

Holy Bible

Aionian Edition®

उर्दू बाइबिल, देवनागरी

Urdu Bible, Devanagari

AionianBible.org

दुनिया का पहला मुकद्दस बाइबल गैरतरजुमह
कॉर्पी और प्रिंट करने के लिए **100%** मुफ्त
इस नाम से भी जाना जाता है “ जामुनी बाइबल ”

Holy Bible Aionian Edition ®

उर्दू बाइबिल, देवनागरी
Urdu Bible, Devanagari

Creative Commons Attribution ShareAlike 4.0, 2018-2022

Source text: eBible.org

Source version: 12/30/2021

Source copyright: Creative Commons Attribution ShareAlike 4.0
Bridge Connectivity Solutions, 2017

Formatted by Speedata Publisher version 4.7.1 on 1/3/2022

100% Free to Copy and Print

<http://AionianBible.org>

Published by Nainoia Inc

<http://Nainoia-Inc.signedon.net>

We pray for a modern public domain translation in every language
Report content and format concerns to Nainoia Inc
Volunteer help is welcome and appreciated!

Celebrate Jesus Christ's victory of grace!

તारुफ

उर्दू at AionianBible.org/Preface

The *Holy Bible Aionian Edition* ® is the world's first Bible *un-translation*! What is an *un-translation*? Bibles are translated into each of our languages from the original Hebrew, Aramaic, and Koine Greek. Occasionally, the best word translation cannot be found and these words are transliterated letter by letter. Four well known transliterations are *Christ*, *baptism*, *angel*, and *apostle*. The meaning is then preserved more accurately through context and a dictionary. The Aionian Bible un-translates and instead transliterates ten additional Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies.

The first three words are *aiōn*, *aiōnios*, and *aīdios*, typically translated as *eternal* and also *world* or *eon*. The Aionian Bible is named after an alternative spelling of *aiōnios*. Consider that researchers question if *aiōn* and *aiōnios* actually mean *eternal*. Translating *aiōn* as *eternal* in Matthew 28:20 makes no sense, as all agree. The Greek word for *eternal* is *aīdios*, used in Romans 1:20 about God and in Jude 6 about demon imprisonment. Yet what about *aiōnios* in John 3:16? Certainly we do not question whether salvation is *eternal*! However, *aiōnios* means something much more wonderful than infinite time! Ancient Greeks used *aiōn* to mean *eon* or *age*. They also used the adjective *aiōnios* to mean *entirety*, such as *complete* or even *consummate*, but never infinite time. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs. So *aiōnios* is the perfect description of God's Word which has *everything* we need for life and godliness! And the *aiōnios* life promised in John 3:16 is not simply a ticket to *eternal* life in the future, but the invitation through faith to the *consummate* life beginning now!

The next seven words are *Sheol*, *Hadēs*, *Geenna*, *Tartaroō*, *Abyssos*, and *Limnē Pyr*. These words are often translated as *Hell*, the place of *eternal punishment*. However, *Hell* is ill-defined when compared with the Hebrew and Greek. For example, *Sheol* is the abode of deceased believers and unbelievers and should never be translated as *Hell*. *Hadēs* is a temporary place of punishment, Revelation 20:13-14. *Geenna* is the Valley of Hinnom, Jerusalem's refuse dump, a temporal judgment for sin. *Tartaroō* is a prison for demons, mentioned once in 2 Peter 2:4. *Abyssos* is a temporary prison for the Beast and Satan. Translators are also inconsistent because *Hell* is used by the King James Version 54 times, the New International Version 14 times, and the World English Bible zero times. Finally, *Limnē Pyr* is the Lake of Fire, yet Matthew 25:41 explains that these fires are prepared for the Devil and his angels. So there is reason to review our conclusions about the destinies of redeemed mankind and fallen angels.

This *un-translation* helps us to see these ten underlying words in context. The original translation is unaltered and a note is added to 63 Old Testament and 200 New Testament verses. To help parallel study and Strong's Concordance use, apocryphal text is removed and most variant verse numbering is mapped to the English standard. We thank our sources at eBible.org, Crosswire.org, unbound.Biola.edu, Bible4u.net, and NHEB.net. The Aionian Bible is copyrighted with creativecommons.org/licenses/by-nd/4.0, allowing 100% freedom to copy and print, if respecting source copyrights. Check the Reader's Guide and read online at AionianBible.org and with the Android App. Why purple? King Jesus' Word is royal... and purple is the color of royalty!

फहरीस्त

पुराना अहदनामा

पैदाइश	11
खुरु	41
अह	66
गिन	85
इस्त	111
यशो	133
कुजा	148
स्त	163
1 सम्	165
2 सम्	185
1 सला	201
2 सला	221
1 तवा	240
2 तवा	257
एज्जा	278
नहे	284
आस्त	293
अर्यू	298
जबूर	313
अम्सा	348
वाइज्ज	361
गजलुल	366
यसा	369
र्यम	398
नोहा	431
हिजि	434
दानि	463
होसी	472
यूए	477
आम्	479
अब्द	483
यूना	484
मीका	485
नाह्म	488
हबक्	489
सफन	491
हज्जी	493
ज़कर	494
मला	499

नया अहदनामा

मर्ती	503
मरकुस	521
लूका	533
यूहन्ना	553
आमाल	569
रोमियो	588
1 कुरिन्थियों	596
2 कुरिन्थियों	604
गलातियों	610
इफिसियों	613
फिलिप्पियों	616
कुलुस्सियों	618
1 थिस्सलुनीकियों	621
2 थिस्सलुनीकियों	623
1 तीमुथियुस	624
2 तीमुथियुस	627
तीतुस	629
फिलेमोन	630
इब्रानियों	631
याकूब	638
1 पतरस	640
2 पतरस	643
1 यूहन्ना	645
2 यूहन्ना	648
3 यूहन्ना	649
यहदाह	650
मुकाशफा	651
मनसलकात	
रीडर्स गाइड	
लगत	
नक्शे	
मिसाल, Doré	

पुराना अहदनामा



चुनाँचे उसने आदम को निकाल दिया और बाग — ए — 'अदन के मशरिक की तरफ कस्बियों को और चारों तरफ घूमने वाली शोलाजन तलवार को रखदा, कि वह जिन्दगी के दररक्त की राह की हिफाजत करें।

ऐदाइश 3:24

पैदाइश

1 खुदा ने सबसे पहले जमीन — ओ — आसमान को पैदा किया। 2 और

जमीन बीरान और सुन्दराथी और गहराओं के ऊपर अँधेरा था: और खुदा की स्थ पानी की सतह पर जुम्बिश करती थी। 3 और खुदा ने कहा कि रोशनी हो जा, और रोशनी हो गई। 4 और खुदा ने देखा कि रोशनी अच्छी है, और खुदा ने रोशनी को अँधेरे से जुदा किया। 5 और खुदा ने रोशनी को तो दिन कहा और अँधेरे को रात। और शाम हुई और सुबह हुई तब पहला दिन हुआ। 6 और खुदा ने कहा कि पानियों के बीच फजा हो लाकि पानी, पानी से जुदा हो जाए।

7 फिर खुदा ने फजा को बनाया और फजा के नीचे के पानी को फजा के ऊपर के पानी से जुदा किया; और ऐसा ही हुआ। 8 और खुदा ने फजा को आसमान कहा। और शाम हुई और सुबह हुई — तब दूसरा दिन हुआ। 9 और खुदा ने कहा कि आसमान के नीचे का पानी एक जगह जमा हो कि खुशकी नजर आए, और ऐसा ही हुआ। 10 और खुदा ने खुशकी को जमीन कहा और जो पानी जमा हो गया था उसको समून्दर; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 11 और खुदा ने कहा कि जमीन धास और बीजदार बूटियों को, और फलदार दरखतों को जो अपनी — अपनी किस्म के मुताबिक बीज रखवें और फलदार दरखतों को जिनके बीज उन की किस्म के मुताबिक उनमें हैं उगाया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 13 और शाम हुई और सुबह हुई — तब तीसरा दिन हुआ। 14 और खुदा ने कहा कि फलक पर सिटारे हों कि दिन को रात से अलग करें; और वह निशान और जमानों और दिनों और बरसों के फर्क के लिए हों। 15 और वह फलक पर रोशनी के लिए हों कि जमीन पर रोशनी डालें, और ऐसा ही हुआ।

16 फिर खुदा ने दो बड़े चमकदार सिटारे बनाए, एक बड़ा चमकदार सितारा, कि दिन पर हृक्ष करें और एक छोटा चमकदार सितारा कि रात पर हृक्ष करें और उसने सिटारों को भी बनाया। 17 और खुदा ने उनको फलक पर रखवा कि जमीन पर रोशनी डालें, 18 और दिन पर और रात पर हृक्ष करें, और उजाले को अँधेरे से जुदा करें; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 19 और शाम हुई और सुबह हुई — तब चौथा दिन हुआ। 20 और खुदा ने कहा कि पानी जानदारों को कसरत से पैदा करें, और परिन्दे जमीन के ऊपर फजा में उड़ें। 21 और खुदा ने बड़े बड़े दरियाई जानवरों को, और हर किस्म के जानदार को जो पानी से बक्सरत पैदा हुए थे, उनकी किस्म के मुताबिक और हर किस्म के परिन्दों को उनकी किस्म के मुताबिक, पैदा किया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 22 और खुदा ने उनको यह कह कर बरकत दी कि फलों और बडों और इन समून्दरों के पानी को भर दो, और परिन्दे जमीन पर बहत बढ़ जाएं।

23 और शाम हुई और सुबह हुई — तब पाँचवाँ दिन हुआ। 24 और खुदा ने कहा कि जमीन जानदारों को, उनकी किस्म के मुताबिक, चौपायें और रेंगनेबाले जानदार और जंगली जानवर उनकी किस्म के मुताबिक पैदा करें, और ऐसा ही हुआ। 25 और खुदा ने जंगली जानवरों और चौपायों को उनकी किस्म के मुताबिक और जमीन के रेंगने बाले जानदारों को उनकी किस्म के मुताबिक बनाया; और खुदा ने देखा कि अच्छा है। 26 फिर खुदा ने कहा कि हम इंसान को अपनी सूरत पर अपनी शबीह की तरह बनाएँ और वह समून्दर की मछलियों और आसमान के परिन्दों और चौपायों, और तमाम जमीन और सब जानदारों पर जो जमीन पर रेंगते हैं इश्कियार रखवें। 27 और खुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर पैदा किया खुदा की सूरत पर उसको पैदा किया — नर — ओ — नारी उनको पैदा किया। 28 और खुदा ने उनको बरकत दी और कहा

कि फलों और बडों और जमीन को भर दो और हृक्षमत करो और समून्दर की मछलियों और हवा के परिन्दों और कुल जानवरों पर जो जमीन पर चलते हैं इखितयार रखवा। 29 और खुदा ने कहा कि देखो, मैं तमाम रू — ए — जमीन की कुल बीजदार सबजी और हर दरखत जिसमें उसका बीजदार फल हो, तुम को देता हूँ, यह तुम्हारे खाने को हों। 30 और जमीन के कुल जानवरों के लिए, और हवा के कुल परिन्दों के लिए और उन सब के लिए जो जमीन पर रेंगने वाले हैं जिनमें जिन्दगी का दम है, कुल हरी बूटियाँ खाने को देता हूँ, और ऐसा ही हुआ। 31 और खुदा ने सब पर जो उसने बनाया था नजर की, और देखा कि बहुत अच्छा है, और शाम हुई और सुबह हुई तब छठा दिन हुआ।

2 तब आसमान और जमीन और उनके कुल लश्कर का बनाना खत्म हुआ।

2 और खुदा ने अपने काम को, जिसे वह करता था सातवें दिन खत्म किया, और अपने सारे काम से जिसे वह कर रहा था, सातवें दिन फारिगा हुआ। 3 और खुदा ने सातवें दिन को बरकत दी, और उसे मुकदम्स ठहराया; क्यूंकि उसमें खुदा सारी कायानात से जिसे उसने पैदा किया और बनाया फारिग हुआ। 4 यह है आसमान और जमीन की पैदाइश, जब वह पैदा हुए जिस दिन खुदावन्द खुदा ने जमीन और आसमान को बनाया; 5 और जमीन पर अब तक खेत का कोई पौधा न था और न मैदान की कोईं सबजी अब तक उमी थी, क्यूंकि खुदावन्द खुदा ने जमीन पर पानी नहीं बरसाया था, और न जमीन जोतने को कोई इंसान था। 6 बक्लि जमीन से कुहर उठती थी, और तमाम रू — ए — जमीन को सेराब करती थी। 7 और खुदावन्द खुदा ने जमीन की मिट्टी से इंसान को बनाया और उसके निर्थनों में जिन्दगी का दम फूका इंसान जीती जान हुआ। 8 और खुदावन्द खुदा ने मशरिक की तरफ अदन में एक बाग लगाया और इंसान को जिसे उसने बनाया था वहाँ रखवा। 9 और खुदावन्द खुदा ने हर दरखत को जो देखने में खुशन्मा और खाने के लिए अच्छा था जमीन से उगाया और बाग के बीच में जिन्दगी का दरखत और भले और बुरे की पहचान का दरखत भी लगाया। 10 और अदन से एक दरिया बाग के सेराब करने को निकला और वहाँ से चार नदियों में तकसीम हुआ। 11 हफ्तली का नाम फैसून है जो हवीला की सारी जमीन को जहाँ सोना होता है धैरे हुए है। 12 और इस जमीन का सोना चोखा है। और वहाँ मोती और संग-ए-सुलेमानी भी है। 13 और दूसरी नदी का नाम जैहन है, जो कूश की सारी जमीन को धैरे हुए है। 14 और तीसरी नदी का नाम दिजला है जो असर के मशरिक को जाती है। और चौथी नदी का नाम फरात है। 15 और खुदावन्द खुदा ने आदम को लेकर बाग — ए — 'अदन में रखवा के उसकी बागवानी और निगहबानी करे। 16 और खुदावन्द खुदा ने आदम को हृक्ष दिया और कहा कि तू बाग के हर दरखत का फल बे रोक टोक खा सकता है। 17 लेकिन भले और बुरे की पहचान के दरखत का कभी न खाना क्यूंकि जिस रोज तूने उसमें से खेयेगा तू मर जायेगा। 18 और खुदावन्द खुदा ने कहा कि आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं उसके लिए एक मददगार उसकी तरह बनाऊँगा। 19 और खुदावन्द खुदा ने सब जंगली जानवर और हवा के सब परिन्दे मिट्टी से बनाएँ और उनको आदम के पास लाया कि देखे कि वह उनके क्या नाम रखता है और आदम ने जिस जानवर को जो कहा वही उसका नाम ठहरा। 20 और आदम ने सब चौपायों और हवा के परिन्दों और सब जंगली जानवरों के नाम रखवे लेकिन आदम के लिए कोई मददगार उसकी तरह न मिला। 21 और खुदावन्द खुदा ने आदम पर गहरी नीद भेजी और वह सो गया और उसने उसकी पसलियों में से एक को निकाल लिया और उसकी जगह गोशत भर दिया। 22 और खुदावन्द खुदा उस पसली से जो उसने आदम में से निकाली थी एक 'ओरत बना कर उसे आदम के पास लाया। 23 और आदम ने कहा कि यह तो अब मेरी हड्डियों में से हड्डी, और मेरे गोशत में से गोशत है;

इसलिए वह 'औरत कहलाएपी क्यूंकि वह मर्द से निकाली गई। 24 इसलिए आदमी अपने माँ बाप को छोड़ेगा और अपनी बीवी से मिला रहेगा और वह एक तन होंगे। 25 और आदम और उसकी बीवी दोनों नगे थे और शरमाते न थे।

3 और साँप सब जंगली जानवरों से, जिनको खुदावन्द खुदा ने बनाया था

चालाक था, और उसने 'औरत से कहा क्या बाकी इंखुदा ने कहा है, कि बाप के किरी दरखत का फल तुम न खाना? 2 'औरत ने साँप से कहा कि बाप के दरखतों का फल तो हम खाते हैं। 3 लेकिन जो दरखत बाप के बीच में है उसके फल के बारे में खुदा ने कहा है कि तुम न तो उसे खाना और न छूना बरना मर जाओगे। 4 तब साँप ने 'औरत से कहा कि तुम हरणिज न मरोगे! 5 बल्कि खुदा जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे, तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम खुदा की तरह भले और बुरे के जानने वाले बन जाओगे। 6 'औरत ने जो देखा कि वह दरखत खाने के लिए अच्छा और आँखों को खुशानुमा मालूम होता है और अकल्प बरुशने के लिए खबूल है तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर को भी दिया और उसने खाया। 7 तब दोनों की आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि वह नगे हैं और उन्होंने अंजीर के पत्तों को सी कर अपने लिए लूगीयाँ बनाई। 8 और उन्होंने खुदावन्द खुदा की आवाज जो ठंडे बक्त बाप में फिरता था सुनी और आदम और उसकी बीवी ने अपने आप को खुदावन्द खुदा के सामने से बाप के दरखतों में छिपाया। 9 तब खुदावन्द खुदा ने आदम को पुकारा और उससे कहा कि त कहाँ है? 10 उसने कहा, मैंने बाप में तेरी आवाज सुनी और मैं डरा क्यूंकि मैं नंगा था और मैंने अपने आप को छिपाया। 11 उसने कहा, तुझे किसने बताया कि तु नंगा है? क्या तुने उस दरखत का फल खाया जिसके बारे में मैंने तुझ को हृक्षम दिया था कि उसे न खाना? 12 आदम ने कहा कि जिस 'औरत को तूने मेरे साथ किया है उसने मुझे उस दरखत का फल दिया और मैंने खाया। 13 तब खुदावन्द खुदा ने, 'औरत से कहा कि तूने यह क्या किया? 'औरत ने कहा कि साँप ने मुझ को बहकाया तो मैंने खाया। 14 और खुदावन्द खुदा ने साँप से कहा, इसलिए कि तूने यह किया तू सब चौपायों और जंगली जानवरों में लान्ती ठहरा; तू अपने पेट के बल चलेगा, और अपनी उम्र भर खाक चाटेगा। 15 और मैं तेरे और 'औरत के बीच और तेरी नसल और औरत की नसल के बीच 'अदावत डालूँगा वह तेरे सिर को कुचलेगा और तू उसकी एड़ी पर कटेगा। 16 फिर उसने 'औरत से कहा कि मैं तेरे दर्द — ए — हम्मल को बहुत बढ़ाऊँगा तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी रगबत अपने शौहर की तरफ होगी और वह तुझ पर हक्कमत करेगा। 17 और आदम से उसने कहा चूँकि तूने अपनी बीवी की बात मानी और उस दरखत का फल खाया जिस के बारे मैंने तुझ हृक्षम दिया था कि उसे न खाना इसलिए जमीन तेरी बजह से लान्ती हुई। मशक्तक के साथ तू अपनी उम्र भर उसकी पैदावार खाएगा। 18 और वह तेरे लिए कैटै और ऊँटकटरो उगाएगी और तू खेत की सब्जी खाएगा। 19 तू अपने मुँह के परसीने की रोटी खाएगा जब तक कि जमीन में तू फिर लौट न जाए इसलिए कि तू उससे निकाला गया है कि बैंकूकि तू खाक है और खाक में फिर लौट जाएगा। 20 और आदम ने अपनी बीवी का नाम हव्वा रख्खा, इसलिए कि वह सब जिन्दों की माँ है। 21 और खुदावन्द खुदा ने आदम और उसकी बीवी के लिए चमड़े के कुर्ते बना कर उनको पहनाए। 22 और खुदावन्द खुदा ने कहा, देखो इंसान भले और बुरे की पहचान में हम में से एक की तरह हो गया: अब कहीं ऐसा न हो कि वह अपना हाथ बढ़ाए और जिन्दगी के दरखत से भी कुछ लेकर खाए और हमेशा जिन्दा रहे। 23 इसलिए खुदावन्द खुदा ने उसको बाप — ए — 'अदन से बाहर कर दिया, ताकि वह उस जमीन की जिसमें से वह लिया गया था, खेती करे। 24 चुनौते उसने आदम को निकाल दिया और बाप — ए — 'अदन के मशरिक की तरफ कस्बियों को और चारों तरफ

घूमने वाली शोलाज्जन तलवार को रखवा, कि वह ज़िन्दगी के दरखत की राह की हिफाजत करें।

4 और आदम अपनी बीवी हव्वा के पास गया, और वह हामिला हुई और उसके काइन पैदा हुआ। तब उसने कहा, मुझे खुदावन्द से एक फर्जन्द मिला। 2 फिर काइन का भाई हाबिल पैदा हुआ; और हाबिल भेड़ बकरियों का चरवाहा और काइन किसान था। 3 कुछ दिन के बाद ऐसा हुआ कि काइन अपने खेत के फल का हविया खुदावन्द के लिए लाया। 4 और हाबिल भी अपनी भेड़ बकरियों के कुछ पहलौठे बच्चों का और कुछ उनकी बच्ची का हविया लाया। और खुदावन्द ने हाबिल को और उसके हविये को कुबल किया, 5 लेकिन काइन को और उसके हविये को कुबल न किया। इसलिए काइन बहुत गुस्सा हुआ और उसका मुँह बिंगड़ा। 6 और खुदावन्द ने काइन से कहा, तू क्यूं गुस्सा हुआ? और तेरा मुँह क्यूं बिंगड़ा हुआ है? 7 अगर तू भला करे तो क्या तू मकबूल न होगा? और अगर तू भला न करे तो गुनाह दरवाजे पर दुबका बैठा है और तेरा मुश्ताक है, लेकिन तू उस पर गालिब आ। 8 और काइन ने अपने भाई हाबिल को कुछ कहा और जब वह दोनों खेत में थे तो ऐसा हुआ कि काइन ने अपने भाई हाबिल पर हमला किया और उसे कत्ल कर डाला। 9 तब खुदावन्द ने काइन से कहा कि तेरा भाई हाबिल कहाँ है? उसने कहा, मुझे मालूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का मुहाफिज हूँ? 10 फिर उसने कहा कि तूने यह क्या किया? तेरे भाई का खन्न जमीन से मुझ को पुकारता है। 11 और अब तू जमीन की तरफ से लान्ती हुआ, जिसने अपना मुँह पसारा किए तेरे हाथ से तेरे भाई का खन्न ले। 12 जब तू जमीन को जोड़ेगा, तो वह अब तुझे अपनी पैदावार न देगी और जमीन पर तू खानाखबाब और आवारा होगा। 13 तब काइन ने खुदावन्द से कहा कि मेरी सजा बर्दाशत से बाहर है। 14 देख, आज तूने मुझे रु — ए — जमीन से निकाल दिया है, और मैं तेरों सामने से गायब हो जाऊँगा; और जमीन पर खानाखबाब और आवारा रहँगा, और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पाएगा कत्ल कर डालेगा। 15 तब खुदावन्द ने उसे कहा, नहीं, बल्कि जो काइन को कत्ल करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा। और खुदावन्द ने काइन के लिए एक निशान ठहराया कि कोई उसे पा कर मार न डाले। 16 इसलिए, काइन खुदावन्द के सामने से निकाल गया और अदन के मशरिक की तरफ नद के इलाके में जा बसा। 17 और काइन अपनी बीवी के पास गया और वह हामिला हुई और उसके हनक पैदा हुआ; और उसने एक शहर बसाया और उसका नाम अपने बेटे के नाम पर हनक रख्खा। 18 और हनक से ईराद पैदा हुआ, और ईराद से महयाएल पैदा हुआ, और महयाएल से मत्साएल पैदा हुआ, और मत्साएल से लमक पैदा हुआ। 19 और लमक दो और तेरों ब्याह लाया: एक का नाम अदा और दूसरी का नाम ज़िल्ला था। 20 और अदा के याबल पैदा हुआ: वह उनका बाप था जो खेमों में रहते और जानवर पालते हैं। 21 और उसके भाई का नाम यूबल था: वह बीन और बांसली बजाने वालों का बाप था। 22 और ज़िल्ला के भी तबलकाइन पैदा हुआ: जो पीतल और लोहे के सब तेज हथियारों का जानाये वाला था; और नामा तबलकाइन की बहन थी। 23 और लमक ने अपनी बीवियों से कहा कि ऐ अदा और ज़िल्ला मेरी बात सुनो; ऐ लमक की बीवियों, मेरी बात पर कान लगाओ: मैंने एक आदमी को जिसने मुझे ज़ख्मी किया, मार डाला। और एक जवान को जिसने मेरे चोट लगाई, कत्ल कर डाला। 24 अगर काइन का बदला सात गुना लिया जाएगा, तो लमक का सतर और सात गुना। 25 और आदम फिर अपनी बीवी के पास गया और उसके एक और बेटा हुआ और उसका नाम सेत रख्खा: और वह कहने लगी कि खुदा ने हाबिल के बदले जिसको काइन ने कत्ल किया, मुझे दूसरा फर्जन्द दिया। 26

और सेत के यहाँ भी एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम उसने अन्सू रख्खा; उस बक्त से लोग यहोवा का नाम लेकर दुआ करने लगे।

5 यह आदम का नसबनामा है। जिस दिन खुदा ने आदम को पैदा किया; तो उसे अपनी शबीह पर बनाया। 2 मर्द और औरत उनको पैदा किया और उनको बरकत दी, और जिस दिन वह पैदा हुए उनका नाम आदम रख्खा। 3 और आदम एक सौ तीस साल का था जब उसकी सूरत — ओ — शबीह का एक बेटा उसके यहाँ पैदा हुआ; और उसने उसका नाम सेत रख्खा। 4 और सेत की पैदाइश के बाद आदम आठ सौ साल जिन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 5 और आदम की कुल उम्र नौ सौ तीस साल की हुई, तब वह मरा। 6 और सेत एक सौ पाँच साल का था जब उससे अन्सू पैदा हुआ। 7 और अन्सू की पैदाइश के बाद सेत आठ सौ साल साल जिन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 8 और सेत की कुल उम्र नौ सौ बारह साल की हुई, तब वह मरा। 9 और अन्सू नव्वे साल का था जब उससे कीनान पैदा हुआ। 10 और कीनान की पैदाइश के बाद अन्सू आठ सौ पन्द्रह साल जिन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 11 और अन्सू की कुल उम्र नौ सौ पाँच साल की हुई, तब वह मरा। 12 और कीनान सतर साल का था जब उससे महललेल पैदा हुआ। 13 और महललेल की पैदाइश के बाद कीनान आठ सौ चारों साल जिन्दा रहा और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 14 और कीनान की कुल उम्र नौ सौ दस साल की हुई, तब वह मरा। 15 और महललेल पैसठ साल का था जब उससे महललेल पैदा हुआ। 16 और यारिद की पैदाइश के बाद महललेल आठ सौ तीस साल जिन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 17 और महललेल की कुल उम्र आठ सौ पचासनवे साल की हुई, तब वह मरा। 18 और यारिद एक सौ बासठ साल का था जब उससे हनक पैदा हुआ। 19 और हनक की पैदाइश के बाद यारिद आठ सौ साल जिन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 20 और यारिद की कुल उम्र नौ सौ बासठ साल की हुई, तब वह मरा। 21 और हनक पैसठ साल का था उससे मत्रसिलह पैदा हुआ। 22 और मत्रसिलह की पैदाइश के बाद हनक तीन सौ साल तक खुदा के साथ — साथ चलता रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 23 और हनक की कुल उम्र तीन सौ पैसठ साल की हुई। 24 और हनक खुदा के साथ — साथ चलता रहा, और वह गायब हो गया क्योंकि खुदा ने उसे उठा लिया। 25 और मत्रसिलह एक सौ सतासी साल का था जब उससे लमक पैदा हुआ। 26 और लमक की पैदाइश के बाद मत्रसिलह सात सौ बयासी साल जिन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 27 और मत्रसिलह की कुल उम्र नौ सौ उनहतर साल की हुई, तब वह मरा। 28 और लमक एक सौ बयासी साल का था जब उससे एक बेटा पैदा हुआ। 29 और उसने उसका नाम नूह रख्खा और कहा, कि यह हमारे हाथों की मेहनत और मशक्कत से जो ज़मीन की बजह से है जिस पर खुदा ने लाना तकी है, हमें आराम देगा। 30 और नूह की पैदाइश के बाद लमक पाँच सौ पचासनवे साल जिन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 31 और लमक की कुल उम्र सात सौ सतर साल की हुई, तब वह मरा। 32 और नूह पाँच सौ साल का था, जब उससे सिम, हाम और याफत, पैदा हुए।

6 जब स — ए — ज़मीन पर आदमी बहुत बढ़ने लगे और उनके बेटियाँ पैदा हुईं। 2 तो खुदा के बेटों ने आदमी की बेटियों को देखा कि वह खूबसूरत हैं; और जिनको उन्होंने चुना उनसे ब्याह कर लिया। 3 तब खुदावन्द ने कहा कि मेरी स्थ हँसान के साथ हमेशा मुजाहमत न करती रहेगी। क्योंकि वह भी तो हँसान है; तो भी उसकी उम्र एक सौ बीस साल की होगी। 4 उन दिनों में ज़मीन पर जब्बार थे, और बाद में जब खुदा के बेटे हँसान की बेटियों के पास गए, तो

उनके लिए उनसे औलाद हुईं। यहीं पुराने ज़माने के सूर्य है, जो बड़े नामवर हुए हैं। 5 और खुदावन्द ने देखा कि ज़मीन पर इंसान की बड़ी बहुत बढ़ गई, और उसके दिल के तस्वीर और खायाल हमेशा बोही ही होते हैं। 6 तब खुदावन्द ज़मीन पर इंसान के पैदा करने से दुखी हुआ और दिल में गम किया। 7 और खुदावन्द ने कहा कि मैं इंसान को जिसे मैंने पैदा किया, सू — ए — ज़मीन पर से मिटा डालूँगा; इंसान से लेकर हैवान और रेंगेवाले जानदार और हवा के परिन्दों तक; क्योंकि मैं उनके बनाने से दुखी हूँ। 8 मगर नूह खुदावन्द की नज़र में मक्कल हुआ। 9 नूह का नसबनामा यह है: नूह मर्द — ए — रास्तबाज और अपने ज़माने के लोगों में बेएब था, और नूह खुदा के साथ — साथ चलता रहा। 10 और उससे तीन बेटे सिम, हाम और याफत पैदा हुए। 11 लेकिन ज़मीन खुदा के अगे नापाक हो गई थी, और वह ज़ुल्म से भरी थी। 12 और खुदा ने ज़मीन पर नज़र की और देखा, कि वह नापाक हो गई है, क्योंकि हर इंसान ने ज़मीन पर अपना तरीका बिगाड़ लिया था। 13 और खुदा ने नूह से कहा कि पेरे इंसान का खातिमा मेरे सामने आ पहुँचा है; क्योंकि उनकी बजह से ज़मीन ज़ुल्म से भर गई, इसलिए देख, मैं ज़मीन के साथ उनको हलाक करूँगा। 14 तू गोपर की लकड़ी की एक कश्ती आने लिए बना; उस कश्ती में कोठरियाँ तैयार करना और उसके अन्दर और बाहर राल लगाना। 15 और ऐसा करना कि कश्ती की लम्बाई तीन सौ हाथ, उसकी चौड़ाई पचास हाथ और उसकी ऊँचाई तीस हाथ हो। 16 और उस कश्ती में एक रौशनदान बनाना, और ऊपर से हाथ भर छोड़ कर उसे खत्म कर देना; और उस कश्ती का दरवाजा उसके पहलू में रखना; और उसमें तीन हिस्से बनाना निचला, दसरा और तीसरा। 17 और देख, मैं खुद ज़मीन पर पानी का तूफान लानेवाला हूँ, ताकि हर इंसान को जिसमें ज़िन्दगी की साँस है, दुनिया से हलाक कर डालूँ, और सब जो ज़मीन पर हैं मर जाएंगे। 18 लेकिन तो साथ मैं अपना 'अहद क़ाईम करूँगा'; और तू कश्ती में जाना — तू और तेरे साथ तेरे बेटे और तेरी बीवी और तेरे बेटों की बीवियाँ। 19 और जानवरों की हर किसिम में से दो — दो अपने साथ कश्ती में से लेना, कि वह तेरे साथ जिते बचें, वह नर — ओ — मादा हों। 20 और परिन्दों की हर किसिम में से, और चरिन्दों की हर किसिम में से, और ज़मीन पर रेंगेवालों की हर किसिम में से दो दो तेरे पास आएं, ताकि वह जिते बचें। 21 और तू रह तरह की खाने की चीज लेकर अपने पास ज़मा कर लेना, क्योंकि यहीं तेरे और उनके खाने को होगा। 22 और नूह ने ऐसा ही किया; जैसा खुदा ने उसे हुक्म दिया था, वैसा ही 'अमल किया।

7 और खुदावन्द ने नूह से कहा कि तू अपने पेरे खान्दान के साथ कश्ती में आ; क्योंकि मैंने तुझी को अपने सामने इस ज़माना में रास्तबाज देखा है। 2 सब पाक जानवरों में से सात — सात, नर और उनकी मादा; और उनमें से जो पाक नहीं हैं दो — दो, नर और उनकी मादा अपने साथ ले लेना। 3 और हवा के परिन्दों में से भी सात — सात, नर और मादा, लेना ताकि ज़मीन पर उनकी नसल बाकी रहे। 4 क्योंकि सात दिन के बाद मैं ज़मीन पर चारों साल दिन और चालीस रात पानी बरसाऊंगा, और हर जानदार शय को जिसे मैंने बनाया ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। 5 और नूह ने वह सब जैसा खुदावन्द ने उसे हुक्म दिया था किया। 6 और नूह छ: सौ साल का था, जब पानी का तूफान ज़मीन पर आया। 7 तब नह और उसके बेटे और उसकी बीवी, और उसके बेटों की बीवियाँ, उसके साथ तूफान के पानी से बचने के लिए कश्ती में गए। 8 और पाक जानवरों में से और उन जानवरों में से जो पाक नहीं, और परिन्दों में से और ज़मीन पर के हर रेंगेवाले जानदार में से 9 दो — दो, नर और मादा, कश्ती में नूह के पास गए, जैसा खुदा ने नूह को हुक्म दिया था। 10 और सात दिन के बाद ऐसा हुआ कि तूफान का पानी ज़मीन पर आ गया। 11 नूह की उम्र

का छः सौवां साल था, कि उसके दूसरे महीने के ठीक सत्रहवीं तारीख को बडे समून्दर के सब सेते फूट निकले और आसमान की खिड़कियाँ खुल गईं। 12 और चालीस दिन और चालीस रात जमीन पर बारिश होती रही। 13 उसी दिन नहूं और नहूं के बेटे सिम और हाम और याफत, और 14 और हर किस्म का जानवर और हर किस्म का चौपाया और हर किस्म का जमीन पर का रेंगने वाला जानदार और हर किस्म का परिन्दा और हर किस्म की खिड़िया, यह सब कश्ती में नहूं के पास आए। 16 और जो अन्दर आए थे, जैसा खुदा ने उसे हक्म दिया था, सब जानवरों के नर — ओ — मादा थे। तब खुदावन्द ने उसको बाहर से बन्द कर दिया। 17 और चालीस दिन तक जमीन पर तूफान रहा, और पानी बढ़ा और उसने कश्ती को ऊपर उठा दिया; तब कश्ती जमीन पर से उठ गई। 18 और पानी जमीन पर चढ़ता ही गया और बहुत बढ़ा और कश्ती पानी के ऊपर तैरती रही। 19 और पानी जमीन पर बहुत ही ज्यादा चढ़ा और सब ऊँचे पहाड़ जो दुनिया में हैं छिप गए। 20 पानी उसे पंद्रह हाथ और ऊपर चढ़ा और पहाड़ ढूँग गए। 21 और सब जानवर जो जमीन पर चलते थे, परिन्दे और चौपाये और जंगली जानवर और जमीन पर के सब रेंगनेवाले जानदार, और सब आदमी मर गए। 22 और खुशकी के सब जानदार जिनके नथनों में ज़िन्दगी का दम था मर गए। 23 बल्कि हर जानदार शय जो इस जमीन पर थी मर मिटी — क्या इंसान क्या हैवान क्या रेंगने वाले जानदार क्या हवा का परिन्दा, यह सब के सब जमीन पर से मर मिटे। सिर्फ़ एक नहूं बाकी बचा, या वह जो उसके साथ कश्ती में थे। 24 और पानी जमीन पर एक सौ पचास दिन तक बढ़ता रहा।

8 फिर खुदा ने नहूं को और सब जानदार और सब चौपायों को जो उसके साथ कश्ती में थे याद किया; और खुदा ने जमीन पर एक हवा चलाई और पानी स्थ गया। 2 और समून्दर के सेते और आसमान के दीरीचे बन्द किए गए, और आसमान से जो बारिश हो रही थी थम गई; 3 और पानी जमीन पर से घटते — घटते एक सौ पचास दिन के बाद कम हुआ। 4 और सातवें महीने की सत्रहवीं तारीख को कश्ती अरारात के पहाड़ों पर टिक गई। 5 और पानी दसवें महीने तक बराबर घटता रहा, और दसवें महीने की पहली तारीख को पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आईं। 6 और चालीस दिन के बाद ऐसा हुआ, कि नहूं ने कश्ती की खिड़की जो उसने बनाई थी खोली, 7 और उसने एक कैवे को उड़ा दिया; इसलिए वह निकला और जब तक कि जमीन पर से पानी सूख न गया इधर उधर फिरता रहा। 8 फिर उसने एक कबूतरी अपने पास से उड़ा दी, ताकि देखे, कि जमीन पर पानी घटा या नहीं। 9 लेकिन कबूतरी ने पंजा टेकने की जगह न पाई और उसके पास कश्ती को लौट आई, क्यूँकि तमाम स — ए — जमीन पर पानी था। तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया और अपने पास कश्ती में रख दिया। 10 और सात दिन ठहर कर उसने उस कबूतरी को फिर कश्ती से उड़ा दिया; 11 और वह कबूतरी शाम के बक्त्र उसके पास लौट आई, और देखा तो जैतून की एक ताजा पत्ती उसकी चोंच में थी। तब नहूं ने मालूम किया कि पानी जमीन पर से कम हो गया। 12 तब वह सात दिन और ठहरा, इसके बाद फिर उस कबूतरी को उड़ाया, लेकिन वह उसके पास फिर कभी न लौटी। 13 और छः सौ पहले साल के पहले महीने की पहली तारीख को ऐसा हुआ, कि जमीन पर से पानी सूख गया; और नहूं ने कश्ती की छत खोली और देखा कि जमीन की सतह सूख गई है। 14 और दूसरे महीने की सताईस्वीं तारीख को जमीन बिल्कुल सूख गई। 15 तब खुदा ने नहूं से कहा कि 16 कश्ती से बाहर निकल आ; तू और तेरे साथ तेरी बीबी और तेरे बेटे और तेरे बेटों की बीवियाँ। 17 और उन जानदारों को भी बाहर निकाल ला जो तेरे साथ हैं: क्या परिन्दे, क्या चौपाये, क्या जमीन के रेंगनेवाले जानदार; ताकि वह जमीन पर कसरत से बच्चे

दें और फल दायक हों और जमीन पर बढ़ जाएँ। 18 तब नहूं अपनी बीबी और अपने बेटों और अपने बेटों की बीवियों के साथ बाहर निकला। 19 और सब जानवर, सब रेंगनेवाले जानदार, सब परिन्दे और सब जो जमीन पर चलते हैं, अपनी अपनी किस्म के साथ कश्ती से निकल गए। 20 तब नहूं ने खुदावन्द के लिए एक मजबूत बनाया; और सब पाक चौपायों और पाक परिन्दों में से थोड़े से लेकर उस मजबूत पर सोगड़ती कुर्बानीयाँ पेश की। 21 और खुदावन्द ने उसकी राहत अंगूज खुशबूती, और खुदावन्द ने अपने दिल में कहा कि इंसान की बजह से मैं फिर कभी जमीन पर लान्त नहीं भेज़ूँगा, क्यूँकि इंसान के दिल का ख्याल लड़कपन से बुरा है; और न फिर सब जानदारों को जैसा अब किया है, मासँगा। 22 बल्कि जब तक जमीन काईम है बीज बोना और फसल कटना, सर्दी और तपिश, गर्मी और जाड़ा और रात खत्म न होंगे।

9 और खुदा ने नहूं और उसके बेटों को बरकत दी और उनको कहा कि फायदेमंद हो और बढ़ो और जमीन को भर दो। 2 और जमीन के सब जानदारों और हवा के सब परिन्दों पर तुम्हारी दहशत और तुम्हारा रौप होगा; यह और तमाम कीड़ी जिन से जमीन भरी पड़ी है, और समून्दर की कुल मछलियाँ तुम्हारे कब्जे में कीं गईं। 3 हर चलता फिरता जानदार तुम्हारे खाने को होगा, हरी सब्ज़ी की तरह मैंने सबका सब तुम को दे दिया 4 मगर तुम गोशत के साथ खून को, जो उसकी जान है न खाना। 5 मैं तुम्हारे खून का बदला जस्ते लूँगा, हर जानवर से उसका बदला लूँगा; आदमी की जान का बदला आदमी से और उसके भाई बन्द से लूँगा। 6 जो आदमी का खून करे उसका खून आदमी से होगा, क्यूँकि खुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर बनाया है। 7 और तुम फल दायक हो और बढ़ो और जमीन पर खूब अपनी नसल बढ़ाओ, और बहुत ज्यादा हो जाओ। 8 और खुदा ने नहूं और उसके बेटों से कहा, 9 देखो, मैं खुद तुमसे और तुम्हारे बाद तुम्हारी नसल से, 10 और सब जानदारों से जो तुम्हारे साथ हैं, क्या परिन्दे क्या चौपाये क्या जमीन के जानवर, यानी जमीन के उन सब जानवरों के बारे में जो कश्ती से उतरे, 'अहद करता हूँ 11 मैं इस 'अहद को तुम्हारे साथ काईम रखूँगा कि सब जानदार तूफान के पानी से फिर हलाक न होंगे, और न कभी जमीन को तबाह करने के लिए फिर तूफान आएगा 12 और खुदा ने कहा कि जो अहद मैंने अपने और तुम्हारे बीच और सब जानदारों के बीच जो तुम्हारे साथ हैं, नसल — दर — नसल हमेशा के लिए करता हूँ, उसका निशान यह है कि 13 मैं अपनी कमान को बादल में रखता हूँ, वह मेरे और जमीन के बीच 'अहद का निशान होगी 14 और ऐसा होगा कि जब मैं जमीन पर बादल लाऊँगा, तो मेरी कमान बादल में दिखाई देगी। 15 और मैं अपने 'अहद को, जो मैं और और तुम्हारे और हर तरह के जानदार के बीच है, याद करूँगा; और तमाम जानदारों की हलाकत के लिए पानी का तूफान फिर न होगा। 16 और कमान बादल में होगी और मैं उस पर निगाह करूँगा, ताकि उस अबदी 'अहद को याद करूँ जो खुदा के और जमीन के सब तरह के जानदार के बीच है। 17 तब खुदा ने नहूं से कहा कि यह उस 'अहद का निशान है जो मैं अपने और जमीन के कुल जानदारों के बीच काईम करता हूँ। 18 नहूं के बेटे जो कश्ती से निकले, सिम, हाम और याफत थे और हाम कनान का बाप था। 19 यही तीनों नहूं के बेटे थे और इन्हीं की नसल सारी जमीन फैली। 20 और नहूं काश्तकारी करने लगा और उसने एक अँगूर का बाग लगाया। 21 और उसने उसकी मरी पी और उसे नशा आया और वह अपने डेरे में नंगा हो गया। 22 और कनान के बाप हाम ने अपने बाप को नंगा देखा, और अपने दोनों भाइयों को बाहर आ कर खबर दी। 23 तब सिम और याफत ने एक कपड़ा लिया और उसे अपने कन्धों पर धरा, और पीछे को उल्टे चल कर गए और अपने बाप की नंगे पन को ढाँका, इसलिए उनके मुँह उल्टी तरफ थे और उन्होंने अपने बाप की

नगे पन को न देखा। 24 जब नहूं अपनी मय के नशे से होश में आया, तो जो उसके छोटे बेटे ने उसके साथ किया था उसे मालूम हुआ। 25 और उसने कहा कि कनान मलाऊन हो, वह अपने भाइयों के गुलामों का गुलाम होगा 26 फिर कहा, खुदावन्द सिम का खुदा मुबारक हो, और कनान सिम का गुलाम हो। 27 खुदा याफत को फैलाए, कि वह सिम के डेरों में बसे, और कनान उसका गुलाम 28 और तूफान के बाद नहूं साडे तीन सौ साल और ज़िन्दा रहा। 29 और नहूं की कुल उम्र साडे नौ सौ साल की हुई। तब उसने वफ़ात पाई।

10 नहूं के बेटों सिम, हाम और याफत की औलाद यह हैं। तूफान के बाद उनके यहाँ बेटे पैदा हुए। 2 बनी याफत यह हैं: ज़ुमर और माज़ूज और मादी, और यावान और तूबल और मसक और तीरास। 3 और ज़ुमर के बेटे: अशकनाज और रीफ़त और तुजरमा। 4 और यावान के बेटे: इलिसा और तरसीस, किती और देवानी। 5 कौमों के जरीर इहीं की नसल में बट कर, हर एक की ज़बान और कबीले के मुताबिक मुख्यतः लिफ़ मुल्क और गिरोह हो गए। 6 और बनी हाम यह हैं: क़श और मिस्र और फूत और कनान। 7 और बनी क़श यह हैं। सबा और हबीला और सबत और रामा और सब्तीका। और बनी रामा यह हैं: सबा और ददान। 8 और क़श से नमस्द पैदा हुआ। वह रू—ए—ज़मीन पर एक सर्मा हुआ है। 9 खुदावन्द के सामने वह एक शिकारी सूर्पा हुआ है, इसलिए यह मसल चली कि, “खुदावन्द के सामने नमस्द सा शिकारी सूर्पा।” 10 और उस की बादशाही का पहला मुल्क सिन आर में बाबुल और अरक और अक्काद और कलना से हुई। 11 उसी मुल्क से निकल कर वह असूर में आया, और नीनवा और रहेबोत ईर और कलन हो, 12 और नीनवा और कलन के बीच रसन को, जो बड़ा शहर है बनाया। 13 और मिस्र से लदी और अनामी और लिहाबी और नफतही 14 और फस्सी और कसलही जिनसे फिलिस्ती निकले और कफ्तरी पैदा हुए। 15 और कनान से सैदा जो उसका पहलौठा था, और हित, 16 और यबूरी और अमरी और जिरजासी, 17 और हब्बी और अरकी और सीनी, 18 और अस्वादी और समारी और हमारी पैदा हुए; और बाद में कनानी कबीले फैल गए। 19 और कनानीयों की हड़ यह है: सैदा से गज़ा तक जो जिरार के रास्ते पर है, फिर वहाँ से लसा तक जो सदूम और 'अम्मा और अदमा और ज़िबायान की राह पर है। 20 इसलिए बनी हाम यह है, जो अपने—अपने मुल्क और गिरोहों में अपने कबीलों और अपनी ज़बानों के मुताबिक आबाद हैं। 21 और सिम के यहाँ भी जो तमाम बनी इब्र का बाप और याफत का बड़ा भाई था, औलाद हुई। 22 और बनी सिम यह है: ऐलाम और असूर और अरफ़कसद और लद और आराम। 23 और बनी आराम यह है; ऊज़ और हूल और जतर और मस। 24 और अरफ़कसद से सिलह पैदा हुआ और सिलह से इब्र। 25 और इब्र के यहाँ दो बेटे पैदा हुए; एक का नाम फलज था क्यैंकि ज़मीन उसके दिनों में बटी, और उसके भाई का नाम युक्तान था। 26 और युक्तान से अलमदाद और सलत और हसारमात और इराश। 27 और हदूम और ऊज़ाल और दिक्कला। 28 और ऊबल और अबीमाएल और सिबा। 29 और ओकीर और हवील और यबाब पैदा हुए; यह सब बनी युक्तान थे। 30 और इनकी आबादी मेसा से मशरिक के एक पहाड़ सफ़ार की तरफ़ थी। 31 इसलिए बनी सिम यह है, जो अपने—अपने मुल्क और गिरोह में अपने कबीलों और अपनी ज़बानों के मुताबिक आबाद हैं। 32 नहूं के बेटों के खान्दान उनके गिरोह और नसलों के लेतबार से यही है, और तूफान के बाद जो कौमें ज़मीन पर इधर उधर बट गई वह इहीं में से थी।

11 और तमाम ज़मीन पर एक ही ज़बान और एक ही बोली थी। 2 और ऐसा हुआ कि मशरिक की तरफ़ सफ़र करते करते उनको मुल्क — ए

— सिन आर में एक मैदान मिला और वह वहाँ बस गए। 3 और उन्होंने आपस में कहा, 'आओ, हम ईंटें बनाएँ और उनको आग में खूब पकाएँ। तब उन्होंने पथर की जगह ईंट से और चुने की जगह गोरे से काम लिया। 4 फिर वह कहने लगे, कि आओ हम अपने लिए एक शहर और एक बुर्ज जिसकी चोटी आसमान तक पहुँचे बनाएँ और यहाँ अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हम तमाम रू—ए—ज़मीन पर बिखर जाएँ। 5 और खुदावन्द इस शहर और बुर्ज, को जिसे बनी आदम बनाने लगे देखने को उत्तरा। 6 और खुदावन्द ने कहा, “देखो, यह लोग सब एक हैं और इन सभों की एक ही ज़बान है। वह जो यह करने लगे हैं तो अब कुछ भी जिसका वह इरादा करें उनसे बाकी न छूटेगा। 7 इसलिए आओ, हम वहाँ जाकर उनकी ज़बान में इखिलाफ़ डालें, ताकि वह एक दूसरे की बात समझा न सके।” 8 तब, खुदावन्द ने उनको वहाँ से तमाम रू—ए—ज़मीन में बिखरे दिया; तब वह उस शहर के बनाने से बाज़ आए। 9 इसलिए उसका नाम बाबुल हुआ क्यैंकि खुदावन्द ने उनको तमाम रू—ए—ज़मीन पर बिखरे दिया। 10 यह सिम का नसबनाम है: सिम एक सौ साल का था जब उससे तूफान के दो साल बाद अरफ़कसद पैदा हुआ; 11 और अरफ़कसद की पैदाइश के बाद सिम पाँच सौ साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 12 जब अरफ़कसद पैरीस साल का हुआ, तो उससे सिलह पैदा हुआ; 13 और अर सिलह की पैदाइश के बाद अरफ़कसद चार सौ तीन साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 14 सिलह जब तीस साल का हुआ, तो उससे इब्र पैदा हुआ; 15 और इब्र की पैदाइश के बाद सिलह चार सौ तीन साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 16 जब इब्र चौंतीस साल का था, तो उससे फलज पैदा हुआ; 17 और फलज की पैदाइश के बाद इब्र चार सौ तीस साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 18 फलज तीस साल का था, जब उससे रं'ऊ पैदा हुआ; 19 और रं'ऊ की पैदाइश के बाद फलज दो सौ जी साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 20 और रं'ऊ बतीस साल का था, जब उससे सस्ज पैदा हुआ; 21 और सस्ज की पैदाइश के बाद रं'ऊ दो सौ सात साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 22 और अस्ज तीस साल का था, जब उससे नहर पैदा हुआ। 23 और नहर की पैदाइश के बाद सस्ज दो सौ साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 24 नहर उन्नीस साल का था, जब उससे तारह पैदा हुआ। 25 और तारह की पैदाइश के बाद नहर एक सौ उन्नीस साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 26 और तारह सतर साल का था, जब उससे इब्राहाम और नहर और हारान पैदा हुए। 27 और यह तारह का नसबनाम है: तारह से इब्राहाम और नहर और हारान पैदा हुए, और हारान से लूह पैदा हुआ। 28 और हारान अपने बाप तारह के आगे अपनी पैदाइशी जगह यानी कसदियों के ऊर में मरा। 29 और अब्राम और नहर ने अपना—अपना ब्याह कर लिया। इब्राहाम की बीवी का नाम सारय और नहर की बीवी का नाम मिल्का था जो हारान की बेटी थी। बही मिल्का का बाप और इस्का का बाप था। 30 और सारय बाँझ थी; उसके कोई बाल — बच्चा न था। 31 और तारह ने अपने बेटे इब्राहाम को और अपने पोते लूह को, जो हारान की बेटा था, और अपनी बह सारय को जो उसके बेटे इब्राहाम की बीवी थी, साथ लिया और वह सब कसदियों के ऊर से रवाना हुए की कनान के मुल्क में जाएँ; और वह हारान तक आएँ और वही रहने लगे। 32 और तारह की उम्र दो सौ पाँच साल की हुई और उस ने हारान में वफ़ात पाई।

12 खुदावन्द ने इब्राहाम से कहा, कि तू अपने बतन और अपने नोदरों के बीच से और अपने बाप के घर से निकल कर उस मुल्क में जा जो मैं

तुझे दिखाऊँगा। 2 और मैं तुझे एक बड़ी कौम बनाऊँगा और बरकत दूँगा और तेरा नाम सरफ़राज कहँसँगा; इसलिए तू बरकत का जरिया हो। 3 जो तुझे मुबारक कहें उनको मैं बरकत दूँगा, और जो तुझ पर लान्त करे उस पर मैं लान्त कहँसँगा, और ज़मीन के सब कबीले तेरे वसीले से बरकत पाएँगे। 4 तब इब्राहीम खुदावन्द के कहने के मुताबिक चल पड़ा और लूत उसके साथ गया, और अब्राम पच्छातर साल का था जब वह हारान से रवाना हुआ। 5 और इब्राहीम ने अपनी बीवी सारय, और अपने भतीजे लूत को, और सब माल को जो उन्होंने जमा किया था, और उन आदमियों को जो उनको हारान में मिल गए थे साथ लिया, और वह मुल्क — ए — कनान को रवाना हुए और मुल्क — ए — कनान में आए। 6 और इब्राहीम उस मुल्क में से गुजरात हुआ मकाम — ए — सिकम में मोरा के बलूत तक पहुँचा। उस बक्त मुल्क में कनानी रहते थे। 7 तब खुदावन्द ने इब्राहीम को दिखाई देकर कहा कि यही मुल्क मैं तेरी नसल को दूँगा। और उससे वहाँ खुदावन्द के लिए जो उसे दिखाई दिया था, एक कुर्बानगाह बनाई। 8 और वहाँ से कूच करके उस पहाड़ की तरफ गया जो बैत — एल के मशरिक में है, और अपना डेरा ऐसे लगाया कि बैत — एल मारिब में और 'एँ' मशरिक में पड़ा; और वहाँ उसने खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाई और खुदावन्द से दुआ की। 9 और इब्राहीम सफर करता करता दरिखिन की तरफ बढ़ गया। 10 और उस मुल्क में काल पड़ा: और इब्राहीम मिस को गया कि वहाँ टिका रहे; क्यौंकि मुल्क में सख्त काल था। 11 और ऐसा हुआ कि जब वह मिस में दाखिल होने को था तो उसने अपनी बीवी सारय से कहा कि देख, मैं जानता हूँ कि तू देखने में खबरसरत औरत है। 12 और यूँ होगा कि मिसी तुझे देख कर कहेंगे कि यह उसकी बीवी है, इसलिए वह मुझे तो मार डालेंगे मगर तुझे जिन्दा रख लेंगे। 13 इसलिए तू यह कह देना, कि मैं इसकी बहन हूँ, ताकि तेरी वजह से मेरा भला हो और मेरी जान तेरी बदौलत बची रहे। 14 और यूँ हुआ कि जब इब्राहीम मिस में आया तो मिसियों ने उस 'औरत को देखा कि वह निहायत खबरसरत है। 15 और फिर 'औन के हाकिमों ने उसे देख कर फिर 'औन के सामने में उसकी तारीफ की, और वह 'औरत फिर' 'औन के घर में पहुँचाई गई। 16 और उसने उसकी खातिर इब्राहीम पर एहसान किया; और भेड़ बकरियाँ और गाय, बैल और गधे और गुलाम और लौंडियाँ और गरधियाँ और ऊँट उसके पास हो गए। 17 लेकिन खुदावन्द ने फिर 'औन और उसके खानदान पर, इब्राहीम की बीवी सारय की वजह से बड़ी — बड़ी बलाए नाजिल की। 18 तब फिर 'औन ने इब्राहीम को बुला कर उससे कहा, कि तने मुझ से यह क्या किया? तूने मुझे क्यूँ न बताया कि यह तेरी बीवी है। 19 तूने यह क्यूँ कहा कि वह मेरी बहन है? इसी तिए मैंने उसे लिया कि वह मेरी बीवी बने इसलिए देख तेरी बीवी हाजिर है। उसको ले और चला जा। 20 और फिर 'औन ने उसके हक में अपने आदमियों को हिदायत की, और उन्होंने उसे और उसकी बीवी को उसके सब माल के साथ रवाना कर दिया।

13 और इब्राहीम मिस से अपनी बीवी और अपने सब माल और लूत को साथ ले कर कनान के दरिखिन की तरफ चला। 2 और इब्राहीम के पास चौपाएँ और सोना चाँदी बकसरत था। 3 और वह कनान के दरिखिन से सफर करता हुआ बैत — एल में उस जगह पहुँचा जहाँ पहले बैत — एल और 'एँ' के बीच उसका डेरा था। 4 यानी वह मकाम जहाँ उसने शूर' में कुर्बानगाह बनाई थी, और वहाँ इब्राहीम ने खुदावन्द से दुआ की। 5 और लूत के पास भी जो इब्राहीम का हमसफर था भेड़ — बकरियाँ, गाय — बैल और डेरे थे। 6 और उस मुल्क में इतनी गुजाइश न थी कि वह इकट्ठे रहे, क्यौंकि उनके पास इतना माल था कि वह इकट्ठे नहीं रह सकते थे। 7 और इब्राहीम के चरवाहों में झांगड़ा हुआ; और कना'नी और फरिज़ी उस बक्त मुल्क में

रहते थे। 8 तब इब्राहीम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों और तेरे चरवाहों के बीच झांगड़ा न हआ करे, क्यौंकि हम भाइ हैं। 9 क्या यह सारा मुल्क तेरे सामने नहीं? इसलिए तू मुझ से अलग हो जा: अगर तू बाँध जाए तो मैं दहने जाऊँगा, और अगर तू दहने जाए तो मैं बाँध जाऊँगा। 10 तब लूत ने आँख उठाकर यरदन की सारी तराई पर जो ज़ुगर की तरफ है नजर दौड़ाई। क्यौंकि वह इससे पहले कि खुदावन्द ने सदूम और 'अम्भा' को तबाह किया, खुदावन्द के बाग और मिस के मुल्क की तरफ ख़बर सेराब थी। 11 तब लूत ने यरदन की सारी तराई को अपने लिए चून लिया, और वह मशरिक की तरफ चला; और वह एक दूरे से जुदा हो गए। 12 इब्राहीम तो मुल्क — ए — कनान में रहा, और लूत ने तराई के शहरों में सुकूनत इखिलायर की और सदूम की तरफ अपना डेरा लगाया। 13 और सदूम के लोग खुदावन्द की नजर में निहायत बदकार और गुनहगार थे। 14 और लूत के जुदा हो जाने के बाद खुदावन्द ने इब्राहीम से कह कि अपनी आँख उठा और जिस जगह तू है वहाँ से शिमाल दखिलन और मशरिक और मगरिब की तरफ नजर दौड़ा। 15 क्यौंकि यह तमाम मुल्क जो तू देख रहा है, मैं तुझ को और तेरी नसल को हमेशा के लिए दूँगा। 16 और मैं तेरी नसल को खाक के जर्रों की तरफ बनाऊँगा, ऐसा कि अगर कोई शरस्त खाक के जर्रों को गिन सके तो तेरी नसल भी गिन ली जाएगी। 17 उठ, और इस मुल्क की लम्बाई और चौड़ाई में घूम, क्यौंकि मैं इसे तुझ को दूँगा। 18 और इब्राहीम ने अपना डेरा उठाया, और मररे के बलूतों में जो हबस्त में है जा कर रहने लगा; और वहाँ खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाई।

14 और सिन'आर के बादशाह अमराफिल, और इल्लासर के बादशाह अर्युक, और 'ऐलाम के बादशाह किदरला उम्र, और जोझे के बादशाह तिद'आल के दिनों में, 2 ऐसा हुआ कि उन्होंने सदूम के बादशाह बर'आ, और 'अम्भा' के बादशाह बिरस'आ और अदमा के बादशाह सिनिअब, और जिबोईम के बादशाह शिमेबर, और बाला' यानी ज़ुगर के बादशाह से जंग की। 3 यह सब सिद्धिम यानी दरिया — ए — शेर की बादी में इकट्ठे हुए। 4 बारह साल तक वह किदरला उम्र के फर्माबिरदर रहे, लेकिन तेरहवें साल उन्होंने सरकरी की। 5 और चौदहवें साल किदरला उम्र और उसके साथ के बादशाह आए, और रिफाईम को 'असतारात कर्नेम में, और ज़ूजियों को हाम में, और ऐसीम को सरीकीयैम में, 6 और होरियों को उनके कोह — ए — शाईर में मारते — मारते एल-फरारन तक जो बीरासे से लगा हुआ है आए। 7 फिर वह लौट कर 'ऐन — मिसफात यानी कादिस पहुँचे, और 'अम्भालीकियों के तमाम मुल्क को, और अमोरियों को जो हसेसन तमर में रहते थे मारा। 8 तब सदूम का बादशाह, और 'अम्भा' का बादशाह, और अदमा का बादशाह, और जिबोईम का बादशाह, और बाला' यानी ज़ुगर का बादशाह, निकले और उन्होंने सिद्धिम की बादी में लड़ाई की। 9 ताकि 'ऐलाम के बादशाह किदरला उम्र, और जोझे के बादशाह तिद'आल, और सिन'आर के बादशाह अमराफिल, और इल्लासर के बादशाह अर्युक से जंग को; यह चार बादशाह उन पाँचों के मुकाबिले में थे। 10 और सिद्धिम की बादी में जा — बजा नफत के गढ़े थे; और सदूम और 'अम्भा' के बादशाह भागते — भागते वहाँ पिरे, और जो बचे पहाड़ पर भाग गए। 11 तब वह सदूम 'अम्भा' का सब माल और वहाँ का सब अनाज लेकर चले गए; 12 और इब्राहीम के भतीजे लूत को और उसके माल को भी ले गए क्यौंकि वह सदूम में रहता था। 13 तब एक ने जो बच गया था जाकर इब्राहीम 'झानी' को खबर दी, जो इस्काल और 'आनेर के भाई मरमे अमोरी के बलूतों में रहता था, और यह अब्राहीम के हम 'अहद थे। 14 जब इब्राहीम ने सुना कि उसका भाई गिरफ्तार हुआ, तो उसने अपने तीन सौ अशरह माहिर लड़ाकों को लेकर दान तक उनका

पीछा किया। 15 और रात को उसने और उसके खादिमों ने गोल — गोल होकर उन पर धावा किया और उनको मारा और खूबा तक, जो दमिश्क के बाँह हाथ है, उनका पीछा किया। 16 और वह सारे माल को और अपने भाई लूल को और उसके माल और 'औरतों को भी और और लोगों को वापस फेर लाया। 17 और जब वह किदरला उम्र और उसके साथ के बादशाहों को मार कर फिरा तो सदूम का बादशाह उसके इस्तकबाल को सर्वी की बादी तक जो बादशाही बादी है आया। 18 और मलिक — ए — सिद्क, सालिम का बादशाह, गेटी और मय लाया और वह खुदा ताला का काहिन था। 19 और उसने उसको बरकत देकर कहा कि खुदा ताला की तरफ से जो आसमान और जमीन का मालिक है, इब्राहम मुबारक हो। 20 और मुबारक है खुदा ताला जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में कर दिया। तब इब्राहम ने सबका दस्वाँ हिस्सा उसको दिया। 21 और सदूम के बादशाह ने इब्राहम से कहा कि आदमियों को मुझे दे दे और माल अपने लिए रख ले। 22 लेकिन इब्राहम ने सदूम के बादशाह से कहा कि मैंने खुदावन्द खुदा ताला, आसमान और जमीन के मालिक, की कसम खाई है, 23 कि मैं न तो कोई धागा, न जूती का तस्मा, न तेरी और कोई चीज़ तैयार कर यह न कर सके कि मैंने इब्राहम को दैलतमन्द बना दिया। 24 सिवा उसके जो जबाबों ने खा लिया और उन आदमियों के हिस्से के जो मेरे साथ गए; इसलिए 'अपने और इस्काल और ममरे अपना — अपना हिस्सा ले लें।

15 इन बातों के बाद खुदावन्द का कलाम खबाब में इब्राहम पर नाजिल हुआ और उसने फरमाया, “ऐ अब्दाम, त मप डर, मैं तेरी ढाल और तेरा बहुत बड़ा अब्र हूँ।” 2 इब्राहम ने कहा, “ऐ खुदावन्द खुदा, त मुझे क्या देगा? क्यूँकि मैं तो बेऔलाद जाता हूँ, और मैंने घर का मुख्तार दमिश्की इल्ली एलियाज़ है।” 3 फिर इब्राहम ने कहा, “देख, तने मुझे कोई औलाद नहीं दी और देख मेरा खानाजाद मेरा वारिस होगा।” 4 तब खुदावन्द का कलाम उस पर नाजिल हुआ और उसने फरमाया, “यह तेरा वारिस न होगा, बल्कि वह जो तेरे सुल्ख से पैदा होगा वही तेरा वारिस होगा।” 5 और वह उसको बाहर ले गया और कहा, कि अब आसमान कि तरफ निगाह कर और अगर तू सितारों को गिन सकता है तो गिन। और उससे कहा कि तेरी औलाद ऐसी ही होगी। 6 और वह खुदावन्द पर ईमान लाया और इसे उसने उसके हक में रास्तबाज़ी शुभा किया। 7 और उसने उससे कहा कि मैं खुदावन्द हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर से निकाल लाया, कि तुझ को यह मुल्क मीरास में दूँ। 8 और उसने कहा, “ऐ खुदावन्द खुदा! मैं क्यूँ कर जानूँ कि मैं उसका वारिस हूँगा?” 9 उसने उस से कहा कि मेरे लिए तीन साल की एक बछिया, और तीन साल की एक बक्री, और तीन साल का एक मेंढ़ा, और एक कुमरी, और एक कबूतर का बच्चा ले। 10 उसने उन सभों को लिया और उनके बीच से दो टुकड़े किया, और हर टुकड़े को उसके साथ के दूसरे टुकड़े के सामने रखा, मगर परिन्दों के टुकड़े न किए। 11 तब शिकारी परिन्दे उन टुकड़ों पर झपटने लगे पर इब्राहम उनकी हँकता रहा। 12 सूरज डूबते वक्त इब्राहम पर गहरी नीद गालिब हुई और देखो, एक बड़ा खतरनाक अंधेरा उस पर छा गया। 13 और उसने इब्राहम से कहा, यकीन जान कि तेरी नसल के लोग ऐसे मुल्क में जो उनको नहीं परदेसी होंगे और वहाँ के लोगों की गुलामी करेंगे और वह चार सौ साल तक उनको दुख देंगे। 14 लेकिन मैं उस कौम की 'अदालत कस्सँगा जिसकी वह गुलामी करेंगे, और बाद में वह बड़ी दैलत लेकर वहाँ से निकल आएँगे। 15 और त सूरी सलामत अपने बाप — दादा से जा मिलेगा और बहुत ही बुढ़ापे में दफन होगा। 16 और वह चौथी पुश्त में यहाँ लौट आएँगे, क्यूँकि अमोरियों के गुनाह अब तक पूरे नहीं हए। 17 और जब सूरज डूबा और अन्धेरा छा गया, तो एक तनरू जिसमें से धूंआ उठता था दिखाई दिया, और एक जलती मश'अल उन टुकड़ों के बीच में से

होकर गुज़री। 18 उसी रोज़ खुदावन्द ने इब्राहम से 'अहद किया और फरमाया, यह मुल्क दरिया — ए — मिस्र से लेकर उस बड़े दरिया याँनी दरयाए — फरात तक, 19 कैनियों और कनीजियों और कदमूनियों, 20 और हितियों और फरिजियों और रिफाइम, 21 और अमोरियों और कनाँनियों और जिरजासियों और यबसियों समेत मैंने तेरी औलाद को दिया है।

16 और इब्राहम की बीवी सारय के कोई औलाद न हुई। उसकी एक मिस्री लौंडी थी जिसका नाम हाजिरा था। 2 और सारय ने इब्राहम से कहा कि देख, खुदावन्द ने मुझे तो औलाद से महस्म रखवा है, इसलिए तू मेरी लौंडी के पास जा शायद उससे मेरा घर आबाद हो। और इब्राहम ने सारय की बात मानी। 3 और इब्राहम को मुल्क — ए — कनाँन में रहते दस साल हो गए थे जब उसकी बीवी सारय ने अपनी मिस्री लौंडी उसे दी कि उसकी बीवी बने। 4 और वह हाजिरा के पास गया और वह हामिला हुई। और जब उसे मालम हुआ कि वह हामिला हो गई तो अपनी बीवी को हकीर जानने लगी। 5 तब सारय ने इब्राहम से कहा, जो ज़ुल्म मुझ पर हुआ वह तेरी गर्दन पर है। मैंने अपनी लौंडी तेरे आगोश में दी और अब जो उसने आपको हामिला देखा तो मैं उसकी नज़रों में हकीर हो गई; इसलिए खुदावन्द मेरे और उसे तेरी बीच इन्साफ़ करे। 6 इब्राहम ने सारय से कहा कि तेरी लौंडी तेरे हाथ में है; जो तुझे भला दिखाई दे वैसा ही उसके साथ कर। तब सारय उस पर सख्ती करने लगी और वह उसके पास से भाग गई। 7 और वह खुदावन्द के फरिशता को वीराने में पानी के एक चम्मे के पास मिली। यह वही चम्मा है जो शेर की राह पर है। 8 और उसने कहा, “ऐ सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आई और किधर जाती है?” उसने कहा कि मैं अपनी बीवी सारय के पास से भाग आई हूँ। 9 खुदावन्द के फरिशता ने उससे कहा कि तू अपनी बीवी के पास लौट जा और अपने को उसके कँज़े में कर दे 10 और खुदावन्द के फरिशता ने उससे कहा, कि मैं तेरी औलाद को बहुत बढ़ाऊँगा यहाँ तक कि कसरत की वजह से उसका शुमार न हो सकेगा। 11 और खुदावन्द के फरिशता ने उससे कहा कि तू हामिला है और तेरा बेटा होगा, उसका नाम इस्माईल रखना इसलिए कि खुदावन्द ने तेरा दुख सुन लिया। 12 वह गोरखर की तरह आजाद मर्द होगा, उसका हाथ सबके खिलाफ़ और सबके हाथ उसके खिलाफ़ होंगे और वह अपने सब भाइयों के सामने बसा रहेगा। 13 और हाजिरा ने खुदावन्द का जिसने उससे बातें की, अताएल — रोई नाम रखवा याँनी ऐ खुदा तू बूसीर है; क्यूँकि उसने कहा, क्या मैंने यहाँ भी अपने देखेवाले को जाते हुए देखा? 14 इसी वजह से उस कँए का नाम बैरलील रोई पड़ गया; वह कादिस और बरिद की बीच है। 15 और इब्राहम से हाजिरा के एक बेटा हुआ, और इब्राहम ने अपने उस बेटे का नाम जो हाजिरा से पैदा हुआ इस्माईल रखवा। 16 और जब इब्राहम से हाजिरा के इस्माईल पैदा हुआ तब इब्राहम छियासी साल का था।

17 जब इब्राहम निनानवे साल का हुआ तब खुदावन्द इब्राहम को नज़र आया और उससे कहा कि मैं खुदा — ए — कादिर हूँ; तू मेरे सामने में चल और कामिल हो। 2 और मैं अपने और तेरे बीच 'अहद बँधूंगा और तुझे बहुत ज़्यादा बढ़ाऊँगा। 3 तब इब्राहम सिज़द में हो गया और खुदा ने उससे हम — कलाम होकर फरमाया। 4 कि देख मेरा 'अहद तेरे साथ है और तू बहुत कौमों का बाप होगा। 5 और तेरा नाम पिर इब्राहम नहीं कहलाएँगा बल्कि तेरा नाम अब्राहम होगा, क्यूँकि मैंने तुझे बहुत कौमों का बाप ठहरा दिया है। 6 और मैं तुझे बहुत कामयाब करँगा और कौमें तेरी नसल से होंगी और बादशाह तेरी औलाद में से निकलेंगे। 7 और मैं अपने और तेरे बीच, और तेरा बाद तेरी नसल के बीच उनकी सब नसलों के लिए अपना 'अहद जो अबदी 'अहद होगा,

बांधूंगा ताकि मैं तेरा और तेरे बाद तेरी नसल का खुदा रहूँ। 8 और मैं तुझ को और तेरे बाद तेरी नसल को, कनान का तमाम मुल्क जिसमें तू परदेसी है ऐसा दूँगा, कि वह हमेशा की मिल्कियत हो जाएँ; और मैं उनका खुदा हँगा। 9 फिर खुदा ने अब्रहाम से कहा कि तू मेरे 'अहद' को मानना और तेरे बाद तेरी नसल पुश्ट दर पुश्ट उसे माने। 10 और मेरा 'अहद' जो मेरे और तेरे बीच और तेरे बाद तेरी नसल के बीच है, और जिसे तुम मानोगे वह यह है: कि तुम में से हर एक फर्जन्द — ए — नरीना का खतना किया जाए। 11 और तुम अपने बदन की खलती का खतना किया करना, और यह उस 'अहद' का निशान होगा जो मेरे और तुम्हारे बीच है। 12 तुम्हारे यहाँ नसल — दर — नसल हर लड़के का खतना, जब वह आठ रोज़ का हो, किया जाएँ; चाहे वह घर में पैदा हो चाहे उसे किसी परदेसी से खरीदा हो जो तेरी नसल से नहीं। 13 लाजिम है कि तेरे खानाजाद और तेरे गुलाम का खतना किया जाएँ, और मेरा 'अहद' तुम्हारे जिसमें में अबदी 'अहद' होगा। 14 और वह फर्जन्द — ए — नरीना जिसका खतना न हुआ हो, अपने लोगों में से काट डाला जाए क्यूंकि उसने मेरा 'अहद' तोड़ा। 15 और खुदा ने अब्रहाम से कहा, कि सारय जो तेरी बीची है इसलिए उसको सारय न पुकारना, उसका नाम सारा होगा। 16 और मैं उसे बरकत दूँगा और उससे भी तुझे एक बेटा बरखँगा; यक़ीनन मैं उसे बरकत दूँगा कि कौमें उसकी नसल से होंगी और 'आलम के बादशाह उससे पैदा होंगे। 17 तब अब्रहाम सिद्धे में हुआ और हँस कर दिल में कहने लगा कि क्या सौ साल के बड़े से कोई बच्चा होगा, और क्या सारा के जो नव्वे साल की है औलाद होंगी? 18 और अब्रहाम ने खुदा से कहा कि काश इस्मा'ईल ही तेरे सामने जिन्दा रहे, 19 तब खुदा ने फरमाया, कि बेशक तेरी बीची सारा के तुझ से बेटा होगा, तू उसका नाम इस्हाक रखना; और मैं उससे और फिर उसकी औलाद से अपना 'अहद' जो अबदी 'अहद' है बांधूंगा। 20 और इस्मा'ईल के हक में भी मैंने तेरी दुआ सुनी; देख मैं उसे बरकत दूँगा और उसे कामयाब करूँगा और उसे बहुत बढ़ाऊँगा; और उससे बाहर सरदार पैदा होंगे और मैं उसे बड़ी कौम बनाऊँगा। 21 लेकिन मैं अपना 'अहद' इस्हाक से बांधूंगा जो अगले साल इसी वक्त — ए — मुकर्रर पर सारा से पैदा होगा। 22 और जब खुदा अब्रहाम से बातें कर चुका तो उसके पास से ऊपर चला गया। 23 तब अब्रहाम ने अपने बेटे इस्मा'ईल की ओर और सब खानाजादों और अपने सब गुलामों को यानी अपने घर के सब आदिमियों को लिया और उसी दिन खुदा के हुक्म के मुताबिक उन का खतना किया। 24 अब्रहाम निनानवे साल का था जब उसका खतना हुआ। 25 और जब उसके बेटे इस्मा'ईल का खतना हुआ तो वह तेरह साल का था। 26 अब्रहाम और उसके बेटे इस्मा'ईल का खतना एक ही दिन हुआ। 27 और उसके घर के सब आदिमियों का खतना, खानाजादों और उनका भी जो परदेसियों से खरीदे गए थे, उसके साथ हुआ।

18 फिर खुदावन्द ममरे के बलूतों में उसे नजर आया और वह दिन को गमीं के वक्त अपने खेमे के दरवाजे पर भैड़ा था। 2 और उसने अपनी आँखें उठा कर नजर की ओर क्या देखता है कि तीन मर्द उसके सामने खड़े हैं। वह उनको देख कर खेमे के दरवाजे से उनसे मिलने को दौड़ा और ज़रीन तक झ़का। 3 और कहने लगा कि ऐ मेरे खुदावन्द, अगर मुझ पर आपने करम की नजर की है तो अपने खादिम के पास से चले न जाएँ। 4 बल्कि थोड़ा सा पानी लाया जाएँ, और आप अपने पांच धो कर उस दरखत के नीचे आराम करें। 5 मैं कुछ रोटी लाता हूँ, आप ताजा — दम हो जाएँ; तब आगे बढ़ें क्यूंकि आप इसी लिए अपने खादिम के यहाँ आए हैं उन्होंने कहा, जैसा तूने कहा है, वैसा ही कर। 6 और अब्रहाम दैर्घ्य में सारा के पास दौड़ा गया और कहा, कि तीन पैमाना बारीक आटा जल्द ले और उसे गैंध कर फुलके बना। 7 और अब्रहाम गल्ले की

तरफ दौड़ा और एक मोटा ताजा बछड़ा लाकर एक जवान को दिया, और उस ने जल्दी — जल्दी उसे तैयार किया। 8 फिर उसने मक्खन और दध और उस बछड़े को जो उस ने पकवाया था, लेकर उनके सामने रखा; और खुद उनके पास दरखत के नीचे खड़ा रहा और उन्होंने खाया। 9 फिर उन्होंने उसे पूछा कि तेरी बीची सारा कहाँ है? उसने कहा, वह दैरें मैं है। 10 तब उसने कहा, “मैं फिर मौसम — ए — बहार में तेरे पास आऊँगा, और देख तेरी बीची सारा के बेटा होगा।” उसके पीछे दैरे का दरवाजा था, सारा वहाँ से सुन रही थी। 11 और अब्रहाम और सारा ज़ईफ़ और बड़ी उम्र के थे, और सारा की वह हालत नहीं रही थी जो 'अैरतों की होती है। 12 तब सारा ने अपने दिल में हँस कर कहा, खुदावन्द “क्या इस कंदर उम्र — दराज होने पर भी मेरे लिए खुशी हो सकती है, जबकि मेरा शौहर भी बूढ़ा है?” 13 फिर खुदावन्द ने अब्रहाम से कहा कि सारा क्यूँ यह कह कर हँसी की क्या मेरे जो ऐसी बुढ़िया हो गई है वाक़ई बेटा होगा? 14 क्या खुदावन्द के नजदीक कोई बात मुश्किल है? मौसम — ए — बहार में मुकर्रर बक्त पर मैं तेरे पास फिर आऊँगा और सारा के बेटा होगा। 15 तब सारा इन्कार कर गई, कि मैं नहीं हँसी। क्यूँकि वह डरती थी, लेकिन उसने कहा, “नहीं, तू ज़रूर हँसी थी।” 16 तब वह मर्द वहाँ से उड़े और उन्होंने सदूम का स्वर किया, और अब्रहाम उनको स्वभास करने को उनके साथ हो लिया। 17 और खुदावन्द ने कहा कि जो कुछ मैं करने को हूँ, क्या उसे अब्रहाम से छिपाए रखूँँ 18 अब्रहाम से तो यक़ीनन एक बड़ी और ज़बरदस्त कौम पैदा होगी, और ज़मीन की सब कौमें उसके बरसीले से बरकत पाएँगी। 19 क्यूँकि मैं जानता हूँ कि वह अपने बेटों और घराने को जो उसके पीछे रह जाएँ, वसीयत करेगा कि वह खुदावन्द की राह में काईम रह कर 'अद्ल और इन्साफ़ करें; ताकि जो कुछ खुदावन्द ने अब्रहाम के हक में फरमाया है उसे पूरा करे। 20 फिर खुदावन्द ने फरमाया, “चौंकि सदूम और 'अमरा' का गुनाह बढ़ गया और उनका जुर्म निहायत संगीन हो गया है। 21 इसलिए मैं अब जाकर देखूँगा कि क्या उन्होंने सरासर वैसा ही किया है जैसा गुनाह मेरे कान तक पहुँचा है, और अगर नहीं किया तो मैं मालूम कर लूँगा।” 22 इसलिए वह मर्द वहाँ से मुड़े और सदूम की तरफ चले, लेकिन अब्रहाम खुदावन्द के सामने खड़ा ही रहा। 23 तब अब्रहाम ने नजदीकी जा कर कहा, क्या तू नेक को बद के साथ हलाक करेगा? 24 शायद उस शहर में पचास रास्तबाज़ हों; “क्या तू उसे हलाक करेगा और उन पचास रास्तबाज़ों की खातिर जो उसमें हों उस मकाम को न छोड़ेगा? 25 ऐसा करना तुझ से दूर है कि नेक को बद के साथ मार डाले और नेक बद के बराबर हो जाएँ। ये तुझ से दूर है। क्या तमाम दुनिया का इन्साफ़ करने वाला इन्साफ़ न करेगा?” 26 और खुदावन्द ने फरमाया, कि अगर मुझे सदूम में शहर के अन्दर पचास रास्तबाज़ मिलें, तो मैं उनकी खातिर उस मकाम को छोड़ दूँगा। 27 तब अब्रहाम ने जवाब दिया और कहा, कि देखिए मैंने खुदावन्द से बात करने की हिम्मत की, अगरचे मैं मिट्ठी और राख हूँ। 28 शायद पचास रास्तबाज़ों में पाँच कम हों; क्या उन पाँच की कमी की बजह से तू तमाम शहर को बर्बाद करेगा? उस ने कहा अगर मुझे वहाँ पैतॉलीस मिलें तो मैं उसे बर्बाद नहीं करूँगा। 29 फिर उसने उससे कहा कि शायद वहाँ चालीस मिलें। तब उसने कहा कि मैं उन चालीस की खातिर भी यह नहीं करूँगा। 30 फिर उसने कहा, “खुदावन्द नाराज़ न हो तो मैं कुछ और 'अर्ज करूँ। शायद वहाँ तीस मिलें।” उसने कहा, “अगर मुझे वहाँ तीस भी मिलें तो भी ऐसा नहीं करूँगा।” 31 फिर उसने कहा, “देखिए मैंने खुदावन्द से बात करने की हिम्मत की, शायद वहाँ बीस मिलें।” उसने कहा, “मैं बीस के लिए भी उसे बर्बाद नहीं करूँगा।” 32 तब उसने कहा, “खुदावन्द नाराज़ न हो तो मैं एक बार और कुछ 'अर्ज करूँ; शायद वहाँ दस मिलें।” उसने कहा, “मैं दस के

लिए भी उसे बर्बाद नहीं कर सक़ूँगा।” 33 जब खुदावन्द अब्रहाम से बातें कर चुका तो चला गया और अब्रहाम अपने मकान को लौटा।

19 और वह दोनों फरिशता शाम को सदूम में आए और लूत सदूम के फाटक-

पर बैठा था। और लूत उनको देख कर उनके इस्तकबाल के लिए उठा और जमीन तक डूका, 2 और कहा, “ऐ मेरे खुदावन्द, अपने खादिम के घर तशीरीफ ले चलिए और रात भर आराम कीजिए और अपने पाँव धोइये और सबह उठ कर अपनी राह लीजिए।” और उन्होंने कहा, “नहीं, हम चौक ही में रात काट लेंगे।” 3 लेकिन जब वह बहुत बज़िद हुआ तो वह उसके साथ चल कर उसके घर में आए; और उसने उनके लिए खाना तैयार की और बेखामीरी रोटी पकाई, और उन्होंने खाया। 4 और इससे पहले कि वह आराम करने के लिए लैटें सदूम शहर के आदमियों ने, जवान से लेकर बड़े तक सब लोगों ने, हर तरफ से उस घर को घेर लिया। 5 और उन्होंने लूट को पुकार कर उससे कहा कि वह आदमी जो आज रात तेरे यहाँ आए, कहाँ है? उनको हमारे पास बाहर ले आ ताकि हम उनसे सोहबत करें। 6 तब लूत निकल कर उनके पास दरवाजा पर गया और अपने पीछे किवाड़ बन्द कर दिया। 7 और कहा कि ऐ भाइयो! ऐसी बड़ी तो न करो। 8 देखो! मेरी दो बेटियाँ हैं जो आदमी से बाकिफ नहीं; मर्जी हो तो मैं उनको तुम्हारे पास ले आऊँ और जो तुम को भला मालूम हो उससे करो, मगर इन आदमियों से कछु करना क्यूँकि वह इसलिए मेरी पनाह में आए हैं। 9 उन्होंने कहा, यहाँ से हट जा! “फिर कहने लगे, कि यह शास्त्र हमेरे बीच कथाम करने आया था और अब हकमत जताता है, इसलिए हम तेरे साथ उनसे ज्यादा बद सलूकी करेंगे।” तब वह उस आदमी यारी लूट पर पिल पड़े और नज़दीक आए ताकि किवाड़ तोड़ डालें। 10 लेकिन उन आदमियों ने अपना हाथ बढ़ा कर लूट को अपने पास घर में खीच लिया और दरवाजा बन्द कर दिया। 11 और उन आदमियों को जो घर के दरवाजे पर थे क्या छोटे क्या बड़े, अंधा कर दिया; तब वह दरवाजा ढूँढ़ते — ढूँढ़ते थक गए। 12 तब उन आदमियों ने लूट से कहा, क्या यहाँ तेरा और कर्कोई है? दामाद और अपने बेटों और बेटियों और जो कोई तेरा इस शहर में हो, सबको इस मकाम से बाहर निकल ले जा। 13 क्यूँकि हम इस मकाम को बर्बाद करेंगे, इसलिए कि उनका गुनाह खुदावन्द के सामने बहुत बुलन्द हुआ है और खुदावन्द ने उसे बर्बाद करने को हमें भेजा है। 14 तब लूट ने बाहर जाकर अपने दामादों से जिह्वोंने उसकी बेटियाँ ब्याही थीं बातें की और कहा कि उठो और इस मकाम से निकलो क्यूँकि खुदावन्द इस शहर को बर्बाद करेगा। लेकिन वह अपने दामादों की नज़र में मज़कूर सा मालूम हुआ। 15 जब सबह हुई तो फरिशतों ने लूट से जल्दी कराई और कहा कि उठ अपनी बीवी और अपनी दोनों बेटियों को जो यहाँ है ले जा; ऐसा न हो कि तू भी इस शहर की बड़ी में गिरफतार होकर हलाक हो जाए। 16 मार उसने देर लगाई तो उन आदमियों ने उसका और उसकी बीवी और उसकी दोनों बेटियों को हाथ पकड़ा, क्यूँकि खुदावन्द की मेहरबानी उस पर हुई और उसे निकाल कर शहर से बाहर कर दिया। 17 और यैं हुआ कि जब वह उनको बाहर निकाल लाए तो उसने कहा, “अपनी जान बचाने को भाग; न तो पीछे मुड़ कर देखना न कहीं मैदान में ठहरना; उस पहाड़ को चला जा, ऐसा न हो कि तू हलाक हो जाए।” 18 और लूट ने उससे कहा कि ऐ मेरे खुदावन्द, ऐसा न कर। 19 देख, तने अपने खादिम पर करम की नज़र की है और ऐसा बड़ा फ़ज़ल किया कि मेरी जान बचाई; मैं पहाड़ तक जा नहीं सकता, कहीं ऐसा न हो कि मुझ पर मुसीबत आ पड़े और मैं मर जाऊँ। 20 देख, यह शहर ऐसा नज़दीक है कि वहाँ भाग सकता हूँ और यह छोटा भी है। इजाज़त हो तो मैं वहाँ चला जाऊँ, वह छोटा सा भी है और मेरी जान बच जाएगी। 21 उसने उससे कहा कि देख, मैं इस बात में भी तेरा लिहाज़ करता हूँ

कि इस शहर को जिसका तू ने ज़िक्र किया, बर्बाद नहीं कर सक़ूँगा। 22 जल्दी कर और वहाँ चला जा, क्यूँकि मैं कुछ नहीं कर सकता जब तक कि तू वहाँ पहुँच न जाए। इसीलिए उस शहर का नाम जुराक कहलाया। 23 और जमीन पर धूप निकल चुकी थी, जब लूट जुराक में दाखिल हुआ। 24 तब खुदावन्द ने अपनी तरफ से सदूम और ‘अमूरा पर गन्धक और आग आसमान से बरसाई, 25 और उसने उन शहरों को और उस सारी तराई को और उन शहरों के सब रहने वालों को और सब कुछ जो जमीन से उगा था बर्बाद किया। 26 मार उसकी बीवी ने उसके पीछे से मुड़ कर देखा और वह नमक का सुतून बन गई। 27 और अब्रहाम सबह सवेरे उठ कर उस जगह गया जहाँ वह खुदावन्द के सामने बढ़ा हुआ था; 28 और उसने सदूम और ‘अमूरा और उस तराई की सारी जमीन की तरफ नज़र की, और क्या देखता है कि जमीन पर से ध्वां ऐसा उठ रहा है जैसे भट्टी का ध्वां। 29 और यैं हुआ कि जब खुदा ने उस तराई के शहरों को बर्बाद किया, तो खुदा ने अब्रहाम को याद किया और उन शहरों की जहाँ लूट रहता था, बर्बाद करते बक्त लूट को उस बला से बचाया। 30 और लूट जुरासे निकल कर पहाड़ पर जा बसा और उसकी दोनों बेटियाँ उसके साथ थीं, क्यूँकि उसे जुराक में बसे डर लगा, और वह और उसकी दोनों बेटियाँ एक गार में रहने लगे। 31 तब पहलौटी ने छोटी से कहा, कि हमारा बाप बूढ़ा है और जमीन पर कोई आदमी नहीं जो दुनिया के दस्तूर के मुताबिक हमारे पास आए। 32 आओ, हम अपने बाप को मय पिलाएँ और उससे हम — आगोश हों, ताकि अपने बाप से नसल बाकी रख दें। 33 इसलिए उन्होंने उसी रात अपने बाप को मय पिलाई और पहलौटी अन्दर गई और अपने बाप से हम — आगोश हुई, लेकिन उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई। 34 और दूसरे दिन यैं हुआ कि पहलौटी ने छोटी से कहा कि देख, कल रात को मैं अपने बाप से हम — आगोश हुई, आओ, आज रात भी उसको मय पिलाएँ और तू भी जा कर उससे हम आगोश हो, ताकि हम अपने बाप से नसल बाकी रख दें। 35 फिर उस रात भी उन्होंने अपने बाप को मय पिलाई और छोटी गई और उससे हम — आगोश हुई, लेकिन उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई। 36 फिर लूट की दोनों बेटियाँ अपने बाप से हमिला हुईं। 37 और बड़ी के एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम मोआब रख दिया; वही मोआबियों का बाप है जो अब तक मौजूद है। 38 और छोटी के भी एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम बिन — ‘अमीरा रख दिया; वही बनी — ‘अमोन का बाप है जो अब तक मौजूद है।

20 और अब्रहाम वहाँ से दौखियन के मुल्क की तरफ चला और कादिस

और शोर के बीच ठहरा और जिरार में कथाम किया। 2 और अब्रहाम ने अपनी बीवी सारा के हक्क में कहा, कि वह मेरी बहन है, और जिरार के बादशाह अबीमलिक ने सारा को बुलवा लिया। 3 लेकिन रात को खुदा अबीमलिक के पास रखाब में आया और उसे कहा कि देख, तू उस ‘औरत की वजह से जिसे तू ने लिया है हलाक होगा क्यूँकि वह शौहर वाली है। 4 लेकिन अबीमलिक ने उससे सोहबत नहीं की थी; तब उसने कहा, ऐ खुदावन्द, क्या तू सादिक कौम को भी मारेगा? 5 क्या उसने खुद मुझ से नहीं कहा, कि यह मेरी बहन है? और वह खुद भी यही कहती थी, कि वह मेरा भाई है; मैंने तो अपने सच्चे दिल और पाकीजा हाथों से यह किया। 6 और खुदा ने उसे रखाब में कहा, “हाँ, मैं जानता हूँ कि तू अपने सच्चे दिल से यह किया, और मैंने भी तुझे रोका कि तू मेरा गुनाह न करो; इसी लिए मैंने तुझे उसको छूने न दिया। 7 अब तू उस आदमी की बीवी को वापस कर दे; क्यूँकि वह नहीं है और वह तेरे लिए दुआ करेगा और तु जिन्दा रहेगा। लेकिन अगर तू उसे वापस न करे तो जान ले कि तू भी और जितने तेरे हैं सब ज़सर हलाक होंगे।” 8 तब अबीमलिक ने सबह सवेरे उठ कर अपने सब नौकरों को बुलाया और उनको ये सब बातें कह सुनाई, तब

वह लोग बहुत डर गए। 9 और अबीमलिक ने अब्राहाम को खुला कर उससे कहा, कि तूने हम से यह क्या किया? और मुझ से तेरा क्या कुसर हुआ कि तू मुझ पर और मेरी बादशाही पर एक गुनाह — ए — अजीम लाया? तूने मुझ से वह काम किए जिनका करना मुनासिब न था। 10 अबीमलिक ने अब्राहाम से यह भी कहा कि तूने क्या समझ कर ये बात की? 11 अब्राहाम ने कहा, कि मेरा ख्याल था कि खुदा का खौफ तेरे इस जगह हरगिज़ न होगा, और वह मुझे मेरी बीवी की बजह से मार डालेगा। 12 और फिल — हकीकित वह मेरी बहन भी है, क्यूँकि वह मेरे बाप की बेटी है अगरचे मेरी माँ की बेटी नहीं; फिर वह मेरी बीवी हुई। 13 और जब खुदा ने मेरे बाप के घर से मुझे आवारा किया तो मैंने इससे कहा कि मुझ पर यह तेरी मेहरबानी होगी कि जहाँ कही हम जाएँ तू मेरे हक में यही कहना कि यह मेरा भाई है। 14 तब अबीमलिक ने भेड़ बकरियाँ और गाये बैल और गुलाम और लौटियाँ अब्राहाम को दी, और उसकी बीवी सारा को भी उसे बापस कर दिया। 15 और अबीमलिक ने कहा कि देख, मेरा मुल्क तेरे सामने है, जहाँ जी चाहे रह। 16 और उसने सारा से कहा कि देख, मैंने तेरे भाई को चाँदी के हजार सिक्के दिए हैं, वह उन सब के सामने जो तेरे साथ है तेरे लिए आँख का पर्दा है, और सब के सामने तेरी बड़ई हो गी। 17 तब अब्राहाम ने खुदा से दुआ की, और खुदा ने अबीमलिक और उसकी बीवी और उसकी — लौटियों की शिकाया बरबाही और उनके औलात होने लगी। 18 क्यूँकि खुदावन्द ने अब्राहाम की बीवी सारा की बजह से अबीमलिक के खान्दान के सब रहम बन्द कर दिए थे।

21 और खुदावन्द ने जैसा उसने फरमाया था, सारा पर नजर की और उसने अपने बाटे के मूताबिक सारा से किया। 2 तब सारा हामिला हुई और अब्राहाम के लिए उसके बुढ़ापे में उसी मुकर्रर वक्त पर जिसका ज़िक्र खुदा ने उससे किया था, उसके बेटा हुआ। 3 और अब्राहाम ने अपने बेटे का नाम जो उससे, सारा के पैदा हुआ इस्हाक रख्बा। 4 और अब्राहाम ने खुदा के हक्म के मुताबिक अपने बेटे इस्हाक का खतना, उस वक्त किया जब वह आठ दिन का हुआ। 5 और जब उसका बेटा इस्हाक उससे पैदा हुआ तो अब्राहाम सौ साल का था। 6 और सारा ने कहा, कि खुदा ने मुझे हँसाया और सब सुनने वाले मेरे साथ हँसेंगे। 7 और यह भी कहा कि भला कोई अब्राहाम से कह सकता था कि सारा लड़कों को दूध पिलाएँ? क्यूँकि उससे उसके बुढ़ापे में मेरे एक बेटा हुआ। 8 और वह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ाया गया और इस्हाक के दूध छुड़ाने के दिन अब्राहाम ने बड़ी दावत की। 9 और सारा ने देखा कि हाजिरा मिसी का बेटा जो उसके अब्राहाम से हुआ था, ठड़े मराता है। 10 तब उसने अब्राहाम से कहा कि इस लौटी को और उसके बेटे को निकाल दे, क्यूँकि इस लौटी का बेटा मेरे बेटे इस्हाक के साथ वारिस न होगा। 11 लेकिन अब्राहाम को उसके बेटे के जरिएँ यह बात निहायत बुरी मालूम हुई। 12 और खुदा ने अब्राहाम से कहा कि तुझे इस लड़के और अपनी लौटी की बजह से बुरा न लगे; जो कुछ सारा तुझ से कहती है तू उसकी बात मान क्यूँकि इस्हाक से तेरी नसल का नाम चलेगा। 13 और इस लौटी के बेटे से भी मैं एक कौम पैदा करूँगा, इसलिए कि वह तेरी नसल है। 14 तब अब्राहाम ने सबह सबैरे उठ कर रोटी और पानी की एक मशक ली और उसे हाजिरा को दिया, बल्कि उसे उसके कंधे पर रख दिया और लड़के को भी उसके हवाले करके उसे स्वसरत कर दिया। इसलिए वह चली गई और बैरसबा के बीराने में आवारा फिरने लगी। 15 और जब मशक का पानी खत्म हो गया तो उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे डाल दिया। 16 और खुद उसके सामने एक टप्पे के किनारे पर दूर जा कर बैठी और कहने लगी कि मैं इस लड़के का मरना तो न देखूँ। इसलिए वह उसके सामने बैठ गई और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। 17 और खुदा ने उस लड़के की आवाज सुनी और खुदा

के फरिश्ता ने आसमान से हाजिरा को पुकारा और उससे कहा, “ऐ हाजिरा, तुझ को क्या हुआ? मत डर, क्यूँकि खुदा ने उस जगह से जहाँ लड़का पड़ा है उसकी आवाज सुन ली है। 18 उठ, और लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से सेंभाल; क्यूँकि मैं उसको एक बड़ी कौम बनाऊँगा।” 19 फिर खुदा ने उसकी आँखें खोली और उसने पानी का एक कुआँ देखा, और जाकर मशक को पानी से भर लिया और लड़के को पिलाया। 20 और खुदा उस लड़के के साथ था और वह बड़ा हुआ और बीराने में रहने लगा और तीरदाज बना। 21 और वह फारान के बीराने में रहता था, और उसकी माँ ने मुल्क — ए — मिस से उसके लिए बीवी ली। 22 फिर उस बक्त यूँ हुआ, कि अबीमलिक और उसके लशकर के सरदार फ़ीकुल ने अब्राहाम से कहा कि हर काम में जो तू करता है खुदा तेरे साथ है। 23 इसलिए तू अब मुझ से खुदा की कसम खा, कि तून मुझ से न मेरे बेटे से और न मेरे पोते से दांग करेगा; बल्कि जो मेहरबानी मैंने तुझ पर की है वैसे ही तू भी मुझ पर और इस मुल्क पर, जिसमें तुने कायम किया है, करेगा। 24 तब अब्राहाम ने कहा, “मैं कसम खाऊँगा।” 25 और अब्राहाम ने पानी के एक कुएँ की बजह से, जिसे अबीमलिक के नौकरों ने जबरदस्ती ढीन लिया था, अबीमलिक को झिड़का। 26 अबीमलिक ने कहा, “भूँड़े खबर नहीं कि किसने यह काम किया, और तूने भी मुझे नहीं बताया, न मैंने आज से पहले इसके बारे में कुछ सुना।” 27 फिर अब्राहाम ने भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल लेकर अबीमलिक को दिए और दोनों ने अपस में 'अहद किया। 28 अब्राहाम ने भेड़ के सात मादा बच्चों को लेकर अलग रखवा। 29 और अबीमलिक ने अब्राहाम से कहा कि भेड़ के इन सात मादा बच्चों को अलग रखने से तेरा मतलब क्या है? 30 उसने कहा, कि भेड़ के इन सात मादा बच्चों को तू मेरे हाथ से ले ताकि वह मेरे गवाह हों कि मैंने यह कुआँ खोदा। 31 इसलिए उसने उस मकाम का नाम बैरसबा¹ रख्बा, क्यूँकि वही उन दोनों ने कसम खाई। 32 तब उन्होंने बैरसबा² में 'अहद किया, तब अबीमलिक और उसके लशकर का सरदार फ़ीकुल दोनों उठ खड़े हुए और फिलिस्तियों के मुल्क को लौट गए। 33 तब अब्राहाम ने बैरसबा³ में ज़ाऊ का एक दरखत लगाया और वहाँ उसने खुदावन्द से जो अबीदी खुदा है दुआ की। 34 और अब्राहाम बहुत दिनों तक फिलिस्तियों के मुल्क में रहा।

22 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि खुदा ने अब्राहाम को आजमाया और उसे कहा, ऐ अब्राहाम! “उसने कहा, मैं हाजिर हूँ।” 2 तब उसने कहा कि तू अपने बेटे इस्हाक को जो तेरा इकलौता है और जिसे तू प्यार करता है, साथ लेकर मोरियाह के मुल्क में जा और वहाँ उसे फ़ाहड़ों में से एक फ़ाहड़ पर जो मैं तुझे बताऊँगा, सोखतनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ा। 3 तब अब्राहाम ने सबह सबैरे उठ कर अपने गधे पर चार जामा कसा और अपने साथ दो जवानों और अपने बेटे इस्हाक को लिया, और सोखतनी कुर्बानी के लिए लकड़ियाँ चीरी और उठ कर उस जगह को जो खुदा ने उसे बताई थी रखाना हुआ। 4 तीसरे दिन अब्राहाम ने निगाह की और उस जगह को दूर से देखा। 5 तब अब्राहाम ने अपने जवानों से कहा, “तुम यहीं गधे के पास ठहरो, मैं और यह लड़का दोनों ज़रा वहाँ तक जाते हैं, और सिज्दा करके फिर तुम्हरे पास लौट आयेंगे।” 6 और अब्राहाम ने सोखतनी कुर्बानी की लकड़ियाँ लेकर अपने बेटे इस्हाक पर रख्वरी, और आग और छुरी अपने हाथ में ली और दोनों इकट्ठे रखाना हुए। 7 तब इस्हाक ने अपने बाप अब्राहाम से कहा, ऐ बाप! “उसने जवाब दिया कि ऐ मेरे बेटे, मैं हाजिर हूँ। उसने कहा, देख, आग और लकड़ियाँ तो हैं, लेकिन सोखतनी कुर्बानी के लिए बर्दां कहाँ हैं?” 8 अब्राहाम ने कहा, “ऐ मेरे बेटे खुदा खुद ही अपने लिए सोखतनी कुर्बानी के लिए बर्दां कहाँ हैं।” 9 अब्राहाम पर्हँचे जो खुदा ने बताई थी; वहाँ अब्राहाम ने कुर्बान गाह

बनाईं और उस पर लकड़ियाँ चुनी और अपने बेटे इस्हाक को बाँधा और उसे कुर्बानगाह पर लकड़ियों के ऊपर रख दिया। 10 और अब्राहाम ने हाथ बढ़ाकर छुरी ली कि अपने बेटे को जबह करे। 11 तब खुदावन्द के फरिश्ता ने उसे आसमान से पुकारा, कि ऐ अब्राहाम, ऐ अब्राहाम! उसने कहा, “मैं हाजिर हूँ।” 12 फिर उसने कहा कि तू अपना हाथ लड़के पर न चला और न उससे कुछ कर; क्यूँकि मैं अब जान गया कि तू खुदा से डरता है, इसलिए कि तूने अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है मुझ से देगे न किया। 13 और अब्राहाम ने निगाह की और अपने पीछे एक मैंडा देखा जिसके सींग आड़ी में अट्टे थे; तब अब्राहाम ने जाकर उस मैंडे को पकड़ा और अपने बेटे के बदले सोखनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ाया। 14 और अब्राहाम ने उस मकम का नाम यहोबा यरी रख दिया। चुनाँचे आज तक यह कहावत है कि खुदावन्द के पहाड़ पर मुह्या किया जाएगा। 15 और खुदावन्द के फरिश्ते ने आसमान से दोबारा अब्राहाम को पुकारा और कहा कि। 16 “खुदावन्द फरमाता है, चूँकि तूने यह काम किया कि अपने बेटे की भी जो तेरा इकलौता है देरेंग न रखें।” इसलिए मैंने भी अपनी जात की कसम खाई है कि 17 मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा, और तेरी नसल को बढ़ाते — बढ़ाते आसमान के तरों और समुद्र के किनारों की रेत की तरह कर दूँगा, और तेरी औलाद अपने दुश्मनों के फाटक की मालिक होगी। 18 और तेरी नसल के बसिले से जमीन की सब कौमें बरकत पाएँगी, क्यूँकि तूने मेरी बात मारी।” 19 तब अब्राहाम अपने जवानों के पास लौट गया, और वह उठे और इकट्ठे बैरसबा’ को गए; और अब्राहाम बैरसबा’ में रहा। 20 इन बातों के बाद यूँ हाँ कि अब्राहाम को यह खबर मिली, कि मिल्काह के भी तौरे भाई नहर से बेटे हुए हैं। 21 यानी ऊज जो उसका पहलौता है, और उसका भाई बूज और क्रमाल, अराम का बाप, 22 और कसद और हजू और फिल्दास और इद्लाफ और बैतैल। 23 और बैतैल से रिक्का पैदा हुई। यह आठों अब्राहाम के भाई नहर से मिल्काह के पैदा हुए। 24 और उसकी बाँड़ी से भी जिसका नाम रूमा था, तिक्ख और जाहम और तख्स और मांका पैदा हुए।

23 और सारा की उग्र एक सौ सताईंस साल की हुई, सारा की जिन्दगी के इतने ही साल थे। 2 और सारा ने करयतअरबा’ में वकाफ पाई। यह कनान में है और हब्सन भी कहलाता है। और अब्राहाम सारा के लिए मातम और नौहा करने को वहाँ गया। 3 फिर अब्राहाम मर्याद के पास से उठ कर बनी — हित से बातें करने लगा और कहा कि। 4 मैं तुम्हारे बीच परदेसी और गरीब — उल — बतन हूँ। तुम अपने यहाँ कंबिस्तान के लिए कोई मिलिक्यत मुझे दो, ताकि मैं अपने मुर्दे को आँखें के सामने से हटाकर दफन कर दूँ। 5 तब बनीहित ने अब्राहाम को जवाब दिया कि। 6 ऐ खुदावन्द हमारी सुन, तू हमारे बीच जबरदस्त सरदार है। हमारी कब्रों में जो सबसे अच्छी हो उसमें तू अपने मुर्दे को दफन कर, हम में ऐसा कोई नहीं जो तुझ से अपनी कब्र का इकार करे, ताकि तू अपना मुर्दा दफन न कर सके। 7 अब्राहाम ने उठ कर और बनी — हित के आगे, जो उस मुल्क के लोग हैं, आदाव बजा लाकर 8 उनसे यूँ बातें की, कि आग तुहारी मर्ती हो कि मैं अपने मुर्दे को आँख के सामने से हटाकर दफन कर दूँ, तो मेरी ‘अर्ज सुनो, और सुहर के बेटे इस्फरोन से मेरी सिफारिश करो, 9 कि वह मकफीला के गार को जो उसका है और उसके खेत के किनारों पर है, उसकी पूरी कीमत लेकर मुझे दे दे, ताकि वह कंबिस्तान के लिए तुम्हारे बीच मेरी मिलिक्यत हो जाए। 10 और ‘इस्फरोन बनी-हित के बीच बैठा था। तब ‘इस्फरोन हिती ने बनी हित के सामने, उन सब लोगों के अपने सामने जो उसके शहर के दरवाजे से दाखिल होते थे अब्राहाम को जवाब दिया, 11 “ऐ मेरे खुदावन्द! यूँ न होगा, बल्कि मेरी सुन! मैं यह खेत तुझे देता हूँ, और वह गार भी जो उसमें है तुझे दिए देता हूँ। यह मैं अपनी कौम के लोगों के सामने तुझे देता हूँ,

तू अपने मुर्दे को दफन कर।” 12 तब अब्राहाम उस मुल्क के लोगों के सामने द्युका। 13 फिर उसने उस मुल्क के लोगों के सुनते हुए ‘इस्फरोन से कहा कि अगर तू देना ही चाहता है तो मेरी सुन, मैं तुझे उस खेत का दाम दूँगा; यह तू मुझ से ले ले, तो मैं अपने मुर्दे को वहाँ दफन करँगा। 14 इस्फरोन ने अब्राहाम को जवाब दिया, 15 “ऐ मेरे खुदावन्द, मेरी बात सुन; यह जमीन चाँदी की चार सौ मिस्काल की है इसलिए मेरे और तेरे बीच यह है क्या? तब अना मुर्दा दफन कर।” 16 और अब्राहाम ने ‘इस्फरोन की बात मान ली; इसलिए अब्राहाम ने इस्फरोन को उतनी ही चाँदी तौल कर दी, जितनी का जिक्र उसने बनी — हित के सामने किया था, यानी चाँदी के चार सौ मिस्काल जो सौदागरों में राख जी थी। 17 इसलिए इस्फरोन का वह खेत जो मकफीला में मार्पे के सामने था, और वह गार जो उसमें था, और सब दरखत जो उस खेत में और उसके चारों तरफ की हट्टू में थे, 18 यह सब बनी — हित के और उन सबके आपने सामने जो उसके शहर के दरवाजे से दाखिल होते थे, अब्राहाम की खास मिलिक्यत करार दिए गए। 19 इसके बाद अब्राहाम ने अपनी बीवी सारा को मकफीला के खेत के गार में, जो मुल्काए — कनान में मार्पे यानी हब्सन के सामने है, दफन किया। 20 चुनाँचे वह खेत और वह गार जो उसमें था, बनी — हित की तरफ से कंबिस्तान के लिए अब्राहाम की मिलिक्यत करार दिए गए।

24 और अब्राहाम जाईक और उग्र दराज हुआ और खुदावन्द ने सब बातों में अब्राहाम को बरकत बख्ती थी। 2 और अब्राहाम ने अपने घर के खास नौकर से, जो उसकी सब चीजों का मुख्तार था कहा, तू अपना हाथ ज़रा मेरी रान के नीचे रख कि। 3 मैं तुझ से खुदावन्द की जो जमीन — ओ — आसमान का खुदा है कि कसम लें, कि तू कनानियों की बेटियों में से जिनमें से रहता हूँ, किसी को मेरे बेटे से नहीं ब्याहेगा। 4 बल्कि तू मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जा कर मेरे बेटे इस्हाक के लिए बीवी लाएगा। 5 उस नौकर ने उससे कहा, “शायद वह ‘और तइस मुल्क में मेरे साथ आना न चाहे; तो क्या मैं तेरे बेटे को उस मुल्क में जहाँ से तू आया फिर ले जाऊँ?’” 6 तब अब्राहाम ने उससे कहा खबरदार तू मेरे बेटे को वहाँ हरागिज न ले जाना। 7 खुदावन्द, आसमान का खुदा, जो मुझे मेरे बाप के घर और मेरी पैदाइशी जगह से निकाल लाया, और जिसने मुझ से जाँच की और कसम खाकर मुझ से कहा, कि मैं तेरी नसल को यह मुल्क दूँगा; वही तेरे आगे — आगे अपना फिरिश्ता भेजेगा कि तू वहाँ से मेरे बेटे के लिए बीवी लाए। 8 और आग वह ‘औरत तेरे साथ आना न चाहे, तो तू मेरी इस कसम से छुटा, लेकिन मेरे बेटे को हरागिज वहाँ न ले जाना। 9 उस नौकर ने अपना हाथ अपने आका अब्राहाम की रान के नीचे रख कर उससे इस बात की कसम खाई। 10 तब वह नौकर अपने आका के ऊँटों में से दस ऊँट लेकर रवाना हुआ, और उसके आका की अच्छी अच्छी चीजें उसके पास थीं, और वह उठकर मसोपतामिया में नहर के शहर के गया। 11 और शाम को जिस वक्त ‘औरतें पानी भरने आती हैं उस ने उस शहर के बाहर बावती के पास ऊँटों को बिठाया। 12 और कहा, “ऐ खुदावन्द, मेरे आका अब्राहाम के खुदा, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ के आज तू मेरा काम बना दे, और मेरे आका अब्राहाम पर करम कर। 13 देख, मैं पानी के चशमा पर खड़ा हूँ और इस शहर के लोगों की बेटियाँ पानी भरने को आती हैं; 14 इसलिए ऐ खुदावन्द ऐसा हो कि जिस लड़की से मैं कहूँ, कि तू ज़रा अपना घड़ा झूका दे तो मैं पानी पी लौं और वह कहे, कि ले पी, और मैं तेरे ऊँटों को भी पिला दूँगा”; तो वह वही हो जिसे तुम अपने बन्दे इस्हाक के लिए उठारा था, और इसी से मैं समझ लौंगा कि तूने मेरे आका पर करम किया है।” 15 वह यह कह ही रहा था कि रिक्का, जो अब्राहाम के भाई नहर की बीवी मिल्काह के बेटे बैतैल से पैदा हुई थी, अपना घड़ा कंधे पर लिए हुए निकली। 16 वह लड़की निहायत खबरसूत और कुवारी,

और मर्द से नवाकिफ थी। वह नीचे पानी के चशमा के पास गई और अपना घड़ा भर कर ऊपर आई। 17 तब वह नौकर उससे मिलने को दौड़ा और कहा कि जरा अपने घड़े से थोड़ा सा पानी मुझे पिला दे। 18 उसने कहा, पीजिए साहब; “और फौरन घड़े को हाथ पर उतार उसे पानी पिलाया। 19 जब उसे पिला चुकी तो कहने लगी, कि मैं तेरे ऊंटों के लिए भी पानी भर — भर लाऊँगी, जब तक वह पी न चुकें।” 20 और फौरन अपने घड़े को हौज में खाली करके पिर बावली की तरफ पानी भरने दौड़ी गई, और उसके सब ऊंटों के लिए भरा। 21 वह आदमी चूप — चाप उसे गौर से देखता रहा, ताकि मालूम करे कि खुदावन्द ने उसका सफर मुबारक किया है या नहीं। 22 और जब ऊंट पी चुके तो उस शब्द से अधे मिस्काल सोने की एक नथ, और दस मिस्काल सोने के दो कड़े उसके हाथों के लिए निकाले। 23 और कहा कि जरा मुझे बता कि तू किसकी बेटी है? और क्या तेरे बाप के घर में यह मारे टिकने की जगह है? 24 उसने उससे कहा कि मैं बैतैल की बेटी हूँ। वह मिल्काह का बेटा है जो नहर से उसके हुआ। 25 और यह भी उससे कहा कि हमारे पास भूसा और चारा बहुत है, और टिकने की जगह भी है। 26 तब उस आदमी ने झुक कर खुदावन्द को सिज्दा किया, 27 और कहा, “खुदावन्द मेरे आका अब्राहाम का खुदा मुबारक हो, जिसने मेरे आका को अपने करम और सच्चाई से महस्त नहीं रखा और मुझे तो खुदावन्द ठीक राह पर चलाकर मेरे आका के भाईयों के घर लाया।” 28 तब उस लड़की ने दौड़ कर अपनी माँ के घर में यह सब हाल कह सनाया। 29 और रिक्का का एक भाई था जिसका नाम लाबन था; वह बाहर पानी के चशमा पर उस आदमी के पास दौड़ा गया। 30 और ऐसा हुआ कि जब उसने वह नथ देखी, और वह कड़े भी जो उसकी बहन के हाथों में थे, और अपनी बहन रिक्का का बयान भी सुन लिया कि उस शब्द ने मुझे से ऐसी — ऐसी बातें कहीं, तो वह उस आदमी के पास आया और देखा कि वह चशमा के नजदीक ऊंटों के पास खड़ा है। 31 तब उससे कहा, “ऐ, तू जो खुदावन्द की तरफ से मुबारक है। अन्दर चल, बाहर कर्कू खड़ा है? मैंने घर को और ऊंटों के लिए भी जगह को तैयार कर लिया है।” 32 तब वह आदमी घर में आया, और उसने उसके ऊंटों को खोला और ऊंटों के लिए भूसा और चारा, और उसके और उसके साथ के आदमियों के पांच धोने को पानी दिया। 33 और खाना उसके आगे रखवा गया, लेकिन उसने कहा कि मैं जब तक अपना मतलब बयान न कर लौं नहीं खाऊँगा। उसने कहा, अच्छा, कह। 34 तब उसने कहा कि मैं अब्राहाम का नौकर हूँ। 35 और खुदावन्द ने मेरे आका को बड़ी बरकत दी है, और वह बहुत बड़ा आदमी हो गया है; और उसने उसे भेड — बकरीयाँ, और गाय बैल और सोना चाँदी और लौंडिया और गुलाम और ऊंट और गधे बछों हैं। 36 और मेरे आका की बीवी सारा के जब वह बुढ़िया हो गई, उससे एक बेटा हुआ। उसी को उसने अपना सब कुछ दे दिया है। 37 और मेरे आका ने मुझे कसम दे कर कहा है, कि तू कनानियों की बेटियों में से, जिनके मूलक में मैं रहता हूँ किसी को मेरे बेटे से न ब्याहना। 38 बल्कि तू मेरे बाप के घर और मेरे रिश्तेदारों में जाना और मेरे बेटे के लिए बीवी लाना। 39 तब मैंने अपने आका से कहा, “शायद वह ‘औरत मेरे साथ आना न चाहे।’ 40 तब उसने मुझे से कहा, ‘खुदावन्द, जिसके सामने मैं चलता रहा हूँ, अपना फरिशता तेरे साथ भेजोगा और तेरा सफर मुबारक करेगा; तू मेरे रिश्तेदारों और मेरे बाप के खानदान में से मेरे बेटे के लिए बीवी लाना।’ 41 और जब तू मेरे खानदान में जा पहुँचेगा, तब मेरी कसम से छेटेगा; और अगर वह कोई लड़की न दें, तो भी तू मेरी कसम से छुटा। 42 इसलिए मैं आज पानी के उस चशमा पर आकर कहने लगा, ‘ऐ खुदावन्द, मेरे आका अब्राहाम के खुदा, अगर तू मेरे सफर को जो मैं कर रहा हूँ मुबारक करता है।’ 43 तो देख, मैं पानी के चशमा के पास खड़ा होता

हूँ, और ऐसा हो कि जो लड़की पानी भरने निकले और मैं उससे कहूँ, ‘जरा अपने घड़े से थोड़ा पानी मुझे पिला दे, 44 और वह मुझे कहे कि तू भी भी और मैं तेरे ऊंटों के लिए भी रह दूँगी, तो वो वही ‘औरत हो जिसे खुदावन्द ने मेरे आका के बेटे के लिए ठहराया है।’ 45 मैं दिल में यह कह ही रहा था कि रिक्का अपना घड़ा कच्चे पर लिए हुए बाहर निकली, और नीचे चशमा के पास गई, और पानी भरा। तब मैंने उससे कहा, ‘जरा मुझे पानी पिला दे।’ 46 उसने फौरन अपना घड़ा कच्चे पर से उतारा और कहा, ‘ले पी और मैं तेरे ऊंटों को भी पिला दूँगी।’ तब मैंने पिया और उसने मेरे ऊंटों को भी पिलाया। 47 फिर मैंने उससे पूछा, ‘तू किसकी बेटी हैं?’ उसने कहा, मैं बैतैल की बेटी हूँ, वह नहर का बेटा है जो मिल्काह से पैदा हुआ; फिर मैंने उसकी नाक में नथ और उसके हाथों में कड़े पहना दिए। 48 और मैंने झुक कर खुदावन्द को सिज्दा किया और खुदावन्द, अपने आका अब्राहाम के खुदा को मुबारक कहा, जिसने मुझे ठीक राह पर चलाया कि अपने आका के भाई की बेटी उसके बेटे के लिए ले जाऊँ। 49 इसलिए अब अगर तुम करम और सच्चाई से मेरे आका के साथ पेश आना चाहते हो तो मुझे बताओ, और अगर नहीं तो कह दो, ताकि मैं दहनी या बाँ तरफ फिर जाऊँ। 50 तब लाबन और बैतैल ने जबाब दिया, कि यह बात खुदावन्द की तरफ से हुई है, हम तुझे कुछ बुरा या भला नहीं कह सकते। 51 देख, रिक्का तेरे सामने मौजूद है, उसे ले और जा, और खुदावन्द के कौल के मुताबिक अपने आका के बेटे से उसे ब्याह दे। 52 जब अब्राहाम के नौकर ने उनकी बातें सुनी, तो जर्मन तक झुक कर खुदावन्द को सिज्दा किया। 53 और नौकर ने चाँदी और सोने के जेवर, और लिबास निकाल कर रिक्का को दिए, और उसके भाई और उसकी माँ को भी कीमती चीजें दी। 54 और उसने और उसके साथ के आदमियों ने खाया पिया और रात भर वही रहे; सुबह को वह उठे और उसने कहा, कि मुझे मेरे आका के पास रवाना कर दो। 55 रिक्का के भाई और माँ ने कहा, कि लड़की को कुछ दिन, कम से कम दस दिन, हमारे पास रहने दें; इसके बाद वह चर्ची जाएगी। 56 उसने उससे कहा, कि मुझे न रोको क्योंकि खुदावन्द ने मेरा सफर मुबारक किया है, मुझे स्वस्त कर दो ताकि मैं अपने आका के पास जाऊँ। 57 उन्होंने कहा, “हम लड़की को बुलाकर पूछते हैं कि वह क्या कहती है।” 58 तब उन्होंने रिक्का को बुला कर उससे पूछा, “क्या तू इस आदमी के साथ जाएगी?” उसने कहा, “जाऊँगी।” 59 तब उन्होंने अपनी बहन रिक्का और उसकी दाया और अब्राहाम के नौकर और उसके आदमियों को स्वस्त किया। 60 और उन्होंने रिक्का को दुआ दी और उससे कहा, “ऐ हमारी बहन, तू लाखों की माँ हो और तेरी नस्त अपने कीना रखने वाले के फाटक की मालिक हो।” 61 और रिक्का और उसकी सहेतियाँ उठकर ऊंटों पर सवार हुई, और उस आदमी के पीछे हो ली। तब वह आदमी रिक्का को साथ लेकर रवाना हुआ। 62 और इस्हाक बेरलही — रोई से होकर चला आ रहा था, क्योंकि वह दलिखिन के मूलक में रहता था। 63 और शाम के बक्तु इस्हाक बैतैलखला को मैदान में गया, और उसने जो अपनी आँखें उठाई और नज़र की तो क्या देखता है कि ऊंट चले आ रहे हैं। 64 और रिक्का ने निगाह की और इस्हाक को देख कर ऊंट पर से उतर पड़ी। 65 और उसने नौकर से पूछा, “यह शब्द कौन है जो हम से मिलने की मैदान में चला आ रहा है?” उस नौकर ने कहा, “यह मेरा आका है।” तब उसने बुका लेकर अपने ऊपर डाल दिया। 66 नौकर ने जो — जो किया था सब इस्हाक को बताया। 67 और इस्हाक रिक्का को अपनी माँ सारा के ढेर में ले गया। तब उसने बुका लेकर अपने ऊपर डाल दिया। 68 नौकर ने जो — जो किया था सब इस्हाक को बताया।

और अब्रहाम ने फिर एक और बीवी की जिसका नाम करता था। 2 और उससे जिमान और युक्सान और मिदान और मिदियान और इस्हाक और सूख पैदा हुए। 3 और युक्सान से सिबा और ददान पैदा हुए, और ददान की ओलाद से असूी और लतस्ती और लूमी थे। 4 और मिदियान के बेटे ऐसा और इफिर और हनक और अबीदा'आ और इल्द'आ थे; यह सब बनी करता थे। 5 और अब्रहाम ने अपना सब कुछ इस्हाक को दिया। 6 और अपनी बाँदियों के बेटों को अब्रहाम ने बहुत कुछ इनाम देकर अपने जीती जी उनको अपने बेटे इस्हाक के पास से मशरिक की तरफ याँनी मशरिक के मूल्क में भेज दिया। 7 और अब्रहाम की कुल उम्र जब तक कि वह जिन्दा रहा एक सौ पिछ्चतर साल की हई। 8 तब अब्रहाम ने दम छोड़ दिया और खूब बुढ़ापे में निहायत ज़ईफ और पूरी उम्र का होकर वफात पाई, और अपने लोगों में जा मिला। 9 और उसके बेटे इस्हाक और इस्मा'ईल ने मकफीला के गार में, जो ममरे के सामने हिती सहर के बेटे इफरोन के खेत में है, उसे दफन किया। 10 यह वरी खेत है जिसे अब्रहाम ने बनी — हित से खरीदा था; वही अब्रहाम और उसकी बीवी सारा दफन हुए। 11 और अब्रहाम की वफात के बाद खुदा ने उसके बेटे इस्हाक को बरकत बरखी और इस्हाक बैर — लही — रोई के नजदीक रहता था। 12 यह नसबनामा अब्रहाम के बेटे इस्मा'ईल का है जो अब्रहाम से सारा की लौटी हाजिरा मिरी के बत से पैदा हुआ। 13 और इस्मा'ईल के बेटों के नाम यह है: यह नाम तरीबावा उनकी पैदाइश के मताबिक है, इस्मा'ईल का पहलौठा नबायोत था, फिर कीदार और अदविएल और मिबासाम, 14 और मिशमा' और दूमा और मस्सा, 15 हटद और तेमा और यत्रू और नफीस और किदमा। 16 यह इस्मा'ईल के बेटे हैं और इन्हीं के नामों से इनकी बस्तियां और छावियाँ नामजद हुईं और यहीं बारह अपने अपने कबीले के सरदार हुए। 17 और इस्मा'ईल की कुल उम्र एक सौ सैतीस साल की हुई तब उससे दम छोड़ दिया और वफात पाई और अपने लोगों में जा मिला। 18 और उसकी औलाद हवीला से शोर तक, जो मिस के सामने उस रारे पर है जिस से असू को जाते हैं आबाद थी। यह लोग अपने सब भाइयों के सामने बसे हुए थे। 19 और अब्रहाम के बेटे इस्हाक का नसबनामा यह है: अब्रहाम से इस्हाक पैदा हुआ: 20 इस्हाक चालीस साल का था जब उसने रिब्का से ब्याह किया, जो फ़दान अराम के बाशिन्दे बैतूल अरामी की बेटी और लाबन अरामी की बहन थी। 21 और इस्हाक ने अपनी बीवी के लिए खुदावन्द से दुआ की, क्यूँकि वह बाँझी थी, और खुदावन्द ने उसकी दुआ कुबल की, और उसकी बीवी रिब्का हामिला हुई। 22 और उसके पेट में दो लड़के आपस में मुजाहमत करने लगे। तब उसने कहा, “अगर ऐसा ही है तो मैं जीती क्यूँ हूँ?” और वह खुदावन्द से पछने गई। 23 खुदावन्द ने उससे कहा, “दो कोमे तेरे पेट में हैं, और दो कबीले तेरे बत्र से निकलते ही अलग — अलग हो जाएँगे। और एक कबीला दूसरे कबीले से ताकतवर होगा, और बड़ा छोटे की खिदमत करेगा।” 24 और जब उसके बच्चा पैदा होने के दिन पूरे हुए, तो क्या देखते हैं कि उसके पेट में जुड़वां बच्चे हैं। 25 और पहला जो पैदा हुआ तो सुर्ख था और ऊपर से ऐसा जैसे ऊनी कपड़ा, और उन्होंने उसका नाम ‘ऐसौ रखवा। 26 उसके बाद उसका भाई पैदा हुआ और उसका हाथ ‘ऐसौ की ईड़ी को पकड़े हुए था, और उसका नाम याँकूब रखवा गया; जब वह रिब्का से पैदा हुए तो इस्हाक साठ साल का था। 27 और वह लड़के बढ़े, और ‘ऐसौ शिकार में माहिर हो गया और जंगल में रहने लगा, और याँकूब सादा मिजाज डेरों में रहने वाला आदमी था। 28 और इस्हाक ‘ऐसौ को प्यार करता था क्यूँकि वह उसके शिकार का गोशत खाता था और रिब्का याँकूब को प्यार करती थी। 29 और याँकूब ने दाल पकाई, और ‘ऐसौ जंगल से आया और वह बहुत भूका था। 30 और ‘ऐसौ ने याँकूब से कहा,

“यह जो लाल — लाल है मुझे खिला दे, क्यूँकि मैं बे — दम हो रहा हूँ।” इसी लिए उसका नाम अदोम भी हो गया। 31 तब याँकूब ने कहा, “तू आज अपने पहलौठे का हक मेरे हाथ बेच दे।” 32 ‘ऐसौ ने कहा, “देख, मैं तो मरा जाता हूँ, पहलौठे का हक मेरे किस काम आएगा?” 33 तब याँकूब ने कहा कि आज ही मुझ से कसम खा, उसने उससे कसम खाई, और उसने अपना पहलौठे का हक याँकूब के हाथ बेच दिया। 34 तब याँकूब ने ‘ऐसौ को रोटी और मसर की दाल दी; वह खा — पीकर उठा और चला गया। यूँ ‘ऐसौ ने अपने पहलौठे के हक की कट न जाना।

26 और उस मूल्क में उस पहले काल के ‘अलावा जो अब्रहाम के दिनों

में पड़ा था, फिर काल पड़ा। तब इस्हाक जिरार को फिलिस्तियों के बादशाह अबीमिलिक के पास गया। 2 और खुदावन्द ने उस पर जाहिर हो कर कहा कि मिस को न जा; बल्कि जो मूल्क मैं तझे बताकू उसमें रह। 3 तब इसी मूल्क में क्याम रख और मैं तेरे साथ रहँगा और तुझे बरकत बरखँगा क्यूँकि मैं तुझे और तेरी नसल को यह सब मूल्क दूँगा, और मैं उस कसम को जो मैंने तेरे बाप अब्रहाम से खाई पूरा करँगा। 4 और मैं तेरी औलाद को बढ़ा कर आसमान के तारों की तरह कर दूँगा, और यह सब मूल्क तेरी नसल को दूँगा, और जीवन की सब कौमें तेरी नसल के वसीले से बरकत पाएँगी। 5 इसलिए कि अब्रहाम ने मेरी बात मानी, और मेरी नसीहत और मेरे हक्मों और कवानीन — ओ — आईन पर 'अमल किया। 6 फिर इस्हाक जिरार में रहने लगा; 7 और वहाँ के बाशिन्दों ने उससे उसकी बीवी के बारे में पूछा। उसने कहा, वह मेरी बहन है, क्यूँकि वह उसे अपनी बीवी बताते डरा, यह सोच कर कि कहीं रिब्का की बजह से वहाँ के लोग उसे कल्तन न कर डालें, क्यूँकि वह खबरसूत थी। 8 जब उसे वहाँ रहते बहुत दिन हो गए तो, फिलिस्तियों के बादशाह अबीमिलिक ने खिड़की में से झाँक कर नज़र की ओर देखा कि इस्हाक अपनी बीवी रिब्का से हँसी खेल कर रहा है। 9 तब अबीमिलिक ने इस्हाक को बुला कर कहा, “वह तो हकीकत में तेरी बीवी है; फिर तूने क्यूँ कर उसे अपनी बहन बताया?” इस्हाक ने उससे कहा, “इसलिए कि मुझे खायाल हुआ कि कहीं मैं उसकी बजह से मारा न जाऊँ।” 10 अबीमिलिक ने कहा, “तूने हम से क्या किया? यूँ तो आसानी से इन लोगों में से कोई तेरी बीवी के साथ मुशाश्रत कर लेता, और तू हम पर इल्जाम लाता।” 11 तब अबीमिलिक ने सब लोगों को यह हक्म किया कि जो कोई इस आदमी को या इसकी बीवी को छुएगा वह मार डाला जाएगा। 12 और इस्हाक ने उस मूल्क में खेती की और उसी साल उसे सौ गुना फल मिला; और खुदावन्द ने उसे बरकत बरखी। 13 और वह बढ़ गया और उसकी तरक्की होती गई, यहाँ तक कि वह बहुत बड़ा आदमी हो गया। 14 और उसके पास भेड़ बरकरायाँ और गाय बैल और बहुत से नौकर चाकर थे, और फिलिस्तियों को उस पर रश्क आने लगा। 15 और उन्होंने सब कुँए जो उसके बाप के नौकरों ने उसके बाप अब्रहाम के बक्त्र में खोदे थे, बन्द कर दिए और उनको मिट्टी से भर दिया। 16 और अबीमिलिक ने इस्हाक से कहा कि तू हमारे पास से चला जा, क्यूँकि तू हम से ज्यादा ताकतवर हो गया है। 17 तब इस्हाक ने वहाँ से जिरार की बादी में जाकर अपना डेरा लगाया और वहाँ रहने लगा। 18 और इस्हाक ने पानी के उन कुओं को जो उसके बाप अब्रहाम के दिनों में खोदे गए थे फिर खुदवाया, क्यूँकि फिलिस्तियों ने अब्रहाम के मरने के बाद उनको बन्द कर दिया था, और उसने उनके फिर वही नाम रखवे जो उसके बाप ने रखवे थे। 19 और इस्हाक के नौकरों को वादी में खोदते — खोदते बहते पानी का एक सोता मिल गया। 20 तब जिरार के चरवाहों ने इस्हाक के चरवाहों से झागड़ा किया और कहने लगे कि यह पानी हमारा है। और उसने उस कुँए का नाम 'इस्क रखवा, क्यूँकि उन्होंने उससे झागड़ा किया। 21 और

उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा, और उसके लिए भी वह झगड़ने लगे; और उसने उसका नाम सिताना रख दिया। 22 इसलिए वह वहाँ से दूसरी जगह चला गया और एक और कुआँ खोदा, जिसके लिए उन्होंने झगड़ा न किया और उसने उसका नाम रहोवत रख दिया और कहा कि अब खुदावन्द ने हमारे लिए जगह निकाली और हम इस मुल्क में कामयाब होंगे। 23 वहाँ से वह बैरसबा' को गया। 24 और खुदावन्द उसी रात उस पर जाहिर हुआ और कहा कि मैं तेरे बाप अब्रहाम का खुदा हूँ। मत दर, कर्कौंक मैं तेरे साथ हूँ और तुझे बरकत दूँगा, और अपने बन्दे अब्रहाम की खातिर तेरी नसल बढ़ाऊँगा। 25 और उसने वहाँ मजबूत बनाया और खुदावन्द से दुआ की, और अपना डेरा वही लगा लिया; और वहाँ इस्हाक के नौकरों ने एक कुआँ खोदा। 26 तब अलीमालिक अपने दोस्त अख्खूजत और अपने सिपहसालार फीकुल को साथ ले कर, जिरार से उसके पास गया। 27 इस्हाक ने उसने कहा कि तुम मेरे पास क्यूँ कर आए, हालाँकि मुझ से कीना रखते हो और मझ को अपने पास से निकाल दिया। 28 उन्होंने कहा, “हम ने खूब सफाई से देखा कि खुदावन्द तेरे साथ है, तब हम ने कहा कि हमारे और तेरे बीच कसम हो जाए और हम तेरे साथ ‘अहट करें, 29 कि जैसे हम ने तुझे छुआ तक नहीं, और अलावा नेकी के तुझ से और कुछ नहीं किया और तुझ को सलामत सख्त, किया त भी हम से कोई बदी न करेगा क्यौंकि तू अब खुदावन्द की तरफ से मुबारक है।” 30 तब उसने उनके लिए दावत तैयार की और उन्होंने खाया पिया। 31 और वह सबह सवेरे उठे और आपस में कसम खाईं; और इस्हाक ने उन्हें सख्त किया और वह उसके पास से सलामत चले गए। 32 उसी रोज इस्हाक के नौकरों ने आ कर उससे उस कुएँ का जिक्र किया जिसे उन्होंने खोदा था और कहा कि हम को पानी मिल गया। 33 तब उसने उसका नाम सबा' रख दिया: इसीलिए वह शहर आज तक बैरसबा' कहलाता है। 34 जब ऐसौ चालीस साल का हुआ, तो उसने बैरी हिती की बेटी यहदिथ और ऐलोन हिती की बेटी बशमथ से ब्याह किया; 35 और वह इस्हाक और रिब्का के लिए बवाल — ए — जान हूँ।

27 जब इस्हाक जर्ज़फ़ हो गया, और उसकी आँखें ऐसी धूमधला गई कि उसे मेरे बेटे “उसने कहा, मैं हाजिर हूँ” 2 तब उसने कहा, देख! मैं तो जर्ज़फ़ हो गया और मुझे अपनी मौत का दिन मालूम नहीं। 3 इसलिए अब तू जारा अपना हथियार, अपना तरकश और अपनी कमान लेकर जंगल को निकल जा और मेरे लिए शिकार मार ला। 4 और मेरी हस्ब — ए पसन्द लजीज़ खाना मेरे लिए तैयार करके मेरे आगे ले आ, ताकि मैं खाऊँ और अपने मरने से पहले दिल से तुझे दुआ दूँ। 5 और जब इस्हाक अपने बेटे ऐसौ से बातें कर रहा था तो रिब्का सुन रही थी, और ऐसौ जंगल को निकल गया कि शिकार मार कर लाए। 6 तब रिब्का ने अपने बेटे याँकूब से कहा, कि देख, मैंने तेरे बाप को तेरे भाई ऐसौ से यह कहते सुना कि। 7 मेरे लिए शिकार मार कर लजीज़ खाना पका कर अपने बाप के पास लाया, और उसने दुआ दी। 8 इसलिए ऐसे बेटे, इस हवाम के मुताबिक जो मैं तुझे देती हूँ मेरी बात को मान। 9 और जाकर रेवड में से बकरी के दो अच्छे — अच्छे बच्चे मुझे ला दे, और मैं उनको लेकर तेरे बाप के लिए उसकी हस्ब — ए — पसन्द लजीज़ खाना तैयार कर रहा था। 10 और तू उसे अपने बाप के लिए आगे ले जाना, ताकि वह खाए और अपने मरने से पहले तुझे दुआ दे। 11 तब याँकूब ने अपनी मौं रिब्का से कहा, “देख, मेरे भाई ऐसौ को जिसम पर बाल है और मेरा जिसम साफ़ है। 12 शायद मेरा बाप मुझे टटोरे, तो मैं उसकी नज़र में दगाबाज ठहस्संगा; और बरकत नहीं बल्कि लान्त कमाऊँगा।” 13 उसकी मौं ने उसे कहा, “ऐ मेरे बेटे! तेरी लान्त मुझ पर आए, तू सिर्फ़ मेरी बात मान और जाकर वह बच्चे मुझे ला दे।”

14 तब वह गया और उनको लाकर अपनी मौं को दिया, और उसकी मौं ने उसके बाप की हस्ब — ए — पसन्द लजीज़ खाना तैयार किया। 15 और रिब्का ने अपने बड़े बेटे ऐसौ के नफीस लिबास, जो उसके पास घर में थे लेकर उनकी अपने छोटे बेटे याँकूब को पहनाया। 16 और बकरी के बच्चों की खालें उसके हाथों और उसकी गर्दन पर जहाँ बाल न थे लपेट दी। 17 और वह लजीज़ खाना और रोटी जो उसने तैयार की थी, अपने बेटे याँकूब के हाथ में दे दी। 18 तब उसने बाप के पास आ कर कहा, ऐ मेरे बाप! “उसने कहा, मैं हाजिर हूँ, तू कौन है मैं बेटे?” 19 याँकूब ने अपने बाप से कहा, “मैं तेरा पहलौटा बेटा ‘ऐसौ हूँ।’ मैंने तेरे कहने के मताबिक किया है; इसलिए ज़रा उठ और बैठ कर मेरे शिकार का गोशत खा, ताकि तू दिल से मुझे दुआ दे।” 20 तब इस्हाक ने अपने बेटे से कहा, “बेटा! तुझे यह इस कदर जल्द कैसे मिल गया?” उसने कहा, “इसलिए कि खुदावन्द तेरे खुदा ने मेरा काम बना दिया।” 21 तब इस्हाक ने याँकूब से कहा, “ऐ मेरे बेटे, ज़रा नज़दीक आ कि मैं तुझे टटोलूँ कि तू मेरा ही बेटा ‘ऐसौ है या नहीं।’” 22 और याँकूब अपने बाप इस्हाक के नज़दीक गया; और उसने उसे टटोलकर कहा, “आवाज तो याँकूब की है लेकिन हाथ ऐसौ के हैं।” 23 और उसने उसे न पहचाना, इसलिए कि उसके हाथों पर उसके भाई ऐसौ के हाथों की तरह बाल थे, इसलिए उसने उसे दुआ दी। 24 और उसने पूछा कि क्या तू मेरा बेटा “ऐसौ ही है?” उसने कहा, “मैं वही हूँ।” 25 तब उसने कहा, “खाना मेरे आगे ले आ, और मैं अपने बेटे के शिकार का गोशत खाऊँगा, ताकि दिल से तुझे दुआ दूँ।” तब वह उसे उसके नज़दीक ले आया, और उसने खाया; और वह उसके लिए मय लाया और उसने पी। 26 फिर उसके बाप इस्हाक ने उससे कहा, “ऐ मेरे बेटे! अब पास आकर मुझे चूम।” 27 उसने पास जाकर उसे चूमा। तब उसने उसके लिबास की खशबू पाई और उसे दुआ दे कर कहा, “देखो! मेरे बेटे की महक उस खेत की महक की तरह है जिसे खुदावन्द ने बरकत दी हो।” 28 खुदा आसमान की ओस और जमीन की फर्की, और बहुत सा अनाज और मय तुझे बख्शे। 29 कौमें तेरी खिदमत करें, और कबीले तेरे सामने झुकें। तू अपने भाइयों का सरदार हो, और तेरी मौं के बेटे तेरे आगे झुकें, जो तुझ पर लान्त करे वह खुद लान्ती हो, और जो तुझे दुआ दे वह बरकत पाए।” 30 जब इस्हाक याँकूब को दुआ दे चुका, और याँकूब अपने बाप इस्हाक के पास से निकला ही था कि उसका भाई ऐसौ अपने शिकार से लौटा। 31 वह भी लजीज़ खाना पका कर अपने बाप के पास लाया, और उसने अपने बाप से कहा, मेरा बाप उठ कर अपने बेटे के शिकार का गोशत खाए, ताकि दिल से मुझे दुआ दे। 32 उसके बाप इस्हाक ने उससे पूछा कि तू कौन है? उसने कहा, मैं तेरा पहलौटा बेटा “ऐसौ हूँ।” 33 तब तो इस्हाक शिद्दत से कौपने लगा और उसने कहा, “फिर वह कौन था जो शिकार मार कर मेरे पास ले आया, और मैंने तेरे आगे से पहले सबमें से थोड़ा — थोड़ा खाया और उसे दुआ दी? और मुबारक भी वही होगा।” 34 ऐसौ अपने बाप की बातें सुनते ही बड़ी बुलन्दी और हसरतनाक आवाज से चिल्ला उठा, और अपने बाप से कहा, “मुझ को भी दुआ दे, ऐ मेरे बाप! मुझ को भी।” 35 उसने कहा, “तेरा भाई दास से आया, और तेरी बरकत ले गया।” 36 तब उसने कहा, “क्या उसका नाम याँकूब ठीक नहीं रख दिया गया? क्यौंकि उसने दोबारा मुझे धोखा दिया। उसने मेरा पहलौटे का हक तो ले ही लिया था, और देख, अब वह मेरी बरकत भी ले गया।” फिर उसने कहा, “क्या तूने मेरे लिए कोई बरकत नहीं रख छोड़ी है?” 37 इस्हाक ने ऐसौ को जबाब दिया, कि देख, मैंने उसे तेरा सरदार ठहराया, और उसके सब भाइयों को उसके सुरुद किया कि खादिम हों, और अनाज और मय उसकी परवरिश के लिए बताई। अब ऐसे बेटे, तेरे लिए मैं क्या करूँ? 38 तब ऐसौ ने अपने बाप से कहा, “क्या तेरे पास एक ही

बरकत है, ऐ मेरे बाप? मुझे भी दुआ दे, ऐ मेरे बाप, मुझे भी।” और ‘ऐसौ जोर — जोर से रोया। 39 तब उसके बाप इस्हाक ने उससे कहा, “देख जरखखेज जमीन में तेरा घर हो, और ऊपर से आसमान की शबनम उस पर पड़े। 40 तेरी औकात — बसरी तेरी तलवार से हो, और तू अपने भाई की खिंदमत करे, और जब तू आजाद हो; तो अपने भाई का जुआ अपनी गर्दन पर से उतार फेंके।” 41 और ‘ऐसौ ने याकूब से, उस बरकत की वजह से जो उसके बाप ने उसे बख्ती, कीना रखवा; और ‘ऐसौ ने अपने दिल में कहा, कि “मेरे बाप के मातम के दिन नज़दीक हैं, फिर मैं अपने भाई याकूब को मार डालूँगा।” 42 और रिब्का को उसके बड़े बेटे ‘ऐसौ’ की यह बातें बताई गईं; तब उसने अपने छोटे बेटे याकूब को बुलावा कर उससे कहा, “देख, तेरा भाई ‘ऐसौ’ तुझे मार डालने पर है, और यही सोच — सोचकर अपने को तसल्ली दे रहा है। 43 इसलिए ऐ मेरे बेटे, तू मेरी बात मान, और उठकर हारान को मेरे भाई लाबन के पास भाग जा; 44 और थोड़े दिन उसके साथ रह, जब तक तेरे भाई की नाराजगी उत्तर न जाए। 45 यानी जब तक तेरे भाई का कहर तेरी तरफ से ठंडा न हो, और वह उस बात को जो तूने उससे की है भूल न जाए; तब मैं तुझे बहाँ से बुलावा भेजूँगी। मैं एक ही दिन में तुम दोनों को क्यूँ खो भैदूँ?” 46 और रिब्का ने इस्हाक से कहा, मैं हिती लड़कियों की वजह से अपनी ज़िन्दगी से तंग हूँ, इसलिए अगर याकूब हिती लड़कियों में से, जैसी इस मूल्क की लड़कियाँ हैं, किसी से ब्याह कर ले तो मेरी ज़िन्दगी में क्या लुक्फ़र होगा?

28 तब इस्हाक ने याकूब को बुताया और उसे दुआ दी और उसे ताकीद

की, कि तू कनानी लड़कियों में से किसी से ब्याह न करना। 2 तू उठ कर फ़दान अराम को अपने नाना बैतूल के घर जा, और बहाँ से अपने मामूलाबन की बेटियों में से एक को ब्याह ला। 3 और कादिर — ए — मूलतक खुदा तुझे बरकत बरखो और तुझे कामयाब करे और बढ़ाओ, कि तुझ से कौमों के कबीली पैदा हों। 4 और वह अब्राहाम की बरकत तुझे और तेरे साथ तेरी नसल को दे, कि तेरी मुसाफिरत की यह सरजमीन जो खुदा ने अब्राहाम को दी तेरी मीरास हो जाए। 5 तब इस्हाक ने याकूब को स्वतंत्रता किया और वह फ़दान अराम में लाबन के पास, जो अरामी बैतूल का बेटा और याकूब और ‘ऐसौ’ की माँ रिब्का का भाई था गया। 6 फिर जब ‘ऐसौ’ ने देखा कि इस्हाक ने याकूब को दुआ देकर उसे फ़दान अराम भेजा है, ताकि वह बहाँ से बीती ब्याह कर लाए; और उसे दुआ देते बरकत यह ताकीद भी की है कि तू कनानी लड़कियों में से किसी से ब्याह न करना। 7 और याकूब अपने माँ बाप की बात मान कर फ़दान अराम को चला गया। 8 और ‘ऐसौ’ ने यह भी देखा कि कनानी लड़कियाँ उसके बाप इस्हाक को बुरी लगती हैं, 9 तो ‘ऐसौ’ इस्माईल के पास गया और महलत को, जो इस्माईल — बिन — अब्राहाम की बेटी और नबायोत की बहन थी, ब्याह कर उसे अपनी और बीवियों में शामिल किया। 10 और याकूब बैर — सबा’ से निकल कर हारान की तरफ चला। 11 और एक जगह पहुँच कर सारी रात बही रहा क्योंकि सूरज डूब गया था, और उसने उस जगह के पथरों में से एक उठा कर अपने सरहने रख लिया और उसी जगह सोने को लेट गया। 12 और खबाब में क्या देखता है कि एक सीढ़ी जमीन पर खड़ी है, और उसका सिरा आसमान तक पहुँचा हुआ है। और खुदा के फरिश्ता उस पर से चढ़ते उतरते हैं। 13 और खुदावन्द उसके ऊपर खड़ा कर हरा है, कि मैं खुदावन्द, तेरे बाप अब्राहाम का खुदा और इस्हाक का खुदा हूँ। मैं यह जमीन जिस पर तू लेता है तुझे और तेरी नसल को दूँगा। 14 और तेरी नसल जमीन की गर्द के जरों की तरह होगी और तू मशरिक और मागिरब और शिमाल और दखिलनमें फैल जाएगा, और जमीन के सब कबीले तेरे और तेरी नसल के बसीले से बरकत पाएंगे। 15 और देख, मैं तेरे साथ हूँ और हर जगह जहाँ कही

तू जाए तेरी हिफाजत कहँगा और तुझ को इस मूल्क में फिर लाऊँगा, और जो मैंने तुझ से कहा है जब तक उसे पूरा न कर ले तुझे नहीं छोड़ुँगा। 16 तब याकूब जाग उठा और कहने लगा, कि यकीन खुदावन्द इस जगह है और मुझे मालूम न था। 17 और उसने डर कर कहा, “यह कैसी खौफनाक जगह है। तो यह खुदा के घर और आसमान के आसताने के अलावा और कुछ न होगा।” 18 और याकूब सुध — सर्वे उठा, और उस पथर की जिसे उसने अपने सरहने रखवा था लेकर सुत्तन की तरह खड़ा किया और उसके सिरे पर तेल डाला। 19 और उस जगह का नाम बैतूल रखवा, लेकिन पहले उस बस्ती का नाम लज़ था। 20 और याकूब ने मन्त्र मानी और कहा कि अगर खुदा मेरे साथ रहे, और जो सफर मैं कर रहा हूँ उसमें मेरी हिफाजत करे, और मुझे खाने को रोटी और पहनने की कपड़ा देता रहे, 21 और मैं अपने बाप के घर सलामत लौट आऊँ; तो खुदावन्द मेरा खुदा होगा। 22 और यह पथर जो मैंने सुत्तन सा खड़ा किया है, खुदा का घर होगा; और जो कुछ तू मुझे दे उसका दस्वाँ हिस्सा ज़सर ही तुझे दिया करँगा।

29 और याकूब आगे चल कर मशरिकी लोगों के मूल्क में पहुँचा। 2

और उसने देखा कि मैदान में एक कुआँ है और कुँए के नज़दीक भेड़ बकरियों के तीन रेवड़ बैठे हैं; क्यूँकि चरवाहे इसी कुँए से रेवड़ों को पानी पिलाते थे और कुँए के मुँह पर एक बड़ा पथर रखवा रहता था। 3 और जब सब रेवड़ बहाँ इकहोंते थे, तब वह उस पथर को कुँए के मुँह पर से ढलकाते और भेड़ों को पानी पिला कर उस पथर को रख देते थे। 4 तब याकूब ने उनसे कहा, “ऐ मेरे भाइयों, तुम कहाँ के हो?” उन्होंने कहा, “हम हारान के हैं।” 5 फिर उसने पूछा कि तुम नहर के बेटे लाबन से वाकिफ़ हो? उन्होंने कहा, हम वाकिफ़ हैं। 6 उसने पूछा, “क्या वह खैरियत से है?” उन्होंने कहा, “खैरियत से है, और वह देख, उसकी बेटी राखिल भेड़ बकरियों के साथ चली आती है।” 7 और उसने कहा, देखो, अभी तो दिन बहत है, और चौपायों के जमा’ होने का बक्तव नहीं। तुम भेड़ बकरियों को पानी पिला कर फिर चराने को ले जाओ। 8 उन्होंने कहा, “हम ऐसा नहीं कर सकते, जब तक कि सब रेवड़ जमा’ न हो जाएँ। तब हम उस पथर को कुँए के मुँह पर से ढलकाते हैं, और भेड़ बकरियों को पानी पिलाते हैं।” 9 वह उनसे बातें कर ही रहा था कि राखिल अपने बाप की भेड़ बकरियों के साथ आई, क्योंकि वह उनको चराया करती थी। 10 जब याकूब ने अपने मामूलाबन की बेटी राखिल को और अपने मामूलाबन के रेवड़ को देखा, तो वह नज़दीक गया और पथर को कुँए के मुँह पर से ढलकाकर अपने मामूलाबन के रेवड़ को पानी पिलाया। 11 और याकूब ने राखिल को चमा और जोर जोर से रोया। 12 और याकूब ने राखिल से कहा, कि मैं तेरे बाप का रिश्तेदार और रिब्का का बेटा हूँ। तब उसने दौड़ कर अपने बाप को खबर दी। 13 लाबन अपने भाजे की खबर पाते ही उससे मिलने को दौड़ा, और उसको गले लगाया और चूमा और उसे अपने घर लाया; तब उसने लाबन को अपना सारा हाल बताया। 14 लाबन ने उसे कहा, “तू वाक़ई मेरी ही और मेरा गोरत है।” फिर वह एक महीना उसके साथ रहा। 15 तब लाबन ने याकूब से कहा, “चूँकि तू मेरा रिश्तेदार है, तो क्या इसलिए लाजिम है कि तू मेरी खिदमत मुफ्त करे? इसलिए मुझे बता कि तेरी मजदूरी क्या होगी?” 16 और लाबन की दो बेटियाँ थीं, बड़ी का नाम लियाह और छोटी का नाम राखिल था। 17 लियाह की आर्थी भूमी लेकिन राखिल हसीन और खबरसूत थी। 18 और याकूब राखिल पर किंदा था, तब उसने कहा, “तेरी छोटी बेटी राखिल की खातिर मैं सात साल तेरी खिदमत करँगा।” 19 लाबन ने कहा, “उसे गैर आदीयों को देने की जगह तुझी को देना बेहतर है, तू मेरे पास रह।” 20 चुनाँचे याकूब सात

साल तक राखिल की खातिर खिदमत करता रहा लेकिन वह उसे राखिल की मुहब्बत की बजह से चन्द दिनों के बारबर मालूम हुए। 21 याकूब ने लाबन से कहा कि मेरी मुझ परी हो गई, इसलिए मेरी बीवी मुझे दे ताकि मैं उसके पास जाऊँ। 22 तब लाबन ने उस जगह के सब लोगों को बुला कर जमा किया और उनकी दावत की। 23 और जब शाम हो गई तो अपनी बेटी लियाह को उसके पास ले आया, और याकूब उससे हम आगोश हुआ। 24 और लाबन ने अपनी लौटी ज़िलफ़ा अपनी बेटी लियाह के साथ कर दी कि उसकी लौटी हो। 25 जब सुबह को मालूम हआ कि यह तो लियाह है, तब उसने लाबन से कहा, कि तूने मुझ से ये क्या किया? क्या मैंने जो तेरी खिदमत की, वह राखिल की खातिर न थी? फिर तूने क्यूँ मुझे थोका दिया? 26 लाबन ने कहा कि हमारे मुल्क में ये दस्तर नहीं के पहलौटी से पहले छोटी को ब्याह दें। 27 तब इसका हफ्ता पूरा कर दे, फिर हम दूसरी भी तुझे दे देंगे; जिसकी खातिर तुझे सात साल और मेरी खिदमत करनी होगी। 28 याकूब ने ऐसा ही किया, कि लियाह का हफ्ता पूरा किया; तब लाबन ने अपनी बेटी राखिल भी उसे ब्याह दी। 29 और अपनी लौटी बिल्हाह अपनी बेटी राखिल के साथ कर दी कि उसकी लौटी हो। 30 इसलिए वह राखिल से भी हम आगोश हुआ, और वह लियाह से ज्यादा राखिल को चाहता था; और सात साल और साथ रह कर लाबन की खिदमत की। 31 और जब खुदावन्द ने देखा कि लियाह से नफरत की गई, तो उसने उसका रिहम खोला, मगर राखिल बाँध रही। 32 और लियाह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, और उसने उसका नाम स्विन रखवा क्यूँकि उसने कहा कि खुदावन्द ने मेरा दुख देख लिया, इसलिए मेरा शौहर अब मुझे प्यार करेगा। 33 वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा कि खुदावन्द ने सुना कि मुझ से नफरत की गई, इसलिए उसने मुझे यह भी बख्खा। तब उसने उसका नाम शम्मौन रखवा। 34 और वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा, “अब इस बार मेरा शौहर को मुझ से लगान होगी, क्यूँकि उसने मेरे तीन बेटे हुए।” इसलिए उसका नाम लाली रखवा गया। 35 और वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा कि अब मैं खुदावन्द की हम्द करूँगी। इसलिए उसका नाम यहदाह रखवा। फिर उसके औलाद होने में देरी हुई।

30 और जब राखिल ने देखा कि याकूब से उसके औलाद नहीं होती तो राखिल को अपनी बहन पर रशक आया, तब वह याकूब से कहने लगी, “मुझे भी औलाद दे नहीं तो मैं मर जाऊँगी।” 2 तब याकूब का कहर राखिल पर भड़का और उस ने कहा, “क्या मैं खुदा की जगह हूँ जिसने तुझ को औलाद से महस्म रखवा है?” 3 उसने कहा, “देख, मेरी लौटी बिल्हाह हाज़िर है, उसके पास जा ताकि मेरे लिए उसके औलाद हो और वह औलाद मेरी ठहरे।” 4 और उसने अपनी लौटी बिल्हाह को उसे दिया कि उसकी बीवी बने, और याकूब उसके पास गया। 5 और बिल्हाह हामिला हुई, और याकूब से उसके बेटा हुआ। 6 तब राखिल ने कहा कि खुदा ने मेरा इन्साफ़ किया और मेरी फरियाद भी सुनी और मुझ को बेटा बख्खा। इसलिए उसने उसका नाम दान रखवा। 7 और राखिल की लौटी ज़िलफ़ा को लेकर याकूब को दिया कि उसकी बीवी बने। 10 और लियाह की लौटी ज़िलफ़ा को लेकर याकूब को दिया कि उसकी बीवी बने। 10 और लियाह की लौटी ज़िलफ़ा के भी याकूब से एक बेटा हुआ। 11 तब लियाह ने कहा, जहे — किस्मत! “तब उसने उसका नाम ज़इ रखवा। 12 लियाह की लौटी ज़िलफ़ा के याकूब से फिर एक बेटा हुआ। 13 तब लियाह ने

कहा, मैं खुश किस्मत हूँ: ‘औरतें मुझे खुश किस्मत कहेंगी।’” और उसने उसका नाम आशर रखवा। 14 और स्विन गेहूँ काटने के मौसम में घर से निकला और उसे खेत में मदुम गियाह मिल गए, और वह अपनी माँ लियाह के पास ले आया। तब राखिल ने लियाह से कहा कि अपने बेटे के मदुम गियाह में से मुझे भी कछ दे दे। 15 उसने कहा, “क्या ये छोटी बात है कि तूने मेरे शौहर को ले लिया, और अब व्या मेरे बेटे के मदुम गियाह भी लेना चाहती है?” राखिल ने कहा, “बस तो आज रात वह तेरे बेटे के मदुम गियाह की खातिर तेरे साथ सोएगा।” 16 जब याकूब शाम को खेत से आ रहा था तो लियाह आगे से उससे मिलने को गई और कहने लगी कि तुझे मेरा पास आना होगा, क्यूँकि मैंने अपने बेटे के मदुम गियाह के बदले तुझे मजदूरी पर लिया है। वह उस रात उरी के साथ सोया। 17 और खुदा ने लियाह की सुनी और वह हामिला हुई, और याकूब से उसके पाँचवां बेटा हुआ। 18 तब लियाह ने कहा कि खुदा ने मेरी मजदूरी मुझे तीन क्यूँकि मैंने अपने शौहर को अपनी लौटी दी। और उसने उसका नाम इश्कर रखवा। 19 और लियाह फिर हामिला हुई और याकूब से उसके छाता बेटा हुआ। 20 तब लियाह ने कहा कि खुदा ने अच्छा महर मुझे बख्खा; अब मेरा शौहर मेरे साथ रहेगा क्यूँकि मेरे उससे छ: बेटे हो चके हैं। इसलिए उसने उसका नाम ज़बूलून रखवा। 21 इसके बाद उसके एक बेटी हुई और उसने उसका नाम दीना रखवा। 22 और खुदा ने राखिल को याद किया, और खुदा ने उसकी सुन कर उसके रहम को खोला। 23 और वह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, तब उसने कहा कि खुदा ने मुझ से स्वाईं दूर की। 24 और उस ने उसका नाम यसुफ़ यह कह कर रखवा कि खुदा बन्द मुझ को एक और बेटा बख्खो। 25 और जब राखिल से यसुफ़ पैदा हुआ तो याकूब ने लाबन से कहा, “मुझ स्वस्त कर कि मैं ऐपने घर और अपने बतन को जाऊँ।” 26 मेरी बीवियाँ और मेरे बाल बच्चे जिनकी खातिर मैं ने तेरी खिदमत की है मेरे हवाले कर और मुझे जाने दे, क्यूँकि तू खुद जानता है कि मैंने तेरी कैसी खिदमत की है।” 27 तब लाबन ने उसे कहा, “अगर मुझ पर तेरे करम की नजर है तो यही रह क्यूँकि मैं जान गया हूँ कि खुदावन्द ने तेरी वजह से मुझ को बरकत बख्खी है।” 28 और यह भी कहा कि मुझ से तू अपनी मजदूरी ठहरा ले, और मैं तुझे दिया करूँगा। 29 उसने उसे कहा कि तू खुद जानता है कि मैंने तेरी कैसी खिदमत की है और तेरे जानवर मेरे साथ कैसे रहे। 30 क्यूँकि मेरे अपने घर और अपने बतन को जाऊँ। 31 उसने कहा, “तुझे मैं क्या दूँ?” याकूब ने कहा, “तू मुझे कुछ न देना, लेकिन अगर तू मेरे लिए एक काम कर दे तो मैं तेरी भेड — बकरियों को फिर चारांगा और उनकी निगहबानी करूँगा।” 32 मैं आज तेरी सब भेड — बकरियों में चक्कर लगाऊँगा, और जिनी भेड़े चितली और और जिनी बकरियाँ और चितली हों उन सबको अलग एक तरफ़ कर दूँगा, इन्ही को मैं अपनी मजदूरी ठहराता हूँ। 33 और आइन्दा जब कभी मेरी मजदूरी का हिसाब तेरे सामने ही तो मेरी सच्चाई अप मेरी तरफ़ से इस तरह बोल उठेगी, कि जो बकरियाँ चितली और नहीं और जो भेड़े काली नहीं अगर वह मेरे पास हों तो चुराई हुई समझी जाएँगी।” 34 लाबन ने कहा, “मैं राजी हूँ, जो तू कहे वही सही।” 35 और उसने उसी रोज धारीदार और बकरों की और सब चितली और बकरियों को जिम्मे कछ सफेदी थी, और तमाम काली भेड़ों को अलग करके उनकी अपने बेटों के हवाले किया। 36 और उसने अपने और याकूब के बीच तीन दिन के सफर का फासला ठहराया; और याकूब लाबन के बाकी रेबड़ों को चराने लगा। 37 और याकूब ने सफेदा और बादाम, और चिनार की ही ही छड़ियाँ लीं उनको छील छीलकर इस तरह गन्डेदार बना लिया के उन छड़ियों

की सफेदी दिखाई देने लगी। 38 और उसने वह गन्डेदार छाड़ियाँ भेड़ — बकरियों के सामने हैं जो और नालियों में जहाँ वह पानी पीने आती थीं खड़ी कर दी, और जब वह पानी पीने आई तब गाभिन हो गई। 39 और उन छाड़ियों के आगे गाभिन होने की वजह से उन्हें धारीदार, चितले और बच्चे दिए। 40 और यांकूब ने भेड़ बकरियों के उन बच्चों को अलग किया, और लाबन की भेड़ — बकरियों के मुँह धारीदार और कलै बच्चों की तरफ फेर दिए और उसने अपने बेड़ों को जुदा किया, और लाबन की भेड़ बकरियों में मिलने न दिया। 41 और जब मजबूत भेड़ — बकरियाँ गाभिन होती थीं तो यांकूब छाड़ियों को नालियों में उनकी आँखों के सामने रख देता था, ताकि वह उन छाड़ियों के आगे गाभिन हों। 42 लेकिन जब भेड़ बकरियाँ दुबली होती तो वह उनको वहाँ नहीं रखता था। इसलिए दुबली तो लाबन की रही और मजबूत यांकूब की हो गई। 43 चुनौती वह निहायत बढ़ता गया और उसके पास बहुत से रेवड़ और लैंडिया और नौकर चाकर और ऊँट और गधे हो गये।

31 और उसने लाबन के बेटों की यह बातें सुनी, कि यांकूब ने हमारे बाप का सब कुछ ले लिया और हमारे बाप के माल की बदौलत उसकी यह सारी शान — ओ — शौकत है। 2 और यांकूब ने लाबन के चेहरे को देख कर ताड़ लिया कि उसका सब पहले से बदला हुआ है। 3 और खुदावन्द ने यांकूब से कहा, कि त अपने बाप दादा के मुल्क को और अपने रिश्तेदारों के पास लौट जा, और मैं तेरे साथ रहँगा। 4 तब यांकूब ने राखिल और लियाह को मैदान में जहाँ उसकी भेड़ — बकरियाँ थीं खुलाया 5 और उनसे कहा, मैं देखता हूँ कि तुम्हारे बाप का सब पहले से बदला हुआ है, लेकिन मेरे बाप का खुदा मेरे साथ रहा। 6 तुम तो जानती हो कि मैंने अपनी ताकत के मुताबिक तुम्हारे बाप की खिदमत की है। 7 लेकिन तुम्हारे बाप ने मुझे धोका दे देकर दस बार मेरी मजदूरी बदली, लेकिन खुदा ने उसको मुझे नुकसान पहँचाने न दिया। 8 जब उसने यह कहा कि चितले बच्चे तेरी मजदूरी होंगे, तो भेड़ बकरियों चितले बच्चे देने लगी, और जब कहा कि धारीदार बच्चे तेरे होंगे, तो भेड़ — बकरियों ने धारीदार बच्चे दिए। 9 यूँ खुदा ने तुम्हारे बाप के जानवर लेकर मुझे दे दिए। 10 और जब भेड़ बकरियाँ गाभिन हुईं, तो मैंने खबाब में देखा कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं वो धारीदार, चितले और चितककरे हैं। 11 और खुदा के फरिश्ते ने खबाब में मुझ से कहा, ‘ऐ यांकूब!’ मैंने कहा, ‘मैं हाजिर हूँ। 12 तब उसने कहा कि अब तू अपनी आँख उठा कर देख, कि सब बकरे जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं धारीदार चितले और चितककरे हैं, क्यूँकि जो कुछ लाबन तुझ से करता है मैंने देखा। 13 मैं बैतेल का खुदा हूँ, जहाँ तूने सुन्न पर तेल डाला और मेरी मन्त मानी, इसलिए अब उठ और इस मुल्क से निकल कर अपने बतन को लौट जा।’ 14 तब राखिल और लियाह ने उसे जबाब दिया, “क्या, अब भी हमारे बाप के घर में कुछ हमारा खबरा या मीरास है? 15 क्या वह हम को अजनबी के बाबर नहीं समझता? क्यूँकि उन्हें हम को भी बेच डाला और हमारे सप्ते भी खा बैठा। 16 इसलिए अब जो दैलत खुदा ने हमारे बाप से ली वह हमारी और हमारे फर्जन्दों की है, फिर जो कुछ खुदा ने तुझ से कहा है वही कर।” 17 तब यांकूब ने उठ कर अपने बाल बच्चों और बीवियों को ऊँटों पर बिठाया। 18 और अपने सब जानवरों और माल — ओ — अस्त्राब को जो उसने इक्षा किया था, यांनी वह जानवर जो उसे फ़ज़ान — अराम में मजदूरी में मिले थे, लेकर चला ताकि मुल्क — ए — कनान में अपने बाप इस्हाक के पास जाए। 19 और लाबन अपनी भेड़ों की ऊन कतरने को गया हुआ था, तब राखिल अपने बाप के बुतों को चुरा ले गई। 20 और यांकूब लाबन अरामी के पास से चोरी से चला गया, क्यूँकि उसे उसने अपने भागने की खबर न दी। 21 फिर वह अपना सब कुछ लेकर भागा और दरिया पार होकर

अपना सब कोह — ए — जिलं आद की तरफ किया। 22 और तीसरे दिन लाबन की खबर हुई कि यांकूब भाग गया। 23 तब उसने अपने भाइयों को हमराह लेकर सात मञ्जिल तक उसका पीछा किया, और जिलं आद के पहाड़ पर उसे जा पकड़ा। 24 और रात को खुदा लाबन अरामी के पास खबाब में आया और उससे कहा कि खबरदार, तू यांकूब को बुरा या भला कुछ न कहना। 25 और लाबन यांकूब के बराबर जा पहुँचा और यांकूब ने अपना खेमा पहाड़ पर खड़ा कर रखवा था। इसलिए लाबन ने भी अपने भाइयों के साथ जिलं आद के पहाड़ पर डेरा लगा लिया। 26 तब लाबन ने यांकूब से कहा, कि तूने यह क्या किया कि मैंने पास से चोरी से चला आया, और मेरी बेटियों को भी इस तरह ले आया गोया वह तलवार से कैट की गई है? 27 तू छिप कर क्यूँ भागा और मैंने पास से चोरी से क्यूँ चला आया और मुझे कुछ कहा भी नहीं, बरना मैं तुझे खुशी — खुशी तबले और बरबत के साथ गाते बजाते रवाना करता? 28 और मुझे अपने बेटों और बेटियों को चम्मने भी न दिया? यह तने बेहदा काम किया। 29 मुझ में इतनी ताकत है कि तुम को दुख दूँ लेकिन तेरे बाप के खुदा ने कल रात मुझे यूँ कहा, कि खबरदार तू यांकूब को बुरा या भला कुछ न कहना। 30 खैर! अब तू चला आया तो चला आया क्यूँकि तू अपने बाप के घर का बहुत ख्वाहिश मन्द है, लेकिन मेरे देवताओं को क्यूँ चुरा लाया? 31 तब यांकूब ने लाबन से कहा, “इसलिए कि मैं डरा, क्यूँकि मैंने सोचा कि कहीं तू अपनी बेटियों को जबरन मझ से छीन न ले। 32 अब जिसके पास तुझे तेरे बूत मिलें वह ज़िन्दा नहीं बर्चेगा। तेरा जो कुछ मेरे पास निकले उसे इन भाइयों के आगे पहचान कर ले!” क्यूँकि यांकूब को मालूम न था कि राखिल उन देवताओं को चुरा लाई है। 33 चुनौती लाबन यांकूब और लियाह और दोनों लैंडियों के खिमों में गया लैंडियन उनको बहाँ न पाया, तब वह लियाह के खेमा से निकल कर राखिल के खेमे में दाखिल हुआ। 34 और राखिल उन बुतों को लेकर और उनकी ऊँट के कजावे में रख कर उन पर बैठ गई थी, और लाबन ने सारे खेमे में टटोल टटोल कर देख लिया पर उनको न पाया। 35 तब वह अपने बाप से कहने लगी, “ऐ मैं आका! तू इस बात से नाराज न होना कि मैं तेरे आगे उठ नहीं सकती, क्यूँकि मैं ऐसे हाल में हूँ जूँ ‘ओरतों का हुआ करता है।’” तब उसने ढंडा पर वह बुत उसको न मिले। 36 तब यांकूब ने गुस्सा होकर लाबन को मलामत की और यांकूब लाबन से कहने लगा कि मेरा क्या जुर्म और क्या कुसर है कि तूने ऐसी तेजी से मेरा पीछा किया? 37 तूने जो मेरा सारा सामान टटोल — टटोल कर देख लिया तो तुझे तेरे घर के सामान में से क्या चीज मिली? अगर कुछ है तो उसे मेरे और अपने इन भाइयों के आगे रख, कि वह हम दोनों के बीच इन्साफ करें। 38 मैं पूरे बीस साल तेरे साथ रहा; न तो कभी तेरी भेड़ों और बकरियों का गाभ गिरा, और न तेरे रेवड़ के मेंडे मैंने खेए था। 39 जिसे दरिन्दों ने फ़ाड़ा मैं उसे तेरे पास न लाया, उसका नुकसान मैंने सहा; जो दिन की या रात को चोरी गया उसे तुम मुझ से तलब किया। 40 मेरा हाल यह रहा कि मैं दिन को गर्मी और रात को सर्दी में मरा और मेरी आँखों से नीद दूर रहती थी। 41 मैं बीस साल तक तेरे घर में रहा, चौदह साल तक तो मैंने तेरी दोनों बेटियों की खातिर और छँ: साल तक तेरी भेड़ बकरियों की खातिर तेरी खिदमत की, और तूने दस बार मेरी मजदूरी बदल डाली। 42 अगर मेरे बाप का खुदा अब्राहाम का मालूब जिसका रौब इस्हाक मानता था, मेरी रुक़ान होता तो जरूर ही तू अब मुझे खाली हाथ जाने देता। खुदा ने मेरी मुसीबत और मेरे हाथों की मेहनत देखी है और कल रात तुझे डॉटा थी। 43 तब लाबन ने यांकूब को जबाब दिया, यह बेटियाँ भी मेरी और यह लड़के भी मेरे और यह भेड़ बकरियाँ भी मेरी हैं, बकिं जो कुछ तुझे दिखाया है वह सब मेरा ही है। इसलिए मैं आज के दिन अपनी ही बेटियों से या उनके लड़कों से जो उनके हुए क्या कर

सकता है? 44 फिर अब आ, कि मैं और तू दोनों मिल कर आपस में एक 'अहंद बॉय्स और वही मेरे और तेरे बीच गवाह हो। 45 तब या'कूब ने एक पत्थर लेकर उसे सुतन की तरह खड़ा किया। 46 और या'कूब ने अपने भाइयों से कहा, पत्थर जमा' करो! 'उन्होंने पत्थर जमा' करके ढेर लगाया और वही उस ढेर के पास उन्होंने खाना खाया। 47 और लाबन ने उसका नाम यज्ञ शाहदूथ और या'कूब ने जिला'आद रख्खा। 48 और लाबन ने कहा कि यह ढेर आज के दिन मेरे और तेरे बीच गवाह हो। इसी लिए उसका नाम जिला'आद रख्खा गया। 49 और मिस्फ़ाह भी क्यूंकि लाबन ने कहा कि जब हम एक दूसरे से गैर हाज़िर हो तो खुदावन्द मेरे और तेरे बीच निगरानी करता हो। 50 अगर तू मेरी बेटियों को दूख दे और उनके अलावा और बीवियाँ करे तो कोई आदमी हमारे साथ नहीं है लेकिन देख खुदा मेरे और तेरे बीच में गवाह है। 51 लाबन ने या'कूब से यह भी कहा कि इस ढेर को देख और उस सुतन को देख जो मैंने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है। 52 यह ढेर गवाह हो और ये सुतन गवाह हो, नुकसान पहुँचने के लिए न तो मैं इस ढेर से उधर तेरी तरफ हट से बढ़ूँ और न तू इस ढेर और सुतन से इधर मेरी तरफ हट से बढ़े। 53 अब्रहाम का खुदा और नहर का खुदा और उनके बाप का खुदा हमारे बीच में इस्साक करे।" और या'कूब ने उस जात की कसम खाई जिसका रौब उसका बाप इस्साक मानता था। 54 तब या'कूब ने वही पहाड़ पर कुर्बानी पेश की और अपने भाइयों को खाने पर बुलाया, और उन्होंने खाना खाया और रात पहाड़ पर काटी। 55 और लाबन सबह — सर्वे उठा और अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमा और उनको दुआ देकर रवाना हो गया और अपने मकान को लौटा।

32 और या'कूब ने भी अपनी राह ली और खुदा के फरिशता उसे मिले।

2 और या'कूब ने उनको देख कर कहा, कि यह खुदा का लक्षक है और उस जगह का नाम महनाइम रख्खा। 3 और या'कूब ने अपने आगे — आगे कासिदों को अदोम के मूलक को, जो शाईर की सर — ज़मीन में है, अपने भाई 'ऐसौ के पास भेजा, 4 और उनको हुक्म दिया, कि तुम मेरे खुदावन्द 'ऐसौ से यह कहना कि आपका बन्दा या'कूब कहता है, कि मैं लाबन के वहाँ मूकीया था और अब तक वही रहा। 5 और मेरे पास गया बैल गधे और भेड़ बकरियाँ और नौकर चाकर और लौटियों हैं और मैं अपने खुदावन्द के पास इस्लिए खबर भेजता हूँ कि मुझे पर आप के करम की नजर हो 6 फिर कासिद या'कूब के पास लौट कर आए और कहने लगे कि हम भाई 'ऐसौ के पास गए थे; वह चार सौ आदिमियों को साथ लेकर तेरी मूलाकात को आ रहा है 7 तब या'कूब निहायत डर गया और परेशान हो और उस ने अपने साथ के लोगों और भेड़ बकरियों और गाये बैलों और ऊँटों के दो गोल किए 8 और सोचा कि 'ऐसौ एक गोल पर आ पड़े और उसे मारे तो दुसरा गोल बच कर भाग जाएगा 9 और या'कूब ने कहा ऐ मेरे बाप अब्रहाम के खुदा और मेरे बाप इस्साक के खुदा! ऐ खुदावन्द जिस ने मुझे यह फरमाया कि तू अपने मूलक को अपने रिश्तेदारों के पास लौट जा और मैं तेरे साथ भलाई करूँगा 10 मैं तेरी सब रहमतों और वफादारी के मुकाबला में जो तुमे अपने बन्दा के साथ बरती है बिल्कुल हेच हूँ क्यूंकि मैं सिर्फ़ अपनी लाठी लेकर इस यरदन के पार गया था और अब ऐसा हूँ कि मेरे दो गोल हैं 11 मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे मेरे भाई 'ऐसौ के हाथ से बचा ले क्यूंकि मैं उस से डरता हूँ कि कहीं वह आकर मुझे और बच्चों को माँ समेत मार न डाले 12 यह तेरा ही फरमान है कि मैं तेरे साथ जस्तर भलाई करूँगा और तेरी नसल को दरिया की रेत की तरह बनाऊँगा जो कसरत की वजह से गिरी नहीं जा सकती। 13 और वह उस रात वही रहा और जो उसके पास था उस में से अपने भाई 'ऐसौ के लिए यह नजराना लिया। 14 दो सौ बकरियाँ और बीस बकरे; दो सौ भेड़ और बीस मैंडे। 15 और तीस दूध देने वाली ऊँटनीयाँ बच्चों

समेत और चालीस गाय और दस बैल बीस गधियाँ और दस गधे 16 और उनको जुदा — जुदा गोल कर के नौकरों को सौपना और उन से कहा कि तुम मेरे आगे आगे पार जाओ और गोलों को जरा दूर दूर रखना। 17 और उनसे सब से अगले गोल के रखवालों को हुक्म दिया कि जब मेरा भाई 'ऐसौ तुझे मिले और तुझ से पूछे कि तू किस का नौकर है और कहाँ जाता है और यह जानवर जो तेरे आगे आगे हैं किस के हैं? 18 तू कहना कि यह तेरे खादिम या'कूब के हैं, यह नजराना है जो मेरे खुदावन्द 'ऐसौ के लिए भेजा गया है और वह खुद भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है। 19 और उस ने दसरे और तीसरे को गोलों के सब रखवालों को हुक्म दिया कि जब 'ऐसौ तुमको मिले तो तुम यही बात कहना। 20 और यह भी कहना कि तेरा खादिम या'कूब खुद भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है, उस ने यह सोचा कि मैं इस नजराना से जो मुझ से पहले वहाँ जायेगा उसे खुश कर लूँ तब उस का मुँह देखँगा, शायद यूँ बह मुझको कुबूल कर ले। 21 चूँचे वह नजराना उसके आगे आगे पार गया लेकिन वह खुद उस रात अपने डोंगे में रहा। 22 और वह उत्तीर रात उठा और अपनी दोनों बीवियों दोनों लौटियों और ग्याह बेटों को लेकर उनको यबूक के घाट से पार उतारा। 23 और उनको लेकर नदी पार कराया और अपना सब कुछ पार भेज दिया। 24 और या'कूब अकेला रह गया और पौ फटने के बक्त तक एक शख्स वहाँ उस से कुर्ती लड़ता रहा। 25 जब उसने देखा कि वह उस पर गालिब नहीं होता, तो उसकी रान को अन्दर की तरफ से छुआ और या'कूब की रान की नस उसके साथ कुश्ती करने में चढ़ गई। 26 और उसने कहा, "मुझे जाने दे क्यूंकि पौ फट चली," या'कूब ने कहा, "जब तक तू मझे बरकत न दे, मैं तुझे जाने नहीं दूँगा।" 27 तब उसने उससे पूछा, तेरा क्या नाम है? उसने जवाब दिया, "या'कूब।" 28 उसने कहा, "तेरा नाम आगे को या'कूब नहीं बल्कि इस्माइल होगा, क्यूंकि तूने खुदा और आदिमियों के साथ जोर आजामाई की और गालिब हुआ।" 29 तब या'कूब ने उससे कहा, "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, तू मुझे अपना नाम बता दो।" उसने कहा, "तू मेरा नाम क्यूँ पूछता है?" और उसने उसे वहाँ बरकत दी। 30 और या'कूब ने उस जगह का नाम फनीएल रख्खा और कहा, "मैंने खुदा को आमने सामने देखा, तो भी मेरी जान बची रही।" 31 और जब वह फनीएल से गुज़र रहा था तो आफताब तून् हुआ और वह अपनी रान से लंगडाता था। 32 इसी बजह से बनी इस्माइल उस नस की जो रान में अन्दर की तरफ है आज तक नहीं खाते, क्यूंकि उस शख्स ने या'कूब की रान की नस को जो अन्दर की तरफ से चढ़ गई थी दूर दिया था।

33 और या'कूब ने अपनी आँखें उठा कर नजर की और क्या देखता है कि

'ऐसौ चार सौ आदमी साथ लिए चला आ रहा है। तब उसने लियाह और राखिल और दोनों लौटियों को बच्चे बॉट दिए। 2 और लौटियों और उनके बच्चों को सबसे आगे, और लियाह और उसके बच्चों को पीछे, और राखिल और यूसुफ़ को सबसे पीछे रख्खा। 3 और वह खुद उनके आगे — आगे चला और अपने भाई के पास पहुँचते — पहुँचते सात बार ज़मीन तक झुका। 4 और 'ऐसौ उससे मिलने को दौड़ा, और उससे बगलागीर हुआ और उसे गले लगाया और चूमा, और वह दोनों रोए। 5 फिर उसने आँखें उठाई और 'औरतों और बच्चों को देखा और कहा कि यह तेरे साथ कौन है? उसने कहा, "यह वह बच्चे हैं जो खुदा ने तेरे खादिम को इनायत किए हैं।" 6 तब लौटियों और उनके बच्चे नजदीक आए और अपने आप को झुकाया। 7 फिर लियाह अपने बच्चों के साथ नजदीक आई और वह झुके, आखिर को यूसुफ़ और राखिल पास आए और उन्होंने अपने आप को झुकाया। 8 फिर उसने कहा कि उस बड़े गोल से जो मुझे मिला तेरा क्या मतलब है? उसने कहा, यह कि मैं अपने खुदावन्द की नजर में मक्कूल ठहरूँ। 9 तब 'ऐसौ ने कहा, "मैं पास बहुत हैं; इसलिए ऐ मेरे

भाई जो तेरा है वह तेरा ही रहे।” 10 याकूब ने कहा, “नहीं अगर मुझ पर तेरे करम की नजर हुई है तो मेरा नजराना मेरे साथ से कुबल कर, क्यूंकि मैंने तो तेरा मँह ऐसा देखा जैसा कोई खुदा का मँह देखता है, और तू मुझ से राजी हुआ। 11 इसलिए मेरा नजराना जो तेरे सामने पेश हुआ उसे कुबल कर ले, क्यूंकि खुदा ने मुझ पर बड़ा फ़ज़ल किया है और मेरे पास सब कुछ है।” गर्ज उसने उसे मजबूर किया, तब उसने उसे ले लिया। 12 और उसने कहा कि अब हम कूच करें और चल पड़ें, और मैं तेरे आगे — आगे हो लौंगा। 13 उसने उसे जबाब दिया, “मेरा खुदावन्द जानता है कि मेरे साथ नाज़ुक बच्चे और दूध पिलाने वाली भेड़ — बकरियाँ और गाय हैं। अगर उनकी एक दिन भी हद से ज्यादा हँकाँते सब भेड़ बकरियाँ मर जाएँगी। 14 इसलिए मेरा खुदावन्द अपने खादिम से पहले रवाना हो जाए, और मैं चौपायां और बच्चों की रफ़तार के मुताबिक आहिस्ता — आहिस्ता चलता हुआ अपने खुदावन्द के पास शाईर में आ जाऊँगा।” 15 तब ऐसौ ने कहा कि मर्जी हो तो मैं जो लोग मेरे साथ हूँ उम्मे से थोड़े तो साथ छोड़ता जाऊँ। उसने कहा, इसकी क्या ज़स्त है? मेरे खुदावन्द की नजर — ए — करम मेरे लिए काफ़ी है। 16 तब ऐसौ उसी रोज़ उल्टे पाँव शाईर को लौटा। 17 और याकूब सफ़र करता हुआ सुकूत में आया, और अपने चौपायां के लिए झोपड़े खड़े किए। इसी वजह से इस जगह का नाम सुकूत पड़ गया। 18 और याकूब जब फ़दान अराम से चला तो मुल्क — ए — कनान के एक शहर सिकम के नजदीक सही — ओ — सलामत पहुँचा और उस शहर के सामने अपने दो लगाए। 19 और ज़रीन के जिस हिस्से पर उसने अपना खेमा खड़ा किया था, उसे उसने सिकम के बाप हमोर के लड़कों से चाँदी के सौ सिक्के देकर खरीद लिया। 20 और वहाँ उस ने खुदा, के लिए एक मसबह बनाया और उसका नाम एल — इलाह — ए — इमाइल रख्खा।

34 और लियाह की बेटी दीना जो याकूब से उसके पैदा हुई थी, उस मुल्क की लड़कियों के देखने को बाहर गई। 2 तब उस मुल्क के अमीर हब्बी हमोर के बेटे सिकम ने उसे देखा, और उसे ले जाकर उसके साथ मुबाश्त की और उसे ज़रीन किया। 3 और उसका दिल याकूब की बेटी दीना से लग गया, और उसने उस लड़की से इक्ष में मीठी — मीठी बातें की। 4 और सिकम ने अपने बाप हमोर से कहा कि इस लड़की को मेरे लिए ब्याह ला दे। 5 और याकूब को मालूम हुआ कि उसने उसकी बेटी दीना को बे इज़जत किया है। लेकिन उसके बेटे चौपायां के साथ ज़गल में थे इसलिए याकूब उनके अपने तक चुपका रहा। 6 तब सिकम का बाप हमोर निकल कर याकूब से बातचीत करने को उसके पास गया। 7 और याकूब के बेटे यह बात सुनते ही ज़ंगल से आए। यह शख्स बड़े नाराज और खौफनाक थे, क्यूंकि उसने जो याकूब की बेटी से मुबाश्त की तो बनी — इमाइल में ऐसा मकर्स्ह फेल किया जो हरगिज़ मनासिब न था। 8 तब हमोर उन से कहने लगा कि मेरा बेटा सिकम तुम्हारी बेटी को दिल से चाहता है, उसे उसके साथ ब्याह दो। 9 हम से समर्थियाना कर लो; अपनी बेटियाँ हम को दो और हमारी बेटियाँ आप लो। 10 तो तुम हमोर साथ बसे रहोगे और यह मुल्क तुम्हारे सामने है, इसमें ठहरना और तिजारत करना और अपनी जायदादें खड़ी कर लेना। 11 और सिकम ने इस लड़की के बाप और भाइयों से कहा, कि मुझ पर बस तुम्हारे करम की नजर हो जाए, फिर जो कुछ तुम मुझ से कहोगे मैं दूँगा। 12 मैं तुम्हारे कहने के मुताबिक जितना मेहर और जहेज़ तुम मुझ से तलब करो, दूँगा लेकिन लड़की को मुझ से ब्याह दो। 13 तब याकूब के बेटों ने इस वजह से कि उसने उनकी बहन दीना को बे इज़जत किया था, रिया से सिकम और उसके बाप हमोर को जबाब दिया, 14 और कहने लगे, “हम यह नहीं कर सकते कि नामङ्गन आदमी को अपनी बहन दें, क्यूंकि

इसमें हमारी बड़ी स्वाई है। 15 लेकिन जैसे हम हैं अगर तुम कैसे ही हो जाओ, कि तुम्हारे हर आदमियों का खतना कर दिया जाए तो हम राजी हो जाएँगे। 16 और हम अपनी बेटियाँ तुहे देंगे और तुम्हारी बेटियाँ लेंगे और तुम्हारे साथ रहेंगे और हम सब एक कौम हो जाएँगे। 17 और अगर तुम खतना कराने के लिए हमारी बात न मानी तो हम अपनी लड़की लेकर चले जाएँगे।” 18 उनकी बातें हमोर और उसके बेटे सिकम को पसन्द आई। 19 और उस जवान ने इस काम में ताथीर न की क्यूंकि उसे याकूब की बेटी की चाहत थी, और वह अपने बाप के सारे घराने में सबसे खास था। 20 फिर हमोर और उसका बेटा सिकम अपने शहर के फाटक पर गए और अपने शहर के लोगों से यूँ बातें करने लगे कि, 21 यह लोग हम से मेल जोल रखते हैं; तब वह इस मुल्क में रह कर सौदागरी करें, क्यूंकि इस मुल्क में उनके लिए बहत गुन्जाइश है, और हम उनकी बेटियाँ ब्याह लें और अपनी बेटियाँ उनकी दें। 22 और वह भी हमारे साथ रहने और एक कौम बन जाने को राजी है, मार सिर्फ़ इस शर्त पर कि हम में से हर आदमी का खतना किया जाए जैसा उनका हुआ है। 23 क्या उनके चौपाएँ और माल और सब जानवर हमारे न हो जाएँगे? हम सिर्फ़ उनकी मान लें और वह हमारे साथ रहने लगेंगे। 24 तब उन सभों ने जो उसके शहर के फाटक से आया — जाया करते थे, हमोर और उसके बेटे सिकम की बात मानी और जितने उसके शहर के फाटक से आया — जाया करते थे उनमें से हर आदमी ने खतना कराया। 25 और तीसरे दिन जब वह दर्द में मुबिला थे, तो यूँ हुआ कि याकूब के बेटों में से दीना के दो भाई, शमैन और लाली, अपनी अपनी तलवार लेकर अचानक शहर पर आ पड़े और सब आदमियों को कत्ल किया। 26 और हमोर और उसके बेटे सिकम को भी तलवार से कत्ल कर डाला और सिकम के घर से दीना को निकाल ले गए। 27 और याकूब के बेटे मक्तुलों पर आए और शहर को लटा, इसलिए कि उन्होंने उनकी बहन को बे इज़जत किया था। 28 उन्होंने उनकी भेड़ — बकरियाँ और गाय — बैल, गधे और जो कुछ शहर और खेत में था ले लिया। 29 और उनकी सब दौलत लटी और उनके बच्चों और बीवियों को करजे में कर लिया, और जो कुछ घर में था सब लट — घस्ट कर ले गए। 30 तब याकूब ने शमैन और लाली से कहा, कि तुम ने मुझे कुदाया क्यूंकि तुम ने मुझे इस मुल्क के बाशिनों, यानी कनानियों और फ़रिज़ियों में नफरतअंगेज बना दिया, क्यूंकि मेरे साथ तो थोड़े ही आदमी हैं; अब वह मिल कर मेरे मुकाबिले को आएँगे और मुझे कत्ल कर देंगे, और मैं अपने घराने समेत बर्बाद हो जाऊँगा। 31 उन्होंने कहा, “तो क्या उसे मुनासिब था कि वह हमारी बहन के साथ कसबी की तरह बर्ताव करता?”

35 और खुदा ने याकूब से कहा, कि उठ बैतैल को जा और वही रह और वहाँ खुदा के लिए, जो तुम्हे उस वक्त दिखाई दिया जब तु अपने भाई ऐसों के पास से भागा जा रहा था, एक मजबूर बना। 2 तब याकूब ने अपने घराने और अपने सब साथियों से कहा “गैर मांबूदों को जो तुम्हारी बीच हैं दूर करो, और पाकी हासिल करके अपने कपड़े बदल डालो। 3 और आओ, हम रवाना हों और बैत — एल को जाएँ, वहाँ मैं खुदा के लिए जिसने मेरी तरी के दिन मेरी दूआ कुबल की और जिस राह में मैं चला थे साथ रहा, मजबूर बना जाऊँगा।” 4 तब उन्होंने सब गैर मांबूदों को जो उनके पास थे और मुन्दरों को जो उनके कानों में थे, याकूब को दे दिया और याकूब ने उनको उस बलूत के दरखत की नीचे जो सिकम के नजदीक था दबा दिया। 5 और उन्होंने कूच किया और उनके आस पास के शहरों पर ऐसा बड़ा खौफ़ छाया हुआ था कि उन्होंने याकूब के बेटों का पीछा न किया। 6 और याकूब उन सब लोगों के साथ जो उसके साथ थे लूँग पहुँचा, बैत — एल यही है और मुल्क — ए — कनान में है। 7 और उसने वहाँ मजबूर बनाया और उस मुकाम का नाम एल

— बैतेल रख्खा, क्यैंकि जब वह अपने भाई के पास से भागा जा रहा था तो खुदा वही उस पर जाहिर हुआ था। 8 और रिक्का की दाया दबोरा मर गई और वह बैतेल की उतराई में बलूत के दरखत के नीचे दफन हुई, और उस बलूत का नाम अल्लोन बक्त रख्खा गया। 9 और या'कूब के फ़दान अराम से अने के बाद खुदा उसे फिर दिखाई दिया और उसे बरकत बख्खी। 10 और खुदा ने उसे कहा कि तेरा नाम या'कूब है, तेरा नाम अगे को या'कूब न कहलाएगा, बल्कि तेरा नाम इमाइल होगा। तब उसने उसका नाम इमाइल रख्खा। 11 फिर खुदा ने उसे कहा, कि मैं खुदा — ए — कादिर — ए — मुलक हूँ, तू कामयाब हो और बहुत हो जा। तुझ से एक कौम, बल्कि कौमों के कबीले पैदा होंगे और बादशाह तेरे सुल्ब से निकलेंगे। 12 और यह मुल्क जो मैंने अब्राहाम और इस्हाक को दिया है, वह तुझ को दूँगा और तेरे बाद तेरी नस्त को भी यही मुल्क दूँगा। 13 और खुदा जिस जगह उससे हम कलाम हुआ, वही से उसके पास से ऊपर चला गया। 14 तब या'कूब ने उस जगह जहाँ वह उससे हम — कलाम हुआ, पत्थर का एक सुन्तुन खड़ा किया और उस पर तपावन किया और तेल डाला। 15 और या'कूब ने उस मकाम का नाम जहाँ खुदा उससे हम कलाम हुआ बैतेलन रख्खा। 16 और वह बैतेल से चले और इफ़रात थोड़ी ही दूर रह गया था कि राखिल के दर्द — ए — ज़िह लगा, और वज़ा' — ए — हम्ल में निहायत दिक्कत हुई। 17 और जब वह सरखत दर्द में मुल्लिता थी तो दाइ ने उससे कहा, “डर मत, अब के भी तेरे बेटा ही होगा।” 18 और यूँ हुआ कि उसने मरते — मरते उसका नाम बिनज़नी रख्खा और मर गई, लेकिन उसके बाप की हलात हम के रास्ते में दफन हुई। 20 और या'कूब ने उसकी कब्र पर एक सुन्तुन खड़ा कर दिया। राखिल की कब्र का यह सुन्तुन आज मौजूद है। 21 और इमाइल अगे बढ़ा और 'अद' के बुर्ज की परली तरफ अपना डेरा लगाया। 22 और इमाइल के उस मुल्क में रहते हुए ऐसा हुआ कि स्विन ने जाकर अपने बाप की हरप बिलहान से बुक्षात्र की और इमाइल को यह मालाम हो गया। 23 उस वक्त या'कूब के बारह बेटे थे लियाह के बेटे यह थे: स्विन या'कूब का पहलौठा, और शमैन और लावी और यहदाह, इश्कार और जबलून। 24 और राखिल के बेटे: यसुफ और बिनयमीन थे। 25 और राखिल की लौड़ी बिलहान के बेटे, दान और नफताली थे। 26 और लियाह की लौड़ी जिलफ़ा के बेटे, ज़द और आशर थे। यह सब या'कूब के बेटे हैं जो फ़दान अराम में पैदा हुए। 27 और या'कूब मरते में जो करयत अरबा' या'नी हब्सन है जहाँ अब्राहाम और इस्हाक ने डेरा किया था, अपने बाप इस्हाक के पास आया। 28 और इस्हाक एक सौ अस्सी साल का हुआ। 29 तब इस्हाक ने दम छोड़ दिया और वकात पाई और बढ़ा और पूरी उम्र का हो कर अपने लोगों में जा मिला, और उसके बेटों 'ऐसौ और या'कूब ने उसे दफन किया।

36 और 'ऐसौ या'नी अदोम का नसबनामा यह है। 2 'ऐसौ कना'नी लड़कियों में से हिनी ऐलोन की बेटी 'अदा' को, और हब्बी सबा' ओन की नवारी और 'अना की बेटी ओहलीबामा की, 3 और इमाइल की बेटी और नबायोत की बहन बशामा को ब्याह लाया। 4 और 'ऐसौ से 'अदा' के इलिफ़ज़ पैदा हुआ, और बशामा के 'र'ऊल ऐसा हुआ, 5 और ओहलीबामा के य'ओस और यालाम और कोरह पैदा हुए। यह 'ऐसौ के बेटे हैं जो मुल्क — ए — कना'न में पैदा हुए। 6 और 'ऐसौ अपनी बीवियों और बेटे बेटियों और अपने घर के सब नौकर चाकरों और अपने चौपायों और तमाम जानवरों और अपने सब माल अस्बाब को, जो उसने मुल्क ए — कना'न में जमा' किया था, लेकर अपने भाई या'कूब के पास से एक दूसरे मुल्क को चला गया। 7 क्यैंकि उनके पास इस कदर सामान हो गया था कि वह एक जगह रह नहीं सकते थे, और उनके चौपायों

की कसरत की वजह से उस ज़मीन में जहाँ उनका कथाम था गुंजाइश न थी। 8 तब 'ऐसौ जिसे अदोम भी कहते हैं, कोह — ए — शाईर में रहने लगा। 9 और 'ऐसौ का जो कोह — ए — शाईर के अदोमियों का बाप है यह नसबनामा है। 10 'ऐसौ के बेटों के नाम यह हैं: इलिफ़ज़, 'ऐसौ की बीवी 'अदा' का बेटा; और 'र'ऊल, 'ऐसौ की बीवी बशामा का बेटा। 11 इलिफ़ज़ के बेटे, तेमान और ओमर और सफी और जांताम और कनज थे। 12 और तिमाना' 'ऐसौ के बेटे इलिफ़ज़ की हरम थी, और इलिफ़ज़ से उसके 'अमालीक पैदा हुआ; और 'ऐसौ की बीवी 'अदा' के बेटे यह थे। 13 'र'ऊल के बेटे यह है: नहत और जारह और सम्मा और मिज़ा, यह 'ऐसौ की बीवी बशामा के बेटे थे। 14 और ओहलीबामा के बेटे, जो 'अना की बेटी सबा' ओन की नवासी और 'ऐसौ की बीवी थी, यह है: 'ऐसौ से उसके य'ओस और यालाम और कोरह पैदा हुए। 15 और 'ऐसौ की ओलाद में जो रईस थे वह यह है: 'ऐसौ के पहलौटे बेटे इलिफ़ज़ की ओलाद में रईस तेमान, रईस ओमर, रईस सफी, रईस कनज, 16 रईस कोरह, रईस जांताम, रईस 'अमालीक। यह वह रईस है जो इलिफ़ज़ से मुल्क — ए — अदोम में पैदा हुए और 'अदा' के फ़ज़न्द थे। 17 और 'र'ऊल — बिन 'ऐसौ के बेटे यह है: रईस नहत, रईस जारह, रईस सम्मा, रईस मिज़ा। यह वह रईस है जो 'र'ऊल से मुल्क — ए — अदोम में पैदा हुए और 'ऐसौ की बीवी बशामा के फ़ज़न्द थे। 18 और 'ऐसौ की बीवी ओहलीबामा की ओलाद यह है: रईस या'कूस, रईस यालाम, रईस कोरह। यह वह रईस है जो 'ऐसौ की बीवी उहलीबामा बिन्त 'अना के फ़ज़न्द थे। 19 और 'ऐसौ या'नी अदोम की ओलाद और उनके रईस यह हैं। 20 और शाईर होरी के बेटे जो उस मुल्क के बाशिन्दे थे, यह है: लोपान और सोबल और सबा' ओन और 'अना 21 और दीसोन और एसर और दीसान; बनी 'शाईर में से जो होरी रईस मुल्क — ए — अदोम में हुए थे हैं। 22 होरी और हीमाम लोतान के बेटे, और तिमाना लोतान की बहन थी। 23 और यह सोबल के बेटे हैं: 'अलवान और मानहत और एबाल और सफी और ओनाम। 24 और सबा' ओन के बेटे यह है: अय्याह और 'अना; यह वह 'अना है जिसे अपने बाप के गधों को बीराने में चराते वक्त गर्म चश्मे मिले। 25 और 'अना की ओलाद यह है: दीसोन और ओहलीबामा बिन्त 'अना। 26 और दीसोन के बेटे यह है: हमदान और इशबान और यिनान और किरान। 27 यह एसर के बेटे हैं: बिलहान और जावान और 'अकान। 28 दीसान के बेटे यह है: 'ऊँज़ और इरान। 29 जो होरियों में से रईस हुए वह यह है: रईस 'लुतान, रईस, सोबल 'रईस सबा'उन और रईस 'अना, 30 रईस दीसोन, रईस एसर, रईस दीसान; यह उन होरियों के रईस है जो मुल्क — शाईर में थे। 31 यही वह बादशाह है, जो मुल्क — ए — अदोम से पहले उससे कि इमाइल का कोई बादशाह हो, मुसल्लत थे। 32 बाला' — बिनब' और अदोम में एक बादशाह था, और उसके शहर का नाम दिन्हाबा था। 33 बाला' मर गया और यूबाब — बिन जागह जो बुसराही था, उसकी जगह बादशाह हुआ। 34 फिर यूबाब मर गया और हुरीम जो तेमानियों के मुल्क का बाशिन्दा था, उसका जानशीन हुआ। 35 और हुरीम मर गया और हदर — बिन — बदत जिसने मोआब के मैदान में मिदियनियों को मारा, उसका जानशीन हुआ और उसके शहर का नाम 'अवीत था। 36 और हदर मर गया और शम्ला जो मुसरिका का था उसका जानशीन हुआ। 37 और शम्ला मर गया और साउल उसका जानशीन हुआ ये रहबुत का था जो दिरियाई फुर्रीत के बराबर है। 38 और साउल मर गया और बा'लहनानिबन — 'अकबूर उसका जानशीन हुआ। 39 और बा'लहनान — बिन — 'अकबूर मर गया और हदर उसका जानशीन हुआ, और उसके शहर का नाम पाऊ और उसकी बीवी का नाम महेबाल था, जो मतरिद की बेटी और मेजाहाब की नवासी थी। 40 फिर 'ऐसौ के रईसों के नाम उनके खान्दानों और मकामों के मुताबिक यह

है: रईस, तिम्ना, रईस 'अलवा, रईस यतेत, 41 रईस ओहलीबामा, रईस ऐला, रईस फिनोन, 42 रईस कनज़, रईस तेमान, रईस मिक्सार, 43 रईस मज्दाएल, रईस इमाम; अदोम का रईस यही है, जिनके नाम उनके मक्खजा मुल्क में उनके घर के मुताबिक दिए गए हैं। यह हाल अदोमियों के बाप 'ऐसौ' का है।

37 और या'कूब मुल्क — ए — कना'न में रहता था, जहाँ उसका बाप

मुसाफिर की तरह रहा था। 2 या'कूब की नसल का हाल यह है: कि यूसुफ सत्रह साल की उम्र में अपने भाइयों के साथ भेड़ — बकरियाँ चाराया करता था। यह लड़का अपने बाप की बीवियों, बिल्हाह और ज़िल्फा के बेटों के साथ रहता था और वह उनके बुद्ध कामों की खबर बाप तक पहुँचा देता था। 3 और इस्माईल यूसुफ को अपने सब बेटों से ज्यादा प्यार करता था क्यूँकि वह उसके बुद्धपे का बेटा था, और उसने उसे एक बकलमून कबा भी बनवा दी। 4 और उसके भाइयों ने देखा कि उनका बाप उसके सब भाइयों से ज्यादा उसी को प्यार करता है, इसलिए वह उससे अदावत रखने लगे और तीक तौर से बात भी नहीं करते थे। 5 और यूसुफ ने एक खबाब देखा जिसे उसने अपने भाइयों को बताया, तो वह उससे और भी अदावत रखने लगे। 6 और उसने उनसे कहा, “ज़रा वह खबाब तो सनो, जो मैंने देखा है। 7 हम खेत में पूले बांधे थे और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला उठा और सीधा छड़ा हो गया, और तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को चारों तरफ से धेर लिया और उसे सिंज्दा किया।” 8 तब उसके भाइयों ने उससे कहा, कि क्या तु सचमुच हम पर सल्तनत करेगा या हम पर तेरा तसल्लुत होगा? और उन्होंने उसके खबाबों और उसकी बातों की बजह से उससे और भी ज्यादा अदावत रख दिया। 9 फिर उसने दूसरा खबाब देखा और अपने भाइयों को बताया। उसने कहा, “देखो! मुझे एक और खबाब दिखाई दिया है, कि सूरज और चौंड और प्यारह सितारों ने मुझे सिंज्दा किया।” 10 और उसने इसे अपने बाप और भाइयों दोनों को बताया; तब उसके बाप ने उसे डाँटा और कहा कि यह खबाब क्या है जो तू देखा है? क्या मैं और तेरी माँ और तेरे भाई सचमुच तेरे आगे ज़मीन पर झुक कर तुझे सिंज्दा करेंगे? 11 और उसके भाइयों को उससे हसद हो गया, लेकिन उसके बाप ने यह बात याद रख दी। 12 और उसके भाई अपने बाप की भेड़ — बकरियाँ चाराने सिक्म को गए। 13 तब इस्माईल ने यूसुफ से कहा, “तेरे भाई सिक्म में भेड़ — बकरियों को चरा रहे होंगे, इसलिए आ कि मैं तुझे उनके पास भेजें।” उसने उसे कहा, “मैं तैयार हूँ।” 14 तब उसने कहा, “तू जा कर देख कि तेरे भाइयों का और भेड़ — बकरियों का क्या हाल है, और आकर मुझे खबर दे।” तब उसने उसे हब्सन की बादी से भेजा और वह सिक्म में आया। 15 और एक शख्स ने उसे मैदान में इधर — उधर आवारा फिरते पाया; यह देख कर उस शख्स ने उससे पूछा, “तु क्या ढूँढता है?” 16 उसने कहा, “मैं अपने भाइयों को ढूँढता हूँ। ज़रा मुझे बता दे कि वह भेड़ बकरियों को कहाँ चरा रहे हैं?” 17 उस शख्स ने कहा, “वह यहाँ से चले गए, क्यूँकि मैंने उनको यह कहते सुना, 'चलो, हम दूतैन को जाएँ।'” चुनौते यूसुफ अपने भाइयों की तलाश में चला और उनको दूतैन में पाया। 18 और ज़ूँही उन्होंने उसे दूर से देखा, इससे पहले कि वह नज़दीक पहुँचे, उसके कल्ल का मन्स्बा बाँधा। 19 और आपस में कहने लगे, “देखो! खबाबों का देखने वाला आ रहा है। 20 और आपों ने अब हम उसे मार डाले और किसी गढ़े में डाल दें और यह कह दें कि कोई बुरा दरिन्दा उसे खा गया; फिर देखेंगे कि उसके खबाबों का अन्जाम क्या होता है।” 21 तब, स्विन ने यह सुन कर उसे उनके हाथों से बचाया और कहा, “हम उसकी जान न लें।” 22 और स्विन ने उनसे यह भी कहा कि खून न बहाओ बल्कि उसे इस गढ़े में जो बीरीने में है डाल दो, लेकिन उस पर हाथ न उठाओ। वह चाहता था कि उसे उनके हाथ से बचा कर उसके बाप के पास सलामत पहुँचा दे। 23 और यूँ हुआ कि

जब यूसुफ अपने भाइयों के पास पहुँचा, तो उन्होंने उसकी बूकलमून कबा की जो वह पहने था उतार लिया; 24 और उसे उठा कर गढ़े में डाल दिया। वह गढ़ा सूखा था, उसमें जरा भी पानी न था। 25 और वह खाना खाने बैठे और और और उठाई तो देखा कि इस्माईलियों का एक काफिला जिल'आद से आ रहा है, और गर्म मसाल्हे और रैगान बल्सान और मुर्ग ऊँटों पर लादे हुए मिस को लिए जा रहा है। 26 तब यहदाह ने अपने भाइयों से कहा कि अगर हम अपने भाई को मार डालें और उसका खन छिपाएँ तो क्या नकारा होगा? 27 आपों, उसे इस्माईलियों के हाथ बेच डालें कि हमारे हाथ उस पर न उठे क्यूँकि वह हमारा भाई और हमारा खन है। उसके भाइयों ने उसकी बात मान ली। 28 फिर वह मिदियाँ नी सौदागर उधर से गुज़ेर, तब उन्होंने यूसुफ को खींच कर गढ़े से बाहर निकाला और उसे इस्माईलियों के हाथ बीस स्पर्ये को बेच डाला और वह यूसुफ को मिस में मैं ले गए। 29 जब स्विन गढ़े पर लौट कर आया और देखा कि यूसुफ उसमें नहीं है तो अपना लिबास चाक किया। 30 और अपने भाइयों के पास उल्टा फिरा और कहने लगा, कि लड़का तो वहाँ नहीं है, अब मैं कहाँ जाऊँ? 31 फिर उन्होंने यूसुफ की कबा लेकर और एक बकरा जबह करके उसे उसके खन में रख किया। 32 और उन्होंने उस बकलमून कबा को भिजवा दिया। फिर वह उसे उनके बाप के पास ले आए और कहा, “हम को यह चीज़ पड़ी मिली; अब तु पहचान कि यह तेरे बेटे की कबा है या नहीं?” 33 और उसने उसे पहचान लिया और कहा, “यह तो मेरे बेटे की कबा है। कोई बुरा दरिन्दा उसे खा गया है, यूसुफ बेशक फाड़ा गया।” 34 तब या'कूब ने अपना लिबास चाक किया और टाट अपनी कमर से लपेटा, और बहुत दिनों तक अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। 35 और उसके सब बेटे बेटियों उसे तसल्ली देने जाते थे, लेकिन उसे तसल्ली न होती थी। वह यही कहता रहा, कि मैं तो मातम ही करता हुआ कब्ज़ में अपने बेटे से जा मिलूँगा। इसलिए उसका बाप उसके लिए रोता रहा। (Sheol h7585) 36 और मिदियालियों ने उसे मिस में फूटीफार के हाथ जो फिर औन का एक हाकिम और जिलोदारों का सरदार था बेचा।

38 उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि यहदाह अपने भाइयों से जुहा हो कर एक 'अदूल्लामी आदमी के पास, जिसका नाम हीरा था गया। 2 और यहदाह ने वहाँ सुवा' नाम किसी कनारी की बेटी को देखा और उससे ब्याह करके उसके पास गया। 3 वह हामिला हुई और उसके एक बेटा हुआ, जिसका नाम उसने 'एर रखबा। 4 और वह फिर हामिला हुई और एक बेटा हुआ और उसका नाम ओनान रखबा। 5 फिर उसके एक और बेटा हुआ और उसका नाम सीला रखबा, और यहदाह कर्जीब में था जब इस 'औरत के यह लड़का हुआ। 6 और यहदाह अपने पहलौटे बेटे 'एर के लिए एक 'औरत ब्याह लाया जिसका नाम तमर था। 7 और यहदाह का पहलौटा बेटा 'एर खुदावन्द की निगाह में शरीर था, इसलिए खुदावन्द ने उसे हलाक कर दिया। 8 तब यहदाह ने ओनान से कहा कि अपने भाई की बीवी के पास जा और देवर का हक अदा कर ताकि तेरे भाई के नाम से नसल चले। 9 और ओनान जानता था कि यह नसल मेरी न कहलाएँ, इसलिए यूँ हुआ कि जब वह अपने भाई की बीवी के पास जाता तो नुकेको जमीन पर गिरा देता था कि मबादा उसके भाई के नाम से नसल चले। 10 और उसका यह काम खुदावन्द की नज़र में बहुत बुरा था, इसलिए उसने उसे भी हलाक किया। 11 तब यहदाह ने अपनी बहू तमर से कहा कि मेरे बेटे सीला के बालिग होने तक त अपने बाप के घर बेवा बैठी रह। क्यूँकि उसने सोचा कि कहीं यह भी अपने भाइयों की तरह हलाक न हो जाए। तब तमर अपने बाप के घर में जाकर रहने लगी। 12 और एक 'असरे के बाद ऐसा हुआ कि सुवा' की बेटी जो यहदाह की बीवी थी मर गई, और जब यहदाह को उसका गम भूला तो वह अपने 'अदूल्लामी दोस्त हीरा के साथ अपनी भेड़ों की ऊन के कतरने वालों

के पास तिमनत को गया। 13 और तमर की यह खबर मिली कि तेरा खुसर अपनी भेड़ों की ऊन कतरने के लिए तिमनत को जा रहा है। 14 तब उसने अपने रंडापे के कपड़ों को उतार फेंका और बुर्का ओढ़ा और अपने को ढांका और 'ऐसीम' के फाटक के बाबर जो तिमनत की राह पर है, जा बैठी क्यूँकि उसने देखा कि सीला बालिंग हो गया मगर यह उससे ब्याही नहीं गई। 15 यहदाह उसे देख कर समझा कि कोई कस्ती है, क्यूँकि उसने अपना मुँह ढाँक रखवा था। 16 इसलिए वह रास्ते से उसकी तरफ को फिरा और उससे कहने लगा कि जरा मुझे अपने साथ मुबाशरत कर लेने दे, क्यूँकि इसे बिल्कुल नहीं मालूम था कि वह इसकी बहू है। उसने कहा, तू मुझे क्या देगा ताकि मेरे साथ मुबाश्रत करे। 17 उसने कहा कि उसके भेजने तक तू मेरे पास कुछ रहन कर देगा। 18 उसने कहा, "तुझे रहन क्या दूँ?" उसने कहा, "अपनी मुहर और अपना बाज़ बंद और अपनी लाठी जो तेरे हाथ में है।" 19 उसने यह चीज़ें उसे दी और उसके साथ मुबाश्रत की, और वह उससे हामिला हो गई। 20 और यहदाह ने अपने 'अद्भुत्तामी दोस्त के हाथ बकरी का बच्चा भेजा ताकि उस 'औरत के पास से अपना रहन वापिस मंगाए, लेकिन वह 'औरत उसे न मिली। 21 तब उसने उस जगह के लोगों से पूछा, "वह कस्ती जो ऐसीम में रास्ते के बाबर बैठी थी कहाँ है?" उहोंने कहा, यहाँ कोई कस्ती नहीं थी। 22 तब उसने यहदाह के पास लौट कर उसे बताया कि वह मुझे नहीं मिली; और वहाँ के लोग भी कहते थे कि वहाँ कोई कस्ती नहीं थी। 23 यहदाह ने कहा, "खेर! उस रहन को वही रखें, हम तो बदनाम न हों; मैंने तो बकरी का बच्चा भेजा लेकिन वह तुझे नहीं मिली।" 24 और करीबन तीन महीने के बाद यहदाह को यह खबर मिली कि तेरी बह तमर ने जिना किया और उसे छिनाले का हम्ल भी है। यहदाह ने कहा कि उसे बाहर निकाल लाओ कि वह जलाई जाए। 25 जब उसे बाहर निकाला गया तो उसने अपने खुसर को कहला भेजा कि वहाँ भी रहना नहीं था। इसलिए तू पहचान तो सही कि यह मुहर और बाज़बन्द और लाठी किसकी है। 26 तब यहदाह ने जिकरार किया और कहा, "वह मुझ से ज्यादा सच्ची है, क्यूँकि मैंने उसे अपने बेटे सीला से नहीं ब्याहा।" और वह फिर कभी उसके पास न गया। 27 और उसके बजा — ए — हम्ल के बक्तव्य मालूम हुआ कि उसके पेट में तौमर है। 28 और जब वह जनने लगी तो एक बच्चे का हाथ बाहर आया और दाई ने पकड़ कर उसके हाथ में लाल डोरा बाँध दिया, और कहने लगी, "यह पहले पैदा हुआ।" 29 और यूँ हुआ कि उसने अपना हाथ फिर खीच लिया, इन्हें मैं उसका भाई पैदा हो गया। तब वह दाई बोल उठी कि तू कैसे जबरदस्ती निकल पड़ा तब उसका नाम फारस रखवा गया। 30 फिर उसका भाई जिसके हाथ में लाल डोरा बाँधा था, पैदा हुआ और उसका नाम जारह रखवा गया।

39 और यसुफ को मिस्र में लाए, और फूटीफार मिस्री ने जो फिर 'औन का एक हाकिम और जिलौदारों का सरदार था, उसकी इमाईलियों के हाथ से जो उसे वहाँ ले गए थे खरीद लिया। 2 और खुदावन्द यसुफ के साथ था और वह इकबालमन्द हुआ, और अपने मिस्री आका के घर में रहता था। 3 और उसके आका ने देखा कि खुदावन्द उसके साथ है और जिस काम को वह हाथ लगाता है खुदावन्द उसमें उसे इकबालमंद करता है। 4 चुनौते यसुफ उसकी नज़र में मकब्ल ठहरा और वही उसकी खिदमत करता था; और उसने उसे अपने घर का मुख्तार बना कर अपना सब कुछ उसे सौंप दिया। 5 और जब उसने उसे घर का और सारे माल का मुख्तार बनाया, तो खुदावन्द ने उस मिस्री के घर में यसुफ की खातिर बरकत बरखी; और उसकी सब चीज़ों पर जो घर में

और खेत में थीं, खुदावन्द की बरकत होने लगी। 6 और उसने अपना सब कुछ यसुफ के हाथ में छोड़ दिया, और सिवा रोटी के जिसे वह खा लेता था, उसे अपनी किसी चीज़ का होश न था। और यसुफ खूबसूरत और हसीनथा। 7 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि उसके आका की बीबी की आँख यसुफ पर लगी और उसने उससे कहा कि मेरे साथ हमबिस्तर हो। 8 लेकिन उसने इकार किया; और अपने आका की बीबी से कहा कि देख, मेरे आका को खबर भी नहीं कि इस घर में मेरे पास क्या क्या है, और उसने अपना सब कुछ मेरे हाथ में छोड़ दिया है। 9 इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं; और उसने तेरे अलावा कोई चीज़ मुझ से बाज़ नहीं रखवी, क्यूँकि तू उसकी बीबी है। इसलिए भला मैं क्यूँ ऐसी बड़ी बुराई करूँ और खुदा का गुनहगार बर्दूँ? 10 और वह हर दिन यसुफ को मजबूर करती रही, लेकिन उसने उसकी बात न मानी कि उससे हमबिस्तर होने के लिए उसके साथ लेटे। 11 और एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपना काम करने के लिए घर में गया, और घर के आदमियों में से कोई भी अन्दर न था। 12 तब उस 'औरत ने उसका लिबास पकड़ कर कहा, मेरे साथ हम बिस्तर हो, वह अपना लिबास उसके हाथ में छोड़ कर भागा और बाहर निकल गया। 13 जब उसने देखा कि वह अपना लिबास उसके हाथ में छोड़ कर भाग गया, 14 तो उसने अपने घर के आदमियों को बुला कर उनसे कहा, "देखो, वह एक 'इंड्री' को हम से मजाक करने के लिए हमारे पास ले आया है। यह मुझ से हम बिस्तर होने को अन्दर धूस आया, और मैं बुलन्द आवाज से चिल्लाने लगी। 15 जब उसने देखा कि मैं जोर — जोर से चिल्ला रही हूँ, तो अपना लिबास मेरे पास छोड़ कर भाग और बाहर निकल गया।" 16 और वह उसका लिबास उसके आका के घर लौटने तक अपने पास रखते रही। 17 तब उसने यह बातें उससे कहीं, "यह इनी गुलाम, जो तू लाया है मेरे पास अन्दर धूस आया कि मुझ से मजाक करे। 18 जब मैं जोर — जोर से चिल्लाने लगी तो वह अपना लिबास मेरे ही पास छोड़ कर बाहर भाग गया।" 19 जब उसके आका ने अपनी बीबी की वह बातें जो उससे उसकी कहीं, सुन ली, कि तेरे गुलाम ने मुझ से ऐसा ऐसा किया तो उसका गजब भड़का। 20 और यसुफ के आका ने उसको लेकर कैद खाने में जहाँ बादशाह के कैदी बन्द थे डाल दिया, तब वह वहाँ कैद खाने में रहा। 21 लेकिन खुदावन्द यसुफ के साथ था; उसने उस पर रहम किया और कैद खाने के दारोगा की नज़र में उसे मकबूल बनाया। 22 और कैद खाने के दारोगा ने सब कैदियों को जो कैद में थे, यसुफ के हाथ में सौंपा; और जो कुछ वह करते उसी के हक्म से करते थे। 23 और कैद खाने का दारोगा सब कामों की तरफ से, जो उसके हाथ में थे बैफिक था, इसलिए कि खुदावन्द उसके साथ था; और जो कुछ वह करता रहा खुदावन्द उसमें इकबाल मन्दी बरखाता था।

40 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि शाह ए — मिस्र का साकी और नानपज अपने खुदावन्द शाह — ए — मिस्र के मुजरिम हुए। 2 और फिर 'औन अपने इन दोनों हाकिमों से जिनमें एक साकियों और दूसरा नानपजों का सरदार था, नाराज हो गया। 3 और उसने इनको जिलौदारों के सरदार के घर में उसी जगह जहाँ यसुफ रिसरास में था, कैद खाने में नज़रबन्द करा दिया। 4 जिलौदारों के सरदार ने उनको यसुफ के हवाले किया, और वह उनकी खिदमत करने लगा और वह एक मुश्त तक नज़रबन्द रहे। 5 और शाह — ए — मिस्र के साकी और नानपज दोनों ने, जो कैद खाने में नज़रबन्द थे एक ही रात में अपने — अपने होनहार के मुताबिक एक — एक खबाब देखा। 6 और यसुफ सुख्ख हो कर उनके पास अन्दर आया और देखा कि वह उदास है। 7 और उसने फिर 'औन के हाकिमों से जो उसके साथ उसके आका के घर में नज़रबन्द थे, पूछा कि आज तुम क्यूँ ऐसे उदास नज़र आते हो? 8 उन्होंने उससे कहा, "हम ने एक खबाब देखा है, जिसकी तांबीर करने वाला कोई नहीं है।" यसुफ ने उनसे

कहा, “क्या तांबीर की कुदरत खुदा को नहीं? मुझे जरा वह ख्वाब बताओ।” 9 तब सरदार साकी ने अपना ख्वाब यूसुफ से बयान किया। उसने कहा, “मैंने ख्वाब में देखा कि अंगूर की बेल में सामने है। 10 और उस बेल में तीन साथे हैं, और ऐसा दिखाई दिया कि उसमें कलियाँ लागी और फूल आए और उसके सब गुच्छों में पक्के — पक्के अंगूर लगे। 11 और फिर औन का प्याला मेरे हाथ में है, और मैंने उन अंगूरों को लेकर फिर औन के प्याले में निचोड़ा और वह प्याला मैंने फिर औन के हाथ में दिया।” 12 यूसुफ ने उससे कहा, “इसकी तांबीर यह है कि वह तीन शरवें तीन दिन है। 13 इसलिए अब से तीन दिन के अन्दर फिर औन तुझे सरफराज फरमाएगा, और तुझे फिर तेरे ‘ओहदे पर बहाल कर देगा; और पहले की तरह जब तु उसका साकी था, प्याला फिर औन के हाथ में दिया करेगा। 14 लेकिन जब तू खुशहाल हो जाए तो मुझे याद करना और जरा मुझ से मेहरबानी से पेश आना, और फिर औन से मेरा जिक्र करना और मुझे इस घर से छुटकारा दिलवाना। 15 क्यूँकि इवानियों के मुल्क से मुझे चुरा कर ले आए हैं, और यहाँ भी मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसकी बजाह से कैद खाने में डाला जाऊँ।” 16 जब सरदार नानपज ने देखा कि तांबीर अच्छी निकती तो यूसुफ से कहा, “मैंने भी ख्वाब में देखा, कि मेरे सिर पर सफेद रोटी की तीन टोकरियाँ हैं; 17 और ऊपर की टोकरी में हर किस्म का पका हुआ खाना फिर औन के लिए है, और परिन्दे मेरे सिर पर की टोकरी में से खा रहे हैं।” 18 यूसुफ ने उसे कहा, “इसकी तांबीर यह है कि वह तीन टोकरियाँ तीन दिन हैं। 19 इसलिए अब से तीन दिन के अन्दर फिर औन तेरा सिर तेरे तन से जुदा करा के तुझे एक दरखत पर टंगवा देगा, और परिन्दे तेरा गोशत नौंच — नौंच कर खाएँगे।” 20 और तीसरे दिन जो फिर औन की सालगिरह का दिन था, यूँ हुआ कि उसने अपने सब नौकरों की दावत की और उसने सरदार साकी और सरदार नानपज को अपने नौकरों के साथ याद फरमाया। 21 और उसने सरदार साकी को फिर उसकी खिदमत पर बहाल किया, और वह फिर औन के हाथ में प्याला देने लगा। 22 लेकिन उसने सरदार नानपज को फौसी दिलवाई, जैसा यूसुफ ने तांबीर करके उनको बताया था। 23 लेकिन सरदार साकी ने यूसुफ को याद न किया बल्कि उसे भूल गया।

41 पूरे दो साल के बाद फिर औन ने ख्वाब में देखा कि वह दरिया-ए-नील के किनारे खड़ा है; 2 और उस दरिया में से सात ख्वासरूत और मोटी — मोटी गायें निकल कर सरकंडों के खेत में चरने लगीं। 3 उनके बाद और सात बदशक्त और दुबली — दुबली गायें दरिया से निकलीं और दूसरी गायों के बराबर दरिया के किनारे जा खड़ी ही हैं। 4 और यह बदशक्त और दुबली दुबली गायें उन सातों ख्वासरूत और मोटी गायों को खा गईं, तब फिर औन जाग उठा। 5 और वह फिर सो गया और उसने दूसरा ख्वाब देखा कि एक टहनी में अनाज की सात मोटी और अच्छी — अच्छी बालें निकलीं। 6 उनके बाद और सात पतली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बालें निकलीं। 7 यह पतली बालें उन सातों मोटी और भरी हुई बालों को निगल गईं। और फिर औन जाग गया और उसे मालूम हुआ कि यह ख्वाब था। 8 और सुबह को यूँ हुआ कि उसका जी घबराया तब उसने मिस के सब जादूरों और सब अक्लमन्दों को खुलवा भेजा, और अपना ख्वाब उनको बताया। लेकिन उनमें से कोई फिर औन के आगे उनकी तांबीर न कर सका। 9 उस बक्त सरदार साकी ने फिर औन से कहा, मेरी खताएँ आज मुझे याद आईं। 10 जब फिर औन अपने खादिमों से नाराज था और उसने मुझे और सरदार नानपज को जिलौदारों के सरदार के घर में नज़रबन्द करवा दिया। 11 तो मैंने और उसने एक ही रात में एक — एक ख्वाब देखा, यह ख्वाब हम ने अपने अपने होनहार के मुताबिक देखे। 12 वहाँ एक इङ्गी जवान, जिलौदारों के सरदार का नौकर, हमारे साथ

था। हम ने उसे अपने ख्वाब बताए और उसने उनकी तांबीर की, और हम में से हर एक को हमारे ख्वाब के मुताबिक उसने तांबीर बताई। 13 और जो तांबीर उसने बताई थी वैसा ही हुआ, क्यूँकि मुझे तो उसने मेरे मन्सब पर बहाल किया था और उसे फौसी दी थी। 14 तब फिर औन ने यूसुफ को खुलवा भेजा: तब उहोंने जल्द उसे कैद खाने से बाहर निकाला, और उसने हजामत बनवाई और कपड़े बदल कर फिर औन के सामने आया। 15 फिर औन ने यूसुफ से कहा, “मैंने एक ख्वाब देखा है जिसकी तांबीर कोइन नहीं कर सकता, और मुझ से तेरे बारे में कहते हैं कि तू ख्वाब को सुन कर उसकी तांबीर करता है।” 16 यूसुफ ने फिर औन को जवाब दिया, “मैं कुछ नहीं जानता, खुदा ही फिर औन को सलामती बख्श जवाब देगा।” 17 तब फिर औन ने यूसुफ से कहा, मैंने ख्वाब में देखा कि मैं दरिया-ए-नील के किनारे खड़ा हूँ। 18 और उस दरिया में से सात मोटी और ख्वासरूत गायें निकल कर सरकंडों के खेत में चरने लगीं। 19 उनके बाद और सात खराब और निहायत बदशक्त और दुबली गायें निकलीं, और वह इस कदर बुरी थी कि मैंने सारे मुल्क — ए — मिस में ऐसी कभी नहीं देखीं। 20 और वह दुबली और बदशक्त गायें उन पहली सातों मोटी गायों को खा गईं; 21 और उनके खा जाने के बाद यह मालूम भी नहीं होता था कि उहोंने उनको खा लिया है, बल्कि वह पहले की तरह जैसी की तरी बदशक्त रही। तब मैं जाग गया। 22 और फिर ख्वाब में देखा कि एक टहनी में सात भरी और अच्छी — अच्छी बालों निकलीं। 23 और उनके बाद और सात सूखी और पतली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बालें निकलीं। 24 और यह पतली बाले उन सातों अच्छी — अच्छी बालों को निगल गईं। और मैंने इन जादूरों से इसका बयान किया लेकिन ऐसा कोई न निकला जो मुझे इसका मतलब बताता। 25 तब यूसुफ ने फिर औन से कहा कि फिर औन का ख्वाब एक ही है, जो कुछ खुदा करने को है उसे उसने फिर औन पर जाहिर किया है। 26 वह सात अच्छी — अच्छी गायें सात साल हैं, और वह सात अच्छी अच्छी बाले भी सात साल हैं; ख्वाब एक ही है। 27 और वह सात बदशक्त और दुबली गायें जो उनके बाद निकलीं, और वह सात खालीं और पूरबी हवा की मारी मुरझाई हुई बाले भी सात साल ही हैं, मगर काल के सात बरस। 28 यह वही बात है जो मैं फिर औन से कह चुका हूँ कि जो कुछ खुदा करने को है उसे उसने फिर औन पर जाहिर किया है। 29 देख! सारे मुल्क — ए — मिस में सात साल तो पैदावार ज्यादा के होंगे। 30 उनके बाद सात साल काल के आँखें और तमाम मुल्क ए — मिस में लोगा इस सारी पैदावार को भूल जाएँगे और यह काल मुल्क को तबाह कर देगा। 31 और अजानी मुल्क में याद भी नहीं रहेगी, क्यूँकि जो काल बाद में पड़ेगा वह निहायत ही सखल होगा। 32 और फिर औन ने जो यह ख्वाब दो दफा देखा तो इसकी बजह यह है कि यह बात खुदा की तरफ से मुकर्रर हो चुकी है, और खुदा इसे जल्द पूरा करेगा। 33 इसलिए फिर औन को चाहिए कि एक समझदार और 'अक्लमन्द आदमी' को तलाश कर ले और उसे मुल्क — ए — मिस पर मुख्तार बनाए। 34 फिर औन यह करे ताकि उस आदमी को इख्लियार हो कि वह मुल्क में नजिकों को मुकर्रर कर दे, और अजानी के सात बरसों में सारे मुल्क — ए — मिस की पैदावार का पाँचवा हिस्सा ले ले। 35 और वह उन अच्छे बरसों में जो आते हैं सब खाने की चीजें जमा करें और शहर — शहर में गल्ला जो फिर औन के इख्लियार में हो, खुराक के लिए फराहम करके उसकी हिफाजत करें। 36 यही गल्ला मुल्क के लिए ज़रूरी होगा, और सातों साल के लिए जब तक मुल्क में काल रहेगा काफ़ी होगा, ताकि काल की बजह से मुल्क बर्बाद न हो जाए। 37 यह बात फिर औन और उसके सब खादिमों को पसंद आई। 38 तब फिर औन ने अपने खादिमों से कहा कि क्या हम को ऐसा आदमी जैसा यह है, जिसमें खुदा का स्थ

है मिल सकता है? 39 और फिर' औन ने यसुफ से कहा, चूँकि खुदा ने तुझे यह सब कुछ समझा दिया है, इसलिए तेरी तरह समझदार और अकर्तमन्द कोई नहीं। 40 इसलिए तू मेरे घर का मुख्य होगा और मेरी सारी रि' आया तेरे हृकम पर चलेगी, सिर्फ तत्त्व का मालिक होने की वजह से मैं बुजुर्गत हूँगा। 41 और फिर' औन ने यसुफ से कहा कि देख, मैं तुझे सारे मुल्क — ए — मिस का हाकिम बनाता हूँ 42 और फिर' औन ने अपनी अंगठी अपने हाथ से निकाल कर यसुफ के हाथ में पहना दी, और उसे बारीक कतान के लिबास में आरास्ता करवा कर सोने का हार उसके गले में पहनाया। 43 और उसने उसे अपने दूसरे रथ में सवार करा कर उसके आगे — आगे यह ऐलान करवा दिया, कि घुटने टेको और उसने उसे सारे मुल्क — ए — मिस का हाकिम बना दिया। 44 और फिर' औन ने यसुफ से कहा, "मैं फिर' औन हूँ और तेरे हृकम के बौर कोई आदमी इस सारे मुल्क — ए — मिस में अपना हाथ या पौँव हिलाने न पाएगा।" 45 और फिर' औन ने यसुफ का नाम सिफ्नात फ़ा नेह रखखा, और उसने औन के पुजारी फोतीफिरा' की बेटी आसिनाथ को उससे ब्याह दिया, और यसुफ मुल्क — ए — मिस में दौरा करने लगा। 46 और यसुफ तीस साल का था जब वह मिस के बादशाह फिर' औन के सामने गया, और उसने फिर' औन के पास से स्वस्त हो कर सारे मुल्क — ए — मिस का दौरा किया। 47 और अज़ानी के सात बरसों में इक्षात से फ़स्त झुई। 48 और वह लगातार सार्तों साल हर किस्म की खुराक, जो मुल्क — ए — मिस में पैदा होती थी, जमा' कर करके शहरों में उसका जर्खीरा करता गया। हर शहर की चारों तरफों की खुराक वह उत्ती शहर में रखता गया। 49 और यसुफ ने गल्ला समुन्दर की रेत की तरह निहायत कसरत से जर्खीरा किया, यहाँ तक कि हिसाब रखना भी छोड़ दिया क्यूँ कि वह बे — हिसाब था। 50 और काल से पहले औन के पुजारी फोतीफिरा' की बेटी आसिनाथ के यसुफ से दो बेटे पैदा हुए। 51 और यसुफ ने पहलौठे का नाम मनस्ती यह कह कर रखखा, कि 'खुदा ने मेरी और मेरे बाप के घर की सब मुसीबत मुझे से भुला दी।' 52 और दूसरे का नाम इमराईम यह कह कर रखखा, कि 'खुदा ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फ़लदार किया।' 53 और अज़ानी के वह सात साल जो मुल्क — ए — मिस में हुए तमाम हो गए, और यसुफ के कहने के मुताबिक काल के सात साल शूरू हुए। 54 और सब मुल्कों में तो काल था लेकिन मुल्क — ए — मिस में हर जगह खुराक मौजूद थी। 55 और जब मुल्क — ए — मिस में लोग भक्तों मरने लगे तो रोटी के लिए फिर' औन के आगे चिल्लाए। फिर' औन ने मिसियों से कहा कि यसुफ के पास जाओ, जो कुछ वह तुम से कहे वह करो। 56 और तमाम रु — ए — ज़मीन पर काल था; और यसुफ अनाज के जर्खीरह को खुलवा कर मिसियों के हाथ बेचने लगा, और मुल्क — ए — मिस में सख्त काल हो गया। 57 और सब मुल्कों के लोग अनाज मोल लेने के लिए यसुफ के पास मिस में आने लगे, क्यूँकि सारी ज़मीन पर सख्त काल पड़ा था।

42 और याकूब को मालूम हुआ कि मिस में गल्ला है, तब उसने अपने बेटों से कहा कि तुम क्यूँ एक दूसरे का मूँह ताकते हो? 2 देखो, मैंने सना है कि मिस में गल्ला है। तुम वहाँ जाओ और वहाँ से हमारे लिए अनाज मोल ले आओ, ताकि हम ज़िन्दा रहें और हलाक न हों। 3 तब यसुफ के दस भाई गल्ला मोल लेने को मिस में आए। 4 लेकिन याकूब ने यसुफ के भाई बिनयमीन को उसके भाइयों के साथ न भेजा, क्यूँकि उसने कहा, कि कहीं उस पर कोई आफत न आ जाए। 5 इसलिए जो लोग गल्ला खरीदने आए उनके साथ इमाईल के बेटे भी आए, क्यूँकि कनान के मुल्क में काल था। 6 और यसुफ मुल्क — ए — मिस का हाकिम था और वही मुल्क के सब लोगों के हाथ गल्ला बेचता था। तब यसुफ के भाई आए और अपने सिर ज़मीन पर टेक-

कर उसके सामने आदाब बजा लाए। 7 यसुफ अपने भाइयों को देख कर उनको पहचान गया; लेकिन उसने उनके सामने अपने आप को अन्जान बना लिया और उसने सख्त लहजे में पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" उन्होंने कहा, "कनान के मुल्क से अनाज मोल लेने को।" 8 यसुफ ने तो अपने भाइयों को पहचान लिया था लेकिन उन्होंने उसे न पहचाना। 9 और यसुफ उन ख्वाबों को जो उसने उनके बोर में देखे थे यदि करके उनसे कहने लगा कि तुम जासूस हो। तुम आए हो कि इस मुल्क की बुरी हालत दरियाप्त करो। 10 उन्होंने उससे कहा, "नहीं खुदावन्ह! तेरे गुलाम अनाज मोल लेने आए हैं।" 11 हम सब एक ही शब्द के बेटे हैं। हम सच्चे हैं; तेरे गुलाम जासूस नहीं है।" 12 उसने कहा, "नहीं; बल्कि तुम इस मुल्क की बुरी हालत दरियाप्त करने को आए हो।" 13 तब उन्होंने कहा, "तेरे गुलाम बारह भाई एक ही शब्द के बेटे हैं जो मुल्क — ए — कनान में है। सबसे छोटा इस बक्त हमारे बाप के पास है और एक का कुछ पता नहीं।" 14 तब यसुफ ने उससे कहा, "मैं तो तुम से कह चुका कि तुम जासूस हो।" 15 इसलिए तुम्हारी आजमाइश इस तरह की जाएगी कि फिर' औन की हयात की कसम, तुम यहाँ से जाने न पाओगे; जब तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई यहाँ न आ जाए। 16 इसलिए अपने में से किसी एक को भेजो कि वह तुम्हारे भाई को ले आए और तुम कैद रहो, ताकि तुम्हारी बातों की तसदीक हो कि तुम सच्चे हो या नहीं; बरना फिर' औन की हयात की कसम तुम जस्तर ही जासूस हो।" 17 और उसने उन सब को तीन दिन तक इकट्ठे नज़रबन्द रखखा। 18 और तीसरे दिन यसुफ ने उनसे कहा, "एक काम करो तो ज़िन्दा रहोगे; क्यूँकि मुझे खुदा का खौफ है।" 19 अगर तुम सच्चे हो तो अपने भाइयों में से एक को कैद खाने में बन्द रहने दो, और तुम अपने घरवालों के खाने के लिए अनाज ले जाओ। 20 और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ, यूँ तुम्हारी बातों की तसदीक हो जाएगी और तुम हलाक न होगे।" इसलिए उन्होंने ऐसा ही किया। 21 और वह आपस में कहने लगे, "हम दरअसल अपने भाई की बजह से मुजरिम ठरो हैं; क्यूँकि जब उसने हम से मिन्त की तो हम ने यह देखकर भी, कि उसकी जान कैरी मुसीबत में है उसकी न सूनी; इसी लिए यह मुसीबत हम पर आ पड़ी है।" 22 तब स्विन बोल उठा, "क्या मैंने तुम से न कहा था कि इस बच्चे पर ज़ल्म न करो, और तुम ने न सुना; इसलिए देख लो, अब उसके खून का बदला लिया जाता है।" 23 और उनको मालूम न था कि यसुफ उनकी बातें समझता है, इसलिए कि उनके बीच एक तरजुमान था। 24 तब वह उनके पास से हट गया और रोया, और फिर उनके पास आकर उनसे बातें की और उनमें से समैन को लेकर उनकी आँखों के सामने उसे बन्धवा दिया। 25 फिर यसुफ ने हृकम किया, कि उनके बोरों में अनाज भरें और हर शब्द की नकटी उसी के बोरे में रख दें, और उनको सफर का सामान भी दे दें। चुनांचे उनके लिए ऐसा ही किया गया। 26 और उन्होंने अपने गधों पर गल्ला लाद लिया और वहाँ से खाना हुए। 27 जब उसमें से एक ने मन्जिल पर अपने गधे को चारा देने के लिए अपना बोरा खोला, तो अपनी नकटी बोरे के मुँह में रखखी देखी। 28 तब उसने अपने भाइयों से कहा कि मेरी नकटी वापस कर दी गई है, वह मेरे बोरे में है, देख लो।" फिर तो वह घबरा गए और हक्का — बक्का होकर एक दूसरे को देखने और कहने लगे, खुदा ने हम से यह क्या किया? 29 और वह मुल्क — ए — कनान में अपने बाप या कूकब के पास आए, और सारी बारदात उसे बराई और कहने लगे कि 30 उस शांख ने जो उस मुल्क का मालिक है हम से सख्त लहजे में बातें की, और हम को उस मुल्क के जासूस समझा। 31 हम ने उससे कहा कि हम सच्चे आदमी हैं, हम जासूस नहीं। 32 हम बारह भाई एक ही बाप के बेटे हैं; हम में से एक का कुछ पता नहीं और सबसे छोटा इस बक्त हमारे बाप के पास मुल्क — ए — कनान में

है। 33 तब उस शब्द ने जो मुल्क का मालिक है हम से कहा, ऐसी से जान लूँगा कि तुम सच्चे हो कि अपने भाइयों में से किसी को मेरे पास छोड़ दो और अपने घरवालों के खाने के लिए अनाज लेकर चले जाओ। 34 और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ; तब मैं जान लूँगा कि तुम जासूस नहीं बल्कि सच्चे आदमी हो। और मैं तुम्हारे भाई को तुम्हारे हवाले कर दूँगा, फिर तुम मुल्क में सौदागरी करना। 35 और यूँ हुआ कि जब उन्होंने अपने बोरे खाली किए तो हर शब्द की नकदी की थैली उनी के बोरे में रख देखी, और वह और उनका बाप नकदी की थैलियाँ देख कर डर गए। 36 और उनके बाप याकूब ने उनसे कहा, “तुम ने मुझे बेटोंलाद कर दिया। यूसुफ नहीं रहा और शमैन भी नहीं है, और अब बिनयमीन को भी ले जाना चाहते ही। ये सब बातें मेरे खिलाफ हैं।” 37 तब स्विन ने अपने बाप से कहा, “अगर मैं उसे रेत पास न ले आँऊ तो तू मेरे दोनों बेटों को क़त्ल कर डालना। उसे मेरे हाथ में सौंप दे और मैं उसे फिर रेरे पास पहुँचा दूँगा।” 38 उसने कहा, मेरा बेटा तुम्हारे साथ नहीं जाएगा; क्यौंकि उसका भाई मर गया और वह अकेला रह गया है। अगर रासते में जाते — जोते उस पर कोई आफत आ पड़े तो तुम मेरे सफेद बालों को शम के साथ क़ब्र में उतारोगे। (Sheol h7585)

43 और काल मुल्क में और भी सखल हो गया। 2 और यूँ हुआ कि जब उस गल्ले को जिसे मिस्र से लाए थे, खा चुके तो उनके बाप ने उनसे कहा कि जाकर हमारे लिए फिर कुछ अनाज मोल ले आओ। 3 तब यहदाह ने उसे कहा कि उस शब्द ने हम को निहायत ताकीद से कह दिया था कि तुम मेरा मुँह न देखोगे, जब तक तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो। 4 इसलिए अगर तू हमारे भाई को हमारे साथ भेज दे, तो हम जाएँगे और तैरे लिए अनाज मोल लाएँगे। 5 और अगर तू उसे न भेजे तो हम नहीं जाएँगे; क्यौंकि उस शब्द ने कह दिया है कि तुम मेरा मुँह न देखोगे जब तक तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो। 6 तब इसाईल ने कहा कि तुम ने मुझ से कर्तृ यह बदसुलकी की, कि उस शब्द को बता दिया कि हमारा एक भाई और भी है? 7 उन्होंने कहा, “उस शब्द ने बजिद हो कर हमारा और हमारे खानादान का हाल पछा कि ‘क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िन्दा है? और क्या तुम्हारा कोई और भाई है?’ तो हम ने उस सबलों के मुताबिक उसे बता दिया। हम क्या जानते थे कि वह कहेगा, ‘अपने भाई को ले आओ।’” 8 तब यहदाह ने अपने बाप इसाईल से कहा कि उस लड़के को मेरे साथ कर दे तो हम चले जाएँगे; ताकि हम और तू और हमारे बाल बच्चे ज़िन्दा रहें और हलाक न हों। 9 और मैं उसका ज़िम्मेदार होता हूँ, तू उसको मेरे हाथ से वापस मँगाना। अगर मैं उसे तैरे पास पहुँचा कर सामने खड़ा न कर दूँ तो मैं हमेशा के लिए गुनहगार ठहस़ंगा। 10 अगर हम देर न लगाते तो अब तक दूसरी दफ़ा लौट कर आ भी जाते। 11 तब उनके बाप इसाईल ने उनसे कहा, “अगर यही बात है तो ऐसा करो कि अपने बर्तनों में इस मुल्क की मशहूर पैदावार में से कुछ उस शब्द के लिए नज़राना लेते जाओ, जैसे थोड़ा सा रोशान — ए — बलसान, थोड़ा सा शहद, कुछ गर्म मसाले, और मुर्जू और पिस्ता और बादाम, 12 और दूना दाम अपने हाथ में ले लो, और वह नकदी जो फेर दी गई और तुम्हारे बोरों के मुँह में रख दी गई। 13 और अपने भाई की भी साथ लो, और उठ कर फिर उस शब्द के पास जाओ। 14 और खुदा — ए — कादिर उस शब्द को तुम्हारे साथ भेज दे। मैं अगर बे — औलाद हुआ तो हुआ।” 15 तब उन्होंने नज़राना लिया और दूना दाम भी हाथ में ले लिया, और बिनयमीन को लेकर चल पड़े, और मिस्र पहुँच कर यूसुफ के सामने जा खड़े हए। 16 जब यूसुफ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने घर के मुन्तज़िम से कहा, “इन आदमियों

को घर में ले जा, और कोई जानवर ज़बह करके खाना तैयार करवा; क्यौंकि यह आदमी दोपहर को मेरे साथ खाना खाएँगे।” 17 उस शब्द ने जैसा यूसुफ ने फरमाया था किया, और इन आदमियों को यूसुफ के घर में ले गया। 18 जब इनको यूसुफ के घर में पहुँचा दिया तो डर के मोरे कहने लगे, “वह नकदी जो पहली दफ़ा हमारे बोरों में रख कर वापस कर दी गई थी, उसी की वजह से हम को अन्दर करवा दिया है, ताकि उसे हमारे खिलाफ बहाना मिल जाए और वह हम पर हमला करके हम को गुलाम बना ले और हमारे गधों को छीन ले।” 19 और वह यूसुफ के घर के मुन्तज़िम के पास गए और दरवाजे पर खड़े होकर उससे कहने लगे, 20 “जनाब, हम पहले भी यहाँ अनाज मोल लेने आए थे; 21 और यूँ हुआ कि जब हम ने मंज़िल पर उतर कर अपने बोरों को खोला, तो अपनी अपनी पूरी तैली हई नकदी अपने अपने बोरे के मुँह में रख दी देखी, इसलिए हम उसे अपने साथ वापस लेते आए हैं। 22 और हम अनाज मोल लेने को और भी नकदी साथ लाए हैं, ये हम नहीं जानते कि हमारी नकदी किसने हमारे बोरों में रख दी।” 23 उसने कहा कि तुम्हारी सलामती हो, मत डरो! तुम्हारे खुदा और तुम्हारे बाप के खुदा ने तुम्हारे बोरों में तुम को खेजना दिया होगा, मुझे तो तुम्हारी नकदी मिल चुकी। फिर वह शमैन को निकाल कर उनके पास ले आया। 24 और उस शब्द ने उनको यूसुफ के घर में लाकर पानी दिया, और उन्होंने अपने पाँव धोए; और उनके गधों को चारा दिया। 25 फिर उन्होंने यूसुफ के इन्तिज़ार में कि वह दोपहर को आएगा, नज़राना तैयार करके रख दी; क्यौंकि उन्होंने सुना था कि उनको वही रोटी खानी है। 26 जब यूसुफ घर आया, तो वह उस नज़राने को जो उनके पास था उसके सामने ले गए, और ज़मीन पर दूक कर उसके सामने आदाब बजा लाए। 27 उसने उनसे खैर — ओ — ‘आफियत पूरी’ और कहा कि तुम्हारा खुदा बाप जिसका तुम ने ज़िक्र किया था अच्छा तो है? क्या वह अब तक ज़िन्दा है? 28 उन्होंने ज़वाब दिया, “तेरा खादिम हमारा बाप खैरियत से है; और अब तक ज़िन्दा है।” 29 फिर उसने आँख उठा कर अपने भाई बिनयमीन को जो उसकी माँ का बेटा था, देखा और कहा कि तुम्हारा सबसे छोटा भाई जिसका ज़िक्र तुम ने मुझ से किया था यही है? फिर कहा कि ऐ मेरे बेटे! खुदा तुझ पर मेहरबान रहे। 30 तब यूसुफ ने ज़लदी की क्यौंकि भाई को देख कर उसके सामने आदाब बजा लाए। 29 फिर उसने आँख उठा कर अपने भाई बिनयमीन को जो उसकी माँ का बेटा था, देखा और कहा कि तुम्हारा सबसे छोटा भाई जिसका ज़िक्र तुम ने मुझ से किया था यही है? फिर कहा कि ऐ मेरे बेटे! खुदा तुझ पर मेहरबान रहे। 30 तब यूसुफ ने ज़लदी की क्यौंकि भाई को देख कर उसका जी भर आया, और वह चाहता था कि कही जाकर रोए। तब वह अपनी कोठरी में जा कर वहाँ रोने लगा। 31 फिर वह अपना मुँह धोकर बाहर निकला और अपने को बर्दाशत करके हृकम दिया कि खाना लगाओ। 32 और उन्होंने उसके लिए अलग और उनके लिए ज़ुदा, और मिस्र के लिए, जो उसके साथ खाते थे, ज़ुदा खाना लगाया; क्यौंकि मिस्र के लोग इब्रानियों के साथ खाना नहीं खा सकते थे, क्यौंकि मिस्र के लिए इब्रानियों के साथ खाना तो होता है। 33 और यूसुफ के भाई उसके सामने तरीकाबार अपनी उम्र की बड़ाई और छोटाई के मुताबिक बैठे और आपस में हैरान थे। 34 फिर वह अपने सामने से खाना उठा कर हिस्से कर — कर के उनको देने लगा, और बिनयमीन का हिस्सा उनके हिस्सों से पाँच गुना ज़्यादा था। और उन्होंने मय पी और उसके साथ खुशी मराई।

44 फिर उसने अपने घर के मुन्तज़िम को यह हृकम किया कि इन आदमियों के बोरों में जितना अनाज वह लेजा सकें भर दे, और हर शब्द की नकदी उसी के बोरे के पूँछ में रख दे; 2 और मेरा चाँदी का प्याला सबसे छोटे के बोरे के पूँछ में उसकी नकदी के साथ रखना। चुनांचे उने यूसुफ के फरमाने के मुताबिक ‘अमल किया। 3 सबक रौशनी होते ही यह आदमी अपने गधों के साथ सख्त कर दिए गए। 4 वह शहर से निकल कर अभी तू भी नहीं गए थे कि यूसुफ ने अपने घर के मुन्तज़िम से कहा, जा! उन लोगों का पीछा कर; और

जब तू उनको पा ले तो उनसे कहना, 'नेकी के बदले तुम ने बटी क्यूँ की? 5 क्या यह वही चीज नहीं जिससे मेरा आका पीता और इसी से ठीक फाल भी खोला करता है? तुम ने जो यह किया इसलिए बुरा किया' 6 और उसने उनको पा लिया और यही बातें उनसे कहीं। 7 तब उन्होंने उससे कहा कि हमारा खुदावन्द, ऐसी बातें क्यूँ कहता है? खुदा न करे कि तेरे खादिम ऐसा काम करें 8 भला, जो नकटी हम को अपने बोरों के मुँह में मिली, उसे तो हम मुल्क — ए — कनान से तेरे पास वापस ले आए, फिर तेरे आका के घर से चाँदी या सोना क्यूँ कर चुरा सकते हैं? 9 इसलिए तेरे खादिमों में से जिस किसी के पास वह निकले वह मार दिया जाए, और हम भी अपने खुदावन्द के गुलाम हो जाएँगे। 10 उसने कहा कि तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह निकल आए वह मेरा गुलाम होगा, और तुम बेगुनाह ठहरोगे। 11 तब उन्होंने जल्दी की, और एक — एक ने अपना बोरा जमीन पर उतार लिया और हर शख्स ने अपना बोरा खोल दिया। 12 तब वह ढूँने लगा और सबसे बड़े से शूरू करके सबसे छोटे पर तलाशी खत्म की, और प्याला बिनयमीन के बोरे में मिला। 13 तब उन्होंने अपने लिबास चाक किए और हर एक अपने गधे को लालकर उल्टा शहर को फिरा। 14 और यहदाह और उसके भाई यसुफ के घर आए, वह अब तक वही था; तब वह उसके आगे जमीन पर गिरे। 15 तब यसुफ ने उनसे कहा, "तुम ने यह कैसा काम किया? क्या तुम को मालूम नहीं कि मुझ सा आदमी ठीक फाल खोलता है?" 16 यहदाह ने कहा कि हम अपने खुदावन्द से क्या कहें? हम क्या बात करें? या क्यूँ कर अपने को बरी ठहराएँ? खुदा ने तेरे खादिमों की बटी पकड़ ली। इसलिए देख, हम भी और वह भी जिसके पास प्याला निकला, दोनों अपने खुदावन्द के गुलाम हैं। 17 उसने कहा कि खुदा न करे कि मैं ऐसा करूँ, जिस शख्स के पास यह प्याला निकला वही मेरा गुलाम होगा, और तुम अपने बाप के पास सलामत चले जाओ। 18 तब यहदाह उसके नजदीक जाकर कहने लगा, "ऐ मेरे खुदावन्द! जरा अपने खादिम को इजाजत दे कि अपने खुदावन्द के कान में एक बात कहे; और तेरा गजब तेरे खादिम पर न भड़के, क्यूँकि तू फिर औन की तरह है। 19 मेरे खुदावन्द ने अपने खादिमों से सवाल किया था कि तुम्हारा बाप या तुम्हारा भाई है? 20 और हम ने अपने खुदावन्द से कहा था, 'हमारा एक बुड़ा बाप है और उसके बुढ़ापे का एक छोटा लड़का भी है; और उसका भाई मर गया है और वह अपनी माँ का एक ही रह गया है, इसलिए उसका बाप उस पर जान देता है। 21 तब तू अपने खादिमों से कहा, 'उसे मेरा पास ले आओ कि मैं उसे देखूँ। 22 हम ने अपने खुदावन्द को बताया, 'वह लड़का अपने बाप को छोड़ नहीं सकता, क्यूँकि अपर वह अपने बाप को छोड़े तो उसका बाप मर जाएगा। 23 फिर तू अपने खादिमों से कहा कि जब तक तुम्हारा छोटा भाई तुम्हारे साथ न आए, तुम फिर मेरा मुँह न देखोगे।' 24 और यूँ हुआ कि जब हम अपने बाप के पास, जो तेरा खादिम है, पहुँचे तो हम ने अपने खुदावन्द की बातें उनसे कहीं। 25 हमारे बाप ने कहा, "फिर जा कर हमारे लिए कुछ अनाज मोला लाओ।" 26 हम ने कहा, "हम नहीं जा सकते; अगर हमारा सबसे छोटा भाई हमारे साथ हो तो हम जाएँगे।" 27 क्यूँकि जब तक हमारा सबसे छोटा भाई हमारे साथ न हो, हम उस शख्स का मुँह न देखेंगे।" 27 और तेरे खादिम मेरे बाप ने हम से कहा, "तुम जानते हो कि मेरी बीवी के मुझ से दो बेटे हुए। 28 एक तो मुझे छोड़ ही गया और मैंने ख्याल किया कि वह जस्तर फाड़ डाला गया होगा, और मैंने उस बक्त से फिर नहीं देखा। 29 अब आग तुम इसको भी मेरे पास से ले जाओ और इस पर कोई आफत आ पड़े, तो तुम मेरे सफेद बालों को गाम के साथ कब्र में उतारोगे।" (Sheol h7585) 30 "इसलिए अब अगर मैं तेरे खादिम अपने बाप के पास जाऊँ और यह लड़का हमारे साथ न हो, तो चूँकि उसकी जान इस लड़के की जान के साथ

जुड़ी है। 31 वह यह देख कर कि लड़का नहीं आया मर जाएगा, और तेरे खादिम अपने बाप के, जो तेरा खादिम है, सफेद बालों को गाम के साथ कब्र में उतारोगे। (Sheol h7585) 32 और तेरा खादिम अपने बाप के सामने इस लड़के का जिम्मेदार भी हो चुका है और यह कहा है कि अगर मैं इसे तेरे पास वापस न पहुँचा दूँ तो मैं हमेशा के लिए अपने बाप को गुनहगार ठहस्सा। 33 इसलिए अब तेरे खादिम की इजाजत हो कि वह इस लड़के के बदले अपने खुदावन्द का गुलाम हो कर रह जाए, और यह लड़का अपने भाइयों के साथ चला जाए। 34 क्यूँकि लड़के के बौगे मैं क्या मुँह लेकर अपने बाप के पास जाऊँ? कहीं ऐसा न हो कि मुझे वह मुसीबत देखनी पड़े, जो ऐसे हाल में मेरे बाप पर आएगा।"

45 तब यसुफ उनके आगे जो उसके आस पास खड़े थे, अपने को रोक न कर सका और चिल्ला कर कहा, "हर एक आदीवी को मैंने पास से बाहर कर दो।" चुनांचे जब यसुफ ने अपने आप को अपने भाइयों पर जाहिर किया उस बक्त और कोई उसके साथ न था। 2 और वह जोर जोर से रोने लगा; और मिसियों ने सुना, और फिर औन के महल में भी आवाज गई। 3 और यसुफ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं यसुफ हूँ। क्या मेरा बाप अब तक ज़िन्दा है?" और उसके भाई उसे कुछ जबाब न दे सके, क्यूँकि वह उनके सामने घबरा गए। 4 और यसुफ ने अपने भाइयों से कहा, "ज़रा न ज़रीक आ जाओ।" और वह नज़रीक आए। तब उसने कहा, "मैं तुम्हारा भाई यसुफ हूँ, जिसको तुम ने बेच कर मिस्थ पहुँचवाया। 5 और इस बात से कि तुम ने मुझे बेच कर यहाँ पहुँचवाया, न तो गमानी हो और न अपने — अपने दिल में पेरान हो; क्यूँकि खुदा ने जानों को बचाने के लिए मुझे तुम से आगे भेजा। 6 इसलिए कि अब दो साल से मुल्क में काल है, और अभी पाँच साल और ऐसे हैं जिनमें न तो हल चलेगा और न फसल कटेगी। 7 और खुदा ने मुझ को तुम्हारे आगे भेजा, ताकि तुम्हारा बकिया जमीन पर सलामत रखें और तुम को बड़ी रिहाई के बसीले से ज़िन्दा रखें। 8 फिर तुम ने नहीं बल्कि खुदा ने मुझे यहाँ भेजा, और उसने मुझे गोया फिर औन का बाप और उसके सारे धर का खुदावन्द और सारे मुल्क — ए — मिस्थ का हाकिम बनाया। 9 इसलिए तुम जल्द मेरे बाप के पास जाकर उससे कहो, 'तेरा बेटा यसुफ यूँ कहता है, कि खुदावन्द ने मुझ को सारे मिस्थ का मालिक कर दिया है।' 10 मेरे पास चला आ, देर न कर। 10 तू जशन के इलाके में रहना, और तू और तेरे बेटे और तेरी भेड़ बकरियाँ और गायें बैल और तेरा माल ओ — मता'अ, यह सब मेरे नज़रीक होंगे। 11 और वही मैं तेरी पवररिश करूँगा; ऐसा न हो कि तज़ को और तेरे धराने और तेरे माल — ओ — मता'अ को गरीबी आ दबाए, क्यूँकि काल के अभी पाँच साल और है। 12 और देखो, तुम्हारी ओँखें और मेरे भाई बिनयमीन की ओँखें देखती हैं कि खुद मेरे मुँह से ये बातें तुम से हो रही हैं। 13 और तुम मेरे बाप से मेरी सारी शान — ओ — शौकत का जो मुझे मिस्थ में हासिल है, और जो कुछ तुम ने देखा है सबका जिक्र करना; और तुम बहत जल्द मेरे बाप को यहाँ ले आना।" 14 और वह अपने भाई बिनयमीन के गते लग कर रोया और बिनयमीन भी उसके गते लगकर रोया। 15 और उसने सब भाइयों को चमा और उनसे मिल कर रोया, इसके बाद उसके भाई उससे बातें करने लगे। 16 और फिर औन के महल में इस बात का जिक्र हुआ कि यसुफ के भाई आई हैं और इस से फिर औन के नैकर चाकर बहुत खुश हुए। 17 और फिर औन ने यसुफ से कहा कि अपने भाइयों से कह, "तुम यह काम करो कि अपने जानवरों को लाद कर मुल्क — ए — कनान को चले जाओ।" 18 और अपने बाप को और अपने — अपने धराने और लेकर मेरे पास आ जाओ, और जो कुछ मुल्क — ए — मिस्थ में अच्छे से अच्छे हैं वह मैं तुम को दूँगा और तुम इस मुल्क की उम्दा उम्दा चीजें खाना। 19 तुझे हुक्म मिल गया है, कि उनसे कहे, 'तुम यह करो कि अपने बाल बच्चों

और अपनी बीवियों के लिए मुल्क — ए — मिस से अपने साथ गाड़ियाँ ले जाओ, और अपने बाप को भी साथ लेकर चले आओ। 20 और अपने अस्बाब का कुछ अफसोस न करना, क्यूंकि मुल्क — ए — मिस की सब अच्छी चीजें तुम्हारे लिए हैं।” 21 और इसाईल के बेटों ने ऐसा ही किया; और यूसुफ ने फिर औन के हक्म के मुताबिक उनको गाड़ियाँ दी और सफर का सामान भी दिया। 22 और उसने उनमें से हर एक को एक — एक जोड़ा कपड़ा दिया, लेकिन बिन्यमीन को चाँदी के तीन सौ सिक्के और पाँच जोड़े कपड़े दिए। 23 और अपने बाप के लिए उसने यह चीजें भेजी, यानी दस गधे जो मिस की अच्छी चीजों से लदे हुए थे, और दस गधियाँ जो उसके बाप के रास्ते के लिए गल्ला और रोटी और सफर के सामान से लदी हुई थी। 24 चुनांचे उसने अपने भाइयों को रखाना किया और वह चल पड़े; और उसने उसे कहा, “देखना, कहीं रास्ते में तुम झागड़ा न करना।” 25 और वह मिस से रखाना हुए और मुल्क — ए — कनान में अपने बाप या’कूब के पास पहुँचे, 26 और उससे कहा, “यूसुफ अब तक जिन्दा है और वही सारे मुल्क — ए — मिस का हाकिम है।” और या’कूब का दिल धक से रह गया, क्यूंकि उसने उनका यकीन न किया। 27 तब उन्होंने उसे वह सब बातें जो यूसुफ ने उनसे कहीं थी बताई, और जब उनके बाप या’कूब ने वह गाड़ियाँ देख लीं जो यूसुफ ने उसके लाने को भेजी थीं, तब उसकी जान में जान आई। 28 और इसाईल कहने लगा, “यह बस है कि मेरा बेटा यूसुफ अब तक जिन्दा है। मैं अपने मरने से पहले जाकर उसे देख तो लौंगा।”

46 और इसाईल अपना सब कुछ लेकर चला और बैरसबा’ में आकर अपने बाप इस्हाक के खुदा के लिए कुर्बानियाँ पेश की। 2 और खुदा ने रात को खबार में इसाईल से बातें की और कहा, ऐ या’कूब, ऐ या’कूब। “उसने जबाब दिया, मैं हाजिर हूँ।” 3 उसने कहा, “मैं खुदा, तेरे बाप का खुदा हूँ। मिस में जाने से न डर, क्यूंकि मैं वहाँ तुझ से एक बड़ी कौम पैदा करूँगा। 4 मैं तेरे साथ मिस को जाऊँगा और फिर तुझे ज़स्त लौटा भी लाऊँगा, और यूसुफ अपना हाथ तेरी आँखों पर लगाएगा।” 5 तब या’कूब बैरसबा’ से रखाना हुआ, और इसाईल के बेटे अपने बाप या’कूब को और अपने बाल बच्चों और अपनी बीवियों को उन गाड़ियों पर ले गए जो फिर औन ने उनके लाने को भेजी थीं। 6 और वह अपने चौपायों और सारे माल — ओ — अस्बाब को जो उन्होंने मुल्क — ए — कनान में जमा किया था लेकर मिस में आए, और या’कूब के साथ उसकी सारी औलाद थी। 7 वह अपने बेटों और बेटियों और पोतों और पोतियों, और अपनी कुल नस्ल को अपने साथ मिस में ले आया। 8 और या’कूब के साथ जो इसाईलीयानी उसके बेटे वौंगा मिस में आए उनके नाम यह हैं: स्विन, या’कूब का पहलौठा। 9 और बनी स्विन यह हैं: हनक और फल्ला, और हसरोन और कर्मी। 10 और बनी शमैन यह हैं: यमूलू और यमीन और उहद और यकीन और सुहर और साऊल, जो एक कनानी ‘औरत से पैदा हुआ था। 11 और बनी लावी यह हैं: जैरसेन और किहात और मिररी। 12 और बनी यहदाह यह हैं: एर और ओनान और सीला, और फारस और जारह — इनमें से ‘एर और ओनान मुल्क — ए — कनान में मर चुके थे। और फारस के बेटे यह हैं: हसरोन और हमूलू। 13 और बनी इश्कार यह हैं: तोला’ और फूवा और योब और सिमरोन। 14 और बनी जब्लून यह हैं: सरद और एलोन और यहलीएल। 15 यह सब या’कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो फ़दान अराम में लिया हुआ पैदा हुए, इसी के बत्र से उसकी बेटी दीना थी। यहाँ तक तो उसके सब बेटे बेटियों का शुमार तैयार हुआ। 16 बनी जड़ यह हैं: सफियान और हज्जी और सनी और अस्बान और ‘एरी और अस्दी और अरेली। 17 और बनी आशर यह हैं: यिमना और इसवाह और इसवी और बरी’आह और सिर्हां उनकी बहन और

बनी बरी’आह यह हैं: हिब्रू और मलकीएल। 18 यह सब या’कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो जिल्फा लौंडी से पैदा हुए, जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया था। उनका शुमार सोलह था। 19 और या’कूब के बेटे यूसुफ और बिन्यमीन राखिल से पैदा हुए थे। 20 और यूसुफ से मुल्क — ए — मिस में औन के पुजारी फोर्टिफिर’ की बेटी आसिनाथ के मनस्सी और इक्काईल पैदा हुए। 21 और बनी बिन्यमीन यह हैं: बाला’ और बक और अशबेल और जीरा और नामान, अस्ती और रोस, मुफ़फीम और हुमकीम और अरदा। 22 यह सब या’कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो राखिल से पैदा हुए। यह सब शुमार में चौदह थे। 23 और दान के बेटे का नाम हशीम था। 24 और बनी नफताली यह हैं: यहसीएल और ज़नी और यिस और सलीम। 25 यह सब या’कूब के उन बेटों की औलाद हैं जो बिल्हार लौंडी से पैदा हुए, जिसे लाबन ने अपनी बेटी राखिल को दिया था। इनका शुमार सात था। 26 या’कूब के सुल्ब से जो लोग पैदा हुए और उसके साथ मिस में आए वह उसकी बहओं को छोड़ कर शुमार में छियासठ थे। 27 और यूसुफ के दो बेटे थे जो मिस में पैदा हुए, इसलिए या’कूब के घराने के जो लोग मिस में आए वह सब मिल कर सतर हुए। 28 और उसने यहदाह को अपने से आगे यूसुफ के पास भेजा ताकि वह उसे जशन का रस्ता दिखाए, और वह जशन के ‘इलाके में आए। 29 और यूसुफ अपना रथ तैयार करवा के अपने बाप इसाईल के इस्तकबाल के लिए जशन को गया, और उसके पास जाकर उसके गले से लिपट गया और वही लिपटा हुआ देर तक रोता रहा। 30 तब इसाईल ने यूसुफ से कहा, “अब चाहे मैं मर जाऊँ, क्यूंकि तेरा मूँह देख चुका कि तू अभी जिन्दा है।” 31 और यूसुफ ने अपने भाइयों से और अपने बाप के घराने से कहा, मैं अभी जाकर फिर औन को खबर कर दूँगा और उससे कह दूँगा कि मेरे भाई और मेरे बाप के घराने के लोग, जो मुल्क — ए — कनान में थे मेरे पास आ गए हैं। 32 और वह चौपान हैं, क्यूंकि बाबर चौपायों को पालते आए हैं, और वह अपनी भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल और जो कुछ उनका है सब ले आए हैं। 33 तब जब फिर औन तुम को बुला कर पूछे कि तुम्हारा पेशा क्या है? 34 तो तम यह कहना कि तेरे खादिम, हम भी और हमारे बाप दादा भी, लड़कपन से लेकर आज तक चौपाये पालते आए हैं। तब तुम जशन के इलाके में रह सकोगे, इसलिए कि मिसियों को चौपानों से नफरत है।

47 तब यूसुफ ने आकर फिर औन को खबर दी कि मेरा बाप और मेरे भाई और उनकी भेड़ बकरियाँ और गाय बैल और उनका सारा माल — ओ — सामान मुल्क — ए — कनान से आ गया है, और अभी तो वह सब जशन के ‘इलाके में हैं। 2 फिर उसने अपने भाइयों में से पाँच को अपने साथ लिया और उनको फिर औन के सामने हाजिर किया। 3 और फिर औन ने उसके भाइयों से पूछा, “तेरे खादिम चौपान हैं जैसे हमारे बाप दादा थे।” 4 फिर उन्होंने फिर औन से कहा कि हम इस मुल्क में मुसाफिराना तौर पर रहने आए हैं, क्यूंकि मुल्क — ए — कनान में सच्चल काल होने की वजह से वहाँ तेरे खादिमों के चौपायों के लिए चराई नहीं रही। इसलिए करम करके अपने खादिमों को जशन के ‘इलाके में रहने दे। 5 तब फिर औन ने यूसुफ से कहा कि तेरा बाप और तेरे भाई तेरे पास आ गए हैं। 6 मिस का मुल्क तेरे आगे पड़ा है, यहाँ के अच्छे से अच्छे इलाके में अपने बाप और भाइयों को बसा दे, यानी जशन ही के ‘इलाके में उनको रहने दे, और अगर तेरी समझ में उनमें होशियार आदमी भी हों तो उनको मेरे चौपायों पर मुकर्रर कर दे। 7 और यूसुफ अपने बाप या’कूब को अन्दर लाया और उसे फिर औन के सामने हाजिर किया, और या’कूब ने फिर औन को दुआ दी। 8 और फिर औन ने या’कूब से पूछा कि तेरी उम्र कितने साल की है? 9 या’कूब ने फिर औन से कहा कि मेरी मुसाफिरत के साल एक सौ तीस हैं, मेरी जिन्दगी के

दिन थोड़े और दुख से भरे हुए रहे, और अभी यह इतने हुए भी नहीं हैं जितने में बाप दादा की ज़िन्दगी के दिन उनके दौर — ए — मुसाफिरत में हुए। 10 और या'कूब फिर' औन को दुआ दे कर उसके पास से चला गया। 11 और यूसुफ ने अपने बाप और अपने भाइयों को बसा दिया और फिर' औन के हुक्म के मुताबिक रा'मसीस के इलाके को, जो मुल्क — ए — मिस्र का निहायत हरा भरा 'इताका है उनकी जापार ठहराया। 12 और यूसुफ अपने बाप और अपने भाइयों और अपने बाप के घर के सब आदिमियों की पवरिश, एक — एक के खानादान की ज़स्तर के मुताबिक अनाज से करने लगा। 13 और उस सारे मुल्क में खाने को कुछ न रहा, क्यूंकि काल ऐसा सख्त था कि मुल्क — ए — मिस्र और मुल्क — ए — कनान दोनों काल की वजह से तबाह हो गए थे। 14 और जितना स्थाया मुल्क — ए — मिस्र और मुल्क — ए — कनान में था वह सब यूसुफ ने उस गल्ले के बदले, जिसे लोग खरीदते थे, ले ले कर जमा' कर लिया और सब स्थाये को उसने फिर' औन के महल में पहुँचा दिया। 15 और जब वह सारा स्थाया, जो मिस्र और कनान के मुल्कों में था, खर्च हो गया तो मिस्री यूसुफ के पास आकर कहने लगे, "हम को अनाज दे; क्यूंकि स्थाया तो हमारे पास रहा नहीं। हम तेरे होते हुए क्यूं मरें?" 16 यूसुफ ने कहा कि आगर स्थाया नहीं है तो अपने चौपाये दो; और मैं तुम्हारे चौपायों के बदले तुम को अनाज दूँगा। 17 तब वह अपने चौपाये यूसुफ के पास लाने लगे और गाय बैलों और गधों के बदले उनको अनाज देने लगा; और पूरे साल भर उनको उनके सब चौपायों के बदले अनाज खिलाया। 18 जब यह साल गुजर गया तो वह दूसरे साल उसके पास आकर कहने लगे कि इसमें हम अपने खुदावन्द से कुछ नहीं छिपाते कि हमारा सारा स्थाया खर्च हो चुका और हमारे चौपायों के गल्लों का मालिक भी हमारा खुदावन्द हो गया है। और हमारा खुदावन्द देख चुका है कि अब हमारे जिस्म और हमारी ज़मीन के अलावा कुछ बाकी नहीं। 19 फिर ऐसा क्यूं हो कि तेरे देखते — देखते हम भी मरें और हमारी ज़मीन भी उजड़ जाए? इसलिए त हम को और हमारी ज़मीन को अनाज के बदले खरीद ले कि हम फिर' औन के गुलाम बन जाएँ, और हमारी ज़मीन का मालिक भी वही हो जाए और हम को बीज दे ताकि हम हलाक न हों बल्कि ज़िन्दा रहें और मुल्क भी वीरान न हो। 20 और यूसुफ ने मिस्र की सारी ज़मीन फिर' औन के नाम पर खरीद ली; क्यूंकि काल से तंग आ कर मिस्रियों में से हर शाखा ने अपना खेत बेच डाला। तब सारी ज़मीन फिर' औन की हो गई। 21 और मिस्र के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक जो लोग रहते थे उनको उसने शहरों में बसाया। 22 लेकिन पुजारियों की ज़मीन उसने न खरीदी, क्यूंकि फिर' औन की तरफ से पुजारियों को खुराक मिलती थी। इसलिए वह अपनी — अपनी खुराक, जो फिर' औन उनको देता था खाते थे इसलिए उन्होंने अपनी ज़मीन न बेची। 23 तब यूसुफ ने वहाँ के लोगों से कहा, कि देखो, मैंने आज के दिन तुम को और तुम्हारी ज़मीन को फिर' औन के नाम पर खरीद लिया है। इसलिए तुम अपने लिए यहाँ से बीज लो और खेत बो डालो। 24 और फ़सल पर पाँचवाँ हिस्सा फिर' औन को दे देना और बाकी चार तुम्हारे रहे, ताकि खेती के लिए बीज के भी काम आँएँ, और तुम्हारे और तुम्हारे घर के आदिमियों और तुम्हारे बाल बच्चों के लिए खाने को भी हो। 25 उन्होंने कहा, कि तूने हमारी जान बचाई है, हम पर हमारे खुदावन्द के करम की नज़र रहे और हम फिर' औन के गुलाम बने रहेंगे। 26 और यूसुफ ने यह कानून जो आज तक है मिस्र की ज़मीन के लिए ठहराया, के फिर' औन पैदावार का पाँचवाँ हिस्सा लिया करे। इसलिए सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन ऐसी थी जो फिर' औन की न हुई। 27 और इस्माईली मुल्क — ए — मिस्र में ज़शन के इलाके में रहते थे, और उन्होंने अपनी जायदादें खड़ी कर लीं और वह बढ़े और बहुत ज्यादा हो गए। 28 और या'कूब मुल्क — ए — मिस्र में सत्रह साल और

जिया; तब या'कूब की कुल उम्र एक सौ सैंतालीस साल की हुई। 29 और इस्माईल के मरने का बक्तव्य नज़दीक आया; तब उसने अपने बेटे यूसुफ को बुला कर उससे कहा, "अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो अपना हाथ मेरी रान के नीचे रख, और देख, मेहरबानी और सच्चाई से मेरे साथ पेश आना; मुझ को मिस्र में दफ़न करना। 30 बल्कि जब मैं अपने बाप — दादा के साथ सो जाऊं तो मुझे मिस्र से ले जाकर उनके कब्रिस्तान में दफ़न करना।" उसने जवाब दिया, "जैसा तूने कहा है मैं वैसा ही करौंगा।" 31 और उसने कहा कि तु मुझ से कसम खा। और उसने उसके कसम खाई, तब इस्माईल अपने बिस्तर पर सिरहाने की तरफ सिज़दे में हो गया।

48 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि किसी ने यूसुफ से कहा, "तेरा बाप बीमार है।" तब वह अपने दोनों बेटों, मनस्सी और इस्माईल को साथ लेकर चला। 2 और या'कूब से कहा गया, तेरा बेटा यूसुफ तेरे पास आ रहा है, और इस्माईल अपने को संभाल कर पलंग पर बैठ गया। 3 और या'कूब ने यूसुफ से कहा, "खुदा — ए — कादिर — ए — मुतलक मुझे लज़ में जो मुल्क — ए — कनान में है, दिखाई दिया और मुझे बरकत दी। 4 और उसने मुझ से कहा मैं तुझे कामयाब कहस्ता और बढ़ाऊंगा और तुम से कौमों का एक पिरोह पैदा कहस्ता; और तेरे बाद यह ज़मीन तेरी नसल को ढूँगा, ताकि यह उनकी हमेशा की जायदाद हो जाए। 5 तब तेरे दोनों बेटे, जो मुल्क — ए — मिस्र में मेरे अपने से पहले पैदा हुए मेरे हैं, यानी स्थिन और शमैन की तरह इस्माईल और मनस्सी भी मेरे ही होंगे। 6 और जो औलाद अब उनके बाद तुझ से होगी वह तेरी ठरेगी, लेकिन अपनी मीरास में अपने भाइयों के नाम से वह लोग नामज़द होंगे। 7 और मैं जब फ़दान से आता था तो राखिल ने गास्ते ही मैं जब इफ़रात थोड़ी दूँर रह गया था, मेरे सामने मुल्क — ए — कनान में वफ़ात पाई। 8 और मैंने उसे वही इफ़रात के रास्ते में दफ़न किया। बैतलहम वही है।" 8 फिर इस्माईल ने यूसुफ के बेटों को देख कर पूछा, "यह कौन है?" 9 यूसुफ ने अपने बाप से कहा, "यह मेरे बेटे हैं जो खुदा ने मुझे यहाँ दिए हैं।" उसने कहा, "उनको ज़रा मेरे पास ला, मैं उनको बरकत ढूँगा।" 10 लेकिन इस्माईल की औँखें खुड़ापे की वजह से धूँधला गई थीं, और उसे दिखाई नहीं देता था। तब यूसुफ उनको उसके नज़दीक ले आया। तब उसने उनके चम्प कर गले लगा लिया। 11 और इस्माईल ने यूसुफ से कहा, "मुझे तो ख्याल भी न था कि मैं तेरा मूँह देखूँगा लेकिन खुदा ने तेरी औलाद भी मुझे दिखाई।" 12 और यूसुफ उनको अपने घृनों के बीच से हटा कर मूँह के बल ज़मीन तक झका। 13 और यूसुफ उन दोनों को लेकर, यानी इस्माईल को अपने दहने हाथ से इस्माईल के बाएँ हाथ के सामने और मनस्सी को अपने बाएँ हाथ से इस्माईल के दहने हाथ के सामने करके, उनको उसके नज़दीक लाया। 14 और इस्माईल ने अपना दहना हाथ बढ़ा कर इस्माईल के सिर पर जो छोटा था, और बाँया हाथ मनस्सी के सिर पर रख दिया। उसने जान बढ़ा कर अपने हाथ यूँ रख दिये, क्यूंकि पहलौता तो मनस्सी ही था। 15 और उसने यूसुफ को बरकत दी और कहा कि खुदा, जिसके सामने मेरे बाप अब्रहाम और इस्माइल ने अपना दैर पूरा किया; वह खुदा, जिसने सारी उम्र आज के दिन तक मेरी रहनुमाई की। 16 और वह फ़रिशता, जिसने मुझे सब बलाओं से बचाया, इन लड़कों को बरकत दी; और जो मेरा और मेरे बाप दादा अब्रहाम और इस्माइल का नाम है उसी से यह नामज़द हों, और ज़मीन पर बहुत कसरत से बढ़ जाएँ। 17 और यूसुफ यह देखकर कि उसके बाप ने अपना दहना हाथ इस्माईल के सिर पर रख दिया, नाखुश हुआ और उसने अपने बाप का हाथ थाम लिया, ताकि उसे इस्माईल के सिर पर से हटाकर मनस्सी के सिर पर रख दिये। 18 और यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि मैं भी बाप, ऐसा न कर; क्यूंकि पहलौता यह है, अपना दहना हाथ इसके सिर पर रख। 19 उसके बाप ने न

माना, और कहा, “ऐ मेरे बेटे, मुझे खूब मालूम है। इससे भी एक गिरोह पैदा होगी और यह भी बुजुर्ग होगा, लेकिन इसका छोटा भाई इससे बहुत बड़ा होगा और उसकी नसल से बहुत सी कौमें होंगी।” 20 और उसे उनको उस दिन बरकत बर्बादी और कहा, इसाईली तेरा नाम ले लेकर यूं दुआ दिया करेंगे, ‘खुदा तुझ को इफ्राईम और मनस्सी को तरह कामयाब करो।’ तब उसने इफ्राईम को मनस्सी पर फजीलत दी। 21 और इसाईल ने यसुफ़ से कहा, मैं तो मरता हूँ लेकिन खुदा तुम्हारे साथ होगा और तुम को फिर तुम्हारे बाप दादा के मुल्क में ले जाएगा। 22 और मैं तुझे तो भाइयों से ज्यादा एक हिस्सा, जो मैंने अमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और कमान से लिया देता हूँ।

49 और याकूब ने अपने बेटों को यह कह कर बुलवाया कि तुम सब जमा हो जाओ, ताकि मैं तुम को बताऊँ कि आखिरी दिनों में तुम पर क्या — क्या गुजरेगा। 2 ऐ, याकूब के बेटों जमा हो कर सुनो, और अपने बाप इसाईल की तरफ कान लगाओ। 3 ऐ रुबिन! तू मेरा पहलौटा, मेरी कृत्व और मेरी शहजोरी का पहला फल है। तू मेरे रौब की और मेरी ताकत की शान है। 4 तू पानी की तरह बे सबत है, इसलिए मुझे फजीलत नहीं मिलेगी क्यूँकि तू अपने बाप के बिस्तर पर चढ़ा तने उसे नापाक किया; स्विन मेरे बिछाने पर चढ़ गया। 5 शमैन और लावी तो थाईं — थाईं हैं, उनकी तलवारें ज़ुल्म के हथियार हैं। 6 ऐ मेरी जान! उनके मध्ये मैं शरीक न हो, ऐ मेरी बुजुर्गी! उनकी मजलिस में शामिल न हो, क्यूँकि उन्होंने अपने गजब में एक आदमी को कल्प किया, और अपनी खुदवाई से बैलों की कँचें काटी। 7 लात उनके गजब पर, क्यूँकि वह तुन्द था। और उनके कहर पर, क्यूँकि वह सख्त था; मैं उन्हें याकूब में अलग अलग और इसाईल में बिखरे दौँगा। 8 ऐ यहदाह, तेरे थाईं तेरी मदह करेंगे, तेरा हाथ तेरे दुश्मनों की गर्दन पर होगा। तेरे बाप की औलाद तेरे आगे सिज्दा करेगी। 9 यहदाह शेर — ऐ — बबर का बच्चा है ऐ मेरे बेटे! तू शिकार मार कर चल दिया है। वह शेर — ऐ — बबर, बल्कि शेरनी की तरह दुबक कर बैठ गया, कौन उसे छेड़े? 10 यहदाह से सल्तनत नहीं छूटेगी। और न उसकी नसल से हुक्मत का 'असा मौकूफ होगा। जब तक शीलोह न आए और कौमें उसकी फरमाबदर होंगी। 11 वह अपना जवान गथा अंगू के दरखत से, और अपनी गथी का बच्चा 'आला दरजे के अंगू के दरखत से बाँधा करेगा; वह अपना लिबास मय में, और अपनी पोशाक आब — ए अंगू में दोया करेगा 12 उसकी आँखें मय की वजह से लाल, और उसके दौत दूध की वजह से सफेद रहा करेंगे। 13 जबलून समन्दर के किनारे बसेगा, और जहाजों के लिए बन्दरगाह का काम देगा, और उसकी हृद सैदा तक फैली होगी। 14 इश्कार मजबूत गथा है, जो दो भेड़सालों के बीच बैठा है; 15 उसने एक अच्छी आरामगाह और खुशनुमा जमीन को देख कर अपना कन्धा बोझ उठाने को शक्याया, और बेगार में गुलाम की तरह काम करने लगा। 16 दान इसाईल के कर्बीलों में से एक की तरह अपने लोगों का इसाफ करेगा। 17 दान रास्ते का सौंप है, वह राहगुजर का अज़दह है, जो घोड़े के 'अकब को ऐसा डसाता है कि उसका सवार पछाड़ खा कर पिर पड़ता है। 18 ऐ खुदावन्द, मैं तेरी नजात की राह देखता आया हूँ। 19 ज़द पर एक फौज हमला करेगी लेकिन वह उसके दुम्बाला पर छापा मरेगा। 20 आशर नफ़ीस अनाज पैदा किया करेगा और बादशाहों के लायक लज़ीज़ सामान मुहर्या करेगा। 21 नफ़ाती ऐसा है जैसा छुटी हुई हिरनी, वह मीठी — मीठी बातें करता है। 22 यसुफ़ एक फलदार पौधा है, ऐसा फलदार पौधा जो पानी के चर्खों के पास लगा हुआ है, और उसकी शाखें। दीवार पर फैल गई हों। 23 तीरंदाजों ने उसे बहुत छेड़ा और मारा और सताया है; 24 लेकिन उसकी कमान मजबूत रही, और उसके हाथों और बाजुओं ने याकूब के कादि के हाथ से ताकत पाई, वहीं से वह चौपान उठा है जो इसाईल की चटान है। 25

यह तेरे बाप के खुदा का काम है, जो तेरी मदद करेगा, उसी कादि — ए — मुतलक का काम जो ऊपर से आसामन की बरकतें, और नीचे से गहरे समुद्र कि बरकतें 'आता करेगा। 26 तेरे बाप की बरकतें, मेरे बाप दादा की बरकतों से कहीं ज्यादा है, और कदीम पहाड़ों की इन्तिहा तक पहुँची हैं; वह यसुफ़ के सिर, बल्कि उसके सिर की चाँदी पर जो अपने भाइयों से जुदा हुआ नजिल होंगी। 27 बिन्यमीन फांडने वाला भेड़िया है, वह सबह को शिकार खाएगा और शाम को लट्ठ का माल बैटेगा। 28 इसाईल के बारह कबीले यहीं हैं। और उनके बाप ने जो — जो बातें कह कर उनको बरकत दी वह भी यहीं हैं; हर एक को, उसकी बरकत के मुवाफिक उसने बरकत दी। 29 फिर उन्हें उनको हृक्षम किया और कहा, कि मैं अपने लोगों में शामिल होने पर हूँ; मुझे मेरे बाप दादा के पास उस मगारह मरे में जो इफ्रोन हिती के खेत में है दफ्न करना, 30 यानी उस मारों में जो मुल्क — ए — कनान में ममरे के सामने मकफ़ीला के खेत में है, जिसे अब्राहाम ने खेत के साथ 'इफ्रोन हिती से मोल लिया था, ताकि कब्रिस्तान के लिए वह उसकी मिलिक्यत बन जाए। 31 वहाँ उन्होंने इस्हाक और उसकी बीवी रिबका को दफ्न किया, और वही मैंने भी लियाह को दफ्न किया, 32 यानी उसी खेत के मागारे में जो बनी हिती से खरीदा था। 33 और जब याकूब अपने बेटों को बसीरीत कर चुका तो, उसने अपने पाँव बिछाने पर समेट लिए और दम छोड़ दिया और अपने लोगों में जा मिला।

50 तब यसुफ़ अपने बाप के मँहूँ से लिपट कर उस पर रोया और उसको चूमा।

2 और यसुफ़ ने उन हकीमों को जो उनके नौकर थे, अपने बाप की लाश में खुशबू भरने का हुम्म दिया। तब हकीमोंने इसाईल की लाश में खुशबू भरी। 3 और उसके चालीस दिन पूरे हुए, क्यूँकि खुशबू भरने में इन्हें ही दिन लगते हैं। और मिस्री उसके लिए सतर दिन तक मातम करते रहे। 4 और जब मातम के दिन गुजर गए तो यसुफ़ ने फिर 'अौन के घर के लोगों से कहा, अगर मुझ पर तुम्हारे करम की नजर है तो फिर' औन के घर के लोगों से कहा, अगर मुझ पर तुम्हारे करम की नजर है तो फिर 'अौन से जरा 'अर्ज कर दो, 5 कि मैं अपने बाप के नाम से यह मुझ से कसम लेकर कहा है, 'मैं तो मरता हूँ, तू मुझ को मेरी कब्र में जो मैंने मुल्क — ए — कनान में अपने लिए खुदवाई है, दफ्न करना। इसलिए जरा मुझ इजाजत दे कि मैं वहाँ जाकर अपने बाप को दफ्न करूँ, और मैं लौट कर आ जाऊँगा।' 6 फिर 'अौन ने कहा, कि जा और अपने बाप को जैसे उसने तुझ से कसम ली है दफ्न कर। 7 तब यसुफ़ अपने बाप को दफ्न करने चला, और फिर 'अौन के सब खादिम और उसके घर के बुर्ज़, और मुल्क — ए — मिस्र के सब बुजुर्ग, 8 और यसुफ़ के घर के सब लोग और उसके भाई, और उसके बाप के घर के आदमी उसके साथ गए; वह सिर्फ़ अपने बाल बच्चे और भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल जशन के 'इलाकों में छोड़ गए। 9 और उसके साथ रथ और सवार भी गए, और एक बड़ा क्राफिला उसके साथ था। 10 और वह अतद के खलिहान पर जो यरदन के पार है पहुँचे, और वहाँ उन्होंने बुलन्द और दिलसोज़ आवाज़ से नैहा किया; और यसुफ़ ने अपने बाप के लिए सात दिन तक मातम कराया। 11 और जब उस मुल्क के बाशिनों यानी कनानियों ने अतद में खलिहान पर इस तरह का मातम देखा, तो कहने लगे, 'मिस्रीयों का यह बड़ा दर्दनाक मातम है।' इसलिए वह जगह अबील मिस्रीय कहलाई, और वह यरदन के पार है। 12 और याकूब के बेटों ने जैसा उसने उनको हृक्षम किया था, वैसा ही उसके लिए किया। 13 क्यूँकि उन्होंने उसे मुल्क — ए — कनान में ले जाकर ममरे के सामने मकफ़ीला के खेत के मारों में, जिसे अब्राहाम ने 'इफ्रोन हिती से खरीदकर कब्रिस्तान के लिए अपनी मिलिक्यत बना लिया था दफ्न किया। 14 और यसुफ़ अपने बाप को दफ्न करके अपने भाइयों, और उनके साथ जो उसके बाप को दफ्न करने के लिए

उसके साथ गए थे, मिस्र को लौटा। 15 और यूसुफ के भाई यह देख कर कि उनका बाप मर गया कहने लगे, कि यूसुफ शायद हम से दूषमनी करे, और सारी बुराई का जो हम ने उससे की है पूरा बदला ले। 16 तब उन्होंने यूसुफ को यह कहला भेजा, “तेरे बाप ने अपने मरने से आगे ये हृकम किया था, 17 'तुम यूसुफ से कहना कि अपने भाइयों की खता और उनका गुनाह अब बरखा दे, क्यूंकि उन्होंने तुम्हा से बुराई की; इसलिए अब तू अपने बाप के खुदा के बन्दों की खता बरखा दे।'” और यूसुफ उनकी यह बातें सुन कर रोया। 18 और उसके भाइयों ने खुद भी उसके सामने जाकर आगे सिर टेक दिए और कहा, “देख! हम तेरे खादिम हैं।” 19 यूसुफ ने उनसे कहा, “मत डरो! क्या मैं खुदा की जगह पर हूँ? 20 तुम ने तो मुझ से बुराई करने का इरादा किया था, लेकिन खुदा ने उसी से नेकी का कस्द किया, ताकि बहुत से लोगों की जान बचाए चुनाँचे आज के दिन ऐसा ही हो रहा है। 21 इसलिए तुम मत डरो, मैं तुम्हारी और तुम्हारे बाल बच्चों की परवारिश करता रहूँगा।” इस तरह उसने अपनी मूलायम बातों से उनको तसल्ली दी। 22 और यूसुफ और उसके बाप के घर के लोग मिस्र में रहे, और यूसुफ एक सौ दस साल तक ज़िन्दा रहा। 23 और यूसुफ ने इफ्राईम की औलाद तीसीरी नस्ल तक देखी, और मनस्सी के बेटे मकरी की औलाद को भी यूसुफ ने अपने घुटनों पर खिलाया। 24 और यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं मरता हूँ; और खुदा यकीनन तुम को याद करेगा, और तुम को इस मुल्क से निकाल कर उस मुल्क में पहुँचाएगा जिसके देने की कसम उसने अब्बहाम और इस्हाक और याकूब से खाई थी।” 25 और यूसुफ ने बनी — इस्माइल से कसम लेकर कहा, खुदा यकीनन तुम को याद करेगा, इसलिए तुम ज़स्त ही मेरी हड्डियों को यहाँ से ले जाना। 26 और यूसुफ ने एक सौ दस साल का होकर बफात पाई; और उन्होंने उसकी लाश में खुशबू भरी और उसे मिस्र ही में ताबूत में रखवा।

खुरू

1 इसाईल के बेटों के नाम जो अपने — अपने घराने को लेकर याँकूब के साथ मिस्र में आए थे हैं: 2 स्विन, शमैन, लावी, यहदाह, 3 इश्कार, जबूलन, बिनयमीन, 4 दान, नफताली, ज़द, आशर 5 और सब जाने जो याँकूब के सुल्ब से पैदा हुईं सतर थीं, और यसुफ तो मिस्र में पहले ही से था। 6 और यसुफ और उसके सब भाई और उस नसल के सब लोग मर मिटे। 7 और इसाईल की औलाद कामयाब और ज्यादा ताँदाद और फिरावान और बहुत ताकतवर हो गई और वह मुल्क उनसे भर गया। 8 तब मिस्र में एक नया बादशाह हुआ जो यसुफ को नहीं जानता था। 9 और उसने अपनी कौम के लोगों से कहा, “देखो इस्माइली हम से ज्यादा और ताकतवर हो गए हैं। 10 इसलिए आओ, हम उनके साथ हिकमत से पेश आँए, ऐसा न हो कि जब वह और ज्यादा हो जाएँ और उस वक्त जंग छिड़ जाए तो वह हमारे दुश्मनों से मिल कर हम से लड़ें और मुल्क से निकल जाएँ।” 11 इसलिए उन्होंने उन पर बेगार लेने वाले मुकर्रर किए जो उनसे सख्त काम लेकर उनको सताएँ। तब उन्होंने फिर औन के लिए ज़खरि के शहर पितोम और रामसीस बनाए। 12 तब उन्होंने जितना उनको सताया वह उतना ही ज्यादा बढ़ाते और फैलते गए, इसलिए वह लोग बनी — इसाईल की तरफ से फ़िक्रमन्द ही गए। 13 और मिस्रियों ने बनी — इसाईल पर तशुद कर — कर के उनसे काम कराया। 14 और उन्होंने उनसे सख्त मेहनत से गारा और ईंट बनवा — बनवाकर और खेत में हर किस्म की खिद्रमत ले — लेकर उनकी ज़िन्दानी क़डवी की; उनकी सब खिद्रमतें जो वह उनसे कराते थे दुख की थीं। 15 तब मिस्र के बादशाह ने इब्रानी दाइयों से जिनमें एक का नाम सिफ़ारा और दूसरी का नाम फूँआ था बातें की, 16 और कहा, “जब इब्रानी ‘औरतों के तुम बच्चा जानाओ और उनको पत्थर की बैठकों पर बैठी देखो, तो अगर बेटा हो तो उसे मार डालना, और अगर बेटी हो तो वह जीती रहे।” 17 लेकिन वह दाइयाँ खुदा से डरती थीं, तब उन्होंने मिस्र के बादशाह का हुक्म न माना बल्कि लड़कों को जिन्दा छोड़ देती थीं। 18 फिर मिस्र के बादशाह ने दाइयों को बुलवा कर उनसे कहा, “तुम ने ऐसा क्यों किया कि लड़कों को जिन्दा रहने दिया?” 19 दाइयों ने फिर औन से कहा, “इब्रानी ‘औरतें मिस्री ‘औरतों की तरह नहीं हैं। वह ऐसी मज़बूत होती है कि दाइयों के पहुँचने से पहले ही जनकर फ़ारिग हो जाती है।’” 20 तब खुदा ने दाइयों का भला किया और लोग बढ़े और बहुत जबरदस्त हो गए। 21 और इस बजह से कि दाइयाँ खुदा से डरी, उसने उनके घर आबाद कर दिए। 22 और फिर औन ने अपनी कौम के सब लोगों को ताकीदन कहा, “उत्में जो बेटा पैदा हो तुम उसे दरिया में डाल देना, और जो बेटी हो उसे ज़िन्दा छोड़ना।”

2 और लावी के घराने के एक शख्स ने जाकर लावी की नसल की एक 'औरत से ब्याह किया। 2 वह 'औरत हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, और उस ने यह देखकर कि बच्चा ख्वासरूत है तीन महीने तक उसे छिपा कर रखा। 3 और जब उसे और ज्यादा छिपा न सकी तो उसने सरकंडों का एक टोकरा लिया, और उस पर चिकनी मिट्ठी और रात लगा कर लड़के को उसमें रख दिया, और उसे दरिया के किनारे ज़ाऊँ में छोड़ आई। 4 और उसकी बहन दूर खड़ी रही ताकि देखे कि उसके साथ क्या होता है। 5 और फिर औन की बेटी दरिया पर गुस्कर करने आई और उसकी सहेलियाँ दरिया के किनारे — किनारे टहलने लगीं। तब उसने ज़ाऊँ में वह टोकरा देख कर अपनी सहेली की भेजा कि उसे उठा लाए। 6 जब उसने खोला तो लड़के को देखा, और वह बच्चा रो रहा था। उसे उस पर रहम आया और कहने लगी, “यह किसी इब्रानी का बच्चा है।” 7 तब उसकी बहन ने फिर औन की बेटी से कहा, “क्या मैं जा कर

‘इब्रानी’ औरतों में से एक दाईं तेरे पास बुला लाऊँ, जो तेरे लिए इस बच्चे को दूध पिलाया करे?” 8 फिर औन की बेटी ने उसे कहा, “जाए!” वह लड़की जाकर उस बच्चे की माँ को बुला लाई। 9 फिर औन की बेटी ने उसे कहा, “तू इस बच्चे को ले जाकर मेरे लिए दूध पिला, मैं तुझे तेरी मज़दूरी दिया करूँगी।” वह ‘औरत उस बच्चे को ले जाकर दूध पिलाने लगी। 10 जब बच्चा कुछ बड़ा हुआ तो वह उसे फिर औन की बेटी के पास ले गई और वह उसका बेटा ठहरा और उसने उसका नाम मूसा यह कह कर रखवा, “मैंने उसे पानी से निकाला।” 11 इतने में जब मूसा बड़ा हुआ तो बाहर अपने भाइयों के पास गया। और उनकी मशकतों पर उसकी नज़र पड़ी और उसने देखा कि एक मिस्री उसके एक ‘इब्रानी बाई’ को मार रहा है। 12 फिर उसने इधर उधर निगाह की और जब देखा कि वहाँ कोई दूसरा आदमी नहीं है, तो उस मिस्री को जान से मार कर उसे रेत में छिपा दिया। 13 फिर दूसरे दिन वह बाहर गया और देखा कि दो इब्रानी आपस में मार पीट कर रहे हैं। तब उसने उसे जिसका कुसूर था कहा, कि “तू अपने साथी को क्यूँ मारता है?” 14 उसने कहा, “तुझे किसने हम पर हाकिम या मुनिसफ मुकर्रर किया? क्या जिस तरह तुमे उस मिस्री को मार डाला, मुझे भी मार डालना चाहता है?” तब मूसा यह सोच कर डरा, “बिला शक यह राज खूल गया।” 15 जब फिर औन ने यह सुना तो चाहा कि मूसा को कत्तल करे। पर मूसा फिर औन के सामने से भाग कर मुल्क — ए — मिदियान में जा बसा। वहाँ वह एक कुँए के नज़दीक बैठा था। 16 और मिदियान के काहिन की सात बेटियाँ थीं। वह आई और पानी भर — भर कर कठोरों में डालने लगी ताकि अपने बाप की भेड़ — बकरियों को पिलाएँ। 17 और गड़रिये आकर उनको भगाने लगे, लेकिन मूसा खड़ा हो गया और उसने उनकी मदर की और उनकी भेड़ — बकरियों को पानी पिलाया। 18 और जब वह अपने बाप राऊँल के पास लौटी तो उसने पछा, “आज तुम इस कदर जल्द कैसे आ गई?” 19 उन्होंने कहा, “एक मिस्री ने हम को गड़रियों के हाथ से बचाया, और हमारे बदलने पानी भर — भर कर भेड़ बकरियों को पिलाया।” 20 उसने अपनी बेटियों से कहा, “वह आदमी कहाँ है? तुम उसे क्यूँ छोड़ आई? उसे बुला लाओ कि रोटी खाए।” 21 और मूसा उस शख्स के साथ रहने को राजी हो गया। तब उसने अपनी बेटी सफ़रमूसा मूसा को ब्याह दी। 22 और उसके एक बेटा हुआ, और मूसा ने उसका नाम जैरसोम यह कहकर रखवा, “मैं अजनबी मुल्क में मुसाफ़िर हूँ।” 23 और एक मुद्रत के बाद यूँ हुआ कि मिस्र का बादशाह मर गया। और बनी — इसाईल अपनी गुलामी की बजह से आह भरने लगे और रोएँ और उनका रोना जो उनकी गुलामी की बजह था खुदा तक पहुँचा। 24 और खुदा ने उनका कराहना सुना, और खुदा ने अपने ‘अहद को जो अब्राहाम और इस्हाक और याँकूब के साथ था याद किया। 25 और खुदा ने बनी — इसाईल पर नज़र की और उनके हाल को मालूम किया।

3 और मूसा के ससुर यित्रो कि जो मिदियान का काहिन था, भेड़ — बकरियाँ चराता था। और वह भेड़ — बकरियों को हंकाता हुआ उनको वीराने की पर्ली तरफ से खुदा के पहाड़ होरिब के नज़दीक ले आया। 2 और खुदावन्द का फरिश्ता एक ज़ाड़ी में से आग के शोले में उस पर ज़ाहिर हुआ। उसने निगाह की और क्या देखता है, कि एक ज़ाड़ी में आग लगी हुई है पर वह ज़ाड़ी भस्म नहीं होती। 3 तब मूसा ने कहा, “मैं अब जरा उधर कतार कर इस बड़े मन्ज़र को देवूँ कि यह ज़ाड़ी क्यूँ नहीं जल जाती।” 4 जब खुदावन्द ने देखा कि वह देखने को कतार कर आ रहा है, तो खुदा ने उसे ज़ाड़ी में से पुकारा और कहा, ऐ मूसा! ऐ मूसा! “उसने कहा, मैं हाजिर हूँ।” 5 तब उसने कहा, “इधर पास मत आ। अपने पाँव से जूता उतार, क्यूँकि जिस जगह तू खड़ा है वह पाक जमीन है।” 6 फिर उसने कहा कि मैं तेरे बाप का खुदा, याँनी अब्राहाम

का खुदा और इस्हाक का खुदा और याकूब का खुदा हैं। मूसा ने अपना मुँह छिपाया क्योंकि वह खुदा पर नजर करने से डरता था। 7 और खुदावन्द ने कहा, “मैंने अपने लोगों की तकलीफ जो मिस्र में है खूब देखी, और उनकी फरियाद जो बेगार लेने वालों की बजह से है सुनी, और मैं उनके दुर्खों को जानता हूँ। 8 और मैं उतरा हूँ कि उनको मिथियों के हाथ से छुड़ाऊँ, और उस मुल्क से निकल कर उनको एक अच्छे और बड़े मुल्क में जाऊँ दूध और शहद बहता है यानी कनानियों और हितियों और अमोरियों और फरिजियों और हव्वियों और यबसियों के मुल्क में पहुँचाऊँ। 9 देख बनी — इसाईल की फरियाद मूल तक पहुँची है, और मैंने वह ज़ुल्म भी जो मिस्र उन पर करते हैं देखा है। 10 इसलिए अब आ मैं तुझे फिर “औन के पास भेजता हूँ कि तू मेरी क्रौप बनी — इसाईल को मिस्र से निकाल लाए।” 11 मूसा ने खुदा से कहा, “मैं कौन हूँ जो फिर “औन के पास जाऊँ और बनी — इसाईल को मिस्र से निकाल लाऊँ?” 12 उसने कहा, “मैं ज़स्त तेरे साथ रहँगा और इसका कि मैंने तुझे भेजा है तेरे लिए यह निशान होगा, कि जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाल लाएगा तो तुम इस पहाड़ पर खुदा की इबादत करोगे।” 13 तब मूसा ने खुदा से कहा, “जब मैं बनी — इसाईल के पास जाकर उनको कहूँ कि तुम्हारे बाप — दादा के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।” 14 खुदा ने मूसा से कहा, “मैं जो हूँ सो मैं हूँ।” 15 फिर खुदा ने मूसा से यह भी कहा कि तू बनी — इसाईल से यूँ कहना कि खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा के खुदा, अब्रहाम के खुदा और याकूब के खुदा ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।” 16 हमेशा तक मेरा यही नाम है और सब नसलों में इसी से मेरा ज़िक्र होगा। 17 जा कर इसाईली बुजुर्गों को एक जगह जमा कर और उनको कह, ‘खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा के खुदा, अब्रहाम और इस्हाक और याकूब के खुदा ने मुझे दिखाई देकर यह कहा है कि मैंने तुम को भी, और जो कुछ बरताव तुम्हारे साथ मिस्र में किया जा रहा है उसे भी खूब देखा है। 17 और मैंने कहा है कि मैं तुम को मिस्र के दुख में से निकाल कर कनानियों और हितियों और अमोरियों और फरिजियों और हव्वियों और यबसियों के मुल्क में ले चलूँगा, जहाँ दूध और शहद बहता है। 18 और वह तेरी बात मानेंगे और तू इसाईली बुजुर्गों को साथ लेकर मिस्र के बादशाह के पास जाना और उससे कहना कि ‘खुदावन्द इश्नानियों के खुदा की हम से मुलाकात हूँ।’ अब तू हम को तीन दिन की मंजिल तक वीराने में जाने दे ताकि हम खुदावन्द अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें। 19 और मैं जानता हूँ कि मिस्र का बादशाह तुम को न यूँ जाने देगा, न बड़े जोर से। 20 तब मैं अपना हाथ बढ़ाऊँगा और मिस्र को उन सब ‘अजायब से जो मैं उसमें कहँगा, मुसीबत में डाल दूँगा।’ इसके बाद वह तुम को जाने देगा। 21 और मैं उन लोगों को मिथियों की नजर में इज़ज़त बलूँगा और यूँ होगा कि जब तुम निकलोगे तो खाली हाथ न निकलोगे। 22 बल्कि तुम्हारी एक — एक ‘औरत अपनी अपनी पड़ोसन से और अपने — अपने घर की मेहमान से सोने चाँदी की ज़ेबर और लिबास माँग लेगी। इनको तुम अपने बेटों और बेटियों को पहनाओगे और मिथियों को लूट लोगे।

4 तब मूसा ने जबाब दिया, “लेकिन वह तो मेरा यकीन ही नहीं कहेंगे न मेरी बात सुनेंगे। वह कहेंगे, ‘खुदावन्द तुझे दिखाई नहीं दिया।’” 2 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि यह तेरे हाथ में क्या है? उसने कहा, “लाठी।” 3 फिर उसने कहा कि उसे ज़मीन पर डाल दे। उसने उसे ज़मीन पर डाला और वह साँप बन गई, और मूसा उसके सामने से भागा। 4 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, हाथ बढ़ा कर उसकी दुप पकड़ ले। उसने हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया, वह उसके हाथ में लाठी बन गया। 5 ताकि वह यकीन करें कि खुदावन्द उनके

बाप — दादा का खुदा, अब्रहाम का खुदा, इस्हाक का खुदा और याकूब का खुदा तुझ को दिखाई दिया। 6 फिर खुदावन्द ने उसे यह भी कहा, कि तू अपना हाथ अपने सीने पर रख कर ढाँक ले। उसने अपना हाथ अपने सीने पर रख कर उसे ढाँक लिया, और जब उसने निकाल कर देखा तो उसका हाथ कोढ़ से बर्फ की तरह सफेद था। 7 उसने कहा कि तू अपना हाथ फिर अपने सीने पर रख कर ढाँक ले। उसने फिर उसे सीने पर रख कर ढाँक लिया। जब उसने उसे सीने पर से बाहर निकाल कर देखा तो वह फिर उसके बाकी जिसम की तरह हो गया। 8 और यूँ होगा कि अगर वह तेरा यकीन न करें और पहले निशान और मोअजिज़ों को भी न मानें तो वह दूसरे निशान और मोअजिज़ों की बजह से यकीन करेंगे। 9 और अगर वह इन दोनों निशान और मोअजिज़ों की बजह से भी यकीन न करें और तेरी बात न सुनें, तो तू दरिया-ए-नील से पानी लेकर खुशक ज़मीन पर छिड़क देना और वह पानी जो तू दरिया से लेगा खुशक ज़मीन पर खन हो जाएगा। 10 तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, “ऐ खुदावन्द! मैं फसीह नहीं, न तो पहले ही था और न जब से तूने अपने बन्दे से कलाम किया बल्कि स्क — स्क कर बोलता हूँ और मेरी ज़बान कुन्दन्दै।” 11 तब खुदावन्द ने उसे कहा कि आदमी का मुँह किसने बनाया है? और कौन गँगा या बहार या बीना या अन्धा करता है? क्या मैं ही जो खुदावन्द हूँ यह नहीं करता? 12 इसलिए अब तू जा और मैं तेरी ज़बान का ज़िम्मा लेता हूँ और तुझे सिखाता रहँगा कि तू क्या — क्या कहे। 13 तब उसने कहा कि ऐ खुदावन्द! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, किसी और के हाथ से जिसे तू चाहे यह पैगाम भेज। 14 तब खुदावन्द का कहर मूसा पर भड़का और उसने कहा, क्या लावियों में से हास्त तेरा भाई नहीं है? मैं जानता हूँ कि वह फसीह है और वह तेरी मुलाकात को आ भी रहा है, और तुझे देख कर दिल में खुश होगा। 15 इसलिए तू उसे सब कुछ बताना और यह सब बातें उसे सिखाना और मैं तेरी और उसकी ज़बान का ज़िम्मा लेता हूँ, और तुम को सिखाता रहँगा कि तुम क्या — क्या करो। 16 और वह तेरी तरफ से लोगों से बातें करेगा और वह तेरा पूँछ बनेगा और तू उसके लिए जैसे खुदा होगा। 17 और तू इस लाठी को अपने हाथ में लिए जा और इसी से यह निशान और मोअजिज़ों को दिखाना। 18 तब मूसा लौट कर अपने ससर यित्रो के पास गया और उसे कहा, “मुझे ज़रा इज़ाज़त दे कि अपने भाईयों के पास जो मिस्र में हैं, जाऊँ और देखूँ कि वह अब तक ज़िन्दा है कि नहीं।” यित्रो ने मूसा से कहा, कि सलामत जा। 19 और खुदावन्द ने मिदियान में मूसा से कहा, कि “मिस्र को लौटा जा, क्योंकि वह सब जो तेरी जान के ख्वाहाँ थे मर गए।” 20 तब मूसा अपनी बीवी और अपने बेटों को लेकर और उनको एक गधे पर चढ़ा कर मिस्र को लौटा, और मूसा ने खुदा की लाठी अपने हाथ में ले ली। 21 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “जब तू मिस्र में पहुँचे तो देख वह सब करामात जो मैंने तेरे हाथ में रखी हैं फिर” औन के आगे दिखाना, लेकिन मैं उसके दिल को सख्त करँगा, और वह उन लोगों को जाने नहीं देगा। 22 तू फिर “औन से कहना, कि ‘खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि इसाईल मेरा बेटा बल्कि मेरा पहलौटा है।” 23 और मैं तुझे कह चुका हूँ कि मेरे बेटे को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करे, और तूने अब तक उसे जाने देने से इन्कार किया है, और देख मैं तेरे बेटे को बल्कि तेरे पहलौटे को मार डालूँगा।” 24 और रास्ते में मंजिल पर खुदावन्द उसे मिला और चाहा कि उसे मार डाले। 25 तब सफ़ूरा ने चक्रमक का एक पथर लेकर अपने बेटे की खलती काट डाली और उसे मूसा के पाँव पर फेंक कर कहा, “तू बेशक मेरे लिए खूनी दूल्हा ठहरा।” 26 तब उसने उसे छोड़ दिया। लेकिन उसने कहा, कि “खतने की बजह से तू खनी दूल्हा है।” 27 और खुदावन्द ने हास्त से कहा, कि “वीराने में जा कर मूसा से मुलाकात कर।” वह गया और खुदा के पहाड़ पर उससे मिला और उसे बोसा दिया। 28 और मूसा ने हास्त को

बताया, कि खुदा ने क्या — क्या बातें कह कर उसे भेजा और कौन — कौन से निशान और मुअजिजे दिखाने का उसे हूँक्रम दिया है। 29 तब मूसा और हास्न ने जाकर बनी — इसाईल के सब बुजुर्गों को एक जगह जमा¹ किया। 30 और हास्न ने सब बातें जो खुदावन्द ने मूसा से कहीं थीं उनको बताई और लोगों के सामने निशान और मोजिजे किए। 31 तब लोगों ने उनका यकीन किया और यह सुन कर कि खुदावन्द ने बनी — इसाईल की खबर ली और उनके दुर्खाएं पर नज़र की, उन्होंने अपने सिर झुका कर सिद्धा किया।

5 इसके बाद मूसा और हास्न ने जाकर फिर² औन से कहा कि, “खुदावन्द इसाईल का खुदा यूँ फ्रमाता है, कि ‘मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह वीराने में मेरे लिए ‘इंद करें।’” 2 फिर³ औन ने कहा, कि “खुदावन्द कौन है कि मैं उसकी बात को मान कर बनी — इसाईल को जाने दूँ? मैं खुदावन्द को नहीं जानता और मैं बनी — इसाईल को जाने भी नहीं दूँगा।” 3 तब उन्होंने कहा, कि “इब्नानियों का खुदा हम से मिला है; इसलिए हम को इजाजत दे कि हम तीन दिन की मन्जिल वीराने में जा कर खुदावन्द अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें, ऐसा न हो कि वह हम पर बवा भेज दे या हम को तलवार से मरवा दे।” 4 तब मिस्र के बादशाह ने उनको कहा, कि “ऐ मूसा और ऐ हास्न! तुम क्यूँ इन लोगों को इनके काम से छुड़वाते हो? तुम जाकर अपने — अपने बोझ को उठाओ।” 5 और फिर⁴ औन ने यह भी कहा, कि “देखो, यह लोग इस मूलक में बहुत हो गए हैं, और तुम इनको इनके काम से बिठाते हो।” 6 और उसी दिन फिर⁵ औन ने बेगार लेने वालों और सरदारों को जो लोगों पर थे हूँक्रम किया, 7 “अब आगे को तुम इन लोगों को ईंट बनाने के लिए भुस न देना जैसे अब तक देते रहे, वह खुद ही जाकर अपने लिए भुस बटोरें। 8 और इसे उतनी ही ईंट बनवाना जिनी वह अब तक बनाते आए हैं; तुम उसमें से कुछ न घटाना क्यूँकि वह काहिल हो गए हैं, इसलिए चिल्ला — चिल्ला कर कहते हैं, ‘हम को जाने दो कि हम अपने खुदा के लिए कुर्बानी करें। 9 इसलिए इनसे ज्यादा सख्त मेहनत ली जाए, ताकि काम में मशगूल हों और झूटी बातों से दिल न लगाएँ।” 10 तब बेगार लेने वालों और सरदारों ने जो लोगों पर थे जाकर उनसे कहा, कि फिर⁶ औन कहता है, कि भैं तुम को भुस नहीं देने का। 11 तुम खुद ही जाओ और जहाँ कहीं तुम को भुस मिले वहाँ से लाओ, क्योंकि तुहारा काम कुछ भी घटाया नहीं जाएगा।” 12 चुनावें वह लोग तामाम मूलक — ए — मिस्र में मारे — मारे फिरने लगे कि भुस के ‘बदले खेटीं जाया’ करें। 13 और बेगार लेने वाले यह कह कर जल्दी करते थे कि तुम अपना रोज़ का काम जैसे भुस पा कर करते थे अब भी करो। 14 और बनी — इसाईल में से जो — जो फिर⁷ औन के बेगार लेने वालों की तरफ से इन लोगों पर सरदार मुकर्रर हुए थे, उन पर मार पड़ी और उनसे पृष्ठा गया, कि “क्या वजह है कि तुम ने पहले की तरह आज और कल पूरी — पूरी ईंट नहीं बनवाई?” 15 तब उन सरदारों ने जो बनी — इसाईल में से मुकर्रर हुए थे फिर⁸ औन के आगे जा कर फरियाद की और कहा कि तु अपने खादिमों से ऐसा सुलक क्यूँ करता हो? 16 तेरे खादिमों को भुस तो दिया नहीं जाता और वह हम से कहते रहते हैं ईंट बनाओं, और देख तेरे खादिम मार भी खाते हैं पर कुसूर तेरे लोगों का है। 17 उसने कहा, “तुम सब काहिल हो काहिल, इसी लिए तुम कहते हो कि हम को जाने दे कि खुदावन्द के लिए कुर्बानी करें। 18 इसलिए अब तुम जाओ और काम करो, क्यूँकि भुस तुम को नहीं मिलेगा और ईंटों को तुहें उसी हिसाब से देना पड़ेगा।” 19 जब बनी — इसाईल के सरदारों से यह कहा गया, कि तुम अपनी ईंटों और रोज़ मर्झ के काम में कुछ भी कमी नहीं करने पाएंगे तो वह जान गए कि वह कैसे बवाल में फैसे हुए हैं। 20 जब वह फिर⁹ औन के पास से निकले आ रहे थे तो उनको मूसा और हास्न कुलाकात के लिए रास्ते पर खड़े मिले। 21 तब उन्होंने उन से कहा,

कि खुदावन्द ही देवे और तुहारा इन्साफ करे, क्यूँकि तुम ने हम को फिर¹⁰ औन और उसके खादिमों की निगाह में ऐसा धिनौना किया है, कि हमारे कल्तव के लिए उनके हाथ में तलवार दे दी है। 22 तब मूसा खुदावन्द के पास लौट कर गया और कहा, कि ऐ खुदावन्द! तूने इन लोगों को क्यूँ दुख में डाला और मुझे क्यूँ भेजा? 23 क्यूँकि जब से मैं फिर¹¹ औन के पास तेरे नाम से बाते करने गया, उसने इन लोगों से बुराई ही बुराई की और तूने अपने लोगों को ज़रा भी रिहाई न बरबारी।

6 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि ‘अब तू देखेगा कि मैं मैं फिर¹² औन के साथ क्या करता हूँ, तब वह ताकतवर हाथ की वजह से उनको जाने देगा और ताकतवर हाथ ही की वजह से वह उनको अपने मूलक से निकाल देगा। 2 फिर खुदा ने मूसा से कहा, कि मैं खुदावन्द हूँ। 3 और मैं अब्राहाम और इस्हाक और याकूब को खुदा — ए — काहिर — ए — मूलतक के तौर पर दिखाई दिया, लेकिन अपने यहोबा नाम से उन पर ज़ाहिर न हुआ। 4 और मैंने उनके साथ अपना ‘अहद भी बींचा है कि मूलक — ए — कनान जो उनकी मुसाफिरत का मूलक था और जिसमें वह परदेसी थे उनको दूँगा। 5 और मैंने बनी — इसाईल के कराहने को भी सुन कर, जिनको मिसियों ने गुलामी में रख डोडा है, अपने उस ‘अहद को याद किया है। 6 इसलिए तू बनी — इसाईल से कह, कि मैं खुदावन्द हूँ, और मैं तुम को मिसियों के बोझों के नीचे से निकाल लूँगा और मैं तुम को उनकी गुलामी से आजाद करूँगा, और मैं अपना हाथ बढ़ा कर और उनको बड़ी — बड़ी सजाएँ देकर तम को रिहाई दूँगा। 7 और मैं तुम को ले लूँगा कि मेरी कौम बन जाओ और मैं तुहारा खुदा हूँ जो तुम्हें मिसियों के बोझों के नीचे से निकालता हूँ। 8 और जिस मूलक को अब्राहाम और इस्हाक और याकूब को देने की कसम मैंने खाई थी उसमें तुम को पहुँचा कर उसे तुहारी मीरास कर दूँगा। खुदावन्द मैं हूँ। 9 और मूसा ने बनी — इसाईल को यह बातें सुना दी, लेकिन उन्होंने दिल की कुद्दन और गुलामी की सख्ती की वजह से मूसा की बात न सुनी। 10 फिर खुदावन्द ने मूसा को फरमाया, 11 कि जा कर मिस्र के बादशाह फिर¹³ औन से कह कि बनी — इसाईल को अपने मूलक में से जाने दे। 12 मूसा ने खुदावन्द से कहा, कि “देख, बनी — इसाईल ने तेरे मेरी सुनी नहीं; तब मैं जो ना मज्जतून होट रखता हूँ फिर¹⁴ औन मेरी क्यूँ कर सुनेगा?” 13 तब खुदावन्द ने मूसा और हास्न को बनी — इसाईल और मिस्र के बादशाह फिर¹⁵ औन के हक में इस मज्जतून का हूँक्रम दिया कि वह बनी — इसाईल को मूलक — ए — मिस्र से निकाल ले जाएँ। 14 उनके आबाई खान्दानों के सरदार यह थे: स्किन, जो इसाईल का पहलौठा था, उसके बेटे: हनूक और फल्लू और हमसोन और कर्मी थे; यह स्किन के घराने थे। 15 बनी शमैन यह थे: यमूल और यमीन और उहद और यकीन और सहर और सातल, जो एक कनानी¹⁶ और उसे पैदा हुआ था; यह शमैन के घराने थे। 16 और बनी लावी जिनसे उनकी नसल चली उनके नाम यह हैं: जैरसोन और किहात और मिरारी, और लावी की उम्र एक सौ सैतीस बरस की हूँ। 17 बनी जैरसोन: लिबनी और सिमाई थे, इन ही से इनके खान्दान चले। 18 और बनी किहात: ‘अमराम और इजहार और हबस्न और उज्जीएल थे; और किहात की उम्र एक सौ तैतीस बरस की हूँ। 19 और बनी मिरारी: महली और मशीनी थे। लावीयों के घराने जिनसे उनकी नसल चली यही थे। 20 और ‘अमराम ने अपने बाप की बहन यूक्बिद से ब्याह किया, उस ‘औरत के उससे हास्न और मूसा पैदा हुए; और ‘अमराम की उम्र एक सौ सैतीस बरस की हूँ। 21 बनी इजहार: कोरह और नफज और जिकरी थे। 22 और बनी उज्जीएल: मीसाएल और इलसफन और सितरी थे। 23 और हास्न ने नहसोन की बहन ‘अमीनदाब की बेटी इलिशीबा’ से ब्याह किया; उससे नदब

और अबीह और इली एलियाजर और एतामर पैदा हुए। 24 और बनी कोरहः अस्सीर और इलाकना और अबियासफ थे, और यह कोरहियों के घराने थे। 25 और हास्न के बेटे इली एलियाजर ने फूटिएल की बेटियों में से एक के साथ ब्याह किया, उससे फीन्हास पैदा हुआ; लावियों के बाप — दादा के घरानों के सरदार जिनसे उनके खान्दान चले यहीं थे। 26 यह वह हास्न और मूसा हैं जिनको खुदावन्द ने फसमाया: कि बनी — इसाईल को उनके लश्कर के मुताबिक मूल्क — ए — मिस्र से निकाल ले जाओ। 27 यह वह है जिन्होंने मिस्र के बादशाह फिरँ औन से कहा, कि हम बनी — इसाईल को मिस्र से निकाल ले जाएँगे; यह वही मूसा और हास्न है। 28 जब खुदावन्द ने मूल्क — ए — मिस्र में मूसा से बातें की तो यूँ हुआ, 29 कि खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि मैं खुदावन्द हूँ जो कुछ मैं तुझे कहूँ तु से मिस्र के बादशाह फिरँ औन से कहना। 30 मूसा ने खुदावन्द से कहा, कि देख, मेरे तो होटों का खतना नहीं हुआ। फिरँ औन क्यूँ कर मेरी सुनेगा?

7 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, “देख, मैंने तुझे फिरँ औन के लिए जैसे खुदा ठहराया और तेरा भाई हास्न फैगम्बर होगा। 2 जो — जो हक्म मैं तुझे दूँ तब तू कहना, और तेरा भाई हास्न उसे फिरँ औन से कहे कि वह बनी — इसाईल को अपने मूल्क से जाने दे। 3 और मैं फिरँ औन के दिल को सख्त कराँगा और अपने निशान अजाईब मूल्क — ए — मिस्र में कसरत से दिखाऊँगा। 4 तो भी फिरँ औन तुहारी न सुनेगा, तब मैं मिस्र को हाथ लगाऊँगा और उसे बड़ी — बड़ी सजाएँ टेकर अपने लोगों, बनी — इसाईल के लश्करों को मूल्क — ए — मिस्र से निकाल लाऊँगा। 5 और मैं जब मिस्र पर हाथ चलाऊँगा और बनी — इसाईल को उनमें से निकाल लाऊँगा, तब मिस्री जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।” 6 मूसा और हास्न ने जैसा खुदावन्द ने उनको हक्म दिया वैसा ही किया। 7 और मूसा अस्सी बरस और हास्न तिरासी बरस का था, जब वह फिरँ औन से हम कलाम हुए। 8 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा, 9 “जब फिरँ औन तुम को कहे, कि अपना मोर्जिज़ा दिखाओ, तो हास्न से कहना, कि अपनी लाठी को लेकर फिरँ औन के सामने डाल दे, ताकि वह साँप बन जाए।” 10 और मूसा और हास्न फिरँ औन के पास गए और उन्होंने खुदावन्द के हक्म के मुताबिक किया; और हास्न ने अपनी लाठी फिरँ औन और उसके खादिमों के सामने डाल दी और वह साँप बन गई। 11 तब फिरँ औन ने भी ‘अकलमन्दों और जादूगरों को खुलवाया, और मिस्र के जादूगरों से भी अपने जादू से ऐसा ही किया। 12 क्यूँकि उन्होंने भी अपनी — अपनी लाठी सामने डाली और वह साँप बन गई, लेकिन हास्न की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई। 13 और फिरँ औन का दिल सख्त हो गया और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी। 14 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फिरँ औन का दिल मुतास्सिब है, वह इन लोगों को जाने नहीं देता। 15 अब तु सुबह को फिरँ औन के पास जा। वह दरिया पर जाएगा इसलिए त दरिया के किनारे उसकी मुलाकात के लिए खड़ा रहना, और जो लाठी साँप बन गई थी उसे हाथ में ले लेना। 16 और उससे कहना, कि ‘खुदावन्द इशानियों के खुदा ने मूझे तेरे पास यह कहने को भेजा है कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह बीराने में मेरी इबादत करें; और अब तक तूने कुछ सुनी नहीं।’ 17 तब खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तू इसी से जान लेगा कि मैं खुदावन्द हूँ, देख, मैं अपने हाथ की लाठी को दरिया के पानी पर मास्स्गा और वह खून हो जाएगा। 18 और जो मछलियाँ दरिया में हैं मर जाएँगी, और दरिया से जाग उठेगा और मिस्रियों को दरिया का पानी पीने से कराहियत होगी।’ 19 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि हास्न से कह, अपनी लाठी ले और मिस्र में जितना पानी है, यानी दरिया और नहरों और झीलों और तालाबों पर, अपना हाथ बढ़ा ताकि वह खून बन

जाएँ; और सारे मुल्क — ए — मिस्र में पथर और लकड़ी के बर्तनों में भी खून ही खून होगा। 20 और मूसा और हास्न ने खुदावन्द के हक्म के मुताबिक किया; उसने लाठी उठाकर उसे फिरँ औन और उसके खादिमों के सामने दरिया के पानी पर मारा, और दरिया का पानी सब खून हो गया। 21 और दरिया की मछलियाँ मर गईं, और दरिया से जाग उठने लगा और मिस्री दरिया का पानी पी न सके, और तमाम मुल्क — ए — मिस्र में खून ही खून हो गया। 22 तब मिस्र के जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया, लेकिन फिरँ औन का दिल सख्त हो गया; और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी। 23 और फिरँ औन लौट कर अपने घर चला गया, और उसके दिल पर कुछ असर न हुआ। 24 और सब मिस्रियों ने दरिया के आस पास पीने के पानी के लिए कुँए खोद डाले, क्योंकि वह दरिया का पानी नहीं पी सकते थे। 25 और जब से खुदावन्द ने दरिया को मारा उसके बाद सात दिन गुज़रे।

8 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि फिरँ औन के पास जा और उससे कह कि ‘खुदावन्द यूँ फरमाता है कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करें।’ 2 और अगर तू उनको जाने न देगा, तो देख, मैं तेरे मूल्क को मैंदकों से मास्गा। 3 और दरिया बेशपार मैंदकों से भर जाएगा, और वह आकर तेरे घर में और तेरी आरामगाह में और तेरे पलंग पर और और तेरे मूलाजिमों के घरों में और तेरी रायत पर और तेरे तन्हों और आटा गूँधें के लगानों में घुसते फिरेंगे, 4 और तुझ पर और तेरी रायत और तेरे नौकरों पर चढ़ जाएँगे।’ 5 और खुदावन्द ने मूसा को फरमाया, हास्न से कह, कि अपनी लाठी लेकर अपने हाथ दरियाओं और नहरों और झीलों पर बढ़ा और मैंदकों को मूल्क — ए — मिस्र पर चढ़ा ला। 6 चुनाँचे जितना पानी मिस्र में मैं था उस पर हास्न ने अपना हाथ बढ़ाया, और मैंदक चढ़ा आए और मूल्क — ए — मिस्र को ढाँक लिया। 7 और जादूगरों ने भी अपने जादू से ऐसा ही किया और मूल्क — ए — मिस्र पर मैंदक चढ़ा लाए, 8 तब फिरँ औन ने मूसा और हास्न को बुलवाकर कहा, कि ‘खुदावन्द से सिफारिश करों के मैंदकों को मूझे से और मेरी रायत से दफ़ा’ करे, और मैं इन लोगों को जाने दूँगा ताकि वह खुदावन्द के लिए कुर्बानी करें।’ 9 मूसा ने फिरँ औन से कहा, कि तुझे मुझ पर यहीं फस्तुक हरे! मैं तेरे और तेरे नौकरों और तेरी रायत के बासे कब के लिए सिफारिश करूँ कि मैंदक तुझ से और तेरे घरों से दफ़ा हों और दरिया ही मैं रहें? 10 उसने कहा, “कल के लिए।” तब उसने कहा, “तेरे ही कहने के मुताबिक होगा ताकि जाने कि खुदावन्द हमारे खुदा की तरह कोई नहीं। 11 और मैंदक तुझ से और तेरे घरों से और तेरे नौकरों से और तेरी रायत से दूर होकर दरिया ही मैं रहा करेंगे।” 12 फिर मूसा और हास्न फिरँ औन के पास से निकल कर चले गए; और मूसा ने खुदावन्द से मैंदकों के बारे में जो उसने फिरँ औन पर भेजे थे फरियाद की। 13 और खुदावन्द ने मूसा की दरखास्त के मुवाफिक किया, और सब घरों और सहनों और खेतों के मैंदक मर गए। 14 और लोगों ने उनको जमाए कर करके उनके ढेर लगा दिए, और जमीन से बदबू आने लगी। 15 फिर जब फिरँ औन ने देखा कि छुटकारा मिल गया तो उसने अपना दिल सख्त कर लिया, और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उनकी न सुनी। 16 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “हास्न से कह, ‘अपनी लाठी बढ़ा कर जमीन की गर्द को मार, ताकि वह तमाम मूल्क — ए — मिस्र में जारी बन जाएँ।’” 17 उन्होंने ऐसा ही किया, और हास्न ने अपनी लाठी लेकर अपना हाथ बढ़ाया और इंसान और हैवान पर जाँहे गई और तमाम मूल्क — ए — मिस्र में जमीन की सारी गर्द जाँहे बन गई। 18 और जादूगरों ने कोशिश की कि अपने जादू से जाँहे पैदा करें लेकिन न कर सके। और इंसान और हैवान दोनों पर जाँहे चढ़ी रही। 19 तब जादूगरों ने फिरँ औन से कहा, कि

“यह खुदा का काम है।” लेकिन फिर‘औन का दिल सख्त हो गया, और जैसा खुदावन्द ने कह दिया था उसने उनकी न सुनी। 20 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “सुबह — सर्वेर उठ कर फिर‘औन के आगे जा खडा होना, वह दरिया पर आएगा तब तू उससे कहना, ‘खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे कि वह मेरी इबादत करें। 21 वर्ना अगर तू उनको जाने न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे नैकरों और तेरी रँझत पर और तेरे घरों में मच्छरों के गोल के गोल भैंगा; और मिथियों के घर और तमाम ज़मीन जहाँ जहाँ वह है, मच्छरों के गोलों से भर जाएगी। 22 और मैं उस दिन जशन के ‘इलाके’ को उसमें मच्छरों के गोल न होंगे; ताकि तू जान ले कि दुनिया में खुदावन्द मैं ही हूँ। 23 और मैं और अपने लोगों और तेरे लोगों में फ़र्क करँगा और कल तक यह निशान ज़ुहूर में आएगा।” 24 चुनाँचे खुदावन्द ने ऐसा ही किया, और फिर‘औन के घर और उसके नैकरों के घरों और सारे मुल्क — ए — मिस में मच्छरों के गोल के गोल भर गए, और इन मच्छरों के गोलों की वजह से मुल्क का नास हो गया। 25 तब फिर‘औन ने मूसा और हास्न को बुलवा कर कहा, कि तुम जाओ और अपने खुदा के लिए इसी मुल्क में कुर्बानी करो। 26 मूसा ने कहा, “ऐसा करना मुनासिब नहीं, क्यूँकि हम खुदावन्द अपने खुदा के लिए उस चीज़ की कुर्बानी करेंगे जिससे मिसी नफरत रखते हैं, तब अगर हम मिथियों की आँखों के आगे उस चीज़ की कुर्बानी करें जिससे वह नफरत रखते हैं तो क्या वह हम को संग्रासार न कर डालेंगे? 27 तब हम तीन दिन की राह वीराने में जाकर खुदावन्द अपने खुदा के लिए जैसा वह हम को हक्म देगा कुर्बानी करेंगे।” 28 फिर‘औन ने कहा, “मैं तुम को जाने दँगा ताकि तुम खुदावन्द अपने खुदा के लिए वीराने में कुर्बानी करो, लेकिन तुम बहुत दूर मत जाना और मैं लिए सिफारिश करना।” 29 मूसा ने कहा, “देख, मैं तेरे पास से जाकर खुदावन्द से सिफारिश करँगा के मच्छरों के गोल फिर‘औन और उनके नैकरों और उसकी रँझत के पास से कल ही दूर हो जाएँ, सिर्फ इतना हो कि फिर‘औन आगे को दँगा करके लोगों को खुदावन्द के लिए कुर्बानी करने को जाने देने से इन्कार न कर दे।” 30 और मूसा ने फिर‘औन के पास से जा कर खुदावन्द से सिफारिश की। 31 खुदावन्द ने मूसा की दरबाह्यास्त के मुवाफ़िक किया; और उसने मच्छरों के गोलों को फिर‘औन और उसके नैकरों और उसकी रँझत के पास से दूर कर दिया, यहाँ तक कि एक भी बाकी न रहा। 32 फिर फिर‘औन ने इस बार भी अपना दिल सख्त कर लिया, और उन लोगों को जाने न दिया।

9 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि फिर‘औन के पास जाकर उससे कह, खुदावन्द ‘इशानियों का खुदा यूँ फरमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करें। 2 क्यूँकि अगर तू इन्कार करे और उनको जाने न दे और अब भी उनको रोके रखें, 3 तो देख, खुदावन्द का हाथ तेरे चौपायों पर जो खेतों में हैं वानी थोड़ों, गधों, ऊँटों, गाय बैलों और भेड़ — बकरियों पर ऐसा पड़ेगा कि उनमें बड़ी भारी मरी फैल जाएगी। 4 और खुदावन्द इसाईल के चौपायों को मिथियों के चौपायों से जुदा करेगा, और जो बनी — इसाईल के हैं उनमें से एक भी नहीं मरेगा। 5 और खुदावन्द ने एक वक्त मुकर्रर कर दिया और बता दिया कि कल खुदावन्द इस मुल्क में यही काम करेगा। 6 और खुदावन्द ने दूसरे दिन ऐसा ही किया और मिथियों के सब चौपाए मर गए लेकिन बनी — इसाईल के चौपायों में से एक भी न मरा। 7 चुनाँचे फिर‘औन ने आदमी भेजे तो मालमूत हुआ कि इसाईलियों के चौपायों में से एक भी नहीं मरा है, लेकिन फिर‘औन का दिल ताँ’अस्सब में था और उसने लोगों को जाने न दिया। 8 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा कि तुम दोनों भट्ठी की राख अपनी सुषिष्यों में ले लो, और मूसा उसे फिर‘औन के सामने आसमान की तरफ उड़ा दे। 9 और वह सारे मुल्क — ए — मिस में बारीक गर्द हो कर मिस के आदमियों और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले बन जाएगी। 10 फिर वह भट्ठी की राख लेकर फिर‘औन के आगे जा खड़े हुए, और मूसा ने उसे आसमान की तरफ उड़ा दिया और वह आदमियों और जानवरों के जिस्म पर फोड़े और फफोले बन गयी। 11 और जातूरा फोड़ों की बजह से मूसा के आगे खड़े न रह सके, क्यूँकि जातूराओं और सब मिथियों के फोड़े निकले हुए थे। 12 और खुदावन्द ने फिर‘औन के दिल को सख्त कर दिया, और उसने जैसा खुदावन्द ने मूसा से कह दिया था उनकी न सुनी। 13 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “सुबह — सर्वेर उठ कर फिर‘औन के आगे जा खडा हो और उसे कह, कि ‘खुदावन्द’ इशानियों का खुदा यूँ फरमाता है, कि मेरे लोगों को जाने दे ताकि वह मेरी इबादत करें। 14 क्यूँकि मैं अब की बार अपनी सब बलाएँ तेरे दिल और तेरे नैकरों और तेरी रँझत पर नाजिल करँगा, ताकि तू जान ले कि तमाम दुनिया में मेरी तरह कोई नहीं है। 15 और मैंने तो अभी हाथ बढ़ा कर तुझे और तेरी रँझत को बबा से मारा होता और तू ज़मीन पर से हलाक हो जाता। 16 लेकिन मैंने तुझे हकीकत में इसलिए काईम रख्या है कि अपनी ताकत तुझे दिखाऊँ, ताकि मेरा नाम सारी दुनिया में मशहूर हो जाए। 17 क्या तू अब भी मेरे लोगों के मुकाबले में तकब्बर करता है कि उनको जाने नहीं देता? 18 देख, मैं कल इसी वक्त ऐसे बड़े — बड़े ओले बरसाऊँगा जो मिस में जब से उसकी बुनियाद डाली गई अज तक नहीं पड़े। 19 तब आदमी भेज कर अपने चौपायों को, जो कुछ तेरा माल खेतों में है उसको अन्दर कर ले; क्यूँकि जितने आदमी और जानवर मैदान में होंगे और घर में नहीं पहुँचाए जाएँगे, उन पर ओले पड़ेंगे और वह हलाक हो जाएँगे।” 20 तब फिर‘औन के खादिमों में जो — जो खुदावन्द के कलाम से डरता था, वह अपने नैकरों और चौपायों को घर में भगा ले आया। 21 और जिन्होंने खुदावन्द के कलाम का लिहाज न किया, उन्होंने अपने नैकरों और चौपायों को मैदान में रहने दिया। 22 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ा ताकि सब मुल्क — ए — मिस में इसान और हैवान और खेत की सबजी पर जो मुल्क — ए — मिस में है ओले गिरें। 23 और मूसा ने अपनी लाठी आसमान की तरफ उठाई, और खुदावन्द ने राद और ओले भेजे और आग ज़मीन तक अपने लगी, और खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस पर ओले बरसाए। 24 तब ओले गिरे और ओलों के साथ आग मिटी हुई थी, और वह ओले ऐसे भारी थे कि जब से मिसी कौम आबाद हुई ऐसे ओले मुल्क में कभी नहीं पड़े थे। 25 और ओलों ने सारे मुल्क — ए — मिस में उनको जो मैदान में थे क्या इसान, क्या हैवान, सबको मारा और खेतों की सारी सब्जी को भी ओले मार गए और मैदान के सब दरखतों को तोड़ा डाला। 26 मगर जशन के ‘इलाका’ में जहाँ बनी — इसाईल रहते थे ओले नहीं गिरे। 27 तब फिर‘औन ने मूसा और हास्न को बुला कर उससे कहा, कि मैंने इस दफा’ गुनाह किया; खुदावन्द सच्चा है और मैं और मेरी कौम हम दोनों बदकार हैं। 28 खुदावन्द से सिफारिश करो क्यूँकि यह जोर का गरजना और ओलों का बरसना बहुत ही चुका, और मैं तुम को जाने दँगा और तुम अब स्के नहीं रहोगे। 29 तब मूसा ने उसे कहा, कि मैं शहर से बाहर निकलते ही खुदावन्द के आगे हाथ फैलाऊँगा और गरज खत्म हो जाएगा और ओले भी फिर न पड़ेंगे, ताकि तू और तेरे नैकर अब भी खुदावन्द खुदा से नहीं डरोगे। 30 लेकिन मैं जानता हूँ कि तू और तेरे नैकर अब भी खुदावन्द खुदा से नहीं डरोगे। 31 अब सुन और जै को तो ओले मार गए, क्यूँकि जै की बाले निकल चकी थी और सन में फूल लगे हुए थे; 32 पर गेहूँ और कठिया गेहूँ मारे न गए क्यूँकि वह बढ़े न थे। 33 और मूसा ने फिर‘औन के पास से शहर के बाहर जाकर खुदावन्द के आगे हाथ फैलाए, तब गरज और ओले खत्म हो गए और ज़मीन पर बारिश थम गई। 34 जब फिर‘औन ने देखा कि मैंह और ओले और गरज

खत्म हो गए, तो उसने और उसके खादिमों ने और ज्यादा गुनाह किया कि अपना दिल सख्त कर दिया। 35 और फिर 'औन के दिल सख्त हो गया, और उसने बनी — इसाईल को जैसा खुदावन्द ने मूसा के जरिए कह दिया था जाने न दिया।

10 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फिर 'औन के पास जा; क्यूंकि मैं ही

ने उसके दिल और उसके नैकरों के दिल को सख्त कर दिया है, ताकि मैं अपने यह निशान उनके बीच दिखाऊँ; 2 और तू अपने बेटे और अपने पोते को मेरे निशान और वह काम जो मैंने मिस्र में उनके बीच किए सुनाए और तम जान लो कि खुदावन्द मैं ही हूँ। 3 और मूसा और हास्न ने फिर 'औन के पास जाकर उससे कहा कि खुदावन्द, 'इशानियों का खुदा यूँ फरमाता है, कि 'तू कब तक मेरे सामने नीचा बनने से इन्कार करेगा? मेरे लोगों को जाने दे कि वह मेरी इबादत करें। 4 वर्ना, अगर तू मैं लोगों को जाने न देगा, तो देख, कल मैं तैयार मूल्क में टिहुँयों ले आँऊँगा। 5 और वह जमीन की सतह को ऐसा ढाँक लैगी कि कोई जमीन को देख भी न सकेगा; और तुम्हारा जो कुछ ओलों से बच रहा है वह उसे खा जाएँगी, और तुम्हारे जिनेवे दरखत मैदान में लगे हैं उनको भी चट कर जाएँगी, 6 और वह तेरे और तेरे नैकरों बल्कि सब मिथियों के घरों में भर जाएँगी; और ऐसा तेरे बाप दादाओं ने जब से वह पैदा हुए उस वक्त से आज तक नहीं देखा होगा। 7 और वह लौट कर फिर 'औन के पास से चला गया। 7 तब फिर 'औन के नैकर फिर 'औन से कहने लगे कि 'ये शख्स कब तक हमारे लिए फन्दा बना रहेगा? इन लोगों को जाने दे ताकि वह खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करें। क्या तुझे खबर नहीं कि मिस्र बर्बाद हो गया?' 8 तब मूसा और हास्न फिर 'औन के पास फिर बूला लिए गए, और उसने उनको कहा, कि 'जाओ, और खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करो, लेकिन वह कौन — कौन हैं जो जाएँगे?' 9 मूसा ने कहा, कि 'हम अपने जवानों और बुढ़ों और अपने बेटों और बेटियों और अपनी भेड़ बकरियों और अपने गाये बैलों समेत जाएँगे, क्यूंकि हम को अपने खुदा की 'ईद करनी है।' 10 तब उसने उनको कहा कि 'खुदावन्द ही तुम्हारे साथ रहे, मैं तो जस्तर ही तुम को बच्चों समेत जाने दूँगा, खबरदार हो जाओ इसमें तुम्हारी खराकी है। 11 नवीनी, ऐसा नहीं होने पाएँगा; तब तुम मर्द ही मर्द जाकर खुदावन्द की इबादत करो क्यूंकि तुम यही चाहते थे।' 12 और वह फिर 'औन के पास से निकाल दिए गए। 12 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि 'मूल्क — ए — मिस्र पर अपना हाथ बढ़ा ताकि टिहुँयों मूल्क — ए — मिस्र पर अपनी लाठी बढ़ाइ, और खुदावन्द ने उस सारे दिन और सारी रात पुरावा आँधी चलाई, और सुबह होते होते पुरावा आँधी टिडिडयाँ ले आई। 14 और टिडिडयाँ सारे मूल्क — ए — मिस्र पर छाँ गई और वही मिस्र की हड्डों में बसरा किया, और उनका दल ऐसा भारी था कि न तो उसने पहले ऐसी टिहुँयों कभी आई न उनके बाद फिर आएँगी। 15 क्यूंकि उन्होंने इश जमीन को ढाँक लिया, ऐसा कि मूल्क में अधेरा हो गया; और उन्होंने उस मूल्क की एक — एक सब्जी को और दरखतों के मेवह को, जो ओलों से बच गए थे चट कर लिया। और मूल्क — ए — मिस्र में न तो किसी दरखत की, न खेत की किसी सब्जी की हरियाली बाकी रही। 16 तब फिर 'औन ने जल्द मूसा और हास्न को बुलावा कर कहा कि 'मैं खुदावन्द तुम्हारे खुदा का और तुम्हारा गुनहगार हूँ। 17 इसलिए सिर्फ इस बार मेरा गुनाह बख्तों, और खुदावन्द अपने खुदा से सिफारिश करो कि वह सिर्फ इस मौत को मुझ से टूट कर दे।' 18 फिर उसने फिर 'औन के पास से निकल कर खुदावन्द से सिफारिश की। 19 और खुदावन्द ने पछुवा आँधी भेजी जो टिहुँयों को उड़ा कर ले गई और उनको बहर — ए — कुलज़ुम में

डाल दिया, और मिस्र की हड्डों में एक टिहुँयी भी बाकी न रही। 20 लेकिन खुदावन्द ने फिर 'औन के दिल को सख्त कर दिया और उसने बनी — इसाईल को जाने न दिया। 21 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ा ताकि मुल्क — ए — मिस्र में तारीकी छा जाए, ऐसी तारीकी जिसे टोल सके। 22 और मूसा ने अपना हाथ आसमान की तरफ बढ़ाया और तीन दिन तक तासे मूल्क — ए — मिस्र में गहरी तारीकी रही। 23 तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा और न कोई अपनी जगह से हिला, लेकिन सब बनी — इसाईल के मकानों में उजाला रहा। 24 तब फिर 'औन ने मूसा को बुलावा कर कहा कि 'तुम जाओ और खुदावन्द की इबादत करो सिर्फ अपनी भेड़ बकरियों और गायें बैलों को यही छोड़ जाओ और जो तुम्हारे बाल — बच्चे हैं उनको भी साथ लेते जाओ।' 25 मूसा ने कहा, कि तुझे हम को कुर्बानियों और सोख्तनी कुर्बानियों के लिए जानवर देने पड़ेंगे, ताकि हम खुदावन्द अपने खुदा के आगे कुर्बानी करें। 26 इसलिए हमारे चौपाये भी हमारे साथ जाएँगे और उनका एक खुर तक भी पीछे नहीं छोड़ा जाएगा, क्यूंकि उन्हीं में से हम को खुदावन्द अपने खुदा की इबादत का सामान लेना पड़ेगा, और जब तक हम वहाँ पहुँच न जाएँ हम नहीं जानते कि क्या — क्या लेकर हम को खुदावन्द की इबादत करनी होगी। 27 लेकिन खुदावन्द ने फिर 'औन के दिल को सख्त कर दिया और उसने उनको जाने ही न दिया। 28 और फिर 'औन ने उसे कहा, 'मेरे सामने से चला जा; और होशियार रह, फिर मेरा मूँह देखने को मत आना क्यूंकि जिस दिन तो मेरा मूँह देखा तो मारा जाएगा।' 29 तब मूसा ने कहा, कि तूने ठीक कहा है, मैं फिर तेरा मूँह कभी नहीं देखँगा।

11 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि 'मैं फिर 'औन और मिथियों पर एक

बला और लाठँगा, उसके बाद वह तुम को यहाँ से जाने देगा, और जब वह तुम को जाने देगा तो यकीन तुम सब को यहाँ से बिल्कुल निकाल देगा। 2 इसलिए अब तू लोगों के कान में यह बात डाल दे कि उनमें से हर शख्स अपने पड़ोसी और हर 'औरत अपनी पड़ोसन से साने, चौदी के जेवर ले।' 3 और खुदावन्द ने उन लोगों पर मिथियों को मेहरबान कर दिया, और यह आदमी मूसा भी मूल्क — ए — मिस्र में फिर 'औन के खादिमों के नजदीक और उन लोगों की निगाह में बड़ा बुर्जा था। 4 और मूसा ने कहा, कि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि मैं आधी रात को निकल कर मिस्र के बीच में जाऊँगा; 5 और मूल्क — ए — मिस्र के सब पहलौटे, फिर 'औन जो तख्त पर बैठा है उसके पहलौटे से लेकर वह लौटी जो चक्री की पीसती है उसके पहलौटे तक और सब चौपायों के पहलौटे मर जाएँगे। 6 और सारे मूल्क — ए — मिस्र में ऐसा बड़ा मातम होगा जैसा न कभी पहले हुआ और न फिर कभी होगा। 7 लेकिन इसाईल में से किसी पर चाहे इंसान हो चाहे हैवान एक कुत्ता भी नहीं भौंकेगा, ताकि तुम जान लो कि खुदावन्द मिथियों और इसाईलियों में कैसा फ़क़र करता है। 8 और तेरे यह सब नैकर मेरे पास आकर मेरे आगे सर झकाएँगे और कहेंगे, कि 'तू भी निकल और तेरे सब पैरी भी निकलें, इसके बाद मैं निकल जाऊँगा। यह कह कर वह बड़े गुस्से में फिर 'औन के पास से निकल कर चला गया। 9 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि फिर 'औन तुम्हारी इसी बजह से नहीं सुनेगा; ताकि 'अजायब मूल्क — ए — मिस्र में बहुत ज्यादा हो जाएँ। 10 और मूसा और हास्न ने यह करामत फिर 'औन को दिखाई, और खुदावन्द ने फिर 'औन के दिल को सख्त कर दिया कि उसने अपने मूल्क से बनी — इसाईल को जाने न दिया।

12 फिर खुदावन्द ने मूल्क — ए — मिस्र में मूसा और हास्न से कहा कि

2 "यह महीना तुम्हारे लिए महीनों का शुरू" और साल का पहला महीना

हो। 3 तब इमाईलियों की सारी जमा' अत से यह कह दो कि इसी महीने के दसवें दिन, हर शब्दस अपने आबाई खानदान के मुताबिक घर पैछे एक बर्रा ले, 4 और अगर किसी के घराने में बर्र को खाने के लिए आदमी कम हों, तो वह और उसका पडोसी जो उसके घर के बराबर रहता हो, दोनों मिल कर नफरी के शुमार के मुताबिक एक बर्रा ले रखें, तुम हर एक आदमी के खाने की मिक्दार के मुताबिक बर्र का हिसाब लगाना। 5 तुम्हारा बर्रा बे 'एब और यह साला नह हो, और ऐसा बच्चा या तो भेड़ों में से चुन कर लेना या बकरियों में से। 6 और तुम उसे इस महीने की चौदहवीं तक रख छोड़ना, और इमाईलियों के कबीलों की सारी जमा' अत शाम को उसे जबह करो। 7 और थोड़ा सा खन लेकर जिन घरों में वह उसे खाएँ, उनके दरवाजों के दोनों बाजुओं और ऊपर की चौखट पर लगा दें। 8 और वह उसके गोश को उसी रात आग पर भून कर बेखमीरी रोटी और कडवे साग पात के साथ खा लें। 9 उसे कच्चा या पानी में उबाल कर हरगिज न खाना, बल्कि उसको सिर और पाये और अन्दस्नी 'आजा समेत आग पर भून कर खाना। 10 और उसमें से कुछ भी सुबह तक बाकी न छोड़ना और अगर कुछ उसमें से सुबह तक बाकी रह जाए तो उसे आग में जला देना। 11 और तुम उसे इस तरह खाना अपनी कमांधे और अपनी जितायाँ पांव में पहने और अपनी लाठी हाथ में लिए हुए तुम उसे जल्दी — जल्दी खाना, क्यूँकि यह फसह खुदावन्द की है। 12 इसलिए कि मैं उस रात मूल्क — ए — मिस में से होकर गुस्स़ा और इंसान और हैवान के सब पहलौठों को जो मूल्क — ए — मिस में है, मास्ता और मिस के सब मांबूदों को भी सजा टूँगा, मैं खुदावन्द हूँ। 13 और जिन घरों में तुम हो उन पर वह खन तुम्हारी तरफ से निशान ठरेगा और मैं उस खन को देख कर तुम को छोड़ता जाऊँगा, और जब मैं मिसियों को मास्ता तो बबा तुम्हारे पास फटकने की भी नहीं कि तुम को हलाक करो। 14 और वह दिन तुम्हारे लिए एक यादगार होगा और तुम उसको खुदावन्द की 'ईद का दिन समझ कर मानना। 15 उसे हमेशा की रस्म करके उस दिन को नसल दर नसल 'ईद का दिन मानना। 15 'सात दिन तक तुप बेखमीरी रोटी खाना, और पहले ही दिन से खमीर अपने घर से बाहर कर देना; इसलिए कि जो कोई पहले दिन से सातवें दिन तक खमीरी रोटी खाए वह शब्दस इमाईल में से काट डाला जाएगा। 16 और पहले दिन तुम्हारा मुकद्दस मजमा' हो, और सातवें दिन भी मुकद्दस मजमा' हो; उन दोनों दिनों में कोई काम न किया जाए सिवा उस खाने के जिसे हर एक आदमी खाए, सिर्फ यही किया जाए। 17 और तुम बेखमीरी रोटी की यह 'ईद मनाना, क्यूँकि मैं उसी दिन तुम्हारे लक्षकर को मूल्क — ए — मिस से निकालूँगा; इस लिए तुम उस दिन को हमेशा की रस्म करके नसल दर नसल मानना। 18 पहले महीने की चौदहवीं तारीख की शाम से इक्कीसवीं तारीख की शाम तक तुम बेखमीरी रोटी खाना। 19 सात दिन तक तुम्हारे घरों में कुछ भी खमीर न हो, क्यूँकि जो कोई किसी खमीरी चीज़ को खाए, वह चाहे मुसाफिर हो चाहे उसकी पैदाइश उसी मूल्क की हो, इमाईल की जमा' अत से काट डाला जाएगा। 20 तुम कोई खमीरी चीज़ न खाना बल्कि अपनी सब बसियों में बेखमीरी रोटी खाना।' 21 तब मूसा ने इमाईल के सब बुज्जों को बुलाकर उनको कहा, कि अपने — अपने खानदान के मुताबिक एक — एक बर्रा निकाल रखवा, और यह फसह का बर्रा जबह करना। 22 और तुम ज़फे का एक गुच्छा लेकर उस खन में जो तसले में होगा डबोना और उसी तसले के खन में से कुछ ऊपर की चौखट और दरवाजे के दोनों बाजुओं पर लगा देना; और तुम में से कोई सुबह तक अपने घर के दरवाजे से बाहर न जाए। 23 क्यूँकि खुदावन्द मिसियों को मारता हुआ गुजरेगा, और जब खुदावन्द ऊपर की चौखट और दरवाजे के दोनों बाजुओं पर खन देखेगा तो वह उस दरवाजे को छोड़ जाएगा; और हलाक करने वाले को तुम को मारने के लिए घर

के अन्दर आने न देगा। 24 और तुम इस बात को अपने और अपनी औलाद के लिए हमेशा की रिवायत करके मानना। 25 और जब तुम उस मूल्क में जो खुदावन्द तुम को अपने बाटे के मुवाफिक देगा दाखिल हो जाओ, तो इस इबादत को बाबर जारी रखना। 26 और जब तुम्हारी औलाद तुम से पैछे, कि इस इबादत से तुम्हारा मकसद क्या है? 27 तो तुम यह कहना, कि 'यह खुदावन्द की फसह की कुर्बानी है, जो मिस में मिसियों को मारते बक्त बनी — इमाईल के घरों को छोड़ गया और यूँ हमारे घरों को बचा लिया।' तब लोगों ने सिर दूका कर सिज्दा किया। 28 और बनी — इमाईल ने जाकर, जैसा खुदावन्द ने मूसा और हास्तन को फरमाया था वैसा ही किया। 29 और आधी रात को खुदावन्द ने मूल्क — ए — मिस के सब पहलौठों को फिर' औन जो अपने तख्त पर बैठा था उसके पहलौठे से लेकर वह कैदी जो कैदखाने में था उसके पहलौठे तक, बल्कि चौपायों के पहलौठों को भी हलाक कर दिया। 30 और फिर' औन और उनके सब नैकर और सब मिसी रात ही को उठ बैठे और मिस में बड़ा कोहराम मचा, क्यूँकि एक भी ऐसा घर न था जिसमें कोई न मरा हो। 31 तब उसने रात ही रात में मूसा और हास्तन को बुलावा कर कहा, कि 'तुम बनी — इमाईल को लेकर मेरी कौम के लोगों में से निकल जाओ और जैसा कहते हो जाकर खुदावन्द की इबादत करो।' 32 और अपने कहने के मुताबिक अपनी भेड़ बकरियों और गाय बैल भी लेते जाओ और मेरे लिए भी दुआ' करना।' 33 और मिसी उन लोगों से बजिद होने लगे, ताकि उनको मूल्क — ए — मिस से जल्द बाहर चलता करें, क्यूँकि वह समझे कि हम सब मर जाएँगे। 34 तब इन लोगों ने अपने गुण्डे गुण्डाए आटे को बौर खमीर दिए लगानों समेत कपड़ों में बौध कर अपने कंधों पर धर लिया। 35 और बनी — इमाईल ने मूसा के कहने के मुवाफिक यह भी किया, कि मिसियों से सोने चाँदी के जेवर और कपड़े माँग लिए। 36 और खुदावन्द ने उन लोगों को मिसियों की निगाह में ऐसी 'इज्जत बख्शी कि जो कुछ उन्होंने माँगा उन्होंने दे दिया। तब उन्होंने मिसियों को लट लिया। 37 और बनी — इमाईल ने आपसीस से सुककात तक पैदल सफर किया और बाल बच्चों को छोड़ कर वह कोई छः लाख मर्द थे। 38 और उनके साथ एक मिर्ती — ज़ुली गिरोह भी गई और भेड़ — बकरियाँ और गाय — बैल और बहत चौपाये उनके साथ थे। 39 और उन्होंने उस गुन्धे हुए आटे की जिसे हर मिस से लाए थे बेखमीरी रोटीयाँ पकाई, क्यूँकि वह उसमें खमीर देने न पाए थे इसलिए कि वह मिस से ऐसे जबरन निकल दिए गए कि वहाँ ठहर न सके और न कुछ खाना अपने लिए तैयार करने पाए। 40 और बनी — इमाईल को मिस में रहते हुए चार सौ तीस बरस हुए थे। 41 और उन चार सौ तीस बरसों के गुरह जाने पर ठीक उसी दिन खुदावन्द का सारा लक्षकर मूल्क — ए — मिस से निकल गया। 42 ये वह रात है जिसे खुदावन्द की खातिर मानना बहुत मुनासिर है क्यूँकि इसमें वह उनको मूल्क — ए — मिस से निकाल लाया, खुदावन्द की यह वही रात है जिसे ज़स्ती है कि सब बनी इमाईल नसल — दर — नसल ख़बू मारें। 43 फिर खुदावन्द ने मूसा और हास्तन से कहा, कि 'फसह की रिवायत यह है, कि कोई बेगाना उसे खाने न पाए। 44 लेकिन अगर कोई शब्द किसी का खरीदा हुआ गुलाम हो, और तूने उसका खतना कर दिया हो तो वह उसे खाए। 45 पर अजनबी और मज़दूर उसे खाने न पाए। 46 और उसे एक ही घर में खाएँ याँनी उसका ज़रा भी गोशत तू घर से बाहर न ले जाना और न तुम उसकी कोई हड्डी तोड़ना। 47 इमाईल की सारी जमा' अत इस पर 'अमल करे। 48 और अगर कोई अजनबी तेरे साथ मुकीम हो और खुदावन्द की फसह को मानना चाहता हो उसके यहाँ के सब मर्द अपना खतना कराएँ, तब वह पास आकर फसह करे; यूँ वह ऐसा समझा जाएगा जैसे उसी मूल्क की उसकी पैदाइश है लेकिन कोई नामज्जलून आदमी उसे खाने

न पाए। 49 वर्तनी और उस अजनबी के लिए जो तुम्हारे बीच मुक्तीम हो एक ही शरीर अत होगी। 50 तब सब बनी — इसाईल ने जैसा खुदावन्द ने मूसा और हास्तन को फरमाया वैसा ही किया। 51 और ठीक उसी दिन खुदावन्द बनी — इसाईल के सब लश्करों को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल ले गया।

13 और खुदावन्द ने मूसा को फरमाया, कि 2 “सब पहलौठों को याएं”

जो बनी — इसाईल में, चाहे इंसान हो चाहे हैवान पहलौठे बच्चे हों उनको मैरे लिए पाक ठहरा क्यूंकि वह मेरे हैं।” 3 और मूसा ने लोगों से कहा, कि “तुम इस दिन को याद रखना जिस में तुम मिस्र से जो गुलामी का घर है निकले, क्यूंकि खुदावन्द अपनी ताकत से तुम को वहाँ से निकाल लाया; इसमें खमीरी रोटी खाई न जाए। 4 तुम अबीव के महीने में आज के दिन निकले हो। 5 फिर जब खुदावन्द तुझ को कनानियों और हितियों और अमारियों और हव्वियों और यबसियों के मुल्क में पहुँचा दे जिसे तुझ को देने की कसम उसने तेरे बाप दादा से खाई थी और जिसमें तूध और शहद बहता है, तो तू इसी महीने में यह इबादत किया करना। 6 सात दिन तक तू बेखमीरी रोटी खाना और सातवें दिन खुदावन्द की ‘ईंद मनाना। 7 बेखमीरी रोटी सातों दिन खाइ जाए, और खमीरी रोटी तेरे पास दिखाइ भी न दे और न तेरे मुल्क की हादों में कही कुछ खमीर नजर आए। 8 और तू उस दिन अपने बेटे को यह बताना, कि इस दिन को मैं उस काम की बजह से मानता हूँ जो खुदावन्द ने मेरे लिए उस वक्त किया जब मैं मुल्क — ए — मिस्र से निकाला। 9 और यही तेरे पास जैसे तेरे हाथ में एक निशान और तेरी दोनों आँखों के सामने एक यादगार ठहरे, ताकि खुदावन्द की शरीरी अत तेरी जबान पर हो; क्यूंकि खुदावन्द ने तुझ को अपनी ताकत से मुल्क — ए — मिस्र से निकाला। 10 तब तू इस रिवायत को इसी वक्त — ए — मुअर्रयन में हर साल माना करना। 11 “और जब खुदावन्द उस कसम के मुताबिक, जो उसने तुझ से और तेरे बाप दादा से खाई, तुझ को कनानियों के मुल्क में पहुँचा कर वह मुल्क तुझ को दे दे। 12 तू तू पहलौठे बच्चों को और जानवरों के पहलौठों को खुदावन्द के लिए अलग कर देना। सब न बच्चे खुदावन्द के होंगे। 13 और गधे के पहले बच्चे के फिदिये में बर्बाद देना, और आगर तू उसका फिदिया न दे तो उसकी गर्दन तोड़ डालना। और तेरे बेटों में जिनने पहलौठे हों उन सबका फिदिया तुझ को देना होगा। 14 और जब अगले जमाने में तेरा बेटा तुझसे सवाल करे, कि ‘यह क्या है?’ तो तू उसे यह जवाब देना, ‘खुदावन्द हम को मिस्र से जो गुलामी का घर है अपनी ताकत से निकाल लाया। 15 और जब फिर औन ने हम को जाने देना न चाहा, तो खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में इंसान और हैवान दोनों के पहलौठे मार दिए। इसलिए मैं जानवरों के सब न बच्चों को जो अपनी अपनी माँ के रिहम को खोलते हैं खुदावन्द के आगे कुर्बानी करता हैं, लेकिन अपने बेटों के सब पहलौठों का फिदिया देता हैं। 16 और यह तेरे हाथ पर एक निशान और तेरी पेशानी पर टीकों की तरह हों, क्यूंकि खुदावन्द अपने ताकत से हम को मिस्र से निकाल लाया।” 17 और जब फिर औन ने उन लोगों को जाने की इजाजत दे दी तो खुदा इनको फिलिस्तियों के मुक्के के गास्ते से नहीं ले गया, अगर उधर से नजदीक पड़ता; क्यूंकि खुदा ने कहा, ऐसा न हो कि यह लोग लड़ाई — भिड़ाई देख कर पछताने लंगे और मिस्र को लौट जाएँ। 18 बल्कि खुदा इनको चक्कर खिला कर बहर — ए — कुलजुम के बीरान के गास्ते से ले गया और बनी — इसाईल मुल्क — ए — मिस्र से हथियार बन्द निकले थे। 19 और मूसा यूसुफ की हड्डियों को साथ लेता गया, क्यूंकि उसने बनी — इसाईल से यह कह कर, कि खुदा ज़स्त तुम्हारी खबर लेगा इस बात की सख्त कसम ले ली थी, कि तुम यहाँ से मेरी हड्डियों अपने साथ लेते जाना। 20 और उन्होंने सुक्रात से रवाना करके बीराने के किनारे ईंताम में खेमा लगाया। 21 और

खुदावन्द उनको दिन को रास्ता दिखाने के लिए बादल के सुतून में और रात को रौशनी देने के लिए आग के सुतून में हो कर उनके आगे — आगे चला करता था, ताकि वह दिन और रात दोनों में चल सके। 22 वह बादल का सुतून दिन को और आग का सुतून रात को उन लोगों के आगे से हटता न था।

14 और खुदावन्द ने मूसा से फरमाया, कि 2 “बनी — इसाईल को हक्म दे

कि वह लौट कर मिजादल और समन्दर के बीच फी हखीरोत के सामने बाल — सफोन के आगे खेमे लगाएँ, उसी के आगे समन्दर के किनारे खेमे लगाना। 3 फिर औन बनी — इसाईल के हक्म में कहेगा कि वह जमीन की उलझनों में आकर बीरान में घिर गए हैं। 4 और मैं फिर औन के दिल को सख्त कर्सँगा और वह उनका पीछा करेगा, और मैं फिर औन और उसके सारे लश्कर पर मूसाज हाँगा और मिस्री जान लंगे तो खुदावन्द मैं हूँ।” और उन्होंने ऐसा ही किया। 5 जब मिस्र के बादशाह को खबर मिली कि वह लोग चल दिए, तो फिर औन और उसके खादिमों का दिल उन लोगों की तरफ से फिर गया, और वह कहे लगे कि हम ने यह क्या किया, कि इसाईलियों को अपनी खिदमत से छुट्टी देकर उनको जाने दिया? 6 तब उसने अपना रथ तैयार करवाया और अपनी कौम के लोगों को साथ लिया, 7 और उसने छ: सौ चुने हुए रथ बल्कि मिस्र के सब रथ लिए और उन सभों में सरदारों को बिठाया। 8 और खुदावन्द ने मिस्र के बादशाह फिर औन के दिल को सख्त कर दिया और उसने बनी इसाईल का पीछा किया, क्यूंकि बनी — इसाईल बड़े फँटु से निकले थे। 9 और मिस्री फौज ने फिर औन के सब घोड़ों और रथों और सवारों समेत उनका पीछा किया और उनको जब वह समन्दर के किनारे फी — हखीरोत के पास बाल सफोन के सामने खेमा लगा रहे थे जा लिया। 10 और जब फिर औन नजदीक आ गया तब बनी — इसाईल ने आँख उठा कर देखा कि मिस्री उनका पीछा किए चले आते हैं, और वह बहुत खौफजदा हो गए। तब बनी — इसाईल ने खुदावन्द से फरियाद की, 11 और मूसा से कहने लगे, “क्या मिस्र में कब्जे न थीं जो तू हम को वहाँ से माने के लिए बीरान में ले आये हैं? तू तेरे हाथ से यह क्या किया कि हम को मिस्र से निकाल लाया? 12 क्या हम तुझ से मिस्र में यह बात न कहते थे कि हम को रहने दे कि हम मिस्रियों की खिदमत करें? क्यूंकि हमारे लिए मिस्रियों की खिदमत करना बीरान में मरने से बेहतर होता।” 13 तब मूसा ने लोगों से कहा, “डरो मत, चुपचाप खड़े होकर खुदावन्द की नजात के काम को देखो जो वह आज तुम्हारे लिए करेगा। क्यूंकि जिन मिस्रियों को तुम आज देखते हो उनको फिर कभी हमेशा तक न देखोगे। 14 खुदावन्द तुम्हारी तरफ से जंग करेगा और तुम खामोश रहोगे।” 15 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि तू क्यूं मुझ से फरियाद कर रहा है? बनी — इसाईल से कह कि वह आगे बढ़े। 16 और तू अपनी लाठी उठा कर अपना हाथ समन्दर के ऊपर बढ़ा और उसे दो हिस्से कर, और बनी इसाईल समुद्र के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल जाएँगी। 17 और देख, मिस्रियों के दिल सख्त कर दूँगा और वह उनका पीछा करेगे, और मैं फिर औन और उसकी सिपाह और उसके रथों और सवारों पर मूसाज हाँगा। 18 और जब मैं फिर औन और उसके रथों और सवारों पर मूसाज हो जाएँगा तो मिस्री जान लंगे कि मैं ही खुदावन्द हूँ। 19 और खुदा उसका फरियाद जो इसाईली लश्कर के आगे — आगे चला करता था जा कर उनके पीछे हो गया और बादल का वह सुतून उनके सामने से हट कर उनके पीछे जा ठहरा। 20 इस तरह वह मिस्रियों के लश्कर और इसाईली लश्कर के बीच में हो गया, तब वहाँ बादल भी था और अन्धेरा भी तो भी रात को उससे रौशनी रही। तब वह रात भर एक दूसरे के पास नहीं आए। 21 फिर मूसा ने अपना हाथ समन्दर के ऊपर बढ़ाया और खुदावन्द ने रात भर तुन्द पूरी आँधी चला कर और समन्दर को पीछे हटा कर उसे खुशक ज़मीन बना दिया और पानी

दो हिस्से हो गया। 22 और बनी — इसाईल समन्दर के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल गए और उनके दाहने और बाँह हाथ पानी दीवार की तरह था। 23 और मिसियों ने पीछा किया और फिर 'अौन सब घोड़े और रथ और सवार उनके पीछे — पीछे समन्दर के बीच में चले गए। 24 और रात के पिछले पहर खुदावन्द ने आग और बादल के सूतन में से मिसियों के लशकर पर नजर की और उनके लशकर को घबरा दिया। 25 और उसने उनके रथों के पाहियों को निकल डाला इसलिए उनका चलना मुश्किल हो गया तब मिसी कहने लगे, “आओ, हम इसाईलियों के सामने से भागें, क्यूंकि खुदावन्द उनकी तरफ से मिसियों के साथ जंग करता है।” 26 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि अपना हाथ समन्दर के ऊपर बढ़ा, ताकि पानी मिसियों और उनके रथों और सवारों पर फिर बरने लगे। 27 और मूसा ने अपना हाथ समन्दर के ऊपर बढ़ाया, और सबह होते होते समन्दर फिर अपनी असली ताकत पर आ गया; और मिसी उल्टे भागने लगे और खुदावन्द ने समन्दर के बीच ही में मिसियों को हलाक कर दिया। 28 और पानी पलट कर आया और उसने रथों और सवारों और फिर 'अौन सारे लशकर जो इसाईलियों का पीछा करता हुआ समन्दर में गया था डुबो दिया और उसमें से एक भी बाकी न छोड़ा। 29 लेकिन बनी — इसाईल समन्दर के बीच में खुशक ज़मीन पर चलकर निकल गए और पानी उनके दहने और बाँह हाथ दीवार की तरह रहा। 30 फिर खुदावन्द ने उस दिन इसाईलियों को मिसियों को हाथ से इस तरह बचाया, और इसाईलियों ने मिसियों को समन्दर के किनारे मरे हुए पड़े देखा। 31 और इसाईलियों ने बड़ी कुदरत जो खुदावन्द ने मिसियों पर जाहिर की देखी, और वह लोग खुदावन्द से डर गये और खुदावन्द पर और उसके बन्दे मूसा पर इमान लाए।

15 तब मूसा और बनी — इसाईल ने खुदावन्द के लिए यह गीत गाया और यूँ कहने लगे, “मैं खुदा वन्द की सना गाँऊँगा क्यूंकि वह जलाल के साथ फतहमन्द हुआ; उस ने घोड़े को सवार समेत समुन्द्र में डाल दिया। 2 खुदावन्द मेरी ताकत और राग है, वही मेरी नजात भी ठहरा। वह मेरा खुदा है, मैं उसकी बड़ाई कस्संगा, वह मेरे जाप का खुदा है मैं उसकी बुजुर्गी कस्संगा। 3 खुदावन्द साहिब — ए — जंग है, यहोता उसका नाम है। 4 फिर 'अौन के रथों और लशकर को उसने समन्दर में डाल दिया; और उसके बूते सरदार बहर — ए — कुलज़ुम में डूब गये। 5 गहरे पानी ने उनको छिपा लिया; वह पत्थर की तरह तह में चले गए। 6 ऐ खुदावन्द, तेरा दहना हाथ कुदरत की वजह से जलाली है। ऐ खुदावन्द तेरा दहना हाथ दुश्मन को चकनाचूर कर देता है। 7 त अपनी 'अज़मत के जोर से अपने मुखालिकों को हलाक करता है; तू अपना कहर भेजता है, और वह उनके खँटी की तरह भस्म कर डालता है। 8 रे नथनों के दम से पानी का ढेर लग गया, सैलाब तरे की तरह सीधे खड़े हो गए, और गहरा पानी समन्दर के बीच में जम गया। 9 दुश्मन ने तो यह कहा था, मैं पीछा करूँगा, मैं जा पकड़ूँगा, मैं लट का माल बांटूँगा, उनकी तबाही से मेरा कलेजा ठंडा होगा। मैं अपनी तलवार खीच कर अपने ही हाथ से उनको हलाक करूँगा। 10 तने अपनी औंधी की फँक मारी, तो समन्दर ने उनको छिपा लिया। वह जोर के पानी में शीसे की तरह डूब गए। 11 मांबूदों में ऐ खुदावन्द तेरी तरह कौन है? कौन है जो तेरी तरह अपनी पाकीज़ी की वजह से जलाली और अपनी मदह की वजह से रौब वाला और साहिब — ए — करामात है? 12 तने अपना दहना हाथ बढ़ाया, तो ज़मीन उनको निगल गई। 13 “अपनी रहमत से तूते उन लोगों की जिनको तूते छुटकारा बख्शा रहनुपाई की, और अपने जोर से त उनको अपने मुकद्दस मकान को ले चला है। 14 कौमें सुन कर काँप गई हैं और फिलिस्तीन के रहने वालों की जान पर आ बनी है। 15 अटोम के ऊहदे दार हैरान हैं, मोआब के पहलवानों को कपकपी लग गई है, कनान के सब रहने

वालों के दिल पिघले जाते हैं। 16 खोफ — ओ — हिंगस उन पर तारी है; तेरे बाजू की 'अज़मत की वजह से वह पत्थर की तरह बेहिस — ओ — हरकत है। जब तक ऐ खुदावन्द, तेरे लोग निकल न जाएँ, जब तक तेरे लोग जिनको तूने खरीदा है पार न हो जाएँ, 17 तू उनको वहाँ ले जाकर अपनी मीरास के पहाड़ पर दरखत की तरह लगाएगा, तू उनको उसी जगह ले जाएगा जिसे तूने अपनी सूकूनत के लिए बनाया है ऐ खुदावन्द! वह तेरी जा — ए — मुकद्दस है, जिसे तेरे हाथों ने काईम किया है। 18 खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक सल्तनत करेगा।” 19 इस हमद की वजह यह थी कि फिर 'अौन के सवार घोड़ों और रथों समेत समन्दर में गए, और खुदावन्द समन्दर के पानी को उन पर लौटा लाया; लेकिन बनी — इसाईल समन्दर के बीच में से खुशक ज़मीन पर चल कर निकल गए। 20 तब हास्न की बहन मरियम नविया ने दफ हाथ में लिया, और सब 'ओरें दफ लिए नाचती हुई उसके पीछे चली। 21 और मरियम उनके हमद के जवाब में यह गाती थी, “खुदावन्द की हमद — ओ — सना गाओ, क्यूंकि वह जलाल के साथ फतहमन्द हुआ है; उसने घोड़े को उसके सवार समेत समन्दर में डाल दिया है।” 22 फिर मूसा बनी — इसाईल को बहर — ए — कुलज़ुम से आगे ले गया और वह शो के बीराने में आए, और बीराने में चलते हुए तीन दिन तक उनको कोई पानी का चश्मा न मिला। 23 और जब वह मारह में आए तो मारह का पानी पी न सके क्यूंकि वह कडवा था, इसीलिए उस जगह का नाम मारह पड़ गया। 24 तब वह लोग मूसा पर बड़बड़ा कर कहने लगे, कि हम क्या पिएँ? 25 उसने खुदावन्द से फरियाद की; खुदावन्द ने उसे एक पेड़ दिखाया जिसे जब उसने पानी में डाला तो पानी मीठा हो गया। वही खुदावन्द ने उनके लिए एक कानून और शरी' अत बनाई और वही यह कह कर उनकी आजमाइश की, 26 कि “अगर तू दिल लगा कर खुदावन्द अपने खुदा की बात सुने और वही काम करे जो उसकी नजर में भला है और उसके हक्मों को माने और उसके कानूनों पर 'अमल करें, तो मैं उन बीमारियों में से जो मैंने मिसियों पर भेजी तुम पर कोई न भेज़ूँगा क्यूंकि मैं खुदावन्द तेरा शापी हूँ।” 27 फिर वह एलीम में आए जहाँ पानी के बारह चश्मे और खजूर के संतर दरखत थे, और वही पानी के करीब उन्होंने अपने खेमे लगाए।

16 फिर वह एलीम से रवाना हुए और बनी — इसाईल की सारी जमा' अत मुल्क — ए — मिस से निकलने के बाद दसरे महीने की पांदुहरी तारीख को सीन के बीराने में जो एलीम और सीन के बीच है पहुँची। 2 और उस बीराने में बनी — इसाईल की सारी जमा' अत मूसा और हास्न पर बड़बड़ा लगी। 3 और बनी — इसाईल कहने लगे, “काश कि हम खुदावन्द के हाथ से मुल्क — ए — मिस में जब ही मार हिए जाते जब हम गोशत की हाँडियों के पास बैठ कर दिल भर कर रोटी खाते थे, क्यूंकि तुम तो हम को इस बीराने में इसीलिए ले आए हो कि सारे मजें को भूका मारो।” 4 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “मैं आसमान से तुम लोगों के लिए रोटियाँ बरसाऊँगा, फिर वह लोग निकल कर सिफ़े एक — एक दिन का हिस्सा हर दिन बटोर लिया करें कि इस से मैं इनकी आजमाइश करूँगा कि वह मेरी शरी' अत पर चलेंगे या नहीं। 5 और छेटे दिन ऐसा होगा कि जितना वह ला कर पकाएँगे वह उससे जितना रोज जमा' करते हैं दूना होगा।” 6 तब मूसा और हास्न ने सब बनी — इसाईल से कहा, कि “शाम को तुम जान लोगे कि जो तुम को मुल्क — ए — मिस से निकाल कर लाया है वह खुदावन्द है। 7 और सबह को तुम खुदावन्द का जलाल देखोगे, क्यूंकि तुम जो खुदावन्द पर बड़बड़ा लगाते हो उसे वह सुनता है। और हम कौन हैं जो तुम हम पर बड़बड़ाते हो?” 8 और मूसा ने यह भी कहा, कि “शाम को खुदावन्द तुम को खाने को गोशत और सबह को रोटी पेट भर के देगा; क्यूंकि तुम जो खुदावन्द पर बड़बड़ाते हो उसे वह सुनता है। और हमारी क्या

हकीकत है? तुम्हारा बड़बड़ाना हम पर नहीं बल्कि खुदावन्द पर है।” 9 फिर मूसा ने हास्न से कहा, कि “बनी इसाईल की सारी जमा’ अत से कह, कि तुम खुदावन्द के नजदीक आओ क्यूंकि उसने तुम्हारा बड़बड़ाना सुन लिया है।” 10 और जब हास्न बनी — इसाईल की जमा’ अत से यह बातें कह रहा था, तो उन्होंने वीराने की तरफ नजर की और उनको खुदावन्द का जलाल बादल में दिखाई दिया। 11 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 12 “मैंने बनी — इसाईल का बड़बड़ाना सुन लिया है, इसलिए तू उनसे कह दे कि शाम को तुम गोशत खाओगे और सुबह को तुम रोटी से सेर होगे, और तुम जान लोगे कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।” 13 और यूँ हुआ कि शाम को इतनी खेड़ेरे आई कि उनकी खेमागाह को ढाँक लिया, और सुबह को खेमागाह के आस पास ओपस पड़ी ही है। 14 और जब वह ओपस जो पड़ी थी। सख गई तो क्या देखते हैं, कि वीरान में एक छोटी — छोटी गोल गोल चीज़ ऐसी छोटी जैसे पाले के दाने होते हैं जैसीन पर पड़ी है। 15 बनी — इसाईल उसे देखकर आपस में कहने लगे, मन? क्यूंकि वह नहीं जानते थे कि वह क्या है। तब मूसा ने उनसे कहा, यह वही रोटी है जो खुदावन्द ने खाने को तुम को दी है। 16 इसलिए खुदावन्द का हृक्षम यह है कि तुम उसे अपने — अपने खाने की मिक्दार के मुवाफिक यानी अपने — अपने आदमियों के शुमार के मुताबिक हर शख्स एक ओपर जमा’ करना, और हर शख्स उतने ही आदमियों के लिए जमा’ करे जितने उसके खेमे में हों। 17 चुनाँचे बनी — इसाईल ने ऐसा ही किया और किसी ने ज्यादा और किसी ने कम जमा’ किया। 18 और जब उन्होंने उसे ओपर से नापा तो जिसने ज्यादा जमा’ किया था कुछ ज्यादा न पाया और उसका जिसने कम जमा’ किया था कम न हुआ। उनमें से हर एक ने अपने खाने की मिक्दार के मुताबिक जमा’ किया था। 19 और मूसा ने उनसे कह दिया था कि कोई उसमें से कुछ सुबह तक बाकी न छोड़े। 20 तोमीं उन्होंने मूसा की बात न मानी बल्कि बाँजों ने सुबह तक कुछ रहने दिया, इसलिए उसमें कीड़े पड़ गए और वह सड़ गया; तब मूसा उनसे नाराज हुआ। 21 और वह हर सुबह को अपने — अपने खाने की मिक्दार के मुताबिक जमा’ कर लेते थे और धूप तेज होते ही वह पिघल जाता था। 22 और छठे दिन ऐसा हुआ कि जितनी रोटी वह रोज़ जमा’ करते थे उससे दूनी जमा’ की यानी हर शख्स दो ओपर, और जमा’ अत के सब सरदारों ने आकर यह मूसा को बताया। 23 उनसे उनको कहा, कि “खुदावन्द का हृक्षम यह है कि कल खास आराम का दिन यानी खुदावन्द का मुकद्दस सबत है, जो तुम को पकाना हो पका लो और जो उबालना हो उबाल लो और वह जो बच रहे उसे अपने लिए सुबह तक महफूज रखें।” 24 चुनाँचे उन्होंने जैसा मूसा ने कहा था उसे सुबह तक रहने दिया, और वह न तो सड़ा और न उसमें कीड़े पड़े। 25 और मूसा ने कहा कि आज उसी को खाओ क्यूंकि आज खुदावन्द का सबत है, इसलिए वह आज तुम को मैटान में नहीं मिलेगा। 26 छः दिन तक तुम उसे जमा’ करना लेकिन सातवें दिन सबत है, उसमें वह नहीं मिलेगा। 27 और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उनमें से कुछ आदमी मन बटोरने गए पर उनको कुछ नहीं मिला। 28 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “तुम लोग कब तक मेरे हृक्षमों और शरीर अत के मानसे से इन्कार करते रहोगे? 29 देखो, चीकि खुदावन्द ने तुम को सबत का दिन दिया है, इसलिए वह तुम को छठे दिन दो दिन का खाना देता है। इसलिए तुम अपनी — अपनी जगह रहो और सातवें दिन कोई अपनी जगह से बाहर न जाए।” 30 चुनाँचे लोगों ने सातवें दिन आराम किया। 31 और बनी — इसाईल ने उसका नाम मन रख्बा, और वह धनिये के बीज की तरह सफेद और उसका मजा शहद के बने हए पए की तरह था। 32 और मूसा ने कहा, “खुदावन्द यह हृक्षम देता है, कि इसका एक ओपर भर कर अपनी नसल के लिए रख लो, ताकि वह उस रोटी को देखे जो मैंने तुम को वीराने में खिलाई जब

मैं तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया।” 33 और मूसा ने हास्न से कहा, “एक मर्तबान ले और एक ओपर मन उसमें भर कर उसे खुदावन्द के आगे रख दे, ताकि वह तुम्हारी नसल के लिए रखवा रहे।” 34 और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्षम दिया था उसी के मुताबिक हास्न ने उसे शहादत के सन्दूक के आगे रख दिया ताकि वह रखवा रहे। 35 और बनी — इसाईल जब तक आबाद मुल्क में न आए यानी चालीस बरस तक मन खाते रहे, अलगर जब तक वह मुल्क — ए — कनान की हृद तक न आए मन खाते रहे। 36 और एक ओपर ऐका का दसवाँ हिस्सा है।

17 फिर बनी — इसाईल की सारी जमा’ अत सीन के वीराने से चली और खुदावन्द के हृक्षम के मुताबिक सफर करती है रफीदीम में आकर खेमा लगाया; वहाँ उन लोगों के पीने को पानी न मिला। 2 वहाँ वह लोग मूसा से झगड़ा करके कहने लगे, कि “हम को पीने को पानी दे।” मूसा ने उनसे कहा, कि “तुम मुझ से क्यूँ झगड़ते हो और खुदावन्द को क्यूँ आजमाते हो?” 3 वहाँ उन लोगों को बड़ी प्यास लगी, तब वह लोग मूसा पर बड़बड़ाने लगे और कहा, कि तू हम को और हमारे बच्चों और चौपायों को प्यासा मारने के लिए हम लोगों को क्यूँ मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया? 4 मूसा ने खुदावन्द से फरियाद करके कहा कि मैं इन लोगों से क्या करूँ? वह सब तो अभी मुझे संगसार करने को तैयार है। 5 खुदावन्द ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे होकर चल और बनी — इसाईल के बुजुर्गों में से कुछ को अपने साथ ले ले और जिस लाठी से तूने दरिया पर मारा था उसे अपने हाथ में लेता जा। 6 देख, मैं तैरे अगे जाकर वहाँ होरिब की एक चट्टान पर खड़ा रहूँगा, और तू उस चट्टान पर मारना तो उसमें से पानी निकलेगा कि यह लोग पिएँ। चुनाँचे मूसा ने बनी — इसाईल के बुजुर्गों के सामने यही किया, 7 और उसने उस जगह का नाम मस्सा और मरीबा रख्बा; क्यूंकि बनी — इसाईल ने वहाँ झगड़ा किया और यह कह कर खुदावन्द का इमतिहान किया, “खुदावन्द हासो बीच में है या नहीं?” 8 तब ‘अमालीकी’ आकर रफीदीम में बनी — इसाईल से लड़ने लगे। 9 और मूसा ने यशूँ अ से कहा, “हमारी तरफ के कुछ आदमी चुन कर ले जा और ‘अमालीकियों से लड़, और मैं कल खुदा की लाठी अपने हाथ में लिए हए पहाड़ की चोटी पर खड़ा रहूँगा।” 10 फिर मूसा के हृक्षम के मुताबिक यशूँ अ ‘अमालीकियों से लड़ने लगा, और मूसा और हास्न और हर पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। 11 और जब तक मूसा अपना हाथ उठाए रहता था तब बनी — इसाईल गालिब रहते थे, और जब वह लोगों के साथ लटका देता था तब ‘अमालीकी’ गालिब होते थे। 12 और जब मूसा के हाथ भर गए तो उन्होंने एक पथर लेकर मूसा के नीचे रख दिया और वह उस पर बैठ गया, और हास्न और हर एक इधर से दूसरा उधर से उसके हाथों को संभाले रहे। तब उसके हाथ आफताब के गुरुब होने तक मजबूती से उठे रहे। 13 और यशूँ अ ने ‘अमालीकी’ और उसके लोगों की तलवार की धार से शिक्षित दी। 14 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, “इस बात की यादगारी के लिए किताब में लिख दे और यशूँ अ को सुना दे कि मैं ‘अमालीकी’ का नाम — औ — निशान दुनिया से बिल्कुल मिटा दूँगा।” 15 और मूसा ने एक कुर्बानगाह बनाई और उसका नाम ‘यहोवा निस्सी’ रख्वा। 16 और उसने कहा खुदावन्द ने कसम खाई है; इसलिए खुदावन्द ‘अमालीकियों से नसल दर नसल जंग करता रहेगा।

18 और जो कुछ खुदावन्द ने मूसा और अपनी कौम इसाईल के लिए किया और जिस तरह से खुदावन्द ने इसाईल को मिस्र से निकाला, सब मूसा के ससु यित्रों ने जो मिदियान का काहिन था सुना। 2 और मूसा के ससु यित्रों ने मूसा की बीची सफ्फूरा को जो मायके भेज दी गई थी, 3 और उसके दोनों बेटों को साथ लिया। इनमें से एक का नाम मूसा ने यह कह कर जैरसोम

रखवा था कि “मैं परदेस में मुसाफिर हूँ।” 4 और दूसरे का नाम यह कह कर इली एलियार रखवा था कि “मेरे बाप का खुदा मेरा मददगार हुआ, और उसने मुझे फिर औन की तलवार से बचाया।” 5 और मूसा का ससुर यित्रो उसके बेटों और बीवी को लेकर मूसा के पास उस बीराने में आया, जहाँ खुदा के पहाड़ के पास उसका खेमा लगा था, 6 और मूसा से कहा, कि “मैं तेरा ससुर यित्रो तेरी बीवी को और उसके साथ उसके दोनों बेटों को लेकर तेरे पास आया हूँ।” 7 तब मूसा अपने ससुर से मिलने को बाहर निकला और कोर्णिंश बजा लाकर उसको चमा, और वह एक दूसरे की खैर — ओ — ‘आफियत पछते हुए खेमे में आए। 8 और मूसा ने अपने ससुर को बताया कि खुदावन्द ने इसाईल की खातिर फिर औन के साथ क्या किया, और इन लोगों पर रास्ते में क्या — क्या मुसीबों पड़ी और खुदावन्द उनको किस किस तरह बचाता आया। 9 और यित्रो इन सब एहसानों की बजह से जो खुदावन्द ने इसाईल पर किए कि उनको मिलियों के हाथ से नजात बरखी बहत खुश हुआ। 10 और यित्रो ने कहा, “खुदावन्द मुबारक हो, जिसने तुम को मिलियों के हाथ और फिर औन के हाथ से नजात बरखी, और जिसने इस कौम को मिलियों के पंजे से छुड़ाया। 11 अब मैं जान गया कि खुदावन्द सब माल्बूदों से बड़ा है, क्यूँकि वह उन कामों में जो उन्होंने गुरुर से किए उन पर गालिब हुआ।” 12 और मूसा के ससुर यित्रो ने खुदा के लिए सोल्जिटी कुर्बानी और जबरीह चढ़ाए, और हासन और इसाईल के सब बुर्जुआ मूसा के ससुर के साथ खुदा के सामने खाना खाने आए। 13 और दूसरे दिन मूसा लोगों की ‘अदालत करने वैठा और लोग मूसा के आसपास सुबह से शाम तक खड़े रहे। 14 और जब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो वह लोगों के लिए करता था देख लिया तो उससे कहा, “यह क्या काम है जो तू लोगों के लिए करता है? तू क्यूँ आप अकेला बैठता है और सब लोग सुबह से शाम तक तेरे आस — पास खड़े रहते हैं?” 15 मूसा ने अपने ससुर से कहा, “इसकी बजह यह है कि लोग मेरे पास खुदा से मालूम करने के लिए आते हैं। 16 जब उनमें कुछ झगड़ा होता है तो वह मेरे पास आते हैं, और मैं उनके बीच इसाफ करता और खुदा के अहकाम और शरीरी अत उनको बताता हूँ।” 17 तब मूसा के ससुर ने उससे कहा, कि “तू अच्छा काम नहीं करता। 18 इससे तू क्या बल्कि यह लोग भी जो तेरे साथ हैं कहाँई घुल जाएँगे, क्यूँकि यह काम तेरे लिए बहत भारी है। 19 तू अकेला इसे नहीं कर सकता। इसलिए अब त मेरी बात सुन, मैं तुझे सलाह देता हूँ और खुदा तेरे साथ रहे।” 20 त इन लोगों के लिए खुदा के सामने जाया कर और इनके सब मूँआमिले खुदा के पास पहुँचा दिया कर। 20 और त रिवायतों और शरीरी अत की बातें इनको सिखाया कर, और जिस रास्ते इनको चलना और जो काम इनको करना हो वह इनको बताया कर। 21 और तू इन लोगों में से ऐसे लायक शख्सों को चुन ले जो खुदातरस और सच्चे और रिश्वत के दुश्मन हों, और उनको हजार — हजार और सौ — सौ और पचास — पचास और दस — दस आदमियों पर हाकिम बना दे; 22 कि वह हर वक्त लोगों का इन्साफ किया करें और ऐसा हो कि बड़े — बड़े मुक़दमें तो वह तेरे पास लाएँ और छोटी — छोटी बातों का फैसला खुद ही कर दिया करें। ये तेरा बोझ हल्का हो जाएगा और वह भी उसके उठाने में तेरे शरीक होंगे। 23 अगर तू यह काम करे और खुदा भी तुझे ऐसा ही हक्म दे, तो तू सब कुछ झेल सकेगा और यह लोग भी अपनी जगह इत्मीनान से जाएँगे।” 24 और मूसा ने अपने ससुर की बात मान कर जैसा उन्हे बताया था वैसा ही किया। 25 चुनाँचे मूसा ने सब इसाईलियों में से लायक शख्सों को चुना और उन को हजार — हजार और सौ — सौ और पचास — पचास और दस — दस आदमियों के ऊपर हाकिम मुकर्कर किया। 26 इसलिए यही हर वक्त लोगों का इन्साफ करने लगे, मुश्किल मुकदमात तो वह मूसा के पास ले आते थे पर छोटी — छोटी बातों का

फैसला खुद ही कर देते थे। 27 फिर मूसा ने अपने ससुर को सब्बत किया और वह अपने बतन को बताना हो गया।

19 और बनी — इसाईल को जिस दिन मुल्क — ए — मिस्र से निकले तीन महीने हुए उसी दिन वह सीना के बीराने में आए। 2 और जब वह रफीदीम से खबाना होकर सीना के बीरान में आए तो बीरान ही में खेमे लगा लिए, इसलिए वही पहाड़ के सामने इसाईलियों के डेरे लगे। 3 और मूसा उस पर चढ़ कर खुदा के पास गया और खुदावन्द ने उसे पहाड़ पर से पकार कर कहा, “तू याँकूब के खानान दें यूँ कह और बनी — इसाईल को यह सुना दे: 4 ‘तुम ने देखा कि मैंने मिलियों से क्या — क्या किया, और तुम को जैसे ‘उकाब के परों पर बैठा कर अपने पास ले आया। 5 इसलिए अब अगर तुम मेरी बात मानो और मेरे ‘अहद पर चलो तो सब कौमों में से तुम ही मेरी खास मिलिक्यत ठहरोगे क्यूँकि सारी जमीन मेरी है। 6 और तुम मेरे लिए काहिनों की एक मम्लुकत और एक मुकदम्स कौम होगे, इन्हीं बातों को तू बनी — इसाईल को सुना देना।” 7 तब मूसा ने आ कर और उन लोगों के बुजुर्गों को बुलाकर उनके आपने — सामने वह सब बातें जो खुदावन्द ने उसे फरमाई थी बयान की। 8 और सब लोगों ने मिल कर जबाब दिया, “जो कुछ खुदावन्द ने फरमाया है वह सब हम करेंगे।” और मूसा ने लोगों का जबाब खुदावन्द को जाकर सनाया। 9 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “देख, मैं काले बादल में इसलिए तेरे पास आता हूँ कि जब मैं तुझ से बातें करूँ तो यह लोग सुनें और हमेशा तेरा यकीन करें।” और मूसा ने लोगों की बातें खुदावन्द से बयान की। 10 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “लोगों के पास जा, और आज और कल उनको पाक कर, और वह अपने कपड़े धो ले, 11 और तीसरे दिन तैयार रहें, क्यूँकि खुदावन्द तीसरे दिन सब लोगों के देखते देखते कोह-ए-सीना पर उतरेगा। 12 और तू लोगों के लिए चारों तरफ हृद बाँध कर उनसे कह देना, खबरदार तुम न तो इस पहाड़ पर चढ़ाना और न इसके दामन को छाना; जो कोई पहाड़ को छुए जस्तर जान से मार डाला जाए। 13 मगर उसे कोई हाथ न लगाए बल्कि वह ला — कलाम संगसार किया जाए, या तीर से छेड़ा जाए चाहे वह इंसान हो चाहे हैवान, वह जीता न छोड़ा जाए; और जब नरसिंगा देर तक फूँका जाए तो वह सब पहाड़ के पास आ जाएँ।” 14 तब मूसा पहाड़ पर से उतरकर लोगों के पास गया और उसने लोगों को पाक साफ किया, और उन्होंने अपने कपड़े धो लिए। 15 और उन्हें लोगों से कहा कि “तीसरे दिन तैयार रहना और ‘औरत के नजदीक न जाना।’” 16 जब तीसरा दिन आया तो सुबह होते ही बादल गरजने और बिजली चमकने लगी, और पहाड़ पर काली घटा छा गई और करना की आवाज बहत बुलन्द हुई और सब लोग खेमों में काँप गए। 17 और मूसा लोगों को खेमा गाह से बाहर लाया कि खुदा से मिलाए, और वह पहाड़ से नीचे आ खड़े हुए। 18 और कोह-ए-सीना ऊपर से नीचे तक धूँसे से भर गया क्यूँकि खुदावन्द शेले में होकर उस पर उतरा, और धूँस और धूँसों में काँप गए। 17 और मूसा लोगों को खेमा गाह से बाहर लाया कि खुदा से मिलाए, और खुदा ने आवाज के जरिए से उसे जबाब दिया। 20 और खुदावन्द कोह-ए-सीना की चोटी पर उतरा, और खुदावन्द ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया; तब मूसा ऊपर चढ़ गया। 21 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “नीचे उतर कर लोगों को ताकीदन समझा देता ऐसा न हो कि वह देखने के लिए हादों को तोड़ कर खुदावन्द के पास आ जाएँ और उनमें से बहत से हलाक हो जाएँ। 22 और काहिनी भी जो खुदावन्द के नजदीक आया करते हैं अपने आपको पाक करें, कहीं ऐसे न हो कि खुदावन्द उन पर टूट पड़े।” 23 तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, “लोग कोह-ए-सीना पर नहीं चढ़ सकते क्यूँकि तूने तो हम को ताकीदन

कहा है, कि पहाड़ के चौगिर्द हृद बन्दी करके उसे पाक रखेंगो।” 24 खुदावन्द ने उसे कहा, नीचे उतर जा, और हास्न को अपने साथ लेकर ऊपर आ; लेकिन काहिन और अवाम हैं तोड़कर खुदावन्द के पास ऊपर न आए, ऐसा न हो कि वह उन पर टूट पड़े। 25 चुनाँच मूसा नीचे उतर कर लोगों के पास गया और यह बातें उन को बताई।

20 और खुदा ने यह सब बातें फरमाई कि 2 “खुदावन्द तेरा खुदा जो तुझे

मूल्क — ए — मिस्र से और गुलामी के घर से निकाल लाया मैं हूँ। 3 “मेरे सामने तू गैर माँबूदों को न मानना। 4 “तू अपने लिए कोई तराशी हूँ मूरत न बनाना, न किसी चीज़ की सूरत बनाना जो ऊपर आसमान में या नीचे जमीन पर या जमीन के नीचे पानी मैं है। 5 तू उनके अगे सिज्दा न करना और न उनकी इबादत करना, क्यैंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा गयर खुदा हूँ और जो मुझे से ‘एवदात रखते हैं’ उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक बाप दादा की बदकारी की सजा देता हूँ। 6 और हजारों पर जो मुझ से मुहब्बत रखते और मेरे हृक्मों को मानते हैं। रहम करता हूँ। 7 ‘तू खुदावन्द अपने खुदा का नाम बेकाइदा न लेना, क्यैंकि जो उसका नाम बेफायदा लेता है खुदावन्द उसे बेगुनाह न ठहराएगा। 8 “याद कर कि तू सबत का दिन पाक मानना। 9 छः दिन तक तू मैहनत करके अपना सारा काम — काज करना। 10 लेकिन सातवाँ दिन खुदावन्द तेरे खुदा का सबत है; उसमें न तू कोई काम करे न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा गुलाम, न तेरी लौंडी, न तेरा चौपाया, न कोई मुसाफिर जो तेरे यहाँ तेरे फटोंकों के अन्दर हो 11 क्यैंकि खुदावन्द ने छः दिन में आसमान और जमीन और समन्दर और जो कुछ उनमें है वह सब बनाया, और सातवें दिन आराम किया; इसलिए खुदावन्द ने सबत के दिन को बरकत दी और उसे पाक ठहराया। 12 “तू अपने बाप और अपनी माँ की इज्जत करना ताकि तेरी उप्र उस मूल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझे देता है दराज हो। 13 “तू खन न करना। 14 “तू ज़िना न करना। 15 “तू चोरी न करना। 16 “तू अपने पड़ोसी के खिलाफ़ झटी गवाही न देना। 17 “तू अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना; तू अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना, और न उसके गुलाम और उसकी लौंडी और उसके बैल और उसके गधे का, और न अपने पड़ोसी की किसी और चीज़ का लालच करना।” 18 और सब लोगों ने बादल गरजते और बिजली चमकते और करना की आवाज होते और पहाड़ से धुआँ उत्ते देखा, और जब लोगों ने यह देखा तो कौप उठे और टूर खड़े हो गए; 19 और मूसा से कहने लगे, “तू ही हम से बातें किया कर और औ हम सुन लिया करेंगे; लेकिन खुदा हम से बातें न करे, ऐसा न हो कि हम मर जाएँ।” 20 मूसा ने लोगों से कहा, “तुम डरो मत, क्यैंकि खुदा इसलिए आया है कि तम्हारा इम्हिमान करे और तुम को उसका खौफ हो ताकि तुम गुनाह न करो।” 21 और वह लोग टूर ही खड़े रहे और मूसा उस गहरी तारीकी के नज़दीक गया जहाँ खुदा था। 22 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, तू बनी — इमाईल से यह कहना कि ‘तुम ने खुद देखा कि मैंने आसमान पर से तुम्हरे साथ बातें की। 23 तुम मेरे साथ किसी को शरीक न करना, याँनी चौंदी या सोने के देवता अपने लिए न गढ़ लेना। 24 और तू मिट्टी की एक कुर्बानगाह मेरे लिए बनाया करना, और उस पर अपनी भेंड बकरियों और गाय — बैल की सोखतनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश करना और जहाँ — जहाँ मैं अपने नाम की यादारी कराऊँगा वहाँ मैं तैरे पास आकर तुझे बरकत दूँगा। 25 और अगर तू मेरे लिए पथर की कुर्बानगाह बनाए तो तरासे हुए पथर से न बनाना, क्यैंकि अगर तू उस पर अपने औजार लगाए तो तू उसे नापाक कर देगा। 26 और तू मेरी कुर्बानगाह पर सीढ़ियों से हरगिज़ न चढ़ाना ऐसा न हो कि तेरा नंगापन उस पर जाहिर हो।

21 “वह अहकाम जो तुझे उनको बताने हैं यह है: 2 अगर तू कोई ‘इब्रानी गुलाम खरीदे तो वह छः बरस खिदमत करे और सातवें बरस मुफ्त आजाद होकर चला जाए। 3 अगर वह अकेला आया हो तो अकेला ही चला जाए और अगर वह शादी शुदा हो तो उसकी बीवी भी उसके साथ जाए। 4 अगर उसके आका ने उसकी शादी कराया हो और उस ‘औरत के उससे बेटे और बेटियाँ हुई हों तो वह ‘औरत और उसके बच्चे उस आका के होकर रहें और वह अकेला चला जाए। 5 पर आगर वह गुलाम साक़ कह दे कि मैं अपने आका से और अपनी बीवी और बच्चों से मुहब्बत रखता हूँ, मैं आजाद होकर नहीं जाऊँगा। 6 तो उसका आका उसे खुदा के पास ले जाए, और उसे दरवाजे पर या दरवाजे की चौखट पर लाकर सुतारी से उसका कान छेदे; तब वह हमेशा उसकी खिदमत करता रहे। 7 ‘और अगर कोई शख्स अपनी बेटी को लौंडी होने के लिए बेच डाले तो वह गुलामों की तरह चली न जाए। 8 अगर उसका आका जिसने उससे निस्कत की है उससे खुश न हो, तो वह उसका फिदिया मंज़र करे पर उसे यह इब्लियार न होगा कि उसको किसी अजनबी कौम के हाथ बेचे, क्यैंकि उसने उससे दागाबाजी की। 9 और अगर वह उसकी निस्कत अपने बेटे से कर दे तो वह उससे बेटियों का सा सुलक करे। 10 आगर वह दूसरी ‘औरत कर ले तो भी वह उसके खाने, कपड़े और शादी के फर्ज़ में कासिर न हो। 11 और अगर वह उससे यह तीनों बातें न करे तो वह मुफ्त बे — स्पष्ट दिए चली जाए। 12 ‘अगर कोई किसी आदमी को ऐसा मारे कि वह मर जाए तो वह कतईं जान से मारा जाए। 13 लेकिन अगर वह शरस्व घाट लगाकर न बैठा हो बल्कि खुदा ही ने उसे उसके हवाले कर दिया हो, तो मैं ऐसे हाल में एक जगह बता दूँगा जहाँ वह भाग जाए। 14 और अगर कोई दीदा — ओ — दानिस्ता अपने पड़ोसी पर चढ़ आए ताकि उसे धोखे से मार डाले, तो तू उसे मेरी कुर्बानगाह से जड़ा कर देना ताकि वह मारा जाए। 15 ‘और जो कोई अपने बाप या अपनी माँ को मारे वह कतईं जान से मारा जाए। 16 ‘और जो कोई किसी आदमी को चुराए चाहे वह उसे बेच डाले चाहे वह उसके यहाँ मिले, वह कतईं मार डाला जाए। 17 ‘और जो अपने बाप या अपनी माँ पर लाँनत करे वह कतईं मार डाला जाए। 18 ‘और अगर दो शख्स झगड़े और एक दूसरे को पथर या मुक्का मारे और वह मरे तो नहीं पर बिस्तर पर पर पड़ा रहे, 19 तो जब वह उठ कर अपनी लाठी के सहारे बाहर चलने — फिरने लगे, तब वह जिसने मारा था बरी हो जाए और सिफ़र उसका हरजाना भर दे और उसका पूरा ‘इलाज करा दे। 20 ‘और अगर कोई अपने गुलाम या लौंडी को लाठी से ऐसा मारे कि वह उसके हाथ से मर जाए तो उसे ज़स्तर सज्जा दी जाए। 21 लेकिन अगर वह एक — दो दिन जीता रहे तो आका को सज्जा न दी जाए, इसलिए कि वह गुलाम उसका माल है। 22 ‘अगर लोग आपस में मार पीक करें और किसी हामिला को ऐसी चोट पहुँचाएँ कि उसे इसकात हो जाए, लेकिन और कोई नुकसान न हो तो उससे जितना जुर्माना उसका शौहर तजवीज करे लिया जाए और वह जिस तरह काजी फैसला करें जुर्माना भर दे। 23 लेकिन अगर नुकसान हो जाए तो तू जान के बदले जान ले, 24 और आँख के बदले जान ले, 25 जलाने के बदले जलाना, जख्म के बदले जख्म और चोट के बदले चोट। 26 ‘और अगर कोई अपने गुलाम या अपनी लौंडी की आँख पर ऐसा मारे कि वह फूट जाए, तो वह उसकी आँख के बदले उसे आजाद कर दे। 27 अगर कोई अपने गुलाम या अपनी लौंडी का दाँत मार कर तोड़ दे, तो वह उसके दाँत के बदले उसे आजाद कर दे। 28 ‘अगर बैल किसी मर्द या ‘औरत को ऐसा सींग मारे कि वह मर जाए, तो वह बैल ज़स्तर संगसार किया जाय और उसका गोश्ट खाया न जाए, लेकिन बैल का मालिक बेगुनाह ठहरे। 29 लेकिन अगर उस बैल की पहले से सींग मारने की ‘आदत थी

और उसके मालिक को बता भी दिया गया था तो भी उसने उसे बाँध कर नहीं रख दिया, और उसने किसी मद्द या 'औरत को मार दिया हो तो बैल संगसार किया जाए और उसका मालिक भी मारा जाए। 30 और अगर उससे खुबबहा माँगा जाए, तो उसे अपनी जान के फिरिया में जितना उसके लिए ठहराया जाए उतना ही देना पड़ेगा। 31 चाहे उसने किसी के बेटे को मारा हो या बेटी को, इसी हृक्षम के मुताबिक उसके साथ 'अमल किया जाए। 32 अगर बैल किसी के गुलाम या लौटी को सींग से मारे तो मालिक उस गुलाम या लौटी के मालिक को तीस मिस्काल स्थगे दे और बैल संगसार किया जाए। 33 'और अगर कोई आदमी गढ़ा खोले या खोदे और उसका मूँह न ढूँपे, और कोई बैल या गधा उसमें गिर जाए; 34 तो गढ़े का मालिक इसका नुकसान भर दे और उनके मालिक को कीमत दे और मेरे हुए जानवर को खुद ले ले। 35 'और अगर किसी का बैल दूसरे के बैल को ऐसी चोट पहुँचाए के वह मर जाए, तो वह जीते बैल को बेचे और उसका दाम आधा आधा आपस में बाँट लें और इस मेरे हुए बैल को भी ऐसे ही बाँट लें। 36 और अगर मालूम हो जाए कि उस बैल की पहले से सींग माने की 'आदत थी और उसके मालिक ने उसे बाँध कर नहीं रख दिया, तो उसे कहतँ बैल के बदले बैल देना होगा।

22 "अगर कोई आदमी बैल या भेड़ चुरा ले और उसे जबक कर दे या बेचे

डाले, तो वह एक बैल के बदले पाँच बैल और एक भेड़ के बदले चार भेड़े भरे। 2 अगर चोर सैंध मारते हुए पकड़ा जाए और उस पर ऐसी मार पड़े कि वह मर जाए तो उसके खन का कोई जुर्म नहीं। 3 अगर सूरज निकल चुके तो उसका खन जुर्म होगा; बल्कि उसे नुकसान भरना पड़ेगा और अगर उसके पास कुछ न हो तो वह चोरी के लिए बेचा जाए। 4 अगर चोरी का माल उसके पास जीता मिले चाहे वह बैल हो या गधा या भेड़ तो वह उसका दून भर दे। 5 'अगर कोई आदमी किसी खेत या ताकिस्तान को खिलावा दे और अपने जानवर को छोड़ दे कि वह दूसरे के खेत को चार लें, तो अपने खेत या ताकिस्तान की अच्छी से अच्छी पैदावार में से उसका मु'आवजा दे। 6 'अगर आग भड़के और काँटों में लग जाए और अनाज के ढेर या खड़ी फसल या खेत को जला कर भस्म कर दे, तो जिस ने आग जलाई हो वह जस्त मु'आवजा दे। 7 'अगर कोई अपने पड़ोसी की नक्तद या जिन्स रखने को दे और वह उस शब्द के घर से चोरी हो जाए, तो अगर चोर पकड़ा जाए तो दूना उसको भरना पड़ेगा। 8 लेकिन अगर चोर पकड़ा न जाए तो उस घर का मालिक खुदा के आगे लाया जाए, ताकि मालूम हो जाए कि उसने अपने पड़ोसी के माल को हाथ नहीं लगाया। 9 हर किस्म की खियानत के मु'आमिले में चाहे बैल का चाहे गधे या भेड़ या कपड़े या किसी और खोई हुई चीज का हो, जिसकी निस्बत कोई बोल उठे कि वह चीज यह है तो फरीकीन का मुकदमा खुदा के सामने लाया जाए और जिसे खुदा मुजरिम ठहराए वह अपने पड़ोसी को दूना भर दे। 10 'अगर कोई अपने पड़ोसी के पास गधा या बैल या भेड़ या कोई और जानवर अमानत रख दें और वह बगैर किसी के देखे मर जाए या चोट खाए या हँका दिया जाए, 11 तो उन दोनों के बीच खुदावन्द की कसम हो कि उसने अपने हमस्याए के माल को हाथ नहीं लगाया, और मालिक इसे सच माने और दूसरा उसका मु'आवजा न दे। 12 लेकिन अगर वह उसके पास से चोरी हो जाए तो वह उसके मालिक को मु'आवजा दे। 13 और अगर उसको किसी दरिन्दे ने फाड़ डाला हो तो वह उसको गवाही के तौर पर पेश कर दे और फाड़ हुए का नुकसान न भरे। 14 'अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी से कोई जानवर 'अधियत ले और वह जख्मी हो जाए या मर जाए, और मालिक वहाँ मौजूद न हो तो वह जस्त उसका मु'आवजा दे। 15 लेकिन अगर मालिक साथ हो तो उसका नुकसान न भरे और अगर किराया की हुई चीज हो तो उसका नुकसान उसके किराये में आ गया।

16 "अगर कोई आदमी किसी कुँवारी को जिसकी निस्बत न हुई हो, फुसला कर उससे मुबाश्त करे तो वह जस्त ही उसे महर देकर उससे शादी करे। 17 लेकिन अगर उसका बाप हणिज राजी न हो कि उस लड़की को उसे दे, तो वह कुँवारियों के महर के मुवाफिक उसे नकटी दे। 18 "तू जादूगरी को जीने न देना। 19 "जो कोई किसी जानवर से मुबाश्त करे वह करतँ जान से मारा जाए। 20 "जो कोई एक खुदावन्द को छोड़ कर किसी और मालूम के आगे कुर्बानी चढ़ाए वह बिल्कुल नाबूट कर दिया जाए। 21 "और तू मुसाफिर को न तो सताना न उस पर सितम करना, इस लिए के तुम भी मुल्क — ए — मिस में मुसाफिर थे। 22 तुम किसी बेवा या यतीम लड़के को दुख न देना। 23 अगर तू उनको किसी तरह से दुख दे और वह मुझ से फरियाद करें तो मैं जस्त उनकी फरियाद सनूँगा। 24 और मेरा कहर भड़केगा और मैं तुम को तलवार से मार डालूँगा और तुम्हारी बीवियाँ बेवा और तुम्हारे बच्चे यतीम हो जाएँगे। 25 'अगर तू मेरे लोगों में से किसी मोहताज को जो जो रौप्य पास रहता हो कुछ कर्ज दे तो उससे कर्जदार की तरह सुलूक न करना और न उससे सूद लेना। 26 अगर तू किसी वक्त अपने पड़ोसी के कपड़े गिरवी रख भी ले तो सूज के डूबने तक उसको चापस कर देना। 27 क्यूँकि सिर्फ वही उसका एक ओढ़ना है, उसके जिस्म का वही लिपास है फिर वह क्या ओढ़ कर सोएगा? फिर जब वह फरियाद करेगा तो मैं उसकी सुरुँगा क्यूँकि मैं मेहरबान हूँ। 28 "तू खुदा को न कोसान और न अपनी कैम के सरदार पर लाँनत भेजना। 29 "तू अपनी ज्यादा पैदावार और अपने कोल्ह के रस में से मुझे नज़ — ओ — नियाज देने में देर न करना और अपने बेटों में से फहलौठे को मुझे देना। 30 अपनी गायों और भेड़ों से भी एसा ही करना; सात दिन तक तो बच्चा अपनी माँ के साथ रहे, आठवें दिन तू उसे मुझ को देना। 31 "और तू मेरे लिए पाक आदमी होना, इसी बजह से दरिन्दों के फाड़ हुए जानवर का गोशत जो मैदान में पड़ा हुआ मिले मत खाना; तुम उसे कुत्तों के आगे फेंक देना।

23 तू झटी बात ना फैलाना और नारास्त गवाह होने के लिए शरीरों का साथ न देना। 2 बुराई करने के लिए किसी भी डी की पैरेवी न करना, और न किसी मुकदमे में इन्साफ का खन कराने के लिए भी डी का मूँह देखकर कुछ कहना। 3 और न मुकदमों में कंगाल की तरफदारी करना। 4 'अगर तौरे दुम्पन का बैल या गधा तुझे भटकता हुआ मिले, तो तू जस्त उसे उसके पास फेर कर ले आना। 5 अगर तू अपने दुम्पन के गधे को बोझ के नीचे दबा हुआ देखे और उसकी मदद करने को जी भी न चाहता हो तो भी जस्त उसे मदद देना। 6 "तू अपने कंगाल लोगों के मुकदमों में इन्साफ का खन न करना। 7 इटे मु'आमिले से तू रहना और बेगुहाँओं और सादिकों को कल्पन न करना क्यूँकि मैं शरीर को रास्त नहीं ठहराऊँगा। 8 तू रिश्वत न लेना क्यूँकि रिश्वत बीनाओं को अन्धा कर देती है और सादिकों की बातों को पलट देती है। 9 "परदेसी पर जुल्म न करना क्यूँकि तुम परदेसी के दिल को जानते हो, इसलिए कि तुम खुद भी मुल्क — ए — मिस में परदेसी थे। 10 "छः: बरस तक तू अपनी जीमन में बोना और उमका गल्ला जमा करना, 11 पर सातवें बरस उसे यैं छी छोड़ देना कि पड़ती रहे, ताकि तेरी कौम के गरीब उसे खाएँ और जो उनसे बचे उसे जंगल के जानवर चर लें। अपने अंगू और जैतून के बाग से भी एसा ही करना। 12 छः: दिन तक अपना काम काज करना और सातवें दिन आराम करना, ताकि तेरे बैल और गधे को आराम मिले और तेरी लौटी का बेटा और परदेसी ताजा दम हो जाएँ। 13 और तुम सब बातों में जो मैंने तुम से कही है होशियर रहना और दूसरे मालूमों का नाम तक न लेना क्यूँकि वह तेरे मूँह से सुमाँह भी न दे। 14 'तू साल में तीन बार मेरे लिए ईंद मानना। 15 ईंद — ए — फतीर को मानना, उसमें मैं हृक्षम के मुताबिक अबीब महीने के मुकर्ररा वब्रत पर सात दिन तक बेखुमी

रोटियाँ खाना क्यूँकि उसी महीने में तू मिस्र से निकला था और कोई मेरे आगे खाली हाथ न आए। 16 और जब तेरे खेत में जिसे तूने मेहनत से बोया पहला फल आए तो फस्त काटने की 'इंद मनाना', और साल के आखिर में जब त् अपनी मेहनत का फल खेत से 'जमा' करें तो 'जमा' करने की 'इंद मनाना। 17 और साल में तीनों मर्तबा तुम्हारे यहाँ के सब मर्द खुदावन्द खुदा के आगे हाजिर हुआ करें। 18 "तू खुम्मीरी रेटी के साथ मेरे जबींहे का खुन न चढ़ाना और मेरी 'इंद की चर्बी' सुबह तक बाकी न रहने देना। 19 त् अपनी जमीन के पहले फलों का पहला हिस्सा खुदावन्द अपने खुदा के घर में लाना। 20 त् हलवान को उसकी माँ के दूध में न पकाना। 20 "देख, मैं एक फरिश्ता तेरे आगे आगे भेजता हूँ कि रास्ते में तेरा निगहबान हो और तुझे उस जगह पहुँचा दे जिसे मैंने तैयार किया है। 21 तुम उसके आगे होशियार रहना और उसकी बात मानना, उसे नाराज न करना क्यूँकि वह तुम्हारी खता नहीं बछेगा इसलिए कि मेरा नाम उसमें रहता है। 22 लेकिन अगर त् सचमुच उसकी बात माने और जो मैं कहता हूँ वह सब करे, तो मैं तेरे दुश्मनों का दुश्मन और तेरे मुखालिफों का मुखालिफ हूँगा। 23 इसलिए कि मेरा फरिश्ता तेरे आगे — आगे चलेगा और तुझे अमेरियों और हितियों और फरिजियों और कनानियों और हक्कियों यद्युसियों में पहुँचा देगा और मैं उनको हत्तक कर डालूँगा। 24 त् उनके मांबूदों को सिज्डा न करना, न उनकी इबादत करना, न उनके से काम करना बल्कि त् उनको बिल्कुल उलट देना और उनके सुन्नों को टुकड़े टुकड़े कर डालना। 25 और तुम खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करना, तब वह तेरी रोटी और पानी पर बरकत देगा और मैं तेरी बीच से बीमारी को दूर कर दूँगा। 26 और तेरे मूल्क में न तो किसी के इस्कात होगा और न कोई बौंझ रहेगी और मैं तेरी उम्र पूरी करूँगा। 27 मैं अपने खौफ को तेरे आगे — आगे भेजूँगा और मैं उन सब लोगों को जिनके पास तू जाएगा शिक्स्ट दूँगा, और मैं ऐसा कसँगा कि तेरे सब दुश्मन तेरे आगे अपनी पुश्ट फेर देंगे। 28 मैं तेरे आगे जम्मूरों को भेजूँगा, जो हक्की और कनानी और हिती को तेरे सामने से भगा देंगे। 29 मैं उनको एक ही साल में तेरे आगे से दूर नहीं करूँगा ऐसा न हो के जमीन वीरान हो जाए और जंगली दरिद्रे ज्यादा होकर तुझे सताने लाएं। 30 बल्कि मैं थोड़ा थोड़ा करके उनको तेरे सामने से दूर करता रहूँगा, जब तक त् शमार में बढ़ कर मूल्क का वारिस न हो जाए। 31 मैं बहर — ए — कुलजुम से लेकर फिलिसियों के समन्दर तक और वीरान से लेकर नहर — ए — फुरात तक तेरी हृदये बायाँग। क्यूँकि मैं उस मूल्क के बाशिन्दों को तुम्हारे हाथ में कर दूँगा और त् उनको अपने आगे से निकाल देगा। 32 त् उनसे या उनके मांबूदों से कोई 'अह न बौंधना। 33 वह तेरे मूल्क में रहेन न पाएँ ऐसा न हो कि वह तुझ से मेरे खिलाफ गुनाह कराएँ, क्यूँकि अगर त् उनके मांबूदों की इबादत करे तो यह तेरे लिए जस्तर फंदा हो जाएगा।"

24 और उसने मूसा से कहा, कि "तू हास्न और नदब और अबीह और बनी

इस्माइल के सतर बुजुर्गों को लेकर खुदावन्द के पास उपर आ, और तुम दूर ही से सिज्डा करना। 2 और मूसा अकेला खुदावन्द के नजदीक आए पर वह नजदीक न आएँ और लोग उसके साथ ऊपर न चढ़ें।" 3 और मूसा ने लोगों के पास जाकर खुदावन्द की सब बातें और अहकाम उनको बता दिए और सब लोगों ने हम आवाज़ होकर जवाब दिया, "जिनीं बातें खुदावन्द ने फरमाइ हैं, हम उन सब को मानेंगे।" 4 और मूसा ने खुदावन्द की सब बातें लिख लीं और सुन्ह को सबसे उठ कर पहाड़ के नीचे एक कुर्बानगाह और बनी — इस्माइल के बारह कबीलों के हिसाब से बारह सूतन बनाए। 5 और उसने बनी इस्माइल के जवानों को भेजा, जिन्होंने सोखतनी कुर्बानियों चढ़ाई और बैठते को जबह करके सलामती के जबींहे खुदावन्द के लिए पेश किया। 6 और मूसा ने आधा खून लेकर तस्सों में रख्वा और आधा कुर्बानगाह पर छिड़क दिया। 7 फिर

उसने 'अहदनामा लिया और लोगों को पढ़ कर सुनाया। उन्होंने कहा, कि "जो कुछ खुदावन्द ने फरमाया है उस सब को हम करेंगे और ताबे' रहेंगे।" 8 तब मूसा ने उस खून को लेकर लोगों पर छिड़का और कहा, "देखो, यह उस 'अहद' का खून है जो खुदावन्द ने इन सब बातों के बारे में तुम्हारे साथ बांधा है।" 9 तब मूसा और हास्न और नदब और अबीह और बनी — इस्माइल के सतर बुजुर्ग ऊपर गए। 10 और उन्होंने इस्माइल के खुदा को देखा, और उसके पाँव के नीचे नीलम के पथर का चबूतरा सा था जो आसमान की तरह शफ़काफ था। 11 और उसने बनी इस्माइल के शरीफों पर अपना हाथ न बढ़ाया। फिर उन्होंने खुदा को देखा और स्थाया और पिया। 12 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "पहाड़ पर मेरे पास आ और वही ठहरा रह; और मैं तुझे पथर की लोहे और शरीरी अत और अहकाम जो मैंने लिखे हैं दूँगा ताकि त् उनको सिखाए।" 13 और मूसा और उसका खादिम यशूँअ उठे और मूसा खुदा के पहाड़ के ऊपर गया। 14 और बुजुर्गों से कह गया कि "जब तक हम लौट कर तुम्हारे पास न आ जाएँ तुम हमरे लिए यही ठहरे रहो, और देखो हास्न और हर तुम्हारे साथ हैं, जिस किसी का कोई मुकदमा हो वह उनके पास जाए।" 15 तब मूसा पहाड़ के ऊपर गया और पहाड़ पर घटा छा गई। 16 और खुदावन्द का जलाल कोह-ए-सीना पर आकर ठहरा और छ: दिन तक घटा उस पर छाई रही और सातवें दिन उसने घटा में से मूसा को बुलाया। 17 और बनी — इस्माइल की निगाह में पहाड़ की चोटी पर खुदावन्द के जलाल का मन्जर भस्म करने वाली आग की तरह था। 18 और मूसा घटा के बीच में होकर पहाड़ पर चढ़ गया और वह पहाड़ पर चालीस दिन और चालीस रात रहा।

25 और खुदावन्द ने मूसा को फरमाया, 2 'बनी — इस्माइल से यह कहना

कि मैं लिए नज़ लाएँ, और तुम उन्हीं से मेरी नज़ लेना जो अपने दिल की खुशी से दें। 3 और जिन चीजों की नज़ तुम को उनसे लेनी हैं वह यह हैः सोना और चाँदी और पीतल, 4 और आसमानी और अर्गावनी और सुखे रंग का कपड़ा और बारीक कतान और बकरी की पश्म, 5 और मेंढों की सुखे रंगी हुई खालें और तुख्स की खालें और कीकर की लकड़ी, 6 और चराग के लिए तेल और मस्ह करने के तेल के लिए और खुशबूदार खुशबूक के लिए मसालहे, 7 और संग-ए-सुलेमानी और अफ़ोद और सीनाबद में जड़ने के नसीन। 8 और वह मैं लिए एक मकलिस बनाएँ ताकि मैं उनके बीच सुकूनत करूँ। 9 और घर और उसके सारे सामान का जो नस्ता मैं तुझे दिखाऊँ ठीक उसी के मुताबिक तुम उसे बनाना। 10 'और वह कीकर की लकड़ी का एक सन्दूक बनाये जिस की लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई ढेढ़ हाथ हो। 11 और तू उसके अन्दर और बाहर खालीस सोना मंडना और उसके ऊपर चारों तरफ एक जरीन ताज बनाना। 12 और उसके लिए सोने के चार कडे ढालकर उसके चारों पारों में लगाना, दो कडे एक तरफ हौं और दो ही दूसरी तरफ। 13 और कीकर की लकड़ी की चोबें बना कर उन पर सोना मंडना। 14 और इन चोबों को सन्दूक के पास के कडों में डालना कि उनके सहारे सन्दूक उठ जाए। 15 चोबें सन्दूक के कडों के अन्दर लगी हैं और उससे सन्दूक में रखना। 17 "और तू कफ़करे का सरपोश खालीस सोने का बनाना जिसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई ढेढ़ हाथ हो। 18 और सोने के दो कस्बी सरपोश के दोनों सिरों पर गढ़ कर बनाना। 19 एक कस्बी को एक सिरे पर और दूसरे कस्बी को दूसरे सिरे पर लगाना, और तुम सरपोश को और दोनों सिरों के कस्बियों को एक ही टुकड़े से बनाना। 20 और वह कस्बी इस तरह ऊपर को अपने पर फैलाए हुए हों कि सरपोश को अपने परों से ढाँक लें और उनके मुँह आपने — सामने सरपोश की तरफ हों। 21 और तू उस सरपोश को उस सन्दूक के ऊपर लगाना और वह

'अहदनामा जो मैं तुझे दूँगा उसे उस सन्दूक के अन्दर रखना। 22 वहाँ मैं तुझ से मिला करूँगा और उस सरपोश के ऊपर से और कस्बियों के बीच मैं से जो 'अहदनामे के सन्दूक के ऊपर होंगे, उन सब अहकाम के बारे में जो मैं बनी — इमाईंल के लिए तुझे दूँगा तुझे से बातचीत किया करूँगा। 23 "और तू दो हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी और डेढ़ हाथ ऊँची कीकर की लकड़ी की एक मेज भी बनाना। 24 और उसको खालिस सोने से मंडना और उसके चारों तरफ एक जरीन ताज बनाना। 25 और उसके चौपांच चार उंगल चौड़ी एक कंगनी लगाना और उस कंगनी के चारों तरफ एक जरीन ताज बनाना। 26 और सोने के चार कड़े उसके लिए बना कर उन कड़ों को उन चारों कोनों में लगाना जो चारों पायों के सामने होंगे। 27 वह कड़े कंगनी के पास ही हों, ताकि चोबों के लिए जिनके सहारे मेज उठाई जाए घरों का काम दें। 28 और कीकर की लकड़ी की चोबें बना कर उनको सोने से मंडना ताकि मेज उन्हीं से उठाई जाए। 29 और तू उसके तबाक और चमचे और आफताबे और उंडेलने के बड़े — बड़े करते सब खालिस सोने के बनाना। 30 और तू उस मेज पर नन्हीं की रोटियाँ हमेशा मेरे सामने रखना। 31 "और तू खालिस सोने का एक शमा'दान बनाना। वह शमा'दान और उसका पाया और डन्डी सब घड़ कर बनाए जाएँ और उसकी प्यालियाँ और लट्टू और उसके फूल सब एक ही टुकड़े के बने हों। 32 और उसके दोनों पहलुओं से छः शाँखे बाहर को निकलती हों, तीन शाखें शमा'दान के एक पहलु से निकलें और तीन दूसरे पहलु से। 33 एक शाख में बादाम के फूल की सूरत की तीन प्यालियाँ, एक लट्टू और एक फूल हो; और दूसरी शाख में भी बादाम के फूल की सूरत की तीन प्यालियाँ, एक लट्टू और एक फूल हो, इसी तरह शमा'दान की छहों शाखों में यह सब लगा हुआ हो। 34 और खुद शमादान में बादाम के फूल की सूरत की चार प्यालियाँ अपने — अपने लट्टू और फूल समेत हों। 35 और दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों और फिर दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों और फिर दो शाखों के नीचे एक लट्टू, सब एक ही टुकड़े के हों शामा'दान की छहों बाहर को निकली हुई शाखें ऐसी ही हों। 36 यानी लट्टू और शाखें और शमा'दान सब एक ही टुकड़े के बने हों, यह सबका सब खालिस सोने के एक ही टुकड़े से गढ़ कर बनाया जाए। 37 और तू उसके लिए सात चराग बनाना, यहीं चराग जलाए जाएँ ताकि शमा'दान के सामने जैशनी हो। 38 और उसके गुलागार और गुलदान खालिस सोने के हों। 39 शमा'दान और यह सब बर्तन एक किन्तार खालिस सोने के बने हुए हों। 40 और देख, तू इनको ठीक इनके नमूने के मुताबिक जो तुझे पहाड़ पर दिखाया गया है बनाना।

26 "और तू घर के लिए दस पर्दे बनाना; यह बटे हुए बारीक कतान और असमानी किरमिजी और सुर्खंग के कपड़ों के हों और इनमें किसी माहिर उत्साद से कस्बियों की सूरत कढ़वाना। 2 हर पर्दे की लम्बाई अष्टाईंस हाथ और चौड़ाइ चार हाथ हो और सब पर्दे एक ही नाप के हों। 3 और पाँच पर्दे एक दूसरे से जोड़े जाएँ और बाकी पाँच पर्दे भी एक दूसरे से जोड़े जाएँ। 4 और तू एक बड़े पर्दे के हाशिये में बटे हुए किनारे की तरफ जो जोडा जाएगा आसमानी रंग के तुकमे बनाना और ऐसे ही दूसरे बड़े पर्दे के हाशिये में जो इसके साथ मिलाया जाएगा तुकमे बनाना। 5 पचास तुकमे एक बड़े पर्दे में बनाना और पचास ही दूसरे बड़े पर्दे के हाशिये में जो इसके साथ मिलाया जाएगा बनाना, और सब तुकमे एक दूसरे के आमने सामने हों। 6 और सोने की पचास घुन्डियाँ बना कर इन पर्दों को इहीं घुन्डियों से एक दूसरे के साथ जोड़ देना, तब वह घर एक हो जाएगा। 7 'और तू बकरी के बाल के पर्दे बनाना ताकि घर के ऊपर खेमा का काम दें, ऐसे पर्दे ग्यारह हों। 8 और हर पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाइ चार हाथ हों, वह ग्यारह हों, पर्दे एक ही नाप के हों। 9 और तू पाँच पर्दे

एक जगह और छः पर्दे एक जगह आपस में जोड़ देना, और छठे पर्दे को खेमे के सामने मोड़ कर दोहरा कर देना। 10 और तू पचास तुकमे उस पर्दे के हाशिये में, जो बाहर से मिलाया जाएगा और पचास ही तुकमे दूसरी तरफ के पर्दे के हाशिये में जो बाहर से मिलाया जाएगा बनाना। 11 और पीतल की पचास घुन्डियाँ बना कर इन घुन्डियों को तुकमों में पहना देना और खेमे को जोड़ देना ताकि वह एक हो जाए। 12 और खेमे के पर्दों का लटका हुआ हिस्सा, यानी आधा पर्दा जो बचा रहेगा वह घर की पिछली तरफ लटका रहे। 13 और खेमे के पर्दों की लम्बाई के बाकी हिस्से में से एक हाथ पर्दा इधर से और एक हाथ पर्दा उधर से घर की दोनों तरफ इधर और उधर लटका हो ताकि उसे ढाँक ले। 14 और तू इस खेमे के लिए मेंहों की सुर्खंगी हुई खालों का गिलाफ और उसके ऊपर तुब्खों की खालों का गिलाफ बनाना। 15 "और तू घर के लिए कीकर की लकड़ी के तख्ते बनाना कि खड़े किए जाएँ। 16 हर तख्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाइ डेढ़ हाथ हो। 17 और हर तख्ते में दो — दो चूर्ण हों जो एक दूसरे से मिली हुई हों, घर के सब तख्ते इसी तरह के बनाना। 18 और घर के लिए जो तख्ते तू बनाएगा उनमें से बीस तख्ते दालिखनी स्थंख के लिए हों। 19 और इन बीसों तख्तों के नीचे चाँदी के चालीस खाने बनाना यानी हर एक तख्ते के नीचे उसकी दोनों चूलों के लिए दो — दो खाने। 20 और घर की दूसरी तरफ यानी उत्तरी स्थंख के लिए बीस तख्ते हों। 21 और उके लिए भी चाँदी के चालीस ही खाने हों, यानी एक — एक तख्ते के नीचे दो — दो खाने। 22 और घर के पिछले हिस्से में घर के कोनों के लिए दो तख्ते बनाना। 23 और उसी पिछले हिस्से में घर के कोनों के लिए दो तख्ते बनाना। 24 यह नीचे से दोहरे हों और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर एक हल्के में मिलाए जाएँ, दोनों तख्ते इसी ढब के हों, यह तख्ते दोनों कोनों के लिए हो गए। 25 तब आठ तख्ते और चाँदी के सोलाह खाने होंगे, यानी एक एक तख्ते के लिए दो दो खाने। 26 "और तू कीकर की लकड़ी के बेन्डे बनाना, पाँच बेन्डे घर के एक पहलू के तख्तों के लिए, 27 और पाँच बेन्डे घर के पिछले हिस्से में छः तख्ते बनाना। 28 यह नीचे से दोहरे हों और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर एक हल्के में मिलाए जाएँ, दोनों तख्ते इसी ढब के हों, यह तख्ते दोनों कोनों के लिए हो गए। 29 और घर के पिछले हिस्से में घर के कोनों के लिए दो तख्ते बनाना। 30 और तू घर को उसी नमूने के मुताबिक बनाना जो पहाड़ पर दिखाया गया है। 31 "और तू आसमानी — अर्धावानी और सुर्खंग रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का एक पट्टा बनाना, और उसमें किसी माहिर उस्ताद से कस्बियों की सूरत कढ़वाना। 32 और उसे सोने से मंडे हुए कीकर के चार सुर्खों पर लटकाना, इनके कुड़े सोने के हों और चाँदी के चार खानों पर खड़े किए जाएँ, 33 और पर्दे को घुन्डियों के नीचे लटकाना और शहादत के सन्दूक को वही पर्दे के अन्दर ले जाना और यह पर्दा तुम्हरे लिए पाक मकाम को पाकतरीन मकाम से अलग करेगा। 34 और तू सरपोश को पाकतरीन मकाम में शहादत के सन्दूक पर रखना। 35 और मेज को पर्दे के बाहर रख कर शमा'दान को उसके सामने घर की दालिखनी स्थंख में रखना यानी मेज उत्तरी स्थंख में रखना। 36 और तू एक पर्दा खेमे के दरवाजे के लिए आसमानी अर्धावानी और सुर्खंग रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाना और उस पर बेल बटे कढ़े हुए हों। 37 और इस पर्दे के लिए कीकर की लकड़ी के पाँच सूतन बनाना और उनको सोने से मंडना और उनके कुन्डे सोने के हों, जिनके लिए तू पीतल के पाँच खाने ढाल कर बनाना।

27 "और तू कीकर की लकड़ी की कुबानगाह पाँच हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी बनाना; वह कुबानगाह चौखुन्टी और उसकी ऊँचाई तीन

हाथ हो। 2 और तू उसके लिए उसके चारों कोनों पर सींग बनाना, और वह सींग और कुर्बानगाह सब एक ही टुकड़े के हों और तू उनको पीतल से मंडना। 3 और तू उसकी राख उठाने के लिए देंगे और बेलचे और कटोरे और सीखें और अन्गुठियाँ बनाना; उसके सब बर्तन पीतल के बनाना। 4 और उसके लिए पीतल की जाती की झंजरी बनाना और उस जाती के चारों कोनों पर पीतल के चार कड़े लगाना। 5 और उस झंजरी को कुर्बानगाह की चारों तरफ के किनारे के नीचे इस तरह लगाना कि वह ऊँचाई में कुर्बानगाह की आधी दूर तक पहुँचे। 6 और तू कुर्बानगाह के लिए कीकर की लकड़ी की चोबें बनाकर उनको पीतल से मंडना। 7 और तू उन चोबों को कड़ों में पहना देना कि जब कभी कुर्बानगाह उठाई जाए, वह चोबे उसकी दोनों तरफ रहें। 8 तब्दियों से वह कुर्बानगाह बनाना और वह खोखली हो। वह उसे ऐसी ही बनाएँ जैसी तुँग पहाड़ पर दिखाई गई है। 9 “फिर तू घर के लिए सहन बनाना, उस सहन की दाखिली तरफ के लिए बारीक बटे हुए कतान के पर्दे हों जो मिला कर सू हाथ लम्बे हों; यह सब एक ही स्थू में हों। 10 और उनके लिए बीस सुतून बनें और सुतूनों के लिए पीतल के बीस ही खाने बनें और इन सुतूनों के कुन्डे और पटियाँ चाँदी की हों। 11 इसी तरह उत्तरी स्थू के लिए पर्दे सब मिला कर लम्बाई में सौ हाथ हों, उनके लिए भी बीस ही सुतून और सुतूनों के लिए बीस ही पीतल के खाने बनें और सुतूनों के कुन्डे और पटियाँ चाँदी की हों। 12 और सहन की पश्चिमी स्थू की चौड़ाई में पचास हाथ के पर्दे हों, उनके लिए दस सुतून और सुतूनों के लिए दस ही खाने बनें। 13 और पूरी स्थू में सहन हो। 14 और सहन के दरवाजे के एक पहलू के लिए पन्द्रह हाथ के पर्दे हों, जिनके लिए तीन सुतून और सुतून के लिए तीन ही खाने बनें। 15 और दूसरे पहलू के लिए भी पन्द्रह हाथ के पर्दे और तीन सुतून और तीन ही खाने बनें। 16 और सहन के दरवाजे के लिए बीस हाथ का एक पर्दा हो जो आसमानी, अर्धावानी और सुर्खंर रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ हो और उस पर बेल — बटे कड़े हों, उसके सुतून चार और सुतूनों के खाने भी चार ही हों। 17 और सहन के आस पास सब सुतून चाँदी की पटियों से जड़े हुए हों और उनके कुन्डे चाँदी के और उनके खाने पीतल के हों। 18 सहन की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई हर जगह पचास हाथ और कनात की ऊँचाई पाँच हाथ ही, पर्दे बारीक बटे हुए कतान के और सुतूनों के खाने पीतल के हों। 19 घर के तरह तरह के काम के सब सामान और वहों की मेखें और सहन की मेखे यह सब पीतल के हों। 20 ‘और तू बनी — इसाईल को हक्म देना कि वह तेरे पास कट कर निकाला हुआ जैतून का खालिस तेल रोशनी के लिए लाएँ ताकि चराग हमेशा जलता रहे। 21 खेंगा-ए-इजितमा’ अ में उस पर्दे के बाहर, जो शहादत के सन्दक के सामने होगा, हास्न और उसके बेटे शाम से सुबह तक शमा ‘दान को खुदावन्द के सामने अरास्ता रखें, यह दस्तर — उल्लामल बनी — इसाईल के लिए नसल — दर — नसल हमेशा क्राईम रहेगा।

28 “और तू बनी — इसाईल में से हास्न को जो तेरा भाई है, और उसके साथ उसके बेटों को अपने नजदीक कर लेना; ताकि हास्न और उसके बेटे नदव और अबीह और इलीएलियाजर और ऐतामर कहानत के ‘उहदे पर होकर मेरी खिदमत करें। 2 और तू अपने भाई हास्न के लिए ‘इज्जत और ज़ीनत के लिए पाक लिबास बना देना। 3 और तू उन सब रोशन ज़मीरों से जिनको मैंने हिकमत की रुह से भरा है, कह कि वह हास्न के लिए लिबास बनाएँ ताकि वह पाक होकर मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे। 4 और जो लिबास वह बनाएँ यह है: याँनी सीना बन्द और अफूद और जुब्बा और चार खाने का कुरता, और ‘अमामा, और कमरबन्द, वह तेरे भाई हास्न और उसके बेटों के लिए यह पाक लिबास बनाएँ, ताकि वह मेरे लिए काहिन

की खिदमत को अन्जाम दे। 5 और वह सोना और आसमानी और अर्धावानी और सुर्खंर रंग के कपड़े और महीन कतान लें। 6 “और वह अफोद से नें और आसमानी और अर्धावानी और सुर्खंर रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाएँ, जो किसी महिर उस्ताद के हाथ का काम हो। 7 और वह इस तरह से जोड़ा जाए कि उसके दोनों मौंदों के सिरे आपस में मिला दिए जाएँ। 8 और उसके ऊपर जो कारीगरी से बना हुआ पटका उसके बांधने के लिए होगा, उस पर अफोद की तरह काम हो और वह उसी कपड़े का हो, और सोने और आसमानी और अर्धावानी और सुर्खंर रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ हो। 9 और तू दो संग-ए-सुलेमानी लेकर उन पर इसाईल के बेटों के नाम कन्दा कराना। 10 उनमें से छः के नाम तो एक पत्थर पर और बाकियों के छः: नाम दूसरे पत्थर पर उनकी पैदाइश की तरतीब के मुवाफ़िक हों। 11 तू पत्थर के कन्दाकार को लगा कर अँगूठी की नक्शा की तरह इसाईल के बेटों के नाम उन दोनों पत्थरों पर खुदाव कर के उनको सोने के खानों में जड़वाना। 12 और दोनों पत्थरों को अफोद के दोनों मौंदों पर लगाना ताकि यह पत्थर इसाईल के बेटों की यादगारी के लिए हो, और हास्न उनके नाम खुदावन्द के सामने अपने दोनों कन्धों पर यादगारी के लिए लगाए रहे। 13 और तू सोने के खाने बनाना, 14 और खालिस सोने की दो ज़र्ज़िं डोरी की तरह गुन्धी हुई बनाना और इन गुन्धी हुई ज़र्ज़िरों को खानों में जड़ देना। 15 “और ‘अदल का सीना बन्द किसी माहिर उस्ताद से बनवाना और अफोद की तरह सोने और आसमानी और अर्धावानी और सुर्खंर रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाना। 16 वह चौखुटा और दोहरा हो, उसकी लम्बाई एक बालिशत और चौड़ाई भी एक ही बालिशत हो। 17 और चार कतारों में उस पर जवाहर जड़ना, पहली कतार में याकूत — ए — सुर्खंर और पुखराज और गोहर — ए — शब चराग हो। 18 दूसरी कतार में ज़मर्सद और नीलम और हीरा, 19 तीसरी कतार में लशम और यश्म और याकूत, 20 चौथी कतार में फीरोजा और संग — ए — सुलेमानी और ज़बरजद; यह सब सोने के खानों में जड़े जाएँ। 21 यह जवाहर इसाईल के बेटों के नामों के मुताबिक शुमार में बारह हों और अँगूठी के नक्शा की तरह यह नाम जो बारह कबीलों के नाम होंगे, उन पर खुदावाएँ जाएँ। 22 और तू सीनाबन्द के लिए सोने के दो हल्के बना कर उनको सीनाबन्द के दोनों सिरों पर लगाना; 24 और सोने की दोनों गुन्धी हुई ज़र्ज़िरों को उन दोनों हल्कों में जो सीनाबन्द के दोनों सिरों पर होंगे लगा देना। 25 और दोनों गुन्धी हुई ज़र्ज़िरों के बाकी दोनों सिरों को दोनों पत्थरों के खानों में जड़ कर उनको अफोद के दोनों मौंदों पर सामने की तरफ लगा देना। 26 और सोने के और दो हल्के बनाकर उनको सीनाबन्द के दोनों सिरों के उस हाथिये में लगाना जो अफोद के अन्दर की तरफ है। 27 फिर सोने के दो हल्के और बनाकर उनको अफोद के दोनों मौंदों के नीचे उसके कारीगरी से बुने हुए पत्थर के ऊपर रहे। 28 और वह सीनाबन्द को लेकर हस्तों के ऊपर भी रहे और अफोद से भी अलग न होने पाए। 29 और हास्न इसाईल के बेटों के नाम ‘अदल के सीनाबन्द पर अपने सीनि पर पाक मकाम में दाखिल होने के बक्त खुदावन्द के आसमने सामने लगाए रहे, ताकि हमेशा उनकी यादगारी हुआ करे। 30 और तू ‘अदल के सीनाबन्द में ऊरीम और तुमीम को रखना और जब हास्न खुदावन्द के सामने जाए तो यह उसके दिल के ऊपर हों, यैं हास्न बनी — इसाईल के फैलते को अपने दिल के ऊपर खुदावन्द के आपने सामने हमेशा लिए रहेगा। 31 “और तू अफोद का जुब्बा बिल्कुल आसमानी रंग का बनाना।

32 और उसका गिरेबान बीच में हो, और ज़िरह के गिरेबान की तरह उसके गिरेबान के चारों तरफ बुनी हुई गोट हो ताकि वह फटने न पाए। 33 और उसके दामन के घेर में चारों तरफ आसमानी, आर्तावानी और सुर्व रंग के अनार बनाना और उनके बीच चारों तरफ सोने की घटियाँ लगाना। 34 यानी जुबके के दामन के प्लेट घेर में एक सोने की घन्टी हो और उसके बाद अनार, फिर एक सोने की घन्टी हो और उसके बाद अनार। 35 इस जुबके को हास्न खिदमत के बक्तव्य पहना करे, ताकि जब — जब वह पाक मकाम के अन्दर खुदावन्द के सामने जाए या बहाँ से निकले तो उसकी आवाज सुनाई दे, कहीं ऐसा न हो कि वह मर जाए। 36 “और खुलालिस सोने का एक पतर बना कर उस पर अँगूठी के नक्श की तरह यह खुदावन्द के लिए मुकदमा। 37 और उसे नीले फीते से बौंधना, ताकि वह 'अमामे पर या'नी 'अमामे के सामने के हिस्से पर हो। 38 और यह हास्न की पेशानी पर रहे ताकि जो कुछ बनी — इसाईल अपने पाक हदियों के जरिए से पाक ठहराएँ, उन पाक ठहराई हुई चीजों की बदी हास्न उठाएँ और यह उसकी पेशानी पर हमेशा रहे, ताकि वह खुदावन्द के सामने मक्कबूल हों। 39 “और कुरता बारीक कतान का बुना हुआ और चार खाने का हो और 'अमामा भी बारीक कतान ही का बनाना, और एक कमरबन्द बनाना जिस पर बेल बूटे कठे हों। 40 “और हास्न के बेटों के लिए कुरते बनाना और 'इज़ज़त और ज़ीनत के लिए उनके लिए कमरबन्द और पांगड़ियाँ बनाना। 41 और तू यह सब अपने भाई हास्न और उसके साथ उसके बेटों को पहनाना, और उनको मसह और मख्सूस और पाक करना ताकि वह सब मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे। 42 और तू उनके लिए कतान के पाजामे बना देना ताकि उनका बदन ढंका रहे, यह कमर से रान तक के हों। 43 और हास्न और उसके बेटे जब — जब खेमा — ए — इजितमा'अ में दाखिल हों या खिदमत करने को पाक मकाम के अन्दर कुर्बानगाह के नजदीक जाएँ, उनको पहना करें कहीं ऐसा न हो कि गुनाहगार ठहरें और मर जाएँ। यह दस्तूर — उल — 'अमल उसके और उसकी नसल के लिए हमेशा रहेगा।

29 और उनको पाक करने की खातिर ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दें, तू उनके लिए यह करना कि एक बछड़ा और दो बे — ऐब मैंदे लेना, 2 और बेखमीरी रोटी और बे — खमीर के कुल्चे जिनके साथ तेल मिला हो और तेल की चुपड़ी हुई बे — खमीरी चपातियाँ लेना। यह सब गेहँूँ के मैंदे की बनाना। 3 और इनको एक टोकी में रख कर उस टोकी को बछड़े और दोनों मैंदों समेत अगे ले आना। 4 फिर हास्न और उसके बेटों को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर लाकर उनको पानी से नहलाना। 5 और वह लिबास लेकर हास्न को कुरता और अफोद का जुब्बा और अफोद और सीनाबन्द पहनाना, और अफोद का करीगरी से बुना हुआ कमरबन्द उसके बाध देना। 6 और 'अमामे को उसके सिर पर रख कर उस 'अमामे के ऊपर पाक ताज लगा देना। 7 और मसह करने का तेल लेकर उसके सिर पर डालना और उसको मसह करना। 8 फिर उसके बेटों को आगे लाकर उनको कुरते पहनाना। 9 और हास्न और उसके बेटों के कमरबन्द लपेट कर उनके पांगड़ियाँ बाँधना ताकि कहानत के 'उहदे पर हमेशा के लिए उनका हक्क रहे; और हास्न और उसके बेटों को मख्सूस करना। 10 “फिर तू उस बछड़े को खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने लाना, और हास्न और उसके बेटे अपने हाथ उस बछड़े के सिर पर रखें। 11 फिर उस बछड़े को खुदावन्द के आगे खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर जबक हक्क करना। 12 और उस बछड़े के खन में से कुछ लेकर उसे अपनी उंगली से कुर्बानगाह के सींगों पर लगाना और बाकी सारा खून कुर्बानगाह के पाये पर उंडेल देना। 13 फिर उस चर्बी को जिससे अंतिड़ियाँ ढकी रहती हैं, और जिगर पर की झिल्ली को और

दोनों गुर्दों को और उनके ऊपर की चर्बी को लेकर सब कुर्बानगाह पर जलाना। 14 लेकिन उस बछड़े के गोश और खाल और गोबर को खेमागाह के बाहर आग से जला देना इसलिए कि यह खाता की कुर्बानी है। 15 “फिर तू एक मैंदे को लेना, और हास्न और उसके बेटे अपने हाथ उस मैंदे के सिर पर रखें। 16 और तू उस मैंदे को जबक हक्क करना और उसका खून लेकर कुर्बानगाह पर चारों तरफ छिड़कना। 17 और तू मैंदे को टुकड़े — टुकड़े काटना और उसकी अंतिड़ियों और पायों को धो कर उसके टुकड़ों और उसके सिर के साथ मिला देना। 18 फिर इस पूरे मैंदे को कुर्बानगाह पर जलाना। यह खुदावन्द के लिए सोखती कुर्बानी है। यह गहरातमेज़ खुशबू यानी खुदावन्द के लिए आतिशीन कुर्बानी है। 19 “फिर दूसरे मैंदे को लेना और हास्न और उसके बेटे अपने हाथ उस मैंदे के सिर पर रखें। 20 और तू इस मैंदे को जबक हक्क करना और उसके खून में से कुछ लेकर हास्न और उसके बेटों के दहने कान की लौ पर और दहने हाथ और दहने पाँव के अंगठों पर लगाना, और खन को कुर्बानगाह पर चारों तरफ छिड़क देना। 21 और कुर्बानगाह पर के खन और मसह करने के तेल में से कुछ कुछ लेकर हास्न और उसके लिबास पर, और उसके साथ उसके बेटों और उनके लिबास पर छिड़कना, तब वह अपने लिबास समेत और उसके साथ ही उसके बेटे अपने — अपने लिबास समेत पाक होंगे। 22 और तू मैंदे की चर्बी और मोटी दुम को, और जिस चर्बी से अंतिड़ियाँ ढकी रहती हैं उसको और जिगर पर की झिल्ली को, और दोनों गुर्दों को और उनके ऊपर की चर्बी को और दहनी रान को लेना; इस लिए कि यह खास मैंदा है। 23 और बेखमीरी रोटी की टोकरी में से जो खुदावन्द के आगे रखी होगी, रोटी का एक गिरदा और एक कुल्चा जिसमें तेल मिला हुआ हो और एक चपाती लेना। 24 और इन सभों को हास्न और उसके बेटों के हाथों पर रख कर इनको खुदावन्द के सामने हिलाना, ताकि यह हिलाने का हादिया हो। 25 फिर इनको उनके हाथों से लेकर कुर्बानगाह पर सोखती कुर्बानी के ऊपर जला देना, ताकि वह खुदावन्द के आगे रहातमेज़ खुशबू हो; यह खुदावन्द के लिए आतिशीन कुर्बानी है। 26 “और तू हास्न के खास मैंदे का सीना लेकर उसको खुदावन्द के सामने हिलाना ताकि वह हिलाने का हादिया हो, यह तेरा हिस्सा ठहरेगा। 27 और तू हास्न और उसके बेटों के खास मैंदे के हिलाने के हादिये के सीनी को जो हिलाया जा चका है, और उठाए जाने के हादिये की रान को जो उठाई जा चुकी है, लेकर उन दोनों को पाक ठहराना, 28 ताकि यह सब बनी — इसाईल की तरफ से हमेशा के लिए हास्न और उसके बेटों का हक्क हो क्योंकि यह उठाए जाने का हादिया है। इसलिए यह बनी — इसाईल की तरफ से उनकी सलामती के ज़बीहों में से उठाए जाने का हादिया होगा, जो उनकी तरफ से खुदावन्द के लिए उठाया गया है। 29 “और हास्न के बाद उसके पाक लिबास उसकी औलाद के लिए होंगे ताकि उन ही में वह मसह — ओ — मख्सूस किए जाएँ। 30 उसका जो बेटा उसकी जगह काहिन हो वह जब पाक मकाम में खिदमत करने को खेमा — ए — इजितमा'अ में दाखिल हो तो उनको सात दिन तक पहने रहे। 31 “और तू खास मैंदे को लेकर उसके गोश को किसी पाक जगह में उत्तालना। 32 और हास्न और उसके बेटे मैंदे का गोश और टोकरी की रोटियाँ खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर खाएँ। 33 और जिन चीजों से उनको मख्सूस और पाक करने के लिए कफ़कारा दिया जाए वह उनको भी खाएँ, लेकिन अजनबी शख्स उनमें से कुछ न खाने पाए क्योंकि यह चीजें पाक हैं। 34 और अगर मख्सूस करने के गोश या रोटी में से कुछ सुबह तक बचा रह जाए तो उस बचे हुए को आग से जला देना, वह हरगिज़ न खाया जाए इसलिए कि वह पाक है। 35 “और तू हास्न और उसके बेटों के साथ जो कुछ मैंदे हैं वह प्रिया है वह सब 'अमल में लाना, और सात दिन तक उनको मख्सूस करते रहना। 36 और तू हर

रोज़ खता की कुर्बानी के बछड़े को कफ़फ़रों के लिए जबह करना; और तू कुर्बानगाह को उसके कफ़फ़रा देने के बक्त साफ़ करना, और उसे मसह करना ताकि वह पाक हो जाए, 37 तू सात दिन तक कुर्बानगाह के लिए कफ़फ़रा देना और उसे पाक करना तो कुर्बानगाह निहायत पाक हो जाएगी, और जो कुछ उससे छू जाएगा वह भी पाक ठहरेगा 38 “और तू हर रोज़ सदा एक — एक बरस के दो — दो बर्बं कुर्बानगाह पर चढ़ाया करना। 39 एक बर्बं सुबह को और दूसरा बर्बं जवाल और गुरुब के बीच चढ़ाना। 40 और एक बर्बं के साथ ऐसा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा देना, जिसमें हीन के चौथे हिस्से की मिक्दार में कृत कर निकाला हुआ तेल मिला हुआ हो और हीन के चौथे हिस्से की मिक्दार में तपावन के लिए मय भी देना। 41 और तू दूसरे बर्बं को जवाल और गुरुब के बीच चढ़ाना और उसके साथ सुबह की तरह नज़र की कुर्बानी और वैसा ही तपावन देना, जिससे वह खुदावन्द के लिए राहतअोज़ खुशबू और आतिशीन कुर्बानी ठहरे। 42 ऐसी ही सोखतीनी कुर्बानी तुम्हारी नसल दर नसल खेमा — ए — इजितमा’अ के दरवाजे पर खुदावन्द के आगे हमेशा हुआ करे। वहाँ मैं तुम से मिट्टौंगा और तज़ से बातें करौंगा। 43 और वही मैं बनी इस्माइल से मुलाकात करौंगा और वह मकाम मैरे जलाल से पाक होगा। 44 और मैं खेमा — ए — इजितमा’अ को और कुर्बानगाह को पाक करौंगा, और मैं हास्न और उसके बेटों को पाक करौंगा ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत की अन्जाम दें। 45 और मैं बनी — इस्माइल के बीच सुकूनत करौंगा और उनका खुदा हाँगा। 46 तब वह जान लेगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा हाँ जो उनको मुल्क — ए — मिस्र से इसलिए निकाल कर लाया कि मैं उनके बीच सुकूनत करौंगा। मैं ही खुदावन्द उनका खुदा हाँ।

30 और तू खुशबू जलाने के लिए कीकर की लकड़ी की एक कुर्बानगाह बनाना। 2 उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ हो, वह चौखुन्टी रहे और उसकी ऊँचाई दो हाथ हो और उसके सींग उसी टुकड़े से बनाए जाएँ। 3 और तू उसकी ऊपर की सतह और चारों पहलूओं को जो उसके चारों ओर हैं, और उसके सींगों को खालिस सोने से मढ़ाना और उसके लिए चारों ओर एक ज़रीन ताज बनाना। 4 और तू उस ताज के निचे उसके दोनों पहलूओं में सोने के दो कड़े उसकी दोनों तरफ बनाना। वह उसके उठाने की चोबों के लिए खानों का काम देंगे। 5 और चोबें कीकर की लकड़ी की बना कर उनको सोने से मढ़ाना। 6 और तू उसको उस पर्दे के आगे रखना जो शहादत के सन्दूक के सामने है; वह सरपेश के सामने रहे जो शहादत के सन्दूक के ऊपर है, जहाँ मैं तुझ से मिला करौंगा। 7 “इसी पर हास्न खुशबूदार खुशबू जलाया करे, हर सबह चरागों को ठीक करते बक्त खुशबू जलाएँ। 8 और जवाल और गुरुब के बीच भी जब हास्न चरागों को रोशन करे तब खुशबू जलाएँ, यह खुशबू खुदावन्द के सामने तुम्हारी नसल — दर — नसल हमेशा जलाया जाए। 9 और तुम उस पर और तरह की खुशबू न जलाना, न उस पर सोखतीनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी चढ़ाना और कोई तपावन भी उस पर न तपाना। 10 और हास्न साल में एक बार उसके सींगों पर कफ़फ़रा दे। तुम्हारी नसल — दर — नसल साल में एक बार इस खता की कुर्बानी के खून से जो कफ़फ़रों के लिए हो, उसके लिए कफ़फ़रा दिया जाए। यह खुदावन्द के लिए सबसे ज्यादा पाक है।” 11 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 12 “जब तू बनी — इस्माइल का शुमार करे तो जितनों का शुमार हुआ हो वह फी — मर्द शुमार के बक्त अपनी जान का फ़िदिया खुदावन्द के लिए दें, ताकि जब तू उनका शुमार कर रहा हो उस बक्त कोई बबा उनमें फैलने न पाए। 13 हर एक जो निकल — निकल कर शुमार किए हुओं में मिलता जाए, वह मकादिस की मिस्काल के हिसाब से नीम मिस्काल दे। मिस्काल बीस जीरहों की होती है। यह नीम मिस्काल खुदावन्द

के लिए नज़र है। 14 जितने बीस बरस के या इससे ज्यादा उम्र के निकल निकल कर शुमार किए हुओं में मिलते जाएँ, उनमें से हर एक खुदावन्द की नज़र दे। 15 जब तुम्हारी जानों के कफ़फ़रों के लिए खुदावन्द की नज़र दी जाए, तो दौलतमन्द नीम मिस्काल से ज्यादा न दे और न गरीब उससे कम दे। 16 और तू बनी — इस्माइल से कफ़फ़रों की नक्दी लेकर उसे खेमा — ए — इजितमा’अ के काम में लगाना। ताकि वह बनी — इस्माइल की तरफ से तुम्हारी जानों के कफ़फ़रों के लिए खुदावन्द के सामने यादागार हो।” 17 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 18 “तू धोने के लिए पीतल का एक हौज और पीतल ही की उसकी कुर्सी बनाना, और उसे खेमा — ए — इजितमा’अ और कुर्बानगाह के बीच में रख कर उसमें पानी भर देना। 19 और हास्न और उसके बेटे अपने हाथ पाँव उससे धोया करें। 20 खेमा — ए — इजितमा’अ में दाखिल होते बक्त पानी से धो लिया करें ताकि हलाक न हों, या जब वह कुर्बानगाह के नज़दीक खिदमत के लिए याँनी खुदावन्द के लिए सोखतीनी कुर्बानी पेश करने को आएँ, 21 तो अपने — अपने हाथ पाँव धो लें ताकि मर न जाएँ। यह उसके और उसकी औलात के लिए नसल — दर — नसल हमेशा की रिवायत हो।” 22 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 23 कि तू मकादिस की मिस्काल के हिसाब से खास — खास खुशबूदार मसाल्हे लेना; याँनी अपने अपने निकला हुआ मर्द पाँच सौ मिस्काल, और उसका आधा याँनी ढाई सौ मिस्काल दारचीनी, और खुशबूदार अगर ढाई सौ मिस्काल, 24 और तज पाँच सौ मिस्काल, और जैतन का तेल एक हीन; 25 और तू उससे मसह करने का पाक तेल बनाना, याँनी उनकी गन्धी की हिक्मत के मुताबिक मिला कर एक खुशबूदार रौशन तैयार करना। यही मसह करने का पाक तेल होगा। 26 इसी से तू खेमा — ए — इजितमा’अ को, और शहादत के सन्दूक को, 27 और मेज़ को उसके बर्तन के साथ, और शमादान को उसके बर्तन के साथ, और खुशबू जलाने की कुर्बानगाह को 28 और सोखतीनी कुर्बानी पेश करने के मज़बह को उसके सब बर्तन के साथ, और हौज को और उसकी कुर्सी को मसह करना; 29 और तू उनको पाक करना ताकि वह निहायत पाक हो जाएँ, जो कुछ उनसे छू जाएगा वह पाक ठहरेगा। 30 “और तू हास्न और उसके बेटों को मसह करना और उनको पाक करना ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे। 31 और तू बनी — इस्माइल से कह देना, ‘यह तेल मेरे लिए तुम्हारी नसल दर नसल मसह करने का पाक तेल होगा। 32 यह किसी आदीनी के जिस्म पर न डाला जाएँ, और न उस कोई और रौशन इसकी तरकीब से बनाना; इस लिए के यह पाक है और तुम्हारे नज़दीक पाक ठहरे। 33 जो कोई इसकी तह कुछ बनाए या इसमें, से कुछ किसी अजनबी पर लगाए वह अपनी कौम में से काट डाला जाए।” 34 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “तू खुशबूदार मसाल्हे मर्द और मस्तकी और लौन और खुशबूदार मसाल्हे के साथ खालिस लबान बजन में बगाबर — बगाबर लेना, 35 और नमक मिलाकर उनसे गन्धी की हिक्मत के मुताबिक खुशबूदार रौशन की तरह साफ़ और पाक खुशबू बनाना। 36 और इसमें से कुछ खूब बारीक पीस कर खेमा — ए — इजितमा’अ में शहादत के सन्दूक के सामने जहाँ मैं तुझ से मिला करौंगा रखना। यह तुम्हारे लिए निहायत पाक ठरे। 37 और जो खुशबू तू बनाए उसकी तरकीब के मुताबिक तुम अपने लिए कुछ न बनाना। वह खुशबू तौरे नज़दीक खुदावन्द के लिए पाक हो। 38 जो कोई सूधने के लिए भी उसकी तरह कुछ बनाए वह अपनी कौम में से काट डाला जाए।”

31 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 “देख मैंने बजलीएल — बिन — ऊरी, बिन हर को यहदाह के कबीले में से नाम लेकर बुलाया है। 3 और मैंने उसको हिक्मत और समझ और इल्म और हर तरह की कारिगरी में अल्लाह के स्वर से मांगू किया है। 4 ताकि हुनरमन्दी के कामों को इंजाद करे,

और सोने और चाँदी और पीतल की चीजें बनाए। 5 और पत्थर को जड़ने के लिए काटे और लकड़ी को तराशे, जिससे सब तरह की कारीगरी का काम हो। 6 और देख, मैंने अहलियाब को जो अखीसमक का बेटा और दान के कबीले में से है उसका साथी मुकर्रर किया है, और मैंने सब रौशन जमीरों के दिल में ऐसी समझ रख्खी है कि जिन — जिन चीजों का मैंने तुझ को हक्म दिया है उन सभों को वह बना सकें। 7 यानी खेम — ए — इजिटामा'अ और शहादत का सन्तुक्त और सरपेश जो उसके ऊपर रहेगा, और खेमें का सब सामान, 8 और मेज़ और उसके बर्बन, और खालिस सोने का शमा'दान और उसके सब बर्तन, और खुशबूज जलाने की कुर्बानगाह, 9 और सब बर्तन, और हौज़ और उसकी कुर्सी, 10 और बेल — बेटे कहे हुए जाएं और हास्न काहिन के पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास, ताकि काहिन की खिदमत को अन्जाम दें। 11 और मसह करने का तेल, और मक्रदिस के लिए खुशबूजार मसाल्हे का खुशबूज; इन सभों को वह जैसा मैंने तझे हक्म दिया है वैसा ही बनाएँ।" 12 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 13 कि तू बनी — इसाईल से यह भी कह देना, 'तम मेरे सबतों को जस्तर मानना, इस लिए कि यह मेरे और तुम्हारे बीच तुम्हारी नसल दर नसल एक निशान रहेगा, ताकि तुम जानो कि मैं खुदावन्द तुम्हारा पाक करने वाला हूँ। 14 "फिर तुम सबत को मानना इस लिए कि वह तुम्हारे लिए पाक है, जो कोई उसकी बे हरमती करे वह जस्तर मार डाला जाए। जो उसमें कुछ काम करे वह अपनी कौम में से काट डाला जाए। 15 छ: दिन काम काज किया जाए लेकिन सबताँ दिन आराम का सबत है जो खुदावन्द के लिए पाक है, जो कोई सबत के दिन काम करे वह जस्तर मार डाला जाए। 16 तब बनी — इसाईल सबत को मानें और नसल दर नसल उसे हमेशा का 'अहद' जानकर उसका लिहाज रखें। 17 मेरे और बनी — इसाईल के बीच यह हमेशा के लिए एक निशान रहेगा, इस लिए कि छ: दिन में खुदावन्द ने आसमान और जमीन को पैदा किया और सातवें दिन आराम करके तज़ा दम हुआ।" 18 और जब खुदावन्द को है-ए-सीना पर मूसा से बातें कर चुका तो उसने उसे शहादत की दो तखियाँ दी, वह तखियाँ पत्थर की और खुदा के हाथ की लिख्खी हुई थी।

32 और जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में देर लगाई तो वह हास्न के पास जमा' होकर उससे कहने लगे, कि "उठ, हमारे लिए देवता बना दे जो हमारे आगे — आगे चले, क्यूँकि हम नहीं जानते कि इस मर्द मूसा को, जो हम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया क्या हो गया?" 2 हास्न ने उनसे कहा, "तुम्हारी बीवियों और लड़कों और लड़कियों के कानों में जो सोने की बालियाँ हैं उनको उतार कर मेरे पास ले आओ।" 3 चुनाँचे सब लोग उनके कानों से सोने की बालियाँ उतार — उतार कर उनको हास्न के पास ले आए। 4 और उसने उनको उनके हाथों से लेकर एक डाला हुआ बछड़ा बनाया, जिसकी सूरत छेनी से ठीक की। तब वह कहने लगे, "ऐ इसाईल, यहीं तेरा वह देवता है जो तुझ को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया।" 5 यह देख कर हास्न ने उसके आगे एक कुर्बानगाह बनाई और उसने 'ऐतान कर दिया कि "कल खुदावन्द के लिए 'ईद होगी।" 6 और दूसरे दिन सबह सर्वे उठ कर उन्होंने कुर्बानियाँ पेश की और सलामती की कुर्बानियाँ पेश अदा कीं फिर उन लोगों ने बैठ कर खाया — पिया और उठकर खेल — कूद में लग गए। 7 तब खुदावन्द ने मूसा को कहा, नीचे जा, क्यूँकि तेरे लोग जिनको तु मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया बिगड़ गए हैं। 8 वह उस राह से जिसका मैंने उनको हक्म दिया था बहुत जल्द फिर गए हैं; उन्होंने अपने लिए डाला हुआ बछड़ा बनाया और उसे पूजा और उसके लिए कुर्बानी चढ़ाकर यह भी कहा, कि "ऐ इसाईल, यह तेरा वह देवता है जो तुझ को मुल्क — ए

— मिस्र से निकाल कर लाया।" 9 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि "मैं इस कौम को देखता हूँ कि यह बारी कौम है। 10 इसलिए तू मुझे अब छोड़ दे कि मेरा गजब उन पर भड़के और मैं उनको भसम कर दूँ, और मैं तुझे एक बड़ी कौम बनाऊँगा।" 11 तब मूसा ने खुदावन्द अपने खुदा के आगे मिन्नत करके कहा, ऐ खुदावन्द, क्यूँ तेरा गजब अपने लोगों पर भड़कता है जिनको तु कृव्वत — ए — 'अजीम और ताकतवर हाथों से मुक्त — ए — मिस्र से निकाल कर लाया है? 12 मिस्री लोग यह क्यूँ कहने पाएँ, कि 'वह उनको बुराई के लिए निकाल ले गया, ताकि उनको पहाड़ों में मार डाले और उनको इस जमीन पर से फना कर दे?' इसलिए तू अपने कहर — आओ — गजब से बाज रह और अपने लोगों से इस बुराई करने के खयाल को छोड़ दे। 13 तू अपने बन्दों, अब्राहाम और इस्हाक और इसाईल, को याद कर जिनसे तूने अपनी ही कसम खा कर यह कहा था, कि मैं तुम्हारी नसल को आसमान के तारों की तरह बढ़ाऊँगा; और यह सारा मुल्क जिसका मैंने जिक्र किया है तुम्हारी नसल को बख़ूँगा कि वह सदा उसके मालिक रहें।" 14 तब खुदावन्द ने उस बुराई के खयाल को छोड़ दिया जो उसने कहा था कि अपने लोगों से केरागा। 15 और मूसा शहादत की दोनों तखियाँ हाथ में लिए हुए उटा फिरा और पहाड़ से नीचे उतरा; और वह तखियाँ इधर से और उधर से दोनों तरफ से लिखी हुई थीं। 16 और वह तखियाँ खुदा ही की बनाई हुई थीं, और जो लिखा हुआ था वह भी खुदा ही का लिखा और उन पर खुदा हुआ था। 17 और जब यश़'अ ने लोगों की ललकार की आवाज सुनी तो मूसा से कहा, कि "लश्करगाह में लड़ाई का शोर हो रहा है।" 18 मूसा ने कहा, यह आवाज न तो फतहमन्दों का नारा है, न मगलबूंदों की फरियाद; बल्कि मुझे तो गाने वालों की आवाज सुनाई देती है।" 19 और लश्करगाह के नजदीक आकर उसने वह बछड़ा और उनका नाचना देखा। तब मूसा का गजब भड़का, और उसने उन तखियाँ को अपने हाथों में से पटक दिया और उनकी पहाड़ के नीचे तोड़ डाला। 20 और उसने उस बछड़े को जिसे उन्होंने बनाया था लिया, और उसको आग में जलाया और उसे बारीकी पीस कर पानी पर छिड़का और उसी में से बनी — इसाईल को पिलवाया। 21 और मूसा ने हास्न से कहा, कि "इन लोगों ने तेरे साथ क्या किया था जो तूने इनको इने बड़े गुनाह में फँसा दिया?" 22 हास्न ने कहा, कि "मैं आपलिक का गजब न भड़के; तू इन लोगों को जानता है कि गुनाह पर तुले रहते हैं," 23 चुनाँचे इन्हीं ने मुझ से कहा, कि 'हमारे लिए देवता बना दे जो हमारे आगे — आगे चले, क्यूँकि हम नहीं जानते कि इस आदमी मूसा को जो हम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया क्या हो गया?' 24 तब मैंने इन्से कहा, कि "जिसके यहाँ सोना हो वह उसे उतार लाए। तब इन्होंने उसे मुझ को दिया और मैंने उसे आग में डाला, तो यह बछड़ा निकल पड़ा।" 25 जब मूसा ने देखा कि लोग बेकाबू हो गए, क्यूँकि हास्न ने उनको बेलगाम छोड़कर उनको उनके दुश्मनों के बीच जलील कर दिया, 26 तो मूसा ने लश्करगाह के दरवाजे पर खड़े होकर कहा, जो — जो खुदावन्द की तरफ है वह मेरे पास आ जाए।" तब सभी बनी लावी उसके पास जमा' हो गए। 27 और उसने उनसे कहा, कि "खुदावन्द इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है, कि तुम अपनी — अपनी रान से तलबार लटका कर फाटक — फाटक धूम — धूम कर सारी लश्करगाह में अपने अपने भाइयों और अपने अपने साथियों और अपने अपने पड़ोसियों को कल्प करते फिरो।" 28 और बनी लावी ने मूसा के कहने के मुवाफिक 'अमल किया; चुनाँचे उस दिन लोगों में से करीबन तीन हजार गर्द मरे गए। 29 और मूसा ने कहा, कि "आज खुदावन्द के लिए अपने आपको मख्सुस करो, बल्कि हर शब्द अपने ही बेटे और अपने ही भाई के खिलाफ हो ताकि वह तुम को आज ही बरकत दे।" 30 और दूसरे दिन मूसा ने लोगों से कहा, कि "तुमने

बड़ा गुनाह किया; और अब मैं खुदावन्द के पास ऊपर जाता हूँ शायद मैं तुम्हारे गुनाह का कफ़कारा दे सकूँ।” 31 और मूसा खुदावन्द के पास लौट कर गया और कहने लगा, “हाय, इन लोगों ने बड़ा गुनाह किया कि अपने लिए सोने का देवता बनाया। 32 और अब अगर तू इनका गुनाह मु’अफ़ कर दे तो ख़ेर बरना मेरा नाम उस किताब में से जो तुमें लिखी है मिटा दो।” 33 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “जिसने मेरा गुनाह किया है मैं उसी के नाम को अपनी किताब में से मिटाऊँगा। 34 अब तू बरना हो और लोगों को उस जगह ले जा जो मैंने तुझे बताई है। देख, मेरा फरिश्ता तेरे आगे — आगे चलेगा। लेकिन मैं अपने मुतालबे के दिन उनको उनके गुनाह की सज्जा दूँगा।” 35 और खुदावन्द ने उन लोगों में बबा भेजी, क्यूँकि जो बछड़ा हास्तने बनाया वह उन्हीं का बनवाया हुआ था।

33 और खुदावन्द ने मूसा से कहा,

जिनको तू मुल्क — ए — मिस से निकाल कर लाया, यहाँ से उस मुल्क की तरफ रवाना हो जिसके बारे में अब्राहाम और इस्हाक और याकूब से मैंने कस्म खाकर कहा था कि इसे मैं तेरी नसल को दूँगा। 2 और मैं तेरे आगे एक फरिश्ते को भेजूँगा; और मैं कनानियों और अमोरियों और हितियों और फरिज्जियों और हब्बियों और यबसियों को निकाल दूँगा। 3 उस मुल्क में दूध और शहद बहता है; और चूंकि तू बागी कौम है इस लिए मैं तेरी बीच में होकर न चलूँगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुझ को राह में फना कर डालूँ।” 4 लोग इस दहशतानक खबर को सुन कर गमगीन हुए और किसी ने अपने जेवर न पहने। 5 क्यूँकि खुदावन्द ने मूसा से कह दिया था, कि “बनी — इस्माईल से कहना, कि ‘तुम बागी लोग हो, अगर मैं एक लाम्हा भी तेरे बीच में होकर चलूँ तो तुझ को फना कर दूँगा। फिर तू अपने जेवर उतार डाल ताकि मुझे मालूम हो कि तेरे साथ क्या करना चाहिए।” 6 चुनाँचे बनी — इस्माईल होरिब पहाड़ से लेकर आगे आगे अपने जेवरों को उतारे रहे। 7 और मूसा खेमे को लेकर उसे लश्करगाह से बाहर बल्कि लश्करगाह से दूर लगा लिया करता था, और उसका नाम खेमा — ए — इजितमा’ अ रखबा। और जो कोई खुदावन्द का तालिब होता वह लश्करगाह के बाहर उसी खेमे की तरफ चला जाता था। 8 और जब मूसा बाहर खेमे की तरफ जाता तो सब लोग उठकर अपने — अपने खेमे के दरवाजे पर खड़े हो जाते और मूसा के पीछे देखते रहते थे, जब तक वह खेमे के अन्दर दाखिल न हो जाता। 9 और जब मूसा खेमे के अन्दर चला जाता तो बादल का सुनन उठकर खेमे के दरवाजे पर ठहरा रहता, और खुदावन्द मूसा से बातें करने लगता। 10 और सब लोग बादल के सुनन को खेमे के दरवाजे पर ठहरा हुआ देखते थे, और सब लोग उठ — उठकर अपने — अपने खेमे के दरवाजे पर से उसे सिज्दा करते थे। 11 और जैसे कोई शरक्ष अपने दोस्त से बात करता है वैसे ही खुदावन्द आपने सामने होकर मूसा से बातें करता था। और मूसा लश्करगाह को लौट आता था, लेकिन उसका खालिद यशू’अ जो नून का बेटा और जबान आदमी था खेमे से बाहर नहीं निकलता था। 12 और मूसा ने खुदावन्द से कहा, देख, तू मुझ से कहता है, कि “इन लोगों को ले चल, लेकिन मुझे यह नहीं बताया कि तू किसको मेरे पास भेजेगा। हालाँकि तू यह भी कहा है, कि मैं तुझ को नाम से जानता हूँ और तुझ पर मेरे करम की नज़र है।” 13 तब अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है तो मुझ को अपनी राह बता, जिससे मैं तुझे पहचान लूँ ताकि मुझ पर तेरे करम की नज़र रहे, और यह ख़याल रख कि यह कौम तेरी ही उम्मत है।” 14 तब उसने कहा, “मैं साथ चलूँगा और तुझे आराम दूँगा।” 15 मूसा ने कहा, अगर तू साथ न चले तो हम को यहाँ से आगे न ले जा। 16 क्यूँकि यह क्यूँकर मालूम होगा कि मुझ पर और तेरे लोगों पर तेरे करम की नज़र है? क्या इसी तरह से नहीं कि तू हमारे साथ — साथ चले,

ताकि मैं और तेरे लोग इस ज़मीन की सब कौमों से निराले ठहरें? 17 खुदावन्द ने मूसा से कहा, “मैं यह काम भी जिसका तुमें ज़िक्र किया है, कहस्ता क्यूँकि तुझ पर मेरे करम की नज़र है और मैं तुझ को नाम से पहचानता हूँ।” 18 तब वह बोल उठा, कि “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, मुझे अपना जलाल दिखा दे।” 19 उसने कहा, “मैं अपनी सारी नेकी तेरे सामने जाहिर कहस्ता और तेरे ही सामने खुदावन्द के नाम का ‘ऐलान कहस्ता’, और मैं जिस पर मेहरबान होना चाहूँ मेहरबान हूँगा, और जिस पर रहम करना चाहूँ रहम कहस्ता।” 20 और यह भी कहा, “तू मेरा चेहरा नहीं देख सकता, क्यूँकि इंसान मुझे देख कर जिन्दा नहीं रहेगा।” 21 फिर खुदावन्द ने कहा, “देख, मेरे करीब ही एक जगह है, इसलिए तू उस चट्टान पर खड़ा हो। 22 और जब तक मेरा जलाल गुज़रता रहेगा मैं तुझे उस चट्टान के शिगाफ में रखूँगा, और जब तक मैं निकल न जाऊँ तुझे अपने हाथ से ढाँके रहूँगा। 23 इसके बाद मैं अपना हाथ उठा लूँगा, और तू मेरा पीछा देखोगा लेकिन मेरा चेहरा दिखाई नहीं देगा।”

34 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा

पहली तालियों पर, जिनको तुमें तोड़ डाला मरकूम थी। 2 और सबह तक तैयार हो जाना, और सबेरे ही कोह-ए-सीना पर आकर वहाँ पहाड़ की चोटी पर मेरे सामने हाजिर होना। 3 लेकिन तेरे साथ कोई और आदमी न आए, और न पहाड़ पर कहीं कोई दूसरा शराब दिखाई दे। भेड़ बकरीयाँ और गाय — बैल भी पहाड़ के सामने चर्चे न पाएँ। 4 और मूसा ने पहली तालियों की तरह दो तालियाँ अपने लिए तराश लेना; और मैं उन तालियों पर बही बातें लिख दूँगा जो पहली तालियों पर, जिनको तुमें तोड़ डाला मरकूम थी। 2 और सबह तक तैयार हो जाना, और सबेरे ही कोह-ए-सीना पर आकर वहाँ पहाड़ की चोटी पर मेरे सामने हाजिर होना। 3 लेकिन तेरे साथ कोई और आदमी न आए, और न पहाड़ पर कहीं कोई दूसरा शराब दिखाई दे। भेड़ बकरीयाँ और गाय — बैल भी पहाड़ के सामने चर्चे न पाएँ। 4 और मूसा ने पहली तालियों की तरह पथर की दो तालियाँ तराशी, और सबह सबेरे उठ कर पथर की दोनों तालियाँ हाथ में लिए हुए खुदावन्द के हृकम के मुताबिक कोह-ए-सीना पर चढ़ गया। 5 तब खुदावन्द बादल में हो कर उतरा और उसके साथ वहाँ खड़े हो कर खुदावन्द के नाम का ‘ऐलान किया। 6 और खुदावन्द उसके आगे से यह पुकारता हुआ गुज़रा “खुदावन्द, खुदावन्द खुदा — ए — रहीम और मेहरबान, कहर करने में धीमा और शफ़कत और बफ़ा में ग़ानी। 7 हज़ारों पर फ़ज़ल करने वाला, गुनाह और तकसीर और खाता का बख्ताने वाला; लेकिन वह मुजरिम को हरपिज़ बरी नहीं करेगा, बल्कि बाप — दादा के गुनाह की सज़ा उनके बेटों और पोतों को तीसरी और चौथी नसल तक देता है।” 8 तब मूसा ने जल्दी से सिर झुका कर सिज्दा किया, 9 और कहा, ऐ खुदावन्द, “अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र है, तो ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि हमारे बीच में होकर चल, अगर तेरे यह कौम बागी है, और तू हमारे गुनाह और खाता को मु’अफ़ कर और हम को अपनी मीरास कर ले।” 10 उसने कहा, देख, मैं ‘अहद बाँधता हूँ, कि तेरे सब लोगों के सामने ऐसी करामात करेंगा जो दुनिया भर में और किसी कौम में कभी की नहीं गई, और वह सब लोग जिनके बीच तू रहता है, खुदावन्द के काम को देखेंगे क्यूँकि जो मैं तुम लोगों से करने को हूँ वह हैबैठनाक काम होगा। 11 आज के दिन जो हृकम मैं तुझे देता हूँ, तू उसे याद रखना। देख, मैं अमोरियों और कनानियों और हितियों और फ़रिज्जियों और हव्वियों और यबसियों को तेरे आगे से निकलता हूँ। 12 इसलिए खुदावन्द रहना कि जिस मुल्क को तू जाता है उसके बाशिनों से कोई ‘अहद न बाँधना, ऐसा न हो कि वह तेरे लिए फ़न्दा ठहरें। 13 बल्कि तुम उनकी कुर्बानगाहों को ढा देना, और उनके सुनानों के टुकड़े — टुकड़े कर देना, और उनकी यसीरियों को काट डालना। 14 क्यूँकि तुझ को किसी दूसरे मालूम की परातिश नहीं करनी होगी, इसलिए कि खुदावन्द जिसका नाम गय्यूँ है वह खुदा — ए — गय्यर है भी। 15 कहीं ऐसा न हो कि तू उस मुल्क के बाशिनों से कोई ‘अहद बाँध ले और जब वह अपने मालूमों की पैरवी में ज़िनाकार ठहरें और अपने मालूमों के लिए कुर्बानी करें, और कोई तुझ को दावत दे और तू उसकी

कुर्बानी में से कुछ खा ले; 16 और तू उनकी बेटियाँ अपने बेटों से ब्याहे और उनकी बेटियाँ अपने मांबूदों की पैरवी में जिनाकार ठहरें, और तेरे बेटों को भी अपने मांबूदों की पैरवी में जिनाकार बना दें। 17 “तू अपने लिए डाले हुए देवता न बना लेना। 18 “तू बेरभमीरी रोटी की ईद माना करना। मेरे हुक्म के मुताबिक सात दिन तक अवीब के मर्फीने में बक्त — ए — मुअय्यना पर बेरभमीरी रोटियाँ खाना; क्यौंकि माह — ए — अबीब में तू मिसे निकला था। 19 सब पहलौटे मेरे हैं: और तेरे चौपायां में जो नर पहलौटे हों, क्या बछड़े, क्या बर्बे सब मेरे होंगे। 20 लेकिन गधे के पहले बच्चे का फिदिया बर्बा देकर होंगा, और अमार तू फिदिया देना न चाहे तो उसकी गर्दन तोड़ डालना; लेकिन अपने सब पहलौटे बेटों का फिदिया ज़स्तर देना। और कोई मेरे सामने खाली हाथ दिखाई न दे। 21 “छः दिन काम काज करना लेकिन सातवें दिन आराम करना, हल जोतने और फसल काटने के मौसम में भी आराम करना। 22 और तू गेहँ के पहले फल के काटने के बक्त हफ्तों की ईद, और सात के आखिर में फसल जमा। करने की ईद माना करना। 23 तेरे सब मर्द साल में तीन बार खुदावन्द खुदा के आगे जो इसाईल का खुदा है, हाजिर हों। 24 क्यौंकि मैं कौमों को तेरे आगे से निकाल कर तेरी सहदों को बढ़ा दूँगा, और जब साल में तीन बार तू खुदावन्द अपने खुदा के आगे हाजिर होगा तो काईं शर्क़ु तेरी ज़मीन का लालच न करेगा। 25 “तू मेरी कुर्बानी का खुन खुमीरी रोटी के साथ न पेश करना, और “ईद — ए — फसह की कुर्बानी में से कुछ सुख हतक बाकी न रहने देना। 26 अपनी ज़मीन की पहली पैदावार का पहला फल खुदावन्द अपने खुदा के घर में लाना। हलवान को उसकी माँ के दूध में न पकाना।” 27 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि “तू यह बातें लिख; क्यौंकि इन्हीं बातों के मतलब के मुताबिक मैं तुझ से और इसाईल से “अहद बांधता हूँ।” 28 तब वह चालीस दिन और चालीस रात वहीं खुदावन्द के पास रहा और न रोटी खाइ और न पानी पिया, और उसने उन तालियों पर उस ‘अहद’ की बातों को यानी दस अहकाम को लिखा। 29 और जब मूसा शहादत की दोनों तालियाँ अपने हाथ में लिए हुए कोह-ए-सीना से उतरा आता था, तो पहाड़ से नीचे उतरते बक्त उसे खबर न थी कि खुदावन्द के साथ बातें करने की बजह से उसका चेहरा चमक रहा है। 30 और जब हास्तन और बनी इसाईल ने मूसा पर नजर की और उसके चेहरे को चमकते देखा तो उसके नजदीक आने से डो। 31 तब मूसा ने उनको बुलाया; और हास्तन और ज़मा। अत के सब सरदार उसके पास लौट आए और मूसा उन से बातें करने लगा। 32 और बाद में सब बनी इसाईल नजदीक आए और उसने वह सब अहकाम जो खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर बातें करते बक्त उसे दिए थे उनको बताए। 33 और जब मूसा उनसे बातें कर चुका तो उसने अपने मुँह पर नकाब डाल लिया। 34 और जब मूसा खुदावन्द से बातें करने के लिए उसके सामने जाता तो बाहर निकलने के बक्त तक नकाब को उतारे रहता था, और जो हुक्म उसे मिलता था, वह उसे बाहर आकर बनी — इसाईल को बता देता था। 35 और बनी — इसाईल मूसा के चेहरे को देखते थे कि उसके चेहरे की जिल्द चमक रही है, और जब तक मूसा खुदावन्द से बातें करने न जाता तब तक अपने मुँह पर नकाब डाले रहता।

35 और मूसा ने बनी — इसाईल की सारी ज़मा। अत को ज़मा। करके कहा, जिन बातों पर 'अमल करने का हुक्म खुदावन्द ने तुम को दिया है वह यह है। 2 छः दिन काम लिए रोज़ — ए — मुकद्दस यानी खुदावन्द के आराम का सबत हो; जो कोई उसमें कुछ काम करे वह मार डाला जाए। 3 तुम सबत के दिन अपने धरों में कहीं भी आग न जलाना।” 4 और मूसा ने बनी — इसाईल की सारी ज़मा। अत से कहा, जिस बात का हुक्म खुदावन्द ने दिया है वह यह है, कि 5 तुम अपने पास से खुदावन्द के लिए हादिया लाया करो। जिस

किसी के दिल की खुशी हो वह खुदावन्द का हादिया लाये सोना और चाँदी और पीतल, 6 और आसमानी रंग और अर्मावानी रंग और सुखे रंग के कपड़े, और महीन कतान, और बकरियों की पश्म, 7 और मेंटों की सुर्खं रंगी हुई खालें और तुख्स की खालें और कीकर की लकड़ी, 8 और जलाने का तेल, और मसह करने के तेल के लिए और खुशबूदार खुशबू के लिए मसात्त्वे, 9 और अफोद और सीनाबन्द के लिए सुलेमानी पत्थर और और जड़ाक पत्थर। 10 “और तुम्हारे बीच जो रौशन ज़मीर हैं, वह आकर वह चीजें बनाएँ जिनका हक्म खुदावन्द ने दिया है। 11 यानी घर और उसका खेमा और गिलाफ और उसकी घुड़ियाँ और तब्बें और बैंडे और उसके सुतून, और खाने, 12 सन्दूक और उसकी चोबे, सरपोश और बीच का पर्दा, 13 मेज और उसकी चोबे और उसके सब बर्बन, और नज़र की रोटियाँ, 14 और रोशनी के लिए शमा। दान और उसके बर्बन और चारा और जलाने का तेल; 15 और खुशबू जलाने की कुर्बान गाह और उसकी चोबे और मसह करने का तेल, और खुशबूदार खुशबू; और घर के दरवाजे के लिए दरवाजे का पर्दा, 16 और सोखनी कुर्बानी का मजबह, और उसके लिए पीतल की झंजरी और उसकी चोबे और उसके सब बर्बन, और हौज और उसकी कुर्सी; 17 और सहन के पर्दे सुतूनों के साथ और उनके खाने, और सहन के दरवाजे का पर्दा, 18 और घर की मेंटे, और सहन की मेंटे, और उन दोनों की रसिसियाँ, 19 और मकदिस की खिदमत के लिए बेल बटे कहे हुए लिबास, और हास्तन काहिन के लिए पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास, ताकि वह काहिन की खिदमत को अन्जाम दें।” 20 तब बनी — इसाईल की सारी ज़मा। अत मूसा के पास से सख्त हुई। 21 और जिस जिस का जी चाहा और जिस — जिस के दिल में राबत। हुई, वह खेमा-ए-इजितमा। अ के काम और वहाँ की इजात और पाक लिबास के लिए खुदावन्द का हादिया लाया। 22 और क्या मर्द, क्या “औरत, जितनों का दिल चाहा वह सब ज़ुगान बालियाँ, अँगूठियाँ और बाजूबन्द, जो सब सोने के ज़ेर थे लाने लगे। इस तरीके से लोगों ने खुदावन्द को सोने का हादिया दिया। 23 और जिस — जिस के पास आसमानी रंग और अर्मावानी रंग और सुखे रंग के कपड़े, और महीन कतान और बकरियों की पश्म और मेंटों की सुर्खं रंगी हुई खालें और तुख्स की खालें थी, वह उनको ले आए। 24 जिसने चाँदी या पीतल का हादिया देना चाहा वह वैसा ही हादिया खुदावन्द के लिए लाया, और जिस किसी के पास कीकर की लकड़ी थी वह उसी को ले आया। 25 और जितनी ‘औरतें होशियार थीं उन्होंने अपने हाथों से कात — कात कर आसमानी और अर्मावानी और सुखे रंग के और महीन कतान के तार लाकर दिए। 26 और जितनी ‘औरतों के दिल हिक्मत की तरफ मायल थे उन्होंने बकरियों की पश्म काती। 27 और जो सरदार थे वह अफोद और सीना बन्द के लिए सुलेमानी पत्थर और जड़ाक पत्थर, 28 और रोशनी और मसह करने के तेल, और खुशबूदार खुशबू के लिए मसात्त्वे और तेल लाए। 29 यूँ बनी — इसाईल अपनी ही खुशी से खुदावन्द के लिए हादिये लाए, यानी जिस — जिस मर्द या ‘औरत का जी चाहा कि इन कामों के लिए जिनके बनने का हक्म खुदावन्द ने मूसा के ज़रिए दिया था, कुछ दे वह उन्होंने दिया 30 और मूसा ने बनी — इसाईल से कहा, देखो, खुदावन्द ने बजलीए बिन ऊरी बिन हर को जो यहदाह के कबीले में से है नाम लेकर बुलाया है। 31 और उसने उसे हिक्मत और समझ और अक्ल और हर तरह की कारीगरी के लिए स्व-उल्लास से मांभूर किया है। 32 और कारीगरी में और सोना, चाँदी और पीतल के काम में, 33 और जड़ाक पत्थर और लकड़ी के तराशने में गरज हर एक नादिर काम के बनाने में माहिर किया है। 34 और उसने उसे और अखीसमक के बेटे अल्हियाब को भी जो दान के कबीले का है, हनूर सिखाने की काविलियत बरब्ती है। 35 और उनके दिलों में ऐसी हिक्मत भर दी है

जिससे वह हर तरह की कारीगरी में माहिर हों, और कन्दाकार का और माहिर उस्ताद का और ज़रदोज़ का जो आसमानी, अर्गावानी और सुर्खं रंग के कपड़ों और महीन कतान पर गुलकारी करता है, और ज़ूलाहे का और हर तरह के दस्तकार का काम कर सके और 'अजीब और नादिर चीजें ईंजाद करें।

36 फिर बज़लीएल और अहलियाब और सब रोशन ज़मीर आदमी काम करें, जिनको खुदावन्द ने हिकमत और समझ से मालामाल किया है ताकि वह मकादिस की इबादत के सब काम को खुदावन्द के हक्म के मुताबिक़ अन्जाम दें। 2 तब मूसा ने बज़लीएल और अहलियाब और सब रोशन ज़मीर आदमियों को बुलाया, जिनके दिल में खुदावन्द ने हिकमत भर दी थी, यानी जिनके दिल में तहरीक हुई कि जाकर काम करें। 3 और जो — जो हहिये बनी — इसाईल लाए थे कि उसने मकादिस की इबादत की चीजें बनाई जाएँ, वह सब उन्होंने मूसा से ले लिए और लोग फिर भी अपनी खुशी से हर सुहृद उसके पास हहिये लाते रहे। 4 तब वह सब 'अक्लन्मन्द कारीगर जो मकादिस के सब काम बना रहे थे, अपने — अपने काम को छोड़कर मूसा के पास आए, 5 और वह मूसा से कहने लगे, "कि लोग इस काम के सरअन्जाम के लिए, जिसके बनाने का हक्म खुदावन्द ने दिया है, ज़स्तर से बहुत ज्यादा ले आए हैं।" 6 तब मूसा ने जो हक्म दिया उसका 'ऐलान उन्होंने तमाम लश्करगाह में करा दिया: "कि कोई मर्द या 'औरत अब से मकादिस के लिए हहिया देने की ग़र्ज़ से कुछ और काम न बनाएँ।" यूँ वह लोग और लाने से रोक दिए गए। 7 क्यूँकि जो सामान उनके पास पहुँच चुका था वह सारे काम को तैयार करने के लिए न सिर्फ़ काफ़ी बल्कि ज्यादा था। 8 और काम करनेवालों में जिनने रोशन ज़मीर थे, उन्होंने मकादिस के लिए बारीक बटे हुए कतान के और आसमानी और अर्गावानी और सुर्खं रंग के कपड़ों के दस पर्दे बनाए, जिन पर माहिर उस्ताद के हाथ के कड़े हुए कस्बी थे। 9 हर पर्दे की लम्बाई अशैँस हाथ और चौड़ाई चार हाथ थी और वह सब पर्दे एक ही नाप के थे। 10 और उसने पाँच पर्दे एक दूसरे के साथ जोड़ दिए। 11 और उसने एक बड़े पर्दे के हाशिये में उसके मिलाने के स्ख पर आसमानी रंग के तुकमे बनाए। ऐसे ही तुकमे उसने दूसरे बड़े पर्दे की उस तरफ के हाशिये में बनाए जिसपर मिलाने का स्ख था। 12 पचास तुकमे उसने एक पर्दे में और पचास ही दूसरे पर्दे के हाशिये में उसके मिलाने के स्ख पर बनाए, यह तुकमे आपस में एक दूसरे के सामने थे। 13 और उसने सोने की पचास धुन्डियों बनाई और उन्हीं धुन्डियों से पर्दों को आपस में ऐसा जोड़ दिया कि घर मिलकर एक हो गया। 14 और बकरी के बालों से ग्यारह पर्दे घर के ऊपर के खेमे के लिए बनाए। 15 हर पर्दे की लम्बाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ थी, और वह ग्यारह पर्दे एक ही नाप के थे। 16 और उसने पाँच पर्दे तो एक साथ जोड़े और छः एक साथ। 17 और पचास तुकमे उन जुड़े हुए पर्दों में से किनारे के पर्दे के हाशिये में बनाए और पचास ही तुकमे उन दूसरे जुड़े हुए पर्दों में से किनारे के पर्दे के हाशिये में बनाए। 18 और उसने पीतल की पचास धुन्डियों भी बनाई ताकि उनसे उस खेमे को ऐसा जोड़ दे कि वह एक हो जाए। 19 और खेमे के लिए एक गिलाफ़ मेंढों की सुर्खं रंगी हुई खालों का और उसके लिए गिलाफ़ तुख़स की खालों का बनाया। 20 और उसने घर के लिए कीकर की लकड़ी के तख्ते बनाए कि खड़े किए जाएँ। 21 हर तख्ते की लम्बाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी। 22 और उसने एक एक तख्ते के लिए दो — दो जुड़ी हुई चलें बनाई, घर के सब तख्तों की चूले ऐसी ही बनाई। 23 और घर के लिए जो तख्ते बने थे उनमें से बीस तख्ते दाखिखनी स्ख में लगाए। 24 और उसने उन बीसों तख्तों के नीचे चाँदी के चालीस खाने बनाए, यानी हर तख्ते की दोनों चूलों के लिए दो — दो खाने। 25 और घर की दूसरी तरफ यानी उत्तरी स्ख के

लिए बीस तख्ते बनाए। 26 और उनके लिए भी चाँदी के चालीस ही खाने बनाए, यानी एक — एक तख्ते के नीचे दो — दो खाने। 27 और घर के पिछले हिस्से यानी पन्थिमी स्ख के लिए छः तख्ते बनाए। 28 और दो तख्ते घर के दोनों कोनों के दोनों तख्ते इसी ढब के बनाए। 29 यह नीचे से दोहरे थे और इसी तरह ऊपर के सिरे तक आकर एक ही हल्के में मिला दिए गए थे, उसने दोनों कोनों के दोनों तख्ते के नीचे दो तख्ते के लिए दो — दो खाने। 31 और उसने कीकर की लकड़ी के बेड़े बनाये पाँच बेड़े घर के एक तरफ के तख्तों के लिए, 32 और पाँच बेड़े घर के दूसरी तरफ के तख्तों के लिए, और पाँच बेड़े घर के पिछले हिस्से में पन्थिम की तरफ के तख्तों के लिए बनाए। 33 और उसने बर्ती बेन्डे को ऐसा बनाया कि तख्तों के बीच में से होकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचें। 34 और तख्तों को सोने से मंडा और सोने के कड़े बनाए, ताकि बेन्डों के लिए खानों का काम दें और बेन्डों को सोने से मंडा। 35 और उसने बीच का पर्दा आसमानी, अर्गावानी और सुर्खं रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाया जिस पर माहिर उस्ताद के हाथ के कस्बी कढ़े हुए थे। 36 और उसके लिए कीकर के चार सुतून बनाए और उनको सोने से मंडा, उनके कुन्डे सोने के थे और उसने उनके लिए चाँदी के चार खाने ढाल कर बनाए। 37 और उसने खेमे के दरवाजे के लिए एक पर्दा आसमानी, अर्गावानी और सुर्खं रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बनाया, वह बेल — बटेदार था। 38 और उसके लिए पाँच सुतून कुन्डों समेत बनाए और उनके सिरों और पट्टियों को सोने से मंडा, उनके लिए जो पाँच खाने थे वह पीतल के बने हुए थे।

37 और बज़लीएल ने वह सन्दूक कीकर की लकड़ी का बनाया, उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी। 2 और उसने उसके अन्दर और बाहर खालिस सोना मंडा और उसके लिए चारों तरफ एक सोने का ताज बनाया। 3 और उसने उसके चारों पायों पर लगाने को सोने के चार कड़े ढाले, दो कड़े तो उसकी एक तरफ और दो दूसरी तरफ थे। 4 और उसने कीकर की लकड़ी की चोबें बनाकर उनको सोने से मंडा। 5 और उन चोबों को सन्दूक के दोनों तरफ के कड़ों में ढाला ताकि सन्दूक उठाया जाए। 6 और उसने सरपोश खालिस सोने का बनाया, उसकी लम्बाई ढाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ थी। 7 और उसने सरपोश के दोनों सिरों पर सोने के दो कस्बी गढ़ कर बनाए। 8 एक कस्बी को उसने एक सिरे पर रखा और दूसरे को दूसरे सिरे पर, दोनों सिरों के कस्बी और सरपोश एक ही टुकड़े से बने थे। 9 और कस्बियों के बाज़ ऊपर से फैले हुए थे और उनके बाज़ओं से सरपोश ढका हआ था, और उन कस्बियों के चोरे सरपोश की तरफ और एक दूसरे के सामने थे। 10 और उसने वह मेज़ जीकर की लकड़ी की बनाई, उसकी लम्बाई ढाई दो हाथ और चौड़ाई एक हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी। 11 और उसने उसको खालिस सोने से मंडा और उसके लिए चारों तरफ सोने का एक ताज बनाया। 12 और उसने एक कंगानी चार उंगल चौड़ी उपर के चारों तरफ रखी और उस कंगानी पर चारों तरफ सोने का एक ताज बनाया। 13 और उसने उसके लिए सोने के चार कड़े ढाल कर उनको उसके चारों पायों के चारों कोनों में लगाया। 14 यह कड़े कंगानी के पास थे, ताकि मेज़ उठाने की चोबों के खानों का काम दें। 15 और उसने मेज़ जीकर की लकड़ी की बनाई और उनको लम्बाई दो हाथ और चौड़ाई एक हाथ और ऊँचाई डेढ़ हाथ थी। 16 और उसने मेज़ पर के सब बर्तन, यानी उसके तबाक और चमचे और बड़े — बड़े प्याले और उंडेलने के लोटे खालिस सोने के बनाए। 17 और उसने शमादान खालिस सोने का बनाया। वह शमादान और उसका पाया और उसकी डन्डी गढ़े हुए थे। यह सब और उसकी प्यालियाँ और लट्टू

और फूल एक ही टुकड़े के बने हुए थे। 18 और छः शाखें उसकी दोनों तरफ से निकलती हुई थीं। शमा'दान की तीन शाखें तो उसकी एक तरफ से और तीन शाख उसकी दूसरी तरफ से। 19 और एक शाख में बादाम के फूल की शक्ति की तीन प्यालियाँ और एक लदू और एक फूल था, और दूसरी शाख में भी बादाम के फूल की शक्ति की तीन प्यालियाँ और एक लदू और एक फूल था। गर्ज उस शमा'दान की छहों शाखों में सब कुछ ऐसा ही था। 20 और खुद शमा'दान में बादाम के फूल की शक्ति की चार प्यालियाँ अपने— अपने लदू और फूल समेत बनी थी। 21 और शमा'दान की छहों निकलती हुई शाखों में से हर दो— दो शाखें और एक— एक लदू एक ही टुकड़े के थे। 22 उनके लदू और उनकी शाखें सब एक ही टुकड़े के थे। सारा शमा'दान खालिस सोने का और एक ही टुकड़े का गढ़ा हुआ था। 23 और उसने उसके लिए सात चराग बनाए और उसके गुलगार और गुलदान खालिस सोने के थे। 24 और उसने उसको और उसके सब बर्तन को एक किन्तार खालिस सोने से बनाया 25 और उसने खुशबू जलाने की कुर्बानगाह कीकर की लकड़ी की बनाई, उसकी लम्बाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ थी। वह चौकोर थी और उसकी ऊँचाई दो हाथ थी और वह और उसके सींग एक ही टुकड़े के थे। 26 और उसने उसके ऊपर की सतह और चारों तरफ की अंतराफ और सींगों को खालिस सोने से मढ़ा और उसके लिए सोने का एक ताज चारों तरफ बनाया। 27 और उसने उसकी दोनों तरफ के दोनों पहलुओं में ताज के नीचे सोने के दो कड़े बनाए जो उसके उठाने की चोबों के लिए खानों का काम दें। 28 और चोबै कीकर की लकड़ी की बनाई और उनको सोने से मढ़ा। 29 और उसने मसह करने का पाक तेल और खुशबूदार मसाल्हे का खालिस खुशबू गन्धी की हिक्मत के मताबिक तैयार किया।

38 और उसने सोख्तनी कुर्बानी का मज़बह कीकर की लकड़ी का बनाया;

उसकी लम्बाई पॉच हाथ और चौड़ाई पॉच हाथ थी, वह चौकोर था और उसकी ऊँचाई तीन हाथ थी। 2 और उसने उसके चारों कोनों पर सींग बनाए सींग और वह मजबह दोनों एक ही टुकडे के थे, और उसने उसको पीतल से मंडा। 3 और उसने मजबह के सब बर्तन, यानी देंगे और बेलचे और कटोरे और सींहे और अग्निधियाँ बनायी उसके सब बर्तन पीतल के थे। 4 और उसने मजबह के लिए उसकी चारों तरफ किनारे के नीचे पीतल की जाली की झंजरी इस तरह लगाई कि वह उसकी आधी दूर तक पहुँचती थी। 5 और उसने पीतल की झंजरी के चारों कोनों में लगाने के लिए चार कडे ढाले ताकि चोबों के लिए खानों का काम दें। 6 और चोबे कीकर की लकड़ी की बनाकर उनको पीतल से मंडा। 7 और उसने वह चोबे मजबह की दोनों तरफ के कड़ों में उसके उठाने के लिए डाल दी। वह खोखला तख्तों का बना हआ था। 8 और जो खिदमत गुजार 'औरतें खेमा — ए — इजितमा' अ के दरवाजे पर खिदमत करती थी, उनके आईनों के पीतल से उसने पीतल का हौज और पीतल ही की उसकी कर्ती बनाई। 9 फिर उसने सहन बनाया, और दखिली स्ख के लिए उस सहन के पर्दे बारीक बटे हुए कतान के थे और सब मिला कर सौ हाथ लम्बे थे। 10 उनके लिए बीस सुतन और उनके लिए पीतल के बीस खाने थे, और सुतन के कुण्डे और पट्टियाँ चाँदी की थी। 11 और उत्तरी स्ख में भी वह सौ हाथ लम्बे और उनके लिए बीस सुतन और उनके लिए बीस ही पीतल के खाने थे, और सुतनों के कुण्डे और पट्टियाँ चाँदी की थी। 12 और पश्चिमी स्ख के लिए सब पर्दे मिला कर पचास हाथ के थे, उनके लिए दस सुतन और दस ही उनके खाने थे और सुतनों के कुण्डे और पट्टियाँ चाँदी की थी। 13 और पूर्णी स्ख में भी वह पचास ही हाथ के थे। 14 उसके दरवाजे की एक तरफ पन्द्रह हाथ के पर्दे और उनके लिए तीन सुतन और तीन खाने थे। 15 और दसमी तरफ भी वैसा ही था

उत्तर सहन के दरवाजे के द्वारा और उत्तर पंद्रह — पन्द्रह हाथ के पर्दे थे। उनके लिए तीन — तीन सुतन और तीन ही तीन खाने थे। 16 सहन के चारों तरफ के सब पर्दे बारीक बढ़े हुए कतान के बुने हुए थे। 17 और सुतनों के खाने पीतल के और उनके कुंडे और पाटियाँ चाँदी की थी। उनके सिरे चाँदी से मढ़े हुए और सहन के कुल सुतन चाँदी की पाटियों से जड़े हुए थे। 18 और सहन के दरवाजे के पर्दे पर बेल बढ़े का काम था, और वह आसमानी और अर्गावानी और सुर्खं रंग के कपड़े और बारीक बढ़े हुए कतान का बुना हुआ था; उसकी लम्बाई बीस हाथ और ऊँचाई सहन के पर्दे की चौड़ाई के मुताबिक पाँच हाथ थी। 19 उनके लिए चार सुतन और चार ही उनके लिए पीतल के खाने थे, उनके कुन्डे चाँदी के थे और उनके सिरों पर चाँदी मढ़ी हुई थी और उनकी पाटियाँ भी चाँदी की थीं। 20 और घर के और सहन के चारों तरफ की सब मेंें पीतल की थी 21 और घर यानी मस्कन — ए — शहादत के जो सामान लावियों की खिदमत के लिए बने और जिनको मसा के हक्म के मुताबिक हास्तन कहिन के बेटे एतामर ने गिना, उनका हिसाब यह है। 22 बजलीएल बिन — ऊरी बिन — हर ने जो यहदाह के कबीले का था, सब कुछ जो खुदावन्द ने मसा को फरमाया था बनाया। 23 और उसके साथ दान के कबीले का अहलियाब बिन अखीरमक था जो खोदने में माहिर कारीगर था और आसमानी और अर्गावानी और सुर्खं रंग के कपड़ों और बारीक कतान पर बेल — बृते काढता था 24 सब सोना जो मकदिस की चीज़ों के काम में लगा, यानी हहिदेय का सोना उन्नीस किन्तार और मकदिस की मिस्काल के हिसाब से एक हजार सात सौ पिछत्तर मिस्काल था। 25 और जमात में से गिने हुए लोगों के हहिदेय की चाँदी एक सौ किन्तार और मकदिस की मिस्काल के हिसाब से एक हजार सात सौ पिछत्तर मिस्काल थी। 26 मकदिस की मिस्काल के हिसाब से हर अदामी जो निकल कर शुमार किए हुओं में मिल गया एक बिका, यानी नीम मिस्काल बीस बरस और उससे ज्यादा उम्र लोगों से लिया गया था यह छः लाख तीन हजार साढ़े पाँच सौ मर्द थे। 27 इस सौ किन्तार चाँदी से मकदिस के और बीच के पर्दे के खाने ढाले गए, सौ किन्तार से सौ ही खाने बने यानी एक — एक किन्तार। एक — एक खाने में लगा 28 और एक हजार सात सौ पिछत्तर मिस्काल चाँदी से सतनों के कुन्डे बने और उनके सिरे मढ़े गए और उनके लिए पाटियाँ तैयार हुईं। 29 और हहिदेय का पीतल सतर किन्तार और दो हजार चार सौ मिस्काल था। 30 इससे उसने खेमा — ए — इजितामा अ के दरवाजे के खाने और पीतल का मजबूत और उसके लिए पीतल की झंजरी और मजबूत के सब बर्तन, 31 और सहन के चारों तरफ के खाने और सहन के दरवाजे के खाने और घर की मेंें और सहन के चारों तरफ की मेंें बनाई।

39 और उन्होंने मकदिस में खिदमत करने के लिए आसमानी और अर्गवानी

और सुर्ख बेल बटे कढे हुए लिबास और हास्तन के लिए पाक लिबास, जैसा खुदवन्द ने मूसा को हुक्म दिया था बनाए। 2 और उसने सोने, और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारिक बटे हुए कतान का अफोद बनाया। 3 और उन्होंने सोना पीट पीट कर पतले — पतले पतल और पतरों को काट — काट कर तार बनाए, ताकि आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारिक बटे हुए कतान पर माहिर उस्ताद की तरह उन्होंने जरदोजी करें। 4 और अफोद को जोड़ने के लिए उन्होंने दो मोंडे बनाए और उनके दोनों सिरों को मिलाकर बाँध दिया। 5 और उसके कसने के लिए करीगरी से बुना हुआ कमरबन्द जो उसके ऊपर था, वह भी उसी टुकडे और बनावट का था, यानी सोने और आसमानी और अर्गवानी और सुर्ख रंग के कपड़ों और बारिक बटे हुए कतान का बना हुआ था; जैसा खुदवन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 6 और उन्होंने सुलेमानी पत्थर काट कर साफ किए जो सोने

के खानों में जड़े गए, और उन पर अँगूठी के नक्शा की तरह बनी इसाईल के नाम खुदे थे। 7 और उसने उनको अफोद के मोंदों पर लगाया ताकि वह बनी — इसाईल की यादगारी के पथर हों, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म किया था। 8 और उसने अफोद की बनावट का सीनाबन्द तैयार किया जो माहिर उस्ताद के हाथ का काम था, यानी वह सोने और आसमानी और अर्धावानी और सुर्खंर रंग के कपड़ों और बारीक बटे हुए कतान का बना हुआ था। 9 वह चौकोर था, उन्होंने उस सीनाबन्द को दोहरा बनाया और दोहरा होने पर उसकी लम्बाई एक बालिश और चौड़ाई एक बालिश थी। 10 इस पर चार कतारों में उन्होंने जवाहर जड़े। याकूत — ए — सुर्खंर, और पुरबारज, और जमर्स्ट की कतार तो पहली कतार थी। 11 और दूसरी कतार में लश्म, और यश्म, और याकूतः 12 चौथी कतार में फ़रीजा, और संग — ए — सुलेमानी, और जबरजदः, यह सब अलग — अलग सोने के खानों में जड़े हुए थे। 14 और यह पथर इसाईल के बेटों के नामों के शुपार के मुताबिक बारह थे और अँगूठी के नक्शा की तरह बारह कबीलों में से एक — एक का नाम अलग — अलग एक एक पथर पर खुदा था। 15 और उन्होंने सीना बन्द पर डोरी की तरह गुन्धी हुई खालिस सोने की ज़न्नरी बनाई। 16 और उन्होंने सोने के दो खाने और सोने के दो कड़े बनाए और दोनों कड़ों को सीनाबन्द के दोनों सिरों पर थे 18 और दोनों गुन्धी हुई ज़न्नरी के बाकी दोनों सिरों को दोनों खानों में जड़कर उनको अफोद के दोनों मोंदों पर सामने के स्ख लगाया। 19 और उन्होंने सोने के दो कड़े और बना कर उनको सीना बन्द के दोनों सिरों के उस हाशिये में लगाया जिस का स्ख अन्दर अफोद की तरफ था। 20 और उन्होंने सोने के दो कड़े और बना कर उनको अफोद के दोनों मोंदों के सामने के हिस्से में अन्दर के स्ख जहाँ अफोद जुड़ा था लगाया ताकि वह अफोद के कारीगरी से बुने हुए पटके के ऊपर रहे। 21 और उन्होंने सीना बन्द को लेकर ऊपर के कड़े को अफोद के कड़ों के साथ एक नीले फ़ीते से इस तरह बाँधा कि वह अफोद के कारीगरी से बने हुए पटके के ऊपर रहे और सीना बन्द ढीला होकर अफोद से अलग न होने पाए जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म दिया था। 22 और उसने अफोद का जुब्बा बुन कर बिल्कुल आसमानी रंग का बनाया। 23 और उसका गिरेबान जिरह के गिरेबान की तरह बीच में था और उसके चारों तरफ गोट लगी हुई थी ताकि वह फट न जाए। 24 और उन्होंने उसके दामन के घेरे में आसमानी और अर्धावानी और सुर्खंर रंग के बटे हुए तार से अनार बनाये। 25 और खालिस सोने की घंटियाँ बना कर उनको जुब्बे के दामन के घेरे में चारों तरफ अनारों के बीच लगाया। 26 तब जुब्बे के दामन के सारे घेरे में खिदमत करने के लिए एक — एक घन्टी थी और फिर एक — एक अनार जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म दिया था। 27 और उन्होंने बारीक कतान के बुने हुए कुरते हास्तन और उसके बेटों के लिए बनाये। 28 और बारीक कतान का 'अमामा, और बारीक कतान की खूबसूर पागड़ीयाँ, और बारीक बटे हुए कतान के पजामे, 29 और बारीक बटे हुए कतान, और आसमानी अर्धावानी और सुर्खंर रंग के कपड़ों का बेल बूटेदार कमरबन्द भी बनाया; जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म किया था। 30 और उन्होंने पाक ताज का पत्तर खालिस सोने का बनाकर उस पर अँगूठी के नक्श की तरह यह खुदावन्द के लिए पाक। 31 और उसे 'अमामे के साथ ऊपर बाँधने के लिए उसमे एक नीला फ़ीता लगाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म किया था। 32 इस तरह खेमा — ए — इजितमा'अ के घर का सब काम खत्म हुआ और बनी इसाईल ने सब कुछ जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म दिया था वैसा ही किया। 33 और वह घर को मूसा के पास लाए, यानी

खेमा, और उसका सारा सामान, उसकी घुन्डियाँ, और तख्ते, बेन्डे और सुतून और खाने; 34 और घटा टोप, मेंदों की सुर्खंर रंगी हुई खालों का गिलाफ़ और तुख़स की खालों का गिलाफ़ और बीच का पर्दा; 35 शहादत का सन्दूक और उसकी चोबे और सरपोश, 36 और मेज़ और उसके सब बर्तन और नज़र की रोटी; 37 और पाक शमादान और उसकी सजावट के चराग और उसके सब बर्तन और जलाने का तेल; 38 और जरीन कुबानिगाह, और मसह करने का तेल और खुशबूदार खुशबू और खेमे के दरवाजे का पर्दा; 39 और पीतल मढ़ा हुआ मजबह, और पीतल की झंजरी, और उसकी चोबे और उसके सब बर्तन और हौज़ और उसकी कुसीँ; 40 सहन के पर्दे और उनके सुतून और खाने और सहन के दरवाजे का पर्दा और उसकी रस्सियाँ और मेखे और खेमा — ए — इजितमा'अ के काम के लिए घर की झबादत के सब सामान; 41 और पाक मुकाम कि खिदमत के लिए कठे हुए लिबास और हास्तन काहिन के पाक लिबास और उसके बेटों के लिबास जिनको पहन कर उनको काहिन की खिदमत को अन्जाम देना था। 42 जो कुछ खुदावन्द ने मूसा को हृक्म किया था उसी के मुताबिक बनी इसाईल ने सब काम बनाया। 43 और मूसा ने सब काम का मुलाहजा किया और देखा कि उन्होंने उसे कर लिया है जैसा खुदावन्द ने हृक्म दिया था उन्होंने सब कुछ वैसा ही किया, और मूसा ने उनको बरकत दी।

40 और खुदावन्द ने मूसा से कहा; 2 "पहले महीने की पहली तारीख को तू खेमा — ए — इजितमा'अ के घर को खड़ा कर देना। 3 और उस में शहादत का सन्दूक रख कर सन्दूक पर बीच का पर्दा खीची देना। 4 और मेज़ को अन्दर ले जाकर उस पर की सब चीज़ें तरतीब से सजा देना और शमादान को अन्दर करके उसके चराग रोशन कर देना। 5 और खुशबू जलाने की जरीन कुबानिगाह को शहादत के सदूक के सामने रखना और घर के दरवाजे का पर्दा लगा देना। 6 और सोख्तनी कुबानी का मजबह खेमा — ए — इजितमा'अ के घर के दरवाजे के सामने रखना। 7 और हौज़ को खेमा — ए — इजितमा'अ और मजबह के बीच में रख कर उसमे पानी भर देना 8 और सहन के चारों तरफ से घेर कर सहन के दरवाजे में पर्दा लटका देना। 9 और मसह करने का तेल लेकर घर को और उसके अन्दर के सब चीज़ों को मसह करना; और यूँ उसे और उसके सब बर्तन को पाक करना तब वह पाक ठहरेगा। 10 और तू सोख्तनी कुबानी के मजबह और उसके सब बर्तन को मसह करके मजबह को पाक करना, और मजबह निहायत ही पाक ठहरेगा 11 और तू हौज़ और उसकी कुसीँ को भी मसह करके पाक करना। 12 और हास्तन और उसके बेटे को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर लाकर उसको पानी से गुस्त दिलाना 13 और हास्तन को पाक लिबास पहनाना और उसे मसह और पाक करना, ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे 14 और उनके बेटों को लाकर उनको कुरते पहनाना, 15 और जैसा उनके बाप को मसह करे वैसा ही उनको भी मसह करना, ताकि वह मेरे लिए काहिन की खिदमत को अन्जाम दे; और उनका मसह होना उनके लिए नसल — दर — नसल हमेशा की कहानत का निशान होगा।" 16 और मूसा ने सब कुछ जैसा खुदावन्द ने उसको हृक्म किया था उसके मुताबिक किया। 17 और दूसरे साल के पहले महीने की पहली तारीख को घर खड़ा किया गया। 18 और मूसा ने घर को खड़ा किया और खानों को रख कर उनमे तड़ते लगा उनके बेड़े खीची दिए और उसके सुतूनों खड़ा कर दिया। 19 और घर के ऊपर खेमे को तान दिया और खेमा पर उसका गिलाफ़ चढ़ा दिया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म किया था। 20 और शहादतनामे को लेकर सन्दूक में रखवा, और चोबों को सन्दूक में लगा सरपोश को सन्दूक के ऊपर रखवा; 21 फिर उस सन्दूक को घर के अन्दर लाया, और बीच का पर्दा लगा कर शहादत के सन्दूक को पर्दे के अन्दर किया, जैसा

खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 22 और मेज़ को उस पर्दे के बाहर घर को उत्तरी स्ख में खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर रखवा, 23 और उस पर खुदावन्द के आमने सामने गेटी सजाकर रख्खी, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 24 और खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर ही मेज़ के सामने घर की दालिखनी स्ख में शमांदान को रखवा, 25 और चराग खुदावन्द के सामने रोशन कर दिए, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 26 और जरीन कुबीनगाह को खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर पर्दे के सामने रखवा, 27 और उस पर खुशबदार मसाल्हे का खुशबू जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था 28 और उसने घर के दरवाजे में पर्दा लगाया था। 29 और खेमा — ए — इजितमा'अ के घर के दरवाजे पर सोख्तनी कुबीनी का मजबह रखकर उस पर सोख्तनी कुबीनी और नज़ की कुबीनी पेश की, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया, 30 और उसने हौज़ को खेमा — ए — इजितमा'अ और मजबह के बीच में रखकर उसमें धोने के लिए पानी भर दिया। 31 और मूसा और हास्न और उसके बेटों ने अपने — अपने हाँथ — पाँव उसमें धोए। 32 जब — जब वह खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर दाखिल होते, और जब — जब वह मजबह के नजदीक जाते तो अपने आपको धोकर जाते थे, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 33 और उसने घर और मजबह के चारों तरफ सहन को घेर कर सहन के दरवाजे का पर्दा डाल दिया और मूसा ने उस काम को खत्म किया। 34 तब खेमा — ए — इजितमा'अ पर बादल छा गया, और घर खुदावन्द के जलाल से भरा हो गया। 35 और मूसा खेमा — ए — इजितमा'अ में दाखिल न हो सका क्यूंकि वह बादल उस पर ठहरा हुआ था, और घर खुदावन्द के जलाल से भरा था। 36 और बनी — इस्माईल के सारे सफर में यह होता रहा कि जब वह बादल घर के ऊपर से उठ जाता तो वह आगे बढ़ते, 37 लेकिन अगर वह बादल न उठता तो उस दिन तक सफर नहीं करते थे जब तक वह उठ न जाता। 38 क्यूंकि खुदावन्द का बादल इस्माईल के सारे घराने के समाने और उनके सारे सफर में दिन के बक्त तो घर के ऊपर ठहरा रहता और रात को उसमें आग रहती थी।

अह

1 और खुदावन्द ने खेमा — ए — इजितमा'अ में से मूसा को बुलाकर उससे कहा, 2 बनी — इमाईल से कह, कि जब तुम में से कोई खुदावन्द के लिए चढ़ावा चढ़ाए, तो तुम चौपायों याँनी गाय — बैल और भेड़ — बकरी का हृदिया देना। 3 अगर उसका चढ़ावा गाय — बैल की सोखतनी कुर्बानी हो, तो वह ऐंखें बर को लाकर उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर चढ़ाए ताकि वह खुद खुदावन्द के सामने मक्कबूल ठहरे। 4 और वह सोखतनी कुर्बानी के जानवर के सिर पर अपना हाथ रखें, तब वह उसकी तरफ से मक्कबूल होगा ताकि उसके लिए कफ़कारा हो। 5 और वह उस बछड़े को खुदावन्द के सामने जबह करे, और हास्न के बेटे जो काहिन हैं खून को लाकर उसे उस मज़बह पर चारों तरफ छिड़के जो खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर हैं। 6 तब वह उस सोखतनी कुर्बानी के जानवर की खाल खींचे और उसके 'उज्ज्व — 'उज्ज्व को काट कर जुदा — जुदा करे। 7 फिर हास्न काहिन के बेटे मज़बह पर आग रखें, और आग पर लकड़ियाँ तरतीब से चुन दें। 8 और हास्न के बेटे जो काहिन हैं, उसके आज्ञा को और सिर और चर्चीं को उन लकड़ियों पर जो मज़बह की आग पर होंगी तरतीब से रख दें। 9 लेकिन वह उसकी अंतिड़ियों और पायों को पानी से धो ले, तब काहिन सबको मज़बह पर जलाए कि वह सोखतनी कुर्बानी याँनी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी हों। 10 और अगर उसका चढ़ावा रेवड़ में से भेड़ या बकरी की सोखतनी कुर्बानी हो, तो वह बे — 'ऐंख बर को लाए। 11 और वह उसे मज़बह की उत्तरी सिस्त में खुदावन्द के आगे जबह करे, और हास्न के बेटे जो काहिन हैं उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ छिड़के। 12 फिर वह उसके 'उज्ज्व — 'उज्ज्व को और सिर और चर्चीं को काट कर जुदा — जुदा करे, और काहिन उनकी तरतीब से उन लकड़ियों पर जो मज़बह की आग पर होंगी चुन दें; 13 लेकिन वह अंतिड़ियों और पायों को पानी से धो ले। तब काहिन सबको लेकर मज़बह पर जला दे, वह सोखतनी कुर्बानी याँनी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी है। 14 "और अगर उसका चढ़ावा खुदावन्द के लिए परिद्दों की सोखतनी कुर्बानी हो, तो वह कुमरियों या कबूतर के बच्चों का चढ़ावा चढ़ाए। 15 और काहिन उसको मज़बह पर लाकर उसका सिर मरोड़ डाले, और उसे मज़बह पर जला दे; और उसका खून मज़बह के पहलू पर गिर जाने दे। 16 और उसके पोटे को आलाइश के साथ ले जाकर मज़बह की पूजी सिस्त में राख की जगह में डाल दे। 17 और वह उसके दोनों बाजुओं को पकड़ कर उसे चीर पर अलग — अलग न करे। तब काहिन उसे मज़बह पर उन लकड़ियों के ऊपर रख कर जो आग पर होंगी जला दे, वह सोखतनी कुर्बानी याँनी खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी है।

2 और अगर कोई खुदावन्द के लिए नज़्र की कुर्बानी का हृदिया लाए, तो अपने हृदिये के लिए ऐंमैदा ले और उसमें तेल डाल कर उसके ऊपर लबान रख दें; 2 और वह उसे हास्न के बेटों के पास जो काहिन हैं लाए। और तेल मिले हुए मैदे में से इस तरह अपनी मुश्ती भर कर निकाले कि सब लबान उसमें आ जाए। तब काहिन उसे नज़्र की कुर्बानी की यादगारी के तौर पर मज़बह के ऊपर जलाए। यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी होगी। 3 और जो कुछ उस नज़्र की कुर्बानी में से बाकी रह जाए, वह हास्न और उसके बेटों का होगा। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में पाकतरीन चीज़ है। 4 "और जब तू तन्हू का पका हुआ नज़्र की कुर्बानी का हृदिया लाए, तो वह तेल मिले हुए मैदे के बेख़मीरी गिरदे या तेल चुपड़ी हुई बेख़मीरी

चपातियाँ हों। 5 और अगर तेरी नज़्र की कुर्बानी का चढ़ावा तवे का पका हुआ हो, तो वह तेल मिले हुए बेख़मीरी मैदे का हो। 6 उसको टुकड़े — टुकड़े करके उस पर तेल डालना, तो वह नज़्र की कुर्बानी होगी। 7 और अगर तेरी नज़्र की कुर्बानी का चढ़ावा कढ़ाई का तला हुआ हो, तो वह मैदे से तेल में बनाया जाए। 8 त. इन चीजों की नज़्र की कुर्बानी का चढ़ावा खुदावन्द के पास लाना, वह काहिन को दिया जाए। और वह उसे मज़बह के पास लाए। 9 और काहिन उस नज़्र की कुर्बानी में से उसकी यादगारी का हिस्सा उठा कर मज़बह पर जलाए, यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी होगी। 10 और जो कुछ उस नज़्र की कुर्बानी में से बच रहे वह हास्न और उसके बेटों का होगा। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में पाकतरीन चीज़ है। 11 कोई नज़्र की कुर्बानी जो तुम खुदावन्द के सामने चढ़ाओ, वह खमीर मिला कर न बनाई जाए, तुम खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी होगी। 12 तुम इनको फहले फलों के हृदिये के तौर पर खुदावन्द के सामने लाना, लेकिन राहतअंगेज खुशबू के लिए वह मज़बह पर न पेश किये जाएँ। 13 और तू अपनी नज़्र की कुर्बानी के हर हृदिये को नमकीन बनाना, और अपनी किसी नज़्र की कुर्बानी को अपने खूदा के 'अहद के नमक बौर न रहने देना; अपने सब हृदियों के साथ नमक भी पेश करना। 14 'और अगर तू पहले फलों की नज़्र का हृदिया खुदावन्द के सामने पेश करे तो अपने फहले फलों की नज़्र के चढ़ावे के लिए अनाज की भूती हुई बाले, याँनी हरी — हरी बालों में से हाथ से मलकर निकाले हुए अनाज को चढ़ाना। 15 और उसमें तेल डालना और उसके ऊपर लबान रखना, तो वह नज़्र की कुर्बानी होगी। 16 और काहिन उसकी यादगारी के हिस्से को, याँनी थोड़े से मल कर निकाले हुए दानों को और थोड़े से तेल को और सारे लबान को जला दें; यह खुदावन्द के लिए आतिशी कुर्बानी होगी।

3 और अगर उसका हृदिया सलामती का जबीहा हो और वह गाय बैल में से किसी को अदा करे, तो चाहे वह नर हो या मादा; लेकिन जो बे — 'ऐंख बर उसी को वह खुदावन्द के सामने पेश करे। 2 और वह अपना हाथ अपने हृदिये के जानवर के सिर पर रख दें, और खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर उसे जबह करे; और हास्न के बेटे जो काहिन हैं उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ छिड़के। 3 और वह सलामती के जबीहे में से खुदावन्द के लिए आतिशी कुर्बानी पेश करे, याँनी जिस चर्ची से अंतिड़ियाँ ढकी रहती हैं, 4 और वह सारी चर्चीं जो अंतिड़ियों पर लिपटी रहती हैं, और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्चीं जो कमर के पास रहती हैं, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दे के साथ; इन सभों को वह जुदा करे। 5 और हास्न के बेटे उन्हें मज़बह पर सोखतनी कुर्बानी के ऊपर जलाएँ जो उन लकड़ियों पर होगी जो आग के ऊपर हैं; यह खुदावन्द के लिए राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी है। 6 और अगर उसका सलामती के जबीहे का हृदिया खुदावन्द के लिए भेड़ — बकरी में से हो, तो चाहे नर हो या मादा, लेकिन जो बे — 'ऐंख हो उसी को वह अदा करे। 7 अगर वह बरी पेश करता हो, तो उसे खुदावन्द के सामने अदा करे, 8 और अपना हाथ अपने चढ़ावे के जानवर के सिर पर रख दें, और उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने जबह करे; और हास्न के बेटे उसके खून को मज़बह पर चारों तरफ छिड़के। 9 और वह सलामती के जबीहे में से खुदावन्द के लिए अतिशी कुर्बानी पेश करे; याँनी उसकी पूरी चर्चीं भरी दुम को वह रीढ़ के पास से अलग करे, और जिस चर्ची से अंतिड़ियाँ ढकी रहती हैं, और वह सारी चर्चीं जो अंतिड़ियों पर लिपटी रहती हैं, 10 और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्चीं जो कमर के पास रहती हैं, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दे के साथ; इन सभों को वह अलग करे। 11 और काहिन इन्हें मज़बह पर जलाएँ;

यह उस अतिशी कुर्बानी की गिज़ा है जो खुदावन्द को पेश की जाती है। 12 “और अगर वह बकरा या बकरी पेश करता हो, तो उसे खुदावन्द के सामने अदा करो। 13 और वह अपना हाथ उसके सिर पर रख दें, और उसे खेमा — ए — इजितमा’अ के सामने जबह करें; और हास्त के बेटे उसके खन को मजबह से पर चारों तरफ छिड़कें। 14 और वह उसमें से अपना चढ़ावा अतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करें; यानी जिस चर्बी से अंतिडियाँ ढकी रहती हैं, और वह सब चर्बी जो अंतिडियों पर लिपटी रहती है, 15 और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की डिल्ली गुर्दों के साथ, इन सभों को वह अलग करें। 16 और काहिन इनको मजबह पर जलाएँ; यह उस अतिशीन कुर्बानी की गिज़ा है, जो राहतअंगेज खुशबू के लिए होती है; सारी चर्बी खुदावन्द की है। 17 यह तुम्हारी सब सुकृतगाहों में नसल — दर — नसल एक हमेशा का कानून रहेगा, कि तुम चर्बी या खन मुतलक न खाओ।”

4 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 2 बनी इस्माईल से कह कि अगर कोई उन कामों में से जिनको खुदावन्द ने मना’ किया है, किसी काम को करे और उससे अनजाने में खता हो जाए। 3 अगर काहिन — ए — मम्सूह ऐसी खता करे जिससे कौम मुजरिम ठहरती हो, तो वह अपनी उस खता के लिए जो उसने की है, एक बे — ऐब बछड़ा खता की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करो। 4 वह उस बछड़े को खेमा — ए — इजितमा’अ के दरवाजे पर खुदावन्द के आगे लाएँ, और बछड़े के सिर पर अपना हाथ रख दें और उसको खुदावन्द के आगे जबह करो। 5 और वह काहिन — ए — मम्सूह उस बछड़े के खन में से कुछ लेकर उसे खेमा — ए — इजितमा’अ के दरवाजे पर खुदावन्द के आगे जबह करो। 6 और काहिन अपनी उंगली खन में डुबो — डुबो कर, और खन में से ले लेकर उसे हैकल के पर्दे के सामने सात बार खुदावन्द के आगे छिड़के। 7 और काहिन उसी खन में से खुशबूतार खुशबू जलाने की कुर्बानगाह के सीरीजों पर, जो खेमा — ए — इजितमा’अ में है, खुदावन्द के आगे लाएँ, और उस बछड़े के बाकी सब खन को सोखतनी कुर्बानी के मजबह के पाये पर, जो खेमा — ए — इजितमा’अ के दरवाजे पर है उंडेल दे। 8 फिर वह खता की कुर्बानी के बछड़े की सब चर्बी को उससे अलग करे; यानी जिस चर्बी से अंतिडियाँ ढकी रहती हैं, और वह सब चर्बी जो अंतिडियों पर लिपटी रहती है, 9 और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की डिल्ली गुर्दों के साथ; इन सभों को वह वैसे ही अलग करे। 10 जैसे सलामती के जबही के बछड़े से वह अलग किए जाते हैं, और काहिन उनको सोखतनी कुर्बानी के मजबह पर जलाए। 11 और उस बछड़े की खाल, और उसका सब गोशत, और सिर और पाये, और अंतिडियाँ और गोबर; 12 यानी पूरे बछड़े को लश्कर गाह के बाहर किसी साफ़ जगह में जहाँ राख पड़ती है, ले जाएँ; और सब कुछ लकड़ियों पर रख कर आग से जलाए, वह बरी जलाया जाए जहाँ राख डाली जाती है। 13 ‘अगर बनी — इस्माईल की सारी जमा’अत से अनजाने चूक हो जाए, और यह बात जमा’अत की आँखों से छिपी तो हो तो भी वह उन कामों में से जिहें खुदावन्द ने मना’ किया है, किसी काम को करके मुजरिम हो गई हो, 14 तो उस खता के जिसके वह कुस्तबार हों, मालूम हो जाने पर जमा’अत एक बछड़ा खता की कुर्बानी के तौर पर चढ़ाने के लिए खेमा — ए — इजितमा’अ के सामने लाए। 15 और जमा’अत के बुजूर्ग अपने — अपने हाथ खुदावन्द के आगे उस बछड़े के सिर पर रख दें, और बछड़ा खुदावन्द के आगे जबह किया जाए। 16 और काहिन — ए — मम्सूह उस बछड़े के खन में से कुछ खेमा — ए — इजितमा’अ में ले जाएँ; 17 और काहिन अपनी उंगली उस खन में डुबो — डुबो कर उसे पर्दे के सामने सात बार खुदावन्द के आगे छिड़के, 18 और

उसी खन में से मजबह के सीरीजों पर जो खुदावन्द के आगे खेमा — ए — इजितमा’अ में है लगाए, और बाकी सारा खन सोखतनी कुर्बानी के मजबह के पाये पर, जो खेमा — ए — इजितमा’अ के दरवाजे पर है, उंडेल दे। 19 और उसकी सब चर्बी उससे अलग करके उसे मजबह पर जलाए। 20 वह बछड़े से यही करे, यानी जो कुछ खता की कुर्बानी के बछड़े से किया था, वही इस बछड़े से करे। यूँ काहिन उनके लिए कफ़कारा दे, तो उन्हें मु’आफ़ी मिलेगी; 21 और वह उस बछड़े को लश्करगाह के बाहर ले जा कर जलाएँ, जैसे पहले बछड़े को जलाया था; यह जमा’अत की खता की कुर्बानी है। 22 और जब किसी सरदार से खता हो जाए, और वह उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना’ किया है किसी काम को अनजाने में कर दैठे और मुजरिम हो जाए। 23 तो जब वह खता जो उससे सरजद हूँद है उसे बता दी जाएँ, तो वह एक बे — ऐब बकरा अपनी कुर्बानी के लिए लाएँ; 24 और अपना हाथ उस बकरे के सिर पर रख दें, और उसे उस जगह जबह करे जहाँ सोखतनी कुर्बानी के जानवर खुदावन्द के आगे जबह करते हैं; यह खता की कुर्बानी है। 25 और काहिन खता की कुर्बानी का कुछ खन अपनी उंगली पर लेकर उसे सोखतनी कुर्बानी के मजबह के सीरीजों पर लगाए, और उसका बाकी सब खन सोखतनी कुर्बानी के मजबह के पाए पर उंडेल दे। 26 और सलामती के जबही की चर्बी की तरह उसकी सब चर्बी मजबह पर जलाए। यूँ काहिन उसकी खता का कफ़कारा दे, तो उसे मु’आफ़ी मिलेगी। 27 ‘और अगर कोई ‘आम आदमियों में से अनजाने में खता करे, और उन कामों में से जिहें खुदावन्द ने मना’ किया है किसी काम को करके मुजरिम हो जाएँ; 28 तो जब वह खता जो उसने की है उसे बता दी जाएँ, तो वह अपनी उस खता के लिए जो उससे सरजद हूँद है, एक बे — ऐब बकरी लाएँ। 29 और वह अपना हाथ खता की कुर्बानी के जानवर के सिर पर रख दें, और खता की कुर्बानी के उस जानवर को सोखतनी कुर्बानी की जगह पर जबह करो। 30 और काहिन उसका कुछ खन अपनी उंगली पर ले कर उसे सोखतनी कुर्बानी के मजबह के सीरीजों पर लगाएँ, और उसका बाकी सब खन मजबह के पाए पर उंडेल दे; 31 और वह उसकी सारी चर्बी को अलग करे जैसे सलामती के जबही की चर्बी अलग की जाती है, और काहिन उसे मजबह पर राहतअंगेज खुशबू के तौर पर खुदावन्द के लिए जलाए। यूँ काहिन उसके लिए कफ़कारा दे, तो उसे मु’आफ़ी मिलेगी। 32 और अगर खता की कुर्बानी के लिए उसका हंदिया बरी हो, तो वह बे — ऐब मादा लाएँ; 33 और अपना हाथ खता की कुर्बानी के जानवर के सिर पर रख दें; और उसे खता की कुर्बानी के तौर पर उस जगह जबह करे जहाँ सोखतनी कुर्बानी जबह करते हैं। 34 और काहिन खता की कुर्बानी का कुछ खन अपनी उंगली पर लेकर उसे सोखतनी कुर्बानी के मजबह के सीरीजों पर लगाएँ, और उसका बाकी सब खन मजबह के पाये पर उंडेल दे। 35 और उसकी सब चर्बी को अलग करे जैसे सलामती के जबही के बर्की की चर्बी अलग की जाती है। और काहिन उसको मजबह पर खुदावन्द की अतिशी कुर्बानियों के ऊपर जलाए। यूँ काहिन उसके लिए उसकी खता का जो उससे हूँद है उसका कफ़कारा दे, तो उसे मु’आफ़ी मिलेगी।

5 और अगर कोई इस तरह खता करे कि वह गवाह हो और उसे कसम दी जाए कि जैसे उसने कुछ देखा या उसे कुछ मालूम है, और वह न बताएँ, तो उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा। 2 या अगर कोई शब्द किसी नापाक चीज़ को छू ले, चाहे वह नापाक जानवर या नापाक चौपाये या नापाक रैनेवेल जानवर की लाश हो, तो चाहे उसे मालूम भी न हो कि वह नापाक हो गया है तो भी वह मुजरिम ठहरेगा। 3 या अगर वह इंसान की उन नजासतों में से जिनसे वह नजिस हो जाता है, किसी नजासत को छू ले और उसे मालूम न हो, तो वह उस वक्त मुजरिम ठहरेगा जब उसे मालूम हो जाएगा। 4 या अगर कोई बगैर

सोचे अपनी ज़बान से बुराई या भलाई करने की कसम खाले, तो कसम खा कर वह आदमी चाहे कैसी ही बात बौर सोचे कह दे, बशर्त कि उसे मालूम न हो, तो ऐसी बात में मुजरिम उस बक्त ठहरेगा जब उसे मालूम हो जाएगा। 5 और वह वह इन बातों में से किसी में मुजरिम हो, तो जिस अप्र में उससे खता हुई है वह उसका इकरार करे, 6 और खुदावन्द के सामने अपने ज़र्म की कुर्बानी लाए, यानी जो खता उससे हुई है उसके लिए रेवड में से एक मादा, यानी एक भेड़ या बकरी खता की कुर्बानी के तौर पर पेश करे, और काहिन उसकी खता का कफ़कारा दे 7 “और अगर उसे भेड़ देने का मक्तूर न हो, तो वह अपनी खता के लिए ज़र्म की कुर्बानी के तौर पर दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे खुदावन्द के सामने पेश करे; एक खता की कुर्बानी के लिए और दूसरा सोखतनी कुर्बानी के लिए। 8 वह उन्हें काहिन के पास ले आए जो फहले उसे जो खता की कुर्बानी के लिए है पेश करे, और उसका सिर गर्दन के पास से मरोड़ डाले पर उसे अलगा न करे, 9 और खता की कुर्बानी का कुछ खून मजबह के पहलू पर छिड़के और बाकी खून को मजबह के पाये पर गिर जाने दे; यह खता की कुर्बानी है। 10 और दूसरे परिदें को हक्म के मुवाफिक सोखतनी कुर्बानी के तौर पर अदा करे यूँ काहिन उसकी खता का जो उन्हें की है कफ़कारा दे, तो उसे मुआफ़ी मिलेगी। 11 और अगर उसे दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लाने का भी मक्तूर न हो, तो अपनी खता के लिए अपने हृदिये के तौर पर, ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा खता की कुर्बानी के लिए लाए। उस पर न तो वह तेल डाले, न लुबान रखें, क्यैकि यह खता की कुर्बानी है। 12 वह उसे काहिन के पास लाए, और काहिन उसमें से अपनी मुरी भर कर उसकी यादगारी का हिस्सा मजबह पर खुदावन्द की आतिशीन कुर्बानी के ऊपर जलाए। यह खता की कुर्बानी है। 13 यूँ काहिन उसके लिए इन बातों में से, जिस किसी में उससे खता हुई है उस खता का कफ़कारा दे, तो उसे मुआफ़ी मिलेगी; और जो कुछ बाकी रह जाएगा, वह नज़र की कुर्बानी की तरह काहिन का होगा।” 14 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि: 15 अगर खुदावन्द की पाक चीजों में किसी से तकसीर हो और वह अनजाने में खता करे, तो वह अपने ज़र्म की कुर्बानी के तौर पर रेवड में से बे — ‘ऐब मैंदा खुदावन्द के सामने अदा करे। ज़र्म की कुर्बानी के लिए उसकी क़ीमत हैकल की मिस्काल के हिसाब से चाँदी की उतनी ही मिस्कालें हों, जितनी तू मुकर्र कर दे। 16 और जिस पाक चीज में उससे तकसीर हुई है वह उसका मुआवजा दे, और उसमें पाँचवाँ हिस्सा और बढ़ा कर उसे काहिन के हवाले करे। यूँ काहिन ज़र्म की कुर्बानी का मैंदा पेश कर उसका कफ़कारा दे, तो उसे मुआफ़ी मिलेगी। 17 ‘और अगर कोई खता करे, और उन कामों में से जिन्हें खुदावन्द ने मना किया है किसी काम को करे, तो चाहे वह यह बात जानता भी न हो तो भी मुजरिम ठहरेगा; और उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा। 18 तब वह रेवड में से एक बे — ‘ऐब मैंदा उतने ही दाम का, जो तु मुकर्र कर दे, ज़र्म की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाए। यूँ काहिन उसकी उस बात का, जिसमें उसने में चूक हो गई कफ़कारा दे, तो उसे मुआफ़ी मिलेगी। 19 यह ज़र्म की कुर्बानी है, क्यैकि वह यकीनन खुदावन्द के आगे मुजरिम है।”

6 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 “अगर किसी से यह खता हो कि वह खुदावन्द का कुमूर करे, और अमानत या लेन — देन या लूट के मुआमिले में अपने पड़ोसी को धोखा दे, या अपने पड़ोसी पर ज़ुल्म करे, 3 या किसी खोई हुई चीज को पाकर धोखा दे, और झूठी कसम भी खा ले; तब इनमें से चाहे कोई बात हो जिसमें किसी शरक्स से खता हो गई है, 4 इसलिए अगर उससे खता हुई है और वह मुजरिम ठहरा है, तो जो चीज उसने लट्ठी, या जो चीज उसने ज़ुल्म करके छीनी, या जो चीज उसके पास अमानत थी, या जो खोई हुई

चीज उसे मिली, 5 या जिस चीज के बारे में उसने झूठी कसम खाई; उस चीज को वह जस्त पूरा — पूरा वापस करे, और असल के साथ पौँचवा हिस्सा भी बढ़ा कर दे। जिस दिन यह मालूम हो कि वह मुजरिम है, उसी दिन वह उसे उसके मालिक को वापस दे; 6 और अपने ज़र्म की कुर्बानी खुदावन्द के सामने अदा करे, और जितना दाम त मुकर्र करे उतने दाम का एक बे — ‘ऐब मैंदा रेवड में से ज़र्म की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाए। 7 यूँ काहिन उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़कारा दे, तो जिस काम को करके वह मुजरिम ठहरा है उसकी उसे मुआफ़ी मिलेगी।” 8 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 9 “हास्त और उसके बेटों को यूँ हुक्म दे कि सोखतनी कुर्बानी के बारे में शरा’ यह है, कि सोखतनी कुर्बानी मजबह के ऊपर आतिशादान पर तमाम रात सुबह तक रहे, और मजबह की आग उस पर जलती रहे। 10 और काहिन अपना कतान का लिबास पहने और कतान के पाजामे को अपने तन पर डाले और आग ने जो सोखतनी कुर्बानी को मजबह पर भस्म करके राख कर दिया है, उस राख को उठा कर उसे मजबह की एक तरफ रख दें। 11 फिर वह अपने लिबास को उतार कर दूसरे कपड़े पहने, और उस राख को उठा कर लशकरगाह के बाहर किसी साफ़ जगह में ले जाए। 12 और मजबह पर आग जलती रहे, और कभी बुझने न पाएँ; और काहिन हर सुबह को उस पर लकड़ियाँ जला कर सोखतनी कुर्बानी को उसके ऊपर चुन दे, और सलामती के ज़बीहों की चर्बीं को उसके ऊपर जलाया करे। 13 मजबह पर आग हमेशा जलती रख दीजा जाएँ; वह कभी बुझने न पाए। 14 “नज़र की कुर्बानी” और नज़र की कुर्बानी के बारे में शरा’ यह है, कि हास्त के बेटे उसे मजबह के आगे खुदावन्द के सामने पेश करें। 15 और वह नज़र की कुर्बानी में से अपनी मुरी भर इस तरह निकाले कि उसमें थोड़ा सा मैदा और कुछ तेल जो उसमें पड़ा होगा और नज़र की कुर्बानी का सब लुबान आ जाए, और इस यादगारी के हिस्से को मजबह पर खुदावन्द के सामने राहतअंगैज़ खुशबू के तौर पर जलाए। 16 और जो बाकी बचे उसे हास्त और उसके बेटे खाँएँ, वह बांग्रे खुमार के पाक जगह में खाया जाएँ, यानी वह स्नेहा — ए — इजितामा’अ के सहन में उसे खाँएँ। 17 वह खमीर के साथ पकाया न जाएँ; मैंने यह अपनी आतिशीन कुर्बानियों में से उनका हिस्सा दिया है, और यह खता की कुर्बानी और ज़र्म की कुर्बानी की तरह बहत पाक है। 18 हास्त की औलाद के सब मर्द उसमें से खाँएँ। तुम्हारी नसल — दर — नसल की आतिशीन कुर्बानियाँ जो खुदावन्द को पेश करेंगे उसमें से यह उनका हक्क होगा। जो कोई उन्हें छुए वह पाक ठहरेगा।” 19 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 20 “जिस दिन हास्त को मसह किया जाए उस दिन वह और उसके बेटे खुदावन्द के सामने यह हृदिया अदा करे, कि ऐफ़ा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, आधा सुबह की और आधा शाम को, हमेशा नज़र की कुर्बानी के लिए लाएँ। 21 वह तबे पर तेल में पकाया जाएँ; जब वह तर हो जाए तो तू उसे ले आना। इस नज़र की कुर्बानी को पकावान के टकड़ों की सूत में पेश करना ताकि वह खुदावन्द के लिए राहतअंगैज़ खुशबू भी हो। 22 और जो उसके बेटों में से उसकी जगह काहिन मस्हूर हो वह उसे पेश करे। यह हमेशा का कानून होगा कि वह खुदावन्द के सामने बिल्कुल जलाया जाए। 23 काहिन की हर एक नज़र की कुर्बानी बिल्कुल जलाई जाएँ; वह कभी खाँई न जाए।” 24 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 25 “हास्त और उसके बेटों से कह कि खता की कुर्बानी के बारे में शरा’ यह है, कि जिस जगह सोखतनी कुर्बानी का जानवर जबह किया जाता है, वही खता की कुर्बानी का जानवर भी खुदावन्द के आगे जबह किया जाएँ; वह बहत पाक है। 26 जो काहिन उसे खता के लिए पेश करे वह उसे खाएँ; वह पाक जगह में, यानी खेमा — ए — इजितामा’अ के सहन में खाया जाए। 27 जो कुछ उसके गोश्त से छू जाए वह पाक ठहरेगा, और अगर किसी कपड़े पर उसके खून की

छिट पड़ जाए, तो जिस कपड़े पर उसकी छीट पड़ी है तू उसे किसी पाक जगह में धोना। 28 और मिठी का वह बर्तन जिसमें वह पकाया जाए तो उस बर्तन की माँज कर पानी से धो लिया जाए। 29 और काहिनों में से हर मर्द उसे खाए; वह बहुत पाक है। 30 लेकिन जिस खता की कुर्बानी का कुछ खन खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर पाक मकाम में कफ़ारों के लिए पहुँचाया गया है, उसका गोश्त कभी न खाया जाए; बल्कि वह आग से जला दिया जाए।

7 “और ज़र्म की कुर्बानी के बारे में शरा' यह है। वह बहुत पाक है। 2 जिस जगह सोखलनी कुर्बानी के जानवर को ज़बह करते हैं, वही वह ज़र्म की कुर्बानी के जानवर को भी ज़बह करें; और वह उसके खून को मज़बह के चारों तरफ छिड़के। 3 और वह उसकी सब चर्बी को चढ़ाए, यानी उसकी मोटी दुम को, और उस चर्बी को जिससे अंतःडियाँ ढकी रहती हैं 4 और दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी जो कमर के पास रहती है, और जिगर पर की झिल्ली गुर्दे के साथ: इन सबको वह अलग करे। 5 और काहिन उनको मज़बह पर खुदावन्द के सामने आतिशीन कुर्बानी के तौर पर जलाए, यह ज़र्म की कुर्बानी है। 6 और काहिनों में से हर मर्द उसे खाए और किसी पाक जगह में उसे खाएँ; वह बहुत पाक है। 7 ज़र्म की कुर्बानी वैसी ही है जैसी खता की कुर्बानी है और उनके लिए एक ही शरा' है, और उन्हें वही काहिन ले जो उनसे कफ़ारा देता है 8 और जो काहिन किसी शरब की तरफ से सोखलनी कुर्बानी पेश करता है वही काहिन उस सोखलनी कुर्बानी की खाल को जो उसने पेश की, अपने लिए ले — ले। 9 और हर एक नज़र की कुर्बानी जो तनूर में पकाई जाए, और वह भी जी कड़ाही में तैयार की जाए, और तबे की पसी हूँ भी उनी काहिन की जो उसे पेश करे। 10 और हर एक नज़र की कुर्बानी जो चाहे उसमें तेल मिला हुआ हो या वह खुशक हो, बाबर — बराबर हास्न के सब बेटों के लिए हो। 11 ‘और सलामती के ज़बीहे के बारे में जिसे कोई खुदावन्द के सामने चढ़ाए शरा' यह है, 12 कि वह अगर शुकाने के तौर पर उसे अदा करे तो वह शुकाने के ज़बीहे के साथ, तेल मिले हुए बे — खमरी कुलचे और तेल चुपड़ी हूँ बे — खमरी चपातियाँ और तेल मिले हुए मैटे के तर कुलचे भी पेश करे। 13 और सलामती के ज़बीहे की कुर्बानी के साथ जो शुकाने के लिए होगी, वह खमरी रोटी के गिर्द अपने हंडिये पर पेश करे। 14 और हर हदिये में से वह एक को लेकर उसे खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर अदा करें; और यह उस काहिन का ही जो सलामती के ज़बीहे का खन छिड़कता है। 15 और सलामती के ज़बीहों की उस कुर्बानी का गोश्त, जो उस की तरफ से शुकाने के तौर पर होगी, कुर्बानी अदा करने के दिन ही खा लिया जाए; वह उसमें से कुछ सुख तक बाकी न छोड़े। 16 लेकिन अगर उसके चढ़ावे की कुर्बानी मिन्त का या रजा का हादिया हो, तो वह उस दिन खाइ जाए जिस दिन वह अपनी कुर्बानी पेश करें; और जो कुछ उस में से बच रहे, वह दूसरे दिन खाया जाए। 17 लेकिन जो कुछ उस कुर्बानी के गोश्त में से तीसरे दिन तक रह जाए वह आग में जला दिया जाए। 18 और उसके सलामती के ज़बीहों की कुर्बानी के गोश्त में से अगर कुछ तीसरे दिन खाया जाए तो वह मंज़र न होगा, और न उस का सवाब कुर्बानी देने वाले की तरफ मन्सूब होगा, बल्कि यह मक़स्त्व बात होगी; और जो उस में से खाए उस का गुमाह उसी के सिर लगेगा। 19 “और जो गोश्त किसी नापाक चीज़ से छू जाए, खाया न जाए; वह आग में जलाया जाए। और ज़बीहे के गोश्त को, जो पाक है वह तो खाए, 20 लेकिन जो शरब नापाकी की हालत में खुदावन्द की सलामती के ज़बीहे का गोश्त खाए, वह अपने लोगों में से काट डाला जाए। 21 और जो कोई किसी नापाक चीज़ को छुए, वाह वह इंसान की नापाकी हो या नापाक जानवर हो या कोई नजिस मक़स्त्व शय हो, और फिर

खुदावन्द के सलामती के ज़बीहे के गोश्त में से खाए, वह भी अपने लोगों में से काट डाला जाए।” 22 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 23 “बनी — इसाईल से कह, कि तुम लोग न तो बैल की न भेड़ की और न बकरी की कुछ चर्बी खाना। 24 जो जानवर खुद — ब — खुद मर गया हो और जिस को दरिन्दों ने फाड़ा हो, उनकी चर्बी और — और काम में लाओ तो लाओ पर उसे तुम किसी हाल में न खाना। 25 क्यूँकि जो कोई ऐसे चौपाये की चर्बी खाए, जिसे लोग आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने चढ़ाते हैं, वह खाने वाला आदमी अपने लोगों में से काट डाला जाए। 26 और तुम अपनी स्कूनतगाहों में कही भी किसी तरह का खन चाहे परिन्दे का हो या चौपाये का, हग्गीज़ न खाना। 27 जो कोई किसी तरह का खन खाए, वह शरब से अपने लोगों में से काट डाला जाए।” 28 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 29 “बनी — इसाईल से कह कि जो कोई अपना सलामती का ज़बीहा खुदावन्द के सामने पेश करे, वह खुद ही अपने सलामती के ज़बीहे की कुर्बानी में से अपना हादिया खुदावन्द के सामने लाए।” 30 वह अपने ही हाथों में खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी को लाए, यानी चर्बी को सीनि के साथ लाए कि सीनि हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाया जाए। 31 और काहिन चर्बी को मज़बह पर जलाए, लेकिन सीना हास्न और उसके बेटों का हो। 32 और तुम सलामती के ज़बीहों की दहनी रान उठाने की कुर्बानी के तौर पर काहिन को देना। 33 हास्न के बेटों में से जो सलामती के ज़बीहों का खन और चर्बी पेश करे, वही वह दहनी रान अपना हिस्सा ले। 34 क्यूँकि बनी इसाईल के सलामती के ज़बीहों में से हिलाने की कुर्बानी का सीना और उठाने की कुर्बानी की रान को लेकर, मैंने हास्न काहिन और उसके बेटों को दिया है, कि यह हमेशा बनी इसाईल की तरफ से उन का हक्क हो। 35 “यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से हास्न के मस्सूह होने का हिस्सा है, जो उस दिन मुकर्रर हुआ जब वह खुदावन्द के सामने काहिन की खिदमत को अंजाम देने के लिए हाजिर किए गए। 36 यानी जिस दिन खुदावन्द ने उठें मसह किया, उस दिन उसने यह हुक्म दिया कि बनी — इसाईल की तरफ से उठें यह मिला करे; इसलिए उन की नसल — दर — नसल यह उन का हक्क रहेगा।” 37 सोखलनी कुर्बानी, और नज़र की कुर्बानी, और खता की कुर्बानी, और ज़र्म की कुर्बानी, और तख्बीस और सलामती के ज़बीहे के बारे में शरा' यह है। 38 जिसका हुक्म खुदावन्द ने मूसा को उस दिन कोह-ए-सीना पर दिया जिस दिन उसने बनी — इसाईल को फरमाया, कि सीना के बीराने में खुदावन्द के सामने अपनी कुर्बानी पेश करें।

8 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 “हास्न और उसके साथ उसके बेटों को, और तिलास, को और मसह करने के तेल को, और खता की कुर्बानी के बछड़े और दोनों मेंडों और बे — खमरी रोटीयों की टोकरी को ले; 3 और सारी जमा’अत को खेमा — ए — इजितमा’अ के दरवाजे पर जमा’ कर।” 4 चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक ‘अमल किया; और सारी जमा’अत खेमा — ए — इजितमा’अ के दरवाजे पर जमा’ हुई। 5 तब मूसा ने जमा’अत से कहा, “यह वह काम है, जिसके करने का हुक्म खुदावन्द ने दिया है।” 6 फिर मूसा हास्न और उसके बेटों को आगे लाया और उन को पानी से गुस्त दिलाया। 7 और उसको कुरता पहना कर उस पर अफोद लगाया और अफोद के कारीगरी से बुने हुए कमरबन्द को उस पर लपेटा, और उसी से उसको उसके ऊपर कस दिया। 8 और सीनाबन्द को उसके ऊपर काम कर लगाया और उसी से उसको ऊपर कस दिया। 9 और उसके सिर पर ‘अमामा रख्खा और ‘अमामे पर सामने सोने के पतर यानी पाक ताज को लगाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था।

10 और मूसा ने मसह करने का तेल लिया; और घर को और जो कुछ उसमें था सब को मसह कर के पाक किया। 11 और उस में से थोड़ा सा लेकर मजबह पर सात बार छिड़का; और मजबह और उसके सब बर्तनों को, और हौज और उसकी कुर्बानी को मसह किया, ताकि उन्हें पाक करे। 12 और मसह करने के तेल में से थोड़ा सा हास्न के सिर पर डाला और उसे मसह किया ताकि वह पाक हो। 13 फिर मूसा हास्न के बेटों को आगे लाया और उन को कुरते पहनाए, और उन पर कमरबन्द लपेटे, और उनको पगड़ीयाँ पहनाई जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 14 और वह खता की कुर्बानी के बछड़े को आगे लाया, और हास्न और उसके बेटों ने अपने — अपने हाथ खता की कुर्बानी के बछड़े के सिर पर रख दिए। 15 फिर उसने उसको जबह किया, और मूसा ने खन को लेकर मजबह के चारों तरफ उसके सींगों पर अपनी उँगली से लगाया और मजबह को पाक किया; और बाकी खन मजबह के पाये पर उँडेल कर उसका कफकारा दिया, ताकि वह पाक हो। 16 और मूसा ने अंतिडियों के ऊपर की सारी चर्ची, और जिगर पर की झिल्ली, और दोनों गुर्दों और उन की चर्ची को लिया और उन्हें मजबह पर जलाया; 17 लेकिन बछड़े को, उसकी खाल और गेश्ट और गोबर के साथ, लश्करगाह के बाहर आग में जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 18 फिर उसने सोखतनी कुर्बानी के मेंढे को हाजिर किया, और हास्न और उसके बेटों ने अपने — अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रख दिए। 19 और उसने उसको जबह किया, और मूसा ने खन को मजबह के ऊपर चारों तरफ छिड़का। 20 फिर उसने मेंढे के 'उज्ज्व — 'उज्ज्व को काट कर अलग किया, और मूसा ने सिर और 'आजा और चर्ची' को जलाया। 21 और उसने अंतिडियों और पायों को पानी से धोया, और मूसा ने पौरे मेंढे को मजबह पर जलाया। यह सोखतनी कुर्बानी राहतअंगौज खुशबू के लिए थी, यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी थी, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 22 और उसने दूसरे मेंढे को जो तख्सीसी मेंढा था हाजिर किया, और हास्न और उसके बेटों ने अपने — अपने हाथ उस मेंढे के सिर पर रख दिए। 23 और उसने उस को जबह किया, और मूसा ने उसका कुछ खन लेकर उसे हास्न के दहने कान की लौ पर, और दहने हाथ के अंगठे और दहने पाँव के अंगठे पर लगाया। 24 फिर वह हास्न के बेटों को आगे लाया, और उसी खन में से कुछ उनके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अंगठे और दहने पाँव के अंगठे पर लगाया; और बाकी खन को उसने मजबह के ऊपर चारों तरफ छिड़का। 25 और उसने चर्ची और मोटी दम, और अंतिडियों के ऊपर की चर्ची, और जिगर पर की झिल्ली, और दोनों गुर्दे और उन की चर्ची, और दहनी रान इन सभों को लिया, 26 और बे — खमीरी रोटियों की टोकरी में से जो खुदावन्द के सामने रहती थी, बे — खमीरी रोटी का एक गिर्द, और तेल चपड़ी हुई रोटी का एक गिर्द, और एक चपाती निकाल कर उर्हे चर्ची और दहनी रान पर रख दिया। 27 और इन सभों को हास्न और उसके बेटों के हाथों पर रखकर उन्हें हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाया। 28 फिर मूसा ने उनको उनके हाथों से ले लिया, और उनको मजबह पर सोखतनी कुर्बानी के ऊपर जलाया। यह राहतअंगौज खुशबू के लिए तख्सीसी कुर्बानी थी। यह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी थी। 29 फिर मूसा ने सरीन को लिया, और उसको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाया। उस तख्सीसी मेंढे में से यही मूसा का हिस्सा था, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 30 और मूसा ने मसह करने के तेल और मजबह के ऊपर के खन में से कुछ — कुछ लेकर उसे हास्न और उसके लिबास पर छिड़का; और हास्न और उसके लिबास को, और उसके बेटों को और उनके लिबास को पाक किया। 31 और मूसा ने हास्न और उसके बेटों से कहा कि, ये

गोश्ट खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर पकाओ, और इसको वही उस रोटी के साथ जो तख्सीसी टोकरी में है, खाओ, जैसा मैंने हुक्म किया है कि हास्न और उसके बेटे उसे खाएँ। 32 और इस गोश्ट और रोटी में से जो कुछ बच रहे उसे आग में जला देना; 33 और जब तक तुम्हारी तख्सीस के दिन पौरे न हों, तब तक याँनी सात दिन तक, तुम खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे से बाहर न जाना; क्यूंकि सात दिन तक वह तुम्हारी तख्सीस करता रहेगा। 34 जैसा आज किया गया है, वैसा ही करने का हुक्म खुदावन्द ने दिया है ताकि तुम्हरे लिए कफकारा हो। 35 इसलिए तुम खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर सात रोज़ तक दिन रात ठहरे रहना, और खुदावन्द के हुक्म को मानना, ताकि तुम मर न जाओ; क्यूंकि ऐसा ही हुक्म मुझको मिला है। 36 तब हास्न और उसके बेटों ने सब काम खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक किया जो उस ने मूसा के जरिए दिया था।

9 आठवें दिन मूसा ने हास्न और उसके बेटों को और बनी — इस्माईल के खुजर्गों को बुलाया और हास्न से कहा कि, 2 "खता की कुर्बानी के लिए एक बे — ऐब बछड़ा और सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बे — ऐब मेंढा तू अपने बास्ते ले और उन को खुदावन्द के सामने पेश कर। 3 और बनी — इस्माईल से कह, कि तुम खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा, और सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, और एक बर्दी जो यकसाला और बे — ऐब हों लो। 4 और सलामती के जबहि के लिए खुदावन्द के सामने चढ़ाने के बास्ते एक बैल और एक मेंढा, और तेल मिली हुई नज़र की कुर्बानी भी लो; क्यूंकि आज खुदावन्द तुम पर जाहिर होगा।" 5 और वह जो कुछ मूसा ने हुक्म किया था सब खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने ले आए, और सारी जमा'अत नज़दीकी आकर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई। 6 मूसा ने कहा, "ये वह काम है जिसके बारे में खुदावन्द ने हुक्म दिया है कि तुम उसे करो, और खुदावन्द का जलाल तुम पर जाहिर होगा।" 7 और मूसा ने हास्न से कहा, कि मजबह के नज़दीक जा और अपनी खता की कुर्बानी और अपनी सोखतनी कुर्बानी पेश कर और अपने लिए और कौम के लिए कफकारा दे, और जमा'अत के हदिये को पेश कर और उनके लिए कफकारा दे जैसा खुदावन्द ने हुक्म किया है। 8 तब हास्न ने मजबह के पास जाकर उस बछड़े को जो उसकी खता की कुर्बानी के लिए था जबह किया। 9 और हास्न के बेटे खन को उसके पास ले गए, और उस ने अपनी उँगली उस में डुबो — डुबो कर उसे मजबह के सींगों पर लगाया और बाकी खन मजबह के पाये पर उँडेल दिया। 10 लेकिन खता की कुर्बानी की चर्ची, और गुर्दों और जिगर पर की झिल्ली को उसने मजबह पर जलाया, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म किया था। 11 और गेश्ट और खाल को लश्करगाह के बाहर आग में जलाया। 12 फिर उसने सोखतनी कुर्बानी के जानवर को जबह किया, और हास्न के बेटों ने खन उसे दिया और उसने उसको मजबह के चारों तरफ छिड़का। 13 और सोखतनी कुर्बानी को एक — एक टुकड़ा कर के, सिर के साथ उसको दिया और उसने उन्हें मजबह पर जलाया। 14 और उनने अंतिडियों और पायों को धोया और उनको मजबह पर सोखतनी कुर्बानी के उपर जलाया। 15 फिर जमा'अत के हदिये को आगे लाकर, और उस बकरे को जो जमा'अत की खता की कुर्बानी के लिए था लेकर उस को जबह किया, और पहले की तरह उसे भी खता के लिए पेश करा। 16 और सोखतनी कुर्बानी के जानवर को आगे लाकर, उसने उसे हुक्म के मुताबिक पेश किया। 17 फिर नज़र की कुर्बानी को आगे लाया, और उसमें से एक मुट्ठी लेकर सुबह की सोखतनी कुर्बानी के 'अलावा उसे जलाया। 18 और उसने बैल और मेंढे को, जो लोगों की तरफ से सलामती के जबहि थे, जबह किया; और हास्न के बेटों ने खन उसे दिया, और उसने उसको मजबह पर चारों तरफ

छिड़का। 19 और उन्होंने बैल की चर्बी को, और मेंटे की मोटी दुम को, और उस चर्बी को जिससे अंतिडॉयू ढकी रहती है, और दोनों गुर्दे, और जिगर पर की डिल्ली को भी उसे दिया; 20 और चर्बी सीनों पर धर दी। तब उन्हें वह चर्बी मजबूत पर जलाई, 21 और सीना और दहनी रान को हास्न ने मूसा के हृक्षम के मुताबिक हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाया। 22 और हास्न ने जमा'अत की तरफ अपने हाथ बढ़ाकर उनको बरकत दी; और खता की कुर्बानी और सोखतनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानी पेश करके नीचे उत्तर आया। 23 और मूसा और हास्न खेमा — ए — इजितमा'अ में दाखिल हुए, और बाहर निकल कर लोगों को बरकत दी; तब सब लोगों पर खुदावन्द का जलाल नम्रदार हआ। 24 और खुदावन्द के सामने से आग निकली और सोखतनी कुर्बानी और चर्बी को मजबूत के ऊपर भस्म कर दिया; लोगों ने यह देख कर नारे मारे और सरनाँ हो गए।

10

और नदब और अबीह ने जो हास्न के बेटे थे, अपने — अपने खुशबूदान को लेकर उनमें आग भरी, और उस पर और ऊपरी आग जिस का हृक्षम खुदावन्द ने उनको नहीं दिया था, खुदावन्द के सामने पेश की। 2 और खुदावन्द के सामने से आग निकली और उन दोनों को खा गई, और वह खुदावन्द के सामने मर गए। 3 तब मूसा ने हास्न से कहा, “यह वही बात है जो खुदावन्द ने कही थी, कि जो मेरे नजदीक आएँ ज़स्त हैं कि वह मुझे पाक जाने, और सब लोगों के आगे मेरी तज्जीद करें।” और हास्न चृप रहा। 4 फिर मूसा ने मीसाएल और अलसफन को जो हास्न के चचा उज्ज़ीएल के बेटे थे, बुला कर उन से कहा, “नजदीक आओ, और अपने भाइयों को हैकल के सामने से उठा कर लश्करगाह के बाहर ले जाओ।” 5 तब वह नजदीक गए, और उन्हें उनके कुर्तों के साथ उठाकर मूसा के हृक्षम के मुताबिक लश्करगाह के बाहर ले गए। 6 और मूसा ने हास्न और उसके बेटों, इस्तीएलियाजर और ऐतामर से कहा, कि न तुम्हारे सिर के बाल बिखरने पाएँ, और न तुम अपने कपड़े फाड़ना, ताकि न तुम ही मरो, और न सारी जमा'अत पर उसका ग़ज़ब नाज़िल हो; लेकिन इस्माइल के सब घराने के लोग जो तुम्हारे भाई हैं, उस आग पर जो खुदावन्द ने लगाई है नोहा करें। 7 और तुम खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे से बाहर न जाना, ता ऐसा न हो कि तुम पर जाओ; क्यौंकि खुदावन्द का मसह करने का तेल तुम पर लगा हुआ है। इसलिए उन्होंने मूसा के कहने के मुताबिक ‘अमल किया। 8 और खुदावन्द ने हास्न से कहा, कि 9 “तू या तेरे बेटे मय या शराब पीकर कभी खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर दाखिल न होना, ताकि तुम मर न जाओ। यह तुम्हारे लिए नसल — दर — नसल हमेशा तक एक कानून रहेगा; 10 ताकि तुम पाक और ‘आम अशिया मैं, और पाक और नापाक मैं तमीज़ कर सको; 11 और बनी — इस्माइल को वह सब तौर — तरीके सिखा सको जो खुदावन्द ने मूसा के जरिएँ उनको फरमाए हैं।” 12 फिर मूसा ने हास्न और उसके बेटों, इस्तीएलियाजर और ऐतामर से जो बाकी रह गए थे कहा, कि “खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से जो नज़र की कुर्बानी बच रही है उसे ले लो, और बौर खमीर के उसको मजबूत के पास खाओ, क्यौंकि यह बहुत पाक है, 13 और तुम उसे किसी पाक जगह में खाना, इसलिए खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से तेरा और तेरे बेटों का यह हक है; क्यौंकि मुझे ऐसा ही हृक्षम मिला है। 14 और हिलाने की कुर्बानी के सीन को, और उठाने की कुर्बानी की रान को तुम लोग यानी तेरे साथ तेरे बेटे और बेटियाँ भी, किसी साफ जगह में खाना; क्यौंकि बनी — इस्माइल की सलामती के जबाहो में से यह तेरा और तेरे बेटों का हक है जो दिया गया है। 15 और उठाने की कुर्बानी की रान और हिलाने की कुर्बानी का सीन, जिसे वह चर्बी की आतिशी कुर्बानियों के साथ लाएँगे, ताकि वह खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाए जाएँ। यह दोनों हमेशा

के लिए खुदावन्द के हृक्षम के मुताबिक तेरा और तेरे बेटों का हक होगा।” 16 फिर मूसा ने खता की कुर्बानी के बकरे को जो बहुत तलाश किया, तो क्या देखता है कि वह जल चुका है। तब वह हास्न के बेटों इस्तीएलियाजर और ऐतामर पर, जो बच रहे थे, नाराज़ हुआ और कहने लगा कि, 17 “खता की कुर्बानी जो बहुत पाक है और जिसे खुदावन्द ने तुम को इसलिए दिया है कि तुम जमा'अत के गुनाह को अपने ऊपर उठा कर खुदावन्द के सामने उनके लिए कफ़कारा दो, तुम ने उसका गोशत हैकल मैं क्यौं न खाया? 18 देखो, उसका खून हैकल मैं तो लाया ही नहीं गया था। पस तम्हें लाजिम था कि मेरे हृक्षम के मुताबिक तुम उसे हैकल मैं खा लेते।” 19 तब हास्न ने मूसा से कहा, “देख, आज ही उन्होंने अपनी खता की कुर्बानी और अपनी सोखतनी कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेश की, और मुझ पर ऐसे — ऐसे हादसे गुज़र गए। तब अगर मैं आज खता की कुर्बानी का गोशत खाता तो क्या यह बात खुदावन्द की नज़र में भली होती?” 20 जब मूसा ने यह सुना तो उसे पसन्द आया।

11

फिर खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा, 2 “तुम बनी — इस्माइल से कहो कि ज़मीन के सब हैवानात मैं से जिन जानवरों को तुम खा सकते हो वह यह है। 3 जानवरों मैं जिनके पाँव अलग और चिरे हुए हैं और वह ज़ुगाली करते हैं, तुम उनको खाओ। 4 मगर जो ज़ुगाली करते हैं या जिनके पाँव अलग हैं, उन मैं से तुम इन जानवरों को न खाना; यानी ऊँट को, क्यौंकि वह ज़ुगाली करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, इसलिए वह तुम्हारे लिए नापाक है। 5 और साकान को, क्यौंकि वह ज़ुगाली करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, वह तुम्हारे लिए नापाक है। 6 और खरगोश को, क्यौंकि वह ज़ुगाली तो करता है लेकिन उसके पाँव अलग नहीं, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है। 7 और सूअर को, क्यौंकि उसके पाँव अलग और चिरे हुए हैं लेकिन वह ज़ुगाली नहीं करता, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है। 8 तुम उनका गोशत न खाना और उन की लाशों को न छाना, वह तुम्हारे लिए नापाक है। 9 “जो जानवर परानी मैं रहते हैं उन मैं से तुम इनको खाना, यानी समन्दरों और दरियाओं वौग़र के जानवरों में, जिनके पर और छिल्के हों तुम उहें खाओ। 10 लेकिन वह सब जानदार जो परानी मैं यानी समन्दरों और दरियाओं वौग़र मैं चलते फिरते और रहते हैं, लेकिन उनके पर और छिल्के नहीं होते, वह तुम्हारे लिए मकर्स्ह ही रहें। तुम उनका गोशत न खाना और उन की लाशों से कराहियत करना। 12 पानी के जिस किसी जानदार के न पर हों और न छिल्के, वह तुम्हारे लिए मकर्स्ह है। 13 “और परिन्दों मैं जो कमर्स्ह होने की वजह से कभी खाए न जाएँ और जिन से तुम्हें कराहियत करना है वो यह है। उकाब और उस्तरब्जान ख्वाब और लगड़, 14 और चील और हर किस्म का बाज, 15 और हर किस्म के कच्चे, 16 और शुतरमुर्ग और चुगाद और कोकिल और हर किस्म के शाहीन, 17 और बूम और हड़पीला और उल्ल, 18 और काज और खावसिल और पिंड, 19 और लकलक और सब किस्म के बग्ले और हूद — हूद, और चम्पागाड़। 20 “और सब परदार रेंगने वाले जानदार जितने चार पाँवों के बल चलते हैं, वह तुम्हारे लिए मकर्स्ह है। 21 मगर परदार रेंगने वाले जानदारों मैं से जो चार पाँव के बल चलते हैं तुम उन जानदारों को खा सकते हो, जिनके ज़मीन के ऊपर कूदने फॉन्दने को पाँव के ऊपर टॅंगे होती हैं, 22 वह जिन्हें तुम खा सकते हो यह है, हर किस्म की टिक्की और हर किस्म का सुली‘अम और हर किस्म का डिगर और हर किस्म का टिक्का। 23 लेकिन सब परदार रेंगने वाले जानदार जिनके चार पाँव हैं, वह तुम्हारे लिए मकर्स्ह है। 24 ‘और इन से तुम नापाक ठहरोगा, जो कोई इन मैं से किसी की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। 25 और जो कोई इन की लाश मैं से कुछ भी उठाए वह अपने कपड़े धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा। 26 और सब चारपाएँ

जिनके पाँव अलग हैं लेकिन वह चिरे हुए नहीं और न वह जुगाली करते हैं, वह तुम्हारे लिए नापाक हैं, जो कोई उन को छुए वह नापाक ठहरेगा। 27 और चार पाँवों पर चलने वाले जानवरों में से जितने अपने पंजों के बल चलते हैं, वह भी तुम्हारे लिए नापाक है। जो कोई उन की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। 28 और जो कोई उन की लाश को उठाए वह अपने कपडे धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा। यह सब तुम्हारे लिए नापाक है। 29 “और जमीन पर के रेंगने वाले जानवरों में से जो तुम्हारे लिए नापाक हैं वह यह है, यानी नेवला और चहा और हर किस्म की बड़ी छिपकली, 30 और हिरजन और गोह और छिपकली और सान्डा और गिरगिट। 31 सब रेंगने वाले जानदारों में से यह तुम्हारे लिए नापाक हैं, जो कोई उनके मरे पीछे उन को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। 32 और जिस चीज पर वह मरे पीछे गिरे वह चीज नापाक होगी, चाहे वह लकड़ी का बर्तन हो या कपड़ा या चमड़ा या बोरा हो, चाहे किसी का कैसा ही बर्तन हो, जस्तर है कि वह पानी में डाला जाए और वह शाम तक नापाक रहेगा, इस के बाद वह पाक ठहरेगा। 33 और अगर इनमें से कोई किसी मिट्टी के बर्तन में गिर जाए तो जो कुछ उस में है वह नापाक होगा, और बर्तन को तुम तोड़ डालना। 34 उसके अन्दर अगर खाने की कोई चीज हो जिस में पानी पड़ा हुआ हो, तो वह भी नापाक ठहरेगी; और अगर ऐसे बर्तन में पीने के लिए कुछ हो तो वह नापाक होगा। 35 और जिस चीज पर उनकी लाश का कोई हिस्सा गिरे, चाहे वह तन्ह हो या चूल्हा, वह नापाक होगी और तोड़ डालनी जाए। ऐसी चीजें नापाक होती हैं और वह तुम्हारे लिए भी नापाक हों, 36 मगर चश्मा या तालाब जिस में बहुत पानी हो वह पाक रहेगा, लेकिन जो कुछ उन की लाश से छू जाए वह नापाक होगा। 37 और अगर उन की लाश का कुछ हिस्सा किसी बोने के बीज पर गिरे तो वह बीज पाक रहेगा; 38 लेकिन अगर बीज पर पानी डाला गया हो और इसके बाद उन की लाश में से कुछ उस पर गिरा हो, तो वह तुम्हारे लिए नापाक होगा। 39 “और जिन जानवरों को तुम खा सकते हो, अगर उन में से कोई पर जाए तो जो कोई उस की लाश को छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। 40 और जो कोई उनकी लाश में से कुछ खाए, वह अपने कपडे धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा; और जो कोई उन की लाश को उठाए, वह अपने कपडे धो डाले और वह शाम तक नापाक रहेगा। 41 “और सब रेंगने वाले जानदार जो जमीन पर रेंगते हैं, मकरस्त हैं और कभी खाए न जाएँ। 42 और जमीन पर के सब रेंगने वाले जानदारों में से, जितने पेट या चार पाँवों के बल चलते हैं या जिनके बहुत से पाँव होते हैं, उनको तुम न खाना क्यूँकि वह मकरस्त हैं। 43 और तुम किसी रेंगने वाले जानदार की बजह से जो जमीन पर रेंगता है, अपने आप को मकरस्त न बना लेना और न उन से अपने आप को नापाक करना के नजिये हो जाओ; 44 क्यूँकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, इसलिए अपने आप को पाक करना और पाप होना क्यूँकि मैं कुदस्त हूँ, इसलिए तुम किसी तरह के रेंगने वाले जानदार से जो जमीन पर चलता है, अपने आप को नापाक न करना; 45 क्यूँकि मैं खुदावन्द हूँ, और तुमको मूल्क — ए — मिसे से इसी लिए निकाल कर लाया हूँ कि मैं तुम्हारा खुदा ठहरूँ। इसलिए तुम पाप होना क्यूँकि मैं कुदस्त हूँ।” 46 हैवानात, और परिनदों, और अबी जानवरों, और जमीन पर के सब रेंगने वाले जानदारों के बारे में शरा’ यही है; 47 ताकि पाप और नापाक में, और जो जानवर खाए जा सकते हैं और जो नहीं खाए जा सकते, उनके बीच इम्तियज किया जाए।

12 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 “बीनी — इस्माइल से कह कि अगर कोई ‘औरत हामिला हो, और उसके लड़का हो तो वह सात दिन तक नापाक रहेगी; जैसे हैजे के दिनों में रहती है। 3 और आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। 4 इसके बाद तैतीस दिन तक वह तहारत के खून में रहे,

और जब तक उसकी तहारत के दिन पौरे न हों तब तक न तो किसी पाक चीज को छुए और न हैकल में दाखिल हो। 5 और अगर उसके लड़की हो तो वह दो हफ्ते तक नापाक रहेगी, जैसे हैजे के दिनों में रहती है। इसके बाद वह छियास ठिन तक तहारत के खून में रहे। 6 ‘और जब उसकी तहारत के दिन पौरे हो जाएँ, तो चाहे उसके बेटा हुआ हो या बेटी, वह सोखतनी कुर्बानी के लिए एक यक — साला बर्बा, और खतना की कुर्बानी के लिए कबूतर का एक बच्चा या एक कुम्ही खेमा — ए — इजितमा’ अ के दरवाजे पर काहिन के पास लाए; 7 और काहिन उसे खुदावन्द के सामने पेश करे और उसके लिए कफ़सारा दे। तब वह अपने जिरयान — ए — खून से पाक ठहरेगी। जिस ‘औरत के लड़का या लड़की हो उसके बारे में शरा’ यह है। 8 और अगर उस की बर्बा लाने का मकदूर न हो तो वह दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे, एक सोखतनी कुर्बानी के लिए और दूसरा खतना की कुर्बानी के लिए लाए। यूँ काहिन उसके लिए कफ़सारा दे तो वह पाक ठहरेगी।”

13 फिर खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा, 2 “अगर किसी के जिसम की जिल्द में वर्म, या पपड़ी, या सफेद चमकता हुआ दागा हो, और उसके जिसम की जिल्द में कोढ़ जैसी बला हो, तो उसे हास्न काहिन के पास या उसके बेटों में से जो काहिन हैं किसी के पास ले जाएँ। 3 और काहिन उसके जिसम की जिल्द की बला को देखे, अगर उस बला की जगह के बाल सफेद हो गए हों और वह बला देखने में खाल से गहरी हो, तो वह कोढ़ का मर्ज है; और काहिन उस शख्स को देख कर उसे नापाक करार दे। 4 और अगर उसके जिसम की जिल्द का चमकता हुआ दागा सफेद तो हो लेकिन खाल से गहरा न दिखाई दे, और न उसके ऊपर के बाल सफेद हो गए हों, तो काहिन उस शख्स को सात दिन तक बन्द रखें; 5 और सातवें दिन काहिन उसे मुलाहिजा करे, और अगर वह बला उसे वही के वही दिखाई दे और जिल्द पर फैल न गई हो, तो काहिन उसे सात दिन और बन्द रखें; 6 और सातवें दिन काहिन उसे मुलाहिजा करे, और अगर देखे कि उस बला की चमक कम है और वह जिल्द के ऊपर फैली भी नहीं है; तो काहिन उसे पाक करार दे क्यूँकि वह पपड़ी है। इसलिए वह अपने कपडे धो डाले और साफ हो जाए। 7 लेकिन अगर काहिन के उस मुलजे के बाद जिस में वह साफ करार दिया गया था, वह पपड़ी उसकी जिल्द पर बहुत फैल जाए, तो वह शख्स काहिन को फिर दिखाया जाएँ; 8 और काहिन उसे मुलाहिजा करे, और अगर देखे कि जिल्द पर सफेद वर्म है और उसने बालों को सफेद कर दिया है, और उस वर्म की जगह का गोशत जिन्दा और कच्चा है, 11 तो यह उसके जिसम की जिल्द में पुराना कोढ़ है, इसलिए काहिन उसे नापाक करार दे लेकिन उसे बन्द न करे क्यूँकि वह नापाक है। 12 और अगर कोढ़ जिल्द में चारों तरफ फूट आए, और जहाँ तक काहिन को दिखाई देता है, यही मालूम हो कि उस की जिल्द सिर से पाँव तक कोढ़ से ढंक गई है; 13 तो काहिन गौर से देखे और अगर उस शख्स का सारा जिस्म कोढ़ से ढंका हुआ निकले, तो काहिन उस मरीज को पाक करार दे, क्यूँकि वह सब सफेद हो गया है और वह पाक है। 14 लेकिन जिस दिन जीता और कच्चा गोशत उस पर दिखाई दे, वह नापाक होगा। 15 और काहिन उस कच्चे गोशत को देख कर उस शख्स को नापाक करार दे, कच्चा गोशत नापाक होता है; वह कोढ़ है। 16 और अगर वह कच्चा गोशत फिर कर सफेद हो जाए, तो वह काहिन के पास जाएँ; 17 और काहिन उसे मुलाहिजा करे, और अगर देखे कि मर्ज की जगह सब सफेद हो गई है तो काहिन मरीज को पाक करार दे; वह पाक है। 18 ‘और

अगर किसी के जिस्म की जिल्ड पर फोड़ा हो कर अच्छा हो जाए, 19 और फोड़े की जगह सफेद वर्म या सुखी माइल चमकता हुआ सफेद दाग हो तो वह दिखाया जाए; 20 और काहिन उसे मुलाहिजा करे, और अगर देखे कि वह खाल से गहरा नजर आता है और उस पर के बाल भी सफेद हो गए हैं, तो काहिन उस शख्स को नापाक करार दे; क्यूंकि वह कोढ़ है जो फोड़ में से फूट कर निकलता है। 21 लेकिन अगर काहिन देखे कि उस पर सफेद बाल नहीं, और वह खाल से गहरा भी नहीं है और उसकी चमक कम है; तो काहिन उसे सात दिन तक बन्द रखें। 22 और अगर वह जिल्ड पर चारों तरफ फैल जाए, तो काहिन उसे नापाक करार दे; क्यूंकि वह कोढ़ की बल्ता है। 23 लेकिन अगर वह चमकता हुआ दाग अपनी जगह पर वहीं का वहीं रहे, और फैल न जाए तो वह फोड़े का दाग है; तब काहिन उस शख्स को पाक करार दे। 24 “या अगर जिस्म की खाल कहीं से जल जाए, और उस जली हुई जगह का जिन्दा गोश्ट एक सुखी माइल चमकता हुआ सफेद दाग या बिल्कुल ही सफेद दाग बन जाए 25 तो काहिन उसे मुलाहिजा करे, और अगर देखे कि उस चमकते हुए दाग के बाल सफेद हो गए हैं और वह खाल से गहरा दिखाई देता है; तो वह कोढ़ है जो उस जल जाने से पैदा हुआ है; और काहिन उस शख्स को नापाक करार दे क्यूंकि उसे कोढ़ की बीमारी है। 26 लेकिन अगर काहिन देखे कि उस चमकते हुए दाग पर सफेद बाल नहीं, और न वह खाल से गहरा है बल्कि उसकी चमक भी कम है, तो वह उसे सात दिन तक बन्द रखें; 27 और सातवें दिन काहिन उसे देखे, अगर वह जिल्ड पर बहुत फैल गया हो तो काहिन उस शख्स को नापाक करार दे; क्यूंकि उसे कोढ़ की बीमारी है। 28 और अगर वह चमकता हुआ दाग अपनी जगह पर वहीं का वहीं रहे और जिल्ड पर फैला हुआ न हो, बल्कि उसकी चमक भी कम हो, तो वह सिर्फ़ जल जाने की बजह से फूला हुआ है; और काहिन उस शख्स को पाक करार दे क्यूंकि वह दाग जल जाने की बजह से है। 29 “अगर किसी मर्द या ‘औरत के सिर या ठोड़ी में दाग हो, 30 तो काहिन उस दाग को मुलाहिजा करे और अगर देखे कि वह खाल से गहरा मालूम होता है और उस पर जर्द — जर्द बारीक रोगे हैं तों काहिन उस शख्स को नापाक करार दे क्यूंकि वह सा’फा है जो सिर या ठोड़ी का कोढ़ है। 31 और अगर काहिन देखे कि वह सा’फा की बला खाल से गहरी नहीं मालूम होती है और उस पर स्याह बाल नहीं है, तो काहिन उस शख्स को जिसे सा’फा का मर्ज़ है, सात दिन तक बन्द रखें; 32 और सातवें दिन काहिन उस बला का मुलाहिजा करे और अगर देखे कि सा’फा फैला नहीं और उस पर कोई जर्द बाल भी नहीं और सा’फा खाल से गहरा नहीं मालूम होता; 33 तो उस शख्स के बाल मैंडे जाएं, लेकिन जर्हीं सा’फा हो वह जगह न मैंडी जाए। और काहिन उस शख्स को जिसे सा’फा का मर्ज़ है, सात दिन और बन्द रखें। 34 फिर सातवें रोज़ काहिन सा’फे का मुलाहिजा करे, और अगर देखे कि सा’फा जिल्ड में फैला नहीं और न वह खाल से गहरा दिखाई देता है तो काहिन उस शख्स को पाक करार दे; और वह अपने कपड़े धोएं और साफ़ हो जाए। 35 लेकिन अगर उस की सफाई के बाद सा’फा उसकी जिल्ड पर बहुत फैल जाए तो काहिन उसे देखे, 36 और अगर सा’फा उसकी जिल्ड पर फैला हुआ नजर आए तो काहिन जर्द बाल को न ढूँढ़े क्यूंकि वह शख्स नापाक है। 37 लेकिन अगर उस को सा’फा अपनी जगह पर वहीं का वहीं दिखाई दे और उस पर स्याह बाल निकले हुए हों, तो सा’फा अच्छा हो गया; वह शख्स पाक है और काहिन उसे पाक करार दे। 38 और अगर किसी मर्द या ‘औरत के जिस्म की जिल्ड में चमकते हुए दाग या सफेद चमकते हुए दाग हों, 39 तो काहिन देखे, और अगर उनके जिस्म की जिल्ड के दाग स्याही माइल सफेद रंग के हों, तो वह छीप है जो जिल्ड में फूट निकलती है; वह शख्स पाक है। 40 ‘और जिस शख्स के सिर के बाल पिर गए हों, वह गंजा तो है मगर पाक है। 41 और जिस शख्स के सर के बाल पेशानी की तरफ से पिर गए हों, वह चँदूला तो है मगर पाक है। 42 लेकिन उस गंजे या चँदूले सिर पर सुखी माइल सफेद दाग हों, तो यह कोढ़ है जो उसके गंजे या चँदूले सिर पर निकला है; 43 इसलिए काहिन उसे मुलाहिजा करे, और अगर वह देखे कि उसके गंजे या चँदूले सिर पर वह दाग ऐसा सुखी माइल सफेद रंग लिए हुए हैं, जैसा जिल्ड के कोढ़ में होता है, 44 तो वह आदमी कोढ़ी है, वह नापाक है और काहिन उसे ज़रूर ही नापाक करार दे क्यूंकि वह मर्ज़ उसके सिर पर है। 45 और जो कोढ़ी इस बला में मुब्लिला हो, उसके कपड़े फटे और उसके सिर के बाल बिखेरे रहें, और वह अपने ऊपर के हॉट को ढैंके और चिल्ला — चिल्ला कर कर्दे, नापाक, नापाक। 46 जितने दिनों तक वह इस बला में मुब्लिला रहे, वह नापाक रहेगा और वह है भी नापाक। तब वह अकेला रहा करे, उसका मकान लश्करगाह के बाहर हो। 47 ‘और वह कपड़ा भी जिस में कोढ़ की बला हो, चाहे वह ऊन का हो या कतान का; 48 और वह बला भी चाहे कतान या ऊन के कपड़े के ताने में या उसके बाने में हो, या वह चमड़े में हो या चमड़े की बनी हुई किसी चीज़ में हो; 49 अगर वह बला कपड़े में या चमड़े में, कपड़े के ताने में या बाने में या चमड़े की किसी चीज़ में सब्जी माइल या सुखी माइल रंग की हो, तो वह कोढ़ की बला है और काहिन को दिखाई जाए। 50 और काहिन उस बला को देखे, और उस चीज़ को जिस में वह बला है सात दिन तक बन्द रखें; 51 और सातवें दिन उस को देखें। अगर वह बला कपड़े के ताने में या बाने में, या चमड़े पर या चमड़े की बनी हुई किसी चीज़ पर फैल गई हो, तो वह खा जाने वाला कोढ़ है और नापाक है। 52 और उस ऊन या कतान के कपड़े को जिसके ताने में या बाने में वह बला है, या चमड़े की ऊस चीज़ को जिस में वह है जला दे; क्यूंकि यह खा जाने वाला कोढ़ है। वह आग में जलाया जाए। 53 “और अगर काहिन देखे, कि वह बला कपड़े के ताने में या बाने में, या चमड़े की किसी चीज़ में फैली हुई नजर नहीं आती, 54 तो काहिन हुक्म करे कि उस चीज़ को जिस में वह बला है धोएँ, और वह फिर उसे और सात दिन तक बन्द रखें; 55 और उस बला के धोए जाने के बाद काहिन फिर उसे मुलाहिजा करे, और अगर देखे कि उस बला का रंग नहीं बदला और वह फैली भी नहीं है, तो वह नापाक है। त उस कपड़े को आग में जला देना; क्यूंकि वह खा जाने वाली बला है, चाहे उस का फ़साद अन्दरूनी हो या बैस्ती। 56 और अगर काहिन देखे कि धोने के बाद उस बला की चमक कम हो गई है, तो वह उस कपड़े से या चमड़े से, ताने या बाने से, फाड़ कर निकाल फेंके। 57 और अगर वह बला फिर भी कपड़े के ताने या बाने में या चमड़े की चीज़ में दिखाई दे, तो वह फूटकर निकल रही है। तब तु उस चीज़ को जिस में वह बला है आग में जला देना। 58 और अगर उस कपड़े के ताने या बाने में से, या चमड़े की चीज़ में से, जिसे तूने धोया है, वह बला जाती रहे तो वह चीज़ दोबारा धोई जाए और वह पाक ठहरेगी।” 59 ऊन या कतान के ताने या बाने में, या चमड़े की किसी चीज़ में अगर कोढ़ की बला हो, तो उसे पाक या नापाक करार देने केलिए शरा’यही है।

14 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 ‘कोढ़ी के लिए जिस दिन वह पाक करार दिया जाए यह शरा’ है, कि उसे काहिन के पास ले जाएँ, 3 और काहिन लश्करगाह के बाहर जाएँ, और काहिन खुद कोढ़ी को मुलाहिजा करे और अगर देखे कि उसका कोढ़ अच्छा हो गया है, 4 तो काहिन हुक्म दे कि वह जो पाक करार दिए जाने को है, उसके लिए दो जिन्दा पाक परिन्दे और देवदार की लकड़ी और सर्खी कपड़ा और ज़फ़ा लें। 5 और काहिन हुक्म दे कि उनमें से एक परिन्दा किसी मिट्टी के बर्तन में बहते हुए पानी के ऊपर ज़बह किया जाए। 6 फिर वह जिन्दा परिन्दे को और देवदार की लकड़ी और सर्खी

कपड़े और जूफ़े को ले, और इन को और उस ज़िन्दा परिन्दे को उस परिन्दे के ख़ुत मैं पानी दे जो बहते पानी पर ज़बह हो चुका है। 7 और उस शब्द पर जो कोढ़ से पाक करार दिया जाने को है, सात बार छिड़क कर उसे पाक करार दे और ज़िन्दा परिन्दे को ख़ुले मैदान में छोड़ दे। 8 और वह जो पाक करार दिया जाएगा अपने कपड़े धोए और सारे बाल मुन्डाए, और पानी में गुस्सा करे, तब वह पाक ठहरेगा; इसके बाद वह लश्करगाह में आए, लेकिन सात दिन तक अपने ख़ुमे के बाहर ही रहे। 9 और सातवें रोज़ अपने सिर के सब बाल और अपनी दाढ़ी और अपने अबू-ग़ज़ अपने सारे बाल मुन्डाए, और अपने कपड़े धोए और पानी में नहाए, तब वह पाक ठहरेगा। 10 और वह आठवें दिन दो बे — 'ऐ नर बर्री और एक बे — 'ऐ बक — साला मादा बर्री और नन्हा की कुर्बानी के लिए ऐफ़ा के तीन दहाई विस्से के बराबर तेल मिला हुआ मैदा और लोज भर तेल ले। 11 तब वह काहिन जो उसे पाक करार देगा, उस शब्द को जो पाक करार दिया जाएगा और इन चीजों को खुदावन्द के सामने खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर हाजिर करे। 12 और काहिन नर बर्री में से एक को लेकर ज़ुर्म की कुर्बानी के लिए उसे और उस लोज भर तेल की नज़दीक लाए, और उनको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए; 13 और उस बर्बे को हैकल में उस ज़गह ज़बह करे जहाँ ख़ता की कुर्बानी और सोख्तनी कुर्बानी के जानवर ज़बह किए जाते हैं, क्यूंकि ज़ुर्म की कुर्बानी ख़ता की कुर्बानी की तरह काहिन का हिस्सा ठहरेगी; वह बहत पाक है। 14 और काहिन ज़ुर्म की कुर्बानी का कुछ ख़न ले और जो शब्द पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अँगठे पर और दहने पाँव के अँगठे पर उसे लगाए, 15 और काहिन उस लोज भर तेल में से कुछ लेकर अपने बाएँ हाथ की हथेली में डाले; 16 और काहिन अपनी दहनी उँगली को अपने बाएँ हाथ के तेल में डुबोए, और खुदावन्द के सामने कुछ तेल सात बाल अपनी उँगली से छिड़के। 17 और काहिन अपने हाथ के बाकी तेल में से कुछ ले और जो शब्द पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ के अँगठे और दहने पांव के अँगठे पर, ज़ुर्म की कुर्बानी के ख़न के ऊपर लगाए। 18 और जो तेल काहिन के हाथ में बाकी बचे उसे वह उस शब्द के सिर में डाल दे जो पाक करार दिया जाएगा, यूँ काहिन उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़कारा दे। 19 और काहिन ख़ता की कुर्बानी भी पेश करे, और उसके लिए जो अपनी नापाकी से पाक करार दिया जाएगा कफ़कारा दे; इसके बाद वह सोख्तनी कुर्बानी के जानवर को ज़बह करे। 20 फिर काहिन सोख्तनी कुर्बानी और नन्हा की कुर्बानी को मज़बह पर अदा करे। यूँ काहिन उसके लिए कफ़कारा दे तो वह पाक ठहरेगा। 21 “और अगर वह गरीब हो और इतना उसे मक़दूर न हो तो वह हिलाने के लिए ज़ुर्म की कुर्बानी के लिए एक नर बर्बा ले ताकि उसके लिए कफ़कारा दिया जाए और नन्हा की कुर्बानी के लिए ऐफ़ा के दसवें विस्से के बराबर तेल मिला हुआ मैदा और लोज भर तेल, 22 और अपने मक़दूर के मुताबिक दो कुर्मायाँ या कबूतर के दो बच्चे भी ले, जिन में से एक तो ख़ता की कुर्बानी के लिए और दूसरा सोख्तनी कुर्बानी के लिए हो। 23 इहें वह आठवें दिन अपने पाक करार दिए जाने के लिए काहिन के पास खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर खुदावन्द के सामने लाए। 24 और काहिन ज़ुर्म की कुर्बानी के बर्बे को और उस लोज भर तेल को लेकर उनको खुदावन्द के सामने हिलाने की कुर्बानी के तौर पर हिलाए। 25 फिर काहिन ज़ुर्म की कुर्बानी के बर्बे को ज़बह करे, और वह ज़ुर्म की कुर्बानी का कुछ ख़न लेकर जो शब्द पाक करार दिया जाएगा, उसके दहने कान की लौ पर और दहने हाथ के अँगठे और दहने पाँव के अँगठे पर उसे लगाए। 26 फिर काहिन उस तेल में से कुछ अपने बाएँ हाथ की हथेली में डाले, 27 और वह अपने बाएँ हाथ के तेल में से कुछ

अपनी दहनी उँगली से खुदावन्द के सामने सात बार छिड़के। 28 फिर काहिन कुछ अपने हाथ के तेल में से ते ले, और जो शब्द पाक करार दिया जाएगा उसके दहने कान की लौ पर और उसके दहने हाथ के अँगठे और दहने पाँव के अँगठे पर, ज़ुर्म की कुर्बानी के ख़न की जगह उसे लगाए; 29 और जो तेल काहिन के हाथ में बाकी बचे उसे वह उस शब्द के सिर में डाल दे जो पाक करार दिया जाएगा, ताकि उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़कारा दिया जाए। 30 फिर वह कुर्मायाँ या कबूतर के बच्चों में से जिन्हें वह ला सका हो एक को अदा करे, 31 यानी जो कुछ उसे मयस्सर हुआ हो उस में से एक को ख़ता की कुर्बानी के तौर पर और दूसरे को सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर, नन्ही की कुर्बानी के साथ पेश करे। यूँ काहिन उस शब्द के लिए जो पाक करार दिया जाएगा, खुदावन्द के सामने कफ़कारा दे। 32 उस कोटी के लिए जो अपने पाक करार दिए जाने के सामान को लाने का मक़दूर न रखता हो शरा' यह है।” 33 फिर खुदावन्द ने मसा और हास्न से कहा, 34 “जब तम मुल्क — ए — कनान में जिसे मैं तुम्हारी मिलिक्यत किए देता हूँ दाखिल हो, और मैं तुम्हारे मीरासी मुल्क के किसी धर में कोढ़ की बला भेजूँ। 35 तो उस घर का मालिक जाकर काहिन को खुबर दे कि मुझे ऐसा मालूम होता है कि उस घर में कुछ बला सी है। 36 तब काहिन हुक्म करे कि इससे पहले कि उस बला को देखने के लिए काहिन वहाँ जाए लोग उस घर को खाली करें, ताकि जो कुछ घर में हो वह नापाक न ठहराया जाए। इसके बाद काहिन घर देखने को अन्दर जाए। 37 और उस बला को मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि वह बला उस घर की दीवारों में सब्जी या सुखी माइल गहरी लकरीरों की सूक्त में है, और दीवार में सतह के अन्दर नज़र आती है, 38 तो काहिन घर से बाहर निकल कर घर के दरवाजे पर जाए और घर को सात दिन के लिए बन्द कर दे; 39 और वह सातवें दिन फिर आकर उसे देखे। अगर वह बला घर की दीवारों में फैली हुई नज़र आए, 40 तो काहिन हुक्म दे कि उन पत्थरों को जिन में वह बला है, निकालकर उन्हें शहर के बाहर किसी नापाक ज़बह में फेंक दें। 41 फिर वह उस घर को अन्दर ही अन्दर चारों तरफ से खुर्चवाएँ, और उस खुची हुई मिट्टी को शहर के बाहर किसी नापाक ज़बह में डालें। 42 और वह उन पत्थरों की ज़गह और पत्थर लेकर लगाएँ और काहिन ताजा गोरे से उस घर की अस्तरकारी कराए। 43 और अगर पत्थरों के निकाले जाने और उस घर के खुर्च और अस्तरकारी कराए जाने के बाद भी वह बला फिर आ जाए और उस घर में फैट निकले, 44 तो काहिन अन्दर जाकर मुलाहिज़ा करे, और अगर देखे कि वह बला घर में फैल गई है तो उस घर में खा जाने वाला कोढ़ है, वह नापाक है। 45 तब वह उस घर को, उसके पत्थरों और लकड़ियों और उसकी सारी मिट्टी को गिरा दे; और वह उनको शहर के बाहर निकाल कर किसी नापाक ज़बह में ले जाए। 46 इसके सिवा, अगर कोई उस घर के बन्द कर दिए जाने के दिनों में उसके अन्दर दाखिल हो तो वह शाम तक नापाक रहेगा; 47 और जो कोई उस घर में सोए वह अपने कपड़े धो डाले, और जो कोई उस घर में कुछ खाए वह भी अपने कपड़े धोए। 48 “और अगर काहिन अन्दर जाकर मुलाहिज़ा करे और देखे कि घर की अस्तरकारी के बाद वह बला उस घर में नहीं फैली, तो वह उस घर को पाक करार दे क्यूंकि वह बला दूर हो गई। 49 और वह उस घर को पाक करार देने के लिए दो परिन्दों में से एक को मिट्टी के किसी बर्तन में बहते हुए पानी पर ज़बह करे; 51 फिर वह देवदार की लकड़ी और ज़ूफ़ा और सुखी कपड़े और उस ज़िन्दा परिन्दे को लेकर उनको उस ज़बह किए हुए परिन्दे के ख़न में और उस बहते हुए पानी में गोता दे, और सात बार उस घर पर छिड़के। 52 और वह उस परिन्दे के ख़न से, और बहते हुए पानी और ज़िन्दा परिन्दे और देवदार की

लकड़ी और जूफे और सुर्ख कपड़े से उस घर को पाक करे; 53 और उस जिन्दा परिन्दे को शहर के बाहर खुले मैदान में छोड़ दे; यूँ वह घर के लिए कफ़कारा दे, तो वह पाक ठहरेगा।" 54 कोढ़ की हर किस्म की बला के, और साके के लिए, 55 और कपड़े और घर के कोढ़ के लिए, 56 और वर्म और पपड़ी, और चमकते हुए दाग के लिए शरा' यह है; 57 ताकि बताया जाए कि कब वह नापाक और कब पाक करार दिए जाएँ। कोढ़ के लिए शरा' यही है।

15 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा कि; 2 "बनी — इसाईल से

कहो कि अगर किसी शब्स की जिरयान का मर्ज हो तो वह जिरयान की वजह से नापाक है; 3 और जिरयान की वजह से उसकी नापाकी यूँ होगी, कि चाहे धात बहती हो या धात का बहाना खत्म हो गया हो वह नापाक है। 4 जिस बिस्तर पर जिरयान का मरीज़ सोए वह बिस्तर नापाक होगा, और जिस चीज़ पर वह बैठे वह चीज़ नापाक होगा। 5 और जो कोई उसके बिस्तर को छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापाक रहे। 6 और जो कोई उस चीज़ पर बैठे जिस पर जिरयान का मरीज़ बैठा हो, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापाक रहे। 7 और जो कोई जिरयान के मरीज़ के जिस्म को छुए, वह भी अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापाक रहे। 8 और अगर जिरयान का मरीज़ किसी शब्स पर जो पाक है। थक दे, तो वह शब्स अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापाक रहे। 9 और जिस ज़ीन पर जिरयान का मरीज़ सवार हो, वह ज़ीन नापाक होगा। 10 और जो कोई किसी चीज़ को जो उस मरीज़ के नीचे रही हो छुए, वह शाम तक नापाक रहे; और जो कोई उन चीजों को उठाए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापाक रहे। 11 और जिस शब्स की जिरयान का मरीज़ बैग्र हाथ धोए छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापाक रहे। 12 और मिट्टी के जिस बर्तन को जिरयान का मरीज़ छुए, वह तोड़ डाला जाए, लेकिन चोबी बर्तन पानी से धोया जाए। 13 'और जब जिरयान के मरीज़ को शिफा हो जाए, तो वह अपने पाक ठहरने के लिए सात दिन गिने; इस के बाद वह अपने कपड़े धोए और बहते हुए पानी में नहाए तब वह पाक होगा। 14 और आठवें दिन दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लेकर वह खुदावन्द के सामने खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर जाए, और उन को काहिन के हवाले करे; 15 और काहिन एक को खता की कुर्बानी के लिए, और दूसरे को सोखतनी कुर्बानी के लिए पेश करे। यूँ काहिन उसके नापाक खन के जिरयान के लिए खुदावन्द के सामने उस की तरफ से कफ़कारा दे। 16 'और अगर किसी मर्द की धात बहती हो, तो वह पानी में नहाए और शाम तक नापाक रहे। 17 और जिस कपड़े या चमड़े पर नुक्फा लग जाए, वह कपड़ा या चमड़ा पानी से धोया जाए और शाम तक नापाक रहे। 18 और वह 'औरत भी जिसके साथ मर्द सुहबत करे और मुन्जिल हो, तो वह दोनों पानी से गुस्त करें और शाम तक नापाक रहे। 19 'और अगर किसी 'औरत को ऐसा जिरयान हो कि उसे हैज़ का खन आए, तो वह सात दिन तक नापाक रहेगी, और जो कोई उसे छुए वह शाम तक नापाक रहेगा। 20 और जिस चीज़ पर वह अपनी नापाकी की हालत में सोए वह चीज़ नापाक होगी, और जिस चीज़ पर वह भी नापाक हो जाएगी। 21 और जो कोई उसके बिस्तर को छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापाक रहे। 22 और जो कोई उस चीज़ को जिस पर वह बैठी हो छुए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए और शाम तक नापाक रहे। 23 और अगर उसका खन उसके बिस्तर पर या जिस चीज़ पर वह बैठी हो उस पर लगा हुआ हो और उस बक्त कोई उस चीज़ को छुए, तो वह शाम तक नापाक रहे। 24 और अगर मर्द उसके साथ सुहबत करे और उसके हैज़ का खन उसे लग जाए, तो वह सात दिन

तक नापाक रहेगा और हर एक बिस्तर जिस पर वह मर्द सोएगा नापाक होगा। 25 'और अगर किसी 'औरत को हैज़ के दिन को छोड़कर यूँ बहुत दिनों में खन आए या हैज़ की मुढ़त गुजर जाने पर भी खन जारी रहे, तो जब तक उस को यह मैला खन आता रहेगा तब तक वह ऐसी ही रहेगी जैसी हैज़ के दिनों में रहती है, वह नापाक है। 26 और इस जिरयान — ए — खन के कुल दिनों में जिस — जिस बिस्तर पर वह सोएगी, वह हैज़ के बिस्तर की तरह नापाक होगा; और जिस — जिस चीज़ पर वह बैठेगी, वह चीज़ हैज़ की नजासत की तरह नापाक होगी। 27 और जो कोई उन चीजों को छुए वह नापाक होगा, वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापाक रहे। 28 और जब वह अपने जिरयान से शिफा पा जाए तो सात दिन गिने, तब इसके बाद वह पाक रहेगी। 29 और आठवें दिन वह दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे लेकर उनको खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर काहिन के पास लाए। 30 और काहिन एक को खता की कुर्बानी के लिए और दूसरे को सोखतनी कुर्बानी के लिए पेश करे, यूँ काहिन उसके नापाक खन के जिरयान के लिए खुदावन्द के सामने उस की तरफ से कफ़कारा दे। 31 "इस तरीके से तुम बनी — इसाईल को उन की नजासत से अलग रखना, ताकि वह मेरे हैकल की जो उनके बीच है नापाक करने की वजह से अपनी नजासत में हलाक न हों।" 32 उसके लिए जिसे जिरयान का मर्ज हो, और उसके लिए जिस की धात बहती हो, और वह उसकी वजह से नापाक हो जाए, 33 और उनके लिए जो हैज़ से हो, और उस मर्द और 'औरत के लिए जिनको जिरयान का मर्ज हो, और उस मर्द के लिए जो नापाक 'औरत के साथ सुहबत करे शरा' यही है।

16 और हास्न के दो बेटों की फ़कात के बाद जब वह खुदावन्द के नजदीक

आए और मर गए। 2 खुदावन्द मूसा से हम कलाम हुआ; और खुदावन्द ने मूसा से कहा, अपने भाई हास्न से कह कि वह हर बक्तर पर्दे के अन्दर के पाकतीन मकाम में सरपेश के पास जो सन्दूक के ऊपर है न आया करे, ताकि वह मर न जाए; क्यूँकि मैं सरपेश पर बादल में दिखाई दूँगा। 3 और हास्न पाकतीन मकाम में इस तरह आए कि खता की कुर्बानी के लिए एक बछड़ा और सोखतनी कुर्बानी के लिए एक मेंढा लाए। 4 और वह कतान का पाक कुरता पहने, और उसके तर पर कतान का पाजामा हो, और कतान के कमरबन्द से उसकी कमर करी हुई हो, और कतान ही का 'अमामा उसके सिर पर बैधा हो; यह पाक लिबास है और वह इन को पानी से नहा कर पहने 5 और बनी — इसाईल की जमा'अत से खता की कुर्बानी के लिए दो बकरे और सोखतनी कुर्बानी के लिए एक मेंढा ले। 6 और हास्न खता की कुर्बानी के बछड़े को जो उसकी तरफ से है पेश कर अपने घर के लिए कफ़कारा दे। 7 फिर उन दोनों बकरों को लेकर उन को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर खुदावन्द के सामने खड़ा करे। 8 और हास्न उन दोनों बकरों पर चिठ्ठियाँ डाले, एक चिठ्ठी खुदावन्द के लिए और दूसरी 'अज़ाज़ेल के लिए हो। 9 और जिस बकरे पर खुदावन्द के नाम की चिठ्ठी निकले उसे हास्न लेकर खता की कुर्बानी के लिए अदा करे; 10 लेकिन जिस बकरे पर 'अज़ाज़ेल के नाम की चिठ्ठी निकले वह खुदावन्द के सामने जिन्दा खड़ा किया जाए, ताकि उससे कफ़कारा दिया जाए और वह 'अज़ाज़ेल के लिए बीनों में छोड़ दिया जाए। 11 "और हास्न खता की कुर्बानी के बछड़े की जो उस की तरफ से है, आगे लाकर अपने और अपने घर के लिए कफ़कारा दे, और उस बछड़े को जो उस की तरफ से खता की कुर्बानी के लिए है ज़बह करे। 12 और वह एक खुशबूदान को ले जिसमें खुदावन्द के मजबूत पर की आग के अंगरे भर हों और अपनी मुष्टियाँ बारीक खुशबूदान खुशबू से भर ले और उसे पर्दे के अन्दर लाए। 13 और उस खुशबू को खुदावन्द के सामने आग में डाले, ताकि खुशबू का धुर्हाँ सरपेश

को जो शहादत के सन्दूक के ऊपर है छिपा ले, कि वह हलाक न हो। 14 फिर वह उस बछड़े का कुछ खन लेकर उसे अपनी उँगली से पूब की तरफ सरपोश के ऊपर छिड़के, और सरपोश के आगे भी कुछ खन अपनी उँगली से सात बार छिड़के। 15 फिर वह खन की कुर्बानी के उस बकरे को जबह करे जो जमा'अत की तरफ से है और उसके खन को पर्दे के अन्दर लाकर जो कुछ उसने बछड़े के खन से किया था वही इससे भी करे, और उसे सरपोश के ऊपर और उसके सामने छिड़के। 16 और बनी — इसाईल की सारी नापाकियों, और गुनाहों, और खताओं की वजह से पाकतरीन मकाम के लिए कफ़फ़ारा दे; और ऐसा ही वह खेमा — ए — इजितमा'अ के लिए भी करे जो उनके साथ उन की नापाकियों के बीच रहता है। 17 और जब वह कफ़फ़ारा देने को पाकतरीन मकाम के अन्दर जाए, तो जब तक वह अपने और अपने घराने और बनी — इसाईल की सारी जमा'अत के लिए कफ़फ़ारा देकर बाहर न आ जाए उस वक्त तक कोई आदमी खेमा — ए — इजितमा'अ के अन्दर न रहे 18 फिर वह निकल कर उस मज़बह के पास जो खुदावन्द के सामने है जाए और उसके लिए कफ़फ़ारा दे, और उस बछड़े और बकरे का थोड़ा — थोड़ा सा खन लेकर मज़बह के सींगों पर चारों तरफ लगाए; 19 और कुछ खन उसके ऊपर सात बार अपनी उँगली से छिड़के और उसे बनी — इसाईल की नापाकियों से पाक और पाक करे। 20 और जब वह पाकतरीन मकाम और खेमा — ए — इजितमा'अ और मज़बह के लिए कफ़फ़ारा दे चुके तो उस जिन्दा बकरे को आगे लाए; 21 और हास्त अपने दोनों हाथ उस जिन्दा बकरे के सिर पर रख कर उसके ऊपर बनी — इसाईल की सब बदकारियों, और उनके सब गुनाहों, और खताओं को इकरार करे और उन को उस बकरे के सिर पर धर कर उसे किसी शख्स के हाथ जो इस काम के लिए तैयार ही बीराम में भिजवा दे। 22 और वह बकरा उनकी सब बदकारियाँ अपने ऊपर लादे हुए किसी बीराम में ले जाएं, इसलिए वह उस बकरे को बीराम में छोड़े दे। 23 “फिर हास्त खेमा — ए — इजितमा'अ में आकर कतान के सारे लिबास को जिसे उसने पाकतरीन मकाम में जाते वक्त पहना था उतारे और उसकी वही रहने दे। 24 फिर वह किसी पाक जगह में पानी से गुस्त करके अपने कपड़े पहन ले, और बाहर आ कर अपनी सोखलनी कुर्बानी और जमा'त की सोखलनी कुर्बानी पेश करे और और अपने लिए और जमा'अत के लिए कफ़फ़ारा दे। 25 और खता की कुर्बानी की चर्ची को मज़बह पर जलाए। 26 और जो आदमी बकरे को 'अज़ाजेल के लिए छोड़ कर आए, वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए, इसके बाद वह लश्करगाह में दाखिल हो। 27 और खता की कुर्बानी के बछड़े को और खता की कुर्बानी के बकरे को जिन का खन पाकतरीन मकाम में कफ़फ़रों के लिए पहुँचाया जाए, उन को वह लश्करगाह से बाहर ले जाएं, और उनकी खाल और गोश्त और फुज़लात को आग में जलाएँ। 28 और जो उन को जलाएँ वह अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे, उसके बाद वह लश्करगाह में दाखिल हो। 29 “और यह तुम्हरे लिए एक हमेशा का कानून हो कि सातवें महीने की दसवीं तारीख को तुम अपनी अपनी जान को दुख देना, और उस दिन कोई चाहे वह देसी हो या परदेसी जो तुम्हरे बीच बद — ओ — बाश रखता हो किसी तरह का काम न करें; 30 क्यूँकि उस रोज तुम्हारे लिए तुम को पाक करने के लिए कफ़फ़ारा दिया जाएगा, इसलिए तुम अपने सब गुनाहों से खुदावन्द के सामने पाक ठहरोगे। 31 यह तुम्हरे लिए खास अराम का सबत होगा। तुम उस दिन अपनी अपनी जान को दुख देना; यह हमेशा का क़ानून है। 32 और जो अपने बाप की जगह काहिन होने के लिए मसह और मख्सूस किया जाए वह काहिन कफ़फ़ारा दिया करें; यानी कतान के पाक लिबास को पहनकर 33 वह हैकैल के लिए कफ़फ़ारा दे, और खेमा — ए — इजितमा'अ और मज़बह के लिए

कफ़फ़ारा दे, और काहिनों और जमा'अत के सब लोगों के लिए कफ़फ़ारा दे। 34 इसलिए यह तुम्हारे लिए एक हमेशा कानून हो कि तुम बनी — इसाईल के लिए साल में एक दफ़ा' उनके सब गुनाहों का कफ़फ़ारा दो।” और उसने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हक्म दिया था वैसा ही किया।

17 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 'हास्त और उसके बेटों से और सब

बनी — इसाईल से कह कि खुदावन्द ने यह हक्म दिया है कि 3 इसाईल के घराने का जो कोई शख्स बैल या बर्दे या बकरे को चाहे लश्करगाह में या लश्करगाह के बाहर जबह कर के 4 उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर, खुदावन्द के घर के आगे, खुदावन्द के सामने चढ़ाने को न ले जाए, उस शख्स पर खन का इल्जाम होगा कि उसने खन किया है, और वह शख्स अपने लोगों में से काट डाला जाए। 5 इससे मक्कद यह है कि बनी — इसाईल अपनी कुर्बानियाँ, जिनको वह खुले मैदान में जबह करते हैं, उन्हें खुदावन्द के सामने खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर काहिन के पास लाएं और उनको खुदावन्द के सामने सलामती के जबीहों के तौर पर पेश करें, 6 और काहिन उस खन को खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर खुदावन्द के मज़बह के ऊपर छिड़के और चर्ची को जलाए, ताकि खुदावन्द के लिए राहतअंग खुशबू हो। 7 और आइन्दा कभी वह उन बकरों के लिए जिनके पैरौ होकर वह ज़िनाकार ठहरे हैं, अपनी कुर्बानियाँ न पेश करें। उनके लिए नसल — दर — नसल यह हमेशा कानून होगा। 8 “इसलिए तुम से कह दे कि इसाईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो उनमें क़याम करते हैं जो कोई सोखलनी कुर्बानी या कोई जबीहा पेश कर, 9 उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर खुदावन्द के सामने चढ़ाने को न लाए; वह अपने लोगों में से काट डाला जाए। 10 “और इसाईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो उनमें क़याम करते हैं जो कोई जबीहा पर तुहारी जानों के लिए कफ़फ़ारा हो; क्यूँकि जान रखने ही की वजह से खन कफ़फ़ारा देता है। 12 इसलिए मैंने बनी — इसाईल से कहा है कि तुम में से कोई शख्स खन कभी न खाए, और न कोई परदेसी जो तुम में क़याम करता हो कभी खन को खाए। 13 “और बनी — इसाईल में से या उन परदेसियों में से जो उनमें क़याम करते हैं जो कोई शिकार में ऐसे जानवर या परिन्दे को पकड़े जिसका खाना ठीक है, तो वह उसके खन को निकाल कर उसे मिट्टी से ढाँक दे। 14 क्यूँकि जिसम की जान जो है वह उस का खन है, जो उसकी जान के साथ एक है। इसलिए मैंने बनी — इसाईल को हक्म किया है कि तुम किसी किस्म के जानवर का खन न खाना, क्यूँकि हर जानवर की जान उसका खन ही है; जो कोई उसे खाए वह काट डाला जाएगा। 15 और जो शख्स मुरदार को या दरिन्दे के फाड़े हुए जानवर को खाए, वह चाहे देसी हो या परदेसी अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे और शाम तक नापक रहे, तब वह पाक होगा। 16 लेकिन अगर वह उनको न धोए और न गुस्त करे, तो उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।”

18 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 बनी — इसाईल से कह कि मैं

खुदावन्द तुहारा खुदा हूँ। 3 तुम मुल्क — ए — मिस्त्र के से काम जिसमें तुम रहते थे, न करना और मुल्क — ए — कनान के से काम भी जहाँ मैं तुम्हें लिए जाता हूँ, न करना और न उनकी रसमों पर चलना। 4 तुम मेरे हुक्मों पर 'अमल करना और मेरे कानून को मान कर उन पर चलना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 5 इसलिए तुम मेरे आईन और अहकाम मानना, जिन

पर अगर कोई 'अमल करे तो वह उन ही की बदौलत जिन्दा रहेगा। मैं खुदावन्द हूँ। 6 "तुम में से कोई अपनी किसी कीरीबी रिश्तेदार के पास उसके बदन को बे — पर्दा करने के लिए न जाए। मैं खुदावन्द हूँ। 7 तु अपनी माँ के बदन को जो तेरे बाप का बदन है बे — पर्दा न करना; क्यूँकि वह तेरी माँ है, तू उसके बदन को बे — पर्दा न करना, क्यूँकि वह तेरे बाप का बदन है। 9 तु अपनी बहन के बदन को, चाहे वह तेरे बाप की बेटी हो चाहे तेरी माँ की और चाहे वह भर में पैदा हुई हो चाहे और कहीं, बे — पर्दा न करना। 10 तु अपनी पोती या नवारी के बदन को बे — पर्दा न करना, क्यूँकि उमका बदन तो तेरा ही बदन है। 11 तेरे बाप की बीवी की बेटी, जो तेरे बाप से पैदा हुई है, तेरी बहन है; तू उसके बदन को बे — पर्दा न करना। 12 तु अपनी फूफी के बदन को बे — पर्दा न करना, क्यूँकि वह तेरे बाप की कीरीबी रिश्तेदार है। 13 तु अपनी खाला के बदन को बेपर्दा न करना, क्यूँकि वह तेरी माँ की कीरीबी रिश्तेदार है। 14 तु अपने बाप के बाई के बदन को बे — पर्दा न करना, यानी उस की बीवी के पास न जाना, वह तेरी चची है। 15 तु अपनी बह के बदन को बे — पर्दा न करना, क्यूँकि वह तेरे बेटे की बीवी है, इसलिए तु उसके बदन को बे — पर्दा न करना। 16 तु अपनी भावज के बदन को बे — पर्दा करना, क्यूँकि वह दोनों उस 'औरत की कीरीबी रिश्तेदार हैं: यह बड़ी खालासत है। 18 तु अपनी साली से ब्याह कर के उसे अपनी बीवी की सौतन न बनाना, कि दूसरी के जिते जी उसके बदन को भी बेपर्दा करे। 19 "और तू 'औरत के पास जब तक वह हैज़ की वजह से नापाक है, उसके बदन को बे — पर्दा करने के लिए न जाना। 20 और तु अपने को नजिस करने के लिए अपने पड़ोसी की बीवी से सुहबत न करना। 21 तु अपनी औलाद में से किसी को मोलक की खातिर आग में से पेश करने के लिए न देना, और न अपने खुदा के नाप को नापाक ठहराना। मैं खुदावन्द हूँ। 22 तु मर्द के साथ सुहबत न करना जैसे 'औरत से करता है; यह बहुत मकस्तु काम है। 23 तु अपने को नजिस करने के लिए किसी जानवर से सुहबत न करना, और न कोइँ 'औरत किसी जानवर से हम — सुहबत होने के लिए उसके आगे खड़ी हो; क्यूँकि यह और्ध्वी बात है। 24 "तुम इन कामों में से किसी में फँस कर आलदा न हो जाना, क्यूँकि जिन कौमों को मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ वह इन सब कामों की वजह से आलदा है। 25 और उन का मुल्क भी आलदा हो गया है; इसलिए मैं उसकी बदकारी की सजा उसे देता हूँ, ऐसा कि वह अपने बाशिन्दों को उगले देता है। 26 लिहाजा तुम मेरे आइन और अहकाम को मानना और तुम में से कोई, चाहे वह देती हो या परदेसी जो तुम में क्याम रखता हो, इन मकस्तु में से किसी काम को न करे; 27 क्यूँकि उस मुल्क के बाशिन्दों ने जो तुमसे पहले थे यह सब मकस्तु काम किये हैं और मुल्क आलदा हो गया है। 28 इसलिए ऐसा न हो कि जिस तरह उस मुल्क ने उस कौम को जो तुमसे पहले वहाँ थी उगल दिया, उसी तरह तुम को भी जब तुम उसे आलदा करो तो उगल दे। 29 क्यूँकि जो इन मकस्तु कामों में से किसी को करेगा, वह अपने लोगों में से काट डाला जाए। 30 इसलिए मेरी शरी'अत को मानना, और यह मकस्तु रसमें जो तुमसे पहले अदा की जाती थी, इसमें से किसी को 'अमल में न लाना और इन में फँस कर आलदा न हो जाना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"

19 फिर खुदावन्द ने मासा से कहा, 2 "बनी — इसाईं की सारी जमा'अत से कह कि तुम पाक रहो; क्यूँकि मैं जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ पाक हूँ 3 तुम मैं से हर एक अपनी मौं और अपने बाप से डरता रहो, और तुम मैं से सबतों को मानना, मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 4 तुम बृतों की तरफ रूँ न होना,

और न अपने लिए ढाले हुए मा'बूद बनाना; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 5 "और जब तुम खुदावन्द के सामने सलामती के जबरीहे पेश करो, तो उनको इस तरह पेश करना कि तुम मकबूल हो। 6 और जिस दिन उसे पेश करो उस दिन और दूसरे दिन वह खाया जाए, और अगर तीसरे दिन तक कुछ बचा रह जाए तो वह आग में जला दिया जाए। 7 और अगर वह जरा भी तीसरे दिन खाया जाए, तो मकस्तु ठहरेगा और मकबूल न होगा; 8 बल्कि जो कोई उसे खाए उसका गुनाह उत्ती के सिर लगेगा, क्यूँकि उसने खुदावन्द की पाक चीज़ को नजिस किया; इसलिए वह शब्द अपने लोगों में से काट डाला जाएगा। 9 "और जब तुम अपनी जमीन की पैदावार की फसल काटो, तो अपने खेत के कोने — कोने तक पूरा — पूरा न काटना और न कटाई की गिरी — पड़ी बालों को चुन लेना। 10 और तु अपने अंगूरिस्तान का दाना — दाना न तोड़ लेना, और न अपने अंगूरिस्तान के पिरे हुए दानों को जमा' करना; उनको गरीबों और मुसाफिरों के लिए छोड़ देना। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 11 "तुम चोरी न करना और न दगा देना और न एक दूसरे से झट बोलना। 12 और तुम मेरा नाम लेकर झटी कसम न खाना जिससे तू अपने खुदा के नाम को नापाक ठहराएँ; मैं खुदावन्द हूँ। 13 "तु अपने पड़ोसी पर न जूत्म करना, न उसे लूटना। मज़दूर की मज़दूरी तेरे पास सारी रात सुबह तक रहने न पाए। 14 तू बहरे को न कोसाना, और न अन्ये के आगे ठोक खिलाने की चीज़ को धरना, बल्कि अपने खुदा से डरना। मैं खुदावन्द हूँ। 15 "तुम फैसले में नारास्ती न करना, न तो गरीब की रि'आयत करना और न बड़े आदमी का लिहाज़; बल्कि रास्ती के साथ अपने पड़ोसी का इन्साफ़ करना। 16 तु अपनी कौम में इधर — उधर लुत्रापन न करते फिरना, और न अपने पड़ोसी का खून करने पर आमादा होना; मैं खुदावन्द हूँ। 17 तु अपने दिल में अपने भाई से बुज़न न रखना; और अपने पड़ोसी को ज़सर डॉटे भी रहना, ताकि उसकी वजह से तेरे सिर गुनाह न लगे। 18 तु इन्तकाम न लेना, और न अपनी कौम की नसल से कीना रखना, बल्कि अपने पड़ोसी से अपनी तह पुह़ब्बत करना; मैं खुदावन्द हूँ। 19 "तु मेरी शरी'अतों को मानना: तू अपने चौपायों को गैर जिन्स से भरवाने न देना, और अपने खेत में दो किस्म के बीज एक साथ न बोना, और न तुड़ पर दो किस्म के मिले जुले तार का कपड़ा हो। 20 "अगर कोई ऐसी 'औरत से सुहबत करे जो लौड़ी और किसी शब्द की मगंतर हो, और न तो उसका फिदिया ही दिया गया हो और न वह आजाद की गई हो, तो उन दोनों की सजा मिले लैकिन वह जान से मारे न जाएँ इसलिए कि वह 'औरत आजाद न थी। 21 और वह आदमी अपने जुर्म की कुर्बानी के लिए खेमा — ए — इजिताम'अ के दरवाजे पर खुदावन्द के सामने एक मेंढा लाए कि वह उसके जुर्म की कुर्बानी हो। 22 और काहिन उसके जुर्म की कुर्बानी के मेंढे से उसके लिए खुदावन्द के सामने कफ़फ़रा दे, तब जो खता उसने की है वह उसे मु'आफ़ की जाएगी। 23 और जब तुम उस मुल्क में पहुँचकर किस्म — किस्म के फल के दरखत लगाओ तो तुम उनके फल को जैसे नामज्जन समझना वह तुम्हारे लिए तीन बरस तक नामज्जन के बाबर हों और खाए न जाएँ। 24 और चौथे साल उनका सारा फल खुदावन्द की तम्जीद करने के लिए पाक होगा। 25 तब पाँचवें साल से उनका फल खाना ताकि वह तुम्हारे लिए इफ़रात के साथ पैदा हों। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 26 "तुम किसी चीज़ को खन के साथ न खाना। और न जादू मंत्र करना, न शगुन निकालना। 27 तुम अपने अपने सिर के गोशों को बाल काट कर गोल न बनाना, और न तु अपनी दाढ़ी के कोनों को बिगड़ाना। 28 तुम मुर्दां की वजह से अपने जिस्म को जख्मी न करना, और न अपने ऊपर कुछ गुदवाना। मैं खुदावन्द हूँ। 29 तु अपनी बेटी को कर्नी बना कर नापाक न होने देना, कहीं ऐसा न हो कि मुल्क में रण्डी बाज़ी फैल जाए और सारा मुल्क

बदकारी से भर जाए। 30 तुम मेरे सबतों को मानना और मेरे हैकल की ताजीम करना; मैं खुदावन्द हूँ। 31 जो जिन्नात के यार है और जो जादूगर है, तुम उनके पास न जाना और न उनके तालिब होना कि वह तुम को नजिस बना दें। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 32 'जिनके सिर के बाल सफेद हैं, तुम उनके सामने उठ खड़े होना और बड़े — बड़े का अदब करना, और अपने खुदा से डरना। मैं खुदावन्द हूँ। 33 'और अगर कोई परदेसी तेरे साथ तुहारे मुल्क में क्याम करता हो तो तुम उसे आजार न पहुँचाना; 34 बल्कि जो परदेसी तुहारे साथ रहता हो उसे देसी की तरह समझना, बल्कि त उससे अपनी तरह मुहब्बत करना; इसलिए कि तुम मुल्क — ए — मिस में परदेसी थे। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 35 'तुम इन्साफ़, और पैमाइश, और वज़न, और पैमाने में नारास्ती न करना। 36 ठीक तराज़, ठीक तौल बाट पूरा एका और पूरा हीन रखना। जो तुम को मुल्क — ए — मिस से निकाल कर लाया मैं ही हूँ, खुदावन्द तुहारा खुदा। 37 इसलिए तुम मेरे सब आईन और सब अहकाम मानना और उन पर 'अमल करना; मैं खुदावन्द हूँ।'

20 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 "तू बनी — इसाईल से यह भी कह

दे कि बनी — इसाईल में से या उन परदेसियों में से जो इसाईलियों के बीच क्याम करते हैं, जो कोई शब्स अपनी औलाद में से किसी की मोलक की नज़र करे वह ज़स्त जान से मारा जाए; अहल — ए — मुल्क उसे संग्राम करें। 3 और मैं भी उस शब्स का मुखालिफ़ हूँगा और उसे उसके लोगों में से काट डालनेंगा, इसलिए कि उस ने अपनी औलाद को मोलक की नज़र कर के मेरे हैकल और मेरे पाक नाम को नापाक ठहराया। 4 और अगर उस बक्त जब वह अपनी औलाद में से किसी की मोलक की नज़र करे, अहल — ए — मुल्क उस शब्स की तरफ से चशमोझी कर के उसे जान से न मारें 5 तो मैं खुद उस शब्स का और उसके घराने का मुखालिफ़ हो कर उसको और उन सभों को जो उसकी पैरती में ज़िनाकार बनें और मोलक के साथ ज़िना करें, उनकी कौम में से काट डालूँगा। 6 'और जो शब्स जिनात के यारों और जादूगरों के पास जाए कि उनकी पैरती में ज़िना करे, मैं उसका मुखालिफ़ हूँगा और उसे उस की कौम में से काट डालूँगा। 7 इसलिए तुम अपने आप को पाक करो और पाक रहो, मैं खुदावन्द तुहारा खुदा हूँ। 8 और तुम मेरे कानून को मानना और उस पर 'अमल करना। मैं खुदावन्द हूँ जो तुम को पाक करता हूँ। 9 और जो कोई अपने बाप या अपनी माँ पर लान्त करे वह ज़स्त जान से मारा जाए, उसने अपने बाप या माँ पर लान्त की है, इसलिए उस का खून उसी की गर्दन पर होगा। 10 'और जो शब्स दूसरे की बीवी से यानी अपने पड़ोसी की बीवी से ज़िना करे, वह ज़नी और ज़निया दोनों ज़स्त जान से मार दिए जाएं। 11 और जो शब्स अपनी सौतेली मौं से सुहबत करे उसने अपने बाप के बदन को बे — पर्दा किया, वह दोनों ज़स्त जान से मारे जाएँ, उनका खून उन ही की गर्दन पर होगा। 12 और अगर कोई शब्स अपनी बह से सुहबत करे तो वह दोनों ज़स्त जान से मारे जाये उन्होंने औंधी बात की है उनका खून उन ही की गर्दन पर होगा। 13 और अगर कोई मर्द से सुहबत करे जैसे 'औरत से करते हैं तो उन दोनों ने बहुत मक्स्ह काम किया है, इसलिए वह दोनों ज़स्त जान से मारे जाएँ, उनका खून उनही की गर्दन पर होगा। 14 और अगर कोई शब्स अपनी बीवी और अपनी सास दोनों को रख दें तो यह बड़ी खबासत है, इसलिए वह आदमी और वह 'औरतें तीनों के तीनों जला दिए जाएँ ताकि तुहारे बीच खबासत न रहें; 15 और अगर कोई मर्द किसी जानवर से ज़िना अ करे तो वह ज़स्त जान से मारा जाए और तुम उस जानवर को भी मार डालना। 16 और अगर कोई 'औरत कीसी जानवर के पास जाए और उससे हम सुहबत हो तो उस 'औरत और जानवर दोनों को मार डालना, वह ज़स्त जान से मारे जाएँ; उनका खून उन ही की गर्दन पर होगा। 17

'और अगर कोई मर्द अपनी बहन को जो उसके बाप की या उसकी माँ की बेटी हो, लेकर उसका बदन देखे और उसकी बहन उसका बदन देखे, तो यह शर्म की बात है; वह दोनों अपनी कौम के लोगों की आँखों के सामने कत्ल किए जाएँ, उसने अपनी बहन के बदन को बे — पर्दा किया, उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा। 18 और अगर मर्द उस 'औरत से जो कपड़ों से हो सुहबत कर के उसके बदन को बे — पर्दा करे, तो उसने उसका चम्मा खोला और उस 'औरत ने अपने खुन का चश्मा खुलवाया। इसलिए वह दोनों अपनी कौम में से काट डाले जाएँ। 19 और त अपनी खाला या फूफ़ी के बदन को बे — पर्दा न करना, क्यूँकि जो ऐसा करे उसने अपनी करीबी रिशेदार को बे — पर्दा किया; इसलिए उन दोनों का गुनाह उन ही के सिर लगेगा। 20 और अगर कोई अपनी चची या ताई से सुहबत करे तो उसने अपने चचा या ताऊ के बदन को बे — पर्दा किया; इसलिए उनका गुनाह उनके सिर लगेगा, वह बे — औलाद मरेंगे। 21 अगर कोई शब्स अपने भाई की बीवी को रख दें तो यह नज़सत है, उसने अपने भाई के बदन को बे — पर्दा किया है; वह बे — औलाद रहेंगे। 22 इसलिए तुम मेरे सब आईन और अहकाम मानना और उन पर 'अमल करना, ताकि वह मुल्क जिसमें मैं तुम को बसाने को लिए जाता हूँ तुम को उगल न दे। 23 तुम उन कौमों के दस्तूरों पर जिनको मैं तुम्हारे आगे से निकालता हूँ मत चलना, क्यूँकि उन्होंने यह सब काम किए इसीलिए मुझे उन से नफरत हो गई। 24 लेकिन मैंने तुमसे कहा है कि तुम उनके मुल्क के वारिस होगे, और मैं तुम को वह मुल्क जिस में दूध और शहद बहता है तुम्हारी मिल्कियत होने के लिए दँगा। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जिसने तुम को और कौमों से अलग किया है। 25 इसलिए तुम पाक और नापाक चौपायों में, और पाक और नापाक परिनदों में फ़र्क़ करना, और तुम किसी जानवर या परिनदे या ज़मीन पर के रेंगनेवाले जानदार से, जिनको मैंने तुम्हारे लिए नापाक ठहराकर अलग किया है अपने आप को मक्स्हन न बना लेना। 26 और तुम मेरे लिए पाक बने रहना, क्यूँकि मैं जो खुदावन्द हूँ पाक हूँ; और मैंने तुम को और कौमों से अलग किया है ताकि तुम मेरी ही रहो। 27 और वह मर्द या 'औरत जिसमें जिन्न हो या वह जादूगर हो तो वह ज़स्त जान से मारा जाएँ, ऐसों को लोग संग्राम करें; उनका खुन उन ही की गर्दन पर होगा।'

21 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि 'हास्त के बेटों से जो काहिन हैं कह कि अपने कबीले के मुर्दे की वजह से कोई अपने आप को नज़िस न कर ले। 2 अपने करीबी रिशेदारों की वजह से जैसे अपनी माँ की वजह से, और अपने बाप की वजह से, और अपने बेटे — बेटी की वजह से, और अपने भाई की वजह से, 3 और अपनी सभी कुँवारी बहन की वजह से जिसने शौहर न किया हो, इन की खातिर वह अपने को नज़िस कर सकता है। 4 क्यूँकि वह अपने लोगों में सरदार है, इसलिए वह अपने आप को ऐसा आलत्ता न करे कि नापाक हो जाए। 5 वह न अपने सिर उनकी खातिर बीच से घृटवाएँ और न अपनी दाढ़ी के कोने मुण्डवाएँ, और न अपने को ज़ख्मी करें। 6 वह अपने खुदा के लिए पाक बने रहें और अपने खुदा के नाम को बेहरमत न करें, क्यूँकि वह खुदावन्द की आतिशीन कुर्बानियाँ जो उनके खुदा की गिज़ा हैं पेश करते हैं; इसलिए वह पाक रहें। 7 वह किसी फ़ाहिशा या नापाक 'औरत से ब्याह न करें, और न उस 'औरत से ब्याह करें जिसे उसके शौहर ने तलाक दी हो; क्यूँकि काहिन अपने खुदा के लिए पाक है। 8 तब तू काहिन को पाक जानाना क्यूँकि वह तेरे खुदा की गिज़ा पेश करता है; इसलिए वह तेरी नज़र में पाक ठहरे, क्यूँकि मैं खुदावन्द जो तुम को पाक करता हूँ कुद्दम हूँ। 9 और अगर काहिन की बेटी फ़ाहिशा बनकर अपने आप को नापाक करे तो वह अपने बाप को नापाक ठहराती है, वह 'औरत आग में ज़लाई जाए। 10 और वह जो अपने

भाइयों के बीच सरदार काहिन हो, जिसके सिर पर मसह करने का तेल डाला गया और जो पाक लिबास पहनने के लिए मध्यस्स किया गया, वह अपने सिर के बाल लिखरने न दे और अपने कपड़े न फाड़े। 11 वह किसी मर्दे के पास न जाए, और न अपने बाप या माँ की खातिर अपने आप को नजिस करे। 12 और वह हैकल के बाहर भी न निकले और न अपने खुदा के हैकल को बेहरमत करे, क्यैकि उसके खुदा के मसह करने के तेल का ताज उस पर है; मैं खुदावन्द हूँ। 13 और वह कुँवारी 'औरत से ब्याह करे; 14 जो बेवा या मुतल्लका या नापाक 'औरत या फाहिशा हो, उनसे वह ब्याह न करे बल्कि वह अपनी ही कौम की कुँवारी को ब्याह ले। 15 और वह अपने तुरम को अपनी कौम में नापाक न ठहराए, क्यैकि मैं खुदावन्द हूँ जो उसे पाक करता हूँ। 16 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 17 "हास्तन से कह दे कि तेरी नसल में नसल — दर — नसल अगर कोई किसी तरह का 'ऐ रखता हो, तो वह अपने खुदा की गिजा पेश करने को नज़दीक न आए; 18 चाहे कोई हो जिसमें ऐब हो वह नज़दीक न आए चाहे वह अन्धा हो या लंगडा, या नकचपटा हो, या जाइद — उल — 'आजा, 19 या उसका पाँव टूटा हो, या हाथ टूटा हो 20 या वह कुबड़ा या बैना हो, या उसकी आँख में कछु नुक्स हो, या खुजली भरा हो, या उसके पपड़ियाँ हों, या उसके खुसिए पिचके हों। 21 हास्तन काहिन की नसल में से कोई जो 'ऐबदार हो खुदावन्द की आतिशी कुर्बानीयों पेश करने को नज़दीक न आए, वह 'ऐबदार है; वह हर्मिज अपने खुदा की गिजा पेश करने को पास न आए। 22 वह अपने खुदा की बहत ही मुकद्दस और पाक दोनों तरह की रोटी खाए, 23 लेकिन पर्दे के अन्दर दाखिल न हो, न मज़बह के पास आए इसलिए कि वह 'ऐबदार है; कहीं ऐसा न हो कि वह मेरे पाक मकामों को बे — हुरमत करे, क्यैकि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ।" 24 तब मूसा ने हास्तन और उसके बेटों और सब बनी — इसाईल से यह बातें कहीं।

22 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 "हास्तन और उसके बेटों से कह कि वह बनी — इसाईल की पाक चीजों से जिनको वह मेरे लिए पाक करते हैं अपने आप को बचाए रखते, और मेरे पाक नाम को बे — हुरमत न करें; मैं खुदावन्द हूँ। 3 उनको कह दे कि तुम्हारी नसल — दर — नसल जो कोई तुम्हारी नसल में से अपनी नापाकी की हालत में उन पाक चीजों के पास जाए, जिनको बनी — इसाईल खुदावन्द के लिए पाक करते हैं, वह शश्व भैरों से काट डाला जाएँ, मैं खुदावन्द हूँ। 4 हास्तन की नसल में जो कोढ़ी, या जियान का मरीज हो वह जब तक पाक न हो जाए, पाक चीजों में से कछु न खाए, और जो कोई ऐसी चीज को जो मर्द की वजह से नापाक हो गई है, या उस शश्व की जिस की धात बहती हो छुए 5 या जो कोई किसी रेग्ने वाले जानदार बो जिसके छुने से वह नापाक हो सकता है, छुए या किसी ऐसे शश्व को छुए जिससे उसकी नापाकी चाहे वह किसी किस्म की हो उसको भी लग सकती हो; 6 तो वह अदमी जो इनमें से किसी को छुए शाम तक नापाक रहेगा, और जब तक पानी से गुस्त न कर ले पाक चीजों में से कछु न खाए; 7 और वह उस बक्त पाक ठरेगा जब आफतब गुस्त हो जाए, इसके बाद वह पाक चीजों में से खाए, क्यैकि यह उसकी खुराक है। 8 और मुरदार या दरिन्दों के फाडे हुए जानवर को खाने से वह अपने आप को नजिस न कर ले, मैं खुदावन्द हूँ 9 इसलिए वह मेरी शरा' को माने, ऐसा न हो कि उस की वजह से उनके सिर गुमाह लगे और उसकी बेहरमती करने की वजह से वह मर भी जाएँ, मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ। 10 'कोई अजनबी पाक चीज की न खाने पाए चाहे वह काहिन ही के यहाँ ठहरा हो, या उसका नौकर हो तो भी वह कोई पाक चीज न खाए; 11 लेकिन वह जिसे काहिन ने अपने जर से खरीदा हो उसे खा सकता है, और वह जो उसके घर में पैदा हुए हों वह भी उसके खाने में से

खाएँ। 12 अगर काहिन की बेटी किसी अजनबी से ब्याही गई हो, तो वह पाक चीजों की कुबर्नी में से कछु न खाए। 13 लेकिन अगर काहिन की बेटी बेवा हो जाएँ, या मुतल्लका हो और बे — औलाद हो, और लड़कपन के दिनों की तरह अपने बाप के घर में फिर आ कर रहे तो वह अपने बाप के खाने में से खाए; लेकिन कोई अजनबी उसे न खाए। 14 और अगर कोई अनजाने में पाक चीज को खा जाए तो वह उसके पाँचवें हिस्से के बराबर अपने पास से उस में मिला कर वह पाक चीज काहिन को दे 15 और वह बनी — इसाईल की पाक चीजों को जिनको वह खुदावन्द की नज़र करते हों बेहरमत करके, 16 उनके सिर उस गुनाह का जुर्म न लादें जो उनकी पाक चीजों को खाने से होगा; क्यैकि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ।" 17 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 18 "हास्तन और उसके बेटों और सब बनी — इसाईल से कह कि इसाईल के घराने का या उन परदेसियों में से जो इसाईलियों के बीच रहते हैं, जो कोई शश्व अपनी कुर्बानी लाए, चाहे वह कोई मिन्नत की कुर्बानी हो या रजा की कुर्बानी, जिसे वह सोखनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करते हैं; 19 तो अपने मकबूल होने के लिए तुम बैलों या बर्दौं या बकरों में से बे — 'ऐब हो रचना। 20 और जिसमें 'ऐब हो उसे न अदा करना क्यैकि वह तुम्हारी तरफ से मकबूल न होगा। 21 और जो कोई अपनी मिन्नत पूरी करने के लिए या रजा की कुर्बानी के तौर पर गाय, बैल या भेड़ बकरी में से सलामती का जबीहा खुदावन्द के सामने पेश करे, तो वह जानवर मकबूल ठहरने के लिए बे — 'ऐब हो; उसमें कोई नुक्स न हो। 22 जो अन्धा या शिक्स्ता — ए — 'उज्ज या लला हो, जिसके रसौली या खुजली या पपड़ियाँ हों, ऐसों को खुदावन्द के सामने न चढ़ाना और न मज़बह पर उनकी आतिशी कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेश करना। 23 जिस बछड़े या बर्दौं का कोई 'उज्ज ज्यादा या कम हो उसे तो रजा की कुर्बानी के तौर पर पेश कर सकता है, लेकिन मिन्नत पूरी करने के लिए वह मकबूल न होगा। 24 जिस जानवर के खुसिए कुचले हुए या चूर किए हुए या दृटे या कटे हुए हों, उसे तुम खुदावन्द के सामने न चढ़ाना और न अपने मुल्क में ऐसा काम करना; 25 और न इनमें से किसी को लेकर तुम अपने खुदा की गिजा परदेसी या अजनबी के हाथ से अदा करवाना, क्यैकि उनका बिगाड उसमें मौजूद होता है, उनमें 'ऐब है इसलिए वह तुम्हारी तरफ से मकबूल न होगे।" 26 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 27 "जिस बक्त बछड़ा या भेड़ या बकरी का बच्चा पैदा हो, तो सात दिन तक वह अपनी माँ के साथ रहे और आठवें दिन से और उसके बाद से वह खुदावन्द की आतिशी कुर्बानी के लिए मकबूल होगा। 28 और चाहे गाय हो या भेड़, बकरी, तुम उसे और उसके बच्चे दोनों को एक ही दिन जब्त न करना। 29 और जब तुम खुदावन्द के शुकाने का जबीहा कुर्बानी करो, तो उसे तस तरह कुर्बानी करना कि तुम मकबूल ठहरो; 30 और वह उसी दिन खा भी लिया जाए, तुम उसमें से कछु भी दूसरे दिन की सुबह तक बाकी न छोड़ना; मैं खुदावन्द हूँ। 31 "इसलिए तुम मेरे हृक्षमों को मानना और उन पर 'अमल करना; मैं खुदावन्द हूँ। 32 तुम मेरे पाक नाम को नापाक न ठहराना, क्यैकि मैं बनी — इसाईल के बीच ज़सर ही पाक माना जाऊँगा; मैं खुदावन्द तुम्हारा पाक करने वाला हूँ, 33 जो तुम को मुल्क — ए — मिस से निकाल लाया हूँ ताकि तुम्हारा खुदा बना रहूँ, मैं खुदावन्द हूँ।"

23 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, कि 2 "बनी — इसाईल से कह कि खुदावन्द की 'ईंदै जिनका तुम को पाक मज़म'ओं के लिए ऐलान देना होगा, मेरी वह 'ईंदै यह है। 3 छ: दिन काम — काज किया जाए लेकिन सातवाँ दिन खास आराम का और पाक मज़म' का सबत है, उस रोज़ किसी तरह का काम न करना; वह तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में खुदावन्द का सबत है। 4 "खुदावन्द की 'ईंदै जिनका ऐलान तुम को पाक मज़म'ओं के लिए वक्त — ए

— मुअच्यन पर करना होगा इसलिए यह हैं। 5 पहले महीने की चौदहवी तारीख की शाम के बक्त खुदावन्द की फस हआ करे। 6 और उसी महीने की पंद्रहवी तारीख को खुदावन्द के लिए 'इंद — ए — फतीर हो, उसमें तुम सात दिन तक बे — खमीरी रोटी खाना। 7 पहले दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो उसमें तुम कोई खादिमाना काम न करना। 8 और सातवें दिन तुम खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना और और सातवें दिन फिर पाक मजमा' हो उस रोज तुम कोई खादिमाना काम न करना।" 9 और खुदावन्द ने मसा से कहा, 10 "बनी — इस्माइल से कह कि जब तुम उस मूलक में जो मैं तुम को देता हूँ दाखिल हो जाओ और उसकी फसल काटो, तो तुम अपनी फसल के पहले फलों का एक पूला काहिन के पास लाना; 11 और वह उसे खुदावन्द के सामने हिलाए, ताकि वह तुम्हारी तरफ से कुबूल हो और काहिन उसे सबत के दूसरे दिन सुबह को हिलाए। 12 और जिस दिन तुम पूले को हिलाओ उसी दिन एक नर बे — 'ऐ यक — साला बरा सोखनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करना। 13 और उसके साथ नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा ऐका के दो दहाई हिस्से के बराबर हो, ताकि वह अतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खशबू के लिए जलाई जाए; और उसके साथ मय का तापावन हीन के चौथे हिस्से के बराबर मय लेकर करना। 14 और जब तक तुम अपने खुदा के लिए यह हदिया न ले आओ, उस दिन तक नई फसल की रोटी या भूता हआ अनाज, या हरी बाले हरिगिज न खाना। तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल — दर — नसल हमेशा यही कानून रहेगा। 15 "और तुम सबत के दूसरे दिन से जिस दिन हिलाने की कुर्बानी के लिए पूला लाओगे गिनना शुरू करना, जब तक सात सबत पूरे न हो जाएँ। 16 और सातवें सबत के दूसरे दिन तक पचास दिन गिन लेना, तब तुम खुदावन्द के लिए नज़र की नई कुर्बानी के लिए नज़र की नई कुर्बानी के वजन के मैदे के दो गिर्दे हिलाने की कुर्बानी के लिए ते आना; वह खमीर के साथ पकाए जाएँ ताकि खुदावन्द के लिए पहले फल ठहरें। 18 और उन मिर्दों के साथ ही तुम सात यक — साला बे — 'ऐ बर्रे और एक बछडा और दो मैंदे लाना, ताकि वह अपनी अपनी नज़र की कुर्बानी और तापावन के साथ खुदावन्द के सामने सोखनी कुर्बानी के तौर पर पेश करे जाएँ, और खुदावन्द के सामने रहतअंगेज खशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरें। 19 और तुम खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा और सलामती के जबहि के लिए दो यकसाला नर बर्रे चढाना। 20 और काहिन इनको पहले फल के दोनों गिर्दों के साथ लेकर उन दोनों बर्रों के साथ हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए, वह खुदावन्द के लिए पाक और काहिन का हिस्सा ठहरें। 21 और तुम ऐन उसी दिन 'ऐलान कर देना, उस रोज तुम्हारा पाक मजमा' हो, तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना; तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल — दर — नसल सदा यही तौर तीकी रहेगा। 22 "और जब तुम अपनी जमीन की पैदावार की फसल काटो, तो तुम अपने खेत को कोने — कोने तक पूरा न काटना और न अपनी फसल की गिरी — पड़ी बालों को जमा' करना, बल्कि उनको गरीबों और मुसाफिरों के लिए छोड़ देना, मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।" 23 और खुदावन्द ने मसा से कहा, 24 "बनी — इस्माइल से कह कि सातवें महीने की पहली तारीख तुम्हारे लिए खास आराम का दिन हो, उसमें यादगारी के लिए नरसिंगे फूंके जाएँ और पाक मजमा' हो। 25 तुम उस रोज कोई खादिमाना काम न करना और खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना।" 26 खुदावन्द ने मसा से कहा 27 "उसी सातवें महीने की दसवीं तारीख की कफ़क़रे का दिन है; उस रोज तुम्हारा पाक मजमा' हो, और तुम अपनी जानों को दुख देना और खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना। 28 तुम उस दिन किसी तरह का काम न करना,

क्यूँकि वह कफ़क़रे का दिन है जिसमें खुदावन्द तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारे लिए कफ़क़रा दिया जाएगा। 29 जो शख्स उस दिन अपनी जान को दुख ने दे वह अपने लोगों में से काट डाला जाएगा। 30 और जो शख्स उस दिन किसी तरह का काम करे, उसे मैं उसके लोगों में से फ़ना कर दूँगा। 31 तुम किसी तरह का काम मत करना, तुम्हारी सब सुकूनत गाहों में नसल — दर — नसल हमेशा यही तौर तीकी रहेंगे। 32 यह तुम्हारे लिए खास आराम का सबत हो, इसमें तुम अपनी जानों को दुख देना; तुम उस महीने की नौवीं तारीख की शाम से दूसरी शाम तक अपना सबत मानना।" 33 और खुदावन्द ने मसा से कहा, 34 'बनी — इस्माइल से कह कि उसी सातवें महीने की पंद्रहवी तारीख से लेकर सात दिन तक खुदावन्द के लिए 'इंद — ए — खियाम होगी। 35 पहले दिन पाक मजमा हो; तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना। 36 तुम सातवें दिन बराबर खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना। आठवें दिन तुम्हारा पाक मजमा हो और फिर खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी पेश करना; वह खास मजमा है, उसमें कोई खादिमाना काम न करना। 37 "यह खुदावन्द की मुकर्ररा 'इंद' है जिनमें तुम पाक मजमा'ओं का 'ऐलान करना'; ताकि खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी, और सोखनी कुर्बानी, और नज़र की कुर्बानी और जबहि और तपावन हर एक अपने अपने मुअ़च्यन दिन में पेश किया जाए। 38 इनके अलावा खुदावन्द के सबतों को मानना, और अपने हदियों और मिन्तों और रजा की कुर्बानियों को जो तुम खुदावन्द के सामने लाते हो पेश करना। 39 "और सातवें महीने की पंद्रहवी तारीख से, जब तुम जमीन की पैदावार जमा' कर चुको तो सात दिन तक खुदावन्द की 'इंद मानना। पहला दिन खास आराम का हो, और अश्वरहवीं दिन भी खास आराम ही का हो। 40 इसलिए तुम पहले दिन खशनुमा दरखतों के फल और खजूर की डालियाँ, और घंसे दरखतों की शाखे और नदियों की बेद — ए — मज़नूँ लेना; और तुम खुदावन्द अपने खुदा के आगे सात दिन तक खुशी मनाना। 41 और तुम हर साल खुदावन्द के लिए सात रोज तक यह 'इंद माना' करना। तुम्हारी नसल दर नसल हमेशा यही कानून रहेगा कि तुम सातवें महीने इस 'इंद' को मानो। 42 सात रोज तक बराबर तुम सायबानों में रहना, जितने इस्माइल की नसल के हैं सब के सब सायबानों में रहें; 43 ताकि तुम्हारी नसल को माल्म हो कि जब मैं बनी — इस्माइल को मूल्क — ए — मिस्र से निकल कर ला रहा था तो मैंने उनको सायबानों में टिकाया था; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।" 44 इसलिए मसा ने बनी — इस्माइल को खुदावन्द की मुकर्रा 'इंद' बता दी।

24 और खुदावन्द ने मसा से कहा, 2 "बनी — इस्माइल को हक्म कर कि वह तेरे पास जैदून का कूट कर निकाला हुआ खालिस तेल रोशनी के लिए लाएँ, ताकि चरागा हमेशा जलता रहे। 3 हास्त उसे शहादत के पर्दे के बाहर खेमा — ए — इजिताम' अ में शाम से सुबह तक खुदावन्द के सामने करनी से रखवा करें; तुम्हारी नसल — दर — नसल सदा यही कानून रहेगा। 4 वह हमेशा उन चरागों की तरतीब से पाक शमा'दान पर खुदावन्द के सामने रखवा करें। 5 "और तू मैदा लेकर बाहर गिर्दे पकाना, हर एक मिर्द में ऐका के दो दहाई हिस्से के बराबर मैदा हो; 6 और तू उनको दो कतरों कर कि हर कतार में छ: रोटियाँ, पाक मेज पर खुदावन्द के सामने रखना। 7 और तू हर एक कतार पर खालिस लबान रखना, ताकि वह रोटी पर यादगारी यानी खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी के तौर पर हो। 8 वह हमेशा हर सबत के रोज उनको खुदावन्द के सामने तरतीब दिया करें, क्यूँकि यह बनी — इस्माइल की जानिब से एक हमेशा 'अहद है। 9 और यह रोटियाँ हास्त और उसके बेटों की होंगी वह इन को किसी पाक जगह में खाएँ, क्यूँकि वह एक जाविदानी कानून के मुताबिक खुदावन्द की आतिशी कुर्बानियों में से हास्त के लिए बहुत पाक हैं।"

10 और एक इस्माईली 'औरत का बेटा जिसका बाप मिस्ती था, इस्माईलियों के बीच चला गया और वह इस्माईली 'औरत का बेटा और एक इस्माईली लश्करगाह में आपस में मार पीट करने लगे; 11 और इस्माईली 'औरत के बेटे ने पाक नाम पर कुफ्र बका और ला'नत की। तब लोग उसे मूसा के पास ले गए। उसकी माँ का नाम सलोमीत था, जो दिवी की बेटी थी जो दान के कबीले का था। 12 और उन्होंने उसे हवालात में डाल दिया ताकि खुदावन्द की जानिब से इस बात का फैसला उन पर जाहिर किया जाए। 13 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 14 'उस ला'नत करने वाले को लश्करगाह के बाहर निकाल कर ले जा: और जितनों ने उसे ला'नत करते मुसा, वह सब अपने — अपने हाथ उसके सिर पर रख दें और सारी जमा' अत उसे संग्रासार करो। 15 और तू बनी — इस्माईल से कह दें कि जो कोई अपने खुदा पर ला'नत करे उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा। 16 और वह जो खुदावन्द के नाम पर कुफ्र बके, ज़स्तर जान से मारा जाए; सारी जमा' अत उसे कत्तृ असंग्रासार करे, चाहे वह देसी हो या परदेसी; जब वह पाक नाम पर कुफ्र बके तो वह ज़स्तर जान से मारा जाए। 17 'और जो कोई किसी आदमी को मार डाले वह ज़स्तर जान से मारा जाए। 18 और जो कोई किसी चौपाए को मार डाले, वह उसका मु'आवजा जान के बदले जान दे। 19 "और अगर कोई शब्स अपने पडोसी को 'ऐबदार बना दे, जो जैसा उसने किया वैसा ही उससे किया जाए; 20 या'नी 'उज्ज तोड़ने के बदले 'उज्ज तोड़ना हो, और आँख के बदले आँख और दाँत के बदले दाँत। जैसा ऐब उसने दूसरे आदमी में पैदा कर दिया है वैसा ही उसमें भी कर दिया जाए। 21 अलउर्ज, जो कोई किसी चौपाए को मार डाले वह उसका मु'आवजा दे; लेकिन इसान का कातिल जान से मारा जाए। 22 तुम एक ही तरह का कानून देवी और परदेसी दोनों के लिए रखना, क्यूंकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।' 23 और मूसा ने यह बनी — इस्माईल को बताया। तब वह उस ला'नत करने वाले को निकाल कर लश्करगाह के बाहर ले गए और उसे संग्रासार कर दिया। इसलिए बनी — इस्माईल ने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्षम दिया था वैसा ही किया।

25 और खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर मूसा से कहा कि; 2 "बनी — इस्माईल से कहा कि, जब तुम उस मुल्क में जै मैं तुम को देता हूँ दाखिल हो जाओ, तो उसकी जमीन भी खुदावन्द के लिए सबत को माने। 3 त अपने खेत को छ: बरस बोना, और अपने अंगूरिस्तान को छ: बरस छाँटना और उसका फल जमा' करना। 4 लेकिन सातवें साल जमीन के लिए खास आराम का सबत हो। यह सबत खुदावन्द के लिए हो। इसमें तून अपने खेत को बोना और न अपने अंगूरिस्तान को छाँटना। 5 और न अपनी खुदगो फसल को काटना और न अपनी बे — छटी ताकों के अंगरौं को तोड़ना; यह जमीन के लिए खास आराम का साल हो। 6 और जमीन का यह सबत तेरे, और तेरे गुलामों और तेरी लौटी और मजदूरों और उन परदेसियों के लिए जो तेरे साथ रहते हैं, तुम्हारी खुराक का जरिया' होगा; 7 और उसकी सारी पैदावार तेरे चौपायों और तेरे मुल्क के और जानवरों के लिए खुराक ठहरेगी। 8 "और तू बरसों के सात सबतों को, या'नी सात गुगा सात साल गिम लेना, और तेरे हिसाब से बरसों के सात सबतों की मुद्रत कुल उन्चास साल होंगे। 9 तब तू सातवें महीने की दसवीं तारीख की बड़ा नरसिंगा जोर से फुँकवाना, तुम कफ़क़रे के रोज अपने सारे मुल्क में यह नरसिंगा फुँकवाना। 10 और तुम पचासवें बरस को पाक जानना और तमाम मुल्क में सब बाशिन्दों के लिए आजादी का 'ऐलान कराना, यह तुम्हारे लिए यूबली हो। इसमें तुम में से हर एक अपनी मिल्कियत का मालिक हो, और हर शब्स अपने खानदान में फिर शामिल हो जाए। 11 वह पचासवाँ बरस तुम्हारे लिए यूबली हो, तुम उसमें कुछ न बोना और न उसे जो अपने आप पैदा हो जाए आजादी का इलाका और न बे — छटी ताकों का अंगूर जमा'

करना। 12 क्यूंकि वह साल — ए — यूबली होगा; इसलिए वह तुम्हारे लिए पाक ठहरे, तुम उसकी पैदावार की खेत से लेकर खाना। 13 "उस साल — ए — यूबली में तुम में से हर एक अपनी मिल्कियत का फिर मालिक हो जाए। 14 और अगर तू अपने पडोसी के हाथ कुछ बेचे या अपने पडोसी से कुछ खरीदे, तो तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना। 15 यूबली के बाद जितने बरस गुज़रे हो उनके शुभार के मुताबिक तू अपने पडोसी से उसे खरीदाना, और वह उसे फसल के बरसों के शुभार के मुताबिक तैयार करना, बल्कि अपने खुदा से डारे रहना; क्यूंकि बरसों के शुभार के मुताबिक वह उनकी फसल तैयार करना है। 16 जितने ज्यादा बरस हों उतना ही दाम ज्यादा करना और जितने कम बरस हों उतनी ही उस की कीमत घटाना; क्यूंकि बरसों के शुभार के मुताबिक वह उनकी फसल तैयार करना है। 17 और तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना, बल्कि अपने खुदा से डारे रहना; क्यूंकि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 18 इसलिए तुम मेरी शरी' अत पर 'अमल करना और मेरे हुक्मों को मानना और उन पर चलना, तो तुम उस मुल्क में अपने के साथ बर्से रहेंगे। 19 और जमीन फलेनी और तुम पेट भर कर खाओगे, और वहाँ अपन के साथ रहा करोगे। 20 और अगर तुम को खुयाल हो कि हम सातवें बरस क्या खाएँगे? क्यूंकि देखो, हम को न तो बोना है और न अपनी पैदावार की जामा करना है। 21 तो मैं छेटे ही बरस ऐसी बरकत तुम पर नाजिल करूँगा कि तीनों साल के लिए काफ़ी गल्ला पैदा हो जाएगा। 22 और आठवें बरस फिर जीतना बोना और पिछला गल्ला खाते रहना, बल्कि जब तक नैवें साल के बोए हुए की फसल न काट लो उस बक्त तक वही पिछला गल्ला खाते रहेंगे। 23 "और जमीन हमेशा के लिए बेनी न जाए क्यूंकि जमीन मेरी है, और तुम मेरे मुसाफ़िर और मेहमान हो। 24 बल्कि तुम अपनी मिल्कियत के मुल्क में हर जगह जमीन को छुड़ा लेने देना। 25 "और अगर तुम्हारा भाई गरीब हो जाए और अपनी मिल्कियत का कुछ हिस्सा बेच डाले, तो जो उस का सबसे करीबी रिशेदार है वह बह आकर उस को जिसे उसके भाई ने बेच डाला है छुड़ा ले। 26 और अगर उस आदमी का कोई न हो जो उसे छुड़ाए, और वह खुद मालदार हो जाए और उसके छुड़ाने के लिए उसके पास काफ़ी हो। 27 तो वह फ़रोज़ के बाद के बरसों को गिन कर बाकी दाम उसकी जिसके हाथ जमीन बेची है फेर दे; तब वह फिर अपनी मिल्कियत का मालिक हो जाए। 28 लेकिन अगर उसमें इतना मकदूर न हो कि अपनी जमीन वापस करा ले, तो जो कुछ सन बेच डाला है वह साल — ए — यूबली तक खरीदार के हाथ में रहे; और साल — ए — यूबली में छुट जाए, तब यह आदमी अपनी मिल्कियत का फिर मालिक हो जाए। 29 और अगर कोई शब्स रहने के ऐसे मकान को बेचे जो किसी फसलीदार शहर में हो, तो वह उसके बिक जाने के बाद साल भर के अन्दर — अन्दर उसे छुड़ा सकेगा; या'नी पैरे एक साल तक वह उसे छुड़ाने का हक्कदार रहेगा। 30 और अगर वह पैरे एक साल की मी'आद के अन्दर छुड़ाया न जाए, तो उस फसीलदार शहर के मकान पर खरीदार का नसल — दर — नसल हमेशा का कब्जा हो जाए और वह साल — ए — यूबली में भी न छुटे। 31 लेकिन जिन देहात के गिर्द कोई फसील नहीं उनके मकानों का हिसाब मुल्क के खेतों की तरह होगा, वह छुड़ाए भी जा सकेंगे और साल — ए — यूबली में वह छूट भी जाएँगे। 32 तो भी लावियों के जो शहर है, लावी अपनी मिल्कियत के शहरों के मकानों को चाहे किसी बक्त छुड़ा लै। 33 और अगर कोई दूसरा लावी उनको छुड़ा ले, तो वह मकान जो बेचा गया और उसकी मिल्कियत का शहर दोनों साल ए — यूबली में छुट जाएँ; क्यूंकि जो मकान लावियों के शहरों में है वही बनी — इस्माईल के बीच लावियों की मिल्कियत है। 34 लेकिन उनके शहरों की 'इलाके के खेत नहीं बिक सकते, क्यूंकि वह उनकी हमेशा की मिल्कियत है। 35 और अगर तेरा कोई भाई गरीब हो जाए और वह तेरे सामने तंगदस्त हो, तो तू उसे संभालना। वह परदेसी और मुसाफ़िर की तरह तेरे साथ

रहे। 36 तू उससे सूद या नफा' मत लेना बल्कि अपने खुदा का खौफ रखना, ताकि तेरा भाई तेरे साथ ज़िनदगी बसर कर सके। 37 तू अपना स्थाया उसे सूद पर मत देना और अपना खाना भी उसे नके के ख्याल से न देना। 38 मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को इसी लिए मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया कि मुल्क — ए — कनान तुम को दूँ और तुम्हारा खुदा ठहरूँ। 39 'और अगर तेरा कोई भाई तेरे सामने ऐसा गरीब हो जाए कि अपने को तेरे हाथ बेच डाले, तो तू उससे गुलाम की तरह खिदमत न लेना। 40 बल्कि वह मजदूर और मुसाफिर की तरह तेरे साथ रहे और साल — ए — यूबली तक तेरी खिदमत करे। 41 उसके बाद वह बाल — बच्चों के साथ तेरे पास से चला जाए, और अपने घराने के पास और अपने बाप दादा की मिलिकियत की जगह को लौट जाए। 42 इसलिए कि वह मेरे खादिम हैं जिनको मैं मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया हूँ, वह गुलामों की तरह बेचे न जाएँ। 43 तू उन पर सख्ती से हक्मरानी न करना, बल्कि अपने खुदा से डरते रहना। 44 और तेरे जो गुलाम और तेरी जो लौटियाँ हों, वह उन कौमों में से हों जो तुम्हारे चारों तरफ रहती हैं; उन ही में से तुम गुलाम और लौटियाँ खरीदा करना। 45 इनके सिवा उन परदेसियों के लड़के बालों में से भी जो तुम्हीं में कथाया करते हैं और उनके घरानों में से जो तुम्हारे मुल्क में पैदा हुए और तुम्हारे साथ हैं तुम खरीदा करना और वह तुम्हारी ही मिलिकियत होंगे। 46 और तुम उनको मीरास के तौर पर अपनी औलाद के नाम कर देना कि वह उनकी मौस्त्सी मिलिकियत हों। इनमें से तुम हमेशा अपने लिए गुलाम लिया करना; लेकिन बनी — इसाईंल जो तुम्हारे भाई हैं, उनमें से किसी पर तुम सख्ती से हक्मरानी न करना। 47 "और अगर कोई परदेसी या मुसाफिर जो तेरे साथ हो, दौलतमन्द हो जाए और तेरा भाई उसके सापने ग़रीब हो कर अपने आप को उस परदेसी या मुसाफिर या परदेसी के खानादान के किसी आदमी के हाथ बेच डाले, 48 तो बिक जाने के बाद वह छुड़ाया जा सकता है, उसके भाइयों में से कोई उसे छुड़ा सकता है, 49 या उसका चचा या ताऊ, या उसके चचा या ताऊ का बेटा, या उसके खानादान का कोई और आदमी जो उसका करीबी रिश्तेदार हो वह उस को छुड़ा सकता है; या अगर वह मालदार हो जाए, तो वह अपना फ़िदिया दे कर छूट सकता है। 50 वह अपने खरीदार के साथ अपने को फ़रोखत कर देने के साल से लेकर साल — ए — यूबली तक हिसाब करे और उसके बिकने की कीमत बरसों की तादाद के मुताबिक हो; यानी उसका हिसाब मजदूर के दियों की तरह उसके साथ होगा। 51 अगर यूबली के अभी बहुत से बरस बाकी हों, तो जितने स्थायों में वह खरीदा गया था उनमें से अपने छूटने की कीमत उतने ही बरसों के हिसाब के मुताबिक फेर दे। 52 और अगर साल — ए — यूबली के थोड़े से बरस रह गए हों, तो वह उसके साथ हिसाब करे और अपने छूटने की कीमत उतने ही बरसों के मुताबिक उसे फेर दे; 53 और वह उस मजदूर की तरह अपने आका के साथ रहे जिसकी मजदूरी साल — ब — साल ठहराई जाती हो, और उसका आका उस पर तुम्हारे सामने सख्ती से हक्मत न करने पाए। 54 और अगर वह इन तरीकों से छुड़ाया न जाए तो साल — ए — यूबली में बाल बच्चों के साथ छूट जाए। 55 क्यूँकि बनी — इसाईंल मेरे लिए खादिम हैं, वह मेरे खादिम हैं जिनको मैं मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया हूँ, मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।

26 तुम अपने लिए बुत न बनाना और न कोई तराई हुई मूरत या लाट अपने कि उसे सिज्दा करो; इसलिए कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 2 तुम मेरे सबतों को मानना और मेरे हैकल की ताजीमी करना; मैं खुदावन्द हूँ। 3 "अगर तुम मेरी शरीरी अत पर चलो और मेरे हृकमों को मानो और उन पर 'अमल करो, 4 तो मैं तुम्हारे लिए सही वक्त मैंह बरसाऊँगा और ज़मीन से अनाज पैदा होगा और

मैदान के दरखत फलेंगे; 5 यहाँ तक कि अंगू जमा' करने के वक्त तक तुम दाक्ते रहोगे, और जोतने बोने के वक्त तक अंगू जमा' करोगे, और पेट भर अपनी रोटी खाया करोगे, और चैन से अपने मुल्क में बसे रहोगे। 6 और मैं मुल्क में अमन बरबंगा, और तुम सोओगे और तुम को कोई नहीं डराएगा; और मैं बुरे दरिन्दों को मुल्क से हलाक कर दूँगा, और तलवार तुम्हारे मुल्क में नहीं चलेंगी। 7 और तुम अपने दुश्मनों का पीछा करोगे, और वह तुम्हारे आगे — आगे तलवार से मारे जाएँगे। 8 और तुम्हारे पाँच आदमी सौ को दैडाऊँगे, और तुम्हारे सौ आदमी दस हजार को खेड़े देंगे, और तुम्हारे दुश्मन तलवार से तुम्हारे आगे — आगे मारे जाएँगे; 9 और मैं तुम पर नज़र — ए — 'इन्यायत रखबंगा, और तुम को काम्याब करँगा और बढ़ाऊँगा, और जो मेरा 'अहद तुम्हारे साथ है उसे पूरा करँगा। 10 और तुम 'अरसे का जारीया किया हआ पुराना अनाज खाओगे, और नये की बजह से पुराने को निकाल बाहर करोगे। 11 और मैं अपना घर तुम्हारे बीच कायम रखँगा और मेरी स्त्री तुम्हे नफरत न करेगी। 12 और मैं तुम्हारे बीच चला फिरा करँगा, और तुम्हारा खुदा हूँगा, और तुम मेरी कौम होगे। 13 मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से इसलिए निकाल कर ले आया कि तुम उनके गुलाम न बने रहो; और मैंने तुम्हारे जैर की चोंबे तोड़ डाली है और तुम को सीधी खड़ा करके चलाया। 14 लेकिन अगर तुम मेरी न सुनो और इन सब हृकमों पर 'अमल न करो, 15 और मेरी शरीरी अत को छोड़ दो, और तुम्हारी स्त्रीहों को मेरे फैसलों से नफरत हो, और तुम मेरे सब हृकमों पर 'अमल न करो बल्कि मेरे 'अहद को तोड़ो; 16 तो मैं भी तुम्हारे साथ इस तरह पेश आऊँगा कि दहशत और तप — ए — दिक और बुखार को तुम पर मुकर्रर कर दूँगा, जो तुम्हारी आँखों को चौपट कर देंगे और तुम्हारी जान को धूला डालेंगे, और तुम्हारा बीज बोना फ़िज़ूल होगा क्यूँकि तुम्हारे दुश्मन उसकी फ़सल खाएँगे; 17 और मैं खुद भी तुम्हारा मुखालिक हो जाऊँगा, और तुम अपने दुश्मनों के अगे शिक्षत खाओगे; और जिनको तुम्हे 'अदावत है वही तुम पर हक्मरानी करेंगे, और जब कोई तुमको दैडाता भी न होगा तब भी तुम भागोगे। 18 और अगर इतनी बातों पर भी तुम मेरी न सुनो तो मैं तुम्हारे गुनाहों के ज़रिएँ तुम को सात गुर्जी सजा और दूँगा। 19 और मैं तुम्हारी शहज़ेरी के फ़ख़ु़ को तोड़ डालूँगा, और तुम्हारे लिए आसमान को लोहे की तरह और ज़मीन को पीतल की तरह कर दूँगा। 20 और तुम्हारी कृक्षत बेफ़यदा सर्फ़ होगी क्यूँकि तुम्हारी ज़मीन से कुछ लैपा न होगा और मैदान के दरखत फलने ही के नहीं। 21 और अगर तुम्हारा चलन मेरे खिलाफ ही रहे और तुम मेरा कहाना न मानो, तो मैं तुम्हारे गुनाहों के मुवाफिक तुम्हारे ऊपर और सातगुरी बलाएँ लाऊँगा। 22 ज़ंगली दरिन्दे तुम्हारे बीच छोड़ दूँगा जो तुम को बेऔलाद कर देंगे और तुम्हारे चौपायों को हलाक करेंगे और तुम्हारा शुमार घारा देंगे, और तुम्हारी सड़के सूनी पड़ जाएँगी। 23 और अगर इन बातों पर भी तुम मेरे लिए न सुधरो बल्कि मेरे खिलाफ ही चलते रहो, 24 तो मैं भी तुम्हारे खिलाफ चलूँगा, और मैं आप ही तुम्हारे गुनाहों के लिए तुम को और सात गुना मासँगा। 25 और तुम पर एक ऐसी तलवार चलवाऊँगा जो 'अहदशिक्कनी का पूरा पूरा इन्काम ले लेगी, और जब तुम अपने शहरों के अन्दर जा जाकर इकट्ठे हो जाओ, तो मैं बबा को तुम्हारे बीच भेज़ूँगा और तुम ग़रीम के हाथ में सौप दिए जाओगे। 26 और जब मैं तुम्हारी रोटी का सिलसिला तोड़ दूँगा, तो दस 'ओरें एक ही तन्दू में तुम्हारी रोटी पकाएँगी। और तुम्हारी उन रोटियों को तोल — तोल कर देती जाएँगी; और तुम खाते ज़ाओगे पर सेर न होगे। 27 "और अगर तुम इन सब बातों पर भी मेरी न सुनो और मेरे खिलाफ ही चलते रहो, 28 तो मैं अपने ग़ज़ब में तुम्हारे बरखिलाफ चलूँगा, और तुम्हारे गुनाहों के ज़रिएँ तुम को सात गुर्जी सजा भी दूँगा। 29 और तुम को

अपने बेटों का गोशत और अपनी बेटियों का गोशत खाना पड़ेगा। 30 और मैं तुम्हारी परस्तिश के बलन्द मकामों को ढा दुंगा, और तुम्हारी सूरज की मूर्तों को काट डालूँगा और तुम्हारी लाशें तुम्हारे शिक्षक्ता बुतों पर डाल दूँगा, और मेरी स्त्री को तुम्हें नफरत हो जाएगी। 31 और मैं तुम्हारे शहरों को वीरान कर डालूँगा, और तुम्हारे हैकलों को उजाड़ बना दूँगा, और तुम्हारी खुशबू — ए — शीरीन की तपत को मैं स्थाने का भी नहीं। 32 और मैं मुल्क को सूरा कर दूँगा, और तुम्हारे दुश्मन जो वहाँ रहते हैं इस बात से हेरान होंगे। 33 और मैं तुम को गैर कौमों में बिखेर दूँगा और तुम्हारे पीछे — पीछे तलवार खीचे रहूँगा; और तुम्हारा मुल्क सूना हो जाएगा, और तुम्हारे शहर वीरान बन जाएगे। 34 'और यह ज़मीन जब तक वीरान रहेगी और तुम दुश्मनों के मुल्क में होंगे, तब तक वह अपने सबत मनाएगी; तब ही इस ज़मीन को आराम भी मिलेगा और वह अपने सबत भी मनाने पाएगी। 35 ये जब तक वीरान रहेगी तब ही तक आराम भी करेगी, जो इसे कभी तुम्हारे सबतों में जब तुम उसमें रहते थे नसीब नहीं हुआ था। 36 और जो तुम में से बच जाएँगे और अपने दुश्मनों के मुल्कों में होंगे, उनके दिल के अन्दर मैं बेहिमाती पैदा कर दूँगा उड़ती हुई पट्टी की आवाज उनको खोड़ेंगी, और वह ऐसे भागेंगे जैसे कोई तलवार से भागता हो और हालाँकि कोई पिछा भी न करता होगा तो भी वह गिर — गिर पड़ेगे। 37 और वह तलवार के खौफ से एक दूसरे से टकरा — टकरा जाएँगे बाबजूद यह कि कोई खेड़ता न होगा, और तुम को अपने दुश्मनों के मुकाबले की ताब न होगी। 38 और तुम गैर कौमों के बीच बिखर कर हलाक हो जाओगे, और तुम्हारे दुश्मनों की ज़मीन तुम को खा जाएगी। 39 और तुम में से जो बाकी बचेंगे वह अपनी बदकारी की बजह से तुम्हारे दुश्मनों के मुल्कों में घुलते रहेंगे, और अपने बाप दादा की बदकारी की बजह से भी वह उन्हीं की तरह घुलते जाएँगे। 40 'तब वह अपनी और अपने बाप दादा की इस बदकारी का इकरार करेंगे कि उन्होंने मुझ से खिलाफ़वर्जी कर कि मेरी हुम्म — उदूली की; और यह भी मान लेंगे कि चूंकि वह मेरे खिलाफ़ चले थे, 41 इसलिए मैं भी उनका मुखालिफ़ हुआ और उनको उनके दुश्मनों के मुल्क में ला छोड़ा। अगर उस वक्त उनका नामज़दान दिल 'आजिज़ बन जाए और वह अपनी बदकारी की सजा को मन्ज़ूर करें, 42 तब मैं अपना 'अहद जो या' कूब के साथ था याद करूँगा, और जो 'अहद मैंने इस्हाक के साथ, और जो 'अहद मैंने अब्द्द्हाम के साथ बान्धा था उनको भी याद करूँगा, और इस मुल्क को याद करूँगा। 43 और वह ज़मीन भी उनसे छूट कर जब तक उनकी गैर हाज़िरी में सूनी पट्टी रहेगी तब तक अपने सबतों को मनाएगी, और वह अपनी बदकारी की सजा को मन्ज़ूर कर लेंगे, इसी बजह से कि उन्होंने मेरे हृकमों को छोड़ दिया था, और उनकी स्त्रीहों को मेरी शरी'अत से नफरत ही गई थी। 44 इस पर भी जब वह अपने दुश्मनों के मुल्क में होंगे तो मैं उनको ऐसा नहीं छोड़ूँगा करूँगा और न मुझे उनसे ऐसी नफरत होगी कि मैं उनकी बिल्कुल फना कर दूँ, और मेरा जो 'अहद उनके साथ है उसे तोड़ दूँ क्यूँकि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ। 45 बल्कि मैं उनकी खातिर उनके बाप दादा के 'अहद की याद करूँगा, जिनको मैं गैरकौमों की आँखों के सामने मुल्क — ए — मिथ से निकाल कर लाया ताकि मैं उनका खुदा ठहराएँ; मैं खुदावन्द हूँ।' 46 यह वह शरी'अत और अहकाम और कवानीन हैं जो खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर अपने और बनी — इस्माइल के बीच मूसा की ज़रिएँ मुकर्रर किए।

27 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 2 "बनी — इस्माइल से कह, कि जब कोई शख्स अपनी मिन्नत पूरी करने लगे, तो मिन्नत के आदमी तेरी कीमत ठहराने के मुताबिक खुदावन्द के होंगे। 3 इसलिए बीस बरस की उम्र से लेकर साठ बरस की उम्र तक के मर्द के लिए तेरी ठहराई हुई कीमत हैकल

की मिस्काल के हिसाब से चाँदी की पचास मिस्काल हों। 4 और अगर वह 'औरत हो, तो तेरी ठहराई हुई कीमत तीस मिस्काल हों। 5 और अगर पाँच बरस से लेकर बीस बरस तक की उम्र हो, तो तेरी ठहराई हुई कीमत मर्द के लिए बीस मिस्काल और 'औरत के लिए दस मिस्काल हों। 6 लेकिन अगर उम्र एक महीने से लेकर पाँच बरस तक की हो, तो लड़के के लिए चाँदी के पाँच मिस्काल और लड़की के लिए चाँदी के तीन मिस्काल ठहराई जाएँ। 7 और अगर साठ बरस से लेकर ऊपर ऊपर की उम्र हो, तो मर्द के लिए पन्द्रह मिस्काल और 'औरत के लिए दस मिस्काल मुकर्रर हों। 8 लेकिन अगर कोई तेरे अन्दाजे की मिस्काल कम मक्कर रखता हो, तो वह काहिन के सामने हाज़िर किया जाए और काहिन उसकी कीमत ठहराएँ, या'नी जिस शख्स ने मिन्नत मानी है उसकी जैसी हैसियत ही वैसी ही कीमत काहिन उसके लिए ठहराएँ। 9 'और अगर वह मिन्नत किसी ऐसे जानवर की है जिसकी कुर्बानी लोग खुदावन्द के सामने चढ़ाया करते हैं, तो जो जानवर कोई खुदावन्द की नज़र करे वह पाक ठहरेगा। 10 वह उसे फिर किसी तरह न बदले, न तो अच्छे की बदले बुरा दे और न बुरे की बदले अच्छा दे, और अगर वह किसी हाल में एक जानवर के बदले दूसरा जानवर दे तो वह और उसका बदल दोनों पाक ठहरेंगे। 11 और अगर वह कोई नापाक जानवर हो जिसकी कुर्बानी खुदावन्द के सामने नहीं पेश करते, तो वह उसे काहिन के सामने खड़ा करे, 12 और चाहे वह अच्छा हो या बुरा काहिन उसकी कीमत ठहराएँ और ऐ काहिन, जो कुछ तू उसका दाम ठहराएगा वही रहेगा। 13 और अगर वह चाहे कि उसका फिदिया देकर उसे छुड़ाए, तो जो कीमत तुने ठहराई है उसमें उसका पाँचवा हिस्सा वह और मिला कर दे। 14 'और अगर कोई अपने घर को पाक करार दे ताकि वह खुदावन्द के लिए पाक हो, तो ख़वाह वह अच्छा हो या बुरा काहिन उसकी कीमत ठहराएँ, और जो कुछ वह ठहराए वही उसकी कीमत रहेगी। 15 और जिसने उस घर को पाक करार दिया है अगर वह चाहे कि घर का फिदिया देकर उसे छुड़ाए, तो तेरी ठहराई हुई कीमत में उसका पाँचवा हिस्सा और मिला दे तब वह घर उत्ती का रहेगा। 16 और अगर कोई शख्स अपने मौस्त्सी खेत का कोई हिस्सा खुदावन्द के लिए पाक करार दे, तो तू कीमत का अन्दाजा करते यह देखना कि उसमें कितना बीज बोया जाएगा। जितनी ज़मीन में एक खोमर के बजान के बराबर जौ जौ सकें उसकी कीमत चाँदी की पचास मिस्काल हो। 17 अगर कोई साल — ए — यूबली से अपना खेत पाक करार दे, तो उसकी कीमत जो तू ठहराए वही रहेगी। 18 लेकिन अगर वह साल — ए — यूबली के बाद अपने खेत को पाक करार दे, तो जिसने बरस दूसरे साल — ए — यूबली के बाकी हों उन्हीं के मुताबिक काहिन उसके लिए स्पष्ट कि हिसाब करे; और जितना हिसाब में आए उतना तेरी ठहराई हुई कीमत से कम किया जाए। 19 और अगर वह जिसने उस खेत को पाक करार दिया है यह चाहे कि उसका फिदिया देकर उसे छुड़ाए, वह तेरी ठहराई हुई कीमत का पाँचवा हिस्सा उसके साथ और मिला कर दे तो वह खेत उसी का रहेगा। 20 और अगर वह उस खेत का फिदिया देकर उसे न छुड़ाए या किसी दूसरे शख्स के हाथ उसे बेच दे, तो फिर वह खेत कभी न छुड़ाया जाएँ; 21 बल्कि वह खेत जब साल — ए — यूबली में छूटे तो वक्फ किए हुए खेत की तरह वह खुदावन्द के लिए पाक होगा, और काहिन की मिल्कियत ठहरेगा 22 और अगर कोई शख्स किसी खरीदि हुए खेत को जो उसका मौस्त्सी नहीं, खुदावन्द के लिए पाक करार दे, 23 तो काहिन जितने बरस दूसरे साल — ए — यूबली के बाकी हों उनके मुताबिक तेरी ठहराई हुई कीमत का हिसाब उसके लिए करे, और वह उसी दिन तेरी ठहराई हुई कीमत को खुदावन्द के लिए पाक जानकर दे दे। 24 और साल — ए — यूबली में वह खेत उसी को वापस हो जाए जिससे वह खरीदा गया था और जिसकी वह

मिल्कियत है। 25 और तेरे सारे कीमत के अन्दाज़े हैकल की मिस्काल के हिसाब से हों, और एक मिस्काल बीस जीरह का हो। 26 लेकिन सिर्फ चौपायों के पहलौठों को जो पहलौठे होने की वजह से खुदावन्द के ठहर चुके हैं, कोई शब्द स पाक करार न दे, चाहे वह बैल हो या भेड़ — बकरी वह तो खुदावन्द ही का है। 27 लेकिन अगर वह किसी नापाक जानवर का पहलौठा हो तो वह शब्द तेरी ठहराई हुई कीमत का पाँचवा हिस्सा कीमत में और मिलाकर उसका फिदिया दे और उसे छुड़ाए, और अगर उसका फिदिया न दिया जाए तो वह तेरी ठहराई हुई कीमत पर बेचा जाए। 28 “तोभी कोई मरब्सूस की हुई चीज़ जिसे कोई शरब्स अपने सारे माल में से खुदावन्द के लिए मरब्सूस करे, चाहे वह उसका आदमी या जानवर या मौस्सी जमीन ही बेची न जाए और न उसका फिदिया दिया जाए; हर एक मरब्सूस की हुई चीज़ खुदावन्द के लिए बहुत पाक है। 29 अगर आदमियों में से कोई मरब्सूस किया जाए तो उसका फिदिया न दिया जाए, वह जस्तर जान से मारा जाए। 30 और जमीन की पैदावार की सारी दहेकी चाहे वह जमीन के बीज की या दरखत के फल की हो, खुदावन्द की है और खुदावन्द के लिए पाक है। 31 और अगर कोई अपनी दहेकी में से कुछ छुड़ाना चाहे, तो वह उसका पाँचवाँ हिस्सा उसमें और मिला कर उसे छुड़ाए। 32 और गाय, बैल और भेड़ बकरी, या जो जानवर चरबाहे की लाठी के नीचे से गुज़रता हो, उनकी दहेकी याँनी दस पीछे एक — एक जानवर खुदावन्द के लिए पाक ठहरे। 33 कोई उसकी देख भाल न करे कि वह अच्छा है या बुरा है और न उसे बदले और अगर कहीं कोई उसे बदले तो वह असल और बदल दोनों के दोनों पाक ठहरे और उसका फिदिया भी न दिया जाए। 34 जो हक्म खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर बनी इस्ताईल के लिए मूसा को दिए वह यही है।

गिन

1 बनी — इसाईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकल आने के दूरे बरस के दूसरे महीने की पहली तारीख को सीना के वीरान में खुदावन्द ने खेमा — ए — इजितमा'अ में मूसा से कहा कि, 2 “तुम एक — एक मर्द का नाम ले लेकर गिनो, और उनके नामों की तांदात से बनी — इसाईल की सारी जमा'अत की मर्दुमशमारी का हिसाब उनके कबीलों और आबाई खान्दानों के मुताबिक करो। 3 बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के जितने इसाईलीं जंग करने के काबिल हों, उन सभों के अलग — अलग दलों को त् और हास्त देनों मिल कर गिन डालो। 4 और हर कबीले से एक — एक आदमी जो अपने आबाई खान्दान का सरदार है तुम्हारे साथ हो। 5 और जो आदमी तुम्हारे साथ होंगे उनके नाम यह हैं: स्विन के कबीले से इतिसूर बिन शदियर, 6 शमौन के कबीले से सल्लीएल बिन सूरीशदी, 7 यहदाह के कबीले से नहसोन बिन 'अम्मीनदाब, 8 इश्कार के कबीले से नतनीएल बिन जुगार, 9 जब्लून के कबीले से इतियाब बिन हेलोन, 10 यूसुफ की मौजूद में से इस्माईल के कबीले का इलीसमा'अ बिन 'अम्मीहूद, और मनस्सी के कबीले का जमलीएल बिन फदाहसर, 11 बिनयमीन के कबीले से अबिदान बिन जिदा'ऊनी 12 दान के कबीले से अखी'अजर बिन 'अम्मीशदी, 13 आशर के कबीले से फज़ ईंगल बिन 'अकरान, 14 ज़द के कबीले से इतियासफ बिन द'ऊएल, 15 नफताली के कबीले से अखीरा' बिन 'एनान। 16 यही अश्खास जो अपने आबाई कबीलों के रईस और बनी — इसाईल में हजारों के सरदार थे जमा'अत में से बुलाए गए। 17 और मूसा और हास्त ने इन अश्खास को जिनके नाम मज़कूर हैं अपने साथ लिया। 18 और उन्होंने दूसरे महीने की पहली तारीख को सारी जमा'अत को जमा' किया, और इन लोगों ने बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के सब आदमियों का शुमार करवा के अपने — अपने कबीले, और आबाई खान्दान के मुताबिक अपना अपना हस्त — औ — नसब लिखवाया। 19 इसलिए जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म दिया था उसी के मुताबिक उसने उनको दश्त — ए — सीना में गिना। 20 और इसाईल के पहलौठे स्विन की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक अपने नाम से गिना गया। 21 इसलिए स्विन के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह छियालीस हजार पाँच सौ थे। 22 और शमौन की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक अपने नाम से गिना गया। 23 इसलिए शमौन के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह उस्तठ हजार तीन सौ थे। 24 और ज़द की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 25 इसलिए ज़द के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह पैतालीस हजार छ: सौ पचास थे। 26 और यहदाह की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 27 इसलिए यहदाह के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चौहतर हजार छ: सौ थे। 28 और इश्कार की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 29 इसलिए इश्कार के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चूबन हजार चार सौ थे।

30 और जब्लून की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 31 इसलिए जब्लून के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह सतावन हजार चार सौ थे। 32 और यूसुफ की औलाद यारीनी इस्माईल की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 33 इसलिए इफ्राईम के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह चालीस हजार पाँच सौ थे। 34 और मनस्सी की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 35 इसलिए मनस्सी के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह बन्तीस हजार दो सौ थे। 36 और बिनयमीन की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 37 इसलिए बिनयमीन के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह बैतिस हजार चार सौ थे। 38 और दान की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 39 इसलिए दान के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह बासठ हजार सात सौ थे। 40 और आशर की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 41 इसलिए आशर के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह इकतालीस हजार पाँच सौ थे। 42 और नफताली की नसल के लोगों में से एक — एक मर्द जो बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का और जंग करने के काबिल था, वह अपने घराने और आबाई खान्दान के मुताबिक गिना गया। 43 इसलिए नफताली के कबीले के जो आदमी शुमार किए गए वह तिरपन हजार चार सौ थे। 44 यही वह लोग हैं जो गिने गए। इन ही को मूसा और हास्त और बनी — इस्माईल के बारह रईसों ने जो अपने — अपने आबाई खान्दान के सरदार थे, गिना। 45 इसलिए बनी — इस्माईल में से जितने आदमी बीस बरस या उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के और जंग करने के काबिल थे, वह सब गिने गए। 46 और उन सभों का शुमार छ: लाख तीन हजार पाँच सौ पचास था। 47 पर लावी अपने आबाई कबीले के मुताबिक उनके साथ गिने नहीं गए। 48 क्यौंकि खुदावन्द ने मूसा से कहा था कि, 49 “तू लालियों के कबीले को न गिना और न बनी — इस्माईल के शुमार में उनका शुमार दाखिल करना, 50 बल्कि तू लालियों को शहादत के घर और उसके सब बर्तनों और उसके सब लालियों के मुतवल्ली मुकर्रर करना। वही घर और उसके सब बर्तनों को उठाया करें और वहीं उसमें खिदमत भी करें और घर के आस — पास वही अपने खेमे लगाया करें। 51 और जब घर को आगे रवाना करने का ब्रक्त हो तो लावी उसे उतारें, और जब घर को लगाने का ब्रक्त हो तो लावी उसे खड़ा करें; और अगर कोई अजनबी शख्स उसके नजदीक आए तो वह जान से मरा जाए। 52 और बनी — इस्माईल अपने — अपने दल के मुताबिक अपनी — अपनी छावनी और अपने — अपने झाँडे के पास अपने — अपने खेमे डालें; 53 लेकिन लावी शहादत के घर के चारों तरफ खेमे लगाएँ, ताकि बनी — इस्माईल की जमा'अत पर गजब न हो; और लावी ही शहादत के घर की निगाहबनी करें।” 54 चुनाँचे बनी — इस्माईल ने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्म दिया था वैसा ही किया।

2 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा कि 2 "बनी — इसाईल अपने — अपने खेमे अपने — अपने झंडे के निशान के पास और अपने — अपने आबाई खान्दान के 'अलम के साथ खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने और उसके चारों तरफ लगाएँ । 3 और जो पश्चिम की तरफ जिधर से सूज निकलता है, अपने खेमे अपने दलों के मुताबिक लगाएँ वह यहदाह की छावनी के झंडे के लोग हों, और अम्मीनदाब का बेटा नहसोन बनी यहदाह का सरदार हो; 4 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे वह सब चौहतर हजार छः सौ थे । 5 और इनके करीब इश्कार के कबीले के लोग खेमे लगाएँ, और जुगर का बेटा नतनीएल बनी इश्कार का सरदार हो; 6 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे चब्बन हजार चार सौ थे । 7 फिर जबलून का कबीला हो, और हेलोन का बेटा इलियाब बनी जबलून का सरदार हो; 8 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे वह सन्तावन हजार चार सौ थे । 9 इसलिए जितने यहदाह की छावनी में अपने — अपने दल के मुताबिक गिने गए वह एक लाख छियासी हजार चार सौ थे। पहले यही रवाना हुआ करें । 10 "और दश्खिन की तरफ अपने दलों के मुताबिक स्विन की छावनी के झंडे के लोग हों, और शदियू का बेटा इलियू बनी स्विन का सरदार हो; 11 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे वह छियासी हजार पाँच सौ थे । 12 और इनके करीब शमौन के कबीले के लोग खेमे लगाएं, और सूरीशी का बेटा सल्मीएल बनी शमौन का सरदार हो; 13 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे वह उनसठ हजार तीन सौ थे । 14 फिर ज़द का कबीला हो, और रँऊएल का बेटा इलियासफ बनी ज़द का सरदार हो; 15 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे वह पैन्तालीस हजार छः सौ पचास थे । 16 इसलिए जितने स्विन की छावनी में अपने — अपने दल के मुताबिक गिने गए वह एक लाख इक्कावन हजार चार सौ पचास थे । रवानी के बक्त दूसरी नौबत इन लोगों की हो । 17 "फिर खेमा — ए — इजितमा'अ लावियों की छावनी के साथ जो और छावनियों के बीच में होणी आगे जाए और जिस तरह से लाली खेमे लगाएँ उसी तरह से वह अपनी — अपनी जगह और अपने — अपने झंडे के पास — पास चलें । 18 'और पश्चिम की तरफ अपने दलों के मुताबिक इक्राईम की छावनी के झंडे के लोग हों, और 'अम्मीहद का बेटा इल्लिसमा' बनी इक्राईम का सरदार हो; 19 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे, वह चालीस हजार पाँच सौ थे । 20 और इनके करीब मनस्सी का कबीला हो, और फदाहसूर का बेटा जमतीएल बनी मनस्सी का सरदार हो; 21 उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे बत्तीस हजार दो सौ थे । 22 फिर बिनयमीन का कबीला हो, और जिद'जैनी का बेटा अबिदान बनी बिनयमीन का सरदार हो; 23 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे वह पैतीसी हजार चार सौ थे । 24 इसलिए जितने इक्राईम की छावनी में अपने — अपने दल के मुताबिक गिने गए वह एक लाख आठ हजार एक सौ थे । रवाना के बक्त तीसरी नौबत इन लोगों की हो । 25 'और शिमाल की तरफ अपने दलों के मुताबिक दान की छावनी के झंडे के लोग हों और 'अम्मीशीकी का बेटा अर्डी अज़र बनी दान का सरदार हो; 26 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे, वह बासठ हजार सात सौ थे । 27 इनके करीब आशर के कबीले के लोग खेमे लगाएँ, और 'अकरान का बेटा फज़'ईएल बनी आशर का सरदार हो; 28 और उसके दल के लोग जो शमार किए गए थे वह, इकतालीस हजार पाँच सौ थे । 29 फिर नफताली का कबीला हो, और 'एनान का बेटा अर्डीर' बनी नफताली का सरदार हो; 30 और उसके दल के लोग जो शमार किये गए, वह तिरपन हजार चार सौ थे । 31 फिर जितने दान की छावनी में गिने गए वह एक लाख सन्तावन हजार छः सौ थे । यह लोग अपने — अपने झंडे के पास — पास होकर सब से पीछे रवाना हुआ करें ।"

32 बनी — इसाईल में से जो लोग अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक गिने गए वह यही है; और सब छावनियों के जितने लोग अपने — अपने दल के मुताबिक गिने गए वह छः लाख तीन हजार पाँच सौ पचास थे । 33 लेकिन लाली जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्ष किया था, बनी — इसाईल के साथ गिने नहीं गए । 34 इसलिए बनी — इसाईल ने ऐसा ही किया और जो — जो हृक्ष खुदावन्द ने मूसा को दिया था उसी के मुताबिक वह अपने — अपने झंडे के पास और अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक, अपने — अपने घराने के साथ खेमे लगाते और रवाना होते थे ।

3 3 और जिस दिन खुदावन्द ने कोह-ए-सीना पर मूसा से बातें की, तब हास्न और मूसा के पास यह औलाद थी । 2 और हास्न के बेटों के नाम यह हैं: नदब जो पहलौठा था, और अबीह और इलीएलियाजर और ऐतामर । 3 हास्न के बेटे जो कहानत के लिए मम्सू हुए और जिनको उसने कहानत की खिदमत के लिए मम्बसू किया था उनके नाम यहीं हैं । 4 और नदब और अबीह तो जब उन्होंने दश्त — ए — सीना में खुदावन्द के सामने ऊपरी आग पेश की तब ही खुदावन्द के सामने मर गए, और वह बे — औलाद भी थे । और इलीएलियाजर और ऐतामर अपने बाप हास्न के सामने कहानत की खिदमत को अन्जाम देते थे । 5 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 6 "लाली के कबीले को नजदीक लाकर हास्न काहिन के आगे हाजिर कर ताकि वह उसकी खिदमत करें । 7 और जो कुछ उसकी तरफ से और जमा'अत की तरफ से उनको सौंपा जाए वह सब की खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे निगहबानी करें ताकि घर की खिदमत बजा लाएँ । 8 और वह खेमा — ए — इजितमा'अ के सब सामान की और बनी — इसाईल की सारी अमानत की हिफाजत करें ताकि घर की खिदमत बजा लाएँ । 9 और ते लावियों को हास्न और उसके बेटों के हाथ में सुर्पद कर; बनी — इसाईल की तरफ से वह बिल्कुल उसे दे दिए गए हैं । 10 और हास्न और उसके बेटों को मुर्कर कर, और वह अपनी कहानत को महफूज रखें और अगर कोई अजनबी नजदीक आये तो वह जान से मारा जाए । 11 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 12 "देख, मैंने बनी — इसाईल में से लावियों को उन सभों के बदले में ले लिया है जो इसाईलियों में पहलौठी के बच्चे हैं, इसलिए लाली में हों । 13 कर्मीक सब पहलौठे में हैं, इसलिए कि जिस दिन मैंने मूल्क — ए — मिस्र में सब पहलौठों को मारा, उसी दिन मैंने बनी — इसाईल के सब पहलौठों को, क्या इंसान और क्या हैवान, अपने लिए पाक किया; इसलिए वह जस्तर मेरे हों । मैं खुदावन्द हूँ ।" 14 फिर खुदावन्द ने दश्त — ए — सीना में मूसा से कहा, 15 "बनी लाली को उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक शुमार कर, यानी एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के हर लड़के को गिना ।" 16 चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के हृक्ष के मुताबिक जो उसने उसे दिया, उनको गिना । 17 और लाली के बेटों के नाम यह हैं: जैरसोन और किहात और मिरारी । 18 जैरसोन के बेटों के नाम जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं: लिबनी और सिम'ई । 19 और किहात के बेटों के नाम जिनसे उनके खान्दान चले 'अमराम और इज़हार और हब्सू और 'उज़ज़ीएल हैं । 20 और मिरारी के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले, महीनी और मूरी हैं । लावियों के घराने उनके आबाई खान्दानों के मुताफिक यही हैं । 21 और जैरसोन से लिबनीयों और सिम'ईयों के खान्दान चले; यह जैरसोनियों के खान्दान है । 22 इनमें जितने फरजन्द — ए — नीना एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के थे वह सब गिने गए और उनका शुमार सात हजार पाँच सौ था । 23 जैरसोनियों के खान्दानों के आदिमी घर के पीछे पश्चिम की तरफ अपने खेमे लगाया करें । 24 और लालका बेटा इलियासफ, जैरसोनियों के आबाई खान्दानों का सरदार हो । 25 और खेमा — ए — इजितमा'अ के जो सामान बनी जैरसोन की हिफाजत में

सौंपै जाएँ वह यह है: घर और खेमा, और उसका गिलाफ, और खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे का पर्दा, 26 और घर और मजबह के गिर्द के सहन के पर्दे, और सहन के दरवाजे का पर्दा, और वह सब रसियाँ जो उसमें काम आती हैं। 27 और किंहात से 'अमरामियों और इज्हाहरियों और हबस्नियों और 'उज्जीएलियों के खान्दान चले, ये किंहातियों के खान्दान हैं। 28 उनके फर्जन्द — ए — नरीना एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के आठ हजार छ: सौ थे। हैकल की निगहबानी इनके जिम्मे थी। 29 बनी किंहात के खान्दानों के आदमी घर की दाखिनी सिम्म में अपने खेमे डाला करें। 30 और 'उज्जीएल का बेटा इलिसफन किंहातियों के घरानों के आबाई खान्दान का सरदार हो। 31 और सन्दूक और मेज और शमा'दान और दोनों मजबहे और हैकल के बर्तन, जो इबादत के काम में आते हैं, और पर्दे और हैकल में बर्तन का सारा सामान, यह सब उनके जिम्मे हों। 32 और हास्न काहिन का बेटा इली'एलियाजर लावियों के सरदारों का सरदार और हैकल के मृत्वलियों का नाजिर हो। 33 मिरारी से महलियों और मूशियों के खान्दान चले; यह मिरारियों के खान्दान हैं। 34 इसमें जितने फर्जन्द — ए — नरीना एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के थे वह छ: हजार दो सौ थे। 35 और अवीखेल का बेटा सूरील मिरारियों के घरानों के आबाई खान्दान का सरदार हो। यह लोग घर की उत्तरी सिम्म में अपने खेमे डाला करें। 36 और घर के तख्तों और उसकी बेडों और सुतनों और खानों और उसके सब आलात, और उसकी खिदमत के सब लवाजिम की मुहाफिजत, 37 और सहन के चारों तरफ के सुतनों, और खानों और मेडों और रसियों की निगरानी बनी मिरारी के जिम्मे हो। 38 और घर के आगे पश्चिम की तरफ जिधर से सूरज निकलता है, यानी खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे, मूसा और खास्न और उसके बेटे अपने खेमे लगाया करें और बनी — इमाईल के बदले हैकल की फिकाजत किया करें, और जो अजनबी शशक उसके नजदीक आए वह जान से मारा जाए। 39 इलिए लावियों में से जितने एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर की उप्र के थे उनको मूसा और हास्न ने खुदावन्द के हक्म के मुवाफिक उनके घरानों के मुताबिक गिना, वह शुमार में बाईस हजार थे। 40 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि 'बनी इमाईल के सब नरीना पहलौटे, एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर की उप्र के गिन ले और उनके नामों का शमार लगा। 41 और बनी — इमाईल के सब पहलौटों के बदले लावियों को, और बनी — इमाईल के चौपायों के सब पहलौटों के बदले लावियों के चौपायों को मेरे लिए ले। मैं खुदावन्द हूँ।' 42 चूँचे मूसा ने खुदावन्द के हक्म के मुताबिक बनी — इमाईल के सब पहलौटों को गिना। 43 तब जितने नरीना पहलौटे एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर की उप्र के गिने गए, वह नामों के शमार के मुताबिक बाईस हजार दो सौ तिहार थे। 44 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 45 'बनी — इमाईल के सब पहलौटों के बदले लावियों को, और उनके चौपायों के बदले लावियों को ले; और लाली मेरे हों, मैं खुदावन्द हूँ।' 46 और बनी — इमाईल के पहलौटों में जो दो सौ तिहार लावियों के शमार से ज्यादा हैं, उनके फिदिये के लिए 47 तू हैकल की मिस्काल के हिसाब से हर शख्स पाँच मिस्काल लेना एक मिस्काल बीस जीरह का होता है। 48 और इनके फिदिये का स्पया जो शुमार में ज्यादा है तू हास्न और उसके बेटों को देना।' 49 तब जो उनसे जिनको लावियों ने छुड़ाया था, शुमार में ज्यादा निकले थे उनके फिदिये का स्पया मूसा ने उसे लिया। 50 ये स्पया उनने बनी — इमाईल के पहलौटों से लिया, इसलिए हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक हजार तीन सौ पैसठ मिस्कालें बसल हुईं। 51 और मूसा ने खुदावन्द के हक्म के मुताबिक फिदिये का स्पया जैसा खुदावन्द ने मूसा को फरमाया था, हास्न और उसके बेटों को दिया।

4 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा कि, 2 "बनी लाली में से किंहातियों को उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक, 3 तीस बरस से लेकर पचास बरस की उप्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल है, उन सभों को गिनो। 4 और खेमा — ए — इजितमा'अ में पाकतरीन चीजों की निस्बत बनी किंहात का यह काम होगा, 5 कि जब लशकर रवाना हो तो हास्न और उसके बेटे आँ और बीच के पर्दे की ऊतरे और उससे शहादत के सन्दूक को ढाँकें, 6 और उस पर तुख्स की खालों का एक गिलाफ डालें, और उसके ऊपर बिल्कुल आसमानी रंग का कपड़ा बिछाएँ, और उसमें उसकी चीबें लगाएँ। 7 और नज्जर की रोटी की मेज पर आसमानी रंग का कपड़ा बिछाकर, उसके ऊपर तबाक और चमचे और उँडेलने के कटोरे और प्याले रखें; और दाइमी रोटी भी उस पर हो। 8 फिर वह उन पर सुर्ख रंग का कपड़ा बिछाएँ और उसे तुख्स की खालों के एक गिलाफ से ढाँकें, और मेज में उसकी चीबें लगा दें। 9 फिर आसमानी रंग का कपड़ा लेकर उससे रोशनी देने वाले शमा'दान को, और उसके चरागों और गुलारीयों और गुलदानों और तेल के सब बर्तनों को, जो शमा'दान के लिए काम में आते हैं ढाँकें; 10 और उसको और उसके सब बर्तनों को तुख्स की खालों के एक गिलाफ के अन्दर रख कर उस गिलाफ को चौखटे पर धर दें। 11 और जरीन मजबह पर आसमानी रंग का कपड़ा बिछाएँ और उसे तुख्स की खालों के एक गिलाफ से ढाँकें और उसकी चीबें उसमें लगाएँ। 12 और सब बर्तनों को जो हैकल की खिदमत के काम में आते हैं लेकर उनको आसमानी रंग के कपड़े में लपेटें और उनको तुख्स की खालों के एक गिलाफ से ढाँक कर चौखटे पर धरें। 13 फिर वह मजबह पर से सब राख को उठाकर उसके ऊपर अर्धावानी रंग का कपड़ा बिछाएँ। 14 उसके सब बर्तन जिनसे उसकी खिदमत करते हैं जैसे अंगीठियाँ और सेरें और बेल्चे और कटोरे, गर्ज मजबह के सब बर्तन उस पर रखें, और उस पर तुख्स की खालों का एक गिलाफ से ढाँक कर चौखटे पर धरें। 15 और जब हास्न और उसके बेटे हैकल की और हैकल के सब अस्बाब को ढाँक चुके, तब खेमागाह के रवानानी के वक्त बनी किंहात उसके उठाने के लिए आँ लेकिन वह हैकल को न छुँएँ, ऐसा न हो कि वह मर जाएँ। खेमा — ए — इजितमा'अ की यही चीजें बनी किंहात के उठाने की हैं। 16 "और रोशनी के तेल, और खुशबूदार खुशबू और दाइमी नज्जर की कुर्बानी और मसह करने के तेल, और सारे घर, और उसके लवाजिम और हैकल और उसके सामान की निगहबानी हास्न काहिन के बेटे इली'एलियाजर के जिम्मे हो।" 17 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा कि; 18 "तुम लावियों में से किंहातियों के कबीले के खान्दानों को मुनक्तात" होने न देना; 19 बालिक इस मकसद से कि जब वह पाकतरीन चीजों के पास आँ तो जिन्दा रहे, और मर न जाएँ, तुम उनके लिए ऐसा करना कि हास्न और उसके बेटे अन्दर आ कर उनमें से एक — एक का काम और बोझ मुकर्हर कर दें। 20 लेकिन वह हैकल को देखने की खातिर दम भर के लिए भी अन्दर न आने पाएँ, ऐसा न हो कि वह मर जाएँ।" 21 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 22 'बनी जैसोन मैं से भी उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक, 23 तीस बरस से लेकर पचास बरस तक की उप्र के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत के वक्त हाजिर रहते हैं उन सभों को गिन। 24 जैसोनियों के खान्दानों का काम खिदमत करने और बोझ उठाने का है। 25 वह घर के पर्दों को, और खेमा — ए — इजितमा'अ और उसके गिलाफ को, और उसके ऊपर के गिलाफ को जो तुख्स की खालों का है, और खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे के पर्दों को, 26 और घर और मजबह के चारों तरफ के सहन के पर्दों को, और सहन के दरवाजे के पर्दों को और उनकी रसियों को, और खिदमत के

सब बर्तनों को उठाया करें; और इन चीजों से जो — जो काम लिया जाता है वह भी यही लोग किया करें। 27 जैरसोनियों की औलाद का खिदमत करने और बोझ उठाने का सारा काम हास्त और उसके बेटों के हक्म के मुताबिक हो, और तुम उनमें से हर एक का बोझ मुकर्रर करके उनके सुरुद करना। 28 खेमा — ए — इजितमा'अ में बनी जैरसोन के खान्दानों का यही काम रहे और वह हास्त काहिन के बेटे ऐतापर के मातहत होकर खिदमत करें। 29 “और बनी मिरारी में से उनके आबाई खान्दानों और घरानों के मुताबिक, 30 तीस बरस से लेकर पचास बरस तक की उम्र के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत के बक्त हाजिर रहते हैं उन सभों को गिन। 31 और खेमा — ए — इजितमा'अ में जिन चीजों के उठाने की खिदमत उनके जिम्मे हो वह यह है: घर के तज्जे और उसके बेडे, और सूतन और सूतनों के खाने, 32 और चारों तरफ के सहन के सूतन और उनके सब आलात और सरे सामान; और जो चीजें उनके उठाने के लिए तम मुकर्रर करो उनमें से एक — एक का नाम लेकर उसे उनके सुरुद करो। 33 बनी मिरारी के खान्दानों को जो कुछ खिदमत खेमा — ए — इजितमा'अ में हास्त काहिन के बेटे ऐतापर के मातहत करना है वह यही है।” 34 चुनाँचे मूसा और हास्त और जमा'अत के सरदारों ने किहातियों की औलाद में से उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक, 35 तीस बरस की उम्र से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, उन सभों की गिन लिया; 36 और उनमें से जितने अपने घरानों के मुवाफिक गिने गए वह दो हजार सात सौ पचास थे। 37 किहातियों के खान्दानों में से जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में खिदमत करते थे उन सभों का शुमार इतना ही है, जो हक्म खुदावन्द ने मूसा के जरिए दिया था उसके मुताबिक मूसा और हास्त ने उनको गिना। 38 और बनी जैरसोन में से अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक, 39 तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, वह सब गिने गए; 40 और जितने अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक गिने गए वह दो हजार छ: सौ तीस थे। 41 इसलिए बनी जैरसोन के खान्दानों में से जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में खिदमत करते थे और जिनको मूसा और हास्त ने खुदावन्द के हक्म के मुताबिक शुमार किया वह इतने ही थे। 42 और बनी मिरारी के घरानों में से अपने घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक, 43 तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में काम करने के लिए हैकल की खिदमत में शामिल थे, 44 वह सब गिने गए; और जितने उनमें से अपने घरानों के मुवाफिक गिने गए वह तीन हजार दो सौ थे। 45 इसलिए खुदावन्द के उस हक्म के मुताबिक जो उसने मूसा के जरिए दिया था, जिन्होंने को मूसा और हास्त ने बनी मिरारी के खान्दानों में से गिना वह यही है। 46 अलतारज लावियों में से जिनको मूसा और हास्त और इसाईल के सरदारों ने उनके घरानों और आबाई खान्दानों के मुताबिक गिना, 47 यानी तीस बरस से लेकर पचास बरस की उम्र तक के जितने खेमा — ए — इजितमा'अ में खिदमत करने और बोझ उठाने के काम के लिए हाजिर होते थे, 48 उन सभों का शुमार आठ हजार पाँच सौ अस्सी था। 49 वह खुदावन्द के हक्म के मुताबिक मूसा के जरिए अपनी अपनी खिदमत और बोझ उठाने के काम के मुताबिक गिने गए। यूँ वह मूसा के जरिए जैसा खुदावन्द ने उसको हक्म दिया था गिने गए।

5 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 2 “बनी — इसाईल को हक्म दे कि वह हर कोही को, और जिरयान के मरीज़ को, और जो मुर्दे की वजह से नापाक हो, उसको लश्करगाह से बाहर कर दें; 3 ऐसों को चाहे वह मर्द हों या

‘औरत, तुम निकाल कर उनको लश्करगाह के बाहर रख्बो ताकि वह उनकी लश्करगाह को जिसके बीच मैं रहता हूँ, नापाक न करें।’ 4 चुनाँचे बनी — इसाईल ने ऐसा ही किया और उनको निकाल कर लश्करगाह के बाहर रख्बा; जैसा खुदावन्द ने मूसा को हक्म दिया था वैसा ही बनी — इसाईल ने किया। 5 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 6 “बनी — इसाईल से कह कि अगर कोई मर्द ये ‘जौत खुदावन्द की हक्म उद्दील करके कोई ऐसा गुनाह करे जो आदमी करते हैं और कुस्तबाव हो जाए, 7 तो जो गुनाह उसने किया है वह उसका इकरार करे, और अपनी तकसीर के मु’आवजे में पूरा दाम और उसमें पाँचवाँ हिस्सा और मिलकर उस शब्द को दे जिसका उसने कुम्हर किया है। 8 लेकिन अगर उस शब्द का कोई रिश्तेदार न हो जिसे उस तकसीर का मु’आवजा दिया जाए, तो तकसीर का जो मु’आवजा खुदावन्द को दिया जाए वह काहिन का हो ‘अलावा कफ़कारे के उस मेंदे के जिससे उसका कफ़कारा दिया जाए। 9 और जितनी पाक चीजें बनी इसाईल उठाने की कुर्बानी के तौर पर काहिन के पास लाएँ वह उसी की हों। 10 और हर शब्द की पाक की हूँई चीजें उसकी हों और जो चीज़ कोई शब्द काहिन को दे वह भी उसी की हो।” 11 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “बनी इसाईल से कह कि 12 अगर किसी की बीवी गुमराह हो कर उससे बेवफाई करे, 13 और कोई दूसरा आदमी उस ‘औरत के साथ मुबाश्त करे और उसके शौहर को मालूम न हो बल्कि यह उससे पोशीदा रहे, और वह नापाक हो गई हो लेकिन न तो कोई शहिद ही और न वह ‘ऐन फेल के बक्त पकड़ी गई हो। 14 और उसके शौहर के दिल में गैरत आएः और वह अपनी बीवी से गैरत खाने लगे हालाँके वह नापाक नहीं हूँई। 15 तो वह शब्द अपनी बीवी को काहिन के पास हाजिर करे, और उस ‘औरत के चढ़ावे के लिए ऐफा के दस्वे हिस्से के बाबर जौ का आटा लाए लेकिन उस पर न तेल डाले न लबान रख्बे; क्यूँकि यह नज़र की कुर्बानी गैरत की है, यानी यह यादारी की नज़र की कुर्बानी है जिससे गुनाह याद दिलाया जाता है। 16 “तब काहिन उस ‘औरत की नज़दीक लाकर खुदावन्द के सामने खड़ी करे, 17 और काहिन मिट्टी के एक बासन में पाक पानी ले और घर के फर्श की गर्द लेकर उस पानी में डाले। 18 फिर काहिन उस ‘औरत को खुदावन्द के सामने खड़ी करके उसके सिर के बाल खुलवा दे, और यादारी की नज़र की कुर्बानी को जो गैरत की नज़र की कुर्बानी है उसके हाथों पर धरे, और काहिन अपने हाथ में उस कड़वे पानी को ले जो लान्त को लाता है। 19 फिर काहिन उस ‘औरत को कस्सम रिहता कर कहे कि अगर किसी शब्द ने तुझसे सुहबत नहीं की है और तू अपने शौहर के ‘अलावा किसी दूसरे शब्द ने तुझ से सुहबत की है, 21 तो काहिन उस ‘औरत को लान्त की कस्सम खिला कर उससे कहे, कि खुदावन्द तुझे तेरी कौम में तेरी रान को सड़ा कर और तेरे पेट को फुला कर लान्त और फटकार का निशाना बनाएः 22 और यह पानी जो लान्त लाता है तेरी अंतड़ियों में जा कर तेरे पेट को फुलाएँ और तेरी रान को सड़ाएँ। और ‘औरत आमीन, आमीन कहे। 23 “फिर काहिन उन लान्तों को किसी किताब में लिख कर उनको उसी कड़वे पानी में धो डालो। 24 और वह कड़वा पानी जो लान्त को लाता है उस ‘औरत को पिलाएँ, और वह पानी जो लान्त को लाता है उस ‘औरत के पेट में जा कर कड़वा हो जाएगा। 25 और काहिन उस ‘औरत के हाथ से गैरत की नज़र की कुर्बानी को लेकर खुदावन्द के सामने उसको हिलाएँ, और उसे मज़बह के पास लाएँ, 26 फिर काहिन उस नज़र की कुर्बानी में

से उसकी यादगारी के तौर पर एक मुट्ठी लेकर उसे मज़बह पर जलाए, बाद उसके बह यानी उस 'औरत को पिलाए। 27 और जब बह उसे वह यानी पिला चुकेगा, तो ऐसा होगा कि अगर वह नापाक हुई और उसने अपने शौहर से बेवफाई की, तो वह यानी जो लान्त को लाता है उसके पेट में जा कर कड़वा हो जाएगा और उसका पेट फूल जाएगा और उसकी रान सड़ जाएगी; और वह 'औरत अपनी कौम में लान्त का निशाना बनेगी। 28 पर अगर वह नापाक नहीं हुई बल्कि पाक है, तो बे — इल्जाम ठहरेगी और उससे औलाद होगी। 29 "गैरत के बोरे में यही शरा है, चाहे 'औरत अपने शौहर की होती हुई गुमराह होकर नापाक हो जाए या मर्द पर गैरत सवार हो, 30 और वह अपनी बीजी से गैरत खाने लगे; ऐसे हाल में वह उस 'औरत को खुदावन्द के आगे खड़ी करे और कहिन उस पर यह सारी शरी'अत 'अमल में लाए। 31 तब मर्द गुनाह से बरी ठहरेगा और उस 'औरत का गुनाह उसी के सिर लगेगा।"

6 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 2 'बनी — इसाईल से कह कि जब कोई मर्द या 'औरत नज़ीर की मिन्नत, यानी अपने आप को खुदावन्द के लिए अलग रखने की खास मिन्नत माने, 3 तो वह मर्य और शराब से परहेज़ करे, और मर्य का या शराब का सिरका न पिए और न अंगूष्ठ का रस पिए और न तज़ाया या खुशक अंगूष्ठ खाए। 4 और अपनी नज़ारत के तमाम दिनों में बीज से लेकर छिल्के तक जो कुछ अंगूष्ठ के दरखत में पैदा हो उसे न खाए। 5 'और उसकी नज़ारत की मिन्नत के दिनों में उसके सिर पर उस्तरा न फेरा जाए; जब तक वह मुहूर जिसके लिए वह खुदावन्द का नज़ीर बना है पूरी न हो, तब तक वह पाक रहे और अपने सिर के बालों की लट्टों को बढ़ावे दे। 6 उन तमाम दिनों में जब वह खुदावन्द का नज़ीर हो वह किसी लाश के नज़दीक न जाए। 7 वह अपने बाप या माँ या बाई या बहन की खातिर भी जब वह मर्द, अपने आप को नज़िस न करे। क्यूंकि उसकी नज़ारत जो खुदा के लिए है, उसके सिर पर है। 8 वह अपनी नज़ारत की पूरी मुहूर तक खुदावन्द के लिए पाक है। 9 "और अगर कोई आदमी नागहान उसके पास ही मर जाए और उसकी नज़ारत के सिर को नापाक कर दे, तो वह अपने पाक होने के दिन अपना सिर मुण्डवाए, यानी सातवें दिन सिर मुण्डवाए। 10 और आठवें दिन दो कुमरियाँ या कबूतर के दो बच्चे खेमा — ए — इजितामा' अ के दरवाजे पर कहिने के पास लाए। 11 और कहिन एक को खता की कुर्बानी के लिए और दसरे को सोखतनी कुर्बानी के लिए पेश करे और उसके लिए कफ़फ़ारा दे, क्यूंकि वह मर्द की वजह से गुनहगार ठहरा है; और उसके सिर को उसी दिन पाक करे। 12 फिर वह अपनी नज़ारत की मुहूर को खुदावन्द के लिए पाक करे, और एक यक सालाना नर बर्बा जर्म की कुर्बानी के लिए लाए; लेकिन जो दिन गुज़र गए हैं वह गिने नहीं जाएँगे क्यूंकि उसकी नज़ारत नापाक हो गई थी। 13 'और नज़ीर के लिए शरा' यह है, कि जब उसकी नज़ारत के दिन पूरे हो जाएँ तो वह खेमा — ए — इजितामा' अ के दरवाजे पर हाज़िर किया जाए। 14 और वह खुदावन्द के सामने अपना चढ़ावा चढ़ाए, यानी सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बे — ऐब यक — साला मादा बर्बा, और खता की कुर्बानी के लिए एक बे — ऐब मेंदा, 15 और बेखमीरी रेटियों की एक टोकरी, और तेल मिले हुए मैंदे के कुलचे, और तेल चुपड़ी हुई बे — खुमरी रेटियाँ, और उनकी नज़ीर की कुर्बानी, और उनके तपावन लाए। 16 और कहिन उनको खुदावन्द के सामने ला कर उसकी तरफ से खता की कुर्बानी और सोखतनी कुर्बानी पेश करे। 17 और उस मैंदे को बेखमीरी रेटियों की टोकरी के साथ खुदावन्द के सामने सलामती की कुर्बानी के तौर पर पेश करे, और कहिन उसकी नज़ीर की कुर्बानी और उसका तपावन भी अदा करो। 18 फिर वह नज़ीर खेमा — ए — इजितामा' अ के दरवाजे पर अपनी नज़ारत के

बाल मुण्डवाए, और नज़ारत के बालों को उस आग में डाल दे जो सलामती की कुर्बानी के नीचे होगी। 19 और जब नज़ीर अपनी नज़ारत के बाल मुण्डवा चुके, तो कहिन उस मैंदे का उबाला हुआ शाना और एक बे — खुमरी गेटी टोकरी में से और एक बे — खुमरी कुलचा लेकर उस नज़ीर के हाथों पर उनको धरे। 20 फिर कहिन उनको हिलाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने हिलाए। हिलाने की कुर्बानी के सिरी और उठाने की कुर्बानी के शाने के साथ यह भी कहिन के लिए पाक है। इसके बाद नज़ीर मय पी सकेगा। 21 "नज़ीर जो मिन्नत माने और जो चढ़ावा अपनी नज़ारत के लिए खुदावन्द के सामने लाये 'अलावा उसके जिसका उसे मक्कू हो उन सभों के बोरे में शरा' यह है। जैसी मिन्नत उसने मानी हो वैसा ही उसको नज़ारत की शरा' के मुताबिक 'अमल करना पड़ेगा।" 22 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 23 "हास्न और उसके बेटों से कह कि तुम बनी — इस्माईल को इस तरह दुआ दिया करना। तुम उससे कहना: 24 'खुदावन्द तुझे बरकत दे और तुझे महफ़ूज रख खें। 25 "खुदावन्द अपना चेहरा तुझ पर जलवागर फरमाए, और तुझ पर मेहरबान रहे। 26 "खुदावन्द अपना चेहरा तेरी तरफ मुतवज्जिह करे, और तुझे सलामती बख्तो। 27 "इस तरह वह मेरे नाम को बनी — इस्माईल पर रख लें और मैं उनको बरकत बख्त लेंगा।"

7 और जिस दिन मूसा घर को खड़ा करने से फारिग हुआ और उसको और उसके सब सामान को मसह और पाक किया, और मज़बह और उसके सब मसह को भी मसह और पाक किया; 2 तो इस्माईली रईस जो अपने आबाई खान्दानों के सरदार और क़बीलों के रईस और शमार किए हुओं के ऊपर मुकर्खर थे नज़राना लाए। 3 वह अपना हादिया छ: पर्देदार गाड़ियाँ और बारह बैल खुदावन्द के सामने लाये दो — दो रईसों की तरफ से एक — एक गाड़ी और हर रईस की तरफ से एक बैल था, इनको उहोंने घर के सामने हाज़िर किया। 4 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 5 "तुझको उनसे ले ताकि वह खेमा — ए — इजितामा' अ के काम में आए, और तू लालियों में हर शरब की खिदमत के मुताबिक उनको तकसीम कर दे।" 6 तब मूसा ने वह गाड़ियाँ और बैल लेकर उनको लालियों को दे दिया। 7 बनी जैरसोन को उसने उनकी खिदमत के लिहाज से दो गाड़ियाँ और चार बैल दिए। 8 और चार गाड़ियाँ और आठ बैल उसने बनी मिरारी को उनकी खिदमत के लिहाज से हास्न कहिन के बेटे ऐतामर के माताहत करके दिए। 9 लेकिन बनी किहात को उसने कोई गाड़ी नहीं दी, क्यूंकि उनके जिम्मे हैकल की खिदमत थी; वह उसे अपने कन्धों पर उठाते थे, 10 और जिस दिन मज़बह मसह किया गया उस दिन वह रईस उसकी तकदीस के लिए हादिये लाए, और अपने हादियों को वह रईस मज़बह के आगे ले जाने लगे। 11 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "मज़बह की तकदीस के लिए एक — एक रईस एक — एक दिन अपना हादिया पेश करे।" 12 इसलिए पहले दिन यहदाह के बेटीले में से 'अमीनदाब के बेटे नहसोन ने अपना हादिया पेश करा। 13 और उसका हादिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक, और सत्तर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़ीर की कुर्बानी के लिए एक बे — ऐब मेंदा, 14 और बेखमीरी रेटियों की एक टोकरी, और तेल मिले हुए मैंदे के कुलचे, और तेल चुपड़ी हुई बे — खुमरी रेटियाँ, और उनकी नज़ीर की कुर्बानी, और उनके तपावन लाए। 15 सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंदा, एक नर यक — साला बर्बा, 16 खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; 17 और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मैंदे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्बा। यह 'अमीनदाब के बेटे नहसोन का हादिया था। 18 दूसरे दिन ज़ुगार के बेटे नतनीएल ने जो इश्कार के कबीले का सरदार था, अपना हादिया पेश करा। 19 और उसका हादिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक,

— साला बर्दे। यह 'अमीरहूद के बेटे इल्लिसमा' का हादिया था। 54 और आठवें दिन फ़दाहसूर के बेटे जमलीएल ने जो मनस्सी के क़बीले का सरदार था, अपना हादिया पेश करा। 55 और उसका हादिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक, और सतर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; 56 दस मिस्काल सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था; 57 सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंदा, एक नर यक — साला बर्दा, 58 खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; 59 और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंदे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्दे। यह फ़दाहसूर के बेटे जमलीएल का हादिया था। 60 और नवे दिन जिद औनी के बेटे अबिदान ने जो बिनयमीन के क़बीले का सरदार था, अपना हादिया पेश करा। 61 और उसका हादिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक, और सतर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; 62 दस मिस्काल सोने का एक चम्मच जो खुशबू से भरा था; 63 सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंदा, एक नर यक — साला बर्दा; 64 खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; 65 और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंदे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्दे। यह जिद औनी के बेटे अबिदान का हादिया था। 66 और दसवें दिन 'अमीरश़ी' के बेटे अर्धी'अजर ने जो दान के क़बीले का सरदार था, अपना हादिया पेश करा। 67 और उसका हादिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक, और सतर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; 68 दस मिस्काल सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था; 69 सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंदा, एक नर यक — साला बर्दा; 70 खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; 71 और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंदे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्दे। यह 'अमीरश़ी' के बेटे अर्धी'अजर का हादिया था। 72 और ग्यारहवें दिन 'अकरान के बेटे फ़ज़ी'ईल ने जो आशर के क़बीले का सरदार था, अपना हादिया पेश करा। 73 और उसका हादिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक, और सतर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; 74 दस मिस्काल चाँदी का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था; 75 सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंदा, एक नर यक — साला बर्दा; 76 खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; 77 और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंदे, पाँच बकरे, पाँच नर यक — साला बर्दे। यह 'अकरान के बेटे फ़ज़ी'ईल का हादिया था। 78 और बारहवें दिन 'एनान के बेटे अर्धीरा' ने जो बनी नफ़ताली के क़बीले का सरदार था, अपना हादिया पेश करा। 79 और उसका हादिया यह था: हैकल की मिस्काल के हिसाब से एक सौ तीस मिस्काल चाँदी का एक तबाक, और सतर मिस्काल चाँदी का एक कटोरा, उन दोनों में नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा भरा था; 80 दस मिस्काल सोने का एक चम्मच, जो खुशबू से भरा था; 81 सोखतनी कुर्बानी के लिए एक बछड़ा, एक मेंदा, एक नर यक — साला बर्दा; 82 खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा; 83 और सलामती की कुर्बानी के लिए दो बैल, पाँच मेंदे, पाँच बकरे, पाँच नर यकसाला बर्दे। यह 'एनान के बेटे अर्धीरा' का हादिया था। 84 मज़बव के मम्फ़ू होने के दिन जो हादिये उसकी तकदीस के लिए इस्माइली रईसों की तरफ से पेश करे गए वह यही थे: यानी चाँदी के बार तबाक, चाँदी के बारह कटोरे, सोने के बारह चम्मच। 85 चाँदी का हर तबाक वजन में एक सौ तीस मिस्काल और हर एक कटोरा सनर

मिस्काल का था। इन बर्तनों की सारी चाँदी हैकल की मिस्काल के हिसाब से दो हजार चार सौ मिस्काल थी। 86 खुदाबन्द से भेरे हए सोने के बारह चम्मच जो हैकल की मिस्काल की तौल के मुताबिक वजन में दस — दस मिस्काल के थे, इन चम्मचों का सारा सोना एक सौ बीस मिस्काल था। सोखतनी कुर्बानी के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेंदे, बारह नर यक — साला बर्बे अपनी — अपनी नज़र की कुर्बानी के साथ थे; और खता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे थे; 87 सोखतनी कुर्बानी के लिए कुल बारह बछड़े, बारह मेंदे, बारह नर यक — साला बर्बे अपनी — अपनी नज़र की कुर्बानी के साथ थे; और खता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे थे; 88 और सलामती की कुर्बानी के लिए कुल चौबीस बैल, साठ मेंदे, साठ बकरे, साठ नर यक — साला बर्बे थे। मजबह की तकदीस के लिए जब वह मम्सू हुआ इतना हिंदिया पेश करा गया। 89 और जब मूसा खुदा से बातें करने को खेमा — ए — इजितमा'अ में गया, तो उसने सरपेश पर से जो शहादत के सन्दर्भ के ऊपर था, दोनों कस्तबियों के बीच से वह आवाज सुनी जो उससे मुड़ातिब थी; और उसने उससे बातें की।

8 और खुदाबन्द ने मूसा से कहा कि; 2 “हास्न से कह, जब तु चरामों को रोशन करे तो सातों चरामों की रोशनी शमा'दान के सामने हो।” 3 चुनाँचे हास्न ने ऐसा ही किया, उसने चरामों को इस तरह जलाया कि शमा'दान के सामने रोशनी पड़े, जैसा खुदाबन्द ने मूसा को हूक्म दिया था। 4 और शमा'दान की बनावट ऐसी थी कि बह पाये से लेकर फूलों तक गढ़े हुए सोने का बना हुआ था। जो मन्ना खुदाबन्द ने मूसा को दिखाया उसी के मुवाफिक उसने शमा'दान को बनाया। 5 और खुदाबन्द ने मूसा से कहा कि 6 “लावियों को बनी — इसाईल से अलग करके उनको पाक कर। 7 और उनको पाक करने के लिए उनके साथ यह करना, कि खता का पानी लेकर उन पर छिड़कना; फिर वह अपने सारे जिस्म पर उस्तरा फिरवाएँ, और अपने कपड़े धोएँ, और अपने को साफ़ करें। 8 तब वह एक बछड़ा और उसके साथ की नज़र की कुर्बानी के लिए तेल मिला हुआ मैदा ले, और तु खता की कुर्बानी के लिए एक दूसरा बछड़ा भी लेना। 9 और तू लावियों को खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे हाजिर करना और बनी — इसाईल की सारी जमा'अत को जमा' करना। 10 फिर लावियों को खुदाबन्द के आगे लाना, तब बनी — इसाईल अपने — अपने हाथ लावियों पर रख्वें। 11 और हास्न लावियों की बनी — इसाईल की तरफ से हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदाबन्द के सामने पेश करे, ताकि वह खुदाबन्द की खिदमत करने पर रहें। 12 फिर लावी अपने — अपने हाथ बछड़ों के सिरों पर रख्वें, और तू एक को खता की कुर्बानी और दूसरे को सोखतनी कुर्बानी के लिए खुदाबन्द के सामने पेश करना, ताकि लावियों के वास्ते कफ़कारा दिया जाए। 13 फिर तू लावियों को हास्न और उसके बेटों के आगे खड़ा करना और उनको हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदाबन्द के सामने पेश करना। 14 “तू तू लावियों को बनी — इसाईल से अलग करना और लावी मेरे ही ठहरेंगे। 15 इसके बाद लावी खेमा — ए — इजितमा'अ की खिदमत के लिए अन्दर आया करें, इसलिए त उनको पाक कर और हिलाने की कुर्बानी के लिए उनको पेश करना। 16 इसलिए कि वह सब बनी — इसाईल में से मुझे बिल्कुल दे दिए गए हैं, क्योंकि मैंने इन ही को उन सभों के बदले जो इसाईलियों में पहलौंठी के बच्चे हैं, अपने लिए ले लिया है। 17 इसलिए कि बनी — इसाईल के सब पहलौंठे, क्या इंसान क्या हैवान मेरे हैं, मैंने जिस दिन मुल्क — ए — मिस्क के पहलौंठों को मारा उसी दिन उनको अपने लिए पाक किया। 18 और बनी — इसाईल के सब पहलौंठों के बदले मैंने लावियों को ले लिया है। 19 और मैंने बनी — इसाईल में से लावियों को लेकर उनको हास्न और उसके बेटों को 'अता किया है, ताकि वह खेमा — ए — इजितमा'अ में बनी — इसाईल की जगह खिदमत

करें और बनी — इसाईल के लिए कफ़कारा दिया करें; ताकि जब बनी — इसाईल हैकल के नज़दीक आएँ तो उनमें कोई बवा न फैले।” 20 चुनाँचे मूसा और हास्न और बनी — इसाईल की सारी जमा'अत ने लावियों से ऐसा ही किया; जो कुछ खुदाबन्द ने लावियों के बारे में मूसा को हूक्म दिया था, वैसा ही बनी — इसाईल ने उनके साथ किया। 21 और लावियों ने अपने आप को गुनाह से पाक करके अपने कपड़े धोए, और हास्न ने उनको हिलाने की कुर्बानी के लिए खुदाबन्द के सामने पेश करा, और हास्न ने उनकी तरफ से कफ़कारा दिया ताकि वह पाक हो जाएँ। 22 इसके बाद लावी अपनी खिदमत बजा लाने को हास्न और उसके बेटों के सामने खेमा — ए — इजितमा'अ में जाने लगे। इसलिए जैसा खुदाबन्द ने लावियों के बारे में मूसा को हूक्म दिया था उन्होंने वैसा ही उनके साथ किया। 23 फिर खुदाबन्द ने मूसा से कहा, 24 “लावियों के मुत्तुलिक जो बात है वह यह है, कि पच्चीस बरस से लेकर उससे ऊपर — ऊपर की उप्र में वह खेमा — ए — इजितमा'अ की खिदमत के काम के लिए अन्दर हाजिर हुआ करें। 25 और जब पचास बरस के होंगे तो फिर उस काम के लिए न आएँ और न खिदमत करें, 26 बल्कि खेमा — ए — इजितमा'अ में अपने भाइयों के साथ निगहबानी के काम में मशालून हों, और कोई खिदमत न करें। लावियों को जो — जो काम सौंपै जाएँ उनके मुत्तुलिक तू उनसे ऐसा ही करना।”

9 बनी — इसाईल के मुल्क — ए — मिस्क से निकलने के दूसरे बरस के पहले महीने में खुदाबन्द ने दशत — ए — सीना में मूसा से कहा कि; 2 “बनी इसाईल 'ईद — ए — फस्त ह उसके मु'अय्यन बक्त पर मनाएँ। 3 इसी महीने की चौदहीवीं तारीख की शाम को तुम बक्त — ए — मु'अय्यन पर यह 'ईद मनाना, और जितने उसके तौर तरीके और रसम हैं, उन सभों के मुताबिक उसे मनाना।” 4 इसलिए मूसा ने बनी — इसाईल को हूक्म किया कि 'ईद — ए — फस्त ह करें। 5 और उन्होंने पहले महीने की चौदहीवीं तारीख की शाम को दशत — ए — सीना में 'ईद — ए — फस्त की और बनी — इसाईल ने सब पर, जो खुदाबन्द ने मूसा को हूक्म दिया था 'अमल किया। 6 और कई आदमी ऐसे थे जो किसी लाश की वजह से नापाक हो गए थे, वह उस दिन फस्त ह न कर सके। इसलिए वह उसी दिन मूसा और हास्न के पास आए, 7 और मूसा से कहने लगे, “हम एक लाश की वजह से नापाक हो रहे हैं, फिर भी हम और इसाईलियों के साथ बक्त — ए — मु'अय्यन पर खुदाबन्द की कुर्बानी पेश करने से क्यूँ रोके जाएँ?” 8 मूसा ने उनसे कहा, “ठहर जाओ, मैं जरा सुन लूँ कि खुदाबन्द तुम्हारे हक में क्या हूक्म करता है।” 9 और खुदाबन्द ने मूसा से कहा, 10 “बनी — इसाईल से कह कि अगर कोई तुम में से या तुम्हारी नसल में से, किसी लाश की वजह से नापाक हो जाए या वह कहीं दूर सफर में हो जाए वह खुदाबन्द के लिए 'ईद — ए — फस्त ह करे। 11 वह दूसरे महीने की चौदहीवीं तारीख की शाम को यह 'ईद मनाएँ और कुर्बानी के गोशत को बे — खमीरी रोटियों और कड़वी तरकारियों के साथ खाएँ। 12 वह उसमें से कुछ भी सुबह के लिए बाज़ी न छोड़ें, और न उसकी कोई हड्डी तोड़ें, और फस्त को उसके सारे तौर तरीके के मुताबिक मारें। 13 लोकिन जो आदमी पाक हो और सफर में भी न हो, अगर वह फस्त करने से बाज़ रहे तो वह आदमी अपनी कौम में से अलग कर डाला जाएगा; क्योंकि उसने मु'अय्यन बक्त पर खुदाबन्द की कुर्बानी नहीं पेश की इसलिए उस आदमी का गुनाह उसी के सिर लगेगा। 14 और अगर कोई परदेसी तुम में क्याम करता हो और वह खुदाबन्द के लिए फस्त करना चाहे, तो वह फस्त के तौर तरीके और रसम के मुताबिक उसे माने; तुम देसी और परदेसी दोनों के लिए एक ही कानून रखना।” 15 और जिस दिन घर आनी खेमा — ए — शहादत नस्ब हुआ उसी दिन बादल उस पर छा गया,

और शाम को वह घर पर आग सा दिखाई दिया और सुबह तक बैसा ही रहा। 16 और हमेशा ऐसा ही हुआ करता था, कि बादल उस पर छाया रहता और रात को आग दिखाई देती थी। 17 और जब घर पर से वह बादल उठ जाता तो बनी — इसाईल रवाना होते थे, और जिस जगह वह बादल जा कर ठहर जाता वही बनी — इसाईल खेमा लगाते थे। 18 खुदावन्द के हक्म से बनी — इसाईल रवाना होते, और खुदावन्द ही के हक्म से वह खेमे लगाते थे; और जब तक बादल घर पर ठहरा रहता वह अपने खेमे डाले पड़े रहते थे। 19 और जब बादल घर पर बहुत दिनों ठहरा रहता, तो बनी — इसाईल खुदावन्द के हक्म को मानते और रवाना नहीं होते थे। 20 और कभी — कभी वह बादल चंद दिनों तक घर पर रहता, और तब भी वह खुदावन्द के हक्म से खेमे लगाये रहते और खुदावन्द ही के हक्म से वह रवाना होते थे। 21 फिर कभी — कभी वह बादल शाम से सुबह तक ही रहता, तो जब वह सुबह को उठ जाता तब वह रवाना तो थे; और अगर वह रात दिन बराबर रहता, तो जब वह उठ जाता तब ही वह रवाना होते थे। 22 और जब तक वह बादल घर पर ठहरा रहता, चाहे दो दिन या एक महीना या एक बरस हो, तब तक बनी — इसाईल अपने खेमों में मक्कीय रहते और रवाना नहीं होते थे; पर जब वह उठ जाता तो वह रवाना होते थे। 23 गरज वह खुदावन्द के हक्म से मक्का करते और खुदावन्द ही के हक्म से रवाना होते थे; और जो हक्म खुदावन्द मूसा के जरिए देता, वह खुदावन्द के उस हक्म को माना करते थे।

10 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 2 “अपने लिए चाँदी के दो नरसिंगे

बनवा; वह दोनों गढ़कर बनाए जाएँ, त उनको जमा’ अत के बुलाने और लश्करों की रवानगी के लिए काप में लाना। 3 और जब वह दोनों नरसिंगे फूँके, तो सारी जमा’ अत खेमा-ए-इजितमा’ अ के दरवाजे पर रे पास इकट्ठी हो जाए। 4 और अगर एक ही फूँके, तो वह रईस जो हजारों इसाईलियों के सरदार हैं तेरे पास जमा’ हो। 5 और जब तुम साँस बाँध कर जोर से फूँको, तो वह लश्कर जो पश्चिम की तरफ है रवानगी करें। 6 जब तुम दोबारा साँस बाँध कर जोर से फूँको, तो उन लश्करों को जो दण्डिखन की तरफ है रवाना हो। इसलिए रवानगी के लिए साँस बाँध कर जोर से नरसिंगे फूँका करें। 7 लेकिन जब जमा’ अत को जमा’ करना हो तब भी फूँकना, लेकिन साँस बाँध कर जोर से न फूँकना। 8 और हास्त के बेटे जो काहिन हैं वह नरसिंगे फूँका करें। यहीं तौर तरीके हमेशा तुम्हारी नसल — दर — नसल काईम हरे। 9 और जब तुम अपने मुल्क में ऐसे दुश्मन से जो तुम को सताना हो लड़ने को निकलो, तो तुम नरसिंगों को साँस बाँध कर जोर से फूँकना। इस हाल में खुदावन्द तुम्हरे खुदा के सामने तुम्हारी याद होगी और तुम अपने दुश्मनों से नजात पाओगे। 10 और तुम अपनी खुशी के दिन और अपनी मुकर्ररा ‘ईंदों के दिन और अपने महीनों के शुरू में अपनी सोखतीनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों के बक्तव्य नरसिंगे फूँकना ताकि उनसे तुम्हारे खुदा के सामने तुम्हारी यादगारी हो; मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।” 11 और दूसरे साल के दूसरे महीने की बीसवीं तारिख को वह बादल शहादत के घर पर से उठ गया। 12 तब बनी — इसाईल सीना के जंगल से रवाना होकर निकले और वह बादल फारान के जंगल में ठहर गया। 13 इसलिए खुदावन्द के उस हक्म के मुताबिक जो उसने मूसा के जरिए दिया था, उनकी पहली रवानगी हुई। 14 और सब से पहले बनी यहदाव के लश्कर का झांडा रवाना हुआ और वह अपने दलों के मुताबिक चले, उनके लश्कर का सरदार ‘अमीनदाब का बेटा नहसोन था। 15 और इश्कार के कबीले के लश्कर का सरदार जुगर का बेटा नतीन था। 16 और जबलून के कबीले के लश्कर का सरदार हेलोन का बेटा इलियाब था। 17 फिर घर उतारा गया और बनी जैरसोन और बनी मिरारी, जो घर को उठाते थे रवाना हुए। 18 फिर रुबिन के

लश्कर का झांडा आगे बढ़ा और वह अपने दलों के मुताबिक चले, शटियूर का बेटा इलीसूर उनके लश्कर का सरदार था। 19 और शमौन के कबीले के लश्कर का सरदार सूरीशी का बेटा सलमीएल था। 20 और जर के कबीले के लश्कर का सरदार दंऊल का बेटा इलियास्फ था। 21 फिर किहातियों ने जो हैकल को उठाते थे रवानगी की, और उनके पहुँचने तक घर खड़ा कर दिया जाता था। 22 फिर बनी इफ्राईम के लश्कर का झांडा निकला और वह अपने दलों के मुताबिक चले, उनके लश्कर का सरदार ‘अमीनहिद का बेटा इलीसमा’ था। 23 और मनस्सी के कबीले के लश्कर का सरदार फदाहसूर का बेटा जमलीएल था। 24 और बिनयमीन के कबीले के लश्कर का सरदार आजिद औनी का बेटा अबिदान था। 25 और बनी दान के लश्कर का झांडा उनके सब लश्करों के पीछे — पीछे रवाना हुआ और वह अपने दलों के मुताबिक चले, उनके लश्कर का सरदार ‘अमीशीशी का बेटा अज्जी’ अजर था। 26 और आशर के कबीले के लश्कर का सरदार ‘अकरान का बेटा फज’ ईएल था। 27 और नफताली के कबीले के लश्कर का सरदार एनान का बेटा अज्जीरा’ था। 28 तब बनी — इसाईल इसी तरह अपने दलों के मुताबिक कूच करते और आगे रवाना होते थे। 29 इसलिए मूसा ने अपने ससर रंजाएल मिदियानी के बेटे होबाब से कहा कि “हम उस जगह जा रहे हैं जिसके बारे में खुदावन्द ने कहा है कि मैं उसे तुम को दौँगा, इसलिए त भी साथ चल और हम तेरे साथ नेकी करेंगे, क्योंकि खुदावन्द ने बनी — इसाईल से नेकी का वादा किया है।” 30 उन्हे उसे जबाब दिया, “मैं नहीं चलता, बल्कि मैं अपने बतन को और अपने रिश्टेदोरों में लौट कर जाऊँगा।” 31 तब मूसा ने कहा, “हम को छोड़ मत, क्योंकि यह तुझ को मालूम है कि हमको बीराने में किस तरह खेमाजन होना चाहिए, इसलिए तू हमारे लिए अँखों का काम देगा; 32 और अगर तू हमारे साथ चले, तो इतनी बात ज़सर होगी कि जो नेकी खुदावन्द हम से करे वही हम तुझ से करेंगे।” 33 फिर वह खुदावन्द के पहाड़ से सफर करके तीन दिन की राह चले, और तीनों दिन के सफर में खुदावन्द के ‘अहद का संदूक उनके लिए आरामगाह तलाश करता हुआ उनके आगे — आगे चलता रहा। 34 और जब वह लश्करगाह से रवाना होते तो खुदावन्द का बादल दिन भर उनके ऊपर छाया रहता था। 35 और संदूक की रवानगी के बक्तव्य मसा यह कहा करता, “उठ, ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मन तितर — बितर हो जाएँ, और जो तुझ से कीना रखते हैं वह तेरे आगे से भागें।” 36 और जब वह ठहर जाता तो वह यह कहता था, “ऐ खुदावन्द, हजारों — हजार इसाईलियों में लौट कर आ जा।”

11 फिर वह लोग कुड़कुड़ने और खुदावन्द के सनते बुरा कहने लगे; चुनाँचे खुदावन्द ने सुना और उसका गजब भड़का और खुदावन्द की आग उनके बीच जल उठी, और लश्करगाह को एक किनारे से भस्म करने लगी। 2 तब लोगों ने मूसा से फरियाद की; और मूसा ने खुदावन्द से दुआ की, तो आग बुझ गई। 3 और उस जगह का नाम तबेरा पड़ा, क्योंकि खुदावन्द की आग उनमें जल उठी थी। 4 और जो मिली — जुती भीड़ इन लोगों में थी वह तरह — तरह की लालच करने लगी, और बनी — इसाईल भी फिर रोने और कहने लगे, हम को कौन गोश खाने को देगा? 5 हम को वह मछली याद आती है जो हम मिस्र में मुफ्त खाते थे; और हाय! वह खरी, और वह खरबजूँ, और वह गन्दने, और प्याज, और लहसन; 6 लेकिन अब तो हमारी जान खुशक हो गई, यहाँ कोई चीज मयस्सर नहीं और मन के अलावा हम को और कुछ दिखाई नहीं देता। 7 और मन धनिये की तरह था और ऐसा नजर आता था जैसे मोती। 8 लोग इधर — उधर जा कर उसे जमा’ करते और उसे चक्की में पीसते थे। यो ओखली में कट लेते थे, फिर उसे हाइडिंगों में उबाल कर रोटियाँ बनाते थे; उसका मजा ताजा तेल का सा था। 9 और रात को जब लश्करगाह में

ओस पड़ती तो उसके साथ मन भी गिरता था। 10 और मूसा ने सब घरानों के आदमियों को अपने — अपने खेमे के दरवाजे पर रोते सुना, और खुदावन्द का कहर बहुत भड़का और मूसा ने भी बुरा माना। 11 तब मूसा ने खुदावन्द से कहा, “तूने अपने खादिम से यह सख्त बर्ताव क्यूँ किया? और मुझ पर तेरे करम की नज़र क्यूँ नहीं हैं, जो तू इन सब लोगों का बोझ मुझ पर डालता है? 12 क्या यह सब लोग मेरे पेट में पड़े थे? क्या यह मुझ ही से पैदा हुए थे जो तू मुझे कहता है कि जिस तरह से बाप दृश्य पीते बच्चे को उठाए — उठाए फिरता है, उसी तरह मैं इन लोगों को अपनी गोद में उठाए कर उस मुल्क में ले जाऊँ जिसके देने की कक्षम तूने उनके बाप दादा से खार्ड है? 13 मैं इन सब लोगों को कहाँ से गोशत ला कर दूँ? क्यूँकि वह यह कह — कह कर मेरे सामने रोते हैं, कि हम को गोशत खाने को दे। 14 मैं अकेला इन सब लोगों को नवी सम्भाल सकता, क्यूँकि यह मेरी ताकत से बाहर है। 15 और जो तुझे मेरे साथ यही बर्ताव करना है तो मेरे ऊपर अगर तेरे करम की नज़र है, तो मुझे एक ही बार मैं जान से मार डाल ताकि मैं अपनी बुरी हालत देखने ना पाऊँ।” 16 खुदावन्द ने मूसा से कहा, “बनी — इसाईल के बुजुर्गों में से सतर मर्द, जिनको तू जानता है कि कौम के बुजुर्ग और उनके सरदार हैं मेरे सामने जमा” कह और उनको खेमा — ए — इजितमा’अ के पास ले आ; ताकि वह तेरे साथ वहाँ खड़े हों। 17 और मैं उत्तर कर तेरे साथ वहाँ बातें कहूँगा, और मैं उस स्थ में से जो तुझ में है, कुछ लेकर उनमें डाल दूँगा कि वह तेरे साथ कौम का बोझ उठाएँ, ताकि तू उसे अकेला न उठाए। 18 और लोगों से कह कि कल के लिए अपने को पाक कर रखेंगे तो तुम गोशत खाओगे, क्यूँकि तुम खुदावन्द के सुनते हुए यह कह — कह कर रोए हो कि हम को कौन गोशत खाने को देगा? हम तो मिस ही मैं मौज से थे। इसलिए खुदावन्द तुम को गोशत देगा और तुम खाना। 19 और तुम एक या दो दिन नहीं और न पाँच या दस या बीस दिन, 20 बल्कि एक महीना कामिल उत्ते खते रहोगे, जब तक वह तुम्हारे नश्यों से निकलने न लगे और तुम उससे धिन न खाने लगो; क्यूँकि तुम ने खुदावन्द को जो तुहरे बीच है छोड़ दिया, और उसके सामने यह कह — कह कर रोए हो कि हम मिस से क्यूँ निकल आएँ?” 21 फिर मूसा कहने लगा, “जिन लोगों में मैं हूँ उनमें छः लाख तो प्यादे ही हैं, और तू ने कहा है कि मैं उनको इतना गोशत दूँगा कि वह महीने भर उत्ते खते रहेंगे। 22 इसलिए क्या भेड़बकरियों के यह रेवड़ और गाय — बैलों के द्युष्ण उनकी खातिर ज़बह होंगे कि उनके लिए बस हो? या समन्दर की सब मछलियाँ उनकी खातिर इकट्ठी की जाएँ कि उन सब के लिए काफ़ी हो?” 23 खुदावन्द ने मूसा से कहा, “क्या खुदावन्द का हाथ छोटा हो गया है? अब तू देख लोगा कि जो मैंने तुझ से कहा है वह पूरा होता है या नहीं।” 24 तब मूसा ने बाहर जाकर खुदावन्द की बातें उन लोगों को कह सनाई, और कौम के बुजुर्गों में से सतर शशस इकट्ठे करके उनको खेमे के चारों तरफ खड़ा कर दिया। 25 तब खुदावन्द बादल में होकर उत्तरा और उसने मूसा से बातें की, और उस स्थ में से जो उसमें थी कुछ लेकर उसे उन सरत बुजुर्गों में डाला; चुनाँचे जब रुह उनमें आई तो वह नबुव्वत करने लगे, लेकिन बाद में फिर करी न की। 26 लेकिन उनमें से दो शशस लक्षकरगाह ही में रह गए, एक का नाम इलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी स्थ आई; यह भी उन्ही में से थे जिनके नाम लिख लिए गए थे लेकिन यह खेमे के पास न गए, और लक्षकरगाह ही में नबुव्वत करने लगे। 27 तब किसी जवान ने दौड़ कर मूसा को खबर दी और कहने लगा, कि इलदाद और मेदाद लक्षकरगाह में नबुव्वत कर रहे हैं। 28 इसलिए मूसा के खादिम नून के बेटे यश़‘आ ने, जो उसके चुने हुए जवानों में से था मूसा से कहा, “ऐ मेरे मालिक मूसा, तू उनको रोक दे!” 29 मूसा ने उससे कहा, “क्या तुझे मेरी खातिर रशक आता है? काश खुदावन्द के सब लोग नवी होते, और खुदावन्द अपनी स्थ उन

सब में डालता।” 30 फिर मूसा और वह इसाईली बुजुर्ग लक्षकरगाह में गए। 31 और खुदावन्द की तरफ से एक आँखी चली और समन्दर से बर्टे उड़ा लाई, और उनको लक्षकरगाह के बराबर और उसके चारों तरफ एक दिन की राह तक इस तरफ और एक ही दिन की राह तक दूसरी तरफ जमीन से क्रीबन दो — दो हाथ ऊपर डाल दिया। 32 और लोगों ने उठ कर उस सारे दिन और उस सारी रात और उसके दूसरे दिन भी बोरे जमा कीं, और जिसने कम से कम जमा की थीं उसके पास भी दृश्य खोमर के बराबर जमा हो गई, और उन्होंने अपने लिए लक्षकरगाह की चारों तरफ उनको फैला दिया। 33 और उनका गोशत उन्होंने दाँतों से काटा ही था और उसे चबाने भी नहीं पाए थे कि खुदावन्द का कहर उन लोगों पर भड़क उठा, और खुदावन्द ने उन लोगों को बड़ी सख्त बबा से मारा। 34 इसलिए उस मकाम का नाम कब्रोत हतावा रखा गया, क्यूँकि उन्होंने उन लोगों को जिन्होंने लालच किया था वही दफ्न किया। 35 और वह लोग कब्रोत हतावा से सफर करके हसेरात को गए और वही हसेरात में रहने लगे।

12 और मूसा ने एक कूशी ‘औरत से ब्याह कर लिया। तब उस कूशी ‘औरत की बजह से जिसे मूसा ने ब्याह लिया था, मरियम और हास्तन उसकी बदरोई करने लगे। 2 वह कहने लगे, “क्या खुदावन्द ने सिर्फ़ मूसा ही से बातें की हैं? क्या उसने हम से भी बातें नहीं की?” और खुदावन्द ने यह सुना। 3 और मूसा तो इस जमीन के सब आदमियों से ज्यादा हीरीम था। 4 तब खुदावन्द ने अचानक मूसा और हास्तन और मरियम से कहा, “तुम तीनों निकल कर खेमा — ए — इजितमा’अ के पास हाज़िर हो।” तब वह तीनों वहाँ आए। 5 और खुदावन्द बादल के सुनत में होकर उत्तरा और खेमे के दरवाजे पर खड़े होकर हास्तन और मरियम को बुलाया। वह दोनों पास गए। 6 तब उसने कहा, “मेरी बातें सुनो, अगर तुम मैं कोई नवी हो, तो मैं जो खुदावन्द हूँ उसे रोया मैं दिखाई दूँगा और खबाब में उससे बातें कहसँगा। 7 पर मेरा खादिम मूसा ऐसा नवी है, वह मेरे सारे खानादान में अमानत दार है; 8 मैं उससे राजों में नहीं बल्कि आपने — सामने और सरीह तौर पर बातें करता हूँ, और उसे खुदावन्द का दीदार भी नसीब होता है। इसलिए तुम को मेरे खादिम मूसा की बदगोई करते खौफ क्यूँ न आया?” 9 और खुदावन्द का ग़ज़ब उन पर भड़का और वह चला गया। 10 और बादल खेमे के ऊपर से हट गया, और मरियम कोड से बर्फ़ की तरह सफेद हो गई; और हास्तन ने जो मरियम की तरफ नज़र की तो देखा कि वह कोही हो गई है। 11 तब हास्तन मूसा से कहने लगा, “हाय मेरे मालिक, इस गुनाह को हमारे सिर न लगा, क्यूँकि हम से नादानी हूँ और हम ने खता की। 12 और मरियम की उस मेरे हुए की तरह न रहने दे, जिसका जिसम उसकी पैदाइश ही के बक्त आधा गला हुआ होता है।” 13 तब मूसा खुदावन्द से फरियाद करने लगा, “ऐ खुदा, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, उसे शिका दे।” 14 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “अगर उसके बाप ने उसके मूँह पर सिर्फ़ थूका ही होता, तो क्या सात दिन तक वह शर्मिन्दा न रहती? इसलिए वह सात दिन तक लक्षकरगाह के बाहर बन्द रहे, इसके बाद वह फिर अनन्द आने पाए।” 15 चुनाँचे मरियम सात दिन तक लक्षकरगाह के बाहर बन्द रही, और लोगों ने जब तक वह अनन्द आने न पाई रखाना न हुए। 16 इसके बाद वह लोग हसेरात से रखाना हुए और फ़ारान के जंगल में पहुँच कर उन्होंने खेमे लगाए।

13 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 2 “तू आदमियों को भेज कि वह मूलक — ए — कनाँन का, जो मैं बनी — इसाईल को देता हूँ हाल दरियाप्त करें; उनके बाप — दादा के हर कब्रीले से एक आदमी भेजना जो उनके यहाँ का रईस हो।” 3 चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के इरशाद के मुवाफिक फ़ारान के जंगल से ऐसे आदमी रखाना किए जो बनी — इसाईल के सरदार थे।

4 उनके यह नाम थे: स्क्रिन के कबीले से ज़कूर का बेटा सम्मूअ, 5 और शमौन के कबीले से होरी का बेटा साफत, 6 और यहदाह के कबीले से यफुना का बेटा कालिब, 7 और इश्कर के कबीले से युसुफ का बेटा इजाल, 8 और इफ़राईम के कबीले से नून का बेटा होसे'अ, 9 और बिनयमीन के कबीले से रफ़ का बेटा फल्ती, 10 और जबलन के कबीले से सोदी का बेटा ज़ीएल, 11 और यसुफ के कबीले से यानी मनस्सी के कबीले से सूसी का बेटा ज़़ी, 12 और दान के कबीले से ज़मल्ली का बेटा 'अम्मीएल, 13 और आशर के कबीले से मीकाएल का बेटा सत्र, 14 और नफ़ताली के कबीले से युफ़सी का बेटा नव़बी, 15 और ज़इ के कबीले से माकी का बेटा ज्यूएल। 16 यही उन लोगों के नाम हैं जिनको मसा ने मुल्क का हाल दरियाप्त करने को भेजा था। और नून के बेटे होसे'अ का नाम मसा ने यशू'अ रख्खा। 17 और मसा ने उनको रवाना किया ताकि मुल्क — ए — कानान का हाल दरियाप्त करें और उनसे कहा, “तुम इधर दाखिल की तरफ से जाकर पहाड़ों में चले जाना। 18 और देखना कि वह मुल्क कैसा है, और जो लोग वहाँ बसे हैं वह कैसे हैं, जोरावर हैं या कमज़ोर और थोड़े से हैं या बहुत। 19 और जिस मुल्क में वह आबाद है वह कैसा है, अच्छा है या बुरा; जिन शहरों में वह रहते हैं वह कैसे हैं, आया वह खेमों में रहते हैं या किलों में। 20 और वहाँ की ज़मीन कैसी है, ज़राखेज़ है या बंजर और उसमें दरख़त हैं या नहीं, तुम्हारी हिम्मत बन्धी रहे और तुम उस मुल्क का कुछ फल लेते आना।” और वह मौसम अंगू की पहली फ़सल का था। 21 तब वह रवाना हुए और दश्त — ए — सीन से रहोब तक जो हमात के रास्ते में हैं, मुल्क को खबर देखा भाला। 22 और वह दाखिल की तरफ से होते हुए हब्सन तक गए, जहाँ 'अनाक के बेटे अर्खीमान और सीसी और तलमी रहते थे और हब्सन जुअन से जो मिस्र में हैं, सात बरस आगे बसा था। 23 और वह वादी — ए — इस्काल में पहुँचे, वहाँ से उन्होंने अंगू की एक डाली काट ली जिसमें एक ही गुच्छा था, और जिसे दो आदमी एक लाठी पर लटकाए हुए लेकर गए, और वह कुछ अनार और अंजीर भी लाए। 24 उसी गुच्छे की बजह से जिसे इस्माइलियों ने वहाँ से काटा था, उस जगह का नाम वादी — ए — इस्काल पड़ गया। 25 और चालीस दिन के बाद वह उस मुल्क का हाल दरियाप्त करके लौटे। 26 और वह चले और मसा और हासन और बनी — इस्माइल की सारी ज़मा'अत के पास दश्त — ए — फ़रान के कादिस में आए, और उनकी और सारी ज़मा'अत को सब हाल सुनाया, और उस मुल्क का फल उनको दिखाया। 27 और मसा से कहने लगे, “जिस मुल्क में तुम हम को भेजा था हम वहाँ गए, बाक़ै दूध और शहद उसमें बहता है, और यह वहाँ का फल है। 28 लेकिन जो लोग वहाँ बसे हुए हैं वह जोरावर है और उनके शहर बड़े — बड़े और फ़सीलदार हैं, और हम ने बनी 'अनाक को भी वहाँ देखा। 29 उस मुल्क के दाखिली हिस्से में तो अमालीकी आबाद है, और हिनी और यस्सी और अमेरी पहाड़ों पर रहते हैं, और समन्दर के साहिल पर और यरदन के किनारे — किनारे कनानी बसे हुए हैं।” 30 तब कालिब ने मसा के सामने लोगों को चुप कराया और कहा, “चलो, हम एक दम जा कर उस पर कब्जा करें, क्यूँकि हम इस काबिल हैं कि उस पर हासिल कर लें।” 31 लेकिन जो और आदमी उसके साथ गए थे वह कहने लगे, “हम इस लायक नहीं हैं कि उन लोगों पर हमला करें, क्यूँकि वह हम से ज्यादा ताकतवर है।” 32 इन आदमियों ने बनी — इस्माइल को उस मुल्क की, जिसे वह देखने गए थे बुरी खबर दी, और यह कहा, “वह मुल्क जिसका हाल दरियाप्त करने को हम उसमें से गुज़रे, एक ऐसा मुल्क है जो अपने बाशिन्दों को खा जाता है; और वहाँ जिते आदमी हम ने देखें वह सब बड़े कदावर हैं। 33 और हम ने वहाँ बनी 'अनाक को भी देखा

जो जब्बार है और जब्बारों की नसल से हैं, और हम तो अपनी ही निगाह में ऐसे थे जैसे टिढ़े होते हैं और ऐसे ही उनकी निगाह में थे।”

14 तब सारी जमा'अत जोर जोर से चीखने लगी और वह लोग उस रात रोते ही रहे। 2 और कुल बनी — इस्माइल मसा और हासन की शिकायत करने लगे, और सारी जमा'अत उनसे कहने लगी हाय काश हम मिस्र ही में मर जाते या काश इस वीरान ही में मरते। 3 खुदावन्द क्यूँ हम को उस मुल्क में ले जा कर तत्वार से कत्तल कराना चाहता है? 4 “फिर तो हमारी बीवियाँ और बाल बच्चे लूट का माल ठहरेंगे, क्या हमारे लिए बेहतर न होगा कि हम मिस्र को वापस चले जाएँ?” फिर वह आपस में कहने लगे, “आओ हम किसी को अपना सरदार बना लें, और मिस्र को लौट चलें।” 5 तब मसा और हासन बनी — इस्माइल की सारी जमा'अत के सामने और मूँह खो गए। 6 और नून का बेटा यशू'अ और यफ़ुना का बेटा कालिब, जो उस मुल्क का हाल दरियाप्त करने वालों में से थे, अपने — अपने कपड़े फ़ाड कर 7 बनी — इस्माइल की सारी जमा'अत से कहने लगे कि “वह मुल्क जिसका हाल दरियाप्त करने को हम उसमें से गुज़रे, बहुत अच्छा मुल्क है। 8 अगर खदा हम से राजी रहे तो वह हम को उस मुल्क में पहुँचाएंगा, और वही मुल्क जिस में दूध और शहद बहता है हम को देगा। 9 सिर्फ़ इतना हो कि तुम खुदावन्द से बगावत न करो और न उस मुल्क के लोगों से डरो; वह तो हमारी खुराक है, उनकी पनाह उनके सिर पर से जाती रही है और हमारे साथ खुदावन्द है; इसलिए उनका खोफ़ न करो।” 10 तब सारी जमा'अत बोल उठी कि इनको सांसार करो। उस बक्त खेमा — ए — इजितमा'अ में सब बनी — इस्माइल के सामने खुदावन्द का जलाल नुमायाँ हुआ। 11 और खुदावन्द ने मसा से कहा कि “यह लोग कब तक मेरी तौरीन करते रहेंगे? और बावजूद उन सब निशान — आत को जो मैंने इनके बीच किए हैं, कब तक मुझ पर ईमान नहीं लाएँगे? 12 में इनको बवा से मास्त्वा और मीरास से खारिज कर्सँगा, और तुझे एक ऐसी कौम बनाऊँगा जो इनसे कहीं बड़ी और ज्यादा जोरावर हो।” 13 मसा ने खुदावन्द से कहा, “तब तो मिस्री, जिनके बीच से तू इन लोगों को अपने जोर — ए — बाज़ से निकल ले आया यह सुनेंगे, 14 और उसे इस मुल्क के बाशिन्दों को बताएँगे। उन्होंने सुना है कि तू जो खुदावन्द है इन लोगों के बीच रहता है, क्यूँकि तू ऐसे खुदावन्द सरीह तौर पर दिखाइ देता है, और तेरा बादल इन पर साया किए रहता है, और तू दिन को बादल के सुनन में और रात को आग के सुनन में हो कर इनके आग — आगे चलता है। 15 तब अगर तू इस कौम को एक अकेले आदमी की तरह जान से मार डाले, तो वह कौमें जिन्होंने तेरी शोहरत सुनी कहेंगी; 16 कि चौंकि खुदावन्द इस कौम को उस मुल्क में, जिसे उसने इनको देने की कसम खाई थी पहुँचा न सका, इसलिए उसने इनको वीरान में हलाक कर दिया। 17 तब खुदावन्द की कुदरत की 'अज़मत रैते ही इस क्लौल के मुताबिक जाहिर हो, 18 कि खुदावन्द कह करने में धीमा और शफ़कत में गरी है, वह गुमाह और खता को बद्धा देता है लेकिन मुज़रिम को हरगिज़ बरी नहीं करेगा, क्यूँकि वह बाप दादा के गुनाह की सजा उनकी ओलात को तीसी और चौथी नसल तक देता है। 19 इसलिए तू अपनी रहमत की फ़िरावानी से इस उम्मत का गुनाह, जैसे तू मिस्र से लेकर यहाँ तक इन लोगों को मु'आफ़ करता रहा है अब भी मु'आफ़ कर दे।” 20 खुदावन्द ने कहा, “मैंने तेरी दरख़वास्त के मुताबिक मुआफ़ किया; 21 लेकिन मुझे अपनी हायत की कसम और खुदावन्द के जलाल की कसम जिससे सारी जमीन मामूँ होगी, 22 चौंकि इन सब लोगों ने जिन्होंने बावजूद मेरे जलाल के देखने के, और बावजूद उन निशान — आत को जो मैंने मिस्र में और इस वीरान में दिखाए, फिर भी दिस बार मुझे आज़माया और मेरी बात नहीं मानी; 23 इसलिए वह उस मुल्क को जिसके देने की कसम मैंने उनके बाप दादा से

खाई थी देखने भी न पायेगे और जिन्होंने मेरी तौहीन की है उन में से भी कोई उसे देखने नहीं पाएगा। 24 लेकिन इसलिए कि मेरे बन्दे कालिक का कुछ और ही मिजाज था और उसने मेरी पूरी पैरवी की है, मैं उसको उस मुल्क में जहाँ वह हो आया है पहुँचाऊँगा और उसकी औलाद उसकी वारिस होगी। 25 और बादी में तो 'अमालीकी और कना'नी बसे हुए हैं, इसलिए कल तुम घृण कर उस राते से जो बहर — ए — कुलजुम को जाता है वीरान में दाखिल हो जाओ।" 26 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा, 27 "मैं कब तक इस खबरीस पिरोह की जो मेरी शिकायत करती रहती है, बर्दशत करूँ? बनी — इमाइल जो मेरे बरिलाक शिकायतें करते रहते हैं, मैंने वह सब शिकायतें सुनी है। 28 इसलिए तुम उससे कह दो, खुदावन्द कहता है, मुझे अपनी हयात की कसम है कि जैसा तुम ने मेरे सुनते कहा है, मैं तुम से जस्तर वैसा ही कहूँगा। 29 तुम्हारी लाशें इसी वीरान में पड़ी रहेंगी, और तुम्हारी सारी 'तादाद में से या 'नी बीस बरस से लेकर उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के तुम सब जिनने पिने गए, और मुझ पर शिकायत करते रहे, 30 इनमें से कोई उस मुल्क में, जिसके बारे में मैंने कसम खाई थी कि तुमको वहाँ बसाऊँगा, जाने न पाएगा, अलावा यफुन्ना के बेटे कालिक और नून के बेटे यश्वांक के। 31 और तुम्हारे बाल — बच्चे जिनके बारे में तुम ने यह कहा कि वह तो लूट का माल ठहोरे, उनको मैं वहाँ पहुँचाऊँगा, और जिस मुल्क को तुम ने हकीकी जाना वह उसकी हकीकीत पहचानेगे। 32 और तुम्हारा यह हाल होगा कि तुम्हारी लाशें इसी वीरान में पड़ी रहेंगी। 33 और तुम्हारे लड़के बाले चालीस बरस तक वीरान में आवारा पिरते और तुम्हारी जिनाकारियों का फल पाते रहेंगे, जब तक कि तुम्हारी लाशें वीरान में गल न जाएँ। 34 उन चालीस दिनों के हिसाब से जिनमें तुम उस मुल्क का हाल दरियाप्त करते रहे थे, अब दिन पीछे एक — एक बरस या 'नी चालीस बरस तक, तुम अपने गुनाहों का फल पाते रहेंगे; तब तुम मेरे मुखालिक हो जाने को समझोगे। 35 मैं खुदावन्द यह कह चुका हूँ कि मैं इस पूरी खबरीस पिरोह से जो मेरी मुखालिकत पर मुत्ताकिक है कर्ता'रै ऐसा ही कहूँगा, इनका खातामा इसी वीरान में होगा और वह यहीं मरेंगे।" 36 और जिन आदमियों को मूसा ने मुल्क का हाल दरियाप्त करने को भेजा था, जिन्होंने लौट कर उस मुल्क की ऐसी भूमि खबर सुनाई थी, जिससे सारी जमा'अत मूसा पर कुड़कुड़ाने लगी, 37 इसलिए वह आदमी जिन्होंने मुल्क की भूमि खबर दी थी खुदावन्द के सामने बबा से मर गए। 38 लेकिन जो आदमी उस मुल्क का हाल दरियाप्त करने गए थे उनमें से नून का बेटा यश्वांक और यफुन्ना का बेटा कालिक दोनों जिन बचे रहे। 39 और मूसा ने यह बातें सब बनी इसाईन से कहीं, तब वह लोग जार — जार रोए। 40 और वह दूसरे दिन सुबह सर्वे उठ कर यह कहते हुए पहाड़ की चोटी पर चढ़ने लगे, कि हम हाजिर हैं और जिस जगह का वादा खुदावन्द ने किया है वहाँ जाएँगे क्यूँकि हम से खता हुए हैं। 41 मूसा ने कहा, "तुम क्यूँ अब खुदावन्द की हक्म उद्लौ करते हो? इससे कोई फाइदा न होगा। 42 ऊपर मत चढ़ो क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारे बीच नहीं है ऐसा न हो कि अपने दुश्मनों के मुकाबले में शिक्षत खाओ। 43 क्यूँकि वहाँ तुम से आगे 'अमालीकी और कना'नी लोग हैं, इसलिए तुम तलवार से मारे जाओगे; क्यूँकि खुदावन्द से तुम फिर गए हो, इसलिए खुदावन्द तुम्हारे साथ नहीं रहेगा।" 44 लेकिन वह शोड़ी करके पहाड़ की चोटी तक चढ़े चले गए, लेकिन खुदावन्द के 'अहद' का सन्दूक और मूसा लश्करगाह से बाहर न निकले। 45 तब 'अमालीकी और कना'नी जो उस पहाड़ पर रहते थे, उन पर आ पड़े और उनको कत्ल किया और हमा तक उनको मारते चले आए।

15 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 "बनी — इमाइल से कह कि जब तुम अपने रहने के मुल्क में जो मैं तुम को देता हूँ पहुँचो 3 और खुदावन्द के

सामने आतिशी कुबानी, या 'नी सोखतनी कुबानी या खास मिन्त का जबीहा या रजा की कुबानी पेश करो, या अपनी मृ'अय्यन 'ईदों में राहतअंगेज खुशब के तौर पर खुदावन्द के सामने गाय बैल या भेड़ बकरी चढ़ाओ। 4 तो जो शख्स अपना हदिया लाए, वह खुदावन्द के सामने नज़र की कुबानी के तौर पर ऐफा के दस्वे हिस्से के बराबर मैदा जिसमें चौथाई हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो, 5 और तपावन के तौर पर चौथाई हीन के बराबर मय भी लाएँ, तू अपनी सोखतनी कुबानी या अपने जबीहे के हर बर्बे के साथ इतना ही तैयार किया करना। 6 और हर मेंठे के साथ ऐफा के पाँचवे हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तिहाई हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो, नज़र की कुबानी के तौर पर लाना। 7 और तपावन के तौर पर तिहाई हीन के बराबर मय देना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशब ठहरे। 8 और जब तू खुदावन्द के सामने सोखतनी कुबानी या खास मिन्त के जबीहे या सलामती के जबीहे के तौर पर बछड़ा पेश करे, 9 तो वह उस बछड़े के साथ नज़र की कुबानी के तौर पर ऐफा के तीन दर्हाई हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें अधे हीन के बराबर तेल मिला हुआ हो चढ़ाए। 10 और तू तपावन के तौर पर आधे हीन के बराबर मय पेश करना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशब की अतिशी कुबानी ठहरे। 11 "हर बछड़े, और हर मेंठे, और हर नर बर्बे या बकरी के बच्चे के लिए ऐसा ही किया जाए। 12 तुम जितने जानवर लाओ, उनके शरार के मुताबिक एक — एक के साथ ऐसा ही करना। 13 जितने देसी खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशब की अतिशी कुबानी पेश करें वह उस वक्त यह सब काम इसी तरीके से करें। 14 और अगर कोई परदेसी तुम्हारे साथ क्रयाम करता हो या जो कोई नसलों से तुम्हारे साथ रहता आया हो, और वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशब की अतिशी कुबानी पेश करना चाहे तो जैसा तुम करते हो वह भी वैसा ही करे। 15 मज़मे के लिए, या 'नी तुम्हारे लिए और उस परदेसी के लिए जो तुम में रहता हो नसल — दर — नसल हमेशा एक ही कानून रहेगा; खुदावन्द के आगे परदेसी भी वैसे ही हो जैसे तुम हो। 16 तुम्हारे लिए और परदेसियों के लिए जो तुम्हारे साथ रहते हैं एक ही शरी'अत और एक ही कानून हो।" 17 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि: 18 "बनी — इमाइल से कह, जब तुम उस मुल्क में पहुँचो, जहाँ मैं तुम को लिए जाता हूँ, 19 और उस मुल्क की रोटी खाओ तो खुदावन्द के सामने उठाने की कुबानी पेश करना। 20 तुम अपने पहले गैंधे हुए आटे का एक गिर्दी उठाने की कुबानी के तौर पर अदा करना, जैसे खलीहान की उठाने की कुबानी को लेकर उठाते हो वैसे ही इसे भी उठाना। 21 तुम अपनी नसल — दर — नसल अपने पहले ही गैंधे हुए आटे में से कुछ लेकर उसे खुदावन्द के सामने उठाने की कुबानी के तौर पर पेश करना। 22 "और अगर तुम से भल हो जाए और तुमने उन सब हक्मों पर जो खुदावन्द ने मूसा को दिए 'अमल न किया हो, 23 या 'नी जिस दिन से खुदावन्द ने हुक्म देना शुरू' किया उस दिन से लेकर आगे — अगे, जो कुछ हक्म खुदावन्द ने तुम्हारी नसल — दर — नसल मूसा के जरिए' तुम को दिया है, 24 उसमें अगर अनजाने में कोई खता हो गई हो और जमा'अत उससे वाकिफ न हो तो सारी जमा'अत एक बछड़ा सोखतनी कुबानी के लिए पेश करो, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशब हो, और उसके साथ शरा' के मुताबिक उसकी नज़र की कुबानी और उसका तपावन भी चढ़ाए, और खता की कुबानी के लिए एक बकरा पेश करो। 25 यूँ काहिन बनी — इमाइल की सारी जमा'अत के लिए कफ़रारा दे तो उनकी मृ'अकी मिलेगी, क्यूँकि यह महज भूल थी और उन्होंने उस भूल के बदले वह कुबानी भी चढ़ाई जो खुदावन्द के सामने आतिशी कुबानी ठहरती है, और खता की कुबानी भी खुदावन्द के सामने पेश की। 26 तब बनी — इमाइल की सारी जमा'अत को और उन परदेसियों को भी जो उनमें रहते हैं

मुआफी मिलेगी, क्यूंकि जमा' अत के एतबार से यह अनजाने में हुआ। 27 और अगर एक ही शख्स अनजाने में खता करे तो वह यक — साला बकरी खता की कुर्बानी के लिए चढ़ाए।" 28 यूँ कहिन उस शख्स की तरफ से जिसने अनजाने में खता की, उसकी खता के लिए खुदावन्द के सामने कफ़क़रा दे तो उसे मुआफी मिलेगी। 29 जिस शख्स ने अनजाने में खता की हो, उसके लिए तुम एक ही शरा' रखना चाहे वह बनी — इसाईल में से देसी हो या परदेसी जो उनमें रहता हो। 30 लेकिन जो शख्स बेखौफ हो कर गुनाह करे, चाहे वह देसी हो या परदेसी, वह खुदावन्द की बैंज़ती करता है; वह शख्स अपने लोगों में से अलग किया जाएगा। 31 क्यूंकि उसने खुदावन्द के कलाम की हिकारत की और उसके हृक्ष को तोड़ डाला, वह शख्स बिल्कुल अलग कर दिया जाएगा, उसका गुनाह उसी के सिर लगेगा।" 32 और जब बनी — इसाईल वीरान में रहते थे, उन दिनों एक आदमी उनको सबत के दिन लकड़ियाँ जमा' करता हुआ मिला। 33 और जिनकी वह लकड़ियाँ जमा' करता हुआ मिला वह उसे मूसा और हास्न और सारी जमा' अत के पास ले गए। 34 उन्होंने उसे हवालात में रखा, क्यूंकि उनको यह नहीं बताया गया था कि उसके साथ क्या करना चाहिए। 35 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "यह शख्स जर जान से मारा जाए; सारी जमा' अत लश्करगाह के बाहर उसे पथराव करो।" 36 चुनौते जैसा खुदावन्द ने मूसा को हृक्ष दिया था, उसके मुताबिक सारी जमा' अत ने उसे लश्करगाह के बाहर ले जाकर पथराव किया और वह मर गया। 37 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 38 "बनी — इसाईल से कह कि वह नसल — दर — नसल अपने लिवासों के किनारों पर झालर लगाएँ, और हर किनारे की झालर के ऊपर आसमानी रंग का डोरा टाँकें। 39 यह झालर तुम्हारे लिए ऐसी हो कि जब तुम उसे देखो तो खुदावन्द के सारे हृक्षों को याद करके उन पर 'अमल करो और अपने दिल और आँखों की ख्वाहिशों की पैरवी में जिनाकारी न करते फिरो जैसा करते आए हो; 40 बल्कि मेरे सब हृक्षों को याद करके उनको 'अमल में लाओ और अपने खुदा के लिए पाक हो। 41 मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो तुम को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल कर लाया ताकि तुम्हारा खुदा ठहसँ। मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ।"

16 और कोरह बिन इज़हार बिन किहात बिन लावी ने बनी स्विन में से इलियाब के बेटों दातन और अबीराम, और पलत के बेटे ओन के साथ मिल कर और आदमियों को साथ लिया; 2 और वह और बनी — इसाईल में से ढाई सौ और अश्खास जो जमा' अत के सरदार और चीया और मशहर आदमी थे, मूसा के मुकाबले में उठे; 3 और वह मूसा और हास्न के खिलाफ इकट्ठे होकर उनसे कहने लगे, "तुम्हारे तो बड़े दावे हो चले, क्यूंकि जमा' अत का एक — एक आदमी पाक है और खुदावन्द उनके बीच रहता है। इसलिए तुम अपने आप को खुदावन्द की जमा' अत से बड़ा क्य़ूँकर ठहराते हो?" 4 मूसा यह सुन कर मूँह के बल गिरा। 5 फिर उसने कोरह और उसके कुल फरीक से कहा कि "कल सबह खुदावन्द दिखा देगा कि कौन उसका है और कौन पाक है और वह उसी को अपने नजदीक आने देगा, क्यूंकि जिसे वह खुद चुनेगा उसे वह अपनी कुरबत भी देगा। 6 इसलिए ऐ कोरह और उसके फरीक के लोगों, तुम यैं करो कि अपना अपना खुशबूदान लो, 7 और उनमें आग भरो और खुदावन्द के सामने कल उनमें खुशबू जलाओ, तब जिस शख्स को खुदावन्द चुन ले वही पाक ठहरेगा। ऐ लावी के बेटों, बड़े — बड़े दावे तो तुम्हारे हैं।" 8 फिर मूसा ने कोरह की तरफ मुखातिब होकर कहा, ऐ बनी लावी सुगो, 9 क्या यह तुम को छोटी बात दिखाई देती है कि इसाईल के खुदा ने तुम को बनी — इसाईल की जमा' अत में से चुन कर अलग किया, ताकि तुम को वह अपनी कुरबत बाल्ये और तुम खुदावन्द के घर की खिदमत करो, और जमा' अत के आगे खड़े हो

कर उसकी भी खिदमत बजा लाओ। 10 और तुझे और तेरे सब भाइयों को जो बनी लावी हैं, अपने नजदीक आने दिया? इसलिए क्या अब तुम कहात को भी चाहते हो? 11 इसलिए तू और तेरे फरीक के लोग, यह सब के सब खुदावन्द के खिलाफ इकट्ठे हुए हैं, और हास्न कौन है जो तुम की शिकायत करते हो?" 12 फिर मूसा ने दातन और अबीराम को जो इलियाब के बेटे थे बुलवा भेजा; उन्होंने कहा, "हम नहीं आते; 13 क्या यह छोटी बात है कि तू हम को एक ऐसे मुल्क से, जिसमें दूध और शहद बहता है निकाल लाया है, कि हमको वीरान में हलाक करे, और उस पर भी यह तुर्प है कि अब तू सरदार बन कर हम पर हृक्षमत जताता है? 14 इसके अलावा तूने हम को उस मुल्क में भी नहीं पहँचाया जहाँ दूध और शहद बहता है, और न हम को खेतों और ताकिस्तानों का वारिस बनाया; क्या तू इन लोगों की आँखें निकाल डालेगा? हम तो नहीं आने के।" 15 तब मूसा बहुत तैश में आ कर खुदावन्द से कहने लगा, "तू उनके हृदयों की तरफ तवज्ज्ञ मत कर। मैंने उनसे एक गधा भी नहीं लिया, न उनमें से किसी को कोई नुकसान पहँचाया है।" 16 फिर मूसा ने कोरह से कहा, "कल तू अपने सारे फरीक के लोगों को लेकर खुदावन्द के आगे हाजिर हो; तू भी हो और वह भी हो, और हास्न भी हो।" 17 और तुम में से हर शख्स अपना खुशबूदान लेकर उसमें खुशबू डाले, और तुम अपने — अपने खुशबूदान को जो शुमार में ढाई सौ होंगे, खुदावन्द के सामने लाओ और तू भी अपना खुशबूदान लाना और हास्न भी लाए।" 18 तब उन्होंने अपना अपना खुशबूदान लेकर और उनमें आग रख कर उस पर खुशबू डाला, और खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर मूसा और हास्न के साथ आ कर खड़े हुए। 19 और कोरह ने सारी जमा' अत को उनके खिलाफ खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर जमा' कर लिया था। तब खुदावन्द का जलाल सारी जमा' अत के साथ नुगायाँ हुआ। 20 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा; 21 कि "तुम अपने आप को इस जमा' अत से बिल्कुल अलग कर लो, ताकि मैं उनको एक पल में भसम कर दूँ।" 22 तब वह मूँह के बल पिर कर कहने लगे, "ऐ खुदा, सब बशर की रुहों के खुदा! क्या एक आदमी के गुनाह की वजह से तेरा कहर सारी जमा' अत पर होगा?" 23 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, 24 "तू जमा' अत से कह कि तुम कोरह और दातन और अबीराम के खेमों के आस पास से दूर हट जाओ।" 25 और मूसा उठ कर दातन और अबीराम की तरफ गया, और बनी — इसाईल के बुजूर्ज उसके पीछे पीछे गए। 26 और उसने जमा' अत से कहा, "इन शरीर आदमियों के खेमों से निकल जाओ और उनकी किसी चीज़ को हाथ न लगाओ, ऐसा न हो कि तुम भी उनके सब गुहाहों की वजह से हलाक हो जाओ।" 27 तब वह लोग कोरह और दातन और अबीराम के खेमों के आस पास से दूर हट गए, और दातन और अबीराम अपनी बीवियों और बेटों और बाल — बच्चों समेत निकल कर अपने खेमों के दरवाजों पर खड़े हुए। 28 तब मूसा ने कहा, "इस से तुम जान लेगे के खुदावन्द ने मुझे भेजा है कि यह सब काम करूँ, क्यूंकि मैंने अपनी मर्जी से कुछ नहीं किया।" 29 अगर यह आदमी वैसी ही मौत से मरे जो सब लोगों को आती है, या इन पर वैसे ही हादसे गुज़रे जो सब पर गुज़रते हैं, तो मैं खुदावन्द का भेजा हुआ नहीं हूँ। 30 लेकिन अगर खुदावन्द कोई नया करिश्मा दिखाएँ, और जमीन अपना मूँह खोल दे और इनको इनके घर — बार के साथ निगल जाए और यह जीते जी पाताल में समा जाएँ, तो तुम जाना कि इन लोगों ने खुदावन्द की तहकीर की है।" (Sheol h7585) 31 उसने यह बातें खत्म ही की थी कि जमीन उनके पाओं तले फट गई। 32 और जमीन ने अपना मूँह खोल दिया और उनको और उनके घर — बार को, और कोरह के यहाँ के सब आदमियों को और उनके सारे माल — और अस्वाब को निगल गई। 33 तब वह और उनका सारा घर — बार जीते जो

पाताल में समा गए और जमीन उनके ऊपर बराबर हो गई, और वह जमा'अत में से खत्म हो गए। (Sheol h7585) 34 और सब इसाईली जो उनके आस पास थे उनका चिल्लाना सुन कर यह कहते हुए भागे, कि कहीं जमीन हम को भी निगल न ले। 35 और खुदावन्द के सामने से आग निकली और उन ढाई सौ आदमियों को जिन्होंने खुशबू पेश करा था भसम कर डाला। 36 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 37 "हास्न काहिन के बेटे इसी"एलियाजर से कह कि वह खुशबूदान को शोलों में से उठा ले और आग के अंगारों को उधर ही खिखेर दे क्यूंकि वह पाक है। 38 जो खत्मकार अपनी ही जान के दुश्मन हए, उनके खुशबूदानों के पीट पीट कर पतर बनाए जाएँ ताकि वह मजबह पर मंडे जाएँ क्यूंकि उन्होंने उनको खुदावन्द के सामने रख दिया था इसलिए वह पाक है, और वह बनी — इसाईल के लिए एक निशान भी ठहरेंगे।" 39 तब इनी"एलियाजर काहिन ने पीतल के उन खुशबूदानों को उठा लिया जिनमें उन्होंने जो भसम कर दिए गए थे खुशबू पेश करा था, और मजबह पर मंडने के लिए उनके पतर बनवाएः 40 ताकि बनी — इसाईल के लिए एक यादगार हो कि कोई गैर शख्स जो हास्न की नसल से नहीं, खुदावन्द के सामने खुशबू जलाने को नजदीक न जाएँ ऐसा न हो कि वह कोरह और उसके फरीक की तरह हलाक हो, जैसा खुदावन्द ने उसको मूसा के जरिएँ बता दिया था। 41 लेकिन दूसरे ही दिन बनी — इसाईल की सारी जमाअत ने मूसा और हास्न की शिकायत की और कहने लगे, कि तुम ने खुदावन्द के लोगों को मार डाला है। 42 और जब वह जमा'अत मूसा और हास्न के खिलाफ इक्षी हो रही थी तो उन्होंने खेमा — ए — इजितमा'अ की तरफ निगाह की, और देखा कि बादल उस पर छाया हआ है और खुदावन्द का जलाल नुमायाँ है। 43 तब मूसा और हास्न खेमा — ए — इजितमा'अ के सामने आए। 44 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 45 "तुम इस जमा'अत के बीच से हट जाओ, ताकि मैं इनको एक पत्त में भसम कर डालूँ।" तब वह मुँह के बल पिर। 46 और मूसा ने हास्न से कहा, "अपना खुशबूदान ले और मजबह पर से आग लेकर उसमें डाल और उस पर खुशबू जला, और जल्द जमा'अत के पास जाकर उनके लिए कफ़कारा दे क्यूंकि खुदावन्द का कहर नाजिल हुआ है और बबा शूरू हो गई।" 47 मूसा के कहने के मुताबिक हास्न खुशबूदान लेकर जमा'अत के बीच में दौड़ता हुआ गया और देखा कि बबा लोगों में फैलने लगी है, तब उसने खुशबू जलायी और उन लोगों के लिए कफ़कारा दिया। 48 और वह मुर्दों और जिन्दों के बीच में खड़ा हुआ, तब बबा खत्म हुई। 49 तब 'अलावा उनके जो कोरह के मुआ'मिले की बजह से हलाक हुए थे, चौदह हजार सात सौ आदमी बबा से हलाक गए। 50 फिर हास्न लौट कर खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर मूसा के पास आया और बबा खत्म हो गई।

17 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 2 "बनी — इसाईल से गुफ्तगू मरके उनके सब सरदारों से उनके आबाई खानादानों के मुताबिक, हर खानादान एक लाठी के हिसाब से बारह लाठियाँ ले; और हर सरदार का नाम उसी की लाठी पर लिख, 3 और लाती की लाठी पर हास्न का नाम लिखाना। क्यूंकि उनके आबाई खानादानों के हर सरदार के लिए एक लाठी होगी। 4 और उनको लेकर खेमा — ए — इजितमा'अ में शहादत के सन्दूक के सामने जहाँ मैं तुम से मुलाकात करता हूँ रख देना। 5 और जिस शख्स को मैं चुनूँगा उसकी लाठी से कलियाँ फूट निकलेंगी, और बनी — इसाईल जो तुम पर कुड़कुड़ाते रहते हैं, वह कुड़कुड़ाना मैं अपने पास से दफ़ा करूँगा।" 6 तब मूसा ने बनी — इसाईल से गुफ्तगू की, और उनके सब सरदारों ने अपने आबाई खानादानों के मुताबिक हर सरदार एक लाठी के हिसाब से बारह लाठियाँ उस को दीं; और हास्न की लाठी भी उनकी लाठियों में थी। 7 और मूसा ने उन लाठियों को

शहादत के खेमे में खुदावन्द के सामने रख दिया। 8 और दूसरे दिन जब मूसा शहादत के खेमे में गया, तो देखा कि हास्न की लाठी मैं जो लाती के खानादान के नाम की थी कलियाँ फूटी हुई और शगफ़े छिले हुए और पक्के बादम लगे हैं। 9 और मूसा उन सब लाठियों को खुदावन्द के सामने से निकाल कर सब बनी — इसाईल के पास ले गया, और उन्होंने देखा और हर शख्स ने अपनी लाठी ले ली। 10 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "हास्न की लाठी शहादत के सन्दूक के आगे धर दे, ताकि वह फिराओंज़ों के लिए एक निशान के तौर पर रख दी रहे, और इस तरह तुमकी शिकायतें जो मैं खिलाफ़ होती रहती हैं बन्द कर दे ताकि वह हलाक न हो।" 11 और मूसा ने जैसा खुदावन्द ने उसे हुक्म दिया था वैसा ही किया। 12 और बनी — इसाईल ने मूसा से कहा, "देख, हम हलाक हुए जाते, हम हलाक हुए जाते, हम सब के सब हलाक हुए जाते हैं। 13 जो कोई खुदावन्द के घर के नजदीक जाता है, मर जाता है। तो क्या हम सब के सब हलाक ही हो जाएँगे?"

18 और खुदावन्द ने हास्न से कहा कि, हैकल का बार — ए — गुनाह तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे आबाई खानादान पर होगा, और तुम्हारी कहानत का बार — ए — गुनाह भी तुझ पर और तेरे बेटों पर होगा। 2 और तुलावी के कबीले यानी अपने बाप के कबीले के लोगों को भी जो तेरे भाई हैं अपने साथ ले आया कर, ताकि वह तेरे साथ होकर तेरी खिदमत करें; लेकिन शहादत के खेमे के आगे तू और तेरे बेटे ही आया करें। 3 वह तेरी खिदमत और सरे खेमे की मुहाफ़िज़त करें; सिर्फ वह हैकल के बर्तनों और मजबह के नजदीक न जाएँ, ऐसा न हो कि वह भी और तुम भी हलाक हो जाओ। 4 इसलिए वह तेरे साथ होकर खेमा — ए — इजितमा'अ और खेमे के इत्तेमाल की सब चीज़ों की मुहाफ़िज़त करें, और कोई गैर शख्स तुहरे नजदीक न आने पाए। 5 और तुम हैकल और मजबह की मुहाफ़िज़त करो ताकि आगे को फिर बनी इसाईल पर कहर नाजिल न हो। 6 और देखो, मैंने बनी लाती को जो तुहरे भाई हैं बनी — इसाईल से अलग करके खुदावन्द की खातिर बल्खिश के तौर पर तुम को सुर्पद किया, ताकि वह खेमा — ए — इजितमा'अ की खिदमत करें। 7 लेकिन मजबह की और पर्दे के अन्दर की खिदमत तेरे और तेरे बेटों के जिम्मे हैं, इसलिए उसके लिए तुम अपनी कहानत की हिफ़ाज़त करना, वहाँ तुम ही खिदमत किया करना, कहानत की खिदमत का शर्फ़ मैं तुम को बरबाता हूँ और जो गैर शख्स नजदीक आए वह जान से मारा जाए। 8 फिर खुदावन्द ने हास्न से कहा, देख, मैंने बनी — इसाईल की सब पाप चीज़ों में से उठाने की कुबीनियाँ तुझे दे दी; मैंने उनको तेरे मम्सूह होने का हक ठहराकर तुझे और तेरे बेटों को हमेशा के लिए दिया। 9 सबसे पाप चीज़ों में से जो कुछ आग से बचाया जाए वह तेरा होगा; उनके सब चढ़ावे, यानी नज़ की कुबीनी और खत्म की कुबीनी और जुर्म की कुबीनी जिनको वह मैं सामने गुज़राने, वह तेरे और तेरे बेटों के लिए बहत पाप ठहरें। 10 और तु उनको बहुत पाप जान कर खाना; मर्द ही मर्द उनको खाएँ, वह तेरे लिए पाप कह। 11 और अपने हादिये में से जो कुछ बनी — इसाईल उठाने की कुबीनी और हिलाने की कुबीनी के तौर पर पेश करें वह भी तेरा ही हो, इनको मैं तुझ को और तेरे बेटे — बेटियों को हमेशा के हक के तौर पर देता हूँ; तेरे घराने में जितने पाप हैं वह उनको खाएँ। 12 अच्छे से अच्छा तेल और अच्छी से अच्छी मय और अच्छे से अच्छा गेहूँ, यानी इन चीजों में से जो कुछ वह पहले फल के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करें वह सब मैंने तुझे दिया। 13 उनके मुल्क की सारी पैदावार के पहले पक्के फल, जिनको वह खुदावन्द के सामने लाएँ तेरे होगे, तेरे घराने में जितने पाप हैं वह उनको खाएँ। 14 बनी — इसाईल की हर एक मध्यसूक्स की हुई चीज़ तेरी होगी। 15 उन जानादारों में से जिनको वह खुदावन्द के सामने पेश

करते हैं, जितने पहलौठी के बच्चे हैं चाहे वह इंसान के हों चाहे हैवान के वह सब तैरे होंगे; लेकिन इंसान के पहलौठों का फ़िदिया लेकर उनको ज़स्त छोड़ देना और नापाक जानवरों के पहलौठे भी फ़िदिये से छोड़ दिए जाएँ। 16 और जिनका फ़िदिया दिया जाए वह जब एक महीने के हों, तो उनको अपनी ठार्हाई हुई कीमत के मुताबिक हैकल की मिस्काल के हिसाब से जो बीस जरि की होती है चाँदी की पाँच मिस्काल लेकर छोड़ देना। 17 लेकिन गाय और भेड़ — बकरी के पहलौठों का फ़िदिया न लिया जाए, वह पाक हैं, तु उनका खन मज़बह पर छिड़कना और उनकी चबीं आतिशीन कुर्बानी के तौर पर जला देना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशबू ठहरे। 18 और उनका गोशत तेरा होगा जिस तरह हिलाई हुई कुर्बानी का सीना और दहनी रान तेरे हैं। 19 जितनी पाक चीजें बनी — इसाईल उठाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करें, उन सभों को मैंने तुझे और तेरे बेटे — बेटियों को हमेशा के हक के तौर पर दिया; यह खुदावन्द के सामने रेरे और तेरी नसल के लिए नमक का दाइमी 'अहद है।' 20 और खुदावन्द ने हास्न से कहा, उनके मुल्क में तुझे कोई मीरास नहीं मिलेगी और न उनके बीच तेरा कोई हिस्सा होगा क्यूंकि बनी — इसाईल में तेरा हिस्सा और तेरी मीरास मैं हूँ। 21 'और बनी लावी को उस खिदमत के मु'आवज़े में जो वह खेमा — ए — इजितमा'अ में करते हैं मैंने बनी इसाईल की सारी देहकी मौस्सी हिस्से के तौर पर दी। 22 और आगे को बनी — इसाईल खेमा — ए — इजितमा'अ के नजदीक रहगिज न आएँ, ऐसा न हो कि गुनाह उनके सिर लगे और वह मर जाएँ। 23 बल्कि बनी लावी खेमा — ए — इजितमा'अ की खिदमत करें और वहीं उनका बार — ए — गुनाह उठाएँ, तुम्हारी नसल — दर — नसल यह एक दाइमी कानून हो, और बनी इसाईल के बीच उनको कोई मीरास न मिले। 24 क्यूंकि मैंने बनी — इसाईल की देहकी को, जिसे वह उठाने की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करेंगे उनका मौस्सी हिस्सा कर दिया है; इसी बजह से मैंने उनके हक में कहा है कि बनी — इसाईल के बीच उनकी कोई मीरास न मिले।' 25 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 26 "तू लावियों से इतना कह देना कि जब तुम बनी — इसाईल से उस देहकी को लो जिसे मैंने उनकी तरफ से तुम्हारा मौस्सी हिस्सा कर दिया है, तो तुम उस देहकी की देहकी खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी के लिए पेश करना। 27 और यह तुम्हारी उठाई हुई कुर्बानी तुम्हारी तरफ से ऐसी ही समझी जाएगी जैसे खलिहान का गलता और कोल्ह की मय समझी जाती है। 28 इस तरीके से तुम भी अपनी सब देहकियों में से जो तुम को बनी इसाईल की तरफ से मिलेगी खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी पेश करना, और खुदावन्द की यह उठाई हुई कुर्बानी हास्न कहिन को देना। 29 जितने नजराने तुम को मिलें उनमें से उनका अच्छे से अच्छा हिस्सा, जो पाक किया गया है और खुदावन्द का है, तुम उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करना। 30 इसलिए तू उनसे कह देना कि जब तुम इनमें से उनका अच्छे से अच्छा हिस्सा उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करोगे, तो वह लावियों के हक में खलिहान के भेरे गल्ले और कोल्ह की भरी मय के बराबर का हिसाब होगा। 31 और इनको तुम अपने घरानों के साथ हर जगह खा सकते हो, क्यूंकि यह उस खिदमत के बदले तुम्हारा मज़रूरी है जो तुम खेमा — ए — इजितमा'अ में करोगे। 32 और जब तुम उसमें से अच्छे से अच्छा हिस्सा उठाने की कुर्बानी के तौर पर पेश करोगे, तो तुम उसकी बजह से गुनाहगार न ठहरोगे; और खबरदार बनी इसाईल की पाक चीजों को नापाक न करना ताकि तुम हलाक न हो।"

19 और खुदावन्द ने मूसा और हास्न से कहा, 2 कि शरी'अत के जिस कानून का हक्म खुदावन्द ने दिया है वह यह है, कि तु बनी — इसाईल से कह कि वह तैरे पास एक बेदाम और बे — 'ऐ खुर्ख रंग की बछिया लाएँ,

जिस पर कभी बोझ न रखेगा यहा हो। 3 और तुम उसे लेकर इली'एलियाज़र काहिन को देना कि वह उसे लश्करगाह के बाहर ले जाए, और कोई उसे उसी के सामने जबह कर दे; 4 और इली'एलियाज़र काहिन अपनी उंगली से उसका कुछ खून लेकर उसे खेमा — ए — इजितमा'अ के आगे की तरफ सात बार छिड़के। 5 फिर कोई उसकी आँखों के सामने उस गाय को जला दे; यानी उसका चमड़ा, और गोशत, और खून, और गोबर, इन सब को वह जलाए। 6 फिर काहिन देवदार की लकड़ी और ज़फ़ा और सुख़ी कपड़ा लेकर उस आग में जिसमें गाय जलती हो डाल दे। 7 तब काहिन अपने कपड़े धोए और पानी से गुस्त करे; इसके बाद वह लश्करगाह के अन्दर आए, फिर भी काहिन शाम तक नापाक रहेगा। 8 और जो उस गाय को जलाए वह भी अपने कपड़े पानी से धोए और पानी से गुस्त करे और वह भी शाम तक नापाक रहेगा। 9 और कोई पाक शब्द उस गाय की राख को बटोरे, और उसे लश्करगाह के बाहर किसी पाक जगह में धर दे; यह बनी — इसाईल की जमा'अत के लिए नापाकी दूर करने के पानी के लिए रखवी हो, क्यूंकि यह खता की कुर्बानी है। 10 और जो उस गाय की राख को बटोरे वह भी अपने कपड़े धोए और वह भी शाम तक नापाक रहेगा, और यह बनी — इसाईल के और उन परदेसियों के लिए जो उनमें क्याम करते हैं एक दाइमी कानून होगा। 11 'जो कोई किसी आदमी की लाश को छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 12 ऐसा आदमी तीसरे दिन उस राख से अपने को साफ़ करे तो वह सातवें दिन पाक ठहरेगा लेकिन अगर वह तीसरे दिन अपने को साफ़ न करे तो वह सातवें दिन पाक नहीं ठहरेगा। 13 जो कोई आदमी की लाश को छूकर अपने को साफ़ न करे वह खुदावन्द के घर को नापाक करता है, वह शब्द इसाईल में से अलग किया जाएगा क्यूंकि नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक है उसकी नापाकी अब तक उस पर है। 14 अगर कोई आदमी किसी खेमे में मर जाए तो उसके बारे में शरा'य है, कि जितने उस खेमे में आएँ और जितने उस खेमे में रहते हों वह सात दिन तक नापाक रहेंगे। 15 और हर एक खुला बर्तन जिसका ढकना उस पर बन्धा न हो नापाक ठहरेगा। 16 और जो कोई मैदान में तलवार के मकतुल को या मुर्दे को या आदमी की हड्डी को या किसी कब्ज़े को छुए वह सात दिन तक नापाक रहेगा। 17 और नापाक आदमी के लिए उस जली हुई खता की कुर्बानी की राख को किसी बर्तन में लेकर उस पर बहात पानी डालें। 18 फिर कोई पाक आदमी ज़फ़ा लेकर और उसे पानी में डुबो डुबोकर उस खेमे पर, और जितने बर्तन और आदमी वहाँ हों उन पर और जिस शब्द ने हड्डी को, या मकतुलको, या मुर्दे को, या कब्ज़े को छुआ है उस पर छिड़के। 19 वह पाक आदमी तीसरे दिन और सातवें दिन उस नापाक आदमी पर इस पानी को छिड़के और सातवें दिन उसे साफ़ करे फिर वह अपने कपड़े धोए और पानी से नहाए, तो वह शाम को पाक होगा। 20 'लेकिन जो कोई नापाक हो और अपनी सफाई न करे, वह शब्द जमा'अत में से अलग किया जाएगा क्यूंकि उसने खुदावन्द के हैकल को नापाक किया नापाकी दूर करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया इसलिए वह नापाक है। 21 और यह उनके लिए एक दाइमी कानून हो; जो नापाकी दूर करने के पानी को लेकर छिड़के वह अपने कपड़े धोए, और जो कोई नापाकी दूर करने के पानी को छुए वह भी शाम तक नापाक रहेगा। 22 और जिस किसी चीज़ को वह नापाक आदमी छुए वह चीज़ नापाक ठहरेगी, और जो कोई उस चीज़ को छु ले वह भी शाम तक नापाक रहेगा।

20 और पहले महीने में बनी — इसाईल की सारी जमा'अत सीन के जंगल में आ गई और वह लोग कादिस में रहने लगे, और मरियम ने वहाँ बकात पाई और वहीं दफ़न हुई। 2 और जमा'अत के लोगों के लिए वहाँ पानी न मिला, इसलिए वह मूसा और हास्न के बरसिलाफ़ इकट्ठे हुए। 3 और लोग

मूसा से झागड़ने और यह कहने लगे, “हाय, काश हम भी उसी बक्त मर जाते जब हमरे भाई खुदावन्द के सामने मेरे। 4 तुम खुदावन्द की जमा’अत को इस जंगल में क्यूँ ले आए हो कि हम भी और हमरे जानवर भी यहाँ मरें? 5 और तुम ने क्यूँ हम को मिस से निकाल कर इस बुरी जगह पहुँचाया है? यह तो बोने की और अंजीरों और ताकों और अनार की जगह नहीं है बल्कि यहाँ तो पिने के लिए पानी तक हासिल नहीं।” 6 और मूसा और हास्न जमा’अत के पास से जाकर खेमा — ए — इजितमा’अ के दरवाजे पर औथे मुँह पिरे। तब खुदावन्द का जलाल उन पर जाहिर हआ, 7 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 8 “उस लाटी को ले और तू और तेरा भाई हास्न, तुम दोनों जमा’अत को इक्षा करो और उनकी औंखों के सामने उस चट्टान से कहो कि वह अपना पानी दे, और तू उनके लिए चट्टान ही से पानी निकालना, यूँ जमा’अत को और उनके चौपायों को पिलाना।” 9 चुनाँचे मूसा ने खुदावन्द के सामने से उसी के हक्म के मुताबिक वह लाटी ली। 10 और मूसा और हास्न ने जमा’अत को उस चट्टान के सामने इक्षा किया, और उसने उनसे कहा, “सुनो, ऐ बागियों, क्या हम तुम्हारे लिए इसी चट्टान से पानी निकालें?” 11 तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और उस चट्टान पर दो बार लाटी मरी, और करसर तेरे पानी ब्रह्म निकला और जमा’अत ने और उनके चौपायों ने पिया। 12 लेकिन मूसा और हास्न से खुदावन्द ने कहा, “क्यूँकि तुम ने मेरा यकीन नहीं किया कि बर्नी — इसाईल के सामने मेरी तकरीब करते, इसलिए तुम इस जमा’अत को उस मूल्क में जो मैंने उनको दिया है नहीं पहुँचाने पाएओगे।” 13 मरीबा का चशमा यही है क्यूँकि बर्नी — इसाईल ने खुदावन्द से झागड़ा किया और वह उनके बीच कुदूस साबित हुआ। 14 और मूसा ने कादिस से अदोम के बादशाह के पास कासिद रवाना किए और कहला भेजा कि “तेरा भाई इसाईल यह ‘अर्ज करता है, कि तू हमारी सारी मुसीबियों से जो हम पर आई वाकिफ़ है; 15 कि हमारे बाप दादा मिस में गए और हम बहुत मुश्ट तक मिस में रहे, और मिसियों ने हम से और हमरे बाप दादा से बुरा सुलक किया। 16 और जब हमने खुदावन्द से फरियाद की तो उनमें हमारी सुनी, और एक फरियाद को भेज कर हम को मिस से निकाल ले आया है, और अब हम कादिस शहर में हैं जो तेरी सरहद के आस्थिर में वाके हैं। 17 इसलिए हम को अपने मूल्क में से होकर जाने की इजाजत दे। हम खेतों और ताकिस्तानों में से होकर नहीं गुज़रेंगे, और न कुओं का पानी पिएँगे; हम शाहरह पर चल कर जाएँगे और दहने या बाँह हाथ नहीं मुड़ेंगे, जब तक तेरी सरहद से बाहर निकल न जाएँ।” 18 लेकिन शाह — ए — अदोम ने कहला भेजा, “तू मेरे मूल्क से होकर जाने नहीं पाएगा, वरना मैं तलवार लेकर तेरा सामना करँगा।” 19 बर्नी — इसाईल ने उसे फिर कहला भेजा कि “हम सङ्क की सङ्क जाएँगे, और अगर हम या हमारे चौपाये तेरा पानी भी पिएँ तो उसका दाम देंगे; हम को और कुछ नहीं चाहिए अलावा इसके कि हम को पॉक — पॉक चल कर निकल जाने दे।” 20 लेकिन उसने कहा, “तू हरगिज निकलने नहीं पाएगा।” और अदोम उसके मुकाबले के लिए बहुत से आदमी और हथियार लेकर निकल आया। 21 यूँ अदोम ने इसाईल को अपनी हादों से गुज़रने का रास्ता देने से इन्कार किया, इसलिए इसाईल उसकी तरफ से मुड़ गया। 22 और बर्नी — इसाईल की सारी जमा’अत कादिस से रवाना होकर कोह — ए — हर पहुँची। 23 और खुदावन्द ने कोह — ए — हर पर, जो अदोम की सरहद से मिला हाथा, मूसा और हास्न से कहा, 24 “हास्न अपने लोगों में जो मिलेगा, क्यूँकि वह उस मूल्क में जो मैंने बर्नी — इसाईल को दिया है जाने नहीं पाएगा, इसलिए कि मरीबा के चश्मे पर तुम ने मेरे कलाम के खिलाफ़ ‘अमल किया। 25 इसलिए तू हास्न और उसके बेटे इली’एलियाज़र को अपने साथ लेकर कोह — ए — हर के ऊपर आ जा। 26 और हास्न के लिबास को उतार

कर उसके बेटे इली’एलियाज़र को पहना देना, क्यूँकि हास्न वहीं वफ़ात पाकर अपने लोगों में जो मिलेगा।” 27 और मूसा ने खुदा के हक्म के मुताबिक ‘अमल किया, और वह सारी जमा’अत की औंखों के सामने कोह — ए — हर पर चढ़ गए। 28 और मूसा ने हास्न के लिबास को उतार कर उस के बेटे इली’एलियाज़र को पहना दिया, और हास्न ने वहीं पहाड़ की चोटी पर रहलत की। तब मूसा और इली’अजर पहाड़ पर से उतर आए। 29 जब जमा’अत ने देखा कि हास्न ने वफ़ात पाई तो इसाईल के सारे घराने के लोग हास्न पर तीस दिन तक मातम करते रहे।

21 और जब ‘अराद के कनानी बादशाह ने जो दाखिन की तरफ रहता था सुना, कि इसाईली अथारिम की राह से आ रहे हैं, तो वह इसाईलियों से लड़ा और उनमें से कई एक को गुलाम कर लिया। 2 तब इसाईलियों ने खुदावन्द के सामने मिन्नत मानी और कहा कि “अगर तू सचमुच उन लोगों को हमारे हवाले कर दे तो हम उनके शहरों को बर्बाद कर देंगे।” 3 और खुदावन्द ने इसाईल की फरियाद सुनी और कनानियों को उन के हवाले कर दिया; और उन्होंने उनको और उनके शहरों को बर्बाद कर दिया, चुनाँचे उस जगह का नाम भी हरमा पड़ गया। 4 फिर उन्होंने कोह — ए — होर से रवाना होकर बहर — ए — कुलजुम का रास्ता लिया, ताकि मुल्क — ए — अदोम के बाहर — बाहर धूम कर जाएँ; लेकिन उन लोगों की जान उस रास्ते से ‘अजिज़ आ गई। 5 और लोग खुदा की और मूसा की शिकायत करके कहने लगे कि “तुम क्यूँ हम को मिस से बीरान में मरने के लिए ले आए? यहाँ तो न रोटी है, न पानी, और हमारा जी इस निकम्मी खुराक से कराहियत करता है।” 6 तब खुदावन्द ने उन लोगों में जलाने वाले साँप भेजे, उन्होंने लोगों को काटा और बहुत से इसाईली मर गए। 7 तब वह लोग मूसा के पास आकर कहने लगे कि “हम ने गुनाह किया, क्यूँकि हम ने खुदावन्द की और तेरी शिकायत की; इसलिए तू खुदावन्द से दुआ कर कि वह इन साँपों को हम से दूर करे।” चुनाँचे मूसा ने लोगों के लिए दुआ की। 8 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा कि “एक जलाने वाला साँप बना ले और उसे एक बल्ली पर लटका दे, और जो साँप का डसा हुआ उस पर नजर करेगा वह जिन्दा बचेगा।” 9 चुनाँचे मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर उसे बल्ली पर लटका दिया; और ऐसा हुआ कि जिस जिस साँप के डसे हुए आदमी ने उस पीतल के साँप पर निगाह की वह जिन्दा बच गया। 10 और बर्नी — इसाईल ने वहाँ से रवाना की और ओबूत में आकर खेमे डाले। 11 फिर ओबूत से कूच किया और ‘अय्ये’ अबारीम में, जो पश्चिम की तरफ मोआब के सामने के बीरान में वाके हैं खेमे डाले। 12 और वहाँ से रवाना होकर बादी — ए — ज़रद में खेमे डाले। 13 जब वहाँ से चले तो अरनोन से पार हो कर, जो अमोरियों की सरहद से निकल कर बीरान में बहती है, खेमे डाले: क्यूँकि मोआब और अमोरियों के बीच अरनोन मोआब की सरहद है। 14 इसी वजह से खुदावन्द के जंग नामे में यूँ लिखा है: “वाहेब जो सूफ़ में है, और अरनोन के नाले 15 और उन नालों का ढलान जो ‘आर शहर तक जाता है, और मोआब की सरहद से मुतसिल है।” 16 फिर इस जगह से वह बैर को गा; यह वही कुवाँ है जिसके बारे में खुदावन्द ने मूसा से कहा था कि “इन लोगों को एक जगह जमा’ कर, और मैं इनको पानी दूँगा।” 17 तब इसाईल ने यह गीत गाया: “ऐ कुँएँ, तू उबल आ! तुम इस कुँएँ की तारीफ़ गाओ।” 18 यह वही कुँएँ है जिसे रईसों ने बनाया, और कौम के अमीरों ने अपने ‘असा और लाठियों से खोदा।” तब वह उस जंगल से मत्तना को गा, 19 और मत्तना से नहलीएल को, और नहलीएल से बामात को, 20 और बामात से उस बादी में पहुँच कर जो मोआब के मैदान में है, पिसगा की उस चोटी तक निकल गए जहाँ से यशीमोन नजर आता है। 21 और इसाईलियों ने अमोरियों के बादशाह सीहोन के पास

कासिद रवाना किए और यह कहला भेजा कि; 22 “हम को अपने मुल्क से गुज़ार जाने दें; हम खेतों और अँगू के बागों में नहीं घुसेंगे, और न कुओं का पानी पीएंगे, बल्कि शाहराह से सीधे चले जाएंगे जब तक तेरी हद के बाहर न हो जाएं।” 23 लेकिन सीहोन ने इसाईलियों को अपनी हद में से गुज़रने न दिया; बल्कि सीहोन अपने सब लोगों को इकट्ठा करके इसाईलियों के मुकाबले के लिए बीरान में पहुँचा, और उसने यहज में अकर इसाईलियों से जंग की। 24 और इसाईल ने उसे तलवार की धार से मारा और उसके मुल्क पर, अरनोन से लेकर यज्बोक तक जहाँ बनी ‘अम्मोन की सरहद है कब्जा कर लिया; क्यूँकि बनी ‘अम्मोन की सरहद मजबूत थी। 25 तब बनी — इसाईल ने यहाँ के सब शहरों को ले लिया और अमोरियों के सब शहरों में, यानी हस्तोन और उसके आस पास के कस्बों में बनी — इसाईल बस गए। 26 हस्तोन अमोरियों के बादशाह सीहोन का शहर था, इसने मोआब के अगले बादशाह से लड़कर उसके सारे मुल्क को, अरनोन तक उससे छीन लिया था। 27 इसी वजह से मिसाल कहने वालों की यह कहावत है कि “हस्तोन में आओ, ताकि सीहोन का शहर बनाया और मजबूत किया जाए। 28 क्यूँकि हस्तोन से आग निकली, सीहोन के शहर से शोला बरामद हुआ, इसने मोआब के ‘आ शहर को और अरनोन के ऊँचे मकामात के सरदारों को भसम कर दिया। 29 ऐ, मोआब! तुम पर नोहा है। ऐ कोमोस के मानवे बालों! तुम हलाक हुए, उसने अपने बेटों को जो भागे थे और अपनी बेटियों को एलामों की तरह अमोरियों के बादशाह सीहोन के हवाले किया। 30 हमने उन पर तीर चलाए, इसलिए हस्तोन दीवोन तक तबाह हो गया, बल्कि हम ने नुक़ा तक सब कुछ उजाड़ दिया। वह नुक़ा जो मीदवा से मुत्सिल है।” 31 तब बनी — इसाईल अमोरियों के मुल्क में रहने लगे। 32 और मूसा ने याजेर की जासूसी कराई, फिर उन्होंने उसके गाँव ले लिए और अमोरियों को जो वहाँ थे निकाल दिया। 33 और वह धूम कर बसन के रास्ते से आगे को बढ़े और बसन का बादशाह ‘ओज़ अपने सारे लश्कर को लेकर निकला, ताकि अदराई में उनसे जंग करे। 34 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, “उससे मत डर, क्यूँकि मैंने उसे और उसके सारे लश्कर को और उसके मुल्क को तेरे हवाले कर दिया है। इसलिए जैसा तैने अमोरियों के बादशाह सीहोन के साथ जो हस्तोन में रहता था किया है, वैसा ही इसके साथ भी करना।” 35 चुनाँचे उहोंने उसको और उसके बेटों और सब लोगों को यहाँ तक मारा कि उसका कोई बाकी न रहा, और उसके मुल्क को अपने कब्जे में कर लिया।

22 फिर बनी — इसाईल रवाना हुए और दरिया — ए — यरदन के पार मोआब के मैदानों में यही के सामने खेमे खड़े किए। 2 और जो कुछ बनी — इसाईल ने अमोरियों के साथ किया था वह सब बलक बिन सफोर ने देखा था। 3 इसलिए मोआबियों को इन लोगों से बड़ा खौफ आया, क्यूँकि यह बहुत से थे; गर्ज मोआबी बनी — इसाईल की वजह से पेरेशन हुए। 4 तब मोआबियों ने मिदियानी बुजुर्गों से कहा, “जो कुछ हमारे आस पास है उसे यह लश्कर ऐसा चट कर जाएगा जैसे बैल मैदान की घास को चट कर जाता है।” उस बक्त बलक बिन सफोर मोआबियों का बादशाह था। 5 इसलिए उस ने बाॅरे के बेटे बल’आम के पास फतोर को, जो बड़े दरिया कि किनारे उसकी कौम के लोगों का मुल्क था, कासिद रवाना किए कि उसे बुला लाएँ और यह कहला भेजा, “देख, एक कौम मिस्र से निकलकर आई है, उनसे ज़मीन की सतह छिप गई है; अब वह मेरे सामने ही आकर जम गए है। 6 इसलिए अब त आकर मेरी खातिर इन लोगों पर लाॅन्त कर, क्यूँकि यह मुझ से बहुत कबी है, फिर मुक्किन है कि मैं गालिब आऊँ, और हम सब इनको मार कर इस मुल्क से निकल दें; क्यूँकि यह मैं जानता हूँ कि किसे तू बरकत देता है उसे बरकत मिलती है, और जिस पर तू लाॅन्त करता है वह मलाॅन होता है।” 7 तब

मोआब के बुजुर्ग और मिदियान के बुजुर्ग फाल खोलने का इनाम साथ लेकर रवाना हुए और बल’आम के पास पहुँचे और बलक का पैगाम उसे दिया। 8 उसने उसे कहा, “आज रात यहीं ठहरो और जो कुछ खुदावन्द मुझ से कहेगा, उसके मुताबिक मैं तुम को जबाब दूँगा।” चुनाँचे मोआब के हाकिम बल’आम के साथ ठहर गए। 9 और खुदा ने बल’आम के पास आकर कहा, “तेरे यहाँ यह कौन आदमी है?” 10 बल’आम ने खुदा से कहा, “मोआब के बादशाह बलक बिन सफोर ने मेरे पास कहला भेजा है, कि 11 जो कौम मिस्र से निकल कर आई है उससे ज़मीन की सतह छिप गई है, इसलिए त अब आकर मेरी खातिर उन पर लाॅन्त कर, फिर मुक्किन है कि मैं उसे लड़ सकूँ और उनको निकाल दूँ।” 12 खुदा ने बल’आम से कहा, “तू इनके साथ मत जाना, तू उन लोगों पर लाॅन्त न करना, इसलिए कि वह मुबारक है।” 13 बल’आम ने सुबह को उठ कर बलक के हाकिमों से कहा, “तुम अपने मुल्क को लौट जाओ, क्यूँकि खुदावन्द मुझे तम्हारे साथ जाने की इजाजत नहीं देता।” 14 और मोआब के हाकिम चले गए और जाकर बलक से कहा, “बल’आम हमारे साथ आने से इंकार करता है।” 15 तब दूसरी दफा बलक ने और हाकिमों को भेजा, जो पहलों से बढ़ कर मुआजिज और शुगार में भी ज़्यादा थे। 16 उहोंने बल’आम के पास जाकर उस से कहा, “बलक बिन सफोर ने यौँ कहा है, कि मेरे पास आने में तेरे कोई स्कावट न हो; 17 क्यूँकि मैं बहुत ‘आला मन्स्ब पर तुझे मुम्ताज करूँगा, और जो कुछ तुम मुझ से कहे मैं वही करूँगा; इसलिए तु आजा और मेरी खातिर इन लोगों पर लाॅन्त कर।” 18 बल’आम ने बलक के खादिमों को जबाब दिया, “अगर बलक अपना घर भी चाँदी और सोने से भर कर मुझे दे, तो भी मैं खुदावन्द अपने खुदा के हृक्ष से तजावज़ नहीं कर सकता, कि उसे घटाकर या बढ़ा कर मानूँ। 19 इसलिए अब तुम भी आज रात यहीं ठहरो, ताकि मैं देखूँ कि खुदावन्द मुझ से और क्या कहता है।” 20 और खुदा ने रात को बल’आम के पास आ कर उससे कहा, “अगर यह आदमी तुझे बुलाने को आए हए हैं तो तू उठ कर उनके साथ जा; मगर जो बात मैं तुझ से कहूँ उसी पर ‘अमल करना।’” 21 तब बल’आम सुबह को उठा, और अपनी गधी पर ज़ीन रख कर मोआब के हाकिमों के साथ चला। 22 और उसके जाने की वजह से खुदा का ग़ज़ब भड़का, और खुदावन्द का फरिश्ता उससे मुजाहमत करने के लिए रास्ता रोक कर खड़ा हो गया। वह तो अपनी गधी पर सवार था और उसके साथ उसके दो मुलाजिम थे। 23 और उस गधी ने खुदावन्द के फरिश्ते को देखा, कि वह अपने हाथ में नंगी तलवार लिए हुए रास्ता रोके खड़ा है; तब गधी रास्ता छोड़कर एक तरफ हो गई और खेत में चली गई। तब बल’आम ने गधी को मारा ताकि उसे रास्ते पर ले आए। 24 तब खुदावन्द का फरिश्ता एक नीची राह में जा खड़ा हुआ, जो ताकिस्तानों के बीच से होकर निकलती थी और उसकी दोनों तरफ दीवारें थीं। 25 गधी खुदावन्द के फरिश्ते को देख कर दीवार से जा लगी और बल’आम का पाँव दीवार से पिचा दिया, इसलिए उसने फिर उसे मारा। 26 तब खुदावन्द का फरिश्ता आगे बढ़ कर एक ऐसे तंग मकाम में खड़ा हो गया, जहाँ दहनी या बाई तरफ मुड़ने की जगह न थी। 27 फिर जो गधी ने खुदावन्द के फरिश्ते को देखा तो बल’आम को लिए हुए बैठ गई, फिर तो बल’आम झल्ला उठा और उसने गधी को अपनी लाठी से मारा। 28 तब खुदावन्द ने गधी की ज़बान खोल दी और उसने बल’आम से कहा, “मैंने तेरे साथ क्या किया है कि तूने मुझे तीन बार मारा?” 29 बल’आम ने गधी से कहा, “इसलिए कि तूने मुझे चिढ़ाया; काश मेरे हाथ में तलवार होती, तो मैं तुझे अभी मार डालता।” 30 गधी ने बल’आम से कहा, “क्या मैं तेरी वही गधी नहीं हूँ जिस पर तू अपनी सारी उम्र आज तक सवार होता आया है? क्या मैं तेरे साथ पहले कभी ऐसा करती थी?” उसने कहा, “नहीं।” 31 तब खुदावन्द ने

बल'आम की आँखें खोली, और उसने खुदावन्द के फरिश्ते को देखा कि वह अपने हाथ में नंगी तलबार लिए हए रास्ता रोके खड़ा है, तब उसने अपना सिर झुका लिया और औथा हो गया। 32 खुदावन्द के फरिश्ते ने उसे कहा, “तू ने अपनी गर्भी को तीन बार कर्कूं मारा? देख, मैं तुझ से मुजाहमत करने को आया हूँ, इसलिए कि तेरी चाल मेरी नजर में टेढ़ी है। 33 और गर्भी ने मुझ को देखा, और वह तीन बार मेरे सामने से मुड़ गई। अगर वह मेरे सामने से न हटती तो मैं ज़स्तर तुझ को मार ही डालता, और उसको जिन्दा छोड़ देता।” 34 बल'आम ने खुदावन्द के फरिश्ते से कहा, “मुझ से खता हई, क्यूँकि मुझे मालूम न था कि तू मेरा रास्ता रोके खड़ा है। इसलिए अगर अब तुझे बुरा लगता है तो मैं लौट जाता हूँ।” 35 खुदावन्द के फरिश्ते ने बल'आम से कहा, “तू इन आदमियों के साथ चला ही जा, लेकिन सिफ़ वही बात कहना जो मैं तुझ से कह हूँ।” तब बल'आम बलक के हाकिमों के साथ गया। 36 जब बलक ने सुना कि बल'आम आ रहा है, तो वह उसके इस्तकबाल के लिए मोआब के उस शहर तक गया जो अरनोन की सरहद पर उसकी हादों के इन्हिंहाइ हिस्से में बाक़ेँ था। 37 तब बलक ने बल'आम से कहा, “क्या मैंने बड़ी उम्मीद के साथ तुझे नहीं बुलबा भेजा था? पिर तू मेरे पास वर्ने न चला आया? क्या मैं इस कालिल नहीं कि तुझे 'आला मन्स्ब पर मुम्ताज़ करँ?'” 38 बल'आम ने बलक को जवाब दिया, “देख, मैं तेरे पास आ तो गया हूँ लेकिन क्या मेरी इतनी मजाल है कि मैं कुछ बोलूँ? जो बात खुदा मेरे मुँह में डालेगा, वही मैं कहूँगा।” 39 और बल'आम बलक के साथ — साथ चला और वह करयत हुसात में पहुँचे। 40 बलक ने बैल और भेड़ों की कुर्बानी पेश की, और बल'आम और उन हाकिमों के पास जो उसके साथ थे कुर्बानी का गोशत भेजा। 41 दूसरे दिन सुबह को बलक बल'आम को साथ लेकर उसे बाल के बुलन्द मकामों पर ले गया। वहाँ से उसने दूर दूर के इस्माइलियों को देखा।

23 और बल'आम ने बलक से कहा, “मेरे लिए यहाँ सात मजबहे बनवा दे, और सात बछड़े और सात मेंटे मेरे लिए यहाँ तैयार कर रख।” 2 बलक ने बल'आम के कहने के मुताबिक किया, और बलक और बल'आम ने हर मजबह पर एक बछड़ा और एक मेंटा चढ़ाया। 3 फिर बल'आम ने बलक से कहा, “तू अपनी सोखतनी कुर्बानी के पास खड़ा हर, और मैं जाता हूँ, मुक्किन है कि खुदावन्द मुझ से मुलाकात करने को आए। इसलिए जो कुछ वह मुझ पर ज़ाहिर करेगा, मैं तुझे बताऊँगा।” 4 और वह एक बरहना पहाड़ी पर चला गया। 4 और खुदा बल'आम से मिला; उसने उससे कहा, “मैंने सात मजबहे तैयार किए हैं और उन पर एक — एक बछड़ा और एक — एक मेंटा चढ़ाया है।” 5 तब खुदावन्द ने एक बात बल'आम के मुँह में डाली और कहा कि “बलक के पास लौट जा, और यूँ कहना।” 6 तब वह उसके पास लौट कर आया और क्या देखता है, कि वह अपनी सोखतनी कुर्बानी के पास मोआब के सब हाकिमों के साथ खड़ा है। 7 तब उसने अपनी मिसाल शुरू की, और कहने लगा, “बलक ने मुझे अराम से, यानी शाह — ए — मोआब ने पवित्रम के पहाड़ों से बुलवाया, कि आ जा, और मेरी खातिर याकूब पर लान्त कर, आ, इस्माइल को फटकार! 8 मैं उस पर लान्त करें करूँ, जिस पर खुदा ने लान्त नहीं की? मैं उसे कैसे फटकारूँ, जिसे खुदावन्द ने नहीं फटकारा 9 चट्टानों की चोटी पर से वह मुझे नजर आते हैं, और पहाड़ों पर से मैं उनको देखता हूँ। देख, यह वह कौम है जो अकेली बसी रहेगी, और दूसरी क्लौमों के साथ मिल कर इसका शुमार न होगा। 10 याकूब की गर्द के जर्रों को कौन गिन सकता है, और बनी इस्माइल की चौथाई को कौन शुमार कर सकता है? काश, मैं सादिकों की मौत महँ और मेरी 'आकबत भी उन ही की तरह हो।” 11 तब बलक ने बल'आम से कहा, “ये तूने मुझ से क्या किया? मैंने तुझे बुलवाया ताकि तू मेरे दुश्मनों पर

लान्त करे, और तू ने उनको बरकत ही बरकत दी।” 12 उसने जवाब दिया और कहा क्या मैं उसी बात का खयाल न करूँ, जो खुदावन्द मेरे मुँह में डाले? 13 फिर बलक ने उससे कहा, “अब मेरे साथ दूसरी जगह चल, जहाँ से तू उनको देख भी सकेगा; वह सब के सब तो तुझे नहीं दिखाई देंगे, लेकिन जो दूर दूर पड़े हैं उनको देख लेगा; फिर तब वहाँ से मेरी खातिर उन पर लान्त करना।” 14 तब वह उसे पिसागा की चोटी पर, जहाँ जोकीम का मैदान है ले गया; वही उसने सात मजबहे बनाए और हर मजबह पर एक — एक बछड़ा और एक मेंटा चढ़ाया। 15 तब उसने बलक से कहा, “तू यहाँ अपनी सोखतनी कुर्बानी के पास ठहरा रह, जब कि मैं उधर जाकर खुदावन्द से मिल कर आऊँ।” 16 और खुदावन्द बल'आम से मिला, और उसने उसके मुँह में एक बात डाली, और कहा, “बलक के पास लौट जा, और यूँ कहना।” 17 और जब वह उसके पास लौटा तो क्या देखता है, कि वह अपनी सोखतनी कुर्बानी कि पास मोआब के हाकिमों के साथ खड़ा है। तब बलक ने उससे पछा, “खुदावन्द ने क्या कहा है?” 18 तब उसने अपनी मिसाल शुरू की और कहने लगा, “उठ ऐ बलक, और सुन, ऐ सफ़ेर के बेटे! मेरी बातों पर कान लगा, 19 खुदा इसान नहीं कि झट्ठ बोले, और न वह आदमजाद है कि अपना इरादा बदले। क्या, जो कुछ उसने कहा उसे न करे? या, जो फरमाया है उसे पूरा न करे? 20 देख, मुझे तो बरकत देने का हक्म मिला है, उसने बरकत दी है, और मैं उसे पलट नहीं सकता। 21 वह याकूब में बदी नहीं पाता, और न इस्माइल में कोई खराबी देखता है। खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ है, और बादशाह के जैसी ललकार उन लोगों के बीच में है। 22 खुदा उनको मिस्म से निकाल कर लिए आ रहा है, उनमें जंगली सॉंड के जैसी ताकत है। 23 याकूब पर कोई जादू नहीं चलता, और न इस्माइल के खिलाफ़ फाल कोई चीज़ है; बल्कि याकूब और इस्माइल के हक्म में अब यह कहा जाएगा, कि खुदा ने कैसे कैसे काम किए। 24 देख, यह गिरोह शेरनी की तरह उठती है। और शेर की तरह तन कर खड़ी होती है। वह अब नहीं लेने को, जब तक शिकार न खा ले। और मकतुलों का खन न पी ले।” 25 तब बलक ने बल'आम से कहा, “न तो तू उन पर लान्त ही कर और न उनको बरकत ही दे।” 26 बल'आम ने जवाब दिया, और बलक से कहा, “क्या मैंने तुझे से नहीं कहा कि जो कुछ खुदावन्द करे, वही मुझे करना पड़ेगा?” 27 तब बलक ने बल'आम से कहा, “अच्छा आ, मैं तुझ को एक और जगह ले जाऊँ; शायद खुदा को पसन्द आए कि तू मेरी खातिर वहाँ से उन पर लान्त करे।” 28 तब बलक बल'आम को फग्गू की चोटी पर, जहाँ से यशीमोन नजर आता है ले गया। 29 और बल'आम ने बलक से कहा कि “मेरे लिए यहाँ सात मजबहे बनवा और सात ही मेंटे मेरे लिए तैयार कर रख।” 30 चुनौते बलक ने, जैसा बल'आम ने कहा वैसा ही किया और हर मजबह पर एक बैल और एक मेंटा चढ़ाया।

24 जब बल'आम ने देखा कि खुदावन्द को यही मन्ज़र है कि इस्माइल को बरकत दे, तो वह पहले की तरह शग़ू़द देखने को इधर उधर न गया, बल्कि बीराम की तरफ अपना मुँह कर लिया। 2 और बल'आम ने निगाह की, और देखा कि बनी — इस्माइल अपने — अपने कबीले की तरतीब से मुक्किम हैं। और खुदा की रस्त पर नाज़िल हैं। 3 और उसने अपनी मसल शुरू की और कहने लगा, “ब'ओर का बेटा बल'आम कहता है, यानी वही शश्व जिसकी आँखें बन्ध थी यह कहता है, 4 बल्कि यह उसी का कहना है जो खुदा की बातें सुनता है, और सिंजदे में पड़ा हुआ खुली आँखों से क़ादिर — ए — मुतलक का खबाब देखता है। 5 ऐ याकूब, तेरे डेरे, ऐ इस्माइल, तेरे खेमे कैसे खुशनुमा हैं। 6 वह ऐसे फैले हुए हैं, जैसे बादियाँ और दरिया कि किनारे बासा, और खुदावन्द के लगाए हुए 'ऊद के दरख़त और नदियों के किनारे देवदार

के दरखत। 7 उसके चरसों से पानी बहेगा, और सेराब खेतों में उसका बीज पड़ेगा। उसका बादशाह अजाज से बढ़कर होगा, और उसकी सल्तनत को 'उस्ज हासिल होगा। 8 खुदा उसे मिस से निकाल कर लिए आ रहा उसमें जंगली सांड के जैसी ताकत है, वह उन कौमों को जो उसकी दुश्मन हैं, चट कर जाएगा, और उनकी हड्डियों को तोड़ डालेगा और उनको अपने तीरों से छेद — छेद कर मारेगा। 9 वह खुद कर बैठा है, वह शेर की तरह बल्कि शेरनी की तरह लेट गया है, अब कौन उसे छेड़े? जो तुझे बरकत दे वह मुबारक, और जो तुझ पर ला'नत करे वह मला'नन हो।' 10 तब बलक को बल'आम पर बड़ा गुस्सा आया, और वह अपने हाथ पीटने लगा। फिर उसने बल'आम से कहा, "मैंने तुझे बुलाया कि तू मेरे दुश्मनों पर ला'नत करे, लेकिन तू ने तीनों बार उनको बरकत ही बरकत दी। 11 इसलिए अब तू अपने मुल्क को भाग जा। मैंने तो सोचा था कि तुझे 'आला मन्सब पर मुमताज कस्तूर, लेकिन खुदावन्द ने तुझे ऐसे जेज़ा से महस्त रखा।" 12 बल आम ने बलक को जवाब दिया, "क्या मैंने तेरे उन कासिदों से भी जिनको तूने मेरे पास भेजा था। यह नहीं कह दिया था, कि 13 अगर बलक अपना घर चाँदी और सोने से भर कर मुझे दे तोभी मैं अपनी मर्जी से भला या बुरा करने की खातिर खुदावन्द के हक्म से तजाऊज़ नहीं कर सकता, बल्कि जो कुछ खुदावन्द कहे मैं वही कहँगा? 14 'और अब मैं अपनी कौम के पास लौट कर जाता हूँ, इसलिए तू आ, मैं तुझे आगाह कर दूँ कि यह लोग तेरी कौम के साथ आशिर्वद दिनों में क्या क्या करेंगे।' 15 चुनौती उसने अपनी मिसाल शुरू की और कहने लगा, "ब'ओर का बेटा बर्दां आम कहता है, याँनी वही शरख जिसकी आँखें बन्द थीं यह कहता है, 16 बल्कि यह उसी का कहना है जो खुदा की बातें सुनता है, और हक्कतांला का इफकान रखता है, और सिज्दे में पढ़ा हुआ खुली आँखों से कादिर — ए — मुतलक का खाबाब देखता है; 17 मैं उसे देखूँगा तो सही, लेकिन अभी नहीं; वह मुझे नज़र भी आएगा, लेकिन नज़दीक से नहीं; याँकूब में से एक सितारा निकलेगा और इस्माइल में से एक 'असा डेगा, और मोआब के 'इलाके को मार मार कर साफ कर देगा, और सब हांगामा करने वालों को हलाक कर डालेगा। 18 और उसके दुश्मन अदोम और शाईर दोनों उसके कब्जे में होंगे, और इस्माइल दिलावरी करेगा। 19 और याँकूब ही की नसल से वह फरमँराँवाँ उठेगा, जो शहर के बाकी मान्दा लोगों को हलाक कर डालेगा।" 20 फिर उसने 'अमालीक पर नज़र करके अपनी यह मसल शुरू की, और कहने लगा, "कौमोंमें पहली कौम 'अमालीक की थी, लेकिन उसका अन्जाम हलाकत है।" 21 और कीनियों की तरफ निगाह करके यह मिसाल शुरू की, और कहने लगा "तेरा घर मजबूत है और तेरा आशियाना भी खान्दान पर बना हुआ है। 22 तोभी कीन खाना खाब होगा, यहाँ तक कि असर तुझे गुलाम करके ले जाएगा।" 23 और उसने यह मसल भी शुरू की, और करने लगा, हाय, अफ़सोस! जब खुदा यह करेगा तो कौन जीता बचेगा? 24 लेकिन कीरीम के साहिल से जहाज आएंगे, और वह असर और इब्र दोनों को दुख देंगे। फिर वह भी हलाक हो जाएगा।" 25 इसके बाद बल'आम उठ कर रवाना हुआ और अपने मुल्क को लौटा, और बलक ने भी अपनी राह ली।

25 और इस्माइली शिर्तीम में रहते थे, और लोगों ने मोआबी 'औरतों के साथ हारपकारी शुरू कर दी। 2 क्यूँकि वह 'औरतें इन लोगों को अपने माँबदूं की कुबानियों में आने की दावत देती थी, और यह लोग जाकर खते और उनके माँबदूं को सिज्दा करते थे। 3 यूँ इस्माइली बाल फ़ग़र की इबादत लगे। तब खुदावन्द का कहर बनी इस्माइल पर भड़का, 4 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, "कौम के सब सरदारों को पकड़कर खुदावन्द के सामने धूप में टॉग दे, ताकि खुदावन्द का शरीर कहर इस्माइल पर से टल जाए।" 5 तब मूसा

ने बनी — इस्माइल के हाकिमों से कहा, "तुम्हारे जो — जो आदमी बाल फ़ग़र की इबादत करने लगे हैं उनको क़त्ल कर डालो।" 6 और जब बनी — इस्माइल की जमा'अत खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर रो रही थी, तो एक इस्माइली मूसा और तमाम लोगों की आँखों के सामने एक मिदियानी 'औरत को अपने साथ अपने भाइयों के पास ले आया। 7 जब फ़ीन्हास बिन इली'एलियाज़र बिन हास्न काहिन ने यह देखा, तो उसने जमा'अत में से उठ हाथ में एक बर्छी ली, 8 और उस मर्द के पीछे जाकर खेमे के अन्दर घुसा और उस इस्माइली मर्द और उस 'औरत दोनों का पेट छेद दिया। तब बनी — इस्माइल में से बबा जाती रही। 9 और जितने इस बबा से मेरे उनका शुमार चौबीस हज़ार था। 10 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 11 "फ़ीन्हास बिन इली'एलियाज़र बिन हास्न काहिन ने मेरे कहर को बनी — इस्माइल पर से हटाया क्यूँकि उनके बीच उसे मेरे लिए गैरत आई, इसीलिए मैंने बनी — इस्माइल को अपनी गैरत के जोश में हलाक नहीं किया। 12 इसलिए त कह दे कि मैंने उससे अपना सुलह का 'अहद बौद्धा, 13 और वह उसके लिए और उसके बाद उसकी नसल के लिए कहानत का 'दाइमी'अहद होगा; क्यूँकि वह अपने खुदा के लिए गैरतमन्द हुआ और उसने बनी — इस्माइल के लिए कफ़कारा दिया।" 14 उस इस्माइली मर्द का नाम जो उस मिदियानी 'औरत के साथ मारा गया जिमीरी था, जो सलू का बेटा और शमौन के कबीले के एक आबाई खान्दान का सरदार था। 15 और जो मिदियानी 'औरत मारी गई उसका नाम कज़बी थी, वह सूर की बेटी जी जो मिदियान में एक आबाई खान्दान के लोगों का सरदार था। 16 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 17 "मिदियानियों को सताना और उनको मारना, 18 क्यूँकि वह तुम को अपने धोखे के दाम में फ़ंसाकर सताते हैं, जैसा फ़ग़र के मु'आमिले में हुआ और कज़बी के मु'आमिले में भी हुआ।" 19 जो मिदियान के सरदार की बेटी और मिदियानियों की बहन थी, और फ़ग़र ही के मु'आमिले में बबा के दिन मारी गई।

26 और बबा के बाद खुदावन्द ने मूसा और हास्न काहिन के बोट इली'एलियाज़र से कहा कि, 2 "बनी — इस्माइल की सारी जमा'अत में बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के जितने इस्माइली जंग करने के कालिल हैं, उन सभीं को उनके आबाई खान्दानों के मुताबिक गिनो।" 3 चुनौती मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने मोआब के मैदानों में जो यददन के किनारे किनारे रीही के सामने हैं, उन लोगों से कहा, 4 कि "बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र के आदमियों को वैसे ही गिन ले जैसे खुदावन्द ने मूसा और बनी — इस्माइल को, जब वह मुल्क — ए — मिस से निकल आए थे हुक्म किया था।" 5 स्विन जो इस्माइल का पहलौठा था उसके बेटे यह हैं, याँनी हनूक, जिससे हनूकियों का खान्दान चला; और फ़ल्लू, जिससे फ़लियों का खान्दान चला; 6 और हसरोन, जिससे हसरोनियों का खान्दान चला; 7 ये बनी स्विन के खान्दान हैं, और इनमें से जो निने गए वह तैनातीलीस हज़ार सात सौ तीस थे। 8 और फ़ल्लू का बेटा इलियाब था, 9 और इलियाब के बेटे नमूएल और दातन और अबीराम थे। यह वही दातन और अबीराम हैं जो जमा'अत के चुने हुए थे, और जब कोरह के फ़रीक ने खुदावन्द से झांगड़ा किया तो यह भी उस फ़रीक के साथ मिल कर मूसा और हास्न से झांगड़े; 10 और जब उन ढाई सौ आदमियों के आग में भस्म हो जाने से वह फ़रीक हलाक हो गया, उसी मौके पर ज़मीन ने मुँह खोल कर कोरह के साथ उनको भी निगल लिया था; और वह सब 'इबरत का निशान ठहरे। 11 लेकिन कोरह के बेटे नहीं मेरे थे। 12 और शमौन के बेटे जिनसे उनके खान्दान चला चला; और यमीन, जिससे यमीनियों का खान्दान चला; और यकीन, जिससे

जिससे यकीनियों का खान्दान चला; 13 और जारह, जिससे जारहियों का खान्दान चला; और साऊल, जिससे साऊलियों का खान्दान चला। 14 तब बनी शमौन के खान्दानों में से बाईं हजार दो सौ आदमी गिने गए। 15 और ज़द के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह है, यानी सफोन, जिससे सफोनियों का खान्दान चला; और हज्जी, जिससे हज्जियों का खान्दान चला; और सूनी, जिससे सूनियों का खान्दान चला; 16 और उज़नी जिससे उज़नियों का खान्दान चला; और 'री, जिससे 'एरियों का खान्दान चला; 17 और अस्ट, जिससे अस्टियों का खान्दान चला; और अरेली, जिससे अरेलियों का खान्दान चला। 18 बनी ज़द के यही घराने हैं, जो इनमें से गिने गए वह चालीस हजार पाँच सौ थे। 19 यहदाह के बेटों में से 'ए' और ओनान तो मूल्क — ए — कनान ही में मर गए। 20 और यहदाह के और बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह है, यानी सीला, जिससे सीलानियों का खान्दान चला; और फारस, जिससे फारसियों का खान्दान चला; और जारह, जिससे जारहियों का खान्दान चला। 21 फारस के बेटे यह है, यानी हसरोन, जिससे हसरोनियों का खान्दान चला; और हमूल, जिससे हमूलियों का खान्दान चला। 22 ये बनी यहदाह के घराने हैं। इनमें से छिह्नतर हजार पाँच सौ आदमी गिने गए। 23 और इश्कार के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह है, यानी तोला', जिससे तोलाइयों का खान्दान चला; और फुव्वा, जिससे फुव्वियों का खान्दान चला: 24 यसब, जिससे यसबियों का खान्दान चला; सिमरोन, जिससे सिमरोनियों का खान्दान चला। 25 यह बनी इश्कार के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह चौसठ हजार तीन सौ थे। 26 और जबलन के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह है, यानी सरद, जिससे सरदियों का खान्दान चला; एलोन, जिससे एलोनियों का खान्दान चला; यहलीएल, जिससे यहलीएलियों का खान्दान चला। 27 यह बनी जबलून के घराने हैं। इनमें से साठ हजार पाँच सौ आदमी गिने गए। 28 और यसुफ के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह है, यानी मनस्सी और इफ़ाईम। 29 और मनस्सी का बेटा मकरी था, जिससे मकरीयों का खान्दान चला; और मकरी से जिल आद पैदा हुआ, जिससे जिल'आदियों का खान्दान चला। 30 और जिल'आद के बेटे यह है, यानी ईंलियाज़र, जिससे ईंञ्जरियों का खान्दान चला; और खलक, जिससे खलकियों का खान्दान चला; 31 और असरीएल, जिससे असरिएलियों का खान्दान चला; और सिक्कम, जिससे सिक्कियों का खान्दान चला; 32 और समीदा', जिससे समीदाइयों का खान्दान चला; और हिक्र, जिससे हिक्रियों का खान्दान चला। 33 और हिक्र के बेटे सिलाफिहाद के यहाँ कोई बेटा नहीं बल्कि बेटियाँ ही हुईं, और सिलाफिहाद की बेटियों के नाम यह हैं: महलाह, और नू'आह, और हजलाह, और मिल्काह, और तिरज़ाह। 34 यह बनी मनस्सी के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह बाबन हजार सात सौ थे। 35 और इफ़ाईम के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह है, यानी सुतलह, जिससे सुतलहियों का खान्दान चला; और बकर, जिससे बकरियों का खान्दान चला, और तहन जिससे तहनियों का खान्दान चला। 36 और सुतलह का बेटा 'ईरान था, जिससे 'ईरानियों का खान्दान चला। 37 यह बनी इफ़ाईम के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह बत्तीस हजार पाँच सौ थे। यसुफ के बेटों के खान्दान यही हैं। 38 और बिनयमीन के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, यानी बाला', जिससे बला'इयों का खान्दान चला; और अशबील, जिससे अशबीलियों का खान्दान चला; और अखीराम, जिससे अखीरामियों का खान्दान चला; 39 और सूफाम, जिससे सूफामियों का खान्दान चला; और हफ़ाम, जिससे हफ़ामियों का खान्दान चला। 40 बाला' के दो बेटे थे एक अर्द, जिससे अर्दियों का खान्दान चला; दूसरा नामान, जिससे नामानियों का खान्दान चला। 41 यह बनी बिनयमीन के घराने हैं। इनमें से जो गिने गए वह पैतालस हजार छ़: सौ थे।

42 और दान का बेटा जिससे उसका खान्दान चला सुहाम था, उससे सुहामियों खान्दान चला। दानियों का खान्दान यही था। 43 सुहामियों के खान्दान के जो आदमी गिने गए वह चौसठ हजार चार सौ थे। 44 और आशर के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, यानी यिमना, जिससे यिमनियों का खान्दान चला; और ईस्वी, जिससे ईस्वियों का खान्दान चला; और बरी'अहियों का खान्दान चला। 45 बनी बरी'आह यह है, यानी हिब्र, जिससे हिब्रियों का खान्दान चला; और मलकीएल, जिससे मलकीएलियों का खान्दान चला। 46 और आशर की बेटी का नाम सारा था। 47 यह बनी आशर के घराने हैं, और जो इनमें से गिने गए वह तिरपन हजार चार सौ थे। 48 और नफताली के बेटे जिनसे उनके खान्दान चले यह हैं, यानी यहसीएल, जिससे यहसीएलियों का खान्दान चला; और जूनी, जिससे जूनियों का खान्दान चला; 49 और यिम, जिससे यिमियों का खान्दान चला; और सलीम, जिससे सलीमियों का खान्दान चला। 50 यह बनी नफताली के घराने हैं, और जितने इनमें से गिने गए वह पैतालीस हजार चार सौ थे। 51 फिर बनी — इसाईल में से जितने गिने गए वह सब मिला कर छ़: लाख एक हजार सात सौ तीस थे। 52 और खुदावन्द ने मूसा से कहा, 53 "इही ही को, इनके नामों के शमार के मुवाकिक वह जमीन मीरास के तौर पर बाँट दी जाए। 54 जिस कबीले में ज्यादा आदमी हों उसे ज्यादा हस्सा मिले, और जिसमें कम हों उसे कम हस्सा मिले। हर कबीले की मीरास उसके गिने हुए आदमियों के शमार पर खत्म हो। 55 लेकिन जमीन पर्ची से तक्सीमी की जाए। वह अपने आबाई कबीलों के नामों के मुताबिक मीरास पाएँ। 56 और चाहे ज्यादा आदमियों का कबीला हो या थोड़ों का, पर्चीसे उनकी मीरास तक्सीमी की जाए।" 57 और जो लावियों में से अपने — अपने खान्दान के मुताबिक गिने गए वह यह है, यानी जैरसोन से जैरसेनियों का घराना, किहात से किहातियों का घराना, मिरारी से मिरारियों का घराना। 58 और यह भी लावियों के घराने हैं, यानी लिबनी का घराना, हबस्न का घराना, महली का घराना, और मूरी का घराना, और कोरह का घराना। और किहात से अमराम पैदा हुआ। 59 और अमराम की बीबी का नाम यूकबिद था, जो लावी की बेटी थी और मिस्र में लावी के यहाँ पैदा हुई; इसी के हास्न और मूसा और उनकी बहन मरियम अमराम से पैदा हुए। 60 और हास्न के बेटे यह थे: नदब और अबीह और इली'एलियाज़र और एताप्र। 61 और नदब और अबीह तो उसी बक्त मर गए जब उन्होंने खुदावन्द के सामने उपरी आग पेश की थी। 62 फिर उनमें से जितने एक महीने और उससे ऊपर — ऊपर के नरीना फर्जन्द गिने गए वह तेईस हजार थे। यह बनी — इसाईल के साथ नहीं गिने गए क्यूंकि इनको बनी — इसाईल के साथ मीरास नहीं मिली। 63 तब मूसा और इली'एलियाज़र काहिन ने जिन बनी — इसाईल को मोआब के मैदानों में जो यदन के किनारे किनारे यही के सामने हैं शुमार किया वह यही है। 64 लेकिन जिन इसाईलियों को मूसा और हास्न काहिन ने सीना के जंगल में गिना था, उनमें से एक शख्स भी इनमें न था। 65 क्यूंकि खुदावन्द ने उनके हक में कह दिया था कि वह यकीन बीरान में मर जाएँगे, चुनौते उनमें से अलावा युक्फ़ना के बेटे कालिब और नून के बेटे यश्वर के एक भी बाकी नहीं बचा था।

27 तब यसुफ के बेटे मनस्सी की औलाद के घरानों में से सिलाफिहाद बिन फ़िक्र बिन जिल'आद बिन मकरी बिन मनस्सी की बेटियों, जिनके नाम महलाह और नू'आह और हजलाह और मिल्काह और तिरज़ाह हैं, पास आकर 2 खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर मूसा और इली'एलियाज़र काहिन और अमीरों और सब जमा'अत के सामने खड़ी हुई और कहने लगी कि; 3 "हमारा बाप वीरान में मरा, लेकिन वह उन लोगों में शामिल न था जिन्होंने कोरह के फ़रीक से मिल कर खुदावन्द के खिलाफ सिर उठाया था; बल्कि वह

अपने गुनाह में मरा और उसके कोई बेटा न था। 4 इसलिए बेटा न होने की वजह से हमारे बाप का नाम उसके घराने से क्यूँ मिटने पाए? इसलिए हम को भी हमारे बाप के भाइयों के साथ हिस्सा दो।” 5 मूसा उनके मृ'अमलिए को खुदावन्द के सामने ले गया। 6 खुदावन्द ने मूसा से कहा, 7 “सिलाफिहाद की बेटियाँ ठीक कहती हैं; तु उनको उनके बाप के भाइयों के साथ जस्तर ही मीरास का हिस्सा देना, यानी उनको उनके बाप की मीरास मिले। 8 और बनी — इस्माइल से कह, कि अगर कोई शश्वर मर जाए और उसका कोई बेटा न हो, तो उस की मीरास उसकी बेटी को देना। 9 अगर उसकी कोई बेटी न हो, तो उसके भाइयों को उसकी मीरास देना। 10 अगर उसके भाई भी न हों, तो तुम उसकी मीरास उसके बाप के भाइयों को देना। 11 अगर उसके बाप का भी कोई भाई न हो, तो जो शश्वर उसके घराने में उसका सब से करीबी रिश्तेदार हो उसे उसकी मीरास देना; वह उसका वारिस होगा। और यह हुक्म बनी — इस्माइल के लिए, जैसा खुदावन्द ने मूसा को फरमाया वाजिबी फर्ज होगा।” 12 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, “तू 'अबारीम के इस पहाड़ पर चढ़कर उस मुल्क को, जो मैंने बनी — इस्माइल को 'इनायत किया है देख ले। 13 और जब तु उसे देख लेगा, तो तू भी अपने लोगों में अपने भाई हास्तन की तरह जा मिलेगा। 14 क्यूँकि सीन के जंगल में जब जमा'अत ने मुझ से झांगड़ा किया, तो बरअक्स इसके कि वहाँ पानी के चश्मे पर तम दोनों उनकी आँखों के सामने मेरी तकदीस करते, तुम ने मैंने हुक्म से सरकशी की।” यह वही मीरीबा का चश्मा है जो दश्त — ए — सीन के कादिस में है। 15 मूसा ने खुदावन्द से कहा कि; 16 “‘खुदावन्द सारे बशर की रस्तों का खुदा, किसी आदमी को इस जमा'अत पर मुकर्र करे; 17 जिसकी आमद — ओ — रफत उनके सामने हो और वह उनको बाहर ले जाने और अन्दर ले आने में उनका रहबर हो, ताकि खुदावन्द की जमा'अत उन भेड़ों की तरह न रहे जिनका कोई चरवाहा नहीं।” 18 खुदावन्द ने मूसा से कहा, “तू नून के बेटे यशू'अ को लेकर उस पर अपना हाथ रख, क्यूँकि उस शश्वर में स्थ है; 19 और उसे इल्लीएलियाज़र काहिन और सारी जमा'अत के आगे खड़ा करके उनकी आँखों के सामने उसे वसीयत कर। 20 और अपने रोबदाब से उसे बहराबर कर दे, ताकि बनी — इस्माइल की सारी जमा'अत उसकी फरमाबदारी करे। 21 वह इल्लीएलियाज़र काहिन के आगे खड़ा हुआ करे, जो उसकी जानिब से खुदावन्द के सामने ऊरीम का हुक्म दरियापत किया करेगा। ऊरी के कहने से वह और बनी — इस्माइल की सारी जमा'अत के लोग निकला करें, और ऊरी के कहने से लौटा भी करें।” 22 इसलिए मूसा ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक 'अमल किया, और उसने यशू'अ को लेकर उसे इल्लीएलियाज़र काहिन और सारी जमा'अत के सामने खड़ा किया; 23 और उसने अपने हाथ उस पर रख दें, और जैसा खुदावन्द ने उसको हुक्म दिया था उसे वसीयत की।

28 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि; 2 “बनी — इस्माइल से कह कि मेरा हहिया, यानी मेरी वह गिजा जो राहतअंगेज खुशबू की आतिशीन कुर्बानी है, तुम याद करके मेरे सामने बक्त — ए — मृ'अव्यन पर पेश करना। 3 तु उन से कह दे कि जो आतिशी कुर्बानी तुम को खुदावन्द के सामने पेश करना है वह यह है: कि दो बे — ऐब यक — साला नर बर्ब दर दिन दाइमी सोखनी कुर्बानी के लिए 'अदा करो। 4 एक बर्ब सुबह और दूसरा बर्ब शाम को चढ़ाना; 5 और साथ ही ऐफा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें कूट कर निकाल हुआ तेल चौथाई हीन के बराबर मिला हो, नज़ की कुर्बानी के तौर पर पेश करना। 6 यह वही दाइमी सोखनी कुर्बानी है जो कोह-ए-सीनी पर मुकर्र की गई, ताकि खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे। 7 और हीन की चौथाई के बराबर मय हर एक बर्ब तपावन के लिए लाना।

हैकल ही में खुदावन्द के सामने मय का यह तपावन चढ़ाना। 8 और दूसरे बर्ब को शाम के बक्त चढ़ाना, और उसके साथ भी सुबह की तरह वैसी ही नज़ की कुर्बानी और तपावन हो, ताकि यह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे। 9 'और सबत के दिन दो बे — ऐब यकसाला नर बर्ब और नज़ की कुर्बानी के तौर पर ऐफा के पाँचवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, तपावन के साथ पेश करना। 10 दाइमी सोखनी कुर्बानी और उसके तपावन के 'अलावा यह हर सबत की सोखनी कुर्बानी है। 11 'और अपने महीनों के शुरू' में हर माह दो। बछड़े और एक मैदा और सात बे-ऐब यक — साला नर बर्ब सोखनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने चढ़ाया करना। 12 और ऐफा के तीन दहाई हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, हर बछड़े के साथ; और ऐफा के पाँचवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, हर मैदे के साथ; और ऐफा के दसवें हिस्से के बराबर मैदा, जिसमें तेल मिला हो, 13 हर बर्ब के साथ नज़ की कुर्बानी के तौर पर लाना। ताकि यह राहतअंगेज खुशबू की सोखनी कुर्बानी, यानी खुदावन्द के सामने आतिशी कुर्बानी ठहरे। 14 और इन के साथ तपावन के लिए मय हर एक बछड़ा आधे हीन के बराबर, और हर एक मैदा तिहाई हीन के बराबर, और हर एक बर्ब चौथाई हीन के बराबर हो। यह साल भर के हर महीने की सोखनी कुर्बानी है। 15 और उस दाइमी सोखनी कुर्बानी और उसके तपावन के 'अलावा एक बकरा खता की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश करा जाए। 16 और पहले महीने की चौदहवीं तारीख को खुदावन्द की फसह हुआ करे। 17 और उसी महीने की पंद्रहवीं तारीख को 'ईद हो, और सात दिन तक बेखमीरी रोटी खाई जाए। 18 पहले दिन लोगों का पाक मजमा' हो, तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना। 19 बल्कि तुम आतिशी कुर्बानी, यानी खुदावन्द के सामने सोखनी कुर्बानी के तौर पर दो बो बछड़े और एक मैदा और सात यक — साला नर बर्ब चढ़ाना। यह सब के सब बे — 'ऐब हों। 20 और उनके साथ नज़ की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा, हर एक बछड़ा ऐफा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर एक मैदा पाँचवें हिस्से के बराबर। 21 और सातों बर्बों में से हर बर्ब पीछे ऐफा के दसवें हिस्से के बराबर पेश करना। 22 और खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा हो, ताकि उससे तुम्हारे लिए कफ़कारा दिया जाए। 23 तुम सबक की सोखनी कुर्बानी के 'अलावा, जो दाइमी सोखनी कुर्बानी है, इनको भी पेश करना। 24 इसी तरह तुम हर दिन सात दिन तक आतिशी कुर्बानी की यह गिजा चढ़ाना, ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशबू ठहरे; दिन — मरा की दाइमी सोखनी कुर्बानी और तपावन के 'अलावा यह भी पेश करा जाए। 25 और सातवें दिन फिर तुम्हारा पाक मजमा हो उसमें कोई खादिमाना काम न करना। 26 'और पहले फलों के दिन, जब तुम नई नज़ की कुर्बानी हफ्तों की 'ईद में खुदावन्द के सामने पेश करो, तब भी तुम्हारा पाक मजमा' हो, उस दिन कोई खादिमाना काम न करना। 27 बल्कि तुम सोखनी कुर्बानी के तौर पर दो बो बछड़े, एक मैदा और सात यक — साला नर बर्ब पेश करना; ताकि यह खुदावन्द के सामने राहतअंगेज खुशबू हो, 28 और इनके साथ नज़ की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा, हर बछड़ा ऐफा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मैदा पाँचवें हिस्से के बराबर, 29 और सातों बर्बों में से हर बर्ब पीछे ऐफा के दसवें हिस्से के बराबर हो। 30 और एक बकरा हो ताकि तुम्हारे लिए कफ़कारा दिया जाए। 31 दाइमी सोखनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी के 'अलावा तुम इनको भी पेश करना। यह सब बे — 'ऐब हों और इनके तपावन साथ हों।

29 और सातवें महीने की पहली तारीख को तुम्हारा पाक मजमा' हो, उसमें कोई खादिमाना काम न करना। यह तुम्हारे लिए नरसिंगे फ़ूकने का दिन

है। 2 तुम सोखतनी कुर्बानी के तौर पर एक बछड़ा, एक मेंढा और सात बे — 'ऐब यक — साला नर बर्बे चढ़ाना ताकि यह खुदावन्द के सामने राहत अंगौज खुशबू ठहरे। 3 और इनके साथ नज़ की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; बछड़ा ऐफा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर, 4 और सातों बर्बों में से हर बर्बे पीछे ऐफा के दसवें हिस्से के बराबर हो। 5 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो, ताकि तुम्हारे वास्ते कफ़फ़ारा दिया जाए। 6 नये चाँद की सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी, और दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और उनके तपावनों के 'अलावा, जो अपने — अपने कानून के मुताबिक पेश करो जाएँगे, यह भी राहतअंगौज खुशबू की आतिशी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने अदा किये जाए। 7 फिर उसी सातवें महीने की दसवीं तारीख को तुम्हारा पाक मजमा' हो; तुम अपनी अपनी जान को दुख देना और किसी तरह का काम न करना, 8 बल्कि सोखतनी कुर्बानी के तौर पर एक बछड़ा, एक मेंढा और सात यक — साला नर बर्बे खुदावन्द के सामने चढ़ाना, ताकि यह राहतअंगौज खुशबू ठहरे; यह सब के सब बे — 'ऐब हों, 9 और इनके साथ नज़ की कुर्बानी के तौर पर तेल मिला हुआ मैदा; हर बछड़ा ऐफा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और हर मेंढा पाँचवें हिस्से के बराबर, 10 और सातों बर्बों में से हर बर्बे पीछे ऐफा के दसवें हिस्से के बराबर हो, 11 और खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा हो, यह भी उस खता की कुर्बानी के 'अलावा, जो कफ़फ़ारे के लिए है और दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी, और तपावनों के 'अलावा अदा किये जाएँ। 12 और सातवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख को फिर तुम्हारा पाक मजमा' हो; उस दिन तुम कोई खादिमाना काम न करना, और सात दिन तक खुदावन्द की खातिर 'इंद मानाना। 13 और तुम सोखतनी कुर्बानी के तौर पर तेहर बछड़े, दो मेंढे, और चौदह यक — साला नर बर्बे चढ़ाना ताकि यह राहत अंगौज खुशबू खुदावन्द के लिए आतिशीन कुर्बानी ठहरे; यह सब के सब बे — 'ऐब हों। 14 और इनके साथ नज़ की कुर्बानी के तौर पर तेहर बछड़ों में से हर बछड़े पीछे तेल मिला हुआ मैदा ऐफा के तीन दहाई हिस्से के बराबर, और दोनों मेंढों में से हर मेंढे पीछे पाँचवें हिस्से के बराबर, 15 और चौदह बर्बों में से हर बर्बे पीछे ऐफा के दसवें हिस्से के बराबर हो। 16 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ। 17 "और दूसरे दिन बारह बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला नर बर्बे चढ़ाना। 18 और बछड़ों और मेंढों और बर्बों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीके के मुताबिक उनकी नज़ की कुर्बानी और तपावन हों, 19 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और तपावनों के 'अलावा चढ़ाए जाएँ। 20 "और तीसरों दिन ग्याह बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बर्बे हों। 21 और बछड़ों और मेंढों और बर्बों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीके के मुताबिक उनकी नज़ की कुर्बानी और तपावन हों, 22 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और तपावन के अलावा चढ़ाए जाएँ। 23 'और चौथे दिन दस बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बर्बे हों। 24 और बछड़ों और मेंढों और बर्बों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीके के मुताबिक उनकी नज़ की कुर्बानी और तपावन हों, 25 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाए। 26 "और पाँचवें दिन नौ बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बर्बे हों। 27 और बछड़ों और मेंढों और बर्बों के साथ, उनके शुमार और कानून के मुताबिक

उनकी नज़ की कुर्बानी और तपावन हों, 28 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाए। 29 "और छठे दिन आठ बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बर्बे हों। 30 और बछड़ों और मेंढों और बर्बों के साथ, उनके शुमार और कानून के मुताबिक उनकी नज़ की कुर्बानी और तपावन हों; 31 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा अदा की जाए। 32 "और सातवें दिन सात बछड़े, दो मेंढे और चौदह यक — साला बे — 'ऐब नर बर्बे हों। 33 और बछड़ों और मेंढों और बर्बों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीके के मुताबिक उनकी नज़ की कुर्बानी और तपावन हों, 34 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और तपावन के अलावा अदा की जाएँ 35 "और आठवें दिन तुम्हारा पाक मजमा' हो; तुम उस दिन कोई खादिमाना काम न करना, 36 बल्कि तुम एक बछड़ा, एक मेंढा, और सात यक — साला बे — 'ऐब नर बर्बे सोखतनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ाना ताकि वह खुदावन्द के सामने राहतअंगौज खुशबू की आतिशी कुर्बानी ठहरे। 37 और बछड़े और मेंढे और बर्बों के साथ, उनके शुमार और तौर तरीके के मुताबिक उनकी नज़ की कुर्बानी और तपावन हों, 38 और एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए हो। यह सब दाइमी सोखतनी कुर्बानी और उसकी नज़ की कुर्बानी और तपावन के 'अलावा चढ़ाए जाएँ। 39 "तुम अपनी मुकर्रा 'ईंदों में अपनी मिन्नतों और रजा की कुर्बानियों के 'अलावा यहीं सोखतनी कुर्बानियाँ और नज़ की कुर्बानियाँ और तपावन और सलामती की कुर्बानियाँ खुदावन्द को पेश करना।" 40 और जो कुछ खुदावन्द ने मूसा को हव्वम दिया, वह सब मूसा ने बनी इस्लाइंट को बता दिया।

30 और मूसा ने बनी — इस्लाइंल के कबीलों के सरदारों से कहा, "जिस

बात का खुदावन्द ने हुक्म दिया है वह यह है, कि 2 जब कोई मर्द खुदावन्द की मिन्नत माने या कसम खाकर अपने ऊपर कोई खास फ़र्ज ठहराए, तो वह अपने 'अहद को न तोड़े, बल्कि जो कुछ उसके मुँह से निकला है उसे पूरा करे। 3 और अगर कोई औरत खुदावन्द की मिन्नत माने और अपनी नौ जबानी के दिनों में अपने बाप के घर होते हुए अपने ऊपर कोई फ़र्ज ठहराए। 4 और उसका बाप उसकी मिन्नत और उसके फ़र्ज का हाल जो उसने अपने ऊपर ठहराया है सुनकर चुप हो रहे, तो वह सब मिन्नतें और सब फ़र्ज जो उसने अपने ऊपर ठहराए हैं काईम रहेंगे। 5 लेकिन अगर उसका बाप जिस दिन यह सुने उसी दिन उसे मना' करे, तो उसकी कोई मिन्नत या कोई फ़र्ज जो उसने अपने ऊपर ठहराया है, काईम नहीं रहेगा; और खुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़र रखेगा क्यूँकि उसके बाप ने उसे इजाजत नहीं दी। 6 और अगर किसी आदमी से उसकी मिस्त्रत हो जाए, हालाँकि उसकी मिन्नतें या मुँह की निकली हुई बात जो उसने अपने ऊपर फ़र्ज ठहराई है, अब तक पूरी न हुई हो; 7 और उसका आदमी यह हाल सुनकर उस दिन उससे कुछ न कहे तो उसकी मन्त्रे काईम रहेंगी, और जो बातें उसने अपने ऊपर फ़र्ज ठहराई हैं वह भी काईम रहेंगी। 8 लेकिन अगर उसका आदमी जिस दिन यह सब सुने, उसी दिन उसे मना' करे तो उसने जैसे उस 'औरत की मिन्नत को और उसके मुँह की निकली हुई बात को जो उसने अपने ऊपर फ़र्ज ठहराई थी तोड़ दिया; और खुदावन्द उस 'औरत को मा'ज़र रखेगा। 9 लेकिन बेवा और तलाकशुदा की मिन्नतें और फ़र्ज ठहरायी हुई बातें काईम रहेंगी। 10 और अगर उसने अपने शौहर के घर होते हुए कुछ मिन्नत मानी या कसम खाकर अपने ऊपर कोई फ़र्ज ठहराया हो, 11 और उसका शौहर यह हाल सुन कर खामोश रहा हो और उसे मना' न किया

हो, तो उसकी मिन्नतें और सब फर्ज़ जो उसने अपने ऊपर ठहराए काईम रहेंगे। 12 लेकिन अगर उसके शौहर ने जिस दिन यह सब सुना उसी दिन उसे बातिल ठहराया हो, तो जो कुछ उस 'औरत के मूँह से उसकी मिन्नतें और ठहराए हुए फर्ज़ के बारे में निकला है, वह काईम नहीं रहेगा; उसके शौहर ने उनको तोड़ डाला है, और खुदावन्द उस 'औरत को माँजूर रख खेगा। 13 उसकी हर मिन्नत को और अपनी जान को दुख देने की हर कसम को उसका शौहर चाहे तो काईम रख खेगे, या अगर चाहे तो बातिल ठहराए। 14 लेकिन अगर उसका शौहर दिन — ब — दिन खामोश ही रहे, तो वह जैसे उसकी सब मिन्नतों और ठहराए हुए फर्ज़ों को काईम नहीं कर देता है; उसने उनको काईम यूँ किया कि जिस दिन से सब सुना वह खामोश ही रहा। 15 लेकिन अगर वह उनको सुन कर बाद में उनको बातिल ठहराए तो वह उस 'औरत का गुनाह उठाएगा।' 16 शौहर और बीवी के बीच और बाप बेटी के बीच, जब बेटी नौ — जवानी के दिनों में बाप के घर हो, इन ही तौर तरीके का हक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया।

31 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, 2 'मिदियानियों से बनी — इसाईल का इन्तकाम ले; इसके बाद तू अपने लोगों में जा मिलेगा।' 3 तब मूसा ने लोगों से कहा, 'अपने में से जंग के लिए आदमियों को हथियारबन्द करो, ताकि वह मिदियानियों पर हमला करें और मिदियानियों से खुदावन्द का इन्तकाम लें।' 4 और इसाईल के सब कबीलों में से हर कबीला एक हजार आदमी लेकर जंग के लिए भेजना।' 5 फिर हजारों हजार बनी — इसाईल में से हर कबीला एक हजार के हिसाब से बारह हजार हथियारबन्द आदमी जंग के लिए चुने गए। 6 यूँ मूसा ने हर कबीले से एक हजार आदमियों को जंग के लिए भेजा और इनी'एलियाजर काहिन के बेटे फँन्हास को भी जंग पर रवाना किया, और हैकल के बर्तन और बलन्द आवाज के नरसिंग उसके साथ कर दिए। 7 और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हक्म दिया था, उसके मूत्राक्ष उहोंने मिदियानियों से जंग की और सब मर्दों को कत्ल किया। 8 और उहोंने उन मर्त्तुओं के अलावा ईब्बी और रकम और सूर और होर और रबा' को भी, जो मिदियान के पाँच बादशाह थे, जान से मारा और ब'अर के बेटे बल'आम को भी तलवार से कत्ल किया। 9 और बनी — इसाईल ने मिदियान की 'औरतों और उनके बच्चों को गुलाम किया, और उनके चौपाये और भेड़ बकरियाँ और माल — ओ — अस्बाब सब कुछ लूट लिया। 10 और उनकी सुकूनतगाहों के सब शहरों को जिनमें वह रहते थे, और उनकी सब छावनियों को आग से फँक दिया। 11 और उहोंने सारा माल — ए — गरीमत और सब गुलाम, क्या इंसान और क्या हैवान साथ लिए, 12 और उन गुलामों और माल — ए — गरीमत को मूसा और इनी'एलियाजर काहिन और बनी इसाईल की सारी जमा'अत के पास उस लश्करगाह में ले आए जो यरीह के सामने यरदन के किनारे किनारे मोआब के मैदानों में थी। 13 तब मूसा और इनी'एलियाजर काहिन और जमा'अत के सब सरदार उनके इस्तकबाल के लिए लश्करगाह के बाहर गए। 14 और मूसा उन फौजी सरदारों पर जो हजारों और सैकड़ों के सरदार थे और जंग से लौटे थे झल्लाया, 15 और उसे कहने लगा, 'क्या तुम ने सब 'औरतें जीती बचा रख दी हैं?' 16 देखो, इन ही ने बल'आम की सलाह से फँगर के मु'अमिले में बनी — इसाईल से खुदावन्द की हक्म उदूली कराई, और यूँ खुदावन्द की जमा'अत में बवा फैटी। 17 इसलिए इन बच्चों में जितने लड़के हैं सब को मार डालो, और जितनी 'औरतें मर्द का मूँह देख चुकी हैं उनको कत्ल कर डालो। 18 लेकिन उन लड़कियों को जो मर्द से वाकिफ़ नहीं और अद्भुती है, अपने लिए जिन्दा रख द्यो। 19 और तुम सात दिन तक लश्करगाह के बाहर ही खेमे डाले पड़े रहो, और तुम में से जितनों ने किसी आदमी की जान से मारा हो और जितनों ने किसी मक्तूल को छुआ हो, वह सब

अपने आप को और अपने कैदियों को तीसरे दिन और सातवें दिन पाक करें। 20 तुम अपने सब कपड़ों और चमड़े की सब चीज़ों को और बकरी के बालों की बुनी हुई चीज़ों को और लकड़ी के सब बर्तनों को पाक कराना।' 21 और इनी'एलियाजर काहिन ने उन सिपाहियों से जो जंग पर गए थे कहा, शरी'अत का वह कानून जिसका हक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया था ही है, कि 22 सोना और चौंड़ी और पीतल और लोहा और रांग और सीसा; 23 गरज जो कुछ आग में ठहर सके वह सब तुम आग में डालना तब वह साफ होगा, तो भी नापाकी दूर करने के पानी से उसे पाक करना पड़ेगा; और जो कुछ आग में न ठहर सके उसे तुम पानी में डालना। 24 और तुम सातवें दिन अपने कपड़े धोना तब तुम पाक ठहरोगे, इसके बाद लश्करगाह में दाखिल होना। 25 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 26 'इनी'एलियाजर काहिन और जमा'अत के आवाई खानदानों के सरदारों को साथ लेकर, तू उन आदमियों और जानवरों को शुमार कर जो लूट में आए हैं। 27 और लूट के इस माल को दो हिस्सों में तकरीम कर कि, एक हिस्सा उन जंगी मर्दों को दे जो लड़ाई में गए थे और दूसरा हिस्सा जमा'अत को दे। 28 और उन जंगी मर्दों से जो लड़ाई में गए थे, खुदावन्द के लिए चाहे आदमी हों या गाय — बैल या गधे या भेड़ बकरियाँ, हर पाँच सौ पीछे एक को हिस्से के तौर पर ले; 29 इन्हीं के आधे में से इस हिस्से को लेकर इनी'एलियाजर काहिन को देना, ताकि वह खुदावन्द के सामने उठाने की कुर्बानी ठहरे। 30 और बनी — इसाईल के आधे में से चाहे आदमी हों या गाय — बैल या गधे या भेड़ — बकरियाँ, याँनी सब किस्म के चौपायें में से पचास — पचास पीछे एक — एक को लेकर लाकियों को देना जो खुदावन्द के घर की मुहाफिज़त करते हैं।' 31 चुनाँचे मूसा और इनी'एलियाजर काहिन ने जैसा खुदावन्द ने मूसा से कहा था वैसा ही किया। 32 और जो कुछ माल — ए — गरीमत जंगी मर्दों के हाथ आया था उसे छोड़कर लूट के माल में छ: लाख पिछतर हजार भेड़ — बकरियाँ थीं; 33 और बहतर हजार गाय — बैल, 34 और इक्सठ हजार गधे, 35 और नुफ़स — ए — इंसानी में से बर्तीय हजार ऐसी 'औरतें जो मर्द से नावाकिफ़ और अद्भुती थीं। 36 और लूट के माल के उस आधे में जो जंगी मर्दों का हिस्सा था, तीन लाख सैतीस हजार पाँच सौ भेड़ — बकरियाँ थीं, 37 जिनमें से छ: सौ पिछतर भेड़ — बकरियाँ खुदावन्द के हिस्से के लिए थीं। 38 और छतीस हजार गाय — बैल थे, जिनमें से बहतर खुदावन्द के हिस्से के थे। 39 और तीस हजार पाँच सौ गधे थे, जिनमें से इक्सठ गधे खुदावन्द के हिस्से के थे। 40 और नुफ़स — ए — इंसानी का शुमार सोलह हजार था, जिनमें से बर्तीस जाने खुदावन्द के हिस्से से अलग रख्खा था; 43 फिर इस आधे में भी जो जमा'अत को दिया गया तीन लाख सैतीस हजार पाँच सौ भेड़ — बकरियाँ थीं, 44 और छतीस हजार गाय — बैल 45 और तीस हजार पाँच सौ गधे, 46 और सोलह हजार नुफ़स — ए — इंसानी। 47 और बनी — इसाईल के इस आधे में से मूसा ने जंगी मर्दों के हिस्से से अलग रख्खा था; 43 फिर इस आधे में भी जो जमा'अत को दिया गया तीन लाख सैतीस हजार पाँच सौ भेड़ — बकरियाँ थीं, 44 और छतीस हजार गाय — बैल 45 और तीस हजार पाँच सौ गधे, 46 और सोलह हजार नुफ़स — ए — इंसानी। 47 और बनी — इसाईल के इस आधे में से मूसा ने खुदावन्द के हक्म के मुवाफिक उस हिस्से को जो खुदावन्द के उठाने की कुर्बानी थी, इनी'एलियाजर काहिन को दिया। 42 अब रहा बनी — इसाईल का आधा हिस्सा, जिसे मूसा ने जंगी मर्दों के हिस्से से अलग रख्खा था; 43 फिर इस आधे में भी जो जमा'अत को दिया गया तीन लाख सैतीस हजार पाँच सौ भेड़ — बकरियाँ थीं, 44 और छतीस हजार गाय — बैल 45 और तीस हजार पाँच सौ गधे, 46 और सोलह हजार नुफ़स — ए — इंसानी। 47 और बनी — इसाईल के इस आधे में से मूसा ने खुदावन्द के हक्म के मुवाफिक, क्या इंसान और क्या हैवान हर पचास पीछे एक को लेकर लाकियों को दिया जो खुदावन्द के घर की मुहाफिज़त करते थे। 48 तब वह फौजी सदार जो हजारों और सैकड़ों सिपाहियों के सरदार थे, मूसा के पास आकर 49 उससे कहने लगे, 'तेरे खादियों ने उन सब जंगी मर्दों को जो हमारे मातहत हैं गिना, और उनमें से एक जवान भी कम न हुआ। 50 इसलिए हम में से जो कुछ जिसके हाथ लगा, याँनी सोने के जेवर और पाजेब और कंगन और अंगूठियाँ और मुन्द्रे और बाज़बन्द यह सब हम खुदावन्द के हहिये के

तौर पर ले आए हैं ताकि हमारी जानों के लिए खुदावन्द के सामने कफकारा दिया जाए।” 51 चुनाँचे मूसा और इलीएलियाज़र काहिन ने उनसे यह सब सोने के घडे हुए जेवर ले लिए। 52 और उस हादिये का सारा सोना जो हजारों और सैकड़ों के सरदारों ने खुदावन्द के सामने पेश कर, वह याँनी, तकीबन 190 कि. ग्रा. याँनीसोलह हजार सात सौ पचास मिस्काल था। 53 कँूँकि जंगी मर्दी में से हर एक कुछ न कुछ लट्ट कर ले आया था। 54 तब मूसा और इलीएलियाज़र काहिन उस सोने को जो उन्होंने हजारों और सैकड़ों के सरदारों से लिया था, खेमा — ए — इजितमा’अ में लाए ताकि वह खुदावन्द के सामने बनी — इसाईल की यादगार ठहरे।

32 और बनी स्विन और बनी ज़द के पास चौपायों के बहुत बड़े बड़े गोल थे।

इसलिए जब उन्होंने याँजेर और जिल’आद के मुल्कों को देखा कि यह मकाम चौपायों के लिए बहुत अच्छे हैं, 2 तो उन्होंने जाकर मूसा और इलीएलियाज़र काहिन और ज्याँ अत के सरदारों से कहा कि, 3 ‘अतारात और दीबोन और याँजेर और निमरा और हस्बोन, इलींआती और शबाम और नबू और बक्सन, 4 याँनी वह मुल्क जिस पर खुदावन्द ने इसाईल की ज्याँ अत को फतह दिलाई है, चौपायों के लिए बहुत अच्छा है और तेरे खादिमों के पास चौपाये हैं। 5 इसलिए अगर हम पर तेरे करम की नज़र है तो इसी मुल्क को अपने खादिमों की मीरास कर दे, और हम को यरदान पार न ले जा। 6 मूसा ने बनी स्विन और बनी ज़द से कहा, “क्या तुम्हारे भाई लड़ई में जाँ और तुम यहीं बैठे रहो? 7 तुम कँूँ बनी — इसाईल को पार उत्तर कर उस मुल्क में जाने से, जो खुदावन्द ने उन को दिया है, बेदिल करते हो? 8 तुम्हारे बाप दादा ने भी, जब मैंने उनको कादिस बरनी’ से भेजा कि मुल्क का हाल दरियापत करें तो ऐसा ही किया था। 9 क्यैंकि जब वह बादी — ए — इस्काल में पहुँचे और उस मुल्क को देखा, तो उन्होंने बनी — इसाईल को बे — दिल कर दिया, ताकि वह उस मुल्क में जो खुदावन्द ने उनको ‘इनायत किया न जाएँ। 10 और उसी दिन खुदावन्द का ग़ज़ब भड़का और उसने क़सम खाकर कहा, कि 11 उन लोगों में से जो मिस्थ से निकल कर आये हैं बीस बरस और उससे ऊपर — ऊपर की उम्र का कोई शख़स उस मुल्क को नहीं देखने पाएगा, जिसके देने की क़सम मैंने अब्बाम और इहाक और याँकूल से खाई, कँूँकि उन्होंने मेरी पूरी पैरवी नहीं की। 12 मगर युक्ता किन्ज़ी का बेटा कालिब और नून का बेटा यशूँ अउसे देखेंगे, कँूँकि उन्होंने खुदावन्द की पूरी पैरवी की है। 13 सो खुदावन्द का कहर इसाईल पर भड़का और उसने उनकी वीराम में चालीस बरस तक आवारा फिराया, जब तक कि उस नसल के सब लोग जिन्होंने खुदावन्द के सामने गुनाह किया था, नाबदू न हो गए। 14 और देखो, तुम जो गुनाहगारों की नसल हो, अब अपने बाप दादा की जगह उठे हो, ताकि खुदावन्द के कहर — ए — शर्दीद की इसाईलियों पर ज्यादा कराओ। 15 कँूँकि अगर तुम उस की पैरवी से फिर जाओ तो वह उनको फिर वीराम में छोड़ देगा, और तुम इन सब लोगों को हलाक कराओगे।” 16 तब वह उसके नज़दीक आकर कहने लगे, हम अपने चौपायों के लिए यहाँ भेड़साले और अपने बाल — बच्चों के लिए शहर बनाएँगे, 17 लेकिन हम खुद हथियार बाँधे हुए तैयार रहेंगे के बनी — इसाईल के आगे चलें, जब तक कि उनको उनकी जगह तक न पहुँचा दें; और हमारे बाल — बच्चे इस मुल्क के बाशिन्दों की वजह से फ़सीलदार शहरों में रहेंगे। 18 और हम अपने घरों को फिर बापस नहीं आएँगे जब तक बनी — इसाईल का एक — एक आदमी अपनी मीरास का मालिक न हो जाए। 19 और हम उनमें शामिल होकर यरदान के उस पार या उससे आगे, मीरास न लेंगे क्यैंकि हमारी मीरास यरदान के इस पार पश्चिम की तरफ हम को मिल गई।” 20 मूसा ने उनसे कहा, अगर तुम यह काम करो और खुदावन्द के सामने

हथियारबन्द होकर लड़ने जाओ, 21 और तुम्हारे हथियार बन्द जवान खुदावन्द के सामने यरदान पार जाएँ, जब तक कि खुदावन्द अपने दुश्मनों को अपने सामने से दफ़ा न करे, 22 और वह मुल्क खुदावन्द के सामने कज़े में न आज़; तो इसके बाद तुम खुदावन्द के सामने और इसाईल के आगे बेगुनाह ठहरोगे और यह मुल्क खुदावन्द के सामने तुम्हारी मिल्कियत हो जाएगा। 23 लेकिन अगर तुम ऐसा न करो तो तुम खुदावन्द के गुनाहगर ठहरोगे; और यह जान लो कि तुम्हारा गुनाह तुम को पकड़ेगा। 24 इसलिए तुम अपने बाल बच्चों के लिए शहर और अपनी भेड — बकरियों के लिए भेड़साले बनाओ; जो तुम्हारे मूँह से निकला है वही करो।” 25 तब बनी ज़द और बनी स्विन ने मूसा से कहा कि “तेरे खादिम, जैसा हमारे मालिक का हुक्म है वैसा ही करोगे। 26 हमारे बाल बच्चे और हमारी बीवियाँ, हमारी भेड़ बकरियाँ और हमारे सब चौपाये जिल’आद के शहरों में रहेंगे; 27 लेकिन हम जो तेरे खादिम हैं, इसलिए हमारा एक — एक हथियारबन्द जवान खुदावन्द के सामने लड़ने को पार जाएंगा, जैसा हमारा मालिक कहता है।” 28 तब मूसा ने उनके बारे में इलीएलियाज़र काहिन और नून के बेटे यशूँ और इसाईली कबाइल के आबाई खानादानों के सरदारों को वसीयत की 29 और उनसे यह कहा कि “अगर बनी ज़द और बनी स्विन का एक — एक मर्द खुदावन्द के सामने तुम्हारे साथ यरदान के पार हथियारबन्द होकर लड़ाई में जाए और उस मुल्क पर तुम्हारा कब्जा हो जाए, तो तुम जिल’आद का मुल्क उनकी मीरास कर देना। 30 लेकिन अगर वह हथियार बाँध कर तुम्हारे साथ पार न जाएँ, तो उनको भी मुल्क — ए — कनाँन ही में तुम्हारे बीच मीरास मिलें।” 31 तब बनी ज़द और बनी स्विन ने जवाब दिया, जैसा खुदावन्द ने तेरे खादिमों को हुक्म दिया है, हम वैसा ही करेंगे। 32 हम हथियार बाँध कर खुदावन्द के सामने उस पार मुल्क — ए — कनाँन को जाएँगे, लेकिन यरदान के इस पार ही हमारी मीरास रहे।” 33 तब मूसा ने अमोरियों के बादशाह सीहोन की मस्तकत और बसन के बादशाह ‘ओज़ की मालकत को, याँनी उनके मुल्कों को और शहरों को जो उन अतराफ में थे, और उस सारी नवाही के शहरों को बनी ज़द और बनी स्विन और मनस्सी बिन यूसुफ के आधे कंबीले को दे दिया। 34 तब बनी ज़द ने तब बनी ज़द ने दिबोन और ‘अतारात और अरोँइर, 35 और ‘अतारात, शोफान, और याँजेर, और युग्बिहा, 36 और बैत निमरा, और बैत हासन, फरीलदार शहर और भेड़साले बनाए। 37 और बनी स्विन ने हस्बोन, और इलींआती, और करयताइम, 38 और नबू, और बालम’ऊन के नाम बदलकर उनको और शिबामह को बनाया, और उन्होंने अपने बनाए हुए शहरों के दूसरे नाम रख्खे। 39 और मनस्सी के बेटे मकीर की नसल के लोगों ने जाकर जिल’आद को ले लिया, और अमोरियों को जो वहाँ बैठे हुए थे निकाल दिया। 40 तब मूसा ने जिल’आद मकीर बिन मनस्सी को दे दिया। तब उसकी नसल के लोग वहाँ सुकृत करने लगे। 41 और मनस्सी के बेटे याईर ने उस नवाही की बस्तियों की जाकर ले लिया और उनका नाम हव्वत हयाँइर रख्खा 42 और नूबू ने कनात और उसके देहात को अपने क़ज़े में कर लिया और अपने ही नाम पर उस का भी नाम नूबू रख्खा।

33 जब बनी — इसाईल मूसा और हास्तुन के मातहत दल बाँधे हुए मुल्क — ए — मिस्थ से निकल कर चले तो जैल की मंजिलों पर उन्होंने कथाम किया। 2 और मूसा ने उनके सफ़र का हाल उनकी मंजिलों के मुताबिक खुदावन्द के हुक्म से लिखा किया; इसलिए उनके सफ़र की मंजिलें यह हैं। 3 पहले महीने की पंद्रहवीं तारीख की उन्होंने रामसीस से रवानगी की। फ़सह के दूसरे दिन सब बनी — इसाईल के लोग सब मिस्थियों की आँखों के सामने बड़े फ़ख़ से रवाना हुए। 4 उस वक्त मिस्थी अपने पहलौठों को, जिनको खुदावन्द ने

मारा था दफन कर रहे थे। खुदावन्द ने उनके मांबद्दों को भी सजा दी थी। 5 इसलिए बनी — इसाइल ने रामसीस से रवाना होकर सुककात में खेमे डाले। 6 और सुककात से रवाना होकर एताम में, जो वीरान से मिला हुआ है मूकीम हुए। 7 फिर एताम से रवाना होकर हर हथीरोत को, जो बाल सफोन के सामने है मुड गए और मिजदाल के सामने खेमे डालते। 8 फिर उन्होंने फी हथीरोत के सामने से कूच किया और समन्दर के बीच से गुजर कर वीरान में दाखिल हुए, और दशत — ए — एताम में तीन दिन की राह चल कर मारा में पडाव किया। 9 और मारा से रवाना होकर एलीम में आए। और एलीम में पानी के बारह चम्बे और खज्जर के सतर दरखत थे, इसलिए उन्होंने यही खेमे डाल लिए। 10 और एलीम से रवाना होकर उन्होंने बहर — ए — कुलज़ुम के किनारे खेमे खड़े किए। 11 और बहर — ए — कुलज़ुम से चल कर सीन के जंगल में खेमाजन हुए। 12 और सीन के जंगल से रवाना होकर दफका में ठहरे। 13 और दफका से रवाना होकर अल्स में मूकीम हुए। 14 और अल्स से चल कर रफीदीम में खेमे डाले। यहाँ इन लोगों को पीने के लिए पानी न मिला। 15 और रफीदीम से रवाना होकर दशत — ए — सीन में ठहरे। 16 और सीन के जंगल से चल कर कबरोत हतावा में खेमे खड़े किए। 17 और कबरोत हतावा से रवाना होकर हसीरात में खेमे डाले। 18 और हसीरात से रवाना होकर रितमा में खेमे डाले। 19 और रितमा से रवाना होकर रिम्मोन फारास में खेमे खड़े किए। 20 और रिमोन फारास से जो चले तो लिबान में जाकर मूकीम हुए। 21 और लिबान से रवाना होकर रैस्सा में खेमे डाले। 22 और रैस्सा से चलकर कहीलाता में खेमे खड़े किए। 23 और कहीलाता से चल कर कोह — ए — साफर के पास खेमा किया। 24 कोह — ए — साफर से रवाना होकर हरादा में खेमाजन हुए। 25 और हरादा से साफर करके मक्हीलीतों में कथाम किया। 26 और मक्हीलीतों से रवाना होकर तहत में खेमे खड़े किए। 27 तहत से जो चले तो तारह में आकर खेमे डाले। 28 और तारह से रवाना होकर मितक्का में कथाम किया। 29 और मितक्का से रवाना होकर हशमाना में खेमे डाले। 30 और हशमाना से चल कर मौसीरोत में खेमे खड़े किए। 31 और मौसीरोत से रवाना होकर बनी याकान में खेमे डाले। 32 और बनी याकान से चल कर होर हज्जिदाजाद में खेमाजन हुए। 33 और हीर हज्जिदाजाद से रवाना होकर यत्ताता में खेमे खड़े किए। 34 और यूत्ताता से चल कर 'अबस्ना में खेमे डाले। 35 और 'अबस्ना से चल कर "अस्यून जाबर में खेमा किया। 36 और 'अस्यून जाबर से रवाना होकर सीन के जंगल में, जो कादिस है कथाम किया। 37 और कादिस से चल कर कोह — ए — होर के पास, जो मुल्क — ए — अदोम की सरहद है खेमाजन हुए। 38 यहाँ हास्न काहिन खुदावन्द के हक्म के मुताबिक कोह — ए — होर पर चढ़ गया और उसने बनी — इसाइल के मुल्क — ए — मिस्र से निकलने के चालीसवें बरस के पाँचवें महीने की पहली तारीख को वही वफात पाई। 39 और जब हास्न ने कोह — ए — होर पर वफात पाई तो वह एक सौ तीनेस बरस का था। 40 और 'अराद के कना'नी बादशाह को, जो मुल्क — ए — कना'न के दलिखन में रहता था, बनी इसाइल की आमद की खबर मिली। 41 और इसाइलीनी कोह — ए — होर से रवाना होकर जलमना में ठहरे। 42 और जलमना से रवाना होकर फूनोन में खेमे डाले। 43 और फूनोन से रवाना होकर ओबूत में कथाम किया। 44 और ओबूत से रवाना होकर 'अर्यी अबारीम में जो मुल्क — ए — मोआब की सरहद पर है खेमे डाले, 45 और 'अर्यीम से रवाना होकर दीबोन ज़द में खेमाजन हुए। 46 और दीबोन ज़द से रवाना होकर 'अलमन दबलातायम में खेमे खड़े किए। 47 और 'अलमन दबलातायम से रवाना होकर 'अबरीम के कोहिस्तान में, जो नबी के सामने है खेमा किया। 48 और 'अबारीम के कोहिस्तान से चल कर मोआब के मैदानों में, जो यरीह के

सामने यरदन के किनारे वाके' है खेमाजन हुए। 49 और यरदन के किनारे बैत यसीमोत से लेकर अबील सतीम तक मोआब के मैदानों में उन्होंने खेमे डाले। 50 और खुदावन्द ने मोआब के मैदानों में, जो यरीह के सामने यरदन के किनारे वाके' है, मसा से कहा कि, 51 "बनी — इसाइल से यह कह दे कि जब तुम यरदन को उब्र करके मूल्क — ए — कना'न में दाखिल हो, 52 तो तुम उस मूल्क के सारे बाशिन्दों को वहाँ से निकाल देना, और उनके शबीहादर पत्थरों को और उनके डाले हुए बूतों को तोड़ डालना, और उनके सब ऊँचे मकामों को तबाह कर देना। 53 और तुम उस मूल्क पर कब्जा करके उसमें बसना, क्यैंकि मैंने वह मूल्क तुम को दिया है कि तुम उसके मालिक बनो। 54 और तुम पर्ची डाल कर उस मूल्क को अपने घरानों में मीरास के तौर पर बॉट लेना। जिस खान्दान में ज्यादा आदमी हों उसको ज्यादा, और जिसमें थोड़े हों उसको थोड़ी मीरास देना; और जिस आदमी का पर्चा जिस जगह के लिए निकले वही उसके हिस्से में मिले। तुम अपने आबाई कबाइल के मूताबिक अपनी अपनी मीरास लेना। 55 लेकिन अगर तुम उस मूल्क के बाशिन्दों को अपने आपे से दूर न करो, तो जिनको तुम बाकी रहने देगे वह तुम्हारी आँखों में खार और तुम्हारे पहलुओं में कॉट होंगे, और उस मूल्क में जहाँ तुम बसोगे तुम को दिक करेंगे। 56 और आधिर को यूँ होगा कि जैसा मैंने उनके साथ करने का इरादा किया वैसा ही तुम से हस्तॄगा।"

34

फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 2 "बनी — इसाइल को हुम्म कर, और उनको कह दे कि जब तुम मूल्क — ए — कना'न में दाखिल हो; यह वही मूल्क है जो तुम्हारी मीरास होगा, यानी कनान का मूल्क म'ए अपनी हृदृ — ए — अरबा के 3 तो तुम्हारी दलिखनी सिस्त सीन के जंगल से लेकर मूल्क — ए — अदोम के किनारे किनारे हो, और तुम्हारी दलिखनी सरहद दरिया — ए — शोर के आधिर को जाए। 4 वहाँ से तुम्हारी सरहद 'अक्राबियम की चढ़ाई के दलिखन तक पहुँच कर मुड़े, और सीन से होती हुई कादिस बनी' अ के दलिखन में जाकर निकले, और हसर अदार से होकर 'अजमून तक पहुँचे। 5 फिर यही सरहद 'अजमून से होकर घूमती हुई मिस्र की नहर तक जाए और समन्दर के किनारे पर खत्म हो। 6 "और पश्चिमी सिस्त में बड़ा समन्दर और उसका साहिल हो, इसलिए यही तुम्हारी पश्चिमी सरहद ठहरे। 7 "और उत्तरी सिस्त में तुम बड़े समन्दर से कोह — ए — होर तक अपनी हृदृ मुकर्रर करना कि वह सिदाद से जा मिले। 9 और वहाँ से होती हुई ज़िफ़रस्न को निकल जाए और हसर 'एनान पर जाकर खत्म हो, यह तुम्हारी उत्तरी सरहद हो। 10 "और तुम अपनी पूर्वी सरहद हसर 'एनान से लेकर सफाम तक बॉथाम। 11 और यह सरहद सफाम से रिबला तक जो 'एन के पश्चिम में है जाए, और वहाँ से नीचे की उत्तरी हुई किन्नर की द्वीप के पर्बती किनारे तक पहुँचे: 12 और फिर यरदन के किनारे किनारे नीचे को जाकर दरिया — ए — शोर पर खत्म हो। इन हंदों के अन्दर का मूल्क तुम्हारा होगा।" 13 तब मूसा ने बनी — इसाइल को हुम्म किया, "यही वह जर्मीन है जिसे तुम पर्ची डाल कर मीरास में लोगे, और इसी के बारे में खुदावन्द ने हुम्म दिया है कि वह साहे नौ कबीलों को दी जाए। 14 क्यैंकि बनी स्विन के कबीले ने अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक मीरास पाली, और बनी मनस्सी के आधे कबीले ने भी अपनी मीरास पाली; 15 यानी इन ढाई कबीलों को दी जाए। 16 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 17 'जो अश्खास इस मूल्क के मीरास के तौर पर तुम को बॉट देंगे उन के नाम यह है,

यानी इलीएलियाज़र काहिन और नून का बेटा यशूँ। 18 और तुम ज़मीन को मीरास के तौर पर बॉटने के लिए हर कबीले से एक सरदार को लेना। 19 और उन आदमियों के नाम यह हैं: यहदाह के कबीले से युफ़ाना का बेटा कालिब, 20 और बनी शमैन के कबीले से अमीहद का बेटा समूएल, 21 और बिनयमीन के कबीले से किसलन का बेटा इलीदाद, 22 और बनी दान के कबीले से एक सरदार बुक्की बिन युग्ली, 23 और बनी यूसुफ में से यानी बनी मनस्सी के कबीले से एक सरदार हीनीएल बिन अफ़द, 24 और बनी इ़क़ाइम के कबीले से एक सरदार कमूएल बिन सिपतान, 25 और बनी ज़बलन के कबीले से एक सरदार इलिसफ़न बिन फरनाक, 26 और बनी इश्क़ार के कबीले से एक सरदार फ़लतीएल बिन 'अज़ज़ान, 27 और बनी आशर के कबीले से एक सरदार अमीहद बिन शलूमी, 28 और बनी नफताली के कबीले से एक सरदार फ़िदाहेल बिन 'अमीहद।' 29 यह वह लोग हैं जिनको खुदावन्द ने हुक्म दिया कि मुल्क — ए — कनान में बनी — इसाईल को मीरास तक्सीम कर दें।

35 फिर खुदावन्द ने मोआब के मैदानों में, जो यरीह के सामने यरदन के किनारे वाके हैं, मूसा से कहा कि, 2 "बनी इसाईल को हुक्म कर, कि अपनी मीरास में से जो उनके कब्जे में आए लावियों की रहने के लिए शहर हैं, और उन शहरों के 'इलाके भी तुम लावियों को दे देना। 3 यह शहर उनके रहने के लिए हैं, उनके 'इलाके उनके चौपायों और माल और सारे जानवरों के लिए हैं। 4 और शहरों के 'इलाके जो तुम लावियों को दो वह हर शहर की दीवार से शुरू' करके बाहर चारों तरफ हज़ार — हज़ार हाथ के फेर में हैं। 5 और तुम शहर के बाहर पश्चिम की तरफ दो हज़ार हाथ, और दक्षिण की तरफ दो हज़ार हाथ, और पश्चिम की तरफ दो हज़ार हाथ, और उत्तर की तरफ दो हज़ार हाथ इस तरह पैमाइश करना के शहर उनके बीच में आ जाए। उनके शहरों के इतनी ही 'इलाके हैं। 6 और लावियों के उन शहरों में से जो तुम उनको दो, छः पनाह के शहर ठहरा देना जिनमें खूनी भाग जाएँ। इन शहरों के 'अलावा बयालीस शहर और उनको देना, 7 या नी सब मिला कर अठतालीस शहर लावियों की देना और इन शहरों के साथ इनके 'इलाके भी हैं। 8 और वह शहर बनी — इसाईल की मीरास में से यूँ दिए जाएँ। जिनके कब्जे में बहुत से हौं उनसे थोड़े शहर लेना। हर कबीला अपनी मीरास के मुताबिक जिसका वह वारिस हो लावियों के लिए शहर दे।" 9 और खुदावन्द ने मूसा से कहा कि, 10 "बनी — इसाईल से कह दे कि जब तुम यरदन को पार करके मुल्क — ए — कनान में पहुँच जाओ, 11 तो तुम कई ऐसे शहर मुकर्रर करना जो तुम्हारे लिए पनाह के शहर हों, ताकि वह खूनी जिससे अनजाने में खून हो जाए वहाँ भाग जा सके। 12 इन शहरों में तुम को इन्तकाम लेने वाले से पनाह मिलेगी, ताकि खूनी जब तक वह फ़ैसले के लिए जाएँ। 13 और पनाह के आगे हाजिर न हो तब तक मारा न जाए। 14 और पनाह के जो शहर तुम दोगे वह छः हैं। 15 इन छहों शहरों में बनी — इसाईल को और उन मुसाफ़िरों और पटदेसियों को जो तुम में क़याम करते हैं, पनाह मिलेगी ताकि जिस किसी से अनजाने में खून हो जाए वह वहाँ भाग जा सके। 16 'और अगर कोई किसी को लोडे के हथियार से ऐसा मारे कि वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा और वह खूनी ज़स्त मारा जाए। 17 या अगर कोई ऐसा पथर हाथ में लेकर जिससे आदीमी मर सकता हो, किसी को मारे और वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा और वह खूनी ज़स्त मारा जाए। 18 या अगर कोई चोली आला हाथ में लेकर जिससे आदीमी मर सकता हो, किसी को मारे और वह मर जाए, तो वह खूनी ठहरेगा और वह खूनी ज़स्त मारा जाए। 19 खून का इन्तकाम लेने वाला खूनी को आप ही करता हो; जब वह उसे मिले तब ही उसे मार डाले। 20 और अगर कोई किसी को 'अदावत से

धकेल दे या घात लगा कर कुछ उस पर फेंक दे और वह मर जाए, 21 या दुश्मनी से उसे अपने हाथ से ऐसा मारे कि वह मर जाए; तो वह जिसने मारा हो ज़स्त कल्पना किया जाए क्यूँकि वह खूनी है। खून का इन्तकाम लेने वाला इस खूनी को जब वह उसे मिले मार डाले। 22 'लेकिन अगर कोई किसी को बौर 'अदावत के नाग़हान धकेल दे या बौर घात लगाए उस पर कोई चीज़ डाल दे, 23 या उसे बौर देखे कोई ऐसा पत्थर उस पर फेंके जिससे आदीमी मर सकता हो, और वह मर जाए; लेकिन यह न तो उसका दुष्मन और न उसके तुक़सान का ख्वाहान था; 24 तो ज़मा'अत ऐसे कातिल और खून के इन्तकाम लेने वाले के बीच इन हुक्मों के मुहाफ़िक फैसला करें; 25 और ज़मा'अत उस कातिल को खून के इन्तकाम लेने वाले के हाथ से छुड़ाए और ज़मा'अत ही उसे पनाह के उस शहर में जहाँ वह भाग गया था वापस पहुँचा दें, और जब तक सरदार काहिन जो पाक तेल से मस्हूर हुआ था मर न जाए तब तक वह वही रहे। 26 लेकिन अगर वह खूनी अपने पनाह के शहर की सरहद से, जहाँ वह भाग कर गया हो किसी बक्तव्य बाहर निकले, 27 और खून के इन्तकाम लेने वाले की वह पनाह के शहर की सरहद के बाहर मिल जाए और इन्तकाम लेने वाला कातिल को कल्पना कर डाले, तो वह खून करने का मुजरिम न होगा; 28 क्यूँकि खूनी को लाज़िम था कि सरदार काहिन की वफ़ात तक उसी पनाह कि शहर में रहता, लेकिन सरदार काहिन के मरने के बाद खूनी अपनी मौस्सी जगह को लौट जाए। 29 "इसलिए तुम्हारी सब सुकूनतगाहों में नसल — दर — नसल यह बाते फैसले के लिए कानून ठहरेंगी। 30 अगर कोई किसी को मार डाले तो कातिल गवाहों की शहादत पर कल्पना किया जाए, लेकिन एक गवाह की शहादत से कोई मारा न जाए। 31 और तुम उस कातिल से जो वाजिब — उल — कल्पना हो दियत न लेना बल्कि वह ज़स्त ही मारा जाए। 32 और तुम उससे भी जो किसी पनाह के शहर को भाग गया हो, इस गर्ज़े से दियत न लेना कि वह सरदार काहिन की मौत से पहले फिर मुल्क में रहने को लौटने पाए। 33 इसलिए तुम उस मुल्क को जहाँ तुप रहोगे नापाक न करना, क्यूँकि खून मुल्क को नापाक कर देता है; और उस मुल्क के लिए जिसमें खून बहाया जाए अलावा कातिल के खून के और किसी चीज़ का कफ़क़रा नहीं लिया जा सकता। 34 और तुम अपनी क्याम के मुल्क को जिसके अन्दर मैं हूँगा, गन्दा भी न करना; क्यूँकि मैं जो खुदावन्द हूँ, इसलिए बनी — इसाईल के बीच रहता हूँ।"

36 और बनी यूसुफ के घरानों में से बनी जिलां आद बिन मकीर बिन मनस्सी के आबाई खानानों के सरदार मूसा और उन अमीरों के पास जाकर जो बनी इसाईल के आबाई खानानों के सरदार थे कहने लगे, 2 "खुदावन्द के हमारे मालिक को हुक्म दिया था कि पर्ची डाल कर यह मुल्क मीरास के तौर पर बनी — इसाईल को देना; और हमारे मालिक को खुदावन्द की तरफ से हुक्म मिला था, कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद की मीरास उसकी बेटियों को दी जाए। 3 लेकिन अगर वह बनी — इसाईल के और कबीलों के आदमियों से ब्याही जाएँ, तो उनकी मीरास हमारे बाप — दादा की मीरास से निकल कर उस कबीले की मीरास में शामिल वरी जाएगी जिसमें वह ब्याही जाएँगी; यूँ वह हमारे हिस्से की मीरास से अलग हो जाएगी। 4 और जब बनी — इसाईल का साल — ए — यूलवली आएगा, तो उनकी मीरास उसी कबीले की मीरास से मुल्हक की जाएगी जिसमें वह ब्याही जाएँगी। 5 तब मूसा ने खुदावन्द के कलाम के मुताबिक बनी — इसाईल को हुक्म दिया और कहा कि "बनी यूसुफ के कबीले के लोग ठीक कहते हैं। 6 इसलिए सिलाफ़िहाद की बेटियों के हक में खुदावन्द का हुक्म यह है कि वह जिनको पसन्द करें उन्हीं से ब्याही करें, लेकिन अपने बापदादा के कबीले ही के खानानों में ब्याही जाएँ। 7 यूँ बनी — इसाईल की

मीरास एक कबीले से दूसरे कबीले में नहीं जाने पाएगी; क्यौंकि हर इस्माईली को अपने बाप — दादा के कबीले की मीरास को अपने कब्जे में रखना होगा। 8 और अगर बनी इस्माईल के किसी कबीले में कोई लड़की हो जो मीरास की, मालिक हो तो वह अपने बाप के कबीले के किसी खानदान में व्याह करे ताकि हर इस्माईली अपने बाप दादा की मीरास पर काँस रहे। 9 यूँ किसी की मीरास एक कबीले से दूसरे कबीले में नहीं जाने पाएगी; क्यौंकि बनी — इस्माईल के कबीलों को लाजिम है कि अपनी अपनी मीरास अपने — अपने कब्जे में रखें।” 10 और सिलाफिहाद की बेटियों ने जैसा खुदावन्द ने मूसा को हक्म दिया था वैसा ही किया। 11 क्यौंकि महलाह और तिरज़ाह और हुजलाह और मिल्काह और नूआह जो सिलाफिहाद की बेटियाँ थीं, वह अपने चचेरे भाइयों के साथ व्याही गईं, 12 यानी वह यसुफ के बेटे मनस्सी की नसल के खान्दानों में व्याही गईं, और उनकी मीरास, उनके आबाई खान्दान के कबीले में काँस रही। 13 जो हक्म और फैसले खुदावन्द ने मूसा के जरिए 'मोआब के मैदानों में जो यरीह के सामने यरदन के किनारे वाकें हैं बनी इस्माईल को दिए वह यही हैं।

इस्त

1 यह वही बातें हैं जो मूसा ने यरदन के उस पार बीराने में, 'यानी उस मैदान में जो सफ़ के सामने और फ़ारान और तोफ़ल और लाबन और हसीरात और दीज़हब के बीच है, सब इसाईलियों से कहीं। 2 कोह — ए — शाईर की राह से होरिब से कादिस बर्नी' अ तकग्यारह दिन की मन्ज़िल है। 3 और चालीसिंचे बरस के ग्यारहवें महीने की पहली तारीख को मूसा ने उन सब अहकाम के मुताबिक जो खुदावन्द ने उसे बनी — इसाईल के लिए दिए थे, उनसे यह बातें कहीं: 4 'यानी जब उसने अमोरियों के बादशाह सीहीन को जो हस्तोन में रहता था मारा, और बसन के बादशाह 'ओज़ को जो 'इस्तारात में रहता था, अदराई में कल्ल किया; 5 तो इसके बाद यरदन के पार मोआब के मैदान में मूसा इस शरीं अत को यूँ बयान करने लगा कि, 6 'खुदावन्द हमारे खुदा ने होरिब में हमसे यह कहा था, कि तुम इस पहाड़ पर बहुत रह चुके हो 7 इसलिए अब फिरो और कच करो और अमोरियों के पहाड़ी मूल्क, और उसके आस — पास के मैदान और पहाड़ी क़ा'अ और नशेब की जमीन और दखिनी अतराफ़ में, और समन्दर के साहिल तक जो कनानीयों का मूल्क वै बल्कि कोह — ए — लुबान और दरिया — ए — फ़रात तक जो एक बड़ा दरिया है, चले जाओ। 8 देखो, मैंने इस मूल्क को तुम्हारे सामने कर दिया है। इसलिए जाओ और उस मूल्क को अपने कब्ज़े में कर लो, जिसके बारे में खुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा अब्राहाम, इहाक, और याकूब से क्रसम खाकर यह कहा था, कि वह उसे उनको और उनके बाद उनकी नसल को देगा।' 9 उस वक्त मैंने तुम्हसे कहा था, कि मैं अकेला तुम्हारा बोझ नहीं उठा सकता। 10 खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको बढ़ाया है और आज के दिन आसमान के तारों की तरह तुम्हारी कसरत है। 11 खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा का खुदा तुमको इससे भी हजार चँद बढ़ाए, और जो वादा उसने तुमसे किया है उसके मुताबिक तुमको बरकत बढ़ाया। 12 मैं अकेला तुम्हारे जंगल और बोझ और झांझट को कैसे उठा सकता हूँ? 13 इसलिए तुम अपने — अपने कबीले से ऐसे आदिमियों को चुनो जो दानिश्वर और 'अक्स्तमन्द और मशहर हों, और मैं उनको तुम पर सरदार बना दूँगा। 14 इसके जबाब में तुमने मुझसे कहा था, कि जो कुछ तूने फरमाया है उसका करना बेहतर है। 15 इसलिए मैंने तुम्हारे कबीलों के सरदारों को जो 'अक्स्तमन्द और मशहर थे, लेकर उनको तुम पर मुकर्रर किया ताकि वह तुम्हारे कबीलों के मुताबिक हजारों के सरदार, और सैकड़ों के सरदार, और पचास — पचास के सरदार, और दस — दस के सरदार हाकिम हों। 16 और उसी मौके पर मैंने तुम्हारे काजियों से ताकीदन ये कहा, कि तुम अपने भाइयों के मुक़द्दमों को सुना, पर चाहे भाई — भाई का मुआमिला हो या परदेसी का तुम उनका फैसला इन्साफ़ के साथ करना। 17 तुम्हारे फैसले में किसी की ई — रि 'आयत न हो, जैसे बड़े आदमी की बात सुनोगे वैसे ही छोटे की सुनना और किसी आदमी का युँह देख कर डर न जाना; क्योंकि यह 'अदालत खुदा की है, और जो मुक़द्दमा तुम्हारे लिए मुश्किल हो उसे मेरे पास ले आना मैं उसे सुनँगा। 18 और मैंने उसी वक्त सब कुछ जो तुमको करना है बता दिया। 19 और हम खुदावन्द अपने खुदा के हृक्षम के मुताबिक होरिब से सफ़र करके उस बड़े और खतरनाक बीराने में से होकर गुज़े, जिसे तुमने अमोरियों के पहाड़ी मूल्क के रास्ते में देखा। फिर हम कादिस बर्नी' अ मैं पहुँचे। 20 वहाँ मैंने तुमको कहा, कि तुम अमोरियों के पहाड़ी मूल्क तक आ गए हो जिसे खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है। 21 देख, उस मूल्क को खुदावन्द तैरे खुदा ने तेरे सामने कर दिया है। इसलिए तू जा, और जैसा खुदावन्द तैरे बाप — दादा के खुदा ने तुम से कहा है तू उस पर कब्ज़ा कर और न खौफ़ खा न हिरासान हो। 22 तब तुम सब मैं

पास आकर मुझसे कहने लगे, कि हम अपने जाने से पहले वहाँ आदमी भेजें, जो जाकर हमारी खातिर उस मूल्क का हाल दरियाप्त करें और आकर हमको बताएँ कि हमको राह से वहाँ जाना होगा और कौन — कौन से शहर हमारे रास्ते में पड़ेगे। 23 यह बात मुझे बहुत पसन्द आई चुनौती मैंने कबीले पीछे एक — एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी चुने। 24 और वह रवाना हुए और पहाड़ पर चढ़ गए और बादी — ए — इसकाल मैं पहुँच कर उस मूल्क का हाल दरियाप्त किया। 25 और उस मूल्क का कुछ फल हाथ में लेकर उसे हमारे पास लाए, और हमको यह खबर दी कि जो मूल्क खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है वह अच्छा है। 26 'तो भी तुम वहाँ जाने पर राजी न हुए बल्कि तुमने खुदावन्द अपने खुदा के हृक्षम से सरकशी की, 27 और अपने खेमों में कुड़कुड़ने और कहने लगे, कि खुदावन्द को हमसे नफरत है इसीलिए वह हमको मूल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया ताकि वह हमको अमोरियों के हाथ में गिरपातर करा दे और वह हमको हलाक कर डाले। 28 हम किधर जा रहे हैं? हमारे भाइयों ने तो यह बता कर हमारा हौसला तोड़ दिया है, कि वहाँ के लोग हमसे बड़े — बड़े और लम्बे हैं, और उनके शहर बड़े — बड़े और उनकी फसीले आसमान से बातें करती हैं। इसके अलावा हमने वहाँ 'अनाकीम की औलाद की भी देखा। 29 तब मैंने तुमको कहा, कि खौफ़ज़दा मत हो और न उसे डरो। 30 खुदावन्द तुम्हारा खुदा जो तुम्हारे आगे आगे चलता है, वही तुम्हारी तरफ से जंग करेगा जैसे उसने तुम्हारी खातिर मिस्र में तुम्हारी आँखों के सामने सब कुछ किया 31 और बीराने में भी तुमने यही देखा कि जिस तरह इंसान अपने बेटे को उठाए हुए चलता है उरी तरह खुदावन्द तुम्हारा खुदा तेरे इस जगह पहुँचने तक सारे रास्ते जहाँ — जहाँ तुम गए तुमको उठाए रहा 32 तो भी इस बात में तुमने खुदावन्द अपने खुदा का यक़ीन न किया, 33 जो राह में तुमसे आगे — आगे तुम्हारे वासे खेमे लगाने की जगह तलाश करने के लिए, रात को आग में और दिन को बादल में होकर चला, ताकि तुमको वह रास्ता दिखाए जिस से तुम चलो। 34 'और खुदावन्द तुम्हारी बाँतें सुन कर गज़बानक हुआ और उसने कसम खाकर कहा, कि 35 इस बुरी नसल के लोगों में से एक भी उस अच्छे मूल्क को देखने नहीं पाएगा, जिसे उनके बाप — दादा को देने की कसम मैंने खाइ है, 36 सिवा यक़ुना के बेटे कालिब के; वह उसे देखेगा, और जिस जमीन पर उसने कदम रखवा है उसे मैं उसकी और उसकी नसल को दूँगा; इसलिए के उसने खुदावन्द की पैरवी पौरे तौर पर की, 37 और तुम्हारी ही बजह से खुदावन्द मुझ पर भी नाराज हुआ और यह कहा, कि तू भी वहाँ जाने न पाएगा। 38 नून का बेटा यश् अ जो तेरे सामने खड़ा रहता है वहाँ जाएगा, इसलिए तू उसकी हौसला अफ़ज़ाई कर क्यैंकि वही बीनी इसाईल को उस मूल्क का मालिक बनाएगा। 39 और तुम्हारे बाल — बच्चे जिनके बारे में तुमने कहा था, कि लूट में जाएँगे, और तुम्हारे लड़के बाले जिनको आज भले और बड़े की भी तमीज़ नहीं, यह वहाँ जाएँगे; और यह मूल्क मैं इन ही को दूँगा और यह उस पर कब्ज़ा करेंगे। 40 पर तुम्हारे लिए यह है, कि तुम लौटो और बहर — ए — कुलज़ुम की राह से बीराने में जाओ। 41 'तब तुमने मुझे जवाब दिया, कि हमने खुदावन्द का गुनाह किया है और अब जो कुछ खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको हृक्षम दिया है, उसके मुताबिक हम जाएँगे और जंग करेंगे। इसलिए तुम सब अपने — अपने जंगी हथियार बाँध कर पहाड़ पर चढ़ जाने को तैयार हो गए। 42 तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि उसे कह दे के ऊपर मत चढ़ो और न जंग करो क्यैंकि मैं तुम्हारे बीच नहीं हूँ; कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने दुश्मनों से शिक्षित खाओ। 43 और मैंने तुम्हें कहा भी दिया पर तुमने मेरी न सुनी, बल्कि तुमने खुदावन्द के हृक्षम से सरकशी की और शोखी से पहाड़ पर चढ़ गए। 44 तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि उसे कह दे के ऊपर मत चढ़ो और न जंग

शहद की मक्कियों की तरह तुम्हारा पीछा किया और शाईर में मारते — मारते तुमको हरमा तक पहुँचा दिया। 45 तब तुम लैट कर खुदावन्द के आगे रेने लगे, लेकिन खुदावन्द ने तुम्हारी फरियाद न सुनी और न तुम्हारी बातों पर कान लगाया। 46 इसलिए तुम क्रांतिस में बहुत दिनों तक पड़े रहे, यहाँ तक के एक जमाना हो गया।

2 “और जैसा खुदावन्द ने मुझे हक्म दिया था, उसके मुताबिक हम लैटे और बहर — ए — कुलजुम की राह से वीराने में आए और बहुत दिनों तक कोह — ए — शाईर के बाहर — बाहर चलते रहे। 2 तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि: 3 तुम इस पहाड़ के बाहर — बाहर बहुत चल चुके; उत्तर की तरफ मुड़ जाओ, 4 और तु इन लोगों को ताकीद कर दे कि तुमको बनी 'ऐसौ', तुम्हारे भाई जो शाईर में रहते हैं तुनकी सरहट के पास से होकर जाना है, और वह तुम्हे दियासान होंगे। इसलिए तुम खुब एहतियात रखना, 5 और उनको मरत छेड़ना, क्यूँकि मैं उनकी जमीन में से पाँव धरने तक की जगह भी तुमको नहीं ढूँगा, इसलिए कि मैंने कोह — ए — शाईर 'ऐसौ' को मीरास में दिया है। 6 तुम समय देकर अपने खाने के लिए उनसे खुराक खरीदना, और पीने के लिए पानी भी स्थाया देकर उनसे मोल लेना। 7 क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तेरे हाथ की कमाई में बकरत देता रहा है, और इस बड़े वीराने में जो तुम्हारा चलना फिरना है वह उसे जानता है। इन चातीस बरसों में खुदावन्द तेरा खुदा बराबर तुम्हारे साथ रहा और तुड़को कीसी चीज़ की कमी नहीं हुई। 8 इसलिए हम अपने भाईयों बनी 'ऐसौ' के पास से जो शाईर में रहते हैं तुकरा कर मैदान की राह से एलात और 'अस्यन जाबर होते हुए गुज़रे।' 9 फिर हम मुड़े और मोआब के वीराने के रास्ते से चले। 9 फिर खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि मोआबियों को न तो सताना और न उससे जंग करना; इसलिए कि मैं तुझको उनकी जमीन का कोई हिस्सा मिलियत के तौर पर नहीं ढूँगा, क्यूँकि मैंने 'आर को बनी लूट की मीरास कर दिया है। 10 वहाँ पहले ऐसीम बसे हुए थे जो 'अनाकीम की तरह बड़े — बड़े और लबे — लम्बे और शुमार में बहुत थे। 11 और 'अनाकीम ही की तरह वह भी रिफाईम में गिने जाते थे, लेकिन मोआबी उनको ऐसीम कहते हैं। 12 और पहले शाईर में होरी कौम के लोग बसे हुए थे, लेकिन बनी 'ऐसौ' ने उनको निकाल दिया और उनको अपने सामने से बर्बाद करके आप उनकी जगह बस गए, जैसे इस्याईल ने अपनी मीरास के मुल्क में किया जिसे खुदावन्द ने उनको दिया। 13 अब उठो और बादी — ए — जरद के पार जाओ। चुनौती हम बादी — ए — जरद से पार हुए। 14 और हमारे क्रांतिस बनी'अ से रखाना होने से लेकर बादी — ए — जरद के पार होने तक अठतीस बरस का 'अस्सा गुज़रा। इस असना में खुदावन्द की कसम के मुताबिक उस नस्ल के सब जंगी मर्द लश्कर में से मर खप गए। 15 और जब तक वह नाबूद न हो गए तब तक खुदावन्द का हाथ उनको लश्कर में से हलाक करने को उनके खिलाफ बढ़ा ही रहा। 16 जब सब जंगी मर्द मर गए और कौम में से फना हो गए 17 तो खुदावन्द ने मुझसे कहा, 18 आज तुझे 'आर शहर से होकर जो मोआब की सरहट है गुज़रना है। 19 और जब तु बनी 'अम्मोन के क्रीबी जा पहुँचे, तो उन को मरत सताना और न उनको छेड़ना, क्यूँकि मैं बनी 'अम्मोन की जमीन का कोई हिस्सा तुझे मीरास के तौर पर नहीं ढूँगा इसलिए कि उसे मैंने बनी लूट को मीरास में दिया है। 20 वह मुल्क भी रिफाईम का गिना जाता था, क्यूँकि पहले रफाईम जिनको 'अम्मोनी लोग जमजमीम कहते थे वहाँ बसे हुए थे। 21 यह लोग भी 'अनाकीम की तरह बड़े — बड़े और लम्बे — लम्बे और शुमार में बहुत थे, लेकिन खुदावन्द ने उनको 'अम्मोनियों के सामने से हलाक किया, और वह उनको निकाल कर उनकी जगह आप बस गए। 22 ठांक वैसे ही जैसे उसने बनी 'ऐसौ' के सामने से जो शाईर में रहते थे होरियों को हलाक किया,

और वह उनको निकाल कर आज तक उन ही की जगह बसे हुए है। 23 ऐसे ही 'अवियों को जो अपनी बस्तियों में गज्जा तक बसे हुए थे, कफतूरियों ने जो कफतूरा से निकले थे हलाक किया और उनकी जगह आप बस गए 24 इसलिए उठो, और बादी — ए — अरनून के पार जाओ। देखो, मैंने हस्बोन के बादशाह सीहोन को, जो अमोरी है उसके मुल्क समेत तुम्हारे हाथ में कर दिया है; इसलिए उस पर कब्जा करना शूरू करो और उससे जंग छेड़ दो। 25 मैं आज ही से तुम्हारा खोफ और रौब उन क्रौमों के दिल में डालना शूरू करूँगा जो इस जमीन पर रहती है, वह तुम्हारी खबर सुनेंगी और कौपिंगी, और तुम्हारी बजह से बेताब हो जाएँगी। 26 “और मैंने दशत — ए — कदीमात से हस्बोन के बादशाह सीहोन के पास सुलह के पैगाम के साथ कासिद रवाना किए और कहला भेजा, कि 27 मुझे अपने मुल्क से गुज़र जाने दें; मैं शाहराह से होकर चलूँगा और दहने और बाँह हाथ नहीं मुँहूँगा 28 तू समय लेकर मेरे हाथ मेरे खाने के लिए खुराक बेचना, और मेरे पीने के लिए पानी भी मुझे स्थाया लेकर देना; सिफ़े मुझे पौंच — पौंच निकल जाने दे, 29 जैसे बनी 'ऐसौ' ने जो शाईर में रहते हैं, और मोआबियों ने जो 'आर शहर में बसते हैं। मेरे साथ किया; जब तक कि मैं यदरन को उबू करके उस मुल्क में पहुँच न जाऊँ जो खुदावन्द हमारा खुदा हमको देता है। 30 लेकिन हस्बोन के बादशाह सीहोन ने हमको अपने हाँ से गुज़रने न दिया; क्यूँकि खुदावन्द तेरे खुदा ने उसका मिजाज कड़ा और उसका दिल सख्त कर दिया ताकि उसे तेरे हाथ में हवाले कर दे, जैसा आज जाहिर है। 31 और खुदावन्द ने मुझसे कहा, देख, मैं सीहोन और उसके मुल्क को तेरे हाथ में हवाले करने को हूँ, इसलिए तू उस पर कब्जा करना शूरू कर, ताकि वह तेरी मीरास रहे। 32 तब सीहोन अपने सब आदमियों को लेकर हमारे मुकाबले में निकला और जग करने के लिए यहज में आया। 33 और खुदावन्द हमारे खुदा ने उसे हमारे हवाले कर दिया; और हमने उसे, और उसके बेटों को, और उसके सब आदमियों को मार लिया। 34 और हमने उसी वक्त उसके सब शहरों को ले लिया, और हर आबाद शहर को 'औरतों और बच्चों समेत बिल्कुल नाबूद कर दिया और किनी को बाकी न छोड़ा; 35 लेकिन चौपायों को और शहरों के माल को जो हमारे हाथ लगा लूट कर हमने अपने लिए रख लिया। 36 और 'अंसोईर से जो बादी — ए — अरनोन के किनारे है, और उस शहर से जो बादी में है, जिल 'आद तक ऐसा कोई शहर न था जिसको सर करना हमारे लिए मुश्किल हुआ; खुदावन्द हमारे खुदा ने सबको हमारे कब्जे में कर दिया। 37 लेकिन बनी 'अम्मोन के मुल्क के नजदीक और दरिया — ए — यबोक का 'इलाका और कोहिस्तान के शहरों में और जहाँ — जहाँ खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको मना' किया था तो नहीं गया।

3 “फिर हमने मुड़ कर बसन का रास्ता लिया और बसन का बादशाह 'ओज अदाई में अपने सब आदमियों को लेकर हमारे मुकाबले में जग करने को आया। 2 और खुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उससे मत डर, क्यूँकि मैंने उसको और उसके सब आदमियों और मुल्क को तेरे कब्जे में कर दिया है; जैसा तू अपोरियों के बादशाह सीहोन से जो हस्बोन में रहता था किया, वैसा ही तू इससे भी करेगा। 3 चुनौती खुदावन्द हमारे खुदा ने बसन के बादशाह 'ओज को भी उसके सब आदमियों समेत हमारे क्लाब में कर दिया, और हमने उनको यहाँ तक मारा के उनमें से कोई बाकी न रहा। 4 और हमने उसी वक्त उसके सब शहर ले लिए, और एक शहर भी ऐसा न रहा जो हमने उनसे ले न लिया हो। यूँ अरजूब का सारा मुल्क जो बसन में 'ओज की सलतनत में शामिल था और उसमें साठ शहर थे, हमारे कब्जे में आया। 5 यह सब शहर फसीलदार थे और इनकी ऊँची — ऊँची दीवारें और फाटक और बेंडे थे। इनके 'अलावा बहुत से ऐसे क़स्बे भी हमने ले लिए जो फसीलदार न थे। 6 और जैसा हमने हस्बोन के बादशाह

सीहोन के यहाँ किया वैसा ही इन सब आबाद शहरों को माए 'औरतों और बच्चों के बिल्कुल नाबद कर डाला। 7 लैकिन सब चौपायों और शहरों के माल को लूट कर हमने अपने लिए रख लिया। 8 यूँ हमने उस वक्त अमोरियों के दोनों बादशाहों के हाथ से, जो यरदन पार रहते थे उनका मुल्क बादी — ए — अरनोन से कोह — ए — हरमन तक ले लिया। 9 इस हरमन को सैदानी सिरयून, और अमोरी सनीर कहते हैं 10 और सलका और अदराई तक मैदान के सब शहर और सारा जिला आद और सारा बसन या'नी 'ओज की सलतनत के सब शहर जो बसन में शामिल थे हमने ले लिए। 11 क्यूँकि रिफाईम की नसल में से सिर्फ बसन का बादशाह 'ओज बाकी रहा था। उसका पलंग लहो का बना हुआ था और वह बनी अम्मोन के शहर रब्बा में मौजद है, और आदमी के हाथ के नाप के मुताबिक नौ हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा है। 12 इसलिए इस मुल्क पर हमने उस वक्त कब्जा कर लिया, और 'ओरो'इर जो बादी — ए — अरनोन के किनारे है और जिला 'आद के पहाड़ी मुल्क का आधा हिस्सा और उसके शहर मैंने स्त्रीयों और जड़ियों को दिए। 13 और जिला 'आद का बाकी हिस्सा और सारा बसन या'नी अरजूब का सारा मुल्क जो 'ओज की कलमरी में था, मैंने मनस्ती के आधे कबीले को दिया। बसन रिफाईम का मुल्क कहलाता था। 14 और मनस्ती के बेटे याई ने जसूरियों और माकातियों की सरहद तक अरजूब के सारे मुल्क को ले लिया और अपने नाम पर बसन के शहरों को हब्बत याई का नाम दिया, जो आज तक चला आता है 15 और जिला 'आद मैंने मकीर को दिया, 16 और स्त्रीयों और जड़ियों को मैंने जिला 'आद से बादी — ए — अरनोन तक का मुल्क, या'नी उस बादी के बीच के हिस्से को उनकी एक हद ठहरा कर दिया — ए — यदोक तक, जो 'अमोरियों की सरहद है उनको दिया। 17 और मैदान को और किन्नरत से लेकर मैदान के दरिया या'नी दरिया — ए — शोर तक, जो पूर्ब में पिसगा के ढाल तक फैला हुआ है और यरदन और उसका सारा इलाके को भी मैंने इन ही को दे दिया। 18 "और मैंने उस वक्त तुम्होंको हक्म दिया, कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्होंको यह मुल्क दिया है कि तुम उस पर कब्जा करो। इसलिए तुम सब जंगी मर्द हथियारबंद होकर अपने भाइयों बनी — इसाईं के आगे — आगे पार चलो; 19 मगर तुम्हारी लीवियाँ और तुम्हारे बाल बच्चे और चौपाये क्यूँकि मुझे मालम है कि तुम्हारे पास चौपाये बहुत हैं, इसलिए यह सब तुम्हारे उन ही शहरों में रह जाएँ जो मैंने तुम्होंको दिए हैं; 20 आखीर तक कि खुदावन्द तुम्हारे भाइयों को चैन न बखो जैसे तुमको बख्ता, और वह भी उस मुल्क पर जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा यरदन के उस पर तुम्होंको देता है कब्जा न कर लै। तब तुम सब अपनी मिल्कियत में जो मैंने तुम्होंको दी है लौट कर अपने पांसोंमें। 21 और उसी 'मैके' पर मैंने यशू'अ को हक्म दिया, कि जो कुछ खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने इन दो बादशाहों से किया वह सब तर्ने अपनी आँखों से देखा; खुदावन्द ऐसा ही उस पार उन सब सलतनतों का हाल करेगा जहाँ तू जा रहा है। 22 तुम उनसे न डरना, क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारा दुता तुम्हारी तरफ से आप जंग कर रहा है। 23 उस वक्त मैंने खुदावन्द से 'अजिजी की साथ दरखावास्त की कि, 24 ऐ खुदावन्द खुदा तूने अपने बन्दे को अपनी 'अजमत और अपना ताकतवर हाथ दिखाना शूर' किया है क्यूँकि आसमान में या जमीन पर ऐसा कौन मां'बूद है जो तेरे से काम या करामत कर सके। 25 इसलिए मैं तेरी मिन्तकरता करता हूँ कि मुझे पार जाने दे कि मैं भी अच्छे मुल्क को जो यरदन के पार है और उस खुशनुमा पहाड़ और लुबनान को देखूँ। 26 लैकिन खुदावन्द तुम्हारी बजह से मुझसे नाराज था और उसने मेरी न सुनी; बल्कि खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि बस कर इस मजमून पर मुझसे फिर कभी कुछ न कहना। 27 तू कोह — ए — पिसगा की चोटी पर चढ़ जा और पश्चिम और उत्तर और दक्षिण और पूरब की तरफ नज़र दौड़ा कर उसे अपनी आँखों

से देख ले, क्यूँकि तू इस यरदन के पार नहीं जाने पाएगा। 28 पर यशू'अ को बसीयत कर और उसकी हौसला अफज़ाई करके उसे मज़बूत कर क्यूँकि वह इन लोगों के आगे पार जाएगा; और वही इनको उस मुल्क का, जिसे तू देख लेगा मालिक बनाएगा। 29 चुनौते हम उस बादी में जो बैत फ़ारू है ठहरे रहे।

4 "और अब ऐ इसाईंलियों, जो आईन और अहकाम मैं तुमको सिखाता हूँ तुम

उन पर 'अमल करने के लिए उनको सुन लो, ताकि तुम जिन्दा रहो और उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा का खुदा तुमको देता है, दाखिल हो कर उस पर कब्जा कर लो। 2 जिस बात का मैं तुमको हक्म देता हूँ, उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना; ताकि तुम खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को जो मैं तुमको बताता हूँ मान सको। 3 जो कुछ खुदावन्द ने बाल फ़ारू की पैरवी की, खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे बीच से नाबूट कर दिया। 4 पर तुम जो खुदावन्द अपने खुदा से लिपेट रहे हो, सब के सब आज तक जिन्दा हो। 5 देखो, जैसा खुदावन्द मेरे खुदा ने मुझे हक्म दिया, उसके मुताबिक मैंने तुमको आईन और अहकाम सिखा दिए हैं; ताकि उस मुल्क में उन पर 'अमल करो जिस पर कब्जा करने के लिए जा रहे हो। 6 इसलिए तुम इनको मानना और 'अमल में लाना, क्यूँकि और कौमों के सामने यही तुम्हारी 'अक्लत और दानिश ठहरेंगे। वह इन तमाम कवानीन को सुन कर कहेंगी, कि यकीनन ये बुज्जा कौम निहायत 'अक्लतमन्द और समझदार है। 7 क्यूँकि ऐसी बड़ी कौम कौन है जिसका मां'बूद इस कद्र उसके नज़दीक हो जैसा खुदावन्द हमारा खुदा, कि जब कभी हम उससे दूआ करें हमारे नज़दीक हैं? 8 और कौन ऐसी बुज्जा कौम है जिसके आईन और अहकाम ऐसे रास्त हैं जैसी ये सारी शरी अत है, जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूँ। 9 "इसलिए तुम ज़स्त ही अपनी एहतियात रखना और बड़ी हिफाजत करना, ऐसा न हो कि तुम वह बातें जो तुमने अपनी आँख से देखी हैं भूल जाओ और वह जिन्दगी भर के लिए तुम्हारे दिल से जाती रहें; बल्कि तुम उनको अपने बेटों और पोतों को सिखाना। 10 खासकर उस दिन की बातें, जब तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने होरिब में खड़ा हुआ; क्यूँकि खुदावन्द ने मुझसे कहा था, कि कौम को मैंने सामने जमा कर और मैं उनको अपनी बांतों से सुनाऊंगा ताकि वह ये सीखें कि जिन्दगी भर, जब तक जमीन पर जिन्दा रहें मेरा खौफ मानें और अपने बाल — बच्चों को भी यही सिखाएँ। 11 चुनौते तुम नज़दीक जाकर उस पहाड़ के नीचे खड़े हुए, और वह पहाड़ आग से दहक रहा था और उसकी लौ आसमान तक पहुँचती थी और चारों तरफ तारीकी और घटा और जुलमत थी। 12 और खुदावन्द ने उस आग में से होकर तुमसे कलाम किया; तुमने बातें तो सुनी लैकिन कोई सूरत न देखी, सिर्फ आवाज ही आवाज सनी। 13 और उसने तुमको अपने 'अहद के दस्ती' अहकाम बताकर उनके मानने का हुक्म दिया, और उनको पत्थर की दो तख्तियों पर लिखी भी दिया। 14 उस वक्त खुदावन्द ने मुझे हक्म दिया, कि तुमको यह आईन और अहकाम सिखाऊँ ताकि तुम उस मुल्क में जिस पर कब्जा करने के लिए जा रहे हो, उन पर 'अमल करो। 15 "इसलिए तुम अपनी खब ही एहतियात रखना; क्यूँकि तुमने उस दिन जब खुदावन्द ने आग में से होकर होरिब में तुमसे कलाम किया, किसी तरह की कोई सूरत नहीं देखी। 16 ऐसा न हो कि तुम बिंगड़कर किसी शक्ति या सूरत की खोटी हड्डी मूरत अपने लिए बना लो, जिसकी शबीय किसी मर्द या 'औरत, 17 या जमीन के किसी हैवान या हवा में उड़ने वाले परिन्दे, 18 या जमीन के रेंगनेवाले जानदार या मछली से, जो जमीन के नीचे पानी में रहती है मिलती हो; 19 या जब तू आसमान की तरफ नज़र करे और तमाम अजराम — ए — फलक या'नी सूरज और चाँद और तारों को देखे, तो गुमराह होकर उन्हीं को सिजदा और उनकी

इबादत करने लगे जिनको खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने इस जमीन की सब कौमों के लिए रखाया है। 20 लेकिन खुदावन्द ने तुमको चुना, और तुमको जैसे लोहे की भट्टी यानी मिस से निकाल ले आया है ताकि तुम उसकी मीरास के लोग ठहरो, जैसा आज जाहिर है। 21 और तुम्हारी ही वजह से खुदावन्द ने मुझसे नाराज होकर कसम खाई, कि मैं यरदन पार न जाऊँ और न उस अच्छे मूल्क में पहुँचे पाऊँ, जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है; 22 बल्कि मुझे इसी मूल्क में मरना है, मैं यरदन पार नहीं जा सकता, लेकिन तुम पार जाकर उस अच्छे मूल्क पर कब्जा करोगे। 23 इसलिए तुम एहतियात रखो, ऐसा न हो कि तुम खुदावन्द अपने खुदा के उस 'अहद' को जो उसने तुमसे बांधा है भूत जाओ, और अपने लिए किसी चीज की शबीह की खोदी हूँ मूरत बना लो जिसे खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको मना' किया है 24 क्यैंकि खुदावन्द तेरा खुदा भस्म करने वाली आग है; वह गय्यर खुदा है। 25 और जब तुझसे बेटे और पेटे पैदा हों और तुमको उस मूल्क में रहते हुए एक जमाना हो जाए, और तुम बिंगड़कर किसी चीज की शबीह की खोदी हूँ मूरत बना लो, और खुदावन्द अपने खुदा के सामने शरारत करके उसे गुस्सा दिलाओ; 26 तो मैं आज के दिन तुहारे बरखिलाक आसमान और जमीन को गवाह बनाता हूँ कि तुम उस मूल्क से, जिस पर कब्जा करने को यरदन पार जाने पर हो, जल्द बिल्कुल फना हो जाओगे; तुम वहाँ बहुत दिन रहते न पाओगे बल्कि बिल्कुल नाबद कर दिए जाओगे। 27 और खुदावन्द तुमको कौमों में तिर बित करेगा, और जिन कौमों के बीच खुदावन्द तुमको पढ़ूँचाएगा उनमें तुम थोड़े से रह जाओगे। 28 और वहाँ तुम आदियों के हाथ के बने हुए लकड़ी और पत्थर के मांबूदों की इबादत करोगे, जो न देखते न सुनते न खाते न सूँधते हैं। 29 लेकिन वहाँ भी अगर तुम खुदावन्द अपने खुदा के तालिब हो तो वह तुझको मिल जाएगा, बर्शत कि तुम अपने पेरे दिल से और अपनी सारी जान से उसे छोड़ो। 30 जब त तुम्हारी बात में पड़ेगा और यह सब बातें तुझ पर गुज़रेंगी तो आखिरी दिनों में तू खुदावन्द अपने खुदा की तरफ पिरेगा और उसकी मारेगा; 31 क्यैंकि खुदावन्द तेरा खुदा, रहीम खुदा है, वह तुझको न तो छोड़ेगा और न हलाक करेगा और न उस 'अहद' को भूलेगा जिसकी कसम उसने तुम्हारे बाप — दादा से खाई। 32 'और जब से खुदा ने इंसान को जमीन पर पैदा किया, तब से शुरू करके तुम उन गुज़रे दिनों का हाल जो तुमसे पहले हो चुके पूछ, और आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दरियाफ़त कर, कि इतनी बड़ी वारदात की तरह कभी कोई बात हूँ या सुनें मैं भी आई? 33 क्या कभी कोई कौम खुदा की आवाज जैसे तू ने सुनी, आग में से आती हूँ सुन कर जिन्दा बची है? 34 या कभी खुदा ने एक कौम को किसी दूसरी कौम के बीच से निकालने का इरादा करके, इम्तिहानों और निशान और मोजिजों और जंग और ताकतवर हाथ और बलन्द बाजू और हौलनकाम माज़रों के बसीले से, उनको अपनी खालिर बरगुजीदा करने के लिए जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारी आँखों के सामने मिस में तुम्हारे लिए किए? 35 यह सब कुछ तुझको दिखाया गया, ताकि तू जाने कि खुदावन्द ही खुदा है और उसके अलावा और कोई ही नहीं। 36 उसने अपनी आवाज आसमान में से तुमको सुनाई ताकि तुझको तरबियत करे, और जमीन पर उसने तुझको अपनी बड़ी आग दिखाई, और तुमने उसकी बातें आग के बीच में से आती हूँ सुनी। 37 और चैकि उसे ऐसे बाप — दादा से महब्बत थी, इसीलिए उसने उनके बाद उनकी नसल को चुन लिया, और तेरे साथ होकर अपनी बड़ी कुदरत से तुझको मिस से निकाल लाया; 38 ताकि तुम्हारे सामने से उन कौमों को जो तुझ से बड़ी और ताकतवर हैं दफ़ा करे, और तुझको उनके मूल्क में पहुँचाए, और उसे तुझको मीरास के तौर पर दे, जैसा आज के दिन जाहिर है। 39 इसलिए आज के दिन तू जान ले और इस बात

को अपने दिल में जमा ले, कि ऊपर आसमान में और नीचे जमीन पर खुदावन्द ही खुदा है और कोई दूसरा नहीं। 40 इसलिए तू उसके आईन और अहकाम को जो मैं तुझको आज बताता हूँ मानना, ताकि तेरा और तेरे बाद तेरी औलाद का भला हो, और हमेशा उस मूल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है तेरी तरफ दराज हो।' 41 फिर मसा ने यरदन के पार पूरब की तरफ तीन शहर अलग किए, 42 ताकि ऐसा खूनी जो अनजाने बगैर कीटी 'अदावत के अपने पड़ोसी को मार डाले, वह वहाँ भाग जाए और इन शहरों में से किसी में जाकर जीता बच रहे। 43 यानी स्कीनियों के लिए तो शहर — ए — बसर हो जो तराई में वीरान के बीच बाके' है, और जड़ियों के लिए शहर — ए — रामात जो जिल 'आद मैं है, और मनसिसियों के लिए बसन का शहर — ए — जैलान। 44 यह वह शरी अत है जो मूसा ने बनी इसाईल के आगे पेश की। 45 यही वह शहादतें और आईन और अहकाम जो जिनको मूसा ने बनी इसाईल को उनके मिस से निकालने के बाद, 46 यरदन के पार उस बादी में जो बैत फ़ारू के सामने है, कह सुनाया, यानी अमोरियों के बादशाह सीहोन के मूल्क में जो हस्तोन में रहता था, जिसे मूसा और बनी इसाईल ने मूल्क — ए — मिस से निकालने के बाद मारा। 47 और फिर उसके मूल्क को, और बसन के बादशाह 'ओज के मूल्क को अपने कब्ज़े में कर लिया। अमोरियों के इन दोनों बादशाहों का यह मूल्क यरदन पार पूरब की तरफ, 48 'अपोईं से जो बादी — ए — अरनोन के किनारे बाके' है, कोह — ए — सियन तक जिसे हरमून भी कहते हैं, फैला हुआ है। 49 इसी में यरदन पार पूरब की तरफ मैदान के दरिया तक जो पिसाग की ढाल के नीचे बहता है, वहाँ का सारा मैदान शामिल है।

5 फिर मसा ने सब इस्खाईलियों को बुलावा कर उनको कहा, ऐ इस्खाईलियो। तुम उन आईन और अहकाम को सुन लो, जिनको मैं आज तुमको सुनाता हूँ, ताकि तुम उनको सीख कर उन पर 'अमल करो। 2 खुदावन्द हमारे खुदा ने होरिक में हमसे एक 'अहद बांधा। 3 खुदावन्द ने यह 'अहद हमारे बाप — दादा से नहीं, बल्कि खुद हम सब से जो यहाँ आज के दिन जीति हैं बांधा। 4 खुदावन्द ने तुमसे उस पहाड़ पर, आमने — सामने आग के बीच में से बातें की। 5 उस बक्त यैं तुहारे और खुदावन्द के बीच खड़ा हुआ ताकि खुदावन्द का कलातम तुम पर जाहिर करूँ क्यैंकि तुम आग की बजह से ढेर है थे और पहाड़ पर न चढ़ो। 6 तब उसने कहा, 'खुदावन्द तेरा खुदा, जो तुझको मूल्क — ए — मिस यानी गुलामी के घर से निकाल लाया, मैं हूँ। 7 'मेरे आगे तू और मांबूदों को न मानाना। 8 'तू अपने लिए कोईं तराशी हूँ मूरत न बनाना, न किसी चीज की सूरत बनाना जो ऊपर आसमान में से नीचे जमीन पर या जमीन के नीचे पानी मैं है। 9 तू उनके आगे सिज्दा न करना और न उनकी इबादत करना, क्यैंकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा गय्यर खुदा हूँ। और जो मूझसे 'अदावत रखते हैं उनकी औलाद को तीसीं और चौथीं नसल तक बाप — दादा की बदकारी की सजा देता हूँ। 10 और हजारों पर जो मूझसे मुहब्बत रखते और मेरे हृष्मों को मानते हैं, रहम करता हूँ। 11 'तू खुदावन्द अपने खुदा का नाम बेफायदा न लेना; क्यैंकि खुदावन्द उसको जो उसका नाम बेफायदा लेता है, बेग़नाह न ठहराएगा। 12 'तू खुदावन्द अपने खुदा के हृक्ष के मूताबिक सबत के दिन को याद करके पाक मानना। 13 छः दिन तक तू मेहनत करके अपना सारा काम — काज करना; 14 लेकिन सातवाँ दिन खुदावन्द ऐसे खुदा का सबत है उसमें न तू कोई काम करे, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा गुलाम, न तेरी लौटी, न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा और कोई जानवर और न कोई मुसाफ़िर जो तेरे फाटकों के अन्दर हों, ताकि तेरा गुलाम और तेरी लौटी भी तेरी तरह आराम करें। 15 और याद रखना कि तू मूल्क — ए — मिस में गुलाम था, और वहाँ से खुदावन्द तेरा खुदा अपने ताकतवर हाथ और बलन्द बाजू से तुझको

निकाल लाया; इसलिए खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको सबत के दिन को मानने का हक्म दिया। 16 'अपने बाप और अपनी माँ की 'इज्जत करना, जैसा खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझे हक्म दिया है; ताकि तेरी उम्र दराज हो और जो तेरा मुल्क खुदावन्द तेरा खुदातुझे देता है उसमें तेरा भला हो। 17 तु खन न करना। 18 'तु जिना न करना। 19 "तु चोरी न करना। 20 'तु अपने पड़ोसी के खिलाफ झाठी गवाही न देना। 21 'तु अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना, और न अपने पड़ोसी के घर, या उसके खेत, या गुलाम, या लौटी, या बैल, या गधे, या उसकी किसी और चीज का ख्वाहिश मन्द होना। 22 "यही बातें खुदावन्द ने उस पहाड़ पर, आग और घटा और जलमत में से तुम्हारी सारी जमा' अत को बलन्द आवाज से कही, और इससे ज्यादा और कुछ न कहा और इन ही को उसने पथर की दो तजियों पर लिखा और उनको मेरे सुर्द किया। 23 'और जब वह पहाड़ आग से दहक रहा था, और तुमने वह आवाज अन्धेरे में से आती सनी तो तुम और तुम्हारे कब्जीलों के सरदार और बुजूर्ग में पास आए। 24 और तुम कहने लगे, कि खुदावन्द हमारे खुदा ने अपनी शौकत और 'अजमत हमको दिखाई, और हमने उसकी आवाज आग में से आती सनी; आज हमने देख लिया के खुदावन्द इंसान से बातें करता है तो भी इंसान जिन्दा रहता है। 25 इसलिए अब हम क्यूँ अपनी जान दें? क्यूँकि ऐसी बड़ी आग हमको भस्म कर देगी, आगर हम खुदावन्द अपने खुदा की आवाज फिर सुनें तो मर ही जाएँ। 26 क्यूँकि ऐसा कौन सा बशर है जिसने जिन्दा खुदा की आवाज हमारी तरह आग में से आती सुनी हो और फिर भी जिन्दा रहा? 27 इसलिए तु ही नजदीक जाकर जो कुछ खुदावन्द हमारा खुदा करे उसे सुन ले, और तु ही वह बातें जो खुदावन्द हमारा खुदा तुझ से कहे हमको बताना; और हम उसे सुनेंगे और उस पर 'अमल करेंगे। 28 "और जब तुम मुझसे गुपत्त कर रहे थे तो खुदावन्द ने तुम्हारी बतें सुनी। तब खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि मैंने इन लोगों की बातें, जो उन्होंने तुझ से कही सुनी हैं, जो कुछ उन्होंने कहा ठीक कहा। 29 काश उनमें ऐसा ही दिल हो ताकि वह मेरा खौफ मान कर हायेशा मेरे सब हक्मों पर 'अमल करो, ताकि हमेशा उनका और उनकी औलाद का भला होता। 30 इसलिए तु जाकर उनसे कह दे, कि तुम अपने खेमों को लौट जाओ। 31 लेकिन तू यही मेरे पास खड़ा रह और मैं वह सब फरमान और सब आईन और अहकाम जो तुझे उनको सिखाने हैं, तुझको बताऊँगा; ताकि वह उन पर उस मुल्क में जो मैं उनको कब्जा करने के लिए देता हूँ, 'अमल करें। 32 इसलिए तुम एहतियात रखना और जैसा खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको हक्म दिया है वैसा ही करना, और दहने या बाँँ हथ को न मुड़ना। 33 तुम उस सारे रास्ते पर जिसका हुम्म खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको दिया है चलना; ताकि तुम जिन्दा रहो और तुम्हारा भला हो, और तुम्हारी उम्र उस मुल्क में जिस पर तुम कब्जा करोगे दराज हो।

6 यह वह फरमान और आईन और अहकाम है, जिनको खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुमको सिखाने का हक्म दिया है; ताकि तुम उन पर उस मुल्क में 'अमल करो, जिस पर कब्जा करने के लिए पार जाने को हो। 2 और तुम अपने बेटों और पोतों समेत खुदावन्द अपने खुदा का खौफ मान कर उसके तमाम आईन और अहकाम पर, जो मैं तुमको बताता हूँ, जिन्दगी भर 'अमल करना ताकि तुम्हारी उम्र दराज हो। 3 इसलिए, ऐ इस्माईल सुन, और एहतियात करके उन पर 'अमल कर, ताकि तेरा भला हो और तुम खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के बादे के मुताबिक उस मुल्क में, जिस में दूध और शहद बहता है बहत बढ़ जाओ। 4 'सुन, ऐ इस्माईल, खुदावन्द हमारा खुदा एक ही खुदावन्द है। 5 तु अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान, और अपनी सारी ताकत से खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रख। 6 और ये बातें जिनका हक्म आज मैं तुझे देता हूँ

तेरे दिल पर नक्शा रहें। 7 और तू इनको अपनी औलाद के जहन नशी करना, और घर बैठे और राह चलते और लेटते और उठते बक्त इनका जिक्र किया करना। 8 और तू निशान के तौर पर इनको अपने हाथ पर बाँधना, और वह तेरी पेशानी पर टीकों की तरह हों। 9 और तू उनको अपने घर की चौरबटों और अपने फाटकों पर लिखना। 10 और जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको उस मुल्क में पहुँचाए, जिसे तुझको देने की कसम उसने तेरे बाप — दादा अब्रहाम और इस्हाक और या'कूब से खाई, और जब वह तुझको बड़े — बड़े और अच्छे शहर जिनको तने नहीं बनाया, 11 और अच्छी — अच्छी चीजों से भेरे हुए घर जिनको तने नहीं भरा, और खोदे — खुदाए हाज जो तूने नहीं खोदे, और अंगू के बाग और जैतून के दरखत जो तूने नहीं लगाए 'इनयात करे, और तू खाए और सेर हो, 12 तो तू होशियार रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू खुदावन्द को जो तुझको मुल्क — ए — मिस यानी गुलामी के घर से निकाल लाया भूल जाए। 13 तु खुदावन्द अपने खुदा का खौफ मानना, और उसी की इबादत करना, और उसी के नाम की कसम खाना। 14 तुम और माँबूदों की यानी उन कौमों के माँबूदों की, जो तुम्हारे आस — पास रहती हैं पैरवी न करना। 15 क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा जो तुम्हारे बीच है गयरू खुदा है। इसलिए ऐसा न हो कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा का गजब तुझ पर भड़के, और वह तुझको इस जर्मीन पर से फना कर दे। 16 "तुम खुदावन्द अपने खुदा को मत आजमाना, जैसा तुमने उसे मस्सा में आजमाया था। 17 तुम मेहनत से खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों और शहादों और आईन को, जो उनसे तुझको फरमाए हैं मानना। 18 और तुम वह ही करना जो खुदावन्द की नजर में दुस्त और अच्छा है ताकि तेरा भला हो और जिस अच्छे मुल्क के बारे में खुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा से कसम खाई तु उसमें दाखिल होकर उस पर कब्जा कर सके। 19 और खुदावन्द तेरे सब दुश्मनों को तुम्हारे आगे से दफा करे, जैसा उसने कहा है। 20 "और जब आइन्दा ज़माने में तुम्हारे बेटे तुझसे सवाल करें, कि जिन शहादों और आईन और फरमान के मानने का हुम्म खुदावन्द हमारे खुदा ने तुपको दिया है उनका मतलब क्या है? 21 तो तू अपने बेटों को यह जवाब देना, कि जब हम मिस में फिर 'औन के गुलाम थे, तो खुदावन्द अपने ताकतवर हाथ से हमको मिस से निकाल लाया; 22 और खुदावन्द ने हमको इन सब हुक्मों पर 'अमल करो और हौलनाक अजायब — ओ — मिशान हमारे सामने अहल — ए — मिस, और फिर 'औन और उसके सब घराने पर करके दिखाए; 23 और हमको बहाँ से निकाल लाया ताकि हमको इस मुल्क में, जिसे हमको देने की कसम उसने हमारे बाप दादा से खाई पहुँचाए। 24 इसलिए खुदावन्द ने हमको इन सब हुक्मों पर 'अमल करो और हमेशा अपनी भलाई के लिए खुदावन्द अपने खुदा का खौफ मानने का हुक्म दिया है, ताकि वह हमको जिन्दा रखें, जैसा आज के दिन जाहिर है। 25 और अगर हम एहतियात रखते हैं कि खुदावन्द अपने खुदा के सामने इन सब हुक्मों को मानें, जैसा उस ने हमसे कहा है, तो इसी में हमारी सदाकत होगी।

7 "जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको उस मुल्क में, जिस पर कब्जा करने के लिए तू जा रहा है पहुँचा दे, और तेरे आगे से उन बहुत सी कौमों को या'नी हितियों, और जिरजासियों, और अमोरियों, और कनानियों, और फरिजियों, और हव्वियों, और यबसियों को, जो सातों कैमें तुझसे बड़ी और ताकतवर हैं निकाल दे। 2 और जब खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे आगे शिक्षत दिलाए और तू उनको मार ले, तो तू उनको बिल्कुल हलाक कर डालना; तू उनसे कोई 'अहद न बांधना और न उन पर रहम करना। 3 तू उनसे ब्याह शादी भी न करना, न उनके बेटों को अपनी बेटियों देना। 4 क्यूँकि वह तेरे बेटों को मेरी पैरवी से बरगता कर देंगी, ताकि वह और माँबूदों की इबादत करें। 5 क्यूँकि वह तेरे बेटों को मेरी पैरवी से बरगता कर देंगी,

और वह तुझको जल्द हलाक कर देगा। 5 बल्कि तुम उनसे यह सुलूक करना, कि उन के मजबहों को ढा देना, उन के सुतूनों को टुकड़े — टुकड़े कर देना और उनकी यसीरतों को काट डालना, और उनकी तराशी हुई मूरतें आग में जला देना। 6 क्यूँकि तुम खुदावन्द अपने खुदा के लिए एक मुक़दिस कौम हो, खुदावन्द तुम्हरे खुदा ने तुझको इस जमीन की ओर और सब कौमों में से चून लिया है ताकि उसकी खास उम्मत ठहरो। 7 खुदावन्द ने जो तुमसे मुहब्बत की ओर तुमको चुन लिया, तो इसकी वजह यह न थी कि तुम शुमार में और कौमों से ज्यादा थे, क्यूँकि तुम सब कौमों से शमार में कम थे; 8 बल्कि चूँकि खुदावन्द को तुमसे मुहब्बत है और वह उस कसम को जो उसने तुम्हारे बाप — दादा से खाई पूरा करना चाहता था, इसलिए खुदावन्द तुमको अपने ताकतवर हाथ से निकाल लाया, और गुलामी के घर यानी मिस के बादशाह फ़िर 'अौन के हाथ से तुमको छुटकारा बछाया। 9 इसलिए जान लो कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा वही खुदा है। वह वफादार खुदा है, और जो उससे मुहब्बत रखते और उसके हुक्मों को मानते हैं, उनके साथ हजार नसल तक वह अपने 'अहद को काईम रखता और उन पर रहम करता है। 10 और जो उससे 'अदावत रखते हैं, उनको उनके देखते ही देखते बदला देकर हलाक कर डालता है, वह उसके बारे में जो उससे 'अदावत रखता है देर न करेगा, बल्कि उसी के देखते — देखते उसे बदला देगा। 11 इसलिए जो फ़सान और आईन और अहकाम मैं आज के दिन तुझको बताता हूँ तू उनको मानना और उन पर 'अमल करना। 12 और तुम्हारे इन हुक्मों को सुनने और मानने और उन पर 'अमल करने की वजह से खुदावन्द तेरा खुदा भी तेरे साथ उस 'अहद और रहमत को काईम रख देगा, जिसकी कसम उनसे तुम्हारे बाप — दादा से खाई, 13 और तुझसे मुहब्बत रख देगा और तुझको बरकत देगा और बढ़ाएगा; और उस मुल्क में जिसे तुझको देने की कसम उनसे तेरे बाप — दादा से खाई वह तेरी औलात पर, और तेरी जमीन की पैदावार यानी तुम्हारे गल्ले, और मय, और तेल पर, और तेरे गाय — बैल के और भेड़ — बकरियों के बच्चों पर बरकत न जिल करेगा। 14 तुझको सब कौमों से ज्यादा बरकत दी जाएगी, और तुम में या तुम्हारे चौपायों में न तो कोई 'अकीम होगा न बँझा। 15 और खुदावन्द हर किसी की बीमारी तुझ से दूर करेगा और मिस के उन ब्लैंड रोगों को जिनसे तुम वाकिफ हो तज़को लगाने न देगा, बल्कि उनको उन पर जो तुझ से 'अदावत रखते हैं नाजिल करेगा। 16 और तू उन सब कौमों को, जिनको खुदावन्द तेरा खुदा तेरे काबू में कर देगा नाबद कर डालना। तू उन पर तरस न खाना और न उनके मांबूदों की इबादत करना, वर्ना यह तुम्हारे लिए एक जाल होगा। 17 और आग तेरा दिल भी यह कहे कि ये कौमें तो मुझसे ज्यादा हैं, हम उनको क्यूँ कर निकालें? 18 तोमी तू उनसे न डरना, बल्कि जो कुछ खुदावन्द तेरे खुदा ने फ़िर 'अौन और सरे मिस से किया उसे खबर याद रखना; 19 यानी उन बड़े — बड़े तज़रिबों को जिनको तेरी आँखों ने देखा, और उन निशान और मोजिजों और ताकतवर हाथ और बलन बाजू को जिनसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको निकाल लाया; क्यूँकि खुदावन्द तेरा खुदा ऐसा ही उन सब कौमों से करेगा जिनसे तू डरता है। 20 बल्कि खुदावन्द तेरा खुदा उनमें ज़म्बरों को भेज देगा, यहाँ तक कि जो उनमें से बाकी बच कर छिप जाएँगे वह भी तेरे आगे से हलाक हो जाएँगे। 21 इसलिए तू उनसे दहशत न खाना; क्यूँकि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे बीच में है, और वह खुदा — ए — 'अजीम और मुहीब है। 22 और खुदावन्द तेरा खुदा उन कौमों को तेरे आगे से थोड़ा — थोड़ा करके दफ़ा करेगा। तू एक ही दम उनको हलाक न करना, ऐसा न हो कि जंगली दरिद्रे बढ़ कर तज़ पर हमला करने लंगे। 23 बल्कि खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे हवाले करेगा, और उनको ऐसी शिक्षस्त — ए — फ़ाश देगा कि वह हलाक हो जाएँगे। 24 और वह उनके बादशाहों को

तेरे काबू में कर देगा, और तू उनका नाम सफ़ह — ए — रोज़गार से मिटा डालेगा; और कोई मर्द तेरा सामना न कर सकेगा, यहाँ तक कि तू उनको हलाक कर देगा। 25 तुम उनके मांबूदों की तराशी हुई मूरतों को आग से जला देना और जो चाँदी या सोना उन पर हो उसका तू लालच न करना और न उसे लेना, ऐसा न हो कि तू उसके फ़न्दे में फ़ंस जाए क्यूँकि ऐसी बात खुदावन्द तेरे खुदा के आगे मक़स्त है। 26 इसलिए तू ऐसी मक़स्त ही अपने घर में लाकर उसकी तरह नेस्त कर दिए जाने के लायक न बन जाना, बल्कि तू उससे बहुत ही नफ़रत करना और उससे बिल्कुल नफ़रत रखना; क्यूँकि वह मलाऊन चीज़ है।

8 सब हुक्मों पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, तुम एहतियात करके

'अमल करना ताकि तुम जीते और बढ़ते रहो; और जिस मुल्क के बारे में खुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा से कसम खाई है, तुम उसमें जाकर उस पर कब्जा करो। 2 और तू उस सारे तीकों को याद रखना जिस पर इन चालीस बरसों में खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको इस वीराने में चलाया, ताकि वह तुझको 'आजिज़ कर के आजमाए और तेरे दिल की बात दरियाफ़त करे कि तू उसके हुक्मों को मनिगा या नहीं। 3 और उसने तुझको 'आजिज़ किया भी और तुझको भक्ता होने दिया, और वह मन जिसे न तन तेरे बाप — दादा जानते थे तुझको खिलाया; ताकि तुझको सिखाए कि इंसान सिर्फ़ गेटी ही से जिन्दा नहीं रहता, बल्कि हर बात से जो खुदावन्द के मैंह से निकलती है वह जिन्दा रहता है। 4 इन चालीस बरसों में न तो तेरे तन पर तेरे कपड़े पुराने हए और न तुम्हारे पाँव सूजे। 5 और तू अपने दिल में खयाल रखना कि जिस तरह आदमी अपने बेटों को तम्बीह करता है, वैसे ही खुदावन्द तेरा खुदा तुमको तम्बीह करता है। 6 इसलिए तू खुदावन्द अपने खुदा की राहों पर चलने और उसका खौफ़ मानने के लिए उसके हुक्मों पर 'अमल करना। 7 क्यूँकि खुदावन्द तेरा खुदा तुझको एक अच्छे मुल्क में लिए जाता है। वह पानी की नदियों और ऐसे चरमों और सोतों का मुल्क है जो बादियों और पहाड़ों से फ़ूट कर निकलते हैं। 8 वह ऐसा मुल्क है जहाँ गेहूँ और जो अगर और अंजीर के दरखत और अनार होते हैं। वह ऐसा मुल्क है जहाँ रौपनदार जैतन और शहद भी है। 9 उस मुल्क में तुझको रोटी इफ़रात से मिलेगी और तुझको किसी चीज़ की कमी न होगी, क्यूँकि उस मुल्क के पाथर भी लोहा है और बहाँ के पहाड़ों से तू तौंबा खोद कर निकाल सकेगा। 10 और तू खाएगा और सेर होगा, और उस अच्छे मुल्क के लिए जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है उसका शुक्र बजा लाएगा। 11 इसलिए खबरदार रहना, कि कहीं ऐसा न हो कि तू खुदावन्द अपने खुदा को भूलकर, उसके फरमानों और हुक्मों और आईन को जिनको आज मैं तुझको सुनाता हूँ मानना छोड़ दे; 12 ऐसा न हो कि जब तू खाकर सेर हो और खुशनुमा घर बना कर उम्रे रहने लगे, 13 और तेरे गाय — बैल के गल्ले और भेड़ बकरियाँ बढ़ जाएँ और तेरे पास चाँदी, और सोना और माल बा — कसरत हो जाएँ; 14 तो तेरे दिल में गुर्ज़ समाए और तू खुदावन्द अपने खुदा को भूल जाएँ जो तुझ को हुई थी; 15 और ऐसे बड़े और हौलनाक वीराने में तेरा रहर फ़ुआ जहाँ जलने वाले सौंप और बिच्छू थे; और जहाँ की जमीन बगैर पानी के सखी पड़ी थी, वहाँ उसने तेरे लिए चक्रमक की चट्टान से पानी निकाला। 16 और तुझको बीरान में वह मन खिलाया जिसे तेरे बाप — दादा जानते थे; ताकि तुझको 'आजिज़ करे और तेरी आजमाइश करके आशिर्वाद में तेरा भला करे। 17 और ऐसा न हो कि तू अपने दिल में कहने लगे, कि मेरी ही ताकत और हाथ के जोर से मुझको यह दौलत न नीब दूर है। 18 बल्कि तू खुदावन्द अपने खुदा को याद रखना, क्यूँकि वही तुझको दौलत हासिल करने की कृबत इसलिए देता है कि अपने उस 'अहद को जिसकी कसम उनसे तेरे बाप — दादा से खाई थी, काईम रखे जैसा

आज के दिन जाहिर है। 19 और अगर तू कभी खुदावन्द अपने खुदा को भूले, और और माँबदों के फैरै बन कर उनकी इबादत और परस्तिश करे, तो मैं आज के दिन तुम्हों को आगाह किए देता हूँ कि तुम जस्त ही हलाक हो जाओगे। 20 जिन कौमों को खुदावन्द तुम्हारे सामने हलाक करने को है, उन्हीं की तरह तुम भी खुदावन्द अपने खुदा की बात न मानने की बजह से हलाक हो जाओगे।

9 सुन ले ऐ इसाईल, आज तुझे यरदन पार इसलिए जाना है, कि तू ऐसी कौमों

पर जो तुझ से बड़ी और ताकतवर हैं, और ऐसे बड़े शहरों पर जिनकी फसीलें आसमान से बातें करती हैं, कब्जा करे। 2 वहाँ 'अनाकीमी की औलाद है जो बड़े — बड़े और कृदावर लोग हैं। तुझे उनका हाल मालूम है, और तो उनके बारे में यह कहते सुना है कि बनी 'अनाक का मुकाबला कौन कर सकता है? 3 फिर तू आज कि दिन जान ले, कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे आगे आगे भसम करने वाली आग की तरह पार जा रहा है। वह उनको फ़ना करेगा और वह उनको तेरे आगे पस्त करेगा, ऐसा कि तू उनको निकाल कर जल्द हलाक कर डालेगा, जैसा खुदावन्द ने तुझ से कहा है। 4 "और जब खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे आगे से निकाल चुके, तो तू अपने दिल में यह न कहना कि मेरी सदाकत की बजह से खुदावन्द मुझे इस मुल्क पर कब्जा करने को यहाँ लाया क्यूँकि हक्कीकत में इनकी शरारत की बजह से खुदावन्द इन कौमों को तेरे आगे से निकालता है। 5 त अपनी सदाकत या अपने दिल की रास्ती की बजह से उस मुल्क पर कब्जा करने को नहीं जा रहा है बल्कि खुदावन्द तेरा खुदा इन कौमों की शरारत की बजह से इनको तेरे आगे से खारिज करता है, ताकि यूँ वह उस वादे को जिसकी कसम उसने तेरे बाप — दादा अब्राहाम और इस्हाक और याकूब से खाई पूरा करे। 6 "गरज त समझ ले कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरी सदाकत की बजह से यह अच्छा मुल्क तुझे कब्जा करने के लिए नहीं दे रहा है, क्यूँकि तू एक बारी कौम है। 7 इस बात को याद रख और कभी न भूल, कि तूने खुदावन्द अपने खुदा को वीराने में किस किस तरह गुस्सा दिलाया; बल्कि जब से तुम मुल्क — ए — मिस से निकले हो तब से इस जगह पहुँचने तक, तुम बराबर खुदावन्द से बागत ही करते रहे। 8 और होरिंग में भी तुमने खुदावन्द को गुस्सा दिलाया, चुनौतँ खुदावन्द नाराज़ होकर तुमको हलाक करना चाहता था। 9 जब मैं पथर की दोनों तखियों को, यानी उस अहद की तखियों को जो खुदावन्द ने तुम्हें बांधा था लेने को पहाड़ पर चढ़ गया; तो मैं चालीस दिन और चालीस रात वही रोटी खाई न पानी पिया। 10 और खुदावन्द ने अपने हाथ की लिखी हुई पथर की दोनों तखियों मेरे सुर्पद की, और उन पर वही बांते स्लिखी थीं जो खुदावन्द ने पहाड़ पर आग के बीच में से मजमे के दिन तुम्हें कही थीं। 11 और चालीस दिन और चालीस रात के बाद खुदावन्द ने पथर की वह दोनों तखियों यानी 'अहद की तखियों मुझको दी। 12 और खुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उठ कर जल्द यहाँ से नीचे जा, क्यूँकि तेरे लोग जिनको तू मिस से निकाल लाया है बिगड़ गए हैं वह उस राह से जिसका मैंने उनको हक्म दिया जल्द नाफरमान हो गए, और अपने लिए एक मूरत ढाल कर बना ली है।' 13 "और खुदावन्द ने मुझसे यह भी कहा, कि मैंने इन लोगों को देख लिया, ये बाधी लोग हैं। 14 इसलिए अब तू मुझे इनको हलाक करने दे ताकि मैं इनका नाम सफह — ए — रोज़गार से मिटा डालूँ, और मैं तुझ से एक कौम जो इन से ताकतवर और बड़ी हो बनाऊँगा। 15 तब मैं उल्टा फिरा और पहाड़ से नीचे उतरा, और पहाड़ पर आग से दहक रहा था; और 'अहद की वह दोनों तखियों मेरे दोनों हाथों में थीं। 16 और मैंने देखा कि तुमने खुदावन्द अपने खुदा का गुनाह किया; और अपने लिए एक बछड़ा ढाल कर बना लिया है, और बहुत जल्द उस राह से जिसका हुक्म खुदावन्द ने तुमको दिया था, नाफरमान हो गए। 17 तब मैंने उन दोनों तखियों को अपने दोनों हाथों से

लेकर फैक दिया और तुम्हारी आँखों के सामने उनको तोड़ डाला 18 और मैं पहले की तरह चालीस रात खुदावन्द के आगे औंधा पड़ा रहा, मैंने न रोटी खाई न पानी पिया; क्यूँकि तुमसे बड़ा गुनाह सरजद हुआ था, और खुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए तुमने वह काम किया जो उसकी नज़र में बुरा था। 19 और मैं खुदावन्द के कहर और गज़ब से डर रहा था, क्यूँकि वह तुम्हें सज़ा नाराज़ होकर तुमको हलाक करने का था; लेकिन खुदावन्द ने उस बार भी मेरी सुन ली। 20 और खुदावन्द हास्तन से ऐसे गुस्सा था कि उसे हलाक करना चाहा, लेकिन मैंने उस वक्त हास्तन के लिए भी दुआ की। 21 और मैंने तुम्हारे गुनाह को यानी उस बछड़े को, जो तुमने बनाया था लेकर आग में जलाया; फिर उसे कट कटकर ऐसा पीसा कि वह गर्द की तरह बारीक हो गया; और उसकी उस राख को उस नदी में जो पहाड़ से निकल कर नीचे बहती थी डाल दिया। 22 "और तबेरा और मस्सा और कबरोत हत्तामा में भी तुमने खुदावन्द को गुस्सा दिलाया। 23 और जब खुदावन्द ने तुमको कादिस बनीं असे यह कह कर रवाना किया, कि जाओ और उस मुल्क को जो मैंने तुमको दिया है कब्जा करो, तो उस वक्त भी तुमने खुदावन्द अपने खुदा के हुक्म को 'उदूल किया, और उस पर ईंमान न लाए और उसकी बात न मानी। 24 जिस दिन से मेरी तुम्हें वाक़फ़ियत हुई है, तुम बराबर खुदावन्द से सरकशी करते रहे हो। 25 "इसलिए वह चालीस दिन और चालीस रात जो मैं खुदावन्द के आगे औंधा पड़ा रहा, इनी लिए पड़ा रहा क्यूँकि खुदावन्द ने कह दिया था कि वह तुमको हलाक करेगा। 26 और मैंने खुदावन्द से यह दुआ की, कि ऐ खुदावन्द खुदा तू अपनी कौम और अपनी मीरास के लोगों को, जिनको तूने अपनी कुदरत से नजात बरखी और जिनको तू ताकतवर हाथ से मिस से निकाल लाया, हलाक न कर। 27 अपने खादिमों अब्राहाम और इस्हाक और याकूब को याद फरमा, और इस कौम की खुदसीरी और शरारत और गुनाह पर नजर न कर, 28 कही ऐसा न हो कि जिस मुल्क से तू हमको निकाल लाया है वहाँ के लोग कहने लगे, कि दैँकि खुदावन्द उस मुल्क में जिसका बादा उसने उनसे किया था पाँचांचा न सका, और चैंकि उसे उनसे नफरत भी थी, इसलिए वह उनको निकाल ले गया ताकि उनको बीराने में हलाक कर दे। 29 आखिर यह लोग तेरी कौम और तेरी मीरास हैं जिनको तू अपने बड़े जोर और बलन्द बाज़ु से निकाल लाया है।

10 "उस वक्त खुदावन्द ने मुझसे कहा, कि पहली तखियों की तरह पथर

की दो और तखियों तराश ले, और मैं पास पहाड़ पर आ जा, और एक चोबी संदूक भी बना ले। 2 और जो बातें पहली तखियों पर जिनको तूने तोड़ डाला लिखी थीं, वही मैं इन तखियों पर भी लिख दूँगा; फिर तू इनके सन्दूक में रख देना। 3 इसलिए मैंने कीकर की लकड़ी का एक संदूक बनाया और पहली तखियों की तरह पथर की दो तखियों तराश ली, और उन दोनों तखियों को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया। 4 और जो दूसरी तखियों को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया। 5 तब मैं पैरों पर लौट कर नीचे आया और इन तखियों को उस संदूक में जो मैंने बनाया था रख दिया, और खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक जो उसने मुझे दिया था, वह वही रखी हुई है। 6 फिर बनी — इसाईल बेरोत — ए — बनी याकान से रवाना होकर मौसीरा में आए। वही हास्तन ने वकात पाई और दफ्न भी हुआ, और उसका बेटा इलीएलियाज़ कहनात के 'उद्देश पर मुकर्रर होकर उसकी जगह खिदमत करने लगा। 7 वहाँ से वह जुदजदा को और जुदजदा से युत्बाता को चले, इस मुल्क में पानी की नदियाँ हैं। 8 उसी कौमके पर खुदावन्द ने लाखों के कबीले को इस वजह से अलग किया, कि वह खुदावन्द के 'अहद के संदूक को उठाया करे

और खुदावन्द के सामने खड़ा होकर उसकी खिदमत को अन्जाम दे, और उसके नाम से बरकत दिया करे, जैसा आज तक होता है। 9 इसलिए लावी को कोई हिस्सा या मीरास उसके भाइयों के साथ नहीं मिली, क्यूंकि खुदावन्द उसकी मीरास है, जैसा खुद खुदावन्द तेरे खुदा ने उसे कहा है। 10 'और मैं पहले की तरह चालीस दिन और चालीस रात पहाड़ पर ठहरा रहा, और इस दफ़ा' भी खुदावन्द ने मेरी सुनी और न चाहा कि तुझको हलाक करे। 11 फिर खुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उठ, और इन लोगों के आगे रवाना हो, ताकि ये उस मूल्क पर जाकर कब्ज़ा कर लें जिसे उनको देने की कसम मैंने उनके बाप — दादा से खाई थी। 12 "इसलिए ऐ इसाईल, खुदावन्द तेरा खुदा तुझ से इसके अलावा और क्या चाहता है कि तू खुदावन्द अपने खुदा का खौफ माने, और उसकी सब राहों पर चले, और उससे मुहब्बत रखें, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से खुदावन्द अपने खुदा की बन्दी करे, 13 और खुदावन्द के जो अहकाम और आईन मैं तुझको आज बताता हूँ उन पर 'अमल करो, ताकि तेरी खैर हो?' 14 देख, आसमान और आसमानों का आसमान, और जमीन और जो कुछ जमीन मैं है, यह सब खुदावन्द तेरे खुदा ही का है। 15 तो भी खुदावन्द ने तेरे बाप — दादा से खुदा होकर उनसे मुहब्बत की, और उनके बाट उनकी औलाद को यार्नी तुमको सब क्रौमों में से बरगुज़ीदा किया, जैसा आज के दिन जाहिर है। 16 इसलिए अपने दिलों का खत्मा करो और आगे को बाबी न रहो। 17 क्यूंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा इलाहों का इलाह खुदावन्दों का खुदावन्द है, वह बुर्जावार और कादिर और मुहीब खुदा है, जो स्ट्री' आयत नहीं करता और न रिश्वत लेता है। 18 वह यतीमों और बेवाओं का इन्साफ़ करता है, और परदेसी से ऐसी मुहब्बत रखता है कि उसे खाना और कपड़ा देता है। 19 इसलिए तुम परदेसीयों से मुहब्बत रखना क्यूंकि तुम भी मूल्क — ए — मिस्र में परदेसी थे। 20 तुम खुदावन्द अपने खुदा का खौफ मानना, उसकी बन्दी करना और उससे लिपेटे रहना और उसी के नाम की कसम खाना। 21 वही तेरी हन्द का सजावार है और बर्ती तेरा खुदा है जिसमें तेरे लिए वह बड़े और हैलैनाक काम किए जिनको तू ने अपनी आँखों से देखा। 22 तेरे बाप — दादा जब मिस्र में गए तो सन्तर आदमी थे, लेकिन अब खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुझको बढ़ा कर आसमान के सितारों की तरह कर दिया है।

11 "इसलिए तुम खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखना, और उसकी शरीर' अत और आईन और अहकाम और फ़रमानों पर सदा 'अमल करना। 2 और तम आज के दिन खब समझ लो, क्यूंकि मैं तुम्हारे बाल बच्चों से कलाम नहीं कर रहा हूँ, जिनको न तो मालूम है और न उन्होंने देखा कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा की तस्की, और उसकी 'अजमत, और ताकतवर हाथ और बलन्द बाजू से क्या क्या हुआ; 3 और मिस्र के बीच मिस्र के बादशाह फ़िर' औन और उसके मुक्के के लोगों को कैसे कैसे निशान और कैरी करामात दिखाई। 4 और उसने मिस्र के लशकर और उनके घोड़ों और रथों का क्या हाल किया, और कैसे उसने बहर — ए — कुलज़म के पानी में उनको डुबो दिया जब वह तुम्हारा पीछा कर रहे थे, और खुदावन्द ने उनको कैसा हलाक किया कि आज के दिन तक वह नाबदू हैं, 5 और तुम्हारे इस जगह पहुँचने तक उसने वीराने में तुम्हसे क्या क्या किया; 6 और दातन और अबीराम का जो इलियाब बिन स्विन के बेटे थे, क्या हाल बनाया कि सब इसाईलियों के सामने जमीन ने अपना मूँह पसार कर उनको और उनके धरानों और खेमों और हर आदमी को जो उनके साथ था मिगल लिया; 7 लेकिन खुदावन्द के इन सब बड़े — बड़े क्रामों को तुमने अपनी आँखों से देखा है। 8 "इसलिए इन सब हक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ तुम मानना, ताकि तुम मजबूत होकर उस मूल्क में जिस पर कब्ज़ा करने के लिए तुम पार जा रहे हो, पहुँच जाओ और उस पर कब्ज़ा

भी कर लो। 9 और उस मूल्क में तुम्हारी उग्र दराज़ हो जिसमें दूध और शहद बहता है, और जिसे तुम्हारे बाप — दादा और उनकी औलाद को देने की कसम खुदावन्द ने उनसे खाई थी। 10 क्यूंकि जिस मूल्क पर तू कब्ज़ा करने को जा रहा है वह मुल्क मिस्र की तरह नहीं है, जहाँ से तुम निकल आए हो वहाँ तो तू बीज बोकर उसे सब्जी के बाग की तरह पाँव से नालियाँ बना कर सीचता था। 11 लेकिन जिस मूल्क पर कब्ज़ा करने के लिए तुम पार जाने को वह पहाड़ों और बादियों का मूल्क है, और बारिश के पानी से सेराब हुआ करता है। 12 उस मूल्क पर खुदावन्द तेरे खुदा की तवज्ज्हर हरहती है, और साल के शूरु से साल के आखिर तक खुदावन्द तेरे खुदा की आँखें उस पर लगी रहती हैं। 13 'और अगर तुम मेरे हक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ दिल लगा कर सुगे, और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखें, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से उसकी बन्दी करो, 14 तो मैं तुम्हारे मूल्क में सही बक्त पर पहला और पिछला मैं बरसाऊँगा, ताकि तू अपना गल्ला और मय और तेत जमा' कर सके। 15 और मैं तेरे चौपायों के लिए मैदान में घास पैदा करूँगा, और तू खायेगा और सेरे होगा। 16 इसलिए तुम खबरदार रहना कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे दिल धोका खाएँ, और तुम बहक कर और माबूदों की इबादत और परस्तिश करने लगो। 17 और खुदावन्द का गज़ब तुम पर भड़के और वह आसमान को बन्द कर दे ताकि मैं हन न बरसे, और जमीन में कुछ पैदावार न हो, और तुम इस अच्छे मूल्क से जो खुदावन्द तुमको देता है जल्द फ़ना हो जाओ। 18 इसलिए मेरी इन बातों को तुम अपने दिल और अपनी जान में महफूज़ रखना और निशान के तौर पर इनको अपने हाथों पर बैंधना, और वह तुम्हारी पेशानी पर टीकों की तरह हों। 19 और तुम इनको अपने घर की चौखटों पर और अपने फाटकों पर लिखा करना, 21 ताकि जब तक जमीन पर आसमान का साया है, तुम्हारी और तुम्हारी औलाद की उग्र उस मूल्क में दराज़ हो, जिसको खुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा को देने की कसम उससे खाई थी। 22 क्यूंकि अगर तुम उन सब हक्मों को जो मैं तुमको देता हूँ, पूरी जान से मानो और उन पर 'अमल करो, और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखें, और उसकी सब राहों पर चलो, और उससे लिपेटे रहो; 23 तो खुदावन्द इन सब क्रौमों को तुम्हारे आगे से निकल डालेगा, और तुम उन क्रौमों पर जो तुमसे बड़ी और ताकतवर हैं कैबिज़ होगे। 24 जहाँ जहाँ तुम्हारे पाँव का तत्त्व टिके वह जगह तुम्हारी हो जाएगी, यार्नी वीराने और लुबनान से और दरिया — ए — फ़रात से पश्चिम के समन्दर तक तुम्हारी सरहद होगी। 25 और कोई शब्द वहाँ तुम्हारा मुकाबला न कर सकेगा, क्यूंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारा रौब और खौफ़ उस तमाम मूल्क जहाँ कहीं तुम्हारे कदम पड़े पैदा कर देगा जैसा उनसे तुम्हे कहा है। 26 "देखो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे बरकत और लान्त दोनों रखें देता हूँ 27 बरकत उस हाल में जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के हक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ मानो; 28 और लान्त उस बक्त जब तुम खुदावन्द अपने खुदा की फ़रमांबदारी न करो, और उस राह को जिसके बारे में मैं आज तुमको हक्म देता हूँ छोड़ कर और माबूदों की पैरवी करो, जिसने तुम अब तक वाकिफ़ नहीं। 29 और जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको उस मूल्क में जिस पर कब्ज़ा करने को तू जा रहा है पहेंचा दे, तो कोह — ए — गरिजीं पर से बरकत और कोह — ए — ऐबाल पर से लान्त सुनाना। 30 वह दोनों पाहाड़ यरदान पर पश्चिम की तरफ़ उन कनानीयों के मूल्क में वाकें हैं जो जिलजाल के सामने मोरा के बलतों के क्लीबी मैदान में रहते हैं। 31 और तुम यरदान पर इसी लिए जाने को हो, कि उस मूल्क पर जो खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको देता है कब्ज़ा करो, और तुम उस पर कब्ज़ा

करेगे भी और उसी में बसोगे। 32 इसलिए तुम एहतियात कर के उन सब आईन और अहकाम पर 'अमल करना जिनको मैं आज तुम्हारे सामने पेश करता हूँ।

12 “जब तक तुम दुनिया में ज़िन्दा रहो तुम एहतियात करके इन ही आईन और अहकाम पर उस मुल्क में 'अमल करना जिसे खुदावन्द तेरे बाप — दादा के खुदा ने तुझको दिया है, ताकि तू उस पर कब्जा करे। 2 वहाँ तुम ज़स्त उन सब जगहों को बर्बाद कर देना जहाँ — जहाँ वह कौमें जिनके तुम वारिस होगे, ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर और टीलों पर और हर एक हरे दरखत के नीचे अपने मांबद्दों की पूजा करती थीं। 3 तुम उनके मजबहों को ढा देना, और उनके सुन्नों को तोड़ डालना, और उनकी यसीरियों को आग लगा देना, और उनके मांबद्दों की खुदी ही हृषि मूर्तों को काट कर पिरा देना, और उस जगह से उनके नाम तक को मिटा डालना। 4 लेकिन खुदावन्द अपने खुदा से ऐसा न करना। 5 बल्कि जिस जगह को खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारे सब कबीलों में से चुन ले, ताकि वहाँ अपना नाम काईम करे, तुम उसके उसी घर के तालिब होकर वहाँ जाया करना। 6 और वहीं तुम अपनी सोखतनी कुर्बानियों और जबीहों और दहेकियों और उठाने की कुर्बानियों और अपनी मिन्नतों की चीजों और अपनी रजा की कुर्बानियों और गाय बैलों और भेड़ बकरियों के पहलौठों को पेश करना। 7 और वहीं खुदावन्द अपने खुदा के सामने खाना और अपने घरानों समेत अपने हाथ की कमाई की खुशी भी करना, जिसमें खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको बरकत बछरी है। 8 और जैसे हम यहाँ जो काम जिसका ठीक दिखाइ देता है वही करते हैं, ऐसे तुम वहाँ न करना। 9 क्यूँकि तुम अब तक उस आरामगाह और मीरास की जगह तक, जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है नहीं पहुँचे हो। 10 लेकिन जब तुम यदवन पार जाकर उस मुल्क में जिसका मालिक खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमके बनाता है बस जाओ, और वह तुम्हारे सब दुश्मनों की तरफ से जो चारों तरफ हैं तुमको राहत दे, और तुम अन्न से रहने लगो; 11 तो वहाँ जिस जगह को खुदावन्द तुम्हारा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुन ले, वही तुम ये सब कुछ जिसका मैं तुमको हृक्म देता हूँ ते जाया करना; यानी अपनी सोखतनी कुर्बानियों और जबीहे और अपनी दहेकियों, और अपने हाथ के उठाए हए हदिये, और अपनी खास नज़र की चीजें जिनकी मन्नत तुमने खुदावन्द के लिए मारी हो। 12 और वहीं तुम और तुम्हारे बेटे बेटियाँ और तुम्हारे नौकर चाकर और लौड़ियाँ और वह लाली भी जो तुम्हारे फाटकों के अन्दर रहता हो और जिसका कोई हिस्सा या मीरास तुम्हारे साथ नहीं, सब के सब मिल कर खुदावन्द अपने खुदा के सामने खुशी मनाना। 13 और तुम खबरदार रहना, कहीं ऐसा न हो कि जिस जगह को देख ले। वही अपनी सोखतनी कुर्बानी पेश करो। 14 बल्कि सिर्फ उसी जगह जिसे खुदावन्द तेरे किसी कबीले में चुन ले, तू अपनी सोखतनी कुर्बानियाँ पेश करना और वही सब कुछ जिसका मैं तुमको हृक्म देता हूँ करना। 15 “लेकिन गोश्त को तुम अपने सब फाटकों के अन्दर अपने दिल की चाहत और खुदावन्द अपने खुदा की दी हुई बरकत के मुवाफिक जबह कर के खा सकेगा। पाक और नापाक दोनों तरह के आदमी उसे खा सकेंगे, जैसे विकारे और हिरन को खाते हैं। 16 लेकिन तुम खून को बिल्कुल न खाना, बल्कि तुम उसे पानी की तरह जमीन पर उँडेल देना। 17 और तू अपने फाटकों के अन्दर अपने गल्ले और मय और तेल की दहेकियों, और गाय — बैलों और भेड़ — बकरियों के पहलौठे, और अपनी मन्नत मारी हुई चीजें और रजा की कुर्बानियाँ और अपने हाथ की उठाई हुई कुर्बानियाँ कभी न खाना। 18 बल्कि तू और तेरे बेटे बेटियाँ और तेरे नौकर — चाकर और लौड़ियाँ, और वह लाली भी जो तेरे फाटकों के अन्दर हो, उन चीजों को खुदावन्द अपने खुदा के सामने उस जगह खाना जिसे खुदावन्द तेरा खुदा चुन ले, और तुम खुदावन्द अपने खुदा के सामने अपने हाथ की कमाई की

खुशी मनाना। 19 और खबरदार जब तक तू अपने मुल्क में ज़िन्दा रहे लावियों को छोड़ न देना। 20 “जब खुदावन्द तेरा खुदा उस वादे के मुताबिक जो उसने तुझ से किया है तुम्हारी सरहद को बढ़ाए, और तेरा जी गोश्त खाने को करे और तू कहने लगे कि मैं तो गोश्त खाऊँगा, तो तू जैसा तेरा जी चाहे गोश्त खा सकता है। 21 और अगर वह जगह जिसे खुदावन्द तेरे खुदा ने अपने नाम को वहाँ काईम करने के लिए चुना है तेरे मकान से बहुत दूर हो, तो तू अपने गाय बैल और भेड़ — बकरी मैं से जिनको खुदावन्द ने तुझको दिया है किसी को जबह कर लेना और जैसा मैंने तुझको हृक्म दिया है तू उसके गोश्त को अपने दिल की चाहत के मुताबिक अपने फाटकों के अन्दर खाना; 22 जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं वैसी ही तू उसे खाना। पाक और नापाक दोनों तरह के आदमी उसे एक जैसे खा सकेंगे। 23 सिर्फ इतनी एहतियात जस्तर रखना कि तू खून को न खाना; क्यूँकि खून ही तो जान है, इसलिए तू गोश्त के साथ जान को हारीज़ न खाना। 24 तू उसको खाना मत, बल्कि उसे पानी की तरह जमीन पर उँडेल देना; 25 तू उसे न खाना; ताकि तेरे उस काम के करने से जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, तेरा और तेरे साथ तेरी औलाद का भी भला हो। 26 लेकिन अपनी पाक चीजों को जो तेरे पास हों और अपनी मन्नतों की चीजों को उसी जगह ले जाना जिसे खुदावन्द चुन ले। 27 और वहीं अपनी सोखतनी कुर्बानियों का गोश्त और खून दोनों खुदावन्द अपने खुदा के मजबह पर पेश करना; और खुदावन्द तेरे खुदा ही के मजबह पर तेरे जबीहों का खून उँडेला जाए, मगर उनका गोश्त तू खाना। 28 इन सब बातों को जिनका मैं तुझको हृक्म देता हूँ और अपनी मन्नतों की चीजों को उसी जगह ले जाना जिसे खुदावन्द चुन ले। 29 और वहीं अपनी सोखतनी कुर्बानियों का गोश्त और खून दोनों खुदावन्द अपने खुदा के मजबह पर पेश करना; और खुदावन्द तेरे खुदा ही के मजबह पर तेरे जबीहों का खून उँडेला जाए, मगर उनका गोश्त तू खाना। 30 इन सब बातों को जिनका मैं तुझको हृक्म देता हूँ और अपनी से सुन ले, ताकि तेरे उस काम के करने से जो खुदावन्द तेरे खुदा की नज़र में अच्छा और ठीक है, तेरा और तेरे बाद तेरी औलाद का भला हो। 29 “जब खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सामने से उस कोरों को उस जगह जहाँ तू उनके वारिस होने को जा रहा है काट डाले, और तू उनका वारिस होकर उनके मुल्क में बस जाये, 30 तो तू खबरदार रहना, कहीं ऐसा न हो कि जब वह तेरे आगे से खत्म हो जाएँ तो तू इस फंदे में फैस जाये, कि उनकी पैरेवी करे और उनके मांबद्दों के बारे में ये दरियाफ़त करे कि ये कौमें किस तरह से अपने मांबद्दों की पूजा करती है? मैं भी वैसा ही करूँगा। 31 तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए ऐसा न करना, क्यूँकि जिन जिन कामों से खुदावन्द को नफरत और 'अदावत है वह सब उन्होंने अपने मांबद्दों के लिए किए हैं, बल्कि अपने बेटों और बेटियों को भी वह अपने मांबद्दों के नाम पर आग में डाल कर जला देते हैं। 32 “जिस जिस बात का मैं हृक्म करता हूँ, तुम एहतियात करके उस पर 'अमल करना और उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न उसमें से कुछ घटाना।

13 अगर तेरे बीच कोई नवी या खबाब देखने वाला जाहिर हो और तुझको किसी निशान या अजीब बात की खबर दे। 2 और वह निशान या 'अजीब बात जिसकी उसने तुझको खबर दी वजूद में आए और वह तुझ से कहे, कि आओ हम और मांबद्दों की जिनसे तुम वाकिफ़ नहीं पैरवी करके उनकी पूजा करें; 3 तो तू हारीज़ उस नवी या खबाब देखने वाले की बात को न सुनना; क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुमको आज्ञामाणा, ताकि जान ले कि तुम खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मुहब्बत रखते हो या नहीं। 4 तुम खुदावन्द अपने खुदा की पैरवी करना, और उसका खौफ़ मानना, और उसके हुक्मों पर चलना, और उसकी बात सुनना; तुम उसी की बन्दगी करना और उसी से लिपेटे रहना। 5 वह नवी या खबाब देखने वाला कल्प लिया करा इसकी उसको खुदावन्द तुम्हारो खुदा से जिसने तुमको मुल्क — ए — मिस्र से निकाला और तुझको गुलामी के घर से रिहाई बखरी, बागवत करने की तरीकी दी ताकि तुझको उस राह से जिस पर खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको चलने का हृक्म दिया है बहकाए। यूँ तुम अपने बीच में से ऐसे

गुनाह को दूर कर देना। 6 “अगर तेरा भाई, या तेरी माँ का बेटा, या तेरा बेटा या बेटी, या तेरी हमासोश बीबी, या तेरा दोस्त जिसको तू अपनी जान के बराबर 'अजीज रखता है, तुझको चुपके चुपके फुसलाकर कहे, कि चलो, हम और मां'बूदों की पूजा करें जिससे तू और तेरे बाप — दादा वाकिफ भी नहीं, 7 यानी उन लोगों के मां'बूद जो तेरे चारों तरफ तेरे नजदीक रहते हैं, या तुझ से दूर जमीन के इस सिरे से उस सिरे तक बसे हुए हैं; 8 तो तू इस पर उसके साथ रजामन्द न होना, और न उनकी बात सुनना। तू उस पर तरस भी न खाना और न उसकी रिं'आयत करना और न उसे छिपाना। 9 बल्कि तू उसको जस्तर कल्पना और उसको कल्पना करते बक्तव्य पहले तेरा हाथ उस पर पड़े, इसके बाद सब कौम का हाथ। 10 और तू उसे संगसार करना ताकि वह मर जाए; क्यैंकि उसने तुझको खुदावन्द तेरे खुदा से, जो तुझको मुल्क — ए — मिस से यानी गुलामी के घर से निकाल लाया, नाफरमान करना चाहा। 11 तब सब इमाईल सुन कर डेरोंगे और तेरे बीच फिर ऐसी शरारत नहीं करोंगे। 12 “और जो शहर खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको रहने को दिए हैं, अगर उनमें से किसी के बारे में तू ये अफवाह सुने, कि, 13 कुछ खबरीं आदमियों ने तेरे ही बीच में से निकलकर अपने शहर के लोगों को ये कहकर गुप्तराह कर दिया है, कि चलो, हम और मां'बूदों की जिससे तू वाकिफ नहीं पूजा करें; 14 तो तू दरियाफत और खबू तपतीश करके पता लगाना, और देखो, अगर ये सच हो और करत्ई यही बात निकले, कि ऐसा मकस्त काम तेरे बीच किया गया, 15 तो तू उस शहर के बाशिन्दों को तलवार से जस्तर कल्पन कर डालना, और वहाँ का सब कुछ और चौपाये वौरा तलवार ही से हलाकर कर देना। 16 और वहाँ की सारी लट को चौक के बीच जमा कर के उस शहर को और वहाँ की लट्ट को, तिनका तिनका खुदावन्द अपने खुदा के सामने आग से जला देना; और वह हमेशा को एक ढेर सा पड़ा रहे, और फिर कभी बनाया न जाए। 17 और उनकी मरम्भस की हड्डी चीजों में से कुछ भी तेरे हाथ में न रहे; ताकि खुदावन्द अपने कहर — ए — शदीद से बाज आए, और जैसा उसने तेरे बाप — दादा से क्रस्प खाई है, उस के मुगाबिक तुझ पर रहम करे और तरस खाए और तुझको बढाए। 18 ये तब ही होगा जब तू खुदावन्द अपने खुदा की बात मान कर उसके हृक्षमों पर जो आज मैं तुझको देता हूँ चले, और जो कुछ खुदावन्द तेरे खुदा की नजर में ठीक है उसी को करे।

14 “तुम खुदावन्द अपने खुदा के फर्जन्द हो, तुम मुर्दों की बजह से अपने आप को ज़ख्मी न करना, और न अपने अबरू के बाल मुंडवाना। 2 क्यैंकि तू खुदावन्द अपने खुदा की मुकद्दस कौम है और तुझको इस जमीन की और सब कौमों में से चुन लिया है ताकि तू उसकी खास कौम ठहरे। 3 “तू किसी यिनौनी चीज़ को मत खाना। 4 जिन चौपायों को तुम खा सकते हो वह ये हैं, यानी गाय — बैल, और भेड़, और बकरी, 5 और चिकरे और हिरन, और छोटा हिरन और बुज़कोही और साबिर और नीलगाय और, ज़गली भेड़। 6 और चौपायों में से जिस जिस के पाँव अलग और चिरे हुए हैं और वह ज़गली भी करता हो तुम उसे खा सकते हो। 7 लेकिन उनमें से जो ज़गली करते हैं या उनके पाँव चिरे हुए हैं तुम उनको, यानी कैंट, और खरगोश, और साफान को न खाना, क्यैंकि ये ज़गली करते हैं लेकिन इनके पाँव चिरे हुए नहीं हैं; इसलिए ये तुम्हारे लिए नापाक हैं। 8 और सूअर तुम्हारे लिए इस बजह से नापाक है कि उसके पाँव तो चिरे हुए हैं लेकिन वह ज़गली नहीं करता। तुम न तो उनका गोश खाना और न उनकी लाश को हाथ लगाना। 9 'आवी जानवरों में से तुम उन ही को खाना जिनके पर और छिल्के हों। 10 लेकिन जिसके पर और छिल्के न हों तुम उसे मत खाना, वह तुम्हारे लिए नापाक है। 11 “पाक परिन्दों में से तुम जिसे चाहो खा सकते हो, 12 लेकिन इनमें से तुम किसी को न खाना, यानी 'उकाब, और उस्तुखानख़वार, और बहरी 'उकाब, 13 और चील

और बाज़ और गिद्ध और उनकी किस्म के: 14 हर किस्म का कौवा, 15 और शुतुर्मुर्ग और चुगाद और कोकिल और किस्म के शाहीन, 16 और बूम, और उल्लू, और काज़, 17 और हवासिल, और रखम, और हड्गाली, 18 और लक — लक, और हर किस्म का बगुला, और हुद — हुद, और चमगाद। 19 और सब परदार रेंगने वाले जानदार तुम्हारे लिए नापाक हैं, वह खाए न जाएँ। 20 और पाक परिन्दों में से तुम जिसे चाहो खाओ। 21 “जो जानवर आप ही मर जाए तू उसे मत खाना; तू उसे किसी परदेसी को, जो तेरे फाटकों के अन्दर हो खाने को दे सकता है, या उसे किसी अजनबी आदमी के हाथ बेच सकता है; क्यैंकि तू खुदावन्द अपने खुदा की मुकद्दस कौम है। तू हलवान को उसकी माँ के दूध में न उबालना। 22 “तू अपने गल्ले में से, जो हर साल तुम्हारे खेतों में पैदा हो दहेकी देना। 23 और तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने उसी मकाम में जिसे वह अपने नाम के घर के लिए चुने, अपने गल्ले और मय और तेल की दहेकी को, और अपने गाय — बैल और भेड़ — बकरियों के पहलौठों को खाना, ताकि तू हमेशा खुदावन्द अपने खुदा का खौफ मानना सीखे। 24 और अगर वह जगह जिसको खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम को वहाँ काईम करने के लिए चुने तेरे घर से बहुत दूर हो, और रास्ता भी इस कदर लम्बा हो कि तू अपनी दहेकी को उस हाल में जब खुदावन्द तेरा खुदा तुझको बरकत बख्शे वहाँ तक न ले जा सके, 25 तो तू उसे बेच कर समये को बाँध, हाथ में लिए हुए उस जगह चले जाना जिसे खुदावन्द तेरा खुदा चुने। 26 और इस समये से जो कुछ तेरा जी चाहे, चाहे गाय — बैल, या भेड़ — बकरी, या मय, या शराब मोल लेकर उसे अपने घराने समेत वहाँ खुदावन्द अपने खुदा के सामने खाना और खुशी मनाना। 27 और लाली को जो तेरे फाटकों के अन्दर है छोड़ न देना, क्यैंकि उसका तेरे साथ कोइ हिस्सा या मीरास नहीं है। 28 'तीन तीन बरस के बाद तू तीसीरे बरस के माल की सारी दहेकी निकाल कर उसे अपने फाटकों के अन्दर इकट्ठा करना। 29 तब लाली जिसका तेरे साथ कोई हिस्सा या मीरास नहीं, और परदेसी और यतीम और बेवा 'औरतें जो तेरे फाटकों के अन्दर हों हाँ, और खाकर सेर हों, ताकि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बख्शो।

15 'हर साल साल के बाद तू छुटकारा दिया करना। 2 और छुटकारा देने का तरीका ये हो, कि अगर किसी ने अपने पडोसी को कुछ कर्ज़ दिया हो तो वह उसे छोड़ दे, और अपने पडोसी से या भाई से उसका मुताल्बा न करे; क्यैंकि खुदावन्द के नाम से इस छुटकारे का 'ऐतान हुआ है। 3 परदेसी से तू उसका मुताल्बा कर सकता है, पर जो कुछ तेरा तेरे भाई पर आता हो उसकी तरफ से दस्तबरदार हो जाना। 4 तेरे बीच कोई कंगाल न रहे; क्यैंकि खुदावन्द तुझको इस मुल्क में ज़स्त बरकत बख्शेगा, जिसे खुद खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको कब्ज़ा करने को देता है। 5 बरश्ति कि तू खुदावन्द अपने खुदा की बात मान कर इन सब अहकाम पर चलने की इहतियात रखें, जो मैं आज तुझको देता हूँ। 6 क्यैंकि खुदावन्द तेरा खुदा, जैसा उसने तुझ से 'आदा किया है, तुझको बरकत बख्शेगा और तू बहुत सी कौमों को कर्ज़ देगा, पर तुझको उनसे कर्ज़ लेना न पड़ेगा; और तू बहुत सी कौमों पर हक्मरानी करेगा, लेकिन वह तुझ पर हक्मरानी करने न पाएँगी। 7 जो मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है, अगर उसमें कही तेरे फाटकों के अन्दर तेरे भाइयों में से कोई गरीब हो, तो तू अपने उस गरीब भाई की तरफ से न अपना दिल सख्त करना और न अपनी मुरी बन्द कर लेना; 8 बल्कि उसकी जस्तर करना और हुद — हुद, और चमगाद। 9 खबरदार रहना कि तेरे दिल में ये भुग खयाल न गुज़रने पाए कि सातवाँ साल, जो छुटकारे का साल है, नजदीक है और तेरे गरीब भाई की तरफ से तेरी नजर बढ़ हो जाए और तू उसे

कुछ न दे; और वह तेरे खिलाफ खुदावन्द से फरियाद करे और ये तेरे लिए गुप्त ठहरे। 10 बल्कि तुझको उसे ज़सर देना होगा; और उसको देते बक्त तेरे दिल को बुरा भी न लगे, इसलिए कि ऐसी बात की वजह से खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में, और सब मु'अमिलों में जिनको तू अपने हाथ में लेगा तुझको बरकत बछोगा। 11 और चूँकि मूल्क में कंगाल हमेशा पाए जाएँगे, इसलिए मैं तुझको हुक्म करता हूँ कि तू अपने मूल्क में अपने भाई याँनी कंगालों और मुहताजों के लिए अपनी मुश्ती खुली रखना। 12 'अगर तेरा कोई भाई, चाहे वह 'इब्रानी मर्द हो या 'इब्रानी' औरत तेरे हाथ बिके और वह छः बरस तक तेरी खिदमत करे, तो तेरा सातवें साल उसको आजाद होकर जाने देना। 13 और जब तू उसे आजाद कर के अपने पास से स्वस्त करे, तो उसे खाली हाथ न जाने देना। 14 बल्कि तू अपनी भेड़ बकरी और खते और कोल्ह में से दिल खोलकर उसे देना, याँनी खुदावन्द तेरे खुदा ने जैसी बरकत तुझको दी ही उसके मुताबिक उसे देना। 15 और याद रखना कि मूल्क — ए — मिस्र में तू भी शुल्क था, और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको छुड़ाया; इसलिए मैं तुझको इस बात का हुक्म आज देता हूँ। 16 और अगर वह इस वजह से कि उसे तुझसे और तेरे घराने से मुहब्बत हो और वह तेरे साथ खुशहाल हो, तुझ से कहने लगे कि मैं तेरे पास से नहीं जाता। 17 तो तू एक सुतारी लेकर उसका कान दरवाजे से लगाकर छेद देना, तो वह हमेशा तेरा गुलाम बना रहेगा। और अपनी लौटी से भी ऐसा ही करना। 18 और अगर तू उसे आजाद करके अपने पास से स्वस्त करे तो उसे मुश्किल न गरदानना; क्यूँकि उसने दो मज़दूरों के बराबर छः बरस तक तेरी खिदमत की, और खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कारोबार में तुझको बरकत बछोगा। 19 'तेरे गाय — बैल और भेड़ — बकरियों में जिनते पहलौठे नर पैदा हों, उन सब को खुदावन्द अपने खुदा के लिए मुकद्दस करना, अपने गाय — बैल के पहलौठे से कुछ काम न लेना और न अपनी भेड़ — बकरी के पहलौठे के बाल करना। 20 तू उसे अपने घराने समेत खुदावन्द अपने खुदा के सामने उसी जगह जिसे खुदावन्द चुन ले, साल — ब — साल खाया करना। 21 और अगर उसमें कोई नुकस हो मसलन वह लंगड़ा या अन्धा हो या उसमें और कोई बुरा 'ऐब हो, तो खुदावन्द अपने खुदा के लिए उसकी कुर्बानी न गुज़राना। 22 तू उसे अपने फाटकों के अन्दर खाना। पाक और नापाक दोनों तरह के आदमी जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं वैसे ही उसे खाएँ। 23 लैकिन उसके खून को हरपीज न खाना; बल्कि तू उसको पानी की तरह ज़मीन पर उँड़ेल देना।

16 'त अबीब के महीने को याद रखना और उसमें खुदावन्द अपने खुदा की फसह करना क्यूँकि खुदावन्द तेरा खुदा अबीब के महीने में रात के बक्त तुझको मिस्र से निकाल लाया। 2 और जिस जगह को खुदावन्द अपने नाम के घर के लिए चुने, वही तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए अपने गाय — बैल और भेड़ — बकरी में से फसह की कुर्बानी पेश करना। 3 तू उसके साथ खुम्मीरी रोटी न खाना, बल्कि सात दिन तक उसके साथ बेखमीरी रोटी जो दुख की रोटी है खाना; क्यूँकि तू मूल्क — ए — मिस्र से हड्डबड़ी में निकला था। यूँ तू उम्र भर उस दिन को जब तू मूल्क — ए — मिस्र से निकले याद रख सकेगा। 4 और तेरी हादों के अन्दर सात दिन तक कहीं खमीर नजर न आए, और उस कुर्बानी में से जिसको तू पहले दिन की शाम को चढ़ाए कुछ गोशत सुबह तक बाकी न रहने पाए। 5 तू फसह की कुर्बानी को अपने फाटकों के अन्दर, जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको दिया हो कहीं न चढ़ाना; 6 बल्कि जिस जगह को खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुनेगा, वहाँ तू फसह की कुर्बानी को उस बक्त जब तू मिस्र से निकला था, याँनी शाम को सूरज इकते

कर खाना और फिर सुबह को अपने खेमे को लौट जाना। 8 छः दिन तक बेखमीरी रोटी खाना और सातवें दिन खुदावन्द तेरे खुदा की खातिर पाक मजमा' हो, उसमें तू कोई काम न करना। 9 फिर तू सात हफ्ते यूँ गिनाना, कि जब से हँसुआ लेकर फसल काटनी शुरू' करे तब से सात हफ्ते गिन लेना। 10 तब जैसी बरकत खुदावन्द तेरे खुदा ने दी हो, उसके मुताबिक अपने हाथ की रजा की कुर्बानी का हादिया लाकर खुदावन्द अपने खुदा के लिए हफ्तों की 'ईद मनाना। 11 और उसी जगह जिसे खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुनेगा, तू और तेरे बेटे बेटियाँ और वह लाली जो तेरे फाटकों के अन्दर हो, और मुसाफिर और यतीम और बेवा जो तेरे बीच हों, सब मिल कर खुदावन्द अपने खुदा के सामने खुशी मनाना। 12 और याद रखना के तू मिस्र में गुलाम था और इन हक्मों पर एहतियात करके 'अमल करना। 13 जब तू अपने खलीहान और कोल्ह का माल जमा' कर चुके, तो सात दिन तक 'ईद — ए — खियाम करना। 14 और तू और तेरे बेटे बेटियाँ और गुलाम और लौटियाँ और लाली, और मुसाफिर और यतीम और बेवा जो तेरे फाटकों के अन्दर हों, सब तेरी इस 'ईद में खुशी मनाएँ। 15 सात दिन तक तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए उसी जगह जिसे खुदावन्द चुने, 'ईद करना, इसलिए कि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सारे माल में और सब कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बछोगा, इसलिए तू परी — परी खुशी करना। 16 और साल में तीन बार, याँनी बेखमीरी रोटी की 'ईद और हफ्तों की 'ईद और 'ईद — ए — खियाम के मौके' पर तेरे यहाँ के सब मर्द खुदावन्द अपने खुदा के आगे, उसी जगह हाजिर हुआ करे जिसे वह चुनेगा। और जब आँए तो खुदावन्द के सामने खाली हाथ न आँए; 17 बल्कि हर मर्द जैसी बरकत खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको बछोगी हो अपनी तौफीकी के मुताबिक दे। 18 तू अपने कुर्बानीों की सब बस्तियों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा तुझको दे, काजी और हाकिम मुकर्रर करना जो सदाकत से लोगों की 'अदालत करे। 19 तू इस्साफ का खून न करना। तू न तो किसी की स्तर 'अदात करना और न रिव्यू लेना, क्यूँकि रिव्यूत 'अक्वलमन्द की आँखों को अन्धा कर देती है और सादिक की बातों को पलट देती है। 20 जो कुछ बिल्कुल हक है तू उसी की पैरवी करना, ताकि तू ज़िन्दा रहे और उस मूल्क का मालिक बन जाये जो खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है। 21 जो मजबूत तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए बनाये उसके करीब किसी किस्म के दरखत की यसीरत न लगाना, 22 और न कोई सुरू अपने लिए खड़ा कर लेना, जिससे खुदावन्द तेरे खुदा को नफरत है।

17 तू खुदावन्द अपने खुदा के लिए कोई बैत या भेड़ — बकरी, जिसमें कोई 'ऐब या बुराई' हो, जबह मत करना क्यूँकि यह खुदावन्द तेरे खुदा के नज़दीक मक्स्हूह है। 2 'अगर तेरे बीच तेरी बस्तियों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा तुझको दे, कहीं कोई मर्द या 'अैरत मिले जिसने खुदावन्द तेरे खुदा के सामने यह बदकारी की हो कि उसके 'अहद को तोड़ा हो, 3 और जाकर और मा'बदों की या सूरज या चाँद या अजराम — ए — फलक में से किसी की, जिसका हुक्म मैंने तुझको नहीं दिया, इबादत और परासिश की हो, 4 और यह बात तुझको बताई जाए और तेरे सुनने में आए, तो तू ज़ॉफ़िशनी से तहकीकात करना और अगर यह ठीक हो और कतई तौर पर साबित हो जाए कि इमाइल में ऐसा मक्स्हूह काम हुआ, 5 तो तू उस मर्द या उस 'अैरत को जिसने यह बुरा काम किया हो, बाहर अपने फाटकों पर निकाल ले जाना और उनको ऐसा संग्रास करना कि वह मर जाएँ। 6 जो वाजिब — उल — कल्त ठहरे वह दो या तीन आदमियों की गवाही से मारा जाए, सिर्फ़ एक ही आदमी की गवाही से वह मारा न जाए। 7 उसको कल्त करते बक्त गवाहों के हाथ पहले उस पर उठे उसके बाद बाकी सब लोगों के हाथ, यूँ तू अपने बीच से शरारत को दूर किया

करना। 8 अगर तेरी बस्तियों में कही आपस के खून या आपस के दावे या आपस की मार पीट के बारे में कोई झागड़ी की बात उठे, और उसका फैसला करना तेरे लिए नियात ही मुश्किल हो, तो तू उठ कर उस जगह जिसे खुदावन्द तेरा खुदा चुनेगा जाना। 9 और लाली काहिनों और उन दिनों के क्रांतियों के पास पहुँच कर उनसे दरियापत करना, और वह तुझको फैसले की बात बताएँगे; 10 और तू उसी फैसले के मुताबिक जो वह तुझको उस जगह से जिसे खुदावन्द चुनेगा बताएँ 'अमल करना। जैसा वह तुमको सिखाएँ उसी के मुताबिक सब कछ एहतियात करके मानना। 11 शरी' अत की जो बात वह तुझको सिखाएँ और जैसा फैसला तुझको बताएँ उसी के मुताबिक करना और जो कुछ फतवा वह दें उससे दहने या बाएँ न मुड़ना। 12 और अगर कोई शब्द गुस्ताखी से पेश आए कि उस काहिन की बात, जो खुदावन्द तेरे खुदा के सामने खिदमत के लिए खड़ा रहता है या उस काजी का कहा न सुने, तो वह शब्द मार डाला जाए और तू इसाईल में से ऐसी खुदाई को दूर कर देना। 13 और सब लोग सन कर डर जाएँगे और फिर गुस्ताखी से पेश नहीं आएँगे। 14 जब तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है पहुँच जाये, और उस पर कब्जा कर के वहाँ रहने और कहने लगे, कि उन कौमों की तरह जो मैं चारों तरफ हूँ मैं भी किसी को अपना बादशाह बनाऊँ। 15 तो तू बहरहाल सिर्फ उसी को अपना बादशाह बनाना जिसको खुदावन्द तेरा खुदा चुन ले, तू अपने भाइयों में से ही किसी को अपना बादशाह बनाना, और परदेसी को जो तेरा भाई नहीं अपने ऊपर हाकिम न कर लेना। 16 इन्हाँ ज़स्त है कि वह अपने लिए बहुत घोड़े न बढ़ाए, और न लोगों को मिश में भेजे ताकि उसके पास बहुत से घोड़े हो जाएँ, इसलिए कि खुदावन्द ने तुमसे कहा है कि तुम उस राह से फिर कभी उधर न लौटना। 17 और वह बहुत सी बींवियाँ भी न रख देएँ ऐसा न हो कि उसका दिल फिर जाए, और न वह अपने लिए सोना चाँदी जखीरा करे। 18 और जब वह तरख — ए — सल्तनत पर बैठा करे तो उस शरी' अत की जो लाली काहिनों के पास रहेंगी, एक नकल अपने लिए एक किताब में उतार ले। 19 और वह उसे अपने पास रख देएँ और अपनी सारी उम्र उसको पढ़ा करे, ताकि वह खुदावन्द अपने खुदा का खौफ मानना और उस शरी' अत और आईन की सब बातों पर 'अमल करना सीखें; 20 जिससे उसके दिल में गुरुर न हो कि वह अपने भाइयों को हकीकी जाने, और इन अहकाम से न तो दहने न बाएँ मुड़े; ताकि इसाईलियों के बीच उसकी और उसकी औलाद की सल्तनत ज़माने तक रहे।

18 लाली काहिनों याँनी लाली के कबीले का कोई हिस्सा और मीरास की मीरास खाया करें। 2 इसलिए उनके भाइयों के साथ उनको मीरास न मिले; खुदावन्द उनकी मीरास है, जैसा उसने खुद उनसे कहा है। 3 और जो लोग गय — बैल या भेड़ या बकरी की कुर्बानी गुजरानते हैं उनकी तरफ से काहिनों का यह हक होगा, कि वह काहिन को शाना और कनपटियाँ और झोज्ज़ दें। 4 और तू अपने अनाज और मय और तेल के पहले फल में से, और अपनी भेड़ों के बाल में से जो पहरी दफ़ा करते जाएँ उसे देना। 5 क्रृप्ति खुदावन्द तेरा खुदा ने उसको तेरे सब कबीलों में से चुन लिया है, ताकि वह और उसकी औलाद हमेशा खुदावन्द के नाम से खिदमत के लिए हाजिर रहें। 6 और तेरी जो बस्तियों सब इसाईलियों में है उनमें से अगर कोई लाली किसी बस्ती से जहाँ वह बद — ओ — बाश करता था आए, और अपने दिल की पूरी चाहत से उस जगह हाजिर हो जिसको खुदावन्द चुनेगा: 7 तो अपने सब लाली भाइयों की तरह जो वहाँ खुदावन्द के सामने खड़े रहते हैं, वह भी खुदावन्द अपने खुदा के नाम से खिदमत करे। 8 और उन सबको खाने को बराबर हिस्सा मिले, 'अलाला उस कीमत के जो उसके बाप — दादा की मीरास बेचने से उसे हासिल हो। 9 जब तू

उस मुल्क में जो खुदावन्द तेरा खुदा तुमको देता है पहुँच जाओ, तो वहाँ की कौमों की तरह मक्स्ह काम करने न सीखना। 10 तुझमें हरगिज़ कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में चलवाए, या फालगिरा या शगुन निकालने वाला या अफसूसगर या जादूगर 11 या मंत्री या जिन्नात का आशना या रम्माल या साहिर हो। 12 क्रृप्ति कवह सब जो ऐसा काम करते हैं खुदावन्द के नजदीक मक्स्ह हैं, और इन ही मक्स्हहात की वजह से खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे सामने से निकालने पर है। 13 तू खुदावन्द अपने खुदा के सामने कामिल रहना। 14 क्रृप्ति कवह कौमें जिनका तू वारिस होगा शगुन निकालने वालों और फालगिरी की सुनती है; लेकिन तुझको खुदावन्द तेरे खुदा ने ऐसा करने न दिया। 15 खुदावन्द तेरा खुदा तेरे लिए तेरे ही बीच से, याँनी तेरे ही भाइयों में से मेरी तरह एक नबी खड़ा करेगा तुम उसकी सुनना; 16 यह तेरी उस दरखास्त के मुताबिक होगा जो तुमे खुदावन्द अपने खुदा से मजमे के दिन होंतेरिए मैं की थी, 'मुझको न तो खुदावन्द अपने खुदा की आवाज फिर सुननी पड़े और न ऐसी बड़ी आग ही का नजारा हो, ताकि मैं मर जाऊँ। 17 और खुदावन्द ने मुझसे कहा कि 'वह जो कुछ कहते हैं इसलिए ठीक कहते हैं। 18 मैं उनके लिए उन ही के भाइयों में से तेरी तरह एक नबी खड़ा करँगा, और अपना कलाम उनके मुँह में डालँगा, और जो कुछ मैं उसे हुम्म दूँगा वही वह उनसे कहेगा। 19 और जो कोई मेरी उन बातों की जिनकी वह मेरा नाम लेकर कहेगा न सुने, तो मैं उनका हिसाब उनसे लूँगा। 20 लेकिन जो नबी गुस्ताख बन कर कोई ऐसी बात मैं नाम से कहे, जिसके कहने का मैंने उसको हुक्म नहीं दिया या और माँबद्दों के नाम से कुछ कहे, तो वह नबी कत्तल किया जाए। 21 और अगर तू अपने दिल में कहे कि 'जो बात खुदावन्द ने नहीं कही है, उसे हम क्यूँ कर पहचानें?' 22 तो पहचान यह है, कि जब वह नबी खुदावन्द के नाम से कुछ कहे और उसके कहे कि मुताबिक कुछ बाके' या पूरा न हो, तो वह बात खुदावन्द की कही हुई नहीं; बल्कि उस नबी ने वह बात खुद गुस्ताख बन कर कही है, तू उससे खोपू न करना।

19 जब खुदावन्द तेरा खुदा उन कौमों को, जिनका मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है काटा डाले, और तू उनकी जगह उनके शहरों और घरों में रहने लगे, 2 तो तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको कब्जा करने को देता है, तीन शहर अपने लिए अलग कर देना। 3 और तू एक रास्ता भी अपने लिए तैयार करना, और अपने उस मुल्क की ज़मीन को जिस पर खुदावन्द तेरा खुदा तुझको कब्जा दिलाता है तीन हिस्से करना, ताकि हर एक खुनी वही भाग जाए। 4 और उस क्रांतिल का जो वहाँ भाग कर अपनी जान बचाए हाल यह हो, कि उसने अपने पड़ोसी को अनजाने में और बगैर उससे पुरानी दुश्मनी रख देएँ मार डाला हो। 5 मसलन कोई शब्द अपने पड़ोसी के साथ लकड़ीयाँ काटने को ज़ंगल में जाए और कुलहाड़ा हाथ में उठाए ताकि दरखत काटे, और कुलहाड़ा दस्ते से निकल कर उसके पड़ोसी के जा लगे और वह मर जाए, तो वह इन शहरों में से किसी मैं भाग कर ज़िन्दा बचे। 6 कही ऐसा न हो कि रास्ते की लम्बाई की बजह से खुद का इनकाम लेने वाला अपने जोश — ए — गजब मैं कातिल का पीछा करके उसको जा पकड़े और उसको कत्तल कर, हालाँकि वह वाजिब — उल — कत्तल नहीं क्यूँकि उसे मक्तुल से पुरानी दुश्मनी न थी। 7 इसलिए मैं तुझको हुक्म देता हूँ कि तू अपने लिए तीन शहर अलग कर देना। 8 और अगर खुदावन्द तेरा खुदा उस कसम के मुताबिक जो उसने तेरे बाप — दादा से खाई, तेरी सरहद को बढ़ाकर वह सब मुल्क जिसके देने का वादा उसने तेरे बाप दादा से किया था तुझको दे। 9 और तू इन सब खुम्हों पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ ध्यान करके 'अमल करे और खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रख देएँ और हमेशा उसकी राहों पर चले, तो इन

तीन शहरों के आलावा तीन शहर और अपने लिए अलग कर देना। 10 ताकि तेरे मुल्क के बीच जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको मीरास में देता है, बेगुनाह का खून बहाया न जाए और वह खून यूँ तेरी गर्दन पर हो। 11 लेकिन अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी से दुर्मनी खत्ता हुआ उसकी घाट में लगे, और उस पर हमला कर के उसे ऐसा मारे कि वह मर जाए और वह खुद उन शहरों में से किसी में भाग जाए। 12 तो उसके शहर के बुर्जुग लोगों को भेजकर उसे वहाँ से पकड़वा मँगावाँ, और उसको खून के इन्तकाम लेने वाले के हाथ में हवाले करें ताकि वह कत्ल हो। 13 तुझको उस पर जरा तरस न आए, बल्कि तु इस तरह बेगुनाह के खून को इसाईल से दफा' करना ताकि तेरा भला हो। 14 तू उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको कब्जा करने को देता है, अपने पड़ोसी की हद का निशान जिसको अपने लोगों ने तेरी मीरास के हिस्से में ठहराया हो मत हटाना। 15 किसी शख्स के खिलाफ उसकी किसी बदकारी या गुनाह के बारे में जो उससे सरजद हो, एक ही गवाह बस नहीं बल्कि दो गवाहों या तीन गवाहों के कहने से बात पक्की समझी जाए। 16 अगर कोई झटा गवाह उठ कर किसी आदमी की बड़ी की निस्बत गवाही दे, 17 तो वह दोनों आदमी जिनके बीच यह झागड़ा हो, खुदावन्द के सामने काहिने और उन दिनों के काजियों के आगे खड़े हों, 18 और काज़ी खबूल तहकीकात करें, और अगर वह गवाह झटा निकले और उसने अपने भाई के खिलाफ झटी गवाही दी हो; 19 तो जो हाल उसने अपने भाई का करना चाहा था, वही तुम उसका करना; और यूँ तु ऐसी बुराई को अपने बीच से दफा' कर देना। 20 और दूसरे लोग सुन कर डेरे और तेरे बीच फिर ऐसी बुराई नहीं करेंगे। 21 और तुझको जरा तरस न आए; जान का बदला जान, आँख का बदला आँख, दाँत का बदला दाँत, हाथ का बदला हाथ, और पाँव का बदला पाँव हो।

20 जब तू अपने दुश्मनों से जंग करने को जाये, और घोड़ों और रथों और अपने से बड़ी फौज को देखे तो उनसे डर न जाना; क्यूँकि खुदावन्द तेरा खुदा जो तुझको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया तौर साथ है। 2 और जब मैदान — ए — जंग में तुम्हारा मुकाबला होने को हो तो काहिन फौज के आदमियों के पास जाकर उनकी तरफ मुखातिब हो, 3 और उनसे कहे, 'सुनो ऐ इसाईलियों, तुम आज के दिन अपने दुश्मनों के मुकाबले के लिए मैदान — ए — जंग में आए हो; इसलिए तुम्हारा दिल परेशान न हो, तुम न खौफ करो, न काँपों, न उनसे दहशत खाओ। 4 क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हरे साथ — साथ चलता है, ताकि तुमको बचाने को तुम्हारी तरफ से तुम्हरे दुश्मनों से जंग करो।' 5 फिर फौजी अफसरान लोगों से यूँ कहें कि 'तुम में से जिस किसी ने नया घर बनाया हो और उसे मरम्भसून किया हो तो वह अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह जंग में कत्ल हो और दूसरा शख्स उसे मरम्भसून करे। 6 और जिस किसी ने ताकिस्तान लगाया हो लेकिन अब तक उसका फल इस्तेमाल न किया हो वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और दूसरा आदमी उसका फल खाए। 7 और जिसने किसी 'औत से अपनी मांगी तो कर ली हो लेकिन उसे ब्याह कर नहीं लाया है वह अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह लड़ाई में मारा जाए और दूसरा मर्द उससे ब्याह करे। 8 और फौजी हाकिम लोगों की तरफ मुखातिब हो कर उनसे यह भी कहें कि 'जो शख्स डरोपक और कच्चे दिल का हो वह भी अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि उसकी तरह उसके भाईयों का हैसला भी टूट जाए। 9 और जब फौजी हाकिम यह सब कुछ लोगों से कह चके, तो लशकर के सरदारों को उन पर मुकर्रर कर दें। 10 जब तू किसी शहर से जंग करने को उसके नजदीक पहुँचे, तो पहले उसे सुलह का पैसाम देना। 11 और अगर वह तुझको सुलह का जबाब दे और अपने फाटक तेरे लिए खोल दे, तो वहाँ के सब

बाशिन्दे तेरे बाजगुजार बन कर तेरी खिदमत करें। 12 और अगर वह तुझसे सुलह न करें बल्कि तुझसे लडना चाहें, तो तुम उसका मुहासिरा करना; 13 और जब खुदावन्द तेरा खुदा उसे तेरे कब्जे में कर दे तो वहाँ के हर मर्द को तलवार से कत्ल कर डालना। 14 लेकिन 'औरतों और बाल कच्चों और चौपायों और उस शहर का सब माल और लूट को अपने लिए रख लेना, और तू अपने दुश्मनों की उस लूट को जो खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको दी हो गया। 15 उन सब शहरों का यही हाल करना जो तुझसे बहुत दूर है और इन कौमों के शहर नहीं हैं। 16 लेकिन इन कौमों के शहरों में जिनको खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है, किसी आदमी को जिन्दा न बाकी रखवा। 17 बल्कि तू इनको याँनी हिती और अमोरी और कनाँनी और फरिज्जी और हब्बी और यबूसी कौमों को, जैसा खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको हुक्म दिया है बिलकुल हल्लाक कर देना। 18 ताकि वह तुमको अपने से मक्टह काम करने न सिखाएँ जो उन्होंने अपने माँबदों के लिए किए हैं, और यूँ तम खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ गुनाह करने लगो। 19 जब तू किसी शहर को फतह करने के लिए उससे जंग करे और जमाने तक उसको धेर रहे, तो उसके दरखतों को कुल्हाड़ी से न काट डालना क्यूँकि उनका फल तेरे खने के काम में आएगा इसलिए तू उनको मत काटना। क्यूँकि क्या मैदान का दरखत इसान है कि तू उसको धेर रहे? 20 इसलिए सिर्फ उन्हीं दरखतों को काट कर उड़ा देना जो तेरी समझ में खने के मतलब के न हों, और तू उस शहर के सामने जो तुझसे जंग करता हो बुर्जों को बना लेना जब तक वह सर न हो जाए।

21 अगर उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको कब्जा करने को देता है, किसी मक्तुल की लाश मैदान में पड़ी ही है मिले और यह मालूम न हो कि उसका कातिल कौन है; 2 तो तेरे बुर्जुग और काज़ी निकल कर उस मक्तुल के चारों तरफ के शहरों के फासले को नापें, 3 और जो शहर उस मक्तुल के सब से नजदीक हो, उस शहर के बुर्जुग एक बछिया लैं जिससे कभी कोई काम न लिया गया हो और न जुए में जोती गई हो; 4 और उस शहर के बुर्जुग उस बछिया को बहते पानी की बादी में, जिसमें न हल चला हो और न उसमें कुछ बोया गया हो ले जाएँ, और वहाँ उस बादी में उस बछिया की गर्दन तोड़ दें। 5 तब बनी लाती जो काहिन है नजदीक आयें क्यूँकि खुदावन्द तेरे खुदा ने उनको चून लिया है कि खुदावन्द की खिदमत करें और उसके नाम से बरकत दिया करें, और उन ही के कहने के मुताबिक हर झागड़े और मार पीट के मुक़से का फैसला हुआ करे। 6 फिर इस शहर के सब बुर्जुग जो उस मक्तुल के सब से नजदीक रहने वाले हों, उस बछिया के ऊपर जिसकी गर्दन उस बादी में तोड़ी गई अपने हाथ धोएँ, 7 और यूँ कहें, 'हमारे हाथ से यह खून नहीं हुआ और न यह हमारी आँखों का देखा हुआ है। 8 इसलिए ऐ खुदावन्द, अपनी कौम इसाईल को जिसे तुमें छुड़ाया है मुँआफ कर, और बेगुनाह के खून को अपनी कौम इसाईल के जिम्मे न लगा। तब वह खून उनको मुँआफ कर दिया जाएगा। 9 यूँ तु उस काम को करके जो खुदावन्द के नजदीक दूसर्त है, बेगुनाह के खून की जबाबदेही को अपने ऊपर से दूर — और — दफा' करना। 10 'जब तू अपने दुश्मनों से जंग करने को निकले और खुदावन्द तेरा खुदा उनको तेरे हाथ में कर दे, और तू उनको गुलाम कर लाए, 11 और उन गुलामों में किसी खबूसरूत 'औरत को देख कर तुम उस पर फरेफस्त हो जाओ और उसके बाद तू उसके पास जाकर उसका शौहर होना और वह तेरी बीवी बने। 14 और अगर वह तुझको न भाए तो जहाँ वह चाहे उसको जाने देना, लेकिन स्पष्ट ये की

खातिर उसको हरगिज़ न बेचना और उससे लौड़ी का सा सुलूक न करना, इसलिए कि तुने उसकी हृष्टत ले ली है। 15 'अगर किसी मर्द की दो बीवियाँ हों और एक महबूबा और दूसी गैर महबूबा हो, और महबूबा और गैर महबूबा दोनों से लड़के हों और पहलौढ़ा बेटा गैर महबूबा से हो, 16 तो जब वह अपने बेटों को अपने माल का वारिस करे, तो वह महबूबा के बेटे को गैर महबूबा के बेटे पर जो हक्कीकत में पहलौढ़ा है तर्जी ह देकर पहलौढ़ा न ठहराए। 17 बल्कि वह गैर महबूबा के बेटे को अपने सब माल का दूना हिस्सा दे कर उसे पहलौढ़ा माने, क्यूँकि वह उसकी कूब्बत की शूरूआत है और पहलौढ़े का हक उसी का है। 18 अगर किसी आदमी का जिड़ी और बासी, बेटा हो, जो अपने बाप या माँ की बात न मानता हो और उनके तमचीह करने पर भी उनकी न सुनता हो, 19 तो उसके माँ बाप उसे पकड़ कर और निकाल कर उस शहर के बुजुर्गों के पास उस जगह के फाटक पर ले जाएँ, 20 और वह उसके शहर के बुजुर्गों से 'अर्ज़ करें कि यह हमारा बेटा जिड़ी और बासी है, यह हमारी बात नहीं मानता और उडाऊ और शराबी है। 21 तब उसके शहर के सब लोग उसे संगसार करें कि वह मर जाएँ, यूँ तु ऐसी बुराई को अपने बीच से दूर करना। तब सब इमाईली सुन कर डर जाएँ। 22 और आग किसी ने कोई ऐसा गुनाह किया हो जिससे उसका कल्प वाजिब हो, और तू उसे मारकर दरखत से टॉग दे, 23 तो उसकी लाश रात भर दररक्ष पर लटकी न रहे बल्कि तू उनी दिन उसे दफन कर देना, क्यूँकि जिसे फँसी मिलती है वह खुदा की तरफ से मलाऊन है; ऐसा न हो कि तू उस मूल्क को नापाक कर दे जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको मीरास के तौर पर देता है।

22 तू अपने भाई के बैल या भेड़ को भटकती देख कर उस से मूँह न फेरना, बल्कि जस्त तू उसको अपने भाई के पास पहुँचा देना। 2 और अगर तेरा भाई तेरे नजदीक न रहता हो या तू उससे वाकिफ़ न हो, तो तू उस जानवर को अपने घर ले आना और वह तेरे पास रहे जब तक तेरा भाई उसकी तलाश न करे, तब तू उसे उसको दे देना। 3 तू उसके गधे और उसके कपड़े से भी ऐसा ही करना; गरज़ जो कुछ तेरे भाई से खोया जाएँ और तुझको मिले, तू उससे ऐसा ही करना और मूँह न फेरना। 4 तू अपने भाई का गधा या बैल रास्ते में गिरा हुआ देखकर उससे मूँह न फेरना, बल्कि जस्त उसके उठाने में उसकी मदद करना। 5 'औरत मर्द का लिबास न पहने और न मर्द' 'औरत की पोशाक पहने, क्यूँकि जो ऐसा काम करता है वह खुदावन्द तेरे खुदा के नजदीक मकरस्त है। 6 अगर राह चलते अचानक किसी परिन्दे का घोंसला दररक्ष या ज़मीन पर बच्चों या अंडों के साथ तुझको मिल जाएँ, और माँ बच्चों या अंडों पर बैठी हड़ हो तो तू बच्चों को माँ के साथ न पकड़ लेना; 7 बच्चों को तू ले तो ले लेकिन माँ को जस्त छोड़ देना, ताकि तेरा भला हो और तेरी उम्र दराज हो। 8 जब तू कोई नया घर बनाये तो अपनी छत पर मुण्डेर जस्त लगाना, ऐसा न हो कि कोई आदमी वहाँ से गिरे और तेरी वजह से वह खून तेरे ही घरवालों पर हो। 9 तू अपने ताकिस्तान में दो किस्म के बीज न बोना, ऐसा न हो कि सारा फल यारी जो बीज तुमें बोया और ताकिस्तान की पैदावार दोनों जब्त कर लिए जाएँ। 10 तू बैल और गधे दोनों को एक साथ जोत कर हल न चताना। 11 तू ऊन और सन दोनों की मिलावट का बुना हुआ कपड़ा न पहनना। 12 तू अपने ओढ़ने की चादर के चारों किनारों पर झालर लगाया करना। 13 'अगर कोई मर्द किसी 'औरत को ब्याहे और उसके पास जाएँ, और बाद उसके उससे नफरत करके, 14 शर्मनाक बते उसके हक्क में कहे और उसे बदनाम करने के लिए यह दा'वा करे कि मैंने इस 'औरत से ब्याह किया, और जब मैं उसके पास गया तो मैंने कुँवरेपन के निशान उसमें नहीं पाए। 15 तब उस लड़की का बाप और उसकी माँ उस लड़की के कुँवरेपन के निशानों को उस शहर के फाटक पर बुजुर्गों के पास ले जाएँ, 16 और उस लड़की का बाप बुजुर्गों से कहे कि मैंने अपनी बेटी

इस शख्स को ब्याह दी, लेकिन यह उससे नफरत रखता है; 17 और शर्मनाक बातें उसके हक्क में कहता है, और यह दा'वा करता है कि मैंने तेरी बेटी में कुँवरेपन के निशान नहीं पाए; हालाँकि मेरी बेटी के कुँवरेपन के निशान यह मौजूद है। फिर वह उस चादर को शहर के बुजुर्गों के आगे फैला दें। 18 तब शहर के बुजुर्ग उस शख्स को पकड़ कर उसे कोडे लगाएँ, 19 और उससे चाँदी के सौ मिस्काल जुर्माना लेकर उस लड़की के बाप को दें, इसलिए कि उसने एक इमाईली कुँवारी को बदनाम किया; और वह उसकी बीवी बनी रहे और वह ज़िन्दगी भर उसको तलाक न देने पाए। 20 लेकिन अगर यह बात सच हो कि लड़की में कुँवरेपन के निशान नहीं पाए गए, 21 तो वह उस लड़की को उसके बाप के घर के दरवाजे पर निकाल लाएँ, और उसके शहर के लोग उसे संगसार करें कि वह मर जाएँ; क्यूँकि उसने इमाईल के बीच शरास्त की, कि अपने बाप के घर में फ़ाहिशापन किया। यूँ तु ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' करना। 22 अगर कोई मर्द किसी शौहर बाती 'औरत से जिना करते पकड़ा जाए तो वह दोनों मार डाले जाएँ, यारी वह मर्द भी जिसने उस 'औरत से सुहबत की और वह 'औरत भी, यूँ तु इमाईल में से ऐसी बुराई को दफ़ा' करना। 23 अगर कोई कुँवारी लड़की किसी शख्स से मन्त्रब हो गई हो, और कोई दूसरा आदमी उसे शहर में पाकर उससे सुहबत करे; 24 तो तू उन दोनों को उस शहर के फाटक पर निकाल लाना, और उनको तू संगसार कर देना कि वह मर जाएँ, लड़की को इसलिए कि वह शहर में होते हए न चिल्लाई, और मर्द को इसलिए कि उसने अपने पड़ोसी की बीवी को बेहरमत किया। यूँ तु ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' करना। 25 लेकिन अगर उस आदमी को वही लड़की जिसकी निस्बत हो चुकी हो किसी मैदान या खेत में मिल जाए, और वह आदमी जबरन उससे सुहबत करे, तो सिर्फ़ वह आदमी ही जिसने सुहबत की मार डाला जाएँ; 26 लेकिन उस लड़की से कुछ न करना क्यूँकि लड़की का ऐसा गुनाह नहीं जिससे वह कल्प के लायक ठहरे, इसलिए कि यह बात ऐसी है जैसे कोई अपने पड़ोसी पर हमला करे और उसे मार डाले। 27 क्यूँकि वह लड़की उसे मैदान में मिली और वह मन्त्रब लड़की चिल्लाई भी लेकिन वहाँ कोई ऐसा न था जो उसे छुड़ाता। 28 अगर किसी आदमी को कोई कुँवारी लड़की मिल जाए जिसकी निस्बत न हुई हो, और वह उसे पकड़कर उससे सुहबत करे और दोनों पकड़े जाएँ, 29 तो वह मर्द जिसने उससे सुहबत की हो, लड़की के बाप को चाँदी के पचास मिस्काल दे और वह लड़की उसकी बीवी बने; क्यूँकि उसने उसे बेहरमत किया, और वह उसे अपनी ज़िन्दगी भर तलाक न देने पाए। 30 कोई शख्स अपने बाप की बीवी से ब्याह न करे और अपने बाप के दामन को न खोले।

23 जिसके खुसिये कुचले गए हों या आलत काट डाली गई हो, वह खुदावन्द की जमा 'अत मैं आने न पाए। 2 कोई हरामजादा खुदावन्द की जमा 'अत मैं दाखिल न हो, दसवी नसल तक उसकी नसल में से कोई खुदावन्द की जमा 'अत मैं आने न पाए। 3 कोई 'अमोनी या मोआबी खुदावन्द की जमा' अत मैं दाखिल न हो, दसवी नसल तक उनकी नसल में से कोई खुदावन्द की जमा 'अत मैं कीमी आने न पाए; 4 इसलिए कि जब तुम मिस्त्र से निकल कर आ रहे थे तो उन्होंने रोटी और पानी लेकर रसत में तुहारा इस्तकबाल नहीं किया, बल्कि ब'ओर के बेटे बल'आप को मसोपतामिया के फ़तोरे से उजर तर पर बुलवाया ताकि वह तुझ पर ला'नत करे। 5 लेकिन खुदावन्द तेरे खुदा ने बल'आप की न सुनी, बल्कि खुदावन्द तेरे खुदा ने तेरे लिए उस ला'नत को बरकत से बदल दिया इसलिए कि खुदावन्द तेरे खुदा को तुझसे मुहब्बत थी। 6 तू अपनी ज़िन्दगी भर कभी उनकी सलामती या स'आदत की चाहत न रखना। 7 तू किसी आदोमी से नफरत न रखना, क्यूँकि वह तेरा भाई है; तू किसी मिस्त्री से

भी नफरत न रखना, क्यैंकि तू उसके मुल्क में परदेसी हो कर रहा था। 8 उनकी तीसरी नसल के जो लड़के पैदा हों वह खुदावन्द की जमा' अत में आने पाएँ। 9 जब तू अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए दल बॉध कर निकले तो अपने को हर बुरी चीज से बचाए रखना। 10 अगर तुम्हारे बीच कोई ऐसा आदमी हो जो गत को एहतिलाम की वजह से नापाक हो गया हो, तो वह खेमागाह से बाहर निकल जाए और खेमागाह के अन्दर न आएँ; 11 लेकिन जब शाम होने लगे तो वह पानी से गुस्त करे, और जब आफताब गुस्त हो जाए तो खेमागाह में आए। 12 और खेमागाह के बाहर तू कोई जगह ऐसी ठहरा देना, जहाँ त अपनी हाजत के लिए जा सके; 13 और अपने साथ अपने हथियारों में एक मेरेख भी रखना, ताकि जब बाहर तुझे हाजत के लिए बैठना हो तो उससे जगह खोद लिया करे और लौटते बत्त अपने फुजले को ढाँक दिया करे। 14 इसलिए कि खुदावन्द तेरा खुदा ने जब तुम मिस्त्र से निकलकर आ रहे थे, तो रास्ते में मरियम से क्या किया। 15 जब तू अपने भाई को कुछ कर्ज दे, तो गिरवी की चीज लेने को उसके घर में न घूमना। 11 तू बाहर ही खड़े रहना, और वह शरब्स जिसे तू कर्ज दे खुद गिरवी की चीज बाहर तेरे पास लाए। 12 और अगर वह शरब्स गरीब हो, तो उसकी गरीबी की चीज को पास रखकर सो न जाना; 13 बल्कि जब आफताब गुस्त होने लगे, तो उसकी चीज उसे लौटा देना ताकि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सोए और तुझको दुआ दे; और यह बात तेरे लिए खुदावन्द तेरे खुदा के सामने रास्तबाजी ठहरेगी। 14 तू अपने गरीब और मोहताज खादिम पर जुन्म न करना, चाहे वह तेरे भाईयों में से हो चाहे उन परदेसियों में से जो तेरे मुल्क के अन्दर तेरी बसियों में रहते हों। 15 तू उसी दिन इससे पहले कि आफताब गुस्त हो उसकी मजदूरी उसे देना, क्यैंकि वह गरीब है और उसका दिल मजदूरी में लगा रहता है; ऐसा न हो कि वह खुदावन्द से तेरे खिलाफ फरियाद करे और यह तेरे हक में जुनाह ठहरे। 16 बेटों के बदले बाप मारे न जाएँ न बाप के बदले बेटे मारे जाएँ। हर एक अपने ही जुनाह की बजह से मारा जाए। 17 तू परदेसी या यतीम के मुकदमे को न बिगाड़ना, और न बेवा के कपड़े को गिरवी रखना; 18 बल्कि याद रखना कि तू मिस्त्र में गुलाम था, और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको वहाँ से छुड़ाया; इसलिए मैं तुझको इस काम के करने का हृक्षम देता हूँ। 19 जब तू अपने खेत की फसल काटे और कोई पूला खेत में भूल से रह जाए, तो उसके लेने को वापस न जाना, वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे, ताकि खुदावन्द तेरा खुदा तेरे सब कामों में जिनको तु हाथ लगाये तुझको बरकत बरखो। 20 जब तू अपने जैतन के दरखत को झाड़े, तो उसके बाद उसकी शाखों को दोबारा न झाड़ना; बल्कि वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे। 21 जब तू अपने ताकिस्तान के अंगरों को जमा' करे, तो उसके बाद उसका दाना — दाना न तोड़ लेना; वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे। 22 और याद रखना कि तू मुल्क — ए — मिस्त्र में गुलाम था; इसी लिए मैं तुझको इस काम के करने का हृक्षम देता हूँ।

24 अगर कोई मर्द किसी 'औरत से ब्याह करे और पीछे उसमे कोई ऐसी बेहद बात पाए जिससे उस 'औरत की तरफ उसकी उनसियत न रहे, तो वह उसका तलाक नामा लिख कर उसके हवाले करे और उसे अपने घर से निकाल दे। 2 और जब वह उसके घर से निकल जाए, तो वह दूरे मर्द की हो सकती है। 3 लेकिन अगर दूसरा शौहर भी उससे नाशुश्वर रहे, और उसका तलाकनामा लिखकर उसके हवाले करे और उसे अपने घर से निकाल दे या वह दूसरा शौहर जिससे उससे ब्याह किया हो मर जाए, 4 तो उसका पहला शौहर जिसने उसे निकाल दिया था उस 'औरत के नापाक हो जाने के बाद फिर उससे ब्याह न करने पाए, क्यैंकि ऐसा काम खुदावन्द के नजदीक मकस्त है। इसलिए तू उस मुल्क को जिसे खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको देता है, गुनाहगार न बनाना। 5 जब किसी ने कोई नई 'औरत ब्याही हो, तो वह जंग के लिए न जाए और न कोई काम उसके सुर्पुर्द हो। वह साल भर तक अपने ही घर

में आजाद रह कर अपनी ब्याही हुई बीवी को खुश रखवे। 6 कोई शरब्स चक्की की या उसके ऊपर के पाट को गिरवी न रखवे, क्यैंकि यह तो जैसे आदमी की जान को गिरवी रखना है। 7 अगर कोई शरब्स अपने इस्माईली भाइयों में से किसी को गुलाम बनाए या बेचने की नियत से चुराता हुआ पकड़ा जाए, तो वह चोर मार डाला जाए। यैं तू ऐसी बुराई अपने बीच से दफा' करना। 8 तू कोढ़ी की बीमारी की तरफ से बोशियार रहना, और लाली कीहानों की सब बातों को जो वह तुमको बताएँ जानकिशानी से माना और उनके मुताबिक 'अमल करना; जैसा मैंने उनको हक्म किया है वैसा ही ध्यान देकर करना। 9 तू याद रखना कि खुदावन्द तेरे खुदा ने जब तुम मिस्त्र से निकलकर आ रहे थे, तो रास्ते में मरियम से क्या किया। 10 जब तू अपने भाई को कुछ कर्ज दे, तो गिरवी की चीज लेने को उसके घर में न घूमना। 11 तू बाहर ही खड़े रहना, और वह शरब्स जिसे तू कर्ज दे खुद गिरवी की चीज बाहर तेरे पास लाए। 12 और अगर वह शरब्स गरीब हो, तो उसकी गरीबी की चीज को पास रखकर सो न जाना; 13 बल्कि जब आफताब गुस्त होने लगे, तो उसकी चीज उसे लौटा देना ताकि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सोए और तुझको दुआ दे; और यह बात तेरे लिए खुदावन्द तेरे खुदा के सामने रास्तबाजी ठहरेगी। 14 तू अपने गरीब और मोहताज खादिम पर जुन्म न करना, चाहे वह तेरे भाईयों में से हो चाहे उन परदेसियों में से जो तेरे मुल्क के अन्दर तेरी बसियों में रहते हों। 15 तू उसी दिन इससे पहले कि आफताब गुस्त हो उसकी मजदूरी उसे देना, क्यैंकि वह गरीब है और उसका दिल मजदूरी में लगा रहता है; ऐसा न हो कि वह खुदावन्द से तेरे खिलाफ फरियाद करे और यह तेरे हक में जुनाह ठहरे। 16 बेटों के बदले बाप मारे न जाएँ न बाप के बदले बेटे मारे जाएँ। हर एक अपने ही जुनाह की बजह से मारा जाए। 17 तू परदेसी या यतीम के मुकदमे को न बिगाड़ना, और न बेवा के कपड़े को गिरवी रखना; 18 बल्कि याद रखना कि तू मिस्त्र में गुलाम था, और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको वहाँ से छुड़ाया; इसलिए मैं तुझको इस काम के करने का हृक्षम देता हूँ। 19 जब तू अपने खेत की फसल काटे और बेटों के बदले बेटे मारे जाएँ। 20 जब तू अपने ताकिस्तान के अंगरों को जमा' करे, तो उसके बाद उसका दाना — दाना न तोड़ लेना; वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे। 21 जब तू अपने ताकिस्तान के अंगरों को जमा' करे, तो उसके बाद उसका दाना — दाना न तोड़ लेना; वह परदेसी और यतीम और बेवा के लिए रहे। 22 और याद रखना कि तू मुल्क — ए — मिस्त्र में गुलाम था; इसी लिए मैं तुझको इस काम के करने का हृक्षम देता हूँ।

25 अगर लोगों में किसी तरह का झगड़ा हो और वह 'अदालत में आएँ ताकि काजी उनका इन्साफ करें, तो वह सादिक को बेगुनाह ठहराएँ और शरीर पर फतवा दें। 2 और अगर वह शरीर पिटने के लायक निकले, तो काजी उसे जमीन पर लिटवाकर अपनी आंखों के सामने उसकी शरारत के मुताबिक उसे गिन गिनकर कोडे लगवाए। 3 वह उसे चालीस कोडे लगाए, इससे ज्यादा न मारें; ऐसा न हो कि इससे ज्यादा कोडे लगाने से तेरा भाई तुझको हकीर मालम देने लगे। 4 तू दाँहें मैं चलते हुए बैल की मूँह न बाँधना। 5 अगर कोई भाई मिलकर साथ रहते हों और एक उनमें से बे — औलाद मर जाएँ, तो उस मरहम की बीवी किसी अजनबी से ब्याह न करें; बल्कि उसके शौहर के भाई उसके पास जाकर उसे अपनी बीवी बना ले, और शौहर के भाई का जो हक है वह उसके साथ अदा करें। 6 और उस 'औरत के जो पहला बच्चा हो वह इस आदमी के मरहम भाई के नाम का कहलाएँ, ताकि उसका नाम इस्माईल में से

मिट न जाए। 7 और अगर वह आदमी अपनी भावज से ब्याह करना न चाहे, तो उसकी भावज फाटक पर बुजुर्गों के पास जाए और कहे, 'मेरा देवर इसाईल में अपने भाई का नाम बहाल रखने से इनकार करता है, और मेरे साथ देवर का हक अदा करना नहीं चाहता। 8 तब उसके शहर के बुजुर्ग उस आदमी को बुलवाकर उसे समझाएँ, और अगर वह अपनी बात पर काईम रहे और कहे, 'मुझको उससे ब्याह करना मंजूर नहीं। 9 तो उसकी भावज बुजुर्गों के सामने उसके पास जाकर उसके पावों से जूती उतारे, और उसके मुँह पर थक दे और यह कहे, 'जो आदमी अपने भाई का घर आबाद न करे उससे ऐसा ही किया जाएगा। 10 तब इसाईलियों में उसका नाम यह पड़ जाएगा, कि यह उस शख्स का घर है जिसकी जूती उतारी गई थी। 11 जब दो शख्स आपस में लड़ते हों और एक की बीबी पास जाकर अपने शौहर को उस आदमी के हाथ से छुड़ने के लिए जो उसे मारता हो अपना हाथ बढ़ाए और उसकी शर्मगाह को पकड़ ले, 12 तो तु उसका हाथ काट डालना और जरा तरस न खाना। 13 तु अपने थैले में तरह — तरह के छोटे और बड़े तैल बाट न रखना। 14 तु अपने घर में तरह — तरह के छोटे और बड़े पैमाना भी न रखना। 15 तेरा तौल बाट पूरा और ठीक और तेरा पैमाना भी पूरा और ठीक हो, ताकि उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है तेरी 'उम्र दराज हो। 16 इसलिए कि वह सब जो ऐसे ऐसे फ़ेरेब के काम करते हैं, खुदावन्द तेरे खुदा के नजदीक मकस्त हैं। 17 यद रखना कि जब तुम मिस से निकलकर आ रहे थे तो रास्ते में 'अमालीकियों' ने तेरे साथ क्या किया। 18 क्यूंकि वह रास्ते में तेरे सामने आए और जबकि तू थका मँदा था, तो भी उन्होंने उनको जो कमज़ोर और सब से पीछे थे मारा, और उनको खुदा का खोफ़ न आया। 19 इसलिए जब खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में, जिसे खुदावन्द तेरा खुदा मीरास के तौर पर तुझको कब्जा करने को देता है, तेरे सब दुश्मनों से जो आस — पास है तुझको राहत बख्तों, तो 'अमालीकियों' के नाम — ओ — निशान को सफह — ए — रोज़गार से मिटा देना; त् इस बात को न भूलना।

26 और जब तु उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको मीरास के तौर पर देता है पहेंचे, और उस पर कब्जा कर के उस में बस जाये; 2 तब जो मुल्क खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है उसकी जमीन में जो किस्म — किस्म की चीज़े तु लगाये, उन सब के पहले फल को एक टोकरे में रख कर उस जगह ले जाना जिसे खुदावन्द तेरा खुदा अपने नाम के घर के लिए चुने। 3 और उन दिनों के काहिने के पास जाकर उससे कहना, 'आज के दिन मैं खुदावन्द तेरे खुदा के सामने इकरार करता हूँ, कि मैं उस मुल्क में जिसे हमको देने की कसम खुदावन्द ने हमारे बाप — दादा से खाई थी आ गया हूँ। 4 तब काहिन तेरे हाथ से उस टोकरे को लेकर खुदावन्द तेरे खुदा के मज़बह के आगे रख देव। 5 फिर त् खुदावन्द अपने खुदा के सामने थूँकहा, 'मेरा बाप एक असामी था जो मरने पर था, वह मिस में जाकर वहाँ रहा और उसके लोग थोड़े से थे, और वहीं वह एक बड़ी और ताकतवर और ज्यादा तादादावली कीम बन गयी। 6 फिर मिसियों ने हमसे लोग सुलक किया और हमको दुख दिया और हमसे साज्हा — खिदमत ली। 7 और हमने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के सामने फरियाद की, तो खुदावन्द ने हमारी फरियाद सुनी और हमारी मुसीबत और मेहनत और मज़लमी देखी। 8 और खुदावन्द कवी हाथ और बलन्द बाजू से बड़ी हैबत और निशान और मोजिजों के साथ हमको मिस से निकाल लाया। 9 और हमको इस जगह लाकर उसने यह मुल्क जिसमें दूध और शहद बहता है हमको दिया है। 10 इसलिए अब ऐ खुदावन्द, देख, जो जमीन तने मुझको दी है, उसका पहला फल मैं तेरे पास ले आया हूँ। फिर त् उसे खुदावन्द अपने खुदा के आगे रख देना और खुदावन्द अपने खुदा को सिज्दा करना। 11 और तू और लाली और जो

मुसाफिर तेरे बीच रहते हों, सब के सब मिल कर उन सब नेमतों के स्त्रिए, जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको और तेरे घराने की बख्ताह हो खुशी करना। 12 और जब त् तीसरे साल जो दहेकी का साल है अपने सारे माल की दहेकी निकाल चुके, तो उसे लाली और मुसाफिर और यतीम और बेवा को देना ताकि वह उसे तेरी बस्तियों में खाएँ और सेर हों। 13 फिर त् खुदावन्द अपने खुदा के आगे थूँकहा, 'मैंने तेरे हक्मों के मुताबिक जो तूने मुझे दिए मुक़द्दस चीजों को अपने घर से निकाला और उनको लावियों और मुसाफिरों और यतीमों और बेवाओं को दे भी दिया: और मैंने तेरे किसी हक्म को नहीं ठाला और न उनको भला। 14 और मैंने अपने मातम के बक्त उन चीजों में से कुछ नहीं खाया, और नापाक हालत में उनको अलग नहीं किया, और न उनमें से कुछ मुर्दाएँ के लिए दिया। मैंने खुदावन्द अपने खुदा की बात मानी है, और जो कुछ तूने हक्म दिया उसी के मुताबिक 'अमल किया। 15 आसमान पर से जो तेरा मुक़द्दस घर है नजर कर और अपनी कौम इसाईल को और उस मुल्क को बरकत दे, जिस मुल्क में दूध और शहद बहता है और जिसको तूने उस कसम के मुताबिक जो तूने हमारे बाप दादा से खाइ हमको 'अता किया है। 16 खुदावन्द तेरा खुदा, आज तुझको इन आईन और अहकाम के मानने का हक्म देता है; इसलिए त् अपने सारे दिल और सारी जान से इज़को मानना और इन पर 'अमल करना। 17 तूने आज के दिन इकरार किया है कि खुदावन्द तेरा खुदा है, और त् उसकी राहों पर चलेगा, और उसके आईन और फरमान और अहकाम को मानेगा, और उसकी बात सुनेगा। 18 और खुदावन्द ने भी आज के दिन तुझको, जैसा उसने वादा किया था, अपनी खास कौम करार दिया है ताकि तू उसके सब हक्मों को माने; 19 और वह सब कौमों से, जिनको उसने पैदा किया है, तारीफ और नाम और 'इज़जत में तुझको मुमाताज़ करे; और त् उसके कहने के मुताबिक खुदावन्द अपने खुदा की पाक कौम बन जाये।'

27 फिर मूसा ने बनी — इसाईल के बुजुर्गों के साथ हो कर लोगों से कहा कि "जितने हक्म आज के दिन मैं तुमको देता हूँ उन सब को मानना। 2 और जिस दिन तुम यरदन पार हो कर उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है पहेंचो, तो त् बड़े — बड़े पर्थर खड़े करके उन पर चूने की अस्तरकारी करना; 3 और पार हो जाने के बाद इस शरी' अत की सब बातें उन पर लिखना, ताकि उस वादे के मुताबिक जो खुदावन्द तेरे बाप — दादा के खुदा ने तुझ से किया, उस मुल्क में जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है याही उस मुल्क में जहाँ दूध और शहद बहता है त् पहुँच जाये। 4 इसलिए तुम यरदन के पार हो कर उन पत्थरों को जिनके बारे में मैं तुमको आज के दिन हक्म देता हूँ, कोह — ए — ऐबाल पर नस्क करके उन पर चूने की अस्तरकारी करना। 5 और वहीं त् खुदावन्द अपने खुदा के लिए पत्थरों का एक मज़बह बनाना, और लोहे का कोई ओजार उन पर न लगाना। 6 और त् खुदावन्द अपने खुदा का मज़बह बे तराशे पत्थरों से बनाना, और उस पर खुदावन्द अपने खुदा के लिए सोखती कुर्बानियाँ पेश करना। 7 और वहीं सलामती की कुर्बानियाँ आदा करना और उनको खाना और खुदावन्द अपने खुदा के सामने खुशी मानना। 8 और उन पत्थरों पर इस शरी' अत की सब बातें साफ़ — साफ़ लिखना।" 9 फिर मूसा और लाली काहिनों ने सब बनी — इसाईल से कहा, ऐ इसाईल, खामोश हो जा और सुन, तू आज के दिन खुदावन्द अपने खुदा की कौम बन गया है। 10 इसलिए त् खुदावन्द अपने खुदा की बात सुनना और उसके सब आईन और अहकाम पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ 'अमल करना।' 11 और मूसा ने उसी दिन लोगों से ताकीद करके कहा कि; 12 "जब तुम यरदन पार हो जाओ, तो कोह — ए — गरिज़ीम पर शमौन, और लाली, और यहदाह, और इश्कार, और यसुफ़, और बिनयमीन खड़े हों और लोगों को

बरकत सुनाएँ। 13 और स्विन, और जड़, और आशर, और ज़बूलून, और दान, और नफताली कोहे — ए — 'ऐबाल पर खड़े होकर ला'नत सुनाएँ। 14 और लावी बलन्द आवाज से सब इसाईली आदमियों से कहें कि: 15 'ला'नत उस आदमी पर जो कारीगरी की सन' अत की तरह खोदी हुई या ढाली हुई मूरत बना कर जो खुदावन्द के नज़दीक मकरहू है, उसको किसी पोशीदा जगह में नस्ब करे। और सब लोग जवाब दें और कहें, 'आमीन। 16 'ला'नत उस पर जो अपने बाप या माँ को हँकीर जाने। और सब लोग कहें, 'आमीन। 17 'ला'नत उस पर जो अपने पडोसी की हट के निशान को हटाये। और सब लोग कहें, 'आमीन। 18 'ला'नत उस पर जो अन्ये को रासते से गुमाह करे। और सब लोग कहें, 'आमीन। 19 'ला'नत उस पर जो परदेसी और यतीम और बेबा के मुक़दमों को बिगाड़े।' 19 और सब लोग कहें, 'आमीन। 20 'ला'नत उस पर जो अपने बाप की बीवी से मुबाश्त करे, कर्हूंकि वह अपने बाप के दमान को बेपर्दी करता है। और सब लोग कहें, 'आमीन। 21 'ला'नत उस पर जो किसी चौपाए के साथ जिमा' अ करे। और सब लोग कहें, 'आमीन। 22 'ला'नत उस पर जो अपनी बहन से मुबाश्त करे, चाहे वह उसके बाप की बेटी हो चाहे माँ की। और सब लोग कहें, 'आमीन। 23 'ला'नत उस पर जो अपनी सास से मुबाश्त करे। और सब लोग कहें, 'आमीन। 24 'ला'नत उस पर जो अपने पडोसी को पोशीदीरी में मारे। और सब लोग कहें, 'आमीन। 25 'ला'नत उस पर जो बे — गुमाह को कत्ल करने के लिए इनाम ले। और सब लोग कहें, 'आमीन। 26 'ला'नत उस पर जो इस शरी' अत की बातों पर 'अमल करने के लिए उन पर क़ाईम न रहे।' और सब लोग कहें, 'आमीन।

28 और अगर तू खुदावन्द अपने खुदा की बात को जांफिशानी से मान कर

उसके इन सब हुक्मों पर, जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, एहतियात से 'अमल करे तो खुदावन्द तेरा खुदा दुनिया की सब कौमों से ज्यादा तुझको सरफराज करेगा। 2 और अगर तू खुदावन्द अपने खुदा की बात सुने तो यह सब बरकतें तुझ पर नाजिल होंगी और तुझको मिलेंगी। 3 शहर में भी तू मुबारक होगा, और खेत में भी मुबारक होगा। 4 तेरी औलाद, और तेरी जमीन की पैदावार, और तेरे चौपायों के बच्चे, या'नी गाय — बैल की बढ़ती और तेरी भेड़ — बकरियों के बच्चे मुबारक होंगे। 5 तेरा टोकरा और तेरी कठौती दोनों मुबारक होंगे। 6 और तू अन्दर आते बक्त मुबारक होगा, और बाहर जाते बक्त भी मुबारक होगा। 7 खुदावन्द तेरे दुश्मनों को जो तुझ पर हमला करें, तेरे सामने शिक्षत दिलाएणा; वह तेरे मुकाबले को तो एक ही रास्ते से आयें, लेकिन सात सात रास्तों से हो कर तेरे आगे से भागें। 8 खुदावन्द तेरे अम्बारखानों में और सब कामों में जिनमें तू हाथ लगाये बरकत का हुक्म देगा, और खुदावन्द तेरा खुदा उस मुल्क में जिसे वह तुझको देता है तुझको बरकत बरखेगा। 9 अगर तू खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को माने और उसकी राहों पर चले, तो खुदावन्द अपनी उय कसम के मुताबिक जो उसने तुझ से खाई तुझको अपनी पाक कौम बना कर काईम रखेगा। 10 और दुनिया की सब कौमें यह देखकर कि तू खुदावन्द के नाम से कहलाता है, तुझ से डर जाएँगी। 11 और जिस मुल्क को तुझको देने की कसम खुदावन्द ने तेरे बाप — दादा से खाई थी, उसमें खुदावन्द तेरी औलाद को और तेरे चौपायों के बच्चों को और तेरी जमीन की पैदावार को खूब बढ़ा कर तुझको बढ़ाएगा। 12 खुदावन्द आसमान को जो उसका अच्छा खजाना है तेरे लिए खोल देगा कि तेरे मुल्क में बक्त पर मैं बरसाएण, और वह तेरे सब कामों में जिनमें तू हाथ लगाए बरकत देगा; और तू बहुत सी कौमों को कर्ज देगा, लेकिन खुद कर्ज नहीं लेगा। 13 और खुदावन्द तुझको दुम नहीं बल्कि सिर ठहराएगा, और तू पस्त नहीं बल्कि सरफराज ही रहेगा; बर्ती कि तू खुदावन्द अपने खुदा के हुक्मों को, जो मैं तुझको आज के दिन देता हूँ, सुनो

और एहतियात से उन पर 'अमल करो, 14 और जिन बातों का मैं आज के दिन तुझको हुक्म देता हूँ, उनमें से किसी से दहने या बाँह हाथ मुट कर और मार्मूदों की पैरवी और इबादत न करे। 15 'लेकिन अगर तू ऐसा न करे, कि खुदावन्द अपने खुदा की बात सुनकर उसके सब अहकाम और आईन पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ एहतियात से 'अमल करे, तो यह सब ला'नतें तुझ पर नाजिल होंगी और तुझको लगेंगी। 16 शहर में भी तू ला'नती होगा, और खेत में भी ला'नती होगा। 17 तेरा टोकरा और तेरी कठौती दोनों ला'नती ठहरेंगे। 18 तेरी औलाद और तेरी जमीन की पैदावार, और तेरे गाय — बैल की बढ़ती और तेरी भेड़ — बकरियों के बच्चे ला'नती होंगे। 19 तू अन्दर आते ला'नती ठरेगा, और बाहर जाते भी ला'नती ठहरेगा। 20 खुदावन्द उन सब कामों में जिनको तू हाथ लगाए, ला'नत और इज्तिराब और फटकार को तुझ पर नाजिल करेगा जब तक कि तू हलाक होकर जल्द बर्बाद न हो जाए, यह तेरी उन बद' आमालियों की बजह से होगा जिनको करने की बजह से तू मझको छोड़ देगा। 21 खुदावन्द ऐसा करेगा कि बबा तुझ से लिपटी रहेगी, जब तक कि वह तुझको उस मुल्क से जिस पर कब्जा करने को तू वहाँ जा रहा है फना न कर दे। 22 खुदावन्द तुझको तप — ए — दिक और बुखार और सोजिश और शर्दीद हरात और तलवार और बाद — ए — समूम और गेस्टी से मरेगा, और यह तेरे पीछे पड़े रहेंगे जब तक कि तू फना न हो जाये। 23 और आसमान जो तेरे सिर पर है पीतल का, और जमीन जो तेरे नीचे है लोहे की हो जाएगी। 24 खुदावन्द मैं हें के बदले तेरी जमीन पर खाक और धूल बरसाएगा; यह आसमान से तुझ पर पड़ती ही रहेगी, जब तक कि तू हलाक न हो जाये। 25 'खुदावन्द तुझको तेरे दुश्मनों के आगे शिक्षत दिलाएणा; तू उनके मुकाबले के लिए तो एक ही रास्ते से जाएगा, और उनके सामने से सात — सात रास्तों से होकर भागेगा, और दुनिया की तमाम सलतनतों में तू मारा — मारा फिरेगा। 26 और तेरी लाश हवा के परिन्दों और जमीन के दरिन्दों की खुराक होगी, और कोई उनको हंका कर भगाने को भी न होगा। 27 खुदावन्द तुझको मिस के फोटों, और बवासीर, और खुजली, और खारिश में ऐसा मुब्लिला करेगा कि तू कभी अच्छा भी नहीं होने का। 28 खुदावन्द तुझको जूनन और नावीनाई और दिल की घबराहट में भी मुब्लिला कर देगा। 29 और जैसे अंधेरे में टोलता है वैसे ही तू दोपहर दिन को टोलता फिरेगा और तू अपने धन्धों में नाकाम रहेगा; और तुझ पर हमेशा जुल्म ही होगा, और तू लुटाही ही रहेगा और कोई न होगा जो तुझको बचाए। 30 'और तेरे मैंगनी तो तू करेगा लेकिन दूसरा उससे मुबाश्त करेगा, तू धूर बनाएगा लेकिन उसमें बसने न पाएगा, तू ताकिस्तान लगाएगा लेकिन उसका फल इस्टेमाल न करेगा। 31 तेरा बैल तेरी अँखों के सामने जबह किया जाएगा लेकिन तू उसका गोशत खाने न पाएगा, तेरा गधा तुझ से जबरन छीन लिया जाएगा और तुझको फिर न मिलेगा, तेरी भेड़े तेरे दुश्मनों के हाथ लगेंगी और कोई न होगा जो तुझको बचाए। 32 तेरे बेटे और बेटियाँ दूसरी कौम को दी जाएँगी, और तेरी आँखें देखेंगी और सारे दिन उनके लिए तरसते — तरसते रह जाएँगी; और तेरा कुछ बस नहीं चलेगा। 33 तेरी जमीन की पैदावार और तेरी सारी कमाई को एक ऐसी कौम खाएगी जिससे तू वाकिफ नहीं; और तू हमेशा मजल्लम और दबा ही रहेगा, 34 यहाँ तक कि इन बातों को अपनी आँखों से देख देखकर दीवाना हो जाएगा। 35 खुदावन्द तेरे घृतों और टांगों में ऐसे बुरे फोड़े पैदा करेगा, कि उनसे तू पाँव के तलवे से लेकर सिर की चाँद तक शिक्का न पा सकेगा। 36 खुदावन्द तुझको और तेरे बादशाह को, जिसे तू अपने ऊपर मुकर्रर करेगा, एक ऐसी कौम के बीच ले जाएगा जिसे तू और तेरे बाप — दादा जानते भी नहीं; और वहाँ तू और मार्मूदों की जो महज लकड़ी और पत्थर है इबादत करेगे। 37 और उन सब कौमों में, जहाँ — जहाँ खुदावन्द

तुझको पहुँचाएगा, तू बाइस — ए — हैरत और जर्ब — उल — मसल और अंगूष्ठ नुमा बनेगा। 38 तू खेत में बहुत सा बीज ले जाएगा लोकन थोड़ा सा जमा' करेगा, क्यूँकि टिटी उसे चाट लेंगी। 39 तू ताकिस्तान लगाएगा और उन पर मेहनत करेगा, लेकिन न तो मय पीने और न अंगूष्ठ जमा' करने पायेगा, क्यूँकि उनको कीड़े खा जाएंगे। 40 तेरी सब हदों में जैतून के दरखत लगे होंगे, लेकिन तू उनका तेल नहीं लगाने पाएगा; क्यूँकि तेरे जैतून के दरखतों का फल झड़ जाया करेगा। 41 तेरे बेटे और बेटियाँ पैदा होंगी लेकिन वह सब तेरे न रहेंगे, क्यूँकि वह शुलाम हो कर चले जाएंगे। 42 तेरे सब दरखतों और तेरी सब जमीन की पैदावार पर टिटीयाँ कब्जा कर लेंगी। 43 परदेसी जो तेरे बीच होगा वह तुझसे बढ़ता और सरफ़राज होता जाएगा, लेकिन तू पूस्त ही पूस्त होता जाएगा। 44 वह तुझको कर्ज देगा, लेकिन तू उसे कर्ज न दे सकेगा; वह सिर होगा और तू दम ठहरेगा। 45 और चूँकि तू खुदावन्द अपने खुदा के उन हुक्मों और आईन पर जिनको उसने तुझको दिया है, 'अमल करने के लिए उसकी बात नहीं सुनेगी; इसलिए यह सब लान्तें तुझ पर आँएगी और तेरे पीछे पड़ी होंगी और तुझको लगेंगी, जब तक तेरा नास न हो जाए। 46 और वह तुझ पर और तेरी औलाद पर हमेशा निशान और अचम्पे के तैर पर रहेंगी। 47 और चूँकि तू बाबजूद सब चीजों की फिरावानी के फ़रहत और खुशदिली से खुदावन्द अपने खुदा की इबादत नहीं करेगा। 48 इसलिए भका और प्यासा और नंगा और सब चीजों का मुहताज होकर तू अपने दुश्मनों की खिदमत करेगा जिनको खुदावन्द तेरे बरखिलाफ़ भेजेगा; और गरीम तेरी गरदन पर लोहे का जुआ रखवे रहेगा, जब तक वह तेरा नास न कर दे। 49 खुदावन्द दूर से बल्कि जमीन के किनारे से एक कौम को तुझ पर चढ़ा लाएगा जैसे 'उकाब टूट कर आता है, उस कौम की ज़बान को तू नहीं समझेगा'; 50 उस कौम के लोग युशंश होंगे, जो न बूढ़ों का लिहाज करेंगे न जवानों पर तरस खाएँगे। 51 और वह तेरे चौपायाएँ के बच्चों और तेरी जमीन की पैदावार को खाते रहेंगे, जब तक तेरा नास न हो जाए और वह तेरे लिए अनाज, या मय, या तेल, या गाय — बैल की बढ़ती, या तेरी भेड़ — बकरियों के बच्चे कुछ नहीं छोड़ेंगे, जब तक वह तुझको फना न कर दे। 52 और वह तेरे तमाम मुल्क में तेरा धिराव तेरी ही बस्तियों में किए रहेंगे; जब तक तेरी ऊँची — ऊँची फसीलियों जिन पर तेरा भरोसा होगा, गिर न जाएँ। तेरा धिराव वह तेरी ही उस मुल्क की सब बस्तियों में करेंगे, जिसे खुदावन्द तेरा खुदा तुझको देता है। 53 तब उस धिराव के मौके' पर और उस आड़े वक्त में तू अपने दुश्मनों से तंग आकर अपने ही जिस्म के पहले फल को, यानी अपने ही बेटों और बेटियों का गोशत जिनको खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको 'अता किया होगा खायेगा। 54 वह शरक्स जो तुम में नाज़ुक मिजाज और नाज़ुक बदन होगा, उसकी भी अपने भाई और अपनी हमआगोश बीची और अपने बाकी मांदा बच्चों की तरफ बुरी नज़र होगी; 55 यहाँ तक कि वह इसमें से किसी को भी अपने ही बच्चों के गोशत में से, जिनको वह खुद खाएगा कुछ नहीं देगा, क्यूँकि उस धिराव के मौके' पर और उस आड़े वक्त में जब तेरे दुश्मन तुझको तेरी ही सब बस्तियों में तंग कर मारेंगे, तो उसके पास और कुछ बाकी न रहेगा। 56 वह 'अौर भी जो तुम्हारे बीच ऐसी नाज़ुक मिजाज और नाज़ुक बदन होगी कि नमी — ओ — नज़ाकत की बजह से अपने पाँव का तलवा भी जमीन से लगाने की ज़रूर अत न करती हो, उसकी भी अपने पहल के शैहर और अपने ही बेटे और बेटी, 57 और अपने ही नौजाद बच्चे की तरफ जो उसकी रानों के बीच से निकला हो, बल्कि अपने सब लड़के बालों की तरफ जिनको वह जनेगी बुरी नज़र होगी; क्यूँकि वह तमाम चीजों की किल्लत की बजह से उन्हीं को छुप — छुप कर खाएगी, जब उस धिराव के मौके' पर और उस आड़े वक्त में तेरे दुश्मन तेरी ही बस्तियों में तुझको तंग कर मारेंगे। 58 अगर तू उस

शरी' अत की उन सब बातों पर जो इस किताब में लिखी हैं, एहतियात रख कर इस तरह 'अमल न करे कि तुमको खुदावन्द अपने खुदा के जलाती और मुहीब नाम का खौफ हो; 59 तो खुदावन्द तुम पर 'अजीब आफतें नाजिल करेगा, और तुम्हारी औलाद की आफतों को बढ़ा कर बड़ी और देरा आफतें और सख्त और देरा बीमारियाँ कर देगा। 60 और मिस के सब रोग जिनसे तू डरता था तुझको लगाएगा और वह तुझको लगे रहेंगे। 61 और उन सब बीमारियों और आफतों को भी जो इस शरी' अत की किताब में मज़कूर नहीं हैं, खुदावन्द तुझको लगाएगा जब तक तेरा नास न हो जाए। 62 और चूँकि तू खुदावन्द अपने खुदा की बात नहीं सुनेगा, इसलिए कहाँ तो तुम कसरत में आसामन के तारों की तरह हो, और कहाँ शुमार में थोड़े ही से रह जाओगे। 63 तब यह होगा कि जैसे तुम्हारे साथ भलाई करने और तुमको बढ़ाने से खुदावन्द खुशनद होआ, ऐसे ही तुमको फना करने और हलाक कर डालने से खुदावन्द खुशनद होगा; और तुम उस मुल्क से उखाड़ दिए जाओगे, जहाँ तू उस पर कब्जा करने को जा रहा है। 64 और खुदावन्द तुझको जमीन के एक सिरे से दूसरे सिरे तक तमाम कौमों में तिर — बितर करेगा, वहाँ तू लकड़ी और पत्थर के और मां'बूदों की जिनको तू या तेरे बाप — दादा जानते भी नहीं इबादत करेगा। 65 उन कौमों के बीच तुझको चैन नसीब न होगा और न तेरे पाँव के तलवे को आराम मिलेगा, बल्कि खुदावन्द तुझको वहाँ दिल — ए — लरज़ूं और आँखों को धूंधलाहट और जी को कूदन देगा। 66 और तेरी जान शक में अटकी रहेंगी और तू रात — दिन डरता रहेगा, और तुम्हारी ज़िन्दगी का कोई ठिकाना न होगा। 67 और तू अपने दिली खौफ के और उन नजारों की बजह से जिनको तू अपनी आँखों से देखेगा, सुबह को कहेगा कि ऐ काश कि शाम होती और शाम को कहेगा ऐ काश कि सुबह होती। 68 और खुदावन्द तुझको किसियों में चढ़ा कर उस रासेसे मिस में लौटा ले जाएगा, जिसके बारे में मैंने तुझसे कहा कि तू उसे फिर कभी न देखना; और वहाँ तुम अपने दुश्मनों के गुलाम और लौटी होने के लिए अपने को बैठेगे लेकिन कोई खरीदार न होगा।"

29 इसाईलियों के साथ जिस 'अहद' के बाँधने का हक्म खुदावन्द ने मूसा को मोआब के मुल्क में दिया उसी की यह बातें हैं। यह उस 'अहद' से अलग हैं जो उसने उनके साथहोरिब में बाँधा था। 2 इसलिए मूसा ने सब इसाईलियों को बुलावा कर उनसे कहा, तुमने सब कुछ जो खुदावन्द ने तुम्हारी आँखों के सामने, मुल्क — ए — मिस में फ़िर' औन और उसके सब खादिमों और उसके सारे मुल्क से किया देखा है। 3 इस्मिहान के वह बड़े — बड़े काम और निशान और बड़े — बड़े करिश्मे, तुमने अपनी आँखों से देखे। 4 लेकिन खुदावन्द ने तुमको आज तक न तो ऐसा दिल दिया जो समझे, और न देखने की आँखें और सुनने के कान दिए। 5 और मैं चालीस बरस बीरामे में तुमको लिए फिरा, और न तुम्हारे तन के कपड़े पुराने हुए और न तुम्हारे पाँव की ज़रूरी पुरानी हैं। 6 और तुम इसी लिए रोटी खाने और मय या शराब पीने नहीं पाए ताकि तुम जान लो कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 7 और जब तुम इस जगह आए तो हस्तों का बादशाह सीहोन और बरस का बादशाह 'ओज हमारा मुकाबला करने को निकले, और हमने उनको मारकर, 8 उनका मुल्क ले लिया और उसे रुदीनियों को और ज़दियों को और मनस्सियों के अधे कबीले को मीरास के तौर पर दे दिया। 9 तब तुम इस 'अहद' की बातों को मानना और उन पर 'अमल करना, ताकि जो कुछ तुम करो उसमें कामयाब हो। 10 आज के दिन तुम और तुम्हारे कबीले और तुम्हारे बुज़ुर्ग और तुम्हारे 'उहदेदार और सब इसाईली मर्द, 11 और तुम्हारे बच्चे और तुम्हारी बीवियाँ और वह परदेसी भी जो तेरी खेमागाह में रहता है, चाहे वह तेरा लकड़हारा हो चाहे सक्रका, सबके सब खुदावन्द अपने खुदा के सामने खड़े हों, 12 ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा

के 'अहंद में, जिसे वह तेरे साथ आज बँधता और उसकी कसम में जिसे वह आज तुझसे खाता है शामिल हो। 13 और वह तुझको आज के दिन अपनी कौम करार दे और वह तेरा खुदा हो, जैसा उमने तुझसे कहा, जैसी उसने तेरे बाप — दादा अब्राहम और इस्हाक और या'कूब से कसम खाई। 14 और मैं इस 'अहंद और कसम में सिर्फ तुम्हीं को नहीं, 15 लेकिन उसको भी जो आज के दिन खुदावन्द हमारे खुदा के सामने यहाँ हमारे साथ खड़ा है, और उसकी भी जो आज के दिन यहाँ हमारे साथ नहीं, उनमें शामिल करता है। 16 तुम खुद जानते हो कि मूल्क — ए — मिस्र में हम कैसे रहे और क्यूँ कर उन कौमों के बीच से होकर आए, जिनके बीच से तम गुज़रे। 17 और तुमने खुद उनकी मकरहूं चीजें और लकड़ी और पत्थर और चाँदी और सोने की मूर्तें देखी जो उनके यहाँ थी। 18 इसलिए ऐसा न हो कि तुम मैं कोई मर्द या 'औरत या खानदान या कर्जीला ऐसा हो जिसका दिल आज के दिन खुदावन्द हमारे खुदा से बरगशता हो, और वह जाकर उन कौमों के मार्बदों की झालात करे या ऐसा न हो कि तुम मैं कोई ऐसी जड़ हो जो इन्द्रायन और नागदौना पैदा करे; 19 और ऐसा आदमी कसम की यह बातें सुनकर दिल ही दिल में अपने को मुहारकबाद दे और कहे, कि चाहे मैं कैसा ही जिदी हो कर तर के साथ खुशक को फ़ाना कर डालूँ तोमी मेरे लिए सलामती है। 20 लेकिन खुदावन्द उसे मु'आफ नहीं करेगा, बल्कि उस वक्त खुदावन्द का कहर और उसकी गैरत उस आदमी पर नाजिल होगी और सब लाएं नहीं जो इस किताब में लिखी है उस पर पड़ेंगी, और खुदावन्द उसके नाम को सफह — ए — रोज़गार से मिटा देगा। 21 और खुदावन्द इस 'अहंद की उन सब लाएं नहीं के मुताबिक जो इस शरी'अत की किताब में लिखी है, उसे इसाईं के सब कर्बलों में से बुरी सजा के लिए जुदा करेगा। 22 और अने वाली नसलों में तुम्हारी नसल के लोग जो तुम्हारे बाद पैदा होंगे और परदेसी भी जो दूर के मूल्क से आएंगे, जब वह इस मूल्क की बलाओं और खुदावन्द की लगाई हुई बीमारियों को देखेंगे, 23 और यह भी देखेंगे कि सारा मूल्क जैसे गम्धक और नमक बना पड़ा है और ऐसा जल गया है कि इसमें न तो कुछ बोया जाता न पैदा होता, और न किसी किस्म की घास उगती है और वह सदूम और 'अमरा और 'अदमा और जिबोइम की तरह उज़ज़ गया जिनको खुदावन्द ने अपने गज़ब और कहर में तबाह कर डाला। 24 तब वह बल्कि सब कौपे पूँछेंगी, 'खुदावन्द ने इस मूल्क से ऐसा क्यूँ किया? और ऐसे बड़े कहर के भड़कने की बजह क्या है?' 25 उस वक्त लोग जवाब देंगे, 'खुदावन्द इनके बाप — दादा के खुदा ने जो 'अहंद इनके साथ इनको मूल्क — ए — मिस्र से निकालते बक्त बाँधा था, उसे इन लोगों ने छोड़ दिया; 26 और जाकर और मार्बदों की झालात और परस्तिश की, जिनसे वह वाकिफ न थे और जिनको खुदावन्द ने इनको दिया भी न था। 27 इसलिए इस किताब की लिखी हुई सब लाएं नहीं को इस मूल्क पर नाजिल करने के लिए खुदावन्द का गज़ब इस पर भड़का। 28 और खुदावन्द ने कहर और गुस्से और बड़े गज़ब में इनको मूल्क से उद्याकर दूर से मूल्क में फेंका, जैसा आज के दिन जाहिर है। 29 गैब का मालिक तो खुदावन्द हमारा खुदा ही है, लेकिन जो बातें जाहिर की गई हैं वह हमेशा तक हमारे और हमारी औलाद के लिए हैं, ताकि हम इस शरी'अत की सब बातों पर 'अमल करें।

30 और जब यह सब बातें यानी बरकत और लाएं नह जिनको मैंने आज तेरे आगे रखवा है तुझ पर आएँ, और तू उन कौमों के बीच जिनमें खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको हँका कर पहुँचा दिया हो उनको याद करें। 2 और तू और तेरी औलाद दोनों खुदावन्द अपने खुदा की तरफ फिरे, और उसकी बात इन सब हक्मों के मुताबिक जो मैं आज तुझको देता हूँ अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से माने। 3 तो खुदावन्द तेरा खुदा तेरी गुलामी को पलटकर तुझ पर रहम

करेगा, और फिरकर तुझको सब कौमों में से, जिनमें खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझको तितर — बितर किया हो जमा' करेगा। 4 आग तेरे आवारागंद दुनिया के इन्हिलाई हिस्सों में भी हों, तो वहाँ से भी खुदावन्द तेरा खुदा तुझको जमा' करके ले आएगा। 5 और खुदावन्द तेरा खुदा उसी मूल्क में तुमको लाएगा जिस पर तुम्हारे बाप — दादा ने कब्जा किया था, और तू उसको अपने कँजे में लाएगा; फिर वह तुझसे भलाई करेगा और तेरे बाप — दादा से ज्यादा तुमको बढ़ाएगा। 6 और खुदावन्द तेरा खुदा तेरे और तेरी औलाद के दिल का खतना करेगा, ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से महबूबत रखें और जिन्दा रहें। 7 और खुदावन्द तेरा खुदा यह सब लाएं नहीं तुम्हारे दुश्मनों और कीना रखने वालों पर, जिन्होंने तुझको सताया नाजिल करेगा। 8 और तू लौटेगा और खुदावन्द की बात सुनेगा, और उसके सब हक्मों पर जो मैं आज तुझको देता हूँ 'अमल करेगा। 9 और खुदावन्द तेरा खुदा तुझको तेरे कारोबार और आस औलाद और चापायों के बच्चों और जमीन की पैदावार के लिहाज से तेरी भलाई की खालिर तुझको बढ़ाएगा; फिर तुझसे खुश होगा, जैसे वह तेरे बाप — दादा से खुश था। 10 बशर्ते कि तू खुदावन्द अपने खुदा की बात को सुनकर उसके अहकाम और आईन को माने जो शरी'अत की इस किताब में लिखे हैं, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से खुदावन्द अपने खुदा की तरफ फिरे। 11 क्यूँकि वह हक्म जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, तेरे लिए बहुत मुश्किल नहीं और न वह दूर है। 12 वह आसमान पर तो है नहीं कि तू कहे कि 'आसमान पर कौन हमारी खालिर चढ़े, और उसको हमारे पास लाकर सुनाए ताकि हम उस पर 'अमल करें?' 13 और न वह समन्दर पार है कि तू कहे, 'समन्दर पर कौन हमारी खालिर जाए, और उसको हमारे पास ला कर सुनाए ताकि हम उस पर 'अमल करें?' 14 बल्कि वह कलाम तेरे बहुत नज़दीक है; वह तुम्हारे मूँह में और तुम्हारे दिल में है, ताकि तुम उस पर 'अमल करो। 15 देखो, मैंने आज के दिन जिन्दगी और भलाई को, और मौत और बुराई को तुम्हारे आगे रखवा है। 16 क्यूँकि मैं आज के दिन तुपको हक्म करता हूँ, कि तू खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखे और उसकी राहों पर चले, और उसके फरमान और आईन और अहकाम को माने ताकि तू जिन्दा रहे और बढ़े; और खुदावन्द तेरा खुदा उस मूल्क में तुझको बरकत बख्त, जिस पर कँजा करने को तू वहाँ जारहा है। 17 लेकिन अगर तेरा दिल फिर जाए और तू न सुने, बल्कि गुमराह होकर और मार्बदों की परस्तिश और इबादत करने लगे; 18 तो आज के दिन मैं तुमको जता देता हूँ कि तुम जस्तर फ़ाना हो जाओगे, और उस मूल्क में जिस पर कँजा करने को तुम यदन पार जा रहे हो तुम्हारी उम्र दराज न होगी। 19 मैं आज के दिन आसमान और जमीन को तुम्हारे बरखिलाफ गवाह बनाता हूँ, कि मैंने जिन्दगी और मौत की और बरकत और लाएं नह को तुम्हारे आगे रखवा है; इसलिए तुम जिन्दगी को इब्लियार करो कि तुम भी जिन्दा रहो और तुम्हारी औलाद भी; 20 ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखे, और उसकी बात सुने और उसी से लिपटा रहे; क्यूँकि वही तेरी जिन्दगी और तेरी उम्र की दराजी है, ताकि तू उस मूल्क में बसा रहे जिसको तेरे बाप — दादा अब्राहम और इस्हाक और या'कूब को देने की कसम खुदावन्द ने उससे खाई थी।'

31 और मूसा ने जा कर यह बातें सब इसाईंतियों को सुनाई, 2 और उनको कहा कि 'मैं तो आज कि दिन एक सौ बीस बरस का हूँ, मैं अब चल फिर नहीं सकता; और खुदावन्द ने मुझसे कहा है कि तू इस यदन पार नहीं जाएगा। 3 इसलिए खुदावन्द तेरा खुदा ही रहे आगे — आगे पार जाएगा, और वही उन कौमों को तेरे आगे से फ़ाना करेगा और तू उसका वारिस होगा, और जैसा खुदावन्द ने कहा है, यशू'अ तुम्हारे आगे — आगे पार जाएगा। 4 और

खुदावन्द उनसे वही करेगा जो उसने अमेरियों के बादशाह सीहोन और 'ओज और उनके मूल्क से किया, कि उनको फना कर डाला। 5 और खुदावन्द उनको तुमसे शिक्ष्यत दिलाएगा, और तुम उनसे उन सब हक्मों के मुताबिक पेश आना जो मैंने तुमको दिए हैं। 6 तू मजबूत हो जा और हौसला रख; मत डर और न उनसे खौफ खा, क्यूंकि खुदावन्द तेरा खुदा खुद ही तेरे साथ जाता है; वह तुझसे दस्तबरदार नहीं होगा, और न तुमको छोड़ेगा। 7 फिर मूसा ने यशू'अ को बुलाकर सब इसाईलियों के सामने उससे कहा, "तू मजबूत हो जा और हौसला रख; क्यूंकि तू इस कौम के साथ उस मूल्क में जाएगा, जिसको खुदावन्द ने उनके बाप — दादा से कसम खाकर देने को कहा था, और तू उनको उसका वारिस बनाएगा। 8 और खुदावन्द ही तेरे आगे — आगे चलेगा; वह तेरे साथ रहेगा, वह तुझ से न दस्तबरदार होगा, न तुझे छोड़ेगा; इसलिए तू खौफ न कर और बे — दिल न हो।" 9 और मूसा ने इस 'शरी'अत को लिखकर उसे कहिनों के, जो बनी लाती और खुदावन्द के 'अहद' के संदर्भ के उठाने वाले थे, और इसाईल के सब बुजुर्गों के सुर्दू किया। 10 फिर मूसा ने उनको यह हृक्षम दिया, हर सात बरस के आखिर में छुटकारे के साल के मु'अय्यन बक्त फर ज्ञोपांडियों के ईद में, 11 जब सब इसाईली खुदावन्द तुम्हारे खुदा के सामने उप जगह आ कर हाजिर हों जिसे वह खुद चुनेगा, तो तुम इस 'शरी'अत को पढ़कर सब इसाईलियों को सुनाना। 12 तुम सारे लोगों को, यारी मर्दों और 'औरतों और बच्चों और अपनी बसियों के मुसाफिरों को जमा' करना, ताकि वह सुनें और सीखें और खुदावन्द तुम्हारे खुदा का खौफ मानें और इस शरी "अत की सब बातों पर एहतियात रखकर 'अमल करें; 13 और उनके लड़के जिनको कुछ मालूम नहीं वह भी सुनें, और जब तक तुम उस मूल्क में जीत रहो जिस पर कङ्जा करने को तुम यरदन पार जाते हो, तब तक वह बराबर खुदावन्द तुम्हारे खुदा का खौफ मानना सीखें।" 14 फिर खुदावन्द ने मूसा से कहा, "देख, तेरे मरने के दिन आ पहुँचे। इसलिए तू यशू'अ को बुला ले और तुम दोनों खेमा — ए — इजितामा'अ में हाजिर हो जाओ, ताकि मैं उसे हिदायत करूँ।" चुनाँचे मूसा और यशू'अ रवाना होकर खेमा — ए — इजितामा'अ में हाजिर हुए। 15 और खुदावन्द बादल के सुतन में होकर खेमे में नमूदार हुआ, और बादल का सुतन खेमे के दरवाजे पर ठहर गया। 16 तब खुदावन्द ने मूसा से कहा, "देख, तू अपने बाप — दादा के साथ सो जाएगा; और यह लोग उठकर उस मूल्क के अजनबी मालूमों की पैरवी में, जिनके बीच वह जाकर रहेंगे जिनाकार हो जाएँगे और मुझको छोड़ देंगे, और उस 'अहद' को जो मैंने उनके साथ बाँधा है तोड़ डालेंगे। 17 तब उस बक्त ने कहा कि यह उन पर भड़केगा, और मैं उन को छोड़ दूँगा और उनसे अपना मूँह छिपा लूँगा; और वह निगल लिए जाएँगे और बहुत सी बलाएँ और मुझीबों उन पर आएँगी, चुनाँचे वह उस दिन कहेंगे, 'क्या हम पर यह बलाएँ इसी वजह से नहीं आई कि हमारा खुदा हमारे बीच नहीं?' 18 उस बक्त उन सब बदियों की वजह से, जो और मालूमों की तरफ माइल होकर उन्होंने की होंगी मैं जस्त अपना मूँह छिपा लूँगा। 19 इसलिए तुम यह गीत अपने लिए लिख लो, और तुम उसे बनी — इसाईल को सिखाना और उनको हिफ्ज करा देना, ताकि यह गीत बनी इसाईल के खिलाफ मेरा गवाह रहे। 20 इसलिए कि जब मैं उनको उस मूल्क में, जिस की कसम मैंने उनके बाप — दादा से खाइ और जहाँ दूध और शहद बहता है पहुँचा दूँगा, और वह खबर खा — खाकर मोटे हो जाएँगे; तब वह और मालूमों की तरफ फिर जाएँगे और उनकी इच्छात करेंगे और मुझको हकीर जानेंगे और मेरे 'अहद' को तोड़ डालेंगे। 21 और यूँ होगा कि जब बहुत सी बलाएँ और मुझीबों उन पर आएँगी, तो ये गीत गवाह की तरह उन पर शहादत देगा; इसलिए कि इसे उनकी औलाद कभी नहीं भूलेगी, क्यूंकि इस बक्त भी उनको उस मूल्क में पहुँचाने से पहले

जिसकी कसम मैंने खाइ है, मैं उनके ख्याल को जिसमें वह है जानता हूँ।" 22 इसलिए मूसा ने उसी दिन इस गीत को लिख दिया और उसे बनी — इसाईल को सिखाया। 23 और उसने नून के बेटे यशू'अ को हिदायत की और कहा, "मजबूत हो जा, और हौसला रख; क्यूंकि तू बनी — इसाईल को उस मूल्क में ले जाएगा जिसकी कसम मैंने उनसे खाइ थी, और मैं तेरे साथ रहँगा।" 24 और ऐसा हुआ कि जब मूसा इस 'शरी'अत की बातों को एक किताब में लिख चुका और वह खत्म हो गई, 25 तो मूसा ने लाखियों से, जो खुदावन्द के 'अहद' के संदर्भ को उठाया करते थे कहा, 26 "इस शरी'अत की किताब को लेकर खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद' के संदर्भ के पास रख दो, ताकि वह तुम्हारे बरखिलाफ गवाह रहे। 27 क्यूंकि मैं तुम्हारी बागावत और गर्दनकशी को जानता हूँ। देखो, अभी तो मेरे जीते जी तुम खुदावन्द से बगावत करते रहे हो, तो मेरे मरने के बाद किताना ज्यादा न करोगे? 28 तुम अपने कबीले के सब बुजुर्गों और 'उहदेदारों' को मेरे पास जामा करो, ताकि मैं यह बातें उनके कानों में डाल दूँ और आसमान और जमीन को उनके बरखिलाफ गवाह बनाऊँ। 29 क्यूंकि मैं जानता हूँ कि मेरे मरने के बाद तुम अपने को बिगाड़ लोगों, और उस रास्ते से जिसका मैंने तुम्हके हृक्षम दिया है फिर जाओगे; तब आखिरी दिनों में तुम पर आफत टूटेगी, क्यूंकि तुम अपने कामों से खुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए वह काम करेंगे जो उसकी नजर में बुरा है।" 30 इसलिए मूसा ने इस गीत की बातें इसाईल की सारी जमा'अत को आखिर तक कह सुनाई।

32 कान लगाओ, ऐ आसमानो, और मैं बोलूँगा; और जमीन मैं भूँ की बातें सुने।

2 मेरी तालीम मैंह की तरह बरसेगी, मेरी तकरी शबनम की तरह टाकेगी, जैसे नर्म धास पर फुअर पड़ती हो, और सञ्जी पर झाड़ियाँ। 3 क्यूंकि मैं खुदावन्द के नाम का इश्तिहार दूँगा। तुम हमारे खुदा की ताजीमी करो। 4 "वह वही चट्ठान है, उसकी सनात अत कामिल है; क्यूंकि उसकी सब राहें इन्साफ की हैं, वह खफादार खुदा, और बड़ी से मुर्खा है, वह मुस्तिफ़ और बर — हक्क है। 5 यह लोग उसके साथ बुधी तरह से पेश आए, यह उसके फर्जन्द नहीं। यह उनका 'ऐब है, यह सब कजरौ और टेढ़ी नसल है।' 6 क्या तुम ऐ बेवकूफ़ और कम'अक्ल लोगों, इस तरह खुदावन्द को बदला दोगे? क्या वह तुम्हारा बाप नहीं, जिसने तुम्हके खरीदा है? उस ही ने तुम्हके बनाया और कथाम बख्शा। 7 कदमी दिनों को याद करो, नसल दर नसल के बरसों पर गौर करो; अपने बाप से पछो, वह तुम्हके बताएगा; बुजुर्गों से सवाल करो, वह तुम्हे बयान करेंगे। 8 जब हक तालामा ने कौमों को मीरास बांटी, और बनी आदम को जुदा — जुदा किया, तो उसने कौमों की सरहड़ें, बनी इसाईल के शमार के मुताबिक ठहराई। 9 क्यूंकि खुदावन्द का हिस्सा उसी की लोग हैं। याकूब उसकी मीरास का हिस्सा है। 10 वह खुदावन्द की वीराने और सूने खत्तरनाक वीराने में मिला; खुदावन्द उसके चारों तरफ रहा, उसने उसकी खबर ली, और उसे अपनी आँख की पुलती की तरह रख्खा। 11 जैसे 'उकाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों पर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने बाजूओं को फैलाया, और उनको लेकर अपने परों पर उठा लिया। 12 सिर्फ़ खुदावन्द ही ने उनकी रहबी की, और उसके साथ कोई अजनबी मालूम न था। 13 उसने उसे जमीन की ऊँची — ऊँची जगहों पर सबार कराया, और उसने खेत की पैदावार खाई; उसने उसे चट्ठान में से शहद, और मुश्किल जगह में से तेल चुसाया। 14 और गायों का मक्खन और भेड़ — बकरियों का दूध और बर्दी की चर्बी, और बसनी नसल के मेंढे और बकरे, और खालिस गेहूँ का आटा भी, और तू अंगर के खालिस रस की मय पिया करता था। 15 लेकिन यस्सनू मोटा हो कर लाते मारने लगा; तू मोटा हो कर सुस्त हो गया है, और तुझ पर चर्दी छा गई है; तब उसने खुदा को जिसने उसे बनाया छोड़ दिया, और अपनी नजात की चट्ठान की

हिकारत की। 16 उन्होंने अजनबी माँ'बूदों के जरिए' उसे गैरत, और मक्स्हात से उसे गुस्सा दिलाया। 17 उन्होंने जिन्नात के लिए जो खुदा न थे, बल्कि ऐसे माँ'बूदों के लिए जिनसे वह वाकिफ न थे, यानी नये — नये माँ'बूदों के लिए जो हाल ही में जाहिर हुए थे, जिनसे उनके बाप दादा कभी डरे नहीं कुर्बानी की। 18 तू उस चट्टान से गाफिल हो गया, जिसने तुझे पैदा किया था; तू खुदा को भूल गया, जिसने तुझे पैदा किया। 19 "खुदावन्द ने यह देख कर उनसे नफरत की, क्यूंकि उसके बेटों और बेटियों ने उसे गुस्सा दिलाया। 20 तब उसने कहा, मैं अपना मुँह उनसे छिपा लूँगा, और देखूँगा कि उनका अन्जाम कैसा होगा; क्यूंकि वह बागी नसल और बेवफा औलाद है। 21 उन्होंने उस चीज़ के जरिए' जो खुदा नहीं, मुझे गैरत और अपनी बातिल बातों से मुझे गुस्सा दिलाया; इसलिए मैं भी उनके जरिए' से जो कोई उम्मत नहीं उनको गैरत और एक नादान कौम के जरिए' से उनको गुस्सा दिलाऊँगा। 22 इसलिए कि मेरे गुस्से के मारे आग भडक उठी है, जो पाताल की तह तक जलती जाएगी, और जमीन को उसकी पैदावार समेत भस्म कर देगी, और पहाड़ों की बुनियादों में आग लगा देगी। (Sheol h7585) 23 मैं उन पर आफतों का ढेर लगाऊँगा, और अपने तीरों को उन पर खत्म करूँगा। 24 वह भूक के मारे घूल जाएँगे, और शर्दीद हरारत और सरबत हलाकत का लुकमा हो जाएँगे; और मैं उन पर दरिन्द्रों के दाँत और जमीन पर के सरकने वाले कीड़ों का जहर छोड़ दूँगा। 25 बाहर वह तलवार से मरेंगे, और कोठरियों के अन्दर खौफ से, जबान मर्द और कुँवारियों, दृध पीते बच्चे और पवके बाल वाले सब बूँही हलाक होंगे। 26 मैंने कहा, मैं उनको दूँ — दूर तिर — बिर करूँगा, और उनका तज़किरा नौ — ए — बशर में से मिटा डालूँगा। 27 लेकिन मुझे दुश्मन की छेड़ छाड़ का अन्देशा था, कि कहीं मुखालिफ उल्टा समझ कर, यूँ न कहने लगें, कि हमारे ही हाथ बाला है और यह सब खुदावन्द से नहीं हुआ।" 28 "वह एक ऐसी कौम हैं जो मसलहत से खाली हो उनमें कुछ समझ नहीं। 29 काश वह 'अक्ललमन्द होते कि इसको समझते, और अपनी 'आकर्षण पर गौर करते। 30 क्यूँ कर एक आदमी हजार का पीछा करता, और दो आदमी दस हजार को भगा देते, अगर उनकी चट्टान ही उनको बेच न देती, और खुदावन्द ही उनको हवाले न कर देता? 31 क्यूँकि उनकी चट्टान ऐसी नहीं जैसी हमारी चट्टान है, चाहे हमारे दुश्मन ही क्यूँ न मुस्निक हों। 32 क्यूँकि उनकी ताक सदूम की ताकों में से और 'अमरा के खेतों की है; उनके अंग बहाल के बने हुए हैं, और उनके गुच्छे कड़वे हैं। 33 उनकी मय अजदहाओं का बिस, और काले नागों का जहर — ए — कातिल है 34 क्या यह मेरे खजानों में सर — ब — मुरह होकर भरा नहीं पड़ा है? 35 उस बक्त जब उनके पाँव फिसरें, तो इन्तकाम लेना और बदला देना मेरा काम होगा; क्यूँकि उनकी आकर्षण का दिन नज़दीक है, और जो हादिसे उन पर गुजारने वाले हैं वह जल्द आएँगे। 36 क्यूँकि खुदावन्द अपने लोगों का इन्साफ करेगा, और अपने बन्दों पर तरस खाएगा; जब वह देखेगा कि उनकी कुब्वत जाती रही, और कोई भी, न कैटी और न आजाद बाकी बचा। 37 और वह कहेगा, उन के माँ'बूद कहाँ हैं? वह चट्टान कहाँ, जिस पर उनका भरोसा था; 38 जो उनके कुर्बानियों की चर्ची खाते, और उनके तपावन की मय पीते थे? वही उठ कर तुम्हारी मरद करें, वही तुम्हारी पिनाह हों। 39 'इसलिए अब तुम देख लो, कि मैं ही वह हूँ। और मेरे साथ कोई माँ'बूद नहीं। मैं ही मार डालता और मैं ही जिलाता हूँ, मैं ही जख्मी करता और मैं ही चांगा करता हूँ, और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ाए। 40 क्यूँकि मैं अपना हाथ आसमान की तरफ उठाकर कहता हूँ, कि चूँकि मैं हमेशा हमेशा जिन्दा हूँ, 41 इसलिए अगर मैं अपनी झलकीती तलवार को, तेज करूँ, और 'अदालत को अपने हाथ में ले लूँ, तो अपने मुखालिफों से इन्तकाम लूँगा, और अपने कीना

रखने वालों को बदला दूँगा। 42 मैं अपने तीरों को खून पिला — पिलाकर मस्त कर दूँगा, और मेरी तलवार गोश्त खाएँगी — वह खून मक्तुलों और गुलामों का, और वह गोश्त दुश्मन के सरदारों के सिर का होगा। 43 ऐ कौमों, उसके लोगों के साथ खुशी मनाओ क्यूँकि वह अपने बन्दों के खून का बदला लेगा, और अपने मुखालिफों को बदला देगा, और अपने मुल्क और लोगों के लिए कफ़ारा देगा।" 44 तब मूरा और नून के बेटे होसे'अने आ कर इस गीत की सारी बातें लोगों को कह सुनाई। 45 और जब मूरा यह सब बातें सब इसाईलियों को सुना चुका, 46 तो उससे कहा, "जो बातें मैंने तुम्से आज के दिन बयान की हैं, उन सब से तुम दिल लगाना और अपने लड़कों को हुक्म देना कि वह एहतियात रखकर इस शरी'अत की सब बातों पर 'अमल करें। 47 क्यूँकि यह तुम्हारे लिए कोई बे फायदा बात नहीं, बल्कि यह तुम्हारी जिन्दगानी है, और इसी से उस मुल्क में, जहाँ तुम यरदन पार जा रहे हो कि उस पर कब्ज़ा करो, तुम्हारी 'उम्र दराज होगी।" 48 और उसी दिन खुदावन्द ने मूरा से कहा कि, 49 "तू इस कोह — ए — 'अबारीम पर चढ़ कर नबू की चोटी को जा, जो यरीह के सामने मुल्क — ए — मोआब में है; और कनान के मुल्क की जिसे मैं मीरास के तौर पर बनी — इसाईल को देता हूँ देख ले। 50 और उसी पहाड़ पर जहाँ तू जा ए वकात पाकर अपने लोगों में शामिल हो, जैसे तेरा भाई हास्तन होर के पहाड़ पर मरा और अपने लोगों में जा मिला। 51 इसलिए कि तुम दोनों ने बनी — इसाईल के बीच सीन के जंगल के क्रादिस में मरीबा के चश्मे पर मेरा गुनाह किया, क्यूँकि तुमने बनी — इसाईल के बीच मेरी बड़ाई न की। 52 इसलिए त उस मुल्क को अपने आगे देख लेगा, लेकिन त वहाँ उस मुल्क में जैं बनी — इसाईल को देता हूँ जाने न पाएगा।"

33 और मर्द — ए — खुदा मूरा ने जो 'दु'आ — ए — खैर देकर अपनी वफात से पहले बनी — इसाईल को बरकत दी, वह यह है। 2 और उसने कहा: "खुदावन्द सीना से आया और शाईर से उन पर जाहिर हुआ, वह कोह — ए — फाराम से जलवागर हुआ, और लाखों फरिश्तों में से आया; उसके दरने हाथ पर उनके लिए आतिशी शरी'अत थी। 3 वह बेशक कौमों से मुहब्बत रखता है, उसके सब मुकद्दस लोग तेरे हाथ में हैं, और वह तेरे कदमों में बैठे, एक एक तेरी बातों से मुस्तकीज होगा। 4 मूरा ने हमाको शरी'अत और या'कूब की जमा'अत के लिए मीरास दी। 5 और वह उस वक्त यसू-सून में बादशाह था, जब कौम के सरदार इकट्ठे और इसाईल के क़वीले जमा' हुए। 6 "स्विन जिन्दा रहे और मर न जाए, तोमी उसके आदमी थोड़े ही होंगे।" 7 और यहदाह के लिए यह है जो मूरा ने कहा, "ऐ खुदावन्द, तू यहदाह की सुन, और उसे उसके लोगों के पास पहुँचा; वह अपने लिए आप अपने हाथों से लड़ा, और तू ही उसके दुश्मनों के मुकाबले में उसका मददगार होगा।" 8 और लाखी के हक में उसने कहा, तेरे तुम्हीन और ऊरीम उस मर्द — ए — खुदा के पास हैं जिसे तूने मस्सा पर आजमा लिया, और जिसके साथ मरीबा के चश्मे पर तेरा तनाजा' हुआ; 9 जिसने अपने मौं बाप के बारे में कहा, कि मैंने इन को रेखा नहीं, और न उसपे अपने भाईयों को अपना मामा, और न अपने बेटों को पहचाना। क्यूँकि उन्होंने तेरे कलाम की एहतियात की और वह तेरे 'अहद को मानते हैं। 10 वह या'कूब को तेरे हुक्मों और इसाईल को तेरी शरी'अत सिखाएँगे। वह तेरे आगे खुशबू और तेरे मजबह पर पूरी सोखलनी कुर्बानी रखेंगे। 11 ऐ खुदावन्द, तू उसके माल में बरकत दे और उसके हाथों की खिदमत को कुबला कर; जो उसके खिलाफ उठे उनकी कमर तोड़ दे, और उनकी कमर भी जिनको उससे 'अदावत है ताकि वह फिर न उठे। 12 और बिनयमीन के हक में उस ने कहा, "खुदावन्द का प्यारा, सलामती के साथउसके पास रहेगा; वह सारे दिन उसे ढाँके रहता है, और वह उसके कन्धों

के बीच सुकृनत करता है।” 13 और यूमुक के हक में उसने कहा, “उसकी जमीन खुदावन्द की तरफ से मुबारक हो, आसमान की बेशकीमत अशया और शबनम और वह गहरा पानी जो नीचे है, 14 और सूरज के पकाए हुए बेशकीमत फल, और चाँद की उगाई हुई बेशकीमती चीजें। 15 और कर्दीम पहाड़ों की बेशकीमत चीजें, और अबदी पहाड़ियों की बेशकीमत चीजें। 16 और जमीन और उसकी मामूरी की बेशकीमती चीजें और उसकी खुशनदी जो डाइंगी में रहता था, इन सबके ऐतबार से यूमुक के सिर पर यानी उसी के सिर के चाँद पर, जो अपने भाइयों से जुदा रहा बरकत नाजिल हो। 17 उसके बैल के पहलांठे की सी उसकी शौकत है; और उसके सीधी जंगली साँड़ के से हैं; उन्हीं से वह सब कौमों को, बल्कि जमीन की इन्तिहा के लोगों को ढकेलेगा; वह इफ्राईम के लाखों लाख, और मनस्सी के हजारों हजार है।” 18 “और जबलून के बारे में उसने कहा, ऐ जबलून, तू अपने बाहर जाते बवत और ऐ इश्कार, तू अपने खेमों में खुश रह। 19 वह लोगों को पहाड़ों पर बूताएँगे, और वहाँ सदाकत की कुर्बानियाँ पेश करेंगे; क्यूंकि वह समन्दरों के फैज़ और रेत के छिपे हुए खाजानों से बहाराव होंगे।” 20 और ज़द के हक में उसने कहा, “जो कोई ज़द की बाज़ वह मुबारक हो। वह शेरनी की तरह रहता है, और बाज़ बल्कि सिर के चाँद तक को फाड़ डालता है 21 और उसने फलों को अपने लिए चुन लिया, क्यूंकि शरा’ देने वाले का हिस्सा वहाँ अलग किया हआ था; और उसने लोगों के सरदारों के साथ आकर खुदावन्द के इन्साफ़ को और उसके हक्मों को जो इसाईल के लिए था पूरा किया।” 22 “और दान के हक में उसने कहा, दान उस शेर — ए — बबर का बच्चा है जो बसन से कृद कर आता है।” 23 और नफताली के हक में उसने कहा, “ऐ नफताली, जो लुत्फ — ओ — करम से आसूदा, और खुदावन्द की बरकत से मामूर है; तू पश्चिम और दालिखन का मालिक हो।” 24 और आशर के हक में उसने कहा, आशर आस — औलाद से मालामाल हो; वह अपने भाइयों का मकबूल हो और अपना पैंच तेल में डुबोए। 25 तेरे बैन्डे लोहे और पीतल के होंगे, और जैसे तेरे दिन तैरी ही तेरी कुव्वत हो। 26 “ऐ यमसून, खुदा की तरह और कोई नहीं, जो तेरी मदद के लिए आसमान पर और अपने जाह — ओ — जलाल में आसमानों पर सवार है। 27 अबदी खुदा तेरी सुकृनतगाह है और नीचे दाइमी बाज़ है, उसने गनीम को तेरे सामने से निकाल दिया और कहा, उनको हलाक कर दे। 28 और इसाईल सलायती के साथ याकूब का सोता, अकेला अनाज और मय के मुल्क में बसा हआ है, बल्कि आसमान से उस पर ओस पड़ती रहती है 29 मुबारक है तू, ऐ इसाईल; तू खुदावन्द की बचाई हुई कौम है, इसलिए कौन तेरी तरह है? वही तेरी मदद की सिपाह, और तेरे जाह — ओ — जलाल की तलबार है। तेरे दुश्मन तेरे मुती होंगे और तू उन के ऊँचे मकामों को पस्त करेगा।”

34 और मसा मोआब के मैदानों से कोह ए — नब के ऊपर पिसगा की चोटी पर, जो यरीह के सामने है चढ़ गया; और खुदावन्द ने जिला आद का सारा मुल्क दान तक, और नफताली का सारा मुल्क, 2 और इफ्राईम और मनस्सी का मुल्क, और यहदाह का सारा मुल्क पिछले समन्दर तक, 3 और दालिखन का मुल्क, और वादी — ए — यरीह जो खुरमों का शहर है उसकी वादी का मैदान जुगर तक उसको दिखाया। 4 और खुदावन्द ने उससे कहा, “यहीं वह मुल्क है, जिसके बारे में मैंने अब्बाम और इस्हाक और याकूब से क्रस्म खाकर कहा था, कि इसे मैं तुम्हारी नसल को दूँगा। इसलिए मैंने ऐसा किया कि तू इसे अपनी आँखों से देख ले, लेकिन तू उस पार वहाँ जाने न पाएगा।” 5 तब खुदावन्द के बन्दे मसा ने खुदावन्द के कहे के मुवाफिक, वही मोआब के मुल्क में वफ़ात पाई, 6 और उसने उसे मोआब की एक वादी में बैत फ़ग्रू के सामने दफ़न किया; लेकिन आज तक किसी आदमी को उसकी कब्र

मालूम नहीं। 7 और मूसा अपनी वफ़ात के बक्त एक सौ बीस बरस का था, और न तो उसकी आँख धूँगलाने पाई और न उसकी अपनी कुव्वत कम हुई। 8 और बनी इसाईल मूसा के लिए मोआब के मैदानों में तीस दिन तक रोते रहे; फिर मूसा के लिए मातम करने और रोने — पीटने के दिन खत्म हुए। 9 और नून का बेटा यशूअ अक्तलमन्दी की रुह से मामूर था, क्यूंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रखवे थे; और बनी — इसाईल उसकी बात मानते रहे, और जैसा खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था उन्होंने वैसा ही किया। 10 और उस बक्त से अब तक बनी — इसाईल में कोई नवी मूसा की तरह, जिससे खुदावन्द ने आमने — सामने बातें की नहीं उठा। 11 और उसको खुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस में फ़िर औन और उसके सब खादिमों और उसके सारे मुल्क के सामने, सब निशान और 'अजीब कामों के दिखाने को भेजा था। 12 यूँ मूसा ने सब इसाईलियों के सामने ताकतवर हाथ और बड़ी हैबत के काम कर दिखाए।

1 और खुदावन्द के बन्दे मूसा की बफ़त के बाद ऐसा हुआ कि खुदावन्द

ने उसके खादिम नून के बेटे यशू'अ से कहा, 2 "मेरा बन्दा मूसा मर गया है इसलिए अब तू उठ और इन सब लोगों को साथ लेकर इस यरदन के पार उस मुल्क में जा जिसे मैं उनको यानी, बनी इस्माइल को देता हूँ। 3 जिस — जिस जगह तुम्हारे पाँव का तलुवा टिके उसको, जैसा मैंने मूसा से कहा, मैंने तुमको दिया है। 4 वीराने और उस लुबनान से लेकर बड़े दरिया — ए — फरात तक हितियों का सारा मुल्क और पश्चिम की तरफ बड़े समन्वर तक तुम्हारी हँद होगी। 5 तेरी जिन्दगी भर कोई शख्स तेरे सामने खड़ा न रह सकेगा; जैसे मैं मूसा के साथ था वैसे ही तेरे साथ रहँगा मैं न तुझे से अलग हँगा और न तुझे छोड़ूँगा। 6 इसलिए मजबूत हो जा और हौसला रख, क्यैंकि तू इस कौम को उस मुल्क का वारिस करायेगा जिसे मैंने उनको देने की कसम उनके बाप दादा से खाई। 7 तू सिर्फ़ मजबूत और निहायत दिलेर हो जा कि एहतियात रख कर उस सारी शरी'अत पर 'अमल करे जिसका हक्म मैं बन्दे मूसा ने तुझ को दिया, उस से न दौहिने मुड़ना न बायें ताकि जहाँ कहीं तू जाये तज्ज्ञ खुब कामयाबी हासिल हो। 8 शरी'अत की यह किताब तेरे मुँह से न हटे, बल्कि तज्ज्ञ दिन और रात इसी का ध्यान हो ताकि जो कुछ उस में लिखा है उस सब पर त् एहतियात करके 'अमल कर सके; क्यैंकि तब ही तुझे कामयाबी की गाह नसीब होती और त् खब कामयाब होगा। 9 क्या मैंने तुझको हक्म नहीं दिया? इसलिए मजबूत हो जा और हौसला रख; खौफ़ न खा और बेदित न हो, क्यैंकि खुदावन्द तेरा खुदा जहाँ जहाँ तू जाए तेरे साथ रहेगा।" 10 तब यशू'अ ने लोगों के मनसबदारों को हक्म दिया कि। 11 तुम लश्कर के बीच से होकर गुज़रो और लोगों को यह हक्म दो कि तुम अपने अपने लिए सफर का सामान तैयार कर लो क्यैंकि तीन दिन के अन्दर तुम को इस यरदन के पार होकर उस मुल्क पर कब्जा करने को जाना है जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हको देता है ताकि तुम उसके मालिक हो जाओ। 12 और बनी संविन और बनी जद और मनस्ती के आधे कबीले से यशू'अ ने यह कहा कि। 13 उस बात को जिसका हक्म खुदावन्द के बन्दे मूसा ने तुम्हको दिया याद रखना कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हको आराम बछाता है और वह यह मुल्क तुम्हको देगा। 14 तुम्हारी भवित्वियां और तुम्हारे बाल बच्चे और चौपाये इसी मुल्क में जिसे मूसा ने यरदन के इस पार तुम्हको दिया है रहें, लेकिन तुम सब जितने बहादुर और सरमा हो हथियार लगाए हुए अपने भाइयों के आगे आगे पार जाओ और उनकी मदद करो। 15 जब तक खुदावन्द तुम्हारे भाइयों को तुम्हारी तरह आराम न बछो और वह उस मुल्क पर जिसे खुदावन्द तुम्हारा खुदा उनको देता है कब्जा न कर लें। बाद में तुम अपनी मिल्कियत के मुल्क में लौटना जिसे खुदावन्द के बन्दे मूसा ने यरदन के इस पार पूरब की तरफ तुम को दिया है और उसके मालिक होना। 16 और उन्होंने यशू'अ को जवाब दिया कि जिस जिस बात का तूने हम को हक्म दिया है हम वह सब करेंगे, और जहाँ जहाँ तू हमको भेजे वहाँ हम जाएँगे। 17 जैसे हम सब उम्र में मूसा की बात सुनते थे वैसे ही तेरी सुनेंगे; सिर्फ़ इतना हो कि खुदावन्द तेरा खुदा जिस तरह मूसा के साथ रहता था तेरे साथ भी रहे। 18 जो कोई तेरे हक्म की मुखालिफ़त करे और सब मुआमिलों में जिनकी तू ताकीद करे तेरी बात न माने वह जान से मारा जाए। तू सिर्फ़ मजबूत हो जा और हौसला रख।

2 तब नन के बेटे यशू'अ ने शिर्तीम से दो आदमियों को चुपके से जासस

के तौर पर भेजा और उन से कहा, कि जा कर उस मुल्क को और यरीह को देखो भालो। चुनौती वह रवाना हुए और एक कस्ती के घर में जिसका नाम राहब था आए और वहीं सोए। 2 और यरीह के बादशाह को खबर मिली कि देख

आज की रात बनी इस्माइल में से कुछ आदमी इस मुल्क की जासूसी करने को यहाँ आए हैं। 3 और यरीह के बादशाह ने राहब को कहला भेजा कि उन लोगों को जो तेरे पास आये और तेरे घर में दाखिल हुए हैं निकाल ला इस लिए कि वह इस सारे मुल्क की जासूसी करने को आए हैं। 4 तब उस 'औरत ने उन दोनों आदमियों को लेकर और उनको छिपा कर यूँ कह दिया कि वह आदमी मेरे पास आए तो थे लेकिन मुझे मालूम न हुआ कि वह कहाँ के थे। 5 और फाटक बंद होने के बक्त के करीब जब अंथरा हो गया, वह आदमी चल दिए और मैं नहीं जानती हूँ कि वह कहाँ गये। इसलिए जल्द उनका पीछा करो क्यैंकि तुम जस्तर उनको पा लोगे। 6 लेकिन उनसे उनको अपनी छत पर चढ़ा कर सन की लकड़ियों के नीचे जो छत पर तरतीब से धरी थी छिपा दिया था। 7 और यह लोग यरदन के रास्ते पर पाँव के निशानों तक उनके पीछे गये और जँहीं उनका पीछा करने वाले फाटक से निकले उन्होंने फाटक बंद कर लिया। 8 तब राहब छत पर उन आदमियों के लेट जाने से पहले उन के पास गई 9 और उन से यूँ कहने लगी कि मुझे यकीन है कि खुदावन्द ने यह मुल्क तुम्हको दिया है और तुम्हारा रौब हम लोगों पर छा गया है और इस मुल्क के सब बाशिने तुम्हारे अगे डेरे जा रहे हैं। 10 क्यैंकि हम ने सुन लिया है कि जब तुम मिस्र से निकले तो खुदावन्द ने तुम्हारे आगे बहर — ए — कुलजुम के पानी को सुखा दिया, और तुम ने अमरियों के दोनों बादशाहों सीहीन और 'ओज़े से जो यरदन के उस पार थे और जिनको तुमने बिल्कुल हलाक कर डाला क्या किया। 11 यह सब कुछ सुनते ही हमारे दिल पिघल गये और तुम्हारी वजह से फिर किसी शख्स में जान बाकी न रही क्यैंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा ही ऊपर आसमान का और नीचे जमीन का खुदा है। 12 इसलिए अब मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूँ कि मुझ से खुदावन्द की कसम खाओ कि चूँकि मैंने तुम पर मेहरबानी की है तुम भी मेरे बाप के घराने पर मेहरबानी करोगे और मुझे कोई सच्चा निशान दो; 13 कि तुम मेरे बाप और माँ और भाइयों और बहनों को और जो कुछ उनका है सबको सलामत बचा लोगे और हमारी जानों को मौत से महफूज़ रखोगे। 14 उन आदमियों ने उस से कहा कि हमारी जान तुम्हारी जान की जिम्मेदार होगी बर्ती कि तुम हमारे इस काम का जिक्र न कर दो और ऐसा होगा कि जब खुदावन्द इस मुल्क को हमारे कब्जे में कर देगा तो हम ऐसे साथ मेहरबानी और वफ़ादारी से पेश आयेंगे। 15 तब उस 'औरत ने उनको खिड़की के रास्ते रस्सी से नीचे उतार दिया क्यैंकि उस का घर शहर की दीवार पर बना था और वह दीवार पर रहती थी। 16 और उस ने उस से कहा कि पहाड़ को चल दो ऐसा न हो कि पीछा करने वाले तुम को मिल जायें; और तीन दिन तक वहीं छिपे रहना जब तक पीछा करने वाले लौट न आयें, इस के बाद अपना रास्ता लेना। 17 तब उन आदमियों ने उस से कहा कि हम तो उस कसम की तरफ से जो तुने हम को खिलाई है वे इलज़ाम रहेंगे। 18 इसलिए देख! जब हम इस मुल्क में आएं तो तू सुर्खं रंग के सूत की इस डोरी को उस खिड़की में जिससे तुने हम को नीचे उतारा है बांध देना; और अपने बाप और माँ और भाईयों बल्कि अपने बाप के सारे घराने को अपने पास घर में जमा कर रखना। 19 फिर जो कोई तेरे घर के दरवाजों से निकल कर गली में जाये, उस का खन उसी के सर पर होगा और हम बे गुनाह ठहरेंगे; और जो कोई तेरे साथ घर में होगा उस पर अगर किसी का हाथ चले, तो उसका खन हमारे सर पर होगा। 20 और अगर तू हमारे इस काम का जिक्र कर दे, तो हम उस कसम की तरफ से जो तुने हम को खिलाई है वे बेल्ज़ाम हो जाएँगे। 21 उसने कहा, "जैसा तुम कहते हो वैसा ही हो।" इसलिए उसने उनको रवाना किया और वह चल दिए; तब उसने सुर्खं रंग की वह डोरी खिड़की में बौद्ध दी। 22 और वह जाकर पहाड़ पर पहुँचे और तीन दिन तक वहीं ठहरे रहे, जब तक उनका पीछा करने वाले लौट न आएं, और

उन पीछा करने वालों ने उनको सारे रास्ते ढूँढ़ा पर कही न पाया। 23 फिर यह दोनों आदमी लैटै और पहाड़ से उतर कर पार गये, और नून के बेटे यशू'अ के पास जाकर सब कुछ जो उन पर गुज़रा था उसे बताया। 24 और उन्होंने यशू'अ से कहा “यकीनन खुदावन्द ने वह सारा मुल्क हमारे कब्जे में कर दिया है क्यूँकि उस मुल्क के सब बाशिदे हमारे आगे डेरे जा रहे हैं।”

3 तब यशू'अ सुबह सर्वे उठा, और वह सब बनी इसाईल शिरीम से रवाना हो

कर यरदन पर आए, और पार उत्तरने से पहले वही टिके। 2 और तीन दिन के बाद मनसबदार लशक के बीच होकर गुज़रे। 3 और उन्होंने लोगों को हक्म दिया कि जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के अहद के सन्दूक को देखो और काहिनों और लाली उसे उठाये हुए हों, तो तुम अपनी जगह से उठ कर उसके पीछे पीछे चलना। 4 लेकिन तुम्हारे और उस के बीच पैमाइश करके करीब दो हजार हाथ का फासला रहे, उसके नज़ीक न जाना; ताकि तुम को मालम हो कि किस रास्ते तुमको चलना है, क्यूँकि तुम अब तक इस राह से कभी नहीं गुज़रे। 5 और यशू'अ ने लोगों से कहा, “तुम अपने आप को पाक करो क्यूँकि कल के दिन खुदावन्द तुम्हारे बीच 'अजीब — ओ — गरीब काम करेगा।” 6 फिर यशू'अ ने काहिनों से कहा कि तुम 'अहद के सन्दूक को ले कर लोगों के आगे आगे पार उतरो। चुनाँचे वह 'अहद के सन्दूक को लेकर लोगों के आगे आगे चले। 7 और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, “आज के दिन से मैं तुझे सब इसाईलियों के सामने सरफराज करना शू' करूँगा, ताकि वह जान लें कि जैसे मैं मूसा के साथ रहा वैसे ही तेरे साथ रहँगा। 8 और तू उन काहिनों को जो 'अहद के सन्दूक को उठाये यह हक्म देना, कि जब तुम यरदन के पानी के किनारे पहुँचो तो यहर रहँगा।” 9 और यशू'अ ने बनी इसाईल से कहा कि पास आकर खुदावन्द अपने खुदा की बातें सुनो। 10 और यशू'अ कहने लगा कि इस से तुम जान लोगे कि जिन्दा खुदा, तुम्हारे बीच है, और वही जस्तर कनानियों और हितियों और हावियों, और फरिजियों और जरजासियों, और अमोरियों और यवसियों को तुम्हारे आगे से डका करेगा। 11 देखो, सारी जमीन के मालिक के 'अहद का सन्दूक तुम्हारे आगे आगे यरदन में जाने को है। 12 इसलिए अब तुम हर कबीला पीछे एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी इसाईल के कबीलों में से चुन लो। 13 और जब यरदन के पानी में उन काहिनों के पाँव के तलवे टिक जाएँगे, जो खुदावन्द या'नी सारी दुनिया के मालिक के 'अहद का सन्दूक उठाते हैं तो यरदन का पानी या'नी वह पानी जो उपर से बहता हुआ नीचे आता है थम जायेगा, और उस का ढेर लग जाएगा। 14 और जब लोगों ने यरदन के पार जाने को अपने खेंगों से रवानी की और वह काहिन जो 'अहद का सन्दूक उठाये हुए थे, लोगों के आगे आगे हो लिए। 15 और जब 'अहद के संदूक के उठाने वाले यरदन पर पहुँचे और उन काहिनों के पाँव जो सन्दूक को उठाये हुए थे, किनारे के पानी में ढब गए क्यूँकि फसल के तमाम दिनों में यरदन का पानी चारों तरफ अपने किनारों से ऊपर चढ़कर बहा करता है, 16 तो जो पानी ऊपर से आता था वह खबू दूर आदम के पास जो जरतान के बराबर एक शहर है, रुक कर एक ढेर हो गया; और वह पानी जो मैदान के दरिया या'नी दरिया — ए — शेर की तरफ बह कर गया था बिल्कुल अलग हो गया और लोग 'ऐन यरीह के मुकाबिल पार उतरे। 17 और वह काहिन जो खुदावन्द के 'अहद का संदूक उठाये हुए थे यरदन के बीच में सूखी जमीन पर खड़े रहे; और सब इसाईली खुश कमीन पर हो कर गुज़रे, यहाँ तक कि सारी क्रौम साफ यरदन के पार हो गई।

4 और जब सारी क्रौम यरदन के पार हो गई तो खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि। 2 कबीला पीछे एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी लोगों में से

चुन लो। 3 और उन को हुक्म दो कि तुम यरदन के बीच में से जहाँ काहिनों के पाँव जमे हुए थे बारह पत्थर लो और उनको अपने साथ ले जा कर उस मंजिल पर जहाँ तुम आज की रात टिकोगे रख देना। 4 तब यशू'अ ने उन बारह आदमियों को जिनको उस ने बनी इसाईल में से कबीला पीछे एक आदमी के हिसाब से तैयार कर रखा था बुलाया। 5 और यशू'अ ने उन से कहा, “तुम खुदावन्द अपने खुदा के 'अहद के सन्दूक के बीच में जाओ, और तुम मैं से हर शब्द बनी इसाईल के कबीलों के शुमार के मुताबिक एक एक पत्थर अपने कन्धे पर उठा ले। 6 ताकि यह तुम्हारे बीच एक निशान हो, और जब तुम्हारी औलाद आइन्दा जमाने में तुम से पैछ, कि इन पत्थरों से तुम्हारा क्या मतलब है? 7 तो तुम उन को जबाब देना कि यरदन का पानी खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे दो हिस्से हो गया था; क्यूँकि जब वह यरदन पर आ रहा था तब यरदन का पानी दो हिस्से हो गया। यूँ यह पत्थर हमेशा के लिए बनी इसाईल के वास्ते यादगार ठहरेंगे।” 8 चुनाँचे बनी इसाईल ने यशू'अ के हुक्म के मुताबिक किया, और जैसा खुदावन्द ने यशू'अ से कहा था उन्होंने बनी इसाईल के कबीलों के शुमार के मुताबिक यरदन के बीच में से बारह पत्थर उठा लिए; और उन को उठा कर अपने साथ उस जगह ले गये जहाँ वह टिके और वही उनको रख दिया। 9 और यशू'अ ने यरदन के बीच में से जगह जहाँ 'अहद के सन्दूक के उठाने वाले काहिनों ने पाँव जमाये थे बारह पत्थर खड़े किये; चुनाँचे वह आज के दिन तक बरी हैं। 10 क्यूँकि वह काहिन जो सन्दूक को उठाये हुए थे यरदन के बीच ही मैं खड़े रहे, जब तक उन सब बातों के मुताबिक जिनका हुक्म मूसा ने यशू'अ को दिया था हर एक बात पूरी न हो चुकी, जिसे लोगों को बताने का हुक्म खुदावन्द ने यशू'अ को किया था; और लोगों ने जल्दी की ओर पार उतरे। 11 और ऐसा हुआ कि जब सब लोग साफ पार हो गये, तो खुदावन्द का सन्दूक और काहिन भी लोगों के स्वरूप पार हुए। 12 और बनी स्विन और बनी ज़द और मनस्ती के आधे कबीले के लोग मूसा के कन्धे के मुताबिक हथियार बांधे हुए बनी इसाईल के आगे पार गये; 13 यानी करीब चालीस हजार आदमी लडाई के लिए तैयार और हथियार बांधे हुए खुदावन्द के सामने पार होकर यरीह के मैदान में पहुँचे ताकि जंग करें। 14 उस दिन खुदावन्द ने सब इसाईलियों के सामने यशू'अ को सरफराज किया; और जैसा वह मूसा से डरते थे, वैसे ही उससे उसकी जिन्दानी भर डरते रहे। 15 और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि। 16 इन काहिनों को जो 'अहद का सन्दूक उठाये हुए हैं, हुक्म कर कि वह यरदन में से निकल आयें। 17 चुनाँचे यशू'अ ने काहिनों को हुक्म दिया कि यरदन में से निकल आओ। 18 और जब वह काहिन जो खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक उठाये हुए थे यरदन के बीच में से निकल आए, और उनके पाँव के तलवे खुशकी पर आ टिके तो यरदन का पानी फिर अपनी जगह पर आ गया और पहले की तरह अपने सब किनारों पर बहने लगा। 19 और लोग पहले महीने की दसवीं तारीख को यरदन में से निकल कर यरीह की पूरबी समरह पर जिल्जाल में खेमाजन हुए। 20 और यशू'अ ने उन बारह पत्थरों को जिनको उन्होंने यरदन में से लिया था जिल्जाल में खड़ा किया। 21 और उस ने बनी इसाईल से कहा कि जब तुम्हारे लड़के आइन्दा जमाने में अपने अपने बाप दादा से पैछे, कि इन पत्थरों का मतलब क्या है? 22 तो तुम अपने लड़कों को यही बताना कि इसाईली खुशकी खुशकी हो कर इस यरदन के पार आए थे। 23 क्यूँकि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने जब तक तुम पार न हो गये, यरदन के पानी को तुम्हारे सामने से हटा कर सुखा दिया; जैसा खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने बहर — ए — कूलज़ुम से किया, कि उसे हमारे सामने से हटा कर सुखा दिया जब तक हम पार न हो गये। 24 ताकि जमीन की सब कौमें जान

लें कि खुदावन्द का हाथ ताकतवर है। और खुदावन्द तुम्हारे खुदा से हमेशा डरती रहें।

5 और जब उन अमेरियों के सब बादशाहों ने जो यरदन के पार पश्चिम की तरफ थे, और उन कनानियों के तमाम बादशाहों ने जो समन्दर के नज़दीक थे सुना, कि खुदावन्द ने बनी इसाईल के सामने से यरदन के पानी को हटा कर सुखा दिया, जब तक हम पर न आ गये तो उनके दिल डर गये और उन में बनी इसाईल की वजह से जान बाकी न रही। 2 उस वक्त खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि चकमक की छुरियां बना कर बनी इसाईल का खतना फिर दूसरी बार कर दे। 3 और यशू'अ ने चकमक की छुरियां बनायी और खल्लियों की पहाड़ी पर बनी इसाईल का खतना किया। 4 और यशू'अ ने जो खतना किया उसकी वजह यह है, कि वह लोग जो मिस्र से निकले, उन में जितने जारी मर्द थे वह सब वीरों में मिस्र से निकले थे उनका खतना हो चुका था, लेकिन वह सब लोग जो वीरों में मिस्र से निकलने के बाद रास्ते ही में पैदा हुए थे उनका खतना नहीं हुआ था। 6 क्यूँकि बनी इसाईल चार्टास बरस तक वीरों में फिरते रहे, जब तक सारी कौम यारी सब जंगी मर्द जो मिस्र से निकले थे फना न हो गये। इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द की बात नहीं मानी थी। उन ही से खुदावन्द ने कस्म खा कर कहा था, कि वह उनको उस मूल्क को देखने भी न देगा जिसे हमको देने की कस्म उस ने उनके बाप दादा से खाइ और जहाँ दूध और शहद बहता है। 7 तब उन ही के लड़कों का जिनको उस ने उनकी जगह बरपा किया था, यशू'अ ने खतना किया क्यूँकि वह नाम खतन थे इसलिए कि रास्ते में उनका खतना नहीं हुआ था। 8 और जब सब लोगों का खतना कर चुके तो यह लोग खेमागाह में अपनी अपनी जगह रहे जब तक अच्छे न हो गये। 9 फिर खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि आज के दिन में मिस्र की मलापत को तुम पर से ढलका दिया। इसी वजह से आज के दिन तक उस जगह का नाम जिल्जाल है। 10 और बनी इसाईल ने जिल्जाल में डेरे डाल लिए, और उन्होंने यरीह के मैदानों में उसी महीने की चौदहवीं तारीख को शाम के वक्त 'ईद — ए — फस्त मनाई। 11 और 'ईद — ए — फस्त के दूसरे दिन उस मूल्क के पुराने अनाज की बेखारी रोटियां और उसी रोज भूनी हुई बाले भी खायी। 12 और दूसरे ही दिन से उनके उस मूल्क के पुराने अनाज के खाने के बाद मन्न रोक दिया गया और उगे फिर बनी इसाईल को मन्न कभी न मिला, लेकिन उस साल उन्होंने मूल्क कनान की पैदावार खाई। 13 और जब यशू'अ यरीह के नज़दीक था तो उस ने अपनी आँखें उठायी और क्या देखा कि उसके मुकाबिल एक शरख़स हाथ में अपनी नंगी तलवार लिए खड़ा है; और यशू'अ ने उस के पास जा कर उस से कहा, "त हमारी तरफ है या हमारे दुश्मनों की तरफ?" 14 उस ने कहा, "नहीं! बल्कि मैं इस वक्त खुदावन्द के लश्कर का सरदार हो कर आया हूँ।" 15 और यशू'अ ने जमीन पर सरनाहूँ हो कर सिज्दा किया और उससे कहा, "मेरे मालिक का आपने खादिम से क्या इशाद है?" 15 और खुदावन्द के लश्कर के सरदार ने यशू'अ से कहा कि तू अपने पांव से अपनी जूती उतार दे क्यूँकि यह जगह जहाँ तू खड़ा है पाक है। इसलिए यशू'अ ने ऐसा ही किया।

6 और यरीह बनी इसाईल की वजह से निहायत मजबूती से बंद था और न तो कोई बाहर जाता और न कोई अन्दर आता था। 2 और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि देख मैं ने यरीह को और उसके बादशाह और जबरदस्त सूरमाओं को तेरे हाथ में कर दिया है। 3 इसलिए तम जंगी मर्द शहर को पेर लो, और एक दफ़ा' उसके चौगिर्द गश्त करो। छः दिन तक तुम ऐसा ही करना। 4 और सात काहिन सन्दूक के आगे आगे मैंडों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए चले।

और सातवें दिन तुम शहर की चारों तरफ सात बार धूमना, और काहिन नरसिंगे फँकें। 5 और यूँ होगा कि जब वह मैंडे के सींग को जोर से झूँके और तुम नरसिंगे की आवाज सुनो तो सब लोग निहायत जोर से ललकारें; तब शहर की दीवार बिल्कुल गिर जायेगी और लोग अपने अपने सामने सीधी चढ़ जायें। 6 और नन के बेटे यशू'अ ने काहिनों को बुला कर उन से कहा कि 'अहद के सन्दूक को उठाओ, और सात काहिन मैंडों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के सन्दूक के आगे आगे चले।' 7 और उन्होंने लोंगों से कहा, "बढ़ कर शहर को धेर लो और जो आदमी हथियार लिए हैं वह खुदा के सन्दूक के आगे आगे चलें।" 8 और जब यशू'अ लोंगों से यह बातें कह चुका, तो सात काहिन मैंडों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के आगे आगे चले और वह नरसिंगे फँकते गये और खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक उनके पीछे पीछे चला।' 9 और वह हथियार लिए आदमी उन काहिनों के आगे आगे चले जो नरसिंगे फँक रहे थे, और दुबाला सन्दूक के पीछे पीछे चला, और काहिन चलते चलते नरसिंगे फँकते जाते थे। 10 और यशू'अ ने लोंगों को हक्म दिया कि न तुम ललकारना, और न तुम्हारी आवाज सुनायी दे और न तुम्हारे यूँह से कोई बात निकले। जब मैं तुम को ललकारने को कहूँ तब तुम ललकारना। 11 इसलिए उसने खुदावन्द के सन्दूक को शहर के गिर्द एक बार फिरवाया। तब वह खेमागाह में आए और वही रात काटी। 12 और यशू'अ सुबह सर्वे उठा और काहिनों ने खुदावन्द का सन्दूक उठा लिया। 13 और वह सात काहिन मैंडों के सींगों के सात नरसिंगे लिए हुए खुदावन्द के सन्दूक के पीछे पीछे चला, और काहिन चलते चलते नरसिंगे फँकते जाते थे। 14 और दूसरे दिन भी वह एक बार शहर के गिर्द धूम कर खेमागाह में फिर आए। उन्होंने छे दिन तक एसा ही किया। 15 और सातवें दिन यूँ हुआ कि वह सुबह को पौ फटने के बक्त उठे और उसी तरह शहर के गिर्द सात बार पिरे; सात बार शहर के गिर्द सिर्फ़ उसी दिन पिरे। 16 और सातवीं बार यहु़ा कि जब काहिनों ने नरसिंगे फँके तो यशू'अ ने लोंगों से कहा, "ललकारो। क्यूँकि खुदावन्द ने यह शहर तुम को दे दिया है।" 17 और वह शहर और जो कुछ उस में है सब खुदावन्द की खातिर बर्बाद होगा। सिर्फ़ राहिब कस्ती और किनने उसके साथ घर में हों वह सब जीते बचेंगे, इसलिए कि उस ने उन काहिनों को जिनको हम ने भेजा छुपा रखा था। 18 और तुम बहरहाल अपने आप को मख्सूस की हुई चीजों से बचाए रखना, ऐसा न हो कि उनको मख्सूस करने के बाद तुम किसी मख्सूस की हुई चीज़ को लौ और यूँ इसाईल की खेमागाह को लाए नहीं कर डालो और उसे दुख दो। 19 लेकिन सब चाँदी और सोना और बरतन जो पीतल और लोहे के हों खुदावन्द के लिए पाक हैं इसलिए वह खुदावन्द के खजाने में दाखिल किये जाएँ।" 20 तब लोंगों ने ललकारा और काहिनों ने नरसिंगे फँके, और ऐसा हुआ कि जब लोंगों ने नरसिंगे की आवाज सुनी तो उन्होंने बुलंद आवाज से ललकारा और दीवार बिल्कुल गिर पड़ी और लोंगों में से हर एक आदमी अपने सामने से चढ़ कर शहर में थे क्या मर्द क्या? औरत, क्या जबान क्या बुड़े, क्या बैल क्या भेड़ क्या गधे सब को तलवार की धार से बिल्कुल हलाक कर दिया। 22 और यशू'अ ने उन दोनों आदमियों से जिन्होंने उस मूल्क की जासूसी की थी कहा कि उस कस्ती के घर जाओ, और वहाँ से जैसी तुम ने उस से कस्म खाइ है उसके मुताबिक उस 'औरत को और जो कुछ उसके पास है सब को निकाल लाओ।' 23 तब वह दोनों जबान जासूस अन्दर गये और राहब को और उसके बाप और उसकी माँ और उसके भाइयों को, और उसके अस्बाब बल्कि उसके सारे

खानदान को निकाल लाये, और उनको बनी इसाईंल की खेमागाह के बाहर बिटा दिया। 24 फिर उन्होंने उस शहर को और जो कुछ उस में था सब को आग से फूँक दिया और सिर्फ़ चाँदी और सोने को और पीतल और लोहे के बरतनों को खुदावन्द के घर के ख़जाने में दाखिल किया। 25 लेकिन यशूअ ने राहब कस्बी और उस के बाप के घराने को और जो कुछ उसका था सब को सलामत बचा लिया। उसकी रिहाइश आज के दिन तक इसाईंल में है, क्योंकि उस ने उन क्रासिदों को जिनको यशूअ ने यरीह में जाससी के लिए भेजा था छिपा रखा था। 26 और यशूअ ने उस वक्त उन को क्रसम दे कर ताकीद की और कहा कि जो शरब उठ कर इस यरीह शहर को फिर बनाये वह खुदावन्द के सामने मला'ऊन हो। वह अपने पहलौठे को उसकी नीव डालते बक्त और अपने सब से छोटे बेटे को उसके फाटक लगवाते बक्त खो बैठेगा। 27 इसलिए खुदावन्द यशूअ के साथ था और उस सारे मुल्क में उसकी शोहरत फैल गयी।

7 लेकिन बनी इसाईंल ने मरम्भस की हुई चीज़ में खयानत की, क्योंकि 'अकन

बिन कर्मी बिन जब्दी बिन जारह ने जो यहदाह के कबीले का था उन मरम्भस की हुई चीजों में से कुछ ले लिया; इसलिए खुदावन्द का कहर बनी इसाईंल पर भड़का। 2 और यशूअ ने यरीह से 'एः' को जो बैतएल की पूर्जी सिम्मत में बैतआवन के करीब आबाद है, कुछ लोग यह कहकर भेजे, कि जाकर मुल्क का हाल दरियापत करो! और इन लोगों ने जाकर 'एः' का हाल दरियापत किया। 3 और वह यशूअ के पास लौटे और उस से कहा, "सब लोग न जाएँ सिफ़ दो तीन हजार मर्द चढ़ जाएँ और 'एः' को मार लें। सब लोगों को वहाँ जाने की तकलीफ़ न दें, क्योंकि वह थोड़े से है" 4 चुनौती लोगों में से तीन हजार मर्द के करीब वहाँ चढ़ गये, और 'एः' के लोगों के सामने से भाग आए। 5 और 'एः' के लोगों ने उन में से तकरीबन छतीसी आदमी मार लिए; और फाटक के सामने से लेकर शबरीम तक उनको खटेड़ते आए और उतार पर उनको मारा। इसलिए उन लोगों के दिल पिघल कर पानी की तरह हो गये। 6 तब यशूअ और सब इसाईंली बुजुर्जों ने अपने अपने कपड़े फाड़े और खुदावन्द के 'अहद' के सन्दर्भ के आगे शाम तक जमीन पर औंधे पड़े रहे, और अपने अपने सर पर खाक डाली। 7 और यशूअ ने कहा, "हाय ऐ मालिक खुदावन्द! तू हमको अपोरियों के हाथ में हवाला करके, हमारा नास कराने की खातिर इस कौम को यरदन के इस पार क्यों लाया? काश कि हम सब करते और यरदन के उस पार ही ठहरे रहते। 8 ऐ मालिक, इसाईंलियों के अपने दुश्मनों के आगे पीठ फेर देने के बाद मैं क्या कहूँ! 9 क्योंकि कनानी और इस मुल्क के सब बाशिन्दे यह सुन कर हम को धेर लेंगे, और हमारा नाम मिटा डालेंगे। फिर तू अपने बुजुर्ज नाम के लिए क्या करेगा?" 10 और खुदावन्द ने यशूअ से कहा, उठ खड़ा हो। तू क्यूँ इस तरह औंधा पड़ा है? 11 इसाईंलियों ने गुनाह किया, और उन्होंने उस 'अहद' को जिसका मैने उनको हक्म दिया तोड़ा है; उन्होंने मरम्भस की हुई चीजों में से कुछ ले भी लिया, और चोरी भी की और रियाकारी भी की और अपने सामान में उसे मिला भी लिया है। 12 इस लिए बनी इसाईंल अपने दुश्मनों के आगे ठहर नहीं सकते। वह अपने दुश्मनों के आगे पीठ फेरते हैं, क्योंकि वह मल'ऊन हो गये मैं आगे को तुम्हरे साथ नहीं रहँगा, जब तक तुम मरम्भस की हुई चीज़ को अपने बीच से दूर न कर दो। 14 इसलिए तुम कल सुबह को अपने कबीले के मुताबिक हाजिर किये जाओगे, और जिस कबीले को खुदावन्द पकड़े वह एक एक घर कर के पास आए; और जिस घर

खानदान को खुदावन्द पकड़े वह एक एक घर कर के पास आए; और जिस घर को खुदावन्द पकड़े वह एक — एक आदमी करके पास आए। 15 तब जो कोई मरम्भस की हुई चीज़ रखता हुआ पकड़ा जाये, वह और जो कुछ उसका हो सब आग से जला दिया जाये; इस लिए कि उस ने खुदावन्द के 'अहद' को तोड़ डाला और बनी इसाईंल के बीच शरारत का काम किया। 16 तब यशूअ ने सुबह सर्वेरे उठ कर इसाईंलियों को कबीला बा कबीला हाजिर किया, और यहदाह का कबीला पकड़ा गया। 17 फिर वह यहदाह के खानदानों को नजदीक लाया, और जारह का खानदान पकड़ा गया। फिर वह जारह के खानदान के एक एक आदमी को नजदीक लाया, और जब्दी पकड़ा गया। 18 फिर वह उसके घराने के एक एक आदमी को नजदीक लाया, और 'अकन बिन कर्मी बिन जब्दी बिन जारह जो यहदाह के कबीले का था पकड़ा गया। 19 तब यशूअ ने 'अकन से कहा, "ऐ मेरे फर्ज़द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि खुदावन्द इसाईंल के खुदा की तमजीद कर और उसके आगे इकरार कर, अब तु मुझे बता दे कि तुम क्या किया है और मुझ से मत छिपा।" 20 और 'अकन ने यशूअ को जबाब दिया, "हकीकत में मैने खुदावन्द इसाईंल के खुदा का गुनाह किया है, और यह यह मुझ से सरजद हआ है। 21 कि जब मैने लूट के माल में बाबूल की एक नकीस चादर, और दो सौ मिस्काल चाँदी और पचास मिस्काल सोने की एक ईंट देखी तो मैने ललचा कर उन को ले लिया; और देख वह मेरे खेमे में जमीन में छिपाई हुई हैं और चाँदी उनके नीचे है।" 22 तब यशूअ ने कासिद भेजे; वह उस डेरे को दौड़े गये, और क्या देखा कि वह उसके डेरे में छिपाई हुई हैं और चाँदी उनके नीचे है। 23 वह उनको डेरे में से निकाल कर यशूअ और सब बनी इसाईंल के पास लाये, और उनको खुदावन्द के सामने रख दिया। 24 तब यशूअ और सब इसाईंलियों ने जारह के बेटे 'अकन को, और उस चाँदी और चादर और सोने की ईंट को, और उसके बेटों और बेटियों को, और उसके बैलों और गधों और भेड़ बकरियों और डेरे को, और जो कुछ उसका था सबको लिया और बादी — ए — अकर में उनको ले गये। 25 और यशूअ ने कहा कि तुम हम को क्यूँ दुख दिया? खुदावन्द आज के दिन तुझे दुख देगा! तब सब इसाईंलियों ने उसे संग्रास किया; और उन्होंने उनको आग में जलाया और उनको पत्थरों से मारा। 26 और उन्होंने उसके पत्थरों का एक बड़ा डेर लगा दिया जो आज तक है तब खुदावन्द अपने कहर — ए — शदीद से बाज़ आया। इस लिए उस जगह का नाम आज तक बादी — ए — 'अकर है।

8 और खुदावन्द ने यशूअ से कहा, "खौफ़ न खा और न हिरास़ हो सब जंगी

मर्दों को साथ ले और उठ कर एः पर चढ़ाई कर देख मैंने 'ए' के बादशाह और उसकी कौम और उसके शहर और उसके 'इलाके' को तेरे कब्जे में कर दिया है। 2 और तू एः और उसके बादशाह से वही करना जो तू ये यरीह और उसके बादशाह से किया। सिर्फ़ वहाँ के माल — ए — गनीमत और चौपायों को तुम अपने लिए लूट के तौर पर ले लेना। इसलिए तू उस शहर के लिए उसी की पीछे अपने आदमी घाट में लगा दो।" 3 तब यशूअ और सब जंगी मर्द एः पर चढ़ाई करने को उठे; और यशूअ ने तीस हजार मर्द जो जबरदस्त सरामा थे, चून कर रात ही की उनको रवाना किया। 4 और उनको यह हक्म दिया कि देखो! तुम उस शहर के मुकाबिल शहर ही के पीछे घाट में बैठना; शहर से बहुत दूर न जाना बल्कि तुम सब तैयार रहना। 5 और मैं उन सब आदमियों को लेकर जो मेरे साथ हैं, शहर के नजदीक आँगा; और ऐसा होगा कि जब वह यहमारा सामना करने को पहले की तरह निकल आएंगे, तो हम उनके सामने से भागेंगे। 6 और वह हमारे पीछे निकल चले आयेंगे, क्योंकि वह कहेंगे कि यह तो पहले की तरह हमारे सामने से भागे जाते हैं, इसलिए हम उनके आगे से भागेंगे। 7 और तुम घाट में से

उठ कर शहर पर कब्जा कर लेना, क्यूंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा उसे तुम्हारे कब्जे में कर देगा। 8 और जब तुम उस शहर को ले लो तो उसे आग लगा देना; खुदावन्द के कहने के मुाबिक काम करना। देखो, मैंने तुमको हुक्म कर दिया। 9 और यशू'अ ने उनको रवाना किया, और वह आराम गाह में गये और बैठ — एल और एः के पश्चिम की तरफ जा बैठें; लेकिन यशू'अ उस रात को लोगों के बीच टिका रहा। 10 और यशू'अ ने सुख सबैरे उठ कर लोगों की मैजूदात ली, और वह बनी इसाईल के बुजुर्गों को साथ लेकर लोगों के आगे आगे एः की तरफ चला। 11 और सब जंगी मर्द जो उसके साथ थे चले, और नजदीक पहुँचकर शहर के सामने आए और एः के उत्तर में ढेरे डाले, और यशू'अ और 'ए के बीच एक वादी थी। 12 तब उस ने कोई पाँच हजार आदमियों को लेकर बैठएल और एः के बीच शहर के पश्चिम की तरफ उनको आराम गाह में बिठाया। 13 इसलिए उन्होंने लोगों को याँनी सारी फौज जो शहर के उत्तर में थी, और उनको जो शहर की पश्चिमी तरफ घाट में थे ठिकाने पर कर दिया; और यशू'अ उसी रात उस वादी में गया। 14 और जब एः के बादशाह ने देखा, तो उन्होंने जल्दी की और सबैरे उठे और शहर के आदमी याँनी वह और उसके सब लोग निकल कर मुंअच्यन बक्त पर लडाई के लिए बनी इसाईल के मुकाबिल मैदान के सामने आएः और उसे खबर न थी कि शहर के पीछे उसकी घाट में लोग बैठे हए हैं। 15 तब यशू'अ और सब इसाईलियों ने ऐसा दिखाया, गोया उन्होंने उन से शिक्षत खाई और वीराने के रास्ते होकर भागे। 16 और जितने लोग शहर में थे वह उनका पीछा करने के लिए बुलाये गये; और उन्होंने यशू'अ का पीछा किया और शहर से दूर निकले चले गये। 17 और एः और बैठएल में कोई आदमी बाकी न रहा जो इसाईलियों के पीछे न गया हो; और उन्होंने शहर को खुला छोड़ कर इसाईलियों का पीछा किया। 18 तब खुदावन्द ने यशू'अ से कह कि जो बरचा तें हाथ में है उसे एः की तरफ बढ़ा दे, क्यूंकि मैं उसे तेर कब्जे में कर दूँगा और यशू'अ ने उस बढ़े को जो उसके हाथ में था शहर की तरफ बढ़ाया। 19 तब उसके हाथ बढ़ते ही जो घाट में थे अपनी जाह से निकले, और दौड़ कर शहर में दाशिल हुए और उसे सर कर लिया, और जल्द शहर में आग लगा दी। 20 और जब एः के लोगों ने पीछे मुड़ कर नजर की, तो देखा, कि शहर का धुंआ आसमान की तरफ उठ रहा है और उनका बस न चला कि वह इधर या उधर भागें, और जो लोग वीराने की तरफ भागे थे वह पीछा करने वालों पर उलट पड़े। 21 और जब यशू'अ और सब इसाईलियों ने देखा कि घाट वालों ने शहर ले लिया और शहर का धुंआ उठ रहा है, तो उन्होंने पलट कर एः के लोगों को कल्ला किया। 22 और वह दूसरे भी उनके मुकाबले को शहर से निकले; इसलिए वह सब के सब इसाईलियों के बीच में, जो कुछ तो इधर और उधर थे पड़ गये, और उन्होंने उनको मारा यहाँ तक कि किसी को न बाकी छोड़ा न भागने दिया। 23 और वह एः के बादशाह को जिन्दा गिरफ्तार करके यशू'अ के पास लाये। 24 और जब इसाईली एः के सब बाशिंदों को मैदान में उस वीराने के बीच जहाँ उन्होंने इनका पीछा किया था कल्ला कर चुके, और वह सब तलवार से मारे गये यहाँ तक कि बिल्कुल फना हो गये, तो सब इसाईली एः को फिरे और उसे बर्बाद कर दिया। 25 चुनाँचे वह जो उस दिन मारे गये, मर्द 'औरत मिला कर बारह हजार याँनी एः के सब लोग थे। 26 क्यूंकि यशू'अ ने अपना हाथ जिस से वह बरछे को बढ़ाये हुए था नहीं खींचा, जब तक कि उस ने एः के सब रहने वालों को बिल्कुल हलाक न कर डाला। 27 और इसाईलियों ने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक, जो उस ने यशू'अ को दिया था अपने लिए सिर्फ़ शहर के चौपायां और माल — ए — गनीमत को लट्ठ में लिया। 28 तब यशू'अ ने एः को जला कर हमेशा के लिए उसे एक ढेर और वीराना बना दिया, जो आज के दिन तक है। 29 और उस ने

एः के बादशाह को शाम तक दरखत पर टांग रखा; और जूँ ही सूरज ढूबने लगा, उन्होंने यशू'अ के हुक्म से उसकी लाश को दरखत से उत्तर कर शहर के फाटक के सामने डाल दिया, और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर लगा दिया जो आज के दिन तक है। 30 तब यशू'अ ने कोह — ए — 'खुदावन्द इसाईल के खुदा के लिए एक मजबूत बनाया। 31 जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने बनी इसाईल को हुक्म दिया था, और जैसा मूसा की शरीँ अत की किंतब में लिखा है; यह मजबूत बे खडे पत्थरों का था जिस पर किसी ने लोहा नहीं लगाया था, और उन्होंने उस पर खुदावन्द के सामने सोस्तनी कुर्बानियाँ और सलामती के जब्बीहे पेश किये। 32 और उस ने बहाँ उन पत्थरों पर मूसा की शरीँ अत की जो उस ने लिखी थी, सब बनी इसाईल के सामने एक नकल कन्दा की। 33 और सब इसाईली और उनके बुजुर्ग और मनसबदार और काजी, याँनी देसी और परदेसी दोनों लाली काहिनों के आगे जो खुदावन्द के आगे, जो खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक' के उठाने वाले थे, सन्दूक के इधर और उधर खडे हुए। इन में से आधे तो कोह — ए — गरजीम के मुकाबिल थे जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने पहले हुक्म दिया था कि वह इसाईली लोगों को बरकत दें। 34 इसके बाद उस ने शरीँ अत की सब बातें, याँनी बरकत और लान्त जैसी वह शरीँ अत की किंतब में लिखी हुई है, पढ़ कर सुनायी। 35 चुनाँचे जो कुछ मूसा ने हुक्म दिया था, उस में से एक बात भी ऐसी न थी जिसे यशू'अ ने बनी इसाईल की सारी जमा अत, और 'औरतों और बाल बच्चों और उन मुसाफिरों के सामने जो उनके साथ मिल कर रहते थे न पढ़ा हो।

9 और जब उन सब हिती, अमोरी, कना॑नी, फरिज्जी, हब्बी और यबसी बादशाहों ने जो यरदन के उस पार पहाड़ी मुल्क और नशेब की जमीन और बड़े समन्दर के उस साहिल पर जो लुबनान के सामने हैं रहते थे यह सुना। 2 तो वह सब के सब इकट्ठा हुए ताकि मुताफिक हो कर यशू'अ और बनी इसाईल से जंग करें। 3 और जब जिबा॑न के बाशिंदों ने सुना कि यशू'अ ने येरीह और एः से क्या क्या किया है। 4 तो उन्होंने भी हीला बाजी की और जाकर सफरीरों का भेस भरा, और पुराने बोरे और पुराने फटे हुए और मरम्मत किये हुए शराब के मशकीजे अपने गधों पर लादे। 5 और पॉव में पुराने वैन्दन लगे हुए जूते और तन पर पुराने कपड़े डाले, और उनके सफर का खाना सूरी फॉर्मी लगी हुई रोटियाँ थी। 6 और वह जिल्जाल में खेमागाह को यशू'अ के पास जाकर उस से और इसाईली मर्दों से कहने लगे, "हम एक दूर मुल्क से आयें हैं; इसलिए अब तुम हम से 'अहद बाँधों।'" 7 तब इसाईली मर्दों ने उन हव्वियों से कहा, कि शायद तुम हमारे बीच ही रहते हो; फिर हम तुम से क्वूकूर 'अहद बाँधें।' 8 उन्होंने यशू'अ से कहा, "हम तेरे खादिम हैं। तब यशू'अ ने उन से पूछा, तुम कौन हो और कहाँ से आए हो?" 9 उन्होंने ने उस से कहा, तेरे खादिम एक बहुत दूर मुल्क से खुदावन्द तेरे खुदा के नाम के जरिये आए हैं क्यूंकि हम ने उसकी शोहरत और जो कुछ उस ने मिस में किया। 10 और जो कुछ उस ने अमोरियों के दोनों बादशाहों से जो यरदन के उस पार थे, याँनी हम्बन के बादशाह सीहोन और बसन के बादशाह 'ओज़े' से जो असतारात में था किया सब सुना है। 11 इसलिए हमारे बुजुर्ग और हमारे मुल्क के सब बाशिंदों ने हम से यह कहा कि तुम सफर के लिए अपने हाथ में खाना ले लो और उन से मिलने को जाओ और उन से कहो कि हम तुम्हारे खादिम हैं इसलिए तुम अब हमारे साथ 'अहद बाँधो।' 12 जिस दिन हम तुम्हारे पास आने को निकले हमने अपने अपने घर से अपने खाने की रोटी गरम गरम ली, और अब देखो वह सूखी है और उसे फॉर्मी लग गई। 13 और मय के यह मशकीजे जो हम ने भर लिए थे नये थे, और देखो यह तो फट गये; और यह हमारे कपड़े और जते दूर — ओ — दराज सफर की वजह से पुराने हो गये। 14 तब इन लोगों ने उनके

खाने में से कुछ लिया और खुदावन्द से मशवरत न की। 15 और यशू'अ ने उन से सुलह की और उनकी जान बख्शी करने के लिए उन से 'अहं बौधा, और जमा'अत के अमीरों ने उन से कसम खाई। 16 और उनके साथ 'अहं बौधने से तीन दिन के बाद उनके सुनें में आया, कि यह उनके पड़ोसी हैं और उनके बीच ही रहते हैं। 17 और बनी इसाईल रवाना हो कर तीसरे दिन उनके शहरों में पहुँचे, जिबा'ऊन और कफीरह और बैस्त और कर्यत यारीम उनके शहर थे। 18 और बनी इसाईल ने उनको कल्पन न किया इसलिए कि जमा'अत के अमीरों ने उन से खुदावन्द इसाईल के खुदा की कसम खाई थी; और सारी जमा'अत उन अमीरों पर कुँडकुड़ाने लगी। 19 लेकिन उन सब अमीरों ने सारी जमा'अत से कहा कि हम ने उन से खुदावन्द इसाईल के खुदा की कसम खाई है, इसलिए हम उन्हें छू नहीं सकते। 20 हम उन से यही करेंगे और उनको जीता छोड़ेंगे ऐसा न हो कि उस कसम की जब जह से जो हम ने उन से खाई है, हम पर ग़ज़ब टटे। 21 इसलिए अमीरों ने उन से यही कहा कि उनको जीता छोड़ो। तब वह सारी जमा'अत के लिए लकड़हरे और पानी भरने वाले बने जैसा अमीरों ने उन से कहा था। 22 तब यशू'अ ने उनको बुलवा कर उन से कहा जिस हाल कि तुम हमारे बीच रहते हो, तुम ने यह कह कर हमको कँूँफ़े ब दिया कि हम तुम से बहुत दूर रहते हैं? 23 इसलिए अब तुम ला'नी ठहरे, और तुम में से कोई ऐसा न रहेगा जो गुलाम यारी में खुदा के घर के लिए लकड़हारा और पानी भरने वाला न हो। 24 उन्होंने यशू'अ को जबाब दिया कि तेरे खादिमों को तहकीक यह खबर मिली थी, कि खुदावन्द तेरे खुदा ने अपने बन्दे मूसा को फरमाया कि सारा मुल्क तुमको दे और उस मुल्क के सब बाशिदों को तुम्हारे सामने से हलाक करे। इसलिए हमको तुम्हारी बजह से अपनी अपनी जानों के लाले पड़ गये, इस लिए हम ने यह काम किया। 25 और अब देख, हम तेरे हाथ में हैं जो कुछ त हम से करना भला और ठीक जाने सो कर। 26 फिर उसने उन से वैसा ही किया, और बनी इसाईल के हाथ से उनको ऐसा बचाया कि उन्होंने उनको कल्पन न किया। 27 और यशू'अ ने उनी दिन उनको जामा'अत के लिए और उस मुकाम पर जिसे खुदावन्द खुद चुने उसके मजबह के लिए, लकड़हरे और पानी भरने वाले मुकर्रा किया जैसा आज तक है।

10 और जब येस्सलेम के बादशाह अदूरी सिद्रुक ने सुना कि यशू'अ ने ऐसे-

को सर करके उसे हलाक कर दिया और जैसा उस ने यहीं और बहाँ के बादशाह से किया वैसा ही था: और उसके बादशाह से किया; और जिबा'ऊन के बाशिदों ने बनी इसाईल से सुलह कर ली और उनके बीच रहने लगे हैं। 2 तो वह सब बहुत ही डेरे, क्यौंकि जिबा'ऊन एक बड़ा शहर बल्कि बादशाही शहरों में से एक की तरह और ऐसे से बड़ा था और उसके सब मर्द बड़े बहादुर थे। 3 इस लिए येस्सलेम के बादशाह अदूरी सिद्रुक ने हब्सन के बादशाह हहाम, और यरमूत के बादशाह पीराम, और लकीस के बादशाह याफ़ी और अजलून के बादशाह दबीर को यूँ कहला भेजा कि। 4 मेरे पास आओ और मेरी मदद करो और चलो हम जिबा'ऊन को मारें; क्यौंकि उस ने यशू'अ और बनी इसाईल से सुलह कर ली है। 5 इसलिए अमोरियों के पाँच बादशाह, यारी येस्सलेम का बादशाह और हब्सन का बादशाह और यरमूत का बादशाह और लकीस का बादशाह और 'अजलून का बादशाह इकट्ठे हुए; और उन्होंने अपनी सब फौजों के साथ चढ़ाइ की और जिबा'ऊन के मुकाबिल डेरे डाल कर उस से जंग शुरू की। 6 तब जिबा'ऊन के लोगों ने यशू'अ को जो जिलजाल में खेमाजन था कहला भेजा कि अपने खादिमों की तरफ से अपना हाथ मत खीच। जल्द हमारे पास पहुँच कर हमको बचा और हमारी मदद कर, इसलिए कि सब अमीरी बादशाह जो पहाड़ी मूल्क में रहते हैं हमारे खिलाफ़ इकट्ठे हुए हैं। 7 तब यशू'अ सब जंगी मर्दों और सब जबरदस्त सूरमाओं को हमराह लेकर जिलजाल से चल

पड़ा। 8 और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा, "उन से न डर इस लिए कि मैंने उनको तेरे कब्जे में कर दिया है; उन में से एक आदमी भी तेरे सामने खड़ा न रह सकेगा।" 9 तब यशू'अ गातों रात जिलजाल से चल कर अचानक उन पर आ पड़ा। 10 और खुदावन्द ने उनको बनी इसाईल के सामने शिक्षत दी; और उस ने उनको जिबा'ऊन में बड़ी खुन रेजी के साथ कल्प किया और बैत हौस्न की चढ़ाइ के रास्ते पर उनको दौड़ाया और 'अजीकाह और मुककीदा तक उनको मारता गया। 11 और जब वह इसाईलियों के सामने से भागे और बैत हौस्न के उत्तर पर थे, तो खुदावन्द ने 'अजीकाह तक असामान से उन पर बड़े बड़े पथर बरसाए और वह मर गये; और जो ओलों से मेरे वह उनसे जिनको बनी इसाईल ने तलवार से मारा कहीं ज्यादा थे। 12 और उस दिन जब खुदावन्द ने अमोरियों को बनी इसाईल के काबा में कर दिया यशू'अ ने खुदावन्द के हज़र बनी इसाईल के सामने यह कहा कि, ऐ सूज त जिबा'ऊन पर और ऐ चाँद! तू बादी — ए — अय्यातोन में ठहरा रह। 13 और सूज ठहर गया और चाँद थमा रहा। जब तक कौम ने अपने दृश्यमानों से अपना इन्तकाम न ले लिया। क्या यह आशर की किताब में नहीं लिखा है? और सूज आसामान के बीचों बीच ठहरा रहा, और तकरीबन सारे दिन डूबने में जल्दी न की। 14 और ऐसा दिन कभी उस से पहले हुआ और न उसके बाद, जिस में खुदावन्द ने किसी आदमी की बात सुनी ही; क्यौंकि खुदावन्द इसाईलियों की खातिर लड़ा। 15 फिर यशू'अ और उसके साथ सब इसाईली जिलजाल को खेमागाह में लैटे। 16 और वह पाँचों बादशाह भाग कर मुक्कैदा के गार में जा छिपे। 17 और यशू'अ को यह खबर मिली कि वह पाँचों बादशाह मुक्कैदा के गार में छिपे हुए मिले हैं। 18 यशू'अ ने हृकम किया कि बड़े बड़े पथर उस गार के मुँह पर लुकड़ा दो और आदमियों को उसके पास उनकी निगहबारी के लिए बिटा दो। 19 लेकिन तुम न स्को, तुम अपने दृश्यमानों का पीछा करो और उन में के जो जो पीछे रह गए हैं उनको मार डालो, उनको मोहलत न दो कि वह हपने अपने शहर में दाखिल हो; इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने उनको तुम्हारे कब्जे में कर दिया है। 20 और जब यशू'अ और बनी इसाईल बड़ी खौरैजी के साथ उनको कल्पन कर चुके, यहाँ तक कि वह हलाक — ओ — बर्बाद हो गये; और वह जो उन में से बाकी बचे फसील दार शहरों में दाखिल हो गये। 21 तो सब लोग मुक्कैदा में यशू'अ के पास लश्कर गाह को सलामत लैटे, और किसी ने बनी इसाईल में से किसी के बरखिलाफ़ जबान न हिलाई। 22 फिर यशू'अ ने हृकम दिया कि गार का मुँह खोलो और उन पाँचों बादशाहों को गार से बाहर निकाल कर मेरे पास लाओ। 23 उन्होंने ऐसा ही किया और वह पाँचों बादशाहों को यारी शाह येस्सलेम और शाह — ए — हबरोन और शाह — ए — यरमत और शाह — ए — लकीस और शाह — ए — अजलून को गार से निकाल कर उसके पास लाओ। 24 और जब वह उनको यशू'अ के सामने लाये तो यशू'अ ने सब इसाईलियों को बुलवाया और उन जंगी मर्दों के सरदारों से जो उसके साथ गये थे यह कहा कि नजदीक आकर अपने अपने पाँच इन बादशाहों की गरदनों पर रखो। 25 और यशू'अ ने उन से कहा खौफ़ न करो और हिरासाँ मत हो मजबूत हो जाओ और हैसला रखो इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे सब दृश्यमानों से जिनका मुकाबिला तुम करोगे ऐसा ही करेगा। 26 इसके बाद यशू'अ ने उनको मारा और कल्प किया और पाँच दरखतों पर उनको टांग दिया। इसलिए वह शाम तक दरखतों पर टंगे रहे। 27 और सूज डूबते बक्त उन्होंने यशू'अ के हृकम से उनको दरखतों पर से उतार कर उसी गार में जिस में वह जा छिपे थे डाल दिया, और गार के मुँह पर बड़े बड़े पथर रख दिए जो आज तक हैं। 28 और उसी दिन यशू'अ ने मुक्कैदा को घेर कर के उसे हलाक किया, और उसके बादशाह को और उसके सब लोगों को बिल्कुल हलाक कर डाला और एक भी बाकी न

छोड़ा; और मुक़ैकैदा के बादशाह से उसने वही किया जो यरीह के बादशाह से किया था। 29 फिर यशू'अ और उसके साथ सब इस्माइली मुक़ैकैदा से लिबनाह को गये, और वह लिबनाह से लड़ा। 30 और खुदावन्द ने उसको भी और उसके बादशाह को भी बनी इस्माइल के कब्जे में कर दिया; और उस ने उसे और उसके सब लोगों को हलाक किया और एक को भी बाकी न छोड़ा, और वहाँ के बादशाह से वैसा ही किया जो यरीह के बादशाह से किया था। 31 फिर लिबनाह से यशू'अ और उसके साथ सब इस्माइली लकीस को गये और उसके मुकाबिल डेरे डाल लिए और वह उस से लड़ा। 32 और खुदावन्द ने लकीस को इस्माइल के कब्जे में कर दिया उस ने दूसरे दिन उस पर फतह पायी और उसे हलाक किया और सब लोगों को जो उस में थे कत्तल किया जिस तरह उस ने लिबनाह से किया था। 33 उस वक्त जजर का बादशाह हुरम लकीस को मदद करने को आया इसलिए यशू'अ ने उसको और उसके आदमियों को मारा वहाँ तक कि उसका एक भी जीता न छोड़ा। 34 और यशू'अ और उसके साथ सब इस्माइली लकीस से 'अजलून को गये और उसके मुकाबिल डेरे डालकर उस से जंग शुरू' की। 35 और उत्ती दिन उसे धेर लिया उसे हलाक किया और उन सब लोगों को जो उस में थे उस ने उसी दिन बिल्कुल हलाक कर डाला जैसा उस ने लकीस से किया था। 36 फिर 'अजलून से यशू'अ और उसके साथ सब इस्माइली हब्सन को गये और उस से लड़े। 37 और उन्होंने उसे धेर करके उसे और उसके बादशाह और उसकी सब बस्तियों और वहाँ के सब लोगों को बर्बाद किया और जैसा उस ने 'अजलून से किया था एक को भी जीता न छोड़ा बल्कि उसे और वहाँ के सब लोगों को बिल्कुल हलाक कर डाला। 38 फिर यशू'अ और उसके साथ सब इस्माइली दबीर को लौटे और उससे लड़े। 39 और उसने उसे और उसके बादशाह और उसकी सब बस्तियों को फतह कर लिया और उन्होंने उनको बर्बाद किया और सब लोगों को जो उस में थे बिल्कुल हलाक कर दिया उसने एक को भी बाकी न छोड़ा जैसा उसने हब्सन और उसके बादशाह से किया था वैसा ही दबीर और उसके बादशाह से भी किया था। 40 तब यशू'अ ने सारे मुल्क को याँनी पहाड़ी मुल्क और दखिली हिस्सा और नशीब की जमीन और ढलानों और वहाँ के सब बादशाहों को मारा। 41 और यशू'अ ने उनको कादिस बरनी' से लेकर गज्जा तक और जशन के सारे मुल्क के लोगों को जिबा'ऊन तक मारा। 42 और यशू'अ ने उन सब बादशाहों पर और उनके मुल्क पर एक ही वक्त में कब्जा हासिल किया इसलिए कि खुदावन्द इस्माइल का खुदा इस्माइल की खातिर लड़ा। 43 फिर यशू'अ और सब इस्माइली उसके साथ जिल्जाल को खेमगाह में लौटे।

11 जब हसर के बादशाह याबीन ने यह सुना तो उस ने मदन के बादशाह यूआब और समस्त के बादशाह को। 2 और उन बादशाहों को जो उत्तर की तरफ पहाड़ी मुल्क और किन्नरत के दखिली भैदान और नशेब की जमीन और नशीब की जमीन में रहते थे। 3 और पूर्वी और पश्चिम के कनानियों और अमूरीयों और हितियों और फरिजियों और पहाड़ी मुल्क के यवसियों और हव्वियों को जो हरमन के नीचे मिस्फ़ाह के मुल्क में रहते थे बुलवा भेजा। 4 तब वह और उनके साथ उनके लश्कर याँनी एक बड़ी भीड़ जो तादाद में समन्दर के किनारे की रेत की तरह थे बहुत से घोड़ों और रथों को साथ लेकर निकले। 5 और यह सब बादशाह मिलकर आए और उन्होंने मेसम की झील पर इकड़े डेरे डाले ताकि इस्माइलियों से लड़े। 6 तब खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि उन से न डरो क्यूंकि कल इस वक्त मैं उन सब को इस्माइलियों के सामने मार कर डाल दूँगा त

उनके घोड़ों की कूँचें काट डालना और उनके रथ आग से जला देना। 7 चुनाँचे यशू'अ और सब जंगी मर्द उनके साथ मेस्म की झील पर अचानक उनके मुकाबिले को आए और उन पर टूट पड़े। 8 और खुदावन्द ने उनको इस्माइलियों के कब्जे में कर दिया इसलिए उन्होंने उनको मारा और बड़े सैदा और मिसरफ़ाह अलतमाइम और पूरब में मिसफ़ाह की बादी तक उनको दौड़ाया और कत्तल किया वहाँ तक कि उन में से एक भी बाकी न छोड़ा। 9 और यशू'अ ने खुदावन्द के हक्म के मुकाबिल उन से किया कि उनके घोड़ों की कूँचें काट डाली और उनके रथ आग से जला दिए। 10 फिर यशू'अ उती वक्त लौटा और उस ने हसर को धेर करके उसके बादशाह को तलवार से मारा, क्यूंकि अगले वक्त में हसर उन सब सल्तनतों का सरदार था। 11 और उन्होंने उन सब लोगों को जो वहाँ थे तहस नहस करके उनको, बिल्कुल हलाक कर दिया; वहाँ कोई आदमी बाकी न रहा, फिर उस ने हसर को आग से जला दिया। 12 और यशू'अ ने उन बादशाहों के सब शहरों को और उन शहरों के सब बादशाहों को लेकर और उनको तहस नहस कर के बिल्कुल हलाक कर दिया, जैसा खुदावन्द के बन्दे मूसा ने हक्म किया था। 13 लेकिन जो शहर अपने टीलों पर बने हुए थे उन में से किसी को इस्माइलियों ने नहीं जलाया, सिवा हसर के जिसे यशू'अ ने फूँक दिया था। 14 और उन शहरों के तमाम माल — ए — गनीमत और चौपायों को बनी इस्माइल ने अपने वास्ते लटे लूट में ले लिया, लेकिन हर एक आदमी को तलवार की धार से कत्तल किया, वहाँ तक कि उनको खत्म कर दिया और एक आदमी को भी न छोड़ा। 15 जैसा खुदावन्द ने अपने बन्दे मूसा को हक्म दिया, और यशू'अ ने वैसा ही किया; और जो हक्म खुदावन्द ने मूसा को दिया था उन में से किसी को उस ने बैरे पूरा किये न छोड़ा। 16 इसलिए यशू'अ ने उस सारे मुल्क को, याँनी पहाड़ी मुल्क, और सारे दखिली हिस्से और जशन के सारे मुल्क, और नशेब की जमीन, और मैदान और इस्माइलियों के पहाड़ी मुल्क, और उसी की नशेब की जमीन, 17 कोह — ए — खलक से लेकर जो शाई की तरफ जाता है, बाल जड़ तक जो बादी — ए — लुबनान में कोह — ए — हरमून के नीचे है सब को ले लिया, और उनके बादशाहों पर फतह हासिल करके उस ने उनको मारा और कत्तल किया। 18 और यशू'अ मुद्रत तक उन सब बादशाहों से लड़ता रहा। 19 सिवा हव्वियों के जो जिबा'ऊन के बाशिए थे और किसी शहर ने बनी इस्माइल से सुलह नहीं की, बल्कि सब को उन्होंने लड़ कर फतह किया। 20 क्यूंकि यह खुदावन्द ही की तरफ से था कि वह उनके दिलों को ऐसा सख्त कर दे कि वह जंग में इस्माइल का मुकाबला करें ताकि वह उनको बिल्कुल हलाक कर डाले और उन पर कुछ मेहरबानी न हो बल्कि वह उनको बर्बाद कर दे, जैसा खुदावन्द ने मूसा को हक्म दिया था। 21 फिर उस वक्त यशू'अ ने आकर, अनाकीमी की पहाड़ी मुल्क, याँनी हब्सन और दबीर और 'अनाब से बल्कि यहदाह के सारे पहाड़ी मुल्क और इस्माइल के सारे पहाड़ी मुल्क से काट डाला; यशू'अ ने उनको उनके शहरों के साथ बिल्कुल हलाक कर दिया। 22 इसलिए अनाकीमी में से कोई बनी इस्माइल के मुल्क में बाकी न रहा, सिर्फ गज्जा और जात और अशदूद में थोड़े से बाकी रहे। 23 तब जैसा खुदावन्द ने मूसा से कहा था, उसके मुताबिक यशू'अ ने सारे मुल्क को लिया यशू'अ ने उसे इस्माइलियों को उनके कबीलों के हिस्से के मुवाफ़िक मीरास के तौर पर दिया, और मुल्क को जंग से फरागत मिली।

12 उस मुल्क के वह बादशाह जिनको बनी इस्माइल ने कत्तल करके उनके मुल्क पर, यरदन के उस पार पूरब की तरफ अरनोन की बादी से लेकर कोह — ए — हरमून तक और तमाम पूरबी मैदान पर, कब्जा कर लिया यह है। 2 अमूरीयों का बादशाह सीहोन जो हसबून में रहता था और 'अरोईर से

लेकर जो वादी — ए — अरनून के किनारे है, और उस वादी के बीच के शहर से वादी — ए — यब्बूक तक जो बनी 'अम्मन की सरहद है आधे जिल' आद पर, 3 और मैदान से बहेरे — ए — किन्नरत तक जो पूरब की तरफ है, बल्कि पूरब ही की तरफ बैत यसीमोत से होकर मैदान के दरिया तक जो दरयाई शेर है, और दखिलन में पिसागा के दामन के नीचे नीचे हृकूमत करता था। 4 और बसन के बादशाह 'ऊज की सरहद, जो रिफाईम की बकिया नसल से था और 'असतारात और अदराई में रहता था, 5 और वह कोह — ए — हरमून और सलतका और सारे बसन में जसरियों और मांकातियों की सरहद तक, आधे जिल' आद में जो हसबून के बादशाह सीहोन की सरहद थी, हृकूमत करता था। 6 उनको खुदावन्द के बदे मूसा और बनी इसाईल ने मारा, और खुदावन्द के बन्दा मूसा ने बनीरुबिन और बनीजद और मनस्सी के आधे कबीले को उनका मुल्क, मीरास के तौर पर दे दिया। 7 और यरदन के इस पार पश्चिम की तरफ बाल जद से जो वादी — ए — लुब्नान में है, कोह — ए — खल्क तक जो शाईर को निकल गया है, जिन बादशाहों को यशू'अ और बनी इसाईल ने मारा और जिनके मुल्क को यशू'अ ने इसाईलियों के कबीलों को उनकी तकसीम के मुताबिक मीरास के तौर पर दे दिया वह यह हैं। 8 पहाड़ी मुल्क और नशबि की जमीन और मैदान और ढलानों में और वीरान और दखिलनी हिस्से में हिती और अमूरी और कना'नी और फरिज्जी और हव्वी और यबूसी क्लौमों में से; 9 एक यरीह का बादशाह, एक एँको का बादशाह जो बैतएल के नजदीक आबाद है। 10 एक येस्लेम का बादशाह, एक हबस्न का बादशाह, 11 एक यरमूत का बादशाह, एक लकीस का बादशाह, 12 एक 'अजलून का बादशाह, एक जजर का बादशाह, 13 एक दबीर का बादशाह, एक जदर का बादशाह, 14 एक हुरमा का बादशाह, एक 'अराद का बादशाह, 15 एक लिब्नाह का बादशाह, एक 'अद्दुल्लाम का बादशाह, 16 एक मक्कीदा का बादशाह, एक बैत — एल का बादशाह, 17 एक तफूह का बादशाह, एक हफर का बादशाह, 18 एक अफीक का बादशाह, एक लश्सन का बादशाह, 19 एक मदन का बादशाह, एक हसूर का बादशाह, 20 एक सिम्स्न मर्सन का बादशाह, एक इक्वशाक का बादशाह, 21 एक तानक का बादशाह, एक मजिदो का बादशाह, 22 एक कादिस का बादशाह, एक कर्मिल के यकनियाम का बादशाह, 23 एक दोर की 'मुर्फ़िका' जमीन के दोर का बादशाह, एक गोइम का बादशाह, जो जिलजाल में था। 24 एक तिरजा का बादशाह, यह सब इक्तीस बादशाह, थे।

13 और यशू'अ बूढ़ा और उम्र रसीदा हुआ और खुदावन्द ने उस से कहा,

कि तू बूढ़ा और उम्र रसीदा है और कब्जा करने को अभी बहुत सा मुल्क बाकी है। 2 और वह मुल्क जो बाकी है इसलिए ये है; फ़िलिस्तियों के सब इक्लीम और सब हबस्सी। 3 सीहर से जो मिस के सामने है उत्तर की तरफ 'अकरस्न की हट तक जो कनानियों का गिना जाता है, फ़िलिस्तियों के पाँच सरदार या'नी गजी और अशदूटी असकल्नी और जाती और अकर्स्नी और 'अच्चीम भी। 4 जो दखिलन की तरफ है और कनानियों का सारा मुल्क और मगारह जो सैदानियों का है, अफीक या'नी अमरियों की सरहद तक। 5 और जिल्लियों का मुल्क और पूरब की तरफ बाल जद से जो कोह — ए — हरमून के नीचे है, हिमात के मद्रखल तक सारा लुब्नान। 6 फिर लुब्नान से मिसरफात अलमाईम तक पहाड़ी मुल्क के सब बाशिंदे या'नी सब सैदानी। उनको मैं बनी इसाईल के सामने से निकल डालूँगा, तू सिर्फ़ जैसा मैंने तुड़नको हृक्म दिया है, मीरास के तौर पर उसे इसाईलियों को तकसीम कर दे, 7 इसलिए त इस मुल्क को उन नौ कबीलों और मनस्सी के आधे कबीले को मीरास के तौर पर बांट दे, 8 मनस्सी के साथ बनी स्विन और बनी जद ने अपनी अपनी मीरास पा ली थी जिसे मूसा ने यरदन के उस पार पूरब की तरफ उनको दिया था, क्यूँकि खुदावन्द

के बन्दे मूसा ने उसे उन ही को दिया था, या'नी: । 9 'अरो'ईर से जो वादी — ए — अरनून के किनारे आबाद है 'शू', करके वह शहर जो वादी के बीच में है, मिदवा का सारा मैदान दीबोन तक, 10 और अमूरियों के बादशाह सीहोन के सब शहर जो हसबून में सल्तनत करता था बनी 'अम्मून की सरहद तक। 11 और जिल' आद और जसूरियों और मांकातियों की नवाही और सारा कोह — ए — हरमून और सारा बसन सलका तक। 12 और 'ओज जो रिफाईम की बकिया नसल से था और 'इस्तारात और अदराई में हक्मरान था उसका सारा 'इलाका जो बसन में था क्यूँकि मूसा ने उनको मार कर अलग कर दिया था। 13 तो भी बनी इसाईल ने जसरियों और मांकातियों को नहीं निकाला चुनौंचे जसरी और मांकाती आज तक इसाईलियों के बीच बसे हुए हैं। 14 सिर्फ़ लावी के कबीले को उस ने कोई मीरास नहीं दी; क्यूँकि खुदावन्द इसाईल के खुदा की आतिशीन कुर्बानियाँ उसकी मीरास हैं, जैसा उसने उससे कहा था। 15 और मूसा ने बनी स्विन के कबीले को उनके घरानों के मुताबिक मीरास दी, 16 और उनकी सरहद यह थी: या'नी 'ओरो'ईर से जो वादी — ए — अरनोन के किनारे आबाद है, और वह शहर जो पहाड़ के बीच में है, और मिदवा के पास का सारा मैदान; 17 हस्बोन और उसके सब शहर जो मैदान में हैं, दीबोन और बायात बाल, बैत बाल म'जुन, 18 और यहसाह, और कदीमात, और मफ़'अत, 19 और कर्नीताईम, और सिबामह, और ज़रत — उल — सहर जो पहाड़ के किनारे में हैं, 20 और बैत फ़गूर, और पिसगा के दामन की जमीन, और बैत यसीमोत, 21 और मैदान के सब शहर और अमोरियों के बादशाह सीहोन का सारा मुल्क जो हसबोन में सल्तनत करता था, जिसे मूसा ने मिदियान के रईसों ईक्वी और रक्म और सूर और हर और रब्बा, सीहोन के रईसों के साथ जो उस मुल्क में बसते थे, कल्ल बिया था। 22 और ब'ओर के बैटे बल'अम को भी जो नजूरी था, बनी इसाईल ने तलवार से कल्ल करके उनके मकतुलों के साथ मिला दिया था। 23 और यरदन और उसके 'इलाके बनी स्विन की सरहद थी। यही शहर और उनके गाँव बनी स्विन के घरानों के मुताबिक उनके वारिस ठहरे। 24 और मूसा ने ज़द के कबीले या'नी बनी ज़द को उनके घरानों के मुताबिक मीरास दी। 25 और उनकी सरहद यह थी: या'ज़ेर और जिल' आद के सब शहर और बनी 'अम्मोन का आधा मुल्क, 'ओरो'ईर तक जो रब्बा के सामने है। 26 और हसबोन से रामात उल मिस्फ़ाह और बूतीम तक, और महनाईम से दबीर की सरहद तक। 27 और वादी में बैत हारम, और बैत निमरा, और सुक्कात, और सफोन, या'नी हस्बोन के बादशाह सीहोन की अकलीम का बाकी हिस्सा, और यरदन के उस पार पूरब की तरफ किन्नरत की झील के उस सिरे तक, यरदन और उस की सारी नवाही। 28 यही शहर और इनके गाँव बनी ज़द के घरानों के मुताबिक उनकी मीरास ठहरे। 29 और मूसा ने मनस्सी के आधे कबीले को भी मीरास दी, यह बनी मनस्सी के घरानों के मुताबिक उनके आधे कबीले के लिए थी। 30 और उनकी सरहद यह थी: महनाईम से लेकर सारा बसन और बसन के बादशाह 'ओज की तमाम अकलीम, और याईर के सब कर्से जो बसन में हैं वह साठ शहर है, 31 और आधा जिल' आद और 'इस्तारात और अदराई जो बसन के बादशाह 'ओज के शहर थे, मनस्सी के बैटे मकीर की औलाद को मिले, या'नी मकीर की औलाद के आधे को उनके घरानों के मुताबिक यह मिले। 32 यही वह हिस्से हैं जिनको मूसा ने यरीह के पास मोआब के मैदानों में यरदन के उस पार पूरब की तरफ मीरास के तौर पर तकसीम किया। 33 लेकिन लावी के कबीले को मूसा ने कोई मीरास नहीं दी; क्यूँकि खुदावन्द इसाईल का खुदा उनकी मीरास है, जैसा उसने उनसे खुद कहा।

14 और वह हिस्से जिनको कन'आन के मुल्क में बनी इसाईल ने वारिस के तौर पर पाया, और जिनको इली'एलियाज़र कहिं और नून के बैटे

यश्‌अ और बनी इमाईल के कबीलों के आवाई खानदानों के सरदारों ने उनको तक्सीम किया यह है। 2 उनकी मीरास पचीं से दी गयी, जैसा खुदावन्द ने साढे नौ कबीलों के हक में मूसा को हक्म दिया था। 3 क्यूंकि मूसा ने यरदन के उस पार ढाई कबीलों की मीरास उनको दे दी थी, लेकिन उसने लावियों को उनके बीच कुछ मीरास नहीं दी। 4 क्यूंकि बनी यसुफ के दो कबीले थे, मनस्सी और इमाईल, इसलिए लावियों को उस मुल्क में कुछ हिस्सा न मिला सिवा शहरों के जो उनके रहने के लिए थे और उनकी नवाही के जो उनके चौपायों और माल के लिए थी। 5 जैसा खुदावन्द ने मूसा को हक्म दिया था, वैसा ही बनी इमाईल ने किया और मुल्क को बाँट लिया। 6 तब बनी यहदाह जिलजाल में यश्‌अ के पास आये; और किन्जी युफन्ना के बेटे कालिब ने उससे कहा, तुझे मालम है कि खुदावन्द ने मर्द — ए — खुदा मूसा से मेरी और तेरी बारे में कादिस बरनी में क्या कहा था। 7 जब खुदावन्द के बन्दे मूसा ने कादिस बरनी से मुझको इस मुल्क का हाल दरियापत करने को भेजा उस बक्त मैं चालीस बरस का था; और मैंने उसको वही खबर ला कर दी जो मेरे दिल में थी। 8 तो भी मेरे भाइयों ने जो मेरे साथ गये थे, लोगों के दिलों को पिछला दिया; लेकिन मैंने खुदावन्द अपने खुदा की पूरी पैरवी की है। 9 तब मूसा ने उस दिन करमां खा कर कहा, “जिस जर्मीन पर तेरा कदम पड़ा है वह हमेशा के लिए तेरी और तेरे बेटों की मीरास ठहरीगी, क्यूंकि तुम खुदावन्द मेरे खुदा की पूरी पैरवी की है”। 10 और अब देख जब से खुदावन्द ने ये हवा बात मूसा से कही तब से इन पैतौलीस बरसों तक, जिनमें बनी इमाईल वीराने में आवारा फिरते रहे, खुदावन्द मुझे अपने कौल के मुताबिक जीता रखा और अब देख, मैं आज के दिन पिचासी बरस का हूँ। 11 और आज के दिन मैं वैसा ही हूँ जैसा उस दिन था, जब मूसा ने मुझे भेजा था और जंग के लिए और बाहर जाने और लौटने के लिए जैसी कृत्वत मुझे उस बक्त थी वैसी ही अब भी है। 12 इसलिए यह पहाड़ी जिसका ज़िक्र खुदावन्द ने उस रोज किया था मुझ को दे दे, क्यूंकि तूने उस दिन सुन लिया था कि ‘अनाकीम वर्हां बसते हैं और वर्हां के शहर बड़े फसील दार हैं, यह गुप्तिकिन है कि खुदावन्द मेरे साथ हो और मैं उनको खुदावन्द के कौल के मुताबिक निकाल दूँ।’ 13 तब यश्‌अ ने युफन्ना के बेटे कालिब को दुआ दी, और उसको हबस्न मीरास के तौर पर दे दिया। 14 इसलिए हबस्न उस बक्त से आज तक किन्जी युफन्ना के बेटे कालिब की मीरास है, इस लिए कि उस ने खुदावन्द इमाईल के खुदा की पूरी पैरवी की। 15 और अगले बक्त में हबस्न का नाम करयत अरबा’ था, और वह अरबा’ ‘अनाकीम में सब से बड़ा आदमी था। और उस मुल्क को जंग से फरागत मिलती।

15 और बनी यहदाह के कबीले का हिस्सा उनके घरानों के मुताबिक पचीं डालकर अदोम की सरहद तक, और दाखिलन में दश — ए — सीन तक जो जु़ुब के इन्तिहाई हिस्से में आबाद है ठहरा। 2 और उनकी दाखिलनी हद दरिया — ए — शोर के इन्तिहाई हिस्से की उस खाड़ी से जिसका सख दाखिलन की तरफ है शूँ हुई, 3 और वह ‘अकरबीम की ढाई दी की दाखिलनी सिम्त से निकल सीन होती हुई कादिस बरनी के दाखिलन को गयी, फिर हमस्न के पास से अदार को जाकर करका’ को मुड़ी, 4 और वर्हां से ‘अजमन होती हुई मिस्त के नाले को जा निकली, और उस हद का खातिमा समन्दर पर हुआ; यही तुम्हारी दाखिलनी सरहद होगी। 5 और पूर्जी सरहद यरदन के दहाने तक दरिया — ए — शोर ही ठहरा, और उसकी उत्तरी हद उस दरिया की उस खाड़ी से जो यरदन के दहाने पर है शूँ हुई, 6 और यह हद बैत हजला को जाकर और बैत उल ‘अराबा के उत्तर से गुजर कर स्थिन के बेटे बोहन के पथर को पहँची, 7 फिर वर्हां से वह हद ‘अक्सर की बादी होती हुई दबाव को गई और वर्हां से उत्तर की सिम्त चल कर जिलजाल के सामने जो अदुमीम की ढाई के मुकाबिल है

जा निकली, यह ढाई नदी के दाखिलन में है, फिर वह हद ‘ऐन शम्स के चर्खों के पास होकर ऐन राजिल पहँची। 8 फिर वही हद हिन्मू के बेटे की बादी में से होकर यबूसियों की बस्ती के दाखिलन को गयी, येस्तलेम वही है, और वहाँ से उस पहाड़ की चोटी को जा निकली, जो बादी — ए — हिन्मू के मुकाबिल पश्चिम की तरफ और रिफाईम की बादी के उत्तरी इन्तिहाई हिस्से में आबाद है; 9 फिर वही हद पहाड़ की चोटी से अब — ए — नफ्तहू के चर्खों को गयी, और वर्हां से कोह — ए — ‘अफरोने के शहरों के पास जा निकली, और उधर से बा’ला तक जो करयत या ‘रीम है पहँची; 10 और बा’ला से होकर पश्चिम की सिम्त कोह — ए — शैंझर को फिरी, और कोह — ए — यारीम के जो कसलून भी कहलाता है, उत्तरी दामन के पास से गुजर कर बैत शम्स की तरफ उत्तरी हुई तिमान को गयी; 11 और वर्हां से वह हद ‘अकर्स्न के उत्तर को जा निकली; फिर वह सिर्कन से हो कर कोह — ए — बा’ला के पास से गुजरती हुई यबनीएल पर जा निकली, और इस हद का खातिमा समन्दर पर हुआ 12 और पश्चिमी सरहद बड़ा समन्दर और उसका साहिल था। बनी यहदाह की चारों तरफ की हद उनके घरानों के मुताबिक यही है। 13 और यश्‌अ ने उस हक्म के मुताबिक जो खुदावन्द ने उसे दिया था, युफन्ना के बेटे कालिब को बनी यहदाह के बीच ‘अनाक के बाप अरबा’ का शहर करयत अरबा’ जो हबस्न है हिस्सा दिया। 14 इसलिए कालिब ने वर्हां से ‘अनाक के तीनों बेटों, यामी सीसी और अखीमान और तलमी को जो बनी ‘अनाक हैं निकाल दिया। 15 और वह वर्हां से दबीर के बाशिदों पर चढ़ गया। दबीर का क़दीमी नाम करयत सिफर था। 16 और कालिब ने कहा, “जो कोई करयत सिफर को मार कर उसको सर करले, उसे मैं अपनी बेटी ‘अकसा ब्याह दूँगा।’ 17 तब कालिब के बाईं कनज के बेटे गतीनीएल ने उसको सर कर लिया, इसलिए उसने अपनी बेटी ‘अकसा उसे ब्याह दी। 18 जब वह उसके पास आई, तो उसने उस आदमी को उभारा कि वह उसके बाप से एक खेत माँगें; इसलिए वह अपने गधे रप से उत्तर पड़ी, तब कालिब ने उसपर कहा, “तू क्या चाहीर है?” 19 उस ने कहा, “पुरुष बक्त दें; क्यूंकि तूने दाखिलन के मुल्क में कुछ जर्मीन मुझे ‘इनायत की है, इसलिए मुझे पानी के चर्खे भी दे।” 20 तब उसने उस पर के चर्खे और नीचे के चर्खे ‘इनायत किये। 20 बनी यहदाह के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यह है। 21 और अदोम की सरहद की तरफ दाखिलन में बनी यहदाह के इन्तिहाई शहर यह है, कबजीली और ‘एदर और यजर, 22 और कैना और दैमूा और ‘अद अदा, 23 और कादिस और हसर और इतनान, 24 जीफ और तलम और बा’लूत, 25 और हसूर और हदाता और करयत और हस्सन जो हसूर है, 26 और अमाम और समा’ और मोलादा, 27 और हसार जदा और हिशमोन और बैत फलत, 28 और हसर सु’आल और बैरसबा’ और बिजयोत्याह, 29 बा’ला और इद्यीम और ‘अज्जम, 30 और इलतोलद और कसील और हुरमा, 31 और सिकलाज और मदमना और सनसना, 32 और लबाजत और सिलहीम और ‘ऐन और रिमोन; यह सब उन्नीस शहर हैं, और इनके गाँव भी हैं। 33 और नशेब की जर्मीन में इस्तल और सुरु’आह और असनाह, 34 और ज़नोआह और ‘ऐन जनीम, तफ्हू और ‘एनाम, 35 यरमत और ‘अदुल्लाम, शोको और ‘अजीक्का, 36 और शारीम और अदीतीम और जदीरा और जदीरीम; और यह चौदह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। 37 जिनान और हदाशा और मिजदल जद, 38 और दिन‘आन और मिस्फाह और यक्तीएल, 39 लकीस और बुसकत और ‘इजलन, 40 और कब्ज्बन और लहमान और कितलीस, 41 और जदीरोत और बैत दजन और नामा और मुक्कैदा; यह सोलह शहर हैं, और इनके गाँव भी हैं। 42 लिबना और ‘अत्र और ‘असन, 43 और यफताह और असना और नसीब, 44 और क़ईला और अकजीब और मरेसा; यह नौ शहर हैं और इनके

गाँव भी हैं। 45 अकस्त्रन और उसके कस्बे और गाँव। 46 अकस्त्रन से समन्दर तक अशदूद के पास के सब शहर और उनके गाँव। 47 अशदूद अपने शहरों और गाँव के साथ, और गज्जा अपने शहरों और गाँव के साथ; मिस की नदी और बड़े समन्दर और साहिल तक। 48 और पहाड़ी मुल्क में समीर और यतीर और शोको, 49 और दन्ना और करयत सन्ना जो दर्वी है, 50 और 'अनाब और इस्पाह और 'इनीम, 51 और जशन और हैलून और जिलोह; यह यारह शहर है और इनके गाँव भी हैं। 52 अराब और दोमाह और इश्यान, 53 और यनीम और बैत तप्फह और अफीका, 54 और हमता और करयत अरबा' जो हबस्त है और सी'ऊँ; यह नौ शहर है और इनके गाँव भी हैं। 55 माँउन, कर्मिल और जीफ और यता, 56 और यजरएल और याकदि आम और जनोआह, 57 कैन, जिब'आ और तिमान; यह दूसरे शहर है और इनके गाँव भी हैं। 58 हालहल और बैत सूर और जदू, 59 और मा' रात और बैत 'अनोत और इलतिक्न; यह छह शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। 60 करयत बा'ल जो करयत यारीम है, और रब्बा; यह दो शहर हैं और इनके गाँव भी हैं। 61 और बीराने में बैत 'अराबा और मदीन और सकाका, 62 और नबसान और नमक का शहर और 'ऐन जटी, यह छँ शहर है और इनके गाँव भी हैं। 63 और यबसियों को जो येस्सलेम के बाशिन्दे थे, बनी यहदाह निकाल न सके; इसलिए यबसी बनी यहदाह के साथ आज के दिन तक येस्सलेम में बसे हए हैं।

16 और बनी यूसुफ का हिस्सा पर्ची डालकर यरीह के पास के यरदन

से शूरू हाए, यानी पूरब की तरफ यरीह के चर्चे बल्कि बीराना पड़ा। फिर उसकी हृदय यरीह से पहाड़ी मुल्क होती हुई बैत — एल को गयी। 2 फिर बैत — एल से निकल कर लूज़ को गई और अर्कियों की सरहद के पास से गुजरती हुई 'अतारात पहुँची, 3 और वहाँ से पश्चिम की तरफ यफलीतियों की सरहद से होती हुई नीचे के बैत हौस्त बल्कि जजर को निकल गयी, और उसका खातिमा समन्दर पर हुआ। 4 तब बनी यूसुफ यानी मनस्सी और इक्राईम ने अपनी अपनी मीरास पर कब्जा किया। 5 और बनी इक्राईम की सरहद उनके घरानों के मुताबिक यह थी: पूरब की तरफ ऊपर के बैत हौस्त तक 'अतारात अदार उनकी हृदय ठहरी; 6 मैं उत्तर की तरफ वह हृदय पश्चिम के मिकमता होती हुई पूरब की तरफ तानत सैला को मुड़ी, और वहाँ से यन्हाह के पूरब को गयी; 7 और यन्हाह से 'अतारात और नाराता होती हुई यरीह पहुँची, और फिर यरदन को जा निकली, 8 और वह हृदय तप्फह से निकल कर पश्चिम की तरफ कानाह के नाले को गई और उसका खातिमा समन्दर पर हुआ। बनी इक्राईम के कबीला की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यही है। 9 और इसके साथ बनी इक्राईम के लिए बनी मनस्सी की मीरास में भी शहर अलग किए गये और उन सब शहरों के साथ उनके गाँव भी थे। 10 और उन्होंने कनानियों को जो जजर में रहते थे न निकाला, बल्कि वह कनानी आज के दिन तक इक्राईमियों में बसे हए हैं, और खादिम बनकर बेगार का काम करते हैं।

17 और मनस्सी के कबीले का हिस्सा पर्ची डालकर यह ठहरा। क्यूँकि वह

यूसुफ का पहलौठा था, और चूँकि मनस्सी का पहलौठा बेटा मकीर जो जिला'आद का बाप था जानी मर्द था इसलिए उस को जिला'आद और बसन मिले। 2 इसलिए यह हिस्सा बनी मनस्सी के बाकी लोगों के लिए उनके घरानों के मुताबिक था यानी बनी अबी'अंजर और बनी खलक और बनी इस्परिल और बनी सिकम और बनी हिफ़ और बनी समीदा' के लिए, यूसुफ के बेटे मनस्सी के फर्जन्द — ए — नरीना अपने अपने घराने के मुताबिक यही थे। 3 और सिलाफिहाद बिन हिफ़ बिन जिला'आद बिन मकीर बिन मनस्सी के बेटे नहीं बल्कि बेटियाँ थीं और उसकी बेटियों के नाम यह हैं, महलाह और नू'आह और

हुजला और मिलकाह और तिरजाह। 4 इसलिए वह इली'एलियाज़र काहिन और नून के बेटे यश'अ और सरदारों के आगे आकर कहने लाए कि खुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया था कि वह हमको हमारे भाईयों के बीच मीरास दे चुनाँचे खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक उस ने उनके भाईयों के बीच उनको विरासत दी। 5 इसलिए मनस्सी को जिला'आद और बसन के मुल्क को छोड़ कर जो यरदन के उस पार है दस हिस्से और मिले। 6 क्यूँकि मनस्सी की बेटियों ने भी बेटों के साथ मीरास पाई और मनस्सी की बेटों को जिला'आद का मुल्क मिला। 7 और आशर से लेकर मिकमताह तक जो सिकम के मुकाबिल है मनस्सी की हृदय थी, और वही हृदय दहने हाथ पर, 'ऐन तप्फह के बाशिन्दों तक चली गयी। 8 यूँ तप्फह की जमीन तो मनस्सी की है लेकिन तप्फह शहर जो मनस्सी की सरहद पर था बनी इक्राईम का दिस्सा ठहरा, 9 फिर वहाँ से वह हृदय कानाह के नाले को उत्तर कर उसके दाखिलन की तरफ पहुँची, यह शहर जो मनस्सी के शहरों के बीच है इक्राईम के ठहरे और मनस्सी की हृदय उस नाले के उत्तर की तरफ से होकर समन्दर पर खत्म हुई। 10 इसलिए दाखिलन की तरफ इक्राईम की और उत्तर की तरफ मनस्सी की मीरास पड़ी और उसकी सरहद समन्दर थी यूँ वह दोनों उत्तर की तरफ आशर से और पूरब की तरफ इक्कार से जा मिली। 11 और इक्कार और आशर की हृदय में बैत शान और उसके कब्जे और इबली'आम और उसके कस्बे और अहल — ए — दोर और उसके कब्जे और अहल — ए — 'ऐन दोर और उसके कस्बे और अहल — ए — तानक और उसके कस्बे और अहल — ए — मजिदों और उसके कस्बे बल्कि तीनों मुर्झियों मकामात मनस्सी को मिले। 12 तो भी बनी मनस्सी उन शहरों के रहने वालों को निकाल न सके बल्कि उस मुल्क में कनानी बसे ही रहे, 13 और जब बनी इक्राईल ताकतवर हो गये तो उन्होंने कनानियों से बेगार का काम लिया और उनको बिल्कुल निकाल बाहर न किया। 14 बनी यूसुफ ने यश'अ से कहा कि तूने क्यूँ पर्ची डालकर हम को सिर्फ़ एक ही हिस्सा मीरास के लिए दिया अगरचे हम बड़ी क्रौप हैं क्यूँकि खुदावन्द ने हम को बरकत दी है? 15 यश'अ ने उनको जवाब दिया कि अगर तुम बड़ी क्रौप हो तो जंगल में जाओ, और वहाँ फरिज्जीयों और रिफाईम के मुल्क को अपने लिए काट कर साफ़ कर लो क्यूँकि इक्राईम का पहाड़ी मुल्क तम्हारे लिए बहत तंग है। 16 बनी यूसुफ ने कहा कि यह पहाड़ी मुल्क हमारे लिए काफ़ी नहीं है और सब कनानियों के पास जो नेशेब के मुल्क में रहते हैं यानी वह जो बैत शान और उसके कस्बों में और वह जो यजर'एल की बाती में रहते हैं दोनों के पास लोहे के रथ है। 17 यश'अ ने बनी यूसुफ यानी इक्राईम और मनस्सी से कहा कि तुम बड़ी क्रौप हो और बड़े जोर रखते हो, इसलिए तम्हारे लिए सिर्फ़ एक ही हिस्सा न होगा। 18 बल्कि यह पहाड़ी मुल्क भी तम्हारा होगा क्यूँकि अगरचे वह जंगल है तुम उसे काट कर साफ़ कर डालना और उसके मधारिज़ भी तम्हारे ही ठरेंगे क्यूँकि तुम कनानियों को निकाल दोगे अगरचे उनके पास लोहे के रथ हैं और वह ताकतवर भी हैं।

18 और बनी इक्राईल की सारी जप्पा'अत ने शीलोह में जप्पा' होकर खेमा

— ए — इजितामा'अ को वहाँ खड़ा किया और वह मुल्क उनके आगे मगलब हो चुका था। 2 और बनी इक्राईल में सात कबीले ऐसे रह गये थे जिनकी मीरास उनको तकसीम होने न पाई थी। 3 और यश'अ ने बनी इक्राईल से कहा, कि तुम कब तक उस मुल्क पर कब्जा करने से जो खुदावन्द तुम्हारे बाप दादा के खुदा ने तुम को दिया है सुस्ती करोगे? 4 इसलिए तुम अपने लिए हर कबीले में से तीन शब्स चुन लो, मैं उनको भेज़ूँगा और वह जाकर उस मुल्क में सैर करोगे और अपनी अपनी मीरास के मुवाफिक उसका हाल लिख कर मेरे पास आँगें। 5 वह उसके सात हिस्से करेगे, यहदाह अपनी सरहद में दाखिलन

की तरफ और यूसुफ का खानदान अपनी सरहद में उत्तर की तरफ रहेगा। 6 इसलिए तुम उस मूल्क के सात हिस्से लिख कर मेरे पास यहाँ लाओ ताकि मैं खुदावन्द के आगे जो हमारा खुदा है तुम्हारे लिए पर्ची डालूँ। 7 क्यूँकि तुम्हारे बीच लायिंग का कोई हिस्सा नहीं इसलिए कि खुदावन्द की कहानत उनकी मीरास है और जदू और स्ट्रिंग और मनस्सी के आधे कबीले को यरदान के उस पार पूरब की तरफ मीरास मिल चुकी है जिसे खुदावन्द के बन्दे मूसा ने उनको दिया। 8 तब वह आदमी उठ कर रवाना हुए और यशू'अ ने उनको जो उस मूल्क का हाल लिखने के लिए गये ताकीद की कि तुम जाकर उस मूल्क में सैर करो और उसका हाल लिख कर फिर मेरे पास आओ और मैं शीलोह में खुदावन्द के आगे तुम्हारे लिए पर्ची डालूँगा। 9 चुनौते उन्होंने जाकर उस मूल्क में सैर की और शहरों के सात हिस्से कर के उनका हाल किताब में लिखा और शीलोह की खेमागाह में यशू'अ के पास लौटे। 10 तब यशू'अ ने शीलोह में उनके लिए खुदावन्द के सामने पर्ची डाली और वही यशू'अ ने उस मूल्क को बनी इधाईल की हिस्सों के मुताबिक उनको बाँट दिया। 11 और बनी बिन यमीन के कबीले की पर्ची उनके घरानों के मुताबिक निकली और उनके हिस्से की हाद बनी यहदाह और बनी यूसुफ के बीच पड़ी। 12 इसलिए उनकी उत्तरी हाद यरदान से शूरु" हुई और यह हाद यरीह के पास से उत्तर की तरफ गुजर कर पहाड़ी मूल्क से होती हुई पश्चिम की तरफ बैत आवन के वीराने तक पहुँची। 13 और वह हाद वहाँ से लूज़ को जो बैत — एल है गयी और लूज़ के दाखिलन से उस पहाड़ के बराबर होती हुई जो नीचे के बैत हौस्न के दाखिलन में है 'अतारात अदार को जा निकली। 14 और वह पश्चिम की तरफ से मुड़ कर दाखिलन को झुकी और बैत हौस्न के सामने के पहाड़ से होती हुई दाखिलन की तरफ बनी यहदाह के एक शहर करयत बाल तक जो करयत यारीम है चर्ती गयी, यह पश्चिमी हिस्सा था। 15 और दाखिली हाद करयत यारीम की इन्हानी से शूरु" हुई और वह हाद पश्चिम की तरफ आब — ए — नफतूह के चश्मे तक चर्ती गयी; 16 और वहाँ से वह उत्तर के पहाड़ के बेटे की वादी के सामने है गयी, यह रिफाईम की वादी के उत्तर में है और वहाँ से दाखिलन की तरफ हिन्स्म की वादी और यबूसियों के बराबर से गुजरती हुई 'ऐन राजिल पहुँची; 17 वहाँ से वह उत्तर की तरफ मुड़ कर और 'ऐन शम्स से गुजरती हुई जलीलोत को गयी जो अदुमीमी की चार्दाई के मुकाबिल है और वहाँ से स्विन के बेटे बोहन के पथर तक पहुँची; 18 और फिर उत्तर को जाकर मैदान के मुकाबिल के स्वर से निकलती हुयी मैदान ही में जा उत्ती। 19 फिर वह हाद वहाँ से बैत हजला के उत्तरी पहलू तक पहुँची और उस हाद का खातिमा दरिया — ए — शोर की उत्तरी खाड़ी पर हुआ जो यरदान के दाखिली सिरे पर है, यह दाखिलन की हाद थी। 20 और उसकी पूर्बी सिम्त की हाद यरदान ठहरा, बनी बिन यमीन की मीरास उनकी चौमिर्द की हृदों के 'ऐतबार से और उनके घरानों के मुवाफिक यह थी। 21 और बनी बिन यमीन के कबीले के शहर उनके घरानों के मुवाफिक यह थे, यरीह और बैत हजला और 'ईमक कसीस। 22 और बैत 'अराबा और समरीम और बैतएल। 23 और 'अब्बीम और कारा और 'उफरा। 24 और कफरउल'उम्मी और 'उफनी और जबा', यह बारह शहर थे और इनके गाँव थी थे। 25 और जिबा'ऊन और रामा और बैरोत। 26 मिस्फाह और कफीरह और मोजा 27 और रकम और अरफील और तराला। 28 और जिला', अलिफ और यबूसियों का शहर जो येशलेम है और जिबा'अत और करयत, यह चौदह शहर हैं और इनके गाँव थी हैं, बनी बिन यमीन की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यह थे।

19 और दूसरा पर्चा शमैन के नाम पर बनी शमैन के कबीले के वास्ते उनके घरानों के मुवाफिक निकला और उनकी मीरास बनी यहदाह की मीरास

के बीच थी। 2 और उनकी मीरास में 'बैरसबा' यासबा' था और मोलादा। 3 और हसार सं'ऊल और बालाह और 'अजम। 4 और इलतोलद और बतूल और हुरमा 5 और सिकलाज और बैत मरकबोत और हसार ससा। 6 और बैत लिबाउत और सरोहन, यह तेरह शहर थे और इनके गाँव थी थे। 7 'ऐन और रिम्मोन और 'अतर और 'असन, यह चार शहर थे और इनके गाँव थी थे। 8 और वह सब गाँव थी इनके थे जो इन शहरों के आस पास बा'लात बैर यानी दाखिलन के रामा तक हैं, बनी शमैन के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यह ठहरी। 9 बनी यहदाह की मिल्कियत में से बनी शमैन की मीरास ली गयी क्यूँकि बनी यहदाह का हिस्सा उनके बास्ते बहुत ज्यादा था, इसलिए बनी शमैन को उनकी मीरास के बीच मीरास मिली। 10 और तीसरा पर्चा बनी जब्लून का उनके घरानों के मुवाफिक निकला और उनकी मीरास की हाद सारीद तक थी। 11 और उनकी हाद पश्चिम की तरफ मर'अला होती हुई दब्बास तत तक गयी, और उस नदी से जो यक्कनियाम के आगे है जो मिली। 12 और सारीद से पूरब की तरफ मुड़ कर वह किसलोत तबूर की सरहद को गई और वहाँ से दबरत होती हुई यफ़ी'को जो निकली। 13 और वहाँ से पूरब की तरफ जिता हीफ़ और इत्ता कार्जीन से गुजरती हुई रिम्मोन को गयी, जो 'आ तक फैला हुआ है। 14 और वह हाद उस के उत्तर से मुड़ कर हन्नातोन को गई, और उसका खातिमा इफताएल की वादी पर हआ। 15 और कत्तात और नहलाल और सिमरोन और इदाला और बैतलहम, यह बारह शहर और उनके गाँव इन लोगों के ठहरे। 16 यह सब शहर और इनके गाँव बनी जब्लून के घरानों के मुवाफिक उनकी मीरास है। 17 और चौथा पर्चा इश्कार के नाम पर बनी इश्कार के लिए उनके घरानों के मुवाफिक निकला। 18 और उनकी हाद यजर'एल और किस्लोत और शैनीम। 19 और हफारीम और शियून और अनाभरात। 20 और रैबत कसयोन और अबीज। 21 और रीमत और 'ऐन जन्नीम और 'ऐन हदा और बैत कसीस तक थी। 22 और वह हाद तबूर और शरखसीमाह और बैत शम्स से जो मिली और उनकी हाद का खातिमा यरदान पर हआ, यह सोलह शहर थे और इनके गाँव थी थे। 23 यह शहर और इनके गाँव बनी इश्कार के घरानों के मुवाफिक उनकी मीरास है। 24 और पाँचवां पर्चा बनी आशर के कबीले के लिए उनके घरानों के मुताबिक निकला। 25 और खिलकत और हली और बतन और इक्शाफ। 26 और अलम्मलक और 'अमाद और मिसाल उनकी हाद ठहरे और पश्चिम की तरफ वह कमिल और सैहर लिबनात तक पहुँची। 27 और वह पूरब की तरफ मुड़ कर बैत दूजन को गयी और फिर जब्लून तक और वादी — ए — इफताहएल के उत्तर से होकर बैत उल 'अमक और नजीएल तक पहुँची और फिर कब्लून के बाएँ को गयी। 28 और 'अबस्तन और रहोब और हम्मन और कानाह बट्टिक बड़े सैदा तक पहुँची। 29 फिर वह हाद रामा सूर के फसील दार शहर की तरफ को झुकी और वहाँ से मुड़ कर हसा तक गयी और उसका खातिमा अकज्जीब की नवाही के समन्दर पर हआ। 30 और 'उम्मा और अफीक और रहोब भी इनको मिले, यह बाईस शहर थे और इनके गाँव थी थे। 31 बनी आशर के कबीले की मीरास उनके घरानों के मुताबिक यह शहर और इनके गाँव थे। 32 छठा पर्चा बनी नफताली के नाम पर बनी नफताली के कबीले के लिए उनके घरानों के मुताबिक निकला। 33 और उनकी सरहद हलफ से 'जाननीम के बलूत से अदामी नक्कब और यबनीएल होती हुई लक्खम तक थी और उसका खातिमा अकज्जीब की नवाही के समन्दर पर हआ। 34 और वह हाद पश्चिम की तरफ मुड़ कर अजनूतबूर से गुजरती हुई हुक्कक को गई और दरखिल में जब्लून तक और पश्चिम में आशर तक और पूरब में यहदाह के हिस्सा के यरदान तक पहुँची। 35 और फसील दार शहर यह है यानी सिद्धीम और सैर और हम्मात और रकत और किन्नरत। 36 और अदमा और रामा और हसूर। 37 और क्रादिस और

अदराई और 'एन हम्सू'। 38 और इस्न और मिजदालएल और हुरीम और बैत 'अनात और बैत शास्म, यह उन्तीस शहर थे और इनके गाँव भी थे। 39 यह शहर और इनके गाँव बनी नफताली के कबीले के घरानों के मुताबिक उनकी मीरास है। 40 और सातवां पर्ची बनी दान के कबीले के लिए उनके घरानों के मुवाफिक निकला। 41 और उनकी मीरास की हद यह है, सर 'आह और इस्ताल और 'ईर शम्स। 42 और शालबीन और अय्यालोन और इतलाह। 43 और ऐलोन और तिमानत और 'अकस्न। 44 और इलतिकिया और जिब्बातोन और बालात। 45 और यहदी और बनी बरक और जात रिम्मोन। 46 और मेयरकरन और रिक्कनमा' उस सरहद के जो याफा के मुकाबिल है। 47 और बनी दान की हद उनकी इस हद के' अलावा भी थी, क्यूंकि बनी दान ने जाकर लशम से जंग की और उसे घेर करके उसको तलवार की धार से मारा और उस पर कब्जा करके वहाँ बसे, और अपने बाप दान के नाम पर लशम का नाम दान रखा। 48 यह सब शहर और इनके गाँव बनी दान के कबीले के घरानों के मुताबिक उनकी मीरास है। 49 तब वह उस मुल्क को मीरास के लिए उसकी सरहदों के मुताबिक तकरीम करने से फारिग हुए और बनी इस्माइल ने नून के बेटे यशू'अ को अपने बीच मीरास दी। 50 उन्होंने खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक वही शहर जिसे उसने माँग था या'नी इफ़ाईम के पहाड़ी मुल्क का तिमनत सरह उसे दिया और वह उस शहर को तामीर करके उसमें बस गया। 51 यह वह मीरासी हिस्से हैं जिनको 'इली'एलियाजर काहिन और नून के बेटे यशू'अ और बनी इस्माइल के कबीलों के आबाई खानदानों के सरदारों ने शीलोह में खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे पर खुदावन्द के सामने पर्ची डालकर मीरास के लिए तकसीम किया, यूँ वह उस मुल्क की तकसीम से फारिग हुए।

20 और खुदावन्द ने यशू'अ से कहा कि, 2 बनी इस्माइल से कह कि अपने लिए पनाह के शहर जिनकी वजह मैं ने मूसा के बारे में तुमको हुक्म किया मुकर्रर करो, 3 ताकि वह ख़ूनी जो भूल से और ना दानिस्ता किसी को मार डाले वहाँ भाग जाए और वह खन के बदला लेने वाले से तुम्हारी पनाह ठहरें। 4 वह उन शहरों में से किसी में भाग जाए, और वह खन के बदला लेने वाले से तुम्हारी पनाह ठहरें। 5 वह उन शहरों में से किसी में भाग जाए, और उस शहर के दरवाजे पर खड़ा हो कर उस शहर के बुजुर्गों को अपना हाल कह सुनाएँ; तब वह उसे शहर में अपने हाँ ले जाकर कोई जाह दें ताकि वह उनके बीच रहे। 5 और आप ख़ून का बदला लेने वाला उसका पीछा करे तो वह उस ख़ूनी को उसके हवाला न करें क्यूंकि उस ने अपने पड़ोसी को अन्जनाने में मारा और पहले से उसकी उस से 'अदावत न थी। 6 और वह जब तक फैसले के लिए जमात के आगे खड़ा न हो, और उन दिनों का सरदार काहिन मर न जाये तब तक उसी शहर में रहे इसके बाद वह ख़ूनी लौट कर अपने शहर और अपने घर में यानी उस शहर में आए जहाँ से बह भागा था। 7 तब उन्होंने नफताली के पहाड़ी मुल्क में जलील के कादिस को और इफ़ाईम के पहाड़ी मुल्क में सिकम को और यहदाह के पहाड़ी मुल्क में करयत अरबा' को जो हबसन है अलग किया। 8 और यरीह के पास के यरदन के पूरब की तरफ स्विन के कबीले के मैदान में बसर को जो बीरोने में है और जद के कबीले के हिस्से में रामा को जो जिल'आद में है और मनस्सी के कबीले के हिस्सा में जो लान को जो बसन में है मुकर्रर किया। 9 यही वह शहर हैं जो सब बनी इस्माइल और उन मुसाफिरों के लिए जो उनके बीच बसते हैं इसलिए ठहराये गये कि जो कोई अन्जने में किसी को कल्प करे वह वहाँ भाग जाये, और जब तक वह जमा'अत के आगे खड़ा न हो तब तक ख़ून के बदला लेने वाले के हाथ से मारा न जाये।

21 तब लावियों के आबाई खानदानों के सरदार इली'एलियाजर काहिन और नून के बेटे यशू'अ और बनी इस्माइल के कबीलों के आबाई खानदानों के

सरदारों के पास आये। 2 और मुल्क — ए — कना'न के शीलोह में उन से कहने लगे कि खुदावन्द ने मूसा के बारे में हमारे रहने के लिए शहर और हमारे चौपायों के लिए उनकी नवाही के देने का हुक्म किया था। 3 इसलिए बनी इस्माइल ने अपनी अपनी मीरास में से खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक यह शहर और उनकी नवाही लावियों को दी। 4 और पर्ची किहातियों के नाम पर निकला और हास्न काहिन की औलातद को जो लावियों में से थी पर्ची से यहदाह के कबीले और शमैन के कबीले और बिनयमीन के कबीले में से तेरह शहर मिले। 5 और बाकी बनी किहात को इफ़ाईम के कबीले के घरानों और दान के कबीले और मनस्सी के आधे कबीले में से जो बसन में है तेरह शहर पर्ची से मिले। 7 और बाकी बनी मिरासी को उनके घरानों के मुताबिक स्विन के कबीले और ज़द के कबीले और जबलून के कबीले में से बारह शहर मिले। 8 और बनी इस्माइल ने पर्ची डालकर इन शहरों और इनकी नवाही को जैसा खुदावन्द ने मूसा के बारे में फरमाया था लावियों को दिया। 9 उन्होंने बनी यहदाह के कबीले और बनी शमैन के कबीले में से यह शहर दिए जिनके नाम यहाँ मज़कूर है। 10 और यह कहातियों के खानदानों में से जो लावी की नसल में से थे बनी हास्न को मिले क्यूंकि पहला पर्ची उनके नाम का था। 11 इसलिए उन्होंने यहदाह के पहाड़ी मुल्क में 'अनाक के बाप अरबा' का शहर करयत अरबा' जो हबस्न कहलाता है म'ए उसके 'इलाके के उनको दिया। 12 लेकिन उस शहर के खेतों और गाँव को उन्होंने युक्ना के बेटे कालिब को मीरास के तौर पर दिया। 13 इसलिए उन्होंने हास्न का काहिन की औलाद को हबस्न जो ख़ूनी की पनाह का शहर था और उसके 'इलाके और लिबनाह और उसके 'इलाके। 14 और यतीर और उसके 'इलाके और इस्तिम'अ और उसके 'इलाके। 15 और हौलून और उसके 'इलाके और दवीर और उसके 'इलाके। 16 और 'एन और उसके 'इलाके और यूता और उसके 'इलाके और जैत शास्म और उसके 'इलाके का यानी यह जो शहर उन दोनों कबीलों से ले कर दिए। 17 और बिनयमीन के कबीले से जिला'ऊन और उसके 'इलाके और जिला' और उसके 'इलाके। 18 और अननोत और उसके 'इलाके और 'अलमोन और उसके 'इलाके यह चार शहर दिए गए। 19 इसलिए बनी हास्न के जो काहिन हैं सब शहर तेरह थे जिनके साथ उनकी नवाही भी थी। 20 और बनी किहात के घरानों को जो लावी थे या'नी बाकी बनी किहात को इफ़ाईम के कबीले से यह शहर पर्ची से मिले। 21 और उन्होंने इफ़ाईम के पहाड़ी मुल्क में उनको सिकम शहर और उसके 'इलाके तो ख़ूनी की पनाह के लिए और जद के उसके 'इलाके। 22 और किब्रजैम और उसके 'इलाके और बैत हौस्न और उसके 'इलाके। 23 और दान के कबीला से इलतिकिया और उसके 'इलाके और जिब्बतून और उसके 'इलाके। 24 और अय्यालोन और उसके 'इलाके और जात रिम्मोन और उसके 'इलाके यह चार शहर दिए। 25 और मनस्सी के आधे कबीले से या'नक और उसके 'इलाके और जात रिम्मोन और उसके 'इलाके, यह दो शहर दिए। 26 बाकी बनी किहात के घरानों के सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ दस थे। 27 और बनी जैरसोन को जो लावियों के घरानों में से है मनस्सी के दूसरे आधे कबीले में से उन्होंने बसन में जो लान और उसके 'इलाके तो ख़ूनी की पनाह के लिए और जिस्तराह और उसके 'इलाके यह दो शहर दिए। 28 और इक्कार के कबीले से किस्यन और उसके 'इलाके और दबरत और उसके 'इलाके। 29 यरमोत और उसके 'इलाके और 'एन जनीम और उसके 'इलाके, यह चार शहर दिए। 30 और आशर के कबीले से मसाल और उसके 'इलाके और अबदोन और उसके 'इलाके। 31 खिलकत और उसके 'इलाके और रहोब और उसके 'इलाके यह

चार शहर दिए। 32 और नफताली के कबीले से जतील में कादिस और उसके 'इलाके' तो ख़र्नी की पनाह के लिए और हम्मात दूर और उसके 'इलाके' और करतान और उसके 'इलाके', यह तीन शहर दिए। 33 इसलिए जैरसोनियों के घरानों के मुताबिक उनके सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ तेरह थे। 34 और बनी मिरारी के घरानों को जो बाकी लानी थे जबूलून के क़क्कीली से यक़नियाम और उसके 'इलाके', करतान और उसके 'इलाके'। 35 दिमना और उसके 'इलाके', नहलात और उसके 'इलाके', यह चार शहर दिए। 36 और स्विन के कबीले से बसर और उसके 'इलाके', यहसा और उसके 'इलाके'। 37 कदीमात और उसके 'इलाके' और मिफ़'अत और उसके 'इलाके', यह चार शहर दिये। 38 और ज़द के कबीले से जिल 'आद में रामा और उसके 'इलाके' तो ख़र्नी की पनाह के लिए और महनाइम और उसके 'इलाके'। 39 हस्बोन और उसके 'इलाके', या 'जेर और उसके 'इलाके', कुल चार शहर दिए। 40 इसलिए ये सब शहर उनके घरानों के मुताबिक बनी मिरारी के थे, जो लावियों के घरानों के बाकी लोग थे उनको पर्वी से बारह शहर मिले। 41 तब बनी इस्माइलीन की मिल्कियत के बीच लावियों के सब शहर अपनी अपनी नवाही के साथ अठतालीस थे। 42 उन शहरों में से हर एक शहर अपने पर्द की नवाही के साथ था सब शहर ऐसे ही थे। 43 यूँ खुदावन्द ने इस्माइलियों को वह सारा मूल्क दिया जिसे उनके बाप दादा को देने की कसम उस ने खाई थी और वह उस पर क़बिज़ हो कर उसमें बस गये। 44 और खुदावन्द ने उस सब बातों के मुताबिक जिनकी कसम उस ने उनके बाप दादा से खाई थी चारों तरफ से उनको आराम दिया और उनके सब दुश्मनों में से एक आदमी भी उनके सामने खड़ा। न रहा, खुदावन्द ने उनके सब दुश्मनों को उनके कब्ज़े में कर दिया। 45 और जितनी अच्छी बातें खुदावन्द ने इस्माइल के घराने से कही थीं उन में से एक भी न छुटी, सब की सब परी हड़ी।

22 उस वक्त यशूअ ने रोबिनियों और जड़ियों और मनस्सी के आधे कबीले

को बुला कर। 2 उन से कहा कि सब कुछ जो खुदावन्द के बने मूसा ने तुम को फरमाया तुम ने माना, और जो कुछ मैं ने तुम को हक्म दिया उस में तुम ने मेरी जात मानी। 3 तुमने अपने भाईयों को इस मुहूर्त में आज के दिन तक नहीं छोड़ा बल्कि खुदावन्द अपने खुदा के हक्म की ताकीद पर 'अमल किया। 4 और अब खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे भाईयों को जैसा उस ने उन से कहा था आराम बख्ताहै इसलिए तुम अब लौट कर अपने अपने खेमे को अपनी मीरासी सर जमीन में जो खुदावन्द के बने मूसा ने यरदन के उस पार तुम को दी है चले जाओ। 5 सिर्फ उस फरमान और शरा' पर 'अमल करने की निहायत एहतियात रखना जिसका हक्म खुदावन्द के बने मूसा ने तुम को दिया, कि तुम खुदावन्द अपने खुदा से मुहब्बत रखो और उसकी सब राहों पर चलो, और उसके हक्मों को मानो और उस से लिपेट रहो और अपने सारे दिल, और सारी जान, से उसकी बन्दी करो। 6 और यश'अ ने बरकत दे कर उनको स्वस्त किया और वह अपने अपने खेमे को चले गये। 7 मनस्सी के आधे क़बीले को तो मूसा ने बसन में मीरास दी, थी लेकिन उस के दूसरे आधे को यश'अ ने उनके भाईयों के बीच यरदन के इस पार पश्चिम की तरफ हिस्सा दिया, और जब यश'अ ने उनको स्वस्त किया की अपने अपने खेमे को जाएँ, तो उनको भी बरकत देकर। 8 उन से कहा कि, बड़ी दौलत और बहुत से चौपाये, और चाँदी और सोना और पीलत और लोहा और बहुत सी पोशाक लेकर तुम अपने अपने खेमे को लौटो; और अपने दुश्मनों के माल — ए — गनीमत को अपने भाईयों के साथ बांट लो। 9 तब बनी रुबिन और बनी ज़द और मनस्सी का आधा क़बीला लौटा और वह बनी इसाइल के पास से शैलोह से जो मुल्क — ए — कना'न में है रवाना हुए, ताकि वह अपने मीरासी मुल्क जिल'आद को लौट, जाएँ जिसके मालिक वह खुदावन्द के उस हक्म के मताविक हए थे जो उस ने

मूसा के बारे में दिया था। 10 और जब वह यरदन के पास के उस मुकाम में पहुँचे जो मुल्क कनान में है, तो बनी स्विन और बनी ज़द और मनस्सी के आधे क़बीले ने वहाँ यरदन के पास एक मजबह जो देखने में बड़ा मजबह था बनाया। 11 और बनी इस्माईल के सुनने में आया की देखो बनी स्विन और बनी ज़द और मनस्सी के आधे क़बीला ने मुल्क — ए — कनान के सामने, यरदन के पिर्द के मुकाम में उस स्थ पर जो बनी इस्माईल का है एक मजबह बनाया है। 12 जब बनी इस्माईल ने यह सुना तो बनी इस्माईल की सारी जमात शीलोंह में इक़ट्टा हुई, ताकि उन पर चढ़ जाये और लड़े, 13 और बनी इस्माईल ने इली^१एलियाज़र काहिन के बेटे फीनीहास को बनी स्विन और बनी ज़द और मनस्सी के आधे क़बीला के पास जो मुल्क जिला^२आद में थे भेजा। 14 और बनी इस्माईल के क़बीलों से हर एक के आबाई खानदान से एक अमीर के हिसाब से दस अमीर उसके साथ किये, उन में से हर एक हजार दर हजार इस्माईलियों में अपने आबाई खानदान का सरदार था। 15 इसलिए वह बनी स्विन और बनी ज़द और मनस्सी के आधे क़बीले के पास मुल्क जिला^२आद में आये और उन से कहा कि, 16 खुदावन्द की सारी जमात यह कहती है कि तुम ने इस्माईल के खुदा से यह क्या सरकशी की कि, आज के दिन खुदावन्द की पैरवी से फिरकर अपने लिए एक मजबह बनाया, और आज के दिन तुम खुदावन्द से बागी हो गये? 17 क्या हमारे लिए फ़ग़र की बदकारी कुछ कम थी जिस से हम आज के दिन तक पाक नहीं हुए, अगर चे खुदावन्द की जमात में बवा भी आई कि। 18 तुम आज के दिन खुदावन्द की पैरवी से फिर जाते हो? और चूँकि तुम आज खुदावन्द से बागी होते हो, इसलिए कल यह होगा कि इस्माईल की सारी जमात पर उसका कहर नाजिल होगा। 19 और अगर तुम्हारा मीरासी मुल्क नापाक है, तो तुम खुदावन्द के मीरासी मुल्क में पार आ जाओ जहाँ खुदावन्द का घर है और हमारे बीच मीरास लो, लेकिन खुदावन्द हमारे खुदा के मजबह के सिवा अपने लिए कोई और मजबह बना कर, न तो खुदावन्द से बागी हो और न हम से बागावत करो। 20 क्या जारह के बेटे 'अकन की खायानत की वजह से जो उस ने मरखस्स की हुई चीज़ में की इस्माईल की सारी जमात पर गजब नाजिल न हुआ? वह शब्द अकेला ही अपनी बदकारी में हलाक नहीं हुआ। 21 तब बनी स्विन और बनी ज़द और मनस्सी के आधे क़बीला ने हजार दर हजार इस्माईलियों के सरदारों को जवाब दिया कि। 22 खुदावन्द खुदा — ओं का खुदा, खुदावन्द खुदा — ओं का खुदा, जानता है और इस्माईली भी जान लेंगे, अगर इस में ब़ागावत या खुदावन्द की मुखालिफ़त है तने तो हमको आज जीता न छोड़ा। 23 अगर हम ने आज के दिन इसलिए यह मजबह बनाया हो कि खुदावन्द से फिर जाएँ या उस पर सोखनी कुर्बानी या नज़र की कुर्बानी या सलामती के जबहि चढ़ाएं तो खुदावन्द ही इसका हिसाब ले। 24 बल्कि हम ने इस खयल और गरज से यह किया कि कहीं आइन्दा ज़माना में तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से यह न कहने लगे, 'कि तुम को खुदावन्द इस्माईल के खुदा से क्या लेना है?' 25 क्योंकि खुदावन्द तो हमारे और तुम्हारे बीच 'ऐ बनी स्विन और बनी ज़द यरदन को हद ठहराया है इसलिए खुदावन्द में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं है, यूँ तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से खुदावन्द का खौफ़ छुड़ा देगी। 26 इसलिए हम ने कहा कि आओ हम अपने लिए एक मजबह बनाना शूरू^३ करें जो न सोखनी कुर्बानी के लिए हो और न जबहि के लिए। 27 बल्कि वह हमारे और तुम्हारे और हमारे बाद हमारी नस्लों के बीच गवाह ठहरे, ताकि हम खुदावन्द के सामने उसकी 'इजाद अपनी सोखनी कुर्बानियों और अपने जबीहों और सलामती के हादियों से करें, और आइन्दा ज़माना में तुम्हारी औलाद हमारी औलाद से कहने न पाए कि खुदावन्द में तुम्हारा कोई हिस्सा नहीं। 28 इसलिए हम ने कहा कि, जब वह हम से या हमारी औलाद से आइन्दा ज़माना में यूँ कहेंगे तो हम उनको

जवाब देंगे कि देखो खुदावन्द के मजबूत का नमूना जिसे हमारे बाप दादा ने बनाया, यह न सोखतनी कृत्तिमी के लिए है न जबीहा के लिए बल्कि यह हमारे और तुम्हारे बीच गवाह है। 29 खुदा न करे कि हम खुदावन्द से बायी हों और आज खुदावन्द की पैरस्टी से फिर कर खुदावन्द अपने खुदा के मजबूत के सिवा जो उसके खेमे के सामने है सोखतनी कृत्तिमी और नज़र की कृत्तिमी और जबीहा के लिए कोई मजबूत बनाएँ। 30 जब फन्हास काहिन और जामात के अमीरों यानी हजार दर हजार इस्माइलियों के सरदारों ने जो उसके साथ आए थे यह बातें सुनी जो बनी स्विन और बनी जड़ और बनी मनस्सी ने कहीं तो वह बहुत खुश हुए। 31 तब इनीं एलियाजर के बेटे फन्हास काहिन ने बनी स्विन और बनी जड़ और बनी मनस्सी से कहा आज हम ने जान लिया कि खुदावन्द हमारे बीच है क्यूंकि तुम से खुदावन्द की यह खता नहीं है, इसलिए तुम ने बनी इस्माइल को खुदावन्द के हाथ से छुड़ा लिया है। 32 और इनीं एलियाजर काहिन का बेटा फन्हास और वह सरदार जिल 'आद से बनी स्विन और बनी जड़ के पास से मुल्क — ए — कनान में बनी इस्माइल के पास लौट आये और उनको यह माजरा सुनाया? 33 तब बनी इस्माइल इस बात से खुश हुए और बनी इस्माइल ने खुदा की हाद की और फिर जंग के लिए उन पर चढ़ाई करने और उस मुल्क को तबाह करने का नाम न लिया जिस में बनी स्विन और बनी जड़ रहते थे। 34 तब बनी स्विन और बनी जड़ ने उस मजबूत का नाम 'ईंद यह कह कर रखा की वह हमारे बीच गवाह है कि यहोवाह खुदा है।

23 इसके बहुत दिनों बाद जब खुदावन्द ने बनी इस्माइल को उनके सब चारों

तरफ के दुश्मनों से आराम दिया और यशः अ बुद्धा और उम्र रसीदा हुआ। 2 तो यशः अ ने सब इस्माइलियों और उनके बुजुर्गों और सरदारों और काजियों और मनसबदारों को बुलाया, और वह खुदा के सामने हाजिर हुए। 2 तब यशः अ ने उन सब लोगों से कहा कि खुदावन्द इस्माइल का खुदा यूँ फरमाता है कि तुम्हारे आबा यानी अब्राहाम और नहर का बाप तारह वगैरह पूर्ने जमाने में बड़े दरिया के पार रहते और दूसरे मांबूदों की इबादत करते थे। 3 और मैंने तुम्हारे बाप अब्राहाम को बड़े दरिया के पार से लेकर कनान के सारे मुल्क में उसकी रहवारी की, और उसकी नसल को बढ़ाया और उसे इज़हाक 'इनायत किया। 4 और मैंने इस्वाक को या 'कूब और 'ऐसौ बछों, और 'ऐसौ को कोह — ए — शाँझ दिया की वह उसका मालिक हो, और या 'कूब अपनी औलात के साथ मिस्र में गया। 5 और मैंने मूसा और हास्न को भेजा, और मिस्र पर जो मैंने उस में किया उसके मुताबिक मेरी मार पड़ी और उसके बाद मैं तुमको निकाल लाया। 6 तुम्हारे बाप दादा को मैंने मिस्र से निकाला, और तुम समन्दर पर आये, तब मिस्रीयों ने रथों और सवारों को लेकर बहर — ए — कुलज़ुम तक तुम्हारे बाप दादा का पीछा किया। 7 और जब उहोने खुदावन्द से फरियाद की तो उसने तुम्हारे और मिस्रीयों के बीच अन्धेरा कर दिया, और समन्दर को उन पर चढ़ा लाया और उनको छिंगा दिया और उपने जो कुछ मैंने मिस्र में किया अपनी आँखों से देखा और तुम बहुत दिनों तक बीराने में रहे। 8 फिर मैं तम को अमोरियों के मुल्क में जो यरदान के उस पार रहते थे ले आया, वह तुमसे लड़े और मैंने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया; और तुमने उनके मुल्क पर कब्जा कर लिया, और मैंने उनको तुम्हारे आगे से हलाक किया। 9 फिर सफोर का बेटा बलक, मोआब का बादशाह, उठ कर इस्माइलियों से लड़ा और तुम पर लान्त करने को ब'ऊर के बेटे बिल' आम को बुलवा भेजा। 10 और मैंने न चाहा बिल' आम की सूँ; इसलिए वह तुम को बरकत ही देता गया, इसलिए मैं ने तुम को उसके हाथ से छुड़ाया। 11 फिर तुम यरदान पार हो कर यरीह को आये, और यरीह के लोग यानी अमोरी और फरिज्जी और कनानी और हिती और जिरजासी और हब्बी और यबूसी तुम से लड़े, और मैंने उनको तुम्हारे कब्जा में कर दिया। 12 और मैंने तुम्हारे आगे जम्बरों को भेजा, जिन्होने दोनों अमोरी बादशाहों को तुम्हारे सामने से भगा दिया; यह न तुम्हारी तलवार और न तुम्हारी कमान से हुआ। 13 और मैंने तुम को वह मुल्क जिस पर तुम ने मेहनत न की, और वह शहर जिनको तुम ने बनाया न था 'इनायत किये, और तुम उन में बसे हो और तुम ऐसे ताकिस्तानों और जैतून के बागों का फल खाते हो जिनको तुमने नहीं लगाया। 14 इसलिए अब तुम खुदावन्द का खौफ रखो और नेक नियती और सदाकत से उसकी इबादत करो, और उन मांबूदों को दर कर दो जिनकी इबादत तुम्हारे बाप दादा बड़े दरिया के पार और मिस्र में करते थे, और खुदावन्द की इबादत करो।

से जिसे खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम को दिया है मिट जाओगे। 14 और देखो, मैं आज उसी रास्ते जाने वाला हूँ जो सारे जहान का है और तुम खब जानते हो कि उन सब अच्छी बातों में से जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम्हारे हक में कही एक बात भी न छूटी, सब तुम्हारे हक में परी हूँ और एक भी उन में से न रह गयी। 15 इसलिए ऐसा होगा कि जिस तरह वह सब भलाइयां जिनका खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम से जिक्र किया था तुम्हारे आगे आयी उसी तरह खुदावन्द सब बुराईयाँ तुम पर लाएगा जब तक इस अच्छे मुल्क से जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा ने तुम को दिया है वह तुम को बर्बाद न कर डाले। 16 जब तुम खुदावन्द अपने खुदा के उस 'अहद' को जिसका हुक्म उस ने तुम को दिया तो तोड़ डालो और जाकर और मांबूदों की इबादत करने और उनको सिजदा करने लगो तो खुदावन्द का कहर तुम पर भड़केगा और तुम इस अच्छे मुल्क से जो उस ने तुम को दिया है वह जल्द हलाक हो जाओगे।

24 इसके बाद यशः अ ने इस्माइल के सब कबीलों को सिकम में जमा किया,

और इस्माइल के बुजुर्गों और सरदारों और काजियों और मनसबदारों को बुलाया, और वह खुदा के सामने हाजिर हुए। 2 तब यशः अ ने उन सब लोगों से कहा कि खुदावन्द इस्माइल का खुदा यूँ फरमाता है कि तुम्हारे आबा यानी अब्राहाम और नहर का बाप तारह वगैरह पूर्ने जमाने में बड़े दरिया के पार रहते और दूसरे मांबूदों की इबादत करते थे। 3 और मैंने तुम्हारे बाप अब्राहाम को बड़े दरिया के पार से लेकर कनान के सारे मुल्क में उसकी रहवारी की, और उसकी नसल को बढ़ाया और उसे इज़हाक 'इनायत किया। 4 और मैंने इस्वाक को या 'कूब और 'ऐसौ बछों, और 'ऐसौ को कोह — ए — शाँझ दिया की वह उसका मालिक हो, और या 'कूब अपनी औलात के साथ मिस्र में गया। 5 और मैंने मूसा और हास्न को भेजा, और मिस्र पर जो मैंने उस में किया उसके मुताबिक मेरी मार पड़ी और उसके बाद मैं तुमको निकाल लाया। 6 तुम्हारे बाप दादा को मैंने मिस्र से निकाला, और तुम समन्दर पर आये, तब मिस्रीयों ने रथों और सवारों को लेकर बहर — ए — कुलज़ुम तक तुम्हारे बाप दादा का पीछा किया। 7 और जब उहोने खुदावन्द से फरियाद की तो उसने तुम्हारे और मिस्रीयों के बीच अन्धेरा कर दिया, और समन्दर को उन पर चढ़ा लाया और उनको छिंगा दिया और उपने जो कुछ मैंने मिस्र में किया अपनी आँखों से देखा और तुम बहुत दिनों तक बीराने में रहे। 8 फिर मैं तम को अमोरियों के मुल्क में जो यरदान के उस पार रहते थे ले आया, वह तुमसे लड़े और मैंने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया; और तुमने उनके मुल्क पर कब्जा कर लिया, और मैंने उनको तुम्हारे आगे से हलाक किया। 9 फिर सफोर का बेटा बलक, मोआब का बादशाह, उठ कर इस्माइलियों से लड़ा और तुम पर लान्त करने को ब'ऊर के बेटे बिल' आम को बुलवा भेजा। 10 और मैंने न चाहा बिल' आम की सूँ; इसलिए वह तुम को बरकत ही देता गया, इसलिए मैं ने तुम को उसके हाथ से छुड़ाया। 11 फिर तुम यरदान पार हो कर यरीह को आये, और यरीह के लोग यानी अमोरी और फरिज्जी और कनानी और हिती और जिरजासी और हब्बी और यबूसी तुम से लड़े, और मैंने उनको तुम्हारे कब्जा में कर दिया। 12 और मैंने तुम्हारे आगे जम्बरों को भेजा, जिन्होने दोनों अमोरी बादशाहों को तुम्हारे सामने से भगा दिया; यह न तुम्हारी तलवार और न तुम्हारी कमान से हुआ। 13 और मैंने तुम को वह मुल्क जिस पर तुम ने मेहनत न की, और वह शहर जिनको तुम ने बनाया न था 'इनायत किये, और तुम उन में बसे हो और तुम ऐसे ताकिस्तानों और जैतून के बागों का फल खाते हो जिनको तुमने नहीं लगाया। 14 इसलिए अब तुम खुदावन्द का खौफ रखो और नेक नियती और सदाकत से उसकी इबादत करो, और उन मांबूदों को दर कर दो जिनकी इबादत तुम्हारे बाप दादा बड़े दरिया के पार और मिस्र में करते थे, और खुदावन्द की इबादत करो।

15 और अगर खुदावन्द की इबादत तुम को बुरी मालूम होती हो, तो आज ही तुम उसे जिसकी इबादत करोगे चुन लो, ख्वाह वह वही मालूम हों जिनकी इबादत तुम्हे बाप दादा बड़े दरिया के उस पार करते थे या अमेरी के मालूम हों जिनके मुल्क में तुम बरे हो; अब रही मेरी और मेरे धराने की बात इसलिए हम तो खुदावन्द की इबादत करेंगे। 16 तब लोगों ने जवाब दिया कि खुदा न करे कि हम खुदावन्द को छोड़ कर और मालूमों की इबादत करें। 17 क्यूँकि खुदावन्द हमारा खुदा वही है जिस ने हमको और हमारे बाप दादा को मुल्क मिल यानी गुलामी के घर से निकाला और वह बड़े — बड़े निशान हमारे सामने दिखाए और सारे राते जिस में हम चले और उन सब कौमों के बीच जिन में से हम गुज़रे हम को महफूज़ रखा। 18 और खुदावन्द ने सब कौमों यानी अमोरियों को जो उस मुल्क में बसते थे हमारे सामने से निकाल दिया, इसलिए हम भी खुदावन्द की इबादत करेंगे क्यूँकि वह हमारा खुदा है। 19 यशू'अ ने लोगों से कहा, “तुम खुदावन्द की इबादत नहीं कर सकते; क्यूँकि वह पाक खुदा है, वह गर्यूँ खुदा है, वह तुम्हारी खताएँ और तुम्हारे गुनाह नहीं बरछेगा। 20 अगर तुम खुदावन्द को छोड़ कर अजनबी मालूमों की इबादत करो तो अगर वह तुम से नेकी करता रहा है तो भी वह फिर कर तुम से बुराई करेगा और तुम को फना कर डालेगा।” 21 लोगों ने यशू'अ से कहा, “नहीं बल्कि हम खुदावन्द ही की इबादत करेंगे।” 22 यशू'अ ने लोगों से कहा, “तुम आप ही अपने गवाह हो कि तुम ने खुदावन्द को चुना है कि उसकी इबादत करो।” उन्होंने ने कहा, “हम गवाह हैं।” 23 तब उसने कहा, “इसलिए अब तुम अजनबी मालूमों को जो तुम्हारे बीच हैं दूर कर दो और अपने दिलों को खुदावन्द इसाईल के खुदा की तरफ लाओ।” 24 लोगों ने यशू'अ से कहा, “हम खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करेंगे और उसी की बात मानेंगे।” 25 इसलिए यशू'अ ने उसी रोज़ लोगों के साथ 'अहद बांधा, और उनके लिए सिक्कम में कायदा और कानून ठहराया। 26 और यशू'अ ने यह बातें खुदा की शरीरी अत की किताब में लिख दी, और एक बड़ा पत्थर लेकर उसे वही उस बलूत के दरखत के नीचे जो खुदावन्द के माक्सिस के पास था खड़ा किया। 27 और यशू'अ ने सब लोगों से कहा कि देखो यह पत्थर हमारा गवाह रहे, क्यूँकि उस ने खुदावन्द की सब बातें जो उस ने हम से कहीं सुनी हैं इसलिए यहीं तुम पर गवाह रहे ऐसा न हो की तुम अपने खुदा का इन्कार कर जाओ। 28 फिर यशू'अ ने लोगों को उनकी अपनी अपनी मीरास की तरफ सूखसत कर दिया। 29 और इन बातों के बाद यूँ हुआ कि नून का बेटा यशू'अ खुदावन्द का बन्दा एक सौ दस बरस का होकर वफ़ात कर गया। 30 और उन्होंने उसी की मीरास की हद पर तिमनत सिरह में जो इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में कोह — ए — जास की उत्तर की तरफ को है उसे दफ़न किया 31 और इसाईली खुदावन्द की इबादत यशू'अ के जीते जी और उन बुजुर्गों के जीते जी करते रहे जो यशू'अ के बाद ज़िन्दा रहे, और खुदावन्द के सब कामों से जो उस ने इसाईलियों के लिए किये वाकिफ़ थे 32 और उन्होंने यसुफ़ की हड्डियों को, जिनके बनी इसाईल मिस से ले आये थे, सिक्कम में उस ज़मीन के हिस्से में दफ़न किया जिसे याकूब ने सिक्कम के बाप हमोर के बेटों से चाँदी के सौ सिक्कों में खरीदा था; और वह ज़मीन बनी यसुफ़ की मीरास ठहरी। 33 और हास्न के बेटे इली'एलियाज़र ने वफ़ात की और उन्होंने उसे उसके बेटे फ़ीन्हास की पहाड़ी पर दफ़न किया, जो इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में उसे दी गयी थी।

कुजा

1 और यशू'अ की मौत के बाद यूँ हुआ कि बनी — इसाईल ने खुदावन्द

से पूछा कि हमारी तरफ से कन्यानियों से जंग करने को पहले कौन चढ़ाई करे? 2 खुदावन्द ने कहा कि यहदाह चढ़ाई करे; और देखो, मैंने यह मुल्क उसके हाथ में कर दिया है। 3 तब यहदाह ने अपने भाई शमैन से कहा कि तू मेरे साथ मेरे बैंटवरे के हिस्से में चल, ताकि हम कन्यानियों से लड़ें: और इसी तरह हम भी तेरे बैंटवरे के हिस्से में तेरे साथ चलूँगा। इसलिए शमैन उसके साथ गया। 4 और यहदाह ने चढ़ाई की, और खुदावन्द ने कन्यानियों और फरिजियों को उनके कब्जे में कर दिया; और उन्होंने बजक में उनमें से दस हजार अदर्मी कल्त किए। 5 और अदूरी बजक को बजक में पाकर वह उससे लड़े, और कन्यानियों और फरिजियों को मारा। 6 लेकिन अदूरी बजक भागा, और उन्होंने उसका पीछा करके उसे पकड़ लिया, और उसके हाथ और पाँव के अँगे काट डाले। 7 तब अदूरी बजक ने कहा कि हाथ और पाँव के अँगे कटे हुए सतर बादशाह मेरी मेज के नीचे रेजाचीनी करते थे, इसलिए जैसा मैंने किया वैसा ही खुदा ने मुझे बदला दिया। फिर वह उसे येस्शलेम में लाए और वह वहाँ मर गया। 8 और बनी यहदाह ने येस्शलेम से लड़ कर उसे ले लिया, और उसे बर्बाद करके शहर को आग से फँक दिया। 9 इसके बाद बनी यहदाह उन कन्यानियों से जो पहाड़ी मुल्क और दक्षिणी हिस्से और नशेब की जमीन में रहते थे, लड़ने को गए। 10 और यहदाह ने उन कन्यानियों पर जो हब्सन में रहते थे चढ़ाई की और हब्सन का नाम पहले करयत अब्ला' था; वहाँ उन्होंने सीसी और अखीमान और तलमी को मारा। 11 वहाँ से वह दबीर के बाशिदों पर चढ़ाई करने को गया दबीर का नाम पहले करयत सिफर था। 12 तब कालिब ने कहा, “जो कोई करयत सिफर को मार कर उसे ले ले, मैं उसे अपनी बेटी ‘अक्सा ब्याह दँगा।’” 13 और कालिब के छोटे भाई कनज के बेटे गुतीएल ने उसे ले लिया; फिर उसने अपनी बेटी ‘अक्सा उस ब्याह दी।’ 14 और जब वह उसके पास गई, तो उसने उसे सलाह दी कि वह उसके बाप से एक खेत माँगो; फिर वह अपने गधे पर से उतर पड़ी, तब कालिब ने उससे कहा, “तू क्या चाहती है?” 15 उसने उससे कहा, “मुझे बरकत दे; चैक्कि तुमे मुझे दखिलन के मुल्क में रखा है, इसलिए पानी के चश्मे भी मुझे दे।” तब कालिब ने ऊपर के चश्मे और नीचे के चश्मे उसे दिए। 16 और मूसा के साले कीनी की औलाद खजूरों के शहर में बनी यहदाह के साथ याहदाह के बीराने को जो ‘अराद’ के दखिलन में है, चली गयी और जाकर लोगों के साथ रहने लगी। 17 और यहदाह अपने भाई शमैन के साथ गया और उन्होंने उन कन्यानियों को जो सफर में रहते थे मारा, और शहर को मिटा दिया; इसलिए उस शहर का नाम हरमा' कहलाया। 18 और यहदाह ने गज्जा और उसका ‘इलाका, और अस्कलोन और उसका ‘इलाका अक्सन और उसका ‘इलाका को भी ले लिया। 19 और खुदावन्द यहदाह के साथ था, इसलिए उसने पहाड़ियों को निकाल दिया, लेकिन बादी के बाशिदों को निकाल न सका, क्यूँकि उनके पास लोहे के रथ थे। 20 तब उन्होंने मूसा के कहने के मुताबिक हब्सन कालिब को दिया; और उसने वहाँ से ‘अनाक के तीरों बेटों को निकाल दिया। 21 और बनी बिनयमीन ने उन यबसियों को जो येस्शलेम में रहते थे न निकाला, इसलिए यबसी बनी बिनयमीन के साथ आज तक येस्शलेम में रहते हैं। 22 और यसुक के घराने ने भी बैतेल लेकिन चढ़ाई की, और खुदावन्द उनके साथ था। 23 और यसुक के घराने ने बैतैल का हाल दरियापत करने को जासूस भेजे और उस शहर का नाम पहले लूज था। 24 और जासूसों ने एक शब्द को उस शहर से निकलते देखा और उससे कहा, कि शहर में दाखिल

होने की राह हम को दिखा दे, तो हम तज्ज्ञ से मेहरबानी से पेश आएँगे। 25 इसलिए उसने शहर में दाखिल होने की राह उनको दिखा दी। उन्होंने शहर को बर्बाद किया, पर उस शब्द और उसके सारे घराने को छोड़ दिया। 26 और वह शब्द हितियों के मुल्क में गया, और उसने वहाँ एक शहर बनाया और उसका नाम लज्ज रखा; चूँचे आज तक उसका यही नाम है। 27 और मनसी ने भी बैत शान और उसके कस्बों और तानक और उसके कस्बों और दोर और उसके कस्बों के बाशिदों, और इब्ती‘आम और उसके कस्बों के बाशिदों, और मजिदों और उसके कस्बों के बाशिदों को न निकाला; बल्कि कन्यानी उस मुल्क में बसे ही रहे। 28 लेकिन जब इसाईल ने जोर पकड़ा, तो वह कन्यानियों से बेगार का काम लेने लगे लेकिन उनको बिल्कुल निकाल न दिया। 29 और इफ़ाईम ने उन कन्यानियों को जो जजर में रहते थे न निकाला, इसलिए कन्यानी उनके बीच जजर में बसे रहे। 30 और जब्लून ने कितरोन और नहलाल के लोगों को न निकाला, इसलिए कन्यानी उनमें क्याम करते रहे और उनके फरमाबरदार हो गए। 31 और आशर ने ‘अक्को और सैदा और अहलाब और अक्जीब और हिलबा और अफ़ीक और रहोब के बाशिदों को न निकाला; 32 बल्कि आशरी उन कन्यानियों के बीच जो उस मुल्क के बाशिदे थे बस गए, क्यूँकि उन्होंने उनको निकाला न था। 33 और नफताली ने बैत शम्स और बैत अनात के बाशिदों को न निकाला, बल्कि वह उन कन्यानियों में जो वहाँ रहते थे बस गया; तो भी बैत शम्स और बैत अनात के बाशिदे उनके फरमाबरदार हो गए। 34 और अमोरियों ने बनी दान को पहाड़ी मुल्क में भागा दिया, क्यूँकि उन्होंने उनको निकाला न था। 35 बल्कि अमोरी कोह — ए — हरिस पर और अस्यालोन और सालबीम में बसे ही रहे, तो भी बनी यसुक का हाथ गालिब हुआ, ऐसा कि यह फरमाबरदार हो गए। 36 और अमोरियों की सरहद 'अकरब्बीम की चढ़ाई से यानी चट्टान से शुरू' करके उपर ऊपर थी।

2 और खुदावन्द का फरिशता जिल्जाल से बोकीम को आया और कहने लगा, मैं तुम को मिस्म से निकाल कर, उस मुल्क में जिसके बारे में मैं ने तुम्हारे बाप — दादा से कसम खाई थी, ले आया और मैंने कहा, भी हगिज़ तुम से याद खिलाफ़ी नहीं करूँगा। 2 और तुम उस मुल्क के बाशिदों के साथ ‘अहद न बँधाना, बल्कि तुम उनके मजबहों को ढा देना। लेकिन तुम ने मेरी बात नहीं मारी। तुमने क्यूँ ऐसा किया? 3 इसी लिए मैंने भी कहा, ‘कि मैं उनको तुम्हारे आगे से दफ़ा’ न करूँगा, बल्कि वह तुम्हारे पहलुओं के कैंटै और उनके माबूद तुम्हारे लिए फँदा होंगे।’ 4 जब खुदावन्द के फरिशते ने सब बनी इसाईल से यह बातें कहीं, तो वह जोर — जोर रेने से लगे। 5 और उन्होंने उस जगह का नाम बोकीम रखा; और वहाँ उन्होंने खुदावन्द के लिए कुर्बानी अदा की। 6 और जिस बक्त यशू'अ ने जमा' अत को स्वस्त किया था, तब बनी — इसाईल में से हर एक अपनी मीरास को लौट दिया था ताकि उस मुल्क पर कब्जा करे। 7 और वह लोग खुदावन्द की इबादत यशू'अ के जीते जी और उन बुजुर्गों के जीते जी करते रहे, जो यशू'अ के बाद जिन्ना रहे और जिन्होंने खुदावन्द के सब बड़े काम जो उसने इसाईल के लिए किए देखे थे। 8 और नून का बेटा यशू'अ, खुदावन्द का बंदा, एक सौ दस बरस का होकर बफ़त कर गया। 9 और उन्होंने उसी की मीरास की हद पर, तिमनत हरिस में इफ़ाईम के पहाड़ी मुल्क में जो कोह — ए — जास के उत्तर की तरफ है, उसको दफ़न किया। 10 और वह सारी नसल भी अपने बाप — दादा से जा मिली; और उनके बाद एक और नसल पैदा हुई, जो न खुदावन्द को और न उस काम को जो उसने इसाईल के लिए किया जानी थी। 11 और बनी — इसाईल ने खुदावन्द के आगे बुराई की, और बालीम की इबादत करने लगे। 12 और उन्होंने खुदावन्द अपने बाप

— दादा के खुदा को जो उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया था छोड़ दिया, और दूसरे मां'बूदों की जो उनके चारों तरफ की कौमों के मां'बूदों में से थे पैरवी करने और उनको सिज्दा करने लगे और खुदावन्द को गुस्सा दिलाया। 13 और वह खुदावन्द को छोड़ कर बा'ल और 'इस्तारात की इबादत करने लगे। 14 और खुदावन्द का कहर इसाईल पर भड़का, और उसने उनको गारतारों के हाथ में कर दिया जो उनको लूटने लगे; और उसने उनको उनके दुश्मनों के हाथ जो आस पास थे बेचा, इसलिए वह फिर अपने दुश्मनों के सामने खड़े न हो सके। 15 और वह जहाँ कही जाते खुदावन्द का हाथ उनकी तकलीफ ही पर तुला रहता था, जैसा खुदावन्द ने कह दिया था और उनसे कसम खाई थी; इसलिए वह निहायत तंग आ गए। 16 फिर खुदावन्द ने उनके लिए ऐसे काजी खड़े किए, जिन्होंने उनको उनके गारतारों के हाथ से छुड़ाया। 17 लेकिन उन्होंने अपने काजियों की भी न सुनी, बल्कि और मां'बूदों की पैरवी में जिना करते और उनको सिज्दा करते थे; और वह उस राह से जिस पर उनके बाप — दादा चलते और खुदावन्द की फरमाँबरदारी करते थे, बहुत जल्द फिर गए और उन्होंने उनके से काम न किए। 18 और जब खुदावन्द उनके लिए काजियों को बरपा करता तो खुदावन्द उस काजी के साथ होता, और उस काजी के जीते जी उनको उनके दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया करता था; इसलिए कि जब वह अपने सताने वालों और दुख देने वालों के 'जरिए' कुछते थे, तो खुदावन्द गमरीन होता था। 19 लेकिन जब वह काजी मर जाता, तो वह फिरकर और मां'बूदों की पैरवी में अपने बाप — दादा से भी ज्यादा विगड़ जाते और उनकी इबादत करते और उनको सिज्दा करते थे; वह न तो अपने कामों से और न अपनी घमंडी के चाल — चलन से बाज आए। 20 इसलिए खुदावन्द का ग़जब इसाईल पर भड़का और उसने कहा, “चूँकि इन लोगों ने मेरे उस 'अहद' को जिसका हुक्म मैं ने उनके बाप — दादा को दिया था, तोड़ डाला और मेरी बात नहीं सुनी। 21 इसलिए मैं भी अब उन कौमों में से जिनको यूँ-अँ छोड़ कर मरा है, किसी को भी इनके आगे से दफ़ा नहीं करँगा। 22 ताकि मैं इसाईल को उन ही के 'जरिए' से आजमाऊँ, कि वह खुदावन्द की राह पर चलने के लिए अपने बाप — दादा की तरह काईम रहेंगे या नहीं।” 23 इसलिए खुदावन्द ने उन कौमों को रहने दिया और उनको जल्द न निकाल दिया और यशःअे के हाथ में भी उनको हवाले न किया।

3 और यह वह कौमें हैं जिनको खुदावन्द ने रहने दिया, ताकि उनके बरसीले से इसाईलियों में से उन सब को जो कन'आन की सब लडाइयों से बाकिफ़ न थे आजमाए, 2 सिर्फ़ मक्सद यह था कि बनी — इसाईल की नसल के खासकर उन लोगों को, जो पहले लड़ाना नहीं जानते थे लडाई सिखाई जाए ताकि वह बाकिफ़ हो जाएँ, 3 यानी फिलिस्तियों के पाँचों सरदार, और सब कन'आनी और सैदानी, और कोह — ए — बा'ल हरमून से हमारत के मदरखल तक के सब हब्बी जो कोह — ए — लुहानान में बसते थे। 4 यह इसलिए थे कि इनके बरसीले से इसाईली आजमाए जाएँ, ताकि मांतूम हो जाएँ के वह खुदावन्द के हुक्मों को जो उसने पूसा के 'जरिए' उनके बाप — दादा को दिए थे सुनेंगे या नहीं। 5 इसलिए बनी — इसाईल कन'आनियों और हितियों और अमूरियों और फरिजियों और हव्वियों और यशूसियों के बीच बस गए; 6 और उनकी बेटियों से आप निकाल हरने और अपनी बेटियाँ उनके बेटों को देने, और उनके मां'बूदों की इबादत करने लगे। 7 और बनी — इसाईल ने खुदावन्द के आगे बुराई की, और खुदावन्द अपने खुदा को भूल कर बा'लीम और यसीरितों की इबादत करने लगे। 8 इसलिए खुदावन्द का कहर इसाईलियों पर भड़का, और उसने उनको मसोपतामिया के बादशाह कोशन रिसा'तीम के हाथ बेच डाला; इसलिए वह आठ बरस तक कोशन रिसा'तीम के फरमाँबरदार रहे। 9

और जब बनी — इसाईल ने खुदावन्द से फरियाद की तो खुदावन्द ने बनी — इसाईल के लिए एक रिहाइ देने वाले को खड़ा किया, और कालिब के छोटे भाई कनज के बेटे गुतनीएल ने उनको छुड़ाया। 10 और खुदावन्द की रुह उस पर उत्तरी और वह इसाईल का काजी हुआ और जंग के लिए निकला; तब खुदावन्द ने मसोपतामिया के बादशाह कोशन रिसा'तीम को उसके हाथ में कर दिया, इसलिए उसका हाथ कोशन रिसा'तीम पर गालिब हुआ। 11 और उस मुल्क में चालीस बरस तक चैन रहा और कनज के बेटे गुतनीएल ने वफ़ात पाई। 12 और बनी — इसाईल ने फिर खुदावन्द के आगे बुराई की; तब खुदावन्द ने मोआब के बादशाह 'अजलून को इसाईलियों के खिलाफ़ जोर बरबा, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द के आगे बदी की थी। 13 और उसने बनी 'अम्मत और बनी 'अमातीक' को अपने यहाँ जमा' किया और जाकर इसाईल को मारा, और उन्होंने खजरों का शहर ले लिया। 14 इसलिए बनी इसाईल अठारह बरस तक मोआब के बादशाह 'अजलून के फरमाँबरदार रहे। 15 लेकिन जब बनी — इसाईल ने खुदावन्द से फरियाद की तो खुदावन्द ने बिनयरीनी जीरा के बेटे अहद को जो बेसहारा था, उनका छुड़ाने वाले मुकर्रर किया और बनी इसाईल ने उसके जरिए मोआब के बादशाह 'अजलून के लिए हादिया भेजा। 16 और अहद ने अपने लिए एक दोधारी तलवार एक हाथ लम्बी बनवाई, और उसे अपने जामे के नीचे दहनी रान पर बाँध लिया। 17 फिर उसने मोआब के बादशाह 'अजलून के सामने वह हादिया पेश किया, और 'अजलून बड़ा मोटा आदमी था। 18 और जब वह हादिया पेश कर चुका तो उन लोगों को जो हादिया लाए थे स्खसत किया। 19 और वह उस पथर के कान के पास जो जिल्जाल में है, कहने लगा, “ऐ बादशाह मेरे पास तैर लिए एक खूफिया पैगाम है।” उसने कहा, “खामोश रह।” तब वह पास सब जो उसके खड़े थे उसके पास से बाहर चले गए। 20 फिर अहद उसके पास आया, उस बक्त वह अपने हवादार बालाखाने में अकेला बैठा था। तब अहद ने कहा, “तैर लिए मेरे पास खुदा की तरफ़ से एक पैगाम है।” तब वह कुसीं पर से उठ खड़ा हुआ। 21 और अहद ने अपना बायौं हाथ बड़ा कर अपनी दहनी रान पर से वह तलवार ली और उसकी पेट में धुसेड़ दी। 22 और फल कब्ज़े समेत दाखिल हो गया, और चबीं फल के ऊपर लिपट गईं; कर्मूकि उसने तलवार को उसकी पेट से निकाला, बल्कि उसके दरवाजों के अन्दर उसे बन्द कर के ताला लगा दिया। 24 और जब वह चलता लगा तो उसके खादिम आए और उन्होंने देखा कि बालाखाने के दरवाजों में ताला लगा है; वह कहने लगे, “वह ज़रूर हवादार कमरे में फरागत कर रहा है।” 25 और वह ठहरे ठहरे शरमा भी गए, और जब देखा कि वह बालाखाने के दरवाजे नहीं खोलता, तो उन्होंने कुंजी ली और दरवाजे खोले, और देखा कि उनका आका ज़मीन पर मरा पड़ा है। 26 और वह ठहरे ही हुए थे कि अहद इन्हें भाग निकला, और पथर की कान से आगे बढ़ कर स'ईरत में जा पनाह ली। 27 और वहाँ पहुँच तक उसने इसाईम के पहाड़ी मुल्क में नरसिंगा फूका। तब बनी इसाईल उसके साथ पहाड़ी मुल्क से उतरे, और वह उनके आगे हो लिया। 28 उसने उनको कहा, “मेरे पीछे पीछे चले चलो, क्यूँकि खुदावन्द ने तुम्हारे दुश्मनों यानी मोआबियों को तुम्हरे कब्ज़ा में कर दिया है।” इसलिए उन्होंने उसके पीछे पीछे जाकर यरदन के घाटों को जो मोआब की तरफ़ थे अपने कब्ज़े में कर लिया, और एक को भी पार उतरने न दिया। 29 उस बक्त उन्होंने मोआब के दस हजार शरक्स के करीब जो सब के सब मोटे ताज़े और बहादुर थे, कल्तून किए और उनमें से एक भी न बचा। 30 इसलिए मोआब उस दिन इसाईलियों के हाथ के नीचे दब गया, और उस मुल्क में अस्सी बरस चैन रहा।

31 इसके बाद 'अनात का बेटा शमजर खड़ा हुआ, और उसने फिलिस्तियों में से छँ: सौ आदमी बैल के पैने से मारे; और उसने भी इसाईल को रिहाई दी।

4 और अहंद की वफात के बाद बनी इसाईल ने फिर खुदावन्द के सामने बुराई की। 2 इसलिए खुदावन्द ने उनको कन' आन के बादशाह याबीन के हाथ जो हस्त में सल्तनत करता था बेचा, और उसके लश्कर के समराद का नाम सीसरा था; वह दीगर अक्वाम के शहर हस्सत में रहता था। 3 तब बनी — इसाईल ने खुदावन्द से फरियाद की; क्यूंकि उसके पास लोहे के नौ सौ रथ थे, और उसने बीस बरस तक बनी — इसाईल को शिष्ट से सताया। 4 उस वक्त लफीदोत की बीवी दबोरा नविया, बनी — इसाईल का इन्साफ किया करती थी। 5 और वह इसाईम के पहाड़ी मूलक में रामा और बैतेल के बीच दबोरा के खजूर के दरखत के नीचे रहती थी, और बनी इसाईल उसके पास इन्साफ के लिए आते थे। 6 और उसने कादिस नफ्ताली से अबीनूँ अम के बेटे बरक को बुला भेजा और उससे कहा, "क्या खुदावन्द इसाईल के खुदा ने हक्म नहीं किया, कि तू तबूर के पहाड़ पर चढ़ जा, और बनी नफ्ताली और बनी जब्लून में से दस हजार आदमी अपने साथ ले ले? 7 और मैं नहर — ए — कीसोन पर याबीन के लश्कर के सरदार सीसरा को और उसके रथों और फौज को तेरे पास खीच लाऊँगा, और उसे तेरे हाथ में कर दूँगा।" 8 और बरक ने उससे कहा, "आगर तू मेरे साथ चलेगी तो मैं जाऊँगा, लेकिन आगर तू मेरे साथ नहीं चलेगी तो मैं नहीं जाऊँगा।" 9 उसने कहा, "मैं ज़स्त तेरे साथ चलूँगी, लेकिन आगर तू मेरे साथ नहीं चलेगी तो मैं नहीं जाऊँगा।" 10 और बरक ने जब्लून और नफ्ताली को कादिस में बुलाया; और दस हजार आदमी अपने साथ लेकर चढ़ा, और दबोरा भी उसके साथ चढ़ी। 11 और हिब्र कीनी ने जो मूसा के साले हबाब की नसल से था, कीनियों से अलग होकर कादिस के करीब जानीमी में बलून के दरखत के पास अपना डेरा डाल लिया था। 12 तब उन्होंने सीसरा को खोबर पहुँचाई कि बरक बिन अबीनूँ अम कोह — ए — तबूर पर चढ़ गया है। 13 और सीसरा ने अपने सब रथों को, यानी लोहे के नौ सौ रथों और अपने साथ के सब लोगों को दीगर अक्वाम के शहर हस्सत से कीसोन की नदी पर जमा किया। 14 तब दबोरा ने बरक से कहा कि उठ! क्यूंकि यही वह दिन है, जिसमें खुदावन्द ने सीसरा को तेरे कब्जे में कर दिया है। क्या खुदावन्द तेरे आगे नहीं गया है? तब बरक और वह दस हजार आदमी उसके पीछे पीछे कोह — ए — तबूर से उतरे। 15 और खुदावन्द ने सीसरा को और उसके सब रथों और सब लश्कर को, तलवार की धार से बरक के सामने शिक्षत दी; और सीसरा रथ पर से उतर कर पैदल भागा। 16 और बरक रथों और लश्कर को दीगर अक्वाम के हस्सत शहर तक दौड़ाता गया; चुनौचे सीसरा का सारा लश्कर तलवार से मिटा, और एक भी न बचा। 17 लेकिन सीसरा हिब्र कीनी की बीवी या'एल के डेरे को पैदल भाग गया, इसलिए कि हस्त के बादशाह याबीन और हिब्र कीनी के घराने में सुलह थी। 18 तब या'एल सीसरा से यिलों को निकली, और उससे कहने लगी, "ऐ मेरे खुदावन्द, आ मेरे पास आ, और परेशान न हो।" इसलिए वह उसके पास डेरे में चला गया, और उसने उसको कम्बल उड़ा दिया। 19 तब सीसरा ने उससे कहा कि ज़रा मुझे थोड़ा सा पानी पीने को दे, क्यूंकि मैं व्यासा हूँ। तब उसने दूध का मश्कीज़ा खोलकर उसे पिलाया, और फिर उसे उड़ा दिया। 20 तब उसने उससे कहा कि तू डेरे के दरवाजे पर खड़ी रहना, और अगर कोई शब्द आकर तुझ से पूछे कि यहाँ कोई आदमी है? तो कह देना कि नहीं। 21 तब हिब्र की बीवी या'एल डेरे की एक मेख और एक मेखचूँ को हाथ में ले, दबे पौंच उसके पास गई और मेख उसकी कनपटियों पर रख कर ऐसी ठोकी कि वह पार होकर

जमीन में जा धूंसी, क्यूंकि वह गहरी नीद में था, पस वह बेहोश होकर मर गया। 22 और जब बरक सीसरा को दौड़ाता आया तो या'एल उससे मिलने को निकली और उससे कहा, "आ जा, और मैं तुझे वही शब्द जिसे तू दृढ़ता है दिखा दूँगी।" पस उसने उसके पास आकर देखा कि सीसरा मरा पड़ा है, और मेख उसकी कनपटियों में है। 23 इसलिए खुदा ने उस दिन कन' आन के बादशाह याबीन को बनी — इसाईल के सामने नीचा दिखाया। 24 और बनी — इसाईल का हाथ कन' आन के बादशाह याबीन पर ज्यादा गालिब ही होता गया, यहाँ तक कि उन्होंने शह — ए — कन' आन याबीन को बर्बाद कर डाला।

5 उसी दिन दबोरा और अबीनूँ अम के बेटे बरक ने यह गीत गाया कि: 2

पेशवाओं ने जो इसाईल की पेशवाई की और लोग खुशी खुशी भर्ती हुए इसके लिए खुदावन्द को मुबारक कहो। 3 ऐ बादशाहों, सनो! ऐ शाहजादों, कान लगाओ! मैं खद खुदावन्द की तारीफ करूँगी, मैं खुदावन्द, इसाईल के खुदा की बड़ाई गाँँगी। 4 ऐ खुदावन्द, जब तू शाई से चला, जब तू अदोम के मैदान से बाहर निकला, तो जमीन कौप उठी, और आसमान टूट पड़ा, हाँ, बादल बरसे। 5 पहाड़ खुदावन्द की हजूरी की वजह से, और वह सीना भी खुदावन्द इसाईल के खुदा की हजूरी की वजह से कौप गए। 6 'अनात के बेटे शमजर के दिनों में, और या'एल के दिनों में शहराहें सूनी पड़ी थी, और मुसाफिर पगांडियों से आते जाते थे। 7 इसाईल में हाकिम बन्द रहे, वह बन्द रहे, जब तक कि मैं दबोरा खड़ी न हई, जब तक कि मैं इसाईल में मौं होकर न उठी। 8 उन्होंने नए माँबूद चुन लिए, तब जंग फाटकों ही पर होने लगी। क्या चालीस हजार इसाईलियों में भी कोई ढाल या बर्छी दिखाई देती थी? 9 मेरा दिल इसाईल के हाकिमों की तरफ लगा है जो लोगों के बीच खुशी खुशी भर्ती हुए। तुम खुदावन्द को मुबारक कहो। 10 ऐ तुम सब जो सफेद गधों पर सवार हुआ करते हो, और तुम जो नक्स गालीचों पर बैठते हो, और तुम लोग जो रास्ते चलते हो, सब इसका चर्चा करो। 11 तीरं अंदाजों के शेर से दूर पनथटों में, वह खुदावन्द के सच्चे कामों का, यानी उसकी हक्मपत के उन सच्चे कामों का जो इसाईल में है जिक्र करेंगे। उस वक्त खुदावन्द के लोग उतर उतर कर फाटकों पर गए। 12 "जाग, जाग, ऐ दबोरा! जाग, जाग और गीत गा! उठ, ऐ बरक, और अपने गुलामों को बाँध ले जा, ऐ अबीनूँ अम के बेटे। 13 उस वक्त थोड़े से रईस और लोग उतर आएः खुदावन्द मेरी तरफ से ताकतवरों के मुकाबिले के लिए आया। 14 इक्फाईम में से वह लोग आए जिनकी जड़ 'अमालीक' में हैं; तेरे पीछे पीछे ऐ बिनयानीन, तेरे लोगों के बीच, मकीर में से हाकिम उतर कर आएः और जब्लून में से वह लोग आए जो सिपहसालार की लाठी लिए रहते हैं; 15 और इश्कार के सरदार दबोरा के साथ साथ थे, जैसा इश्कार वैसा ही बरक था; वह लोग उसके साथी झपट कर बाढ़ी में गए। स्विन की नदियों के पास बड़े बड़े इश्कार दिल में ठांडे गए। 16 तू उन सीटियों को सुनें के लिए, जो भेड़ बकरियों के लिए बजाते हैं भेड़ सालों के बीच क्यूँ बैठा रहा? स्विन की नदियों के पास दिलों में बड़ी घबराहट थी। 17 जिल' आद यरदन के पार रहा; और दान किशियों में क्यूँ रह गया? आशर समुन्दर के बन्दर के पास बैठा ही रहा, और अपनी खाडियों के आस पास जम गया। 18 जब्लून अपनी जान पर खेलने वाले लोग थे; और नफ्ताली भी मूलक के ऊँचे ऊँचे मकामों पर ऐसा ही निकला। 19 बादशाह आकर लड़े, तब कन' आन के बादशाह ताँ'नक में मजिदों के चश्मों के पास लड़े: लेकिन उनको कछु स्पष्टे हासिल न हए। 20 आसमान की तरफ से भी लड़ाई हूँ; बल्कि सितारे भी अपनी अपनी मजिल में सीसरा से लड़े। 21 कीसोन नदी उनको बहा ले गई, यानी वही पुरानी नदी जो कीसोन नदी है। ऐ मेरी जान! तू जोरों में चल। 22 उनके कूदने, उन ताकतवर घोड़ों के कूदने की वजह से, खुरों की टांप की

आवाज़ होने लगी। 23 खुदावन्द के फरिश्ते ने कहा, कि तुम मीरोज़ पर लान्त करो, उसके बाशिंदों पर सख्त ला'न्त करो क्यूंकि वह खुदावन्द की मदद को ताकतवर के मुकाबिल खुदावन्द की मदद को आए। 24 हिंदू कीनी की बीवी याए़ल, सब 'औरतों से मुबारक ठहरेगी, जो 'औरतें डेरों में हैं उन से वह मुबारक होगी। 25 सीसरा ने पानी माँगा, उसने उसे दूध दिया, अमीरों की थाल में वह उसके लिए मक्खन लाई। 26 उसने अपना हाथ मेख को, और अपना दहना हाथ बढ़ियों के मेखचू को लगाया; और मेखचू से उसने सीसरा को मारा, उसने उसके सिर को फोड़ डाला, और उसकी कनपटियों को आर पार छेद दिया। 27 उसके पाँव पर वह झुका, वह गिरा, और पड़ा रहा; उसके पाँव पर वह झुका और गिरा; जहाँ वह झुका था, वहीं वह मर कर गिरा। 28 सीसरा की माँ खिड़की से झाँकी और चिल्लाई, उसने झिलमिली की ओट से पुकारा, 'उसके रथ के अनें मैं इन्हीं देर क्यूँ लगी? उसके रथों के पहिए क्यूँ अटक गए?' 29 उसकी अक्लमन्द 'औरतों ने जबाब दिया, बल्कि उसने अपने को आप ही जबाब दिया, 30 'क्या उन्होंने लूट को पाकर उसे बॉट नहीं लिया है? क्या हर आदमी को एक एक बल्कि दो दो कुँवारियाँ, और सीसरा को रंगारंग कपड़ों की लट, बल्कि बेल बैटे कढ़े हुए रंगारंग कपड़ों की लट, और दोनों तरफ बेल बैटे कढ़े हुए जो गुलामों पर लटी हों, नहीं मिली?' 31 ऐसे खुदावन्द, तेरे सब दुश्मन ऐसे ही हलाक हो जाएँ। लेकिन उसके प्यार करने वाले आफताब की तरह हों जब वह जोश के साथ उगता है।' और मूल्क में चालीस बरस अमन रहा।

6 और बनी — इस्माईल ने खुदावन्द के आगे बुगाई की, और खुदावन्द ने उनको सात बरस तक मिदियानियों के हाथ में रखवा। 2 और मिदियानियों का हाथ इस्माईलियों पर गालिब हुआ; और मिदियानियों की वजह से बनी — इस्माईल ने अपने लिए पहाड़ों में खोह और गार और किले' बना लिए। 3 और ऐसा होता था कि जब बनी — इस्माईल कुछ बोते थे, तो मिदियानी और 'अमालीकी और मशारिक के लोग उन पर चढ़ आते थे; 4 और उनके मुकाबिल डेरे लगा कर गज्जा तक खेतों की पैदावार को बर्बाद कर डालते, और बनी — इस्माईल के लिए न तो कुछ खुराक, न भेड़ — बकरी, न गाय बैल, न गांधा छोड़ते थे। 5 क्यूंकि वह अपने चौपायों और डेरों को साथ लेकर आते, और टिक्कियों के दल की तरह आते; और वह और उनके ऊंट बेशमार होते थे। यह लोग मूल्क को तबाह करने के लिए आ जाते थे। 6 इसलिए इस्माईली मिदियानियों की वजह से निहायत बर्बाद हो गए, और बनी — इस्माईल खुदावन्द से फरियाद करने लगे। 7 और जब बनी — इस्माईल मिदियानियों की वजह से खुदावन्द से फरियाद करने लगे, 8 तो खुदावन्द ने बनी — इस्माईल के पास एक नवी को भेजा। उसने उनसे कहा कि खुदावन्द इस्माईल का खुदा यैं फरमाता है: मैं तुम को मिस से लाया, और मैंने तुम को गुलामी के घर से बाहर निकाला। 9 मैंने मिदियों के हाथ से और उन सभों के हाथ से जो तुम को सताते थे तुम को छाड़ाया, और तुम्हारे सामने से उनको दफा' किया और उनका मूल्क तुम को दिया। 10 और मैंने तुम से कहा था कि खुदावन्द तुम्हारा खुदा मैं हूँ, इसलिए उन अमोरियों के मांबूदों से जिनके मूल्क में बसते हो, मत डरना। लेकिन तुम ने मेरी बात न मानी। 11 फिर खुदावन्द का फरिश्ता आकर उफरा में बलूत के एक दरखत के नीचे जो यूआस अर्बी' अज्जर का था बैठा, और उसका बेटा जिदाऊन मय के एक कोल्ह में गेहूँ झाड़ रहा था ताकि उसके मिदियानियों से छिपा रखें। 12 और खुदावन्द का फरिश्ता उसे दिखाई देकर उससे कहने लगा कि ऐ ताकतवर स्मृति, खुदावन्द तेर साथ है। 13 जिदाऊन ने उससे कहा, 'ऐ मेरे मालिक! अगर खुदावन्द ही हमारे साथ है तो हम पर यह सब हादसे क्यूँ गुज़रें? और उसके बह सब 'अजीब काम कहाँ गए, जिनका ज़िक्र हमारे

बाप — दादा हम से यैं करते थे, कि क्या खुदावन्द ही हम को मिस से नहीं निकाल लाया? लेकिन अब तो खुदावन्द ने हम को छोड़ दिया, और हम को मिदियानियों के हाथ में कर दिया।' 14 तब खुदावन्द ने उस पर मिगाह की और कहा कि तू अपने इसी ताकत में जा, और बनी — इस्माईल की मिदियानियों के हाथ से छुड़ा। क्या मैंने तुझे नहीं भेजा? 15 उसने उससे कहा, 'ऐ मालिक! मैं किस तरह बनी — इस्माईल को बचाऊँ? मेरा घराना मनस्सी में सब से गरीब है, और मैं अपने बाप के घर में सब से छोटा हूँ।' 16 खुदावन्द ने उससे कहा, 'मैं जस्तर तेर साथ हूँगा, और तू मिदियानियों को ऐसा मार लेगा जैसे एक आदमी को।' 17 तब उसने कहा कि अगर अब मुझ पर तेर करम की नजर हुई है, तो इसका मुझे कोई निशान दिखा कि मुझ से तू ही बांटे करता है। 18 और मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तू यहाँ से न जा जब तक मैं तेरे पास फिर न आऊँ और अपना हादिया निकाल कर तेरे आगे न रखूँ। उसने कहा कि जब तक तू पिर आ न जाए, मैं ठहरा रहूँगा। 19 तब जिदाऊन ने जाकर बकरी का एक बच्चा और एक एफा आटे की फतीरी रोटियाँ तैयार की, और गोश्त को एक टोकरी में और शोरबा एक हौंडी में डालकर उसके पास बलूत के दरखत के नीचे लाकर पेश किया। 20 तब खुदा के फरिश्ते ने उससे कहा, 'इस गोश्त और फतीरी रोटियों कों ले जाकर उस चबूत्र पर रख, और शोरबे को उंडेल दे।' उसने वैसा ही किया। 21 तब खुदावन्द के फरिश्ते ने उस लाटी की नोक से जो उसके हाथ में थी, गोश्त और फतीरी रोटियों को छुआ; और उस पथर से आग निकली और उसने गोश्त और फतीरी रोटियों को भसम कर दिया। तब खुदावन्द का फरिश्ता उसकी नजर से गायब हो गया। 22 और जिदाऊन ने जान लिया के वह खुदावन्द का फरिश्ता था; इसलिए जिदाऊन कहने लगा, 'अफसोस है ऐ मालिक, खुदावन्द, कि मैंने खुदावन्द के फरिश्ते को आमने — सामने देखा।' 23 खुदावन्द ने उससे कहा, 'तेरी सलामती हो, खौफ न कर, तू मेरेगा नहीं।' 24 तब जिदाऊन ने वहाँ खुदावन्द के लिए मज़बूत बनाया, और उसका नाम यहोवा सलोम रख्वा; वह अर्बी' अजरियों के 'उफरा' में आज तक मौजूद है। 25 और उसी रात खुदावन्द ने उसे कहा कि अपने बाप का जवान बैल, यानी वह दूसरा बैल जो सात बरस का है ले, और बाल के मज़बूत को जो तेरे बाप का है ढां दे, और उसके पास की यसीरत को काट डाला; 26 और खुदावन्द अपने खुदा के लिए इस गढ़ी की चोटी पर काँड़े के मुताबिक एक मज़बूत बना; और उस दूसरे बैल को लेकर, उस यसीरत की लकड़ी से जिसे तू काट डालेगा, सोखतनी कुर्बानी गुजार। 27 तब जिदाऊन ने अपने नौकरों में से दस आदमियों को साथ लेकर जैसा खुदावन्द ने उसे फरसाया था किया; और चौंक वह यह काम अपने बाप के खानदान और उस शहर के बाशिंदों के डर से दिन को न कर सका, इसलिए उसे रात को किया। 28 जब उस शहर के लोग सुबह सर्वेर उठे तो क्या देखते हैं, कि बाल का मज़बूत ढाया हुआ, और उसके पास की यसीरत कटी हुई, और उस मज़बूत पर जो बनाया गया था वह दूसरा बैल चढ़ाया हुआ है। 29 और वह आपस में कहने लगे, 'किसने यह काम किया?' और जब उन्होंने तहकीकत और पूछ — ताछ की तो लोगों ने कहा, 'यूआस के बेटे जिदाऊन ने यह काम किया है।' 30 तब उस शहर के लोगों ने युआस से कहा, 'अपने बेटे को निकाल ला ताकि कत्तल किया जाए, इसलिए कि उसने बाल का मज़बूत ढाया दिया, और उसके पास की यसीरत काट डाली है।' 31 युआस ने उन सभों को जो उसके सामने खड़े थे कहा, 'क्या तुम बाल के बास्ते इगाड़ा करोगे? या तुम उसे बचा लोगे? जो कोई उसकी तरफ से इगाड़ा करे वह इसी सुबह मारा जाए। अगर वह खुदा है तो तो आप ही अपने लिए इगाड़े, क्यूंकि किसी ने उसका मज़बूत ढाया है।' 32 इसलिए उसने उस दिन जिदाऊन का नाम यह कहकर यस्त्वाल रख्वा, कि बाल आप इससे इगाड़ ले, इसलिए कि

इसने उसका मज़बह ढा दिया है। 33 तब सब मिदियानी और 'अमालीकी और मशरिक के लोग इकट्ठे हुए, और पार होकर यज्ञाएँ एल की बादी में उन्होंने डेरा किया। 34 तब खुदावन्द की रुह जिदा'ऊन पर नाजिल हुई, इसलिए उसने नरसिंगा फ़ूका और अबी' अपेक्षा के लोग उसकी पैरवी में इकट्ठे हुए। 35 फिर उसने सारे मनस्सी के पास कासिद भेजे, तब वह भी उसकी पैरवी में इकट्ठे हुए। और उसने आशर और जब्लून और नफ़ताली के पास भी कासिद रखना किए, इसलिए वह उनके इस्तकबाल को आए। 36 तब जिदा'ऊन ने खुदा से कहा, “अगर तु अपने कौल के मुताबिक मैं हाथ के बरीले से बनी — इशाईल को रिहाई देना चाहता है, 37 तो देख, मैं भेड़ की ऊन खलिहान में रख दूँगा; इसलिए अगर आपस सिर्फ़ ऊन ही पर पड़े और आस — पास की जमीन सब सूखी रहे, तो मैं जान लूँगा कि तू अपने कौल के मुताबिक बनी — इशाईल को मैं हाथों के बरीले से रिहाई बर्बादोगा।” 38 और ऐसा ही हुआ। क्यूँकि वह सबह को जूँ ही सर्वे उठा, और उस ऊन को दबाया और ऊन में से आपस निचोड़ी तो प्याला भर पानी निकला। 39 तब जिदा'ऊन ने खुदा से कहा कि तेरा गुस्सा मुझ पर न भड़के, मैं सिर्फ़ एक बार और 'अर्ज़ करता हूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि सिर्फ़ एक बार और इस ऊन से आजमाश कर लूँ, अब सिर्फ़ ऊन ही ऊन खुश करे और आस पास की सब जमीन पर आपस पड़े। 40 तब खुदा ने उस रात ऐसा ही किया क्यूँकि ऊन ही खुशक रही और सारी जमीन पर आपस पड़ी।

7 तब यस्ब्बा'ल या'नी जिदा'ऊन और सब लोग जो उसके साथ थे सर्वे ही उठे, और होद के चश्मे के पास डेरा किया, और मिदियानियों की लश्कर गाह उनके उत्तर की तरफ़ कोह — ए — मोरा के मुतसिल बादी में थी 2 तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा, तेरे साथ के लोग इतने ज्यादा हैं, कि मैं मिदियानियों को उनके हाथ में नहीं कर सकता; ऐसा न हो कि इस्माईली मेरे सामने अपने ऊपर फ़ऱाह कर के कहने लगें कि हमारी ताकत ने हम को बचाया। 3 इसलिए तू लोगों में सुना सुना कर ऐलान कर दे कि जो कोई तरसान और हिंगासान हो, वह लौट कर कोह — ए — जिला'आद से चला जाए। चुनावे उन लोगों में से बाइस हजार तो लौट गए, और दस हजार बाकी रह गए। 4 तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि लोग अब भी ज्यादा हैं; इसलिए तू उनको चश्मे के पास नीचे ले आ, और वहाँ मैं तेरी खातिर उनको आजमाऊँगा, और ऐसा होगा कि जिसके बारे में तुझ से कहूँ, 'यह तेरे साथ जाए, वही तेरे साथ जाए; और जिसके हक में मैं कहूँ कि यह तेरे साथ न जाए' वह न जाए। 5 इसलिए वह उन लोगों को चश्मे के पास नीचे ले गया, और खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि जो जो अपनी जबान से पानी चपड़ चपड़ कर के कुते की तरह पिए उसको अलग रख, और वैसे ही हर ऐसे शब्ब को जो घुटने टेक कर पिए। 6 इसलिए जिन्होंने अपना हाथ अपने मुँह से लगा कर चपड़ चपड़ कर के पिया वह गिनती में तीन सौ शब्ब थे, और बाकी सब लोगों ने घुटने टेक कर पानी पिया। 7 तब खुदावन्द ने जिदा'ऊन से कहा कि मैं इन तीन सौ आदमियों के बरीले से जिन्होंने चपड़ चपड़ कर के पिया तुम को बचाऊँगा, और मिदियानियों को तेरे हाथ में कर दूँगा; और बाकी सब लोग अपनी अपनी जगह को लौट जाएँ। 8 तब उन लोगों ने अपना — अपना खाना और नरसिंगा अपने अपने हाथ में लिया; और उनसे सब इस्माईली आदमियों को उनके डेरों की तरफ़ रखाना कर दिया पर उन तीन सौ आदमियों रख लिया; और मिदियानियों की लश्कर गाह उसके नीचे बादी में थी। 9 और उसी रात खुदावन्द ने उससे कहा, उठ, और नीचे लश्कर गाह में उतर जा: क्यूँकि मैंने उसे तेरे कब्जा में कर दिया है। 10 लेकिन अगर तू नीचे जाते डरता है, तो तू अपने नैकर फ़ऱाह के साथ लश्कर गाह में उतर जा, 11 और तू सुन लेगा कि वह क्या

कह रहे हैं; इसके बाद तुझ को हिम्मत होगी कि तू उस लश्कर गाह में उतर जाए। चुनावे वह अपने नैकर फ़ऱाह को साथ लेकर उन सिपाहियों के पास जो उस लश्कर गाह के किनारे थे गया। 12 और मिदियानी और 'अमालीकी और मशरिक के लोग कसरत से बादी के बीच टिड़ियों की तरह फैले पड़े थे; और उनके ऊंट कसरत की बजह से समन्दर के किनारे की रेत की तरह बेशुमार थे। 13 और जब जिदा'ऊन पहुँचा तो देखो, वहाँ एक खाल अपना खाल अपने साथी से बयान करता हुआ कह रहा था, “देख, मैंने एक खाल देखा है कि जौ की एक रोटी मिदियानी लश्कर गाह में गिरी और लुक़की हुई डेरे के पास पहुँची, और उससे ऐसी टकराई कि वह गिर गया और उसका ऐसा उलट दिया कि वह डेरा फर्जी हो गया।” 14 तब उनके साथी ने जबाब दिया कि यह युआस के बेटे जिदा'ऊन इस्माईली आदमी की तलवार के 'अलावा और कुछ नहीं; खुदा ने मिदियान की और सारे लश्कर को उसके कब्जे में कर दिया है। 15 जब जिदा'ऊन ने खाल का मज़मून और उसकी ताँबी सुनी तो सिज्दा किया, और इस्माईली लश्कर में लौट कर कबने लगा, “उठो, क्यूँकि खुदावन्द ने मिदियानी लश्कर को तुम्हारे कब्जे में कर दिया है।” 16 और उसने उन तीन सौ आदमियों के तीन गोल किए, और उन सभों के हाथ में एक नरसिंगा, और उनके साथ एक खाली घड़ा दिया हर घड़े के अनन्द एक मशाल थी। 17 और उनसे उनसे कहा कि मुझे देखते रहना और वैसा ही करना; और देखो, जब मैं लश्कर गाह के किनारे जा पहुँचूँ, तो जो कुछ मैं करूँ तुम भी वैसा ही करना। 18 जब मैं और हर सब जो मैं साथ थे हैं। नरसिंगा फ़ूके, तो तुम भी लश्कर गाह की हर तरफ़ नरसिंगे फ़ूकना और ललकारना, “यहोवा की और जिदा'ऊन की तलवार।” 19 इसलिए बीच के पहर के शुरू में जब नए पहरे वाले बदले गए, तो जिदा'ऊन और वह सौ आदमी जो उसके साथ थे लश्कर गाह के किनारे आए; और उन्होंने नरसिंगे फ़ूके और उन घड़ों को जो उनके हाथ में थे तोड़ा। 20 और उन तीनों गोलों ने नरसिंगे फ़ूके और घड़े तोड़े और मशालों को अपने बाएँ हाथ में और नरसिंगों को फ़ूकने के लिए अपने दूनने हाथ में ले लिया और चिल्ला उठे कि यहोवा की और जिदा'ऊन की तलवार। 21 और यह सब के सब लश्कर गाह के चारों तरफ़ अपनी अपनी जगह खड़े हो गए, तब सारा लश्कर दौड़ने लगा और उन्होंने चिल्ला चिल्लाकर उनको भगाया। 22 और उन्होंने तीन सौ नरसिंगों को फ़ूका, और खुदावन्द ने हर शब्ब की तलवार उसके साथी और सब लश्कर पर चलवाई और सारा लश्कर सरीरात की तरफ़ बैत — सिता तक और तब्बात के करीब अबील महोला की सरहद तक भागा। 23 तब इस्माईली आदमी नफ़ताली और आशर और मनस्सी की सहदों से जमा' होकर निकले और मिदियानियों का पीछा किया। 24 और जिदा'ऊन ने इफ़राईम के तमाम पहाड़ी मूलक में कासिद रखाना किए और कहला भेजा कि मिदियानियों के मुकाबिले को उतर आओ, और उनसे फ़हले पहले दरिया — ए — यरदन के घाटों पर बैतबारा तक काबिज हो जाओ। तब सब इफ़राईली जमा' होकर दरिया — ए — यरदन के घाटों पर बैतबारा तक काबिज हो गए। 25 और उन्होंने मिदियान के दो सरदारों 'ओरेब और ज़ईब को पकड़ दिया, और 'ओरेब को 'ओरेब की चालन पर और ज़ईब को ज़ईब के कोल्ह के पास कल्ले किया; और मिदियानियों को टौड़ाया और 'ओरेब और ज़ईब के सिर यरदन पार जिदा'ऊन के पास ले आए।

8 और इफ़राईम के बाशिन्दों ने उससे कहा कि तूने हम से यह सलूक क्यूँ किया, कि जब तू मिदियानियों से लड़ने को चला तो हम को न बुलवाया? इसलिए उन्होंने उसके साथ बड़ा झगड़ा किया। 2 उसने उनसे कहा, “मैंने तुम्हारी तरह भला किया ही क्या है? क्या इफ़राईम के छोड़े हुए अंगूर भी अबी' अपेक्षा की फ़सल से बेहतर नहीं हैं? 3 खुदा ने मिदियान के सरदार

'ओरेब और जईब को तुम्हारे कब्जे में कर दिया; इसलिए तुम्हारी तरह मैं कर ही क्या सका हूँ?' जब उसने यह कहा, तो उनका गुस्सा उसकी तरफ से धीमा हो गया। 4 तब जिदा'ऊन और उसके साथ के तीन सौ आदमी जो बावजूद थे मौदे होने के फिर भी पीछा करते ही रहे थे, यरदन पर आकर पार उतरे। 5 तब उसने सुककात के बाशिदों से कहा कि इन लोगों को जो मेरे पैरी हैं, रोटी के गिर्दे दो क्यूंकि वह थक गए हैं; और मैं मिदियान के दोनों बादशाहों जिबह और जिलमना' का पीछा कर रहा हूँ। 6 सुककात के सरदारों ने कहा, 'क्या जिबह और जिलमना' के हाथ अब तेरे कब्जे में आ गए हैं, जो हम तेरे लश्कर को रोटियाँ दें?' 7 जिदा'ऊन ने कहा, 'जब खुदावन्द जिबह और जिलमना' को मेरे कब्जे में कर देगा, तो मैं तुम्हारे गोशत को बबल और हमेशा गुलाब के काँटों से नुचवाऊँगा।' 8 फिर वहाँ से वह फनूल को गया, और वहाँ के लोगों से भी ऐसी ही बात कही; और फनूल के लोगों ने भी उसे वैसा ही जवाब दिया जैसा सुककातियों ने दिया था। 9 इसलिए उनने फनूल के बाशिदों से भी कहा कि जब मैं सलामत लौटूँगा, तो इस बुर्ज को ढा ढूँगा। 10 और जिबह और जिलमना' अपने क्रीबन पंद्रह हजार आदमियों के लश्कर के साथ करकूर में थे, क्यूंकि सिर्फ इन्हें ही मशरिक के लोगों के लश्कर में से बच रहे थे; इसलिए कि एक लाख बीस हजार शमशीर जन आदमी कल्प हो गए थे। 11 तब जिदा'ऊन उन लोगों के रास्ते से जो नुबह और युगबिहा के मशरिक की तरफ डेरों में रहते थे गया, और उस लश्कर को मारा क्यूंकि वह लश्कर बेफिर पड़ा था। 12 और जिबह और जिलमना' भागे, और उसने उनका पीछा करके उन दोनों मिदियानी बादशाहों, जिबह और जिलमना' को पकड़ लिया और सारे लश्कर को भगा दिया। 13 और यूआस का बेटा जिदा'ऊन हर्स की चाढाई के पास से जंग से लौटा। 14 और उसने सुककातियों में से एक जवान को पकड़ कर उससे दरियाफ़त किया; इसलिए उनने उसे सुककात के सरदारों और बुजुर्गों का हाल बता दिया जो शुपरामें सतर थे। 15 तब वह सुककातियों के पास आकर कहने लगा कि जिबह और जिलमना' को देख लो, जिनके बारे में युपा ने तजन मुझ से कहा था, 'क्या जिबह और जिलमना' के हाथ तेरे कब्जे में आ गए हैं, कि हम तेरे आदमियों को जो थक गए हैं रोटियाँ दें?' 16 तब उसने शहर के बुजुर्गों को पकड़ा और बबल और सदा गुलाब के काँटे लेकर उसे सुककातियों की तादीब की। 17 और उसने फनूल का बुर्ज ढा कर उस शहर के लोगों को कल्प किया। 18 फिर उसने जिबह और जिलमना' से कहा कि वह लोग जिनको तुम ने तबू में कल्प किया कैसे थे? उन्होंने जवाब दिया, जैसा तू है वैसे ही वह थे; उनमें से हर एक शहजादों की तरह था। 19 तब उसने कहा कि वह मेरे बाईं, मेरी माँ के बेटे थे, इसलिए खुदावन्द की हयात की कसम, अगर तुम उनको जीता छोड़ते तो मैं भी तुम को न मारता। 20 फिर उसने अपने बड़े बेटे यतर को हुक्म किया कि उठ, उनको कल्प कर। लेकिन उस लड़के ने अपनी तलवार न छीची, क्यूंकि उसे डर लगा, इसलिए कि वह अभी लड़का ही था। 21 तब जिबह और जिलमना' ने कहा, 'तू आप उठ कर हम पर वार कर, क्यूंकि जैसा आदमी होता है वैसी ही उसकी ताकत होती है।' इसलिए जिदा'ऊन ने उठ कर जिबह और जिलमना' को कल्प किया, और उनके ऊँटों के गले के चन्दन हार ले लिए। 22 तब बनी — इसाईल ने जिदा'ऊन से कहा कि तू हम पर हक्मत कर, तू और तेरा बेटा और तेरा पोता भी, क्यूंकि तूने हम को मिदियानियों के हाथ से छुड़ाया। 23 तब जिदा'ऊन ने उसने कहा कि न मैं तुम पर हक्मत करूँ और न मेरा बेटा, बल्कि खुदावन्द ही तुम पर हक्मत करेगा। 24 और जिदा'ऊन ने उनसे कहा कि मैं तुम से यह 'अर्ज करता हूँ, कि तुम मैं से हर शब्द स अपनी लूट की बालियाँ मुझे दे दे। यह लोग इस्माईली थे, इसलिए इनके पास सोने की बालियाँ थीं। 25 उन्होंने जवाब दिया कि हम इनको बड़ी खुशी से देंगे। फिर

उन्होंने एक चादर बिछाई और हर एक ने अपनी लूट की बालियाँ उस पर डाल दी। 26 इसलिए वह सोने की बालियाँ जो उसने माँगी थी, बजन में एक हजार सत सौ मिस्काल थी; 'अलावह उन चन्दन हारों और ज्मकों और मिदियानी बादशाहों की इत्वानी पोशाक के जो वह पहने थे, और उन जन्जरीरों के जो उनके ऊँटों के गले में पड़ी थी। 27 और जिदा'ऊन ने उसे एक अफूद बनवाया और उसे अपने शहर उफरा में रखा; और वहाँ सब इसाईली उसकी पैरवी में जिनाकारी करने लगे, और वह जिदा'ऊन और उसके धराने के लिए फंदा ठहरा। 28 यू मिदियानी बनी — इसाईल के आगे मगातब हुए और उन्होंने फिर कभी सिर न उठाया। और जिदा'ऊन के दिनों में चालीस बरस तक उस मुल्क में अम्न रहा। 29 और यूआस का बेटा यस्ब्बा'ल जाकर अपने घर में रहने लगा। 30 और जिदा'ऊन के सतर बेटे थे जो उस ही के सुल्ब से पैदा हुए थे, क्यूंकि उसकी बहुत सी बिवियाँ थीं। 31 और उसकी एक हरम के भी जो सिकम में थी उसे एक बेटा हुआ, और उसने उसका नाम अबीमलिक रखा। 32 और यूआस के बेटे जिदा'ऊन ने खबू उपर रसीदा होकर वफ़ा पाई, और अबी'अज़रियों के उफरा में अपने बाप यूआस की कब्र में दफ़न हुआ। 33 और जिदा'ऊन के मरते ही बनी इसाईल फिर कर बालीम की पैरवी में जिनाकारी करने लगे, और बाल बरीत को अपना माँबदू बना लिया। 34 और बनी इसाईल ने खुदावन्द अपने खुदा को, जिसने उनको हार तरफ उनके दूशमनों के हाथ से रिहाई दी थी याद न रखा; 35 और न वह यस्ब्बा'ल याँनी जिदा'ऊन के खानदान के साथ, उन सब नेकियों के बदले में जो उसने बनी इसाईल से की थी महेरबानी से पेश आए।

9 तब यस्ब्बा'ल का बेटा अबीमलिक सिकम में अपने मासुओं के पास गया, और उनसे और अपने सब ननिहाल के लोगों से कहा कि; 2 सिकम के सब आदमियों से पूछ देखो कि तुम्हारे लिए क्या बेहतर है, यह कि यस्ब्बा'ल के सब बेटे जो सतर आदमी हैं वह तुम पर सल्तनत करें, या यह कि एक ही की तुम पर हक्मत हो? और यह भी याद रखो, कि मैं तुम्हारी ही हड्डी और तुम्हारा ही गोशत हूँ। 3 और उसके मासुओं ने उसके बारे में सिकम के सब लोगों के कानों में यह बातें डाली; और उनके दिल अबीमलिक की पैरवी पर माइल हुए, क्यूंकि वह कहने लगे कि यह हमारा भाई है। 4 और उन्होंने बाल बरीत के घर में से चाँदी के सतर सिक्के उसको दिए, जिनके बरीते से अबीमलिक ने शुद्धे और बदमाश लोगों को अपने यहाँ लगा लिया, जो उसकी पैरवी करने लगे। 5 और वह उफरा में अपने बाप के घर गया और उसने अपने भाइयों यस्ब्बा'ल के बेटों को जो सतर आदमी थे, एक ही पत्थर पर कल्प किया; लेकिन यस्ब्बा'ल का छोटा बेटा यूताम बचा रहा, क्यूंकि वह छिप गया था। 6 तब सिकम के सब आदमी और सब अहल — ए — मिल्लो जमा' हुए, और जाकर उस सुतून के बलूत के पास जो सिकम में था अबीमलिक को बादशाह बनाया। 7 जब यूताम को इसकी खबर हुई तो वह जाकर कोह — ए — गरीज़ीम की चोटी पर खड़ा हुआ और अपनी आवाज बुलन्द की, और पुकार पुकार कर उनसे कहने लगा, ऐ सिकम के लोगों, मेरी सोनो। ताकि खुदा तुम्हारी सोने। 8 एक जमाने में दरखत चले, ताकि किसी को मसह करके अपना बादशाह बनाएँ; इसलिए उन्होंने जैतून के दरखत से कहा, 'तू हम पर सल्तनत कर। 9 तब जैतून के दरखत ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी चिकनाहट की, जिसके जरिए' मेरे बरीते से लोग खुदा और इसान की बड़ाई करते हैं, छोड़ कर दरखतों पर हुक्मरानी करने जाऊँ?' 10 तब दरखतों ने अंजीर के दरखत से कहा, 'तू आ और हम पर सल्तनत कर। 11 लेकिन अंजीर के दरखत ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी मिठास और अच्छे अच्छे फलों को छोड़ कर दरखतों पर हुक्मरानी करने जाऊँ?' 12 तब दरखतों ने अंगूर की बेल से कहा कि तू आ और हम पर सल्तनत कर। 13 अंगूर की बेल ने उनसे कहा, 'क्या मैं अपनी मय को जो

खुदा और इंसान दोनों को खुश करती है, छोड़ कर दरखतों पर हक्मरानी करने जाएँ?” 14 तब उन सब दरखतों ने ऊँटकटरों से कहा, “चल, तू ही हम पर सलतनत कर।” 15 ऊँटकटरों ने दरखतों से कहा, “अगर तुम सचमच मुझे अपना बादशाह मसह करके बनाओ, तो आओ, मेरे साथे मैं पनाह लो; और अगर नहीं, तो ऊँटकटरों से आग निकलकर लबनान के देवदरों को खा जाए।” 16 इसलिए बात यह है कि तुम ने जो अबीमलिक को बादशाह बनाया है, इसमें अगर तुम ने सच्चाई और ईमानदारी बरती है, और यस्ब्बाल और उसके घराने से अच्छा सलूक किया और उसके साथ उसके एहसान के हक के मुताबिक मुलक किया है। 17 क्यौंकि मेरा बाप तुम्हारी खातिर लड़ा, और उसने अपनी जान खतरे में डाली, और तुम को मिदियान के कँडजे से छुड़ाया। 18 और तुम ने आज मेरे बाप के घराने से बगावत की, और उसके सतर बेटे एक ही पत्थर पर कल्त किए, और उसकी लौड़ी के बेटे अबीमलिक को सिकम के लोगों का बादशाह बनाया इसलिए कि वह तुम्हारा भाई है। 19 इसलिए अगर तुम ने यस्ब्बाल और उसके घराने के साथ आज के दिन सच्चाई और ईमानदारी बरती है, तो तुम अबीमलिक से खुश रहो और वह तुम से खुश रहे। 20 और अगर नहीं, तो अबीमलिक से आग निकलकर सिकम के लोगों को और अहल — ए — मिल्लों खा जाए; और सिकम के लोगों और अहल — ए — मिल्लों के बीच से आग निकलकर अबीमलिक को खा जाए। 21 फिर यहां दौड़ता हुआ भागा और बैर को चलता बना, और अपने भाई अबीमलिक के खौफ से वहीं रहने लगा। 22 और अबीमलिक इस्माइलियों पर तीन बरस हाकिम रहा। 23 तब खुदा ने अबीमलिक और सिकम के लोगों के बीच एक बुरी रुह भेजी, और सिकम के लोग अबीमलिक से दादा बाजी करने लगे; 24 ताकि जो जुलम उन्होंने यस्ब्बाल के सतर बेटों पर किया था वह उन ही पर आए, और उनका खन उनके भाई अबीमलिक के सिर पर जिस ने उनको कल्त किया, और सिकम के लोगों के सिर पर हो जिन्होंने उसके भाइयों के कल्त में उसकी मदत की थी। 25 तब सिकम के लोगों ने पहाड़ों की चोटियों पर उसकी धात में लोग बिठाए, और वह उनको जो उस रस्ते के पास से गुजरते लट्टे लेते थे; और अबीमलिक को इसकी खबर हुई। 26 तब जाल बिन 'अबद अपने भाइयों के साथ सिकम में आया; और सिकम के लोगों ने उस पर भरोसा किया। 27 और वह खेतों में गए और अपने अपने ताकिस्तानों का फल तोड़ा और अंगूष्ठों का रस निकाला और खबर खुशी मनाई, और अपने मांबूट के हैकल में जाकर खाया — पिया और अबीमलिक पर लान्तें बरसाई। 28 और जाल बिन 'अबद कहने लगा, “अबीमलिक कौन है, और सिकम कौन है कि हम उसकी फरमांबरदारी करें? क्या वह यस्ब्बाल का बेटा नहीं, और क्या जबल उसका मन्सबदार नहीं? तुम ही सिकम के बाप हमेर के लोगों की फरमांबरदारी करो, हम उसकी फरमांबरदारी करेंगे करें?” 29 काश कि यह लोग मेरे कँडजे में होते, तो मैं अबीमलिक को किनारे कर देता।” और उसने अबीमलिक से कहा, “तू अपने लक्षकर को बढ़ा और निकल आ।” 30 जब उस शहर के हाकिम ज़बल ने जाल बिन 'अबद की यह बांते सुनी तो उसका कहर भड़का। 31 और उसने चालाकी से अबीमलिक के पास कासिद रवाना किए और कहला भेजा, “देख, जाल बिन 'अबद और उसके भाई सिकम में आए हैं, और शहर को तुझ से बगावत करने की तहरीक कर रहे हैं। 32 इसलिए तू अपने साथ के लोगों को लेकर रात को उठ, और मैदान में धात लगा कर बैठ जा। 33 और सुबह को सूरज निकलते ही सर्वे उठ कर शहर पर हमला कर, और जब वह और उसके साथ के लोग तेरा सामना करने को निकले तो जो कुछ तज्ज्ञ से बन आए तु उन से कर।” 34 इसलिए अबीमलिक और उसके साथ के लोग रात ही को उठ चार गोल हो सिकम के मुकाबिल धात में बैठ गए। 35 और जाल बिन 'अबद बाहर

निकल कर उस शहर के फाटक के पास जा खड़ा हुआ; तब अबीमलिक और उसके साथ के आदमी आरामगाह से उठे। 36 और जब जाल ने फौज को देखा तो वह जबल से कहने लगा, “देख, पहाड़ों की चोटियों से लोग उतर रहे हैं।” जबल ने उससे कहा कि तुझे पहाड़ों का साथ ऐसा दिखाई देता है जैसे आदमी। 37 जाल फिर कहने लगा, “देख, मैदान के बीचों बीच से लोग उतरे आते हैं; और एक गोल मांओनीम के बलून के रस्ते आ रहा है।” 38 तब जबल ने उससे कहा, “अब तेरा वह मुँह कहाँ है जो तू कहा करता था, कि अबीमलिक कौन है कि हम उसकी फरमांबरदारी करें? क्या यह वही लोग नहीं हैं जिनकी दूने हिकारत की है? इसलिए अब जगा निकल कर उनसे लड़ तो सही।” 39 तब जाल सिकम के लोगों के सामने बाहर निकला और अबीमलिक से लड़ा। 40 और अबीमलिक ने उसको दौड़ाया और वह उसके सामने से भागा, और शहर के फाटक तक बहुत से ज़खीरी हो हो कर पिरे। 41 और अबीमलिक ने अरोमा में कयाम किया; और जबल ने जाल और उसके भाइयों को निकाल दिया, ताकि वह सिकम में रहने न पाएँ। 42 और दूसरे दिन सुबह को ऐसा हुआ कि लोग निकल कर मैदान को जाने लगे, और अबीमलिक को खोबर हुई। 43 इसलिए अबीमलिक ने फौज लेकर उसके तीन गोल किए और मैदान में धात लगाई; और जब देखा कि लोग शहर से निकले आते हैं, तो वह उनका सामना करने को उठा और उनको मार लिया। 44 और अबीमलिक उस गोल समेत जो उसके साथ था आगे लपका, और शहर के फाटक के पास आकर खड़ा हो गया; और वह दो गोल उन सभों पर जो मैदान में थे झ़पटे और उनको काट डाला। 45 और अबीमलिक उस दिन शाम तक शहर से लड़ता रहा, और शहर को घेर कर के उन लोगों को जो वहाँ थे कल्त किया, और शहर को बर्बाद कर के उसमें नमक छिड़कवा दिया। 46 और जब सिकम के बुर्ज के सब लोगों ने यह सुना, तो वह अलतबरीत के हैकल के किले में जा घुसे। 47 और अबीमलिक को यह खोबर हुई कि सिकम के बुर्ज के सब लोग इकट्ठे हैं। 48 तब अबीमलिक अपनी फौज संगत जलामोन के पहाड़ पर चढ़ा, और अबीमलिक ने कुल्हाड़ा अपने हाथ में ले दरखतों में से एक डाली काटी और उसे उठा कर अपने कन्धे पर रख लिया, और अपने साथ के लोगों से कहा, “जो कुछ तुम ने मुझे करते देखा है, तुम भी जल्द वैसा ही करो।” 49 तब उन सब लोगों में से हर एक ने उसी तरह एक डाली काट ली, और वह अबीमलिक के पीछे हो लिए और उनको किले पर डालकर किले में आग लगा दी; चुनौती सिकम के बुर्ज के सब आदमी भी जो शब्द और 'औरत मिलाकर करीब एक हजार थे मर गए। 50 पिर अबीमलिक के तैबिज़ को जा तैबिज़ के मुकाबिल खेमाज़न हुआ और उसे ले लिया। 51 लेकिन वहाँ शहर के अन्दर एक बड़ा मजबूत बुर्ज था, इसलिए सब शब्द और 'औरत और शहर के सब बाशिन्दे भाग कर उस में जा घुसे और दरवाज़ा बन्द कर लिया, और बुर्ज की छत पर चढ़ गए। 52 और अबीमलिक बुर्ज के पास आकर उसके मुकाबिल लड़ता रहा, और बुर्ज के दरवाजे के नजदीक गया ताकि उसे जला दे। 53 तब किसी 'औरत ने चक्की का ऊपर का पाट अबीमलिक के सिर पर फेंका, और उसकी खोपड़ी को तोड़ डाला। 54 तब अबीमलिक ने फौरन एक जवान को जो उसका सिलाहबरदार था बुला कर उससे कहा कि अपनी तलवार खींच कर मुझे कल्त कर डाल, ताकि मेरे हक्क में लोग यह न कहने पाएँ कि एक 'औरत ने उसे मार डाला। इसलिए उस जवान ने उसे छेद दिया और वह मर गया। 55 जब इस्माइलियों ने देखा कि अबीमलिक मर गया, तो हर शब्द अपनी जगह चला गया। 56 यूँ खुदा ने अबीमलिक की उस बुराई का बदला जो उसने अपने सतर भाइयों को मार कर अपने बाप से की थी उसको दिया। 57 और सिकम के लोगों की सारी

बुराई खुदा ने उन ही के सिर पर डाली, और यस्बाल के बेटे यूताम की लानत उनको लगाया।

10 और अबीमलिक के बाद तोला' बिन फुव्वा बिन दोदो जो इश्कार के

कबीले का था, इसाइलियों की हिमायत करने को उठा; वह इसाईंस के पहाड़ी मूल्क में समीर में रहता था। 2 वह तईस बरस इसाईंलियों का काजी रहा; और मर गया और समीर में दफन हुआ। 3 इसके बाद जिल'आदी याई उठा, और वह बाइस बरस इसाईंलियों का काजी रहा। 4 उसके तीस बेटे थे जो तीस जवान गधों पर सवार हुआ करते थे; और उनके तीस शहर थे जो आज तक हव्वोंत याईर कहलाते हैं, और जिल'आद के मूल्क में हैं। 5 और याईर मर गया और कामोन में दफन हुआ। 6 और बनी — इसाईंल खुदावन्द के हज़र फिर बुराई करने, और बालीम और अराम के माबूदों और सैदा के माबूदों और मोआब के माबूदों और बनी 'अम्मोन के माबूदों और फिलिसियों के माबूदों की इबादत करने लगे, और खुदावन्द को छोड़ दिया और उसकी इबादत न की। 7 तब खुदावन्द का कहर इसाईंल पर भड़का, और उसने उनको फिलिसियों के हाथ और बनी 'अम्मोन के हाथ बेच डाला। 8 और उहोंने उस साल बनी इसाईंल को तंग किया और सताया, बल्कि अठारह बरस तक वह सब बनी — इसाईंल पर जुल्म करते रहे, जो यरदन पार अमेरियों के मूल्क में जो जिल'आद में है रहते थे। 9 और बनी 'अम्मून यरदन पार होकर यहदाह और बिनयमीन और इसाईंस के खान्दान से लड़ने को भी आ जाते थे, इसलिए इसाईंली बहत तंग आ गए। 10 और बनी इसाईंल खुदावन्द से फरियाद करके कहने लगे, "हमने तेरा गुनाह किया कि अपने खुदा को छोड़ा और बालीम की इबादत की!" 11 और खुदावन्द ने बनी — इसाईंल से कहा, "क्या मैंने तुम को मिस्त्रियों और अमेरियों और बनी 'अम्मोन और फिलिसियों के हाथ से रिहाई नहीं दी? 12 और सैदानियों और 'अमालीकियों और माओनियों ने भी तुम को सताया, और तुम ने मुझ से फरियाद की और मैंने तुम को उनके हाथ से छुड़ाया। 13 तो भी तुम ने मुझे छोड़ कर और माबूदों की इबादत की, इसलिए अब मैं तुम को रिहाई नहीं दूँगा। 14 तुम जाकर उन माबूदों से, जिनको तुम ने इख्तियार किया है फरियाद करो, वही तुम्हारी मुसीबत के बक्तु तुम को छुड़ाएँ।" 15 बनी इसाईंल ने खुदावन्द से कहा, "हम ने तो गुनाह किया, इसलिए जो कुछ तेरी नज़र में अच्छा हो हम से कर; लेकिन आज हम को छुड़ा ही ले।" 16 और वह अजनबी माबूदों को अपने बीच से दूर करके खुदावन्द की इबादत करने लगे; तब उसका जी इसाईंल की परेशानी से गमगीन हुआ। 17 फिर बनी 'अम्मून इकट्ठे होकर जिल'आद में खेमाजन हए; और बनी — इसाईंल भी फराहम होकर मिस्फ़ाह में खेमाजन हए। 18 तब जिल'आद के लोग और सरदार एक दूसरे से कहने लगे, "वह कौन शख्स है जो बनी 'अम्मून से लड़ना शुरू करेगा? वही जिल'आद के सब बाशिदों का हाकिम होगा।"

11 और जिल'आदी इफ्ताह बड़ा जबरदस्त सूर्पा और कस्ती का बेटा था;

और जिल'आद से इफ्ताह पैदा हुआ था। 2 और जिल'आद की बीवी के भी उससे बेटे हुए, और जब उसकी बीवी के बेटे बड़े हुए, तो उहोंने इफ्ताह को यह कहकर निकाल दिया कि हमारे बाप के घर में तुझे कोई मीरास नहीं मिलेगी, क्योंकि तू गैर 'अौरत का बेटा है। 3 तब इफ्ताह अपने भाइयों के पास से भाग कर तोब के मूल्क में रहने लगा और इफ्ताह के पास शहदे जमा' हो गए, और उसके साथ फिरे लगे। 4 और कुछ 'अौरत के बाद बनी 'अम्मून ने बनी — इसाईंल से जंग छेड़ दी। 5 और जब बनी — इसाईंल से लड़ने लगे, तो जिल'आदी बुजुर्ग चले कि इफ्ताह को तोब के मूल्क से ले आएँ। 6 इसलिए वह इफ्ताह से कहने लगे कि हम बनी 'अम्मून से लड़ें। 7 और इफ्ताह

ने जिल'आदी बुजुर्गों से कहा, "क्या तुम ने मुझ से 'अदावत करके मुझे मेरे बाप के घर से निकाल नहीं दिया? इसलिए अब जो तुम मुसीबत में पड़ गए हो तो मैं तेरे पास क्यूँ आए?" 8 जिल'आदी बुजुर्गों ने इफ्ताह से कहा कि अब हम ने फिर इसलिए तेरी तरफ सब किया है, कि तू हमारे साथ चलकर बनी 'अम्मून से लड़ने को मेरे घर ले चलो, और खुदावन्द उनको मेरे हवाले कर दे, तो क्या मैं तुम्हारा हाकिम हूँगा?" 10 जिल'आदी बुजुर्गों ने इफ्ताह को जबाब दिया कि खुदावन्द हमारे बीच गवाह हो, यकीनन जैसा तूने कहा, हम वैसा ही क्योंगे। 11 तब इफ्ताह जिल'आदी बुजुर्गों के साथ रवाना हुआ, और लोगों ने उसे अपना हाकिम और सरदार बनाया; और इफ्ताह ने मिस्फ़ाह में खुदावन्द के आगे अपनी सब बातें कह सुनाई। 12 और इफ्ताह ने बनी 'अम्मून के बादशाह के पास कासिद रवाना किए और कहला भेजा कि तुझे मुझ से क्या काम, जो तू मेरे मूल्क में लड़ने को मेरी तरफ आया है? 13 बनी 'अम्मून के बादशाह ने इफ्ताह के कासिदों को जबाब दिया, "इसलिए कि जब इसाईंली मिस्म से निकल कर आए, तो अरनन से यब्बूक और यरदन तक जो मेरा मूल्क था उसे उहोंने छीन लिया; इसलिए अब तू उन 'इलाकों को सुलह — ओ — सलामीती से मुझे लौटा दे।" 14 तब इफ्ताह ने फिर कासिदों को बनी 'अम्मून के बादशाह के पास रवाना किया, 15 और यह कहला भेजा कि इफ्ताह यूँ कहता है कि; इसाईंलियों ने न तो मोआब का मूल्क और न बनी 'अम्मोन का मूल्क छीना; 16 बल्कि इसाईंली जब मिस्म से निकले और वीराने छानते हुए बहर — ए — कुलज़ुम तक आए और कादिस में पहुँचे, 17 तो इसाईंलियों ने अदोम के बादशाह के पास कासिद रवाना किए और कहला भेजा कि हम को ज़रा अपने मूल्क से होकर गुज़र जाने दे, लेकिन अदोम का बादशाह न माना। इसी तरह उहोंने मोआब के बादशाह को कहला भेजा, और वह भी राजी न हुआ। चुनाँचे इसाईंली कादिस में रहे। 18 तब वह वीराने में होकर चले, और अदोम के मूल्क और मोआब के मूल्क के बाहर बाहर चक्कर काट कर मोआब के मूल्क के मशरिक की तरफ आए, और अरनन के उस पार डेरे डाले, पर मोआब की सरहद में दाखिल न हुए, इसलिए कि मोआब की सरहद अरनन था। 19 फिर इसाईंलियों ने अमेरियों के बादशाह सीहोन के पास जो हस्तोन का बादशाह था, कासिद रवाना किए; और इसाईंलियों ने उसे कहला भेजा कि 'हम को ज़रा इजाजत दे दे, कि तै मूल्क में से होकर अपनी जगह को चले जाएँ। 20 लेकिन सीहोन ने इसाईंलियों का इतना ऐतबार न किया कि उनको अपनी सरहद से गुज़रने दे, बल्कि सीहोन अपने सब लोगों को जमा' करके यहासा में खेमाजन हुआ और इसाईंलियों से लड़ा। 21 और खुदावन्द इसाईंल के खुदा ने सीहोन और उसके सारे लश्कर को इसाईंलियों के कब्ज़े में कर दिया, और उहोंने उनको मार लिया; इसलिए इसाईंलियों ने अमेरियों के जो वहाँ के बाशिदे थे, सारे मूल्क पर कब्ज़ा कर लिया। 22 और वह अरनन से यब्बूक तक, और वीरान से यरदन तक अमेरियों की सब सरहदों पर काबिज़ हो गए। 23 तब खुदावन्द इसाईंल के खुदा ने अमेरियों को उनके मूल्क से अपनी कौम इसाईंल के सामने से खारिज किया; इसलिए क्या तू भूत अब उस पर कब्ज़ा करने पाएँ? 24 क्या जो कुछ तेरा माबूद कमोस तुझे कब्ज़ा करने को दे, तू उस पर कब्ज़ा न करेगा? इसलिए जिस जिस को खुदावन्द हमारे खुदा ने हमारे सामने से खारिज कर दिया है, हम भी उनके मूल्क पर कब्ज़ा करेंगे। 25 और क्या तू सफ़ेर के बेटे बलक से जो मोआब का बादशाह था, कुछ बेहतर है? क्या उसने इसाईंलियों से कभी डागड़ा किया या कभी उन से लड़ा? 26 जब इसाईंली हस्तोन और उसके कस्तों, और 'अरोँइर और उसके कस्तों और उन सब शहरों

में जो अरनून के किनारे — किनारे है तीन सौ बरस से बड़े हैं, तो इस 'अरसे में तुम ने उनको क्यूँ न छुड़ा लिया? 27 गरज मैंने तेरी खता नहीं की, बल्कि तेरा मुझ से लड़ना तेरी तरफ से मुझ पर ज़ुल्म है; इसलिए खुदावन्द ही जो मुसिफ़ है, बनी — इसाईंल और बनी 'अम्मोन के बीच आज इन्साफ़ करे। 28 लेकिन बनी 'अम्मोन के बादशाह ने इफ्ताह की यह बातें, जो उसने उसे कहला भेजी थी न मानी। 29 तब खुदावन्द की रुह इफ्ताह पर नज़िल हुई, और वह जिल'आद और मनस्ती से गुज़र कर जिल'आद के मिस्फ़ह में आया; और जिल'आद के मिस्फ़ह से बनी 'अम्मोन की तरफ़ चला। 30 और इफ्ताह ने खुदावन्द की मिन्नत मानी और कहा कि आगर त यकीनन बनी 'अम्मोन को मेरे हाथ में कर दे; 31 तो जब मैं बनी 'अम्मोन की तरफ़ से सलामत लौटूँगा, उस वक्त जो कोई पहले मेरे घर के दरवाजे से निकलकर मेरे इस्तकबाल को आए वह खुदावन्द का होगा; और मैं उसकी सोखतनी कुर्बानी के तौर पर पेश करूँगा। 32 तब इफ्ताह बनी 'अम्मन की तरफ़ उनसे लड़ने को गया, और खुदावन्द ने उनको उसके हाथ में कर दिया। 33 और उसने 'अरोँइर से मिनियत तक जो बीस शहर हैं, और अबील करामी तक बड़ी खैरूजी के साथ उनको मारा; इस तरह बनी 'अम्मन बनी — इसाईंल से मातृत्व हुए। 34 और इफ्ताह मिस्फ़ह को अपने घर आया, और उसकी बेटी तबले बजाती और नाचती हुई उसके इस्तकबाल को निकलकर आई; और वह एक उसकी औलाद थी, उसके सिवा उसके कोई बेटी बेटा न था। 35 जब उसने उसको देखा, तो अपने कपड़े फाड़ कर कहा, “हाय, मेरी बेटी! तूने मुझे पस्त कर दिया, और जो मुझे दुख देते हैं उनमें से एक तू है; क्योंकि मैंने खुदावन्द को जबान दी है, और मैं पलट नहीं सकता।” 36 उसने उससे कहा, “ऐ मेरे बाप, तूने खुदावन्द को जबान दी है, इसलिए जो कुछ तेरे मुँह से निकला वही मेरे साथ कर, इसलिए कि खुदावन्द ने तेरे दुश्मनों बनी 'अम्मन से तेरा इन्तकाम लिया।” 37 फिर उसने अपने बाप से कहा, “मेरे लिए इन्हाँ कर दिया जाए कि दो महीने की मोहल्लत मुझ को मिले, ताकि मैं जाकर पहाड़ों पर अपनी हमजोलियों के साथ अपने चुँवारेपन पर मातम करती फिरूँ।” 38 उसने कहा, “जा!” और उसने उसे दो महीने की स्खत्स दी, और वह अपनी हमजोलियों को लेकर गई, और पहाड़ों पर अपने कुँवारेपन पर मातम करती फिरी। 39 और दो महीने के बाद वह अपने बाप के पास लौट आई, और वह उसके साथ वैसा ही पेश आया जैसी मिन्नत उसने मानी थी। इस लड़की ने शरब्स का मुँह न देखा था; इसलिए बनी इसाईंल में यह दस्तर चला, 40 कि साल — ब — साल इसाईंली 'औरतें जाकर बरस में चार दिन तक इफ्ताह जिल'आदी की बेटी की यादगारी करती थी।

12 तब इफ़ाइम के लोग जमा' होकर उत्तर की तरफ़ गए और इफ़ताह से कहने लगे कि जब तू बनी 'अम्मन से जंग करने को गया तो हम को साथ चलने को क्यूँ न बुलाया? इसलिए हम तेरे घर को तुझ समेत जलाएँ। 2 इफ़ताह ने उनको जबाब दिया कि मेरा और मेरे लोगों का बड़ा झ़गड़ा बनी 'अम्मन के साथ हो रहा था, और जब मैंने तुम को बुलायाता तो तुम ने उनके हाथ से मुड़े न बचाया। 3 और जब मैंने यह देखा कि तुम मुड़े नहीं बचाते, तो मैंने अपनी जान हथेली पर रख्खी और बनी 'अम्मन के मुकाबिले को चला, और खुदावन्द ने उनको मेरे कब्जे में कर दिया; फिर तुम आज के दिन मुझ से लड़ने को मेरे पास क्यूँ चले आए? 4 तब इफ़ताह सब जिल'आदियों को जमा' करके इफ़ाइमियों से लड़ा, और जिल'आदियों ने इफ़ाइमियों को मार लिया क्यूँकि वह कहते थे कि तुम जिल'आदी इफ़ाइम ही के भगोड़े हो, जो इफ़ाइमियों और मनस्तियों के बीच रहते हो। 5 और जिल'आदियों ने इफ़ाइमियों का रास्ता रोकने के लिए यरदन के घाटों को अपने कब्जे में कर लिया, और जो भागा हुआ इफ़ाइमी कहता कि मुझे पार जाने दो तो जिल'आदी उससे कहते क्या कि

तू इफ़ाइमी है? और अगर वह जबाब देता, “नहीं।” 6 तो वह उससे कहते, शिब्बलत तो बोल, तो वह “सिब्बलत” कहता, क्यूँकि उससे उसका सही तलफ़ुज नहीं हो सकता था। तब वह उसे पकड़कर यरदन के घाटों पर कल्प कर देते थे। इसलिए उस वक्त बयालीस हज़ार इफ़ाइमी कल्प हुए। 7 और इफ़ताह छः बरस तक बनी इसाईंल का काज़ी रहा। फिर जिल'आदी इफ़ताह ने बफ़ात पाई, और जिल'आद के शहरों में से एक में दफ़न हुआ। 8 उसके बाद बैतलहमी इव्वासान इसाईंलियों का काज़ी हुआ। 9 उसके तीस बेटे थे; और तीस बेटियाँ उसने बाहर ब्याह दी, और बाहर से अपने बेटों के लिए तीस बेटियाँ ले आया। वह सात बरस तक इसाईंलियों का काज़ी रहा। 10 और इव्वासान मर गया और बैतलहम में दफ़न हुआ। 11 और उसके बाद ज़बलूनी ऐलोन इसाईंल का काज़ी हुआ; और वह दस बरस इसाईंल का काज़ी रहा। 12 और ज़बलूनी ऐलोन मर गया, और अव्यालोन में जो ज़बलून के मुल्क में है दफ़न हुआ। 13 इसके बाद फ़िर 'अतोनी हिल्लेल का बेटा 'अबदोन इसाईंल का काज़ी हुआ। 14 और उसके चालीस बेटे और तीस पेटे थे जो सतर जवान गधों पर सवार होते थे; और वह आठ बरस तक इसाईंलियों का काज़ी रहा। 15 और फ़िर 'अतोनी हिल्लेल का बेटा 'अबदोन मर गया, और 'अमालीकियों के पहाड़ी 'इलाके में, फ़िर 'अतोन में जो इफ़ाइम के मुल्क में है दफ़न हुआ।

13 और बनी — इसाईंल ने फिर खुदावन्द के आगे बुराई की, और खुदावन्द ने उनकी चालीस बरस तक फ़िलिस्तियों के हाथ में कर रख्खा। 2 और दानियों के घराने में सूर'आ का एक शरब्स था जिसका नाम मनोहा था। उसकी बीवी बाँझ थी, इसलिए उसके कोई बच्चा न हआ। 3 और खुदावन्द के फ़रिश्ते ने उस 'औरत को दिखाई देकर उससे कहा, “देख, तू बाँझ है और तेरे बच्चा नहीं होता; लेकिन तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा।” 4 इसलिए खुबरदार, मय या नशे की चीज़ न पीना, और न कोई नापाक चीज़ खाना। 5 क्यूँकि देख, तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा। उसके सिर पर कभी उस्तरा न पिरे, इसलिए कि वह लड़का पेट ही से खुदा का नज़ीर होगा; और वह इसाईंलियों को फ़िलिस्तियों के हाथ से रिहाई देना शुरू करेगा।” 6 उस 'औरत ने जाकर अपने शौहर से कहा कि एक शरब्स — ए — खुदा मेरे पास आया, उसकी सूरत खुदा के फ़रिश्ते की सूरत की तह निहायत खौफनाक थी, और मैंने उससे नहीं पूछा के तू कहाँ का है? और न उसने मुझे अपना नाम बताया। 7 लेकिन उसने मुझ से कहा, “देख, तू हामिला होगी और तेरे बेटा होगा, इसलिए तू मय या नशे की चीज़ न पीना, और न कोई नापाक चीज़ खाना, क्यूँकि वह लड़का पेट ही से अपने मने के दिन तक खुदा का नज़ीर रहेगा।” 8 तब मनोहा ने खुदावन्द से दरखास्त की और कहा, “ऐ मेरे मालिक, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि वह शरब्स — ए — खुदा जिसे तूने भेजा था, हमारे पास फिर आए और हम को सिखाएं कि हम उस लड़के से जो पैदा होने को है क्या करें।” 9 और खुदा ने मनोहा की 'अर्ज़ सुनी, और खुदा का फ़रिश्ता उस 'औरत के पास जब वह खेत में बैठी थी फिर आया, लेकिन उसका शौहर मनोहा उसके साथ नहीं था। 10 इसलिए उस 'औरत ने ज़ल्टी की और टौड़ कर अपने शौहर को ख़बर दी और उससे कहा कि देख, वही शरब्स जो उस दिन मेरे पास आया था अब फिर मुझे दिखाई दिया। 11 तब मनोहा उठ कर अपनी बीवी के पीछे पीछे चला, और उस शरब्स के पास आकर उससे कहा, “क्या तू बही शरब्स है जिसने इस 'औरत से बातें की थीं?” उसने कहा, “मैं वही हूँ।” 12 तब मनोहा ने कहा, “तेरी बातें पूरी हों, लेकिन उस लड़के का कैसा तौर — औ — तरीक और क्या काम होगा?” 13 खुदावन्द के फ़रिश्ते ने मनोहा से कहा, “उन सब चीज़ों से जिनका ज़िक्र मैंने इस 'औरत से किया यह परहेज़ करे। 14 वह ऐसी कोई चीज़ जो ताक से पैदा होती है न खाए, और मय या नशे की चीज़ न पिए, और न कोई नापाक

चीज खाएँ; और जो कुछ मैंने उसे हृक्षम दिया यह उसे माने।” 15 मनोहा ने खुदावन्द के फरिश्ते से कहा कि इजाजत हो तो हम तज्ज को रोक लें, और बकरी का एक बच्चा तैयार करें। 16 तब खुदावन्द के फरिश्ते ने मनोहा को जबाब दिया, “अगर तु मुझे रोक भी ले, तो भी मैं तेरी रोटी नहीं खाने का; लेकिन अगर तु सोखतनी कुर्बानी तैयार करना चाहे, तो तुझे लाजिम है कि उसे खुदावन्द के लिए पेश करे।” क्यौंकि मनोहा नहीं जानता था कि वह खुदावन्द का फरिश्ता है। 17 फिर मनोहा ने खुदावन्द के फरिश्ते से कहा कि तेरा नाम क्या है? ताकि जब तेरी बातें पूरी हों तो हम तेरा इकराम कर सकें। 18 खुदावन्द के फरिश्ते ने उससे कहा, “तू क्यूँ मेरा नाम पूछता है? क्यौंकि वह तो 'अजीब है।” 19 तब मनोहा ने बकरी का वह बच्चा मांए, उसकी नज़र की कुर्बानी के लेकर एक चट्टान पर खुदावन्द के लिए उनको पेश किया, और फरिश्ते ने मनोहा और उसकी बीवी के देखते देखते 'अजीब काम किया। 20 क्यौंकि ऐसा हुआ कि जब शोला मजबह पर से आसमान की तरफ उठा, तो खुदावन्द का फरिश्ता मजबह के शोले में होकर ऊपर चला गया, और मनोहा और उसकी बीवी देखकर औंधे पूँह जमीन पर गिरे। 21 लेकिन खुदावन्द का फरिश्ता न फिर मनोहा को दिखाई दिया न उसकी बीवी को। तब मनोहा ने जाना कि वह खुदावन्द का फरिश्ता था। 22 और मनोहा ने अपनी बीवी से कहा कि हम अब ज़स्तर मर जाएँगे, क्यौंकि हम ने खुदा को देखा। 23 उसकी बीवी ने उससे कहा, “अगर खुदावन्द यहीं चाहता कि हम को मार दे, तो सोखतनी और नज़र की कुर्बानी हमारे हाथ से कुबूल न करता, और न हम को यह बाकि 'आत दिखाता और न हम से ऐसी बातें कहता।” 24 और उस 'औरत के एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम समसून रख्खा; और वह लड़का बढ़ा, और खुदावन्द ने उसे बरकत दी। 25 और खुदावन्द की रुह उसे महने दान में, जो सुरा आ और इस्ताल के बीच में है तहरीक देने लगी।

14 और समसून तिमनत को गया, और तिमनत में उसने फिलिस्तियों की बेटियों में से एक 'औरत देखी। 2 और उसने आकर अपने माँ बाप से कहा, “मैंने फिलिस्तियों की बेटियों में से तिमनत में एक 'औरत देखी है, इसलिए तुम उससे मेरा ब्याह करा दो।” 3 उसके माँ बाप ने उससे कहा, “क्या तेरे भाइयों की बेटियों में, या मेरी सारी कौम में कोई 'औरत नहीं है जो तु नामाख्तन फिलिस्तियों में ब्याह करने जाता है?” समसून ने अपने बाप से कहा, “उसी से मेरा ब्याह करा दे, क्यौंकि वह मुझे बहुत पसंद आती है।” 4 लेकिन उसके माँ बाप को मालूम न था, यह खुदावन्द की तरफ से है; क्यौंकि वह फिलिस्तियों के खिलाफ बहाना ढूँढता था। उस बबत फिलिस्ती इस्माईलियों पर हुक्मरान थे। 5 फिर समसून और उसके माँ बाप तिमनत को चले, और तिमनत के ताकिस्तानों में पहुँचे, और देखो, एक जवान शेर समसून के सामने आकर गरजने लगा। 6 तब खुदावन्द की रुह उस पर जोर से नाजिल हुई, और उसने उसे बकरी के बच्चे की तरह चीर ढाला, गो उसके हाथ में कुछ न था। लेकिन जो उसने किया उसे अपने बाप या माँ को न बताया। 7 और उसने जाकर उस 'औरत से बातें की और वह समसून को बहुत पसंद आई। 8 और कुछ 'अरसे के बाद वह उसे लेने को लौटा; और शेर की लाश देखने को करता गया, और देखा कि शेर के पिंजर में शहद की मक्खियों का हज़म और शहद है। 9 उसने उसे हाथ में ले लिया और खाता हुआ चला, और अपने माँ बाप के पास आकर उनको भी दिया और उन्होंने भी खाया, लेकिन उसने उनको न बताया कि यह शहद उसने शेर के पिंजर में से निकाला था। 10 फिर उसका बाप उस 'औरत के यहाँ गया, वहाँ समसून ने बड़ी जियाफ़त की क्यौंकि जवान ऐसा ही करते थे। 11 वह उसे देखकर उसके लिए तीस साथियों को ले आए कि उसके साथ रहें। 12 समसून ने उनसे कहा, “मैं तुम से एक पहेली पूछता हूँ; इसलिए अगर तुम

जियाफ़त के सात दिन के अन्दर अन्दर उसे बूझकर मुझे उसका मतलब बता दो, तो मैं तीस कतानी करूंगा और तीस जोड़े कपड़े तुम को दूँगा। 13 और अगर तुम न बता सको, तो तुम तीस कतानी करूंगा और तीस जोड़े कपड़े मुझ को देना।” उन्होंने उससे कहा कि तु अपनी पहेली बयान कर, ताकि हम उसे सुनें। 14 उसने उससे कहा, खाने वाले में से तो खाना निकला, और जबरदस्त में से मिठास निकली और वह तीन दिन तक उस पहेली को हल न कर सके। 15 और सातवें दिन उन्होंने समसून की बीवी से कहा कि अपने शौहर को फुसला, ताकि इस पहेली का मतलब वह हम को बता दे; नहीं तो हम तज्ज को और तेरे बाप के घर को आग से जला देंगे। क्या तुम ने हम को इसलिए बलाया है कि हम को फ़कीर कर दो? क्या बात भी यूँही नहीं? 16 और समसून की बीवी उसके आगे रो कर कहने लगी, “तुझे तो मुझ से नफरत है, तू मुझ को प्यार नहीं करता। तूने मेरी कौम के लोगों से पहेली पूँछी, लेकिन वह मुझे न बताई।” उसने उससे कहा, “खबर! मैंने उसे अपने माँ बाप को तो बताया नहीं और तुझे बता दूँगा।” 17 इसलिए वह उसके आगे जब तक जियाफ़त रही सारों दिन रोती रही; और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उसने उसे बता ही दिया, क्यौंकि उसने उसे निहायत पेरेशान किया था। और उस 'औरत ने वह पहेली अपनी बीवी के लोगों को बता दी। 18 और उस शहर के लोगों ने सातवें दिन सूरज के ढूँबने से पहले उससे कहा, “शहद से मीठा और क्या होता है? और शेर से ताकतवर और कौन है?” उसने उनसे कहा, “अगर तुम मेरी बड़ियां को हल में न जोतें, तो मेरी पहेली कभी न बूझते।” 19 फिर खुदावन्द की रुह उस पर जोर से नाजिल हुई, और वह अस्कलोन को गया। वहाँ उसने उनके तीस आदमी मारे, और उनको लटकर कपड़ों के जोड़े पहेली बूझने वालों को दिए। और उसका कहर भड़क उठा, और वह अपने माँ बाप के घर चला गया। 20 लेकिन समसून की बीवी उसके एक साथी को, जिसे समसून ने दोस्त बनाया था दे दी गई।

15 लेकिन कुछ 'अरसे बाद गेहूँ की फसल के मौसम में, समसून बकरी का

एक बच्चा लेकर अपनी बीवी के यहाँ गया और कहने लगा, “मैं अपनी बीवी के पास कोठरी में जाऊँगा।” लेकिन उसके बाप ने उसे अन्दर जाने न दिया। 2 और उसके बाप ने कहा, “मुझ को यकीन यह खयाल हुआ कि तुझे उससे सख्त नफरत हो गई है, इसलिए मैंने उसे तेरे साथी को दे दिया। क्या उसकी छोटी बहन उससे कहीं खबरसूत नहीं है? इसलिए उसके बदले तू इसी को ले लो।” 3 समसून ने उनसे कहा, “इस बार मैं फिलिस्तियों की तरफ से, जब मैं उनसे बुराई करूँगा कूक़े कुसर ठहरँगा।” 4 और समसून ने जाकर तीन सौ लोमड़ियाँ पकड़ीं; और मशाले ली और दुम से दुम मिलाई, और दो दो दुमों के बीच में एक एक मशाल बाँध दी। 5 और मशालों में आग लगा कर उसने लोमड़ियों को फिलिस्तियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया, और पूलियों और खड़े खेतों दोनों को, बल्कि जैतून के बागों को भी जला दिया। 6 तब फिलिस्तियों ने कहा, “किसने यह किया है?” लोगों ने बताया कि तिमनती के दामाद समसून ने; इसलिए कि उसने उसकी बीवी छीन कर उस के साथी को दे दी। तब फिलिस्तियों ने आकर उस 'औरत को और उसके बाप को आग में जला दिया। 7 समसून ने उनसे कहा कि तुम जो ऐसा काम करते हो, तो ज़स्तर ही मैं तुम से बदला लूँगा और इसके बाद बाज आऊँगा। 8 और उस ने उनको बड़ी खूरँजी के साथ मार कर उनका कच्चमप कर डाला; और वहाँ से जाकर 'ऐताम की चट्टान की दराड में रहने लगा। 9 तब फिलिस्ती जाकर यहदाह में खेमाजन हुए और लही में फैल गए। 10 और यहदाह के लोगों ने उनसे कहा, “तुम हम पर क्यूँ चढ़ आए हो?” उन्होंने कहा, “हम समसून को बाँधने आए हैं, ताकि जैसा उसने हम से किया हम भी उससे वैसा ही करें।” 11 तब यहदाह के तीन हजार आदमी ऐताम की चट्टान की दराड में उतर गए, और समसून से

कहने लगे, “क्या तू नहीं जानता के फिलिस्ती हम पर हुक्मरान हैं? इसलिए तूने हम से यह क्या किया है?” उसने उनसे कहा, “जैसा उन्होंने मुझ से किया, मैंने भी उनसे वैसा ही किया।” 12 उन्होंने उससे कहा, “अब हम आए हैं कि तुझे बाँध कर फिलिस्तियों के हवाले कर दें।” समसून ने उनसे कहा, “मुझ से क्रमसम खाओ के तुम खुद मुझ पर हमला न करोगे।” 13 उन्होंने उसे जवाब दिया, “नहीं! बल्कि हम तुझे कस कर बाँधेंगे और उनके हवाले कर देंगे; लेकिन हम हरपिजि तुझे जान से न मरोगे।” फिर उन्होंने उसे दो नई रसिस्तियों से बाँधा और चब्बान से उसे ऊपर लाए। 14 जब वह लही में पहुँचा, तो फिलिस्ती उसे देख कर ललकारने लगे। तब खुदावन्द की स्थ हम पर जोर से नाजिल हुई, और उसके बाजुओं पर की रसिस्तियाँ आग से जले हए सन की तरह हो गई, और उसके बन्धन उसके हाथों पर से उतर गए। 15 और उसे एक गधे के जबडे की नई हड्डी मिल गई इसलिए उसने हाथ बढ़ा कर उसे उठा लिया, और उससे उसने एक हजार आदिमियों को मार डाला। 16 फिर समसून ने कहा, “गधे के जबडे की हड्डी से ढेर के ढेर लग गए, गधे के जबडे की हड्डी से मैंने एक हजार आदिमियों को मारा।” 17 और जब वह अपनी बात खत्म कर चुका, तो उसने जबडा अपने हाथ में से फेंक दिया; और उस जगह का नाम रामत लही पड़ गया। 18 और उसको बड़ी प्यास लगी, तब उसने खुदावन्द को पुकारा और कहा, “तुम अपने बन्दे के हाथ से ऐसी बड़ी रिहाई बाब्जी। अब क्या मैं प्यास से मरूँ, और नामज्जनों के हाथ में पड़ूँ?” 19 लेकिन खुदा ने उस गहे को जो लही में है चाक कर दिया, और उसमें से पानी निकला; और जब उसने उसे पी लिया तो उसकी जान में जान आई, और वह ताजा दम हआ। इसलिए उस जगह का नाम ऐन हक्कोरे रखबद्धा गया, वह लही में आज तक है। 20 और वह फिलिस्तियों के दिनों में बीस बरस तक इमाइलियों का काज़ी रहा।

16 फिर समसून गज्जा को गया। वहाँ उसने एक कस्ती देखी, और उसके पास गया। 2 और गज्जा के लोगों को खबर हुई के समसून यहाँ आया है। उन्होंने उसे घेर लिया और सारी रात शहर के फाटक पर उसकी धात में बैठे रहे; लेकिन रात भर चुप चाप रहे और कहा कि सुख की रोशनी होते ही हम उसे मार डालेंगे। 3 और समसून आधी रात तक लेटा रहा, और आधी रात को उठ कर शहर के फाटक के दोनों पल्लों और दोनों बाजुओं को पकड़कर चौखट समेत उखाड लिया; और उनको अपने कंधों पर रख कर उस पहाड़ की चोटी पर, जो हब्सन के सामने है ले गया। 4 इसके बाद सरिक की बादी में एक 'औरत से जिसका नाम दलीला था, उसे इक हो गया। 5 और फिलिस्तियों के सरदारों ने उस 'औरत के पास जाकर उससे कहा कि तू उसे फुसलाकर दरियाफ़त कर ले कि उसकी ताकत का राज क्या है और हम क्यूँकर उस पर गालिक आएँ, ताकि हम उसे बाँधकर उसको अजियत पहुँचाएँ; और हम में से हर एक ग्यारह सौ चाँदी के सिक्के तुझे देंगा। 6 तब दलीला ने समसून से कहा कि मुझे तो बता दे तेरी ताकत का राज क्या है, और तुझे तकलीफ़ पहुँचाने के लिए किस चीज़ से तुझे बाँधना चाहिए। 7 समसून ने उससे कहा कि अगर वह मुझ को सात हरी हरी बेदों से जो सुखाई न गई हो बाँधे, तो मैं कमज़ोर होकर और आदिमियों की तरह हो जाऊँगा। 8 तब फिलिस्तियों के सरदार सात हरी हरी बेदों जो सुखाई न गई थीं, उस 'औरत के पास ले आए और उसने समसून को उनसे बाँधा। 9 और उस 'औरत ने कुछ आदमी अन्दर की कोठी में घात में बिठा लिए थे। इसलिए उस ने समसून से कहा कि ऐ समसून, फिलिस्ती तुझ पर चढ़ आए। तब उसने उन बेदों को ऐसा तोड़ा जैसे सन का सूत आग पाते ही टूट जाता है; इसलिए उसकी ताकत का राज न खला। 10 तब दलीला ने समसून से कहा, देख, तूने मुझे धोका दिया और मुझ से झट बोला। “अब तू जगा मुझ को बता दे, कि तू किस चीज़ से बाँधा जाए।” 11 उसने उससे कहा, “अगर वह

मुझे नई नई रसिस्तियों से जो कभी काम में न आई हों, बाँधे तो मैं कमज़ोर होकर और आदिमियों की तरह हो जाऊँगा।” 12 तब दलीला ने नई रसिस्तियों लेकर उसको उनसे बाँधा और उससे कहा, “ऐ समसून, फिलिस्ती तुझ पर चढ़ आए।” और घाट बाले अन्दर की कोठी में ठहरे ही हुए थे। तब उसने अपने बाजुओं पर से धागे की तरह उनको तोड़ डाला। 13 तब दलीला समसून से कहने लगी, “अब तक तो तूने मुझे धोका ही दिया और मुझ से झट बोला; अब तो बता दे, कि तू किस चीज़ से बाँध सकता है?” उसने उसे कहा, “अगर तू मेरे सिर की सातों लट्टे ताने के साथ बुन दे।” 14 तब उसने खट्टे से उसे कसकर बाँध दिया और उससे कहा, ऐ समसून, फिलिस्ती तुझ पर चढ़ आए। “तब वह नीद से जाग उठा, और बल्ली के खट्टे को ताने के साथ उखाड डाला। 15 फिर वह उससे कहने लगी, तू क्यूँकर कह सकता है, कि मैं तुझे चाहता हूँ, जब कि तेरा दिल मुझ से लगा नहीं? तू तीनों बार मुझे धोका ही दिया और न बताया कि तेरी ताकत का राज क्या है।” 16 जब वह उसे रोज अपनी बातों से तंग और मजबूर करने लगी, यहाँ तक कि उसका दम नाक में आ गया। 17 तो उसने अपना दिल खोलकर उसे बता दिया कि मेरे सिर पर उस्तरा नहीं फिरा है, इसलिए कि मैं अपनी माँ के पेट ही से खुदा का नजीर हूँ, इसलिए अगर मेरा सिर मूंदा जाए तो मेरी ताकत मुझ से जाती रहेगा, और मैं कमज़ोर होकर और आदिमियों की तरह हो जाऊँगा। 18 जब दलीला ने देखा कि उसने दिल खोलकर सब कुछ बता दिया, तो उसने फिलिस्तियों के सरदारों को कहला भेजा कि इस बार और आओ, क्यूँकि उसने दिल खोलकर मुझे सब कुछ बता दिया है। तब फिलिस्तियों के सरदार उसके पास आए, और स्पष्ट अपने हाथ में लेते आए। 19 तब उसे उसने अपने जानों पर सुला लिया, और एक आदमी को बुलवाकर सातों लट्टे जो उसके सिर पर थी, मुण्डवा डाली, और उसे तकलीफ़ देने लगी; और उसका जो उससे जाता रहा। 20 फिर उसने कहा, “ऐ समसून, फिलिस्ती तुझ पर चढ़ आए।” और वह नीद से जागा और कहने लगा कि मैं और दफा की तरह बाहर जाकर अपने को झटक़ूँगा। लेकिन उसे खबर न थी कि खुदावन्द उससे अलग हो गया है। 21 तब फिलिस्तियों ने उसे पकड़ कर उसकी आँखें निकाल डाली, और उसे गज्जा में ले आए और पीतल की बेड़ियों से उसे जकड़ा, और वह कैदखाने में चक्की पीसा करता था। 22 तो भी उसके सिर के बाल मुण्डवाए जाने के बाद फिर बदले लगे। 23 और फिलिस्तियों के सरदार फराहम हुए ताकि अपने माँबूद जोड़ने के लिए बड़ी कुर्बानी गुजारे और खुशी करें क्यूँकि वह कहते थे कि हमारे माँबूद ने हमारे दुश्मन समसून को हमारे कब्ज़े में कर दिया है। 24 और जब लोग उसको देखते तो अपने माँबूद की तारीफ़ करते और कहते थे कि हमारे माँबूद ने हमारे दुश्मन और हमारे मुल्क को उजाड़ने वाले को, जिसने हम में से बहुतों को हलाक किया हमारे हाथ में कर दिया है। 25 और ऐसा हुआ कि जब उनके दिल निहायत शाद हुए, तो वह कहने लगे कि समसून को बुलाओ, कि हमारे लिए कोई खेल करे। इसलिए उन्होंने समसून को कैदखाने से बुलवाया, और वह उनके लिए खेल करने लगा; और उन्होंने उसको दो खम्बों के बीच खड़ा किया। 26 तब समसून ने उस लड़के से जो उसका हाथ पकड़े था कहा, “मुझे उन खम्बों को जिन पर यह घर काईम है, थामने दे ताकि मैं उन पर टेक लगाऊँ।” 27 और वह घर शख्सों और 'औरतों से भरा था, और फिलिस्तियों के सब सरदार वही थे, और छत पर करीबन तीन हजार शख्स और 'औरत थे जो समसून के खेल देख रहे थे। 28 तब समसून ने खुदावन्द से फरियाद की और कहा, “ऐ मालिक, खुदावन्द! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे याद कर; और मैं तेरी मिन्नत करता हूँ ऐ खुदा सिर्फ़ इस बार और तू मुझे ताकत बरखा, ताकि मैं एक बार फिलिस्तियों से अपनी दोनों आँखों का बदला लूँ।” 29 और समसून ने दोनों बीच के खम्बों

को जिन पर घर काईम था पकड़ कर, एक पर दहने हाथ से और दूसरे पर बाँहें हाथ से जोर लगाया। 30 और समस्त कहने लगा कि फिलिसियों के साथ मुझे भी मरना ही है। इसलिए वह अपने सारी ताकत से झुका; और वह घर उन सरदारों और सब लोगों पर जो उसमें थे पिर पड़ा। इसलिए वह मुर्दे जिनको उसने अपने मरते दम मारा, उसे भी ज्यादा थे जिनको उसने जीते जी कल्प किया। 31 तब उसके भाई और उसके बाप का सारा घराना आया, और वह उसे उठा कर ले गए और सुरुआ और इस्तातल के बीच उसके बाप मनोहा के कब्रिस्तान में उसे दफन किया। वह बीस बरस तक इसाईलियों का काजी रहा।

17 और इक्वाईम के पहाड़ी मुल्क का एक शब्द था जिसका नाम मीकाह था। 2 उसने अपनी माँ से कहा, चाँदी के वह ग्यारह सौ सिक्के जो तेर पास से लिए गए थे, और जिनके बारे में तो लान्नत भेजी और मुझे भी यही सुना कर कहा, “इसलिए देख वह चाँदी मेरे पास है, मैंने उसको ले लिया था।” उसकी माँ ने कहा, “मेरे बेटे को खुदावन्द की तरफ से बरकत मिले।” 3 और उसने चाँदी के वह ग्यारह सौ सिक्के अपनी माँ को लौटा दिए, तब उसकी माँ ने कहा, “मैं इस चाँदी को अपने बेटे की खातिर अपने हाथ से खुदावन्द के लिए मुकद्दस किए देती हूँ, ताकि वह एक बुत तराशा हुआ और एक ढाला हुआ बना इसलिए, अब मैं इसको तुझे लौटा देती हूँ।” 4 लेकिन जब उसने वह नकदी अपनी माँ को लौटा दी, तो उसकी माँ ने चाँदी के दो सौ सिक्के लेकर उनको ढालने वाले को दिया, जिसने उससे एक तराशा हुआ और एक ढाला हुआ बुत बनाया; और वह मीकाह के घर में रहे। 5 और इस शब्द मीकाह के वहाँ एक बुत खाना था, और उसने एक अफूद और तराफीम को बनायाया; और अपने बेटों में से एक को मख्सूस किया जो उसका काहिन हुआ। 6 उन दिनों इसाईल में कोई बादशाह न था, और हर शब्द जो कुछ उसकी नज़र में अच्छा मालूम होता वही करता था। 7 और बैतलहम यहदाह में यहदाह के घराने का एक जवान था जो लावी था; यह वही टिका हुआ था। 8 यह शब्द उस शहर यानी बैतलहम — ए — यहदाह से निकला, कि और कहीं जहाँ जगह मिले जा टिके। तब वह सफर करता हुआ इक्वाईम के पहाड़ी मुल्क में मीकाह के घर आ निकला। 9 और मीकाह ने उससे कहा, “तू कहाँ से आता है?” उसने उससे कहा, “मैं बैतलहम — ए — यहदाह का एक लावी हूँ, और निकला हूँ कि जहाँ कहीं जगह मिले वही रहूँ।” 10 मीकाह ने उससे कहा, “मेरे साथ रह जा, और मेरा बाप और काहिन हो; मैं तुझे चाँदी के दस सिक्के सालाना और एक जोड़ा कपड़ा और खाना दूँगा।” 11 तब वह लावी अन्दर चला गया। 11 और वह उस आदी के साथ रहने पर राजी हुआ; और वह जवान उसके लिए ऐसा ही था जैसा उसके अपने बेटों में से एक बेटा। 12 और मीकाह ने उस लावी को मख्सूस किया, और वह जवान उसका काहिन बना और मीकाह के घर में रहने लगा। 13 तब मीकाह ने कहा, “मैं अब जानता हूँ कि खुदावन्द मेरा भला करेगा, क्यूँकि एक लावी मेरा काहिन है।”

18 उन दिनों इसाईल में कोई बादशाह न था, और उन ही दिनों में दान का कबीला अपने रहने के लिए मीरास ढूँडता था, क्यूँकि उनको उस दिन तक इसाईल के कबीलों में मीरास नहीं मिली थी। 2 इसलिए बनी दान ने अपने सारे शमार में से पाँच सूर्माओं को सुरुआ और इस्तातल से रवाना किया, ताकि मुल्क का हाल दरियापत करें और उसे देखें भालो। इसलिए वह इक्वाईम के पहाड़ी मुल्क में मीकाह के घर आए और वही उतरे। 3 जब वह मीकाह के घर के पास पहुँचे, तो उस लावी जवान की आवाज पहचानी, परस वह उधर को मुड़ गए और उससे कहने लगे, “तुझे कोयहाँ कौन लाया? तू यहाँ क्या करता है और यहाँ तेरा क्या है?” 4 उसने उससे कहा, “मीकाह ने मुझे से ऐसा ऐसा सुलूक किया, और मुझे

नैकर रख लिया है और मैं उसका काहिन बना हूँ।” 5 उन्होंने उससे कहा कि खुदा से ज़रा सलाह ले, ताकि हम को मालूम हो जाए कि हमारा यह सफर मुबारक होगा या नहीं। 6 उस काहिन ने उससे कहा, “सलामती से चले जाओ, क्यूँकि तुम्हारा यह सफर खुदावन्द के हज़र है।” 7 इसलिए वह पाँचों शब्द चल निकले और लैस में आए। उन्होंने वहाँ के लोगों को देखा कि सैदानियों की तरह कैसे इन्सिनाम और अम्न और चैन से रहते हैं; क्यूँकि उस मुल्क में कोई हाकिम नहीं था जो उनको किसी बात में जलील करता। वह सैदानियों से बहत दूर थे, और किसी से उनको कुछ सपोकर न था। 8 इसलिए वह सुरुआ और इस्तातल को अपने भाइयों के पास लौटे, और उनके भाइयों ने उसे पूछा कि तुम क्या कहते हो? 9 उन्होंने कहा, “चलो, हम उन पर चढ़ जाएं, क्यूँकि हम ने उस मुल्क को देखा कि वह बहुत अच्छा है; और तुम क्या चुप चाप ही रहे? अब चलकर उस मुल्क पर काबिज होने में सुस्ती न करो।” 10 अगर तुम चले तो एक मुतमाइन कौम के पास पहुँचोगे, और वह मुल्क वसी है; क्यूँकि खुदा ने उसे तुम्हारे हाथ में कर दिया है। वह ऐसी जगह है जिसमें दुनिया की किसी चीज़ की कमी नहीं।” 11 तब बनी दान के घराने के छँ: सौ शब्द ज़ंग के हथियार बैंधे हुए सुरुआ और इस्तातल से रवाना हुए। 12 और जाकर यहदाह के कर्यत यारीम में खेमाजन हुए। इसलिए आज के दिन तक उस जगह को महने दान कहते हैं, और यह कर्यत यारीम के पीछे है। 13 और वहाँ से चलकर इक्वाईम के पहाड़ी मुल्क में पहुँचे और मीकाह के घर आए। 14 तब वह पाँचों शब्द जो लैस के मुल्क का हाल दरियापत करने गए थे, अपने भाइयों से कहने लगे, “क्या तुम को खबर है, कि इन घरों में एक अफूद और तराफीम और एक तराशा हुआ बुत और एक ढाला हुआ बुत है? इसलिए अब सोच लो कि तुम को क्या करना है।” 15 तब वह उस तरफ मुड़ गए और उस लावी जवान के मकान में यानी मीकाह के घर में दाखिल हुए, और उसपर खैर — ओ — सलामती पूछी। 16 और वह छँ: सौ आदमियों के बादी जो बनी दान में से थे, ज़ंग के हथियार बैंधे फाटक पर खड़े रहे। 17 और उन पाँचों शब्दों ने जो जमीन का हाल दरियापत करने को निकले थे, वहाँ आकर तराशा हुआ बुत और अफूद और तराफीम और ढाला हुआ बुत ले आए, तो उस काहिन ने उनसे कहा, “तुम यह क्या करते हो?” 19 तब उन्होंने उसे कहा, “चुप रह, मुँह पर हाथ रख ले; और हमारे साथ चल और हमारा बाप और काहिन बन। क्या तेरे लिए एक शब्द के घर का काहिन होना अच्छा है, या यह कि तू बनी — इसाईल के एक कबीले और घराने का काहिन हो है?” 20 तब काहिन का दिल खुश हो गया और वह अफूद और तराफीम और तराशा हुए बुत को लेकर लोगों के बीच चला गया। 21 फिर वह मुड़े और रवाना हुए, और बाल बच्चों और चौपायों और सामन को अपने आगे कर लिया। 22 जब वह मीकाह के घर से रूप निकल गए, तो जो लोग मीकाह के घर के पास के मकानों में रहते थे वह जमा हुए और चलकर बनी दान को जा लिया। 23 और उन्होंने बनी दान को पुकारा, तब उन्होंने उधर मुँह करके मीकाह से कहा, “तुझे को क्या हुआ जो तू इतने लोगों की जमियत को साथ लिए आ रहा है?” 24 उसने कहा, “तुम मेरे मालूमों को जिनको मैंने बनवाया, और मेरे काहिन को साथ लेकर चले आए, अब मेरे पास और क्या बाकी रहा? इसलिए तुम मुझ से यह क्यूँकर कहते हो कि तुझ को क्या हुआ?” 25 बनी दान ने उससे कहा कि तेरी आवाज हम लोगों में सुनाइ न दे, ऐसा न हो कि झल्ले मिजाज के आदमी तुझ पर हमला कर बैठे। 26 इसलिए बनी दान तो

अपने रास्ते ही चले गए; और जब मीकाह ने देखा, कि वह उसके मुकाबले में बड़े ज़बरदस्त हैं, तो वह मुड़ा और अपने घर को लौटा। 27 यूँ वह मीकाह की बनवाई हुई चीजों को और उस काहिन को जो उसके यहाँ था, लेकर लैस में ऐसे लोगों के पास पहुँचे जो अन्न और चैन से रहते थे; और उनको बांधा किया और शहर जला दिया। 28 और बचाने वाला कोई न था, क्यूँकि वह सैदा से दूर था और यह लोग किसी आदमी से सरोकार नहीं रखते थे। और वह शहर बैत रहोब के पास की बादी में था। फिर उन्होंने वह शहर बनाया और उसमें रहने लगे। 29 और उस शहर का नाम अपने बाप दान के नाम पर जो इसाईल की औलाद था दान ही रखा, लेकिन पहले उस शहर का नाम लैस था। 30 और बनी दान ने वह तराशा हुआ बूत अपने लिए खड़ा कर लिया; और यूनतन बिन जैरसोम बिन मूसा और उसके बेटे उस मुल्क की असीरी के दिन तक बनी दान के कबीले के काहिन बने रहे। 31 और सारे बक्त जब तक खुदा का घर शीलोह में रहा, वह मीकाह के तराशे हुए बूत को जो उसने बनवाया था अपने लिए खड़े किए रहे।

19 उन दिनों में जब इसाईल में कोई बादशाह न था, ऐसा हुआ कि एक

शख्स ने जो लावी था और इस्काईम के पहाड़ी मुल्क के दूसरे सिरे पर रहता था, बैतलहम — ए — यहदाह से एक हरम अपने लिए कर ली। 2 उसकी हरम ने उस से बेवफाई की और उसके पास से बैतलहम यहदाह में अपने बाप के घर चली गई, और चार महीने बही रही। 3 और उसका शौहर उठकर और एक नौकर और दो गधे साथ लेकर उसके पांछे रखाना हुआ, कि उसे मना फुसला कर वापस ले आए। इसलिए वह उसे अपने बाप के घर में ले गई, और उस जवान 'औरत का बाप उसे देख कर उसकी मुलाकात से खुश हुआ। 4 और उसके खुपर या'नी उस जवान 'औरत के बाप ने उसे रोक लिया, और वह उसके साथ तीन दिन तक रहा; और उन्होंने खाया पिया और वहाँ टिके रहे। 5 चौथे रोज़ जब वह सुबह सवैरे उठे, और वह चलने को खड़ा हुआ; तो उस जवान 'औरत के बाप ने अपने दामाद से कहा, एक टुकड़ा रोटी खाकर ताजा दम हो जा, इसके बाद तुम अपनी राह लेना। 6 इसलिए वह दोनों बैठ गए और मिलकर खाया पिया फिर उस जवान 'औरत के बाप ने उस शख्स से कहा कि रात भर और टिकने को राजी हो जा, और अपने दिल को खुश कर। 7 लेकिन वह शख्स चलने को खड़ा हो गया, लेकिन उसका खुसर उससे बजिद हुआ; इसलिए फिर उसने बही रात काटी। 8 और पाँचवें रोज़ वह सुबह सवैरे उठा, ताकि रखाना हो; और उस जवान 'औरत के बाप ने उससे कहा, "जरा इत्मिनान रख और दिन ढलने तक ठहरे रहो।" तब दोनों ने रोटी खाई। 9 और जब वह शख्स और उसकी हरम और उसका नौकर चलने को खड़े हुए, तो उसके खुसर या'नी उस जवान 'औरत के बाप ने उससे कहा, "देख, अब तो दिल ढला और शाम हो चली, इसलिए मैं तुम से मिन्नत करता हूँ कि तुम रात भर ठहर जाओ। देख, दिन तो खातिमें पर है, इसलिए यहीं टिक जा, तेरा दिल खुश हो और कल सुबह ही सुबह तुम अपनी राह लगाना, ताकि तू अपने घर को जाए।" 10 लेकिन वह शख्स उस रात रहने पर राजी न हुआ, बल्कि उठ कर रखाना हुआ और यबूस के सामने पहुँचा येस्सलेम यहीं है; और दो गधे जीन करने हुए उसके साथ थे, और उसकी हरम भी साथ थी। 11 जब वह यबूस के बराबर पहुँचे तो दिन बहुत ढल गया था, और नौकर ने अपने आका से कहा, "आ, हम यबूसियों के इस शहर में मुड़ जाएँ और यहीं टिकें।" 12 उसके आका ने उससे कहा, "हम किसी अजनबी के शहर में, जो बनी — इसाईल में से नहीं दाखिल न होंगे, बल्कि हम जिब'आ को जाएँगे।" 13 फिर उसने अपने नौकर से कहा "आ, हम इन जगहों में से किसी में चले चलें, और जिब'आ या रामा में रात काटें। 14 इसलिए वह आगे बढ़े और रास्ता चलते ही रहे, और बिनयमीन के

जिब'आ के नज़दीक पहुँचते पहुँचते सूरज ढूब गया। 15 इसलिए वह उधर को मुड़े, ताकि जिब'आ में दाखिल होकर वहाँ टिके। वह दाखिल होकर शहर के चौक में बैठ गया, क्यूँकि वहाँ कोई आदमी उनको टिकाने को अपने घर न ले गया। 16 शाम को एक बूढ़ा शख्स अपना काम करके वहाँ आया। यह आदमी इफ़ाईम के पहाड़ी मुल्क का था, और जिब'आ में आ बसा था; लेकिन उस मकाम के बालिंदे बिनयमीनी थी। 17 उसने जो आँखें उठाई तो उस मुसाफिर को उस शहर के चौक में देखा, तब उस बूढ़े शख्स ने कहा, तु किधर जाता है और कहाँ से आया है?" 18 उसने उससे कहा, "हम यहदाह के बैतलहम से इफ़ाईम के पहाड़ी मुल्क के दूसरे सिरे को जाते हैं। मैं वही का हूँ, और यहदाह के बैतलहम को गया हुआ था; और अब खुदावन्द के घर को जाता हूँ, यहाँ कोई मुझे अपने घर में नहीं उतारता। 19 हालाँकि हमारे साथ हमारे गधों के लिए भूसा और चारा है; और मेरे और तेरी लौटी के बास्ते, और इस जवान के लिए जो तेरे बन्दो के साथ है रोटी और मय भी है, और किसी चीज़ की कमी नहीं।" 20 उस बूढ़े शख्स ने कहा, "तेरी सलामती हो; तेरी सब जस्तरें हरसूत मेरे जिम्मे हों, लेकिन इस चौक में हरमिज न टिक।" 21 वह उसे अपने घर ले गया और उसके गधों को चारा दिया, और वह अपने पाँव धोकर खाने पीने लगे। 22 जब वह अपने दिलों को खुश कर रहे थे, तो उस शहर के लोगों में से कुछ खबीसों ने उस घर को घेर लिया और दरवाज़ा पीटने लगे, और साहिब — ए — खाना यानी बूढ़े शख्स से कहा, "उस शख्स को जो तेरे घर में आया है, बाहर ले आ ताकि हम उसके साथ सुहबत करें।" 23 वह आदमी जो साहिब — ए — खाना था, बाहर उनके पास जाकर उनसे कहने लगा, "नहीं, मेरे भाईयों ऐसी शरात न करो; चूँकि यह शख्स मेरे घर में आया है, इसलिए यह बेकफ़ी न करो।" 24 देखो, मेरी कुंवारी बेटी और इस शख्स की हरम यहाँ हैं, मैं अभी उनको बाहर लाए देता हूँ, तुम उनकी आबस लो और जो कुछ तुम को भला दिखाई दे उनसे करो, लेकिन इस शख्स से ऐसा यिनौना काम न करो।" 25 लेकिन वह लोग उसकी सुनते ही न थे। तब वह शख्स अपनी हरम को पकड़ कर उनके पास बाहर ले आया। उन्होंने उससे सुहबत की और सारी रात सुबह तक उसके साथ बदजाती करते रहे, और जब दिन निकलने लगा तो उसको छोड़ दिया। 26 वह 'औरत पौ फूटे हुए आई, और उस शख्स के घर के दरवाजे पर जहाँ उसका खाविन्द था गिरी और रोशनी होने तक पड़ी रही। 27 और उसका खाविन्द सुबह को उठा और घर के दरवाजे खोले और बाहर निकला कि रखाना हों और देखो वह 'औरत जो उसकी हरम थी घर के दरवाजे पर अपने आस्तान पर फैलाये हुए पड़ी थी। 28 उसने उससे कहा, "उठ, हम चलें।" लेकिन किसी ने जवाब न दिया। तब उस शख्स ने उसे अपने गधे पर लाद लिया, और वह शख्स उठा और अपने मकान को चला गया। 29 और उसने घर पहुँच कर छुपी ली, और अपनी हरम को लेकर उसके आज़ा काटे और उसके बारह टुकड़े करके इसाईल की सब सरहदों में भेज दिए। 30 और जितनों ने यह देखा, वह कहने लगे कि जब से बनी — इसाईल मुल्क — ए — मिस्र से निकल आए, उस दिन से आज तक ऐसा बुरा काम न कभी हुआ न कभी देखने में आया, इसलिए इस पर गौर करो और सलाह करके बातों।

20 तब सब बनी इसाईल निकले और सारी जमा'त जिल'आद के मुल्क समेत दान से बैरसावा' तक यकतन होकर खुदावन्द के सामने मिस्फ़ाह में इकट्ठी हुई। 2 और तमाम क्रौम के सरदार बल्कि बनी इसाईल के सब कबीलों के लोग जो चार लाख शमशीर जन प्यादे थे, खुदा के लोगों के मजमे में हाज़िर हए। 3 और बनी बिनयमीन ने सुना कि बनी — इसाईल मिस्फ़ाह में आए हैं। और बनी — इसाईल पूछने लगे कि बताओ तो सही यह शरात क्योंकर हुई? 4 तब उस लावी ने जो उस मक्तूल 'औरत का शौहर था जवाब दिया कि मैं अपनी

हरम को साथ लेकर बिनयमीन के जिब'आ में टिकने को गया था। 5 और जिब'आ के लोग मुझ पर चढ़ आए, और रात के बक्तु उस घर को जिसके अन्दर मैं था चारों तरफ से घेर लिया, और मुझे तो वह मार डालना चाहते थे; और मेरी हरम को जबरन ऐसा बेआबूस किया कि वह मर गई। 6 इसलिए मैंने अपनी हरम को लेकर उसको टुकड़े टुकड़े किया, और उनको इसाईल की मीरास के सारे मुल्क में भेजा, क्यूंकि इसाईल के बीच उन्होंने खुदावन्द और धिनौना काम किया है। 7 ऐं बनी — इसाईल, तुम सब के सब देखो, और यही अपनी सलाह — ओ — मशवरत दो। 8 और सब लोग यकतन होकर उठे और कहने लगे, हम में से कोई अपने डेर को नहीं जाएगा, और न हम में से कोई अपने घर की तरफ स्थू करेगा। 9 बल्कि हम जिब'आ से यह करेंगे, कि पच्ची डाल कर उस पर चढ़ाई करेंगे। 10 और हम इसाईल के सब कबीलों में से सौ पीछे दिस, और हजार पीछे सौ, और दिस हजार पीछे एक हजार आदमी लोगों के लिए स्वत लाने को ज्ञात करें; ताकि वह लोग जब बिनयमीन के जिब'आ में पहुँचें, तो जैसा मकस्त काम उन्होंने इसाईल में किया है उसके मुताबिक उससे कारणजारी कर सकें। 11 तब सब बनी — इसाईल उस शहर के मुकाबिल गठे हए यकतन होकर जमा' हुए। 12 और बनी — इसाईल के कबीलों ने बिनयमीन के सारे कबीलों में लोग रखाना किए और कहला भेजा कि यह क्या शरारत है जो तुम्हारे बीच है? 13 इसलिए अब उन आदमियों यानी उन खबीसों को जो जिब'आ में हैं हमारे हवाले करो, कि हम उनको कल्त करें और इसाईल में से बुराई को दूर कर डालें। लेकिन बनी बिनयमीन ने अपने भाईयों बनी इसाईल का कहना न माना। 14 बल्कि बनी बिनयमीन शहरों में से जिब'आ में जमा' हुए, ताकि बनी — इसाईल से लड़ने को जाएँ। 15 और बनी बिनयमीन जो शहरों में से उस बक्तु जमा' हुए, वह शुमार में छब्बीस हजार शमशीर जन शख्स थे, 'अलावा जिब'आ के बासिंटों के जो शुमार में सात सौ चुने हुए जवान थे। 16 इन सब लोगों में से सात सौ चुने हुए बैंबून्थे जवान थे, जिनमें से हर एक फलाखुन से बाल के निशाने पर बौर खता किए पथर मार सकता था। 17 और इसाईल के लोग, बिनयमीन के 'अलावा, चार लाख शमशीर जन शख्स थे, यह सब साहिब — ए — जंग थे। 18 और बनी — इसाईल उठ कर बैतैल को गए और खुदा से मश्वरत चाही और कहने लगे कि हम में से कौन बनी बिनयमीन से लड़ने को पहले जाएँ? खुदावन्द ने फरमाया, "पहले यहदाव हाजा!" 19 इसलिए बनी — इसाईल सुबह सवेरे उठे और जिब'आ के सामने डेरे खड़े किए। 20 और इसाईल के लोग बिनयमीन से लड़ने को निकले, और इसाईल के लोगों ने जिब'आ में उनके मुकाबिल सफारीआई की। 21 तब बनी बिनयमीन ने जिब'आ से निकल कर उस दिन बाइस हजार इसाईलियों को कल्त करके खाक में मिला दिया। 22 तेकिन बनी — इसाईल के लोग हौसला करके दूसरे दिन उसी मकाम पर जहाँ पहले दिन सफ बाँधी थी फिर सफारा हुए। 23 और बनी — इसाईल जाकर शाम तक खुदावन्द के आगे रोते रहे; और उन्होंने खुदावन्द से पूछा कि हम अपने भाई बिनयमीन की औलाद से लड़ने के लिए फिर बढ़े या नहीं? खुदावन्द ने फरमाया, "उस पर चढ़ाई करो।" 24 इसलिए बनी — इसाईल दूसरे दिन बनी बिनयमीन के मुकाबले के लिए नजदीक आए। 25 और उस दूसरे दिन बनी बिनयमीन उनके मुकाबिल जिब'आ से निकले और अठारह हजार इसाईलियों को कल्त करके खाक में मिला दिया, यह सब शमशीर जन थे। 26 तब सब बनी — इसाईल और सब लोग उठे और बैतैल में आए और वहाँ खुदावन्द के हुजूर बैठे रोते रहे, और उस दिन शाम तक रोजा रख्खा और सोखनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियाँ खुदावन्द के आगे पेश की। 27 और बनी — इसाईल ने इस वजह से कि खुदा के 'अहद का सन्दूक उन दिनों वही था, 28 और हास्तन के बेटे इलीं एतियाजर का बेटा फ़ीन्हास उन

दिनों उसके आगे खड़ा रहता था, खुदावन्द से पूछा कि मैं अपने भाई बिनयमीन की औलाद से एक दफा' और लड़ने को जाऊँ या रहने दौँ खुदावन्द ने फरमाया कि जा, मैं कल उसको तेरे कब्जे में कर दूँगा। 29 इसलिए बनी — इसाईल ने जिब'आ के चारों तरफ लोगों को घात में बिठा दिया। 30 और बनी — इसाईल तीसरे दिन बनी बिनयमीन के मुकाबिले को चढ गए, और पहले की तरह जिब'आ के मुकाबिल फिर सफारा हुए। 31 और बनी बिनयमीन इन लोगों का सामना करने निकले, और शहर से दूर खिचे चले गए; और उन शाहराहों पर जिनमें से एक बैतैल को और दूसरी मैदान में से जिब'आ को जाती थी, पहले की तरह लोगों को मारना और कल्त करना शुरू किया और इसाईल के तीस आदमी के करीब मार डाले। 32 और बनी बिनयमीन कहने लगे कि वह पहले की तरह हम से मगलूब हुए। लेकिन बनी — इसाईल ने कहा, "आओ, भागें और उन को शहर से दूर शाहराहों पर खींच लाएँ।" 33 तब सब इसाईली शख्स अपनी अपनी जगह से उठ खड़े हुए, और बाल तमर में सफारा हुए; इस बक्त वह इसाईली जो कमीन में बैठे थे, मारे जिब'आ से जो उनकी जगह थी निकले। 34 और सारे इसाईल में से दस हजार चुने हुए आदमी जिब'आ के सामने आए और लड़ाई सख्त होने लगी; लेकिन उन्होंने न जाना कि उन पर आफत अपने जाली है। 35 और खुदावन्द ने बिनयमीन को इसाईल के आगे मारा, और बनी — इसाईल ने उस दिन पच्चीस हजार एक सौ बिनयमीनियों को कल्त किया, यह सब शमशीर जन थे। 36 तब बनी बिनयमीन ने देखा कि वह मगलूब हुए क्यूंकि इसाईली शख्स उन लोगों का भरोसा करके जिनकी उन्होंने जिब'आ के खिलाफ घात में बिठाया था, बिनयमीन के सामने से हट गए। 37 तब कमीन वालों ने जलदी की और जिब'आ पर झटपट, और इन कमीन वालों ने आगे बढ़कर सारे शहर को बबांद किया। 38 और इसाईली आदमियों और उन कमीनवालों में यह निशान मुकर्रर हुआ था, कि वह ऐसा करें कि धुरें का बहुत बड़ा बादल शहर से उठाएँ। 39 इसलिए इसाईली शख्स लडाई में हटने लगे और बिनयमीन ने उनमें से करीब तीस के आदमी कल्त कर दिए क्यूंकि उन्होंने कहा कि वह यहकीन हमारे सामने मगलूब हुए जैसे पहली लडाई में। 40 लेकिन जब धूँ उन्होंने बैतैल सा उस शहर से उठा, तो बनी बिनयमीन ने अपने पीछे निगाह की और क्या देखा कि शहर का शहर धुरें में आसमान को उड़ा जाता है। 41 फिर तो इसाईली शख्स पलटे और बिनयमीन के लोग हक्का — बक्तव्य हो गए, क्यूंकि उन्होंने देखा कि उन पर आफत आ पड़ी। 42 इसलिए उन्होंने इसाईली शख्सों के आगे पीठ फेर कर वीराम की राह ली; लेकिन लडाई ने उनका पीछा न छोड़ा, और उन लोगों ने जो और शहरों से आते थे उनको उनके बीच में फ़ना कर दिया। 43 औं उन्होंने बिनयमीनियों को घेर लिया और उनको दौड़ाया, और मशरिक में जिब'आ के मुकाबिल उनकी आराम गाहों में उनको लाताड़ा। 44 इसलिए अठारह हजार बिनयमीनी मारे गए, यह सब सूर्यी थे। 45 और वह लौट कर रिम्मोन की चट्टान की तरफ वीराम में भाग गए; लेकिन उन्होंने शाहराहों में चुन — चुन कर उनके पाँच हजार और मारे और जिदोम तक उनको खूब दौड़ा कर उनमें से दो हजार शख्स और मार डाले। 46 इसलिए सब बनी बिनयमीन जो उस दिन मारे गए पच्चीस हजार शमशीर जन शख्स थे, और यह सब के सब सूर्यी थे। 47 लेकिन छः सौ आदमी लौट कर और वीराम की तरफ भाग गए; लेकिन उन्होंने शाहराहों में चुन — चुन कर उनके पाँच हजार और रिम्मोन की चट्टान को चल दिए, और रिम्मोन की चट्टान में चार मरीने रहे। 48 और इसाईली शख्स लौट कर फिर बनी बिनयमीन पर टृप पड़े, और उनको बबांद किया, यानी सारे शहर और चौपायों और उन सब को जो उनके हाथ आए। और जो — जो शहर उनको मिले उन्होंने उन सबको फ़ूँक दिया।

21 और इसाईल के लोगों ने मिस्फाह में कसम खाकर कहा था कि हम में से

कोई अपनी बेटी किसी बिनयमीनी को न देगा। 2 और लोग बैतैल में आए, और शाम तक वहाँ खुदा के आगे बुलन्द आवाज से जार जार रोते रहे, 3 और उन्होंने कहा, ऐ खुदावन्द, इसाईल के खुदा! इसाईल में ऐसा कर्यूं हुआ, कि इसाईल में से आज के दिन एक कबीला कम हो गया? 4 और दूसरे दिन वह लोग सुबह सर्वेर उठे और उस जगह एक मजबह बना कर सोखतनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश की। 5 और बनी — इसाईल कहने लगे कि इसाईल के सब कबीलों में ऐसा कौन है जो खुदावन्द के हजर जमा'अत के साथ नहीं आया क्यूंकि उन्होंने सरखत कसम खाई थी कि जो खुदावन्द के सामने मिस्फाह में हाजिर न होगा वह ज़स्त कल्त किया जाएगा। 6 इसलिए बनी — इसाईल अपने भाई बिनयमीनी की वजह से पछताए और कहने लगे कि आज के दिन बनी — इसाईल का एक कबीला कट गया। 7 और वह जो बाकी रहे हैं, हम उनके लिए बीवियों की निस्बत क्या करें? क्यूंकि हम ने तो खुदावन्द की कसम खाई है कि हम अपनी बेटियों उनको नहीं ब्याहेंगे। 8 इसलिए वह कहने लगे कि बनी — इसाईल में से वह कौन सा कबीला है जो मिस्फाह में खुदावन्द के सामने नहीं आया? और देखो, लश्कर गाह में जमा'अत में शमिल होने के लिए यबीस जिल'आद से कोई नहीं आया था। 9 क्यूंकि जब लोगों का शुमार किया गया तो यबीस जिल'आद के बाशिंदों में से वहाँ कोई नहीं मिला। 10 तब जमा'अत ने बारह हजार सुर्मा रखाना किए और उनको हक्म दिया कि जाकर याबीस जिल'आद के बाशिंदों को 'औरतों और बच्चों समेत कल्त करो। 11 और जो तुम को करना होगा वह यह है, कि सब शख्सों और ऐसी 'औरतों को जो शख्ससे वाकिफ हो चुकी हों कुंवारी 'औरतें मिली जो शख्स से नावाकिफ और अछूती थी, और वह उनको मुल्क — ए — कन'आन में शीलोह की लश्करगाह में ले आए। 12 तब सारी जमा'अत ने बनी बिनयमीन को जो रिपोन की चट्ठान में थे कहला भेजा, और सलामती का पैगाम उनको दिया। 13 तब बिनयमीनी लैटे; और उन्होंने वह 'औरतें उनको दे दी, जिनको उन्होंने यबीस जिल'आद की 'औरतों में से जिन्दा बचाया था, लेकिन वह उनके लिए बस न है। 15 और लोग बिनयमीन की वजह से पछताए, इसलिए कि खुदावन्द ने इसाईल के कबीलों में रखना डाल दिया था। 16 तब जमा'अत के बुजूर्ग कहने लगे कि उनके लिए जो बच रहे हैं बीवियों की निस्बत हम क्या करें, क्यूंकि बनी बिनयमीन की सब 'औरतें मिट गईं? 17 इसलिए उन्होंने कहा, 'बनी बिनयमीन के बाकी मान्दा लोगों के लिए मीरास ज़स्ती है, ताकि इसाईल में से एक कबीला मिट न जाए। 18 तो भी हम तो अपनी बेटियाँ उनको ब्याह नहीं सकते; क्यूंकि बनी — इसाईल में यह कहकर कसम खाई थी, कि जो किसी बिनयमीनी को बेटी दे वह लानी हो। 19 फिर वह कहने लगे, 'देखो, शीलोह में जो बैतैल के उत्तर में, और उस शाहराह की मशरिकी तरफ में है जो बैतैल से सिकम को जाती है, और लबूना के दब्लिखन में है, साल — ब — साल खुदावन्द की एक 'ईंद होती है।' 20 तब उन्होंने बनी बिनयमीन को हक्म दिया कि जाओ, और ताकिस्तानों में धात लगाए बैठे रहो; 21 और देखते रहना, कि अगर शीलोह की लड़कियाँ नाच नाचने को निकलें, तो तुम ताकिस्तानों में से निकलकर सैला की लड़कियों में से एक एक बीवी अपने अपने लिए पकड़ लेना, और बिनयमीन के मुल्क को चल देना। 22 और जब उनके बाप या भाई हम से शिकायत करने को आएँगे, तो हम उनसे कह देंगे कि उनको महेरबानी से हमें 'इनायत करो, क्यूंकि उस लडाई में हम उनमें से हर एक के लिए बीवी नहीं लाए; और तुम ने उनको अपने आप नहीं दिया, वरना तुम गुनहगार होते। 23 गरज बनी बिनयमीन ने ऐसा ही किया, और अपने शुमार के मुताबिक उनमें से

जो नाच रही थीं जिनको पकड़ कर ले भागे, उनको ब्याह लिया और अपनी मीरास को लौट गए, और उन शहरों को बना कर उनमें रहने लगे। 24 तब बनी — इसाईल वहाँ से अपने अपने कबीले और घराने को चले गए, और अपनी मीरास को लौटे। 25 और उन दिनों इसाईल में कोई बादशाह न था; हर एक शख्स जो कुछ उसकी नज़र में अच्छा मालूम होता था वही करता था।

1 उन ही दिनों में जब कान्नी इन्साफ़ किया करते थे, ऐसा हुआ कि उस सरजमीन में काल पड़ा, यहदाह बैतलहम का एक आदमी अपनी बीवी और दो बेटों को लेकर चला कि मोआब के मूल्क में जाकर बसे। 2 उस आदमी का नाम इलीमलिक और उसकी बीवी का नाम न'ओमी उसके दोनों बेटों के नाम महलोन और किलयोन थे। ये यहदाह के बैतलहम के इकानी थे। तब वह मोआब के मूल्क में आकर रहने लगे। 3 और न'ओमी का शौहर इलीमलिक मर गया, वह और उसके दोनों बेटे बाकी रह गए। 4 उन दोनों ने एक एक मोआबी "औरत ब्याह ली। इनमें से एक का नाम 'उफ़ा' और दूसरी का स्त था; और वह दस बरस के कनीब वहाँ रहे। 5 और महलोन और किलयोन दोनों मर गए, तब वह 'औरत अपने दोनों बेटों और शौहर से महस्त हो गई। 6 तब वह अपनी दोनों बहुओं को लेकर उठी कि मोआब के मूल्क से लौट जाएँ इसलिए कि उस ने मोआब के मूल्क में यह हाल सुना कि खुदावन्द ने अपने लोगों को रोटी दी और यूँ उनकी खबर ली। 7 इसलिए वह उस जगह से जहाँ वह थी, दोनों बहुओं को साथ लेकर चल निकली, और वह सब यहदाह की सरजमीन को लौटने के लिए रास्ते पर हो गई। 8 और न'ओमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा, दोनों अपने अपने मैके को जाओ। जैसा तुम ने मरहमों के साथ और मेरे साथ किया, वैसा ही खुदावन्द तुम्हारे साथ मेरहबानी से पेश आए। 9 खुदावन्द यह करे कि तुम को अपने अपने शौहर के घर में आराम मिले। तब उसने उनको चूमा और वह जोर — जोर से रोने लगा। 10 फिर उन दोनों ने उससे कहा, "नहीं! बल्कि हम तेरे साथ लौट कर तेरे लोगों में जाएँगी।" 11 न'ओमी ने कहा, ऐ मेरी बेटियों, लौट जाओ! मेरे साथ क्यूँ चलो? क्या मैं रिहम में और बेटे हैं जो तुम्हारे शौहर हैं? 12 ऐ मेरी बेटियों, लौट जाओ! अपना रास्ता लो, क्योंकि मैं ज्यादा बुढ़िया हूँ और शौहर करने के लायक नहीं। अगर मैं कहती कि मुझे उमीद है बल्कि अगर आज की रात मेरे पास शौहर भी होता, और मेरे लड़के पैदा होते; 13 तो भी क्या तुम उनके बड़े होने तक इंतज़ार करती और शौहर कर लेने से बाज़ रहती? नहीं मेरी बेटियों मैं तुम्हारी वजह से जियादा दुखी हूँ इसलिए कि खुदावन्द का हाथ मेरे खिलाफ़ बढ़ा हुआ है। 14 वह फिर जोर जोर से रोई, और उफ़ा ने अपनी सास को चूमा लेकिन स्त उससे लिपटी रही। 15 तब उसने कहा, "जिठानी अपने कुन्बे और अपने माबूद के पास लौट गई, तू भी अपनी जिठानी के पीछे चली जा।" 16 स्त ने कहा, "तू मिन्तन न कर कि मैं तुझे छोड़ और तेरे पीछे से लौट जाऊँ; क्यूँकि जहाँ तू जाएँगी मैं जाऊँगी और जहाँ तू रहेंगी मैं रहूँगी, तेरे लोग मेरे लोग और तेरा खुदा मेरा खुदा होगा। 17 जहाँ तू मेरी मैं मस्ती और वही दफन भी हूँगी; खुदावन्द मुझ से ऐसा ही बल्कि इस से भी ज्यादा करे, अगर मौत के अलावा कोई और चीज़ मुझ को तुझ से जुदा न कर दे।" 18 जब उसने देखा कि उसने उसके साथ चलने की ठान ली है, तो उससे और कुछ न कहा। 19 इसलिए वह दोनों चलते बैतलहम में आईं। जब वह बैतलहम में दाखिल हुई तो सारे शहर में धूम मची, और 'औरतें कहने लगी, कि क्या ये न'ओमी है? 20 उसने उसने कहा, "मुझ को न'ओमी नहीं बल्कि मारह कहो, कि कादिर — ए — मुतलक मेरे साथ बहुत तल्खी से पेश आया है। 21 मैं भरी पूरी गई, खुदावन्द मुझ को खानी लौटा लाया। इसलिए तुम क्यूँ मुझे न'ओमी कहती हो, हालाँकि खुदावन्द मेरे खिलाफ़ दावेदार हुआ और कादिर — ए — मुतलक ने मुझे दुख दिया?" 22 गरज़ न'ओमी लौटी और उसके साथ उसकी बह मोआबी स्त थी, जो मोआब के मूल्क से यहाँ आई। और वह दोनों जौ काटने के मौसम में बैतलहम में दाखिल हुई।

2 और न'ओमी के शौहर का एक रिश्तेदार था, जो इलीमलिक के घराने का और बड़ा मालदार था; और उसका नाम बो'अज़ था। 2 इसलिए मोआबी स्त ने न'ओमी से कहा, "मुझे इजाज़त दे, तो मैं खेत में जाऊँ और जो कोई करम की नज़र मुझ पर करे, उसके पीछे पीछे बाले चुनौं।" उस ने उससे कहा, "जा मेरी बेटी।" 3 इसलिए वह गई और खेत में जाकर काटने वालों के पीछे बाले चुनने लगी, इतकाक से वह बो'अज़ ही के खेत के हिस्से में जा पहुँची जो इलीमलिक के खान्दान का था। 4 और बो'अज़ ने बैतलहम से आकर काटने वालों से कहा, खुदावन्द तुम्हारे साथ हो। उन्होंने उससे जबाब दिया खुदावन्द तुझे बरकत दो।" 5 फिर बो'अज़ ने अपने उस नौकर से जो काटने वालों पर मुकर्रर था पूछा, किसकी लड़की है?" 6 उस नौकर ने जो काटने वालों पर मुकर्रर था जबाब दिया, "ये वह मोआबी लड़की है जो न'ओमी के साथ मोआब के मूल्क से आई है।" 7 उस ने मुझ से कहा था, 'कि मुझ को ज़रा काटने वालों के पीछे पूलियों के बीच बाले चुनकर जमा' करने दे इसलिए यह आकर सबह से अब तक यही रही, सिर्फ़ जरा सी देर घर में ठहरी ही।" 8 तब बो'अज़ ने स्त से कहा, "ऐ मेरी बेटी! क्या तुझे सुनाइ नहीं देता? तू दूसरे खेत में बाले चुनने को न जाना और न यहाँ से निकलना, मेरी लड़कियों के साथ साथ रहना।" 9 इस खेत पर जिसे वह काटते हैं तेरी आखें जमी रहें और तू इही के पीछे पीछे चलना। क्या मैंने इन जवानों को हक्म नहीं किया कि वह तुझे न छुएँ? और जब तु प्यासी हो, बर्तनों के पास जाकर उसी पानी में से पीना जो मेरे जवानों ने भरा है।" 10 तब वह और्धे मुँह गिरी और जमीन पर सरनगू होकर उससे कहा, "क्या वजह है कि तू मुझ पर करम की नज़र करके मेरी खबर लेता है, हालाँकि मैं परदेसन हूँ?" 11 बो'अज़ ने उसे जबाब दिया, कि "जो कुछ तू अपने शौहर के मरने के बाद अपनी सास के साथ किया सब मुझे पूरे तौर पर बताया गया तूने कैसे अपने मौं — बाप और रहने की जगह को छोड़ा, उन लोगों में जिनको तू इससे परले न जानती थी आई है।" 12 खुदावन्द तेरे काम का बदला दे, खुदावन्द इशाईल के खुदा की तरफ से, जिसके पांचों की नीचे तू पानाह के लिए आई है, तुझ को पूरा अज़ मिले।" 13 तब उसने कहा, "ऐ मेरे मालिक! तेरे करम की नज़र मुझ पर रहे, क्योंकि तूने मुझे दिलासा दिया और मेरहबानी के साथ अपनी लौड़ी से बातें की जब कि मैं तेरी लौड़ियों में से एक के बराबर भी नहीं।" 14 फिर बो'अज़ ने उससे खेने के बक्तव्य कहा कि यहाँ आ और रोटी खा और अपना निवाला सिरके में भिगो। तब वह काटने वालों के पास बैठ गई, और उन्होंने भुना हुआ अनाज उसके पास कर दिया; तब उसने खाया और सेर हुई और कुछ रख छोड़ा। 15 और जब वह बाले चुनने उठी, तो बो'अज़ ने अपने जवानों से कहा कि उसे पूलियों के बीच में भी चुनने देना और उसे न डॉटना। 16 और उसके लिए गश्तों में से थोड़ा सा निकाल कर छोड़ देना, और उसे चुनने देना और छिड़कना मत। 17 इसलिए वह शाम तक खेत में चुनती रही, जो कुछ उसने चुना था उसे फटका और वह कनीब एक ऐका जौ निकला। 18 और वह उसे उठा कर शहर में रही, जो कुछ उसने चुना था उसे उसकी सास ने देखा, और उसने वह भी जो उसने सेर होने के बाद रख छोड़ा था, निकालकर अपनी सास को दिया। 19 उसकी सास ने उससे पूछा, "तूने आज कहाँ बाले चुनी और कहाँ काम किया? मुबारक हो वह जिसने तेरी खबर ली।" तब उसने अपनी सास को बताया कि उसने किसके पास काम किया था, और कहा कि उस शब्द सा नाम, जिसके यहाँ आज मैंने काम किया बो'अज़ है। 20 न'ओमी ने अपनी बह से कहा, वह खुदावन्द की तरफ से बरकत पाए, जिसने ज़िंदों और मुर्दों से अपनी मेरहबानी बा'ज़ न रखी। और न'ओमी ने उससे कहा, "ये शब्द हमारे करीबी परिषे का है और हमारे नजदीकी के करीबी रिश्तेदारों में से एक है।" 21 मोआबी स्त ने कहा, उसने मुझ से ये भी कहा था कि तू मेरे जवानों के साथ

रहना, जब तक वह मेरी सारी फस्त काट न चुकें। 22 न'ओमी ने अपनी बहू स्त से कहा, मेरी बेटी ये अच्छा है कि तू उसकी लड़कियों के साथ जाया करे, और वह तुझे किसी और खेत में न पायें। 23 तब वह बाले चुनने के लिए जौ और गेहूँ की फसल के खातिमे तक बो'अज्ज की लड़कियों के साथ — साथ लगी रहीं; और वह अपनी सास के साथ रहती थी।

3 फिर उसकी सास न'ओमी ने उससे कहा, “मेरी बेटी क्या मैं तेरे आराम की तालिब न बँड़ू, जिससे तेरी भलाई हो? 2 और क्या बो'अज हमारा रिश्तेदार नहीं, जिसकी लड़कियों के साथ तू थी? देख वह आज की रात खलीहान में जौ फटकेगा। 3 इसलिए तू नहा — धोकर खुशबू लगा, अपनी पोशाक पहन और खलीहान को जा जब तक वह मर्द खा पी न चुके, तब तक तू अपने आप उस पर जाहिर न करना। 4 जब वह लेट जाए, तो उसके लेटने की जगह को देख लेना; तब तू अन्दर जा कर और उसके पाँव खोलकर लेट जाना और जो कुछ तुझे करना मुशासिक है वह तुझ को बताएगा।” 5 उसने अपनी सास से कहा, “जो कुछ तू मुझ से कहती है, वह सब मैं कहूँगी।” 6 फिर वह खलीहान को गई और जो कुछ उसकी सास ने हकम दिया था वह सब किया। 7 और जब बो'अज खा पी चुका, उसका दिल खुश हुआ; तो वह गत्तें के ढेर की एक तरफ जाकर लेट गया। तब वह चुपके — चुपके आई और उसके पाँव खोलकर लेट गई। 8 और आधी रात को ऐसा हुआ कि वह मर्द डर गया, और उसने करवट ली और देखा कि एक “औरत उसके पाँव के पास पड़ी है। 9 तब उन्हें पूछा, “तू कौन है?” उस ने कहा, “तेरी लौटी स्तु स्तु हैं; इसलिए तू अपनी लौटी पर अपना दामन फैला दे, क्यूँकि तू नजदीक का करीबी रिश्तेदार है।” 10 उसने कहा, “तू खुदावन्द की तरफ से मुबारक हो, ऐ मेरी बेटी क्यूँकि तूने शून्य की तरह आखिर में ज्यादा मेहरबानी कर दिखाई कि तूने जबानों का चाहे अमीर हों या गरीब पीछा न किया। 11 अब ऐ मेरी बेटी, मत डर! मैं सब कुछ जो तू कहती है तुझ से कहूँगा क्यूँकि मेरी कौम का तमाम शहर जानता है कि तू पाक दामन 'औरत है। 12 और यह सच है कि मैं नजदीक का करीबी रिश्तेदार हूँ, लेकिन एक और भी है जो करीब के रिश्तों में मुझ से ज्यादा नजदीक है। 13 इस रात तू ठहरी रह, सुबह को अगर वह करीब के रिश्ते का हक अदा करना चाहे, तो खैर वह करीब के रिश्ते का हक अदा करें; और अगर वह तेरे साथ करीबी रिश्ते का हक अदा करना न चाहे, तो जिन्दा खुदावन्द की कसम है मैं तेरे करीबी रिश्ते का हक अदा कहूँगा। सुबह तक तो तू लेटी रह।” 14 इसलिए वह सुबह तक उसके पाँव के पास लेटी रही, और पहले इससे कि कोई एक दूसरे को पहचान सके उठ खड़ी हुई; क्यूँकि उसने कह दिया था कि ये जाहिर होने न पाए कि खलीहान में ये 'औरत आई थी। 15 फिर उसने कहा, “उस चादर को जो तेरे ऊपर है ला, और उसे थामे रह।” जब उसने उसे थामा तो उसने जौ के छह पैमाने नाप कर उस पर लाद दिए। फिर वह शहर को चला गया। 16 फिर वह अपनी सास के पास आई तो उसने कहा, “ऐ मेरी बेटी, तू कौन है?” तब उसने सब कुछ जो उस मर्द ने उससे किया था उसे बताया, 17 और कहने लगी कि मुझको उसने यह छ. पैमाने जौ के दिए, क्यूँकि उसने कहा, तू अपनी सास के पास खाली हाथ न जा। 18 तब उसने कहा, “ऐ मेरी बेटी, जब तक इस बात के अंजाम का तुझे पता न लगे, तू चुप चाप बैठी रह इसलिए कि उस शख्स को चैन न मिलेगा जब तक वह इस काम को आज ही तमाम न कर ले।”

4 तब बो'अज बेथलेहम शहर के फाटक के पास जाकर वहाँ बैठ गया और देखो जिस नजदीक के करीबी रिश्ते का जिक्र बो'अज ने किया था वह आनिकला। उसने उससे कहा और भाई इधर आ! जरा यहाँ बैठ जा। तब वह उधर

आकर बैठ गया। 2 फिर उसने शहर के बुजुर्गों में से दस आदमियों को बुला कर कहा, “यहाँ बैठ जाओ।” 3 तब वह बैठ गए। 3 तब उसने उस नजदीक के करीबी रिश्तेदार से कहा, न'ओमी जो मोआब के मुल्क से लौट आई है जीमीन के उस टुकड़े को जो हमारे भाई इलीमलिक का माल था बेचती है। 4 इसलिए मैंने सोचा कि तुझ पर इस बात को जाहिर करके कहँगा कि तू इन लोगों के सामने जो बैठे हैं और मेरी कौम के बुजुर्गों के सामने उसे मोल ले। अगर तू उसे छुड़ाता है तो छुड़ाता तो मुझे बता दे ताकि मुझ को मालम हो जाए क्यूँकि तेरे अलावा और कोई नहीं जो उसे छुड़ाए और मैं तेरे बाद हूँ। उसने कहा, “मैं छुड़ाऊँगा।” 5 तब बो'अज ने कहा, जिस दिन तू वह जीमीन न'ओमी के हाथ से मोल ले तो तुझे उसके मोआबी स्तु के हाथ से भी जो मरहम की बीची है मोल लेना होगा ताकि उस मरहम का नाम उसकी मीरास पर काईम करे। 6 तब उसके नजदीक के करीबी रिश्तेदार ने कहा, “मैं अपने लिए उसे छुड़ा नहीं सकता ऐसा न हो कि मैं अपनी मीरास खराब कर दूँ। उसके छुड़ाने का जो मेरा हक है उसे तू ले ले क्यूँकि मैं उसे छुड़ा नहीं सकता।” 7 और अगले ज्याने में इस्माइल में मु'अमिला पवका करने के लिए छुड़ाने और बदलने के बारे में यह मालम था कि अदीनी अपनी जूती उतार कर अपने पड़ोसी को दे देता था। इस्माइल में तस्दीक करने का यही तरीका था 8 तब उस नजदीक के करीबी रिश्तेदार ने बो'अज से कहा, “तू आप ही उसे मोल ले ले। फिर उसने अपनी जूती उतार डाली। 9 और बो'अज ने बुजुर्गों और सब लोगों से कहा, तुम आज के दिन गवाह हो कि मैंने इलीमलिक और किलयोन और महलोन का सब कुछ न'ओमी के हाथ से मोल ले लिया है। 10 सिर्फ़ इसके मैंने महलोन की बीची मोआबी स्तु को भी अपनी बीची बनाने के लिए खरीद लिया है ताकि उस मरहम के नाम को उसकी मीरास में क्रायम करूँ और उस मरहम का नाम उसके भाइयों और उसके मकान के दरवाजे से मिट न जाए तुम आज के दिन गवाह हो।” 11 तब सब लोगों ने जो फाटक पर थे और उन बुजुर्गों ने कहा कि हम गवाह हैं। खुदावन्द उस 'औरत को जो तेरे घर में आई है राखिल और लियाह की तरह करे जिन दोनों ने इस्माइल का घर आबाद किया और तू इफ़्रात में भलाई का काम करे, और बैतलहम में तेरा नाम हो। 12 और तेरा घर उस नसल से जो खुदावन्द तुझे इस 'औरत से दे फारस के घर की तरह हो जो यहदाह से तमर के हुआ। 13 इसलिए बो'अज ने स्तु को लिया और वह उसकी बीची बनी और उसने उससे सोहबत की और खुदावन्द के फजल से वह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ। 14 और 'औरतों ने न'ओमी से कहा, खुदावन्द मुबारक हो जिसने आज के दिन तुझ को नजदीक के करीबी रिश्ते के बगैर नहीं ढोला और उसका नाम इस्माइल में मशहूर हुआ। 15 और वह तेरे लिए तेरी जान का बहात करनेवाला और तेरे बुद्धाए का पालने वाला होगा क्यूँकि तेरी बीची बनी से लगाया और उसकी दाया बनी। 17 और उसकी पडोसनों ने उस बच्चे को एक नाम दिया और कहने लगी न'ओमी के लिए बेटा पैदा हुआ इसलिए उन्होंने उसका नाम 'ओबेद रखा। वह यस्ती का बाप था जो दाऊद का बाप है। 18 और फारस का नसबनामा ये है फारस से हसरोन पैदा हुआ 19 और हसरोन से राम पैदा हुआ और राम से 'अमीनदाब पैदा हुआ 20 और 'अमीनदाब से नहसोन पैदा हुआ और नहसोन से सलमोन पैदा हुआ 21 और सलमोन से बो'अज पैदा हुआ और बो'अज से 'ओबेद पैदा हुआ 22 और ओबेद से यस्ती पैदा हुआ और यस्ती से दाऊद पैदा हुआ।

1 समु

1

इक्साईम के पहाड़ी मुल्क में रामातीम सोफ़ीम का एक शख्स था जिसका नाम इल्काना था। वह इक्साईमी था और यरोहाम बिन इतीह बिन तह बिन सूफ़ का बेटा था। 2 उसके दो बैबियाँ थीं, एक का नाम हन्ना था और दूसरी का फनिना, और फनिना के औलाद हुई तेकिन हन्ना बे औलाद थीं। 3 यह शख्स हर साल अपने शहर से शीलोह में रब्ब — उल — अफवाज के हज़र सज्दा करने कुर्बानी पेश करने को जाता था और एली के दोनों बेटे हुम्नी और फीन्हास जो खुदावन्द के काहिन थे वहीं रहते थे 4 और जिस दिन इल्काना कुर्बानी अदा करता वह अपनी बीबी फनिना को और उस के सब बेटे बेटियों को हिस्से देता था 5 लेकिन हन्ना को दूना हिस्सा दिया करता था इसलिए कि वह हन्ना को चाहता था लेकिन खुदावन्द ने उसका रहम बंद कर रखा था 6 और उसकी सौत उसे कुढ़ाने के लिए बे तह छेड़ती थी क्यूंकि खुदावन्द ने उसका रहम बंद कर रखा था 7 और चौंकि वह हर साल ऐसा ही करता था जब वह खुदावन्द के घर जाती इसलिए फनिना उसे छेड़ती थी चुनाँचे वह रोती खाना न खाती थी 8 इसलिए उसके खांविद इल्काना ने उससे कहा, “ऐ हन्ना तू क्यूं रोती है और क्यूं नहीं खाती और तेरा दिल क्यूं गमान है?” क्या मैं तेरे लिए दस बेटों से बढ़ कर नहीं? 9 और जब वह शीलोह में खा पी चुके तो हन्ना उठी; उस बक्त एली काहिन खुदावन्द की हैकल की चौथेट के पास कुसीं पर बैठा हुआ था 10 और वह निहायत दुखी थी, तब वह खुदावन्द से दुआ करने और जार जार रोने लगी 11 और उसने मिन्नत मानी और कहा, “ऐ रब्ब — उल — अफवाज अगर तू अपनी लौटी की मुसीबत पर नज़र करे और मुझे याद फरमाए और अपनी लौटी को फरमोश न करे और अपनी लौटी को फर्जन्द — ए — नरीना बछो तो मैं उसे ज़िन्दगी भर के लिए खुदावन्द को सुपुर्द कर दूँगी और उस्तरा उसके सर पर कभी न फिरेगा।” 12 और जब वह खुदावन्द के सामने दूँआ कर रही थी, तो एली उसके मुँह को गौरा से देख रहा था। 13 और हन्ना तो दिल ही दिल में कह रही थी सिर्फ़ उसके हॉट हिलो थे लेकिन उसकी आवाज नहीं सुनाई देती थी तब एली को गुपान हुआ कि वह नशे में है। 14 इसलिए एली ने उस से कहा, कि तू कब तक नशे में रहेगी? अपना नशा उतार। 15 हन्ना ने जबाब दिया “नहीं ऐ मेरे मालिक, मैं तो गमानीं औरत हूँ — मैंने न तो मय न कोई नशा पिया लेकिन खुदावन्द के आगे अपना दिल उँड़ला है। 16 तू अपनी लौटी को खबरीस “औरत न समझ, मैं तो अपनी फिक्रों और दुखों के हज़म के जरिएँ अब तक बोलती रही।” 17 तब एली ने जबाब दिया, “तू सलामत जा और इक्साईल का खुदा तेरी मुराद जो तूने उससे माँगी है पूरी करे।” 18 उसने कहा, “तेरी खादिमा पर तेरे करम की नज़र हो।” तब वह ‘औरत चर्ची गई और खाना खाया और फिर उसका चेहरा उदास न रहा। 19 और सुबह को वह सर्वे उठे और खुदावन्द के आगे सज्जा किया और रामा को अपने घर लोट गये। और इल्काना ने अपनी बीबी हन्ना से मुवाशरत की और खुदावन्द ने उसे याद किया। 20 और ऐसा हुआ कि बक्त पर हन्ना हामिला हड़ और उस के बेटा हुआ और उस ने उसका नाम समुएल रखा क्यूंकि वह कहने लगी, “मैंने उसे खुदावन्द से माँग कर पाया है।” 21 और वह शख्स इल्काना अपने सारे घराने के साथ खुदावन्द के हज़र सालाना कुर्बानी पेश करने और अपनी मिन्नत पूरी करने को गया। 22 लेकिन हन्ना न गई क्यूंकि उसने अपने खांविद से कहा, जब तक लड़के का दूध छुड़ाया न जाए मैं यहीं रहँगी और तब उसे लेकर जाऊँगी ताकि वह खुदावन्द के सामने हाजिर हो और फिर हमेशा वहीं रहे 23 और उस के खांविन्द इल्काना ने उससे कहा, जो तुझे अच्छा लगे वह कर। जब तक तू उसका दूध न छुड़ाये तहीं रह सिर्फ़ इतना हो कि खुदावन्द

अपनी बात को बरकरार रखवे इसलिए वह ‘औरत ठहरी रही और अपने बेटे को दूध छुड़ाने के बक्त तक पिलाती रही। 24 और जब उस ने उसका दूध छुड़ाया तो उसे अपने साथ लिया और तीन बछड़े और एक एका आटा मय की एक मशक अपने साथ ले गई, और उस लड़के को शीलोह में खुदावन्द के घर लाई, और वह लड़का बहुत ही छोटा था 25 और उन्होंने एक बछड़े को जबह किया और लड़के को एली के पास लाएः 26 और वह कहने लगी, “ऐ मेरे मालिक तेरी जान की क्रसम ऐ मेरे मालिक मैं वहीं ‘औरत हूँ जिसने तेरे पास यहीं खड़ी होकर खुदावन्द से दुआ की थी। 27 मैंने इस लड़के के लिए दुआ की थी और खुदावन्द ने मेरी मुराद जो मैंने उससे माँगी पूरी की। 28 इसी लिए मैंने भी इसे खुदावन्द को दे दिया; यह अपनी ज़िन्दगी भर के लिए खुदावन्द को दे दिया गया है” तब उसने वहाँ खुदावन्द के आगे सज्जा किया।

2 और हन्ना ने दुआ की और कहा, मेरा दिल खुदावन्द मैं खड़ा है: मेरा सींग खुदावन्द के टॉफैल से ऊँचा हुआ। मेरा मुँह मेरे दुश्मनों पर खुल गया है क्यूंकि मैं तेरी नज़ात से खुश हूँ। 2 “खुदावन्द की तरह कोई पाक नहीं क्यूंकि तेरे सिवा और कोई है ही नहीं और न कोई चट्टान है जो हमारे खुदा की तरह हो। 3 इस कदर गुर्ह से और बातें न करो और बड़ा बोल तुम्हारे मुँह से न निकलें; क्यूंकि खुदावन्द खदा — ए — ‘अलीम है, और ‘आमाल का तोलने वाला है। 4 ताकतरों की कमाने टूट गई और जो लड़खड़ाते थे वह ताकत से कमर बस्ता हुए। 5 वह जो आसूदा थे रोटी की खांविद मज़दूर बनें और जो भूके थे ऐसे न रहे, बल्कि जो बौद्ध थी उस के साथ हुए, और जिसके पास बहुत बच्चे हैं वह घुलानी जाती है। 6 खुदावन्द मारता है और जिलाता है; वहीं कब्र मैं उतारता और उससे निकलता है। (Sheol h7585) 7 खुदावन्द शरीब कर देता और दैलतमंद बनाता है, वहीं प्रत करता और बुलंद भी करता है। 8 वह शरीब को खाक पर से उठाता, और कंगाल को घूरे मैं से निकाल खड़ा करता है ताकि इनको शहजादों के साथ बिलाएँ, और जलात के तख्त का वारिस बनाए; क्यूंकि जमीन के सुतन खुदावन्द के हैं उन्हें दुनिया को उन ही पर काईम किया है। 9 वह अपने मुकद्दसों के पाँव को संभाले रहेगा, लेकिन शरीर अँधेरे मैं खामोश किए जायेंगे क्यूंकि ताकत ही से कोई फतह नहीं पाएगा। 10 जो खुदावन्द से झागड़ते हैं वह टुकड़े टुकड़े कर दिए जाएँगे; वह उन के खिलाफ आस्मान में गरजेगा खुदावन्द ज़मीन के किनारों का इंसाफ करेगा, वह अपने बादशाह को ताकत बज़ेरोगा, और अपने मम्सूह के सींग को बुलंद करेगा। 11 तब इल्काना रामा को अपने घर चला गया; और एली काहिन के सामने वह लड़का खुदावन्द की खिदमत करने लगा। 12 और एली के बेटे बहुत शरीर थे; उन्होंने खुदावन्द को न पहचाना। 13 और काहिनों का दस्तर लोगों के साथ यह था, कि जब कोई शख्स कुर्बानी करता था तो काहिन का नौकर गोशत उबलने के बक्त एक सहशाखा काँटा अपने हाथ मैं लिए हए आता था; 14 और उसको कढ़ाया या दिये यहा हांडे यहा हांडी मैं डालता और जितना गोशत उस कौटे मैं लग जाता उसे काहिन अपने आप लेता था। 15 हीं हीं वह शीलोह मैं सब इक्साईलियों से किया करते थे जो वहाँ आते थे 15 बल्कि चर्ची जलाने से पहले काहिन का नौकर आ मौजूद होता, और उस शख्स से जो कुर्बानी पेश करता यह कहने लगता था, “काहिन के लिए कबाब के वास्ते गोशत दे, क्यूंकि वह तुझ से उबला हुआ गोशत नहीं बल्कि कच्चा लेगा।” 16 और अगर वह शख्स यह कहता कि अभी वह चर्ची को ज़स्त रज़लायेंगे तब जितना तेरा जी चाहे ले लेना “तो वह उसे जबाब देता नहीं तू मुझे अभी दे नहीं तो मैं छीन कर ले जाऊँगा।” 17 इसलिए उन जवानों का गुनाह खुदावन्द के सामने बहुत बड़ा था क्यूंकि लोग खुदावन्द की कुर्बानी से नफरत करने लगे थे। 18 लेकिन समुएल जो लड़का था, कतान का अफूद पहने हुए खुदावन्द के सामने खिदमत करता था। 19 और

उस की माँ उस के लिए एक छोटा सा जुब्बा बनाकर साल ब साल लाती जब वह अपने शौहर के साथ सालाना कुर्बानी पेश करने आती थी। 20 और एस्टी ने इल्काना और उस की बीवी को दुआ दी और कहा, “खुदावन्द तुझको इस 'औरत से उस कर्ज के बदले में जो खुदावन्द को दिया गया नसल दे।” फिर वह अपने घर गये। 21 और खुदावन्द ने हन्ना पर नज़र की और वह हामिला हुई, और उसके तीन बेटे और दो बेटियाँ हुईं, और वह लड़का सम्पुल खुदावन्द के सामने बढ़ता गया। 22 एस्टी बहुत बुझा हो गया था, और उसने सब कुछ सुना कि उसके बेटे सारे इसाईल से क्या किया करते हैं और उन 'औरतों से जो खेमा — ए — इजितमा' अ के दरवाजे पर खिदमत करती थी हम आगोशी करते हैं। 23 और उस ने उन से कहा, तुम ऐसा क्यूँ करते हो? क्योंकि मैं तुम्हारी बदजातियाँ पूरी कौम से सुनता हूँ? 24 नहीं मेरे बेटों ये अच्छी बात नहीं जो मैं सुनता हूँ; तुम खुदावन्द के लोगों से नाफ़रमानी करते हो। 25 अगर एक आदमी दूसरे का गुनाह करे तो खुदा उसका इंसाफ करेगा लोकिन अगर आदमी खुदावन्द का गुनाह करे तो उस की शफा'अत कौन करेगा? बावजूद इसके उन्होंने अपने बाप का कहना न माना; क्यूँकि खुदावन्द उनको मार डालना चाहता था। 26 और वह लड़का सम्पुल बढ़ता गया और खुदावन्द और इंसान दोनों का मक्कबूल था। 27 तब एक नवी एस्टी के पास आया और उससे कहने लगा, खुदावन्द यूँ फरमाता है क्या मैं तेरे आबाई खानदान पर जब वह मिस्थ में फिर 'अौन के खानदान की गुलामी में था जाहिर नहीं हुआ? 28 और क्या मैंने उसे बनी इसाईल के सब कबीलों में से चुन न लिया, ताकि वह मेरा काहिन हो और मेरे मज़बह के पास जाकर खुशबू जलाये और मेरे सामने अफ़द पहने और क्या मैंने सब कुर्बानियाँ जो बनी इसाईल आग से अदा करते हैं तेरे बाप को न दी? 29 तब तुम क्यूँ मेरे उस कुर्बानी और हादिये को जिनका हुक्म मैंने अपने घर में दिया लात मारते हो? और क्यूँ तू अपने बेटों की मुझ से ज्यादा 'इज़ज़त करता है, ताकि तुम मेरी कौम इसाईल के अच्छे से अच्छे हादियों को खाकर मेरें बनो। 30 इसलिए खुदावन्द इसाईल का खुदा फरमाता है कि मैंने तो कहा, था कि तेरा घराना और तेरे बाप का घराना हमेशा मेरे सामने चलेगा लोकिन अब खुदावन्द फरमाता है कि यह बात अब मुझ से दूर हो, क्यूँकि वह जो मेरी 'इज़ज़त करते हैं मैं उन की 'इज़ज़त कस्तूँ लेकिन वह जो मेरी हिकारत करते हैं है बेकद होंगे। 31 देख वह दिन आते हैं कि मैं तेरा बाज़ू और तेरे बाप के घराने का बाज़ू काट डालूँगा, कि तेरे घर में कोई बुझा होने न पाएगा। 32 और तू मेरे घर की मुसीबित देखेगा बावजूद उस सारी दौलत के जो खुदा इसाईल को देगा और तेरे घर में कभी कोई बुझा होने न पाएगा। 33 और तेरे जिस आदमी को मैं अपने मज़बह से काट नहीं डालूँगा वह तेरी आँखों को घुलाने और तेरे दिल को दूख देने के लिए रहेगा और तेरे घर की सब बढ़ती अपनी भरी जवानी में मर मिटाए। 34 और जो कुछ तेरे दोनों बेटों हुफ़नी फीन्हास पर नाज़िल होगा वही तेरे लिए निशान ठहरेगा; वह दोनों एक ही दिन मर जाएँगे। 35 और मैं अपने लिए एक बफादार काहिन पैदा करूँगा जो सब कुछ मेरी मर्जी और मंशा के मुताबिक करेगा, और मैं उस के लिए एक पायदराघर बनाऊँगा और वह हमेशा मेरे मस्हू के आगे आगे चलेगा। 36 और ऐसा होगा की हर एक शख्स जो तेरे घर में बच रहेगा, एक टुकड़े चाँदी और रोटी के एक टुकड़े के लिए उस के सामने आकर सिज्दा करेगा और कहेगा, कि कहानत का कोई काम मुझे दीजिए ताकि मैं रोटी का निवाला खा सकूँ।

3 और वह लड़का सम्पुल एस्टी के सामने खुदावन्द की खिदमत करता था, और उन दिनों खुदावन्द का कलाम गिराँकूद था कोई ख्वाब जाहिर न होता था। 2 और उस बक्त ऐसा हुआ कि जब एस्टी अपनी जगह लेटा था उस की आँखें धून्दलाने लगी थीं, और वह देख नहीं सकता था। 3 और खुदा का चराग

अब तक बुझा नहीं था और सम्पुल खुदावन्द की हैकल में जहाँ खुदा का संदूक था लेटा हुआ था 4 तो खुदावन्द ने सम्पुल को पुकारा; उसने कहा, “मैं हाज़िर हूँ।” 5 और वह दौड़ कर एस्टी के पास गया और कहा, तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ “उसने कहा, मैंने नहीं पुकारा फिर लेट जा।” इसलिए वह जाकर लेट गया। 6 और खुदावन्द ने फिर पुकारा “सम्पुल” सम्पुल उठ कर एस्टी के पास गया और कहा, “तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ।” उसने कहा, “ऐ, मैं बेटे मैंने नहीं पुकारा; फिर लेट जा।” 7 और सम्पुल ने अभी खुदावन्द का नहीं पहचाना था और न खुदावन्द का कलाम उस पर जाहिर हुआ था। 8 फिर खुदावन्द ने तीसीरी दफा सम्पुल को पुकारा और वह उठ कर एस्टी के पास गया और कहा, तूने मुझे पुकारा इसलिए मैं हाज़िर हूँ “तब एस्टी जान गया कि खुदावन्द ने उस लड़के को पुकारा। 9 इसलिए एस्टी ने सम्पुल से कहा, जा लेट रह और अगर वह तुझे पुकारे तो तू कहना ऐ खुदावन्द फरमा; क्यूँकि तेरा बन्दा सुनता है।” तब सम्पुल जाकर अपनी जगह पर लेट गया 10 तब खुदावन्द आ मौजूद हुआ, और पहले की तरह पुकारा “सम्पुल! सम्पुल! सम्पुल ने कहा, फरमा, क्यूँकि तेरा बन्दा सुनता है।” 11 खुदावन्द ने सम्पुल से कहा, “देख मैं इसाईल में ऐसा काम करने पर हूँ जिस से हर सुनने वाले के कान भन्ना जाएँ। 12 उस दिन मैं एस्टी पर सब कुछ जो मैंने उस के घराने के हक्क में कहा है शुरू से अधिक तक पूरा करूँगा। 13 क्यूँकि मैं उसे बता चुका हूँ कि मैं उस बदकारी की बजह से जिसे वह जानत है हमेशा के लिए उसके घर का फैसला करूँगा क्यूँकि उसके बेटों ने अपने ऊपर लाए बुलाई और उसने उनको न रोका। 14 इसी लिए एस्टी के घराने के बारे में मैंने क्रसम खाइ कि एस्टी के बदकारी न तो कभी किसी जीवीहा से साफ होगी न हादिये से।” 15 और सम्पुल सुबह तक लेटा रहा; तब उसने खुदावन्द के घर के दरवाजे खोले और सम्पुल एस्टी पर ख्वाब जाहिर करने से डरा। 16 तब एस्टी ने सम्पुल को बुलाकर कहा, ऐ मेरे बेटे सम्पुल “उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ।” 17 तब उसने पूछा वह “क्या बात है जो खुदावन्द ने तुझ से कही है? मैं तेरी मिन्त करता हूँ उसे मुझ से पोशीदा न रख, अगर तू कुछ भी उन बातों में से जो उसने तुझ से कही है छिपाए तो खुदा तुझ से ऐसा ही करे बल्कि उससे भी ज्यादा।” 18 तब सम्पुल ने उसको पूरा हाल बताया और उससे कुछ न छिपाया, उसने कहा, “वह खुदावन्द है जो वह भला जाने वह करे।” 19 और सम्पुल बड़ा होता गया और खुदावन्द उसके साथ था और उसने उसकी बातों में से किसी को मिट्टी में मिलने न दिया। 20 और सब बनी इसाईल ने दान से बैरसबा' तक जान लिया कि सम्पुल खुदावन्द का नवी मुर्कर हुआ। 21 और खुदावन्द शीलोह में फिर जाहिर हुआ, क्यूँकि खुदावन्द ने अपने आप को सैला में सम्पुल पर अपने कलाम के ज़रिए से जाहिर किया।

4 और सम्पुल की बात सब इसाईलीयों के पास पहुँची, और इसाईलीयों से लड़ने को निकले और इबन-'अजर के आस पास डेरे लगाए और फिलिसियों ने लड़ने को निकले और इबन-'अजर के आस पास डेरे लगाए और फिलिसियों ने अपनी क्रम से खेमे खड़े किए। 2 और फिलिसियों ने इसाईल के मुकाबिले के लिए सफ आराई की और जब वह इकट्ठा लड़ने लगे तो इसाईलीयों ने फिलिसियों से शिकस्त खाई; और उन्होंने उनके लश्कर में से जो मैदान में था करीबन चार हजार आदमी कल्प किए। 3 और जब लोग लश्कर गाह में फिर आए तो इसाईल के बुज़र्गों ने कहा, “कि आज खुदावन्द ने हमको फिलिसियों के सामने क्यूँ शिकस्त दी आओ हम खुदावन्द के 'अहद का संदूक शीलोह से अपने पास ले आये ताकि वह हमारे बीच आकर हमको दूशमनों से बचाए।” 4 तब उन्होंने शीलोह में लोग भेजे, और वह कसबियों के ऊपर बैठने वाले रब्ब — उल — अफ़वाज के 'अहद के संदूक को वहाँ से ले आए और एस्टी के दोनों बेटे हुफ़नी और फीन्हास खुदा के 'अहद का संदूक के

साथ वहाँ हाजिर थे। 5 और जब खुदावन्द के 'अहट' का संदूक लशकर गाह में आ पहुँचा तो सब इसाईंली ऐसे जोर से ललकारने लगे, कि जमीन भूँज उठी। 6 और फिलिस्तियों ने जो ललकारने की आवाज सुनी तो वह कहने लगे, कि इन "इब्रानियों की लशकर गाह में इस बड़ी ललकार के शेर के क्या माना है?" फिर उनको मालूम हआ कि खुदावन्द का संदूक लशकर गाह में आया है। 7 तब फिलिस्ती डर गए क्योंकि वह कहने लगे, कि खुदा लशकर गाह में आया है और उन्होंने कहा, "कि हम पर बर्बादी है इस लिए कि इस से पहले ऐसा कभी नहीं हआ। 8 हम पर बर्बादी है, ऐसे जबरदस्त मालबों के हाथ से हमको कौन बचाएगा? यह वही मालूम है जिन्होंने मिसियों को वीराने में हर किस्म की बला से मारा। 9 ऐसे फिलिस्तियों तुम मजबूत हो और मर्दानगी करो ताकि तुम 'इब्रानियों के गुलाम न बनो जैसे वह तुम्हारे बने बल्कि मर्दानगी करो और लड़ो।" 10 और फिलिस्ती लड़े और बनी इसाईंल ने शिक्षत खाई और हर एक अपने डेरे को भागा, और वहाँ बहुत बड़ी खेंजी हई क्योंकि तीस हजार इसाईंली पियादे वहाँ मारे गए। 11 और खुदावन्द का संदूक छिन गया, और 'एली' के दोनों बेटे हुम्नी और फीन्हास मारे गये। 12 और बिनयमीन का एक आदमी लशकर में से टौड कर अपने कपड़े फाड़े और सर पर खाक डाले हए उसी दिन शीतोह में आ पहुँचा। 13 और जब वह पहुँचा तो एली रास्ते के किनारे कुर्सी पर बैठा इत्तिजार कर रहा था क्योंकि उसका दिल खुदा के संदूक के लिए कौपं रहा था और जब उस शख्स ने शहर में आकर हाल सुनाया, तो सारा शहर चिल्ला उठा। 14 और एली ने चिल्लाने की आवाज सुनकर कहा, इस हल्ललड की आवाज के क्या माने हैं "और उस आदमी ने जल्दी की और आकर एली को हाल सुनाया। 15 और एली अठानवे साल का था और उसकी आँखें रह गई थीं और उसे कुछ नहीं सज्जा था। 16 तब उस शख्स ने एली से कहा, ऐ फौज में से आता हूँ और मैं आज भी फौज के बीच से भागा हूँ, उसने कहा, ऐ मेरे बेटे क्या हाल रहा?" 17 उस खबर लाने वाले ने जबाब दिया "इसाईंली फिलिस्तियों के आगे से भागे और लोगों में भी बड़ी खेंजी हई और तेरे दोनों बेटे हुम्नी और फीन्हास भी मर गये और खुदा का संदूक छिन गया।" 18 जब उसने खुदा के संदूक का जिक्र किया तो वह कुर्सी पर से पछाड़ खाकर फाटक के किनारे गिरा, और उसकी गर्दन टूट गई और वह मर गया क्योंकि वह बूँदा और भारी आदमी था, वह चालीस बरस बनी इसाईंल का काजी रहा। 19 और उसकी बह, फीन्हास की बीवी हमल से थी, और उसके जनने का वक्त नज़दीक था और जब उसने यह खबरें सुनी कि खुदा का संदूक छिन गया और उसका ससुर और शौहर मर गये तो वह झुक कर जनी क्यूँकि दर्द ऐ ज़िंह उसके लग गया था। 20 और उसने उसके मरे वक्त उन 'अज़रों' ने जो उस के पास खड़ी थी उसे कहा, "मत डर क्यूँकि तेरे बेटा हआ है।" लेकिन उसने न जबाब दिया और न कुछ तवज्ज्ञ ही। 21 और उसने उस लड़के का नाम यक्कोद रथखा और कहने लगी, "कि हशमत इसाईंल से जाती रही।" इसलिए कि खुदा का संदूक छिन गया था, और उसका ससुर और शौहर जाते रहे थे। 22 इसलिए उसने कहा, "हशमत इसाईंल से जाती रही, क्यूँकि खुदा का संदूक छिन गया है।"

5 और फिलिस्तियों ने खुदा का संदूक छीन लिया और वह उसे इबन-'अज़र से अशदूद को ले गए; 2 और फिलिस्ती खुदा के संदूक को लेकर उसे दजोन के घर में लाए और दजोन के पास उसे रख्खा; 3 और अशदूदी जब सुबह को सवेरे उठे, तो देखा कि दजोन खुदावन्द के संदूक के आगे औंधे मुहँ ज़मीन पर गिरा पड़ा है। तब उन्होंने दजोन को लेकर उसी की जगह उसे फिर खड़ा कर दिया। 4 फिर वह जो दूसरे दिन की सबह को सवेरे उठे, तो देखा कि दजोन खुदावन्द के संदूक के आगे औंधे मुहँ ज़मीन पर गिरा पड़ा है, और दजोन का सर और उसकी हथेलियाँ दहलीज पर कटी पड़ी थीं, सिर्फ दजोन का

धड़ ही धड़ रह गया था; 5 तब दजोन के पुजारी और जितने दजोन के घर में आते हैं, आज तक अशदूद में दजोन की दहलीज पर पाँव नहीं रखते। 6 तब खुदावन्द का हाथ अशदूदीयों पर भारी हुआ, और वह उनको हलाक करने लगा, और अशदूद और उसकी 'इलाके के लोगों को गिलिटियों से मारा। 7 और अशदूदीयों ने जब यह हाल देखा तो कहने लगे, "कि इसाईंल के खुदा का संदूक हमारे साथ न रहे, क्यूँकि उसका हाथ बुरी तरह हम पर और हमारे मालूद दजोन पर है।" 8 तब उन्होंने फिलिस्तियों के सब सरदारों को बुलावा कर अपने यहाँ जामा किया और कहने लगे, "हम इसाईंल के खुदा के संदूक को क्या करें?" उन्होंने जबाब दिया, "कि इसाईंल के खुदा का संदूक जात को पहुँचाया जाए।" इसलिए वह इसाईंल के खुदा के संदूक को वहाँ ले गए। 9 और जब वह उसे ले गए तो ऐसा हुआ कि खुदावन्द का हाथ उस शहर के खिलाफ ऐसा उठा कि उस में बड़ी भारी हल चल मच गई, और उसने उस शहर के लोगों को छोड़े से बड़े तक मारा और उनके गिलिटियाँ निकलने लगी। 10 जब उन्होंने खुदा का संदूक 'अक्खन' को भेज दिया। और जैसे ही खुदा का संदूक अक्खन को पहुँचा, अक्खनी चिल्लाने लगे, "वह इसाईंल के खुदा का संदूक हम में इसलिए लाए हैं, कि हमको और हमारे लोगों को मरा डालें।" 11 तब उन्होंने फिलिस्तियों के सरदारों को बुलावा कर जामा किया और कहने लगे, "कि इसाईंल के खुदा के संदूक को रवाना कर दो कि वह फिर अपनी जगह पर जाए, और हमको और हमारे लोगों को मरा डालने न पाए।" क्यूँकि वहाँ सारे शहर में मौत की हलचल मच गई थी, और खुदा का हाथ वहाँ बहुत भारी हुआ। 12 और जो लोग मेरे नहीं वह गिलिटियों के मारे पड़े रहे, और शहर की फरियाद आसमान तक पहुँची।

6 इसलिए खुदावन्द का संदूक सात महीने तक फिलिस्तियों के मुल्क में रहा।

2 तब फिलिस्तियों ने काहिनों और नजूमियों को बुलावा और कहा, "कि हम खुदावन्द के इस संदूक को क्या करें? हमको बताओ कि हम क्या साथ कर के उसे उसकी जगह भेजें?" 3 उन्होंने कहा, "कि अगर तुम इसाईंल के खुदा के संदूक को वापस भेजते हो, तो उसे खाली न भेजना बल्कि जुर्म की कुर्बानी उसके लिए ज़सर ही साथ करना तब तुम शिका पाओगे और तुमको मालूम हो जाएगा कि वह तुम से किस लिए अलग नहीं होता।" 4 उन्होंने पूछा कि वह जुर्म की कुर्बानी जो हम उसको दें क्या हो उन्होंने जबाब दिया, "कि फिलिस्ती सरदारों के शमार के मुताबिक सोने की पाँच गिलिटियाँ और सोने ही की पाँच चुहियाँ क्यूँकि तुम सब और तुम्हारे सरदार दोनों एक ही दुख में मृत्युलिला हुए। 5 इसलिए तुम अपनी गिलिटियों की मूरतें और उन चूहियों की मूरतें, जो मुल्क को खराब करती हैं बनाओ और इसाईंल के खुदा की बडाई करो; शायद यूँ वह तुम पर से और तुम्हारे मालूदों पर से और तुम्हारे मुल्क पर से अपना हाथ हल्का कर ले। 6 तुम क्यूँ अपने दिल को सख्त करते हो, जैसे मिसियों ने और फिर? औन ने अपने दिल को सख्त किया? जब उसने उनके बीच 'अज़ीज़ी काम किए, तो क्या उन्होंने लोगों को जाने न दिया और क्या वह चले न गये? 7 अब तुम एक नया गाड़ी बनाओ, और दो दूध वाली गायों को जिनके ज़ुआ न लगा हो लो, और उन गायों को गाड़ी में जोतो और उनके बच्चों को घर लौटा लाओ। 8 और खुदावन्द का संदूक लेकर उस गाड़ी पर रखो, और सोने की चीज़ों को जिनको तुम जुर्म की कुर्बानी के तौर पर साथ करोगे एक सन्दर्भ में करके उसके पहलू में रख दो और उसे रखना न कर दो कि चला जाए। 9 और देखते रहना, अगर वह अपनी ही सरहद के रसेते बैत शम्स को जाए, तो उसी ने हम पर यह बलाए। 'अज़ीज़ी भेजी' और अगर नहीं तो हम जान लेंगे कि उसका हाथ हम पर नहीं चला, बल्कि यह हादसा जो हम पर हुआ इतिफ़ाकी था।" 10 तब उन लोगों ने ऐसा ही किया, और दो दूध वाली गायें लेकर उनको गाड़ी में जोता

और उनके बच्चों को घर में बन्द कर दिया। 11 और खुदावन्द के सन्दूक और सोने की चुहियों और अपनी गिलिटियों की मूर्तों के संदूक्चे को गाड़ी पर रख दिया। 12 उन गायों ने बैत शम्स का सीधा रास्ता लिया, वह सड़क ही सड़क डकारती गई, और दहने या बाँह हाथ न मुड़ी, और फिलिस्ती सरदार उनके पीछे — पीछे बैत शम्स की सरहद तक गये। 13 और बैत शम्स के लोग बादी में गेहूं की फसल काट रहे थे। उन्होंने जो आँख उठाई तो संदूक को देखा, और देखते ही खुश हो गए। 14 और गाड़ी बैत शम्सी यशों के खेत में आकर वहाँ खड़ी हो गई, जहाँ एक बड़ा पथर था। तब उन्होंने गाड़ी की लकड़ियों को चीरा और गायों को सोखतनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश किया। 15 और लाखियों ने खुदावन्द के संदूक को और उस संदूक्चे को जो उसके साथ था, जिसमें सोने की चीजें थीं, नीचे उतारा और उनको उस बड़े पथर पर रखबा। और बैत शम्स के लोगों ने उसी दिन खुदावन्द के लिए सोखतनी कुर्बानीयाँ पेश की और जबाइं पेश किए। 16 जब उन पाँचों फिलिस्ती सरदारों ने यह देख लिया तो वह उसी दिन अकस्तन को लौट गए। 17 सोने की गिलिटियाँ जो फिलिस्तियों ने जुर्म की कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द को पेश की वह यह है, एक अशूदू की तरफ से, एक गज्जा की तरफ से, एक अस्कलोन की तरफ से, एक अशदू की तरफ से, और एक अकस्तन की तरफ से। 18 और वह सोने की चुहियों फिलिस्तियों के उन पाँचों सरदारों के शहरों के शुमार के मुताबिक थीं, जो फसीलदार शहरों और दिहात के मालिक उस बड़े पथर तक थे जिस पर उन्होंने खुदावन्द के संदूक को रखाया था जो आज के दिन तक बैत शम्सी यशों के खेत में मौजूद है। 19 और उसने बैत शम्स के लोगों को मारा इस लिए कि उन्होंने खुदावन्द के संदूक के अंदर झाँका था तब उसने उनके पचास हजार और सत्तर आदमी मार डाले, और वहाँ के लोगों ने मातम किया, इसलिए कि खुदावन्द ने उन लोगों को बड़ी बवा से मारा। 20 तब बैत शम्स के लोग कहने लगे, “कि किसकी मजाल है कि इस खुदावन्द खुदा — ए — कुदूस के आगे खड़ा हो? और वह हमारे पास से किस की तरफ जाए?” 21 और उन्होंने क्रयत यारीम के बाशिदों के पास कासिद भेजे और कहला भेजा, कि फिलिस्ती खुदावन्द के संदूक को वापस ले आए हैं इसलिये तुम आओ और उसे अपने यहाँ ले जाओ।

7 तब क्रयत यारीम के लोग आए और खुदावन्द के संदूक को लेकर अबीनदाब के घर में जो टीले पर है, लाए, और उसके बेटे एलियाजर को पाक किया कि वह खुदावन्द के संदूक की निगरानी करे। 2 और जिस दिन से संदूक क्रयत यारीम में रहा, तब से एक मुहूर हो गई, यानी बीस बरस गुजरे और इसाईल का सारा घराना खुदावन्द के पीछे नौहा करता रहा। 3 और समुएल ने इसाईल के सारे घराने से कहा कि “अगर तुम अपने सारे दिल से खुदावन्द की तरफ फिरते हो तो गैर मांबूदों और इस्तारात को अपने बीच से दूर करो और खुदावन्द के लिए अपने दिलों को मुस्त”इद करके सिर्फ उसकी इबादत करो, और वह फिलिस्तियों के हाथ से तुमको रिहाई देगा।” 4 तब बनी इसाईल ने बा’लीम और इस्तारात को दूर किया, और सिर्फ खुदावन्द की इबादत करने लगे। 5 फिर समुएल ने कहा कि “सब इसाईल को मिस्फ़ाह में जमा” करो, और मैं तुम्हारे लिए खुदावन्द से दुआ करूँगा।” 6 तब वह सब मिस्फ़ाह में इकड़ा हुए और पानी भर कर खुदावन्द के आगे उँड़ा, और उस दिन रोजा रखबा और वहाँ कहने लगे, कि “हमने खुदावन्द का गुनाह किया है।” और समुएल मिस्फ़ाह में बनी इसाईल की ‘अदालत करता था। 7 और जब फिलिस्तियों ने सुना कि बनी इसाईल मिस्फ़ाह में इकड़े हुए हैं, तो उनके सरदारों ने बनी इसाईल पर हमला किया, और जब बनी — इसाईल ने यह सुना तो वह फिलिस्तियों से डेर। 8 और बनी — इसाईल ने समुएल से कहा, “खुदावन्द हमारे खुदा के

सामने हमारे लिए फरियाद करना न छोड़, ताकि वह हमको फिलिस्तियों के हाथ से बचाए।” 9 और समुएल ने एक दूध पीता बर्लि लिया और उसे पूरी सोखतनी कुर्बानी के तौर पर खुदावन्द के सामने पेश किया, और समुएल बनी — इसाईल के लिए खुदावन्द के सामने फरियाद करता रहा और खुदावन्द ने उस की सुनी। 10 और जिस बैत समुएल उस सोखतनी कुर्बानी को अदा कर रहा था उस बैत फिलिस्ती इसाईलियों से जंग करने को नज़दीक आए, लेकिन खुदावन्द फिलिस्तियों के उपर उसी दिन बड़ी कड़क के साथ गरजा और उनको घबरा दिया; और उन्होंने इसालियों के आगे शिक्षर खाई। 11 और इसाईल के लोगों ने मिस्फ़ाह से निकल कर फिलिस्तियों को दौड़ाया, और बैतकर्के के नीचे तक उन्हें मारते चले गए। 12 तब समुएल ने एक पथर ले कर उसे मिस्फ़ाह और शेन के बीच में खड़ा किया, और उसका नाम इबन-अज़र यह कहकर रखबा, “कि यहाँ तक खुदावन्द ने हमारी मटद की।” 13 इस लिए फिलिस्ती मालब हुए और इसाईल की सरहद में फिर न आए, और समुएल की जिन्दगी भर खुदावन्द का हाथ फिलिस्तियों के खिलाफ़ रहा। 14 और अकस्तन से जात तक के शहर जिनको फिलिस्तियों ने इसाईलियों से ले लिया था, वह फिर इसालियों के कब्जे में आए; और इसाईलियों ने उनकी इलाका भी फिलिस्तियों के हाथ से छुड़ा लिया और इसाईलियों और अमेरियों में सुलह थी। 15 और समुएल अपनी जिन्दगी भर इसाईलियों की ‘अदालत करता रहा। 16 और वह हर साल बैतएल और जिल्जाल और मिस्फ़ाह में टैरा करता, और उन सब मकामों में बनी — इसाईल की ‘अदालत करता था। 17 फिर वह रामा को लौट आता क्यूंकि वहाँ उसका घर था, और वहाँ इसाईल की ‘अदालत करता था, और वही उसने खुदावन्द के लिए एक मजबूत बनाया।

8 जब समुएल बुझा हो गया, तो उसने अपने बेटों को इसाईलियों के काजी ठहराया। 2 उसके पहलौठे का नाम याएल, और उसके दूसरे बेटे का नाम अवियाह था। वह दोनों बैरसबा के काजी थे। 3 लेकिन उसके बेटे उसकी रास्ते पर न चले, बल्कि वह नफ़ा के लालच से रिस्वत लेते और इन्साफ़ का खून कर देते थे। 4 तब सब इसाईली बुजुर्ग जमा होकर रामा में समुएल के पास आए। 5 और उससे कहने लगे “देख, तू जाईँ कहे, और तेरे बेटे तेरी राह पर नहीं चलते, अब तो किसी को हमारा बादशाह मुर्कर करदे, जो और कौमों की तरह हमारी ‘अदालत करे।’” 6 लेकिन जब उन्होंने कहा, कि हमको कोई बादशाह दे जो हमारी ‘अदालत करे, तो यह बात समुएल को बुरी लगी, और समुएल ने खुदावन्द से दुआ की। 7 और खुदावन्द ने समुएल से कहा, कि “जो कुछ यह लोग तुझ से कहते हैं, तू उसको मान रक्याकि उन्होंने तेरी नहीं बल्कि मेरी हिकारत की है कि मैं उनका बादशाह न रहूँ। 8 जैसे काम वह उस दिन से जब से मैं उनको मिस्फ़ाह से निकाल लाया आज तक करते आए हैं, कि मुझे छोड़ करके और मांबूदों की इबादत करते रहे हैं, वैसा ही बह तुझ से करते हैं। 9 इसलिए तू उसकी बात मान, तो यही तू संजीदगी से उनको खबर जाता दे और उनको बता भी दे, कि जो बादशाह उनपर हुक्मत करेगा उसका तरीका कैसा होगा।” 10 और समुएल ने उन लोगों को जो उससे बादशाह के तालिक थे, खुदावन्द की सब बातें कह दी हैं। 11 और उसने कहा, कि जो बादशाह तुम पर हुक्मत करेगा उसका तरीका यह होगा, कि वह तुम्हारे बेटों को लेकर अपने रथों के लिए और अपने रिसाले में नैकर रख खेगा और वह उसके रथों के आगे दौड़ेंगे। 12 और वह उनको हजार — हजार के संदरबार और चाप्चास के जमादार बनाया और कुछ से हल जुतवायेगा और फ़सल कटवायेगा और अपने लिए जंग के हथियार और अपने रथों के साज बनवायेगा। 13 और तुम्हारी बेटियों को लेकर गधिन और बावराचिन और नानबज़ बनाया। 14 और तुम्हारे खेतों और ताकिस्तानों और ज़ैतून के बागों को जो अच्छे से अच्छे

होंगे लेकर अपने खिदमत गारों को 'अता करेगा, 15 और तुम्हारे खेतों और ताकिस्तानों का दसवाँ हिस्सा लेकर अपने खोजों और खादिमों को देगा। 16 और तुम्हारे नौकर चाकरों और लौंडियों और तुम्हारे खुदासूरत जवानों और तुम्हारे गदहों को लेकर अपने काम पर लागाएगा। 17 और वह तुम्हारी भेड़ बकरियों का भी दसवाँ हिस्सा लेगा इस लिए तुम उसके शुलाम बन जाओगे।

18 और तुम उस दिन उस बादशाह की वजह से जिसे तुमने अपने लिए चुना होगा, फरियाद करोगे पर उस दिन खुदावन्द तुम को जवाब न देगा। 19 तो भी लोगों ने समुएल की बात न सुनी और कहने लगे, “नहीं हम तो बादशाह चाहते हैं जो हमारे ऊपर हो। 20 ताकि हम भी और सब कौमों की तरह हों और हमारा बादशाह हमारी 'अदालत' करे, और हमारे आगे चले और हमारी तरफ से लड़ाई करे।” 21 और समुएल ने लोगों की सब बातें सुनी और उनको खुदावन्द के कानों तक पहुँचाया। 22 और खुदावन्द ने समुएल को फरमाया तु उनकी बात मान और उनके लिए एक बादशाह मुकर्रर कर तब समुएल ने इसाईल के लोगों से कहा कि तुम सब अपने अपने शहर को चले जाओ।

9 और बिनयमीन के कबीले का एक शख्स था जिसका नाम कीस, बिन

अबीएल, बिन सरोर, बिन बकोरात, बिन अफीख था वह एक बिनयमीनी का बेटा और जबरदस्त सूमा था। 2 उसका एक जवाब और खुदासूरत बेटा था जिसका नाम साऊल था, और बनी — इसाईल के बीच उससे खुदासूरत कोई शख्स न था। वह ऐसा लम्बा था कि लोग उसके कंधे तक आते थे। 3 और साऊल के बाप कीस के गये खो गए, इसलिए कीस ने अपने बेटे साऊल से कहा, “कि नौकरों में से एक को अपने साथ ले और उठ कर गयों को ढूँढ़ ला।” 4 इसलिए वह इफाईम के पहाड़ी मुल्क और सलीमा की सर ज़मीन से होकर गुज़रा, लेकिन वह उनको न मिले। तब वह सालीमी की सर ज़मीन में गए और वह वहाँ भी न थे, फिर वह बिनयमीनी के मुल्क में आए लेकिन उनको वहाँ भी न पाया। 5 जब वह सूफ़ के मुल्क में पहुँचे तो साऊल अपने नौकर से जो उसके साथ था कहने लगा, “आ हम तौट जाँचु ऐसा न हो कि मेरा बाप गयों की फ़िक्र छोड़ कर हमारी फ़िक्र करने लगे।” 6 उसने उससे कहा, “देख इस शहर में खुदा एक नबी है जिसकी बड़ी इज़ज़त होती है, जो कुछ वह कहता है, वह सब ज़स्तर ही पूरा होता है। इसलिए हम उथा चलें, शायद वह हमको बता दे कि हम किधर जाएँ।” 7 साऊल ने अपने नौकर से कहा, “लेकिन देख अगर हम वहाँ चलें तो उस शख्स के लिए क्या लेते जाएँ? रोटियाँ तो हमारे तो शेशदान की हो चुकी और कई चीज़ हमारे पास है नहीं, जिसे हम उस नबी को पेश करें हमारे पास है किया?” 8 नौकर ने साऊल को जवाब दिया, “देख, पाव मिस्कात चाँदी मेरे पास है, उसी को मैं उस नबी को ढँगा ताकि वह हमको रास्ता बता दे।” 9 अगले ज़माने में इसाईलियों में जब कोई शख्स खुदा से मशवरा करने जाता तो यह कहता था, कि आओ, हम गैबीनी के पास चलें, क्यूँकि जिसको अब नबी कहते हैं, उसको पहले गैबीनी कहते थे। 10 तब साऊल ने अपने नौकर से कहा, तू ने क्या खुब कहा, आ हम चलें इस लिए वह उस शहर को जहाँ वह नहीं था चले। 11 और उस शहर की तरफ टीले पर चढ़ते हुए, उनको कई जवान लड़कियाँ मिलीं जो पानी भरने जाती थीं; उन्होंने उन से पूछा, “क्या गैबीनी यहाँ है?” 12 उन्होंने उनको जवाब दिया, “हाँ है, देखो वह तुम्हारे सामने ही है, इसलिए जलदी करो क्यूँकि वह आज ही शहर में आया है, इसलिए कि आज के दिन ऊँचे मकाम में लोगों की तरफ से कुर्बानी होती है।” 13 जैसे ही तुम शहर में दाखिल होगे, वह तुमको पहले उससे कि वह ऊँचे मकाम में खाना खाने जाए मिलेगा, क्यूँकि जब तक वह न पहुँचे लोग खाना नहीं खायेंगे, इसलिए कि वह कुर्बानी को बरकत देता है, उसके बाद मेहमान खाते हैं, इसलिए अब तुम चढ़ जाओ, क्यूँकि इस वक्त वह तुमको मिल

जाएगा।” 14 इसलिए वह शहर को चले और शहर में दाखिल होते ही देखा कि समुएल उनके सामने आ रहा है कि वह ऊँचे मकाम को जाए। 15 और खुदावन्द ने साऊल के आने से एक दिन पहले समुएल पर जाहिर कर दिया था कि 16 कल इसी वक्त मैं एक शख्स को बिन यमीन के मुल्क से तेरे पास भेज़ूँगा, तू उसे मसह करना ताकि वह मेरी कौम इसाईल का सरदार हो, और वह मेरे लोगों को फिलिसियों के हाथ से बचाएगा, क्यूँकि मैंने अपने लोगों पर नज़र की है, इसलिए कि उनकी फरियाद मेरे पास पहुँची है। 17 इसलिए जब समुएल साऊल से मिला, तो खुदावन्द ने उससे कहा, “देख यही वह शख्स है जिसका जिक्र मैंने तुझे से किया था, यही मेरे लोगों पर हुक्मत करेगा।” 18 फिर साऊल ने फाटक पर समुएल के नज़दीक जाकर उससे कहा, “कि मुझको जरा बता दे कि गैबीनी का घर कहा, है?” 19 समुएल ने साऊल को जवाब दिया कि वह गैबीनी मैं ही हूँ, मेरे आगे आगे ऊँचे मकाम को जा, क्यूँकि तुम आज के दिन मेरे साथ खाना खाओगे और सबह को मैं तुझे स्वस्त करूँगा, और जो कुछ तेरे दिल में है सब तुझे बता दूँगा। 20 और तेरे गधे जिनको खोए हुए तीन दिन हुए, उनका खाल मत कर, क्यूँकि वह मिल गए और इसाईलियों में जो कुछ दिलकश है वह किसके लिए है, क्या वह तेरे और तेरे बाप के सारे घराने के लिए नहीं? 21 साऊल ने जबाब दिया “क्या मैं बिन यमीनी, या नी इसाईल के सब से छोटे कबीले का नहीं? और क्या मेरा घराना बिन यमीन के कबीले के सब घरानों में सब से छोटा नहीं? इस लिए तू मुझ से ऐसी बातें क्यूँ कहता है?” 22 और समुएल साऊल और उसके नौकर को मेहमानखाने में लाया, और उनको मेहमानों के बीच जो कोई तीस आदमी थे सद जगह में बिठाया। 23 और समुएल ने बाबर्ची से कहा “कि वह टुकड़ा जो मैंने तुझे दिया, जिसके बारे में तुझे से कहा, था कि उसे अपने पास रख छोड़ना, लेआ।” 24 बाबर्ची ने वह रान मां अ उसके जो उसपर था, उठा कर साऊल के सामने रख दी, तब समुएल ने कहा, यह देख जो रख लिया गया था, उसे अपने सामने रख कर खा ले क्यूँकि वह इसी पूँ अय्यन वक्त के लिए, तैरे लिए रखखी रही क्यूँकि मैंने कहा कि मैंने इन लोगों की दावत की है “इस लिए साऊल ने उस दिन समुएल के साथ खाना खाया। 25 और जब वह ऊँचे मकाम से उतर कर शहर में आए तो उसने साऊल से उस के घर की छत पर बातें की 26 और वह सबैरे उठे, और ऐसा हुआ, कि जब दिन चढ़ने लगा, तो समुएल ने साऊल को फिर घर की छत पर बुलाकर उससे कहा, उठ कि मैं तुझे स्वस्त करूँ।” इस लिए साऊल उठा, और वह और समुएल दोनों बाहर निकल गए। 27 और शहर के सिरे के उतार पर चलते चलते समुएल ने साऊल से कहा कि अपने नौकर को हुक्म कर कि वह हम से आगे बढ़े, इसलिए वह आगे बढ़, गया, लेकिन तू अभी रहारा रह ताकि मैं तुझे खुदा की बात सुनाँ।

10 फिर समुएल ने तेते की कुपी ली और उसके सर पर उँड़ेती और उसे

चमा और कहा, कि क्या यही बात नहीं कि खुदावन्द ने तुझे मसह किया, ताकि तू उसकी मीरास का रहनुमा हो? 2 जब तू आज मेरे पास से चला जाएगा, तो जिल्जह में जो बिनयमीन की सरदार मैं हूँ, राखिल की कब्र के पास दो शख्स तुझे मिलेंगे, और वह तुझे से कहेंगे, कि वह गधे जिनको तू ढूँढ़ने गया था मिल गए, और देख अब तेरा बाप गयों की तरफ से बेफिक होकर तुम्हारे लिए फिल मंद है, और कहता है, कि मैं अपने बेटे के लिए क्या करूँ? 3 फिर वहाँ से आगे बढ़ कर जब तू तबू के बलूत के पास पहुँचेगा, तो वहाँ तीन शख्स जो बैताल को खुदा के पास जाते होंगे तुझे मिलेंगे, एक तो बकरी के तीन बच्चे, दूसरा रोटी के तीन टुकड़े, और तीसरा मय का एक मशकीजा लिए जाता होगा। 4 और वह तुझे सलाम करेंगे, और रोटी के दो टुकड़े तुझे देंगे, तू उनके हाथ से ले लेना। 5 और बाद उसके तू खुदा के पहाड़ को पहुँचेगा, जहाँ

फिलिस्तियों की चौकी है, और जब त वहाँ शहर में दाखिल होगा तो नवियों की एक जमा' अत जो ऊँचे मकाम से उत्तरी होगी, तज्जे मिलेगी, और उनके आगे सिंतार और दफ और बाँसुली और बरबत होंगे और वह नबुव्वत करते होंगे। 6 तब खुदावन्द की रुह तज्ज पर जोर से नाजिल होगी, और तू उनके साथ नबुव्वत करने लगेगा, और बदल कर और ही आदमी हो जाएगा। 7 इसलिए जब यह निशान तेरे आगे आँू, तो फिर जैसा मौका हो वैसा ही काम करना क्यूँकि खुदा तेरे साथ है। 8 और तु मुझ से पहले जिल्जाल को जाना; और देख मैं तेरे पास आँगा ताकि सोखनी कुर्बानियाँ करूँ और सलामती के जबींहों को जबह करूँ। 9 सात दिन तक वही रहना जब तक मैं तेरे पास आकर तुझे बता न दूँ कि तुझको क्या करना होगा। 10 और ऐसा हुआ कि जैसे ही उसने समुएल से स्वस्त होकर पीठ करी, खुदा ने उसे दूसरी तरह का दिल दिया और वह सब निशान उसी दिन बजूद में आए। 11 और जब वह उधर उस पहाड़ के पास आए तो नवियों की एक जमा' अत उसके मिली, और खुदा की रुह उस पर जोर से नाजिल हुई, और वह ही उनके बीच नबुव्वत करने लगा। 12 और ऐसा हुआ कि जब उसके आगे जान पहचाने ने यह देखा कि वह नवियों के बीच नबुव्वत कर रहा है तो वह एक दूसरे से कहने लगे, “कौंसे के बेटे को क्या हो गया? क्या साऊल भी नवियों में शामिल है?” 13 और वहाँ के एक आदमी ने जबाब दिया, कि भला उनका बाप कौन है? “तब ही से यह मिसाल चली, क्या साऊल भी नवियों में है?” 14 और जब वह नबुव्वत कर चुका तो ऊँचे मकाम में आया। 15 वहाँ साऊल के चचा ने उससे और उसके नौकर से कहा, “तुम कहाँ गए थे?” उसने कहा, “गधे हूँडने और जब हमने देखा कि वह नहीं मिलते, तो हम समुएल के पास आए।” 16 फिर साऊल के चचा ने कहा, “कि मुझको जरा बता तो सही कि समुएल ने तुम से क्या क्या कहा।” 17 और साऊल ने अपने चचा से कहा, उसने हमको साफ — साफ बता दिया, कि गधे मिल गए, लेकिन हुक्मत का मजमून जिसका ज़िक्र समुएल ने किया था न बताया। 18 और उसने बनी इस्माईल से कहा “कि खुदावन्द इस्माईल का खुदा यूँ फरमाता है कि मैं इस्माईल को मिस्र से निकाल लाया और मैंने तुमको मिस्रियों के हाथ से और सब सलतनतों के हाथ से जो तुम पर जुल्म करती थी रिहाई दी।” 19 लेकिन उसने आज अपने खुदा को जो तुम को तुम्हारी सब मसीबों और तकलीफों से रिहाई बछरी है, हकीकी जाना और उससे कहा, हमारे लिए एक बादशाह मुकर्रर कर, इसलिए अब तुम कबीला — कबीला होकर और हजार करके सब के सब खुदावन्द के सामने हाजिर हो।” 20 जब समुएल इस्माईल के सब कबीलों को नजदीक लाया, और पर्वी बिनयमीन के कबीले के नाम पर निकली। 21 तब वह बिनयमीन के कबीला को खानदान — खानदान करके नजदीक लाया, तो मतरियों के खानदान का नाम निकला और फिर कीस के बेटे साऊल का नाम निकला लेकिन जब उन्होंने उसे ढूँढ़ा, तो वह न मिला। 22 तब उन्होंने खुदावन्द से फिर पूछा, क्या यहाँ किसी और आदमी को भी आना है, खुदावन्द ने जबाब दिया, देखो वह असबाब के बीच छिप गया है। 23 तब वह देखे और उसको वहाँ से लाए, और जब वह लोगों के बीच खड़ा हुआ, तो ऐसा लम्बा था कि लोग उसके कंधे तक आते थे। 24 और समुएल ने उन लोगों से कहा तुम उसे देखते हो जिसे खुदावन्द ने चुन लिया, कि उसकी तरह सब लोगों में एक भी नहीं, तब सब लोग ललकार कर बोल उठे, “कि बादशाह जीता रहे।” 25 फिर समुएल ने लोगों को हुक्मत का तरीका बताया और उसे किंताब में लिख कर खुदावन्द के सामने रख दिया, उसके बाद समुएल ने सब लोगों को स्वस्त कर दिया, कि अपने अपने घर जाएँ। 26 और साऊल भी जिबा' को अपने घर गया, और लोगों का एक जत्था, भी जिनके दिल को खुदा ने उभारा था उसके साथ,

हो लिया। 27 लेकिन शरीरों में से कुछ कहने लगे, “कि यह शरूस हमको किस तरह बचाएगा?” इसलिए उन्होंने उसकी तहकीर की और उसके लिए नजराने न लाए तब वह अनसुनी कर गया।

11 तब अम्मी नाहस चढाई कर के यबीस जिला' आद के मुकाबिल खेमाजन हुआ; और यबीस के सब लोगों ने नाहस से कहा, हम से 'अहद — औ — पैमान कर ले, “और हम तेरी खिदमत करेंगे।” 2 तब अम्मी नाहस ने उनको जबाब दिया, “इस शर्त पर मैं तुम से 'अहद करूँगा, कि तुम सब की दहनी औंख निकाल डाली जाए और मैं इसे सब इस्माईलियों के लिए जिल्लत का निशान ठहराऊँ।” 3 तब यबीस के बुजुर्गों ने उस से कहा, “हमको सात दिन की मोहलत दे ताकि हम इस्माईल की सब सरहदों में कासिद भेजें, तब अगर हमारा हिमायती कोई न मिले तो हम तेरे पास निकल आँगें।” 4 और वह कासिद साऊल के जिबा' में आए और उन्होंने लोगों को यह बताए कह सुनाई और सब लोग चिल्ला चिल्ला कर रोने लगे। 5 और साऊल खेत से बैलों के पीछे पीछे चला आता था, और साऊल ने पछा, “कि इन लोगों को क्या हुआ, कि गेते हैं?” उन्होंने यबीस के लोगों की बातें उसे बताई। 6 जब साऊल ने यह बताए सुनी तो खुदा की स्वर उसपर जोर से नाजिल हुई, और उसका गुस्सा निहायत भड़का 7 तब उसने एक जोड़ी बैल लेकर उनको टकड़े — टकड़े काटा और कासिदों के हाथ इस्माईल की सब सरहदों में भेज दिया, और यह कहा कि “जो कोई आकर साऊल और समुएल के पीछे न हो ले, उसके बैलों से ऐसा ही किया जाएगा, और खुदावन्द का खौफ लोगों पर छा गया, और वह एक तन हो कर निकल आए।” 8 और उसने उनको बज़क में गिना, इसलिए बनी इस्माईल तीन लाख और यहदाह के आदमी तीस हजार थे। 9 और उन्होंने उन कासिदों से जो आँथे कहा कि तुम यबीस जिला' आद के लोगों से यूँ कहना कि कल धूप तेज होने के बज्जत तक तुम रिहाई पाओगे इस लिए कासिदों ने जाकर यबीस के लोगों को खबर दी और वह खुश हुए। 10 तब अहल — ए — यबीस ने कहा, कल हम तुम्हारे पास निकल आँगें, और जो कुछ तुमको अच्छा लगे, हमारे साथ करना।” 11 और दूसरी सुबह को साऊल ने लोगों के तीन गोल किए; और वह रात के पिछले पहर लश्कर में घूस कर 'अम्मीयों को कल्तव करने लगे, यहाँ तक कि दिन बहुत चढ़ गया, और जो बच निकले वह ऐसे तिर बिताए हो गए, कि दो आदमी भी कहीं एक साथ न रहे। 12 और लोग समुएल से कहने लगे “किसने यह कहा, था कि क्या साऊल हम पर हुक्मत करेगा? उन आदमियों को लाओ, ताकि हम उनको कल्तव करें।” 13 साऊल ने कहा “आज के दिन हरगिज कोई मारा नहीं जाएगा, इसलिए कि खुदावन्द ने इस्माईल को आज के दिन रिहाई दी है।” 14 तब समुएल ने लोगों से कहा, “आओ जिल्जाल को चलें ताकि वहाँ हुक्मत को नए सिरे से काईम करें।” 15 तब सब लोग जिल्जाल को गए, और वही उन्होंने खुदावन्द के सामने साऊल को बादशाह बनाया, फिर उन्होंने वहाँ खुदावन्द के आगे, सलामती के जबींहों जबह किए, और वही साऊल और सब इस्माईली मर्दों ने बड़ी खुशी मनाई।

12 तब समुएल ने सब इस्माईलियों से कहा, “देखो जो कुछ तुमने मुझ से कहा, मैंने तुम्हारी एक एक बात मानी और एक बादशाह तुम्हारे ऊपर ठहराया है। 2 और अब देखो यह बादशाह तुम्हारे आगे आगे चलता है, मैं तो बुझा हूँ और मेरा सिर सफेद हो गया और देखो मेरे बेटे तुम्हारे साथ हैं, मैं लड़कपन से आज तक तुम्हारे सामने ही चलता रहा हूँ। 3 मैं हाजिर हूँ, इसलिए तुम खुदावन्द और उसके मम्हूक के आगे मेरे मुँह पर बताओ, कि मैंने किसका बैल से लिया या किसका गधा तिया? मैंने किसका हक मारा या किस पर जुल्म किया, या किस के हाथ से मैंने रिश्वत ली, ताकि अंधा बनजाऊँ? बताओ और

यह मैं तुमको बापस कर दूँगा।” 4 उन्होंने जवाब दिया “तू ते हमारा हक्क नहीं मारा और न हम पर जुल्म किया, और न तुमे किसी के हाथ से कुछ लिया।” 5 तब उसने उनसे कहा, कि खुदावन्द तुम्हारा गवाह, और उसका मम्हार आज के दिन गवाह है, “कि मेरे पास तुम्हारा कुछ नहीं निकला।” उन्होंने कहा, “वह गवाह है।” 6 फिर सम्पुल्त लोगों से कहने लगा, वह खुदावन्द ही है जिसने मूसा और हास्तन को मुकर्रर किया, और तुम्हारे बाप दादा को मुल्क मिस से निकाल लाया। 7 इस लिए अब ठहरे रहे ताकि मैं खुदावन्द के सामने उन सब नेकियों के बारे में जो खुदावन्द ने तुम से और तुम्हारे बाप दादा से की बातें कहने। 8 जब याकूब मिस में गया, और तुम्हारे बाप दादा ने खुदावन्द से फरियाद की तो खुदावन्द ने मूसा और हास्तन को भेजा, जिन्होंने तुम्हारे बाप दादा को मिस से निकाल कर इस जगह बसाया। 9 लेकिन वह खुदावन्द अपने खुदा को भूल गए, तब उसने उनको हसर की फौज के सिपह सालार सीसारा के हाथ और फिलिस्तियों के हाथ और शाह — ए — मोआब के हाथ बेच डाला, और वह उनसे लड़े। 10 फिर उन्होंने खुदावन्द से फरियाद की और कहा कि हमने गुनाह किया, इसलिए कि हमने खुदावन्द को छोड़ा, और बालीम और इस्तारात की इबादत की लेकिन अब तुमको हमारे दुश्मनों के हाथ, से छुड़ा, तो हम तेरी इबादत करेंगे। 11 इस लिए खुदावन्द ने यस्ब्लाल और बिदान और इस्ताह और सम्पुल को भेजा और तुम को तुम्हारे दुश्मनों के हाथ से जो तुम्हारी चारों तरफ थे, रिहाई दी और तुम चैन से रहने लगे। 12 और जब तुमने देखा कि बनी अम्मून का बादशाह नाहस तुम पर चढ़ आया, तो तुमने मुझ से कहा कि हम पर कोई बादशाह हक्कमत करे हाताँकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा तुम्हारा बादशाह था। 13 इसलिए अब उस बादशाह को देखो जिसे तुमने चुन लिया, और जिसके लिए तुमने दरखास्त की थी, देखो खुदावन्द ने तुम पर बादशाह मुकर्रर कर दिया है। 14 अगर तुम खुदावन्द से डरते और उसकी इबादत करते और उस की बात मानते रहो, और खुदावन्द के हृक्म से सरकशी न करो और तुम और वह बादशाह भी जो तुम पर हक्कमत करता है खुदावन्द अपने खुदा के पैरों बने रहे तो भला; 15 लेकिन अगर तुम खुदावन्द की बात न मानों बल्कि खुदावन्द के हृक्म से सरकशी करो तो खुदावन्द का हाथ तुम्हारे खिलाफ होगा, जैसे वह तुम्हारे बाप दादा के खिलाफ होता था। 16 इसलिए अब तुम ठहरे रहो और इस बड़े काम को देखो जिसे खुदावन्द तुम्हारी आँखों के सामने करेगा। 17 क्या आज गेहूँ काटने का दिन नहीं मैं खुदावन्द से दरखास्त करँगा, कि बादल गरजे और पानी बरसे, और तुम जान लोगे, और देख भी लोगे कि तुमने खुदावन्द के सामने अपने लिए बादशाह माँगने से कितनी बड़ी शरारत की। 18 चुनौती सम्पुल ने खुदावन्द से दरखास्त की और खुदावन्द की तरफ से उसी दिन बादल गरजा और पानी बरसा; तब सब लोग खुदावन्द और सम्पुल से निहायत डर गए। 19 और सब लोगों ने सम्पुल से कहा, कि अपने खातिरों के लिए खुदावन्द अपने खुदा से द्रुआ कर कि हम मर न जाएँ क्यूँकि हमने अपने सब गुनाहों पर यह शरारत भी बढ़ा दी है कि अपने लिए एक बादशाह माँगा। 20 सम्पुल ने लोगों से कहा, “खौफ न करो, यह सब शरारत तो तुमने की है तो भी खुदावन्द की पैरवी से किनारा कशी न करो बल्कि अपने सारे दिल से खुदावन्द की इबादत करो। 21 तुम किनारा कशी न करना, बरना बातिल चीजों की पैरवी करने लगोगे जो न फायदा पहुँचा सकती न रिहाई दे सकती है, इसलिए कि वह सब बातिल हैं। 22 क्यूँकि खुदावन्द अपने बड़े नाम के जरिए अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा, इस लिए कि खुदावन्द को यहीं पसंद आया कि तुम को अपनी क्रौम बनाए। 23 अब रहा मैं इसलिए खुदा न करे कि तुम्हारे लिए द्रुआ करने से बाज आकर खुदावन्द का गुनहगार ठहरू, बल्कि मैं वही रास्ता जो अच्छा और सीधा है, तुमको बताऊँगा। 24 सिर्फ इतना हो कि तुम

खुदावन्द से डरो, और अपने सारे दिल और सच्चाई से उसकी इबादत करो क्यूँकि सोचो कि उसने तुम्हारे लिए कैसे बड़े काम किए हैं। 25 लेकिन अगर तुम अब भी शरारत ही करते जाओ, तो तुम और तुम्हारा बादशाह दोनों के दोनों मिटा दिए जाओगे।”

13 साऊल तीस बरस की उम्र में हक्कमत करने लगा, और इस्माईल पर दो

बरस हक्कमत कर चका। 2 तो साऊल ने तीन हजार इस्माईली जबान अपने लिए चुरे, उनमें से दो हजार मिक्मास में और बैत — एल के पहाड़ पर साऊल के साथ और एक हजार बिनयमीन के जिबा में यूनतन के साथ रहे और बाकी लोगों को उसने स्थूलत किया, कि अपने अपने डेरों को जाएँ। 3 और यूनतन ने फिलिस्तियों की चौकी के सिपाहियों को जो जिबा में थे कत्ल कर डाला और फिलिस्तियों ने यह सुना, और साऊल ने सारे मूल्क में नारसिंग फुकवा कर कहला भेजा कि ‘इब्रानी लोग सुने। 4 और सारे इस्माईल ने यह कहते सुना, कि साऊल ने फिलिस्तियों की चौकी के सिपाही मार डाले और यह भी कि इस्माईल से फिलिस्तियों को नफरत हो गई है, तब लोग साऊल के पीछे चल कर जिल्जाल में जमा हो गए। 5 और फिलिस्ती इस्माईलियों से लड़ने को इकट्ठे हुए यानी तीस हजार रथ और छः हजार सवार और एक बड़ा पिरोह जैसे समन्दर के किनारे की रेत। इसलिए वह चढ़ आए और मिक्मास में बैतआवन के पूर्ब की तरफ खेमाजन हुए। 6 जब बनी इस्माईल ने देखा, कि वह आकृत में मुन्तिला हो गए, क्यूँकि लोग परेशान थे, तो वह गारों और झाड़ियों और चट्ठानों और गढ़ों और गढ़ों में जा छिपे। 7 और कुछ ‘इब्रानी यरदन के पार जड़ और जिल्लात आद के ‘इलाके को चले गए तो लेकिन साऊल जिल्जाल ही में रहा, और सब लोग काँपते हुए उसके पीछे पीछे रहे। 8 और वह वहाँ सांत दिन सम्पुल के मुकर्रर बवत के मुताबिक ठहरा रहा, लेकिन सम्पुल जिल्जाल में न आया, और लोग उसके पास से इधर उधर हो गए। 9 तब साऊल ने कहा, सोखतनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानियों को मेरे पास लाओ, तब उसने सोखतनी कुर्बानी अदा की। 10 और जैसे ही वह सोखतनी कुर्बानी अदा कर चुका तो क्या, देखता है, कि सम्पुल ए पहुँचा और साऊल उसके इस्तकबाल को निकला ताकि उसे सलाम करे। 11 सम्पुल ने पूछा, “कि तूने क्या किया?” साऊल ने जवाब दिया “कि जब मैंने देखा कि लोग मेरे पास से इधर उधर हो गए, और तू ठहराएँ हुए दिनों के अन्दर नहीं आया, और फिलिस्ती मिक्मास में जमा हो गए हैं। 12 तो मैंने सोंचा कि फिलिस्ती जिल्जाल में मुझ पर आ पड़ेंगे, और मैंने खुदावन्द के करम के लिए अब तक दुआ भी नहीं की है, इस लिए मैंने मजबूर होकर सोखतनी कुर्बानी अदा की।” 13 सम्पुल ने साऊल से कहा, “तूने बेवकूफी की, तूने खुदावन्द अपने खुदा के हृक्म को जो उसने तुझे दिया, नहीं माना वर्ना खुदावन्द तेरी बादशाहत बनी इस्माईल में हमेशा तक काईम रखता। 14 लेकिन अब तेरी हक्कमत काईम न रहेगी क्यूँकि खुदावन्द ने एक शख्स को जो उसके दिल के मुताबिक है, तलाश कर लिया है और खुदावन्द ने उसे अपनी क्रौम का सरदार ठहराया है, इसलिए कि तूने वह बात नहीं मानी जिसका हृक्म खुदावन्द ने तुझे दिया था।” 15 और सम्पुल उठकर जिल्जाल से बिनयमीन के जिबा को गया तब साऊल ने उन लोगों को जो उसके साथ हाजिर थे, पिना और वह करीबन छः सौ थे 16 और साऊल और उसका बेटा यूनतन और उनके साथ के लोग बिनयमीन के जिबा में रहे, लेकिन फिलिस्ती मिक्मास में खेमाजन थे। 17 और गार गराय फिलिस्तियों के लेशकर में से तीन गोल होकर निकले एक गोल तो सुआल के ‘इलाके को उफरह के रास्ते से गया। 18 और दूसरे गोल ने बैतहोस्तन की राह ली और तीसरे गोल ने उस सरहद की राह ली जिसका स्व वाटी — ए — जुब्रैम की तरफ जंगल के सामने है। 19 और इस्माईल के सारे मूल्क में कहीं लुहर नहीं मिलता था क्यूँकि

फिलिस्तियों ने कहा था कि, 'इंड्रानी लोग अपने लिए तलवारें और भाले न बनाने पाएँ। 20 इसलिए सब इमाईंली अपनी अपनी काली और भाले और कल्हाड़ी और कुदाल को तेज़ करने के लिए फिलिस्तियों के पास जाते थे। 21 लेकिन कुदालों और फालियों और कॉटी और कुल्हाड़ों के लिए, और पैनों को दस्त करने के लिए, वह रेती रखते थे। 22 इस लिए लडाई के दिन साऊल और यूनतन के साथ के लोगों में से किसी के हाथ में न तो तलवार थी न भाला, लेकिन साऊल और उसके बेटे यूनतन के पास तो यह थे। 23 और फिलिस्तियों की चौकी के सिपाही, निकल कर मिक्मास की घाटी को गए।

14 और एक दिन ऐसा हुआ, कि साऊल के बेटे यूनतन ने उस जवान से जो

उसका सिलाह बरदार था कहा कि आ हम फिलिस्तियों की चौकी को जो उस तरफ है चलें, पर उसने अपने बाप को न बताया। 2 और साऊल जिबा के निकास पर उस अनार के दरखत के नीचे जो मजस्न में है मुकीम था, और करीबन छ़: सौ आदमी उसके साथ थे। 3 और अखियाह बिन अखीतोब जो यकबोद बिन फीन्हास बिन 'एली का भाई और शीलोह में खुदावन्द का काहिन था अफूट पहने हुए था और लोगों को खबर न थी कि यूनतन चला गया है। 4 और उन की घाटियों के बीच जिन से होकर यूनतन के फिलिस्तियों की चौकी को जाना चाहता था एक तरफ एक बड़ी नुकीली चट्ठान थी और दूसरी तरफ भी एक बड़ी नुकीली चट्ठान थी, एक का नाम बुसीस था दूसरी का सना। 5 एक तो शिमाल की तरफ मिक्मास के मुकाबिल और दूसरी जुनब की तरफ जिबा के मुकाबिल थी। 6 इसलिए यूनतन ने उस जवान से जो उसका सिलाह बरदार था, कहा, "आ हम उधर उन नामजूदों की चौकी को चलें — मुस्किन है, कि खुदावन्द हमारा काम बना दे, क्यूंकि खुदावन्द के लिए बहुत सरे या थोड़ों के ज़रिए़ से बचाने की कैद नहीं।" 7 उसके सिलाह बरदार ने उससे कहा, "जो कछुरे रेते दिल में है इसलिए कर और उधर चल मैं तो तेरी मर्जी के मुताबिक रेते साथ हूँ।" 8 तब यूनतन ने कहा, "देख हम उन लोगों के पास इस तरफ जाएँ, और अपने को उनको दिखाएँ।" 9 अगर वह हम से यह कहें, कि हमारे अपने तक ठहरो, तो हम अपनी जगह चुप चाप छेड़े रहेंगे और उनके पास नहीं जाएँगे। 10 लेकिन अगर वह यूँ कहें, कि हमारे पास तो आओ, तो हम चढ़ जाएँगे, क्यूंकि खुदावन्द ने उनको हमारे कब्जे में कर दिया, और वह हमारे लिए निशान होगा।" 11 फिर इन दोनों ने अपने आप को फिलिस्तियों की चौकी के सिपाहियों को दिखाया, और फिलिस्ती कहने लगे, "देखो ये 'इंड्रानी उन सुराखों में से जहाँ वह छिप गए थे, बाहर निकले आते हैं।" 12 और चौकी के सिपाहियों ने यूनतन और उसके सिलाह बरदार से कहा, "हमारे पास आओ, तो सही, हम तुमको एक चीज़ दिखाएँ।" इसलिए यूनतन ने अपने सिलाह बरदार से कहा, "अब मेरे पीछे पीछे चढ़ा, चला आ, क्यूंकि खुदावन्द ने उनको इमाईंल के कब्जे में कर दिया है।" 13 और यूनतन अपने हाथों और पांव के बल चढ़ गया, और उसके पीछे पीछे उसका सिलाह बरदार था, और वह यूनतन के सामने गिरते गए और उसका सिलाह बरदार उसके पीछे पीछे उनको कल्पन करता गया। 14 यह पहली खेरेजी जो यूनतन और उसके सिलाह बरदार ने की करीबन बीस आदमियों की थी जो कोई एक बीधा जमीन की रेखाई में मारे गए। 15 तब साऊल और मैदान और सब लोगों में लरजिश हुई और चौकी के सिपाही, और गारतगर भी काँप गए, और जलजला आया इसलिए मिहायत तेज़ कपकपी हुई। 16 और साऊल के निगबानों ने जो बिनयमीन के जिबा' में थे नज़र की और देखा कि भीड़ घटती जाती है और लोग इधर उधर जा रहे हैं। 17 तब साऊल ने उन लोगों से जो उसके साथ थे, कहा, "गिनती करके देखो, कि हम में से कौन चला गया है," इसलिए उन्होंने शुमार किया तो देखो, यूनतन और उसका सिलाह बरदार गायब थे। 18 और साऊल ने अखियाह से कहा,

"खुदा का संदूक यहाँ ला।" क्यूंकि खुदा का संदूक उस बक्त बनी इमाईंल के साथ वही था। 19 और जब साऊल काहिन से बातें कर रहा था तो फिलिस्तियों की लशकर गाह, में जो हलचल मच गई थी वह और ज्यादा हो गई तब साऊल ने काहिन से कहा कि "अपना हाथ खीच ले।" 20 और साऊल और सब लोग जो उसके साथ थे, एक जगह जमा' हो गए, और लड़ने को आए और देखा कि हर एक की तलवार अपने ही साथी पर चल रही है, और सब तहलका मचा हुआ है। 21 और वह 'इंड्रानी भी जो घले की तरह फिलिस्तियों के साथ थे और चारों तरफ से उनके साथ लशकर में आए थे फिर कर उन इमाईंलियों से मिल गए जो साऊल और यूनतन के साथ थे। 22 इसी तरह उन सब इमाईंली मर्दों ने भी जो इफाईम के पहाड़ी मूलक में छिप गए थे, यह सुन कर कि फिलिस्ती भागे जाते हैं, लडाई में आ उनका पीछा किया। 23 तब खुदावन्द ने उस दिन इमाईंलियों को रहिएँ दी और लडाई बैत आवन के उस पार तक पहुँची। 24 और इमाईंली मर्द उस दिन बड़े पेरेशन थे, क्यूंकि साऊल ने लोगों को कसम देकर यूँ कहा, था कि जब तक शाम न हो और मैं अपने दुश्मनों से बदला न ले तूँ उस बक्त तक अगर कोई कुछ खाए तो वह लान्ती हो। इस बजाए दे उन लोगों में से किसी ने खाना चाहा तक न था। 25 और सब लोग जंगल में जा पहुँचे और वहाँ जमीन पर शहद था। 26 और जब यह लोग उस जंगल में पहुँच गए तो देखा कि शहद टपक रहा है तो भी कोई अपना हाथ अपने मूँह तक नहीं ले गया इसलिए कि उनको कसम का खौफ था। 27 लेकिन यूनतन ने अपने बाप को उन लोगों को कसम देते नहीं सुना था, इसलिए उसने अपने हाथ की लाठी के सिरे को शहद के छते में भोका और अपना हाथ अपने मूँह से लगा लिया और उसकी आँखों में रोशनी आई। 28 तब उन लोगों में से एक ने उससे कहा, तेरे बाप ने लोगों को कसम देकर सखल ताकीद की थी, और कहा था "कि जो शख्स आज के दिन कुछ खाना खाए, वह लान्ती हो और लोग बेदम से हो रहे थे।" 29 तब यूनतन ने कहा कि मेरे बाप ने मूलक को दुख दिया है, देखो मेरी आँखों में जरा सा शहद चखने की बजह से कैसी रोशनी आई। 30 कितना ज्यादा अच्छा होता अगर सब लोग दुश्मन की लूट में से जो उनको मिली दिल खोल कर खाते क्यूंकि अभी तो फिलिस्तियों में कोई बड़ी खेरेजी भी नहीं हुई है। 31 और उन्होंने उस दिन मिक्मास से अय्यालोन तक फिलिस्तियों को मारा और लोग बहुत ही बे दम हो गए। 32 इसलिए वह लोग लूट पर गिरे और भेड़ बकरियों और बैलों और बछड़ों को लेकर उनको जमीन पर जबह, किया और खन समेत खाने लगे। 33 तब उन्होंने साऊल को खबर दी कि देख लोग खुदावन्द का गुनाह करते हैं कि खन समेत खा रहे हैं। उसने कहा, तुम ने बेर्मानी की, इसलिए एक बड़ा पत्थर आज मेरे सामने ढलका लाओ। 34 फिर साऊल ने कहा कि लोगों के बीच इधर उधर जाकर उन से कहो कि हर शख्स अपना बैल और अपनी भेड़ यहाँ मेरे पास लाए और यही, जबह करे और खाए और खन समेत खाकर खुदा का गुनहगार न बने। चूँचे उस रात लोगों में से हर शख्स अपना बैल वही लाया और वही जबह किया। 35 और साऊल ने खुदावन्द के लिए एक मजबह बनाया, यह पहला मजबह है, जो उन्होंने खुदावन्द के लिए बनाया। 36 फिर साऊल ने कहा, "आओ, रात ही को फिलिस्तियों का पीछा करें और पौ फटने तक उनको लूटे और उन में से एक आदमी को भी न छोड़ें।" उन्होंने कहा, "जो कुछ तुझे अच्छा लगे वह कर तब काहिन ने कहा, कि आओ, हम यहाँ खुदा के नज़दीक हाजिर हों।" 37 और साऊल ने खुदा से सलाह ली, कि क्या मैं फिलिस्तियों का पीछा करूँ? क्या तू उनको इमाईंल के हाथ में कर देगा। तो भी उसने उस दिन उसे कुछ जवाब न दिया। 38 तब साऊल ने कहा कि तुम सब जो लोगों के सरदार हो यहाँ, नज़दीक आओ, और तहकीक करो और देखो कि आज के दिन गुनाह क्यूंकर

हुआ है। 39 क्यूंकि खुदावन्द की हयात की कसम जो इसाईल को रिहाई देता है अगर वह मेरे बेटे यूनत ही का गुनाह हो, वह जस्तर मारा जाएगा, लेकिन उन सब लोगों में से किसी आदमी ने उसको जबाब न दिया। 40 तब उस ने सब इसाईलियों से कहा, “उम सब के सब एक तरफ हो जाओ, और मैं और मेरा बेटा यूनतन दूसरी तरफ हो जायेंगे।” लोगों ने साऊल से कहा, “जो तु मुनासिब जाने वह कर।” 41 तब साऊल ने खुदावन्द इसाईल के खुदा से कहा, “हक को जाहिर कर दे,” इसलिए पर्ची यूनतन और साऊल के नाम पर निकली, और लोग बच गए। 42 तब साऊल ने कहा कि “मेरे और मेरे बेटे यूनतन के नाम पर पर्ची डालो, तब यूनतन पकड़ा गया।” 43 और साऊल ने यूनतन से कहा, “मुझे बता कि तुमें क्या किया है?” यूनतन ने उसे बताया कि “मैंने बेशक अपने हाथ की लाठी के सिरे से जरा सा शहद चखवा था इसलिए देख मुझे मरना होगा।” 44 साऊल ने कहा, “खुदा ऐसा ही बल्कि इससे भी ज्यादा करो क्यूंकि ऐ यूनतन तु जस्तर मारा जाएगा।” 45 तब लोगों ने साऊल से कहा, “क्या यूनतन मारा जाए, जिसने इसाईल को ऐसा बड़ा छुटकारा दिया है ऐसा न होगा, खुदावन्द की हयात की कसम है कि उसके सर का एक बाल भी ज़मीन पर गिरने नहीं पाएगा क्यूंकि उसने आज खुदा के साथ हो कर काम किया है।” इसलिए लोगों ने यूनतन को बचा लिया और वह मारा न गया। 46 और साऊल फिलिसियों का पीछा छोड़ कर लौट गया और फिलिस्ती अपने मकाम को छले गए। 47 जब साऊल बनी इसाईल पर बादशाहत करने लगा, तो वह हर तरफ अपने दुश्मनों याँनी मोआब और बनी 'अम्मून और अदोम और ज़ोबाह के बादशाहों और फिलिसियों से लड़ा और वह जिस जिस तरफ फिरता उनका बुरा हाल करता था। 48 और उसने बहादुरी करके अमालीकियों को मारा, और इसाईलियों को उनके हाथ से छुड़ाया जो उनको लूटते थे। 49 साऊल के बेटे यूनतन और इसवी और मलकीश अथे; और उसकी दोनों बेटियों के नाम यह थे, बड़ी का नाम मेरब और छोटी का नाम मीकल था। 50 और साऊल कि बीती का नाम अदीनु अम था जो अर्खीमा जी की बेटी थी, और उसकी फैज़ के सरदार का नाम अबनेर था, जो साऊल के चचा नेर का बेटा था। 51 और साऊल के बाप का नाम क्रीस था और अबनेर का बाप नेर अबीएल का बेटा था। 52 और साऊल की जिन्दगी भर फिलिसियों से सखल जंग रही, इसलिए जब साऊल किसी ताकतवर मर्द या सूरमा को देखता था तो उसे अपने पास रख लेता था।

15 और समुएल ने साऊल से कहा कि “खुदावन्द ने मुझे भेजा है कि मैं दूसरे मसह करूँ ताकि तू उसकी कौम इसाईल का बादशाह हो, इसलिए अब तू खुदावन्द की बातें सुन। 2 रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि मुझे इसका ख्याल है कि 'अमालीक' ने इसाईल से क्या किया और जब यह मिस्र से निकल आए तो वह रास्ते में उनका मुखालिक हो कर आया। 3 इस लिए अब तु जा और 'अमालीक' को मार और जो कुछ उनका है, सब को बिलकुल मिटा दे, और उनपर रहम मत कर बल्कि मर्द और 'औतन नहे, बच्चे और दूध पीति, गाय बैल और भेड़ बकरियाँ, उंट और गधे सब को कल्पन कर डाल।'” 4 चुनौंचे साऊल ने लोगों को जमा किया और तलाइम में उनको गिना; इस लिए वह दो लाख पियादे, और यहदाह के दस हजार जवान थे। 5 और साऊल 'अमालीक' के शहर को आया और वाटी के बीच घात लगा कर बैठा। 6 और साऊल ने कीनियों से कहा कि तुम चल दो 'अमालीकियों' के बीच से निकल जाओ, ऐसा न हो कि मैं तुमको उनके साथ हलाक कर डालूँ इसलिए कि तुम सब इसाईलियों से जब वह मिस्र से निकल आए महेरबानी के साथ पेश आए। इसलिए कीनी अमालीकियों में से निकल गए। 7 और साऊल ने 'अमालीकियों' को हवीला से शोर तक जो मिस्र के सामने है मारा। 8 और 'अमालीकियों' के

बादशाह अजाज को जीता पकड़ा और सब लोगों को तलवार की धार से मिटा दिया। 9 लेकिन साऊल ने और उन लोगों ने अजाज को और अच्छी अच्छी भेड़ बकरियों गाय — बैलों और मोटे मोटे बच्चों और बर्बेर को और जो कुछ अच्छा था उसे जीता रखवा और उनको बरबाद करना न चाहा लेकिन उन्होंने हर एक चीज़ को जो नाकिस और निकमी थी बरबाद कर दिया। 10 तब खुदावन्द का कलाम समुएल को पहुँचा कि 11 मुझे अफसोस है कि मैंने साऊल को बादशाह होने के लिए मुकर्रर किया है, क्यूंकि वह मेरी पैरवी से फिर गया है, और उसने मेरे हक्म नहीं माने, तब समुएल का गुस्सा भड़का और वह सारी रात खुदावन्द से फरियाद करता रहा। 12 और समुएल सवैरे उठा कि सुबह को साऊल से मुलाकात करे, और समुएल को खबर मिली, कि साऊल करमिल को आया था, और अपने लिए लाट खड़ी की और फिर गुजरता हुआ जिल्जाल को चला गया है। 13 फिर समुएल साऊल के पास गया और साऊल ने उस से कहा, “तू खुदावन्द की तरफ से मुबारक हुआ, मैंने खुदावन्द के हक्म पर 'अमल किया।'” 14 समुएल ने कहा, “फिर यह भेड़ बकरियों का मियाना और गाय, और बैलों का बनबाना कैसा है, जो मैं सुनता हूँ?” 15 साऊल ने कहा कि “यह लोग उनको 'अमालीकियों' के यहाँ से ले आए हैं, इसलिए कि लोगों ने अच्छी अच्छी भेड़ बकरियों और गाय बैलों को जीता रखवा ताकि उनको खुदावन्द तेरे खुदा के लिए ज़बह करें और बाकी सब को तो हम ने बरबाद कर दिया।” 16 तब समुएल ने साऊल से कहा, “ठहर जा और जो कुछ खुदावन्द ने आज की रात मुझे से कहा है, वह मैं दुश्म बताऊँगा।” उसने कहा, “बताऊँगे।” 17 समुएल ने कहा, “अगर्चे तू अपनी ही नजर में हक्कीर था तो भी क्या तू बनी इसाईल के कबीलों का सरदार न बनाया गया? और खुदावन्द ने तुझे मसह किया ताकि तू बनी इसाईल का बादशाह हो।” 18 और खुदावन्द ने तुझे सफर पर भेजा और कहा कि जा और गुनहगार 'अमालीकियों' को मिटा कर और जब तक वह फना न हो जायें उन से लड़ता रह। 19 तब तू खुदावन्द की बात क्यूँ न मानी बल्कि लट पर दूर कर वह काम कर गुजरा जो खुदावन्द की नजर में बुरा है?” 20 साऊल ने समुएल से कहा, “मैंने तो खुदावन्द का हुक्म माना और जिस रास्ते पर खुदावन्द ने मुझे भेजा चला, और 'अमालीक' के बादशाह अजाज को ले आया हूँ, और 'अमालीकियों' को बरबाद कर दिया। 21 जब लोग लट के माल में से भेड़ बकरियाँ और गाय बैल याँनी अच्छी चीज़ें जिनको बरबाद करना था, ले आए ताकि जिल्जाल में खुदावन्द तेरे खुदा के सामने कुर्बानी करें।” 22 समुएल ने कहा, “क्या खुदावन्द सोकुर्बानी कुर्बानियों और जबीहों से इतना ही खुश होता है जितना इस बात से कि खुदावन्द का हुक्म माना जाए? देख फरमा बरदारी कुर्बानी से और बात मानना मेंदों की चबीं से बेहतर है।” 23 क्यूंकि बगावत और जादूगरी बगावत है और सरक्षणी ऐसी ही है जैसी मूरतों और बुतों की इचात इस लिए चूँकि तेरे खुदावन्द के हुक्म को रद किया है इसलिए उसने भी तुझे रद किया है कि बादशाह न रहे।” 24 साऊल ने समुएल से कहा, मैंने गुनाह किया कि मैंने खुदावन्द के फरमान को और तेरी बातों को टाल दिया है, क्यूंकि मैं लोगों से डरा और उनकी बात सुनी। 25 इसलिए अब मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरा गुनाह बछ्ना दे, और मेरे साथ लौट चल ताकि मैं खुदावन्द को सिज्दा करूँ। 26 समुएल ने साऊल से कहा, “मैं तेरे साथ नहीं लौटूँगा क्यूंकि तेरे खुदावन्द के कलाम को रद कर दिया है और खुदावन्द ने तुझे रद किया, कि इसाईल का बादशाह न रहे।” 27 और जैसे ही समुएल जाने को मुड़ा साऊल ने उसके जुब्बा का दामन पकड़ लिया, और वह फट गया। 28 तब समुएल ने उससे कहा, “खुदावन्द ने इसाईल की बादशाही तुझ से आज ही चाक कर के छीन ली और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से बेहतर है दे दी है।” 29 और जो इसाईल की तकत

है, वह न तो झट बोलता और न पछताता है, क्यौंकि वह इंसान नहीं है कि पछताए।” 30 उसने कहा, “मैंने गुनाह तो किया है तो भी मेरी क्रौंक के बुजुर्गों और इसाईन के आगे मेरी ‘इज्जत कर और मेरे साथ, लौट कर चल ताकि मैं खुदावन्द तेरे खुदा को सिद्धा करूँ।” 31 तब समुएल लौट कर साऊल के पीछे हो लिया और साऊल ने खुदावन्द को सिद्धा किया। 32 तब समुएल ने कहा कि ‘अमालीकियों के बादशाह अजाज को यहाँ मेरे पास लाओ, इसाईन अजाज खुशी खुशी उसके पास आया और अजाज कहने लगा, हक्कीकत में मौत की कड़वाहट गुजर गयी। 33 समुएल ने कहा, जैसे तेरी तलवार ने ‘औरतों को बे औलाद किया वैसे ही तेरी माँ ‘औरतों में बे औलाद होगी और समुएल ने अजाज को जिल्जाल में खुदावन्द के सामने टुकड़े टुकड़े किया। 34 और समुएल रामा को चला गया और साऊल अपने घर साऊल के जिबा’ को गया। 35 और समुएल अपने मरते दम तक साऊल को फिर देखने न गया क्यौंकि साऊल के लिए गम खाता रहा, और खुदावन्द साऊल को बनी इसाईन का बादशाह करके दुखी हुआ।

16 और खुदावन्द ने समुएल से कहा, “तू कब तक साऊल के लिए गम

खाता रहेगा, जिस हाल कि मैंने उसे बनी इसाईन का बादशाह होने से रुक कर दिया है? तू अपने सींग में तेल भर और जा, मैं तुझे बैतलहमी यस्सी के पास भेजता हूँ, क्यौंकि मैंने उसके बेटों में से एक को अपनी तरफ से बादशाह चुना है।” 2 समुएल ने कहा, मैं क्यैंकर जाऊँ? अगर साऊल सुन लेगा, तो मुझे मार ही डालेगा। “खुदावन्द ने कहा, एक बछिया अपने साथ लेजा और कहना कि मैं खुदावन्द के लिए कुर्बानी करने को आया हूँ।” 3 और यस्सी को कुर्बानी की दावत देना फिर मैं तुझे बताऊँगा कि तुझे क्या करना है, और उसी को जिसका नाम मैं तुझे बताऊँगा मैं लिए मसह करना।” 4 और समुएल ने वही जो खुदावन्द ने कहा था किया और बैतलहम में आया, तब शहर के बुजुर्ग काँपते हुए उससे मिलने को गए और कहने लगे, “तू सुलह के ख्याल से आया है?” 5 उसने कहा, सुलह के ख्याल से, मैं खुदावन्द के लिए कुर्बानी पेश करने आया हूँ। तुम अपने आप को पाक साफ करो और मेरे साथ कुर्बानी के लिए आओ “और उसने यस्सी को और उसके बेटों को पाक किया और उनको कुर्बानी की दावत दी। 6 जब वह आए तो वह इलियाब को देख कर कहने लगा, यकीन खुदावन्द का मम्सह उसके आगे है।” 7 तब खुदावन्द ने समुएल से कहा कि: “तू उसके चेहरा और उसके कद की ऊँचाई को न देख इसलिए कि मैंने उसे ना पसंद किया है, क्यौंकि खुदावन्द इंसान की तरफ नजर नहीं करता इसलिए कि इंसान जाहिरी सूरत को देखता है, पर खुदावन्द दिल पर नजर करता है।” 8 तब यस्सी ने अबीनदाब को बुलाया और उसे समुएल के सामने से निकाला, उसने कहा, “खुदावन्द ने इसको भी नहीं चुना।” 9 फिर यस्सी ने सम्मा को आगे किया, उसने कहा, “खुदावन्द ने इसको भी नहीं चुना।” 10 और यस्सी ने अपने सात बेटों को समुएल के सामने से निकाला और समुएल ने यस्सी से कहा कि “खुदावन्द ने उनको नहीं चुना है।” 11 फिर समुएल ने यस्सी से पछा, “क्या तेरे सब लड़के यहीं हैं?” उसने कहा, सब से छोटा अभी रह गया, वह भेड़ बकरियाँ चराता है “समुएल ने यस्सी से कहा, उसे बुला भेज क्यौंकि जब तक वह यहाँ न आ जाए हम नहीं बैठेंगे।” 12 इसलिए वह उसे बुलावाकर अंदर लाया। वह सुर्खं रंग और खबरस्त और हसीन था और खुदावन्द ने फरमाया, “उठ, और उसे मसह कर क्यौंकि वह यहीं है।” 13 तब समुएल ने तेल का सींग लिया और उसके भाइयों के बीच मसह किया; और खुदावन्द की स्त्र उस दिन से आगे को दाऊद पर जोर से नाजिल होती रही, तब समुएल उठकर रामा को चला गया। 14 और खुदावन्द की स्त्र साऊल से जुदा हो गई और खुदावन्द की तरफ से एक बुरी स्त्र उसे सताने लगी। 15 और साऊल के

मुलाज़िमों ने उससे कहा, “देख अब एक बुरी स्त्र खुदा की तरफ तुझे सतानी है।” 16 इसलिए हमारा मालिक अब अपने खादिमों को जो उसके सामने हैं, हक्म दे कि वह एक ऐसे शरक्स को तलाश कर लाएँ जो बरबत बजाने में काबिल हो, और जब जब खुदा की तरफ से यह बुरी स्त्र पर चढ़े वह अपने हाथ से बजाएँ, और तू बहाल हो जाए।” 17 साऊल ने अपने खादिमों से कहा, ““खैर एक अच्छा बजाने वाला मेरे लिए ढूँढ़ों और उसे मेरे पास लाओ।” 18 तब जवानों में से एक यूँ बोल उठा कि “देख मैंने बैतलहम के यस्सी के एक बेटे को देखा जो बजाने में काबिल और जबरदस्त सरमा और जंगी जवान और बात में साहिबे तमीज़ और खबरस्त आदमी है और खुदावन्द उसके साथ है।” 19 तब साऊल ने यस्सी के पास क्रासिद रवाना किए और कहला भेजा कि “अपने बेटे दाऊद को जो भेड़ बकरियों के साथ रहता है, मेरे पास भेज दे।” 20 तब यस्सी ने एक गधा जिस पर रोटियाँ लंदी थीं, और मय का एक मशकीना और बकरी का एक बच्चा लेकर उनको अपने बेटे दाऊद के हाथ साऊल के पास भेजा। 21 और दाऊद साऊल के पास आकर उसके सामने खड़ा हुआ, और साऊल उससे मुहब्बत करने लगा, और वह उसका सिलह बरदार हो गया। 22 और साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि दाऊद को मेरे सामने रखने दे क्यौंकि वह मेरा मंज़ूर नजर हुआ है। 23 इसलिए जब वह बुरी स्त्र खुदा की तरफ से साऊल पर चढ़ती थी तो दाऊद बरबत लेकर हाथ से बजाता था, और साऊल को राहत होती और वह बहाल हो जाता था, और वह बुरी स्त्र उस पर से उतर जाती थी।

17 फिर फिलिस्तियों ने जंग के लिए अपनी फौजें जमा की, और यहदाह के

शहर शोको में इकट्ठे हुए और शोके और ‘अजीका के बीच अफसदमीम में खैमज़न हुए। 2 और साऊल और इसाईन के लोगों ने जमा’ होकर एका की बादी में डेरे डाले और लडाई के लिए फिलिस्तियों के मुकाबिल सफ आराई की। 3 और एक तरफ के पहाड़ पर फिलिस्ती और दूसरी तरफ के पहाड़ पर बनी इसाईन खड़े हुए और इन दोनों के बीच बादी थी। 4 और फिलिस्तियों के लश्कर से एक पहलवान निकला जिसका नाम जाती जूलियत था, उसका कद छ हाथ और एक बालिश था। 5 और उसके सर पर पीतल का टोपा था, और वह पीतल ही की जिरह पहने हुए था जो तोल में पाँच हजार पीतल की मिस्काल के बरबर थी। 6 और उसकी टांगों पर पीतल के दो साकपेश थे और उसके दोनों शानों के बीच पीतल की बरछी थी। 7 और उसके भाले की छड़ ऐसी थी जैसे ज़ुलाहे का शहरी और उसके नेज़े का फल छः सौ मिस्काल लोहे का था और एक शरक्स ढाल लिए हुए उसके आगे आगे चलता था। 8 वह खड़ा हुआ, और इसाईन के लश्करों को पुकार कर उन से कहने लगा कि तुमने आकर जंग के लिए क्यूँ सफ आराई की? क्या मैं फिलिस्ती नहीं और तुम साऊल के खादिम नहीं? इसलिए अपने लिए किसी शरक्स को चुनो जो मेरे पास उतर आए। 9 अगर वह मुझे से लड़ सके और मुझे कल्त कर डाले तो हम तुम्हे खादिम हो जाएँगे लेकिन अगर मैं उस पर गालिब आऊँ और उसे कल्त कर डालूँ तो तुम हमारे खादिम हो जाना और हमारी खिदमत करना। 10 फिर उस फिलिस्ती ने कहा कि मैं आज के दिन इसाईनी कौज़ों की बीज़ज़ती करता हूँ कोई जवान निकालो ताकि हम लड़ें। 11 जब साऊल और सब इसाईलियों ने उस फिलिस्ती की बातें सुनी, तो फेरेशन हुए और बहत डर गए। 12 और दाऊद बैतल हम यहदाह के उस इफ्राती आदमी का बेटा था जिसका नाम यस्सी था, उसके आठ बेटे थे और वह खट बाल के ज़माना के लोगों के बीच बुड़ा और उम्र दराज था। 13 और यस्सी के तीन बड़े बेटे साऊल के पीछे पीछे जंग में गए थे और उसके तीनों बेटों के नाम जो जंग में गए थे यह थे इलियाब जो पहलौदा था, और दूसरा अबीनदाब और तीसरा सम्मा। 14 और दाऊद सबसे छोटा था और तीनों बड़े बेटे साऊल के पीछे पीछे थे। 15 और दाऊद बैतलहम में अपने

बाप की भेड़ बकरियाँ चराने को साऊल के पास से आया जाया करता था। 16 और वह फ़िलिस्ती सुबह और शाम नज़दीक आता और चालिस दिन तक निकल कर आता रहा। 17 और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि “इस भ्रु अनाज में से एक एफ़ा और यह दस रोटियाँ अपने भाइयों के लिए लेकर इनको जल्द लश्कर गाह, में अपने भाइयों के पास पहचा दे। 18 और उनके हजारी सरदार के पास पनीर की यह दस टिकियाँ लेजा और देख कि तैये भाइयों का क्या हाल है, और उनकी कुछ निशानी ले आ।” 19 और साऊल और वह भाई और सब इसाईली जवान एला की बादी में फ़िलिस्तियों से लट रहे थे। 20 और दाऊद सुबह को सवेरे उठा, और भेड़ बकरियों को एक रखवाले के पास छोड़ कर यस्सी के हक्म के मुताबिक सब कुछ लेकर रवाना हुआ, और जब वह लश्कर जो लड़ने जा रहा था, जंग के लिए ललकार रहा था, उस बक्त वह छकड़ों के पड़ाव में पहुँचा। 21 और इसाईलियों और फ़िलिस्तियों ने अपने — अपने लश्कर को आमने सामने करके सफ आराई की। 22 और दाऊद अपना सामान असबाब के निगहबान के हाथ में छोड़ कर आप लश्कर में डौँट गया और जाकर अपने भाइयों से खेर — ओ — ‘आफियत पछी।’ 23 और वह उनसे बातें करता ही था कि देखो वह पहलवान जात का फ़िलिस्ती जिसका नाम जूलियत था फ़िलिस्ती सफों में से निकला और उनसे फ़िर वैसी ही बातें कहीं और दाऊद ने उनको सुना। 24 और सब इसाईली जवान उस शब्स को देख कर उसके सामने से भागे और बहत डर गए। 25 तब इसाईली जवान ऐसा कहने लगे, “तुम इस आदमी को जो निकला है देखो हो? यक़ीनन यह इसाईल की बे’इज़ज़ती करने को आया है, इसलिए जो कोई उसको मार डाले उसे बादशाह बड़ी दौलत से माला माल करेगा और अपनी बेटी उसे ब्याह देगा, और उसके बाप के घराने को इसाईल के बीच आजाद कर देगा।” 26 और दाऊद ने उन लोगों से जो उसके पास खड़े थे पृछा कि जो शब्स इस फ़िलिस्ती को मार कर यह नंग इसाईल से दूर करे उस से क्या सुलूक किया जाएगा? क्यौंकि यह ना मर्खन फ़िलिस्ती होता कौन है कि वह जिंदा खुदा की फौजों की बे’इज़ज़ती करे? 27 और लोगों ने उसे यही जवाब दिया कि उस शब्स से जो उसे मार डाले यह सुलूक किया जाएगा। 28 और उसके सब से बड़े भाई इलियाब ने उसकी बातों को जो वह लोगों से करता था सुना और इलयाब का गुस्सा दाऊद पर भड़का और वह कहने लगा, “तू यहाँ क्यूँ आया है? और वह थोड़ी सी भेड़ बकरियाँ तूने जंगल में किस के पास छोड़ी? मैं तेरे घमंड और तेरे दिल की शरारत से बाकिक हूँ, तु लड़ाई देखने आया है।” 29 दाऊद ने कहा, “मैंने अब क्या किया? क्या बात ही नहीं हो रही है?” 30 और वह उसके पास से फ़िर कर दूसरे की तरफ गया और वैसी ही बातें करने लगा और लोगों ने उसे फ़िर पहले की तरह जवाब दिया। 31 और जब वह बातें जो दाऊद ने कहीं सुने में आई तो उन्होंने साऊल के आगे उनका ज़िक्र किया और उसने उसे बुला भेजा। 32 और दाऊद ने साऊल से कहा कि उस शब्स की बजह से किसी का दिल न घबराए, तेरा खादिम जाकर उस फ़िलिस्ती से लड़ेगा। 33 साऊल ने दाऊद से कहा कि तू इस काबिल नहीं कि उस फ़िलिस्ती से लड़ेने को उसके सामने जाए; क्यौंकि तू महज लड़का है और वह अपने बचपन से ज़ंगी जवान है। 34 तब दाऊद ने साऊल को जवाब दिया कि तेरा खादिम अपने बाप की भेड़ बकरियाँ चराता था और जब कभी कोई शेर या रीछ आकर झँड में से कोई बर्दी उठा ले जाता। 35 तो मैं उसके पीछे पीछे जाकर उसे मारता और उसे उसके मुँह से छुड़ाता था और जब वह मुँह पर झँपटता तो मैं उसकी दाढ़ी पकड़ कर उसे मारता और हलाक कर देता था। 36 तेरे खादिम ने शेर और रीछ दोनों को जान से मारा इसलिए यह नामवरतुन फ़िलिस्ती उन में से एक की तरह होगा, इसलिए कि उसने जिन्दा खुदा की फौजों की बे’इज़ज़ती की है। 37 फ़िर दाऊद ने कहा, “खुदावन्द ने मुझे शेर

और रीछ के पंजे से बचाया, वही मुझको इस फ़िलिस्ती के हाथ से बचाएगा।” साऊल ने दाऊद से कहा, “जा खुदावन्द तेरे साथ रहे।” 38 तब साऊल ने अपने कपड़े दाऊद को पहनाए, और पीतल का टोप उसके सर पर रख्खा और उसे ज़िर्ह भी पहनाई। 39 और दाऊद ने उसकी तलवार अपने कपड़ों पर कस ली और चलने की कोशिश की क्यौंकि उसने इनको आजमाया नहीं था, तब दाऊद ने साऊल से कहा, “मैं इनको पहन कर चल नहीं सकता क्यौंकि मैंने इनको आजमाया नहीं है।” इसलिए दाऊद ने उन सबको उतार दिया। 40 और उनसे अपनी लाठी अपने हाथ में ली, और उस नला से पाँच चिकने — चिकने पथर अपने वास्ते चुन कर उनको चरवाहे के थैले में जो उसके पास था, यानी झोले में डाल लिया, और उसका गोफ़न उसके हाथ में था फिर वह फ़िलिस्ती के नज़दीक चला। 41 और वह फ़िलिस्ती बढ़ा, और दाऊद के नज़दीक आया और उसके आगे — आगे उसका सिपर बरदार था। 42 और जब उस फ़िलिस्ती ने इधर उधर निगाह की और दाऊद को देखा तो उसे नाचीज़ जाना क्यौंकि वह महज लड़का था, और सुर्ख़े और नाज़ुक चेहरे का था। 43 तब फ़िलिस्ती ने दाऊद से कहा, “क्या मैं कुत्ता हूँ, जो तू लाठी लेकर मेरे पास आता है?” और उस फ़िलिस्ती ने अपने माबूदों का नाम लेकर दाऊद पर लान्नत की। 44 और उस फ़िलिस्ती ने दाऊद से कहा, “तू मेरे पास आ, और मैं तेरा गोशत हवाई परिदौं और ज़ंगली जानवरों को ढँगा।” 45 और दाऊद ने उस फ़िलिस्ती से कहा कि “तू तलवार भाला और बरछी लिए हुए मेरे पास आता है, लेकिन मैं रब्ब — उल — अफ़वाज के नाम से जो इसाईल के लश्करों का खुदा है, जिसकी तुने बे’इज़ज़ती की है तेरे पास आता है।” 46 और आज ही के दिन खुदावन्द तुझको मेरे हाथ में कर देगा, और मैं तुझको मार कर तेरा सर तुझ पर से उतार लौंगा और मैं आज के दिन फ़िलिस्तियों के लश्कर की लाशें हवाई परिदौं और ज़मीन के ज़ंगली जानवरों को ढँगा ताकि दुनिया जान ले कि इसाईल में एक खुदा है। 47 और यह सारी ज़मांत जान ले कि खुदावन्द तलवार और भाले के ज़रिए से ज़रीनी बचाया इसलिए कि जंग तो खुदावन्द की है, और वही तुमको हमारे हाथ में कर देगा।” 48 और ऐसा हुआ, कि जब वह फ़िलिस्ती उठा, और बढ़ कर दाऊद के मुकाबिला के लिए नज़दीक आया, तो दाऊद ने जल्दी की और लश्कर की तरफ उस फ़िलिस्ती से मुकाबिला करने को दौड़ा। 49 और दाऊद ने अपने थैले में अपना हाथ डाला और उस में से एक पथर लिया और गोफ़न में रख कर उस फ़िलिस्ती के माथे पर मारा और वह पत्थर उसके माथे के अंदर घुस गया और वह ज़मीन पर मुँह के बल गिर पड़ा। 50 इसलिए दाऊद उस गोफ़न और एक पथर से उस फ़िलिस्ती पर गालिब आया और उस फ़िलिस्ती को मारा और कल्प किया और दाऊद के हाथ में तलवार न थी। 51 और दाऊद दौड़ कर उस फ़िलिस्ती के ऊपर खड़ा हो गया, और उसकी तलवार पकड़ कर मियाँन से खीची और उसे कल्प किया और उसी से उसका सर कट डाला और फ़िलिस्तियों ने जो देखा कि उनका पहलवान मारा गया तो वह भागे। 52 और इसाईल और यहूदा के लोग उठे और ललकार कर फ़िलिस्तियों को गई और ‘अक़रन के फाटकों तक दौड़ाया और फ़िलिस्तियों में से जो ज़ख्मी हुए थे वह शारीर के रास्ते में और जात और ‘अक़रन तक गिरते गए। 53 तब बनी इसाईल फ़िलिस्तियों के पीछे से लटेरे फ़िर और उनके खेमों को लटा। 54 और दाऊद उस फ़िलिस्ती का सर लेकर उसे येस्ज़लेम में लाया और उसके हथियारों को उसने अपने डोंगे में रख दिया। 55 जब साऊल ने दाऊद को उस फ़िलिस्ती का मुकाबिला करने के लिए जाते देखा तो उसने लश्कर के सरदार अबनेर से पछा अबनेर यह लड़का किसका बेटा है? अबनेर ने कहा, ऐ बादशाह तेरी जान की कसम में नहीं जानता। 56 तब बादशाह ने कहा, तमाल्म कर कि यह नौजवान किस का बेटा है। 57 और जब दाऊद उस फ़िलिस्ती को

कत्तल कर के फिरा तो अबनेर उसे लेकर साऊल के पास लाया और फिलिस्ती का सर उसके हाथ में था। 58 तब साऊल ने उससे कहा, “ऐ जवान तू किसका बेटा है?” दाऊद ने जवाब दिया, “मैं तैरे खादिम बैतलहमी यससी का बेटा हूँ।”

18 जब वह साऊल से बातें कर चका, तो यूनतन का दिल दाऊद के दिल

से ऐसा मिल गया कि यूनतन उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत करने लगा। 2 और साऊल ने उस दिन से उसे अपने साथ रख खा और फिर उसे उसके बाप के घर जाने न दिया। 3 और यूनतन और दाऊद ने आपस में ‘अहद किया, क्यूँकि वह उससे अपनी जान के बराबर मुहब्बत रखता था। 4 तब यूनतन ने वह क्रक्का जो वह पहने हुए था उतार कर दाऊद को दी और अपनी पोशाक बल्कि अपनी तलवार और अपनी कमान और अपना कमर बन्द तक दे दिया। 5 और जहाँ, कहीं साऊल दाऊद को भेजता वह जाता और ‘अक्लमन्दी से काम करता था, और साऊल ने उसे जंगी मर्दी पर मुकर्रह कर दिया और यह बात सारी कौम की और साऊल के मुलाजिमों की नजर में अच्छी थी। 6 जब दाऊद उस फिलिस्ती को कत्तल कर के लौटा आता था, और वह सब भी आ रहे थे, तो इसाईल के सब शहरों से ‘औरतें गाती और नाचती हुई दफ्तों और खुर्जी के नारों और बाजों के साथ साऊल बादशाह के इस्तकबाल को निकली। 7 और वह ‘औरतें नाचती हुई गाती जाती थी, कि साऊल ने तो हजारों को पर दाऊद ने लाखों को मारा। 8 और साऊल निहायत खफा हुआ क्यूँकि वह बात उसे बड़ी बुरी लगी, और वह कहने लगा, कि उन्होंने दाऊद के लिए तो लाखों और मेरे लिए सिर्फ हजारों ही ठहराए। इसलिए बादशाही के ‘अलावा उसे और क्या मिलना बाकी है? 9 इसलिए उस दिन से आगे को साऊल दाऊद को बद गुमानी से देखने लगा। 10 और दूसरे दिन ऐसा हुआ, कि खुदा कि तरफ से बुरी स्थ साऊल पर जोर से नाजिल हुई और वह घर के अंदर नव्बत्व करने लगा, और दाऊद हर दिन की तरह अपने हाथ से बजा रहा था, और साऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए था। 11 तब साऊल ने भाला चलाया क्यूँकि उसने कहा, कि मैं दाऊद को दीवार के साथ छेड़ दूँगा, और दाऊद उसके सामने से दो बार हट गया। 12 इसलिए साऊल दाऊद से डरा करता था क्यूँकि खुदावन्द उसके साथ था और साऊल से अलग हो गया था। 13 इसलिए साऊल ने उसे अपने पास से अलग कर के उसे हजार जवानों का सरदार बना दिया, और वह लोगों के सामने आया जाया करता था। 14 और दाऊद अपनी सब राहों में ‘अक्लमन्दी के साथ चलता था, और खुदावन्द उसके साथ था। 15 जब साऊल ने देखा कि वह ‘अक्लमन्दी से काम करता है, तो वह उससे डरने लगा। 16 लेकिन पूरा इसाईल और यहदाह के लोग दाऊद को प्यार करते थे, इसलिए कि वह उनके सामने आया जाया करता था। 17 तब साऊल ने दाऊद से कहा कि देख मैं अपनी बड़ी बेटी मेरब को तूझ से ब्याह दूँगा, तू सिर्फ मेरे लिए बहादुरी का काम कर और खुदावन्द की लडाईयाँ लड़, क्यूँकि साऊल ने कहा कि मेरा हाथ नहीं बल्कि फिलिस्तियों का हाथ उस पर चले। 18 दाऊद ने साऊल से कहा, मैं क्या हूँ और मेरी हस्ती ही क्या और इसाईल में मेरे बाप का खानदान क्या है, कि मैं बादशाह का दामाद नहूँ? 19 लेकिन जब बक्त आ गया कि साऊल की बेटी मेरब दाऊद से ब्याही जाए, तो वह महलाती ‘अदरीएल से ब्याह दी गई। 20 और साऊल की बेटी मीकल दाऊद को चाहती थी, इसलिए उन्होंने साऊल को बताया और वह इस बात से खुश हुआ। 21 तब साऊल ने कहा, मैं उसी को उसे दूँगा, ताकि यह उसके लिए फंदा हो और फिलिस्तियों का हाथ उस पर पड़े, इसलिए साऊल ने दाऊद से कहा कि इस दूसरी दफ़ा’ तो तू आज के दिन मेरा दामाद हो जाएगा। 22 और साऊल ने अपने खादिमों को हुक्म किया कि दाऊद से चुपके चुपके बातें करो और कहो कि देख बादशाह तुझ से खुश है और उसके सब खादिम तुझे प्यार करते हैं इसलिए अब तू बादशाह का दामाद बन

जा। 23 चुनौंचे साऊल के मुलाजिमों ने यह बातें दाऊद के कान तक पहँचाई, दाऊद ने कहा, क्या बादशाह का दामाद बनना तुमको कोई हल्की बात मालूम होती है, जिस हाल कि मैं गरीब आदमी हूँ और मेरी कुछ औकात नहीं? 24 तब साऊल ने कहा, तुम दाऊद से कहना कि बादशाह मेहर नहीं माँगता वह सिर्फ फिलिस्तियों की सौ खलिड़ीयाँ चाहती हैं, ताकि बादशाह के दुश्मनों से इन्तकाम लिया जाए, साऊल का यह इरादा था, कि दाऊद को फिलिस्तियों के हाथ से मरवा डाले। 25 जब उसके खादिमों ने यह बातें दाऊद से कहीं तो दाऊद बादशाह का दामाद बनने को गज़ी हो गया और अभी दिन पूरे भी नहीं हुए थे। 26 कि दाऊद उठा, और अपने लोगों को लेकर गया और दो सौ फिलिस्ती कत्तल कर डाले और दाऊद उनकी खलिड़ीयाँ लाया और उन्होंने उनकी पूरी तादाद में बादशाह को दिया ताकि वह बादशाह का दामाद हो, और साऊल ने अपनी बेटी मीकल उसे ब्याह दी। 28 और साऊल ने देखा और जान लिया कि खुदावन्द दाऊद के साथ है, और साऊल की बेटी मीकल उसे चाहती थी। 29 और साऊल दाऊद से और भी डरने लगा, और साऊल बराबर दाऊद का दुम्पन रहा। 30 फिर फिलिस्तियों के सरदारों ने धावा किया और जब जब उन्होंने धावा किया साऊल के सब खादिमों की निस्बत दाऊद ने ज्यादा ‘अक्लमन्दी का काम किया इस से उसका नाम बहुत बड़ा हो गया।

19 और साऊल ने अपने बेटे यूनतन और अपने सब खादिमों से कहा, कि दाऊद को मार डालो। 2 लेकिन साऊल का बेटा यूनतन दाऊद से बहुत खुश था इसलिए यूनतन ने दाऊद से कहा, ‘मेरा बाप तेरे कत्तल की फिक मैं हूँ, इसलिए तू सुबह को अपना खयाल रखना और किसी पोशीदा जगह में छिपे रहना। 3 और मैं बाहर जाकर उस मैदान में जहाँ तू होगा अपने बाप के पास खड़ा हूँगा और अपने बाप से तेरे जरिए’ बात कर्सँगा और अगर मुझे कुछ मालूम हो जाए तो तुझे बता दूँगा।’ 4 और यूनतन ने अपने बाप साऊल से दाऊद की तारीफ की और कहा, कि बादशाह अपने खादिम दाऊद से बुराई न करे क्यूँकि उसने तेरा कुछ गुनाह नहीं किया बल्कि तेरे लिए उसके काम बहुत अच्छे रहे हैं। 5 क्यूँकि उसने अपनी जान हथेली पर रखवी और उस फिलिस्ती को कत्तल किया और खुदावन्द ने सब इसाईलियों के लिए बड़ी फतह कराई, तूने यह देखा और खुश हुआ, तब तू किस लिए दाऊद को बे वजह कत्तल करके बे गुनाह के खन का मुजरिम बनना चाहता है? 6 और साऊल ने यूनतन की बात सुनी और साऊल ने कसम खाकर कहा कि खुदावन्द की हयात की कसम है वह मारा नहीं जाएगा। 7 और यूनतन ने दाऊद को बुलाया और उसने वह सब बातें उसको बताई और यूनतन दाऊद को साऊल के पास लाया और वह पहले की तरह उसके पास रहने लगा। 8 और फिर जंग हुई और दाऊद निकला और फिलिस्तियों से लड़ा और बड़ी खौज़ी की साथ उनको कत्तल किया और वह उसके सामने से भागे। 9 और खुदावन्द की तरफ से एक बुरी स्थ साऊल पर जब वह अपने घर में अपना भाला अपने हाथ में लिए बैठा था, चढ़ी और दाऊद हाथ से बजा रहा था, 10 और साऊल ने चाहा, कि दाऊद की दीवार के साथ भाले से छेद दे लेकिन वह साऊल के आगे से हट गया, और भाला दीवार में जा घुसा और दाऊद भागा और उस रात बच गया। श 11 और साऊल ने दाऊद के घर पर क्रासिद भेजे कि उसकी ताक में रहें और सुबह को उसे मार डालें, इसलिए दाऊद की बीवी मीकल ने उससे कहा, ‘अगर आज की रात तू अपनी जान न बचाए तो कल मारा जाएगा।’ 12 और मीकल ने दाऊद को खिड़की से उतार दिया, इसलिए वह चल दिया और भाग कर बच गया। 13 और मीकल ने एक बुत को लेकर पलंग पर लिटा दिया, और बकरियों के बाल का ताकिया सिरहाने रखकर उसे कपड़ों से ढांक दिया। 14 और जब साऊल ने दाऊद के

पकड़ने को कासिद भेजे तो वह कहने लगी, कि वह बीमार है। 15 और साऊल ने क्रासिदों को भेजा कि दाऊद को देखें और कहा, कि उसे पलंग समेत मेरे पास लाओ कि मैं उसे कत्ल करूँ। 16 और जब वह कासिद अंदर आए, तो देखा कि पलंग पर बूत पड़ा है और उसके सिरहाने बकरियों के बाल का तकिया है। 17 तब साऊल ने मीकल से कहा, “कि त ने मुझ से क्यूँ ऐसी दगा की और मेरे दुश्मन को ऐसे जाने दिया कि वह बच निकला?” मीकल ने साऊल को जवाब दिया, “कि वह मुझ से कहने लगा, मुझे जाने दे, मैं क्यूँ तुझे मार डालूँ?” 18 और दाऊद भाग कर बच निकला और रामा में समुएल के पास आकर जो कुछ साऊल ने उससे किया था, सब उसको बताया, तब वह और समुएल दोनों नयोत में जाकर रहने लगे। 19 और साऊल को खबर मिली कि दाऊद रामा के बीच नयोत में है। 20 और साऊल ने दाऊद को पकड़ने को कासिद भेजे और उन्होंने जो देखा कि नवियों का मजमा’ नबुव्वत कर रहा है और समुएल उनका सरदार बना खड़ा है तो खुदा की स्तुति साऊल के कासिदों पर नाजिल हड़ी और वह भी नबुव्वत करने लगे। 21 और जब साऊल तक यह खबर पहुँची तो उसने और क्रासिद भेजे और वह भी नबुव्वत करने लगे और साऊल ने फिर तीसी बार और कासिद भेजे और वह भी नबुव्वत करने लगे। 22 तब वह खुद रामा को चला और उस बड़े कुवें पर जो सीको मैं है पहँच कर पूछने लगा कि सम्पुल और दाऊद कहाँ हैं? और किसी ने कहा, कि देख वह रामा के बीच नयोत मैं हैं। 23 तब वह उधर रामा के नयोत की तरफ चला और खुदा की स्तुति उस पर भी नाजिल हड़ी और वह चलते चलते नबुव्वत करता हुआ, रामा के नयोत मैं पहँचा। 24 और उसने भी अपने कढ़े उतरे और वह भी समुएल के आगे नबुव्वत करने लगा, और उस सारे दिन और सारी रात नंगा पड़ा रहा, इसलिए यह कहावत चली, “क्या साऊल भी नवियों मैं है?”

20 और दाऊद रामा के नयोत से भागा, और यूनतन के पास जाकर कहने लगा कि मैंने क्या किया है? मेरा क्या गुनाह है? मैंने तेरे बाप के आगे कौन सी गलती की है, जो वह मेरी जान चाहता है? 2 उसने उससे कहा कि खुदा न करे, तू मारा नहीं जाएगा, देख मेरा बाप कोई काम बड़ा हो या छोटा नहीं करता जब तक उसे मुझ को न बताए, फिर भला मेरा बाप इस बात को क्यूँ मुझसे छिपाएगा? ऐसा नहीं। 3 तब दाऊद ने कसम खाकर कहा कि तेरे बाप को अच्छी तरह मालूम है, कि मुझ पर तेरे करम की नजर है इस लिए वह सोचता होगा, कि यूनतन को यह मालूम न हो नहीं तो वह सुखी होगा लेकिन यकीन खुदावन्द की ह्यात और तेरी जान की कसम मुझ में और मौत मैं सिर्फ़ एक ही कदम का फासला है। 4 तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि जो कुछ तेरा जी चाहता हो मैं तेरे लिए वही कहँगा। 5 दाऊद ने यूनतन से कहा कि देख कल नया चाँद है, और मुझे लाजिम है कि बादशाह के साथ खाने बैठूँ, लेकिन तू मुझे इजाजत दे कि मैं परसों शाम तक मैदान में छिपा रहूँ। 6 अगर मैं तेरे बाप को याद आँते कहना कि दाऊद ने मुझ से बजिद होकर इजाजत माँगी ताकि वह अपने शहर बैतलहम को जाए, इसलिए कि वहाँ, सारे घराने की तरफ से सालाना कुर्बानी है। 7 अगर वह कहे कि अच्छा तो तेरे चाकर की सलामी है लेकिन अगर वह युस्से से भर जाए तो जान लेना कि उसने बटी की ठान ली है। 8 तब तू अपने खादिम के साथ नरमी से पेश आ, क्यूँकि तेरे अपने खादिम को अपने साथ खुदावन्द के ‘अहद में दाखिल कर लिया है, लेकिन अगर मुझ में कुछ बुराई हो तो तू खुद ही मुझे कल्पत कर डाल तू मुझे अपने बाप के पास क्यूँ पहँचाए? 9 यूनतन ने कहा, “ऐसी बात कभी न होगी, अगर मुझे ‘इल्म होता कि मेरे बाप का ‘इरादा है कि तुझ से बटी करे तो क्या मैं तुझे खबर न करता?” 10 फिर दाऊद ने यूनतन से कहा, “अगर तेरा बाप तुझे सख्त जबाब दे तो कौन मुझे बताएगा?” 11 यूनतन ने दाऊद से कहा, “चल हम मैदान को

निकल जाएँ।” चुनौंचे वह दोनों मैदान को चले गए। 12 तब यूनतन दाऊद से कहने लगा, “खुदावन्द इसाईल का खुदा गवाह रहे, कि जब मैं कल या परसों ‘अनकरीब इसी वक्त अपने बाप का राज लूँ और देखूँ कि दाऊद के लिए भलाई है तो क्या मैं उसी वक्त तेरे पास कहला न भेज़ूँगा और तज्ज्ञ न बताऊँगा? 13 खुदावन्द यूनतन से ऐसा ही बल्कि इससे भी ज्यादा करे अगर मेरे बाप की यही मर्जी हो कि तुझ से बुराई करे और मैं तुझे न बताऊँ और तुझे स्वस्त न कराऊँ ताकि तू सलामत चला जाए और खुदावन्द तेरे साथ रहे, जैसा वह मेरे बाप के साथ रहा। 14 और सिर्फ़ यही नहीं कि जब तक मैं जीता रहूँ तब ही तक तू मुझ पर खुदावन्द का सा करम करे ताकि मैं मर न जाऊँ; 15 बल्कि मेरे घराने से भी कभी अपने करम को बाज़ न रखना और जब खुदावन्द तेरे दुश्मनों में से एक एक को जमीन पर से मिटा और बर्बाद कर डाले तब भी ऐसा ही करना।” 16 इसलिए यूनतन ने दाऊद के खानदान से ‘अहद किया और कहा कि “खुदावन्द दाऊद के दुश्मनों से बदला ले। 17 और यूनतन ने दाऊद को उस मुहब्बत की वजह से जो उसको उससे थी दोबारा कसम खिलाई क्यूँकि उससे अपनी जान के बाबर मुहब्बत रखता था।” 18 तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि “कल नया चाँद है और तू याद आएगा, क्यूँकि तेरी जगह खाली रहेगी।” 19 और अपने तीन दिन ठहरने के बाद तू जल्द जाकर उस जगह आ जाना जाहूँ, तू उस काम के दिन छिपा था, और उस पथर के नज़दीक रहना जिसका नाम अजल है। 20 और मैं उस तरफ तीन तीर इस तरह चलाऊँगा, गोया निशाना मारता हूँ। 21 और देख, मैं उस वक्त लड़के को भेज़ूँगा कि जा तीरों को ढूँढ़ ले आ, इसलिए अगर मैं लड़के से कहँ कि देख, तीर तेरी इस तरफ हैं तो तू उनको उठा, कर ले आना क्यूँकि खुदावन्द की ह्यात की कसम तेरे लिए सलामती होगी न कि नुकसान। 22 लेकिन अगर मैं छोकरे से यूँ कहँ कि देख, तीर तेरी उस तरफ है तो तू अपनी रास्ता लेना क्यूँकि खुदावन्द ने तुझे स्वस्त किया है। 23 रहा वह मुआमिला जिसका जिक्र तूने और मैंने किया है इस लिए देख, खुदावन्द हमेशा तक मेरे और तेरी चीज़ रहे।” 24 तब दाऊद मैदान मैं जा छिपा और जब नया चाँद हुआ तो बादशाह खाना खाने बैठा। 25 और बादशाह अपने दस्तर के मुताबिक अपनी मसनद पर यानी उसी मसनद पर जो दीवार के बाबर थी बैठा, और यूनतन खड़ा हुआ, और अबनेर साऊल के हफ्लू मैं बैठा, और दाऊद की जगह खाली रही। 26 लेकिन उस रोज़ साऊल ने कुछ न कहा, क्यूँकि उसने गुप्तान किया कि उसे कुछ हो गया होगा, वह नापाक होगा, वह जस्तर नापाक ही होगा। 27 और नए चाँद के बाद दूसरे दिन दाऊद की जगह फिर खाली रही, तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से कहा कि “क्या वजह है, कि यस्सी का बेटा न तो कल खाने पर आया न आज आया है?” 28 तब यूनतन ने साऊल को जबाब दिया कि दाऊद ने मुझ से बजिद होकर बैतलहम जाने को इजाजत माँगी। 29 वह कहने लगा कि “मैं तीरी मिन्त करता हूँ मुझे जाने दे क्यूँकि शहर में हमारे घराने का ज़बीहा है और मेरे भाई ने मुझे हृक्ष किया है कि हाजिर रहूँ, अब अगर मुझ पर तेरे करम की नजर है तो मुझे जाने दे कि अपने भाईयों को देखें, इसलिए वह बादशाह के दस्तरखान पर हाजिर नहीं हुआ।” 30 तब साऊल का गुस्सा यूनतन पर भड़का और उसने उससे कहा, “ऐ करजपतर चण्डालन के बेटे क्या मैं नहीं जानता कि तूने अपनी शर्मिदारी और अपनी माँ की बरहनगी की शर्मिदारी के लिए यस्सी के बेटे को चुन लिया है? 31 क्यूँकि जब तक यस्सी का यह बेटा इस जमीन पर जिन्दा है, न तो तुझ को क़रायाम होगा न तेरी बादशाहत को, इसलिए अभी लोग भेज कर उसे मेरे पास ला दाखिल किए उसका मरना जस्तर है।” 32 तब यूनतन ने अपने बाप साऊल को जबाब दिया “वह क्यूँ मारा जाए? उसने क्या किया है?” 33 तब साऊल ने भाला फेंका कि उसे मारे, इससे यूनतन जान गया कि उसके बाप ने

दाऊद के कल्प का पूरा 'इगादा' किया है। 34 इसलिए यूनतन बड़े गुस्सा में दस्तरखबान पर से उठ गया और महीना के उस दूसरे दिन कुछ खाना न खाया क्यूंकि वह दाऊद के लिए दुखी था इसलिए कि उसके बाप ने उसे मस्वा किया। 35 और सुबह को यूनतन उसी वक्त जो दाऊद के साथ ठहरा था मैदान को गया और एक लड़का उसके साथ था। 36 और उसने अपने लड़के को हृक्षम किया कि दौड़ और यह तीर जो मैं चलाता हूँ दौड़ ला और जब वह लड़का दौड़ा जा रहा था, तो उसने ऐसा तीर लगाया जो उससे आगे गया। 37 और जब वह लड़का उस तीर की जगह पहुँचा जिसे यूनतन ने चलाया था, तो यूनतन ने लड़के के पीछे पुकार कर कहा, "क्या वह तीर तेरी उस तरफ नहीं?" 38 और यूनतन उस लड़के के पीछे चिल्लाया, तेज जा, जल्दी कर ठहरमत, इस लिए यूनतन के लड़के ने तीरों को जमा किया और अपने आका के पास लौटा। 39 लेकिन उस लड़के को कुछ मालूम न हुआ, सिर्फ दाऊद और यूनतन ही इसका राज जानते थे। 40 फिर यूनतन ने अपने हथियार उस लड़के को दिए और उससे कहा "इनको शहर को ले जा।" 41 जैसे ही वह लड़का चला गया दाऊद जूनब की तरफ से निकला और जमीन पर औथा होकर तीन बार सिजदा किया और उन्होंने आपस में एक दूसरे को चूमा और आपस में रोए लेकिन दाऊद बहुत रोया। 42 और यूनतन ने दाऊद से कहा कि सलामत चला जा क्यूंकि हम दोनों ने खुदावन्द के नाम की कसम खाकर कहा है कि खुदावन्द मेरे और तेरे बीच और मेरी और तेरी नसल के बीच हमेशा तक रहे, इसलिए वह उठ कर रवाना हुआ और यूनतन शहर में चला गया।

21 और दाऊद नोब में अखीमलिक काहिन के पास आया; और अखीमलिक दाऊद से मिलने को काँपता हुआ आया और उससे कहा, "तु क्यूँ अकेला है, और तेरे साथ कोई आदमी नहीं?" 2 दाऊद ने अखीमलिक काहिन से कहा कि "बादशाह ने मुझे एक काम का हृक्षम करके कहा है, कि जिस काम पर मैं तुझे भेजता हूँ, और जो हृक्षम मैंने तुझे दिया है वह किसी शरख पर जाहिर न हो इस लिए मैंने जवानों को फूलानी जगह बिठा दिया है।" 3 इसलिए अब तेरे यहाँ क्या है? मेरे हाथ में रोटियाँ के पाँच टुकड़े या जो कुछ मौजूद हो दे।" 4 काहिन ने दाऊद को जबाब दिया "मेरे यहाँ 'आम रोटियाँ तो नहीं लेकिन पाक रोटियाँ हैं; बरती कि वह जबान 'आरों से अलग रहे होंगे।'" 5 दाऊद ने काहिन को जबाब दिया "सच तो यह है कि तीन दिन से 'औरतें हमसे अलग रही हैं, और अगर यह मालूम सफर है तोभी जब मैं चला था तब इन जवानों के बर्तन पाक थे, तो आज तो ज़स्तर ही वह बर्तन पाक होंगे।'" 6 तब काहिन ने पाक रोटी उसको दी क्यूंकि और रोटी वहाँ नहीं थी, सिर्फ नजर की रोटी थी, जो खुदावन्द के आगे से उठाई गई थी ताकि उसके बदले उस दिन जब वह उठाई जाए गर्म रोटी रखेगी जाए। 7 और वहाँ उस दिन साऊल के खादिमों में से एक शरख खुदावन्द के आगे स्का हुआ था, उसका नाम अदोमी दोएग था। यह साऊल के चरवाहों का सरदार था। 8 फिर दाऊद ने अखीमलिक से पूछा "क्या यहाँ तेरे पास कोई नेज़ह या तलवार नहीं? क्यूंकि मैं अपनी तलवार और अपने हथियार अपने साथ नहीं लाया क्यूंकि बादशाह के काम की जल्दी थी।" 9 उस काहिन ने कहा, कि "फिलिस्ती जैलियत की तलवार जिसे तूने एला की बादी में कल्प किया कपड़े में लिपटी हुई अफूद के पीछे रखी है, अगर तु उसे लेना चाहता है तो ले, उसके 'अलावा यहाँ कोई और नहीं है।'" दाऊद ने कहा, "वैसे तो कोई है ही नहीं, वही मुझे दे।" 10 और दाऊद उठा, और साऊल के खौफ से उसी दिन भागा और जात के बादशाह अकीस के पास चला गया। 11 और अकीस के मुलाजियों ने उससे कहा, "क्या यही उस मुल्क का बादशाह दाऊद नहीं? क्या इसी के बारे में नाचते बक्त गा — गा कर उन्होंने आपस में नहीं कहा था कि साऊल ने तो हजारों को लेकिन दाऊद ने लाखों को मारा?"

12 दाऊद ने यह बातें अपने दिल में रखेगी और जात के बादशाह अकीस से निहायत डरा। 13 इसलिए वह उनके आगे दूसरी चाल चला और उनके हाथ पड़ कर अपने को दीवाना सा बना लिया, और फाटक के किवाड़ों पर लकरी खीचने और अपनी थूक को अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा। 14 तब अकीस ने अपने नौकरों से कहा, "लो यह आदमी तो दीवाना है, तुम उसे मेरे पास करूँ लाएँ।" 15 क्या मुझे दीवानों की ज़स्तर है जो तुम उसको मेरे पास लाए हो कि मेरे सामने दीवाना पन करे? क्या ऐसा आदमी मेरे घर में आने पाएगा?"

22 और दाऊद वहाँ से चला और 'अटूल्लाम के मारे में भाग आया, और

उसके बाई और उसके बाप का सारा धराना यह सुनकर उसके पास वहाँ पहुँचा। 2 और सब कंगल और सब कंजदार और सब बिंगड़े दिल उसके पास जमा हुए और वह उनका सरदार बना और उसके साथ क़रीबन चार सौ आदमी हो गए। 3 और वहाँ से दाऊद मोआब के मिसाकाह को गया और मोआब के बादशाह से कहा, "मेरे माँ बाप को ज़रा यही आकर अपने यहाँ रहने दे जब तक कि मुझे मालूम न हो कि खुदा मेरे लिए क्या करेगा।" 4 और वह उनको शाहे मोआब के सामने ले आया, इसलिए वह जब तक दाऊद गढ़ में रहा, उसी के साथ रहे। 5 तब जाद नवी ने दाऊद से कहा, इस गढ़ में मत रह, रवाना हो और यहदाह के मुल्क में जा, इसलिए दाऊद रवाना हुआ, और हारत के बन में चला गया। 6 और साऊल ने सुना कि दाऊद और उसके साथियों का पता लगा है, और साऊल उस बक्त रामा के जिब्ला में ज़ाऊ के दरखत के नीचे अपना भाला अपने हाथ में लिए बैठा था और उसके खादिम उसके चारों तरफ खड़े थे। 7 तब साऊल ने अपने खादिमों से जो उसके चारों तरफ खड़े थे कहा, "सुनो तो ऐ जिन्यायीनों। क्या यस्ती का बेटा तुमैं से हर एक को खेत और ताकिस्तान देया और तुम सबको हजारों और सैकड़ों का सरदार बनाएगा? 8 जो तुम सब ने मेरे खिलाफ साजिश की है और जब मेरा बेटा यस्ती के बेटे से 'अहंद — ओ — पैमान करता है तो तुम मैं से कोई मुश्य पर ज़ाहिर नहीं करता और तुम मैं कोई नहीं जो मेरे लिए गमगीन हो और मुझे बताए कि मेरे बेटे ने मेरे नौकर को मेरे खिलाफ घाट लगाने को उभारा है, जैसा आज के दिन है?" 9 तब अदोमी दोएग ने जो साऊल के खादिमों के बराबर खड़ा था जबाब दिया कि "मैंने यस्ती के बेटे को नोब में अखीमलिक का हिन के पास आते देखा। 10 और उसने उसके लिए खुदावन्द से सवाल किया और उसे जाद — ए — राह दिया और फिलिस्ती जैलियत की तलवार दी।" 11 तब बादशाह ने अखीतोब के बेटे अखीमलिक का हिन को और उसके बाप के सारे धराने को यानी उन काहिनों को जो नोब मैं थे खुलवा भेजा और वह सब बादशाह के पास हाजिर हुए। 12 और साऊल ने कहा, "ऐ अखीतोब के बेटे तू सुन। 13 और साऊल ने उससे कहा कि "तुम ने याँनी तूने और यस्ती के बेटे ने क्यूँ मेरे खिलाफ साजिश की है, कि तूने उसे रोटी और तलवार दी और उसके लिए खुदा से सवाल किया ताकि वह मैरे बर खिलाफ उठ कर घाट लगाए जैसा आज के दिन है?" 14 तब अखीमलिक ने बादशाह को जबाब दिया कि "तौरे सब खादिमों में दाऊद की तरह आमानतार कौन है? वह बादशाह का दामाल है, और तेरे दरबार में हाजिर हुआ, करता और तेरे घर मैं अजिज्ज हूँ।" 15 और क्या मैंने आज ही उसके लिए खुदा से सवाल करना शुरू किया? ऐसी बात मुझ से दूर रहे, बादशाह अपने खादिम पर और मेरे बाप के सारे धराने पर कोई इल्जाम न लगाए क्यूँकि तेरा खादिम उन बातों को कुछ नहीं जानता, न थोड़ा न बहता।" 16 बादशाह ने कहा, "ऐ अखीमलिक! तू और तेरे बाप का सारा धराना ज़स्तर मार डाला जाएगा।" 17 फिर बादशाह ने उन सिपाहियों को जो उसके पास खड़े थे हृक्षम किया कि "मुझे और खुदावन्द के काहिनों को मार डालो क्यूँकि दाऊद के साथ इनका भी हाथ है और इन्होंने

यह जानते हुए भी कि वह भागा हुआ है मुझे नहीं बताया।” लेकिन बादशाह के खादिमों ने खुदावन्द के काहिनों पर हमला करने के लिए हाथ बढ़ाना न चाहा। 18 तब बादशाह ने दोणा से कहा, “तू मुड और उन काहिनों पर हमला कर इसलिए अदोमी दोणा ने मुड कर काहिनों पर हमला किया और उस दिन उसने पचासी आदमी जो कतान के अफूद पहने थे कत्ल किए। 19 और उसने काहिनों के शहर नेब को तलवार की धार से मारा और मर्दी और औरतों और लड़कों और दूध पीते बच्चों और बैलों और गधों और भेड़ बकरियों को बरबाद किया। 20 और अखीतोब के बेटे अखीमलिक के बेटों में से एक जिसका नाम अबीयातर था बच निकला और दाऊद के पास भाग गया। 21 और अबीयातर ने दाऊद को खबर दी कि साऊल ने खुदावन्द के काहिनों को कत्ल कर डाला है।” 22 दाऊद ने अबीयातर से कहा, “मैं उसी दिन जब अदोमी दोणा वहाँ मिला जान गया था कि वह जस्तर साऊल को खबर देता तेरे बाप के सारे घराने के मारे जाने की बजह मैं हूँ। 23 इसलिए तू मेरे साथ रह और मत डर — जो तेरी जान चाहता है, वह मेरी जान चाहता है, इसलिए तू मेरे साथ सलामत रहेगा।”

23 और उन्होंने दाऊद को खबर दी कि “देख, फिलिस्ती कँईला से लड़ रहे हैं और खतिहानों को लट रहे हैं।” 2 तब दाऊद ने खुदावन्द से पूछा

कि “क्या मैं जाऊँ और उन फिलिस्तियों को मारूँ?” खुदावन्द ने दाऊद को फरमाया, “जा फिलिस्तियों को मार और कँईला को बचा।” 3 और दाऊद के लोगों ने उससे कहा कि “देख, हम तो यहीं यहदाह मैं डरते हैं, तब हम कँईला को जाकर फिलिस्ती लशकरों का सामना करें तो कितना ज्यादा न डर लगेगा?” 4 तब दाऊद ने खुदावन्द से पिर सवाल किया, खुदावन्द ने जबवाब दिया कि “उठ कँईला को जा क्यूँकि मैं फिलिस्तियों को तेरे कब्जे में कर दूँगा।” 5 इसलिए दाऊद और उसके लोग कँईला को गए और फिलिस्तियों से लड़े और उनकी मवासी ले आए और उनको बड़ी खौज़ी के साथ कत्ल किया, यूँ दाऊद ने कँईलियों को बचाया। 6 जब अखीमलिक का बेटा अबीयातर दाऊद के पास कँईला को भागा तो उसके हाथ में एक अफूद था जिसे वह साथ ले गया था। 7 और साऊल को खबर हई कि दाऊद कँईला मैं आया है इसलिए साऊल कहने लगा कि “खुदा ने उसे मेरे कब्जे में कर दिया क्यूँकि वह जो ऐसे शहर में घुसा है, जिस में फाटक और अडबगे हैं तो कैट हो गया है।” 8 और साऊल ने जंग के लिए अपने सारे लश्कर को बुला लिया ताकि कँईला मैं जाकर दाऊद और उसके लोगों को धेर ले। 9 और दाऊद को मालूम हो गया कि साऊल उसके खिलाफ बुराई की तदबीर कर रहा है, इसलिए उसने अबीयातर काहिन से कहा कि “अफूद यहाँ ले आ।” 10 और दाऊद ने कहा, ऐ खुदावन्द इसाईल के खुदा तेरे बन्दे ने यह कर्तःई सुना है कि साऊल कँईला को आना चाहता है ताकि मेरी बजह से शहर को बरबाद करदे। 11 तब क्या कँईला के लोग मुझको उसके हवाले कर देंगे? क्या साऊल जैसा तेरे बन्दे ने सुना है आएगा? ऐ खुदावन्द इसाईल के खुदा मैं तेरी मिन्त करता हूँ कि तू अपने बन्दे को बता दे “खुदावन्द ने कहा, वह आएगा।” 12 तब दाऊद ने कहा कि “क्या कँईला के लोग मुझे और मेरे लोगों को साऊल के हवाले कर देंगे?” खुदावन्द ने कहा, “वह तुझे हवाले कर देंगे।” 13 तब दाऊद और उसके लोग जो करीबन छ़: सौ थे उठकर कँईला से निकल गए, और जहाँ कहीं जा सके चल दिए और साऊल को खबर मिली कि दाऊद कँईला से निकल गया तब वह जाने से बाज़ रहा। 14 और दाऊद ने बीराने के किलों में सुकूनत की और दश्त ऐ ज़ीफ़ के पहाड़ी मुल्क में रहा, और साऊल हर रोज उसकी तलाश में रहा, लेकिन खुदावन्द ने उसको उसके कब्जे में हवाले न किया। 15 और दाऊद ने देखा कि साऊल उसकी जान लेने को निकला है, उस वक्त दाऊद दश्त — ए — ज़ीफ़ के बन

में था। 16 और साऊल का बेटा यूनतन उठकर दाऊद के पास बन में गया और खुदा में उसका हाथ मज़बूत किया। 17 उसने उसपे कहा, “तू मत डर क्यूँकि तू मेरे बाप साऊल के हाथ में नहीं पड़ेगा और तू इसाईल का बादशाह होगा और मैं तज़ि से दूसरे दर्जे पर हूँगा, यह मेरे बाप साऊल को भी मालूम है।” 18 और उन दोनों ने खुदावन्द के आगे ‘अहद औ पैमान किया और दाऊद बन में ठहरा रहा, और यूनतन उसने घर को गया। 19 तब ज़ीफ़ के लोग जिला में साऊल के पास जाकर कहने लगे, “क्या दाऊद हमारे बीच कोहे हवाली के बन के किलों में जंगल के जुनूब की तरफ छिपा नहीं है? 20 इसलिए अब ऐ बादशाह रेरे दिल को जो बड़ी आरज़ आने की है उसके मुताबिक आ और उसको बादशाह के हाथ में हवाले करना हमारा जिम्मा रहा।” 21 तब साऊल ने कहा, “खुदावन्द की तरफ से तुम मुबारक हो क्यूँकि तुमने मुझ पर रहम किया। 22 इसलिए अब जरा जाकर सब कुछ और पक्का कर लो और उसकी जगह को देख, कर जान लो कि उसका ठिकाना कहाँ है, और किसने उसे वहाँ देखा है, क्यूँकि मुझ से कहा, गया है कि वह बड़ी चालाकी से काम करता है। 23 इसलिए तुम देख भाल कर जाहाँ — जहाँ वह छिपा करता है उन ठिकानों का पता लगा कर जस्तर मेरे पास फिर आओ और मैं तुहारे साथ चलूँगा और अगर वह इस मुल्क में कहीं भी हो तो मैं उसे यहदाह के हजारों हजार में से ढूँड निकालूँगा।” 24 इसलिए वह उठे और साऊल से फहले ज़ीफ़ को गए लेकिन दाऊद और उसके लोग मँऊन के बीराने में थे जो जंगल के जुनूब की तरफ मैदान में था। 25 और साऊल और उसके लोग उसकी तलाश में निकले और दाऊद को खबर पहुँची, इसलिए वह चट्टान पर से उतर आया और मँऊन के बीराने में रहने लगा, और साऊल ने यह सुनकर मँऊन के बीराने में दाऊद का पीछा किया। 26 और साऊल पहाड़ की इस तरफ और दाऊद और उसके लोग पहाड़ की उस तरफ चल रहे थे, और दाऊद साऊल के खौफ़ से निकल जाने की जल्दी कर रहा, था इसलिए कि साऊल और उसके लोगों ने दाऊद को और उसके लोगों को पकड़ने के लिए धेर लिया था। 27 लेकिन एक कासिद ने आकर साऊल से कहा कि “जल्दी चल क्यूँकि फिलिस्तियों ने मुल्क पर हमला किया है।” 28 इसलिए साऊल दाऊद का पीछा छोड़ कर फिलिस्तियों का मुकाबिला करने को गया इसलिए उन्होंने उस जगह का नाम सिला हम्मखल्कों तक रखवा। 29 और दाऊद वहाँ से चला गया और ‘एन जदी के किलों में रहने लगा।

24 जब साऊल फिलिस्तियों का पीछा करके लौटा तो उसे खबर मिली कि

दाऊद ‘एन जदी’ के बीराने में है। 2 इसलिए साऊल सब इसाईलियों में से तीन हजार चुने हुए जवान लेकर जंगली बकरों की चट्टानों पर दाऊद और उसके लोगों की तलाश में चला। 3 और वह रास्ता में भेड़ सालों के पास पहुँचा जहाँ एक गार था, और साऊल उस गार में फरागत करने लगा और दाऊद अपने लोगों के साथ उस गार के अंदरस्ती खानों में बैठा, था। 4 और दाऊद के लोगों ने उससे कहा, “देख, यह वह दिन है, जसके बारे में खुदावन्द ने तुझ से कहा, था कि ‘देख, मैं तेरे दूशन को तेरे कब्जे में कर दूँगा और जो तेरा जी चाहे वह तु उसपे करना।’” इसलिए दाऊद उठकर साऊल के जुब्बे का दामन चुपके से काट ले गया। 5 और उसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद का दिल बेचैन हुआ, इसलिए कि उसने साऊल के जुब्बे का दामन काट लिया था। 6 और उसने अपने लोगों से कहा कि “खुदावन्द न करे कि मैं आपने मालिक से जो खुदावन्द का मम्सूह है, ऐसा काम करूँ कि अपना हाथ उस पर चलाऊँ इसलिए कि वह खुदावन्द का मम्सूह है।” 7 इसलिए दाऊद ने अपने लोगों को यह बताए कह कर रोका और उनको साऊल पर हमला करने न दिया और साऊल उठ कर गार से निकला और अपनी राह ली। 8 और बाद उसके दाऊद भी उठा, और उस गार में से निकला और साऊल के पीछे पुकार कर कहने लगा, ऐ मेरे मालिक

बादशाह! “जब साऊल ने पीछे फिर कर देखा तो दाऊद ने ओंधे मुँह गिरकर सिज्दा किया। 9 और दाऊद ने साऊल से कहा, तू कूँू ऐसे लोगों की बातों को सुनता है, जो कहते हैं कि दाऊद तेरी बड़ी चाहता है? 10 देख, आज के दिन तू अपनी आँखों से देखा कि खुदावन्द ने गार में आज ही तुझे मेरे कब्जे में कर दिया और कुछ ने मुझ से कहा, भी कि तुझे मार डालूँ लैकिन मेरी आँखों ने तेरा लिहाज किया और मैंने कहा कि मैं अपने मालिक पर हाथ नहीं चलाऊँगा क्यैकि वह खुदावन्द का मम्स्ह है। 11 ‘अलतावा इसके ऐ मेरे बाप देख, यह भी देख, कि तेरे जुब्बे का दामन मेरे हाथ में है, और चूँकि मैंने तेरे जुब्बे का दामन काटा और तुझे मार नहीं डाला इसलिए तू जान ले और देख, ले कि मैंने हाथ में किसी तरह, की बड़ी या बुराई नहीं और मैंने तेरा कोई गुनाह नहीं किया अगर्च तू मेरी जान लेने के दर्प है। 12 खुदावन्द मेरे और तेरे बीच इन्साफ करे और खुदावन्द तुझ से मेरा बदला ले लैकिन मेरा हाथ तुझ पर नहीं उठेगा। 13 पुराने लोगों कि मिसाल है, कि युरों से बुराई होती है लैकिन मेरा हाथ तुझ पर नहीं उठेगा। 14 इस्पाईंल का बादशाह किस के पीछे निकला? तू किस के पीछे पड़ा है? एक मेरे हुए कुते के पीछे, एक पिस्सू के पीछे। 15 जब खुदावन्द ही मुसिफ हो और मेरे और तेरे बीच फैसला करे और देखे, और मेरा मुकदमा लड़ और तेरे हाथ से मुझे छुड़ाए।” 16 और ऐसा हुआ, कि जब दाऊद यह बातें साऊल से कह चुका तो साऊल ने कहा, “ऐ मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरी आवाज़ है?” और साऊल चिल्ला कर रोने लगा। 17 और उसने दाऊद से कहा, “तू मुझ से ज्यादा सच्चा है इसलिए कि तूने मेरे साथ भलाई की है, हालाँकि मैंने तेरे साथ बुराई की। 18 और तेरे आज के दिन जाहिर कर दिया कि तूने मेरे साथ भलाई की है क्यैकि जब खुदावन्द ने मुझे तेरे कब्जे में कर दिया तो तूने मुझे कल्तन न किया। 19 भला क्या कोई अपने दूशमन को पाकर उसे सलामत जाने देता है? इसलिए खुदावन्द उसने की के बदले जो तेरे मुझ से आज के दिन की तुझ को नेक अज्ज दे। 20 और अब देख, मैं खब जानता हूँ कि तू यकीनन बादशाह होगा और इस्पाईंल की सलतनत तेरे हाथ में पड़ कर काईंग होगी। 21 इसलिए अब मुझ से खुदावन्द की कसम खा कि तू मेरे बाद मेरी नसल को हलाक नहीं करेगा और मेरे बाप के घराने में से मेरे नाम को मिटा नहीं डालेगा।” 22 इसलिए दाऊद ने साऊल से कसम खाइ और साऊल घर को चला गया पर दाऊद और उसके लोग उस गढ़ में जा बैठे।

25 और सम्पूर्ण मर गया और सब इस्पाईंली जमा हुए और उन्होंने उस पर नौहा किया और उसे रामा में उसी के घर में दफन किया और दाऊद उठ कर फ़ारान के जंगल को चला गया। 2 और माँन में एक शरबत रहता था जिसकी जायदाद करमिल में थी यह शरबत बहुत बड़ा था और उस के पास तीन हजार भेड़े और एक हजार बकरियाँ थीं और यह कर्मिल में अपनी भेड़ों के बाल करत रहा था। 3 इस शरबत का नाम नाबाल और उसकी बींची का नाम अबीजेल था, यह ‘औरत बड़ी समझदार और खबूसरत थी लैकिन वह आदमी बड़ा बे अद्व और बदकर था और वह कालिक के खानादान से था। 4 और दाऊद ने वीराने में सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों के बाल करत रहा, है। 5 इसलिए दाऊद ने दस जवान रवाना किए और उसने उन जवानों से कहा, “कि तुम कर्मिल पर चढ़कर नाबाल के पास जाओ, और मेरा नाम लेकर उसे सलाम कहो। 6 और उस खुश हाल आदमी से यूँ कहो कि तेरी और तेरे घर कि और तेरे माल असबाब की सलामती हो। 7 मैंने अब सुना है कि तेरे यहाँ बाल करतने वाले हैं और तेरे चरबाहे हमारे साथ रहे और हमने उनको नुकसान नहीं पहँचाया और जब तक वह कर्मिल में हमारे साथ रहे उनकी कोई चीज़ खोई न गई। 8 तू अपने जवानों से पूछ और वह तुझे बताएँगे, तब इन जवानों पर तेरे करम की नज़र हो इसलिए कि हम अच्छे दिन आए हैं, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि जो

कुछ तेरे कब्जे में आए अपने खादिमों को और अपने बेटे दाऊद को ‘अता कर।’ 9 इसलिए दाऊद के जवानों ने जाकर नाबाल से दाऊद का नाम लेकर यह बातें कहीं और चुप हो रहे। 10 नाबाल ने दाऊद के खादिमों को जवाब दिया ‘कि दाऊद कौन है? और यस्सी का बेटा कौन है? इन दिनों बहुत से नौकर ऐसे हैं जो अपने आका के पास से भाग जाते हैं। 11 क्या मैं अपनी रोटी और पानी और जब्बी हैं जो मैंने अपने करतने वालों के लिए जबह किए हैं, लेकर उन लोगों को यूँ जिनको मैं नहीं जानता कि वह कहाँ के हैं?’ 12 इसलिए दाऊद के जवान उल्ले पाँच फिरे और लौट गए और आकर यह सब बातें उसे बताईं। 13 तब दाऊद ने अपने लोगों से कहा, अपनी अपनी तलवार बाँध लो, इसलिए हर एक ने अपनी तलवार बाँधी और दाऊद ने भी अपनी तलवार लटकाई, तब करीबन चार सौ जवान दाऊद के पीछे चले और दो सौ सामान के पास रहे। 14 और जवानों में से एक ने नाबाल की बींची अबीजेल से कहा, ‘कि देख, दाऊद ने वीराने से हमारे आका को मुबारकबाद देने को कासिद भेजे लैकिन वह उन पर झुँझलाया। 15 लैकिन इन लोगों ने हम से बड़ी नेकी की और हमारा नुकसान नहीं हुआ, और मैदानों में जब तक हम उनके साथ रहे हमारी कोई चीज़ गुम न हुई। 16 बल्कि जब तक हम उनके साथ भेड़ बकरी चराते रहे वह रात दिन हमारे लिए गोया दीवार थे। 17 इसलिए अब सोच समझ ले कि तू क्या करेगी क्यैकि हमारे आका और उसके सब घराने के खिलाफ बदी का मंसूबा बाँधा गया है, क्यैकि यह ऐसा खबीस आदमी है कि कोई इस से बात नहीं कर सकता।’ 18 तब अबीजेल ने जल्दी की और दो सौ रोटियाँ और मय के दो मशकीजे और पाँच पकाई भेड़े और भने हुए अनाज के पाँच पैमाने और किशमिश के एक सौ खोले और इन्जीर की दो सौ टिकियाँ साथ ली और उनको गधों पर लाद लिया। 19 और अपने चाकरों से कहा, “तुम मुझ से आगे जाओ, देखो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूँ” और उसने शोहर नाबाल को खबर न की। 20 और ऐसा हुआ, कि जैसे ही वह गधे पर चढ़ कर पहाड़ की आड़ से उत्तरी दाऊद अपने लोगों के साथ उत्तरे हुए उसके सामने आया और वह उनको मिली। 21 और दाऊद ने कहा, था “कि मैं इस पाजी के सब माल की जो वीराने में था वे फ़ाइदा इस तरह निगहबानी की कि उसकी लौड़ों में से कोई चीज़ गुम न हुई क्यैकि उसने नेकी के बदले मुझ से बदी की। 22 इसलिए अगर मैं सुबह की रोशनी होने तक उसके लोगों में से एक लड़का भी बाकी छोड़ तो खुदावन्द दाऊद के दुशमनों से ऐसा ही बल्कि इस्पे ज्यादा ही करे।” 23 और अबीजेल ने जो दाऊद को देखा, तो जल्दी की और गधे से उतरी और दाऊद के आगे औंधी गिरी और जमीन पर सरनाँूँ हो गईं। 24 और वह उसके पाँच पर गिर कर कहने लगी, “मुझ पर ऐ मेरे मालिक मुझी पर यह गुनाह हो और जरा अपनी लौड़ी को इजाजत दे कि तेरे कान में कुछ कहे और तू अपनी लौड़ी की दरब्बास्त सुन। 25 मैं तेरी मिन्नत करती हूँ कि मेरा मालिक उस खबीस आदमी नाबाल का कुछ खयाल न करे क्यैकि जैसा उसका नाम है वैसा ही वह है उसका नाम नाबाल है और हिमाकत उसके साथ है लैकिन मैंने जो तेरी लौड़ी हूँ अपने मालिक के जवानों को जिनको तूने भेजा था नहीं देखा। 26 और अब ऐ मेरे मालिक! खुदावन्द की हयत की कसम और तेरी जान ही की कसम कि खुदावन्द ने जो तुझे खूँजी से और अपने ही हाथों अपना इन्तकाम लेने से बाज रखा है इसलिए तेरे दुश्मन और मेरे मालिक के बुराई चाहने वाले नाबाल की तरह ठहरें। 27 अब यह हदिया जो तेरी लौड़ी अपने मालिक के सामने लाई है, उन जवानों को जो मेरे खुदावन्द की पैरतें हैं दिया जाए। 28 तू अपनी लौड़ी का गुनाह मूँआफ करदे क्यैकि खुदावन्द यकीनन मेरे मालिक का घर काईंग रखेगा इसलिए कि मेरे मालिक खुदावन्द की लडाईयाँ लडता है और तुझ में तमाम उग्र बुराई नहीं पाई जाएगी। 29 और जो इंसान तेरा

पीछा करने और तेरी जान लेने को उठे तो भी मेरे मालिक की जान ज़िन्दगी के बद्दल चेरे खुदावन्द तेरे खुदा के साथ बंधी रहेगी लेकिन तेरे दुश्मनों की जाने वह गोया गोफन में रखकर फेंक देगा। 30 और जब खुदावन्द मेरे मालिक से वह सब नेकियाँ जौ उसने तेरे हक में फरमाई है कर चुकेगा और तुझ को इसाईल का सरदार बना देगा। 31 तो तुझे इसका गम और मेरे मालिक को यह दिनी सदमा न होगा कि तूने बे वजह खुन बहाया या मेरे मालिक ने अपना बदला लिया और जब खुदावन्द मेरे मालिक से बलाई करे तो तू अपनी लौटी को याद करना।” 32 दाऊद ने अबीजेल से कहा, “कि खुदावन्द इसाईल का खुदा मुबारक हो जिसने तुझे आज के दिन मुझ से मिलने को भेजा। 33 और तेरी ‘अकलमंदी मुबारक तू खुद भी मुबारक हो जिसने मुझको आज के दिन खैरीजी और अपने हाथों अपना बदला लेने से बाज रखवा। 34 क्यूंकि खुदावन्द इसाईल के खुदा की हयात की कसम जिसने मुझे तुझको उत्सान पहुंचाने से रोका कि अगर तू जलदी न करती और मुझ से मिलने को न आती तो सुबह की रोशनी तक नाबाल के लिए एक लड़का भी न रहता।” 35 और दाऊद ने उसके हाथ से जो कुछ वह उसके लिए लाई थी कुबूल किया और उससे कहा, “अपने घर सलामत जा, देख मैंने तेरी बात मारी और तेरा लिहाज किया।” 36 और अबीजेल नाबाल के पास आई और देखा कि उसने अपने घर में शाहाना ज़ियाफ़त की तरह दावत कर रखखी है और नाबाल का दिल उसके पहलू में खाल है इसलिए कि वह नशे में चूर था, इसलिए उसने उससे सुबह की रोशनी तक न थोड़ा न बहत कुछ न कहा, 37 सुबह को जब नाबाल का नशा उतर गया तो उसकी बीवी ने यह बताते उसे बताई तब उसका दिल उसके पहलू में मुर्दा हो गया और वह पत्थर की तरह सुन पड़ गया। 38 और दस दिन के बाद ऐसा हुआ कि खुदावन्द ने नाबाल को मारा और वह मर गया। 39 जब दाऊद ने सुना कि नाबाल मर गया तो वह कहने लगा, “कि खुदावन्द मुबारक हो जो नाबाल से मेरी स्सवाई का मुकदमा लड़ा और अपने बन्दे को बुराई से बाज रखवा और खुदावन्द ने नाबाल की शरारत को उसी के सिर पर लाता।” और दाऊद ने अबीजेल के बारे में पैगाम भेजा ताकि उससे शादी करे। 40 और जब दाऊद के खादिम करमिल में अबीजेल के पास आए तो उन्होंने उससे कहा, “कि दाऊद ने हमको तेरे पास भेजा है ताकि हम तुझे उससे शादी करने को लें जाएँ।” 41 इसलिए वह उठी, और जमीन पर ओंधे मुँह गिरी और कहने लगी “कि देख, तेरी लौटी तो नैकर है ताकि अपने मालिक के खादिमों के पाँव धोए।” 42 और अबीजेल ने जल्दी की और उठकर गधे पर सवार हुई और अपनी पाँच लौंडियाँ जो उसके जितौ में थीं साथ लेती और वह दाऊद के क्रासिंडों के पीछे पीछे गई और उसकी बीवी बनी। 43 और दाऊद ने यजराल की अख्खन्अम को भी ब्याह लिया, इसलिए वह दोनों उसकी बीवियाँ बनी। 44 और साऊल ने अपनी बेटी मीकल को जो दाऊद की बीवी थी लैस के बेटे जिल्लीमी फिल्ती को दे दिया था।

26 और ज़ीफ़ी जिबा¹ में साऊल के पास जाकर कहने लगे, “क्या दाऊद हकीला के पहाड़ में जो ज़ंगल के सामने है, छिपा हआ, नहीं?” 2 तब साऊल उठा, और तीन हजार चुने हुए इसाईली जवान अपने साथ लेकर ज़ीफ़ के ज़ंगल को गया ताकि उस ज़ंगल में दाऊद को तोलाश करे। 3 और साऊल हकीला के पहाड़ में जो ज़ंगल के सामने है रास्ता के किनारे खेमा जन हुआ, पर दाऊद ज़ंगल में हारा, और उसने देखा कि साऊल उसके पीछे ज़ंगल में आया है। 4 तब दाऊद ने जासूस भेज कर मालूम कर लिया कि साऊल हकीकित में आया है? 5 तब दाऊद उठ कर साऊल की खेमागाह, में आया और वह जगह देखी जहाँ साऊल और नेर का बेटा अबनेर भी जो उसके लश्कर का सरदार था आराम कर रहे थे और साऊल गाड़ियों की जगह के बीच सोता था और लोग उसके चारों तरफ डेरे डाले हुए थे। 6 तब दाऊद ने हिन्ती अबीमलिक ज़रोयाह

के बेटे अबीशै से जो योआब का भाई था कहा “कौन मेरे साथ साऊल के पास खेमागाह में चलेगा?” अबीशै ने कहा, “मैं तेरे साथ चलूँगा।” 7 इसलिए दाऊद और अबीशै रात को लश्कर में घुसे और देखा कि साऊल गाड़ियों की जगह के बीच में पड़ा सो रहा है और उसका नेजा उसके सरहाने ज़मीन में गड़ा हुआ है और अबनेर और अबनेर के लोग उसके चारों तरफ पड़े हैं। 8 तब अबीशै ने दाऊद से कहा, खुदा ने आज के दिन तेरे दुश्मन को तेरे हाथ में कर दिया है इसलिए अब तू जरा मुझको इजाजत दे कि नेजे के एक ही वार में उसे ज़मीन से पैकूद कर दूँ और मैं उस पर दसरा वार करने का भी नहीं। 9 दाऊद ने अबीशै से कहा, “उसे कत्तल न कर क्यूंकि कौन है जो खुदावन्द के मम्सूह पर हाथ उठाए और वे गुनाह ठहरे।” 10 और दाऊद ने यह भी कहा, “कि खुदावन्द की हयात की कसम खुदावन्द आप उसको मारेगा या उसकी मौत का दिन आएगा या वह जंग में जाकर मर जाएगा। 11 लेकिन खुदावन्द न करे कि मैं खुदावन्द के मम्सूह पर हाथ चलाऊँ पर जरा उसके सरहाने से यह नेजा और पानी की सुराही उठा, ले फिर हम चले चलें।” 12 इसलिए दाऊद ने नेजा और पानी की सुराही साऊल के सरहाने से उठा ली और वह चल दिए और न किसी आदमी ने यह देख और न किसी को खबर हुई और न कोई जागा क्यूंकि वह सब के सब सोते थे इसलिए कि खुदावन्द की तरफ से उन पर गहरी नीद आई हुई थी। 13 फिर दाऊद दसरी तरफ जाकर उस पहाड़ की चोटी पर दूर खड़ा रहा, और उनके बीच एक बड़ा फासला था। 14 और दाऊद ने उन लोगों को और नेर के बेटे अबनेर को पुकार कर कहा, ऐ अबनेर तु जवाब नहीं देता? अबनेर ने जवाब दिया “तु कौन है जो बादशाह को पुकारता है?” 15 दाऊद ने अबनेर से कहा, क्या तू बड़ा बहादुर नहीं और कौन बनी इसाईल में तेरा नज़ीर है? फिर किस लिए तूने अपने मालिक बादशाह की निगहबानी न की? क्यूंकि एक शख्स तेरे मालिक बादशाह को कल्तव करने घुसा था। 16 तब यह काम तूने कुछ अच्छा न किया खुदावन्द कि हयात की कसम तुम कत्तल के लायक हो क्यूंकि तुमने अपने मालिक की जो खुदावन्द का मम्सूह है, निगहबानी न की अब जरा देख, कि बादशाह का भाला और पानी की सुराही जो उसके सरहाने थी कहाँ है। 17 तब साऊल ने दाऊद की आवाज पर हचानी और कहा, “ऐ मेरे बेटे दाऊद क्या यह तेरी आवाज है?” दाऊद ने कहा, “ऐ मेरे मालिक बादशाह यह मेरी ही आवाज है।” 18 और उसने कहा, “मेरा मालिक क्यूं अपने खादिम के पीछे पड़ा है? मैंने क्या किया है और मुझ में क्या बुराई है? 19 इसलिए अब जरा मेरा मालिक बादशाह अपने बन्दे की बातें सुने अगर खुदावन्द ने तुझ को मेरे खिलाफ उभारा हो तो वह कोई हृदिया मंज़ूर करे और अगर यह आदमियों का काम हो तो वह खुदावन्द के आगे लान्ती होंगे क्यूंकि उन्होंने आज के दिन मुझको खारिज किया है कि मैं खुदावन्द की दी हुई मीरास में शामिल न हूँ और मुझ से कहते हैं जो और मालूमों की ज़बादत कर। 20 इसलिए अब खुदावन्द की सामने से अलग मेरा खन ज़मीन पर न बहे क्यूंकि बनी इसाईल का बादशाह एक पिस्स ढूँढ़ने को इस तरह, निकला है जैसे कोई पहाड़ों पर तीर का शिकार करता हो।” 21 तब साऊल ने कहा, “कि मैंने खता की — ऐ मेरे बेटे दाऊद लौट आ क्यूंकि मैं फिर तड़े नुकसान नहीं पहचाँता इसलिए कि नीजी जान आज के दिन तेरी निगाह में कीमती ठहरी — देख, मैंने हिमाकत की और निहायत बड़ी भूल मुझ से हुई।” 22 दाऊद ने जवाब दिया “ऐ बादशाह इस भाला को देख, इसलिए जवानों में से कोई आकर इसे ले जाए। 23 और खुदावन्द हर शख्स को उसकी सच्चाई और दिग्नानतदारी के मुताबिक बदला देगा क्यूंकि खुदावन्द ने आज तुझे मेरी हाथ में कर दिया था लेकिन मैंने न चाहा कि खुदावन्द के मम्सूह पर हाथ उठाऊँ। 24 और देख, जिस तरह, तेरी ज़िन्दगी आज मेरी नज़र में कीमती ठहरी इसी तरह मेरी ज़िंदगी खुदावन्द की निगाह में

कीमती हो और वह मुझे सब तकलीफों से रिहाई बरखो।” 25 तब साऊल ने दाऊद से कहा, ऐ मेरे बेटे दाऊद तू मुलाक हो त बड़े बड़े काम करेगा और जस्तर फतहमंद होगा। इसलिए दाऊद अपनी रास्ते चला गया और साऊल अपने मकान को लौटा।

27 और दाऊद ने अपने दिल में कहा कि अब मैं किसी न किसी दिन साऊल

के हाथ से हलाक हूँगा, तब मेरे लिए इससे बेहतर और कुछ नहीं कि मैं फिलिस्तियों की सर जमीन को भाग जाऊँ और साऊल मुझ से न उमर्दी हो कर बनी इस्माईल की सरहदों में फिर मुझे नहीं ढूँडेगा, यूँ मैं उसके हाथ से बच जाऊँगा। 2 इसलिए दाऊद उठा और अपने साथ के छः सौ जवानों को लेकर जात के बादशाह म'ओके के बेटे अकीस के पास गया। 3 और दाऊद उसके लोग जात में अकीस के साथ अपने अपने खानदान समेत रहने लगे और दाऊद के साथ भी उसकी दोनों बीवियाँ यानी यजराएँ अख्खनम और नाबाल की बीवी कर्मिली अबीजिल थी। 4 और साऊल को खबर मिली कि दाऊद जात को भाग गया, तब उस ने फिर कभी उसकी तलाश न की। 5 और दाऊद ने अकीस से कहा, “कि अगर मुझ पर तेरे करम की नजर है तो मुझे उस मुल्क के शहरों में कहीं जगह दिला दे ताकि मैं बहाँ बसूँ तेरा खादिम रेरे साथ दार — उस — सलतनत में क्यूँ रहेंगे?” 6 इसलिए अकीस ने उस दिन सिक्लाज उसे दिया इसलिए सिक्लाज आज के दिन तक यहदाह के बादशाहों का है। 7 और दाऊद फिलिस्तियों की सर जमीन में कुल एक बरस और चार महीने तक रहा। 8 और दाऊद और उसके लोगों ने जाकर जस्सरियों और जज्जरियों और 'अमालाईकियों पर हमला किया क्योंकि वह शोर कि राह से मिस्र की हद तक उस सर जमीन को तबाह कर डाला और 'औरत मर्द किसी को जिन्दा न छोड़ा और उनकी भेड़ बकरियाँ और बैल और गधे और झंट और कपड़े लेकर लौटा और अकीस के पास गया। 10 अकीस ने पूछा, “कि आज तुम के किधर लूट मार की, दाऊद ने कहा, यहदाह के दलिखन और यरहमीलियों के दलिखन और कीनियों के दलिखनमें।” 11 और दाऊद उन में से एक मर्द 'औरत को भी जिन्दा बचा कर जात में नहीं लाता था और कहता था कि “कहीं वह हमारी हक्कीकित न खोलते हैं, और कह दें कि दाऊद ने ऐसा ऐसा किया और जब से वह फिलिस्तियों के मुल्क में बसा है, तब से उसका यहीं तरीका रहा, है।” 12 और अकीस ने दाऊद का यकीन कर के कहा, “कि उसने अपनी कौम इस्माईल को अपनी तरफ से कमाल नफरत दिला दी है इसलिए अब हमेशा यह मेरा खादिम रहेगा।”

28 और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ, कि फिलिस्तियों ने अपनी फौजे जंग

के लिए जमा की ताकि इस्माईल से लड़ें और अकीस ने दाऊद से कहा, “तू यकीन जान कि तुझे और तेरे लोगों को लश्कर में हो कर मेरे साथ जाना होगा।” 2 दाऊद ने अकीस से कहा, फिर जो कुछ तेरा खादिम करेगा वह तुझे मालूम भी हो जाएगा “अखीस ने दाऊद से कहा, फिर तो हमेशा के लिए तुझ को मैं अपने बुराई का निगाहबान ठहराऊँगा।” 3 और समुएल मर चुका था और सब इस्माईलियों ने उस पर नौहा कर के उसे उसके शहर रामा में डफन किया था और साऊल ने जिन्नात के आशनाओं और अफसूरों को मुल्क से खारिज कर दिया था। 4 और फिलिस्ती जमा हुए और आकर शूनीम में डेरे डाले और साऊल ने भी सब इस्माईलियों को जमा किया और वह जिलबु'आ में खेमाजन हुए। 5 और जब साऊल ने फिलिस्तियों का लश्कर देखा तो परेशन हुआ, और उसका दिल बहुत कॉपें लगा। 6 और जब साऊल ने खुदावन्द से सवाल किया तो खुदावन्द ने उसे न तो खबाबों और न उमीम और न नबियों के बसीते से कोई जवाब दिया। 7 तब साऊल ने अपने मुलाजिमों से कहा, “कोई ऐसी 'औरत

मेरे लिए तलाश करो जिसका आशना जिन्न हो ताकि मैं उसके पास जाकर उससे पूछूँ।” उसके मुलाजिमों ने उससे कहा, देख, “ऐसे दोर में एक 'औरत है जिसका आशना जिन्न है।” 8 इसलिए साऊल ने अपना भेस बदल कर दूसरी पोशाक पहनी और दो आदमियों को साथ लेकर चला और वह रात को उस 'औरत के पास आए और उसने कहा, “ज्ञा मेरी खातिर जिन्न के जरिए से मेरा फल खोल और जिसका नाम मैं तुझे बताऊँ उसे ऊपर बुला दे।” 9 तब उस 'औरत ने उससे कहा, “देख, तू जानत है कि साऊल ने क्या किया कि उसने जिन्नात के आशनाओं और अफसूरों को मुल्क से काट डाला है, फिर तू क्यूँ मेरी जान के लिए फैदा लगाता है ताकि मुझे मरवा डाले।” 10 तब साऊल ने खुदावन्द की कसम खा कर कहा, “कि खुदावन्द की हयात की कसम इस बात के लिए तुझे कोई सजा नहीं दी जाएगी।” 11 तब उस 'औरत ने कहा, “मैं किस को तेरे लिए ऊपर बुला दूँ?” उसने कहा, “समुएल को मेरे लिए बुला दे।” 12 जब उस 'औरत ने समुएल को देखा तो बुतंद आवाज से चिलाई और उस 'औरत ने साऊल से कहा, “तूने मुझ से क्यूँ दगा की व्यूकि तू तो साऊल है।” 13 तब बादशाह ने उससे कहा, “परेशन मत हो, तुझे क्या दिखाई देता है?” उसने साऊल से कहा, “मुझे एक मांबूद जमीन से ऊपर आते दिखाई देता है।” 14 तब उसने उससे कहा, “उसकी शक्ति कैसी है?” उसने कहा, “एक बुज्जा ऊपर को आ रहा है और जुब्बा पहने है,” तब साऊल जान गया कि वह समुएल है और उसने मूँह के बल गिर कर जमीन पर सिज्दा किया। 15 समुएल ने साऊल से कहा, “तूने कर्यूँ मुझे बेचैन किया कि मुझे ऊपर बुलवाया।” साऊल ने जवाब दिया, “मैं सख्त परेशन हूँ, क्योंकि फिलिस्ती मुझ से लड़ते हैं और खुदा मुझ से अलग हो गया है और न तो नबियों और न तो खबाबों के वर्सीले से मुझे जबाब देता है इसलिए मैंने तुझे बुलाया ताकि तू मुझे बताए कि मैं क्या करूँ।” 16 समुएल ने कहा, फिर तू मुझ से किस लिए पछता है जिस हाल कि खुदावन्द तुझ से अलग हो गया और तेरा दुश्मन बना है? 17 और खुदावन्द ने जैसा भैंसे जरिए कहा, था वैसा ही किया है, खुदावन्द ने तेरे हाथ से सलतनत चाक कर ली और तेरे पडोसी साऊद को 'इनायत की है। 18 इसलिए कि तूने खुदावन्द की बात नहीं मानी और 'अमालाईकियों से उसके कहर — ए — शर्दीत के मुताबिक पेश नहीं आया इसी वजह से खुदावन्द ने आज के दिन तुझ से यह बरताव किया। 19 'अलावा इसके खुदावन्द तेरे साथ इस्माईलियों को भी फिलिस्तियों के हाथ में कर देगा और कल तू और तेरे बेटे मेरे साथ होंगे और खुदावन्द इस्माईली लश्कर को भी फिलिस्तियों के हाथ में कर देगा। 20 तब साऊल फैरन जमीन पर लम्बा होकर गिरा और समुएल की बातों की वजह से निहायत डर गया और उस में कुछ ताकत बाकी न रही क्यूँकि उसने उस सारे दिन और सारी रात रोटी नहीं खाई थी। 21 तब वह 'औरत साऊल के पास आई और देखा कि वह निहायत परेशन है, इसलिए उसने उससे कहा, “देख, तेरी लौड़ी ने तेरी बात मानी और मैंने अपनी जान अपनी हथेती पर रखवी और जो बातें तूने मुझ से कहीं मैंने उनको माना है।” 22 इसलिए अब मैं तेरी मिन्तकरती नहीं हूँ कि तू अपनी लौड़ी की बात सुन और मुझे 'इजाजत दे कि रोटी का टुकड़ा रेरे आगे रखवूँ, तु खा कि जब तू अपनी राह ले तो तुझे ताकत मिले।” 23 लेकिन उसने इनकार किया और कहा, कि मैं नहीं खाऊँगा लेकिन उसके मुलाजिम उस 'औरत के साथ मिलकर उससे बजिद हुए, तब उसने उनका कहा, माना और जमीन पर से उठ कर पलंग पर बैठ गया। 24 उस 'औरत के घर में एक मोटा बछड़ा था, इसलिए उसने जल्दी की ओर उसे जबह किया और आटा लेकर गँथा और बे खमीरी रोटियाँ पकाई। 25 और उनको साऊल और उसके मुलाजिमों के आगे लाई और उन्होंने खाया तब वह उठेओर उसी रात चले गए।

29 और फिलिस्ती अपने सारे लश्कर को अफ़क़िक में जमा' करने लगे और

इस्राईली उस चश्मा के नज़दीक जो यज़र'एल में है खेड़ा जन हए। 2 और फिलिस्तियों के उमरा सैकड़ों और हज़रों के साथ आगे — आगे चल रहे थे और दाऊद अपने लोगों के साथ अकीस के साथ पीछे — पीछे जा रहा था। 3 तब फिलिस्ती अमीरों ने कहा, “इन ‘झानियों का यहाँ क्या काम है?” अकीस ने फिलिस्ती अमीरों से कहा “क्या यह इस्राईल के बादशाह साऊल का खादिम दाऊद नहीं जो इतने दिनों बल्कि इतने बरसों से मेरे साथ है और मैंने जब से वह मेरे पास भाग आया है आज के दिन तक उस में कछु बुराई नहीं पाई?” 4 लेकिन फिलिस्ती हाकिम उससे नाराज़ हुए और फिलिस्ती ने उससे कहा, इस शब्द को लौटा दे कि वह अपनी जगह को जो तुमे उसके लिए ठहराई है वापस जाए, उसे हमारे साथ जंग पर न जाने दे ऐसा न हो कि जंग में वह हमारा मुखालिफ़ हो क्यूंकि वह अपने आका से कैसे मेल करेगा? क्या इन ही लोगों के सिरों से नहीं? 5 क्या यह वही दाऊद नहीं जिसके बारे में उन्होंने नाचते बत्त गा — गा कर एक दूसरे से कहा कि “साऊल ने तो हज़रों को पर दाऊद ने लाखों को मारा?” 6 तब अकीस ने दाऊद को बुला कर उससे कहा, “खुदावन्द की हयात की कसम कि तु सच्चा है और मेरी नज़र में तेरा आना जाना मेरे साथ लश्कर में अच्छा है क्यूंकि मैंने जिस दिन से तु मेरे पास आया आज के दिन तक तुझ में कछु बुराई नहीं पाई तोभी यह हाकिम तुझे नहीं चाहते। 7 इसलिए तु अब लौट कर सलामत चला जा ताकि फिलिस्ती हाकिम तुझ से नाराज़ न हों।” 8 दाऊद ने अकीस से कहा, “लेकिन मैंने क्या किया है? और जब से मैं तेरों सामने हूँ तब से आज के दिन तक मुझ में तुमे क्या बात पाई जो मैं अपने मालिक बादशाह के दुश्मनों से जंग करने को न जाऊँ।” 9 अकीस ने दाऊद को जबाब दिया “मैं जानता हूँ कि तु मेरी नज़र में खुदा के फरिशता की तरह नेक है तोभी फिलिस्ती हाकिम ने कहा है कि वह हमारे साथ जंग के लिए न जाए। 10 इसलिए अब तु सुबह सवेरे अपने आका के खादिमों को लेकर जो तेरे साथ यहाँ आए हैं उनमा और जैसे ही तुम सुबह सवेरे उठो रोशनी होते होते रवाना हो जाओ।” 11 इसलिए दाऊद अपने लोगों के साथ तड़के उठा ताकि सुबह को रवाना होकर फिलिस्तियों के मूल्क को लौट जाए और फिलिस्ती यज़र'एल को छत्ते गए।

30 और ऐसा हुआ, कि जब दाऊद और उसके लोग तीसरे दिन सिक्कलाज में

पहुँचे तो देखा कि ‘अमालीकियों ने दलिखनी हिस्से और सिक्कलाज पर चढ़ाई कर के सिक्कलाज को मारा और आग से फँक दिया। 2 और ‘औरतों को और जितें छेटे बड़े वहाँ थे सब को कैद कर लिया है, उन्होंने किसी को कत्ल नहीं किया बल्कि उनको लेकर चल दिए थे। 3 इसलिए जब दाऊद और उसके लोग शहर में पहुँचे तो देखा कि शहर आग से जला पड़ा है, और उनकी बीवियाँ और बेटे और बेटियाँ कैद हो गई हैं। 4 तब दाऊद और उसके साथ के लोग ज़ेर ज़ेर से रोने लगे यहाँ तक कि उन में रोने की ताकत न रही। 5 और दाऊद की दोनों बीवियाँ यज़र'एली अखनूनम और कर्मली नाबाल की बीवी अबीजेल कैद हो गई थी। 6 और दाऊद बड़े शिक्कजे में था क्यूंकि लोग उसे संग्राम करने को कहते थे इसलिए कि लोगों के दिल अपने बेटों और बेटियों के लिए निहायत गमगीन थे लेकिन दाऊद ने खुदावन्द अपने खुदा में अपने आप को मज़बूत किया। 7 और दाऊद ने अखीमिलिक के बेटे अबीयातर काहिन से कहा, कि जरा अफ़क़ दो यहाँ मेरे पास ले आ, इसलिए अबीयातर अफ़क़ को दाऊद के पास ले आया। 8 और दाऊद ने खुदावन्द से पूछा कि “आप मैं उस फौज का पीछा करूँ तो क्या मैं उनको जा लूँगा?” उसने उससे कहा कि “पीछा कर क्यूंकि तू यकीनन उनको पालेगा और जस्तर सब कुछ छुड़ा लाएगा।” 9 इसलिए दाऊद और वह छँ: सौ आदमी जो उसके साथ थे चले और बसों की

नदी पर पहुँचे जहाँ वह लोग जो पीछे छोड़े गए ठहरे रहे। 10 लेकिन दाऊद और चार सौ आदमी पीछा किए चले गए क्यूंकि दो सौ जो ऐसे थक गए थे कि बसों की नदी के पार न जा सके पीछे रहे गए। 11 और उनको मैदान में एक मिस्त्री मिल गया, उसे वह दाऊद के पास ले आए और उसे रोटी दी, इसलिए उसने खाई और उसे पीने को पानी दिया। 12 और उन्होंने अंजीर की टिकिया का टुकड़ा और किशमिश के दो खोशे उसे दिए, जब वह खा चुका तो उसकी जान में जान आई क्यूंकि उस ने तीन दिन और तीन रात से न रोटी खाई थी न पानी पिया था। 13 तब दाऊद ने पूछा “तु किस का आदमी है? और तु कहाँ का है?” उस ने कहा “मैं एक मिस्त्री जवान और एक ‘अमालीकी’ का नौकर हूँ और मेरा आका मुझ को छोड़ गया क्यूंकि तीन दिन हुए कि मैं बीमार पड़ गया था। 14 हमने करतियों के दलिखन में और यहूदाह के मूल्क में और कालिब के दलिखन में लूट मार की और सिक्कलाज को आग से फँक दिया।” 15 दाऊद ने उस से कहा “क्या तु मुझे उस फौज तक पहुँचा देगा?” उसने कहा “तु मुझ से खुदा की कसम या कि न तु मुझे कत्ल करेगा और न मुझे मेरे आका के हवाले करेगा तो मैं तुझ को उस फौज तक पहुँचा दूँगा।” 16 जब उसने उसे वहाँ पहुँचा दिया तो देखा कि वह लोग उस सारी जमीन पर फैले हुए थे और उसे बहुत से माल की बजह से जो उन्होंने फिलिस्तियों के मूल्क और यहूदाह के मूल्क से लूटा था खाते पीते और जियाफ़तें उड़ा रहे थे। 17 इसलिए दाऊद रात के पहले पहर से लेकर दूसरे दिन की शाम तक उनको मारता रहा, और उन में से एक भी न बचा सिवा चार सौ जवानों के जो ऊँटों पर चढ़ कर भाग गए। 18 और दाऊद ने सब कुछ जो ‘अमालीकी’ ले गए थे छुड़ा लिया और अपनी दोनों बीवियों को भी दाऊद ने छुड़ाया। 19 और उनकी कोई चीज़ एम न हूँ न छोटी न बड़ी न लड़के न लड़कियाँ न लूट का माल न और कोई चीज़ जो उन्होंने ली थी दाऊद सब का सब लौटा लाया। 20 और दाऊद ने सब भेड़ बकरियाँ और गाय और बैल ले लिए और वह उनको बाकी जानवर के आगे यह कहते हुए हँक लाए कि यह दाऊद की लूट है। 21 और दाऊद उन दो सौ जवानों के पास आया जो ऐसे थक गए थे कि दाऊद के पीछे न जा सके और जिनको उन्होंने बसों की नदी पर ठहराया था, वह दाऊद और उसके साथ के लोगों से मिलने को निकले और जब दाऊद उन लोगों के नज़दीक पहुँचा तो उसने उनसे खैर — ओ — ‘आफ़ियत पूछी। 22 तब उन लोगों में से जो दाऊद के साथ गए थे सब बद जात और खबीस लोगों ने कहा, चौंकि यह हमारे साथ न गए, इसलिए हम इनको उस माल में से जो हम ने छुड़ाया है कोई हिस्सा नहीं देंगे ‘अलावा हर शब्द की बीवी और बाल बच्चों के ताकि वह उनको लेकर चलें जाएँ। 23 तब दाऊद ने कहा, ‘ऐ मेरे भाइयों तम इस माल के साथ जो खुदावन्द ने हमको दिया है ऐसा नहीं करने पाओगे क्यूंकि उसी ने हमको बचाया और उस फौज को जिनसे हम पर चढ़ाई की हमारे कब्जे में कर दिया। 24 और इस काम में तुम्हारी मानेगा कौन? क्यूंकि जैसा उसका हिस्सा है जो लड़ाई में जाता है वैसा ही उसका हिस्सा होगा जो सामान के पास ठहरता है, दोनों बराबर हिस्सा पाएँगे।’ 25 और उस दिन से आगे को ऐसा ही रहा कि उसने इस्राईल के लिए यही कानून और आईन मुकर रखिया जो आज तक है। 26 और जब दाऊद सिक्कलाज में आया तो उसने लूट के माल में से यहूदाह के बुजुर्गों के पास जो उसके दोस्त थे कुछ भेजा और कहा, कि देखो खुदावन्द के दूशमणों के माल में से यह तुहारे लिए हादिया है। 27 यह उनके पास जो बैतैल में और उनके पास जो रामात — उल — ज़ुन्नब में और उनके पास जो यतीर में। 28 और उनके पास जो ‘अरोँश में, और उनके पास जो सिफ़मात में और उनके पास जो इस्मिं‘अ में। 29 और उनके पास जो रकिल में और उनके पास जो यरहमीलियों के शहरों में और उनके पास जो कीनियों के शहरों में। 30 और

उनके पास जो हुरमा में और उनके पास जो कोर'आसान में, और उनके पास जो 'अताक में। 31 और उनके पास जो हबस्न में थे और उन सब जगहों में जहाँ जहाँ दाऊद और उसके लोग फिरा करते थे, भेजा।

31 और फिलिस्ती इसाईल से लड़े और इसाईली जवान फिलिस्तियों के सामने से भागे और पहाड़ी — ए — जिल्बू'आ में कत्ल होकर गिरे। 2 और फिलिस्तियों ने साऊल और उसके बेटों का खब्ब पीछा किया और फिलिस्तियों ने साऊल के बेटों यूनतन और अवीनदाब, और मलकीशु'अ को मार डाला। 3 और यह जंग साऊल पर निहायत भारी हो गई और तीरअंदाजों ने उसे पालिया और वह तीरअंदाजों की वजह से सख्त मुश्किल में पड़ गया। 4 तब साऊल ने अपने सिलाह बरदार से कहा, अपनी तलवार खींच और उससे मुझे छेद दे ऐसा न हो कि यह नामरुद्दन आँ और मुझे छेद लें, और मुझे बे 'इज्जत करें लेकिन उनके सिलाह बरदार ऐसा करना न चाहा, क्योंकि वह बहुत डर गया था इसलिए साऊल ने अपनी तलवार ली और उस पर गिरा। 5 जब उसके सिलाह बरदार ने देखा, कि साऊल मर गया तो वह भी अपनी तलवार पर गिरा और उसके साथ मर गया। 6 इसलिए साऊल और उसके तीनों बेटे और उसका सिलाह बरदार और उसके सब लोग उसी दिन एक साथ मर गिरे। 7 जब उन इसाईली मर्दों ने जो उस वादी की दूसरी तरफ और यरदन के पार थे यह देखा कि इसाईल के लोग भाग गए और साऊल और उसके बेटे मर गए तो वह शहरों को छोड़ कर भाग निकले और फिलिस्ती आए और उन में रहने लगे। 8 दूसरे दिन जब फिलिस्ती लाशों के कपड़े उतारने आए तो उन्होंने साऊल और उसके तीनों बेटों को कहे जिल्बू'आ पर मुर्दा पाया। 9 इसलिए उन्होंने उसका सर काट लिया और उसके हथियार उतार लिए और फिलिस्तियों के मूल्क में कासिद रवाना कर दिए, ताकि उनके बुतखानों और लोगों को यह खुशखबरी पहुँचा दें। 10 इसलिए उन्होंने उसके हथियारों को 'अस्तारात के मन्दिर में रख दिया और उसकी लाश को बैतशान की दीवार पर जड़ दिया। 11 जब यबीस जिल'आद के बासिंदों ने इसके बारे में वह बात जो फिलिस्तियों ने साऊल से की सुनी। 12 तो सब बहादुर उठे, और रातों रात जाकर साऊल और उसके बेटों की लाशें बैतशान की दीवार पर से ले आए और यबीस में पहुँच कर वहाँ उनको जला दिया। 13 और उनकी हड्डियाँ लेकर यबीस में झाऊ के दरखत के नीचे दफन की और सात दिन तक रोज़ा रख्छा।

2 समु

1

और साऊल की मौत के बा'द जब दाऊद अमालीकियों को मार कर लौटा

और दाऊद को सिकलाज में रहते हुए दो दिन हो गए। 2 तो तीसरे दिन ऐसा हुआ कि एक शब्बस लश्करगाह में से साऊल के पास पहुँचा तो जमीन पर गिरा और सिज्दा किया। 3 दाऊद ने उससे कहा, “तु कहाँ से आता है?” उसने उससे कहा, “मैं इस्माइल की लश्करगाह में से बच निकला हूँ।” 4 तब दाऊद ने उससे पूछा, “क्या हाल रहा? जरा मुझे बता।” उसने कहा कि “लोग जंग में से भाग गए, और बहुत से गिरे मर गए और साऊल और उसका बेटा यूनतन भी मर गये हैं।” 5 तब दाऊद ने उस जवान से जिसने उसको यह खबर दी कहा, “तुझे कैसे मालूम है कि साऊल और उसका बेटा यूनतन मर गये?” 6 वह जवान जिसने उसको यह खबर दी कहने लगा कि मैं कह— ए— जिलबू’ा पर अचानक पहुँच गया और क्या देखा कि साऊल अपने नेज़ह पर झुका हुआ है रथ और सवार उसका पीछा किए आ रहे हैं। 7 और जब उसने अपने पीछे नज़र की तो मुझको देखा और मुझे पुकारा, मैंने जवाब दिया कि “मैं हाजिर हूँ।” 8 उसने मुझे कहा तु कौन है? मैंने उसे जवाब दिया मैं अमालीकी हूँ। 9 फिर उसने मुझसे कहा, मेरे पास खड़ा होकर मुझे कल्प कर डाल क्यूँकि मैं बड़े तकलीफ में हूँ और अब तक मेरी जान मुझे में है। 10 तब मैंने उसके पास खड़े होकर उसे कल्प किया क्यूँकि मुझे यकीन था कि अब जो वह गिरा है तो बचेगा नहीं और मैं उसके सिर का ताज और बाजू पर का कंगन लेकर उनको अपने खुदावन्द के पास लाया हूँ। 11 तब दाऊद ने अपने कपड़ों को पकड़ कर उनको फांड़ा डाला और उसके साथ सब आदमियों ने भी ऐसा ही किया। 12 और वह साऊल और उसके बेटे यूनतन और खुदावन्द के लोगों और इस्माइल के घराने के लिये मातम करने लगे और शाम तक रोज़ा रखा इसलिए कि वह तलवार से मारे गये थे। 13 फिर दाऊद ने उस जवान से यो यह खबर लाया था पूछा कि “तू कहाँ का है?” उसने कहा, “मैं एक परदेसी का बेटा और ‘अमालीकी हूँ।” 14 दाऊद ने उससे कहा, “तु खुदावन्द के ममसह को हलाक करने के लिए उस पर हाथ चलाने से क्यूँ न डरा?” 15 फिर दाऊद ने एक जवान को बुलाकर कहा, “नज़दीक जा और उसपर हमला कर।” इसलिए उसने उसे ऐसा मारा कि वह मर गया। 16 और दाऊद ने उससे कहा, “तेरा खुन तेरे ही सिर पर हो तु क्यूँकि तू ही ने अपने मुँह से खुद अपने ऊपर गवाही दी। और कहा कि मैंने खुदावन्द के ममसह को जान से मारा।” 17 और दाऊद ने साऊल और उसके बेटे यूनतन पर इस मरिया के साथ मातम किया। 18 और उसने उनको हृक्षण दिया कि बनी यहदाह को कमान का गीत सिखायें। देखो वह यशार की किताब में लिखा है। 19 “ए इस्माइल! तेरे ही ऊँचे मकामों पर तेरा गुरुर मारा गया, हाय! पहलवान कैसे मर गए। 20 यह जात में न बताना, अस्कलोन की गतियों में इसकी खबर न करना, ऐसा न हो कि फिलिस्तियों की बेटियाँ खुश हों, ऐसा न हो कि नामखनों की बेटियाँ गुरुर करें। 21 ऐ जिलबू’ा के पहाड़ों! तुम पर न ओस पड़े और न बारिश हो और न हादिया की चीजों के खेत हों, क्यूँकि वहाँ पहलवानों की ढाल बुरी तरह से फेंक दी गई, यानी साऊल की ढाल जिस पर तेल नहीं लगाया गया था। 22 मकतूलों के खन से ज़बरदस्तों की चबीं से यूनतन की कमान कभी न टली, और साऊल की तलवार खाली न लौटी। 23 साऊल और यूनतन अपने जीते जी अजीज़ और दिल पसन्द थे और अपनी मौत के बक्त अलग न हुए, वह ‘उकाबों से तेज और शेर बवरों से ताक्त वर थे। 24 हे इस्माइली औरतों, साऊल के लिए रेओं, जिसने तुमको अच्छे अच्छे अर्गावानी लिबास पहनाए और सोने के जेवरों से

तुम्हारे लिबास को आरास्ता किया। 25 हाय! लडाई में पहलवान कैसे मर गये? यूनतन तेरे ऊँचे मकामों पर कल्प हआ। 26 ऐ मेरे भाई यूनतन! मुझे तेरा गाम है, तु मुझको बहुत ही प्यारा था, तेरी मुहब्बत मेरे लिए ‘अजीब थी, औरतों की मुहब्बत से भी ज्यादा। 27 हाय, पहलवान कैसे मर गये और जंग के हथियार बरबाद हो गये।”

2 और इसके बा’द ऐसा हुआ कि दाऊद ने खुदावन्द से पूछा कि “क्या मैं

यहदाह के शहरों में से किसी में चला जाऊँ?” खुदावन्द ने उस से कहा, “जा।” दाऊद ने कहा, किधर जाऊँ “उस ने फरमाया, हब्रून को।” 2 इसलिए दाऊद अपनी दोनों बीवियों यज़र ‘एली अश्वन्न-अम और कर्मिती नाबाल की बीवी अवीजेल के साथ वहाँ गया। 3 और दाऊद अपने साथ के आदमियों को भी एक एक घराने समेत वहाँ ले गया और वह हब्रून के शहरों में रहने लगे। 4 तब यहदाह के लोग आए और वहाँ उहोंने दाऊद को मसह करके यहदाह के खानदान का बादशाह बनाया, और उहोंने दाऊद को बताया कि यबीस जिल’आद के लोगों ने साऊल को दफन किया था। 5 इसलिए दाऊद ने यबीस जिल’आद के लोगों के पास क्रसिद रखाना किए और उनको कहला भेजा कि खुदावन्द की तरफ से तुम मुबारक हो इसलिए कि तुमने अपने मालिक साऊल पर यह एहसान किया और उसे दफन किया। 6 इसलिए खुदावन्द तुम्हारे साथ रहमत और सच्चाई को अमल में लाये और मैं भी तुमको इस नेकी का बदला दूँगा इसलिए कि तुमने यह काम किया है। 7 तब तुम्हारे बाजू तक तकतवर हों और तुम दिलेर रहो क्यूँकि तुम्हारा मालिक साऊल मर गया और यहदाह के घराने ने मसह कर के मुझे अपना बादशाह बनाया है। 8 लेकिन नेर के बेटे अबनेर ने जो साऊल के लशकर का सरदार था साऊल के बेटे इश्बोसत को लेकर उसे महनायम में पहुँचाया। 9 और उसे जिल’आद और आशररों और यज़र ‘एल और इक्काइम और बिनयामीन और तमाम इस्माइल का बादशाह बनाया। 10 और साऊल के बेटे इश्बोसत की उम्र चालीस बरस की थी जब वह इस्माइल का बादशाह हुआ और उसने दो बरस बादशाही की लेकिन यहदाह के घराने ने दाऊद की पैरवी की। 11 और दाऊद हब्रून में बनी यहदाह पर सात बरस छः महीने तक हाकिम रहा। 12 फिर नेर का बेटा अबनेर और साऊल के बेटे इश्बोसत के खादिम महनायम से जिब’ऊन में आए। 13 और जरोयाह का बेटा योआब और दाऊद के मुलाजिम निकले और जिब’ऊन के तालाब पर उनसे मिले और दोनों अलग अलग बैठ गये, एक तालाब की इस तरफ और दूसरा तालाब की दूसरी तरफ। 14 तब अबनेर ने योआब से कहा, जरा यह जवान उठकर हमारे सामने एक दूसरे का सुकालता करें, योआब ने कहा “ठीक।” 15 तब वह उठकर ता’दाद के मुताबिक आपने सामने हए या’नी साऊल के बेटे इश्बोसत और बिनयामीन की तरफ से बाहर जवान और दाऊद के खादिमों में से बाहर आदमी। 16 और उन्होंने एक दूसरे का सिर पकड़ कर अपनी अपनी तलवार अपने मुखालिफ के बेटे में भेंक दी, इसलिए वह एक ही साथ गिरे इसलिए वह जाह हल्कत हस्तोरीम कहलाइ वह जिब’ऊन में है। 17 और उस रोज बड़ी सख्त लडाई हुई और अबनेर और इस्माइल के लोगों ने दाऊद के खादिमों से शिक्षत खाई। 18 और जरोयाह के तीनों बेटे योआब, और अबीशै और असाहील वहाँ मौजूद थे और असाहील जंगली हिरन की तरह दौड़ता था। 19 और असाहील ने अबनेर का पीछा किया और अबनेर का पीछा करते बक्त वह दहने या बाएं हाथ न मुड़ा। 20 तब अबनेर ने अपने पीछे नज़र करके उसने कहा, ऐ असाहील क्या तू है। 21 अबनेर ने उससे कहा, “अपनी दहनी या बायी तरफ मुड़ जा और जवानों में से किसी को पकड़ कर उसके हथियार लूट लो।” लेकिन ‘असाहील उसका पीछा करने से बाज़ न आया। 22 अबनेर ने असाहील से फिर कहा, ‘मेरा पीछा करने से बाज़ रह मैं

कैसे तुझे जमीन पर मार कर डाल दूँ क्यूँकि फिर मैं तेरे भाईं योआब को क्या मूँह दिखाऊंगा।” 23 इस पर भी उसने मुड़ने से इनकार किया, अबनेर ने अपने भाले के पिछले सिरे से उसके पेट पर ऐसा मारा कि वह पार हो गया तब वह वहाँ गिरा और उसी जगह मर गया और ऐसा हुआ कि जितने उस जगह आए जहाँ ‘असाहील गिर कर मरा था वह वही खड़े रह गये। 24 लेकिन योआब और अबीशै अबनेर का पीछा करते रहे और जब वह कोह — ए — अम्मा जो दश्त — ए — जिभउन के रास्ते में जियाह के मुकाबिल है पहुँचे तो सूजू डब गया। 25 और बनी बिनयमीन अबनेर के पीछे इकट्ठे हुए और एक झूँपड बन गए और एक पहाड़ की चोटी पर खड़े हुए। 26 तब अबनेर ने योआब को पकार कर कहा, “क्या तलवार हमेशा तक हलाक करती रहे? क्या तू नहीं जानता कि इसका अंजाम कडवाहट होगा? तू कब लोगों को हुक्म देगा कि अपने भाइयों का पीछा छोड़ कर लौट जायें।” 27 योआब ने कहा, “जिन्दा खुदा की कसम अगर तू न बोला होता तो लोग सुबह ही को ज़स्तर चले जाते और अपने भाइयों का पीछा छोड़ कर लौट जायें।” 28 फिर योआब ने नरसिंगा फूँका और सब लोग ठहर गये और इसाईल का पीछा फिर न किया और न फिर लड़े 29 और अबनेर और उसके लोग उस सारी रात मैदान चले, और यदरन के पार हुए, और सब वितरोन से गुरकर कर महनायम में आ पहुँचे। 30 और योआब अबनेर का पीछा छोड़ कर लौटा, और उसने जो सब आदमियों को जमा किया, तो दाऊद के मूलाजिमों में से उन्नीस आदमी और ‘असाहील कम निकले। 31 लेकिन दाऊद के मूलाजिमों ने बिनयमीन में से और अबनेर के लोगों में से इन्हें मार दिए कि तीन सौ साठ आदमी मर गये। 32 और उन्होंने ‘असाहील को उठा कर उसे उसके बाप की कब्र में जो बैतलहम में थी दफन किया और योआब और उसके लोग सारी रात चले और हङ्कून पहुँच कर उनको दिन निकला।

3 असल में साऊल के घराने और दाऊद के घराने में मुक्त तक जंग रही और दाऊद रोज़ ब रोज़ ताकतवर होता गया और साऊल का खानदान कमज़ोर होता गया। 2 और हङ्कून में दाऊद के यहाँ बेटे पैदा हुए अमनुष उसका पहलौता था, जो यजर ऐली अस्वनूअम के बतन से था। 3 और दूसरा किलयाब था जो कर्मिली नाबाल की बीवी अबीजेल से हुआ, तीसरा अबीसलोम था जो ज़स्र के बादशाह तल्मी की बेटी माका से हुआ। 4 चौथा अदूनियाह था जो हज्जती का बेटा था और पाँचवाँ सफतियाह जो अवीताल का बेटा था। 5 और छाता इत्रिआम था जो दाऊद की बीवी ‘इज्जलाह से हुआ, यह दाऊद के यहाँ हङ्कून में पैदा हुआ। 6 और जब साऊल के घराने और दाऊद के घराने में जंग हो रही थी, तो अबनेर ने साऊल के घराने में खब जोर पैदा कर लिया। 7 और साऊल के एक बाँटी थी जिसका नाम रिस्फाह था, वह अश्याह की बेटी थी इसलिए इश्बोसत ने अबनेर से कहा, “तू मेरे बाप की बाँटी के पास क्यूँ गया?” 8 अबनेर इश्बोसत की इन बातों से बहत गुस्सा होकर कहने लगा, “क्या मैं यहदाह के किसी कुते का सिर हूँ? आज तक मैं तेरे बाप साऊल के घराने और उसके भाइयों और दोस्तों से मेहरबानी से पेश आता रहा हूँ और तुझे दाऊद के हवाले नहीं किया, तो भी तू आज इस ‘औरत के साथ मुझ पर ऐब लगाता है। 9 खुदा अबनेर से वैसा ही बल्कि उससे ज्यादा करे अगर मैं दाऊद से वही सलूक न करूँ जिसकी कसम खुदावन्द ने उसके साथ खाई थी। 10 ताकि हुक्मत को साऊल के घराने से हटा कर के दाऊद के तख्त को इसाईल और यहदाह दोनों पर दान से बैरसबा’ तक काईम करूँ।” 11 और वह अबनेर को एक लफज जवाब न दे सका इसलिए कि उससे डरता था। 12 और अबनेर ने अपनी तरफ से दाऊद के पास कासिद रवाना किए और कहला भेजा कि “मूल्क किसका है? तू मेरे साथ अपना ‘अहद बाँध और देख मेरा हाथ तेरे साथ होगा ताकि सारे इसाईल को तेरी तरफ मायल करूँ।” 13 उसने कहा, “अच्छा

मैं तेरे साथ ‘अहद बाधूँगा पर मैं तुझसे एक बात चाहता हूँ और वह यह है कि जब तू मुझसे मिलने को आए तो जब तक साऊल की बेटी मीकल को पहले अपने साथ न लाये तू मेरा मूँह देखने नहीं पाएगा।” 14 और दाऊद ने साऊल के बेटे इश्बोसत को क्रासिदों कि जरिएं कहला भेजा कि “मेरी बीवी मीकल को जिसको मैंने फिलिस्तियों की सौ खलड़ियाँ देकर ब्याहा था मेरे हवाले कर।” 15 इसलिए इश्बोसत ने लोग भेज कर उसे उसके शौहर लैस के बेटे फलीएल से छीन लिया। 16 और उसका शौहर उसके साथ चला, और उसके पीछे पीछे बहुरीम तक रोता हुआ चला आया, तब अबनेर ने उससे कहा, “लौट जा।” इसलिए वह “लौट गया।” 17 और अबनेर ने इसाईली बुजुर्गों के पास खबर भेजी, “गुरे दिनों में तुम यह चालते थे कि दाऊद तुम पर बादशाह हो। 18 तब अब ऐसा करलो, क्यूँकि खुदावन्द ने दाऊद के हक में फरमाया है कि मैं अपने बन्दा दाऊद के जरिएं अपनी कौम इसाईल को फिलिस्तियों और उनके सब दुश्मनों के हाथ से रिहाई दँगा।” 19 और अबनेर ने बनी बिनयमीन से भी बातें की और अबनेर चला कि जो कुछ इसाईलीयों और बिनयमीन के सारे घराने को अच्छा लगा उसे हङ्कून में दाऊद को कह सुनाये। 20 इसलिए अबनेर हङ्कून में दाऊद के पास आया और बीस आदमी उसके साथ थे तब दाऊद ने अबनेर और उन लोगों की जो उसके साथ थे मेहमान नवाज़ी की। 21 अबनेर ने दाऊद से कहा, “अब मैं उठकर जाऊँगा और सारे इसाईल को अपने मालिक बादशाह के पास इक्का कस्तूँगा ताकि वह तुझसे अहद बाँधे और तू जिस जिस पर तेरा जी चाहे हुक्मत करे।” इसलिए दाऊद ने अबनेर को स्वतंत्र किया और वह सलामत चला गया। 22 दाऊद के लोग और योआब किसी जंग से लट का बहुत सा माल अपने साथ लेकर आएः लेकिन अबनेर हङ्कून में दाऊद के पास नहीं था, क्यूँकि उसे उसने स्वतंत्र कर दिया था और वह सलामत चला गया था। 23 और जब योआब और लश्कर के सब लोग जो उसके साथ थे आए तो उन्होंने योआब को बताया कि “नेर का बेटा अबनेर बादशाह के पास आया था और उसने उसे स्वतंत्र कर दिया और वह सलामत चला गया।” 24 तब योआब बादशाह के पास आकर कहने लगा, “यह तूने क्या किया? देख! अबनेर तेरे पास आया था, इसलिए तूने उसे क्यूँ स्वतंत्र कर दिया कि वह निकल गया? 25 तू ने के बेटे अबनेर को जानता है कि वह तुझको धोका देने और तेरे आने जाने और तेरे सारे काम का राज लेने आया था।” 26 जब योआब दाऊद के पास से बाहर निकला तो उसने अबनेर के पीछे क्रासिद भेजे और वह उसको सीरह के कुँवे से लौटा ले आएः लेकिन यह दाऊद को मालूम नहीं था। 27 जब अबनेर हङ्कून में लौट आया तो योआब उसे अलग फाटक के अन्दर ले गया, ताकि उसके साथ चुप्पे चुप्पे बात करे, और वहाँ अपने भाईं ‘असाहील के खन के बदले में उसके पेट में ऐसा मारा कि वह मर गया। 28 बाद में जब दाऊद ने यह सुना तो कहा कि “मैं और मेरी हुक्मत दोनों हमेशा तक खुदावन्द के आगे ने के बेटे अबनेर के खन की तरफ से बे गुनाह हैं। 29 वह योआब और उसके बाप के सारे घराने के सिर लगे, और योआब के घराने में कोई न कोई ऐसा होता रहे जिसे जरयान हो या कोँटी या बैसार्वी पर चले या तलवार से मेरे या टुकडे टकड़े को मोहताज हों।” 30 इसलिए योआब और उसके भाईं अबीशै ने अबनेर को मार दिया इसलिए कि उसने जिब’ ऊन में उनके भाईं ‘असाहील को लडाई में कत्ल किया था 31 और दाऊद ने योआब से और उन सब लोगों से जो उसके साथ थे कहा कि “अपने कपडे फाडो और टाट पहनो और अबनेर के आगे आगे मातम करो।” और दाऊद बादशाह खुद जनाजे के पीछे पीछे चला। 32 और उन्होंने अबनेर को हङ्कून में दफन किया और बादशाह अबनेर की कब्र पर जोर जोर से रोया और सब लोग भी रोए। 33 और बादशाह ने अबनेर पर मर्सिया कहा, “क्या अबनेर को ऐसा ही मरना था जैसे बेवकूफ मरता है? 34 तेरे

हाथ बंधे न थे और न तेरे पाँव बेड़ियों में थे, जैसे कोई बदकारों के हाथ से मरता है वैसे ही तू मारा गया।” तब उसपर सब लोग दोबाहर रोए। 35 और सब लोग कुछ दिन रहते दाऊद को रोटी खिलाने आए लोकिन दाऊद ने कसम खाकर कहा, “अगर मैं सूजन के गुरुब छोड़े से पहले रोटी या और कुछ चर्चाँ तो खुदा मुझ से ऐसा बल्कि इससे जायदा करो।” 36 और सब लोगों ने इस पर गौर किया और इससे खुश हुए क्योंकि जो कुछ बादशाह करता था सब लोग उससे खुश होते थे। 37 तब सब लोगों ने और तमाम इस्माइल ने उसी दिन जान लिया कि नेर के बेटे अबनेर का कल्प होना बादशाह की तरफ से न था। 38 और बादशाह ने अपने मुलाजिमों से कहा, “क्या तुम नहीं जानते हो कि आज के दिन एक सरदार बल्कि एक बहुत बड़ा आदमी इस्माइल में मरा है? 39 और अगर्वी मैं मम्सूह बादशाह हूँ तो भी आज के दिन बेबस हूँ और यह लोग बीं जरोयाह मुझसे ताकतवर हैं खुदावन्द बदकारों को उसकी गुनाह के मुताबिक बदला दे।”

4 जब साऊल के बेटे इश्बोसत ने सुना कि अबनेर हब्बन में मर गया तो उसके हाथ ढीले पड़ गए, और सब इस्माइली घबरा गए। 2 और साऊल के बेटे इश्बोसत के दो आदमी थे जो फौजों के सरदार थे, एक का नाम बा’ना और दूसरे का रेकाब था, यह दोनों बिनयमीन की नसल के बैस्ती रिम्मोन के बेटे थे, क्योंकि बैस्त भी बनी बिनयमीन का गिना जाता है। 3 और बैस्ती जिंतीम को भाग गए थे चुनाँचे आज के दिन तक वह वहाँ रहते हैं। 4 और साऊल के बेटे यूनतन का एक लंगड़ा बेटा था, जब साऊल और यूनतन की खबर यज्जऱएल से पहुँची तो एह पाँच बरस का था, तब उसकी दिया उसको उठा कर भागी और और उसने जो भागने में जल्दी की तो ऐसा हुआ कि वह गिर पड़ा और वह लंगड़ा हो गया उसका नाम मिफीबोसत था। 5 और बैस्ती रिम्मोन के बेटे रेकाब और बा’ना चले और कड़ी धूप के बक्त इश्बोसत के घर आए जब दोपहर को आराम कर रहा था। 6 तब वह वहाँ घर के अन्दर गैंगूँ लेने के बहाने से घुसे और उसके पेट में मारा और रेकाब और उसका भाई बा’ना भाग निकले। 7 जब वह घर में घुसे तो वह अपनी आरामगाह में अपने बिस्तर पर सोता था, तब उन्होंने उसे मारा और कल्प किया और उसका सिर काट दिया और उसका सिर लेकर तमाम रात मैदान की राह चले। 8 और इश्बोसत का सिर हब्बन में दाऊद के पास ले आए और बादशाह से कहा, “तेरा दुश्मन साऊल जो तेरी जान का तालिक था यह उसके बेटे इश्बोसत का सिर है, इसलिए खुदावन्द ने आज के दिन मेरे मालिक बादशाह का बदला साऊल और उसकी नसल से लिया।” 9 तब दाऊद ने रेकाब और उसके भाई बा’ना को बैस्ती रिम्मोन के बेटे थे जबाब दिया कि “खुदावन्द की हयात की कसम जिसने मेरी जान को हर मुसीबत से रिहाई दी है। 10 जब एक शख्स ने मुझसे कहा कि देख साऊल मर गया और समझा कि खुशखबरी देता है तो मैंने उसे पकड़ा और सिक्कताज में उसे कल्प किया यही सज्जा मैंने उसे सक्की खबर के बदले दिया। 11 तब जब बदकारों ने एक सच्चे इंसान को उसी के घर में उसके बिस्तर पर कल्प किया है, तो क्या मैं अब उसके खन का बदला तुमसे ज़स्त न लूँ और तुमको ज़मीन पर से मिटा न डालूँ?” 12 तब दाऊद ने अपने जवानों को हक्म दिया, और उन्होंने उनको कल्प किया और उनके हाथ और पाँव काट डाले, और उनको हब्बन में तालाब के पास टौंग दिया और इश्बोसत के सिर को लेकर उन्होंने हब्बन में अबनेर की कब्र में दफन किया।

5 तब इस्माइल के सब कबीले हब्बन में दाऊद के पास आकर कहने लगे, “देख हम तेरी हड्डी और तेरा गोश्त है। 2 और गुज़रे ज़माने में जब साऊल हमारा बादशाह था, तो तू ही इस्माइलियों को ले जाया और ले आया करता

था: और खुदावन्द ने तुझसे कहा कि तू मेरे इस्माइली लोगों की गल्ता बानी करेगा और तू इस्माइल का सरदार होगा।” 3 गर्ज इस्माइल के सब बज़ुर्ग हब्बन में बादशाह के पास आए और दाऊद बादशाह ने हब्बन में उनके साथ खुदावन्द के सामने ‘अहद बांधा’ और उन्होंने दाऊद को मसह करके इस्माइल का बादशाह बनाया। 4 और दाऊद जब हक्मत करने लगा तो तीस बरस का था और उसने चालीस बरस बादशाहत की। 5 उसने हब्बन में सात बरस छः: महीन यहदाह पर हक्मत की और येस्सलेम में सब इस्माइल और यहदाह पर तैतीस बरस बादशाहत की। 6 फिर बादशाह और उसके लोग येस्सलेम को यबसियों पर जो उस मुल्क के बाशिदे थे चार्डाई करने लगे, उन्होंने दाऊद से कहा, “जब तक तू अंधों और लंगड़ों को न ले जाए यहाँ नहीं आने पायेगा।” वह समझते थे कि दाऊद यहाँ नहीं आ सकता है। 7 तो भी दाऊद ने सिय्यून का किला¹ ले लिया, वही दाऊद का शहर है। 8 और दाऊद ने उस दिन कहा कि “जो कोई यबसियों को मारे वह नाले को जाए और उन लंगड़ों और अंधों को मारे जिन से दाऊद के दिल को नफरत है।” इसी लिए यह कहावत है कि “अंधे और लंगड़े वहाँ हैं, इसलिए वह घर में नहीं आ सकता।” 9 और दाऊद उस किला² में रहने लगा और उसने उसका नाम दाऊद का शहर रखा और दाऊद ने चारों तरफ मिल्लों से लेकर अन्दर के स्तर तक बहुत कुछ तारीफ किया। 10 और दाऊद बढ़ता ही गया क्यूंकि खुदावन्द लशकरों का खुदा उसके साथ था। 11 और सूर के बादशाह हेरान ने क्रासिदों को और देवदर की लकड़ियों और बढ़ियों और राजागिरों को दाऊद के पास भेजा और उन्होंने दाऊद के लिए एक महल बनाया। 12 और दाऊद को यकीन हुआ कि खुदावन्द का बादशाह बनाकर क्यास बरखा, और उसने उसकी हुक्मत को अपनी कौम इस्माइल की खातिर मुस्तज़ा किया है। 13 और हब्बन से चले आने के बाद दाऊद ने येस्सलेम से और बाँदियाँ रख ली और बीवियाँ की और दाऊद के यहाँ और बेटे बेटियाँ पैदा हुईं। 14 और जो येस्सलेम में उसके यहाँ पैदा हुए, उनके नाम यह हैं सामू़ आ, और सोबाब और नातन और सुलेमान। 15 और इबहार और इलिसू अ और नफज और यफ़ी। 16 और इलीसमा³ और इलीयदा और इलिफालत। 17 और जब फिलिस्तियों ने सुना कि उन्होंने दाऊद को मसह करके इस्माइल का बादशाह बनाया है, तो सब फिलिस्ती दाऊद की तलाश में चढ़ आए और दाऊद को खबर हुई, तब वह किला⁴ में चला गया। 18 और फिलिस्ती आकर रिफाईम की बादी में फैल गये। 19 तब दाऊद ने खुदा से पूछा, “क्या मैं फिलिस्तियों के मुकाबला को जाऊँ? क्या तू उनको मेरे कब्जे में कर देगा?” खुदावन्द ने दाऊद से कहा कि “जा। क्योंकि मैं ज़स्त फिलिस्तियों को मेरे कब्जे में कर दूँगा।” 20 फिर दाऊद बाल प्राजीम में आया और वहाँ दाऊद ने उनको मारा और कहने लगा कि “खुदावन्द ने मेरे दुश्मनों को मेरे सामने तोड़ डाला जैसे पानी टूट कर बह निकलता है।” तब उसने उस जगह का नाम बा’ल प्राजीम रखा। 21 और वही उन्होंने अपने बुतों को छोड़ दिया था तब दाऊद और उसके लोग उनको ले गए। 22 और फिलिस्ती फिर चढ़ आए और रिफाईम की बादी में फैल गये। 23 और जब दाऊद ने खुदावन्द से पूछा तो उसने कहा, “तू चार्डाई न कर, उनके पीछे से घूम कर तूत के दरखतों के सामने से उन पर हमला कर। 24 और जब तूत के दरखतों की फुनियों में तुझे फौज के चलने की आवाज सुनाई दे तो चुस्त हो जाना, क्योंकि उस बक्त खुदावन्द तेरे अगे आगे निकल चुका होगा, ताकि फिलिस्तियों के लशकर को मारे।” 25 और दाऊद ने जैसा खुदावन्द ने उसे फरमाया था वैसा ही किया और फिलिस्तियों को जिबा⁵ से जजर तक मारता गया।

6 और दाऊद ने फिर इस्माइलियों के सब चुने हुए तीस हजार मर्दों को जमा⁶ किया। 2 और दाऊद उठा और सब लोगों को जो उसके साथ थे लेकर

बाला यहदाह से चला ताकि खुदा के संदूक को उधर से ले आए, जो उस नाम का याँची रब्ब — उल — अपवाज के नाम का कहलाता है, जो कर्स्बियों पर बैठता है। 3 तब उन्होंने खुदा के संदूक को नई गाड़ी पर रखा और उसे अबीनदाब के घर से जो पहाड़ी पर था निकाल लाये, और उस नई गाड़ी को अबीनदाब के बेटे उज्जह और अखियों हांकने लगे। 4 और वह उसे अबीनदाब के घर से जो पहाड़ी पर था खुदा के संदूक के साथ निकाल लाये, और अखियों संदूक के आगे आगे चल रहा था। 5 और दाऊद और इमाईल का सारा घराना सनेहर की लकड़ी के सब तरह के साज और सिंतार बरबत और दफ और खन्जरी और जाँड़ खुदावन्द के आगे आगे बजाते चले। 6 और जब वह नकोन के खलियान पर पहुँचे तो उज्जह ने खुदा के संदूक की तरफ हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, क्यूँकि बैलों ने ठोकर खाई थी। 7 तब खुदावन्द का गुस्सा उज्जह पर भड़का और खुदा ने वही उसे उसकी खत्ता की बजह से मारा, और वह वही खुदा के संदूक के पास मर गया। 8 और दाऊद इस वजह से कि खुदा उज्जह पर टूट पड़ा नाशुश हुआ, और उसने उस जगह का नाम परज उज्जह रखवा जो आज के दिन तक है। 9 और दाऊद उस दिन खुदावन्द से डर गया और कहने लगा कि “खुदावन्द का संदूक में यहाँ क्यूँकर आए?” 10 और दाऊद ने खुदावन्द के संदूक को अपने यहाँ, दाऊद के शहर में ले जाना न चाहा, बल्कि दाऊद उसे एक तरफ जाती ‘ओबेदअदम के घर ले गया। 11 और खुदावन्द का संदूक जाती ओबेदअदम के घर में तीन महीने तक रहा और खुदावन्द ने ओबेदअदम को और उसके सारे घराने को बरकत दी। 12 और दाऊद बादशाह को खबर मिली कि खुदावन्द ने ‘ओबेदअदम के घराने को और उसकी हर चीज में खुदा के संदूक की बजह से बरकत दी है, तब दाऊद गया और खुदा के संदूक को ‘ओबेदअदम के घर से दाऊद के शहर में रुशी रुशी से आया। 13 और ऐसा हुआ कि जब खुदावन्द के संदूक के उठाने वाले छ: कटम चले तो दाऊद ने एक बैल और एक मोटा बछड़ा जबह किया। 14 और दाऊद खुदावन्द के सामने अपने सारे जोर से नाचने लगा, और दाऊद कतान का अफूद पहने था। 15 तब दाऊद और इमाईल का सारा घराना खुदावन्द के संदूक को ललकारते और नरसिंगा फँकते हुए लाये। 16 और जब खुदावन्द का संदूक दाऊद के शहर के अन्दर आ रहा था, तो साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की से निगाह की और दाऊद बादशाह को खुदावन्द के सामने उछलते और नाचते देखा, तब उसने अपने दिल ही दिल में हक्की राजा। 17 और वह खुदा के संदूक को अन्दर लाये और उसे उसकी जगह पर उस खेमा के बीच जो दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था रखवा, और दाऊद ने सोलतनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश कर चुका, तो उसने रब्बूल अपवाज के नाम से लोगों को बरकत दी। 19 और उसने सब लोगों याँनी इमाईल के सारे जमात के मर्दों और ‘ओरतों दोनों को एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा गोशत और किशमिश की एक एक टिक्कया बाँटी, फिर सब लोग अपने अपने घर चले गये। 20 तब दाऊद लौटा ताकि अपने घराने को बरकत दे और साऊल की बेटी मीकल दाऊद के इस्तकबाल को निकली और कहने लगी कि “इमाईल का बादशाह आज कैसा शानदार मालूम होता था जिसने आज के दिन अपने मुलाजिमों की लौटियों के सामने अपने को नंगा किया जैसे कोई नौजवान बेहयाई से नंगा हो जाता है!” 21 दाऊद ने मीकल से कहा, “यह ते खुदावन्द के सामने था जिसने तेरे बाप और उसके सारे घराने को छोड़ कर मुझे पसन्द किया, ताकि वह मुझे खुदावन्द की क्रौम इमाईल का रहनुमा बनाये, इसलिए मैं खुदावन्द के आगे नाचँगा। 22 बल्कि मैं इससे भी ज्यादा जलील हूँगा और अपनी ही नजर में नीच हूँगा और

जिन लौटियों का ज़िक्र तूने किया है वही मेरी इज्जत करेंगी।” 23 इसलिए साऊल की बेटी मीकल मरते दम तक बे औलाद रही।

7 जब बादशाह अपने महल में रहने लगा, और खुदावन्द ने उसे उसको चारों तरफ के सब दुश्मनों से आराम बख्शा। 2 तो बादशाह ने नातन नबी से कहा, “देख मैं तो देवदार की लकड़ियों के घर में रहता हूँ लेकिन खुदावन्द का संदूक पर्दों के अन्दर रहता है।” 3 तब नातन ने बादशाह से कहा। “जा जो कुछ तेरे दिल में है कर क्यूँकि खुदावन्द तेरे साथ है।” 4 और उसी रात को ऐसा हुआ कि खुदावन्द का कलाम नातन को पहुँचा कि 5 “जा और मेरे बन्दा दाऊद से कह, खुदावन्द यूँ फरमाता है कि क्या तू मेरे रहने के लिए एक घर बनाएगा? 6 क्यूँकि जब से मैं बनी इमाईल को मिस से निकाल लाया आज के दिन तक किसी घर में नहीं रहा, बल्कि खेमा और मसकन में फिरता रहा हूँ। 7 और जहाँ जहाँ मैं सब बनी इमाईल के साथ फिरता रहा, क्या मैं ने कहीं किसी इमाईली कबीले से जिसे मैंने हक्क किया कि मेरी क्रौम इमाईल की गल्ला बानी करो यह कहा कि तुमने मेरे लिए देवदार की लकड़ियों का घर क्यों नहीं बनाया? 8 इसलिए अब तु मेरे बन्दा दाऊद से कहा कि रब्बूल अपवाज यूँ फरमाता है, कि मैंने तुझे भेड़साला से जहाँ त भेड़ बकरियों के पीछे पीछे फिरता था लिया, ताकि तु मेरी क्रौम इमाईल का रहनुमा हो। 9 और मैं जहाँ जहाँ त गया तेरे साथ रहा, और तेरे सब दुश्मनों को तेरे सामने से काट डाला है, और मैं दुनिया के बड़े बड़े लोगों के नाम की तरह तेरा नाम बड़ा करँगा। 10 और मैं अपनी क्रौम इमाईल के लिए एक जगह मुकर्कर करँगा, और वहाँ उनको जमाऊँगा ताकि वह अपनी ही जगह बसें और फिर हटाये न जायें, और शरारत के फर्ज़द उनको फिर दुख नहीं देने पायेंगे जैसा पहले होता था। 11 और जैसा उस दिन से होता आया, जब मैंने हक्क दिया, कि मेरी क्रौम इमाईल पर काजी होंगी और मैं ऐसा करँगा, कि तुझको तेरे सब दुश्मनों से आराम मिले इसके अलावा खुदावन्द तुझको बताता है कि खुदावन्द तेरे घरको बनाये रखेगा। 12 और जब तेरे दिन पूरे हो जायेंगे और तु अपने बाप दादा के साथ मर जाएंगा, तो मैं तेरे बाद तेरी नसल को जो तेरे सुल्ख से होगी, खड़ा करके उसकी हूँकूमत को काईम करँगा। 13 वही मैंने नाम का एक घर बनाएगा और मैं उसकी बादशाहत का तत्त्व हमेशा के लिए काईम करँगा। 14 और मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा, अगर वह खत्ता करे तो मैं उसे आदमियों की लाठी और बनी आदम के ताजिया नों से नसीहत करँगा। 15 लेकिन मेरी रहमत उससे जदा न होगी, जैसे मैंने उसे साऊल से जुदा किया जिसे मैंने तेरे आगे से हटा दिया। 16 और तेरा घर और तेरी बादशाहत हमेशा बनी रहेगी, तेरा तत्त्व हमेशा के लिए काईम किया जायेगा। 17 जैसी यह सब बातें और यह सारा खबाब था वैसा ही दाऊद से नातन ने कहा। 18 तब दाऊद बादशाह अन्दर जाकर खुदावन्द के आगे बैठा, और कहने लगा, ऐ मालिक खुदावन्द मैं कौन हूँ और मेरा घराना क्या है कि तूने मझे यहाँ तक पहुँचाया। 19 तो भी ऐ ऐ मालिक खुदावन्द यह तेरी नजर में छोटी बात थी क्यूँकि तूने अपने बन्दा के घराने के हक में बहुत मुश्त तक का ज़िक्र किया है और वह भी ऐ मालिक खुदावन्द आदमियों के तरीके पर। 20 और दाऊद तूने और क्या कह सकता है? क्यूँकि ऐ मालिक खुदावन्द तू अपने बन्दा को जानता है। 21 तूने अपने कलाम की खातिर और अपनी मँज़ी के मुताबिक यह सब बड़े काम किए और ताकि तेरा बन्दा उनसे बाकिक हो जाए। 22 इसलिए तू ऐ खुदावन्द खड़ा, बुर्जग है, क्यूँकि जैसा हमने अपने कानों से सुना है उसके मुताबिक कोई तेरी तरह नहीं और तेरे 'अलावब' कोई खुदा नहीं। 23 और दुनिया में वह कौन सी एक क्रौम है जो तेरे लोगों याँनी इमाईल की तरह है, जिसे खुदा ने जाकर अपनी क्रौम बनाने को छुड़ाया, ताकि वह अपना नाम करे, और तम्हारी खातिर बड़े काम और अपने मुल्क के लिए और अपनी

कौम के आगे जिसे तूने मिस्त्री की कौमों से और उनके मां/बूदों से रिहाई बख्शी होतनाक काम करे। 24 और तूने अपने लिए अपनी कौम बनी इसाईल को मुकर्रर किया, ताकि वह हमेशा के लिए तेरी कौम ठहरे और तू खुद ऐ खुदावन्द उनका खुदा हुआ। 25 और अब तू ऐ खुदावन्द उस बात को जो तूने अपने बन्दा और उसके घराने के हक में फरमाइ है, हमेशा के लिए क्राईम करदे और जैसा तूने फरमाया है वैसा ही कर। 26 और हमेशा यह कह कहकर तेरे नाम की बडाई की जाए, कि रब्ब — उल — अपवाज इसाईल का खुदा है और तेरे बन्दा दाऊद का घराना तेरे सामने काईम किया जाएगा। 27 क्यूंकि तूने ऐ रब्ब — उल — अपवाज इसाईल के खुदा अपने बन्दा पर ज़ाहिर किया, और फरमाया कि मैं तेरा घराना बनाए रख खुँगा, तब तेरे बन्दा के दिल में यह आया कि तेरे आपे यह मुनाजात करे। 28 और ऐ मालिक खुदावन्द तू खुदा है और तेरी बातें सच्ची हैं, और तूने अपने बन्दे से इस नेकी का वांदा किया है। 29 इसलिए अब अपने बन्दा के घराने को बरकत देना मंज़र कर, ताकि वह हमेशा तेरे नज़दीक वफादार रहे, कि तू ही ने ऐ मालिक खुदावन्द यह कहा है, और तेरी ही बरकत से तेरे बन्दे का घराना हमेशा मुबारक रहे।

8 इसके बाद दाऊद ने फिलिस्तियों को मारा, और उनको मगलूब किया और दाऊद ने दास्तन हक्मत 'इनाम फिलिस्तियों के हाथ से छीन ली। 2 और उसने मोआब को मारा और उनको जमीन पर लिटा कर स्सी से नापा, तब उसने कल्त करने के लिए दो रसियों से नापा और जीता छोड़ने के लिए एक पूरी रस्सी से, यूँ मोआबी दाऊद के खादिम बनकर हदिये लाने लगे। 3 और दाऊद ने जोबाह के बादशाह रहोब के बेटे हदद'अजर को भी जब वह दरिया — ए — फ़रात पर बादशाहत पर भी क़ज्जा करने को जा रहा था मार लिया। 4 और दाऊद ने उसके एक हजार सात सौ सवार और बीस हजार पियादे पकड़ लिए और दाऊद ने रथों के सब घोड़ों की नाले काटी पर उनमें से सौ रथों के लिए थोड़े बचा रख ले। 5 और जब दमिश्क के अरामी ज़ोबाह के बादशाह हदद अजर की मदद को आए तो दाऊद ने अरामियों के बाईस हजार आदमी कल्त किए। 6 जब दाऊद ने दमिश्क के आराम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई तब अरामी भी दाऊद के खादिम बन कर हदिये लाने लगे, और खुदावन्द ने दाऊद को जहाँ कहीं वह गया फतह बख्शी। 7 और दाऊद ने हदद'अजर के मुलाजिमों की सोने की ढाले छीन ली और उनको येस्शलेम में ले आया। 8 और दाऊद बादशाह बताह और बैस्ती से जो हदद'अजर के शहर थे बहुत सा पीतल ले आया। 9 और जब हमात के बादशाह तूरी ने सुना कि दाऊद ने हदद'अजर का सारा लश्कर मार लिया। 10 तो तूरी ने अपने बेटे यूराम को दाऊद बादशाह के पास भेजा, कि उसे सलाम करे और मुबारकबाद दे, इसलिए कि उसने हदद'अजर से लड़ा करता था और यूराम चाँदी और सोने और पीतल के बरतन अपने साथ लाया। 11 और दाऊद बादशाह ने उनको खुदावन्द के लिए मख्सूस किया, ऐसे ही उसने उनसब कौमों के सोने चाँदी को मख्सूस किया जिनको उसने मगलूब किया था। 12 यांनी अरामियों और मोआबियों और बनी अम्मोन और फिलिस्तियों और 'आमालीकियों के सोने चाँदी और ज़ोबाह के बादशाह रहोब के बेटे हदद'अजर की लूट की। 13 और दाऊद का बड़ा नाम हुआ जब वह नमक की बाटी में अरामियों के अठारह हजार आदमी मार कर लौटा। 14 और उसने अदोम में चौकियाँ बिठाई बल्कि सारे अदोम में चौकियाँ बिठाई और सब अदमी दाऊद के खादिम बने और खुदावन्द ने दाऊद को जहाँ कहीं वह गया फतह बख्शी। 15 और दाऊद ने कुल इसाईल पर बादशाहत की और दाऊद अपनी सब 'इयत के साथ अदल — ओ — इन्साफ करता था 16 और ज़रीयाह का बेटा योआब लश्कर का सरदार था, और अखीलूद का बेटा यहसफ़त मुर्विख था। 17 और अखीतोब का बेटा सदूक

और अबीयातर का बेटा अखीमलिक काहिन थे और सिरायाह मुशी था। 18 और यहयादाह का बेटा बनायाह केरितियों और फिलिस्तियों का सरदार था, और दाऊद के बेटे कहिन थे।

9 फिर दाऊद ने कहा, "क्या साऊल के घराने में से कोई बाकी है, जिस

पर मैं यूनतन की खातिर महरबानी करूँ।" 2 और साऊल के घराने का एक खादिम जिसका नाम जीबा था, उसे दाऊद के पास बुला लाये, बादशाह ने उससे कहा, "क्या तू जीबा है?" उसने कहा, "हाँ तेरा बन्दा वही है।" 3 तब बादशाह ने उससे कहा, "क्या साऊल के घराने में से कोई नहीं रहता ताकि मैं उसपर खुदा की तरह महेरबानी करूँ?" जीबा ने बादशाह से कहा, "यूनतन का एक बेटा रह गया है जो लंगड़ा है।" 4 तब बादशाह ने उससे पूछा, "वह कहाँ है?" जीबा ने बादशाह को जवाब दिया, "देख वह लद्बार में अम्मी ऐल के बेटे मकरी के घर में है।" 5 तब दाऊद बादशाह ने लोग भेज कर लद्बार से अम्मी ऐल के बेटे मकरी के घर से उसे बुलाया लिया। 6 और साऊल के बेटे यूनतन का बेटा मिफ़ीबोसत दाऊद के पास आया, और उसने मूँह के बल गिरकर सिज्दा किया, तब दाऊद ने कहा, मिफ़ीबोसत! "उसने जवाब दिया, तेरा बन्दा हाजिर है।" 7 दाऊद ने उससे कहा, "मत डर क्यूँकि मैं तेरे बाप यूनतन की खातिर जस्त तुझ पर महरबानी करूँगा, और तेरे बाप साऊल की जमीन पर तुझे फेर दूँगा, और तू हमेशा मेरे दस्तरख्बान पर खाना खाया कर।" 8 तब उसने सिज्दा किया और कहा, "कि तेरा बन्दा है क्या चीज़ जो तू मुझे जैसे मेरे कुत्ते पर निगाह करे?" 9 तब बादशाह ने साऊल के खादिम जीबा को बुलाया और उससे कहा कि "मैंने सब कुछ जो साऊल और उसके सारे घराने का था तेरे आका के बेटे को बाज़ा दिया। 10 इसलिए तू अपने बेटों और जैकरों समेत जमीन को उसकी तरफ से जोत कर पैदावार को ले आया कर ताकि तेरे आका के बेटे के खाने को रोटी हो पर मिफ़ीबोसत जो तेरे आका का बेटा है मेरे दस्तरख्बान पर हमेशा खाना खायेगा।" और जीबा के पन्दरह बेटे और बीस नौकर थे। 11 तब जीबा ने बादशाह से कहा, "जो कुछ मेरे मालिक बादशाह ने अपने खादिम को हक्म दिया है तेरा खादिम वैसा ही करेगा।" लेकिन मिफ़ीबोसत के हक्म में बादशाह ने फरमाया कि वह मेरे दस्तरख्बान पर इस तरह खाना खायेगा कि गोया वह बादशाह जादों मेंसे एक है। 12 और मिफ़ीबोसत का एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका था, और जितने जीबा के घर में रहते थे वह सब मिफ़ीबोसत के खादिम थे। 13 इसलिए मिफ़ीबोसत येस्शलेम में रहने लगा, क्यूँकि वह हमेशा बादशाह के दस्तरख्बान पर खाना खाता था और वह दोनों पाँव से लंगड़ा था।

10 इसके बाद ऐसा हुआ कि बनी अम्मोन का बादशाह मर गया और उसका

बेटा हनूम उसका जामासीन हुआ। 2 तब दाऊद ने कहा कि "मैं नाहस के बेटे हनूम के साथ महरबानी करूँगा, जैसे उसके बाप ने मेरे साथ महरबानी की।" 3 तब दाऊद ने अपने खादिम भेजे ताकि उनके ज़रिए उसके बाप के बारे में उसे तसल्ली दे, चूँचे दाऊद के खादिम बनी अम्मोन की सर जमीन पर आए। 4 बनी अम्मोन के सरदारों ने अपने मालिक हनूम से कहा, "तुम्हे क्या यह गुमान है कि दाऊद तेरे बाप की ज़ीम करता है कि उसने तसल्ली देने वाले तेरे पास भेजे हैं? क्या दाऊद ने अपने खादिम तेरे पास इसलिए नहीं भेजे हैं कि शहर का हाल दरयापत करके और इसका भेद लेकर वह इसको बरबाद करे?" 5 तब हनूम ने दाऊद के खादिमों को पकड़ कर उनकी आधी दाढ़ी मुंदबाई और उनकी लिबास बीच से सुरीन तक कटाव कर उनको स्त्रवत्सर कर दिया। 6 जब दाऊद को खबर पहुँची तो उसने उसे मिलने को लोग भेजे इसलिए यह आदमी बहुत ही शर्मिन्दा थे, इसलिए बादशाह ने फरमाया कि "जब तक तुम्हारी दाढ़ी न

बढ़े यरीह में रहो, उसके बाद चले आना।” 6 जब बनी अम्मोन ने देखा कि वह दाऊद के आगे गुस्सा हो गया तो बनी अम्मोन ने लोग भेजे और बैतरहोब के अरामियों और जूबाह के अरामियों में से बीस हजार पियादों को और माका के बादशाह को एक हजार सिपाहियों समेत और तोब के बारह हजार आदमियों को मजदूरी पर बुलाया। 7 और दाऊद ने यह सुनकर योआब और बहादुरों के सारे लश्कर को भेजा। 8 तब बनी अम्मोन निकले और उन्होंने फाटक के पास ही लड़ाई के लिए सफ बांधी और जूबाह और रहोब के अरामी और तोब और माका के लोग मैदान में अलग थे। 9 जब योआब ने देखा कि उसके आगे और पीछे दोनों तरफ लड़ाई के लिए सफ बांधी है तो उसने बनी इस्माईल के खास लोगों को चुन लिया और अरामियों के सामने उनकी सफ बांधी। 10 और बाकी लोगों को अपने भाई अबीशी के हाथ सौप दिया, और उसने बनी अम्मोन के सामने सफ बांधी। 11 फिर उसने कहा, अगर अरामी मुझ पर गालिब होने लगें तो मेरी मदद करना और अगर बनी अम्मोन तुझ पर गालिब होने लगें तो मैं आकर तेरी मदद करौँ। 12 इसलिए खूब हिम्मत रख और हम सब अपनी क्रौम और अपने खुदा के शहरों की खातिर मर्दानगी करें और खुदावन्द जो बेहतर जाने वह करो। 13 तब योआब और वह लोग जो उसके साथ थे अरामियों पर हमला करने को आगे बढ़े और वह उसके आगे भागे। 14 जब बनी अम्मोन ने देखा कि अरामी भाग गए तो वह भी अबीशी के सामने से भाग कर शहर के अन्दर घुस गए, तब योआब बनी अम्मोन के पास से लौट कर येस्शलेम में आया। 15 जब अरामियों ने देखा कि उन्होंने इस्माईलियों से शिकस्त खाई तो वह सब जमा’ हुए। 16 और हटद’ अजर ने लोग भेजे और अरामियों को जो दरिया — ए — फरात के पार थे ले आया और वह हिलाम में आए और हटद’ अजर की फौज का सिपह सालार सूबक उनका सरदार था। 17 और दाऊद को खबर मिली, इसलिए उसने सब इस्माईलियों को इकट्ठा किया और यरदन के पार होकर हिलाम में आया और अरामियों ने दाऊद के सामने सफ आराई की और उससे लड़े। 18 और अरामी इस्माईलियों के सामने से भागे और दाऊद ने अरामियों के सात सौ रथों के आदमी और चालीस हजार सवार कल्तव कर डाले, और उनकी फौज के सरदार सूबक को ऐसा मारा कि वह वही मर गया। 19 और जब बादशाहों ने जो हटद’ अजर के खादिम थे देखा कि वह इस्माईलियों से हार गए, तो उन्होंने इस्माईलियों से सुलह कर ली और उनकी खिदमत करने लगे, तब अरामी बनी अम्मोन की फिर मदद करने से डेर।

11 और ऐसा हुआ कि दूसरे साल जिस वक्त बादशाह जंग के लिए निकलते हैं, दाऊद ने योआब और उसके साथ अपने खादिमों और सब इस्माईलियों को भेजा, और उन्होंने बनी अम्मोन को कल्तव किया और रब्बा को जा धेरा पर दाऊद येस्शलेम ही में रहा। 2 और शाम के वक्त दाऊद अपने पलंग पर से उठकर बादशाही महल की छत पर टहलने लगा, और छत पर से उसने एक 'औरत को देखा जो नहा रही थी, और वह 'औरत निहायत खब्बमूत थी। 3 तब दाऊद ने लोग भेजकर उस 'औरत का हाल दर्यापत्र किया, और किसी ने कहा, “क्या वह इलीआम की बेटी बतसवा नहीं जो हिती ऊरियाह की बीवी है?” 4 और दाऊद ने लोग भेजकर उसे बुला लिया, वह उसके पास आई और उसने उससे सोहबत की (क्योंकि वह अपनी नापाकी से पाक हो चुकी थी) फिर वह अपने घर को चली गई। 5 और वह औरत हाम्ला हो गई, तब उसने दाऊद के पास खबर भेजी कि “मैं हाम्ला हूँ।” 6 और दाऊद ने योआब को कहला भेजा कि “हिती ऊरियाह को मेरे पास भेज दे।” इसलिए योआब ने ऊरियाह को दाऊद के पास भेज दिया। 7 और जब ऊरियाह आया तो दाऊद ने पूछा कि योआब कैसा है और लोगों का क्या हाल है और जंग कैसी हो रही है? 8 फिर दाऊद ने ऊरियाह से कहा कि “अपने घर जा और अपने पाँव धो।” और

ऊरियाह बादशाह के महल से निकला और बादशाह की तरफ से उसके पीछे पीछे एक खाना भेजा गया। 9 लेकिन ऊरियाह बादशाह के घर के आस्ताना पर अपने मालिक के और सब खादिमों के साथ सोया और अपने घर न गया। 10 और जब उन्होंने दाऊद को यह बताया कि “ऊरियाह अपने घर नहीं गया। तो दाऊद ने ऊरियाह से कहा, क्या तुम सफर से नहीं आया? तब तुम अपने घर क्यों नहीं गया?” 11 ऊरियाह ने दाऊद से कहा कि “सांदूक और इर्हाइल और यहदाह झोपड़ियों में रहते हैं और मेरा मालिक योआब और मेरे मालिक के खादिम खुले मैदान में डेरे डाले हुए हैं तो क्या मैं अपने घर जाऊँ और खाँख पियूँ और अपनी बीवी के साथ सोऊँ? तेरी हयात और तेरी जान की कसम मुझसे यह बात न होगी।” 12 फिर दाऊद ने ऊरियाह से कहा कि “आज भी तू यहीं रह जा, कल मैं तुमे रवाना कर दूँगा।” इसलिए ऊरियाह उस दिन और दूसरे दिन भी येस्शलेम में रहा। 13 और जब दाऊद ने उसे बुलाया तो उसने उसके सामने खाया पिया और उसने उसे पिलाकर मतवाला किया और शाम को वह बाहर जाकर अपने मालिक के और खादिमों के साथ अपने बिस्तर पर सो रहा पर अपने घर को न गया। 14 सबह को दाऊद ने योआब के लिए खत लिखा और उसे ऊरियाह के हाथ भेजा। 15 और उसने खत में यह लिखा कि “ऊरियाह को जंग में सबसे आगे रखना और तुम उसके पास से हट जाना ताकि वह मारा जाए और जाँ बहक हो।” 16 और यूँ हुआ कि जब योआब ने उस शहर का जाइजा कर लिया तो उसने ऊरियाह को ऐसी जगह रखखा जहाँ वह जानता था कि बहादुर मर्द है। 17 और उस शहर के लोग निकले और योआब से लड़े और वहाँ दाऊद के खादिमों में से थोड़े से लोग काम आए और हिन्ती ऊरियाह भी मर गया। 18 तब योआब ने आदमी भेज कर जंग का सब हाल दाऊद को बताया। 19 और उसने क्रासिद को नर्सीहत कर दी कि “जब तु बादशाह से जंग का सब हाल बयां कर चुके।” 20 तब अगर ऐसा हो कि बादशाह को गुस्सा आ जाये और वह तुम्हसे कहने लगे कि तुम लड़ने को शहर के ऐसे नजदीक क्यों चले गये? क्या तुम नहीं जानते थे कि वह दीवार पर से तीर मारें? 21 योब्बसुत के बेटे अबीमलिक को किसने मारा? क्या एक 'औरत ने चक्की का पात दीवार परसे उसके ऊपर के ऊपर नहीं फैका कि वह तैबिज में मर गया? इसलिए तुम शहर की दीवार के नजदीक क्यों गये? तो फिर तू कहना कि तेरा खादिम हिती ऊरियाह भी मर गया।” 22 तब वह क्रासिद चला और आकर जिस काम के लिए योआब ने उसे भेजा था वह सब दाऊद को बताया। 23 और उस क्रासिद ने दाऊद से कहा “कि वह लोग हमपर गालिब हुए और निकल कर मैदान में हमारे पास आगए, फिर हम उनको दौड़ाते हुए फाटक के मदरखल तक चले गये। 24 तब तीरदाजों ने दीवार पर से तेरे खादिमों पर तीर छोड़े, इसलिए बादशाह के थोड़े खादिम भी मरे और तेरा खादिम हिती ऊरियाह भी मर गया।” 25 तब दाऊद ने क्रासिद से कहा कि, “तू योआब से यूँ कहना कि तुम्हे इस बात से ना खुशी न हो इसलिए कि तलवार जैसा एक को उड़ाती है वैसा ही दूसरे को, इसलिए तू शहर से और सख्त जंग करके उसे ढा दे और तू उसे हिम्मत देना।” 26 जब और्याह की बीवी ने सुना कि उसका शौहर ऊरियाह मर गया तो वह अपने शौहर के लिए मातम करने लगी। 27 और जब मातम के दिन गुजर गए तो दाऊद ने बुलावाकर उसको अपने महल में रख लिया और वह उसकी बीवी हो गई और उससे उसके एक लड़का हुआ पर उस काम से जिस दाऊद ने किया था खुदावन्द नाराज हुआ।

12 और खुदावन्द ने नात को दाऊद के पास भेजा, उसने उसके पास आकर उससे कहा, “किसी शहर में दो शब्द थे, एक अमीर दूसरा गरीब। 2 उस अमीर के पास बहुत से रेवड़ और गल्ले थे। 3 लैकिन उस गरीब के पास भेज की एक पठिया के 'अलावा कुछ न था, जिसे उसने खरीद कर पाला था

और वह उसके और उसके बाल बच्चों के साथ बढ़ी थी, वह उसी के नेवाले में से खाती और उसके पियाला से पीती और उसकी गोद में सोती थी, और उसके लिए बौद्ध बेटी के थी। 4 और उस अमीर के यहाँ कोई मुसाफिर आया, इसलिए उसने उस मुसाफिर के लिए जो उसके यहाँ आया था पकाने को अपने रेवड और गलता में से कुछ न लिया, बल्कि उस गरीब की भेड़ ले ली, और उस शख्स के लिए जो उसके यहाँ आया था पकाइ।” 5 तब दाऊद का गजब उस शख्स पर बशिददत भड़का और उसने नातन से कहा कि “रुद्धावन्द की हयात की क्रसम कि वह शख्स जिसने यह काम किया वाजिबूल कत्ल है।” 6 इसलिए उस शख्स को उस भेड़ का चौंगना भरना पड़ेगा क्यूंकि उसने ऐसा काम किया और उसे तरस न आया।” 7 तब नातन ने दाऊद से कहा, “वह शख्स तूहीं है, खुदावन्द इमाईल का खुदा यूँ फरमाता है कि मैंने तुझे मसह करके इमाईल का बादशाह बनाया और मैंने तुझे साऊल के हाथ से छुड़ाया।” 8 और मैंने तेरे आका का घर तुझे दिया और तेरे आका की बीवियों तेरी गोद में करदी, और इमाईल और यहदाह का घरना तुझको दिया, और अगर यह सब कुछ थोड़ा था तो मैं तुझको और और चीजें भी देता। 9 इसलिए तेरे क्यों खुदा की बात की तहकीर करके उसके सामने बुराई की? तुमें हिती ऊरियाह को तलवार से मारा और उसकी बीवी लेली ताकि वह तेरी बीवी बने और उसको बीनी अम्मोनी की तलवार से कत्ल करवाया। 10 इसलिए अब तेरे घरसे तलवार कभी अलग न होगी क्यूंकि तुम मुझे हकीर जाना और हिती ऊरियाह की बीवी लेली ताकि वह तेरी बीवी हो। 11 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि देख मैं बुराई को तेरे ही घर से तेरे खिलाफ उठाऊँगा और मैं तेरी बीवियों को लेकर तेरी आँखों के सामने तेरे पड़ोसी को ढूँगा, और वह दिन दहाड़े तेरी बीवियों से सोहबत करेगा। 12 क्यूंकि तेरे छिपकर यह किया लेकिन मैं सारे इमाईल के सामने दिन दहाड़े यह करँगा।” 13 तब दाऊद ने नातन से कहा, “मैंने खुदावन्द का गुनाह किया।” नातन ने दाऊद से कहा कि “खुदावन्द ने भी तेरा गुनाह बख्ता, त् मरेगा नहीं।” 14 तो भी तैरि तेरे इस काम से खुदावन्द के दुम्पों को कुफ़ बक्कने का बड़ा मौका दिया है इसलिए वह लड़का भी जो तुझसे पैदा होगा मर जाएगा।” 15 फिर नातन अपने घर चला गया और खुदावन्द ने उस लड़के को जो ऊरियाह की बीवी के दाऊद से पैदा हुआ था मारा और वह बहत बीमार हो गया। 16 इसलिए दाऊद ने उस लड़के की खातिर खुदा से मिन्नत की और दाऊद ने रोजा रखा और अन्दर जाकर सारी रात ज़मीन पर पड़ा रहा। 17 और उसके घराने के बुर्ज़ुग उठकर उसके पास आए कि उसे ज़मीन पर से उठायें पर वह न उठा और न उसने उनके साथ खाना खाया। 18 और सातवें दिन वह लड़का मर गया और दाऊद के मूलाजिम उसे डर के मारे यह न बता सके कि लड़का मर गया, क्यूंकि उन्होंने कहा कि “जब वह लड़का जिन्दा ही था और हमने उससे बात की तो उसने हमारी बात न मानी तब अगर हम उसे बतायें कि लड़का मर गया तो वह बहुत ही दुर्वी होगा।” 19 लेकिन जब दाऊद ने अपने मूलाजिमों को आपस में फ़ुसफुसाते देखा तो दाऊद समझ गया कि लड़का मर गया, इसलिए दाऊद ने अपने मूलाजिमों से पैछा, “क्या लड़का मर गया?” उन्होंने जवाब दिया, मर गया। 20 तब दाऊद ज़मीन पर से उठा और उसने गुस्त करके उसने तेल लगाया और लिबास बदली और खुदावन्द के घर में जाकर सज्जा किया फिर वह अपने घर आया और उसके हृक्षम देने पर उन्होंने उसके आगे रोटी रखी और उसने खाई। 21 तब उसके मूलाजिमों ने उससे कहा, “यह कैसा काम है जो तुमे किया? जब वह लड़का जीता था तो तूने उसके लिए रोजा रख्खा और रोता भी रहा और जब वह लड़का मर गया तो तूने उठकर रोटी खाई।” 22 उसने कहा कि “जब तक वह लड़का जिन्दा था मैंने रोता रहा क्यूंकि मैंने सोचा क्या जाने खुदावन्द को मुझपर रहम आजाये कि वह लड़का जीता रहे? 23

लेकिन अब तो मर गया तब मैं किस लिए रोजा रखूँ? क्या मैं उसे लौटा के ला सकता हूँ? मैं तो उसके पास जाऊँगा पर वह मेरे पास नहीं लौटने का।” 24 फिर दाऊद ने अपनी बीवी बत सबा’को तसल्ली दी और उसके पास गया और उससे सोहबत की और उसके एक बेटा हुआ और दाऊद ने उसका नाम सुनेमान रख्खा और खुदावन्द का प्यारा हुआ। 25 और उसने नातन नवी की जरिए पैगाम भेजा तब उसने उसका नाम खुदावन्द की खातिर यदीदियाह रख्खा। 26 और योआब बीनी अम्मोन के बच्चा से लड़ा और उसने दास्त हक्कमत को ले लिया। 27 और योआब ने क्रासिदों के जरिए दाऊद को कहला भेजा कि “मैं बच्चा से लड़ा और मैंने पानियों के शहर को ले लिया। 28 फिर अब तब बाकी लोगों को जमा कर और इस शहर के नज़दीक खेमा जन हो और इस पर कब्जा कर ले ऐसा न हो कि मैं इस शहर को बरबाद करूँ और वह मेरे नाम से कहलाए।” 29 तब दाऊद ने लोगों को जमा किया और रब्बा को गया और उससे लड़ा और उसे ले लिया। 30 और उसने उनके बादशाह का ताज उसके सर पर से उतार लिया, उसका बजन सोने का एक किन्तार था और उसमें जवाहर जड़े हुए थे, फिर वह दाऊद के सर पर रख्खा गया और वह उस शहर से लैट का बहुत सा माल निकाल लाया। 31 और उसने उन लोगों को जो उसमें थे बाहर निकाल कर उनको आरों और लोहे के हैंगों और लोहे के कुलहाड़ों के नीचे कर दिया, और उनको ईंटों के पजावे में से चलवाया और उसने बीनी अम्मोन के सब शहरों से ऐसा ही किया, फिर दाऊद और सब लोग येस्तलेम को लौट आए।

13 और इसके बाद ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अबीसलोम की एक खूबसूरत बहन थी, जिसका नाम तमर था, उस पर दाऊद का बेटा अमनू आशिक हो गया। 2 और अमनू ऐसा कुछने लगा कि वह अपनी बहन तमर की बजह से बीमार पड़ गया, क्यूंकि वह कँवारी थी इसलिए अमनू को उसके साथ कुछ करना दुश्वार मालूम हुआ। 3 और दाऊद के भाई सिमाना का बेटा यनदब अमनू का दोस्त था, और यनदब बड़ा चालाक आदीनी था। 4 फिर उसने उनसे कहा, “ऐ बादशाह जादे! तू क्यूँ दिन ब दिन दुबला होता जाता है? क्या त् मुझे नहीं बताएगा?” तब अमनू ने उससे कहा कि “मैं अपने भाई अबीसलोम की बहन तमर पर ‘आशिक हूँ।’” 5 यनदब ने उससे कहा, “त् अपने बिस्तर पर लेटे जा और बीमारी का बहाना कर ले और जब तेरा बाप तुझे देखने आए, तो तू उससे कहना, मेरी बहन तमर को ज़रा आने दे कि वह मुझे खाना दे और मेरे सामने खाना पकाये, ताकि मैं देखूँ और उसके हाथ से खाऊँ।” 6 तब अमनू पड़ गया और उसने बीमारी का बहाना कर लिया और जब बादशाह उसको देखने आया, तो अमनू ने बादशाह से कहा, “मेरी बहन तमर को ज़रा आने दे कि वह मेरे सामने दो परियाँ बनाये, ताकि मैं उसके हाथ से खाऊँ।” 7 तब दाऊद ने तमर के घर कहला भेजा कि “त् अभी अपने भाई अमनू के घर जा और उसके लिए खाना पकाओ।” 8 फिर तमर अपने भाई अमनू के घर गई और वह बिस्तर पर पड़ा हुआ था और उसने आटा लिया और गूँथा, और उसके सामने पूरियाँ बनायी और उनको पकाया। 9 और तबे को लिया और उसके सामने उनको उंडेल दिया, लेकिन उसने खाने से इन्कार किया, तब अमनू ने कहा कि “सब आदमियों को मेरे पास से बाहर कर दो।” तब हर एक आदमी उसके पास से चला गया। 10 तब अमनू ने तमर से कहा कि “खाना कोठरी के अन्दर ले आ ताकि मैं तेरे हाथ से खाऊँ।” इसलिए तमर वह पूरियाँ जो उसने पकाई थी उठा कर उनको कोठरी में अपने भाई अमनू के पास लायी। 11 और जब वह उनको उसके नज़दीक ले गई कि वह खाए तो उसने उसे पकड़ लिया और उससे कहा, “ऐ मेरी बहन मुझसे सोहबत कर।” 12 उसने कहा, “नहीं मेरे भाई मेरे साथ ज़बरदस्ती न कर क्यूंकि इमाईलियों में कोई ऐसा काम नहीं होना चाहिए, त् ऐसी हिमाकत न कर। 13 और भला मैं अपनी स्सवाई

कहाँ लिए फिस्टँगी? और तू भी इमाईलियों के बेवकूफों में से एक की तरह ठहरेगा, इसलिए तू बादशाह से दरख्बास्त कर क्यूँकि वह मुझको तुझसे रोक नहीं रख सकेगा।” 14 लेकिन उसने उसकी बात न मानी और चूँकि वह उससे ताक़तवर था इसलिए उसने उसके साथ जबरदस्ती की, और उससे सोहबत की। 15 फिर अमनून को उससे बड़ी सख्त नफरत हो गई क्यूँकि उसकी नफरत उसके जज्ज— ए इश्क से कही बढ़कर थी, इसलिए अमनून ने उससे कहा, “उठ चली जा।” 16 वह कहने लगी, “ऐसा न होगा क्यूँकि यह जूल्म कि तू मुझे निकालता है उस काम से जो तूने मुझसे किया बदलता है।” लेकिन उसने उसकी एक न सुनी। 17 तब उसने अपने एक मुलाजिम को जो उसकी खिदमत करता था बुला कर कहा, “इस ‘औरत को मेरे पास से बाहर निकाल दे और पीछे दरवाजे की चटकनी लगा दे।” 18 और वह रंग बिरंग जोड़ा पहने हुए थी क्यूँकि बादशाहों की कुँवारी बेटियाँ ऐसी ही लिंबास पहनती थीं फिर उसके खादिम ने उसको बाहर कर दिया और उसके पीछे चटकनी लगा दी 19 और तमर ने अपने सर पर खाक डाली और अपने रंग बिरंग के जोड़े को जो पहने हुए थी फाड़ लिया, और सर पर हाथ धर कर रोती हुई चली। 20 उसके भाई अबीसलोम ने उससे कहा, “क्या तेरा भाई अमनून तेरे साथ रहा है? खैर ऐ मेरी बहन अब चुप हो रह क्यूँकि वह तेरा भाई है और इस बात का गम न करा।” तब तमर अपने भाई अबीसलोम के घर में बै सपड़ी रही। 21 और जब दाऊद बादशाह ने वह सब बातें सुनी तो निहायत गुप्ता हुआ। 22 और अबीसलोम ने अपने भाई अमनून से कुछ बुरा भला न कहा क्यूँकि अबीसलोम को अमनून से नफरत थी इसलिए कि उसने उसकी बहन तमर के साथ जबरदस्ती किया था। 23 और ऐसा हुआ कि पूरे दो साल के बाद भेड़ों के बाल करतने वाले अबीसलोम के यहाँ बाँल हसोर में थे जो इक़ाइम के पास हैं और अबीसलोम ने बादशाह के सब बेटों को दाँवत दी। 24 तब अबीसलोम बादशाह के पास आकर कहने लगा, “तेरे खादिम के यहाँ भेड़ों के बाल करतने वाले आए हैं इसलिए मैं मिन्त करता हूँ कि बादशाह अपने मुलाजिमों और अपने खादिम के साथ चलो।” 25 तब बादशाह ने अबीसलोम से कहा, “नहीं मेरे बेटे हम सबके सब न चलें ऐसा न हो कि तुझ पर हम बोझ हो जाएँ और वह उससे बजिद हुआ तो भी वह न गया पर उसे दुआ दी।” 26 तब अबीसलोम ने कहा, अगर ऐसा नहीं हो सकता तो मेरे भाई अमनून को तो हमारे साथ जाने दे “बादशाह ने उससे कहा, वह तेरे साथ क्यों जाए?” 27 लेकिन अबीसलोम ऐसा बजिद हुआ कि उसने अमनून और सब शहजादों को उसके साथ जाने दिया। 28 और अबीसलोम ने अपने खादिमों को हक्म दिया कि “देखो जब अमनून का दिल मय से सुरू में हो और मैं तुम को कहूँ कि अमनून को मारो तो तुम उसे मार डालना खौफ न करना, क्या मैंने तुमको हक्म नहीं दिया? हिमतबर और बहादुर बने रहो।” 29 चुनौती अबीसलोम के नौकरों ने अमनून से वैसा ही किया जैसा अबीसलोम ने हक्म दिया था, तब सब शहजादे उठे और हर एक अपने खच्चर पर चढ़ कर भागा। 30 और वह अभी गास्ते ही में थे कि दाऊद के पास यह खबर पहुँची कि “अबीसलोम ने सब शहजादों को कल्त कर डाला है और उनमें से एक भी बाकी नहीं बचा।” 31 तब बादशाह ने उठकर अपने लिंबास को फाड़ा और जमीन पर गिर पड़ा और उसके सब मुलाजिम लिंबास फाड़े हुए उसके सामने खड़े रहे। 32 तब दाऊद के भाई सिमाओं का बेटा यूनदब कहने लगा कि “मेरा मालिक यह ख्याल न करे, कि उहोंने सब जबानों को जो बादशाह जादे हैं मार डाला है इसलिए कि सिर्फ अमनून ही मरा है, क्यूँकि अबीसलोम के इन्तिजाम से उसी दिन से यह बात ठान ली गई थी जब उसने उसकी बहन तमर के साथ जबरदस्ती की थी। 33 इसलिए मेरा मालिक बादशाह ऐसा ख्याल करके कि सब शहजादे मर गये इस बात का गम न करे क्यूँकि सिर्फ अमनून ही मरा है।”

34 और अबीसलोम भाग गया और उस जवान ने जो निगहबान था अपनी आँखें उठाकर निगाह की और क्या देखा कि बहुत से लोग उसके पीछे की तरफ से पहाड़ के किनारे के रस्ते से चले आ रहे हैं। 35 तब यूनदब ने बादशाह से कहा कि “देख शहजादे आ गए जैसा तेरे खादिम ने कहा था वैसा ही है।” 36 उसने अपनी बात खत्म ही की थी कि शहजादे आ पहुँचे और जोर जोर से रोने लगे और बादशाह और उसके सब मुलाजिम भी जोर जोर से रोए। 37 लेकिन अबीसलोम भाग कर जसर के बादशाह ‘अमीन्हदू’ के बेटे तल्मी के पास चला गया और दाऊद हर रोज अपने बेटे के लिए मातम करता रहा। 38 इसलिए अबीसलोम भाग कर जसर को गया और तीन बरस तक वही रहा। 39 और दाऊद बादशाह के दिल में अबीसलोम के पास जाने की बड़ी आरज़ू थी क्यूँकि अमनून की तरफ से उसे तसल्ली हो गई थी इसलिए कि वह मर चुका था।

14 और जरोयाह के बेटे योआब ने जान लिया कि बादशाह का दिल अबीसलोम की तरफ लगा है। 2 तब योआब ने तक़‘अ को आदमी भेज कर वहाँ से एक ‘अक्लमन्द’ औरत बुलावाइ और उससे कहा कि “ज़रा सोग वाली सा भेस करके मातम के कपड़े पहन ले, और तेल न लगा बल्कि ऐसी ‘औरत की तरह बन जा, जो बड़ी मुद्रत से मुद्रा के लिए मातम कर रही हो।” 3 और बादशाह के पास जाकर उससे इस तरह कहना। फिर योआब ने जो बातें कहनी थीं सिखायी। 4 और जब तक़‘अ की वह ‘औरत बादशाह से बातें करने लगी, तो ज़मीन पर औंधे मुँह होकर गिरी और सिज्दा करके कहा, ऐ बादशाह तेरी दुहाइ है।” 5 बादशाह ने उससे कहा, “तुझे क्या हुआ?” उसने कहा, “मैं सच मुच एक बेवा हूँ और मेरा शौहर मर गया है।” 6 तेरी लौंडी के दो दो बेटे थे, वह दोनों मैदान पर आपस में मार पीट करने लगे, और कोई न था जो उनको छुड़ा देता, इसलिए एक ने दूसरे को ऐसी मार लगाई कि उसे मार डाला। 7 और अब देख कि सब कुम्हे का कुम्हा तेरी लौंडी के खिलाफ उठ खड़ा हुआ है, और वह कहते हैं, कि उसको जिसने अपने भाई को मारा हमरे हवाले कर ताकि हम उसको उसके भाई की जान के बरतें, जिसे उसने मार डाला कल्त करें, और यूँ वारिस को भी हलाक कर दें, इस तरह वह मेरे अंगरे को जो बाकी रहा है बुद्धा देंगे, और मेरे शौहर का न तो नाम न बकिया रह— ए— ज़मीन पर छोड़ेंगे।” 8 बादशाह ने उस ‘औरत से कहा, “तू अपने घर जा और मैं तेरे बारे में हक्म कर सूँगा।” 9 तक़‘अ की उस ‘औरत ने बादशाह से कहा, “ऐ मेरे मालिक! ऐ बादशाह! सारा गुनाह मुझ पर और मेरे बाप के घराने पर हुआ और बादशाह और उसका तख्त बे गुनाह रहे।” 10 तब बादशाह ने फरमाया, “जो कोई तुझसे कुछ करे उसे मेरे पास ले आना और फिर वह तुझको छूने नहीं पायेगा।” 11 तब उसने कहा कि “मैं अर्ज करती हूँ कि बादशाह खुदावन्द अपने खुदा को याद करे, कि खुन का बदला लेने वाला और हलाक न करने पाए, ऐसा न हो कि वह मेरे बेटे को हलाक कर दें” उसने जबाब दिया, “खुदावन्द की हायत की कसम तेरे बेटे का एक बाल भी ज़मीन पर नहीं गिरने पायेगा।” 12 तब उस ‘औरत ने कहा, “ज़रा मेरे मालिक बादशाह से तेरी लौंडी एक बात कहें?” 13 उसने जबाब दिया, “कह” तब उस ‘औरत ने कहा कि “कि तूने खुदा के लोगों के खिलाफ ऐसी तदबीर क्यों निकालती है? क्यूँकि बादशाह इस बात के कहने से मुजरिम सा ठहरता है, इसलिए कि बादशाह अपने जिला वतन को फिर घर लौटा कर नहीं आता। 14 क्यूँकि हम सबको मरना है, और हम ज़मीन पर गिरे हुए पानी कि तरह हो जाते हैं जो फिर जमा नहीं हो सकता, और खुदा किसी की जान नहीं लेता बल्कि ऐसे ज़रिए निकालता है, कि जिला वतन उसके यहाँ से निकाला हुआ न रहे। 15 और मैं जो अपने मालिक से यह बात कहने आई हूँ, तो इसकी बजह यह है कि लोगों ने मुझे डरा दिया था, इसलिए तेरी लौंडी ने कहा कि मैं खुद बादशाह से दरख्बास्त कर सूँगी, शयद

बादशाह अपनी लौटी की गुजारिश पूरी करे। 16 क्यूंकि बादशाह सुनकर जस्तर अपनी लौटी को उस शब्द के हाथ से छुड़ाएगा, जो मुझे और मेरे बेटे दोनों को खुदा की मीरास में से मिटा डालना चाहता है। 17 इसलिए तेरी लौटी ने कहा कि मेरे मालिक बादशाह की बात तसल्ली बख्स हो, क्यूंकि मेरा मालिक बादशाह नेकी और गुहाह के फर्क करने में खुदा के फरिश्ता की तरह है, इसलिए खुदावन्द तेरा खुदा तेरा साथ हो। 18 तब बादशाह ने उस 'औरत से कहा, मैं तुझसे जो कुछ पहुँच तेरा उसको जरा भी मुझसे मत छिपाना। उस 'औरत ने कहा, 'मेरा मालिक बादशाह फरमाए।' 19 बादशाह ने कहा, 'क्या इस सारे मुआमले में योआब का हाथ तेरे साथ है?' उस 'औरत ने जवाब दिया, तेरी जान की कसम 'ऐ मेरे मालिक बादशाह कोई इन बातों से जो मेरे मालिक बादशाह ने फरमाई है दहनी याँ बायीं तरफ नहीं मुड़ सकता क्यूंकि तेरे खादिम योआब ही ने मुझे हक्म दिया और उसी ने यह सब बातें तेरी लौटी को सिखायी। 20 और तेरे खादिम योआब ने यह काम इसलिए किया ताकि उस मज़मून के रंग ही को पलट दे और मेरा मालिक 'अक्तलमन्द है, जिस तरह खुदा के फरिश्ता में समझ होती है कि दुनिया की सब बातों को जान ते।' 21 तब बादशाह ने योआब से कहा, 'देख, मैंने यह बात मान ली इसलिए तु जा और उस जवाब अबीसलोम को फिर ले आ।' 22 तब यूआब जमीन पर औरै होकर गिरा और सज्जा किया और बादशाह को मुबारक बाद दी और योआब कहने लगा, 'आज तेरे बन्दा को यकीन हुआ ऐ मेरे मालिक बादशाह मुझ पर तेरे करम की नजर है इसलिए कि बादशाह ने अपने खादिम की गुजारिश पूरी की।' 23 फिर योआब उठा, और जस्तर को गया और अबीसलोम को येस्शलेम में ले आया। 24 तब बादशाह ने फरमाया, 'वह अपने घर जाए और मेरा मुँह न देखो।' तब अबीसलोम अपने घर गया और वह बादशाह का मुँह देखेने न पाया। 25 और सारे इसाईल में कोई शब्द अबीसलोम की तरह उसके हृष्ट की वजह से ताँरीक के कबील न था क्यूंकि उसके पाँव के तलवे से सर के चाँद तक उसमें कोई ऐब न था। 26 जब वह अपना सिर मुँडवाता था क्यूंकि हर साल के अधिक में वह उसे मुँडवाता था इसलिए कि उसके बाल घने थे, इसलिए वह उनको मुँडवाता था तो अपने सिर के बाल वज़न में शाही तौल बाट के मुताबिक दो सौ मिस्काल के बराबर पाता था। 27 और अबीसलोम से तीन बेटे पैदा हुए और एक बेटी जिसका नाम तमर था वह बहुत खूबसूरत 'औरत थी। 28 और अबीसलोम पूरे दो बरस येस्शलेम में रहा और बादशाह का पूँछ न देखा। 29 तब अबीसलोम ने योआब को बुलवाया ताकि उसे बादशाह के पास भेजे, लेकिन उसने उसके पास आने से इनकार किया, और उसने दोबारह बुलवाया लेकिन वह न आया। 30 तब उसने अपने मूलाजिमों से कहा, 'देखो योआब का खेत मेरे खेत से लगा है और उसमें जौ है इसलिए जाकर उसमें आग लगा दो।' और अबीसलोम के मूलाजिमों ने उस खेत में आग लगा दी। 31 तब योआब उठा और अबीसलोम के पास उसके घर जाकर उससे कहने लगा, 'तेरे खादिमों ने मेरे खेत में आग क्यों लगा दी?' 32 अबीसलोम ने योआब को जवाब दिया कि 'देख मैंने तुझे कहला भेजा कि यहाँ आ ताकि मैं तुझे बादशाह के पास यह कहने को भेजूँ, कि मैं जस्ते से यहाँ क्यों आया? मैं लिए वहीं रहना बेहतर होता, इसलिए बादशाह अब मुझे अपना दीदार दे और अगर मुझमें कोई बुराई हो तो मुझे मार डाल।' 33 तब योआब ने बादशाह के पास जाकर उसे यह पैगाम दिया और जब उसने अबीसलोम को बुलवाया तब वह बादशाह के पास आया और बादशाह के आगे जमीन पर सर द्वाका दिया, और बादशाह ने अबीसलोम को बोसा दिया।

15 इसके बाद ऐसा हुआ कि अबीसलोम ने अपने लिए एक रथ और घोड़े और पचास आदमी तैयार किए, जो उसके आगे आगे दौड़े। 2 और अबीसलोम सर्वेरे उठकर फाटक के रास्ता के बराबर खड़ा हो जाता और जब

कोई ऐसा आदमी आता जिसका मुक़दमा फैसला के लिए बादशाह के पास जाने को होता, तो अबीसलोम उसे बुलाकर पूछता था कि 'तू किस शहर का है?' और वह कहता कि 'तेरा खादिम इसाईल के फल्खों कबीले का है?' 3 फिर अबीसलोम उससे कहता, 'देख तेरी बातें तो ठीक और सच्ची हैं लेकिन कोई बादशाह की तरफ से मुर्कर नहीं है जो तेरी सुने।' 4 और अबीसलोम यह भी कहा करता था कि 'काश मैं मुल्क का काज़ी बनाया गया होता तो हर शब्द जिसका कोई मुक़दमा या दावा होता मेरे पास आता और मैं उसका इन्साफ करता।' 5 और जब कोई अबीसलोम के नज़दीक आता था कि उसे सज्जा करे तो वह हाथ बढ़ावन्द उसे पकड़ लेता और उसको बोसा देता था। 6 और अबीसलोम सब इसाईलियों से जो बादशाह के पास फैसला के लिए आते थे, इसी तरह पेश आता था। यूँ अबीसलोम ने इसाईल के दिल जीत लिया। 7 और चालीस बरस के बाद यूँ हुआ कि अबीसलोम ने बादशाह से कहा, 'मुझे जरा जाने दे कि मैं अपनी मिन्नत जो मैंने खुदावन्द के लिए मानी है हब्बन में पूरी करूँ।' 8 क्यूंकि जब मैं अराम के जस्तर में था तो तेरे खादिम ने यह मिन्नत मानी थी कि अगर खुदावन्द मुझे फिर येस्शलेम में सच मुच पहुँचा दे, तो मैं खुदावन्द की ज्ञानदत करूँगा।' 9 बादशाह ने उससे कहा कि 'सलामत जा।' इसलिए वह उठा और हब्बन को गया। 10 और अबीसलोम ने बनी इसाईल के सब कबीलों में जासूस भेजकर ऐलान करा दिया कि जैसे ही तुम नरसिंगे की आवाज सुनो तो बोल उठना कि 'अबीसलोम हब्बन में बादशाह हो गया है।' 11 और अबीसलोम के साथ येस्शलेम से दो सौ आदमी जिनको दावत दी गई थी गये थे वह सादा दिनी से गये थे और उनको किसी बात की खबर नहीं थी। 12 और अबीसलोम ने कुर्बानियाँ अदा करते बक्त जिलोनी अबीतुफ़कल को जो दाऊद का सलाहकार था, उसके शहर जल्वा से बुलवाया, यह बड़ी भारी साज़िश थी और अबीसलोम के साथ येस्शलेम से दो सौ आदमी जिनको दावत दी गई थी गये थे वह सादा दिनी से गये थे और उनको किसी बात की खबर नहीं थी। 13 और एक कासिद ने आकर दाऊद को खबर दी कि 'बनी इसाईल के दिल अबीसलोम की तरफ है।' 14 और दाऊद ने अपने सब मूलाजिमों से जो येस्शलेम में उसके साथ थे कहा, 'उठो भाग चरों, नहीं तो हममें से एक भी अबीसलोम से नहीं बचेगा, चलने की जल्दी करो ऐसा न हो कि वह हम को झट आले और हम पर आफत लाये और शहर को तहस नहस करे।' 15 बादशाह के खादिमों ने बादशाह से कहा, 'देख तेरे खादिम जो कुछ हमारा मालिक बादशाह चाहे उसे करने को तैयार है।' 16 तब बादशाह निकला और उसका सारा घराना उसके पीछे चला और बादशाह ने दस 'औरतें जो बाँती थीं घर की निगहबानी के लिए पीछे छोड़ दी। 17 और बादशाह निकला और सब लोग उसके पीछे चले और वह बैत मिहक में ठहर गये। 18 और उसके सब खादिम उसके बराबर से होते हुए आगे गए और सब कैरीती और सब फलैती और सब जाती याँनी वह छः सौ आदमी जो जात से उसके साथ आए थे बादशाह के सामने आगे चले। 19 तब बादशाह ने जाती इती से कहा, 'तू हमारे साथ क्यों चलता है? तू लौट जा और बादशाह के साथ रह क्यूंकि तू पटदेसी और जिला वतन भी है, इसलिए अपनी जगह को लौट जा।' 20 तू कल ही तो आया है, तो क्या आज मैं तुझे अपने साथ इधर उधर फिराऊँ? जिस हाल कि मुझे जिधर जा सकता हूँ जाना है? इसलिए तू लौट जा और अपने भाईयों को साथ लेता जा, रहमत और सच्चाई तेरे साथ हों।' 21 तब इती ने बादशाह को जवाब दिया, 'खुदावन्द की हयात की कसम और मेरे मालिक बादशाह की जान की कसम जहाँ कही मेरा मालिक बादशाह चाहे मरते चाहे जीति होगा, वही ज़रूर तेरा खादिम भी होगा।' 22 तब दाऊद ने इती से कहा, 'चल राजा जा।' और जाती इती और उसके सब लोग और सब नन्हे बच्चे जो उसके साथ थे पार गये। 23 और सारा मूल्क ऊँची आवाज से रोया और सब लोग पार हो गये, और बादशाह खुद नहर किंद्रोन के पार हुआ, और

सब लोगों ने पार हो कर जंगल की राह ली। 24 और सदूक भी और उसके साथ सब लावी खुदा के 'अहद का संदूक' लिए हुए आए और उन्होंने खुदा के संदूक को रख दिया, और अबीयातर ऊपर चढ़ गया और जब तक सब लोग शहर से निकल न आए वहीं रहा। 25 तब बादशाह ने सदूक से कहा कि "खुदा का संदूक शहर को वापस ले जा, तब अगर खुदावन्द के करम की नजर मुझ पर होगी तो वह मुझे फिर ले आएगा, और उसे और अपने घर को मुझे फिर दिखाएगा। 26 लेकिन अगर वह बूँफरमाए, कि मैं तुझसे खुश नहीं, तो देख मैं हाजिर हूँ जो कुछ उसको अच्छा मालूम हो मेरे साथ करे।" 27 और बादशाह ने सदूक कहिन से यह भी कहा, "क्या तू गैब बीन नहीं? शहर को सलामत लौट जा और तुम्हारे साथ तुम्हारे दोनों बेटे हों, अखीमा'ज जो तेरा बेटा है और यूनतन जो अबीयातर का बेटा है। 28 और देख, मैं उस जंगल के घाटों के पास ठहरा रहूँगा जब तक तुम्हारे पास से मुझे हकीकत हाल की खबर न मिले।" 29 इसलिए सदूक और अबीयातर खुदा का संदूक येस्सलेम को वापस ले गये और वहीं रहे। 30 और दाऊद कोह — ए — जैतून की चढाई पर चढ़ने लगा और रोता जा रहा था, उसका सिर ढका था और वह नगे पाँव चल रहा था, और वह सब लोग जो उसके साथ थे उनमें से हर एक ने अपना सिर ढाँक रखवा था, वह ऊपर चढ़ते जाते थे और रोते जाते थे। 31 और किसी ने दाऊद को बताया कि "अखीतुफक्ल भी फसादियों में शामिल और अबीसलोम के साथ है।" 32 तब दाऊद ने कहा, "ऐ खुदावन्द! मैं तुझसे मिन्नत करता हूँ कि अखीतुफक्ल की सलाह को बेकूफी से बदल दो।" 32 जब दाऊद चोटी पर पहुँचा जहाँ खुदा को सज्जा किया करते थे, तो अरकी हसी अपनी चोगा फोड़े और सिर पर खाक डाले उसके इस्तकबाल को आया। 33 और दाऊद ने उससे कहा, "अगर तू मैं साथ जाए तो मुझ पर बोझ होगा। 34 लेकिन अगर तू शहर को लौट जाए और अबीसलोम से कहे कि, ऐ बादशाह मैं तेरा खादिम हूँ तो तू मेरी खातिर अखीतुफक्ल की सलाह को रद कर देगा। 35 और क्या वहाँ तेरे साथ सदूक और अबीयातर काहिन न होंगे? इसलिए जो कुछ तू बादशाह के घर से सुने उसे सदूक और अबीयातर काहिनों को बता देना। 36 देख वहाँ उनके साथ उनके दोनों बेटे हैं यानी सदूक का बेटा अखीमा'ज और अबीयातर का बेटा यूनतन इसलिए जो कुछ तुम सुनो, उसे उनके जरिए मुझे कहला भेजना।" 37 इसलिए दाऊद का दोस्त हसी शहर में आया और अबीसलोम भी येस्सलेम में पहुँच गया।

16 और जब दाऊद चोटी से आगे बढ़ा तो मिफीबोसत का खादिम जीबा दो गधे लिए हुए उसे मिला, जिन पर जीन करे थे और उनके ऊपर दो सौ रोटियाँ और किशमिश के सौ गुच्छे और ताबिस्तानी मेवों के सौ दाने और मय का एक मश्कीजा था। 2 और बादशाह ने जीबा से कहा, "इन से तेरा क्या मतलब है?" जीबा ने कहा, "यह गधे बादशाह के घराने की सवारी के लिए और रोटियाँ और गर्मी के फल जवानों के खाने के लिए हैं और यह शराब इसलिए है कि जो बयाबान में थक जायें उसे पियें।" 3 और बादशाह ने पछा, "तेरे आका का बेटा कहाँ है?" जीबा ने बादशाह से कहा, "देख वह येस्सलेम में रह गया है क्योंकि उसने कहा आज इस्माईल का घराना मेरे बाप की बादशाहत मुझे लौटा देगा।" 4 तब बादशाह ने जीबा से कहा, "देख! जो कुछ मिफीबोसत का है वह सब तेरा हो गया।" तब जीबा ने कहा, "मैं सिज्दा करता हूँ ऐ मेरे मालिक बादशाह तेरे करम की नजर मुझ पर रहें।" 5 जब दाऊद बादशाह बह्रैम पहुँचा तो वहाँ से साऊल के घर के लोगों में से एक शख्स जिसका नाम सिमाई बिन जीरा था निकला और लान्नत करता हुआ आया। 6 और उसने दाऊद पर और दाऊद बादशाह के सब खादिमों पर पत्थर फेके और सब लोग और सब स्मृता उसके दहने और बायें हाथ थे। 7 और सिमाई लान्नत करते बक्त

यूँ कहता था, "दूर हो! दूर हो! ऐ खूनी आदमी ऐ खबीस! 8 खुदावन्द ने साऊल के घराने के सब खन को जिसके बदले तू बादशाह हुआ तेरे ही ऊपर लौटाया, और खुदावन्द बादशाहत तेरे बेटे अबीसलोम के हाथ में दे दी, है और देख तू अपनी ही बुराई में खुद आप फंस गया है इसलिए कि तू खूनी आदमी है।" 9 तब जरोयाह के बेटे अबीशे ने बादशाह से कहा, "यह मरा हुआ कृता मेरे मालिक बादशाह पर क्यूँ लान्नत करे? मुझको जरा ऊपर जाने दे कि उसका सिर उड़ा दूँ।" 10 बादशाह ने कहा, "ऐ जरोयाह के बेटो! मुझे तुमसे क्या काम? वह जो लान्नत कर रहा है, और खुदावन्द ने उससे कहा है कि दाऊद पर लान्नत कर इसलिए कौन कह सकता है कि तू तेरे क्यों ऐसा किया?" 11 और दाऊद ने अबीशे से और अपने सब खादिमों से कहा, "देखो मेरा बेटा ही जो मेरे सुल्ब से पैदा हुआ मेरी जान का तालिक है तब अब यह बिनयमीनी कितना ज्यादा ऐसा न करे? उसे छोड़ दो और लान्नत करने दो क्योंकि खुदावन्द ने उसे हक्रम दिया है। 12 शायद खुदावन्द उस जल्म पर जो मेरे ऊपर हुआ है, नजर करे और खुदावन्द आज के दिन उसकी लान्नत के बदले मुझे नेक बदला दे।" 13 तब दाऊद और उसके लोग रास्ता चलते रहे और सिमाई उसके सामने के पहाड़ के किनारे पर चलता रहा और चलते चलते लान्नत करता और उसकी तरफ पत्थर फेंकता और खाक डालता रहा। 14 और बादशाह और उसके सामने के पहाड़ के किनारे पर चलता रहा और चलते चलते लान्नत करता और उसकी तरफ पत्थर फेंकता और खाक डालता रहा। 15 और अबीसलोम और सब इस्माइली मर्द येस्सलेम में आए और अखीतुफक्ल उसके साथ था। 16 और ऐसा हुआ कि जब दाऊद का दोस्त अरकी हसी अबीसलोम के पास आया तो हसी ने अबीसलोम से कहा, "बादशाह जीता रहे! बादशाह जीता रहे!" 17 और अबीसलोम ने हसी से कहा, "क्या तूने अपने दोस्त पर यही महेबानी की? तू अपने दोस्त के साथ क्यों न गया?" 18 हसी ने अबीसलोम से कहा, "नहीं बल्कि जिसको खुदावन्द ने और इस्माइल के सब आदमियों ने चुन लिया है मैं उसी का हूँगा और उसी के साथ रहूँगा।" 19 और पिर मैं किसकी खिदपत करूँ? क्या मैं उसके बेटे के सामने रह कर खिदपत न करूँ? जैसे मैंने तेरे बाप के सामने रहकर की बैसे ही तेरे सामने रहूँगा।" 20 तब अबीसलोम ने अखीतुफक्ल से कहा, "तुम सलाह दो कि हम क्या करें।" 21 तब अखीतुफक्ल ने अबीसलोम से कहा कि "अपने बाप की बाँदियों के पास जा जिनको बह घर की निगह बनी को छोड़ गया है, इसलिए कि जब इस्माइली सुनेंगे कि तेरे बाप को तुझ से नफरत है, तो उन सबके हाथ जो तेरे साथ हैं ताकतवर हो जायेंगे।" 22 फिर उहोंने महल की छत पर अबीसलोम के लिए एक तबू खड़ा कर दिया और अबीसलोम सब इस्माइल के सामने अपने बाप की बाँदियों के पास गया। 23 और अखीतुफक्ल की सलाह जो इन दिनों होती वह ऐसी समझी जाती थी, कि गोया खुदा के कलाम से आदमी ने बात पछ ली, यूँ अखीतुफक्ल की सलाह दाऊद और अबीसलोम की खिदपत में ऐसी ही होती थी।

17 और अखीतुफक्ल ने अबीसलोम से यह भी कहा कि "मुझे अभी बारह हजार जवान चुन लेने दे और मैं उठकर आज ही गत को दाऊद का पीछा करूँगा। 2 और ऐसे हाल में कि वह थका माँदा हो और उसके हाथ ढीरे हों, मैं उस पर जा पड़ूँगा और उसे डराऊँगा, और सब लोग जो उसके साथ हैं भाग जायेंगे, और मैं सिर्फ बादशाह को मासूँगा। 3 और मैं सब लोगों को तेरे पास लौटा लौंगा, जिस आदमी का तू तालिक है वह ऐसा है कि जैसे सब लौट आए, यूँ सब लोग सलामत रहेंगे। 4 यह बात अबीसलोम को और इस्माइल के सब बुजुर्गों को बहुत अच्छी लगी।" 5 और अबीसलोम ने कहा, अब अरकी हसी को भी बुलाऊँगे और जो वह कहे हम उसे भी सुनें। 6 जब हसी अबीसलोम के पास आया तो अबीसलोम ने उससे कहा कि, "अखीतुफक्ल ने तो यह कहा

है, क्या हम उसके कहने के मुताबिक 'अमल करें? अगर नहीं तो तू बता।' 7 हस्ती ने अबीसलोम से कहा कि, "वह सलाह जो अखीतुफक्ल ने इस बार दी है अच्छी नहीं।" 8 इसके 'अलावा हस्ती ने यह भी कहा कि, "तू अपने बाप को और उसके आदिमियों को जानता है कि वह बहादुर लोग हैं, और वह अपने दिल ही दिल में उस रीछनी की तरह, जिसके बच्चे जंगल में छिन गये हों झल्ला रहे होंगे और तेरा बाप जंगी मर्द है, और वह लोगों के साथ नहीं ठहरेगा 9 और देख अब तो वह किसी गार में या किसी दूसरी जगह छिपा हुआ होगा। और जब शूरू ही मैं थोड़े से कल्प हों जायेंगे, तो जो कोई सनेहा यही कहेगा, कि अबीसलोम के पैरेकार के बीच तो खूरैशी शूरू है। 10 तब वह भी जो बहादुर है और जिसका दिल शेर के दिल की तरह है बिल्कुल पिघल जाएगा क्योंकि सारा इस्माईल जानता है कि तेरा बाप बहादुर आदमी है और उसके साथ के लोग सूरमा हैं। 11 तो मैं यह सलाह देता हूँ कि दान से बेर सबा' तक के सब इस्माईली सम्पन्नर के किनारे की रेत की तरह तेरे पास कसरत से इकट्ठे किए जायें और तु आप ही लड़ाई पर जा। 12 यूँ हम किसी न किसी जगह जहाँ वह मिले उस पर जा ही पड़ेंगे और हम उस पर ऐसे गिरेंगे जैसे शबनम ज़मीन पर गिरती है, फिर न तो हम उसे और न उसके साथ के सब आदिमियों में से किसी को जीता छोड़ेंगे। 13 इसके 'अलावा अगर वह किसी शहर में घुसा हुआ होगा तो सब इस्माईली उस शहर के पास रसियाँ ले आयेंगे और हम उसको खींचकर दर्खा में कर देंगे यहाँ तक कि उसका एक छोटा सा पथर भी वहाँ नहीं मिलेगा।" 14 तब अबीसलोम और सब इस्माईली कहने लगे कि "यह सलाह जो अरकी हस्ती ने दी है अखीतुफक्ल की सलाह से अच्छी है।" क्योंकि यह तो खुदावन्द ही ने ठहरा दिया था कि अखीतुफक्ल की अच्छी सलाह बातिल हो जाए ताकि खुदावन्द अबीसलोम पर बला न ज़िल करे। 15 तब हस्ती ने स्टूक और अबीयातर काहिनों से कहा कि "अखीतुफक्ल ने अबीसलोम को और बनी इस्माईल के बुरुणों को ऐसी ऐसी सलाह दी और मैंने यह सलाह दी।" 16 इसलिए अब जल्द दाऊद के पास कहना भेजो कि अज रात को जंगल के घाटों पर न ठहर बल्कि जिस तरह हो सके पार उतर जा ताकि ऐसा न हो कि बादशाह और सब लोग जो उसके साथ हैं निगल लिए जायें।" 17 और यूनतन और अखीमा'ज़ ऐस राजिल के पास ठहरे थे और एक लौटी जाती और उनको खबर दे आती थी और वह जाकर दाऊद को बता देते थे क्योंकि मुनासिब न था कि वह शहर में आते दिखाई देते। 18 लेकिन एक लड़के ने उनको देख लिया और अबीसलोम को खबर दी लेकिन वह दोनों जल्दी करके निकल गये और बहरीम में एक शब्ब के घर गये जिसके सहन में एक कुआँ था इसलिए वह उसमें उतर गये। 19 और उस 'अौरत ने पर्दा ले कर कुवे के पूर्व पर बिछाया और उस पर दला हुआ अनाज फैला दिया और कुछ मालूम नहीं होता था। 20 और अबीसलोम के खादिम उस घर पर उस 'अौरत के पास आए और पूछा कि "अखीमा'ज़ और यूनतन कहाँ हैं?" उस 'अौरत ने उनसे कहा, "वह नाले के पार गये।" और जब उन्होंने उनको ढूढ़ा और न पाया तो येस्सलेम को लौट गये। 21 और ऐसा हुआ कि जब यह चले गये तो वह कुवे से निकले और जाकर दाऊद बादशाह को खबर दी और वह दाऊद से कहने लगे, कि "उठो और दरया पार हो जाओ क्योंकि अखीतुफक्ल ने तुम्हारे खिलाफ ऐसी ऐसी सलाह दी है।" 22 तब दाऊद और सब लोग जो उसके साथ थे उठे और यदन के पार गये, और सुबह की रोशनी तक उनमें से एक भी ऐसा न था जो यदन के पार न हो गया हो। 23 जब अखीतुफक्ल ने देखा कि उसकी सलाह पर 'अमल नहीं किया गया तो उसने अपने गधे पर जीन कसा और उठ कर अपने शहर को अपने घर गया और अपने घराने का बन्दोबस्त करके अपने को फँसी दी और मर गया और अपने बाप की कब्र में दफन हुआ। 24 तब दाऊद महनायम में

आया और अबीसलोम और सब इस्माईली जवान जो उसके साथ थे यदन के पार हुए। 25 और अबीसलोम ने योआब के बदले 'अमासा' को लश्कर का सरदार किया, यह 'अमासा एक इस्माईली आदमी का बेटा था जिसका नाम इतरा था उसने नाहस की बेटी अबीजेल से जो योआब की माँ ज़रोयाह की बहन थी सोहबत की थी। 26 और इस्माईली और अबीसलोम जिल 'आद के मूल्क में खेमा जन हुए। 27 और जब दाऊद महनायम में पहुँचा तो ऐसा हुआ कि नाहस का बेटा सोरी, बनी अम्मोन के बड़ा से और अम्मी ऐल का बेटा मकीर लद्दाबार से और बरजिली जिल 'आदी राजिलीम से। 28 पलंग और चार पाइयाँ और बासन और मिट्टी के बर्तन और गेहूँ और जौ और आटा और भुना हुआ अनाज और लोबिये की फलियाँ और मस्रू और भुना हुआ चबेना। 29 और शहद और मखबन और भेड़ और गाय के दूध का पनीर दाऊद के और उसके साथ के लोगों के खाने के लिए लाये क्यौंकि उन्होंने कहा कि "लोग बयाबान में भूके और थके और प्यासे हैं।"

18 और दाऊद ने उन लोगों को जो उसके साथ थे गिना और हज़ारों के और सैकड़ों के सरदार मुकर्रर किए। 2 और दाऊद ने लोगों की एक तिहाई योआब के मातहत और एक तिहाई योआब के भाई अबीशी बिन ज़रोयाह के मातहत और तिहाई जाती इत्ती के मातहत करके उनको रवाना किया और बादशाह ने लोगों से कहा कि "मैं खुद भी ज़स्त तुम्हारे साथ चलूँगा।" 3 लेकिन लोगों ने कहा कि "तू नहीं जाने पायेगा क्यौंकि हम आगर भागें तो उनको कुछ हमारी परवा न होगी और अगर हम में से आधे मारे जायें तो भी उनको कुछ परवा न होगी लेकिन तू हम जैसे दस हज़ार के बराबर है इसलिए बेहतर यह है कि तू शहर में से हमारी मदद करने को तैयार रहे।" 4 बादशाह ने उनसे कहा, "जो तुम्हारों बेहतर मालूम होता है मैं वही कहूँगा।" इसलिए बादशाह शहर के फाटक की एक तरफ खड़ा रहा और सब लोग सौ सौ और हज़ार हज़ार करके निकलने लगे। 5 और बादशाह ने योआब और अबीशी और इत्ती को फरमाया कि "मेरी खातिर उस जवान अबीसलोम के साथ नरमी से पेश आना।" जब बादशाह ने सब सरदारों को अबीसलोम के हक्क में नसीहत की तो सब लोगों ने सुना। 6 इसलिए वह लोग निकल कर मैदान में इस्माईल के मुकाबिले को गये और इक़ाईम के जंगल में हड़े। 7 और वहाँ इस्माईल के लोगों ने दाऊद के खादिमों से शिक्ष्य खाई और उस दिन ऐसी बड़ी ख़ेरैज़ी हुई कि बीस हज़ार आदमी मारे गए। 8 इसलिए कि उस दिन सारी बादशाहत में जंग थी और लोग इतने तलवार का लुकमा नहीं बने जितने बन का शिकार हुए। 9 और अचानक अबीसलोम दौड़ के दाऊद के खादिमों के सामने आ गया और अबीसलोम अपने खच्चर पर सवार था और वह खच्चर एक बड़े बलूत के दरखत की धनी डालियों के नीचे से गया, इसलिए उसका सिर बलूत में अटक गया और वह आसमान और ज़मीन के बीच मैं लटका रह गया और वह खच्चर जो उसके रान तले था निकल गया। 10 किसी शब्ब के ने यह देखा और योआब को खबर दी कि "मैंने अबीसलोम को बलूत के दरखत मैं लटका हुआ देखा।" 11 और योआब ने उस शब्ब से जिसने उसे खबर दी थी कहा, "तूने यह देखा मिर क्यों नहीं तूने उसे मार कर वही ज़मीन पर गिरा दिया? क्यूँकि मैं तझे चाँदी के दस टकड़े और कमर बांद देता।" 12 उस शब्ब ने योआब से कहा कि "अगर मुझे चाँदी के हज़ार टकड़े भी मेरे हाथ में मिलते तो भी मैं बादशाह के बेटे पर हाथ न उठाता क्यूँकि बादशाह ने हमारे सुनते तुझे और अबीशी और इत्ती को नसीहत की थी कि खबरदार कोई उस जवान अबीसलोम को न छुए। 13 वरना अगर मैं उसकी जान के साथ दगा खेलता और बादशाह से तो कोई बात छुपी थी यूँ ही तू खुद भी किनारा कर लेता।" 14 तब योआब ने कहा, "मैं तेरे साथ यूँ ही ठहरा नहीं रह सकता।" फिर उसने तीन तीर हाथ में लिए और उनसे

अबीसलोम के दिल को जो अभी बलूत के दरखत के बीच ज़िन्दा ही था छेद डाला। 15 और दस जवानों ने जो योआब के सलह बरदार थे अबीसलोम को धेर कर उसे मारा और कल्त कर दिया। 16 तब योआब ने नरसिंह फँका और लोग इसाइलियों का पीछा करने से लैटै क्यूँकि योआब ने लोगों को रोक लिया। 17 और उन्होंने अबीसलोम को लेकर बन के उस बड़े गढ़े में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बहुत बड़ा ढेर लगा दिया और सब इसाईंती अपने अपने डेर को भाग गये। 18 और अबीसलोम ने अपने जिती जी एक लाट लेकर खड़ी कराई भी जो शाही वादी में है क्यूँकि उसने कहा, मेरे कोई बेटा नहीं जिससे मेरे नाम की यादगार रहे इसलिए उसने उस लाट को अपना नाम दिया। और वह आज तक अबीसलोम की यादगार कहलाती है। 19 तब सदूक के बेटे अखीमा'ज ने कहा कि “मुझे दौड़ कर बादशाह को खबर पहुँचाने दे कि खुदावन्द ने उसके दुश्मनों से उसके बदला ले लिया।” 20 लेकिन योआब ने उससे कहा कि आज के दिन तू कोई खबर न पहुँचा बल्कि दूसरे दिन खबर पहुँचा देना लेकिन आज तुझे कोई खबर नहीं ले जाना होगा इसलिए बादशाह का बेटा मर गया है। 21 तब योआब ने कृशी से कहा कि जा कर जो कुछ तो देखा है इसलिए बादशाह को जाकर बता दे। तब वह कृशी योआब को सज्जा करके दौड़ गया। 22 तब सदूक के बेटे अखीमा'ज ने फिर योआब से कहा, “चाहे कुछ ही हो तू मुझे भी उस कृशी के पीछे दौड़ जाने दे।” योआब ने कहा, “ऐ मेरे बेटे तू क्यूँ दौड़ जाना चाहता है जिस हाल कि इस खबर के बदले तुझे कोई इन्हाँआम नहीं मिलेगा?” 23 उसने कहा, चाहे कुछ ही हो मैं तो जाँचा “उसने कहा, दौड़ जा।” तब अखीमा'ज मैदान से होकर दौड़ गया और कृशी से आगे बढ़ गया। 24 और दाऊद दोनों फाटकों के दरमियान बैठा था और पहरे वाला फाटक की छत से होकर दीवार पर गया और क्या देखता है कि एक शशस अकेला दौड़ा आता है। 25 उस पहरे वाले ने पुकार कर बादशाह को खबर दी, बादशाह ने फरमाया, “अगर वह अकेला है तो मैं ज़बानी खबर लाता होगा।” और वह तेज़ आया और नज़दीक पहुँचा। 26 और पहरे वाले ने एक और आदमी को देखा कि दौड़ा आता है, तब उस पहरे वाले ने दरबान को पुकार कर कहा कि “देख एक शशस और अकेला दौड़ा आता है।” बादशाह ने कहा, “वह भी खबर लाता होगा।” 27 और पहरे वाले ने कहा, “मुझे अगले का दौड़ना सदूक के बेटे अखीमा'ज के दौड़ने की तरह मालूम देता है।” तब बादशाह ने कहा, “वह भला आदमी है और अच्छी खबर लाता होगा।” 28 और अखीमा'ज ने पुकार कर बादशाह से कहा, “खैर है!” और बादशाह के आगे ज़मीन पर झुक कर सिंज्दा किया और कहा कि “खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो जिसने उन आदमियों को जिन्होंने मेरे मालिक बादशाह के खिलाफ हाथ उठाये थे क़ाब में कर दिया है।” 29 बादशाह ने पृछा क्या वह जवान अबीसलोम सलामत है? अखीमा'ज ने कहा कि “जब योआब ने बादशाह के खादिम को याँनी मुझको जो तेरा खादिम हैं रवाना किया तो मैंने एक बड़ी हल्लचल तो देखी लेकिन मैं नहीं जानता कि वह क्या थी।” 30 तब बादशाह ने कहा, “एक तरफ हो जा और यहीं खड़ा रह।” इसलिए वह एक तरफ होकर चुप चाप खड़ा हो गया। 31 फिर वह कृशी आया और कृशी ने कहा, “मेरे मालिक बादशाह के लिए खबर है क्यूँकि खुदावन्द ने आज के दिन उन सबसे जो तेरे खिलाफ उठे थे तेरा बदला लिया।” 32 तब बादशाह ने कृशी से पृछा, “क्या वह जवान अबीसलोम सलामत है?” कृशी ने जवाब दिया कि “मेरे मालिक बादशाह के दुश्मन और जितने तुझे तकलीफ पहुँचाने को तेरे खिलाफ उठे वह उसी जवान की तरह हो जायें।” 33 तब बादशाह बहुत बेचैन हो गया और उस कोठरी की तरफ जो फाटक के ऊपर थी गोता हुआ चला और

चलते चलते यूँ कहता जाता था, “हाय मेरे बेटे अबीसलोम! मेरे बेटे! मेरे बेटे अबीसलोम! काश मैं तेरे बदले मर जाता! ऐ अबीसलोम! मेरे बेटे! मेरे बेटे!”

19 और योआब को बताया गया कि “देख बादशाह अबीसलोम के लिए नौहा और मातम कर रहा है।” 2 इसलिए तमाम लोगों के लिए उस दिन की फ़तह मातम से बदल गई क्यूँकि लोगों ने उस दिन यह कहते सुना कि “बादशाह अपने बेटे के लिए दुर्दी है।” 3 इसलिए वह लोग उस दिन चोरी से शहर में घुसे जैसे वह लोग जो लड़ाई से भागते हैं शर्म के मारे चोरी चोरी चलते हैं। 4 और बादशाह ने अपना मुँह ढाँक लिया और बादशाह ऊँची आवाज से चिल्लाने लगा कि “हाय मेरे बेटे अबीसलोम! हाय अबीसलोम मेरे बेटे! मेरे बेटे!” 5 तब योआब घर में बादशाह के पास जाकर कहने लगा कि “तूने आज अपने सब खादिमों को शमिन्दा किया, जिन्होंने आज के दिन तेरी जान और तेरे बेटों और तेरी बेटियों की जानें और तेरी बीवियों की जानें और तेरी बीदियों की जानें बचायी।” 6 क्यूँकि तू अपने ‘अदावत रखने वालों को प्यार करता है, और अपने दोस्तों से ‘अदावत रखता है, इसलिए कि तूने आज के दिन ज़ाहिर कर दिया कि सरदार और खादिम तेरे नज़दीक बेकद हैं, क्यूँकि आज के दिन मैं देखता हूँ कि अगर अबीसलोम जीता रहता और हम सब मर जाते, तो तू बहुत खुश होता।” 7 इसलिए उठ बाहर निकल और अपने खादिमों से तसल्ली बख्श बातें कर क्यूँकि मैं खुदावन्द की कसम खाता हूँ कि अगर तू बाहर न जाए तो आज रात को एक आदमी भी तेरी साथ न रहेगा और यह तेरै लिए उन सब आफतों से बदर रहोगा जो तेरी नौजवानी से लेकर अब तक तुझ पर आई है।” 8 तब बादशाह उठकर फाटक में जा बैठा और सब लोगों को बताया गया कि देखो बादशाह फाटक में बैठा है, तब सब लोग बादशाह के सामने आए और इसाईंली अपने डेरे को भाग गये थे। 9 और इसाईंल के कबीलों के सब लोगों में झगड़ा था और वह कहते थे कि “बादशाह ने हमारे दुश्मनों के हाथ से और फिलिस्तियों के हाथ से बचाया और अब वह अबीसलोम के सामने से मुळक छोड़ कर भाग गया।” 10 और अबीसलोम जिसे हमने मसह करके अपना हाकिम बनाया था, लड़ाई में मर गया है इसलिए तम अब बादशाह को वापस लाने की बात क्यों नहीं करते?” 11 तब दाऊद बादशाह ने सदूक और अबीयातर कहिनों को कहला भेजा कि “यहदाह के बुरुणों से कहो कि तुम बादशाह को उसके महल में पहुँचाने के लिए सबसे पीछे क्यों होते हो जिस हाल कि सारे इसाईंल की बात उसे उसके महल में पहुँचाने के बारे में बादशाह तक पहुँची है।” 12 तुम तो मेरे बाई और मेरी हड्डी हो फिर तुम बादशाह को वापस ले जाने के लिए सबसे पीछे क्यों हो? 13 और ‘अमासा से कहना क्या तू मेरी हड्डी और गोशत नहीं? इसलिए अगर तू योआब की जगह मेरे सामने हमेशा के लिए लश्कर का सरदार न हो तो खुदा मुझसे ऐसा ही बल्कि इससे भी ज्यादा करे।” 14 और उसने सब बनी यहदाह का दिल एक आदमी के दिल की तरह माएल कर लिया चुनाँचे उन्होंने बादशाह को पैगाम भेजा कि “तू अपने सब खादिमों को साथ लेकर लौट आ।” 15 इसलिए बादशाह लौट कर यरदन पर आया और सब बनी यहदाह जिल्जात को गये कि बादशाह का इस्तकबाल करें और उसे यरदन के पार ले आयें। 16 और जीरा के बेटे बिनयमीनी सिमँई ने जो बहरीम का था जल्दी की और बनी यहदाह के साथ दाऊद बादशाह के इस्तकबाल को आया। 17 और उसके साथ एक हजार बिनयमीनी जवान थे और साऊल के घराने का खादिम जीबा अपने पन्दरह बेटों और बीस नौकरों समेत आया और बादशाह के सामने यरदन के पार उतरे। 18 और एक कश्ती पार गई कि बादशाह के घराने को ले आये और जो काम उसे मुनासिब मालूम हो उसे करे और ज़ीरा का बेटा सिमँई बादशाह के सामने जैसे ही वह यरदन पर हुआ औंधा हो गिरा। 19 और बादशाह से कहने लगा कि मेरा मालिक मेरी तरफ गुनाह

मंसूब न करे और जिस दिन मेरा मालिक बादशाह येस्स्लेम से निकला उस दिन जो कुछ तेरे खादिम ने बद मिजाजी से किया उसे ऐसा याद न रख कि बादशाह उसको अपने दिल में रख ले। 20 क्यूंकि तेरा बन्दा यह जानता है कि ‘मैंने गुनाह किया है और देख आज के दिन मैं ही यस्फुक के घराने में से पहले आया हूँ कि अपने मालिक बादशाह का इस्तकबाल करूँ। 21 और जरोयाह के बेटे अबीशे ने जवाब, दिया क्या सिमाई इस वजह से मारा न जाए कि उसने खुदावन्द के ममसूह पर लाना न की?” 22 दाऊद ने कहा, “ऐ जरोयाह के बेटे! मुझे तुमसे क्या काम कि तुम आज के दिन मेरे मुखालिक हो हो? क्या इस्माईल में से कोई आदी आज के दिन कल्प किया जाए? क्या मैं यह नहीं जानता कि मैं आज के दिन इस्माईल का बादशाह हूँ?” 23 और बादशाह ने सिमाई से कहा, तू मारा नहीं जाएगा “और बादशाह ने उससे कसम खाई। 24 फिर साऊल का बेटा मिफीबोसत बादशाह के इस्तकबाल को आया, उसने बादशाह के चले जाने के दिन से लेकर उसे सलामत घर आजाने के दिन तक न तो अपने पाँव पर परश्याँ बाँधी और न अपनी दाढ़ी कतरवाई और न अपने कपड़े धूलवाए थे। 25 और ऐसा हुआ कि जब वह येस्स्लेम में बादशाह से मिलने आया तो बादशाह ने उससे कहा, ऐ मिफीबोसत तु मेरे साथ क्यों नहीं गया था?” 26 उसने जवाब दिया, ऐ मेरे मालिक बादशाह मेरे नौकर ने मुझसे दगा की क्यूंकि तेरे खादिम ने कहा था कि मैं अपने लिए गधे पर जीन कर्सूँा ताकि मैं सराब हो कर बादशाह के साथ जाऊँ इसलिए कि तेरा खादिम लंगडा है। 27 तब उसने मेरे मालिक बादशाह के सामने तेरे खादिम पर इल्जाम लगाया, लेकिन मेरा मालिक बादशाह तु खुदावन्द के फरिशता की तरह है, इसलिए जो कुछ तुझे अच्छा मालूम हो वह कर। 28 क्यूंकि मेरे बाप का सारा घराना, मेरे मालिक बादशाह के आगे मुर्दों के तरह था तो भी तुमे अपने खादिम को उन लोगों के बीच बिठाया जो तेरे दस्तरखान पर खाते थे तब क्या अब भी मेरा कोई हक है कि मैं बादशाह के आगे फिर फर्याद करूँ? 29 बादशाह ने उससे कहा, “तू अपनी बातें क्यों बयान करता जाता है? मैं कहता हूँ कि तू और जीबा दोनों उस जर्मीनी को आपस में बाँट लो।” 30 और मिफीबोसत ने बादशाह से कहा, “वही सब ले ले इसलिए कि मेरा मालिक बादशाह अपने घर में फिर सलामत आ गया है।” 31 और बरजिली जिल ‘आदी रजिलीम से आया और बादशाह के साथ यरदन पार गया ताकि उसे यरदन के पार पहुँचाये। 32 और यह बरजिली बहुत ही उम्र दराज आदीया यानी अस्ती बरस का था, उसने बादशाह को जब तक वह मेहनायम में रहा खुराक पहुँचाई थी इसलिए कि वह बहुत बड़ा आदीया था। 33 तब बादशाह ने बरजिली से कहा कि “तू मेरे साथ चल और मैं येस्स्लेम में अपने साथ तेरी परवरिश करूँगा।” 34 और बरजिली ने बादशाह को जवाब दिया कि “मेरी जिन्दगी के दिन ही कितने हैं जो मैं बादशाह के साथ येस्स्लेम को जाऊँ? 35 आज मैं अस्ती बरस का हूँ, क्या मैं भले और बुरे में फँक कर सकता हूँ? क्या तेरा बन्दा जो कुछ खाता पीता है उसका मजा जान सकता है? क्या मैं गाने वालों और गाने वालियों की फिर आवाज सुन सकता हूँ? तब तेरा बन्दा अपने बादशाह पर क्यों बोझा हो? 36 तेरा बन्दा सिफ़र यरदन के पार तक बादशाह के साथ जाना चाहता है, इसलिए बादशाह मुझे ऐसा बड़ा बदला क्यूँ दे? 37 अपने बन्दा को लौट जाने दे ताकि मैं अपने शहर में अपने बाप और माँ की कब्र के पास मर्सूँ लेकिन देख तेरा बन्दा किम्हाम हाजिर है, वह मेरे मालिक बादशाह के साथ पार जाए और जो कुछ तुझे अच्छा मालूम दे उससे कर।” 38 तब बादशाह ने कहा, “किम्हाम मेरे साथ पार चलेगा और जो कुछ तुझे अच्छा मालूम हो वही मैं उसके साथ करूँगा और जो कुछ तु चाहेगा मैं तेरे लिए वही करूँगा।” 39 और सब लोग यरदन के पार हो गये और बादशाह भी पार हुआ, फिर बादशाह ने बरजिली को चूमा और उसे दुआ दी और वह अपनी जगह को लौट गया। 40

तब बादशाह जिलजाल को रवाना हुआ और किम्हाम उसके साथ चला और यहदाह के सब लोग और इस्माईल के लोगों में से भी आधे बादशाह को पार लाये। 41 तब इमाईल के सब लोग बादशाह के पास आकर उससे कहने लगे कि “हमारे भाई बनी यहदाह तुझे क्यूँ चोरी से ले आए और बादशाह को और उसके घराने को और दाऊद के साथ जितने थे उनको यरदन के पार से लायें?” 42 तब सब बनी यहदाह ने बनी इस्माईल को जवाब दिया, “इस्माईल कि बादशाह का हमारे साथ नजदीक का रिश्ता है, तब तुम इस बात की बजह से नाराज़ क्यों हैं? क्या हमने बादशाह के दाम का कुछ खा लिया है या उसने हमको कुछ इन्हाँ आम दिया है?” 43 फिर बनी इस्माईल ने बनी यहदाह को जवाब दिया कि “बादशाह मैं हमारे दस हिस्से हैं और हमारा हक भी दाऊद पर तुम से ज्यादा है तब तुमने क्यों हमारी हिकारत की, कि बादशाह को लौटा लाने में पहले हमसे सलाह नहीं ली?” और बनी यहदाह की बातें बनी इस्माईल की बातों से ज्यादा सख्त थीं।

20 और वहाँ एक शरीर बिनयमीनी था और उसका नाम सबा’ बिन बिक्री था, उसने नरसिंगा फँका और कहा कि “दाऊद मैं हमारा कोई हिस्सा नहीं और न हमारी मीरास यस्सी के बेटे के साथ है, ऐ इस्माईलियों अपने अपने डेरे को चले जाओ।” 2 इसलिए सब इस्माईली दाऊद की फैरवी छोड़ कर सबा’ बिन बिक्री के पीछे हो लिए तो इनकिन यहदाह के लोग यरदन से येस्स्लेम तक अपने बादशाह के साथ ही रहे। 3 और दाऊद येस्स्लेम में अपने महल में आया और बादशाह ने अपनी उन दस बाँटियों को जिनको वह अपने घर की निगहबानी के लिए छोड़ गया था, लेकर उनको नजर बंद कर दिया और उनकी परवरिश करता रहा लेकिन उनके पास न गया, इसलिए उन्होंने अपने मने के दिन तक नजर बंद रहकर रंडाये की हालत में ज़िन्दगी की आटी। 4 और बादशाह ने ‘अमासा’ को हक्म किया कि “तीन दिन के अन्दर बनी यहदाह को मेरे पास जमा’ कर और तू भी यहाँ हाजिर हो।” 5 तब ‘अमासा’ बनी यहदाह को बुताने गया, लेकिन वह मुताअयन वक्त से जो उसने उसके लिए एस्कूरर किया था ज्यादा ठहरा। 6 तब दाऊद ने अबीशे से कहा कि “सबा’ बिन बिक्री तो हमको अबीसलोम से ज्यादा नुकसान पहुँचायेगा फिर तू अपने मालिक के खादिमों को लेकर उसका पीछा कर ऐसा न हो कि वह दीवारदार शहरों को लेकर हमारी नजर से बच निकले।” 7 तब योआब के आदीया और करैती और फलेती और सब बहातुर उसके पीछे हो लिए और येस्स्लेम से निकले ताकि ‘सबा’ बिन बिक्री का पीछा करें। 8 और जब वह उस बड़े पथर के नजदीक पहुँचे जो जिब़ुन में है तो ‘अमासा’ उनसे मिलने को आया और योआब अपना जंगी लिबास पहने था और उसके ऊपर एक पटका था जिस से एक तलवार मियान में पड़ी हुई उसके कमर में बंधी थी और उसके चलते चलते वह निकल पड़ी। 9 तब योआब ने ‘अमासा’ से कहा, “ऐ मेरे भाई तू खेरियत से है?” और योआब ने ‘अमासा’ की दाढ़ी अपने दहने हाथ से पकड़ी कि उसको बोसा दे। 10 और ‘अमासा’ ने उस तलवार का जो योआब के हाथ में थी ख्याल न किया, इसलिए उसने उससे उसके पेट में ऐसा मारा कि उसकी अंतिंगाँ ज़मीन पर निकल पड़ी और उसने दूसरा वार न किया, इसलिए वह मर गया, फिर योआब और उसका भाई अबीशे सबा’ बिन बिक्री का पीछा करने लगे। 11 और योआब के जवानों में से एक शख्स उसके पास खड़ा हो गया और कहने लगा कि “जो कोई योआब से राजी है और जो कोई दाऊद की तरफ है वह योआब के पीछे होले।” 12 और ‘अमासा’ सड़क के बीच अपने खून में लोट रहा था और उस शख्स ने देखा कि सब लोग खड़े हो गये हैं, तो वह ‘अमासा’ को सड़क पर से मैदान को उठा ले गया और जब यह देखा कि जो कोई उसके पास आता है खड़ा हो जाता है, तो उस पर एक कपड़ा डाल दिया। 13 और जब वह सड़क पर से हटा लिया

गया, तो सब लोग योआब के पीछे सबा' बिन बिक्री का पीछा करने चले। 14 और वह इसाईल के सब कबीलों में से होता हुआ अबील और बैत मा'का और सब बेरियों तक पहुँचा और वह भी जमा' होकर उसके पीछे चले। 15 और उन्होंने आकर उसे अबील बैत मा'का में घेर लिया शहर के सामने ऐसा दमदमा बाँधा कि वह दीवार के बराबर रहा और सब लोगों ने जो योआब के साथ थे दीवार को तोड़ना शुरू किया ताकि उसे गिरा दे। 16 तब एक 'अक्लमन्द' 'औरत शहर में से पुकार कर कहने लगी कि "ज़रा योआब से कह दो कि यहाँ आए ताकि मैं उससे कुछ कहूँ।" 17 तब वह उसके नजदीक आया, उस 'औरत ने उससे कहा, "क्या तू योआब है?" उसने कहा, "हूँ" तब वह उससे कहने लगी, "अपनी लौड़ी की बातें सुन।" 18 तब वह कहने लगी कि "पुराने जमाना में यूँ कहा करते थे कि वह ज़स्तर अबील में सलाह पूँछे और इस तरह वह बात को खत्म करते थे। 19 और मैं इसाईल में उन लोगों में से हूँ जो सुलह पसंद और दयानदार हैं, तु चाहता है कि एक शहर और मौँ को इसाईलियों के बीच हलाक करे, फिर त क्यूँ खुदावन्द की मीरास को निगलना चाहता है?" 20 योआब ने जवाब दिया, "मुझसे हरगिज़ ऐसा न हो कि मैं निगल जाऊँ या हलाक करूँ।" 21 बात यह नहीं है बल्कि इसाईल के पहाड़ी मुल्क के एक शब्स ने जिसका नाम सबा' बिन बिक्री है बादशाह यानी दाऊद के खिलाफ हाथ उठाया है इसलिए सिर्फ उरी को मैं हवाले कर देते तो मैं शहर से चला जाऊँगा।" 22 योआब ने योआब से कहा, "देख उसका सिर दीवार पर से तैरे पास फेंक दिया जाएगा।" 22 तब वह 'औरत अपनी दानाई से सब लोगों के पास गई, फिर उसने सबा' बिन बिक्री का सिर काट कर उसे बाहर योआब की तरफ फेंक दिया, तब उसने नरसिंगा फँका और लोग शहर से अलग होकर अपने डेरे को चले गये और योआब येस्शलेम को बादशाह के पास लौट आया। 23 और योआब इसाईल के सारे लश्कर का सरदार था, और बिनायाह बिन यहयाद के रोतियों और फलतियों का सरदार था। 24 और अद्युम खिराज का दरोगा था और अबीलहु का बेटा यहसफ़त मुवरिख था। 25 और सिवा मुन्ही था और सदूक और अबीयातर काहिन थे। 26 और 'ईरा याझी भी दाऊद का एक काहिन था।

21 और दाऊद के दिनों में लगातार तीन साल काल पड़ा, और दाऊद

ने खुदावन्द से दरियापत्त किया, खुदावन्द ने फरमाया, "यह साऊल और उसके ख़रैज़ घराने की वजह से है, क्यूँकि उसने जिब'ऊँनियों को कत्ल किया।" 2 तब बादशाह ने जिब'ऊँनियों को बुलाकर उनसे बात की, यह जिब'ऊनी बनी इसाईल में से नहीं बल्कि बचे हुए अमरियों में से थे और बनी इसाईल ने उनसे कसम खाई थी और साऊल ने बनी इसाईल और बनी यहदाह की खातिर अपनी गरम जोरी में उनको कत्ल कर डालना चाहा था। 3 इसलिए दाऊद ने जिब'ऊनियों से कहा, "मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ और मैं किस चीज़ से कफ़रारा दूँ, ताकि तुम खुदावन्द की मीरास को दुआ दो?" 4 जिब'ऊनियों ने उससे कहा कि "हमारे और साऊल या उसके घराने के दरमियान चाँदी या सोने का कोई मूँआमला नहीं और न हमको यह इच्छियार है कि हम इसाईल के किसी आदमी को जान से मरों।" 5 उसने कहा, "जो कुछ तुम कहो मैं वही तुम्हारे लिए करूँगा।" 5 उन्होंने बादशाह को जवाब दिया कि "जिस शब्स ने हमारा नास किया और हमारे खिलाफ ऐसी तदबीर निकाली कि हम मिटा दिए जायें, और इसाईल की किसी बादशाहत में बाकी न रहें।" 6 उरी के बेटों में से सात आदमी हमारे हवाले कर दिए जायें, और हम उनको खुदावन्द के लिए चुने हुए साऊल के जिबा' में लटका देंगे।" बादशाह ने कहा, "मैं दे दूँगा।" 7 लेकिन बादशाह ने मिफ़ीबोसत बिन यूनत बिन साऊल को खुदावन्द की कसम की वजह से जो उनके दाऊद और साऊल के बेटे यूनत के दरमियान हुई थी बचा

रखा। 8 लेकिन बादशाह ने अर्याह की बेटी रिस्फ़ह के दोनों बेटों अरमोनी और मिफ़ीबोसत को जो साऊल से हुए थे और साऊल की बेटी मीकल के पाँचों बेटों को जो बरजिली महलाती के बेटे 'अदरीएल से हुए थे लेकर। 9 उनको जिब'ऊनियों के हवाले किया और उन्होंने उनको पहाड़ पर खुदावन्द के सामने लटका दिया, इसलिए वह सातों एक साथ मारे, यह सब फसल काटने के दिनों में यानी जौ की फसल के शुरू में मारे गये। 10 तब अर्याह की बेटी रिस्फ़ह ने टाट लिया और फसल के शुरू से उसको अपने लिए चाप्तन पर बिछाए रही जब तक आसमान से उन पर बारिश न हुई और उसने न तो दिन के बक्त वहा के परिन्दों को और न रात के बक्त जंगली दरिन्दों को उन पर आये दिया। 11 और दाऊद को बताया गया कि साऊल की बाँदी अर्याह की बेटी रिस्फ़ह ने ऐसा किया। 12 तब दाऊद ने जाकर साऊल की हड्डियों और उसके बेटे यूनत की हड्डियों को यवीस जिला' आद के लोगों से लिया जो उनको बैत शान के चौक में से चुरा लाये थे, जहाँ फिलिस्तियों ने उनको जिस दिन कि उन्होंने साऊल को जिलबूँ आ में कत्ल किया टांग दिया था। 13 इसलिए वह साऊल की हड्डियों और उसके बेटे यूनत की हड्डियों को वहाँ से ले आया, और उन्होंने उनकी भी हड्डियाँ जामा की जो लटकाए गये थे। 14 और उन्होंने साऊल और उसके बेटे यूनत की हड्डियों को जिला' में जो बिनयमीनी की सर ज़मीन में है उरी के बाप कैस की कब्र में दफ़न किया और उन्होंने जो कुछ बादशाह ने फरमाया था सब पूरा किया, इसके बाद खुदा ने उस मूल्क के बारे में दुआ सुनी। 15 और फिलिस्ती फिर इसाईलियों से लड़े और दाऊद अपने खादिमों के साथ निकला और फिलिस्तियों से लड़ा और दाऊद बहुत थक गया। 16 और इस्बी बनोब ने जो देवजादों में से था और जिसका नेज़ह वजन में पीतल की तीन सौ पिस्काल था और वह एक नई तलवार बँधे था चाहा कि दाऊद को कत्ल करे। 17 लेकिन ज़रोयाह के बेटे अबीशै ने उसकी मदद की और उस फिलिस्ती को ऐसी मार लगाई कि उसे मार दिया, तब दाऊद के लोगों ने कसम खाकर उससे कहा कि "तू फिर कमी हमारे साथ ज़ंग पर नहीं जाएगा ऐसा न हो कि तू इसाईल का चारगा बुझादे।" 18 इसके बाद फिलिस्तियों के साथ ज़ब में लडाई हुई, तब हासीता सिब्बकी ने सफ़ को जो देवजादों में से था कत्ल किया। 19 और फिर फिलिस्तीयों से जब में एक और लडाई हुई, तब इल्हनान बिन यानी अर्जीम ने जो बैतुल-हम का था जाती जोलियत को कत्ल किया जिसके नेज़ह की छड़ ज़ुलाहे के शहतीर की तरह थी। 20 फिर जात में लडाई हुई और वहाँ एक बड़ा लम्बा शब्स था, उसके दोनों हाथों और दोनों पावों में छँ: उंगलियाँ थीं जो सब की सब गिनती में ज़बैसी थीं और यह भी उस देव से पैदा हुआ था। 21 जब इसने इसाईलियों की फ़ज़ीहत की तो दाऊद के भाई सिमाए के बेटे यूनत ने उसे कत्ल किया। 22 यह चारों उस देव से जात में पैदा हुए थे, और वह दाऊद के हाथ से और उसके खादिमों के हाथ से मारे गये।

22 जब खुदावन्द ने दाऊद को उसके सब दुश्मनों और साऊल के हाथ से रिहाई दी तो उसने खुदावन्द के सामने इस मज़मून का हम्द सुनाया। 2 वह कहने लगा, खुदावन्द मेरी चट्ठान और मेरा किला' और मेरा छुड़ने वाला है। 3 खुदा मेरी चट्ठान है, मैं उसी पर भरोसा रखूँगा, वही मेरी दाल और मेरी नजात का सीधा है, मेरा ऊँचा बुर्ज और मेरी पनाह है, मेरे नजात देने वाले। तही मुझे ज़ुल्म से बचाता है। 4 मैं खुदावन्द को जो तारीफ़ के लायक है पुकास्तँगा, यूँ मैं अपने दुश्मनों से बचाया जाऊँगा। 5 क्यूँकि मौत की मौर्जौ ने मुझे धेरा, बेटीनी के सैलाबों ने मुझे डारया। 6 पाताल की रस्सियाँ मेरे चारों तरफ थीं मौत के फ़ंदे मुझ पर आते थे। (Sheol h7585) 7 अपनी मुसीबत में मैंने खुदावन्द को पुकारा, मैं अपने खुदा के सामने चिल्लाया। उसने अपनी हैकल में से मेरी आवाज सुनी और मेरी फरयाद उसके कान में पहुँची। 8 तब ज़मीन हिल गई

और कॉप उठी और आसमान की बुनियादों ने जुम्बिश खाईं और हिल गयी, इसलिए कि वह गुस्सा हुआ। 9 उसके नथुनों से धूमां उठा और उसके मुँह से आग निकल कर भस्म करने लगी, कोयले उससे दहक उठे। 10 उसने आसमानों को भी झुका दिया और नीचे उतर आया और उसके पाँव तले गहरा अँधेरा था। 11 वह कर्स्बी पर सवार होकर उदा और हवा के बाजुओं पर दिखाई दिया। 12 और उसने अपने चारों तरफ अँधेरे को और पानी के इजिटामा और आसमान के दलदार बादलों को शामियाने बनाया। 13 उस झलक से जो उसके आगे आगे थी आग के कोयले सुखग गये। 14 खुदावन्द आसमान से गरजा और हक तं अला ने अपनी आवाज सुनाई। 15 उसने तीर चला कर उनको तिर बितर किया, और बिजली से उनको शिक्षत दी। 16 तब खुदावन्द की डॉट से, उसके नथुनों के दम के झोंकों से, समुन्दर की गहराई दिखाई देने लगी, और जहान की बुनियादें नम्दार हुईं। 17 उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और मुझे बहत पानी में से खींच कर बाहर निकाला। 18 उसने मेरे ताकतवर दुश्मन और मेरे 'अदावत रखने वालों से, मुझे छुड़ा लिया क्यूंकि वह मेरे लिए निहायत बहादुर थे। 19 वह मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर आ पड़े, पर खुदावन्द मेरा सहारा था। 20 वह मुझे चौड़ी जगह में निकाल भी लाया, उसने मुझे छुड़ाया, इसलिए कि वह मुझसे खुश था। 21 खुदावन्द ने मेरी रास्तबाजी के मुवाफिक मुझे बदला दिया, और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक मुझे बदला दिया। 22 क्यूंकि मैं खुदावन्द की राहों पर चलता रहा, और गलती से अपने खुदा से अलग न हुआ। 23 क्यूंकि उसके सारे फैसले मेरे सामने थे, और मैं उसके कानून से अलग न हुआ। 24 मैं उसके सामने कामिल भी रहा, और अपनी बदलाई से बाज़ रहा। 25 इसीलिए खुदावन्द ने मुझे मेरी रास्तबाजी के मुवाफिक बल्कि मेरी उस पाकीज़गी के मुताबिक जो उसकी नज़र के सामने थी बदला दिया। 26 रहम दिल के साथ त रहीम होगा, और कामिल आदमी के साथ कामिल। 27 नेकों के साथ नेक होगा, और टेढ़ों के साथ टेढ़ा। 28 मुसीबत जदा लोगों को त बचाएगा, लेकिन तेरी अँधेरे मास्टरों पर लगा हैं ताकि त उन्हें नीचा करे। 29 क्यूंकि ऐ खुदावन्द! तू मेरा चराग है, और खुदावन्द मेरे अँधेरे को उजाला कर देगा। 30 क्यूंकि तेरी बदौलत मैं फौज पर जंग करता हूँ, और अपने खुदा की बदौलत तीवार फौंद जाता हूँ। 31 लेकिन खुदा की राह कामिल है, खुदावन्द का कलाम ताया हुआ है, वह उन सबकी ढाल है जो उसपर भरोसा रखते हैं। 32 क्यूंकि खुदावन्द के 'अलावा और कौन खुदा है? और हमारे खुदा को छोड़ कर और कौन चटटान है? 33 खुदा मेरा मज़बूत किला' है, वह अपनी राह में कामिल शब्द की रहनुमाई करता है। 34 वह उसके पाँव हिरनी के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में काईम करता है। 35 वह मेरे हाथों को जंग करना सिखाता है, यहाँ तक कि मेरे बाज़ पीतल की कमान को झाका देते हैं। 36 तूने मुझको अपनी नज़र की ढाल भी बछाई, और तेरी नरमी ने मुझे बुर्ज़ग बना दिया। 37 तूने मेरे नीचे मेरे कदम चौड़े कर दिए, और मेरे पाँव नहीं फिसले। 38 मैंने अपने दुश्मनों का पीछा करके उनको हलाक किया, और जब तक वह फना न हो गये मैं वापस नहीं आया। 39 मैंने उनको फना कर दिया और ऐसा छेड़ डाला है कि वह उठ नहीं सकते, बल्कि वह तो मेरे पाँव के नीचे गिर पड़े हैं। 40 क्यूंकि तूने लड़ाई के लिए मुझे ताकत से तैयार किया, और मेरे मुखालिफों को मेरे सामने नीचा किया। 41 तूने मेरे दुश्मनों की पीठ मेरी तरफ फेरती, ताकि मैं अपने 'अदावत रखने वालों को काट डालूँ। 42 उन्होंने इन्तज़ार किया लेकिन कोई न था जो बचा, बल्कि खुदावन्द का भी इन्तज़ार किया, लेकिन उसने उनको जवाब न दिया। 43 तब मैंने उनको कट कट कर जमीन की गर्द की तरह कर दिया, मैंने उनको गली क्रूचों के कीचड़ की तरह रौद कर चारों तरफ फैला दिया। 44 तूने मुझे मेरी

कौम के झगड़ों से भी छुड़ाया, तूने मुझे कौमों का सरदार होने के लिए रख छोड़ा है, जिस कौम से मैं बाकिक भी नहीं वह मेरी फरमा बरदार होगी। 45 परदेसी मेरे ताबे' हो जायेंगे, वह मेरा नाम सुनते ही मेरी फरमाबदरी करेंगे। 46 परदेसी मुझा जायेंगे और अपने किलोंसे थरथराते हुए निकलेंगे। 47 खुदावन्द जिन्दा है, मेरी चटटान मुबारक हो! और खुदा मेरे नजात की चटटान मुम्ताज हो! 48 वह वीर खुदा जो मेरा बदला लेता है, और उम्मतों को मेरे ताबे' कर देता है। 49 और मुझे मेरे दुश्मनों के बीच से निकालता है, हाँ त मुझे मेरे मुखालिफों पर सरफराज करता है, त मझे टेढ़े आदमियों से रिहाई देता है। 50 इसलिए ऐ खुदावन्द! मैं कौमों के बीच तेरी शुक्रगुज़री और तेरे नाम की मदह सराई करूँगा। 51 वह अपने बादशाह को बड़ी नजात 'इन्यात करता है, और अपने ममसूह दाऊद और उसकी नसल पर हमेशा शफकत करता है।

23 दाऊद की आखरी बातें गह हैं: दाऊद बिन यसरी कहता है, यार्नी यह उस शख्स का कलाम है जो सरफराज किया गया, और याकूब के खुदा का ममसूह और इस्माईल का शीरी नामा साज है। 2 'खुदावन्द की स्त्र ने मेरी ज़रिए' कलाम किया, और उसका सुखन मेरी जबान पर था। 3 इस्माईल के खुदा ने फरमाया। इस्माईल की चटटान ने मुझसे कहा। एक है जो सच्चाई से लोगों पर हक्मत करता है। जो खुदा के खौफ के साथ हक्मत करता है। 4 वह सबह की रोशनी की तरह होगा जब सूरज निकलता है, ऐसी सबह जिसमें बादल न हो, जब नरम नरम धास जमीन में से, बारिश के बाद की साफ चमक के ज़रिए निकलती है। 5 मेरा घर तो सच मुच खुदा के सामने देस है भी नहीं, तो भी उसने मेरे साथ एक हमेशा का 'अहद, जिसकी सब बातें मु'अय्यन और पाएदार हैं बांधा है, क्यूंकि यही मेरी सारी नजात और सारी मुसाद है, अगर वे बह उसको बढ़ाता नहीं। 6 लेकिन झटे लोग सब के सब कॉटों की तरह ठहरेंगे जो हटा दिए जाते हैं, क्यूंकि यही मेरी सारी नजात और सारी मुसाद है, अगर वे बह उसको बढ़ाता नहीं। 7 बल्कि जो आदमी उनको छुए, ज़स्त है कि वह लोहे और नेज़ह की छड़ से मुसल्लह हो, इसलिए वह अपनी ही जगह में आग से बिल्कुल भस्म कर दिए जायेंगे। 8 और दाऊद के बहादुरों के नाम यह हैं: यार्नी तहकीमोंनी योशेब बशेबत जो सिपह सालाह का सरदार था, वही ऐज़नी अदीनों था जिससे आठ सौ एक ही वक्त में मकतूल हुए। 9 उसके बाद एक अखीरा के बेटे दोटे का बेटा एलियाज़र था, यह उन तीनों सूमाओं में से एक था जो दाऊद के साथ उस वक्त थे, जब उन्होंने उन फिलिस्तियों को जो लड़ाई के लिए जमा' हए थे ललकारा हालाँकि सब बनी इस्माईल चले गये थे। 10 और उसने उठकर फिलिस्तियों को इतना मारा कि उसका हाथ थक कर तलवार से चिपक गया और खुदावन्द ने उस दिन बड़ी फतह कराई और लोग फिर कर सिर्फ लूटने के लिए उसके पीछे हो लिए। 11 बाद उसके हरारी अजी का बेटा सम्मा था और फिलिस्तियों ने उस कत — ए — जमीन के पास जो मस्र के पेड़ों से भरा था 'जमा' होकर दिल बाँध लिया था और लोग फिलिस्तियों के आगे से भाग गये थे। 12 लेकिन उसने उस कत' के बीच में खड़े होकर उसको बचाया और फिलिस्तियों को कत्तल किया और खुदावन्द ने बड़ी फतह कराई। 13 और उन तीस सरदारों में से तीन सरदार निकले और फसल काटने के मौसम में दाऊद के पास 'अद्भुलाम के मगारा में आए और फिलिस्तियों की फौज रिफाईम की बादी में खेमा जन थी। 14 और दाऊद उस वक्त गढ़ी में था और फिलिस्तियों के पहरे की चौकी बैतल हम में थी। 15 और दाऊद ने तरसते हुए कहा, ऐ काश कोई मुझे बैतल हम के उस कुँवे का पानी पिने को देता जो फाटक के पास है। 16 और उन तीनों बहादुरों ने फिलिस्तियों के लश्कर में से जाकर बैतल हम के कुँवे से जो फाटक के बराबर है पानी भर लिया और उसे दाऊद के पास लाये लेकिन उसने न चाहा कि पिए बल्कि उसे खुदावन्द के सामने उंडेल दिया। 17 और कहने लगा, ऐ खुदावन्द

मुझसे यह बात हरगिज़ न हो कि मैं ऐसा करूँ, क्या मैं उन लोगों का खून पियूँ जिन्होंने अपनी जान जोखों में डाली?" इसी लिए उसने न चाहा कि उसे पिए, उन तीनों बहादुरों ने ऐसे ऐसे काम किए। 18 और योरोहाह के बेटे योआब का भाई अबीशै उन तीनों में अफ़ज़ल था, उसने तीन सौ पर अपना भाला चला कर उनको कत्ल किया और तीनों में नामी था। 19 क्या वह उन तीनों में खास न था? इसीलिए वह उनका सरदार हुआ तो भी वह उन पहले तीनों के बराबर नहीं होने पाया। 20 और यह्यादा' का बेटा बिनायाह कबजील के एक सरमा का बेटा था, जिसने बड़े बड़े काम किए थे, इसने मोआब के अर्रिएल के दोनों बेटों को कत्ल किया और जाकर बर्फ के मौसम में एक गार के बीच एक शेर बबर को मारा। 21 और उसने एक जसीम मिस्री को कत्ल किया, उस मिस्री के हाथ में भला था लेकिन यह लाठी ही लिए हए उस पर लपका और मिस्री के हाथ से भला छीन लिया और उसी के भाले से उसे मारा। 22 तब यह्यादा' के बेटे बिनायाह ने ऐसे ऐसे काम किए और तीनों बहादुरों में नामी था। 23 वह उन तीसों से ज्यादा खास था लेकिन वह उन पहले तीनों के बराबर नहीं होने पाया और दाऊद ने उसे अपने मुहाफ़िज़ सिपाहियों पर मुकर्रर किया। 24 और तीसों में योआब का भाई 'असाहिल और इल्हनान बैतल हम के दोदो का बेटा। 25 हरोदी सम्मा, हरोदी इलिका। 26 फलती खलिसि, 'ईरा बिन 'अक्कास तक़'। 27 अन्तोती अबी'अजर, हसाती मबूमी। 28 अयहुई जल्मोन, नतोफाती महरी। 29 नतोफाती बा'ना के बेटा हलिब, इती बिन रीबी बनी बिनयमीन के जिब्बा'का। 30 फिर 'आतोनी, बिनायाह, और जा'स के नालों कब हिदी। 31 'अरबाती अबी' अल्बून, बर्हमी 'अज्जमावत। 32 सा'लाबनी इलीयाब, बनी यासीन यूनतन। 33 हरारी सम्मा, अख्वीआम बिन सरार हरारी। 34 इलिफ़ालत बिन अहसवी मा'कारी का बेटा, इलीआम बिन अख्वीतुफ़फ़ल जिलोनी। 35 कर्मिली हरसो, अरबी फा'री। 36 जोबाह के नातन का बेटा इजाल, ज़दी बानी। 37 'अमोनी सिलक, बैरोती नहरी, ज़रोहाह के बेटे योआब के सिलहबरदर। 38 इतरी 'ईरा, इतरी जरीब। 39 और दिन्ती ऊरियाह, यह सब सैंतीस थे।

24 इसके बाद खुदावन्द का गुस्सा इस्माइल पर फिर भड़का और उसने दाऊद के दिल को उनके खिलाफ़ यह कहकर उभारा कि "जाकर इस्माइल और यहदाह को गिना।" 2 और बादशाह ने लशकर के सरदार योआब को जो उसके साथ था हक्म किया कि "इस्माइल के सब कर्बालीं में दान से बेर सबा" तक गश्त करो और लोगों को गिनो ताकि लोगों की तादाद मुझे मा'लूम हो।" 3 तब योआब ने बादशाह से कहा कि "खुदावन्द तेरा खुदा उन लोगों को चाहे वह कितने ही हों सौ गुना बढ़ाए और मैं मालिक बादशाह की आँखें इसे देवें, लेकिन मैं मालिक बादशाह को यह बात क्यों भाटी है?" 4 तो भी बादशाह की बात योआब और लशकर के सरदारों पर गालिकी ही रही, और योआब और लशकर के सरदार बादशाह के सामने से इस्माइल के लोगों का शुमार करने निकले। 5 और वह यरदान पार उत्ते और उस शहर की दहनी तरफ 'अरो'इर में खेमाजन हार जो जट की वादी में या'जेर की जानिब है। 6 फिर जिला आद और तहतीम हदरी के 'इलाके में गए, और दान या'न को गए, और धूम कर सैदा तक पहुँचे। 7 और वहाँ से सूर के किला' को और हज्वियों और कऩ'आनियों के सब शहरों को गए और यहदाह के ज़नब में बेरसबा' तक निकल गए। 8 चुनाँचे सारी हक्मत में गश्त करके नौ महीने जीस दिन के बाद वह येस्लेम को लौटै। 9 और योआब ने मद्दम शमारी की तादाद बादशाह को दी वह इस्माइल में आठ लाख बहादुर मर्द निकले जो शमशीर जन थे और यहदाह में आदीमी पॅच लाख निकले। 10 और लोगों का शुमार करने के बाद दाऊद का दिल बेचैन हुआ और दाऊद ने खुदावन्द से कहा, "यह जो मैंने किया वह बड़ा गुनाह किया, अब ऐ-

खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपने बन्दा का गुनाह दूर कर दे क्यूँकि मुझसे बड़ी बेवकूफ़ी हुई।" 11 इसलिए जब दाऊद सुबह को उठा तो खुदावन्द का कलाम जाद पर जो दाऊद का गैब बीन था नाजिल हुआ और उसने कहा कि 12 "जा और दाऊद से कह खुदावन्द यूँ फरमाता है कि मैं तेरे सामने तीन बलाएँ पेश करता हूँ, तू उनमें से एक को चुन ले ताकि मैं उसे तुझ पर नाजिल करूँ।" 13 तब जाद ने दाऊद के पास जाकर उसको यह बताया और उस से पुछा, "क्या तेरे मुल्क में सात बरस कहत रहे या तू तीन महीने तक अपने दुश्मनों से भागता फिरे और वह तेरा पीछा करेंगे या तेरी हक्मत में तीन दिन तक मैंते हों? इसलिए तू सोच ले और गैर कर ले कि मैं उसे जिसने मुझे भेजा ने क्या जवाब दूँ।" 14 दाऊद ने जाद से कहा, "मैं बड़े शिकंजे में हूँ, हम खुदावन्द के हाथ में पड़ें क्यूँकि उसकी रहमतें 'अजीम हैं लेकिन मैं इसान के हाथ में न पड़ूँ।" 15 तब खुदावन्द ने इस्माइल पर बबा भेजी जो उस सुबह से लेकर वक्त मु़अय्यान तक रही और दान से बेर सबा' तक लोगों मेंसे सतर हजार आदमी मर गए। 16 और जब फरिश्ते ने अपना हाथ बढ़ाया कि येस्लेम को हलाक करे तो खुदावन्द उस बबा से मलूल हुआ और उस फरिश्ते से जो लोगों को हलाक कर रहा था कहा, "यह बस है, अब अपना हाथ रोक लो।" उस वक्त खुदावन्द का फरिश्ता यबूसी अरोनाह के खलिहान के पास खड़ा था। 17 और दाऊद ने जब उस फरिश्ता को जो लोगों को मार रहा था देखा तो खुदावन्द से कहने लगा, "देख गुनाह तेरे मैंने किया और खता मुझसे हुई लेकिन इन भेड़ों ने क्या किया है? इसलिए तेरा हाथ मेरे और मेरे बाप के घराने के खिलाफ़ हो।" 18 उसी दिन जाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, "जा और यबूसी अरोनाह के खलिहान में खुदावन्द के लिए एक मजब्बह बना।" 19 इसलिए दाऊद जाद के कहने के मुताबिक जैसा खुदावन्द का हक्म था गया। 20 और अरोनाह ने निगाह की और बादशाह और उसके खादिमों को अपनी तरफ आते देखा, तब अरोनाह निकला और जमीन पर सरनाँ छोकर बादशाह के अगे सज्जा किया। 21 और अरोनाह कहने लगा, "मेरा मालिक बादशाह अपने बन्दा के पास क्यों आया?" दाऊद ने कहा, "यह खलिहान तुझसे खरीदने और खुदावन्द के लिए एक मजब्बह बनाने आया हूँ ताकि लोगों में से बबा जाती रहे।" 22 अरोनाह ने दाऊद से कहा, मेरा मालिक बादशाह जो कुछ उसे अच्छा मालूम हो लेकर पेश करे, देख सोखनी कुर्बानी के लिए बैल है और दायें चलाने के औजार और बैरों का सामान ईधन के लिए है। 23 यह सब कुछ ऐ बादशाह अरोनाह बादशाह की नजर करता है। और अरोनाह ने बादशाह से कहा कि "खुदावन्द तेरा खुदा तुझसे कुबूल फरमाए।" 24 तब बादशाह ने अरोनाह से कहा, "नहीं बल्कि मैं जस्त रीमात देकर उसको तुझसे खरीदूँगा और मैं खुदावन्द अपने खुदा के सामने ऐसी सोखनी कुर्बानियाँ अदा करूँगा जिन पर मेरा कुछ खर्च न हुआ हो" फिर दाऊद ने वह खलिहान और वह बैल चाँदी के पचास मिस्कालें देकर खरीद। 25 और दाऊद ने वहाँ खुदावन्द के लिए मजब्बह बनाया और सोखनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश की और खुदावन्द ने उस मुल्क के बारे में दुआ सुनी और बबा इस्माइल में से जाती रही।

1 सल्ला

1 और दाऊद बादशाह बुझा और उम्र दराज हुआ; और वह उसे कपड़े उड़ाते, लेकिन वह गर्म न होता था। 2 तब उसके खादिमों ने उसने कहा, कि हमारे मालिक बादशाह के लिए एक जवान कुँवारी ढूँढ़ी जाए, जो बादशाह के सामने खड़ी रहे और उसकी देख भाल किया करे, और तो यहल में लेट रहा करे ताकि हमारे मालिक बादशाह को गर्मी पहुँचे। 3 चुनाँचे उहँहोंने इस्माईल की सारी हुक्मत में एक ख्वाबसूरत लड़की तलाश करते करते शून्यत अबीशाग को पाया, और उसे बादशाह के पास लाए। 4 और वह लड़की बहुत हसीन थी, तब वह बादशाह की देख भाल और उसकी खिदमत करने लगी; लेकिन बादशाह उससे वाकिफ न हुआ। 5 तब हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने सर उठाया और कहने लगा, “मैं बादशाह हूँगा।” और अपने लिए रथ और सवार और पचास आदमी, जो उसके आगे — आगे दैड़े, तैयार किए। 6 उसके बाप ने उसको कभी इतना भी कहकर गम्भीन नहीं किया, कि तू ने यह कँूँ किया है? और वह बहुत ख्वाबसूरत भी था, और अबीसलोम के बाद पैदा हुआ था। 7 और उसने जरोयाह के बेटे योआब और अबीयातर काहिन से बात की; और यह दोनों अदूनियाह के पैरोंकार होकर उसकी मटद करने लगे। 8 लेकिन सदूक काहिन, और यहयदा के बेटे बिनायाह, और नातन नबी, और सिमाई और रेई और दाऊद के बहादुर लोगों ने अदूनियाह का साथ न दिया। 9 और अदूनियाह ने भेड़े और बैल और मोटे — मोटे जानवर ज़ुहलत के पत्थर के पास, जो ऐन राजित के बराबर है, ज़बह किए, और अपने सब भाइयों यानी बादशाह के बेटों की, और सब यहदाह के लोगों की, जो बादशाह के मुलाजिम थे, दा॑वत की; 10 लेकिन नातन नबी और बिनायाह और बहादुर लोगों और अपने भाई सुलेमान को न बुलाया। 11 तब नातन ने सुलेमान की मौं बतसबा॑ से कहा, क्या तू ने नहीं सुना कि हज्जीत का बेटा अदूनियाह बादशाह बन बैठा है, और हमारे मालिक दाऊद को यह मालम नहीं? 12 अब तू आ कि मैं तुम्हे सलाह दूँ, ताकि तू अपनी और अपने बेटे सुलेमान की जान बचा सके। 13 तू दाऊद बादशाह के सामने जाकर उससे कह, “ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह, क्या तू ने अपनी लौड़ी से कसम खाकर नहीं कहा कि यकीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद हुक्मत करेगा, और वही मेरे तख्त पर बैठेगा? पस अदूनियाह कर्वै बादशाही करता है? 14 और देख, तू बादशाह से बात करती ही होगी कि मैं भी तेरे बाद आ पहुँचूँगा, और तेरी बातों की तस्दीक करूँगा।” 15 तब बतसबा॑ अन्दर कोठरी में बादशाह के पास गई; और बादशाह बहुत बुझा था, और शून्यत अबीशाग बादशाह की खिदमत करती थी। 16 और बतसबा॑ ने झुक्कर बादशाह को सिज्दा किया। बादशाह ने कहा, “तू क्या चाहती है?” 17 उसने उससे कहा, “ऐ मेरे मालिक, तू ने खुदावन्द अपने खुदा की कसम खाकर अपनी लौड़ी से कहा था, यकीनन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद हुक्मत करेगा, और वही मेरे तख्त पर बैठेगा। 18 पर देख, अब तो अदूनियाह बादशाह बन बैठा है, और ऐ मेरे मालिक बादशाह, तुझ को इसकी खबर नहीं। 19 और उसने बहुत से बैल और मोटे जानवर और भेड़े ज़बह की हैं; और बादशाह के सब बेटों और अबीयातर काहिन, और लश्कर के सरदार योआब की दा॑वत की है, लेकिन तेरे बन्दे सुलेमान को उसने नहीं बुलाया। 20 लेकिन ऐ मेरे मालिक, सारे इस्माईल की निगाह तुझ पर है, ताकि तू उनको बताए कि मेरे मालिक बादशाह के तख्त पर कौन उसके बाद बैठेगा। 21 वरना यह होगा कि जब मेरा मालिक बादशाह अपने बाप — दादा के साथ सो जाएगा, तो मैं और मेरा बेटा सुलेमान दोनों को क्सरवार ठहरेंगे।” 22 वह अभी बादशाह से बात ही कर रही थी कि नातन नबी आ गया। 23 और उन्होंने बादशाह को खबर दी, “देख, नातन नबी हाजिर है।” और जब वह बादशाह के सामने आया, तो उसने मुँह के बल गिर कर बादशाह को सिज्दा किया। 24 और नातन कहने लगा, ऐ मेरे मालिक बादशाह! क्या तू ने फरमाया है, कि मेरे बाद अदूनियाह बादशाह हो, और वही मेरे तख्त पर बैठे? 25 क्यूँकि उसने आज जाकर बैल और मोटे — मोटे जानवर और भेड़े कसरत से ज़बह की हैं, और बादशाह के सब बेटों और लश्कर के सरदारों और अबीयातर काहिन की दा॑वत की है; और देख, वह उसके सामने खा पी रहे हैं और कहते हैं, ‘अदूनियाह बादशाह जिन्दा रहे।’ 26 लेकिन मुझे तेरे खादिम को, और सदूक काहिन और यहयदा के बेटे बिनायाह और तेरे खादिम सुलेमान को उसने नहीं बुलाया। 27 क्या यह बात मेरे मालिक बादशाह की तरफ से है? और तू ने अपने खादिमों को बताया भी नहीं कि मेरे मालिक बादशाह के बाद, उसके तख्त पर कौन बैठेगा? 28 तब दाऊद बादशाह ने जबाब दिया और फरमाया, ‘बतसबा॑’ को मेरे पास लुटाओ।” 29 तब वह बादशाह के सामने आई और बादशाह के सामने खड़ी है। 29 बादशाह ने कसम खाकर कहा कि, खुदावन्द की हयात की कसम जिसने मेरी जान को हर तरह की आफत से रिहाई दी, 30 कि सचमुच जैरी मैंने खुदावन्द इस्माईल के खुदा की कसम तुझ से खाई और कहा, कि यकीन तेरा बेटा सुलेमान मेरे बाद बादशाह होगा, और वही मेरी जगह मेरे तख्त पर बैठेगा, तो सचमुच मैं आज के दिन वैसा ही करूँगा। 31 तब बतसबा॑ जर्मान पर मुँह के बल गिरी और बादशाह को सिज्दा करके कहा कि ‘मेरा मालिक दाऊद बादशाह, हमेशा जिन्दा रहे।’ 32 और दाऊद बादशाह ने फरमाया, ‘कि सदूक काहिन आयर नातन नबी और यहयदा के बेटे बिनायाह को मेरे पास लुटाओ।’ 30 तब वह बादशाह के सामने आए। 33 बादशाह ने उनको फरमाया कि तुम अपने मालिक के मुलाजिमों को अपने साथ लो, और मेरे बेटे सुलेमान को मेरी ही खच्चर पर सवार कराओ; और उसे जैहन को ले जाओ; 34 और वहाँ सदूक काहिन और नातन नबी उसे मसह करें, कि वह इस्माईल का बादशाह हो; और तुम नरसिंगा फूँकना और कहना कि सुलेमान बादशाह जिन्दा रहे।’ 35 पिर तुम उसके पीछे — पीछे चले आना, और वह आकर मेरे तख्त पर बैठे; क्यूँकि वही मेरी जगह बादशाह होगा, और मैंने उसे मुकर्रर किया है कि वह इस्माईल और यहदाह का हाकिम हो।’ 36 तब यहयदा के बेटे बिनायाह ने बादशाह के जबाब में कहा, “आमीन! खुदावन्द मेरे मालिक बादशाह का खुदा भी ऐसा ही कहे। 37 जैसे खुदावन्द मेरे मालिक बादशाह के साथ रहा, वैसे ही वह सुलेमान के साथ रहे; और उसके तख्त को मेरे मालिक दाऊद बादशाह के तख्त से बड़ा बनाए।’ 38 इसलिए सदूक काहिन और नातन नबी और यहयदा का बेटा बिनायाह और कर्ती और फल्ली गए, और सुलेमान को दाऊद बादशाह के खच्चर पर सवार कराया और उसे जैहन पर लाए। 39 और सदूक काहिन ने खेमे से तेल का सींग लिया और सुलेमान को मसह किया। और उन्होंने नरसिंगा फूँका और सब लोगों ने कहा, सुलेमान बादशाह जिन्दा रहे।’ 40 और सब लोग उसके पीछे आए और उन्होंने बाँसुलियाँ बजाई और बड़ी खुशी मनाई, ऐसा कि जर्मान उनके शेरओं — गुल से गँज उठी। 41 और अदूनियाह और उपरे सब मेहमान जो उसके साथ थे, खा ही चुके थे कि उन्होंने यह सुना। और जब योआब को नरसिंगे की आवाज सुनाई दी तो उसने कहा, शहर में यह हंगामा और शेर क्यूँ मच रहा है?” 42 वह यह कह ही रहा था कि देखो, अबीयातर काहिन का बेटा यूनतन आया; और अदूनियाह ने उससे कहा, “भीतर आ; क्यूँकि तू लायक शब्द है, और अच्छी खबर लाया होगा।” 43 यूनतन ने अदूनियाह को जबाब दिया, वाकई हमारे मालिक दाऊद बादशाह ने सुलेमान को बादशाह बना दिया है। 44 और बादशाह ने सदूक काहिन और नातन नबी और यहयदा के बेटे बिनायाह और करेतियों और फलेतियों को उसके साथ भेजा। तब उन्होंने बादशाह के खच्चर पर उसे सवार कराया। 45 और सदूक

काहिन और नातन नबी ने जैहन पर उसको मसह करके बादशाह बनाया है; तब वह वही से खुशी करते आए हैं, ऐसा कि शहर गूँज गया। वह शोर जो तुम ने सुना यही है। 46 और सुलेमान तख्त — ए — हुक्मत पर बैठ भी गया है। 47 इसके 'अलावा बादशाह के मुलाजिम हमारे मालिक दाऊद बादशाह को मुबारकबाद देने आए और कहने लगे कि तेरा खुदा, सुलेमान के नाम को तेरे नाम से ज्यादा मुमाज करे, और उसके तख्त को तेरे तख्त से बड़ा बनाए; और बादशाह अपने बिस्तर पर सिंजदे में हो गया। 48 और बादशाह ने भी ऐसा फरमाया कि खुदावन्द इस्माइल का खुदा मुबारक हो, जिसने एक वारिस बख्शा कि वह मेरी ही आँखों के देखते हुए आज मेरे तख्त पर बैठे। 49 फिर तो अदूनियाह के सब मेहमान डर गए, और उठ खड़े हुए और हर एक ने अपना रास्ता लिया। 50 और अदूनियाह सुलेमान की बजह से डर के मारे उठा, और जाकर मजबह के सींग पकड़ लिए। 51 और सुलेमान को यह बताया गया कि "देख, अदूनियाह सुलेमान बादशाह से डरता है, क्यूँकि उन्हें मजबह के सींग पकड़ रखते हैं; और कहता है कि सुलेमान बादशाह आज के दिन मुझ से कसम खाए, कि वह अपने खादिम को तलवार से कल्प नहीं करेगा।" 52 सुलेमान ने कहा, "आगर वह अपने को लायक सविक करे, तो उसका एक बाल भी जमीन पर नहीं परिणाम; लेकिन अगर उसमें शरारत पाई जाएगी तो वह मारा जाएगा।" 53 तब सुलेमान बादशाह ने लोग भेजे, और वह उसे मजबह पर से उतार लाए। उसने आकर सुलेमान बादशाह को सिज्दा किया; और सुलेमान ने उससे कहा, "अपने घर जा।"

2 और दाऊद के मरने के दिन नज़दीक आए, तब उसने अपने बेटे सुलेमान को बसीयत की और कहा कि, 2 "मैं उसी रास्ते जाने वाला हूँ जो सरे जहान का है; इसलिए तू मजबूत हो और मर्दानगी दिखा।" 3 और जो मूसा की शरीर अत में लिखा है, उसके मुताबिक खुदावन्द अपने खुदा की हिदायत को मानकर उसके रास्तों पर चल; और उसके कानन पर और उसके फरमानों और हक्मों और शहादों पर 'अमल कर, ताकि जो कुछ त करे और जहाँ कहीं त जाए, सब में तुझे कामयाबी हो, 4 और खुदावन्द अपनी उस बात को काईम रखवे, जो उसने मेरे हक में कही कि, 'अगर तेरी औलाद अपने रास्ते की हिफाजत करके अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से मेरे सामने सच्चाई से चले, तो इस्माइल के तख्त पर तेरे यहाँ आदमी की कमी न होगी।' 5 "और तू खुद जानता है कि जरोयाह के बेटे योआब ने मुझ से क्या — क्या किया, यानी उसने इस्माइली लश्कर के दो सरदारों, ने के बेटे अब्नेर और यतर के बेटे 'अमासा से क्या किया, जिनको उसने कल्प किया और सुलह के बक्तव्यन् — ए — जंग बहाया, और खून — ए — जंग को अपने पटके पर जो उसकी कमर में बंधा था और अपनी जूतियों पर जो उसके पाँवों में थी लगाया।" 6 इसलिए तू अपनी हुक्मत से काम लेना और उसके सफेद सर को कब्ज में सलामत उत्तरने न देना। (Sheol h7585) 7 लेकिन बरजिली जिल 'अदी' के बेटों पर महेबानी करना, और वह उनमें शामिल हों जो तेरे दस्तरखान पर खाना खाया करेंगे, क्यूँकि वह ऐसा ही करने को मेरे पास आए जब मैं तेरे भाई अबीसलोम की बजह से भगाया था। 8 और देख, बिनयमीनी जीरा का बेटा बहरीमी सिमाई तेरे साथ है, जिसने उस दिन जब कि मैं महनायम को जाता था बहुत दूरी तरह मुझ पर लाना की, लेकिन वह यरदन पर मुझ से मिलने को आया, और मैंने खुदावन्द की कसम खाकर उससे कहा कि 'मैं तुझे तलवार से कल्प नहीं करूँगा।' 9 तब तू उसको बेगुनाह न ठारना, क्यूँकि त् 'अक्तर्लमन्द आदमी है और तू जानता है कि तुझे उसके साथ क्या करना चाहिए, इसलिए तू उसका सफेद सर लाह लहान करके कब्र में उतारना।' (Sheol h7585) 10 और दाऊद अपने बाप — दादा के साथ सो गया और दाऊद के शहर में दफन हुआ। 11 और कुल मुझ जिसमें दाऊद ने

इस्माइल पर हुक्मत की चालीस साल की थी; सात साल तो उसने हब्सन में हुक्मत की, और सैतीस साल येस्जातेम में। 12 और सुलेमान अपने बाप दाऊद के तख्त पर बैठा और उसकी हुक्मत बहुत ही मजबूत हुई। 13 तब हज्जती का बेटा अदूनियाह, सुलेमान की माँ 'बतसबा' के पास आया; उसने पूछा, "तू सुलह के ख्याल से आया है?" उसने कहा, "सुलह के ख्याल से।" 14 फिर उसने कहा, "मुझे तुझ से कुछ कहना है।" उसने कहा, "कहा।" 15 उसने कहा, "तू जानती है कि हुक्मत मेरी थी, और सब इस्माइली मेरी तरफ मुतवज्जिह थे कि मैं हुक्मत करूँ, लेकिन हुक्मत पलट गई और मैं भाई की हो गई, क्यूँकि खुदावन्द की तरफ से यह उसी की थी।" 16 इसलिए मेरी तुझ से एक दरखास्त है, नामंजर न कर।" 17 उसने कहा, "बयान कर।" 18 उसने कहा, "जरा सुलेमान बादशाह से कह, क्यूँकि वह तेरी बात को नहीं टालेगा, कि अबीशांग शून्मीत को मुझे ब्याह दे।" 19 बतसबा ने कहा, "अच्छा, मैं तेरे लिए बादशाह से 'दरखास्त करूँगी।'" 20 तब बतसबा सुलेमान बादशाह के पास गई, ताकि उससे अदूनियाह के लिए 'दरखास्त' करे। बादशाह उसके इस्तकबाल के वास्ते उठा और उसके सामने झुका, फिर अपने तख्त पर बैठा; और उसने बादशाह की माँ के लिए एक तख्त लगाया, तब वह उसके दर्हने हाथ बैठी; 20 और कहने लगी, "मेरी तुझ से एक छोटी सी दरखास्त है; तू मुझ से इन्कार न करना।" बादशाह ने उससे कहा, "ऐ मेरी माँ, इश्शाद फरमा; मुझे तुझ से इन्कार न होगा।" 21 उसने कहा, "अबीशांग शून्मीत तेरे भाई अदूनियाह को ब्याह दी जाए।" 22 सुलेमान बादशाह ने अपनी माँ को जबाब दिया, "तू अबीशांग शून्मीत ही को अदूनियाह के लिए कम्मू माँगती है? उसके लिए हुक्मत भी माँग, क्यूँकि वह तो मेरा बड़ा भाई है; बल्कि उसके लिए क्या, अबीयातर काहिन और जरोयाह के बेटे योआब के लिए भी माँग।" 23 तब सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द की कसम खाई और कहा कि "अगर अदूनियाह ने यह बात अपनी ही जान के खिलाफ नहीं कही, तो खुदा मुझ से ऐसा ही, बल्कि इससे भी ज्यादा करे।" 24 इसलिए अब खुदावन्द की हायत की कसम जिसने मुझ को क्रायम बख्शा, और मुझ को मेरे बाप दाऊद के तख्त पर बिठाया, और मैं लिए अपने बादे के मुताबिक एक घर बनाया, यकीनन अदूनियाह आज ही कल्प किया जाएगा।" 25 और सुलेमान बादशाह ने यह यहदा को बेटे बिनायाह को भेजा: उसने उस पर ऐसा बार किया कि वह मर गया। 26 फिर बादशाह ने अबीयातर काहिन से कहा, "तू अनतोत को अपने खेतों में चला जा क्यूँकि तू कल्प के लायक है, लेकिन मैं इस बक्त तुझ को कल्प नहीं करता क्यूँकि तू मेरे बाप दाऊद के सामने खुदावन्द यहोवाह का सन्दूक उठाया करता था; और जो यही बाईत मेरे बाप पर आई वह तुझ पर भी आई।" 27 तब सुलेमान ने अबीयातर को खुदावन्द के काहिन के उद्दे से बरतरफ किया, ताकि वह खुदावन्द के उस कौल को प्राप्त करे जो उसने शीतोह में एली के घराने के हक में कहा था। 28 और यह खबर योआब तक पहुँची: क्यूँकि योआब अदूनियाह का तो पैरोकार हो गया था, अगर्च वह अबीसलोम का पैरोकार नहीं हुआ था। इसलिए योआब खुदावन्द के खेमे को भाग गया, और मजबूत के सींग पकड़ लिए। 29 और सुलेमान बादशाह को खबर हुई, "योआब खुदावन्द के खेमे को भाग गया है; और देख, वह मजबूत के पास है।" 30 तब सुलेमान ने यह यहदा को बेटे बिनायाह को यह कहकर भेजा कि, "जाकर उस पर बार कर।" 31 तब बिनायाह खुदावन्द के खेमे को गया, और उसने उससे कहा, "बादशाह यूँ फरमाता है कि तू बाहर निकल आ।" 32 उसने कहा, "नहीं, बल्कि मैं यही मस्तूगा।" 33 तब बिनायाह ने उससे कहा, "जैसा उन्हें कहा वैसा ही कर, और उसने मुझे ऐसा जवाब दिया।" 34 तब बादशाह ने उससे कहा, "जैसा उन्हें कहा वैसा ही कर, और उस पर बार कर और उसे दफन कर दे; ताकि तू उस खून को जो

योआब ने बै वजह बहाया, मुझ पर से और मैरे बाप के घर पर से दूर कर दे। 32 और खुदावन्द उसका खन उल्टा उसी के सर पर लाएगा, क्यूंकि उसने दो शख्तों पर जो उससे ज्यादा रास्तबाज और अच्छे थे, यानी ने के बेटे अबनेर पर जो इस्साईंली लश्कर का सरदार था और यतर के बेटे 'अमासा पर जो यहदाह की फौज का सरदार था, वार किया और उनको तलवार से कत्ल किया, और मेरे बाप दाऊद को मालम न था। 33 इसलिए उनका खन योआब के सर पर और उसकी नसल के सर पर हमेशा तक रहेगा, लेकिन दाऊद पर और उसकी नसल पर और उसके घर पर और उसके तख्त पर हमेशा तक खुदावन्द की तरफ से सलामती होगी।" 34 तब यहदाह¹ का बेटा बिनायाह गया, और उसने उस पर वार करके उसे कत्ल किया; और वह बीरान के बीच अपने ही घर में दफन हुआ। 35 और बादशाह ने यहदाह¹ के बेटे बिनायाह को उसकी जगह लश्कर पर मुकर्रर किया; और सदूक काहिन को बादशाह ने अबीयातर की जगह रखा। 36 फिर बादशाह ने सिमई² को बुला भेजा और उससे कहा कि "येस्सलेम में अपने लिए एक घर बना ले और वहाँ रह, और वहाँ से कही न जाना; 37 क्यूंकि जिस दिन तू बाहर निकलेगा और नहर — ए — किंद्रोन के पार जाएगा, तू यकीन जान ले कि तू जस्त मारा जाएगा, और तेरा खन तेरी ही सर पर होगा।" 38 और सिमई² ने बादशाह से कहा, "यह बात अच्छी है; जैसा मेरे मालिक बादशाह ने कहा है, तेरा खादिम ऐसा ही करेगा।" इसलिए सिमई² बहुत दिनों तक येस्सलेम में रहा। 39 और तीन साल के आधिर में ऐसा हुआ कि सिमई² के नौकरों में से दो आदमी जात के बादशाह अक्सीस — बिन — मां³ काह के यहाँ भाग गए। और उन्होंने सिमई² को बताया कि, "देख, तेरे नौकर जात में है।" 40 तब सिमई² ने उठकर अपने गधे पर जीन कसा, और अपने नौकरों की तलाश में जात को अक्सीस के पास गया; और सिमई² जाकर अपने नौकरों को जात से ले आया। 41 और यह खबर सुलेमान को मिली कि सिमई² येस्सलेम से जात को गया था और वापस आ गया है, 42 तब बादशाह ने सिमई² को बुला भेजा और उससे कहा, "क्या मैंने तुझे खुदावन्द की कसम न खिलाई और तुझ को बता न दिया कि, 'यकीन जान ले कि जिस दिन तू बाहर निकला और इधर — उधर कहीं गया, तो जस्त मारा जाएगा?' और तू ने मुझ से यह कहा कि जो बात मैंने सनी, वह अच्छी है। 43 इसलिए तेरे खुदावन्द की कसम को, और उस हुक्म को जिसकी मैंने तुझे ताकीद की, क्यूँ न माना?" 44 और बादशाह ने सिमई² से यह भी कहा, "तू उस सारी शरारत को जो तू ने मेरे बाप दाऊद से की, जिससे तेरा दिल वाकिफ है जानता है, इसलिए खुदावन्द तेरी शरारत को उल्टा तेरी ही सर पर लाएगा। 45 लेकिन सुलेमान बादशाह मुबारक होगा, और दाऊद का तख्त खुदावन्द के सामने हमेशा काँइम रहेगा।" 46 और बादशाह ने यहदाह¹ के बेटे बिनायाह को हुक्म दिया, तब उसने बाहर जाकर उस पर ऐसा वार किया कि वह मर गया। और हुक्मत सुलेमान के हाथ में मजबूत हो गई।

3 और सुलेमान ने मिस्र के बादशाह फिर⁴ औन से रिश्तेदारी की, और फिर⁴ औन की बेटी ब्याह ली; और जब तक अपना महल और खुदावन्द का घर और येस्सलेम के चरों तरफ दीवार न बना चुका, उसे दाऊद के शहर में लाकर रखवा। 2 लेकिन लोग ऊँची जगहों में कुर्बानी करते थे, क्यूंकि उन दिनों तक कोई घर खुदावन्द के नाम के लिए नहीं बना था। 3 और सुलेमान खुदावन्द से महब्बत रखता और अपने बाप दाऊद के कानून पर चलता था। 4 और बादशाह जिबा⁵ ऊन को गया ताकि कुर्बानी करे, क्यूंकि वह खास ऊँची जगह थी, और सुलेमान ने उस मजबूत पर एक हजार सोखतनी कुर्बानियाँ पेश की। 5 जिबा⁵ ऊन में खुदावन्द रात के बक्तु सुलेमान को रुचाव में दिखाई दिया, और खुदावन्द ने

कहा, "माँग, मैं तुझे क्या दूँ।" 6 सुलेमान ने कहा, "तू ने अपने खादिम मेरे बाप दाऊद पर बड़ा एहसान किया, इसलिए कि वह तेरे सामने सच्चाई और सदाकत और तेरे साथ सीधी दिल से चलता रहा, और तू ने उसके बासे यह बड़ा एहसान रख छोड़ा था कि तू ने उसे एक बेटा इनायत किया जो उसके तख्त पर बैठे, जैसा आज के दिन है। 7 और अब ऐ खुदावन्द, मेरे खुदाह! तू ने अपने खादिम को मेरे बाप दाऊद की जगह बादशाह बनाया है, और मैं छोटा लड़का ही हूँ और मुझे बाहर जाने और भीतर आने का तरीकी नहीं। 8 और तेरा खादिम तेरी कौम के बीच मैं हूँ, जिसे तू ने चुन लिया है, वह ऐसी कौम है जो कसरत के जरिए⁶ न गिनी जा सकती है न शुमार हो सकती है। 9 तब तू अपने खादिम को अपनी कौम का इन्साफ करने के लिए समझने वाला दिल 'इनायत' कर, ताकि मैं बुरे और भले में फ़क़र कर सकूँ, क्यूंकि तेरी इस बड़ी कौम का इन्साफ कौन कर सकता है?" 10 और यह बात खुदावन्द को पसन्द आई कि सुलेमान ने यह चीज माँगी। 11 और खुदा ने उससे कहा, "चौंके तू ने यह चीज माँगी, और अपने लिए लम्बी उम्र की दरखास्त न की और न अपने लिए दैलत का सबल किया और न अपने दुश्मनों की जान माँगी, बल्कि इन्साफ पसन्दी के लिए तू ने अपने बास्ते 'अक्लमन्दी' की दरखास्त की है। 12 इसलिए देख, मैंने तेरी दरखास्त के मुताबिक किया; मैंने एक 'अक्लमन्द' और समझने वाला दिल तुझ को बाब्यास्त के अक्लमन्दी की दरखास्त की है। 13 और मैंने तुझ को कुछ और भी दिया जो तू ने नहीं माँगा, यानी दैलत और 'इज्जत' ऐसा कि बादशाहों में तेरी उम्र भर कोई तुझ से पहले हुआ और न कोई तेरे बाद तुझ सा पैदा होगा। 14 और मैंने तुझ को कुछ और भी दिया जो तू ने नहीं माँगा, यानी दैलत और 'इज्जत' ऐसा कि बादशाहों में तेरी उम्र भर कोई तरह न होगा। 15 और अगर तू मेरे रास्तों पर चले, और मेरे कानून और मेरे अहकाम को माने जैसे तेरा बाप दाऊद चलता रहा, तो मैं तेरी उम्र लम्बी कहस्तांग।" 15 फिर सुलेमान जाग गया, और देखा कि एक खबाव था, और वह येस्सलेम में आया और खुदावन्द के 'अहद' के सन्दूक के आगे खड़ा हुआ और सोखतनी कुर्बानियाँ पेश की और सलामती की कुर्बानियाँ पेश की और अपने सब मुलाजियों की दीवात की। 16 उस बक्तु दो 'औरतें जो कस्तियाँ थीं, बादशाह के पास आईं और उसके आगे खड़ी हुईं। 17 और एक 'औरत कहने लगी, ऐ मेरे मालिक! मैं और यह 'औरत दोनों एक ही घर में रहती हैं, और इसके साथ घर में रहते हुए मैं एक बच्चा हुआ। 18 और मेरे जच्चा हो जाने के बाद, तीसरे दिन ऐसा हुआ कि यह 'औरत भी जच्चा हो गई, और हम एक साथ ही कोई गैर और उसके आगे खड़ी हुईं। 19 और इस 'औरत का बच्चा रात को मर गया, क्यूंकि वह उसके ऊपर ही लेट गई थी। 20 तब यह आधी रात को उठी, और जिस बक्त तेरी लौटी सोती थी। मैंने बेटे को मेरी बाल से लेकर अपनी गोद में लिटा लिया, और अपने मेरे हुए बच्चे को मेरी गोद में डाल दिया। 21 सबह को जब मैं उठी कि अपने बच्चे को दूध पिलाऊँ, तो क्या देखती हूँ कि वह मरा पड़ा है, लेकिन जब मैंने सुबह को गौर किया, तो देखा कि यह मेरा लड़का नहीं है जो मेरे हुआ था। 22 "फिर वह दूसरी 'औरत कहने लगी, नहीं, यह जो जिन्दा है मेरा बेटा है और मरा हुआ तेरा बेटा है।" इसने जबाब दिया, "नहीं, मरा हुआ तेरा बेटा है और जिन्दा मेरा बेटा है।" तब वह बादशाह के सामने इसी तरह कहती रही। 23 तब बादशाह ने कहा, "एक कहती है, 'यह जो जिन्दा है मेरा बेटा है, और जो मर गया है वह तेरा बेटा है, और दूसरी कहती है, 'नहीं, बल्कि जो मर गया है वह तेरा बेटा है, और जो जिन्दा है वह मेरा बेटा है।'" 24 तब बादशाह ने कहा, "मूँझे एक तलवार ला दो।" तब वह बादशाह के पास तलवार ले आए। 25 फिर बादशाह ने फरमाया, "इस जीते बच्चे को चीर कर दो टक्के कर डालो, और आधा एक को और आधा दूसरी को दे दो।" 26 तब उस 'औरत ने जिसका वह जिन्दा बच्चा था बादशाह से दरखास्त की, क्यूंकि उसके दिल में अपने बेटे की

ममता थी, तब वह कहने लगी, “ऐ मेरे मालिक! यह जिन्दा बच्चा उसी को दे दें, लेकिन उसे जान से न मरवा।” लेकिन दूसरी ने कहा, “यह न मेरा हो न तेरा, उसे चीर डालो।” 27 तब बादशाह ने हृष्म किया, “जिन्दा बच्चा उसी को दो, और उसे जान से न मरो; क्यूंकि वही उसकी माँ है।” 28 और सारे इसाईल ने यह इन्साफ जो बादशाह ने किया सुना, और वह बादशाह से डरने लगे; क्यूंकि उन्होंने देखा कि ‘अदालत करने के लिए खुदा की हिक्मत उसके दिल में है।

4 और सुलेमान बादशाह तमाम इसाईल का बादशाह था। 2 और जो सरदार

उसके पास थे, वह यह थे: सदूक का बेटा अजरियाह काहिन, 3 और सीरा के बेटे इलीहीरिफ और अखियाह मंगुथी थे, और अखीलूद का बेटा यहसफत मुवर्रिख था; 4 और यहयदा का बेटा बिनायाह लश्कर का सरदार, और सदूक और अबीयात्र काहिन थे; 5 और नातन का बेटा अजरियाह मन्सबदारों का दारोगा था, और नातन का बेटा जबूद काहिन और बादशाह का दोस्त था; 6 और अखीसर महल का दीवान, और 'अबदा का बेटा अदूनिराम बेगार का मुन्सरिम था। 7 और सुलेमान ने सब इसाईल पर बारह मन्सबदार मुकर्रर किए, जो बादशाह और उसके घराने के लिए खुराक पहुँचाते थे। हर एक को साल में महीना भर खुराक पहुँचानी पड़ती थी। 8 उनके नाम यह हैं: इफाईम के पहाड़ी मुल्क में बिनहर; 9 और मक्स और सालबीम और बैतशम्स और ऐलोन बैतहनान में बिन दिकर 10 और अरबूत में बिन हसद था, और शोको और फिर की सारी सर — ज़मीन उसके इलाके में थी; 11 और दोरे के सारे मुरफ़ा इलाके में बिन अबीनदाब था, और सुलेमान की बेटी ताफ़त उसकी बीती थी, 12 और अखीलूद का बेटा बाना था, जिसके जिम्मा तानक और मजिदो और सारा बैतशान था, जो ज़रातान से मुत्सिल और यज़र 'एल के नीचे बैतशान से अबील महोला तक यानी युक्म' आम से उधर तक था; 13 और बिन जबर रामात जिल'आद में था, और मनस्सी के बेटे याईर की बस्तियों जो जिल'आद में हैं उसके जिम्मा थी, और बसन में अरजूब का 'इलाका' भी इसी के जिम्मा था जिसमें साठ बड़े शहर थे जिनकी शहर पनाहें और पीलत के बड़े थे; 14 और इदूर का बेटा अखीनदाब महानायम में था; 15 और अखीमा'ज़ नफताली में था, इसमें भी सुलेमान की बेटी बर्सिमत को ब्याह लिया था; 16 और हसी का बेटा बाना आशर और बालतोत में था; 17 और फस्त्ह का बेटा यहसफत इश्कर में था; 18 और ऐला का बेटा सिमई बिनयरीन में था; 19 और ऊरी का बेटा जबर जिल'आद के 'इलाके में था, जो अमोरियों के बादशाह सीहीन और बसन के बादशाह 'ओज़ का मुल्क था, उस मुल्क का वही अकेला मन्सबदार था। 20 और यहदाह और इसाईल के लोग कसरत में समुन्दर के किनारे की रेत की तरह थे, और खाते — पीते और खुश रहते थे। 21 और सुलेमान दरिया — ए — फुरात से फिलिस्तियों के मुल्क तक, और मिस्र की सरहद तक सब हुक्मतों पर हाकिम था। वह उसके लिए हदिये लाती थी, और सुलेमान की उम्र भर उसकी फरमाबदार रही। 22 और सुलेमान की एक दिन की खुराक यह थी: तीस कोर मैदा और साठ कोर आटा, 23 और दस मोटे — मोटे बैल और चाराई पर के बीस बैल, एक सौ भेड़े, और इनके 'अलतावा विकरों और दिसन और छोटे दिसन और मोटे ताजा मुर्गी। 24 क्यूंकि वह दरिया — ए — फुरात की इस तरफ के सब मुल्क पर, तिक्सह से ग़ज़ा तक, यानी सब बादशाहों पर जो दरिया — ए — फुरात की इस तरफ थे फरमानरवा था, और उसके चारों तरफ सब पास पड़ोस में सबसे उसकी सुलह थी। 25 और सुलेमान की उम्र भर यहदाह और इसाईल का एक — एक आदमी अपनी ताक और अपने अंजीर के दरखत के नीचे, दान से बैरसबा' तक अमन से रहता था। 26 और सुलेमान के यहाँ उसके रथों के लिए चालीस हज़ार थान और बारह हज़ार सबार थे। 27 और उन मन्सबदारों में से हर एक अपने महीने में सुलेमान बादशाह के लिए, और उन

सबके लिए जो सुलेमान बादशाह के दस्तरख्बान पर आते थे, खुराक पहुँचाता था; वह किसी चीज़ की कमी न होने देते थे। 28 और लोग अपने — अपने फर्ज के मुताबिक घोड़े और तेज रफ्तार समन्दों के लिए जौ और भूसा उसी जगह ले आते थे जहाँ वह मन्सबदार होते थे। 29 और खुदा ने सुलेमान को हिक्मत और समझ बहुत ही ज्यादा, और दिल की बड़ाई भी 'इनायत की जैसी समुद्र के किनारे की रेत होती है। 30 और सुलेमान की हिक्मत सब अहल — ए — मशरिक की हिक्मत, और मिस्र की सारी हिक्मत पर फोकियत रखती थी; 31 इसलिए कि वह सब आदमियों से, बल्कि अजराही ऐतान और हैमान और कल्कूल और दराद से, जो बनी महल थे, ज्यादा दामिशन्द था; और चारों तरफ की सब कौमों में उसकी शोहरत थी। 32 और उसने तीन हज़ार मिसालें कही और उसके एक हज़ार पाँच गीत थे; 33 और उसने दरखतों का, यानी लुबनान के देवदार से लेकर ज़फ़ा तक का जो दीवारों पर उत्ता है, बयान किया; और चौपायों और परिदंडों और रेंगने वाले ज़ानदारों और मछलियों का भी बयान किया। 34 और सब कौमों में से ज़मीन के सब बादशाहों की तरफ से जिन्होंने उसकी हिक्मत की शोहरत सुनी थी, लोग सुलेमान की हिक्मत को सुने आते थे।

5 और सर के बादशाह हीराम ने अपने खादिमों को सुलेमान के पास भेजा,

क्यूंकि उसने सुना था कि उन्होंने उसे उसके बाप की जगह मसह करके बादशाह बनाया है; इसलिए कि हीराम हमेशा दाऊद का दोस्त रहा था। 2 और सुलेमान ने हीराम को कहला भेजा, 3 “तू ज़नाता है कि मेरा बाप दाऊद, खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए घर न बना सका; क्यूंकि उसके चारों ओर हर तरफ लडावाइयाँ होती रही, जब तक कि खुदावन्द ने उन सब को उसके पाँवों के तलवों के नीचे न कर दिया। 4 और अब खुदावन्द मेरे खुदा ने मुझ को हर तरफ अमन दिया है; न तो कोई मुखालिफ़ है, न आकृत की मार। 5 इसलिए देख, खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाने का मेरा इरादा है, जैसा खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा था, 'तेरा बेटा, जिसको मैं तेरी जगह तेर तख्त पर बिठाऊँगा, वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। 6 इसलिए अब तू हृष्म कर कि वह मेरे लिए लुबनान से देवदार के दरखतों को कटों; और मेरे मुलाजिम तेरे मुलाजिमों के साथ रहेंगे, और मैं तेरे मुलाजिमों के लिए जितनी मज़रूमी तू कहेगा तुझे दूँगा; क्यूंकि तू ज़नाता है कि हम में ऐसा कोई नहीं जो सैदानियों की तरह लकड़ी काटना जानता हो।” 7 जब हीराम ने सुलेमान की बातें सुनी, तो बहुत ही खुश हुआ और कहने लगा कि “आज के दिन खुदावन्द मुबारक हो, जिसने दाऊद को इस बड़ी कौम के लिए एक 'अक्लमन्द बेटा बरब्बा।'” 8 और हीराम ने सुलेमान को कहला भेजा कि “जो पैगाम तू ने मुझे भेजा मैंने उसको सुन लिया है, और मैं देवदार की लकड़ी और सनोबर की लकड़ी के बारे में तेरी मर्जी पूरी करूँगा। 9 मेरे मुलाजिम उनको लुबनान से उतारकर समुन्दर तक लाएँगे, और मैं उनके बड़े बन्धवा दूँगा; ताकि समुन्दर उस जगह जाएँ जूँ तू ठहराए। और वहाँ उनको खलवा दूँगा, फिर तू उनको ले लेना, और तू मेरे घराने के लिए खुराक देकर मेरी मर्जी पूरी करना।” 10 फिर हीराम ने सुलेमान को उसकी मर्जी के मुताबिक देवदार की लकड़ी और सनोबर की लकड़ी दी; 11 और सुलेमान ने हीराम को उसके घराने के खाने के लिए बीस हज़ार कोर गेहूँ और बीस कोर खालिस तेल दिया; इसी तरह सुलेमान हीराम को हर साल देता रहा। 12 और खुदावन्द ने सुलेमान को, जैसा उसने उससे बादा किया था हिक्मत बरब्बी; और हीराम और सुलेमान के दर्मियान सुलह थी, और उन दोनों ने बाहम 'अहट बौद्ध लिया। 13 और सुलेमान बादशाह ने सारे इसाईल में से बेगारी लगाए, वह बेगारी तीस हज़ार आदमी थे, 14 और वह हर महीने उनमें से दस — दस हज़ार को बारी — बारी से लुबनान

भेजता था। तब वह एक महीने लुबनान पर और दो महीने अपने घर रहते; और अद्वितीय उन बेगारियों के ऊपर था। 15 और सुलेमान के सतर हजार बोझ उठाने वाले, और अस्सी हजार दरखत कराने वाले पहाड़ों में थे। 16 इनके 'अलावा सुलेमान के तीन हजार तीन सौ खास मन्सवदार थे, जो इस काम पर मुख्तार थे और उन लोगों पर जो काम करते थे सरदार थे। 17 और बादशाह के हृकम से वह बड़े बड़े बेशकीय पत्थर निकाल कर लाए, ताकि घर की बुनियाद घड़े हुए पथरों की डाली जाए। 18 और सुलेमान के राजगीरों, और हीराम के राजगीरों, और जिलियों ने उनको तराशा और घर की तामीर के लिए लकड़ी और पत्थरों को तैयार किया।

6 और बनी — इसाईल के मुल्क — ए — मिस्र से निकल आने के बाद चार

सौ अस्सीवें साल, इसाईल पर सुलेमान की हृकमत के चौथे साल, जीव के महीने में जो दूसरा महीना है, ऐसा हुआ कि उनमें खुदावन्द का घर बनाना शुरू किया। 2 और जो घर सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द के लिए बनाया उसकी लम्बाई साठ हाथ¹ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई तीस हाथ थी। 3 और उस घर की हैकल के सामने एक बरआमदा, उस घर की चौड़ाई के मुताबिक बीस हाथ लम्बा था, और उस घर के सामने उसकी चौड़ाई दस हाथ थी। 4 और उसने उस घर के लिए झारके बनाए जिनमें जाली जड़ी हुई थी। 5 और उसने चारों तरफ घर की दीवार से लगी हुई, यानी हैकल और इल्हामगाह की दीवारों से लगी हुई, चारों तरफ मान्जिलें बनाई और हुजरे भी चारों तरफ बनाए। 6 सबसे निचली मान्जिल पाँच हाथ चौड़ी, और बीच की छः हाथ चौड़ी, और तीसीरी सात हाथ चौड़ी थी; बृंदूक उसने घर की दीवार के चारों तरफ बाहर के स्ख पुश्ते बनाए थे, ताकि किडियाँ घर की दीवारों को पकड़े हुए न हों। 7 और वह घर जब तामीर हो रहा था, तो ऐसे पथरों का बनाया गया जो कान पर तैयार किए जाते थे; इसलिए उसकी तामीर के बक्त न मार तोल, न कुलहाड़ी, न लोहे के किसी औजार की आवाज उस घर में सुनाई दी। 8 और बीच के हजरों का दरवाजा उस घर की दहनी तरफ था, और चक्करदार सीढ़ियों से बीच की मान्जिल के हजरों में, और बीच की मान्जिल से तीसीरी मान्जिल को जाया करते थे। 9 तब उसने वह घर बनाकर उसे पूरा किया, और उस घर को देवदार के शहरीरों और तख्तों से पाटा। 10 और उसने उस पौरे घर से लगी हुई पाँच — पाँच हाथ ऊँची मान्जिलें बनाई, और वह देवदार की लकड़ियों के सहरों उस घर पर टिकी हुई थी। 11 और खुदावन्द का कलाम सुलेमान पर नाजिल हुआ, 12 "यह घर जो तु बनाता है, इसलिए अगर तु मेरे कानून पर चले और मेरे हुक्मों को पूरा करे और मेरे फरमानों को मानकर उन पर 'अमल करे, तो मैं अपना वह क्लौल जो मैंने तेरे बाप दाऊद से किया तेरे साथ काईम रखँगा। 13 और मैं बनी — इसाईल के दर्मियान रहँगा और अपनी कौम इसाईल को तक न करँगा।" 14 इसलिए सुलेमान ने वह घर बनाकर उसे पूरा किया। 15 और उसने अन्दर घर की दीवारों पर देवदार के तख्ते लगाए। इस घर के फर्श से छत की दीवारों तक उसने उन पर लकड़ी लगाई, और उसने उस घर के फर्श को सनोकर के तख्तों से पाट दिया। 16 और उसने उस घर के पिछले हिस्से में बीस हाथ तक, फर्श से दीवारों तक देवदार के तख्ते लगाए, उसने इसे उसके अन्दर बनाया ताकि वह इल्हामगाह यानी पाकतरीन मकान हो। 17 और वह घर यानी इल्हामगाह के सामने की हैकल चालीस हाथ लम्बी थी। 18 और उस घर के अन्दर — अन्दर देवदार था, जिस पर लट्टू और खिले हुए फूल खुदे हुए थे; सब देवदार ही था और पथर अलग नजर नहीं आता था। 19 और उसने उस घर के अन्दर बीच में इल्हामगाह तैयार की, ताकि खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक वहाँ रखँगा जाए। 20 और इल्हामगाह अन्दर ही अन्दर से बीस हाथ लम्बी और बीस हाथ चौड़ी और बीस हाथ ऊँची थी; और उसने उस

पर खालिस सोना मंडा, और मज़बह को देवदार से पाटा। 21 और सुलेमान ने उस घर को अन्दर खालिस सोने से मंडा, और इल्हामगाह के सामने उसने सोने की जजरि तान दी और उस पर भी सोना मंडा। 22 और उस पौरे घर को, जब तक कि वह सारा घर पूरा न हो गया, उसने सोने से मंडा; और इल्हामगाह के पौरे मज़बह पर भी उसने सोना मंडा। 23 और इल्हामगाह में उसने जैतून की लकड़ी के दो कर्स्टी दिन — दस हाथ ऊँचे बनाए। 24 और कर्स्टी का एक बाजू पाँच हाथ का और उसका दूसरा बाजू भी पाँच ही हाथ का था; एक बाजू के सिरे से दूसरे बाजू के सिरे तक दस हाथ का फासला था। 25 और दस ही हाथ का दूसरा कर्स्टी था; दोनों कर्स्टी एक ही नाप और एक ही सूरत के थे। 26 एक कर्स्टी की ऊँचाई दस हाथ थी, और इतनी ही दूसरे कर्स्टी की थी। 27 और उसने दोनों कर्स्टियों को भीतर के मकान के अन्दर रखा; और कर्स्टियों के बाजू फैले हुए थे, ऐसा कि एक का बाजू एक दीवार से, और दूसरे का बाजू दूसरी दीवार से लगा हुआ था; और इके बाजू घर के बीच में एक दूसरे से मिले हुए थे। 28 और उसने कर्स्टियों पर सोना मंडा। 29 उसने उस घर की सब दीवारों पर, चारों तरफ अन्दर और बाहर कर्स्टियों और खजर के दरख्तों और खिले हुए फूलों की खुदी हुई सरतें कन्दा की। 30 और उस घर के फर्श पर उसने अन्दर और बाहर सोना मंडा। 31 और इल्हामगाह में दाखिल होने के लिए उसने जैतून की लकड़ी के दरवाजे बनाएः ऊपर की चौड़ाई और बाजूओं का चौड़ाई दीवार का पाँचवा हिस्सा था। 32 दोनों दरवाजे जैतून की लकड़ी के थे; और उसने उन पर कर्स्टियों और खजर के दरख्तों और खिले हुए फूलों की खुदी हुई सरतें कन्दा की, और उन पर सोना मंडा और इस सोने को कर्स्टियों पर और खजर के दरख्तों पर फैला दिया। 33 ऐसे ही हैकल में दाखिल होने के लिए उसने जैतून की लकड़ी की चौड़ाई बनाई, जो दीवार का चौथा हिस्सा थी। 34 और सनोबर की लकड़ी के दो दरवाजे थे; एक दरवाजे के दोनों पट दुहरे हो जाते, और दूसरे दरवाजे के भी दोनों पट दुहरे हो जाते थे। 35 और इन पर कर्स्टियों और खजर के दरख्तों और खिले हुए फूलों को उसने खुदवाया, और खुदे हुए काम पर सोना मंडा। 36 और अन्दर के सहन की तीन सफे तराशे हुए पथर की बनाई, और एक सफे देवदार के शहतीरों की। 37 ऊँचे साल जीव के महीने में खुदावन्द के घर की बुनियाद डाली गई; 38 और ग्यारहवें साल बल के महीने में, जो आठवाँ महीना है, वह घर अपने सब हिस्सों समेत अपने नक्शे के मुताबिक बनकर तैयार हुआ। ऐसा उसको बनाने में उसे सात साल लगे।

7 और सुलेमान तेरह साल अपने महल की तामीर में लगा रहा, और अपने

महल की खत्म किया; 2 क्योंकि उसने अपना महल लुबनान के बन की लकड़ी का बनाया, उसकी लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊँचाई तीस हाथ थी, और वह देवदार के सुनूनों की चार कतारों पर बना था; और सुनूनों पर देवदार के शहतीर थे। 3 और वह पैतौलीस शहतीरों के ऊपर जो सुनूनों पर टिके थे, पाट दिया गया था। हर कतार में पन्द्रह शहतीर थे। 4 और खिड़कियों की तीन कतारों थी, और तीनों कतारों में हर एक रोशनदान दूसरे रोशनदान के सामने था। 5 और सब दरवाजे और चौरांदे मुख्ली शक्त की थी, और तीनों कतारों में हर एक रोशनदान दूसरे रोशनदान के सामने था। 6 और उसने सुनूनों का बरआमदा बनाया; उसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ, और इनके सामने एक डोरोही थी, और इनके आगे सुनून और मोटे — मोटे शहतीर थे। 7 और उसने तख्त के लिए एक बरआमदा, यानी 'अदालत का बरआमदा बनाया जहाँ वह 'अदालत कर सके; और फर्श — से — फर्श तक उसे देवदार से पाट दिया। 8 और उसके रहने का महल जो उसी बरआमदे के अन्दर दूसरे सहन में था, ऐसे ही काम का बना हुआ था। और सुलेमान ने किंतु जैतून की बेटी के लिए जिसे उसने ब्याहा था, उसी बरआमदे के

तरह का एक महल बनाया 9 यह सब अन्दर और बाहर बुनियाद से मुन्डेर तक बेशकीमत पत्थरों, यानी तराशे हुए पत्थरों के बने हुए थे, जो नाप के मुताबिक आरों से चरि गए थे, और ऐसा ही बाहर बाहर बड़े सहन तक था। 10 और बुनियाद बेशकीमत पत्थरों, यानी बड़े — बड़े पत्थरों की थी; यह पत्थर दस — दस हाथ और आठ — आठ हाथ के थे। 11 और ऊपर नाप के मुताबिक बेशकीमत पत्थर, यानी घड़े हुए पत्थर और देवदार की लकड़ी लागी हुई थी। 12 और बड़े सहन में चारों तरफ घड़े हुए पत्थरों की तीन कत्तरे और देवदार के शहतीरों की एक कत्तार, वैसी ही थी जैसी खुदावन्द के घर के अन्दरस्नी सहन और उस घर के बरआप में थी। 13 फिर सुलेमान बादशाह ने सूर से हीराम को बुलवा लिया। 14 वह नफ्ताली के कबीले की एक बेवा 'औरत का बेटा था, और उसका बाप सूर का बाशिन्दा था और उठरा था; और वह पीतल के सब काम की कारीगरी में हिकमत और समझ और महारत रखता था। इसलिए उसने सुलेमान बादशाह के पास आकर उसका सब काम बनाया। 15 क्यूँकि उसने अठारह — अठारह हाथ ऊँचे पीतल के दो सुतन बनाए, और एक — एक का घेर बाहर हाथ के सूत के बराबर था यह अन्दर से खोखले और इसके पीतल की मोटाई चार ऊंगल थी। 16 और उसने सुतनों की चोटियों पर रखने के लिए पीतल ढाल कर दो ताज बनाये एक ताज की ऊँचाई पाँच और दूसरे ताज की ऊँचाई भी पाँच हाथ थी। 17 और उन ताजों के लिए जो सुतनों की चोटियों पर थे, चारखने की जालियाँ और जंजीरनुमा हार थे, सात एक ताज के लिए और सात दूसरे ताज के लिए। 18 तब उसने वह सुतन बनाए, और सुतनों की चोटी के ऊपर के ताजों को ढाँकने के लिए एक जाली के काम पर चारों तरफ दो कत्तरे थी, और दूसरे ताज के लिए भी उसने ऐसा ही किया। 19 और उन चार — चार हाथ के ताजों पर जो बरआपदे के सुतनों की चोटी पर थे सोसन का काम था; 20 और उन दोनों सुतनों पर, ऊपर की तरफ भी जाली के बराबर की गोलाई के पास ताज बने थे; और उस दूसरे ताज पर कत्तार दर कत्तार चारों तरफ दो सौ अनार थे। 21 और उसने हैकल के बरआपदे में वह सुतन खड़े किए; और उसने दहने सुतन को खड़ा करके उसका नाम याकिन रखा, और बाएँ सुतन को खड़ा करके उसका नाम बो'एलियाजर रखा। 22 और सुतनों की चोटी पर सोसन का काम था; ऐसे सुतनों का काम खत्म हुआ। 23 फिर उसने ढाला हुआ एक बड़ा हौज कमाया, वह एक किनारे से दूसरे किनारे तक दस हाथ था; वह गोल था, और ऊँचाई उसकी पाँच हाथ थी, और उसका घेर चारों तरफ तीस हाथ के सूत के बराबर था। 24 और उसके किनारे के नीचे चारों तरफ दसों हाथ तक लटू थे, जो उसे यानी बड़े हौज की घेरे हुए थे, यह लटू दो कत्तरों में थे, और जब वह ढाला गया तब ही यह भी ढाले गए थे। 25 और वह बारह बैलों पर रखा गया, तीन के मूँह शिमाल की तरफ, और तीन के मूँह मागरिब की तरफ, और तीन के मूँह जुनूब की तरफ, और तीन के मूँह मशरिक की तरफ थे; और वह बड़ा हौज उन ही पर ऊपर की तरफ था, और उन सभों का पिछला धड़ अन्दर के स्वर था। 26 और दिल उसका चार ऊंगल था, और उसका किनारा प्याले के किनारे की तरह गुल — ए — सोसन की तरह था, और उसमें दो हजार बत की समाई थी। 27 और उसने पीतल की दस कुर्सियाँ बनाई, एक एक कुर्सी की लम्बाई चार हाथ और चौड़ाई चार हाथ और ऊँचाई तीन हाथ थी। 28 और उन कुर्सियों की कारीगरी इस तरह की थी, इनके हाशिये थे, और पटरों के दर्मियान भी हाशिये थे; 29 और उन हाशियों पर जो पटरों के दर्मियान थे, शेर और बैल और कस्ती बने थे; और उन पटरों पर भी एक कुर्सी ऊपर की तरफ थी, और शेरों और बैलों के नीचे लटकते काम के हार थे। 30 और हर कुर्सी के लिए चार चार पीतल के पहिये और पीतल ही के धेरे थे, और उसके चारों पायों में टेके लागी थी; यह ढली हुई टेके हौज के नीचे

थी, और हर एक के पहलू में हार बने थे। 31 और उसका मूँह ताज के अन्दर और बाहर एक हाथ था, और वह मूँह डेल हाथ था और उसका काम कुर्सी के काम की तरह गोल था; और उसी मूँह पर नक्काशी का काम था और उनके हाशिये गोल नहीं बल्कि चौकोर थे। 32 और वह चारों पहिये हाशियों के नीचे थे, और पहियों के धेरे कुर्सी में लगे थे; और हर पहिये की ऊँचाई डेल हाथ थी। 33 और पहियों का काम रथ के पहिये के जैसा था, और उनके धेरे और उनकी पुठियाँ और उनके आरे और उनकी नामें सब के सब ढाले हुए थे। 34 और हर कुर्सी के चारों कोनों पर चार टेके थी, और टेके और कुर्सी एक ही टुकड़े की थी। 35 और हर कुर्सी के सिरे पर आध हाथ ऊँची चारों तरफ गोलाई थी, और कुर्सी के सिरे की कंगनियाँ और हाशिये उत्ती के टुकड़े के थे। 36 और उसकी कंगनियों के पाटों पर और उसके हाशियों पर उने कस्तियों और शेरों और खजूर के दरखतों को, हर एक की जगह के मुताबिक कन्दा किया, और चारों तरफ हार थे। 37 दसों कुर्सियों को उसने इस तरह बनाया, और उन सबका एक ही सौचा और एक ही नाप और एक ही सूरत थी। 38 और उसने पीतल के दस हौज बनाए, हर एक हौज में चालीस बत की समाई थी; और हर एक हौज चार हाथ का था; और उन दसों कुर्सियों में से हर एक पर एक हौज था। 39 उसने पाँच कुर्सियाँ घर की दहनी तरफ, और पाँच घर की बाई तरफ रखी, और बड़े हौज को घर के दहने मशरिक की तरफ जुनूब के स्ख पर रखवा। 40 हीराम ने हौजों और बैलों और कटोरों को भी बनाया। इसलिए हीराम ने वह सब काम जिसे वह सुलेमान बादशाह की खातिर खुदावन्द के घर में बना रहा प्रा किया; 41 यानी दोनों सुतन और सुतनों की चोटी पर ताजों के दोनों प्याले, और सुतनों की चोटी पर के ताजों के दोनों प्यालों की ढाँकने की दोनों जालियाँ; 42 और दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार, यानी सुतनों पर के ताजों के दोनों प्यालों के ढाँकने की हर जाली के लिए अनारों की दो दो कत्तरें; 43 और दसों कुर्सियाँ और दसों कुर्सियों पर के दसों हौज; 44 और वह बड़ा हौज और बड़े हौज के नीचे के बाहर बैल; 45 और वह दो और बैल्चे और कटोरे। यह सब बर्बन जो हीराम ने सुलेमान बादशाह की खातिर खुदावन्द के घर में बनाए, ज़िलकते हुए पीतल के थे। 46 बादशाह ने उन सबको यददन के मैदान में सुककात और जरतान के बीच की चिकनी मिट्टी बाली जमीन में ढाला। 47 और सुलेमान ने उन सब बर्बन को बगैर तोले छोड़ दिया, क्यूँकि वह बहुत से थे; इसलिए उस पीतल का बर्जन माल्म न हो सका। 48 और सुलेमान ने वह सब बर्बन बनाए जो खुदावन्द के घर में थे, यानी वह सोने का मजबूह, और सोने की मेज़ जिस पर नजर की रोटी रहती थी, 49 और खालिस सोने के वह शमादान जो इल्हामगाह के आगे पाँच दहने और पाँच बाएँ थे, और सोने के फूल और चिराम, और चिमटे; 50 और खालिस सोने के प्याले और गुलतराश और कटोरे और चमचे और ऊदसोज़; और अन्दरूनी घर, यानी पाकतरीन मकान के दरवाजे के लिए और घर के यानी बैकल के दरवाजे के लिए सोने के कब्जे। 51 ऐसे वह सब काम जो सुलेमान बादशाह ने खुदावन्द के घर में बनाया खत्म हुआ; और सुलेमान अपने बाप दाऊद की मध्यसूस की हुई चीज़ों, यानी सोने और चाँदी और बर्तनों को अन्दर लाया, और उनको खुदावन्द के घर के खजानों में रखा।

8 तब सुलेमान ने इस्माइल के बुजुर्गों और कबीलों के सब सरदारों को, जो बनी इस्माइल के आबाई खान्दानों के रईस थे, अपने पास येस्सलेम में जमा किया ताकि वह दाऊद के शहर से, जो सिय्यून है, खुदावन्द के 'अहद के सन्कट' को ले आएँ। 2 इसलिए उस 'ईद में इस्माइल के सब लोग माह — ए — ऐतानीम में, जो सातवाँ महीना है, सुलेमान बादशाह के पास जमा' हुए। 3 और इस्माइल के सब बुजुर्ग आए, और काहिनों ने सन्दूक उठाया। 4 और वह

खुदावन्द के सन्दूक को, और खेमा — ए — इजितमा'अ को, और उन सब मुकद्दस बर्तनों को जो खेमे के अन्दर थे ले आएः उनको काहिन और लावी लाए थे। 5 और सुलेमान बादशाह ने और उसके साथ इसाईल की सारी जमा'अत ने, जो उसके पास जमा'थी, सन्दूक के सामने खड़े होकर इतनी भेड़ — बकरियाँ और बैत जबह किए कि उनको कसरत की वजह से उनकी गिनती या हिसाब न हो सका। 6 और काहिन खुदावन्द के 'अहद' के सन्दूक को उसकी जगह पर, उस घर की इल्हामगाह में, यानी पाकतरीन मकान में ऐसे कर्सियों के बाजुओं के नीचे ले आए। 7 क्वाँकि कस्बी अपने बाजुओं को सन्दूक की जगह के ऊपर फैलाए हुए थे, और वह करुबी सन्दूक को और उसकी चोबों को ऊपर से ढाँके हुए थे। 8 और वह चोबे ऐसी लम्बी थी कि उन चोबों के सिरे पाक मकान से इल्हामगाह के सामने दिखाई देते थे, लेकिन बाहर से नहीं दिखाई देते थे। और वह आज तक वही है। 9 उस सन्दूक में कुछ न था सिवा पथर की उन दो लौहों के जिनको वहाँ मूसा ने होरिब में रख दिया था, जिस वक्त के खुदावन्द ने बनी इसाईल से जब वह मुल्क — ए — मिस से निकल आएः 'अहद बाँधा था। 10 फिर ऐसा हुआ कि जब काहिन पाक मकान से बाहर निकल आए, तो खुदावन्द का घर अब से भर गया: 11 इसलिए काहिन उस अब की वजह से खिद्रत के लिए खड़े न हो सके, इसलिए कि खुदावन्द का घर उसके जलाल से भर गया था। 12 तब सुलेमान ने कहा कि 'खुदावन्द ने फरमाया था कि वह गहरी तारीकी में रहेगा। 13 मैंने हकीकत में एक घर तेरे रखने के लिए, बल्कि तेरी हमेशा की सुकूनत के बास्ते एक जगह बनाई है।' 14 और बादशाह ने अपना मुँह फेरा और इसाईल की सारी जमा'अत को बरकत दी, और इसाईल की सारी जमा'अत खड़ी रही; 15 और उसने कहा कि खुदावन्द इसाईल का खुदा मुबारक हो! जिसने अपने मुँह से मेरे बाप दाऊद से कलाम किया, और उसे अपने हाथ से यह कह कर पूरा किया कि। 16 "जिस दिन से मैं अपनी कौम इसाईल को मिस से निकाल लाया, मैंने इसाईल के सब कबीलों में से भी किसी शहर को नहीं चुना कि एक घर बनाया जाए, ताकि मेरा नाम वहाँ हो; लेकिन मैंने दाऊद को चुन लिया कि वह मेरी कौम इसाईल पर हाकिम हो। 17 और मेरे बाप दाऊद के दिल में था कि खुदावन्द इसाईल के खुदा के नाम के लिए एक घर बनाए। 18 लेकिन खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा, 'चैकि मेरे नाम के लिए एक घर बनाने का रुखाल तेरे दिल में था, तब तू ने अच्छा किया कि अपने दिल में ऐसा ठाना; 19 तोमैं तू उस घर को न बनाना, बल्कि तेरा बेटा जो तेरे सुल्ब से निकलेगा वह मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। 20 और खुदावन्द ने अपनी बात, जो उसने कही थी, काईंम की है, क्यौंकि मैं अपने बाप दाऊद की जगह उठा हूँ, और जैसा खुदावन्द ने 'वादा' किया था, मैं इसाईल के तखत पर बैठा हूँ और मैंने खुदावन्द इसाईल के खुदा के नाम के लिए उस घर को बनाया है। 21 और मैंने वहाँ एक जगह उस सन्दूक के लिए मुकर्रर कर दी है, जिसमें खुदावन्द का वह 'अहद' है जो उसने हमारे बाप — दादा से, जब वह उनको मुल्क — ए — मिस से निकाल लाया, बाँधा था।' 22 और सुलेमान ने इसाईल की सारी जमा'अत के सामने खुदावन्द के मजबह के आगे खड़े होकर अपने हाथ आसमान की तरफ फैलाए। 23 और कहा, ऐ खुदावन्द, इसाईल के खुदा! तेरी तरह न तो ऊपर आसमान में, न नीचे जमीन पर कोई खुदा है; तू अपने उन बन्दों के लिए जो तेरे सामने अपने सारे दिल से चलते हैं, 'अहद' और रहमत को निगाह रखता है। 24 तू ने अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के हक में वह बात काईंम रख रखी, जिसका तू ने उससे 'वादा' किया था; तू ने अपने मुँह से फरमाया और अपने हाथ से उसे पूरा किया, जैसा आज के दिन है। 25 इसलिए अब ऐ खुदावन्द इसाईल के खुदा! तू अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के साथ उस कौल को भी पूरा कर जो तूने उससे किया था कि 'तेरे आदमियों से मेरे सामने इसाईल के

तखत पर बैठने वाले की कमी न होगी; बशर्ते कि तेरी औलाद, जैसे तू मेरे सामने चलता रहा वैसे ही मेरे सामने चलने के लिए, अपने रास्ते की एहतियात रख खें। 26 इसलिए अब ऐ इसाईल के खुदा, तेरा वह कौल सच्चा साबित किया जाए, जो तू ने अपने बन्दे मेरे बाप दाऊद से किया। 27 लेकिन क्या खुदा हकीकत में जमीन पर सुकूनत करेगा? देख, आसमान बल्कि आसमानों के आसमान में भी तू समा नहीं सकता, तो यह घर तो कुछ भी नहीं जिसे मैंने बनाया। 28 तोभी, ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, अपने बन्दा की दुआ और मुनाजात का लिहाज करके, उस फरियाद और दुआ को सुन ले जो तेरा बन्दा आज के दिन तेरे सामने करता है, 29 ताकि तेरी आँखें इस घर की तरफ, यानी उसी जगह की तरफ जिसकी जरिएँ तू ने फरमाया कि 'मैं अपना नाम बहाँ रखूँगा,' दिन और रात खुली रहें; ताकि तू उस दुआ को सुने जो तेरा बन्दा इस मकाम की तरफ स्ख करके तुझ से करेगा। 30 और तू अपने बन्दा और अपनी कौम इसाईल की मुनाजात को, जब वह इस जगह की तरफ स्ख करके करें सुन लेना, बल्कि तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सुन लेना, और सुनकर मु'आफ कर देना। 31 "अगर कोई शख्स अपने पड़ोसी का गुनाह करे, और उसे कसम खिलाने के लिए उसको हल्क दिया जाए, और वह आकर इस घर में तेरे मजबह के आगे कसम खाएः 32 तो तू आसमान पर से सुनकर 'अमल करना और अपने बन्दों का इन्साफ करना, और बदकार पर फतवा लागकर उसके 'आमात को उती के सिर डालना, और सादिक को सच्चा ठहराकर उसकी सदाकत के मुताबिक उसे बदला देना। 33 जब तेरी कौम इसाईल तेरा गुनाह करने के जरिएँ अपने दुश्मनों से शिक्षत खाए और फिर तेरी तरफ रुजू़ लाये और तेरे नाम का इकरार करके इस घर में तुझ से दुआ और मुनाजात करे; 34 तो तू आसमान पर से सुनकर अपनी कौम इसाईल का गुनाह मु'आफ करना, और उनको इस मुल्क में जो तने उनके बाप दादा को दिया फिर ले आना। 35 "जब इस वजह से कि उन्होंने तेरा गुनाह किया हो, आसमान बन्द हो जाए और बारिश न हो, और वह इस पकाम की तरफ स्ख करके दुआ करें और तेरे नाम का इकरार करें, और अपने गुनाह से बाज आएँ जब तू उनको दुख दे; 36 तो तू आसमान पर से सुन कर अपने बन्दों और अपनी कौम इसाईल का गुनाह मु'आफ कर देना, क्यौंकि तू उनको उस अच्छी रास्ते की तालीम देता है जिस पर उनको चलना फर्ज है, और अपने मुल्क पर जिसे तू ने अपनी कौम को मीरास के लिए दिया है, पानी बरसाना। 37 "अगर मुल्क में काल हो, अगर बबा हो, अगर बाद — ऐ — समूम या गेस्ट या टिट्ही या कमला हो, अगर उनके दुश्मन उनके शहरों के मुल्क में उनको धेर लें, गरज कैसी ही बला कैसा ही रोग हो; 38 तो जो दुआ और मुनाजात किसी एक शख्स या तेरी कौम इसाईल की तरफ से ही, जिसमें से हर शख्स अपने दिल का दुख जानकर अपने हाथ इस घर की तरफ फैलाएँ; 39 तो तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनतगाह है सुनकर मु'आफ कर देना, और ऐसा करना कि हर आदमी को, जिसके दिल को तू जानता है, उसी की सारे चाल चलन के मुताबिक बदला देना; क्यौंकि सिर्फ तू ही सब बनी — आदम के दिलों को जानता है; 40 ताकि जिसी मुक्त तरह उस मुल्क में जिसे तू ने हमारे बाप — दादा को दिया जिन्दा रहें, तेरा खौफ माने। 41 'अब रहा वह परदेसी जो तेरी कौम इसाईल में से नहीं है, वह जब दूर मुल्क से तेरे नाम की खातिर आएँ, 42 क्यौंकि वह तेरे बुजर्ज नाम और कवी हाथ और बुलन्द बाज़ का हाल सुनेंगे इसलिए जब वह आएँ और इस घर की तरफ स्ख करके दुआ करे, 43 तो तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सुन लेना, और जिस — जिस बात के लिए वह परदेसी तुझ से फरयाद करे तू उसके मुताबिक करना, ताकि जमीन की सब कौमें बनी इसाईल की मानिन्द तेरे नाम को पहचाने मानें, और जान लें कि यह घर जिसे मैंने बनाया है तेरे नाम का कहलाता है। 44 'अगर तेरे लोग चाहे

किसी रास्ते से तू उनको भेजे, अपने दुश्मनों से लड़ने को निकलें, और वह खुदावन्द से उस शहर की तरफ जिसे तू ने चुना है, और उस घर की तरफ जिसे मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है, सब करके दुआ करें, 45 तो तू आसमान पर से उनकी दुआ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना। 46 'अगर वह तेरा गुनाह करें क्यूंकि कोई ऐसा आदमी नहीं जो गुनाह न करता हो और तू उनसे नाराज होकर उनको दुश्मन के हवाले कर दे, ऐसा कि वह दुम्हन उनको गुलाम करके अपने मुल्क में ले जाए, खावा वह दूर हो या नाजदीक, 47 तो मैं आगर वह उस मुल्क में जहाँ वह गुलाम होकर पहुँचाए गए, होश में आये और रुँझ लाये और अपने गुलाम करने वालों के मुल्क में तबसे मुनाजात करें और कहें कि हम ने गुनाह किया, हम टेढ़ी चाल चलें, और हम ने शरारत की; 48 इसलिए अगर वह अपने दुश्मनों के मुल्क में जो उनको कैट करके ले गए, अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से तेरी तरफ पिंडे और अपने मुल्क की तरफ, जो तू ने उनके बाप — दादा को दिया, और इस शहर की तरफ, जिसे तू ने चुन लिया, और इस घर की तरफ, जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है, सब करके तुझ से दुआ करें, 49 तो तू आसमान पर से, जो तेरी सुकृत गाह है, उनकी दुआ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना, 50 और अपनी कौम को, जिसने तेरा गुनाह किया, और उनकी सब खताओं को, जो उनसे तेरे खिलाफ सरजद हों, मु'अफ़ कर देना, और उनके गुलाम करने वालों के आगे उन पर रहम करना ताकि वह उन पर रहम करें। 51 क्यूँकि वह तेरी कौम और तेरी मीरास है, जिसे तू मिस से लोहे के भेटे के बीच में से निकाल लाया। 52 सो तेरी आँखें तेरे बन्दा की मुनाजात और तेरी कौम इसाईल की मुनाजात की तरफ खुली रहें, ताकि जब कभी वह तुझ से फरियाद करें, तू उनकी सुनें; 53 क्यूँकि तू ने ज़रीन की सब कौमों में से उनको अलग किया कि वह तेरी मीरास हों, जैसा ऐ मालिक खुदावन्द, तू ने अपने बन्दे मसा की ज़रिएँ फरमाया, जिस वक्त तू हमारे बाप — दादा को मिस से निकाल लाया।" 54 और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान खुदावन्द से यह सब मुनाजात कर चुका, तो वह खुदावन्द के मजबह के सामने से, जहाँ वह अपने हाथ आसमान की तरफ फैलाए हए घूने टेके था, उठा। 55 और खड़े होकर इसाईल की सारी ज़मान' अत को ऊँची आवाज से बरकत दी और कहा, 56 "खुदावन्द, जिसने अपने सब वाँदों के मुताबिक अपनी कौम इसाईल को आराम बख्ता मुबारक हो; क्यूँकि जो सारा अच्छा वाँदा उसने अपने बन्दे मसा की ज़रिएँ किया, उसने से एक बात भी खाली न गई। 57 खुदावन्द हमारा खुदा हमारे साथ रहे जैसे वह हमारे बाप — दादा के साथ रहा, और न हम को तर्क कर न छोड़े। 58 ताकि वह हमारे दिनों को अपनी तरफ माइल करे कि हम उसकी सब रास्तों पर चलें, और उसके फरमानों और कानून और अहकाम को, जो उसने हमारे बाप — दादा को दिए मानें। 59 और यह मेरी बातें जिनको मैंने खुदावन्द के सामने मुनाजात में पेश किया है, दिन और रात खुदावन्द हमारे खुदा के नजीकी रहें, ताकि वह अपने बन्दा की दाद और अपनी कौम इसाईल की दाद हर दिन की ज़स्तर के मुताबिक दे; 60 जिसने ज़रीन की सब कौमें जान लें कि खुदावन्द ही खुदा है और उसके सिवा और कोई नहीं। 61 इसलिए तुम्हारा दिल आज की तरह खुदावन्द हमारे खुदा के साथ उसके कानून पर चलने, और उसके हुक्मों को मानने के लिए कामिल रहे।" 62 और बादशाह ने और उसके साथ सारे इसाईल ने खुदावन्द के सामने कुर्बानी पेश की। 63 सुलेमान ने जो सलामती के ज़बीहों की कुर्बानी खुदावन्द के सामने पेशकी उसमें उसने बाईस हज़ार बैल और एक लाख बीस हज़ार भेड़े पेश की। ऐसे बादशाह ने और सब बनी — इसाईल ने खुदावन्द का घर मरम्भसू पक्का किया। 64 उसी दिन बादशाह ने सहन के दर्मियानी हिस्से को जो खुदावन्द के घर के सामने था मुक़द्दस किया, क्यूँकि उसने वही

सोखतनी कुर्बानी और नजर की कुर्बानी और सलामती के ज़बीहों की चर्बी पेश की, इसलिए कि पीतल का मजबूत जो खुदावन्द के सामने था, इतना छोटा था कि उस पर सोखतनी कुर्बानी और नजर की कुर्बानी और सलामती के ज़बोहों की चर्बी के लिए गुन्जाइश न थी। 65 इसलिए सुलेमान ने और उसके साथ सारे इसाईल, याँनी एक बड़ी जमा' अत, ने जो हमात के मदखल से लेकर मिस की नहर तक की हृदृद से आई थी, खुदावन्द हमारे खुदा के सामने सात दिन और फिर सात दिन और, याँनी चौदह दिन, 'ईद मनाई। 66 और आठवें दिन उसने उन लोगों को स्खसत कर दिया। तब उन्होंने बादशाह को मुबारकबाद दी, और उस सारी नेकी के ज़रिएँ जो खुदावन्द ने अपने बन्दा दाऊद और अपनी कौम इसाईल से की थी, अपने डेरों को दिल में खुश और खुश होकर लौट गए।

9 और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान खुदावन्द का घर और शाही महल बना चुका, और जो कुछ सुलेमान करना चाहता था वह सब खत्म हो गया, 2 तो खुदावन्द सुलेमान को दूसरी बार दिखाई दिया, जैसे वह जिबूँन में दिखाई दिया था। 3 और खुदावन्द ने उससे कहा, मैंने तेरी दुआ और मुनाजात जो तूने मेरे सामने की है सुन ली, और इस घर में, जिसे तू ने बनाया है, अपना नाम हमेशा तक रखने के लिए मैंने उसे मुक़द्दस किया; और मेरी आँखें और मेरा दिल सदा वहाँ लगे रहेंगे। 4 अब रहा तू इसलिए अगर तू जैसे तेरा बाप दाऊद चला, वैसे ही मेरे सामने खुलूस — ए — दिल और सच्चाई से चल कर उस सब के मुताबिक जो मैंने उड़े फरमाया 'अमल करे, और मेरे कानून और अहकाम को माने, 5 तो मैं तेरी हक्मत का तख्त इसाईल के ऊपर हमेशा काईम रखूँगा, जैसा मैंने तेरे बाप दाऊद से वाँदा किया और कहा कि 'तेरी नस्ल में इसाईल के तख्त पर बैठने के लिए आदमी की कमी न होगी। 6 लेकिन तुम हो या तुम्हारी औलाद, अगर तुम मेरी पैरवी से बरगश्ता हो जाओ और मेरे अहकाम और कानून को, जो मैंने तुम्हारे आगे रख ले हैं, न मानो बल्कि जाकर और माँबूदों की इबादत करने और उनको सिज्दा करने लगो, 7 तो मैं इसाईल को उस मुल्क से जो मैंने उनको दिया है काट डालूँगा; और उस घर को जिसे मैंने अपने नाम के लिए मुक़द्दस किया है, अपनी नजर से दूर कर दूँगा; और इसाईल सब कौमों में उसकी मिसाल होगी और उस पर उँगली उठेगी। 8 और अगर चैय घर ऐसा मुताज है तो वही हर एक जो इसके पास से गुजरा, हैरान होगा और सुस्करेगा, और वह कहेंगे, 'खुदावन्द ने इस मुल्क और इस घर से ऐसा क्यूँ किया?' 9 तब वह जबाब देंगे, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा को, जो उनके बाप — दादा को मुल्क — ए — मिस से निकाल लाया, छोड़ दिया और गैर माँबूदों को थाम कर उनको सिज्दा करने और उनकी इबादत करने लगे; इसी लिए खुदावन्द ने उन पर यह सारी मुसीबत नाजिल की।" 10 और बीस साल के बाद जिनमें सुलेमान ने वह दोनों घर, याँनी खुदावन्द का घर और शाही महल बनाए, ऐसा हुआ कि 11 चैय क्षूँ के बादशाह हीराम ने सुलेमान के लिए देवदार की और सनोबर की लकड़ी और सोना उसकी मर्जी के मुताबिक इन्तिजाम किया था, इसलिए सुलेमान बादशाह ने गलील के मुल्क में बीस शहर हीराम को दिया। 12 और हीराम उन शहरों को जो सुलेमान ने उसे दिए थे, देखने के लिए मुल्क से निकला पर वह उसे पसन्द न आए। 13 तब उसने कहा, "ऐ मेरे भाई, यह क्या शहर है जो तू ने मुझे दिए?" और उसने उनका नाम कुबूल का मुल्क रखा, जो आज तक चला आता है। 14 और हीराम ने बादशाह के पास एक सौ बीस किन्तार सोना भेजा। 15 और सुलेमान बादशाह ने जो बेगारी लगाए, तो इनी तिए कि वह खुदावन्द के घर और अपने महल को और मिल्लो और येस्शलेम की शहरपनाह और हस्तर और मजिदों और जजर को बनाए। 16 मिस के बादशाह फिर औन ने हमला करके और जजर को घेर करके उसे आग से फूँक दिया था, और उन कनाँ आनियों को जो उस शहर में बसे हुए थे कल्त

करके उसे अपनी बेटी को, जो सुलेमान की बीवी थी, जहेज में दे दिया था, 17 तब सुलेमान ने जजर और बैतहोस्न असफल को, 18 और बालात और वियाबान के तमर को बनाया, जो मुल्क के अन्दर है। 19 और जखीरों के सब शहरों को जो सुलेमान के पास थे, और अपने रथों के लिए शहरों को, और अपने सवारों के लिए शहरों को, और जो कुछ सुलेमान ने अपनी मर्जी से येस्शलेम में और अपनी मुल्क की सारी जमीन में बनाना चाहा बनाया। 20 और वह सब लोग जो अमोरियों और हितियों और फरिज्जियों और हब्बियों यवसियों में से बाकी रह गए थे और बनी — इस्माइल में से न थे, 21 इसलिए उनकी औलाद को जो उनके बाद मुल्क में बाकी रही, जिनको बनी — इस्माइल पेरू तौर पर मिटा न सके, सुलेमान ने गुलाम बनाकर बेगार में लगाया जैसा आज तक है। 22 लेकिन सुलेमान ने बनी — इस्माइल में से किसी को गुलाम न बनाया, बल्कि वह उसके जंगी मर्द और मुलाजिम और हाकिम और फौजी सरदार और उसके रथों और सवारों के हाकिम थे। 23 और वह खास मन्सदार जो सुलेमान के काम पर मुकर्ख थे, पाँच सौ पचास थे; यह उन लोगों पर जो काम बना रहे थे सरदार थे। 24 और फिर 'अौन की बेटी दाऊद के शहर से अपने उस महल में, जो सुलेमान ने उसके लिए बनाया था, आई तब सुलेमान ने मिल्लों की 'तामीर किया। 25 और सुलेमान साल में तीन बार उस मजबह पर जो उसने खुदावन्द के लिए बनाया था, सोखनी कुबानियाँ और सलामती के जबीह पेश करता था, और उनके साथ उस मजबह पर जो खुदावन्द के आगे था खुशबूज लालता था। इस तरह उसने उस घर को पूरा किया। 26 फिर सुलेमान बादशाह ने 'असयोन जावर में, जो अदोम के मुल्क में बहर — ए — कुलज़म के किनारे ऐलोत के पास है, जहाजों का बेड़ा बनाया। 27 और हीराम ने अपने मुलाजिम सुलेमान के मुलाजिमों के साथ उस बेड़े में भेजे, जह मल्लाह थे जो समन्दर से वाकिफ थे। 28 और वह ओफीर को गए और वहाँ से चार सौ बीस किन्तार सोना लेकर उसे सुलेमान बादशाह के पास लाए।

10

और जब सबा की मलिका ने खुदावन्द के नाम के जरिए^१ सुलेमान की शोहरत सुनी, तो वह आई ताकि मुश्किल सवालों से उसे आजमाए। 2 और वह बहुत बड़ी जिलौ के साथ येस्शलेम में आई, और उसके साथ ऊँट थे, जिन पर मशाल हैं और बहुत सा सोना और कीमती जवाहर लदे थे, और जब वह सुलेमान के पास पहुँची तो उसने उन सब बातों के बारे में जो उसके दिल में थी उससे बात की। 3 सुलेमान ने उसके सब सवालों का जवाब दिया, बादशाह से कोई बात ऐसी छुपी न थी जो उसे न बताई। 4 और जब सबा की मलिका ने सुलेमान की सारी हिकमत और उस महल को जो उसने बनाया था, 5 और उसके दस्तरखान की नेमतों, और उसके मुलाजिमों के बैठने के तरीके, और उसके खादिमों की हज़री और उनकी पोशाक, और उसके साकियों, और उस सीढ़ी को जिससे वह खुदावन्द के घर को जाता था देखा, तो उसके होश उड़ गए। 6 उसने बादशाह से कहा कि "वह सच्ची खबर थी जो मैंने तेरे कामों और तेरी हिकमत के बारे में अपने मुल्क में सुनी थी। 7 तो भी मैंने वह बातों पर यकीन न की, जब तक खुद आकर अपनी और्खों से यह देख न लिया, और मुझे तो आधा भी नहीं बताया गया था: क्यूँकि तेरी हिकमत और तेरी कामयादी उस शोहरत से जो मैंने सुनी बहुत ज़्यादा है। 8 खुशनसीब हैं तेरे लोग। और खुशनसीब हैं तेरे यह मुलाजिम, जो बराबर तेरे सामने खड़े रहते और तेरी हिकमत सुनते हैं। 9 खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो, जो तुझ से ऐसा खुश हुआ कि तुझे इस्माइल के तख्त पर बिठाया है; चौंकि खुदावन्द ने इस्माइल से हमेसे मुहब्बत रख्खी है, इसलिए उसने तुझे 'अदल और इन्साफ करने को बादशाह बनाया।" 10 और उसने बादशाह को एक सौ बीस किन्तार सोना और मसाल्हे का बहुत बड़ा ढेर और कीमती जवाहर दिए; और जैसे मसाल्हे सबा की मलिका

ने सुलेमान बादशाह को दिए, वैसे फिर कभी ऐसी बहुतायत के साथ न आए। 11 और हीराम का बेड़ा भी जो ओफीर से सोना लाता था, बड़ी कसरत से चन्दन के दरखत और कीमती जवाहर ओफीर से लाया। 12 तब बादशाह ने खुदावन्द के घर और शाही महल के लिए चन्दन की लकड़ी के सुतू, और बरबत और गाने वालों के लिए सितार बनाए; चन्दन के ऐसे दरखत न कभी आए थे, और न कभी आज के दिन तक दिखाई दिए। 13 और सुलेमान बादशाह ने सबा की मलिका को सब कुछ, जिसकी वह मुश्तक हुई और जो कुछ उसने माँगा दिया; 'अलावा इसके सुलेमान ने उसको अपनी शाहीना सखावत से भी इनायत किया। फिर वह अपने मुलाजिमों के साथ अपनी मुल्क को लौट गई। 14 जितना सोना एक साल में सुलेमान के पास आता था, उसका बजन सोने का छ: सौ छियासठ किन्तार था। 15 'अलावा इसके ब्योपारियों और सौदागरों की तिजारत और मिली जुली कौमों के सब सलातीन, और मुल्क के सूबेदारों की तरफ से भी सोना आता था। 16 और सुलेमान बादशाह ने सोना घड़कर दो सौ ढालें बनाई, छ: सौ मिस्काल सोना एक एक ढाल में लगा। 17 और उसने घडे हुए सोने की तीन सौ ढालें बनाईं, एक एक ढाल में डेढ़ सेर सोना लगा, और बादशाह ने उनको लुबनानी बन के घर में रखवा। 18 इनके 'अलावा बादशाह ने हाथी दाँत का एक बड़ा तख्त बनाया, और उस पर सबसे चोखा सोना मंडा। 19 उस तख्त में छ: सीढ़ियों थीं, और तख्त के ऊपर का हिस्सा पीछे से गोल था, और बैठने की जगह की दोनों तरफ टेके थीं, और टेकों के पास दो शेर खड़े थे: 20 और उन छ: सीढ़ियों के इधर और उधर बारह शेर खड़े थे। किसी हक्कमत में ऐसा कभी नहीं बना। 21 और सुलेमान बादशाह के पीने के सब बरतन सोने के थे, और लुबनानी बन के घर के भी सब बरतन खालिस सोने के थे, चाँदी का एक भी न था, क्यूँकि सुलेमान के दिलों में उसकी कुछ कढ़न न थी। 22 क्यूँकि बादशाह के पास समुन्दर में हीराम के बेड़े के साथ एक तरसीस बेड़ा भी था। यह तरसीसी बेड़ा तीन साल में एक बार आता था, और सोना और चाँदी और हाथी दाँत, और बन्दर, और मोर लाता था। 23 इसलिए सुलेमान बादशाह दैलत और हिकमत में जमीन के सब बादशाहों पर सबकत ले गया। 24 और सारा जहान सुलेमान के दीदार का तालिक था, ताकि उसकी हिकमत को जो खुदा ने उसके दिल में डाली थी सने, 25 और उनमें से हर एक आदमी चाँदी के बर्बन, और सोने के बरतन कपड़े और हथियार और मसाल्हे और घोड़े, और खच्चर हदिये के तौर पर अपने हिस्से के मुवाफिक लाता था। 26 और सुलेमान ने रथ और सवार इकट्ठे कर लिए; उसके पास एक हजार चार सौ रथ और बारह हजार सवार थे, जिनको उसने रथों के शहरों में और बादशाह के साथ येस्शलेम में रखा। 27 और बादशाह ने येस्शलेम में इफरात की वजह से चाँदी को तो ऐसा कर दिया जैसे पथर, और देवदारों को ऐसा जैसे नशेब के मुल्क के गूलर के दरखत होते हैं। 28 और जो घोड़े सुलेमान के पास थे वह मिस्र से मगाए गए थे, और बादशाह के सौदागर एक एक झांड की कीमत लगाकर उनके झांड के द्वांड लिया करते थे। 29 और एक रथ चाँदी की छ: सौ मिस्काल में आता और मिस्र से रखाना होता, और घोड़ा डेढ़ सौ मिस्काल में आता था, और ऐसे ही हितियों के सब बादशाहों और अरामी बादशाहों के लिए, वह इनको उन्हीं के जरिए^२ से मंगाते थे।

11

और सुलेमान बादशाह फिर 'अौन की बेटी के 'अलावा बहुत सी अजनबी 'औरतों से, यानी मोआबी, 'अम्मोनी, अदोमी, सैदानी और हिती औरतों से मुहब्बत करने लगा; 2 यह उन कौमों की थी जिनके बारे में खुदावन्द ने बनी — इस्माइल से कहा था कि तुम उनके बीच न जाना, और न वह तुम्हारे बीच आँ, क्यूँकि वह जस्त तुम्हारे दिलों को अपने माँबूदों की तरफ माइल कर लेंगी "सुलेमान इन्हीं के इश्क का दम भरने लगा। 3 और उसके पास सात

सौ शाहजादियाँ उसकी बीवियाँ और तीन सौ बांदी थीं, और उसकी बीवियों ने उसके दिल को फेर दिया। 4 क्यूंकि जब सुलेमान खड़ा हो गया, तो उसकी बीवियों ने उसके दिल को गैर मांबूदों की तरफ माइल कर दिया; और उसका दिल खुदावन्द अपने खुदा के साथ कामिल न रहा, जैसा उसके बाप दाऊद का दिल था। 5 क्यूंकि सुलेमान सैदानियों की देवी इस्तारात, और 'अम्मोनियों के नफरती मिलकोम की पैरवी करने लगा। 6 और सुलेमान ने खुदावन्द के आगे बढ़ी की, और उसने खुदावन्द की पूरी पैरवी न की जैसी उसके बाप दाऊद ने की थी। 7 फिर सुलेमान ने मोआवियों के नफरती कमोस के लिए उस पहाड़ पर जो येस्शलेम के सामने है, और बनी 'अम्मोन के नफरती मोलक के लिए ऊँचा मकाम बना दिया। 8 उसने ऐसा ही अपनी सब अजनबी बीवियों की खातिर किया, जो अपने मांबूदों के सामने खुशबू जलाती और कुर्बानी पेश करती थी। 9 और खुदावन्द सुलेमान से नाराज़ हुआ, क्यूंकि उसका दिल खुदावन्द इसाईल के खुदा से फिर गया था जिसने उसे दो बार दिखाइ देकर 10 उसको इस बात का हृक्ष किया था कि वह गैर मांबूदों की पैरवी न करे; लेकिन उसने वह बात न मानी जिसका हृक्ष खुदावन्द ने सुलेमान को कहा, चौंकि तुझ से यह काम हुआ, और तू ने मेरे 'अहंद और मेरे कानून को जिनका मैंने तुझे हृक्ष दिया नहीं माना, इसलिए मैं हृक्षमत को ज़स्तर तुझ से छीनकर तेरे खादिम को ढूँगा। 12 तो मैं तेरे बाप दाऊद की खातिर मैं तेरे दिनों में यह नहीं कहूँगा; बल्कि उसे तेरे बेटे के हाथ से छीनूँगा। 13 फिर भी मैं सारी हृक्षमत को नहीं छीनूँगा, बल्कि अपने बन्दे दाऊद की खातिर और येस्शलेम की खातिर, जिसे मैंने चुन लिया है, एक कबीला तेरे बेटे को ढूँगा। 14 तब खुदावन्द ने अदोमी हृदद को सुलेमान का मुखालिफ बना कर खड़ा किया, यह अदोम की शाही नसल से था। 15 क्यूंकि जब दाऊद अदोम में था और लश्कर का सरदार योआब अंदोम में हर एक आदमी को कल्तल करके उन मक्तुलों को दफन करने गया, 16 क्यूंकि योआब और सब इसाईल छः महीने तक वही रहे, जब तक कि उसने अदोम में हर एक आदमी को कल्तल न कर डाला। 17 तो हृदद कई एक अदोमियों के साथ, जो उसके बाप के मुलाजिम थे, मिस को जाने को भाग निकला, उस बक्त हृदद छोटा लड़का ही था। 18 और वह मिदियान से निकलकर फारान में आए, और फारान से लोग साथ लेकर शाह — ए — मिस फिर 'औन के पास मिस में गए। उसने उसके एक घर दिया और उसके लिए खुराक मुकर्रर की और उसे जागार दी। 19 और हृदद की फिर 'औन के सामने इतना रस्ख हासिल हुआ कि उसने अपनी साती, यांनी मलिका तहफनीस की बहन उसी को ब्याह दी। 20 और तहफनीस की बहन के उससे उसका बेटा जन्म नहीं आया और उसके बाप ने फिर 'औन के महल में छुड़ाया; और जन्म नहीं आया और उसे जागार दी। 21 इसलिए जब हृदद ने मिस में सुना कि दाऊद अपने बाप — दादा के साथ सो गया और लश्कर का सरदार योआब भी मर गया है, तो हृदद ने फिर 'औन से कहा, मुझे सख्त कर दे, ताकि मैं अपने मुल्क को चतां जाऊँ।' 22 तब फिर 'औन ने उससे कहा, "भला तुझे मेरे पास किस चीज़ की कमी हूँ तू कि तू अपने मुल्क को जाने के लिए तैयार है?" उसने कहा, "कुछ नहीं, फिर भी तू मुझे जिस तरह हो सख्त ही कर दे।" 23 और खुदा ने उसके लिए एक और मुखालिफ इल्लियद के बेटे रज्जोन को खड़ा किया, जो अपने आका जोबाह के बादशाह हृदद एलियाज़र के पास से भाग गया था; 24 और उसने अपने पास लोग जमा कर लिए, और जब दाऊद ने जोबाह वालों को कल्तल किया, तो वह एक फौज का सरदार हो गया; और वह दमिश्क को जाकर वही रहे और दमिश्क में हृक्षमत करने लगे। 25 इसलिए हृदद की शरारत के 'अलावा यह भी सुलेमान की सारी उम्र इसाईल का दुश्मन रहा; और उसने इसाईल से नफरत रखी और अराम पर हृक्षमत

करता रहा। 26 और सरीदा के इफ़राईमी नबात का बेटा यस्बोआम, जो सुलेमान का मुलाजिम था और जिसकी माँ का नाम, जो बेवा थी, सर्द'आ था; उसने भी बादशाह के खिलाफ अपना हाथ उठाया। 27 और बादशाह के खिलाफ उसके हाथ उठाने की यह वजह हूँ तू कि बादशाह मिल्लों को बनाता था, और अपने बाप दाऊद के शहर के रखने की मरम्मत करता था। 28 और वह शब्द यस्बोआम एक ताकतवर सूर्या था, और सुलेमान ने उस जवान को देखा कि मेहनती है, इसलिए उसने उसे बनी युसुफ के सारे काम पर मुख्तार बना दिया। 29 उस बक्त जब युरब'आम येस्शलेम से निकल कर जा रहा था, तो सैलानी अखियाह नबी उसे रास्ते में मिला, और अखियाह एक नई चादर ओढ़े हुए था; यह दोनों मैदान में अकेले थे। 30 इसलिए अखियाह ने उस नई चादर को जो उस पर थी लेकर उसके बारह टुकड़े फाडे। 31 और उसने युरब'आम से कहा कि "तू अपने लिए दस टुकड़े ले ले; क्यूंकि खुदावन्द इसाईल का खुदा ऐसा कहता है कि देख, मैं सुलेमान के हाथ से हक्मत छीन लूँगा, और दस कबीले तुझे दूँगा। 32 लेकिन मेरे बन्दे दाऊद की खातिर और येस्शलेम यांनी उस शहर की खातिर, जिसे मैंने बनी — इसाईल के सब कबीलों में से चुन लिया है, एक कबीला उसके पास रहेगा 33 क्यूंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और सैदानियों की देवी इस्तारात और मोआवियों के मांबूद कमोस और बनी 'अम्मोन के मांबूद मिलकोम की इबादत की है, और मेरे रास्तों पर न चले कि वह काम करते जो मेरी नजर में भला था, और मेरे कानून और अहकाम को मानते जैसा उसके बाप दाऊद ने किया। 34 फिर भी मैं सारी मुल्क उसके हाथ से नहीं ले लूँगा, बल्कि अपने बन्दा दाऊद की खातिर, जिसे मैंने इसलिए चुन लिया कि उसने मेरे अहकाम और कानून माने, मैं इसकी उम्र भर इसे पेशवा बनाए रखूँगा। 35 लेकिन उसके बेटे के हाथ से हृक्षमत यांनी दस कबीलों को लेकर तुझे दूँगा; 36 और उसके बेटे को एक कबीला दूँगा, ताकि मेरे बन्दे दाऊद का चराग येस्शलेम, यांनी उस शहर में जिसे मैंने अपना नाम रखने के लिए चुन लिया है, हंसिया मेरे आगे रहे। 37 और मैं तुझे लूँगा, और तू अपने दिल की पूरी ख्वाहिश के मुवाफिक हृक्षमत करेगा और इसाईल का बादशाह होगा। 38 और ऐसा होगा कि अगर तू उन सब बातों को जिनका मैं तुझे हृक्ष दूँसुने, और मेरी रास्तों पर चले, और जो काम मेरी नजर में भला है उसको करे, और मेरे कानून और अहकाम को माने, जैसा मैं बन्दा दाऊद ने किया, तो मैं तेरे साथ रहूँगा, और तेरे लिए एक मजबूत घर बनाऊँगा, जैसा मैंने दाऊद के लिए बनाया, और इसाईल को तुझे दे दूँगा। 39 और मैं इसी वजह से दाऊद की नसल को दुख दूँगा, लेकिन हमेशा तक नहीं।" 40 इसलिए सुलेमान युरब'आम के कल्तल के पीछे पड़ गया, लेकिन युरब'आम उठकर मिस को शाह — ए — मिस सीसक के पास भाग गया और सुलेमान की वफात तक मिस में रहा। 41 सुलेमान का बाकी हाल और सब कुछ जो उसने किया और उसकी हिक्मत: इसलिए क्या वह सुलेमान के अहवाल की किंतुब में दर्ज नहीं? 42 और वह मुश्त जिसमें सुलेमान ने येस्शलेम में सब इसाईल पर हृक्षमत की चालीस साल की थी। 43 और सुलेमान अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में दफन हुआ, और उसका बेटा रहब'आम उसकी जगह बादशाह हुआ।

12 और रहब'आम सिक्कम को गया, क्यूंकि सारा इसाईल उसे बादशाह बनाने की सिक्कम को गया था। 2 और जब नबात के बेटे युरब'आम ने, जो अपनी मिस में था, यह सुना; क्यूंकि युरब'आम सुलेमान बादशाह के सामने से भाग गया था, और वह मिस में रहता था: 3 इसलिए उन्होंने लोग भेजकर उसे बुलवाया तो यस्ब'आम और इसाईल की सारी जमा'अत आकर रहब'आम से ऐसे कहने लगी कि। 4 "तेरे बाप ने हमारा बोझ सख्त कर दिया था; तब तू अब अपने बाप की उस सख्त खिदमत को और उस भारी बोझे को, जो उसने हम पर

रखा, हल्का कर दे, और हम तेरी खिंदमत करेंगे।” 5 तब उसने उससे कहा, “अभी तुम तीन दिन के लिए चले जाओ, तब फिर मेरे पास आना।” तब वह लोग चले गए। 6 और रहब'आम बादशाह ने उन उम्र दराज लोगों से जो उसके बाप सुलेमान के जीते जी उसके सामने खड़े रहते थे, सलाह ली और कहा कि “इन लोगों को जवाब देने के लिए तुम मुझे क्या सलाह देते हो?” 7 उन्होंने उससे यह कहा कि “अगर तू आज के दिन इस कौम का खादिम बन जाओ, और उनकी खिंदमत करे और उनको जवाब दे और उनसे मीठी बातें करे, तो वह हमेशा तेरे खादिम बने होंगे।” 8 लेकिन उसने उन उम्र दराज लोगों की सलाह जो उन्होंने उसे दी, छोड़कर उन जवानों से जो उसके साथ बड़े हुए थे और उसके सामने खड़े थे, सलाह ली, 9 और उनसे पूछा कि “तुम क्या सलाह देते हो, ताकि हम इन लोगों को जवाब दे सकें जिन्होंने मुझ से ऐसा कहा है कि उस बोझे को जो तेरे बाप ने हम पर रखवा हल्का कर दे?” 10 इन जवानों ने जो उसके साथ बड़े हुए थे उससे कहा, तु उन लोगों को ऐसा जवाब देना जिन्होंने तुझ से कहा है कि तेरे बाप ने हमारे बोझे को भारी किया, तू उसको हमारे लिए हल्का कर दे “तब तू उनसे ऐसा कहना कि मेरी छिंगुरी मेरे बाप की कमर से भी मोटी है।” 11 और अब अगर्चे मेरे बाप ने भारी बोझ तुम पर रखवा है, तोमी मैं तुम्हारे बोझे को और ज्यादा भारी करूँगा, मेरे बाप ने तुम को कोड़ों से ठीक किया, मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक बनाऊँगा।” 12 तब युरब'आम और सब लोग तीसरे दिन रहब'आम के पास हाजिर हुए, जैसा बादशाह ने उनको हुक्म दिया था कि “तीसरे दिन मेरे पास फिर आना।” 13 और बादशाह ने उन लोगों को सख्त जवाब दिया और उम्र दराज लोगों की उस सलाह को जो उन्होंने उसे दी थी छोड़ दिया, 14 और जवानों की सलाह के मुवाफिक उनसे यह कहा कि “मेरे बाप ने तो तुम पर भारी बोझ रखा, लेकिन मैं तुम्हारे बोझे को ज्यादा भारी करूँगा; मेरे बाप ने तुम को कोड़ों से ठीक किया, लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक बनाऊँगा।” 15 इसलिए बादशाह ने लोगों की न सुनी क्यूँकि यह पु'अमिला खुदावन्द की तरफ से था, ताकि खुदावन्द अपनी बात को जो उसने सैलानी अखियाह की जरिए न बनाता था, तब युरब'आम से कही थी पूरा करे। 16 और जब सारे इस्माइल ने देखा कि बादशाह ने उनकी न सुनी तो उन्होंने बादशाह को ऐसा जवाब दिया कि “दाऊद में हमारा क्या हिस्सा है? यससी के बेटे में हमारी मीरास नहीं। ऐ इस्माइल, अपने डेरों को चले जाओ; और अब ऐ दाऊद तू अपने घर को सभाला! तब इस्माइली अपने डेरों को चल दिए।” 17 लेकिन जिन्हे इस्माइली यहदाह के शहरों में रहते थे उन पर रहब'आम हुक्मत करता रहा। 18 फिर रहब'आम बादशाह ने अदूरम को भेजा जो बेगरियों के ऊपर था, और सारे इस्माइल ने सुना कि युरब'आम लौट आया है, तो उन्होंने लोग भेज कर उसे जमा'अत में बुलवाया और उसे सारे इस्माइल का बादशाह बनाया, और यहदाह के कबीले के 'अलावा किसी ने दाऊद के घराने से बाही हुआ और आज तक है। 20 जब सारे इस्माइल ने सुना कि युरब'आम लौट आया है, तो उन्होंने लोग भेज कर उसे जमा'अत में बुलवाया और बिनयरीन के कबीले को, जो सब एक लाख अस्सी हजार चुने हुए जंगी मर्द थे, इकश्त किया ताकि वह इस्माइल के घराने से लड़कर हुक्मत को फिर सुलेमान के बेटे रहब'आम के कब्जे में करा दें। 22 लेकिन समायाह को जो मर्द — ऐ — खुदा था, खुदा का यह पैगाम आया 23 कि “यहदाह के बादशाह सुलेमान के बेटे रहब'आम और यहदाह और बिनयरीन के सारे घराने और कौमें के बाकी लोगों से कह कि 24 खुदावन्द ऐसा फरमाता है कि: तुम चढ़ाई न करो और न अपने भाइयों बनी — इस्माइल से लड़ो, बल्कि हर शर्खस अपने घर को लौटै,

क्यूँकि यह बात मेरी तरफ से है।” इसलिए उन्होंने खुदावन्द की बात मानी और खुदावन्द के हुक्म के मुताबिक लौटे और अपना रास्ता लिया। 25 तब युरब'आम ने इफ़राईम के पहाड़ी मुल्क में सिकम को तामीर किया और उसमें रहने लगा, और वहाँ से निकल कर उसने फ़नूर्लू को तामीर किया। 26 और युरब'आम ने अपने दिल में कहा कि “अब हुक्मत दाऊद के घराने में फिर चली जाएगी। 27 अब यह लोग येस्शलेम में खुदावन्द के घर में कुर्बानी अदा करने को जाया करें, तो इनके दिल अपने मालिक, यांनी यहदाह के बादशाह रहब'आम, की तरफ माइल होंगे और वह मुझ को कल्प करके शाह — ऐ — यहदाह रहब'आम की तरफ फिर जाएंगे।” 28 इसलिए उस बादशाह ने सलाह लेकर सोने के दो बछड़े बनाए और लोगों से कहा, “येस्शलेम को जाना तुम्हारी ताकत से बाहर है, ऐ इस्माइल, अपने मांबदूओं को देख, जो तुझे मुल्क — ऐ — यिस्र से निकाल लाए।” 29 और उसने एक को बैतेल में काईम किया, दूसरे को दान में रखा। 30 और यह गुनाह का जरिए ठहरा, क्यूँकि लोग उस एक की इबादत करने के लिए दान तक जाने लगे। 31 और उसने ऊँची जगहों के घर बनाए, और लोगों में से जो बनी लाली न थे काहिन बनाए। 32 और युरब'आम ने आठवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख के लिए उस ईद की तरह जो यहदाह में होती है एक ईद ठहराइ और उस मजबह के पास गया, ऐसा ही उसने बैतेल में किया; और उन बछड़ों के लिए जो उसने बनाए थे कुर्बानी पेशकी, और उसने बैतेल में अपने बनाए हुए ऊँचे मकामों के लिए काहिनों को रखवा। 33 और आठवें महीने की पन्द्रहवीं तारीख की, यांनी उस महीने में जिसे उसने अपने ही दिल से ठहराया था, वह उस मजबह के पास जो उसने बैतेल में बनाया था गया, और बनी — इस्माइल के लिए ईद ठहराई और खुशबू जलाने को मजबह के पास गया।

13 और देखो, खुदावन्द के हुक्म से एक नबी यहदाह से बैतेल में आया, और युरब'आम खुशबू जलाने को मजबह के पास खड़ा था। 2 और वह खुदावन्द के हुक्म से मजबह के खिलाफ चिल्लाकर कहने लगा, ऐ मजबह, ऐ मजबह! खुदावन्द ऐसा फरमाता है कि “देख, दाऊद के घराने से एक लड़का बनाय यूसियाह पैदा होगा। तब वह ऊँचे मकामों के काहिनों की, जो तुझ पर खुशबू जलाते हैं, तुझ पर कुर्बानी केरगा और वह आदमियों की हड्डियाँ तुझ पर जलाएँगी।” 3 और उसने उसी दिन एक निशान दिया और कहा, वह निशान जो खुदावन्द ने बताया है, “यह है कि देखो, मजबह फट जाएगा और वह राख जो उस पर है गिर जाएगी।” 4 और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने उस नबी का कलाम, जो उसने बैतेल में मजबह के खिलाफ चिल्ला कर कहा था, सुना तो युरब'आम ने मजबह पर से पकड़ लो! और उसका वह हाथ जो उसने उसकी तरफ बढ़ाया था खुशक हो गया, ऐसा कि वह उसे फिर अपनी तरफ छीच न सका। 5 और उस निशान के मुताबिक जो उस नबी ने खुदावन्द के हुक्म से दिया था, वह मजबह भी फट गया और राख मजबह पर से गिर गई। 6 तब बादशाह ने उस नबी से कहा कि “अब खुदावन्द अपने खुदा से इलित्जा कर और मेरे लिए दुआ कर, ताकि मेरा हाथ मेरे लिए फिर बहाल हो जाए।” तब उस नबी ने खुदावन्द से इलित्जा की और बादशाह का हाथ उसके लिए बहाल हुआ, और जैसा पहले था वैसा ही हो गया। 7 और बादशाह ने उस नबी से कहा कि “मेरे साथ घर चल और ताजा दम हो, और मैं तुझे इनम दँगा।” 8 उस नबी ने बादशाह को जबाब दिया कि “अगर तू अपना आधा घर भी मुझे दे, तो भी मैं तेरे साथ नहीं जाने का और न मैं इस जगह रोटी खाऊँ और न पानी पियूँ।” 9 क्यूँकि खुदावन्द का हुक्म मुझे ताकीद के साथ यह हुआ है कि तू न गेरी खाना न पानी पीना, न उस रास्ते से लौटना जिससे तू जाए।” 10 तब वह दूसरे रास्ते से गया और जिस रास्ते से बैतेल में आया था उससे न लौटा। 11 और बैतेल में

एक बड़ा नबी रहता था, तब उसके बेटों में से एक ने आकर वह सब काम जो उस नबी ने उस दिन बैतेलू में किए उसे बताए, और जो बातें उसने बादशाह से कही थी उनको भी अपने बाप से बयान किया। 12 और उनके बाप ने उनसे कहा, “वह किस रास्ते से गया?” उसके बेटों ने देख लिया था कि वह नबी जो यहदाह से आया था, किस रास्ते से गया है। 13 तब उसने अपने बेटों से कहा, “मेरे लिए गधे पर जीन कस दो।” तब उन्होंने उसके लिए गधे पर जीन कस दिया और वह उस पर सवार हुआ, 14 और उस नबी के पीछे चला और उसे बलूत के एक दरखत के नीचे बैठे पाया। तब उन्होंने उससे कहा, “क्या तु वही नबी है जो यहदाह से आया था?” उसने कहा, “हाँ।” 15 तब उसने उससे कहा, “मेरे साथ घर चल और रोटी खा।” 16 उसने कहा, मैं तेरे साथ लौट नहीं सकता और न तेरे घर जा सकता हूँ, और मैं तेरे साथ इस जगह न रोटी खाऊँ न पानी पियूँ। 17 क्यूँकि खुदावन्द का मुझ को यूँ हक्म हुआ है कि “तु वहाँ न रोटी खाना न पानी पीना, और न उस रास्ते से होकर लौटना जिससे तु जाए।” 18 तब उसने उससे कहा, “मैं भी तेरी तरह नबी हूँ, और खुदावन्द के हक्म से एक फरिश्ते ने मुझ से यह कहा कि उसे अपने साथ अपने घर में लौटा कर ले आ, ताकि वह रोटी खाए और पानी पिए।” लेकिन उसने उससे झाट कहा। 19 इसलिए वह उसके साथ लौट गया और उसके घर में रोटी खाई और पानी पिया। 20 जब वह दस्तरखान पर बैठे थे तो खुदावन्द का कलाम उस नबी पर, जो उसे लौटा लाया था, नाजिल हुआ। 21 और उसने उस नबी से, जो यहदाह से आया था, चिल्ला कर कहा, खुदावन्द एसा फरमाता है, “इसलिए कि तु ने खुदावन्द के कलाम से नाफरमानी की, और उस हक्म को नहीं माना जो खुदावन्द तैरे खुदा ने तुझे फरमाया था। 22 बल्कि तू लौट आया और तू ने उसी जगह जिसके जरिए खुदावन्द ने तुझे फरमाया था कि न रोटी खाना, न पानी पीना, रोटी भी खाइ और पानी भी पिया; इसलिए तेरी लाश तेरे बाप दादा की कब्र तक नहीं पहुँचेगी।” 23 जब वह रोटी खा चुका और पानी पी चुका, तो उसने उसके लिए यार्नी उस नबी के लिए जिसे वह लौटा लाया था, गधे पर जीन कस दिया। 24 जब वह रवाना हुआ तो रास्ते में उसे एक शेर मिला जिसने उसे मार डाला, इसलिए उसकी लाश रास्ते में पड़ी रही और गधा उसके पास खड़ा रहा, शेर भी उस लाश के पास खड़ा रहा। 25 और लोग उधर से गुजरे और देखा कि लाश रास्ते में पड़ी है और शेर लाश के पास खड़ा है, फिर उन्होंने उस शहर में जहाँ वह बड़ा नबी रहता था यह बताया। 26 और जब उस नबी ने, जो उसे रास्ते से लौटा लाया था, यह सना तो कहा, “यह वही नबी है जिसने खुदावन्द के कलाम की नाफरमानी की, इसी लिए खुदावन्द ने उसको शेर के हवाले कर दिया; और उसने खुदावन्द के उस सुखन के मुताबिक जो उसने उससे कहा था, उसे फाडा और मार डाला।” 27 फिर उसने अपने बेटों से कहा कि “मेरे लिए गधे पर जीन कस दो।” इसलिए उन्होंने जीन कस दिया। 28 तब वह गया और उसने उसकी लाश रास्ते में पड़ी हुई, और गधे और शेर को लाश के पास खड़े पाया; क्यूँकि शेर ने न लाश को खाया और न गधे को फाडा था। 29 तब उस नबी ने उस नबी की लाश उठाकर उसे गधे पर रखा और ले आया, और वह बड़ा नबी उस पर मातम करने और उसे दफन करने को अपने शहर में आया। 30 और उसने उसकी लाश को अपनी कब्र में रखा, और उन्होंने उस पर मातम किया और कहा, ‘हाय, मेरे भाइ।’ 31 और जब वह उसे दफन कर चुका, तो उसने अपने बेटों से कहा कि “जब मैं मर जाऊँ, तो मृत्यु को उसी कब्र में दफन करना जिसमें यह नबी दफन हुआ है। मेरी हड्डियाँ उसकी हड्डियों के बराबर रखना।” 32 इसलिए कि वह बात जो उसने खुदावन्द के हक्म से बैतेलू के मजबह के खिलाफ और उन सब ऊँचे मकामों के घरों के खिलाफ, जो सामरिया के कस्बों में है, कही है ज़स्तर पूरी होगी।” 33 इस माजरे के बाद भी

युरब'आम अपनी बुरे रास्ते से बाज़ न आया, बल्कि उसने 'अबाम में से ऊँचे मकामों के काहिन ठहराए, जिस किसी ने चाहा उसे उसने मख्सूस किया, ताकि पहचान न हो सके कि तु युरब'आम की बीबी है, और शीलोह को चली जा। देख, अखियाह नबी वहाँ है जिसने मेरे बारे में कहा था कि मैं इस कौम का बादशाह हूँगा। 3 और दस रोटियाँ और पपड़ियाँ और शहद का एक मर्तबान अपने साथ ले, और उसके पास जा; वह तुझे बता देगा कि लड़के का क्या हाल होगा।” 4 तब युरब'आम की बीबी ने ऐसा ही किया, और उठकर शीलोह को गई और अखियाह के घर पहुँची; लेकिन अखियाह को कुछ नजर नहीं आता था, क्यूँकि बुद्धापे की बजह से उसकी आँखें रह गई थीं। 5 और खुदावन्द ने अखियाह से कहा, “देख, युरब'आम की बीबी तुझ से अपने बेटे के बारे में पूछने आ रही है, क्यूँकि वह बीमार है। तब तु उससे ऐसा कहना, क्यूँकि जब वह अन्दर आएगी तो अपने आपको दूसरी 'ओरत बनाएगी।’ 6 और जैसे ही वह दरवाजे से अन्दर आई, और अखियाह ने उसके पाँव की आहट सुनी तो उसने उसके कहा, “ऐ युरब'आम की बीबी, अन्दर आ! तु क्यूँ अपने को दूसरी बनानी है? क्यूँकि मैं तो तेरे ही पास सख्त पैराम के साथ भेजा गया हूँ।” 7 इसलिए जाकर युरब'आम से कह, ‘खुदावन्द इसाईल का खुदा ऐसा फरमाता है, हालाँकि मैंने तुझे लोगों में से लेकर सरफराज किया, और अपनी कौम इसाईल पर तुझे बादशाह बनाया। 8 और दाऊद के घराने से हक्मत छीन ली और तुझे दी; तो मैं तेरे बन्दे दाऊद की तरह न हआ, जिसने मेरे हक्म मने और अपने सारे दिल से मेरी पैराकी की ताकि सिर्फ वही करे जो मेरी नजर में ठीक था, 9 लेकिन तू ने उन सभों से जो तुझ से पहले हए ज्यादा बदी की, और जाकर अपने लिए और और मार्बूद और डाले हए बुत बनाए ताकि मुझे गुस्सा दिलाए; बल्कि तू ने मुझे अपनी पीठ के पीछे फेका। 10 इसलिए देख, मैं युरब'आम के घराने पर बला नाजिल करूँगा, और युरब'आम की नस्त के हर एक लड़के को, यानी हर एक को जो इसाईल में बन्द है और उसको जो आजाद छूटा हुआ है, काट डालूँगा, और युरब'आम के घराने की सफाई कर दूँगा, जैसे कोई गोबर की सफाई करता हो, जब तक वह सब दूर न हो जाए। 11 युरब'आम का जो कोई शहर में मेरागा उसे कुते खाएँगे और जो मैदान में मेरागा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे, क्यूँकि खुदावन्द ने यह फरमाया है। 12 इसलिए तु उठ और अपने घर जा, और जैसे ही तेरा कदम शहर में पड़ेगा वह लड़का मर जाएगा। 13 और सारा इसाईल उसके लिए रोएगा और उसे दफन करेगा क्यूँकि युरब'आम की औलाद में से सिर्फ उसी को कब्र नसीब होगी, इसलिए कि युरब'आम के घराने में से इसी में कुछ पाया गया जो खुदावन्द इसाईल के खुदा के नजदीक भला है। 14 'अलावा इसके खुदावन्द अपनी तरफ से इसाईल के लिए एक ऐसा बादशाह पैदा करेगा जो उसी दिन युरब'आम के घराने को काट डालेगा, लेकिन कब? यह अभी होगा। 15 क्यूँकि खुदावन्द इसाईल को ऐसा मारेगा जैसे सरकंडा पानी में हिलाया जाता है, और वह इसाईल को इस अच्छे मुल्क से जो उसने उनके बाप दादा को दिया था उखाड़ फेंकेगा, और उनको दरिया — ए — फुरात के पार बिखेरे देगा; क्यूँकि उन्होंने अपने लिए यसीरिते बनाई और खुदावन्द को गुस्सा दिलाया है। 16 और वह इसाईल को युरब'आम के उन गुनाहों की बजह से छोड़ देगा जो उसने खुद किए, और जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया।” 17 और युरब'आम की बीबी उठकर रवाना हुई और तिरज्जा में

14 उस वक्त युरब'आम का बेटा अबियाह बीमार पड़ा। 2 और युरब'आम

ने अपनी बीबी से कहा, “ज़रा उठ कर अपना भेस बदल डाल, ताकि पहचान न हो सके कि तु युरब'आम की बीबी है, और शीलोह को चली जा। देख, अखियाह नबी वहाँ है जिसने मेरे बारे में कहा था कि मैं इस कौम का बादशाह हूँगा।” 3 और दस रोटियाँ और पपड़ियाँ और शहद का एक मर्तबान अपने साथ ले, और उसके पास जा; वह तुझे बता देगा कि लड़के का क्या हाल होगा।” 4 तब युरब'आम की बीबी ने ऐसा ही किया, और उठकर शीलोह को गई और अखियाह के घर पहुँची; लेकिन अखियाह को कुछ नजर नहीं आता था, क्यूँकि बुद्धापे की बजह से उसकी आँखें रह गई थीं। 5 और खुदावन्द ने अखियाह से कहा, “देख, युरब'आम की बीबी तुझ से अपने बेटे के बारे में पूछने आ रही है, क्यूँकि वह बीमार है। तब तु उससे ऐसा कहना, क्यूँकि जब वह अन्दर आएगी तो अपने आपको दूसरी 'ओरत बनाएगी।’ 6 और जैसे ही वह दरवाजे से अन्दर आई, और अखियाह ने उसके पाँव की आहट सुनी तो उसने उसके कहा, “ऐ युरब'आम की बीबी, अन्दर आ! तु क्यूँ अपने को दूसरी बनानी है? क्यूँकि मैं तो तेरे ही पास सख्त पैराम के साथ भेजा गया हूँ।” 7 इसलिए जाकर युरब'आम से कह, ‘खुदावन्द इसाईल का खुदा ऐसा फरमाता है, हालाँकि मैंने तुझे लोगों में से लेकर सरफराज किया, और अपनी कौम इसाईल पर तुझे बादशाह बनाया। 8 और दाऊद के घराने से हक्मत छीन ली और तुझे दी; तो मैं तेरे बन्दे दाऊद की तरह न हआ, जिसने मेरे हक्म मने और अपने सारे दिल से मेरी पैराकी की ताकि सिर्फ वही करे जो मेरी नजर में ठीक था, 9 लेकिन तू ने उन सभों से जो तुझ से पहले हए ज्यादा बदी की, और जाकर अपने लिए और और मार्बूद और डाले हए बुत बनाए ताकि मुझे गुस्सा दिलाए; बल्कि तू ने मुझे अपनी पीठ के पीछे फेका। 10 इसलिए देख, मैं युरब'आम के घराने पर बला नाजिल करूँगा, और युरब'आम की नस्त के हर एक लड़के को, यानी हर एक को जो इसाईल में बन्द है और उसको जो आजाद छूटा हुआ है, काट डालूँगा, और युरब'आम के घराने की सफाई कर दूँगा, जैसे कोई गोबर की सफाई करता हो, जब तक वह सब दूर न हो जाए। 11 युरब'आम का जो कोई शहर में मेरागा उसे कुते खाएँगे और जो मैदान में मेरागा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे, क्यूँकि खुदावन्द ने यह फरमाया है। 12 इसलिए तु उठ और अपने घर जा, और जैसे ही तेरा कदम शहर में पड़ेगा वह लड़का मर जाएगा। 13 और सारा इसाईल उसके लिए रोएगा और उसे दफन करेगा क्यूँकि युरब'आम की औलाद में से सिर्फ उसी को कब्र नसीब होगी, इसलिए कि युरब'आम के घराने में से इसी में कुछ पाया गया जो खुदावन्द इसाईल के खुदा के नजदीक भला है। 14 'अलावा इसके खुदावन्द अपनी तरफ से इसाईल के लिए एक ऐसा बादशाह पैदा करेगा जो उसी दिन युरब'आम के घराने को काट डालेगा, लेकिन कब? यह अभी होगा। 15 क्यूँकि खुदावन्द इसाईल को ऐसा मारेगा जैसे सरकंडा पानी में हिलाया जाता है, और वह इसाईल को इस अच्छे मुल्क से जो उसने उनके बाप दादा को दिया था उखाड़ फेंकेगा, और उनको दरिया — ए — फुरात के पार बिखेरे देगा; क्यूँकि उन्होंने अपने लिए यसीरिते बनाई और खुदावन्द को गुस्सा दिलाया है। 16 और वह इसाईल को युरब'आम के उन गुनाहों की बजह से छोड़ देगा जो उसने खुद किए, और जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया।” 17 और युरब'आम की बीबी उठकर रवाना हुई और तिरज्जा में

आई, और जैसे ही वह घर की चौखट पर पहुँची वह लड़का मर गया; 18 और सारे इस्माईल ने जैसा खुदावन्द ने अपने बन्दे अखियाह नबी की जरिए फरमाया था, उसे दफन करके उस पर नौहा किया। 19 युरब'आम का बाकी हाल कि वह किस किस तरह लड़ा और उसने क्यूँकर हुक्मत की, वह इस्माईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा है। 20 और जितनी मुहर तक युरब'आम ने हुक्मत की वह बाईस साल की थी, और वह अपने बाप दादा के साथ सो गया और उसका बेटा नदब उसकी जगह बादशाह हुआ। 21 सुलेमान का बेटा रहब'आम यहदाह में बादशाह था। रहब'आम इकतालीस साल का था, जब वह बादशाही करने लगा और उसने येस्शलेम यानी उस शहर में, जिसे खुदावन्द ने बनी — इस्माईल के सब कबीलों में से चुना था ताकि अपना नाम वहाँ रखें, सतरह साल हुक्मत की; और उसकी माँ का नाम ना'मा था जो 'अमोनी' औरत थी। 22 और यहदाह ने खुदावन्द के सामने बटी की और जो गुनाह उनके बाप — दादा ने किए थे उनसे भी ज्यादा उन्होंने अपने गुनाहों से, जो उनसे रसरजद हुए, उसकी गैरत को भड़काया। 23 क्यूँकि उन्होंने अपने लिए हर एक ऊँचे टीले पर और हर एक होर दरखत के नीचे, ऊँचे मकाम और सुनून और यसीरिते बनाई, 24 और उस मुल्क में लूटी भी थे। वह उन कौमों के सब मकरह काम करते थे, जिनको खुदावन्द ने बनी इस्माईल के सामने से निकाल दिया था। 25 रहब'आम बादशाह के पाँचवें साल में शाह — ए — मिस सीसिक ने येस्शलेम पर पेश की। 26 और उसने खुदावन्द के घर के खजानों और शाही महल के खजानों को ले लिया, बल्कि उसने सब कुछ ले लिया, और सोने की वह सब ढारते भी ले गया जो सुलेमान ने बनाई थीं। 27 और रहब'आम बादशाह ने उनके बदले पीतल की ढालें बनाई और उनको मुहाफिज सिपाहियों के सरदारों के हवाले किया जो शाही महल के दरवाजे पर पहरा देते थे। 28 और जब बादशाह खुदावन्द के घर में जाता तो वह सिपाही उनको लेकर चलते, और फिर उनको बापस लाकर सिपाहियों की कोठरी में रख देते थे। 29 और रहब'आम का बाकी हाल और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं है? 30 और रहब'आम और युरब'आम में बराबर जंग रही। 31 और रहब'आम अपने बाप — दादा के साथ सो गया और दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफन हुआ, उसकी माँ का नाम ना'मा था जो 'अमोनी' औरत थी; और उसका बेटा अबियाम उसकी जगह बादशाह हुआ।

15 और नबात के बेटे यस्ब'आम की हुक्मत के अठारहवें साल से अबियाम यहदाह पर हुक्मत करने लगा। 2 उसने येस्शलेम में तीन साल बादशाही की। उसकी माँ का नाम माका था, जो अबीसलोम की बेटी थी। 3 उसने अपने बाप के सब गुनाहों में, जो उसने उससे पहले किए थे, उसके चाल चलन इखियार किए और उसका दिल खुदावन्द अपने खुदा के साथ कामिल न था, जैसा उसके बाप दाऊद का दिल था। 4 बाबूजूद इसके खुदावन्द उसके खुदा ने दाऊद की खातिर येस्शलेम में उसे एक चरांगा दिया, यानी उसके बेटे को उसके बाद ठहराया और येस्शलेम को बरकरार रख्छा। 5 इसलिए कि दाऊद ने वह काम किया जो खुदावन्द की नजर में ठीक था और अपनी सारी उम्र खुदावन्द के किसी हक्म से बाहर न हुआ, 'अलावा हिती ऊरियाह के मु'अमिले कि। 6 और रहब'आम और युरब'आम के बीच उसकी सारी उम्र जंग रही; 7 और अबियाम का बाकी हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं है? और अबियाम और युरब'आम में जंग होती रही। 8 और अबियाम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफन किया; और उसका बेटा आसा उसकी जगह बादशाह हुआ। 9 शाह — ए — इस्माईल युरब'आम के

बीसवें साल से आसा यहदाह पर हुक्मत करने लगा। 10 उसने इकतालीस साल येस्शलेम में हुक्मत की, उस की माँ का नाम माका था, जो अबीसलोम की बेटी थी। 11 और आसा ने अपने बाप दाऊद की तरह वह काम किया जो खुदावन्द की नजर में ठीक था। 12 उसने लूटियों को मुल्क से निकाल दिया, और उन सब बुतों को जिनके उसके बाप दादा ने बनाया था दूर कर दिया। 13 और उसने अपनी माँ माका को भी मालिकों के स्तबे से उतार दिया, क्यूँकि उसने एक यसीरित के लिए एक नफरत अंगेज बुत बनाया था। तब आसा ने उसके बुत को काट डाला और बादी — ए — किंद्रोन में उसे जला दिया। 14 लेकिन ऊँचे मकाम ढाए न गए, तो ये आसा का दिल उम्र भर खुदावन्द के साथ कामिल रहा। 15 और उसने वह चीजें जो उसके बाप ने नजर की थी, और वह चीजें जो उसने आप नजर की थी, यानी चाँदी और सोना और बर्तन, सबको खुदावन्द के घर में दाखिल किया। 16 आसा और शाह — ए — इस्माईल बाशा में उनकी उम्र भर जंग रही। 17 और शाह — ए — इस्माईल बाशा ने यहदाह पर चढाई की और रामा को बनाया, ताकि शाह — ए — यहदाह आसा के पास किसी की आना जाना न हो सके। 18 तब आसा ने सब चाँदी और सोने को, जो खुदावन्द के घर के खजानों में बाकी रहा था, और शाही महल के खजानों को लेकर उनको अपने खादिमों के हवाले किया, और आसा बादशाह ने उनको शाह — ए — अराम बिनहद के पास, जो हजियन के बेटे तब रिम्मू का बेटा था और दमिश्क में रहता था, रवाना किया और कहला भेजा, 19 कि 'मेरे और तेरे बीच और मेरे बाप और तेरे बाप के बीच 'अहद — ओ — पैमान है। देख, मैंने तेरे लिए चाँदी और सोने का हदिया भेजा है; तब तु आकर शाह — ए — इस्माईल बाशा से 'अहद की तोड़दे, ताकि वह मेरे पास से चला जाए।' 20 और बिन हदब ने आसा बादशाह की बात मानी और अपने लश्कर के सरदारों को इस्माईली शहरों पर चढाई करने को भेजा, और 'अय्यन और दान और अबील बैत माका' और सारे किनरत और नफताली के सारे मुल्क को मारा। 21 जब बाशा ने यह सुना तो रामा के बनाने से हाथ स्फीचा और इस्तजा में रहने लगा। 22 तब आसा बादशाह ने सारे यहदाह में 'एलान कराया और कोई छोड़ा न गया; तब वह रामा के पथर को और उसकी लकड़ियों को, जिन से बाशा उसे तारीर कर रहा था, उठा ले गए; और आसा बादशाह ने उनसे बिनयामीन के जिबा' और मिसफाह को बनाया। 23 आसा का बाकी सब हाल और उसकी सारी ताकत, और सब कुछ जो उसने किया, और जो शहर उसने बनाए, तो क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में कलमबन्द नहीं है? लेकिन उसके बुढ़ापे के बक्त में उसे पाँचों का रोग लग गया। 24 और आसा अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप — दादा के साथ अपने बाप दाऊद के शहर में दफन हुआ; और उसका बेटा यहसफत उसकी जगह बादशाह हुआ। 25 शाह — ए — यहदाह आसा की हुक्मत के दूसरे साल से युरब'आम का बेटा नदब इस्माईल पर हुक्मत करने लगा, और उसने इस्माईल पर दो साल हुक्मत की। 26 और उसने खुदावन्द की नजर में बटी की और अपने बाप की रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन इखियार किए, जिससे उसने इस्माईल से गुनाह कराया था। 27 अखियाह के बेटे बाशा ने, जो इश्कार के घराने का था, उसके खिलाफ साजिश की और बाशा ने जिब्बतून में, जो फिलिस्तियों का था, उसे कत्ल किया; क्यूँकि नदब और सारे इस्माईल ने जिब्बतून का घेरा कर रखा था। 28 शाह — ए — यहदाह आसा के तीसरे ही साल बाशा ने उसे कत्ल किया, और उसकी जगह हुक्मत करने लगा। 29 और ज़ॉही वह बादशाह हुआ उसने युरब'आम के सारे घराने को कत्ल किया; और जैसा खुदावन्द ने अपने खादिम अखियाह सैलानी की जरिए फरमाया था, उसने युरब'आम के लिए किसी साँस लेने वाले को भी, जब तक उसे हलाक न कर डाला, न छोड़ा। 30 युरब'आम के

के उन गुनाहों की वजह से जो उसने खुद किए, और जिससे उसने इसाईल से गुनाह कराया, और उसके उस गुस्सा दिलाने की वजह से, जिससे उसने खुदावन्द इसाईल के खुदा के गजब को भड़काया। 31 और नदब का बाकी हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवरीख की किताब में कलमबन्द नहीं? 32 आसा और शाह — ए — इसाईल बांश के दर्मियान उनकी उम्र भर जंग रही। 33 शाह — ए — यहदाह आसा के तीसेरे साल से अखिल्याह का बेटा बांशा तिरजा में सारे इसाईल पर बादशाही करने लगा, और उसने चौबीस साल हक्मत की। 34 और उसने खुदावन्द की नजर में बदी की, और युरब'आम की रास्ते और उसके गुनाह के चाल चलन इखिल्याह किया जिससे उसने इसाईल से गुनाह कराया।

16 और हनानी के बेटे याह पर खुदावन्द का यह कलाम बांशा के खिलाफ

नाजिल हआ, 2 “इसलिए के मैने तुझे खाक पर से उठाया और अपनी कौम इसाईल का पेशवा बनाया, और तू युरब'आम की रास्ते पर चला, और तू ने मेरी कौम इसाईल से गुनाह करा के उनके गुनाहों से मुझे गुस्सा दिलाया। 3 इसलिए देख, मैं बांशा और उसके घराने की पूरी सफाई कर दूँगा और तेरे घराने को नवात के बेटे युरब'आम के घराने की तरह बना दूँगा। 4 बांशा का जो कोई शहर में मरेगा उसे कुते खाएँगे, और जो मैटान में मरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे।” 5 बांशा का बाकी हाल और जो कुछ उसने किया और उसकी ताकत, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवरीख की किताब में लिखा नहीं है? 6 और बांशा अपने बाप दादा के साथ सो गया और तिरजा में दफन हआ, और उसका बेटा ऐला उसकी जगह बादशाह हआ। 7 और हनानी के बेटे याह के जरिए खुदावन्द का कलाम बांशा और उसके घराने के खिलाफ उस सारी बदी की वजह से भी नाजिल हआ, जो उसने खुदावन्द की नजर में की और अपने हाथों के काम से उसे गुस्सा दिलाया, और युरब'आम के घराने की तरह बना, और इस वजह से भी कि उसने उसे कल्प लिया। 8 शाह — ए — यहदाह आसा के छब्बीसवें साल से बांशा का बेटा ऐल तिरजा में बनी इसाईल पर हक्मत करने लगा, और उसने दो साल हक्मत की। 9 और उसके खादिम जिमरी ने, जो उसके अधे रथों का दारोगा था, उसके खिलाफ साजिश की। उस बक्त वह तिरजा में था, और अरजा के घर में जो तिरजा में उसके घर का दीवान था, शराब पी कर मतवाला होता जाता था। 10 तब जिमरी ने आसा शाह — ए — यहदाह के सत्ताइसवें साल अन्दर जाकर उस पर वार किया और उसे कल्प कर दिया, और उसकी जगह हक्मत करने लगा। 11 जब वह बादशाही करने लगा, तो तख्त पर बैठते ही उसने बांशा के सारे घराने को कल्प किया, और न तो उसके रिश्तेदारों का और न उसके दोस्तों का कोई लड़का बाकी छोड़ा। 12 ऐसे जिमरी ने खुदावन्द के उस कहे के मुताबिक, जो उसने बांशा के खिलाफ याह नवी के जरिए फरमाया था, बांशा के सारे घराने को मिटा दिया। 13 बांश के सब गुनाहों और उसके बेटे ऐला के गुनाहों की वजह से जो उन्होंने किए, और जिससे उन्होंने इसाईल से गुनाह कराया, ताकि खुदावन्द इसाईल के खुदा को अपने बातिल कामों से गुस्सा दिलाएँ। 14 ऐला का बाकी हाल और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवरीख की किताब में कलमबन्द नहीं? 15 शाह — ए — यहदाह आसा के सत्ताइसवें साल में जिमरी ने तिरजा में सात दिन बादशाही की; उस बक्त लोग जिब्बतुन के मुकाबिल, जो फिलिस्तियों का था, खेमाजन थे। 16 और उन लोगों ने, जो खेमाजन थे, यह चर्चा सुना के जिमरी ने साजिश की और बादशाह को मार भी डाला है, इसलिए सो इसाईल ने उमरी को, जो लश्कर का सरदार था, उस दिन लश्करगाह में इसाईल का बादशाह बनाया। 17 तब 'उमरी और उसके साथ सारा इसाईल जिब्बतुन से रवाना हुआ और उन्होंने तिरजा का घेरा कर लिया।

18 और ऐसा हुआ कि जब जिमरी ने देखा कि शहर का घिराव हो गया, तो शाही महल के मज़बूत हिस्से में जाकर शाही महल में आग लगा दी और जल मरा। 19 अपने उन गुनाहों की वजह से जो उसने किए, कि खुदावन्द की नजर में बदी की और युरब'आम के रस्ते और उसके गुनाह के चाल चलन इखिल्याह किए जो उसने किया, ताकि इसाईल से गुनाह कराए। 20 जिमरी का बाकी हाल और जो बगावत उसने की, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवरीख की किताब में कलमबन्द नहीं? 21 उस बक्त इसाईली दो हिस्से हो गए, आधे आदमी जीनत के बेटे तिबनी के पैरोकार हो गए ताकि उसे बादशाह बनाएँ और आधे 'उमरी' के पैरोकार थे। 22 लेकिन जो 'उमरी' के पैरोकार थे उन पर, जो जीनत के बेटे तिबनी के पैरोकार थे, गालिब आए। इसलिए तिबनी मर गया और उमरी बादशाह हुआ। 23 शाह — ए — यहदाह आसा के इकट्ठीसवें साल में उमरी इसाईल पर हक्मत करने लगा, उसने बारह साल हक्मत की; तिरजा में छ: साल उसकी हक्मत रही। 24 और उसने सामरिया का पहाड़ समर से दो किन्तार' चौंकी में खरीदा, और उस पहाड़ पर एक शहर बनाया और उस शहर का नाम, जो उसने बनाया था, पहाड़ के मालिक समर के नाम पर सामरिया रखा। 25 और उमरी ने खुदावन्द की नजर में बदी की, और उन सब से जो उससे पहले हुए बदलत काम किए। 26 क्यूँकि उसने नवात के बेटे युरब'आम की सब रास्तों और उसके गुनाहों की चाल चलन इखिल्याह की, जिससे उसने इसाईल से गुनाह कराया ताकि वह खुदावन्द इसाईल के खुदा को अपने बातिल कामों से गुस्सा दिलाएँ। 27 और उमरी के बाकी काम जो उसने किए और उसका जोर जो उसने दिखाया, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवरीख की किताब में कलमबन्द नहीं? 28 तब उमरी अपने बाप — दादा के साथ सो गया और सामरिया में दफन हुआ, और उसका बेटा अर्खीअब उसकी जगह बादशाह हुआ। 29 शाह — ए — यहदाह आसा के अठीसवें साल से उमरी का बेटा अर्खीअब इसाईल पर हक्मत करने लगा, और उमरी के बेटे अर्खीअब ने सामरिया में इसाईल पर बाईस साल हक्मत की। 30 और उमरी के बेटे अर्खीअब ने जितेन उससे पहले हुए थे, उन सभों से ज्यादा खुदावन्द की नजर में बदी की। 31 और गोया नवात के बेटे युरब'आम के गुनाहों के चाल चलन इखिल्याह करना उसके लिए एक हल्की सी बात थी, इसलिए उसने सैदनियों के बादशाह इजबाल की बेटी इजबिल से ब्याह किया, और जाकर बाल की इजावत करने और उसे सिज्दा करने लगा। 32 और बाल के मन्दिर में, जिसे उसने सामरिया में बनाया था, बाल के लिए एक मज़बूत तैयार किया। 33 और अर्खीअब ने यसीरत बनाई, और अर्खीअब ने इसाईल के सब बादशाहों से ज्यादा, जो उससे पहले हुए थे, खुदावन्द इसाईल के खुदा को गुस्सा दिलाने के काम किए। 34 उसके दिनों में बैतानी हीएन ने यरीह को तामीर किया। जब उसने उसकी बुनियाद डाली तो उसका पहलौना बेटा अर्खीअब मरा, और जब उसके फाटक लगाए तो उसका सबसे छोटा बेटा सज़ब मर गया, यह खुदावन्द के कलाम के मुताबिक हुआ जो उसने नून के बेटे यशूअ के जरिए फरमाया था।

17 एलियाह तिशबी ने जो जिल'आद के परदेसियों में से था, अर्खीअब

से कहा कि “खुदावन्द इसाईल के खुदा की हयात की क्रसम, जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, इन बरसों में न ओस पड़ेगी न बारिश होगी, जब तक मैं न कहूँ।” 2 और खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाजिल हुआ कि 3 “यहाँ से चल दे और मशरिक की तरफ अपना सख कर और करीत के नाले के पास, जो यरदन के सामने है, जा छिप। 4 और तू उसी नाले में से पीना, और मैने कौवों को हृक्ष किया है कि वह तेरी परवरिश करें।” 5 तब उसने जाकर खुदावन्द के कलाम के मुताबिक किया, क्यूँकि वह गया और करीत के नाले के पास जो

यरदन के सामने है रहने लगा। 6 और कौवे उसके लिए सुबह को रोटी और गोश्त, और शाम को भी रोटी और गोश्त लाते थे, और वह उस नाले में से पिया करता था। 7 और कुछ 'अपसे के बाद वह नाला सूख गया इसलिए कि उस मुल्क में बारिश नहीं हुई थी। 8 तब खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाजिल हुआ, कि 9 "उठ और सैदा के सारपत को जा और वही रह। देख, मैंने एक बेवा को बहाँ हुम्म दिया है कि तेरी परवरिश करे।" 10 तब वह उठकर सारपत को गया, और जब वह शहर के फाटक पर पहुँचा तो देखा, कि एक बेवा बहाँ लकड़ियाँ चुन रही हैं; तब उसने उसे पुकार कर कहा, "ज़रा मुझे थोड़ा सा पानी किसी बर्तन में ला दे कि मैं पियूँ।" 11 जब वह लेने चली, तो उसने पुकार कर कहा, "ज़रा अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी मेरे बास्ते लेती आना।" 12 उसने कहा, "खुदावन्द तेरे खुदा की हयात की कसम, मेरे यहाँ रोटी नहीं सिर्फ मुश्ती भर आटा एक मटक में, और थोड़ा सा तेल एक कुप्पी में है। और देख, मैं दो एक लकड़ियाँ चुन रही हूँ, ताकि घर जाकर अपने और अपने बेटे के लिए उसे पकाऊँ, और हम उसे खाएँ, फिर मर जाएँ।" 13 और एलियाह ने उससे कहा, "मत डर; जा और जैसा कहती है कर, लेकिन पहले मेरे लिए एक टिकिया उसमें से बनाकर मेरे पास ले आ; उसके बाद अपने और अपने बेटे के लिए बना लेना। 14 क्यूँकि खुदावन्द इस्माइल का खुदा ऐसा फरमाता है, उस दिन तक जब तक खुदावन्द ज़मीन पर मैं हन बरसाएँ, न तो आटे का मटका खाली होगा और न तेल की कुप्पी में कमी होगी।" 15 तब उन्ने जाकर एलियाह के कहने के मुताबिक किया, और यह और वह और उसका कुन्ना बहुत दिनों तक खाते रहे। 16 और खुदावन्द के कलाम के मुताबिक जो उसने एलियाह की जरिएँ फरमाया था, न तो आटे का मटका खाली हुआ और न तेल की कुप्पी में कमी हुई। 17 इन बातों के बाद उस 'ओरत का बेटा, जो उस घर की मालिक थी, बीमार पड़ा और उसकी बीमारी ऐसी सख्त हो गई कि उसमें दम बाकी न रहा। 18 तब वह एलियाह से कहने लगी, ऐ नबी, मुझे तुझ से क्या काम? तू मेरे पास आया है, कि मेरे ज्ञान याद दिलाएँ और मेरे बेटे को पार दो।" 19 उसने उससे कहा, अपना बेटा मुझ को दो।" 20 और वह उसकी गोद से लेकर उसकी बालाखाने पर, जहाँ वह रहता था, ले गया और उसे अपने लंग पर लिटाया। 20 और उसने खुदावन्द से फरियाद की और कहा, "ऐ खुदावन्द मेरे खुदा! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि इस लड़के की जान इसमें फिर आ जाए।" 22 और खुदावन्द ने एलियाह की फरयाद सुनी और लड़के की जान उसमें फिर आ गई और वह जी उठा। 23 तब एलियाह उस लड़के को उठाकर बालाखाने पर से नीचे घर के अन्दर ले गया, और उसे उसकी माँ के ज़िम्मे किया, और एलियाह ने कहा, "देख, तेरा बेटा जिन्दा है।" 24 तब उस 'ओरत ने एलियाह से कहा, "अब मैं जान गई कि तू नबी है, और खुदावन्द का जो कलाम तेरे मुँह में है वह सच है।"

18 और बहुत दिनों के बाद ऐसा हुआ कि खुदावन्द का यह कलाम तीसे साल एलियाह पर नाजिल हुआ, कि "जाकर अखींब रसे मिल, और मैं ज़मीन पर मैं हन बरसाऊँगा।" 2 इसलिए एलियाह अखींब से मिलने को चला; और सामरिया में सख्त काल था। 3 और अखींब ने 'अबदियाह को, जो उसके घर का दीवान था, तलब किया और अबदियाह खुदावन्द से बहुत डरता था, 4 क्यूँकि जब इज़बिल ने खुदावन्द के नवियों को कत्तल किया तो 'अबदियाह ने सौ नवियों को लेकर, पचास पचास करके उनको एक गार में छिपा दिया, और रोटी और पानी से उनको पालता रहा — 5 इसलिए अखींब

ने 'अबदियाह से कहा, "मुल्क में गश्त करता हुआ पानी के सब चश्मों और सब नालों पर जा, शायद हम को कहीं घास मिल जाए, जिससे हम घोड़ों और खच्चरों को जिन्दा बचा लें ताकि हमारे सब चौपाएँ जाया' न हों।" 6 तब उन्होंने उस पर मुल्क में गश्त करने के लिए, उसे आपस में तक्सीम कर लिया; अखींब अकेला एक तरफ चला और 'अबदियाह अकेला दूसरी तरफ गया। 7 और 'अबदियाह राते ही में था कि एलियाह उसे मिला, वह उसे पहचान कर मुँह के बल गिरा और कहने लगा, "ऐ मेरे मालिक एलियाह, क्या तू है?" 8 उसने उसे जबाब दिया, मैं ही हूँ जा अपने मालिक को बता दे कि एलियाह हाजिर है। 9 उसने कहा, "मुझ से क्या गुनाह हुआ है, जो तू अपने खादिम को अखींब के हाथ में हवाले करना चाहता है, ताकि वह मुझे कत्तल करे। 10 खुदावन्द तेरे खुदा की हयात की कसम, कि ऐसी कोई कौम या हुक्मत नहीं जहाँ मेरे मालिक ने तेरी तलाश के लिए न भेजा हो; और जब उन्होंने कहा कि वह यहाँ नहीं, तो उसने उस हुक्मत और कौम से कसम ली कि तू उनको नहीं मिला है। 11 और अब तू कहता है कि जाकर अपने मालिक को खबर कर दे कि एलियाह हाजिर है। 12 और ऐसा होगा कि जब मैं तेरे पास से चला जाऊँगा, तो खुदावन्द की स्थूलता को न जाने कहाँ ले जाएँ और मैं जाकर अखींब को खबर दूँ और तू उसको कहीं मिल न सके, तो वह मुझको कत्तल कर देगा। लेकिन मैं तेरा खादिम लड़कपन से खुदावन्द से डरता रहा हूँ। 13 क्या मेरे मालिक को जो कछु मैंने किया है नहीं बताया गया, कि जब इज़बिल ने खुदावन्द के नवियों को कत्तल किया, तो मैंने खुदावन्द के नवियों में से सौ आदिमियों को लेकर, पचास — पचास करके उनको एक गार में छिपाया और उनको रोटी और पानी से पालता रहा? 14 और अब तू कहता है कि जाकर अपने मालिक को खबर दे कि एलियाह हाजिर है; तब वह मुझे मार डालेगा।" 15 तब एलियाह ने कहा, "रब्ब — उल — अफवाज की हयात की कसम जिसके सामने मैं खड़ा हूँ, मैं आज उससे ज़सर मिलूँगा।" 16 तब 'अबदियाह अखींब से मिलने को गया और उसे खबर दी; और अखींब एलियाह की मुलाकात को चला। 17 और जब अखींब ने एलियाह को देखा, तो उसने उससे कहा, "ऐ इस्माइल के सताने वाले, क्या तू ही है?" 18 उसने जबाब दिया, "मैंने इस्माइल को नहीं सताया, बल्कि तू और तेरे बाप के घराने ने, क्यूँकि तुमने खुदावन्द के हृष्मों को छोड़ दिया, और तू बालीम का पैरोकार हो गया। 19 इसलिए अब तू कासिद भेज; और सारे इस्माइल को और बाल के साढे चार सौ नवियों को, और यसीरत के चार सौ नवियों को जो इज़बिल के स्तररखान पर खाते हैं कि कर्मिल की पहाड़ी पर मैंने पास इकट्ठा कर दे।" 20 तब अखींब ने सब बनी — इस्माइल को बुला भेजा, और नवियों को कर्मिल की पहाड़ी पर इकट्ठा कर दे।" 21 और एलियाह सब लोगों के नजदीक आकर कहने लगा, "तुम कब तक दो खलालों में डाँवाडोल रहोगे? अगर खुदावन्द ही खुदा है, तो उसकी पैरवी करो; और अगर बाल है, तो उसकी पैरवी करो।" लेकिन उन लोगों ने उसे एक हर्फ़ जबाब न दिया। 22 तब एलियाह ने उन लोगों से कहा, "एक मैं ही अकेला खुदावन्द का नबी बच रहा हूँ, लेकिन बाल के नवी चार सौ पचास आदीमी हैं। 23 इसलिए हम को दो बैल दिए जाएँ, और वह अपने लिए एक बैल को चुन ले और उसे टुकड़े टुकड़े काटकर लकड़ियों पर धूँगा, और मैं खुदावन्द से दुआ करूँगा; और वह खुदा जो आग से जबाब दे, वही खुदा ठरे।" 24 और सब लोग बोल उठे, "खब कहा!" 25 तब एलियाह ने बाल के नवियों से कहा कि "तुम अपने लिए एक बैल चुनोलों और पहले उसे तैयार करो क्यूँकि तुम बहुत से हो; और अपने माँबूद से दुआ करो, लेकिन आग नीचे न

देना।” 26 इसलिए उन्होंने उस बैल को लेकर जो उनको दिया गया उसे तैयार किया; और सबह से दोपहर तक बा’ल से दुआ करते और कहते रहे, ऐ बा’ल, हमारी सुन! “लेकिन न कुछ आवाज हुई और न कोई जवाब देने वाला था। और वह उस मजबह के पास जो बनाया गया था कहूँदे रहे। 27 और दोपहर को ऐसा हुआ कि एलियाह ने उनको चिढ़ाकर कहा, बुलन्द आवाज से पुकारो; क्यूँकि वह तो मांबूद है, वह किसी सोच में होगा, या वह तबहाई में है, या कहीं सफर में होगा, या शायद वह सोता है, इसलिए जस्तर है कि वह जगाया जाए।” 28 तब वह बुलन्द आवाज से पुकारने लगे, और अपने दस्तर के मूताबिक अपने आप को छुरियों और नशरतों से धायल कर लिया, यहाँ तक कि लह लुहान हो गए। 29 वह दोपहर ढले पर भी शाम की कुर्बानी चढ़ाकर नवबृत्त करते रहे, लेकिन न कुछ आवाज हुई, न कोई जवाब देने वाला, न ध्यान करने वाला था। 30 तब एलियाह ने सब लोगों से कहा कि “मेरे नजदीक आ जाओ।” चुनौते सब लोग उसके नजदीक आ गए। तब उन्होंने खुदावन्द के उस मजबह को, जो ढा दिया गया था, मरम्मत किया। 31 और एलियाह ने याकूब के बेटों के कुर्बानों के गिनती के मूताबिक, जिस पर खुदावन्द का यह कलाम नाजिल हुआ था कि “तेरा नाम इश्वाईल होगा,” बारह पथर लिए, 32 और उसने उन पथरों से खुदावन्द के नाम का एक मजबह बनाया; और मजबह के आस पास उसने ऐसी बड़ी खाई खोदी, जिसमें दो पैमाने बीज की समाई थी, 33 और लकड़ियों को तरतीब से चुना और बैल भी टुकड़े — टुकड़े काटकर लकड़ियों पर धर दिया, और कहा, चार मटके पानी से भरकर उस सोखतनी कुर्बानी पर और लकड़ियों पर उँडेल दो।” 34 फिर उसने कहा, “दोबारा करो।” उन्होंने दोबारा किया; फिर उसने कहा, “तिबारा करो।” तब उन्होंने तिबारा भी किया। 35 और पानी मजबह के चारों तरफ बहने लगा, और उसने खाई भी पानी से भरवा दी। 36 और शाम की कुर्बानी पेश करने के बहत एलियाह नवी नजदीक आया और उसने कहा “ऐ खुदावन्द अब्रहाम और इज्हाक और इश्वाईल के खुदा! आज मा’लूम हो जाए कि इश्वाईल में तू ही खुदा है, और मैं तेरा बन्दा हूँ, और मैंने इन सब बातों को तेरे ही हकम से किया है। 37 मेरी सुन, ऐ खुदावन्द, मेरी सुन! ताकि यह लोग जान जाएँ कि ऐ खुदावन्द, तू ही खुदा है, और तू ने फिर उनके दिलों को फेर दिया है।” 38 तब खुदावन्द की आग नाजिल हुई और उसने उस सोखतनी कुर्बानी को लकड़ियों और पथरों और मिट्टी समेत भस्म कर दिया, और उस पानी को जो खाई में था चाट लिया। 39 जब सब लोगों ने यह देखा, तो मुँह के बल पिरे और कहने लगे, “खुदावन्द वही खुदा है, खुदावन्द वही खुदा है।” 40 एलियाह ने उनसे कहा, “बा’ल के नवियों को पकड़ लो, उनमें से एक भी जाने न पाए।” इसलिए उन्होंने उनको पकड़ दिया, और एलियाह उनको नीचे कोसोन के नाले पर ले आया और वहाँ उनको कत्ल कर दिया। 41 फिर एलियाह ने अर्खीअब से कहा, “ऊपर चढ़ जा, खा और पी, क्यूँकि कसरत की बारिश की आवाज है।” 42 इसलिए अर्खीअब खाने पीने को ऊपर चला गया। और एलियाह कर्मिल की चोटी पर चढ़ गया, और ज़मीन पर सरनग़ होकर अपना मुँह अपने घुटनों के बीच कर लिया, 43 और अपने खादिम से कहा, “जरा ऊपर जाकर समुन्दर की तरफ तो नज़र कर।” इसलिए उसने ऊपर जाकर नज़र की और कहा, “वहाँ कुछ भी नहीं है।” उसने कहा, “फिर सात बार जा।” 44 और सातवें मर्तबा उसने कहा, “देख, एक छोटा सा बादल आदमी के हाथ के बराबर समुन्दर में से उठा है।” तब उसने कहा, “जा और अर्खीअब से कह कि अपना रथ तैयार कराके नीचे उतर जा, ताकि बारिश तुझे रोक न से।” 45 और थोड़ी ही देर में असामन घटा और आँधी से सियाह हो गया और बड़ी बारिश हुई; और अर्खीअब सवार होकर यज़ऱएल को चला। 46 और खुदावन्द का हाथ एलियाह पर था; और उसने

अपनी कमर कस ली और अर्खीअब के आगे — आगे यज़ऱएल के मदखल तक डौड़ा चला गया।

19 और अर्खीअब ने सब कुछ, जो एलियाह ने किया था और यह भी कि उसने सब नवियों को तलवार से कत्ल कर दिया, इंजिलिको बताया।

2 इसलिए ईंजिलिन ने एलियाह के पास एक कासिद खाना किया और कहला भेजा कि “अगर मैं कल इस बहत तक तेरी जान उनकी जान की तरह न बना डालूँ, तो मांबूद मुझ से ऐसा ही बल्कि इससे ज्यादा करो।” 3 जब उसने यह देखा तो उठकर अपनी जान बचाने को भागा, और बैरसबा’ में, जो यहदाह का है, आया और अपने खादिम को वही छोड़ा। 4 और खुट एक दिन की मन्जिल दशर में निकल गया और ज़ाऊ के एक पेड़ के नीचे आकर बैठा, और अपने लिए मौत माँगी और कहा, “बस है; अब तू ऐ खुदावन्द, मेरी जान को ले ले, क्यूँकि मैं अपने बाप — दादा से बेहतर नहीं हूँ।” 5 और वह ज़ाऊ के एक पेड़ के नीचे लेटा और सो गया; और देखो, एक फरिश्ते ने उसे छुआ और उससे कहा, “उठ और खा।” 6 उसने जो निगाह की तो क्या देखा कि उसके सिरहाने, अंगरों पर पकी हुई एक रोटी और पानी की एक सराही रखी है; तब वह खा पीकर फिर लेट गया। 7 और खुदावन्द का फरिश्ता दोबारा फिर आया, और उसे छुआ और कहा, “उठ और खा, कि यह सफर तेरे लिए बहुत बड़ा है।” 8 इसलिए उसने उठकर खाया पिया, और उस खाने की ताकत से चालीस दिन और चालीस रात चल कर खुदा के पहाड़ होरिब तक गया। 9 और वहाँ एक गार में जाकर टिक गया, और देखो, खुदावन्द का यह कलाम उस पर नाजिल हुआ कि “ऐ एलियाह, तू यहाँ क्या करता है?” 10 उसने कहा, “खुदावन्द लश्करों के खुदा के लिए मुझे बड़ी गैरत आई, क्यूँकि बनी — इश्वाईल ने तेरे ‘अहद को छोड़ दिया और तेरे मजबहों को ढा दिया, और तेरे नवियों को तलवार से कत्ल किया, और एक मैं ही अकेला बचा हूँ; तब वह मेरी जान लेने को पीछे पड़े हैं।” 11 उसने कहा, “बाहर निकल, और पहाड़ पर खुदावन्द के सामने खड़ा हो।” 12 और देखो, खुदावन्द गज़रा; और एक बड़ी सख्त आँधी ने खुदावन्द के आगे पहाड़ों को चीर डाला और चटानों के टुकड़े कर दिए, लेकिन खुदावन्द आँधी में नहीं था; और आँधी के बाद जलजला आया, पर खुदावन्द जलजले में नहीं था। 12 और जलजले के बाद आग आई, लेकिन खुदावन्द आग में भी नहीं था; और आग के बाद एक दबी हुई हल्की आवाज आई। 13 उसको सुनकर एलियाह ने अपना मुँह अपनी चादर से लपेट लिया, और बाहर निकल कर उस गार के मुँह पर खड़ा हुआ। और देखो, उसे यह आवाज आई कि “ऐ एलियाह, तू यहाँ क्या करता है?” 14 उसने कहा, “मुझे खुदावन्द लश्करों के खुदा के लिए बड़ी गैरत आई, क्यूँकि बनी — इश्वाईल ने तेरे ‘अहद को छोड़ दिया और तेरे मजबहों को ढा दिया, और तेरे नवियों को तलवार से कत्ल किया; एक मैं ही अकेला बचा हूँ, तब वह मेरी जान लेने को पीछे पड़े हैं।” 15 खुदावन्द ने उसे फरमाया, “तू अपने रस्ते लौट कर दमिश्क के बियाबान को जा, और जब तू वहाँ पहुँचे तो तू हज़ाएल को मसह कर, कि अराम का बादशाह हो, 16 और निमी के बेटे याह को मसह कर, कि इश्वाईल का बादशाह हो, और अबील महोला के इल्लीशा — बिन — साफ़त को मसह कर, कि तेरी जगह नवी हो।” 17 और ऐसा होगा कि जो हज़ाएल की तलवार से बच रहेगा उसे इल्लीशा कत्ल कर डालेगा। 18 तोरी मैं इश्वाईल में सात हज़ार अपने लिए रख छोड़ा, यानी वह सब छुटने जो बा’ल के आगे नहीं दूके और हर एक मूँह जिसने उसे नहीं चूमा।” 19 तब वह वहाँ से रवाना हुआ, और साफ़त का बेटा इर्लीशा उसे मिला जो बारह जोड़ी बैल अपने आगे लिए हुए जोत रहा था, और वह खुट बारहवें के साथ था; और एलियाह उसके बाबर

से गुजरा, और अपनी चादर उस पर डाल दी। 20 तब वह बैलों को छोड़कर एलियाह के पीछे दौड़ा और कहने लगा, “मुझे अपने बाप और अपनी माँ को चूम लेने दे, फिर मैं तेरे पीछे हो लूँगा।” उसने उसके कहा कि “लौट जा; मैंने तुझ से क्या किया है?” 21 तब वह उसके पीछे से लौट गया, और उसने उस जोड़ी बैल को लेकर जबह किया, और उन ही बैलों के सामान से उनका गोशत उबला और लोगों को दिया, और उन्होंने खाया; तब वह उठा और एलियाह के पीछे रवाना हुआ, और उसकी खिंदिमत करने लगा।

20 और अराम के बादशाह बिन हदद ने अपने सारे लश्कर को इकट्ठा किया,

और उसके साथ बत्तीस बादशाह और घोड़े और रथ थे; और उसने सामरिया पर चढ़ाई करके उसका धेरा किया और उससे लड़ा। 2 और इसाईल के बादशाह अर्डीअब के पास शहर में क्रासिद रवाना किए और उसे कहला भेजा कि “बिन हदद ऐसा फरमाता है कि 3 तेरी चाँदी और तेरा सोन मेरा है, तेरी बीवियाँ और तेरे लड़कों में जो सबसे खूबसूरत है वह मेरे हैं।” 4 इसाईल के बादशाह ने जवाब दिया, “ऐ मेरे मालिक, बादशाह! तेरे कहने के मुताबिक, मैं और जो कुछ मेरे पास है सब तेरा ही है।” 5 फिर उन क्रासिदों ने दोबारा आकर कहा कि “बिन हदद ऐसा फरमाता है कि मैंने तुझे कहला भेजा था कि तू अपनी चाँदी और अपनी बीवियाँ और अपने लड़के मेरे हवाले कर दे 6 लेकिन अब मैं कल इसी बक्त अपने खादिमों को तेरे पास भेज़ूँगा; तब वह तेरे घर और तेरे खादिमों के घरों की तलाशी लेंगे, और जो कुछ तेरी निगाह में कीमती होगा वह उसे अपने कब्जे में करके ले आएँगे।” 7 तब इसाईल के बादशाह ने मुल्क के सब बुजुर्गों को बुला कर कहा, “ज़रा गौर करो और देखो, कि यह शख्स किस तरह चुप्पाई के पीछे पड़ा है; चूँकि उसने मेरी बीवियाँ और मेरे लड़के और मेरी चाँदी और मेरा सोना, मुझ से मंगा भेजा और मैंने उससे इन्कार नहीं किया।” 8 तब सब बुजुर्गों और सब लोगों ने उससे कहा कि “तू मत सुन, और मत मान।” 9 इसलिए उसने बिनहदद के कासिदों से कहा, “मेरे मालिक बादशाह से कहना, ‘जो कुछ तू ने अपने खादिम से पहले तलब किया, वह तो मैं करूँगा; पर यह बात मुझ से नहीं हो सकती।” तब क्रासिद रवाना हुए और उसे यह जवाब सुना दिया। 10 तब बिन हदद ने उसको कहला भेजा कि “आगर सामरिया की मिट्टी, उन सब लोगों के लिए जो मेरे पैरोकार है, मुश्टियाँ भरने को भी काफ़ी हो; तो मार्बूट मुझ से ऐसा ही बल्कि इससे भी ज्यादा करो।” 11 शाह — ए — इसाईल ने जवाब दिया, “तुम उससे कहना, ‘जो हथियार बांधत है, वह उसकी तरह फ़ख़ न करे जो उसे उतारता है।’” 12 जब बिन हदद ने, जो बादशाहों के साथ सायबानों में मयोरेशी कर रहा था, यह पैगाम सुना तो अपने मुलाजिमों को हृक्षम किया कि “सफ बान्ध लो।” इसलिए उन्होंने शहर पर चढ़ाई करने के लिए सफ़आराई की। 13 और देखो, एक नवी ने शाह — ए — इसाईल अर्डीअब के पास आकर कहा, “खुदावन्द ऐसा फरमाता है कि ‘क्या तू ने इस बड़े हज़ूर को देख लिया? मैं आज ही उसे तेरे हाथ में कर दूँगा, और तू जान लेगा कि खुदावन्द मैं ही हूँ।’” 14 तब अर्डीअब ने पूछा, “किसके कर्तिले से?” उसने कहा, खुदावन्द ऐसा फरमाता है कि सूबों के सरदारों के जवानों के बसीली से। “फिर उसने पूछा कि लड़ाई कौन शूरू करे।” उसने जवाब दिया कि “तु।” 15 तब उसने सूबों के सरदारों के जवानों को शमार किया, और वह दो सौ बत्तीस निकले; उनके बाद उसने सब लोगों, यानी सब बनी — इसाईल की हाजरी ली, और वह सात हज़ार थे। 16 यह सब दोपहर को निकले, और बिन हदद और वह बत्तीस बादशाह, जो उसके मनदगार थे, सायबानों में पी पीकर मस्त होते जाते थे। 17 इसलिए सूबों के सरदारों के जवान पहले निकले। और बिन हदद ने आदमी भेजे, और उन्होंने उसे खबर दी कि “सामरिया से लोग निकले हैं।” 18 उसने कहा, “अगर वह सुलह के इरादे से निकले हों

तो उनको ज़िन्दा पकड़ लो, और अगर वह जंग को निकले हों तोभी उनको ज़िन्दा पकड़ा।” 19 तब सूबों के सरदारों के जवान और वह लश्कर जो उनके पीछे हो लिया था शहर से बाहर निकले; 20 और उनमें से एक एक ने अपने मुखालिक को कत्ल किया; इसलिए अरामी भागे और इसाईल ने उनका पीछा किया, और शाह — ए — अराम बिन हदद एक घोड़े पर सवार होकर सवारों के साथ भगाकर बच गया। 21 और शाह — ए — इसाईल ने निकल कर घोड़ों और रथों को मारा, और अरामियों को बड़ी खैरेजी के साथ कत्ल किया। 22 और वह नवी शाह — ए — इसाईल के पास आया और उससे कहा, “जा अपने को मज़बूत कर, और जो कुछ तू करे उसे गौर से देख लेना; चूँकि अगले साल शाह — ए — अराम फिर तुझ पर चढ़ाई करेगा।” 23 और शाह — ए — अराम के खादिमों ने उससे कहा, “उनका खुदा पवाहाई खुदा है, इसलिए वह हम पर गालिब आए; लेकिन हम को उनके साथ मैदान में लड़ने दे तो ज़स्त हम उन पर गालिब होंगे।” 24 और एक काम यह कर, कि बादशाहों को हटा दे, यानी हर एक को उसके ‘उहदे से हटा दे और उनकी जगह सरदारों को मुकर्रर कर; 25 और अपने लिए एक लश्कर अपनी उस फौज की तरह, जो तबाह हो गई, घोड़े की जगह घोड़ा और रथ की जगह रथ गिन गिनकर तैयार कर ले। हम मैदान में उनसे लड़ेंगे और ज़स्त उन पर गालिब होंगे।” इसलिए उसने उनका कहा माना और ऐसा ही किया। 26 और अगले साल बिन हदद ने अरामियों की हाजरी ली, और इसाईल से लड़ने के लिए अफ़ीक को गया। 27 और बनी — इसाईल की हाजरी भी ली गई, और उनकी खुराक का इन्तज़ाम किया गया और यह उनसे लड़ने को गए; और बनी — इसाईल उनके बराबर खेमाजन होकर ऐसे मालूम होते थे जैसे हल्लवानों के दो छोटे रेवड़, लेकिन अरामियों से वह मुल्क भर गया था। 28 तब एक नवी इसाईल के बादशाह के पास आया और उससे कहा, “खुदावन्द ऐसा फरमाता है कि चूँकि अरामियों ने ऐसा कहा है कि खुदावन्द पहाड़ी खुदा है, और वादियों का खुदा नहीं; इसलिए मैं इस सारे बड़े हज़ूर को तेरे ज़िम्मे में कर दूँगा, और तुम जान लोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।” 29 और वह एक दूसरे के मुकाबिल सात दिन तक खेमाजन रहे; और सातवें दिन ज़ंग छिड़ गई, और बनी — इसाईल ने एक दिन में अरामियों के एक लाख प्यादे कत्ल कर दिए; 30 और बाकी अफ़ोक को शहर के अन्दर भाग गए, और वहाँ एक दीवार सताईस हज़ार पर जो बाकी रहे थे मिरी। और बिन हदद भागकर शहर के अन्दर एक अन्दस्ती कोठरी में घुस गया। 31 और उसके खादिमों ने उससे कहा, “देख, हम ने सुना है कि इसाईल के घराने के बादशाह रहीम होते हैं; इसलिए हम को ज़रा अपनी कमरों पर टाट और अपने सिरों पर रसियाँ बाँधी, और शाह — ए — इसाईल के सामने जाने दें; शायद वह तेरी जान बख्खी करे।” 32 इसलिए उन्होंने अपनी कमरों पर टाट और सिरों पर रसियाँ बाँधी, और शाह — ए — इसाईल के सामने आकर कहा, “तेरा खादिम बिनहदद यह दरखावास्त करता है कि ‘मेरे बानी करके मुझे ज़िन दे।’” उसने कहा, “क्या वह अब तक ज़िन्दा है? वह मेरा भाई है।” 33 वह लोग बड़ी ध्यान से सुन रहे थे; इसलिए उन्होंने उसका दिली झाड़ा दरियाप्त करने के लिए झाट उससे कहा कि “तेरा भाई बिन हदद।” 34 तब बिन हदद उससे मिलने को निकला, और उसने उसे अपने रथ पर चढ़ा लिया। 34 और बिनहदद ने उससे कहा, “जिन शहरों को मेरे बाप ने तेरे बाप से ले लिया था, मैं उनको लौटा दूँगा; और तू अपने लिए दमिश्क में सड़कें बनवा लेना, जैसे मेरे बाप ने सामरिया में बनवाई।” अर्डीअब ने कहा, “मैं इसी ‘अहद पर तुझे छोड़ दूँगा।’” इसलिए उसने उससे ‘अहद बाँधा’ और उसे छोड़ दिया। 35 इसलिए अम्बियाजादों में से एक ने खुदावन्द के हृक्षम से अपने साथी से कहा, “मुझे मार।” लेकिन उसने मारने से इन्कार किया।

36 तब उसने उससे कहा, “इसलिए कि तू ने खुदावन्द की बात नहीं मानी, सो देख, जैसे ही तू मेरे पास से रवाना होगा एक शेर तुझे मार डालेगा।” सो जैसे ही वह उसके पास से रवाना हुआ, उसे एक शेर मिला और उसे मार डाला। 37 फिर उसे एक और शख्स मिला, उसने उससे कहा, “मुझे मार।” उसने उसे मारा, और मार कर जखमी कर दिया। 38 तब वह नबी चला गया और बादशाह के इन्तजार में रास्ते पर ठहरा रहा, और अपनी आँखों पर अपनी पागड़ी लपेट ली और अपना भेस बदल डाला। 39 जैसे ही बादशाह उधर से गुजरा, उसने बादशाह की दुहाई दी और कहा कि “तेरा खादिम जंग होते में वहाँ चला गया था; और देख, एक शख्स उधर मुड़कर एक आदमी को मेरे पास ले आया, और कहा कि “इस आदमी की हिफाजत कर; अगर यह किसी तरह गायब हो जाए, तो उसकी जान के बदले तेरी जान जाएगी, और नहीं तो तुझे एक किन्त्वार चाँदी देनी पड़ेगी। 40 जब तेरा खादिम इधर उधर मस्सूर था, वह चलता बना।” शाह — ए — इसाईल ने उससे कहा, “तुझ पर वैसा ही फतवा होगा, तू ने खुद इसका फैसला किया।” 41 तब उसने झट अपनी आँखों पर से पागड़ी हटा दी, और शाह — ए — इसाईल ने उसे पहचाना कि वह नवियों में से है। 42 और उसने उससे कहा, खुदावन्द ऐसा फरमाता है, “इसलिए कि तू ने अपने हाथ से एक ऐसे शख्स को निकल जाने दिया, जिसे मैंने कल्त के लायक ठहराया था, इसलिए तुझे उसकी जान के बदले अपनी जान और उसके लोगों के बदले अपने लोग देने पड़ेगे।” 43 इसलिए शाह — ए — इसाईल उदास और नाखुश होकर अपने घर को चला और सामरिया में आया।

21 इन बातों के बाद ऐसा हुआ कि यजर एली नबोत के पास यजर एल में एक ताकिस्तान था, जो सामारिया के बादशाह अखीब के महल से लगा हुआ था। 2 इसलिए अखीब ने नबोत से कहा कि “अपना ताकिस्तान मुझ को दे ताकि मैं उसे तरकारी का बाग बनाऊँ, क्योंकि वह मेरे घर से लगा हुआ है; और मैं उसके बदले तुझ को उससे बेहतर ताकिस्तान दँगा; या अगर तुझ मुनासिब मालम हो, तो मैं तुझ को उसकी कीमत नकद दे दूँगा।” 3 नबोत ने अखीब से कहा, “खुदावन्द मुझ से ऐसा न कराए कि मैं तुझ को अपने बाप — दादा की मीरास दे दूँगा।” 4 और अखीब उस बात की बजह से जो यजर एली नबोत ने उससे कही उदास और नाखुश हो कर अपने घर में आया, क्योंकि उसने कहा था मैं तुझ को अपने बाप — दादा की मीरास नहीं दूँगा। इसलिए उसने अपने बिस्तर पर लेट कर अपना मुँह फेर लिया, और खाना छोड़ दिया। 5 तब उसकी बीवी ईज़बिल उसके पास आकर उससे कहने लगी, “तेरा जी ऐसा क्यूँ उदास है कि तू रोटी नहीं खाता?” 6 उसने उससे कहा, “इसलिए कि मैंने यजर एली नबोत से बातचीत की, और उससे कहा कि तू अपना ताकिस्तान की कीमत लेकर मुझे दे दे; या अगर तू चाहे तो मैं उसके बदले दूसरा ताकिस्तान तुझे दे दूँगा। लेकिन उसने जबाब दिया, मैं तुझ को अपना ताकिस्तान नहीं दूँगा।” 7 उसकी बीवी ईज़बिल ने उससे कहा, “इसाईल की बादशाही पर यही रेती हक्मत है? उठ रोटी खा, और अपना दिल बहला; यजर एली नबोत का ताकिस्तान मैं तुझ को दूँगा।” 8 इसलिए उसने अखीब के नाम से खत लिखे, और उन पर उसकी मुहर लगाई, और उनको उन बुज़ुर्गों और अमीरों के पास जो नबोत के शहर में थे और उसी के पड़ोस में रहते थे भेज दिया। 9 उनने उन खतों में यह लिखा कि “रोजा का ‘एलान कराके नबोत को लोगों में ऊँची जगह पर बिठाओ।” 10 और दो आदमियों को, जो बूँहे हों, उसके सामने कर दो कि वह उसके खिलाफ यह गवाही दें कि तू ने खुदा पर और बादशाह पर लानात की, फिर उसे बाहर ले जाकर पथराव करो ताकि वह मर जाए।” 11 चुनौती उसके शहर के लोगों यानी बुज़ुर्गों और अमीरों ने, जो उसके शहर में रहते थे, जैसा ईज़बिल ने उनको कहला भेजा वैसा ही उन खतूत के मज़मून के मुताबिक,

जो उसने उनको भेजे थे, किया। 12 उन्होंने रोजा का ‘एलान कराके नबोत को लोगों के बीच ऊँची जगह पर बिठाया। 13 और वह दोनों आदमी जो बूँहे थे, आकर उसके आगे बैठ गए; और उन बूँहों ने लोगों के सामने उसके, यानी नबोत के खिलाफ यह गवाही दी कि “नबोत ने खुदा पर और बादशाह पर लानात की है।” तब वह उसे शहर से बाहर निकाल ले गए, और उसको ऐसा पथराव किया कि वह मर गया। 14 फिर उन्होंने ईज़बिल को कहला भेजा कि “नबोत पर पथराव कर दिया गया और मर गया।” 15 जब ईज़बिल ने सुना कि नबोत पर पथराव कर दिया गया और मर गया, तो उसने अखीब अब से कहा, “उठ और यजर एली नबोत के ताकिस्तान पर कब्जा कर, जिसे उसने कीमत पर भी तुझे देने से इन्कार किया था; क्योंकि नबोत जिन्दा नहीं बल्कि मर गया है।” 16 जब अखीब ने सुना कि नबोत मर गया है, तो अखीब उठा ताकि यजर एली नबोत के ताकिस्तान को जाकर उस पर कब्जा करे। 17 और खुदावन्द का यह कलाम एलियाह तिशबी पर नाजिल हुआ कि 18 उठ और शाह ए — इसाईल अखीब से, जो सामरिया में रहता है, मिलने को जा। देख, वह नबोत के ताकिस्तान में है, और उस पर कब्जा करने को वहाँ गया है। 19 इसलिए तू उससे यह कहना कि “खुदावन्द ऐसा फरमाता है कि क्या तू ने जान भी ली और कब्जा भी कर लिया?” तब तू उससे यह कहना कि “रखुदावन्द ऐसा फरमाता है कि उसी जगह जहाँ कुत्तों ने नबोत का लह चाटा, कुत्ते तैरे लह को भी चाटेंगे।” 20 और अखीब ने एलियाह से कहा, “ऐ मेरे दुश्मन, क्या मैं तुझे मिल गया?” उसने जबाब दिया कि “तू मुझे मिल गया; इसलिए कि तू ने खुदावन्द के सामने बदी करने के लिए अपने आपको बेच डाला है।” 21 देख, मैं तुझ पर बला नाजिल करूँगा और तेरी पूरी सफाई कर दूँगा, और अखीब की नसल के हर एक लड़के को, यानी हर एक को जो इसाईल में बन्द है, और उसे जो आजाद छुटा हुआ है काट डालूँगा। 22 और तेरे घर को नबात के बेटे युरब आम के घर, और अंगियाह के बेटे बाशा के घर की तरह बना दूँगा; उस गुस्सा दिलाने की बजह से जिसपर तू ने मेरे गजब को भड़काया और इसाईल से गुनाह कराया। 23 और खुदावन्द ने ईज़बिल के हक्क में भी यह फरमाया कि यजर एल की फसील के पास कुत्ते ईज़बिल को खाएँगे। 24 अखीब का जो कोई शहर में मेरेगा उसे कुत्ते खाएँगे, और जो मैटान में मेरेगा उसे हवा के परिन्दे चट कर जाएँगे।” 25 क्यूँकि अखीब की तरह कोई नहीं हुआ था, जिसने खुदावन्द के सामने बदी करने के लिए अपने आपको बेच डाला था और जिसे उसकी बीवी ईज़बिल उभार करती थी। 26 और उसने बहुत ही नफरतअंगोज काम यह किया कि अमोरीयों की तरह, जिनको खुदावन्द ने बनी — इसाईल के आगे से निकाल दिया था, जुतों की पैरवी की। 27 जब अखीब ने यह बातें सुनीं, तो अपने कपड़े फाढ़े और अपने तन पर टाट डाला और रोजा रखवा और टाट ही में लेने और दबे पौँछ चलने लगा। 28 तब खुदावन्द का यह कलाम एलियाह तिशबी पर नाजिल हुआ कि 29 “तू देखता है कि अखीब भी सामने कैसा खाकसार बन गया है? लेकिन चूंकि वह मेरे सामने खाकसार बन गया है, इसलिए मैं उसके दिनों में यह बला नाजिल नहीं करूँगा, बल्कि उसके बेटे के दिनों में उसके घराने पर यह बला नाजिल करूँगा।”

22 तीन साल वह ऐसे ही रहे और इसाईल और अराम के बीच लडाई न हुई; 2 और तीसरे साल यहदाव का बादशाह यहसफत शाह — ए — इसाईल के यहाँ आया, 3 और शाह — ए — इसाईल ने अपने मुलाजिमों से कहा, “क्या तुम को मालम है कि रामात जिल आद हमारा है? लेकिन हम खामोश हैं और शाह — ए — अराम के हाथ से उसे छीन नहीं लेते?” 4 फिर उसने यहसफत से कहा, क्या तू मेरे साथ रामात जिल आद से लड़ने चलेगा? यहसफत ने शाह — ए — इसाईल को जबाब दिया, ‘मैं ऐसा हूँ जैसा तू मेरे

लोग ऐसे हैं जैसे तेरे लोग और मेरे घोड़े ऐसे हैं जैसे तेरे घोडे।” 5 और यहसफत ने शाह — ए — इसाईल से कहा, “ज़रा आज खुदावन्द की मर्ज़ी भी तो मालूम कर ले।” 6 तब शाह — ए — इसाईल ने नवियों को जो करीब चार सौ आदमी थे इकट्ठा किया और उनसे पूछा, “मैं रामात जिल’आद से लड़ने जाऊँ, या बाज रहूँ?” उन्होंने कहा, जा “क्यूँकि खुदावन्द उसे बादशाह के कब्जे में कर देगा।” 7 लेकिन यहसफत ने कहा, “क्या इनको छोड़कर यहाँ खुदावन्द का कोई नबी नहीं है, ताकि हम उससे पछें?” 8 शाह — ए — इसाईल ने यहसफत से कहा, कि “एक शख्स, इमला का बेटा मीकायाह है तो सही, जिसके जरिए से हम खुदावन्द से पूछ सकते हैं; लेकिन मुझे उससे नफरत है, क्यूँकि वह मेरे हक में नेकी की नहीं बल्कि बद्दी की पेशीनगोई करता है।” यहसफत ने कहा, “बादशाह ऐसा न कहे।” 9 तब शाह — ए — इसाईल ने एक सरदार को बुलाकर कहा, कि “इमला के बेटे मीकायाह को जल्द ले आ।” 10 उस वक्त शाह — ए — इसाईल और शाह — ए — यहदाह यहसफत सामरिया के फाटक के सामने, एक खुली जगह में, अपने — अपने तब्दि पर शाहना लिबास पहने हुए बैठे थे, और सब नबी उनके सामने पेशीनगोई कर रहे थे। 11 और कन्नाना के बेटे सिदकियाह ने अपने लिए लहे के सींग बनाए और कहा, खुदावन्द ऐसा फरमाता है कि “तू इन से अरामियों को मारेगा, जब तक वह मिट न जाएँ।” 12 और सब नवियों ने यही पेशीनगोई की और कहा कि रामात जिल’आद पर चढ़ाई कर और कामयाब हो, क्यूँकि खुदावन्द उसे बादशाह के कब्जे में कर देगा। 13 और उस कासिद ने जो मीकायाह को बुलाने गया था उससे कहा, “देख, सब नबी एक जबान होकर बादशाह को खुशखबरी दे रहे हैं, तो जरा तेरी बात भी उनकी बात की तरह हो और तू खुशखबरी ही देना।” 14 मीकायाह ने कहा, “खुदावन्द की हयात की कसम, जो कुछ खुदावन्द मुझे फरमाएँ मैं वही कहँगा।” 15 इसलिए जब वह बादशाह के पास आया, तो बादशाह ने उससे कहा, “मीकायाह, हम रामात जिल’आद से लड़ने जाएँ या रहने दें?” उसने जबाब दिया, “जा और कामयाब हो, क्यूँकि खुदावन्द उसे बादशाह के कब्जे में कर देगा।” 16 बादशाह ने उससे कहा, मैं कितनी मर्तबा तुझे कसम देकर कहूँ, कि “तू खुदावन्द के नाम से हक्क के: ‘अलावा और कुछ मुझ को न बताएँ।’” 17 तब उसने कहा, मैंने सारे इसाईल को उन भेड़ों की तरह, जिनका चौपान न हो, पहाड़ों पर खिखारा देखा; और खुदावन्द ने फरमाया कि “इनका कोई मालिक नहीं; तब वह अपने अपने घर सलामत लौट जाएँ।” 18 तब शाह — ए — इसाईल ने यहसफत से कहा, “क्या मैंने तुझ को बताया नहीं था कि यह मेरे हक में नेकी की नहीं बल्कि बद्दी की पेशीनगोई करेगा?” 19 तब उसने कहा, अच्छा, तू खुदावन्द की बात को सुन ले; मैंने देखा कि खुदावन्द अपने तब्दि पर बैठा है, और सारा आसमानी लश्कर उसके दहने और बाएँ खड़ा है। 20 और खुदावन्द ने फरमाया, ‘कौन अख्भीअब को बहकाएगा, ताकि वह चढ़ाई करे और रामात जिल’आद में मरे गए?’ तब किंती ने कुछ कहा, और किंती ने कुछ। 21 लेकिन एक रुक्न निकल कर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई, और कहा, मैं उसे बहकाऊँगी। 22 खुदावन्द ने उससे पूछा, “किस तरह?” उसने कहा, “मैं जाकर उसके सब नवियों के मूँह में झूठ बोलने वाली स्वं बन जाऊँगी, उसने कहा “तू उसे बहका देगी और गालिक भी होगी, रवाना हो जा और ऐसा ही कर। 23 इसलिए देख, खुदावन्द ने तेरे इन सब नवियों के मूँह में झूठ बोलने वाली स्वं डाली है; और खुदावन्द ने तेरे हक में बद्दी का हुक्म दिया है।” 24 तब कन्नाना का बेटा सिदकियाह ने नज़दीक आया, और उसने मीकायाह के गाल पर मार कर कहा, “खुदावन्द की स्वं तुझ से बात करने को किस रस्ते से होकर मुझ में से गई?” 25 मीकायाह ने कहा, “यह तू उसी दिन देख लेगा, जब तू अन्दर की एक कोठरी में घुसेगा

ताकि छिप जाए।” 26 और शाह — ए — इसाईल ने कहा, मीकायाह को लेकर उसे शहर के नाजिम अमन और यूआस शहजादे के पास लौटा ले जाओ; 27 और कहना, “बादशाह यूँ फरमाता है कि इस शख्स को कैदखाने में डाल दो, और इसे मुरीबत की रोटी खिलाना और मुरीबत का पानी पिलाना, जब तक मैं सलामत न आऊँ।” 28 तब मीकायाह ने कहा, “अगर तू सलामत वापस आ जाए, तो खुदावन्द ने मेरी जरिएँ कलाम ही नहीं किया।” फिर उसने कहा, “ऐ लोगों, तुम सब के सब सुन लो।” 29 इसलिए शाह — ए — इसाईल और शाह — ए — यहदाह यहसफत ने रामात जिल’आद पर चढ़ाई की। 30 और शाह — ए — इसाईल ने यहसफत से कहा, “मैं अपना भेस बदलकर लड़ाई में जाऊँगा; लेकिन तू अपना लिबास पहने रह।” तब शाह — ए — इसाईल अपना भेस बदलकर लड़ाई में गया। 31 उधर शाह — ए — अराम ने अपने रथों के बत्तीसों सरदारों को हुक्म दिया था, “किसी छोटे या बड़े से न लड़ना, ‘अलावा शाह — ए — इसाईल के।’” 32 इसलिए जब रथों के सरदारों ने यहसफत को देखा तो कहा, “ज़रूर शाह — ए — इसाईल यही है।” और वह उससे लड़ने को मुड़े, तब यहसफत चिल्ला उठा। 33 जब रथों के सरदारों ने देखा कि वह शाह — ए — इसाईल नहीं, तो वह उसका पीछा करने से लौट गए। 34 और किसी शख्स ने ऐसे ही अपनी कमान खींची और शाह — ए — इसाईल को जौशन के बन्दों के बीच मारा, तब उसने अपने सारी से कहा, बाग “फेर कर मुझे लश्कर से बाहर निकाल ले चल, क्यूँकि मैं ज़खी हो गया हूँ।” 35 और उस दिन बड़े घमसान का रन पड़ा, और उन्होंने बादशाह को उसके रथ ही में अरामियों के सुकाबिल संभाले रखा; और वह शाम को मर गया, और खुन उसके जख्म से बह कर रथ के पायदान में भर गया। 36 और आफताब गुरुब होते हुए लश्कर में यह पुकार हो गई, “हर एक आदमी अपने शहर, और हर एक आदमी अपने मूल्क को जाए।” 37 इसलिए बादशाह मर गया और वह सामरिया में पहुँचाया गया, और उन्होंने बादशाह को सामरिया में दफन किया; 38 और उस रथ को सामरिया के तालाब में धोया कस्बियाँ यहीं गुस्त करती थीं, और खुदावन्द के कलाम के मुताबिक जो उसने फरमाया था, कुत्तों ने उसका खन चाटा। 39 और अख्भीअब की बाकी बातें, और सब कुछ जो उसने किया था, और हाथी दाँत का घर जो उसने बनाया था, और उन सब शहरों का हाल जो उसने तामीर किए, तो क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में कलमबन्द नहीं? 40 और अख्भीअब अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा अख्भिजियाह उसकी जगह बादशाह हआ। 41 और आसा का बेटा यहसफत शाह — ए — इसाईल अख्भीअब के चौथे साल से यहदाह पर हुक्मत करने लगा। 42 जब यहसफत हुक्मत करने लगा तो पैरीस साल का था, और उसने येस्शलेम में पच्चीस साल हुक्मत की। उसकी माँ का नाम ‘अज्जबाह था, जो सिल्ही की बेटी थी। 43 वह अपने बाप आसा के नक्श — ए — क्लदम पर चला, उससे वह मुड़ा नहीं और जो खुदावन्द की निगाह में ठीक था उसे करता रहा, तो भी ऊँचे मकाम ढाए न गए लोग उन ऊँचे मकामों पर ही कुर्बानी करते और बख्तर जलाते थे। 44 और यहसफत ने शाह — ए — इसाईल से सुलह की। 45 और यहसफत की बाकी बातें और उसकी ताकत जो उसने दिखाई, और उसके जंग करने की कैफियत, तो क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में कलमबन्द नहीं? 46 और उसने बाकी लृतियों को जो उसके बाप आसा के ‘अहद में रह गए थे, मूल्क से निकाल दिया। 47 और अदोम में कोई बादशाह न था, बल्कि एक नाइब हुक्मत करता था। 48 और यहसफत ने तरसीस के जहाज बनाए ताकि ओफरी को सोने के लिए जाएँ, लेकिन वह गए नहीं, क्यूँकि वह “अस्युन जाबर ही मैं टूट गए। 49 तब अख्भीअब के बेटे अख्भिजियाह ने यहसफत से कहा, ‘अपने खादियों के साथ मैं

खादिमों को भी जहाज़ों में जाने दे।” लेकिन यहसफत राज़ी न हुआ। 50 और यहसफत अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफ्न हुआ; और उसका बेटा यहराम उसकी जगह बादशाह हुआ। 51 और अर्डीअब का बेटा अख्जियाह शाह — ए — यहदाह यहसफत के सत्रहवें साल से सामरिया में इस्माइल पर हक्मत करने लगा, और उसने इस्माइल पर दो साल हक्मत की। 52 और उसने खुदावन्द की नजर में बद्दी की, और अपने बाप की रास्ते और अपनी माँ के रास्ते और नबात के बेटे युरब़ आम की रास्ते पर चला, जिससे उसने बनी — इस्माइल से गुनाह कराया; 53 और अपने बाप के सब कामों के मुताबिक बाल की इबादत करता और उसको सिज्दा करता रहा, और खुदावन्द इस्माइल के खुदा को गुस्सा दिलाया।

2 सला

1 अर्खीअब के मरने के बाद मोआब इसाईल से बाही हो गया। 2 और

अख्खजियाह उस झिलमिली दार खिड़की में से, जो सामरिया में उसके बालाखाने में थी, गिर पड़ा और बीमार हो गया। इसलिए उसने कासिदों को भेजा और उनसे ये कहा, “जाकर अक्स्न के मार्बूट बालजबूब से पछो, कि मुझे इस बीमारी से शिका हो जाएगी या नहीं।” 3 लेकिन खुदावन्द के फरिशे ने एलियाह तिशबी से कहा, उठ और सामरिया के बादशाह के कासिदों से मिलने को जा और उनसे कह, ‘क्या इसाईल में खुदा नहीं जो तुम अक्स्न के मार्बूट बालजबूब से पूछने चले हो? 4 इसलिए अब खुदावन्द यूँ फरमाता है कि “तू उस पलंग पर से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि तू ज़स्तर मेरेगा।” तब एलियाह रवाना हुआ। 5 वह कासिद उसके पास लौट आए, तब उसने उनसे पूछा, “तुम लौट क्यूँ आए?” 6 उन्होंने उसके कहा, एक शख्स हम से मिलने को आया, और हम से कहने लगा, ‘उस बादशाह के पास जिसने तुम को भेजा है फिर जाओ, और उससे कहो: खुदावन्द यूँ फरमाता है कि ‘क्या इसाईल में कोई खुदा नहीं जो तू अक्स्न के मार्बूट बालजबूब से पूछने को भेजता है? इसलिए तू उस पलंग से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि ज़स्तर ही मेरेगा।’ 7 उसने उनसे कहा, “उस शख्स की कैसी शक्ति थी, जो तुम से मिलने को आया और तुम से ये बातें कही?” 8 उन्होंने उसे जबाब दिया, “वह बहत बालों वाला आदमी था, और चमड़े का कमरबन्द अपनी कमर पर कसे हुए था।” तब उसने कहा, “ये तो एलियाह तिशबी है।” 9 तब बादशाह ने पचास सिपाहियों के एक सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ उसके पास भेजा। जब वह उसके पास गया और देखा कि वह एक टीले की चोटी पर बैठा है। उसने उससे कहा, ऐ नबी, बादशाह ने कहा है, “तू उतर आ।” 10 एलियाह ने उस पचास के सरदार को जबाब दिया, “आगर मैं नबी हूँ, तो आग आसमान से नाजिल हो और तुम्हे तेरे पचासों के साथ जला कर भसम कर दे।” तब आग आसमान से नाजिल हुई, और उसे उसके पचासों के साथ जला कर भसम कर दिया। 11 फिर उसने दोबारा पचास सिपाहियों के दसरे सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ उसके पास भेजा। उसने उससे मुखातिब होकर कहा, ऐ नबी, बादशाह ने यूँ कहा है, “जल्द उतर आ।” 12 एलियाह ने उनको भी जबाब दिया, “आगर मैं नबी हूँ, तो आग आसमान से नाजिल हो और तुम्हे तेरे पचासों के साथ जलाकर भसम कर दे।” फिर खुदा की आग आसमान से नाजिल हुई, और उसे उसके पचासों के साथ जला कर भसम कर दिया। 13 फिर उसने तीसरे पचास सिपाहियों के सरदार को, उसके पचासों सिपाहियों के साथ भेजा; और पचास सिपाहियों का ये तीसरा सरदार ऊपर चढ़कर एलियाह के आगे दूरनों के बल पिरा, और उसकी मिन्नत करके उससे कहने लगा, “ऐ नबी, मेरी जान और इन पचासों की जानें, जो तेरे खादिम हैं, तेरी निगाह में कीमती हों।” 14 देख, आसमान से आग नाजिल हुई और पचास सिपाहियों के पहले दो सरदारों को उनके पचासों समेत जला कर भसम कर दिया; इसलिए अब मेरी जान तेरी नजर में कीमती हो।” 15 तब खुदावन्द के फरिशे ने एलियाह से कहा, “उसके साथ नीचे जा, उससे न डर।” तब वह उठकर उसके साथ बादशाह के पास नीचे गया, 16 और उससे कहा, खुदावन्द यूँ फरमाता है, “तूने जो अक्स्न के मार्बूट बालजबूब से पूछने को लोग भेजे हैं, तो क्या इसलिए कि इसाईल में कोई खुदा नहीं है जिसकी मर्जी को तू दरियाफ़त कर सके? इसलिए तू उस पलंग से, जिस पर तू चढ़ा है, उतरने न पाएगा, बल्कि ज़स्तर ही मेरेगा।” 17 इसलिए वह खुदावन्द के कलाप के मुताबिक जो एलियाह ने कहा था, मर गया; और चूँकि उसका कोई बेटा न था, इसलिए शाह — ए

— यहदाह यहराम — बिन — यहसफ़त के दूसरे साल से यहराम उसकी जगह सलतनत करने लगा। 18 और अख्खजियाह के और काम जो उसने किए, क्या वह इसाईल के बादशाहों की तबारीख की किताब में लिखे नहीं?

2 और जब खुदावन्द एलियाह को शोले में आसमान पर उठा लेने को था, तो

ऐसा हुआ कि एलियाह ‘इलीशा’ को साथ लेकर जिलजाल से चला, 2 और एलियाह ने इलीशा से कहा, “तू जरा यहीं ठहर जा, इसलिए कि खुदावन्द ने मुझे बैतेप्ल को भेजा है।” इलीशा ने कहा, “खुदावन्द की हयात की कसम और तेरी जान की कसम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।” इसलिए वह बैतेप्ल को चले गए। 3 और अम्बियाजादे जो बैतेप्ल में थे, इलीशा’ के पास आकर उससे कहने लगे कि ‘क्या तुझे मालूम है कि खुदावन्द आज तेरे सिर से उठा लेगा?’ उसने कहा, “हाँ, मैं तेरी जानता हूँ; तुम चुप रहो।” 4 एलियाह ने उससे कहा, “हाँ, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।” इसलिए वह यरीह में आए। 5 और अम्बियाजादे जो यरीह में थे, इलीशा’ के पास आकर उससे कहने लगे, “क्या तुझे मालूम है कि खुदावन्द आज तेरे आका को तेरे सिर से उठा लेगा?” उसने कहा, “हाँ, मैं तेरी जानता हूँ; तुम चुप रहो।” 6 और एलियाह ने उससे कहा, “तू जरा यहीं ठहर जा, क्यूँकि खुदावन्द ने मुझ को यरदन भेजा है।” उसने कहा, “खुदावन्द की हयात की कसम और तेरी जान की कसम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा।” इसलिए वह दोनों आगे चले। 7 और अम्बियाजादों में से पचास आदमी जाकर उनके सामने दूर खड़े हो गए; और वह दोनों यरदन के किनारे खड़े हुए। 8 और एलियाह ने अपनी चादर को लिया, और उसे लपेटकर पानी पर मारा और पानी दो हिस्से होकर इधर — उधर हो गया; और वह दोनों खुश जमीन पर होकर पार गए। 9 और जब वह पार गए तो एलियाह ने इलीशा’ से कहा, “इससे पहले कि मैं तुझ से ले लिया जाऊँ, बता कि मैं तेरे लिए क्या कहूँ।” इलीशा’ ने कहा, “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तेरी स्तर का दूना हिस्सा मुझ पर हो।” 10 उसने कहा, “तू ने मुश्किल सबाल किया; तोभी आगर तू मुझे अपने से जुदा होते देखे, तो तेरे लिए ऐसा ही होगा; और आगर नहीं, तो ऐसा न होगा।” 11 और वह आगे चलते और बातें करते जाते थे, कि देखा, एक आग का रथ और आग के घोड़ों ने उन दोनों को जुदा कर दिया, और एलियाह शोले में आसमान पर चला गया। 12 इलीशा’ ये देखकर चिल्लाया, ऐ मेरे बाप, मेरे बाप! इसाईल के रथ, और उसके सवार! “और उसने उसे फिर न देखा, तब उसने अपने कपड़ों को पकड़कर फाड़ डाला और दो हिस्से कर दिए। 13 और उसने एलियाह की चादर को भी, जो उस पर से गिर पड़ी थी उठा लिया, और उल्टा फिरा और यरदन के किनारे खड़ा हुआ। 14 और उसने एलियाह की चादर को, जो उस पर से गिर पड़ी थी, लेकर पानी पर मारा और कहा, खुदावन्द एलियाह का खुदा कहाँ है? और जब उसने भी पानी पर मारा, तो वह इधर — उधर दो हिस्से हो गया और इलीशा’ पार हुआ। 15 जब उन अम्बियाजादों ने जो यरीह में उसके सामने थे, उसे देखा तो वह कहने लगे, “एलियाह की रस्ते इलीशा” पर ठहरी हुई है।” और वह उसके इस्तकबाल को आए और उसके आगे जमीन तक झुक्कर उसे सिज्जा किया। 16 और उन्होंने उससे कहा, “अब देख, तेरे खादिमों के साथ पचास ताकतवर जवान हैं, जरा उनको जाने दे कि वह तेरे आका को ढूँढ़े, कहीं ऐसा न हो कि खुदावन्द की रस्ते हैं उसे उठाकर किसी पहाड़ पर या किसी जंगल में डाल दिया हो।” उसने कहा, “मत भेजो।” 17 जब उन्होंने उससे बहुत जिद की, यहाँ तक कि वह शर्मी भी गया, तो उसने कहा, “भेज दो।” इसलिए उन्होंने पचास आदमियों को भेजा, और उन्होंने तीन दिन तक ढूँढ़ा पर उसे न पाया। 18 और वह अभी यरीह में ठहरा हुआ था; जब वह उसके पास

लौटे, तब उसने उनसे कहा, “क्या मैंने तुमसे न कहा था कि न जाओ?” 19 फिर उस शहर के लोगों ने इलीशा^१ से कहा, “जरा देख, ये शहर क्या अच्छे मौके^२ पर है, जैसा हमारा खुदावन्द खुद देखता है; लेकिन पानी खराब और ज़मीन बंजर है।” 20 उसने कहा, “मुझे एक नया प्याला ला दो, और उसमें नमक डाल दो।” वह उसे उसके पास ले आए। 21 और वह निकल कर पानी के चश्मे पर गया, और वह नमक उसमें डाल कर कहने लगा, “खुदावन्द यूँ फरमाता है कि मैंने इस पानी को ठीक कर दिया है, अब आगे को इससे मौत या बंजरपन न होगा।” 22 देखो इलीशा^३ के कलाम के मुताबिक जो उसने फरमाया, वह पानी आज तक ठीक है 23 वहाँ से वह बैतैल को चला, और जब वह रास्ते में जा रहा था तो उस शहर के छोटे लड़के निकले, और उसे चिढ़ाकर कहने लगे, “चढ़ा चला जा, ऐ गंजे सिर वाले: चढ़ा चला जा, ऐ गंजे सिर वाले।” 24 और उसने अपने पीछे नज़र की, और उनको देखा और खुदावन्द का नाम लेकर उन पर लान्त की; इसलिए ज़ंगल में से दो रीछियाँ निकली, और उन्होंने उनमें से बयालीस बच्चे फाड़ डाले। 25 वहाँ से वह कर्मिल पहाड़ को गया, फिर वहाँ से सामरिया को लौट आया।

3 और शाह — ए — यहदाह यहसफ़त के अठारहवें बरस से अर्डीबब का

बेटा यहराम सामरिया में इस्माईल पर बादशाहत करने लगा, और उसने बारह साल बादशाहत की। 2 और उसने खुदावन्द के खिलाफ गुनाह किया; लेकिन अपने बाप और अपनी माँ की तरह नहीं, क्यूँकि उसने बाल के उस सुरून को जो उसके बाप ने बनाया था दूर कर दिया। 3 तो वह नवाब के बेटे युर्बां आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्माईल से गुनाह कराया था लिपटा रहा, और उसने अपने आपको अत्यन्त न किया। 4 मोआब का बादशाह मीसा बहुत भेड़ बकरियाँ रखता था, और इस्माईल के बादशाह को एक लाख खर्बी और एक लाख मैंडों की ऊन देता था। 5 लेकिन जब अर्डीबब मर गया, तो मोआब का बादशाह इस्माईल के बादशाह से बागी हो गया। 6 उस ब्रह्मण्य यहराम बादशाह ने सामरिया से निकलकर सारे इस्माईल का जाएजा लिया। 7 और उसने जाकर यहदाह के बादशाह यहसफ़त से पुछवा भेजा, ‘‘मोआब का बादशाह मुझ से बागी हो गया है, इसलिए क्या तु मोआब से लड़ने के लिए मेरे साथ चलेंगा?’’ उसने जवाब दिया, ‘‘मैं चलूँगा, क्यूँकि जैसा मैं हूँ वैसा ही तै हूँ, और जैसे मैं लोग वैसे ही तै लोग, और जैसे मेरे घोड़े वैसे ही तै घोड़े हैं।’’ 8 तब उसने पछा, ‘‘हम किस रास्ते से जाएँ?’’ उसने जवाब दिया, ‘‘अदोम के रास्ते से।’’ 9 चुनौत्ते इस्माईल के बादशाह और यहदाह के बादशाह और अदोम के बादशाह निकले; और उन्होंने सात दिन की मन्जिल का चक्कर कर काटा, और उनके लशकर और चौपायों के लिए, जो पीछे पीछे आते थे, कहीं पानी न था। 10 और इस्माईल के बादशाह ने कहा, ‘‘अफ़सोस कि खुदावन्द ने इन तीन बादशाहों को इकट्ठा किया है, ताकि उनको मोआब के बादशाह के हवाले कर दे।’’ 11 लेकिन यहसफ़त ने कहा, ‘‘क्या खुदावन्द के नवियों में से कोई यहाँ नहीं है, ताकि उसके वसीति से हम खुदावन्द की मज़ी मालूम करें?’’ और इस्माईल के बादशाह के खादिमों में से एक ने जवाब दिया, ‘‘इलीशा^४ — बिन — साफ़त यहाँ है, जो एलियाह के हाथ पर पानी डालता था।’’ 12 यहसफ़त ने कहा, ‘‘खुदावन्द का कलाम उसके साथ है।’’ तब इस्माईल के बादशाह और यहसफ़त और अदोम के बादशाह उसके पास गए। 13 तब इलीशा^५ ने इस्माईल के बादशाह से कहा, ‘‘मुझ को तुझ से क्या काम? तु अपने बाप के नवियों और अपनी माँ के नवियों के पास जा।’’ पर इस्माईल के बादशाह ने उससे कहा, ‘‘नहीं, नहीं, क्यूँकि खुदावन्द ने इन तीनों बादशाहों को इकट्ठा किया है, ताकि उनको मोआब के हवाले कर दे।’’ 14 इलीशा^६ ने कहा, ‘‘रब्ब — उल — अफ़वाज की हयात की कसम, जिसके आगे मैं खड़ा हूँ, अगर मुझे यहदाह के बादशाह यहसफ़त

की हज़ूरी के नज़दीक न होता, तो मैं तेरी तरफ नज़र भी न करता और न तुझे देखता। 15 लेकिन खैर, किसी बजाने वाले को मैं पास लाओ।’’ और ऐसा हुआ कि जब उस बजाने वाले ने बजाया, तो खुदावन्द का हाथ उस पर ठहरा। 16 तब उसने कहा, ‘‘खुदावन्द यूँ फरमाता है, इस ज़ंगल में खन्दकी ही खन्दक खोद डालो।’’ 17 क्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमाता है, ‘‘तुम न हवा आती देखोगे और न पानी आते देखोगे, तो भी ये बादी पानी से भर जाएगी, और तुम भी पियोगे और तुम्हरे मवेशी और तुम्हारे जानवर भी।’’ 18 और ये खुदावन्द के लिए एक हल्की सी बात है; वह मोआबियों को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा। 19 और तुम हर फर्सीलादर शहर और उम्दा शहर कज़ा लोगे, और हर अच्छे खेत को पथरों से खराब कर देगे।’’ 20 इसलिए सुबह को कुर्बानी पेश करने के ब्रह्मण्य ऐसा हुआ, कि अदोम की राह से पानी बहता आया और वह मुल्क पानी से भर गया। 21 जब सब मोआबियों ने ये सुना कि बादशाहों ने उनसे लड़ने के लिए चढ़ाइ की है, तो वह सब जो हथियार बांधने के काबिल थे, और हर अच्छे खेत को पथरों से खराब कर देगे।’’ 22 और वह सुबह संवैर उठे और सूरज पानी पर चमक रहा था, और मोआबियों को वह पानी जो उनके सामने था, खून की तरह सुख्ख दिखाई दिया। 23 तब वह कहने लगे, ‘‘ये तो खून है; वह बादशाह यकीन हलाक हो गए हैं, और उन्होंने आपस में एक दूसरे को मार दिया है। इसलिए अब ऐ मोआब, लूट को चल।’’ 24 जब वह इस्माईल की लशकरगाह में आए, तो इस्माईलियों ने उठकर मोआबियों को ऐसा मारा कि वह उनके अगे से भागे; पर वह आगे बढ़ कर मोआबियों को मारते मारते उनके मुल्क में घुस गए। 25 और उन्होंने शहरों को गिरा दिया, और जमीन के हर अच्छे खिलें पर सभी ने एक एक पथर डालकर उसे भर दिया, और उन्होंने पानी के सब चश्में बन्द कर दिए, और सब अच्छे दरखत काट डाले, सिर्फ़ हरास्त के पहाड़ ही के पथरों को बाकी छोड़ा, पर गोफ़न चलाने वालों ने उसको भी जा घेरा और उसे मारा। 26 जब मोआब के बादशाह ने देखा कि ज़ंग उसके लिए निहायत सख्त हो गई, तो उसने सात सौ तलवार वाले मर्द अपने साथ लिए, ताकि सफ़ चीर कर अदोम के बादशाह तक जा पहुँचे; पर वह ऐसा न कर सके। 27 तब उसने अपने पहलौंटे बेटे को लिया, जो उसकी जगह बादशाह होता, और उसे दीवार पर सोखलनी कुर्बानी के तौर पर पेश किया। यूँ इस्माईल पर बड़ा ग़ज़ब हुआ; तब वह उसके पास से हट गए और अपने मुल्क को लौट आए।

4 और अम्बियाज़ादों की बीवियों में से एक 'औरत ने इलीशा^७ से फरियाद की

और कहने लगी, ‘‘तेरा खादिम मेरा शौहर मर गया है, और तु जानता है कि तेरा खादिम खुदावन्द से डरता था; इसलिए अब कर्ज़ देने वाला आया है कि मैं तेरे लिए क्या करूँ? मुझे बता, तेरे पास घर में क्या है?’’ उसने कहा, ‘‘तेरी खादिम के पास घर में एक प्याला तेल के 'अलावा कुछ भी नहीं।’’ 3 तब उसने कहा, ‘‘तू जा, और बाहर से अपने सब पड़ोसियों से बर्तन उजरत पर ले, वह बर्तन खाली हों, और थोड़े बर्तन न लेना।’’ 4 फिर तू अपने बेटों को साथ लेकर अन्दर जाना और पीछे से दरवाज़ा बन्द कर लेना, और उन सब बर्तनों में तेल उँडेलना, और जो भर जाए उसे उठा कर अलग रखना।’’ 5 तब वह उसके पास से गई, और उसने अपने बेटों को अन्दर साथ लेकर दरवाज़ा बन्द कर लिया; और वह उसके पास लाते जाते थे और वह उँडेलती जाती थी। 6 जब वह बर्तन भर गए तो उसने अपने बेटे से कहा, ‘‘मेरे पास एक और बर्तन ला।’’ उसने उससे कहा, ‘‘और तो कोई बर्तन रहा नहीं।’’ तब तेल बन्द हो गया। 7 तब उसने आकर मर्द — ए — खुदा को बताया। उसने कहा, ‘‘जा, तेल बेच,

और कर्ज अदा कर, और जो बाकी रहे उससे तू और तेरे बेटे गुजारा करों।” 8 एक रोज ऐसा हुआ कि इलीशा॑ शूनीम को गया, वहाँ एक दौलतमन्द॑ ‘औरत थी; और उने उसे गेटी खाने पर मजबूर किया। फिर तो जब कभी वह उधर से गुजरता, रोटी खाने के लिए वहीं चला जाता था। 9 इसलिए उसने अपने शौहर से कहा, “देख, मुझे मालूम होता है कि ये मर्द — ए — खुदा, जो अक्सर हमारी तरफ आता है, मुकद्दस है। 10 हम उसके लिए एक छोटी सी कोठरी दीवार पर बना दें, और उसके लिए एक पलंग और मेज़ और चौकी और चरागादान लगा दें, फिर जब कभी वह हमारे पास आए तो वहीं ठहरेगा।” 11 फिर एक दिन ऐसा हुआ कि वह उधर गया और उस कोठरी में जाकर वहीं सोया। 12 फिर उसने अपने खादिम जेहाजी से कहा, “इस शूनीमी॑ ‘औरत को बुला ले।’ उसने उसे बुला लिया और वह उसके सामने खड़ी हुई। 13 फिर उसने अपने खादिम से कहा, “तू उससे पूछ कि तेरे जो हमारे लिए इस कदर फिक्रें कीं, तो तेरे लिए क्या किया जाए? क्या तू चाहती है कि बादशाह से, या फौज के सरदार से तेरी सिफारिश की जाए?” उसने जबाब दिया, “मैं तो अपने ही लोगों में रहती हूँ।” 14 फिर उसने कहा, “उसके लिए क्या किया जाए?” तब जेहाजी ने जबाब दिया, “सच उसके कोई बेटा नहीं, और उसका शौहर बूझा है।” 15 तब उसने कहा, “उसे बुला ले।” और जब उसने उसे बुलाया, तो वह दरवाजे पर खड़ी हुई। 16 तब उसने कहा, “मौसम — ए — बहार में, वक्त पूरा होने पर तेरी गोद में बेटा होगा।” उनने कहा, “नहीं, ऐसे मालिक ऐ मर्द — ए — खुदा, अपनी खादिमा से झट्ठ न कह।” 17 फिर वह ‘औरत हामिला हुई॑ और जैसा इलीशा॑’ ने उससे कहा था, मौसम — ए — बहार में वक्त पूरा होने पर उसके बेटा हुआ। 18 जब वह लड़का बढ़ा, तो एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपने बाप के पास खेत काटनेवालों में चला गया। 19 और उसने अपने बाप से कहा, हाय मेरा सिर, हाय मेरा सिर! “उसने अपने खादिम से कहा, “उसे उसकी माँ के पास ले जा।” 20 जब उसने उसे लेकर उसकी माँ के पास पहुँचा दिया, तो वह उसके घुटनों पर दोपहर तक बैठा रहा, इसके बाद मर गया। 21 तब उसकी माँ ने ऊपर जाकर उसे मर्द — ए — खुदा के पलंग पर लिटा दिया, और दरवाजा बन्द करके बाहर गई। 22 और उसने शौहर से पुकार कर कहा, “जल्द जवानों में से एक को, और गर्धों में से एक को मेरे लिए भेज दे, ताकि मैं मर्द — ए — खुदा के पास दौड़ जाऊँ और फिर तौट आऊँ।” 23 उसने कहा, “आज तू उसके पास क्यूँ जाना चाहती है? आज न तो नया चाँद है न सब्त!” उसने जबाब दिया, “अच्छा ही होगा।” 24 और उसने गधे पर जीन कसकर अपने खादिम से कहा, “चला, आगे बढ़; और सवारी चलाने में सुस्ती न कर, जब तक मैं तुझ से न कहूँ।” 25 तब वह चली और वह कर्मिल पहाड़ को मर्द — ए — खुदा के पास गई। उस मर्द — ए — खुदा ने दूर से उसे देखकर अपने खादिम जेहाजी से कहा, देख, उधर वह शूनीमी॑ ‘औरत है? तेरा शौहर खैरियत से, बच्चा खैरियत से है?’ “उसने जबाब दिया, ठीक नहीं है।” 27 और जब वह उस पहाड़ पर मर्द — ए — खुदा के पास आई, तो उसके पैर पकड़ लिए, और जेहाजी उसे हटाने के लिए नजदीक आया, पर मर्द — ए — खुदा ने कहा, “उसे छोड़ दे, क्योंकि उसका दिल परेशान है, और खुदावन्द ने ये बात मुझे से छिपाई और मुझे न बताई।” 28 और वह कहने लगी, क्या मैंने अपने मालिक से बेटे का सवाल किया था? क्या मैंने न कहा था, “मुझे धोका न देए?” 29 तब उसने जेहाजी से कहा, “कमर बाँध, और मेरी लाठी हाथ में लेकर अपना रास्ता ले; अगर कोई तुझे रास्ते में मिले तो उसे सलाम न करना, और अगर कोई तुझे सलाम करे तो जबाब न देना; और मेरी लाठी उस लड़के के मुँह पर रख देना।” 30 उस लड़के की माँ ने

कहा, “खुदावन्द की हयात की कसम और तेरी जान की कसम, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगी।” तब वह उठ कर उसके पीछे — पीछे चला। 31 और जेहाजी ने उससे पहले आकर लाठी को उस लड़के के मुँह पर रखा; पर न तो कुछ आवाज हुई, न सुना। इसलिए वह उससे मिलने को लौटा, और उसे बताया, “लड़का नहीं जागा।” 32 जब इलीशा॑ उस घर में आया, तो देखो, वह लड़का मरा हुआ उसके पलंग पर पड़ा था। 33 तब वह अकेला अन्दर गया, और दरवाजा बन्द करके खुदावन्द से दुआ की। 34 और ऊपर चढ़कर उस बच्चे पर लेट गया; और उसके मुँह पर अपना मुँह, और उसकी आँखों पर अपनी आँखें, और उसके हाथों पर अपने हाथ रख लिए, और उसके ऊपर लेट गया; तब उस बच्चे का जिसम गर्म होने लगा। 35 फिर वह उठकर उस घर में एक बार टहला, और ऊपर चढ़कर उस बच्चे के ऊपर लेट गया; और वह बच्चा सात बार छीकी और बच्चे ने आँखें खोल दी। 36 तब उसने जेहाजी को लूला कर कहा, “उस शूनीमी॑ ‘औरत को बुला ले।’” तब उसने उसे बुलाया, और जब वह उसके पास आई, तो उसने उससे कहा, “अपने बेटे को उठा ले।” 37 तब वह अन्दर जाकर उसके कदमों पर गिरी और जमीन पर सिंचे में हो गई, फिर अपने बेटे को उठा कर बाहर चली गई। 38 और इलीशा॑ फिर जिलजाल में आया, और मुल्क में काला था, और अम्बियाज़ादे उसके सामने बैठे हुए थे। और उसने अपने खादिम से कहा, “बड़ी देगा चाढ़ा दे, और इन अम्बियाज़ादों के लिए लप्पी पका।” 39 और उसमें से एक खेत में गया कि कुछ सब्जी चुन लाए। तब उसे कोई जंगली लता मिल गई। उसने उसमें से इन्द्रायन तोड़कर दामन भर लिया और लौटा, और उनको काटकर लप्सी की देग में डाल दिया, क्योंकि वह उनको फहानते न थे। 40 चुनाँचे उन्होंने उन मर्दों के खाने के लिए उसमें से ऊँडेला। और ऐसा हुआ कि जब वह उस लप्सी में से खाने लगे, तो विल्ला उठे और कहा, “ऐ मर्द — ए — खुदा, देग में मौत है।” और वह उसमें से खा न सके। 41 लेकिन उसने कहा, “आटा लाओ।” और उसने उस देग में डाल दिया और कहा, “उन लोगों के लिए ऊँडेलो, ताकि वह खाएँ।” फिर देग में कोई मुजिर चीज़ बाकी न रही। 42 बाल सलीसा से एक शब्द आया, और पहले फसल की रोटियाँ, यानी जौ के बीस पिर्दे और अनाज की हरी — हरी बाले मर्द ए — खुदा के पास लाया, उसने कहा, “इन लोगों को दे दे, ताकि वह खाएँ।” 43 उसके खादिम ने कहा, “क्या मैं इतने ही को सौ आदमियों के सामने रख दूँ?” फिर उसने फिर कहा, लोगों को दे दे, ताकि वह खाएँ, क्योंकि खुदावन्द यूँ फरमाता है, “वह खाएँ और उसमें से कुछ छोड़ भी देंगे।” 44 तब उसने उसे उनके आगे रख दिया और उन्होंने खाया; और जैसा खुदावन्द ने फरमाया था, उसमें से कुछ छोड़ भी दिया।

5 अराम के बादशाह के लक्षकर का सरदार ना’मान, अपने आका के नजदीक मु’अज्जिज़ — इज्जतदार शब्द था; क्योंकि खुदावन्द ने उसके वर्सीले से अराम को फतह बख्ती थी। वह जबरदस्त समझी थी, लेकिन कोही था। 2 और अरामी दल बाँधकर निकले थे, और इस्माइल के मुल्क में से एक छोटी लड़की को कैट करके ले आए थे; वह ना’मान की बीवी की खादिमा थी। 3 उसने अपनी बीवी से कहा, “काश मेरा आका उस नबी के यहाँ होता, जो सामरिया में है। तो वह उसके कोढ़ से खिसका दे देता।” 4 तो किसी ने अन्दर जाकर अपने मालिक से कहा, “वह लड़की जो इस्माइल के मुल्क की है, ऐसा — ऐसा कहती है।” 5 तब अराम के बादशाह ने कहा, “तू जा, और मैं इस्माइल के बादशाह को खत भेज़ूँगा।” तब वह रवाना हुआ, और दस किन्तरा चाँदी और छ़ हजार मिस्काल सोना और दस जोड़े कपड़े अपने साथ ले लिए। 6 और वह उस खत को इस्माइल के बादशाह के पास लाया जिसका मज़बूत था, “ये खत जब तुझको मिले, तो जान लेना कि मैंने अपने खादिम ना’मान को तेरे पास भेजा

है, ताकि तू उसके कोढ़ से उसे शिफा दे।” 7 जब इसाईल के बादशाह ने उस खत को पढ़ा, तो अपने कपड़े फाड़कर कहा, “क्या मैं खुदा हूँ कि मारूँ और जिलाऊँ, जो ये शख्स एक आदमी को मेरे पास भेजता है कि उसको कोढ़ से शिफा दूँ इसलिए अब ज़रा गौर करो, देखो, कि वह किस तरह मुझ से झाड़ने का बहाना ढूँढ़ता है।” 8 जब मर्द — ए — खुदा इलीशा’ ने सुना कि इसाईल के बादशाह ने अपने कपड़े फाड़े, तो बादशाह को कहला भेजा, “तूने अपने कपड़े क्यूँ फाड़े? अब उसे मेरे पास आने दे, और वह जान लेगा कि इसाईल में एक नवी है।” 9 तब ना’मान अपने घोड़ों और रथों के साथ आया, और इलीशा’ के घर के दरवाजे पर खड़ा हुआ, 10 और इलीशा’ ने एक कासिद के ज़रिए कहला भेजा, “जा और यरदन में सात बार गोता मार, तो तेरा जिस्म फिर बहाल हो जाएगा और तू पाक साफ होगा।” 11 पर ना’मान नाराज़ होकर चला गया और कहने लगा, “मुझे यक़ीन था कि वह निकल कर ज़स्तर मेरे पास आएगा, और खड़ा होकर खुदावन्द अपने खुदा से दुआ करेगा, और उस जगह के ऊपर अपना हाथ इधर — उधर हिला कर कोढ़ी को शिफा देगा। 12 क्या खादिम के दरिया, अबाना और फरफर, इसाईल की सब नदियों से बढ़ कर नहीं है? क्या मैं उनमें नहाकर पाक साफ नहीं हो सकता?” इसलिए वह लौटा और बड़े गुस्से में चला गया। 13 तब उसके मुलाज़िम पास आकर उससे यूँ कहने लगे, “ऐ हमारे बाप, अगर वह नबी कोई बड़ा काम करने का हक्म तुझे देता, तो क्या तू उसे न करता? इसलिए जब वह तुझ से कहता है कि नहा ले और पाक साफ हो जा, तो कितना ज्यादा इसे मानना चाहिए?” 14 तब उसने उत्तरकर नवी के कहने के मुताबिक यरदन में सात गोते लगाए, और उसका जिस्म छोटे बच्चे के जिस्म की तरह हो गया और वह पाक साफ हुआ। 15 फिर वह अपनी जिलों के सब लोगों के साथ नवी के पास लौटा, और उसके सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, “देख, अब मैंने जान लिया कि इसाईल को छोड़ और कहीं इस ज़मीन पर कोई खुदा नहीं। इसलिए अब करम फरमाकर अपने खादिम का तोहफा कुखून करा।” 16 लेकिन उसने जबाब दिया, “खुदावन्द की हयात की कसम जिसके आगे मैं खड़ा हूँ, मैं कुछ नहीं लूँगा।” और उसने उससे बहुत मजबूर किया कि ले, पर उसने इनकार किया। 17 तब ना’मान ने कहा, “अच्छा, तो मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तेरे खादिम को दो खच्चरों का बोझ मिट्ठी दी जाएँ क्यूँकि तेरा खादिम अब से आगे खुदावन्द के सिवा किसी गैर — मांबूद के सामने न तो सोखानी कुर्बानी न ज़बीहा पेश करेगा। 18 तब इतनी बात में खुदावन्द तेरे खादिम को मु’आफ करे, कि जब मेरा आका इबादत करने को रिम्मोन के बुखाराने में जाएँ और वह मेरे हाथ का सहारा ले, और मैं रिम्मोन के बुखाराने में सिंचे मैं जाऊँ; तो जब मैं रिम्मोन के बुखाराने में सिंचे मैं हो जाऊँ, तो खुदावन्द इस बात में तेरे खादिम को मु’आफ करे।” 19 उसने उससे कहा, “सलामी जा।” तब वह उससे स्वतंत्र होकर थोड़ी दूर निकल गया। 20 लेकिन उस नवी इलीशा के खादिम जेहाज़ी ने सोचा, “मेरे आका ने अरामी ना’मान को यूँ ही जाने दिया कि जो कुछ वह लाया था उससे न लिया; इसलिए खुदावन्द की हयात की कसम, मैं उसके पीछे दौड़ा जाऊँगा और उससे कुछ न कुछ लूँगा।” 21 तब जेहाज़ी ना’मान के पीछे चला। जब ना’मान ने देखा, कि कोई उसके पीछे दौड़ा आ रहा है, तो वह उससे मिलने को रथ पर से उतरा और कहा, “खैर तो है?” 22 उसने कहा, “सब खैर है! मेरे मालिक ने मुझे ये कहने को भेजा है कि देख, अभियाजादों में से अभी दो जवान इफ्राईम के पहाड़ी मुल्क से मेरे पास आ गए हैं, इसलिए ज़रा एक किन्तार चाँदी, और दो जोड़े कपड़े उनके लिए दे दो।” 23 ना’मान ने कहा, “रुक्षी से दो किन्तार ले।” और वह उससे बजिद हुआ, और उसने दो किन्तार चाँदी दो थैलियों में बाँधी और दो जोड़े कपड़ों के साथ उनको अपने दो नौकरों पर लादा, और वह उनको लेकर

उसके आगे — आगे चले। 24 और उसने टीले पर पहुँचकर उनके हाथ से उनको ले लिया और घर में रख दिया, और उन मर्दों को सख्त किया, तब वह चले गए। 25 लेकिन खुद अन्दर जाकर अपने आका के सामने खड़ा हो गया। इलीशा’ ने उससे कहा, “जेहाज़ी, तू कहाँ से आ रहा है?” उसने कहा, “तेरा खादिम तो कहीं नहीं गया था।” 26 उसने उससे कहा, क्या मेरा दिल उस वक्त तेरे साथ न था, जब वह शख्स तुझ से मिलने को अपने रथ पर से लौटा? क्या स्थेये लेने, और पोशाक, और ज़ेरून के बांगों और तकिस्तानों और भेड़ों और गुलामों, और लौड़ियों के लेने का ये वक्त है? 27 इसलिए ना’मान का कोढ़ तुझे और तेरी नस्ल को हमेशा लगा रहेगा। इसलिए वह बर्फ की तरह सफेद कोढ़ी होकर उसके सामने से चला गया।

6 और अभियाजादों ने इलीशा’ से कहा, “देख, ये जगह जहाँ हम तेरे सामने रहते हैं, हमारे लिए छोटी है, 2 इसलिए हम को ज़रा यरदन को जाने दे कि हम वहाँ से एक एक कड़ी लेकर आँँ और अपने रहने के लिए एक घर बना सकें।” उसने जबाब दिया, “जाओ।” 3 तब एक ने कहा, “मेहबानी से अपने खादिमों के साथ चल।” उसने कहा, “मैं चलूँगा।” 4 चुनाँचे वह उनके साथ गया, और जब वह यरदन पर पहुँचे तो लकड़ी काटने लगे। 5 लेकिन एक की कुलहाड़ी का लोहा, जब वह कड़ी काट रहा था, पानी में गिर गया। तब वह चिल्ता उठा, और कहने लगा, “हाय, मेरे मालिक! यह तो माँगा हुआ था।” 6 नवी ने कहा, “वह किस जगह गिरा?” उसने उसे वह जगह दिखाई। तब उसने एक छड़ी काट कर उस जगह डाल दी, और लोहा तैरने लगा। 7 फिर उसने कहा, “आपने लिए उठा ले।” तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया। 8 अराम का बादशाह, इसाईल के बादशाह से लड़ रहा था; और उसने अपने खादिमों से मशवरा किया कि “मैं इन जगह पर डेरा डालूँगा।” 9 इसलिए मर्द — ए — खुदा ने इसाईल के बादशाह से कहला भेजा कि “खबरदार तू उन जगहों से मत गुजरना, क्यूँकि वहाँ अरामी आने को है।” 10 और इसाईल के बादशाह ने उस जगह, जिसकी खबर मर्द — ए — खुदा ने दी थी और उसको आगाह कर दिया था, अदामी भेजे और वहाँ से अपने को बचाया, और यह सिर्फ़ एक या दो बार ही नहीं। 11 इस बात की वजह से अराम के बादशाह का दिल निहायत बेचैन हुआ; और उसने अपने खादिमों को बुलाकर उनसे कहा, “क्या तुम मुझे नहीं बताओगे कि हम में से कौन इसाईल के बादशाह की तरफ़ है?” 12 तब उसके खादिमों में से एक ने कहा, “नहीं, ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह! बल्कि इलीशा”, जो इसाईल में नवी है, तेरी उन बातों को जो तू अपनी अरामगाह में कहता है, इसाईल के बादशाह को बता देता है।” 13 उसने कहा, “जाकर देखो वह कहाँ है, ताकि मैं उसे पकड़वाऊँ।” और उसे यह बताया गया, “वह दूरै में है।” 14 तब उसने वहाँ घोड़ों और रथों, और एक बड़े लश्कर को रखाना किया; तब उन्होंने रातों रात आकर उस शहर को धेर लिया। 15 जब उस मर्द — ए — खुदा का खादिम सबह को उठ कर बाहर निकला तो देखा, कि एक लश्कर घोड़ों के साथ और रथों के शहर के चारों तरफ़ है। तब उस खादिम ने जाकर उससे कहा, “हाय! ऐ मेरे मालिक, हम क्या करें?” 16 उसने जबाब दिया, “खौफ़ न कर, क्यूँकि हमारे साथ वाले उनके साथ वालों से ज्यादा हैं।” 17 और इलीशा’ ने दुआ की और कहा, “ऐ खुदावन्द, उसकी आँखें खोल दे ताकि वह देख सके।” तब खुदावन्द ने उस जबान की आँखें खोल दी, और उसने जो निगाह की तो देखा कि इलीशा’ के चारों तरफ़ का पहाड़ आग के घोड़ों और रथों से भरा है। 18 और जब वह उसकी तरफ़ अपने लगे, तो इलीशा’ ने खुदावन्द से दुआ की और कहा, “मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, इन लोगों को अन्धा कर दै।” इसलिए उसने जैसा इलीशा’ ने कहा था, उनको अन्धा कर दिया। 19 फिर इलीशा’ ने उससे कहा, “यह वह रास्ता नहीं और न ये वह शहर है, तुम मेरे

पीछे चले आओ, और मैं तुम को उस शब्द के पास पहुँचा टूँगा जिसकी तुम तलाश करते हो।” और वह उनको सामरिया को ले गया। 20 जब वह सामरिया में पहुँचे तो इलीशा¹ ने कहा, “ऐ खुदावन्द, इन लोगों की आँखें खोल दे, ताकि वह देख सके।” तब खुदावन्द ने उनकी आँखें खोल दी, उन्होंने जो निगाह की, तो क्या देखा कि सामरिया के अन्दर है। 21 और इसाईल के बादशाह ने उनको देखकर इलीशा² से कहा, “ऐ मेरे बाप, क्या मैं उनको मार लूँ? मैं उनको मार लूँ।” 22 उसने जबाब दिया, “तू उनको न मार। क्या तू उनको मार दिया करता है, जिनको तू अपनी तत्वावार और कमान से कैद कर लेता है? तू उनके अगे रोटी और पानी रख, ताकि वह खाएँ — पिएँ और अपने मालिक के पास जाएँ।” 23 तब उसने उनके लिए बहुत सा खाना तैयार किया; और जब वह खा पी चुके तो उसने उनको स्वस्त किया, और वह अपने मालिक के पास चले गए। और अराम के पिरोहे इसाईल के मुल्क में फिर न आए। 24 इसके बाद ऐसा हआ कि बिनहद, अराम, का बादशाह अपनी सब फौज इकट्ठी करके चढ़ आया और सामरिया का घेरा कर लिया। 25 और सामरिया में बड़ा काल था, और वह उसे घेर रहे, यहाँ तक कि गधे का सिर चाँदी के अस्सी सिक्कों में और कबूतर की बींक का एक चौथाई पैमाना³ चाँदी के पाँच सिक्कों में बिकने लगा।

26 जब इसाईल का बादशाह दीवार पर जा रहा था, तो एक ‘औरत ने उसकी दहाई दी और कहा, “ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह, मदद कर।” 27 उसने कहा, “अगर खुदावन्द ही तेरी मदद न करे, तो मैं कहाँ से तेरी मदद करूँ? क्या खलिहान से, या अंगूष्ठ के कोलह से?” 28 फिर बादशाह ने उससे कहा, “तुझे क्या हुआ?” उसने जबाब दिया, इस ‘औरत ने मुझसे कहा, “अपना बेटा दे दे, ताकि हम आज के दिन उसे खाएँ; और मेरा बेटा जो है, फिर उसे हम कल खाएँ।” 29 तब मेरे बेटे को हम ने पकाया और उसे खा लिया, और दूसरे दिन मैंने उससे कहा, ‘अपना बेटा ला, ताकि हम उसे खाएँ; “लेकिन उसने अपना बेटा छिपा दिया है।” 30 बादशाह ने उस ‘औरत की बातें सुनकर अपने कपड़े फाड़े; उस बक्त वह दीवार पर चला जाता था, और लोगों ने देखा कि अन्दर उसके तन पर टाट है। 31 और उसने कहा, “अगर आज साफत के बेटे इलीशा⁴ का सिर उसके तन पर रह जाए, तो खुदावन्द मुझसे ऐसा बल्कि इससे ज्यादा करे।” 32 लेकिन इलीशा⁵ अपने घर में बैठा रहा, और बूजुर्ग लोग उसके साथ बैठे थे, और बादशाह ने अपने सामने से एक शब्द को भेजा, पर इससे पहले कि वह कासिद उसके पास आए, उसने बूजुर्गों से कहा, “तुम देखते हो कि उस कातिल के बेटे ने मेरा सिर उड़ा देने को एक आदमी भेजा है? इसलिए देखो, जब बह कासिद आए, तो दिवाज्ञा बन्द कर लेना और मजबूती से दरवाजे को उसके सामने पकड़े रहना। क्या उसके पीछे — पीछे उसके मालिक के पैरों की आहट नहीं?” 33 और वह उसे अभी बातें कर ही रहा था कि देखो, कि वह कासिद उसके पास आ पहुँचा, और उसने कहा, “देखो, ये बला खुदावन्द की तरफ से है, अब आगे मैं खुदावन्द का रास्ता क्यूँ देखूँ?”

7 तब इलीशा⁶ ने कहा, तुम खुदावन्द की बात सनो, खुदावन्द यूँ फरमाता है कि “कल इसी बक्त के करीब सामरिया के फाटक पर एक मिस्काल में एक पैमाना⁷ मैदा, और एक ही मिस्काल में दो पैमाना जौ बिकेगा।” 2 तब उस सरदार ने जिसके हाथ पर बादशाह भरोसा करता था, मर्द — ए — खुदा को जबाब दिया, देख, अगर खुदावन्द आसमान में खिड़कियाँ भी लगा दे, तोभी क्या ये बात हो सकती है उसने कहा, “सुन, तू इसे अपनी आँखों से देखेगा, लेकिन तू उसमें से खाने न पाएगा।” 3 और उस जगह जहाँ से फाटक में दाखिल होते थे, चार कोढ़ी थे: उन्होंने एक दूसरे से कहा, हम यहाँ बैठे — बैठे क्यूँ मरें? 4 अगर हम कहें, “शहर के अन्दर जाएँ, तो शहर में कहत है और हम वहाँ मर जाएँ; और अगर यहीं बैठे रहें, तो भी मरेंगे। इसलिए आओ,

हम अरामी लश्कर में जाएँ, अगर वह हमको जीता छोड़ें तो हम जीते रहेंगे; और अगर वह हम को मार डालें, तो हम को मरना ही तो है।” 5 फिर वह शाम के बक्त उठ कर अरामियों के लश्करगाह को गए, और जब वह अरामियों के लश्करगाह की बाहर की हद पर पहुँचे तो देखा, कि वहाँ कोई आदमी नहीं है। 6 क्यूँकि खुदावन्द ने रथों की आवाज और घोड़ों की आवाज बल्कि एक बड़ी फौज की आवाज अरामियों के लश्कर को सुनवाई, इसलिए वह आस में कहने लगे, “देखो, इसाईल के बादशाह ने हिन्दियों के बादशाहों और मिस्यियों के बादशाहों को हमारे गिलाफ मजदूरी पर बुलाया है, ताकि वह हम पर चढ़ आएँ।” 7 इसलिए वह उठे, और शाम को भग निकले; और अपने खेडे, और अपने घोड़े, और अपने गधे, बल्कि सारी लश्करगाह जैसी की तैसी छोड़ दी और अपनी जान लेकर भगे। 8 चुनाँचे जब ये कोढ़ी लश्करगाह की बाहर की हद पर पहुँचे, तो एक खेडे में जाकर उन्होंने खाया पिया, और चाँदी और सोना और लिखास वहाँ से ले जाकर छिपा दिया, और लौट कर आए और दूसरे खेडे में दाखिल होकर वहाँ से भी ले गए और जाकर छिपा दिया। 9 फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, “हम अच्छा नहीं करते; आज का दिन खुदावन्द की दिन है, और हम खामोश हैं; अगर हम सुबह की रोशनी तक ठहरे रहे तो सजा पाएँगे। अब आओ, हम जाकर बादशाह के घराने को खबर दें।” 10 फिर उन्होंने आकर शहर के दरबान को बुलाया और उनको बताया, “हम अरामियों की लश्करगाह में गए, और देखो, वहाँ न आदमी की आवाज, सिर्फ घोड़े बन्धे हुए, और गधे बन्धे हुए, और खेडे जैसे थे बैसे ही हैं।” 11 और दरबानों ने पुकार कर बादशाह के महल में खबर दी। 12 तब बादशाह रात ही को उठा, और अपने खादियों से कहा कि “मैं तुम को बताता हूँ, अरामियों ने हम से क्या किया है? वह खबर जानते हैं कि हम भ्रूक हैं; इसलिए वह मैदान में छिपें के लिए लश्करगाह से निकल गए हैं, और सोचा है कि जब हम शहर से निकलें तो वह हम को ज़िन्दा पकड़ लें, और शहर में दाखिल हो जाएँ।” 13 और उसके खादियों में से एक ने जबाब दिया, “ज़रा कोई उन बचे हाएँ घोड़ों में से जो शहर में बाकी हैं पाँच घोड़े ले वह तो इसाईल की सारी ज़मा⁸ अत की तरह हैं जो बाकी हैं गई हैं, बल्कि वह उस सारी इसाईली ज़मा⁹ अत की तरह हैं जो फना हो गईं, और हम उनको भेज कर देखें।” 14 तब उन्होंने दो रथ घोड़ों के साथ लिए, और बादशाह ने उनको अरामियों के लश्कर के पीछे भेजा कि जाकर देखें। 15 और वह उनके पीछे यदरदन तक चले गए; और देखो, सारा रास्ता कपड़ों और बर्तनों से भरा पड़ा था जिनको अरामियों ने जल्दी में फेंक दिया था। तब कासिदों ने लौट कर बादशाह को खबर दी। 16 तब लोगों ने निकल कर अरामियों की लश्करगाह को लूटा। फिर एक मिस्काल में एक पैमाना मैदा, और एक ही मिस्काल में दो पैमाने जौ, खुदावन्द के कलाम के मुताबिक बिका। 17 और बादशाह ने उसी सरदार को जिसके हाथ पर भरोसा करता था, फाटक पर मुकर्रर किया; और वह फाटक में लोगों के पैरों के नीचे दब कर मर गया, जैसा नवी ने फरमाया था, जिसने ये उस बक्त कहा था जब बादशाह उसके पास आया था। 18 और नवी ने जैसा बादशाह से कहा था, कल इसी बक्त के करीब सामरिया के फाटक पर एक मिस्काल में एक पैमाना मैदा सामरिया के फाटक पर मिलेगा, वैसा ही हुआ; 19 और उस सरदार ने नवी को जबाब दिया था, “देख, अगर खुदावन्द आसमान में खिड़कियाँ भी लगा दे, तो भी क्या ये बात हो सकती है?” और इसने कहा था, “तू अपनी आँखों से देखेगा, पर उसमें से खाने न पाएगा।” 20 इसलिए उसके साथ ठीक ऐसा ही हुआ, क्यूँकि वह फाटक में लोगों के पैरों के नीचे दबकर मर गया।

8 और इलीशा' ने उस 'औरत से जिसके बेटे को उसने जिन्दा किया था,

ये कहा था, "उठ और अपने खानदान के साथ जा, और जहाँ कहीं तू रह सके वही रह; क्यौंकि खुदावन्द ने काल का हूक्म दिया है; और वह मूलक में सात बरस तक रहेगा भी।" 2 तब उस 'औरत ने उठ कर नवी के कहने के मुताबिक किया, और अपने खानदान के साथ जाकर फिलिस्तियों के मूलक में सात बरस तक रही। 3 साथें साल के आखिर में ऐसा हुआ कि ये 'औरत फिलिस्तियों के मूलक से लौटी, और बादशाह के पास अपने घर और अपनी ज़मीन के लिए फरियाद करने लगी। 4 उस वक्त बादशाह नवी के खादिम जेहाजी से बांटे कर रहा और ये कह रहा था, "जरा वह सब बड़े बड़े काम जो इलीशा' ने किए मुझे बता।" 5 और ऐसा हुआ कि जब वह बादशाह को बता ही रहा था, कि उसने एक मुर्दे को जिन्दा किया, तो वही 'औरत जिसके बेटे को उसने जिन्दा किया था, आकर बादशाह के अपने घर और अपनी ज़मीन के लिए फरियाद करने लगी। 1 तब जेहाजी बोल उठा, "ऐ मेरे मालिक, ऐ बादशाह! यही वह 'औरत है, यही उसका बेटा है जिसे इलीशा' ने जिन्दा किया था।" 6 जब बादशाह ने उस 'औरत से पूछा, तो उसने उसे सब कुछ बताया। तब बादशाह ने एक ख्वाजासरा को उसके लिए मुश्किल कर दिया और फरमाया, सब कुछ जो इसका था, और जब से इसने उस मूलक को छोड़ा, उस वक्त से अब तक की खेत की सारी पैदावार इसको दे दी। 7 और इलीशा' दमिशक में आया, और अराम का बादशाह बिनहदूब बीमार था; और उसकी खबर हई, वह नवी इधर आया है, 8 और बादशाह ने हजाएल से कहा, "अपने हाथ में तोहफा लेकर नवी के इस्तकबाल को जा, और उसके जरिए खुदावन्द से दरियापत कर, मैं इस बीमारी से शिफा पाऊँगा या नहीं?" 9 तब हजाएल उससे मिलने को चला और उसने दमिशक की हर उम्दा चीज़ में से चालीस ऊँटों पर तोहफे लदवाकर अपने साथ लिया, और आकर उसके सामने खड़ा हुआ और कहने लगा, तैरे बेटे बिनहदूब अराम के बादशाह ने मुझ को तैरे पास ये पूछने को भेजा है, मैं इस बीमारी से शिफा पाऊँगा या नहीं?" 10 इलीशा' ने उससे कह कह तू जस्तर शिफा पाएगा तोभी खुदावन्द ने मुझ को यह बताया है कि वह यकीनन मर जाएगा।" 11 और वह उसकी तरफ नज़र लगा कर देखता रहा, यहाँ तक कि वह शर्मी गया; फिर नवी रोने लगा। 12 और हजाएल ने कहा, "मेरे मालिक रोता क्यूँ है?" उसने जबाब दिया, इसलिए कि मैं उस गुनाह से जो तब बनी — इस्माईल से करेगा, आगाह हैं; तू उनके किलों में आग लगाएगा, और उनके जवानों को हलाक करेगा, और उनके बच्चों को पटख — पटख कर टुकड़े — टुकड़े करेगा, और उनकी हामिला 'औरतों को चीर डालेगा। 13 हजाएल ने कहा, "तेरे खादिम की जो कुते के बराबर है, हक्कीकत ही क्या है, जो वह ऐसी बड़ी बात करे?" इलीशा' ने जबाब दिया, खुदावन्द ने मुझे बताया है कि 'तू अराम का बादशाह होगा।' 14 फिर वह इलीशा' से सल्तनत हुआ, और अपने मालिक के पास आया, उसने पूछा, "इलीशा' ने तुझ से क्या कहा?" उसने जबाब दिया, "उसने मुझे बताया कि तू जस्तर शिफा पाएगा।" 15 और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उसने बाला पोश को लिया, और उसे पानी में भिगोकर उसके मूँह पर तान दिया, ऐसा कि वह मर गया। और हजाएल उसकी जगह सल्तनत करने लगा। 16 और इस्माईल का बादशाह अखींअब के बेटे यूराम के पाँचवें साल, जब यहसफत यहदाह के बादशाह का बादशाह था, तो यहदाह के बादशाह यहसफत का बेटा यूराम सल्तनत करने लगा। 17 जब वह सल्तनत करने लगा तो बतीस साल का था, और उसने येस्सलेम में आठ साल बादशाही की। 18 उसने भी अखींअब के घराने की तरह इस्माईल के बादशाहों के रास्ते की पैरवी की, क्यौंकि अखींअब की बेटी उसकी बीबी थी और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया। 19 तोभी खुदावन्द ने अपने बन्दे दाऊद की खातिर न चाहा कि

यहदाह को हलाक करे। क्यौंकि उसने उससे बांदा किया था कि वह उसे उसकी नस्त के बास्ते हमेशा के लिए एक चराग देगा। 20 उसी के दिनों में अदोम यहदाह की इता'अत से फिर गया, और उन्होंने अपने लिए एक बादशाह बना लिया। 21 तब यूराम' सईं को गया और उसके सब रथ उसके साथ थे, और उसने रात को उठ कर अदोमियों को जो उसे धौरे हुए थे, और रथों के सरदारों को मारा, और लोग अपने डेरों को भाग गए। 22 ऐसे अदोम यहदाह की इता'अत से आज तक फिरा है। और उसी बक्त लिबानाह भी फिर गया। 23 यूराम के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या वह यहदाह के बादशाहों की तबाहीख की किताब में लिखे नहीं? 24 और यूराम अपने बाप दादा के साथ दफन हुआ, और उसका बेटा अखीजियाह उसकी जगह बादशाह हुआ। 25 और इस्माईल के बादशाह अखींअब के बेटे यूराम के बारहवें साल से यहदाह का बादशाह यहराम का बेटा अखीजियाह सल्तनत करने लगा। 26 अखीजियाह बाईस साल का था, जब वह सल्तनत करने लगा; और उसने येस्सलेम में एक साल सल्तनत की। उसकी माँ का नाम 'अतलियाह' था, जो इस्माईल के बादशाह उपरी की बेटी थी। 27 और वह भी अखींअब के घराने के रास्ते पर चला, और उसने अखींअब के घराने की तरह खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, क्यौंकि वह अखींअब के घराने का दामाद था। 28 और वह अखींअब के बेटे यूराम के साथ रामात जिल'आद में अराम के बादशाह हजाएल से लड़ने को गया, और अरामियों ने यूराम को ज़खी किया। 29 इसलिए यूराम बादशाह लौट गया ताकि वह यजर'एल में उन ज़ख्मों का इलाज कराए, जो अराम के बादशाह हजाएल से लड़ते बक्त रामा में अरामियों के हाथ से लगे थे। और यहदाह का बादशाह यहराम का बेटा अखीजियाह अखींअब के बेटे यूराम को देखने के लिए यजरएल में आया क्यौंकि वह बीमार था।

9 और इलीशा' नबी ने अभियाजादों में से एक को बुलाकर उससे कहा,

अपनी कमर बाँध, और तेल की ये कुपी अपने हाथ में ले, और रामात जिल'आद को जा। 2 और जब तू वहाँ पहुँचे तो याह — बिन — यहसफत बिन — निमसी को पूछ, और अन्दर जाकर उसे उसके भाइयों में से उठा और अन्दर की कोठरी में ले जा। 3 फिर तेल की यह कुपी लेकर उसके सिर पर डाल और कह, "खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके इस्माईल का बादशाह बनाया है," फिर तू दरबाजा खोल कर भागना और ठहरना मत।" 4 तब वह जवान, यानी वह जवान जो नवी था, रामात जिल'आद को गया। 5 जब वह पहुँचा तो लश्कर के सरदार बैठे हुए थे उसने कहा, "ऐ सरदार, मेरे पास तैरे लिए एक पैगाम है।" याह ने कहा, "हम सभों में से किसके लिए?" उसने कहा, "ऐ सरदार, तैरे लिए।" 6 तब वह उठ कर उस घर में गया, तब उसने उसके सिर पर वह तेल डाला, और उससे कहा, "खुदावन्द, इस्माईल का खुदा यूँ फरमाता है, कि मैंने तुझे मसह करके खुदावन्द की कोम यानी इस्माईल का बादशाह बनाया है। 7 इसलिए तू अपने मालिक अखींअब के घराने को भार डालना, ताकि मैं अपने बन्दों, नवीयों के ख़ुन का और खुदावन्द के सब बन्दों के ख़ुन का इन्तकाम इंजिविल के हाथ से लौं। 8 क्यौंकि अखींअब का सारा घराना हलाक होगा, और मैं अखींअब की नस्त के हर एक लड़के को, और उसको जो इस्माईल में बन्द है और उसको जो आजाद छूटा हुआ है, काट डालूँ। 9 और मैं अखींअब के घर को नवात के बेटे यूराम के घर और अधियाह के बेटे बाशा के घर की तरह कर दूँगा। 10 और इंजिविल को यजर'एल के इलाके में कुते खाएँगे, वहाँ कोई न होगा जो उसे दफन करे।" फिर वह दरबाजा खोल कर भागा। 11 तब याह अपने मालिक के खादिमों के पास बाहर आया; और एक ने उससे पूछा, "सब खैर तैरे पास क्यूँ

आया था?” उसने उनसे कहा, “तम उस शब्दस से और उसके पैगाम से बाकिफ हो।” 12 उन्होंने कहा, “यह झाठ है; अब हम को हाल बता।” उसने कहा, “उसने मुझ से इस तरह की बात की और कहा, ‘खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि “मैंने तुझे मसह करके इस्पाईल का बादशाह बनाया है।’” 13 तब उन्होंने जल्दी की ओर हर एक ने अपनी पोशाक लेकर उसके नीचे सिंहियों की चोटी पर बिछाई, और तुहीं फूंककर कहने लगे, “याह बादशाह है।” 14 तब याह — बिन — यहसफत — बिन — निमसी ने यूराम के खिलाफ साजिश की। और यूराम सारे इस्पाईल के साथ अराम के बादशाह हजाएल की वजह से रामात जिल्लाअद की हिमायत कर रहा था; 15 लेकिन यूराम बादशाह लौट गया था, ताकि यजराएल में उन ज़ख्मों का इलाज कराए जो अराम के बादशाह हजाएल से लड़ते बत्त अरामियों के हाथ से लगे थे। तब याह ने कहा, “अगर तुम्हारी मर्जी यही है, तो कोई यजराएल जाकर खबर करने के लिए इस शहर से भागने और निकलने न पाए।” 16 और याह रथ पर सवार होकर यजराएल को गया, क्यूँकि यूराम वर्ती पड़ा हुआ था। और यहदाह का बादशाह अखजियाह यूराम की मुलाकात को आया हुआ था। 17 यजराएल में निगहबान बुर्ज पर खड़ा था, और उनने जो याह के लशकर को आते हुए देखा, तो कहा, “मुझे एक लशकर दिखाई देता है।” यूराम ने कहा, एक सवार को लेकर उनसे मिलने को भेज, वह ये पूछे, “खैर है?” 18 चुरौंचे एक शब्दस थोड़े पर उसने मिलने को गया और कहा, बादशाह पूछता है, ‘खैर है?’ “याह ने कहा, तुझ को खैर से क्या काम? मैं पीछे हो ले।” फिर निगहबान ने कहा, “कासिद उनके पास पहुँच तो गया, लेकिन वापस नहीं आता।” 19 तब उसने दूसरे को थोड़े पर रवाना किया, जिसने उनके पास जाकर उनसे कहा, बादशाह यूँ कहता है, ‘खैर है?’ “याह ने जवाब दिया, तुझे खैर से क्या काम? मैं पीछे हो ले।” 20 फिर निगहबान ने कहा, “वह भी उनके पास पहुँच तो गया, लेकिन वापस नहीं आता। और रथ का हाँकना ऐसा है जैसे निमसी के बेटे याह का हाँकना होता है, क्यूँकि वही सुस्ती से हाँकता है।” 21 तब यूराम ने फरमाया, “जोत लो।” तब उन्होंने उसके रथ को जोत लिया। तब इस्पाईल का बादशाह यूराम और यहदाह का बादशाह अखजियाह अपने — अपने रथ पर निकले और याह से मिलने को गए, और यजराएली नबोत की मिल्कियत में उससे दो चार हुए। 22 यूराम ने याह को देखकर कहा, “ऐ याह, खैर है?” उसने जवाब दिया, “जब तक तेरी माँ इज़बिल की जिनाकारियाँ और उसकी जादूगरियाँ इस कदर हैं, तब तक कैसी खैर?” 23 तब यूराम ने बाग मोड़ी और भागा, और अखजियाह से कहा, “ऐ अखजियाह यह धोखा है।” 24 तब याह ने अपने सारे जार से कमान खेंची, और यूराम के दोनों शानों के बीच ऐसा मारा के तीर उसके दिल से पार हो गया और वह अपने रथ में गिरा। 25 तब याह ने अपने लशकर के सरदार बिदकर से कहा, उसे लेकर यजराएली नबोत की मिल्कियत के खेत में डाल दें; क्यूँकि याद कर कि जब मैं और तु उसके बाप अखीअब के पीछे पीछे सवार होकर चल रहे थे, तो खुदावन्द ने ये फतवा उस पर दिया था, 26 “यकीनन मैंने कल नबोत के खुन और उसके बेटों के खुन को देखा है, खुदावन्द फरमाता है; और मैं इसी खेत में तुझे बदला दूँगा, खुदावन्द फरमाता है।” इसलिए जैसा खुदावन्द ने फरमाया है, उसे लेकर उसी जगह डाल दे।” 27 लेकिन जब यहदाह के बादशाह अखजियाह ने ये देखा, तो वह बाग की बारह दरी के गराते से निकल भागा। और याह ने उसका पीछा किया और कहा, “उसे भी रथ ही में मार दो।” चुरौंचे उन्होंने उसे जर की चढ़ाई पर, जो इबली आम के करीब है मारा; और वो मजिही की भागा, और वही मर गया। 28 और उसके खादिम उसको एक रथ में येस्जलेम को ले गए, और उसे उसकी कब्र में डाकूट के शहर में उसके बाप — दादा के साथ दफन किया। 29 और अखीअब के बेटे यूराम

के ग्यारहवें साल अखजियाह यहदाह का बादशाह हुआ। 30 जब याह यजराएल में आया, तो इज़बिल ने सुना और अपनी आँखों में सरमा लगा, और अपना सिर संवार खिड़की से झाँकने लगी। 31 और जैसे ही याह फाटक में दाखिल हुआ, वह कहने लगी, “ऐ ज़िमरी। अपने आका के कातिल, खैर तो है?” 32 पर उसने खिड़की की तरफ मुँह उठा कर कहा, “मेरी तरफ कौन है, कौन?” तब दो तीन ख्वाजासराओं ने इसकी तरफ देखा। 33 इसने कहा, “उसे नीचे गिरा दो।” तब उन्होंने उसे नीचे गिरा दिया, और उसके खून के छीटे दीवार पर और घोड़ों पर पड़ी, और इसने उसे पैरों तल रोटा। 34 जब ये अन्दर आया, तो इसने खाया पिया; फिर कहने लगा, “जाओ, उस लांनती ‘ओरत को देखो, और उसे दफन करो क्यूँकि वह शहजादी है।” 35 और वह उसे दफन करने गए, पर सिर और उसके पैर और हथेलियों के सिवा उसका और कुछ उनको न मिला। 36 इसलिए वह लौट आए और उसे ये बताया, इसने कहा, ये खुदावन्द का बही सुखन है, जो उसने अपने बने बने एलियाह तिशबी के मारिफत फरमाया था, ‘यजराएल के इलाके में कुत्ते इज़बिल का गोशत खाएँगे; 37 और इज़बिल की लाश यजराएल के इलाके में खेत में खाद की तरह पड़ी रहेगी, यहाँ तक कि कोई न कहेगा कि “यह इज़बिल है।”

10 सामरिया में अखीअब के समर बेटे थे। इसलिए याह ने सामरिया

में यजराएल के अमीरों, याँनी बुज्जुर्गों के पास और उनके पास जो अखीअब के बेटों के पालने वाले थे, खत लिख भेजे, 2 कि “जिस हाल में तुम्हारे मालिक के बेटे तुम्हारे साथ हैं, और तुम्हारे पास रथ और घोड़े और फसीलदार शहर भी और हथियार भी हैं; इसलिए इस खत के पहुँचते ही, 3 तुम अपने मालिक के बेटों में सबसे अच्छे और लायक को चुनकर उसे उसके बाप के तख्त पर बिठाओ, और अपने मालिक के घराने के लिए जंग करो। 4 लेकिन वह निहायत पेरेशान हुए और कहने लगे देखो दो बादशाह तो उसका मुकाबिला न कर सके; तो हम क्यूँकर कर सकेंगे?” 5 इसलिए महल के दीवान ने और शहर के हाकिम ने और बुज्जुर्गों ने भी, और लड़कों के पालने वालों ने याह को कहला भेजा, “हम सब तेरे खादिम हैं, और जो कुछ तु फरमाएणा वह सब हम करेंगे; हम किसी को बादशाह नहीं बनाएँगे, जो कुछ तेरी नजर में अच्छा है बही कर।” 6 तब उसने दूसरी बार एक खत उनको लिख भेजा, कि “अगर तुम मेरी तरफ हो और मेरी बात मानना चाहते हो, तो अपने मालिक के बेटों के सिर उतार कर कल यजराएल में इसी वक्त मेरे पास आ जाओ।” उस वक्त शाहजादे जो संतर आदमी थे, शहर के उन बड़े आदमियों के साथ थे जो उनके पालनेवाले थे। 7 इसलिए जब यह खत उनके पास आया, तो उन्होंने शाहजादों को लेकर उनको, याँनी उन संतर आदमियों को कल्तव दिया और उनके सिर टोकरों में रख कर उनको उसके पास यजराएल में भेज दिया। 8 तब एक कासिद ने आकर उसे खबर दी, “वह शाहजादे के सिर लाए हैं।” उसने कहा, “तुम तो गरस्त हो। देखो, मैंने तो अपने मालिक के खिलाफ बन्दिश बांधी और उसे मारा; पर इन सभों को किसने मारा? 10 इसलिए अब जान लो कि खुदावन्द के उस बात में से, जिसे खुदावन्द ने अखीअब के घराने के हक में फरमाया, कोई बात खाक में नहीं मिलीगी; क्यूँकि खुदावन्द ने जो कुछ अपने बने एलियाह के जरिए फरमाया था उसे पूरा किया।” 11 इसलिए याह ने उन सबको जो अखीअब के घराने से यजराएल में बच रहे थे, और उसके सब बड़े आदमियों और करीबी दोस्तों और काहिनों को कल्तव दिया, यहाँ तक कि उसने उसके किसी आदमी को बाकी न छोड़ा। 12 फिर वह उठ कर रवाना हुआ और सामरिया को चला। और रास्ते में गड़रियों

के बाल करतरने के घर तक पहुँचा ही था कि 13 याह को यहदाह के बादशाह अख्जियाह के भाई मिल गए; इसने पछा, “तुम कौन हो?” उन्होंने कहा, “हम अछजियाह के भाई हैं; और हम जाते हैं कि बादशाह के बेटों और मलिका के बेटों को सलाम करें।” 14 तब उसने कहा, कि “उनको जिन्दा पकड़ लो।” इसलिए उन्होंने उनको जिन्दा पकड़ लिया और उनको जो बयालीस आदमी थे बाल करतरने के घर के हौज पर कल्प किया; उसने उनमें से एक को भी न छोड़ा। 15 फिर जब वह वहाँ से स्वतंत्र हुआ, तो यहनादाब — बिन — रैकाब जो उसके इस्तकबाल को आ रहा था उसे मिला। तब उसने उसे सलाम किया और उससे कहा “क्या तेरा दिल ठीक है, जैसा मेरा दिल तेरे दिल के साथ है?” यहनादाब ने जबाब दिया कि है। इसलिए उसने कहा, “अगर ऐसा है, तो अपना हाथ मुझे दे।” तब उसने उसे अपना हाथ दिया; और उसने उसे रथ में अपने साथ बिठा लिया, 16 और कहा, “मेरे साथ चल, और मेरी गैरत को जो खुदावन्द के लिए है, देख।” तब उन्होंने उसे उसके साथ रथ पर सवार कराया, 17 और जब वह सामरिया में पहुँचा, तो अखींब के सब बाकी लोगों को, जो सामरिया में थे कल्प किया, यहाँ तक कि उसने, जैसा खुदावन्द ने एलियाह से कहा था, उसको नेस्त — ओ — नाबूद कर दिया। 18 फिर याह ने सब लोगों को जमा किया, और उनसे कहा, कि “अखींब के बाल की थोड़ी इबादत की, याह उसकी बहुत इबादत करेगा।” 19 इसलिए अब तम बाल के सब नवियों और उसके सब पूजने वालों और पुजारियों को मैं पास बुला लाओ; उनमें से कोई गैर हाजिर न रहे, कर्यैकी मुझे बाल के लिए बड़ी कुर्बानी करना है। इसलिए जो कोई गैर हाजिर रहे, वह जिन्दा न बचेगा।” पर याह ने इस गरज से कि बाल के पूजनेवालों को हलाक कर दे, ये बहाना निकाला था। 20 और याह ने कहा, कि “बाल के लिए एक खास ‘इद का ‘एलान करो।’” तब उन्होंने उसका ‘एलान कर दिया। 21 और याह ने सरे इस्माइल में लोग भेजे, और बाल के सब पूजनेवाले आए, यहाँ तक कि एक शख्स भी ऐसा न था जो न आया हो। और वह बाल के बुतखाने में दाखिल हुए, और बाल का बुतखाना इस सिरे से उस सिरे तक भर गया। 22 फिर उसने उसको जो तोशाखाने पर मुकर्रा था हुक्म किया, कि “बाल के सब पूजनेवालों के लिए लिबास निकाल ला।” तब वह उनके लिए लिबास निकाल लाया। 23 तब याह और यहनादाब — बिन — रैकाब बाल के बुतखाने के अन्दर गए, और उसने बाल के पूजनेवालों से कहा, “बयान करो, और देख लो कि यहाँ तुम्हारे साथ खुदावन्द के खादिमों में से कोई न हो, सिर्फ बाल ही के पूजनेवाले हों।” 24 और वह जबीह और सोखती कुर्बानीयाँ पेश करने को अन्दर गए। और याह ने बाहर अस्सी जवान मुकर्रर कर दिए और कहा, कि “अगर कोई उन लोगों में से जिनको मैं तुम्हारे हाथ में कर दूँ निकल भागे, तो छोड़ने वाले की जान उसकी जान के बदले जाएगी।” 25 जब वह सोखती कुर्बानी अदा कर चुका, तो याह ने पहरेवालों और सरदारों से कहा, कि “धूस जाओ और उनको कल्प करो, एक भी निकलने न पाए।” 26 चुनाँचे उन्होंने उनको हलाक किया, और पहरेवालों और सरदारों ने उनको बाहर फेंक दिया और बाल के बुतखाने के शहर को गए। 27 और उन्होंने बाल के बुतखाने की कडियों को बाहर निकाल कर उनको आग में जलाया। 28 इस तरह याह ने बाल को इस्माइल के बीच से हलाक कर दिया। 29 तो भी नबात के बेटे युब्र‘अम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्माइल से गुनाह कराया, याह बाज़ न आया; या नी उसने सोने के बछड़ों को मानने से जो बैतेल और दान में थे, दूरी इत्तियार न की। 30 और खुदावन्द ने याह से कहा, “चूँकि तू ने ये नेकी की है कि जो कछ मेरी नज़र में भला था उसे अंजाम दिया है, और अखींब के घराने से मेरी

मज़री के मुताबिक बर्ताव किया है; इसलिए तेरे बेटे चौथी नस्त तक इस्माइल के तख्त पर बैठेंगे।” 31 लेकिन याह ने खुदावन्द इस्माइल के खुदा की शरीरी अपने सारे दिल से चलने की फिर न की; वह युब्र‘अम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्माइल से गुनाह कराया, अलग न हुआ। 32 उन दिनों खुदावन्द इस्माइल को घटाने लगा, और हज़ाएल ने उनको इस्माइल की सब सरहदों में मारा, 33 यानी यदन से लेकर पूख की तरफ जिल‘अद के सारे मुल्क में, और ज़िलियों और स्वीनियों और मनस्सियों को, ‘अोरोइँसे जो वादी — ए — अरनन में है, यानी जिल‘अद और बसन को भी। 34 याह के बाकी काम और सब जो उसने किया, और उसकी सारी ताकत का बयान; इसलिए क्या वह सब इस्माइल के बादशाहों की तबारीख की किंतब में लिखा नहीं? 35 और याह अपने बाप — दादा के साथ मर गया, और उन्होंने उसे सामरिया में दफन किया, और उसका बेटा यह-आख़ज़ उसकी जगह बादशाह हुआ। 36 और वह उनीं ‘असे में जिसमें याह ने सामरिया में बनी इस्माइल पर सल्तनत की अठाइंस साल का था।

11 जब अख्जियाह की माँ ‘अतलियाह ने देखा कि उसका बेटा मर गया, तब उसने उठकर बादशाह की सारी नस्त को हलाक किया। 2 लेकिन यूराम बादशाह की बेटी यहस्बा ने जो अख्जियाह की बहन थी, अख्जियाह के बेटे यूरास को लिया, और उसे उन शाहजादों से जो कल्प हुए चुपके से जुदा किया; और उसे उसकी दावा और बिस्तरों के साथ बिस्तरों की कोठरी में कर दिया। और उन्होंने उसे ‘अतलियाह से छिपाए रखवा, वह मारा न गया। 3 वह उसके साथ खुदावन्द के घर में छ: साल तक छिपा रहा, और ‘अतलियाह मुल्क में सल्तनत करती रही। 4 सातवें साल में यहोयदा’ ने काम करने और पहरेवालों के सौ — सौ के सरदारों को बुता भेजा, और उनको खुदावन्द के घर में अपने पास लाकर उनसे ‘अहद — ओ — पैमान किया और खुदावन्द के घर में उनको कसम खिलाई और बादशाह के बेटे को उनको दिखाया। 5 और उसने उनको ये हुक्म दिया, कि “तुम ये काम करना: तुम जो सबत को यहाँ आते हो; इसलिए तुम में से एक तिहाई अदामी बादशाह के महल के पहरे पर रहें, 6 और एक तिहाई सूर नाम फाटक पर रहें, और एक तिहाई उस फाटक पर हों जो पहरेवालों के पीछे है, यूँ तुम महल की निगहबानी करना और लोगों को रोके रहना। 7 और तुहारे दो लश्कर, यानी जो सबत के दिन बाहर निकलते हैं, वह बादशाह के आसपास होकर खुदावन्द के घर की निगहबानी करें। 8 और उम अपने हथियार हाथ में लिए हुए बादशाह को चारों तरफ से घेरे रहना, और उनको कोई सफरों के अन्दर चला आए वह कल्प कर दिया जाए, और तुम बादशाह के बाहर जाते और अंदर आते बक्त उसके साथ साथ रहना।” 9 चुनाँचे सौ सौ के सरदारों ने, जैसा यहोयदा काहिन ने उनको हुक्म दिया था वैसे ही सब कुछ किया; और उनमें से हर एक ने अपने आदमियों को जिनकी सबत के दिन बाहर निकलने की बारी थी, उन लोगों के साथ जिनकी सबत के दिन बाहर निकलने की बारी थी लिया, और यहोयदा काहिन के पास आए। 10 और काहिन ने दाऊद बादशाह की बर्छियाँ और सिप्पें, जो खुदावन्द के घर में थीं सौ — सौ के सरदारों को दी। 11 और पहरेवाले अपने अपने हथियार हाथ में लिए हुए हैकल के दाहिने तरफ से लेकर बाएँ तरफ मज़बह और हैकल के बराबर — बराबर बादशाह के चारों तरफ खड़े हो गए। 12 फिर उसने शाहजादे को बाहर लाकर उस पर ताज रखवा, और शहादत नामा उसे दिया; और उन्होंने उसे बादशाह बनाया और उसे मसह किया, और उन्होंने तालियाँ बजाई और कहा “बादशाह सलामत रहे।” 13 जब ‘अतलियाह ने पहरेवालों और लोगों का शोर सुना, तो वह उन लोगों के पास खुदावन्द की हैकल में गई, 14 और देखा कि बादशाह दस्तूर के मुताबिक सुतन के करीब खड़ा है और उसके पास ही सरदार और नरसिंगे हैं, और सल्तनत के सब लोग खुश हैं और नरसिंगे फूंक रहे

हैं। तब 'अतलियाह' ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाई, "गढ़ है! गढ़!" 15 तब यहोयदा काहिन ने सौ — सौ के सरदारों को जो लश्कर के ऊपर थे ये हक्म दिया, कि "उसको सफों के बीच करके बाहर निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले उसको तलवार से कल्पन कर दो।" क्यूंकि काहिन ने कहा, "वह खुदावन्द के घर के अन्दर कल्पन न की जाए।" 16 तब उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया, और वह उस रास्ते से गई जिससे घोड़े बादशाह के महल में दाखिल होते थे, और वहीं कल्पन हुई। 17 और यहोयदा' ने खुदावन्द के, और बादशाह और लोगों के बीच एक 'अहंद बाँधा, ताकि वह खुदावन्द के लोग हों, और बादशाह और लोगों के बीच भी 'अहंद बाँधा। 18 और ममलकत के सब लोग बाल के बुतखाने में गए और उसे ढाया, और उन्होंने उसके मजबहों और बुतों को बिल्कुल चकनाचूर किया, और बाल के पुजारी मतान को मजबहों के सामने कल्पन किया। और काहिन ने खुदावन्द के घर के लिए सरदारों को मुकर्रर किया; 19 और उसने सौ — सौ के सरदारों और काम करने वालों और पहेवालों और सल्तनत के लोगों को लिया, और वह बादशाह को खुदावन्द के घर से उतार लाए और पहेवालों के फाटक के रास्ते से बादशाह के महल में आएं और उसने बादशाहों के तख्त पर जूलूस फरमाय। 20 और सल्तनत के सब लोग खुश हुए, और शहर में अमन हो गया। उन्होंने 'अतलियाह' को बादशाह के महल के पास तलवार से कल्पन किया। 21 और जब यूआस सल्तनत करने लगा तो सात साल का था।

12 और याह के सातवें साल यहआस' बादशाह हुआ और उसने येस्शलेम

में चार्टीस साल सल्तनत की। उसकी माँ का नाम जिबियाह था जो 'बैरसबा' की थी। 2 और यहआस ने इस तामा 'अर्भै में जब तक यहोयदा' काहिन उसकी तालीम — व — तरबियत करता रहा, वही काम किया जो खुदावन्द की नजर में ठीक था। 3 तोरी ऊँचे मकाम ढाए न गए, और लोग अभी ऊँचे मकामों पर कुर्बानी करते और खशबू जलाते थे। 4 और यहआस' ने काहिनों से कहा, कि "मुकद्दस की हुई चीजों की सब नकदी जो मौजूदा सिक्के में खुदावन्द के घर में पहुँचाई जाती है, यानी उन लोगों की नकदी जिनके लिए हर शख्स की हैसियत के मुताबिक अन्दाजा लगाया जाता है, और वह सब नकदी जो हर एक अपनी खुशी से खुदावन्द के घर में लाता है, 5 इन सबको काहिन अपने अपने जान पहचान से लेकर अपने पास रख लें; और हैकल की दरारों की जहाँ कहीं कोई दरार मिले मरम्मत करें।" 6 लेकिन यहआस के तेर्सवें साल तक काहिनों ने हैकल की दरारों की मरम्मत न की। 7 तब यहआस बादशाह ने यहोयदा' काहिन को और, और काहिनों को बुलाकर उनसे कहा, "तुम हैकल की दरारों की मरम्मत क्यूँ नहीं करते? इसलिए अब अपने अपने जान — पहचान से नकदी न लेना, बल्कि इसको हैकल की दरारों के लिए हवाले करो।" 8 इसलिए काहिनों ने मंजूर कर लिया कि न तो लोगों से नकदी लें और न हैकल की दरारों की मरम्मत करें। 9 तब यहोयदा' काहिन ने एक सन्दूक लेकर उसके ऊपर में एक सूराख किया, और उसे मजबह के पास रखवा, ऐसा कि खुदावन्द की हैकल में दाखिल होते बक्त वह दहनी तरफ पड़ता था; और जो काहिन दरवाजे के निगहबान थे, वह सब नकदी जो खुदावन्द के घर में लाइ जाती थी उसी में डाल देते थे। 10 जब वह देखते थे कि सन्दूक में बहुत नकदी हो गई है, तो बादशाह का मूर्ची और सरदार काहिन ऊपर आकर उसे थैलियों में बाँधते थे, और उस नकदी को जो खुदावन्द के घर में मिलती थी गिन लेते थे। 11 और वह उस नकदी को जो तोल ली जाती थी, उनके हाथों में सौप देते थे जो काम करनेवाले, यानी खुदावन्द की हैकल की देख भाल करते थे; और वह उसे बढ़दियों और मैमारों पर जो खुदावन्द के घर का काम बनाते थे। 12 और राजों और संग तराशों पर और खुदावन्द की

हैकल की दरारों की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशे हुए पत्थर खरीदने में, और उन सब चीजों पर जो हैकल की मरम्मत के लिए 'इस्टेमाल में आती थी खर्च करते थे। 13 लेकिन जो नकदी खुदावन्द की हैकल में लाई जाती थी, उससे खुदावन्द की हैकल के लिए चाँदी के प्याले, या गुलामीर, या देगचे, या नरसिंग, यानी सोने के बर्तन या चाँदी के बर्तन न बनाए गए, 14 क्यूँकि ये नकदी कारीगरों को दी जाती थी, और इसी से उन्होंने खुदावन्द की हैकल की मरम्मत की। 15 इसके अलावा जिन लोगों के हाथ वह इस नकदी को सुपुर्द करते थे, ताकि वह उसे कारीगरों को दें, उससे वह उसका कुछ हिसाब नहीं लेते थे इसलिए कि वह ईमानदारी से काम करते थे। 16 और जुर्म की कुर्बानी की नकदी और खता की कुर्बानी की नकदी, खुदावन्द की हैकल में नहीं लाई जाती थी, वह काहिनों की थी। 17 तब शाह — ए — अराम हजाएल ने चढाई की, और जात से लड़कर उसे ले लिया। फिर हजाएल ने येस्शलेम का स्वयं किया ताकि उस पर चढाई करे। 18 तब शाह — ए — यहदाह यहआस' ने सब मुकद्दस चीजों जिनको उसके बाप — दादा, यहसफत और यहराम और अखजियाह, यहदाह के बादशाहों ने नज़र किया था, और अपनी सब मुकद्दस चीजों को और सब सोना जो खुदावन्द की हैकल के खजानों और बादशाह के महल में मिला, लेकर शाहे अराम हजाएल को भेज दिया; तब वह येस्शलेम से हटा। 19 युआस के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखे नहीं? 20 उसके खादिमों ने उठकर साज़िश की और यूआस को मिल्लों के महल में जो सिल्ला की उत्तराई पर है, कल्पन किया; 21 यानी उसके खादिमों यस्कार — बिन — समा'अत, और यहजबद — बिन — शूमीर ने उसे मारा और वह मर गया, और उन्होंने उस उसके बाप — दादा के साथ दाऊद के शहर में दफन किया; और उसका बेटा अमसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

13 और शाह — ए — यहदाह अखजियाह के बेटे यूआस के तेर्सवें बरस

से याह का बेटा यहआखज चामरिया में इस्माईल पर सल्तनत करने लगा और उसने सब्रह बरस सल्तनत की। 2 और उसने खुदावन्द की नजर में गुनाह किया और नवात के बेटे युर्ब'आम के गुनाहों की फैरवी की, जिनसे उसने बनी — इस्माईल से गुनाह कराया, उसने उनसे किनारा न किया। 3 और खुदावन्द का गुस्सा बनी इस्माईल पर भड़का, और उसने उनको बार बार शाह — ए — अराम हजाएल, और हजाएल के बेटे बिनहदद के काबू में कर दिया। 4 और यहआखज खुदावन्द के सामने पिडिगिडाया और खुदावन्द ने उसकी सुनी, क्यूँकि उसने इस्माईल की मजलमी को देखा कि अराम का बादशाह उन पर कैसा जूल्म करता है। 5 और खुदावन्द ने बनी इस्माईल को एक नजात देनेवाला इनायत किया, इसलिए वह अमारियों के हाथ से निकल गए, और बनी — इस्माईल पहले की तरह अपने खेमों में रहने लगे। 6 तोभी उन्होंने युर्ब'आम के घराने के गुनाहों से, जिनसे उसने बनी — इस्माईल से गुनाह कराया, किनारा न किया बल्कि उन्हीं पर चलते रहे; और यसीरत भी सामरिया में रही। 7 और उसने यहआखज के लिए लोगों में से सिफ़ पचास सवार और दस रथ और दस हजार प्यादे छोड़े; इसलिए कि अराम के बादशाह ने उनको तबाह कर डाला, और रौद्र — रौद्र कर खाक की तरह कर दिया। 8 और यहआखज के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत, इसलिए क्या वह इस्माईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 9 और यहआखज अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे सामरिया में दफन किया; और उसका बेटा यूआस उसकी जगह बादशाह हुआ। 10 और शाह — ए — यहदाह यूआस के सैतीसवें बरस यहआखज का बेटा यहआस सामरिया में इस्माईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने सोलह बरस सल्तनत

की। 11 और उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इस्माईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया बल्कि उन ही पर चलता रहा। 12 और यहआस के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत जिससे वह शाह — ए — यहदाह अमसियाह से लड़ा, इसलिए क्या वह इस्माईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 13 और यूआस अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और युरब'आम उसके तरज पर बैठा; और यूआस। सामरिया में इस्माईल के बादशाहों के साथ दफन हुआ। 14 इलीशा' को वह मर्ज लगा जिससे वह मर गया। और शाह — ए — इस्माईल यूआस' उसके पास गया और उसके ऊपर रो कर कहने लगा, ऐ मेरे बाप, ऐ मेरे बाप, इस्माईल के रथ और उसके सवार!“ 15 और इलीशा' ने उससे कहा, तीर — ओ — कमान ले ले।” इसलिए उसने अपने लिए तीर — ओ — कमान ले लिया। 16 फिर उसने शाह — ए — इस्माईल से कहा, “कमान पर अपना हाथ रख।” इसलिए उसने अपना हाथ उस पर रखा; और इलीशा' ने बादशाह के हाथों पर अपने हाथ रख दिया। 17 और कहा, “पूरब की तरफ की खिड़की खोल।” इसलिए उसने उसे खोला, तब इलीशा' ने कहा, “तीर चला।” तब उसने चलाया। तब वह कहने लगा, “ये फतह का तीर खुदावन्द का, यानी अराम पर फतह पाने का तीर है; क्यूंकि तू अफ़की में अरामियों को मराया, यहाँ तक कि उनको हलाक कर देगा।” 18 फिर उसने कहा, “तीरों को ले।” तब उसने उनको लिया। फिर उसने शाह — ए — इस्माईल से कहा, “जर्मिन पर मार।” इसलिए उसने तीन बार मारा और ठहर गया। 19 तब मर्द — ए — खुदा उस पर गुस्सा हुआ और कहने लगा, “तुझे पाँच या छः बार मारना चाहिए था, तब तु अरामियों को इतना मारता कि उनको हलाक कर देता; लेकिन अब तू अरामियों को सिफ़े तीन बार मराया।” 20 और इलीशा' ने वफ़ात पाई, और उन्होंने उसे दफन किया। और नये साल के शुरू में मोआब के लश्कर मुल्क में घुस आए। 21 और ऐसा हुआ कि जब वह एक अदानी को दफ़न कर रहे थे तो उनको एक लश्कर नज़र आया, तब उन्होंने उस शब्द को इलीशा' की कब्र में डाल दिया, और वह शब्द इलीशा' की हड्डियों से टकराते ही ज़िन्दा हो गया और अपने पाँच बर खड़ा हो गया। 22 और शाह — ए — अराम हज़ाएल, यहआखज़ के 'अहद' में बारबार इस्माईल को सताता रहा। 23 और खुदावन्द उन पर मेहरबान हुआ और उसने उन पर तरस खाया, और उस 'अहद' की बजह से जो उसने अब्राहाम और इस्हाक और याकूब से बाँधा था, उनकी तरफ इलितफ़ात की; और न चाहा कि उनको हलाक करे, और अब भी उनको अपने सामने से दूर न किया। 24 और शाह — ए — अराम हज़ाएल मर गया, और उसका बेटा बिन हटद उसकी जगह बादशाह हुआ। 25 और यहआखज़ के बेटे यहआस ने हज़ाएल के बेटे बिन हटद के हाथ से वह शहर छीन लिए जो उसने उसके बाप यहआखज़ के हाथ से ज़ंग करके ले लिए थे। तीन बार यूआस ने उसे शिकस्त दी और इस्माईल के शहरों को वापस ले लिया।

14 और शाह — ए — इस्माईल यहआखज़ के बेटे यूआस के दूसरे साल से शाह — ए — यहदाह यूआस का बेटा अमसियाह सल्तनत करने लगा। 2 वह पच्चीस बरस का था जब सल्तनत करने लगा, और उसने येस्शलेम में उन्नीस बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यह'अदान था जो येस्शलेम की थी 3 उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में नेक था, तोपी अपने बाप दाऊद की तरह नहीं; बल्कि उसने सब कुछ अपने बाप यूआस की तरह किया। 4 क्यूंकि ऊँचे मकाम ढाए न गए, लोग अपी ऊँचे मकामों पर कुर्बानी करते और खुशबूज जलाते थे। 5 जब सल्तनत उसके हाथ में मज़बूत हो गई, तो उसने अपने उन मुलाजियों को जिन्होंने उसके बाप बादशाह को कल्पि किया था जान

से मारा। 6 लेकिन उसने उन कातिलों के बच्चों को जान से न मारा; क्यूंकि मूसा की शरीरी अत की किताब में, जैसा खुदावन्द ने फरमाया, लिखा है: ‘बेटों के बदले बाप न मारे जाएँ, और न बाप के बदले बेटे मारे जाएँ, बल्कि हर शख्स अपने ही गुनाह की बजह से मरे।’ 7 उसने बादी — ए — शोर में दस हज़ार अदूमी मारे और सिला' को जंग करके ले लिया, और उसका नाम युक्तीत रख्खा जो आज तक है। 8 तब अमसियाह ने शाह — ए — इस्माईल यहआस — बिन — यहआखज़ — बिन — याह के पास क्रासिद खाना किए और कहला भेजा “जरा आ तो, हम एक दूसरे का मुकाबला करें।” 9 और शाह — ए — इस्माईल यहआस ने शाह — ए — यहदाह अमसियाह को कहला भेजा, लुबनान के ऊंट — कटरे ने लुबनान के देवदार को पैगाम भेजा, “अपनी बेटी की मेरे बेटे से शादी कर दे; इन्हें एक जंगली जानवर जो लुबनान में था गुज़रा, और ऊंट — कटरे को रौद डाला। 10 तू ने बेशक अदोम को मारा, और तैरे दिल में गुरु बस गया है; इसलिए उसी की डीग मार और घर ही में रह, तू क्यूँ नुस्खान उठाने को छेड़ — छाड़ करता है; जिससे तू भी दुख उठाए और तैरे साथ यहदाह भी?” 11 लेकिन अमसियाह ने न माना। तब शाह — ए — इस्माईल यहआस ने चढ़ाई की, और वह और शाह — ए — यहदाह अमसियाह बैतशम्स में जो यहदाह में है, एक दूसरे के सामने हुए। 12 और यहदाह ने इस्माईल के आगे शिकस्त खाई, और उन्हें से हर एक अपने खेमे को भागा। 13 लेकिन शाह — ए — इस्माईल यहआस ने शाह — ए — यहदाह अमसियाह — बिन — यहआस — बिन — अख़जियाह को बैत — शम्स में पकड़ लिया और येस्शलेम में आया, और येस्शलेम की दीवार इस्फ़ाइम के फाटक से कोने वाले फाटक तक, चार सौ हाथ के बराबर ढाई दी। 14 और उसने सब सोने और चाँदी की, और सब बर्तनों को जो खुदावन्द की हैकल और शाही महल के खजानों में मिले, और कफ़ीलों को भी साथ लिया और सामरिया को लौटा। 15 यहआस के बाकी काम जो उसने किए और उसकी कुव्वत, और जैसे शाह — ए — यहदाह अमसियाह से लड़ा, इसलिए क्या वह इस्माईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 16 और यहआस अपने बाप दादा के साथ सो गया और इस्माईल के बादशाहों के साथ सामरिया में दफ़न हुआ, और उसका बेटा युरब'आम उसकी जगह बादशाह हुआ। 17 और शाह — ए — यहदाह यूआस का बेटा अमसियाह शाह — ए — इस्माईल यहआखज़ के बेटे यहआस के मरने के बाद पन्द्रह बरस जीता रहा। 18 अमसियाह के बाकी काम, इसलिए क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 19 और उन्होंने येस्शलेम में उसके खिलाफ़ साज़िश की, इसलिए वह लकीस को भागा; लेकिन उन्होंने लकीस तक उसका पीछा करके वही उसे कल्पि किया। 20 और वह उसे घोड़ों पर ले आए, और वह येस्शलेम में अपने बाप — दादा के साथ दाऊद के शहर में दफ़न हुआ। 21 और यहदाह के सब लोगों ने अज़रियाह' को जो सोलह बरस का था, उसके बाप अमसियाह की जगह बादशाह बनाया। 22 और बादशाह के अपने बाप — दादा के साथ सो जाने के बाद उसने ऐतात को बनाया, और उसे फिर यहदाह की मुख्य में दाखिल कर लिया। 23 शाह — ए — यहदाह यूआस के बेटे अमसियाह के पन्द्रहवें बरस से शाह — ए — इस्माईल यूआस का बेटा युरब'आम सामरिया में बादशाही करने लगा; उसने इकतालिस बरस बादशाही की। 24 उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया; वह नबात के बेटे युरब'आम के उन सब गुनाहों से, जिनसे उसने इस्माईल से गुनाह कराया, बाज़ न आया। 25 और उसने खुदावन्द इस्माईल के खुदा के उस बात के मुताबिक, जो उसने अपने बदे और नबी यनाह — बिन — अमिते के जरिए जो जात हिफ़ का था फरमाया था, इस्माईल की हद को हमात के मदखल से मैदान के दरिया तक फिर पहुँचा दिया। 26 इसलिए

कि खुदावन्द ने इसाईल के दुर्ग को देखा कि वह बहुत सख्त हैं, क्यूंकि न तो कोई बन्द किया हुआ, न आजाद छुटा हुआ रहा और न कोई इसाईल का मददगार था। 27 और खुदावन्द ने यह तो नहीं फरमाया था कि मैं इस जीवन पर से इसाईल का नाम मिटा दूँगा; इसलिए उसने उनको युआस के बेटे युरब'आम के बरसीते से रिहाई दी। 28 युरब'आम के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया और उसकी कुव्वत, यानी क्यूंकर उसने लड़ कर दमिशक और हमात को जो यहदाह के थे, इसाईल के लिए वापस ले लिया, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 29 और युरब'आम अपने बाप — दादा के साथ सो गया; और उसका बेटा जकरियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

15 शाह — ए — इसाईल युरब'आम के सत्ताइसवें बरस से शाह — ए —

यहदाह अपासियाह का बेटा अज़रियाह सल्तनत करने लगा। 2 जब वह सल्तनत करने लगा तो सोलह बरस का था, और उसने येस्शलेम में बावन बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यकूलियाह था, जो येस्शलेम की थी। 3 और उसने जैसा उसके बाप अपासियाह ने किया था, ठीक उसी तरह वह काम किया जो खुदावन्द की नजर में नेक था; 4 तोभी ऊँचे मकाम ढाए न गए, और लोग अब तक ऊँचे मकामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे। 5 और बादशाह पर खुदावन्द की ऐसी मार पटी कि वह अपने मरने के दिन तक कोही रहा और अलग एक घर में रहता था। और बादशाह का बेटा यूताम महल का मालिक था, और मुल्क के लोगों की 'अदालत किया करता था। 6 और 'अज़रियाह के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, तो क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 7 और 'अज़रियाह अपने बाप — दादा के साथ दफन किया; और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में उसके बाप — दादा के साथ दफन किया; और उसका बेटा यूताम उसकी जगह बादशाह हुआ। 8 और शाह — ए — यहदाह 'अज़रियाह के अठरीसवें साल युरब'आम के बेटे जकरियाह ने इसाईल पर सामरिया में छः महीने बादशाही की। 9 और उसने खुदावन्द की नजर में गुनाह किया, जिस तरह उसके बाप — दादा ने की थी; और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया बाज न आया। 10 और यबीस के बेटे सल्मू ने उसके खिलाफ साजिश की और लोगों के सामने उसे मारा, और कत्ल किया और उसकी जगह बादशाह हो गया। 11 जकरियाह के बाकी काम इसाईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखे हैं। 12 और खुदावन्द का वह वांदा जो उसने याह से किया यही था कि: “चौंटी नस्ल तक तेरे फर्जन्द इसाईल के तज्जर पर बैठोगे।” इसलिए वैसा ही हुआ। 13 शाह — ए — यहदाह उज़जियाह के उन्तालीसवें बरस यबीस का बेटा सल्मू बादशाही करने लगा, और उसने सामरिया में महीना भर सल्तनत की। 14 और जादी का बेटा मनाहिम तिरजा से चला और सामरिया में आया, और यबीस के बेटे सल्मू को सामरिया में मारा, और कत्ल किया और उसकी जगह बादशाह हो गया। 15 और सल्मू के बाकी काम और जो साजिश उसने की, इसलिए देखो, वह इसाईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखे हैं। 16 फिर मनाहिम ने तिरजा से जाकर तिफस्ह को, और उन सभों को जो वहाँ थे और उसकी हुटूट को मारा; और मारने की वजह यह थी कि उन्होंने उसके लिए फाटक नहीं खोले थे; और उसने वहाँ की सब हामिला 'औरतों को चीर डाला। 17 और शाह — ए — यहदाह 'अज़रियाह के उन्तालीसवें बरस से जादी का बेटा मनाहिम इसाईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने सामरिया में दस बरस सल्तनत की। 18 उसने खुदावन्द की नजर में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया, अपनी सारी उम्र बाज न आया। 19 और शाह — ए — अस्र पूल उसके

मुल्क पर चढ़ आया। इसलिए मनाहिम ने हजार किन्तार' चौंटी पूल को नज़र की, ताकि वह उसकी दस्तावीरी करे और सल्तनत को उसके हाथ में मज़बूत कर दे। 20 और मनाहिम ने ये कनकी शाह — ए — अस्र को देने के लिए इसाईल से यानी सब बड़े — बड़े दैलतमन्दों से पचास — पचास मिस्काल हर शख्स के हिसाब से जबरन ली। इसलिए अस्र का बादशाह लौट गया और उस मुल्क में न ठहरा। 21 मनाहिम के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह इसाईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखे नहीं? 22 और मनाहिम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा फकीरियाह उसकी जगह बादशाह हुआ। 23 शाह — ए — यहदाह 'अज़रियाह के पचासवीं साल मनाहिम का बेटा फकीरियाह सामरिया में इसाईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने दो बरस सल्तनत की। 24 उसने खुदावन्द की नजर में गुनाह किया; वह नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया, बाज न आया। 25 और फिक्रह — बिन — रमलियाह ने जो उसका एक सरदार था, उसके खिलाफ साजिश की और उसको सामरिया में बादशाह के महल के मुहकम हिस्से में अरजूब और अरिया के साथ मारा, और जिल'आदियों में से पचास मर्द उसके साथ थे, इसलिए वह उसे कत्ल करके उसकी जगह बादशाह हो गया। 26 फकीरियाह के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसाईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा है। 27 शाह — ए — यहदाह 'अज़रियाह के बावनवें बरस से फिक्रह — बिन — रमलियाह सामरिया में इसाईल पर सल्तनत करने लगा, और उसने बीस बरस सल्तनत की। 28 उसने खुदावन्द की नजर में गुनाह किया और नबात के बेटे युरब'आम के गुनाहों से, जिनसे उसने इसाईल से गुनाह कराया बाज न आया। 29 शाह — ए — इसाईल फिक्रह के अध्याम में शाह — ए — अस्र तिगलत पिलासर ने आकर अयून, और अबील बैत मांका, और यनहा, और कादिस और हसूर और जिल'आद और गलील, और नफताली के सारे मुल्क को ले लिया, और लोगों को गुलाम करके गुलामी में ले गया। 30 और हसी — बिन ऐला ने फिक्रह — बिन — रमलियाह के खिलाफ साजिश की और उसे मारा, और कत्ल किया और उसकी जगह, उज़जियाह के बेटे यूताम के बीसवें बरस, बादशाह हो गया; 31 और फिक्रह के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसाईल के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखे हैं। 32 शाह — ए — इसाईल रमलियाह के बेटे फिक्रह के दूसरे साल से शाह — ए — यहदाह उज़जियाह का बेटा यूताम सल्तनत करने लगा। 33 जब वह सल्तनत करने लगा तो पच्चीस बरस का था, उसने सोलह बरस येस्शलेम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम यस्सा था, जो सदूनी की बेटी थी। 34 उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नजर में भला है; उसने सब कुछ ठीक बैसे ही किया जैसे उसके बाप 'उज़जियाह ने किया था। 35 तोभी ऊँचे मकाम ढाए न गए लोग अभी ऊँचे मकामों पर कुर्बानी करते और खुशबू जलाते थे। खुदावन्द के घर का बालाई दरवाजा इसी ने बनाया। 36 यूताम के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 37 उन ही दिनों में खुदावन्द शाह — ए — अराम रजीन को और फिक्रह — बिन — रमलियाह को, यहदाह पर चढ़ाई करने के लिए भेजने लगा। 38 यूताम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और अपने बाप दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफन हुआ; और उसका बेटा आखज उसकी जगह बादशाह हुआ।

16 और रमलियाह के बेटे फिक्रह के सत्तरहवें बरस से शाह — ए — यहदाह यूताम का बेटा आखज सल्तनत करने लगा। 2 जब आखज सल्तनत करने लगा तो बीस बरस का था, और उसने सोलह बरस येस्शलेम में

बादशाही की। और उसने वह काम न किया जो खुदावन्द उसके खुदा की नज़र में सही है, जैसा उसके बाप दाऊद ने किया था। 3 बल्कि वह इसाईल के बादशाहों के ग्रासे पर चला और उसने उन कौमों के नकरती दस्तर के मुताबिक, जिनको खुदावन्द ने बनी — इसाईल के सामने से खारिज कर दिया था, अपने बेटे को भी आग में चलवाया। 4 और ऊंचे मकामों और टीलों पर और हर एक हरे दरखत के नीचे उसने कुर्बानी की और खुशबू जलाया। 5 तब शाह — ए — अराम रजीन और शाह — ए — इसाईल रमलियाह के बेटे फिक्कह ने लड़ने को येस्सलेम पर चढ़ाई की, और उन्होंने आखज को घेर लिया लेकिन उस पर गालिब न आ सके। 6 उस वक्त शाह — ए — अराम रजीन ने ऐलात को फतह करके फिर अराम में शामिल कर लिया, और यहदियों को ऐलात से निकाल दिया; और अरामी ऐलात में आकर वहाँ बस गए जैसा आज तक है। 7 इसलिए आखज ने शाह — ए — असूर तिगलत पिलासर के पास कासिद रवाना किए और कहला भेजा, “मैं तेरा खादिम और बेटा हूँ, इसलिए तू आ और मुझ को शाह — ए — अराम के हाथ से और शाह — ए — इसाईल के हाथ से जो मुझ पर चढ़ आए हैं, रिहाई दे।” 8 और आखज ने उस चाँदी और सोने को जो खुदावन्द के घर में और शाही महल के खजानों में मिला, लेकर शाह — ए — असूर के लिए नज़राना भेजा। 9 और शाह — ए — असूर ने उसकी बात मारी, चुनौंचे शाह — ए — असूर ने दमिश्क पर लश्करकरी की और उसे ले लिया, और वहाँ के लोगों को कैद करके कीर में ले गया और रजीन को कत्ल किया। 10 और आखज बादशाह, शाह — ए — असूर तिगलत पिलासर की मुलाकात के लिए दमिश्क को गया, और उस मज़बह को देखा जो दमिश्क में था; और आखज बादशाह ने उस मज़बह का नक्शा और उसकी सारी सन्तानों के मुताबिक जिसे आखज ने दमिश्क से भेजा था, एक मज़बह बनाया। और आखज बादशाह के दमिश्क से लौटे तक ऊरियाह काहिन ने उसे तैयार कर दिया। 12 जब बादशाह दमिश्क से लौट आया तो बादशाह ने मज़बह को देखा, और बादशाह मज़बह के पास गया और उस पर कुर्बानी पेश की। 13 उसने उस मज़बह पर अपनी सोखतनी कुर्बानी और अपनी नज़र की कुर्बानी जलाई, और अपना तपावन तपाया और अपनी सलामती के जबीहों का खून उत्ती मज़बह पर छिड़का। 14 और उसने पीतल का वह मज़बह जो खुदावन्द के अगे था, हैकल के सामने से यार्दी अपने मज़बह और खुदावन्द की हैकल के बीच में से, उठवाकर उसे अपने मज़बह के उत्तर की तरफ रखवा दिया। 15 और आखज बादशाह ने ऊरियाह काहिन को हृकम दिया, “बड़े मज़बह पर सुबह की सोखतनी कुर्बानी, और शाम की नज़र की कुर्बानी, और बादशाह की सोखतनी कुर्बानी, और उसकी नज़र की कुर्बानी, और ममलुकत के सब लोगों की सोखतनी कुर्बानी, और उनकी नज़र की कुर्बानी, और उनका तपावन चढ़ाया कर, और सोखतनी कुर्बानी का सारा खून, और जबीह का सारा खून उस पर छिड़क कर; और पीतल का वह मज़बह मेरे सवाल करने के लिए रहेगा।” 16 इसलिए जो कुछ आखज बादशाह ने फरमाया, ऊरियाह काहिन ने वह सब किया। 17 और आखज बादशाह ने कुर्सियों के किनारों को काट डाला, और उनके ऊपर के हौजों को उनसे जुटा कर दिया; और उस बड़े हौज की पीतल के बैलों पर से जो उसके नीचे थे उतार कर पत्थरों के फर्श पर रख दिया। 18 और उसने उस ग्रासे को जिस पर छत थी, और जिसे उन्होंने सबत के दिन के लिए हैकल के अन्दर बनाया था, और बादशाह के अने के रास्ते को जो बाहर था, शाह — ए — असूर की वजह से खुदावन्द के घर में शामिल कर दिया। 19 और आखज के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की

किताब में लिखा नहीं? 20 और आखज अपने बाप दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफन हुआ; और उसका बेटा हिजकियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

17 शाह — ए — यहदाह आखज के बाहरवें बरस से ऐला का बेटा हसी 1 इसाईल पर सामरिया में सलतनत करने लगा, और उसने नौ बरस सलतनत की। 2 उसने खुदावन्द की नज़र में गुनाह किया, तो भी इसाईल के उन बादशाहों की तरह नहीं जो उसने पहले हुए। 3 शाह — ए — असूर सलमनसर ने इस पर चढ़ाई की, और हसीं अ उसका खादिम हो गया और उसके लिए हव्दिया लाया। 4 और शाह — ए — असूर ने हसीं अ की साजिश मा’लम कर ली, क्यूँकि उसने शाह — ए — मिस्र के पास इसलिए कासिद भेजे, और शाह — ए — असूर को हव्दिया न दिया जैसा वह साल — ब — साल देता था, इसलिए शाह — ए — असूर ने उसे बन्द कर दिया और कैदखाने में उसके बेड़ीयाँ डाल दीं। 5 शाह — ए — असूर ने सारी ममलुकत पर चढ़ाई की, और सामरिया को जाकर तीन बरस उसे धैर रहा। 6 और हसीं अ के नैवें बरस शाह — ए — असूर ने सामरिया को ले लिया और इसाईल को गुलाम करके असूर में ले गया, और उनको खलह में, और जौजान की नदी खाबूर पर, और मादियों के शहरों में बसाया। 7 और ये इसलिए हुआ कि बनी — इसाईल ने खुदावन्द अपने खुद के खिलाफ, जिसने उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकालकर शाह — ए — मिस्र फिर औन के हाथ से रिहाई दी थी, गुनाह किया और और — मांबदों का खौफ माना। 8 और उन कौमों के तौर पर जिनको खुदावन्द ने बनी — इसाईल के आगे से खारिज किया, और इसाईल के बादशाहों के तौर पर ये जो उन्होंने खुद बनाए थे चलते रहे। 9 और बनी इसाईल ने खुदावन्द अपने खुदा के खिलाफ छिपकर वह काम किए जो भले न थे, और उन्होंने अपने सब शहरों में, निगहबानों के बुर्ज से फसीलदार शहर तक, अपने लिए ऊँचे मकाम बनाए। 10 और हर एक ऊंचे पाहाड़ पर, और हर एक हरे दरखत के नीचे उन्होंने अपने लिए सुतनों और यसीरियों को खड़ा किया। 11 और वही उन सब ऊंचे मकामों पर, उन कौमों की तरह जिनको खुदावन्द ने उनके सामने से दफ़ा किया, खुशबू जलाया और खुदावन्द को गुस्सा दिलाने के लिए शरारते की; 12 और बुर्तों की इबादत की, जिसके बारे में खुदावन्द ने उनसे कहा था, “तुम ये काम न करना।” 13 तो भी खुदावन्द सब नवियों और गैबीविनों के जरिए इसाईल और यहदाह को आगाह करता रहा, “तुम अपनी बुरी राहों से बाज आओ, और उस सारी शरीरी अत के मुताबिक, जिसका खुब्स मैने तुम्हारे बाप — दादा को दिया और जिसे मैंने अपने बन्दों नवियों के जरिए तुम्हारे पास भेजा है, मेरे अहकाम और कानून को मानो।” 14 बाबजूद इसके उन्होंने न सुना, बल्कि अपने बाप — दादा की तरह जो खुदावन्द अपने खुदा पर ईमान नहीं लाए थे, गर्दनकशी की, 15 और उसके कानून को और उसके 'अहद को, जो उसने उनके बाप — दादा से बांधा था, और उसकी शहादों को जो उसने उनको दी थी रद किया; और बेकार बातों के पैरौं होकर निकम्पे हो गए, और अपने आस — पास की कौमों की पैरवी की, जिनके बारे में खुदावन्द ने उनको ताकीद की थी कि वह उनके से काम न करें। 16 और उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा के सब अहकाम छोड़ कर अपने लिए ढाली ही इमरें मर्तों यारी दो बछड़े बना लिए, और यसीरियत तैयार की, और आसमानी फौज की इबादत की, और बाल की इबादत की। 17 और उन्होंने अपने बेटे और बेटियों को आग में चलवाया, और फालागीरी और जादूगीरी से काम लिया और अपने को बेच डाला, ताकि खुदावन्द की नज़र में गुनाह करके उसे गुस्सा दिलाएँ। 18 इसलिए खुदावन्द इसाईल से बहुत नाराज हुआ, और अपनी नज़र से उनको दूर कर दिया; इसलिए यहदाह के कुर्बानी ले के अलावा और कोई न छूटा। 19 यहदाह ने भी खुदावन्द अपने खुदा के अहकाम

न माने, बल्कि उन तौर तरीकों पर चले जिनको इसाईल ने बनाया था। 20 तब खुदावन्द ने इसाईल की सारी नस्ल को रद किया, और उनको दुख दिया और उनको लुटेरों के हाथ में कक्षे आधिकार कर उनको अपनी नजर से दूर कर दिया। 21 क्यूंकि उसने इसाईल को दाऊद के धराने से जुदा किया, और उन्होंने नवाह के बेटे युब्र'आम को बादशाह बनाया, और युब्र'आम ने इसाईल को खुदावन्द की फैरवी से दूर किया और उनसे बड़ा गुनाह कराया। 22 और बनी इसाईल उन सब गुनाहों की जो युब्र'आम ने किए, फैरवी करते रहे; वह उनसे बाज़ न आए। 23 यहाँ तक कि खुदावन्द ने इसाईल को अपनी नजर से दूर कर दिया, जैसा उसने अपने सब बन्दों के जरिए, जो नवी थे फरमाया था। इसलिए इसाईल अपने मुल्क से अस्सर को पहुँचाया गया, जहाँ वह आज तक है। 24 और शाह — ए — अस्सर ने बाबूल और कूतह और 'अब्बा और हमात और सिफाइम के लोगों को लाकर बनी — इसाईल की जगह सामरिया के शहरों में बसाया। इसलिए वह सामरिया के मालिक हुए, और उसके शहरों में बस गए। 25 और अपने बस जाने के शुरू में उन्होंने खुदावन्द का खौफ न माना; इसलिए खुदावन्द ने उनके बीच शरों को भेजा, जिन्होंने उनमें से कुछ को मार डाला। 26 तब उन्होंने शाह — ए — अस्सर से ये कहा, "जिन कौमों को तूने ले जाकर सामरिया के शहरों में बसाया है, वह उस मुल्क के खुदा के तरीके से वाकिफ़ नहीं है; चुनाँचे उसने उनमें शेर भेज दिए हैं और देख, वह उनको फाड़ते हैं, इसलिए कि वह उस मुल्क के खुदा के तरीके से वाकिफ़ नहीं है।" 27 तब अस्सर के बादशाह ने ये हुक्म दिया, "जिन काहिनों को तुम वहाँ से ले आए हो, उनमें से एक को वहाँ ले जाओ, और वह जाकर वही रहे और ये काहिन उनको उस मुल्क के खुदा का तरीका सिखाए।" 28 इसलिए उन काहिनों में से, जिनको वह सामरिया ले गए थे, एक काहिन आकर बैठते हुए रहने लगा, और उनको सिखाया कि उनको खुदावन्द का खौफ़ क्यंकि मानना चाहिए। 29 इस पर भी हर कौम ने अपने मांबूद बनाए, और उनको सामरियों के बनाए हुए ऊँचे मकामों के बुतखानों में रख्खा; हर कौप ने अपने शहर में जहाँ उसकी सुकूनता थी ऐसा ही किया। 30 इसलिए बाबुलियों ने सुकून बनाते की, और कृतियों ने नेरगुल की, और हमातियों ने असीमा की, 31 और 'अवाइयों ने निबाहाज और तरताका को बनाया; और सिफावियों ने अपने बेटों को अदरममलिक और 'अनममलिक के लिए, जो सिफाइम के मांबूद थे, आग में जलाया। 32 इस तरह वह खुदावन्द से भी डरते थे और अपने लिए ऊँचे मकामों के काहिन भी अपने ही में से बना लिए, जो ऊँचे मकामों के बुतखानों में उनके लिए हुबर्बनी पेश करते थे। 33 इसलिए वह खुदावन्द से भी डरते थे और अपनी कौमों के दस्तूर के मुताबिक, जिनमें से वह निकाल लिए गए थे, अपने — अपने मांबूद की इबादत भी करते थे। 34 आज के दिन तक वह पहले दस्तूर पर चलते हैं, वह खुदावन्द से डरते नहीं, और न तो अपने आईन — औ — कवानीन पर और न उस शरा' और फरमान पर चलते हैं, जिसका हक्म खुदावन्द ने या 'कूब की नसल को दिया था, जिसका नाम उसने इसाईल रखा था। 35 उन ही से खुदावन्द ने 'अहद करके उनको ये ताकीद की थी, "तुम गैर — मांबूदों से न डरना, और न उनको सिज्दा करना, न इबादत करना, और न उनके लिए कुर्बानी करना; 36 बल्कि खुदावन्द जो बड़ी कुक्वत और बलन्द बाजू से तुम को मुल्क — ए — मिस से निकाल लाया, तुम उसी से डरना और उसी को सिज्दा करना और उसी के लिए कुर्बानी पेश करना। 37 और जो — जो कानून, और रवायत, और जो शरी'अत, और हक्म उसने तुम्हारे लिए लिखे, उनको हमेशा मानने के लिए एहतियात रखना; और तुम गैर — मांबूदों से न डरना, 38 और उस 'अहद को जो मैंने तुम से किया है तुम भल न जाना; और न तुम गैर — मांबूदों का खौफ़ मानना; 39 बल्कि तुम खुदावन्द अपने खुदा का खौफ़

मानना, और वह तुम को तुम्हारे सब दुश्मनों के हाथ से छुड़ाएगा।" 40 लेकिन उन्होंने न माना, बल्कि अपने पहले दस्तूर के मुताबिक करते रहे। 41 इसलिए ये कौमें खुदावन्द से भी डरती रही, और अपनी खोटी हुई मूरों को भी पूजती रही; इसी तरह उनकी औलाद और उनकी औलाद की नसल भी, जैसा उनके बाप — दादा करते थे, वैसा वह भी आज के दिन तक करती है।

18 और शाह — ए इसाईल होशे बिन एला के तीसरे साल ऐसा हुआ कि

शाह — ए — यहदाह आखज का बेटा हिजकियाह सल्तनत करने लगा। 2 जब वह सल्तनत करने लगा तो पच्चीस बरस का था, और उसने उन्नीस बरस येस्शलेम में सल्तनत की। उसकी मौँ का नाम अबी था, जो जकरियाह की बेटी थी। 3 और जो — जो उसके बाप दाऊद ने किया था, उसने ठीक उसी के मुताबिक वह काम किया जो खुदावन्द की नजर में अच्छा था। 4 उसने ऊँचे मकामों को दूर कर दिया, और सुतूनों को तोड़ा और यसीरत को काट डाला; और उसने पीतल के साँप को जो मसा ने बनाया था चकनाचूर कर दिया, क्यूंकि बनी — इसाईल उन दिनों तक उसके आगे खुदाबूजता रही थी; और उसने उसका नाम नहशतान' रखा। 5 वह खुदावन्द इसाईल के खुदा पर भरोसा करता था, ऐसा कि उसके बाद यहदाह के सब बादशाहों में उसकी तरह एक न हुआ, और न उससे पहले कोई हुआ था। 6 क्यूंकि वह खुदावन्द से लिपटा रहा और उसकी फैरवी करने से बाज़ न आया; बल्कि उसके हक्मों को माना जिनको खुदावन्द ने मूसा को दिया था। 7 और खुदावन्द उसके साथ रहा और जहाँ कहीं वह गया कामयाब हुआ; और वह शाह — ए — अस्सर से फिर गया और उसकी फैरवी न की। 8 उसने फिलिस्तियों को गज्जा और उसकी सरहदों तक, निगहबानों के बुर्ज से फसीलिदार शहर तक मारा। 9 हिजकियाह बादशाह के चौथे बरस जो शाह — ए — इसाईल होशे'अ — बिन — एला का सातवाँ बरस था, ऐसा हुआ कि शाह — ए — अस्सर सल्तनतर ने सामरिया पर चढ़ाई की, और उसको धेर लिया। 10 और तीन साल के आधिर मैं उन्होंने उसको ले लिया; याँनी हिजकियाह के छठे साल जो शाह — ए — इसाईल होशे'अ का नैवाँ बरस था, सामरिया ले लिया गया। 11 और शाह — ए — अस्सर इसाईल को गुलाम करके अस्सर को ले गया, और उनको खलह में और जौजान की नदी खाली पर, और मादियों के शहरों में रख्खा, 12 इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा की बात न मानी, बल्कि उसके 'अहद को याँनी उन सब बातों को जिनका हक्म खुदा के बढ़े मूसा ने दिया था मुखालिफत की, और न उनको सुना न उन पर 'अमल किया। 13 हिजकियाह बादशाह के चौदहवें बरस शाह — ए — अस्सर सनहेरिक ने यहदाह के सब फसीलिदार शहरों पर चढ़ाई की और उनको ले लिया। 14 और शाह — ए — यहदाह हिजकियाह ने शाह — ए — अस्सर को लकीस में कहला भेजा, "मुझ से खता हुई, मैरे पास से लौट जा; जो कुछ तू मैरे सिर कर मैं उसे उठाऊँगा।" इसलिए शाह — ए — अस्सर ने तीन सौ किन्तारा चाँदी और तीस किन्तारा सोना शाह — ए — यहदाह हिजकियाह के जिम्मे लगाया। 15 और हिजकियाह ने सारी चाँदी जो खुदावन्द के घर और शाही महल के खजानों में मिली उसे दे दी। 16 उस बक्त हिजकियाह ने खुदावन्द की हैकल के दरवाजों का और उन सुतूनों पर का सोना, जिनको शाह — ए — यहदाह हिजकियाह ने खुद मंडवाया था, उतरवा कर शाह — ए — अस्सर को दे दिया। 17 फिर भी शाह — ए — अस्सर ने तरतान और रब सारिस और रबशकी को लकीस से बड़े लक्षकर के साथ हिजकियाह बादशाह के पास येस्शलेम को भेजा। इसलिए वह चले और येस्शलेम को आए, और जब वहाँ पहुँचे तो जाकर ऊपर के तालाब की नारी के पास, जो धोबियों के मैदान के रास्ते पर है, खड़े हो गए। 18 और जब उन्होंने बादशाह को पुकारा, तो इलियाकीम — बिन — खिलकियाह जो घर का

दीवान था और शबनाह मुन्जी और आसफ मुहर्रिर का बेटा यूआख उनके पास निकल कर आए। 19 और रबशाकी ने उनसे कहा, “तुम हिजकियाह से कहो, कि मलिक — ए — मुअज्जम शाह — ए — असूर यूँ फरमाता है, ‘तू क्या भरोसा किए बैठा है? 20 तू कहता तो है, लेकिन ये सिर्फ बातें ही बातें हैं कि जंग की मसलहत भी है और हौसला भी। आखिर किसके भरोसे पर तू ने मुझ से सरकशी की है? 21 देख, तुझे इस मसले हूँप सरकण्डे के ‘असा यानी मिस पर भरोसा है, उस पर अगर कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में गड़ जाएगा और उसे छेद देगा।’” शाह — ए — मिस फिर “अैन उन सब के लिए जो उस पर भरोसा करते हैं, ऐसा ही है। 22 और अगर तुम मुझ से कहो कि हमारा भरोसा खुदावन्द हमारे खुदा पर है, तो क्या वह वही नहीं है, जिसके ऊंचे मकामों और मजबहों को हिजकियाह ने दूर करके यहदाह और येस्शलेम से कहा है, कि तुम येस्शलेम में इस मजबह के आगे सिज्दा किया करो? 23 इसलिए अब ज़रा मेरे आका शाह — ए — असूर के साथ शर्त बांध और मैं तुझे दो हजार धोड़े दँगा, बशर्ते कि तू अपनी तरफ से उन पर सवार चढ़ा सके। 24 भला फिर तू क्यूँकून मेरे आका के अदना मुलाजिमों में से एक सरदार का भी मुँह फेर सकता है, और रथों और सवारों के लिए मिस पर भरोसा रखता है? 25 और क्या अब मैंने खुदावन्द के बिना कहे ही इस मकाम को गारत करने के लिए इस पर चढ़ाई की है? खुदावन्द ही ने मुझ से कहा कि इस मुल्क पर चढ़ाई कर और इसे बर्बाद कर दे।” 26 तब इलियाकीम — बिन — खिलकियाह, और शबनाह, और यूआख ने रबशाकी से अंजरी की कि “अपने खादिमों से अरामी ज़बान में बात कर, क्यूँकि हम उसे समझते हैं, और उन लोगों के सुनते हुए जो दीवार पर हैं, यहदियों की ज़बान में बातें न कर।” 27 लेकिन रबशाकी ने उनसे कहा, “क्या मेरे आका ने मुझे ये बातें कहने को तेरे आका के पास, या तेरे पास भेजा है? क्या उनसे मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो तुम्हारे साथ अपनी ही नजासत खाने और अपना ही कास्सरा पीने को दीवार पर बैठे हैं?” 28 फिर रबशाकी खुदा हो गया और यहदियों की ज़बान में बलन्द आवाज से ये कहने लगा, “मलिक — ए — मुअज्जम शाह — ए — असूर का कलाम सुनो, 29 बादशाह यूँ फरमाता है, ‘हिजकियाह तुम को धोका न दे, क्यूँकि वह तुम को उसके हाथ से छुड़ा न सकेगा। 30 और न हिजकियाह ये कहकर तुम से खुदावन्द पर भरोसा कराए, कि खुदावन्द ज़सर हमको छुड़ाएगा और ये शहर शाह — ए — असूर के हवाले न होगा। 31 हिजकियाह की न सुनो। क्यूँकि शाह — ए — असूर यूँ फरमाता है कि तुम मुझसे सलह कर लो और निकलकर मेरे पास आओ, और तुम में से हर एक अपनी तक और अपने अंजरी के दरखत का फल खाओ और अपने हौज़ का पानी पीता रहे। 32 जब तक मैं आकर तुम को ऐसे मुल्क में न ले जाऊँ, जो तुम्हारे मुल्क की तरह गल्ला और मय का मुल्क, रोटी और ताकिस्तानों का मुल्क, ज़ैतूनी तेल और शहद का मुल्क है, ताकि तुम जीते रहो, और मर न जाओ; इसलिए हिजकियाह की न सुना, जब वह तुमको ये तालीम दे कि खुदावन्द हमको छुड़ाएगा। 33 क्या कौमों के माँबढ़ों में से किसी ने अपने मुल्क को शाह — ए — असूर के हाथ से छुड़ाया है? 34 हमात और अफ़काद के माँबढ़ कहाँ हैं? और सिफ़वाइम और हेना? और इवाह के माँबढ़ कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचा लिया? 35 और मुल्कों के तमाम माँबढ़ों में से किस — किस ने अपना मुल्क मेरे हाथ से छुड़ा लिया, जो यहोवा येस्शलेम को मेरे हाथ से छुड़ा लेगा?” 36 लेकिन लोग खामोश रहे और उसके ज़बाब में एक बात भी न कही, क्यूँकि बादशाह का हक्म यह था कि उसे ज़बाब न देना। 37 तब इलियाकीम — बिन — खिलकियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुन्जी, और यूआख बिन —

आसफ मुहर्रिर अपने कपड़े चाक किए हुए हिजकियाह के पास आए और रबशाकी की बातें उसे सुनाई।

19 जब हिजकियाह बादशाह ने यह सुना, तो अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़कर खुदावन्द के घर में गया। 2 और उसने घर के दीवान और इलियाकीम और शबनाह मुन्जी और काहिनों के बुजुर्गों को टाट उड़ाकर अप्सू के बेटे यसायाह नबी के पास भेजा। 3 और उन्होंने उससे कहा, हिजकियाह यूँ कहता है, कि आज का दिन दुख, और मलामत, और तैहीन का दिन है, क्यूँकि बच्चे पैदा होने पर हैं, लेकिन विलादत की ताकत नहीं। 4 शायद खुदावन्द तेरा खुदा रबशाकी की सब बातें सुने जिसको उसके आका शाह — ए — असूर ने भेजा है, कि “जिन्दा खुदा की तैहीन करे और जो बातें खुदावन्द तेरे खुदा ने सुनी हैं उन पर वह मलामत करेगा। इसलिए तेरा येस्शलेम के लिए जो मौजूद है दुआ कर।” 5 इसलिए हिजकियाह बादशाह के मुलाजिम यसायाह के पास आए। 6 यसायाह ने उनसे कहा, “तुम अपने मालिक से यूँ कहना, ‘खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तू उन बातों से जो तूने सुनी हैं, जिनसे शाह — ए — असूर के मुलाजिमों ने मेरी बुराई की है, न डर। 7 देख, मैं उसमें एक स्थ डाल दँगा, और वह एक अफवाह सुनकर अपने मुल्क को लौट जाएगा, और मैं उसे उसी के मुल्क में तलबार से मरवा डालूँगा।” 8 इसलिए रबशाकी लौट गया और उसने शाह — ए — असूर को लिबानह से लड़ते पाया, क्यूँकि उसने सुना था कि वह लकीस से चला गया है, 9 और जब उसने कूश के बादशाह तिरहाका के ज़रिए ये कहते सुना कि “देख, वह तज़से लड़ने को निकला है,” तो उसने फिर हिजकियाह के पास कासिद रखाना किए और कहा, 10 कि “शाह — ए — यहदाह हिजकियाह से इस तरह कहना, ‘तेरा खुदा, जिस पर तेरा भरोसा है, तुझे यह कहकर धोखा न दे कि येस्शलेम शाह — ए — असूर के कब्जे में नहीं किया जाएगा। 11 देख, तूने सुना है कि असूर के बादशाहों ने तमाम मुमालिक को बिल्कुल गारत करके उनका क्या हाल बनाया है, इसलिए क्या तू बचा रहेगा? 12 क्या उन कौमों के माँबढ़ों ने उनको, यानी ज़ौजान और हारान और रसफ और बनी — ‘अदन जो तिल्लसार में थे, जिनको हमारे बाप — दादा ने बर्बाद किया, छुड़ाया? 13 हमात का बादशाह और अरफ़ाद का बादशाह, और शहर सिफ़वाइम और हेना! और इवाह का बादशाह कहाँ है?’” 14 हिजकियाह ने कासिदों के हाथ से खत लिया और उसे पढ़ा, और हिजकियाह ने खुदावन्द के घर में जाकर उसे खुदावन्द के सामने फैला दिया। 15 और हिजकियाह ने खुदावन्द के सामने इस तरह दुआ की, ऐ खुदावन्द, इस्माईल के खुदा, कस्तियों के ऊपर बैठने वाले। तू ही अकेला ज़मीन की सब सल्तनतों का खुदा है। तू ने ही आसमान और ज़मीन को पैदा किया। 16 ऐ खुदावन्द, कान लगा और सुन! ऐ खुदावन्द, अपनी आँखें खोल और देख; और सनहेरिकी की बातों को, जिनसे जिन्दा खुदा की तैहीन करने के लिए उसने इस आदमी को भेजा है, सुन ले। 17 ऐ खुदावन्द, असूर के बादशाहों ने दर हक्कीकत कौमों को उनके मुल्कों समेत तबाह किया: 18 और उनके माँबढ़ों को आग में डाला क्यूँकि वह खुदा न थे, बल्कि आदमियों की दस्तकारी, यानी लकड़ी और पथर थे; इसलिए उन्होंने उनको बर्बाद किया है। 19 इसलिए अब ऐ खुदावन्द हमारे खुदा मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि तू हमको उसके हाथ से बचा ले, ताकि ज़मीन की सब सल्तनतें जान ले कि तू ही अकेला खुदावन्द खुदा है।” 20 तब यसायाह — बिन — आमूस ने हिजकियाह को कहला भेजा कि खुदावन्द इस्माइल का खुदा यूँ फरमाता है: वैकि तू ने शाह — ए — असूर सनहेरिकी के खिलाफ़ मुझसे दूँआ की है, मैंने तेरी सुन ली। 21 इसलिए खुदावन्द ने उसके हक्म में यूँ फरमाया कि कुँवारी दुखते सिय्यून ने तुझे हकीर जाना और तेरे मज़ाक उड़ाया। 22 येस्शलेम की बेटी ने तुझ पर सर हिलाया है, तूने किसकी तैहीन

— ओ — बुराई की है? तूने किसके खिलाफ अपनी आवाज बलन्द की, और अपनी ऊँचें ऊपर उठाई? इसाईल के कुह्दस के खिलाफ! 23 तूने अपने कासिदों के जरिएँ से खुदावन्द की तौहीन की, और कहा, कि मैं बहुत से रथों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटियों पर, बल्कि लुबनान के वस्ती हिस्सों तक चढ़ाया हूँ; और मैं उसके ऊँचे — ऊँचे देवदरों और अच्छे से अच्छे सोनोबर के दरखाँओं को काट डालूँगा; और मैं उसके दूर से दूर मकाम में, जहाँ उसकी बेशकीमीती जमीन का जंगल है घुसा चला जाऊँगा। 24 मैंने जगह — जगह का पानी खोद — खोद कर पिया है और मैं अपने पाँव के तलवे से मिम की सब नदियों सुखा डालूँगा। 25 क्या तू ने नहीं सुना कि मुझे यह किए हुए मुझ इन्हें और मैंने इसे ऊजेरे दिनों में ठहरा दिया था? अब मैंने उसको पूरा किया है कि तू फसीलदार शहरों को उजाड़ कर खंडर बना देने के लिए खड़ा हो। 26 इसी बजह से उनके बाशिन्दे कमज़ोर हुए और वह घबरा गए, और शर्मिन्दा हुए वह मैदान की धास और हरी पौधे और छतों पर की धास, और उस अनाज की तरह हो गए, जो बढ़ने से पहले सूखा जाए। 27 “लेकिन मैं तेरी मजलिस और आमद — ओ — रफत और तेरा मुझ पर झुंझलाना मैं जानता हूँ। 28 तेरे मुझ पर झुंझलाने की बजह से, और इसलिए कि तेरा घमण्ड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं अपनी नेकेल तेरी नाक में, और अपनी लगाम तेरे मुँह में डालूँगा; और तू जिस रास्ते से आया है, मैं तुझे उसी रास्ते से वापस लौटा दूँगा। 29 “ओ तेरे लिए ये निशान होगा कि तम इस साल वह चीज़ों जो खुद से उगती हैं, और दूसरे साल वह चीज़ों जो उनसे पैदा हों खाओगे; और तीसरे साल तुम बोना और काटना, और बाग लगाकर उनका फल खाना। 30 और वह जो यहदाह के घराने से बचा रहा है कि नीचे की तरफ जड़ पकड़ेगा और ऊपर कि तरफ फल लाएगा। 31 कँूँकि एक बकिया येश्वरतेम से, और वह जो बच रहे हैं कोह — ए — सिय्यन से निकलेंगे। खुदावन्द की गयथरी ये कर दिखाएगी। 32 “इसलिए खुदावन्द शह — ए — असूर के हक में यूँ फरमाता है कि वह इस शहर में अपने, या यहाँ तीर चलाने न पाएगा; वह न तो सिपर लेकर उसके सामने अपने, और न उसके मुकाबिल दमदमा बाँधने पाएगा। 33 बल्कि खुदावन्द फरमाता है कि जिस रास्ते से वह आया, उसी रास्ते से लौट जाएगा; और इस शहर में अपने न पाएगा। 34 कँूँकि मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊँ की खातिर इस शहर की हिमायत कस्तँगा ताकि इसे बचा लें।” 35 इसलिए उसी रात को खुदावन्द के फरिश्ते ने निकल कर असूर की लश्करगाह में एक लाख पचासी हजार आदमी मार डाले, और सुबह को जब लोग सर्वे उठे तो देखा, कि वह सब मरे पड़े हैं। 36 तब शाह — ए — असूर सनहरीब वर्हों से चला गया और लौटकर मीनवा में रहने लगा। 37 और जब वह अपने मांबूद निस्स्कू के बूतखाने में इबादत कर रहा था, तो अदरमलिक और शराशर ने उसे तलवार से कत्त लिया, और अरारात की सरजमीन को भाग गए। और उसका बेटा असरहून उसकी जगह बादशाह हुआ।

20 उन ही दिनों में हिज़कियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के करीब हो

गया तब यसायाह नवी आमूस के बेटे ने उसके पास आकर उस से कहा खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि “तू अपने घर का इन्तजाम कर दे; कँूँकि तू मर जाएगा और बचने का नहीं।” 2 तब उसने अपना चेहरा दीवार की तरफ करके खुदावन्द से यह दुआ की, 3 “ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मित्रत करता हूँ, याद फरमा कि मैं तेरे सामने सच्चाई और पूरे दिल से चलता रहा हूँ, और जो तेरी नज़र में भला है वही किया है।” और हिज़कियाह बहुत रोया। 4 और ऐसा हुआ कि यसायाह निकल कर शहर के बीच के हिस्से तक पहुँचा भी न था कि खुदावन्द का कलाम उस पर न जिल हुआ: 5 “लौट, और मेरी कौम के पेशवा हिज़कियाह से कह, कि खुदावन्द तेरे बाप दाऊँ का खुदा यूँ फरमाता है: मैंने

तेरी दुआ सुनी, और मैंने तेरे आँसू देखे। देख, मैं तुझे शिफा दूँगा, और तीसरे दिन तू खुदावन्द के घर में जाएगा। 6 और मैं तेरी उम्र पन्द्रह साल और बढ़ा दूँगा, और मैं तुझ को और इस शहर को शाह — ए — असूर के हाथ से बचा लूँगा, और मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊँ की खातिर, इस शहर की हिमायत कस्तँगा।” 7 और यसायाह ने कहा, “अंजिरों की टिकिया लो।” इसलिए वह उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बौद्धा, तब वह अच्छा हो गया। 8 हिज़कियाह ने यसायाह से पूछा, “इसका क्या निशान होगा कि खुदावन्द मुझे सेहत बख्शेगा, और मैं तीसरे दिन खुदावन्द के घर में जाऊँगा?” 9 यसायाह ने जबाब दिया, “इस बात का, कि खुदावन्द ने जिस काम को कहा है उसे वह करेगा, खुदावन्द की तरफ से तेरे लिए निशान ये होगा कि साया या दस दर्जे आगे को जाए, या दस दर्जे पीछे की लौटे।” 10 और हिज़कियाह ने जबाब दिया, “ये तो छोटी बात है कि साया दस दर्जे आगे की जाए, इसलिए यूँ नहीं बल्कि साया दस दर्जे पीछे को लौटे।” 11 तब यसायाह नवी ने खुदावन्द से दुआ की; इसलिए उसने साये को आखज की धूप घड़ी में दस दर्जे, यानी जितना वह ढल चुका था उतना ही पीछे को लौटा दिया। 12 उस बबत शह — ए — बाबूल बरदक बलादान — बिन — बलादान ने हिज़कियाह के पास नामा और तहाइक भेजे; कँूँकि उसने सुना था कि हिज़कियाह बीमार हो गया था। 13 इसलिए हिज़कियाह ने उनकी बातें सुनी, और उसने अपनी बेशबाह चीजों का सारा घर, और चाँदी और सोना अपना सिलाहखाना और जो कुछ उसके खजानों में मौजूद था उनको दिखाया; उसके घर में और उसकी सारी ममलुकत में ऐसी कोई चीज़ न थी जो हिज़कियाह ने उनको न दिखाई। 14 तब यसायाह नवी ने हिज़कियाह बादशाह के पास आकर उसे कहा, “ये लोग क्या कहते थे? और ये तेरे पास कहाँ से आए?” हिज़कियाह ने कहा, “ये दूर मुल्क से, यानी बाबूल से आए हैं।” 15 फिर उसने पूछा, “उन्होंने तेरे घर में क्या देखा?” हिज़कियाह ने जबाब दिया, “उन्होंने सब कुछ जो मेरे घर में है देखा; मेरे खजानों में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मैंने उनको दिखाई न हो।” 16 तब यसायाह ने हिज़कियाह से कहा, “खुदावन्द का कलाम सुन ले: 17 देख, वह दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है, और जो कुछ तेरे बाप — दादा ने आज के दिन तक जमा करके रखा है, बाबूल को ले जाएँगे; खुदावन्द फरमाता है, कुछ भी नाकी न रहेगा। 18 और वह तेरे बेटों में से जो तुझसे पैदा होंगे, और जिनका बाप तू ही होगा ले जाएँगे, और वह बाबूल के बादशाह के महल में खाजासरा होंगे।” 19 हिज़कियाह ने यसायाह से कहा, “खुदावन्द का कलाम जो तू ने कहा है, भला है।” और उसने ये भी कहा, ‘भला ही होगा, आजर मेरे दिन में अमन और अमान रहे। 20 हिज़कियाह के बाकी काम और उसकी सारी कूवत, और कँूँकर उसने तालाब और नाली बनाकर शहर में पानी पहुँचाया; इसलिए क्या वह शाहन — ए — यहदाह की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 21 और हिज़कियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा मनस्सी उसकी जगह बादशाह हुआ।

21 जब मनस्सी सलतनत करने लगा तो बारह बरस का था, उसने पचपन

बरस येश्वरतेम में सलतनत की, और उसकी माँ का नाम हिफ्सीबाह था। 2 उसने उन कँूँकों के नकरती कामों की तरह जिनको खुदावन्द ने बनी इसाईल के आगे से दफ़ा किया, खुदावन्द की नज़र में गुजाह किया। 3 कँूँकि उसने उन ऊँचे मकामों को जिनको उसके बाप हिज़कियाह ने दाया था फिर बनाया; और बाल के लिए — मज़बह बनाए। और यसीरीत बनाई जैसे शाह — ए — इसाईल अखींब ने किया था; और आसमान की सारी कौज़ जो सिज्दा करता और उनकी इबादत करता था। 4 और उसने खुदावन्द की हैकल में, जिसके जरिएँ खुदावन्द ने फरमाया था, “मैं येश्वरतेम में अपना नाम रख दूँगा।”

मजबह बनाए। 5 और उसने आसमान की सारी फौज के लिए खुदावन्द की हैकल के दोनों सहानों में मजबह बनाए। 6 और उसने अपने बेटे को आग में चलाया, और वह शगून निकालता और अफ्सूँगरी करता, और जिन्नात के प्यारों और जादूगरों से तां-अल्लुक रखता था। उसने खुदावन्द के आगे उसको गुस्सा दिलाने के लिए बड़ी शरात की। 7 और उसने यसीरत की खोदी हई मूरत को, जिसे उसने बनाया था, उस घर में खड़ा किया जिसके जरिए खुदावन्द ने दाऊद और उसके बेटे सुलोमान से कहा था कि “इसी घर में और येस्शलेम में जिसे मैंने बनी — इसाईल के सब कबीलों में से चुन लिया है, मैं अपना नाम हमेशा तक रख दूँगा। 8 और मैं ऐसा न करूँगा कि बनी — इसाईल के पाँव उस मूल्क से बाहर आवारा फिरें, जिसे मैंने उनके बाप — दादा को दिया, बारते कि वह उन सब हक्म के मुताबिक और उस शरी' अत के मुताबिक, जिसका हक्म मैं बन्दे मूरा ने उनको दिया, ‘अमल करने की एहतियात रख जैं।’” 9 लेकिन उन्होंने न माना, और मनस्सी ने उनको बहकाया कि वह उन कौमों के बारे में, जिनको खुदावन्द ने बनी — इसाईल के आगे से बर्बाद किया, ज्यादा बदी करें। 10 इसलिए खुदावन्द ने अपने बन्दों, नवियों के जरिए फरमाया, 11 “कूँकूँ बादशाह यहदाह मनस्सी ने नफरती काम किए, और अमेरियों की निस्वत जो उससे पहले हुए ज्यादा बुराई की, और यहदाह से भी अपने बुतों के जरीए से गुनाह कराया; 12 इसलिए खुदावन्द इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है: देखो, मैं येस्शलेम और यहदाह पर ऐसी बला लाने को हूँ कि जो कोई उसका हाल सुए, उसके कान झन्ना उठेगे। 13 और मैं येस्शलेम पर सामरिया की रस्सी, और अर्धीअब के घराने का साहूल डालूँगा; और मैं येस्शलेम को ऐसा साफ करूँगा जैसे आदमी थाली को साफ करता है और उसे साफकर के उल्टी रख देता है। 14 और मैं अपनी मीरास के बाकी लोगों को तर्क करके, उनको उनके दुमनों के हवाले करूँगा; और वह अपने सब दुमनों के लिए शिकार और लूट ठहरेगे। 15 क्यूँकि जब से उनके बाप — दादा मिस से निकले, उस दिन से आज तक वह मेरे आगे बुराई करते और युग्मे गुस्सा दिलाते रहे।” 16 ‘अलावा इसके मनस्सी ने उस गुनाह के ‘अलावा कि उसने यहदाह को गुमराह करके खुदावन्द की नजर में गुनाह कराया, बेगुनाहों का खुन भी इस कदर किया कि येस्शलेम इस सिरे से उस सिरे तक भर गया। 17 और मनस्सी के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, और वह गुनाह जो उससे शरजद हुआ; इसलिए क्या वह बनी यहदाह के बादशाहों की तवरीख की किताब में लिखा नहीं? 18 और मनस्सी अपने बाप दादा के साथ सो गया, और अपने घर के बाग में जो ‘उज्जा का बाग है दफन हुआ; और उसका बेटा अमून उसकी जगह बादशाह हुआ। 19 और अमून जब सल्तनत करने लगा तो बाईंस बरस का था। उसने येस्शलेम में दो बरस सल्तनत की; उसकी माँ का नाम मुस्लिमत था, जो हस्स युतबी की बेटी थी। 20 और उसने खुदावन्द की नजर में गुनाह किया जैसे उसके बाप मनस्सी ने की थी। 21 और वह अपने बाप के सब रास्तों पर चला, और उन बुतों की इडादत की जिनकी इडादत उसके बाप के नाम की थी, और उनको सिज्दा किया। 22 और उसने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा को छोड़ दिया, और खुदावन्द की राह पर न चला। 23 और अमून के खादिमों ने उसके खिलाफ साजिश की, और बादशाह को उसी के महल में जान से मार दिया। 24 लेकिन उस मूल्क के लोगों ने उन सबको, जिन्होंने अमून बादशाह के खिलाफ साजिश की थी कल्ल लिया। और मूल्क के लोगों ने उसके बेटे यूसियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया। 25 अमून के बाकी काम जो उसने किए, इसलिए क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवरीख की किताब में लिखे नहीं? 26 और वह अपनी कब्र में ‘उज्जा का बाग में दफन हुआ, और उसका बेटा यूसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

22 जब यूसियाह सल्तनत करने लगा, तो आठ बरस का था, उसने इकतीस साल येस्शलेम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम जदीदाह था, जो बुसकती ‘अदायाह की बेटी थी। 2 उसने वह काम किए जो खुदावन्द की नजर में ठीक था, और अपने बाप दाऊद की सब राहों पर चला और दहने या बाँहं हाथ को न मुड़ा। 3 और यूसियाह बादशाह के अठारहवें बरस ऐसा हआ कि बादशाह ने साफन — बिन असलियाह — बिन — मसुल्लाम मुश्ही को खुदावन्द के घर भेजा और कहा, 4 “तु खिलकियाह सरदार काहिन के पास जा, ताकि वह उस नकदी को जो खुदावन्द के घर में लाई जाती है, और जिसे दरबानों ने लोगों से लेकर जमा किया है गिने, 5 और वह उसे उन कारगुजारों को सौंप दे जो खुदावन्द के घर की निगरानी रखते हैं; और ये लोग उसे उन कारीगरों को दें जो खुदावन्द के घर में काम करते हैं, ताकि हैकल की दरारों की मरम्मत हो; 6 याँ बी बढ़ियों और बादशाहों और मिथियों को दें, और हैकल की मरम्मत के लिए लकड़ी और तराशो हुए पत्थरों के खरीदने पर खर्च करें। 7 लेकिन उसने उस नकदी का जो उनके हाथ में दी जाती थी, कोई हिसाब नहीं लिया जाता था, इसलिए कि वह अमानत दारी से काम करते थे। 8 और सरदार काहिन खिलकियाह ने साफन मुश्ही से कहा, मुझे खुदावन्द के घर में तौरेत की किताब मिली है।” और खिलकियाह ने किताब साफन को दी और उसने उसको पढ़ा। 9 और साफन मुश्ही बादशाह के पास आया और बादशाह को खबर दी कि “तेरे खादिमों ने वह नकदी जो हैकल में मिली और उनके हाथ में सुर्दू की जो खुदावन्द के घर की निगरानी रखते हैं।” 10 और साफन मुश्ही ने बादशाह को ये भी बताया, “खिलकियाह काहिन ने एक किताब मेरे हवाले की है।” और साफन ने उसे बादशाह के सामने पढ़ा। 11 जब बादशाह ने तौरेत की किताब की बातें सुनी, तो अपने कपड़े फाड़े; 12 और बादशाह ने खिलकियाह काहिन, और साफन के बेटे अखीकाम, और मीकायाह के ‘अक्बूर और साफन मुश्ही असायाह को जो बादशाह का मुलाजिम था ये हुक्म दिया, 13 कि “ये किताब जो मिली है, इसकी बातों के बारे में तुम जाकर मेरी और सब लोगों और सारे यहदाह की तरफ से खुदावन्द से दरियापत करो; क्यूँकि खुदावन्द का बड़ा गजब हम पर इसी वजह से भड़का है कि हमारे बाप — दादा ने इस किताब की बातों को न सुना, कि जो कछू उसमें हमारे बारे में लिखा है उसके मुताबिक ‘अमल करते।’” 14 तब खिलकियाह, काहिन और अखीकाम और अक्बूर और साफन असायाह खुल्दा नविया के पास गए, जो तोशाखाने के दोगा सल्लम बिन तिकवा बिन खरखस की बीवी थी, ये येस्शलेम में मिशना नामी महल्ले में रहती थी इसलिए उन्होंने उससे गुप्तगूँकी। 15 उसने उनसे तका कहा, “खुदावन्द इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है, ‘तुम उस शब्दसे से जिसने तुम को मेरे पास भेजा है कहना, 16 कि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि मैं इस किताब की उन सब बातों के मुताबिक, जिनको शाह — ए — यहदाह ने पढ़ा है, इस मकाम पर और इसके सब बाशिन्दों पर बला नाजिल करूँगा। 17 क्यूँकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और गैर — माँ बुतों के आगे खुशबू जलाया, ताकि अपने हाथों के सब कामों से मुझे गुस्सा दिलाएँ, इसलिए मेरा कहर इस मकाम पर भड़केगा और उण्डा न होगा। 18 लेकिन शाह — ए — यहदाह से जिसने तुम को खुदावन्द से दरियापत करने को भेजा है, यूँ कहना कि खुदावन्द इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है कि जो बातें तुमें सुनी हैं उनके बारे में यह है कि; 19 चीकि तेरा दिल नर्म है, और जब तु ने वह बात सुनी जो मैंने इस मकाम और इसके बाशिन्दों के हक्क में कही कि वह तबाह हो जाएँगे और लाँनती भी ठहरेंगे, तो तु ने खुदावन्द के आगे ‘आजिजी की और अपने कपड़े फाड़े और मेरे आगे रोया; इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली, खुदावन्द फरमाता है। 20 इसलिए देख मैं तुझे तेरे बाप — दादा के साथ मिला दूँगा, और तू अपनी कंब्र में

सलामती से उतार दिया जाएगा, और उन सब आफतों को जो मैं इस मकाम पर नाजिल करूँगा, तेरी आँखें नहीं देखेंगी।” इसलिए वह यह खबर बादशाह के पास लाए।

23 और बादशाह ने लोग भेजे, और उन्होंने यहदाह और येस्शलेम के सब

बुर्जाओं को उसके पास जामा किया। 2 और बादशाह खुदावन्द के घर को गया, और उसके साथ यहदाह के सब लोग, और येस्शलेम के सब बासिन्दे, और काहिन, और नवी, और सब छोटे बडे अदामी थे, और उसने जो ‘अहद की किताब खुदावन्द के घर में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़ सुनाई। 3 और बादशाह सुन्न के बाबर खड़ा हआ, और उसने खुदावन्द की पैरवी करने और उसके हुक्मों और शहादों और तौर तरीके को अपने सारे दिल और सारी जान से मानने, और इस ‘अहद की बातों पर जो उस किताब में लिखी हैं ‘अमल करने के लिए खुदावन्द के सामने ‘अहद बाँधा, और सब लोग उस ‘अहद पर कायम हुए। 4 फिर बादशाह ने सरदार काहिन खिलकियाह को, और उन काहिनों को जो दूसरे दर्जे के थे, और दरबानों को हक्म किया कि उन सब बर्तनों को जो बाल और यसीर और आसमान की सारी फौज के लिए बनाए गए थे, खुदावन्द की हैकल से बाहर निकालें, और उसने येस्शलेम के बाहर किंद्रों के खेतों में उनको जला दिया और उनकी राख बैतेल पहुँचाई। 5 और उसने उन बूत परस्त काहिनों को, जिनको शहान — ए — यहदाह ने यहदाह के शहरों के ऊंचे मकामों और येस्शलेम के आस — पास के मकामों में खुशबूजलाने को मुकर्रर किया था, और उनको भी जो बाल और चाँद और सरज और सव्यारे और आसमान के सारे लक्षकर के लिए खुशबूजलाते थे, मौकूफ किया। 6 और वह यसीर को खुदावन्द के घर से येस्शलेम के बाहर किंद्रों के नाले पर ले गया, और उसे किंद्रों के नाले पर जला दिया और उसे कूट कूटकर खाक बना दिया और उसे ‘आम लोगों की कब्रों पर फेंक दिया। 7 उन्हें लूटियों के मकानों को जो खुदावन्द के घर में थे, जिनमें ‘जौते यसीर के लिए पर्दे बुका करती थी, दा दिया। 8 और उसने यहदाह के शहरों से सब काहिनों को लाकर, जिबा’ से बैरसबा’ तक उन सब ऊंचे मकामों में जहाँ काहिनों ने खुशबूजलाया था, नजासत डलवाई, और उन्हें फाटकों के उन ऊंचे मकामों को जो शहर के नाजिम यशूआ के फाटक के मदरखल, यानी शहर के फाटक के बाएँ हाथ को थे, गिरा दिया। 9 तो भी ऊंचे मकामों के काहिन येस्शलेम में खुदावन्द के मजबह के पास न आए, लेकिन वह अपने भाईयों के साथ बेघर्मीरी रोटी खा लेते थे। 10 और उसने तफत में जो बनी — हिन्म की बादी में है, नजासत फिकवाई ताकि कोई शर्खस मोलक के लिए अपने बेटे या बेटी को आग में न जला सके। 11 और उसने उन घोड़ों को दूर कर दिया जिनको यहदाह के बादशाहों ने सूरज के लिए माझसूस करके खुदावन्द के घर के आसाने पर, नातन मतिक ख्वाजासरा की कोठरी के बाबर रखवा था जो हैकल की हड़ के अन्दर थी, और सूरज के रथों को आग से जला दिया। 12 और उन मजबहों को जो आखज के बालाखने की छात पर थे, जिनको शहान — ए — यहदाह ने बनाया था और उन मजबहों को जिनको मनस्सी ने खुदावन्द के घर के दोनों सहनों में बनाया था, बादशाह ने दा दिया और वहाँ से उनको चूर — चूर करके उनकी खाक को किंद्रों के नाले में फिकवा दिया। 13 और बादशाह ने उन ऊंचे मकामों पर नजासत डलवाई जो येस्शलेम के मुकाबिल कोह — ए — आलायश की दहनी तरफ थे, जिनको इस्माईल के बादशाह सुलेमान ने सैदानियों की नफरती ‘अस्तारात और मोआवियों, के नफरती कमूस और बनी ‘अम्मोंन के नफरती मिल्कोम के लिए बनाया था। 14 और उसने सूरनों को टुकड़े — टुकड़े कर दिया और यसीरियों को काट डाला, और उनकी जगह में मुर्दी की हड्डियाँ भर दी। 15 फिर बैतेल का वह

मजबह और वह ऊँचा मकाम जिसे नबात के बेटे युरब’आम ने बनाया था, जिसने इसाईल से गुनाह कराया, इसलिए इस मजबह और ऊँचे मकाम दोनों को उसने ढा दिया, और ऊँचे मकाम को जला दिया और उसे कट — कूटकर खाक कर दिया, और यसीरियों को जला दिया। 16 और जब यूसियाह मुड़ा तो उसने उन कब्रों को देखा जो वहाँ उस पहाड़ पर थी, इसलिए उसने लोग भेज कर उन कब्रों में से हड्डियाँ निकलवाई, और उनको उस मजबह पर जलाकर उस नापाक किया। ये खुदावन्द के सुखन के मुताबिक हुआ, जिसे उस मर्द — ए — खुदा ने जिसने इन बातों की खबर दी थी सुनाया था। 17 फिर उसने पूछा, “ये कैसी यादगार हैं जिसे मैं देखता हूँ?” शहर के लोगों ने उसे बताया, “ये उस मर्द — ए — खुदा की कब्र है, जिसने यहदाह से आकर इन कामों की जो तू ने बैतेल के मजबह से किए, खबर दी।” 18 तब उसने कहा, “उसे रहने दो, कोई उसकी हड्डियों को न सरकाए।” इसलिए उन्होंने उसकी हड्डियाँ उस नवी की हड्डियों के साथ जो सामरिया से आया था रहने दी। 19 और यूसियाह ने उन ऊँचे मकामों के सब घरों की भी जो सामरिया के शहरों में थे, जिनको इस्माईल के बादशाहों ने खुदावन्द को गुप्ता दिलाने को बनाया था दाया, और जैसा उसने बैतेल में किया था वैसा ही उनसे भी किया। 20 और उसने ऊँचे मकामों के सब काहिनों को जो वहाँ थे, उन मजबहों पर कल्पन किया और आदमियों की हड्डियाँ उन पर जलाई, फिर वह येस्शलेम को लौट आया। 21 और बादशाह ने सब लोगों को ये हक्म दिया, कि “खुदावन्द अपने खुदा के लिए फसह मनाओ, जैसा ‘अहद की इस किताब में लिखा है।” 22 और यकीनन काजियों के जमाने से जो इस्माईल की ‘अदालत करते थे, और इस्माईल के बादशाहों और यहदाह के बादशाहों के कुल दिनों में ऐसी ‘इंद — ए — फसह कभी नहीं हुई थी। 23 यूसियाह बादशाह के अठारहवें बरस से फसह येस्शलेम में खुदावन्द के लिए मनाई गई। 24 इसके सिवा यूसियाह ने जिनात के यारों और जादूरों और मूरों और बुतों, और सब नफरती चीजों को जो मुल्क — ए — यहदाह और येस्शलेम में नजर आई दूर कर दिया, ताकि वह शरीर अत की उन बातों को पूछ करे जो उस किताब में लिखी थी, जो खिलकियाह काहिन को खुदावन्द के घर में मिली थी। 25 उससे पहले कोई बादशाह उसकी तरह नहीं हुआ था, जो अपने सारे दिल और अपनी सारी जान और अपने सारे जोर से मूसा की सारी शरीर अत के मुताबिक खुदावन्द की तरफ रुँ लाया हो; और न उसके बाद कोई उसकी तरह खड़ा हुआ। 26 बाबजूद इसके मनस्सी की सब बदकारियों की वजह से, जिनसे उसने खुदावन्द को गुप्ता दिलाया था, खुदावन्द अपने सख्त — ओ — शरीद कहर से, जिससे उसका ग़ज़ब यहदाह पर भड़का था, बाज़ न आया। 27 और खुदावन्द ने फरमाया, कि “मैं यहदाह को भी अपनी आँखों के सामने से दूर करूँगा, जैसे मैं इस्माईल को दूर किया; और मैं इस शहर को जिसे मैंने चुना यानी येस्शलेम को, और इस घर को जिसके ज़रिए मैंने कहा था की मेरा नाम वहाँ होगा रुँ कर दँगा” 28 और यूसियाह के बादशाहों की तवारिख की किताब में लिखे नहीं? 29 उसी के अच्याम में शाह — ए — मिस्फिर’ औन निको ह शाह — ए — असूर पर चढ़ाई करने के लिए दरिया — ए — फरात को गया था; और यूसियाह बादशाह उसका सामना करने को निकला, इसलिए उसने उसे देखते ही मजिदों में कल्पन कर दिया। 30 और उसके मुलायिम उसको एक रथ में मजिदों से मरा हुआ ले गए, और उसे येस्शलेम में लाकर उसी की कब्र में दफन किया। और उस मुल्क के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहआखज को लेकर उसे मसह किया, और उसके बाप की जगह उसे बादशाह बनाया। 31 और यहआखज जब सलतनत करने लगा तो तेझ्स साल का था, उसने येस्शलेम में तीन महीने सलतनत की। उसकी माँ का

नाम हमृतल था, जो लिबनाही यरमियाह की बेटी थी। 32 और जो — जो उसके बाप — दादा ने किया था उसके मुताबिक इसने भी खुदावन्द की नजर में गुनाह किया। 33 इसलिए फिर 'अौन निकोह ने उसे रिबला में, जो मुल्क — ए — हमात में है, कैद कर दिया ताकि वह येस्सलेम में सल्तनत न करने पाएँ और उस मुल्क पर सौ किन्तार सोना खिराज मुकर्रर किया। 34 और फिर 'अौन निकोह ने यूसियाह के बेटे इलियाकीम को उसके बाप यूसियाह की जगह बादशाह बनाया, और उसका नाम बदलकर यहयकीम रखा, लेकिन यह आखज को ले गया, इसलिए वह मिस्र में आकर वहाँ मर गया। 35 यहयकीम ने वह चाँदी और सोना फिर 'अौन को पहुँचाया, पर इस नकटी को फिर 'अौन के हक्म के मुताबिक देने के लिए उसने ममलुकत पर खिराज मुकर्रर किया; या'नी उसने उस मुल्क के लोगों से हर शब्स के लगान के मुताबिक चाँदी और सोना लिया ताकि फिर 'अौन निकोह को दे। 36 यहयकीम जब सल्तनत करने लगा, तो पच्चीस बरस का था, उसने येस्सलेम में ग्यारह बरस सल्तनत की। उसकी माँ का नाम जब्दाता था, जो स्माह के फिदायाह की बेटी थी। 37 और जो — जो उसके बाप — दादा ने किया था, उरी के मुताबिक उसने भी खुदावन्द की नजर में भूराई की।

24 उसी के दिनों में शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर ने चढाई की और यहयकीम तीन बरस तक उसका खादिम रहा तब वह फिर कर उससे मुड़ गया। 2 और खुदावन्द ने कसदियों के दल, और अराम के दल, और मोआब के दल, और बनी 'अमोन के दल उस पर भेजे, और यहदाह पर भी भेजे ताकि उसे जैसा खुदावन्द ने अपने बन्दों नवियों के जरिएँ फरमाया था हलाक कर दे। 3 यकीन खुदावन्द ही के हक्म से यहदाह पर यह सब कुछ हुआ, ताकि मनस्ती के सब गुनाहों के जरिएँ जो उसने किए, उनको अपनी नजर से दूर करे 4 और उन सब बेगुनाहों के खन के जरिएँ भी जिसे मनस्ती ने बहाया, क्यूँकि उसने येस्सलेम को बेगुनाहों के खन से भर दिया था और खुदावन्द ने मुआफ करना न चाहा। 5 यहयकीम के बाकी काम और सब कुछ जो उसने किया, इसलिए क्या वह यहदाह के बादशाहों की तवारीख की किताब में लिखा नहीं? 6 और यहयकीम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उसका बेटा यहयाकीन उसकी जगह बादशाह हुआ। 7 और शाह — ए — मिस्र फिर कभी अपने मुल्क से बाहर न गया; क्यूँकि शाह — ए — बाबुल ने मिस्र के नाले से दरिया — ए — फरात तक सब कुछ जो शाह — ए — मिस्र का था ले लिया था। 8 यहयाकीन जब सल्तनत करने लगा तो अठारह बरस का था, और येस्सलेम में उसने नीन महीने सल्तनत की। उसकी माँ का नाम नहशता था, जो येस्सलेमी इलनातन की बेटी थी। 9 और जो — जो उसके बाप ने किया था उसके मुताबिक उसने भी खुदावन्द की नजर में गुनाह किया। 10 उस वक्त शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर के खादिमों ने येस्सलेम पर चढाई की और शहर को घेर लिया। 11 और शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर भी, जब उसके खादिमों ने उस शहर को घेर रखा था, वहाँ आया। 12 तब शाह — ए — यहदाह यहयाकीन अपनी माँ और और अपने मूलजिमों और सरदारों और 'उहदादारों साथ निकल कर शाह — ए — बाबुल के पास गया, और शाह — ए — बाबुल ने अपनी सल्तनत के आठवें बरस उसे गिरफ्तार किया। 13 और वह खुदावन्द के घर के सब खजानों और शाही महल के सब खजानों को वहाँ से ले गया, और सोने के सब बर्तनों को जिनको शाह — ए — इमाईल सुलेमान ने खुदावन्द की हैक्ल में बनाया था, उसने काट कर खुदावन्द के कलाम के मुताबिक उनके टुकड़े — टुकड़े कर दिए। 14 और वह सारे येस्सलेम को और सब सरदारों और सब सूर्माओं को, जो दस हजार आदमी थे, और सब कारीगरों और लहराओं को गुलाम करके ले गया; इसलिए वहाँ मुल्क के लोगों में से सिवा

कंगालों के और कोई बाकी न रहा। 15 और यहयाकीन को वह बाबुल ले गया, और बादशाह की माँ और बादशाह की बीवियों और उसके 'उहदे दारों और मुल्क के ईसीयों को वह गुलाम करके येस्सलेम से बाबुल को ले गया। 16 और सब ताकतवर आदिमियों को जो सात हजार थे, और कारीगरों और लहराओं को जो एक हजार थे, और सब के सब मजबूत और जंग के लायक थे; शाह — ए — बाबुल गुलाम करके बाबुल में ले आया। 17 और शाह — ए — बाबुल ने उसके बाप के भाई मत्तियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया और उसका नाम बदलकर सिदकियाह सल्तनत करने लगा तो इक्कीस बरस का था, और उसने ग्यारह बरस येस्सलेम में सल्तनत की। उसकी माँ का नाम हमृतल था, जो लिबनाही यरमियाह की बेटी थी। 19 और जो — जो यह यकीम ने किया था उरी के मुताबिक उसने भी खुदावन्द की नजर में गुनाह किया। 20 क्यूँकि खुदावन्द के ग़जब की जबह से येस्सलेम और यहदाह की यौनित आई, कि आखिर उसने उनको अपने सामने से दूर ही कर दिया; और सिदकियाह शाह — ए — बाबुल से फिर गया।

25 और उसकी सल्तनत के नौवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन, यैँ हुआ कि शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर ने अपनी सारी फौज के साथ येस्सलेम पर चढ़ाई की, और उसके सामने खेमाजन हुआ, और उन्होंने उसके सामने चारों तरफ घेराबन्दी की। 2 और सिदकियाह बादशाह की सल्तनत के यारहवें बरस तक शहर का मुहासिरा रहा। 3 चौथे महीने के नौवें दिन से शहर में काल ऐसा सख्त हो गया, कि मुल्क के लोगों के लिए कुछ खाने को न रहा। 4 तब शहर पनाह में सुराख हो गया, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक शही बाग के बगाब था, उससे सब जगी मर्द गत ही रात भाग गए, उस वक्त कसदी शहर को घेर हुए थे और बादशाह ने बीरामे का रास्ता लिया। 5 लेकिन कसदियों की फौज ने बादशाह का पीछा किया और उसे यीह के मैदान में जालिया, और उसका सारा लश्कर उसके पास से तिर बित्र हो गया था। 6 इसलिए वह बादशाह को पकड़ कर रिबला में शाह — ए — बाबुल के पास ले गए, और उन्होंने उस पर फतवा दिया। 7 और उन्होंने सिदकियाह के बेटों को उसकी अँखों के सामने जबह किया और सिदकियाह की अँखें निकाल डाली और उसे ज़ंजीरों से जकड़कर बाबुल को ले गए। 8 और शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर के 'अहद के उन्नीसवें साल के पाँचवें महीने के सातवें दिन, शाह — ए — बाबुल का एक खादिम नबूज़रादान जो जिलौदारों का सरदार था येस्सलेम में आया। 9 और उसने खुदावन्द का घर और बादशाह का महल येस्सलेम के सब घर, या'नी हर एक बड़ा घर आग से जला दिया। 10 और कसदियों के सारे लश्कर ने जो जिलौदारों के सरदार के साथ थे, येस्सलेम की फसील को चारों तरफ से गिरा दिया। 11 और बाकी लोगों को जो शहर में रह गए थे, और उनको जिन्होंने अपनों को छोड़ कर शाह — ए — बाबुल की पनाह ली थी, और 'अवाम में से जिनके बाकी रह गए थे, उन सबको नबूज़रादान जिलौदारों का सरदार कैद करके ले गया। 12 पर जिलौदारों के सरदार ने मुल्क के कंगालों को रहने दिया, ताकि खेती और बांगों की बागानी करें। 13 और पीतल के उन सूतों को जो खुदावन्द के घर में थे, और कुर्सियों को और पीतल के बड़े हौज को, जो खुदावन्द के घर में था, कसदियों ने तोड़ कर टुकड़े — टुकड़े किया और उनका पीतल बाबुल को ले गए। 14 और तमाम देंगे और बेल्चे और गुलारी और चम्चे, और पीतल के तमाम बर्तन जो वहाँ काम आते थे ले गए। 15 और अंगिलियाँ और कटरे, गरज जो कुछ सोने का था उसके सोने को, और जो कुछ चाँदी का था उसकी चाँदी को, जिलौदारों का सरदार ले गया। 16 और दोनों सूतन और वह बड़ा हौज और वह कुर्सियाँ, जिनको सुलेमान ने खुदावन्द के घर के लिए बनाया था, इन सब चीजों के पीतल का

वज्जन बेहिसाब था। 17 एक सुतून अठारह हाथ ऊँचा था, और उसके ऊपर पीतल का एक ताज था और वह ताज तीन हाथ बलन्द था; उस ताज पर चारों तरफ जालियाँ और अनार की कलियाँ, सब पीतल की बनी हुई थीं; और दूसरे सुतून के लवाजिम भी जाली समेत इन्हीं की तरह थे। 18 जिलौदारों के सरदार ने सिरायाह सरदार काहिन को और काहिन — ए — सानी सफनियाह को और तीनों दबानों को पकड़ लिया; 19 और उसने शहर में से एक सरदार को पकड़ लिया जो जंगी मर्दी पर मुकर्रर था, और जो लोग बादशाह के सामने हाजिर रहते थे उनमें से पाँच आदमियों को जो शहर में मिले, और लश्कर के बड़े मुहर्रिर को जो अहल — ए — मुल्क की मौजदात लेता था, और मुल्क के लोगों में से साठ आदमियों को जो शहर में मिले। 20 इनको जिलौदारों का सरदार नबूजरादान पकड़ कर शाह — ए — बाबुल के सामने रिबला में ले गया। 21 और शाह — ए — बाबुल ने हमात के इलाके के रिबला में इनको मारा और कत्ल किया। इसलिए यहदाह भी अपने मुल्क से गुलाम होकर चला गया। 22 जो लोग यहदाह की सर जमीन में रह गए, जिनको नबूकदनजर शाह — ए — बाबुल ने छोड़ दिया, उन पर उसने जिदलियाह — बिन अर्धीकाम — बिन साफ़न को हाकिम मुकर्रर किया। 23 जब लश्करों के सब सरदारों और उनकी सिपाह ने, यानी इस्माईल — बिन — नतनियाह और यूहनान बिन करीह और सिरायाह बिन ताखमत नातूफाती और याजनियाह बिन माकाती ने सुना कि शाह — ए — बाबुल ने जिदलियाह को हाकिम बनाया है, तो वह अपने लोगों समेत मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आए। 24 जिदलियाह ने उनसे और उनकी सिपाह से कसम खाकर कहा, “कसदियों के मुलाजिमों से मत डरो; मुल्क में बसे रहो और शाह — ए — बाबुल की खिदमत करो और तुम्हारी भलाई होगी।” 25 मगर सातवें महीने ऐसा हुआ कि इस्माईल — बिन — नतनियाह — बिन — इलीसमा’ जो बादशाह की नस्ल से था, अपने साथ दस मर्द लेकर आया और जिदलियाह को ऐसा मारा कि वह मर गया; और उन यहदियों और कसदियों को भी जो उसके साथ मिस्फ़ाह में थे कत्ल किया। 26 तब सब लोग, क्या छोटे क्या बड़े और लोगों के सरदार उठ कर मिस्त्र को चले गए क्यूँकि वह कसदियों से डरते थे। 27 और यहयाकीन शाह — ए — यहदाह की गुलामी के सैतीसवें साल के बारहवें महीने के सत्ताइसवें दिन ऐसा हुआ, कि शाह — ए — बाबुल ईवील मरदूक ने अपनी सलतनत के पहले ही साल यहयाकीन शाह — ए — यहदाह को कैदखाने से निकाल कर सरफ़राज किया; 28 और उसके साथ मेहरबानी से बातें कीं, और उसकी कुर्सी उन सब बादशाहों की कुर्सियों से जो उसके साथ बाबुल में थे बतन्द की। 29 इसलिए वह अपने कैदखाने के कपड़े बदलकर उम्र भर बराबर उसके सामने खाना खाता रहा; 30 और उसको उम्र भर बादशाह की तरफ से बजीफे के तौर पर हर रोज खर्चा मिलता रहा।

1 तवा

1 आदम, सेत, उन्स, 2 किनान, महलीएल, यारिद, 3 हनूक, मतूरिलह, लमक, 4 नह, सिम, हाम, और याफत। 5 बनी याफत: ज़ुमर और माजज और मादी और यावान और तूबल और मसक और तीरास हैं। 6 और बनी ज़ुमर अश्कनाज और रीफत और तुजरमा है। 7 और बनी यावान, इलिसा और तरसीस, कित्ती और दूदनी हैं। 8 बनी हाम: कूश और मिस, फूत और कनान हैं। 9 बनी कूश: सबा और हवीला और सबता और रामाह सल्तका हैं और बनी रामाह सबाह और ददान हैं। 10 कूश से नमस्त ऐदा हुआ; ज़मीन पर पहले वही बहादुरी करने लगा। 11 और मिस से लदी और अनामी और लिहाबी और नफतही, 12 और फस्तसी और कसलही जिनसे फिलिस्ती निकले, कफरी पैदा हुए। 13 और कनान से सैदा जो उसका पहलौठा था, और हित, 14 और यबूसी और अमोरी और जिरजाशी, 15 और हव्वी और 'अर्की' और सीनी, 16 और अरवादी और सिमारी और हिमारी पैदा हुए। 17 बनी सिम: ऐलाम और असू और अरफकसद और लद और अराम और 'ऊज' और हल और जतर और मसक है। 18 और अरफकसद से सिलह पैदा हुआ और सिलह से इब्र पैदा हुआ। 19 और इब्र से दो बेटे पहले का नाम फलज था क्यूंकि उसके अन्याम में ज़मीन बटी, और उसके बाई का नाम युत्कान था। 20 और युत्कान से अलमदाद और सलफ और हसर माकत और इराख, 21 और हदूम और ऊजाल और दिकला, 22 और ऐबाल और अबीमाएल और सबा, 23 और ओफीर और हवीला और यूबाब पैदा हुए; यह सब बनी युत्कान हैं। 24 सिम, अरफकसद, सिलह, 25 इब्र, फलज, 'र'ऊ, 26 सर्ज, नहर, तारह, 27 इब्रहाम या'नी अब्रहाम। 28 अब्रहाम के बेटे: इस्हाक और इस्मा'ईल थे। 29 उनकी औलाद यह हैं: इस्मा'ईल का पहलौठा नाबयोत उसके बाद कीदार और अदविएल और मिबसाम, 30 मिशमा'अ और दमा और मसा, हदद और तेमा, 31 यत्र, नाफिय, किदाम, यह बनीइस्मा'ईल हैं। 32 और अब्रहाम की हरम क़तरा के बेटे यह हैं: उसके बन्र से ज़िमरान युक्सान और मिदान और मिदियान और इस्बाक और सरह पैदा हुए और बनी युक्सान: सिबा और ददान हैं। 33 और बनी मिदियान: 'एफा और 'इफ़ और हनूक और अबीदा'अ इल्दू'आ हैं; यह सब बनी क़तरा हैं। 34 और अब्रहाम से इस्हाक पैदा हुआ। बनी इस्हाक: 'ऐसौ और इस्माईल थे। 35 बनी 'ऐसौ: इलिफज और 'र'ऊएल और य'ऊस और यालाम और कोरह हैं। 36 बनी इलिफज तेमान और ओमर और सफी और जाताम, कनज, और तिम्ना' और 'अमालीक इहैं। 37 बनी 'र'ऊएल: नहत, ज़ारह, सम्मा और मिजज़ हैं। 38 और बनी शाईः लोतान और सोबल और सबा'ऊन और 'अना और दीसोन और एसर और दीसान हैं। 39 और हीरी और होमाम लूतान के बेटे थे, और तिम्ना' लोतान की बहन थी। 40 बनी सोबल: 'अल्यान और मानहत 'एबाल सफी और ओनाम हैं। अय्याह और 'अना सबा'ऊन के बेटे थे। 41 और 'अना का बेटा दीसोन था; और हमरान और इश्बान और यिनान और किरान दीसोन के बेटे थे। 42 और एसर के बेटे: बिलहान और जावान और याकान थे और ऊज और अरान दीसान के बेटे थे। 43 और जिन बादशाहों ने मुल्क — ए — अदोम पर उस बक्त हक्मत की जब बनी — इस्माईल पर कोई बादशाह हुक्मरान न था वह यह है: बाला' बिन ब'ओर; उसके शहर का नाम दिहाबा था। 44 और बाला' मर गया और यूबाब बिन ज़ारह जो बुमराही था उसकी जगह बादशाह हुआ। 45 और यूबाब मर गया और हशाम जो तेमान के 'इलाके का था उसकी जगह बादशाह हुआ। 46 और हशाम मर गया और हदद बिन बिदद, जिसने मिदियानियों को मोआब के मैदान में मारा उसकी जाह बादशाह हुआ और उसके शहर का नाम 'अवीत था। 47 और हदद मर गया और

शमला जो मसरिका का था, उसकी जगह बादशाह हुआ। 48 और शमला मर गया और साउल जो दरिया — ए — फ्रत के पास के रहोने का बाशिंदा था उसकी जगह बादशाह हुआ। 49 और साउल मर गया और बाल — हनान बिन अकबूर उसकी जगह बादशाह हुआ। 50 और बा'ल — हनान मर गया और हदद उसकी जगह बादशाह हुआ; उसके शहर का नाम फ़ाई और उसकी बीवी का नाम महेतबेल था, जो मरीद बिन्त मेज़ाहब की बेटी थी। 51 और हदद मर गया। फिर यह अदोम के रईस हुए; रईस तिम्ना', रईस अलियाह, रईस यतीत, 52 रईस ओलीबामा, रईस ऐला, रईस फ़ीनोन, 53 रईस कनज, रईस तेमान, रईस मिसार, 54 रईस मजिदएल, रईस 'इराम; अदोम के रईस यही है।

2 यह बनी इसाईल हैं: स्विन, शमौन, लावी, यहदाह, इश्कार और जब्लत्स, 2 दान, यसूफ, और बिनयमीन, नफताली, ज़द और आशर। 3 'ए' और ओनान और सीला, यह यहदाह के बेटे हैं; यह तीनों उससे एक कानी' 'अैरत बतस' अ के बन्र से पैदा हुए। और यहदाह का पहलौठा 'ए' खदावंद की नजर में एक शरीर था, इसलिए उसने उसको मार डाला; 4 और उसकी बह तमर के उससे फ़ारस और ज़ार हुए। यहदाह के कुल पांच बेटे थे। 5 और फ़ारस के बेटे हसरोन और हमूल थे। 6 और ज़ारह के बेटे: ज़िमरी और ऐतान, हैमान और कलकूल और दारा, यानी कुल पांच थे। 7 और इसाईल का दुख देने वाला 'अकर जिसने माल्खस की हुई चीज़ों में खयानत की, करमी का बेटा था; 8 और ऐतान का बेटा 'अज़रियाह था। 9 और हसरोन के बेटे जो उससे पैदा हुए यह है: यरहमिएल और राम और कुलबी। 10 और राम से 'अमीनदाब ऐदा हुआ और 'अमीनदाब से नहसोन पैदा हुआ, जो बनी यहदाह का सरदार था। 11 और नहसोन से सलमा पैदा हुआ और सलमा से बो'अज़ पैदा हुआ। 12 और बो'अज़ से 'ओबेद पैदा हुआ और 'ओबेद से यस्सी पैदा हुआ। 13 यस्सी से उसका पहलौठा 'इलियाब पैदा हुआ, और अबीनदाब दूसरा, और सिमआ तीसरा, 14 नतनिएल चौथा, रही पाँचवाँ, 15 'ओज़म छठा, दाऊद सातवाँ, 16 और उनकी बहनें ज़रोयाह और अबीजेल थीं। अबीशी और योआब और 'असाहेल, यह तीनों ज़स्याह के बेटे हैं। 17 और अबीजेल से 'अमासा पैदा हुआ, और 'अमासा का बाप इस्माईली यथा। 18 और हसरोन के बेटे कालिब से, उसकी बीवी 'अज़बाह और यरी' जो बेटे हैं। 19 और 'अज़बाह मर गई, और कालिब ने इफ़रात को ब्याह लिया जिसके बन्र से हूँ पैदा हुआ। 20 और हर से ऊरी पैदा हुआ और ऊरी से बजलिएल पैदा हुआ। 21 उसके बाद हसरोन जिल'आद के बाप मकीर की बेटी के पास गया; जिससे उसने साठ बरस की उम्र में ब्याह किया था और उसके बन्र से शज़ब पैदा हुआ। 22 और शज़ब से याईर पैदा हुआ। जो मुल्क — ए — जिल'आद में रईस शहरों का मालिक था। 23 और जसर और अराम ने याईर के शहरों को और कनात को 'म'ए उसके कस्त्वों के यानी साठ शहरों को उन से ले लिया। यह सब जिल'आद के बाप मकीर के बेटे थे। 24 और हसरोन के कालिब इफ़राता में मर जाने के बाद हसरोन की बीवी अवियाह के उससे अशू पैदा हुआ जो तक़्अ का बाप था। 25 और हसरोन के पहलौठे, यरहमिएल के बेटे यह है: राम जो उसका पहलौठा था और बूना और ओनान और ओज़म और अखियाह। 26 और यरहमिएल की एक और बीवी थी जिसका नाम 'अतारा था। वह ओनाम की माँ थी। 27 और यरहमिएल के पहलौठे राम के बेटे माज़ और यमीन 'एकर थे। 28 और ओनाम के बेटे: सम्मी और यदा'; और सम्मी के बेटे: नदब और अबीसूर थे। 29 और अबीसूर की बीवी का नाम अबीखैल था। उसके बन्र से अखबान और मोलिद पैदा हुए। 30 और नदब के बेटे: सिलिद अफ़काईम थे लेकिन सिलिद बे औलाद मर गया। 31 और अफ़काईम का बेटा यस'ई, और यस'ई का बेटा सीसान; और सीसान का

बेटा अखली था। 32 और समी के भाई 'यदा' के बेटे: यतर और यूनतन थे; और यतर बे औलाद मर गया। 33 और यूनतन के बेटे: फलत और जाजा; यह यरहमिएल के बेटे थे। 34 और सीसान के बेटे नहीं सिर्फ बेटियां थीं और सीसान का एक मिसी नैकर यरखा' नामी था। 35 इसलिए सीसान ने अपनी बेटी को अपने नैकर यरखा' से ब्याह दिया, और उसके उससे 'अंती पैदा हुआ। 36 और अंती से नातन पैदा हुआ, और नातन से जाबा'द पैदा हुआ, 37 और जाबा'द से इफलाल पैदा हुआ और इफलाल से 'ओबेट पैदा हुआ। 38 और 'ओबेद से याह पैदा हुआ और याह से 'अजरयाह पैदा हुआ 39 और अजरयाह से खलस पैदा हुआ, और खलस से इलि, आसा पैदा हुआ, 40 और इलि'आसा से सिसमी पैदा हुआ, और सिसमी से सलम पैदा हुआ। 41 और सलम से यकमियाह पैदा हुआ और यकमियाह से इलीसमा' पैदा हुआ। 42 यरहमिएल के भाई कलिब के बेटे यह हैं: मिसा उसका पहलौठा जो जीफ का बाप है, और हबस्न के बाप मरीसा के बेटे। 43 और बनी हबस्न: कोरह और तपूह और रकम और समा' थे। 44 और समा' से युक्र'अम का बाप रखम पैदा हुआ, और रखम से सम्पी पैदा हुआ। 45 और सम्पी का बेटा: म'ऊन था और म'ऊन बैतसूर का बाप था। 46 और कालिब की हरम ऐका से हरान और मौजा और जाजिज पैदा हुए और हारान से जाजिज पैदा हुआ। 47 और बनी यहदी: रजम और यूतम और जसाम और फलत और 'ऐका और शा'फ थे। 48 और कालिब की हरम मा'का से शिब्बर और तिरहनाह पैदा हुए। 49 उसी के बत्र से मदमन्नाह का बाप शा'फ और मक्बीना का बाप सिवा और रहज और रिजबा' का बाप भी पैदा हुए; और कालिब की बेटी 'अकसा थी। 50 कालिब के बेटे यह थे। इकराता के पहलौठे हर का बेटा करयत — यारीम का बाप सोबल, 51 बैतलहम का बाप सलमा, और बैतजादिर का बाप खारीफ। 52 और करयत — यारीम के बाप सोबल के बेटे ही गेटे थे; हराई और ममोखोत के आधे लोग। 53 और करयत यारीम के घराने यह थे: इतरी और फूटी और सुमारी और मिस्रा'ई इन्हीं से सु'अंती और इश्तावली निकलते हैं। 54 बनी सलमा यह थे: बैतलहम और नतफाती और 'अतरात — बैतयुआब और मनूखतियों के आधे लोग और सरा'ई, 55 और या'बीज़ के रहने वाले मुन्हियों के घराने, तिर'अंती और सम'अंती और सौकाती; यह वह कीनी है जो रैकाब के घराने के बाप हमात की नसल से थे।

3 यह दाऊद के बेटे हैं जो हबस्न में उससे पैदा हुए: पहलौठा अमगोन, यजर'एनी अखनअम के बत्र से; दूसरा दानिएल, कर्मिली अबीजेल के बत्र से; 2 तीसरा अबीसलोम, जो जसूर के बादशाह तल्मी की बेटी मा'का का बेटा था; चौथा अदूनियाह, जो हज्जियत का बेटा था। 3 पाँचवाँ सफतियाह, अबीताल ले बत्र से; छठा इतर'अम, उसकी बीवी 'इजला से। 4 यह छ: हबस्न में उसने पैदा हुए। उसने वहाँ सात बरस छ: महीने हक्कमत की, और येस्शलेम में उसने तैसीस बरस हक्कमत की। 5 और यह येस्शलेम में उससे पैदा हुए: सिम'आ और सोबाब और नातन और सुलेमान, यह चारों 'अम्मीएल की बेटी बतसू'अ के बत्र से थे। 6 और इब्हार और इलीसिमा' और इलीयदा' और इलिफालत, 7 और नुजा और नफज और यफी'आ, 8 और इलीसमा' और इलीयदा' और इलिफालत; यह नौ 9 यह सब हरमों के बेटों के 'अलतावा दाऊद के बेटे थे; और तमर इनकी बहन थी 10 और सुलेमान का बेटा रहब'अम था उसका बेटा अबियाह, उसका बेटा आसा, उसका बेटा यहसफत; 11 उसका बेटा यूराम, उसका बेटा अखजियाह उसका बेटा यूआस; 12 उसका बेटा अमसियाह, उसका बेटा अजरियाह, उसका बेटा यूतम; 13 उसका बेटा आखज, उसका बेटा हिजकियाह, उसका बेटा मनस्सी। 14 उसका बेटा अम्मून, उसका बेटा यूसियाह; 15 और यूसियाह के बेटे यह थे: पहलौठा यूहनान, दूसरा यहयकीम, तीसरा सिदकियाह, चौथा सल्लूम।

16 और बनी यहयकीम: उसका बेटा यकूनियाह, उसका बेटा सिदकियाह। 17 और यकूनियाह जो गुलाम था, उसके बेटे यह हैं: सियालतिएल, 18 और मल्कराम और फिदायाह और शीनाजर, यकमियाह, होसमा' और नदबियाह; 19 और फिदायाह के बेटे यह हैं: ज़रब्बाबुल और सिम'ई और ज़रब्बाबुल के बेटे यह हैं: मुसल्लाम और हनानियाह, और सल्लूमियत उनकी बहन थी, 20 और हस्बूा और अहल और बरकियाह और हसादियाह, यसजसद यह पाँच। 21 और हनानियाह के बेटे यह हैं: फलतियाह और यसा'याह। बनी रिफायाह, बनी अरनान, बनी 'ईदयाह, बनी सकनियाह, 22 और सकनियाह का बेटा: समा'याह और बनी समा'याह: हूत्स और इजाल और बरीह और नारियाह और सफात' यह छ: । 23 और नारियाह के बेटे यह थे: इलीहै'ऐनी, और हज्जिकियाह और 'अजरिकाम, यह तीन। 24 और बनी इलीहै'ऐनी यह थे: हूटैवाह और 'इलियासब और फिलायाह और 'अवक्खब और यूहनान और दिलायाह 'अनानी, यह सात।

4 बनी यहदाह यह है: फारस, हसरोन और कर्मी और हर और सोबल। 2 और रियायाह बिन सोबल से यहत पैदा हुआ और यहत से अख्बीमी और लाहद पैदा हुए, यह सु'अंतीयों के खानदान है। 3 और यह 'ऐताम के बाप से है: यजर'एल और इसमा' और इदबास और उनकी बहन का नाम हज्जिल — इलफूनी थी; 4 और फनूएल जटूर का बाप और 'अजर हसा का बाप था। यह इफ्राता के पहलौठे हर के बेटे हैं। जो बैतलहम का बाप था। 5 और तकू'अ के बाप अशर की दो बीवियां थीं हीलाह और नारा। 6 और नारा के उससे अख्बासाम और हिफ़ और तेमनी और हखसतरी पैसा हुए। यह नारा के बेटे थे। 7 और हीलाह के बेटे: जरत और यजूआर और इतनान थे। 8 कूज से 'अन्नबू और जोबीवा और हस्म के बेटे आखररैल के घराने पैदा हुए। 9 और या'बीज़ अपने भाइयों से मु'अजिज़ था और उसकी माँ ने उसका नाम या'बीज़ रखवा क्यूंकि कहती थी, की 'मैंने गम के साथ उसे जन्म दिया है।' 10 और या'बीज़ ने इमाईल के खुदा से यह दुआ की, "आह, त् युझे बाकाई बरकत दे, और मेरी हूदट को बढाए, और तेरा हाथ मुझ पर हो और त् मुझे बटी से बचाए ताकि वह मेरे गम का जरि'अ न हो!" और जो उसने माँग खुदा ने उसको बरखा। 11 और सखा के भाई कलब से महरि पैदा हुआ जो इस्तन का बाप था। 12 और इस्तन से बैतरिफा और फासह और 'ईरनहस जा बाप तखिन्ना पैदा हुए। यही रैका के लोग हैं। 13 और कनज के बेटे: गुतनिल और शिरायाह थे, और गुतनिल का बेटा हतत था। 14 और म'ऊनाती से 'उफरा पैदा हुआ, और शिरायाह से युआब पैदा हुआ जो जिखराशीम का बाप है; क्यूंकि वह कारीगर थे। 15 और यफुन्ना के बेटे कालिब के बेटे यह हैं: 'ईरु और ऐला और नाम; और बनी ऐला: कनज। 16 और यहलिलएल के बेटे यह हैं: जीफ़ और जीफ़ा, तेरयाह और असरएल। 17 और 'अजरा के बेटे यह हैं: यतर और मरद और 'ईरु और यलत और उसके बत्र से मरियम और सम्मी और इस्तिम'अ का बाप इस्बाह पैदा हुए, 18 और उसकी यहदी बीवी के उस से जटूर का बाप यतर और शोको का बाप हिब्र और जोनोआह का बाप यकूनिल पैदा हुए; और फिर'अैन की बेटी बित्याह के बेटे जिसे मरद ने ब्याह लिया था यह है। 19 और यहदाह की बीवी नहम की बहन के बेटे काईलाजमी का बाप और इस्तिम'अ मा'काती थे। 20 और सीमोन के बेटे यह हैं: अमन्नू और रिन्ना, बिनहन्नान और तीलोन, और यस्रै'के बेटे: जोहित और बिनजोहित थे। 21 और सीला बिन यहदाह के बेटे यह है: 'एर, लका का बाप; और ला'दा, मरीसा का बाप और बीत — अशबि'अ के घराने, जो बारीक कटान का काम करते थे। 22 और योकीम और कोजीबा के लोग, और यूआस और शराफ़ जो मोआब के बीच हुक्मरान थे, और यस्ली लहम। यह पुरानी तवारीख है। 23 यह कुम्हार थे और नताईम और

गदेरा के बाशिंदे थे। वह वहाँ बादशाह के साथ उसके काम के लिए रहते थे। 24 बनी शमैन यह हैं: नमूएल, और यमीन, यरीब, जारह, साऊल। 25 और सल का बेटा सलमू और सलमू का बेटा मिसाम, और मिसाम का बेटा मिशमा'। 26 और मिशमा' के बेटे यह हैं: हमुएल हमुएल का बेटा ज़क्रूर, ज़क्रूर का बेटा सिमाई। 27 और सिमाई के सोलह बेटे और छ: बेटियाँ थीं, लेकिन उसके भाइयों के बहन औलाद न हुईं और उनके सब धराने बनी यहदाह की तरह न बढ़े। 28 और वह 'बैरसबा' और मोलादा और हसरसो'आल, 29 और बिलाहा और 'अज़म और तोलाद, 30 और बतुल और हरमा और सिकलाज, 31 और मरकबोत और हसर सूसीम और बैतवराई और शारीम में रहते थे। दाक्त की हक्कमत तक यहीं उनके शहर थे। 32 और उनके गाँव: 'ऐताम और ऐन और रिमोन और तोकन और 'असन, यह पाँच शहर थे। 33 और उनके रहने देहात भी, जो बाल तक उन शहरों के आस पास थे यह उनके रहने के मुकाम थे और उनके नसबनामे हैं। 34 और मिसोबाल, यमलीक और योशा बिन अमसियाह, 35 और यूएल और याह बिन यूसीबियाह बिन सिरायाह बिन 'असिएल, 36 और इलीयू'ऐनी और याक़बा और यसुखाया और 'असायाह और 'अदिएल और यिसीमिएल और बिनायाह, 37 और ज़ीजा बिन शिफ़ई बिन अल्लून बिन यदायाह बिन सिमरी बिन समा'याह: 38 यह जिनके नाम मज़कूर हुए, अपने अपने धराने के सरदार थे और इनके आबाई खानदान बहुत बढ़े। 39 और वह ज़दूर के मदखल तक यानी उस वादी के पूरब तक अपने गल्लों के लिए चरागाह ढूँगे गए, 40 वहाँ उन्होंने अच्छी और सुखी चरागाह पायी और मूल्क वसी' और चैन और सुख की जगह था; क्यूंकि हाम के लोग कदीम से उस में रहते थे। 41 और वह जिनके नाम लिखे गए हैं, शाह — ए — यहदाह हिज़कियाह के दिनों में आये और उन्होंने उनके पड़ाव पर हमला किया और म'ऊनीम को जो वहाँ मिले कल्त किया, ऐसा की वह आज के दिन तक मिले हैं, और उनकी जगह रहने लगे क्यूंकि उनके गल्लों के लिए वहाँ चरागाह थी। 42 और उनमें से यानी शापान के बेटों में से पाँच सौ शब्बां कोह — ए — शाईं को गए और यसाई के बेटे फलतियाह और नारियाह और रिफायाह और 'उज्जीएल उनके सरदार थे; 43 और उन्होंने उन बाकी 'अमालीकियों को जो बच रहे थे कल्त किया और आज के दिन तक वहीं बसे हुए हैं।

5 और इसाईल के पहलौठे स्विन के बेटे क्यूंकि वह उसका पहलौठा था, लेकिन इसलिए की उसने अपने बाप के बिछौने को नापाक किया था उसके पहलौठे होने का हक इसाईल के यसुफ़ की औलाद को दिया गया, ताकि नसबनामा पहलौठे पन के मुताबिक न हो। 2 क्यूंकि यहदाह अपने भाइयों से ताकतवर हो गया और सरदार उसी में से निकला लेकिन पहलौठे का यसुफ़ का हुआ 3 इसलिए इसाईल के पहलौठे स्विन के बेटे यह हैं: हनकू और फल्लू और हसरोन और कर्मी। 4 योएल के बेटे यह हैं: उसका बेटा समा'याह, समा'याह का बेटा ज़ूज़, ज़ूज़ का बेटा सिमाई। 5 सिमाई का बेटा मीकाह, मीकाह का बेटा रियायाह, रियायाह का बेटा बाल। 6 बाल का बेटा बर्ईंग जिसको असूर का बादशाह तिलगातपिलनासर गुलाम कर के ले गया। वह स्वीनियों का सरदार था। 7 और उसके भाई अपने अपने धराने के मुताबिक जब उनकी औलाद का नसब नामा लिखा गया था, सरदार याईंएल और ज़क्रियाह, 8 और बाला' बिन 'अज़ज़ बिन समा' योएल, वह 'अरो'ईर में नबू और बाल म'ऊन तक, 9 और पूरब की तरफ दरिया — ए — फरात से वीरान में दाखिल होने की जगह तक बसा हुआ था क्यूंकि मूल्क — ए — जिल'आद में उनके चौपाये बहुत बढ़ गए थे। 10 और साऊल के दिनों में उन्होंने हिजिरियों से लड़ाई की जो उनके हाथ से कल्त हुए, और वह जिल'आद के पूरब के सारे 'इलाके में उनके डेरों में बस गए। 11 और बनी ज़द उनके सामने मूल्क — ए — बसन में सलका तक

बसे हुए थे। 12 पहला यूएल था, और साफ़म टूसरा, और यानी और साफ़त बसन में थे। 13 और उनके आबाई खानदान के भाई यह हैं: मीकाएल और मुसल्लाम और सबा' और यूरी और याकान और ज़ी'अ और 'इब्र, यह सातों। 14 यह बनी अबीखैल बिन हरी बिन यास़-आह बिन जिल'आद बिन मीकाएल बिन यमीरी बिन यहदू बिन बजू थे। 15 अखी बिन 'अबदिएल बिन ज़ीन इनके आबाई खानदानों का सरदार था। 16 और वह बसन में जिल'आद और उसके कस्बों और शास्त्री की सारे 'इलाका में, जहाँ तक उनकी हड्डी थी, बसे हुए थे। 17 यहदाह के बादशाह युताम के दिनों में, और इसाईल के बादशाह युरब' आम के दिनों में उन सभों के नाम उनके नसबनामों के मुताबिक लिखे गए। 18 और बनी स्विन और ज़दियों और मनस्सी के आधे कबीले में सूर्या, यानी ऐसे लोग जो सिपर और तेग उठाने के काबिल और तीर-अन्दाज और जंग आजमूदा थे, चौवालीस हजार सात सौ साठ थे जो जंग पर जाने के लायक थे। 19 यह हजिरियों और यतर और नक्सीस और नोदब से लड़े। 20 और उनसे मुकाबिला करने के लिए मदद पायी, और हाजिरी और सब जो उनके साथ थे उनके हवाले किए गए क्यूंकि उन्होंने लड़ाई में खुदा से दुआ की और उनकी दुआ कुबूल हुई, इसलिए की उन्होंने उस पर भरोसा रखदा। 21 और वह उनकी मवेसी ले गए; उनके ऊंटों में से पचास हजार और भेड़ बकरियों में से ढाई लाख। 22 क्यूंकि बहुत से लोग कल्त हुए इसलिए की जंग खुदा की थी और वह गुलामी के बक्त तक उनकी जगह बसे रहे। 23 और मनस्सी के आधे कबीले के लोग मुल्क में बसे। वह बसन से बालहरमून और सनीर और हरमून के पहाड़ तक फैल गए। 24 उनके आबाई खानदानों के सरदार यह थे: 'इफ़ और यिसाई और इलीएल, 'अज़रिएल, यरियाह और हुदावियाह और यहदएल, जो ताकतवर सूर्या और नामर और अपने आबाई खानदानों के सरदार थे। 25 और उन्होंने अपने बाप दादा के खुदा की हुक्म 'उद्दूती की, और जिस मुल्क के बाशिदों को खुदा ने उनके सामने से हताक किया था, उन ही के मांबदों की पैदी में उन्होंने जिनाकारी की। 26 तब इसाईल के खुदा ने असूर के बादशाह पूल के दिल को और असूर के बादशाह तिलगातपिलनासर के दिल को उभारा, और वह उनकी यानी स्विनियों और ज़दियों और मनस्सी के आधे कबीले को गुलाम कर के ले गए और उनको खलह और खाबूर और हारा और जौजान की नदी तक ले आये; यह आज के दिन तक वहीं है।

6 बनी लाली: जैरसोन, किहात, और मिरारी हैं। 2 और बनी किहात: 'अमराम और इज़हार और हबस्न और 'उज्जिएल। 3 और 'अमराम की औलाद: हास्न और मूसा और मरियम। और बनी हास्न: नदब और अबीह इलीएलियाज़र और ऐतामर। 4 इलीएलियाज़र से फीनहास पैदा हुआ और फीनहास से अबीस'आ पैदा हुआ, 5 और अबीस'आ से बुक्की पैदा हुआ, और बुक्की 'उज्जी पैदा हुआ। 6 और उज्जी जराखियाह पैदा हुआ, और जराखियाह से मिरायोत पैदा हुआ। 7 मिरायोत से अमरियाह पैदा हुआ, और अमरियाह अखीतोब पैदा हुआ। 8 और अखीतोब सदूक पैदा हुआ, और सदूक से अखीमा'ज पैदा हुआ। 9 और अखीमा'ज से 'अज़रियाह पैदा हुआ, और 'अज़रियाह से यहनान पैदा हुआ, 10 और यहनान से अज़रियाह पैदा हुआ यह वह है जो उस हैक्तल में जिसे सुलेमान ने येस्शलेम में बनाया था, काहिन था। 11 और 'अज़रियाह से अमरियाह पैदा हुआ और अमरियाह से अखीतोब पैदा हुआ। 12 और अखीतोब से सदूक पैदा हुआ और सदूक से सलूम पैदा हुआ। 13 और सलूम से खिलकियाह पैदा हुआ और खिलकियाह से 'अज़रियाह पैदा हुआ। 14 और 'अज़रियाह से सिरायाह पैदा हुआ और सिरायाह से यहसदक पैदा हुआ। 15 और जब खुदावन्द ने नबूकदनज़र के हाथ यहदाह और येस्शलेम

को जिला वतन कराया, तो यहसूदक भी गुलाम हो गया। 16 बनी लावी: जैरसोम किहात, और मिरारी है। 17 और जैरसोम के बेटों के नाम यह हैं: लिबनी और सिमाई। 18 और बनी किहात: 'अमराम और इजहार और हब्सन और 'उज्जील थे। 19 मिरारी के बेटे यह हैं: महली और मूरी और लावियों के घराने उनके आबाई खानदानों के मुताबिक यह है। 20 जैरसोम से उसका बेटा लिबनी। लिबनी का बेटा यहत, यहत का बेटा जिम्मा। 21 जिम्मा का बेटा यूआख, यूआख का बेटा 'ईदू, 'ईदू का बेटा जारह, जारह का बेटा यतरी। 22 बनी किहात: किहात का बेटा अमीनदाब, का बेटा अमीनदाब का बेटा कोरह, कोरह का बेटा अस्सीर, 23 अस्सीर का बेटा अस्सीर। 24 अस्सीर का बेटा तहत, तहत का बेटा ऊरिएल। ऊरिएल का बेटा उज्जियाह, 'उज्जियाह का बेटा साऊल। 25 और इल्काना के बेटे यह हैं: 'अमासी और अखीमोत। 26 रहा इल्काना तो, इल्काना के बेटे यह हैं: या'नी उसका बेटा सफी, सफी का बेटा नहत। 27 नहत का बेटा इलियाब, इलियाब का बेटा यरोहाम, यरोहाम का बेटा इल्काना। 28 समुएल के बेटों में पहलौढ़ा यूएल, दूसरा अबियाह। 29 बनी मिरारी यह हैं: महली, महली का बेटा लिबनी, लिबनी का बेटा समाई, समाई का बेटा 'उज्जा, 30 'उज्जा का बेटा सिम'आ, सिम'आ का बेटा हिजियाह, का बेटा 'असायाह। 31 वह जिनको दाऊद ने सन्दूक के ठिकाना पाने के बाद खुदावन्द के घर में हम्द के काम पर मुकर्र किया यह है: 32 और वह जब तक सुलेमान येस्शलेम में खुदावन्द का घर बनवा न चुका हम्द गा गा कर खेमा — ए — इजिताम'अ के मसकन के सामने खिदमत करते रहे और अपनी अपनी बारी के मुवाफिक अपने काम पर हाजिर रहते थे। 33 और जो हाजिर रहते थे वह और उनके बेटे यह हैं: किहातियों की औलाद में से हैमान गवव्या बिन यूएल बिन समुएल। 34 बिन इल्काना बिन यरोहाम, बिन इल्लीएल, बिन तह। 35 बिन सफ़ बिन इल्काना बिन महत बिन 'अमासी। 36 बिन इल्काना बिन यूएल बिन 'अज़रियाह बिन सफ़नियाह। 37 बिन तहत बिन अस्सीर बिन अबी असाफ़ बिन कोरह। 38 बिन इजहार बिन किहात बिन लावी बिन इस्माईल। 39 और उसका भाई आसाफ़ जो उसके दहने खड़ा होता था, या'नी आसाफ़ बिन बरकियाह बिन सिम'आ। 40 बिन मीकाएल बिन बांसियाह बिन मलकियाह। 41 बिन अतीन बिन जारह बिन 'अदायाह। 42 बिन ऐतान बिन जिम्मा बिन सिमाई। 43 बिन यहत बिन जैरसोम बिन लावी। 44 और बनी मिरारी उनके भाई बाएं हाथ खड़े होते थे या'नी ऐतान बिन कीसी बिन 'अबदी बिन मुलोक। 45 बिन हसबियाह बिन अमासियाह बिन खिलिकियाह। 46 बिन अमसी बिन बानी बिन सामर। 47 बिन महली बिन मूरी नी मिरारी बिन लावी। 48 और उनके भाई लावी बैत उल्लाह के घर की सारी खिदमत पर मुकर्र थे। 49 लेकिन हास्न और उसके बेटे सोखतीनी कुर्बानी के मज़बह और खुशबूज लालने की कुर्बानीगाह दोनों पर पाकतीन मकान की सारी खिदमत को अंजाम देने और इस्माईल के लिए कफ़कारा देने के लिए जैसा खुदा बन्दे मूसा ने हूक्म किया था कुर्बानी पेश करते थे। 50 बनी हास्न यह है: हास्न का बेटा इल्लीअज़र, इल्लीएलियाज़र का बेटा फ़ीनिहास, फ़ीनिहास का बेटा अबीसू'अ। 51 अबीसू'अ का बेटा बुक्की, बुक्की का बेटा 'उज्जी, 'उज्जी का बेटा जराखियाह। 52 जराखियाह का बेटा मिरायोत, मिरायोत का बेटा अमरियाह, अमरियाह का बेटा अखीलोब। 53 अखीलोब का बेटा सदूक, सदूक का बेटा अखीमा'ज। 54 और उनकी हूटू में उनकी छावनियों के मुताबिक उनकी सुकूनतागाहें यह हैं; बनी हास्न में से किहातियों के खानदानों को, जिनकी पर्ची पहली निकलती। 55 उन्होंने यहदाह की जमीन में हब्सन और उसका 'इलाका की दिया। 56 लेकिन उम शहर के खेत और उसके देहात युफ़न्ना के बेटे कालिब को दिए। 57 और बनी हास्न को उन्होंने पनाह के

शहर दिए और हब्सन और लिबनाह भी और उसका 'इलाका और यतीर और इस्तिम'अ और उसका 'इलाका। 58 और हैलान और उसका 'इलाका, और दवीर और उसका 'इलाका, 59 और 'अमसन और उसका 'इलाका, और बैत समा' और उसका 'इलाका। 60 और बिनयमीन के कबीले में से जिबा' और उसका 'इलाका, और 'अलमत और उसका 'इलाका, और 'अन्तोत और उसका इलाका, उनके घरानों के सब शहर तेह थे। 61 और बाकी बनी किहात को आधे कबीले, या'नी मनस्सी के आधे कबीले में से दस शहर पर्ची डालकर दिए गए। 62 और जैरसोम के बेटों को उनके घरानों के मुताबिक इश्कार के कबीले और और आशर के कबीले और नफ़ताली के कबीले और मनस्सी के कबीले से जो बसन में था तेरह शहर मिले। 63 मिरारी के बेटों को उनके घरानों के मुताबिक स्विन के कबीले, और ज़द के कबीले और जब्लून के कबीले में से बारह शहर पर्ची डालकर दिए गए। 64 फिर बनी इस्माईल ने लावियों को वह शहर उनका 'इलाका समेत दिए। 65 और उनोने बनी यहदाह के कबीले, और बनी शमौन के कबीले, और बनी बिनयमीन के कबीले, में से यह शहर जिनके नाम मज़बूर हुए पर्ची डालकर दिए। 66 और बनी किहात के कुछ खानदानों के पास उनकी सरदारों के शहर इफ़र्इम के कबीले में से थे। 67 और उन्होंने उनको पनाह के शहर दिए या'नी इफ़र्इम के पहाड़ी मुक्क में सिक्म और उसका 'इलाका और जज़र भी और उसका 'इलाका। 68 और युक्म'अम और उसका 'इलाका और बैतहौस्न और उसका 'इलाका। 69 और अय्यातोन और उसका 'इलाका, नापताली और जातिरिमोन और उसका 'इलाका। 70 और मनस्सी के आधे कबीले में से आजर और उसका 'इलाका, और बिल'अम और उसका 'इलाका कनी किहात के बाकी खानदान को मिली। 71 बनी जैरसोम के मनस्सी के आधे कबीले के खानदान जोलान और उसका इलाका, बसन में और असारात और उसका 'इलाका। 72 और इश्कार के कबीले में से कादिस और उसका 'इलाका। दाखरात और उसका 'इलाका। 73 और रामात और उसका 'इलाका, और अनीम और उसका 'इलाका। 74 और असर के कबीले में से मसल और उसका 'इलाका, और 'अबदोन और उसका 'इलाका। 75 और हक्क कू और उसका 'इलाका, और होलोब और उसका 'इलाका। 76 और नफ़ताली के कबीले में से कादिस और उसका 'इलाका गालील में, और हम्मन और उसकी नवाही, करयताइम और उसका 'इलाका, मिला। 77 बाकी लावियों, या'नी बनी मिरारी को जब्लून के कबीले में से रिमोन और उसकी नवाही, और तबू और उसका 'इलाका, 78 यरीह के नज़दीक यरदन के पार या'नी यरदन की पूरब की तरफ़, स्विन के कबीले में से वीरान में बसर और उसका 'इलाका, और यहसा और उसका 'इलाका; 79 और कदीमात और उसका 'इलाका, और मिफ़'अत और उसका 'इलाका; 80 और ज़द के कबीले में से रामात और उसका 'इलाका, जिल'आद में, और महनायम और उसका 'इलाका, 81 और हस्तोन और उसका 'इलाका, और या'ज़ेर और उसका 'इलाका मिली।

7 और बनी इश्कार यह है: 'तोला' और फ़व्वा और यस्ब और सिमरोन, यह चारों। 2 और बनी 'तोला': 'उज्जी और रिफ़ायाह और यरीएल और यहमी और इब्साम और समुएल, जो 'तोला' या'नी अपने आबाई खानदानों के सरदार थे। वह अपने जमाने में ताकतवर सूर्य थे और दाऊद के दिनों में उनका शुपार बाइम हज़ार छ़: सो था। 3 और 'उज्जी का बेटा इज़राखियाह और इज़राखियाह के बेटे यह है: मीकाएल और 'अबदियाह और यूएल और यस्सयाह यह पाँचों यह सब के सब सरदार थे। 4 और उनके साथ अपनी अपनी पुत्र और अपने अपने आबाई खानदान के मुताबिक ज़ंगी लश्कर के दल थे जिन में छत्तीस हज़ार जवान थे क्योंकि उनके यहाँ बहुत सी बीवियाँ और बेटे थे। 5 और उनके बाई इश्कार के सब घरानों में ताकतवर सूर्य थे और नसब नामे के हिसाब के

मुताबिक कुल सत्तार्सी हजार थे। 6 और बनी बिनयमीन यह है: 'बाला' और बक्र और यदा'एल, यह तीनों 7 और बनी 'बाला': इसबून और 'उज्जीएल और यरीमोत और 'ईरी, यह पाँचों। यह अपने आबाई खानदानों के सरदार और ताक्तवर सूर्मा थे और नसब नामे के हिसाब के मुताबिक बाइस हजार चौतीस थे। 8 और बनी बक्र यह है: जमीरा और युआस और एतियाजर और इतीयूऐनी और 'उमरी और यरीमोत और अबियाह और 'अन्तोत और 'अलामत यह सब बक्र के बेटे थे। 9 इनकी नसल के लोग नसबनामे के मुताबिक बीस हजार दो सौ ताक्तवर सूर्मा और अपने आबाई खानदानों के सरदार थे। 10 और यदा'एल का बेटा: बिलहान था। और बनी बिलहाँ यह है: 'य'ओस और बिनयमीन और अहद और कना'ना और जैतान और तरसीस और अखीसहर। 11 यह सब यदा'एल के बेटे जो अपने आबाई खानदानों के सरदार और ताक्तवर सूर्मा थे, सतरह हजार दो सौ थे जो लशकर के साथ जंग पर जाने के लायक थे। 12 और सफकीम और हफकीम 'ईर के बेटे, और हाशम इहीर का बेटा। 13 बनी नफताली यह है: यहसीएल और जनी और यिम्म और सल्लूम बनी बिल्हा। 14 बनी मनससी यह है: असरीएल और उसकी बीवी के बत्र से था उसकी अरामी हरम से जिलादा का बाप मकरि पैदा हुआ। 15 और मकरि ने हफकीम और सुफकीम की बहन जिसका नाम मां'का था न्याह लिया और दूसरे का नाम सिलाफहाद था, और सिलाफ हाद के पास बेटियां थी। 16 और मकरि की बीवी मां'का के एक बेटा पैदा हुआ उसने उसका नाम फरस रख्खा और उसके भाई का नाम शरस था, और उसके बेटे औलाम रकम थे। 17 और औलाम का बेटा बिदान था, यह जिलादा बिन मनससी के बेटे थे। 18 और उसकी बहन हम्मोलिकत से इश्हाद और अबी'अजर और महला पैदा हुआ। 19 बनी सार्दी यह है: अखियान और सिकम और लिकही और अनि'आम। 20 और बनी इफाईम यह है: सुतलह, सुतलाह का बेटा बरद, बरद का बेटा तहत, तहत का बेटा इली'अदा, इली'अदा का बेटा तहत, 21 तहत का बेटा जबद, जबद का बेटा सुतलाह था और 'अजर और इली'अद भी, जिनको जात के लोगों ने, जो उस मूल्क में पैदा हुए थे, मार डाला क्यूंकि वह उनकी मैरीशी ले जाने को उत्तर आये थे। 22 और उनका बाप इफाईम बहुत दिनों तक मातम करता रहा, और उसके भाई तसल्ली देने को आये। 23 और वह अपनी बीवी के पास गया और वह हामला हुई और उसके एक बेटा पैदा हुआ और इफाईम ने उसका नाम बरिआ रख्खा क्यूंकि उसके घर पर अफत आई थी। 24 और उसकी बेटी सराह थी, जिसने नशेब और फराज के बैतोस्न और ऊजिन सराह को बनाया। 25 और उसका बेटा रफाह और रसफ भी और उसका बेटा तलाह, और तलाह का बेटा तहन, 26 तहन का बेटा ला'दान, ला'दान का बेटा 'अम्मीहद, 'अम्मीहद का बेटा इलीसमा'अ, 27 इलीसमा'अ का बेटा नन, नन का बेटा यहसू'अ। 28 और उनकी मिलिक्यत और बस्तियां यह हैं: बैतएल और उसके देहात, और मशरिक की तरफ नाराम, और मारिब की तरफ जजर और उसके देहात, और सिकम भी और उसके देहात, 'अय्याह और उसके देहात तक; 29 और बनी मनससी की हुटूट के पास बैतशान और उसके देहात, तानक और उसके देहात, मजिदो और उसके देहात, दोर और उसके देहात थे। इनमें यस्फ बिन इस्माईल के बेटे रहते थे। 30 बनी आशर यह है: यिमना और इस्वाह और इस्मी और बरि'आ, और उनकी बहन सू'अ पैदा हुए। 33 और बनी यफलीत: फासाक और और बिमहाल और 'असवात, यह बनी यफलीत है। 34 और बनी सामिर: अखी और रह्स्या और यह्बाला और आराम थे। 35 और उसके भाई हीलम के बेटे: सूफह और इमना' और सलस और 'अमल थे। 36 और बनी सूफह: सूह और

हरनफर और सू'अल और बेरी और इमराह, 37 बसर और हूद और सम्मा और सिलासा और इतरान और बैरा थे। 38 और बनी यतर: युक्ना और फिसफाह और अरा थे। 39 और बनी 'उल्ला: अरख और हनीएल और रिजियाह थे। 40 यह सब बनी आशर, अपने आबाई खानदानों के, चुने हए रईस और ताक्तवर सूर्मा और अमीरों के सरदार थे। उन में से जो अपने नसबनामे के मुताबिक जंग करने के लायक थे वह शुमार में छब्बीस हजार जवान थे।

8 और बिनयमीन से उसका पहलौठा बाला' पैदा हुआ, दूसरा और अशबेल, तीसरा अखिरख, 2 चौथा नहा और पाँचवाँ रफा। 3 और 'बाला' के बेटे अदार और जीरा और अबिहद, 4 और अबिसू' और नामान और अखवह, 5 और जीरा और सफ़कान और हराम थे। 6 और अहद के बेटे यह हैं यह जिबा' के बाशिंदों के बीच आबाई खानदानों के सरदार थे, और इन्हीं को गुलाम करके मुगाहत को ले गए थे। 7 यानी नामान और अखियाह और और जीरा, यह इनको गुलाम करके ले गया था, और उससे 'उज्जा और अखीहद पैदा हुए। 8 और सहरीम से, मोआब के मूल्क में अपनी दोनों बीवियों हसीम और बाराह को छोड़ देने के बाद लड़के पैदा हुए, 9 और उसकी बीवी हृदस के बत्र से यूबाब और जिबिया और मैसा और मलकाम, 10 और य'ऊज और सिक्याह और मिरमा पैदा हुए। यह उसके बेटे थे जो आबाई खानदानों के सरदार थे। 11 और हसीम से अबीतब और इलफा'ल पैदा हुए। 12 और बनी इलफा'ल: इब्र और मिश'आम और सामिर थे। इसी ने आनू और लुद और उसके देहात को आबाद किया। 13 और बरि'आ और समा' भी जो अय्यालोन के बाशिंदों के दरमियान आबाई खानदानों के सरदार थे और जिह्वोंने जात के बाशिंदों को भगा दिया। 14 और अखियो, शाशक और यरीमोत, 15 और जबदियाह और 'अराद और 'अदर, 16 और मीकाएल और इस्फाह और यूखा, जो बनी बरि'आ है। 17 और जबदियाह और मुसल्लाम और हिजकी और हिबर, 18 और यसमरी और यजलियाह और यूबाब जो बनी इलफा'ल हैं। 19 और यकीम और जिकी और जबदी, 20 और इलिएनी और जलती और इलीएल, 21 और 'अदायाह और बरायाह और सिमरात, जो बनी समाई है। 22 और इसफान और इब्र और इलीएल, 23 और 'अबदोन और जिकी और हनान, 24 और हनानियाह और ऐताम और अंतूवियाह, 25 और यफदियाह और फन्नएल, जो बनी शाशक है। 26 और समसरी और शहारियाह और 'अतालियाह, 27 और या'रसियाह और एलियाह और जिकी जो बनी यरोहाम है। 28 यह अपनी नसलों में आबाई खानदानों के सरदार और रईस थे और येस्शलेम में रहते थे। 29 और जिबा'ऊन में जिबा'ऊन का बाप रहता था, जिसकी बीवी का नाम मां'का था। 30 और उसका पहलौठा बेटा 'अबदोन, और सू और कीस, और बाल और नदब, 31 और जदूर और अखियो और जकर, 32 और मिकलोत से सिमाह पैदा हुआ, और वह भी अपने भाइयों के साथ येस्शलेम में अपने भाइयों के सामने रहते थे। 33 और नयिर से कीस पैदा हुआ, कीस से साऊल पैदा हुआ, और साऊल से यहनतन और मलकीशू और अबीनदाब और इशबा'ल पैदा हुए; 34 और यहनतन का बेटा मरीबा'ल था, मरीबा'ल से मीकाह पैदा हुआ। 35 और बनी मीकाह: फीतूँ और मलिक और तारी' और आखवह थे। 36 और आखवज से यह'अदा पैदा हुआ, और यह'अदा से 'अलमत और 'अज्जामावत और जिमरी पैदा हुए; और जिमरी से मौजा पैदा हुआ। 37 और मौजा से बिन'आ पैदा हुआ; बिन'आ का बेटा रफाफा', रफाफा' का बेटा इलि, आसा, और इलि, आसा का बेटा असील, 38 और असील के छ: बेटे थे जिनके नाम यह हैं: 'अजरिकाम, बोकिस, और इस्मा'ईल और सगारियाह और 'अबदियाह और हनान; यह सब असील के बेटे थे। 39 और उसके भाई 'ईशक के बेटे यह हैं: उसका पहलौठा औलाम दूसरा य'ओस, तीसरा इलिफालत। 40 और औलाम के बेटे ताक्तवर

सूर्मा और तीरंदाज थे, और उसके बहुत से बेटे और पोते थे जो डेढ़ सौ थे। यह सब बनी बिन यमीन में से थे।

9 फिर सारा इस्माईल नसबनामों के मुताबिक जो इस्माईल के बादशाहों की किताब में दर्ज हैं गिना गया और यहदाह अपने गुमाहों की वजह से गुलाम हो के बाबूल गया। 2 और वह जो पहले अपनी मिलियत और अपने शहरों में बसे वह इस्माईल और काहिन और लाली और नरनीमथे। 3 और येस्शलेम में बनी यहदाह से और बनी बिनयमीन में से और बनी इकाईम और मनससी में से यह लोग रहने लगे था। 4 'जली बिन 'अम्मीहैद बिन 'उमरी बिन इमरी बिन बानी जो फारस बिन यहदाह की औलाद में से था। 5 और सैलनियों में से 'असायाह, जो पहलौठा था, और उसके बेटे। 6 और बनी जारह में से, यॉक्सल और उनके छ: सौ नव्वे थाई। 7 और बनी बिन यमीन में से सल्लू बिन मुसल्लाम बिन हुदावियाह बिन हसीनुवाह, 8 और इब नियाह बिन यस्हाम और ऐला बिन 'उज्जरी बिन मिक्री और मुसल्लाम बिन सफतियाह बिन 'र' क्सल बिन इबनियाह, 9 और उनके थाई जो अपने नसबनामों के मुताबिक नौ सौ छप्पन थे। यह सब आदमी अपने अपने आबाई खानदानों के सरदार थे। 10 और काहिनों में से यद' अद्यायाह और यहुयीरी और यकीन, 11 और अजरियाह बिन खिलकियाह बिन मुसल्लाम बिन सदोक बिन मिरायोत बिन अखितोब, जो खुदा के घर का नाजिम था। 12 और 'अदायाह बिन यरोहाम बिन फ़शहर बिन मलकियाह, और मारी बिन 'अटीएल बिन याहज़ीराह बिन मुसल्लाम बिन मुसलमीत बिन इम्मर, 13 और उनके थाई अपने आबाई खानदानों के रईस एक हज़र सात सौ आठ थे जो खुदा के घर की खिदमत के काम के लिए बड़े क़ाबिल आदमी थे। 14 और लावियों में से यह थे: समा'याह बिन हसब बिन 'अजरिकाम बिन हसबियाह बनी मिरारी में से, 15 और बक्ककर, हरस और जलाल और मतनियाह बिन मीकाह बिन जिकरी बिन आसफ, 16 और 'अबदियाह बिन समा'याह बिन जलाल बिन यदूतून, और बरकियाह बिन आसा बिन इल्काना, जो नकूतियों के देहात में बस गए थे। 17 और दरबानों में से सलोम और 'अक्कूब और तलमून अखीमान और उनके थाई, सलम सरदार था। 18 वह अब तक शाही फाटक पर मशरिक की तरफ रहे। बनी लाली की छावनी के दरबान यही थे। 19 और सलोम बिन कोरै बिन अबी आसफ बिन कोरह और उसके आबाई खानदान के थाई याँनी कोरही, खिदमत की कारणजारी पर 'तङ्नात थे, और खेमे के फाटकों के निग्बान थे। उनके बाप दादा खुदावन्द की लश्कर गाह पर तैनात और मदखल के निग्बान थे। 20 और फ़ीनहास बिन इर्नी'एलियाजर इस से पहले उनका सरदार था, और खुदावन्द उसके साथ था। 21 जकरियाह बिन मुसलमियाह खेमा — ए — इजितमा'अ के दरवाजे का निग्बान था। 22 यह सब जो फाटकों के दरबान होने को चुने गए दो सौ बारह थे। यह जिनको डाक्ट और सम्पूर्ण गैब बीन ने इनको ओहदे पर मुकर्रर किया था अपने नसबनामों के मुताबिक अपने अपने गँव में गिने गए थे। 23 फिर वह और उनके बेटे खुदावन्द के घर याँनी मसकन के घर के फाटकों की निरानी बारी बारी से करते थे। 24 और दरबान चारों तरफ थे याँनी पूरब, पश्चिम, उत्तर, और दख़चिन की तरफ। 25 और उनके थाई जो अपने अपने गँव में थे उनको सात सात दिन के बाद बारी — बारी उनके साथ रहने को आना पड़ता था। 26 क्यूंकि चारों सरदार दरबान जो लाली थे खास आहोदों पर मुकर्रर थे और खुदा के घर की कोठरियों और खजानों पर मुकर्रर थे। 27 और वह खुदा के घर के आस — पास रहा करते थे क्यूंकि उसकी निग्बानी उनके जिम्मे थी और हर सुबह को उसे खोलना उनके जिम्मे था। 28 और उनमें से कुछ की तहवील में 'इबा'दत के बर्तन थे क्यूंकि वह उनको पिन कर अन्दर लाते और गिन कर निकालते थे। 29 और कुछ उनमें से सामान और

मक्किदिस के सब बर्तनों और और मैदा और मय और तेल और लुबान और खुशबूदार मसाल्हे पर मुकर्रर थे। 30 और काहिनों के बेटों में से कुछ खुशबूदार मसाल्हे का तेल तैयार करते थे। 31 और लावियों में से एक शख्स मतियाह जो कुर्ही सलमू का पहलौठा था, उन चीजों पर खास तैर पर मुकर्रर था जो तवे पर पकाई जाती थी। 32 और उनके कुछ थाई जो क्रिहातियों की औलाद में से थे, नज़र की रेटियों पर तैनात थे कि हर सब्जत को उसे तैयार करें। 33 और यह वह हम्द करने वाले हैं जो लावियों के आबाई खानदानों के सरदार थे और कोठरियों में रहते और और खिदमत से मा'जूर थे, क्यूंकि वह दिन रात अपने काम में मशगूल रहते थे। 34 यह अपनी अपनी नसलों में लावियों के आबाई खानदानों के सरदार और रेस्स थे; और येस्शलेम में रहते थे। 35 और जिबा'ऊन में जिबा'ऊन का बाप याँईल रहता था, जिसकी बीवी का नाम मा'का था, 36 और उसका पहलौठा बेटा 'अबदोन, और सूर और कीस और बा'ल और नियर और नदब, 37 और जदूर और अखियों और जकरियाह और मिक्लोत; 38 मिक्लोत से सिमा'अम पैदा हुआ, और वह भी अपने भाइयों के साथ येस्शलेम में अपने भाइयों के सामने रहते थे। 39 और नियर से कीस पैदा हुआ और कीस से साऊल पैदा हुआ और साऊल से यूनतन और मलकीश्। 40 और अबीनदाब और इश्बा'ल पैदा हुए। 40 और यूनतन का बेटा मरीबिबा'ल था और मरीबिबा'ल से मीकाह पैदा हुआ। 41 और मीकाह के बेटे फीतुम और मलिक और तहरी और आखज थे; 42 और आखज से याँरा पैदा हुआ, और याँरा से 'अलमत और अजमावत और जिमरी पैदा हुए, और जिमरी से मौज़ा पैदा हुआ। 43 और मौज़ा से बिन'आ पैदा हुआ, बिन'आ का बेटा रिफायाह, रिफायाह का बेटा इलि, आसा, इली'असा का बेटा असील, 44 और असील के छ: बेटे थे और यह उनके नाम हैं: 'अजरकाम, बोकिस, और इस्मा'ईल और सगरियाह और 'अबदियाह और हनान, यह बनी असील थे।

10 और फ़िलिस्ती इस्माईल से लड़े और इस्माईल के लोग फ़िलिस्तियों के आगे से भागे और पहाड़ी जिल्लू'आ में कत्ल हो कर गिरे। 2 और फ़िलिस्तियों ने साऊल का और उसके बेटों का खब पीछा किया और फ़िलिस्तियों ने यूनतन और अबीनदाब और मलकीश्। 3 को जो साऊल के बेटे थे कत्ल किया। 3 और साऊल पर जंग दोबर हो गयी और तीरदाजों ने उसे पा लिया और वह तीरदाजों की वजह से पेरेशन था। 4 तब साऊल ने अपने सिलाहबरदार से कहा, 'अपनी तलवार खींच और उससे मुझे छेड़ दे ऐसा न हो कि यह नमधून आकर मेरी बे 'इज़जती करें।' लेकिन उसके सिलाहबरदार ने न माना, क्यूंकि वह बहुत डर गया। तब साऊल ने अपनी तलवार ली और उस पर गिरा। 5 जब उसके सिलाहबरदार ने देखा कि साऊल मर गया तो वह भी तलवार पर गिरा और मर गया। 6 तब साऊल मर गया और उसके तीनों बेटे भी और उसका सारा खानदान एक साथ मर मिटा। 7 जब सब इस्माईली लोगों ने जो बादी में थे देखा कि लोग भाग निकले और साऊल और उसके बेटे मर गए हैं, तो वह अपने शहरों को छोड़कर भाग गए और फ़िलिस्ती आकर उनमें बसे। 8 और दूसरे दिन सुबह को जब फ़िलिस्ती मक्कलों को नंगा करने आये, तो उन्होंने साऊल और उसके बेटों को कोहे जिल्लू'आ पर पड़े पाया। 9 तब उन्होंने उसको नंगा किया और उसका सिर और उसके हथियार ले लिए, और फ़िलिस्तियों के मुलक में चारों तरफ लोग रवाना कर दिए ताकि उनके बुतों और लोगों के पास उस खुशबूदारी को पहुँचायें। 10 और उन्होंने उसके हथियारों को अपने मा'बूदों के मंदिर में रखा और उसके सिर को दजून के मंदिर में लटका दिया। 11 जब यबीस जिल'आद के सब लोगों ने, जो कुछ फ़िलिस्तियों ने साऊल से किया था सुना। 12 तो उनमें से कब बहादुर उठे और साऊल की लाश और उसके बेटों की लाशें लेकर उनको यबीस में लाये, और

उनकी हड्डियों को यवीस के बलूत के नीचे दफन किया और सात दिन तक रोजा रख्खा। 13 फिर साऊल अपने गुनाह की वजह से, जो उसने खुदावन्द के सामने किया था मरा; इसलिए कि उसने खुदावन्द की बात न मानी, और इसलिए भी कि उससे मशविरा किया जिसका यार जिन था, ताकि उसके ज़रिए से दरियापत करे। 14 और उसने खुदावन्द से दरियापत न किया। इसलिए उसने उसको मार डाला और हक्कमत यस्ती के बेटे दाऊद की तरफ बदल दी।

11 तब सब इस्माइली हब्सन में दाऊद के पास जमा' होकर कहने लगे, देख

हम तेरी ही हड्डी और तेरा ही गोश त है। 2 और गुजरे जमाने में उस वक्त भी जब साऊल बादशाह था, तू ही ले जाने और ले आने में इस्माइलियों का रहबर था, और खुदावन्द तेरे खुदा ने तुझे फरमाया, "तू मेरी कौम इस्माइल की गल्लेबानी करेगा, और तू ही मेरी कौम इस्माइल का सरदार होगा।" 3 गरज इस्माइल के सब बुरुज़ु हब्सन में बादशाह के पास आये, और दाऊद ने हब्सन में उनके साथ खुदावन्द के सामने 'अहद किया; और उन्होंने खुदावन्द के कलाम के मुताबिक जो सम्मुखी की ज़रिएँ फरमाया था, दाऊद को मस्खू किया ताकि इस्माइलियों का बादशाह हो। 4 और दाऊद और तमाम इस्माइली येस्ज़तेम को गए यबूस यही है, और उस मुल्क के बाशिंदे यबूसी वहाँ थे। 5 और यबूस के बाशिंदों ने दाऊद से कहा कि तू यहाँ आने न पाएंगा तो वी दाऊद ने सिय्यून का 'किला' ले लिया, यही दाऊद का शहर है। 6 और दाऊद ने कहा, "जो कोई पहले यबूसियों को मारे वह सरदार और सिंहसालार होगा।" और योआब बिन ज़रोयाह पहले चढ़ गया और सरदार बना। 7 और दाऊद किले में रहने लगा, इसलिए उन्होंने उसका नाम दाऊद का शहर रख्खा। 8 और उसने शहर को चारों तरफ याँनी मिल्लों से लेकर चारों तरफ बनाया और योआब ने बाकी शहर की मरम्मत की। 9 और दाऊद तरक्की पर तरक्की करता गया, क्योंकि रब्ब — उल — अफवाज उसके साथ था। 10 और दाऊद के स्मर्मीओं के सरदार यह है, जिन्होंने उसकी हक्कमत में सारे इस्माइल के साथ उसे मज़बूती दी ताकि जैसा खुदावन्द ने इस्माइल के हक के मैं कहा था उसे बादशाह बनाएँ। 11 दाऊद के स्मर्मीओं का शुमार यह है: यसुबि'आम बिन हकमूनी जो तीसों का सरदार था। उने तीन सौ पर अपना भाला चलाया और उनको एक ही वक्त में कल्ल लिया। 12 उसके बाद अख्खी दोदो का बेटा एलियाज़र था जो उन तीनों स्मर्मीओं में से एक था। 13 तब दाऊद के साथ फसदर्मी में था जहाँ फिलिस्ती जंग करने को जमा' हुए थे। वहाँ ज़मीन का टुकड़ा जै से भरा हुआ था, और लोग फिलिस्तियों के आगे से भागे। 14 तब उन्होंने उस ज़मीन क्व टुकड़े के बीच में खड़े हो कर उसे बचाया और फिलिस्तियों को कल्ल किया और खुदावन्द ने बड़ी फतह देकर उनको रिहा बछर्वी। 15 और उन तीसों सरदारों में से तीन, दाऊद के साथ थे उस चट्टान पर याँनी 'अदल्लाम के मुगारे में उत्तर गए, और फिलिस्तियों की फौजे रिफाईंग की बादी में खेमाज़न थी। 16 और दाऊद उस वक्त गढ़ी में था और फिलिस्तियों की चौकी उस वक्त बैतलहम में थी। 17 और दाऊद ने तरस कर कहा, "ऐ काश कोई बैतलहम के उस कुँए का पानी जो फाटक के करीब है, मुझे पीने को देता।" 18 तब वह तीनों फिलिस्तियों की सफ तोड़ कर निकल गए और बैतलहम के उस कुँए में से जो फाटक के करीब है पानी भर लिया और उसे दाऊद के पास लाये लेकिन दाऊद ने न चाहा कि उसे पिए बन्कि उसे खुदावन्द के लिए तपाया। 19 और कहने लगा कि खुदा न करे कि मैं ऐसा करूँ। क्या मैं इन लोगों का खन धियूँ जै अपनी जानों पर खेले हैं? क्योंकि वह जानबाजी कर के उसको लाये हैं। तब उसने न पिया। वह तीनों स्मर्मी ऐसे ऐसे काम करते थे। 20 और योआब का भाई अबीशै तीनों का सरदार था। उसने तीन सौ पर भाला चलाया और उनको मार डाला। वह इन तीनों में मशहूर था। 21 यह तीनों में उन दोनों से ज्यादा खास था और उनका सरदार बना,

लेकिन उन पहले तीनों के दर्जे को न पहुँचा। 22 और बिनायाह बिन यहयदा' एक कबज़िएसी सूर्या था जिसने बड़ी बहादुरी के काम किये थे; उसने मोआब के अरिएल के दोनों बेटों को कल्ल किया, और जाकर बर्फ के मौसम में एक गढ़े के बीच एक शेर को मारा। 23 और उसने पाँच हाथ के एक कटदावर मिसी को कल्ल किया हालाँकि उस मिसी के हाथ में जुलाहे के शहतीर के बराबर एक भाल था, लेकिन वह एक लाठी लिए हुए उसके पास गया और भाले को उस मिसी के हाथ से छीन कर उसी के भाले से उसको कल्ल किया। 24 यहयदा' के बेटे बिनायाह ने ऐसे ऐसे काम किये और वह उन तीनों स्मर्मीओं में नामी था। 25 वह उन तीसों से मुअज्जिज़ था, लेकिन पहले तीनों के दर्जे को न पहुँचा। और दाऊद ने उसे मुहाफिज़ सिपाहियों का सरदार बनाया। 26 और लश्करों में सूर्या यह थे: योआब का भाई 'असाहेल और बैतलहमी दोदो का बेटा इल्हनान, 27 और सम्पोत हस्सी, खलिसफल्लूनी, 28 तक़'अ, 'इक्कीस, का बेटा 'ईरा, अबी'अज़र 'अन्तोती, 29 सिब्बकी हसाती, 'एर्ती अख्वी, 30 महरी नत्फाती, हलिद बिन बाँना न नत्फाती, 31 बनी बिनयमीन के जिब़'आ के रीबी का बेटा इत्ती, बिनायाह किऱ'आतोती, 32 जाँ'स की नदियों का बशिंदा हरी, अबीएल 'अरबाती, 33 'अज़मावत बहस्मी, इलियाब सालबूनी, 34 बनी हशीम जिज़नी, हरारी शजी का बेटा यूनतन, 35 और हरारी सक्काकर का बेटा अख्वीआम, इलिफाल बिन ऊर, 36 हिफ़ कमीराती, अखियाह फ्लूनी, 37 हस्स कर्मिती, नगरी बिन अज़बी, 38 नातन कला भाई यूएल, मिखार बिन हाज़रीरी, 39 सिलक 'अम्मूनी, नहरी बैरोती जो योआब बिन ज़रोयाह का सिलाहबरदार था, 40 'ईरा ईत्ती, जरीब इत्ती, 41 ऊरियाह हित्ती, ज़बद बिन अख्खी, 42 सीज़ा स्वीनी का बेटा 'अदीना स्वीनियों का एक सरदार जिसके साथ तीस जवान थे, 43 हनान बिन माँ'का, यहसक्त मितनी, 44 'उज्जियाह 'इस्ताराती, ख्वूतम 'अरोँ'ईरी के बेटे समा'अ और याँ'ईल, 45 यदी'एलबिन सिमी और उसका भाई यस्ता तीसी, 46 इलीएल महाबी, और इलनाम के बेटे योबी और यूसावियाह, और पितामा मोआबी, 47 इलीएल, और 'ओबेद, और यासीएल मज़बूआ।

12 यह वह है जो सिक्लाज़ में दाऊद के पास आये जब कि वह हनूज़ कीस के बेटे साऊल की वजह से छिपा रहता था, और उन स्मर्मीओं में थे जो लड़ाई में उसके मददगार थे। 2 उनके पास कमाने थीं, और वह गुफान से पथर मारते और कमान से तीर चलाते वक्त दहने और बाएं दोनों हाथों को काम में ला सकते थे और साऊल के बिनयमीनी भाइयों में से थे। 3 अख्खी'अज़र सरदार था। फिर युआस बनी समा'आ जिब़'आती और यज़ील और फ्लत जो अज़मावत के बेटे थे और बराक और याँ 'अन्तोती, 4 और इस्माइल 'जिब़'आती जो तीसों में सूर्या और तीसों का सरदार था; और यरमियाह और यहजीएल और युहनान और यूज़बाँ'द ज़दीराती, 5 इल'ओज़ी और यरीमोत और बालियाह और समरियाह और सफतियाह खस्सी, 6 इलकाना और यसियाह और 'अज़रिएल और यूँ'अज़र और यसुबि'आम जो कुरही थे। 7 और याँ'ईला और ज़बदियाह जो योरोहाम ज़दूरी के बेटे थे। 8 और ज़दियों में से बहुत से अलग होकर वियाबान के किले में दाऊद के पास आ गए; वह ताकतवर सूर्या और जंग में माहिर लोग थे, जो ढाल और बछरी का इत्तेमाल जानते थे। उनकी सूर्तें ऐसी थीं जैसी शेरों की सूर्तें और वह पहाड़ों पर हिरियों की तरह तेज ढौड़ते थे। 9 अब्बल 'अज़र था, 'अबदियाह दसरा, इलियाब तीसरा, 10 मिसमन्ना चौथा, यरमियाह पाँचवाँ, 11 'अन्ती छठा, इलीएल सातवाँ, 12 यहनान आठवाँ, इलज़बाँ'द नवाँ, 13 यरमियाह दसवाँ, मकबानी य्यारहवाँ। 14 यह बनी ज़द में सरलशकर थे। इनमें सबसे छोटा सौ के बराबर और सबसे बड़ा हज़रान के बराबर था। 15 यह वह है जो पहले महीने में यरदन के पार गए जब उसके सब किनारे ढूबे हुए थे और उन्होंने वादियों के सब लोगों को पूरब और

पश्चिम की तरफ भगा दिया। 16 बनी बिनयमीन और यहदाह में से कुछ लोग किले में दाऊद के पास आये। 17 तब दाऊद उनके इस्तकबाल को निकला और उसे कहने लगा, “अगर तुम नेक नियती से मेरी मदद के लिए मेरे पास आये हो तो मेरा दिल तुमसे मिला रहेगा लेकिन अगर मुझे मेरे दुश्मनों के हाथ में पकड़वाने आये हो हालाँकि मेरा हाथ जूत्म से पाक है तो हमारे बाप दादा का खुदा यह देखे और मलामत करो।” 18 तब स्थ 'अमासी पर नाजिल हुई और जो उन तीसों का सरदार था और वह कहने लगा, “हम तेरे हैं, ऐ दाऊद! और हम तेरी तरफ हैं, ऐ यस्सी के बेटे! सलामती तेरी सलामती, और तेरे मददगारों की सलामती हो, क्यूँकि तेरा खुदा तेरी मदद करता है।” तब दाऊद ने उनको कुबल किया और उनको फौज का सरदार बनाया। 19 और मनस्सी में से कुछ लोग दाऊद से मिल गए जब वह साऊल के मुकाबिल जंग के लिए फिलिस्तियों के साथ निकला, लेकिन उन्होंने उनकी मदद न की क्यूँकि फिलिस्तियों के हाकिमों ने सलाह कर के उसे लौटा दिया और कहने लगे कि वह हमारे सिर काटकर अपने आका साऊल से जा मिलेगा। 20 जब वह सिकलाज को जा रहा था मनस्सी में से 'अनादा और यूजबाद' और यदीएल और मीकाएल और युजबाद और इनीह और जिलती जो बनी मनस्सी में हजारों के सरदार थे उससे मिल गए। 21 उन्होंने गारतारों के जत्थे के मुकाबिलों में दाऊद की मदद की क्यूँकि वह सब ताकतवर समीं और लकर के सरदार थे। 22 बलिके रोज — ब — रोज लोग दाऊद के पास उसकी मदद को आते गए, यहाँ तक कि खुदा की फौज की तरह एक बड़ी फौज तैयार हो गयी। 23 और जो लोग जंग के लिए हथियार बाँध कर हबस्न में दाऊद के पास आये ताकि खुदावन्द की बात के मुताबिक साऊल की ममलुकत को उसकी तरफ बदल दें, उनका शुमार यह है। 24 बनी यहदाह छ: हजार आठ सौ, जो ढाल और नेजा लिए हुए जंग के लिए तैयार थे। 25 बनी शमैन में से जंग के ले लिए सात हजार एक सौ ताकतवर सूमीं 26 बनी लाली में से चार हजार छ: सौ। 27 और यहदाह' हास्न के घराने का सरदार था और उसके साथ तीन हजार सात सौ थे। 28 और सदोक, एल जवान सूमीं और उसके आबाई घराने के बाइस सरदार। 29 और साऊल के थाई बनी बिनयमीन में से तीन हजार लेकिन उस वक्त तक उनका बहुत बड़ा हिस्सा साऊल के घराने का तरफदार था। 30 और बनी इक्काइम में से बीस हजार आठ सौ ताकतवर सूमीं जो अपने आबाई खानादानों में नामी आदमी थे। 31 और मनस्सी के आधे कबीले से अठारह हजार, जिनके नाम बताये गए थे कि अगर दाऊद को बादशाह बनायें। 32 और बनी इश्कार में से ऐसे लोग जो जमाने को समझते और जानते थे कि इस्माईल को क्या करना मुनासिब है उनके सरदार दो सौ थे और उनके सब थाई उनके हृकम में थे। 33 और जबलून में से ऐसे लोग मैदान में जाने और हर किस्म की जंगी हथियार के साथ मैदान एं जंग के काबिल थे, पचास हजार। यह सफ़आराई करना जानते थे और दो दिले न थे। 34 और नफ्ताली में से एक हजार सरदार और उनके साथ सैतीस हजार ढाले और भाले लिए हुए। 35 और दानियों में से अश्रूइस हजार छ: सौ मैदान एं जंग करने वाले। 36 और आशर में से चालीस हजार जो मैदान में जाने और मारका आराई के काबिल थे। 37 और यरदन के पार के स्थानियों और जदियों और मनस्सी के आधे कबीले में से एक लाख बीस हजार जिनके साथ लड़ाई के लिए हर किस्म के जंगी हथियार थे। 38 यह सब जंगी मर्द जो मैदान एं जंग कर सकते थे खुलूस — ए — दिल से हबस्न को आये ताकि दाऊद को सारे इस्माईल का बादशाह बनायें और बाकी सब इस्माईली भी दाऊद को बादशाह बनाने पर रजामंद थे। 39 और वह वहाँ दाऊद के साथ तीन दिन तक ठहरे और खाते पीते रहे, क्यूँकि उनके भाइयों ने उनके लिए तैयारी की थी। 40 इसके अलावा इनके जो उनके करीब के थे बलिके इश्कार और जबलून और

नफ्ताली तक के लोग गधों और ऊँटों और खच्चरों और बैलों पर रोटियाँ और मैदे की बनी हुई खाने की चीजें और अंजीर की टिकियाँ। और किशमिश के गुच्छे और शराब और तेल लादे हुए और बैल और भेड़ बकरियाँ इफरात से लाये इसलिए कि इस्माईल में खुशी थी।

13 और दाऊद उन सरदारों से जो हजार हजार और सौ सौ पर थे याँनी हर

एक लकर के शब्द से सलाह ली। 2 और दाऊद ने इस्माईल की सारी जमा' अत से कहा कि अगर आप को पसंद हो और खुदावन्द की मर्जी हो तो आओ हम हर जगह इस्माईल के सारे मुल्क में अपने बाकी भाइयों को जिनके साथ काहिन और लाली भी अपने नवाहीदार शहरों में रहते हैं, कहला भेजे ताकि वह हमारे पास जमा' हों, 3 और हम अपने खुदा के सन्दूक फिर अपने पास ले आये क्यूँकि हम साऊल के दिनों में उनके तालिब न हुए। 4 तब सारी जमा' अत बोल उठे कि हम ऐसा ही करेंगे क्यूँकि यह बात सब लोगों की निगाह में ठीक थी। 5 तब दाऊद ने मिस्र की नदी सीहर से हमात के मदखल तक के सारे इस्माईल को जमा' किया, ताकि खुदा का सन्दूक को करयत यारीम से ले आये। 6 और दाऊद और सारा इस्माईल बाला जानी कीरतयारीम को जो यहदाह में है गए, ताकि खुदा के सन्दूक को वहाँ ले आयें, जो कस्तियों पर बैठने वाला खुदावन्द है और इस नाम से पुकारा जाता है। 7 और वह खुदा के सन्दूक को एक नदी पर गाड़ी रख कर अवीनदबाल के घर से बाहर निकाल लाये, और 'उज्जा और असियो गाड़ी को हाँक रहे थे। 8 और दाऊद और सारा इस्माईल, खुदा के आगे बड़े जोर सेहम्द करते और बरबत और सितार और दफ और झांझ और तुरही बजाते चले आते थे। 9 और जब वह कीटन के खलिहान पर पहुँचे, तो 'उज्जा ने सन्दूक के थामने को अपना बढ़ाया, क्यूँकि बैलों ने ठोकर खानी थी। 10 तब खुदावन्द का कहर 'उज्जा पर भड़का और उसने उसको मार डाला इसलिए कि उसने अपना हाथ सन्दूक पर बढ़ाया था और वह वहाँ खुदा के सामने मर गया। 11 तब दाऊद उदास हुआ, इसलिए कि खुदा 'उज्जा पर टूट पड़ा और उसने उस मुकाम का नाम परज़ 'उज्जा रख द्या जो आज तक है। 12 और दाऊद उस दिन खुदा से डर गया और कहने लगा कि मैं खुदा के सन्दूक को अपने यहाँ बैठकर लाऊँ? 13 इसलिए दाऊद सन्दूक को अपने यहाँ दाऊद के शहर में न लाया बल्कि उसे बाहर ही जानी 'ओबेदअदोम के घर में ले गया 14 तब खुदा का सन्दूक 'ओबेदअदोम के घराने के साथ उसके घर में तीन महीने तक रहा, और खुदावन्द ने 'ओबेदअदोम और उसकी सब बीजों को बरकत दी।

14 और सू के बादशाह हीराम ने दाऊद के कासिद और उसके लिए महल

बानने के लिए देवदार के लड्हे और राजगीर और बढ़ी भेजे। 2 और दाऊद जान गया कि खुदावन्द ने उसे बनी — इस्माईल का बादशाह बना कर काईम कर दिया है, क्यूँकि उसकी हक्मत उसके इस्माईली लोगों की खातिर मुस्ताज की गई थी। 3 और दाऊद ने येस्सलेम में और 'औते ब्याह ली, और उसने और बेटे बेटियों पैदा हुए। 4 और उसके उन बच्चों के नाम जो येस्सलेम में पैदा हुए थे हैं: सम्मू' और सोबाल और नातन और सुलेमान, 5 और इब्नार और इलिस' और इलफालत, 6 और नौजा और नफज और यफ़ी'आ, 7 और इलिसमा' और और बालयद' और इलिफ़कालत। 8 और जब फिलिस्तियों ने सुना कि दाऊद मस्हूर होकर सोरा इस्माईल का बादशाह बना है तो सब फिलिस्ती दाऊद की ललाश में चढ़ आये और दाऊद यह सुनकर उनके मुकाबिले को निकला। 9 और फिलिस्तियों ने आकर रिफाईम की वादी में धावा मारा। 10 तब दाऊद ने खुदा से सवाल किया, “क्या मैं फिलिस्तियों पर चढ़ जाऊँ? क्या तू उनको मेरे हाथ में कर देगा?” खुदावन्द ने उसे फरमाया, “चढ़ जा क्यूँकि उनको मेरे हाथ में कर देगा?” खुदावन्द ने उसे फरमाया, “चढ़ जा क्यूँकि उनको मेरे हाथ में कर देगा?”

उनको तेरे हाथ में कर दँगा।” 11 तब वह बाल पराजीम में आये और दाऊद ने वही उनको मारा और दाऊद ने कहा, “खुदा ने मेरे हाथ से दुश्मनों को ऐसा चीरा, जैसे पानी चाक हो जाता है।” इस वजह से उन्होंने उस मकाम का नाम बाल पराजीम रख्छा। 12 और वह अपने बुतों को बहाँ छोड़ गए, और वह दाऊद के हक्म से आग में जला दिए गए। 13 और फिलिस्तियों ने फिर उस बादी में धावा मारा। 14 और दाऊद ने फिर खुदा से सवाल किया, और खुदा ने उससे कहा, “तु उनका पीछा न कर, बल्कि उनके पास से करता कर निकल जा, और तूत के पेढ़ों के सामने से उन पर हमला कर। 15 और जब तू तूत के दरखतों की फुनियों पर चलने की जैसी आवाज सुने, तब लड़ाई को निकलना क्यूंकि खुदा तेरे आगे आगे फिलिस्तियों के लश्कर को माने के लिए निकला है।” 16 और दाऊद ने जैसा खुदा ने उसे फरमाया था किया और उन्होंने फिलिस्तियों की फौज को जिबा उन से जजर तक कल्प किया। 17 और दाऊद की शोहरत सब मूल्कों में फैल गई, और खुदावन्द ने सब क्षौमों पर उसका खौफ बिठा दिया।

15 और दाऊद ने दाऊद के शहर में अपने लिए महल बनाए, और खुदा

के सन्दूक के लिए एक जगह तैयार करके उसके लिए एक खेमा खड़ा किया। 2 तब दाऊद ने कहा कि लावियों के 'अलावा और किसी को खुदा के सन्दूक को उठाना नहीं चाहिए, क्योंकि खुदावन्द ने उन्हीं को चुना है कि खुदा सन्दूक को उठाएँ और हमेशा उसकी खिदमत करें। 3 और दाऊद ने सारे इस्माईल को येस्सलिम में 'जमा' किया, ताकि खुदावन्द के सन्दूक को उस जगह जो उसने उसके लिए तैयार की थी ले आए। 4 और दाऊद ने बीनी हासन को और लावियों को इक्षण किया: 5 यानी बीनी किहत में से, ऊरिएल सरदार और उसके एक सौ बीस भाइयों को; 6 बीनी मिरारी में से, 'असायाह सरदार और उसके दो सौ बीस भाइयों को; 7 बीनी जैरसोम में से, यूएल सरदार और उसके एक सौ तीस भाइयों को; 8 बीनी इलिसफन में से, समायाह सरदार और उसके दो सौ भाइयों को; 9 बीनी हबस्न में से, इतीएल सरदार और उसके अस्सी भाइयों को; 10 बीनी उज्जीएल में से, 'अम्मीनदाब सरदार और उसके एक सौ बाहर भाइयों को। 11 और दाऊद ने सदोक और अबीयात कहिनों की, और ऊरिएल और 'असायाह और यूएल और समायाह और इतीएल और 'अम्मीनदाब लावियों को बुलाया, 12 और उनसे कहा कि तुम लावियों के आबाई खान्दानों के सरदार हो; तुम अपने आपको पाक करो, तुम भी और तुम्हारे भाई भी, ताकि तुम खुदावन्द इस्माईल के खुदा के सन्दूक को उस जगह जो मैंने उसके लिए तैयार की है ला सको। 13 क्यूंकि जब तुम ने पहली बार उसे न उठाया, तो खुदावन्द हमारा खुदा हम पर टट पड़ा, क्यूंकि हम कानून के मुताबिक उसके तालिक नहीं हुए थे। 14 तब कहिनों और लावियों ने खुदावन्द इस्माईल के खुदा के सन्दूक को लाने के लिए अपने आपको पाक किया। 15 और बीनी लावी ने खुदा के सन्दूक को, जैसा मूसा ने खुदावन्द के कलाम के मुवाफिक हक्म किया था, कड़ियों से अपने कन्धों पर उठा लिया। 16 और दाऊद ने लावियों के सरदारों को फरमाया कि अपने भाइयों में से हम्द करने वालों को मुकर्रर करें कि मूसीकी के साज, यानी सिंतार और बरबत और झाँझ बजाएँ और आवाज बुलन्द करके खुशी से गाएँ। 17 तब लावियों ने हैमान बिन यूल को मुकर्रर किया, और उसके भाइयों में से आसफ बिन बरकियाह को, और उनके भाइयों बीनी मिरारी में से ऐतान बिन कौसियाह को; 18 और उनके साथ उनके दूसरे दर्जे के भाइयों यानी ज़करियाह, बीन और याज़िल और सिमीरामोत और यहिएल और उन्नी और इलियाब और बिनायाह और मासियाह और मतियाह और इलिफल और मिकिनियाह और 'ओबेदअदोम और याईंएल को जो दरबान थे। 19 फिर हम्द करने वाले हैमान, आसफ और ऐतान मुकर्रर हुए कि पीतल की

झाँझों को जोर से बजाएँ; 20 और ज़करियाह और 'अज़ीएल और सिमीरामीत और यहिएल और उन्नी और इलियाब और मासियाह और बिनायाह सिंतार को 'अलामीत राग पर छेड़े; 21 और मतियाह और इलिफल और मिकिनियाह और 'ओबेदअदोम और याईंएल और 'अज़ज़ियाह शमीनीत राग पर सिंतार बजाएँ। 22 और कनानियाह, लावियों का सरदार, हम्द गाने पर मुकर्रर था; खहम्द सिखाता था, क्यूंकि वह बड़ा ही माहिर था। 23 और बरकियाह और इल्काना सन्दूक के दरबान थे, 24 और शबनियाह और यहसफत और नतनीएल और 'अमासी और ज़करियाह और बिनायाह और इलीएलियाज़र कहिन खुदा के सन्दूक के आगे आगे नरसिंगे फँकते जाते थे, और 'ओबेदअदोम और यहियाह सन्दूक के दरबान थे। 25 तब दाऊद और इस्माईल के बजूर्ज़ी और हजारों के सरदार रवाना हुए कि खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को 'ओबेदअदोम के घर से खुशी मनाते हुए लाएँ। 26 और ऐसा हुआ कि जब खुदा ने उन लावियों की, जो खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को उठाए हुए थे मदद की, तो उन्होंने सात बैल और सात मेंटे कुर्बानी किया। 27 और दाऊद और सब लावी जो सन्दूक को उठाये हए थे, और हम्द करने वाले और हम्द करने वालों के साथ कनानियाह जो हम्द करने में उस्ताद था कतानी लिबासों से मुलब्बस थे, और दाऊद कतान का अफूट भी पहने था। 28 यूँ सब इस्माईली नारा मारते और नरसिंगों और तरहियों और झाँझों की आवाज के साथ सिरतार और बरबत कों जोर से बजाते हुए, खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक को लाए। 29 और ऐसा हुआ कि जब खुदावन्द का 'अहद का सन्दूक दाऊद के शहर में पहुँचा, तो साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झाँक कर दाऊद बादशाह को खब नाचते — कूदते देखा, और उसने अपने दिल में उसको हकीर जाना।

16 तब वह खदा के सन्दूक को ले आए और उसे खेमा के बीच में जो

दाऊद ने उसके लिए खड़ा किया था रखा, और सोखनी कुर्बानियों और सलामीती की कुर्बानियों खुदा के सामने पेश की। 2 जब दाऊद सोखनी कुर्बानी और सलामीती की कुर्बानियों खेमा पर चका तो उसने खुदावन्द के नाम से लोगों को बरकत दी। 3 और उसने सब इस्माईली लोगों को, क्या आदमी क्या 'औरत, एक एक रोटी और एक एक टुकड़ा गोशत और किशमिश की एक एक टिकिया दी। 4 और उसने लावियों में से कुछ को मुकर्रर किया कि खुदावन्द के सन्दूक के आगे खिड़की करें, और खुदावन्द इस्माईल के खुदा का ज़िक्र और शुक्र और उसकी हम्द करें। 5 अब्वल आसफ और उसके बाद ज़करियाह और याईंएल और सिमीरामोत और यहिएल और इलियाब और बिनायाह और बिनायाह और 'ओबेदअदोम और याईंएल, सिंतार और बरबत के साथ, और आसफ झाँझों को जोर से बजाता हुआ; 6 और बिनायाह और यहसफत कहिन हमेशा तरहियों के साथ खुदा के 'अहद के सन्दूक के आगे रहा करें। 7 पहले उसी दिन दाऊद ने यह ठहराया कि खुदावन्द का शुक्र आसफ और उसके भाई बजा लाया करें। 8 खुदावन्द की शुक्रगुजारी करो। उससे दुआ करो; क्षौमों के बीच उसके कामों का इश्तिहार दो। 9 उसके सामने हम्द करो, उसकी बड़ाई करो, उसके 'अजीब कामों का ज़िक्र करो। 10 उसके पाक नाम पर फँख करो; जो खुदावन्द के तालिब है, उनका दिल खुदा रहे। 11 तुम खुदावन्द और उसकी ताकत के तालिब हो; तुम खुदावन्द और मासियाह और यहसफत रहो। 12 तुम उसके 'अजीब कामों को जो उनने किए, और उसके मोजिजों और मुँह के कानून को याद रखो। 13 उसके बन्दे इस्माईल की नसल, ऐ बीनी याकूब, जो उसके चुने हुए हो। 14 वह खुदावन्द हमारा खुदा है, तमाम रु — ए — ज़मीन पर उसके कानून है। 15 हमेशा उसके 'अहद को याद रखो, और हजार नसलों तक उसके कलाम को जो उसने फरमाया। 16 उसी 'अहद को जो उसने अब्रहाम से खाई, 17 जिसे उसने याकूब के लिए

कानून के तौर पर और इसाईल के लिए हमेशा 'अहद के तौर पर काईम किया, 18 यह कहकर, "मैं कनान का मूलक तुझको दूँगा, वह तुम्हारा मौस्ती हिस्सा होगा।" 19 उस वक्त तुम शुमार में थोड़े थे बल्कि बहुत ही थोड़े और मूलक में परदेसी थे। 20 वह एक कौम से दूसरी कौम में और एक मूलक से दूसरी मूलक में फिरते रहे। 21 उसने किसी शब्दस को उनपर जुल्म करने न दिया; बल्कि उनकी खातिर बादशाहों को तबीह की, 22 कि तुम मेरे ममस्मों को न छुओ और मेरे नवियों को न सताओ। 23 ऐ सब अहल — ए जमीन, खुदावन्द के सामने हमद करो। रोज — ब — रोज उसकी नजात की बशरत दो। 24 कौमों में उसके जलाल का, सब लोगों में उसके 'अजायब का बयान करो। 25 क्यूंकि खुदावन्द बुर्जा और बहुत ही तारीफ के लायक है, वह सब मांबदों से ज्यादा बड़ा है। 26 इसलिए कि और कौमों के सब मांबद महज बुत हैं; लेकिन खुदावन्द ने असामानों को बनाया। 27 'अज्ञमत और जलाल उसके सामने में है, और उसके यहाँ कुरदत और शादमानी है। 28 ऐ कौमों के कबीलों! खुदावन्द की, खुदावन्द ही की तम्जीद — ओ — ताजीम करो। 29 खुदावन्द की ऐसी बड़ाई करो जो उसके नाम के शायाँ है। हदिया लाओ, और उसके सामने आओ, पाक आराइश के साथ खुदावन्द को सिज्दा करो। 30 ऐ सब अहल — ए — जमीन! उसके सामने कॉप्टे रहो। जहान काईम है, और उसे हिलता नहीं। 31 आसमान खुशी मनाए और जमीन खुश हो, वह कौमों में ऐलान करें कि खुदावन्द हक्मत करता है। 32 समन्दर और उसकी मामूली शोर मचाए, मैदान और जो कुछ उसमें है बाग बाग हो। 33 तब जंगल के दरखत खुशी से खुदावन्द के सामने हमद करने लगें, क्यूंकि वह जमीन का इन्साफ करने को आ रहा है। 34 खुदावन्द का शुक करो, इसलिए कि वह नेक है; क्यूंकि उसकी शफकत हमेशा है। 35 तुम कहो, "ऐ हमारी नजात के खुदा, हम को बचा ले, और कौमों में से हम को जमा" कर और उनसे हम को रिहाई दे, ताकि हम तेरे कुहस नाम का शुक करें, और ललकारते हुए तेरी तारीफ करें। 36 खुदावन्द इसाईल का खुदा, अजल से 'हमेश तक मुबारक हो।' और सब लोग बोल उठे "आमीन।" 37 उन्होंने खुदावन्द की तारीफ की। 37 उसने वहाँ खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक के आगे आसफ और उसके भाइयों को, हर रोज़ के ज़स्ती काम के मुताबिक हमेशा सन्दूक के आगे खिदमत करने को छोड़ा; 38 और 'ओबेदअदेम और उसके अठासठ भाइयों को, और 'ओबेदअदेम बिन यदून और हसाह को ताकि दबान हों। 39 और सटकू कहिन और उसके काहिन भाइयों को खुदावन्द के घर के आगे, जिबा'ऊन के ऊँचे मकाम पर, इसलिए 40 कि वह खुदावन्द की 'शरी' अत की सब लिखी हुई बातों के मुताबिक जो उसने इसाईल को फरमाई, हर सुबह और शाम सोखतनी कुर्बानी के मजबह पर खुदावन्द के लिए सोखतनी कुर्बानीयाँ पेश की। 41 उनके साथ हैमान और यदून और बाकी चुने हुए आदमियों को जो नाम — ब — नाम मज़कर हुए थे, ताकि खुदावन्द का शुक करें क्यूंकि उसकी शफकत हमेशा है। 42 उन ही के साथ हैमान और यदून थे, जो बजाने वालों के लिए तुरहियाँ और झाँझें और खुदा के हमद के लिए बाजे लिए हुए थे, और बनी यदून दरबान थे। 43 तब सब लोग अपने अपने घर गए, और दाऊद लौटा कि अपने घराने को बरकत दे।

17 जब दाऊद अपने महल में रहने लगा, तो उसने नातन नवी से कहा, मैं तो देवदार के महल में रहता हूँ, लेकिन खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक खेमे हैं। 2 नातन ने दाऊद से कहा, जो कुछ तेरे दिल में है वह कर, क्यूंकि खुदा तेरे साथ है। 3 और उसी रात ऐसा हुआ कि खुदा का कलाम नातन पर नाजिल हुआ कि, 4 जाकर मेरे बन्दे दाऊद से कह कि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तू मेरे रहने के लिए घर न बनाना। 5 क्यूंकि जब से मैं बनी — इसाईल को निकाल

लाया, आज के दिन तक मैंने किसी घर में स्कूनत नहीं की; बल्कि खेमा — ब — खेमा और मस्कन — ब — मस्कन फिरता रहा हूँ 6 उन जगहों में जहाँ जहाँ मैं सारे इसाईल के साथ फिरता रहा, क्या मैंने इसाईली काजियों में से जिनको मैंने हक्म किया था कि मेरे लोगों की गल्लेबानी करें, किसी से एक हफ्ते भी कहा कि तुम ने मेरे लिए देवदार का घर क्यूँ नहीं बनाया? 7 तब तु मेरे बन्दे दाऊद से यूँ कहना कि रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि मैंने तुझे भेड़साले में से जब तु भेड़ — बकरियों के पीछे पीछे चलता था लिया, ताकि तू मेरी कौम इसाईल का रहनुमा हो; 8 और जहाँ कहीं तु गया मैं तेरे साथ रहा, और तेरे सब दुश्मनों को तेरे सामने से काट डाला है, और मैं रुप्ते जमीन के बड़े बड़े आदमियों के नाम की तरह तेरा नाम कर दूँगा। 9 और मैं अपनी कौम इसाईल के लिए एक जगह ठहराऊँगा, और उनको काईम कर दूँगा ताकि अपनी जगह बसे रहें और फिर हटाए न जाएँ, और न शरारत के फर्जन्द फिर उनको दुख देने पाएँगे जैसा शूरू में हुआ। 10 और उस वक्त भी जब मैंने हक्म दिया कि मेरी कौम इसाईल पर काजी मुकर्रर हों, और मैं तेरे सब दुश्मनों को मालब करूँगा। इसके 'अलावा मैं तुझे बताता हूँ कि खुदावन्द तेरे लिए एक घर बनाएगा। 11 जब तेरे दिन प्ले हो जाएँगे ताकि तू अपने बाप — दादा के साथ मिल जाने को चला जाएँ, तो मैं तेरे बाद तेरी नसल को तेरे बेटों में से खड़ा करूँगा, और उसकी हक्मत को को काईम करूँगा। 12 वह मेरे लिए घर बनाएगा, और मैं उसका तख्त हमेशा के लिए काईम करूँगा। 13 मैं उसका बाप हूँगा और वह मेरा बेटा होगा; और मैं अपनी शफकत उस पर से नहीं हटाऊँगा, जैसे मैंने उस पर से जो तुझ से पहले था हटा ली, 14 बल्कि मैं उसको अपने घर में और अपनी ममलकत में हमेशा तक काईम रखूँगा, और उसका तख्त हमेशा तक साबित रहेगा। 15 इसलिए नातन ने इन सब बातों और इस सारे खबाब के मुताबिक ऐसा ही दाऊद से कहा। 16 तब दाऊद बादशाह अन्दर जाकर खुदावन्द के सामने बैठा, और कहने लगा, ऐ खुदावन्द खुदा! मैं कौन हूँ, और मेरा घराना क्या है कि तू ने मुझ को यहाँ तक पहुँचाया? 17 और ये, ऐ खुदा, तेरी नजर में छोटी बात थी, बल्कि तू ने तो अपने बन्दे के घर के हक में आइदा बहुत दिनों का ज़िक्र किया है, और तू ने ऐ खुदावन्द खुदा, मुझे ऐसा माना कि गोया मैं बड़ा मन्जिलत वाला आदमी हूँ। 18 भला दाऊद तुझ से उस इकराम की निस्बत, जो तेरे खादिम का हुआ और क्या कहें? क्यूंकि तू अपने बन्दे को जानता है। 19 ऐ खुदावन्द, तू ने अपने बन्दे की खातिर अपनी ही मर्जी से इन बड़े बड़े कामों को जाहिर करने के लिए इतनी बड़ी बात की। 20 ऐ खुदावन्द, कोई तेरी तरह नहीं और तेरे 'अलावा जिसे हम ने अपने कानों से सुना है और कोई खुदा नहीं। 21 और रु — ए — जमीन पर तेरी कौम इसाईल की तरह और कौन सी कौम है, जिसे खुदा ने जाकर अपनी उमत बनाने को खुद छड़ाया? ताकि तू अपनी उमत के सामने से जिसे तू ने मिस से खलासी बरबादी, कौमों को दूर करके बड़े और मुहीम कामों से अपना नाम करे। 22 क्यूंकि तू ने अपनी कौम इसाईल को हमेशा के लिए अपनी कौम ठहराया है, और तू खुद ऐ खुदावन्द, उनका खुदा हुआ है। 23 और अब ऐ खुदावन्द, वह बात जो तू ने अपने बन्दे के हक में और उसके घराने के हक में फरमाई, हमेशा तक साबित रहे और जैसा तू ने कहा है वैसा ही कर। 24 और तेरा नाम हमेशा तक काईम और बुर्जा हो ताकि कहा जाए कि रब्ब — उल — अफवाज इसाईल का खुदा है, बल्कि वह इसाईल ही के लिए खुदा है और तेरे बन्दे दाऊद का घराना तेरे सामने काईम रहे। 25 क्यूंकि तू ने ऐ मेरे खुदा, अपने बन्दा पर जाहिर किया है कि तू उसके लिए एक घर बनाएगा; इसलिए तेरे बन्दे को तेरे सामने दुभा करने का हैसला हुआ। 26 और ऐ खुदावन्द तू ही खुदा है, और तू ने अपने बन्दे से इस भलाई का वांदा किया; 27 और तुझे पसंद आया कि तू अपने बन्दे के घराने

को बरकत बरखो, ताकि वह हमेशा तक तेरे सामने काईम रहे; क्यौंकि तू ऐ खुदावन्द बरकत दे चुका है, इसलिए वह हमेशा तक मुबारक है।

18 इसके बाद यूँ हुआ कि दाऊद ने फिलिस्तियों को मारा और उनको

मग्लूब किया, और जात को उनके कस्बों समेत फिलिस्तियों के हाथ से ले लिया। 2 उसने मोआब को मारा, और मोअबी दाऊद के फरमाँबरदार हो गए और हदिए लाए। 3 दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हहर० एलियाज़र को भी, जब वह अपनी हक्मत दरिया — ए — फ्रात तक काईम करने गया, हमात में मार लिया। 4 और दाऊद ने उससे एक हजार रथ और सात हजार सवार और बीस हजार प्यादे ले लिए, और उसने रथों के सब घोड़ों की नालें कटवा दी, लेकिन उनमें से एक सौ रथों के लिए घोड़े बचा लिए। 5 जब दमिश्क के अरामी ज़ोबाह के बादशाह हहर० एलियाज़र की मदद करने को आए, तो दाऊद ने अरामियों में से बाइप हजार आदमी कल्त किए। 6 तब दाऊद ने दमिश्क के अराम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई, और अरामी दाऊद के फरमाँबरदार हो गए और हदिए लाए। और जहाँ कहीं दाऊद जाता खुदावन्द उसे फतह बख्शता था। 7 और दाऊद हहर० एलियाज़र के नौकरों की सोने की ढालें लेकर उनको येस्सलेम में लाया; 8 और हहर० एलियाज़र के शहरों, तिबखत और कून से दाऊद बहुत सा पीतल लाया, जिससे सुलेमान ने पीतल का बड़ा हौज और खम्भा और पीतल के बर्तन बनाए। 9 जब हमात के बादशाह तूँक ने सुना के दाऊद ने ज़ोबाह के बादशाह हहर० एलियाज़र का सारा लश्कर मार लिया, 10 तो उसने अपने बेटे हह्दाम को दाऊद बादशाह के पास भेजा ताकि उसे सलाम करे और मुबारक बाद दे, इसलिए के उसने जंग करके हहर० एलियाज़र को मारा क्यौंकि हहर० एलियाज़र तूँक से लड़ा करता था, और हर तरह के सोने और चाँदी और पीतल के बर्तन उसके साथ थे। 11 इनकी भी दाऊद बादशाह ने उस चाँदी और सोने के साथ, जो उसने और सब कौमों या 'नी अदोम और मोआब और बनी 'अम्मून और फिलिस्तियों और 'अमालीक से लिया था, खुदावन्द को नज़र किया। 12 और अबीसै। बिन जरोयाह ने बाढ़ी — ए — शोर में अठारह हजार अदोमियों को मारा। 13 और उसने अदोम में सिपाहियों की चौकियाँ बिठाई, और सब अदोमी दाऊद के फरमाँबरदार हो गए। और जहाँ कहीं दाऊद जाता खुदावन्द उसे फतह बख्शता था। 14 तब दाऊद सारे इसाईल पर हक्मत करने लगा, और अपनी सारी रायत के साथ अदूल — ओ — इन्साफ करता था। 15 और योआब बिन जरोयाह लश्कर का सरदार था, और यहसफ़त बिन अखीलद मुवर्रिखथा; 16 और सदूक बिन अखीतोब और अबीमलिक बिन अबीयातर काहिन थे, और शौशा मुश्ची था; 17 और बिनायाह बिन यहयदा करेतियों और फलेतियों पर था; और दाऊद के बेटे बादशाह के खास मुसाहिब थे।

19 इसके बाद ऐसा हुआ कि बनी 'अम्मून का बादशाह नाहस मर गया,

और उसका बेटा उसकी जगह हक्मत करने लगा। 2 तब दाऊद ने कहा कि मैं नाहस के बेटे हनून के साथ नेकी कस्तूँगा क्यौंकि उसके बाप ने मेरे साथ नेकी की, तब दाऊद ने कासिद भेजे ताकि उसके बाप के बारे में उसे तसल्ली दें। इसलिए दाऊद के खादिम बनी अम्मून के मूल्क में हनून के पास आये कि उसे तसल्ली दें। 3 लेकिन बनी 'अम्मून के अमीरों ने हनून से कहा, "क्या तेरा ख्याल है कि दाऊद तेरे बाप की इज्जत करता है, तो उसने तेरे पास तसल्ली देवाले भेजे हैं? क्या उसके खादिम तेरे मुक्क का हाल दरियाप्त करने, और उसे तबाह करने, और राज लेने नहीं आए हैं?" 4 तब हनून ने दाऊद के खादिमों को पकड़ा और उनकी दाढ़ी में मैंडवाकर, उनकी आर्दी लिबास उनके सुरीनों तक कटवा डाली, और उनको रवाना कर दिया। 5 तब

कुछ ने जाकर दाऊद को बताया कि उन आदमियों से कैसा सुलूक किया गया। तब उसने उनके इस्तकबाल को लोग भेजे इसलिए कि वह निहायत शरमाते थे, और बादशाह ने कहा कि जब तक तुम्हारी दाढ़ियाँ न बढ़ जाएँ येरीह में ठहरे रहो, इसके बाद लौट आना। 6 जब बनी 'अम्मून ने देखा कि वह दाऊद के सामने नफरतअंगज हो गए हैं, तो हनून और बनी 'अम्मून ने मसोपतामिया और अराम, माका और जोबाह से रथों और सवारों को किराया करने के लिए एक हजार किन्तरा चाँदी भेजी। 7 इसलिए उन्होंने बतीस हजार रथों और माँका के बादशाह और उसके लोगों को अपने लिए किराया कर लिया, जो आकर मीदबा के सामने खेमाजन हो गए। और बनी 'अम्मून अपने अपने शहर से जमा हुए और लड़ने को आए। 8 जब दाऊद ने यह सुना तो उसने योआब और सूर्पांत्रों के सारे लश्कर को भेजा। 9 तब बनी 'अम्मून ने निकलकर शहर के फाटक पर लड़ाई के लिए सफ़ बाँधी, और वह बादशाह जो आए थे सो उनसे अलग मैदान में थे। 10 जब योआब ने देखा कि उसके आगे और पीछे लड़ाई के लिए सफ़ बाँधी है, तो उसने सब इसाईल के खास लोगों में से आदमी चुन लिए और अरामियों के मुकाबिल उनकी सफ़ आराई की; 11 और बाकी लोगों को अपने भाई अबीशी के सुर्पुर्द किया, और उन्होंने बनी 'अम्मून के सामने अपनी सफ़ बाँधी। 12 और उसने कहा कि अगर अरामी मुझ पर गालिब आँए, तो तू मेरी मदद करना; और अगर बनी 'अम्मून तुझ पर गालिब आँए, तो मैं तेरी मदद करूँगा। 13 इसलिए हिम्मत बाँधो, और आओ हम अपनी कौम और अपने खुदा के शहरों की खातिर मर्दानी करें; और खुदावन्द जो कुछ उसे भला मालूम हो करे। 14 तब योआब अपने लोगों समेत अरामियों से लड़ने को अगे बढ़ा, और वह उसके सामने से भागे। 15 जब बनी 'अम्मून ने अरामियों को भागते देखा, तो वह भी उसके भाई अबीशी के सामने से भाग कर शहर में घुस गए। तब योआब येस्सलेम को लौट आया। 16 जब अरामियों ने देखा कि उन्होंने बनी — इसाईल से शिकस्त खाई, तो उन्होंने कासिद भेज कर दरिया — ए — फुरत के पार के अरामियों को बुलवाया; और हहर० एलियाज़र का सिपहसालार सोफ़क उनका सरदार था। 17 और इसकी खबर दाऊद को मिली तब वह सारे इसाईल को जमा करके यहरन के पार गया, और उनके करीब पहुँचा और उनके मुकाबिल सफ़ बाँधी, फिर जब दाऊद ने अरामियों के मुकाबिले में जंग के लिए सफ़ बाँधी तो वह उससे लड़े। 18 और अरामी इसाईल के सामने से भागे, और दाऊद ने अरामियों के सात हजार रथों के सवारों और चालीस हजार प्यादों को मारा, और लश्कर के सरदार सोफ़क को कत्ल किया। 19 जब हहर० एलियाज़र के मुलाजिमों ने देखा कि वह इसाईल से हार गए, तो वह दाऊद से सुलूक करके उसके फरमाँबरदार हो गए; और अरामी बनी 'अम्मून की मदद पर फिर कभी राजी न हुए।

20 फिर नए साल के शुरू में जब बादशाह जंग के लिए निकलते हैं, योआब

ने ताकतवर लश्कर ले जाकर बनी 'अम्मून के मूल्क को उजाड़ डाला और आकर रब्बा को धेर लिया; लेकिन दाऊद येस्सलेम में रह गया था, और योआब ने रब्बा को धेर करके उसे ढा दिया। 2 और दाऊद ने उनके बादशाह के ताज को उसके सिर पर से उतार लिया, और उसका वजन एक किन्तरा सोना पाया, और उसमें बेशकीमत जवाहर जड़े थे; इसलिए वह दाऊद के सिर पर रखा गया, और वह उस शहर में से बहुत सा लूट का माल निकाल लाया। 3 उसने उन लोगों को जो उसमें थे, बाहर निकाल कर आरों और लोहे के हींगों और कुल्हाडों से काटा, और दाऊद ने बनी 'अम्मून के सब शहरों से ऐसा ही किया। तब दाऊद और सब लोग येस्सलेम को लौट आए। 4 इसके बाद जजर में फिलिस्तियों से जंग हुई; तब हसाती सिंबकी ने सफ़की को जो पहलवान के बेटों में से एक था कत्ल किया, और फिलिस्ती मगलूब हुए। 5

और फिलिस्तियों से फिर जंग हुईं; तब याँकर के बेटे इल्हनान ने जाती जूलियत के भाई लहमी को, जिसके भाले की छड़ जुलाहे के शहतीर के बराबर थी, मार डाला। 6 फिर जात में एक और जंग हुई जहाँ एक बड़ा कदाअवार आदमी था जिसके चौबीस उंगलियाँ, यानी हाथों में छ: छ: और पाँव में छ: छ: थीं, और वह भी उसी पहलवान का बेटा था। 7 जब उसने इसाईल की फ़जीहत की तो दाऊद के भाई सिमआ के बेटे योनतन ने उसको मार डाला। 8 यह जात में उस पहलवान से पदा हुए थे, और दाऊद और उसके खादिमों के हाथ से कल्प लुप्त हुए।

21 और शैतान ने इसाईल के खिलाफ़ उठकर दाऊद को उभारा कि इसाईल का शुमार करें 2 तब दाऊद ने योआब से और लोगों के सरदारों से कहा कि जाओ बैरसबा से दान तक इसाईल का शुमार करो, और मुझे खुराक दो ताकि मुझे उनकी 'तादाम' लूम हो। 3 योआब ने कहा, "खुदावन्द अपने लोगों को जिनें हैं, उससे सौ गुना ज्यादा करें; लेकिन ऐ मेरे मालिक बादशाह, क्या वह सब के सब मेरे मालिक के खादिम नहीं हैं? फिर मेरा खुदावन्द यह बात क्यूँ चाहता है? वह इसाईल के लिए खता का ज़रिए क्यूँ बनें?" 4 तो भी बादशाह का फरमान योआब पर गालिब रहा चुनाँचे युआब स्वस्त हुआ और तमाम इसाईल में फिरा और येस्सलेम की लौटा; 5 और योआब ने लोगों के शुमार की मीजान दाऊद को बतायी और सब इसाईली ग्यारह लाख शमशीर जन मर्द, और यहदाह चार लाख सतर हजार शमशीर जन शश्वत थे। 6 लेकिन उसने लावी और बिनयमीन का शुमार उनके साथ नहीं किया था, क्यूँकि बादशाह का हक्म योआब के नजदीकी नफरत अंगेज था। 7 लेकिन खुदा इस बात से नाराज हुआ, इसलिए उसने इसाईल को मारा। 8 तब दाऊद ने खुदा से कहा कि मुझसे बड़ा गुनाह हुआ कि मैंने यह काम किया। अब मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने बन्दा कुसर मुआक कर, क्यूँकि मैंने बेहदा काम किया है। 9 और खुदावन्द ने दाऊद के गैबैरीन जाद से कहा; 10 कि जाकर दाऊद से कह कि खुदावन्द यैं फरमाता है कि मैं तेरे सामने तीन चीजें पेश करता हूँ, उत्तमे से एक चुन ले, ताकि मैं उत्ते तुझ पर भेजूँ। 11 तब जाद ने दाऊद के पास आकर उससे कहा, खुदावन्द यैं फरमाता है कि तू जिसे चाहे उसे चुन ले: 12 या तो कहत के तीन सात; या अपने दुश्मनों के आगे तीन महीने तक हलाक होते रहना, ऐसे हाल में कि तेरे दुश्मनों की तलवार तुझ पर बार करती रहे; या तीन दिन खुदावन्द की तलवार यानी मुल्क में बगा रहे, और खुदावन्द का फरिशता इसाईल की सब सरहदों में मारता रहे। अब सोच ले कि मैं अपने भेजनेवाले को क्या जबाब दूँ। 13 दाऊद ने जाद से कहा, मैं बड़े शिकंजे में हूँ मैं खुदावन्द के हाथ में पड़ूँ क्यूँकि उसकी रहमतें बहुत ज्यादा हैं लेकिन इंसान के हाथ में न पड़ूँ। 14 तब खुदावन्द ने इसाईल में बबा भेजी, और इसाईल में से सतर हजार आदमी मर गए। 15 और खुदा ने एक फरिशता येस्सलेम को भेजा कि उसे हलाक करें; और जब वह हलाक करने ही को था, तो खुदावन्द देख कर उस बला से मल्लू हुआ और उस हलाक करनेवाले फरिशते से कहा, बस, अब अपना हाथ खीच। और खुदावन्द का फरिशता यहसूी उरनान के खलिहान के पास खड़ा था। 16 और दाऊद ने अपनी आँखें उठा कर आसमान — ओ — जमीन के बीच खुदावन्द के फरिशते को खड़े देखा, और उसके हाथ में नंगी तलवार थी जो येस्सलेम पर बढ़ाई हुई थीं, तब दाऊद और बुजूर्गा टाट ओढ़े हुए मूँह के गिरे सिज्दा किया। 17 और दाऊद ने खुदा से कहा, क्या मैं ही ने हक्म नहीं किया था कि लोगों का शुमार किया जाए? गुनाह तो मैंने किया, और बड़ी शरारत मुझ से हुई, लेकिन इन भेड़ों ने क्या किया है? ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, तेरा हाथ मेरे और मेरे बाप के घराने के खिलाफ हो न कि अपने लोगों के खिलाफ के वह बबा मैं मुब्तिला हूँ। 18 तब खुदावन्द के फरिशते ने जाद को हक्म किया कि दाऊद से कहे कि दाऊद जाकर यहसूी उरनान के खलिहान में खुदावन्द के लिए

एक कुर्बानगाह बनाए। 19 और दाऊद जाद के कलाम के मुताबिक, जो उसने खुदावन्द के नाम से कहा था गया, 20 और उरनान ने मुड़ कर उस फरिशते को देखा, और उसके चारों बेटे जो उपके साथ थे छिप गए। उस बक्त उरनान गेहूँ दाउता था। 21 जब दाऊद उरनान के पास आया, तब उरनान ने मिगाह की और दाऊद को देखा, और खलिहान से बाहर निकल कर दाऊद के आगे झुका और जमीन पर सिज्दा किया। 22 तब दाऊद ने उरनान से कहा कि इस खलिहान की यह जगह मुझे दे दे, ताकि मैं इसमें खुदावन्द के लिए एक कुर्बानगाह बनाऊँ; तू इसका परा दाम लेकर मुझे दे, ताकि बबा लोगों से दूर कर दी जाए। 23 उरनान ने दाऊद से कहा, "तू इसे ले ले और मेरा मालिक बादशाह जो कुछ उसे भला मालूम हो करे। देख, मैं इन बैलों को सोखतनी कुर्बानियों के लिए और दाऊदने के सामान इन्हें के लिए, और यह गेहूँ नज़र की कुर्बानी के लिए देता है; मैं यह सब कुछ दिए देता हूँ।" 24 दाऊद बादशाह ने उरनान से कहा, "नहीं नहीं, बल्कि मैं ज़रूर परा दाम देकर तुझ से खरीद लौंगा, क्यूँकि मैं उसे जो तेरा माल है खुदावन्द के लिए नहीं लेने का, और बगैर खर्च किये सोखतनी कुर्बानियाँ पेश करूँगा।" 25 तब दाऊद ने उरनान को उस जगह के लिए छ: सौ मिस्काल सोना तैल कर दिया। 26 और दाऊद ने वहाँ खुदावन्द के लिए मज़बूत बनाया और सोखतनी कुर्बानियाँ और सलामती की कुर्बानियाँ पेश की और खुदावन्द से दुआ की; और उसने आसमान पर से सोखतनी कुर्बानी के मज़बूत पर आग भेज कर उसको जबाब दिया। 27 और खुदावन्द ने उस फरिशते को हक्म दिया, तब उसने अपनी तलवार फिर मियान में कर ली। 28 उस बक्त जब दाऊद ने देखा के खुदावन्द ने यहसूी उरनान के खलिहान में उसको जबाब दिया था, तो उसने वही कुर्बानी चढ़ाई। 29 क्यूँकि उस बक्त खुदावन्द का घर जिसे मूसा ने वीराम में बनाया था, और सोखतनी कुर्बानी का मज़बूत जिबा ऊन की ऊँची जगह में थे। 30 लेकिन दाऊद खुदा से पछने के लिए उसके आगे न जा सका, क्यूँकि वह खुदावन्द के फरिशता की तलवार की बजह से डर गया।

22 और दाऊद ने कहा, "यहीं खुदावन्द खुदा का घर और यहीं इसाईल की सोखतनी कुर्बानी का मज़बूत है।" 2 दाऊद ने हक्म दिया कि उन परदेसियों को जो इसाईल के मुल्क में थे जमा करें, और उसने पत्थरों को तराशने वाले मुकर्रर किए कि खुदा के घर के बनारे के लिए पथर काट कर घड़ें। 3 और दाऊद ने दरवाजों के किवाड़ों की कीलों और कब्जों के लिए बहुत सा लोहा, और इन्हान पीतल कि तैल से बाहर था, 4 और देवदार के बेशुमार लट्ठे तैयार किए, क्यूँकि सैदैनी और सूरी देवदार के लट्ठे कसरत से दाऊद के पास लाते थे। 5 और दाऊद ने कहा कि मेरा बेटा सुलेमान लड़का और ना तजुरबेकार है, और ज़स्त है कि वह घर जो खुदावन्द के लिए बनाया जाए निहायत 'अजीम — उश — शान हो, और सब मुल्कों में उसका नाम और शोहरत हो। इसलिए मैं उसके लिए तैयारी करूँगा। चुनाँचे दाऊद ने अपने मरने से फहले बहुत तैयारी की। 6 तब उसने अपने बेटे सुलेमान को बुलाया और उसे ताकीद की कि खुदावन्द इसाईल के खुदा के लिए एक घर बनाए। 7 दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा, यह तो खुद मेरे दिल में था कि खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाऊँ। 8 लेकिन खुदावन्द का कलाम मुझे पहुँचा, कि तू ने बहुत खूरैजी की है और बड़ी बड़ी लडाइयाँ लड़ा हैं; इसलिए तू मेरे नाम के लिए घर न बनाना, क्यूँकि तू ने जमीन पर मेरे सामने बहुत खुन बहाया है। 9 देख, तुझ से एक बेटा पैदा होगा, वह मर्द — ए — सुलह होगा; और मैं उसे चारों तरफ के सब दुश्मनों से अमन बरबांगा, क्यूँकि सुलेमान उसका नाम होगा और मैं उसके दिनों में इसाईल को अमन — ओ — अमान बरबांगा। 10 वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। वह मेरा बेटा होगा और मैं उसका बाप हूँगा, और मैं इसाईल पर उसकी हक्मत का तोड़त हमेशा तक — क़ाईम रखबैरँगा।

11 अब ऐ मेरे बेटे खुदावन्द तेरे साथ रहे और तू कामयाब हो और खुदावन्द अपने खुदा का घर बना, जैसा उसने तेरे हक में फरमाया है। 12 अब खुदावन्द तुझे अकल — ओ — दानाई बछो और इसाईल के बारे में तेरी हिदायत करे, ताकि तू खुदावन्द अपने खुदा की शरी' अत को मानता रहे। 13 तब तू कामयाब होगा, बशं कि तू उन कानून और अहकाम पर जो खुदावन्द ने मूसा को इसाईल के लिए दिए हितियात करके 'अमल करे। इसलिए हिम्मत बांध और हैसला रख, खौफ न कर, परेशान न हो। 14 देख, मैंने मशक्कत से खुदावन्द के घर के लिए एक लाख किन्तार सोना और दस लाख किन्तार चाँदी, और बेअंदाजा पीतल और लोहा तैयार किया है क्यूंकि वह कसरत से है, और लकड़ी और पत्थर भी मैंने तैयार किए हैं, और तू उनको और बढ़ा सकता है। 15 बहुत से कारीगर पत्थर और लकड़ी के काटने और तराशने वाले, और सब तरह के हुनरमन्द जो किस्म किस्म के काम में माहिर हैं तेरे पास हैं। 16 सोने और चाँदी और पीतल और लोहे का कुछ हिसाब नहीं है। इसलिए उठ और काम में लग जा, और खुदावन्द तेरे साथ रहे। 17 इसके 'अलावा दाऊद ने इसाईल के सब सरदारों को अपने बेटे सुलेमान की मदद का हृकम दिया और कहा, 18 क्या खुदावन्द तुहारा खुदा तुहारे साथ नहीं है? और क्या उसने तम को चारों तरफ चैन नहीं दिया है? क्यूंकि उसने इस मूल्क के बाशिंदों को मेरे हाथ में कर दिया है, और मुल्क खुदावन्द और उसके लोगों के आगे मालब हुआ है। 19 इसलिए अब तम अपने दिल को और अपनी जान को खुदावन्द अपने खुदा की तलाश में लगाओ, और उठो और खुदावन्द खुदा का मक्कदिस बनाओ, ताकि तुम खुदावन्द के 'अहद के सन्दर्भ को और खुदा के पाक बर्तनों को उस घर में, जो खुदावन्द के नाम का बनेगा ले आओ।

23 अब दाऊद बहू और उम्र — दराज हो गया था, तब उसने अपने बेटे सुलेमान को इसाईल का बादशाह बनाया। 2 उसने इसाईल के सब सरदारों को, काहिनों और लावियों समेत इक्कशा किया। 3 तीस बरस के और उससे ज्यादा उम्र के लाली गिने गए, और उनकी गिनती एक एक आदमी को शुमार करके अठतीस हजार थी। 4 इनमें से चौबीस हजार खुदावन्द के घर के काम की निगरानी पर मुकर्रर हुए, और छ: हजार सरदार और मुनिसिफ थे, 5 और चार हजार दरबान थे, और चार हजार उन साजों से खुदावन्द की तारीफ करते थे जिनको मैंने याँनी दाऊद ने तारीफ और बड़ाई के लिए बनाया था 6 और दाऊद ने उनको जैरसोन, किहात और मिरारी नाम बनी लाली के फर्फीकों में तक्सीम किया। 7 जैरसोनियों में से यह थे: लादान और सिम्इँ। 8 लादान के बेटे: सरदार यहीएल और जैताम और यूएल, यह तीन थे। 9 सिम्इँ के बेटे: सल्तमियत और हजीएल और हारान, यह तीन थे। यह लादान के आबाई खान्दानों के सरदार थे। 10 और सिम्इँ के बेटे यहत, जीना और याँऊस और बरी आ, यह चारों सिम्इँ के बेटे थे। 11 पहला यहत था, और जीजा दूसरा, और याँऊस और बरी'आ के बेटे बहुत न थे, इस वजह से वह एक ही आबाई खान्दान में गिने गए। 12 किहात के बेटे: 'अमराम, इजहार, हबस्तन और 'उज्जीएल, यह चार थे। 13 अमराम के बेटे: हास्त और मूसा थे। हास्त अलग किया गया, ताकि वह और उसके बेटे हमेशा पाकतरीन चीजों की पाक किया करें, और हमेशा खुदावन्द के आगे खुशबू जलाएँ और उसकी खिदमत करें, और उसका नाम लेकर बरकत दें। 14 रहा मर्द — ए — खुदा मूसा, इसलिए उसके बेटे लाली के कबीले में गिने गए। 15 मूसा के बेटे: जैरसोम और इलीएलियाजर थे। 16 और जैरसोम का बेटा सबुएल सरदार था, 17 और इलीएलियाजर का बेटा रहबियाह सरदार था; और इलीएलियाजर के और बेटे न थे, लेकिन रहबियाह के बहुत से बेटे थे। 18 इजहार का बेटा सल्मीत सरदार था। 19 हबस्त के बेटों में पहला यरयाह, अमरियाह दूसरा, यहजीएल तीसरा, और यकीमी'आम चौथा था। 20 उज्जीएल के बेटों में अब्बल मीकाह सरदार

और यकीमी'आम चौथा था। 21 मिरारी के बेटे: महली और मूसी। महली के बेटे: इनी'एलियाजर और कीस थे। 22 और इलीएलियाजर मर गया और उसके कोई बेटा न था सिर्फ बेटियाँ थीं, और उनके भाई कीस के बेटों ने उनसे ब्याह किया। 23 मूसी के बेटे: महली और 'ऐदर और यरीमोत, येतीन थे। 24 लाली के बेटे यही थे, जो अपने अपने आबाई खान्दान के मुताबिक थे। उनके आबाई खान्दानों के सरदार जैसा वह नाम — ब — नाम एक एक करके गिने गए यही है। वह बीस बरस और उससे ऊपर की उम्र से खुदावन्द के घर की खिदमत का काम करते थे। 25 क्यूंकि दाऊद ने कहा कि खुदावन्द इसाईल के खुदा ने अपने लोगों को आराम दिया है, और वह हमेशा तक येस्शलेम में सुकूनत करेगा। 26 और लावियों को भी घर और उसकी खिदमत के सब बर्तनों को फिर कभी उठाना न पड़ेगा। 27 क्यूंकि दाऊद की पिछली बातों के मुताबिक बनी लाली जो बीस बरस और उससे ज्यादा उम्र के थे, गिने गए। 28 क्यूंकि उनका काम यह था कि खुदावन्द के घर की खिदमत के बक्त, सहनों और कोठरियों में और सब मुकद्दस चीजों के पाक करने में, याँनी खुदा के घर की खिदमत के काम में, बनी हास्त की मदद करें; 29 और नज़र की रोटी का, और मैटे की नज़र की कुर्बानी का रखाव हव बेखरीयी रोटियों या तबे पर कपी हुई चीजों या तली हुई चीजों की हो, और हर तरह के तौल और नाप का काम करें। 30 और हर सबह और शाम को खड़े होकर खुदावन्द की शुक्रगुजारी और बड़ाई करें, 31 और सब्जों और नये चाँदों और मुकर्रा 'ईंदों में, हमेशा खुदावन्द के सामने पूरी तादाद में सब सोखलनी कुर्बानियाँ उस काइदे के मुताबिक जो उनके बारे में है पेश करें। 32 और खुदावन्द के घर की खिदमत को अन्जाम देने के लिए खेमा — ए — इजिताम' आ की हिकाज़त और मक्कदिस की निगरानी और अपने आबाई बनी हास्त की इता' अत करें।

24 और बनी हास्त के फरीक यह थे हास्त के बेटे नदब, अबीह और इलीएलियाजर और ऐतामर थे। 2 नदब और अबीह अपने बाप से पहले मर गए, और उनके औलाद न थी, इसलिए इलीएलियाजर और ऐतामर ने कहानत का काम किया। 3 दाऊद ने इलीएलियाजर के बेटों में से सदोक, और ऐतामर के बेटों में से अर्डीमिलिक को उनकी खिदमत की तरतीब के मुताबिक तक्सीम किया। 4 इतमर के बेटों से ज्यादा इलीएलियाजर के बेटों में रईस मिले, और इस तरह से वह तक्सीम किए गए कि इलीएलियाजर के बेटों में आबाई खान्दानों के सोलह सरदार थे; और ऐतामर के बेटों में से आबाई खान्दानों के मुताबिक आठ। 5 इस तरह पर्ची डाल कर और एक साथ खल्त मल्त होकर वह तक्सीम हुए, क्यूंकि मक्कदिस के सरदार और खुदा के सरदार बनी इलीएलियाजर और बनी ऐतामर दोनों में से थे। 6 और नतीनएल मुर्जी के बेटे समायाह ने जो लावियों में से था, उनके नामों को बादशाह और अमरीरों और सदोक काहिन और अर्डीमिलिक बिन अबीयातर और काहिनों और लावियों के आबाई खान्दानों के सरदारों के सामने लिखा। जब इनी'एलियाजर का एक आबाई खान्दान लिया गया, तो ऐतामर का भी एक आबाई खान्दान लिया गया। 7 और पहली चिर्ठी यह्यैरीबी की निकली, दूसरी यद'अयाह की, 8 तीसीरी हारिम की, चौथी श'अरीम, 9 पाँचवी मलकियाह की, छठी मियामीन की 10 सातवीं हक्कज़ की, आठवीं अबियाह की, 11 नवी यश्वा'आ की, दसवीं सिकानियाह की, 12 ग्यारहवी इलियासब की, बारहवीं यकीम की, 13 तेरहवीं खुफकाह की, चौदहवीं यसबाब की, 14 पन्दहवीं बिल्जाह की, सोलहवीं इमर की, 15 सत्रहवीं हज़री की, अठारहवीं फ़ज़ीज़ की, 16 उनीसवीं फ़तहियाह की, बीसवीं यहज़िकेल की, 17 इक्कीसवीं यकिन की, बाइसवीं जम्मूल की, 18 तेहसवीं दिलायाह की, चौबीसवीं माजियाह की। 19

यह उनकी खिदमत की तरतीब थी, ताकि वह खुदावन्द के घर में उस कानून के मुताबिक आएँ जो उनके बाप हास्न की जरिएँ वैसा ही मिला, जैसा खुदावन्द इसाईल के खुदा ने उसे हक्म किया था। 20 बाकी बनी लावी में से: 'अमरास के बेटों में से स्बालून, स्बालून के बेटों में से यहदियाह; 21 रहा रहबियाह, सो रहबियाह के बेटों में से पहला यस्सियाह। 22 इज्हारियों में से सल्लूमोत, बनी सल्लूमोत में से यहत। 23 बनी हबस्न में से: यरियाह पहला, अमरियाह दूसरा, यहजिल्ला तीसरा, यकमिं' आम चौथा। 24 बनी उज्जीएल में से: मीकाह; बनी मीकाह में से: समीर। 25 मीकाह का भाई यस्सियाह, बनी यस्सियाह में से ज़करियाह। 26 मिरारी के बेटे: महली और मूरी। बनी याजियाह में से बिनू 27 रहे बनी मिरारी, सो याजियाह से बिनू और सहम और ज़क्कर और इब्री। 28 महली से: इलीएलियाज़र, जिसके कोई बेटा न था। 29 कीस से, कीस का बेटा: यरहमिएल। 30 और मूरी के बेटे: महली और ऐदूर और यरीमीत। लावियों की औलाद अपने आबाई खान्दानों के मुताबिक यही थी। 31 इन्होंने भी अपने भाई बनी हास्न की तरह, दाऊद बादशाह और सदूक और अखीमलिक और काहिनों और लावियों के आबाई खान्दानों के सरदारों के सामने अपनी अपनी पर्ची डाला, यानी सरदार के आबाई खान्दानों का जो हक्क था वही उसके छोटे भाई के खान्दानों का था।

25 फिर दाऊद और लश्कर के सरदारों ने आसफ और हैमान और यदूतन के बेटों में से कुछ को खिदमत के लिए अलग किया, ताकि वह बरबत और सिराह और झाँझा से नव्युवत करें; और जो उस काम को करते थे उनका शमार उनकी खिदमत के मुताबिक यह था: 2 आसफ के बेटों में से ज़क्कर, यसूफ, नतनियाह और असरीलाह; आसफ के यह बेटे आसफ के मातहत थे, जो बादशाह के हुक्म के मुताबिक नव्युवत करता था। 3 यदूतन से बनी यदूतन, सो जिदलियाह, जरी और यसा'याह, हसबियाह और मततियाह, यह छः: अपने बाप यदूतन के मातहत थे जो बरबत लिए रहता और खुदावन्द की शुक्रुजारी और हम्द करता हुआ नव्युवत करता था। 4 रहा हैमान, वह हैमान के बेटे: बुक्कयाह, मतनियाह, 'उज्जीएल, स्बालूल यरीमोत, हानानियाह, हानानी, इलियाता, जिदलती, स्मर्मी' अज़र, यसबिकाशा, मल्लूती, हौतीर, और महजियोत; 5 यह सब हैमान के बेटे थे, जो खुदा की बातों में सींग बुलन्द करने के लिए बादशाह का गैबीनी था; और खुदा ने हैमान को चौदह बेटे और तीन बेटियों दी थी। 6 यह सब खुदावन्द के घर में हम्द करने के लिए अपने बाप के मातहत थे, और झाँझा और सिराह और बरबत से खुदा के घर की खिदमत करते थे। आसफ और यदूतन और हैमान बादशाह के हुक्म के तबै़े थे 7 उनके भाईयों समेत जो खुदावन्द की तारीफ और बडाई की तालीम पा चुके थे, यानी वह सब जो महिर थे, उनका शमार दो सौ अठासी था। 8 और उहोंने क्या छोटे क्या बड़े क्या उस्ताद क्या शार्गिर्द, एक ही तरकि से अपनी अपनी खिदमत के लिए पर्ची डाला। 9 पहली चिट्ठी आसफ की यसूफ को मिली, दूसरी जिदलियाह को, और उसके भाई और बेटे उस समेत बारह थे। 10 तीसरी ज़म्मकर को, और उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 11 चौथी यिज़री को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 12 पाँचवीं नतनियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 13 छठी बुक्कयाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 14 सातवीं यसरीलाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 15 आठवीं यसा'याह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 16 नवीं मतनियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 17 दसवीं सिमई को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 18 यारहर्वी 'अजरएल को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 19 बारहर्वी हसबियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 20 तेरहर्वी स्बालून को, उसके बेटे और भाई

उस समेत बारह थे। 21 चौदहर्वी मततियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 22 पंद्रहर्वी यरीमोत को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 23 सोलहर्वी हनानियाह को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 24 सत्त्वाहर्वी यसबिकाशा को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 25 अठारहर्वी हनानी को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 26 उन्नीसवीं मल्लूती को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 27 बीसवीं इलियाता को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 28 इक्वीसवीं हौतीर को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 29 बाल्सवीं जिदलती को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 30 तेसवीं महाजियोत को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे। 31 चौबीसवीं स्मर्मी 'एलियाज़र को, उसके बेटे और भाई उस समेत बारह थे।

26 दरबानों के फ़रीक यह थे: कुरहियों में मसलमियाह बिन कूरे, जो बनी आसफ में मैं से था; 2 और मसलमियाह के यहाँ बेटे थे: ज़करियाह पहलौठा, यदीएल दूसरा, जबदियाह तीसरा, यतनीएल चौथा, 3 ऐलाम पाँचवाँ, यहहानान छटा, इलीह-ऐसी सतावँ था। 4 और 'ओबेदअदोम के यहाँ बेटे थे: समायाह पहलौठा, यहज़बा'द दूसरा, यू-अख तीसरा, और सकार चौथा, और नतनीएल पाँचवाँ, 5 'अम्मीएल छटा, इक्कार सातावँ, फ़'उलती आठवाँ; क्यूंकि खुदा ने उसे बरकत बख्ती थी। 6 उसके बेटे समायाह के यहाँ भी बेटे पैदा हुए, जो अपने आबाई खान्दान पर सरदारी करते थे क्योंकि वह ताकतवर सर्मी थे। 7 समायाह के बेटे: उत्तनी और रफाएल और 'ओबेद और इलज़बा'द, जिनके भाई इलीह और समाकियाह सर्मी थे। 8 यह सब 'ओबेदअदोम की औलाद में से से थे। वह और उनके भाई उसके खिदमत के लिए ताकत के 'ऐतबार से काबिल आदमी थे, यूँ 'ओबेदअदोमी बासठ थे। 9 मसलमियाह के बेटे और भाई अठारह सर्मी थे। 10 और बनी मिरारी में से हसा के हाँ बेटे थे: सिमरी सरदार था वह पहलौठा तो न था, लेकिन उसके बाप ने उसे सरदार बना दिया था, 11 दूसरा खिलकियाह, तीसरा तबलयाह, चौथा ज़करियाह; हसा के सब बेटे और भाई तेरह थे। 12 इहीं मैं से या'नी सरदारों में से दरबानों के फ़रीक थे, जिनका जिम्मा अपने भाईयों की तरह खुदावन्द के घर में खिदमत करने का था। 13 और उहोंने क्या छोटे क्या बड़े, अपने अपने आबाई खान्दान के मुताबिक हर एक फाटक के लिए पर्ची डाला। 14 पूरब की तरफ का पर्ची सलमियाह के नाम निकला। फिर उसके बेटे ज़करियाह के लिए भी, जो 'अक्लामन्द सलाहकार था, पर्ची डाला गया और उसका पर्ची शिमाल की तरफ का निकला। 15 'ओबेदअदोम के लिए जन्नब की तरफ का था, और उसके बेटों के लिए गल्लाखाना का। 16 सुफ़रीम और हसा के लिए पश्चिम की तरफ सलकत के फाटक के नज़दीक का, जहाँ से ऊँची सड़क ऊपर जाती है ऐसा कि आपने सामने होकर पहरा दें। 17 पूरब की तरफ छः: लावी थे, उत्तर की तरफ हर रोज़ चार, दक्खिन की तरफ हर रोज़ चार, और तोशाखाने के पास दो दो। 18 पश्चिम की तरफ परबार के लिए चार तो ऊँची सड़क पर और दो परबार के लिए। 19 बनी कोरही और बनी मिरारी में से दरबानों के फ़रीक यही थे। 20 लावियों में से अखियाह खुदा के घर के खजानों और नज़र की चीज़ों के खजानों पर मुकर्ररथा। 21 बनी ला'दान: इसलिए ला'दान के खान्दान के जैरसोनियों के बेटे, जो उन आबाई खान्दानों के सरदार थे, जो जैरसोनी ला'दान से त'अल्लुक रखते थे यह थे: यहीएली। 22 और यहीएली के बेटे: जैताम और उसका भाई यूएल, खुदावन्द के घर के खजानों पर थे। 23 अमरामियों, इज्हारियों, हबस्नियों और उज्जीएलियों में से: 24 सुबुलून बिन जैरसोम बिन मूसा, बैत — उल — माल पर मुखार था। 25 और उसके भाई इली'एलियाज़र की तरफ से: उसका बेटा रहबियाह, रहबिया का बेटा यसा'याह, यसा'याह का बेटा यूराम, यूराम का बेटा ज़िकरी, ज़िकरी का बेटा सल्लूमीत। 26 यह

सल्लूमीत और उसके भाईं नज़्र की हुई चीजों के सब ख़ज़ानों पर मुकर्रर थे, जिनको दाऊद बादशाह और आबाई खान्दानों के सरदारों और हज़ारों और सैकड़ों के सरदारों और लश्कर के सरदारों ने नज़्र किया था। 27 लड़ाइयों की लृप्त में से उन्होंने खुदावन्द के घर की मरम्मत के लिए कुछ नज़्र किया था। 28 समैल गैबीन और सालत बिन कीस और अबनेर बिन नेर और योआब बिन ज़रोयाह की सारी नज़्र, गरज़ जो कुछ निसी ने नज़्र किया था वह सब सल्लूमीत और उसके भाईयों के हाथ में सुरुद्ध था। 29 इज़हारियों में से कनानियाह और उसके बेटे, इस्माईलियों पर बाहर के काम के लिए हाकिम और काज़ी थे। 30 हबस्तियों में से हसबियाह और उसके भाईं, एक हज़ार सात सौ सूर्मा, मगारिब की तरफ यरदान पार के इस्माईलियों की निगारानी की खातिर खुदावन्द के सब काम और बादशाह की खिदमत के लिए तैनात थे। 31 हबस्तियों में यरयाह, हबस्तियों का उनके आबाई खान्दानों के नस्बों के मुताबिक सरदार था। दाऊद की हकमत के चालीसवें बरस में वह ढूँढ़ निकाले गए, और जिल 'आद के याज़ेर में उनके बीच ताकतवर सूर्मा मिले। 32 उसके भाईं, दो हज़ार सात सौ सूर्मा और आबाई खान्दानों के सरदार थे, जिनकी दाऊद बादशाह ने रूबीनियों और ज़ाहियों और मनस्सी के आधे कबीले पर खुदा के हर एक काम और शाही मुआमिलात के लिए सरदार बनाया।

27 और बनी इस्माईल अपने शमार के मुवाफिक यानी आबाई खान्दानों के रईस और हज़ारों और सैकड़ों के सरदार और उनके मस्बदार जो उन फ़रीकों के हर हाल में बादशाह की खिदमत करते थे, जो साल के सब महीनों में माह — ब — माह आते और स्वस्त होते थे, हर फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 2 पहले महीने के पहले फ़रीक पर यसुबि'आम बिन जबदिल था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 3 वह बनी फ़ारस में से था और पहले महीने के लश्कर के सब सरदारों का रईस था। 4 दूसरे महीने के फ़रीक पर दूदे अख़ीरी था, और उसके फ़रीक में मिकलोत भी सरदार था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 5 तीसरे महीने के लश्कर का खास तीसरा सरदार यहयदा' कहिन का बेटा बिनायाह था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 6 यह वह बिनायाह है जो तीसों में ज़बरदस्त और उन तीसों के ऊपर था; उसी के फ़रीक में उसका बेटा 'अम्मीज़बा'द भी शामिल था। 7 चौथे महीने के लिए योआब का भाईं 'असाहील था, और उसके पीछे उसका बेटा ज़बदियाह था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 8 पाँचवें महीने के लिए पैंचवाँ सरदार समहृत इज़रारवी था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 9 छठे महीने के लिए छठा सरदार तक़ू'अ 'इक्कीस का बेटा ईशा था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 10 सातवें महीने के लिए सातवाँ सरदार बनी इफ़राईम में से फ़ल्टीखलस था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 11 आठवें महीने के लिए आठवाँ सरदार ज़ाहियों में से नफ़काती महीनी था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 12 नवें महीने के लिए नववाँ सरदार जिनयमीनियों में से 'अन्तोती अबी' अज़र था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 13 दसवें महीने के लिए दसवाँ सरदार ज़ाहियों में से नज़फ़ती महीनी था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 14 ग्यारहवें महीने के लिए ग्यारहवाँ सरदार बनी इफ़राईम में से फ़र' आतीनी बिनायाह था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 15 बारहवें महीने के लिए बारहवाँ सरदार गुत्तीएलियों में से नफ़काती खल्दी था, और उसके फ़रीक में चौबीस हज़ार थे। 16 इस्माईल के कबीलों पर रूबीनियों का सरदार इनी'एलियाज़र बिन ज़िक्री था, शमैलियों का सफ़तियाह बिन माका; 17 लावियों का हसबियाह बिन क़मैल, हास्न के घराने का सदोक; 18 यहदाह का इलीह, जो दाऊद के भाईयों में से था; इश्कार का 'उमरी बिन मिकाएल; 19 ज़बूलून का इसमाइयाह बिन 'अबदियाह, नफ़ताली का यरीमोत बिन 'अज़रिएल; 20 बनी इफ़राईम का

हसी'अ बिन 'अज़ज़ियाह, मनस्सी के आधे कबीले का यूएल बिन फ़िदायाह; 21 जिल 'आद में मनस्सी के आधे कबीले का 'ईदू बिन ज़करियाह, बिन यमीन का या'सीएल बिन अबनेर; 22 दान का 'अज़री'एल बिन यरोहाम। यह इस्माईल के कबीलों के सरदार थे। 23 लेकिन दाऊद ने उनका शुमार नहीं किया था जो बीस बरस या कम उम्र के थे, क्यूंकि खुदावन्द ने कहा था कि मैं इस्माईल को आसमान के तरीं की तरह बढ़ाऊँगा। 24 ज़रोयाह के बेटे योआब ने गिनना तो शुरू किया, लेकिन खत्म नहीं किया था कि इनमें में इस्माईल पर कहर नज़िल हआ, और न वह तादूद दाऊद बादशाह की तबारीची तादादों में दर्ज हुई। 25 शाही खज़ानों पर 'अज़मावत बिन 'अदिल मुकर्रर था, और खेतों और शहरों और ग़ाँव और किलों के खज़ानों पर यूनतन बिन उज़ज़ियाह था; 26 और काश्तकारी के लिए खेतों में काम करनेवालों पर 'अज़री बिन कलूब था; 27 और अंगूरिस्तानों पर सिम'ई रामाती था, और मय के ज़ज़रीरों के लिए अंगूरिस्तानों की पैदावार पर जबड़ी शिफ़मी था; 28 और ज़ैतून के बागों और गूलर के दरख्तों पर जो नशेव के मैदानों में थे, बाल हनान जदरी था; और यूआस तेल के गोदामों पर; 29 और गाय — बैल के गल्लों पर जो शास्त्र में चरते थे, सितरी शास्त्री था; और साफ़त बिन 'अदरीनी गाय — बैल के उन गल्लों पर था जो वादियों में थे; 30 और क़ैटों पर इस्माईली ओविल था, और गधों पर यहदियाह मस्तोनी था; 31 और भेड़ — बकरी के रेवड़ों पर याज़ीज़ हाजिर था। यह सब दाऊद बादशाह के माल पर मुकर्रर थे। 32 दाऊद का चचा योनतन सलाह कार और अक्लमंद और मुन्शी था, और यहीएल बिन हक्मूती शहजादों के साथ रहता था। 33 अखीतुफ़कल बदशाह का सलाह कार था, और हसी'अक्री बादशाह का दोस्त था। 34 और अखीतुफ़कल से नीचे यहयदा' बिन बिनायाह और अबीयातर थे, और शाही फ़ोज़ का सिपहसालार योआब था।

28 दाऊद ने इस्माईल के सब हाकिमों को जो कबीलों के सरदार थे, और उन फ़रीकों के सरदारों को जो बारी बारी बादशाह की खिदमत करते थे, और हज़ारों के सरदारों और सैकड़ों के सरदारों, और बादशाह के और उसके बेटों के सब माल और मवेशी के सरदारों, और खवाजा सराओं और बहादुरों बल्कि सब ताकतवर सूर्माओं को येस्सलेम में इकट्ठा किया। 2 तब दाऊद बादशाह अपने पाँव पर उठ खड़ा हुआ, और कहने लगा, ऐसे भाईयों और मेरे लोगों, मेरी सूजों! मेरे दिल में तो था कि खुदावन्द के 'अहद के सन्दूक' के लिए आरामगाह, और अपने खुदा के लिए पाँव की कुर्सी बनाऊँ, और मैंने उसके बनाने की तैयारी भी की; 3 लेकिन खुदा ने मुझ से कहा कि तू मेरे नाम के लिए घर नहीं बनाने पाएगा, क्यूंकि तू ज़नी मर्द है और तू ने खनबहाया है। 4 तो भी खुदावन्द इस्माईल के खुदा ने मुझे मेरे बाप के सारे घराने में से चुन लिया कि मैं हमेशा इस्माईल का बादशाह रहूँ, क्यूंकि उसने यहदाह को रहनुमा होने के लिए मन्त्रखबर किया; और यहदाह के घराने में से मेरे बाप के घराने को चुना है, और मेरे बाप के बेटों में से मुझे पसंद किया ताकि मुझे सारे इस्माईल का बादशाह बनाए। 5 और मेरे सब बेटों में से क्यूंकि खुदावन्द ने मुझे बहत से बेटे दिए हैं उसने मेरे बेटे सुनेवान को पांचत किया, ताकि वह इस्माईल पर खुदावन्द की हूकमत के तख्त पर बैठे। 6 उसने मुझ से कहा, 'तेरा बेटा सुलेमान मेरे घर और मेरी बारगाहों को बनाएगा, क्यूंकि मैंने उसे चुन लिया है कि वह मेरा बेटा हो और मैं उसका बाप हाँगा। 7 और अगर वह मेरे हूकमों और फ़रमानों पर 'अमल करने में साबित कदम रहे जैसा आज के दिन है, तो मैं उसकी बादशाही हमेशा तक काईम रखूँगा। 8 फिर अब सारे इस्माईल यानी खुदावन्द की जमा'अत के सामने और हमारे खुदा के सामने, तुम खुदावन्द अपने खुदा के सब हूकमों को मानो और उनके तालिब हो, ताकि तुम इस अच्छे मुल्क के वारिस हो; और उसे अपने बाद अपनी औलाद के लिए हमेशा के लिए मीरास छोड़ जाओ। 9 और

तू ऐ मेरे बेटे सुलेमान, अपने बाप के खुदा को पहचान और पूरे दिल और स्फूर्ति में आपनी 'इदी' से उसकी 'इबा' दत कर; क्यूंकि खुदावन्द सब दिलों को जाँचता है, और जो कुछ स्थान में आता है उसे पहचानता है। अगर तू उसे ढूँढ़ते तो वह तुझ को मिल जाएगा, और अगर तू उसे छोड़ते तो वह हमेशा के लिए तुझे रुक कर देगा। 10 इसलिए होशियार हो, क्यूंकि खुदावन्द ने तुझ को मकदिस के लिए एक घर बनाने को चुना है, इसलिए हिम्मत बांध कर काम कर। 11 तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को हैकल के उसारे और उसके मकानों और खजानों और बालाखानों और अन्दर की कोठरियों और कफ़ारागाह की जगह का नमूना, 12 और उन सब चीजों, यानी खुदावन्द के घर के सहनों और आस पास की कोठरियों और खुदा के घर के खजानों और नज़र की हुई चीजों के खजानों का नमूना भी दिया जो, उसको 'स्फूर्ति' से मिला था; 13 और कहानों और लायियों के फरीकों और खुदावन्द के घर की इजादत के सब काम और खुदावन्द के घर की इजादत के सब बर्तन के लिए, 14 यानी सोने के बर्तनों के वास्ते सोना तोल कर हर तरह की खिदमत के सब बर्तनों के लिए, और चाँदी के सब बर्तनों के वास्ते चाँदी तौल कर हर तरह की खिदमत के सब बर्तनों के लिए, 15 और सोने के शमादानों और उनके चिरागों के लिए एक एक शमादान, और उनके चरागों का सोना तोल कर; और चाँदी के शमादानों के लिए एक एक शमादान, और उसके चरागों के लिए हर शमादान के इतेरोंमाल के मुताबिक चाँदी तौल कर; 16 और नज़र की रेटी की मेज़ों के वास्ते एक एक मेज़ के लिए सोना तोल कर, और चाँदी की मेज़ों के लिए चाँदी; 17 और काँटों और कटोरों और प्यालों के लिए खालिस सोना दिया, और सुनहले प्यालों के लिए एक एक प्याले के लिए तौल कर, और चाँदी के प्यालों के वास्ते एक एक प्याले के लिए तौल कर; 18 और खुशबू की कुर्बानगाह के लिए चोखा सोना तौल कर, और रथ के नमूने यानी उन कस्तियों के लिए जो पर फैलाए खुदावन्द के 'अहद' के सन्दूक को ढाँके हुए थे, सोना दिया। 19 यह सब यानी इस नमूने के सब काम खुदावन्द के हाथ की तरीरी से मुझे समझाए गए। 20 दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा, हिम्मत बांध और हौसले से काम कर, खौफ न कर, परेशान न हो, क्यूंकि खुदावन्द खुदा जो मेरा खुदा है तेरे साथ है। वह तुझ को छोड़ेगा और न छोड़ा करेगा, जब तक खुदावन्द के घर की खिदमत का सारा काम तमाम न हो जाए। 21 और देख, कहानों और लायियों के फरीक खुदा के घर की सारी खिदमत के लिए हाजिर हैं, और हर क्रिस्म की खिदमत के लिए सब तरह के काम में हर शब्द से जो माहिर है बखूबी तेरे साथ हो जाएगा; और लक्षर के सरदार और सब लोग भी तेरे हृक्षम में होंगे।

29 और दाऊद बादशाह ने सारी जमा'अत से कहा कि खुदा ने सिर्फ़ मेरे बेटे सुलेमान को चुना है, और वह अभी लड़का और नातज़ुरेकर है; और काम बड़ा है, क्यूंकि वह महल इंसान के लिए नहीं बल्कि खुदावन्द खुदा के लिए है। 2 और मैंने तो अपने मकरूर भर अपने खुदा की हैकल के लिए सोने की चीजों के लिए सोना, और चाँदी की चीजों के लिए चाँदी, और पीतल की चीजों के लिए पीतल, लोहे की चीजों के लिए लोहा, और लकड़ी की चीजों के लिए लकड़ी, और 'अक्रीक और जड़ाऊ पथर और पच्ची के काम के लिए रंग बिरंग के पथर, और हर क्रिस्म के बेशकीमत जवाहिर और बहुत सा संग — ए — मरमर तैयार किया है। 3 और चूंकि मुझे अपने खुदा के घर की लौलगी है और मेरा पास सोने और चाँदी का मेरा अपना खजाना है, इसलिए मैं उसकी भी उन सब चीजों के 'अलावा जो मैंने उस मुकद्दस हैकल के लिए तैयार की है, अपने खुदा के घर के लिए देता हूँ। 4 यानी तीन हजार किन्तार सोना जो ओफ़ीर सोना है, और सात हजार किन्तार खालिस चाँदी 'इमारतों की दीवारों पर मढ़ने के लिए; 5 और कारीगरों के हाथ के हर क्रिस्म के काम के लिए सोने

की चीजों के लिए सोना, और चाँदी की चीजों के लिए चाँदी है। तो कौन तैयार है कि अपनी खुशी से अपने आपको आज खुदावन्द के लिए मध्यस्थ करे? 6 तब आबाई खानदानों के सरदारों और इस्माइल के कबीलों के सरदारों और हजारों और सैकड़ों के सरदारों और शाही काम के नाजिमों ने अपनी खुशी से तैयार होकर, 7 खुदा के घर के काम के लिए, सोना पाँच हजार किन्तार और दस हजार दिरहम, और चाँदी दस हजार किन्तार, और पीतल अठारह हजार किन्तार, और लोहा एक लाख किन्तार दिया। 8 और जिनके पास जवाहर थे, उन्होंने उनकी जैरसोनी यहाँएल के हाथ में खुदावन्द के घर के खजाने के लिए दे डाला। 9 तब लोग शादमान हुए, इसलिए कि उन्होंने अपनी खुशी से दिया क्यूंकि उन्होंने पूरे दिल से रजामन्दी से खुदावन्द के लिए दिया था; और दाऊद बादशाह भी निहायत शादमान हुआ। 10 फिरदाऊद ने सारी जमा'अत के आगे खुदावन्द का शुक्र किया, और दाऊद कहने लगा, ऐ खुदावन्द, हमारे बाप इस्माइल के खुदा! तू हमेशा से हमेशा तक मुबारक हो। 11 ऐ खुदावन्द, 'अज्ञमत और कुदरत और जलाल और गलबा और हशमत तेरे ही लिए हैं, क्यूंकि सब कुछ जो आसमान और जमीन में है तेरा है। ऐ खुदावन्द, बादशाही तेरी है, और तू ही बैहसियत — ए — सरदार सभों से मुस्ताज है। 12 और दौलत और 'इज्जत तेरी तरफ से आती है, और तू सभों पर हुक्मत करता है, और तेरे हाथ में कुदरत और तवानाई है, और सरफ़ाराज करना और सभों को जोर बरछाना तेरे हाथ में है। 13 और अब ऐ हमारे खुदा, हम तेरा शुक्र और तेरे जलाली नाम की तारीफ़ करते हैं। 14 लेकिन मैं कौन और मेरे लोगों की हकीकित क्या कि हम इस तरह से खुशी खुशी नज़राना देने के काबिल हों? क्यूंकि सब चीजें तेरी तरफ़ से मिलती हैं, और तेरी ही चीजों में से हम ने तुझे दिया है। 15 क्यूंकि हम तेरे आगे परदेसी और मुसाफ़िर हैं जैसे हमारे सब बाप — दादा थे। हमारे दिन रु — ए — जमीन पर साये की तरह हैं, और क्याम नसीब नहीं। 16 ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, यह सारा ज़खीरा जो हम ने तैयार किया है कि तेरे पाप का नाम के लिए एक घर बनाएँ, तेरी ही हाथ से मिला है और सब तेरा ही है। 17 ऐ मेरे खुदा, मैं यह भी जानता हूँ कि तू दिल को जाँचता है, और रास्ती में तेरी खुशनन्दी है। मैंने तो अपने दिल की रास्ती से यह सब कुछ रजामन्दी से दिया, और मुझे तेरे लोगों को जो यहाँ हाजिर हैं, तेरे सामने खुशी खुशी देते देख कर खुशी हासिल हुई। 18 ऐ खुदावन्द, हमारे बाप — दादा अब्राहाम, इज्हाक और इस्माइल के खुदा, अपने लोगों के दिल के ख्याल और तस्वीर में यह बात सदा जमाए रख, और उनके दिल को अपनी जानिब मुस्तर्इद ईद कर। 19 और मेरे बेटे सुलेमान को ऐसा कामिल दिल 'अता कर कि वह तेरे हृक्षमों और शहादतों और कानून को माने और इन सब बातों पर 'अमल करे, और उस हैकल को बनाए जिसके लिए मैंने तैयारी की है। 20 फिर दाऊद ने सारी जमा'अत से कहा, अब अपने खुदावन्द खुदा को मुबारक करो। तब सारी जमा'अत ने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को मुबारक कहा, और सिर झकाकर उन्होंने खुदावन्द और बादशाह के आगे सिज्दा किया। 21 दूसरे दिन खुदावन्द के लिए जबीहों को जबह किया और खुदावन्द के लिए सोखानी कुर्बानियाँ पेश की, यानी एक हजार बैल और एक हजार मैट्टे और एक हजार बर्म'ए और उनके तपावनों के चढ़ाए, और बक्सरत कुर्बानियाँ की जो सारे इस्माइल के लिए थीं। 22 और उन्होंने उस दिन निहायत खुशी के साथ खुदावन्द के आगे खाया — पिया और उन्होंने दूसरी बार दाऊद के बेटे सुलेमान को बादशाह बनाकर, उसको खुदावन्द की तरफ़ से पेशवा होने और सदोक को काहिन होने के लिए मसह किया। 23 तब सुलेमान खुदावन्द के तख्त पर अपने बाप दाऊद की जगह बादशाह होकर बैठा और कामयब हुआ, और सारा इस्माइल उसका फरमांबदर हुआ। 24 और सब हाकिम और बहादुर और दाऊद बादशाह के सब बेटे भी सुलेमान बादशाह

के फरमाँबरदार हुए। 25 और खुदावन्द ने सारे इस्माइल की नजर में सुलेमान को निहायत सरफराज किया, और उसे ऐसा शाहाना दबदबा 'इनायत किया जो उससे पहले इस्माइल में किसी बादशाह को नसीब न हुआ था। 26 दाऊद बिन यस्सी ने सारे इस्माइल पर हक्मत की; 27 और वह 'असीं जिसमें उसने इस्माइल पर हक्मत की चालीस बरस का था। उसने हब्स्न में सात बरस और येस्शलेम में तैतीस बरस हक्मत की। 28 और उसने निहायत बुढ़ापे में खूब उम्र रखीदा और दैलत — ओ — इज्जत से आसूदा होकर बफात पाई, और उसका बेटा सुलेमान उसकी जगह बादशाह हुआ। 29 दाऊद बादशाह के काम शुरू' सर तक, आखिर सब के सब समुएल नबी की तवारीख में और नातन नबी की तवारीख में और जाद नबी की तवारीख में, 30 या 'नी उसकी सारी हक्मत और जोर और जो जमाने उस पर और इस्माइल पर और जमीन की सब ममलुकतों पर गुज़रे, सब उनमें लिखे हैं।

2 तवा

1 और सुलेमान बिन दाऊद अपनी ममलुकत में ठहरा हुआ और खुदावन्द

उसका खुदा उसके साथ रहा और उसे बहुत बुलन्द किया। 2 और सुलेमान ने सारे इस्लाइल यानी हजारों और सैकड़ों के सरदारों और काजिओं, और सब इस्लाइलियों के ईसिंगों से जो आवाई खानदानों के सरदार थे वांते की। 3 और सुलेमान सारी जमा' अत साथ जिबा' उन के ऊंचे मकाम को गया क्यूंकि खुदा का खेमा — ए — इजितमा' अ जैसे खुदावन्द के बन्दे मसा ने विराने में बनाया था वही था। 4 लेकिन खुदा के सन्दूक को दाऊद करीयत — या'रीम से उस मकाम में उठा लाया था जो उस ने उसके लिए तैयार किया था क्यूंकि उसने उस के लिए येस्शलेम में एक खेमा खड़ा किया था। 5 लेकिन पीतल का वह मजबह जिसे बजलीएल बिन ऊरी बिन हरने ने बनाया था वही खुदावन्द के मस्कन के आगे था। फिर सुलेमान उस जमा' अत के साथ वही गया। 6 और सुलेमान वहाँ पीतल के मजबह के पास जो खुदावन्द के आगे खेमा — ए — इजितमा' अ में था गया और उस पर एक हजार सोखानी कुर्बानियाँ पेश की। 7 उसी रात खुदा सुलेमान को दिखाई दिया और उस से कहा, मौंग मैं तुझे क्या दूँ 8 सुलेमान ने खुदा से कहा, तुमें मैं बाप दाऊद पर बड़ी मेहरबानी की और मुझे उसकी जगह बादशाह बनाया। 9 अब ऐ खुदावन्द खुदा, जो वादा तूने मेरे बाप दाऊद से किया वह बरकरार रहे, क्यूंकि तूने मुझे एक ऐसी कौम का बादशाह बनाया है जो कसरत में जमीन की खाक के जरूरी की तरह है। 10 इसलिए मुझे हिक्मत — ओ — मारिफत इनायत कर ताकि मैं इन लोगों के आगे अन्दर बाहर आया जाया कहूँ क्यूंकि तेरी इस बड़ी कौम का इन्साफ़ कौन कर सकता है? 11 तब खुदा ने सुलेमान से कहा चुंकि तेरे दिल में यह बात थी और तुमें न तो दौलत न माल न इज़ज़त न अपने दुश्मनों की मौत मौंगी और न लम्बी उम्र की तलब की बल्कि अपने लिए हिक्मत — ओ — मारिफत की दरखास्त की ताकि मेरे लोगों का जिन पर मैंने तुझे बादशाह बनाया है इन्साफ़ करो। 12 इसलिए हिक्मत — ओ — मारिफत तुझे 'अता हुँ है और मैं तुझे इस कदर दौलत और माल और 'इज़ज़त बरख़ूँगा कि न तु उन बादशाहों में से जो तुझ से पहले हुए किसी को नसीब हुई और न किसी को तेरे बाद नसीब होगी। 13 चुनौंचे सुलेमान जिबा' उन के ऊंचे मकाम से यानी खेमा — ए — इजितमा' अ के आगे से येस्शलेम को लौट आया और बनी इस्लाइल पर बादशाहत करने लगा। 14 और सुलेमान ने रथ और सवार ज़मा कर लिए और उसके पास एक हजार चार सौ रथ और बारह हजार सवार थे, जिनको उसने रथों के शहरों में और येस्शलेम में बादशाह के पास रखा। 15 और बादशाह ने येस्शलेम में चाँदी और सोने को कसरत की बजह से पथर्यों की तरह और देवदारों को नशेब की जमीन के गलर के दरखाँओं की तरह बना दिया। 16 और सुलेमान के घोड़े मिस्र से आते थे और बादशाह के सौदागर उनके झुंड के झुंड यानी हर झुंड का मोल करके उनको लेते थे। 17 और वह एक रथ छ: सौ मिस्काल चाढ़ी और एक घोड़ा ढेल सौ मिस्काल में लेते और मिस्र से ले आते थे और इसी तरह हितियों के सब बादशाहों और आराम के बादशाहों के लिए उन ही के वर्सीला से उन को लाते थे।

2 और सुलेमान ने 'इरादा किया कि एक घर खुदावन्द के नाम के लिए और

एक घर अपनी हक्मत के लिए बनाए। 2 और सुलेमान ने सतर हजार भोज्ज्वल उठाने वाले और पहाड़ में अस्ती हजार पथर काटाने वाले और तीन हजार छ: सौ आदमी उनकी निगरानी के लिए गिनकर ठहरा दिए। 3 और सुलेमान ने सूर के बादशाह हराम के पास कहला भेजा कि जैसा तुमें मेरे बाप दाऊद के साथ किया और उसके पास देवदार की लकड़ी भेजी कि वह अपने रहने के लिए एक

घर बनाए वैसा ही मेरे साथ भी कर। 4 मैं खुदावन्द अपने खुदा के नाम के लिए एक घर बनाने को हूँ कि उसके लिए पाक करूँ और उसके खुशबूदार मसाल्हे का खुशबू जलाऊ, और वह सबतों और नए चाँदों और खुदावन्द हमारे खुदा की मुकर्रा 'ईदों पर हमेशा नज़र की रोटी और सुबह और शाम की सोखती कुर्बानियों के लिए हो क्यूंकि यह हमेशा तक इस्लाइल पर फर्ज है। 5 और वह घर जो मैं बनाने को हूँ अजीम उश शान होगा क्यूंकि हमारा खुदा सब मांडों से 'अजीम है। 6 लेकिन उसके लिए कौन घर बनाने के लिए कविल है जिस हाल के आसमान में बल्कि आसमानों के आसमान में भी वह समां नहीं सकता तो भला मैं कौन हूँ जो उसके सामने खुशबू जलाने के 'अलावा किसी और ख्याल से उसके लिए घर बनाऊँ? 7 इसलिए अब तू मेरे पास एक ऐसे शख्स को भेज दे जो सोने और चाँदी और पीतल और लोहे के काम में और अर्गावानी और किर्मिजी और नीले कपड़े के काम में माहिर हो और नवकाशी भी जानता हो ताकि वह उन कारीगरों के साथ रहे जो मैं बाप दाऊद के ठहराए हुए यहादाह और येस्शलेम में मेरे पास हैं। 8 और देवदार और सोनोबर और सन्दल के लड़े लुबनान से पास भेजना क्यूंकि मैं जनता हूँ तेरे नैकर लुबनान की लकड़ी कटाने में होशियार है और मैं नैकर तेरे नैकरों के साथ रहकर, 9 मेरे लिए बहुत सी लकड़ी तैयार करेंगे क्यूंकि वह घर जो मैं बनाने को हूँ बहुत आ'लिशान होगा। 10 और मैं तेरे नैकरों यानी लकड़ी कटाने वालों को बीस हजार कुर साफ़ किया हुआ गेहूँ और बीस हजार कुर जौ, और बीस हजार बत मय और बीस हजार बत तेल ढूँगा। 11 तब सूर के बादशाह हराम ने जवाब लिखकर उसे सुलेमान के पास भेजा कि क्यूंकि खुदावन्द को अपने लोगों से मुहब्बत है इसलिए उस ने तुझको उन का बादशाह बनाया है। 12 और हराम ने यह भी कहा खुदावन्द इस्लाइल का खुदा जिस ने आसमान और जमीन को पैदा किया मुबारक हो कि उस ने दाऊद बादशाह को एक दाना बेटा फहम — व — मारिफत से मामूर बरखा ताकि वह खुदावन्द के लिए एक घर और अपनी हक्मत के लिए एक घर बनाए। 13 तब मैंने अपने बाप हराम के एक होशियार शख्स को जो अक्ल से मामूर है भेज दिया है। 14 वह दान की बेटियों में से एक 'औरत का बेटा है और उसका बाप सूर का बाशिन्दा था वह सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और पथर और लकड़ी के काम में और अर्गावानी और नीले और किर्मिजी और कतानी कपड़े के काम में माहिर और हर तरह की नवकाशी और हर किस्म की सनात में ताक है ताकि तेरे हनरमंदों और मेरे मखदूर तेरे बाप दाऊद के हनरमंदों के साथ उसके लिए जगह मुकर्रा हो जाए। 15 और अब गेहूँ और जौ और तेल और शरब जिनका मैं भालिक ने ज़िक्र किया है वह उनको अपने खादिमों के लिए भेजे। 16 और जिनी लकड़ी तुझको जस्तर है हम लुबनान से काटेंगे और उनके बड़े बनवाकर समुन्दर ही समुन्दर तेरे पास याफा में पहुँचाएँगे, फिर तू उनको येस्शलेम को ले जाना। 17 और सुलेमान ने इस्लाइल के मुल्क में के सब परदेसियों को शमार किया जैसे उसके बाप दाऊद ने उनको शुमार किया था और वह एक लाख तिरपन हजार छ: सौ निकले। 18 और उनमें उन में से सतर हजार को बोझ उठाने वालों पर और अस्ती हजार को पहाड़ पर पथर काटने के लिए और तीन हजार छ: सौ को लोगों से काम लेने के लिए नज़ीर ठहराया।

3 और सुलेमान येस्शलेम में कोह — ए — मोरियाह पर जहाँ उसके बाप

दाऊद ने खबाव देखा उसी जगह जैसे दाऊद ने तैयारी कर के मुकर्रा किया यानी उननान यबूसी के खलीहान में खुदावन्द का घर बनाने लगा। 2 और उसने अपनी हक्मत के चौथे साल के दूसरे महीने की दूसरी तारीख को बनाना शूँ किया। 3 और जो बृहियाद सुलेमान ने खुदा के घर की तामीर के लिए डाली वह यह है उसका तूल हाथों के हिसाब से पहले नाप के मवाफिक साठ हाथ

और 'अरज बीस हाथ था। 4 और घर के सामने के उसारा की लम्बाई घर की चौड़ाई के मुताबिक बीस हाथ और ऊँचाई एक सौ बीस हाथ थी और उस ने उसे अन्दर से खालिस सोने से मंडा। 5 और उसने बड़े घर की छत सनोबर के तख्तों से पटवाई, जिन पर चोखा सोना मंडा था और उसके ऊपर खजर के दरखत और जन्जरी बनाई। 6 और जो खबरसूती के लिए उस ने उस घर को बेशकीमत जवाहर से दुर्स्त किया और सोना परवाइम का सोना था। 7 और उसने घर को यानी उसके शहरीरों, चौखटों, दिवारों और किवाड़ों को सोने से मंडा और दीवारों पर कस्बियों की सूरत कंदा की। 8 और उसने पात तरीन मकान बनाया जिसकी लम्बाई घर के चौड़ाई के मुताबिक बीस हाथ और उसकी चौड़ाई बीस हाथ थी और उसने उसे छँड़ी दीवारों को सोने से मंडा। 9 और कीलों का बजन पचास मिस्काल सोने का था और उसमें ऊपर की कोठरियाँ भी सोने से मंडा। 10 और उसने पाकतरिन मकान में दो कस्बियों को तराशकर बनाया और उन्होंने उनको सोने से मंडा। 11 और कस्बियों के बाजू बीस हाथ लम्बे थे, एक कर्स्बी का एक बाजू पाँच हाथ का घर की दीवार तक पहुँचा हुआ और दूसरा बाजू भी पाँच हाथ का दूसरे कर्स्बी के बाजू तक पहुँचा हुआ था। 12 और दूसरे कर्स्बी का एक बाजू पाँच हाथ का घर की दीवार तक पहुँचा हुआ और दूसरा बाजू भी पाँच हाथ का दूसरे कर्स्बी के बाजू से मिला हुआ था। 13 इन कस्बियों के पर बीस हाथ तक फैले हुए थे और वह अपने पाँच पर खड़े थे और उनके मुँह उस घर की तरफ थे। 14 और उसने पर्दः आसमानी और अर्गावानी और किरमिजी कपड़े और महीन कतान से बनाया उस पर कस्बियों को कढ़वाया। 15 और उसने घर के सामने पैतीस पैतीस हाथ ऊँचे दो सुतन बनाए, और हर एक के सिरे पर पाँच हाथ का ताज था। 16 और उसने इल्हामगाह में ज़ंजरी बनाकर सुतनों के सिरों पर लगाए और एक सौ अनार बनाकर ज़ंजरीों में लगा दिए। 17 और उसने हैकल के आगे उन सुतनों को एक दाहिनी और दूसरे को बाईं तरफ खड़ा किया और जो दहिने था उसका नाम यकीन और जो बाँहें था उसका नाम बोंअज़ रखा।

4 और उसने पीतल का एक मजबह बनाया, उसकी लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊँचाई दस हाथ थी। 2 और उसने एक ढाला हुआ बड़ा हौज बनाया जो एक किनारा से दूसरे किनारे तक दस हाथ था, वह गोल था और उसकी ऊँचाई पाँच हाथ थी और उसका घर तीस हाथ के नाप का था। 3 और उसके नीचे बैलों की सूते उसके आस पास दस — दस हाथ तक थी और उस बड़े हौज को चारों तरफ से धैरे हुए थी, यह बैल दो कतारों में थे और उसी के साथ ढाले गए थे। 4 और वह बारह बैलों पर धरा हुआ था, तीन का चेहरा उत्तर की तरफ और तीन का चेहरा पश्चिम की तरफ और तीन का चेहरा दक्षिण की तरफ और तीन का चेहरा गोपनीय की तरफ था और वह बड़ा हौज उनके ऊपर था, और उन सब के पिछले 'आज्ञा अन्दर के चेहरा थे। 5 उसकी मोटाई चार ऊंगली की थी और उसका किनारा प्याला के किनारह की तरह और सोसन के फूल से मुशाबह था, उसमें तीन हजार बत की समाई थी। 6 और उसने दस हौज भी बनाने और पाँच दहनी और पाँच बाईं तरफ रखे ताकि उन में सोखलनी कुर्बानी की चीजें धोई जाएँ, उनमें वह उन्हीं चीजों को धोते थे लेकिन वह बड़ा हौज का काहिनों के नहाने के लिए था। 7 और उसने सोने के दस शमा'दान उस हक्म के मुताबिक बनाए जो उनके बारे में मिला था उसने उनको हैकल में पाँच दहनी और पाँच बाईं तरफ रखा। 8 और उसने दस मेजे भी बनाई और उनको हैकल में पाँच दहनी पाँच बाईं तरफ रखा और उसने सोने के सौ कटोरे बनाए। 9 और उस ने काहिनों का सहन और बड़ा सहन और उस सहन के दवाजों को बनाया और उनके किवाड़ों को पीतल से मंडा। 10 और उसने उस बड़े हौज को पूरब की तरफ दहिने हाथ दक्षिण चेहरा पर रखा। 11 और

ह्राम ने बर्तन और बेल्चे और कटोरे बनाए, इसलिए ह्राम ने उस काम को जिसे वह सुलेमान बादशाह के लिए खुदा के घर में कर रहा था तमाम किया। 12 या'नी दोनों सुतनों और कुरे और दोनों ताज जो उन दोनों सुतनों पर थे और सुतनों की चोटी पर के ताजों के दोनों कुरों को ढाकने की दोनों जालियाँ; 13 और दोनों जालियों के लिए चार सौ अनार या'नी हर जाली के लिए अनारों की दो दो कतारें ताकि सुतनों पर के ताजों के दोनों कुरें ढक जाए। 14 और उसने कुर्सियाँ भी बनाई और उन कुर्सियों पर हौज लगाये। 15 और एक बड़ा हौज और उसके नीचे बारह बैल; 16 और देंगे, बेल्चे और कटैंट और उसके सब बर्तन उसके बाप ह्राम ने सुलेमान बादशाह के लिए खुदावन्द के घर के लिए झालकते हुए पीतल के बनाए। 17 और बादशाह ने उन सब को यारदन के मैदान में सुककात और सरीदा के बीच की चिकनी मिटी में ढाला। 18 और सुलेमान ने यह सब बर्तन इस कशरत से बनाए कि उस पीतल का बजन मालूम न हो सका। 19 और सुलेमान ने उन सब बर्तन को जो खुदा के घर में थे बनाया, या'नी सोने की कुर्बानगाह और वह मेजे भी जिन पर नज़र की रोटियाँ रखी जाती थीं। 20 और खालिस सोने के शमा'दान चिरागों के साथ ताकि वह दस्तूर के मुताबिक इल्हामगाह के आगे रोशन हो। 21 और सोने बल्कि कून्दन के फूल और चिरागों और चमटे; 22 और गुलागी और कटोरे और चमटे और खुशबूदान खालिस सोने के और घर का मदखल या'नी उसके अन्दरनी दरवाजे पाकतरीन मकान के लिए और घर या'नी हैकल के दरवाजे सोने के थे।

5 इस तरह सब काम जो सुलेमान ने खुदावन्द के घर के लिए बनवाया खत्म

हुआ और सुलेमान अपने बाप दाऊद की पाक की हुई चीजों या'नी सोने और चौंटी और सब बर्तन को अन्दर ले आया और उनको खुदा के घर के खजाना में रख दिया। 2 तब सुलेमान ने इसाईल के बुजुर्गों और कबीलों के सब ईंसों या'नी बनी — इसाईल के आर्बाई खानदानों के सरदार को येश्वलेम में इक्षा किया ताकि वह दाऊद के शहर से जो सिव्यन है खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक ले आए। 3 और इसाईल के सब लोग साक्षे महीनी की 'ईद में बादशाह के पास जामा' हुए। 4 इसाईल के सब बुजुर्ग आए और लाली ने सन्दूक उठाया। 5 और वह सन्दूक को खेमा — ए — इजितमा'अ को और सब पाक बर्तन को जो उस खेमा में थे ले आए। इनको लाली काहिन लाए थे। 6 और सुलेमान बादशाह और इसाईल की सारी जामा'अत ने जो उसके पास इकट्ठी हुई थी सन्दूक के आगे खड़ा होकर भेड़ बकरियाँ और बैल जबह किए एसा कि कसरत की वजह से उनका शुमार — ओ — हिसाब नहीं हो सकता था। 7 और काहिनों ने खुदावन्द के 'अहद' के सन्दूक को उसकी जगह घरकी इल्हामगाह में जो पाकतरीन मकान है या'नी कस्बियों के बाजूओं के नीचे लाकर रखा। 8 और कर्स्बी अपने कुछ सन्दूक की जगह के ऊपर फैलाए हुए थे और यूँ कर्स्बी सन्दूक और उसकी चोबों को ऊपर से ढाके हुए थे। 9 और चोबे ऐसी लम्बी थीं कि उनके सिरे सन्दूक से निकले हुए इल्हामगाह के आगे दिखाई देते थे लेकिन बाहर से नज़र नहीं आते थे और वह आज के दिन तक बही है। 10 और उस सन्दूक में कुछ न था 'अलावा पत्थर' की उन दो लौहों के जिनको मसा ने होमेब पर उस में रखा था जब खुदावन्द ने बनी इसाईल से जिस वक्त बह मिस्त से निकले थे 'अहद बांधा। 11 और ऐसा हुआ कि जब काहिन पाक मकान से निकले कर्यकृत सब काहिन जो हाजिर थे अपने को पाक कर के आए थे और बारी बारी से खिदमत नहीं करते थे। 12 और लाली जो गाते थे वह सब के सब जैसे आसफ और हैमान और यदूतून और उनके बेटे और उनके भाई कतानी कपड़े से मुलव्वस होकर और झांझा और सितार और बरबत लिए हुए मजबह के पूरबी किनारे पर खड़े थे और उनके साथ एक सौ बीस काहिन थे जो नरसिंगे फँकने वाले और गाने वाले मिल

गए ताकि खुदावन्द की हम्द और शुक्रगुजारी में उन सब की एक आवाज़ सुनाई दे और जब नरसिंगो और ज़ाँझों और मूरीकी के सब साजों के साथ उन्होंने अपनी आवाज़ बलन्द कर के खुदावन्द की तारीफ की कि वह अच्छा है क्यूंकि उसकी रहमत हमेशा है तो वह घर जो खुदावन्द का घर है अब से भर गया। 14 यहाँ तक कि काहिन अब की वजह से खिदमत के लिए खड़े न रह सके इसालिए कि खुदा का घर खुदावन्द के जलाल से भर गया था।

6 तब सुलेमान ने कहा, खुदावन्द ने फरमाया है कि वह गहरी तारीकी में रहेगा। 2 लेकिन मैंने एक घर तैरे रहने के लिए बल्कि तेरी हमेशा सुकूनत के बास्ते एक जगह बनाई है। 3 और बादशाह ने अपना मुँह फेरा और इसाईल की जमा' अत को बरकत दी और इसाईल की सारी जमा' अत खड़ी रही। 4 तब उसने कहा, खुदावन्द इसाईल का खुदा मुबारक हो जिस ने अपने मुँह से मेरे बाप दाऊद से कलाम किया “और उसे अपने हाथों से यह कहकर पूरा किया।” 5 कि जिस दिन मैं अपनी कौम को मूल्के मिस्र से निकाल लाया तब से मैं ने इसाईल के सब क़बीलों में से न तो किसी शहर को चुना ताकि उसमे रह बनाया जाए और वहाँ मेरा नाम हो और न किसी आदमी को चुना ताकि वह मेरी कौम इसाईल का पेशवा हो। 6 लेकिन मैंने येस्थलेम को चुना कि वहाँ मेरा नाम हो और दाऊद को चुना ताकि वह मेरी कौम इसाईल पर हाकिम हों। 7 और मेरे बाप दाऊद के दिल में था कि खुदावन्द इसाईल के खुदा के नाम के लिए एक घर बनाए। 8 लेकिन खुदावन्द ने मेरे बाप दाऊद से कहा, “चौंक मेरे नाम के लिए एक घर बनाने का ख्याल तैरे दिल में था इसलिए तूने अच्छा किया कि अपने दिल में ऐसा ठाना।” 9 त. भी तो इस घर को न बनाना बल्कि तेरा बेटा जो तैरे सुल्ब से निकलेगा वही मेरे नाम के लिए घर बनाएगा। 10 और खुदावन्द ने अपनी वह बात जो उसने कही थी पूरी की क्यूंकि मैं अपने बाप दाऊद की जगह उठा हूँ और जैसा खुदावन्द ने वादा किया था मैं इसाईल के तख्त पर बैठा हूँ और मैंने खुदावन्द इसाईल के खुदा के नाम के लिए उस घर को बनाया है। 11 और वही मैंने वह सन्दूक रखा है जिस में खुदावन्द का वह ‘अहद है जो उसने बनी इसाईल से किया। 12 और सुलेमान ने इसाईल की सारी जमा' अत के आपने सामने खुदावन्द के मजबूत के अगे खड़े होकर अपने हाथ फैलाए। 13 क्यूंकि सुलेमान ने पाँच हाथ लम्बा और पाँच हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊँचा पीतल का एक पिंग्वर बना कर सहन के नीचे में उसे रखा था, उसी पर वह खड़ा था, तब उसने इसाईल की सारी जमा' अत के आपने सामने घृणे थे तेरे और आसमान की तरफ अपने हाथ फैलाए। 14 और कहने लगा ऐ खुदावन्द इसाईल के खुदा तेरी तरह न तो आसमान में न ज़मीन पर कोई खुदा है। त. अपने उन बन्दों के लिए जो तेरे सामने अपने सारे दिल से चलते हैं 'अहद और रहमत को निगाह रखता है। 15 तूने अपने बन्दे मेरे बाप दाऊद के हक में वह बात काईम रखी जिसका तूने उसरे वा'दा किया था, तेरे अपने मुँह से फरमाया उसे अपने हाथ से पूरा किया जैसा आज के दिन है। 16 अब ऐ खुदावन्द इसाईल के खुदा अपने बन्दा मेरे बाप दाऊद के साथ उस कौल की भी पूरा कर जो तूने उस से किया था कि तेरे हाथ में सामने इसाईल के तख्त पर बैठने के लिए आदमी की कमी न होगी बर्शें कि तेरी औलाद जैसे तू मेरे सामने चलता रहा वैसे ही मेरी शरी' अत पर अमल करने के लिए अपनी रास्ते की एहतियात रखें। 17 और अब ऐ खुदावन्द इसाईल के खुदा जो कौल तेरे अपने बन्दा दाऊद से किया था वह सच्चा साबित किया जाए। 18 लेकिन क्या खुदा फिलहालीकत आदमियों के साथ ज़मीन पर सुकूनत करेगा? देख आसमान बल्कि आसमानों के आसमान में भी त. स्कू नहीं सकता त. यह घर तो कुछ भी नहीं जिसे मैंने बनाया। 19 तो भी ऐ खुदावन्द मेरे खुदा अपने बन्दे की दुआ और मुनाजात का लिहाज़ कर कि उस फरियाद दुआ को सुन ले जो तेरा बन्दा तेरे सामने करता है। 20 ताकि तेरी

आँखें इस घर की तरफ यानी उसी जगह की तरफ जिसकी बारे में तूने फरमाया कि मैं अपना नाम वहाँ रखूँगा दिन और रात खुला रहे ताकि तू उस दुआ को सुने जो तेरा बन्दा इस मकाम की तरफ चेहरा कर के तुझ से करेगा। 21 और तू अपने बन्दा और अपनी कौम इसाईल की मुनाजात को जब वह इस जगह की तरफ चेहरा कर के करें तो सून लेना बल्कि तू आसमान पर से जो तेरी सुकूनत गाह है सून लेना और सुनकर मु'आफ कर देना। 22 अगर कोई शब्द अपने पड़ोसी का गुनाह करे और उसे क्रसम खिलाने के लिए उसको हल्क दिया जाए और वह आकर इस घर में तेरे मजबूत के आगे क्रसम खाए। 23 तो तू आसमान पर से सुनकर 'अमल करना और अपने बन्दों का इसासफ कर के बदकार को सजा देना ताकि उसके 'आमात को उसी कि सर डाले और सादिक को सच्चा ठहराना ताकि उसकी सदाकत के मुताबिक उसे बदला दे। 24 और अगर तेरी कौम इसाईल तेरा गुनाह करने के जरिए अपने दुश्मनों से शिकस्त खाए और फिर तेरी तरफ रूँगा लाए और तेरे नाम का इकरार कर के इस घर में तेरे सामने दुआ और मुनाजात करे। 25 तो तू आसमान पर से सुनकर अपनी कौम इसाईल के गुनाह को बाख्य देना और उनको इस मुल्क में जो तेरे उनको और उनके बाप दादा को दिया है फिर ले आना। 26 और जब इस बजह से कि उन्होंने तेरा गुनाह किया हों आसमान बन्द हो जाए और बारिश न हो और वह इस मकाम की तरफ चेहरा कर के दुआ करें और तेरे नाम का इकरार करे और अपने गुनाह से बाज आए जब तु उनको दुःख दे। 27 तो तू आसमान पर से सुनकर अपने बन्दों और अपनी कौम इसाईल का गुनाह मु'आफ कर देना क्यूंकि तूने उनको उस अच्छी रास्ते की तालिम दी जिस पर उनको चलना फर्ज है और अपने मुल्क पर जैसे तूने अपनी कौम के मीरास के लिए दिया है पानी न बरसाना। 28 अगर मुल्क में काल हो, अगर बवा हो, अगर बांद हो जाए और बारिश न हो और वह शक्ति की कमला हो, अगर उनके दुश्मन उनके शहरों के मुल्क में उनको धेर ले गरज कैसी ही बला या कैसा ही रोग हो। 29 त. जो दुआओं और मुनाजात किसी एक शख्स या तेरी सारी कौम इसाईल की तरफ से हों जिन में से हर शख्स अपने दुःख और रन्ज को जानकर अपने हाथ इस घर की तरफ फैलाए। 30 त. तो आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है सुनकर मु'आफ कर देना और हर शख्स को जिसके दिल को तू जनता है उसकी सब चालचलन के मुताबिक बदला देना क्यूंकि सिर्फ त ही बनी आदम के दिलों को जनता है 31 ताकि जब तक वह उस मुल्क में जिसे तूने हमारे बाप दादा को दिया जीते रहे तेरा खौफ मानकर तेरे रास्तों में चलें। 32 और वह पड़ोसी भी जो तेरी कौम इसाईल में से नहीं है जब तेरे बुजुर्ग नाम और कौमी हाथ और तेरे बुलन्द बाजू की वजह से दूर मुल्क से आए और आकर इस घर की तरफ चेहरा कर के दुआ करें। 33 तो तु आसमान पर से जो तेरी रहने की जगह है सून लेना और जिस जिस बात के लिए वह परदेसी तुझ से फरियाद करे उसके मुताबिक करना ताकि ज़मीन की सब कौम तेरे नाम को पहचाने और तेरी कौम इसाईल की तरह तेरा खौफ माने और जान ले कि यह घर जिसे मैंने बनाया है तेरे नाम का कहलाता है। 34 अगर तेरे लोग चाहे किसी रास्ते से तू उनको भेजे अपने दुश्मन से लड़ने को निकले और इस शहर की तरफ जिसे तूने चुना है और इस घर की तरफ जिसे मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है चेहरा करके तुझ से दुआ करें। 35 तो तू आसमान पर से उनकी दुआ और मुनाजात को सुनकर उनकी हिमा' अत करना। 36 अगर वह तेरा गुनाह न करता हो और तेरा बन्दा दाऊद से भर गया। 37 तो तू आसमान पर से नाराज होकर उनको दुश्मन के हवाले कर दे ऐसा कि वह दुश्मन उनको कैद करके दूर या नज़दीक मुल्क में ले जाए। 38 तो भी अगर वह उस मुल्क में जहाँ कैद होकर पहुँचाए गए, होश में आए और रूँगा लाए और अपनी गुलामी के मुल्क में तुझ से मुनाजात करें और कहें कि हम ने गुनाह किया है हम टेढ़ी चाल

चले और हम ने शरारत की। 38 इसलिए अगर वह अपनी गुलामी के मुल्क में जहाँ उनको गुलाम कर के ले गए हों अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से तेरी तरफ किए और अपने मुल्क की तरफ जो तूने उनको बाप दादा को दिया और इस शहर की तरफ जिसे तूने चुना है और इस घर की तरफ जो मैंने तेरे नाम के लिए बनाया है चेहरा कर के दुआ कर। 39 तो तू आसमान पर से जो तेरी रहने की जाग है उनकी दुआ और मुनाजात सुनकर उनकी हिमायत करना और अपनी कौप को जिस से तेरा गुनाह किया हो मुमाफ कर देना। 40 इसलिए ऐसे मेरे खुदा मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि उस दुआ की तरफ जो इस मकान में की जाए तेरी औंखें खुली और तेरे कान लगे रहें। 41 इसलिए अब ऐ खुदावन्द खुदा तू अपनी ताकत के सन्दर्भ के साथ उठकर अपनी आरामगाह में दाखिल हो, ऐ खुदावन्द खुदा तेरे काहिन नजात से मुलब्बस हों और तेरे मुकद्दस नेकी में मगन रहें। 42 ऐ खुदावन्द खुदा तू अपने मम्सूह की दुआ नामजर न कर, तू अपने बन्दा दाऊद पर की रहमतें याद फरमा।

7 और जब सुलेमान दुआ कर चुका तो आसमान पर से आग उतरी और सोखलनी कुर्बानी और जबीहो को भस्म कर दिया और मस्कन खुदावन्द के जलाल से मामूर हो गया। 2 और काहिन खुदावन्द के घर में दाखिल न हों सके इसलिए कि खुदावन्द का घर खुदावन्द के जलाल से मामूर था। 3 और जब आग नाजिल हुई और खुदावन्द का जलाल उस घर पर छा गया तो सब बनी इसाईल देख रहे थे, तब उन्होंने वही फर्श पर मुँह के बल जमीन तक झुक कर सिज्दा किया और खुदावन्द का शुक्र अदा किया कि वह भला है क्यैंकि उसकी रहमत हमेशा है। 4 तब बादशाह और सब लोगों ने खुदावन्द के आगे जबीहे जबह किए। 5 और सुलेमान बादशाह ने जरिए हजार बैलों और एक लाख बीस हजार भेड़ बकरियों की कुर्बानी पेश की, १० बादशाह और सब लोगों ने खुदा के घर को मख्सस किया। 6 और काहिन अपने अपने मन्सब के मुताबिक खड़े थे और लाली भी खुदावन्द के लिए मुसीकी के साज लिए हुए थे जिनको दाऊद बादशाह ने खुदावन्द का शुक्र बजा लेने को बनाया था जब उसने उनके जरिए से उसकी तारीफ की थी क्यैंकि उसकी रहमत हमेशा है और काहिन उनके आगे नरसिंग फँकते रहे और सब इसाईली खड़े रहे हैं। 7 और सुलेमान ने उस सहन के बीच के हिस्से को जो खुदावन्द के घर के सामने था पाक किया क्यैंकि उसने वहाँ सोखलनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों की चर्ची पेश की क्यैंकि पीतल के उस मजबूत पर जैसे सुलेमान ने बनाया था सोखलनी कुर्बानी और नज़र की कुर्बानी और चर्ची के लिए उंगाइश न थी। 8 और सुलेमान और उसके साथ हमात के मदखल से मिस्र तक के सब इसाईलियों की बहुत बड़ी जमा 'अत ने उस मौका पर सात दिन तक 'ईद मनाई। 9 और आठवें दिन उनका पाक मजमा' जमा' हआ क्यैंकि वह सात दिन मजबूत के मख्सस करने में और सात दिन ईद मानाने में लगे रहे। 10 और सातवें महीने की तेज़सी तारीख को उसने लोगों को स्वतंत्र किया, ताकि वह उस नेकी की वजह से जो खुदावन्द ने दाऊद और सुलेमान और अपनी कौप इसाईल से की थी खुश और शादमान होकर अपने खेंगों को जाएँ। 11 १० सुलेमान ने खुदावन्द का घर और बादशाह का घर तमाम किया और जो कुछ सुलेमान ने खुदावन्द के घर में और अपने घर में बनाना चाहा उस ने उसे बरबरी अंजाम तक पहुँचाया। 12 और खुदावन्द रात को सुलेमान पर जाहिर हुआ और उससे कहा, कि मैंने तेरी दुआ सुनी और इस जगह को अपने वास्ते चुन लिया कि यह कुर्बानी का घर हो। 13 अगर मैं आसमान को बंद कर दूँ कि बारिश न हो या टिड़ियों को हुक्म दूँ कि मुल्क को उजाड़ डालें या अपने लोगों के बीच बबा भेजूँ। 14 तब अगर मैं लोग जो मेरे नाम से कहलाते हैं खाकसार बनकर दुआ करें और मेरे दीदार के तालिब हों और अपनी बुरी रस्तों से फिरें तो मैं आसमान पर से सुनकर उनका गुनाह मु'अफ़ करूँगा।

और उनके मुल्क को बहाल कर दूँगा। 15 अब जो दुआ इस जगह की जाएगी उस पर मेरी औंखें खुली और मेरे कान लगे रहेंगे। 16 क्यैंकि मैंने इस घर को चुना और पाक किया कि मेरा नाम यहाँ हमेशा रहे हैं और मेरी औंखें और मेरा दिल बरबार यहीं लगे रहेंगे। 17 और तू अगर मैं सामने जैसे ही चले जैसे तेरे बाप दाऊद चलता रहा और जो कुछ मैंने तूड़े हुक्म किया उसके मुताबिक अप्स करे और मेरे कानून और हुक्मों को माने। 18 तो मैं तेरे तक्ता — ए — हुक्मत का काईम रखौँगा जैसा मैंने तेरे बाप दाऊद से 'अहद कर के कहा था कि इसाईल का सरदार होने के लिए तेरे हाथ मर्द की कभी कमी न होगी। 19 लेकिन आग तुम बरगशता हो जाओ और मेरे कानून — ब — हुक्मों को जिनको मैंने तुम्हारे आगे रखा है छोड़ कर दो, और जाकर गैर माबूदों की इबादत करो और उनको सिज्दा करों, 20 तो मैं उनको अपने मुल्क से जो मैंने उनको दिया है जड़ से उबाड़ डालौँगा और इस घर को मैंने अपने नाम के लिए पाक किया है अपने सामने से दूर कर दूँगा और इसको सब क्रोमों में जर्ब — उल — मसल और बदनाम कर दूँगा। 21 और यह घर जो ऐसा आलीशान है, इसलिए हर एक जो इसके पास से गुजरेगा हैरान होकर कहेगा कि खुदावन्द ने इस मुल्क और इस घर के साथ ऐसा क्यों किया? 22 तब वह जबाब देंगे इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा को जो उनको मुल्के मिस्र से निकाल लाया था छोड़ दिया और गैर माबूदों को इत्तियार कर के उनको सिज्दा किया और उनकी इबादत की इसीलिए खुदावन्द ने उन पर यह सारी मुसीबत नाजिल की।

8 और बीस साल के आखिर में जिन सुलेमान ने खुदावन्द का घर और अपना घर बनाया था यूँ हुआ कि। 2 सुलेमान ने उन शहर को जो हृष्म ने सुलेमान को दिए थे पिर तामीर किया और बनी इसाईल को वहाँ बसाया। 3 और सुलेमान हमात ज़बाह को जाकर उस पर गालिब हुआ। 4 और उन्होंने तदमूर को बनाया और खजाना के सब शहरों को भी जो उस ने हमात में बनाए थे। 5 और उसने ऊपर के बैत हैस्तून और नीचे के बैत हैस्तून को बनाया जो दीवारों और फाटकों और अड़बंगों से मजबूत किए हुए शहर थे। 6 और बालत और खजाना के सब शहर जो सुलेमान के थे और रथों के सब शहर और सवारों के शहर जो कुछ सुलेमान चाहता था कि येस्शलेम और लुबान और अपनी ममलुकत की सारी सर जमी बनाए वह सब बनाया। 7 और वह सब लोग जो हितियों और अमोरियों और फरिज़ीयों और हव्वियों और यबरियों में से बाकी रह गए थे और इसाईलीन थे। 8 उन ही की ओलाद जो उनके बाद मुल्क में बाकी रह गई थी जिसे बनी इसाईल ने नाबूद नहीं किया, उसी में से सुलेमान ने बेगारी मुकर्रर किए जैसा आज के दिन है। 9 लौकिन सुलेमान ने अपने काम के लिए बनी इसाईल में से किसी को गुलाम न बनाया बल्कि वह जंगी मर्द और उसके लस्करों के सदार और उसके रथों और सवारों पर हुक्मरान थे। 10 और सुलेमान बादशाह के खास मनस्बदार जो लोगों पर हुक्मत करते थे दो सौ पचास थे। 11 और सुलेमान फिर 'अौन की बेटी को डाऊद के शहर से उस घर में जो उसके लिए बनाया था ले आया क्यैंकि उसने कहाँ, कि मेरी बीवी इसाईल के बादशाह दाऊद के घर में नहीं रहेंगी क्यैंकि वह मकाम मुकद्दस है जिन में खुदावन्द का सन्दर्भ आया है। 12 तब सुलेमान खुदावन्द के लिए खुदावन्द उस मजबूत पर जिसको उसने उसरों के सामने बनाया था सोखलनी कुर्बानियों अदा करने लगा। 13 वह हर दिन के फर्ज के मुताबिक जैसा मूसा ने हुक्म दिया था सब्जों और नए चाँदों और साल में तीन बार मुकर्ररा 'ईद यारी' फरीरी गोटी की 'ईद और हफ्तों की 'ईद और खेमों की 'ईद पर कुर्बानी करता था। 14 और उस ने बाप दाऊद के हुक्म के मुताबिक काहिनों के फरीकों को हर दिन के फर्ज के मुताबिक उनके काम पर और लालीयों को उनकी खिदमत पर मुकर्रर किया ताकि वह काहिनों के आपने सामने हम्मद और खिदमत करें और दरबानों को भी

उनके फरीको के मुताबिक हर फाटक पर मुकर्रर किया क्यूंकि मर्दे खुदा दाऊद ने ऐसा ही हक्म दिया था। 15 और वह बादशाह के हक्म से जो उसने काहिनों और लालियों को किसी बात की निस्बत या खजानों के हक में दिया था बाहर न हुए। 16 और सुलेमान का सारा काम खुदावन्द के घर की शुनियाद ढालने के दिन से उसके तैयार होने तक तमाम हआ और खुदावन्द का घर पूरा बन गया। 17 तब सुलेमान अस्यून जाबर और ऐलेट को गया जो मुल्क — ए — अदाम में समन्दर के निरारे है। 18 और ह्राम ने अपने नौकरों के हाथ से जहाजों और मलाहों को जो समन्दर से वाकिफ थे उसके पास भेजा और वह सुलेमान के मुलाजिमों के साथ ओफीर में आई और वहाँ से साढ़े चार सौ किन्तार सोना लेकर बादशाह के पास लाए।

9 जब सबा की मलिका ने सुलेमान की शोहरत सुनी तो वह मुश्किल सवालों से सुलेमान को आजमाने के लिए बहुत बड़ी जिलौ और ऊर्दों के साथ जिन पर मसाल्हे और बाइकरात सोना और जवाहर थे येस्शलेम में आई और सुलेमान के पास आकर जो कुछ उसके दिल में था उस सब की बोरे में उससे बातें की। 2 सुलेमान ने उसके सब सवालों का जवाब उरे दिया और सुलेमान से कोई बात लिप्ती हुई न थी कि वह उसकों बता न सका। 3 जब सबा की मलिका ने सुलेमान की 'अक्तलमन्दी' को और उस घर को जो उसने बनाया था। 4 और उसके दस्तरख्बान की नैमत और उसके खादिमों की निशसत और उसके मुलाजिमों की हाजिर बासी और उनके लिबास और साकियों और उनके लिबास को और उस ज़िनी को जिस से वह खुदावन्द को घर को जाता था देखा तो उस के होश उड़ गए। 5 और उसने बादशाह से कहाँ, कि वह सच्ची खबर थी जो मैंने तेरे कामों और तेरी हिक्मत की बोरे में अपने मुल्क में सुनी थी। 6 तोभी जब तक मैंने आकर अपनी आँखों से न देख लिया उनकी बातों का यकीन न किया और देख जिन्हीं बड़ी तेरी हिक्मत है उसका आधा बयान भी मैं आगे नहीं हुआ तो उस शहर से बढ़कर है जो मैंने सुनी थी। 7 खुश नसीब है तेरे लोग और खुश नसीब है तेरे यह मलाजिम जो हमेशा तेरे सामने खड़े रहते और और तेरी हिक्मत सुनते है। 8 खुदावन्द तेरा खुदा मुबारक हो जो तुझ से ऐसा राजी हुआ कि तुझको अपने तख्त पर बिठाया ताकि तु खुदावन्द अपने खुदा की तरफ से बादशाहों चैंकी तेरे खुदा को इसाईल से मुहब्बत थी कि उनको हमेशा के लिए काईम करे इसलिए उस ने तुझे उनका बादशाह बनाया ताकि तु 'अदल — ओ — इन्साफ करे। 9 और उस ने एक सौ बीस किन्तार सोना और मसाल्हे का बहुत बड़ा ढेर और जवाहर सुलेमान को दिए और जो मसाल्हे सबा की मलिका ने सुलेमान बादशाह को दिए वैसे फिर कभी मयस्यसर न आए। 10 और ह्राम के नौकर भी और सुलेमान के नौकर जो ओफीर से सोना लाते थे, वह चन्दन के दरखत और जवाहर भी लाते थे। 11 और बादशाह ने चन्दन की लकड़ी से खुदावन्द के घर के लिए और शाही महल के लिए चबूत्रे और गाने वालों के लिए बरबत और सितार तैयार कराएँ; और ऐसी चीजें यहदाह के मुल्क में पहले कभी देखें में नहीं आई थी। 12 और सुलेमान बादशाह ने सबा की मलिका को जो कुछ उसने चाहा और मौगा उस से ज्यादा जो वह बादशाह के लिए लाई थी दिया और वह लौटकर अपने मुलाजिमों समेत अपनी ममलुकत को चली गई। 13 और जिनान सोना सुलेमान के पास एक साल में आता था उसका बजन छे; सौ छियासठ किन्तार सोने का था। 14 यह उसके 'अलावा था जो ब्यापारी और सौदागर लाते थे और अबर के सब बादशाह और मुल्क के हाकिम सुलेमान के पास सोना और चौंदी लाते थे। 15 और सुलेमान बादशाह ने पिटे हुए सोने की दो सौ बड़ी ढालें बनवाई, छ; सौ मिस्काल पिटा हुआ सोना एक एक ढाल में लगा। 16 और उसने पिटे हुए सोने की तीन सौ ढालें और बनवाई, एक एक ढाल में तीन सौ मिस्काल सोना

लगा, और बादशाह ने उनको लुबनानी बन के घर में रखा। 17 उसके 'अलावा बादशाह ने हाथी दांत का एक बड़ा तख्त बनवाया और उस पर खालिस सोना मढ़वाया। 18 और उस तख्त के लिए छ; सीढ़ियाँ और सोने का एक पायदान था, यह सब तख्त से जुड़े हुए थे और बैठने की जगह की दोनों तरफ एक एक टेक थी और उन टेकों के बराबर दो शेर — ए — बबर खड़े थे। 19 और उन छोड़ों सीढ़ियों पर इधर और उधर बारह शेर — ए — बबर खड़े थे किसी हक्मत में कभी नहीं बना था। 20 और सुलेमान बादशाह के पीने के सब बर्तन सोने के थे और लबनानी बन के घर सब बर्तन खालिस सोने के थे सुलेमान के अर्याम में चौंदी की कुछ कट न थी। 21 क्यूंकि बादशाह के पास जहाज थे जो ह्राम के नौकरों के साथ तरसीस को जाते थे, तरसीस के यह जहाज तीन साल में एक बार सोना और चौंदी और हारी के दांत और बंदर और मोर लेकर आते थे। 22 सुलेमान बादशाह दौलत और हिक्मत में स्ट्री ए — ज़मीन के सब बादशाहों से बढ़ गया। 23 और रु — ए — ज़मीन के सब बादशाह सुलेमान के दीदार के मुशातक थे ताकि वह उसकी हिक्मत जो खुदा ने उसके दिल में डाली थी सोने। 24 और वह साल — ब — साल अपना अपना हदिया, यानी चौंदी के बर्तन और सोने के बर्तन और लिबास और हथियाह और मसाल्हे और घोड़े और खच्चर जिनने मुकर्रर थे लाते थे। 25 और सुलेमान के पास घोड़े और रथों के लिए चार हजार थान और बारह हजार सबार थे जिनको उस ने रथों के शहरों और येस्शलेम, मैं बादशाह के पास रखा। 26 और वह दरिया — ए — फरात से फिलिसियों के मुल्क बल्कि मिस्र की हद तक सब बादशाहों पर हक्मरान था। 27 और बादशाह ने येस्शलेम में इफरात की वजह से चौंदी को पथरों की रह और देवदार के दरखतों को गूलर के उन दरखतों के बराबर कर दिया जो नर्सीब की सर ज़मीन में है। 28 और वह मिस्र से और और सब मुल्को से सुलेमान के लिए घोड़े लाया करते थे। 29 और सुलेमान के बाकी काम शूरू से आखिर तक किया वह नातन नवी की किताब में और सैलानी अ़रियाह की पेशीनोर्गाई में और 'ईदू गैबीनी की रोयतों की किताब में जो उसपे युब' आम बिन नाबत के जरिए देखी थी, मुनर्ज नहीं है। 30 और सुलेमान ने येस्शलेम में सारे इस्माइल पर चालीस साल हक्मत की। 31 और सुलेमान अपने बाप दादा के साथ सो गया और अपने बाप दाऊद के शहर में दफन हुआ और उसका बेटा रहब 'आम उसकी जगह हक्मत करने लगा।

10 और रहब 'आम सिकम को गया, इसलिए कि सब इस्माइली उसे बादशाह बनाने को सिकम में इक्कठे हुए थे 2 जब नबात के बेटे युब' आम ने यह सुना क्यूंकि वह मिस्र में था जहाँ हव सुलेमान बादशाह के आगे से भाग गया था तो युब' आम मिस्र से लौटा। 3 और लोगों ने उसे बुलवा भेजा। तब युब' आम और सब इस्माइली आए और रहब' आम से कहने लगे। 4 कि तेरे बाप ने हमारा बोझ सखत कर रखा था। इसलिए अब तू अपने बाप की उस सखत खिदमत को और उस भारी बोझ को जो उस ने हम पर डाल रखा था; कुछ हल्का कर दे और हम तेरी खिदमत करेंगे। 5 और उसने उस से कहा, तीन दिन के बाद फिर मेरे पास आना "चुनूनी वह लोग चले गए, 6 तब रहब' आम बादशाह ने उन बुजुर्गों से जो उसके बाप सुलेमान के सामने उसके जीती जी खड़े रहते थे, सलाह की और कहा तुम्हारी क्या सलाह है? मैं इन लोगों को क्या जवाब दूँ? 7 उन्होंने उससे कहा कि अगर तू इन लोगों पर मेहरबान हो और उनको राजी करें और इन से अच्छी अच्छी बातें कहें, तो वह हमेशा तेरी खिदमत करेंगे। 8 लेकिन उस ने उन बुजुर्गों की सलाह को जो उन्होंने उसे दी थी छोड़कर कर उन जिवानों से जिन्होंने उसके साथ परवरिश पाई थी और उसके आगे हाजिर रहते थे सलाह की। 9 और उन से कहा तुम मुझे क्या सलाह देते हो कि हम इन लोगों को क्या जवाब दे जिन्होंने मुझ से यह दरखवास्त की है कि उस बोझ को

जो तेरे बाप ने हम पर रखा कुछ हल्का कर? 10 उन जवानों ने जिन्होंने उसके साथ परवरिश पाई थी उस से कहा, तू उन लोगों को जिन्होंने तुझ से कहा तेरे बाप ने हमारे बोझे को भारी किया लेकिन तू उसको हमारे लिए कुछ हल्का कर दे यूँ जब देना और उन से कहना कि मेरी छिगुली मेरे बाप के कमर से भी मोटी है। 11 और मेरे बाप ने तो भारी बोझ तुम पर रखा ही था लेकिन मैं उस बोझ को और भी भारी कस्तूरा। मेरे बाप ने तुम्हें कोडों से ठीक किया लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक करँगा। 12 और जैसा बादशाह ने हक्म दिया था कि तीसरे दिन मेरे पास फिर आना तीसरे दिन युरब'आम और सब लोग रहब'आम के पास हाजिर हुए। 13 तब बादशाह उनको सख्त जवाब दिया और रहब'आम बादशाह ने बुजुर्गों की सलाह को छोड़कर। 14 जवानों की सलाह के मुताबिक उन्होंने कहा कि मेरे बाप ने तुम्हारा बोझ भारी किया लेकिन मैं उसको और भी भारी करँगा। मेरे बाप ने तुम्हारों कोडों से ठीक किया लेकिन मैं तुम को बिच्छुओं से ठीक करँगा। 15 तब बादशाह ने लोगों की न मानी क्यूँकि यह खुदा ही की तरफ से था ताकि खुदावन्द उस बात को जो उसने सैलानी अखियाह की ज़रिए नबात के बेटे युरब'आम को फरमाई थी पूरा करे। 16 जब सब इस्माइलियों ने यह देखा कि बादशाह ने उनकी न मानी तो लोगों ने बादशाह को जवाब दिया और यूँ कहा कि दाऊद के साथ हमारा क्या हिस्सा है? यस्ती के बेटे के साथ हमारी कुछ मीरास नहीं। ऐ इस्माइलियों! अपने अपने डेरे को चले जाओ। अब ए दाऊद अपने ही घराने को संभाल। इसलिए सब इस्माइली आपने खेमों को चल दिए। 17 लेकिन उन बनी इस्माइल पर जो यहदाह के शहरों में रहते थे रहब'आम हक्मत करता रहा। 18 तब रहब'आम बादशाह ने हटाराम को जो बेगारियों का दरोगा था भेजा लेकिन बनी इस्माइल ने उसको पथराव किया और वह मर गया। तब रहब'आम येस्शलेम को भाग जाने के लिए झट अपने रथ पर सवार हो गया। 19 तब इस्माइली आज के दिन तक दाऊद के घराने से बाहरी है।

11 और जब रहब'आम येस्शलेम में आ गया तो उसने इस्माइल से लड़ने के लिए यहदाह और बिनयमीन के घराने में से एक लाख अस्सी हजार चुने हुए जवान, जो जारी जवान थे इकट्ठा किए, ताकि वह फिर ममलकत को रहब'आम के क़ब्जे में करा दे। 2 लेकिन खुदा बन्द का कलाम नबी समा'याह को पहुँचा कि; 3 यहदाह के बादशाह सुलेमान के बेटे रहब'आम से और सरे इस्माइल से जो यहदाह और बिनयमीन में हैं, कह, 4 'खुदावन्द यूँ फ्रमाता है कि तुम चाहाँ न करना और न अपने भाईयों से लड़ना। तुम अपने अपने घर को लौट जाओ, क्यूँकि यह मु'आमिला मेरी तरफ से है। तब उन्होंने खुदावन्द की बातें मान ली, और युरब'आम पर हमला किए बगैर लौट गए। 5 रहब'आम येस्शलेम में रहने लगा, और उसने यहदाह में हिफाजत के लिए शहर बनाए। 6 चुनौंचे उसने बैतलहम और ऐताम और तक़ा'अ, 7 और बैत सरू और शोको और 'अदल्लाम, 8 और जात और मरीसा और ज़ीफ़, 9 और अदौम और लकीस और 'अज़ीका, 10 और सुर'आ और अच्यातोन और हबस्त को जो यहदाह और बिनयमीन में हैं, बना कर 'किला' बन्द कर दिया। 11 और उसने 'किलों' को बहुत मजबूत किया और उनमें सरदारों को मुकर्रर किया, और खुराक और तेल और शराब के ज़खरी को रखा। 12 और एक एक शहर में ढालें और भाले रखवाकर उनको बहुत ही मजबूत कर दिया; और यहदाह और बिनयमीन उसी के रहे। 13 और कहिन और लाली जो सारे इस्माइल में थे, अपनी अपनी सरहद से निकल कर उसके पास आ गए। 14 क्यूँकि लाली अपनी पास के 'इलाकों' और जायदादों को छोड़ कर यहदाह और येस्शलेम में आए, इसलिए के युरब'आम और उसके बेटों ने उन्हें निकाल दिया था ताकि वह खुदावन्द के समाने कहानत की खिदमत को अंजाम न देने पाएँ। 15 और उसने अपनी तरफ

से ऊँचे मकामों और बकरों और अपने बनाए हुए बछड़ों के लिए काहिन मुकर्रर किए। 16 और लावियों के पीछे इस्माइल के सब कबीलों में से ऐसे लोग जिन्होंने खुदावन्द इस्माइल के खुदा की तलाश में अपना दिल लगाया था, येस्शलेम में आए कि खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा के सामने कुर्बानी पेश करें। 17 इसलिए उन्होंने यहदाह की हक्मत को ताकतवर बना दिया, और तीन साल तक सुलेमान के बेटे रहब'आम को ताकतवर बना रखा, क्यूँकि वह तीन साल तक दाऊद और सुलेमान की रास्ते पर चलते रहे। 18 रहब'आम ने महालात को जो यरीमोत बिन दाऊद और इलियाब बिन यस्सी की बेटी अबीरैखल की बेटी थी, ब्याह लिया। 19 उसके उससे बेटे पैदा हुए, यानी याऊँस और समरियाह और ज़हम। 20 उसके बाद उसने अबीसलोम की बेटी माका को ब्याह लिया, जिसके उससे अबियाह और 'अत्ती और जीजा और सल्लियम ऐसा हुए। 21 रहब'आम अबीसलोम की बेटी माका को अपनी सब बीवियों और बांदियों से ज़यादा प्यार करता था क्यूँकि उसकी अठार ही बीवियाँ और साठ बाँदी थीं; और उससे अठाईस बेटे और साठ बेटियाँ पैदा हुईं। 22 और रहब'आम ने अबियाह बिन माका को रहनुमा मुकर्रर किया ताकि अपने भाइयों में सरदार हो, क्यूँकि उसका श्रद्धा था कि उसे बादशाह बनाए। 23 और उसने होशियारी की, और अपने बेटों को यहदाह और बिनयमीन की सारी ममलकत के बीच हर फसीलदार शहर में अलग अलग कर दिया; और उनको बहुत खुराक दी, और उनके लिए बहुत सी बीवियाँ तलाश कीं।

12 और ऐसा हुआ कि जब रहब'आम की हक्मत मजबूत हो गई और वह ताकतवर बन गया, तो उसने और उसके साथ सारे इस्माइल ने खुदावन्द की शरी'अत को छोड़ दिया। 2 रहब'आम बादशाह के पांचवे साल में ऐसा हुआ कि मिस्र का बादशाह सीसिक येस्शलेम पर चढ़ आया, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द की हक्म 'उद्लूली की थी, 3 और उसके साथ बारह सौ रथ और साठ हजार सवार थे, और लूली और सूकी और कूशी लोग जो उसके साथ मिस्र से आए थे बेशुराथे। 4 और उसने यहदाह के फसीलदार शहर ले लिए, और येस्शलेम तक आया। 5 तब समायाह नबी रहब'आम के और यहदाह के हाकिमों के पास जो सीसिक के डर के मारे येस्शलेम में जमा' हो गए थे, आया और उनसे कहा, "खुदावन्द यूँ फ्रमाता है कि तुम ने मुझ को छोड़ दिया, इसी लिए मैंने भी तुम को सीसिक के हाथ में छोड़ दिया है।" 6 तब इस्माइल के हाकिमों ने और बादशाह ने अपने को खाकसार बनाया और कहा, "खुदावन्द सच्चा है।" 7 जब खुदावन्द ने देखा कि उन्होंने अपने को खाकसार बनाया, तो खुदा बन्द का कलाम समायाह पर नाजिल हुआ: "उन्होंने अपने को खाकसार बनाया है, इसलिए मैं उनको हलाक नहीं करूँगा बल्कि उनको कुछ रिहाई दूँगा, और मेरा कहर सीसिक के हाथ से येस्शलेम पर नाजिल न होगा। 8 तो भी वह उसके खादिम होंगे, ताकि वह मेरी खिदमत को और मुल्क मुल्क की सल्लतों की खिदमत को जान लें।" 9 इसलिए मिस्र का बादशाह सीसिक येस्शलेम पर चढ़ आया, और खुदावन्द के घर के खजाने और बादशाह के घर के खजाने ले गया। बल्कि वह सब कुछ ले गया, और सोने की बह ढाले भी जो सुलेमान ने बनवाई थी ले गया। 10 और रहब'आम बादशाह ने उनके बदले पीतल की ढालें बनवाई और उनको मुहाफिज़ सिपाहियों के सरदारों को जो शाही महल की निगहबानी करते थे सौंपा। 11 और जब बादशाह खुदावन्द के घर में जाता था, तो वह मुहाफिज़ सिपाही आते और उनको उठाकर चलते थे, और फिर उनको वापस लाकर सिलाहखाने में रख देते थे। 12 और जब उसने अपने को खाकसार बनाया, तो खुदा बन्द का कहर उस पर से टल गया और उसने उसको पौरे तौर से तबाह न किया; और भी यहदाह में खुबियाँ थीं। 13 इसलिए रहब'आम बादशाह ने ताकतवर होकर येस्शलेम में हक्मत

की। रहब'आम जब हृकूमत करने लगा तो इकतालीस साल का था और उसने येस्सलेम में, यानी उस शहर में जो खुदावन्द ने इसाईल के सब कबीलों में से चुन लिया था कि अपना नाम वहाँ रखे, सब्रह साल हृकूमत की। उसकी माँ का नाम नामा अम्मूनिया था। 14 और उसने बुराई की, क्यूंकि उसने खुदावन्द की तलाश में अपना दिल न लगाया। 15 और रहब'आम के काम अब्वल से आश्विर तक, क्या वह समायाह नबी और 'ईद गैब्बनीन की तवारीखों' में नसबनामों के मुताबिक लिखा नहीं? रहब'आम और युरब'आम के बीच हमेशा जंग रही। 16 और रहब'आम अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में दफन हुआ; और उसका बेटा अबियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

13 युरब'आम बादशाह के अठारहों साल से अबियाह यहदाह पर हृकूमत करने लगा। 2 उसने येस्सलेम में तीन साल हृकूमत की। उसकी माँ का नाम मीकायाह था जो ऊरिप्ल जिबई की बेटी थी। और अबियाह और युरब'आम के बीच जंग हुई। 3 अबियाह जंगी समर्थनों का लश्कर, यानी चार लाख चुने हुए जंगी सूरमाओं का लश्कर लेकर लड़ाई में गया। और युरब'आम ने उसके मुकाबिले में आठ लाख चुने हुए अदामी लेकर, जो ताकतवर सूरी थे सफ़अराई की। 4 और अबियाह सरप्रेस के पहाड़ पर जो इसाईल के पहाड़ी मुल्क में है, खड़ा हुआ और कहने लगा, “ऐ युरब'आम और सब इसाईलियों, मेरी सोनो! 5 क्या तुम को मालूम नहीं कि खुदा के खुदा ने इसाईल की हृकूमत दाऊद ही को और उसके बेटों को, नमक के अहद से हमेशा के लिए ती है? 6 तो मैं नबात का बेटा युरब'आम, जो सुलेमान बिन दाऊद का खादिम था, उठकर अपने आका से बागी हुआ। 7 उसके पास निकम्मे और खबीस आदमी जमा' हो गए, जिन्होंने सुलेमान के बेटे रहब'आम के मुकाबिले में जो पकड़ा, जब रहब'आम अभी जवान और नर्म दिल था और उनका मुकाबिला नहीं कर सकता था। 8 और अब तम्हारा ख्याल है कि तुम खुदावन्द की बादशाही का, जो दाऊद की औलाद के हाथ में है, मुकाबिला करो; और तुम भारी गिरोह हो और तुम्हारे साथ वह सुनहले बछड़े हैं जिनको सुरब'आम ने बनाया कि तुम्हारे मांबढ़ हों। 9 क्या तुम ने हास्न के बेटों और लालियों को जो खुदावन्द के काहिने थे, खारिज नहीं किया, और मुल्कों की कौमों के तरीके पर अपने लिए काहिन मुकर्रर नहीं किए? ऐसा कि जो कोई एक बछड़ा और सात मेंदे लेकर अपनी तर्कीस करने आए, वह उनका जो हकीकत में खुदा नहीं है काहिन हो सके। 10 लेकिन हमारा यह हाल है कि खुदा वन्द हमारा खुदा है और हम ने उसे छोड़ नहीं दिया है, और हम यहाँ हास्न के बेटे काहिन हैं जो खुदावन्द की खिदमत करते हैं, और लाली अपने अपने काम में लगे रहते हैं। 11 और वह हर सुबह और हर शाम को खुदावन्द के सामने सोखानी कूर्बानियाँ और खुशबूदार खुशबू जलाते हैं, और पाक मेज पर नज़ की रोटियाँ काइदे के मुताबिक रखते और सुनहले शमा'दान और उसके चिरागों को हर शाम को रौशन करते हैं, क्यूंकि हम खुदावन्द अपने खुदा के हक्म को मानते हैं; लेकिन तुम ने उसको छोड़ दिया है। 12 देखो, खुदा हमारे साथ हमारा रहनुमा है, और उसके काहिन तुम्हें खिलाफ़ साँस बाधकर जोर से फँकने को नरसिंगे लिए हुए हैं। ऐ बनी — इसाईल, खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा से मत लड़ो, क्यूंकि तुम कामयाब न होगे। 13 लेकिन युरब'आम ने उनके पीछे कमीन लगवा दी। इसलिए वह बनी यहदाह के आगे रहे और कमीन पीछे थी। 14 जब बनी यहदाह ने पीछे नज़ की, तो क्या देखा कि लड़ाई उनके आगे और पीछे दोनों तरफ से है; और उन्होंने खुदावन्द से फरियाद की, और काहिनों ने नरसिंगे फँके। 15 तब यहदाह के लोगों ने ललकारा, और जब उन्होंने ललकारा तो ऐसा हुआ कि खुदा ने अबियाह और यहदाह के आगे युरब'आम की और सरे इसाईल को मारा। 16 और बनी इसाईल यहदाह के आगे से भागे, और खुदा ने

उनको उनके हाथ में कर दिया। 17 और अबियाह और उसके लोगों ने उनको बड़ी खुनरेजी के साथ कल्त किया, तब इसाईल के पाँच लाख चुने हुए मर्द मर गए। 18 ऐसे बनी — इसाईल उस बक्त मगलबूह हुए और बनी यहदाह गालिब आए, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा पर यकीन किया। 19 और अबियाह ने युरब'आम का पीछा किया और इन शहरों को उससे ले लिया, यानी बैतेल और उसके देहात। यसाना और उसके देहात इस्फोन और उसके देहात। 20 अबियाह के दिनों में युरब'आम ने फिर जोर न पकड़ा, और खुदावन्द ने उसे मारा और वह मर गया। 21 लेकिन अबियाह ताकतवर हो गया और उसने चौदह बीवियाँ ब्याही, और उस के जरिए बेटे और सोलह बेटियाँ पैदा हुईं। 22 अबियाह के बाकी काम और उसके हालात और उसकी कहावतें 'ईद नबी की तपसीरी में लिखी हैं।

14 और अबियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफन किया, और उसका बेटा आसा उसकी जगह बादशाह हुआ। उसके दिनों में दस साल तक मुल्क में अमन रहा। 2 और आसा ने वही किया जो खुदावन्द उसके खुदा के सामने अच्छा और ठीक था। 3 क्यूंकि उसने अजननी मज़बहों और ऊँचे मकामों को दूर किया, और लाटों को गिरा दिया, और यसीरितों को काट डाला, 4 और यहदाह को हक्म किया कि खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के तालिब हों, और शरी'अत और फरमान पर 'अमल करें। 5 उसने यहदाह के सब शहरों में से ऊँचे मकामों और सूरज की मूर्तियों को दूर कर दिया, और उसके सामने हृकूमत में अमन रहा। 6 उसने यहदाह में फसीलदार शहर बनाए, क्यूंकि मुल्क में अमन था। उन बरसों में उसे जग न करना पड़ा, क्यूंकि खुदावन्द ने उसे अमान बख्ती थी। 7 इसलिए उसने यहदाह से कहा, कि “हम यह शहर तामीर करें और उनके पास दीवार और बुर्ज बनायें और फाटक और अड़बों लगाएँ। यह मुल्क अभी हमारे काब में है, क्यूंकि हम खुदावन्द अपने खुदा के तालिब हुए हैं। हम उसके तालिब हुए और उसने हम को चारों तरफ अमान बख्ती है।” इसलिए उन्होंने उनको तामीर किया और कामयाब हुए। 8 और आसा के पास बनी यहदाह के तीन लाख आदमियों का लश्कर था जो ढाल उठाते थे, और बिनयमीन के दो लाख अस्सी हजार थे जो ढाल उठाते और तीर चलाते थे। यह सब जबरदस्त सूरी थे। 9 और इनके मुकाबिले में जारह कूशी दस लाख की फौज और तीन सौ रथों को लेकर निकला, और मरीसा में आया। 10 और आसा उसके मुकाबिले को गया, और उन्होंने मरीसा के बीच सफाता की बादी में जंग के लिए सफ बांधी। 11 और आसा ने खुदावन्द अपने खुदा से फरियाद की और कहा, “ऐ खुदावन्द, ताकतवर और कमज़ोर के मुकाबिले में मदद करने को तेरे 'अलावा और कोई नहीं है। ऐ खुदावन्द हमारे खुदा तू हमारी मदद कर्कृति हम तज़ पर भरोसा रखते हैं और तेरे नाम से इस गिरोह का सामना करने आए हैं। तू ऐ खुदा हमारा खुदा है इंसान तेरे मुकाबिले में गालिब होने न पाए।” 12 फिर खुदावन्द ने आसा और यहदाह के आगे कशियों को मारा और कूशी भागे, 13 और आसा और उसके लोगों ने उनको जिरार तक दौड़ाया, और कशियों में से इतने कल्त हुए कि वह फिर संभल न सके, क्यूंकि वह खुदावन्द और उसके लश्कर के आगे हलाक हुए; और वह बहत सी लट ले आए। 14 उन्होंने जिरार के आसपास के सब शहरों को मारा, क्यूंकि खुदावन्द का खौफ उन पर चाग था। और उन्होंने सब शहरों को लट लिया, क्यूंकि उनमें बड़ी लट थी। 15 और उन्होंने मरीसी के डेरों पर भी हमला किया, और कसरत से भेड़े और ऊँचे लेकर येस्सलेम को लौटे।

15

और खुदा की रुह अजरियाह बिन ओदिद पर नाज़िल हुई, 2 और वह आसा से मिलें को गया और उससे कहा, “ऐ आसा और सारे यहदाह हैं जब तक तुम उसके साथ हो, और अगर तुम उसके तालिब हो तो वह तुम को मिलेगा; लेकिन अगर तुम उसे छोड़ दो तो वह तुम को छोड़ देगा। 3 अब बड़ी मुझत से बनी — इसाईल बागेर सच्चे खुदा और बागेर सिखाने वाले काहिन और बागेर शरी'अत के रहे हैं, 4 लेकिन जब वह अपने दूख में खुदावन्द इसाईल के खुदा की तरफ फिर कर उसके तालिब हुए तो वह उनको मिल गया। 5 और उन दिनों में उसे जो बाहर जाता था और उसे जो अन्दर आता था बिलकुल चैन न था, बल्कि मुल्कों के सब बारिंदों पर बड़ी तकरीफे थी। 6 कौम क्रौम के मुकाबिले में, और शहर शहर के मुकाबिले में पिस गए, क्यूंकि खुदा ने उनको हर तरह मूसीबत से तंग किया। 7 लेकिन तुम मजबूत बनो और तुम्हारे हाथ ढीले न होने पाएँ, क्यूंकि तुम्हारे काम का अंग मिलेगा।” 8 जब आसा ने इन बातों और ‘ओदिद नबी की नबुव्वत को सुना, तो उसने हिम्मत बाँधकर यहदाह और बिनयमीन के सारे मुल्क से, और उन शहरों से जो उसने इसाईल के पहाड़ी मुल्क में से ले लिए थे, मकस्त हींजों को दूर कर दिया, और खुदावन्द के मजबूत को जो खुदावन्द के उसरे के सामने था फिर बनाया। 9 और उसने सारे यहदाह और बिनयमीन को, और उन लोगों को जो इसाईल और मनसी और शमौन में से उनके बीच रहा करते थे, इकष्ट किया, क्यूंकि जब उन्होंने देखा कि खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ है, तो वह इसाईल में से बक्सरत उसके पास चले आए। 10 वह आसा की हुक्मत के पन्दहवे साल के तीसरे महीने में, येस्शलेम में जमा' हुए; 11 और उन्होंने उसी वक्त उस लट्टू में से जो वह लाए थे, खुदावन्द के सामने सात सौ बैल और सात हजार भेड़े कुर्बानी की। 12 और वह उस 'अहद में शामिल हो गए, ताकि अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के तालिब हों, 13 और जो कोई, क्या छोटा क्या बड़ा क्या मर्द क्या 'औरत, खुदावन्द इसाईल के खुदा का तालिब न हो वह कल्प लिया जाए। 14 उन्होंने बड़ी आवाज से ललकार कर तुरहियों और नरसिंगों के साथ खुदावन्द के सामने करसम खाई; 15 और सारा यहदाह उस करसम से बहत खुश हो गए, क्यूंकि उन्होंने अपने सारे दिल से करसम खाई थी, और कमाल अरजू से खुदावन्द के तालिब हुए थे और वह उनको मिला, और खुदावन्द ने उनको चारों तरफ अपान बाँधा। 16 और आसा बादशाह की माँ 'माँ' का भी उसने मलिका के 'ओहदे से उतार दिया, क्यूंकि उसने यसीरित के लिए एक मकस्त बुत बनाया था। इसलिए आसा ने उसके बुत को काटकर उसे चूर चूर किया, और बादी — ए — किंद्रोन में उसको जला दिया। 17 लेकिन ऊँचे मकाम इसाईल में से दूर न किए गए, तो भी आसा का दिल उम्र भर कामिल रहा। 18 और उसने खुदा के घर में वह चीजें जो उसके बाप ने पाक की थीं, और जो कुछ उसने खुद पाक किया था दाखिल कर दिया, याँ'नी चाँदी और सोना और बर्तन। 19 और आसा की हुक्मत के पैतीसिंहें साल तक कोई जंग न हुई।

16

और इसाईल का बादशाह बाशा यहदाह पर चढ़ आया, और रामा को तामीर किया था ताकि यहदाह के बादशाह आसा के यहाँ किसी को अने — जाने न दे। 2 तब आसा ने खुदावन्द के घर और शाही महल के खजानों में से चाँदी और सोना निकालकर, अराम के बादशाह बिन — हदत के पास जो दमिश्क में रहता था रवाना किया और कहला भेजा कि, 3 “मेरे और तेरे बीच और मेरे बाप और तेरे बाप के बीच 'अहद' — ओ — पैमान हैं; देख, मैंने तेरे लिए चाँदी और सोना भेजा है, इसलिए तू जाकर इसाईल के रहने वाले बाशा से वाँदा खिलाफी कर ताकि वह मेरे पास से चला जाए।” 4 और बिन — हदत ने

आसा बादशाह की बात मानी और अपने लश्करों के सरदारों को इसाईली शहरों पर हमला करने को भेजा, तब उन्होंने 'अयून और दान और अबील माइम और नफातीली के जखीर के सब शहरों को तबाह किया। 5 जब बाशा ने यह सुना तो रामा का बनाना छोड़ा, और अपना काम बंद कर दिया। 6 तब आसा बादशाह ने सारे यहदाह को साथ लिया, और वह रामा के पथरों और लकड़ियों को जिनसे बांधा तामीर कर रहा था उठा ले गए, और उसने उनसे जिब'आ और मिस्फाह को तामीर किया। 7 उस वक्त हनानी गैबीवीन यहदाह के बादशाह आसा के पास आकर कहने लगा, “चूँकि तू ने अराम के बादशाह पर भरोसा किया और खुदावन्द अपने खुदा पर भरोसा नहीं रखा, इसी वजह से अराम के बादशाह का लश्कर तेरे हाथ से बच निकला है। 8 क्या कूर्जी और लूबी बहुत बड़ा गिरोह न थे, जिनके साथ गाड़ियाँ और सवार बड़ी कसरत से न थे? तो भी चूँकि तू ने खुदावन्द पर भरोसा रखा, उसने उनको तेरे कब्जा में कर दिया; 9 क्यूंकि खुदावन्द की आँखें सारी जमीन पर फिरती हैं, ताकि वह उनकी इमदाद में जिनका दिल उसकी तरफ कामिल है, अपनी ताकत दिखाए। इस बात में तू ने बेकरफी की, क्यूंकि अब से तेरे लिए जंग ही जंग है।” 10 तब आसा ने उस गैबीवीन से खफा होकर उसे कैदखाने में डाल दिया, क्यूंकि वह उस कलाप की वजह से बहुत ही गुस्सा हुआ; और आसा ने उस वक्त लोगों में से कुछ औरें पर भी ज़ल्म किया। 11 और देखो, आसा के काम शुरू से अखिर तक यहदाह और इसाईल के बादशाहों की किंतु भी मैं लिखा है। 12 और आसा की हुक्मत के उनतालीसिंहें साल उसके पाँव में एक रोग बहत बढ़ गया, तो भी अपनी बीमारी में वह खुदावन्द का तालिब नहीं बल्कि हकीमों का तालिब हुआ। 13 और आसा अपने बाप — दादा के साथ सो गया; उसने अपनी हुक्मत के इकतालीसिंहें साल में वफ़ात किया। 14 उन्होंने उसे उन कब्रों में, जो उसने अपने लिए दाऊद के शहर में खुदवाई थी दफन किया। उसे उस ताबूत में लिया दिया जो इनों और क्रिस्त क्रिस्तु के मसाहते से रथा था, जिनको 'अतारों की दिक्कामत के पुताविक तैयार किया था, और उन्होंने उसके लिए उनको खब जलाया।

17

और उसका बेटा यहसफ़त उसकी जगह बादशाह हुआ, और उसने यहदाह के मुकाबिल अपने आपको मजबूत किया। 2 उसने यहदाह के सब फरसीलदार शहरों में फौजे रखी, और यहदाह के मुल्क में और इसाईल के उन शहरों में जिनको उसके बाप आसा ने ले लिया था, चौकियाँ बिठाई। 3 और खुदावन्द यहसफ़त के साथ था, क्यूंकि उसका चाल चलन उसके बाप दाऊद के पहले तरीकों पर थी, और वह बालीम का तालिब न हुआ, 4 बल्कि अपने बाप — दादा के खुदा का तालिब हुआ और उसके हुक्मों पर चलता रहा, और इसाईल के से काम न किए। 5 इसलिए खुदावन्द ने उसके हाथ में हुक्मत को मजबूत किया; और सारा यहदाह यहसफ़त के पास हादिए लाया, और उसकी दौलत और 'इज़ज़त बहुत फरावान हुई। 6 उसका दिल खुदावन्द के गस्तों में बहत खुश था, और उसने ऊँचे मकानों और यसीरितों को यहदाह में से दूर कर दिया। 7 और अपनी हुक्मत के तीसरे साल उसने बिनखैल और अबदियाह और जकरियाह और नतनीएल और मीकायाह को, जो उसके हाकिम थे, यहदाह के शहरों में तालीम देने को भेजा; 8 और उनके साथ यह लाली थे 'याँ'नी समा'याह और नतनियाह और जबदियाह और 'असाहेल और समीरामोत और यहनतन और अदूनियाह और तूबियाह और तूब अदूनियाह लावियों में से, और इनके साथ इलीसमा' और यहराम काहिनों में से थे। 9 इसोलिए उन्होंने खुदावन्द की शरी'अत की किंतु साथ रख कर यहदाह को तालीम दी, और वह यहदाह के सब शहरों में गए और लोगों को तालीम दी। 10 और खुदावन्द का खोफ़ यहदाह के पास पास की मुल्कों की सब हुक्मतों पर छा गया, यहाँ तक कि

उन्होंने यहसफत से कभी जंग न की। 11 बा'ज़ कुछ फिलिस्ती यहसफत के पास हादि, और खिराज में चाँदी लाए, और 'अरब के लोग भी उसके पास रेवड लाए, यानी सात हजार सात सौ मेंढे और सात हजार सात सौ बकरे। 12 और यहसफत बहुत ही बड़ा और उसने यहदाह में किले और ज़रीके शहर बनाए, 13 और यहदाह के शहरों में उसके बहुत से कारोबार और येस्तलेम में उसके जंगी जवान यानी ताकतवर सूर्मा थे, 14 और उनका शुमार अपने अपने अबाई खानान्द के मुवाफ़िक यह था: यहदाह में से हजारों के सरदार यह थे, सरदार 'अदना और उसके साथ तीन लाख ताकतवर सूर्मा, 15 और उससे दूसरे दर्जे पर सरदार यहनान और उसके साथ दो लाख अस्सी हजार, 16 और उससे नीचे 'अमसियाह बिन ज़िकरी था, जिसने अपने को बखुशी खुदावन्द के लिए पेश किया था, और उस के साथ दो लाख ताकतवर सूर्मा थे; 17 और बिनयमीन में से, इलीयदा' एक ताकतवर सूर्मा था और उसके साथ कमान और सिपर से मुसल्लह दो लाख थे; 18 और उससे नीचे यहजबद था, और उसके साथ एक लाख अस्सी हजार थे जो जंग के लिए तैयार रहते थे। 19 यह बादशाह के खिदमत गुजार थे, और उसने अलग थे जिनको बादशाह ने तमाम यहदाह के फसीलिदार शहरों में रखड़ा था।

18 और यहसफत की दौलत और 'इज्जत फरावान थी और उसने अखींअब

के साथ रिस्ता जोड़ा। 2 और कुछ सालों के बाद वह अखींअब के पास सामरिया को गया, और अखींअब ने उसके और उसके साथियों के लिए भेड़ — बकरियाँ और बैल कसरत से जबह किए, और उसे अपने साथ रामात जिल'आद पर चढ़ायी करने की सलाह दी। 3 और इसाईल के बादशाह अखींअब ने यहदाह के बादशाह यहसफत से कहा, "क्या तु मेरे साथ रामात जिल'आद को चलेगा? उसने जवाब दिया, मैं वैसा ही हूँ जैसा तू है, और मेरे लोग ऐसे हैं जैसे तेरे लोग। इसलिए हम लड़ाई में तेरे साथ होंगे।" 4 और यहसफत ने इसाईल के बादशाह से कहा, "आज जरा खुदावन्द की बात पूछ लें।" 5 तब इसाईल के बादशाह ने नवियों को जो चार सौ जवान थे, इकश्ता किया और उसने पछा, "हम रामात जिल'आद को जंग के लिए जाँय या मैं बाज़ रहूँ?" उन्होंने कहा, "हमला कर क्यूँकि खुदा उसे बादशाह के कब्जे में कर देगा।" 6 लेकिन यहसफत ने कहा, "क्या यहाँ इनके 'अलतावा खुदावन्द का कोई नबी नहीं ताकि हम उससे पछे?" 7 शाह — ए — इसाईल ने यहसफत से कहा, "एक शर्ड्स है तो सही, है; जिसके ज़रिए से हम खुदावन्द से पृछ सकते लेकिन मुझे उससे नकरत है, क्यूँकि वह मेरे हक में कभी नेकी की नहीं बल्कि हमेशा बुराई की पेशीनारोंई करता है। वह शर्षस मीकायाह बिन इमला है।" यहसफत ने कहा, "बादशाह ऐसा न कहे।" 8 तब शाह — ए — इसाईल ने एक 'उहदेदार को बुला कर हक्म किया, "मीकायाह बिन इमला को जल्द ले आ।" 9 और शाह — ए — इसाईल और शाह — ए — यहदाह यहसफत अपने अपने तख्त पर अपना अपना लिबास पहने बैठे थे। वह सामरिया के फाटक के सहन पर खुनी जगह में बैठे थे, और सब अम्बिया उनके सामने नबुव्वत कर रहे थे। 10 और सिदकियाह बिन कना'ना ने अपने लिए लोहे के सींग बनाए और कहा, "खुदावन्द ऐसा फ्रमाता है कि तू इनसे अरामियों को ढक लेगा, जब तक कि वह खत्म न हो जाए।" 11 और सब नवियों ने ऐसी ही नबुव्वत की और कहते रहे कि रामात जिल'आद को जा और कामयाब हो, क्यूँकि खुदावन्द उसे बादशाह के कब्जे में कर देगा। 12 और उस कासिद ने जो मीकायाह को बुलाने गया था, उससे यह कहा, "देख, सब अम्बिया एक जबान होकर बादशाह को खुश खबरी दे रहे हैं, इसलिए तेरी बात भी ज़रा उनकी बात की तरह हो; और तु खुशखबरी ही देना।" 13 मीकायाह ने कहा, "खुदावन्द की हयात की कसम, जो कुछ मेरा खुदा फरमाएगा मैं वही कहँगा।" 14 जब

वह बादशाह के पास पहुँचा, तो बादशाह ने उससे कहा, "मीकायाह, हम रामात जिल'आद को जंग के लिए जाँय या मैं बाज़ रहूँ?" उसने कहा, "तुम चढ़ाई करो और कामयाब हो, और वह तुम्हारे हाथ में कर दिए जाएँगे।" 15 बादशाह ने उससे कहा, "मैं तुझे कितनी बार क्रसम देकर कहूँ कि तू मुझे खुदावन्द के नाम से हक के 'अलतावा और कुछ न बताए?' 16 उसने कहा, "मैंने सब बनी — इसाईल को फाड़ों पर उन भेड़ों की तरह बिखरा देखा जिनका कोई चरवाहा न हो, और खुदावन्द ने कहा इनका कोई मालिक नहीं, इसलिए इनमें से हर शब्द अपने घर को सलामत लौट जाए।" 17 तब शाह — ए — इसाईल ने यहसफत से कहा, "क्या मैंने तुझ से कहा न था कि वह मेरे हक में नेकी की नहीं बल्कि बद्दी की पेशीनारोंई करेगा?" 18 तब वह बोल उठा, अच्छा, तुम खुदावन्द के बात को सुनो: मैंने देखा कि खुदावन्द अपने तख्त पर बैठा है और सारा आसमानी लश्कर उसके दहने और बाँह हाथ खड़ा है। 19 और खुदावन्द ने फरमाया, 'शाह — ए — इसाईल अखींअब को कौन बहकाएगा, ताकि वह चढ़ाई करे और रामात जिल'आद में मक्तूल हो?' और किसी ने कुछ और किसी ने कुछ कहा। 20 तब एक रुद्ध निकलकर खुदावन्द के सामने खड़ी हुई, और कहने लगी, "मैं उसे बहकाऊँगी। खुदावन्द ने उससे पछा, किस तरह?" 21 उसने कहा, "मैं जाऊँगी, और उसके सब नवियों के मुँह में झट बोलने वाली स्थ बन जाऊँगी। खुदावन्द ने कहा, 'तु उसे बहकाएगी, और गालिब भी होगी; जा और ऐसा ही कर। 22 इसलिए देख, खुदावन्द ने तेरे हक में बुराई का हक्म दिया है।' 23 तब सिदकियाह बिन कना'ना ने पास आकर मीकायाह के गाल पर मारा और कहने लगा, खुदावन्द की स्थ तुझ से कलाम करने को किस रास्ते में पास से निकल कर गई? 24 मीकायाह ने कहा, "तु उस दिन देख लेगा, जब तु अन्दर की कोटीरी में छिपने को घुसेगा।" 25 और शाह — ए — इसाईल ने कहा, मीकायाह को पकड़ कर उसे शहर के नाजिम अमून और यूभास शहजादे के पास लौटा ले जाओ, 26 और कहना, "बादशाह दूँ फ्रमाता है कि जब तक मैं सलामत वापस न आ जा�ऊँ, इस आदमी को कैदखाने में रखो, और उसे मुरीबत की रोटी खिलाना और मुरीबत का पानी पिलाना।" 27 मीकायाह ने कहा, "अगर तू कभी सलामत वापस आए, तो खुदावन्द ने मेरे ज़रिए कलाम ही नहीं किया।" और उसने कहा, "ऐ लोगों, तुम सब के सब सुन लो।" 28 इसलिए शाह — ए — इसाईल और शाह — ए — यहदाह यहसफत ने रामात जिल'आद पर चढ़ाई की। 29 और शाह — ए — इसाईल ने यहसफत से कहा, "मैं अपना भेस बदलकर लड़ाई में जाऊँगा, लेकिन तू अपना लिबास पहने रह।" इसलिए शाह — ए — इसाईल ने भेस बदल लिया, और वह लड़ाई में गए। 30 इधर शाह — ए — अराम ने अपने रथों के सरदारों को हक्म दिया था, "शाह — ए — इसाईल के सिवा, किसी छोटे या बड़े से जंग न करना।" 31 और ऐसा हुआ कि जब रथों के सरदारों ने यहसफत को देखा तो कहने लगे, "शाह — ए — इसाईल यही है।" इसलिए वह उससे लड़ने को मुड़े। लेकिन यहसफत चिल्ला उठा, और खुदावन्द ने उसकी मदद की; और खुदा ने उनको उसके पास से लौटा दिया। 32 जब रथों के सरदारों ने देखा कि वह शाह — ए — इसाईल नहीं है, तो उसका पीछा छोड़कर लौट गए। 33 और किसी शब्द ने दूँ ही कमान खींची और शाह — ए — इसाईल को जैशन के बन्दों के बीच मारा। तब उसने अपने सारथी से कहा, "बाग मोड और मुझे लश्कर से निकाल ले चल, क्यूँकि मैं बहुत ज़रीबी हो गया हूँ।" 34 और उस दिन जंग खबर हुई, तो भी शाम तक शाह — ए — इसाईल अरामियों के मुकाबिल अपने को अपने रथ पर संभाले रहा, और सूरज ढूने के वक्त के करीब मर गया।

और शाह — ए — यहदाह यहसफत येस्शलेम को अपने महल में सलामत लौटा। 2 तब हनानी गैबीनी का बेटा याह उसके इस्तकबाल को निकला, और यहसफत बादशाह से कहने लगा, क्या मुनासिब है कि तू शरीरों की मदद करे, और खुदावन्द के दुश्मनों से मुहब्बत रखें? इस बात की वजह से खुदावन्द की तरफ से तुझ पर गजब है। 3 तो भी तुझ में खबियाँ हैं, क्यूंकि तू ने यसीरियों को मुल्क में से दफा¹ किया, और खुदा की तलाश में अपना दिल लगाया है। 4 यहसफत येस्शलेम में रहता था, और उसने फिर बैरसबा² से इस्माईल के पहाड़ी तक लोगों के बीच दौरा करके, उनको खुदावन्द उनके बाप — दादा के खुदा की तरफ फिर मोड़ दिया। 5 उसने यहदाह के सब फसीलदार शहरों में शहर — ब — शहर काजी मुकर्रर किए, 6 और काजियों से कहा, जो कुछ करो सोच समझकर करो, क्यूंकि तुम आदमियों की तरफ से नहीं, बल्कि खुदावन्द की तरफ से 'अदालत करते हो; और वह फैसले में तुम्हारे साथ है। 7 फिर खुदावन्द का खौफ तम में रहे; इसलिए खबरदारी से काम करना, क्यूंकि खुदावन्द हमारे खुदा में बेइन्साफी नहीं है, और न किसी की स्तरीयी न रख्वत होती। 8 और येस्शलेम में भी यहसफत ने लावियों और काहिनों और इस्माईल के आबाई खानानों के सरदारों में से लोगों को, खुदावन्द की 'अदालत और मुकद्दमों के लिए मुकर्रर किया; और वह येस्शलेम को लौटे 9 और उसने उनको ताकीदी की और कहा कि तुम खुदावन्द के खौफ से दियानतदारी और कामिल दिल से ऐसा करना। 10 जब कभी तुम्हारे भाइयों की तरफ से जो अपने शहरों में रहते हैं, कोई मुकद्दमा तुम्हारे सामने आए, जो आपस के खन से या शरी³ अत और फरमान या कानून और 'अदालत से ता' अल्लुक रखता हो, तो तुम उनको आगाह कर देना कि वह खुदावन्द का गुनाह न करें, जिससे तुम पर और तुम्हारे भाइयों पर गजब नाजिल हो। यह करो तो तुम से खता न होगी। 11 और देखो, खुदावन्द के सब मु'अमिलों में अमरियाह काहिन तुम्हारा सरदार है, और बादशाह के सब मु'अमिलों में जबदियाह बिन इस्माईल है, जो यहदाह के खानान का रहनुपा है; और लाली भी तुम्हारे आगे सरदार होंगे। हौसले के साथ काम करना और खुदावन्द नेकों के साथ हो।

कुछ 'अम्मनियों ने यहसफत से लड़ने को चाहाई की। 2 तब चान्द लोगों ने आकर यहसफत को खबर दी, "दरिया के पार अराम की तरफ से एक बड़ा गिरोह तेरे मुकाबिले को आ रहा है, और देख, वह हसासन — तमर में है, जो ऐनजिदी है।" 3 और यहसफत डर कर दिल से खुदावन्द का तालिब हुआ, और सारे यहदाह में रोजा का ऐलान कराया। 4 और बनी यहदाह खुदावन्द से मदद माँगने को इकट्ठे हुए, बल्कि यहदाह के सब शहरों में से खुदावन्द से मदद माँगने को आए। 5 और यहसफत यहदाह और येस्शलेम की जमा⁴ अत के बीच, खुदावन्द के घर में न ए सहन के आगे खड़ा हुआ 6 और कहा, "ऐ खुदावन्द, हमारे बाप — दादा के खुदा! क्या तू ही आसमान में खुदा नहीं? और क्या कौमों की सब मुल्कों पर हुक्मत करने वाला तू ही नहीं? जोर और कुदरत तेरे हाथ में है, ऐसा कि कोई तेरा सामना नहीं कर सकता। 7 ऐ हमारे खुदा, क्या त ही ने इस सज़मीन के बाशिनों को अपनी कौम इस्माईल के आगे से निकाल कर इसे अपने दोस्त अब्राहाम की नसल को हमेशा के लिए नहीं दिया? 8 चुनौते वह उसमें बस गए, और उहोंने तेरे नाम के लिए उसमें एक मक्किय बनाया है और कहते हैं कि; 9 अगर कोई बला हम पर आ पड़े, जैसे तलवार या आफत या बबा या काल, तो हम इस घर के आगे और तेरे सामने खड़े होंगे क्यूंकि तेरा नाम इस घर में है, और हम अपनी मुसीबत में तुझ से फरियाद करेंगे और तू सुनेगा और बचा लेगा। 10 इसलिए अब देख, 'अम्मन और मोआब और कोह — ए — शाई के लोग जिन पर तू ने बनी — इस्माईल को, जब वह मुल्क —

ए — मिस्र से निकलकर आ रहे थे, हमला करने न दिया बल्कि वह उनकी तरफ से मुड़ गए और उनको हलाक न किया। 11 देख, वह हम को कैसा बदला देते हैं कि हम को तेरी मीरास से, जिसका तू ने हम को मालिक बनाया है, निकलने को आ रहे हैं। 12 ऐ हमारे खुदा क्या तू उनकी 'अदालत नहीं करेगा? क्यूंकि इस बड़े गिरोह के मुकाबिल जो हम पर चढ़ा आता है, हम कुछ ताकत नहीं रखते और न हम यह जानते हैं कि क्या करें? बल्कि हमारी आँखें तुझ पर लगी हैं।" 13 और सारा यहदाह अपने बच्चों और बीवियों और लड़कों समेत खुदावन्द के सामने खड़ा रहा। 14 तब जमा⁵ अत के बीच यहजीएल बिन जकरियाह बिन बिनायाह बिन यईएल बिन मतनियाह, एक लाली पर जो बनी आसफ में से था, खुदावन्द की स्न हनजिल हुई 15 और वह कहने लगा, ऐ तमाम यहदाह और येस्शलेम के बाशिनों, और ऐ बादशाह यहसफत, तुम सब सुनो! खुदावन्द तुम तुम को यूँ फरमाता है कि तुम इस बड़े गिरोह की वजह से न तो डरो और न घबराओ, क्यूंकि यह जंग तुम्हारी नहीं बल्कि खुदा की है। 16 तुम कल उनका सामना करने को जाना। देखो, वह सीस की चाढ़ाई से आ रहे हैं, और यस्तएल के जंगल के सामने वादी के किनारे पर तुम को मिलेंगे 17 तुम को इस जाह में लड़ा नहीं पड़ेगा। ऐ यहदाह और येस्शलेम, तुम कतार बाँधकर चुपचाप खड़े रहना और खुदावन्द की जजात जो तुम्हारे साथ है देखना। खौफ न करो और न घबराओ; कल उनके मुकाबिला को निकलना, क्यूंकि खुदावन्द तुम्हारे साथ है। 18 और यहसफत सिज्वे होकर जमीन तक झक्का, और तमाम यहदाह और येस्शलेम के रहने वालों ने खुदावन्द के आगे गिरकर उसको सिज्दा किया। 19 और बनी किहात और बनी कोरह के लावी बुलन्द आवाज से खुदावन्द इस्माईल के खुदा की हम्मद करने को खड़े हो गए। 20 और वह सुख सवेरे उठ कर तक्क⁶ अ के जंगल में निकल गए, और उनके चलते बक्त यहसफत ने खड़े होकर कहा, "ऐ यहदाह और येस्शलेम के बाशिनों, मेरी सुनो। खुदावन्द अपने खुदा पर ईमान रखें, तो तुम काइम किए जाएंगे; उसके नवियों का यकीन करो, तो तुम कायाब होगे।" 21 जब उसने कौप से सलाह कर लिया, तो उन लोगों को मुकर्रर किया जो लश्कर के आगे आगे चलते हुए खुदावन्द के लिए गए, और पाकीजी की खुबसूरती के साथ उसकी हम्मद करें और कहें, कि खुदावन्द की शुक्रजारी करो क्यूंकि उसकी रहमत हमेशा तक है। 22 जब वह गाने और हम्मद करने लगे, तो खुदावन्द ने बनी 'अम्मन और मोआब और कोह — ए — शाई के बाशिनों पर जो यहदाह पर चढ़े आ रहे थे, कमीन वालों को बैठा दिया इसलिए वह मारे गए। 23 क्यूंकि बनी 'अम्मन और मोआब कोह — ए — शाई के बाशिनों के मुकाबिले में खड़े हो गए कि उनको बिल्कुल तह — ए — तेग और हलाक करें, और जब वह शाई के बाशिनों का खातिमा कर चुके, तो आपस में एक दूसरे को हलाक करने लगे। 24 और जब यहदाह ने पहरेदारों के बुर्ज पर जो बियाबान में था, पहँच कर उस गिरोह पर नज़र की तो क्या देखा कि उनकी लाशें जमीन पर पड़ी हैं, और कोई न बचा। 25 जब यहसफत और उसके लोग उनका माल लटै आए, तो उनको इस कसरत से दौलत और लाशें और कीमती जमाहिर जिनकी उन्होंने अपने लिए उतार लिया, मिले कि वह इनको ले जा भी न सके, और माल — ए — गीनीमत इतना था कि वह तीन दिन तक उसके बटोर ने मैं लगे रहे। 26 चौथे दिन वह बराकाह की बादी में इकट्ठे हुए क्यूंकि उन्होंने वहाँ खुदावन्द को मुबारक कहा; इसलिए कि उस मकाम का नाम अज तक बराकाह की बादी है। 27 तब वह लौटे, याँ⁷ यहदाह और येस्शलेम का हर शास्त्र उनके आगे आगे यहसफत ताकि वह खशी खशी येस्शलेम को वापस जाएँ, क्यूंकि खुदावन्द ने उनको उनके दुश्मनों पर खुश किया था। 28 इसलिए वह सितार और बरबत और नरसिंग लिए येस्शलेम में खुदावन्द के घर में आए। 29 और खुदा का खौफ

उन मुल्कों की सब सलतनतों पर छा गया, जब उन्होंने सुना कि इस्माईल कि दूसरों से खुदावन्द ने लड़ाई की है। 30 इसलिए यहसफत की हक्मत में अमन रहा, क्योंकि उसके खुदा ने उसे चारों तरफ अमान बरखी। 31 यहसफत यहदाह पर हक्मत करता रहा। जब वह हक्मत करने लगा तो पैतीस साल का था, और उसने येस्शलेम में पच्चीस साल हक्मत की। उसकी माँ का नाम 'अजबाह था, जो सिलही की बेटी थी। 32 वह अपने बाप आसा के रास्ते पर चला और उससे न मुड़ा, यानी वही किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है। 33 तो भी ऊँचे मकाम दूर न किए गए थे, और अब तक लोगों ने अपने बाप — दादा के खुदा से दिल नहीं लगाया था। 34 और यहसफत के बाकी काम शुरू से आगिर तक याह बिन हनानी की तारीख में दर्ज है, जो इस्माईल के सलातीन की किताब में शामिल है। 35 इसके बाद यहदाह के बादशाह यहसफत ने इस्माईल के बादशाह अख्जियाह से, जो बड़ा बदकार था, सुलह किया; 36 और इसलिए उससे सुलह किया कि तरसीं जाने को जहाज बनाए, और उन्होंने 'अस्थूनाजार में जहाज बनाए। 37 तब एलियाजर बिन दूदावह ने, जो मरीसा का था, यहसफत के बरिलाफ न बुव्वत की और कहा, "इसलिए कि तू ने अख्जियाह से सुलह कर लिया है, खुदावन्द ने तेरे बनाए को तोड़ दिया है।" फिर वह जहाज ऐसे टूटे कि तरसीं को न जा सके।

21 और यहसफत अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और दाऊद के शहर में अपने बाप — दादा के साथ दफन हुआ; और उसका बेटा यहराम उसकी जगह हक्मत करने लगा। 2 उसके बाईं जो यहसफत के बेटे थे: यानी 'अजरियाह और यहीएल और जकरियाह और 'अजरियाह और मीकाईल और असफतियाह, यह सब शाह — ए — इस्माईल यहसफत के बेटे थे। 3 और उनके बाप ने उनको चाँदी और सोने और बेशकीयत चीजों के बड़े इनाम और फसीलदार शहर यहदाह में 'अता किए, लेकिन हक्मत यहराम को दी क्यूँकि वह पहलौठा था। 4 जब यहराम अपने बाप की हक्मत पर काईं हो गया और अपने को ताकतवर कर लिया, तो उसने अपने सब भाइयों को और इस्माईल के कुछ सरदारों को भी तलवार से कत्ल किया 5 यहराम जब हक्मत करने लगा तो बत्तीस साल का था, और उसने आठ साल येस्शलेम में हक्मत की। 6 और वह अखीअब के घरने की तरह इस्माईल के बादशाहों के रास्ते पर चला, क्यूँकि अखीअब की बेटी उसकी बीवी थी; और उसने वही किया जो खुदावन्द की नज़र में बुरा है। 7 तो भी खुदावन्द ने दाऊद के खान्दान को हलाक करना न चाहा, उस 'अहद की वजह से जो उसने दाऊद से बाँधा था, और जैसा उसने उसे और उसकी नसल को हमेशा के लिए एक चिराग देने का बांदा किया था। 8 उसी के दिनों में अदोम यहदाह की हक्मत से अलग हो गया और अपने अपर एक बादशाह बना लिया। 9 तब यहराम अपने अमीरों और अपने सब रथों को साथ लेकर उड़ान कर गया और रात को उठकर अदोमियों को, जो उसे और रथों के सरदारों को थोड़े हुए थे मारा। 10 इसलिए अदोमी यहदाह से आज तक अलग है, और उसी वक्त लिबनाह भी उसके हाथ से निकल गया, क्यूँकि उसने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को छोड़ दिया था। 11 और इसके 'अलावा उसने यहदाह के पहाड़ों पर ऊँचे मकाम बनाए और येस्शलेम के बाशिन्दों को जिनाकार बनाया, और यहदाह को गुमराह किया। 12 और एलियाह नबी से उसे इस मज्मून का खत मिला, "खुदावन्द तेरे बाप दाऊद का खुदा ऐसा फरमाता है, इसलिए कि तू न अपने बाप यहसफत के रास्तों पर और न यहदाह के बादशाह आसा के रास्तों पर चला, 13 बल्कि इस्माईल के बादशाहों के रास्ते पर चला है, और यहदाह और येस्शलेम के बाशिन्दों को जिनाकार बनाया जैसा अखीअब के खान्दान ने किया था; और अपने बाप के घरने में से अपने भाइयों को जो तुझ से अच्छे थे कल्त भी किया। 14 इसलिए

देख, खुदावन्द तेरे लोगों को और तेरे बेटों और तेरी बीवियों को और तेरे सारे माल को बड़ी आफतों से मरेगा। 15 और त अन्तडियों के मर्ज की वजह से हर सखल बीमार हो जाएगा, यहाँ तक कि तेरी अन्तडियों उस मर्ज की वजह से हर दिन निकलती जाएँगी।" 16 और खुदावन्द ने यहराम के खिलाफ फिलिस्तियों और उन 'अरबों का, जो कृशियों की सिम्म में रहते हैं दिल उभारा। 17 इसलिए वह यहदाह पर चार्डाई करके उसमें घुस आए, और सारे माल को जो बादशाह के घर में मिला और उसके बेटों और उसकी बीवियों को भी ले गए, ऐसा कि यह अखिर तक 'अलावा जो उसके बेटों में सबसे छोटा था उसका कोई बेटा बाकी न रहा। 18 और इस सबके बाद खुदावन्द ने एक लाइलाज मर्ज उसकी अन्तडियों में लगा दिया। 19 कुछ मुहर के बाद, दो साल के आगिर में ऐसा हुआ कि उसके रोग के मारे उसकी अन्तडियाँ निकल पड़ी और वह बुरी बीमारियों से मर गया। उसके लोगों ने उसके लिए आग न जलाई, जैसा उसके बाप — दादा के लिए जलाते थे। 20 वह बत्तीस साल का था जब हक्मत करने लगा और उसने आठ साल येस्शलेम में हक्मत की; और वह बौग्र मातम के स्खसत हुआ और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफन किया, लेकिन शाही कब्रों में नहीं।

22 और येस्शलेम के बाशिन्दों ने उसके सबसे छोटे बेटे अख्जियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया; क्यूँकि लोगों के उस जल्दी ने जो 'अरबों के साथ छावी में आया था, सब बड़े बेटों को कल्त कर दिया था। इसलिए शाह — ए — यहदाह यहराम का बेटा अख्जियाह बादशाह हुआ। 2 अख्जियाह बयालीस' साल का था जब वह हक्मत करने लगा, और उसने येस्शलेम में एक साल हक्मत की। उसकी माँ का नाम 'अतलियाह था, जो 'उमरी की बेटी थी। 3 वह भी अखीअब के खान्दान के रास्ते पर चला, क्यूँकि उसकी माँ उसको बुराई की सलाह देती थी। 4 उसने खुदावन्द की नज़र में बुराई की जैसा अखीअब के खान्दान ने किया था, क्यूँकि उसके बाप के मरने के बाद वही उसके सलाहकार थे, जिससे उसकी बबंदी हुई। 5 और उसने उनके सलाह पर 'अमल भी किया, और शाह — ए — इस्माईल अखीअब के बेटे यहराम के साथ शाह — ए — अराम हजाएल से रामात जिला'आद में लड़ने को गया, और अरमियों ने यहराम को जखानी किया; 6 और वह यजरैएल को उन जखानों के 'इलाज के लिए लौटा जो उसे रामा में शाह — ए — अराम हजाएल के साथ लड़ते बक्त उन लोगों के हाथ से लगे थे, और शाह — ए — यहदाह यहराम का बेटा 'अजरियाह, यहराम बिन अखीअब को यजरैएल में देखने गया क्यूँकि वह बुरी बीमार था। 7 अख्जियाह की हलाकत खुदा की तरफ से ऐसी हुई कि वह यहराम के पास गया, क्यूँकि जब वह पहुँचा तो यहराम के साथ याह बिन निमरी से लड़ने को गया, जिसे खुदावन्द ने अखीअब के खान्दान को काट डालने के लिए मसह किया था। 8 और जब याह अखीअब के खान्दान को सजा दे रहा था तो उसने यहदाह के सरदारों और अजरियाह के भाइयों के बेटों को अख्जियाह की खिदमत करते पाया और उनको कल्त किया। 9 और उसने अख्जियाह को ढोंगा यह सामरिया में छिपा था इसलिए वह उसे पकड़ कर याह के पास लाये और उसे कल्त किया और उन्होंने उसे दफन किया क्यूँकि वह कहने लगे, "वह यहसफत का बेटा है, जो अपने सारे दिल से खुदावन्द का तालिब रहा।" और अख्जियाह के घरने में हक्मत संभालने की ताकत किसी में न रही। 10 जब अख्जियाह की माँ 'अतलियाह ने देखा कि उसका बेटा मर गया, तो उसने उठ कर यहदाह के घरने की सारी शाही नसल को मिटा दिया। 11 लेकिन बादशाह की बेटी यहसब 'अत अख्जियाह के बेटे यूआस को बादशाह के बेटों के बीच से जो कल्त किए गए, चुरा ले गई और उसे और उसकी दाया को बिस्तरों की कोठरी में रखा। इसलिए यहराम बादशाह की बेटी

यहयदा' काहिन की बीवी यहसब' अत ने चौंकि वह अख्तियाह की बहन थी उसे अतिलियाह से ऐसा छिपाया कि वह उसे कल्त करने न पायी। 12 और वह उनके पास खुदा की हैकल में छः साल तक छिपा रहा, और 'अतलियाह मुल्क पर हुक्मत करती रही।

23 सातवे साल यहयदा' ने जोर पकडा और सैकड़ों के सरदारों या"नी

'अजरियाह बिन यहराम और इस्माईल बिन यहनान और अजरियाह बिन 'ओबेद और मासियाह बिन 'अदायाह और इलीसाफत बिन जिक्री से 'अहद बाँधा। 2 वह यहदाह में पिरे, और यहदाह के सब शहरों में से लावियों को, और इसाईल के आर्बाई खानानों के सरदारों को इक्षा किया, और वह येस्शलेम में आए। 3 और सारी जमा' अत ने खुदा के घर में बादशाह के साथ 'अहद बाँधा, और यहयदा' ने उनसे कहा, "देखो! यह शाहजादा जैसा खुदावन्द ने बनी दाऊद के हक में फरमाया है, हुक्मत करेगा। 4 जो काम तुम को करना है वह यह है कि तुम काहिनों और लावियों में से जो सब्त को आते हो, एक तिहाई दरबान हो, 5 और एक तिहाई शाही महल पर, और एक तिहाई बुनियाद के फाटक पर; और सब लोग खुदावन्द के घर के सहनों में हो। 6 पर खुदावन्द के घर में सिवा काहिनों के और उनके जो लावियों में से खिदमत करते हैं, और कोई न अन्ने पाए वही अन्दर आए क्यौंकि वह मुकद्दस है लेकिन सब लोग खुदावन्द का पहरा देते रहें। 7 और लावी अपने अपने हाथ में अपने हथियार लिए हुए बादशाह को चारों तरफ से धेरे रहे, और जो कोई हैकल में आए कल्त किया जाए और बादशाह जब अन्दर आए और बाहर निकले तो तुम उसके साथ रहना।" 8 इसलिए लावियों और सारे यहदाह ने यहयदा' काहिन के हुक्म के मुताबिक सब कुछ किया, और उनमें से हर शख्स ने अपने लोगों को लिया, या"नी उनको जो सब्त को अन्दर आते थे और उनको जो सब्त को बाहर चले जाते थे; क्यौंकि यहयदा' काहिन ने बारी बालों को स्खसत नहीं किया था। 9 और यहयदा' काहिन ने दाऊद बादशाह की बछियाँ और ढालें और फरियाँ, जो खुदा के घर में थी, सैकड़ों सरदारों को दी। 10 और उसने सब लोगों को जो अपना अपना हथियार हाथ में लिए हुए थे, हैकल की दहनी तरफ से उसकी बाई तरफ तक, मजबह और हैकल के पास बादशाह के चारों तरफ खड़ा कर दिया। 11 फिर वह शाहजादे को बाहर लाए, और उसके सिर पर ताज रखकर गवाही नामा दिया और उसे बादशाह बनाया; और यहयदा' और उसके बेटों ने उसे मसह किया, और वह बोल उठे, "बादशाह सलामत रहे।" 12 जब 'अतलियाह ने लोगों का शोर सुना, जो डौड़ कर बादशाह की तारीफ कर रहे थे, तो वह खुदावन्द के घर में लोगों के पास आई। 13 और उसने निगाह की और क्या देखा कि बादशाह फाटक में अपने सुतून के पास खड़ा है, और बादशाह के नजदीक हाकिम और नरसिंगे हैं और सारी ममलकत के लोग खश हैं और नरसिंगे फूंक रहे हैं, और गानेवालों बाजों को लिए हुए मदहसराई करने में पेशेवाई कर रहे हैं। तब 'अतलियाह ने अपने कपड़े फाड़े और कहा, "गग्द है! गद्द!" 14 तब यहयदा' काहिन सैकड़ों के सरदारों को जो लशकर पर मुकर्रर थे, बाहर ले आया और उनसे कहा कि उसको सफों के बीच करके निकाल ले जाओ, और जो कोई उसके पीछे चले वह तलवार से मारा जाए। क्यौंकि काहिन कहने लगा कि खुदावन्द के घर में उसे कल्त न करो। 15 इसलिए उन्होंने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया, और वह शाही महल के घोड़ा फाटक के सहन को गई, और वहाँ उन्होंने उसे कल्त कर दिया 16 फिर यहयदा' ने अपने और सब लोगों और बादशाह के बीच 'अहद बाँधा कि वह खुदावन्द के लोग हों। 17 तब सब लोग बाल के मन्दिर को गए और उसे दिया; और उन्होंने उसके मजबहों और उसकी मूर्तियों को चकनाचूर किया, और बाल के पुजारी मतान को मजबहों के सामने कल्त किया। 18 और यहयदा' ने खुदावन्द की हैकल

की खिदमत लावी काहिनों के हाथ में सौंपी, जिनको दाऊद' ने खुदावन्द की हैकल में अलग ठहराया था कि खुदावन्द की सोखती कुर्बानियाँ जैसा मूसा की तौर में लिखा है, खुशी मनाते हुए और गाते हुए दाऊद के दस्तूर के मुताबिक अदा करेंगे। 19 और उसने खुदावन्द की हैकल के फाटकों पर दरबानों को बिठाया, ताकि जो कोई किसी तरह से नापाक हो, अन्दर आने न पाए। 20 और उसने सैकड़ों के सरदारों और हाकिम के हाकिमों और मुल्क के सब लोगों को साथ लिया, और बादशाह को खुदावन्द की हैकल से ले आया, और वह ऊपर के फाटक से शाही महल में आए और बादशाह की तख्त — ए — हुक्मत पर बिठाया। 21 तब मुल्क के सब लोगों ने खुशी मनाई और शहर में अमन हुआ। उन्होंने 'अतलियाह को तलवार से कल्त कर दिया।

24 युआस सात साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने चालीस

साल येस्शलेम में हुक्मत की। उसकी माँ का नाम जिबियाह था, जो बैरसबा' की थी। 2 और युआस यहयदा' काहिन के जीते जी वही, जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, करता रहा। 3 यहयदा' ने उसे दो बीवियाँ ब्याह दी, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं। 4 इसके बाद यूँ हुआ कि युआस ने खुदावन्द के घर की मरम्मत का 'इरादा किया। 5 इसलिए उसने काहिनों और लावियों को इक्षा किया और उनसे कहा कि यहदाह के शहरों में जो जा कर, सारे इसाईल से साल — ब — साल अपने खुदा के घर की मरम्मत के लिए स्पर्य जमा' किया करो, और इस काम में तुम जल्दी करना। तो भी लावियों ने कुछ जल्दी न की। 6 तब बादशाह ने यहयदा सरदार को बुलाकर उससे कहा कि तू ने लावियों से क्यूंतकाजा नहीं किया कि वह शहादत के खेमे के लिए, यहदाह और येस्शलेम से खुदावन्द के बन्दे और इसाईल की जमा' अत के खातिम मूसा का महसूल लाया करें? 7 क्यूंकि उस शरीर 'अौरत 'अतलियाह के बेटों ने खुदा के घर में छेद कर दिए थे, और खुदावन्द के घर की सब पाक की हुई चीजें भी उन्होंने बालीमी को दे दी थीं। 8 तब बादशाह ने हुक्म दिया, और उन्होंने एक सन्दूक बना कर उसे खुदावन्द के घर के दरवाजे के बाहर रखा; 9 और यहयदा और येस्शलेम में ऐलान किया कि लोग वह महसूल जिसे बन्दा — ए — खुदा मूसा ने बीरान में इसाईल पर लगाया था, खुदावन्द के लिए लाएँ। 10 और सब सरदार और सब लोग खुश हुए, और लाकर उस सन्दूक में डालते रहे जब तक पूरा न कर दिया। 11 जब सन्दूक लावियों के हाथ से बादशाह के मुख्तारों के पास पहुँचा, और उन्होंने देखा कि उसमें बहुत नक्ती है, तो बादशाह के मुश्शी और सरदार काहिन के नाइब ने आकर सन्दूक को खाली किया और उसे लेकर फिर उसकी जगह पहुँचा दिया; और हर दिन ऐसा ही कर के उन्होंने बहुत सी नक्ती जमा' कर ली। 12 फिर बादशाह और यहयदा' ने उसे उनको दे दिया जो खुदावन्द के घर की इबादत के काम पर मुकर्रर थे, और उन्होंने पत्थर तराशों और बढ़दियों को खुदावन्द के घर की मरम्मत के लिए मजदूरी पर रखा। 13 इसलिए कारीगर लग गए और काम उनके हाथ से पूरा होता गया, और उन्होंने खुदा के घर को उसकी पहली हालत पर करके उसे मजबूत कर दिया। 14 और जब उसे पूरा कर चुके तो बाकी स्पर्य बादशाह और यहयदा' के पास ले आए, जिससे खुदावन्द के घर के लिए बर्तन या"नी खिदमत के और कुर्बानी पेश करने के बर्तन और चमचे और सोने और चाँदी के बर्तन बने। और वह यहयदा' के जीते जी खुदावन्द के घर में हमेसा सोखती कुर्बानियाँ अदा करते रहे। 15 लेकिन यहयदा' ने बड़ा और उम्र दराज होकर वफात पाईं, और जब वह मरा तो एक सौ तीस साल का था। 16 और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में बादशाहों के साथ दफन किया, क्यौंकि उसने इसाईल में, और खुदा और उसके घर की खातिर नेकी की थी। 17 यहयदा' के मरने के बाद यहयदा के सरदार आकर

बादशाह के सामने कोर्निश बजा लाएँ; तब बादशाह ने उनकी सुनी, 18 और वह खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के घर को छोड़ कर यसीरतों और बूतों की इबादत करने लगे। और उनकी इस खता की वजह से यहदाह और येस्सलेम पर ग़ज़ब नाज़िल हुआ। 19 तो भी खुदावन्द ने नवियों को उनके पास भेजा ताकि उनको उसकी तरफ फेर लाएँ, और वह उनको इल्जाम देते रहे, पर उन्होंने कान न लगाया। 20 तब खुदा की स्थ यहयदा' काहिन के बेटे ज़करियाह पर नाज़िल हुई, इसलिए वह लोगों से बुलन्द जगह पर खड़ा होकर कहने लगा, खुदा ऐसा फरमाता है कि 'तुम क्यूँ खुदावन्द के हक्मों से बाहर जाते हो कि ऐसे खुशहाल नहीं रह सकते? चैंकि तुम ने खुदावन्द को छोड़ा है, उसने भी तुम को छोड़ दिया।' 21 तब उन्होंने उसके खिलाफ साज़िश की, और बादशाह के हुक्म से खुदावन्द के घर के सहन में उसे पत्थराकर बनाया। 22 ऐसे यूआस बादशाह ने उसके बाप यहयदा' के एहसान को जो उसने उस पर किया था, याद न रखा बल्कि उसके बेटे को कत्ल किया। और मरते बबत उसने कहा, 'खुदावन्द इसको देखे, और इन्तकाम ले।' 23 उसी साल के आखिर में ऐसा हुआ कि अरामियों की फौज ने उस पर चढ़ाई की, और यहदाह और येस्सलेम में आकर लोगों में से कौम के सब सरदारों को हलाक किया और उनका सारा माल लूटकर दमिश्क के बादशाह के पास भेज दिया। 24 आगर चे अरामियों के लश्कर से आदिमियों का छोटा ही जथा आया, तो वे खुदावन्द ने एक बहुत बड़ा लश्कर उनके हाथ में कर दिया, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को छोड़ दिया था। इसलिए उन्होंने युआस को उसके किए का बदला किया। 25 और जब वह उसके पास से लौट गए उन्होंने उसे बड़ी बीमारियों में मुबलता छोड़ा, तो उसी के मुलाजिमों ने यहयदा' काहिन के बेटों के खुन की वजह से उसके खिलाफ साज़िश की और उसे उसके बिस्तर पर कत्ल किया, और वह मर गया; और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में तो फ़कन किया, लेकिन उसे बादशाहों की कब्रों में फ़कन न किया। 26 उसके खिलाफ साज़िश करने वाले यह हैं: 'अम्पनिया सामा' अत का बेटा जबद, और मो'आबिया सिमरियत का बेटा यहजबद। 27 अब रहे उसके बेटे और वह बड़े बोझ जो उस पर रखे गए, और खुदा के घर का दोबारा बनाना; इसलिए देखो, यह सब कुछ बादशाहों की किताब की तफ़सीर में लिखा है। और उसका बेटा अमसियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

25 अमसियाह पच्चीस साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने उनतीस साल येस्सलेम में हुक्मत की। उसकी माँ का नाम यहअद्दन था, जो येस्सलेम की थी। 2 उसने वही किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक है, लेकिन कामिल दिल से नहीं। 3 जब वह हुक्मत पर जम गया तो उसने अपने उन मुलाजिमों को, जिन्होंने उसके बाप बादशाह को मार डाला था कत्ल किया, 4 लेकिन उनकी ओलाद को जान से नहीं मारा बल्कि उसी के मुताबिक किया जो मसा की किताब तौर से लिखा है, जैसा खुदावन्द ने फरमाया कि बेटों के बदले बाप — दादा न मारे जाएँ, और न बाप — दादा के बदले बेटे मरे जाएँ, बल्कि वह आदिमी अपने ही गुमाह के लिए मारा जाए। 5 इसके 'अलावा अमसियाह ने यहदाह को इकश्ता किया, और उनको उनके आबाई खानदानों के मुताबिक तमाम मुल्क — ए — यहदाह और बिन्यरीम में हज़ार हज़ार के सरदारों और सौ सौ के सरदारों के नीचे ठहराया; और उनमें से जिनकी उप्री बीस साल या उससे ऊपर थी उनको शुमार किया, और उनको तीन लाख चुने हुए जवान पाया जो जंग में जाने के काबिल और बच्ची और डाल से काम ले सकते थे। 6 और उसने सौ किन्तर चाँदी टेकर इसाईल में से एक लाख ज़बरदस्त सूर्मी नौकर रखे। 7 लेकिन एक नबी ने उसके पास आकर कहा, 'ऐ, बादशाह, इसाईल की फौज तेरे साथ जाने न पाए, क्यूँकि खुदावन्द इसाईल

यानी सब बनी इफ़ाईम के साथ नहीं है। 8 लेकिन अगर तू जाना ही चाहता है तो जा और लड़ाई के लिए मज़बूत हो, खुदा तुझे दुश्मनों के आगे गिराएँगा क्यूँकि खुदा में संभालने और गिराने की ताकत है।' 9 अमसियाह ने उस नबी से कहा, 'लेकिन सौ किन्तरों के लिए जो मैंने इसाईल के लश्कर को दिए, हम क्या करें?' उस नबी ने जवाब दिया, 'खुदावन्द तुझे इससे बहुत ज्यादा दे सकता है।' 10 तब अमसियाह ने उस लश्कर को जो इफ़ाईम में से उसके पास आया था जुटा किया, ताकि वह फिर अपने घर जाएँ। इस वजह से उनका गुस्सा यहदाह पर बहुत भड़का, और वह बहुत गुस्से में घर को लौटै। 11 और अमसियाह ने होसला बाँधा और अपने लोगों को लेकर बाई — ए — शेर को गया, और बनी शाई में से दस हज़ार को मार दिया; 12 और दस हज़ार को बनी यहदाह जिन्दा पकड़ कर ले गए, और उनको एक चट्टान की चोटी पर पहुँचाया और उस चट्टान की चोटी पर से उनको नीचे पिरा दिया, ऐसा कि सब के सब टुकड़े टुकड़े हो गए। 13 लेकिन उस लश्कर के लोग जिनको अमसियाह ने लौटा दिया था कि उसके साथ जंग में न जाएँ, सामरिया से बैतहौस्न तक यहदाह के शहरों पर टूट पड़े और उनमें से तीन हज़ार जवानों को मार डाला और बहुत सी लूट ले गए। 14 जब अमसियाह अदोमियों के किताल से लौटा, तो बनी शाई के मांबूदों को लेता आया और उनको नस्ब किया ताकि वह उसके मांबूद हों, और उनके आगे सिज़दा किया और उनके आगे खुशबू जलाया। 15 इसलिए खुदावन्द का गज़ब अमसियाह पर भड़का और उसने एक नबी को उसके पास भेजा, जिसने उससे कहा, 'तू उन लोगों के मांबूदों का तालिब क्यूँ हुआ, जिन्होंने अपने ही लोगों को तेरे हाथ से न छुड़ाया?' 16 वह उससे बातें कर ही रहा था कि उसने उससे कहा कि क्या हम ने तुझे बादशाह का सलाहकार बनाया है? चुप रह, तू क्यूँ मार खाएँ? तब वह नबी यह कहकर चुप हो गया कि मैं जानता हूँ कि खुदा का इरादा यह है कि तुझे हलाक करे, इसलिए कि तू ने यह किया है और मेरी सलाह नहीं मानी। 17 तब यहदाह के बादशाह अमसियाह ने सलाह करके इसाईल के बादशाह यूआस बिन यहअखज़ जिन याह के पास कहला भेजा कि जरा आ तो, हम एक दूसरे का मुकाबिला करें। 18 इसलिए इसाईल के बादशाह यूआस ने यहदाह के बादशाह अमसियाह को कहला भेजा, कि लुबनान के ऊँट — कटारे ने लुबनान के देवराको पैगाम भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को ब्याह दें; इन्हें में एक जंगली दरिद्रा जो लुबनान में रहता था, गुज़रा और उसने ऊँटकटरों को रौदै डाला। 19 तू कहता है, 'देख मैंने अदोमियों को मारा, इसलिए तेरे दिल में घमण्ड समाया है कि फ़खु करें; घर ही मैं बैठा रह तू क्यूँ अपने नुकसान के लिए दस्तअन्दाज़ी करता है कि तू भी मिरे और तेरे साथ यहदाह भी?' 20 लेकिन अमसियाह ने न माना; क्यूँकि यह खुदा की तरफ से था कि वह उनके दुश्मनों के हाथ में कर दे, इसलिए कि वह अदोमियों के मांबूदों के तालिब हुए थे। 21 इसलिए इसाईल का बादशाह यूआस चढ़ आया, और वह और शाह — ए — यहदाह अमसियाह यहदाह के बैतशम्स में एक दूसरे के मुकाबिल हुए। 22 और यहदाह ने इसाईल के मुकाबिले में शिक्षित खाई, और उनमें से हर एक अपने डेरों को भागा। 23 और शाह — ए — इसाईल यूआस ने शाह — ए — यहदाह अमसियाह बिन यूआस बिन यहअखज़ को बैतशम्स में पकड़ लिया और उसे येस्सलेम में लाया, और येस्सलेम की दीवार इफ़ाईम के फ़ाटक से कोने के फ़ाटक तक चार सौ हाथ ढाई दी। 24 और सारे सोने और चाँदी और सब बर्बनों को जो 'ओबेद अदोम के पास खुदा के घर में मिले, और शाही महल के खजानों और कफ़लीयों को भी लेकर सामरिया को लौटा। 25 और शाह — ए — यहदाह अमसियाह बिन यूआस, शाह — ए — इसाईल यूआस बिन यहअखज़ के मरने के बाद पंद्रह साल जिन्दा रहा। 26 अमसियाह के बाकी काम शुरू

से आखिर तक, क्या वह यहदाह और इसाईन के बादशाहों की किताब में कल्पनबन्द नहीं है? 27 जब से अमसियाह खुदावन्द की पैरपुरी से फिरा, तब ही से येस्सलेम के लोगों ने उसके खिलाफ साजिश की, इसलिए वह लकीस को भाग गया। लेकिन उन्होंने लकीस में उसके पीछे लोग भेजकर उसे वहाँ कल्पन किया। 28 और वह उसे घोड़ों पर ले आए, और यहदाह के शहर में उसके बाप — दादा के साथ उसे दफन किया।

26 जब यहदाह के सब लोगों ने 'उज्जियाह को जो सोलह साल का था,

लेकिन उसे उसके बाप — दादा के साथ सो जाने के बाद ऐलूतो को तामीर किया और उसे फिर यहदाह में शामिल कर दिया। 3 'उज्जियाह सोलह साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने येस्सलेम में बाबन साल हुक्मत की। उसकी माँ का नाम यक्कियाह था, जो येस्सलेम की थी। 4 उसने वही जो खुदावन्द की नजर में दूसरा है, ठीक उसी के मुताबिक किया जो उसके बाप अमसियाह ने किया था। 5 और वह ज़करियाह के दिनों में जो खुदा के खावाओं में माहिर था, खुदा का तालिब रहा और जब तक वह खुदावन्द का तालिब रहा खुदा ने उसे कामयाब रखा। 6 और वह निकला और फिलिस्तियों से लड़ा, और जात की दीवार को और यबना की दीवार को और अशदूद की दीवार को ढां दिया, और अशदूद के मूल्क में और फिलिस्तियों के बीच शहर तामीर किए। 7 और खुदा ने फिलिस्तियों और ज़र्बाल के रहने वाले 'अरबों' और मज़नियों के मुकाबिले में उसकी मदद की। 8 और 'अम्मनी' 'उज्जियाह को नजराने देने लगे और उसके नाम मिस्र की सरहद तक फैल गया, क्यूंकि वह बहुत ताकतवर हो गया था। 9 और उज्जियाह ने येस्सलेम में कोने के फाटक और वादी के फाटक और दीवार के मोड़ पर बुर्ज बनवाए और उनको मज़बूत किया। 10 और उसने वीरान में बुर्ज बनवाए और बहुत से हौज खुदवाए, क्यूंकि नशेब की ज़मीन में भी और मैदान में उसके बहुत चौपाए थे। और पहाड़ों और ज़रखेज खेतों में उसके किसान और ताकिस्तानों के माली थे, क्यूंकि काशत कारी उसे बहुत पसंद थी। 11 इसके 'अलावा उज्जियाह के पास जंगी जवानों का लश्कर था जो यैंएल मुन्शी और मासियाह नाजिम के शुमार के मुताबिक, गोल गोल होकर बादशाह के एक सरदार हनानियाह के मातहत लडाई पर जाता था। 12 और आबाई खान्दानों के सरदारों यामी ज़बरदस्त सूर्माओं का कुल शुमार दो हजार था; सौं था। 13 और उनके मातहत तीन लाख साढ़े सात हजार का ज़बरदस्त लश्कर था, जो दुश्मन के मुकाबिले में बादशाह की मदद करने को बड़े जोर से लड़ता था। 14 और उज्जियाह ने उनके लिए यामी सारे लश्कर के लिए ढालें और बर्छे और खूद और बक्तर और कमानें और फलाखन के लिए पथर तैयार किए। 15 और उसने येस्सलेम में हुनरमंद लोगों की ईजाद की हुई कीलें बनवायीं ताकि वह तीर चलाने और बड़े बड़े पथर फेंकने के लिए बुर्जों और फसीलों पर हों। इसलिए उसका नाम दूर तक फैल गया क्यूंकि उसकी मदद ऐसी 'अजीब तरह से हुई कि वह ताकतवर हो गया। 16 लेकिन जब वह ताकतवर हो गया, तो उसका दिल इस कदर फूल गया कि वह खराब हो गया और खुदावन्द अपने खुदा की नाफरमानी करने लगा; चुनौते वह खुदावन्द की हैकल में गया ताकि खुशबू की कुर्बानगाह पर खुशबू ज़लाए। 17 तब 'अज़जरियाह काहिन उसके पीछे पीछे गया और उसके साथ खुदावन्द के अस्सी काहिन और थे जो बहादुर आदमी थे, 18 और उन्होंने 'उज्जियाह बादशाह का सामना किया और उससे कहने लगे, 'ऐ 'उज्जियाह, खुदावन्द के लिए खुशबू ज़लाना तेरा काम नहीं, बल्कि काहिनों यामी हास्न के बेटों का काम है, जो खुशबू ज़लाने के लिए पाक किए गए हैं। इसलिए मकादिस से बाहर जा, क्यूंकि तू ने खता की है, और खुदावन्द खुदा की तरफ से यह तेरी 'इज्जत

का ज़रिया' न होगा।' 19 तब 'उज्जियाह गुस्सा हुआ, और खुशबू ज़लाने को बखरदान अपने हाथ में लिए हुए था; और जब वह काहिनों पर खुशबू रहा था, तो काहिनों के सामने ही खुदावन्द के घर के अन्दर खुशबू की कुर्बानगाह के पास उसकी पेशानी पर कोढ़ फूट निकला। 20 और सरदार काहिन 'अज़रियाह और सब काहिनों ने उस पर नजर की और क्या देखा कि उसकी पेशानी पर कोढ़ निकला है। इसलिए उन्होंने उस जल्द वहाँ से निकाला, बल्कि उसने खुद भी बाहर जाने में जल्दी की क्यूंकि खुदावन्द की मार उस पर पड़ी थी। 21 चुनौते 'उज्जियाह बादशाह अपने मरने के दिन तक कोढ़ी रहा, और कोढ़ी होने की वजह से एक अलंग घर में रहता था; क्यूंकि वह खुदावन्द के घर से काट डाला गया था। और उसका बेटा यूताम बादशाह के घर का मुख्तार था और मूल्क के लोगों का इन्साफ करता था। 22 और 'उज्जियाह के बाकी काम शुरू' से आखिर तक आमूस के बेटे यसायाह नवी ने लिखे। 23 इसलिए 'उज्जियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया; और उन्होंने कबिस्तान के मैदान में जो बादशाहों का था, उसके बाप — दादा के साथ उसे दफन किया क्यूंकि वह कहने लगे, 'वह कोहिं है।' और उसका बेटा यूताम उसकी जगह बादशाह हुआ।

27 यूताम पच्चीस साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने

सोलह साल येस्सलेम में हुक्मत की। उसकी माँ का नाम यस्सा था जो सदोक की बेटी थी। 2 और उसने वही जो खुदावन्द की नजर में दूसरा है, ठीक ऐसा ही किया जैसा उसके बाप उज्जियाह ने किया था, मगर वह खुदावन्द की हैकल में न दूसा, लेकिन लोग गुहाह करते ही रहे। 3 और उसने खुदावन्द के घर का बालाई दरवाजा बनाया, और ओफल की दीवार पर उसने बहत कछु तामीर किया। 4 और यहदाह के पहाड़ी मूल्क में उसने शहर तामीर किए, और ज़ंगलों में किले' और बुर्ज बनवाए। 5 वह बनी 'अम्मन के बादशाह से भी लड़ा और उन पर गालिब हुआ। और उसी साल बनी 'अम्मन ने एक सौ किन्तार चाँदी और दस हजार कुर गेहूं और दस हजार कुर जौ उसे दिए, और उतना ही बनी 'अम्मन ने दूसरे और तीसरे साल भी उसे दिया। 6 इसलिए यूताम ज़बरदस्त हो गया, क्यूंकि उसने खुदावन्द अपने खुदा के आगे अपने रास्ते दूसरे किए थे। 7 और यूताम के बाकी काम और उसकी सब लडाईयाँ और उसके तौर तरीके इसाईल और यहदाह के बादशाहों की किताब में लिखा है। 8 वह पच्चीस साल का था जब हुक्मत करने लगा और उसने सोलह साल येस्सलेम में हुक्मत की। 9 और यूताम अपने बाप दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे दाऊद के शहर में दफन किया; और उसका बेटा आखज उसकी जगह बादशाह हुआ।

28 आखज बीस साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने सोलह

साल येस्सलेम में हुक्मत की। और उसने वह न किया जो खुदावन्द की नजर में दूसरा है जैसा उसके बाप दाऊद ने किया था 2 बल्कि इसाईल के बादशाहों के रास्तों पर चला, और बाल्तीम की ढाली हुई मृते भी बनवाई। 3 इसके 'अलावा उसने हिन्म के बेटे की बादी में खुशबू ज़लाया, और उन कौमों के नफरती दस्तरों के मुताबिक जिनको खुदावन्द ने बनी — इसाईल के सामने से खारिज किया था, अपने ही बेटों को आग में झोका। 4 उसने ऊँचे मकामों और पहाड़ों पर, और हर एक हरे दरखत के नीचे कुर्बानियाँ की और खुशबू ज़लायी। 5 इसलिए खुदावन्द उसके खुदा ने उसको शाह — ए — अराम के हाथ में भी कर दिया था, इसलिए उन्होंने उसे मारा और उसके लोगों में से गुलामों की भीड़ ले गए, और उनको दमिश्क में लाए; और वह शाह — ए — इसाईल के हाथ में भी कर दिया था, जिसने उसे मारा और बड़ी खुरेजी की। 6 और फिक्र बिन रमलियाह ने एक ही दिन में यहदाह में से एक लाख बीस हजार को, जो सब के सब के कल्पन किया, क्यूंकि उन्होंने खुदावन्द अपने

बाप — दादा के खुदा को छोड़ दिया था। 7 और जिकरी ने जो इफ़ाइम का एक पहलवान था, मासियाह शहजादे को और महल के नाजिम 'अज़रिकाम को और बादशाह के बजीर इल्काना को मार डाला। 8 और बनी — इसाईल अपने भाइयों में से दो लाख 'औरतों और बेटे — बेटियों को गुलाम करके ले गए, और उनका बहुत सा माल लट लिया और लट को सामरिया में लाए। 9 लेकिन वहाँ खुदावन्द का एक नवी था जिसका नाम 'ओदिद था, वह उस लश्कर के इस्तकबाल को गया जो सामरिया को आ रहा था और उनसे कहने लगा, "देखो, इसलिए कि खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा का खुदा यहदाह से नाराज था, उसने उनको तुम्हारे हाथ में कर दिया और तुम ने उनको ऐसे तैश में कल्प किया है जो आसमान तक पहुँचा। 10 और अब तुम्हारा 'इरादा है कि बनी यहदाह और येस्शलेम को अपने गुलाम और लौंडियाँ बना कर उनको दबाए रखो। लेकिन क्या तुम्हारे ही गुनाह जो तुमने खुदा बन्द अपने खुदा के खिलाफ़ किए हैं, तुम्हारे सिर नहीं हैं? 11 इसलिए तुम अब मेरी सुनो और उन गुलामों को, जिनको तुम ने अपने भाइयों में से गुलाम कर लिया है, आज़ाद करके लौटा दो क्यैंकि खुदावन्द का कहर — ए — शदीद तुम पर है।" 12 तब बनी इफ़ाइम के सदरों में से 'अज़रियाह बिन यहनान और बरकियाह बिन मसल्लीमोत और यहज़कियाह बिन सल्म और 'अमासा बिन खुदरी, उनके सामने जो जंग से आ रहे थे खड़े हो गए, 13 और उनसे कहा कि "तुम गुलामों को यहाँ नहीं लाने पाओगे, क्यैंकि जो तुम ने ठाना है उससे हम खुदावन्द के गुहाहार बनेंगे और हमारे गुनाह और खताएं बढ़ जायेंगी क्यैंकि हमारी खता बड़ी है और इसाईल पर कहर — ए — शदीद है। 14 इसलिए उन हथियारबन्द लोगों ने गुलामों और माल — ए — गनीमत को, अमीरों और सारी जमा'अत के आगे छोड़ दिया। 15 और वह आदमी जिनके नाम मज़कूर हुए, उठे और गुलामों को लिया और लट्ट के माल में से उन सभों को जो उनमें नगे थे, लिबास से आरास्ता किया और उनको जूते पहनाएं और उनको खाने — पीने को दिया और उन पर तेल मला, और जितने उनमें कमज़ोर थे उनको गधों पर चढ़ा कर खजूर के दरखतों के शहर यही में उनके भाइयों के पास पहुँचा दिया। तब सामरिया को लौट गए। 16 उस वक्त आखज़ बादशाह ने असूर के बादशाहों के पास कहला भेजा के उसकी मदद करें। 17 इसलिए कि अदोमियों ने फिर चढ़ाई करके यहदाह को मार लिया और गुलामों को ले गए थे। 18 और फिलिस्तियों ने भी नशेब की ज़मीन के और यहदाह के जुनूब के शहरों पर हमला करके बैतशम्स और अश्यालोन और जदीरोत को, और शोको और उसके देहात को, और तिमान और उसके देहात को, और जिम्सू और उसके देहात को भी ले लिया था और उनमें बस गए थे। 19 क्यैंकि खुदावन्द ने शाह — ए — इसाईल आखज़ की वजह से यहदाह को पस्त किया, इसलिए कि उसने यहदाह में बेहाई की चाल चलकर खुदावन्द का बड़ा गुनाह किया था; 20 और शाह — ए — असूर तिलगातपिलनासर उसके पास आया, लेकिन उसने उसको तंग किया और उसकी मदद न की। 21 क्यैंकि आखज़ ने खुदावन्द के घर और बादशाह और सरदारों के महलों से माल लेकर शाह — ए — असूर को दिया, तो भी उसकी कुछ मदद न हुई। 22 अपनी तंगी के बक्त्र में भी उसने, याँनी इसी आखज़ बादशाह ने खुदावन्द का और भी ज्यादा गुनाह किया; 23 क्यैंकि उसने दमिश्क के माँबूदों के लिए जिन्होंने उसे मारा था, कुर्बानियाँ की और कहा, चैंकि अराम के बादशाहों के माँबूदों ने उनकी मदद की है, इसलिए मैं उनके लिए कुर्बानी कस्तंगा ताकि वह मेरी मदद करें।" लेकिन वह उसकी और सारे इसाईल की तबाही की वजह हुए। 24 और आखज़ ने खुदा के घर के बर्तनों को जमा किया और खुदा के घर के बर्तनों को टुकड़े टुकड़े किया और खुदावन्द के घर के दरवाज़ों को बन्द किया और अपने तिए येस्शलेम के हर कोने में मज़बहे

बनाए। 25 और यहदाह के एक एक शहर में गैर — माँबूदों के आगे खुशबू जलाने के लिए ऊँचे मकाम बनाए, और खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा को गूस्सा दिलाया। 26 और उसके बाकी काम और उसके सब तौर तरीके शुरू से आखिर तक यहदाह और इसाईल के बादशाहों की किताब में लिखा है। 27 और आखज़ अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे शहर में याँनी येस्शलेम में दफन किया क्यैंकि वह उसे इसाईल के बादशाहों की कब्रों में न लाए और उसका बेटा हिज़कियाह उसकी जगह बादशाह हुआ।

29 हिज़कियाह पच्चीस साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने उन्नीस साल येस्शलेम में हुक्मत की। उसकी माँ का नाम अबियाह था, जो ज़करियाह की बेटी थी। 2 उसने वही काम जो खुदावन्द की नज़र में दम्पत्त है, ठीक उसी के मुताबिक जो उसके बाप — दादा ने किया था, किया। 3 उसने अपनी हुक्मत के पहले साल के पहले महीने में, खुदावन्द के घर के दरवाज़ों को खोला और उनकी मरम्मत की। 4 और वह काहिनों और लावियों को ले आया और उनको मशरिक की तरफ मैदान में इक्षता किया, 5 और उनसे कहा, ऐ लावियों, मेरी सुनो! तुम अब अपने को पाक करो और खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के घर को पाक करो, और इस पाक मकाम में से सारी नापाकी को निकाल डालो; 6 क्यैंकि हमारे बाप — दादा ने गुनाह किया और जो खुदावन्द हमारे खुदा की नज़र में बुरा है वही किया, और खुदा को छोड़ दिया और खुदावन्द के घर से मूँह फेर लिया और अपनी पीठ उसकी तरफ कर दी 7 और उसों के दरवाजों को भी बन्द कर दिया, और चिराग बुझा दिए, और इसाईल के खुदा के मकदिस में न तो खुशबू जलायी और न सोखती कुर्बानियाँ पेश की 8 इस वजह से खुदावन्द का कहर यहदाह और येस्शलेम पर नज़िल हुआ, और उसने उनको ऐसा हवाले किया कि मारे मारे फिरें और हैरत और सुसकार का जरिए हों, जैसा तुम अपनी आँखों से देखते हो। 9 देखो, इसी वजह से हमारे बाप — दादा तलवार से मारे गए, और हमारे बेटे बेटियाँ और हमारी बीवियाँ गुलामी में हैं। 10 अब मेरे दिल में है कि खुदावन्द इसाईल के खुदा के साथ 'अहट बाँधूं, ताकि उसका कहर — ए — शदीद हम पर से टल जाए। 11 ऐ मेरे फर्जन्दो, तुम अब गाफिल न रहो; क्यैंकि खुदावन्द ने तुम को चुन लिया है कि उसके सामने खड़े रहो और उसकी खिलमत करो और उसके खादिम बनो और खुशबू जलाओ। 12 तब यह लाती उठे: याँनी बनी किंहात में से महत बिन 'अमासी और यूएल बिन 'अज़रियाह, और बनी मिरारी में से कीस बिन 'अबदी और अज़रियाह बिन यहलीएल और जैसोनियों में से यूआख बिन जिम्मा और अदन बिन यूआख, 13 और बनी इलिसफन में से सिमरी और याँक्ल, और बनी आसफ में से ज़करियाह और मतनियाह, 14 और बनी हैमान में से यहीएल और सिमई, और बनी यदूतून में से समाँयाह और 'उजिएल। 15 और उन्होंने अपने भाइयों को इक्षता करके अपने को पाक किया, और बादशाह के हुक्म के मुताबिक जो खुदावन्द के कलाम के मुताबिक था, खुदावन्द के घर को पाक करने के लिए अन्दर गए। 16 और काहिन खुदावन्द के घर के अन्दर्स्नी हिस्से में उसे पाक — साफ करने को दाखिल हुए, और सारी नापाकी को जो खुदावन्द की हैकल में उनको मिली निकाल कर बाहर खुदावन्द के घर के सहन में ले आए, और लावियों ने उसे उठा लिया ताकि उसे बाहर किंदून के नाले में पहुँचा दें। 17 पहले महीने की पहली तारीख को उन्होंने तक्दीस का काम शुरू किया, और उस महीने की आठी तारीख को खुदावन्द के उसरे तक पहुँचे, और उन्होंने आठ दिन में खुदावन्द के घर को पाक किया; इसलिए पहले महीने की सोलहवीं तारीख को उसे पूरा किया। 18 तब उन्होंने महल के अन्दर हिज़कियाह बादशाह के पास जाकर कहा कि "हमने खुदावन्द के सारे घर को, और सोखती कुर्बानी के मज़बह को और

उसके सब बर्तन को, और नन्ही की रोटियों की मेज़ को और उसके सब बर्तन को पाक — साफ़ कर दिया। 19 इसके 'अलावा हम ने उन सब बर्तन को जिनकी आख़बार बादशाह ने अपने दौर — ए — हुक्मत में खता करके रद्द कर दिया था, फिर तैयार करके उनको पाक किया है, और देख, वह खुदावन्द के मज़बह के सामने हैं।" 20 तब हिज़कियाह बादशाह सरेरे उठकर और शहर के रईसों को इकड़ा करके खुदावन्द के घर को गया। 21 और वह सात बैल और सात मेंदे, और सात बर्बे और सात बकरे मुल्क के लिए और मकानिस के लिए और यहदाह के लिए खता की कुर्बानी के लिए ले आए, और उसने काहिनों यानी बनी हास्तन को हुक्म किया के उनको खुदावन्द के मज़बह पर चढ़ाएँ। 22 इसलिए उन्होंने बैलों को जबह किया और काहिनों ने खन को लेकर उसे मज़बह पर छिड़का, फिर उन्होंने मेंदों को जबह किया और खन को मज़बह पर छिड़का, और बर्बों को भी जबह किया और खन मज़बह पर छिड़का। 23 और वह खता की कुर्बानी के बकरों को बादशाह और जमा' अत के आगे नज़दीक ले आए और उन्होंने अपने हाथ उन पर रखे। 24 फिर काहिनों ने उनको जबह किया और उनके खन को मज़बह पर छिड़क कर खता की कुर्बानी की, ताकि सारे इसाईल के लिए कपफ़कार हो; क्यौंकि बादशाह ने फ़रमाया था कि सोखतनी कुर्बानी और खता की कुर्बानी सारे इसाईल के लिए पेश की जाएँ। 25 और उसने दाऊद और बादशाह के गैबीबीन ज़द और नातन नवी के हुक्म के मुताबिक खुदावन्द के घर में लावियों को झाँझ और सितर और बरबत के साथ मुकर्रर किया, क्यौंकि यह नवियों के जरिएँ खुदावन्द का हुक्म था। 26 और लावी दाऊद ने बाजों को और काहिन नरसिंगों को लेकर खड़े हए, 27 और हिज़कियाह ने मज़बह पर सोखतनी कुर्बानी अदा करने का हुक्म दिया, और जब सोखतनी कुर्बानी शूरू हुई तो खुदावन्द का हम्द भी नरसिंगों और शाह — ए — इसाईल दाऊद ने बाजों के साथ शूरू हुआ, 28 और सारी जमा' अत ने सिज्दा किया, और गानेवाले गाने और नरसिंग वाले नरसिंग फूकने लगे। जब तक सोखतनी कुर्बानी जल न चुकी, यह सब होता रहा; 29 और जब वह कुर्बानी अदा कर चुके, तो बादशाह और उसके साथ सब हाज़रीन ने झुक कर सिज्दा किया। 30 फिर हिज़कियाह बादशाह और रईसों ने लावियों को हुक्म किया कि दाऊद और आसफ़ गैबीबीन के हम्द गाकर खुदावन्द की हम्द करें; और उन्होंने खुशी से बड़ाई की और सिर झुकाएँ और सिज्दा किया। 31 और हिज़कियाह कहने लगा, "अब तुम ने अपने आपको खुदावन्द के लिए पाक कर लिया है। इसलिए नज़दीक आओ, और खुदावन्द के घर में जबहीं और शुक्रगुज़री की कुर्बानियाँ लाओ।" तब जमा' अत जबहीं और शुक्रगुज़री की कुर्बानियाँ लाई, और जितने दिल से राजी थे सोखतनी कुर्बानियाँ लाए। 32 और सोखतनी कुर्बानियों का शमार जो जमा' अत लाई थह था: सतर बैल और सौ मेंदे और दो सौ बर्बे, यह सब खुदावन्द की सोखतनी कुर्बानी के लिए थे। 33 और पाक किए हुए जानवर यह थे: छः सौ बैल और तीन हज़ार भेड़ — बकरियाँ। 34 मगर काहिन ऐसे थोड़े थे कि वह सारी सोखतनी कुर्बानी के जानवरों की खालें उतार न सके, इसलिए उनके भाई लावियों ने उनकी मदद की जब तक काम पूरा न हो गया; और काहिनों ने अपने को पाक न कर लिया, क्यौंकि लावी अपने आपको पाक करने में काहिनों से ज्यादा सच्चे दिल थे। 35 और सोखतनी कुर्बानियों भी कसरत से थी, और उनके साथ सलामती की कुर्बानियों की चर्बी और सोखतनी कुर्बानियों के तपावन थे। यूँ खुदावन्द के घर की खिदमत की तरीक दुस्त हुई 36 और हिज़कियाह और सब लोग उस काम की जबह से, जो खुदा ने लोगों के लिए तैयार किया था, बाग बाग हुए क्यौंकि वह काम यक़बारगी किया गया था।

30 और हिज़कियाह ने सारे इसाईल और यहदाह को कहला भेजा, और इसाईम और मनस्सी के पास भी खत लिख भेजे कि वह खुदावन्द

के घर में येस्शलेम को, खुदावन्द इसाईल के खुदा के लिए 'ईद — ए — फ़सह करने को आएँ; 2 क्यौंकि बादशाह और सरदारों और येस्शलेम की सारी जमा' अत ने तूसे महीने में 'ईद — ए — फ़सह मनाने की सलाह कर लिया था। 3 क्यौंकि वह उस वक्त उसे इसलिए नहीं मना सके कि काहिनों ने काफ़ी तादाद में अपने आपको पाक नहीं किया था, और लोग भी येस्शलेम में इकट्ठे नहीं हुए थे। 4 यह बात बादशाह और सारी जमा' अत की नज़र में अच्छी थी। 5 इसलिए उन्होंने हुक्म जारी किया कि बैरसबा' से दान तक सारे इसाईल में 'ऐलान किया जाए कि लोग येस्शलेम में आकर खुदावन्द इसाईल के खुदा के लिए 'ईद — ए — फ़सह करें, क्यौंकि उन्होंने ऐसी बड़ी तादाद में उसको नहीं मनाया था जैसे लिखा है। 6 इसलिए बादशाह के कासिद और उसके सरदारों से खत लेकर बादशाह के हुक्म के मुताबिक सारे इसाईल और यहदाह में फिरे, और कहते गए, "ऐं बनी — इसाईल! अब्रहाम और इस्हाक और इसाईल के खुदावन्द खुदा की तरफ दोबारा फिर जाओ, ताकि वह तुम्हारे बाकी लोगों की तरफ जो अस्सर के बादशाहों के हाथ से बच रहे हैं, फिर मुतवज्जिह हों। 7 और तुम अपने बाप — दादा के खुदा की नाफ़रमानी की, यहाँ तक कि उसने उनको छोड़ दिया कि बर्बाद हो जाएँ, जैसा तुम देखते हो। 8 तब तुम अपने बाप — दादा की तरह मास्सर न बनो, बल्कि खुदावन्द के ताबे हो जाओ और उसके मकानिस में आओ, जिसे उसने हमेशा के लिए पाक किया है, और खुदावन्द अपने खुदा की इबादत करो ताकि उसका कहर — ए — शर्दीद तुम पर से टल जाए। 9 क्यौंकि आगर तुम खुदावन्द की तरफ दोबारा मुड़ो, तो तुम्हारे भाई और तुम्हारे बेटे अपने गुलाम करने वालों की नज़र में काबिल — ए — रहम ठहरेंगे और इस मुल्क में फिर आएँ, क्यौंकि खुदावन्द तुम्हारा खुदा शाफ़र — ओ — रहीम है, और अगर तुम उसकी तरफ फिरो तो वह तुम से अपना मूँह फेर न लेगा।" 10 इसलिए कासिद इसाईम और मनस्सी के मुल्क में शहर — ब — शहर होते हुए जब्लून तक गए, पर उन्होंने उनका मजाक किया और उनको ठड़ों में उड़ाया। 11 फिर भी आशर और मनस्सी और जब्लून में से कुछ लोगों ने फ़िरोतीनी की और येस्शलेम को आए। 12 और यहदाह पर भी खुदावन्द का हाथ था कि उनको यक़दिल बना दे, ताकि वह खुदावन्द के कलाम के मुताबिक बादशाह और सरदारों के हुक्म पर 'अमल करें। 13 इसलिए बहुत से लोग येस्शलेम में जमा' हुए कि तूसे महीने में फ़तीरी रोटी की 'ईद करें; यूँ बहुत बड़ी जमा' अत हो गई। 14 वह उठे और उन मज़बहों को जो येस्शलेम में थे और खुशबू की सब कुर्बानाहों को दू किया, और उनकी किटून न के नाले में डाल दिया। 15 फिर दूसरे महीने की चौदहवीं तारीख को उन्होंने फ़सह को जबह किया, और काहिनों और लावियों ने शर्मिन्दा होकर अपने आपको पाक किया और खुदावन्द के घर में सोखतनी कुर्बानियाँ लाए। 16 वह अपने दस्तूर पर मर्द — ए — खुदा मसा की शरी अत के मुताबिक अपनी अपनी जगह खड़े हुए, और काहिनों ने लावियों के हाथ से खन लेकर छिड़का। 17 क्यौंकि जमा' अत में बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने आपको पाक नहीं किया था, इसलिए यह काम लावियों के सुपुर्द हआ कि वह सब नापाक शख्तों के लिए फ़सह के बर्बों को जबह करें, ताकि वह खुदावन्द के लिए पाक हों। 18 क्यौंकि इसाईम और मनस्सी और इश्कार और जब्लून में से बहुत से लोगों ने अपने आपको पाक नहीं किया था, तो भी उन्होंने फ़सह को जिस तरह लिखा है उस तरह से न खाया, क्यौंकि हिज़कियाह ने उनके लिए यह दुआ की थी, कि खुदावन्द तुम्हारे बाले में दिल लगाया है मूँफ़ाक करे, अगर वह मकानिस की तहारत के मुताबिक पाक न हुआ हो। 20 और खुदावन्द ने हिज़कियाह की सुनी और

लोगों को शिफा दी। 21 और जो बनी — इस्माइल येस्शलेम में हाजिर थे, उन्होंने बड़ी खुशी से सात दिन तक 'ईद — ए — फ़तीर मनाई, और लाली और काहिन बलन्द आवाज के बाजों के साथ खुदावन्द के सामने गा गाकर हर दिन खुदावन्द की हम्द करते रहे। 22 और हिज़कियाह ने सब लावियों से जो खुदावन्द की खिदमत में माहिर थे, तसल्लीबख़ा बातें की। इसलिए वह 'ईद के सातों दिन तक खाते और सलामती के जबीहों की कुर्बानियाँ पेश करते और खुदावन्द अपने बाप दादा के खुदा के सामने इकरार करते रहे। 23 फिर सारी जमा'अत ने और सात दिन मानने की सलाह की, और खुशी से और सात दिन मने। 24 क्यूंकि शाह — ए — यहदाह हिज़कियाह ने जमा'अत को कुर्बानियों के लिए एक हजार बछड़े और सात हजार भेड़ें 'इनायत की, और सरदारों ने जमा'अत को एक हजार बछड़े और दस हजार भेड़ें दीं, और बहुत से काहिनों ने अपने आपको पाक किया। 25 और यहदाह की सारी जमा'अत ने काहिनों और लावियों समेत और उस सारी जमा'अत ने जो इस्माइल के मुल्क से आए थे, और जो यहदाह में रहते थे खुशी मनाई। 26 इसलिए येस्शलेम में बड़ी खुशी हड्ड, क्यूंकि शाह — ए — इस्माइल सुलेमान बिन दाऊद के जमाने से येस्शलेम में ऐसा नहीं हआ था। 27 तब लाली काहिनों ने उठ कर लोगों को बरकत दी, और उनकी सुनी गई, और उनकी दुआ उसके पाक मकान, आसमान तक पहुँची।

31 जब यह हो चुका तो सब इस्माइली जो हाजिर थे, यहदाह के शहरों में गए और सारे यहदाह और बिनयमीन के बलिक इस्माइल और मनस्ती के भी सूतों को टुकड़े — टुकड़े किया, और यसीरितों को काट डाला, और ऊँचे मकामों और मजबहों को ढा दिया; यहाँ तक कि उन सभों को मिटा दिया। तब सब बनी — इस्माइल अपने अपने शहर में अपनी अपनी मिलिक्यत को लौट गए। 2 और हिज़कियाह ने काहिनों के फ़रीकों को और लावियों को उनके फ़रीकों के मुताबिक, याँनी काहिनों और लावियों दोनों के हर शख्स को उसकी खिदमत के मुताबिक खुदावन्द की खेमागाह के फाटकों के अन्दर सोख्तनी कुर्बानियों और सलामती की कुर्बानियों के लिए, और इबादत और शुक्रुजारी और तारीफ करने के लिए मुकर्रर किया। 3 उसने अपने माल में से बादशाही हिस्सा सोख्तनी कुर्बानियों के लिए, याँनी सुबह — ओ — शाम की सोख्तनी कुर्बानियों के लिए, और सब्तों और नए चाँदों और मुकर्ररा 'ईदों की सोख्तनी कुर्बानियों के लिए लहराया, जैसा खुदावन्द की शरी'अत में लिखा है। 4 और उसने उन लोगों को जो येस्शलेम में रहते थे, हक्म किया कि काहिनों और लावियों का हिस्सा दे ताकि वह खुदावन्द की शरी'अत में लगे रहें। 5 इस फरमान के जारी होते ही बनी — इस्माइल अनाज और मय और तेल और शहद और खेत की सब पैदावार के पहले फल बहुतायत से देने, और सब चीज़ों का दसवाँ हिस्सा, और उन पाक चीज़ों का दसवाँ हिस्सा जो खुदावन्द उनके खुदा के लिए पाक की गई थी, लाए और उनको ढेर ढेर करके लगा दिया। 6 उन्होंने तीसरे महीने में ढेर लगाना शुरू किया और सातवें महीने में पूरा किया। 8 जब हिज़कियाह और सरदारों ने आकर ढेरों को देखा, तो खुदावन्द को और उसकी कौम इस्माइल को मुबारक कहा। 9 और हिज़कियाह ने काहिनों और लावियों से उन ढेरों के बारे में पूछा। 10 तब सरदार काहिन 'अज़रियाह ने जो सटक के खान्दान का था, उसे जवाब दिया, "जब से लोगों ने खुदावन्द के घर में हृदये लाना शुरू किया, तब से हम खाते रहे और हम को काफ़ी मिला और बहुत बच रहा है; क्यूंकि खुदावन्द ने अपने लोगों को बरकत बचाई है, और वही बचा हुआ यह बड़ा ढेर है।" 11 तब हिज़कियाह ने हक्म किया कि खुदावन्द के घर

में कोठरियाँ तैयार करें, इसलिए उनको तैयार किया। 12 और वह हृदये और वह दहेकियाँ और पाक की हुई चीज़े इमानदारी से लाते रहे, और उन पर कनानियाह लाली मुख्तार था और उसका भाई सिमई नाइब था, 13 और इलीएल और अज़रियाह और नहात और 'असाहील और यरीमेत और यूजबद और इनीएल और इस्माकियाह और महत और बिनायाह हिज़कियाह बादशाह और खुदा के घर के सरदार 'अज़रियाह के हृक्ष से कनानियाह और उसके भाई सिमई के मातहत पेशकार थे। 14 और मशरिकी फाटक का दरबान यिमना लाली का बेटा कोरे खुदा की खुशी की कुर्बानियों पर मुकर्रर था, ताकि खुदावन्द के हृदयों और पाक तरीन चीज़ों को बॉट दिया करे। 15 और उसके मातहत अदन और बिनयमीन और यश 'अ और समायाह और अमरियाह और सकनियाह, काहिनों के शहरों में इस 'उहदे पर मुकर्रर थे कि अपने भाईयों को, क्या बड़े क्या छोटे उनके फ़रीकों के मुताबिक हिस्सा दिया करें, 16 और इनके 'अलावा उनको भी दें जो तीन साल की उम्र से और उससे ऊपर मर्दाँ के नसबनामे में शुमार किए गए, याँनी उनको जो अपने अपने फ़रीक की बारियों पर अपने अपने ज़िम्मे की खिदमत को हर दिन के फ़र्ज़ के मुताबिक अन्जाम देने को खुदावन्द के घर में जाते थे। 17 और उनको भी जो अपने अपने आबाई खान्दान के मुताबिक काहिनों के नसबनामे में शुमार किए गए, और उन लावियों को जो बीस साल के और उससे ऊपर थे, और अपने अपने फ़रीक की बारी पर खिदमत करते थे। 18 और उनको जो सारी जमा'अत में से अपने बाल — बच्चों और बीवियों और बेटों और बेटियों के नसबनामे के मुताबिक शुमार किए गए, क्यूंकि अपने अपने मुकर्ररा काम पर वह अपने आप को तक़दुस के लिए पाक करते थे। 19 और बनी हास्न के काहिनों के लिए भी, जो शहर — ब — शहर अपने शहरों के चारोंतरफ के खेतों में थे, कई आदीमीं जिनके नाम बता दिए गए थे, मुकर्रर हुए कि काहिनों के सब आदमियों को और उन सभों को जो लावियों के बीच नसबनामे के मुताबिक शुमार किए गए थे, हिस्सा दें। 20 इसलिए हिज़कियाह ने सारे यहदाह में ऐसा ही किया, और जो कुछ खुदावन्द उसके खुदा की नजर में भला और सच्चा और हक्क था वही किया। 21 और खुदा के घर की खिदमत और शरी'अत और अहकाम के ऐतबार से जिस जिस काम को उसने अपने खुदा का तालिब होने के लिए किया, उसे अपने सारे दिल से किया और कामयाब हुआ।

32 इन बातों और इस इमानदारी के बाद शाह — ए — असू सनहेरिब चढ़ आया और यहदाह में दाखिल हुआ, और फ़सीलदार शहरों के मुकाबिल खेमाजन हुआ और उनको अपने कब्ज़े में लाना चाहा। 2 जब हिज़कियाह ने देखा कि सनहेरिब आया है और उसका 'झारादा है कि येस्शलेम से लड़े 3 तो उसने अपने सरदारों और बहादुरों के साथ सलाह की कि उन चश्मों के पानी को जो शहर से बाहर थे बन्द कर दे, और उन्होंने उसकी मदद की। 4 बहुत लोग जमा' हुए और सब चश्मों को और उस नदी को जो उस सरजीम के बीच बहती थी, यह कह कर बन्द कर दिया, "असू के बादशाह आकर बहुत सा पनी कर्दू पाएँ?" 5 और उसने हिम्मत बाँधी और सारी दीवार को जो दूरी थी बनाया, और उसे बुर्जी के बराबर ऊँचा किया और बाहर से एक दूसरी दीवार उठाई, और दाऊद के शहर में मिल्लों को मजबूत किया और बहुत से हथियार और ढारने बनाई। 6 और उसने लोगों पर सर लश्कर ठहराए और शहर के फ़ाटक के पास के मैदान में उनको अपने पास इक्षा किया, और उनसे हिम्मत अफ़ज़ाई की बातें की और कहा, 7 "हिम्मत बाँधो और हौसला रखो, और असू के बादशाह और उसके साथ के सारे गिरें की वजह से न डरो न हिरासा न हो; क्यूंकि वह जो हमारे साथ है, उससे बड़ा है जो उसके साथ है। 8 उसके साथ बशर का हाथ है लेकिन हमारे साथ खुदावन्द हमारा खुदा है कि हमारी

मदद करे और हमारी लड़ाईयाँ लड़े।” तब लोगों ने शाह — ए — यहदाह हिज़कियाह की बातों पर भरोसा किया। 9 उसके बाद शाह — ए — असूर सनहेरिब ने जो अपने सारे लक्षकर’ के साथ लकीस के मुकाबिल पड़ा था, अपने नौकर येस्शलेम को शाह — ए — यहदाह हिज़कियाह के पास और पैरे यहदाह के पास जो येस्शलेम में थे, यह कहने को भेजे कि; 10 शाह — ए — असूर सनहेरिब यूरफरमाता है कि तुम्हारा किस पर भरोसा है कि तुम येस्शलेम में घेरे को झेल रहे हो? 11 क्या हिज़कियाह तुम को कहत और प्यास की मौत के हवाले करने को तुम को नहीं बहका रहा है कि “खुदा बन्द हमारा खुदा हम को शाह — ए — असूर के हाथ से बचा लेगा?” 12 क्या इसी हिज़कियाह ने उसके ऊंचे मकामों और मज़बहों को दूर करके, यहदाह और येस्शलेम को हुक्म नहीं दिया कि तुम एक ही मज़बह के आगे सिज्दा करना और उसी पर खुशबू जलाना? 13 क्या तुम नहीं जानते कि मैंने और मेरे बाप — दादा ने और मुल्कों के सब लोगों से क्या क्या किया है? क्या उन मुल्कों की कौमों के मांबूद अपने मुल्कों को किसी तरह से मेरे हाथ से बचा सके? 14 जिन कौमों को मेरे बाप — दादा ने बिल्कुल हलाक कर डाला, उनके मांबूदों में कौन ऐसा निकला जो अपने लोगों को मेरे हाथ से बचा सका कि तुम्हारा मांबूद तुम को मेरे हाथ से बचा सकेगा? 15 फिर हिज़कियाह तुम को फ़ेरेब न देने पाए और न इस तौर पर बहकाए और न तुम उसका यकीन करो; क्यैकि किसी कौम या मुल्क का मांबूद अपने लोगों को मेरे हाथ से और मेरे बाप — दादा के हाथ से बचा नहीं सका, तो किनता कम तुम्हारा मांबूद तुम को मेरे हाथ से बचा सकेगा। 16 उसके नौकरों ने खुदावन्द खुदा के खिलाफ और उसके बन्दे हिज़कियाह के खिलाफ बहुत सी और बातें कहीं। 17 और उसने खुदावन्द इस्माइल के खुदा की बो‘इज़ज़ती करने और उसके हक्क में कुरुक बकरे के लिए, इस मज़मूर के खत भी लिये: “जैसे और मुल्कों की कौमों के मांबूदों ने अपने लोगों को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगा।” 18 और उन्होंने बड़ी आवाज से पुकार कर यहदियों की जबान में येस्शलेम के लोगों को जो दीवार पर थे यह बातें कह सुनाये ताकि उनको डाराँ और परेशान करें और शहर को ले लें। 19 उन्होंने येस्शलेम के खुदा का ज़िक्र ज़मीन की कौमों के मांबूदों की तरह किया, जो आदमी के हाथ की कारीगरी हैं। 20 इसी वजह से हिज़कियाह बादशाह और अप्सूर के बेटे यसायाह नवी ने दुआ की, और आसमान की तरफ चिल्लाए। 21 और खुदावन्द ने एक फ़रिश्ते को भेजा, जिसने शाह — ए — असूर के लक्षकर में सब ज़बरदस्त सूर्यीओं और रहनुमाओं और सरदारों को हलाक कर डाला। फिर वह शर्मिन्दा होकर अपने मुल्क को लौटा; और जब वह अपने मांबूद के बाबात खाना में गया तो उन ही ने जो उसके सल्लू से निकले थे, उसे वही तलवार से कत्ल किया। 22 यूँ खुदावन्द ने हिज़कियाह को और येस्शलेम के बाशिन्दों को शाह — ए — असूर सनहेरिब के हाथ से और सभों के हाथ से बचाया और हर तरफ उनकी रहनुमाई की। 23 और बहुत लोग येस्शलेम में खुदावन्द के लिए हिदिये और शाह — ए — यहदाह हिज़कियाह के लिए कीमती चीजें लाए, यहाँ तक कि वह उस वक्त से सब कौमों की नज़र में मुसाज़ हो गया। 24 उन दिनों में हिज़कियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के करीब हो गया, और उसने खुदावन्द से दुआ की तब उसने उससे बातें की और उसे एक निशान दिया। 25 लेकिन हिज़कियाह ने उस एहसान के लायक जो उस पर किया गया ‘अमल न किया, क्यैकि उसके दिल में धमण्ड समा गया; इसलिए उस पर, और यहदाह और येस्शलेम पर कहर भड़का। 26 तब हिज़कियाह और येस्शलेम के बाशिन्दों ने अपने दिल के गुरुर के बदले खाकसारी इक्तियार की, इसलिए हिज़कियाह के दिनों में खुदावन्द

का कहर उन पर नाज़िल न हुआ। 27 और हिज़कियाह की दौलत और ‘इज़ज़त बहुत फ़रावान थी और उसने चाँदी और सोने और जवाहर और मसाले और ढालों और सब तरह की कीमती चीजों के लिए खजाने 28 और अनाज और शराब और तेल के लिए अम्बारखाने, और सब क्रिस्म के जानवरों के लिए थान, और भेड़ — बकरियों के लिए बांडे बनाए। 29 इसके ‘अलावा उसने अपने लिए शहर बसाए और भेड़ बकरियों और गाय — बैलों को कसरत से मुहृश्या किया, क्यैकि खुदा ने उसे बहुत माल बछाया था। 30 इसी हिज़कियाह ने जैहन के पानी के ऊपर के सोते को बंद कर दिया, और उसे दाऊद के शहर के मारिब की तरफ सीधी पुँछाया, और हिज़कियाह अपने सारे काम में कामयाब हुआ। 31 तो भी बाबूल के हाकिमों के मुआमिले में, जिन्होंने अपने कासिद उसके पास भेजे ताकि उस मोजिजा का हाल जो उस मुल्क में किया गया था दरियाफ़त करें; खुदा ने उसे अज़माने के लिए छोड़ दिया, ताकि मालूम करे के उसके दिल में क्या है। 32 और हिज़कियाह के बाकी काम और उसके नेक आमाल आमूस के बेटे यसायाह नवी की ख़वाब में और यहदाह और इस्माइल के बादशाहों की किताब में लिया है। 33 और हिज़कियाह अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे बनी दाऊद की कंडों की चढ़ाई पर दम्पन किया, और सारे यहदाह और येस्शलेम के सब बाशिन्दों ने उसकी मौत पर उसकी ताजीमी की; और उसका बेटा मनस्सी उसकी जगह बादशाह हुआ।

33 मनस्सी बारह साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने

येस्शलेम में पचपन साल हुक्मत की। 2 उसने उन कौमों के नफरतअंगेज कामों के मुताबिक जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्माइल के आगे से हटा दिया था, वही किया जो खुदावन्द की नज़र में बुरा था। 3 क्यैकि उसने उन ऊंचे कमामों को, जिनको उसके बाप हिज़कियाह ने ढाया था, फिर बनाया और बालीम के लिए मज़बहे बनाए और यसीरते तैयार की और सारे आसमानी लक्षकर को सिज्दा किया और उनकी बाबादत की। 4 और उसने खुदा वन्द के घर में जिसके बारे में खुदावन्द ने फ़रमाया था कि मेरा नाम येस्शलेम में हमेशा रहेगा, मज़बहे बनाए; 5 और उसने खुदावन्द के घर के दोनों सहनों में, सारे आसमानी लक्षकर के लिए मज़बहे बनाए। 6 और उसने बिन हलूम की बादी में अपने फ़र्जन्दों को भी आग में चलवाया, और वह शगू मानता और जादू और अफ़सूर करता और बदर्स्खों के आशनाओं और जादूगों से ताउल्लुक रखता था। 7 उसने खुदावन्द की नज़र में बहुत बदकारी की, जिससे उसे एस्सा दिलाया; 7 और जो तराशी हड्डी मूरत उसने बनवाई थी उसको खुदा के घर में नस्ब किया, जिसके बारे में खुदा ने दाऊद और उसके बेटे सुलेमान से कहा था कि मैं इस घर में और येस्शलेम में जिसे मैंने बनी — इस्माइल के सब कबीलों में से चुन लिया है, अपना नाम हमेशा तक रखूँगा; 8 और मैं बनी — इस्माइल के पाँच को उस सरज़मीन से जो मैंने उनके बाप — दादा को ‘इनायत की है, फिर कभी नहीं हटाऊँगा बाशर्ते कि वह उन सब बातों को जो मैंने उनकी फ़रमाई, यानी उस सारी शरी’ अत और कानून और हुक्मों को जो मूसा के जरिए मिले, मानने की एहतियात रखें। 9 और मनस्सी ने यहदाह और येस्शलेम के बाशिन्दों को यहाँ तक गुप्तराह किया कि उन्होंने उन कौमों से भी ज़यादा बुरायी की, जिनको खुदावन्द ने बनी — इस्माइल के सामने से हलाक किया था। 10 और खुदा वन्द ने मनस्सी और उसके लोगों से बातें की लेकिन उन्होंने कुछ ध्यान न दिया। 11 इसलिए खुदावन्द उन पर शाह — ए — असूर के सिपह सालारों को चढ़ाया, जो मनस्सी को ज़ंजीरों से ज़कड़ कर और बेड़ियाँ डाल कर बाबूल को ले गए। 12 जब वह मुसीबत में पड़ा तो उसने खुदावन्द अपने खुदा से मिन्नत की और अपने बाप — दादा के खुदा के सामने बहुत खाकसार बना, 13 और उसने उससे दुआ की; तब उसने उसकी जगह बादशाह रखा।

ममलुकत में येस्सलेम को वापस लाया। तब मनस्सी ने जान लिया कि खुदा वन्द ही खुदा है। 14 इसके बाद उसने दाऊद के शहर के लिए जैहन के मारिब की तरफ वादी में मछली फाटक के मदरखल तक एक बाहर की दीवार उठाई, और 'ओफल को धेरा और उसे बहुत ऊँचा किया; और यहदाह के सब फसीलदार शहरों में बहादुर जंगी सरदार रखे। 15 और उसने अजनबी 'म'बदों को, और खुदावन्द के घर से उस मूरत को, और सब मजबहों को जो उसने खुदावन्द के घर के पहाड़ पर और येस्सलेम में बनवाए थे दूर किया और उनको शहर के बाहर फेंक दिया। 16 और उसने खुदावन्द के मजबह की मरम्मत की और उस पर सलामती के जबहों की और शुक्रगुजारी की कुबानियाँ अदा की और यहदाह को इसाईल के खुदावन्द अपने खुदा की इबादत का हक्म दिया। 17 तो भी लोग ऊँचे मकामों में कुबानी करते रहे, लेकिन सिर्फ खुदावन्द अपने खुदा के लिए। 18 और मनस्सी के बाकी काम और अपने खुदा से उसकी 'दु'आ, और उन गैबीनों की बातें जिन्होंने खुदावन्द इसाईल के खुदा के नाम से उसके साथ कलाम किया, वह सब इसाईल के बादशाहों के 'आ'माल के साथ लिखा है। 19 उसकी 'दु'आ और उसका कबूल होना, और उसकी खाकसारी से पहले की सब खाताएँ और उसकी बेईमानी और वह जगह जहाँ उसने ऊँचे मकाम बनवाये और यसीरतों और तराशी हुई मूरतें खड़ी की, यह सब बातें हज़ी की तारीख में कलतमबन्द हैं। 20 और मनस्सी अपने बाप — दादा के साथ सो गया, और उन्होंने उसे उसी के घर में दफन किया; और उसका बेटा अमून उसकी जगह बादशाह हुआ। 21 अमून बाइस साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने दो साल येस्सलेम में हुक्मत की। 22 और जो खुदावन्द की नज़र में भरा है वही उसने किया, जैसा उसके बाप मनस्सी ने किया था। और अमून ने उन सब तराशी हुई मूरतों के आगे जो उसके बाप मनस्सी ने बनवाई थी, कुबानियाँ की और उनकी इबादत की। 23 और वह खुदा वन्द के सामने खाकसार न बना, जैसा उसका बाप मनस्सी खाकसार बना था; बल्कि अमून ने गुनाह पर गुनाह किया। 24 तब उसके खादिमों ने उसके खिलाफ साज़िश की और उसी के घर में उसे मार डाला। 25 लेकिन अहल — ए — मूल्क ने उन सबको कत्ल किया जिन्होंने अमून बादशाह के खिलाफ साज़िश की थी, और अहल — ए — मूल्क ने उसके बेटे यूसियाह को उसकी जगह बादशाह बनाया।

34 यूसियाह आठ साल का था, जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने इकतीस साल येस्सलेम में हुक्मत की। 2 उसने वह काम किया जो खुदावन्द की नज़र में ठीक था, और अपने बाप दाऊद के गास्तों पर चला और दहने या बाँध हाथ को न मुड़ा। 3 क्यूंकि अपनी हुक्मत के आठवें साल जब वह लड़का ही था, वह अपने बाप दाऊद के खुदा का तालिब हुआ, और बारहवें साल में यहदाह और येस्सलेम को ऊँचे मकामों और यसीरतों और तराशे हुए बुतों और ढाली हुई मूरतों से पाक करने लगा। 4 और लोगों ने उसके सामने बालीम के मजबहों को ढा दिया, और सूरज की मूरतों को जो उनके ऊपर ऊँचे पर थी उसने काट डाला, और यासीरतों और तराशी हुई और ढाली हुई मूरतों को उसने टुकड़े टुकड़े करके उनको धूल बना दिया, और उसको उनकी कब्रों पर बिथराया जिन्होंने उनके लिए कुबानियाँ अदा की थी। 5 उसने उन काहिनों की हड्डियों उहरी के मजबहों पर जलाई, और यहदाह और येस्सलेम को पाक किया। 6 और मनस्सी और इस्फाईम और शमौन के शहरों में, बल्कि नफसाली तक उनके आस — पास खण्डों में उसने ऐसा ही किया, 7 और मजबहों को ढा दिया, और यसीरतों और तराशी हुई मूरतों को तोड़ कर धूल कर दिया, और इसाईल के पूरे मूल्क में सूरज की सब मूरतों को काट डाला, तब येस्सलेम को लोटा। 8 अपनी हुक्मत के अठारहवें बरस, जब वह मूल्क और हैकल को पाक कर चुका, तो उसने असलियाह के बेटे साफ़न को

और शहर के हाकिम मासियाह और यूआख मुवरिख को भेजा कि खुदावन्द अपने खुदा के घर की मरम्मत करें। 9 वह खिलकियाह सरदार काहिन के पास आए, और वह नकदी जो खुदा के घर में लाई गई थी जिसे दरबान लावियों ने मनस्सी और इस्फाईम और इसाईल के सब बाकी लोगों से और पूरे यहदाह और बिनयमीन और येस्सलेम के बाशिंदों से लेकर जमा' किया था, उसके सुरुद की। 10 और उन्होंने उसे उन कारिदों के हाथ में सौंपा जो खुदावन्द के घर की निगरानी करते थे, और उन कारिदों ने जो खुदावन्द के घर में काम करते थे उसे उस घर की मरम्मत और दुस्त करने में लगाया; 11 याँनी उसे बढ़दियों और राजनीति को दिया की गड़े हुए पथर और जोड़ों के लिए लकड़ी खरीदि, और उन घरों के लिए जिनको यहदाह के बादशाहों ने उजाड़ दिया था शहतीर बनाई। 12 वह आदमी दियानत से काम करते थे, और यहत और 'अबदियाह लावी जो बनी मिरारी में से थे उनकी निगरानी करते थे, और बनी किंहात में से ज़करियाह और मुसल्लाम काम करते थे, और लावियों में से वह लोग थे जो बाजों में माहिर थे। 13 और वह बाबरदारों के भी दारोगा थे और सब किस्म किस्म के काम करने वालों से काम करते थे, और मुश्शी और मुहतमिम और दरबान लावियों में से थे। 14 जब वह उस नकदी को जो खुदावन्द के घर में लाई गई थी निकाल रहे थे, तो खिलकियाह काहिन को खुदावन्द की तैरती की किताब, जो मूसा की ज़रिए' दी गई थी मिली। 15 तब खिलकियाह ने साफ़न मून्जी से कहा, "मैंने खुदा वन्द के घर में तैरती की किताब पाई है।" और खिलकियाह ने वह किताब साफ़न को दी। 16 और साफ़न वह किताब बादशाह के पास ले गया, फिर उसने बादशाह को यह बताया कि सब कुछ जो तू ने अपने नौकरों के सुरुद किया था, उसे वह कर रहे हैं। 17 और वह नकदी जो खुदावन्द के घर में मौजूद थी, उन्होंने लेकर नाजिरों और कारिदों के हाथ में सौंपी है। 18 फिर साफ़न मून्जी से कहा कि खिलकियाह काहिन ने मुझे यह किताब दी है। और साफ़न मून्जी ने बादशाह से कहा कि खिलकियाह काहिन ने मुझे यह किताब दी है। 19 और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने तैरती की बातें सुनी तो अपने कपड़े फाड़े। 20 फिर बादशाह ने खिलकियाह और अब्दीकाम बिन साफ़न और अबदून बिन मीकाह और साफ़न मून्जी और बादशाह के नौकर असायाह को यह हक्म दिया, 21 कि जाओ, और मेरी तरफ से और उन लोगों की तरफ से जो इस्फाईल और यहदाह में बाकी रह गए हैं, इस किताब की बातों के हक्क में जो मिली है खुदावन्द से पृछों; क्यूंकि खुदावन्द का कहर जो हम पर नाजिल हुआ है बड़ा है, इसलिए कि हमारे बाप — दादा ने खुदावन्द के कलाम को नहीं माना है कि सब कुछ जो इस किताब में लिखा है उसके मुताबिक करते। 22 तब खिलकियाह और वह जिनकी बादशाह ने हक्म किया था, खुल्दा नविया के पास जो तोशाखाने के दारोगा सलम बिन तोकहत बिन खसरा की बीबी थी गए। वह येस्सलेम में मिशना नामी महल्ले में रहती थी, इसलिए उन्होंने उससे वह बातें कही। 23 उसने उनसे कहा, खुदा वन्द इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है कि तुम उस शख्स से जिसने तुम को मेरे पास भेजा है कहो कि; 24 'खुदावन्द यूँ फरमाता है देख, मैं इस जगह पर और इसके बाशिंदों पर आफत लाऊँगा, याँनी सब लानें जो इस किताब में लिखी हैं जो उन्होंने शाह — ए — यहदाह के आगे पढ़ी है। 25 क्यूंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और गैर — म'बदों के आगे खुशबूज जलाई और अपने हाथों के सब कामों से मुझे गुस्सा दिलाया, तब मेरा कहर इस काम पर नाजिल हुआ है और धीमा न होगा। 26 रहा शाह — ए — यहदाह के आगे पढ़ी है। 25 क्यूंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और गैर — म'बदों के आगे खुशबूज जलाई और अपने हाथों के सब कामों से मुझे गुस्सा दिलाया, तब मेरा कहर इस काम पर नाजिल हुआ है और धीमा न होगा। 26 रहा शाह — ए — यहदाह जिसने तुम को खुदावन्द से दरियाफ़त करने को भेजा है, तब तुम उससे ऐसा कहना कि खुदावन्द इसाईल का खुदा ऐसा फरमाता है कि उन बातों के बारे में जो तू ने सुनी हैं, 27 'चूँकि तेरा दिल मोम हो गया, और तू ने खुदा के सामने आजिज़ी की जब तू ने उसकी वह बातें सुनी जो

उसने इस मकाम और इसके बाशिंदों के खुदावन्द कही है, और अपने को मेरे सामने खाकसार बनाया और अपने कपड़े फाड़ कर मेरे आगे रोया, इसलिए मैंने भी तेरी सुन ली है। खुदावन्द फरमाता है, 28 देख, मैं तुझे तेरे बाप — दादा के साथ मिलाऊँगा और तू अपनी कब्र में सलामती से पहुँचाया जाएगा, और सारी आफत को जो मैं इस मकाम और इसके बाशिंदों पर लाऊँगा तेरी आँखें नहीं देखेंगी।” इसलिए उन्होंने यह जवाब बादशाह को पहुँचा दिया। 29 तब बादशाह ने यहदाह और येस्शलेम के सब बुजुर्गों को बुलावा कर इक्षात किया। 30 और बादशाह और सब अहल — ए — यहदाह और येस्शलेम के बाशिंदे, काहिन और लाली और सब लोग क्या छोटे क्या बड़े, खुदावन्द के घर को गए और उसने जो ‘अहद की किंताब खुदावन्द के घर में मिली थी, उसकी सब बातें उनको पढ़ सनाई। 31 और बादशाह अपनी जगह खड़ा हआ, और खुदावन्द के आगे ‘अहद किया के वह खुदावन्द की पैरवी करेगा और उसके हक्मों और उसकी शाहदातों और कानून को अपने सारे दिल और सारी जान से मानेगा, ताकि उस ‘अहद की उन बातों को जो उस किंताब में लिखी थी पूरा करे। 32 और उसने उन सबको जो येस्शलेम और बिन्यमीन में जोूजूद थे, उस ‘अहद में शरीक किया; और येस्शलेम के बाशिंदों ने खुदा अपने बाप — दादा के खुदा के ‘अहद के मुताबिक ‘अमल किया। 33 और यूसियाह ने बनी — इसाईल के सब ‘इलाकों में से सब मक़स्तहात को दफा’ किया और जितने इसाईल में मिले उन सभों से ‘इबादत, यानी खुदा बन्द उनके खुदा की ‘इबादत, कराई और वह उसके जीती जी खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा की पैरवी से न हटे।

35 और यूसियाह ने येस्शलेम में खुदावन्द के लिए ईंट — ए — फसह की, और उन्होंने फसह को पहले महीने की चौदहवीं तारीख को जब्र किया। 2 उसने काहिनों को उनकी खिदमत पर मुकर्रर किया, और उनको खुदावन्द के घर की खिदमत की तराईब दी, 3 और उन लावियों से जो खुदावन्द के लिए पाक होकर तमाम इसाईल को तालीम देते थे कहा कि पाक सन्दूक को उस घर में, जिसे शाह — ए — इसाईल सुलेमान बिन दाऊद ने बनाया था रखो; आगे को तम्हारे कंधों पर कोई बोझ न होगा। इसलिए अब तम खुदावन्द अपने खुदा की और उसकी कौम इसाईल की खिदमत करो। 4 और अपने आबाई खानानों और फरीकों के मुताबिक जैसा शाह — ए — इसाईल दाऊद ने लिखा और जैसा उनके बेटे सुलेमान ने लिखा है, अपने आपको तैयार कर लो। 5 और तुम मक़दिस में अपने भाइयों यानी कौम के फर्जन्दों के आबाई खानानों की तकसीम के मुताबिक खड़े हो, ताकि उनमें से हर एक के लिए लावियों के किसी न किसी आबाई खानान की कोई शाख हो। 6 और फसह को जब्र करो, और खुदावन्द के कलाम के मुताबिक जो मूसा के जरिए मिला, ‘अमल करने के लिए अपने आपको पाक करके अपने भाइयों के लिए तैयार हो।’ 7 और यूसियाह ने लोगों के लिए जिनेव बहौं जोूजूद थे, रेबड़ों में से बर्बेर और हलवान सब के सब फसह की कुर्बानियों के लिए ईंट, जो गिनी में तीस हजार थे और तीन हजार बछड़े थे; यह सब बादशाही माल में से दिए गए। 8 और उसके सरदारों ने खुशी की कुर्बानी के तरों पर लोगों को और काहिनों को और लावियों को दिया। खिलकियाह और जकरियाह और यहीएल ने जो खुदा के घर के नाजिम थे, काहिनों को फसह की कुर्बानी के लिए दो हजार छः सौ बकरी और तीन सौ बैल दिए। 9 और कनानियाह ने भी और उसके भाइयों समायाह और नतनीएल ने, और हसबियाह और यईएल और यज्जबद ने जो लावियों के सरदार थे, लावियों को फसह की कुर्बानी के लिए पाँच हजार भेड़ बकरी और पाँच सौ बैल दिए। 10 ऐसी इबादत की तैयारी हुई, और बादशाह के हक्म के मुताबिक काहिन अपनी अपनी जगह पर और लाली अपने अपने फरीक के मुताबिक खड़े हुए। 11 उन्होंने फसह को जब्र किया, और काहिनों

ने उनके हाथ से खन लेकर छिड़का और लाली खाल खीचते गए। 12 फिर उन्होंने सोखतानी कुर्बानियाँ अलग कीं ताकि वह लोगों के आबाई खानानों की तकसीम के मुताबिक खुदावन्द के सामने पेश करने को उनको दें, जैसा मूसा की किंताब में लिखा है, और बैलों से भी उन्होंने ऐसा ही किया। 13 और उन्होंने दस्तर के मुताबिक फसह को आग पर भूना और पाक हड्डियों को देगों और हड्डों और कढ़ाइयों में पकाया और उनको जल्द लोगों को पहुँचा दिया। 14 इसके बाद उन्होंने अपने लिए और काहिनों के लिए तैयार किया, क्यूंकि काहिन यानी बनी हास्त सोखतानी कुर्बानियों और चबी के चढ़ाने में रात तक मशगूल रहे। इसलिए लावियों ने अपने लिए और काहिनों के लिए जो बनी हास्त थे तैयार किया। 15 और गानेवाले जो बनी आसफ थे, दाऊद और आसफ और हैमान और बादशाह के गैबीनी यदूतों के हक्म के मुताबिक अपनी अपनी जगह में थे, और हर दरवाजे पर दरबान थे। उनको अपना अपना काम छोड़ना न पड़ा, क्यूंकि उनके भाई लावियों ने उनके लिए तैयार किया। 16 इसलिए उसी दिन यूसियाह बादशाह के हक्म के मुताबिक फसह मानने और खुदावन्द के मजबूत पर सोखतानी कुर्बानियाँ पेश करने के लिए खुदावन्द की पूरी इबादत की तैयारी की गई। 17 और बनी — इसाईल ने जो हाजिर थे, फसह को उस वक्त और फरीरी रोटी की ‘ईद की सात दिन तक मनाया। 18 इसकी रह कोई फसह समूपल नबी के दिनों से इसाईल में नहीं मनाया गया था, और न शाहान — ए — इसाईल में से किसी ने ऐसी ईद फसह की जैसी यूसियाह और काहिनों और लावियों और सारे यहदाह और इसाईल ने जो हाजिर थे, और येस्शलेम के बाशिंदों ने की। 19 ये फसह यूसियाह की हक्मत के अठारहवें साल में मनाया गया। 20 इस सबके बाद जब यूसियाह हैकल को तैयार कर चुका, तो शाह — ए — मिस्र निकोह ने करकमीस से जो फ्रात के किनारे है, लड़ने के लिए चढ़ाई की ओर यूसियाह उसके मुकाबिला को निकला। 21 लेकिन उसने उसके पास कासिदों से कहला भेजा कि ऐ यहदाह के बादशाह, तुझ से मेरा क्या काम? मैं आज के दिन तुझ पर नहीं बल्कि उस खानान पर चढ़ाई कर रहा हूँ जिससे मेरी जंग है, और खुदा ने मुझ को जलदी करने का हक्म दिया है; इसलिए तू खुदा से जो मेरे साथ है मुजाहिम न हो, ऐसा न हो कि वह तुझे हल्लाक कर दे। 22 लेकिन यूसियाह ने उससे मूँह न मोड़ा, बल्कि उससे लड़ने के लिए अपना भेस बदला, और निकोह की बात जो खुदा के मूँह से निकली थी न मानी और मजिदों की बादी में लड़ने को गया। 23 और तीरअंदाजों ने यूसियाह बादशाह को तीर मारा, और बादशाह ने अपने नौकरों से कहा, “मुझे ते चलो, क्यूंकि मैं बहुत जरूरी हो गया हूँ।” 24 इसलिए उसके नौकरों ने उसे उस रथ पर से उतार कर उसके दूसरे रथ पर चढ़ाया, और उसे येस्शलेम को ले गए; और वह मर गया और अपने बाप — दादा की कब्रों में दफन हुआ, और सारे यहदाह और येस्शलेम ने यूसियाह के लिए मातम किया। 25 और यामियाह ने यूसियाह पर नौहा किया, और गानेवाले और गानेवालियाँ सब अपने मरियों में आज के दिन तक यूसियाह का जिक्र करते हैं। यह उन्होंने इसाईल में एक दस्तर बना दिया, और देखो वह बातें नौहों में लिखी हैं। 26 यूसियाह के बाकी काम, और जैसा खुदावन्द की शरीरी अत में लिखा है उसके मुताबिक उसके नेक आमाल, 27 और उसके काम, शुरू से आखिर तक इसाईल और यहदाह के बादशाहों की किंताब में लिखा है।

36 और मुल्क के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहआखज को उसके बाप की जगह येस्शलेम में बादशाह बनाया। 2 यहआखज तेईस साल का था जब वह हक्मत करने लगा; उसने तीन महीने येस्शलेम में हक्मत की। 3 और शाह — ए — मिस्र ने उसे येस्शलेम में तख्त से उतार दिया, और मुल्क पर सौ किन्तारा’ चबी और एक किन्तार सोना जुर्माना किया। 4 और शाह — ए — मिस्र ने उसके भाई इलियाकीम को यहदाह और येस्शलेम का बादशाह बनाया,

और उसका नाम बदलकर यहयकीम रखा; और निकोह उसके भाई यहूआखज्ज को पकड़कर मिस को ले गया। 5 यहयकीम पच्चीस साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने ग्यारह साल येस्शलेम में हुक्मत की। उसने वही किया जो खुदावन्द की नजर में बुरा था। 6 उस पर शाह — ए — बाबूल नबकदनजर ने चढ़ाई की और उसे बाबूल से जाने के लिए उसके बेडियाँ डातीं 7 और नबकदनजर खुदावन्द के घर के कुछ बर्तन भी बाबूल को ले गया और उनको बाबूल में अपने मन्दिर में रखवा, 8 यहयकीम के बाकी काम और उसके नफरतअंगेज 'आमाल, और जो कुछ उसमें पाया गया, वह इसाईल और यहदाह के बादशाहों की किताब में लिखा है, और उसका बेटा यहयाकीन उसकी जगह बादशाह हुआ। 9 यहयाकीन आठ साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने तीन महीने दस दिन येस्शलेम में हुक्मत की। उसने वही किया जो खुदावन्द की नजर में बुरा था। 10 और नए साल के शुरू होते ही नबकदनजर बादशाह ने उसे खुदावन्द के घर के नफीस बर्जनों के साथ बाबूल को बुलावा लिया, और उसके भाई सिदकियाह को यहदाह और येस्शलेम का बादशाह बनाया। 11 सिदकियाह इक्कीस साल का था जब वह हुक्मत करने लगा, और उसने ग्यारह साल येस्शलेम में हुक्मत की। 12 उसने वही किया जो खुदावन्द उसके खुदा की नजर में बुरा था। और उसने यरमियाह नबी के सामने जिसने खुदावन्द के मुँह की बातें उससे खुदा की कस्म खिलाई थीं, बगावत की बट्टिक वह गर्दनकश हो गया, और उसने अपना दिल ऐसा सञ्ज्ञ कर लिया कि खुदावन्द इसाईल के खुदा की तरफ न मुड़ा। 14 इसके 'अलावा काहिनों के सब सरदारों और लोगों ने और कौमों के सब नफरती कामों के मुताबिक बड़ी बदकारियाँ कीं, और उन्होंने खुदावन्द के घर को जिसे उसने येस्शलेम में पाक ठहराया था नापाक किया। 15 खुदावन्द उनके बाप — दादा के खुदा ने अपने पैगम्बरों को उनके पास बर बक्त भेज भेज कर पैमाम भेजा क्यूंकि उसे अपने लोगों और अपने घर पर तरस आता था; 16 लेकिन उन्होंने खुदा के पैगम्बरों को छठों में उड़ाया, और उसकी बातों को नचीज जाना और उसके नवियों की हँसी उड़ाई यहाँ तक कि खुदावन्द का गँजब अपने लोगों पर ऐसा भड़का कि कोई चारा न रहा। 17 चुनाँचे वह कसदियों के बादशाह को उन पर चढ़ा लाया, जिसने उनके मकदिस के घर में उनके जवानों को तलवार से कत्ल किया; और उसने क्या जवान मर्द क्या कुंवारी, क्या बड़ा या उम्र दराज, किसी पर तरस न खाया। उसने सबको उसके हाथ में दे दिया। 18 और खुदा के घर के सब बर्तन, क्या बड़े क्या छोटे, और खुदावन्द के घर के खजाने और बादशाह और उसके सरदारों के खजाने; यह सब वह बाबूल को ले गया। 19 और उन्होंने खुदा के घर को जला दिया, और येस्शलेम की फसील ढा ढी, और उसके सारे महल आग से जला दिए और उसके सब कीमती बर्तन को बर्बाद किया। 20 जो तलवार से बचे वह उनको बाबूल से ले गया, और वहाँ वह उसके और उसके बेटों के गुलाम रहे, जब तक फारस की हुक्मत शुरू' न हुई 21 ताकि खुदावन्द का वह कलाम जो यरमियाह की जबानी आया था पूरा हो कि मुल्क अपने सब्तों का आराम पा ले; क्यूंकि जब तक वह सुनसान पड़ा रहा तब तक, यानी सतर साल तक उसे सब्त का आराम मिला। 22 और शाह — ए — फारस खोरस की हुक्मत के पहले साल, इसलिए के खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह की जबानी आया था पूरा हो, खुदावन्द ने शाह — ए — फारस खोरस का दिल उभारा; तो उसने अपनी सारी ममलुकत में 'ऐलान करवाया और इस मजमून का फरमान भी लिखा कि: 23 शाह — ए — फारस खोरस ऐसा फरमाता है, 'खुदावन्द आसमान के खुदा ने जमीन की सब हुक्मतें मुझे बख्ती हैं, और उन्मुझ को ताकीद की है कि मैं येस्शलेम में, जो यहदाह में है उसके लिए एक घर

बनाऊँ; इसलिए तुम्हरे बीच जो कोई उसकी सारी कौम में से हो, खुदावन्द उसका खुदा उसके साथ हो और वह रवाना हो जाए।

एज्ञा

1 और शाह — ए — फारस खोरस की सल्तनत के पहले साल में इसलिए

कि खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह की जबानी आया था परा हआ, खुदावन्द ने शाह — ए — फारस खोरस का दिल उभारा, इसलिए उस ने अपने पूरे मुल्क में 'ऐलान कराया और इस मज़मून का फरमान लिखा कि । 2 शाह — ए — फारस खोरस यूँ फरमाता है कि खुदावन्द आसमान के खुदा ने जमीन की सब मुल्के मुझे बछड़ी हैं, और मुझे तकीद की है कि मैं येस्शलेम में जो यहदाह में है उसके लिए एक घर बनाऊँ । 3 तब तुहरे बीच जो कोई उसकी सारी कौपीं में से हो उसका खुदा उसके साथ हो और वह येस्शलेम को जो यहदाह में है जाए, और खुदावन्द इसाईंल के खुदा का घर जो येस्शलेम में है, बनाए खुदा वही है, 4 और जो कोई किसी जगह जहाँ उसने कथाम किया बाकी रहा हो तो उसी जगह के लोग चाँदी और सोने और माल मवेशी से उसकी मदद करें, और 'अलावा इसके वह खुदा के घर के लिए जो येस्शलेम में है खुशी के हृदिये हैं । 5 तब यहदाह और बिन्यमीन के आबाई खानदानों के सरदार और काहिन और लावी और वह सब जिनके दिल को खुदा ने उभारा, उठे कि जाकर खुदावन्द का घर जो येस्शलेम में है बनाए, 6 और उन सभों ने जो उनके पडोस में थे, 'अलावा उन सब चीजों के जो खुशी से ती गई, चाँदी के बर्तनों और सोने और सामान और मवाशी और कीमती चीजों से उनकी मदद की । 7 और खोरस बादशाह ने भी खुदावन्द के घर के उन बर्तनों को निकलवाया जिनको नबूकदनजर येस्शलेम से ले आया था और अपने मांडूदों के इबादत खाने में रखा था । 8 इन ही को शाह — ए — फारस खोरस ने खजान्ची मिप्रदात के हाथ से निकलवाया, और उनको गिनकर यहदाह के अमीर शेसबज्जर को दिया । 9 और उनकी पिनती ये है: सोने की तीस थालियाँ, और चाँदी की हजार थालियाँ और उनतीस छुरियाँ । 10 और सोने के तीस प्याते, और चाँदी के दूसरी किस्म के चार सौ दस प्याते और, और किस्म के बर्तन एक हजार । 11 सोने और चाँदी की कुल बर्तन पाँच हजार चार सौ थे । शेसबज्जर इन सभों को, जब गुलामी के लोग बाबुल से येस्शलेम को पहुँचाए गए, ले आया ।

2 मुल्क के जिन लोगों को शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर बाबुल को ले

गया था, उन शुलामों की गुलामी में से वह जो निकल आए और येस्शलेम और यहदाह में अपने अपने शहर को वापस आए थे हैं: 2 वह जस्ल्बाबुल, यशूअ, नहमियाह, सिरायाह, रालायाह, मर्की, बिलशान, मिसफार, विगवई, रहम और बाना के साथ आए । इसाईंली कौम के आदमियों का ये शमार हैं । 3 बनी पर'ऊस, दो हजार एक सौ बहतर; 4 बनी सफतियाह, तीन सौ बहतर; 5 बनी अरख, सात सौ पिच्छतर; 6 बनी परखतमोआब, जो यशूअ और यूआब की औलाद में से थे, दो हजार आठ सौ बारह; 7 बनी 'ऐलाम, एक हजार दो सौ चब्बन, 8 बनी जतू, नौ सौ पैतलीस; 9 बनी ज़क़की, सात सौ साठ 10 बनी बानी, छ: सौ बयालीस; 11 बनी बरबई, छ: सौ तेईस; 12 बनी 'अज़जाद, एक हजार दो सौ बाईंस 13 बनी अदुनिकाम छ: सौ छियासठ: 14 बनी बिगवई, दो हजार छप्पन; 15 बनी 'अदीन, चार सौ चब्बन, 16 बनी अतीर, हिजकियाह के घराने के अठानवे 17 बनी बजई, तीन सौ तेर्स; 18 बनी यूह, एक सौ बारह; 19 बनी हाशम, दो सौ तेर्स; 20 बनी जिब्बार, पच्चानवे, 21 बनी बैतलहम, एक सौ तेर्स, 22 अहल — ए — नतूफा, छप्पन: 23 अहल — ए — 'अतोत, एक सौ अष्टाईस; 24 बनी 'अज़मावत, बयालीस; 25 करयत — 'अरीम और कफ़ार और बैरोत के लोग, सात सौ तैतलीस, 26 रामा और जिबा के लोग, छ: सौ इक्कीस, 27 अहल — ए — मिकमास, एक सौ बाईंस; 28 बैतएल और एँके के लोग, दो सौ तेर्स; 29 बनी नब्ब बाबन, 30 बनी मजबीस,

एक सौ छप्पन; 31 दूसरे 'ऐलाम की औलाद, एक हजार दो सौ चब्बन; 32 बनी हारेम, तीन सौ बीस; 33 लद और हादीद और ओनू की औलाद सात सौ पच्चीस: 34 यरीह के लोग, तीन सौ पैतलीस; 35 सनाआह के लोग, तीन हजार छ: सौ तीस। 36 फिर काहिनों यानी यशूअ के खानदान में से: यदा'याह की औलाद, नौ सौ तिहतर; 37 बनी इमेर, एक हजार बाबन; 38 बनी फशहर, एक हजार दो सौ पैतलीस; 39 बनी हारिम, एक हजार सब्रह। 40 लावियों यानी हडावियाह की नस्ल में से यशूअ और कदमीएल की औलाद, चौहतर, 41 गोनेवालों में से बनी आसफ, एक सौ अष्टाईस; 42 दरबानों की नस्ल में से बनी सलम, बनी अतीर, बनी तलमून, बनी 'अक्कोब, बनी खतीरा, बनी सोबै सब मिल कर, एक सौ उन्नालीस। 43 और ननीनीम में से बनी ज़िहा, बनी हस्फ़ा, बनी तब'ऊत, 44 बनी करस्स, बनी सीहा, बनी फदून, 45 बनी लिबाना, बनी हजाबा, बनी 'अवक्कब, 46 बनी हजाब, बनी शमलै, बनी हनान, 47 बनी जिदेल, बनी हजर, बनी रआयाह, 48 बनी रसीन, बनी नक्कदा बनी जज्जाम, 49 बनी 'उज्जा, बनी फासेख, बनी बसैई, 50 बनी असनाह, बनी म'ओनीम, बनी नफीसीम, 51 बनी बकबोक, बनी हक्का, बनी हरहर, 52 बनी बजलतू, बनी महीदा, बनी हरशा, 53 बनी बरकूस, बनी सीसिरा, बनी ताम्ह, 54 बनी नज्याह, बनी खतीफा। 55 सुलेमान के खादिमों की औलाद बनी सूरी बनी हस्फिरत बनी फस्टा: 56 बनी याला, बनी दरकून, बनी जिदेल, 57 बनी सफतियाह, बनी खिरेल, बनी फूकरत जबाइम, बनी अमी। 58 सब ननीनीम और सुलेमान के खादिमों की औलाद तीन सौ बाबने। 59 और जो लोग तल — मिलह और तल — हरसा और कस्ब और अदान और अमीर से गए थे, वह ये हैं; लेकिन ये लोग अपने अपने आबाई खानदान और नस्ल का पता नहीं दे सके कि इसाईंल के हैं या नहीं: 60 यानी बनी दिलायाह, बनी तूवियाह, बनी नक्कदा छ: सौ बाबन। 61 और काहिनों की औलाद में से बनी हबायाह, बनी हक्स, बनी बरजिल्लती जिसने जिल 'आदी बरजिल्लती की बेटियों में से एक को ब्याह लिया और उनके नाम से कहलाया 62 उन्होंने अपनी सनद उनके बीच जो नसबनामों के मुताबिक गिने गए थे ढूँडी लेकिन न पाई, इसलिए वह नापाक समझे गए और कहानत से खारिज हुए; 63 और हाकिम ने उनसे कहा कि जब तक कोई काहिन ऊरीम — ओ — तमीम लिए हुए न उठे, तब तक वह पाक तरीन चीजों में से न खाएँ । 64 सारी जामा'अत मिल कर बयालीस हजार तीन सौ साठ की थी। 65 इनके 'अलावा उनके शुलामों और लौंडियों का शमार सात हजार तीन सौ सैतीस था, और उनके साथ दो सौ गानेवाले और गानेवालियाँ थीं। 66 उनके घोड़े, सात सौ छतीस; उनके खच्चर, दो सौ पैतलीस; 67 उनके ऊंट, चार सौ पैतीस और उनके गधे, छ: हजार सात सौ बीस थे। 68 और आबाई खानदानों के कुछ सरदारों ने जब वह खुदावन्द के घर में जो येस्शलेम में है आए, तो खुशी से खुदा के मस्कन के लिए हृदिये दिए, ताकि वह फिर अपनी जगह पर तामीर किया जाए। 69 उन्होंने अपने ताकत के मुताबिक काम के खजाना में सोने के इक्सठ हजार दिरहम और चाँदी के पाँच हजार मनहाँ और काहिनों के एक सौ लिबास दिए। 70 इसलिए काहिन, और लावी, और कुछ लोग, और गानेवाले और दरबान, और ननीनीम अपने अपने शहर में और सब इसाईंली अपने अपने शहर में बस गए।

3 जब सातवाँ महीना आया, और बनी इसाईंल अपने अपने शहर में बस गए

तो लोग यक्तन होकर येस्शलेम में इकट्ठे हुए। 2 तब यशूअ बिन यसदक और उसके भाई जो काहिन थे, और जस्ल्बाबुल बिन सियालतिएल और उसके भाई उठ खड़े हुए और उन्होंने इसाईंल के खुदा का मजबूह बनाया ताकि उस पर सोखतनी कुर्बानियाँ चढ़ाएँ जैसा मर्द — ए — खुदा मूसा की शरी'अत में लिखा है। 3 और उन्होंने मजबूह को उसकी जगह पर रखा, क्यूँकि उन

अतराफ की कौपों की वजह से उनको खौफ रहा; और वह उस पर खुदावन्द के लिए सोखतनी कुर्बानियाँ याँनी सुबह और शाम की सोखतनी कुर्बानियाँ पेश करने लगे। 4 और उन्होंने लिखे हुए के मुताबिक खैमों की 'ईद मनाई, और रोज़ की सोखतनी कुर्बानियाँ गिन पिन कर जैसा जिस दिन का फर्ज था, दस्तूर के मुताबिक पेश की: 5 उसके बाद दाइमी सोखतनी कुर्बानी, और नये चाँद की, और खुदावन्द की उन सब मुकररा 'ईदों की जो मुकद्दस ठहराई गई थीं, और हर शरख़ की तरफ से ऐसी कुर्बानियाँ पेश की जो रजा की कुर्बानी खुशी से खुदावन्द के लिए अदा करता था। 6 सातवें महीने की पहली तारीख से वह खुदावन्द के लिए सोखतनी कुर्बानियाँ पेश करने लगे। लेकिन खुदावन्द की हैकल की बुनियाद अभी तक डाली न गई थी। 7 और उन्होंने मिलियों और बढ़ियों को नकटी दी, और सैदामियों और सूरीयों को खाना — पीना और तेल दिया, ताकि वह देवदार के लाए लुबनान से याफा को समन्दर की राह से लाएँ, जैसा उनको शाह — ए — फारस खोरस से परवाना मिला था। 8 फिर उनके खुदा के घर में जो येस्शलेम में है आ पहुँचें केवा'द, दूसरे बरस के दूसरे महीने में, ज़स्त्वाबुल बिन सियालतिएल और यश़'अ बिन यूसदक ने, और उनके बाकी भाई कहिनों और लवियों और सभों ने जो शुलामी से लैट का येस्शलेम को आए थे काम शुरू किया और लावियों को जो बीस बरस के और उससे ऊपर थे मुकर्रर किया कि खुदावन्द के घर के काम की निगरानी करें। 9 तब यश़'अ और उसके बेटे और भाई, और कदमील और उसके बेटे जो यहदाह की नसल से थे, मिल कर उठे कि खुदा के घर में करीगरों की निगरानी करें; और बनी हनदाद भी और उनके बेटे और भाई जो लावी थे उनके साथ थे। 10 इसलिए जब मिस्त्री खुदावन्द की हैकल की बुनियाद डालने लगे, तो उन्होंने कहिनों को अपने अपने लिबास पहने और नरसिंगे लिए हुए और आसफ़ की नसल के लावियों को ज़ाँझ लिए हुए खड़ा किया, कि शाह — ए — इसाईल दाकद की तरतीब के मुताबिक खुदावन्द की हम्मद करें। 11 इसलिए वह एक हो कर बारी — बारी से खुदावन्द की तारीफ़ और शुक्रजुली में गा — गा कर कहने लगे कि वह भला है, क्योंकि उसकी रहमत हमेशा इस्माईल पर है। जब वह खुदावन्द की तारीफ़ कर रहे थे, तो सब लोगों ने बलन्द आवाज़ से नरा मारा, इसलिए कि खुदावन्द के घर की बुनियाद पड़ी थी। 12 लेकिन कहिनों और लावियों और आबाई खानदानों के सरदारों में से बहुत से उम्र दराज लोग, जिन्होंने पहले घर को देखा था, उस बक्त जब इस घर की बुनियाद उनकी आँखों के सामने डाली गई, तो बड़ी आवाज़ से जोर से रोने लगे; और बहुत से खुशी के मारे जोर जोर से ललकारे। 13 इसलिए लोग खुशी की आवाज़ के शोर और लोगों के रोने की आवाज़ में फ़र्क न कर सके, क्योंकि लोग बुलन्द आवाज़ से नरे मार रहे थे, और आवाज़ दूर तक सुनाई देती थी।

4 जब यहदाह और बिनयमीन के दुश्मनों ने सुना कि वह जो गुलाम हुए थे, खुदावन्द इस्माईल के खुदा के लिए हैकल को बना रहे हैं; 2 तो वह ज़स्त्वाबुल और आबाई क़बीलों के सरदारों के पास आकर उससे कहने लगे कि हम को भी अपने साथ बनाने दो; क्योंकि हम भी तुहारे खुदा के तालिके हैं जैसे तुम हो, और हम शाह — ए — असूर असरहून के दिनों से जो हम को यहाँ लाया, उसके लिए कुर्बानी पेश करते हैं। 3 तोकिन ज़स्त्वाबुल और यश़'अ और इस्माईल के आबाई खानदानों के बाकी सरदारों ने उनसे कहा कि तुम्हारा काम नहीं, कि हमारे साथ हमरे खुदा के लिए घर बनाओ, बल्कि हम खुद ही मिल कर खुदावन्द इस्माईल के खुदा के लिए उसे बनाएँगे, जैसा शाह — ए — फारस खोरस ने हम को हक्म किया है। 4 तब मुल्क के लोग यहदाह के लोगों की मुखालिफ़त करने और बनाते बक्त उनको तकलीफ़ देने लगे। 5 और शाह — ए — फारस खोरस के जीते जी, बल्कि शाह — ए — फारस दारा की सल्तनत

तक उनके मकसदों को रद करने के लिए उनके खिलाफ़ सलाहकारों को उजरत देते रहे। 6 और अरब्स्यारस के हृक्मत के ज़माने, याँनी उसकी सल्तनत के शुरू' में उन्होंने यहदाह और येस्शलेम के बाशिन्दों की शिकायत लिख भेजी। 7 फिर अरतखशशता के दिनों में बिशलाम और मित्रदात और ताबिएल और उसके बाकी साथियों ने शाह — ए — फारस अरतखशशता को लिखा। उनका खत अरामी हुफ़ और अरामी जबान में लिखा था। 8 रहम दीवान और शम्सी मुश्ती ने अरतखशशता बादशाह को येस्शलेम के खिलाफ़ खुत लिखा। 9 इसलिए रहम दीवान और शम्सी मुश्ती और उनके बाकी साथियों ने जो दीना और अफ़क़र — सतका और तरफ़ीला और फारस और अरक और बाबुल और सोसन और दिह और ऐलाम के थे, 10 और बाकी उन कौपों ने जिनको उस बुजुर्जी — ओ — शरीफ़ असनमफ़ ने पार लाकर शहर — ए — सामरिया और दरिया के इस पार के बाकी 'इल्कों में बसाया था, बौरा बौरा इसको लिखा। 11 उस खत की नकल जो उन्होंने अरतखशशता बादशाह के पास भेजा। ये हैं: “आपके गुलाम, याँनी वह लोग जो दरिया पार रहते हैं, बौरा। 12 बादशाह को मालूम हो कि यहदी लोग जो हज़र के पास से हमारे बीच येस्शलेम में आए हैं, वह उस बारी और फसादी शहर को बना रहे हैं; चुनांचे दीवारों को खत्म और बुनियादों की मरम्मत कर चुके हैं। 13 इसलिए बादशाह को मालूम हो जाए कि अगर ये शहर बन जाए और फसील तैयार हो जाए, तो वह खिराज चुंगी, या महसूल नहीं देंगे और आखिर बादशाहों को नुकसान होगा। 14 इसलिए चैकि हम हज़र के दौलतखाने का नमक खाते हैं और मुनासिब नहीं कि हमारे सामने बादशाह की तहकीर हो, इसलिए हम ने लिखकर बादशाह को खबर दी है। 15 ताकि हज़र के बाप — दादा के दफ़तर की किंतव से मालूम की जाए, तो उस दफ़तर की किंतव से हज़र को मालूम होगा और यकीन हो जाएगा कि ये शहर फितना अंगोज है जो बादशाहों और सभों को नुकसान पहुँचाता रहा है, और पुने जमाने से उसमें फसाद खड़ा करते रहे हैं। इसी वजह से ये शहर उजाड़ दिया गया था। 16 और हम बादशाह को यकीन दिलाते हैं कि अगर ये शहर तामीर हो और इसकी फसील बन जाए, तो इस स्रत में हज़र का हिस्सा दरिया पार कुछ न रहेगा।” 17 तब बादशाह ने रहम दीवान और शम्सी मुश्ती और उनके बाकी साथियों को, जो सामरिया और दरिया पार के बाकी मुल्क में रहते हैं यह जबाब भेजा कि “सलाम बौरा। 18 जो खत तुम ने हमारे पास भेजा, वह मेरे सामने साफ़ साफ़ पढ़ा गया। 19 और मैंने हुक्म दिया और मालूमात की गयी, और मालूम हुआ कि इस शहर ने पुराने जमाने से बादशाहों से बागवत की है, और फितना और फसाद उसमें होता रहा है। 20 और येस्शलेम में ताकतवर बादशाह भी हुए हैं जिन्होंने दरिया पार के सारे मुल्क पर हृक्मत की है, और खिराज, चुंगी और महसूल उनको दिया जाता था। 21 इसलिए तुम हक्म जारी करो कि ये लोग काम बन्द करें और ये शहर न बने, जब तक मेरी तरफ से फरमान जारी न हों। 22 खबरदार, इसमें सुस्ती न करना; बादशाहों के नुकसान के लिए खराबी क्यूँ बढ़ने पाए?” 23 इसलिए जब अरतखशशता बादशाह के खत की नकल रहम और शम्सी मुश्ती और उनके साथियों के सामने पढ़ी गई, तो वह जल्द यहदियों के पास येस्शलेम को गए, और अपनी ताकत से उनको रोक दिया। 24 तब खुदा के घर को जो येस्शलेम में है काम बन्द हआ, और शाह — ए — फारस दारा की सल्तनत के दूसरे बरस तक बन्द रहा।

5 फिर नवी याँनी हज़ज नवी और जकरियाह बिन 'इ़दून यहदियों के सामने जो यहदाह और येस्शलेम में थे, नवुव्वत करने लगे; उन्होंने इस्माईल के खुदा के नाम से उनके सामने नवुव्वत की। 2 तब ज़स्त्वाबुल बिन सियालतिएल और यश़'अ बिन यूसदक उठे, और खुदा के घर को जो येस्शलेम में है बनाने लगे; और खुदा के वह नवी उनके साथ होकर उनकी मदद करते थे। 3 उन्हीं

दिनों दरिया पार का हाकिम, तत्तने और शतर — बोजने और उनके साथी उनके पास आकर उनसे कहने लगे कि किसके फरमान से तम इस घर को बनाते, और इस फसील को पूरा करते हो? 4 तब हम ने उनसे इस तरह कहा कि उन लोगों के क्या नाम हैं, जो इस 'इमारत को बना रहे हैं? 5 लेकिन यहदियों के बुजुर्गों पर उनके खुदा की नजर थी; इसलिए उन्होंने उनको न रोका जब तक कि वह मुआमिला दरार तक न पहुँचा, और फिर इसके बारे में खत के जरिए से जवाब न आया। 6 उस खत की नकल जो दरिया पार के हाकिम तत्तने और शतर — बोजने और उसके अफारसकी साथियों ने जो दरिया पार थे, दरार बादशाह को भेजा, 7 उन्होंने उसके पास एक खत भेजा जिसमें यूं लिखा था: "दरार बादशाह की हर तरह सलामती हो! 8 बादशाह को मालूम हो कि हम यहदाह के सूबा में खुदा — ए — ताला के घर को गए; वह बड़े बड़े पत्थरों से बन रहा है और दीवारों पर कड़ियाँ धरी जा रही हैं, और काम खब मेहनत से हो रहा है और उनके हाथों तरक्की पा रहा है। 9 तब हम ने उन बुजुर्गों से सवाल किया और उसे यूँ कहा, 'कि तुम किस के फरमान से इस घर को बनाते, और इस दीवार को पूरा करते हो? 10 और हम ने उनके नाम भी पछे, ताकि हम उन लोगों के नाम लिख कर हज़र को खबर दें कि उनके सरदार कौन है। 11 और उन्होंने हम को यूँ ज़बाब दिया कि हम ज़मीन — ओ — आसमान के खुदा के बने हैं, और वही घर बना रहे हैं जिसे बने बहुत बरस हए, और जिसे इसाईल के एक बड़े बादशाह ने बना कर तैयार किया था। 12 लेकिन जब हमारे बाप — दादा ने आसमान के खुदा को गुस्सा दिलाया, तो उसने उनको शाह — ए — बाबूल नबकदनजर कसदी के हाथ में कर दिया; जिसने इस घर को उजाड़ दिया, और लोगों को बाबूल को ले गया। 13 लेकिन शाह — ए — बाबूल खोरस के पहले साल खोरस बादशाह ने हृकम दिया कि खुदा का ये घर बनाया जाए। 14 और खुदा के घर के सोने और चाँदी के बर्तनों को भी, जिनको नबूकदनजर येस्सलेम की हैकल से निकाल कर बाबूल के इबादत गाह में ले आया था, उनको खोरस बादशाह ने बाबूल के इबादत गाह से निकाला और उनको शेसबज्जर जारी एक शरबत को जिसे उसने हाकिम बनाया था सौंप दिया, 15 और उससे कहा कि इन बर्तनों को ले और जा, और इनको येस्सलेम की हैकल में रख, और खुदा का मस्कन अपनी जगह पर बनाया जाए। 16 तब उसी शेसबज्जर ने आकर खुदा के घर की जो येस्सलेम में है बुनियाद डाली; और उस बक्त से अब तक ये बन रहा है, लेकिन अभी तैयार नहीं हुआ। 17 इसलिए अब अगर बादशाह मुनासिब जाने, तो बादशाह के दौलतखाने में जो बाबूल में है, मालूमत की जाए कि खोरस बादशाह ने खुदा के इस घर को येस्सलेम में बनाने का हृकम दिया था या नहीं। और इस मुआमिले में बादशाह अपनी मर्जी हम पर जाहिर करो।"

6 तब दारा बादशाह के हृकम से बाबूल के उस तवारीखी कुत्तुखाने में जिसमें खजाने धरे थे, मालूमत की गई। 2 चुनाँचें अखमता के महल में जो मार्द के सूबे में वाके हैं, एक तूपार मिला जिसमें ये हृकम लिखा हुआ था: 3 "खोरस बादशाह के पहले साल खोरस बादशाह ने खुदा के घर के बारे में जो येस्सलेम में है हृकम किया, कि वह घर याँनी वह मकाम जहाँ कुबानियां करते हैं बनाया जाए और उसकी बुनियादें मज़बूती से डाली जाएँ। उसकी ऊँचाई साठ हाथ और चौड़ाई साठ हाथ हो, 4 तीन रें भारी पत्थरों के और एक रद्दा नई लकड़ी का हो; और खर्च शाही महल से दिया जाए। 5 और खुदा के घर के सोने और चाँदी के बर्तन भी, जिनको नबकदनजर उस हैकल से जो येस्सलेम में है निकालकर बाबूल को लाया, वापस दिए जाएँ और येस्सलेम की हैकल में अपनी अपनी जगह पहुँचाए जाएँ, और तू उनको खुदा के घर में रख देना।" 6 इसलिए तू ऐ दरिया पार के हाकिम, तत्तने और शतर — बोजने और तुम्हरे अफारसकी

साथी जो दरिया पार हैं तुम वहाँ से दूर रहो। 7 खुदा के इस घर के काम में दखलअन्दाजी न करो। यहदियों का हाकिम और यहदियों के बुजुर्ग खुदा के घर को उनकी जगह पर तामीर करें। 8 'अलावा इसके खुदा के इस घर के बनाने में यहदियों के बुजुर्गों के साथ तुम को क्या करना है, इसलिए उसके बारे में मेरा ये हकम है कि शाही माल में से, याँनी दरिया पार के खिराज में से उन लोगों को बिला दें ताकि उनको झन्ना न पड़े। 9 और आसमान के खुदा की सोलहनी कुबानियों के लिए जिस चीज़ की उनकी ज़स्तर हो — याँनी बछड़े और मेंडे और हलबान और जिनां गेंहूँ और नमक और मय और तेल, वह काहिन जो येस्सलेम में हैं बताएँ, वह सब बिला — नागा रोज — ब — रोज उनको दिया जाए; 10 ताकि वह आसमान के खुदा के हज़र राहत अंगूज कुबानियाँ पेश करें और बादशाह और शहजादों की उम्र दराजी के लिए दुआ करें। 11 मैंने ये हृकम भी दिया है, कि जो शब्स इस फरमान को बदल दे, उसके घर में से कड़ी निकाली जाए और उसे उसी पर चढ़ाकर सली दी जाए, और इस बात की वजह से उसका घर कूड़ाखाना बना दिया जाए। 12 और वह खुदा जिसने अपना नाम वहाँ रखा है, सब बादशाहों और लोगों को जो खुदा के उस घर को जो येस्सलेम में है, ढाने की गरज से इस हृकम को बदलने के लिए अपना हाथ बढ़ाएँ, गारत करें। मुझ दारा ने हृकम दे दिया, इस पर बड़ी कोशिश से 'अमल हो। 13 तब दरिया पार के हाकिम, तत्तने और शतर — बोजने, और उनके साथियों ने दारा बादशाह के फरमान भेजने की वजह से बिना देर किये हुए उसके मुताबिक 'अमल किया। 14 तब यहदियों के बुजुर्ग, हज़ै नबी और जकरियाह बिन इँद की नबूवत की वजह से, तामीर करते और कामयाब होते रहे। उन्होंने इसाईल के खुदा के हृकम, और खोरस और दारा, और शाह — ए — फारस अतरखशशत के हृकम के मुताबिक उसे बनाया और पूरा किया। 15 इसलिए ये घर अदार के महीने की तीसीरी तारीख में, दारा बादशाह की सलतनत के छठे बरस पूरा हुआ। 16 और बनी — इसाईल, और काहिनों और लावियों और गुलामी के बाकी लोगों ने खुशी के साथ खुदा के इस घर की हमद की। 17 और उन्होंने खुदा के इस घर की तकदीस के मौके पर सौ बैल और दो सौ मैंडे और चार सौ बर्त, और सारे इसाईल की खता की कुबानी के लिए इसाईल के कबीलों के शुमार के मुताबिक बारह बकरे पेश किये। 18 और जैसा मूसा की किताब में लिखा है, उन्होंने काहिनों की उनकी तक्सीम, और लावियों को उनके फरीकों के मुताबिक, खुदा की इबादत के लिए जो येस्सलेम में होती है मुकर्रर किया। 19 और पहले महीने की चौदहवीं तारीख को उन लोगों ने जो गुलामी से आए थे 'ईंद — ए — फसह मनाईः 20 क्यौंकि काहिनों और लावियों ने यकतन होकर अपने आपको पाक किया था, वह सबके सब पाक थे, और उन्होंने उन सब लोगों के लिए जो गुलामी से आए थे, और अपने भाई काहिनों के लिए और अपने वास्ते फसह को ज़बह किया। 21 और बनी — इसाईल ने जो गुलामी से लौटे थे, और उन सभों ने जो खुदावन्द इसाईल के खुदा के तालिब होने के लिए उस सरजमीन की अजनबी कौमों की नापाकियों से अलग हो गए थे, फसह खाया, 22 और खुशी के साथ सात दिन तक फतीरी रोटी की 'ईंद मनाई, क्यौंकि खुदावन्द ने उनको खुश किया था, और शाह — ए — असूर के दिल को उनकी तरफ मोड़ा था ताकि वह खुदा याँनी इसाईल के खुदा के घर के बनाने में उनकी मदद करें।

7 इन बातों के बाद शाह — ए — फारस अतरखशशत के दौर — ए — हृकम में खुदा के तालिब होने के लिए उस सरजमीन की अजनबी कौमों की नापाकियों से अलग हो गए थे, फसह खाया, 22 और खुशी के साथ सात दिन तक फतीरी रोटी की 'ईंद मनाई, क्यौंकि खुदावन्द ने उनको खुश किया था, और शाह — ए — असूर के दिल को उनकी तरफ मोड़ा था ताकि वह खुदा याँनी फौन्हास बिन इर्ली एलियाजर बिन हास्तन सरदार काहिन। 6 यहीं 'एज़ा बाबूल से

गया और वह मूसा की शरी'अत में, जिसे खुदावन्द इसाईल के खुदा ने दिया था, माहिर 'आलिम था; और चैंकि खुदावन्द उसके खुदा का हाथ उस पर था, बादशाह ने उसकी सब दरबारास्ते मन्जर की। 7 और बनी — इसाईल और कहिनों और लावियों और गाने वालों और दरबारों नतीनीम में से कुछ लोग, अरतखशशता बादशाह के सातवें साल येस्शलेम में आए। 8 और वह बादशाह की हक्मत के सातवें बरस के पांचवें महीने येस्शलेम में पहुंचा। 9 क्यौंकि पहले महीने की पहली तारीख को तो बाबुल से चला और पांचवें महीने की पहली तारीख को येस्शलेम में आ पहुंचा। क्यौंकि उसके खुदा की शफकत का हाथ उत्परथा। 10 इसलिए कि 'एजा आमादा हो गया था कि खुदावन्द की शरी'अत का तालिब हो, और उस पर 'अमल करे और इसाईल में आईन और अहकाम की तालीम दे। 11 और एजा काहिन और 'आलिम, या'नी खुदावन्द के इसाईल को दिए हुए अहकाम और आईन की बातों के 'आलिम को जो खत अरतखशशता बादशाह ने 'इनायत किया, उसकी नकल थी। 12 "अरतखशशता शहंशाह की तरफ से एजा काहिन, या'नी आसमान के खुदा की शरी'अत के 'आलिम — ए — कामिल बौरा बौरा को। 13 मैं ये फरमान जारी करता हूँ कि इसाईल के जो लोग और उनके काहिन और लाली में मूल्क मैं हूँ, उनमें से जिनने अपनी खुशी से येस्शलेम को जाना चाहते हैं तो साथ जाएँ। 14 चैंकि त बादशाह और उसके सातों सलाहकारों की तरफ से भेजा जाता है, ताकि अनेक खुदा की शरी'अत के मूताबिक जो तेरे हाथ में है, यहदाह और येस्शलेम का हाल दरियापत्र करें; 15 और जो चाँदी और सोना बादशाह और उसके सलाहकारों ने इसाईल के खुदा को, जिसका घर येस्शलेम में है, अपनी खुशी से नज़र किया है ले जाएँ; 16 और जिस कदर चाँदी सोना बाबुल के सारे सबै से तुड़ी मिलेगा, और जो खुशी के हटिये लोग और काहिन अपने खुदा के घर के लिए जो येस्शलेम में है अपनी खुशी से दें उनको ले जाए। 17 इसलिए उस स्पर्ये से बैल और मैंठ और हलवान और उनकी नज़र की कुर्बानीयाँ, और उनके तपावन की चाँदी त बड़ी कोशिश से खरीदना, और उनको अनेक खुदा के घर के मजबह पर जो येस्शलेम में है पेश करना। 18 और तुड़े और तेरे भाइयों को बाकी चाँदी सोने के साथ जो कुछ करना मुनासिब मालूम हो, वही अपने खुदा की मर्जी के मूताबिक करना। 19 और जो बर्तन तुड़े तेरे खुदा के घर की इबादत के लिए सौंपे जाते हैं, उनको येस्शलेम के खुदा के सामने दे देना। 20 और जो कुछ और तेरे खुदा के घर के लिए जस्ती हो जो तुड़े देना पड़े, उसे शाही खजाने से देना। 21 और मैं अरतखशशता बादशाह, खुद दरिया पार के सब खजानियों को हक्म करता हूँ, कि जो कुछ एजा काहिन, आसमान के खुदा की शरी'अत का 'आलिम, तुम से चाहे वह बिना देर किये किया जाएँ; 22 या'नी सौ किन्तर चाँदी, और सौ कुर गेहँ, और सौ बत मय, और सौ बत तेल तक, और नमक बेअन्दाज़ा। 23 जो कुछ आसमान के खुदा ने हुक्म किया है, इसलिए ठीक वैसा ही आसमान के खुदा के घर के लिए किया जाएँ; क्यौंकि बादशाह और शाहजादों की ममलुकत पर जगज व्यूँ भड़के? 24 और तुम को हम आगाह करते हैं कि काहिनों और लावियों और गानेवालों और दरबारों और नतीनीम और खुदा के इस घर के खादिमों में से किसी पर खिराज, चुनी या महसूल लगाना जायज़ न होगा। 25 और ऐ 'अज्ञा, तू अपने खुदा की उस समझ के मूताबिक जो तुझ को 'इनायत हुई हाकिमों और काजियों को मुकर्रर कर, ताकि दरिया पार के सब लोगों का जो तेरे खुदा की शरी'अत को जानते हैं इन्साकरें; और तुम उसको जो न जानता हो सिखाओ। 26 और जो कोई तेरे खुदा की शरी'अत पर और बादशाह के फरमान पर 'अमल न करे, उसको बिना देर किये कानूनी सजा दी जाएँ, चाहे मौत या जिलावती या माल की जब्ती या कैद की।" 27 खुदावन्द हमारे बाप — दादा का खुदा मुवारक हो, जिसने

ये बात बादशाह के दिल में डाली कि खुदावन्द के घर को जो येस्शलेम में है आरास्ता करें; 28 और बादशाह और उसके सलाहकारों के सामने, और बादशाह के सब 'आली कद्र सरदारों के आगे अपनी रहमत मुझ पर की; और मैंने खुदावन्द अपने खुदा के हाथ से जो मुझ पर था, ताकत पाई और मैंने इसाईल में से खास लोगों को इकट्ठा किया कि वह मेरे हमराह चलें। 8 अरतखशशता बादशाह के दौर — ए — सलतनत में जो लोग मेरे साथ बाबुल से निकले, उनके अबाई खानदानों के सरदार थे हैं और उनका नसबनामा थे हैं: 2 बनी फीन्हास में से, जैरसोन; बनी ऐतामर में से, दानीएल; बनी दाऊद में से हतूश; 3 बनी सिकिनियाह की नस्ल के बनी पर' ऊस में से, जकरियाह, और उसके साथ डेढ़ सौ आदमी नसबनामे के तौर से गिने हुए थे; 4 बनी पखत — मोआब में से, इलीहँ ऐनी बिन जराखियाह, और उसके साथ दो सौ आदमी; 5 और बनी सिकिनियाह में से, गह्यील का बेटा, और उसके साथ तीन सौ आदमी; 6 और बनी 'अदीन में से, 'अबद — बिन यूतन, और उसके साथ पचास आदमी, 7 और बनी 'ऐलाम में से, यसायाह बिन 'अतलियाह, और उसके साथ सतर आदमी; 8 और बनी सफतियाह में से, जबदियाह बिन मीकाएल, और उसके साथ अस्सी आदमी, 9 और बनी योआब में से 'अबदियाह बिन यहीएल, और उसके साथ दो सौ अशार ह आदमी, 10 और बनी सलूमीत में से, युसफियाह का बेटा, और उसके साथ एक सौ साठ आदमी; 11 और बनी बर्बाई में से जकरियाह बिन बर्बाई, और उसके साथ अश्वाईस आदमी; 12 और बनी 'अज्जाजात में से यहनान बिन हवकातान, और उसके साथ एक सौ दस आदमी, 13 और बनी अद्विकाम में से जो सबसे पीछे गए, उनके नाम ये हैं: इलिफालत, और याईएल, और समा'याह, और उनके साथ साठ आदमी; 14 और बनी बिगवई में से, जर्ती और जब्बूद, और उनके साथ सतर आदमी। 15 फिर मैंने उनको उस दरिया के पास जो अहावा की सिम्त को बहता है इकट्ठा किया, और वहाँ हम तीन दिन खैयों में रहे; और मैंने लोगों और काहिनों का मुलाहजा किया पर बनी लाली में से किसी को न पाया। 16 तब मैंने एलियाज़र और अरीएल और समा'याह और इलानातन और यरीब और इलानातन और नातन और जकरियाह और मसुल्लाम को जो रईस थे, और यूरीब और इलनातन को जो मृ'अलिम थे बुलवाया। 17 और मैंने उनको कसीफिया नाम एक मकाम में इसे सरदार के पास भेजा; और जो कुछ उनको इसे और उसके भाइयों नतीनीम से कसीफिया में कहना था बताया, कि वह हमारे खुदा के घर के लिए खिदमत करने वाले हमारे पास ले आएँ। 18 और चैंकि हमारे खुदा की शफकत का हाथ हम पर था, इसलिए वह महली बिन लाली बिन इसाईल की औलाद में से एक 'अक्लमन्द शाखा को, और सरीबियाह को और उसके बेटों और भाइयों, या'नी अश्वार ह आदमियों को 19 और हस्वियाह की, और उसके साथ बनी मिरारी में से यसायाह को, और उसके भाइयों और उनके बेटों को, या'नी बीस आदमियों को; 20 और नतीनीम में से, जिनको दाऊद और अमीरों ने लावियों की खिदमत के लिए मुकर्रर किया था, दो सौ बीस नतीनीम को ले आएँ। इन सभों के नाम बता दिए गए थे। 21 तब मैंने अहावा के दरिया पर रोज़े का ऐलान कराया, ताकि हम अपने खुदा के सामने उस से अपने और अपने बाल बच्चों और अपने माल के लिए सीधी राह तलब करने को फ़रोतान बने। 22 क्यौंकि मैंने शर्म की बजह से बादशाह से सिपाहियों के जर्ती और सवारों के लिए दरबारास्त न की थी, ताकि वह राह में दुश्मन के मुकाबिले में हमारी मदद करें; क्यौंकि हम ने बादशाह से कहा था, कि हमारे खुदा का हाथ भलाई के लिए उन सब के साथ है जो उसके तालिब हैं, और उसका जोर और कहर उन सबके खिलाफ़ है जो उसे छोड़ देते हैं। 23 इसलिए हम ने रोज़ा रखकर इस बात के लिए अपने खुदा से मिन्नत की, और उसने हमारी सुनी। 24 तब मैंने सरदार काहिनों में से बारह को,

यानी सरीवियाह और हसबियाह और उनके साथ उनके भाइयों में से दस को अलग किया, 25 और उनको वह चाँदी सोना और बर्तन, यानी वह हवदिया जो हमारे खुदा के घर के लिए बादशाह और उसके बजारों और अमीरों और तमाम इसाईल ने जो वहाँ हाजिर थे, नज़र किया था तो ले दिया। 26 मैं ही ने उनके हाथ में साढ़े छः सौ किन्तार चाँदी, और सौ किन्तार चाँदी के बर्तन, और सौ किन्तार सोना, 27 और सोने के बीस प्याले जो हज़ार दिवहम के थे, और चांदे चमकते हुए पीतल के दो बर्तन जो सोने की तरह कीमती थी तो ले कर दिए। 28 और मैंने उनसे कहा, कि तुम खुदावन्द के लिए मुकद्दस हो, और ये बर्तन भी मुकद्दस हैं, और ये चाँदी और सोना खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा के खुदा के लिए खुदी की कुर्बानी है। 29 इसलिए होशियार रहना, जब तक येस्शलेम में खुदावन्द के घर की कोठरियों में सरदार काहिनों और लावियों और इसाईल के आबाई खानादानों के अमीरों के सामने उनको तौल न दो, उनकी हिफाजत करना। 30 तब काहिनों और लावियों ने सोना और चाँदी और बर्तनों को तौलकर लिया, ताकि उनको येस्शलेम में हमारे खुदा के घर में पहुँचाएँ। 31 फिर हम पहले महीने की बारहवीं तारीख को अहावा के दरिया से रवाना हुए कि येस्शलेम को जाएँ, और हमारे खुदा का हाथ हमारे साथ था, और उसने हम को दूशमों और रास्ते में यात लगानेवालों के हाथ से बचाया। 32 और हम येस्शलेम पहुँचकर तीन दिन तक ठरे रहे। 33 और चौथे दिन वह चाँदी और सोना और बर्तन हमारे खुदा के घर में तौल कर काहिन मरीमोत बिन ऊरियाह के हाथ में दिए गए, और उसके साथ इस्ती'एलियाज़र बिन फ़ीहास था, और उनके साथ ये लावी थे, यानी यज़बाद बिन यशूअ और नौ इंटियाह बिन बिनवी। 34 सब चीज़ों को गिन कर और तौल कर पूरा वजन उत्ती वक्त लिख लिया गया। 35 और गुलामों में से उन लोगों ने जो जिलावतीनी से लौट आए थे, इसाईल के खुदा के लिए सोखतीनी कुर्बानियाँ पेश की, यानी सारे इसाईल के लिए बारह बछड़े और छियानवे मेंडे, और सतरह बर्बे, और खता की कुर्बानी के लिए बारह बकरे; ये सब खुदावन्द के लिए सोखतीनी कुर्बानी थी। 36 और उन्होंने बादशाह के फरमानों को बादशाह के नाड़ों, और दरिया पार के हाकियों के हवाले किया; और उन्होंने लोगों की और खुदा के घर की हिमायत की।

9 जब ये सब काम हो चुके तो सरदारों ने मेरे पास आकर कहा कि इसाईल के लोग और काहिन और लावी इन अतराफ की कौमों से अलग नहीं रहे, क्यूँकि कानानियों और हितियों और फरिजियों और यवसियों 'अमोनियों और मोआवियों और मिस्रियों और अमोरियों के से नफरती काम करते हैं। 2 चूँचे उन्होंने अपने और अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ ली हैं, इसलिए मुकद्दस नसल इन अतराफ की कौमों के साथ खल्त — मलत हो गई, और सरदारों और हाकियों का हाथ इस बदकारी में सब से बढ़ा हुआ है। 3 जब मैंने ये बात सनी तो अपने लिबास और अपनी चादर को फाड़ दिया, और सिर और डाढ़ी के बाल नोचे और हैरान हो बैठा। 4 तब वह सब जो इसाईल के खुदा की बातों से काँपते थे, गुलामों की इस बदकारी के जरिएँ मेरे पास जामा हुए; और मैं शाम की कुर्बानी तक हैरान बैठा रहा। 5 और शाम की कुर्बानी के बक्त मैं अपना फटा लिबास पहने, और अपनी फटी चादर ओढ़े हुए अपनी शर्मिन्दगी की हालत से उठा, और अपने घृनों पर गिर कर खुदावन्द अपने खुदा की तरफ अपने हाथ फैलाए, 6 और कहा, ऐ मेरे खुदा, मैं शर्मिन्दा हूँ, और तेरी तरफ, ऐ मेरे खुदा, अपना मैंहूँ उठाते मुझे शर्म आती है; क्यूँकि हमारे गुनाह बढ़ते बढ़ते हमारे सिर से बुलन्द हो गए, और हमारी खताकारी आसान तक पहुँच गई है। 7 अपने बाप — दादा के बक्त से आज तक हम बड़े खताकार रहे; और अपनी बदकारी के जरिएँ हम और हमारे बादशाह और हमारे काहिन, और मुल्कों के बादशाहों और तलवार और गुलामी और गारत

और शर्मिन्दगी के हवाले हुए हैं, जैसा आज के दिन है। 8 अब थोड़े दिनों से खुदावन्द हमारे खुदा की तरफ से हम पर फज्जल हुआ है, ताकि हमारा कुछ बकिया बच निकलने को छूटे, और उसके मकान — ए — मुकद्दस में हम को एक खँटी मिले, और हमारा खुदा हमारी आँखें रोशन करे और हमारी गुलामी में हम को कुछ ताजगी बछो। 9 क्यूँकि हम तो गुलाम हैं लेकिन हमारे खुदा ने हमारी गुलामी में हम को छोड़ा नहीं, बल्कि हम को ताजगी बछाने और अपने खुदा के घर को बनाने और उसके खण्डरों की मरम्मत करने, और यहदाह और येस्शलेम में हम को शहर — ए — पनाह देने को फारस के बादशाहों के सामने हम पर रहमत की। 10 और अब ऐ हमारे खुदा, हम इसके बाद क्या कहें? क्यूँकि हम ने तेरे उन हक्मों को छोड़ दिया है, 11 जो तू ने अपने खादिमों यानी नवियों के जरिएँ फरमाए कि वह मुल्क जिसे तुम मीरास में लेने को जाते हो और मुल्कों की कौमों की नापाकी और नफरती कामों की बजह से नापाक मुल्क है, क्यूँकि उन्होंने अपनी नापाकी से उसको इस सिरे से उस सिरे तक रह दिया है। 12 इसलिए तुम अपनी बेटियाँ उनके बेटों को न देना और उनकी बेटियाँ अपने बेटों के लिए न लेना, और न कभी उनकी सलामती या भलाई चाहना, ताकि तुम मज़बूत बनो और उस मुल्क की अच्छी — अच्छी चीज़ खाओ, और अपनी औलाद के बास्ते हमेशा की मीरास के लिए उसे छोड़ जाओ। 13 और हमारे ख़ो कामों और बड़े गुनाह की बजह से जो कुछ हम पर गुज़रा, उसके बाद ऐ हमारे खुदा, हकीकत ये है कि तू ने हमारे गुलामों के अन्दाज़े से हम को कम सजा दी और हम में से ऐसा बकिया छोड़ा; 14 क्या हम फिर तेरे हक्मों को तोड़े, और उन कौमों से नाता जोड़े जो इन नफरती कामों को करती हैं? क्या तू हम से ऐसा गुस्सा न होगा कि हम को बर्बाद कर दे, यहाँ तक कि न कोई बकिया रहे और न कोई बचे? 15 ऐ खुदावन्द, इसाईल के खुदा! तू सादिक है, क्यूँकि हम एक बकिया हैं जो बच निकला है, जैसा आज के दिन है। देख, हम अपनी खताकारी में तेरे सामने हाजिर हैं, क्यूँकि इसी बजह से कोई तेरे सामने खड़ा रह नहीं सकता।

10 जब एज़ा खुदा के घर के अगे रो रो कर और सिज्दा में गिरकर दुआ और इक्रार कर रहा था, तो इसाईल में से मर्दी और 'अौरतों और बच्चों की एक बहुत बड़ी जामा' अत उनके पास इकड़ा हो गई; और लोग फूट फूटकर रो रहे थे। 2 तब सिकनियाह बिन यहीएल जो बनी 'ऐलाम में से था, एज़ा से कहने लगा, “हम अपने खुदा के गुनाहगार तो हुए हैं, और इस सरज्मीन की कौमों में से अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं, तो भी इस मूँअमिले में अब भी इसाईल के लिए उमीद है। 3 इसलिए अब हम अपने मध्यदूम की और उनकी सलाह के मुताबिक, जो हमारे खुदा के हक्म से काँपते हैं, सब बीवियों और उनकी औलाद को दूर करने के लिए अपने खुदा से 'अहद बांधे, और ये शरी अत के मुताबिक किया जाए। 4 अब उठ, क्यूँकि ये तेरा ही काम है, और हम तेरे साथ हैं, हिम्मत बांध कर काम में लगा जा।” 5 तब एज़ा ने उठकर सरदार काहिनों और लावियों और सारे इसाईल से कसम ली कि वह इस इक्रार के मुताबिक 'अमल करोगे; और उन्होंने कसम खाई। 6 तब एज़ा खुदा के घर के सामने से उठा और यहानान बिन इलियास बकी कोठरी में गया, और वहाँ जाकर न रोटी खाई न पानी पिया; क्यूँकि वह गुलामी के लोगों की खता की बजह से मातम करता रहा। 7 फिर उन्होंने यहदाह और येस्शलेम में गुलामी के सब लोगों के बीच 'ऐलाम किया, कि वह येस्शलेम में इकट्ठे हो जाएँ; 8 और जो कोई सरदारों और बुजूर्गों की सलाह के मुताबिक तीन दिन के अन्दर न आए, उसका सारा माल जब्त हो और वह खुद गुलामों की जमा' अत से अलग किया जाए। 9 तब यहदाह और बिनयमीन के सब आदमी उन तीन दिनों के अन्दर येस्शलेम में इकट्ठे हुए; महीना नवाँ था, और उसकी बीसवीं तारीख थी;

और सब लोग इस मु'आमिले और बड़ी बारिश की बजह से खुदा के घर के सामने के मैदान में बैठे कॉप रहे थे। 10 तब एज्ञा काहिन खड़ा होकर उनसे कहने लगा कि तुम ने खता की है और इसाईल का गुनाह बढ़ाने को अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं। 11 फिर खुदावन्द अपने बाप — दादा के खुदा के आगे इकरार करो, और उसकी मर्जी पर 'अमल करो, और इस सरजमीन के लोगों और अजनबी 'औरतों से अलग हो जाओ। 12 तब सारी जमा'अत ने जबाब दिया, और बुलन्द आवाज से कहा कि जैसा तु ने कहा, वैसा ही हम को करना लाजिम है। 13 लेकिन लोग बहुत हैं, और इस वक्त जोर की बारिश हो रही है और हम बाहर खड़े नकी रह सकते, और न ये एक दो दिन का काम है: क्यूंकि हम ने इस मु'आमिले में बड़ा गुनाह किया है। 14 अब सारी जमा'अत के लिए हमारे सरदार मुर्कर हों, और हमारे शहरों में जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली हैं, वह सब मुकर्रा वक्तों पर आएँ और उनके साथ हर शहर के बुर्ज और काजी हों, जब तक कि हमारे खुदा का कहर — ए — शदीद हम पर से टल न जाए और इस मु'आमिले का फैसला न हो जाए। 15 सिर्फ यूनतन बिन 'असाहेल और यहाजियाह बिन तिकवह इस बात के खिलाफ खड़े हुए, और मसुल्लाम और सब्बती लावी ने उनकी मदद की। 16 लेकिन गुलामी के लोगों ने वैसा ही किया। और एज्ञा काहिन और आबाई खान्दानों के सरदारों में से कुछ अपने अपने आबाई खान्दानों की पहली तारीख को इस बात की तहकीकात के लिए बैठे; 17 और पहले महीने के पहले दिन तक, उन सब आदमियों के मु'आमिले का फैसला किया जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली थीं। 18 और काहिनों की औलाद में ये लोग मिले जिन्होंने अजनबी 'औरतें ब्याह ली थीं: यानी, बनी यश'अ में से, यूसदक का बेटा, और उसके भाई मसियाह और इलीएलियाजर और यारिब और जिदलियाह। 19 उन्होंने अपनी बीवियों को दूर करने का 'दा किया, और गुनाहगार होने की बजह से उन्होंने अपने गुनाह के लिए अपने अपने रेवड में से एक एक मैदा कुर्बन किया। 20 और बनी इम्मर में से, हनानी और जबदियाह; 21 और बनी हारिम में से, मासियाह और एलियाह, और समा'याह और यहीएल और 'उज्जियाह; 22 और बनी फशहर में से, इलीयू'ऐसी और मासियाह और इस्मा'ईल और नतनीएल और यज्जबाद और 'इलिसा। 23 और लावियों में से, यूजबाद और सिर्मई और किलायाह जो कर्तीत भी कहलाता है, फतहयाह और यहदाह और इलीएलियाजर; 24 और गानेवालों में से, इलियासब; और दरबानों में से, सल्मूय और तलम और ऊरी। 25 और इसाईल में से: बनी पर'ऊस में से, रमियाह और यजियाह और मलकियाह और मियामीन और इलीएलियाजर और मलकियाह और बिनायाह 26 और बनी 'ऐलाम में से, मतनियाह और जकरियाह और यहीएल और 'अबदी और यमीमोत और एलियाह; 27 और बनी जन्त में से, इलीयू'ऐसी और इलियासब और मतनियाह और यरीमोत और जाबाद और 'अजीजा, 28 और बनी बबई में से, यहानान और हननियाह और जब्बी और 'अतलै 29 और बनी बनी में से, मसुल्लाम और मलूक और 'अदायाह और यासूब और सियाल और यरामोत। 30 और बनी परखत — मोआब में से, 'अदना और किलाल और बिनायाह और मासियाह और मतनियाह और बजलीएल और बिनवी और मनस्सी, 31 और बनी हारिम में से, इलीएलियाजर और यशियाह और मलकियाह और समा'याह और शमौन, 32 बिनयमीन और मलूक और समरियाह; 33 और बनी हाशम में से, मतने और मतताह और जाबाद और इलिफालत और यरीमे और मनस्सी और सिर्मई, 34 और बनी बनी में से, मादि और 'अमराम और ऊएल, 35 बिनायाह और बदियाह और कलह, 36 और वनियाह और मरीमोत और इलियासब, 37 और मतनियाह और मतने और या'सौ, 38 और बनी

और बिनवी और सिर्मई, 39 और सलमियाह और नातन और 'अदायाह, 40 मकनदबै, सासै, सौरै 41 'अजरिएल और सलमियाह, समरियाह, 42 सलूम, अमरियाह, यसूफ। 43 बनी नबू में से, याईएल, मतितियाह, जाबाद, जबीना, यदो और यूएल, बिनायाह। 44 ये सब अजनबी 'औरतों को ब्याह लाए थे, और कुछ की बीवियाँ ऐसी थीं जिनसे उनके औलाद थीं।

नहे

1 नहमियाह बिन हकलियाह का कलाम। बीसवें बरस निक्सलेव के महीने में, जब मैं कस — ए — सोसन में था तो ऐसा हआ, 2 कि हानी जो मैं भाइयों में से एक है और चन्द आदमी यहदाह से आए; और मैंने उनसे उन यहदियों के बारे में जो बच निकले थे और गुलामों में से बाकी रहे थे, और येस्शलेम के बारे में पूछा। 3 उन्होंने मुझ से कहा कि वह बाकी लोग जो गुलामी से छुट कर उस सूबे में रहते हैं, बहुत मुसीबत और जिल्लत में पड़े हैं, और येस्शलेम की फसील दूरी ही है, और उसके फाटक आग से जले हुए हैं। 4 जब मैंने ये बातें सुनी तो बैठ कर रोने लगा और कई दिनों तक मातम करता रहा, और रोजा रखदा और आसमान के खुदा के सामने दुआ की, 5 और कहा, “ऐ खुदावन्द, आसमान के खुदा — ए — 'अज्ञीम — ओ — मूरीब जो उनके साथ जो तुमसे मुहब्बत रखते और तेरे हुक्मों को मानते हैं 'अहद — ओ — फज्जल को क्राइम रखता है, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, 6 कि तू कान लगा और अपनी आँखें खुली रख ताकि तू अपने बन्दे की उस दुआ को सुने जो मैं अब रत दिन तेरे सामने तेरे बन्दों बनी इस्माईल के लिए करता हूँ और बनी इस्माईल की खत्ताओं को जो हमने तेरे बर खिलाफ की मान लेता हूँ, और मैं और मेरे आबाई खानान दोनों ने गुनाह किया है। 7 हमने तेरे खिलाफ बड़ी बुराइ की है और उन हुक्मों और कानून और फरमानों को जो तुमे अपने बन्दे मूसा को दिए नहीं माना 8 मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने उस कौतू को थाद कर जो तुमे अपने बन्दे मूसा को फरमाया अगर तुम नाफरमानी करो, मैं तुम को कौमों में तिरत — बितर कर्सेंगा 9 लेकिन अगर तुम मेरी तरफ फिरकर मेरे हुक्मों को मानों और उन पर 'अमल करो तो गो तुम्हारे आवारगार्द आसमान के किनारों पर भी ही हो मैं उनको बहाँ से इकट्ठा करके उस मकाम पर हूँचाऊँगा जिसे मैंने चुन लिया ताकि अपना नाम बहाँ रखें। 10 वह तो तेरे बन्दे और तेरे लोग है जिनको तुमे अपनी बड़ी कुदरत और कवी हाथ से छुड़ाया है 11 ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि अपने बन्दों की दुआ पर, और अपने बन्दों की दुआ पर जो तेरे नाम से डरना पसन्द करते हैं कान लगा और आज मैं तेरे मिन्नत करता हूँ अपने बन्दों को कामयाब कर और इस शरख के सामने उसपर फज्जल कर।” (मैं तो बादशाह का साकी था)

2 अरतखशशता बादशाह के बीसवें बरस नेसान के महीने में, जब मय उसके आगे थी तो मैंने मय उठा कर बादशाह को दी। इससे पहले मैं कभी उसके सामने मायसू नहीं हुआ था। 2 इसलिए बादशाह ने मुझसे कहा, “तेरा चेहरा क्यूँ मायसू है, बाबजूद ये कि तू बीमार नहीं है? तब ये दिल के गम के अलावा और कुछ न होगा।” 1 तब मैं बहुत डर गया। 3 मैंने बादशाह से कहा कि “बादशाह हमेशा जिन्दा रहे।” मेरा चेहरा मायसू क्यूँ न हो, जबकि वह शहर जहाँ मेरे बाप — दादा की कब्रे हैं उजाड़ पड़ा है, और उसके फाटक आग से जले हुए हैं?” 4 बादशाह ने मुझसे फरमाया, “किस बात के लिए तेरी दरखबास्त है?” तब मैंने आसमान के खुदा से दुआ की, 5 फिर मैंने बादशाह से कहा, “अगर बादशाह की मर्जी हो, और अगर तेरे खादिम पर तेरे करम की नजर है, तो तू मुझे यहदाह से ये भी कहा, “अगर बादशाह की मर्जी हो, तो दरिया पार हाकिमों के लिए मुझे परवाने इनायत होंगे कि वह मुझे यहदाह तक पहुँचने के लिए गुजर जाने दें।” 8 और आसफ के लिए जो शाही जंगल का निगहबान है, एक शाही खत मिले कि

वह हैकल के किले के फाटकों के लिए, और शहरपनाह और उस घर के लिए जिस में रहँगा, कडियाँ बनाने को मुझे लकड़ी दे और खुँकि मेरे खुदा की शफकत का हाथ मुझ पर था, बादशाह ने 'अर्ज कुबूल की। 9 तब मैंने दरिया पार के हाकिमों के पास पहुँचकर बादशाह के परवाने उनको दिए और बादशाह ने फौजी सरदारों और सवारों को मेरे साथ कर दिया था। 10 जब सनबल्लत हस्ती और 'अमोनी गुलाम तूबियाह ने ये सुना, कि एक शख्स बनी — इस्माईल की बहबूदी का तलबागार आया है, तो वह बहुत रंजिदा हुए। 11 और येस्शलेम पहुँच कर तीन दिन रहा। 12 फिर मैं रात को उठा, मैं भी और मेरे साथ चन्द आदमी; लेकिन जो कुछ येस्शलेम के लिए करने को मेरे खुदा ने मेरे दिल में डाला था, वह मैंने किरी को न बताया; और जिस जानवर पर मैं सवार था, उसके अलावा और कोई जानवर मेरे साथ न था। 13 मैं रात को बादी के फाटक से निकल कर अजदह के कुँए और कुँडे के फाटक को गया; और येस्शलेम की फसील को, जो तोड़ दी गई थी और उसके फाटकों को, जो आग से जले हुए थे देखा। 14 फिर मैं चश्मे के फाटक और बादशाह के तालाब को गया, लेकिन वहाँ उस जानवर के लिए जिस पर मैं सवार था, गुजरने की जगह न थी। 15 फिर मैं रात ही को नाले की तरफ से फसील को देखकर लैटा, और बादी के फाटक से दाखिल हुआ और यैंवापस आ गया। 16 और हाकिमों को मालूम न हुआ कि मैं कहाँ — कहाँ गया, या मैंने क्या — क्या किया; और मैंने उस बक्त तक न यहदियों, न काहिनों, न अमीरों, न हाकिमों, न बाकियों को जो कारगुजार थे कुछ बताया था। 17 तब मैंने उनसे कहा, “तुम देखते हो कि हम कैसी मुसीबत में हैं, कि येस्शलेम उजाड़ पड़ा है, और उसके फाटक आग से जले हुए हैं। आओ, हम येस्शलेम की फसील बनाएँ, ताकि आगे को हम जिल्लत का निशान न रहें।” 18 और मैंने उनको बताया कि खुदा की शफकत का हाथ मुझ पर कैसे रहा, और ये कि बादशाह ने मुझ से क्या क्या बातें कही थीं। उन्होंने कहा, “हम उठकर बनाने लगें। इसलिए इस अच्छे काम के लिए उन्होंने अपने हाथों को मजबूत किया। 19 लेकिन जब सनबल्लत हस्ती और अम्मूरी गुलाम तूबियाह और अरबी जशम ने सुना, तो वह हम को ठढ़ों में उड़ाने और हमारी हिकारत करके कहने लगे, तुम ये क्या काम करते हो? क्या तुम बादशाह से बगावत करोगे?” 20 तब मैंने जबाब देकर उनसे कहा, “आसमान का खुदा, वही हम को कामयाब करेगा; इसी वजह से हम जो उसके बन्दे हैं, उठकर तामीर करेंगे; लेकिन येस्शलेम में तुम्हारा न तो कोई हिस्सा, न हक, न यादगार है।”

3 तब इलियासब सरदार काहिन अपने भाइयों यानी काहिनों के साथ उठा, और उन्होंने भेड़ फाटक को बनाया; और उसे पाक किया, और उसके किवाड़ों को लगाया। उन्होंने हमियाह के बुर्ज बल्कि हननएल के बुर्ज तक उसे पाक किया। 2 उससे आगे यरीह के लोगों ने बनाया, और उनसे आगे जक्कर बिन इमरी ने बनाया। 3 मछली फाटक को बनी हसनाह ने बनाया उन्होंने उसकी कडियाँ रखली और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अडबंगे लगाए। 4 और उनसे आगे मरीमोत बिन ऊरियाह बिन हान्कूस ने मरम्मत की। और उनसे आगे मुसल्लाम बिन बरकियाह बिन मरीज़जेबल ने मरम्मत की। और उनसे आगे सोदाक बिन बाना ने मरम्मत की। 5 और उनसे आगे तक़'अ लोगों ने मरम्मत की, लेकिन उनके अमीरों ने अपने मालिक के काम के लिए गर्दन न छुकाई। 6 और पुराने फाटक की यहदाह बिन फासख और मुसल्लाम बिन बसूदियाह ने मरम्मत की उन्होंने उसकी कडियाँ रखली और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अडबंगे लगाए। 7 और उनसे आगे मलतियाह जिबा'ऊनी और यदन मस्नोती, और जिबा'ऊन और मिस्फ़ाह के लोगों ने जो दरिया पार के हाकिम की 'अमलदारी में से थे मरम्मत की। 8 और उनसे आगे सुनारों की

तरफ से उज्जीएल बिन हररहियाह ने, और उससे आगे 'अतारों में से हननियाह ने मरम्मत की, और उन्होंने येस्शलेम को चौड़ी दीवार तक मजबूत किया। 9 और उनसे आगे रिपायाह ने, जो हर का बेटा और येस्शलेम के आधे हल्के का सरदार था मरम्मत की। 10 और उससे आगे यदायाह बिन हस्मफ ने अपने ही घर के सामने तक की मरम्मत की। और उससे आगे हत्तश बिन हसबनियाह ने मरम्मत की। 11 मलकियाह बिन हारिम और हस्क्ल बिन पश्खत — मोअब ने दूसरे हिस्से की और तन्होंने के बुर्ज की मरम्मत की। 12 और उससे आगे सलम बिन हल्हेश ने जो येस्शलेम के आधे हल्के का सरदार था, और उसकी बेटियों ने मरम्मत की। 13 बाई के फाटक की मरम्मत हनून और जनोआह के बाशिन्दों ने की, उन्होंने उसे बनाया और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अडबगे लगाए, और कूड़े के फाटक तक एक हजार हाथ दीवार तैयार की। 14 और कूड़े के फाटक की मरम्मत मलकियाह बिन रैकाब ने की जो बैत — हक्करम के हल्के का सरदार था; उसने उसे बनाया और उसके किवाड़े और चटकनियाँ और अडबगे लगाए। 15 और चश्मा फाटक की सल्लूम बिन कलहज्जा ने जो मिस्फाह के हल्के का सरदार था, मरम्मत की; उसने उसे बनाया और उसको पाटा और उसके किवाड़े चिटकनियाँ और उसके अडबगे लगाए और बादशाही बाग के पास शीलोख के हौज की दीवार को उस सीढ़ी तक, जो दाऊद के शहर से नीचे आती है बनाया। 16 फिर नहमियाह बिन 'अज्जबूक' ने जो बैतसूर के आधे हल्के का सरदार था, दाऊद की कब्रों के सामने की जगह और उस हौज तक जो बनाया गया था, और सूर्माओं के घर तक मरम्मत की। 17 फिर लावियों में से रहम बिन बानी ने मरम्मत की। उससे आगे हसबियाह ने जो काईलाह के आधे हल्के का सरदार था, अपने हल्के की तरफ से मरम्मत की। 18 फिर उनके भाइयों में से बर्वी बिन हनदाद ने जो काईलाह के आधे हल्के का सरदार था, मरम्मत की। 19 और उससे आगे ईजर बिन यशू'अ मिस्फाह के सरदार ने दूसरे टुकड़े की जो मोड़ के पास सिलाहराने की चढ़ाई के सामने है, मरम्मत की। 20 फिर बास्क बिन जब्बी ने सरारामी से उस मोड़ से सरदार काहिन इलियासब के घर के दरवाजे तक, एक और टुकड़े की मरम्मत की। 21 फिर मीमीत बिन ऊरियाह बिन हक्क्स ने एक और टुकड़े की इलियासब के घर के दरवाजे से इलियासब के घर के आखिर तक मरम्मत की। 22 फिर नशेब के रहनेवाले काहिनों ने मरम्मत की। 23 फिर बिनयारीन और हस्क्ल ने अपने घर के सामने तक मरम्मत की। फिर 'अज्जरियाह बिन मासियाह बिन 'अननियाह ने अपने घर के बराबर तक मरम्मत की। 24 फिर बिनवी बिन हनदाद ने 'अज्जरियाह के घर से दीवार के मोड़ और कोने तक, एक और टुकड़े की मरम्मत की। 25 फलाल बिन ऊज्जी ने मोड़ के सामने के हिस्से की, और उस बुर्ज की जो कैदखाने के सहन के पास के शाही महल से बाहर निकला हुआ है, और औफल की दीवार तक एक और टुकड़े की मरम्मत की। 26 और नतीनीम पूरब की तरफ ओफल में पानी फाटक के सामने और उस बुर्ज तक बर्से हुए थे, जो बाहर निकला हुआ है। 27 फिर तक़ीदों ने उस बड़े बुर्ज के सामने जो बाहर निकला हुआ है, और औफल की दीवार तक एक और टुकड़े की मरम्मत की। 28 घोड़ा फाटक के ऊपर काहिनों ने अपने अपने घर के सामने मरम्मत की। 29 उनके पीछे सदोक बिन इम्पी ने अपने घर के सामने मरम्मत की। और फिर पूर्वी फाटक के दरबान समा'याह बिन सिकनियाह ने मरम्मत की। 30 फिर हननियाह बिन सलमियाह और हनून ने जो सलफ का छठा बेटा था, एक और टुकड़े की मरम्मत की। फिर मुसल्लाम बिन बरकियाह ने अपनी कोठरी के सामने मरम्मत की। 31 फिर सुनारों में से एक शब्ख मलकियाह ने नतीनीम और सौदारों के घर तक हिमीफकाद के फाटक के सामने और कोने की चढ़ाई

तक मरम्मत की। 32 और उस कोने की चढ़ाई और भेड़ फाटक के बीच सुनारों और सौदारों ने मरम्मत की।

4 लेकिन ऐसा हुआ जब सनबल्लत ने सुना के हम शहरपनाह बना रहे हैं, तो वह जल गया और बहत गुस्सा हुआ और यहदियों को ठांडे में उड़ाने लगा। 2 और वह अपने भाइयों और सामरिया के लश्कर के आगे यूँ कहने लगा, "ये कमज़ोर यहदी क्या कर रहे हैं? क्या ये अपने गिर्द मोर्चाबन्दी करेंगे? क्या वह कुर्बानी चढ़ाएँगे? क्या वह एक ही दिन में सब कुछ कर चुकेंगे? क्या वह जले हुए पथरों को कूड़े के ढेरों में से निकाल कर फिर नये कर देंगे?" 3 और तुवियाह 'अम्मोनी उसके पास खड़ा था, तब वह कहने लगा, "जो कुछ वह बना रहे हैं, अगर उसपर लोमड़ी चढ़ जाए तो वह उनके पथर की शहरपनाह को गिरा देगी।" 4 सुन ले, ऐ हमारे खुदा क्यूँकि हमारी हिकारत होती है और उनकी मलामत उन ही के सिर पर डाल: और गुलामी के मूल्क में उनको गारतगरों के हवाले कर दे। 5 और उनकी बुराई को न ढाँक, और उनकी खता तेरे सामने से मिटाई न जाए; क्यूँकि उन्होंने मेरारों के सामने तुड़े गुस्सा दिलाया है। 6 गरज हम दीवार बनाते रहे, और सारी दीवार आधी बलन्दी तक जोड़ी गई; क्यूँकि लोग दिल लगा कर काम करते थे। 7 लेकिन जब सनबल्लत और तुवियाह और अरबों और 'अम्मोनियों और अशाद्वियों ने सुना कि येस्शलेम की फसील मरम्मत होती जाती है, और दराडे बन्द होने लगी, तो वह जल गए। 8 और सभों ने मिल कर बान्दिश बांधी कि आकर येस्शलेम से लड़ें, और वहाँ परेशानी पैदा कर दें। 9 लेकिन हम ने अपने खुदा से दुआ की, और उनकी बजह से दिन और रात उनके मुकाबले में पहरा बिठाए रखा। 10 और यहदाह कहने लगा कि बोझ उठाने वालों की ताकत घट गयी और मलबा बहुत है, इसलिए हम दीवार नहीं बना सकते हैं। 11 और हमारे दुश्मन कहने लगे, "जब तक हम उनके बीच पहुँच कर उनको कल्टन कर डालें और काम खत्म न कर दें, तब तक उनको न मालूम होगा न वह देखेंगे।" 12 और जब वह यहदी जो उनके आस — पास रहते थे आए, तो उन्होंने सब जगहों से दस बार आकर हम से कहा कि तुम को हमारे पास लौट आना जस्ता है। 13 इसलिए मैंने शहरपनाह के पीछे की जगह के सबसे नीचे हिस्सों में जहाँ जहाँ खुला था, लोगों को अपनी अपनी तलवार और बर्छी और कमान लिए हुए उके धरानों के मुताबिक बिठा दिया। 14 तब मैं देख कर उठा, और अमीरों और हाकिमों और बाकी लोगों से कहा कि तुम उनसे मत डरो; खुदावन्द को जो बुर्जुआ और बड़ा है याद करो, और अपने भाइयों और बेटे बेटियों और अपनी बीवियों और घरों के लिए लड़ो। 15 और जब हमारे दुश्मनों ने सुना कि ये बात हम को मालूम हो गई और खुदा ने उनका मन्सूबा बेकार कर दिया, तो हम सबके सब शहरपनाह को अपने अपने काम पर लौटे। 16 और ऐसा हुआ कि उस दिन से मैं आधे नौकर काम में लग जाते, और आधे बर्छियाँ और और दाले और कमाने लिए और बख्तर पफने रहते थे; और वह जो हाकिम थे यहदाह के सारे खान्दान की पीछे मौजूद रहते थे। 17 इसलिए जो लोग दीवार बनाते थे और जो बोझ उठाते और ढोते थे, हर एक अपने एक हाथ से काम करता था और दूसरे में अपना हथियार लिए रहता था। 18 और मेरारों में से हर एक आदमी अपनी तलवार अपनी कमर से बांधी हुए हैं और वह जो हाकिम थे यहदाह के सारे खान्दान की पीछे मौजूद रहते थे। 19 इसलिए जो लोग दीवार बनाते थे और जो बोझ उठाते और ढोते थे, हर एक अपने एक हाथ से काम करता था और दूसरे में अपना हथियार लिए रहता था। 20 इसलिए जिधर से नरसिंगा तुम को सुनाई दे, उधर ही तुम हमारे पास चले आना। हमारा खुदा हमारे लिए लड़ेगा। 21 यूँ हम काम करते रहे, और उनमें से आधे लोग पैर फटने के बज्जत से तारों के दिखाइ देने तक बर्छियाँ लिए रहते थे। 22 और मैंने उसी मौके' पर लोगों से ये भी कह दिया था

कि हर शब्द अपने नौकर को लेकर येस्सलेम में रात काटा करे, ताकि रात को वह हमारे लिए पहरा दिया करें और दिन को काम करें। 23 इसलिए न तो मैं न मेरे भाई न मैं नौकर और न पहरे के लोग जो मेरे पैरों थे, कभी अपने कपड़े उतारते थे; बल्कि हर शब्द अपना हथियार लिए हुए पानी के पास जाता था।

5 फिर लोगों और उनकी बीवियों की तरफ से उनके यहदी भाइयों पर बड़ी

शिकायत हुई। 2 क्यूँकि कई ऐसे थे जो कहते थे कि हम और हमारे बेटे — बेटियाँ बहुत हैं, इसलिए हम अनाज ले लें, ताकि खाकर ज़िन्दा रहें। 3 और कुछ ऐसे भी थे जो कहते थे कि हम अपने खेतों और अंगरिस्तानों और मकानों को गिरवी रखते हैं, ताकि हम काल में अनाज ले लें। 4 और कितने कहते थे कि हम ने अपने खेतों और अंगरिस्तानों पर बादशाह के खिराज के लिए सम्पाद कर्ज लिया है। 5 लेकिन हमारे जिस्म तो हमारे भाइयों के जिस्म की तरह है, और हमारे बाल बच्चे ऐसे जैसे उनके बाल बच्चे और देखो, हम अपने बेटे — बेटियों को नौकर होने के लिए गुलामी के सुरुपूर्ण करते हैं, और हमारी बेटियों में से कुछ लौड़ियाँ बन चुकी हैं; और हमारा कुछ बस नहीं चलता, क्यूँकि हमारे खेत और अंगरिस्तान औरों के कब्जे में हैं। 6 जब मैंने उनकी फरियाद और ये बातें सुनी, तो मैं बहत गुस्सा हुआ। 7 और मैंने अपने दिल में सोचा, और अमीरों और हाकिमों को मलामत करके उनसे कहा, “तुम मैं से हर एक अपने भाई से सूद लेता हो।” 8 और मैंने एक बड़ी ज़मा’अत को उनके खिलाफ ज़मा’ किया; 9 और मैंने उनसे कहा कि हम ने अपने मकदूर के मुवाफिक अपने यहदी भाइयों को जो और कौमों के हाथ बेच दिए गए थे, दाम देकर छुड़ाया, इसलिए क्या तुम अपने ही भाइयों को बेचोगे? और क्या वह हमारे ही हाथ में बेचे जाएँगे? तब वह चूप रहे और उनको कुछ जबाब न सूझा। 10 और मैंने ये भी कहा कि ये काम जो तुम करते हो ठीक नहीं; क्या और कौमों की मलामत की वजह से जो हमारी दुम्पन है, तुम को खुदा के खौफ में चलना लाजिम नहीं? 10 मैं भी और मेरे भाई और मेरे नौकर भी उनको स्पाया और गल्ला सूद पर देते हैं, लेकिन मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि हम सब सूद लेना छोड़ दें। 11 मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि आज ही के दिन उनके खेतों और अंगरिस्तानों और जैतून के बागों और घरों को, और उस स्थये और अनाज और मय और तेल के सौंधे इस्से को, जो तुम उनसे जबरन लेते हो उनको वापस कर दो। 12 तब उन्होंने कहा कि हम इनको वापस कर देंगे और उनसे कुछ न माँगेंगे, जैसा तू कहता है हम वैसा ही करेंगे। फिर मैंने कहिनों को खुलाया और उनसे कसम ली कि वह इसी बादे के मुताबिक करेंगे। 13 फिर मैंने अपना दामन झाड़ा और कहा कि इसी तरह से खुदा हर शब्द को जो अपने इस बादे पर ‘अमल न करे, उसके घर से और उसके कारोबार से झाड़ लाते; वह इसी तरह झाड़ दिया और निकाल फेंका जाए। तब सारी ज़मा’अत ने कहा, आमीन! और खुदावन्द की हम्मद की। और लोगों ने इस बादे के मुताबिक काम किया। 14 ‘अलावा इसके जिस वक्त से मैं यहदाह के मुल्क में हाकिम मुकर्रर हुआ, यानी अरतखशशता बादशाह के बीसें बरस से बीतीसें बरस तक, गरज बारह बरस मैंने और मेरे भाइयों ने हाकिम होने की रोटी न खाई। 15 लेकिन अगले हाकिम जो मुझ से पहले थे रैइयत पर एक बार थे, और ‘अलावा चालीस मिस्काल चाँदी के रोटी और मय उनसे लेते थे, बल्कि उनके नौकर भी लोगों पर हक्कमूत जाते थे; लेकिन मैंने खुदा के खौफ की वजह से ऐसा न किया। 16 बल्कि मैं इस शहरपनाह के काम में बराबर मशगूल रहा, और हम ने कुछ ज़मीन भी नहीं खरीदी, और मेरे सब नौकर वहाँ काम के लिए इकट्ठे रहते थे। 17 इसके अलावा उन लोगों के ‘अलावा जो हमारे आस पास की कौमों में से हमारे पास आते थे, यहदीयों और सरदारों में से डेढ़ सौ आदमी मेरे दस्तरखान पर होते थे। 18 और एक बैल और छः मोटी मोटी भेड़ें एक दिन के लिए तैयार होती थीं,

मुर्गियाँ भी मेरे लिए तैयार की जाती थीं, और दस दिन के बाद हर किसी की मय का जखीरा तैयार होता था, बावजूद इस सबके मैंने हाकिम होने की रोटी तलब न की क्यूँकि इन लोगों पर गुलामी गिराँ थी। 19 ऐ मेरे खुदा, जो कुछ मैंने इन लोगों के लिए किया है, उसे तू मेरे हक्क में भलाई के लिए याद रख।

6 जब सनबल्लत और तूबियाह और जशम 'अरबी और हमारे बाकी दुश्मनों

ने सुना कि मैं शहरपनाह को बना चुका, और उसमें कोई रखना बाकी नहीं रहा अगर उस वक्त तक मैंने फाटकों में किवाड़े नहीं लगाए थे। 2 तो सनबल्लत और जशम ने मुझे ये कहला भेजा कि आ, हम ओनू के मैदान के किसी गाँव में आपस में मुलाकात करें। लेकिन वह मुझ से बुर्डै करने की फिक्र मैं थे। 3 इसलिए मैंने उनके पास कासिदों से कहला भेजा कि मैं बड़े काम में लगा हूँ और आ नहीं सकता; मेरे इसे छोड़कर तुम्हारे पास आने से ये काम क्यूँ बन्द रहे? 4 उन्होंने चार बार मेरे पास ऐसा ही ऐगाम भेजा और मैंने उनको इसी तरह का जवाब दिया। 5 फिर सनबल्लत ने पैंचवां बार उसी तरह से अपने नौकर को मेरे पास हाथ में खुली चिठ्ठी लिए हुए भेजा: 6 जिसमें लिखा था कि और कौमों में ये अफवाह है और जशम यही कहता है, कि तेरा और यहदीयों का झरादा बागावत करने का है, इसी वजह से तू शहरपनाह बनाता है; और तू इन बातों के मुताबिक उनका बादशाह बनना चाहता है। 7 और उन्हें नवियों को भी मुकर्रर किया कि येस्सलेम में तेरे हक्क में ऐलान करें और कहें, ‘यहदाह में एक बादशाह है। तब इन बातों के मुताबिक बादशाह को इतनता’ की जाएगी। इसलिए अब आ हम आपस में मशवार करें। 8 तब मैंने उसके पास कहला भेजा, “जो तू कहता है, इस तरह की कोई बात नहीं हूँ, बल्कि तू ये बातें अपने ही दिल से बनाता है।” 9 वह सब तो हम को डराना चाहते थे, और कहते थे कि इस काम में उनके हाथ ऐसे ढीले पड़ जाएँगे कि वह होने ही का नहीं। लेकिन अब ऐ खुदा, तू मेरे हाथों को ताकत बख्श। 10 फिर मैं समाँयाह बिन मुहेतबेल के घर गया, वह घर में बन्द था; उसने कहा, “हम खुदा के घर में, हैकल के अन्दर मिलें, और हैकल के दरवाजों को बन्द कर ले। क्यूँकि वह तुझे कल्त करने को आएँगे, वह ज़स्त रात को तुझे कल्त करने को आएँगे।” 11 मैंने कहा, “क्या मुझसा आदमी भागें? और कौन है जो मुझ सा हो और अपनी जान बचाने को हैकल में दूसरे? मैं अन्दर नहीं जाने का।” 12 और मैंने मालूम कर लिया कि खुदा ने उसे नहीं भेजा था, लेकिन उसने मेरे खिलाफ पेशीनगोदी की बल्कि सनबल्लत और तूबियाह ने उसे मज़दूरी पर रखवा था। 13 और उसका इसलिए मज़दूरी दी गई ताकि मैं डर जाऊँ और ऐसा काम करके खताकार रहस्तूँ, और उनको बुरी खबर फैलाने का मज़मून मिल जाए, ताकि मुझे मलामत करें। 14 ऐ मेरे खुदा! तूबियाह और सनबल्लत को उनके इन कामों के लिहाज से, और नौंझियाह नविया को भी और बाकी नवियों को जो मुझे डराना चाहते थे याद रख। 15 गरज बाबन दिन में, अल्लू महीने की पच्चीसीवां तारीख को शहरपनाह बन चुकी। 16 जब हमारे सब दुम्पों ने ये सुना, तो हमारे आस — पास की सब कौमें डरे लगी और अपनी ही नज़र में खुद ज़लील हो गई; क्यूँकि उन्होंने जान लिया कि ये काम हमारे खुदा की तरफ से हुआ। 17 इसके अलावा उन दिनों में यहदाह के अमीर बहुत से खत तूबियाह को भेजते थे, और तूबियाह के खत उनके पास आते थे। 18 क्यूँकि यहदाह में बहुत लोगों ने उससे कौल — ओ — करार किया था, इसलिए कि वह सिकनियाह बिन अरख का दामाद था; और उसके बेटे यहदाहनान ने मुसल्लाम बिन बरकियाह की बेटी को ब्याह लिया था। 19 और वह मेरे आगे उसकी नेकियों का बयान भी करते थे और मेरी बातें उसे सुनते थे, और तूबियाह मुझे डराने को चिठ्ठियाँ भेजा करता था।

7 जब शहरपनाह बन चुकी और मैंने दरवाजे लगा लिए, और दरबान और गानेवाले और लाई मुकर्हर हो गए, 2 तो मैंने येस्सलेम को अपने भाई हनानी और किले के हाकिम हनानियाह के सुर्पुर किया, क्यूंकि वह अमानत दार और बहतों से ज्यादा खुदा तरस था। 3 और मैंने उसे कहा कि जब तक धूप तेज़ न हो येस्सलेम के फाटक न खलें, और जब वह पहरे पर खड़े हों तो किवडे बद लिए जाएँ, और तुम उनमें अड़बंगे लगाओ और येस्सलेम के बाशिन्दों में से पहरेवाले मुकर्हर करो कि हर एक अपने घर के सामने अपने पहरे पर रहे। 4 और शहर तो 'बरी' और बड़ा था, लेकिन उसमें लोग कम थे और घर बने न थे। 5 और मैंने खुदा ने मेरे दिल में डाला कि अमीरों और सरदारों और लोगों को इकट्ठा करूँ ताकि नसबनामे के मुताबिक उनका शपार किया जाए और मुझे उन लोगों का नसबनामा मिला जो पहले आए थे, और उसमें ये लिखा हुआ पाया: 6 मुल्क के जिन लोगों को शाह — ए — बाबुल नबकदनजर बाबुल को ले गया था, उन शुलामों की गुलामी में से वह जो निकल आए, और येस्सलेम और यहदाह में अपने अपने शहर को गए थे हैं, 7 जो जम्बूबुल, यशू'अ, नहमियाह, 'अज्जरियाह, रामियाह, नहमानी, मर्दकी बिलशान मियकरत, बिगवई, नहम और बाना के साथ आए थे। बनी — इस्माईल के लोगों का शुमार ये था: 8 बनी पर'ऊस, दो हजार एक सौ बहतर; 9 बनी सफ्रतियाह, तीन सौ बहतर; 10 बनी अरख, छ: सौ बाबन; 11 बनी पछत — मोआब जो यशू'अ और योआब की नसल में से थे, दो हजार आठ सौ अठारह; 12 बनी 'ऐलाम, एक हजार दो सौ चब्बन, 13 बनी जनू, आठ सौ पैन्तालीस; 14 बनी जककी, सात सौ साठ; 15 बनी बिनबी, छ: सौ अठतालीस; 16 बनी बबई, छ: सौ अठर्ईस; 17 बनी 'अज्जाजात, दो हजार तीन सौ बाईस; 18 बनी अदुनिकाम छ: सौ सडसठ; 19 बनी बिगवई, दो हजार सडसठ; 20 बनी 'अटीन, छ: सौ पचपन, 21 हिजकियाह के खानादान में से बनी अटीर, अष्टनवे; 22 बनी हशम, तीन सौ अठाईस; 23 बनी बजै, तीन सौ चौबीस; 24 बनी खारिफ, एक सौ बारह, 25 बनी जिबा'ऊन, पचानवे; 26 बैतलहम और नूफ़ाह के लोग, एक सौ अठासी, 27 'अन्नतोत के लोग, एक सौ अश्वाईस; 28 बैत 'अज्जमावत के लोग, बयालीस, 29 करयतया'रीम, कफीरा और बैरेत के लोग, सात सौ तैनातीस; 30 रामा और जिबा' के लोग, छ: सौ इक्कीस; 31 मिकास के लोग, एक सौ बाईस; 32 बैतएल और एँके लोग, एक सौ तीस; 33 दूसे नबू के लोग, बाबन; 34 दूसे 'ऐलाम की औलाद, एक हजार दो सौ चब्बन; 35 बनी हारिम, तीन सौ बीस; 36 यरीह के लोग, तीन सौ पैन्तालीस; 37 लूद और हार्दीद और ओनू के लोग, सात सौ इक्कीस; 38 बनी सनाआह, तीन हजार नौ सौ तीस। 39 फिर काहिन यानी यशू'अ के घराने में से बनी यदा'याह, नौ सौ तिहतर; 40 बनी इमेर, एक हजार बाबन; 41 बनी फशहर, एक हजार दो सौ सैन्तालीस; 42 बनी हारिम, एक हजार सत्रह। 43 फिर लावी यानी बनी होदावा में से यशू'अ और कदमीएल की औलाद, चौहतर; 44 और गानेवाले यानी बनी आसफ, एक सौ अठतालीस; 45 और दरबान जो सलूम और अटीर और तलमून और 'अवक्कब और खतीता और सोबै की औलाद थे, एक सौ अठतीस। 46 और नतीनीम, यानी बनी जीहा, बनी हस्फ़ा, बनी तब'ओत, 47 बनी कर्स्स, बनी सीरीा, बनी फदून, 48 बनी लिबाना, बनी हजाबा, बनी शलमी, 49 बनी हनान, बनी जिद्देल, बनी जहार, 50 बनी रियायाह, बनी रसीन, बनी नकूदा, 51 बनी जब्जाम, बनी उज्जा, बनी फासख, 52 बनी बसै, बनी म'कूनीम, बनी नफ्शसीम 53 बनी बक्कबूक, बनी हक्कफ़ा, बनी हरहर, 54 बनी बजलीत, बनी महीदा, बनी हरशा 55 बनी बरकस, बनी सीमग, बनी ताम्ह, 56 बनी नजियाह, बनी खतीफा। 57 सुलेमान के खादिमों की औलाद: बनी सूरी, बनी सूफिरत, बनी फरीदा, 58 बनी याला, बनी दरकून,

बनी जिद्देल, 59 बनी सफ्रतियाह, बनी खतील, बनी फूकरत जबाइम और बनी अमून। 60 सुबनतीनीम और सुलेमान के खादिमों की औलाद, तीन सौ बानवे। 61 और जो लोग तल — मलह और तलहरसा और करोब और अदून और इमेर से गए थे, लेकिन अपने आबाई खान्दानों और नसल का पता न दे सके कि इस्माईल में से थे या नहीं, सो ये हैं: 62 बनी दिलायाह, बनी तुबियाह, बनी नकूदा, छ: सौ बायालिस। 63 और काहिनों में से बनी हबायाह, बनी हक्कूस और बरजिल्ली की औलाद जिसने जिला'आदी बरजिल्ली की बैटियों में से एक लडकी को ब्याह लिया और उनके नाम से कहलाया। 64 उन्होंने अपनी सनद उनके बीच जो नसबनामों के मुताबिक गिने गए थे दूँड़ी, लेकिन वह न मिली। इसलिए वह नापाक माने गए और कहानत से छारिज हुए; 65 और हाकिम ने उनसे कहा कि वह पाकतीनी चीजों में से न खाएँ, जब तक कोई काहिन ऊरीम — ओ — तुमीम लिए हुए खडा न हो। 66 सारी जमा'अत के लोग मिलकर बयालीस हजार तीन सौ साठ थे; 67 'अलावा उनके गुलामों और लैडियों का शुमार सात हजार तीन सौ सैन्तीस था, और उनके साथ दो सौ पैन्तालीस गानेवाले और गानेवालियाँ थी। 68 उनके घोड़े, सात सौ छतीसीं; उनके खच्चर, दो सौ पैन्तालीस; 69 उनके ऊँट, चार सौ पैन्तीस; उनके गधे, छ: हजार सात सौ बीस थे। 70 और आबाई खान्दानों के सरदारों में से कुछ ने उस काम के लिए दिया। हाकिम ने एक हजार सोने के दिरहम, और पचास प्याने, और काहिनों के पाँच सौ तीस लिबास खजाने में दाखिल किए। 71 और आबाई खान्दानों के सरदारों में से कुछ ने उस काम के खजाने में बीस हजार सोने के दिरहम, और दो हजार दो सौ मना चाँदी दी। 72 और बाकी लोगों ने जो दिया वह बीस हजार सोने के दिरहम, और दो हजार मना चाँदी, और काहिनों के सडसर्प फैराहन थे। 73 इसलिए काहिन और लावी और दरबान और गाने वाले और कुछ लोग, और नतीनीम, और तमाम इस्माईल अपने — अपने शहर में बस गए।

8 और जब सातवाँ महीना आया, तो बनी — इस्माईल अपने — अपने शहर में थे। और सब लोग यकतन होकर पानी फाटक के सामने के मैदान में इकट्ठा हुए, और उन्होंने एजा फकीह से 'अर्ज' की कि मस्सा की शरी' अत की किताब को, जिसका खुदावन्द ने इस्माईल को हक्म दिया था लाए। 2 और सातवाँ महीने की पहली तारीख को एजा काहिन तौरेत को 'जमा'अत के, यानी मर्दों और 'औरतों और उन सबके सामने ले आया जो सुनकर समझ सकते थे। 3 और वह उसमें से पानी फाटक के सामने के मैदान में, सुबह से दोपहर तक मर्दों और 'औरतों और सभों के आगे जो समझ सकते थे पढ़ता रहा; और सब लोग शरी' अत की किताब पर कान लगाए रहे। 4 और एजा फकीह एक चोबी मिम्बर पर, जो उन्होंने इसी काम के लिए बनाया था खडा हुआ; और उसके पास मतियाह, और समा', और 'अनायाह, और ऊरियाह, और खिलकियाह, और मासियाह उसके दहने खडे थे; और उसके बाँह पिंडायाह, और मिसाएल, और मलकियाह, और हाशम, और हसबदाना, और जकरियाह और मुसल्लाम थे। 5 और एजा ने सब लोगों के सामने किताब खोली क्यूंकि वह सब लोगों से ऊपर था, और जब उसने उसे खोला तो सब लोग उठ खडे हुए; 6 और एजा ने खुदावन्द खदा — ए — 'अज्जीम को मुबारक कहा; और सब लोगों ने अपने हाथ उठाकर जवाब दिया, आमीन — आमीन “और उन्होंने औरै मुँह जमीन तक झुककर खुदावन्द को सिज्दा किया। 7 यशू'अ, और बनी, और सरीबियाह, और यमिन और 'अवक्कब, और सब्बती, और हृदियाह, और मासियाह, और कलीता, और 'अजरियाह, और हृजाबाद, और हनान, और फिलायाह और लावी लोगों को शरी' अत समझाते गए; और लोग अपनी — अपनी जगह पर खडे रहे। 8 और उन्होंने उस किताब यानी खडा की शरी' अत में से साफ़ आबाज से पढ़ा, फिर उसके मानी बताए और उनको 'इबारत समझा

दी। 9 और नहमियाह ने जो हाकिम था, और एज़ा काहिन और फकीह ने, और उन लावियों ने जो लोगों को सिखा रहे थे सब लोगों से कहा, आज का दिन खुदावन्द तुम्हारे खुदा के लिए पाक है, न गम करो न रो। 10 क्यूंकि सब लोग शरीर अत की बातें सुनकर रोने लगे थे। 10 फिर उसने उनसे कहा, “अब जाओ, और जो मोटा है खाओ, और जो मीठा है पियो और जिनके लिए कुछ तैयार नहीं हुआ उनके पास भी भेजो; क्यूंकि आज का दिन हमारे खुदावन्द के लिए पाक है, और तुम मायस मत हो, क्यूंकि खुदावन्द की खुशी तुम्हारी पनाहगाह है।” 11 और लावियों ने सब लोगों को चुप कराया और कहा, “खामोश हो जाओ, क्यूंकि आज का दिन पाक है; और गम न करो।” 12 तब सब लोग खाने पीने और हिस्सा भेजने और बड़ी खुशी करने को चले गए; क्यूंकि वह उन बातों को जो उनके आगे पढ़ी गई, समझे थे। 13 और दूसरे दिन सब लोगों के आवाइ खानानामों के सरदार और काहिन और लावी, एज़ा फकीह के पास इकट्ठे हुए कि तैरत की बातों पर ध्यान लगाएँ। 14 और उनको शरीर अत में ये लिखा मिला, कि खुदावन्द ने मूसा के जरिएँ फरमाया है कि बनी — इसाईल सातवें महीने की ईद में झोपड़ियों में रहा करें, 15 और अपने सब शहरों में और येस्तलेम में ये ऐलान और मनादी कराएँ कि पहाड़ पर जाकर जैतून की डालियाँ और जंगली जैतून की डालियाँ और मेहंदी की डालियाँ और खजूर की शाखें, और घंटे दरखतों की डालियाँ झोपड़ियों के बनाने को लाओ, जैसा लिखा है। 16 तब लोग जा — जा कर उनको लाए, और हर एक ने अपने घर की छत पर, और अपने अहोते में, और खुदा के घर के सहनों में, और पानी फाटक के मैदान में, और इक्काईमी फाटक के मैदान में अपने लिए झोपड़ियाँ बनाई। 17 और उन लोगों की सारी जमा’ अत ने जो गुलामी से फिर आए थे, झोपड़ियाँ बनाई और उन्हीं झोपड़ियों में रहें; क्यूंकि यशः अ बिन नून के दिनों से उस दिन तक बनी — इसाईल ने ऐसा नहीं किया था। चुनाँचे बहुत बड़ी खुशी हुई। 18 और पहले दिन से आखिरी दिन तक रोज — ब — रोज उन्ने खुदा की शरीरी अत की किताब पढ़ी। और उन्होंने सात दिन 'ईद मनाई, और आठवें दिन दस्तर के मुवाफिक पाक मजमा' इकट्ठा हुआ।

9 फिर इसी महीने की चौबीसीवीं तारीख को बनी — इसाईल रोजा रखकर और टाट ओढ़कर और मिट्टी अपने सिर पर डालकर इकट्ठे हुए। 2 और इसाईल की नसल के लोग सब परदेसियों से अलग हो गए, और खड़े होकर अपने गुहाहों और अपने बाप — दादा की खताओं का इकरार किया। 3 और उन्होंने अपनी अपनी जगह पर खड़े होकर एक पहर तक खुदावन्द अपने खुदा की किताब पढ़ी; और दूसरे पहर में, इकरार करके खुदावन्द अपने खुदा को सिजदा करते रहे। 4 तब कदमीएल, यशः अ, और बानी, और सबनियाह, बुनी और सरीबियाह, और बानी, और कनानी ने लावियों की सुडियों पर खड़े होकर बलन्द आवाज से खुदावन्द अपने खुदा से फरियाद की। 5 फिर यशः अ, और कदमीएल और बानी और हसबनियाह और सरीबियाह और हदियाह, और सबनियाह, और फतहियाह लावियों ने कहा, खड़े हो जाओ, और कहो, खुदावन्द हमारा खुदा इन्विटा से हमेशा तक मधारक है, तेरा जलाली नाम मुबारक हो, जो सब हम्द — ओ — तारीफ से बाला है। 6 तू ही अकेला खुदावन्द है; तूने आसमान और आसमानों के आसमान को और उनके सारे लश्कर को, और जमीन को और जो कुछ उसपर है, और समन्दरों को और जो कुछ उनमें है बनाया और तू उन सभों का परवरदिगार है, और आसमान का लश्कर तुझे सिजदा करता है। 7 त. वह खुदावन्द खुदा है जिसने इब्बाहम को चुन लिया, और उसे कसदियों के ऊर से निकाल लाया, और उसका नाम अब्बाहम रखखा; 8 तूने उसका दिल अपने सामने बफादार पाया, और कनानीयों हितियों और अमारियों फरिजियों और यबूसियों और जिराजियों का मुल्क देने का

'अहट उससे बँधा ताकि उसे उसकी नसल को दे; और तूने अपने सुखन पूरे किए क्यूंकि तू सादिक है। 9 और तूने मिस्र में हमारे बाप — दादा की मुसीबत पर नजर की, और बहर — ए — कलजुम के किनारे उनकी फरियाद सुनी। 10 और फिर औन और उसके सब नैकर्णों, और उसके मुल्क की सब राज्यत पर निशान और 'अजायब कर दिखाएँ; क्यूंकि तू जानता था कि वह गुस्त के साथ उनसे पेश आए। इसलिए तेरा बड़ा नाम हुआ, जैसा आज है। 11 और तूने उनके आगे समन्दर को दो हिस्से किया, ऐसा कि वह समन्दर के बीच सखी ज़मीन पर होकर चले; और तूने उनका पीछा करनेवालों को गहराओं में डाला, जैसा पथर समन्दर में फेंका जाता है। 12 और तूने दिन को बादल के सुनून में होकर उनकी रहनुमाई की और रात को आग के सुनून में, ताकि जिस रास्ते उनको चलना था उसमें उनको रोशनी मिले। 13 और त. कोह-ए-सीना पर उतर आया, और तूने आसमान पर से उनके साथ बातें की, और रास्त अहकाम और सच्चे कानून और अच्छे आइन — आ — फरमान उनको दिए, 14 और उनको अपने पाक सबत से बाकिफ किया, और अपने बन्दे मूसा के जरिएँ उनको अहकाम और आईन और शरीरी अत दी। 15 और तूने उनकी भक्ति मिटाने को आसमान पर से रोटी दी, और उनकी यास बुझाने को चट्टान में से उनके लिए पानी निकाला, और उनको फरमाया कि वह जाकर उस मुल्क पर कब्जा करें जिसको उनको देने की तूने कसम खाई थी। 16 लेकिन उन्होंने और हमारे बाप — दादा ने गुस्त किया, और बागी बने और तेरे हक्कों को न माना; 17 और फरमाँबरदारी से इन्कार किया, और तेरे 'अजायब को जो तूने उनके बीच किए याद न रखवा; बल्कि बागी बने और अपनी बगावत में अपने लिए एक सरदार मुकर्रर किया, ताकि अपनी गुलामी की तरफ लौट जाएँ। लेकिन तू वह खुदा है जो रहीम — ओ — करीम मु'अफ़ करने की तैयार, और कहर करने में भीमा, और शक्ति में गमी है, इसलिए तूने उनको छोड़ न दिया। 18 लेकिन जब उन्होंने अपने लिए ढाला हुआ बछड़ा बनाकर कहा, थे तेरा खुदा है, जो तुझे मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, और दूंगे गुस्सा दिलाने के बड़े बड़े काप किए; 19 तो भी तूने अपनी गँगांगूँ रहमतों से उनको बीरने में छोड़ न दिया; दिन को बादल का सुनून उनके ऊपर से दूर न हुआ, ताकि वह रास्ते में उनकी रहनुमाई करे, और न रात को आग का सुनून दूर हुआ, ताकि वह उनको रोशनी और वह रास्ता दिखाएँ जिससे उनको चलना था। 20 और तूने अपनी नेक स्थू भी उनकी तरवियत के लिए बछरी, और मन को उनके मुँह से न रोका, और उनको प्यास को बुझाने को पानी दिया। 21 चालीस बरस तक त. वीरने में उनकी परवरिश करता रहा; वह किसी चीज़ के मुहताज न हुए, न तो उनके कपड़े पुराने हुए और न उनके पाँव सजे। 22 इसके सिवा तूने उनको ममलकुर्सों और उम्में बछरी, जिनको तूने उनके हिस्सों के मूताबिक उनको बॉट दिया; चुनाँचे वह सीहोन के मुल्क, और शाह — ए — हज़बोन के मुल्क, और बसन के बादशाह 'ओज़ के मुल्क पर क्रांबिज हुए। 23 तूने उनकी औलाद को बढ़ाकर आसमान के सितारों की तरह कर दिया, और उनको उस मुल्क में लाया जिसके बारे में तूने उनके बाप — दादा से कहा था कि वह जाकर उसपर कब्जा करें। 24 तब उनकी औलाद ने आकर इस मुल्क पर कब्जा किया, और तूने उनके आगे इस मुल्क के बाशिन्दों यानी कनानीयों को मगलूब किया, और उनको उनके बादशहों और इस मुल्क के लोगों के साथ उनके हाथ में कर दिया कि जैसा चाहें वैसा उससे करें। 25 तब उन्होंने फसीलदार शहरों और जरखेज मुल्क को ले लिया, और वह सब तरह के अच्छे माल से भरे हुए घरों और खोदे हुए कुँवों, और बहत से अंगूरिसानों और जैतून के बागों और फलदार दरखतों के मालिक हुए; फिर वह खा कर सेरे हुए और मटे ताजे हो गए, और तेरे बड़े बड़े एहसान से बहत हज़ उठाया। 26 तो भी वह ना — फरमान होकर तुझ से बागी हुए, और उन्होंने

तेरी शरी' अत को पीठ पीछे फेंका, और तेरे नवियों को जो उनके खिलाफ गवाही देते थे ताकि उनको तेरी तरफ फिरा लायें कल्प किया और उन्होंने गुसा सिद्धान्त के बड़े — बड़े काम किए। 27 इसलिए तूने उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दिया, जिन्होंने उनको सताया; और अपने दुख के वक्त में जब उन्होंने तुझ से फरियाद की, तो तूने आसमान पर से सुन लिया और अपनी गैंगरूं रहमतों के मुताबिक उनको छुड़ाने वाले दिए जिन्होंने उनको उनके दुश्मनों के हाथ से छुड़ाया। 28 लेकिन जब उनको आराम मिला तो उन्होंने फिर तेरे आगे बढ़कारी की, इसलिए तूने उनको उनके दुश्मनों के कब्जे में छोड़ दिया इसलिए वह उन पर मुसल्लत रहे; तो भी जब वह रूपूं लाए और तुझ से फरियाद की, तो तूने आसमान पर से सुन लिया और अपनी रहमतों के मुताबिक उनको बार — बार छुड़ाया; 29 और तूने उनके खिलाफ गवाही दी, ताकि अपनी शरी' अत की तरफ उनको फेर लाए। लेकिन उन्होंने गुस्त किया और तेरे फरमान न माने, बल्कि तेरे अहकाम के बरखिलाफ गुनाह किया जिनको अगर कोई माने, तो उनकी वजह से जीता रहेगा, और अपने कन्धे को हटाकर बाणी बन गए और न सुना। 30 तो भी तू बहुत बरसों तक उनकी बद्दिश्वर करता रहा, और अपनी रुह से अपने नवियों के जरिए उनके खिलाफ गवाही देता रहा; तो भी उन्होंने कान न लगाया, इसलिए तूने उनको और मुल्कों के लोगों के हाथ में कर दिया। 31 बावजूद इसके तूने अपनी गैंगरूं रहमतों के जरिए उनको नाबद न कर दिया और न उनको छोड़ा, क्यूंकि तु रहीम — ओ — करीम खुदा है। 32 “इसलिए अब, ऐ हमारे खुदा, बुज्जी, और कादिर — ओ — मुहीब खुदा जो 'अहद — ओ — रहमत को क्राईम रखता है। वह दुख जो हम पर और हमारे बादशाहों पर, और हमारे सरदारों और हमारे काहिनों पर, और हमारे नवियों और हमारे बाप — दादा पर, और तेरे सब लोगों पर असू के बादशाहों के जमाने से आज तक पड़ा है, इसलिए तेरे सामने हल्का न मालम हो; 33 तो भी जो कुछ हम पर आया है तू सब में तु 'अदिल है क्यूंकि तु सच्चाइ से पेश आया, लेकिन हम ने शरात की। 34 और हापरे बादशाहों और सरदारों और हमारे काहिनों और बाप — दादा ने न तो तेरी शरी' अत पर 'अमल किया और न तेरे अहकाम और शहादतों को माना, जिनसे तू उनके खिलाफ गवाही देता रहा। 35 क्यूंकि उन्होंने अपनी ममलतकत में, और तेरे बड़े एहसान के वक्त जो तूने उन पर किया, और इस बरी' और जररेख मुल्क में जो तूने उनके हवाले कर दिया, तेरी इबादत न की और न वह अपनी बढ़कारियों से बाज आए। 36 देख, आज हम गुलाम हैं, बल्कि उसी मुल्क में जो तूने हमारे बाप — दादा को दिया कि उसका फल और पैदावार खाएँ; इसलिए देख, हम उसी में गुलाम हैं। 37 वह अपनी कर्सीर पैदावार उन बादशाहों को देता है, जिनको तूने हमारे गुनाहों की वजह से हम पर मुसल्लत किया है; वह हमारे जिस्मों और हमारी मवारी पर भी जैसा चाहते हैं इछिदियार रखते हैं, और हम सबक मुसीबत में हैं।” 38 “इन सब बातों की वजह से हम सच्चा 'अहद करते और लिख भी देते हैं, और हमारे हाकिम, और हमारे लावी, और हमारे काहिन उस पर मुहर करते हैं।”

10 और वह जिन्होंने गुहर लगाई थे हैं: नरपियाह बिन हकलियाह हाकिम, और सिद्धिकियाह 2 सिरायाह, 'अजरियाह, यरमियाह, 3 फशहर, अमरियाह, मलकियाह, 4 हतूश, सबनियाह, मल्लूक, 5 हारिम, मरीमोत, 'अबदियाह, 6 दानीएल, जिन्नतून, बास्क, 7 मुसल्लाम, अबियाह, मियारीन, 8 माजियाह, बिलजी, समा'याह, ये काहिन थे। 9 और लावी ये थे: याहू'अ बिन अजनियाह, जिन्वी बनी हनदाद में से कटमीएल 10 और उनके भाई सबनियाह, हृदियाह, कलीताह, फिलायाह, हनान, 11 मीका, रहोब, हसाकियाह, 12 जक्कूर, सरीबियाह, सबनियाह, 13 हृदियाह, बानी, बनीनू। 14 लोगों के रेस ये थे: पर'ऊस, पखत — मोआब, 'ऐलाम, ज़तू, बानी, 15 बुनी, 'अजजाद,

बबई, 16 अदूनियाह, बिगवई, 'अदीन, 17 अतीर, हिज़कियाह, 'अज्जूर, 18 हृदियाह, हाशम, बजी, 19 खारीफ, 'अन्नोत, नैब, 20 मगफ़ी'आस, मुसल्लाम, हज़र, 21 मशेजबेल, सदोक, यदू' 22 फिलतियाह, हनान, 'अनायाह, 23 होसे', हननियाह, हसब, 24 हलूहेस, फ़िलहा, सोबेक, 25 रहम, हसबनाह, मासियाह, 26 अखियाह, हनान, 'अनान, 27 मल्लूक, हारिम, बानाह। 28 बाकी लोग, और काहिन, और लावी, और दरबान और गाने वाले और नतीम और सब जो खुदा की शरी' अत की खातिर और मुल्कों की कीर्तों से अलग हो गए थे, और उनकी बीवियां और उनके बेटे और बेटियाँ गरज जिनमें समझ और 'अकल थी 29 वह सबके सब अपने भाई अमीरों के साथ मिलकर लान्नत ओ कसम में शामिल हुए, ताकि खुदावन्द की शरी' अत पर जो बन्दा — ए — खुदावन्द मूसा के जरिए मिली, चले और यहोवाह हमारे खुदावन्द के सब हुक्मों और फरमानों और आइन को मानें और उन पर 'अमल करें। 30 और हम अपनी बेटियाँ मुल्क के बाशिन्दों को न दें, और न अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ लें; 31 और अगर मुल्क के लोग सबत के दिन कुछ माल या खाने की चीज बेचने को लाएं, तो हम सबत को या किसी पाक दिन को उनसे मोल न लें। और सातवाँ साल और हम कर्ज का मुतालबा छोड़ दें। 32 और हम ने अपने लिए कानून ठहराए कि अपने खुदा के घर की खिदमत के लिए साल — ब — साल मिस्काल का तीसरा हिस्सा' दिया करें; 33 या'नी सबतों और नये चाँदों की नज़र की रोटी, और हमेशा की नज़र की कुर्बानी, और हमेशा की सोखनी कुर्बानी के लिए और मुकर्रा 'ईदों और पाक चीजों और खुदा की कुर्बानियों के लिए कि इस्माइल के बास्ते कफ़कारा हो, और अपने खुदा के घर के सब कामों के लिए। 34 और हम ने या'नी काहिनों, और लावियों, और लोगों ने, लकड़ी के हृदिए के बारे में पच्चीं डाली, ताकि उसे अपने खुदा के घर में बाप — दादा के घरानों के मुताबिक मुकर्रा वक्तों पर साल — ब — साल खुदावन्द अपने खुदा के मज़बह पर जलाने को लाया करें, जैसा शरी' अत में लिखा है। 35 और साल — ब — साल अपनी — अपनी जापीन के पहले फल, और सब दरखतों के सब मेवों में से पहले फल खुदावन्द के घर में लाएँ; 36 और जैसा शरी' अत में लिखा है, अपने पहलौठे बेटों को और अपनी मवाशी या'नी गाय, बैल और भेड — बकरी के पहलौठे बच्चों को अपने खुदा के घर में काहिनों के पास जो हमारे खुदा के घर में खिदमत करते हैं लाएँ। 37 और अपने गैंधे हृ आटे और अपनी उठाई हृहृ कुर्बानियों और सब दरखतों के मेवों, और मय और तेल में से पहले फल को अपने खुदा के घर की कोठरियों में काहिनों के पास, और अपने खेत की दहेकी लावियों के पास लाया करें; क्यूंकि लावी सब शहरों में जहाँ हम काशतकारी करते हैं, दसवाँ हिस्सा लेते हैं। 38 और जब लावी दहेकी लें तो कोई काहिन जो हास्न की औलाद से हो, लावियों के साथ हो, और लावी दहेकियों का दसवाँ हिस्सा हमारे खुदा के बैत — उल — माल की कोठरियों में लाएँ। 39 क्यूंकि बनी — इस्माइल और बनी लावी अनाज और मय और तेल की उठाई हृहृ कुर्बानियों उन कोठरियों में लाया करें जहाँ हैकल के बर्तन और खिदमत गुजार काहिन और दरबान और गानेवाले हैं; और हम अपने खुदा के घर को नहीं छोड़ेंगे।

11 और लोगों के सरदार येस्शलेम में रहते थे; और बाकी लोगों ने पच्चीं डाली कि हर दस शब्दों में से एक को शहर — ए — पाक, येस्शलेम, में बसने के लिए लाएँ; और नै बाकी शहरों में रहें। 2 और लोगों ने उन सब आदमियों को, जिन्होंने खुशी से अपने आपको येस्शलेम में बसने के लिए पेश किया दुआ थी। 3 उस स्थान के सरदार, जो येस्शलेम में आ बसे थे हैं; लेकिन यहदाह के शहरों में हर एक अपने शहर में अपनी ही मिलिक्यत में रहता था, या'नी अहल — ए — इस्माइल और काहिन और लावी और नतीम, और

सुलेमान के मुलाज़िमों की औलाद। 4 और येस्शलेम में कुछ बनी यहदाह और कुछ बनी बिनयमीन रहते थे। बनी यहदाह में से, 'अतायाह बिन 'उज्जियाह बिन जकरियाह बिन अमरियाह बिन सफतियाह बिन महललाएल बनी फारस में से; 5 और मासियाह बिन बास्क बिन कुलहोजा, बिन हजायाह, बिन 'अदायाह, बिन यूरीब बिन जकरियाह बिन शिलोनी। 6 सब बनी फारस जो येस्शलेम में बसे चार सौ अठासठ सूर्मा थे। 7 और ये बनी बिनयमीन हैं, सल्लू बिन मुसल्लाम बिन यूरेद बिन फिदायाह बिन कूलायाह बिन मासियाह बिन एतीएल बिन यसायाह। 8 फिर जब्बे सल्लै और नौ सौ अश्वाईं आदमी। 9 और यूएल बिन ज़िकरी उनका नाज़िम था, और यहदाह बिन हस्सन्ह शहर के हाकिम का नाइब था। 10 काहिनों में से यदा'याह बिन यूरीब और यकीन, 11 शिरायाह बिन खिलकियाह बिन मुसल्लाम बिन सदोक बिन मिरायोत बिन अखितोब, खुदा के घर का नाज़िम, 12 और उनके भाई जो हैकल में काम करते थे, आठ सौ बाईस; और 'अदायाह बिन यरोहाम, बिन फिलियाह बिन अम्जी बिन जकरियाह, बिन फशहार बिन मलकियाह, 13 और उसके भाई आबाई खान्दानों के रईस, दो सौ बयातीस; और अमसी बिन 'अज़ाएल बिन अखिरी बिन मसल्लीमोत बिन इम्रे, 14 और उनके भाई जबरदस्त सूर्मा, एक सौ अश्वाईं; और उनका सरदार जबदीएल बिन हजदूलीम था। 15 और लावियों में से, समा'याह बिन हूस्क बिन 'अज़रिकाम बिन हसबियाह बिन बूसी, 16 और सब्बतै और यूज़बाद लावियों के रईसों में से, खुदा के घर के बाहर के काम पर मुकर्रर थे; 17 और मतनियाह बिन मीका बिन जब्नी बिन आसफ सरदार था, जो दुआ के बक्त शकुरगुजारी शूर्ह करने में पेशवा था; और बक्कबुकियाह उसके भाईयों में से दूसरे दर्जे पर था, और 'अबदा बिन सम्म' बिन जलाल बिन यदूतू। 18 पाक शहर में कुल दो सौ चौरासी लाली थे। 19 और दरबान 'अक्कब, तलमून और उनके भाई जो फाटकों की निगहबानी करते थे, एक सौ बहतर थे। 20 और इसाईलियों और काहिनों और लावियों के बाकी लोग यहदाह के सब शहरों में अपनी — अपनी पिलिकपत में रहते थे। 21 लेकिन नरीनीम 'ओप्लर में बसे हुए थे; और जीहा और जिसफा नरीनीम पर मुकर्रर थे। 22 और उज्जी बिन बानी बिन हसबियाह बिन मतनियाह बिन मीका जो आसफ की औलाद यानी गानेवालों में से था, येस्शलेम में उन लावियों का नाज़िम था, जो खुदा के घर के काम पर मुकर्रर थे। 23 क्यूंकि उनके बारे में बादशाह की तरफ से हूकम हो चुका था, और गानेवालों के लिए हर रोज़ की ज़स्तर के मुताबिक मुकर्ररा रसद थी। 24 और फतहयाह बिन मशेजबेल जो जारह बिन यहदाह की औलाद में से था, राइयत के सब मुआ'मिलात के लिए बादशाह के सामने रहता था। 25 रहे गाँव और उनके खेत, इसलिए बनी यहदाह में से कुछ लोग करयत — अरबा' और उसके कस्बों में, और दीबोन और उसके कस्बों में, और यक्कबज़ीएल और उसके गाँवों में रहते थे; 26 और यशू'अ और मोलादा और बैत फलत में, 27 और हसर — सु'आल और बैरसबा' और उसके कस्बों में, 28 और सिक्लाज और मकुनाह और उस के कस्बों में 29 और ऐन — रिमोन और सुरु'आह में, और यरमूत में, 30 ज़नोआह, 'अदूल्लाम, और उनके गाँवों में; लकीस और उसके खेतों में, 'अज़ीका और उसके कस्बों में, यह बैरसबा' से हिनूम की बादी तक डेरों में रहते थे। 31 बनी बिनयमीन भी जिबा' से लेकर आगे मिकमास और 'अव्याह और बैतएल और उसके कस्बों में, 32 और 'अन्नोत और नबू और 'अननियाह, 33 और हासर और रामा और जितेम, 34 और हादीद और जिबोईम और नबल्लाम, 35 और लूद और अनः, यानी कारीगरों की बादी में रहते थे। 36 और लावियों में से कुछ फरीक जो यहदाह में थे, वह बिनयमीन से मिल गए।

12 वह काहिन और लावी जो जम्बाबुल बिन सियालतिएल और यशू'अ के साथ गए, सो ये हैं: सिरायाह, यरमियाह, एज़ा, 2 अमरियाह, मल्लक, हत्तूश, 3 सिकनियाह, रहम, मरीमोत, 4 इङ्ग, जिन्नतु, अबियाह, 5 मियामीन, मादियाह, बिल्जा, 6 समा'याह और यूरीबी, यदा'याह 7 सल्लू, 'असुक खिलकियाह, यदा'याह, ये यशू'अ के दिनों में काहिनों और उनके भाईयों के सरदार थे 8 और लाली ये थे: यशू'अ, बिनवी, कदमिएल सरीबियाह यहदाह और मतनियाह जो अपने भाईयों के साथ शकुरगुजारी पर मुकर्रर था; 9 और उनके भाई बक्कबुकियाह और 'उन्नी उनके सामने अपने — अपने पहरे पर मुकर्रर थे। 10 और यशू'अ से यूरीकीम पैदा हुआ, और यूरीकीम से इलियासिब पैदा हुआ, और इलियासब से यूदू' पैदा हुआ, 11 और यूदू' से यूनतन पैदा हुआ, और यूनतन से यूदू' पैदा हुआ, 12 और यूरीकीम के दिनों में ये काहिन आबाई खान्दानों के सरदार थे: सिरायाह से मिरायाह; यरमियाह से हननियाह; 13 एज़ा से मुसल्लाम; अमरियाह से यहनान; 14 मलकू से यूनतन, सबनियाह से यूसूफ; 15 हारिम से 'अदाना; मिरायोत से खलकै; 16 इङ्ग से जकरियाह; जिन्नतन से मुसल्लाम: 17 अवियाह से जिकरी; मिनयमीन से' मौ' और अदियाह से फिल्ती; 18 बिलजाह से सम्म'आ; समा'याह से यहनान; 19 यूरीब से मतने; यदा'याह से 'उज्जी; 20 सल्लै से कल्लै; 'अमोक से इङ्ग; 21 खिलकियाह से हसबियाह; यदा'याह से नतनीएल। 22 इलियासब और यूदू' और यूनान और यूदू' के दिनों में, लावियों के आबाई खान्दानों के सरदार लिखे जाते थे; और काहिनों के, दारा फारसी की सलतनत में। 23 बनी लाली के आबाई खान्दानों के सरदार यूनान बिन इलियासब के दिनों तक, तवारीख की किताब में लिखे जाते थे। 24 और लावियों के रईस: हसबियाह, सरीबियाह और यशू'अ बिन कदमीएल, अपने भाईयों के साथ आपने सामने बारी — बारी से मर्द — ए — खुदा दाऊद के हूकम के मुताबिक हमद और शकुरगुजारी के लिए मुकर्रर थे। 25 मतनियाह और बक्कबुकियाह और अब्दियाह और यूसूफ और तलमून और अक्कब दरबान थे, जो फाटकों के मधुजनों के पास पदरा देते थे। 26 ये यूरीकीम बिन यशू'अ बिन यूसूफ के दिनों में, और नहमियाह हाकिम और एज़ा काहिन और फ़कीह के दिनों में थे। 27 और येस्शलेम की शहरपनाह की तबदीस के बक्त, उन्होंने लावियों को उनकी सब जगहों से ढंड निकाला कि उनको येस्शलेम में लाएँ, ताकि वह खुशी — खुशी झाँझ और सितार और बरबत के साथ शकुरगुजारी करके और गाकर तकदीस करें। 28 इसलिए गानेवालों की नसल के लोग येस्शलेम को आस — पास के मैदान से और नकूतियों के देहात से, 29 और बैत — उल — जिलजाल से भी, और जिबा' और 'अज़मावत के खेतों से क्यूंकि हुए; क्यूंकि गानेवालों ने येस्शलेम के चारों तरफ आपने लिए देहात बना लिए थे। 30 और काहिनों और लावियों ने अपने आपको पाक किया, और उन्होंने लोगों को और फाटकों को और शहरपनाह को पाक किया। 31 तब मैं यहदाह के अमीरों को दीवार पर लाया, और मैंने दो बड़े गोल मुकर्रर किए जो हमद करते हुए जलसू में निकले। एक उनमें से दहने हाथ की तरफ दीवार के ऊपर — ऊपर से कुड़े के फाटक की तरफ गया, 32 और ये उनके पीछे — पीछे गए, यानी हस्सा'याह और यहदाह के आधे सरदार। 33 'अज़रियाह, एज़ा और मुसल्लाम, 34 यहदाह और बिनयमीन और समा'याह और यरमियाह, 35 और कुछ काहिनजादे नरसिंगे लिए हुए, यानी जकरियाह बिन यूनतन, बिन समा'याह, बिन मतनियाह, बिन मीकायाह, बिन जक्कूर बिन आसफ; 36 और उसके भाई समा'याह और 'अज़राएल, मिल्ले, जिल्लै, माई, नतनीएल और यहदाह और हनानी, मर्द — ए — खुदा दाऊद के बाजों को लिए हुए जाते थे और एज़ा फ़कीह उनके आगे — आगे था। 37 और वह चरमा फाटक से होकर सीधे आगे गए, और दाऊद के शहर की सीढ़ियों पर

चढ़कर शहरपनाह की ऊँचाई पर पहुँचे, और दाऊद के महल के ऊपर होकर पानी फाटक तक पूर्ब की तरफ गए। 38 और शुक्रगुजारी करनेवालों का दूसरा गोल और उनके पांछे — पांछे मैं और आधे लोग उनसे मिलने की दीवार पर तनरौं के बुर्ज के ऊपर चौड़ी दीवार तक 39 और इफ़राईंनी फाटक के ऊपर पुराने फाटक और मछली फाटक, और हननएल के बुर्ज और हमियाह के बुर्ज पर से होते हुए भेड़ फाटक तक गए; और पहरेवालों के फाटक पर खड़े हो गए। 40 तब शुक्रगुजारी करनेवालों के दोनों गोल और मैं और मेरे साथ आधे हाकिम खुदा के घर में खड़े हो गए। 41 और काहिन इलियाकीम, मासियाह, बिनयमीन, मीकायाह, इलियूएनी, जकरियाह, हननियाह नरसिंगे लिए हुए थे; 42 और मासियाह और समा'याह और एलियाज़र और 'उज़ज़ी और यहहनान और मल्कियाह और 'ऐलाम और एज़ा अपने सरदार गानेवाले, इजरायियाह के साथ बलन्द आवाज से गाते थे। 43 और उस दिन उन्होंने बहुत सी कुर्बानियाँ चढ़ाई और उसी दिन खुशी की क्यूँकि खुदा ने ऐसी खुशी उनको बख्त्री कि वह बहुत खुश हुए; और 'आैरों और बच्चों ने भी खुशी मनाई। इसलिए येस्शलेम की खुशी की आवाज दूर तक सुनाई दीती थी। 44 उसी दिन लोग खजाने की, और उठाई हुई कुर्बानियाँ और पहले फलों और देकियों की कोठरियों पर मुकर्रर हुए, ताकि उनमें शहर शहर के खेतों के मुताबिक, जो हिस्से काहिनों और लावियों के लिए 'शरा' के मुताबिक मुकर्रर हुए उनको 'जमा' कीं क्यूँकि बनी यहदाह काहिनों और लावियों की बजह से जो हाजिर रहते थे खुश थे। 45 इसलिए वह अपने खुदा के इन्तजाम और तहारत के इन्तजाम की निगरानी करते रहे; और गानेवालों और दरबानों ने भी दाऊद और उसके बेटे सुलेमान के हक्म के मुताबिक ऐसा ही किया। 46 क्यूँकि पुराने जमाने से दाऊद और आसफ के दिनों में एक सरदार मुनानी होता था, और खुदा की हम्मट और शुक्र के गीत गाए जाते थे। 47 और तमाम इसाईल जस्त्वाबूल के और नहमियाह के दिनों में हर रोज़ की जस्तर के मुताबिक गानेवालों और दरबानों के हिस्से देते थे; यैं वह लावियों के लिए चीज़े मध्यस्स करते, और लावी बनी हास्त के लिए मध्यस्स करते थे।

13 उस दिन उन्होंने लोगों को मूसा की किताब में से पढ़कर सुनाया, और

उसमें ये लिखा मिला कि 'अमोनी और मोआबी खुदा की जमा' अत में कभी न आने पाएँ; 2 इसलिए कि वह रोटी और पानी लेकर बनी — इसाईल के इस्तकबाल को न निकले, बल्कि बल'आम को उनके खिलाफ मजदूरी पर बुलाया ताकि उन पर लान्नत करे — लेकिन हमारे खुदा ने उस लान्नत को बरकत से बदल दिया। 3 और ऐसा हुआ कि शरी'अत को सुनकर उन्होंने सारी मिली जूनी भीड़ को इसाईल से जुदा कर दिया। 4 इससे पहले इलियासब काहिन ने जो हमारे खुदा के घर की कोठरियों का मुजाज़ा था, तबियाह का रिश्तेदार होने की बजह से, 5 उसके लिए एक बड़ी कोठरी तैयार की थी जहाँ पहले नज़र की कुर्बानियाँ और लुबान और बर्तन, और अनाज की और मय की और तेल की दहेकियाँ, जो हक्म के मुताबिक लावियों और गानेवालों और दरबानों को दी जाती थी, और काहिनों के लिए उठाई हुई कुर्बानियाँ भी रखली जाती थी। 6 लेकिन इन दिनों में मैं येस्शलेम में न था, क्यूँकि शाह — ए — बाबूल अरतखशाशता के बर्तसवें बरस में बादशाह के पास गया था। और कुछ दिनों के बाद मैं बादशाह से स्वस्त की दरखास्त की, 7 और मैं येस्शलेम में आया, और मालूम किया कि खुदा के घर के सहनों में तूबियाह के वास्ते एक कोठरी तैयार करने से इलियासब ने कैसी खराबी की है। 8 इससे मैं बहुत रंजीदा हुआ इसलिए मैंने तूबियाह के सब खानारी सामान को उस कोठरी से बाहर फेंक दिया। 9 फिर मैंने हुक्म दिया और उन्होंने उन कोठरियों को साफ किया, और मैं खुदा के घर के बर्तनों और नज़र की कुर्बानियों और लुबान को फिर बही ले

आया। 10 फिर मुझे मालूम हुआ कि लावियों के हिस्से उनको नहीं दिए गए, इसलिए खिदमतगुजार लावी और गानेवाले अपने खेत को भाग गए हैं। 11 तब मैंने हाकिमों से झगड़कर कहा कि खुदा का घर क्यूँ छोड़ दिया गया है? और मैंने उनको इक्षण करके उनको उनकी जगह पर मुकर्रर किया। 12 तब सब अहल — ए — यहदाह ने अनाज और मय और तेल का दसवाँ हिस्सा खजानों में दाखिल किया। 13 और मैंने सलमियाह काहिन और सदोक फकीह, और लावियों में से फिदायाह को खजानों के खजांची मुकर्रर किया; और हनान बिन जक्कर बिन मतनियाह उनके साथ था; क्यूँकि वह दियानतदार माने जाते थे, और अपने भाईयों में बाँट देना उनका काम था। 14 ऐ मेरे खुदा इसके लिए याद कर और मैंने नेक कामों को जो मैंने अपने खुदा के घर और उसके रस्स के लिए किये मिटा न डाल। 15 उन ही दिनों में मैंने यहदाह में कुछ को देखा, जो सबत के दिन हौजों में पाँव से अंगू कुचल रहे थे, और पूले लाकर उनको गधों पर लादते थे। इनी तरह मय और अंगू औंजीर, और हर क्रिस्म के बोझ सबत को येस्शलेम में लाते थे; और जिस दिन वह खाने की चीज़े बेचने लगे मैंने उनको टोका। 16 वहाँ सूर के लोग भी रहते थे, जो मछली और हर तरह का सामान लाकर सबत के दिन येस्शलेम में यहदाह के लोगों के हाथ बेचते थे। 17 तब मैंने यहदाह के हाकिम से झगड़कर कहा, ये क्या बुरा काम है जो तुम करते, और सबत के दिन की बेहरमती करते हो? 18 क्या तुम्हारे बाप — दादा ने ऐसा ही नहीं किया? और क्या हमारा खुदा हम पर ये सब आफतें नहीं लाया? तो भी तुम सबत की बेहरमती करके इसाईल पर ज्यादा ग़ज़ब लाते हो। 19 इसलिए जब सबत से पहले येस्शलेम के फाटकों के पास अन्वेरा होने लगा, तो मैंने हुक्म दिया कि फाटक बन्द कर दिए जाएँ, और हुक्म दे दिया कि जब तक सबत गुज़र न जाए, वह न खुले, और मैंने अपने कुछ नौकरों को फाटकों पर रखवा कि सबत के दिन कोई बोझ अन्दर आने न पाए। 20 इसलिए तजिर और तरह — तरह के माल के बेचनेवाले एक या दो बार येस्शलेम के बाहर रिटके। 21 तब मैंने उनको टोका, और उनसे कहा कि तुम दीवार के नजदीक क्यूँ टिक जाते हो? अगर फिर ऐसा किया तो मैं तुम को गिरफ्तार कर लूँगा। उस बक्तव्य से वह सबत को फिर न आए। 22 और मैंने लावियों को हुक्म किया कि अपने आपको पाक करें, और सबत के दिन की तकनीस की गरज से आकर फाटकों की रखवाली करें। ऐ मेरे खुदा, इसे भी मेरे हक्म में याद कर, और अपनी बड़ी रहमत के मुताबिक मुझ पर तरस खा। 23 उन्हीं दिनों में मैंने उन यहदियों को भी देखा, जिन्होंने अशदी और 'अमोनी और मोआबी 'औरतें ब्याह ली थीं। 24 और उनको बच्चों की जबान आधी अशदी थी और वह यहदी जबान में बात नहीं कर सकते थे, बल्कि हर क्रौम की बोती के मुताबिक बोतते थे। 25 इसलिए मैंने उनसे झगड़कर उनको लान्नत की, और उसमें से कुछ को मारा, और उनके बाल नोच डाले, और उनको खुदा की कसम खिलाई, कि तुम अपनी बेटियाँ उनके बेटों को न देना, और न अपने बेटों के लिए और न अपने लिए उनकी बेटियाँ लेना। 26 क्या शाह — ए — इसाईल सुलेमान ने इन बातों से गुनाह नहीं किया? अगर चे अकसर कौमों में उसकी तरह कोई बादशाह न था, और वह अपने खुदा का प्यारा था, और खुदा ने उसे सारे इसाईल का बादशाह बनाया, तो भी अजनबी 'औरतों ने उसे भी गुनाह में फँसाया। 27 इसलिए क्या हम तुम्हारी सुनकर ऐसी बड़ी बुराई करें कि अजनबी 'औरतों को ब्याह कर अपने खुदा का गुनाह करें? 28 और इलियासब सरदार काहिन के बेटे 'यूद्यद' के बेटों में से एक बेटा, हरोनी सनबललत का दामाद था, इसलिए मैंने उसको अपने पास से भगा दिया 29 ऐ मेरे खुदा, उनको याद कर, इसलिए कि उन्होंने कहानत को और कहानत और लावियों के 'अहद' को नापाक किया है। 30 यूँ ही मैंने उनको कुल अजनबियों से पाक किया, और

काहिनों और लावियों के लिए उनकी खिदमत के मुताबिक, 31 और मुकर्रा
वक्तों पर लकड़ी के हविए और पहले फलों के लिए हल्के मुकर्रर कर दिए। ऐ
मेरे खुदा, भलाई के लिए मुझे याद कर।

आस्त

1

अब्स्यरस के दिनों में ऐसा हुआ यह वही अब्स्यरस है जो हिन्दोस्तान से कश तक एक सौ सताईंस सूबों पर हक्मत करता था 2 कि उन दिनों में जब अब्स्यरस बादशाह अपने तरत — ए — हक्मत पर, जो कम्स — सोसन में था बैठा। 3 तो उसने अपनी हक्मत के नीसरे साल अपने सब हाकिमों और खादिमों की मेहमान नवाजी की। और फारस और मादै की ताकत और सूबों के हाकिम और सरदार उसके सामने हाजिर थे। 4 तब वह बहत दिन यारी एक सौ अस्सी दिन तक अपनी जलीलत कद्र हक्मत की दैत्यत अपनी 'आला' 'अजमत की शान उनके दिखाता रहा 5 जब यह दिन गुजर गए तो बादशाह ने सब लोगों की, क्या बड़े क्या छोटे जो कम्स — ए — सोसन में मैजूद थे, शाही महल के बाग के सहन में सात दिन तक मेहमान नवाजी की। 6 वहाँ सफेद और सब्ज और असमानी रंग के पर्दे थे, जो कतानी और अगवानी डोरियों से चाँदी के हल्कों और संग — ए — मरमर के सुतरों से बन्धे थे; और सुख और सफेद और जर्द और सियाह संग — ए — मरमर के फर्श पर सोने और चाँदी के तख्त थे। 7 उन्होंने उनको सोने के प्यालों में, जो अलग अलग शक्तों के थे, पिने को दिया और शाही मय बादशाह के करम के मुताबिक कसरत से पिलाई। 8 और मय नौशी इस काइदे से थी कि कोई इमजबूर नहीं कर सकता था; क्यूंकि बादशाह ने अपने महल के सब 'उहदे दारों' को नसीहत फरमाई थी, कि वह हर शब्द की मर्जी के मुताबिक करें। 9 वश्ती मलिका ने भी अब्स्यरस बादशाह के शाही महल में 'औरतों की मेहमान नवाजी की। 10 सात दिन जब बादशाह का दिल मय से मस्सर था, तो उसने सारों ख्वाजा सराओं यारी महमान और बिजाता और खबरनाह और बिगता और अबगता और जितार और करकस को, जो अब्स्यरस बादशाह के सामने खिदमत करते थे हक्म दिया, 11 कि वश्ती मलिका को शाही ताज पहनाकर बादशाह के सामने लाएँ, ताकि उसकी खबरसूती लोगों और हाकिमों को दिखाएँ क्यूंकि वह देखें मैं खबरसूत थी। 12 लेकिन वश्ती मलिका ने शाही हक्म पर जो ख्वाजासराओं की जरिए़ मिला था, आने से इनकार किया। इसलिए बादशाह बहुत झल्लाया और दिल में उसका गुस्सा भड़का। 13 तब बादशाह ने उन 'अब्तलमन्दों' से जिनको वक्तों के जानने का 'इल्म था पछा, क्यूंकि बादशाह का दस्तूर सब कानून दानों और 'अदलशानसों' के साथ ऐसा ही था, 14 और फारस और मादै के सारों अमीर यारी कारशीना और सितार और अदमाता और तरसीस और मरस और मरसिना और मम्कान उनके नजदीकी थे, जो बादशाह का दीदार हासिल करते और ममलतक में 'उहदे पर थे 15 'कानून के मुताबिक वश्ती मलिका से क्या करना चाहिए़; क्यूंकि उसने अब्स्यरस बादशाह का हक्म जो ख्वाजासराओं के जरिए़ मिला नहीं माना है?" 16 और मम्कान ने बादशाह और अमीरों के सामने जबाब दिया, वश्ती मलिका ने सिर्फ बादशाह ही का नहीं, बल्कि सब उमरा और सब लोगों का भी जो अब्स्यरस बादशाह के कुल सूबों में हैं कुसूर किया है। 17 क्यूंकि मलिका की यह बात बाहर सब 'औरतों तक पहुँचेगी जिससे उनके शौहर उनकी नजर में जलील हो जाएँगे, जब यह खबर फैलेगी, 'अब्स्यरस बादशाह ने हक्म दिया कि वश्ती मलिका उसके सामने लाई जाएँ, लेकिन वह न आई। 18 और आज के दिन फारस और मादै की सब बोगें जो मलिका की बात सुन चुकी हैं, बादशाह के सब उमरा से ऐसा ही कहने लगेंगी। यूँ बहुत नफरत और गुस्सा पैदा होगा। 19 अगर बादशाह को मन्जूर हो तो उसकी तरफ से शाही फरमान निकले, और वो फारसियों और मादियों के कानून में दर्ज हो, ताकि बदला न जाए कि वश्ती अब्स्यरस बादशाह के सामने पिर कभी न आए, और बादशाह उसका शाहाना स्तबा किसी और को जो उससे

बेहतर है 'इनायत करे। 20 और जब बादशाह का फरमान जिसे वह लाग करेगा, उसकी सारी हक्मत में जो बड़ी है शोहरत पाएगा तो सब बीवियों अपने अपने शौहर की क्या बड़ा क्या छोटा 'इज्जत करेंगी। 21 यह बात बादशाह और हाकिमों को पसन्द आई, और बादशाह ने मम्कान के कहने के मुताबिक किया; 22 क्यूंकि उसने सब शाही सूबों में सबे — सूबे के हस्फ़, और कौम — कौम की बोती के मुताबिक खत भेज दिए, कि हर आदमी अपने घर में हक्मत करे, और अपनी कौम की जबान में इसका चर्चा करें।

2 इन बातों के बाद जब अब्स्यरस बादशाह का गुस्सा ठंडा हुआ, तो उसने

वश्ती को और जो कुछ उसने किया था, और जो कुछ उसके खिलाफ हक्म हुआ था याद किया। 2 तब बादशाह के मुलाजिम जो उसकी खिदमत करते थे कहने लगे, 'बादशाह के लिए जवान खबरसूत कुँवारियाँ दृढ़ी जाएँ। 3 और बादशाह अपनी बादशाहत के सब सूबों में मन्दबदरों को मुकर्रर करे, ताकि वह सब जवान खबरसूत कुँवारियों को कम्स — ए — सोसन के बीच हरमसरा में इक्ष्टा करके बादशाह के ख्वाजासरा हैजा के जिम्मा करें, जो 'औरतों का मुहाफिज हैं; और पाकी के लिए उनका सामान उनको दिया जाए। 4 और जो कुँवारी बादशाह को पसन्द हो, वह वश्ती की जगह मलिका हो।' 5 यह बात बादशाह को पसन्द आई, और उसने ऐसा ही किया। 6 कम्स — ए — सोसन में एक यहरी था जिसका नाम मदकै था, जो याइ बिन सिमाई बिन कीस का बेटा था, जो बिनयमीनी था; 7 और येस्सलेम से उन गुलामों के साथ गुलामी में गए थे, जिनको शाह — ए — यहदाह यक्नियाह के साथ गुलामी में गए थे, जिनको शाह — ए — बाबूल नबूकदनजर गुलाम करके ले गया था। 8 उसने अपने चचा की बेटी हरस्साह यारी आस्तर को पाला था; क्यूंकि उसके माँ — बाप न थे, और वह लड़की हसीन और खबरसूत थी; और जब उसके माँ — बाप मर गए तो मदकै ने उसे अपनी बेटी करके पाला। 9 तब ऐसा हुआ कि जब बादशाह का हक्म और फरमान सुनने में आया, और बहुत सी कुँवारियाँ कम्स — ए — सोसन में इक्ष्टी होकर हैजा के जिम्मा हुईं, तो आस्तर भी बादशाह के महल में पहुँचाई गईं, और 'औरतों के मुहाफिज हैजा के जिम्मा हुईं। 9 और वह लड़की उसे पसन्द आई और उसने उस पर महेरबानी की, और फैरस उसे शाही महल में से पाकी के लिए उसके सामान और खाने के हिस्से, और ऐसी सात महेलियाँ जो उसके लायक थीं उसे दी, और उसे और उसकी सहेलियों को हरमसरा की सबसे अच्छी जगह में ले जाकर रखवा। 10 आस्तर ने न अपनी कौम न अपना खानदान जाहिर किया था; क्यूंकि मदकै ने उसे नसीहत कर दी थी कि न बताए़; 11 और मदकै हर रोज हरमसरा के सहन के आगे फिरता था, ताकि मालूम करे कि आस्तर कैसी है और उसका क्या हाल होगा। 12 जब एक कुँवारी की बारी आई कि 'औरतों के दस्तूर के मुताबिक बाहर महीने की सफाई के बाद अब्स्यरस बादशाह के पास जाए क्यूंकि इने ही दिन उनकी पाकिजामी में लग जाते थे, यारी छः महीने पूर्ण का तेल लगाने में और छः महीने इन और 'औरतों की सफाई की चीजों के लगाने में 13 तब इस तरह से वह कुँवारी बादशाह के पास जाती थी कि जो कुछ वो चाहती कि हरमसरा से बादशाह के महल में ले जाए, वह उसको दिया जाता था। 14 शाम को वह जाती थी और सुबह को लौटकर दूसरे बाँटीसरा में बादशाह के ख्वाजासरा शासज्ज के जिम्मा हो जाती थी, जो बाँटियों का मुहाफिज था; वह बादशाह के पास फिर नहीं जाती थी, मगर जब बादशाह उसे चाहता तब वह नाम लेकर बुलाई जाती थी। 15 जब मदकै के चचा अबीखेल की बेटी आस्तर की, जिसे मदकै ने अपनी बेटी करके रखवा था, बादशाह के पास जाने की बारी आई तो जो कुछ बादशाह के ख्वाजासरा और 'औरतों के मुहाफिज हैजा ने ठहराया था, उसके अलावा उसने और कुछ न माँगा। और आस्तर उन सबकी जिनकी निगाह उस पर पड़ी, मन्जूर

— ए — नज़र हुई। 16 इसलिए आस्तर अख्स्यूरस बादशाह के पास उसके शाही महल में उसकी हक्कमत के सातवें साल के दसवें महीने में, जो बैतृत महीना है पहुँचाई गई। 17 और बादशाह ने आस्तर को सब 'औरतों से ज्यादा प्यार किया, और वह उसकी नज़र में उन सब कुँवारियों से ज्यादा प्यारी और पसंदीदा ठहरी; तब उसने शाही ताज उसके सिर पर रख दिया, और वशती की जगह उसे मलिका बनाया। 18 और बादशाह ने अपने सब हाकिमों और मुलाजिमों के लिए एक बड़ी मेहमान नवाजी, यानी आस्तर की मेहमान नवाजी की; और सबों में 'मु'अमीरी की, और शाही करम के मुताबिक इन 'आम बॉटे। 19 जब कुँवारियाँ दूसरी बार इकट्ठी की गईं, तो मटकै बादशाह के फाटक पर बैठा था। 20 आस्तर ने न तो अपने खानादान और न अपनी कौम का पता दिया था, जैसा मटकै ने उसे नरीहत कर दी थी; इसलिए कि आस्तर मटकै का हक्कम ऐसा ही मानती थी जैसा उस वक्त जब वह उसके यहाँ परवरिश पा रही थी। 21

उन ही दिनों में, जब मटकै बादशाह के फाटक पर बैठा करता था, बादशाह के ख्वाजासराओं में से जो दरवाजे पर पहरा देते थे, दो शख्सों यानी बिगतान और तरश ने बिगड़कर चाहा कि अख्स्यूरस बादशाह पर हाथ चलाएँ। 22 यह बात मटकै को मालूम हुई और उसने आस्तर मलिका को बताई, और आस्तर ने मटकै का नाम लेकर बादशाह को खबर दी। 23 जब उस 'मु'अमिले की तहकीकत की गई और वह बात साचित हुई, तो वह दोनों एक दरखत पर लटका दिए गए; और यह बादशाह के सामने तवारीख की किताब में लिख लिया गया।

3 इन बातों के बाद अख्स्यूरस बादशाह ने अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान को मुम्ताज और सफरराज किया और उसकी कुर्सी को सब हाकिम से जो उसके साथ थे ऊँचा किया। 2 और बादशाह के सब मुलाजिम जो बादशाह के फाटक पर थे, हामान के आगे झुककर उसकी ताजीम करते थे; क्यूँकि बादशाह ने उसके बारे में ऐसा ही हक्कम किया था। लेकिन मटकै न झुकता, न उसकी ताजीम करता था। 3 तब बादशाह के मुलाजिमों ने जो बादशाह के फाटक पर थे मटकै से कहा, "तू क्यूँ बादशाह के हक्कम को तोड़ता हो?" 4 जब वो उससे रोज कहते रहे, और उसने उनकी न मानी, तो उन्होंने हामान को बता दिया, ताकि देखें कि मटकै की बात चलेगी या नहीं, क्यूँकि उसने उनसे कह दिया था कि मैं यहदी हूँ। 5 जब हामान ने देखा कि मटकै न झुकता, न मेरी ताजीम करता है, तो हामान गुस्से से भर गया। 6 लेकिन सिर्फ मटकै ही पर हाथ चलाना अपनी शान से नीचे समझा; क्यूँकि उन्होंने उसे मटकै की कौम बता दी थी, इसलिए हामान ने चाहा कि मटकै की कौम, यानी सब यहदियों को जो अख्स्यूरस की पूरी बादशाहत में रहते थे। हलाक करे। 7 अख्स्यूरस बादशाह की बादशाहत के बारहवें बरस के पहले महीने से, जो नेसान महीना है, वह रोज — ब — रोज और माह — ब — माह बारहवें महीने यानी अदार के महीने तक हामान के सामने पर यानी पर्वी डालते रहे। 8 और हामान ने अख्स्यूरस बादशाह से दरख्तास्त की कि "हुजर की बादशाहत के सब सूबों में एक कौम सब कौमों के दर्मियान इधर उधर फैली हुई है, उसके काम हर कौम से निरात है, और वह बादशाह के क्रवानीन नहीं मानते हैं, इसलिए उनको रहने देना बादशाह के लिए फादे मन्द नहीं। 9 अगर बादशाह को मन्जूर हो, तो उनको हलाक करने का हक्कम लिखा जाए; और मैं तहसीलदारों के हाथ में शाही खजानों में दाखिल करने के लिए चाँदी के दस हजार तोड़े दँड़ा।" 10 और बादशाह ने अपने हाथ से अंगूठी उतार कर यहदियों के दुश्मन अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान को दी। 11 और बादशाह ने हामान से कहा, "वह चाँदी तुझे बख्ती गई और वह लोग भी, ताकि जो तुझे अच्छा मालूम हो उनसे करो।" 12 तब बादशाह के मुंशी पहले महीने की तेरहवीं तारीख को बुलाए गए, और

जो कुछ हामान ने बादशाह के नवाबों, और हर सूबे के हाकिमों, और हर कौम के सरदारों को हक्कम किया उसके मुताबिक लिखा गया; सूबे सूबे के हुस्फू और कौम कौम की जबान में अख्स्यूरस के नाम से यह लिखा गया, और उस पर बादशाह की अंगूठी की मुहर की गई। 13 और कासिदों के हाथ बादशाह के सब सूबों में खत भेजे गए कि बारहवें महीने, यानी अदार महीने की तेरहवीं तारीख को सब यहदियों को, क्या जवान क्या बुड़े क्या बच्चे क्या 'औरतें, एक ही दिन में हलाक और कल्त वर्ते और मिटा दें और उनका माल लट लें। 14 इस लिखाई की एक एक नकल सब कौमों के लिए जारी की गई, कि इस फरमान का ऐलान हर सूबे में किया जाए, ताकि उस दिन के लिए तैयार हो जाएँ। 15 बादशाह के हक्कम से कासिद कौरन रवाना हुए और वह हक्कम क्रम — ए — सोसान में दिया गया। बादशाह और हामान मध्य नौशी करने को बैठ गए, पर सोसान शहर परेशन था।

4 जब मटकै को वह सब जो किया गया था मालूम हुआ, तो मटकै ने अपने कपड़े फाडे और टाट पहने और सिर पर राख डालकर शहर के बीच में चला गया, और ऊँची और पुरादर्द आवाज से चिल्लाने लगा; 2 और वह बादशाह के फाटक के सामने भी आया, क्यूँकि टाट पहने कोई बादशाह के फाटक के अन्दर जाने न पाता था। 3 और हर सूबे में जहाँ कहीं बादशाह का हक्कम और फरमान पहुँचा, यहदियों के दर्मियान बड़ा मातम और रोजा और गिराजारी और नौहा शूरू हो गया, और बहुत से टाट पहने राख में बैठ गए। 4 और आस्तर की सहेलियों और उसके ख्वाजासराओं ने आकर उसे खबर दी तब मलिका बहुत गमगीन हुई, और उसने कपड़े भेजे कि मटकै को पहनाएँ और टाट उस पर से उतार लें, लेकिन उसने उनको न लिया। 5 तब आस्तर ने बादशाह के ख्वाजासराओं में से हताक को, जिसे उसने आस्तर के पास हाजिर रहने को मुकर्रर किया था बुलवाया, और उसे ताकीद की कि मटकै के पास जाकर दरियाफत करे कि यह क्या बात है और किस बजह से है। 6 इसलिए हताक निकल कर शहर के चौक में, जो बादशाह के फाटक के सामने था मटकै के पास गया। 7 तब मटकै ने अपनी पूरी आप बीती, और स्पर्य की वह ठीक रकम उसे बताई जिसे हामान ने यहदियों को हलाक करने के लिए बादशाह के खजानों में दाखिल करने का 'वादा किया था। 8 और उस फरमान की लिखी हुड़ तहरीकी एक नकल भी, जो उनको हलाक करने के लिए सोसान में दी गई थी उसे दी, ताकि उसे आस्तर को दिखाए और बताए और उसे ताकीद करे कि बादशाह के सामने जाकर उससे मिन्नत करे, और उसके सामने अपनी कौम के लिए दरख्बात करे। 9 चुनाँचे हताक ने आकर आस्तर को मटकै की बातें कह सुनाई। 10 तब आस्तर हताक से बातें करने लगी, और उसे मटकै के लिए यह पैगाम दिया कि 11 "बादशाह के सब मुलाजिम और बादशाही सूबों के सब लोग जानते हैं कि जो कोई, मर्द हो या 'औरत बिन बुलाए बादशाह की बारगाह — ए — अन्दस्ती में जाए, उसके लिए बस एक ही कानून है कि वह मारा जाए, अलावा उसके जिसके लिए बादशाह सोने की लाठी उठाए ताकि वह जीता रहे, लेकिन तीस दिन हुए कि मैं बादशाह के सामने नहीं बुलाई गई।" 12 उन्होंने मटकै से आस्तर की बातें कहीं। 13 तब मटकै ने उनसे कहा कि "आस्तर के पास यह जवाब ले जायें कि तू अपने दिल में यह न समझ कि सब यहदियों में से तू बादशाह के महल में बची रहेगी।" 14 क्यूँकि अगर तू इस वक्त खामोशी अस्तियार करे तो छुटकारा और नजात यहदियों के लिए किसी और जगह से आएँ, लेकिन तू अपने बाप के ख्वान्दान के साथ हलाक हो जाएँ। और क्या जाने कि तू ऐसे ही वक्त के लिए बादशाहत को पहुँची है?" 15 तब आस्तर ने उनको मटकै के पास यह जवाब ले जाने का हक्कम दिया, 16 कि "जा, और सोसान में जितने यहदी मौजूद हैं उनको इकट्ठा कर, और तुम मेरे लिए रोजा

रख्खो, और तीन रोज़ तक दिन और रात न कुछ खाओ न पियो। मैं भी और मेरी सहेलियाँ इसी तरह से रोजा रख खेंगी; और ऐसे ही मैं बादशाह के सामने जाऊँगी जो कानून के खिलाफ है; और अगर मैं हलाक हुई तो हलाक हुई।” 17 चुनाँचे मर्दकै रवाना हुआ और आस्तर के हुक्म के मुताबिक सब कुछ किया।

5 और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि आस्तर शाहाना लिबास पहन कर शाही महल की बारगाह — ए — अन्दरस्नी में शाही महल के सामने खड़ी हो गई। और बादशाह अपने सामने शाही महल में अपने तख्त — ए — हुक्मपत्र पर महल के सामने के दरवाजे पर बैठा था। 2 और ऐसा हुआ कि जब बादशाह ने आस्तर मलिका को बारगाह में खड़ी देखा, तो वह उसकी नज़र में मक्कबूल ठहरी और बादशाह ने वह सुनहरी लाटी जो उसके हाथ में थी आस्तर की तरफ बढ़ाया। तब आस्तर ने नज़दीक जाकर लाटी की नोक को छुआ। 3 तब बादशाह ने उससे कहा, “आस्तर मलिका तू क्या चाहती है और किस चीज़ की दरखास्त करती है? आधी बादशाहत तक वह तुझे बरखी जाएगी।” 4 आस्तर ने दरखास्त की “अगर बादशाह को मन्ज़ूर हो, तो बादशाह उस जश्न में जो मैंने उसके लिए तैयार किया है, हामान को साथ लेकर आज तरशीफ लाए।” 5 बादशाह ने फरमाया कि “हामान को जल्द लाओ, ताकि आस्तर के कहे के मुताबिक किया जाए।” 6 तब बादशाह और हामान उस जश्न में आए, जिसकी तैयारी आस्तर ने की थी 6 और बादशाह ने जश्न में मयनौशी के बक्त आस्तर से पूछा, “तेरा क्या सवाल है? वह मन्ज़ूर होगा। तेरी क्या दरखास्त है? आधी बादशाहत तक वह पूरी की जाएगी।” 7 आस्तर ने जबाब दिया, “मेरा सवाल और मेरी दरखास्त यह है, 8 अगर मैं बादशाह की नज़र में मक्कबूल हूँ, और बादशाह को मन्ज़ूर हो कि मेरा सवाल कुबूल और मेरी दरखास्त पूरी करे, तो बादशाह और हामान मेरे जश्न में जो मैं उनके लिए तैयार कर्त्त्वी आये और कल जैसा बादशाह ने इशाद किया है मैं कर्त्त्वी।” 9 उस दिन हामान शादमान और खुश होकर निकला। लेकिन जब हामान ने बादशाह के फाटक पर मर्दकै को देखा कि उसके लिए न खड़ा हुआ न हटा, तो हामान मर्दकै के खिलाफ गुस्से से भर गया। 10 तो भी हामान अपने आपको बरदाशत करके घर गया, और लोग भेजकर अपने दोस्तों को और अपनी बीवी जरिश को बुलवाया। 11 और हामान उनके आगे अपनी शान — ओ — शौकत, और बेटों की कसरत का किस्सा कहने लगा, और किस किस तरह बादशाह ने उसकी तरक्की की, और उसको हाकिम और बादशाही मुलाजिमों से ज्यादा सरफराज किया। 12 हामान ने यह भी कहा, “देखो, आस्तर मलिका ने अलतावा मेरे किसी को बादशाह के साथ अपने जश्न में, जो उसने तैयार किया था आने न दिया; और कल के लिए भी उसने बादशाह के साथ मुझे दावत दी है।” 13 तो भी जब तक मर्दकै यहदी मुझे बादशाह के फाटक पर बैठा दिखाई देता है, इन बातों से मुझे कुछ हासिल नहीं।” 14 तब उसकी बीवी जरिश और उसके सब दोस्तों ने उससे कहा, “पचास हाथ ऊँची सूली बनाई जाए, और कल बादशाह से ‘दरखास्त करके मर्दकै उस पर चढ़ाया जाए; तब खुर्ची खुर्ची बादशाह के साथ जश्न में जाना।” यह बात हामान को पसन्द आई, और उसने एक सूली बनवाई।

6 उस रात बादशाह को नीद न आई, तब उसने तवारीख की किताबों के लाने का हुक्म दिया और वह बादशाह के सामने पढ़ी गई। 2 और यह लिखा था कि मिला कि मर्दकै ने दरबानों में से बादशाह के दो ख्वाजासराओं, बिगताना और तरश की मुखबरी की थी, जो अख्स्यरस बादशाह पर हाथ चलाना चाहते थे। 3 बादशाह ने कहा, “इसके लिए मर्दकै की क्या इज्जत — ओ — हरमत की गई है?” बादशाह के मुलाजिमों ने जो उसकी खिदमत करते थे कहा, “उसके लिए कुछ नहीं किया गया।” 4 और बादशाह ने पूछा, “बारगाह में कौन हाजिर

है?” उधर हामान शाही महल की बाहरी बारगाह में आया हुआ था कि मर्दकै को उस सूली पर चढ़ाने के लिए, जो उसने उसके लिए तैयार की थी। बादशाह से दरखास्त करे। 5 इसलिए बादशाह के मुलाजिमों ने उससे कहा, “हुजूर बारगाह में हामान खड़ा है। बादशाह ने फरमाया, उसे अन्दर आने दो।” 6 तब हामान अन्दर आया, और बादशाह ने उससे कहा, “जिसकी ताजीम बादशाह करना चाहता है, उस शख्स से क्या किया जाए?” हामान ने अपने दिल में कहा, “मुझ से ज्यादा बादशाह किसकी ताजीम करना चाहता होगा?” 7 इसलिए हामान ने बादशाह से कहा कि “उस शख्स के लिए, जिसकी ताजीम बादशाह को मन्ज़ूर हो, 8 शाहाना लिबास जिसे बादशाह पहनता है, और वह घोड़ा जो बादशाह की सवारी का है, और शाही ताज जो उसके सिर पर रखेगा।” 9 और वह लिबास और वह घोड़ा बादशाह के सबसे ऊँचे ‘ओहदा के उमरा में से एक के हाथ में जिम्मा हों, ताकि उस लिबास से उस शख्स को पहनायी जाए, जिसकी ताजीम बादशाह को मन्ज़ूर है; और उसे उस घोड़े पर सवार करके शहर के ‘आम रास्तों में फिराएँ और उसके आगे आगे ‘एलान करें, जिस शख्स की ताजीम बादशाह करना चाहता है, उससे ऐसा ही किया जाएगा।” 10 तब बादशाह ने हामान से कहा, “जल्दी कर, और अपने कहे के मुताबिक वह लिबास और घोड़ा ले, और मर्दकै यहदी से जो बादशाह के फाटक पर बैठा है ऐसा ही कर। जो कुछ तुम कहा है उसमें कुछ भी कर्मी न होने पाए।” 11 तब हामान ने वह लिबास और घोड़ा लिया और मर्दकै को पहाना करके घोड़े पर सवार शहर के ‘आम रास्तों में फिराया, और उसके आगे आगे एलान करता गया कि “जिस शख्स की ताजीम बादशाह करना चाहता है, उससे ऐसा ही किया जाएगा।” 12 और मर्दकै तो फिर बादशाह के फाटक पर लौट आया, लेकिन हामान गमगीन और सिर ढाँके हुए जल्दी जल्दी अपने घर गया। 13 और हामान ने अपनी बीवी जरिश और अपने सब दोस्तों को एक एक बात जो उस पर गुज़री थी बताई। तब उसके दानिशमन्दों और उसकी बीवी जरिश ने उससे कहा, “आप मर्दकै, जिसके आगे तू पत्त होने लगा है, यहदी मसल में से है तो तू पर गालिब न होगा, बल्कि उसके आगे जस्तर पस्त होता जाएगा।” 14 वह उससे अभी बातें कर ही रहे थे कि बादशाह के ख्वाजासरा आ गए, और हामान को उस जश्न में ले जाने की जल्दी की जिसे आस्तर ने तैयार किया था।

7 तब बादशाह और हामान आए कि आस्तर मलिका के साथ खाएँ — पिएँ। 2 और बादशाह ने दूसरे दिन मेहमान नवाज़ी पर मयनौशी के बक्त आस्तर से फिर पूछा, “आस्तर मलिका, तेरा क्या सवाल है? वह मन्ज़ूर होगा। और तेरी क्या दरखास्त है? आधी बादशाहत तक वह पूरी की जाएगी।” 3 आस्तर मलिका ने जबाब दिया, “ऐ बादशाह, अगर मैं तेरी नज़र में मक्कबूल हूँ और बादशाह को मन्ज़ूर हो, तो मेरे सवाल पर मेरी जान बरखी हो और मेरी दरखास्त पर मेरी कौम मुझे मिले।” 4 बैर्चिंग मैं और मेरे लोग हलाक और कत्ल किए जाने, और नेस्त — ओ — नाबद होने की बेच दिए गए हैं। अगर हम लोग गुलाम और लौटियाँ बनने के लिए बेच डाले जाते तो मैं चुप रहती, अगर चे उस दुश्मन को बादशाह के नुस्खान का मुआवजा देने की ताकत न होती।” 5 तब अख्स्यरस बादशाह ने आस्तर मलिका से कहा “वह कौन है और कहाँ है जिसने अपने दिल में ऐसा ख्याल करने की हिम्मत की?” 6 आस्तर ने कहा, वह मुखातिक और वह दुश्मन, यही ख्वाजीस हामान है। “तब हामान बादशाह और मलिका के सामने पेशान हुआ। 7 और बादशाह गुस्सा होकर मयनौशी से उठा, और महल के बाग में चला गया; और हामान आस्तर मलिका से अपनी जान बरखी की दरखास्त करने को उठ खड़ा हुआ, क्यूंकि उसने देखा कि बादशाह ने मेरे खिलाफ बटी की ठान ली है। 8 और बादशाह महल के बाग से लौटकर मयनौशी की जगह आया, और हामान उस तख्त के ऊपर जिस पर

आस्तर बैठी थी पड़ा था। तब बादशाह ने कहा, क्या यह घर ही में मेरे सामने मलिका पर जब करना चाहता है?" इस बात का बादशाह के मूँह से निकलना था कि उन्होंने हामान का मूँह ढाँक दिया। 9 फिर उन ख्वाजासारों में से जो खिदमत करते थे, एक ख्वाजासरा खरबनूह ने दरखास्त की, "हज़र! इसके अलावा हामान के घर में वह पचास हाथ ऊँची सूली खड़ी है, जिसको हामान ने मदकै के लिए तैयार किया जिसने बादशाह के फ़ाइदे की बात बताई।" बादशाह ने फ़रमाया, "उसे उस पर टाँग दो।" 10 तब उन्होंने हामान को उसी सूली पर, जो उसने मदकै के लिए तैयार की थी टाँग दिया। तब बादशाह का गुस्सा ठंडा हुआ।

8 उसी दिन अख्सूरस बादशाह ने यहदियों के दुश्मन हामान का घर आस्तर

मलिका को बख्ता। और मदकै बादशाह के सामने आया, क्यूँकि आस्तर ने बता दिया था कि उसका उससे क्या रिश्ता था। 2 और बादशाह ने अपनी आँगठी जो उसने हामान से ले ली थी, उतार कर मदकै को दी। और आस्तर ने मदकै को हामान के घर पर मुड़तार बना दिया। 3 और आस्तर ने फिर बादशाह के सामने दरखास्त की और उसके कदमों पर गिरी और अँसू बहा बहाकर उसकी मिन्नत की कि हामान अजाजी की बद्रखाही और साजिश को, जो उसने यहदियों के बरखिलाफ़ की थी बातिल कर दे। 4 तब बादशाह ने आस्तर की तरफ सुनहली लाठी बढ़ाई, फिर आस्तर बादशाह के सामने उठ खड़ी हुई 5 और कहने लगी, "आग बादशाह को मंजूर हो और मैं उसकी नजर में मकबूल हूँ, और यह बात बादशाह को मुनासिब मालूम हो और मैं उसकी निगाह में पर्याप्त हूँ, तो उन फरमानों को रद करने को लिखा जाए जिनकी अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान ने, उन सब यहदियों को हलाक करने के लिए जो बादशाह के सब सूबों में बसते हैं, पसन्त किया था। 6 क्यूँकि मैं उस बला को जो मेरी कौम पर नाजिल होगी, क्यूँकर देख सकती हूँ? या कैसे मैं अपने रिश्तेदारों की हलाकत देख सकती हूँ?" 7 तब अख्सूरस बादशाह ने आस्तर मलिका और मदकै यहदी से कहा कि "देखो, मैंने हामान का घर आस्तर को बख्ता है, और उसे उन्होंने सूली पर टाँग दिया, इसलिए कि उसने यहदियों पर हाथ चलाया। 8 तुम भी बादशाह के नाम से यहदियों को जैसा चाहते हो लिखो, और उस पर बादशाह की आँगठी से मुहर करो, क्यूँकि जो लिखाई बादशाह के नाम से लिखी जाती है, उस पर बादशाह की आँगठी से मुहर की जाती है, उसे कोई रद नहीं कर सकता।" 9 तब उसी बक्त तीसरे महीने, यानी सैवान की महीनी की तेज़सीनी तारीख को, बादशाह के मूर्ची तलब किए गए और जो कुछ मदकै ने हिन्दोस्तान से कूश तक एक सौ साताईस सूबों के यहदियों और नवाबों और हाकिमों और सूबों के अमीरों को हक्म दिया, वह सब हर सूबे को उसी के हुस्फ़ और हर कौम को उसी की जबान, और यहदियों को उनके हुस्फ़ और उनकी जबान के मुताबिक लिखा गया। 10 और उसने अख्सूरस बादशाह के नाम से खत लिखे, और बादशाह की आँगठी से उन पर मुहर की, और उनको सवार कासिदों के हाथ रखाना किया, जो अच्छी नसल के तेज रफ्तार शाही घोड़ों पर सवार थे। 11 इसमें बादशाह ने यहदियों को जो हर शहर में थे, इजाजत दी कि इकट्ठे होकर अपनी जान बचाने के लिए मुकाबिले पर अड़ जाएँ, और उस कौम और उस सूबे की सारी फौज को जो उन पर और उनके छोटे बच्चों और बीवियों पर हमलावर हो हलाक और कल्त्त करें और बरबाद कर दें, और उनका माल लट्ट लें। 12 यह अख्सूरस बादशाह के सब सूबों में बाहरवे महीने, यानी अदार महीने की तेरहवीं तारीख की एक ही दिन में हो। 13 इस तहरीर की एक एक नक्ल सब कौमों के लिए जारी की गई कि इस फरमान का ऐलान हर सूबे में किया जाएँ, ताकि यहदी इस दिन अपने दुश्मनों से अपना इतकाम लेने को तैयार रहें। 14 इसलिए वह कासिद जो तेज़ रफ्तार शाही घोड़ों पर सवार थे

रखाना हुए, और बादशाह के हुक्म की वजह से तेज़ निकले चले गए, और वह फरमान सोसान के महल में दिया गया। 15 और मदकै बादशाह के सामने से आसामी और सफेद रंग का शाहना लिबास और सोने का एक बड़ा ताज, और कतानी और अर्गावानी चोपा पहने निकला और सोसन शहर ने नारा मारा और खुशी मनाई। 16 यहदियों को रैनक और खुशी और शादमानी और इज्जत हासिल हुई। 17 और हर सूबे और हर शहर में जहाँ कहीं बादशाह का हुक्म और उसका फरमान पहुँचा, यहदियों को खुर्मी और शादमानी और इंद और खुशी का दिन नसीब हुआ; और उस मुल्क के लोगों में से बहुते यहदी हो गए, क्यूँकि यहदियों का खौफ उन पर छा गया था।

9 अब बारहवें महीने यानी अदार महीने की तेरहवीं तारीख को, जब बादशाह

के हुक्म और फरमान पर 'अमल करने का बक्त नजदीक आया, और उस दिन यहदियों के दुश्मनों को उन पर गालिब होने की उम्मीद थी, हालाँकि इसके अलावा यह हुआ कि यहदियों ने अपने नफरत करनेवालों पर गलबा पाया; 2 तो अख्सूरस बादशाह के सब सूबों के यहदी अपने अपने शहर में इकट्ठे हुए कि उन पर जो उनका नुकसान चाहते थे, हाथ चलाएँ और कोई आदमी उनका सामना न कर सका, क्यूँकि उनका खौफ सब कौमों पर छा गया था। 3 और सूबों के सब अमीरों और नवाबों और हाकिमों और बादशाह के कार गुजारों ने यहदियों की मदद की, इसलिए कि मदकै का रैब उन पर छा गया था। 4 क्यूँकि मदकै शाही महल में खास 'ओदेद पर था, और सब सूबों में उसकी शोहर फैल गई थी, इसलिए कि यह आदमी यानी मदकै बढ़ता ही चला गया। 5 और यहदियों ने अपने सब दुश्मनों को तलवार की धार से काट डाला और कल्त और हलाक किया, और अपने नफरत करने वालों से जो चाहा किया। 6 और सोसान के महल में यहदियों ने पाँच सौ आदमियों को कल्त और हलाक किया, 7 और परशन्दाता और दलफून और असपाता, 8 और पोरता और अदलियाह और अरीदाता, 9 और परमस्ता और अरीसे और अरीदे और वैजाता, 10 यानी यहदियों के दुश्मन हामान — बिन — हम्मदाता के दरों बेटों को उन्होंने कल्त किया, पर लट्ट पर उन्होंने हाथ न बढ़ाया। 11 उसी दिन उन लोगों का शुमार जो सोसान के महल में कल्त हुए बादशाह के सामने पहुँचाया गया। 12 और बादशाह ने आस्तर मलिका से कहा, "यहदियों ने सोसान के महल ही में पाँच सौ आदमियों और हामान के दरों बेटों को कल्त और हलाक किया है, तो बादशाह के बाकी सूबों में उन्होंने क्या कुछ न किया होगा! अब तेरा क्या सवाल है? वह मंजूर होगा, और तेरी और क्या दरखास्त है? वह पूरी की जाएगी।" 13 आस्तर ने कहा, "अगर बादशाह को मंजूर हो तो उन यहदियों को जो सोसान में हैं इजाजत मिले कि आज के फरमान के मुताबिक कल भी करें, और हामान के दरों बेटे सूली पर चढ़ाए जाएँ।" 14 इसलिए बादशाह ने हुक्म दिया, "ऐसा ही किया जाए।" और सोसान में उस फरमान का ऐलान किया गया; और हामान के दरों बेटों को उन्होंने टाँग दिया। 15 और वह यहदी जो सोसान में रहते थे, अदार महीने की चौदहवीं तारीख को इकट्ठे हुए और उन्होंने सोसान में तीन सौ आदमियों को कल्त किया, लेकिन लट्ट के माल को हाथ न लगाया। 16 बाकी यहदी जो बादशाह के सूबों में रहते थे, इकट्ठे होकर अपनी अपनी जान बचाने के लिए मुकाबिले को अड़ गए, और अपने दुश्मनों से आराम पाया और अपने नफरत करनेवालों में से पच्छतर हजार को कल्त किया, लेकिन लट्ट पर उन्होंने हाथ न बढ़ाया। 17 यह अदार महीने की तेरहवीं तारीख थी, और उसी की चौदहवीं तारीख को उन्होंने आराम किया, और उसे मेहमान नवाजी और खुशी का दिन ठहराया। 18 लेकिन वह यहदी जो सोसान में थे, उसकी तेरहवीं और चौदहवीं तारीख को इकट्ठे हुए, और उसकी पन्द्रहवीं तारीख को आराम किया और उसे मेहमान नवाजी और खुशी का दिन

ठहराया। 19 इसलिए देहाती यहदी जो बिना दीवार बस्तियों में रहते हैं, अदर महीने की चौदहवीं तारीख की शादमानी और मेहमान नवाजी का और खुशी का और एक दूसरे को तोहफे भेजने का दिन मानते हैं। 20 मटकै ने यह सब अहवाल लिखकर, उन यहदियों को जो अख्यूरस बादशाह के सब सूबों में क्या नजदीक क्या दूर रहते थे खत भेजे, 21 ताकि उनको ताकीद करे कि वह अदर महीने की चौदहवीं तारीख को, और उसी की पन्द्रहवीं को हर साल, 22 ऐसे दिनों की तरह मानें जिनमें यहदियों को अपने दुश्मनों से बैन मिला; और वह महीने उनके लिए गम से शादमानी में और मातम से खुशी के दिन में बदल गए; इसलिए वह उनको मेहमान नवाजी और खुशी और आपस में तोहफे भेजने और गरीबों को खेत देने के दिन ठहराएँ। 23 यहदियों ने जैसा शूरू किया था और जैसा मटकै ने उनको लिखा था, वैसा ही करने का जिम्मा लिया। 24 क्योंकि अजाजी हम्मदाता के बेटे हामान, सब यहदियों के दुश्मन, ने यहदियों के खिलाफ उनको हलाक करने की तदबीर की थी, और उसने पूर्या नींव डाला था कि उनको मिटाये और हलाक करे। 25 तब जब वह मु'आमिला बादशाह के सामने पेश हुआ, तो उसने खतों के जरिए से हक्म किया कि वह बुरी तजवीज, जो उसने यहदियों के बरिलाफ की थी उल्टी उस ही के सिर पर पड़े, और वह और उसके बेटे सूरी पर चढ़ाए जाएँ। 26 इसलिए उन्होंने उन दिनों को पूरे के नाम की वजह से पूरीम कहा। इस खत की सब बातों की वजह से, और जो कुछ उन्होंने इस मु'आमिले में खुद देखा था और जो उनपर गुजरा था उसकी वजह से भी 27 यहदियों ने ठहरा दिया, और अपने ऊपर और अपनी नस्ल के लिए और उन सभों के लिए जो उनके साथ मिल गए थे, यह जिम्मा लिया ताकि बात अटल हो जाए कि वह उस खत की तहरीक के मुताबिक हर साल उन दोनों दिनों को मुकर्रा बक्त वर्त पर मानेंगे। 28 और यह दिन नसल — दर — नसल हर खान्दान और सबे और शहर में याद रखें और माने जाएँ, और पूरीम के दिन यहदियों में कभी मौक़ूफ न होंगे, न उनकी यादगार उनकी नसल से जाती रहेंगी। 29 और अद्वितीय की बेटी आस्तर मलिका, और यहदी मटकै ने पूरीम के बाब के खत पर जोर देने के लिए पूरे इश्कियार से लिखा। 30 और उसने सलामती और सच्चाई की बातें लिख कर अख्यूरस की बादशाहत के एक सौ से सताईस सूबों में सब यहदियों के पास खत भेजे 31 ताकि पूरीम के इन दिनों को उनके मुकर्रा बक्त के लिए बरकरार करे जैसा यहदी मटकै और आस्तर मलिका ने उनको हक्म किया था; और जैसा उन्होंने अपने और अपनी नसल के लिए रोज़ा रखने और मातम करने के बारे में ठहराया था। 32 और आस्तर के हक्म से पूरीम की इन रस्मों की तसदीक हुई और यह किताब में लिख लिया गया।

10 और अख्यूरस बादशाह ने जमीन पर और समुन्दर के ज़ज़रों पर मेहसूल मुकर्रा किया। 2 और उसकी ताकत और हुक्मत के सब काम, और मटकै की 'अजमत का तफसीली हाल जहाँ तक बादशाह ने उसे तरक्की दी थी, क्या वह मादै और फारस के बादशाहों की तबारीख की किताब में लिखे नहीं? 3 क्योंकि यहदी मटकै अख्यूरस बादशाह से दूसरे दर्जे पर था, और सब यहदियों में खास 'ओहदे और अपने भाइयों की सारी जमा' अत में मक्कूल था, और अपनी कौम का खैर ख्वाह रहा, और अपनी सारी औलाद से सलामती की बातें करता था।

अर्थ्

1 ऊज़ की सर ज़मीन में अर्थ्यू नाम का एक शख्स था। वह शख्स कामिल और रास्तबाज़ था और खुदा से डरता और गुनाह से दूर रहता था। 2 उसके यहाँ सात बेटे और तीन बेटियाँ पैदा हुईं। 3 उसके पास सात हज़ार भेंडे और तीन हज़ार ऊंट और पाँच सौ ज़ोड़ी बैल और पाँच सौ गधियाँ और बहुत से नौकर चाकर थे, ऐसा कि अहल — ए — मशरिक में वह सबसे बड़ा आदमी था। 4 उसके बेटे एक दूसरे के घर जाया करते थे और हर एक अपने दिन पर मेहमान नवाज़ी करते थे, और अपने साथ खाने — पिने को अपनी तीरों बहनों को बुलवा भेजते थे। 5 और जब उनकी मेहमान नवाज़ी के दिन पूरे हो जाते, तो अर्थ्यू उन्हें बुलवाकर पाक करता और सुबह को सबैर उठकर उन सभों की तांदाद के मूताबिक सोखतीं कूर्बानियाँ अदा करता था, क्यूंकि अर्थ्यू कहता था, कि “शायद मेरे बेटों ने कुछ खता की हो और अपने दिल में खुदा की बुराई की हो।” अर्थ्यू हमेशा ऐसा ही किया करता था। 6 और एक दिन खुदा के बेटे आए कि खुदावन्द के सामने हाजिर हों, और उनके बीच शैतान भी आया। 7 और खुदावन्द ने शैतान से पूछा, कि “तू कहाँ से आता है?” शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, कि “ज़मीन पर इधर — उधर धूमता फिरता और उसमें सैर करता हुआ आया हूँ।” 8 खुदावन्द ने शैतान से कहा, “क्या तू ने मेरे बने अर्थ्यू के हाल पर भी कुछ गौर किया? क्यूंकि ज़मीन पर उमरी तरह कामिल और रास्तबाज़ आदमी, जो खुदा से डरता, और गुनाह से दूर रहता हो, कोई नहीं है।” 9 शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, “क्या अर्थ्यू यूँ ही खुदा से डरता है? 10 क्या तू ने उसके और उसके घर के चारों तरफ, और जो कुछ उसका है उस सबके चारों तरफ बाढ़ नहीं बनाई है? तू ने उसके हाथ के काम में बरकत बर्खी है, और उसके गल्ले मुल्क में बढ़ गए हैं। 11 लोकिन तू ज़रा अपना हाथ बढ़ा कर जो कुछ उसका है उसे छू ही दे; तो क्या वह तेरे मुँह पर तेरी बुराई न करेगा?” 12 खुदावन्द ने शैतान से कहा, “देख, उसका सब कुछ तेरे इखित्यार में है, सिर्फ़ उसको हाथ न लगाना।” तब शैतान खुदावन्द के सामने से चला गया। 13 और एक दिन जब उसके बेटे और बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मयनोशी कर रहे थे। 14 तो एक कासिद ने अर्थ्यू के पास आकर कहा, कि “बैल हल में जुते थे और गधे उके पास चर रहे थे, 15 कि सबा के लोग उन पर टूट पड़े और उन्हें ले गए, और नौकरों को हलाक किया और सिर्फ़ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे खबर दूँ।” 16 वह अपनी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, कि “खुदा की आग आसमान से नाजिल हुई और भेड़ों और नौकरों को जलाकर भस्म कर दिया, और सिर्फ़ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे खबर दूँ।” 17 वह अपनी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, ‘कसदी तीन गोल होकर ऊँटों पर आ गिरे और उन्हें ले गए, और नौकरों को हलाक किया और सिर्फ़ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे खबर दूँ।’ 18 वह अभी यह कह ही रहा था कि एक और भी आकर कहने लगा, कि “तेरे बेटे बेटियाँ अपने बड़े भाई के घर में खाना खा रहे और मयनोशी कर रहे थे, 19 और देख, वीरान से एक बड़ी आँधी चली और उस घर के चारों कोनों पर ऐसे जोर से टकराई कि वह उन जवानों पर गिर पड़ा, और वह मर गए और सिर्फ़ मैं ही अकेला बच निकला कि तुझे खबर दूँ।” 20 तब अर्थ्यू ने उठकर अपना लिबास चाक किया और सिर मुदाया और ज़मीन पर गिरकर सिज्दा किया 21 और कहा, “नंगा मैं अपनी मौं के पेट से निकला, और नंगा ही वापस जाऊँगा। खुदावन्द ने दिया और खुदावन्द ने ले लिया। खुदावन्द का नाम मुबारक हो।” 22 इन सब बातों में अर्थ्यू ने न तो गुनाह किया और न खुदा पर गलत काम का ऐब लगाया।

2 फिर एक दिन खुदा के बेटे आए कि खुदावन्द के सामने हाजिर हों, और शैतान भी उनके बीच आया कि खुदावन्द के आगे हाजिर हो। 2 और खुदावन्द ने शैतान से पूछा, कि “तू कहाँ से आता है?” शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, कि “ज़मीन पर इधर — उधर धूमता फिरता और उसमें सैर करता हुआ आया हूँ।” 3 खुदावन्द ने शैतान से कहा, “क्या तू ने मेरे बने अर्थ्यू के हाल पर भी कुछ गौर किया, क्यूंकि ज़मीन पर उसकी तरह कामिल और रास्तबाज़ आदमी जो खुदा से डरता और गुनाह से दूर रहता हो, कोई नहीं और गो तू ने मुझको उभारा कि बे बजह उसे हलाक कहाँ, तो वी वह अपनी रास्तबाज़ी पर काईम है?” 4 शैतान ने खुदावन्द को जवाब दिया, “कि ‘खाल के बदले खाल, बल्कि दंसान अपना सारा माल अपनी जान के लिए दे डालेगा। 5 अब सिर्फ़ अपना हाथ बढ़ाकर उसकी हड्डी और उसके गोश को छू दे, तो वह तेरे मुँह पर तेरी बुराई करेगा।” 6 खुदावन्द ने शैतान से कहा, कि “देख, वह तेरे इखित्यार में है, सिर्फ़ उसकी जान महफूज रहे।” 7 तब शैतान खुदावन्द के सामने से चला गया और अर्थ्यू को तलवे से चाँद तक दर्दनाक फोड़ों से दुख दिया। 8 और वह अपने को खुजलाने के लिए एक ठीकरा लेकर राख पर बैठ गया। 9 तब उसकी बीवी उससे कहने लगी, कि “क्या तू अब भी अपनी रास्ती पर काईम रहेगा? खुदा की बुराई कर और मर जा।” 10 लोकिन उसने उससे कहा, कि “तू नादान ‘औरतों की जैसी बातें करती हैं; क्या हम खुदा के हाथ से सुख पाएँ और दुख न पाएँ?’” इन सब बातों में अर्थ्यू ने अपने लबों से खता न की। 11 जब अर्थ्यू के तीन दोस्तों, तेमानी इलिफ़ज़ और सूर्यी बिलदद और नामाती ज़ूफ़र, ने उस सारी आफत का हाल जो उस पर आई थीं सुना, तो वह अपनी — अपनी जगह से चले और उन्होंने आपस में ‘अहंद किया कि जाकर उसके साथ रोएँ और उसे तसल्ली दें।’ 12 और जब उन्होंने दूर से निगाह की और उसे न पहचाना, तो वह चिल्ला — चिल्ला कर रोने लगे और हर एक ने अपना लिबास चाक किया और अपने सिर के ऊपर आसमान की तरफ धूल उड़ाई। 13 और वह सात दिन और सात रात उसके साथ ज़मीन पर बैठे रहे और किसी ने उससे एक बात न कही क्यूंकि उन्होंने देखा कि उसका गम बहुत बड़ा।

3 इसके बाद अर्थ्यू ने अपना मुँह खोल कर अपने पैदाश्श के दिन पर लान्त की। 2 और अर्थ्यू कहने लगा: 3 “मिट जाए वह दिन जिसमें मैं पैदा हुआ, और वह रात भी जिसमें कहा गया, ‘कि देखो, बेटा हुआ।’” 4 वह दिन अँधीरा हो जाए। खुदा ऊपर से उसका लिहाज़ न करे, और न उस पर रोशनी पढ़े। 5 अँधीरा और मौत का साथ उस पर काविज हो। बदली उस पर छाई रहे और दिन को तारीक कर देनेवाली चीज़ें उसे दहशत जड़ा करें। 6 गहरी तारीकी उस रात को दबोच ले। वह साल के दिनों के बीच रुखी न करने पाए, और न महीनों की तांदाद में आए। 7 वह रात बँझा हो जाए; उसमें रुखी की कोई आवाज़ न आए। 8 दिन पर लान्त करने वाले उस पर लान्त करें और वह भी जो अजदह “को छेड़ने को तैयार है। 9 उसकी शाम के तोरे तारीक हो जाएँ, वह रोशनी की राह देखे, जबकि वह है नहीं, और न वह सुहर की पलकों को देखे। 10 क्यूंकि उसने मेरी मौं के रहम के दरवाज़ों को बंद न किया और दुख को मेरी आँखों से छिपा न रखवा। 11 मैं रहम ही मैं क्यूँ न मर गया? मैंने पेट से निकलते ही जान क्यूँ न दे दी? 12 मुझे कबूल करने को घुटने क्यूँ थे, और छातियाँ कि मैं उनसे पिंपूँ? 13 नहीं तो इस वक्त मैं पड़ा होता, और बेरखबर रहता, मैं सो जाता। तब मुझे आराम मिलता। 14 ज़मीन के बादशाहों और सलाहकारों के साथ, जिन्होंने अपने लिए मकब्रे बनाए। 15 या उन शाहजादों के साथ होता, जिनके पास सोना था। जिन्होंने अपने घर चाँदी से भर लिए थे; 16 या पोशीदा गिरते हमल की तरह, मैं वजूद में न आता या उन बच्चों की तरह

जिन्होंने रोशनी ही न देखी। 17 वहाँ शरीर फसाद से बाज़ आते हैं, और थके मांदे राहत पाते हैं। 18 वहाँ कैदी मिलकर आराम करते हैं, और दरोगा की आवाज सुनने में नहीं आती। 19 छोटे और बड़े दोनों वही हैं, और नौकर अपने मालिक से आजाद है।” 20 “दुखियों को रोशनी, और तत्खजान को जिन्दानी क्यूँ मिलती है? 21 जो मौत की राह देखते हैं लेकिन वह आती नहीं, और छिपे खजाने से ज्यादा उसकी तलाश करते हैं। 22 जो निहायत शादमान और खुश होते हैं, जब कब्ज़ को पा लेते हैं। 23 ऐसे आदमी को रोशनी क्वँूँ मिलती है, जिसकी राह छिपी है, और जिसे खुदा ने हर तरफ से बंद कर दिया है? 24 क्यूँकि मेरे खाने की जगह मेरी आहों हैं, और मेरा कराहना पानी की तरह जारी है। 25 क्यूँकि जिस बात से मैं डरता हूँ, वही मुझ पर आती है, और जिस बात का मुझे खौफ होता है, वही मुझ पर गुजरती है। 26 क्यूँकि मुझे न चैन है, न आराम है, न मुझे कल पड़ती है; बल्कि मुसीबत ही आती है।”

4 तब तेमानी इलिफ़ज़ कहने लगा, 2 अगर कोई तुझ से बात चीत करने की कोशिश करे तो क्या तु अफसोस करेगा?, लेकिन बोले बौग्र कौन रह सकता है? 3 देख, तू ने बहुतों को सिखाया, और कमज़ोर हाथों को मज़बूत किया। 4 तेरी बातों ने गिरते हुए को संभाला, और तू ने लड़खड़ाते घुटनों को मज़बूत किया। 5 लेकिन अब तो तुझी पर आ पड़ी और तु कमज़ोर हुआ जाता है। उसने तुझे छुआ और तू घबरा उठा। 6 क्या तेरे खुदा का डर ही तेरा भरोसा नहीं? क्या तेरी राहों की रास्ती तेरी उम्मीद नहीं? 7 क्या तुझे याद है कि कमी कोई मालूम भी हलाक हुआ है? या कहीं रास्तबाज भी काट डाले गए? 8 मेरे देखने में तो जो गुहाह को जाते और दुख बोते हैं, वही उसको काटते हैं। 9 वह खुदा के दम से हलाक होते, और उसके गुस्से के झोंके से भस्म होते हैं। 10 बबर की गज़ और खँख़बार बबर की दहाड़, और बबर के बच्चों के दाँत, यह सब तोड़े जाते हैं। 11 शिकार न पाने से बढ़ा बबर हलाक होता, और शेरनी के बच्चे तितर — बितर हो जाते हैं। 12 एक बात चुपके से मेरे पास पहुँचाई गई, उसकी भनक मेरे कान में पड़ी। 13 रात के ख्याबों के ख्यालों के बीच, जब लोगों को गहरी नीद आती है। 14 मुझे खौफ और कपकपी ने ऐसा पकड़ा, कि मेरी सब हड्डियों को हिला डाला। 15 तब एक रुह मेरे सामने से गुज़री, और मेरे रोगेरे खड़े हो गए। 16 वह चुपचाप खड़ी हो गई लेकिन मैं उसकी शक्ति पहचान न सका; एक सरत मेरी आँखों के सामने थी और सन्नाटा था। फिर मैंने एक आवाज़ सुनी: 17 कि क्या फानी इसान खुदा से ज्यादा होगा? क्या आदमी अपने खालिक से ज्यादा पाक ठहरोगा? 18 देख, उसे अपने खादिमों का ऐताबर नहीं, और वह अपने फरिश्तों पर हिमाकत को ‘आइद करता है। 19 फिर भला उनकी क्या हकीकत है, जो मिट्ठी के मकानों में रहते हैं। जिनकी बुनियाद खाक में है, और जो पतंगे से भी जल्दी पिस जाते हैं। 20 वह सुबह से शाम तक हलाक होते हैं, वह हमेशा के लिए फना हो जाते हैं, और कार्बो उनका ख्याल भी नहीं करता। 21 क्या उनके खेमी की डोरी उनके अन्दर ही अन्दर तोड़ी नहीं जाती? वह मरते हैं और यह भी बौर दानाई के।

5 ज़रा पुकार क्या कोई है जो तुझे जबाब देगा? और मुक़द्दसों में से तू किसकी तरफ पिरेगा? 2 क्यूँकि कुद्दना बेवकूफ को मार डालता है, और जलन बेवकूफ की जान ले लेती है। 3 मैंने बेवकूफ को जड़ पकड़ते देखा है, लेकिन बरबर उसके घर पर लाना की। 4 उसके बाल — बच्चे सलामी से दूर हैं, वह फाटक ही पर कुचले जाते हैं, और कोई नहीं जो उन्हें छुड़ाए। 5 भक्ता उसकी फसल को खाता है, बल्कि उसे कँटों में से भी निकाल लेता है। और प्यासा उसके माल को निगल जाता है। 6 क्यूँकि मुसीबत मिट्ठी में से नहीं उगती। न दुख जमीन में से निकलता है। 7 बस जैसे चिंगारीयाँ ऊपर ही को उड़ती हैं, वैसे ही इंसान दुख के लिए पैदा हुआ है। 8 लेकिन मैं तो खुदा ही का

तालिब रहँगा, और अपना मुआमिला खुदा ही पर छोड़ूँगा। 9 जो ऐसे बड़े बड़े काम जो बयान नहीं हो सकते, और बेशमार ‘अजीब काम करता है। 10 वही जमीन पर पानी बरसाता, और खेतों में पानी भेजता है। 11 इसी तरह वह हलीमों को ऊँची जगह पर बिठाता है, और मातम करनेवाले सलामती की सरफराजी पाते हैं। 12 वह ‘अद्यारों की तदीरों को बातिल कर देता है। यहाँ तक कि उनके हाथ उनके मकसद को पूरा नहीं कर सकते। 13 वह होशियारों की उन ही की चालाकियों में फ़साता है, और टेढ़े लोगों की मशवरत जल्द जाती रहती है। 14 उहें दिन दहाड़े अँधेरे से पाला पड़ता है, और वह दोपहर के बक्त ऐसे टर्टोलते फिरते हैं जैसे रात को। 15 लेकिन मुफ़लिस को उनके मुँह की तलवार, और जबरदस्त के हाथ से वह बचालेता है। 16 जो गरीब को उम्मीद रहती है, और बदकरी अपना मुँह बंद कर लेती है। 17 देख, वह आदमी जिसे खुदा तम्बीह देता है खुश किस्मत है। इसलिए क़ादिर — ए — मुतलक की तादीब को बेकार न जान। 18 क्यूँकि वही मज़स्ह करता और पट्टी बांधता है। वही ज़ख्मी करता है और उसी के हाथ शिफा देते हैं। 19 वह तुझे छ: मुसीबों से छुड़ाएगा, बल्कि सात में भी कोई आफत तुझे छोड़े न पाएगी। 20 काल में वह तुझ को मौत से बचाएगा, और लड़ाई में तलवार की धार से। 21 तज़बान के कोडे से महफ़ज़ “रखा जाएगा, और जब हलाकत आएगी तो तुझे डर नहीं लगेगा। 22 तू हलाकत और खुशक साली पर हँसेगा, और जमीन के दरिन्दों से तुझे कुछ खौफ न होगा। 23 मैदान के पथरों के साथ तेरा एका होगा, और जंगली जानवर तुझ से मेल रखेंगे। 24 और तू जानेगा कि तेरा खेमा महफ़ज़ है, और तू अपने घर में जाएगा और कोई चीज़ गाएँ न पाएगा। 25 तुझे यह भी मालूम होगा कि तेरी नसल बड़ी, और तेरी औलाद जमीन की धास की तरह बढ़ती। 26 तू पूरी उम्र में अपनी कब्र में जाएगा, जैसे अनाज के पूले अपने बक्त पर जमा किए जाते हैं। 27 देख, हम ने इसकी तहकीकी की और यह बात यूँ ही है। इसे सुन ले और अपने फायदे के लिए इसे याद रख।”

6 तब अद्यारु ने जबाब दिया 2 काश कि मेरा कुद्दना तोला जाता, और मेरी सारी मुसीबत तराज़ में रखबी जाती। 3 तो वह समन्दर की रेत से भी भारी होती; इसी लिए मेरी बातें घबराहट की हैं। 4 क्यूँकि क़ादिर — ए — मुतलक के तीर मेरे अन्दर लगे हुए हैं; मेरी रुह उन ही के जहर को पी रही हैं खुदा की डरावनी बातें मेरे खिलाफ सफ़ बाँधे हुए हैं। 5 क्या जंगली गधा उस बक्त भी चिल्लाता है जब उसे घास मिल जाती है? या क्या बैल चारा पाकर डकारता है? 6 क्या फाँकी चीज़ बे नमक खायी जा सकता है? या क्या अंडे की सफेदी में कोई मज़ा है? 7 मेरी रुह को उनके छूने से भी इंकार है, वह मेरे लिए मक़स्ह गिराता है। 8 काश कि मेरी दरबावास्त मंज़र होती, और खुदा मुझे वह चीज़ बद्दशता जिसकी मुझे आरज़ू है। 9 याँनी खुदा को यहीं मंज़र होता कि मुझे कुचल डाले, और अपना हाथ चत्ताकर मुझे काट डाले। 10 तो मुझे तसलीली होती, बल्कि मैं उस अटल दर्द में भी शादमान रहता; क्यूँकि मैंने उस बातों का इन्कार नहीं किया। 11 मेरी ताकत ही क्या है जो मैं ठहरा रहूँ? और मेरा अन्जाम ही क्या है जो मैं सब करूँ? 12 क्या मेरी ताकत पथरों की ताकत है? या मेरा जिसम पीतल का है? 13 क्या बात यही नहीं कि मैं लाचार हूँ, और काम करने की ताकत मुझ से जाती रही है? 14 उस पर जो कमज़ोर होने को है उसके दोस्त की तरफ से मेहरबानी होनी चाहिए, बल्कि उस पर भी जो क़ादिर — ए — मुतलक का खौफ छोड़ देता है। 15 मेरे भाईयों ने नाले की तरह दगा की, उन वादियों के नालों की तरह जो सूख जाते हैं। 16 जो जड़ की वजह से काले हैं, और जिनमें बर्फ़ छिपी है। 17 जिस बक्त वह गर्म होते हैं तो गायब हो जाते हैं, और जब गर्मी पड़ती है तो अपनी जाग से उड़ जाते हैं। 18 कपाफिले अपने रास्ते से मुड़ जाते हैं, और वीराने में जाकर हलाक हो जाते हैं। 19 तेमा के

काफिले देखते रहे, सबा के कारबाँ उनके इन्तिजार में रहे। 20 वह शर्मिन्दा हुए क्यूंकि उन्होंने उम्मीद की थी, वह वहाँ आए और पशोमान हुए। 21 इसलिए तुम्हारी भी कोई हकीकत नहीं; तुम डरावनी चीज देख कर डर जाते हो। 22 क्या मैंने कहा, 'कुछ मुझे दो? 'या 'अपने माल में से मेरे लिए रिश्वत दो? ' 23 या 'मुखालिफ के हाथ से मुझे बचाओ? ' या 'जालिमों के हाथ से मुझे छाड़ाओ? ' 24 मुझे समझाओ और मैं खामोश रहूँगा, और मुझे समझाओ जैसे कि मैं किस बात में चूका। 25 रास्ती की बातों में कितना असर होता है, बल्कि तुम्हारी बहस से क्या फायदा होता है। 26 क्या तुम इस ख्याल में हो कि लफजों की तकरार करते? इसलिए कि मायस की बातें हवा की तरह होती हैं। 27 हाँ, तुम तो यतीमों पर कुरांआ डालने वाले, और अपने दोस्त को तिजारत का माल बनाने वाले हो। 28 इसलिए जरा मेरी तरफ निगाह करो, क्यूंकि तुम्हारी मुँह पर मैं हरगिज झट्ट न बोलूँगा। 29 मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ बाज आओ बे इन्साफी न करो। मैं हक्क पर हूँ। 30 क्या मेरी ज़बान पर बे इन्साफी है? क्या फितना अंगेजी की बातों के पहचानने का मुझे सलीका नहीं?

7 “क्या इंसान के लिए ज़मीन पर जंग — ओ — जदल नहीं? और क्या उसके दिन मज़दूर के जैसे नहीं होते? 2 जैसे नौकर साये की बड़ी आरज़ करता है, और मज़दूर अपनी उजरत का मुतंज़िर रहता है; 3 वैसे ही मैं बुलान के महीनों का मालिक बनाया गया हूँ, और मुसीबत की रातें मेरे लिए ठहराई गई हैं। 4 जब मैं लेटता हूँ तो कहता हूँ, 'कब उठूँगा?' लेकिन रात लाल्ही होती है, और दिन निकलने तक इधर — उधर करवटे बदलता रहता है। 5 मेरा जिस्म कीड़ों और मिट्टी के ढेलों से ढका है। मेरी खाल सिमटी और फिर नासर हो जाती है। 6 मेरे दिन जुलाहे की ढरकी से भी तेज़ और बैरे उम्मीद के गुज़र जाते हैं। 7 'आह, याद कर कि मेरी ज़िन्दगी हवा है, और मेरी आँखें खुशी को फिर न देखेंगी। 8 जो मुझे अब देखता है उसकी आँख मुझे फिर न देखेंगी। तेरी आँखें तो मुझे पर होंगी लेकिन मैं न हूँगा। 9 जैसे बादल फटकर गायब हो जाता है, वैसे ही वह जो कब्र में उतरता है फिर कभी ऊपर नहीं आता; (Sheol h7585)

10 वह अपने घर को फिर न लौटेगा, न उसकी जगह उसे फिर पहचानेगी। 11 इसलिए मैं अपना मुँह बंद नहीं रखूँगा; मैं अपनी स्थ की तल्खी में बोलता जाऊँगा। मैं अपनी जान के ऐज़बा में शिकवा करूँगा। 12 क्या मैं समन्वय हूँ या मारमच्छ?, जो तू मुझ पर पहरा बिठाता है? 13 जब मैं कहता हूँ। मेरा बिस्तर मुझे आराम पहुँचाएगा, मेरा बिछौना मेरे दुख को हल्का करेगा। 14 तो तु ख्याबों से मुझे डराता, और दीदार से मुझे तसल्ली देता है; 15 यहाँ तक कि मेरी जान फँसी, और मौत को मेरी इन हड्डियों पर तरजीह देती है। 16 मुझे छोड़ दे क्यूंकि मेरे दिन खरब हैं। 17 इंसान की औकात ही क्या है जो तू उसे सरफराज करे, और अपना दिल उस पर लगाए; 18 और हर सुबह उसकी खबर ले, और हर लम्हा उसे आजमाए? 19 तू कब तक अपनी निगाह मेरी तरफ से नहीं हटाएगा, और मुझे इन्हीं भी मोहलत नहीं देगा कि अपना थूक निगल लें? 20 ऐ बनी आदम के नजिर, अगर मैंने गुनाह किया है तो तेरा क्या बिगड़ता है? तो वे क्यूं मुझे अपना निशाना बना लिया है, यहाँ तक कि मैं अपने आप बोझ हूँ। 21 तू मेरा गुनाह क्यूं नहीं मु'आक़ करता, और मेरी बदकारी क्यूं नहीं दूर कर देता? अब तो मैं मिट्टी में सो जाऊँगा, और तू मुझे खब ढूँगा लेकिन मैं न हूँगा।”

8 तब बिलदद सूखी कहने लगा, 2 तू कब तक ऐसे ही बकता रहेगा, और तेरे मुँह की बातें कब तक अँधी की तरह होंगी? 3 क्या खुदा बेइन्साफ़ करता है? क्या कादिर — ए — मुतलक इन्साफ़ का ख़ुन करता है? 4 अगर तेरे फर्जन्दों ने उसका गुनाह किया है, और उसने उन्हें उन ही की खता के

हवाले कर दिया। 5 तो भी अगर तू खुदा को खब ढूँडता, और कादिर — ए — मुतलक के सामने मिन्नत करता, 6 तो अगर तू पाक दिल और रास्तबाज होता, तो वह जस्त अब तेरे लिए बेदार हो जाता, और तेरी रास्तबाजी के घर को बढ़ाता। 7 और अगर तेरा इशाज छोटा सा था, तो भी तेरा अंजाम बहत बड़ा होता। 8 जरा पिछले ज़माने के लोगों से पूछ और जो कुछ उनके बाप दादा ने तहकीक की ही उस पर ध्यान कर। 9 क्यूंकि हम तो कल ही के हैं, और कुछ नहीं जानते और हमारे दिन ज़मीन पर साये की तरह हैं। 10 क्या वह तुझे न सिखाएँगे और न बताएँगे और अपने दिल की बातें नहीं करेंगे? 11 क्या नामरमोश बौरे कीचड़ के उग सकता है क्या सकंडों को बिना पानी के बढ़ा किया जा सकता है? 12 जब वह हरा ही है और काटा भी नहीं गया तो भी और पौटों से पहले सूख जाता है। 13 ऐसी ही उन सब की राहें हैं, जो खुदा को भूल जाते हैं बे खुदा आदमी की उम्मीद टूट जाएगी 14 उसका ऐतमांद जाता रहेगा और उसका भरोसा मकड़ी का जाला है। 15 वह अपने घर पर टेक लगाएगा लेकिन वह खड़ा रहेगा। 16 वह धूप पाकर हरा भरा हो जाता है और उसकी डालियाँ उरी के बाग में फैलती हैं। 17 उसकी जड़ें ढेर में लिपटी हीर रहती हैं, वह पथर की जगह को देख लेता है। 18 अगर वह अपनी जगह से हलाक किया जाए तो वह उसका इन्कार करके कहने लगेगी, कि मैंने तुझे देखा ही नहीं। 19 देख उसके रस्ते की खुशी इन्हीं है, और मिट्टी में से दूसरे उग आएंगे। 20 देख खुदा कामिल आदमी को छोड़ न देगा, न वह बदकिरदारों को सम्भालेगा। 21 वह अब भी तेरे मुँह को हँसी से भर देगा और तेरे लबों की ललकार की आवाज से। 22 तेरे नफरत करने वाले शर्म का जामा पहनेंगे और शरीरों का खेमा काईम न रहेगा।

9 फिर अय्यूब ने जवाब दिया 2 दर हकीकत में मैं जानता हूँ कि बात यूँ ही है, लेकिन इंसान खुदा के सामने कैसे रास्तबाज ठहरे। 3 अगर वह उससे बहस करने को राजी भी हो, यह तो हजार बातों में से उसे एक का भी जवाब न दे सकेगा। 4 वह दिल का 'अक्लतमन्द और ताकत में ज़ोरआवर है, किसी ने हिम्मत करके उसका सामना किया है और बढ़ा हो। 5 वह पहाड़ों को हटा देता है और उन्हें पता भी नहीं लगता वह अपने कहर में उलट देता है। 6 वह ज़मीन को उसकी जगह से हिला देता है, और उसके सुन्नत काँपें लगते हैं। 7 वह सरज को हक्म करता है और वह तरु़त नहीं होता है, और सितारों पर मुहर लगा देता है 8 वह आसमानों को अकेला तान देता है, और समन्वय की लहरों पर चलता है 9 उसने बनात — उन — नाश और जब्बार और सूर्या और जुनून के बुज़ों को बनाया। 10 वह बड़े बड़े काम जो बियान नहीं हो सकते, और बेशुमार अजीब काम करता है। 11 देखो, वह मेरे पास से गुज़रता है लेकिन मुझे दिखाई नहीं देता; वह आगे भी बढ़ जाता है लेकिन मैं उसे नहीं देखता। 12 देखो, वह शिकार पकड़ता है; कौन उसे रोक सकता है? कौन उससे कहेगा कि तू क्या करता है? 13 "खुदा अपने गुरुसे को नहीं हटाएगा। रहब" के मददगार उसके नीचे झुक जाते हैं। 14 फिर मेरी क्या हकीकत है कि मैं उसे जब वूँ और उससे बहस करने को अपने लफज़ छाँट छाँट कर निकलतूँ? 15 उसे तो मैं अगर सादिक भी होता तो जवाब न देता। मैं अपने मुखालिफ़ की मिन्नत करता। 16 अगर वह मेरे पुकारने पर मुझे जबाब भी देता, तो भी मैं यकीन न करता कि उसने मेरी आवाज सुनी। 17 वह तूफान से मुझे तोड़ता है, और वे बजह मेरे ज़ख्मों को ज्यादा करता है। 18 वह मुझे दम नहीं लेने देता, बल्कि मुझे तल्खी से भरपूर करता है। 19 अगर जोरआवर की ताकत का जिक्र हो, तो देखो वह है। और अगर इन्साफ़ का, तो मेरे लिए बक्तव्य को ठहराएगा? 20 अगर मैं सच्चा भी हूँ, तो भी मेरा ही मुँह मुझे मूलिज्म ठहराएगा। और अगर मैं कामिल भी हूँ

तोभी यह मुझे आलसी साबित करेगा। 21 मैं कामिल तो हूँ, लेकिन अपने को कुछ नहीं समझता; मैं अपनी ज़िन्दगी को बेकार जानता हूँ। 22 यह सब एक ही बात है, इसलिए मैं कहता हूँ कि वह कामिल और शरीर दोनों को हलाक कर देता है। 23 अगर बवा अचानक हलाक करने लगे, तो वह बेगुनाह की आजमाइश का मजाक उड़ाता है। 24 ज़मीन शरीरों को हवाले कर दी गई है। वह उसके हाकिमों के मुँह ढाँक देता है। अगर वही नहीं तो और कौन है? 25 मेरे दिन हरकारों से भी तेज़स्स है। वह उड़े चले जाते हैं और रुखी नहीं देखने पाते। 26 वह तेज जहाजों की तरह निकल गए, और उस उकाब की तरह जो शिकार पर झपटता हो। 27 अगर मैं कहूँ, कि मैं अपना गम भला ढूँगा, और उदासी छोड़कर दिलशाद हँगा, 28 तो मैं अपने दुखों से डरता हूँ, मैं जानता हूँ कि तू मुझे बेगुनाह न ठहराएगा। 29 मैं तो मूलिज्म ठहँगा, फिर मैं 'तो मैं ज़हमत क्यूँ उठाऊँ?' 30 अगर मैं अपने को बर्फ के पानी से धोऊँ, और अपने हाथ कितने ही साफ करूँ। 31 तोभी तू मुझे खाइ में गोता देगा, और मैं ही कपड़े मुझ से धिन खाएँगे। 32 क्यूँकि वह मेरी तरह आदमी नहीं कि मैं उसे जवाब दूँ, और हम 'अदालत में एक साथ हाजिर होंगे। 33 हमारे बीच कोई बिचारी नहीं, जो हम दोनों पर अपना हाथ रखें। 34 वह अपनी लाती मुझ से हटा ले, और उसकी डरावनी बात मुझे परेशान न करे। 35 तब मैं कुछ कहँगा और उससे डरने का नहीं, क्यूँकि अपने आप में तो मैं ऐसा नहीं हूँ।

10 “मेरी रुह मेरी ज़िन्दगी से परेशान है, मैं अपना शिकवा खूब दिल खोला कर कहँगा। मैं अपने दिल की तरल्खी में बोलूँगा। 2 मैं खुदा से कहँगा, मुझे मूलिज्म न ठहरा; मुझे बता कि तू मुझ से क्यूँ झगड़ता है। 3 क्या तज्ज्वला अच्छा लगता है, कि अँधेर करे, और अपने हाथों की बानाई हुई चीज़ को बेकार जाने, और शरीरों की बातें की रोशनी करे? 4 क्या तेरी आँखें गोशत की हैं? या तू ऐसे देखता है जैसे आदमी देखता है? 5 क्या तेरे दिन आदमी के दिन की तरह, और तेरे साल इंसान के दिनों की तरह है, 6 कि तू मेरी बदकारी को पछाड़ा, और मेरा गुमाह ढूँड़ता है? 7 क्या तज्ज्वला मालूम है कि मैं शरीर नहीं हूँ, और कोई नहीं जो तेरे हाथ से छुड़ा सके? 8 तेरे ही हाथों ने मुझे बनाया और सरासर जोड़ कर कामिल किया। फिर मैं तू मुझे हलाक करता है। 9 याद कर कि तूने गुंधी हुई मिट्ठी की तरह मुझे बनाया, और क्या तू मुझे फिर खाक में मिलाएगा? 10 क्या तूने मुझे दूध की तरह नहीं उड़ेला, और पर्नी की तरह नहीं जमाया? 11 फिर तूने मुझ पर चमड़ा और गोशत चढ़ाया, और हड्डियों और नसों से मुझे जोड़ दिया। 12 तूने मुझे जान बर्खी और मुझ पर करम किया, और तेरी निगहबानी ने मेरी रुह सलामत रख्खी। 13 तोभी तूने यह बातें तूने अपने दिल में छिपा रख्खी थीं। मैं जानता हूँ कि तेरा यही इशादा है कि 14 अगर मैं गुनाह करूँ, तो तू मुझ पर निगरान होगा; और तू मुझे मेरी बदकारी से बरी नहीं करेगा। 15 अगर मैं गुनाह करूँ तो मुझ पर अफसोस! अगर मैं सच्चा बनूँ तोभी अपना सिर नहीं उठाने का, क्यूँकि मैं ज़िल्लत से भरा हूँ, और अपनी मुसीबत को देखता रहता हूँ। 16 और अगर सिर उठाऊँ, तो तू शेर की तरह मुझ शिकार करता है और फिर 'अजीब सूरत में मुझ पर ज़ाहिर होता है। 17 तू मेरे खिलाफ नए नए गवाह लाता है, और अपना कहर मुझ पर बढ़ाता है; नई नई फौजे मुझ पर चढ़ आती हैं। 18 इसलिए तूने मुझे रहम से निकाला ही क्यूँ? मैं जान दे देता और कोई आँख मुझे देखने न पाती। 19 मैं ऐसा होता कि गोया मैं था ही नहीं मैं रहम ही से कब्र में पहँचा दिया जाता। 20 क्या मेरे दिन थोड़े से नहीं? जां आ, और मुझे छोड़ दे ताकि मैं कुछ राहत पाऊँ। 21 इससे पहले कि मैं वहाँ जाऊँ, जहाँ से फिर न लैटूँगा यानी तारीकी और मौत और साये की सर ज़मीन को: 22 गहरी तारीकी की सर ज़मीन जो खुद तारीकी ही है; मौत

के साये की सर ज़मीन जो बे तरतीब है, और जहाँ रोशनी भी ऐसी है जैसी तारीकी।”

11 तब ज़ूफ़र नामाती ने जवाब दिया, 2 क्या इन बहुत सी बातों का जवाब न दिया जाए? और क्या बकवासी आदमी रास्त ठहराया जाए? 3 क्या तैरे बड़े बोल लोगों को खामोश करदे? और जब तू ठड़ा करे तो क्या कोई तुझे शर्मिन्दा न करे? 4 क्यूँकि तू कहता है, 'मेरी तातीम पाक है, और मैं तेरी निगाह में बेगुनाह हूँ। 5 काश खुदा खुद बोले, और तेरे खिलाफ अपने लबों को खोले। 6 और हिक्मत के आसार तुझे दिखाए कि वह तासीर में बहुत बड़ा है। इसलिए जान ले कि तेरी बदकारी जिस लायक है उससे कम ही खुदा तुझ से मुतलबा करता है। 7 क्या तू तलाश से खुदा को पा सकता है? क्या तू कादिर — ए — मुतलक का राज पौर तौर से बयान कर सकता है? 8 वह आसमान की तरह ऊँचा है, तू क्या कर सकता है? वह पाताल सा गहरा है, तू क्या जान सकता है? (Sheol h7585) 9 उसकी नाप ज़मीन से लब्बी और समन्दर से चौड़ी है 10 अगर वह बीच से गुजर कर बंद कर दे, और 'अदालत में बुलाए तो कौन उसे रोक सकता है? 11 क्यूँकि वह बेहदा आदमियों को पहचानता है, और बदकारी को भी देखता है, चाहे उसका ख्याल न करे? 12 लेकिन बेहदा आदमी समझ से खाली होता है, बल्कि इंसान गधे के बच्चे की तरह पैदा होता है। 13 अगर तू अपने दिल को ठीक करे, और अपने हाथ उसकी तरफ फैलाए, 14 अगर तेरे हाथ में बदकारी हो तो उसे दूर करे, और नारास्ती को अपने खेमों में रहने न दे, 15 तब यकीन तू अपना मुँह बे दाग उठाएगा, बल्कि तू साबित करदम हो जाएगा और डरने का नहीं। 16 क्यूँकि तू अपनी खस्ताहानी को भूल जाएगा, तू उसे उस पानी की तरह याद करेगा जो बह गया है। 17 और तेरी ज़िन्दगी दोपहर से ज्यादा रोशन होगी, और अगर तारीकी हुई तो वह सबह की तरह होगी। 18 और तू मुस्तम'इन रहेगा, क्यूँकि उम्मीद होगी और अपने चारों तरफ देख देख कर सलामी से आराम करेगा। 19 और तू लेट जाएगा, और कोई तुझे ठहराएगा नहीं बल्कि बहत से लोग तुझ से फरियाद करेंगे। 20 लेकिन शरीरों की आँखें रह जाएँगी, उनके लिए भागने को भी रास्ता न होगा, और जान दे देना ही उनकी उम्मीद होगी।”

12 तब अय्यूब ने जवाब दिया, 2 बेशक आदमी तो तुम ही हो “और हिक्मत तुम्हारे ही साथ मेरेगी। 3 लेकिन मुझ में भी समझ है, जैसे तुम मैं है, मैं तुम से कम नहीं। भला ऐसी बातें जैसी यह हैं, कौन नहीं जानता? 4 मैं उस आदमी की तरह हूँ जो अपने पड़ोसी के लिए हँसी का निशाना बना है। मैं वह आदमी था जो खुदा से दुआ करता और वह उसकी सुन लेता था। रास्तबाज और कामिल आदमी हँसी का निशाना होता ही है। 5 जो चैन से है उसके ख्याल में दुख के लिए हिकरत होती है; यह उनके लिए तेयार रहती है जिनका पाँव फिसलता है। 6 डाकुओं के खेमे सलामत रहते हैं, और जो खुदा को गुस्सा दिलाते हैं, वह महफूज रहते हैं; उन ही के हाथ को खुदा खबू भरता है। 7 हैवानों से पूछ और वह तुझे सिखाएँगे, और हवा के परिन्दों से दरियाफ़त कर और वह तज्ज्वल बताएँगे। 8 या ज़मीन से बात कर, वह तुझे सिखाएगी; और समन्दर की मछलियाँ तुझ से बयान करेंगी। 9 कौन नहीं जानता कि इन सब बातों में खुदाबन्द ही का हाथ है जिसने यह सब बनाया? 10 उरी के हाथ में हर जानदार की जान, और कुल बनी आदम की जान ताकत है। 11 क्या कान बातों को नहीं परख लेता, जैसे जबान खाने को चख लेती है? 12 खुदों में समझ होती है, और उम्र की दराजी में समझदारी। 13 खुदा में समझ और कृत्व है, उसके पास मसलाहत और समझ है। 14 देखो, वह ढां देता है तो फिर बनता नहीं। वह आदमी को बंद कर देता है, तो फिर खुलता नहीं। 15 देखो, वह मैं

को रोक लेता है, तो पानी सूख जाता है। फिर जब वह उसे भेजता है, तो वह ज़मीन को उलट देता है। 16 उसमें ताकत और तारासीरी की कूच्चत है। धोका खाने वाला और धोका देने वाला दोनों उसी के हैं। 17 वह सलाहकारों को लटवा कर गुलामी में ले जाता है, और 'अदालत करने वालों' को बेकूफ़ बना देता है। 18 वह शाही बन्धनों को खोल डालता है, और बादशाहों की कमर पर पटका बाँधता है। 19 वह काहिनों को लुटवाकर गुलामी में ले जाता, और ज़बरदस्तों को पछाड़ देता है। 20 वह 'ऐतमाव वाले' की कूच्चत — ए — गोयां दूर करता और बुजूँगों की समझदारी को छीन लेता है। 21 वह हाकिमों पर हिकात बरसाता, और ताकतवरों की कमरबंद को खोल डालता है। 22 वह अँधेरे में से गहरी बांगों को ज़ाहिर करता, और मौत के साथे को भी रोशनी में ले आता है। 23 वह कौमों को बढ़ाकर उन्हें हलाक कर डालता है; वह कौमों को फैलाता और फिर उन्हें समेट लेता है। 24 वह ज़मीन की कौमों के सरदारों की 'अक्ल उड़ा देता और उन्हें ऐसे बीराम में भटका देता है जहाँ रास्ता नहीं। 25 वह रोशनी के बगैर तारीकी में टटोलते फिरते हैं, और वह उन्हें ऐसा बना देता है कि मतवाले की तरह लड़खड़ाते हुए चलते हैं।

13 "मेरी आँखें ने तो यह सब कुछ देखा है, मेरे कान ने यह सुना और समझ भी लिया है।

2 जो कुछ तुम जानते हो उसे मैं भी जानता हूँ, मैं तुम से कम नहीं। 3 मैं तो कादिर — ए — मुतलक से गुफ्तगूँ करना चाहता हूँ, मेरी आज़ूँ है कि खुदा के साथ बहस करूँ 4 लेकिन तुम लोग तो झूटी बातों के गढ़ने वाले हो; तुम सब के सब निकम्मे हकीम हो। 5 काश तुम बिल्कुल खामोश हो जाते, यही तुम्हारी 'अक्लमन्दी' होती। 6 अब मेरी दलील सुनो, और मेरे पूँह के दाखे पर कान लगाओ। 7 क्या तुम खुदा के हक क्षेत्र में नारस्ती से बातें करोगे, और उसके हक में धोके से बोलोगे? 8 क्या तुम उसकी तरफदारी करोगे? क्या तुम खुदा की तरफ से झागड़ोगे? 9 क्या यह अच्छ होगा कि वह तुम्हारा जाएजा करें? क्या तुम उसे धोका दोगे जैसे आदिमी को? 10 वह ज़स्त तुम्हें मलामत करेगा जो तुम खुफिया तरफदारी करो, 11 क्या उसका जलाल तुम्हें डरा न देगा, और उसका रौब तुम पर छा न जाएगा? 12 तुम्हारी छुपी बातें राख की कहावतें हैं, तुम्हारी दीवारें मिट्टी की दीवारें हैं। 13 तुम चुप रहो, मुझे छोड़ो ताकि मैं बोल सकूँ, और फिर मुझ पर जो बीते सो बीतो। 14 मैं अपना ही गोश्ट अपने दाँतों से क्यूँ चबाऊँ; और अपनी जान अपनी हथेती पर क्यूँ रखखूँ? 15 देखो, वह मुझे कल्प करेगा, मैं इन्तिज़ार नहीं करूँगा। बहर हाल मैं अपनी गहों की ताईं उसके सामने कहँगा। 16 यह भी मेरी नज़त के ज़रिए होगा, क्यूँकि कोई बेखुदा उसके बाबार आ नहीं सकता। 17 मेरी तकरीर को गौर से सुनो, और मेरा बयान तुम्हरे कानों में पड़े। 18 देखो, मैंने अपना दावा दुस्त कर लिया हूँ, मैं जानता हूँ कि मैं सच्चा हूँ। 19 कौन है जो मेरे साथ झँगड़ेगा? क्यूँकि फिर तो मैं चुप हो कर अपनी जान दे दँगा। 20 सिर्फ दो ही काम मुझ से न कर, तब मैं तुम से नहीं छि पूँगा: 21 अपना हाथ मुझ से दूर हटालो, और तेरी हैबत मुझे खौफ़ जड़ा न करो। 22 तब तेरे बुलाने पर मैं जबाब दूँगा; या मैं बोलूँ और तू मुझे जबाब दें। 23 मेरी बदकारियाँ और गुनाह किनेहैं? ऐसा कर कि मैं अपनी खता और गुनाह को जान लूँ। 24 तू अपना मुँह क्यूँ छिपाता है, और मुझे अपना दुश्मन क्यूँ जानता है? 25 क्या तू उड़ते पते को पेरेशान करेगा? क्या तु सख्ते डंठल के पिछे पड़ेगा? 26 क्यूँकि तू मेरे खिलाफ तल्ख बातें लिखता है, और मेरी जवानी की बदकारियाँ मुझ पर वापस लाता है।" 27 तू मेरे पाँव काठ में ठोकता, और मेरी सब राहों की निगरानी करता है, और मेरे पाँव के चारों तरफ बाँध खीचता है। 28 अगरचे मैं सड़ी हुई चीज़ की तरह हूँ, जो फना हो जाती है। या उस कपड़े की तरह हूँ जिसे कीड़े ने खा लिया हो।

14 इंसान जो 'औरत से पैदा होता है थोड़े दिनों का है, और दुख से भरा है।

2 वह फूल की तरह निकलता, और काट डाला जाता है। वह साए की तरह उड़ जाता है और ठहरता नहीं। 3 इसलिए क्या तू ऐसे पर अपनी आँखें खोलता है, और मुझे अपने साथ 'अदालत में घसीरता है'? 4 नापाक चीज़ में से पाक चीज़ कौन निकाल सकता है? कोई नहीं। 5 उसके दिन तो ठहरे हुए हैं, और उसके महिनों की तादाद तेरे पास है, और तू ने उसकी हड्डों को मुकर्रर कर दिया है, जिन्हें वह पार नहीं कर सकता। 6 इसलिए उसकी तरफ से नज़र हटा ले ताकि वह आराम करे, जब तक वह मज़दूर की तरह अपना दिन पूरा न कर ले। 7 'क्यूँकि दरखत की तो उम्मीद रहती है कि अगर वह काटा जाए तो फिर फूट निकलेगा, और उसकी नर्म डालियाँ खत्म न होंगी। 8 अगरचे उसकी जड़ ज़मीन में पूरानी हो जाए, और उसका तना मैट्री में गल जाए, 9 तो भी पानी की बू पाते ही वह नए अखुबे लाएगा, और पैदे की तरह शाखे निकलेगा। 10 लेकिन इंसान मर कर पड़ा रहता है, बल्कि इंसान जान छोड़ देता है, और फिर वह कहाँ रहता है? 11 जैसे ज़ील का पानी खत्म हो जाता, और दरिशा उतरता और सूख जाता है, 12 वैसे आदमी लेट जाता है और उठता नहीं; जब तक आसमान टल न जाए, वह बेदार न होंगे, और न अपनी नीद से जगाए जाएँगे। 13 काश कि तू मुझे पाताल में छिपा दे, और जब तक तेरा कहर टल न जाए, मुझे पोशीदा रखें; और कोई मुकर्ररा बक्तव्य में लिए ठहराए और मुझे याद करे। (Sheol h7585) 14 अगर आदमी मर जाए तो क्या वह फिर जिएगा? मैं अपनी जंग के सारे दिनों में मन्तज़िर रहता जब तक मेरा छुटकारा न होता। 15 तू मुझे पुकारता और मैं तुझे जबाब देता; तुझे अपने हाथों की सन्त अत की तरफ ख्वाहिश होती। 16 लेकिन अब तो तू मेरे कदम गिनता है; क्या तू मेरे गुनाह की ताक में लगा नहीं रहता? 17 मेरी खता थैली में सरब — मुहर है, तू ने मेरे गुनाह को सी रखवा है। 18 यकीनन पहाड़ गिरते गिरते खत्म हो जाता है, और च्छान अपनी जगह से हटा दी जाती है। 19 पानी पथरों को धिसा डालता है, उसकी बढ़ ज़मीन की खाक को बहाले जाती है; इनी तरह तू इंसान की उम्मीद को पिटा देता है। 20 तू हमेशा उस पर गालिब होता है, इसलिए वह गुजर जाता है। तू उसका चेहरा बदल डालता और उसे खारिज कर देता है। 21 उसके बेटों की 'इज़जत होती है, लेकिन उसे खबर नहीं। वह ज़लीत होते हैं लेकिन वह उनका हाल 'नहीं जानता। 22 बल्कि उसका गोशत जो उसके ऊपर है, दुखी रहता; और उसकी जान उसके अन्दर ही अन्दर गम खाती रहती है।"

15 तब इलिफ़ज़ तेमानी ने जबाब दिया, 2 क्या 'अक्लमन्द' को चाहिए कि

फुजल बातें जोड़ कर जबाब दे, और पूरी हवा से अपना पेट भरे? 3 क्या वह बेफ़ाइदा बकावास से बहस करे या ऐसी तकरीरों से जो बे फ़ाइदा है? 4 बल्कि तू खौफ़ को नज़र अन्दाज़ करके, खुदा के सामने इबादत को ज़ायल करता है। 5 क्यूँकि तेरा गुनाह तेरे मुँह को सिखाता है, और तू रियाकारों की जबान इखिल्यार करता है। 6 तेरा ही मुँह तुझे मुल्जिम ठहराता है न कि मैं, बल्कि तेरे ही हौंट तेरे खिलाफ़ गवाही देते हैं। 7 क्या पहला इंसान तू ही पैदा हुआ? या पहाड़ों से पहले तेरी पैदाइश है? 8 क्या तू ने खुदा की पोशीदा मसलहत सुन ली है, और अपने लिए 'अक्लमन्दी' का ठेका ले रखवा है? 9 तू ऐसा क्या जानता है, जो हम नहीं जानते? तुझे मैं ऐसी क्या समझ है जो हम में नहीं? 10 हम लोगों में सिर सफेद बाल वाले और बड़े बुढ़े भी हैं, जो तेरे बाप से भी बहुत ज्यादा उम्र के हैं। 11 क्या खुदा की तसल्ली तेरे नज़दीक कुछ कम है, और वह कलाम जो तुझ से नरमी के साथ किया जाता है? 12 तेरा दिल तुझे क्यूँ खीच ले जाता है, और तेरी आँखें क्यूँ इशारा करती हैं? 13 क्या तू अपनी रुह को खुदा की मुखालिफ़ पर आमादा करता है, और अपने पूँह से ऐसी बातें निकलने देता है? 14 इंसान है क्या कि वह पाक हो? और वह जो 'औरत से

पैदा हुआ क्या है, कि सच्चा हो। 15 देख, वह अपने फरिश्तों का 'ऐतबार नहीं करता बल्कि आसमान भी उसकी नज़र में पाक नहीं। 16 फिर भला उसका क्या जिक्र जो धिनौना और खराब है यानी वह आदमी जो बुराई को पानी की तरह पीता है। 17 'मैं तुझे बताता हूँ, तू मेरी सुन; और जो मैंने देखा है उसका बयान करूँगा। 18 जिसे 'अक्तलमन्दों ने अपने बाप — दादा से सुनकर बताया है, और उसे छिपाया नहीं; 19 सिर्फ उन ही को मुलक दिया गया था, और कोई पढ़ेदसी उनके बीच नहीं आया 20 शरीर आदमी अपनी सारी उम्र दर्द से कराहता है, यानी सब बरस जो जातिम के लिए रखवे गए हैं। 21 डरावनी आवाजें उसके कान में गूँजती रहती हैं, इकबालमंदी के बक्त गारतगर उस पर आ पड़ेगा। 22 उसे यकीन नहीं कि वह अँधेरे से बाहर निकलेगा, और तलवार उसकी मुन्तज़िर है। 23 वह रोटी के लिए मारा मारा फिरता है कि कहाँ मिलेगी। वह जानता है, कि अँधेरे के दिन मेरे पास ही है। 24 मुसीबत और सख्त तकलीफ उसे डराती है; ऐसे बादशाह की तरह जो लडाई के लिए तैयार हो, वह उस पर गालिब होते हैं। 25 इसलिए कि उसने खुदा के खिलाफ अपना हाथ बढ़ाया और कहिए — ए — मूलक के खिलाफ फ़ऱज़ करता है; 26 वह अपनी ढालों की मोटी — मोटी गुलामैयों के साथ बागी होकर उसपर हमला करता है; 27 इसलिए कि उसके मुँह पर मोटापा छा गया है, और उसके पहलुओं पर चर्बी की तर्ह जम गई है। 28 और वह वीरान शहरों में बस गया है, ऐसे मकानों में जिनमें कोई आदमी न बसा और जो वीरान होने को थे। 29 वह दौलतमन्द न होगा, उसका माल बना न रहेगा और ऐसों की पैदावार ज़मीन की तरफ न झकेगी। 30 वह अँधेरे से कभी न निकलेगा, और शोले उसकी शाखों को खुशक कर देंगे, और वह खुदा के मुँह से ताकत से जाता रहेगा। 31 वह अपने आप को धोका देकर बतालत का भरोसा न करे, क्यूँकि बतालत ही उसका मज़दूरी ठहरेगी। 32 यह उसके बक्त से फ़हले पूरा हो जाएगा, और उसकी शाख हरी न रहेगी। 33 ताक की तरह उसके अंगूर कच्चे ही और जैतून की तरह उसके फूल गिर जाएँगे। 34 क्यूँकि वे खुदा लोगों की जामा अत बेफल रहेगी, और रिशत के खेमों को आग भस्म कर देगी। 35 वह शरारत से ताक्तवर होते हैं और गुनाह पैदा होता है, और उनका पेट धोखा को तैयार करता है।"

16 तब अँध्यूब ने जवाब दिया, 2 "ऐसी बहुत सी बातें मैं सुन चुका हूँ, तुम सब के सब निकम्मे तसल्ली देने वाले हो। 3 क्या बेकार बातें कभी खत्म होंगी? तू कौन सी बात से डिडक कर जवाब देता है? 4 मैं भी तुम्हारी तरह बात बना सकता हूँ: अगर तुम्हारी जान मेरी जान की जगह होती तो मैं तुम्हारे खिलाफ बातें बना सकता, और तुम पर अपना सिर हिला सकता। 5 बल्कि मैं अपनी जबान से तुम्हें ताकत देता, और मेरे लबों की तकलीफ तुम को तसल्ली देती। 6 'आगार्चे मैं बोलता हूँ लेकिन मुझे को तसल्ली नहीं होती, और मैं चुप भी हो जाता हूँ, लेकिन मुझे क्या राहत होती है। 7 लेकिन उसने तो मुझे दुखी कर डाला है, तने मेरे सारे गिरह को तबाह कर दिया है। 8 तने मुझे मज़बूती से पकड़ लिया है, यही मुझ पर गवाह है। मेरी लालाची मेरे खिलाफ खड़ी होकर मेरे मुँह पर गवाही देती है। 9 उसने अपने गुस्से से मुझे फाड़ा और मेरा पीछा किया है; उसने मुझ पर दाँत पीसे, मेरा मुख्यालिफ मुझे आँखें दिखाता है। 10 उन्होंने मुझ पर मुँह पसारा हैं, उन्होंने तनज़न मुझे गाल पर मारा है; वह मेरे खिलाफ इकट्ठे होते हैं। 11 खुदा मुझे बेदीनों के हवाले करता है, और शरीरों के हाथों में मुझे बहाले करता है। 12 मैं आराम से था, और उसने मुझे चूँ चूँकर डाला; उसने मेरी गर्दन पकड़ ली और मुझे पटक कर टुकड़े टुकड़े कर दिया; और उसने मुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है। 13 उसके तीर अंदाज मुझे चारों तरफ से धूर लेते हैं, वह मेरे गुर्दों को चीरता है, और रहम

नहीं करता, और मेरे पित को ज़मीन पर बहा देता है। 14 वह मुझे ज़रूर पर ज़ख्म लगा कर खस्ता करता है वह पहलबान की तरह मुझ पर हमला करता है: 15 मैंने अपनी खाल पर टाट को सी लिया है, और अपना सींग खाक में रख दिया है। 16 मेरा मुँह रोते रोते सूज गया है, और मेरी पलकों पर मौत का साया है। 17 अगार्चे मेरे हाथों ज़ुल्म नहीं, और मेरी दुआ बुराई से पाक है। 18 ऐ ज़मीन, मेरे खून को न ढाँकना, और मेरी फरियाद को आराम की जगह न मिले। 19 अब भी देख, मेरा गवाह आसमान पर है, और मेरा ज़ामिन 'आलम — ए — बाल पर है। 20 मेरे दोस्त मेरी हिकारत करते हैं, लेकिन मेरी आँख खुदा के सामने अँसू बहाती है; 21 जिस तरह एक आदमी अपने दौसत कि बकालत करता है उसी तरह वह खुदा से आदमी कि बकालत करता है 22 क्यूँकि जब चंद साल निकल जाएँगे, तो मैं उस रास्ते से चला जाऊँगा जिससे फिर लौटने का नहीं।

17 मेरी जान तबाह हो गई मेरे दिन हो चुके कब्र मेरे लिए तैयार है। 2 यकीन हाँसी उड़ने वाले मेरे साथ साथ हैं, और मेरी आँख उनकी छेड़छाड़ पर लगी रहती है। 3 ज़मानत दे, अपने और मेरे बीच में तू ही ज़ामिन हो। कौन है जो मेरे हाथ पर हाथ मारे? 4 क्यूँकि तने इनके दिल को समझ से रोका है, इसलिए तू इनको सरफराज न करेगा। 5 जो लूट की खातिर अपने दोस्तों को मुल्तिज़ ठहराता है, उसके बच्चों की आँखें भी जाती रहेंगी। 6 उसने मुझे लोगों के लिए ज़ख्म या मिसाल बना दिया है; और मैं ऐसा हो गया कि लोग मेरे मुँह पर थूकें। 7 मेरी आँखें गम के मारे धुंदला गईं, और मेरे सब 'आज्ञा परछाई की तरह है। 8 रास्तबाज आदमी इस बात से हेरान होंगे और मार्मासूम आदमी बे खुदा लोगों के खिलाफ जोश में आएगा 9 तोही सच्चा अपनी राह में साक्षित कदम रहेगा और जिसके हाथ साफ हैं, वह ताकतवर ही होता जाएगा 10 लेकिन तुम सब के सब आते हो तो आओ, मुझे तुम्हरे बीच एक भी आदमी 'अक्तलमन्द न मिलेगा। 11 मेरे दिन तो बीत चुके, और मेरे मक्कसद मिट गए और जो मेरे दिल में था, वह बबांद हुआ है। 12 वह रात को दिन से बदलते हैं, वह कहते हैं रोशनी तारीकी के नज़दीक है। 13 अगर मैं उमीद करूँ कि पाताल मेरा घर है, अगर मैं अँधेरे में अपना बिछौना बिछा लिया है। (Sheol h7585) 14 अगर मैंने सड़ाहट से कहा है कि तेरा बाप है, और कीड़े से कि तेरी माँ और बहन है 15 तोमेरी उमीद कहाँ रही, और जो मेरी उमीद है, उसे कौन देखोगा 16 वह पाताल के फाटकों तक नीचे उतर जाएगी जब हम मिलकर खाक में आराम पाएँगे।" (Sheol h7585)

18 तब बिलदद शर्खी ने जवाब दिया, 2 तुम कब तक लफ़ज़ों की ज़स्तूज़ में रहोगे गैर कर लो फिर हम बोलेंगे 3 हम क्यूँ ज़ानवरों की तरह समझे जाते हैं, और तुम्हारी नज़र में नापाक ठहरे हैं। 4 तू जो अपने कहर में अपने को फ़ाड़ता है तो क्या ज़मीन तेरी बजह से उजड़ जाएगी या चट्टान अपनी जगह से हटा दी जाएगी 5 बल्कि शरीर का चराग गुल कर दिया जाएगा और उसकी आग का शोला बे नू हो जाएगा 6 रोशनी उसके खेमे में तरीकी हो जाएगी और जो चराग ऊसके उपर है, बुझा दिया जाएगा 7 उसकी कुब्त के कदम छोटे किए जाएँगे और उसी की मसलहत उसे नेचे गिराएंगी। 8 क्यूँकि वह अपने ही पाँव से जाल में फ़सता है और फ़ंदों पर चलता है 9 दाम उसकी एड़ी को पकड़ेगा, और जाल उसको फँसा लेगा। 10 कमन्द उसके लिए ज़मीन में छिपा दी गई है, और फ़ंदा उसके लिए रास्ते में रखवा गया है। 11 दहशत नाक चींगे हर तरफ से उसे डराएँगी, और उसके दापे होकर उसे भगाएँगी। 12 उसका जोर भूक का मारा होगा और आफ़त उसके शामिल — ए — हाल रहेगी। 13 वह उसके जिस्म के आँजा को खा जाएगी बल्कि मौत का फहलौठा उसके आँजा को चट कर जाएगी। 14 वह अपने खेमे से जिस पर उसको भरोसा है

उखाड़ दिया जाएगा, और दहशत के बादशाह के पास पहुंचाया जाएगा। 15 और वह जो उसका नहीं, उसके खेमे में बरेगा; उसके मकान पर गंधक छिटराई जाएगी। 16 नीचे उसकी जड़ें सुखाई जाएँगी, और ऊपर उसकी डाली कटी जाएगी। 17 उसकी यादगार जमीन पर से मिट जाएगी, और कहरों में उसका नाम न होगा। 18 वह रोशनी से अंधेरे में हँका दिया जाएगा, और दुनिया से खदेड़ दिया जाएगा। 19 उसके लोगों में उसका कोई बेटा होगा न पोता, और जहाँ वह टिका हुआ था, वहाँ कोई उसका बाकी न रहेगा। 20 वह जो पिछे आमेवाले हैं, उसके दिन पर हैरान होंगे, जैसे वह जो पहले हाएँ डर गए थे। 21 नारास्तों के घर यकीनन ऐसे ही हैं, और जो खुदा को नहीं पहचानता उसकी जगह ऐसी ही है।

19 तब अर्यूब ने जवाब दिया 2 तुम कब तक मेरी जान खाते रहोगे, और

बातों से मुझे छू — चू करोगे? 3 अब दप बार तुम ने मुझे मलामत ही की; तुम्हें शर्म नहीं आती की तुम मेरे साथ सख्ती से पेश आते हो। 4 और माना कि मुझ से खाता हुईँ; मेरी खाता मेरी ही है। 5 अगर तुम मेरे सामने मैं अपनी बडाई करते हो, और मेरे नंग को मेरे खिलाफ पेश करते हो; 6 तो जान लो कि खुदा ने मुझे पस्त किया, और अपने जाल से मुझे धेर लिया है। 7 देखो, मैं जूल्य जूल्य पुकारता हूँ, लेकिन मेरी सुनी नहीं जाती। मैं मटद के लिए दुराई देता हूँ, लेकिन कोई इन्साफ नहीं होता। 8 उसने मेरा रास्ता ऐसा शरूत कर दिया है, कि मैं गुजर नहीं सकता। उसने मेरी राहों पर तारीकी को बिठा दिया है। 9 उसने मेरी हशमत मुझ से छीन ली, और मेरे सिर पर से ताज उतार लिया। 10 उसने मुझे हर तरफ से तोड़कर नीचे गिरा दिया, बस मैं तो हो लिया, और मेरी उम्रीद को उसने पेट की तरह उखाड़ डाला है। 11 उसने अपने गजब को भी मेरे खिलाफ भड़काया है, और वह मुझे अपने मुखालिफों में शमार करता है। 12 उसकी फौजें इकट्ठी होकर आती और मेरे खिलाफ अपनी राह तैयार करती और मेरे खेमे के चारों तरफ खेमा जन होती है। 13 उसने मेरे भाझों को मुझ से दूर कर दिया है, और मेरे जान फहान मुझ से बेगाना हो गए है। 14 मेरे प्रियतेदार काम न आएँ, और मेरे दिली दोस्त मुझे भूल गए हैं। 15 मैं अपने घर के रहनेवालों और अपनी लौंडियों की नज़र में अजनबी हूँ, मैं उनकी निगाह में परदेसी हो गया हूँ। 16 मैं अपने नौकर को बुलाता हूँ और वह मुझे जवाब नहीं देता, अगर ये मैं अपने मुँह से उसकी मिन्नत करता हूँ। 17 मेरी साँस मेरी बींची के लिए मक्कह स्वरूप है, और मेरी मित्र मेरी माँ की औलाद “के लिए। 18 छेटे बच्चे भी मुझे हकीर जानते हैं; जब मैं खड़ा होता हूँ तो वह मुझ पर आवाज कसते हैं। 19 मेरे सब हमराज दोस्त मुझ से नफरत करते हैं और जिनसे मैं मुहब्बत करता था वह मेरे खिलाफ हो गए हैं। 20 मेरी खाल और मेरा गोशत मेरी हड्डियों से चिमट गए हैं, और मैं बाल बाल बच निकला हूँ। 21 ऐ मेरे दोस्तों मुझ पर तरस खाओ, तरस खाओ, क्यूँकि खुदा का हाथ मुझ पर भारी है! 22 तुम क्यूँ खुदा की तरह मुझ सातो हो? और मेरे गोशत पर कन्नाँ अत नहीं करते? 23 काश कि मेरी बातें अब लिख ली जाती, काश कि वह किसी किताब में लिखी होती; 24 काश कि वह लोटे के कल्प और सीसे से, हमेशा के लिए चट्टान पर खोद दी जाती। 25 लेकिन मैं जानता हूँ कि मेरा छुड़ाने वाला जिन्दा है। और आखिर कार जमीन पर खड़ा होगा। 26 और अपनी खाल के इस तरह बर्बाद हो जाने के बाद भी, मैं अपने इस जिस्म में से खुदा को देखूँगा। 27 जिसे मैं खुद देखूँगा, और मेरी ही आँखें देखेंगी न कि गैर की; मेरे गुर्दे मेरे अंदर ही फना हो गए हैं। 28 अगर तुम कहो हम उसे कैसा — कैसा सताएँ; हालाँकि असली बात मुझ में पाई गई है। 29 तो तुम तलवार से डरो, क्यूँकि कहर तलवार की सज्जाओं को लाता है ताकि तुम जान लो कि इन्साफ होगा।”

20 तब जूफर नामाती ने जवाब दिया। 2 इसीलिए मेरे ख्याल मुझे जवाब

सिखाते हैं, उस जल्दबाजी की वजह से जो मुझ में है। 3 मैंने वह दिड़की सुन ली जो मुझे शर्मिन्दा करती है, और मेरी ‘अक्ल की रुह मुझे जवाब देती है। 4 क्या तू पुराने ज़माने की यह बात नहीं जानता, जब से इसान जमीन पर बसाया गया, 5 कि शरीरों की फतह चंद रोजा है, और बेदीनों की खुशी दम भर की है? 6 चाहे उसका जह — औ — जलाल आसमान तक बुलन्द हो जाए, और उसका सिर बादलों तक पहुँचे। 7 तो भी वह अपने ही फुजले की तरह हमेशा के लिए बर्बाद हो जाएगा; जिन्होंने उसे देखा है कहिंगे, वह कहाँ है? 8 वह ख्याल की तरह उड़ जाएगा और फिर न मिलेगा, जो वह रात को रोये की तरह दूर कर दिया जाएगा। 9 जिस आँख ने उसे देखा, वह उसे फिर न देखेगी; न उसका मकान उसे फिर कभी देखेगा। 10 उसकी औलाद गरीबों की खुशामद करेगी, और उसी के हाथ उसकी दौलत को वापस देंगे। 11 उसकी हड्डियाँ उसकी जबानी से पुर हैं, लेकिन वह उसके साथ खाक में मिल जाएँगी। 12

“चाहे शरात उसको मीठी लगे, चाहे वह उसे अपनी जबान के नीचे छिपाए।

13 चाहे वह उसे बचा रखें और न छोड़े, बल्कि उसे अपने मुँह के अंदर दबा रखें, 14 तो भी उसका खाना उसकी अंतिडियों में बदल गया है, वह उसके अंदर अजदहा का जहर है। 15 वह दौलत को निगल गया है, लेकिन वह उसे फिर उगलेगा; खुदा उसे उसके पेट से बाहर निकाल देगा। 16 वह अजदहा का जहर चौपेगा; अजदहा की जबान उसे मार डालेगी। 17 वह दरियाओं को देखेने न पाएगा, या ‘नी शहद और मध्यन की बहती नदियों को। 18 जिस चीज़ के लिए उसने मशक्कत खींची, उसे वह वापस करेगा और निकालेगा नहीं; जो माल उसने जमा किया उसके मुताबिक वह खुशी न करेगा। 19 क्यूँकि उसने गरीबों पर जूल्य किया और उन्हें छोड़ दिया, उसने जबरदस्ती घर छीना लेकिन वह उसे बांदा ने पाएगा। 20 इस बजह से कि वह अपने बातिन में आसदी से वाकिफ न हुआ, वह अपनी दिलपसंद चीजों में से कुछ नहीं बचाएगा। 21 कोई चीज़ ऐसी बाकी न रही जिसको उसने निगला न हो। इसलिए उसकी इकबालमन्दी काईम हरहेगी। 22 अपनी अमीरी मैं भी वह तंगी मैं होगा; हर दुखियारे का हाथ उस पर होगा। 23 जब वह अपना पेट भरने पर होगा तो खुदा अपना कहर — ए — शत्रीद उस पर नाज़िल करेगा, और जब वह खाता होगा तब यह उपर बरसेगा। 24 वह लोहे के हथियार से भागेगा, लेकिन पीतल की कमान उसे छेद डालेगी। 25 वह तीर निकालेगा और वह उसके जिस्म से बाहर आएगा, उसकी चमकती नोक उसके पिंते से निकलेगी; दहशत उस पर छाई हुई है। 26 सारी तारीकी उसके खाजानों के लिए रुद्धी हुई है। वह आग जो किसी इंसान की सुलगाई हुई नहीं, उसे खा जाएगी। वह उसे जो उसके खेमे में बचा हुआ होगा, भस्म कर देगी। 27 आसमान उसके गुमाह को जाहिर कर देगा, और जमीन उसके खिलाफ छाई हो जाएगी। 28 उसके घर की बहती जाती रहेगी, खुदा के गजब के दिन उसका माल जाता रहेगा। 29 खुदा की तरफ से शरीर आदमी का हिस्सा, और उसके लिए खुदा की मुकर्रर की हुई मीरास यही है।”

21 तब अर्यूब ने जवाब दिया, 2 गौर से मेरी बात सुनो, और यही तुम्हारा

तसल्ली देना हो। 3 मुझे इजाजत दो तो मैं भी कुछ कहँगा, और जब मैं कह कुँकूँ तो ठड़ा मार लेना। 4 लेकिन मैं, क्या मेरी फरियाद इंसान से है? फिर मैं बेसबी कँूँ न करूँ? 5 मुझ पर गौर करो और मुर्द अजीब हो, और अपना हाथ अपने मुँह पर रखो। 6 जब मैं याद करता हूँ तो घबरा जाता हूँ, और मेरा जिस्म थर्मा उठता है। 7 शरीर क्यूँ जीति रहते, उम्र रसीदा होते, बल्कि कुछवत मैं जबरदस्त होते हैं? 8 उनकी औलाद उनके साथ उनके देखते देखते, और उनकी नसल उनकी आँखों के सामने काईम हो जाती है। 9 उनके घर डर से महफ़ज़ हैं, और खुदा की छड़ी उन पर नहीं है। 10 उनका साँड़ बरदार कर देता है और

चूकता नहीं, उनकी गाय ब्याती है और अपना बच्चा नहीं पिराती। 11 वह अपने छोटे छोटे बच्चों को रेवड़ की तरह बाहर भेजते हैं, और उनकी औलाद नाचती है। 12 वह खजरी और सितार के ताल पर गते, और बाँसती की आवाज से खुश होते हैं। 13 वह खुशहाली में अपने दिन काटते, और दम के दम में पाताल में उतर जाते हैं। (Sheol h7585) 14 हालाँकि उन्होंने खुदा से कहा था, कि 'हमारे पास से चला जा, क्यूंकि हम तेरी गाहों के इल्म के ख्वाहिशमन्द नहीं। 15 कादिर — ए — मुतलक है क्या कि हम उसकी इबादत करें? और अगर हम उससे दुआ करें तो हमें क्या फायदा होगा? 16 देखो, उनकी इकबालमन्दी उनके हाथ में नहीं है। शरीरों की मशवरत मुझ से दूर है। 17 कितनी बार शरीरों का चराग बुझ जाता है? और उनकी आफत उन पर आ पड़ती है? और खुदा अपने गजब में उन्हें गम पर गम देता है? 18 और वह ऐसे हैं जैसे खा के आगे डंठल, और जैसे भूमा जिसे आँधी उड़ा ले जाती है? 19 'खुदा उसका गुनाह उसके बच्चों के लिए रख छोड़ता है, वह उसका बदला उसी को दे ताकि वह जान ले। 20 उसकी हलाकत को उसी की आँखें देखें, और वह कादिर — ए — मुतलक के गजब में से पिए। 21 क्यूंकि अपने बाद उसको अपने घराने से क्या खुरी है, जब उसके महिनों का सिलसिला ही काट डाला गया? 22 क्या कोई खुदा को 'इल्म सिखाएगा? जिस हाल की वह सरकराजों की 'अदालत करता है। 23 कोई तो अपनी पूरी ताकत में, चैन और सुख से रहता हुआ मर जाता है। 24 उसकी दोहिनियाँ धूप से भरी हैं, और उसकी हड्डियों का गूदा तर है, 25 और कोई अपने जी में कुढ़ कुढ़ कर मरता है, और कभी सुख नहीं पाता। 26 वह दोनों मिट्टी में यकसाँ पड़ जाते हैं, और कीड़े उन्हें ढाँक लेते हैं। 27 देखो, मैं तुम्हारे खयालों को जानता हूँ, और उन मस्कों को भी जो तुम बे इसाफी से ऐसे खिलाफ़ बांधते हो। 28 क्यूंकि तुम कहते हो, 'अमीर का घर कहाँ रहा? और वह खेमा कहाँ है जिसमें शरीर बसते थे? 29 क्या तुम ने रास्ता चलने वालों से कभी नहीं पूछा? और उनके निशान — आत नहीं पहचानते 30 कि शरीर आफत के दिन के लिए रखवा जाता है, और गजब के दिन तक पहुँचाया जाता है? 31 कौन उसकी राह को उसके मुँह पर बयान करेगा? और उसके किए का बदला कौन उसे देगा? 32 तो वह कब्र में पहुँचाया जाएगा, और उसकी कब्र पर पहरा दिया जाएगा। 33 वादी के ढेले उसे पसंद हैं; और सब लोग उसके पीछे चले जाएँगे, जैसे उसे पहले बेशमार लोग गए। 34 इसलिए तुम क्यूँ मुझे झाँटी तसल्ली देते हो, जिस हाल कि तुम्हारी बातों में झाँट ही झाँट है।

22 तब इलिफ़ज़ तेमानी ने जबाब दिया, 2 क्या कोई इंसान खुदा के काम आ सकता है? यकीन 'अकल्मन्द अपने ही काम का है। 3 क्या तैर सादिक होने से कादिर — ए — मुतलक को कोई खुशी है? या इस बात से कि त अपनी राहों को कामिल करता है उसे कुछ फायदा है? 4 क्या इसलिए कि तुझे उसका खौफ है, वह तुझे झिलकता और तुझे 'अदालत में लाता है? 5 क्या तेरी शारात बड़ी नहीं? क्या तेरी बदकारियों की कोई हद है? 6 क्यूंकि तु ने अपने भाई की चीजें बे वजह पिरवी रख्ती, नंगों का लिबास उतार लिया। 7 तूने थके माँदों को पानी न पिलाया, और खूनों से रोटी को रोक रखा। 8 लेकिन जबरदस्त आदमी जमीन का मालिक बना, और 'इज्जतदार आदमी उसमें बसा। 9 तू ने बेवाओं को खाली चलता किया, और यतीमों के बाजू तोड़े गए। 10 इसलिए फंदे तेरी चारों तरफ हैं, और नागाहनी खौफ तुझे सताता है। 11 या ऐसी तारीकी कि त देख नहीं सकता, और पानी की बाढ़ तुझे छिपाए लेती है। 12 क्या आसमान की बुलन्दी में खुदा नहीं? और तारों की बुलन्दी को देख वह कैसे ऊँचे है। 13 फिर त कहता है, कि 'खुदा क्या जानता है? क्या वह गहरी तारीकी में से 'अदालत करेगा? 14 पानी से भरे हुए बादल उसके लिए पर्दा हैं

कि वह देख नहीं सकता; वह आसमान के दाइरे में सैर करता फिरता है। 15 क्या त उसी पुरानी राह पर चलता रहेगा, जिस पर शरीर लोग चले हैं? 16 जो अपने वक्त से पहले उठा लिए गए, और सैलाब उनकी बुनियाद को बहा ले गया। 17 जो खुदा से कहते थे, 'हमारे पास से चला जा, 'और यह कि, 'कादिर — ए — मुतलक हमारे लिए कर क्या सकता है?' 18 तो भी उसने उनके घरों को अच्छी अच्छी चीजों से भर दिया — लेकिन शरीरों की मशवरत मुझ से दूर है। 19 सादिक यह देख कर खुश होते हैं, और बे गुनाह उनकी हँसी उड़ाते हैं। 20 और कहते हैं, कि यकीन वह जो हमारे खिलाफ़ उठे थे कट गए, और जो उन्हें से बाकी रह गए थे, उनको आग ने भस्म कर दिया है। 21 "उससे मिला रह, तो सलामत रहेगा; और इससे तेरा भला होगा। 22 मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, कि शरीर अत को उसी की जबानी कुबूल कर और उसकी बातों को अपने दिल में रख ले। 23 अगर त कादिर — ए — मुतलक की तरफ फिरे तो बहाल किया जाएगा। बर्थत कि त नारास्ती को अपने खेमों से दूर कर दे। 24 त अपने खाजने को मिट्टी में, और ओफीर के सोने को नदियों के पथरों में डाल दे, 25 तब कादिर — ए — मुतलक तेरा खजाना, और तेरे लिए बेश कीमत चाँदी होगा। 26 क्यूंकि तब ही त कादिर — ए — मुतलक में मस्सरर रहेगा, और खुदा की तरफ अपना मुँह उठाएगा। 27 त उससे दुआ करेगा, वह तेरी सुनेगा, और त अपनी मिन्नतें पूरी करेगा। 28 जिस बात को त कहेगा, वह तेरे लिए हो जाएगी और नू तेरी राहों को रोशन करेगा। 29 जब वह पस्त करेंगे, तु कहेगा, 'बुलन्दी होगी।' और वह हलीम आदमी को बचाएगा। 30 वह उसको भी छुड़ा लेगा, जो बेगुनाह नहीं है, हाँ वह तेरे हाथों की पाकीज़गी की बजह से छुड़ाया जाएगा।"

23 तब अय्यू ने जबाब दिया, 2 मेरी शिकायत आज भी तल्ख है; मेरी मार मेरे कराहने से भी भरी है। 3 काश कि मुझे मालूम होता कि वह मुझे कहाँ मिल सकता है ताकि मैं ऐसे उसकी मसनद तक पहुँच जाता। 4 मैं अपना मृआमिला उसके सामने पेश करता, और अपना मुँह दलीलों से भर लेता। 5 मैं उन लफ्जों को जान लेता जिनमें वह मुझे जबाब देता और जो कुछ वह मुझ से कहता मैं समझ लेता। 6 क्या वह अपनी कुदरत की 'अजमत में मुझ से लड़ता? नहीं, बल्कि वह मेरी तरफ तबज्जुह करता। 7 गरस्तबाज वहाँ उसके साथ बहस कर सकते, यैँ मैं अपने मुसिफ़ि के हाथ से हमेशा के लिए रिहाई पाता। 8 देखो, मैं आगे जाता हूँ लेकिन वह वहाँ नहीं, और पीछे हटता हूँ लेकिन मैं उसे देख नहीं सकता। 9 बाँध हाथ फिरता हूँ जब वह काम करता है, लेकिन वह मुझे दिखाई नहीं देता; वह दहने हाथ की तरफ छिप जाता है, ऐसा कि मैं उसे देख नहीं सकता। 10 लेकिन वह उस रास्ते को जिस पर मैं चलता हूँ जानता है; जब वह मुझे पालगा तो मैं सोने के तरह निकल आँगा। 11 मेरा पाँव उसके कदमों से लगा रहा है। मैं उसके रास्ते पर चलता रहा हूँ और नाफरामान नहीं हुआ। 12 मैं उसके लबों के हक्म से हटा नहीं; मैंने उसके मुँह की बातों को अपनी ज़स्ती खुराक से भी झाँटा जाखीरा किया। 13 लेकिन वह एक खयाल में रहता है, और कौन उसको फिरा सकता है? और जो कुछ उसका जी चाहता है करता है। 14 क्यूंकि जो कुछ मेरे लिए मुर्कर है, वह पूरा करता है; और बहुत सी ऐसी बातें उसके हाथ में हैं। 15 इसलिए मैं उसके सामने घबरा जाता हूँ, मैं जब सोचता हूँ तो उससे डर जाता हूँ। 16 क्यूंकि खुदा ने मैं दिल को बदा कर डाला है, और कादिर — ए — मुतलक ने मुझ को घबरा दिया है। 17 इसलिए कि मैं इस ज़ुल्म से पहले काट डाला न गया और उसने बड़ी तारीकी को मेरे सामने से न छिपाया।

“कादिर — ए — मुतलक ने वक्त क्यूँ नहीं ठहराए, और जो उसे जानते हैं वह उसके दिनों को क्यूँ नहीं देखते? 2 ऐसे लोग भी हैं जो ज़मीन की हँडों को सरका देते हैं, वह रेवडों को जबरदस्ती ले जाते और उन्हें चराते हैं। 3 वह यतीम के गधे को हाँक ले जाते हैं; वह बेबा के बैल को पिरा लेते हैं। 4 वह मोहताज को रास्ते से हटा देते हैं, ज़मीन के गरीब इकट्ठे छिपते हैं। 5 देखो, वह वीरान के गधों की तरह अपने काम को जाते और मशक्कत उठाकर खुराक ढूँढते हैं। वीरान उनके बच्चों के लिए खुराक बहम पहुँचाता है। 6 वह खेत में अपना चारा काटते हैं, और शरीरों के अंगों की ख़ुशी चीनी करते हैं। 7 वह सारी रात बैंकपड़े नगे पड़े रहते हैं, और ज़ाड़ों में उनके पास कोई ओढ़ना नहीं होता। 8 वह पहाड़ों की बारिश से भीगे रहते हैं, और किसी आड़ के न होने से चट्टान से लिपट जाते हैं। 9 ऐसे लोग भी हैं जो यतीम को छाती पर से हटा लेते हैं और गरीबों से गिरवा लेते हैं। 10 इसलिए वह बैंकपड़े नगे फिरते, और भक्त के मारे पैले ढोते हैं। 11 वह इन लोगों के आहातों में तेल निकालते हैं। वह उनके कुण्डों में अंगूष्ठ रौटते और ध्यासे रहते हैं। 12 आबाद शहर में से निकल कर लोग कराहते हैं, और ज़खियों की जान फरियाद करती है। तोभी खुदा इस हिमाकांत का ख्याल नहीं करता। 13 “वह उनमें से हैं जो नूर से बगावत करते हैं; वह उसकी राहों को नहीं जानते, न उसके रास्तों पर काईम रहते हैं। 14 ख़ुनी रोशनी होते ही उठता है। वह ग़ारीबों और मोहताजों को मारड़लता है, और रात को वह चोंकी की तरह है। 15 जानी की आँख भी शाम की मन्त्रज़िर रहती है। वह कहता है किसी की नज़र मुझ पर न पड़ेगी, और वह अपना मुँह ढाँक लेता है। 16 अंधेरे में वह घरों में सेंध मारते हैं, वह दिन के वक्त छिपे रहते हैं; वह नूर को नहीं जानते। 17 क्यूँकि सुबह उन लोगों के लिए ऐसी है जैसे मौत का साया इसलिए कि उन्हें मौत के साथी की दीहशत मालम है। 18 वह पानी की सतह पर तेज़ फ्रितार है, ज़मीन पर उनके ज़मीन पर उनका हिस्सा मल्तज़न है वह ताकिस्तानों की राह पर नहीं चलते। 19 खुशकी और गर्मी बरफानी पानी के नालों को सुखा देती है, ऐसा ही कब्र गुनहगारों के साथ करती है। (Sheol h7585) 20 रहम उसे भूल जाएगा, कीड़ा उसे मजे सिखाएगा, उसकी याद फिर न होगी; नारास्ती दरखत की तरह तोड़ दी जाएगी। 21 वह बाँझ को जो जनती नहीं, निगल जाता है, और बेबा के साथ भलाई नहीं करता। 22 खुदा अपनी कुब्बत से बहादुरों भी खीच लेता है; वह उठता है, और किसी को ज़िन्दगी का यकीन नहीं रहता। 23 खुदा उन्हें अपन बख़शता है और वह उसी में काईम रहते हैं, और उसकी आँखें उनकी राहों पर लगी रहती हैं। 24 वह सरफराज़ तो होते हैं, लेकिन थोड़ी ही देर में जाते रहते हैं; बल्कि वह पस्त किए जाते हैं और सब दूररों की तरह रास्ते से उठा लिए जाते, और अनाज की बालों की तरह काट डाले जाते हैं। 25 और अगर यह यूँ ही नहीं है, तो कौन मुझे झूटा सावित करेगा और मेरी तक़री को नाचीज़ ठहराएगा?”

तब बिलदत सूर्खी ने जबाब दिया 2 “हुक्मूत और दबदबा उसके साथ है वह अपने बुलन्द मकारों में अमन रखता है। 3 क्या उसकी फौजों की कोई तादाद है? और कौन है जिस पर उसकी रोशनी नहीं पड़ती? 4 फिर इंसान क्यूँकर खुदा के सामने रास्त ठहर सकता है? या वह जो ‘औरत से पैदा हुआ है क्यूँकर पाक हो सकता है? 5 देख, चाँद में भी रोशनी नहीं, और तो उसकी नज़र में पाक नहीं। 6 फिर भला इंसान का जो महज़ कीड़ा है, और आदमजाद जो सिर्फ़ किरम है क्या ज़िक्र।”

तब अर्यब ने जबाब दिया, 2 “जो बे ताकत उसकी तूने कैसी मदद की; जिस बाज़ू में कुब्बत न थी, उसको तू ने कैसा संभाला। 3 नादान को तूने कैसी सलाह दी, और हकीकी पहचान ख़बर ही बताई। 4 तू ने जो बातें कहीं?

इसलिए किस से और किसकी रुह तज्ज्ञ में से हो कर निकली?” 5 “मुर्दों की स्त्रें पानी और उसके रहने वालों के नीचे काँपती हैं। 6 पाताल उसके सामने खुला है, और जहन्मु बेर्पदा है। (Sheol h7585) 7 वह शिमाल को फज्जा में फैलाता है, और ज़मीन को ख़ला में लटकाता है। 8 वह अपने पानी से भेरे हुए बादलों पानी को बाँध देता और बादल उके बोझ से फटा नहीं। 9 वह अपने तख्त को ढांक लेता है और उसके ऊपर अपने बादल को तान देता है। 10 उसने रोशनी और अंधेरे के मिलने की जगह तक, पानी की सतह पर हद बाँध दी है। 11 आसमान के सूत्र काँपते, और और झिड़की से हैरान होते हैं। 12 वह अपनी कुदरत से समन्दर को तूफानी करता, और अपने फहम से रहब को छेद देता है। 13 उसके दम से आसमान आरास्ता होता है, उसके हाथ ने तेज़ साँप को छेदा है। 14 देखो, यह तो उसकी राहों के सिर्फ़ किनारे हैं, और उसकी कैसी धीमी आवाज़ हम सुनते हैं। लेकिन कौन उसकी कुदरत की गरज़ को समझ सकता है?”

27 और अर्यब ने फिर अपनी मिसाल शुरू की और कहने लगा, 2 “ज़िन्दा खुदा की कसम, जिसने मेरा हक की छीन लिया; और कादिर — ए — मुतलक की कसम, जिसने मेरी जान को दुख दिया है। 3 क्यूँकि मेरी जान मुझ में अब तक सालिम है और खुदा का स्ह हमेर नन्हों में है। 4 यकीनन मेरे लब नारास्ती की बांधें न कहेंगे, न मेरी जबान से फरेब की बात निकलेंगी। 5 खुदा न करे कि मैं तुम्हें रास्त ठहराऊँ, मैं मरते दम तक अपनी रास्ती को छोड़ूँगा। 6 मैं अपनी सदाकत पर काईम हूँ और उसे न छोड़ूँगा, जब तक मेरी ज़िन्दगी है, मेरा दिल मुझे मुजरिम न ठहराएगा। 7 “मेरा दुःमन शरीरों की तरह हो, और मेरे खिलाफ उठने वाला नारास्तों की तरह। 8 क्यूँकि गो बे दीन दौलत हासिल कर ले तोभी उसकी क्या उम्मीद है? जब खुदा उसकी जान ले ले, 9 क्या खुदा उसकी फरियाद सुनेगा, जब मूसीबत उस पर आए? 10 क्या वह कादिर — ए — मुतलक में खुदा रहेगा, और हर वक्त खुदा से दुआ करेगा? 11 मैं तुम्हें खुदा के बर्ताव “की तालीम दूँगा, और कादिर — ए — मुतलक की बात न छिपाऊँगा। 12 देखो, तुम सभों ने खुद यह देख चुके हो, फिर तुम खुद बीन कैसे हो गए।” 13 “खुदा की तरफ से शरीर आदमी का हिस्सा, और ज़ालिमों की मीरास जो वह कादिर — ए — मुतलक की तरफ से पाते हैं, यही है। 14 अगर उसके बच्चे बहुत हो जाएँ तो वह तलवार के लिए है, और उसकी औलाद रोटी से सेर न होगी। 15 उसके बाकी लोग मर कर दफन होंगे, और उसकी बेबाएँ नौहा न करेंगी। 16 चाहे वह खाक की तरह चाँदी ज़मा कर ले, और कसरत से लिबास तैयार कर रख लें 17 वह तैयार कर ले, लेकिन जो रास्त है वह उनको पहलेंगे और जो बेगुनाह है वह उस चाँदी को बाँट लेंगे। 18 उसने मकड़ी की तरह अपना घर बनाया, और उस झोंपड़ी की तरह जिसे रख खाला बनाता है। 19 वह लेटा है दौलतमन्द, लेकिन वह दफन न किया जाएगा। वह अपनी आँख खोलता है और वह है नहीं। 20 दहशत उसे पानी की तरह आ लेती है; रात को तूफान उसे उड़ा ले जाता है। 21 पूर्णी हवा उसे उड़ा ले जाती है, और वह जाता रहता है। वह उसे उसकी जाह से उडाऊ फेंकती है। 22 क्यूँकि खुदा उस पर बरसाएगा और छोड़ने का नहीं वह उसके हाथ से निकल भागना चाहेगा। 23 लोग उस पर तालियाँ बजाएंगे, और सुस्कार कर उसे उसकी जगह से निकल देंगे।

28 “यकीन चाँदी की कान होती है, और सोने के लिए जगह होती है, जहाँ ताया जाता है। 2 लोहा ज़मीन से निकला जाता है, और पीतल पथर में से गलाया जाता है। 3 इंसान तारीकी की तह तक पहुँचता है, और ज़ुल्मात और मौत के साथ की इन्हिं तक पहुँचता है। 4 आदमी से दूर वह सुरंग लगाता है, आने जाने वालों के पाँव से बे खबर और

लोगों से दूर वह लटकते और झूलते हैं। 5 और जमीन उस से खूराक पैदा होती है, और उसके अन्दर गोया आग से इकलाला होता रहता है। 6 उसके पत्थरों में नीलम है, और उसमें सोने के जर्जर हैं 7 उस राह को कोई शिकारी परिन्दा नहीं जानता न कुछ की आँखें ने उसे देखा है। 8 न मुतकब्बिर जानवर उस पर चले हैं, न खुनखबार बबर उधर से गुजरा है। 9 वह चक्कमक की चट्टान पर हाथ लगाता है, वह पहाड़ों को जड़ ही से उत्खाड़ देता है। 10 वह चट्टानों में से नालियाँ काटता है, उसकी आँख हर एक बेशकीमत चीज़ को देख लेती है। 11 वह नदियों को मस्तूद करता है, कि वह टपकती भी नहीं और छिपी चीज़ को वह रोशनी में निकाल लाता है। 12 लेकिन हिकमत कहाँ मिलेगी? और 'अक्लमन्दी' की जगह कहाँ है 13 न इंसान उसकी कट्ट जानता है, न वह ज़िन्दों की सर जमीन में मिलती है। 14 गहराक कहता है, वह मुझ में नहीं है, और समन्दर भी कहता है वह मेरे पास नहीं है। 15 न वह सोने के बदले मिल सकती है, न चाँदी उसकी कीमत के लिए तुलेगी। 16 न ओफीर का सोना उसका मोल हो सकता है और न कीमती सुलैमानी पत्थर या नीलम। 17 न सोना और काँच उसकी बराबरी कर सकते हैं, न चोखे सोने के जेवर उसका बदल ठहरेगे। 18 मोंगे और बिल्लौर का नाम भी नहीं लिया जाएगा, बल्कि हिकमत की कीमत मरजान से बढ़कर है। 19 न कूश का पुरुखाज उसके बराबर ठहरेगा न चोखा सोना उसका मोल होगा। 20 फिर हिकमत कहाँ से आती है, और 'अक्लमन्दी' की जगह कहाँ है। 21 जिस हाल कि वह सब ज़िन्दों की आँखों से छिपी है, और हवा के परिदों से पोशीदा रखबी गई है 22 हलातक और मौत कहती है, 'हम ने अपने कानों से उसकी अफवाह तो सनी है।' 23 'खुदा उसकी राह को जानता है, और उसकी जगह से वाकिफ है। 24 क्यूँकि वह जमीन की इन्हिं तक नज़र करता है, और सारे आसमान के निचे देखता है, 25 ताकि वह हवा का वज्जन ठहराए बल्कि वह पानी को पैमाने से नापता है। 26 जब उसने बारिश के लिए कानून, और राद की बर्क के लिए रास्ता ठहराया, 27 तब ही उसने उसे देखा और उसका बयान किया, उसने उसे काईम और ढूँढ़ निकाला। 28 और उसने इंसान से कहा, देख, खुदावन्द का खौफ ही हिकमत है; और बदी से दूर रहना यहीं 'अक्लमन्दी' है।

29 और अद्यूब फिर अपनी मिसाल लाकर कहने लगा, 2 "काश कि मै ऐसा होता जैसे गुज़ेर महीनों में, यानी जैसा उन दिनों में जब खुदा मेरी हिफाजत करता था। 3 जब उमका चराग मेरे सिर पर रोशन रहता था, और मै आँखें में उसके नूर के जरिए^१ से चलता था। 4 जैसा मैं अपनी बोरमन्दी के दिनों में था, जब खुदा की खशनन्दी मेरे खेमे पर थी। 5 जब क़ादिर — ए — मूलतक भी मेरे साथ था, और मेरे बच्चे मेरे साथ थे। 6 जब मेरे कदम मख्खन से धूलते थे, और चट्टान मेरे लिए तेल की नदियाँ बहाती थीं। 7 जब मैं शहर के फाटक पर जाता और आने लिए चौक में बैठक तैयार करता था; 8 तो जवान मुझे देखते और छिप जाते, और उम्र रसीदा उठ खड़े होते थे। 9 हाकिम बोलना बंद कर देते, और अपने हाथ अपने मुँह पर रख लेते थे। 10 रईसों की आबाज थम जाती, और उनकी जबान तालू से चिपक जाती थी। 11 क्यूँकि कान जब मेरी सुन लेता तो मुझे मुबारक कहता था, और आँख जब मुझे देख लेती तो मेरी गावाही देती थी; 12 क्यूँकि मैं गरीब को जब वह फरियाद करता छुड़ाता था और शरीरों को भी जिसका कोई मददगार न था। 13 हलातक होनेवाला मुझे दुआ देता था, और मैं बेवा के दिल को ऐसा खूश करता था कि वह गाने लगती थी। 14 मैंने सदाकत को पहना और उससे मुलब्बस हुआ: मेरा इन्साफ गोया जुब्बा और 'अमामा' था। 15 मैं अर्धों के लिए आँखें था, और लंगड़ों के लिए पाँव। 16 मैं मोहताज का बाप था, और मैं अजनबी के मुआमिले की भी तहकीक करता था। 17 मैं नारस्त के जबड़ों को तोड़ डालता, और उसके

दाँतों से शिकार छुड़ालेता था। 18 तब मैं कहता था, कि मैं अपने आशियाने में हूँगा और मैं अपने दिनों को रोत की तरह बे शुमार कहँसूँगा, 19 मेरी जड़ें पानी तक फैल गई हैं, और रात भर ओस मेरी खाशों पर रहती है; 20 मेरी शौकत मुझ में ताजा है, और मेरी कमान मेरे हाथ में नई की जाती है। 21 'लोग मेरी तरफ कान लगाते और मुन्तजिर रहते, और मेरी मशवरत के लिए खामोश हो जाते थे। 22 मेरी बातों के बाद, वह फिर न बोलते थे; और मेरी तकरीर उन पर टपकती थी 23 वह मेरा ऐसा इन्तजार करते थे जैसा बारिश का; और अपना मुँह ऐसा फैलते थे जैसे पिछले मैंह के लिए। 24 जब वह मायसू होते थे तो मैं उन पर मुस्कराता था, और मेरे चेहरे की रोक की उङ्होंने कभी न बिगाड़ा। 25 मैं उनकी राह को चुनता, और सरदार की तरह बैठता, और ऐसे रहता था जैसे फौज में बादशाह, और जैसे वह जो गमजदांदों को तसल्ली देता है।

30 "लेकिन अब तो वह जो मुझ से कम उम्र हैं मेरा मजाक करते हैं, जिनके बाप — दादा को अपने गल्ले के कुत्तों के साथ रखना भी मुझे नागवार था। 2 बल्कि उनके हाथों की ताकत मुझे किस बात का फायदा पहुँचाएँगी? वह ऐसे आदीमी हैं जिनकी जबानी का जोर जाइल हो गया। 3 वह गुरबत और कहत के मारे दुबले हो गए हैं, वह वीरानी और सुनसानी की तारीकी में खाक चाटते हैं। 4 वह झाड़ियों के पास लेनिये का साग तोड़ते हैं, और झाऊ की जड़ें उनकी खूराक हैं। 5 वह लोगों के बीच टौड़ये गए हैं, लोग उनके पीछे ऐसे चिल्लता हैं जैसे चोर के पीछे। 6 उनको बादियों के दरखतों में, और गारों और जमीन के भट्टों में रहना पड़ता है। 7 वह झाड़ियों के बीच रैकते, और झांकाड़ों के नीचे इकट्ठे पड़े रहते हैं। 8 वह बेवकूफों बल्कि कमीनों की ओलाह है, वह मुलक से मार — मार कर निकाले गए थे। 9 और अब मैं उनका गीत बना हूँ, बल्कि उनके भट्टों में रहना पड़ता है हूँ। 10 वह मुझ से नफरत करते; वह मुझ से दूर खड़े होते, और मेरे मुँह पर थकने से बाज नहीं रहते हैं। 11 क्यूँकि खुदा ने मेरा चिल्ला ढीला कर दिया और मुझ पर आफत भेजी, इसलिए वह मेरे सामने बेलगाम हो गए हैं। 12 मेरे दहने हाथ पर लोगों का मजमा^२ उठता है, वह मेरे पाँव को एक तरफ सरका देते हैं, और मेरे खिलाफ अपनी मुहलिक रहें निकालते हैं। 13 ऐसे लोग भी जिनका कोई मददगार नहीं, मेरे रस्ते को बिगाड़ते, और मेरी मुसीबित को बढ़ाते हैं। 14 वह गोया बड़े सुराख में से होकर आते हैं, और तबाही में मुझ पर टूट पड़ते हैं। 15 दहशत मुझ पर तारी हो गई। 16 हवा की तरह मेरी आबूस को उड़ाती है। मेरी 'आकियत बादल' की तरह जाती रही। 16 "अब तो मेरी जान मेरे अंदर गुदाज हो गई, दुख के दिनों ने मुझे जकड़ लिया है। 17 रात के वक्त मेरी हड्डियों मेरे अंदर छिद जाती हैं और वह दर्द जो मुझे खाए जाते हैं, दम नहीं लेते। 18 मेरे मरज की शिद्दत से मेरी पोशाक बदनुमा हो गयी; वह मेरे पैराहन के गिरेबान की तरह मुझ से लिपटी है। 19 उसने मुझे कीचड़ में धकेल दिया है, मैं खाक और राख की तरह हो गया हूँ। 20 मैं तुझ से फरियाद करता हूँ, और तू मुझे जबाब नहीं देता; मैं खड़ा होता हूँ, और तू मुझे घूरने लगता है। 21 तू बदल कर मुझ पर बे रहम हो गया है; अपने बाज की ताकत से तू मुझे सताता है। 22 तू मुझे ऊपर उठाकर हवा पर सबार करता है, और मुझे आँधी में घुला देता है। 23 क्यूँकि मैं जानता हूँ कि तू मुझे मौत और उस घर तक जो सब ज़िन्दों के लिए मुकर है। 24 'तोभी क्या तबाही के वक्त कोई अपना हाथ न बढ़ाएगा, और मुसीबित में फरियाद न करेगा?' 25 क्या मैं दर्दमन्द के लिए रोता न हूँ? क्या मेरी जान मोहताज के लिए गमान न होती थी? 26 जब मैं भलाई का मुन्तजिर था, तो बुराई पेश आई जब रोशनी के लिए ठहरा था, तो तारीकी आई। 27 मेरी अंतिडियों उबल रही हैं और अराम नहीं पाती; मुझ पर मुसीबित के दिन आ पड़े हैं। 28 मैं बगैर धूप के काला हो गया हूँ। मैं मजमे में खड़ा होकर मदद के लिए

फरियाद करता हूँ। 29 मैं गीदड़ों का भाई, और शुतर मुर्गों का साथी हूँ। 30 मेरी खाल काली होकर मुझ पर से गिरती जाती है और मेरी हड्डियाँ हरात से जल गई। 31 इसी लिए मेरे सितार से मातम, और मेरी बॉसली से रोने की अवाज निकलती है।

31 “मैंने अपनी आँखों से 'अहद किया है। फिर मैं किसी कुँवारी पर क्यूँकूर नजर करूँ। 2 क्यूँकि ऊपर से खुदा की तरफ से क्या हिस्सा है और 'आलम — ए — बाला से कादिर — ए — मुतलक की तरफ से क्या मीरास है? 3 क्या वह नारातों के लिए आफत और बदकिरदारों के लिए तबाही नहीं है। 4 क्या वह मेरी गाहों को नहीं देखता, और मेरे सब कदमों को नहीं गिनत? 5 अगर मैं बताता से चला हूँ, और मेरे पांव ने दाके के लिए जल्दी की है। 6 तो मैं ठीक तराजु़ में तोता जाऊँ, ताकि खुदा मेरी रास्ती को जान ले। 7 अगर मेरा कदम रास्ते से फिरा हुआ है, और मेरे दिल ने मेरी आँखों की पैरवी की है, और अगर मेरे हाथों पर दाग लगा है; 8 तो मैं बोकूँ और दूसरा खाएँ, और मेरे खेत की पैदावार उखाड़ दी जाए। 9 “अगर मेरा दिल किसी 'आैरत पर फेरेपता हुआ, और मैं अपने पड़ोसी के दरवाजे पर थात मैं बैठा; 10 तो मेरी बीवी दूसरे के लिए पीसे, और गैर मर्द उस पर दूँके। 11 क्यूँकि यह बहुत बडा जर्म होता, बल्कि ऐसी बुराई होती जिसकी सजा काजी देते हैं। 12 क्यूँकि वह ऐसी आग है जो जलाकर भस्म कर देती है, और मेरे सारे हासिल को जड़ से बर्बाद कर डालती है। 13 “आग मैंने अपने खादिम या अपनी खादिमा का हक मारा हो, जब उन्होंने मुझे से झगड़ा किया; 14 तो जब खुदा उठेगा, तब मैं क्या करूँगा? और जब वह आएगा, तो मैं उसे क्या जवाब दूँगा? 15 क्या वही उसका बनाने वाला नहीं, जिसने मुझे पेट में बनाया? और क्या एक ही ने हमारी सूख रहम में नहीं बनाई? 16 अगर मैंने मोहताज से उसकी मुराद रोक रखी, या ऐसा किया कि बेवा की आँखें रह गई 17 या अपना निवाला अकेले ही खाया हो, और यतीम उसमें से खाने न पाया 18 नहीं, बल्कि मेरे लड़कपन से वह मेरे साथ ऐसे पला जैसे बाप के साथ, और मैं अपनी माँ के बतन ही से बेबा का रहनुमा रहा हूँ। 19 अगर मैंने देखा कि कोई बेकपड़े मरता है, या किसी मोहताज के पास ओढ़ने को नहीं; 20 अगर उसकी कमर ने मुझ को दुआ न दी ही, और अगर वह मेरी भेड़ों की ऊन से गर्म न हुआ हो। 21 अगर मैंने किसी यतीम पर हाथ उठाया हो, क्यूँकि फाटक पर मुझे अपनी मरद दिखाई दी; 22 तो मेरा कंधा मेरे शाने से उतर जाएँ, और मेरे बाजू की हड्डी टूट जाए। 23 क्यूँकि मुझे खुदा की तरफ से आफत का खौफ था, और उसकी बुजुर्गी की वजह से मैं कुछ न कर सका। 24 “अगर मैंने सोने पर भरोसा किया हो, और खालिस सोने से कहा, मेरा ऐसियाद तुझ पर है। 25 अगर मैं इसलिए कि मेरी दौलत फिराबान थी, और मेरे हाथ ने बहुत कुछ हासिल कर लिया था, नाज़ू़ हुआ। 26 अगर मैंने सूरज पर जब वह चमकता है, नजर की हो या चाँद पर जब वह अब — ओ — ताब में चलता है, 27 और मेरा दिल चुपके से 'आशिक हो गया हो, और मेरे मुँह ने मेरे हाथ को चम्प लिया हो; 28 तो यह भी ऐसा गुनाह है जिसकी सजा काजी देते हैं क्यूँकि यूँ मैंने खुदा का जो 'आलम — ए — बाला पर है, इंकार किया होता। 29 'अगर मैं अपने नफरत करने वाले की हलाकत से खुश हआ, या जब उस पर आैरत आई तो खुश हुआ; 30 हाँ, मैंने तो अपने मुँह को इतना भी गुनाह न करने दिया के लान्त दे कर उसकी मौत के लिए दुआ करता; 31 अगर मेरे खेमे के लोगों ने यह न कहा हो, 'ऐसा कौन है जो उसके यहाँ गोश ते से सेर न हुआ?' 32 परदेसी को गली कूचों में टिकना न पड़ा, बल्कि मैं मुसाफिर के लिए अपने दरवाजे खोल देता था। 33 अगर आदम की तरह अपने गुनाह अपने सीने में छिपाकर, मैंने अपनी गलियों पर पर्दा डाला हो; 34 इस वजह से कि मुझे 'अवाक में लोगों का खौफ था, और मैं खानदानों की हिकारत से डर

गया, यहाँ तक कि मैं खामोश हो गया और दरवाजे से बाहर न निकला 35 काश कि कोई मेरी सुनने वाला होता! यह लो मेरा दस्तखत। कादिर — ए — मुतलक मुझे जबाब दे। काश कि मेरे मुखालिक के दावे का सबूत होता। 36 यकीनन मैं उसे अपने कंधे पर लिए फिरता; और उसे अपने लिए 'अमामे की तरह बाँध लेता। 37 मैं उसे अपने कदमों की तादाद बताता; अमीर की तरह मैं उसके पास जाता। 38 “अगर मेरी जमीन मैं खिलाक फरियाद करती हों, और उसकी रेखांरियाँ मिलकर रोती हों, 39 अगर मैंने बेदाम उसके फल खाए हों, या ऐसा किया कि उसके मालिकों की जान गई; 40 तो गेहूँ के बदले ऊँट कटारे, और जै के बदले कड़वे दाने उंगे।” अर्यूब की बातें तमाम हुईं।

32 तब उन तीनों आदमी ने अर्यूब को जवाब देना छोड़ दिया, इसलिए

कि वह अपनी नजर में सच्चा था। 2 तब इलीह बिन — बराकील बूजी का, जुराम के खानदान से था, कहर से भड़का। उसका कहर अर्यूब पर भड़का, इसलिए कि उसने खुदा को नहीं बल्कि अपने आप को रास्त ठहराया। 3 और उसके तीनों दोस्तों पर भी उसका कहर भड़का, इसलिए कि उन्हें जबाब तो सझा नहीं, तो भी उन्होंने अर्यूब को मुजरिम ठहराया। 4 और इलीह अर्यूब से बात करने से इसलिए स्का रहा कि वह उससे बड़े थे। 5 जब इलीह ने देखा कि उन तीनों के मुँह में जबाब न रहा, तो उसका कहर भड़क उठा। 6 और बराकील बूजी का बेटा इलीह कहने लगा, मैं जबान हूँ और तुम बहुत बुजुर्ग हो, इसलिए मैं स्का रहा और अपनी राय देने की हिम्मत न की। 7 मैं कहा साल खूरदह लोग बोले और उम्र रसीदा हिकमत से खाये 8 लेकिन इंसान में स्ह है, और कादिर — ए — मुतलक का दम अकल बख्शता है। 9 बड़े आदमी ही 'अकलमन्द नहीं होते, और बुजुर्ग ही इन्साफ को नहीं समझते। 10 इसलिए मैं कहता हूँ, 'मेरी सुनो, मैं भी अपनी राय दूँगा। 11 'देखो, मैं तुहारी बातों के लिए स्का रहा, जब तुम अल्फाज की तलाश में थे; मैं तुहारी दरतीलों का मुन्तज़िर रहा। 12 बल्कि मैं तुहारी तरफ तवज़ुह करता रहा, और देखो, तुम मैं कोइंन था जो अर्यूब को कायल करता, या उसकी बातों का जवाब देता। 13 खबरदार, यह न कहना कि हम ने हिकमत को पा लिया है, खुदा ही उसे लाजवाब कर सकता है न कि इंसान। 14 क्यूँकि न उसने मुझे अपनी बातों का निशाना बनाया, न मैं तुहारी तरह तकरीरों से उसे जवाब दूँगा। 15 वह हैरान है, वह अब जवाब नहीं देते; उनके पास कहने को कोई बात न रही। 16 और क्या मैं स्का रहूँ, इसलिए कि वह बोलते नहीं? इसलिए कि वह चुपचाप खेड़े हैं और अब जवाब नहीं देते? 17 मैं भी अपनी बात कहूँगा, मैं भी अपनी राय दूँगा। 18 क्यूँकि मैं बातों से भरा हूँ, और जो स्ह मेरे अंदर है वह मुझे मजबूर करती है। 19 देखो, मेरा पेट बेनिकास शराब की तरह है, वह नई मरकों की तरह फटने ही को है। 20 मैं बोलूँगा ताकि तुझे तसल्ली हो: मैं अपने लबों को खोलूँगा और जवाब दूँगा। 21 न मैं किसी आदमी की तरफदारी करूँगा, न मैं किसी शख्स को खुशामद के खिलाब दूँगा। 22 क्यूँकि मुझे खुश करने का खिलाब देना नहीं आता, वर्ना मेरा बनाने वाला मुझे जल्द उठा लेता।

33 “तोभी ऐ अर्यूब जरा मेरी तकरीर सुन ले, और मेरी सब बातों पर कान

लगा। 2 देख, मैंने अपना मुँह खोला है; मेरी जबान ने मेरे मुँह में सुखन आराई की है। 3 मेरी बातें मेरे दिल की रास्तबाजी को जाहिर करेंगी। और मेरे लब जो कुछ जानते हैं, उसी को सच्चाई से कहेंगे। 4 खुदा वर्स है ने पुढ़े बनाया है, और कादिर — ए — मुतलक का दम मुझे जिन्दगी बख्शता है। 5 अगर तू मुझे जबाब दे सकता है तो दे, और अपनी बातों को मेरे सामने तरतीब देकर खड़ा हो जा। 6 देख, खुदा के सामने मैं तेरे बराबर हूँ। मैं भी मिट्टी से बना हूँ। 7 देख, मेरा रोब तुझे पेशान करेगा, मेरा दबाव तुझ पर भारी न होगा। 8 “यकीनन तू मेरे सुनते ही कहा है, और मैंने तेरी बातें सुनी हैं, 9 कि मैं साफ

और मैं बे तकसीर हूँ, मैं बे गुनाह हूँ, और मुझ में गुनाह नहीं। 10 वह मेरे खिलाफ़ मौका' हूँड़ता है, वह मुझे अपना दुश्मन समझता है; 11 वह मेरे दोनों पाँव को काठ में ठोक देता है, वह मेरी सब राहों की निगरानी करता है। 12 "देख, मैं तुझे जबाब देता हूँ, इस बात में तू हक पर नहीं। क्यूँकि खुदा इंसान से बड़ा है। 13 त क्यूँ उससे झगड़ता है? क्यूँकि वह अपनी बातों में से किसी का हिसाब नहीं देता। 14 क्यूँकि खुदा एक बार बोलता है, बल्कि दो बार, चाहे इंसान इसका खयाल न करे। 15 खबाब में, रात के खबाब में, जब लोगों को गहरी नीद आती है, और बिस्तर पर सोते बक्त्त; 16 तब वह लोगों के कान खोलता है, और उनकी तालीम पर मुहर लगाता है, 17 ताकि इंसान को उसके मकसद से रोके, और गुस्तर को इंसान में से दूर करे। 18 वह उसकी जान को गढ़े से बचाता है, और उसकी जिन्दगी तलबार की मार से। 19 "वह अपने बिस्तर पर दर्द से तम्बीह पाता है, और उसकी हड्डियों में दाइमी जंग है। 20 यहाँ तक कि उसका जी रोटी से, और उसकी जान लजीज खाने से नफरत करने लगती है। 21 उसका गोश्त ऐसा सूख जाता है कि दिखाइ नहीं देता; और उसकी हड्डियों जो दिखाइ नहीं देती थी, निकल आती हैं। 22 बल्कि उसकी जान गढ़े के करीब पहुँचती है, और उसकी जिन्दगी हलाक करने वालों के नजदीक। 23 वहाँ अगर उसके साथ कोई फरिश्ता हो, या हजार में एक तांबीर करने वाला, जो इंसान को बताए कि उसके लिए क्या ठीक है; 24 तो वह उस पर रहम करता और कहता है, कि 'उसे गढ़े में जाने से बचा ले; मुझे फिदिया मिल गया है। 25 तब उसका जिस बच्चे के जिस्म से भी ताजा होगा; और उसकी जवानी के दिन लौट आते हैं। 26 वह खुदा से दुआ करता है। और वह उस पर महेरबान होता है, ऐसा कि वह खुशी से उसका मुँह देखता है; और वह इंसान की सच्चाई को बहाल कर देता है। 27 वह लोगों के सामने गाने और कहने लगता है, कि मैंने गुनाह किया और हक को उलट दिया, और इससे मुझे फायदा न हआ। 28 उसने मेरी जान को गढ़े में जाने से बचाया, और मेरी जिन्दगी रोशनी को देखेगी। 29 "देखो, खुदा आदमी के साथ यह सब काम, दो बार बल्कि तीन बार करता है; 30 ताकि उसकी जान को गढ़े से लौटा लाए, और वह जिन्दों के नूर से मुनव्वर हो। 31 ऐ अय्यब! गौर से मेरी सुन; खामोश रह और मैं बोल्ऱूँगा। 32 अगर तुझे कुछ कहना है तो मैं मुझे जबाब दें; बोल, क्यूँकि मैं तुझे रास्त ठहराना चाहता हूँ। 33 अगर नहीं, तो मेरी सुन; खामोश रह और मैं तुझे समझ सिखाऊँगा।"

34 इसके 'अलावा इलीह ने यह भी कहा,

2 "ऐ तुम 'अक्लमन्द लोगों, मेरी बातें सुनो, और ऐ तुम जो अहल — ए — 'इल्म हो, मेरी तरफ कान लगाओ; 3 क्यूँकि कान बातों को परखता है, जैसे जबान' खाने को चाहती है। 4 जो कुछ ठीक है, हम अपने लिए चुन लें, जो भला है, हम आपस में जान लें। 5 क्यूँकि अय्यब ने कहा, 'ऐ सादिक हूँ, और खुदा ने मेरी हक तल्की की है। 6 अगर ऐसे मैं हक पर हूँ, तो भी झूटा ठहरता हूँ जबकि मैं बेकुसर हूँ, मेरा जख्म ला 'इलाज है। 7 अय्यब जैसा बहादुर कौन है, जो मजाक को पानी की तरह पी जाता है? 8 जो बदकिदारों की रकाफ़त में चलता है, और शरीर लोगों के साथ फिरता है। 9 क्यूँकि उसने कहा है, कि 'आदमी को कुछ फायदा नहीं कि वह खुदा में खुश है।' 10 "इसलिए ऐ अहल — ए — अक्ल मेरी सुनो, यह हरगिज़ हो नहीं सकता कि खुदा शरारत का काम करे, और कादिर — ए — मुतलक गुनाह करे। 11 वह इंसान को उसके 'आ'मल के मुताबिक बदला देगा, वह ऐसा करेगा कि हर किसी को अपनी ही राहों के मुताबिक बदला मिलेगा। 12 यकीन खुदा बुराई नहीं करेगा; कादिर — ए — मुतलक से बेइन्साफ़ी न होगी। 13 किसने उसको ज़रीन पर इखिल्यार दिया? या किसने सारी दुनिया का इन्तिजाम किया है? 14 अगर वह इंसान से अपना दिल लगाए, अगर वह

अपनी स्हृंग और अपने दम को बापस ले ले; 15 तो तमाम बशर इकट्ठे फना हो जाएँगे, और इसान फिर मिट्टी में मिल जाएगा। 16 "इसलिए अगर तुझ में समझ है तो इसे सुन ले, और मेरी बातों पर तबज्जुह कर। 17 क्या वह जो हक से 'अदावत रखता है, हुक्मत करेगा? और क्या तू उसे जो 'आदिल और कादिर है, मुल्जिम ठहराएगा? 18 वह तो बादशाह से कहता है, 'तू रजील है'; और शरीकों से, कि 'तुम शरीर हो।' 19 वह उम्र की तरफदारी नहीं करता, और अमीर की गरीबी से ज्यादा नहीं मानता, क्यूँकि वह सब उसी के हाथ की कारीगरी है। 20 वह दम भर में आधी रात को मर जाते हैं, लोग हिलाए जाते हैं और गुरु जाते हैं और बहादुर लोग बगैर हाथ लगाए उठा लिए जाते हैं। 21 "क्यूँकि उसकी आँखें आदमी की राहों पर लगी हैं, और वह उसकी आदतों को देखता है; 22 न कोई ऐसी तरीकी न मौत का साया है, जहाँ बढ़ किरदार छिप सके। 23 क्यूँकि उसे ज़स्ती नहीं कि आदमी का ज्यादा खयाल करे ताकि वह खुदा के सामने 'अदालत में जाए। 24 वह बिला तफ़ीश जबरदस्तों को टकड़े — टुकड़े करता, और उनकी जगह औरें को खड़ा करता है। 25 इसलिए वह उनके कामों का खयाल रखता है, और वह उन्हें रात को उलट देता है ऐसा कि वह हलाक हो जाते हैं। 26 वह औरें को देखते हुए, उनको ऐसा मारता है जैसा शरीरों को; 27 इसलिए कि वह उसकी पैरवी से फिर गए, और उसकी किसी राह का खयाल न किया। 28 यहाँ तक कि उनकी बजह से गरीबों की फरियाद उसके सामने पहुँची और उसने मुरीबत जदों की फरियाद सुनी। 29 जब वह राहत बख्शी तो कौन मुल्जिम ठहरा सकता है? जब वह मूँह छिपा ले तो कौन उसे देख सकता है? चाहे कोई कौम हो या आदमी, दोनों के साथ यकसाँ सुलक है। 30 ताकि बदीन आदमी सलतनत न करे, और लोगों को फंदे में फ़साने के लिए कोई न हो। 31 "क्यूँकि क्या किसी ने खुदा से कहा है, मैंने सजा उठा ली है, मैं अब बुराई न करूँगा; 32 जो मुझे दिखाई नहीं देता, वह तू मुझे सिखा; अगर मैंने गुनाह किया है तो अब ऐसा नहीं करूँगा?" 33 क्या उसका बदला तेरी मजी पर हो कि तू उसे ना मंज़ूर करता है? क्यूँकि तुझे फैसला करना है न कि मुझे; इसलिए जो कुछ तू जानता है, कह दे। 34 अहल — ए — अक्ल मुझ से कहोंगे, बल्कि हर 'अक्लमन्द जो मेरी सुनता है कहेगा, 35 'अय्यब नादानी से बोलता है, और उसकी बातें कहिकरत से खाली हैं। 36 काश कि अय्यब आखिर तक आजमाया जाता, क्यूँकि वह शरीरों की तरह जबाब देता है। 37 इसलिए कि वह अपने गुनाहों पर बालात को बढ़ाता है; वह हमारे बीच तालियाँ बजाता है, और खुदा के खिलाफ़ बहुत बातें बनाता है।"

35 इसके 'अलावा इलीह ने यह भी कहा,

2 "क्या तू इसे अपना हक लगाता है, या यह दावा करता है कि तेरी सदाकत खुदा की सदाकत से ज्यादा है? 3 जो तू कहता है कि मुझे इससे क्या फायदा मिलेगा? और मुझे इसमें गुनहगर न होने की निस्बत कौन सा ज्यादा फायदा होगा? 4 मैं तुझे और तेरे साथ तेरे दोस्तों को जबाब दूँगा। 5 आसमान की तरफ नज़र कर और देख; और आसमानों पर जो तुझ से बल्टन्द है, निगाह कर। 6 अगर तू गुनाह करता है तो उसका क्या बिगड़ता है? और अगर तेरी खताएँ बढ़ जाएँ तो तू उसका क्या करता है? 7 अगर तू सादिक है तो उसको क्या दे देता है? या उसे तेरे हाथ से क्या मिल जाता है? 8 तेरी शरारत तुझे जैसे आदमी के लिए है, और तेरी सदाकत आदमजादे के लिए। 9 "ज़ुल्म की कसरत की वजह से वह चिल्लते हैं, जबरदस्त के बाज़ू की वजह से वह मदत के लिए दुहाई देते हैं। 10 लेकिन कोई नहीं कहता, कि 'खुदा मेरा खालिक कहाँ है, जो रात के बक्त नगमें 'इन्यात करता है? 11 जो हम को ज़रीन के जानवरों से ज्यादा तालीम देता है, और हमें हवा के परिदंडों से ज्यादा 'अक्लमन्द बनाता है?" 12 वह दुहाई देते हैं लेकिन कोई जबाब नहीं देता, यह बुरे आदमियों के गुस्तर की वजह से है। 13

यकीन खुदा बतालत को नहीं सुनेगा, और कादिर — ए — मुतलक उसका लिहाज़ न करेगा। 14 खासकर जब तू कहता है, कि तू उसे देखता नहीं। मुकदमा उसके सामने है और तू उसके लिए ठहरा हुआ है। 15 लेकिन अब क्यूँकि उसने अपने गजब में सज्जा न दी, और वह गुस्सर का ज्यादा खुयाल नहीं करता; 16 इसलिए अर्थव्यंख खुदवीनी की वजह से अपना मुँह खोलता है और नादानी से बातें बनाता है।

36 फिर इलाह ने यह भी कहा, 2 मुझे जरा इजाजत दे और मैं तुझे बताऊँगा, क्यूँकि खुदा की तरफ से मुझे कुछ और भी कहना है 3 मैं अपने 'इल्म को दूर से लाऊँगा और रास्ती अपने खालिक से मनसङ्कर करूँगा 4 क्यूँकि हकीकत में मेरी बातें झटी नहीं हैं, और जो तेरे साथ है 'इल्म में कामिल हैं। 5 देख खुदा कादिर है, और उसनी को बेकार नहीं जानता वह समझ की कुव्वत में गालिक है। 6 वह शरीरों की जिंदागी को बरकरार नहीं रखता, बल्कि मुसीबत जदों को उनका हक अदा करता है। 7 वह सादिकों से अपनी आँखें नहीं फेरता, बल्कि उन्हें बादशाहों के साथ हमेशा के लिए तख्त पर बिठाता है। 8 और वह सफरराज होते हैं और अगर वह बेड़ियों से जकड़े जाएं और मुसीबत की रस्सियों से बंधें, 9 तो वह उन्हें उनका 'अपल और उनकी तक्सरी दिखाता है, कि उन्होंने घमण्ड किया है। 10 वह उनके कान को तालीम के लिए खोलता है, और हक्म देता है कि वह गुनाह से बाज आयें। 11 अगर वह सुन लें और उसकी इबादत करें तो अपने दिन इकबालमंटी में और अपने बरस खुशाली में बसर करेंगे 12 लेकिन अगर न सुनें तो वह तलबार से हलाक होंगे, और जिहालत में मरेंगे। 13 लेकिन वह जो दिल में बे दीन हैं, गजब को रख छोड़ते जब वह उन्हें बांधता है तो वह मदर के लिए दुहाई नहीं देते, 14 वह जवानी में मरते हैं और उनकी जिन्दागी छोटों के बीच में बर्बाद होता है। 15 वह मुसीबत जदह को मुसीबत से छुड़ता है, और जुल्म में उनके कान खोलता है। 16 बल्कि वह तुझे भी दुख से छुटकारा दे कर ऐसी वसीं जगह में जहाँ तरी नहीं है पहचान देता और जो कुछ तेरे दस्तरखाबान पर चुना जाता है वह चिकनाई से पुर होता है। 17 लेकिन तू तो शरीरों के मुक़दमा की ताईद करता है, इसलिए 'अदल और इन्साफ तुझ पर काबिज हैं। 18 खबरदार तेरा कहर तुझ से तक्फीर न कराए और फिराया की फरादानी तुझे गमराह न करो। 19 क्या तेरा रोना या तेरा ज़ोर व तवानाई इस बात के लिए काफी है कि तू मुसीबत में मैं पड़े। 20 उस रात की ख्वाहिश न कर, जिसमें क्लैमें अपने घरों से उठा ली जाती हैं। 21 होशियार रह, गुनाह की तरफ रागिब न हो, क्यूँकि तू ने मुसीबत को नहीं बल्कि इसी को चुना है। 22 देख, खुदा अपनी कुरदत से बड़े — बड़े काम करता है। कौन सा उस्ताद उसकी तरह है? 23 किसने उसे उसका रास्ता बताया? या कौन कह सकता है कि तू ने नारास्ती की है? 24 'उसके काम की बार्डाई करना याद रख, जिसकी तारीफ लोग करते रहे हैं। 25 सब लोगों ने इसको देखा है, इंसान उसे दूर से देखता है। 26 देख, खुदा बुझा है और हम उसे नहीं जानते, उसके बरसों का शुमार दरियापत से बाहर है। 27 क्यूँकि वह पानी के करतों को ऊपर खीचता है, जो उसी के अब्दियारत से मैंह की सूरत में टपकते हैं; 28 जिनकी फलाक उंडेलते, और इंसान पर कसरत से बरसाते हैं। 29 बल्कि क्या कोई बादलों के फैलाव, और उसके शामियाने की गरजों को समझ सकता है? 30 देख, वह अपने नर को अपने चारों तरफ फैलाता है, और समन्दर की तह को ढाँकता है। 31 क्यूँकि इन्हीं से वह कौमों का इन्साफ करता है, और खुराक इफरात से 'अता फरमाता है। 32 वह जिजली को अपने हाथों में लेकर, उसे हक्म देता है कि दुश्मन पर गिरे। 33 इसकी कड़क उसी की खबर देती है, चौपाये भी तूफान की आमद बताते हैं।

37 इस बात से भी मेरा दिल काँपता है और अपनी जगह से उछल पड़ता है। 2 ज़रा उसके बोलने की आवाज़ को सुनो, और उस ज़मज़मा को जो उसके मुँह से निकलता है। 3 वह उसे सारे आसमान के नीचे, और अपनी बिजली को ज़मीन की इन्तिहा तक भेजता है। 4 इसके बाद कड़क की आवाज आती है, वह अपने जलाल की आवाज से गरजता है, और जब उसकी आवाज सुनाई देती है तो वह उसे गेकता है। 5 खुदा 'अजीब तौर पर अपनी आवाज से गरजता है। वह बड़े बड़े काम करता है जिनको हम समझ नहीं सकते। 6 क्यूँकि वह बर्फ को फरमाता है कि तू ज़मीन पर गिर, इसी तरह वह बारिश से और मूसलाधार में से कहता है। 7 वह हर आदमी के हाथ पर मुहर कर देता है, ताकि सब लोग जिनको उसने बनाया है, इस बात को जान लें। 8 तब दरिन्दे गारों में घुस जाते, और अपनी अपनी माँ मॉट में पड़े रहते हैं। 9 ऑर्धे दलिखन की कोठरी से, और सर्दीं उत्तर से आती है। 10 खुदा के दम से बर्फ जम जाती है, और पानी का फैलाव तंग हो जाता है। 11 बल्कि वह घटा पर नमी को लादता है, और अपने बिजली वाले बादलों को दूर तक फैलाता है। 12 उसी की हिदायत से वह इधर उधर फिराए जाते हैं, ताकि जो कुछ वह उन्हें फरमाए, उसी को वह दुनिया के आबाद हिस्से पर अंजाम दें। 13 चाहे तम्बीके लिए या अपने मुल्क के लिए, या रहमत के लिए वह उसे भेजे। 14 'ऐ अर्यब, इसको सुन ले; चुपचाप खड़ा रह, और खुदा के हैरतअंगेज कामों पर गौर कर। 15 क्या तुझे मालूम है कि खुदा क्यूँकर उन्हें ताकीद करता है और अपने बादल की बिजली को चमकाता है? 16 क्या तू बादलों के मुवाज़े से बाक़िफ़ है? यह उसी के हैरतअंगेज काम हैं जो 'इल्म में कामिल है। 17 जब ज़मीन पर दलिखनी हवा की वजह से सन्नाटा होता है तो तेरे कपड़े क्यूँ गर्म हो जाते हैं? 18 क्या तू उसके साथ फलक को फैला सकता है जो ढले हुए आइन की तरह मजबूत है? 19 हम को सिखा कि हम उस से क्या कहें, क्यूँकि अंगैर की वजह से हम अपनी तकरीर को दुस्त नहीं कर सकते? 20 क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूँ? या क्या कोई आदमी यह ख्वाहिश करे कि वह निगल लिया जाए? 21 'अभी तो आदमी उस नर को नहीं देखते जो असमानों पर रोशन है, लेकिन हवा चलती है और उन्हें साफ़ कर देती है। 22 दलिखनी से सुनहरी रोशनी आती है, खुदा मुहीब शैकत से मुलब्बस है। 23 हम कादिर — ए — मुतलक को पा नहीं सकते, वह कुदरत और 'अदल में शनादर है, और इन्साफ़ की फिरावानी में जूल्म न करेगा। 24 इसलिए लोग उससे डरते हैं; वह अक्लमन्दिलों की परवाह नहीं करता।'

38 तब खुदावन्द ने अर्यब को बोले मैं से यूँ जबाब दिया, 2 'यह कौन है जो नादानी की बातों से, मसलहत पर पर्दा डालता है?' 3 मर्द की तरह अब अपनी कमर कस ले, क्यूँकि मैं तुझ पर सूत खीचा? 4 'तू कहाँ हैं, जब मैंने ज़मीन की बुनियाद डाली? तू 'अक्लमन्द है तो बता। 5 क्या तुझे मालूम है कि मैंने उसकी नाप ठहराई? या किसने उस पर सूत खीचा? 6 किस चीज पर उसकी बुनियाद डाली गईं, या किसने उसके कोने का पत्थर बिठाया, 7 जब सुबह के सिरों में लिलकर गते थे, और खुदा के सब बेटे खुशी से ललकारते थे? 8 'या किसने समन्दर को दरवाजों से बंद किया, जब वह ऐसा फूट निकला जैसे रहम से, 9 जब मैंने बादल को उसका लिबास बनाया, और गहरी तारीकी को उसका लपेटने का कपड़ा, 10 और उसके लिए हद ठहराई, और बेन्दू और किवाड़ लगाए, 11 और कहा, 'यहाँ तक तू आना, लेकिन आगे नहीं, और यहाँ तक तेरी बिछड़ती हई मौजें स्क जाएँगी?' 12 'क्या तू ने अपनी उम्र में कभी सुबह पर हुक्मरानी की, दिया और क्या तूने फ़ज़ा को उसकी जगह बताई, 13 ताकि वह ज़मीन के किनारों पर कब्ज़ा करे, और शरीर लोग उसमें से झाड़ दिए जाएँ? 14 वह ऐसे बदलती है जैसे मुहर के नीचे

चिकनी मिट्टी 15 और तमाम चीजें कपड़े की तरह नमाया हो जाती हैं, और और शरीरों से उसकी बन्दगी स्क जाती है और बुल्नद बाजू तोड़ा जाता है। 16 “क्या तू समन्दर के सोतों में दाखिल हुआ है? या गहराव की थार में चला है? 17 क्या मौत के फाटक तुझ पर ज़ाहिर कर दिए गए हैं? या तू ने मौत के साथ के फाटकों को देख लिया है? 18 क्या तू ने जमीन की चौड़ाई को समझ लिया है? अगर तू यह सब जानता है तो बता। 19 “नूं के घर का रास्ता कहाँ है? रही तारीकी, इसलिए उसका मकान कहाँ है? 20 ताकि तू उसे उसकी हद तक पहुँचा दे, और उसके मकान की राहों को पहचाने? 21 बेशक तू जानता होगा, क्यूँकि तू उस वक्त पैदा हुआ था, और तेरे दिनों का शमार बढ़ा है। 22 क्या तू बर्फ के मखजनों में दाखिल हुआ है, या ओलों के मखजनों को तुम देखा है, 23 जिनको मैंने तकलीफ के बक्त के लिए, और लड़ाई और जंग के दिन की खातिर रख छोड़ा है? 24 रोशनी किस तरीके से तक्सीम होती है, या पूर्वी हवा जमीन पर फैलाई जाती है? 25 सैलाब के लिए किसने नाली काटी, या कड़क की बिजली के लिए रास्ता, 26 ताकि उसे गैर आबाद जमीन पर बरसाए और वीरान पर जिसमें इंसान नहीं बसता, 27 ताकि उजड़ी और सूरी जमीन को सेराब करे, और नर्म — नर्म धास उगाए? 28 क्या बारिश का कोई बाप है, या शबन्म के करते किससे तबल्लुद हुए? 29 यश्व किस के बतन निकला से निकला है, और आसमान के सफेद पाले को किसने पैदा किया? 30 पानी पथर सा हो जाता है, और गहराव की सतह जम जाती है। 31 “क्या तू ‘अक्वद — ए — सुरैया को बाँध सकता, या जब्बार के बंधन को खोल सकता है, 32 क्या तू मिन्तक्तू — उल — बुर्ज को उनके बक्तों पर निकाल सकता है? या बिनात — उन — नांश की उनकी सहेलियों के साथ रहबीर कर सकता है? 33 क्या तू आसमान के कवानीन को जानता है, और जमीन पर उनका इश्तियार काईम कर सकता है? 34 क्या तू बादलों तक अपनी आवाज बुल्नद कर सकता है, ताकि पानी की फिरावनी तुझे छिपा ले? 35 क्या तू बिजली को रवाना कर सकता है कि वह जाए, और तुझ से कहे मैं हाजिर हूँ? 36 बातिन में हिकमत किसने रखी, और दिल को अक्ल किसने बरबी? 37 बादलों को हिकमत से कौन गिन सकता है? या कौन आसमान की मशकों को उड़ेल सकता है, 38 जब गर्द मिलकर तदा बन जाती है, और ढेले एक साथ मिल जाते हैं” 39 “क्या तू शेरनी के लिए शिकार मार देगा, या बबर के बच्चों को सेर करेगा, 40 जब वह अपनी माँदों में बैठे हों, और धात लगाए अड में दुबक कर बैठे हों? 41 पहाड़ी कौवे के लिए कौन खराक मूँहया करता है, जब उसके बच्चे खुदा से फरियाद करते, और खराक न मिलने से उड़ते फिरते हैं?”

39 क्या तू जनता है कि पहाड़ पर की ज़ंगली बकरियाँ कब बच्चे देती हैं? या जब हिरनीयाँ बियाती हैं, तो क्या तू देख सकता है? 2 क्या तू उन महिनों को जिन्हें वह पूरा करती है, गिन सकता है? या तुझे वह बक्त मालूम है जब वह बच्चे देती है? 3 वह द्वक जाती है; वह अपने बच्चे देती है, और अपने दर्द से रिहाई पाती है। 4 उनके बच्चे मोटे तज़े होते हैं, वह खुले मैदान में बढ़ते हैं। वह निकल जाते हैं और फिर नहीं लौटते। 5 गधे को किसने आजाद किया? ज़ंगली गधे के बंद किसने खोले? 6 वीरान को मैंने उसका मकान बनाया, और जमीन — ए — शेर को उसका घर। 7 वह शहर के शेर — ओ — गुल को हेच समझता है, और हाँकने वाले की डॉट को नहीं सुनता। 8 पहाड़ों का सिलसिला उसकी चरागाह है, और वह हरियाली की तलाश में रहता है। 9 “क्या ज़ंगली सॉंड तेरी स्थिदम पर राजी होगा? क्या वह तेरी चरनी के पास रहेगा? 10 क्या तू ज़ंगली सॉंड को स्से से बाँधकर रेघारी में चला सकता है? या वह तेरे पिछे — पीछे बादियों में हैंगा फेरेगा? 11 क्या तू उसकी बड़ी ताकत की वजह से उस पर भरोसा करेगा? या क्या तू अपना काम उस पर छोड़ देगा?

12 क्या तू उस पर भरोसा करेगा कि वह तेरा गल्ला घर ले आए, और तेरे खलीहान का अनाज इकट्ठा करें? 13 “शूतरमुर्गी के बाजू आसदा हैं, लेकिन क्या उसके पर — ओ — बाल से शफकत ज़ाहिर होती है? 14 क्यूँकि वह तो अपने अडे जमीन पर छोड़ देती है, और रेत से उनको गमीं पहुँचाती है; 15 और भल जाती है कि वह पाँव से कचते जाएँगे, या कोई ज़ंगली जानवर उनको रौद डालेगा। 16 वह अपने बच्चों से ऐसी सञ्जलदिली करती है कि जैसे वह उसके नहीं। चाहे उसकी मेहनत रायाँगों जाए उसे कुछ खोफ नहीं। 17 क्यूँकि खुदा ने उसे ‘अक्ल’ से महस्म रखा, और उसे समझ नहीं दी। 18 जब वह तनकर सीधी खड़ी हो जाती है, तो घोड़े और उसके सवार दोनों को नाचीज़ समझती है। 19 “क्या घोड़े को उसका ताकत त ने दी है? क्या उसकी गद्दन की लहराती अयाल से तूने मुलब्बस किया? 20 क्या उसे टिक्की की तरह तूने कुदाया है? उसके फराने की शान मुहीब है। 21 वह बादी में टाप मारता है और अपने जोर में खुश है। वह हथियारबंद आदिमियों का सामना करने को निकलता है। 22 वह खोफ को नाचीज़ जानता है और घबराता नहीं, और वह तलबार से मूँह नहीं मोड़ता। 23 तर्कश उस पर खड़खडाता है, चमकता हुआ भाला और सँग भी; 24 वह तुटी और कहर में जमीन पैमांइ करता है, और उसे यकीन नहीं होता कि यह तुर ही की आवाज है। 25 जब जब तुरही बजती है, वह हिन हिन करता है, और लड़ाई को दूर से सूंघ लेता है, सरदारों की गरज और ललकार को भी। 26 “क्या बा’ज़ तेरी हिकमत से उड़ता है, और दुछिखन की तरफ अपने बाजू फैलाता है? 27 क्या ‘उकाब तेरे हुक्म से ऊपर चढ़ता है, और बुलंदी पर अपना धोंसला बनाता है? 28 वह चट्टान पर रहता और वही बसेरा करता है; यानी चट्टान की चोटी पर और पनाह की जगह में। 29 वहीं से वह शिकार ताड़ लेता है, उसकी आँखें उसे दूर से देख लेती हैं। 30 उसके बच्चे भी खून चूसते हैं, और जहाँ मक्तल हैं वहाँ वह भी है।”

40 खुदाबन्द ने अय्यू से यह भी कहा, 2 “क्या जो फूज़ल हुज्जत करता है वह कादिर — ए — मुतलक से झागड़ा करे? जो खुदा से बहस करता है, वह इसका जबाब दे।” 3 अय्यू का जबाब तब अय्यू ने खुदाबन्द को जबाब दिया, 4 “देख, मैं नाचीज़ हूँ, मैं तुझे क्या जबाब दूँ? मैं अपना हाथ अपने मूँह पर रखता हूँ। 5 अब जबाब न दूँगा; एक बार मैं बोल चुका, बल्कि दो बार लेकिन अब आगे न बढ़गाँ।” 6 तब खुदाबन्द ने अय्यू को बगोले में से जबाब दिया, 7 मर्द की तरह अब अपनी कमर कस ले, मैं तुझ से सवाल करता हूँ और तु मुझे बता। 8 क्या तू मेरे इन्साफ को भी बातिल ठहराएगा? 9 क्या तू मुझे मुज़रिम ठहराएगा ताकि खुद रास्त ठहरे? या क्या तेरा बाजू खुदा के जैसा है? और क्या तू उसकी तरह आवाज़ से गरज सकता है? 10 ‘अब अपने को शान — ओ — शौकत से आरास्ता कर, और ‘इज्जत — ओ — ज़लाल से मुलब्बस हो जा। 11 अपने कहर के सैलाबों को बहा दे, और हर मगास्तर को देख और ज़लील कर। 12 हर मगास्तर को देख और उसे नीचा कर, और शरीरों को जहाँ खड़े हों पामाल कर दे। 13 उनको इकट्ठा मिट्टी में छिपा दे, और उस पोशीदा मकाम में उनके मूँह बाँध दे। 14 तब मैं भी तेरे बारे में मान लूँगा, कि तेरा ही दहना हाथ तुझे बचा सकता है। 15 ‘अब हिपो पोटीमिस’ को देख, जिसे मैंने तेरे साथ बनाया; वह बैल की तरह धास खाता है। 16 देख, उसकी ताकत उसकी कमर में है, और उसका जोर उसके पेट के पश्चों में। 17 वह अपनी दुम को देवदार की तरह हिलाता है, उसकी रानों की नसे एक साथ पैकूस्ता है। 18 उसकी हड्डियाँ पीतल के नलों की तरह हैं, उसके ‘आ’जा लोहे के बेड़ों की तरह हैं। 19 वह खुदा की खास नस ‘अत’ है; उसके खालिक ही ने उसे तलबार बांधी है। 20 यकीन टीले उसके लिए खराक एक साथ पहुँचते हैं जहाँ मैदान के सब जानवर खेलते कूदते हैं। 21 वह कंबल के दरखत के नीचे लेता है,

सरकंडों की आड़ और दलदल में। 22 कंवल के दररक्त उसे अपने साये के नीचे छिपा लेते हैं। नाले के बीड़ी उसे धेर लेती हैं। 23 देख, अगर दरिया में बाढ़ हो तो वह नहीं कॉप्टा चाहे यहरन उसके मूँह तक चढ़ आये वह बे खौफ है। 24 जब वह होशियार हो, तो क्या कोई उसे पकड़ लेगा; या फंदा लगाकर उसकी नाक को छेदेगा?

41 क्या तू मगर कोशिश से बाहर निकाल सकता है या रस्सी से उसकी

ज़बान को दबा सकता है? 2 क्या तू उसकी नाक में रस्सी डाल सकता है? या उसका जबड़ा मेख से छेद सकता है? 3 क्या वह तेरी बहुत मिन्नत समाजत करेगा? या तुझ से मीठी मीठी बातें कहेगा? 4 क्या वह तेरे साथ 'अहं बांधेगा, कि तू उसे हमेशा के लिए नौकर बना ले? 5 क्या तू उससे ऐसे खेलेगा जैसे परिन्दे से? या क्या तू उसे अपनी लड़कियों के लिए बाँध देगा? 6 क्या लोग उसकी तिजारत करेंगे? क्या वह उसे सौदामारों में तकरीम करेंगे? 7 क्या तू उसकी खाल को भालों से, या उसके सिर को माहीगिर के तरसलों से भर सकता है? 8 तू अपना हाथ उस पर धेर, तो लड़ाई को याद रखेगा और फिर ऐसा न करेगा। 9 देख, उसके बारे में उम्मीद बेकायदा है। क्या कोई उसे देखते ही गिर न पड़ेगा? 10 कोई ऐसा तुन्दख, नहीं जो उसे छेड़ने की हिम्मत न करे। फिर वह कौन है जो मेरे सामने खड़ा होसके? 11 किस ने मुझे पहले कुछ दिया है कि मैं उसे अदा करूँ? जो कुछ सारे आसमान के नीचे है वह मेरा है। 12 न मैं उसके 'आजा के बारे में खामोश रहूँगा' न उसकी ताकत और खूबसूरत डील डोल के बारे में। 13 उसके ऊपर का लिबास कौन उतार सकता है? उसके जबड़ों के बीच कौन आएगा? 14 उसके मूँह के किवाड़ों को कौन खोल सकता है? उसके दाँतों का दायरा दहशत नक है। 15 उसकी ढालें उसका परख हैं; जो जैसा सख्त मुहर से पैवस्ता की गई है। 16 वह एक दूसरी से ऐसी जुड़ी हुई है, कि उनके बीच हवा भी नहीं आ सकती। 17 वह एक दूसरी से एक साथ पैवस्ता है; वह आपस में ऐसी जुड़ी हैं कि जुदा नहीं हो सकती। 18 उसकी छिकं न् न् अफशानी करती है उसकी आँखें सुबह के पोटों की तरह हैं। 19 उसके मूँह से जलती मप्पा अले निकलती हैं, और आग की चिंगारियाँ उड़ती हैं। 20 उसके नथनों से धुवाँ निकलता है, जैसे खौलती देगा और सुलगते सरकंडे से। 21 उसका साँस से कोयतों को दहका देता है, और उसके मूँह से शोले निकलते हैं। 22 ताकत उसकी गर्दन में बसती है, और दहशत उसके आगे आगे चलती 'है। 23 उसके गोशत की तरहे आपस में जुड़ी हुई हैं; वह उस पर खब जुड़ी है और हट नहीं सकती। 24 उसका दिल पत्थर की तरह मजबूत है, बल्कि चक्की के निचले पाट की तरह। 25 जब खुदा उठ खड़ा होता है, तो ज़बरदस्त लोग डर जाते हैं, और घबराकर खौफजदा हो जाते हैं। 26 अगर कोई उस पर तलवार चलाए, तो उससे कुछ नहीं बनता: न भाले, न तीर, न बरछी से। 27 वह लोहे को भूसा समझता है, और पीतल को गली हुई लकड़ी। 28 तीर उसे भग नहीं सकता, फलाखन के पथर उस पर तिक्के से हैं। 29 लाठियाँ जैसे तिक्के हैं, वह बछी के चलने पर हँसता है। 30 उसके नीचे के हिस्से तेज ठीकरों की तरह हैं; वह बीचड़ पर जैसे हेंगा फेरता है। 31 वह गहराव को देगा की तरह खौलाता, और समुन्दर को मरहम की तरह बना देता है। 32 वह अपने पीछे चमकिला निशान छोड़ जाता है; गहराव गोया सफेद नज़र आने लगता है। 33 ज़मीन पर उसका नज़ीर नहीं, जो ऐसा बेखौफ पैदा हुआ हो। 34 वह हर ऊँची चीज़ को देखता है, और सब मग़स्तों का बादशाह है।"

42 तब अय्यब ने खुदावन्द यूँ ज़बाब दिया 2 "मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरा कोई इरादा स्क नहीं सकता। 3 यह कौन है जो नादानी से मसलहत पर पर्दा डालता है?" लेकिन मैंने जो न समझा वही कहा,

यानी ऐसी बातें जो मेरे लिए बहुत 'अजीब थीं जिनको मैं जानता न था। 4 मैं तेरी मिन्नत करता हूँ सुन, मैं कुछ कहूँगा। मैं तुझ से सबल करँगा, तू मुझे बता। 5 मैंने तेरी खबर कान से सुनी थी, लेकिन अब मेरी आँख तुझे देखती है; 6 इसलिए मुझे अपने आप से नफरत है, और मैं खाक और राख में तौबा करता हूँ।" 7 और ऐसा हआ कि जब खुदावन्द यह बातें अय्यब से कह चुका, तो उसने इलिफ़ज़ तेमानी से कहा कि "मेरा गज़ब तुझ पर और तेरे दोस्तों पर भड़का है, क्यूँकि तुम ने मेरे बारे में वह बात न कही जो हक है, जैसे मेरे बन्दे अय्यब ने कही। 8 इसलिए अब अपने लिए सात बैल और सात मैंडे लेकर, मेरे बन्दे अय्यब के पास जाओ और अपने लिए सोखानी कुर्बानी पेश करो, और मेरा बन्दा अय्यब तुहारे लिए दुआ करोगा; क्यूँकि उसे तो मैं कुबूल करँगा ताकि तुम्हारी जिहालत के मुताबिक तुहारे साथ सुलूक न करूँ, क्यूँकि तुम ने मेरे बारे में वह बात न कही जो हक है, जैसे मेरे बन्दे बन्दे अय्यब ने कही।" 9 इसलिए इलिफ़ज़ तेमानी, और बिलदास सर्खी और ज़फ़र नामाती ने जाकर जैसा खुदावन्द ने उनको फरमाया था किया, और खुदावन्द ने अय्यब को कुबूल किया। 10 और खुदावन्द ने अय्यब की गुलामी को जब उसने अपने दोस्तों के लिए दुआ की बदल दिया और खुदावन्द ने अय्यब को जितने उनके पास पहले था उसका दो गुना दे दिया। 11 तब उसके सब बाईं और सब बहनें और उसके सब अगले जान — पहचान उसके पास आए, और उसके घर में उसके साथ खाना खाया; और उस पर नौहा किया और उन सब बलाओं के बारे में, जो खुदावन्द ने उस पर नाज़िल की थी, उसे तसल्ली दी। हर शख्स ने उसे एक सिक्का भी दिया और हर एक ने सोने की एक बाली। 12 यूँ खुदावन्द ने अय्यब के आखिरी दिनों में शुरू'आत की निस्बत ज़यादा बरकत बछाई; और उसके पास चौदह हज़ार भेड़ बकरियाँ, और छ: हज़ार ऊँट, और हज़ार जोड़ी बैल, और हज़ार गधियाँ, हो गईं। 13 उसके सात बेटे और तीन बेटियाँ भी हुईं। 14 और उसने पहली का नाम यमीमा और दूसरी का नाम कस्त्याह और तीसरी का नाम करन — हृप्पक रखला। 15 और उस सारी सर ज़मीन में ऐसी 'औरतें कही न थीं, जो अय्यब की बेटियों की तरह खूबसूरत हों, और उनके बाप ने उनको उनके भाइयों के बीच मीरास दी। 16 और इसके बाद अय्यब एक सौ चालीस बरस ज़िन्दा रहा, और अपने बेटे और पोते चौथी पुश्त तक देखे। 17 और अय्यब ने बड़ा और बुर्जुग होकर वफ़ात पाई।

ज़बूर

1 मुबारक है वह आदमी जो शरीरों की सलाह पर नहीं चलता, और खताकरों

की राह में खड़ा नहीं होता; और ठश बाजों की महफिल में नहीं बैठता। 2 बल्कि खुदावन्द की शरीर अत में ही उसकी खुशी है; और उसी की शरीर अत पर दिन रात उसका ध्यान रहता है। 3 वह उस रुखत की तरह होगा, जो पानी की नदियों के पास लगाया गया है। जो अपने बक्त पर फलता है, और जिसका पता भी नहीं मुरझाता। इसलिए जो कुछ वह करे फलदार होगा। 4 शरीर ऐसे नहीं, बल्कि वह भूमि की तरह है, जिसे हवा उड़ा से जाती है। 5 इसलिए शरीर 'अदालत में काईम न रहेंगे, न खताकार सादिकों की जमा' अत में। 6 क्यूँकि खुदावन्द सादिकों की राह जानता है तो किन शरीरों की राह बर्बाद हो जाएगी।

2 कौमें किस लिए गुस्से में हैं और लोग क्यूँ बेकार खयाल बांधते हैं 2

खुदावन्द और उसके मसीह के खिलाफ ज़मीन के बादशाह एक हो कर, और हाकिम अपस में मशवारा करके कहते हैं, 3 "आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रसियाँ अपने ऊपर से उतार फेंकें।" 4 वह जो आसमान पर तख्त नशीन है हँसेगा, खुदावन्द उनका मज़ाक उड़ाएगा। 5 तब वह अपने गज़ब में उनसे कलाम करेगा, और अपने गज़बनाक गुस्से में उनको पेरेशान कर देगा, 6 "मैं तो अपने बादशाह को, अपने पाक पहाड़ सिय्यून पर बिठा चुका हूँ।" 7 मैं उस फरमान को बयान करूँगा: खुदावन्द ने मुझ से कहा, "तु मेरा बेटा है। आज त मुझ से पैदा हुआ। 8 मुझ से माँग, और मैं कौमों को तेरी मीरास के लिए, और ज़मीन के आखिरी हिस्से तेरी मिल्कियत के लिए तुझे बख़्शणा। 9 तू उनको लोहे के 'असा से तोड़ेगा, कुम्हार के बर्तन की तरह तू उनको चकनाचूर कर डालेगा।' 10 इसलिए अब ऐ बादशाहो, अक्लमंद बो; ऐ ज़मीन की 'अदालत करने वालों, तरवियत पाओ। 11 डरते हुए खुदावन्द की इबादत करो, कॅप्टेन हुए खुशी मनाओ। 12 बेटे को चुप्पे, ऐसा न हो कि वह कहर में आए, और तुम रास्ते में हलाक हो जाओ, क्यूँकि उसका गज़ब जल्द भड़कने को है। मुबारक है वह सब जिनका भरोसा उस पर है।

3 दाऊद का ज़बर जब वह अपने बेटे अबीसिलोम के सामने से भागा गया था।

ऐ खुदावन्द मेरे सताने वाले कितने बढ़ गए, वह जो मेरे खिलाफ उठते हैं बहुत है। 2 बहुत से मेरी जान के बारे में कहते हैं, कि खुदा की तरफ से उसकी मदद न होगी। (सिलाह) 3 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, हर तरफ मेरी सिपर है। मेरा फ़खु और सरफ़राज़ करने वाला। 4 मैं बुलन्द अवाज से खुदावन्द के सामने फ़रियाद करता हूँ और वह अपने पाक पहाड़ पर से मुझे जबाब देता है। (सिलाह) 5 मैं लेट कर सो गया; मैं जाग उठा, क्यूँकि खुदावन्द मुझे संभालता है। 6 मैं उन दस हज़ार आदमियों से नहीं डाने का, जो चारों तरफ मेरे खिलाफ इकट्ठा हैं। 7 उन ऐ खुदावन्द, ऐ मेरे खुदा, मुझे बचा ले। क्यूँकि तू मेरे सब दुश्मनों को जबड़े पर मारा है। तूने शरीरों के दाँत तोड़ डाले हैं। 8 नजात खुदावन्द की तरफ से है। तेरे लोगों पर तेरी बरकत हो।

4 जब मैं पुकास्त तो मुझे जबाब दे ऐ मेरी सदाकत के खुदा! तंगी में तूने मुझे

कुशादरी बख़्शी, मुझ पर रहम कर और मेरी दुआ सुन ले। 2 ऐ बनी आदम! कब तक मेरी 'इज्जत के बदले स्वाई होगी? तुम कब तक बकवास से मूँबत्त रखेगे और झूट के दर पे होगे? 3 जान लो कि खुदावन्द ने दीनदार को अपने लिए अलग कर रखा है; जब मैं खुदावन्द को पुकास्ता तो वह सुन लेगा। 4 थरथराओ और गुनाह न करो; अपने अपने बिस्तर पर दिल में सोचो और खामोश रहो। 5 सदाकत की कुर्बानियाँ पेश करो, और खुदावन्द पर भरोसा करो। 6 बहुत से कहते हैं कौन हम को कुछ भलाई दिखाएगा? ऐ खुदावन्द तू अपने चेहरे

का नूर हम पर जलवह गर फरमा। 7 तूने मेरे दिल को उससे ज्यादा खुशी बछरी है, जो उनको गल्से और मय की बहातयत से होती थी। 8 मैं सलामती से लेट जाऊँगा और सो रहँगा: क्यूँकि ऐ खुदावन्द! सिर्फ़ तू ही मुझे मुर्मईन रखता है।

5 ऐ खुदावन्द मेरी बातों पर कान लगा! मेरी आहों पर तबज्जह कर! 2 ऐ मेरे

बादशाह! ऐ मेरे खुदा! मेरी फरियाद की आवाज़ की तरफ मुतवज्जिह हो, क्यूँकि मैं तुझ ही से दुआ करता हूँ। 3 ऐ खुदावन्द तू सुबह को मेरी आवाज सुनेगा। मैं सर्वै ही तुझ से दुआ करके इन्तिजार करूँगा। 4 क्यूँकि तू ऐसा खुदा नहीं जो शरारत से खुश हो। गुनाह तेरे साथ नहीं रह सकता। 5 घंटंडी तेरे सामने खड़े न होंगे। तुझे सब बदकिरदारों से नफरत है। 6 तू उनको जो झट बोलते हैं हलाक करेगा। खुदावन्द को खुँख्वार और दगाबाज आदमी से नफरत है। 7 लेकिन मैं तेरी शफ़कत की कसरत से तेरे घर में आऊँगा। मैं तेरा रौब मानकर तेरी पाक हैकल की तरफ स्भ करके सिज्दा करूँगा। 8 ऐ खुदावन्द! मेरे दुश्मनों की वजह से मुझे अपनी सदाकत में चला; मेरे आगे आपनी राह को साफ कर दे। 9 क्यूँकि उनके मूँह में जरा सच्चाई नहीं, उनका बातिन सिर्फ़ बुराई है। उनका गला खुली कबूल है, वह अपनी जबान से खुशामद करते हैं। 10 ऐ खुदा तू उनको मुजरिम ठहरा; वह अपने ही मश्वरों से तबाह हो। उनको उनके गुनाहों की ज्यादती की वजह से खारिज कर दे; क्यूँकि उन्होंने तुझ से बगावत की है। 11 लेकिन वह सब जो तुझ पर भरोसा रखते हैं, शादमान हों, वह सदा खुशी से ललकारें, क्यूँकि तू उनकी हिमायत करता है। और जो तेरे नाम से मूँबत्त रखते हैं, तुझ में खुश रहें। 12 क्यूँकि तू सादिक को बरकत बख़्शेगा। ऐ खुदावन्द! तू उसे करम से ढाल की तरह ढाँक लेगा।

6 ऐ खुदा तू मुझे अपने कहर में न झिड़क, और अपने गज़बनाक गुस्से में मुझे

तम्बीह न दे। 2 ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर, क्यूँकि मैं अधमरा हो गया हूँ। ऐ खुदावन्द, मुझे शिफा दे, क्यूँकि मेरी हंडिडयों में बेकरारी है। 3 मेरी जान की बहुत ही बेकरार है; और तू ऐ खुदावन्द, कब तक? 4 लौट ऐ खुदावन्द, मेरी जान को छुड़ा। अपनी शफ़कत की खातिर मुझे बचा लो। 5 क्यूँकि मौत के बाद तेरी याद नहीं होती, कब्र में कौन तेरी शक्रागुज़री करेगा? (Sheol h7585) 6 मैं कराहते कराहते थक गया, मैं अपना पलंग औस्तुओं से भिगोता हूँ हर रात मेरा बिस्तर तैरता है। 7 मेरी आँख गम के मारे बैठी जाती हैं, और मेरे सब मुखातिकों की वजह से धंगलाने लगी। 8 ऐ सब बदकिरदारों, मेरे पास से दूर हो; क्यूँकि खुदावन्द ने मेरे रोने की आवाज सुन ली है। 9 खुदावन्द ने मेरी मिन्नत सुन ली; खुदावन्द मेरी दुआ कुबूल करेगा। 10 मेरे सब दुमन शर्मिन्दा और बहुत ही बेकरार होंगे; वह लौट जाएँगे, वह अचानक शर्मिन्दा होंगे।

7 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरा भरोसा तुझ पर है; सब पीछा करने वालों से मुझे

बचा और छुड़ा, 2 ऐसा न हो कि वह शेर — ऐ — बबर की तरह मेरी जान को फ़ाड़े; वह उसे टुकड़े टुकड़े कर दे और कोई छुड़ाने वाला न हो। 3 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, अगर मैंने यह किया हो, अगर मेरे हाथों से बुराई हुई हो; 4 अगर मैंने अपने मेल रखने वाले से भलाई के बदले बुराई की हो, बल्कि मैंने तो उसे जो नाहक मेरा मुखालिफ़ था, बचाया है; 5 तो दुश्मन मेरी जान का पीछा करके उसे आ पकड़े, बल्कि वह मेरी ज़िन्दगी को बर्बाद करके मिट्टी में, और मेरी 'इज्जत को खाक मैं मिला दे। (सिलाह) 6 ऐ खुदावन्द, अपने कहर में उठ; मेरे मुखालिफ़ों के गजब के मुकाबिले मैं तू खड़ा हो जा; और मेरे लिए जाग! तूने इन्साफ का हक्म तो दे दिया है। 7 तेरे चारों तरफ कौमों का इजितमा! अहो; और तू उनके ऊपर 'आतलम — ऐ — बाला को लौट जा 8 खुदावन्द, कौमों का इन्साफ करता है; ऐ खुदावन्द, उस सदाकत — ओ — रास्ती के मुताबिक जो मुझ में है मेरी'अदालत कर। 9 काश कि शरीरों की बदी का

खात्मा हो जाए, लेकिन सादिक को तू क्याम बख्श; क्यूँकि खुदा — ए — सादिक दिलों और गुर्दों को जँचता है। 10 मेरी ढाल खुदा के हाथ में है, जो रास्त दिलों को बचाता है। 11 खुदा सादिक मुस्तिष्ठ है, बल्कि ऐसा खुदा जो हर रोज़ कहर करता है। 12 अगर आदमी जाज न आए तो वह अपनी तलवार तेज़ करेगा; उसने अपनी कमान पर चिल्ला चढ़ाकर उसे तैयार कर लिया है। 13 उसने उसके लिए मौत के हथियार भी तैयार किए हैं; वह अपने तीरों को आतिशी बनाता है। 14 देखो, उसे बुराई की पैदाइश का दर्द लगा है! बल्कि वह शरारत से फलदार हआ और उससे झूट पैदा हआ। 15 उसने गढ़ा खोद कर उसे गहरा किया, और उस खन्दक में जो उसने बनाई थी खुद गिरा। 16 उसकी शरारत उल्ली उसी के सिर पर आएगी; उसका जुल्म उसी की खोपड़ी पर नाजिल होगा। 17 खुदावन्द की सदाकत के मुताबिक मैं उसका शुक्र कहूँगा, और खुदावन्द ताला के नाम की तारीफ गाँऊँगा।

8 ऐ खुदावन्द हमारे रब तेरा नाम तमाम ज़मीन पर कैसा बुज्जा है! तुम अपना जलाल आसमान पर काईम किया है। 2 तुम अपने मुखालिफों की बजह से बच्चों और शीरखारों के मुँह से कुदरत को काईम किया, ताकि तू दुश्मन और इन्तकाम लेने वाले को खामोश कर दे। 3 जब मैं तेरी आसमान पर जो तेरी दस्तकारी है, और चाँद और सितारों पर जिनको तूने मुकर्रर किया, गौर करता हूँ। 4 तो फिर इंसान क्या है कि तू उसे याद रखते, और बनी आदम क्या है कि तू उसकी खबर ले? 5 क्यूँकि तू उसे खुदा से कछ ही कमर बनाया है, और जलाल और शौकत से उसे ताजदार करता है। 6 तूने उसे अपनी दस्तकारी पर इक्षितायार बख्शा है; तुम सब कुछ उसके कंदमों के नीचे कर दिया है। 7 सब भेड़ — बकरियाँ, गाय — बैल बल्कि सब जंगली जानवर 8 हवा के परिन्दे और समन्दर की और जो कुछ समन्दरों के रास्ते में चलता फिरता है। 9 ऐ खुदावन्द, हमारे रब! तेरा नाम पूरी ज़मीन पर कैसा बुज्जा है!

9 मैं अपने प्रेरणे दिल से खुदावन्द की शुक्रुगुजारी कहूँगा; मैं तेरे सब 'अजीब कामों का बयान कहूँगा। 2 मैं तुझ में खुशी मनाऊँगा और मस्सर हँगा; ऐ हकताला, मैं तेरी सिताइश कहूँगा। 3 जब मेरे दुश्मन पीछे हटते हैं, तो तेरी हज़्री की बजह से लगाजिश खाते और हलाक हो जाते हैं। 4 क्यूँकि तूने मेरे हक की और मेरे मुँमिलों की ताईंदी की है। तूने तख्त पर बैठकर सदाकत से इन्साफ किया। 5 तुमे कौमों को झिड़का, तेरे शरीरों को हलाक किया है; तूने उनका नाम हमेशा से हमेशा के लिए मिटा डाला है। 6 दुश्मन खत्म हुए, वह हमेशा के लिए बर्बाद हो गए; और जिन शहरों को तोने डा दिया, उनकी यादारा तक मिट गई। 7 लेकिन खुदावन्द हमेशा तक तख्त नशीन है, उसने इन्साफ के लिए अपना तख्त तैयार किया है; 8 और वही सदाकत से जहान की 'अदालत करेगा, और रास्ती से कौमों का इन्साफ करेगा। 9 खुदावन्द मजल्मों के लिए ऊँचा बुर्ज होगा, मुसीबत के दिनों में ऊँचा बुर्ज। 10 और वह जो तेरा नाम जानते हैं तुझ पर भरोसा करेंगे, क्यूँकि ऐ खुदावन्द, तूने अपने चाहोंने वालों को नहीं छोड़ा। 11 खुदावन्द की सिताइश करो, जो सिय्यन्में रहता है! लोगों के बीच उसके कामों का बयान करो 12 क्यूँकि खून का पूछताछ करने वाला उनको याद रखता है; वह गरीबों की फरियाद को नहीं भलता। 13 ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर। तू जो मौत के फटकों से मझे उठाता है, मेरे उस दुख को देख जो मेरे नफरत करने वालों की तरफ से है। 14 ताकि मैं तेरी कामिल सिताइश का इजहार कहूँ। सिय्यन की बेटी के फटकों पर, मैं तेरी नजात से खुश हँगा 15 कौमें खुद उस गढ़े में गिरी हैं जिसे उन्होंने खोदा था; जो जाल उन्होंने लगाया था उसमें उन ही का पाँव फंसा। 16 खुदावन्द की शोहरत फैल गई, उसने इन्साफ किया है; शरीर अपने ही हाथ के कामों में फंस गया है। 17 शरीर पाताल में जाएँगे, यानी वह सब कौमें जो खुदा

को भूल जाती हैं (Sheol h7585) 18 क्यूँकि गरीब सदा भूले बिसरे न रहेंगे, न गरीबों की उमीद हमेशा के लिए टटेगी। 19 उठ, ऐ खुदावन्द! इंसान गालिब न होने पाए। कौमों की 'अदालत तेरे समने हो। 20 ऐ खुदावन्द! उनको खौफ दिला। कौमें अपने आपको इंसान ही जानें।

10 ऐ खुदावन्द त क्यूँ दू खड़ा रहता है? मुसीबत के बक्त तू क्यूँ छिप जाता है? 2 शरीर के गूर्ह की बजह से गरीब का तेजी से पीछा किया जाता है; जो मन्त्रे उन्होंने बोधे हैं, वह उन ही में पिरपतार हो जाएँ। 3 क्यूँकि शरीर अपनी जिसानी ख्वाहिश पर फ़ख़ करता है, और लालची खुदावन्द को छोड़ देता बल्कि उसकी नाकटी करता है। 4 शरीर अपने तकब्बलू में कहता है कि वह पूछताछ नहीं करेगा, उसका खयाल सरासर यही है कि कोई खुदा नहीं। 5 उसकी राहें हमेशा बराबर हैं, तेरे अहकाम उसकी नजर से दू — ओ — बुलन्द हैं; वह अपने सब मुखालिफों पर फ़ूकराता है। 6 वह अपने दिल में कहता है, 'मैं जुबिश नहीं खाने का; नसल दर नसल मुझ पर कभी मुसीबत न आएगी।' 7 उसका मुँह लान्त — ओ — दगा और जुल्म से भरा है; शरारत और बटी उसकी जबान पर है। 8 वह देहात की घाटों में बैठता है, वह पोशीदा मकामों में बेगुनाह को कत्तल करता है; उसकी आँखें बेकस की घाट में लगी रहती हैं। 9 वह पोशीदा मकाम में शेर — ए — बबर की तरह दुबक कर बैठता है, वह गरीब को पकड़ने की घाट लगाए रहता है; वह गरीब को अपने जाल में फ़ंसा कर पकड़ लेता है। 10 वह दुबकता है, वह झूक जाता है, और बेकस उसके पहलवानों के हाथ से मरे जाते हैं। 11 वह अपने दिल में कहता है, "खुदा भूल गया है, वह अपना मुँह छिपाता है; वह हरगिज नहीं देखेगा।" 12 उठ ऐ खुदावन्द! ऐ खुदा अपना हाथ बुलन्द कर! गरीबों को न भूल। 13 शरीर किस लिए खुदा की नाकटी करता है और अपने दिल में कहता है कि तू पूछताछ ना करेगा? 14 तुम देख लिया है क्यूँकि तू शरारत और बुज़ देखता है ताकि अपने हाथ से बदला दे। बेकस अपने आप को तेरे सिपुर्द करता है तू ही यतीम का मददगार रहा है। 15 शरीर का बाज़ तोड़ दे। और बदकर की शरारत को जब तक बर्बाद न हो ढूँढ़ — ढूँढ़ कर निकाल। 16 खुदावन्द हमेशा से हमेशा बादशाह है। कौमें उसके मुख्ल में से हलका हो गयी। 17 ऐ खुदावन्द तूने हलीमों का मुआसून लिया है तू उनके दिल को तैयार करेगा — तू कान लगा कर सुनेगा 18 कि यतीम और मजल्म का इन्साफ करे ताकि इंसान जो खाक से है फिर ना डराए।

11 मेरा भरोसा खुदावन्द पर है तुम क्यूँकर मेरी जान से कहते हो कि चिड़िया की तरह अपने पहाड़ पर उड़ जा? 2 क्यूँकि देखो! शरीर कमान खीचते हैं वह तीर को चिल्ले पर रखते हैं ताकि अँधेरे में रास्त दिलों पर चलायें। 3 अगर बुनयाद ही उखाड़ दी जाये तो सादिक क्या कर सकता है। 4 खुदावन्द अपनी पाक हैकल में है खुदावन्द का तख्त आसमान पर है। उसकी आँखें बनी आदम को देखती और उसकी पलकें उनको जाँचती हैं। 5 खुदावन्द सादिक को परखता है लेकिन शरीर और जुल्म को पसन्द करने वाले से उसकी स्थ को नकरत है 6 वह शरीरों पर फ़ंदे बरसायेगा आग और गंधक और लू उनके प्याले का हिस्सा होगा। 7 क्यूँकि खुदावन्द सादिक है वह सच्चाई को पसंद करता है रास्त बाज़ उसका दीदार हासिल करेंगे।

12 ऐ खुदावन्द! बचा ले क्यूँकि कोई दीनदार नहीं रहा और अमानत दार लोग बनी आदम में से मिट गये। 2 वह अपने अपने पड़ोसी से झूठ बोलते हैं वह खुशामदी लबों से दो रंगी बातें करते हैं 3 खुदावन्द सब खुशामदी लबों को और बड़े बोल बोलने वाली जबान को काट डालेगा। 4 वह कहते हैं, "हम अपनी जबान से जीतेंगे, हमारे होट हमारे ही हैं; हमारा मालिक कौन है?"

5 गरीबों की तबाही और गरीबों कीआह की वजह से, खुदावन्द फरमाता है, कि अब मैं उड़ूँगा और जिस पर वह फुकारते हैं उसे अम्न — ओ — अमान में रख्खूँगा। 6 खुदावन्द का कलाम पाक है, उस चाँदी की तरह जो भट्टी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार साफ की गई हो। 7 तू ही ऐ खुदावन्द उनकी हिफाजत करेगा, तू ही उनको इस नसल से हमेशा तक बचाए रखेगा। 8 जब बनी आदम में पाजीपन की कद्र होती है, तो शरीर हर तरफ चलते फिरते हैं।

13 ऐ खुदावन्द, कब तक? क्या त हमेशा मुझे भला रहेगा? तू कब तक

अपना चेहरा मुझ से छिपाए रखेगा? 2 कब तक मैं जी ही जी में मन्सूबा बांधता रहूँ, और सारे दिन अपने दिल में गम किया करूँ? कब तक मेरा दुश्मन मुझ पर सर बुलन्द रहेगा? 3 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरी तरफ तबज्जुह कर और मुझे जवाब दे। मेरी आँखें रोशन कर, ऐसा न हो कि मुझे मौत की नीट आ जाए, 4 ऐसा न हो कि मेरा दुश्मन कहे, कि मैं इस पर गालिब आ गया। ऐसा न हो कि जब मैं जुम्बिश खाँक तो मैं मुखालिक खुश हों। 5 लेकिन मैंने तो तेरी रहमत पर भरोसा किया है, मेरा दिल तेरी नजात से खुश होगा। 6 मैं खुदावन्द का हम्द गाँँगा क्यूँकि उसने मुझ पर एहसान किया है।

14 बेवकूफ ने अपने दिल में कहा है, कि कोई खुदा नहीं। वह बिगड गए,

उन्होंने नफरतअंगौज़ काम किए हैं; कोई नेकोकार नहीं। 2 खुदावन्द ने असमान पर से बनी आदम पर निगाह की ताकि देखे कि कोई अकल्मन्द, कोई खुदा का तालिब है या नहीं। 3 वह सब के सब गुमराह हुए, वह एक साथ नापाक हो गए, कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं। 4 क्या उन सब बदकिरदारों को कुछँझ्ल नहीं, जो मेरे लोगों को ऐसे खा जाते हैं जैसे रोटी, और खुदावन्द का नाम नहीं लेते? 5 वहाँ उन पर बड़ा खोफ़ छा गया, कर्दैके खुदा सादिक नसल के साथ है। 6 तुम गरीब की मश्वरत की हँसी उड़ाते हो; इसलिए के खुदावन्द उसकी पनाह है। 7 काश कि इसाईल की नजात सिय्यन में से होती। जब खुदावन्द अपने लोगों को गुलामी से लौटा लाएगा, तो याकूब खुश और इसाईल शादमान होगा।

15 ऐ खुदावन्द तेरे खेमे में कौन रहेगा? तेरे पाक पक्हाड पर कौन सुकूनत

करेगा? 2 वह जो रस्ती से चलता और सदाकत का काम करता, और दिल से सच बोलता है। 3 वह जो अपनी ज़बान से बहुतान नहीं बांधता, और अपने दोस्त से बटी नहीं करता, और अपने पड़ोसी की बदनामी नहीं सुनता। 4 वह जिसकी नजर में रज्जिल आदमी हकीर है, लेकिन जो खुदावन्द से डरते हैं उनकी 'इज्जत करता है'; वह जो कसम खाकर बदलता नहीं चाहे नुकसान ही उठाए। 5 वह जो अपना स्थाया सूद पर नहीं देता, और बेगुनाह के खिलाफ़ श्वित नहीं लेता। ऐसे काम करने वाला कभी जुम्बिश न खाएगा।

16 ऐ खुदा मेरी हिफाजत कर, क्यूँकि मैं तुझ ही में पनाह लेता हूँ। 2 मैंने

खुदावन्द से कहा "तू ही रब है तेरे अलावा मेरी भलाई नहीं।" 3 ज़मीन के पाक लोग वह बरगुजीदा हैं, जिनमें मेरी पूरी खुशनदी है। 4 गैर मांबदों के पीछे दौड़ने वालों का गम बढ़ जाएगा; मैं उनके से ख्वन वाले तपाबन नहीं तपाऊँगा और अपने होटों से उनके नाम नहीं लूँगा। 5 खुदावन्द ही मेरी मीरास और मेरे प्याले का हिस्सा है, तू मेरे बख़रे का मुहाफिज है। 6 ज़रीब मेरे लिए दिलपसंद जगहों में पड़ी, बल्कि मेरी मीरास ख़ब है। 7 मैं खुदावन्द की हम्द करूँगा, जिसने, मुझे नसीहत दी है; बल्कि मेरा दिल रात को मेरी तरबियत करता है 8 मैंने खुदावन्द को हमेशा अपने सामने रखा है, चैकैंकि वह मेरे दर्दने हाथ है, इसलिए मुझे जुम्बिश न होगी। 9 इनी वजह से मेरा दिल खुश और मेरी स्तर शादमान है; मेरा जिस्म भी अम्न — ओ — अमान में रहेगा। 10 क्यूँकि तू

न मेरी जान को पाताल में रहने देगा, न अपने मुक़द्दस को सड़ने देगा। (Sheol h7585) 11 तू मुझे ज़िन्दगी की राह दिखाएगा, तौरे हज़रमें कामिल शादमानी है। तेरे दर्दने हाथ में हमेशा की खुशी है।

17 ऐ खुदावन्द, हक्क को सुन, मेरी फरियाद पर तबज्जुह कर। मेरी दुआ

पर, जो दिखावे के हॉटों से निकलती है कान लगा। 2 मेरा फैसला तेरे सामने से जाहिर हो! तेरी आँखें रास्ती को देखें! 3 तने मेरे दिल को आजमा लिया है, तने रात को मेरी निगरानी की; तने मुझे परखा और कछ खोट न पाया, मैंने ठान लिया है कि मेरा मूँह खता न करे। 4 इंसानी कामों में तेरे लबों के कलाम की मदद से मैं ज़ालिमों की राहों से बाज़ रहा हूँ। 5 मेरे कदम तेरे रस्तों पर काईम रहे हैं, मेरे पाँव फिसले नहीं। 6 ऐ खुदा, मैंने तुझ से दुआ की है कर्मूकि तू मुझे जवाब देगा। मेरी तरफ कान झक्का और मेरी 'अर्ज' सुन ले। 7 तू जो अपने दर्दने हाथ से अपने भरोसा करने वालों को उनके मुखालिकों से बचाता है, अपनी 'अजीब शफ़कत दिखा। 8 मुझे आँख की पुतली की तरह महफ़ज़र रख; मुझे अपने परों के साथ मैं छिपा ले, 9 उन शरीरों से जो मुँह पर ज़ल्म करते हैं, मेरे जानी दुश्मनों से जो मुझे धेर हुए हैं। 10 उन्होंने अपने दिलों को सज़ल किया है, वह अपने मूँह से बड़ा बोल बोलते हैं। 11 उन्होंने कदम कदम पर हम को धेरा है; वह ताक लगाए हैं कि हम को ज़मीन पर पटक दें। 12 वह उस बबर की तरह है जो फ़ाइने पर लालची हो, वह जैसे ज़बान बबर है जो पोशीदा जगहों में दुबका हुआ है। 13 उठ, ऐ खुदावन्द! उसका सामना कर, उसे पटक दे! अपनी तलवार से मैंनी जान को शरीर से बचा ले। 14 अपने हाथ से ऐ खुदावन्द! मुझे लोगों से बचा। यानी दुनिया के लोगों से, जिनका बखरा इसी ज़िन्दगी में है, और जिनका पेट तू अपने ज़खरी से भरता है। उनकी ओलाद भी हस्त — ए — मुराद है; वह अपना बाकी माल अपने बच्चों के लिए छोड़ जाते हैं 15 लेकिन मैं तो सदाकत में तेरा दीदार हासिल करूँगा; मैं जब जाँगूँगा तो तेरी शबाह से सेरे रँगँग।

18 ऐ खुदावन्द, ऐ मेरी ताकत! मैं तुझसे मुहब्बत रखता हूँ। 2 खुदावन्द मेरी

चढ़ान, और मेरा किला और मेरा छुड़ाने वाला है, मेरा खुदा, मेरी चढ़ान जिस पर मैं भरोसा रखूँगा, मेरी ढाल और मेरी नजात का सीग, मेरा ऊँचा बूँज। 3 मैं खुदावन्द को, जो सिताइश के लायक है पुकासँगा। यूँ मैं अपने दुश्मनों से बचाया जाऊँगा। 4 मौत की रसिसियों ने मुझे घेर लिया, और बेदीनी के सैलाबों ने मुझे डराया; 5 पाताल की रसिसियाँ मेरे चारों तरफ थीं, मौत के फंदे मुझ पर आ पड़े थे। (Sheol h7585) 6 अपनी मुसीबत में मैंने खुदावन्द को पुकारा: और अपने खुदा से फरियाद की; उसने अपनी हैकल में से मेरी आवाज सुनी, और मेरी फरियाद जो उसके सामने थी, उसके कान में पहुँची। 7 तब ज़मीन हिल गई और कॉप उठी, पहाड़ों की बुनियादों ने जुम्बिश खाई और हिल गई, इसलिए कि वह गजबनाक हुआ। 8 उसके नथनों से धुँवाँ उठा, और उसके मूँह से आग निकलकर भस्म करने लगी; कोयले उससे दहक उठे। 9 उसने आसमानों को भी झक्का दिया और नीचे उतर आया; और उसके पाँव तले गहरी तारीकी थी। 10 वह करूँबी पर सवार होकर उड़ा, बल्कि वह तेजी से हवा के बाज़ों पर उड़ा। 11 उसने ज़ल्मत यानी बादल की तारीकी और आसमान के दलदार बादलों को अपने चारों तरफ आने छिपने की जगह और अपना शामियाना बनाया। 12 उसकी हज़री की झलक से उसके दलदार बादल फट गए, ओले और अंगारे। 13 और खुदावन्द आसमान में गरजा, हक्क ताला ने अपनी आवाज सुनाई, ओले और अंगारे। 14 उसने अपने तीर चलाकर उनको तिर बितर किया, बल्कि ताबड़ तोड़ बिजली से उनको शिक्कर दी। 15 तब तेरी डॉट से ऐ खुदावन्द! तेरे नथनों के दम के झोके से, पानी की थार दिखाई

देने लगी और जहान की बुनियादें नमूदार हुईं। 16 उसने ऊपर से हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और मुझे बहत पानी में से खींचकर बाहर निकाला। 17 उसने मेरे ताकतवर दुश्मन और मेरे 'अदावत रखने वालों से मुझे छुड़ा लिया, क्यूंकि वह मेरे लिए बहत ही ज़बरदस्त थे। 18 वह मेरी मुसीबत के दिन मुझ पर आ पड़े; लेकिन खुदावन्द मेरा सहारा था। 19 वह मुझे कुशादा जगह में निकाल भी लाया। उसने मुझे छुड़ाया, इसलिए कि वह मुझ से खुश था। 20 खुदावन्द ने मेरी रास्ती के मुवाफिक मुझे बदला दिया: और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक मुझे बदला दिया। 21 क्यूंकि मैं खुदावन्द की राहों पर चलता रहा, और शरात से अपने खुदा से अलग न हुआ। 22 क्यूंकि उसके सब फैसले मेरे सामने रहे, और मैं उसके आईन से नाफरमान न हुआ। 23 मैं उसके सामने कामिल भी रहा, और अपने को अपनी बदकारी से रोके रखवा। 24 खुदावन्द ने मुझे मेरी रास्ती के मुवाफिक और मेरे हाथों की पाकीज़गी के मुताबिक जो उसके सामने थी बदला दिया। 25 रहम दिल के साथ त रहीम होगा, और कामिल आदमी के साथ कामिल। 26 नेकोकार के साथ नेक होगा, और कजरों के साथ टेढ़ा। 27 क्यूंकि तु मुसीबत जदा लोगों को बचाएगा; लेकिन मास्टरों की आँखों को नीचा करेगा। 28 इसलिए के तू मेरे चराग को रैशन करेगा; खुदावन्द मेरा खुदा मेरे अंदरे को उजाला कर देगा। 29 क्यूंकि तेरी बदौलत मैं फौज पर धावा करता हूँ। और अपने खुदा की बदौलत दीवार पाँड़ जाता हूँ। 30 लेकिन खुदा की राह कामिल है; खुदावन्द का कलाम ताया हुआ है; वह उन सबकी ढाल है जौ उस पर भरोसा रखते हैं। 31 क्यूंकि खुदावन्द के अलावा और कौन खुदा है? और हमारे खुदा को छोड़कर और कौन चट्ठान है? 32 खुदा ही मुझे ताकत से कमर बस्ता करता है, और मेरी राह को कामिल करता है। 33 वही मेरे पाँव हिरनीयों के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में काईम करता है। 34 वह मेरे हाथों को जंग करना सिखाता है, यहाँ तक कि मेरे बाज़ पीतल की कमान को झुका देते हैं। 35 तूने मुझ को अपनी नजात की ढाल बख्ती, और तेरे दहने हाथ ने मुझे संभाला, और तेरी नामि ने मुझे बुजूर्ग बनाया है। 36 तूने मेरे नीचे, मेरे कदम कुशादा कर दिए; और मेरे पाँव नहीं फिसरे। 37 मैं अपने दुश्मनों का पीछा करके उनको जा लौँगा; और जब तक वह फना न हो जाएँ, वापस नहीं आऊँगा। 38 मैं उनको ऐसा छेदुँगा कि वह उठ न सकेंगे, वह मेरे पाँव के नीचे पिर पड़ेंगे। 39 क्यूंकि तूने लड़ाई के लिए मुझे ताकत से कमरबस्ता किया; और मेरे मुखालिफों को मेरे सामने नीचा दिखाया। 40 तूने मेरे दुश्मनों की नसल मेरी तरफ फेर दी, ताकि मैं अपने 'अदावत रखने वालों को काट डालूँ। 41 उन्होंने दुहाइ दी लेकिन कोई न था जो बचाएँ, खुदावन्द को भी पुकारा लेकिन उसने उनको जबाब न दिया। 42 तब मैंने उनको कृट कृट कर हवा में उड़ती हीई गर्द की तरह कर दिया; मैंने उनको गली कूरों की कीचड़ की तरह निकाल फेका। 43 तूने मुझे क्रौम के इगाड़ों से भी छुड़ाया; तो मुझे क्रौमों का सरदार बनाया है; जिस क्रौम से मैं वाकिफ भी नहीं वह मेरी फर्माबरदार होगी। 44 मेरा नाम सुनते ही वह मेरी फर्माबरदारी कोंगे; परदेसी मेरे ताबे' हो जाएँगे। 45 परदेसी मुराज़ा जाएँगे, और अपने किंतु से थरथरते हुए निकलेंगे। 46 खुदावन्द जिन्दा है! मेरी चट्ठान मुबारक हो, और मेरा नजात देने वाला खुदा मुमताज हो। 47 वही खुदा जो मेरा इन्तकाम लेता है; और उम्मतों को मेरे सामने नीचा करता है। 48 वह मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ाता है; बल्कि तू मुझे मेरे मुखालिफों पर सफरराज करता है। तू मुझे टेढ़े आदमी से रिहाई देता है। 49 इसलिए ऐ खुदावन्द! मैं क्रौमों के बीच तेरी शुक्रगुजारी, और तेरे नाम की मदहसराई करूँगा। 50 वह अपने बादशाह को बड़ी नजात 'इन्यात करता है, और अपने मम्सूह दाऊद और उसकी नसल पर हमेशा शफकत करता है।

19 आसमान खुदा का जलाल जाहिर करता है; और फज्जा उसकी दस्तकारी दिखाती है। 2 दिन से दिन बात करता है, और रात को रात हिकमत सिखाती है। 3 न बोलना है न कलाम, न उनकी आवाज सुनाई देती है। 4 उनका सुर सारी ज़मीन पर, और उनका कलाम दुनिया की इन्तिहा तक पहुँचा है। उसने आफताब के लिए उनमें खेमा लगाया है। 5 जो दूर्वे की तरह अपने त्रिलोकताने से निकलता है। और पहलवान की तरह अपनी टौड़ में दौड़ने का खुश है। 6 वह आसमान की इन्तिहा से निकलता है, और उसकी गश्त उसके किनारों तक होती है; और उसकी हरारत से कोई चीज़ बे बहरा नहीं। 7 खुदावन्द की शरीरी अत कामिल है, वह जान को बहाल करती है; खुदावन्द कि शहादत बरहक है नादान को दानिश बरबाती है। 8 खुदावन्द के कवानीन रास्त हैं, वह दिल को फरहत पहुँचाते हैं; खुदावन्द का हृक्ष बोरेब है, वह आँखों की रौशन करता है। 9 खुदावन्द का खौफ पाक है, वह अबद तक काईम रहता है; खुदावन्द के अहकाम बरहक और बिल्कुल रास्त है। 10 वह सोने से बल्कि बहुत कुन्दन से ज़यदा पसांदीदा है; वह शहद से बल्कि छेते के टपकों से भी शरीरिन है। 11 नीज उन से रेरे बन्दे को आगाही मिलती है; उनको मानने का अज्ञ बड़ा है। 12 कौन अपनी भलचक को जान सकता है? तू मुझे पोशादा 'ऐंबों से पाक कर। 13 तू अपने बोटे को बे — बाकी के गुहाहों से भी बाज़ रख; वह मुझ पर गालिब न आँ तो मैं कामिल हूँगा, और बड़े गुहाह से बचा रहूँगा। 14 मेरे मुँह का कलाम और मेरे दिल का खयाल तेरे सामने मक्कल ठहरे; ऐ खुदावन्द! ऐ मेरी चट्ठान और मेरे फिदिया देने वाले।

20 मुसीबत के दिन खुदावन्द तेरी सुने। याँकूब के खुदा का नाम तुझे बुलन्दी पर काईम करे! 2 वह मकदिस से रेरे लिए मदर भेजे, और सिय्यन से तुझे कुक्ष्वत बख्त! 3 वह तेरे सब हदियों को याद रखते, और तेरी सोखलनी कुर्बानी को कुबल करे! (सिलाह) 4 वह रेरे दिल की आरज़ पूरी करे, और तेरी सब मश्वरत पूरी करे! 5 हम तेरी नजात पर खुशी मनाएँगे, और अपने खुदा के नाम पर झाड़े खड़े करेंगे। खुदावन्द तेरी तमाम दरखास्तें पूरी करे! 6 अब मैं जान गया कि खुदावन्द अपने मम्सूह को बचा लेता है, वह अपने दहने हाथ की नजात बख्त ताकत से अपने पाक आसमान पर से उसे जबाब देगा। 7 किंती को रथों का और किंती को घोड़ों का भरोसा है, लेकिन हम तो खुदावन्द अपने खुदा ही का नाम लेंगे। 8 वह तो ज़ुके और पिर पड़े; लेकिन हम उठे और सीधे खड़े हैं। 9 ऐ खुदावन्द! बचा ले; जिस दिन हम पुकारें, तो बादशाह हमें जबाब दे।

21 ऐ खुदावन्द! तेरी ताकत से बादशाह खुश होगा; और तेरी नजात से उसे बहुत खुशी होगी। 2 तूने उसके दिल की आरज़ पूरी की है, और उसके मुँह की दरखास्त को नामंजर नहीं किया। (सिलाह) 3 क्यूंकि तू उसे 'उम्दा बरकतें बख्तने में पेश कदमी करता, और खालिस सोने का ताज उसके सिर पर रखता है। 4 उसने तुझ से ज़िन्दगी चाही और तेरे बख्ती, बल्कि उग्र की दराजी हमेशा के लिए। 5 तेरी नजात की बजह से उसकी शौकत 'अजीम है; तू उसे हमशत — ओ — जलाल से आरास्ता करता है। 6 क्यूंकि तू हमेशा के लिए उसे बरकतों से मालामाल करता है; और अपने सामने उसे खुश — ओ — खुर्म रखता है। 7 क्यूंकि बादशाह का भरोसा खुदावन्द पर है; और हकताला की शफकत की बदौलत उसे हरगिज जुम्बिश न होगी। 8 तेरा हाथ तेरे सब दुश्मनों को ढूँड निकालेगा, तेरा दहना हाथ तुझ से कीना रखेंगे वालों का पाता लगा लेगा। 9 तू अपने कहर के बरकत उनको जलते तनूर की तरह कर देगा। खुदावन्द अपने गज़ब में उनको निगल जाएगा, और आग उनको खा जाएगी। 10 तू उनके फल को ज़मीन पर से बर्बाद कर देगा, और उनकी नसल को बनी आदम में से। 11 क्यूंकि उन्होंने तुझ से बदी करना चाहा, उन्होंने ऐसा मन्सूबा

बाँधा जिसे वह पूरा नहीं कर सकते। 12 क्यूँकि तू उनका मुँह फेर देगा, तू उनके मुकाबले में अपने चिल्ले चढ़ाएगा। 13 ऐ खुदावन्द, तू अपनी ही ताकत में सरबुलन्द हो! और हम गाकर तेरी कुदरत की सिताइश करेंगे।

22 ऐ मेरे खुदा! ऐ मेरे खुदा! तूने मुझे क्यूँ छोड़ दिया? तू मेरी मदद और मेरी जाला — ओ — फरियाद से क्यूँ दूर रहता है? 2 ऐ मेरे खुदा! मैं दिन को एकारता हूँ लेकिन तू जबाब नहीं देता और रात को भी और खामोश नहीं होता। 3 लेकिन तू पाक है तू जो इसाईल के हादो — ओ — सना पर तख्तनशीन है। 4 हमारे बाप दादा ने तुझ पर भरोसा किया; उन्होंने भरोसा किया और तूने उसको छुड़ाया। 5 उन्होंने तुझ से फरियाद की और रिहाई पाई, उन्होंने तुझ पर भरोसा किया और शर्मिंदा न हुए। 6 लेकिन मैं तो किंडा हूँ, इंसान नहीं; आदमियों में अनुशृणुता हूँ और लोगों में हकीर। 7 वह सब जो मुझे देखते हैं, मेरा मजाक उड़ते हैं; वह मुँह चिढ़ते, वह सर हिलाकर कहते हैं, 8 “अपने को खुदावन्द के सुर्दू कर दे वही उसे छुड़ाए। जब कि वह उससे खुश है तो वही उसे छुड़ाए।” 9 लेकिन तू ही मुझे पेट से बहार लाया; जब मैं छोटा बच्चा ही था, तूने मुझे भरोसा करना सिखाया। 10 मैं पैदाइश ही से तुझ पर छोड़ा गया, मेरी माँ के पेट ही से तू मेरा खुदा है। 11 मुझ से दूर न हर क्यूँकि मुसीबत कीब है, इसलिए कि कोई मददगार नहीं। 12 बहत से सौंडों ने मुझे धेर लिया है, बसन के ताकतवर सॉँड मुझे धेर हुए हैं। 13 वह फाड़ने और गरजने वाले बबर की तरह मुझ पर अपना मूँह पसारे हुए हैं। 14 मैं पानी की तरह बह गया मेरी सब हड्डियाँ उछड़ गईं। मेरा दिल भोम की तरह हो गया, वह मेरे सीने में पिघल गया। 15 मेरी ताकत ठीकरे की तरह खुशक हो गई, और मेरी जबान मेरे तालू से चिपक गई; और तूने मुझे मौत की खाक में मिला दिया। 16 क्यूँकि कुत्तों ने मुझे धेर लिया है; बदकरों की पिरोह मुझे धेरे हुए हैं; वह हाथ और मेरे पाँव छेदते हैं। 17 मैं अपनी सब हड्डियाँ गिन सकता हूँ, वह मुझे ताकते और घृते हैं। 18 वह मेरे कपड़े आपस में बॉटे हैं, और मेरी पोशाक पर पच्ची डालते हैं। 19 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, दूर न रह! ऐ मेरे चारासाज़, मेरी मदद के लिए जल्दी कर! 20 मेरी जान को तलवार से बचा, मेरी जान को कुत्ते के काबू से। 21 मुझे बबर के मुँह से बचा, बल्कि तूने सौंडों के सींगों में से मुझे छुड़ाया है। 22 मैं अपने भाइयों से तेरे नाम का इजहार करूँगा; जामा’ अत में तेरी सिताइश करूँगा। 23 ऐ खुदावन्द से डरने वालों, उसकी सिताइश करो! ऐ याँकूब की औलाद, सब उसकी तम्जीद करो! और ऐ इसाईल की नसल, सब उसका डर मानो! 24 क्यूँकि उसने न तो मुसीबत जदा की मुसीबत को हकीर जाना न उससे नफरत की, न उससे अपना मुँह छिपाया; बल्कि जब उसने खुदा से फरियाद की तो उसने सुन ली। 25 बड़े मज्जों में मेरी सना ख्वानी का जरिया! 26 हलीम खाएँगे और सेर होंगे; खुदावन्द के तालिक उसकी सिताइश करेंगे। तुम्हारा दिल हमेशा तक जिन्दा रहे। 27 सारी दुनिया खुदावन्द को याद करेगी और उसकी तरफ रस्जू लाएगी; और कौमों के सब धाराने तेरे सामने सिज्जा करेंगे। 28 क्यूँकि सल्तनत खुदावन्द की है, वही कौमों पर हाकिम है। 29 दुनिया के सब आसदा हाल लोग खाएँगे और सिज्जा करेंगे; वह सब जो खाक में मिल जाते हैं उसके सामने झक्केंगे, बल्कि वह भी जो अपनी जान को जिन्दा नहीं रख सकता। 30 एक नसल उसकी बन्दी करेगी; दूसरी नसल को खुदावन्द की खबर दी जाएगी। 31 वह आँगे और उसकी सदाकत को एक कौम पर जो पैदा होगी यह कहकर जाहिर करेंगे कि उसने यह काम किया है।

23 खुदावन्द मेरा चौपान है, मुझे कमी न होगी। 2 वह मुझे हरी हरी चरागाहों में बिठाता है; वह मुझे राहत के चश्मों के पास ले जाता है; 3

वह मेरी जान को बहाल करता है। वह मुझे अपने नाम की खातिर सदाकत की राहों पर ले चलता है। 4 बल्कि चाहे मौत के साथे की वादी मैं से मेरा गुज़र हो, मैं किसी बला से नहीं डस्गंगा, क्यूँकि तू मेरे साथ है; तेरे ‘असा और तेरी लाठी में मुझे तसल्ली है। 5 तू मेरे दुश्मनों के सामने मेरे आगे दस्तरखान बिछाता है। 6 यकीन भलाई और रहमत उप्र भर मेरे साथ साथ रहेंगी; और मैं हमेसा खुदावन्द के घर में सकृन्त करूँगा।

24 ज़मीन और उसकी माँसुरी खुदावन्द ही की है, जहान और उसके बाशिने भी। 2 क्यूँकि उसने समन्दरों पर उसकी बुनियाद रखी और सैलाबों पर उसे काईम किया। 3 खुदावन्द के पहाड़ पर कौन चढ़ेगा? और उसके पाक मकाम पर कौन खड़ा होगा? 4 वही जिसके हाथ साफ है और जिसका दिल पाक है, जिसने बकवास पर दिल नहीं लगाया, और मक्क से कसम नहीं खाई। 5 वह खुदावन्द की तरफ से बरकत पाएगा, हाँ अपने जनात देने वाले खुदा की तरफ से सदाकत। 6 यही उसके तालिबों की नसल है, यहीं तेरे दीदार के तलबगार हैं याँनी याँकूब। (सिलाह) 7 ऐ फाटको, अपने सिर बुलन्द करो। ऐ अबदी दरवाज़ो, ऊँचे हो जाओ! और जलाल का बादशाह दाखिल होगा। 8 यह जलाल का बादशाह कौन है? खुदावन्द जो कवी और कादिर है, खुदावन्द जो जंग में ताकतवर है। 9 ऐ फाटको, अपने सिर बुलन्द करो! ऐ अबदी दरवाज़ो, उनको बुलन्द करो! और जलाल का बादशाह दाखिल होगा। 10 यह जलाल का बादशाह कौन है? लश्करों का खुदावन्द, वही जलाल का बादशाह है। (सिलाह)

25 ऐ खुदावन्द! मैं अपनी जान तेरी तरफ उठाता हूँ। 2 ऐ मेरे खुदा, मैंने तुझ पर भरोसा किया है, मुझे शर्मिंदा न होने दे: मेरे दुश्मन मुझ पर खुशी न मनाएँ। 3 बल्कि जो तेरे मून्तजिर है उनमें से कोई शर्मिंदा न होगा; लेकिन जो नाहक बेवफाई करते हैं वही शर्मिंदा होंगे। 4 ऐ खुदावन्द, अपनी राहें मुझे दिखा; अपने रास्ते मुझे बता दो। 5 मुझे अपनी सच्चाई पर चला और ताँलीम दे, क्यूँकि तू मेरा नजात देने वाला खुदा है, मैं दिन भर तेरा ही मून्तजिर रहता हूँ। 6 ऐ खुदावन्द, अपनी रहमतों और शफकतों को याद फरमा; क्यूँकि वह शूरू से है। 7 मेरी जवानी की खताओं और मेरे गुनाहों को याद न कर; ऐ खुदावन्द, अपनी नेकी की खातिर अपनी शफकत के मूताबिक मुझे याद फरमा। 8 खुदावन्द नेक और रास्त है; इसलिए वह गुनहगारों को राह — ए — हक की तालीम देगा। 9 वह हलीमों को इन्साफ की हिदायत करेगा, हाँ, वह हलीमों को अपनी राह बताएगा। 10 जो खुदावन्द के ‘अहद और उसकी शहादतों को मानते हैं, उनके लिए उसकी सब राहें शफकत और सच्चाई हैं। 11 ऐ खुदावन्द, अपने नाम की खातिर मेरी बदकरी मूँआफ कर दे क्यूँकि वह बड़ी है। 12 वह कौन है जो खुदावन्द से डरता है? खुदावन्द उसको उसी राह की ताँलीम देगा जो उसे पसंद है। 13 उसकी जान राहत में रहेगी, और उसकी नसल ज़मीन की वारिस होगी। 14 खुदावन्द के राज को वही जानते हैं जो उससे डरते हैं, और वह अपना ‘अहद उनको बताएगा। 15 मेरी आँखें हमेशा खुदावन्द की तरफ लगी रहती हैं, क्यूँकि वही मेरा पाँव दाम से छुड़ाएगा। 16 मेरी तरफ मूतवज्जिह हो और मुझ पर रहम कर, क्यूँकि मैं बेकस और मूरीबत जदा हूँ। 17 मेरे दिल के दुख बढ़ गए, तू मुझे मेरी तकलीफों से रिहाई दे। 18 तू मेरी मूरीबत और जॉफिशानी को देख, और मेरे सब गुनाह मूँआफ फरमा। 19 मेरे दुश्मनों को टेख बूँकूक वह बहत है और उनको मुझ से सख्त ‘अदावत है। 20 मेरी जान की हिफाजत कर, और मुझे छुड़ा; मुझे शर्मिंदा न होने दे, क्यूँकि मेरा भरोसा तुझ ही पर है। 21 दियानतदारी और रास्तबाज़ी मुझे सलामत रखें,

क्यूंकि मुझे तेरी ही आस है। 22 ऐ खुदा, इसाईल को उसके सब दुखों से छुड़ा ले।

26 ऐ खुदावन्द, मेरा इन्साफ कर, क्यूंकि मैं रास्ती से चलता रहा हूँ, और मैंने खुदावन्द पर बे लगाजिश भरोसा किया है। 2 ऐ खुदावन्द, मुझे जाँच और आजमा; मेरे दिल — ओ — दिमाग को परख। 3 क्यूंकि तेरी शफकत मेरी आँखों के सामने है, और मैं तेरी सच्चाई की राह पर चलता रहा हूँ। 4 मैं बेहदा लोगों के साथ नहीं बैठा, मैं रियाकारों के साथ कहीं नहीं जाऊँगा। 5 बदकिरदारों की जमांत से मुझे नफरत है, मैं शरीरों के साथ नहीं बैठूँगा। 6 मैं बैंगुनाही में अपने हाथ थोड़ेगा, और ऐ खुदावन्द, मैं तेरे मज़बूत का तवाफ़ करूँगा; 7 ताकि शक्रगुजारी की आवाज बुलन्द करूँ, और तेरे सब 'अजीब कामों को बयान करूँ। 8 ऐ खुदावन्द, मैं तेरी स्कूनतगाह, और तेरे जलाल के खेमे को 'अजीज रखता हूँ। 9 मेरी जान को गुरहगारों के साथ, और मेरी जिन्दगी को खूनी आदमियों के साथ न मिला। 10 जिनके हाथों में शरारत है, और जिनका दहना हाथ रिश्वतों से भरा है। 11 लेकिन मैं तेरे रास्ती से चलता रहूँगा। मुझे छुड़ा ले और मुझ पर रहम कर। 12 मेरा पाँव हमवार जगह पर काईम है। मैं जमांतों में खुदावन्द को मुबारक कहूँगा।

27 खुदावन्द मेरी रोशनी और मेरी नजात मुझे किसकी दहशत? खुदावन्द मेरी जिन्दगी की ताकत है, मुझे किसका डर? 2 जब शरीर यांनी मेरे मुखालिफ़ और मेरे दुश्मन, मेरा गोश खाने को मुझ पर चढ़ आए तो वह ठोकर खाकर गिर पड़े। 3 चाहे मैं खिलाफ़ लश्कर खेमाजन हो, मेरा दिल नहीं डेरेगा। चाहे मेरे मुकाबले में जंग खड़ी हो, तोभी मैं मुत्तम'इन रहूँगा। 4 मैंने खुदावन्द से एक दरखास्त की है, मैं इसी का तालिब रहूँगा; कि मैं उप्र भर खुदावन्द के घर में रहूँ, ताकि खुदावन्द के जमाल को देखूँ और उसकी हैकल में इस्तिफ़ार किया करूँ। 5 क्यूंकि मुसीबत के दिन वह मुझे अपने शमियानों में पोशादा रखेगा; वह मुझे अपने खेमे के पर्दे में छिपा लेगा, वह मुझे चटान पर चढ़ा देगा 6 अब मैं अपने चारों तरफ के दुश्मनों पर सरफराज किया जाऊँगा; मैं उसके खेमे में खुशी की कुर्बानियाँ पेंश करूँगा; मैं गाँठा, मैं खुदावन्द की मदहसराई करूँगा। 7 ऐ खुदावन्द, मेरी आवाज सुन! मैं पुकारता हूँ। मुझ पर रहम कर और मुझे जवाब दे। 8 जब तूने फरमाया, कि मेरे दीदार के तालिब हो; तो मेरे दिल ने तुझ से कहा, ऐ खुदावन्द, मैं तेरे दीदार का तालिब रहूँगा। 9 मुझ से चेहरा न छिपा। अपने बन्दे को कहर से न निकाल। तू मेरा मददगार रहा है; न मुझे तर्क कर, न मुझे छोड़, ऐ मेरे नजात देने वाले खुदा।! 10 जब मेरा बाप और मेरी माँ मुझे छोड़, ऐ मेरे नजात देने वाले खुदा।! 11 ऐ खुदावन्द, मुझे अपनी राह बता, और मेरे दुश्मनों की वजह से मुझे हमवार रास्ते पर चला। 12 मुझे मेरे मुखालिफ़ों की मर्जी पर न छोड़, क्यूंकि ज्ञाटे गवाह और ब्रेस्मी से पुकारने वाले मेरे खिलाफ़ उठे हैं। 13 अगर मुझे यकीन न होता कि जिन्दों की ज़मीन में खुदावन्द के एहसान को देखूँगा, तो मुझे गश आ जाता। 14 खुदावन्द की उम्मीद रख; मज़बूत हो और तेरा दिल कबी हो; हाँ, खुदावन्द ही की

उनके हाथों के कामों के मुताबिक उनसे सुलूक कर; उनके किए का बदला उनको दे। 5 वह खुदावन्द के कामों और उसकी दस्तकारी पर ध्यान नहीं करते, इसलिए वह उनको गिरा देगा और फिर नहीं उठाएगा। 6 खुदावन्द मुबारक है, इसलिए के उसने मेरी मिन्त की आवाज सुन ली। 7 खुदावन्द मेरी ताकत और मेरी ढाल है; मेरे दिल ने उस पर भरोसा किया है, और मुझे मदद मिली है। इसलिए मेरा दिल बहुत खुश है; और मैं गीत गाकर उसकी सिताइश करूँगा। 8 खुदावन्द उनकी ताकत है, वह अपने मम्सूह के लिए नजात का किला' है। 9 अपनी उम्मत को बचा, और अपनी मीरास को बरकत दे; उनकी पासबानी कर, और उनको हमेशा तक संभले रह।

29 ऐ फरिश्तों की जमांत खुदावन्द ही की तम्जीद — ओ — ताजीम करो। 2 खुदावन्द की ऐसी तम्जीद करो, जो उसके नाम के शर्याँ है। पाक आराइश के साथ खुदावन्द को सिज्दा करो। 3 खुदावन्द की आवाज बाल्दलों पर है; खुदा — ए — जुलजाल गरजता है, खुदावन्द पानी से भरे बाल्दलों पर है। 4 खुदावन्द की आवाज में कुदरत है; खुदावन्द की आवाज में जलाल है। 5 खुदावन्द की आवाज देवदारों को तोड़ डालती है; बल्कि खुदावन्द लुबनान के देवदारों को टुकड़े टुकड़े कर देता है। 6 वह उनको बछड़े की तरह, लुबनान और सिरयून को जंगली बछड़े की तरह कुदाता है। 7 खुदावन्द की आवाज आग के शोलों को चीरती है। 8 खुदावन्द की आवाज बीरान को हिला देती है; खुदावन्द कादिस के बीरान को हिला डालता है। 9 खुदावन्द की आवाज से हिरनीयों के हमल गिर जाते हैं, और वह जंगलों को बेर्बां कर देती है; उसकी हैकल में हर एक जलाल ही जलाल पुकारता है। 10 खुदावन्द टूफान के बक्त तख्तनशीन था; बल्कि खुदावन्द हमेशा तक तख्तनशीन है। 11 खुदावन्द अपनी उम्मत को ज़ोर बख्शेगा; खुदावन्द अपनी उम्मत को सलामती की बरकत देगा।

30 ऐ खुदावन्द, मैं तेरी तम्जीद करूँगा; क्यूंकि तूने मुझे सरफराज किया है; और मेरे दुश्मनों को मुझ पर खुश होने न दिया। 2 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा!, मैंने तुझ से फरियाद की और तूने मुझे शिका बज़री। 3 ऐ खुदावन्द, तू मेरी जान को पाताल से निकाल लाया है; तूने मुझे जिन्दा रखवा है कि कब्र में न जाऊँ। (Sheol h7585) 4 खुदावन्द की सिताइश करो, ऐ उसके पाक लोगों! और उसके पाकीजीनी को याद करके शक्रगुजारी करो। 5 क्यूंकि उसका कहर दम भर का है, उसका करम उप्र भर का। रात को शायद रोना पड़े पर सुबह को खुशी की नौतर आती है। 6 मैंने अपनी इकबालमंटी के बक्त यह कहा था, कि मुझे कभी जुम्बिश न होगी। 7 ऐ खुदावन्द, तूने अपने करम से मेरे पहाड़ को काईम रख्खा था; जब तूने अपना चेहरा छिपाया तो मैं घबरा उठा। 8 ऐ खुदावन्द, मैंने तुझ से फरियाद की; मैंने खुदावन्द से मिन्त की, 9 जब मैं कब्र में जाऊँ तो मेरी मौत से क्या फायदा? क्या खाक तेरी सिताइश करेगी? क्या वह तेरी सच्चाई को बयान करेगी? 10 सुन ले ऐ खुदावन्द, और मुझ पर रहम कर; ऐ खुदावन्द, तू मेरा मददगार हो। 11 तूने मेरे मातम को नाच से बदल दिया; तूने मेरा टाट उतार डाला और मुझे खुशी से कमरबस्ता किया, 12 ताकि मेरी स्त्र तेरी मदहसराई करे और चुप न रहे। ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मैं हमेशा तेरा शुक्र करता रहूँगा।

31 ऐ खुदावन्द! मेरा भरोसा तुझ पर, मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे; अपनी सदाकत की खातिर मुझे रिहाई दे। 2 अपना कान मेरी तरफ झुका, जल्द मुझे छुड़ा! तू मेरे लिए मज़बूत चटान, मेरे बचाने को पनाहगाह हो! 3 क्यूंकि तू ही मेरी चटान और मेरा किला है, इसलिए अपने नाम की खातिर मेरी राहबरी और रहनुमाई कर। 4 मुझे उस जाल से निकाल ले जो उन्होंने छिपकर

28 ऐ खुदावन्द, मैं तुझ ही को पुकासँगा; ऐ मेरी चटान, तू मेरी तरफ से कान बन्द न कर; ऐसा न हो कि अगर तू मेरी तरफ से खामोश रहे तो मैं उनकी तरह बन जाऊँ, जो पाताल में जाते हैं। 2 जब मैं तुझ से फरियाद करूँ, और अपने हाथ तेरी मुक़दस्स हैकल की तरफ उठाऊँ, तो मेरी मिन्त की आवाज को सुन लो। 3 मुझे उन शरीरों और बदकिरदारों के साथ घसीर न ले जा; जो अपने पड़ोसियों से सुलह की बातें करते हैं, मगर उनके दिलों में बढ़ी है। 4 उनके अफ़ाल — ओ — आमाल की बुराई के मुवाफिक उनको बदला दे,

मेरे लिए बिछाया है, क्यूंकि तू ही मेरा मजबूत किला है। 5 मैं अपनी रुह तेरे हाथ में सौंपता हूँ: ऐ खुदावन्द! सच्चाई के खुदा; तूने मेरा फिदिया दिया है। 6 मुझे उनसे नफरत है जो ज्ञाटे मांबूदों को मानते हैं: मेरा भरोसा तो खुदावन्द ही पर है। 7 मैं तेरी रहमत से खुश — ओ — रुरम रहँगा, क्यूंकि तूने मेरा दुःख: देख लिया है; त मेरी जान की मुसीबतों से बाकिफ है। 8 तूने मुझे दुश्मन के हाथ में कैट नहीं छोड़ा; तूने मेरे पांव कुशादा जगह में रखवे हैं। 9 ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर क्यूंकि मैं मुसीबत में हूँ। मेरी आँख बल्कि मेरी जान और मेरा जिस्म सब रंज के मारे घुले जाते हैं। 10 क्यूंकि मेरी जान गम में और मेरी उम्र कराहने में फना हुई; मेरा जोर मेरी बदकारी के बजह से जाता रहा, और मेरी हड्डियाँ घुल गई। 11 मैं अपने सब मुखालिफों की बजह से अपने पड़ोसियों के लिए, अज्ञ बस अनुशूतमा और अपने जान पहचानों के लिए खौफ का ज़रिया हूँ जिन्होंने मुझको बाहर देखा, मुझ से दूर भागे। 12 मैं मुर्द की तरह भूला दिया गया हूँ, मैं दृटे बर्तन की तरह हूँ। 13 क्यूंकि मैंने बहतों से अपनी बदनामी सुनी है, हर तरफ खौफ ही खौफ है। जब उन्होंने मिलकर मेरे खिलाफ मश्वरा किया, तो मेरी जान लेने का मन्सवा बांधा। 14 लेकिन ऐ खुदावन्द, मेरा भरोसा तुझ पर है। मैंने कहा, “तू मेरा खुदा है।” 15 मेरे दिन तेरे हाथ में हैं, मुझे मेरे दुश्मनों और सताने वालों के हाथ से छुड़ा। 16 अपने चेहरे को अपने बन्दे पर जलवागार फरमा; अपनी शफकत से मुझे बचा ले। 17 ऐ खुदावन्द, मुझे शर्मिन्दा न होने दे क्यूंकि मैंने तुझ से दुआ की है; शरीर शर्मिन्दा हो जाएँ और पाताल में खामोश हो। (Sheol h758) 18 इटे हॉट बन्ड हो जाएँ, जो सादिकों के खिलाफ गुस्त और हिक्कारत से तकल्बूर की बातें बोलते हैं। 19 आह! तूने अपने डरने वालों के लिए कैरी बड़ी नैमत रख छोड़ी है: जिसे तूने बनी आदम के सामने अपने, भरोसा करने वालों के लिए तैयार किया। 20 तू उनको इंसान की बन्दिशों से अपनी हज़री के पर्दे में छिपाएगा; तू उनको ज़बान के झाड़ों से शामियाने में पोशीदा रख लेगा। 21 खुदावन्द मुबारक हो! क्यूंकि उन्हें मुझ को मजबूत शहर में अपनी 'अनीब शफकत दिखाई। 22 मैंने तो जल्दबाजी से कहा था, कि मैं तेरे सामने से काट डाला गया। तो मेरी जब मैंने तुझ से फरियाद की तो तूने मेरी मिन्त की आवाज़ सुन ली। 23 खुदावन्द से मुहब्बत रखो, ऐ उसके सब पाक लोगों! खुदावन्द ईमानदारों को सलामत रखता है; और मगास्तों को खूब ही बदलता देता है 24 ऐ खुदावन्द पर उम्मीद रखने वालो! सब मजबूत हो और तुम्हारा दिल कवी रहे।

32 मुबारक है वह जिसकी खत्ता बरछती गई, और जिसका गुनाह ढाँका गया।

2 मुबारक है वह आदमी जिसकी बदकारी को खुदावन्द हिसाब में नहीं लाता, और जिसके दिल में दिखावा नहीं। 3 जब मैं खामोश रहा तो दिन भर के कराहने से मेरी हड्डियाँ घुल गई। 4 क्यूंकि तेरा हाथ रात दिन मुझ पर भारी था; मेरी तरावत गर्भियों की खुशकी से बदल गई। (सिलाह) 5 मैंने तेरे सामने अपने गुनाह को मान लिया और अपनी बदकारी को न छिपाया, मैंने कहा, मैं खुदावन्द के सामने अपनी खताओं का इकरार करूँगा और तूने मेरे गुनाह की बुराई को मुआफ किया। (सिलाह) 6 इरीलिए हर दीनदार तुझ से ऐसे वक्त में दुआ करे जब तू मिल सकता है। यकीनन जब सैलाब आए तो उस तक नहीं पहुँचेगा। 7 तू मेरे छिपने की जगह है; तू मुझे दुख से बचाये रख लेगा; तू मुझे रिहाई के नामांगों से घेर लेगा। (सिलाह) 8 मैं तुझे तालीम दूँगा, और जिस राह पर तुझे चलना होगा तुझे बताऊँगा; मैं तुझे सलात दूँगा, मेरी नज़र तुझ पर होगी। 9 तम घोड़े या खच्चर की तरह न बनो जिनमें समझ नहीं, जिनको काबू में रखने का साज़ दहाना और लगाम है, वर्ना वह तेरे पास आने के भी नहीं। 10 शरीर पर बहुत सी मुसीबतें आँएँगी; पर जिसका भरोसा खुदावन्द पर

है, रहमत उसे धेर रहेगी। 11 ऐ सादिको, खुदावन्द में खुश — ओ — बुरम रहो; और ऐ रास्तदिलो, खुशी से ललकारो!

33 ऐ सादिको, खुदावन्द में खुश रहो। हमद करना रास्तबाज़ों की ज़ेबा है। 2 सितार के साथ खुदावन्द का शक करो, दस तार की बरबत के साथ उसकी सिताइश करो। 3 उसके लिए नया गीत गाओ, बुलन्द अबाज के साथ अच्छी तरह बजाओ। 4 क्यूंकि खुदावन्द का कलाम रास्त है, और उसके सब काम बावफ़ा हैं। 5 वह सदाकत और इन्साफ़ को पसंद करता है; जर्मीन खुदावन्द की शफकत से मां'मूर है। 6 आसमान खुदावन्द के कलाम से, और उसका सारा लश्कर उसके मैंहूं के दम से बना। 7 वह समन्दर का पानी तूदे की तरह जमा करता है; वह गहरे समन्दरों को मखजनों में रखता है। 8 सारी ज़मीन खुदावन्द से डोर, जहान के सब बाशिन्दे उसका खौफ रखते हैं। 9 क्यूंकि उसने फरमाया और हो गया; उसने हृकम दिया और बाके' हुआ। 10 खुदावन्द कौमों की मश्वरत को बेकार कर देता है; वह उम्मतों के मन्सूबों को नाचीज़ बना देता है। 11 खुदावन्द की मसलहत हमेशा तक काईम रहेगी, और उसके दिल के खयाल नसल दर नसल। 12 मुबारक है वह कौम जिसका खुदा खुदावन्द है, और वह उम्मत जिसको उसने अपनी ही मीरास के लिए बरगुज़ीदा किया। 13 खुदावन्द आसमान पर से देखता है, सब बनी आदम पर उसकी निगाह है। 14 अपनी सुकूनत गाह से वह ज़मीन के सब बाशिन्दों को देखता है। 15 वही है जो उन सबके दिलों को बनाता, और उनके सब कामों का खयाल रखता है। 16 किसी बादशाह को फौज की कसरत न बचाएँगी; और किसी जबरदस्त आदमी को उसकी बड़ी ताकत रिहाई न देंगी। 17 बच निकलने के लिए घोड़ा बेकार है, वह अपनी शहजरी से किसी को न बचाए़गा। 18 देखो खुदावन्द की निगाह उन पर है जो उससे डरते हैं; जो उसकी शफकत के उमीदवार है, 19 ताकि उनकी जान मौत से बचाएँ, और सूखे में उनको ज़िन्दा रखें। 20 हमारी जान को खुदावन्द की उम्मीद है; वही हमारी मदद और हमारी ढाल है। 21 हमारा दिल उसमें खुश रहेगा, क्यूंकि हम ने उसके पाक नाम पर भरोसा किया है। 22 ऐ खुदावन्द, जैसी तुझ पर हमारी उम्मीद है, वैसी ही तेरी रहमत हम पर हो।

34 मैं हर वक्त खुदावन्द को मुबारक कहूँगा, उसकी सिताइश हमेशा मेरी

ज़बान पर रहेगी। 2 मेरी रुह खुदावन्द पर फ़क्कुर करेगी, हलीम यह सुनकर खुश होगे। 3 मेरे साथ खुदावन्द की बड़ाई करो, हम मिलकर उसके नाम की तमीज़िद करें। 4 मैं खुदावन्द का तालिब हुआ, उसने मुझे ज़बाब दिया, और मेरी सारी दहशत से मुझे रिहाई बख़री। 5 उन्होंने उसकी तरफ नज़र की और मनवर हो गए; और उनके मूँह पर कभी शर्मिन्दीर्नी न आएगी। 6 इस गरीबी ने दुहाई दी, खुदावन्द ने इसकी सुनी, और इसे इसके सब दुखों से बचा लिया। 7 खुदावन्द से डरने वालों के चारों तरफ उसका फरिश्ता खेमाजन होता है और उनको बचाता है। 8 आज़माकर देखो, कि खुदावन्द कैसा मेहरबान है! वह आदमी जो उस पर भरोसा करता है। 9 खुदावन्द से डोरे, ऐ उसके पाक लोगों! क्यूंकि जो उससे डरते हैं उनको कुछ कमी नहीं। 10 बबर के बच्चे तो हाज़तमंद और भूके होते हैं, लेकिन खुदावन्द के तालिब किसी नैमत के मोहताज न हाँगे। 11 ऐ बच्चों, आओ मेरी सुनो, मैं तुम्हें खुदा से डरना सिखाऊँगा। 12 वह कौन आदमी है जो जिन्दगी का मशताक है, और बड़ी उम्र चाहत है ताकि भलाई देखें? 13 अपनी ज़बान को बड़ी से बाज रख, और अपने हँस्टों को दाग की बात से। 14 बुराई को छोड़ और नेकी कर; सुलह का तालिब हो और उसी की पैरवी कर। 15 खुदावन्द की निगाह सादिकों पर है, और उसके कान उनकी फरियाद पर लगे रहते हैं। 16 खुदावन्द का चेहरा बदकारों

के खिलाफ है, ताकि उनकी याद ज़मीन पर से मिटा दे। 17 सादिक चिल्लाए, और खुदावन्द ने सुना; और उनको उनके सब दुर्खों से छुड़ाया। 18 खुदावन्द शिकस्ता दिलों के नज़दीक है, और खस्ता जानों को बचाता है। 19 सादिक की मुसीबतें बहुत हैं, लेकिन खुदावन्द उसको उन सबसे रहिई बचाता है। 20 वह उसकी सब हड्डियों को महफूज रखता है; उनमें से एक भी तोड़ी नहीं जाती। 21 बुराई शरीर को हलाक कर देगी; और सादिक से 'अदावत रखने वाले मुजरिम ठहरेंगे। 22 खुदावन्द अपने बन्दों की जान का फिदिया देता है, और जो उस पर भरोसा करते हैं उनमें से कोई मुजरिम न ठहरेगा।

35 ऐ खुदावन्द, जो मुझ से झगड़ते हैं तू उसे झगड़; जो मुझ से लड़ते हैं तू उसे लड़। 2 डाल और सिप लेकर मेरी मदद के लिए खड़ा हो। 3 भाला भी निकाल और मेरा पीछा करने वालों का रास्ता बंद कर दे; मेरी जान से कह, मैं तेरी नजात हूँ। 4 जो मेरी जान के तलबगाह है, वह शर्मिन्दा और स्वरा हों। जो मेरे नुकसान का मन्दबा बाँधते हैं, वह पसपा और पेरेशान हों। 5 वह ऐसे हो जाएँ जैसे हवा के आगे भूसा, और खुदावन्द का फरिश्ता उनको हाँकता रहे। 6 उनकी राह अँधेरी और फिसलनी हो जाए, और खुदावन्द का फरिश्ता उनको दौड़ाता जाए। 7 क्यूँकि उन्होंने बे वजह मेरे लिए गढ़े में जाल बिछाया, और नाहक मेरी जान के लिए गढ़ा खोदा है। 8 उस पर अचानक तबाही आ पड़े! और जिस जाल को उसने बिछाया है उसमें आप ही फसे; और उसी हलाकत में गिरफ्तार हो। 9 लेकिन मेरी जान खुदावन्द में खुश रहेगी, और उसकी नजात से शादमान होगी। 10 मेरी सब हड्डियाँ कहेंगी, “ऐ खुदावन्द तुझ सा कौन है, जो गरीब को उसके हाथ से जो उससे ताकतवर है, और गरीब — ओ — मोहताज को गारतगर से छुड़ाता है?” 11 झटे गवाह उठते हैं; और जो बातें मैं नहीं जानता, वह मुझ से पूछते हैं। 12 वह मुझ से नेकी के बदले बदी करते हैं, यहाँ तक कि मेरी जान बेकस हो जाती है। 13 लेकिन मैंने तो उनकी बीमारी में जब वह बीमार थे, टाट ओढ़ा और रोजे रख कर अपनी जान को दुख दिया; और मेरी दुआ मेरी ही सीनी में वापस आई। 14 मैंने तो ऐसा किया जैसे वह मेरा दोस्त या मेरा भाई था; मैंने सिर झका कर गम किया जैसे कोई अपनी माँ के लिए मातम करता हो। 15 लेकिन जब मैं लंगड़ाने लगा तो वह खुश होकर इकट्ठे हो गए, कमरिये रेखिलाफ इकट्ठा हुए और मुझे माल्प्स न था; उन्होंने मुझे फाड़ा और बाज न आए। 16 जियाकर्तों के बदतमीज मसाखरों की तरह, उन्होंने मुझ पर दाँत पीसे। 17 ऐ खुदावन्द, तू कब तक देखता रहेगा? मेरी जान को उनकी गारतगरी से, मेरी जान को शेरों से छुड़ा। 18 मैं बड़े मजामें मैं तेरी शुक्रगुजारी कहूँगा मैं बहुत से लोगों में तेरी सिताइश कहूँगा। 19 जो नाहक मैं दुश्मन हैं, मुझ पर खुशी न मनाएँ; और जो मुझ से बे वजह 'अदावत रखते हैं, चश्मक जनी न करें। 20 क्यूँकि वह सलामती की बातें नहीं करते, बल्कि मुल्क के अपन पसंद लोगों के खिलाफ, मक्र के मन्दबे बाँधते हैं। 21 यहाँ तक कि उन्होंने खूब मुँह फाड़ा और कहा, “अहा! अहा! हम ने अपनी आँख से देख लिया है!” 22 ऐ खुदावन्द, तुने खुद यह देखा है; खामोश न रहा। ऐ खुदावन्द, मुझ से दूर न रह। 23 उठ, मैंने इन्साक के लिए जाग, और मेरे मुआमिले के लिए, ऐ मेरे खुदा! ऐ मेरे खुदावन्द! 24 अपनी सदाकत के मुताबिक मेरी अदालत कर, ऐ खुदावन्द, मेरे खुदा! और उनको मुझ पर खुशी न मनाने दे। 25 वह अपने दिल में यह न कहने पाएँ, “अहा! हम तो यहीं चाहते थे!” वह यह न कहें, कि हम उसे निगल गए। 26 जो मेरे नुकसान से खुश होते हैं, वह आपस में शर्मिन्दा और पेरेशान हों। जो मेरे मुकाबले में तकब्बुर करते हैं वह शर्मिन्दी और स्वार्वाई से मुलब्बस हों। 27 जो मेरे सच्चे मुआमिले की ताईद करते हैं, वह खुशी से ललकरें और खुशहों; वह हमेशा यह कहें, खुदावन्द की तम्जीद हो, जिसकी खुशनदी अपने बन्दे की इकबालमन्दी में है।

28 तब मेरी ज़बान से तेरी सदाकत का ज़िक्र होगा, और दिन भर तेरी तारीफ होगी।

36 शरीर की बदी से मेरे दिल में खयाल आता है, कि खुदा का खौफ उसके सामने नहीं। 2 क्यूँकि वह अपने अपको अपनी नज़र में इस खयाल से तमल्ली देता है, कि उसकी बदी न तो फ़ाश होगी, न मक्स्ह समझी जाएगी। 3 उसके मुँह में बदी और फेरेब की बातें हैं, वह 'अकल और नेकी से दस्तबरदार हो गया है। 4 वह अपने बिस्तर पर बदी के मन्सवे बाँधता है; वह ऐसी राह इखियार करता है जो अच्छी नहीं; वह बुराई से नफरत नहीं करता। 5 ऐ खुदावन्द, आसमान में तेरी शफ़कत है, तेरी बफ़ादारी फ़लाक तक बुलन्द है। 6 तेरी सदाकत खुदा के पहाड़ों की तरह है, तेरे अहकाम बहुत गहरे हैं; ऐ खुदावन्द, तू इसान और हैवान दोनों को महफूज रखता है। 7 ऐ खुदा, तेरी शफ़कत क्या ही बेशकीयत है! बनी आदप रे बाज़ुओं के साथ में पानाह लेते हैं। 8 वह तेरे घर की नेमतों से ख्वाब आसदा होंगे, तू उनके अपनी खुशनदी के दरिया में से पिलाएगा। 9 क्यूँकि जिन्दगी का चर्शमा तेरे पास है, तेरे नूर की बदौलत हम रोशनी देखेंगे। 10 तेरे पहचानने वालों पर तेरी शफ़कत हमेशा की हो, और रास्त दिलों पर तेरी सदाकत! 11 मगार आदमी मुझ पर लात न उठाने पाए, और शरीर का हाथ मुझे हाँक न दे। 12 बदकिरदार वहाँ गिरे पड़े हैं; वह गिरा दिए गए हैं और फिर उठ न सकेंगे।

37 तू बदकिरदारों की वजह से बेजार न हो, और बदी करने वालों पर रक्ष कर! 2 क्यूँकि वह घास की तरह जल्द काट डाले जाएँगे, और हरियाली की तरह मुझा जाएँगे। 3 खुदावन्द पर भरोसा कर, और नेकी कर; मुल्क में आबाद रह, और उसकी बफ़ादारी से परवरिश पा। 4 खुदावन्द में मस्सर रह, और वह तेरे दिल की मुसादे पूरी करेगा। 5 अपनी राह खुदावन्द पर छोड़ दे; और उस पर भरोसा कर, वही सब कुछ करेगा। 6 वह तेरी रास्तबाज़ी को नूर की तरह, और तेरे हक को दोपहर की तरह रोशन करेगा। 7 खुदावन्द में मुतम्इन रह, और सब से उसकी आस रख; उस आदमी की वजह से जो अपनी राह में कामयाब होता और बुरे मन्सबों को अंजाम देता है, बेजार न हो। 8 कहर से बाज आ और ज़बाब को छोड़ दे! बेजार न हो, इससे बुराई ही निकलती है। 9 क्यूँकि बदकार काट डाले जाएँगे; लेकिन जिनको खुदावन्द की आस है, मुल्क के वारिस होंगे। 10 क्यूँकि थोड़ी देर में शरीर न बदूद हो जाएगा; तू उसकी जगह को गौर से देखेंगा पर वह न होगा। 11 लेकिन हलीम मुल्क के वारिस होंगे, और सलामती की पिरावानी से खुश रहेंगे। 12 शरीर रास्तबाज के खिलाफ बन्दिशें बाँधता है, और उस पर दाँत पीसता है; 13 खुदावन्द उस पर हँसेगा, क्यूँकि वह देखता है कि उसका दिनआता है। 14 शरीरों ने तलवार निकाली और कमान खीची है, ताकि गरीब और मुहताज को गिरा दें, और रास्तरों को कत्ल करें। 15 उनकी तलवार उन ही के दिल को छेदेगी, और उनकी कमानें तोड़ी जाएँगी। 16 सादिक का थोड़ा सा माल, बहत से शरीरों की दौलत से बेहतर है। 17 क्यूँकि शरीरों के बाजू तोड़े जाएँगे, लेकिन खुदावन्द सादिकों को संभालता है। 18 कामिल लोगों के दिनों को खुदावन्द जानता है, उनकी मीरास हमेशा के लिए होगी। 19 वह आफत के बक्त शर्मिन्दा न होंगे, और काल के दिनों में आसदा रहेंगे। 20 लेकिन शरीर हलाक होंगे, खुदावन्द के दुश्मन चरागाहों की सरसब्जी की तरह होंगे; वह फ़ना हो जाएँगे, वह धूँह की तरह जाते रहेंगे। 21 शरीर कर्ज लेता है और अदा नहीं करता, लेकिन सादिक रहम करता है और देता है। 22 क्यूँकि जिनको वह बरकत देता है, वह ज़मीन के वारिस होंगे, और जिन पर वह लान्त करता है, वह काट डाले जाएँगे। 23 इंसान की चाल चलन खुदावन्द की तरफ से काईम है, और वह उसकी राह से खुश है; 24 अगर वह गिर भी जाए तो पड़ा न रहेगा, क्यूँकि खुदावन्द उसे

अपने हाथ से संभालता है। 25 मैं जबान था और अब बूढ़ा हूँ तो भी मैंने सादिक को बेक्स, और उसकी औलाद को टुकड़े याँगते नहीं देखा। 26 वह दिन भर रहम करता है और कर्ज देता है, और उसकी औलाद को बरकत मिलती है। 27 बटी को छोड़ दे और नेकी कर; और हमेशा तक आबाद रह। 28 क्यूँकि खुदावन्द इन्साफ को पसंद करता है: और अपने पाक लोगों को नहीं छोड़ता। वह हमेशा के लिए प्रभुपूजू है, लेकिन शरीरों की नसल काट डाली जाएगी। 29 सादिक ज़मीन के वारिस होंगे, और उसमें हमेशा बसे रहेंगे। 30 सादिक के मूँह से दानाई निकलती है, और उसकी ज़बान से इन्साफ की बांगें। 31 उसके खुदा की शरीरी अत उसके दिल में है, वह अपनी चाल चलन में फिसलेगा नहीं। 32 शरीर सादिक की ताक में रहता है; और उसे कल्पना चाहता है। 33 खुदावन्द उसे उसके हाथ में नहीं छोड़ेगा, और जब उसकी 'अदावत हो तो उसे मुजरिम न ठहराएगा। 34 खुदावन्द की उम्मीद रख, और उसी की राह पर चलता रह, और वह तुझे सरफ़राज करके ज़मीन का वारिस बनाएगा; जब शरीर काट डाले जाएँगे, तो तू देखेगा। 35 मैंने शरीर को बड़े इक्तिदार में और ऐसा फैलता देखा, जैसे कोई हारा दरखत अपनी असली ज़मीन में फैलता है। 36 लेकिन जब कोई उधर से गुज़राऊ देखा तो वह था ही नहीं; बल्कि मैंने उसे ढांडा लेकिन वह न मिला। 37 कामिल आदमी पर निगाह कर और रास्तबाज़ को देख, क्यूँकि सुलह दोस्त आदमी के लिए अच्छा है। 38 लेकिन खताकार इकट्ठे मर मिटेंगे; शरीरों का अंजाम हल्लाकत है। 39 लेकिन सादिकों की नजात खुदावन्द की तरफ से है; मुरीबत के बक्तव्य वह उनका मज़बूत किला है। 40 और खुदावन्द उनकी मदत करता और उनको बचाता है; वह उनको शरीरों से छुड़ाता और बचा लेता है, इसलिए कि उन्होंने उसमें पनाह ली है।

38 ऐ खुदावन्द, अपने कहर में मुझे छिड़क न दे, और अपने ग़ज़ब में मुझे तम्हीन न कर। 2 क्यूँकि तेरे दुख मुझ में लगे हैं, और तेरा हाथ मुझ पर भारी है। 3 तेरे कहर की वजह से मेरे जिस्म में सिहत नहीं; और मेरे गुहाह की वजह से मेरी हड्डियों को आराम नहीं। 4 क्यूँकि मेरी बटी मेरे सिर से गुज़र गई, और वह बड़े बोझ की तरह मेरे लिए बहुत भारी है। 5 मेरी बेवकूफी की वजह से, मेरे ज़ख्मों से बदबू आती है, वह सड़ गए है। 6 मैं पुरदर्द और बहुत झुका हुआ हूँ, मैं दिन भर मातम करता फिरता हूँ। 7 क्यूँकि मेरी कमर में दर्द ही दर्द है, और मेरे जिस्म में कुछ सिहत नहीं। 8 मैं कमज़ोर और बहुत कुचला हुआ हूँ और दिल की बेचैनी की वजह से कराहता रहा। 9 ऐ खुदावन्द, मेरी सारी तमन्ना तेरे सामने है, और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं। 10 मेरा दिल धड़कता है, मेरी ताकत घटी जाती है, मेरी आँखों की रोशनी भी मुझ से जाती रही। 11 मेरे 'अजीज़ और दोस्त मेरी बता मैं अलग हो गए, और मेरे रिश्तेदार दूर जा खड़े हुए। 12 मेरी जान के तलबगर मेरे लिए जाल बिछाते हैं, और मेरे नुकसान के तालिब शरारत की बातें बोलते, और दिन भर मक्क — ओ — फ़रेब के मन्सुबे बांधते हैं। 13 लेकिन मैं बहेर की तरह सुनता ही नहीं, मैं गौंथ की तरह मूँह नहीं खोलता। 14 बल्कि मैं उस आदमी की तरह हूँ जिसे सनाई नहीं देता, और जिसके मूँह में मलामत की बातें नहीं। 15 क्यूँकि ऐ खुदावन्द, मुझे तुझ से उम्मीद है, ऐ खुदावन्द, मेरे खुदा! तू जवाब देगा। 16 क्यूँकि मैंने कहा, कि कहीं वह मुझ पर खुशी न मनाएँ, जब मेरा पाँव फिसलता है, तो वह मेरे खिलाफ तक्बुर करते हैं। 17 क्यूँकि मैं गिरने ही को हूँ, और मेरा गम बराबर मेरे सामने है। 18 इसलिए कि मैं अपनी बटी को जाहिर करूँगा, और अपने गुनाह की वजह से गमगीन रहँगा। 19 लेकिन मेरे दुश्मन चुक्त और ज़बरदस्त हैं, और मुझ से नाहक 'अदावत रखने वाले बहुत हो गए हैं। 20 जो नेकी के बदले बटी करते हैं, वह भी मेरे मुख्यालिफ़ हैं; क्यूँकि मैं नेकी की पैरवी करता

हूँ। 21 ऐ खुदावन्द, मुझे छोड़ न दे! ऐ मेरे खुदा, मुझ से दूर न हो! 22 ऐ खुदावन्द! ऐ मेरी नजात! मेरी मदद के लिए जल्दी कर!

39 मैंने कहा "मैं अपनी राह की निगरानी करूँगा, ताकि मेरी ज़बान से खता न हो; जब तक शरीर मेरे सामने है, मैं अपने मूँह को लगाम दिए रहूँगा।" 2 मैं गंगा बनकर खामोश रहा, और नेकी की तरफ से भी खामोशी इक्तियार की; और मेरा गम बढ़ गया। 3 मेरा दिल अन्दर ही अन्दर जल रहा था। सोचते सोचते आग भड़क उठी, तब मैं अपनी ज़बान से कहने लगा, 4 "ऐ खुदावन्द! ऐसा कर कि मैं अपने अंजाम से वाकिफ़ हो जाऊँ, और इससे भी कि मेरी उम्र की मी'आद ब्याह है; मैं जान लूँ कि कैसा फ़ानी हूँ। 5 देख, तू भी मेरी उम्र बालिश भर की रख्खी है, और मेरी ज़िन्दगी तेरे सामने बे हकीकत है। यकीनन हर इंसान बेहतरीन हालत में भी बिल्कुल बेसबात है (सिलाह) 6 दर हकीकत इंसान साथे की तरह चलता फिरता है; यकीनन वह फ़ज़ल घबराते हैं; वह जखीरा करता है और यह नहीं जानता के उसे कौन लेगा। 7 "ऐ खुदावन्द! अब मैं किस बात के लिए ठहरा हूँ? मेरी उम्मीद तुझ ही से है। 8 मुझ को मेरी सब खताओं से रिहाई दे। बेक़बूफ़ों को मुझ पर अंगूली न उड़ाने दे। 9 मैं गंगा बना, मैंने मूँह न खोला क्यूँकि तू ही ने यह किया है। 10 मुझ से अपनी बला दूर कर दे; मैं तो तेरे हाथ की मार से फ़ना हुआ जाता हूँ। 11 जब तू इंसान को बटी पर मलामत करके तम्हीन करता है; तो उसके हुस्कों का पतंग की तरह फ़ना कर देता है; यकीनन हर इंसान बेसबात है। (सिलाह) 12 "ऐ खुदावन्द! मेरी दुआ सुन और मेरी फ़रियाद पर कान लगा; मेरे अँसुओं को देखकर खामोश न रह! क्यूँकि मैं तेरे सामने फ़देसी और मुसाफ़िर हूँ, जैसे मेरे सब बाप — दादा थे। 13 आह! मुझ से नज़र हटा ले ताकि तज़ा दम हो जाऊँ, इससे पहले के मर जाऊँ और हलाक हो जाऊँ।"

40 मैंने सब से खुदावन्द पर उम्मीद रख्खी उसने मेरी तरफ माइल होकर मेरी फ़रियाद सुनी। 2 उसने मूँहे हौलनाक गढ़े और दलदल की कीचड़ में से निकाला, और उसने मेरे पाँव चट्ठान पर रख्खे और मेरी चाल चलन काईम की 3 उसने हमारे खुदा की सिताइश का नया हम्द मेरे मूँह में डाला। बहुत से देखेंगे और ढंगें, और खुदावन्द पर भरोसा करेंगे। 4 मुबारक है वह आदमी, जो खुदावन्द पर भरोसा करता है, और मग़स्तर और झटे दोस्तों की तरफ माइल नहीं होता। 5 ऐ खुदावन्द! मेरे खुदा! जो 'अजीबी काम तूने किए, और तेरे ख्याल जो हमारी तरफ है, वह बहुत से हैं। मैं उनको तेरे सामने तरतीब नहीं दे सकता; अगर मैं उनका ज़िक्र और बयान करना चाहूँ तो वह शमार से बाहर है। 6 कुर्बानी और नज़र को तू पसंद नहीं करता, तूने मेरे कान खोल दिए हैं। सोबतीनी कुर्बानी तुने तलब नहीं की। 7 तब मैंने कहा, "देखो! मैं आया हूँ। किताब के तूमारे मैं मेरे बारे लिखा है। 8 ऐ मेरे खुदा, मेरी खुशी तेरी मज़ी धीरी करने में है, बल्कि तेरी शरीरी अत मेरे दिल में है।" 9 मैंने बड़े मज़मे में सदाकत की बशारत दी है, देखो! मैं अपना मूँह बंद नहीं करूँगा, ऐ खुदावन्द! तू जानता है। 10 मैंने तेरी सदाकत अपने दिल में छिपा नहीं रखी; मैंने तेरी वकारारी और नजात का इज़हार किया है; मैंने तेरी शक़त और सच्चाई बड़े मज़मा' से नहीं छिपाई। 11 ऐ खुदावन्द! तू मुझ पर रहम करने में दरेग न कर; तेरी शक़त और सच्चाई बराबर मेरी हिफ़ाज़त करें। 12 क्यूँकि बेशुमार बुराइयों ने मुझे धेर लिया है, मेरी बटी ने मुझे आ पकड़ा है, ऐसा किसी मैं आँख नहीं उठासकता; वह मेरे सिर के बालों से भी ज्यादा हैं: इसलिए मेरा जी छूट गया। 13 ऐ खुदावन्द! मेहरबानी करके मुझे छुड़ा। ऐ खुदावन्द! मेरी मदद के लिए जल्दी कर। 14 जो मेरी जान को हलाक करने के दर पै थे, वह सब शर्मिंदा और खजिल हों; जो मेरे नुकसान से खुश हैं, वह पस्या और स्वता हो। 15 जो मुझ पर अहा हा हा

करते हैं, वह अपनी स्वार्इ की वजह से तबाह हो जाएँ। 16 तेरे सब तालिब तुझ में खुश — ओ — खुर्म हों, तेरी नजात के अशिक हमेशा कहा करें “खुदावन्द की तम्जीद हो।” 17 लेकिन मैं गरीब और मोहाताज हूँ, खुदावन्द मेरी फिक्र करता है। मेरा मददगार और छुड़ाने वाला तू ही है; ऐ मेरे खुदा! देर न कर।

41 मुबारक, है वह जो गरीब का ख्याल रखता है खुदावन्द मुसीबत के दिन

उसे छुड़ाएगा। 2 खुदावन्द उसे महफूज और जिन्दा रखेगा, और वह जमीन पर मुबारक होगा। तू उसे उसके दुश्मनों की मर्जी पर न छोड़। 3 खुदावन्द उसे बीमारी के बिस्तर पर संभालेगा; तू उसकी बीमारी मैं उसके पैरे बिस्तर को ठीक करता है। 4 मैंने कहा, “ऐ खुदावन्द, मुझ पर रहम कर! मेरी जान को शिका दे, क्यूँकि मैं तेरा गुणहगार हूँ।” 5 मेरे दुश्मन यह कहकर मेरी बुराई करते हैं, कि वह कब मेरोंगा और उसका नाम कब मिटेगा? 6 जब वह मुझ से मिलने को आता है, तो इसी बातें बकता है; उसका दिल अपने अन्दर बढ़ी समेटा है; वह बाहर जाकर उसी का ज़िक्र करता है। 7 मुझ से ‘अदावत रखने वाले सब मिलकर मेरी ग़ीत करते हैं; वह मेरे खिलाफ मेरे तुक्सान के मन्स्के बँधते हैं। 8 वह कहते हैं, “इसे तो बुरा रोग लग गया है; अब जो वह पड़ा है तो फिर उठें का नहीं।” 9 बल्कि मेरे दिली दोस्त ने जिस पर मुझे भरोसा था, और जो मेरी रोटी खाता था, मुझ पर लात उठाई है। 10 लेकिन तू ऐ खुदावन्द! मुझ पर रहम करके मुझे उठा खड़ा कर, ताकि मैं उनको बदला दूँ। 11 इससे मैं जान गया कि तू मुझ से खुश है, कि मेरा दुश्मन मुझ पर फ़तह नहीं पाता। 12 मुझे तो त ही मेरी रास्ती में क्याम बरबाता है और मुझे हमेशा अपने सामने कार्राम रखता है। 13 खुदावन्द इसाईल का खुदा, इन्दिदा से हमेशा तक मुबारक हो! आपीन, सुप्त आपीन।

42 जैसे हिरनी पानी के नालों को तरसती है, वैसे ही ऐ खुदा! मेरी स्तु

तेरे लिए तरसती है। 2 मेरी रुक्ष, खुदा की, जिन्दा खुदा की प्यारी है। मैं कब जाकर खुदा के सामने हाज़िर हूँगा? 3 मेरे आँख़ु दिन रात मेरी ख़राक हैं, जिस हाल कि वह मुझ से बराबर कहते हैं, तेरा खुदा कहाँ है? 4 इन बातों को याद करके मेरा दिल भरआता है, कि मैं किस तरह भीड़ यारीं ‘ईद मनाने वाली जमाँ’ अत के साथ, खुशी और हादू करता हुआ उनको खुदा के घर में ले जाता था। 5 ऐ मेरी जान, तू क्यूँ गिरी जाती है? तू अन्दर ही अन्दर क्यूँ बेचैन है? खुदा से उम्मीद रख, क्यूँकि उसके नजात बरबाद दीदार की खातिर मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा। 6 ऐ मेरे खुदा! मेरी जान मेरे अंदर गिरी जाती है, इसलिए मैं तुझे यरदन की रसजामीन से और हरमून और कोह — ए — मिस्फ़ार पर से याद करता हूँ। 7 तेरे आवशारों की आवाज से गहराव को पुकारता है। तेरी सब मौज़े और लहरें मुझ पर से गुज़र गईं। 8 तोभी दिन को खुदावन्द अपनी शफ़कत दिखाएगा; और रात को मैं उसका हम्द गाँझा, बल्कि अपनी जिन्दागी के खुदा से दुआ करूँगा। 9 मैं खुदा से जो मेरी छान है कहँगा, “तू मुझे क्यूँ भूल गया? मैं दुश्मन के ज़ुल्म की वजह से, क्यूँ मातम करता फिरता हूँ।” 10 मेरे मुखालिफ़ों की मलामत, जैसे मेरी हड्डियों में लतवाह है, क्यूँकि वह मुझ से बराबर कहते हैं, “तेरा खुदा कहाँ है?” 11 ऐ मेरी जान! तू क्यूँ गिरी जाती है? तू अन्दर ही अंदर क्यूँ बेचैन है? खुदा से उम्मीद रख, क्यूँकि वह मुझ से बैनक और मेरा खुदा है, मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा।

43 ऐ खुदा, मेरा इन्साफ़ कर और बेदीन कौम के मुकाबले में मेरी वकालत

कर, और दगावाज और बेइन्साफ़ आदमी से मुझे छुड़ा। 2 क्यूँकि त ही मेरी ताकत का खुदा है, तो वे क्यूँ मुझे छोड़ दिया? मैं दुश्मन के ज़ुल्म की वजह से क्यूँ मातम करता फिरता हूँ? 3 अपने नूर, अपनी सच्चाई को भेज, वही मेरी

रहबरी करें, वही मुझ को तेरे पाक पहाड़ और तेरे घर तक पहुँचाए। 4 तब मैं खुदा के मजबूत के पास जाऊँगा, खुदा के सामने जो मेरी कमाल खुशी है; ऐ खुदा! मैं खुदा! मैं सितार बजा कर तेरी सिताइश करूँगा। 5 ऐ मेरी जान! तू क्यूँ गिरी जाती है? तू अन्दर ही अन्दर क्यूँ बेचैन है? खुदा से उम्मीद रख, क्यूँकि वह मेरे चेहरे की रैनक और मेरा खुदा है; मैं फिर उसकी सिताइश करूँगा।

44 ऐ खुदा, हम ने अपने कानों से सुना; हमारे बाप — दादा ने हम से बयान

किया, कि तुमें उनके दिनों में पिछले जमाने में क्या क्या काम किए। 2 तुमें कौमों को अपने हाथ से निकाल दिया, और उनको बसाया; तुमें उम्मतों को तबाह किया, और इनको चारों तरफ फैलाया; 3 क्यूँकि न तो यह अपनी तलवार से इस मुल्क पर काबिज हुए, और न इनकी ताकत ने इनको बचाया; बल्कि तेरे दहने हाथ और तेरी ताकत और तेरे चेहरे के नूर ने इनको फतह बरबाई क्यूँकि तू इससे खुश था। 4 ऐ खुदा! तू मेरा बादशाह है; याकूब के हक्क में जाता का हक्म सादिर फरमा। 5 तेरी बदौलत हम अपने मुखालिफ़ों को पिरा देंगे; तेरे नाम से हम अपने खिलाफ उठने वालों को पस्त करेंगे। 6 क्यूँकि न तो मैं अपनी कमान पर भरोसा करूँगा, और न मेरी तलवार मुझे बचाएगी। 7 लेकिन तूने हम को हमारे मुखालिफ़ों से बचाया है, और हम से ‘अदावत रखने वालों को शर्मिन्दा किया। 8 हम दिन भर खुदा पर फ़ख़र करते रहे हैं, और हमेशा हम तेरे ही नाम का शुक्रिया अदा करते रहेंगे। 9 लेकिन तूने तो अब हम को छोड़ दिया और हम को स्वता किया, और हमारे लश्करों के साथ नहीं जाता। 10 तू हम को मुखालिफ़ के आगे पस्त करता है, और हम से ‘अदावत रखने वाले लूट मार करते हैं 11 तुमें हम को ज़बह होने वाली भेड़ों की तरह कर दिया, और कौमों के बीच हम को तितर बितर किया। 12 तू अपने लोगों को सुफ़त बेच डालता है, और उनकी कीमत से तेरी दौलत नहीं बढ़ती। 13 तू हम को मुखालिफ़ों की मलामत का निशाना, और हमारे आसपास के लोगों के तमस्खार और मज़ाक का जरिया’ बनाता है। 14 तू हम को कौमों के बीच एक मिसाल, और उम्मतों में सिर दिलाने की वजह ठहराता है। 15 मेरी स्वार्इ दिन भर मेरे सामने रहती है, और मेरे मुँह पर शर्मिन्दी छा गई। 16 मलामत करने वाले और कुफ़ बकने वाले की बातों की वजह से, और मुखालिफ़ और इन्तकाम लेने वाले की वजह। 17 यह सब कुछ हम पर बीता तोभी हम तुझ को नहीं भूले, न तेरे ‘अहद से बेकाफ़ी की; 18 न हमारे दिल नाफ़रमान हुए, न हमारे कदम तेरी राह से मुड़े; 19 जो तुमें हम को गीदड़ों की जगह में ख़बर कुचला, और मौत के साथे में हम को छिपाया। 20 अगर हम अपने खुदा के नाम को भूले, या हम ने किसी अजनबी माँबूद के आगे अपने हाथ फैलाए हों: 21 तो क्या खुदा इसे दरियाफ़त न कर लेगा? क्यूँकि वह दिलों के राज जानता है। 22 बल्कि हम तो दिन भर तेरी ही खातिर जान से मारे जाते हैं, और जैसे ज़बह होने वाली भेड़े समझे जाते हैं। 23 ऐ खुदावन्द, जान! तू क्यूँ सोता है? उठ! हमेशा के लिए हम को न छोड़। 24 तू अपना मुँह क्यूँ छिपाता है, और हमारी मुसीबत और मज़लसी को भूलता है? 25 क्यूँकि हमारी जान खाक में मिल गई, हमारा जिस्म मिटी हो गया। 26 हमारी मदद के लिए उठ और अपनी शफ़कत की खातिर, हमारा फिरिया दे।

45 मेरे दिल में एक नफ़ीस मज़मून जोश मार रहा है, मैं वही मज़ामीन

सुनाऊँगा जो मैंने बादशाह के हक्क में लिखे हैं, मेरी जबान मार्हि लिखने वाले का कलम है। 2 तू बनी आदम में सबसे हरीन है, तेरे होंठों में लताफ़त भरी है; इसलिए खुदा ने तुझे हमेशा के लिए मुखारक किया। 3 ऐ ज़बरदस्त! तू अपनी तलवार को जो तेरी हशमत — ओ — शौकत है, अपनी कमर से लटका ले। 4 और सच्चाई और हिलम और सदाकत की खातिर, अपनी शान — ओ

— शौकत में इक्कबालमंदी से सवार हो; और तेरा दहना हाथ तुझे अजीब काम दिखाएगा। 5 तेरे तीर तेज हैं, वह बादशाह के दुश्मनों के दिल में लगे हैं, उम्मते तेरे सम्मने पस्त होती है। 6 ऐ खुदा, तेरा तख्त हमेशा से हमेशा तक है; तेरी सल्तनत का 'असा रास्ती का' 'असा है। 7 तूने सदाकत से मुहब्बत रखी और बदकारी से नफरत, इसीलिए खुदा, तेरे खुदा ने खुशी के तेत से, तुझ को तेरे हमसरों से ज्यादा मसह किया है। 8 तैने हर लिबास से मुर और 'ऊंद और तंज की खुशबूझ आती है, हाथी दाँत के महलों में से तारदर साजों ने तुझे खुश किया है। 9 तेरी खास ख्वातीन में शाहजादियाँ हैं; मलिका तैने दहने हाथ, ओफीर के सोने से सजी खड़ी है। 10 ऐ बेटी, सुना! गौर कर और कान लगा; अपनी कौम और अपने बाप के घर को भूल जा; 11 और बादशाह तेरे हुम्स का मुश्ताक होगा। क्यौंकि वह तेरा खुदावन्द है, तू उसे सिंजदा कर! 12 और सूर की बेटी हादिया लेकर हाजिर होगी, कौम के दौलतमंद तेरी खुशी की तलाश करेंगे। 13 बादशाह की बेटी महल में सरापा हुम्स अफरोज है, उसका लिबास जरबफत का है; 14 वह बेल बूटे दार लिबास में बादशाह के सम्मने पहुँचाई जाएगी। उसकी कुवारी सहेलियाँ जो उसके पीछे — पीछे चलती हैं, तेरे सम्मने हाजिर की जाएँगी। 15 वह उनके खुशी और खुर्मी से ले आएँ, वह बादशाह के महल में दाखिल होंगी। 16 तेरे बेटे तेरे बाप दादा के जाँ नशीन होंगे; जिनको तू पूरी जमीन पर सरदार मुकर्रर करेगा। 17 मैं तेरे नाम की याद को नसल दर नसल काईम रखूँगा इसलिए उम्मते हमेशा से हमेशा तक तेरी; शुक्रजुलाई करेंगी।

46 खुदावन्द हमारी पनाह और ताकत है; मुसीबत में मुस्त़इद मददगार। 2 इसलिए हम को कुछ खौफ नहीं चाहे जमीन उलट जाए, और पहाड़ सम्नुद्र की तह में डाल दिए जाए, 3 चाहे उसका पानी शेर मचाए और तूफानी हो, और पहाड़ उसकी लहरों से हिल जाएँ। सिलह 4 एक ऐसा दरिया है जिसकी शाखो से खुदा के शहर को यानी हक ताला के पाक घर को फ़रहत होती है। 5 खुदा उसमें है, उसे कभी जुम्बिश न होगी; खुदा सुबह सर्वे उसकी मदद करेगा। 6 कौमै झुंगलाई, सलतनतों ने जुम्बिश खाइ; वह बोल उठा, जमीन पिघल गई। 7 लश्करों का खुदावन्द हमारे साथ है; याकूब का खुदा हमारी पनाह है (सिलाह) 8 आओ, खुदावन्द के कामों को देखो, कि उसने जमीन पर क्या क्या वीरानियाँ की हैं। 9 वह जमीन की इन्तिहा तक जंग बंद कराता है; वह कमान को तोड़ता, और नेजे के टुकड़े कर डालता है। 10 'खामोश हो जाओ, और जान लो कि मैं खुदा हूँ। मैं कौमों के बीच सरबुलंद हूँगा।' मैं सारी जमीन पर सरबुलंद हूँगा।' 11 लश्करों का खुदावन्द हमारे साथ है, याकूब का खुदा हमारी पनाह है। (सिलाह)

47 ऐ सब उम्मतों, तालियाँ बजाओ! खुदा के लिए खुशी की आवाज से ललकारो! 2 क्यौंकि खुदावन्द ताला बड़ा है, वह पूरी जमीन का शहंशाह है। 3 वह उम्मतों को हमारे सामने पस्त करेगा, और कौमों हमारे कटदों तले हो जायेंगी। 4 वह हमारे लिए हमारी मीरास को चुनेगा, जो उसके महबूब याकूब की हश्मत है। (सिलाह) 5 खुदा ने बुलन्द आवाज के साथ, खुदावन्द ने नरसिंगे की आवाज के साथ सु'ऊंद फरमाया। 6 मदहसराई करो, खुदा की मदहसराई करो! मदहसराई करो, हमारे बादशाह की मदहसराई करो! 7 क्यौंकि खुदा सारी जमीन का बादशाह है; 'अक्सल से मदहसराई करो। 8 खुदा कौमों पर सल्तनत करता है; खुदा अपने पाक तख्त पर बैठा है। 9 उम्मतों के सरदार इक्षे हुए हैं, ताकि अब्बाम के खुदा की उम्मत बन जाएँ; क्यौंकि जमीन की ढार्तों खुदा बीं हैं, वह बहुत बुलन्द है।

48 हमारे खुदा के शहर में, अपने पाक पहाड़ पर खुदावन्द बुजुर्ग और बेहद सिताइश के लायक है! 2 उत्तर की जानिब कोह — ए — सिय्यन, जो बड़े बादशाह का शहर है, वह बुलन्दी में खुशनुमा और तमाम जमीन का फ़ख़ है। 3 उसके महलों में खुदा पनाह माना जाता है। 4 क्यौंकि देखो, बादशाह इक्षे हुए, वह मिलकर गुज़रे। 5 वह देखकर तंग हो गए, वह घबराकर भागे। 6 वहाँ कंपकी ने उनको आ दबाया, और ऐसे दर्द ने जैसा पैदाइश का दर्द। 7 तू पूर्बी हवा से तरसीस के जहाजों को तोड़ डालता है। 8 लश्करों के खुदावन्द के शहर में, यानी अपने खुदा के शहर में, जैसा हम ने सुना था वैसा ही हम ने देखा: खुदा उसे हमेशा बक्करर रखेगा। 9 ऐ खुदा, तेरी हैकल के अन्दर हम ने तेरी शफ़कत पर गौर किया है 10 ऐ खुदा, जैसा तेरा नाम है वैसी ही तेरी सिताइश जमीन की इन्तिहा तक है। तेरा दहना हाथ सदाकत से मां'मूर है। 11 तेरे अहकाम की बजह से: कोह — ए — सिय्यन शादमान हो यहदाह की बेटियाँ खुशी मनाएं, 12 सिय्यन के गिर्द फिरो और उसका तवाफ़ करो उसके बुजुर्जों को मिनों, 13 उसकी शहर पनाह को ख़बर देख लो, उसके महलों पर गौर करो; ताकि तुम अपने बाली नसल को उसकी ख़बर दे सको। 14 क्यौंकि यही खुदा हमेशा से हमेशा तक हमारा खुदा है, यही मौत तक हमारा रहनुमा रहेगा।

49 ऐ सब उम्मतों, यह सुनो। ऐ जहान के सब बाशिन्दो, कान लगाओ! 2 क्या अदाना क्या आला, क्या अमीर क्या फ़कीर। 3 मेरे मुँह से हिकमत की बातें निकलेंगी, और मेरे दिल का खयाल पुर खिरद होगा। 4 मैं तस्मील की तरफ़ कान लगाऊँगा, मैं अपना राज सिंतार पर बयान करूँगा। 5 मैं मुसीबत के दिनों में क्यौं दर्द, जब मेरा पीछा करने वाली बदी मुझे धेर हो? 6 जो अपनी दौलत पर भरोसा रखते, और अपने माल की कसरत पर फ़ख़ करते हैं, 7 उनमें से कोई किसी तरह अपने बाई का फ़िदिया नहीं दे सकता, न खुदा को उसका मु'आवजा दे सकता है। 8 क्यौंकि उनकी जान का फ़िदिया बेश कीमत है; वह हमेशा तक अदा न होगा। 9 ताकि वह हमेशा तक जिन्दा रहे और कब्र को न देखे। 10 क्यौंकि वह देखता है, कि दानिशमद मर जाते हैं, बैकूफ़ व हैवान खसलत एक साथ हलाक होते हैं, और अपनी दौलत औरों के लिए छोड़ जाते हैं। 11 उनका दिली खयाल यह है कि उनके घर हमेशा तक, और उनके घर नसल दर नसल बने रहेंगे; वह अपनी जमीन अपने ही नाम नामज़द करते हैं। 12 पर इंसान इज्जत की हालत में काईम नहीं रहता वह जानवरों की तरह है, जो फ़ना हो, जाते हैं। 13 उनकी यह चाल उनकी बैकूफ़ी है, तोभी उनके बाद लोग उनकी बातों को पसंद करते हैं। (सिलाह) 14 वह जैसे पाताल का रेवड ठहराए गए हैं; मौत उनकी पासबान होगी; दियानदार सबह को उन पर मुसल्लत होगा, और उनका हुम्स पाताल का तुक्मा होकर बेठिकाना होगा। (Sheol h7585) 15 लेकिन खुदा मेरी जान को पाताल के इखिल्यार से छुड़ा लेगा, क्यौंकि वही मुझे कबूल करेगा। (सिलाह) (Sheol h7585) 16 जब कोई मालदार हो जाए जब उसके घर की हश्मत बढ़े, तो तू खौफ़ न कर। 17 क्यौंकि वह मरकर कुछ साथ न ले जाएगा; उसकी हश्मत उसके साथ न जाएगी। 18 चाहे जीते जी वह अपनी जान को मुबारक कहता रहा हो और जब तू अपना भला करता है तो लोग तेरी तारीफ़ करते हैं 19 तोभी वह अपने बाप दादा की गिरोह से जा मिलेगा, वह रोशनी को हरपिज न देखेंगे। 20 आदमी जो 'इज्जत की हालत में रहता है, लेकिन 'अक्सल नहीं रखता जानवरों की तरह है, जो फ़ना हो जाते हैं।

50 रब खुदावन्द खुदा ने कलाम किया, और पूरब से पश्चिम तक दुनिया को बुलाया। 2 सिय्यन से जो हुम्स का कमाल है, खुदा जलबागर हुआ है। 3 हमारा खुदा आएगा और खामोश नहीं रहेगा; आग उसके आगे आगे भस्म

करती जाएगी, 4 अपनी उम्मत की 'अदालत करने के लिए वह आसमान — ओ— ज़मीन को तलब करेगा, 5 कि मेरे पाक लोगों को मेरे सामने जमा' करो, जिन्होंने कुर्बानी के जरिये से मेरे साथ 'अहद बांधा है। 6 और आसमान उसकी सदाकत बयान करेंगे, क्यूंकि खुदा आप ही इन्साफ करने वाला है। 7 'ऐ मेरी उम्मत, सुन, मैं कलाम करूँगा, और ऐ इस्माइल, मैं तुझ पर गवाही दूँगा। खुदा, तेरा खुदा मैं ही हूँ। 8 मैं तुझे तेरी कुर्बानियों की वजह से मलामत नहीं करूँगा, और तेरी सोखतीनी कुर्बानी बाबराब मेरे सामने रहती है; 9 न मैं तेरे घर से बैल लूँगा न तेरे बाड़े से बकरे। 10 क्यूंकि जंगल का एक एक जानवर, और हजारों पहाड़ों के चौपाये मेरे ही हैं। 11 मैं पहाड़ों के सब परिस्तों को जानता हूँ, और मैदान के दरिन्दे मेरे ही हैं। 12 "आगर मैं भक्त होता तो तुझ से न कहता, क्यूंकि दुनिया और उसकी मामूली मेरी ही है। 13 क्या मैं साँड़ों का गोशत खाऊँगा, या बकरों का खुन पियँगा? 14 खुदा के लिए शुक्रगुजारी की कुर्बानी पेश करें, और हक्कताला के लिए अपनी मन्त्रों पूरी कर; 15 और मुसीबत के दिन मुझ से फरियाद कर मैं तुझे छुड़ाऊँगा और तू मेरी तम्जीद करेगा।" 16 लेकिन खुदा शरीर से कहता है, तुझे मेरे कानून बयान करने से क्या वास्तव? और तू मेरे 'अहद' को अपनी जबान पर क्यूँ लाता है? 17 जबकि तुझे तर्कियत से 'अदालत' है, और मेरी बातों को पीठ पीछे फेंक देता है। 18 तू चोर को देखकर उससे मिल गया, और ज़ानियों का शरीक रहा है। 19 "तेरे मुँह से बदी निकलती है, और तेरी जबान फेरेब गढ़ती है। 20 तू बैठा बैठा अपने भाई की ग़ीबत करता है; और अपनी ही माँ के बेटे पर तोहमत लगाता है। 21 तूने यह काम किए और मैं खामोश रहा; तूने गुमान किया, कि मैं बिल्कुल तुझ ही सा हूँ। लेकिन मैं तुझे मलामत करके इनको तेरी आँखों के सामने तरतीब दूँगा। 22 "अब ऐ खुदा को भलने वालों, इसे सोच लो, ऐसा न हो कि मैं तुम को फाड़ डालूँ, और कोई छुड़ाने वाला न हो। 23 जो शुक्रगुजारी की कुर्बानी पेश करता है वह मेरी तम्जीद करता है; और जो अपना चालांचलन दुस्त रखता है, उसको मैं खुदा की नजात दिखाऊँगा।"

51 ऐ खुदा! अपनी शक्ति के मुताबिक मुझ पर रहम कर; अपनी रहमत की कसरत के मुताबिक मेरी खुताएँ मिटा दे। 2 मेरी बदी को मुझ से धो डाल, और मेरे गुनाह से मुझे पाक कर! 3 क्यूंकि मैं अपनी खुताओं को मानता हूँ, और मेरा गुनाह हमेशा मेरे सामने है। 4 मैंने सिर्फ तेरा ही गुनाह किया है, और वह काम किया है जो तेरी नज़र में बुरा है; ताकि तू अपनी बातों में रास्त ठहरे, और अपनी 'अदालत' में बेघेर रहे। 5 देख, मैंने बदी में सूरत पकड़ी, और मैं गुनाह की हालत में माँ के पेट में पड़ा। 6 देख, तू बातिन की सच्चाई परसंद करता है, और बातिन ही में मुझे दानाई सिखाएगा। 7 ज़ेरे से मुझे साफ कर, तो मैं पाक हूँगा; मुझे धो, और मैं बर्फ से ज्यादा सफेद हूँगा। 8 मुझे खुशी और खुम्ही की खबर सुना, ताकि वह हड्डियों जो तूने तोड़ डाली, हैं, खुश हों। 9 मेरे गुनाहों की तरफ से अपना मुँह फेर ले, और मेरी सब बदकरारी मिटा डाल। 10 ऐ खुदा! मेरे अन्दर पाक दिल पैदा कर, और मेरे बातिन में शुरू से सच्ची स्थ डाल। 11 मुझे अपने सामने से खारिज न कर, और अपनी पाक स्थ को मुझ से जुड़ा न कर। 12 अपनी नजात की शादमानी मुझे फिर इन्यात कर, और मुस्ताइद स्थ से मुझे संभाला। 13 तब मैं खताकारों को तेरी राहें सिखाऊँगा, और गुनहगार तेरी तरफ रूँदूँ करेंगे। 14 ऐ खुदा! ऐ मेरे नजात बख्श खुदा, मुझे खून के जुर्ख से छुड़ा, तो मेरी जबान तेरी सदाकत का हम्द गाएगी। 15 ऐ खुदावन्द! मेरे होटों को खोल दे, तो मेरे मुँह से तेरी सिटाइश निकलेगी। 16 क्यूंकि कुर्बानी मैं तेरी खशी नहीं, बरना मैं देता; सोखतीनी कुर्बानी से तुझे कुछ खशी नहीं। 17 शिक्स्ता स्थ खुदा की कुर्बानी है; ऐ खुदा! तू शिक्स्ता और खस्तादिल को हकीर न जानेगा। 18 अपने करम से सिय्यन के साथ भलाई कर,

येस्खलेम की फर्सील को तामीर कर, 19 तब तू सदाकत की कुर्बानियों और सोखतीनी कुर्बानी और पूरी सोखतीनी कुर्बानी से खुश होगा; और वह तेरे मजबह पर बछड़े चढ़ाएँगे।

52 ऐ जबरदस्त, तू शरारत पर क्यूँ फ़खु करता है? खुदा की शक्ति हमेशा की है। 2 तेरी जबान महज शरारत ईजाद करती है; ऐ दगाबाज, वह तेर उस्तरे की तरह है। 3 त बदी को नेकी से ज्यादा पसंद करता है, और झूट को सदाकत की बात से। 4 ऐ दगाबाज जबान! तू मुहलिक बातों को पसंद करती है। 5 खुदा भी तुझे हमेशा के लिए हलाक कर डालेगा; वह तुझे पकड़ कर तेरे खेमे से निकाल फेंकेगा, और जिन्होंने की ज़मीन से तुझे उखाड़ डालेगा। (सिलाह) 6 सादिक भी इस बात को देख कर डर जाएँगे, और उस पर हँसेंगे, 7 कि देखो, यह वही आदमी है जिसने खुदा को अपनी पनाहगाह न बनाया, बन्कि अपने माल की जयादती पर भरोसा किया, और शरारत में पक्का हो गया। 8 लेकिन मैं तो खुदा के घर में जैतून के हरे दरखत की तरह हूँ। मेरा भरोसा हमेशा से हमेशा तक खुदा की शक्ति पर है। 9 मैं हमेशा तेरी शुक्रगुजारी करता रहूँगा, क्यूंकि तू ही ने यह किया है; और मझे तेरे ही नाम की आस होगी, क्यूंकि वह तेरे पाक लोगों के नज़दीक ख़बू है।

53 बेकूफ ने अपने दिल में कहा है, कि कोई खुदा नहीं। वह बिगड़ गये उन्होंने नफरत अंगेज बदी की है। कोई नेकोकार नहीं। 2 खुदा ने आसमान पर से बनी आदम पर निगाह की ताकि देखे कि कोई दानिशमंद, कोई खुदा का तालिब है या नहीं। 3 वह सब के सब फिर गए है, वह एक साथ नापाक हो गए; कोई नेकोकार नहीं, एक भी नहीं। 4 क्या उन सब बदकिरदारों को कुछ 'इल्म नहीं, जो मेरे लोगों को ऐसे खेते हैं जैसे रोटी, और खुदा का नाम नहीं लेते? 5 वहाँ उन पर बड़ा खौफ़ छा गया जबकि खौफ़ की कोई बात न थी। क्यूंकि खुदा ने उनकी हड्डियाँ जो तेरे खिलाफ़ खैमाजन थे, बिखेर दी। तूने उनको शर्मिन्दा कर दिया, इसलिए कि खुदा ने उनको रक्ष कर दिया है। 6 काश कि इस्माइल की नजात सिय्यून में से होती! जब खुदा अपने लोगों को गुलामी से लौटा लाएगा; तो याकूब खुश और इस्माइल शादमान होगा।

54 ऐ खुदा! अपने नाम के वर्सीले से मुझे बचा, और अपनी कुदरत से मेरा इन्साफ़ कर। 2 ऐ खुदा मेरी दुआ सुन ले; मेरे मुँह की बातों पर कान लगा। 3 क्यूंकि बेगाने मेरे खिलाफ़ उठे हैं, और उठे लोग मेरी जान के तलबगार हुए हैं, उन्होंने खुदा को अपने सामने नहीं रखता। 4 देखो, खुदा मेरा मददगार है। खुदावन्द मेरी जान को संभालने वालों में है। 5 वह ब्लाई को मेरे दूधमनों ही पर लौटा देगा; तू अपनी सच्चाई की रुह से उनको फना कर! 6 मैं तेरे सामने रजा की कुर्बानी चढ़ाऊँगा; ऐ खुदावन्द! मैं तेरे नाम की शुक्रगुजारी करूँगा क्यूंकि वह ख़बू है। 7 क्यूंकि उसने मुझे सब मुसीबतों से छुड़ाया है, और मेरी आँख ने मेरे दूधमनों को देख लिया है।

55 ऐ खुदा! मेरी दुआ पर कान लगा; और मेरी मिन्नत से मुँह न फेर। 2 मेरी तरफ मुतवजिह हो और मुझे जवाब दें; मैं गम से बेकरार होकर कराहत हूँ। 3 दूश्मन की आवाज से, और शरीर के ज़ुल्म की बजह; क्यूंकि वह मुझ पर बदी लादते, और कहर में मुझे सताते हैं। 4 मेरा दिल मुझ में बेताब है, और मौत का हौल मुझ पर छा गया है। 5 खौफ़ और कपकपी मुझ पर तारी है, डर ने मुझे दबा लिया है, 6 और मैंने कहा, "काश कि बजूतर की तरह मेरे पर होते तो मैं उड़ जाता और आराम पाता! 7 फिर तो मैं दूर निकल जाता, और बीरान में बसेरा करता। (सिलाह) 8 मैं आँधी के झोंके और तूफ़न से, किसी पनाह की जगह में भाग जाता।" 9 ऐ खुदावन्द! उनको हलाक कर, और उनकी

ज्ञान में तकरिका डाल; क्यौंकि मैंने शहर में ज़ुल्म और झगड़ा देखा है। 10 दिन रात वह उसकी फसील पर गश्त लगात हैं, बदी और फसाद उसके अंदर हैं। 11 शरारत उसके बीच में बसी हुई है; सितम और फरेब उसके कूचों से दूर नहीं होते। 12 जिसने मुझे मलामत की वह दुश्मन न था, वरना मैं उसको बदांशत कर लेता; और जिसने मेरे खिलाफ तकब्बर किया वह मुझ से 'अदावत रखने वाला न था, नहीं तो मैं उससे छिप जाता। 13 बल्कि वह तो तूहीं था जो मेरा हासर, मेरा रफीक और दिली दोस्त था। 14 हमारी आपसी गुपतगू शीरिन थी; और हज़म के साथ खुदा के घर में फिरते थे। 15 उनकी मौत अचानक आ दबाए, वह जीति जी पाताल में उतर जाएँ; क्यौंकि शरारत उनके घरों में और उनके अन्दर है। (Sheol h7585) 16 लेकिन मैं तो खुदा को पुकारूँगा, और खुदावन्द मुझे बचा लेगा। 17 सुबह — ओ — शाम और दोपहर को मैं फरियाद करूँगा और कराहत रहूँगा, और वह मेरी आवाज़ सुन लेगा। 18 उसने उस लड़ाई से जो मेरे खिलाफ थी, मेरी जान को सलामत छुड़ा लिया। क्यौंकि मुझसे झागड़ा करने वाले बहुत थे। 19 खुदा जो कदीम से है, सुन लेगा और उनको जबाब देगा। यह वह है जिनके लिए इन्कलाब नहीं, और जो खुदा से नहीं दरते। 20 उस शख्स ने ऐसों पर हाथ बढ़ाया है, जो उससे सुरू रखते थे। उसने अपने 'अहद को तोड़ दिया है। 21 उसका मुँह मरुष्वन की तरह चिकना था, लेकिन उसके दिल में जंग थी। उसकी बातें तेल से ज्यादा मुलायम, लेकिन नंगी तलवरों थी। 22 अपना बोझ खुदावन्द पर डाल दे, वह तुझे संभालेगा। वह सादिक को कभी जुमिश न खाने देगा। 23 लेकिन ऐ खुदा! तू उनको हलाकत के गढ़े में उतारेगा। ख़नी और दाबावाज़ अपनी आर्थी उम्र तक भी जिन्दा न रहेगे। लेकिन मैं तुझ पर भरोसा करूँगा।

56 ऐ खुदा! मुझ पर रहम फरार, क्यौंकि इंसान मुझे निगलना चाहता है, वह दिन भर लड़कर मुझे सताता है। 2 मेरे दुश्मन दिन भर मुझे निगलना चाहते हैं, क्यौंकि जो गुस्सर करके मुझे से लड़ते हैं, वह बहुत है। 3 जिस वक्त मुझे डर तोगेगा, मैं तद्द पर भरोसा करूँगा। 4 मेरा फ़ख़ खुदा पर और उसके कलाम पर है। मेरा भरोसा खुदा पर है, मैं डरने का नहीं: बशर मेरा क्या कर सकता है? 5 वह दिन भर मेरी बातों को मरोड़ते रहते हैं; उनके खयाल सरासर यही है, कि मुझ से बदी करें। 6 वह इकट्ठे होकर छिप जाते हैं; वह मेरे नक्श — ए — कदम को देखते भालते हैं, क्यौंकि वह मेरी जान की घाट में है। 7 क्या वह बदकारी करके बच जाएँगे? ऐ खुदा, कहर में उम्मतों को गिरा दे! 8 तू मेरी आवारगी का हिसाब रखता है; मेरे अँख़युओं को अपने मश्कीजे में रख ले। क्या वह तेरी किंतब में लिखे नहीं है? 9 तब तो जिस दिन मैं फरियाद करूँगा, मेरे दुश्मन पस्पा होंगे। मुझे यह मालूम है कि खुदा मेरी तरफ है। 10 मेरा फ़ख़ खुदा पर और उसके कलाम पर है; मेरा फ़ख़ खुदावन्द पर और उसके कलाम पर है। 11 मेरा भरोसा खुदा पर है, मैं डरने का नहीं। इंसान मेरा क्या कर सकता है? 12 ऐ खुदा! तेरी मन्त्रों मुझ पर हैं; मैं तेरे हज़र शकुगुजारी की कुर्बानीयाँ पेश करूँगा। 13 क्यौंकि तूने मेरी जान को मौत से छुड़ाया; क्या तूने मेरे पाँव को किसलने से नहीं बचाया, ताकि मैं खुदा के सामने जिन्दों के न्यू में चलूँ?

57 मुझ पर रहम कर, ऐ खुदा! मुझ पर रहम कर, क्यौंकि मेरी जान तेरी पनाह लेती है। मैं तेरे परों के साथे मैं पनाह लूँगा, जब तक वह आफते गुज़र न जाएँ। 2 मैं खुदा ताला से फरियाद करूँगा; खुदा से, जो मेरे लिए सब कुछ करता है। 3 वह मेरी नजात के लिए आसमान से भेजेगा; जब वह जो मुझे निगलना चाहता है, मलामत करता हो। (सिलाह) खुदा अपनी शफकत और सच्चाई को भेजेगा। 4 मेरी जान बबरों के बीच है, मैं आतिश मिजाज लोगों में

पड़ा हूँ यानी ऐसे लोगों में जिनके दाँत बर्थियाँ और तीर है, जिनकी ज्ञान तेज तलवार है। 5 ऐ खुदा! तू आसमान पर सरफ़राज़ हो, तेरा जलाल सारी ज़मीन पर हो। 6 उन्होंने मेरे पाँव के लिए जाल लगाया है, मेरी जान 'आजिज़ आ गई। उन्होंने मेरे आगे गढ़ा खोदा, वह खुद उसमें गिर पड़े। (सिलाह) 7 मेरा दिल काईम है, ऐ खुदा! मेरा दिल काईम है, मैं गाँठ़गा बल्कि मैं मदह सराई करूँगा। 8 ऐ मेरी शौकत, बेदर हो! ऐ बर्बत और सितार जागो! मैं खुद सबह सवैरे जाग उड़ाँगा। 9 ऐ खुदावन्द! मैं लोगों में तेरा शुक्र करूँगा। मैं उम्मतों में तेरी मदहसराई करूँगा। 10 क्यौंकि तेरी शफकत आसमान के, और तेरी सच्चाई फलाक के बाबर बुलन्द है। 11 ऐ खुदा! तू आसमान पर सरफ़राज़ हो! तेरा जलाल सारी ज़मीन पर हो!

58 ऐ खुज़ुरों! क्या तुम दर हकीकत रास्तगोई करते हो? ऐ बनी आदम! क्या तुम ठीक 'अदालत करते हो? 2 बल्कि तुम तो दिल ही दिल में शरारत करते हो; और ज़मीन पर अपने हाथों से ज़ुल्म पैमाई करते हों। 3 शरीर पैदाइश ही से कज़रवी इखिलायर करते हैं; वह पैदा होते ही झट बोलकर गुपराह हो जाते हैं। 4 उनका जहर साँप का सा जहर है; वह बरेर अजदहे की तरह हैं जो कान बंद कर लेता है; 5 जो मनतर पढ़ने वालों की आवाज़ ही नहीं सुनता, जो चाहे वह कितनी ही होशियारी से मन्तर पढ़े। 6 ऐ खुदा! तू उनके दाँत उनके पूँह में तोड़ दे, ऐ खुदावन्द! बबर के बच्चों की दाढ़े तोड़ डाल। 7 वह घुलकर बहते पानी की तरह हो जाएँ जब वह अपने तीर चलाएँ, तो वह जैसे कुन्द पैकान हों। 8 वह ऐसे हो जाएँ जैसे धोयां, जो गल कर फना हो जाता है; और जैसे 'ओरत का इस्कात जिसने सूरज को देखा ही नहीं। 9 इससे पहले कि तुम्हारी हड्डियों को कटौंगे की आंच लगे वह हरे और जलते दोनों को यकस़ूं बगोते से उड़ा ले जाएगा। 10 सादिक इन्तकाम को देखकर ख़श होगा; वह शरीर के ख़न से अपने पाँव तर करेगा। 11 तब लोग कहेंगे, यकीनन सादिक के लिए अज्ञ है; बेशक खुदा है, जो ज़मीन पर 'अदालत करता है।

59 ऐ मेरे खुदा मुझे मेरे दुश्मनों से छुड़ा मेरे खिलाफ उठने वालों पर सरफ़राज कर। 2 मुझे बदकिरदारों से छुड़ा, और खंबावर आदमियों से मुझे बचा। 3 क्यौंकि देख, वह मेरी जान की घाट में है। ऐ खुदावन्द! मेरी खुदा या मेरे गुनाह के बैरे ज़बरदस्त लोग मेरे खिलाफ इकट्ठे होते हैं। 4 वह मुझ बेक्षर पर दौड़ दौड़कर तैयार होते हैं; मेरी मदद के लिए जाग और देख! 5 ऐ खुदावन्द, लश्करों के खुदा! इस्माईल के खुदा! सब कौमों के मुहासिब के लिए उठ़; किनी दाबाज़ खताकार पर रहम न कर। (सिलाह) 6 वह शाम को लौटते और कुते की तरह भौंकते हैं और शहर के गिर्द फिरते हैं। 7 देख! वह अपने पूँह से डकाते हैं, उनके लब्बों के अन्दर तलवरें हैं; क्यौंकि वह कहते हैं, "कौन सुनता है?" 8 लेखने ऐ खुदावन्द! तू उन पर हँसिएगा; तू तापम कौमों को ठंडों में उड़ाएगा। 9 ऐ मेरी कुब्त, मुझे तेरी ही आस होगी, क्यौंकि खुदा मेरा ऊँचा बुर्ज है। 10 मेरा खुदा अपनी शफकत से मेरा अगुवा होगा, खुदा मुझे मेरे दुश्मनों की पस्ती दिखाएगा। 11 उनको कल्तन कर, ऐसा न हो मेरे लोग भूल जाएँ ऐ खुदावन्द, ऐ हमारी ढाल! अपनी कुदरत से उनको तिर बितर करके पस्त कर दे। 12 वह अपने पूँह के गुनाह, और अपने होंठों की बातों और अपनी लान तान और झट बोलने के बजह से, अपने गुस्सर में पकड़े जाएँ। 13 कहर में उनको फना कर दे, फना कर दे ताकि वह बर्बाद हो जाएँ, और वह ज़मीन की इन्हिना तक जान ले, कि खुदा या 'क़बूल पर हक्मरान है। 14 फिर शाम को वह लौटै और कुते की तरह भौंकें और शहर के गिर्द फिरें। 15 वह खाने की तलाश में मेरे मारे फिरें, और अगर आसदा न हों तो सारी रात ठहरे हों। 16 लेकिन मैं तेरी कुदरत का हमद गाँठ़गा, बल्कि सबह को बुलन्द आवाज़ से तेरी

शफकत का हम्म गाँड़गा। क्यूँकि तू मेरा ऊँचा बुर्ज है, और मेरी मुसीबत के दिन मेरी पनाहगाह। 17 ऐ मेरी ताकत, मैं तेरी मदहसराई कस्संगा; क्यूँकि खुदा मेरा शफकती खुदा मेरा ऊँचाबुर्ज है।

60 ऐ खुदा, तूने हमें रुक्किया; तूने हमें शिकस्ता हाल कर दिया। तू नाराज रुहा है। हमें फिर बहाल कर। 2 तूने ज़मीन को लरजा दिया; तूने उसे फाड़ डाला है। उसके रखने बन्द कर दे क्यूँकि वह लरजाँ है। 3 तूने अपने लोगों को सखियाँ दिखाई, तूने हमको लड़खड़ा देने वाली मय पिलाई। 4 जो तुझ से डरते हैं, तूने उनको एक झांडा दिया है; ताकि वह हक्क की खातिर बुल्नद किया जाए। (सिलाह) 5 अपने दहने हाथ से बचा और हमें जबाब दे, ताकि तेरे महबूब बचाए जाएँ। 6 खुदा ने अपनी पाकीज़गी में फरमाया है, “मैं खुशी कर्स्सांगा, मैं सिकम को तक्सीम कर्स्संगा, और सुकात की बादी को बढ़ाँगा।” 7 जिल आद मेरा है, मनस्ती भी मेरा है, इकाईम मेरे सिर का खुद है, यहदाह मेरा 'असा है। 8 मोआब मेरी चिलमची है, अदोम पर मैं जूता फेंक़ा; ऐ फिलिस्तीन, मेरी वजह से ललकारा।” 9 मुझे उस मुहकम शहर में कौन पहुँचाएगा? कौन मुझे अदोम तक ले गया है? 10 ऐ खुदा, क्या तूने हमें रुह नहीं कर दिया? ऐ खुदा, तू हमारे लश्करों के साथ नहीं जाता। 11 मुखालिफ के मुकाबले में हमारी मदद कर, क्यूँकि इंसानी मदद बेकार है। 12 खुदा की मदद से हम बहारुी करेंगे, क्यूँकि वही हमारे मुखालिफों को पस्त करेगा।

61 ऐ खुदा, मेरी फरियाद सुन! मेरी दुआ पर तबज्जूह कर। 2 मैं अपनी अफसुरी दिली में ज़मीन की इन्हिंहा से तुझे पुकास्संगा; तू मुझे उस चट्ठान पर ले चल जो मुझसे ऊँची है; 3 क्यूँकि तू मेरी पनाह रहा है, और दुश्मन से बचने के लिए ऊँचा बुर्ज। 4 मैं हमेशा तेरे खेमे में रुहँगा। मैं तेरे परों के साथे में पनाह लूँगा। 5 क्यूँकि ऐ खुदा तूने मेरी मिन्नतें कुबल की हैं तूने मुझे उन लोगों की सी मीरास बख्ती है जो तेरे नाम से डरते हैं। 6 तू बादशाह की उम्र दराज करेगा; उसकी उम्र बहुत सी नसलों के बराबर होगी। 7 वह खुदा के सामने हमेशा काईम रहेगा; तू शफकत और सच्चाई की उसकी हिफाजत के लिए मुहर्या कर। 8 यूँ मैं हमेशा तेरी मदहसराई कर्स्संगा, ताकि रोजाना अपनी मिन्नतें पूरी करूँ।

62 मेरी जान को खुदा ही की उम्मीद है, मेरी नजात उसी से है। 2 वही अकेला मेरी चट्ठान और मेरी नजात है, वही मेरा ऊँचा बुर्ज है, मुझे ज़यादा जुँबिश न होगी। 3 तुम कब तक ऐसे शाख पर हमला करते रहोगे, जो इकी हई दीवार और हिलिटी बाड़ की तरह है; ताकि सब मिलकर उसे कल्प ल करो? 4 वह उसको उसके मर्तबे से पिरा देने ही का मश्वरा करते रहते हैं; वह झट से खुश होते हैं। वह अपने मुँह से तो बरकत देते हैं लेकिन दिल में लान्त करते हैं। 5 ऐ मेरी जान, खुदा ही की आस रख, क्यूँकि उसी से मुझे उम्मीद है। 6 वही अकेला मेरी चट्ठान और मेरी नजात है; वही मेरा ऊँचा बुर्ज है, मुझे जुँबिश न होगी। 7 मेरी नजात और मेरी शौकत खुदा की तरफ से है; खुदा ही मेरी ताकत की चट्ठान और मेरी पनाह है। 8 ऐ लोगों हर बत्त उस पर भरोसा करो; अपने दिल का हाल उसके सामने खोल दो। खुदा हमारी पनाहगाह है। (सिलाह) 9 यकीन अदना लोग बेसबात हैं और अला आदमी झटे; वह तराज़ में हह्के निकलेंगे; वह सब के सब बेमबाती से भी कमज़ोर हैं। 10 जुल्म पर तकिया न करो, लटमार करने पर न फूलों; अगर माल बढ़ जाए तो उस पर दिल न लगाओ। 11 खुदा ने एक बार फरमाया; मैंने यह दो बार सुना, कि कुदरत खुदा ही की है। 12 शफकत भी ऐ खुदाबन्द तेरी ही है, क्यूँकि तू हर शब्स को उसके 'अमल के मुताबिक बदला देता है।

63 ऐ खुदा, तू मेरा खुदा है, मैं दिल से तेरा तालिब हूँगा; खुशक और प्यासी ज़मीन में जहाँ पानी नहीं, मेरी जान तेरी प्यासी और मेरा जिस्म तेरा मुशातक है 2 इस तरह मैंने मकदिस में तुझ पर निगाह की ताकि तेरी कुदरत और हश्मत को देखूँ। 3 क्यूँकि तेरी शफकत ज़िन्दगी से बेहतर है मेरे होंट तेरी तारीफ करेंगे। 4 इसी तरह मैं उम्र भर तुमे मुबारक कहूँगा; और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाया कर्स्संगा; 5 मेरी जान जैसे गृदे और चर्ची से सेरे होगी, और मेरा मुँह मस्सर लबों से तेरी तारीफ करेगा। 6 जब मैं बिस्तर पर तुझे याद कर्स्संगा, और रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान कर्स्संगा; 7 इसलिए कि तू मेरा मददगार रहा है, और मैं तेरे परों के साथे में खुशी मनाऊँगा। 8 मेरी जान को तेरी ही धन है; तेरा दहना हाथ मुझे संभालता है। 9 लेकिन जो मेरी जान की हलाकत के दर पै है, वह ज़मीन के तह में चले जाएँगे। 10 वह तलबार के हवाले होंगे, वह गीदड़ों का लुक्मा बनेंगे। 11 लेकिन बादशाह खुदा में खुशी होगा; जो उसकी कसम खाता है वह फरँख करेगा; क्यूँकि झट बोलने वालों का मुँह बन्द कर दिया जाएगा।

64 ऐ खुदा मेरी फरियाद की आवाज सुन ले मेरी जान को दुश्मन के खौफ से बचाए रख। 2 शरीरों के खुफिया मस्वरे से, और बदकिरदारों के हाँगामे से मुझे छिपा ले 3 ज़िन्दोंने अपनी ज़बान तलबार की तरह तेरी ज़ी, और तल्ख बातों के तीरों का निशाना लिया है; 4 ताकि उनको खुफिया मकामों में कामिल आदमी पर चलाएँ; वह उनको अचानक उस पर चलाते हैं और डरते ही नहीं। 5 वह दुरे काम का मजबूत झारादा करते हैं; वह फंदे लगाने की सलाह करते हैं, वह कहते हैं, “हम को कौन देखेगा?” 6 वह शरारों को खोज खोज कर निकालते हैं; वह कहते हैं, “हमने खुब खोज लगाया।” उनमें से हर एक का बातिन और दिल 'अमीक है। 7 लेकिन खुदा उन पर तीर चलाएगा; वह अचानक तीर से ज़ख्मी हो जाएँगे। 8 और उन ही की ज़बान उनको तबाह करेगी; जिन्हे उनको देखेंगे सब सिर हिलाएँगे। 9 और सब लोग डर जाएँगे, और खुदा के काम का बयान करेंगे; और उसके तरीक — ए — 'अमल को बरखूनी समझ लेंगे। 10 सादिक खुदाबन्द में खुश होगा, और उस पर भरोसा करेगा, और जितने रास्तदिल हैं सब फरँख करेंगे।

65 ऐ खुदा, सिय्यन में तारीफ तेरी मुनतज़िर है; और तेरे लिए मिन्नत पूरी की जाएगी। 2 ऐ दुआ के सुने वाले! सब बशर तेरे पास आएँगे। 3 बद आमाल मुझ पर गालिब आ जाते हैं; लेकिन हमारी खताओं का कफ़कारा तू ही देगा। 4 मुबारक है वह आदमी जिसे तू बरगुजीदा करता और अपने पास आने देता है, ताकि वह तेरी बारगाहों में रहे। हम तेरे धर की खुबी से, यामी तेरी पाक हैकल से आसदा होंगें। 5 ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा! तू जो ज़मीन के सब किनारों का और समन्दर पर दूर दूर हने वालों का तकिया है; खौफनाक बातों के ज़रिए से तू हमें सदाकत से जबाब देगा। 6 तू कुदरत से कमरबस्ता होकर, अपनी ताकत से पहाड़ों को मजबूती बख्ताता है। 7 तू समन्दर के और उसकी मौजों के शोर को, और उम्मतों के हँगामे को खत्म कर देता है। 8 ज़मीन की इन्हिंहा के रहने वाले, तेरे मुअमजिजों से डरते हैं; तू मतल — ए — सुबह को और शाम को खुबी बख्ताता है। 9 तू ज़मीन पर तबज्जूह करके उसे सेराब करता है, तू उसे खुब मालामाल कर देता है; खुदा का दरिया पानी से भरा है; जब तू ज़मीन को यूँ तैयार कर लेता है तो उनके लिए अनाज मुहर्या करता है। 10 उसकी रेखारियों को खुब सेराब उसकी मेण्डों को बिठा देता उसे बारिश से नर्म करता है, उसकी पैदावार में बरकर देता है। 11 तू साल को अपने लुक्फ का ताज पहनाता है; और तेरी राहों से रोगन टपकता है। 12 वह बियाबान की चरागाहों पर टपकता है, और पहाड़ियाँ खुशी से कमरबस्ता हैं। 13 चरागाहों में

झुंड के झुंड फैले हुए हैं, वादियाँ अनाज से ढकी हुई हैं, वह खुशी के मारे ललकरती और गाती है।

66 ऐ सारी जमीन खुदा के सामने खुशी का नारा मार। 2 उसके नाम के:

ललाल का हमद गाओ; सिताइश करते हुए उसकी तम्जीद करो। 3 खुदा से कहो, “तेरी काम क्या ही बड़े हैं? तेरी बड़ी कुदरत के जरिए” तेरे दुश्मन अजिजी करोगे। 4 सारी जमीन तुड़े सिज्दा करेगी, और तेरे सामने गाएगी; वह तेरे नाम के हमद गाएँगे।” 5 आओ और खुदा के कामों को देखो; बड़ी आदम के साथ वह अपने सुलूक में बड़ा है। 6 उसने समन्दर को खुशक जमीन बना दिया; वह दरिया में से पैदल गुज़र गए। वहाँ हमने उसमें खुशी मनाई। 7 वह अपनी कुदरत से हमेशा तक सलतनत करेगा, उसकी अँखें कौमों को देखती रहती हैं। सरकश लोग तकब्बर न करें। 8 ऐ लोगों, हमारे खुदा को मुबारक करो, और उसकी तारीफ में आवाज बुलंद करो। 9 वही हमारी जान को जिन्दा रखता है; और हमारे पाँव को फिसलने नहीं देता। 10 क्यूंकि ऐ खुदा, तूने हमें आजमा लिया है; तूने हमें ऐसा ताया जैसे चाँदी ताई जाती है। 11 तूने हमें जाल में फँसाया, और हमारी कमर पर भारी बोझ रख्खा। 12 तूने सवारों को हमारे सिरों पर से गुज़रा हम आग में से और पानी में से होकर गुज़रें; लेकिन तू हम को अफरात की जगह में निकाल लाया। 13 मैं सोङ्गती कुबनियाँ लेकर तेरे घर में दाखिल हँगा; और अपनी मिन्नतें तेरे सामने अदा करँगा। 14 जो मुसीबत के बक्तु मेरे लबों से निकली, और मैंने अपने मुँह से मारें। 15 मैं मोटे मोटे जानवरों की सोखतनी कुबनियाँ मेंढों की खुशबू के साथ अदा करँगा। मैं बैल और बकरे पेश करँगा। 16 ऐ खुदा से डरने वालों, सब आओ, सुनो; और मैं बताऊँगा कि उसने मेरी जान के लिए क्या क्या किया है। 17 मैंने अपने मुँह से उसको पुकारा, उसकी तम्जीद मेरी जबान से हुई। 18 अगर मैं बड़ी को अपने दिल में रखता, तो खुदावन्द मेरी न सुनता। 19 लेकिन खुदा ने यकीनन सुन लिया है; उसने मेरी दुआ की आवाज पर कान लगाया है। 20 खुदा मुबारक हो, जिसने न तो मेरी दुआ को रद किया, और न अपनी शफ़कत को मुझ से बाज रख्खा!

67 खुदा हम पर रहम करे और हम को बरकत बरखो; और अपने चेहरे को

हम पर जलवायर फरमाए, (सिलाह) 2 ताकि तेरी राह जमीन पर जाहिर हो जाए, और तेरी नजात सब कौमों पर। 3 ऐ खुदा! लोग तेरी तारीफ करें; सब लोग तेरी तारीफ करें। 4 उम्मते खुश हों और खुशी से ललकरें, क्यूंकि तू रास्ती से लोगों की ‘अदालत करेगा, और जमीन की उम्मतों पर हक्कूमत करेगा (सिलाह) 5 ऐ खुदा! लोग तेरी तारीफ करें, सब लोग तेरी तारीफ करें। 6 जमीन ने अपनी पैदावार दे दी, खुदा यानी हमारा खुदा हम को बरकत देगा। 7 खुदा हम को बरकत देगा; और जमीन की इन्निहा तक सब लोग उसका डर मानेंगे।

68 खुदा उठे, उसके दुश्मन तितर बितर हों, उससे ‘अदावत रखने वाले

उसके सामने से भाग जाएँ। 2 जैसे धूंधों उड़ जाता है, वैसे ही तू उनको उड़ा दे, जैसे मोम आग के सामने पिघला जाता, वैसे ही शरीर खुदा के सामने फ़ना हो जाएँ। 3 लेकिन सादिक खुशी मनाएँ, वह खुदा के सामने खुश हों, बल्कि वह खुशी से फ़ूले न समाएँ। 4 खुदा के लिए गाओ, उसके नाम की मदहसराई करो; सहरा के सवार के लिए शाहराह तैयार करो; उसका नाम याह है, और तुम उसके सामने खुश हो। 5 खुदा अपने मुकद्दस मकान में, यतीमों का बाप और बेवाओं का दादरस है। 6 खुदा तन्हा को खान्दान बरखाता है; वह कैदियों को आजाद करके इकबालमंद करता है; लेकिन सरकश खुशक जमीन में रहते हैं। 7 ऐ खुदा, जब तू अपने लोगों के आगे — आगे चला, जब तू

बीरान में से गुज़रा, (सिलाह) 8 तो जमीन कॉप उठी; खुदा के सामने आसमान गिर पड़े, बल्कि पाक पहाड़ भी खुदा के सामने, इस्माईल के खुदा के सामने कॉप उठा। 9 ऐ खुदा, तूने खुब मैंह बरसाया; तूने अपनी खुशक मीरास को तजारी बरखी। 10 तेरे लोग उसमें बसने लगे; ऐ खुदा, तूने अपने फैज से गरीबों के लिए उसे तैयार किया। 11 खुदावन्द हक्म देता है; खुशबूबी देने वालियाँ फैज की फैज हैं। 12 लश्करों के बादशाह भागते हैं, वह भग जाते हैं, और ‘और घर में बैठी बैठी लट का माल बॉटी है। 13 जब तुम भेड़ सालों में पड़े रहते हो, तो उस कबूतर की तरह होगे जिसके बाजू जैसे चाँदी से, और पर खालिस सोने से मढ़े हुए हों। 14 जब कादिर — ए — मुतलक ने बादशाहों को उसमें परांगदा किया, तो ऐसा हाल हो गया, जैसे सलमोन पर बर्फ़ पड़ रही थी।

15 बसन का पहाड़ खुदा का पाहाड़ है; बसन का पहाड़ ऊँचा पहाड़ है। 16 ऐ ऊँचे पहाड़ों, तुम उस पहाड़ को क्यूँ ताकते हो, जिसे खुदा ने अपनी सुकूनत के लिए पसन्द किया है, बल्कि खुदावन्द उसमें हमेशा तक रहेगा? 17 खुदा के रथ बीस हज़ार, बल्कि हज़ारहा हज़ार हैं; खुदावन्द जैसा पाक पहाड़ में वैसा ही उनके बीच हैकल में है। 18 तूने ‘आलम — ए — बाला को सुअंड फरमाया, तू कैदियों को साथ ले गया; तुझे लोगों से बल्कि सरकशों से भी हड़िए मिले, ताकि खुदावन्द खुदा उनके साथ रहे। 19 खुदावन्द मुबारक हो, जो हर रोज़ हमारा बोझ उठाता है; वही हमारा नजात देने वाला खुदा है। 20 खुदा हमारे लिए छुड़ने वाला खुदा है और मौत से बचने की राहें भी खुदावन्द खुदा की हैं। 21 लेकिन खुदावन्द अपने दुश्मनों के सिर को, और लगातार गुनाह करने वाले की बालदार खोपड़ी को चीर डालेगा। 22 खुदावन्द ने फरमाया, “मैं उनको बसन से निकाल लाऊँगा; मैं उनको समन्दर की तह से निकाल लाऊँगा। 23 ताकि तू अपना पाँव खून से तर करे, और तेरे दुश्मन तेरे कुत्तों के मुँह का निवाला बनें।” 24 ऐ खुदा! लोगों ने तेरी आमद देखी, मकदिस में मेरे खुदा, मेरे बादशाह की ‘आमद 25 गए वाले आगे आगे और बजाने वाले पीछे पीछे चले, दफ़ बजाने वाली जबान लड़कियाँ बीच में। 26 तुम जो इस्माईल के चरणे से हो, खुदावन्द को मुबारक कहो, हाँ, मज़बू में खुदा को मुबारक करो। 27 वहाँ छोटा बिनयमीन उनका हाकिम है, यहदाह के उमरा और उनके मुसीरी, जब्लून के उमरा और नफ़ताली के उमरा है। 28 तेरे खुदा ने तेरी पायदारी का हक्म दिया है, ऐ खुदा, जो कुछ तूने हमारे लिए किया है, उसे पायदारी बख्खा। 29 तेरी हैकल की बजह से जो येस्तलिम मैंहे है, बादशाह तेरे पास हदिये लाएँगे। 30 तू नेसतान के जंगली जानवरों को धमका दे, सॉँडों के गोल को, और कौमों के बछड़ों को। जो चाँदी के सिक्कों को पामाल करते हैं: उसने जंगू कौमों को परांगदा कर दिया है। 31 उमरा मिस्म से आँणँ; कूश खुदा की तरफ अपने हाथ बढ़ाने में जल्दी करेगा। 32 ऐ जमीन की ममलुकतो, खुदा के लिए गाओ; खुदावन्द की मदहसराई करो। 33 (सिलाह) उसी की जो कटीम आसमान नहीं बल्कि आसमानों पर सवार है, देखो वह अपनी आवाज बुलंद करता है, उसकी आवाज में कुदरत है। 34 खुदा ही की ताजीम करो, उसकी हशमत इस्माईल मैंहे है, और उसकी कुदरत आसमानों पर। 35 ऐ खुदा, तू अपने मकदिसों में मुहीब है, इस्माईल का खुदा ही अपने लोगों को जोर और तवानाई बरखाता है। खुदा मुबारक हो।

69 ऐ खुदा मुझ को बचा ले, क्यूँकि पानी मेरी जान तक आ पहुँचा है। 2 मैं

गहरी दलदर में धंसा जाता हूँ, जहाँ खड़ा नहीं रहा जाता; मैं गहरे पानी में आ पड़ा हूँ, जहाँ सैलाब मेरे सिर पर से गुज़रता है। 3 मैं चिल्लते चिल्लते थक गया, मेरा गला सूख गया; मेरी अँखें अपने खुदा के इन्निजार में पथरा गई। 4 मुझ से बे बजह ‘अदावत रखने वाले, मेरे सिर के बालों से ज्यादा हैं; मेरी हलाकत के चाहने वाले और नाहक दुश्मन ज़बरदस्त हैं, तब जो मैंने छीना

नहीं मुझे देना पड़ा। 5 ऐ खुदा, तू मेरी बेवकूफी से बाकिफ है, और मेरे गुनाह तुझ से पोरीदा नहीं है। 6 ऐ खुदाबन्द, लरकरों के खुदा, तेरी उम्मीद रखने वाले मेरी वजह से शर्मिन्दा न हों, ऐ इमाईल के खुदा, तेरी तालिब मेरी वजह से स्वा न हों। 7 क्यूंकि तेरी नाम की खातिर मैंने मलामत उठाई है, शर्मिन्दी मेरे मुँह पर छा गई है। 8 मैं अपने भाइयों के नजदीक बेगाना बना हूँ, और अपनी माँ के फरजन्दों के नजदीक अजनबी। 9 क्यूंकि तेरे घर की गैरत मुझे खा गई, और तुझ को मलामत करने वालों की मलामतें मुझ पर आ पड़ी है। 10 मेरे रोजा रखने से मेरी जान ने जारी की, और यह भी मेरी मलामत का जरिए हआ। 11 जब मैं ने टाट ओडा, तो उनके लिए जर्ब — उल — मसल ठहरा। 12 फाटक पर बैठने वालों में मेरा ही जिक्र रहता है, और मैं नशे बाजों का हम्द हूँ। 13 लेकिन ऐ खुदाबन्द, तेरी खुशनृती के बक्त मेरी दुआ तुझ ही से है; ऐ खुदा, अपनी शक्त की फिरावानी से, अपनी नजात की सच्चाई में जवाब दे। 14 मुझे दलदल में से निकाल ले और धसने न दें: मुझ से 'अदावत रखने वालों, और गहरे पानी से मुझे बचा ले। 15 मैं सैलाब में ढूब न जाऊँ, और गहराव मुझे निगल न जाए, और पाताल मुझ पर अपना मुँह बन्द न कर ले। 16 ऐ खुदाबन्द, मुझे जवाब दे, क्यूंकि मेरी शक्त खबू है अपनी रहमों की कसरत के मुताबिक मेरी तरफ मुतवज्जिह हो। 17 अपने बन्दे से रस्पेरी न कर; क्यूंकि मैं सुसीबत में हूँ, जल्द मुझे जवाब दे। 18 मेरी जान के पास आकर उसे छुड़ा ले मेरे दुश्मों के सामने मेरा फिरिया दे। 19 त भी मलामत और शर्मिन्दी और स्वाइंसे वाकिफ है; मेरे दुश्मन सब के सब तेरे सामने हैं। 20 मलामत ने मेरा दिल तोड़ दिया, मैं बहुत उदास हूँ और मैं इसी इत्तिजार में रहा कि कोई तरस खाए लेकिन कोई न था; और तसल्ली देने वालों का मुन्तजिर रहा लेकिन कोई न मिला। 21 उन्होंने मुझे खाने को इन्द्रायन भी दिया, और मेरी प्यास बुझाने को उन्होंने मुझे सिरका पिलाया। 22 उनका दस्तरखबान उनके लिए फैदा हो जाए। और जब वह अमन से हों तो जाल बन जाए। 23 उनकी अँखें तारीक हो जाएँ, ताकि वह देख न सके, और उनकी कार्में हमेशा काँपती रहें। 24 अपना ग़ज़ब उन पर उँडेल दे, और तेरा शरीद कहर उन पर आ पड़े। 25 उनका घर उजड जाए, उनके खेमों में कोई न बरे। 26 क्यूंकि वह उसको जिसे तूने मारा है और जिनको तुने जर्खी किया है, उनके दुख का जिक्र करते हैं। 27 उनके गुनाह पर गुनाह बढ़ा; और वह तेरी सदाकत में दाखिल न हों। 28 उनके नाम किताब — ए — हयात से मिटा और सादियों के साथ मुर्दर्ज न हों। 29 लेकिन मैं तो गरीब और गमगीन हूँ। ऐ खुदा तेरी नजात मुझे सर बुलन्द करे। 30 मैं हम्द गाकर खुदा के नाम की तारीफ करूँगा, और शुक्रगुजारी के साथ उसकी तम्जीद करूँगा। 31 यह खुदाबन्द को बैल से ज्यादा पसन्द होगा, बल्कि सींग और खुर वाले बछड़े से ज्यादा। 32 हल्मि इसे देख कर खुश हुए हैं, ऐ खुदा के तालिबो, तुम्हारे दिल जिन्ना रहें। 33 क्यूंकि खुदाबन्द मोहताजों की सुनता है, और अपने कैदियों को हक्कीर नहीं जानता। 34 आसमान और जमीन उसकी तारीफ करें, और समन्दर और जो कुछ उनमें चलता फिरता है। 35 क्यूंकि खुदा सिय्यून को बचाएगा, और यहदाह के शहरों को बनाएगा; और वह वहाँ बसेंगे और उसके वारिस होंगे। 36 उसके बन्दों की नसल भी उसकी मालिक होगी, और उसके नाम से मुहब्बत रखने वाले उसमें बसेंगे।

70 ऐ खुदा! मुझे छुड़ाने के लिए, ऐ खुदाबन्द, मेरी मदद के लिए कर जल्दी कर! 2 जो मेरी जान को हलाक करने के दर पै है, वह सब शर्मिन्दा और स्वा हों। जो मेरे नुस्खान से खुश है, वह पस्पा और स्वा हों। 3 अह! हा! हा! करने वाले अपनी स्वाइंसे के बजह से पस्पा हों। 4 तेरे सब तालिब तुझ में खुश — ओ — खुर्रम हों; तेरी नजात के 'आशिक हमेशा कहा करें, "खुदा की

तम्जीद हो!" 5 लेकिन मैं गरीब और मोहताज हूँ, ऐ खुदा, मेरे पास जल्द आ! मेरा मददगार और छुड़ाने वाला तू ही है; ऐ खुदाबन्द, देर न कर! 71 ऐ खुदाबन्द तू ही मेरी पनाह है; मुझे कभी शर्मिन्दा न होने दे! 2 अपनी सदाकत में मुझे रहिए हैं और छुड़ा; मेरी तरफ कान लगा, और मुझे बचा ले। 3 त भी लिए ठहरने की चटान हो, जहाँ मैं बाबर जा सकूँ; तेरे मेरे बचाने का हक्म दे दिया है, क्यूंकि मेरी चटान और मेरा किला' तू ही है। 4 ऐ मेरे खुदा, मुझे शरीर के हाथ से, नारास्त और बेटर्ड आदमी के हाथ से छुड़ा। 5 क्यूंकि ऐ खुदाबन्द खुदा, तू ही मेरी उम्मीद है; लड़कपन से मेरा भरोसा तुझ ही पर है। 6 त पैदाइशी ही से मुझे संभालता आया है तू मेरी माँ के बतन ही से मेरा शक्तीक रहा है; इसलिए मैं हमेशा तेरी सिताइश करता रहूँगा। 7 मैं बहतों के लिए हैरत की जगह हूँ। लेकिन तू मेरी मजबूत पनाहगाह है। 8 मेरा मुँह तेरी सिताइश से, और तेरी तारीफ में दिन भर पुरे रहेगा। 9 बुढ़ापे के बक्त मुझे न छोड़; मेरी जईकी में मुझे छोड़ न दे। 10 क्यूंकि मेरे दुश्मन मेरे बारे में बातें करते हैं, और जो मेरी जान की धात में है वह आपस में मशवरा करते हैं, 11 और कहते हैं, कि खुदा ने उसे छोड़ दिया है; उसका पीछा करो और पकड़ लो, क्यूंकि छुड़ाने वाला कोई नहीं। 12 ऐ खुदा, मुझ से दूर न रह! ऐ मेरे खुदा, मेरी मदद के लिए जल्दी कर! 13 मेरी जान के मुखालिक शर्मिन्दा और फना हो जाएँ, मेरा नुस्खान चाहने वाले मलामत और स्वाइंसे से मुलब्बस हो। 14 लेकिन मैं हमेशा उम्मीद रखूँगा, और तेरी तारीफ और भी ज्यादा किया करूँगा। 15 मेरा मुँह तेरी सदाकत का, और तेरी नजात का बयान दिन भर करेगा; क्यूंकि मुझे उनका शमार मालूम नहीं। 16 मैं खुदाबन्द खुदा की कुदरत के कामों का इजाह करूँगा; मैं सिर्फ तेरी ही सदाकत का जिक्र करूँगा। 17 ऐ खुदा, तू मुझे बचपन से सिखाता आया है, और मैं अब तक तेरी 'अजायब का बयान करता रहा हूँ। 18 ऐ खुदा, जब मैं बुड़ा और सिर सफेद हो जाऊँ तो मुझे न छोड़ना; जब तक कि मैं तेरी कुदरत आईदा नसल पर, और तेरा जोर हर अने वाले पर जाहिर न कर दूँ। 19 ऐ खुदा, तेरी सदाकत भी बहुत बलन्द है। ऐ खुदा, तेरी तरह कौन है जिसने बड़े बड़े काम किए हैं? 20 तू जिसने हम को बहुत और सख्त तक़िफ़े दिखाई है फिर हम को जिन्दा करेगा; और जमीन की तह से हमें फिर ऊपर ले आएगा। 21 तू मेरी 'अजमान को बढ़ा, और फिर कर मुझे तसल्ली दे। 22 ऐ मेरे खुदा, मैं बरबत पर तेरी, हाँ तेरी सच्चाई की हम्द करूँगा; ऐ इस्माईल के पाक! मैं सितार के साथ तेरी मदहसराई करूँगा। 23 जब मैं तेरी मदहसराई करूँगा, तो मैं होंट बहुत खुश होंगे; और मेरी जान भी जिसका तौने फिरिया दिया है। 24 और मेरी जान दिन भर तेरी सदाकत का जिक्र करेगी, क्यूंकि मेरा नुस्खान चाहने वाले शर्मिन्दा और पशेमान हुए हैं।

72 ऐ खुदा! बाल्शाह के अपने अहकाम और शहजादे को अपनी सदाकत 'अता फरमा। 2 वह सदाकत से तेरे लोगों की, और इस्साफ से तेरे गरीबों की 'अदालत करेगा। 3 इन लोगों के लिए पहाड़ों से सलामती की, और पहाड़ियों से सदाकत के फल पैदा होंगे। 4 वह इन लोगों के गरीबों की 'अदालत करेगा; वह मोहताजों की औलाद को बचाएगा, और जालिम को टुकड़े टुकड़े कर डालेगा। 5 जब तक सूरज और चाँद काईम हैं, लोग नसल — दर — नसल तुझ से डरते रहेंगे। 6 वह कटी हुई धास पर मैं तेरी की तरह, और जमीन को सेराब करने वाली बारिश की तरह नाजिल होगा। 7 उसके दिनों मैं सादिक बढ़ोंगे, और जब तक चाँद काईम है खब अमन रहेगा। 8 उसकी सल्तनत समन्दर से समन्दर तक और दरिया — ए — फरात से जमीन की इन्तिहा तक होगी। 9 वीरान के रहने वाले उसके आगे झुकेंगे, और उसके दुश्मन खाक चाटेंगे। 10 तरसीस के और जजीरों के बादशाह नजरें

पेश करेंगे, सबा और सेबा के बादशाह हहिये लाएँगे। 11 बल्कि सब बादशाह उसके सामने सनर्ज़ होंगे कुल क्लैमें उसकी फरमाबदार होंगी। 12 क्यूँकि वह मोहताज को जब वह फरियाद करे, और गरीब की जिसका कोई मददगार नहीं छुड़ाएगा। 13 वह गरीब और मोहताज पर तरस खाएगा, और मोहताजों की जान को बचाएगा। 14 वह फिदिया देकर उनकी जान को जुल्म और जब से छुड़ाएगा और उनका खून उसकी नजर में बेशकीमत होगा। 15 वह जिन्दा रहेंगे और सबा का सोना उसको दिया जाएगा। लोग बराबर उसके हक में दुआ करेंगे: वह दिनभर उसे दुआ देंगे। 16 ज़मीन में पहाड़ों की चोटियों पर अनाज को अफ्रत होगी; उनका फल लुबनान के दरखतों की तरह झूमेगा; और शहर बाले ज़मीन की धास की तरह हरे भेरे होंगे। 17 उसका नाम हमेशा काईम रहेगा, जब तक सूरज है उसका नाम रहेगा; और लोग उसके बसीले से बरकत पाएँगे, सब क्लैमें उसे खुशनसीब कहेंगी। 18 खुदावन्द खुदा इसाईल का खुदा, मुबारक हो! वही 'अजीब — ओ — गरीब काम करता है। 19 उसका जलील नाम हमेशा के लिए सारी ज़मीन उसके जलाल से मामूर हो। अपीन सुम्मा आपीन! 20 दाऊद बिन यस्सी की दुआएँ तमाम हुईं।

73 बेशक खुदा इसाईल पर, यानी पाक दिलों पर मेहरबान है। 2 लेकिन

मेरे पाँव तो फिसलने को थे, मेरे कदम करीबन लाजिश खा चुके थे। 3 क्यूँकि जब मैं शरीरों की इकबालमंदी देखता, तो मगास्तरों पर हसद करता था। 4 इसलिए के उनकी मौत में दर्द नहीं, बल्कि उनकी ताकत बनी रहती है। 5 वह और आदमियों की तरह मुसीबत में नहीं पड़ते; न और लोगों की तरह उन पर आफत आती है। 6 इसलिए गुस्तर उनके गले का हार है, जैसे वह जुल्म से मुल्क्षस है। 7 उनकी आँखें चर्ची से उपरी हूँह हैं, उनके दिल के खयालत हृद से बढ़ गए हैं। 8 वह ठंडा मारते, और शरारत से जुल्म की बातें करते हैं; वह बड़ा बोल बोलते हैं। 9 उनके मुँह आसमान पर है, और उनकी ज़बाने ज़मीन की सैर करती हैं। 10 इसलिए उसके लोग इस तरफ रसू़ होते हैं, और जी भर कर पीते हैं। 11 वह कहते हैं, 'खुदा को कैसे मालूम है?' क्या हक ताला को कुछ 'इल्म है?' 12 इन शरीरों को देखो, यह हमेशा चैन से रहते हुए दैलूत बढ़ाते हैं। 13 यकीनन मैंने बेकार अपने दिल को साफ़, और अपने हाथों को पाक किया; 14 क्यूँकि मुझ पर दिन भर आफत रहती है, और मैं हर सुबह तम्बीह पाता हूँ। 15 अगर मैं कहता, कि यूँ कहँगा, तो तेरे फ़र्जन्दों की नसल से बेवफाई करता। 16 जब मैं सोचने लगा कि इसे कैसे समझँ, तो यह मेरी नजर में दुर्वार था, 17 जब तक कि मैंने खुदा के मकदिस में जाकर, उनके अंजाम को न सोचा। 18 यकीन तु उनको फिसलनी जगहों में रखता है, और हलाकत की तरफ ढकेल देता है। 19 वह दम भर में कैसे उजड़ गए! वह हादिसों से बिल्कुल फना हो गए। 20 जैसे जाग उठने वाला खबाब को, वैसे ही तेरे खुदावन्द, जाग कर उनकी सूरत को नाचीज जानेगा। 21 क्यूँकि मेरा दिल रंजीदा हआ, और मेरा जिगर छिद गया था; 22 मैं बे'अक्सल और ज़ाहिल था, मैं तेरे सामने जानवर की तरह था। 23 तो भी मैं बराबर तेरे साथ हूँ। तेरे पेरा दाहिना हाथ पकड़ रखा है। 24 तु अपनी मसलहत से मेरी रहनुमाई करेगा, और आखिरकार मुझे जलाल में कुबूल फरमाएगा। 25 आसमान पर तेरे अलावा मेरा कौन है? और ज़मीन पर मैं तेरे अलावा किसी का मुश्तक नहीं। 26 जैसे मेरा जिस्म और मेरा दिल ज़ाइल हो जाएँ, तो भी खुदा हमेशा मेरे दिल की ताकत और मेरा हिस्सा है। 27 क्यूँकि देख, वह जो तुझ से दूँ हैं फूना हो जाएँगे; तेरे उन सबको जिन्होंने तुझ से बेवफाई की, हलाक कर दिया है। 28 लेकिन मेरे लिए यही भला है कि खुदा की नजदीकी हासिल करँ; मैंने खुदावन्द खुदा को अपनी पनाहगाह बना लिया है ताकि तेरे सब कामों का बयान करँ।

74 ऐ खुदा! तूने हम को हमेशा के लिए क्यूँ छोड़ दिया? तेरी चरागाह की भेड़ों पर तेरा कहर क्यूँ भड़क रहा है? 2 अपनी ज़मा'अत को जिसे तूने पहले से खरीदा है, जिसका तूने फिदिया दिया ताकि तेरी मीरास का कबीला हो, और कोह — ए — सिय्यन को जिस पर तूने सुकूनत की है, याद कर। 3 अपने कदम दाइनी खण्डरों की तरफ बढ़ा; यानी उन सब खराबियों की तरफ जो दुश्मन ने मकदिस में की हैं। 4 तेरे मजमे में तेरे मुबालिफ गरजते रहे हैं; निशान के लिए उन्होंने अपने ही झंडे खड़े किए हैं। 5 वह उन आदिमियों की तरह थे, जो गुनाजन दरखतों पर कुल्हाड़े चलाते हैं; 6 और अब वह उसकी सारी नक्शकारी को, कुल्हाड़ी और हथौड़ों से बिल्कुल तोड़े डालते हैं। 7 उन्होंने तेरे हैकल में आग लगा दी है, और तेरे नाम के घर को ज़मीन तक मिस्मार करके नापाक किया है। 8 उन्होंने अपने दिल में कहा है, 'हम उनको बिल्कुल बीरान कर डालें', उन्होंने इस मुल्क में खुदा के सब 'इबादतखानों' को जला दिया है। 9 हमारे निशान नजर नहीं आते; और कोई नवी नहीं रहा, और हम में कोई नहीं जानता कि यह हाल कब तक रहेगा। 10 ऐ खुदा, मुबालिफ कब तक तानाजनी करता रहेगा? क्या दुश्मन हमेशा तेरे नाम पर कुरु बकता रहेगा?

11 तु अपना हाथ क्यूँ रोकता है? अपना दहना हाथ बाल से निकाल और फना कर। 12 खुदा कीदीम से मेरा बादशाह है, जो ज़मीन पर नजात बरखाता है। 13 तूने अपनी कुदरत से समन्दर के दो हिस्से कर दिए तू पानी में अजदहारों के सिर कुचलता है। 14 तूने लिवियातान के सिर के टकड़े किए, और उसे वीरान के रहने वालों की खुराक बनाया। 15 तूने चर्शमे और सैलाब जारी किए; तूने बड़े बड़े दरियाओं को खुएक कर डाला। 16 दिन तेरा है, रात भी तेरी हूँ है; नूर और आफताक बो त ही ने तैयार किया। 17 ज़मीन की तमाम हड्डें तू ही ने ठहराई हैं; गरीब और सदी के मौसम त ही ने बनाए। 18 ऐ खुदावन्द, इसे याद रख के दुश्मन ने तानाजनी की है, और बेवकूफ कौम में तेरे नाम की तक़फीर की है। 19 अपनी फ़ाज़ा की जान की ज़ंगली जानवर के हवाले न कर; अपने गरीबों की जान को हमेशा के लिए भूल न जा। 20 अपने 'अहद का खयाल फरमा, क्यूँकि ज़मीन के तारीक मकाम जुल्म के घरों से भरे हैं। 21 मजल्म शर्मिन्दा होकर न लौटे, गरीब और मोहताज तेरे नाम की तारीफ़ करें। 22 उठ ऐ खुदा, आप ही अपनी वकालत कर; याद कर कि अहमक दिन भर तुझ पर कैसी तानाजनी करता है। 23 अपने दुश्मनों की आवाज को भूल न मुबालिफ़ों का हंगामा खड़ा होता रहता।

75 ऐ खुदा, हम तेरा शुक करते हैं, हम तेरा शुकरते हैं; क्यूँकि तेरा नाम नजदीक है, लोग तेरे 'अजीब कामों का ज़िक्र करते हैं। 2 जब मेरा मु'अय्यन वक्त आएगा, तो मैं रस्ती से 'अदालत कहँसँग। 3 ज़मीन और उसके सब बाशिन्दे गुदाज हो गए हैं, मैंने उसके सुनूलों को काईम कर दिया। 4 मैंने मगास्तरों से कहा, गुस्तर न करो, और शरीरों से, कि सींग ऊँचा न करो। 5 अपना सींग ऊँचा न करो, बगावत से बात न करो। 6 क्यूँकि सफरराजी न तो पूरब से न पन्चिम से, और न दलिखन से आती है; 7 बल्कि खुदा ही 'अदालत करने वाला है'; वह किसी को पस्त करता है और किसी को सफरराजी बरखाता है। 8 क्यूँकि खुदावन्द के हाथ में प्याला है, और मय ज़ाग वाली है; वह मिली हुई शराब से भरा है, और खुदावन्द उसी में से उंडेलता है; बेशक उसकी तलछट ज़मीन के सब शरीर निचोड़ निचोड़ कर पिँसँग। 9 लेकिन मैं तो हमेशा ज़िक्र करता रहँगा, मैं याकूब के खुदा की मदहसराई कहँसँग। 10 और मैं शरीरों के सब सींग काट डालँगा लेकिन सादिकों के सींग ऊँचे किए जाएँगे।

76 खुदा यहदाह में मशहर है, उसका नाम इसाईल में बुर्जु़ है। 2 सालिम में उसका खेमा है, और सिय्यन में उसका घर। 3 वहाँ उसने बर्क — ए —

कमान की और ढाल और तलवार, और समान — ए — जंग को तोड़ डाला। 4 तू जलाली है, और शिकार के पहाड़ों से सनादर है। 5 मजबूत दिल लट गए, वह गहरी नीद में पड़े हैं, और जबरदस्त लोगों में से किसी का हाथ काम न आया। 6 ऐ या'कूब के खुदा, तेरी डिल्डी की से, रथ और घोड़े दोनों पर मौत की नीद तारी है। 7 सिर्फ तुझ ही से डरना चाहिए, और तेरे कहर के बक्त कौन रे सामने खुदा रह सकता है? 8 तूने आसमान पर से फैसला सुनाया; जमीन डर कर चुप हो गई। 9 जब खुदा 'अदालत करने को उठा, ताकि जमीन के सब हलीमों को बचा ले। (सिलाह) 10 बेशक इंसान का ग़ज़ब तेरी सिताइश का ज़रिए होगा, और तू ग़ज़ब के बक्तिये से कमरबस्ता होगा। 11 खुदावन्द अपने खुदा के लिए मन्त्र मानो, और पूरी करो, और सब जो उसके गिर्द है वह उसी के लिए जिससे डरना वाजिब है, हदिए लाएँ। 12 वह हाकिम की स्वह को कब्ज़ करेगा; वह ज़मीन के बादशाहों के लिए बड़ा है।

77

मैं बुलन्द आवाज़ से खुदा के सामने फरियाद करूँगा खुदा ही के सामने बुलन्द आवाज़ से, और वह मेरी तरफ कान लगाएगा। 2 अपनी मुसीबत के दिन मैंने खुदावन्द को ढूँढ़ा, मेरे हाथ रात को फैले रहे और ढीले न हुए; मेरी जान को तस्कीन न हुई। 3 मैं खुदा को याद करता हूँ और बेचैन हूँ मैं वाईला करता हूँ और मेरी जान निदाल है। 4 तू मेरी अँखें खुली रखता है; मैं ऐसा बेताब हूँ कि बोल नहीं सकता। 5 मैं युज़रे दिनों पर, यानी क़दीम ज़माने के बरसों पर सोचता रहा। 6 मुझे रात को अपना हान्द याद आता है; मैं अपने दिल ही में सोचता हूँ। मेरी स्वह बड़ी तफ्तीश में लागी है: 7 'क्या खुदावन्द हमेशा के लिए छोड़ देगा? क्या वह फिर कभी मैंहरबान न होगा? 8 क्या उसकी शफ़कत हमेशा के लिए जाती रही? क्या उसका वादा हमेशा तक बातिल हो गया? 9 क्या खुदा करम करना भूल गया? क्या उसने कहर से अपनी रहमत रोक ली?' (सिलाह) 10 फिर मैंने कहा, 'यह मेरी ही कमज़ोरी है, मैं तो हक ताला की कुदरत के ज़माने को याद करूँगा।' 11 मैं खुदावन्द के कामों का ज़िक्र करूँगा, क्यूँकि मुझे तेरे क़दीम 'अज़ाइब यादआएँ।' 12 मैं तेरी सारी सन्न' अत पर ध्यान करूँगा, और तेरे कामों को सोचूँगा। 13 ऐ खुदा, तेरी राह मकदिस में है। कौन सा देवता खुदा की तरह बड़ा है। 14 तू वह खुदा है जो 'अज़ीब काम करता है, तूने क़ौमों के बीच अपनी कुदरत जाहिर की।' 15 तूने ही बाजू से अपनी कौम, बनी या'कूब और बनी यसुफ़ को फ़िदिया देकर छुड़ाया है। 16 ऐ खुदा, समन्दरों ने तेज़ देखा, समन्दर तुझे देख कर डर गए, गहराओं भी कॉप़ उठे। 17 बदलियों ने पानी बरसाया, आसमानों से आवाज़ आई, तेरे तीर भी चारों तरफ़ चले। 18 बगोले में तेरे गरज़ की आवाज़ थी, बर्क ने जहान को रोशन कर दिया, ज़मीन लरज़ी और क़ौमी। 19 तेरी राह समन्दर में है, तेरे रासे बड़े समन्दरों में हैं; और तेरे नक्श — ए — कदम ना मालम है। 20 तूने मूसा और हास्न के बसीले से, किंला की तरह अपने लोगों की रहनुमाई की।

78

ऐ मेरे लोगों मेरी शरी' अत को सुनो मेरे मुँह की बातों पर कान लगाओ। 2 मैं तमील में कलाम करूँगा, और पुराने पोशीदा राज कहूँगा, 3 जिनको हम ने सुना और जान लिया, और हमारे बाप — दादा ने हम को बताया। 4 और जिनको हम उनकी औलाद से पोशीदा नहीं रख देंगे; बल्कि आँदा नसल को भी खुदावन्द की तारीफ़, और उसकी कुदरत और 'अज़ाइब जो उसने किए बताएँ। 5 क्यूँकि उसने या'कूब में एक शहादत काईम की, और इस्लाइल में शरी' अत मुकर्रर की, जिनके बारे में उसने हमारे बाप दादा को हुक्म दिया, कि वह अपनी औलाद को उनकी तालीम दें, 6 ताकि आँदा नसल, यानी वह फर्जन्द जो पैदा होंगे, उनको जान लें: और वह बड़े होकर अपनी औलाद को सिखाएँ, 7 कि वह खुदा पर उम्मीद रखें, और उसके कामों को भूल न जाएँ,

बल्कि उसके हुक्मों पर 'अमल करें; 8 और अपने बाप — दादा की तरह, सरकश और बागी नसल न बर्ज़ैं: ऐसी नसल जिसने अपना दिल दुस्त न किया और जिसकी स्वह खुदा के सामने वफ़ादार न रही। 9 बनी इक़ाइम हथियार बन्द होकर और कमाने रखते हुए लडाई के दिन फिर गए। 10 उन्होंने खुदा के 'अहद को काईम न रखा, और उसकी शरी' अत पर चलने से इकार किया। 11 और उसके कामों को और उसके 'अज़ायब को, जो उसने उनको दिखाएँ थे भूल गए। 12 उसने मुल्क — ए — मिस्त्र में जुअन के इलाके में, उनके बाप — दादा के सामने 'अज़ीब — ओ — गरीब काम किए। 13 उसने समन्दर के दो हिस्से काके उनको पार उतारा, और पानी को तूदे की तरह खड़ा कर दिया। 14 उसने दिन को बादल से उनकी रहबारी की, और रात भर आग की रोशनी से। 15 उसने वीरान में चट्टानों को चीरा, और उनको जैसे बहर से ख़बर पिलाया। 16 उसने चट्टान में से नदियाँ जारी की, और दरियाओं की तरह पानी बहाया। 17 तोभी वह उसके खिलाफ़ गुनाह करते ही गए, और वीरान में हकताला से सरकशी करते रहे। 18 और उन्होंने अपनी ख़वाहिश के मुताबिक खाना मांग कर अपने दिल में खुदा को अज़माया। 19 बल्कि वह खुदा के खिलाफ़ बकने लगे, और कहा, 'क्या खुदा वीरान में दस्तरख्वान बिछा सकता है? 20 देखो, उसने चट्टान को मारा तो पानी फूट निकला, और नदियाँ बहने लगीं क्या वह रोटी भी दे सकता है? क्या वह अपने लोगों के लिए गोशत मुहर्या कर देगा?' 21 तब खुदावन्द सुन कर ग़जबानक हुआ, और या'कूब के खिलाफ़ आग भड़क उठी, और इस्लाइल पर कहर टूट पड़ा; 22 इसलिए कि वह खुदा पर ईमान न लाए, और उसकी नजात पर भरोसा न किया। 23 तोभी उसने आसमानों को हुक्म दिया, और आसमान के दरवाजे खोले: 24 और खाने के लिए उन पर मन्न बरसाया, और उनको आसमानी ख़ुराक बख्शी। 25 इंसान ने फ़रिश्तों की गिज़ा खाई: उसने खाना भेजकर उनको आसदा किया। 26 उसने आसमान में पुर्व चलाई, और अपनी कुदरत से दखाना बहाई। 27 उसने उन पर गोशत को खाक की तरह बरसाया, और परिन्दों को समन्दर की रेत की तरह; 28 जिनको उसने उनकी ख़ेमागाह में, उनके घरों के आसपास पिराया। 29 तब वह खाकर ख़बर से हुए, और उसने उनकी ख़वाहिश परी की। 30 वह अपनी ख़वाहिश से बाज़ न आए, और उनका खाना उनके मूँह ही में था। 31 कि खुदा का ग़ज़ब उन पर टूट पड़ा, और उनके सबसे मटे ताजे आदमी कल्तव किए, और इस्लाइली ज़वानों को मार पिराया। 32 बावुज़द इन सब बातों कि वह गुपाह करते ही रहे; और उसके 'अज़ीब — ओ — गरीब कामों पर ईमान न लाए। 33 इसलिए उसने उनके दिनों को बातालत से, और उनके बरसों को दहशत से तमाम कर दिया। 34 जब वह उनको कल्तव करने लगा, तो वह उसके तालिब हुए; और रूज़ होकर दिल — ओ — जान से खुदा को ढंगे लगे। 35 और उनको याद आया कि खुदा उनकी चट्टान, और खुदा ताला उनका फ़िदिया देने वाला है। 36 लेकिन उन्होंने अपने मूँह से उसकी ख़ुशामद की, और अपनी ज़बान से उससे झूट बोला। 37 क्यूँकि उनका दिल उसके सामने दुस्त और वह उसके 'अहद में वफ़ादार न निकले। 38 लेकिन वह रहीम होकर बदकारी मु'अफ़ करता है, और हलाक नहीं करता; बल्कि बारहा अपने कहर को रोक लेता है, और अपने पेरे ग़जब को भड़कने नहीं देता। 39 और उसे याद रहता है कि यह महज बशर है। यानी हवा जो चली जाती है और फिर नहीं आती। 40 किंतु बार उन्होंने वीरान में उससे सरकशी की और सेहरा में उसे दुख किया। 41 और वह फिर खुदा को आजमाने लगे और उन्होंने इस्लाइल के खुदा को नाराज़ किया। 42 उन्होंने उसके हाथ को याद न रखा, न उस दिन की जब उसने फ़िदिया देकर उनको मुखालिफ़ से रिहाई बख्शी। 43 उसने मिस्त्र में अपने निशान दिखाएँ, और ज़ुअन के 'इलाके में अपने अज़ायब। 44 और उनके दरियाओं को ख़ून

बना दिया और वह अपनी नदियों से पी न सके। 45 उसने उन पर मच्छरों के गोल भेजे जो उनको खा गए और मेंढक जिन्होंने उनको तबाह कर दिया। 46 उसने उनकी पैदावार कीड़ों को और उनकी मेहनत का फल टिड्डियों को दे दिया। 47 उसने उनकी ताकों को ओलों से और उनके गूल के दरखतों को पाले से मारा। 48 उसने उनके चौपायों को ओलों के हवाले किया, और उनकी भेड़ बकरियों को बिजली के। 49 उसने 'ऐजब के फरिश्तों की फैज भेज कर अपनी कहर की शिश्त गैज — ओ — गजब और बला को उन पर नाजिल किया। 50 उसने अपने कहर के लिए रास्ता बनाया, और उनकी जान मौत से न बचाई, बल्कि उनकी ज़िन्दगी खड़ा के हवाले की। 51 उसने मिस के सब पहलौठों को, याँनी हाम के घरों में उनकी ताकत के पहले फल को मारा: 52 लेकिन वह अपने लोगों को भेड़ों की तरह ले चला, और बीरान में गल्ले की तरह उनकी रहनुमाई की। 53 और वह उनको सलामत ले गया और वह न डेरे, लेकिन उनके दुश्मनों को समन्दर ने छिपा लिया। 54 और वह उनको अपने मकदिस की सरहद तक लाया, याँनी उस पहाड़ तक जिसे उसके दहने हाथ ने हासिल किया था। 55 उसने और कौमों को उनके सामने से निकाल दिया; जिनकी मीरास जरीन डाल कर उनको बैट दी, और जिनके खेमों में इस्माइल के कबीलों को बसाया। 56 तोभी उहोंने खुदाताला को आजमाया और उससे सरकशी की, और उसकी शहादतों को न माना; 57 बल्कि नाफरमान होकर अपने बाप दादा की तरह बेवफाई की और धोका देने वाली कमान की तरह एक तरफ को झुक गए। 58 क्यूंकि उन्होंने अपने ऊँचे मकामों के वजह से उसका कहर भड़काया, और अपनी खोदी हुई मूरतों से उसे गैरत दिलाई। 59 खुदा यह सुनकर गजबनाक हुआ, और इस्माइल से सख्त नफरत की। 60 फिर उसने शीतोह के घर को छोड़ दिया, याँनी उस खेमों को जो बर्नी आदम के बीच खड़ा किया था। 61 और उसने अपनी ताकत को गुलामी में, और अपनी हशमत को मुखालिफ के हाथ में दे दिया। 62 उसने अपने लोगों को तलवार के हवाले कर दिया, और वह अपनी मीरास से गजबनाक हो गया। 63 आग उनके जबानों को खा गई, और उनकी कुँवारियों के स्फुरण न गए गए। 64 उनके काहिन तलवार से मारे गए, और उनकी बेबाओं ने नौहा न किया। 65 तब खुदावन्द जैसे नीद से जाग उठा, उस जबरदस्त आदमी की तरह जो मय की वजह से ललकारता हो। 66 और उसने अपने मुखालिफों को मार कर पस्पा कर दिया; उसने उनको हमेशा के लिए स्वता किया। 67 और उसने यसुफ के खेमों को छोड़ दिया; और इस्माइल के कबीले को न चुना; 68 बल्कि यहदाह के कबीले को चुना! उसी कोह — ए — सियून को जिससे उसको मुहब्बत थी। 69 और अपने मकदिस को पहाड़ों की तरह तामीर किया, और ज़मीन की तरह जिसे उसने हमेशा के लिए काईम किया है। 70 उसने अपने बन्दे बाऊद को भी चुना, और भेड़सातों में से उसे ले लिया; 71 वह उसे बच्चे वाली भेड़ों की चौपानी से हटा लाया, ताकि उसकी कौम याँकू और उसकी मीरास इस्माइल की गल्लेबानी करे। 72 फिर उसने खुल्स — ए — दिल से उनकी पासबानी की और अपने माहिर हाथों से उनकी रहनुमाई करता रहा।

79 ऐ खुदा, कौमें तेरी मीरास में घुस आई हैं; उहोंने तेरी पाप हैकल को नापाक किया है; उहोंने येस्शलेम को खण्डर बना दिया 2 उहोंने रें बन्दों की लाशों को आसामन के परिन्दों की, और तेरे पाप लोगों के गोश्ट को ज़मीन के दरिदों की खुराक बना दिया है। 3 उहोंने उनका खन येस्शलेम के गिर्द पारी की तरह बहाया, और कोई उनको दफन करने वाला न था। 4 हम अपने पड़ोसियों की मलामत का निशाना हैं, और अपने आसापास के लोगों के तमसखुर और मजाक की वजह। 5 ऐ खुदावन्द, कब तक? क्या तू हमेशा के लिए नाराज़ रहेगा? क्या तेरी गैरत आग की तरह भड़कती रहेगी? 6 अपना

कहर उन कौमों पर जो तुझे नहीं पहचानती, और उन ममलुकतों पर जो तेरा नाम नहीं लेती, उँडेल दे। 7 क्यूंकि उन्होंने या 'कूब को खा लिया, और उसके घर को उजाड़ दिया है। 8 हमारे बाप — दादा के गुनाहों को हमारे खिलाफ याद न कर, तेरी रहमत जल्द हम तक पहुँचे, क्यूंकि हम बहुत पस्त हो गए हैं। 9 ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा, अपने नाम के जलाल की खातिर हमारी मदद कर, अपने नाम की खातिर हम को छुड़ाओ और हमारों का कफ़क़ारा दे। 10 कौमें क्यूंकि कहे कि उनका खुदा कहाँ है? तेरे बन्दों के बहाए हुए खून का बदला, हमारी आँखों के सामने कौमों पर जाहिर हो जाए। 11 कैदी की आह तेरे सामने तक पहुँचे: अपनी बड़ी कुदरत से मरने वालों को बचा ले। 12 ऐ खुदावन्द, हमारे पड़ोसियों की तानाजनी, जो वह तुझ पर करते रहे हैं, उल्टी सात गुणा उही के दामन में डाल दे। 13 तब हम जो तेरे लोग और तेरी चरागाह की भेड़े हैं, हमेशा तेरी शुकुरगुजारी करेंगे; हम नसल दर नसल तेरी सिताइश करेंगे।

80 ऐ इस्माइल के चौपान! तू जो गल्ले की तरह यसुफ को ले चलता है, कान लगा! तू जो कस्बियों पर बैठा है, जलवागर हो! 2 इस्माइल — ओ — बिनयमीन और मनस्सी के सामने अपनी कुब्बत को बेदार कर, और हमें बचाने को आ! 3 ऐ खुदा, हम को बहाल कर, और अपना चेहरा चमका, तो हम बच जाएँगे। 4 ऐ खुदावन्द लशकरों के खुदा, तू कब तक अपने लोगों की दुआ से नाराज़ रहेगा? 5 तेरे उनको आँसुओं की रोटी खिलाई, और पीने को कसरत से आँसू ही दिए। 6 तू हम को हमारे पड़ोसियों के लिए झांगड़े का जरिए! बनाता है, और हमारे दुश्मन आपस में हँसते हैं। 7 ऐ लशकरों के खुदा, हम को बहाल कर, और अपना चेहरा चमका, तो हम बच जाएँगे। 8 तू मिस से एक ताक लाया; तेरे कौमों को खारिज करके उसे लगाया। 9 तेरे उनके लिए जगह तैयार की; उसने गहरी जड़ पकड़ी और ज़मीन को भर दिया। 10 पहाड़ उसके साथ में छिप गए, और उसकी डालियाँ खुदा के देवदरों की तरह थी। 11 उसने अपनी शाश्वत समन्दर तक फैलाई, और अपनी ठहनियाँ दरिया — ए — फरात तक। 12 फिर तेरे उसकी बाड़ों को क्यूं तोड़ डाला, कि सब आपने जाने वाले उसका फल तोड़ते हैं? 13 ज़ंगली सूअर उसे बरबाद करता है, और ज़ंगली जानवर उसे खा जाते हैं। 14 ऐ लशकरों के खुदा, हम तेरी मिन्नत करते हैं, पिर मुतकिज़ज हो! असमान पर से निगाह कर, और देख, और इस ताक की निगहबानी फरमा। 15 और उस पैदे की भी जिसे तेरे दहने हाथ ने लगाया है, और उस शाश्वत की जिसे तेरे अपने लिए मज़बूत किया है। 16 यह आग से जली हड़ है, यह कटी पड़ी है; वह तेरे मूँह की झिंडकी से हलाक हो जाते हैं। 17 तेरा हाथ तेरी दहनी तरफ के इंसान पर हो, उस इन्ह — ए — आदम पर जिसे तेरे अपने लिए मज़बूत किया है। 18 फिर हम तुझ से नाफरमान न होंगे; तू हम को फिर जिन्दा कर और हम तेरा नाम लिया करेंगे। 19 ऐ खुदा वन्द लशकरों के खुदा! हम को बहाल कर, अपना चेहरा चमका तो हम बच जाएँगे!

81 खुदा के सामने जो हमारी ताकत है, बुलन्द आवाज से गाओ; याँकू के खुदा के सामने खुशी का नारा मारो! 2 नामा डेढ़ो, और दफ़ लाओ और दिलनवाज सितार और बरबत। 3 नए चाँद और पेरे चाँद के बक्त, हमारी 'ईद के दिन रासिमा फूँको। 4 क्यूंकि यह इस्माइल के लिए कानून, और याँकू के खुदा का हक्म है। 5 इसको उसने यसुफ में शहादत ठहराया, जब वह मुल्क — ए — मिस के खिलाफ निकला। मैंने उसका कलाम सुना, जिसको मैं जानता न था 6 मैंने उसके कंधे पर से बोझ उतार दिया; उसके हाथ टोकरी ढोने से छुट गए। 7 तेरे मुसुमित में पुकारा और मैंने तुझे छुड़ाया; मैंने राद के पर्दे में से तुझे जवाब दिया; मैंने तुझे मरीबा के चरमे पर आजमाया। (सिलाह) 8 ऐ मेरे लोगों, सुनो, मैं तुम को हाशियार करता हूँ! ऐ इस्माइल, काश के तू मेरी सुनता!

9 तेरे बीच कोई गैर खुदावन्द का मांबूद न हो; और तू किसी गैरखुदावन्द के मांबूद को सिज्दा न करना 10 खुदावन्द तेरा खुदा मैं हूँ, जो तुझे मुल्क — ए — मिस से निकाल लाया। तू अपना मुँह खूब खोल और मैं उसे भर दूँगा। 11 “लेकिन मेरे लोगों ने मेरी बात न सुनी, और इसाईल मुझ से रजामंद न हआ। 12 तब मैंने उनको उनके दिल की हट पर छोड़ दिया, ताकि वह अपने ही मवरों पर चलता। 13 काश कि मेरे लोग मेरी सुनते, और इसाईल मेरी राहों पर चलता। 14 मैं जल्द उनके दुमोनों को मालबू कर देता, और उनके मुखालिफों पर अपना हाथ चलाता। 15 खुदावन्द से ‘अदावत रखने वाले उसके ताबे हो जाते, और इनका जमाना हमेशा तक बना रहता। 16 वह इनको अच्छे से अच्छा गेहूँ खिलाता और मैं तुझे चट्ठान में के शहद से शेर करता।”

82 खुदा की जमा’अत में खुदा मौजूद है।

करता है: 2 “तुम कब तक बेइसाप्ती से ‘अदालत करोगे, और शरीरों की तरफदारी करोगे? (सिलाह) 3 गरीब और यतीम का इन्साफ करो, गमजदा और मुफलिस के साथ इन्साफ से पेश आओ। 4 गरीब और मोहताज को बचाओ; शरीरों के हाथ से उनको छुड़ाओ।” 5 वह न तो कुछ जानते हैं न समझते हैं, वह अंदरे में इधर उधर चलते हैं; जमीन की सब बुनियादें हिल गई हैं। 6 मैंने कहा था, “तुम इलाह हो, और तुम सब हकताला के फ़र्जन्द हो; 7 तोभी तुम अदामियों की तरह मरोगे, और ‘उमरा में से किसी की तरह गिर जाओगे।” 8 ऐ खुदा! उठ जमीन की ‘अदालत कर क्यूँकि तू ही सब कौमों का मालिक होगा।

83 ऐ खुदा! खामोश न रह; ऐ खुदा! चुपचाप न हो और खामोशी इख्लियर

न कर। 2 क्यूँकि देख तैर दूरमन ऊधम मचाते हैं और तुझ से ‘अदावत रखने वालों ने सिर उठाया है। 3 क्यूँकि वह तेरे लोगों के खिलाफ मक्कारी से मन्सूबा बँधते हैं, और उनके खिलाफ जो तेरी पनाह में हैं मैं शवशरा करते हैं। 4 उन्होंने कहा, “आओ, हम इनको काट डालें कि उनकी कौम ही न रहे; और इसाईल के नाम का फिर जिक्र न हो।” 5 क्यूँकि उन्होंने एक हो कर के आपस में मश्वरा किया है, वह तेरे खिलाफ ‘अहद बँधते हैं। 6 यानी अदोम के अहल — ए — खैमा और इस्माईली मोआब और हाजरी, 7 जबल और अम्पन और ‘अमालीक, फिलिस्तीन और सूर के बाश्निदे, 8 असरू भी इससे मिला हुआ है, उन्होंने बनी लूँ की मदद की है। 9 तू उनसे ऐसा कर जैसा मिदियान से, और जैसा वादी — ए — कैसन में सीसरा और याबीन से किया था। 10 जो ‘ऐन दोर में हलाक हुए, वह जैसे जमीन की खाद हो गए, 11 उनके सरदारों को ‘अौरेब और ज़ईब की तरह, बल्कि उनके शाहजादों को जिबह और जिलमन’ की तरह बना दे; 12 जिन्होंने कहा है, “आओ, हम खुदा की बसियों पर कब्जा कर लें।” 13 ऐ ऐ खुदा, उनको बगले की गर्द की तरह बना दे, और जैसे हवा के आगे डंठल। 14 उस आग की तरह जो जंगल को जला देती है, उस शोले की तरह जो पहाड़ों में आग लगा देता है, 15 तू इसी तरह अपनी औँधी से उनका पीछा कर, और अपने त़कान से उनको पेरेशान कर दे। 16 ऐ खुदावन्द! उनके चेहरों पर स्वाई तारी कर, ताकि वह तेरे नाम के तालिब हों। 17 वह हमेशा शर्मिन्दा और पेरेशान रहें, बल्कि वह स्वाव होकर हलाक हो जाएँ। 18 ताकि वह जान लें कि तू ही जिसका यहोवा है, जमीन पर बुलन्द — ओ — बाला है।

84 ऐ लश्करों के खुदावन्द! तेरे घर क्या ही दिलकश हैं! 2 मेरी जान

खुदावन्द की बारगाहों की मुश्तक है, बल्कि गुदाज हो चली, मेरा दिल और मेरा जिस्म जिन्दा खुदा के लिए खुशी से ललकारते हैं। 3 ऐ लश्करों के खुदावन्द! ऐ मेरे बादशाह और मेरे खुदा! तेरे मज़बहों के पास गैरया ने अपना अशियाना, और अबालील ने अपने लिए धोसला बना लिया, जहाँ वह अपने

बच्चों को रख दे। 4 मुबारक हैं वह जो तेरे घर में रहते हैं, वह हमेशा तेरी तारीफ करेंगे। मिलाह 5 मुबारक है वह आदमी, जिसकी ताकत तुझ से है, जिसके दिल में सिय्यन की शाह रहते हैं। 6 वह वादी — ए — बुका से गुजर कर उसे चम्पों की जगह बना लेते हैं, बल्कि पहली बारिश उसे बरकतों से मांपू कर देती है। 7 वह ताकत पर ताकत पाते हैं; उनमें से हर एक सिय्यन में खुदा के सामने हाजिर होता है। 8 ऐ खुदावन्द, लश्करों के खुदा, मेरी दुआ सुन ऐ यांकूब के खुदा! कान लगा! (सिलाह) 9 ऐ खुदा! ऐ हमारी सिपर! देख; और अपने मम्सूह के चेहरे पर नजर कर। 10 क्यूँकि तेरी बारगाहों में एक दिन हजार से बेहतर है। मैं अपने खुदा के घर का दरबान होना, शरारत के खेमों में बसने से ज्यादा पसंद करूँगा। 11 क्यूँकि खुदावन्द खुदा, आफताब और ढाल है; खुदावन्द फ़जल और जलाल बछोगा वह रास्त से कोई नेमत बाज न रखेगा। 12 ऐ लश्करों के खुदावन्द! मुबारक है वह आदमी जिसका भरोसा तुझ पर है।

85 ऐ खुदावन्द तू अपने मुल्क पर मेहरबान रहा है।

तू यांकूब को गुलामी से बापस लाया है। 2 तू अपने लोगों की बदकारी मुंआफ कर दी है; तू अपने कर्त्तव्यों में बाज आया है। 3 तू अपना गजब बिल्कुल उठा लिया; तू अपने कहर — ए — शरीद से बाज आया है। 4 ऐ हमारे नजात देने वाले खुदा! हम को बहाल कर, अपना गजब हम से दूर कर। 5 क्या तू हमेशा हम से नाराज रहेगा? क्या तू अपने कहर को नसल दर नसल जारी रखेगा? 6 क्या तू हम को फिर जिन्दा न करेगा, ताकि तेरे लोग तुझ में खुश हों? 7 ऐ खुदावन्द! तू अपनी शफकत हमको दिखा, और अपनी नजात हम को बख्त। 8 मैं सुनूँगा कि खुदावन्द खुदा क्या फरमात है। क्यूँकि वह अपने लोगों और अपने पाक लोगों से सलामती की बातें करेगा; लेकिन वह फिर हिमाकत की तरफ रुँन करें। 9 यकीनन उसकी नजात उससे डरने वालों के करीब है, ताकि जलाल हमारे मुल्क में बसे। 10 शफकत और रास्ती एक साथ मिल गई हैं, सदाकत और सलामती ने एक दूसरे का बोसा लिया है। 11 रास्ती जमीन से निकलती है, और सदाकत आसमान पर से दूसरी की ओर रुँकती है। 12 जो कुछ अच्छा है वही खुदावन्द अता फरमाएगा और हमारी जमीन अपनी पैदावार देगी। 13 सदाकत उसके आगे — आगे चलेगी, उसके नक्शा — ए — कदम को हमारी राह बनाएगी।

86 ऐ खुदावन्द! अपना कान झुका और मुझे जबाब दे, क्यूँकि मैं गरीब और

मोहताज हूँ। 2 मेरी जान की हिफाजत कर, क्यूँकि मैं दीनदार हूँ, ऐ मेरे खुदा! अपने बन्दे को, जिसका भरोसा तुझ पर है, बचा ले। 3 या रब्ब, मुझे पर रहम कर, क्यूँकि मैं दिन भर तुझ से फरियाद करता हूँ। 4 या रब्ब, अपने बन्दे की जान को खुश कर दे, क्यूँकि मैं अपनी जान तेरी तरफ उठाता हूँ। 5 इसलिए कि तू या रब्ब, नेक और मुंआफ करने को तैयार है, और अपने सब दुआ करने वालों पर शफकत में गँवी है। 6 ऐ खुदावन्द, मेरी दुआ पर कान लगा, और मेरी मिन्नत की आवाज पर तज्ज्ञ फरमा। 7 मैं अपनी मुसीबत के दिन तुझ से दुआ करूँगा, क्यूँकि तू मुझे जबाब देगा। 8 या रब्ब, मांमूदों में तुझ सा कोई नहीं, और तेरी कारीगरी बेमिसाल है। 9 या रब्ब, सब कौमें जिनको तुमें बनाया, आकर तेरे सामने सिज्दा करेंगी और तेरे नाम की तम्जीद करेंगी। 10 क्यूँकि तू बुजुर्ग है और ‘अंजीब — ओ — गरीब काम करता है, तू ही अंकेला खुदा है। 11 ऐ खुदावन्द, मुझ को अपनी राह की तालीम दे, मैं तेरी रास्ती में चलूँगा; मेरे दिल को यक्सी रब्बा, ताकि तेरे नाम का खोफ मानूँ। 12 या रब्ब! मेरे खुदा, मैं पूरे दिल से तेरी तारीफ करूँगा; मैं हमेशा तक तेरे नाम की तम्जीद करूँगा। 13 क्यूँकि मुझ पर तेरी बड़ी शफकत है; और तूने मेरी जान को पाताल की तह से निकाला है। (Sheol h7585) 14 ऐ खुदा, मासर मेरे खिलाफ उठे हैं, और टेढ़े लोगों जमा’अत मेरी जान के पीछे पड़ी हैं, और उन्होंने तुझे अपने सामने नहीं रखवा। 15 लेकिन तू या रब्ब, रहीम — ओ — करीम खुदा है, कहर करने में

धीमा और शफकत — ओ — रास्ती में गनी। 16 मेरी तरफ मुतवज्जिह हो और मुझ पर रहम कर; अपने बन्दे को अपनी ताकत बछा, और अपनी लौड़ी के बेटे को बचा ले। 17 मुझे भलाई का कोई निशान दिखा, ताकि मुझ से 'अदावत रखेने वाले इसे देख कर शर्मिन्दा हों क्यूंकि तूने ऐ खुदावन्द, मेरी मदद की, और मुझे तसल्ली दी है।

87 उसकी बुनियाद पाक पहाड़ों में है। 2 खुदावन्द सिय्यून के फाटकों को

या 'कूब के सब घरों से ज्यादा' 'अजीज़ रखता है। 3 ऐ खुदा के शहर! तेरी बड़ी बड़ी खुबियाँ बयान की जाती हैं। (सिलाह) 4 मैं रहब और बाबूल का यूँ ज़िक्र करूँगा, कि वह मेरे जानने वालों में है; फिलिस्तीन और सूर और कूश को देखो, यह वहाँ पैदा हुआ था। 5 बल्कि सिय्यून के बारे में कहा जाएगा, कि फलाँ फलाँ आदमी उसमें पैदा हुए। और हकाताला खुद उसको कथाम बच्चेगा। 6 खुदावन्द क्लौमों के शपार के बक्त दर्ज करेगा, कि यह शश्वर वहाँ पैदा हुआ था। 7 गाने वाले और नाचने वाले यही कहेंगे कि मेरे सब चर्खें तुझ ही में हैं।

88 ऐ खुदावन्द, मेरी जाज़ देने वाले खुदा, मैंने रात दिन तेरे सामने फरियाद की है।

2 मेरी दुआ तेरे सामने पहुँचे, मेरी फरियाद पर कान लगा। 3 क्यूंकि मेरा दिल दुखों से भरा है, और मेरी जान पाताल के नज़दीक पहुँच गई है। (Sheol h7585) 4 मैं कब्र में उत्तरने वालों के साथ गिना जाता हूँ। मैं उस शख्स की तरह हूँ, जो बिल्कुल बेकस हो। 5 जैसे मक्तुलों की तरह जो कब्र में पड़े हैं, मुर्दों के बीच डाल दिया गया हूँ, जिनको तू फिर कभी याद नहीं करता। 6 तूने मुझे गहराओं में, अँधेरी जगह में, पाताल की तह में रखवा है। 7 मुझ पर तेरा कहर भारी है, तूने अपनी सब मौजों से मुझे दुख दिया है। (सिलाह) 8 तूने मेरे जान पहचानों को मुझ से दूर कर दिया; तूने मुझे उनके नज़दीक धिनोंना बना दिया। मैं बन्द हूँ और निकल नहीं सकता। 9 मेरी अँधेरी दुख से धृंथला चली। ऐ खुदावन्द, मैंने हर रोज तुझ से दुआ की है; मैंने अपने हाथ तेरी तरफ फैलाया है। 10 क्या तू मुर्दों को 'अजायब दिखाएगा? क्या वह जो मर गए हैं उठ कर तेरी तारीफ करेगे? (सिलाह) 11 क्या तेरी शफकत का ज़िक्र कब्र में होगा, या तेरी वफादारी का जहन्नुम में? 12 क्या तेरे 'अजायब को अंधेरे में पहचानेंगे, और तेरी सदाकत को फरामोशी की सरजमीन में? 13 लेकिन ऐ खुदावन्द, मैंने तो तेरी दुहाई दी है, और सुबह को मेरी दुआ तेरे सामने पहुँचेंगी। 14 ऐ खुदावन्द, तू क्यूँ। मेरी जान को छोड़ देता है? तू अपना चेहरा मुझ से क्यूँ छिपाता है? 15 मैं लड़कपन ही से मुसीबतजदा और मौत के करीब हूँ मैं तेरे डर के पारे बढ़ हवास हो गया। 16 तेरा कहर — ए — शरीद मुझ पर आ पड़ा; तेरी दहशत ने मेरा काम तमाम कर दिया। 17 उसने दिनभर सैलाब की तरह मेरा धेराव किया; उसने मुझे बिल्कुल धेर लिया। 18 तूने दोस्त व अब्बाब को मुझ से दूर किया और मेरे जान पहचानों को अंधेरे में डाल दिया है।

89 मैं हमेशा खुदावन्द की शफकत के हम्द गाँड़ा। मैं नसल दर नसल

अपने मुँह से तेरी वफादारी का 'ऐलान करूँगा। 2 क्यूंकि मैंने कहा कि शफकत हमेशा तक बनी रहेगी, तू अपनी वफादारी को आसमान में काईम रखेगा। 3 'मैंने अपने बरगुजीदा के साथ 'अहंद बौद्धा है मैंने अपने बन्दे दाऊद से क्रसम खाई है; 4 मैं तेरी नसल को हमेशा के लिए काईम करूँगा, और तेरे तख्त को नसल दर नसल बनाए रखूँगा।' (सिलाह) 5 ऐ खुदावन्द, आसमान तेरे 'अजायब की तारीफ करेगा; पाक लोगों के मजामे में तेरी वफादारी की तारीफ होगी। 6 क्यूंकि आसमान पर खुदावन्द का नज़री कौन है? फरिश्तों की जमात में कौन खुदावन्द की तरह है? 7 ऐसा माँबूद जो पाक लोगों की महिला में बहुत ताज़ीम के लायक खुदा है, और अपने सब चारों तरफ वालों से ज्यादा

बड़ा है। 8 ऐ खुदावन्द लश्करों के खुदा, ऐ याह! तुझ सा जबरदस्त कौन है? तेरी वफादारी तेरे चारों तरफ है। 9 समन्दर के जोश — ओ — खोरेश पर तू हुक्मरानी करता है, तू उसकी उठती लहरों को थमा देता है। 10 तूने रहब को मक्तुल की तरह टकड़े टकड़े किया; तूने अपने कवी बाज़ से अपने दुश्मनों को तिर बितर कर दिया। 11 आसमान तेरा है, ज़मीन भी तेरी है; जहान और उसकी माँमूरी को तू ही ने काईम किया है। 12 उत्तर और दारिखंवन का पैदा करने वाला तू ही है; तबू और हरमून तेरे नाम से खुशी मनाते हैं। 13 तेरा बाजू कुदरत वाला है, तेरा हाथ कवी और तेरा दहना हाथ बुलंद है। 14 सदाकत और 'अदूल तेरे तख्त की बुनियाद है; शफकत और वफादारी तेरे आगे अगे चलती है। 15 मुबारक है वह कौम, जो खुशी की ललकार को पहचानती है, वह ऐ खुदावन्द, जो तेरे चेहरे के नूर में चलते हैं; 16 वह दिनभर तेरे नाम से खुशी मनाते हैं, और तेरी सदाकत से सरफराज होते हैं। 17 क्यूंकि उनकी ताकत की शान तु ही है और तेरे करम से हमारा सींग बुलन्द होगा। 18 क्यूंकि हमारी ढाल खुदावन्द की तरफ से है, और हमारा बादशाह इस्पाईल के कुदूस की तरफ से। 19 उस वक्त तूने ख्वाब में अपने पाक लोगों से कलाम किया, और फरमाया, मैंने एक जबरदस्त को मददगार बनाया है, और कैम्प में से एक को चुन कर सरफराज किया है। 20 मेरा बन्दा दाऊद मुझे मिल गया, अपने पाक तेल से मैंने उसे मसह किया है। 21 मेरा हाथ उसके साथ रहेगा, मेरा बाजू उसे तकवियत देगा। 22 दुश्मन उस पर जब न करने पाएगा, और शरारत का फर्जन्द उसे न सताएगा। 23 मैं उसके मुखालिफों को उसके सामने मगलूब करूँगा और उससे 'अदावत रखने वालों को मारूँगा। 24 लेकिन मेरी वफादारी और शफकत उसके साथ रहेंगी, और मेरे नाम से उसका सींग बुलन्द होगा। 25 मैं उसका हाथ समन्दर तक बढ़ाऊँगा, और उसके दहने हाथ को दरियाओं तक। 26 वह मुझे पुकार कर कहेगा, 'तू मेराबाप, मेरा खुदा, और मेरी जाज़ तकी चढ़ान है। 27 और मैं उसको अपना पहलौता बनाऊँगा और दुनिया का शहंशाह। 28 मैं अपनी शफकत को उसके लिए हमेशा तक काईम रखूँगा और मेरा 'अहंद उसके साथ लातबील रहेगा। 29 मैं उसकी नसल को हमेशा तक काईम रखूँगा, और उसके तख्त को जब तक आसमान है। 30 अगर उसके फर्जन्द मेरी शरीरी अत को छोड़ दें, और मेरे अहकाम पर न चलें, 31 अगर वह मेरे कानून को तोड़ें, और मेरे फरमान को न मानें, 32 तो मैं उनको छड़ी से खता की, और कोड़ों से बदकारी की सजा दूँगा। 33 लेकिन मैं अपनी शफकत उस पर से हटा न लूँगा, और अपनी वफादारी को बेकार न होने न दूँगा। 34 मैं अपने 'अहंद को न तोड़ूँगा, और अपने मुँह की बात को न बदलूँगा। 35 मैं एक बार अपनी पाकी की कसम खा चुका हूँ मैं दाऊद से झट न बोलूँगा। 36 उसकी नसल हमेशा काईम रहेगी, और उसका तख्त आफताब की तरह मेरे सामने काईम रहेगा। 37 वह हमेशा चाँद की तरह, और आसमान के सच्चे गवाह की तरह काईम रहेगा। मिलाह 38 लेकिन तूने तो तर्क कर दिया और छोड़ दिया, तू अपने मम्सूह से नाराज हुआ है। 39 तूने अपने खादिम के 'अहंद को रुक कर दिया, तूने उसके ताज को खाक में मिला दिया। 40 तूने उसकी सब बाड़ों को तोड़ दाला, तूने उसके क्लिलों को खण्डर बना दिया। 41 सब आगे जाने वाले उसे लूटे हैं, वह अपने पड़ोसियों की मलामत का निशाना बन गया। 42 तूने उसके सब दुश्मनों को खुश किया। 43 बल्कि तू उसकी तलवार की धार को मोड़ देते हैं, और लडाई में उसके पाँव को जमने नहीं दिया। 44 तूने उसकी रौनक उड़ा दी, और उसका तख्त खाक में मिला दिया। 45 तूने उसकी जवानी के दिन घटा दिए, तूने उसे शर्मिन्दा कर दिया है। (सिलाह) 46 ऐ खुदावन्द, कब तक? क्या तू हमेशा तक पोशीदा रहेगा? तेरे कहर की आग कब तक भड़कती रहेगी? 47 याद रख मेरा कथाम ही

क्या है, तूने कैसी बतालत के लिए कुल बनी आदम को पैदा किया। 48 वह कौन सा आदमी है जो ज़िन्दा ही रहेगा और मौत को न देखेगा, और अपनी जान को पाताल के हाथ से बचा लेगा? (सिलाह) (Sheol h7585) 49 या रब्ब, तेरी वह पहली शक्ति क्या हूँ, जिसके बारे में तूने दाऊद से अपनी वफादारी की कक्षम खाई थी? 50 या रब्ब, अपने बन्दों की स्वाई को याद कर, मैं तो सब जबरदस्त कौमों की तानाज़नी, अपने सिने में लिए फिरता हूँ। 51 ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मनों ने कैसे ताने मारे, तेरे ममूह के कदम कदम पर कैसी तानाज़नी की है। 52 खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक मुबारक हो! अमीन सुम्मा अमीन।

90 या रब्ब, नसल दर नसल, त ही हमारी पनाहगाह रहा है। 2 इसमें पहले के पहाड़ पैदा हुए, या ज़मीन और दुनिया को तूने बनाया, इन्विदा से हमेशा तक त ही खुदा है। 3 त इंसान को फिर खाक में मिला देता है, और फरमाता है, “ऐ बनी आदम, लौट आओ!” 4 क्यूँकि तेरी नज़र में हजार बरस ऐसे हैं, जैसे कल का दिन जो गुजर गया, और जैसे रात का एक पहर। 5 त उनको जैसे सैलाब से बहा ते जाता है, वह नीद की एक झपकी की तरह है, वह सुबह को उगाने वाली घास की तरह है। 6 वह सुबह को लहलहाती और बढ़ती है, वह शाम को कट्टी और सख जाती है। 7 क्यूँकि हम तेरे कहर से फ़ना हो गए; और तेरे गजब से परेशान हुए। 8 तूने हमारी बदकिरदारी को अपने सामने रखवा, और हमारे छुपे हुए गुनहों को अपने चेहरे की रोशनी में। 9 क्यूँकि हमारे तमाम दिन तेरे कहर में गुज़र, हमारी उम्र खयाल की तरह जाती रहती है। 10 हमारी उम्र की मींआद सतर बरस है, या कुर्वत हो तो अस्सी बरस; तो भी उनकी रौनक महज मशक्त और गम है, क्यूँकि वह जल्द जाती रहती है और हम उड़ जाते हैं। 11 तेरे कहर की शिक्षित को कौन जानता है, और तेरे खौफ के मुताबिक तेरे गजब को? 12 हम को अपने दिन गिनना सिखा, ऐसा कि हम अक्ल दिल हासिल करें। 13 ऐ खुदावन्द, बाज आ! कब तक? और अपने बन्दों पर रहम फरमा! 14 सुबह को अपनी शक्ति से हम को आसदा कर, ताकि हम उम्र भर खुश — ओ — खुर्रम रहें। 15 जितने दिन तेरे हम को दुख दिया, और जितने बरस हम मुसीबत में रहे, उतनी ही खुशी हम को 'इन्यायत कर। 16 तेरा काम तेरे बन्दों पर, और तेरा जलाल उनकी औलाद पर जाहिर हो। 17 और रब्ब हमारे खुदा का करम हम पर साया करे। हमारे हाथों के काम को हमारे लिए क्याम बख्श हाँ हमारे हाथों के काम को क्याम बख्श।

91 जो हक्कताला के पर्दे में रहता है, वह कादिर — ए — मूलक के साथ भैं सुकृत करेगा। 2 मैं खुदावन्द के बारे में कहूँगा, “वही मेरी पनाह और मेरा गढ़ है; वह मेरा खुदा है, जिस पर मेरा भरोसा है।” 3 क्यूँकि वह तुझे संयाद के फंदे से, और मुहलिक बबा से छुड़ाएगा। 4 वह तुझे अपने परों से छिपा लेगा, और तुझे उसके बाज़ुओं के नीचे पनाह मिलेगी, उसकी सच्चाई ढाल और सिपर है। 5 त न रात के खौफ से डेरेगा, न दिन को उड़ने वाले तीर से। 6 न उस बबा से जो अंधेरे में चलती है, न उस हलाकत से जो दोपहर को बीरान करती है। 7 तेरे आसपास एक हजार गिर जाएँगे, और तेरे दहने हाथ की तरफ दस हजार; लेकिन वह तेरे नज़दीक न आएगी। 8 लेकिन तू ऐ अपनी आँखों से निगाह करेगा, और शरीरों के अंजाम को देखेगा। 9 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, मेरी पनाह है। तूने हक्कताला को अपना घर बना लिया है। 10 तुझ पर कोई आफत नहीं आएगी, और कोई बबा तेरे खेमे के नज़दीक न पहुँचेगी। 11 क्यूँकि वह तेरे बारे में अपने फरिश्तों को हुक्म देगा, कि तेरी सब राहों में तेरी हिफ़ाजत करें। 12 वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे, ताकि ऐसा न हो कि तेरे पॅंच को पथर से ठेस लगे। 13 त शेर — ए — बबर और अज़दहा को रैदेगा, तू जबान शेर और अज़दह को पामाल करेगा। 14 चूँकि उसने मुझ से दिल लगाया है, इशलिए मैं उसे छुड़ाऊँगा, मैं उसे सरफ़राज कहूँगा, क्यूँकि उसने

मेरा नाम पहचाना है। 15 वह मुझे पुकारेगा और मैं उसे जबाब दूँगा, मैं मुसीबत में उसके साथ रहूँगा, मैं उसे छुड़ाऊँगा और 'इज़ज़त बख़ूबी'। 16 मैं उसे उम्र की दराजी से आसदा कर दूँगा और अपनी नज़ात उसे दिखाऊँगा।

92 क्या ही भला है, खुदावन्द का शुक्र करना, और तेरे नाम की मदहसराई करना; ऐ हक ताल! 2 सुबह को तेरी शक्ति का इज़ज़तार करना, और रात को तेरी वफादारी का, 3 दस तार वाले साज और बर्बत पर, और सितार पर गूंजती आवाज के साथ। 4 क्यूँकि, ऐ खुदावन्द, तूने मुझे अपने काम से खुश किया; मैं तेरी कारीगरी की बजह से खुशी मनाऊँगा। 5 ऐ खुदावन्द, तेरी कारीगरी कैरी बड़ी है। तेरे ख्याल बहुत 'अमीक' है। 6 हैवान खसलत नहीं जानता और बेवकूफ इसको नहीं समझता, 7 जब शरीर घास की तरह उते हैं, और सब बदकिरदार फूलते फूलते हैं, तो यह इनी लिए है कि वह हमेशा के लिए फ़ना हों। 8 लेकिन तू ऐ खुदावन्द, हमेशा से हमेशा तक बुलन्द है। 9 क्यूँकि देख, ऐ खुदावन्द, तेरे दुश्मन; देख, तेरे दुश्मन हलाक हो जाएँगे; सब बदकिरदार तितर बितर कर दिए जाएँगे। 10 लेकिन तूने मेरे सीधी को ज़ंगली साँड़ के सीधी की तरह बलन्द किया है; मुझ पर ताजा तेल मला गया है। 11 मेरी आँखें ने मेरे दुश्मनों को देख लिया, मेरे कानों ने मेरे मुखालिफ बदकारों का हाल सुन लिया है। 12 सादिक खजर के दरखत की तरह सरसब्ज होगा। वह लुबान के देवदार की तरह बढ़ेगा। 13 जो खुदावन्द के घर में लगाए गए हैं, वह हमारे खुदा की बागराहों में सरसब्ज होंगे। 14 वह बुदाये में भी कामयाब होंगे, वह तर — ओ — ताजा और सरसब्ज रहेंगे; 15 ताकि बाज़ह करें कि खुदावन्द रास्त है वही मेरी चट्टान है और उसमें न रास्ती नहीं।

93 खुदावन्द सलतनत करता है वह शौकत से मूलबस्स है खुदावन्द कुरतत से मूलबस्स है, वह उससे कमर बस्ता है इस लिए जहान काईम है और उसे जुम्बिश नहीं। 2 तेरा तखत पहले से काईम है, त इन्विदा से है। 3 सैलाबों ने, ऐ खुदावन्द! सैलाबों ने शोर मचा रखवा है, सैलाब मौजजन है। 4 बहरों की आवाज़ से, समन्दर की ज़बरदस्त मौजों से भी, खुदावन्द बलन्द — ओ — कादिर है। 5 तेरी शहादतें बिल्कुल सच्ची हैं, ऐ खुदावन्द हमेशा से हमेशा तक के लिए पाकीजी तेरे घर को जेबा है।

94 ऐ खुदावन्द! ऐ इन्तकाम लेने वाले खुदा ऐ इन्तकाम लेने वाले खुदा! जलवागर हो! 2 ऐ जहान का इन्साफ करने वाले! उठ; मगास्तरों को बदला दे! 3 ऐ खुदावन्द, शरीर कब तक; शरीर कब तक खुशी मनाया करेगे? 4 वह बकवास करते और बड़ा बोल बोलते हैं, सब बदकिरदार लाफ़ज़नी करते हैं। 5 ऐ खुदावन्द! वह तेरे लोगों को पीसे डालते हैं, और तेरी मीरास को दुख देते हैं। 6 वह बेबा और परदेसी को कत्ल करते, और यतीम को मार डालते हैं; 7 और कहते हैं “खुदावन्द नहीं देखेगा और याँकूब का खुदा ख्याल नहीं करेगा।” 8 ऐ कौम के हैवानों! ज़रा ख्याल करो; ऐ बेवकूफों! तुम्हें कब 'अक्ल आएगी? 9 जिसने काम दिया, क्या वह खुद नहीं सुनत? जिसने आँख बनाई, क्या वह देख नहीं सकत? 10 क्या वह जो कौमों को तम्बीह करता है, और इंसान को समझ सिखाता है, सज़ा न देगा? 11 खुदावन्द इंसान के ख्यालों को जानता है, कि वह बेकार है। 12 ऐ खुदावन्द, मुबारक है वह आदमी जिसे तू तम्बीह करता, और अपनी शरीर अत की ताँतीम देता है। 13 ताकि उसको मुसीबत के दिनों में आराम बख़ूबी, जब तक शरीर के लिए गढ़ा न खोदा जाए। 14 क्यूँकि खुदावन्द अपने लोगों को नहीं छोड़ेगा, और वह अपनी मीरास को नहीं छोड़ेगा; 15 क्यूँकि 'अद्वल सदाकृत' की तरफ रस्तू करेगा, और सब रास्त दिल उसकी पैरवी करेंगे। 16 शरीरों के मुकाबले में कौन मेरे लिए उठेगा? बदकिरदारों के खिलाफ कौन मेरे लिए खड़ा होगा? 17 अगर खुदावन्द मेरा

मददगार न होता, तो मेरी जान कब की 'आलम — ए — खामोशी में जा बसी होती। 18 जब मैंने कहा, मेरा पाँव फिसल चला, तो ऐ खुदावन्द! तेरी शफक्त ने मुझे संभाल लिया। 19 जब मेरे दिल में फिक्रों की कसरत होती है, तो तेरी तसल्ली मेरी जान को खुश करती है। 20 क्या शारात के तख्त से तुझे कुछ वास्ता होगा, जो कानून की आड़ में बदी गढ़ता है? 21 वह सादिक की जान लेने को इकड़े होते हैं, और बेगुनाह पर कल्प का फतवा देते हैं। 22 लेकिन खुदावन्द मेरा ऊँचा बुर्ज, और मेरा खुदा मेरी पनाह की चट्ठान रहा है। 23 वह उनकी बदकारी उन ही पर लाएगा, और उन ही की शरारत में उनको काट डालेगा। खुदावन्द हमारा उनको काट डालेगा।

95 आओ हम खुदावन्द के सामने नामसराई करे! अपनी नजात की चट्ठान के सामने खुशी से ललकारें। 2 शुक्रगुजारी करते हुए उसके सामने में हाजिर हों, मजमूर गाते हुए उसके आगे खुशी से ललकारें। 3 क्यौंकि खुदावन्द खुदा — ए — 'अजीम है, और सब इलाहों पर शाह — ए — 'अजीम है। 4 जमीन के गहराव उसके कब्जे में हैं; पहाड़ों की चोटियाँ भी उसी की हैं। 5 समन्दर उसका है, उसी ने उसको बनाया, और उसी के हाथों ने खुकी को भी तैयार किया। 6 आओ हम दूके और सिद्धा करें, और अपने खालिक खुदावन्द के सामने घुटने टेकें! 7 क्यौंकि वह हमारा खुदा है, और हम उसकी चरागाह के लोग, और उसके हाथ की भेड़े हैं। काश कि आज के दिन तुम उसकी आवाज सुनते! 8 तुम अपने दिल को सख्त न करो जैसा मरीबा में, जैसा मस्ताह के दिन वीरान में किया था, 9 उस वक्त तुम्हारे बाप — दादा ने मुझे आजमाया, और मेरा इमिहान किया और मेरे काम को भी देखा। 10 चारोंसाथ बरस तक मैं उस नसल से बेजार रहा, और मैंने कहा, कि 'ये वह लोग हैं जिनके दिल आवारा हैं, और उन्होंने मेरी राहों को नहीं पहचाना।' 11 चुनाँचे मैंने अपने गङ्गब में कसम खाई कि यह लोग मेरे आराम में दाखिल न होंगे।

96 खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओ! ऐ सब अहल — ए — जमीन! खुदावन्द के सामने गाओ। 2 खुदावन्द के सामने गाओ, उसके नाम को मुबारक कहो; रोज ब रोज उसकी नजात की बशरत दो। 3 कौमों में उसके जलाल का, सब लोगों में उसके 'अजायब का बयान करो। 4 क्यौंकि खुदावन्द बुर्जां और बहुत। सिंताइश के लायक है; वह सब मांबूदों से ज्यादा ताज़ीम के लायक है। 5 इसलिए कि और कौमों के सब मांबूद सिर्फ़ बुत हैं; लेकिन खुदावन्द ने आसमानों को बनाया। 6 अजमत और जलाल उसके सामने में हैं, कुदरत और जमाल उसके मक्किदिस में। 7 ऐ कौमों के कबीलों! खुदावन्द की, खुदावन्द ही की तम्जीद — ओ — ताज़ीम करो! 8 खुदावन्द की ऐसी तम्जीद करो जो उसके नाम की शायान है; हविया लाओ और उसकी बागराहों में आओ! 9 पाक आराइश के साथ खुदावन्द को सिद्धा करो; ऐ सब अहल — ए — जमीन! उसके सामने काँपते रहो! 10 कौमों में 'ऐलान करो, "खुदावन्द सलतनत करता है! जहान काईम है, और उसे जुमिश नहीं; वह रास्ती से कौमों की 'अदालत करेगा।' 11 असामान खुशी मनाएँ और जमीन खुश हो; समन्दर और उसकी मांमूरी शोर मचाएँ। 12 मैदान और जो कुछ उसमें है, बाग — बाग हों; तब जंगल के सब दररुच खुशी से गाने लगेंगे। 13 खुदावन्द के सामने, क्यौंकि वह आ रहा है; वह जमीन की 'अदालत करने को रहा है। वह सदाकरत से जहान की, और अपनी सच्चाई से कौमों की 'अदालत करेगा।

97 खुदावन्द सलतनत करता है, जमीन खुश हो; बेशमार ज़ज़री खुशी मनाएँ। 2 बादल और तारीकी उसके चारों तरफ हैं; सदाकरत और अदल उसके तख्त की बुनियाद हैं। 3 आग उसके आगे आगे चलती है, और चारों तरफ उसके मुखालिकों को भसम कर देती है। 4 उसकी बिजलियों ने जहान को

रोशन कर दिया जमीन ने देखा और काँप गई। 5 खुदावन्द के सामने पहाड़ मोम की तरह पिघल गए, या'नी सारी जमीन के खुदावन्द के सामने। 6 आसमान उसकी सदाकरत ज़ाहिर करता सब कौमों ने उसका जलाल देखा है। 7 खुदी हई मूरतों के सब पूजने वाले, जो बुतों पर फ़ख़ करते हैं, शर्मिन्दा हों, ऐ मांबूद! सब उसको सिंज्दा करो। 8 ऐ खुदावन्द! सियून ने सुना और खुश हई और यहूदाह की बेटियाँ तेरे अहकम से खुश हुई। 9 क्यौंकि ऐ खुदावन्द! तू तमाम जमीन पर बुलंद — ओ — बाला है; तू सब मांबूदों से बहुत आला है। 10 ऐ खुदावन्द से मूहब्बत रखने वालों, बटी से नफरत करो, वह अपने पाक लोगों की जानों को महफूज़ रखता है, वह उनको शरीरों के हाथ से डुड़ाता है। 11 सादिकों के लिए नू बोया गया है, और रास्त दिलों के लिए खुशी। 12 ऐ सादिकों! खुदावन्द में खुश रहो; उसके पाक नाम का शुक्र करो।

98 खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओं क्यौंकि उसने 'अजीब काम किए हैं। उसके दहने हाथ और उसके पाक बाजू ने उसके लिए फ़तह हासिल की है। 2 खुदावन्द ने अपनी नजात ज़ाहिर की है, उसने अपनी सदाकरत कौमों के सामने ज़ाहिर की है। 3 उसने इसाईल के घराने के हक में अपनी शफक्त — ओ — वफ़ादारी याद की है, इन्तिहाई जमीन के लोगों ने हमारे खुदा की नजात देखी है। 4 ऐ तमाम अहल — ए — जमीन! खुदावन्द के सामने खुशी का नारा मारो; ललकारो और खुशी से गाओं और मदहसराई करो। 5 खुदावन्द की सिंताइश सिराप पर करो, सिराप और सुरीली आवाज़ से। 6 नरसिंग और करना की आवाज़ से, बादशाह या'नी खुदावन्द के सामने खुशी का नारा मारो। 7 समन्दर और उसकी मांमूरी शोर मचाएँ और जहान और उसके बाशिदे। 8 सैलाब तालियाँ बजाएँ; पहाड़ियाँ मिलकर खुशी से गायँ। 9 खुदावन्द के सामने, क्यौंकि वह जमीन की 'अदालत करने आ रहा है। वह सदाकरत से जहान की, रास्ती से कौमों की 'अदालत करेगा।

99 खुदावन्द सलतनत करता है, कौमें काँपी। वह करूबियों पर भैठता है, जमीन लरजे। 2 खुदावन्द सियून में बुर्जुर्ग है; और वह सब कौमों पर बुलंद — ओ — बाला है। 3 वह तेरे बुर्जुर्ग और बड़े नाम की तारीफ़ करें वह पाक है। 4 बादशाह की ताकत इन्साफ़ पसन्द है तू रास्ती को काईम करता है तू ही ने 'अदूल और सदाकरत को यांकूब, मैं रायज़ किया। 5 तुम खुदावन्द हमारे खुदा की तम्जीद करो, और उसके पाँव की चौकी पर सिंज्दा वह पाक है। 6 उसके काहिनों में से मूसा और हास्न ने, और उसका नाम लेनेवालों में से समुद्र ने खुदावन्द से दुआ की और उसने उनको जवाब दिया। 7 उसने बादल के सूत में से उनसे कलाम किया; उन्होंने उसकी शाहदतों को और उस कानून को जो उनको दिया था, माना। 8 ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, तू उनको जवाब देता था; तू वह खुदा है जो उनको मु'आफ़ करता रहा, अगर उन्होंने उनके आमाल का बदला भी दिया। 9 तुम खुदावन्द हमारे खुदा की तम्जीद करो, और उसके पाक पहाड़ पर सिंज्दा करो; क्यौंकि खुदावन्द हमारा खुदा कुददूस है।

100 ऐ अहले जमीन, सब खुदावन्द के सामने खुशी का नारा मारो! 2 खुशी से खुदावन्द की इबादत करो! गाते हुए उसके सामने हाजिर हों! 3 जान रखों खुदावन्द ही खुदा है! उसी ने हम को बनाया और हम उसी के हैं; हम उसके लोग और उसकी चरागाह की भेड़े हैं। 4 शुक्रगुजारी करते हुए उसके फाटकों में और हम्द करते हुए उसकी बागराहों में दाखिल हो; उसका शुक्र करो और उसके नाम को मुबारक कहो! 5 क्यौंकि खुदावन्द भला है, उसकी शफक्त हमेशा की है, और उसकी वफ़ादारी नसल दर नसल रहती है।

101 मैं शक्ति और 'अदल का हम्द गाँँगा'; ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मदह पास कब आएगा? घर में मेरा चाल चलन सच्चे दिल से होगा। 3 मैं किसी खबासत को मढ़ — ए — नज़र नहीं रखूँगा; मुझे कंज रफतारों के काम से नफरत है; उसको मुझ से कुछ मतलब न होगा। 4 कजदिली मुझ से दूर हो जाएगी; मैं किसी बुराई से आशना न हूँगा। 5 जो दर पर्दा अपने पड़ोसी की बुराई करे, मैं उसे हलाक कर डालूँगा; मैं बुलन्द नज़र और मास्टर दिल की बदौशत न करूँगा। 6 मुल्क के इंमानदारों पर मेरी निगाह होगी ताकि वह मेरे साथ रहें; जो कामिल राह पर चलता है वही मेरी खिदमत करेगा। 7 दग्बाजार मेरे घर में रहने न पाएगा; दरोग गो को मेरे सामने कथाम न होगा। 8 मैं हर सुबह मुल्क के सब शरीरों को हलाक किया करूँगा, ताकि खुदावन्द के शहर से बदकारों को काट डालूँ।

102 ऐ खुदावन्द! मेरी दुआ सुन और मेरी फरियाद तेरे सामने पहुँचें। 2 मेरी मुसीबत के दिन मुझ से चेहरा न छिपा, अपना कान मेरी तरफ झुका, जिस दिन मैं फरियाद करूँ मुझे जल्द जवाब दे। 3 क्यूँकि मेरे दिन धूँध की तरह उड़े जाते हैं, और मेरी हड्डियाँ इधन की तरह जल गईं। 4 मेरा दिल घास की तरह झूलस कर सूख गया; क्यूँकि मैं अपनी रोटी खाना भूल जाता हूँ। 5 कराहते कराहते मेरी हड्डियाँ मेरे गोशें से जा लागी। 6 मैं जंगली हवासिल की तरह हूँ, मैं वीरामे का उल्लंघन गया। 7 मैं बेखाब और उस गौंथ की तरह हो गया हूँ, जो छत पर अकेला हो। 8 मेरे दुश्मन मुझे दिन भर मलामत करते हैं, मेरे मुखालिफ़ दीवाना होकर मुझ पर लान्त करते हैं। 9 क्यूँकि मैंने रोटी की तरह राख खाई, और आँख मिलाकर पानी पिया। 10 यह तेरे गजब और कहर की बजह से है, क्यूँकि तूने मुझे उठाया और फिर पटक दिया। 11 मेरे दिन ढलने वाले साये की तरह हैं, और मैं घास की तरह मुरझा गया। 12 लेकिन तु ऐ खुदावन्द, हमेशा तक रहेगा; और तेरी यादगार नसल — दर — नसल रहेगी। 13 तू उठाओ और सिय्यन पर रहम करोगा: क्यूँकि उस पर तरस खेने का बक्तव्य है, हाँ उसका मूँअयन बक्तव्य आ गया है। 14 इसलिए कि तेरे बन्दे उसके पथरों को चाहते, और उसकी खाक पर तरस खाते हैं। 15 और कौमों को खुदावन्द के नाम का, और जमीन के सब बादशाहों को तेरे जलाल का खोफ़ होगा। 16 क्यूँकि खुदावन्द ने सिय्यन को बनाया है; वह अपने जलाल में जाहिर हुआ है। 17 उसने बेकरों की दुआ पर तवज्ज्ञ की, और उनकी दुआ को हकीकी न जाना। 18 यह आने वाली नसल के लिए लिखा जाएगा, और एक कौम पैदा होगी जो खुदावन्द की सिताइश करेगी। 19 क्यूँकि उसने अपने हैकल की बुलन्दी पर से निगाह की, खुदावन्द ने आसमान पर से जमीन पर नज़र की; 20 ताकि गुलाम का कराहना सुने, और मरने वालों को छड़ा ले; 21 ताकि लोग सिय्यन में खुदावन्द के नाम का इजहार, और येस्तेश्लोमें उसकी तारीफ़ करें, 22 जब खुदावन्द की इजाबत के लिए हों। 23 उसने राह में मेरा जोर घटा दिया, उसने मेरी उम्र को ताह कर दी। 24 मैंने कहा, ऐ मेरे खुदा, मुझे आधी उम्र में न उठा, तेरे बरस नसल दर नसल हैं। 25 तूने इन्दिरा से जमीन की बुनियाद डाली; आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है। 26 वह हलाक हो जाएँगे, लेकिन तु बाकी रहेगा; बल्कि वह सब पोशाक की तरह पुराने हो जाएँगे। तु उनको लिबास की तरह बदलेगा, और वह बदल जाएँगे; 27 लेकिन तु बदलने वाला नहीं है, और तेरे बरस बेइन्हिना होंगे। 28 तेरे बन्दों के फर्जन्द बरकरार रहेंगे; और उनकी नसल तेरे सामने काईम रहेगी।

103 ऐ मेरी जान! खुदावन्द को मुबारक कह; और जो कुछ मुझमें है उसके पाक नाम को मुबारक कहें 2 ऐ मेरी जान! खुदावन्द को मुबारक कह

और उसकी किसी ने मत को फरामोश न कर। 3 वह तेरी सारी बदकारी को बख्ताता है वह तुझे तमाम बीमारियों से शिफा देता है 4 वह तेरी जान हलाकत से बचाता है, वह तेरे सर पर शक्ति व रहमत का ताज रखता है। 5 वह तुझे उम्र भर अच्छी अच्छी चीजों से आसदा करता है, तू 'उकाब की तरह नए सिरे नौजवान होता है। 6 खुदावन्द सब मजलतूमों के लिए सदाकत और अदल के काम करता है। 7 उसने अपनी राहें मूसा पर और अपने काम बनी इमाईल पर जाहिर किए। 8 खुदावन्द रहीम व करीम है, कहर करने में भीमा और शक्ति में गरी। 9 वह सदा झिकड़ता न रहेगा वह हमेशा गजबनाक न रहेगा। 10 उस ने हमारे गुनाहों के मुवाफ़िक हम से मूलक नहीं किया और हमारी बदकारियों के मुताबिक हमको बदला नहीं दिया। 11 क्यूँकि जिस कद्र आसमान जमीन से बुलन्द, उसी कद्र उसकी शक्ति उन पर है, जो उससे डरते हैं। 12 जैसे पूरब पच्छिम से दूर है, वैसे ही उसने हमारी खताएँ हम सेदूर कर दी। 13 जैसे बाप अपने बेटों पर तरस खाता है, वैसे ही खुदावन्द उन पर जो उससे डरते हैं, तरस खाता है। 14 क्यूँकि वह हमारी सरिशत से बाकिप़ है, उसे याद है कि हम खाक हैं। 15 इंसान की उम्र तो घास की तरह है, वह जंगली फूल की तरह खिलता है, 16 कि हवा उस पर चली और वह नहीं, और उसकी जगह उसे फिर न देखेगी 17 लेकिन खुदावन्द की शक्ति उससे डरने वालों पर अज्ञल से हमेशा तक, और उसकी सदाकत नसल — दर — नसल है 18 याँनी उन पर जो उसके 'अहद पर काईम रहते हैं, और उसके कबानीन पर 'अमल करनायाद रखते हैं। 19 खुदावन्द ने अपना ताज आसमान पर काईम किया है, और उसकी सलतनत सब पर मुसल्लत है। 20 ऐ खुदावन्द के फिरिश्तो, उसको मुबारक कहो, तुम जो जोर में बढ़ कर हो और उसके कलाम की आवाज सुन कर उस पर 'अमल करते हो। 21 ऐ खुदावन्द के लशकों, सब उसको मुबारक कहो! तुम जो उसके खादिम हो और उसकी मर्जी बजा लाते हो। 22 ऐ खुदावन्द की मखलकात, सब उसको मुबारक कहो! तुम जो उसके तसल्लुत के सब मकामों में ही। ऐ मेरी जान, तू खुदावन्द को मुबारक कह!

104 ऐ मेरी जान, तू खुदावन्द को मुबारक कह, ऐ खुदावन्द मेरे खुदा तू बहुत बुजुर्हा है, तू हशमत और जलाल से मुलब्बस है। 2 तू नह को पोशाक की तरह पहनता है, और आसमान को सायाबान की तरह ताजा है। 3 तू अपने बालाशानों के शहतीर पानी पर टिकाता है; तू बादलों को अपना रथ बनाता है; तू हवा के बाजूओं पर सैर करता है; 4 तू अपने फरिश्तों को हवाएँ और अपने खादिमों की आग के शोले बनाता है। 5 तूने जमीन को उसकी बुनियाद पर काईम किया, ताकि वह कभी जुबिश न खाए। 6 तूने उसको समन्दर से छिपाया जैसे लिबास से; पानी पहाड़ों से भी बुलन्द था। 7 वह तेरी झिड़की से भागा वह तेरी गरज की आवाज से जल्दी — जल्दी चला। 8 उस जगह पहुँच गया जो तूने उसके लिए तैयार की थी; पहाड़ उभर आए, बादियाँ बैठ गई। 9 तूने हद बाँध दी ताकि वह अगे न बढ़ सके, और फिर लौटकर जमीन को न छिपाए। 10 वह बादियों में चम्पे जारी करता है, जो पहाड़ों में बरते हैं। 11 सब जंगली जानवर उससे पीते हैं; गोरख अपनी प्यास बुझाते हैं। 12 उनके आसपास हवा के परिस्त्रे बसाए करते, और डालियों में चहचहते हैं। 13 वह अपने बालाशानों से पहाड़ों को सेराब करता है। तेरी कारीगरी के फल से जमीन आसदा है। 14 वह चौपायों के लिए घास उगाता है, और इंसान के काम के लिए सब्ज़ा, ताकि जमीन से खुदाक पैदा करे। 15 और मय जो इंसान के दिल को तवानाई बख्ताती है। 16 खुदावन्द के दरखत शादाब रहते हैं, याँनी लुबानान के देवदार जो उसने लगाए। 17 जहाँ परिस्त्रे अपने धोसले बनाते हैं; सनोबर के दरखतों में लकलक का बसाए है। 18 ऊँचे पहाड़ जंगली बकरों के

लिए हैं, चट्ठानें साफानों की पनाह की जगह हैं। 19 उसने चौंद को ज़मानों के फ़क्र के लिए मुकर्रर किया; आफ़ताब अपने गुब्ब की जगह जानता है। 20 तू अँधेरा कर देता है तो रात हो जाती है, जिसमें सब ज़ंगली जानवर निकल आते हैं। 21 जवान शेर अपने शिकार की तलाश में गरजते हैं, और खुदा से अपनी ख़राक माँगते हैं। 22 आफ़ताब निकलते ही वह चल देते हैं, और जाकर अपनी माँदों में पड़े रहते हैं। 23 इंसान अपने काम के लिए, और शाम तक अपनी मेहनत करने के लिए निकलता है। 24 ऐ खुदावन्द, तेरी कारीगरी कैसी बेशपार है। तू ने यह सब कुछ हिक्मत से बनाया; ज़मीन तेरी मख्तुलकात से मामूल है। 25 देखो, यह बड़ा और चौड़ा समन्दर, जिसमें बेशपार रेंगे वाले जानदार हैं, यार्नी छोटे और बड़े जानवर। 26 जहाज इसी में चलते हैं, इसी में लिवियातन है, जिसे तू इसमें खेलने को पैदा किया। 27 इन सबको तेरी ही उम्मीद है, ताकि तू उनको बक्त फ़र ख़राक दे। 28 जो कुछ तू देता है, यह ले लेते हैं; तू अपनी मुश्ती खोलता है और यह अच्छी चीज़ों से से होते हैं 29 तू अपना चेहरा छिपा लेता है, और यह परेशान हो जाते हैं; तू इनका दम रोक लेता है, और यह मर जाते हैं, और फिर मिट्टी में मिल जाते हैं। 30 तू अपनी सूह भेजता है, और यह पैदा होते हैं; और तू इस ज़मीन को नया बना देता है। 31 खुदावन्द का जलाल हमेशा तक रहे, खुदावन्द अपनी कारीगरी से खुश हो। 32 वह ज़मीन पर निगाह करता है, और वह काँप जाती है; वह पहाड़ों को छूता है, और उनसे से धुआँ निकलने लगता है। 33 मैं उम्र भर खुदावन्द की तारीफ़ गाँँड़ा, जब तक मेरा बूजूट है मैं अपने खुदा की मदहसराई कहँगा। 34 मेरा ध्यान उसे पसन्द आए, मैं खुदावन्द में खुश रहँगा। 35 गुनहगार ज़मीन पर से फ़ना हो जाएँ, और शरीर बाकी न रहें। ऐ मेरी जान, खुदावन्द को मुबारक कह! खुदावन्द की हम्द करो!

105 खुदावन्द का शुक्र करो, उसके नाम से दुआ करो; कौमों में उसके कामों का बायान करो! 2 उसकी तारीफ़ में गाओ, उसकी मदहसराई करो; उसके तमाम 'अजायब का चर्चा करो! 3 उसके पाप नाम पर फ़खु करो, खुदावन्द के तालिबों के दिल खुश हो! 4 खुदावन्द और उसकी ताकत के तालिब हो, हमेशा उसके दीदार के तालिब रहो! 5 उन 'अजीब कामों को जो उसने किए, उसके 'अजायब और मुँह के अहकम को याद रख़वो! 6 ऐ उसके बन्दे अब्रहाम की नसल! ऐ बीर्यां कूब उसके बरगुज़ीदो! 7 वही खुदावन्द हमारा खुदा है; उसके अहकाम तमाम ज़मीन पर हैं। 8 उसने अपने 'अहद को हमेशा याद रख़वा, यार्नी उस कलाम को जो उसने हजार नसलों के लिए फ़रमाया; 9 उसी 'अहद को जो उसने अब्रहाम से बांधा, और उस कसम को जो उसने इस्हाक से खाई, 10 और उसी को उसने यांकूब के लिए कानून, यार्नी इस्माईल के लिए हमेशा का 'अहद ठहराया, 11 और कहा, "मैं कनान का मुल्क तुझे दूँगा, कि तुम्हारा मौसूली हिस्सा हो।" 12 उस वक्त वह शुमार में थोड़े थे, बल्कि बहुत थोड़े और उस मुल्क में मुसाफिर थे। 13 और वह एक कौम से दूसरी कौम में, और एक सल्तनत से दूसरी सल्तनत में फ़िरते रहे। 14 उसने किसी आदमी को उन पर ज़ुल्म न करने दिया, बल्कि उनकी ख़तिर उसने बादशाहों को धमकाया, 15 और कहा, "मेरे मस्तूहों को हाथ न लगाओ, और मेरे नवियों को कोई नुकसान न पहँचाओ।" 16 फिर उसने फ़रमाया, कि उस मुल्क पर कहत नज़िल हो और उसने रोटी का सहारा बिल्कुल तोड़ दिया। 17 उसने उनसे पहले एक आदमी को भेजा, यूसुफ़ गुलामी में बेचा गया। 18 उन्होंने उसके पाँव को बेड़ियों से दुख दिया; वह लेहे की ज़न्जीरों में ज़कड़ा रहा; 19 जब तक के उसका बात पूरा न हुआ, खुदावन्द का कलाम उसे आज़माता रहा। 20 बादशाह ने हक्म भेज कर उसे छुड़ाया, हाँ कौमों के फ़रमान रखा ने उसे आजाद किया। 21 उसने उसको अपने घर का मुख्तार

और अपनी सारी मिलिक्यत पर हाकिम बनाया, 22 ताकि उसके हाकिमों को जब चाहे कैद करे, और उसके बुज़ुर्गों को अक्ल सिखाए। 23 इसाईल भी मिस्र में आया, और यांकूब हाम की सरजमीन में मुसाफिर रहा। 24 और खुदा ने अपने लोगों को ख़बर बढ़ाया, और उनको उनके मुख्तालिफ़ों से ज़्यादा मज़बूत किया। 25 उसने उनके दिल को नाफ़रमान किया, ताकि उसकी कौम से 'अदावत रख़वें, और उसके बन्दों से दगाबाजी करें। 26 उसने अपने बन्दे मूसा को, और अपने बरगुज़ीदा हास्तन को भेजा। 27 उसने उनके बीच निशान और मुअज़िज़ात, और हाम की सरजमीन में 'अजायब दिखाए। 28 उसने तारीकी भेजकर अँधेरा कर दिया; और उन्होंने उसकी बातों से से सरक़सी न की। 29 उसने उनकी नदियों को लह बना दिया, और उनकी मछलियाँ मार डाली। 30 उनके मुल्क और बादशाहों के बालाखानों में, मेंढक ही मेंढक भर गए। 31 उसने हक्म दिया, और मच्छरों के गोल आए, और उनकी सब हड्डों में ज़एं आ गई। 32 उसने उन पर मैंह की जगह ओले बरसाए, और उनके मुल्क पर दहकती आग नाज़िल की। 33 उसने उनके अँगरू और अंजीर के दरख़तों को भी बर्बाद कर डाला, और उनकी हद के पेड़ तोड़ डाले। 34 उसने हक्म दिया तो बेशुमार टिड़ियाँ और कीड़े आ गए, 35 और उसके मुल्क की तमाम वीज़े चट कर गए, और उनकी ज़मीन की पैदावार खा गए। 36 उसने उनके मुल्क के सब पहलौठों को भी मार डाला, जो उनकी पूरी ताकत के पहले फल थे। 37 और इसाईल को चाँदी और सोने के साथ निकाल लाया, और उसके कबीलों में एक भी कमज़ोर आदमी न था। 38 उनके चले जाने से मिस्र खुश हो गया, क्यूँकि उनका खौफ़ मिस्रियों पर छा गया था। 39 उसने बादल को साथावान होने के लिए फैला दिया, और रात को रोशनी के लिए आग दी। 40 उनके मँगने पर उसने बेरें भेजी, और उनको आसमानी रोटी से सेर किया। 41 उसने चट्ठान को चीरा, और पानी फूट निकाला; और खुशक ज़मीन पर नदी की तरह बहने लगा। 42 क्यूँकि उसने अपने पाक कौल को, और अपने बन्दे अब्रहाम को याद किया। 43 और वह अपनी कौम को खुशी के साथ, और अपने बरगुज़ीदों को हाद दगते हुए निकाल लाया। 44 और उसने उनको कौमों के मुल्क दिए, और उन्होंने उम्मतों की मेहनत के फल पर कब्ज़ा किया। 45 ताकि वह उसके क़ानून पर चले, और उसकी शरी' अत को मानें। खुदावन्द की हम्द करो!

106 खुदावन्द की हम्द करो, खुदावन्द का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला है, और उसकी शफ़कत हमेशा की है। 2 कौन खुदावन्द की क़दरत के कौमों का बायान कर सकता है, या उसकी पूरी सिताइश सुना सकता है? 3 मुबारक है वह जो 'अद्वल करते हैं, और वह जो हर वक्त सदाकत के काम करता है। 4 ऐ खुदावन्द, उस करम से जो तू अपने लोगों पर करता है उसे याद कर, अपनी नजात मुझे इनायत फ़रमा, 5 ताकि मैं तेरे बरगुज़ीदों की इक्कालामदी देखें और तेरी कौम की खुशी में खुश रहँ। और तेरी मीरास के लोगों के साथ फ़खु करें। 6 हम ने और हमारे बाप दादा ने गुनाह किया; हम ने बदकारी की, हम ने शरात के काम किए। 7 हमारे बाप — दादा मिस्र में तेरे 'अजायब न समझें; उन्होंने तेरी शफ़कत की क़सरत को याद न किया; बल्कि समन्दर पर यार्नी बहर — ए — कुलज़ुम पर बारी हए। 8 तोभी उसने उनको अपने नाम की खातिर बचाया, ताकि अपनी क़दरत जाहिर करे। 9 उसने बहर — ए — कुलज़ुम को डॉटा और वह सूख गया। वह उनकी गहराव में से ऐसे निकाल ले गया जैसे वीरान में से, 10 और उसने उनको 'अदावत रख़ने वाले के हाथ से बचाया, और दुर्शमन के हाथ से छुड़ाया। 11 समन्दर ने उनके मुख्तालिफ़ों को छिपा लिया: उनमें से एक भी न बचा। 12 तब उन्होंने उसके कौल का यकीन किया; और उसकी मदहसराई करने लगे। 13 फिर वह जल्द उसके कौमों को भलू गए, और उसकी मश्वरत का इन्तिज़ार न किया। 14

बल्कि वीरान में बड़ी हिस्स की, और सेहरा में खुदा को आजमाया। 15 फिर उसने उनकी मुराद तो पूरी कर दी, लेकिन उनकी जान को सुखा दिया। 16 उन्होंने खेमागाह में मूसा पर, और खुदावन्द के पाक मर्द हास्तन पर हसद किया। 17 फिर ज़मीन फटी और दातन को निगल गई, और अबीराम की जमा' अत को खा गई, 18 और उनके जर्थे में आग भडक उठी, और शोलों ने शरीरों को भस्म कर दिया। 19 उन्होंने हारिब में एक बछड़ा बनाया, और ढाली हुई मूत को सिज्दा किया। 20 यूँ उन्होंने खुदा के जलाल को, घास खाने वाले बैल की शक्ल से बदल दिया। 21 वह अपने मुनज्जी खुदा को भूल गए, जिसन मिस्र में बड़े बड़े काम किए, 22 और हाम की सरज़मीन में 'अजायब, और बहर — ए — कुलज़ुम पर दहशत अंगूज़ काम किए। 23 इसलिए उसने फरमाया, मैं उनको हलाक कर डालता, अगर मेरा बरग़ज़ीदा मूसा मेरे सामने बीच में न आता कि मेरे कहर को टाल दे, ऐसा न हो कि मैं उनको हलाक करूँ। 24 और उन्होंने उस सहाने मूल्क को हकीक जाना, और उसके कौल का यकीन न किया। 25 बल्कि वह अपने डेरों में बड़बडाएँ, और खुदावन्द की बात न मानी। 26 तब उसने उनके खिलाफ़ कसम खाई कि मैं उनको वीरान में पस्त करूँगा, 27 और उनकी नसल की कौमों के बीच और उनके मूल्क मूल्क में तिर बिर करूँगा। 28 वह बाल फ़ग़र को पूजने लगे, और बुतों की कुर्बानियाँ खाने लगे। 29 यूँ उन्होंने अपने अमाल से उसको ना खुश किया, और बबा उनमें फूट निकली। 30 तब फ़ीहास उठा और बीच में आया, और बबा स्कर गई। 31 और यह काम उसके हक में नसल दर नसल, हमेशा के लिए रास्तबाज़ी गिना गया। 32 उन्होंने उसकी मरीबा के चश्मे पर भी नारखुश किया, और उनकी खातिर मूसा को नुकसान पहुँचा; 33 इसलिए कि उन्होंने उसकी स्हर से सरकशी की, और मूसा बे सोचे बोल उठा। 34 उन्होंने उन कौमों को हलाक न किया, जैसा खुदावन्द ने उनको हक्क दिया था, 35 बल्कि उन कौमों के साथ मिल गए, और उनके से काम सीख गए; 36 और उनके बुतों की परास्तिश करने लगे, जो उनके लिए फंदा बन गए। 37 बल्कि उन्होंने अपने बेटे बेटियों को, शयातीन के लिए कुर्बान किया: 38 और मासमूरों का यानी अपने बेटे बेटियों का ख़न बहाया, जिनको उन्होंने कनान के बुतों के लिए कुर्बान कर दिया: और मूल्क ख़न से नापाक हो गया। 39 यूँ वह अपने ही कामों से आलदा हो गए, और अपने फ़ेलों से बेकपा बने। 40 इसलिए खुदावन्द का कहर अपने लोगों पर भड़का, और उसे अपनी मीरास से नक़रत हो गई, 41 और उसने उनकी कौमों के कबज्जे में कर दिया, और उनसे 'अदावत रखने वाले उन पर हक्मराम हो गए। 42 उनके दुशमनों ने उन पर जुल्म किया, और वह उनके महकूम हो गए। 43 उसने तो बाहरा उनको छुड़ाया, लेकिन उनका मश्वरा बगावत बाला ही रहा और वह अपनी बदकारी के बजह से पस्त हो गए। 44 तो भी जब उसने उनकी फरियाद सुनी, तो उनके दुख पर नज़र की। 45 और उसने उनके हक में अपने 'अहद को याद किया, और अपनी शफकत की कसरत के मुताबिक तरस खाया। 46 उसने उनकी गुलाम करने वालों के दिलमें उनके लिए रहम डाला। 47 ऐ खुदावन्द, हमारे खुदा! हम को बचा ले, और हम को कौमों में से इकट्ठा कर ले, ताकि हम तेरे पाक नाम का शुक्र करें, और ललकारते हुए तेरी सिताइश करें। 48 खुदावन्द इस्पाइल का खुदा, इन्तिदा से हमेशा तक मुबारक हो! खुदावन्द की हम्द करो।

107 खुदा का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला है, और उसकी शफकत हमेशा की है! 2 खुदावन्द के छुड़ाए हुए यही कहें, जिनको फिदिया देकर मुखालिफ़ के हाथ से छुड़ा लिया, 3 और उनको मूल्क — मूल्क से जमा' किया; पूरब से और पश्चिम से, उत्तर से और दक्षिण से। 4 वह वीरान में सेहरा के रास्ते पर भटकते फिरे; उनको बसने के लिए कोई शहर न मिला। 5

वह भूके और प्यासे थे, और उनका दिल बैठा जाता था। 6 तब अपनी मुसीबत में उन्होंने खुदावन्द से फरियाद की, और उसने उनको उनके दुखों से रिहाई बख्ती। 7 वह उनको सीधी राह से ले गया, ताकि बसने के लिए किनी शहर में जा पहुँचे। 8 काश के लोग खुदावन्द की शफकत की खातिर, और बनी आदम के लिए उसके 'अजायब की खातिर उसकी सिताइश करते। 9 क्यूँकि वह तसरी जान को से करता है, और भूकी जान को ने 'पतों से मालामाल करता है। 10 जो अंधेरे और मौत के साथे मैं बैठे, मुसीबत और लोहे से जकड़े हुए; 11 चूँकि उन्होंने खुदा के कलाम से सरकशी की और हक ताला की मश्वरत को हकीक जाना। 12 इसलिए उसने उनका दिल मशक्कत से 'अजिज़ कर दिया; वह गिर पड़े और कोई मददगार न था। 13 तब अपनी मुसीबत में उन्होंने खुदावन्द से फरियाद की, और उसने उनके दुखों से रिहाई बख्ती। 14 वह उनको अंधेरे और मौत के साथे से निकाल लाया, और उनके बंधन तोड़ डाले। 15 काश के लोग खुदावन्द की शफकत की खातिर, और बनी आदम के लिए उसके 'अजायब की खातिर उसकी सिताइश करते। 16 क्यूँकि उसने पीतल के फाटक तोड़ दिए, और लोहे के बैण्डों को काट डाला। 17 बेवकूफ अपनी खताओं की बजह से, और अपनी बदकारी के जरिए मुसीबत में पड़ते हैं। 18 उनके जी को हर तरह के खाने से नफरत हो जाती है, और वह मौत के फाटकों के नज़दीक पहुँच जाती है। 19 तब वह अपनी मुसीबत में खुदावन्द से फरियाद करते हैं और वह उनको उनके दुखों से रिहाई बख्ता है। 20 वह अपना कलाम नाजिल फरमा कर उनको शिफा देता है, और उनको उनकी हलाकत से रिहाई बख्ता है। 21 काश के लोग खुदावन्द की शफकत की खातिर, और बनी आदम के लिए उसके 'अजायब की खातिर उसकी सिताइश करते। 22 वह शुक्रगुराजी की कुर्बानियाँ पेश करें, और गाते हुए उसके कामों को बयान करें। 23 जो लोग जहाजों में बहर पर जाते हैं, और समन्दर पर कारोबार में लगे रहते हैं, 24 वह समन्दर में खुदावन्द के कामों को, और उसके 'अजायब को देखते हैं। 25 क्यूँकि वह हुक्म देकर तुफानी हवा चलाता जो उसमें लहरें उठाती है। 26 वह आसमान तक चढ़ते और गहराओं में उतरते हैं; पेरेशानी से उनका दिल पानी हो जाता है; 27 वह झूमते और मतवाले की तरह लड़खड़ाते, और बदहवास हो जाते हैं। 28 तब वह अपनी मुसीबत में खुदावन्द से फरियाद करते हैं और वह उनको उनके दुखों से रिहाई बख्ता है। 29 वह आँखी को थमा देता है, और लहरें खत्म हो जाती है। 30 तब वह उसके थम जाने से खुश होते हैं, यूँ वह उनको बन्दरगाह — ए — मकसद तक पहुँचा देता है। 31 काश के लोग खुदावन्द की शफकत की खातिर, और बनी आदम के लिए उसके 'अजायब की खातिर उसकी सिताइश करते। 32 वह लोगों के मज़बूत में उसकी बड़ाई करें, और बुज्जों की मजलिस में उसकी हमद। 33 वह दरियाओं को बीरान बना देता है, और पानी के चश्मों को खुशक ज़मीन। 34 वह जरखेज ज़मीन की सैहरा — ए — शेर कर देता है, इसलिए कि उसके बाशिंदे शरीर हैं। 35 वह वीरान की झील बना देता है, और खुशक ज़मीन को पानी के चश्मे। 36 वहाँ वह भूकों को बसाता है, ताकि बसने के लिए शहर तेयार करें, 37 और खेत बोएँ, और ताकिस्तान लगाएँ, और पैदावार हासिल करें। 38 वह उनको बरकत देता है, और वह बहुत बढ़ते हैं, और वह उनके चौपायें को कम नहीं होने देता। 39 फिर जुल्म — ओ — तकलीफ और गम के मारे, वह घट जाते और पस्त हो जाते हैं, 40 वह उमरा पर जिल्लत उंडेल देता है, और उनको बेराह बीराने में भटकाता है। 41 तो भी वह मोहताज को मुसीबत से निकालकर सरफ़राज़ करता है, और उसके खानादान को रेवड़ की तरह बढ़ाता है। 42 गास्तबाज़ यह देखकर खुश होंगे; और सब बदकारों का

मुँह बन्द हो जाएगा। 43 'अकल्तमंद इन बातों पर तबज्जुह करेगा, और वह खुदावन्द की शफकत पर गौर करेगा।

108 ऐ खुदा, मेरा दिल काईम है; मैं गाँँगा और दिल से मदहसराई करूँगा। 2 ऐ बरबत और सितार जागो! मैं खुद भी सुख सवेरे जाग उठूँगा। 3 ऐ खुदावन्द, मैं लोगों में तेरा शुक कस्संगा, मैं उम्मतों में तेरी मदहसराई करूँगा। 4 कर्यूकी तेरी शफकत आसमान से बुलन्द है, और तेरी सच्चाई आसमानों के बराबर है। 5 ऐ खुदा, तु आसमानों पर सरफराज हो! और तेरा जलाल सरी जमीन पर हो 6 अपने दहने हाथ से बचा और हमें जबाब दे, ताकि तेरे महबूब बचाए जाएं। 7 खुदा ने अपनी पाकिजानी में यह फरमाया है 'मैं खुरी कस्संगा, मैं सिकम को तकसीम कस्संगा और सुकात की बादी को बाटूँगा। 8 जिल'आद मेरा है, मनस्सी मेरा है; इफाईम मेरे सिर का खुद है; यहदाह मेरा 'असा है। 9 मोआब मेरी वित्तनची है, अदोम पर मैं जगा फैकूँगा, मैं किलिस्तीन पर ललकास्संगा।' 10 मुझे उस फसीलदार शहर में कौन पहुँचाएगा? कौन मुझे अदोम तक ले गया है? 11 ऐ खुदा, क्या तुम हमें रुद नहीं कर दिया? ऐ खुदा, तु हमारे लश्करों के साथ नहीं जाता। 12 मुखालिफ के मुकाबिले मैं हमारी मदद कर, कर्यूकी इंसानी मदद बेकार है। 13 खुदा की बदौलत हम दिलावरी करेगी; कर्यूकी वही हमारे मुखालिफों को पामाल करेगा।

109 ऐ खुदा मेरे महमद खामोश न रह! 2 कर्यूकीं शरीरों और दगाबाजों ने मेरे खिलाफ मुँह खोला है, उहोंने झटी जबान से मुझ से बातें की हैं।

3 उन्होंने 'अदावत की बातों से मझे धेर लिया, और बे बजह मुझ से लड़े हैं। 4 वह मेरी मुहब्बत की बजह से मेरे मुखालिफ है, लेकिन मैं तो बस दुआ करता हूँ। 5 उन्होंने नेकी के बदले मुझ से बदी की है, और मेरी मुहब्बत के बदले' अदावत। 6 तू किसी शरीर आदमी को उस पर मुकर्रर कर दे और कोई मुखालिफ उनके दहने हाथ खड़ा रहे 7 जब उसकी 'अदालत हो तो वह मुजरिम ठहरे, और उसकी दुआ भी गुनाह गिनी जाए। 8 उसकी उम्र कोताह हो जाए, और उसका मन्सब कोई दूसरा ले ले! 9 उसके बच्चे यतीम हो जाएँ, और उसकी बीवी बेवा हो जाए। 10 उसके बच्चे आवारा होकर भीक मौंगँ; उनको अपने बीरान मकामों से दूर जाकर टुकड़े माँगना पड़ें। 11 कर्ज के तलबगार उसका सब कुछ छीन ले, और परदेशी उसकी कमाई लटू लें। 12 कोई न हो जो उस पर शफकत करे, न कोई उसके यतीम बच्चों पर तरस खाए। 13 उसकी नसल कट जाए, और दूसी नसल में उनका नाम मिटा दिया जाए। 14 उसके बाप — दादा की बदी खुदावन्द के सामने याद रहे, और उसकी मौंग का गुनाह मिटाया न जाए। 15 वह बराबर खुदावन्द के सामने रहे, ताकि वह जमीन पर से उनका ज़िक्र मिटा दे। 16 इसलिए कि उसने रहम करना याद नरखड़ा, लेकिन गरीब और मुहताज और शिक्षतादिल को सताया, ताकि उनको मार डाले। 17 बल्कि लांनत करना उसे पसंद था, इसलिए वही उस पर आ पड़ी; और दुआ देना उसे पसन्द न था, इसलिए वह उससे दूर रही 18 उसने लान्नत को अपनी पोशाक की तरह पहना, और वह पानी की तरह उसके बातिन में, और तेल की तरह उसकी हड्डियों में समा गई। 19 वह उसके लिए उस पोशाक की तरह हो जिसे वह पहनता है, और उस पटके की जगह, जिससे वह अपनी कमर कसे रहता है। 20 खुदावन्द की तरफ से मेरे मुखालिफों का, और मेरी जान को बुरा कहने वालों का यहीं बदला है! 21 लेकिन ऐ मालिक खुदावन्द, अपने नाम की खातिर मुझ पर एहसान कर; मुझे छुड़ा कर्यूकी तेरी शफकत खबू है। 22 इसलिए कि मैं गरीब और मुहताज हूँ, और मेरा दिल मेरे पहल में जाझी है। 23 मैं ढलते साये की तरह जाता रहा; मैटिडी की तरह उड़ा दिया गया। 24 फ़काका करते करते मेरे घुटने कमज़ोर हो गए, और चिकनाई की कमी से मेरा जिस्म सूख

गया। 25 मैं उनकी मलामत का निशाना बन गया हूँ जब वह मुझे देखते हैं तो सिर हिलाते हैं। 26 ऐ खुदावन्द मेरे खुदा, मेरी मदद कर! अपनी शफकत के मुताबिक मुझे बचा ले। 27 ताकि वह जान ले कि इसमें तेरा हाथ है, और तू ही ने ऐ खुदावन्द, यह किया है! 28 वह लान्नत करते रहे, लेकिन तू बरकत दे! वह जब उठे तो शर्मिन्दा होंगे, लेकिन तेरा बन्दा खुश होगा! 29 मेरे मुखालिफ जिल्लत से मुलब्बस हो जाएँगे, अपनी ही शर्मिन्दी की चार की तरह ओढ़ लें। 30 मैं अपने मुँह से खुदावन्द का बड़ा शुक कस्संगा, बल्कि बड़ी भीड़ में उसकी हम्द कस्संगा। 31 कर्यूकी वह मोहताज के दहने हाथ खड़ा होगा, ताकि उसकी जान पर फ़तवा देने वालों से उसे रिहाई दे।

110 यहोवा ने मेरे खुदावन्द से कहा, "जब तक कि मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पांव की चौकी न कर दूँ।" 2 खुदावन्द तेरे जोर का 'असा सिय्यून से भेजेगा। तू अपने दुश्मनों में हुक्मरानी कर। 3 लश्करकशी के दिन तेरे लोग खुशी से अपने आप को पेश करते हैं, तेरे जवान पाक आराइश में हैं, और सबके बब्र से शबनम की तरह। 4 खुदावन्द ने कम्म खाई है और फ़िरेगा नहीं, "तू मलिक — ए — सिद्रक के तौर पर हमेशा तक कहिन है।" 5 खुदावन्द तेरे दहने हाथ पर अपने कहर के दिन बादशाहों को छेद डालेगा। 6 वह कौमों में 'अदालत करेगा, वह लाशों के ढेर लगा देगा; और बहुत से मुक्कों में सिरों को कुचलेगा। 7 वह राह में नदी का पानी पिएगा; इसलिए वह सिर को बुलन्द करेगा।

111 खुदावन्द की हमद करो! मैं रास्तबाजों की मजलिस में और जमा'त में, अपने सारे दिल से खुदावन्द का शुक कस्संगा। 2 खुदावन्द के काम 'अज़ीम हैं, जो उन्मे मसस्त हैं उनकी तलाश। मैं रहते हैं। 3 उसके काम जलाली और पुर रहमत हैं, और उसकी सदाकत हमेशा तक काईम है। 4 उसने अपने 'अजायब की यादगार काईम की है; खुदावन्द रहीम — ओ — करीम है। 5 वह उनको जो उससे डार्ते हैं खुराक देता है; वह अपने 'अहद को हमेशा याद रखेगा। 6 उसने कौमों की मीरास अपने लोगों को देकर, अपने कामों का जोर उनकी दिखाया। 7 उसके हाथों के काम बरहक और इन्साफ भरे हैं; उसके तमाम कवानीन रास्त हैं, 8 वह हमेशा से हमेशा तक काईम रहेंगे, वह सच्चाई और रास्ती से बनाए गए हैं। 9 उसने अपने लोगों के लिए फ़िदिया दिया; उसने अपना 'अहद हमेशा के लिए ठहराया है। उसका नाम पाक और बड़ा है। 10 खुदावन्द का खौफ समझ का शूरू है; उसके मुताबिक 'अमल करने वाले अकल्तमंद हैं। उसकी सिताइश हमेशा तक काईम है।

112 खुदावन्द की हमद करो! मुबारक है वह आदमी जो खुदावन्द से डरता है, और उसके हुक्मों में खुब मसस्त रहता है। 2 उसकी नसल जमीन पर ताकतवर होगी, रास्तबाजों की औलाद मुबारक होगी। 3 माल — ओ — दौलत उसके घर में है, और उसकी सदाकत हमेशा तक काईम है। 4 रास्तबाजों के लिए तारीकी में नूर चमकता है; वह रहीम — ओ — कीमी और सादिक है। 5 गहम दिल और कर्ज देने वाला आदमी फ़रमांबरदार है; वह अपना कारोबार रास्ती से करेगा। 6 उसे कभी जुम्बिश न होगी: सादिक की यादगार हमेशा रहेगी। 7 वह बुरी खबर से न डरेगा; खुदावन्द पर भरोसा करने से उसका दिल काईम है। 8 उसका दिल बरकरार है, वह डरने का नहीं, यहाँ तक कि वह अपने मुखालिफों को देख लेगा। 9 उसने बँटा और मोहताजों को दिया, उसकी सदाकत हमेशा काईम रहेगी; उसका सींग इज्जत के साथ बलन्द किया जाएगा। 10 शरीर यह देखेगा और कुहाँगी, वह दौत पीसेगा और घुलेगा; शरीरों की मुराद बर्बाद होगी।

113

खुदावन्द की हमद करो! ऐ खुदावन्द के बन्दों, हमद करो! खुदावन्द के नाम की हमद करो! 2 अब से हमेशा तक, खुदावन्द का नाम मुबारक हो! 3 आफताब के निकलने से ढूबने तक, खुदावन्द के नाम की हमद हो! 4 खुदावन्द सब कौमों पर बुलन्द — औ — बाला है; उसका जलाल आसमान से बरतर है। 5 खुदावन्द हमारे खुदा की तरह कौन है? जो 'आलम — ए — बाला पर तजलनशीन है, 6 जो फरोती से, आसमान — औ — जमीन पर नजर करता है। 7 वह गरीब को खाक से, और मोहताज को मज़बले पर से उठा लेता है, 8 ताकि उसे उमरा के साथ, यानी अपनी कौम के उमरा के साथ बिठाए। 9 वह बाँझ का घर बसाता है, और उसे बच्चों वाली बनाकर दिलखुश करता है। खुदावन्द की हमद करो!

114

जब इस्माइल मिस्र से निकलआया, यानी याकूब का घराना अजनबी ज्ञान वाली कौम में से; 2 तो खुदावन्द उसका हैकल, और इस्माइल उसकी ममलकत ठहरा। 3 यह देखते ही समन्दर भागा; यरदन पीछे हट गया। 4 पहाड़ मैंदों की तरह उछले, पहाड़ियाँ भेड़ के बच्चों की तरह कूदे। 5 ऐ समन्दर, तुझे क्या हुआ के तु भगता है? ऐ यरदन, तुझे क्या हुआ कि तू पीछे हटता है? 6 ऐ पहाड़ों, तुम को क्या हुआ के तुम मैंदों की तरह उछलते हो? ऐ पहाड़ियों, तुम को क्या हुआ के तुम भेड़ के बच्चों की तरह कूदती हो? 7 ऐ जमीन, तु रब्ब के सामने, याकूब के खुदा के सामने थरथरा; 8 जो चट्ठान को इल, और चक्कमाक की पानी का चशमा बना देता है।

115

हमको नहीं, ऐ खुदावन्द बल्कि तू अपने ही नाम को अपनी शफकत और सच्चाई की खातिर जलाल बरखा। 2 कौमें क्यूँ कहें, “अब उनका खुदा कहाँ है?” 3 हमारा खुदा तो आसमान पर है, उसने जो कुछ चाहा वही किया। 4 उनके बूत चाँदी और सोना हैं, यानी आदमी की दस्तकारी। 5 उनके मूँह हैं लोकिन वह बोलते नहीं; अँखें हैं लोकिन वह देखते नहीं। 6 उनके कान हैं लोकिन वह सुनते नहीं; नाक हैं लोकिन वह सूखते नहीं। 7 पांख हैं लोकिन वह सूखते नहीं, और उनके गत से आबाज नहीं निकलती। 8 उनके बनाने वाले उन ही की तरह हो जाएँगे; बल्कि वह सब जो उन पर भरोसा रखते हैं। 9 ऐ इस्माइल, खुदावन्द पर भरोसा कर! वही उनकी मदद और उनकी ढाल है। 10 ऐ हास्तन के घराने, खुदावन्द पर भरोसा करो। वही उनकी मदद और उनकी ढाल है। 11 ऐ खुदावन्द से डाने वालों, खुदावन्द पर भरोसा करो! वही उनकी मदद और उनकी ढाल है। 12 खुदावन्द ने हम को याद रखा, वह बरकत देगा; वह इस्माइल के घराने को बरकत देगा; वह हास्तन के घराने को बरकत देगा। 13 जो खुदावन्द से डरते हैं, क्या छोटे क्या बड़े, वह उन सबको बरकत देगा। 14 खुदावन्द तुम को बढ़ाए, तुम को और तम्हारी औलाद को! 15 तुम खुदावन्द की तरफ से मुबारक हो, जिसने आसमान और जमीन को बनाया। 16 आसमान तो खुदावन्द का आसमान है, लेकिन जमीन उसने बनी आदम को दी है। 17 मुर्दे खुदावन्द की सिताइश नहीं करते, न वह जो खामोशी के 'आलम में उतर जाते हैं: 18 लेकिन हम अब से हमेशा तक, खुदावन्द को मुबारक कहेंगे। खुदावन्द की हमद करो।

116

मैं खुदावन्द से मुहब्बत रखता हूँ क्यूँकि उसने मेरी फरियाद और भर उससे दूरा कहाँगा 3 मौत की रस्सियों ने मुझे जकड़ लिया, और पाताल के दर्द मुझ पर आ पड़े; मैं दुख और गम में गिरफतार हुआ। (Sheol h7585) 4 तब मैंने खुदावन्द से दुआ की, ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्त करता हूँ मेरी जान की रिहाई बरखा! 5 खुदावन्द सादिक और करीम है; हमारा खुदा रहीम है। 6 खुदावन्द सादा लोगों की हिफाजत करता है; मैं पस्त हो गया था, उसी ने मुझे

बचा लिया। 7 ऐ मेरी जान, फिर मुत्मिन हो; क्यूँकि खुदावन्द ने तुझ पर एहसान किया है। 8 इसलिए के तूने मेरी जान को मौत से, मेरी आँखों को आँसू बहाने से, और मेरे पाँव को फिसलने से बचाया है। 9 मैं जिन्दों की जमीन में, खुदावन्द के सामने चलता रहँगा। 10 मैं इमान रखता हूँ इसलिए यह कहँगा, मैं बड़ी मुसीबत में था। 11 मैंने जल्दबाजी से कह दिया, कि “सब आदमी झटे हैं!” 12 खुदावन्द की सब नेमतें जो मुझे मिली, मैं उनके बदले में उसे क्या दूँ? 13 मैं नजात का प्याला उठाकर, खुदावन्द से दुआ करँगा। 14 मैं ऐ खुदावन्द के सामने अपनी मन्त्रें, उसकी सारी कौम के सामने पूरी करँगा। 15 खुदावन्द की निगाह में, उसके पाक लोगों की मौत गिरा करँद है। 16 आहा! ऐ खुदावन्द, मैं तेरा बन्दा हूँ मैं तेरा बन्दा, तेरी लौड़ी का बेटा हूँ। तूने मेरे बन्धन खोले हैं। 17 मैं तेरे सामने शुक्रगुजारी की कुर्बानी पेश करँगा और खुदावन्द से दुआ करँगा। 18 मैं ऐ खुदावन्द के सामने अपनी मन्त्रें, उसकी सारी कौम के सामने पूरी करँगा। 19 खुदावन्द के घर की बारगाहों में, तेरे अन्दर ऐ येस्शलेम! खुदावन्द की हमद करो।

117

ऐ कौमों सब खुदावन्द की हमद करो! करो! ऐ उम्मतो! सब उसकी सिताइश करो! 2 क्यूँकि हम पर उसकी बड़ी शफकत है; और खुदावन्द की सच्चाई हमेशा है खुदावन्द की हमद करो।

118

खुदावन्द का शक्र करो, क्यूँकि वह भला है; और उसकी शफकत हमेशा की है। 3 हास्तन का घराना अब कहे, उसकी शफकत हमेशा की है। 4 खुदावन्द से डरने वाले अब कहे, उसकी शफकत हमेशा की है। 5 मैंने मुसीबत में ऐ खुदावन्द से दुआ की, खुदावन्द ने मुझे जबाब दिया और कुशादी बरखी। 6 खुदावन्द मेरी तरफ है, मैं नहीं डरने का; इंसान मेरा क्या कर सकता है? 7 खुदावन्द मेरी तरफ मेरे मददारों में है, इसलिए मैं अपने 'अदावत रखने वालों को देख रहँगा। 8 खुदावन्द पर भरोसा करना, इंसान पर भरोसा रखने से बेहतर है। 9 खुदावन्द पर भरोसा करना, उमरा पर भरोसा रखने से बेहतर है। 10 सब कौमों ने मुझे धेर लिया, मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा। 11 उन्होंने मुझे पैर लिया, बेशक धेर लिया; मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा। 12 उन्होंने शहद की मक्कियों की तरह मुझे धेर लिया, वह काँटों की आग की तरह बुझ गए, मैं खुदावन्द के नाम से उनको काट डालूँगा। 13 दैन मुझे जोगे से धकेल दिया कि गिर पड़ लेकिन खुदावन्द ने मेरी मदद की। 14 खुदावन्द मेरी ताकत और मेरी हमद है; वही मेरी नजात हुआ। 15 सादिकों के खेतों में खुम्ही और नजात की रागनी है, खुदावन्द का दहना हाथ दिलाकरी करता है। 16 खुदावन्द का दहना हाथ बुलन्द हुआ है, खुदावन्द का दहना हाथ दिलाकरी करता है। 17 मैं मस्ती बल्कि जिन्दा रहँगा, और खुदावन्द के कामों का बयान करँगा। 18 खुदावन्द ने मुझे सज्ज तम्बीह तो की, लेकिन मौत के हवाले नहीं किया। 19 सदाकत के फाटकों को मेरे लिए खोल दो, मैं उससे दाखिल होकर खुदावन्द का शक्र करँगा। 20 खुदावन्द का फाटक यही है, सादिक इससे दाखिल होगे। 21 मैं तेरा शुक्र करँगा क्यूँकि तूने मुझे जबाब दिया, और खुद मेरी नजात बना है। 22 जिस पथर की मेपारों ने रक्षा किया, वही कोने के सिरे का पथर हो गया। 23 यह खुदावन्द की तरफ से हुआ, और हमारी नजर में 'अजीब है। 24 यह वही दिन है जिसे खुदावन्द ने मुकर्रर किया, हम इसमें खुश होंगे और खुशी मनाएँगे। 25 आहा! ऐ खुदावन्द बचा ले! आहा! ऐ खुदावन्द खुशहाली बरखा! 26 मुबारक है वह जो खुदावन्द के नाम से आता है! हम ने तुम को खुदावन्द के घर से दुआ दी है। 27 यहोवा ही खुदा है, और उसी ने हम को नूर बरखा है। कुर्बानी को मजबह के सीरों से रसियों से बाँधो! 28 तू मेरा खुदा है, मैं तेरा

शुक्र कस्तुः; तू मेरा खुदा है, मैं तेरी तम्जीद कस्तुः। 29 खुदावन्द का शुक्र करो, क्यूँकि वह भला है; और उसकी शक्ति हमेशा की है।

119 मुबारक हैं वह जो कामिल रफतार है, जो खुदा की शरी' अत पर

'अमल करते हैं। 2 मुबारक हैं वह जो उसकी शहादों को मानते हैं, और पूरे दिल से उसके तालिब हैं। 3 उन से नारास्ती नहीं होती, वह उसकी राहों पर चलते हैं। 4 तूने अपने कवानीन दिए हैं, ताकि हम दिल लगा कर उनकी मानें। 5 काश कि तेरे कानून मानने के लिए, मेरी चाल चलन दुस्त हो जाएँ। 6 जब मैं तेरे सब अहकाम का लिहाज रखवूँगा, तो शर्मिन्दा न हँगा। 7 जब मैं तेरी सदाकत के अहकाम सीधे तर्हा, तो सच्चे दिल से तेरा शुक्र अदा करूँगा। 8 मैं तेरे कानून मानूँगा; मुझे बिल्कुल छोड़ न दे। 9 जबान अपने चाल चलन किस तरह पाक रखवें? तेरे कलाम के मुताबिक उस पर निगाह रखने से। 10 मैं पूरे दिल से तेरा तालिब हुआ हूँ, मुझे अपने फरमान से भटकने न दे। 11 मैंने तेरे कलाम को अपने दिल में रख लिया है ताकि मैं तेरे खिलाफ गुनाह न करूँ। 12 ऐ खुदावन्द! तू मुबारक हैं; मुझे अपने कानून सिखा। 13 मैंने अपने लबों से, तेरे फरमान अहकाम को बयान किया। 14 मुझे तेरी शहादों की राह से ऐसी खुशी हुई, जैसी हर तरह की दौलत से होती है। 15 मैं तेरे कवानीन पर गौर करूँगा, और तेरी राहों का लिहाज रखवूँगा। 16 मैं तेरे कानून में मस्सर रहूँगा; मैं तेरे कलाम को न भलूँगा। 17 अपने बन्दे पर एहसान कर ताकि मैं जिन्दा रहूँ और तेरे कलाम को मानता रहूँ। 18 मेरी आँखें खोल दे, ताकि मैं तेरी शरीअत के 'अजायब देखें। 19 मैं जमीन पर मुसाफिर हूँ, अपने फरमान मुझ से छिपे न रख। 20 मेरा दिल तेरे अहकाम के इश्यायाक में, हर बक्त तड़पता रहता है। 21 तूने उन मला'उन मास्तों को द्विडक दिया, जो तेरे फरमान से भटकते रहते हैं। 22 मलामत और हिकारत को मुझ से दूर कर दे, क्यूँकि मैंने तेरी शहादों मानी है। 23 उमरा भी बैठकर मेरे खिलाफ बातें करते रहे, लेकिन तेरा बंदा तेरे कानून पर ध्यान लगाए रहा। 24 तेरी शहादों मुझे पसन्द, और मेरी मुशरी हैं। 25 मेरी जान खाक में मिल गई; तू अपने कलाम के मुताबिक मुझे जिन्दा कर। 26 मैंने अपने चाल चलन का इजहार किया और तूने मुझे जबाब दिया; मुझे अपने कानून की तालीम दे। 27 अपने कवानीन की राह मुझे समझा दे, और मैं तेरे 'अजायब पर ध्यान करूँगा। 28 गम के मारे मेरी जान धूली जाती है; अपने कलाम के मुताबिक मुझे ताकत दे। 29 झट की राह से मुझे दूर रख, और मुझे अपनी शरी' अत इनायत फरमा। 30 मैंने वफादारी की राह इखिल्यार की है, मैंने तेरे अहकाम अपने सामने रख दिया है। 31 मैं तेरी शहादों से लिपटा हुआ हूँ, ऐ खुदावन्द! मुझे शर्मिन्दा न होने दे। 32 जब तू मेरा हौसला बढ़ाएगा, तो मैं तेरे फरमान की राह में दौड़ूँगा। 33 ऐ खुदावन्द, मुझे अपने कानून की राह बता, और मैं आखिर तक उस पर चलूँगा। 34 मुझे समझ 'अता कर और मैं तेरी शरी' अत पर चलूँगा, बल्कि मैं पूरे दिल से उसको मानूँगा। 35 मुझे अपने फरमान की राह पर चला, क्यूँकि इसी में मेरी खुशी है। 36 मेरे दिल की अपनी शहादों की तरफ रूँदूँ दिला; न कि लालच की तरफ। 37 मेरी आँखों को बेकारी पर नजर करने से बाज रख, और मुझे अपनी राहों में जिन्दा कर। 38 अपने बन्दे के लिए अपना वह कौतून पूरा कर, जिस से तेरा खौफ पैदा होता है। 39 मेरी मलामत को जिस से मैं डरता हूँ दूर कर दे; क्यूँकि तेरे अहकाम भले हैं। 40 देख, मैं तेरे कवानीन का मुश्तक रहा हूँ; मुझे अपनी सदाकत से जिन्दा कर। 41 ऐ खुदावन्द, तेरे कौल के मुताबिक, तेरी शफकत और तेरी नजात मुझे नसीब हों, 42 तब मैं अपने मलामत करने वाले को जबाब दे सकूँगा, क्यूँकि मैं तेरे कलाम पर भरोसा रखता हूँ। 43 और हक बात को मेरे मुँह से हरागी जुदा न होने दे, क्यूँकि मेरा भरोसा तेरे अहकाम पर है। 44 फिर मैं हमेशा से हमेशा तक, तेरी शरी' अत को मानता रहूँगा। 45 और मैं आजादी से चलूँगा, क्यूँकि मैं तेरे

कवानीन का तालिब रहा हूँ। 46 मैं बादशाहों के सामने तेरी शहादों का बयान करूँगा, और शर्मिन्दा न हँगा। 47 तेरे फरमान से मुझे अजीज़ हैं, मैं उनमें मस्सर रहूँगा। 48 मैं अपने हाथ तेरे फरमान की तरफ जो मुझे 'अजीज़ है उठाऊँगा, और तेरे कानून पर ध्यान करूँगा। 49 जो कलाम तूने अपने बन्दे से किया उसे याद कर, क्यूँकि तूने मुझे उम्मीद दिलाई है। 50 मेरी मुरीबत में यही मेरी तसल्ली है, कि तेरे कलाम ने मुझे जिन्दा किया 51 मगस्तरों ने मुझे बहुत ठड़ों में उड़ाया, तो भी मैंने तेरी शरी' अत से किनारा नहीं किया 52 ऐ खुदावन्द! मैं तेरे कदीम अहकाम को याद करता, और इत्मीनान पाता रहा हूँ। 53 उन शरीरों की बजह से जो तेरी शरी' अत को छोड़ देते हैं, मैं सबल गुस्से में आ गया हूँ। 54 मेरे मुसाफिर खाने में, तेरे कानून मेरी हमद रहे हैं। 55 ऐ खुदावन्द, रात को मैंने तेरा नाम याद किया है, और तेरी शरी' अत पर 'अमल किया है। 56 यह मेरे लिए इसलिए हुआ, कि मैंने तेरे कवानीन को माना। 57 खुदावन्द मेरा बखरा है; मैंने कहा है मैं तेरी बातें मानूँगा। 58 मैं पूरे दिल से तेरे करम का तलब गार हुआ; अपने कलाम के मुताबिक मुझ पर रहम कर। 59 मैंने अपनी राहों पर गौर किया, और तेरी शहादों की तरफ अपने कदम मोड़े। 60 मैंने तेरे फरमान मानने में, जल्दी की ओर देर न लगाई। 61 शरीरों की रसियों ने मुझे जकड़ लिया, लेकिन मैं तेरी शरी' अत को न भूला। 62 तेरी सदाकत के अहकाम के लिए, मैं आधी रात को तेरा शुक्र करने को उड़ूँगा। 63 मैं उन सबका साथी हूँ जो तज्ज्ञ से डरते हैं, और उनका जो तेरे कवानीन को मानते हैं। 64 ऐ खुदावन्द, जमीन तेरी शफकत से मां'मूँ है, मुझे अपने कानून सिखा। 65 ऐ खुदावन्द! तूने अपने कलाम के मुताबिक, अपने बन्दे के साथ भलाई की है। 66 मुझे सही फर्क और 'अक्ल सिखा, क्यूँकि मैं तेरे फरमान पर ईमान लाया हूँ। 67 मैं मुरीबत उठाने से पहले गुराह था; लेकिन अब तेरे कलाम को मानता हूँ। 68 तू भला है और भलाई करता है; मुझे अपने कानून सिखा। 69 मगस्तरों ने मुझ पर बहुतान बांधा है; मैं पूरे दिल से तेरे कवानीन को मानूँगा। 70 उनके दिल विकानाई से फँसी हो गए, लेकिन मैं तेरी शरी' अत में मस्सर रहूँ। 71 अच्छा हुआ कि मैंने मुरीबत उठाई, ताकि तेरे कानून सीख लूँ। 72 तेरे मुँह की शरी' अत मेरे लिए, सोने चाँदी के हज़ारों से खिकों से बेहतर है। 73 तेरे हाथों ने मुझे बनाया और तरतीब दी; मुझे समझ 'अता कर ताकि तेरे फरमान सीख लें। 74 तज्ज्ञ से डरने वाले मुझे देख कर इसलिए कि मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है। 75 ऐ खुदावन्द, मैं तेरे अहकाम की सदाकत को जानता हूँ, और यह कि बफादारी ही से तुने मुझे दुख; मैं डाला। 76 उस कलाम के मुताबिक जो तूने अपने बन्दे से किया, तेरी शफकत मेरी तसल्ली का ज़रिया हो। 77 तेरी रहमत मुझे नसीब हो ताकि मैं जिन्दा रहूँ। क्यूँकि तेरी शरी' अत मेरी खुशनूदी है। 78 मगस्तर शर्मिन्दा हों, क्यूँकि उहोंने नाहक मुझे गिराया, लेकिन मैं तेरे कवानीन पर ध्यान करूँगा। 79 तुम से डरने वाले मेरी तरफ रूँहों, तो वह तेरी शहादों को जान लेंगे। 80 मेरा दिल तेरे कानून मानने में कामिल रहे, ताकि मैं शर्मिन्दगी न उठाऊँ। 81 मेरी जान तेरी नजात के लिए बेताब है, लेकिन मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है। 82 तेरे कलाम के इन्तिजार में मेरी आँखें रह गई, मैं यही कहता रहा कि तु मुझे कब तसल्ली देगा? 83 मैं उस मश्किजे की तरह हो गया जो धूँधें में हो, तो भी मैं तेरा कानून को नहीं भूलता। 84 तेरे बन्दे के दिन ही कितने हैं? तू मेरे सताने वालों पर कब फतवा देगा? 85 मगस्तरों ने जो तेरी शरी' अत के पैरी नहीं, मैं लिए गढ़े खोदे हैं। 86 तेरे सब फरमान बरहक हैं: वह नाहक मुझे सताते हैं, तू मेरी मदद कर! 87 उहोंने मुझे जमीन पर से फ़नाकर ही डाला था, लेकिन मैंने तेरे कवानीन को न छोड़ा। 88 तू मुझे अपनी शफकत के मुताबिक जिन्दा कर, तो मैं तेरे मुँह की शहादत को मानूँगा। 89 ऐ खुदावन्द! तेरा कलाम, आसमान पर हमेशा तक काईम है। 90 तेरी वफादारी नसल दर नसल है; तूने

जर्मीन को कथाम बरज्ञा और वह काईम है। 91 वह आज तेरे अहकाम के मुताबिक काईम हैं क्यूंकि सब चीजें तेरी खिदमत गुजार हैं। 92 अगर तेरी शरी' अत मेरी खुशनदी न होती, तो मैं अपनी मुसीबत में हलाक हो जाता। 93 मैं तेरे कवानीन को कभी न भूलूँगा, क्यूंकि तूने उन्हीं के बरसिले से मुझे जिन्दा किया है। 94 मैं तेरा ही हूँ मुझे बचा ले, क्यूंकि मैं तेरे कवानीन का तालिब रहा हूँ। 95 शरीर मुझे हलाक करने को धात में लगे रहे, लेकिन मैं तेरी शहादतों पर गौर करँगा। 96 मैंने देखा कि हर कमाल की इन्हिं है, लेकिन तेरा हुक्म बहुत बरसी अ है। 97 आह! मैं तेरी शरी' अत से कैसी मुहब्बत रखता हूँ, मुझे दिन भर उसी का ध्यान रहता है। 98 तेरे फरमान मुझे मेरे दुश्मनों से ज्यादा 'अकलमंद बनाते हैं, क्यूंकि वह हमेशा मेरे साथ हैं। 99 मैं अपने सब उस्तादों से 'अकलमंद हैं, क्यूंकि तेरी शहादतों पर मेरा ध्यान रहता है। 100 मैं उग्र रसीदा लोगों से ज्यादा समझ रखता हूँ क्यूंकि मैंने तेरे कवानीन को माना है। 101 मैंने हर बुरी राह से अपने कदम रोक रख खेले हैं, ताकि तेरी शरी' अत पर 'अमल करँ। 102 मैंने तेरे अहकाम से किनारा नहीं किया, क्यूंकि तूने मुझे तालीम दी है। 103 तेरी बातें मेरे लिए कैसी शरीन हैं, वह मेरे मुँह को शहद से भी मीठी मालूम होती हैं। 104 तेरे कवानीन से मुझे समझ हासिल होता है, इसलिए मुझे हर झटी राह से नफरत है। 105 तेरा कलाम मेरे कदमों के लिए चराग, और मेरी राह के लिए रोशनी है। 106 मैंने कसम खाई है और उस पर काईम हूँ, कि तेरी सदाकत के अहकाम पर 'अमल करँगा। 107 मैं बड़ी मुसीबत में हूँ। ऐ खुदावन्द! अपने कलाम के मुताबिक मुझे जिन्दा कर। 108 ऐ खुदावन्द, मेरे मुँह से रजा की कुर्बानियाँ कुबल फरमा और मुझे अपने अहकाम की तालीम दे। 109 मेरी जान हमेशा हथेली पर है, तोभी मैं तेरी शरी' अत को नहीं भूलता। 110 शरीरों ने मेरे लिए फंदा लगाया है, तोभी मैं तेरे कवानीन से नहीं भूलकर। 111 मैंने तेरी शहादतों के अपनी हमेशा की मीरास बनाया है, क्यूंकि उनसे मेरे दिल को खुशी होती है। 112 मैंने हमेशा के लिए आस्तिर तक, तेरे कानून मानने पर दिल लगाया है। 113 मुझे दो दिलों से नफरत है, लेकिन तेरी शरी' अत से मुहब्बत रखता हूँ। 114 तु मेरे छिपने की जगह और मेरी ढाल है; मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है। 115 ऐ बदकिरदारो! मुझे से दूर हो जाओ, ताकि मैं अपने खुदा के फरमान पर 'अमल करँ। 116 तु अपने कलाम के मुताबिक मुझे संभाल ताकि जिन्दा रहूँ, और मुझे अपने भरोसा से शर्मिन्दी न उठाने दे। 117 मुझे संभाल और मैं सलामत रहँगा, और हमेशा तेरे कानून का लिहाज रखँगा। 118 तूने उन सबको हकीर जाना है, जो तेरे कानून से भटक जाते हैं; क्यूंकि उनकी दाबाजी 'बेकर है। 119 तु जर्मीन के सब शरीरों को मैल की तरह छाँट देता है, इसलिए मैं तेरी शहादतों को 'अजीज रखता हूँ। 120 मेरा जिसम तेरे खोफ से काँपता है, और मैं तेरे अहकाम से डरता हूँ। 121 मैं 'अद्वल और इन्साफ किया है; मुझे उनके हवाले न कर जो मुझ पर ज़लम करते हैं। 122 भलाई के लिए अपने बन्दे का जामिन हो, माशरूर मुझ पर ज़लम न करें। 123 तेरी नजात और तेरी सदाकत के कलाम के इन्तिजार में मेरी आँखें रह गईं। 124 अपने बन्दे से अपनी शक्ति के मुताबिक सुलूक कर, और मुझे अपने कानून सिखा। 125 मैं तेरा बन्दा हूँ। मुझ को समझ 'अता कर, ताकि तेरी शहादतों को समझ लूँ। 126 अब वक्त आ गया, कि खुदावन्द काम करें, क्यूंकि उन्होंने तेरी शरी' अत को बेकर कर दिया है। 127 इसलिए मैं तेरे फरमान को सोने से बल्कि कुन्दन से भी ज्यादा अजीज रखता हूँ। 128 इसलिए मैं तेरे सब कवानीन को बरहक जानता हूँ, और हर झटी राह से मुझे नफरत है। 129 तेरी शहादतें 'अजीज हैं, इसलिए मेरा दिल उनको मानता है। 130 तेरी बातों की तशीरी न् रु बर्खाती है, वह सादा दिलों को 'अकलमन्द बनाती है। 131 मैं खुब मुँह खोलकर हँपता रहा, क्यूंकि मैं तेरे फरमान का मुश्ताक था। 132 मेरी तरफ तवज्जुह कर और मुझ पर रहम

फरमा, जैसा तेरे नाम से मुहब्बत रखने वालों का हक है। 133 अपने कलाम में मेरी रहनुमाई कर, कोई बदकारी मुझ पर तसल्लुत न पाए। 134 इसान के ज़ुल्म से मुझे छुड़ा ले, तो तेरे कवानीन पर 'अमल करँगा। 135 अपना चेहरा अपने बन्दे पर जलवायर फरमा, और मुझे अपने कानून सिखा। 136 मेरी आँखों से पानी के चरमे जारी हैं, इसलिए कि लोग तेरी शरी' अत को नहीं मानते। 137 ऐ खुदावन्द तू सादिक है, और तेरे अहकाम बरहक हैं। 138 तूने सदाकत और कमाल वफादारी से, अपनी शहादतों को जाहिर फरमाया है। 139 मेरी गैरत मुझे खा गई, क्यूंकि मेरे मुखालिफ तेरी बातें भूल गए। 140 तेरा कलाम बिल्कुल खालिस है, इसलिए तेरे बन्दे को उससे मुहब्बत है। 141 मैं अदना और हकीर हूँ, तौ भी मैं तेरे कवानीन को नहीं भूलता। 142 तेरी सदाकत हमेशा की सदाकत है, और तेरी शरी' अत बरहक है। 143 मैं तकलीफ और ऐजाब में मुनिला, हूँ तोभी तेरे फरमान मेरी खुशनदी है। 144 तेरी शहादतें हमेशा रास्त हैं; मुझे समझ 'अता कर तो मैं जिन्दा रहँगा। 145 मैं पैरे दिल से दुआ करता हूँ, ऐ खुदावन्द, मुझे जवाब दे। मैं तेरे कानून पर 'अमल करँगा। 146 मैंने उत्तर से दुआ की है, मुझे बचा ले, और मैं तेरी शहादतों को मानौंगा। 147 मैंने पैरे फरने से पहले फरियाद की, मुझे तेरे कलाम पर भरोसा है। 148 मेरी आँखें रात के हर पहर से पहले खुल गईं, ताकि तेरे कलाम पर ध्यान करँ। 149 अपनी शफकत के मुताबिक मेरी फरियाद सुन: ऐ खुदावन्द! अपने अहकाम के मुताबिक मुझे जिन्दा कर। 150 जो शरास्त के दर पै रहते हैं, वह नज़दीक आ गए; वह तेरी शरी' अत से दूर है। 151 ऐ खुदावन्द, तू नज़दीक है, और तेरे सब फरमान बरहक हैं। 152 तेरी शहादतों से मुझे कदीम से मालूम हआ, कि तूने उनको हमेशा के लिए काईम किया है। 153 मेरी मुसीबत का खयाल कर और मुझे छुड़ा, क्यूंकि मैं तेरी शरी' अत को नहीं भूलता। 154 मेरी बकालत कर और मेरा फिरियाद दे: अपने कलाम के मुताबिक मुझे जिन्दा कर। 155 नजात शरीरों से दूर है, क्यूंकि वह तेरे कानून के तालिब नहीं है। 156 ऐ खुदावन्द! तेरी रहमत बड़ी है; अपने अहकाम के मुताबिक मुझे जिन्दा कर। 157 मेरे सताने वाले और मुखालिफ बहुत हैं, तोभी मैंने तेरी शहादतों से किनारा न किया। 158 मैं दाबाजों को देख कर मलूल हआ, क्यूंकि वह तेरे कलाम को नहीं मानते। 159 खयाल फरमा कि मुझे तेरे कवानीन से कैसी मुहब्बत है! ऐ खुदावन्द! अपनी शफकत के मुताबिक मुझे जिन्दा कर। 160 तेरे कलाम का खुलासा सच्चाई है, तेरी सदाकत के कुल अहकाम हमेशा के हैं। 161 उमरा ने मुझे बे बजह सताया है, लेकिन मेरे दिल में तेरी बातों का खौफ है। 162 मैं बड़ी लूट पाने वाले की तरह, तेरे कलाम से खुश हूँ। 163 मुझ झूट से नफरत और कराहियत है, लेकिन तेरी शरी' अत से मुहब्बत है। 164 मैं तेरी सदाकत के अहकाम की बजह से, दिन में सात बार तेरी सिताइश करता हूँ। 165 तेरी शरी' अत से मुहब्बत रखने वाले मुतमिन हैं; उनके लिए ठोकर खाने का कोई मौका' नहीं। 166 ऐ खुदावन्द! मैं तेरी नजात का उम्मीदवार रहा हूँ और तेरे फरमान बजा लाया हूँ। 167 मेरी जान ने तेरी शहादतें मानी हैं, और वह मुझे बहुत 'अजीज है। 168 मैंने तेरे कवानीन और शहादतों को माना है, क्यूंकि मेरे सब चाल चतन तेरे सामने हैं। 169 ऐ खुदावन्द! मेरी फरियाद तेरे सामने पहुँचे; अपने कलाम के मुताबिक मुझे समझ 'अता कर। 170 मेरी इलिजा तेरे सामने पहुँचे, अपने कलाम के मुताबिक मुझे छुड़ा। 171 मैं लबों से तेरी सिताइश हो। क्यूंकि तमुझे अपने कानून सिखाता है। 172 मेरी जबान तेरे कलाम का हम्द गाए, क्यूंकि तेरे सब फरमान बरहक हैं। 173 तेरा हाथ मेरी मदद को तैयार है क्यूंकि मैंने तेरे कवानीन इखिल्यार, किए हैं। 174 ऐ खुदावन्द! मैं तेरी नजात का मुश्तक रहा हूँ, और तेरी शरी' अत मेरी खुशनदी है। 175 मेरी जान जिन्दा रहे तो वह तेरी सिताइश केरेगी, और तेरे अहकाम मेरी मदद करें। 176 मैं खोई हुई

भेड़ की तरह भटक गया हूँ अपने बन्दे की तलाश कर, क्यूँकि मैं तैरे फरमान को नहीं भलता।

120 मैंने मुसीबत में खुदावन्द से फरियाद की, और उसने मुझे जवाब दिया। 2 झटे होटों और दगाबाज जबान से, ऐ खुदावन्द, मेरी जान को छुड़ा। 3 ऐ दगाबाज जबान, तुझे क्या दिया जाए? और तुझे से और क्या किया जाए? 4 जबरदस्त के तेज तीर, झाड़ के अंगारों के साथ। 5 मुझ पर अफ़सोस कि मैं मसक में बसता, और कीदार के खैमों में रहता हूँ। 6 सुलह के दुश्मन के साथ रहते हुए, मुझे बड़ी मुश्त हो गई। 7 मैं तो सुलह दोस्त हूँ। लेकिन जब बोलता हूँ तो वह जंग पर आमादा हो जाते हैं।

121 मैं अपनी आँखें पहाड़ों की तरफ उठाऊगा; मेरी मदद कहाँ से आएगी? 2 मेरी मदद खुदावन्द से है, जिसने आसमान और जमीन को बनाया। 3 वह तेरे पाँव को फिसलने न देगा; तेरा मुहाफिज ऊँचे का नहीं। 4 देख! इमाईल का मुहाफिज, न ऊँधेगा, न सोएगा। 5 खुदावन्द तेरा मुहाफिज है; खुदावन्द तेरे दहने हाथ पर तेरा सायबान है। 6 न आफ़ताब दिन को तुझे नुकसान पहुँचाएगा, न माहताब रात को। 7 खुदावन्द हर बला से तुझे महफूज़ रखेगा, वह तेरी जान को महफूज़ रखेगा। 8 खुदावन्द तेरी आमद — ओ — रफ़त में, अब से हमेशा तक तेरी हिफ़ाज़त करेगा।

122 मैं खुश हुआ जब वह मुझ से कहने लगे “आजो खुदावन्द के घर चलैं।” 2 ऐ येस्सलेम! हमारे क्रदम, तेरे फाटकों के अन्दर हैं। 3 ऐ येस्सलेम त, ऐसे शहर के तरह है जो गुनजान बना हो। 4 जहाँ कर्वीले यानी खुदावन्द के कर्वीले, इमाईल की शहादत के लिए, खुदावन्द के नाम का शुक्र करने को जाते हैं। 5 क्यूँकि वहाँ ‘अदालत के तख्त, यानी दाऊद के खान्दान के तख्त काईम है। 6 येस्सलेम की सलामती की दुआ करो, वह जो तुझ से मुहब्बत रखते हैं इकबालमंद होंगे। 7 तेरी फ़सील के अन्दर सलामती, और तेरे महलों में इकबालमंदी हो। 8 मैं अपने भाइयों और दोस्तों की खातिर, अब कहाँगा तुझ में सलामती रहे! 9 खुदावन्द अपने खुदा के घर की खातिर, मैं तेरी भलाई का तालिब रहूँगा।

123 तू जो आसमान पर तख्तनशीन है, मैं अपनी आँखें तेरी तरफ उठाता हूँ! 2 देख, जिस तरह गुलामों की आँखें अपने आँखें अपने आकार के हाथ की तरफ, और लौटी की आँखें अपनी बीबी के हाथ की तरफ लागी हैं जब तक वह हम पर रहम न करे। 3 हम पर रहम कर! ऐ खुदावन्द, हम पर रहम कर, क्यूँकि हम जिल्लत उठाते उठाते तंग आ गए। 4 आसदा हालों के तमस्खुर, और मागस्तरों की हिक्कारत से, हमारी जान सेर हो गई।

124 अब इमाईल यूँ कहे, अगर खुदावन्द हमारी तरफ न होता, 2 अगर खुदावन्द उस वक्त हमारी तरफ न होता, जब लोग हमारे खिलाफ उठे, 3 तो जब उनका कहर हम पर भड़का था, वह हम को जिन्दा ही निगल जाते। 4 उस वक्त पानी हम को डुबो देता, और सैलाब हमारी जान पर से गुज़र जाता। 5 उस वक्त मौज़न, पानी हमारी जान पर से गुज़र जाता। 6 खुदावन्द मुबारक हो, जिसने हमें उनके दाँतों का शिकार न होने दिया। 7 हमारी जान चिड़िया की तरह चिड़ीमारों के जाल से बच निकली, जाल तो टूट गया और हम बच निकले। 8 हमारी मदद खुदावन्द के नाम से है, जिसने आसमान और जमीन को बनाया।

125 जो खुदावन्द पर भरोसा करते वह कोह — ए — सिय्यून की तरह है, जो अटल बल्कि हमेशा काईम है। 2 जैसे येस्सलेम पहाड़ों से धिरा है, वैसे ही अब से हमेशा तक खुदावन्द अपने लोगों को धेरे रहेगा। 3 क्यूँकि शरारत का ‘असा सादिकों की मीरास पर काईम न होगा, ताकि सादिक बदकारी की तरफ अपने हाथ न बढ़ाएँ। 4 ऐ खुदावन्द! भलों के साथ भलाई कर, और उनके साथ भी जो रास्त दिल हैं। 5 लेकिन जो अपनी टेढ़ी राहों की तरफ मुड़ते हैं, उनको खुदावन्द बदकिरदारों के साथ निकाल ले जाएगा। इसाईल की सलामती हो!

126 जब खुदावन्द सिय्यून के गुलामों को बापस लाया, तो हम ख्वाब देखने वालों की तरह थे। 2 उस वक्त हमारे मुँह में हँसी, और हमारी जबान पर रागीनी थी; तब क्रौमों में यह चर्चा होने लगा, “खुदावन्द ने इनके लिए बड़े बड़े काम किए हैं।” 3 खुदावन्द ने हमारे लिए बड़े बड़े काम किए हैं, और हम खुश हैं! 4 ऐ खुदावन्द! दखिन की नदियों की तरह, हमारे गुलामों को बापस ला। 5 जो आँसुओं के साथ बोते हैं, वह खुशी के साथ कटेंगे। 6 जो रोता हुआ बीज बोते जाता है, वह अपने पूले लिए हुए खुश लौटेंगा।

127 अगर खुदावन्द ही घर न बनाए, तो बनाने वालों की मेहनत बेकार है। अगर खुदावन्द ही शहर की हिफ़ाज़त न करे, तो निगहबान का जागना बेकार है। 2 तम्हारे लिए सबैरे उठना और देर में आरम करना, और मशक्कत की रोटी खाना बेकार है, क्यूँकि वह अपने महबूब को तो नींद ही में दे देता है। 3 देखो, औलाद खुदावन्द की तरफ से मीरास है, और पेट का फल उसी की तरफ से अञ्च है, 4 जवानी के फर्जन्द रेसे हैं, जैसे जबरदस्त के हाथ में तीर। 5 खुश नर्सीब है वह आदमी जिसका तरक़ाउ उनसे भरा है। जब वह अपने दुश्मनों से फाटक पर बातें करेंगे तो शर्मिन्दा न होंगे।

128 मुबारक है हर एक जो खुदावन्द से डरता, और उसकी राहों पर चलता है। 2 तू अपने हाथों की कमाई खाएगा; तू मुबारक और फर्माबदर होगा। 3 तेरी बीबी तेरे घर के अन्दर मेवादार ताक की तरह होगी, और तेरी औलाद तेरे दस्तरख्वान पर जैतून के पौदों की तरह। 4 देखो! ऐसी बरकत उसी आदमी को मिलेगी, जो खुदावन्द से डरता है। 5 खुदावन्द सिय्यून में से तुझ को बरकत दे, और तू उम्र भर येस्सलेम की भलाई देखो। 6 बल्कि तू अपने बच्चों के बच्चे देखो। इसाईल की सलामती हो!

129 इसाईल अब यूँ कहे, “उहोंने मेरी जबानी से अब तक मुझे बार बार सताया, तो भी वह मुझ पर गालिब न आए। 3 हलवाहों ने मेरी पीठ पर हल चलाया, और लम्बी लम्बी रेघारियाँ बनाईं।” 4 खुदावन्द सादिक है; उन्हें शरीरों की रसियाँ काट डाली। 5 सिय्यून से नफरत रखने वाले, सब शर्मिन्दा और पस्पा हों। 6 वह छत पर की घास की तरह हो, जो बढ़ने से पहले ही सख़्त जाती है; 7 जिससे फसल काटने वाला अपनी मुष्टी को, और पूले बाँधने वाला अपने दामन को नहीं भरता, 8 न आने जाने वाले यह कहते हैं, “तुम पर खुदावन्द की बरकत हो! हम खुदावन्द के नाम से तुम को दुआ देते हैं।”

130 ऐ खुदावन्द! मैंने गहराओं में से तेरे सामने फरियाद की है! 2 ऐ खुदावन्द! मेरी आवाज सुन ले! मेरी इल्लिजा की आवाज पर, तेरे कान लगे रहें। 3 ऐ खुदावन्द! अगर तू बदकारी को हिसाब में लाए, तो ऐ खुदावन्द कौन काईम रह सकेगा? 4 लेकिन मगाफिर तेरे हाथ में है, ताकि लोग तुझ से डेरें। 5 मैं खुदावन्द का इन्तिज़ार करता हूँ। मेरी जान मुन्तज़िर है, और मुझे उसके कलाम पर भरोसा है। 6 सुबह का इन्तिज़ार करने वालों से ज़्यादा,

हाँ, सबह का इन्तजार करने वालों से कही ज्यादा, मेरी जान खुदावन्द की मुन्तजिर है। 7 ऐ इसाईल! खुदावन्द पर भरोसा कर; क्यौंकि खुदावन्द के हाथ में शक्ति रहती है, उसी के हाथ में किफियती की कसरत है। 8 और वही इसाईल का किफिया देकर, उसको सारी बदकारी से छुड़ाया।

131 ऐ खुदावन्द! मेरा दिल मास्तर नहीं और मैं बुलंद नज़र नहीं हूँ न मझे बड़े बड़े बड़े मूँ आमिलो से कोई सरोकार है, न उन बातों से जो मेरी समझ से बाहर है, 2 यकीनन मैंने अपने दिल को तिस्कीन टेकर मुमझन कर दिया है, मेरा दिल मुझ में दूध छुड़ाए हए बच्चे की तरह है; हाँ, जैसे दूध छुड़ाया हुआ बच्चा माँ की गोद में। 3 ऐ इसाईल! अब से हमेशा तक, खुदावन्द पर भरोसा कर!

132 ऐ खुदावन्द! दाऊद कि खातिर उसकी सब मुसीबतों को याद कर; 2 कि उसने किस तरह खुदावन्द से कसम खाई, और याँकूब के कादिर के सामने मन्नत मानी, 3 'यकीनन मैं न अपने घर में दाखिल हूँगा, न अपने पलंग पर जाऊँगा; 4 और न अपनी आँखों में नीद, न अपनी पलकों में झापकी आने दूँगा; 5 जब तक खुदावन्द के लिए कोई जगह, और याँकूब के कादिर के लिए घर न हो।' 6 देखो, हम ने उसकी खबर इफ्राता में सुनी; हमें यह जंगल के मैदान में मिली। 7 हम उसके घरों में दाखिल होंगे, हम उसके पाँव की चौकी के सामने सिजाद करेंगे। 8 उठ, ऐ खुदावन्द! अपनी आरामगाह में दाखिल हो! तू और तेरी कुदरत का संदूक। 9 तेरे काहिन सदाकत से मुल्बब्स हों, और तेरे पाक खुशी के नारे मारें। 10 अपने बड़े दाऊद की खातिर, अपने मम्सूह की दुआ ना — मन्ज़र न कर। 11 खुदावन्द ने सच्चाई के साथ दाऊद से कसम खाई है; वह उससे फिरने का नहीं: कि 'मैं तेरी औलाद में से किसी को तेरे तख्त पर बिठाऊँगा। 12 अगर तेरे फर्जनद में 'अहद और मेरी शाहदत पर, जो मैं उनको सिखाऊँगा' अमल करें; तो उनके फर्जनद भी हमेशा तेरे तख्त पर बैठेंगे।' 13 क्यौंकि खुदावन्द ने सियरू को चुना है, उसने उसे अपने घर के लिए पसन्द किया है: 14 'यह हमेशा के लिए मेरी आरामगाह है; मैं यहीं रहूँगा क्यौंकि मैंने इसे पसंद किया है। 15 मैं इसके रिजक में खूब बरकत दूँगा; मैं इसके गरीबों को रोटी से सेर कस्तूँ 16 इसके काहिनों को भी मैं नजात से मुल्बब्स करूँगा और उसके पाक बुलन्द आबाज से खुशी के नारे मारेंगे। 17 वही मैं दाऊद के लिए एक सींग निकालूँगा मैंने अपने मम्सूह के लिए चराग तैयार किया है। 18 मैं उसके दुश्मनों को शर्मिन्दी का लिबास पहनाऊँगा, लेकिन उस पर उसी का ताज रोनक अफरोज होगा।'

133 देखो! कैसी अच्छी और खुशी की बात है, कि भाई एक साथ मिलकर रहे! 2 यह उस बेशकीमत तेल की तरह है, जो सिर पर लगाया गया, और बहता हुआ दाढ़ी पर, याँनी हास्न की दाढ़ी पर आ गया; बल्कि उसके लिबास के दामन तक जा पहुँचा। 3 या हरमून की ओस की तरह है, जो सियरू के पहाड़ों पर पड़ती है। क्यौंकि वही खुदावन्द ने बरकत का, याँनी हमेशा की जिन्दगी का हुक्म फ़रमाया।

134 ऐ खुदावन्द के बन्दो! आओ सब खुदावन्द को मुबारक करो! तुम जो रात को खुदावन्द के घर में खड़े रहते हो! 2 हैकल की तरफ अपने हाथ उठाओ, और खुदावन्द को मुबारक करो! 3 खुदावन्द, जिसने आसमान और जमीन को बनाया, सियरू में से तुड़े बरकत बख्तों।

135 खुदावन्द की हमद करो! खुदावन्द के नाम की हमद करो! ऐ खुदावन्द के बन्दो! उसकी हमद करो। 2 तुम जो खुदावन्द के घर में, हमारे खुद के घर की बारगाहों में खड़े रहते हो! 3 खुदावन्द की हमद करो, क्यौंकि

खुदावन्द भला है; उसके नाम की मदहसराई करो कि यह दिल पसंद है! 4 क्यौंकि खुदावन्द ने याँकूब को अपने लिए, और इसाईल को अपनी खास मिलियत के लिए चुन लिया है। 5 इसलिए कि मैं जानता हूँ कि खुदावन्द बुजुर्ग है और हमारा रब्ब सब माँबद्दों से बालातर है। 6 आसमान और जमीन में, समन्दर और गहराओं में, खुदावन्द ने जो कुछ चाहा वही किया। 7 वह जमीन की इन्तिहा से बुखारात उठाता है, वह बायिश के लिए बिजलीयों बनाता है, और अपने मधुजनों से आँधी निकालता है। 8 उसी ने मिस्र के पहलौटों को मारा, क्या इंसान के क्या हैवान के। 9 ऐ मिस्र, उसी ने तुङ्ग में फ़िर 'ओन और उसके सब खादिमों पर, निशान और 'अजायब जाहिर किए। 10 उसने बहुत सी कौमों को मारा, और जबरदस्त बादशाहों को कत्ल किया। 11 अमोरियों के बादशाह सीहोन को, और बसन के बादशाह 'ओज को, और कनान की सब मन्त्वकतों को; 12 और उनकी जमीन मीरास कर दी, याँनी अपनी कौम इसाईल की मीरास। 13 ऐ खुदावन्द! तेरा नाम हमेशा का है, और तेरी यादगार, ऐ खुदावन्द, नसल दर नसल काईम है। 14 क्यौंकि खुदावन्द अपनी कौम की 'अदालत करेगा, और अपने बन्दों पर तरस खाएगा। 15 कौमों के बुत चाँदी और सोना है, याँनी आदमी की दस्तकारी। 16 उनके मुँह हैं, लेकिन वह बोलते नहीं; आँखें हैं लेकिन वह देखते नहीं। 17 उनके कान हैं, लेकिन वह सुनते नहीं; और उनके मुँह में सौंस नहीं। 18 उनके बनाने वाले उन ही की तरह हो जाएँगे; बल्कि वह सब जो उन पर भरोसा रखते हैं। 19 ऐ इसाईल के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो! ऐ हास्न के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो। 20 ऐ लावी के घराने! खुदावन्द को मुबारक कहो! ऐ खुदावन्द से डरने वाले! खुदावन्द को मुबारक कहो! 21 सियरू में खुदावन्द मुबारक हो! वह येस्तलेम में सुकून तकरता है खुदावन्द की हमद करो।

136 खुदावन्द का शुक करो, क्यौंकि वह भला है, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 2 इलाहों के खुदा का शुक करो, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 3 मालिकों के मालिक का शुक करो, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 4 उसी का जो अकेला बड़े बड़े 'अजीब काम करता है, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 5 उसी का जिसने 'अकलमन्दी से आसमान बनाया, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 6 उसी का जिसने जमीन को पानी पर फैलाया, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 7 उसी का जिसने बड़े — बड़े सिटारे बनाए, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 8 दिन को हुक्मत करने के लिए आफताब, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 9 रात को हुक्मत करने के लिए माहताब और सिटारे, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 10 उसी का जिसने मिस्र के पहलौटों को मारा, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 11 और इसाईल को उनमें से निकाल लाया, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 12 कवी हाथ और बलन्द बाज से, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 13 उसी का जिसने बहर — ए — कुलज़ुम को दो हिस्से कर दिया, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 14 और इसाईल को उसमें से पार किया, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 15 लेकिन फ़िर 'ओन और उसके लश्कर को बहर — ए — कुलज़ुम में डाल दिया, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 16 उसी का जो वीरान में अपने लोगों का राहस्या हुआ, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 17 उसी का जिसने बड़े — बड़े बादशाहों को मारा, कि उसकी शफकत हमेशा की है; 18 और नामवर बादशाहों को कत्ल किया, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 19 अमोरियों के बादशाह सीहोन को, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 20 और बसन के बादशाह 'ओज की, कि उसकी शफकत हमेशा की है; 21 और उनकी जमीन मीरास कर दी, कि उसकी शफकत हमेशा की है; 22 याँनी अपने बन्दे इसाईल की मीरास, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 23 जिसने हमारी पस्ती में हम

को याद किया, कि उसकी शफकत हमेशा की है; 24 और हमारे मुखालिफों से हम को छुड़ाया, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 25 जो सब बशर को रोजी देता है, कि उसकी शफकत हमेशा की है। 26 आसमान के खुदा का शुक करो, कि उसकी सफकत हमेशा की है।

137 हम बाबुल की नदियों पर बैठे, और सिय्यन को याद करके रोए। 2

बहाँ बेटे के दरखतों पर उनके बस्त में, हम ने अपने सितारों को टाँग दिया। 3 क्यूँकि वहाँ हम को गुलाम करने वालों ने हम्द गाने का हृष्म किया, और तबाह करने वालों ने खुशी करने का, और कहा, “सिय्यन के हम्दों में से हमको कोई हम्द सुना आओ!” 4 हम परदेस में, खुदावन्द का हम्द कैसे गाएँ? 5 ऐ येस्शलेम! अगर मैं तुझे भूलूँ, तो मेरा दहना हाथ अपना हुनर भूल जाए। 6 अगर मैं तुझे याद न रखूँ, अगर मैं येस्शलेम को, अपनी बड़ी से बड़ी खुशी पर तरजीह न दूँ मेरी जबान मेरे ताल से चिपक जाए। 7 ऐ खुदावन्द! येस्शलेम के दिन को, बनी अदोम के खिलाफ याद कर, जो कहते थे, “इसे ढा दो, इसे बुनियाद तक ढा दो!” 8 ऐ बाबुल की बेटी! जो हलाक होने वाली है, वह मुबारक होगा, जो तुझे उस सुलूक का, जो तूने हम से किया बदला दे। 9 वह मुबारक होगा, जो तेरे बच्चों को लेकर, चटान पर पटक दे।

138 मैं प्यो दिल से तेरा शुक कहँगा; माँबद्दों के सामने तेरी मदहसराई कहँगा। 2 मैं तेरी पाक हैकल की तरफ सब कर के सिजदा कहँगा,

और तेरी शफकत औंगे सच्चाई की खातिर तेरे नाम का शुक कहँगा। क्यूँकि तने अपने कलाम को अपने हरनाम से ज्यादा ‘अजमत दी है। 3 जिस दिन मैंने तुझ से दुआ की, तूने मुझे जवाब दिया, और मेरी जान की ताकत देकर मेरा हौसला बढ़ाया। 4 ऐ खुदावन्द! जमीन के सब बाल्शाया तेरा शुक करेगे, क्यूँकि उन्होंने तेरे मुँह का कलाम सुना है; 5 बल्कि वह खुदावन्द की राहों का हम्द गाएँगे क्यूँकि खुदावन्द का जलाल बड़ा है। 6 क्यूँकि खुदावन्द अगर चै बुलन्द — ओ — बाला है, तोमी खाकसार का ख्याल रखता है; लेकिन मास्तर को दूर ही से पहचान लेता है। 7 चाहे मैं तुख में से गुज़रूं तु मुझे ताजादम करेगा, तू मेरे दुश्मनों के कहर के खिलाफ हाथ बढ़ाएगा, और तेरा दहना हाथ मुझे बचा लेगा। 8 खुदावन्द मेरे लिए सब कुछ करेगा; ऐ खुदावन्द! तेरी शफकत हमेशा की है। अपनी दस्तकारी को न छोड़।

139 ऐ खुदावन्द! तुमे मुझे जाँच लिया और पहचान लिया। 2 तु मेरा

उठाना बैठना जानता है; तू मेरे ख्याल को दूर से ममझे लेता है। 3 तु मेरे रास्ते की ओर मेरी खबाबगाह की छान बीन करता है, और मेरे सब चाल चलन से बाकिफ है। 4 देख! मेरी जबान पर कोई ऐसी बात नहीं, जिसे तु ऐ खुदावन्द प्यो तैर पर न जानता हो। 5 तूने मुझे आगे पीछे से धेर रखा है, और तेरा हाथ पुँच पर है। 6 यह इकफान मेरे लिए बहुत ‘अजीब है, यह बुलन्द है, मैं इस तक पहुँच नहीं सकता। 7 मैं तेरी स्थ से बचकर कहाँ जाऊँ? या तेरे सामने से किधर भागौँ? 8 अगर आसमान पर चढ़ जाऊँ, तो तू वहाँ है। अगर मैं पाताल में बिस्तर बिछाऊँ, तो देख त वहाँ भी है! (Sheol h7585) 9 अगर मैं सुख के पर लगाकर, समन्दर की इन्हिमा में जा बसूँ, 10 तो वहाँ भी तेरा हाथ मेरी राहनुमाई करेगा, और तेरा दहना हाथ मुझे संभालेगा। 11 अगर मैं कहँ कि यकीन तारीकी मुझे छिपा लेगी, और मेरी चारों तरफ का उजाला रात बन जाएगा। 12 तो अँधिरा भी तुझ से छिपा नहीं सकता, बल्कि रात भी दिन की तरह रोशन है, अँधिरा और उजाला दोनों एक जैसे हैं। 13 क्यूँकि मेरे दिल को तू ही ने बनाया; मेरी माँ के पेट में तू ही ने मझे सूरत बख्ती। 14 मैं तेरा शुक कहँगा, क्यूँकि मैं ‘अजीबओ — गरीब तौर से बना हूँ। तेरे काम हैरत अग्रज है मेरा दिल इसे ख़ब जानता है। 15 जब मैं पोशीदगी में बन रहा था, और जमीन

के तह में ‘अजीब तौर से मुरबब हो रहा था, तो मेरा क़ालिब तुझ से छिपा न था। 16 तेरी आँखों ने मेरे बेतरतीब माड़े को देखा, और जो दिन मेरे लिए मुकरर थे, वह सब तेरी किताब में लिखे थे; जब कि एक भी बूजद में न आया था। 17 ऐ खुदा! तेरे ख्याल मेरे लिए कैसे बेशबहा है। उनका मजमूआ कैसा बड़ा है। 18 अगर मैं उनको गिनँ तो वह शुमार में रेत से भी ज्यादा है। जाग उठते ही तुझे अपने साथ पाता हूँ। 19 ऐ खुदा! काश के तू शरीर को क़त्तल करे। इसलिए ऐ ख्यालबारो! मेरे पास से दूर हो जाओ। 20 क्यूँकि वह शरारत से तेरे खिलाफ बातें करते हैं: और तेरे दुश्मन तेरा नाम बेफ़यादा लेते हैं। 21 ऐ खुदावन्द! क्या मैं तुझ से ‘अदावत रखने वालों से ‘अदावत नहीं रखता, और क्या मैं तेरे मुखालिफों से बेजार नहीं हूँ? 22 मुझे उनसे पूरी ‘अदावत है, मैं उनको अपने दुश्मन समझता हूँ। 23 ऐ खुदा, तू मुझे जाँच और मेरे दिल को पहचान। मुझे आजमा और मेरे ख्यालों को जान ले। 24 और देख कि मुझ में कोई बुरा चाल चलन तो नहीं, और मुझ को हमेशा की राह में ले चल।

140 ऐ खुदावन्द! मुझे बुरे आदमी से रिहाई बरबा; मुझे टेढ़े आदमी से महफूज रख। 2 जो दिल में शरारत के मन्सुबे बँधते हैं; वह हमेशा

मिलकर जंग के लिए जमा हो जाते हैं। 3 उन्होंने अपनी जबान सँप की तरह तेज़ कर रखी है। उनके होटों के नीचे अज़दावा का जहर है। 4 ऐ खुदावन्द! मुझे शरीर के हाथ से बचा मुझे टेढ़े आदमी से महफूज रख, जिनका इरादा है कि मेरे पांच उखांड दें। 5 मास्तरों ने मेरे लिए फंदे और रसियों को छिपाया है, उन्होंने राह के किनारे जाल लगाया है, उन्होंने मेरे लिए दाम बिछा रखवे हैं। (सिलाह) 6 मैंने खुदावन्द से कहा, मेरा खुदा तू ही है। ऐ खुदावन्द, मेरी इलिजा की आवाज पर कान लगा। 7 ऐ खुदावन्द मेरे मालिक, ऐ मेरी नजात की ताकत, तूने जंग के दिन मेरे सिर पर साधा किया है। 8 ऐ खुदावन्द, शरीर की मुराद पूरी न कर, उसके बुरे मन्सुबे को अंजाम न दे ताकि वह डीग न मारे। (सिलाह) 9 मुझे धेरने वालों की मुँह के शरारत, उन्हीं के सिर पर पड़े। 10 उन पर अंगों गिरें! वह आग में डाले जाएँ! और ऐसे गढ़ों में कि फिर न उठे। 11 बदजबान आदमी की जमीन पर क्याम न होगा। आफत टेढ़े आदमी को दौड़ा कर हलाक करेगी। 12 मैं जानता हूँ कि खुदावन्द मुरीब तजदा के मु़अमिले की, और मोहताज के हक की ताईद करेगा। 13 यकीन सादिक तेरे नाम का शुक करेंगे, और रास्तबाज तेरे सामने में रहेंगे।

141 ऐ खुदावन्द! मैंने तेरी दुहाई दी मेरी तरफ जल्द आ! जब मैं तु

से दुआ करूँ, तो मेरी आवाज पर कान लगा! 2 मेरी दुआ तेरे सामने खुशबू की तरह हो, और मेरा हाथ उठाना शाम की क़ुर्बानी की तरह! 3 ऐ खुदावन्द! मेरे मुँह पर पहरा बिठाया, मेरे लबों के दरवाजे की निगहबानी कर। 4 मेरे दिल को किनी बूरी बात की तरफ माइल न होने दे; कि बदकारों के साथ मिलकर, शरारत के कामों में मस्सफ हो जाए, और मुझे उनके नफीस खाने से दूर रख। 5 सादिक मुझे मारे तो मेहरबानी होगी, वह मुझे तम्हीब करे तो जैसे सिर पर रौगन होगा। मेरा सिर इससे इंकार न करे, क्यूँकि उनकी शरारत में भी मैं दुआ करता रहूँगा। 6 उनके हाकिम चटान के किनारों पर से गिरा दिए गए हैं, और वह मेरी बातें सुनेंगे, क्यूँकि यह शीरीन है। 7 जैसे कोई हल चलाकर जमीन को तोड़ता है, वैसे ही हमारी हड्डियाँ पाताल के मुँह पर बिखरी पड़ी हैं। (Sheol h7585) 8 क्यूँकि ऐ मालिक खुदावन्द! मेरी आँखें तेरी तरफ हैं; मेरा भरोसा तुझ पर है, मेरी जान को बेकस न छोड़! 9 मुझे उस फंदे से जो उन्होंने मेरे लिए लगाया है, और बदकिरदारों के दाम से बचा। 10 शरीर आप अपने जाल में फंदे, और मैं सलामत बच निकलूँ।

142

मैं अपनी ही आवाज बुलांद करके खुदावन्द से फरियाद करता हूँ
मैं अपनी ही आवाज से खुदावन्द से मिन्नत करता हूँ। 2 मैं उसके सामने फरियाद करता हूँ, मैं अपना दुख उसके सामने बयान करता हूँ। 3 जब मुझे मैं मेरी जान निढाल थी, तू मेरी राह से बाकिफ़ था! जिस राह पर मैं चलता हूँ उसमे उन्होंने मेरे लिए फंदा लगाया है। 4 दहनी तरफ निगाह कर और देख, मुझे कोई नहीं पहचानता। मैं लिए कहीं पनाह न रही, किसी को मेरी जान की फिक्र नहीं। 5 ऐ खुदावन्द, मैंने तुझ से फरियाद की, मैंने कहा, तू मेरी पनाह है, और जिन्हों की जमीन मैं मेरा बखरा। 6 मेरी फरियाद पर तवज्ज्ञ कर, क्यूँकि मैं बहुत पस्त हो गया हूँ। मेरे सतने वालों से मुझे रिहाई बख्त, क्यूँकि वह मुझ से ताकतवर है। 7 मेरी जान को कैट दे निकाल, ताकि तेरे नाम का शुक्र कर्स सादिक मेरे गिर्द जमा होंगे क्यूँकि तू मुझ पर एहसान करेगा।

143

ऐ खुदावन्द, मेरी दूआ सुन, मेरी इलितजा पर कान लगा। अपनी बफादारी और सदाकत में मुझे जबाब दे, 2 और अपने बन्दे को 'अदालत में न ला, क्यूँकि तेरी नज़र मैं कोई आदमी रास्तबाज नहीं ठहर सकता। 3 इसलिए कि दुश्मन ने मेरी जान को सताया है; उन्हें मेरी जिन्दगी को खाक में मिला दिया, और मुझे अँधेरी जगहों में उनकी तरह बसाया है जिनको मेरे मुँह द्वारा गई हो। 4 इसी बजह से मुझ मैं मेरी जान निढाल है; और मेरा दिल मुझ मैं बेकल है। 5 मैं पिछले जमानों को याद करता हूँ, मैं तेरे सब कामों पर गौर करता हूँ, और तेरी दस्तकारी पर ध्यान करता हूँ। 6 मैं अपने हाथ तेरी तरफ फैलाता हूँ मेरी जान खुश कर्मीन की तरह तेरी प्यासी है। 7 ऐ खुदावन्द, जल्द मुझे जबाब दे: मेरी स्वं गुदाज हो चली। अपना चेहरा मुझ से न छिपा, ऐसा न हो कि मैं कब्र में उतरने वालों की तरह हो जाऊँ। 8 सुबह को मुझे अपनी शफकत की खबर दे, क्यूँकि मेरा भरोसा तुझ पर है। मुझे वह राह बता जिस पर मैं चलूँ, क्यूँकि मैं अपना दिल तेरी ही तरफ लगाता हूँ। 9 ऐ खुदावन्द, मुझे मेरे दुश्मनों से रिहाई बख्त; क्यूँकि मैं पनाह के लिए तेरे पास भाग आया हूँ। 10 मुझे सिखा के तेरी मर्जी पर चलूँ, इसलिए कि तू मेरा खुदा है। तेरी नेक स्वं मुझे रास्ती के मुल्क में ले चलो। 11 ऐ खुदावन्द, अपने नाम की खातिर मुझे जिन्दा कर! अपनी सदाकत में मेरी जान को मुसीबित से निकाल! 12 अपनी शफकत से मेरे दुश्मनों को काट डाल, और मेरी जान के सब दुख देने वालों को हलाक कर दे, क्यूँकि मैं तेरा बन्दा हूँ।

144

खुदावन्द मेरी चट्टान मुबारक हो, जो मेरे हाथों को जंग करना, और मेरी उँगलियों को लडाना सिखाता है। 2 वह मुझ पर शफकत करने वाला, और मेरा किला है; मेरा ऊँचा बुर्ज और मेरा छुड़ाने वाला, वह मेरी ढाल और मेरी पनाहगाह है, जो मेरे लोगों को मेरे ताबे करता है। 3 ऐ खुदावन्द, इसान क्या है कि तू उसे याद रखें? और आदमजाद क्या है कि तू उसका ख्याल करें? 4 इसान बुलान की तरह है; उसके दिन ढलते साये की तरह हैं। 5 ऐ खुदावन्द, आसमानों को झुका कर उतर आ! पहाड़ों को छू, तो उनसे धूओं उठेगा! 6 बिजली गिराकर उनको तिर बित्र कर दे, अपने तीर चलाकर उनको शिक्स्ट दे! 7 ऊपर से हाथ बढ़ा, मुझे रिहाई दे और बड़े सैलाब, यानी परदेसियों के हाथ से छुड़ा। 8 जिनके मूँह से बेकारी निकलती रहती है, और जिनका दहना हाथ झट का दहना हाथ है। 9 ऐ खुदा! मैं तेरे लिए नया हम्द गाऊँगा; दस तर वाली बरत पर मैं तेरी मदहसराई करूँगा। 10 वही बादशाहों को नजात बरसाता है; और अपने बन्दे दाऊद को हलाकत की तलवार से बचाता है। 11 मुझे बचा और परदेसियों के हाथ से छुड़ा, जिनके मूँह से बेकारी निकलती रहती है, और जिनका दहना हाथ झट का दहना हाथ है। 12 जब हमारे बेटे जवानी में कदावार और परदेसियों की तरह हों और हमारी बेटियाँ महल के

कोने के लिए तराशे हुए पत्थरों की तरह हों, 13 जब हमारे खते भरे हों, जिनसे हर किस्म की जिन्स मिल सके, और हमारी भेड़ बकरियाँ हमारे कूचों में हजारों और लाखों बच्चे दें: 14 जब हमारे बैल खुब लदे हों, जब न रखना हो न खुरूज, और न हमारे कूचों में बावैला हो। 15 मुबारक है वह कौम जिसका यह हाल है। मुबारक है वह कौम जिसका खुदा खुदावन्द है।

145

ऐ मेरे खुदा, मेरे बादशाह! मैं तेरी तम्जीद करूँगा। और हमेशा से हमेशा तक तेरे नाम को मुबारक करूँगा। 2 मैं हर दिन तुझे मुबारक कहूँगा, और हमेशा से हमेशा तक तेरे नाम की सिताइश करूँगा। 3 खुदावन्द बुजुर्गी और बेहत सिताइश के लायक है; उसकी बुजुर्गी बयान से बाहर है। 4 एक नसल दसरी नसल से तेरे कामों की तारीफ़, और तेरी कुदरत के कामों का बयान करेगी। 5 मैं तेरी 'अजमत की जलाली शान पर, और तेरे 'अजायब पर गैर करूँगा। 6 और लोग तेरी कुदरत के हौलतान कामों का ज़िक्र करेंगे, और मैं तेरी बुजुर्गी बयान करूँगा। 7 वह तेरे बड़े एहसान की यादगार का बयान करेंगे, और तेरी सदाकत का हम्द गाएँगे। 8 खुदावन्द रहीम — ओ — करीम है; वह कहर करने में धीमा और शफकत में गरी है। 9 खुदावन्द सब पर मेहरबान है, और उसकी रहमत उसकी सारी मखलूक पर है। 10 ऐ खुदावन्द, तेरी सारी मखलूक तेरा शुक करेगी, और तेरे पाक लोग तुझे मुबारक कहेंगे। 11 वह तेरी सल्तनत के जलाल का बयान, और तेरी कुदरत का ज़िक्र करेंगे; 12 ताकि बनी आदम पर उसके कुदरत के कामों को, और उसकी सल्तनत के जलाल की शान को ज़ाहिर करें। 13 तेरी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है, और तेरी हक्मत नसल — दर — नसल। 14 खुदावन्द गिरते हुए को संभालता, और द्विके हुए को उठा खड़ा करता है। 15 सब की अँखें तुझ पर लगी हैं, तू उनको बक्त पर उनकी खुराक देता है। 16 तू अपनी मुश्ती खोलता है, और हर जानदार की ख्वाहिश पूरी करता है। 17 खुदावन्द अपनी सब राहों में सादिक, और अपने सब कामों में रहीम है। 18 खुदावन्द उन सबके क़रीब है जो उससे दुआ करते हैं, यानी उन सबके जो सच्चाई से दुआ करते हैं। 19 जो उससे डरते हैं वह उनकी मुराद पूरी करेगा, वह उनकी फरियाद सेनेगा और उनको बचा लेगा। 20 खुदावन्द अपने सब मुहब्बत रखने वालों की हिफाजत करेगा; लेकिन सब शरीरों को हलाक कर डालेगा। 21 मैं मूँह से खुदावन्द की सिताइश होगी, और हर बशर उसके पाक नाम को हमेशा से हमेशा तक मुबारक कहे।

146

खुदावन्द की हम्द करो ऐ मेरी जान, खुदावन्द की हम्द कर! 2 मैं उग्र भा खुदावन्द की हम्द करूँगा, जब तक मेरा बुजूद है मैं अपने खुदा की मदहसराई करूँगा। 3 न उमरा पर भरोसा करो न आदमजाद पर, वह बचा नहीं सकता। 4 उसका दम निकल जाता है तो वह मिट्टी में मिल जाता है; उसी दिन उसके मन्सुबे फना हो जाते हैं। 5 खुश नसीब है वह, जिसका मददगर यांकूब का खुदा है, और जिसकी उम्मीद खुदावन्द उसके खुदा से है। 6 जिसने आसमान और जमीन और समन्दर को, और जो कुछ उनमें है बनाया; जो सच्चाई को हमेशा काईम रखता है। 7 जो मजलमों का इन्साफ़ करता है; जो भक्तों को खाना देता है। खुदावन्द कैदियों को आजाद करता है; 8 खुदावन्द अन्धों की अँखें खोलता है; खुदावन्द ज़क्के हुए को उठा खड़ा करता है; खुदावन्द सदिकों से मुहब्बत रखता है। 9 खुदावन्द परदेसियों की हिफाजत करता है, वह यतीम और बेबा को संभालता है; लेकिन शरीरों की राह टेढ़ी कर देता है। 10 खुदावन्द, हमेशा तक सल्तनत करेगा, ऐ सिय्यन! तेरा खुदा नसल दर नसल। खुदावन्द की हम्द करो!

147

खुदावन्द की हम्द करो! क्यूँकि खुदा की मदहसराई करना भला है, इसलिए कि यह दिलपसंद और सिताइश ज़ेबा है। 2 खुदावन्द

येस्शलेम को 'तामीर करता है; वह इसाईल के जिला वर्तनों को जमा' करता है। 3 वह शिकस्ता दिलों को शिफा देता है, और उनके जख्म बांधता है। 4 वह सितारों को शुभर करता है, और उन सबके नाम रखता है। 5 हमारा खुदावन्द बुज्ज़ग्र और कुदरत में 'अजीम है, उसके समझ की इन्हिना नहीं। 6 खुदावन्द हल्लीमों को संभालता है, वह शरीरों को खाक में मिला देता है। 7 खुदावन्द के सामने शुक्रुजारी का हम्द गाओ, सितार पर हमारे खुदा की मदहसराई करो। 8 जो आसमान को बादलों से मुलब्बस करता है, जो जमीन के लिए मैंह तैयार करता है; जो पहाड़ों पर धार उगाता है। 9 जो हवानात को खुराक देता है, और कव्वे के बच्चे को जो काँच काँई करते हैं। 10 घोड़े के जोर में उसकी खुशनदी नहीं न ही न आदमी की टाँगों से उसे कोई खुशी है; 11 खुदावन्द उनसे खुश है जो उससे डरते हैं, और उनसे जो उसकी शफकत के उम्मीदवार हैं। 12 ऐ येस्शलेम! खुदावन्द की सिताइश कर!, ऐ सिध्यनू! अपने खुदा की सिताइश कर। 13 क्यूँकि उसने रैने फाटकों के बैंडों को मजबूत किया है, उसने रैने अन्दर तेरी औलाद को बरकत दी है। 14 वह तेरी हृद में अम्न रखता है! वह तुझे अच्छे से अच्छे गेहूँ से आसदा करता है। 15 वह अपना हृक्ष जमीन पर भेजता है, उसका कलाम बहुत तेज री है। 16 वह बर्फ को ऊन की तरह गिराता है, और पाले को राख की तरह बिखेरता है। 17 वह यख को लुक्मों की तरह फेंकता उसकी ठंड कौन सह सकता है? 18 वह अपना कलाम नाजिल करके उनको पिघला देता है; वह हवा चलाता है और पानी बहने लगता है। 19 वह अपना कलाम याँकूब पर जाहिर करता है, और अपने आईन — ओ — अहकाम इसाईल पर। 20 उसने किरी और कौम से ऐसा सुलक नहीं किया; और उनके अहकाम को उन्होंने नहीं जाना। खुदावन्द की हम्द करो!

148 खुदावन्द की हम्द करो! आसमान पर से खुदावन्द की हम्द करो, बुलदियों पर उसकी हम्द करो! 2 ऐ उसके फिरिश्तो! सब उसकी हम्द करो। ऐ उसके लशकरो! सब उसकी हम्द करो! 3 ऐ सूज! ऐ चाँद! उसकी हम्द करो। ऐ नरानी सितारों! सब उसकी हम्द करो 4 ऐ फलक — उल — फलाक! उसकी हम्द करो! और त भी ऐ फज्जा पर के पानी! 5 यह सब खुदावन्द के नाम की हम्द करें, क्यूँकि उसने हृक्ष दिया और यह पैदा हो गए। 6 उसने इनको हमेशा से हमेशा तक के लिए काईम किया है; उसने अटल कानन मुकर्र कर दिया है। 7 जमीन पर से खुदावन्द की हम्द करो ऐ अज़दहाओं और सब गहरे समन्दरो! 8 ऐ आग और ओलो! ऐ बफ़ और कुहर ऐ तुकानी हवा! जो उसके कलाम की तालीम करती है। 9 ऐ पहाड़ों और सब टीलो! ऐ मेवादार दरख्तों और सब देवदारो! 10 ऐ जानवरों और सब चौपायो! ऐ रेणने वालों और परिन्दो! 11 ऐ जमीन के बादशाहों और सब उम्मतों! ऐ उमरा और जमीन के सब हाकिमों! 12 ऐ नौजवानों और कुवारियो! ऐ बूढ़ों और बच्चों! 13 यह सब खुदावन्द के नाम की हम्द करें, क्यूँकि सिफ़ उरी का नाम मुन्ताज है। उसका जलाल जमीन और आसमान से बुलन्द है। 14 और उसने अपने सब पाक लोगों यानी अपनी मुर्करब कौम बनी इसाईल के फ़ज़्र के लिए, अपनी कौम का सींग बुलन्द किया। खुदावन्द की हम्द करो!

149 खुदावन्द की हम्द करो। खुदावन्द के सामने नया हम्द गाओ, और पाक लोगों के मजमे' में उसकी मदहसराई करो! 2 इसाईल अपने खालिक में खुश रहे, फर्जन्दान — ए — सिध्यन अपने बादशाह की वजह से खुश हों! 3 वह नाचते हुए उसके नाम की सिताइश करें, वह दफ और सितार पर उसकी मदहसराई करें! 4 क्यूँकि खुदावन्द अपने लोगों से खुशनद रहता है, वह हल्लीमों को नजात से जीनत बख्तेगा। 5 पाक लोग जलाल पर फ़खु करें, वह अपने बिस्तरों पर खुशी से नगमा सराई करें। 6 उनके मुँह में खुदा की

तम्जीद, और हाथ में दोधारी तलवार हो, 7 ताकि कौमों से इन्तकाम लें, और उम्मतों को सजा दें: 8 उनके बादशाहों को जंजीरों से जकड़ें, और उनके सरदारों को तोहे की बेडियाँ पहनाएं। 9 ताकि उनको वह सजा दें जो लिखी हैं! उसके सब पाक लोगों को यह मकाम हासिल है। खुदावन्द की हम्द करो!

150 खुदावन्द की हम्द करो! तुम खुदा के हैकल में उसकी हम्द करो; उसकी कुदरत के फलक पर उसकी हम्द करो! 2 उसकी कुदरत के कामों की वजह से उसकी हम्द करो; उसकी बड़ी 'अजमत के मुताबिक उसकी हम्द करो! 3 नरसिंगे की आवाज के साथ उसकी हम्द करो; बरबत और सितार पर उसकी हम्द करो! 4 दफ बजाते और नाचते हुए उसकी हम्द करो; तारदार साज़ों और बांसली के साथ उसकी हम्द करो! 5 बुलन्द आवाज झाँझ के साथ उसकी हम्द करो! जोर से इंजनाती झाँझ के साथ उसकी हम्द करो! 6 हर शब्द खुदावन्द की हम्द करो! खुदावन्द की हम्द करो!

अम्सा

1 इमाईल के बादशाह सुलेमान बिन दाऊद की अम्सातः 2 हिकमत और तरबियत हासिल करने, और समझ की बातों का फर्क करने के लिए; 3 'अक्लमंदी' और सदाकृत और 'अदूल', और रास्ती में तरबियत हासिल करने के लिए; 4 सादा दिलों को होशियारी, जबान को 'इल्म और तमीज बाज़ने' के लिए; 5 ताकि 'अक्लमंद आदमी सुनकर 'इल्म में तरक्की करे और समझदार आदमी दुस्त मध्यवर्त तक पहुँचे, 6 जिस से मसल और तमील को, 'अक्लमंदों' की बातों और उनके पोशीदा राजों को समझ सके। 7 खुदावन्द का खौफ 'इल्म की शू' आत है; लेकिन बेवकूफ हिकमत और तरबियत की हिकारत करते हैं। 8 ऐ मेरे बेटे, अपने बाप की तरबियत पर कान लगा, और अपनी माँ की तालीम को न छोड़; 9 क्यूंकि वह तेरे सिर के लिए जीनत का सेहरा, और तेरे गले के लिए तौक होंगी। 10 ऐ मेरे बेटे, अगर गुनहगार तुझे फुसलाएँ, तुरजामंद न होना। 11 अगर बह कहें, हमारे साथ चल, हम खुन करने के लिए ताक में बैठे, और छिपकर बेगुनाह के लिए नाहक घाट लगाएँ, 12 हम उनको इस तरह जिन्दा और पूरा निगल जाएँ जिस तरह पाताल मुर्दों को निगल जाता है। (Sheol h7585) 13 हम को हर किस्म का 'उम्दा माल मिलेगा, हम अपने घरों को लूट से भर लेंगे; 14 तु हमारे साथ मिल जा, हम सबकी एक ही थैली होगी, 15 तो ऐ मेरे बेटे, तु उनके साथ न जाना, उनकी राह से अपना पाँव रोकना। 16 क्यूंकि उनके पाँव बदी की तरफ दौड़ते हैं, और खून बहाने के लिए जलदी करते हैं। 17 क्यूंकि परिदे की आँखों के सामने, जाल बिछाना बेकार है। 18 और यह लोग तो अपना ही खून करने के लिए ताक में बैठते हैं, और छिपकर अपनी ही जान की घाट लगाते हैं। 19 नफे के लालची की राहें ऐसी ही हैं, ऐसा नफा' उसकी जान लेकर ही छोड़ता है। 20 हिकमत कहते में ज़ोर से पुकारती है, वह रास्तों में अपनी आवाज बलान्द करती है; 21 वह बाज़ार की भीड़ में चिल्लती है, वह फाटकों के दहलीज पर और शहर में यह कहती है: 22 'ऐ नादानो, तुम कब तक नादानी को दोस्त रख खोगे?' और उठाबाज़ कब तक ठड़ाबाज़ी से और बेवकूफ कब तक 'इल्म से 'अदावत रख खोगे?' 23 तुम मेरी मलामत को सुनकर बाज आओ, देखो, मैं अपनी स्फुर तुम पर उड़ेदूरी, मैं तुम को अपनी बातें बताऊँगी। 24 चूँकि मैंने खुलाया और तुम ने इंकार किया मैंने हाथ फैलाया और किसी ने खुलाया न किया, 25 बल्कि तुम ने मेरी तमाम मध्यवर्त को नाचीज जाना, और मेरी मलामत की बेकट्टी की; 26 इसलिए मैं भी तुम्हारी मुसीबत के दिन हँसी, और जब तुम पर दहशत छा जाएँगी तो ठड़ा मास्ही। 27 यानी जब दहशत तूफान की तरह आ पड़ेगी, और आफत बगोले की तरह तुम को आ लेगी, जब मुसीबत और ज़ॉक्नी तुम पर टृप पड़ेगी। 28 तब वह मुझे पुकारेंगे, लेकिन मैं जवाब न दूँगी, और दिल ओ जान से मुझे ढूँडेंगे, लेकिन न पाएँगे। 29 इसलिए कि उन्होंने 'इल्म से 'अदावत रख खी, और खुदावन्द के खौफ को इक्षित्यार न किया। 30 उन्होंने मेरी तमाम मध्यवर्त की बेकट्टी की, और मेरी मलामत को बेकार जाना। 31 तब वह अपनी ही चाल चलन का फल खाएँगे, और अपनी ही मन्सूबों से पेट भरेंगे। 32 क्यूंकि नादानों की नाफरमानी, उनको कल्ल करेगी, और बेवकूफों की बेवकूफी उनकी हलाकत का जरिया' होगी। 33 लेकिन जो मेरी सुनता है, वह महफूज होगा, और आफत से निढ़ार होकर इत्मिनान से रहेगा।"

2 ऐ मेरे बेटे, अगर तू मेरी बातों को कुबूल करे, और मेरे फ़रमान को निगाह में रखें, 2 ऐसा कि तू हिकमत की तरफ कान लगाएँ, और समझ से दिल लगाएँ, 3 बल्कि अगर तू 'अक्ल' को पुकारे, और समझ के लिए आवाज बलन्द करे 4 और उसको ऐसा ढूँढ़े जैसे चाँदी को, और उसकी ऐसी तलाश

करे जैसी पोशीदा ख़जानों की; 5 तो तू खुदावन्द के खौफ को समझेगा, और खुदा के ज़रिए' को हासिल करेगा। 6 क्यूंकि खुदावन्द हिकमत बरखात है; 'इल्म — ओ — समझ उसी की मुँह से निकलते हैं। 7 वह गम्भीराजों के लिए मदद तैयार रखता है, और रास्तरी के लिए सिपाह है। 8 ताकि वह 'अदूल' की राहों की निगाहबानी करे, और अपने मुकद्दसों की राह को महफूज रखें। 9 तब तू सदाकृत और 'अदूल' और रास्ती को, बल्कि हर एक अच्छी राह को समझेगा। 10 क्यूंकि हिकमत तेरे दिल में दाखिल होगी, और 'इल्म तेरी जान को पसंद होगा, 11 तमीज तेरी निगाहबान होगी, समझ तेरी हिफाजत करेगा; 12 ताकि तुझे शरीर की राह से, और कजगो से बचाएँ। 13 जो गम्भीराजी की राह को छोड़ देते हैं, ताकि तारीकी की राहों में चलें, 14 जो बदकारी से खुश होते हैं, और शराबत की कजरवी में खुश रहते हैं, 15 जिनका चाल चलन ना हमवार, और जिनकी राहें टेढ़ी हैं। 16 ताकि तुझे बेगाना 'औरत से बचाएँ, यानी चिकनी चुप्पी बातें करने वाली पराई' 'औरत से, 17 जो अपनी जवानी के साथी को छोड़ देती है, और अपने खुदा के 'अहद' को भूल जाती है। 18 क्यूंकि उसका घर मौत की उत्तराइ पर है, और उसकी राहें पाताल को जाती हैं। 19 जो कोई उसके पास जाता है, वापस नहीं आता; और जिन्दगी की राहों तक नहीं पहुँचता। 20 ताकि तू नेकों की राह पर चले, और सादिकों की राहों पर काईम रहे। 21 क्यूंकि रास्तबाज मुल्क में बसेंगे, और कामिल उसमें आबाद रहेंगे। 22 लेकिन शरीर जमीन पर से काट डाले जाएँगे, और दग्बाबाज उससे उड़ावा फेंके जाएँगे।

3 ऐ मेरे बेटे, मेरी तालीम को फ़रामोश न कर, बल्कि तेरा दिल मेरे हृक्मों को माने, 2 क्यूंकि तु इनसे उम्र की दराजी और बुद्धापा, और सलामती हासिल करेगा। 3 शक़फ़त और सच्चाई तुझ से जुदा न हों, तु उनको अपने गले का तौक बनाना, और अपने दिल की तख्ती पर लिख लेना। 4 यूँ तू खुदा और इंसान की नजर में, मक्कूलियत और 'अक्लमंदी' हासिल करेगा। 5 सारे दिल से खुदावन्द पर भरोसा कर, और अपनी समझ पर इत्मिनान न कर। 6 अपनी सब राहों में उसको पहचान, और वह तेरी रहनुमाई करेगा। 7 तू अपनी ही निगाह में 'अक्लमन्द न बन, खुदावन्द से डर, और बदी से किनारा कर। 8 ये तेरी नाफ की सिहत, और तेरी हड्डियों की ताज़गी होगी। 9 अपने माल से और अपनी सारी पैदावार के पहले फलों से, खुदावन्द की ताज़ीम कर। 10 यूँ तेरे खते भरे रहेंगे, और तेरे हौज नई मय से लबरेज होंगे। 11 ऐ मेरे बेटे, खुदावन्द की तम्बीह को हकीर न जान, और उसकी मलामत से बेजार न हो; 12 क्यूंकि खुदावन्द उसी को मलामत करता है जिससे उसे मुहब्बत है, जैसे बाप उस बेटे को जिससे वह खुश है। 13 मुबारक है वह आदमी जो हिकमत को पाता है, और वह जो समझ हासिल करता है, 14 क्यूंकि इसका हासिल चाँदी के हासिल से, और इसका नफा' कुन्दन से बेहतर है। 15 वह मरजान से ज्यादा बेशबहा है, और तेरी पसंदीदा चीजों में बेमिसाल। 16 उसके दहने हाथ में उम्र की दराजी है, और उसके बाएँ हाथ में दौलत ओ — 'इज्जत। 17 उसकी राहें खुश गवार रहें हैं, और उसके सब रास्ते सलामती के हैं। 18 जो उसे पकड़े रहते हैं, वह उसके लिए जिन्दगी का दरखत है, और हर एक जो उसे लिए रहता है, मुबारक है। 19 खुदावन्द ने हिकमत से जमीन की बुनियाद डाली; और समझ से आसमान को काईम किया। 20 उसी के 'इल्म से गहराओं के सोते फूट निकले, और अफलाक शब्दनम टपकाते हैं। 21 ऐ मेरे बेटे, 'अक्लमंदी' और तमीज की हिफाजत कर, उनको अपनी आँखों से ओझाल न होने दें; 22 यूँ वह तेरी जान की हयात, और तेरे गले की जीनत होगी। 23 तब तू बेखटके अपने रास्ते पर चलेगा, और तेरे पाँव को डेस न लगेगी। 24 जब तू लेटेगा तो खोफ न खाएगा, बल्कि तू लेट जाएगा और तेरी नीद मीठी होगी। 25 अचानक दहशत से खौफ

न खाना, और न शरीरों की हलाकत से, जब वह आएः 26 क्यूँकि खुदावन्द तेरा सहारा होगा, और तेरे पाँव को फँस जाने से महफ़ूज़ रख खेगा। 27 भलाई के हकदार से उसे किनारा न करना जब तेरे मुकद्दर में हो। 28 जब तेरे पास देने को कुछ हो, तो अपने पड़ोसी से यह न कहना, अब जा, फिर आना मैं तुझे कल दूँगा। 29 अपने पड़ोसी के खिलाफ़ बुराई का मन्सुबा न बांधना, जिस हाल कि वह तेरे पड़ोस में बेखुटके रहता है। 30 अगर किसी ने तुझे नुकसान न पहुँचाया हो, तू उससे बे वजह झगड़ा न करना। 31 तुदखू आदमी पर जलन न करना, और उसके किसी चाल चलन को इस्तियार न करना; 32 क्यूँकि कजार से खुदावन्द को नफरत लेकिन रास्तबाज़ उसके महरम — ए — राज हैं। 33 शरीरों के घर पर खुदावन्द की लान है, लेकिन सादिकों के मस्कन पर उसकी बरकत है। 34 यकीनन वह ठड़ाबाज़ों पर ठड़े मारता है, लेकिन फ़रोतों पर फ़ज़ल करता है। 35 'अक्लमंद जलाल के वारिस होंगे, लेकिन बेकूफ़ों की तरक्की शर्मिन्दी होगी।

4 ऐ मेरे बेटो, बाप की तरबियत पर कान लगाओ, और समझ हासिल करने के लिए तवज्ज्ञ हकरों। 2 क्यूँकि मैं तुम को अच्छी तल्कीन करता तुम मेरी तालीम को न छोड़ना। 3 क्यूँकि मैं भी अपने बाप का बेटा था, और अपनी माँ की निगाह में नाज़ुक और अकेला लाडला। 4 बाप ने मुझे सिखाया और मुझ से कहा, 'मेरी बातें तेरे दिल में रहें, मेरे फ़रमान बजा ला और जिन्दा रह।' 5 हिक्मत हासिल कर, समझ हासिल कर, भूलना मत और मेरे मुँह की बातों से नाफ़रमान न होना। 6 हिक्मत को न छोड़ना, वह तेरी हिफ़ाज़त करेगी; उससे मुहब्बत रखना, वह तेरी निगहबान होगी। 7 हिक्मत अफ़ज़ल असल है, फिर हिक्मत हासिल कर; बल्कि अपने तमाम हासिलात से समझ हासिल कर; 8 उसकी ताज़ीम कर, वह तुझे सरफ़राज़ करेगी; जब तू उसे गले लगाएगा, वह तुझे 'इज्जत बख्तोंगी। 9 वह तेरे सिर पर जीनत का सेहरा बँधेगी; और तुझ को ख़बूसरूती का ताज 'अता करेगी।' 10 ऐ मेरे बेटे, सुन और मेरी बातों को कबूल कर, और तेरी जिन्दगी के दिन बहुत से होंगे। 11 मैंने तुझे हिक्मत की राह बताई है; और राह — ए — रास्त पर तेरी राहनुमाइ की है। 12 जब त चलेगा तेरे कदम कोताह न होंगे; और अगर तू दौड़े तो ठोकर न खाएगा। 13 तरबियत को मज़बूती से पकड़े रह, उसे जाने न दें; उसकी हिफ़ाज़त कर क्यूँकि वह तेरी जिन्दगी है। 14 शरीरों के रास्ते में न जाना, और बुरे आदमियों की राह में न चलना। 15 उससे बचना, उसके पास से न गुरजना, उससे मुड़कर अगे बढ़ जाना; 16 क्यूँकि वह जब तक बुराई न कर लें सोते नहीं; और जब तक किसी को गिरा न दें उनकी नीद जाती रहती है। 17 क्यूँकि वह शरारत की रोटी खाते, और ज़ुल्म की मय पीते हैं। 18 लेकिन सादिकों की राह सुबह की रोशनी की तरह है, जिसकी रोशनी दो पहर तक बढ़ती ही जाती है। 19 शरीरों की राह तारीकी की तरह है; वह नहीं जानते कि किन चीज़ों से उनको ठोकर लगती है। 20 ऐ मेरे बेटे, मेरी बातों पर तवज्ज्ञ हकर, मेरे कलाम पर कान लगा। 21 उसको अपनी आँख से ओङलत न होने दे, उसको अपने दिल में रख। 22 क्यूँकि जो इसको पा लेते हैं, यह उनकी ज़िन्दगी, और उनके सारे जिस्म की सिंहत है। 23 अपने दिल की ख़ब हिफ़ाज़त कर; क्यूँकि जिन्दगी का सर चश्मा वही है। 24 कज़गो मुँह तुझ से अलग रहे, दरोगां लब तुझ से दूर हों। 25 तेरी आँखें सामने ही नज़र करें, और तेरी पलके सीधी रहें। 26 अपने पाँव के रास्ते को हमवार बना, और तेरी सब राहें काईम रहें। 27 न दहने मुड़ न बाँँ; और पाँव को बटी से हटा ले।

5 ऐ मेरे बेटो! मेरी हिक्मत पर तवज्ज्ञ हकर, मेरे समझ पर कान लगा; 2 ताकि तू तमीज़ को महफ़ूज़ रख खेवें, और तेरे लब 'इल्म के निगहबान हों: 3

क्यूँकि बेगाना 'औरत के होटों से शहद टपकता है, और उसका मुँह तेल से ज्यादा चिकना है; 4 लेकिन उसका अन्जाम अज़दहे की तरह तल्ख, और दो धारी तलवार की तरह तेज है। 5 उसके पाँव मौत की तरफ जाते हैं, उसके कदम पाताल तक पहुँचते हैं। (Sheol h7585) 6 इसलिए उसे जिन्दगी का हमवार रास्ता नहीं मिलता; उसकी राहें बेठिकाना हैं, पर वह बेरबर है। 7 इसलिए ऐ मेरे बेटो, मेरी सुना, और मेरे मुँह की बातों से नाफ़रमान न हो। 8 उस 'औरत से अपनी राह दूर रख, और उसके घर के दरवाजे के पास भी न जा; 9 ऐसा न हो कि तू अपनी आबस किसी गैर के, और अपनी उप्र बेरहम के हवाले करे। 10 ऐसा न हो कि बेगाने तेरी कुब्त से सेर हों, और तेरी कमाई किसी गैर के घर जाए; 11 और जब तेरा गोशत और तेरा जिस घुल जाये तो तू अपने अन्जाम पर नोहा करे; 12 और कहे, 'मैंने तरबियत से कैसी 'अदावत रख खीं, और मेरे दिल में मलामत को हक्कीरी जाना। 13 न मैंने अपने उस्तादों का कहा माना, न अपने तरबियत करने वालों की सुनी। 14 मैं जमा' अत और मजलिस के बीच, करीबन सब बुराइयों में मुबिला हुआ।' 15 तू पानी अपने ही हौज से और बहता पानी अपने ही चश्मे से पीना 16 क्या तेरे चश्मे बाहर बह जाएँ, और पानी की नदियाँ कूचों में? 17 वह सिर्फ़ तेरे ही लिए हों, न तेरे साथ गैरों के लिए भी। 18 तेरा सोता मुबारक हो और तू अपनी जवानी की बीवी के साथ खुश रह। 19 प्यारी हिरनी और दिल फेरब गजाला की तरह उसकी छातियाँ तुझे हर बक्त आसदह करे और उसकी मुहब्बत तुझे हमेशा फेरेपता रखे। 20 ऐ मेरे बेटे, तुझे बेगाना 'औरत क्यों फेरेपता करे और तू गैर 'औरत से क्यों हम आगोश हो? 21 क्यूँकि इंसान की राहें खुदावन्द की आँखों के सामने हैं और वही सब रास्तों को हमवार बनाता है। 22 शरीर को उसी की बदकारी पकड़ेगी, और वह अपने ही गुनाह की रसियों से जकड़ा जाएगा। 23 वह तरबियत न पाने की वजह से मर जायेगा और अपनी सख्त बेकूफ़ी की वजह से गुमराह हो जायेगा।

6 ऐ मेरे बेटे, अगर त अपने पड़ोसी का जामिन हुआ है, अगर तू हाथ पर हाथ मारकर किसी बेगाने का ज़िम्मेदार हुआ है, 2 तो तू अपने ही मुँह की बातों में फँसा, तू अपने ही मुँह की बातों से पकड़ा गया। 3 इसलिए ऐ मेरे बेटे, क्यूँकि तू अपने पड़ोसी के हाथ में फँस गया है, अब यह कर और अपने आपको बचा ले, जा, खाकसार बनकर अपने पड़ोसी से इसरार कर। 4 तू न अपनी आँखों में नीद आने दे, और न अपनी पलकों में झापकी। 5 अपने आपको हरनी की तरह और सय्याद के हाथ से, और चिंडिया की तरह चिंडीमार के हाथ से छुड़ा। 6 ऐ काहिल, चीरी के पास जा, चाल चलन पर गैर कर और 'अक्लमंद बन। 7 जो बावजूद यह कि उसका न कोई सरदार, न नाज़िर न हाकिम है, 8 गर्मी के मौसिम में अपनी ख़ुराक मुहृज्या करती है, और फ़सल कटने के बक्त अपनी ख़ुराक जमा' करती है। 9 ऐ काहिल, तू कब तक पड़ा रहेगा? तू नीद से कब उठेगा? 10 थोड़ी सी नीद, एक और झापकी, जरा पड़े रहने को हाथ पर हाथ: 11 इसी तरह तेरी गरिबी राहजन की तरह, और तेरी तंगदस्ती हथियारबन्द आदमी की तरह आ पड़ेगी। 12 ख़बीस — ओ— बदकार आदमी, टेढ़ी तिरची जबान लिए फिरता है। 13 वह आँख मराता है, वह पाँव से बातें, और ऊँगलियों से इशारा करता है। 14 उसके दिल में क़ज़ी है, वह बुराई के मन्सुबे बँधता रहता है, वह फ़ितना अोज़ है। 15 इसलिए आफ़त उस पर अचानक आ पड़ेगी, वह एकदम तोड़ दिया जाएगा और कोई चारा न होगा। 16 छ़: चीज़ है जिससे खुदावन्द को नफरत है, बल्कि सात है जिससे उसे नफरत है: 17 ऊँची आँखें, झटी जबान का ख़न बहाने वाले हाथ, 18 बुरे मन्सुबे बँधने वाला दिल, शरारत के लिए तेरे रस्तार पाँव, 19 दूरा गवाह जो दरोगांगे इकरता है, और जो भाइयों में निकाक डालता है। 20 ऐ मेरे बेटे, अपने बाप के फ़रमान को बजा ला, और अपनी माँ की तालीम को न छोड़। 21

इनको अपने दिल पर बाँधे रख, और अपने गले का तौक बना ले। 22 यह चलते बक्त तेरी रहबरी, और सोते बक्त तेरी निगहबानी, और जागते बक्त तुझ से बातें करेगी। 23 क्यूँकि फरमान चिराग है और तालीम नर, और तरबियत की मलामत जिन्दगी की राह है, 24 ताकि तुझ को बुरी 'औरत से बचाएँ, यानी बेगान 'औरत की जबान की चापलसी से। 25 तू अपने दिल में उसके हृष पर 'आशिक न हो, और वह तुझ को अपनी पलकों से शिकार न करे। 26 क्यूँकि धोके की बजह से आदमी टुकड़े का मुहताज हो जाता है, और जानिया कीमती जान का शिकार करती है। 27 क्या मुकिन है कि आदमी अपने सिने में आग रखें, और उसके कपड़े न जलें? 28 या कोई अंगारों पर चले, और उसके पाँव न झलसें? 29 वह भी ऐसा है जो अपने पड़ोसी की बीवी के पास जाता है, जो कोई उसे छुए बे सजा न रहेगा। 30 चोर अगर भूक के मारे अपना पेट भरने को चोरी करे, तो लोग उसे हक्कीर नहीं जानते; 31 लेकिन अगर वह पकड़ा जाए तो सात गुना भरेगा, उसे अपने घर का सारा माल देना पड़ेगा। 32 जो किसी 'औरत से जिना करता है वह बे'अक्रत है; वही ऐसा करता है जो अपनी जान को हलाक करना चाहता है। 33 वह जब्यू और जिल्लत उठाएगा, और उसकी स्वर्वाई कभी न मिटेगी। 34 क्यूँकि गैरत से आदमी ग़जबनाक होता है, और वह इन्तिकाम के दिन नहीं छोड़ेगा। 35 वह कोई फिदिया मंजूर नहीं करेगा, और चाहे तू बहुत से 'न'आम भी दे तो वह राजी न होगा।

7 ऐ मेरे बेटे, मेरी बातों को मान, और मेरे फरमान को निगाह में रख। 2 मेरे फरमान को बजा ला और जिन्दा रह, और मेरी तालीम को अपनी और्ख की पुतली जान: 3 उनको अपनी उँगलियों पर बाँध ले, उनको अपने दिल की ताज्जी पर लिख ले। 4 हिक्मत से कह, तू मेरी बहन है, और समझ को अपना रिश्तेदार करार दे; 5 ताकि वह तुझ को पराइ 'औरत से बचाएँ, यानी बेगान 'औरत से जो चापलसी की बातें करती है। 6 क्यूँकि मैंने अपने घर की खिड़की से, यानी झारोंके में से बाहर निगाह की, 7 और मैंने एक बे'अक्ल जवान को नादानों के बीच देखा, यानी नौजवानों के बीच वह मुझे नजरआया, 8 कि उस 'औरत के घर के पास गली के मोड़ से जा रहा है, और उसने उसके घर का रास्ता लिया; 9 दिन छिपे शाम के बक्त, रात के अंधेरे और तारीकी में। 10 और देखो, वहाँ उससे एक 'औरत आ गिरी, जो दिल की चालाक और कस्ती का लिंगास पहने थी। 11 वह गौगाइ और खुदमर है, उसके पाँव अपने घर में नहीं टिकते; 12 अपीली वह गली में है, अपीली बाजारों में, और हर मोड़ पर घात में भैठती है। 13 इसलिए उसने उसको पकड़ कर चम्प, और बेहया मुँह से उससे कहने लगी, 14 "सलामती की कुर्बानी के ज़बीहे मुझ पर फर्ज थे, आज मैंने अपनी नंज़े अदा की है। 15 इसीलिए मैं तेरी मुलाकात को निकली, कि किसी तरह तेरा दीदार हासिल करूँ, इसलिए तू मुझे मिल गया। 16 मैंने अपने पलंग पर कामपदर गालीचे, और मिस के सूत के धारीदार कपड़े बिछाए हैं। 17 मैंने अपने बिस्तर को मूर और ऊद, और दारचीनी से मू'अतर किया है। 18 आ हम सुबह तक दिल भर कर इक्क बाज़ी करें और मुहब्बत की बातों से दिल बहलाएँ। 19 क्यूँकि मेरा शौहर घर में नहीं, उसने दूर का सफर किया है। 20 वह अपने साथ स्थये की थैली ले गया, और पूरे चाँद के बक्त घर आएगा।" 21 उसने मीठी मीठी बातों से उसको फुसला लिया, और अपने लबों की चापलसी से उसको बहका लिया। 22 वह फ़ौरन उसके पीछे हो लिया, जैसे बैल ज़बह होने को जाता है; या बेड़ियों में बेवकूफ सज्जा पाने को। 23 जैसे परिन्दा जाल की तरफ तेज जाता है, और नहीं जानता कि वह उसकी जान के तिए है, हत्ता कि तीर उसके जिगर के पार हो जाएगा। 24 इसलिए अब ऐ बेटो, मेरी सुनो, और मैं मुँह की बातों पर तवज्ज्ञ होऊँ। 25 तेरा दिल उसकी राहों की तरफ मायल न हो, तू उसके रास्तों में गुमराह न होना; 26 क्यूँकि उसने बहतों को ज़ख्मी

करके गिरा दिया है, बल्कि उसके मन्त्रतूल बेशुमार हैं। 27 उसका घर पाताल का रास्ता है, और मौत की कोठरियों को जाता है। (Sheol h7585)

8 क्या हिक्मत पुकार नहीं रही, और समझ आवाज बलंद नहीं कर रहा? 2 वह राह के किनारे की ऊँची जगहों की चोटियों पर, जहाँ सड़के मिलती हैं, खड़ी होती है। 3 फाटकों के पास शहर के दहलीज पर, यानी दरबाजों के मदखल पर वह जोर से पुकारती है, 4 "ऐ आदिमयो, मैं तुम को पुकारती हूँ, और बनी आदम को आवाज देती 5 ऐ सादा दिली होशियारी सीखो; और ऐ बेवकुफों 'अक्ल दिल बनो। 6 सुनो, क्यूँकि मैं लतीफ बातें कहँगी, और मेरे लबों से रास्ती की बातें निकलेंगी; 7 इसलिए कि मेरा मुँह सच्चाई को बयान करेगा; और मेरे होंठों को शरारत से नफरत है। 8 मैं मुँह की सब बातें सदाकत की हैं, उनमें कुछ टेढ़ा तिरछा नहीं है। 9 समझने वाले के लिए वह सब साफ है, और 'इल्म हासिल करने वालों के लिए रास्ता है। 10 चाँदी को नहीं, बल्कि मेरी तरबियत को कुबूल करो, और कुंदन से बढ़कर 'इल्म को; 11 क्यूँकि हिक्मत मरजान से अफ़ज़ल है, और सब पसन्दीदा चीजों में बेमिसाल। 12 मुझ हिक्मत ने होशियारी को अपना मस्कन बनाया है, और 'इल्म और तमीज को पा लेती हैं। 13 खुदावन्द का खौफ बदी से 'अदावत है। गुरुर और घमण्ड और बुरी राह, और टेढ़ी बात से मुझे नफरत है। 14 मशवरत और हिमायत मेरी है, समझ मैं ही हूँ मझ में कुदरत है। 15 मेरी बदौलत बादशाह सल्तनत करते, और उमरा इन्साफ का फतवा देते हैं। 16 मेरी ही बदौलत हाकिम हुक्मत करते हैं, और सरदार यानी दुनिया के सब काजी भी। 17 जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं मैं उनसे मुहब्बत रखती हूँ, और जो मुझे दिल से ढूंढते हैं, वह मुझे पा लेंगे। 18 दौलत — ओ — 'इज़ज़त मेरे साथ है, बल्कि हमेशा दौलत और सदाकत भी। 19 मेरा फल सोने से बल्कि कुन्दन से भी बेहतर है, और मेरा हासिल खालिस चाँदी से। 20 मैं सदाकत की राह पर, इन्साफ के रास्तों में चलती हूँ। 21 ताकि मैं उनको जो मुझ से मुहब्बत रखते हैं, माल के वारिस बनाऊँ, और उनके खजानों को भर दूँ। 22 "खुदावन्द ने इन्तिजाम — ए — 'आलम के शुरू' में, अपनी कठीनी सन'अतों से पहले मुझे पैदा किया। 23 मैं अज़ल से यानी इब्निदा ही से मुकर्रर हुई, इससे पहले के ज़मीन थी। 24 मैं उस बक्त पैदा हुई जब गहराओं न थे; जब पानी से भेर हुए चश्मे भी न थे। 25 मैं पहाड़ों के काईम किए जाने से पहले, और टीलों से पहले पैदा हुई। 26 जब कि उसने अभी न ज़मीन को बनाया था न मैदानों को, और न ज़मीन की खाक की शुरू'आत थी। 27 जब उसने आसमान को काईम किया मैं वही थी; जब उसने सम्मुद्र की सतह पर दायरा खींचा; 28 जब उसने ऊपर अफ़लाक को बराबर किया, और गहराओं के सोते मज़बूत हो गए; 29 जब उसने समुन्द्र की हृद ठहराई, ताकि पानी उसके हुक्म को न तोड़े; जब उसने ज़मीन की बुनियाद के निशान लगाए। 30 उस बक्त माहिर कारीगर की तरह मैं उसके पास थी, और मैं हर रोज़ उसकी खुशनदी थी, और हमेशा उसके सामने शादमान रहती थी। 31 आबादी के लायक ज़मीन से शादमान थी, और मेरी खुशनदी बनी आदम की सुहबत मैं थी। 32 "इसलिए ऐ बेटो, मेरी सुनो, क्यूँकि मुबारक हैं वह जो मेरी राहों पर चलते हैं। 33 तरबियत की बात सुनो, और 'अक्लमंद बनो, और इसको रद्द न करो। 34 मुबारक है वह आदमी जो मेरी सुनता है, और हर रोज़ मेरे फाटकों पर इन्तिजार करता है, और मेरे दरवाजों की चौखटों पर ठहरा रहता है। 35 क्यूँकि जो मुझ को पाता है, जिन्दगी पाता है, और वह खुदावन्द का मकबूल होगा। 36 लेकिन जो मुझ से भटक जाता है, अपनी ही जान को नुकसान पहँचाता है; मुझ से 'अदावत रखने वाले, सब मौत से मुहब्बत रखते हैं।"

9 हिकमत ने अपना घर बना लिया, उसने अपने सातों सूतन तराश लिए हैं। 2 उसने अपने जानवरों को ज़बह कर लिया, और अपनी मय मिला कर तैयार कर ली; उसने अपना दस्तरखान भी चुन लिया। 3 उसने अपनी सहेलियों को खाना किया है; वह खुद शहर की ऊँची जगहों पर पुकारती है, 4 “जो सादा दिल है, इधर आ जाए!” और बे'अक्ल से वह यह कहती है, 5 “आओ, मेरी रोटी में से खाओ, और मेरी मिलाई हुई मय में से पियो। 6 ऐसा सादा दिला, बाज आओ और ज़िन्दा रहो, और समझ की राह पर चलो।” 7 ठड़ा बाज को तम्बीह करने वाला लालान्त उठाएगा, और शरीर को मलामत करने वाले पर धब्बा लगेगा। 8 ठड़ा बाज को मलामत न कर, ऐसा न हो कि वह तुझ से 'अदावत रखने लगे; 'अक्लमंद' को मलामत कर, और वह तुझ से मुहब्बत रखेगा। 9 'अक्लमंद' की तरबियत कर, और वह और भी 'अक्लमंद' बन जाएगा; सादिक को सिखा और वह 'इल्म' में तरबकी करेगा। 10 खुदावन्द का खौफ हिकमत का शूल है, और उस कुदूस की पहचान समझ है। 11 क्यूँकि मेरी बदौलत रेंदिन बढ़ जाएँ, और तेरी ज़िन्दगी के साल ज़यदा होंगे। 12 अगर तू 'अक्लमंद' है तो अपने लिए, और अगर तू ठड़ा बाज है तो खुद ही भागेगा। 13 बेवकूफ 'और गौरांग' है; वह नादान है और कुछ नहीं जानती। 14 वह अपने घर के दरवाजे पर, शहर की ऊँची जगहों में बैठ जाती है; 15 ताकिअने जाने वालों को बुलाए, जो अपने अपने रास्ते पर सीधे जा रहे हैं, 16 “सादा दिल इधर आ जाएँ,” और बे'अक्ल से वह यह कहती है, 17 “चोरी का पानी मीठा है, और पोशिदी की रोटी लज़ीज़।” 18 लेकिन वह नहीं जानता कि वहाँ मुर्दे पड़े हैं, और उस 'औरत के मेहमान पाताल की तह में है। (Sheol h7585)

10 सुलेमान की अम्साल। अक्लमंद बेटा बाप को खुश रखता है, लेकिन बेवकूफ बेटा अपनी माँ का गम है। 2 शरारत के खजाने बेकार हैं, लेकिन सदाकत मौत से छुटाती है। 3 खुदावन्द सादिक की जान को फ़ाका न करने देगा, लेकिन शरीरों की हवस को दूर — ओ — दफ़ा' करेगा। 4 जो ढीले हाथ से काम करता है, कंगाल हो जाता है; लेकिन मेहनती का हाथ दैलैतमंद बना देता है। 5 वह जो गर्मी में जमा' करता है, 'अक्लमंद' बेटा है; लेकिन वह बेटा जो दिरौ के बक्त सोता रहता है, शर्म का ज़रिया है। 6 सादिक के सिर पर बरकतें होती हैं, लेकिन शरीरों के मुँह को ज़ुल्म ढाँकता है। 7 रास्त आदमी की यादगार मुबारक है, लेकिन शरीरों का नाम सड़ जाएगा। 8 'अक्लमंद' दिल फरमान बजा लाएगा, लेकिन बकवासी बेवकूफ पछाड़ खाएगा। 9 रास्त रौ बेखट के चलता है, लेकिन जो कजरवी करता है ज़ाहिर हो जाएगा। 10 आँख मारने वाला रंज पहुँचाता है, और बकवासी बेवकूफ पछाड़ खाएगा। 11 सादिक का मुँह ज़िन्दगी का चश्मा है, लेकिन शरीरों के मुँह को ज़ुल्म ढाँकता है। 12 'अदावत झगड़े' पैदा करती है, लेकिन मुहब्बत सब खताओं को ढाँक देती है। 13 'अक्लमंद' के लबों पर हिकमत है, लेकिन बे'अक्ल की पीठ के लिए लठ है। 14 'अक्लमंद' आदमी 'इल्म जमा' करते हैं, लेकिन बेवकूफ का मुँह कीबी हलाकत है। 15 दैलैतमंद की दैलैत उसका मज़बूत शहर है, कंगाल की हलाकत उसी की तंगदस्ती है। 16 सादिक की मेहनत ज़िन्दगानी का ज़रिया है, शरीर की इकबालमंदी ज़ुनाह करती है। 17 तरबियत पज़ीर ज़िन्दगी की राह पर है, लेकिन मलामत को छोड़ने वाला गुमराह हो जाता है। 18 'अदावत को छिपाने वाला दरोगा' है, और तोहमत लगाने वाला बेवकूफ है। 19 कलाम की कसरत खता से खाली नहीं, लेकिन होटों को काब में रखने वाला 'अक्लमंद' है। 20 सादिक की ज़बान खालिस चाँदी है; शरीरों के दिल बेकद हैं। 21 सादिक के हौट बहतों को गिजा पहुँचते हैं लेकिन बेवकूफ बे'अक्ली से मरते हैं। 22 खुदावन्द ही की बकत दैलैत बरछाती है, और वह उसके साथ दुख नहीं मिलाता। 23 बेवकूफ के लिए शरारत खेल है, लेकिन

हिकमत 'अक्लमंद' के लिए है। 24 शरीर का खौफ उस पर आ पड़ेगा, और सादिकों की मुराद पूरी होगी। 25 जब बगला गुज़रता है तो शरीर हलाक हो जाता है, लेकिन सादिक हमेशा की बुनियाद है। 26 जैसा दांतों के लिए सिरका, और आँखों के लिए धुआँ वैसा ही काहिल अपने भेजने वालों के लिए है। 27 खुदावन्द का खौफ' उम्र की दराजी बरछाता है लेकिन शरीरों की ज़िन्दगी कोताह कर दी जायेगी। 28 सादिकों की उम्मीद खुशी लाएगी लेकिन शरीरों की उम्मीद खाक में मिल जाएगी। 29 खुदावन्द की राह रास्तबाज़ों के लिए पनाहगाह लेकिन बदकिरादारों के लिए हलाकत है, 30 सादिकों को कभी ज़ुम्बिश न होगी लेकिन शरीर ज़मीन पर काईम नहीं रहेंगे। 31 सादिक के मुँह से हिकमत निकलती है लेकिन झ़ठी ज़बान काट डाली जायेगी। 32 सादिक के हौट पसन्दीदा बात से आशना है लेकिन शरीरों के मुँह झूट से।

11 दांग के तराज़ से खुदावन्द को नफरत है, लेकिन पूरा तौल बाट उसकी खुशी है। 2 तकब्बुर के साथ बुराई आती है, लेकिन खाकसरों के साथ हिकमत है। 3 रास्तबाज़ों की रास्ती उनकी राहनुसार होगी, लेकिन दगाबाज़ों की टेढ़ी राह उनको बर्बाद करेगी। 4 कहर के दिन माल काम नहीं आता, लेकिन सदाकत मौत से रिहाई देती है। 5 कामिल की सदाकत उसकी राहनुसार बरेगी लेकिन शरीर अपनी ही शरारत से गिर पड़ेगा। 6 रास्तबाज़ों की सदाकत उनको रिहाई देगी, लेकिन दगाबाज अपनी ही बद नियती में फ़ैस्त जाएँगे। 7 मरने पर शरीर का उम्मीद खाक में मिल जाता है, और ज़ालिमों की उम्मीद बर्बाद हो जाती है। 8 सादिक मुसीबत से रिहाई पाता है, और शरीर उसमें पड़ जाता है। 9 बेटीन अपनी बातों से अपने पड़ोसी को हलाक करता है लेकिन सादिक 'इल्म के ज़रिए' से रिहाई पाएगा। 10 सादिकों की खुशहाली से शहर झुश होता है। और शरीरों की हलाकत पर खुशी की ललकार होती है। 11 रास्तबाज़ों की दुआ से शहर सरकारीज़ी पाता है, लेकिन शरीरों की बातों से बर्बाद होता है। 12 अपने पड़ोसी की बे'इज़ज़ती करने वाला बे'अक्ल है, लेकिन समझार खामोश रहता है। 13 जो कोई लुतरापन करता है राज खोलता है, लेकिन जिसमें वफ़ा की स्थ़ है वह राजदार है। 14 नेक सलाह के बैरै लोग तबाह होते हैं, लेकिन सलाहकारों की कसरत में सलामती है। 15 जो बेगाने का ज़मिन होता है सख्त नुस्खान उठाएगा, लेकिन जिसको ज़मानत से नफरत है वह बेखरत है। 16 नेक सीरत 'औरत 'इज़ज़त पाती है, और तुन्दरू आदमी माल हासिल करते हैं। 17 रहम दिल अपनी जान के साथ नेकी करता है, लेकिन बे रहम अपने जिसम को दुख देता है। 18 शरीर की कर्माई बेकार है, लेकिन सदाकत बोलने वाला हकीकी अज्ज पाता है। 19 सदाकत पर काईम रहने वाला ज़िन्दगी हासिल करता है, और बदी का हिमायती अपनी मौत को पहुँचता है। 20 कज दिलों से खुदावन्द को नफरत है, लेकिन कामिल रफ़तार उसकी खुशनूटी है। 21 यकीन शरीर बे सजा न छुटेगा, लेकिन सादिकों की नसल रिहाई पाएगी। 22 बेटमीज 'औरत में खुबसूरती, जैसे सूअर की नाम में सोने की नय है। 23 सादिकों की तमन्ना सिर्फ़ नेकी है; लेकिन शरीरों की उम्मीद ग़ज़ब है। 24 कोई तो विथराता है, लेकिन तो भी तरबकी करता है; और कोई सही खर्च से परहेज करता है, लेकिन तो भी कंगाल है। 25 सखी दिल मोटा हो जाएगा, और सेराब करने वाला खुद भी सेराब होगा। 26 जो ग़ल्ला रोक रखता है, लोग उस पर लालान्त करेंगे; लेकिन जो उसे बेचता है उसके सिर पर बरकत होगी। 27 जो दिल से नेकी की तलाश में है मन्बूलियत का तालिब है, लेकिन जो बदी की तलाश में है वह उसी के आगे आएगी। 28 जो अपने माल पर भरोसा करता है गिर पड़ेगा, लेकिन सादिक हरे पत्तों की तरह सरसब्ज होंगे। 29 जो अपने घराने को दुख देता है, हवा का वारिस होगा, और बेवकूफ अक्ल दिल का खादिम बनेगा। 30 सादिक का फल ज़िन्दगी का दरख़त है, और जो 'अक्लमंद' है दिलों को मोह लेता है।

31 देख, सादिक को जमीन पर बदला दिया जाएगा, तो कितना ज्यादा शरीर और गुणहार को।

12 जो तरबियत को दोस्त रखता है, वह 'इत्म' को दोस्त रखता है; लेकिन

जो तम्बीह से नफरत रखता है, वह हैवान है। 2 नेक आदमी खुदावन्द का मकबूल होगा, लेकिन क्यों मन्दूख बाँधने वाले को वह मुजरिम ठहराएगा। 3 आदमी शरारत से पायेदार नहीं होगा लेकिन सादिकों की जड़ को कभी जुम्बिश न होगी। 4 नेक 'औरत अपने शौहर के लिए ताज है लेकिन नदामत लाने वाली उसकी हाईड्रों में बोसीदीगी की तरह है। 5 सादिकों के खयालात दूस्त हैं, लेकिन शरीरों की मध्यरथ थोखा है। 6 शरीरों की बातें यही हैं कि खून करने के लिए ताक में बैठे, लेकिन सादिकों की बातें उनको रिहाई देंगी। 7 शरीर पछाड़ खाते और हलाक होते हैं, लेकिन सादिकों का घर काईम रहेगा। 8 आदमी की तारीक उसकी 'अक्लमंदी' के मुशाबिक की जाती है, लेकिन वे 'अक्ल जरील होगा। 9 जो छोटा समझा जाता है लेकिन उसके पास एक नौकर है, उससे बेहतर है जो अपने आप को बड़ा जानता और रोटी का मोहताज है। 10 सादिक अपने चौपाए की जान का खयाल रखता है, लेकिन शरीरों की रहमत भी 'ऐन ज़ुल्म है। 11 जो अपनी जमीन में काशकारी करता है, रोटी से सेर होगा; लेकिन बेकारी का हिमायती वे 'अक्ल है। 12 शरीर बदकिरदारों के दाम का मुश्तक है, लेकिन सादिकों की जड़ फलती है। 13 लबों की खतोकारी में शरीर के लिए फंदा है, लेकिन सादिक मुसीबत से बच निकलेगा। 14 आदमी के कलाम का फल उसके नेकी से आसदा करेगा, और उसके हाथों के किए का बदला उसको मिलेगा। 15 बेवकूफ का चाल चलन उसकी नजर में दूस्त है, लेकिन 'अक्लमंद नीहित' को सुनता है। 16 बेवकूफ का गजब फैरून ज़ाहिर हो जाता है, लेकिन होशियार शर्मिन्दी को छिपाता है। 17 रास्तगो सदाकत ज़ाहिर करता है, लेकिन झूटा गवाह दग्बाजी। 18 बिना समझे बोलने वाले की बातें तलवार की तरह छेदी हैं, लेकिन 'अक्लमंद' की जबान सेहत बरब्त है। 19 सच्चे हॉट हमेशा तक काईम रहेंगे लेकिन झटी जबान सिर्फ दम भर की है। 20 बटी के मन्दूख बाँधने वालों के दिल में दगा है, लेकिन सुलह की मध्यरत देने वालों के लिए खुशी है। 21 सादिक पर कोई आफत नहीं आएगी, लेकिन शरीर बला में मुबिला होंगे। 22 झटे लबों से खुदावन्द को नफरत है, लेकिन रास्तकार उसकी खुशनृदी है। 23 होशियार आदमी 'इत्म' को छिपाता है, लेकिन बेवकूफ का दिल बेवकूफी का 'ऐलान करता है। 24 मेहनती आदमी का हाथ हुक्मराह होगा, लेकिन सुस्त आदमी बाज गुजार बनेगा। 25 आदमी का दिल फिक्रामंदी से ढब जाता है, लेकिन अच्छी बात से खुश होता है। 26 सादिक अपने पडोसी की रहनुमाई करता है, लेकिन शरीरों का चाल चलन उनको गुमराह कर देता है। 27 सुस्त आदमी शिकार पकड़ कर कबाब नहीं करता, लेकिन इंसान की गिरानबहा दौलत मेहनती पाता है। 28 सदाकत की राह में जिन्दगी है, और उसके रास्ते में हरगिज मौत नहीं।

13 'अक्लमंद' बेटा अपने बाप की तारीकी को सुनता है, लेकिन ठड़ा बाज

सरजनिश पर कान नहीं लगाता। 2 आदमी अपने कलाम के फल से अच्छा खाएगा, लेकिन द़ाबाजों की जान के लिए सितम है। 3 अपने युँह की निगहबानी करने वाला अपनी जान की हिफाजत करता है लेकिन जो अपने हॉट पसारता है, हलाक होगा। 4 सुस्त आदमी अरजू करता है लेकिन कुछ नहीं पाता, लेकिन मेहनती की जान सेर होगी। 5 सादिक को झट से नफरत है, लेकिन शरीर नफरत औरज — ओ — स्वाहा होता है। 6 सदाकत रास्तरौ की हिफाजत करती है, लेकिन शरारत शरीर को गिरा देती है। 7 कोई अपने आप को दौलतमंद जताता है लेकिन गरीब है, और कोई अपने आप को कंगाल

बताता है लेकिन बड़ा मालदार है। 8 आदमी की जान का कफ़कारा उसका माल है, लेकिन कंगाल धमकी को नहीं सुनता। 9 सादिकों का चिराग रोशन रहेगा, लेकिन शरीरों का दिया बुझाया जाएगा। 10 तकब्बर से सिर्फ़ झाँगड़ा पैदा होता है, लेकिन मध्यरत पसद के साथ हिक्मत है। 11 जो दौलत बेकारी से हासिल की जाए कम हो जाएगी, लेकिन मेहनत से 'जमा' करने वाले की दौलत बढ़ती रहेगी। 12 उम्रद के पूरा होने में ताऱीर दिल को बीमार करती है, लेकिन आरजू का पूरा होना जिन्दगी का दरखत है। 13 जो कलाम की तहकीर करता है, अपने आप पर हलाकत लाता है; लेकिन जो फरमान से डरता है, अब्र पाएगा। 14 'अक्लमंद' की तालीम ज़िन्दगी का चरमा है, जो मौत के फंदो से छुटकारे का जरिया' हो। 15 समझ की दूस्ती मकबूलियत बरब्ताई है, लेकिन दग्बाजों की राह कठिन है। 16 हर एक होशियार आदमी 'अक्लमंदी' से काम करता है, पर बेवकूफ अपनी बेवकूफी को फैला देता है। 17 शरीर कासिद बला में गिरफ्तार होता है, लेकिन ईमानदार एन्ची सिहत बरब्त है। 18 तरबियत को रद्द करने वाला कंगाल और स्वाहा होगा, लेकिन वह जो तम्बीह का त्विहाज रखता है, 'इज्जत पाएगा। 19 जब मुदाद पूरी होती है तब जी बहुत खुश होता है, लेकिन बटी को छोड़ने से बेवकूफ को नफरत है। 20 वह जो 'अक्लमंदों' के साथ चलता है 'अक्लमंद होगा, पर बेवकूफों का साथी हलाक किया जाएगा। 21 बटी गुणहारों का पीछा करती है, लेकिन सादिकों को नेक बदला मिलेगा। 22 नेक आदमी अपने पोतों के लिए मीरास छोड़ता है, लेकिन गुणहार की दौलत सादिकों के लिए फराहम की जाती है 23 कंगालों की खेती में बहुत खुराक होती है, लेकिन ऐसे लोग भी हैं जो बे इन्साफी से बर्बाद हो जाते हैं। 24 वह जो अपनी छड़ी को बाज रखता है, अपने बेटे से नफरत रखता है, लेकिन वह जो उससे मुहब्बत रखता है, बरवत्र उसको तम्बीह करता है। 25 सादिक खाकर सेर हो जाता है, लेकिन शरीर का पेट नहीं भरता।

14 'अक्लमंद' 'औरत अपना घर बनाती है, लेकिन बेवकूफ उसे अपने ही

हाथों से बर्बाद करती है। 2 रास्तरौ खुदावन्द से डरता है, लेकिन कजरौ उसकी हिकारत करता है। 3 बेवकूफ में से गुरुर फूट निकलता है, लेकिन 'अक्लमंदों' के लब उनकी निगहबानी करते हैं। 4 जहाँ बैल नहीं, वहाँ चरनी साफ है, लेकिन गल्ला की अपज्ञा इस बैल के जार से है। 5 ईमानदार गवाह झट नहीं बोलता, लेकिन झटा गवाह झटी बातें बयान करता है। 6 ठड़ा बाज हिक्मत की तलाश करता और नहीं पाता, लेकिन समझदार को 'इत्म आसानी से हासिल होता है। 7 बेवकूफ से किनारा कर, क्यूँकि तू उस में 'इत्म' की बातें नहीं पाएगा। 8 होशियार की हिक्मत यह है कि अपनी राह पहचाने, लेकिन बेवकूफ की बेवकूफी धोखा है। 9 बेवकूफ गुमाह करके हँसते हैं, लेकिन रास्तकारों में रजामंदी है। 10 अपनी तल्खी को दिल ही ख़बूज जानता है, और बेगाना उसकी खुशी में ढलन नहीं रखता। 11 शरीर का घर बर्बाद हो जाएगा, लेकिन रास्त आदमी का खेमा आबाद रहेगा। 12 ऐसी राह भी है जो इंसान को सीधी मालम होती है, लेकिन उसकी इन्हिं में मौत की राहें हैं। 13 हँसने में भी दिल गमगीन है, और शादमानी का अंजाम गम है। 14 नारकमान दिल अपने चाल चलन का बदला पाता है, और नेक आदमी अपने काम का। 15 नादान हर बात का यकीन कर लेता है, लेकिन होशियार आदमी अपने चाल चलन को देखता भालता है। 16 'अक्लमंद' डरता है और बटी से अल्प रहता है, लेकिन बेवकूफ द्वारा लालता है और बेद्वाक रहता है। 17 जट रंज बेवकूफी करता है, और बुरे मन्सुखे बाँधने वाला यिनौना है। 18 नादान हिमाकत की मीरास पाते हैं, लेकिन होशियारों के सिर लेकिन 'इत्म' का ताज है। 19 शरीर नेकों के सामने झुकते हैं, और खबीस सादिकों के दरवाजों पर। 20 कंगाल से उसका पडोसी भी बेजार है, लेकिन मालदार के दोस्त बहुत हैं। 21 अपने पडोसी को हक्कीर

जानने वाला गुनाह करता है, लेकिन कंगाल पर रहम करने वाला मुबारक है। 22 क्या बढ़ी के मूजिद गुमराह नहीं होते? लेकिन शफकत और सच्चाई नेकी के मूजिद के लिए हैं। 23 हर तरह की मेहनत में नकारा है, लेकिन मुँह की बातों में महज मुहताजी है। 24 'अक्लमंदों का ताज उनकी दौलत है, लेकिन बेवकूफ की बेवकूफी ही बेवकूफी है। 25 सच्चा गवाह जान बचाने वाला है, लेकिन झूठा गवाह दग्बाजी करता है। 26 खुदावन्द के खौफ में कवी उमीद है, और उसके फर्जन्दों को पानाह की जगह मिलती है। 27 खुदावन्द का खौफ जिन्दगी का चश्मा है, जो मौत के फंदों से छुटकारे का जरिया है। 28 रि'आया की कमरत में बादशाह की शान है, लेकिन लोगों की कमी में हाकिम की तबाही है। 29 जो कहर करने में धीमा है, बड़ा 'अक्लमन्द है लेकिन वह जो बेवकूफ है हिमाकत को बढ़ाता है। 30 मुत्मझन दिल, जिस की जान है, लेकिन जलन हड्डियों की बूझीदिगी है। 31 गरीब पर जुल्म करने वाला उसके खालिक की इहानत करता है, लेकिन उसकी 'ताजीमी करने वाला मुहताजों पर रहम करता है। 32 शरीर अपनी शरारत में पस्त किया जाता है, लेकिन सादिक मरने पर भी उमीदवार है। 33 हिक्मत 'अक्लमंद' के दिल में काईम रहती है, लेकिन बेवकूफों का दिली राज खुल जाता है। 34 सदाकत कौम को सरफराजी बरखाती है, लेकिन गुहाह से उमतों की स्वर्वाई है। 35 'अक्लमंद खादिम पर बादशाह की नजर — ए — इनायत है, लेकिन उसका कहर उस पर है जो स्वाई का जरिया है।

15 नर्म जवाब कहर को दूर कर देता है, लेकिन कड़वी बातें ग़ज़ब अंगेज हैं। 2 'अक्लमंदों की जबान 'इल्म का दुस्त बयान करती है, लेकिन बेवकूफ का मुँह हिमाकत उतारता है। 3 खुदावन्द की अँखें हर जगह हैं और नेकों और बदों की निगरान हैं। 4 सिंहत बरबाज जबान जिन्दगी का दरखत है, लेकिन उसकी कजगाई स्हस्ती की शिक्षतस्ती का जरिया है। 5 बेवकूफ अपने बाप की तरबियत को हक्कीर जानता है, लेकिन तम्बीह का लिहाज रखने वाला होशियार हो जाता है। 6 सादिक के घर में बड़ा खजाना है, लेकिन शरीर की आमदनी में पेरेशानी है। 7 'अक्लमंदों के लब 'इल्म फैलाते हैं, लेकिन बेवकूफों के दिल ऐसे नहीं। 8 शरीरों के ज़बीहे से खुदावन्द को नफरत है, लेकिन रस्तकार की दुआ उसकी खुशनूटी है। 9 शरीरों का चाल चलन से खुदावन्द को नफरत है, लेकिन वह सदाकत के पैरों से मुहब्बत रखता है। 10 राह से भटकने वाले के लिए साखत तादीब है, और तम्बीह से नफरत करने वाला मरेगा। 11 जब पाताल और जहन्नुम खुदावन्द के समाने खुले हैं, तो बनी आदम के दिल का क्या ज़िक्र? (Sheol h7585) 12 ठड़बाज तम्बीह को दोस्त नहीं रखता, और 'अक्लमंदों की मजलिस में हरिगिज नहीं जाता। 13 खुश दिली चेहरे की रौनक पैदा करती है, लेकिन दिल की गमीनी से इंसान शिक्षस्ता खातिर होता है। 14 समझदार का दिल 'इल्म का तालिक है, लेकिन बेवकूफों की खुराक बेवकूफी है। 15 मुसीबत जदा के तमाम दिन दुर्भे हैं, लेकिन खुश दिल हमेशा जश्न करता है। 16 थोड़ा जो खुदावन्द के खौफ के साथ हो, उस बड़े खजाने से जो पेरेशानी के साथ हो, बेहतर है। 17 मुहब्बत वाले घर में ज़रा सा सागरात, 'अदावत वाले घर में पत्ते हुए बैल से बेहतर है। 18 ग़ज़बनाक आदमी फितना खड़ा करता है, लेकिन जो कहर में धीमा है झ़गड़ा मिटाता है। 19 काहिल की राह कँटों की आड़ सी है, लेकिन रास्तकारों का चाल चलन शाहराह की तरह है। 20 'अक्लमंद बेटा बाप को खुश रखता है, लेकिन बेवकूफ अपनी माँ की तहकीर करता है। 21 बे'अक्ल के लिए बेवकूफी शादमानी का जरिया है, लेकिन समझदार अपने चाल चलन को दुस्त करता है 22 सलाह के बगैर इरादे पूरे नहीं होते, लेकिन सलाहकारों की कसरत से क्याम पाते हैं। 23 आदमी अपने मुँह के जवाब से खुश होता है, और बामौका' बात

क्या ख़बूब है। 24 'अक्लमंद' के लिए जिन्दगी की राह ऊपर को जाती है, ताकि वह पाताल में उतरने से बच जाए। (Sheol h7585) 25 खुदावन्द मास्टरों का घर ढां देता है, लेकिन वह बेबा के सिवाने को काईम करता है। 26 बुरे मन्स्त्रों से खुदावन्द को नफरत है लेकिन पाक लोगों का कलाम पसंदीदा है। 27 नफे' का लालची अपने घराने को पेरेशान करता है, लेकिन वह जिसकी रिव्वत से नफरत है जिन्दा रहेगा। 28 सादिक का दिल सोचकर जबाब देता है, लेकिन शरीरों का मुँह बुरी बातें उतारता है। 29 खुदावन्द शरीरों से दूर है, लेकिन वह सादिकों की दुआ सन्तान है। 30 आँखों का नूर दिल को खुश करता है, और खुश खबरी हड्डियों में फरबही पैदा करती है। 31 जो जिन्दगी बरबा तम्बीह पर कान लगाता है, 'अक्लमंदों के बीच स्कूनत करेगा। 32 तरबियत को रइ करने वाला अपनी ही जान का दुश्मन है, लेकिन तम्बीह पर कान लगाने वाला समझ हासिल करता है। 33 खुदावन्द का खौफ हिक्मत की तरबियत है, और सरफराजी से पहले फरोती है।

16 दिल की तदबीरि इंसान से है, लेकिन जबान का जवाब खुदावन्द की तरफ से है। 2 इंसान की नजर में उसके सब चाल चलन पाक है, लेकिन खुदावन्द स्हों को जाँचता है। 3 अपने सब काम खुदावन्द पर छोड़ दे, तो तेरे इरादे काईम रहेंगे। 4 खुदावन्द ने हर एक चीज़ खास मकासद के लिए बनाई, हाँ शरीरों को भी उसने दुरे दिन के लिए बनाया। 5 हर एक से जिसके दिल में गुस्तर है, खुदावन्द को नफरत है, यद्यनिन वह बे सजा न छूटेगा। 6 शफकत और सच्चाई से बटी का और लोग खुदावन्द के खौफ की बजह से बटी से बाज़ आते हैं। 7 जब इंसान का चाल चलन खुदावन्द को पसंद आता है तो वह उसके दुश्मनों को भी उसके दोस्त बनाता है। 8 सदाकत के साथ थोड़ा सा माल, बे इन्साफी की बड़ी आमदनी से बेहतर है। 9 आदमी का दिल अपनी राह ठहराता है लेकिन खुदावन्द उसके कदमों की रहनुमाई करता है। 10 कलाम — ए — रब्बानी बादशाह के लिए उसको से निकलता है, और उसका मुँह 'अदालत करने में खता नहीं करता। 11 ठीक तराज़ू और पलड़े खुदावन्द के हैं, थैली के सब तौल बाट उसका काम है। 12 शरारत करने से बादशाहों को नफरत है, क्यूँकि तख्त का कथाम सदाकत से है। 13 सादिक लब बादशाहों की खुशनूटी है, और वह सच बोलने वालों को दोस्त रखते हैं। 14 बादशाह का कहर मौत का कासिद है, लेकिन 'अक्लमंद आदमी उसे ठंडा करता है। 15 बादशाह के चेहरे के नूर में जिन्दगी है, और उसकी नजर — ए — 'इनायत आख़री बरसात के बादल की तरह है। 16 हिक्मत का हस्तल सोने से बहुत बेहतर है, और समझ का हस्तल चाँदी से बहुत पसंदीदा है। 17 रास्तकार आदमी की शाहराह यह है कि बटी से भागे, और अपनी राह का निगहबान अपनी जान की हिफाजत करता है। 18 हलाकत से पहले तकब्बर, और जबाल से पहले खुदबीनी है। 19 गरीबों के साथ फ़रोतन बनाना, मुतकज्बियों के साथ लट का माल तक्सीम करने से बेहतर है। 20 जो कलाम पर तवज्ज्ञ करता है, भलाई देखोगा: और जिसका भरोसा खुदावन्द पर है, मुबारक है। 21 'अक्लमंद' दिल होशियार कहलाएगा, और शरीरन जबानी से 'इल्म की पिंगवानी होती है। 22 'अक्लमंद' के लिए 'अक्ल हयात का चश्मा है, लेकिन बेवकूफ की तरबियत बेवकूफ ही है। 23 'अक्लमंद' का दिल उसके मुँह की तरबियत करता है, और उसके लिए बेवकूफी है। 24 दिलपसंद बातें शहद का छत्ता है, वह जी की मीठी लगती है और हड्डियों के लिए शिफा है। 25 ऐसी राह भी है, जो इंसान को सीधी मालूम होती है; लेकिन उसकी इन्तिहा में मौत की राह है। 26 मेहनत करने वाले ख्वाहिश उससे काम करती है, क्यूँकि उसका पेट उसको उभारता है। 27 खबीस आदमी शरारत को खुद कर निकलता है, और उसके लिए जैसे जलाने वाली आग है। 28 टेढ़ा आदमी किंतु आगेज है, और ग़ीबत करने

वाला दोस्तों में जुदाई डालता है। 29 तुन्दखू आदमी अपने पड़ोसियों को बरगताता है, और उसको खुम्ही राह पर ले जाता है। 30 आँख मारने वाला कंजी ईंजाद करता है, और लब चबाने वाला फसाद खड़ा करता है। 31 सफेद सिर शौकत का ताज है, वह सदाकत की राह पर पाया जाएगा। 32 जो कहर करने में धीमा है पहलवान से बेहतर है, और वह जो अपनी रुह पर जाबित है उस से जो शहर को ले लेता है। 33 पचीं गोद में डाली जाती है, लेकिन उसका सारा इन्तिजाम खुदावन्द की तरफ से है।

17 सलामती के साथ खुशक निवाला इस से बेहतर है, कि घर नेमत से भरा

हो और उसके साथ झगड़ा हो। 2 'अक्तलमन्द नौकर उस बेटे पर जी स्वा करता है हुक्मरान होगा, और भाईयों में शमिल होकर मीरास का हिस्सा लेगा। 3 चौंदी के लिए कुठाली है और सोने के कलिए भट्टी, लेकिन दिलों को खुदावन्द जांचता है। 4 बदकिरादार झटे लबों की सुनता है, और झटा मुकरिद जबान का शनवा होता है। 5 गरीब पर हँसने वाला, उसके खालिक की बेकट्टी करता है; और जो औरें की मुसीबत से खुश होता है, वे सजा न छटेगा। 6 बेटों के बेटे बढ़ों के लिए ताज हैं; और बेटों के फखु़ का जरिया 'उनके बाप — दादा है। 7 खुश गोई बेवकूफ को नहीं सजती, तो किस कंदर कमदोगांगोई शरीफ को सजेगी। 8 रिक्वेट जिसके हाथ में है उसकी नजरमें गिरान बहा जवाहर है, और वह जिधर तबजुह करता है कामयाब होता है। 9 जो खता पोशी करता है मुहब्बत का तालिब है, लेकिन जो ऐसी बात को बार बार छेड़ता है, दोस्तों में जुदाई डालता है। 10 समझदार पर एक झिड़की, बेवकूफों पर सौ कोडों से ज्यादा असर करती है। 11 शरीर महज सरकरी का तालिब है, उसके मुकाबले में संगादिल कारिदं भेजा जाएगा। 12 जिस रिठी के बच्चे पकड़े गए हों आदमी का उस से दो चार होना, इससे बेहतर है के बेवकूफ की बेवकूफी में उसके सामने आए। 13 जो नेकी के बदले में बदी करता है, उसके घर से बदी हरणिज जुदा न होगी। 14 झगड़े का शुरू पानी के फूट निकलने की तरह है, इसलिए लडाई से पहले झगड़े को छोड़ दें। 15 जो शरीर को सादिक और जो सादिक को शरीर ठहराता है, खुदावन्द को उन दोनों से नफरत है। 16 हिक्मत खरीदने को बेवकूफ के हाथ में कीमत से क्या फाइदा है, हालांकि उसका दिल उसकी तरफ नहीं। 17 दोस्त हर बक्तु मुहब्बत दिखाता है, और भाई मुसीबत के दिन के लिए पैदा हुआ है। 18 बे'अक्ल आदमी हाथ पर हाथ मराता है, और अपने पड़ोसी के सामने जामिन होता है। 19 फसाद पसंद खता पसंद है, और अपने दरवाजे को बलन्द करने वाला हलाकत का तालिब। 20 कजदिला भलाई को न देखेगा, और जिसकी जबान कंजो है मुसीबत में पड़ेगा। 21 बेवकूफ के बालिद के लिए गम है, क्यूँकि बेवकूफ के बाप को खुशी नहीं। 22 शादमान दिल शिफा बरबाता है, लेकिन अफसुर्दी दिली हड्डियों को खुशक कर देती है। 23 शरीर बगल में रिक्वेट रख लेता है, ताकि 'अदालत की राहें बिगड़े। 24 हिक्मत समझदार के आपने सामने है, लेकिन बेवकूफ की आँख जमीन के किनारों पर लगी है। 25 बेवकूफ बेटा अपने बाप के लिए गम, और अपनी माँ के लिए तख्ती है। 26 सादिक को सजा देना, और शरीरों को उनकी रास्ती की वजह से मारना, खूब नहीं। 27 साहिब — ए — इल्म कमगो है, और समझदार मरीन है। 28 बेवकूफ भी जब तक खामोश है, 'अक्लमन्द गिना जाता है; जो अपने लब बलन्द रखता है, होशियर है।

18 जो अपने आप को सब से अलग रखता है, अपनी ख्वाहिश का तालिब

है, और हर माँकल बात से बरहम होता है। 2 बेवकूफ समझ से खुश नहीं होता, लेकिन सिर्फ़ इस से कि अपने दिल का हाल जाहिर करे। 3 शरीर के साथ हिकार आती है, और स्वार्वाई के साथ ना कंदी। 4 इंसान के मुँह की बातें

गहरे पानी की तरह हैं और हिक्मत का चश्मा बहता नाला है। 5 शरीर की तरफदारी करना, या 'अदालत में सादिक से बेइन्साफ़ी करना, अच्छा नहीं। 6 बेवकूफ के होटे फितनाअगेजी करते हैं, और उसका मुँह तम्हाँचों के लिए उपकरता है। 7 बेवकूफ का मुँह उसकी हलाकत है, और उसके होटे उसकी जान के लिए फन्दा हैं। 8 गैबतगों की बातें लज़ीज़ निवाले हैं और वह ख़बर ज़म्म हो जाती है। 9 काम में सुस्ती करने वाला, फुज़ल ख़र्च का भाई है। 10 खुदावन्द का नाम मज़बूत बर्ज़ है, सादिक उस में भाग जाता है और अन्न में रहता है 11 दौलतमन्द आदमी का माल उसका मज़बूत शहर, और उसके तस्वीर में ऊँची दीवार की तरह है। 12 आदमी के दिल में तकब्बल हलाकत का पेशरी है, और फरोतीनी 'इज्जत की पेशवा। 13 जो बात सुनने से पहले उसका जबाब दे, यह उसकी बेवकूफी और शर्मिन्दी है। 14 इंसान की रुह उसकी नातवानी में उसे संभालेगी, लेकिन अफसुर्दी दिली को कौन बर्दाश्त कर सकता है? 15 होशियार का दिल 'इल्म हासिल करता है, और 'अक्लमन्द के कान 'इल्म के तालिब हैं। 16 आदमी का नजराना उसके लिए जगह कर लेता है, और बड़े आदमियों के सामने उसकी रसाई कर देता है। 17 जो पहले अपना दाँवा बयान करता है रास्त मालूम होता है, लेकिन दूसरा आकर उसकी हकीकत ज़ाहिर करता है। 18 पचीं झागड़ों को खत्म करती है, और ज़बरदस्तों के बीच फैसला कर देती है। 19 नाराज भाई को राजी करना मज़बूत शहर ले लेने से ज्यादा मुश्किल है, और झगड़े किनों के बैंडों की तरह हैं। 20 आदमी की पेट उसके मुँह के फल से भरता है, और वह अपने लबों की पैदावार से सेर होता है। 21 मौत और जिन्दगी जबान के काब में हैं, और जो उसे दोस्त रखते हैं उसका फल खाते हैं। 22 जिसको बीची मिली उसने तोहफा पाया, और उस पर खुदावन्द का फज़ल हुआ। 23 मुहताज मिन्नत समाजत करता है, लेकिन दौलतमन्द सख्त जबाब देता है। 24 जो बहुतों से दोस्ती करता है अपनी बर्दादी के लिए करता है, लेकिन ऐसा दोस्त भी है जो भाई से ज्यादा मुहब्बत रखता है।

19 रास्तरौ गरीब, कजगो और बेवकूफ से बेहतर है। 2 ये भी अच्छा नहीं

कि रुह 'इल्म से खाली रहे? जो चलने में जल्द बाज़ी करता है, भटक जाता है। 3 आदमी की बेवकूफी उसे गुप्तराह करती है, और उसका दिल खुदावन्द से बेज़ार होता है। 4 दौलत बहुत से दोस्त पैदा करती है, लेकिन गरीब अपने ही दोस्त से बेगाना है। 5 झटा गवाह बे सजा न छटेगा, और झट बोलने वाला रिहाई न पाएगा। 6 बहुत से लोग सखी की खुशामद करते हैं, और हर एक आदमी इनाम देने वाले का दोस्त है। 7 जब मिस्कीन के सब भाई ही उससे नफरत करते हैं, तो उसके दोस्त कितने ज्यादा उससे दूर भागेंगे। वह बातों से उनका पीछा करता है, लेकिन उनको नहीं पाता। 8 जो हिक्मत हासिल करता है अपनी जान को 'अज़ीज़ रखता है, जो समझ की मुहाफ़ज़त करता है क़ाफ़िद उठाएगा। 9 झटा गवाह बे सजा न छटेगा, और जो झट बोलता है फना होगा। 10 जब बेवकूफ के लिए नाज़ — औ — नेमत ज़बा नहीं तो खादिम का शहजादों पर हुक्मरान होना और भी मुसारिब नहीं। 11 आदमी की तमीज़ उसको कहर करने में धीमा बनाती है, और ख़ता से दरग़ज़र करने में उसकी शान है। 12 बादशाह का ग़ज़ब शेर की गरज की तरह है, और उसकी नज़र — ए — 'इनायत घास पर शबनम की तरह। 13 बेवकूफ बेटा अपने बाप के लिए बला है, और बीची का झगड़ा रगड़ा सदा का टपका। 14 घर और माल तो बाप दादा से मीरास में मिलते हैं, लेकिन अक्लमन्द बीची खुदावन्द से मिलती है। 15 काहिली नीद में गर्क कर देती है, और काहिल आदमी भूका रहेगा। 16 जो फरमान बजा लाता है अपनी जान की मुहाफ़ज़त पर जो अपनी राहों से गाफ़िल है, मरेगा। 17 जो गरीबों पर रहम करता है, खुदावन्द को कर्ज़ देता है, और

वह अपनी नेकी का बदला पाएगा। 18 जब तक उम्मीद है अपने बेटे की तादीब किए जा और उसकी बर्बादी पर दिल न लगा। 19 गुस्सावर आदमी सजा पाएगा; क्यूंकि अगर तु उसे रिहाई दे तो तुझे बार बार ऐसा ही करना होगा। 20 मश्वरत को सुन और तरबियत पज़री हो, ताकि तू आखिर कार 'अक्लमन्द हो जाए। 21 आदमी के दिल में बहुत से मन्दूबे हैं, लेकिन सिर्फ खुदावन्द का इरादा ही काईंग रहेगा। 22 आदमी की मकबूलियत उसके एहसान से है, और कंगाल झाँठे आदमी से बेहतर है। 23 खुदावन्द का खोफ जिन्दगी बच्चा है, और खुदा तरस से होगा, और बदी से महफूज रहेगा। 24 सूत आदमी अपना हाथ थाली में डालता है, और इतना भी नहीं करता की फिर उसे अपने मुँह तक लाए। 25 ठड़ा करने वाले को मार, इससे सादा दिल होशियार हो जाएगा, और समझदार को तम्बीह कर, वह 'इल्म हासिल करेगा। 26 जो अपने बाप से बदसुल्की करता और माँ को निकाल देता है, शर्मिंदगी का ज़रिया' और स्वस्वाई लाने वाला बेटा है। 27 ऐ-ऐ-बेटे, अगर तू 'इल्म से बरगश्ता होता है, तो तालीम सुनें से क्या फायदा? 28 ख़बीस गवाह 'अदूल पर हँसता है, और शरीर का मुँह बदी निगलता रहता है। 29 ठड़ा करने वालों के लिए सजाएं ठहराई जाती है, और बेवकूफों की पीठ के लिए कोड़े हैं।

20 मय मसछारा और शराब हंगामा करने वाली है, और जो कोई इनसे फेरब खाता है, 'अक्लमन्द नहीं। 2 बादशाह का रोब शेर की गरज की तरह है; जो कोई उसे गुस्सा दिलाता है, अपनी जान से बदी करता है। 3 झागड़े से अलग रहने में आदमी की 'इज्जत है, लेकिन हर एक बेवकूफ झागड़ा रहता है, 4 काहिल आदमी जाड़े की वजह हल नहीं चलाता; इसलिए फ़सल काटने के बक्त वह भीक माँगेगा, और कुछ न पाएगा। 5 आदमी के दिल की बात गहरे पानी की तरह है, लेकिन समझदार आदमी उसे खींच निकालेगा। 6 अक्सर लोग अपना अपना एहसान जताते हैं, लेकिन बफ़ादार आदमी किसको मिलेगा? 7 रास्तौ सादिक के बाँद, उसके बेटे मुबारक होते हैं। 8 बादशाह जो तख्त — ए — 'अदालत पर बैठता है, खुद देखकर हर तरह की बदी को फटकता है। 9 कौन कह सकता है कि मैंने अपने दिल को साफ कर लिया है; और मैं अपने गुनाह से पाप हो गया हूँ? 10 दो तरह के तौल बाट और दो तरह के पैमाने, इन दोनों से खुशा को नफ़रत है। 11 बच्चा भी अपनी हाँकतों से पहचाना जाता है, कि उसके काम नेक — ओ — रास्त हैं कि नहीं। 12 सुनने वाले कान और देखने वाली आँख दोनों को खुदावन्द ने बनाया है। 13 ख़बाब दोस्त न हो, कहीं ऐसा तू कंगाल हो जाए; अपनी आँखें खोल कि तू रोटी से सेर होगा। 14 ख़रीदार कहता है, रसी है, रसी, लेकिन जब चल पड़ता है तो फ़ख़ करता है। 15 जर — ओ — मरजान की तो कसरत है, लेकिन बेशबहा सरमाया 'इल्म वाले होंट हैं। 16 जो बेगाने का जामिन हो, उसके काड़े छीन ले, और जो अजनबी का जामिन हो, उससे कुछ गिरवी रख ले। 17 दांग की रोटी आदमी को मीठी लगती है, लेकिन आखिर को उसका मुँह कंकरों से भरा जाता है। 18 हर एक काम मश्वरत से ठीक होता है, और तू नेक सलाह लेकर जंग कर। 19 जो कोई लुतारपन करता फिरता है, राज खोलता है; इसलिए तू युँहफ़ से कुछ वास्ता न रख। 20 जो अपने बाप या अपनी माँ पर लात करता है, उसका चिराग गहरी तारीकी में बुझाया जाएगा। 21 अगर चे 'इब्लिदा में मीरास यकलाखत हासिल हो, तो भी उसका अन्जाम मुबारक न होगा। 22 तू यह न कहना, कि मैं बदी का बदला लूँगा। खुदावन्द की आस रख और वह तुझे बचाएगा। 23 दो तरह के तौल बाट से खुदावन्द को नफ़रत है, और दांग के तराज़ ठीक नहीं। 24 आदमी की रफ़तर खुदावन्द की तरफ से है, लेकिन इंसान अपनी राह को क्यूंकर जान सकता है? 25 जल्द बाजी से किसी चीज़ को मुक़द्दस ठहराना, और मिन्नत मानने के बाद दरियापत करना, आदमी के लिए फ़ंदा है। 26 'अक्लमन्द

बादशाह शरीरों को फटकता है, और उन पर दावने का पहिया फ़िरवाता है। 27 आदमी का ज़मीर खुदावन्द का चिराग है; जो उसके तमाम अन्दरूनी हाल को दरियापत करता है। 28 शफ़कत और सच्चाइ बादशाह की निगहबान है, बल्कि शफ़कत ही से उसका तख्त काईम रहता है। 29 जवानों का जोर उनकी शौकत है, और बढ़ों के सफेद बाल उनकी जीनत है। 30 कोड़ों के जख्म से बदी दूर होती है, और मार खाने से दिल साफ होता।

21 बादशाह का दिल खुदावन्द के हाथ में है वह उसको पानी के नालों

की तरह जिधर चाहता है फेरता है। 2 इंसान का हर एक चाल चलन उसकी नज़र में रास्त है, लेकिन खुदावन्द दिलों को ज़ौचता है। 3 सदाकत और 'अदूल, खुदावन्द के नज़दीक कर्बानी से ज़यदा पसन्दीदा हैं। 4 बलन्द नज़री और दिल का तकब्बर, है। और शरीरों की इकबालमंदी गुनाह है। 5 मेहनती की तदबीर यकीन प्रिरावानी की बजह है, लेकिन हर एक जल्दाज का अंजाम मोहताजी है। 6 दरोगारों से खुजाने हासिल करना, बेठिकाना बुखारात और उनके तालिब मौत के तालिब हैं। 7 शरीरों का ज़ुल्म उनको उड़ा ले जाएगा, क्यूंकि उहोंने इन्साफ़ करने से इंकार किया है। 8 गुनाह आलदा आदमी की राह बहुत ढेटी है, लेकिन जो पाक है उसका काम ठीक है। 9 घर की छत पर एक कोने में रहना, झगड़ालू बीती के साथ बड़े घर में रहने से बेहतर है। 10 शरीर की जान बुराई की मृश्ताक है, उसका पड़ोसी उसकी निगाह में मन्दबल नहीं होता। 11 जब ठड़ा करने वाले को सजा दी जाती है, तो सादा दिल हिक्मत हासिल करता है, और जब 'अक्लमन्द तरबियत पाता है, तो 'इल्म हासिल करता है। 12 सादिक शरीर के घर पर गौर करता है; शरीर कैसे गिर कर बर्बाद हो गए हैं। 13 जो गीरबी की आह सुन कर अपने कान बंद कर लेता है, वह आप भी आह करेगा और कोई न सनेगा। 14 पोशीदगी में हादिया देना कहर को ठंडा करता है, और इनाम बगल में देना ज़बब — ए — शादी को। 15 इन्साफ़ करने में सादिक की शादमानी है, लेकिन बदकिरदारों की हलाकत। 16 जो समझ की राह से भटकता है, मुर्दों के गोल में पड़ा रहेगा। 17 'अय्याश कंगाल रहेगा; जो मय और तेल का मुश्ताक है मालदार न होगा। 18 शरीर सादिक का फिदिया होगा, और दगाबाज़ रास्तबाज़ों के बदले में दिया जाएगा। 19 बीरने में रहना, झगड़ालू और चिड़चिदी बीती के साथ रहने से बेहतर है। 20 कीमती ख़जाना और तेल 'अक्लमन्दों के घर में है, लेकिन बेवकूफ़ उनको उड़ा देता है। 21 जो सदाकत और शफ़कत की पैरवी करता है, ज़िन्दगी और सदाकत — ओ — 'इज्जत पाता है। 22 'अक्लमन्द आदमी जबरदस्तों के शहर पर चढ़ जाता है, और जिस कुब्त पर उनका भोसा है, उसे गिरा देता है। 23 जो अपने मुँह और अपनी ज़बान की निगहबानी करता है, अपनी जान को मुरीबतों से महफ़ूज रखता है। 24 मुतक़ब्बर — ओ — मगास्त शख्स जो बहुत तकब्बर से काम करता है। 25 काहिल की तमन्ना उसे मार डाली है, क्यूंकि उसके हाथ मेहनत से इंकार करते हैं। 26 वह दिन भर तमन्ना में रहता है, लेकिन सादिक देता है और देगा नहीं करता। 27 शरीर की कुर्बानी काबिले नफ़रत है, खासकर जब वह बुरी नियत से लाता है। 28 झटा गवाह हलाक होगा, लेकिन जिस शख्स ने बात सुनी है, वह खामोश न रहेगा। 29 शरीर अपने चहरे को सख्त करता है, लेकिन सादिक अपनी राह पर गौर करता है। 30 कोई हिक्मत, कोई समझ और कोई मश्वरत नहीं, जो खुदावन्द के सामने ठहर सके। 31 जंग के दिन के लिए घोड़ा तो तैयार किया जाता है, लेकिन फ़तहयाबी खुदावन्द की तरफ से है।

22 नेक नाम बेकयास खजाने से और एहसान सोने चाँदी से बेहतर है। 2 अमीर — ओ — ग़रीब एक दूसरे से मिलते हैं; उन सबका खालिक

खुदावन्द ही है। 3 होशियार बला को देख कर छिप जाता है; लेकिन नादान बढ़े चले जाते और नुक्सान उठाते हैं। 4 दौलत और 'इज़ज़त — ओ — हयात, खुदावन्द के खौफ और फ़रोतीनी का अज्ज है। 5 टेढ़े आदमी की राह में कॉटे और फ़न्दे हैं; जो अपनी जान की निगहबानी करता है, उसे दूर रहेगा। 6 लड़के की उस राह में तरबियत कर जिस पर उसे जाना है; वह बढ़ा होकर भी उससे नहीं मुड़ेगा। 7 मालदार गरीब पर हुक्मरान होता है, और कर्ज लेने वाला कर्ज देने वाले का नैकर है। 8 जो बदी बोता है मुसीबत कटेगा, और उसके कहर की लाली दृट जाएगी। 9 जो नेक नज़र है बरकर पाएगा, क्यूँकि वह अपनी रोटी में से गरीबों को देता है। 10 ठड़ा करने वाले को निकाल दे तो फ़साद जाता रहेगा; हाँ झाड़ा रगड़ा और स्वाई दूर हो जाएगा। 11 जो पाक दिली को चाहता है उसके होटों में लुक्फ़ है, और बादशाह उसका दोस्तदार होगा। 12 खुदावन्द की आँखें 'इल्म की हिफ़ाज़त करती हैं; वह दगाबाज़ों के कलाम को उलट देता है। 13 सूस्त आदमी कहता है बाहर शेर खड़ा है! मैं गलियों में फ़ाड़ा जाऊँगा। 14 बेगाना 'औरत का मुँह गहरा गढ़ा है; उसमें वह गिरता है जिससे खुदावन्द को नफ़रत है। 15 हिमाकत लड़के के दिल से बाबस्ता है, लेकिन तरबियत की छड़ी उसको उसे दूर कर देगी। 16 जो अपने फ़ायदे के लिए गरीब पर ज़ुल्म करता है, और जो मालदार को देता है, यकीन मोहताज हो जाएगा। 17 अपना कान झूका और 'अक्लमंदों की बातें सुन, और मेरी तालीम पर दिल लगा; 18 क्यूँकि यह पसंदीदा है कि तू उनको अपने दिल में रख खेल, और वह तेरे लबों पर काईम रहें; 19 ताकि तेरा भरोसा खुदावन्द पर हो, मैंने आज के दिन तुझ को हाँ तुझ ही को जाता दिया है। 20 क्या मैंने तेरे लिए मश्वरत और 'इल्म की लतीफ़ बातें इसलिए नहीं लिखी हैं, कि 21 सच्चाई की बातों की हक्कीकत तुझ पर ज़ाहिर कर दूँ ताकि तू सच्ची बातें हासिल करके अपने भेजने वालों के पास वापस जाए? 22 गरीब को इसलिए न लूट की वह गरीब है, और मुसीबत जदा पर 'अदालत गाह में ज़ुल्म न कर; 23 क्यूँकि खुदावन्द उनकी बकालत करेगा, और उनके गारतगारों की जान को गारत करेगा। 24 युस्ते वर आदमी से दोस्ती न कर, और गजबनाक शख्स के साथ न जा, 25 ऐसा ना हो तू उसका चाल चलन सीखे, और अपनी जान को फंदे में फ़ंसाए। — 26 तू उनमें शामिल न हो जो हाथ पर हाथ मारते हैं, और न उनमें जो कर्ज के जमिन होते हैं। 27 क्यूँकि अगर तेरे पास अदा करने को कुछ न हो, तो वह तेरा बिस्तर तेरे नीचे से क्यूँ खीच ले जाए? 28 उन पुरानी हटों को न सरका, जो रेरे बाप — दादा ने बांधी हैं। 29 तू किसी को उसके काम में मेहनती देखता है, वह बादशाहों के सामने खड़ा होगा; वह कम कट्ट लोगों की खिदमत न करेगा।

23 जब तू हाकिम के साथ खाने बैठे, तो खूब गौर कर, कि तेरे सामने कौन है? 2 अगर तू खाऊ है, तो अपने गले पर छुरी रख दे। 3 उसके मजेदार खानों की तमन्ना न कर, क्यूँकि वह दगा बाज़ी का खाना है। 4 मालदार होने के लिए पेरेशन न हो; अपनी इस 'अक्लमन्दी से बाज़ आ। 5 क्या तू उस चीज़ पर आँख लगाएगा जो है ही नहीं? लेकिन लगा कर असमान की तरफ उड़ जाती है? 6 तुंग चश्म की रोटी न खा, और उसके मजेदार खानों की तमन्ना न कर; 7 क्यूँकि जैसे उसके दिल के खयाल हैं वह वैसा ही है। वह तुझ से कहता है खा और पी, लेकिन उसका दिल तेरी तरफ नहीं 8 जो निवाला तने खाया है तू उसे उगल देगा, और तेरी मीठी बातें बे मतलब होंगी 9 अपनी बातें बेवकूफ़ को न सुना, क्यूँकि वह तेरे 'अक्लमंदी के कलाम की ना कट्टी करेगा। 10 पुरानी हटों को न सरका, और यतीमों के खेतों में दखल न कर, 11 क्यूँकि उनका रिहाई बख्शने वाला ज़बरदस्त है; वह खुद ही तेरे खिलाफ़ उनकी बकालत करेगा। 12 तरबियत पर दिल लगा, और 'इल्म की बातें सुन।

13 लड़के से तादीब को देगा न कर; अगर तू उसे छड़ी से मारेगा तो वह मर न जाएगा। 14 तू उसे छड़ी से मारेगा, और उसकी जान को पाताल से बचाएगा। (Sheol h7585) 15 ऐ मेरे बेटे, अगर तू 'अक्लमंद दिल है, तो मेरा दिल, हाँ मेरा दिल खुश होगा। 16 और जब तेरे लबों से सच्ची बातें निकलेंगी, तो मेरा दिल शादमान होगा। 17 तेरा दिल गुनहगारों पर रशक न करे, बल्कि तू दिन भर खुदावन्द से डरता रह। 18 क्यूँकि बदल यकीनी है, और तेरी आस नहीं दूरेगी। 19 ऐ मेरे बेटे, तू सुन और 'अक्लमंद बन, और अपने दिल की रहबी कर। 20 त शराबियों में शामिल न हो, और न हीसी कबाबियों में, 21 क्यूँकि शराबी और खाऊ कंगाल हो जाएँगे और नीद उनको चीथड़े पहनाएगी। 22 अपने बाप का जिससे तू पैदा हुआ सुनें वाला हो, और अपनी माँ को उसके बुढ़ापे में हकीर न जान। 23 सच्चाई की मोल ले और उसे बेच न डाल; हिकमत और तरबियत और समझ को भी। 24 सादिक का बाप निहायत खुश होगा; और अक्लमंद का बाप उससे शादमानी करेगा। 25 अपने माँ बाप को खुश कर, अपनी बालिदा को शादमान रख। 26 ऐ मेरे बेटे, अपना दिल मुझ को दे, और मेरी राहों से तेरी आँखें खुश हों। 27 क्यूँकि फ़ाहिशा गहरी खन्दक है, और बेगान 'औरत तंग गढ़ा है। 28 वह राहजन की तरह घाट में लगी है, और बनी आदम में बदकारों का शुमार बढ़ाती है। 29 कौन अफ़सोस करता है? कौन गमजदा है? कौन झगड़ालू है? कौन शाकी है? कौन बे वजह घायल है? और किसकी आँखों में सुखी है? 30 वही जो देर तक मयनोगी करते हैं; वही जो मिलाई हुई मय की तलाश में रहते हैं। 31 जब मय लाल लाल हो, जब उसका बर 'अक्स जाम पर पड़े, और जब वह रवानी के साथ नीचे उतरे, तो उस पर नज़र न कर। 32 क्यूँकि अन्जाम कर वह साँप की तरह काटी, और अजदहे की तरह डस जाती है। 33 तेरी आँखें 'अजीब चीज़ि देखेंगी, और तेरे मुँह से उल्टी सीधी बातें निकलेंगी। 34 बल्कि तू उसकी तरह होगा जो समन्दर के बीच में लेट जाए, या उसकी तरह जो मस्तूल के सिरे पर सो रहे। 35 तू कहेगा उन्होंने तो पुढ़े मारा है, लेकिन पुढ़ी को चोट नहीं लगी; उन्होंने पुढ़ी पीटा है लेकिन मुझे मालूम भी नहीं हुआ। मैं कब बेदर हँगा? मैं फिर उसका तालिब हँगा।

24 तू शरीरों पर रशक न करना, और उनकी सुहबत की ख्वाहिश न रखना; 2 क्यूँकि उनके दिल ज़ुल्म की फ़िक्र करते हैं, और उनके लब शरात का जिक्र। 3 हिकमत से घर तामीर किया जाता है, और समझ से उसको क्याम होता है। 4 और 'इल्म के वसीले से कोठरियाँ, नफ़ीस — ओ — लतीफ़ माल से मालूम की जाती हैं। 5 'अक्लमंद आदमी ताकतवर है, बल्कि साहिब — ए — 'इल्म का ताकत बढ़ती रहती है। 6 क्यूँकि तू नेक सलाह लेकर जंग कर सकता है, और सलाहकारों की कसरत में सलामी है। 7 हिकमत बेवकूफ़ के लिए बहत बलन्द है, वह फ़ाटक पर मुँह नहीं खोल सकता। 8 जो बदी के मन्सूबे बँधता है, फ़ितनाओंगीज़ कहलाएगा। 9 बेवकूफ़ी का मन्सूबा भी गुनाह है, और ठड़ा करने वाले से लोगों को नफ़रत है। 10 अगर तू मुसीबत के दिन बेदिल हो जाए, तो तेरी ताकत बहुत कम है। 11 जो कल्त के लिए घसटी जाते हैं, उनको छुड़ा; जो मारे जाने को हैं उनको हवाले न कर। 12 अगर तू कहे, देखो, हम को यह मालूम न था, तो क्या दिलों को ज़ाँचने वाला यह नहीं समझता? और क्या तेरी जान का निगहबान यह नहीं जानता? और क्या वह हर शख्स को उसके काम के मुताबिक बदला न देगा? 13 ऐ मेरे बेटे, तू शहद खा, क्यूँकि वह अच्छा है, और शहद का छत्ता भी क्यूँकि वह तुझे मीठा लगता है। 14 हिकमत भी तेरी जान के लिए ऐसी ही होगी; अगर वह तुझे मिल जाए तो तेरे लिए बदला होगा, और तेरी उमीद नहीं दूरेगी। 15 ऐ शरीर, तू सादिक के घर की घाट में न बैठना, उसकी आरामगाह को गारत न करना; 16 क्यूँकि सादिक

सात बार गिरता है और फिर उठ खड़ा होता है; लेकिन शरीर बला में गिर कर पड़ा ही रहता है। 17 जब तेरा दुश्मन गिर पड़े तो खुशी न करना, और जब वह पछाड़ खाए तो दिलशाद न होना। 18 ऐसा न हो खुदावन्द इसे देखकर नाराज हो, और अपना कहर उस पर से उठा ले। 19 तू बदकिरदारों की बजह से बेजार न हो, और शरीरों पे रश्क न कर; 20 क्यूंकि बदकिरदार के लिए कुछ बदला नहीं। शरीरों का चिराग बुझा दिया जाएगा। 21 ऐसे मेरे बेटे, खुदावन्द से और बादशाह से डर; और मुफसिदों के साथ सुखबत न रख; 22 क्यूंकि उन पर अचानक आकर आएगी, और उन दोनों की तरफ से आगे बढ़ती हलाकत को कौन जानता है? 23 ये भी 'अकल्तमंदों की बातें हैं: 'अदातल में तरफदारी करना अच्छा नहीं। 24 जो शरीर से कहता है तू सादिक है, लोग उस पर लान्त करेंगे और उमरतें उस से नफरत रखेंगी; 25 लेकिन जो उसको डॉटरे है खुश होंगे, और उनकी बड़ी बरकत मिलेगी। 26 जो हक्क बात कहता है, लब्बों पर बोसा देता है। 27 अपना काम बाहर तैयार कर, उसे आगे लिए खेत में दूस्त कर ले; और उसके बाद अपना घर बना। 28 बेवजह अपने पड़ोसी के खिलाफ गावाही न देना, और अपने लबों से धोखा न देना। 29 यूँ न कह, "मैं उससे वैसा ही करूँगा जैसा उसने मुझसे किया, मैं उस आदमी से उसके काम के मुताबिक सुलूक करूँगा।" 30 मैं काहिल के खेत के और बैं'अकल के ताकिस्तान के पास से गुजरा, 31 और देखो, वह सब का सब कॉर्टों से भारा था, और बिच्छू बृद्धी से ढका था; और उसकी संगीन दीवार पिराई गई थी। 32 तब मैंने देखा और उस पर खबू गौर किया; हाँ, मैंने उस पर निगह की और 'इब्रत पाई। 33 थोड़ी सी नीट, एक और झपकी, जरा पड़े रहने को हाथ पर हाथ, 34 इसी तरह तेरी मुफलिमी राहजन की तरह, और तेरी तंगदस्ती हथियारबंद आदमी की तरह, आ पड़ेगी।

25 ये भी सुलेमान की अम्साल हैं, जिनकी शाह — ए — यहदाह हिज़कियाह के लोगों ने नकल की थी: 2 खुदा का जलाल राजादारी में है, लेकिन बादशाहों का जलाल मुआमिलात की तफ्तीश में। 3 आसमान की ऊँचाई और जमीन की गहराई, और बादशाहों के दिल की इन्तिहा नहीं मिलती। 4 चाँदी की मैल दूर करने से, सुनार के लिए बर्बन बन जाता है। 5 शरीरों को बादशाह के सामने से दूर करने से, उसका तज्ज्ञ सदाकत पर कार्बन हो जाएगा। 6 बादशाह के सामने अपनी बड़ाई न करना, और बड़े आदमियों की जगह खड़ा न होना; 7 क्यूंकि ये बेहत हैं कि हाकिम के आगे — सामने जिसको तेरी आँखों ने देखा है, तुझ से कहा जाए, अगे बढ़ कर बैठ। 11 कि तू पीछे हटा दिया जाए। 8 झगड़ा करने में जल्दी न कर, आखिरकार जब तेरा पड़ोसी तुझको जलील करे, तब तू क्या करेगा? 9 तू पड़ोसी के साथ अपने दावे का ज़िक्र कर, लेकिन किसी दूसरे का राज न खोल; 10 ऐसा न हो जो कोई उसे सुने तुझे स्वस्व करे, और तेरी बदनामी होती रहे। 11 बामोका' बातें, स्पहली टोकरियों में सोने के सेब हैं। 12 'अकल्तमंद मलामत करने वाले की बात, सुनने वाले के कान में सोने की बाली और कुन्दन का जेब है। 13 वफादार क़सिद अपने भेजने वालों के लिए, ऐसा है जैसे फसल काटने के दिनों में बर्फ की ठंडक, क्यूंकि वह अपने मालिकों की जान को ताजा दम करता है। 14 जो किसी झूटी लियाकत पर फ़ख़र करता है, वह बेबारिश बादल और हवा की तरह है। 15 तहमूल करने से हाकिम राजी हो जाता है, और नर्म जबान हड्डी को भी तोड़ डालती है। 16 क्या तूने शहद पाया? तू इतना खा जितना तेरे लिए काकी है। ऐसा न हो तू ज्यादा खा जाए और उगल डाल्से। 17 अपने पड़ोसी के घर बार बार जाने से अपने पाँवों को रोक, ऐसा न हो कि वह दिक होकर तुझ से नफरत करे। 18 जो अपने पड़ोसी के खिलाफ झूटी गवाही देता है वह गुर्ज़ और तलवार और तेज तीर है। 19 मुसीबत के बक्त बेवफा आदमी पर ऐतमाद, टूटा

दाँत और उखड़ा पाँव है। 20 जो किसी गमगीन के सामने गीत गाता है, वह गोया जाड़े में किसी के कपड़े उतारता और सज्जी पर सिरका डालता है। 21 अगर तेरा दुश्मन भूका हो तो उसे गेटी छिला, और अगर वह प्यासा हो तो उसे पानी पिला; 22 क्यूंकि तू उसके सिर पर अंगारों का ढेर लगाया, और खुदावन्द तज्ज्ञ को बदला देगा। 23 उत्तरी हवा मेह को लाती है, और गैबत गो जबान तरुश्ट-इका। 24 घर की छत पर एक कोने में रहना, इगड़ालू बीवी के साथ कुशादा मकान में रहने से बेहतर है। 25 वह खुशखबरी जो तू के मुल्क से आए, ऐसी है जैसे थके मांदे की जान के लिए ठंडा पानी। 26 सादिक का शरीर के आगे गिरना, गोया गन्दा नला और नापाक सोता है। 27 बहुत शहद खाना अच्छा नहीं, और अपनी बुजुर्गी का तालिब होना जेबा नहीं है। 28 जो अपने नफ्स पर जाबित नहीं, वह बेफरील और मिस्मारशुदा शहर की तरह है।

26 जिस तरह गमीं के दिनों में बर्फ और दिरी के बक्त बारिश, उसी तरह

बेवकूफ को 'इज्जत जेब नहीं देती। 2 जिस तरह गौरव्या आवारा फिरती और अबाबीत उड़ती रहती है, उसी तरह बे वजह ला'नत बेमतलाब है। 3 घोड़े के लिए चाबूक और गधे के लिए लगाम, लेकिन बेवकूफ की पीठ के लिए छड़ी है। 4 बेवकूफ को उसकी हिमाकत के मुताबिक जवाब न दे, मबादा तू भी उसकी तरह हो जाए। 5 बेवकूफ को उसकी हिमाकत के मुताबिक जवाब दे, ऐसा न हो कि वह अपनी नजर में 'अकल्तमंद ठहरे। 6 जो बेवकूफ के हाथ पैगाम भेजता है, अपने पांव पर कुल्हाड़ा मारता और नुकसान का प्याला पीता है। 7 जिस तरह लंगड़े की टौँग लड़खड़ाती है, उसी तरह बेवकूफ के मुँह में तमसील है। 8 बेवकूफ की ताँजीम करने वाला, गोया जवाहिर को पथरों के ढेर में रखता है। 9 बेवकूफ के मुँह में तमसील, शराबी के हाथ में चुभने वाले कैटी की तरह है। 10 जो बेवकूफों और राहगुजरों को मजदूरी पर लगाता है, उस तिरंदाज़ की तरह है जो सबको ज़ख्मी करता है। 11 जिस तरह कुत्ता अपने उगले हुए को फिर खाता है, उसी तरह बेवकूफ अपनी बेवकूफी को दोहराता है। 12 क्या तू उसको जो अपनी नजर में 'अकल्तमंद है देखता है? उसके मुकाबिले में बेवकूफ से ज्यादा उम्मीद है। 13 सुस्त आदमी कहता है, गाह में शेर है, शेर — ए — बरबर गलियों में है! 14 जिस तरह दरवाजा अपनी चूलों पर फिरता है, उसी तरह सुस्त आदमी अपने बिस्तर पर करवट बदलता रहता है। 15 सुस्त आदमी अपना हाथ थाली में डालता है, और उसे फिर मुँह तक लाना उसको थका देता है। 16 काहिल अपनी नजर में 'अकल्तमंद है, बल्कि दरील लाने वाले सात शख्सों से बढ़ कर। 17 जो ग्रस्ता चतनते हुए पराग झगड़े में दखल देता है, उसकी तरह है जो कूते को कान से पकड़ता है। 18 जैसा वह दीवाना जो जलती लकड़ियाँ और मौत के तीर फेंकता है, 19 वैसा ही वह शख्स है जो अपने पड़ोसी को दगा देता है, और कहता है, मैं तो दिल्लागी कर रहा था। 20 लकड़ी न होने से आग बुझ जाती है, इसलिए जहाँ चुगलखोर नहीं वहाँ झगड़ा मौकूफ हो जाता है। 21 जैसे अंगारों पर कोयले और आग पर इंधन है, वैसे ही झगड़ालू झगड़ा खड़ा करने के लिए है। 22 चुगलखोरकी बातें लजीज निवाले हैं, और वह खबू हजम हो जाती है। 23 उलफती, लब बदखावा दिल के साथ, उस ठीकी की तरह है जिस पर खोटी चाँदी मेंटी हो। 24 कीनावर दिल में दाना रखता है, लेकिन अपनी बातों से छिपाता है; 25 जब वह मीठी मीठी बातें करे तो उसका यकीन न कर, क्यूंकि उसके दिल में कमाल नफरत है। 26 अगर चे उसकी बदखावी मक्क में छिपी है, तो भी उसकी बड़ी जमा'अत के आमने सामने खोल दी जाएगी। 27 जो गढ़ा खोदता है, आप ही उसमें गिरेगा; और जो पथर ढलकाता है, वह पलटकर उसी पर पड़ेगा। 28 झूटी जबान उनका कीना रखती है जिनको उस ने घायल किया है, और चापलसू मुँह तबाही करता है।

कल की बारे में घमण्ड न कर, क्यौंकि तू नहीं जानता कि एक ही दिन मैं क्या होगा। 2 गैरे तेरी सिताइश करे न कि तेरा ही मूँह, बेगाना करे न कि तेरे ही लब। 3 पथर भारी है और रेत वजनदार है, लेकिन बेकूफ का दृश्यलाना इन दोनों से गिरोतर है। 4 गुस्सा सख्त बेरहमी और कहर सैलाब है, लेकिन जलन के सामने कौन खड़ा रह सकता है? 5 छिपी मुहब्बत से, खुली मलामत बेहतर है। 6 जो ज़ख्म दोस्त के हाथ से लगे वफ़ा से भरे है, लेकिन दुश्मन के बोसे बाइक्रात है। 7 आसदा जान को शहद के छते से भी नफरत है, लेकिन भक्ते के लिए हर एक क़दवी चीज़ मीठी है। 8 अपने मकान से आवारा इंसान, उस चिड़िया की तरह है जो अपने आशियाने से भटक जाए। 9 जैसे तेल और इन से दिल को फ़रहत होती है, वैसे ही दोस्त की दिली मश्वरत की शीरीनी से। 10 अपने दोस्त और अपने बाप के दोस्त को छोड़ न दे, और अपनी मुसीबत के दिन अपने भाई के घर न जा; क्यौंकि पड़ोसी जो नज़दीक हो उस भाई से जो दूँ हो बेहतर है। 11 ऐ मैं बेटे, 'अक्लमंद बन और मैं दिल को शाद कर, ताकि मैं अपने मलामत करने वाले को जवाब दे सकूँ। 12 होशियार बला को देखकर छिप जाता है; लेकिन नादान बढ़े चले जाते और नुकसान उठते हैं। 13 जो बेगाने का ज़ामिन हो उसके कपड़े छीन ले, और जो अजनबी का ज़ामिन हो उससे कुछ शिरकी रख ले। 14 जो सुबह सबवे उठकर अपने दोस्त के लिए बलन्द आवाज़ से दूँ आ — ए — खेर करता है, उसके लिए यह लान्त महसूब होगी। 15 झड़ी के दिन का लगातार टपका, और झगड़ालू बीवी यकसाँ हैं; 16 जो उसको रोकता है, हवा को रोकता है; और उसका दहना हथ तेल को पकड़ता है। 17 जिस तरह लोहा लोहे को तेज़ करता है, उसी तरह आदमी के दोस्त के चहरे की आब उसी से है। 18 जो अंजीर के दरखत की निगहबानी करता है उसका मेवा खाएगा, और जो अपने आका की खिदमत करता है 'इज्जत पाएगा। 19 जिस तरह पानी में चेहरा चेहरे से मुशाबह है, उसी तरह आदमी का दिल आदमी से। 20 जिस तरह पातल और हलाकत को आसदीन ही, उसी तरह इंसान की औंखे से नहीं होती। (Sheol h7585) 21 जैसे चौंदी के लिए भट्ठी है, वैसे ही आदमी के लिए उसकी तारीफ़ है। 22 अगर तू बेकूफ को अनाज के साथ उखली में डाल कर मूसल से कटे, तोभी उसकी हिमाकत उससे कभी ज़दा न होगी। 23 अपने रेवड़ों का हाल दरियाफ़ करने में दिल लगा, और अपने गल्लों को अच्छी तरह से देख; 24 क्यौंकि दौलत हमेशा नहीं रहती; और क्या ताज़वरी नसल — दर — नसल काईं रहती है? 25 सूखी धास जमा' की जाती है, फिर सज्जा नुमायाँ होता है; और पहाड़ों पर से चारा काट कर जमा' किया जाता है। 26 वे तेरी परवरिश के लिए हैं, और बकरियाँ तेरे मैदानों की कीमत हैं, 27 और बकरियों का दूध तेरी और तेरे खान्दान की ख़्राक और तेरी लौंडियों की गुज़ार के लिए काफ़ी है।

अगर तेरों कोई शरीर का पीछा न करे तोभी वह भागता है, लेकिन सादिक शेर — ए — बबर की तरह दिलेर है। 2 मुल्क की खाताकारी की वजह से हायिकम बहुत से है, लेकिन साहिब — ए — 'इल्म — ओ — समझ से इन्तिजाम बहाल रहेगा। 3 गरीब पर ज़ुल्म करने वाला कंगाल, मूसलाधार मैंहे है जो एक 'अक्लमंद भी नहीं छोड़ता। 4 शरी'अत को छोड़ने वाले, शरीरों की तारीफ़ करते हैं लेकिन शरी'अत पर 'अमल करने वाला 'अक्लमंद बेटा है, लेकिन फुज़लखर्चों का दोस्त अपने बाप को स्वा करता है। 8 जो नाजाइज़ सूद और नके' से अपनी दौलत बढ़ाता है, वह गरीबों पर रहम करने वाले के लिए जमा' करता है। 9 जो कान फेर लेता है कि

शरी'अत को न सुने, उसकी दुआ भी नफरतअगेज़ है। 10 जो कोई सादिक को गुराह करता है, ताकि वह बुरी राह पर चले, वह अपने गढ़े में आप ही गिरेगा; लेकिन कामिल लोग अच्छी चीजों के वारिस होंगे। 11 मालदार अपनी नज़र में 'अक्लमंद है, लेकिन 'अक्लमंद गरीब उसे परख लेता है। 12 जब सादिक फतहबाब होते हैं, तो बड़ी धमधाम होती है; लेकिन जब शरीर खड़े होते हैं, तो आदमी छूँडे नहीं मिलते। 13 जो अपने गुनाहों को छिपाता है, कामयाब न होगा; लेकिन जो उनका इकरार करके, उनको छोड़ देता है, उस पर रहमत होगी। 14 मुबारक है वह आदमी जो सदा डरता रहता है, लेकिन जो अपने दिल को सख्त करता है, मुसीबत में पड़ेगा। 15 गरीबों पर शरीर हाकिम, गरजते हुए शेर और शिकार के तालिब रीछ की तरह है। 16 बे'अक्ल हाकिम भी बड़ा जालिम है, लेकिन जो लालच से नफरत रखता है, उसकी उम्र दराज होगी। 17 जिसके सिर पर किसी का ख़ून है, वह गढ़े की तरफ भागेगा, उसे कोई न रोके। 18 जो रास्तरौ है रिहाई पाएगा, लेकिन टेढ़ा आदमी नागहान गिर पड़ेगा। 19 जो अपनी ज़मीन में काश्तकारी करता है, रोटी से सेर होगा, लेकिन बेमतलब के पीछे चलने वाला बहुत कंगाल हो जाएगा। 20 दियानतदार आदमी बरकतों से मांझर होगा, लेकिन जो दौलतमंद होने के लिए जल्दी करता है, वे सजा न छूटेगा। 21 तरफदारी करना अच्छा नहीं; और न यह कि आदमी रोटी के टकड़े के लिए गुनाह करे। 22 तंग चश्म दौलत जमा' करने में जल्दी करता है, और यह नहीं जानता कि मुकलिसी उसे आ दबाएगा। 23 आदमी को सरजनिश करनेवाला आखिरकार, ज़बानी खुशामद करनेवाले से ज्यादा मकबूल ठहरेगा। 24 जो कोई अपने वालिदैन को लटाता है और कहता है, कि यह गुनाह नहीं, वह गारतगर का साथी है। 25 जिसके दिल में लालच है वह झगड़ा खड़ा करता है, लेकिन जिसका भरोसा खुदाबन्द पर है वह तारो — तजा किया जाएगा। 26 जो अपने ही दिल पर भरोसा रखता है, बेकूफ है; लेकिन जो 'अक्लमंदी से चलता है, रिहाई पाएगा। 27 जो गरीबों को देता है, मुहतज़ न होगा; लेकिन जो आँख चुराता है, बहुत पतला'उन होगा। 28 जब शरीर खड़े होते हैं, तो आदमी छूँडे नहीं मिलते, लेकिन जब वह कना होते हैं, तो सादिक तरकी करते हैं।

जो बार बार तम्बीह पाकर भी गर्दनकशी करता है, अचानक बर्बाद किया जाएगा, और उसका कोई चारा न होगा। 2 जब सादिक इकबालमंद होते हैं, तो लोग खुश होते हैं लेकिन जब शरीर इछिलियार पाते हैं तो लोग आहे भरते हैं। 3 जो कोई हिक्मत से उलफत रखता है, अपने बाप को खुश करता है, लेकिन जो कस्तियों से सुहबत रखता है, अपना माल उड़ाता है। 4 बादशाह 'अद्ल से अपनी ममलुकत को क्याम बख़तान है लेकिन रिव्युत सितान उसको बीरान करता है। 5 जो अपने पड़ोसी की खुशामद करता है, उसके पाँक के लिए जाल बिछाता है। 6 बदकिरदार के गुनाह में फंदा है, लेकिन सादिक गाता और खुशी करता है। 7 सादिक गरीबों के मुं अपिनो का खायाल रखता है, लेकिन शरीर में उसको जानने की लियाकत नहीं। 8 ठंडेबाज़ शहर में आग लगाते हैं, लेकिन 'अक्लमंद कहर को दूर कर देते हैं। 9 अगर 'अक्लमंद बेकूफ से बहस करे, तो ख़वाह वह कहर करे ख़वाह हैं, कुछ इत्तिमान होगा। 10 ख़ैरेज लोग कामिल आदमी से कीना रखते हैं, लेकिन रास्तकार उसकी जान बचाने का इरादा करते हैं। 11 बेकूफ अपना कहर उगल देता है, लेकिन 'अक्लमंद उसको रोकता और पी जाता है। 12 अगर कोई हाकिम झूट पर कान लगाता है, तो उसके सब ख़ादिम शरीर हो जाते हैं। 13 गरीब और ज़बरदस्त एक टूसेरे से मिलते हैं, और खुदाबन्द दोनों की आँखे रोशन करता है। 14 जो बादशाह इमानदारी से गरीबों की 'अदालत करता है, उसका तख्त हमेशा काईंम रहता है। 15 झड़ी और तम्बीह हिक्मत बख़ती है, लेकिन जो लड़का बेत्रवियत छोड़ दिया जाता है, अपनी माँ को स्वा करेगा। 16 जब शरीर कामयाब होते हैं, तो

बदी ज्यादा होती है; लेकिन सादिक उनकी तबाही देखेंगे। 17 अपने बेटे की तरबियत कर; और वह तुझे आराम देगा, और तेरी जान को शादमान करेगा। 18 जहाँ रोया नहीं वहाँ लोग बैकेद हो जाते हैं, लेकिन शरी'अत पर 'अमल करने वाला मुबारक है। 19 नौकर बातों ही से नहीं सुधरता, क्यैंकि आगरचे वह समझता है तो भी परवा नहीं करता। 20 क्या त बेतामूल बोलने वाले को देखता है? उसके मुकाबले में बेवकूफ से ज्यादा उमीद है। 21 जो अपने घर के लड़के को लड़कपन से नाज़ मैं पालता है, वह आखिरकार उसका बेटा बन बैठेगा। 22 कहर आलदा आदमी फिनता खड़ा करता है, और गजबनाक गुनाह में ज़ियादती करता है। 23 आदमी का गुस्सर उसको पस्त करेगा, लेकिन जो दिल से फ़रोतन है 'इज्जत हासिल करेगा। 24 जो कोई चोर का शरीक होता है, अपनी जान से दुश्मनी रखता है; वह हल्क उठाता है और हाल बयान नहीं करता। 25 इंसान का डर फ़ंदा है, लेकिन जो कोई खुदावन्द पर भरोसा करता है महफ़ूज रहेगा। 26 हाकिम की मेरहबानी के तालिब बहत हैं, लेकिन इंसान का फैसला खुदावन्द की तरफ से है। 27 सादिक को बेइन्साफ़ से नफरत है, और शरीर को रास्तरौ से।

30 याका के बेटे अज़र के पैगाम की बातें: उस आदमी ने एतीएल, हाँ

इतीएलऔर उकाल से कहा: 1 2 यकीन मैं हर एक इंसान से ज्यादा और इंसान का सा समझ मुझ में नहीं 3 मैंने हिकमत नहीं सीखी और न मझे उस कुद्दस का 'इरफान हासिल है। 4 कोन आसमान पर चढ़ा और फिर नीचे उतरा? किसने हवा को अपनी मुशी में जमा'कर लिया? किसने पानी की चादर में बाँधा? किसने जमीन की हड्डे ठहराई? अगर तू जानता है, तो बता उसका क्या नाम है, और उसके बेटे का क्या नाम है? 5 खुदा का हर एक बात पाक है, वह उनकी सिप्प है जिनका भरोसा उस पर है। 6 त उसके कलाम में कुछ न बढ़ाना, ऐसा न हो वह तुझ को तम्बीह करे और तू झटा ठहरे। 7 मैंने तुझ से दो बातों की दरखास्त की है, मेरे मरने से फ़हले उनको मुझ से दो देग न कर। 8 बतालत और दरोगाहों को मुझ से दूर कर दे; और मुझ को न कंगाल कर न दौलतमंद, मेरी ज़स्तर के मुताबिक मुझे रोज़ी दे। 9 ऐसा न हो कि मैं सेर होकर इन्कार करूँ और कहूँ, खुदावन्द कौन है? या ऐसा न हो मुहताज होकर चोरी करूँ, और अपने खुदा के नाम की तकफ़ीर करूँ। 10 खादिम पर उसके आका के सामने तोहमत न लगा, ऐसा न हो कि वह तुझ पर लान्त न करे, और तू मुजरिम ठहरे। 11 एक नसल ऐसी है, जो अपने बाप पर लान्त करती है और अपनी माँ को मुबारक नहीं कहती। 12 एक नसल ऐसी है, जो अपनी निगाह में पाक है, लेकिन उसकी गंदगी उससे धोई नहीं गई। 13 एक नसल ऐसी है, कि वाह क्या ही बलन्द नजर है, और उनकी पलकें ऊपर को उठी रहती हैं। 14 एक नसल ऐसी है, जिसके दाँत तलबोंहैं, और डाढ़े छुरियाँ ताकि जमीन के गरीबों और बनी आदम के कंगालों को खा जाएँ। 15 जोंक की दो बेटियाँ हैं, जो 'दे दे' चिल्लाती हैं; तीन हैं जो कभी सेर नहीं होती, बल्कि चार हैं जो कभी 'बस' नहीं कहती। 16 पाताल और बाँझ का रिहम, और जमीन जो सेराब नहीं हुई, और आग जो कभी 'बस' नहीं कहती। (Sheol h7585) 17 वह आँख जो अपने बाप की हँसी करती है, और अपनी माँ की फरमाँबरदारी को हकीकी जानती है, बादी के कौचे उसको उचक ले जाएँगे, और गिर्द के बच्चे उसे खाएँगे। 18 तीन चीजें मेरे नजदीक बहुत ही 'अजीब हैं, बल्कि चार हैं, जिनको मैं नहीं जानता: 19 'उकाब की राह हवा मैं, और साँप की राह चटान पर, और जहाज की राह समन्दर मैं, और मर्द का चाल चलन जवान' औरत के साथ। 20 जानिया की राह ऐसी ही है; वह खाती है और अपना मुँह पोँछती है, और कहती है, मैंने कुछ बुराई नहीं की। 21 तीन चीजों से जमीन लरज़ौ है; बल्कि चार हैं, जिनकी वह बर्दाशत नहीं कर सकती: 22 गुलाम से जो बादशाही करने

लगे, और बेवकूफ से जब उसका पेट भरे, 23 और नामकबूल 'औरत से जब वह ब्याही जाए, और लौड़ी से जो अपनी बीबी की वारिस हो। 24 चार हैं, जो जमीन पर ना चीज़ है, लेकिन बहुत 'अकलमंद हैं: 25 चीटियाँ कमज़ोर मखलूक हैं, तो भी गर्मी में अपने लिए खुराक 'जमा' कर रखती हैं; 26 और साफान आगरचे नातवान मखलूक हैं, तो भी चटानों के बीच अपने घर बनाते हैं; 27 और टिटुयाँ जिनका कोई बादशह नहीं, तोभी वह परे बाँध कर निकलती हैं; 28 और छिपकली जो अपने हाथों से पकड़ती है, और तोभी शाही महलों में है। 29 तीन खुश रफतार हैं, बल्कि चार जिनका चलना खुश नुमा है: 30 एक तो शेर — ए — बबर जो सब हैवानात में बहादुर है, और किसी को पीठ नहीं दिखाता: 31 जंगली घोड़ा और बकरा, और बादशाह, जिसका सामना कोई न करे। 32 आग तूने बेवकूफी से अपने आपको बड़ा ठहराया है, या तूने कोई बुरा मन्सुला बाँधा है, तो हाथ अपने मुँह पर रख। 33 क्यैंकि यकीन दृढ़ बिलोने से मक्खन निकलता है, और नाक मरोड़ने से लह, इसी तरह कहर भड़काने से फ़साद खड़ा होता है।

31 लमविएल बादशाह के पैगाम की बातें जो उसकी माँ ने उसको सिखाईः

2 ऐसे बेटे, ऐसे रिहम के बेटे, तुझे, जिसे मैंने नज़ेर माँ कर पाया क्या कहूँ? 3 अपनी कुक्खत 'औरतों को न दे, और अपनी राहें बादशाहों को बिगाड़ने वालियों की तरफ न निकाल। 4 बादशाहों को ऐ लमविएल, बादशाहों को मरणखारी जेबा नहीं, और शराब की तलाश हाकिमों को शायान नहीं। 5 ऐसा न हो वह पीकर कवानीन को भूल जाए, और किसी मज़लस की हक्क तलकी करे। 6 शराब उसको पिलाओ जो मरने पर है, और मय उसको जो तल्ख जान है 7 ताकि वह पिए और अपनी तंगदरती फ़रामोश करे, और अपनी तबाह हाली को फिर याद न करे 8 अपना मुँह गैरी के लिए खोल उन सबकी वकालत को जो बेकस हैं। 9 अपना मुँह खोल, रस्ती से फैसलाकर, और गरीबों और मुहताजों का इस्साफ़ कर। 10 नेकोकार बीबी किसको मिलती है? क्यैंकि उसकी कद्र मरजान से भी बहत ज्यादा है। 11 उसके शौहर के दिल को उस पर भरोसा है, और उसे मुनाफ़े की कमी न होगी। 12 वह अपनी उम्र के तमाम दिनों में, उससे नेकी ही करेगी, बदी न करेगी। 13 वह ऊन और कतान ढंगती है, और खुशी के साथ अपने हाथों से काम करती है। 14 वह सौदागरों के जहाजों की तरह है, वह अपनी खुराक दूर से ले आती है। 15 वह रात ही को उठ बैठती है, और अपने घराने को खिलाती है, और अपनी लौटियों को काम देती है। 16 वह किसी खेत की बारे में सोचती है और उसे खरीद लेती है; और अपने हाथों के नफ़े से ताकिस्तान लगाती है। 17 वह मज़बूती से अपनी कमर बाँधती है, और अपने बाज़ुओं को मज़बूत करती है। 18 वह अपनी सौदागरी को सूदमंद पाती है। रात को उसका चिराग नहीं बुझता। 19 वह तकले पर अपने हाथ चलाती है, और उसके हाथ अटेन पकड़ते हैं। 20 वह गरीबों की तरफ अपना हाथ बढ़ाती है, हाँ, वह अपने हाथ मोहताजों की तरफ बढ़ाती है। 21 वह अपने घराने के लिए बर्फ़ से नहीं डरती, क्यैंकि उसके खानदान में हर एक सुर्ख पोश है। 22 वह अपने लिए निगारीन बाला पोश बनाती है, उसकी पोशाक महीन कतानी और अर्गावानी है। 23 उसका शौहर फाटक में मशरूह है, जब वह मुलक के बुजुगों के साथ बैठता है। 24 वह महीन कतानी कपड़े बनाकर बेचती है; और पटके सौदागरों के हवाले करती है। 25 'इज्जत और हुर्मत उसकी पोशाक है, और वह आँदांदा दिनों पर हँसती है। 26 उसके मुँह से हिकमत की बातें निकलती हैं, उसकी जबान पर शफ़कत की तातीम है। 27 वह अपने घराने पर बख्बरी निगाह रखती है, और काहिली की रोटी नहीं खाती। 28 उसके बेटे उठते हैं और उसे मुबारक कहते हैं, उसका शौहर भी उसकी तारीफ़ करता है: 29 "कि बहुतेरी बेटियों ने फ़ज़ीलत दिखाई है,

लेकिन तू सब से आगे बढ़ गई।” 30 हँस, धोका और जमाल बेसबात है, लेकिन वह 'औरत जो खुदावन्द से डरती है, सतुरा होगी। 31 उसकी मेहनत का बदला उसे दो, और उसके कामों से मजलिस में उसकी तारीफ हो।

वाइज़

1 शाह — ए — येस्त्रलेम दाऊद के बेटे वा'इज़ की बातें। 2 “बेकार ही बेकार, वा'इज़ कहता है, बेकार ही बेकार! सब कुछ बेकार है।” 3 इंसान को उस सारी मेहनत से जो वह दुनिया में करता है, क्या हासिल है? 4 एक नसल जाती है और दूसरी नसल आती है, लेकिन ज़मीन हमेशा कायाम रहती है। 5 सूरज निकलता है और सूरज ढलता भी है, और अपने तुलुं की जगह को जल्द चला जाता है। 6 हवा दलिखन की तरफ चली जाती है और चबकर खाकर उत्तर की तरफ फिरती है; ये हमेशा चबकर मारती है, और अपनी गश्त के मुताबिक दैरा करती है। 7 सब नदियाँ समन्दर में गिरती हैं, लेकिन समन्दर भर नहीं जाता; नदियाँ जहाँ से निकलती हैं उधर ही को फिर जाती हैं। 8 सब चीजें मान्दगी से भरी हैं, आदमी इसका बयान नहीं कर सकता। आँख देखें से असूदा नहीं होती, और कान सुनें से नहीं भरता। 9 जो हुआ वही फिर होगा, और जो चीज बन चुकी है वही है जो बनाई जाएगी, और दुनिया में कोई चीज नई नहीं। 10 क्या कोई चीज ऐसी है, जिसके बारे में कहा जाता है कि देखो ये तो नई है? वह तो साथिक में हम से पहले के ज़मानों में जैजूद थी। 11 अगलों की कोई यादगार नहीं, और अनेकालों की अपने बाद के लोगों के बीच कोई याद न होगी। 12 मैं वा'इज़ येस्त्रलेम में बनी — इसाईल का बादशाह था। 13 और मैं अपना दिल लगाया कि जो कुछ असामान के नीचे किया जाता है, उस सब की तपतीश — ओ — तहकीक करूँ। खुदा ने बनी आदम को ये सख्त दुख दिया है कि वह दुख दर्द में मुक्तिला रहें। 14 मैंने सब कामों पर जो दुनिया में किए जाते हैं नजर की; और देखो, ये सब कुछ बेकार और हवा की चरान हैं। 15 वह जो देखा है सीधा नहीं हो सकता, और नाकिस का शुमार नहीं हो सकता। 16 मैंने ये बात अपने दिल में कही, “देख, मैंने बड़ी तरक्की की बटिक उन सभों से जो मुझ से पहले येस्त्रलेम में थे, ज्यादा हिक्मत हासिल की, हाँ, मेरा दिल हिक्मत और दासिश में बड़ा कारदान हुआ।” 17 लेकिन जब मैंने हिक्मत के जानने और हिमाकत — ओ — जहालत के समझने पर दिल लगाया, तो मालम किया कि ये भी हवा की चरान है। 18 क्यूंकि बहुत हिक्मत में बहुत गम है, और 'इल्म में तरक्की दुख की ज्यादती है।

2 मैंने अपने दिल से कहा, आ, मैं तुझ को खुशी में आजमाऊँगा, इसलिए

‘अन्त कर ले, लो ये भी बेकार है।’ 2 मैंने हँसी की “दीवाना” कहा और खुशी के बारे में कहा, “इसपे क्या हासिल है?” 3 मैंने दिल में सोचा कि यिसम को मयनोशी से क्यूँकर ताजा करूँ और अपने दिल को हिक्मत की तरफ मायल रखूँ और कर्ये कर हिमाकत को पकड़े रहें, जब तक मालम करूँ कि बनी आदम की बहबूदी किस बात में है कि वह आसामान के नीचे उम्र भर यही किया करे। 4 मैंने बड़े — बड़े काम किए मैंने अपने लिए 'इमारतें बनाइं और मैंने अपने लिए ताकिस्तान लगाए। 5 मैंने अपने लिए बासीचे और बाग तैयार किए और उनमें हर क्रिस्म के मेवादार दरखत लगाए। 6 मैंने अपने लिए तालाब बनाए कि उनमें से बाग के दरखाओं का ज़खीरा सीधीं। 7 मैंने गुलामों और लौटिडों को खरीदा और नैकर — चाकर मेर धर में पैदा हुए, और जितने मुझ से पहले येस्त्रलेम में थे मैं उनसे कहीं ज्यादा गाय — बैल और भेड़ — बकरियों का मालिक था। 8 मैंने सोना और चाँदी और बादशाहों और सर्वों का खास खजाना अपने लिए जमा किया, मैंने गानेवालों और गाने वालियों को रखदा और बनी आदम के अस्त्राब — ए — ऐश यानी लौडियों को अपने लिए कसरत से इकट्ठा किया। 9 इसलिए मैं बुजुर्ज हुआ और उन सभों से जो मुझ से पहले येस्त्रलेम में थे ज्यादा बढ़ गया। मेरी हिक्मत भी मुझ में कायम रही। 10 और सब कुछ जो मेरी आँखें चाहती थीं मैंने उनसे बाज़ न रखदा। मैंने अपने दिल को किसी तरह

की खुशी से न रोका, क्यूँकि मेरा दिल मेरी सारी मेहनत से खुश हुआ और मेरी सारी मेहनत से मेरा हिस्सा यही था। 11 फिर मैंने उन सब कामों पर जो मैं हाथों ने किए थे, और उस मशक्कत पर जो मैंने काम करने में खीची थी, नजर की और देखा कि सब बेकार और हवा की चरान है, और दुनिया में कुछ कायदा नहीं। 12 और मैं हिक्मत और दीवानगी और हिमाकत के देखें पर मृतवज्जिह हुआ, क्यूँकि वह शख्स जो बादशाह के बाद आएगा क्या करेगा? वही जो होता चला आया है। 13 और मैंने देखा कि जैसी रोशनी को तारीकी पर फ़ज़ीलत है, वैरी ही हिक्मत हिमाकत से अफ़ज़ल है। 14 ‘अक्लमन्द अपनी आँखें अपने सिर में रखता है, लेकिन बेवकूफ़ अंधेरे में चलता है, तो भी मैं जान गया कि एक ही हादसा उन सब पर गुज़रता है। 15 तब मैंने दिल में कहा, “जैसा बेवकूफ़ पर हादसा होता है, वैसा ही मुझ पर भी होगा; फिर मैं क्यूँ ज्यादा ‘अक्लमन्द हुआ?’” इसलिए मैंने दिल में कहा कि ये भी बेकार है। 16 क्यूँकि न ‘अक्लमन्द और न बेवकूफ़ की यादगार हमेशा तक रहेगी, इसलिए कि अने बाले दिनों में सब कुछ फ़रामोश हो चुकेगा और ‘अक्लमन्द क्यूँकर बेवकूफ़ की तरह मरता है। 17 फिर मैं ज़िन्दगी से बेजार हुआ, क्यूँकि जो काम दुनिया में किया जाता है मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ; क्यूँकि सब बेकार और हवा की चरान है। 18 बल्कि मैं अपनी सारी मेहनत से जो दुनिया में की थी बेजार हुआ, क्यूँकि ज़स्तर है कि उसे उस आदमी के लिए जो मैं बाद आएगा छोड़ जाऊँ; 19 और कौन जानता है कि वह ‘अक्लमन्द होगा या बेवकूफ़?’ बहरहाल वह मेरी सारी मेहनत के काम पर, जो मैंने किया और जिसमें मैं दुनिया में अपनी हिक्मत ज़ाहिर की, ज़ाबित होगा। ये भी बेकार है। 20 तब मैं फिरा कि अने दिल को उस सारे काम से जो मैंने दुनिया में किया था ना उम्मीद करूँ, 21 क्यूँकि ऐसा शख्स भी है, जिसके काम हिक्मत और दानाई और कामयादी के साथ हैं, लेकिन वह उनको दूसरे आदमी के लिए जिसने उसमें कुछ मेहनत नहीं की उसकी मीरास के लिए छोड़ जाएगा। ये भी बेकार और बला — ए — ‘अज़ीम है। 22 क्यूँकि आदमी को उसकी सारी मशक्कत और जानकिशानी से, जो उसने दुनिया में की क्या हासिल है? 23 क्यूँकि उसके लिए उम्र भर गम है, और उसकी मेहनत मातम है, बल्कि उसका दिल रात को भी आराम नहीं पाता। ये भी बेकार है। 24 फिर इंसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं कि वह खाए और पिए और अपनी सारी मेहनत के बीच खुश होकर अपना जी बहलाए। मैंने देखा ये भी खुदा के हाथ से है; 25 इसलिए कि मुझ से ज्यादा कौन खा सकता और कौन मजा उड़ा सकता है? 26 क्यूँकि वह उस आदमी को जो उसके सामने अच्छा है, हिक्मत और दानाई और खुशी बख्ताता है; लेकिन गुनहगार को ज़हमत देता है कि वह जमा करे और अम्बार लगाए, ताकि उसे दे जो खुदा का पसंदीदा है। ये भी बेकार और हवा की चरान है।

3 हर चीज़ का एक 'मौका' और हर काम का जो आसामान के नीचे होता है

एक वक्त है। 2 पैदा होने का एक वक्त है, और मर जाने का एक वक्त है; दरखत लगाने का एक वक्त है, और लगाए हुए को उखाड़ने का एक वक्त है; 3 मार डालने का एक वक्त है, और शिका देने का एक वक्त है; ढाने का एक वक्त है, और तां'मीर करने का एक वक्त है; 4 रोने का एक वक्त है, और हँसने का एक वक्त है; 5 पत्थर फेंकने का एक वक्त है, और एक वक्त है; 6 साथ होने का एक वक्त है, और एक साथ होने से बाज़ रहने का एक वक्त है; 6 हासिल करने का एक वक्त है, और खो देने का एक वक्त है; रख छोड़ने का एक वक्त है, और फेंक देने का एक वक्त है; 7 फाड़ने का एक वक्त है, और सोने का एक वक्त है; चुप रहने का एक वक्त है, और बोलने का एक वक्त है; 8 मुहब्बत का एक वक्त है, और 'अदावत का एक वक्त है; ज़ंग का एक वक्त

है, और सुलह का एक वक्त है। 9 काम करनेवाले को उससे जिसमें वह मेहनत करता है, क्या हासिल होता है? 10 मैंने उस सख्त दुख को देखा, जो खुदा ने बनी आदम को दिया है कि वह मशक्त में मुलिला रहें। 11 उसने हर एक चीज़ को उसके वक्त में ख़ब बनाया और उसने अबदियत को भी उनके दिल में जागूजीन किया है; इसलिए कि इंसान उस काम को जो खुदा शुरू से आसिर तक करता है दरियापत्त नहीं कर सकता। 12 मैं यकीन जानता हूँ कि इंसान के लिए यही बेहतर है कि खुश वक्त हो, और जब तक जिन्दा रहे नेकी करें; 13 और ये भी कि हर एक इंसान खाए और पिए और अपनी सारी मेहनत से फायदा उठाएः ये भी खुदा की बारिश है। 14 और मुझ को यकीन है कि सब कुछ जो खुदा करता है हमेशा के लिए है, उसमें कुछ कमी बेशी नहीं हो सकती और खुदा ने ये इसलिए किया है कि लोग उसके सामने डरते रहें। 15 जो कुछ है वह पहले हो चुका; और जो कुछ होने को है, वह भी हो चुका; और खुदा गुजिशता को फिर तलब करता है। 16 फिर मैंने दुनिया में देखा कि 'अदालतगह में जल्म है, और सदाकत के मकान में शारात है। 17 तब मैंने दिल में कहा कि खुदा रास्तबाजों और शरीरों की 'अदालत करेगा क्यूँकि हर एक अग्र और हर काम का एक वक्त है। 18 मैंने दिल में कहा कि 'ये बनी आदम के लिए है कि खुदा उनको जाँचे और वह समझ लें कि हम खुद हैवान हैं।' 19 क्यूँकि जो कुछ बनी आदम पर गुजरता है, वही हैवान पर गुजरता है; एक ही हादसा दोनों पर गुजरता है, जिस तरह ये मरता है उसी तरह वह मरता है। हाँ, सब में एक ही साँस है, और इंसान को हैवान पर कुछ मर्तव्य नहीं; क्यूँकि सब बेकार है। 20 सब के सब एक ही जगह जाते हैं, सब के सब खाक से हैं, और सब के सब फिर खाक से जा मिलते हैं। 21 कौन जानता है कि इंसान की स्तर ऊपर चढ़ती और हैवान की स्तर ज़मीन की तरफ नीचे को जाती है? 22 फिर मैंने देखा कि इंसान के लिए इससे बेहतर कुछ नहीं कि वह अपने कारोबार में खुश रहे, इसलिए कि उसका हिस्सा यही है; क्यूँकि कौन उसे वापस लाएगा कि जो कुछ उसके बाद होगा देख ले?

4 तब मैंने फिर कर कर उस तमाम जल्म पर, जो दुनिया में होता है नजर की। और मजल्मों के आँखों को देखा, और उनको तसल्ली देनेवाला कोई न था; और उन पर जल्म करनेवाले जबरदस्त थे, लेकिन उनको तसल्ली देनेवाला कोई न था। 2 तब मैंने मुर्दों को जो आगे पर चुक, उन जिन्दों से जो अब जीते हैं ज्यादा मुवारक जाना; 3 बल्कि दोनों से नेक बख्त वह है जो अब तक हुआ ही नहीं, जिसने वह बुराई जो दुनिया में होती है नहीं देखी। 4 फिर मैंने सारी मेहनत के काम और हर एक अच्छी दस्तकारी को देखा कि इसकी वजह से आदमी अपने पड़ोसी से हसद करता है। ये भी बेकार और हवा की चरान हैं। 5 बे—दानिश अपने हाथ समेटा है और आप ही अपना गोशत खाता है। 6 एक मुर्दी भर जो चैन के साथ हो, उन दो मुर्दियों से बेहतर है जिनके साथ मेहनत और हवा की चरान हो। 7 और मैंने किर कर दुनिया के बेकारी को देखा: 8 कोई अकेला है और उसके साथ कोई दूसरा नहीं; उसके न बेटा है न भाई, तो भी उसकी सारी मेहनत की इनिहा नहीं; और उसकी आँख दौलत से सेर नहीं होती; वह कहता है मैं किसके लिए मेहनत करता और अपनी जान को ऐश से महस्म रखता हूँ? ये भी बेकार हैं, हाँ, ये सख्त दुख है। 9 एक से दो बेहतर हैं, क्यूँकि उनकी मेहनत से उनको बड़ा फायदा होता है। 10 क्यूँकि अगर वह गिरे तो एक अपने साथी को उठाएगा; लेकिन उस पर अफ़सोस जो अकेला है जब वह गिरता है, क्यूँकि कोई दूसरा नहीं जो उसे उठा खड़ा करे। 11 फिर अगर दो इकट्ठे टेरें तो गर्म होते हैं, लेकिन अकेला क्यूँकर गर्म हो सकता है? 12 और अगर कोई एक पर गालिब हो तो दो उसका सामना कर सकते हैं और तिहरी डोरी जल्द नहीं दृटी। 13 गरीब और 'अकलमन्द लड़का उस बड़े बेवकूफ

बा'दशाह से, जिसने नसीहत सुनना छोड़ दिया बेहतर है; 14 क्यूँकि वह कैद खाने से निकल कर बा'दशाही करने आया आवज़द ये कि वह जो सलतनत ही में पैदा हुआ गरीब हो चला। 15 मैंने सब जिन्दों को जो दुनिया में चलते फिरते हैं देखा कि वह उस दूसरे जवान के साथ थे जो उसका जानशीन होने के लिए खड़ा हुआ। 16 उन सब लोगों का याँनी उन सब का जिन पर वह हक्मरान था कुछ शुपार न था, तो भी वह जो उसके बाद उठेंगे उससे खुश न होंगे। यकीन ये भी बेकार और हवा की चरान है।

5 जब तू खुदा के घर को जाता है तो संजीदारी से कदम रख, क्यूँकि सुनने के लिए जाना बेवकूफों के जैसे जबीह पेश करने से बेहतर है, इसलिए कि वह नहीं समझते कि बुराई करते हैं। 2 बोलने में जलदबाजी न कर और तेरा दिल जलदबाजी से खुदा के सामने कुछ न कहे; क्यूँकि खुदा आसमान पर है और तू जमीन पर, इसलिए तेरी बातें मुख्तसर हों। 3 क्यूँकि काम की कसरत की बजह से खाबाब देखा जाता है और बेवकूफ की आवज़द बातों की कसरत होती है। 4 जब तू खुदा के लिए मन्तन माने, तो उसके अदा करने में देर न कर; क्यूँकि वह बेवकूफों से खुश नहीं है। तू अपनी मन्तन को प्पा कर। 5 तेरा मन्तन न मानना इससे बेहतर है कि तू मन्तन माने और अदा न करे। 6 तेरा मुँह तेरे जिस्म को गुनहगार न बनाए, और फ़िरिश्ते के सामने मत कह कि भूल—चक थी, खुदा तेरी आवज़ देखूँ बेजार हो और तेरे हाथों का काम बर्बाद करे? 7 क्यूँकि खबाबों की जियादिती और बतालत और बातों की कसरत से ऐसा होता है; लेकिन तू खुदा से डर। 8 अगर तू मुल्क में गरीबों को मजल्म और अदूल—ओ—इन्साफ़ को मतस्क देखे, तो इससे हैरान न हो; क्यूँकि एक बड़ों से बड़ा है जो मिहां करता है, और कोई इन सब से भी बड़ा है। 9 जमीन का हारिल सब के लिए है, बल्कि काशतकारी से बा'दशाह का भी काम निकलता है। 10 जरदोस्त सम्ये से आसदा न होगा, और दौलत का चाहनेवाला उसके बढ़ने से सेर न होगा: ये भी बेकार हैं। 11 जब माल की ज्यादती होती है, तो उसके खानेवाले भी बहुत हो जाते हैं; और उसके मालिक को अलावा इसके कि उसे अपनी आँखों से देखे और क्या फायदा है? 12 मेहनती की नीद मीठी है, चाहे वह थोड़ा खाए चाहे बहुत; लेकिन दौलत की फ़िरावानी दौलतमन्द को सोने नहीं देती। 13 एक बला — ए — 'अजीम है जिसे मैंने दुनिया में देखा, याँनी दौलत जिसे उसका मालिक अपने नुकसान के लिए रख छोड़ता है, 14 और वह माल किसी बुरे हाथसे बेर्बाद होता है, और अगर उसके घर में बेटा पैदा होता है तो उस वक्त उसके हाथ में कुछ नहीं होता। 15 जिस तरह से वह अपनी माँ के पेट से निकला उसी तरह नंगा जैसा कि आया था फिर जाएगा, और अपनी मेहनत की मज़दूरी में कुछ न पाएगा जिसे वह अपने हाथ में ले जाए। 16 और ये भी बला — ए — 'अजीम है कि ठीक जैसा वह आया था वैसा ही जाएगा, और उसे इस फ़ज़ल मेहनत से क्या हासिल है? 17 वह उम्र भर बेचैनी में खाता है, और उसकी दिकदारी और बेजारी और खफ़ासी की इन्तिहा नहीं। 18 लो! मैंने देखा कि ये खुब है, बल्कि खुशनुमा है कि आदमी खाए और पिये और अपनी सारी मेहनत से जो वह दुनिया में करता है, अपनी तमाम उम्र जो खुदा ने उसे बरबादी है राहत उठाएँ; क्यूँकि उसका हिस्सा यही है। 19 नीज हर एक आदमी जिसे खुदा ने माल — ओ — अस्बाब बरबाद, और उसे तौकीक दी कि उसमें से खाए और अपना हिस्सा ले और अपनी मेहनत से खुश रहे; ये तो खुदा की बारिश है। 20 फिर वह अपनी जिन्दागी के दिनों को बहुत याद न करेगा, इसलिए कि खुदा उसकी खुशदिली के मुताबिक उससे सुलूक करता है।

6 एक जुबानी है जो मैंने दुनिया में देखी, और वह लोगों पर गिराँ है: 2 कोई ऐसा है कि खुदा ने उसे धन दौलत और 'इज़ज़त बरबादी है, यहाँ तक कि

उसकी किसी चीज़ की जिसे उसका जी चाहता है कमी नहीं; तो भी खुदा ने उसे तौफीक नहीं दी कि उससे खाए, बल्कि कोई अजनबी उसे खाता है। ये बेकार और सख्त बीमारी है। 3 अगर आदमी के सौ फ़र्जन्द हों, और वह बहुत बरसों तक जीता रहे यहाँ तक कि उसकी उम्र के दिन बेशपार हों, लेकिन उसका जी खुशी से सेर न हो और उसका दफन न हो, तो मैं कहता हूँ कि वह हमल जो गिर जाए उससे बेहतर है। 4 क्यूँकि वह बतालत के साथ आया और तारीकी में जाता है, और उसका नाम अंधेरे में छिपा रहता है। 5 उसने सूरज को भी न देखा, न किसी चीज़ को जाना, फिर वह उस दसरे से ज्यादा आराम में है। 6 हाँ, अगर वह दो हजार बरस तक जिन्दा रहे और उसे कुछ राहत न हो। क्या सब के सब एक ही जगह नहीं जाते? 7 आदमी की सारी मेहनत उसके मौह के लिए है, तो भी उसका जी नहीं भरता; 8 क्यूँकि 'अक्लमन्द' को बेवकूफ पर क्या फ़ज़ील है? और गरीब को जी जिन्दों के सामने चलना जानता है, क्या हासिल है? 9 आँखों से देख लेना आरज़ की आवारगी से बेहतर है: ये भी बेकार और हवा की चरान है। 10 जो कुछ हुआ है उसका नाम जमाना — ए — कीदीम में रखखा गया, और ये भी मालूम है कि वह इंसान है, और वह उसके साथ जो उससे ताकतवर है डागड नहीं सकता। 11 चौंके बहु सी चीजें हैं जिनसे बेकार बहुतायत होती है, फिर इंसान को क्या फ़ायदा है? 12 क्यूँकि कौन जानता है कि इंसान के लिए उसकी जिन्दगी में, यानी उसकी बेकार जिन्दगी के तमाम दिनों में जिनको वह परछाई की तरह बसर करता है, कौन सी चीज़ फ़ाइदेमन्द है? क्यूँकि इंसान को कौन बता सकता है कि उसके बाद दुनिया में क्या वाकें होगा?

7 नेक नामी बेशबहा 'इत्र से बेहतर है, और मरने का दिन पैदा होने के दिन से' 2 मातम के घर में जाना दावत के घर में दाखिल होने से बेहतर है क्यूँकि सब लोगों का अन्जाम यही है, और जो जिन्दा है अपने दिल में इस पर सोचेगा। 3 गमगीनी हँसी से बेहतर है, क्यूँकि चेहरे की उदासी से दिल सुधर जाता है। 4 दाना का दिल मातम के घर में है लेकिन बेवकूफ का जी 'श्वत्थानी से लगा है। 5 इंसान के लिए 'अक्लमन्द' की सरजनिश सुनना बेवकूफों का राग सुनने से बेहतर है। 6 जैसा हाँड़ी की नीचे कॉटों का चटकना वैसा ही बेवकूफ का हँसना है; ये भी बेकार हैं। 7 यक्कीन ज़रूम 'अक्लमन्द आदमी को दीवाना बना देता है और रिश्वत 'अक्ल को तबाह करती है। 8 किसी बात का अन्जाम उसके आगाज से बेहतर है और बुर्दार भुतकंबिर मिजाज से अच्छा है। 9 त अपने जी में खुबा होने में जल्दी न कर, क्यूँकि खफ़ी बेवकूफों के सीनों में रहती है। 10 त ये न कह कि, अगले दिन इनसे यकून बेहतर थे? क्यूँकि त 'अक्लमन्दी' से इस अग्र की तहकीक नहीं करता। 11 हिकमत ख़बी में मीरास के बराबर है, और उनके लिए जो सूरज को देखते हैं ज्यादा सदमन्द है। 12 क्यूँकि हिकमत वैसी ही पनाहगाह है जैसे स्पस्य, लेकिन 'इलम की खास ख़बी' ये है कि हिकमत साहिब — ए — हिकमत की जान की मुहाफ़िज़ है। 13 खुदा के काम पर गौर कर, क्यूँकि कौन उस चीज़ को सीधा कर सकता है जिसको उसने टेढ़ा किया है? 14 इक्कालामन्दी के दिन खुशी में मशगूल हो, लेकिन मुसीबत के दिन में सोच; बल्कि खुदा ने इसको उसके मुकाबिल बना रखवा है, ताकि इंसान अपने बाद की किसी बात को दरियापत न कर सके। 15 मैंने अपनी बेकारी के दिनों में ये सब कुछ देखा; कोई रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी में मरता है, और कोई बदकिरदार अपनी बदकिरदारी में उम्र दराजी पाता है। 16 हृद से ज्यादा नेकोकर न हो, और हिकमत में 'एतदाल से बाहर न जा; इसकी क्या ज़स्तर है कि त अपने आप को बबोद करे? 17 हृद से ज्यादा बदकिरदार न हो, और बेवकूफ न बन; तू अपने बक्त से पहले काहे को मरेगा? 18 अच्छा है कि तू इसकी भी पकड़े रहे, और उस पर से भी हाथ न उठाएँ; क्यूँकि जो खुदा तरस है

इन सब से बच निकलेगा। 19 हिकमत साहिब — ए — हिकमत को शहर के दस हाकिमों से ज्यादा ताकतवर बना देती है। 20 क्यैंकि ज़मीन पर ऐसा कोई रास्तबाज़ इंसान नहीं कि नेकी ही करे और खता न करे। 21 नीज उन सब बातों के सुनने पर जो कही जाएँ कान न लगा, ऐसा न हो कि तू सुन ले कि तेरा नौकर तुझ पर लान्त करता है; 22 क्यैंकि तू तो अपने दिल से जानता है कि तूने आप इसी तरह से औरों पर लान्त की है 23 मैंने हिकमत से ये सब कुछ आज़माया है। मैंने कहा, 'ऐ 'अक्लमन्द बर्नँसा', लेकिन वह मुझ से कही दूर थी। 24 जो कुछ है सो दूर और बहुत गहरा है, उसे कौन पा सकता 25 मैंने आपने दिल को मुतवज्जिह किया कि जानूँ और तफ्तीश करूँ और हिकमत और खिरद को दरियापत करूँ और समझूँ कि बुराई हिमाकत है और हिमाकत दीवानी। 26 तब मैंने मौत से तल्खतर उस 'औरत को पाया, जिसका दिल फंदा और जाल है और जिसके हाथ हथकड़ीयाँ हैं। जिससे खुदा खुश है वह उस से बच जाएगा, लेकिन गुनहगार उसका शिकार होगा। 27 देख, वाँइज़ कहता है, मैंने एक दूसरे से मुकाबला करके ये दरियापत किया है। 28 जिसकी मैंने दिल को अब तक तलाश है पर मिला नहीं। मैंने हजार में एक मर्द पाया, लेकिन उन सभों में 'औरत एक भी न मिली। 29 लो मैंने सिर्फ़ इतना पाया कि खुदा ने इंसान को रास्त बनाया, लेकिन उन्होंने बहुत सी बान्दिशें तज्जीज़ की।

8 'अक्लमन्द' के बराबर कौन है? और किसी बात की तफ्सीर करना कौन जानता है? इंसान की हिकमत उसके चेहरे को रोशन करती है, और उसके चेहरे की सुख्ती उससे बदल जाती है। 2 मैं तुझे सलाह देता हूँ कि तू बाँदशाह के हक्म को खुदा की क़सम की वजह से मानता रह। 3 तु ज़लदबाज़ी करके उसके सामने से गायब न हो और किसी भी बात पर इसरार न कर, क्यैंकि वह जो कुछ चाहता है करता है। 4 इसलिए कि बाँदशाह का हुक्म बाइ़िलियाह है, और उससे कौन कहेगा कि त ये क्या करता है? 5 जो कोई हुक्म मानता है, बुराई को न टेखेगा और दानिशमंद का दिल मैंके और इन्साफ को समझता है। 6 इसलिए कि हर अग्र का मौका और कायदा है, लेकिन इंसान की मुसीबत उस पर भारी है। 7 क्यैंकि जो कुछ होगा उसको मालूम नहीं, और कौन उसे बता सकता है कि क्यैंकर होगा? 8 किसी आदमी को स्थ पर इजितियाह नहीं कि उसे रोक सके, और मरने का दिन भी उसके इजितियाह से बाहर है; और उस लड़ाई से छुट्टी नहीं मिलती और न शरारत उसको जो उसमे गर्क है छुड़ाएगी 9 ये सब मैंने देखा और अपना दिल सारे काम पर जो 'दुनिया' में किया जाता है लगाया। ऐसा बक्त है जिसमें एक शरस्व दूसरे पर हुक्मत करके अपने ऊपर बला लाता है। 10 इसके 'अलतावा' मैंने देखा कि शरीर गाड़े गए, और लोग भी आए और रास्तबाज़ पाक मकाम से निकले और अपने शहर में फरामोश हो गए; ये भी बेकार हैं। 11 क्यैंकि ब्रे काम पर सजा का हुक्म फैरन नहीं दिया जाता, इसलिए बनी आदम का दिल उनमें बुराई पर लाशिदत मायल है। 12 अगर चे गुनहगार सौ बार बुराई करें और उसकी उम्र दराजी हो, तो भी मैं यकीन जानता हूँ कि उन ही का भला होगा जो खुदा तरस है और उसके सामने काँपते हैं; 13 लेकिन गुनहगार का भला कभी न होगा, और न वह अपने दिनों को साये की तरह बढ़ाएगा, इसलिए कि वह खुदा के सामने काँपता नहीं। 14 एक बेकार है जो ज़मीन पर वकूँ में आती है, कि नेकोकार लोग हैं जिनको वह कुछ पेश आता है जो चाहिए था कि बदकिरदारों को पेश आता; और शरीर लोग हैं जिनको वह कुछ मिलता है, जो चाहिए था कि नेकोकारों को मिलता है। 15 तब मैंने खुरमी की ताँरीफ़ की, क्यैंकि 'दुनिया' में इंसान के लिए कोई चीज़ इससे बेहतर नहीं कि खाए और पिए और खुश रहे, क्यैंकि ये उसकी मेहनत के दौरान में उसकी जिन्दगी के तमाम दिनों में जो खुदा ने दुनिया में उसे बख्ती उसके साथ रहेगा। 16 जब मैंने अपना दिल लगाया कि

हिकमत सीखूँ और उस कामकाज को जो जमीन पर किया जाता है देखूँ क्यूँकि कोई ऐसा भी है जिसकी आँखों में न रात को नीद आती है न दिन को। 17 तब मैंने खदा के सारे काम पर निगाह की और जाना कि इंसान उस काम को, जो दुनिया में किया जाता है, दरियाप्त नहीं कर सकता। अगरचे इंसान कितनी ही मेहनत से उसकी तलाश करे, लेकिन कुछ दरियाप्त न करेगा; बल्कि हर तरह 'अक्लमन्द' को गुमान हो कि उसको मालूम कर लेगा, लेकिन वह कभी उसको दरियाप्त नहीं कर सकेगा।

9 इन सब बातों पर मैंने दिल से गौर किया और सब हाल की तपतीश की, और मालूम हआ कि सादिक और 'अक्लमन्द' और उनके काम खदा के हाथ में हैं; सब कुछ इंसान के सामने है, लेकिन वह न मुहब्बत जानता है न 'अदावत। 2 सब कुछ सब पर एक जैसा गुजरता है, सादिक और शरीर पर, नेकोकार, और पाक और नापाक पर, उस पर जो कुर्बानी पेश करता है और उस पर जो कुर्बानी नहीं पेश करता एक ही हादसा वाकें होता है। जैसा नेकोकार है, वैसा ही गुनहगार है, जैसा वह जो कसम खाता है, वैसा ही वह जो कसम से डरता है। 3 सब चीजों में जो दुनिया में होती हैं एक जुबनी ये है कि एक ही हादसा सब पर गुजरता है; हाँ, बनी आदम का दिल भी शरात से भरा है, और जब तक वह जीते हैं हिमाकत उनके दिल में रहती है, और इसके बाद मुर्दों में शामिल होते हैं। 4 चूंकि जो जिन्दों के साथ है उसके लिए उम्मीद है, इसलिए जिन्दा कुत्ता मुर्दी शेर से बेहतर है। 5 क्यूंकि जिन्दा जानते हैं कि वह मरेंगे, लेकिन मर्दे कुछ भी नहीं जानते और उनके लिए और कुछ अब नहीं क्यूंकि उनकी याद जाती रही है। 6 अब उनकी मुहब्बत और 'अदावत — ओ — हसद सब हलाक हो गए, और ता होशा उन सब कामों में जो दुनिया में किए जाते हैं, उनका कोई हिस्सा नहीं। 7 अपनी राह चला जा, खुशी से अपनी रोटी खा और खुशदिली से अपनी मर्यादी; क्यूंकि खुदा तेरे 'आमाल' को कुबूल कर चका है। 8 तेरा लिखास हमेशा सफेद हो, और तेरा सिर चिकनाहट से खाली न रहे। 9 अपनी बेकारी की जिन्दगी के सब दिन जो उसने दुनिया में तड़े बख्ती है, हाँ, अपनी बेकारी के सब दिन, उस बीवी के साथ जो तेरी प्यारी है ऐश कर ले कि इस जिन्दगी में और तेरी उस मेहनत के दैराम में जो तू ने दुनिया में की तेरा यही हिस्सा है। 10 जो काम तेरा हाथ करने को पाए उसे मक्तुर भर कर क्यूंकि पाताल में जहाँ तू जाता है न काम है न मन्सूला, न 'इल्म न हिकमत। (Sheol h7585) 11 फिर मैंने तज़ज्ज़ह की और देखा कि दुनिया में न तो दौड़ में तेज रफतार को सबकत है न जग में ज़ोरआवर को फतह, और न रोटी 'अक्लमन्द' को मिलती है न दौलत 'अक्लमन्दों' को, और न 'इज़ज़त 'अक्ल बालों' को; बल्कि उन सब के लिए वक्त और हाविसा है। 12 क्यूंकि इंसान अपना वक्त भी नहीं पहचानता; जिस तरह मछलियाँ जो मुसीबत के जाल में फिरपतार होती हैं, और जिस तरह चिड़ियाँ फंदे में फसाई जाती हैं उसी तरह बनी आदम भी बदबूली में, जब अचानक उन पर आ पड़ती है, फंस जाते हैं। 13 मैंने ये भी देखा कि दुनिया में हिकमत है और ये मुझे बड़ी चीज मालूम है। 14 एक छोटा शहर था और उसमें थोड़े से लोग थे, उस पर एक बड़ा बादशाह चढ़ आया और उसका शिराव किया और उसके मुकाबिल बड़े — बड़े दमदमे बैंधे। 15 मगर उस शहर में एक कंगाल 'अक्लमन्द' मर्द पाया गया और उसने अपनी हिकमत से उस शहर को बचा लिया, तोभी किसी शख्स ने इस गरीब मर्द को याद न किया। 16 तब मैंने कहा कि हिकमत जोर से बेहतर है, तोभी गरीब की हिकमत की तहकीर होती है, और उसकी बातें सुनी नहीं जाती। 17 'अक्लमन्दों' की बातें जो आहिस्तगी से कही जाती हैं, बेकूफों के सरदार के शोर से ज्यादा सुनी जाती है। 18 हिकमत लडाई के हथियारों से बेहतर है, लेकिन एक गुनहगार बहुत सी नेकी को बर्बाद कर देता है।

10 मुर्दा मक्कियों 'अन्तार के 'इत्र को बदबूदार कर देती हैं, और थोड़ी सी हिमाकत हिकमत — ओ — 'इज़ज़त को मात कर देती है। 2

'अक्लमन्द' का दिल उसके दहने हाथ है, लेकिन बेकूफ का दिल उसकी बाई तरफ। 3 हाँ, बेकूफ जब राह चलता है तो उसकी अक्ल उड़ जाती है और वह सब से कहता है कि मैं बेकूफ हूँ। 4 अगर हाकिम तुझ पर कहर करे तो अपनी जगह न छोड़, क्यूंकि बर्दाशत बड़े बड़े गुनाहों को दबा देती है। 5 एक जुबनी है जो मैंने दुनिया में देखी, जैसे वह एक खता है जो होकिम से सरजद होती है। 6 हिमाकत बालानशीन होती है, लेकिन दौलतमंद नीचे बैठते हैं। 7 मैंने देखा कि नौकर थोड़ों पर सबरा होकर फिरते हैं, और सरदार नौकरों की तरह जमीन पर पैदल चलते हैं। 8 गढ़ा खोदने वाला उसी में गिरेगा और दीवार में रखना करने वाले को सौंप डेंगा। 9 जो कोई पथरों को काटता है उससे चोट खाएगा और जो लकड़ी चीरता है उससे खतरे में है। 10 अगर कुल्हादा कुन्द है और आदमी धार तेज़ न करे तो बहुत जोर लगान पड़ता है, लेकिन हिकमत हिदायत के लिए मुफीद है। 11 अगर सौंप ने अफसून से पहले डसा है तो अफसूनगर को कुछ फायदा न होगा। 12 'अक्लमन्द' के मुँह की बातें लतीफ हैं लेकिन बेकूफ के होट उसी को मिलत जाते हैं। 13 उसके मुँह की बातों की इन्विटा दिमाकत है और उसकी बातों की इन्विटा फितानांगेज अबलही। 14 बेकूफ भी बहुत सी बातें बनाता है लेकिन आदमी नहीं बता सकता है कि क्या होगा और जो कुछ उसके बाद होगा उसे कौन समझा सकता है? 15 बेकूफों की मेहनत उसे थकाती है, क्यूंकि वह शहर को जाना भी नहीं जानता। 16 ऐ ममलुक तुझ पर अफसोस, जब नाबालिग तेरा बादशाह हो और तेरे सरदार सुबह को खाएँ। 17 नेकबूत है तू ऐ सरजमीन जब तेरा बादशाह शरीफजादा हो और तेरे सरदार मुनासिब बक्त पर तवानाई के लिए खाएँ और न इसलिए कि बदमस्त हों। 18 काहिली की बजह से कडियाँ झुक जाती हैं, और हाथों के हीले होने से छत टपकती हैं। 19 हँसने के लिए लोग दावत करते हैं, और मर्यादा को खुश करती है, और सप्ते से सब मक्करप धो होते हैं। 20 तू अपने दिल में भी बादशाह पर लान्त न कर और अपनी ख्वाबगाह में भी मालदार पर लान्त न कर क्यूंकि हवाई चिड़िया बात को ले उड़ेगी और परदार उसको खोल देगा।

11 अपनी रोटी पानी में डाल दे क्यूंकि तू बहुत दिनों के बाद उसे पाएगा। 2

सात को बल्कि आठ को हिस्सा दे क्यूंकि तू नहीं जानता कि जमीन पर क्या बला आएगी। 3 जब बादल पानी से भरे होते हैं तो जमीन पर बरस कर खाली हो जाते हैं और अगर दरखत दाखिल की तरफ या उत्तर की तरफ गिरे तो जहाँ दरखत गिरता है वही पड़ा रहता है। 4 जो हवा का सूख देखता रहता है वह बोता नहीं और जो बादलों को देखता है वह काटता नहीं। 5 जैसा तू नहीं जानता है कि हवा की क्या राह है और हामिला के रिहम में हड्डियाँ कँक्कर बढ़ती हैं, वैसा ही तू खदा के कामों को जो सब कुछ करता है नहीं जानेगा। 6 सुबह को अपना बीज बो और शाम को भी अपना हाथ ढीला न होने दे, क्यूंकि तू नहीं जानता कि उनमें से कौन सा कामयाब होगा, ये या वह या दोनों के दोनों बारबर कामयाब होंगे। 7 नूर शरीरन है और आफताब को देखना आँखों को अच्छा लगता है। 8 हाँ, अगर आदमी बरसों जिन्दा रहे, तो उनमें खुशी करें; लेकिन तारीकी के दिनों को याद रखें, क्यूंकि वह बहत होंगे। सब कुछ जो आता है बेकार है। 9 ऐ जवान, तू अपनी जवानी में खुश हो, और उसके दिनों में अपना जी बहला। और अपने दिल की राहों में, और अपनी आँखों की मन्जूरी में चल। लेकिन याद रख कि इन सब बातों के लिए खुदा तुझ को 'अदालत में लाएगा। 10 फिर गम को अपने दिल से दूर कर, और बुराई अपने जिस्म से निकाल डाल; क्यूंकि लड़कपन और जवानी दोनों बेकार हैं।

12 और अपनी जबानी के दिनों में अपने खालिक को याद कर, जब कि व्हे

दिन हृनृज नहीं आए और वह बरस नजदीक नहीं हुए, जिनमें तू कहेगा कि इनसे मुझे कुछ खुशी नहीं। 2 जब कि हृनृज सूरज और रोशनी चाँद सितारे तारीक नहीं हुए, और बा'दल बारिश के बाद फिर जमा' नहीं हुए; 3 जिस रोज़ घर के निगाहबान थरथराने लगे और ताकतवर लोग कुबड़े हो जाएँ और पीसने वालियाँ स्क जाएँ इसलिए कि वह थोड़ी सी है, और वह जो खिड़कियों से झाँकती है धूंदला जाएँ, 4 और गल्ती के किवाड़े बन्द हो जाएँ, जब चक्की की आवाज धीमी हो जाएँ और इंसान चिड़िया की आवाज से चौंक उठे, और नगमे की सब बेटियाँ जईफ हो जाएँ। 5 हाँ, जब वह चढ़ाई से भी डर जाएँ और दहशत राह में हो, और बा'दाम के फूल निकले और टिड़ी एक बोझ मालूम हो, और ख्वाहिश मिट जाए क्यूंकि इंसान अपने हमेशा के मकान में चला जायेगा और मातम करने वाले गली गली पिरेंगे। 6 पहले इससे कि चाँदी की डोरी खोली जाएँ, और सोने की कटोरी तोड़ी जाएँ और घड़ा चश्मे पर फोड़ा जाएँ, और हौज का चर्ख टूट जाएँ, 7 और खाक — खाक से जा मिले जिस तरह आगे मिली हुई थी, और स्फुर खुदा के पास जिसने उसे दिया था वापस जाए। 8 बेकार ही बेकार बा'इज़ कहता है, सब कुछ बेकार है। 9 गरज अज बस की बा'इज़ 'अक्लमन्द था, उसने लोगों को तालीम दी; हाँ, उसने बखूबी गौर किया और खब तजवीज़ की और बहुत सी मसलें क्रीने से बयान की। 10 बा'इज़ दिल आवेज बातों की तलाश में रहा, उन सच्ची बातों की जो रास्ती से लिखी गईं। 11 'अक्लमन्द की बातें पैनों की तरह हैं, और उन खूँटियों की तरह जो साहिबान — ए — मजलिस ने लगाई हों, और जो एक ही चरवाहे की तरफ से मिली हों। 12 इसलिए अब ऐ मेरे बेटे, इनसे नसीहत पज़ीर हो, बहुत किताबें बनाने की इन्तेहा नहीं है और बहुत पढ़ना जिसम को थकाता है। 13 अब सब कुछ सुनाया गया; हासिल — ए — कलाम ये हैं: खुदा से डर और उसके हृक्षमों को मान कि इंसान का फर्ज़ — ए — कुल्ली यही है। 14 क्यूंकि खुदा हर एक फ़ेल को हर एक पोशीदा चीज़ के साथ, चाहे भर्ती हो चाहे बुरी, 'अदालत में लाएगा।

गजलतुल

१ सुलेमान की गजल — उल — गजलाता।

चूम, क्यूँकि तेरा इश्क मय से बेहतर है। ३ तेरे 'इश्क की खुशबू खुशगवार है तेरा नाम 'इश्क रेखता है, इसीलिए कुँवारियाँ तुझ पर आशिक हैं। ४ मुझे खीच ले, हम तेरे पांछे दौड़ीं। बादशाह मुझे अपने महल में ले आया। हम तुझ में शादमान औं मस्सर होंगी, हम तेरे 'इश्क का बयान मय से ज्यादा करेंगी। वह सच्चे दिल से तुझ पर 'आशिक हैं। ५ ऐ येस्शलेम की बेटियों, मैं सियाहफाम लेकिन खब्बसूरत हैं कीदार के खेंगी औं सुलेमान के पर्दों की तरह। ६ मुझे मत देखो कि मैं सियाहफाम हूँ, क्यूँकि मैं धूप की जली हूँ। मेरी माँ के बेटे मुझ से नाखुश थे, उन्होंने मुझ से खजर के बागों की निगाहबानी कराई; लेकिन मैंने अपने खजर के बाग की निगाहबानी नहीं की ७ ऐ मेरी जान के प्यारे! मुझे बता, तू अपने गल्ले को कहाँ चराता है, औं दोपहर के बक्त कहाँ बिठाता है? क्यूँकि मैं तेरे दोस्तों के गल्लों के पास क्यूँ मारी — मारी फिस्तँ? ८ ऐ 'औरतों में सब से खब्बसूरत, अगर तू नहीं जानती तो गल्ले के नक्श — ए — कदम पर चरती जा, औं अपने बुजगालों को चरावाहों के खेंगों के पास पास चरा। ९ ऐ मेरी प्यारी, मैंने तुझे फिर 'आन के रथ की योड़ियों में से एक के साथ मिसाल दी है। १० तेरे गाल लगातार जूल्फों में खुशनुम्हाँ हैं, औं तेरी गर्दन मोतियों के हारों में। ११ हम तेरे लिए सोने के तैक बनाएँगे, औं उनमें चाँदी के फूल जड़ेंगे। १२ जब तक बादशाह तनावुल फरमाता रहा, मेरे सम्बूल की महक उड़ती रही। १३ मेरा महबूब मैं लिए दस्ता — ए — मुर है, जो रात भर मेरी सीने के बीच पड़ा रहता है। १४ मेरा महबूब मेरे लिए ऐनजदी के अंगूरिस्तान से मेहन्दी के फूलों का गुच्छा है। १५ देख, तू खब्बसूरत है ऐ मेरी प्यारी, देख तू खब्बसूरत है तेरी आँखें दो कबूल हैं। १६ देख, तू ही खब्बसूरत है ऐ मेरे महबूब, बल्कि दिल पसन्द है; हमारा पतंग भी सञ्ज है। १७ हमारे घर के शहरीर देवदार के औं हमारी कडियाँ सुनबर की हैं।

२ मैं शास्त्र की नर्पिस, औं वादियों की सोसान हूँ। २ जैसी सोसन झाड़ियों में, वैसी ही मेरी महबूबा कुँवारियों में है। ३ जैसा सेव का दरखत जंगल के दरख्तों में, वैसा ही मेरा महबूब नौजवानों में है। मैं निहायत शादमानी से उसके साथे मैं बैठी, औं उसका फल मेरे मुँह में मीठा लगा। ४ वह मुझे मयरयाने के अंदर लाया, औं उसकी सुहृद्दत का झंडा मेरे ऊपर था। ५ किंशमिश से मुझे करार दो, सेबों से मुझे ताजादम करो, क्यूँकि मैं इश्क की बीमार हूँ। ६ उसका बायाँ हाथ मेरे सिर के नीचे है, औं उसका दहना हाथ मुझे गले से लगाता है। ७ ऐ येस्शलेम की बेटियों, मैं तुम को गजालों औं मैदान की हिरनीयों की कसम देती हूँ तुम मेरे प्यारे को न जगाओ न उठाओ, जब तक कि वह उठना न चाहे। ८ मेरे महबूब की आवाज! देख, वह आ रहा है। पहाड़ों पर से कूदात औं टीलों पर से फँटाता हुआ चला आता है। ९ मेरा महबूब आह या जवान गजाल की तरह है देख, वह हमारी दीवार के पीछे खड़ा है, वह खिड़कियों से झाँकता है, वह झाड़ियों से तकाता है। १० 'मेरे महबूब ने मुझ से बातें की औं कहा, उठ मेरी प्यारी, मेरी नाजीनीन चली आ! ११ क्यूँकि देख जाडा गुजर गया, मैं बरस चुका औं निकल गया। १२ जमीन पर फूलों की बहार है, परिन्दों के चहचहाने का बक्त आ पहेंचा, औं हमारी सरजमीन में कुमरियों की आवाज सुनाई देने लगी। १३ अंजीर के दरख्तों में हरे अंजीर पकने लगे, औं ताकें फूलने लगी; उनकी महक फैल रही है। इसलिए उठ मेरी प्यारी, मेरी जमीनी, चली आ। १४ ऐ मेरी कबूली, जो चट्ठानों की दरारों में औं कड़ाड़ों की आड़ में छिपी है, मुझे अपना चेहरा दिखा, मुझे अपनी आवाज सुना, क्यूँकि तू माहजबीन औं तेरी आवाज मीठी है। १५ हमारे लिए लोमड़ियों को पकड़ो, उन लोमड़ी बच्चों

को जो खजूर के बाग को खराब करते हैं; क्यूँकि हमारी ताकों में फूल लगे हैं।"

१६ मेरा महबूब मेरा है औं मैं उसकी हूँ, वह सोसनों के बीच चराता है। १७ जब तक दिन ढले औं साया बढ़े, तू फिर आ ऐ मेरे महबूब। तू गजाल या जवान हिरन की तरह होकर आ, जो बातर के पहाड़ों पर है।

३ मैंने रात को अपने पलंग पर उसे ढूँडा जो मेरी जान का प्यारा है; मैंने उसे ढूँडा पर न पाया। २ अब मैं उस्तुनी औं शहर में फिरँगी, गलियों में औं बाजारों में, उसको ढूँड़ी जो मेरी जान का प्यारा है। मैंने उसे ढूँडा पर न पाया। ३ पहरे बाले जो शहर में फिरते हैं मुझे मिले। मैंने पूछा, "क्या तुम ने उसे देखा है, जो मेरी जान का प्यारा है?" ४ अभी मैं उनसे थोड़ा ही अगे बढ़ी थी, कि मेरी जान का प्यारा मुझे मिल गया। मैंने उसे पकड़ रखा औं उसे न छोड़ा; जब तक कि मैं उसे अपनी माँ के घर में औं अपनी वालिदा के आरामगाह में न ले गई। ५ ऐ येस्शलेम की बेटियों, मैं तुम को गजालों औं रात मैदान की हिरनीयों की कसम देती हूँ कि तुम मेरे प्यारे को न जगाओ न उठाओ, जब तक कि वह उठना न चाहे। ६ यह कौन है जो मुर औं लबान से औं सौदामरों के तमाम 'इंत्रों से मुं अंतर होकर, बियाबान से धुके के खम्बे की तरह चला आता है। ७ देखो, यह सुलेमान की पालकी है। जिसके साथ इसाईली बहादुरों में से साठ पहलवान हैं। ८ वह सब के सब शमशीरजन औं जंग में माहिर है। रात के खतरे की बजह से हर एक की तलबार उसकी रान पर लटक रही है। ९ सुलेमान बादशाह ने लुबनान की लकड़ियों से अपने लिए एक पालकी बनवाई। १० उसके ढंडे चाँदी की बनवाए, उसके बैठने की जगह सोने की औं गँड़ी अर्मावानी बनवाई, औं उसके अंदर का फर्श, येस्शलेम की बेटियों ने इश्क से आरास्ता किया। ११ ऐ सिय्यन की बेटियों, बाहर निकलो औं सुलेमान बादशाह को देखो; उस ताज के साथ जो उसकी माँ ने उसके शादी के दिन औं उसके दिल की शादमानी के दिन उसके सिर पर रखा।

४ देख, तू खब्बसूरत है ऐ मेरी प्यारी! देख, तू खब्बसूरत है, तेरी आँखें तेरे नक्का

ब के नीचे दो कबूल हैं, तेरे बाल बकरियों के गल्ले की तरह हैं, जो कोह — ए — जिल'आद पर बैठी हैं। २ तेरे दाँत भेड़ों के गल्ले की तरह हैं, जिनके बाल करते गए हों औं जिनको गुस्त दिया गया हो, जिनमें से हर एक ने दो बच्चे दिए हों, औं उनमें एक भी बीं बँड़ा न हो। ३ तेरे हौंठ किर्मिंगी डोरे हैं, तेरा मुँह दिल फेरत है, तेरी कनपटियों ने नक्का के नीचे अनार के टुकड़ों की तरह है। ४ तेरी गर्दन दाऊद का बुज्ज है जो सिलाहखाने के लिए बना जिस पर हजार ढाल लटकाई गई है, वह सब की सब पहलवानों की ढालते हैं। ५ तेरी दोनों छातियाँ दो तोअम आह बच्चे हैं, जो सोसनों में चरते हैं। ६ जब तक दिन ढले औं साया बढ़े, मैं मुर के पहाड़ औं लुबनान के टीले पर जा रहूँगा। ७ ऐ मेरी प्यारी, तू सरापा जमाल है; तुम में कोई ऐब नहीं। ८ लुबनान से मैं एसाथ, ऐ दुल्हन! तू लुबनान से मैं साथ चली आ। अमाना की चोटी पर से, सनीर औं रहमन की चोटी पर से, शेरों की मांदों से, औं चीतों के पहाड़ों पर से नजर दौड़ा। ९ ऐ मेरी प्यारी, मेरी जोजा, तू ने मेरा दिल लट लिया। अपनी एक नजर से, अपनी गर्दन के एक तैक से तू ने मेरा दिल गारत कर लिया। १० ऐ मेरी प्यारी, मेरी जोजा, तेरा 'इश्क क्या खूब है। तेरी मुहूँबत मय से ज्यादा लजीज है, औं तेरे इंत्रों की महक हर तरह की खुशबू से बढ़कर है। ११ ऐ मेरी जोजा, तेरे होटों से शहद टपकता है; शहद — ओ — शीर तेरे जबान तत्ते हैं तेरी पोशाक की खुशबू लुबनान की जैसी है। १२ मेरी प्यारी, मेरी जोजा एक महफूज बाजीनी है; वह महफूज सोता औं सर बम्हर चश्मा है। १३ तेरे बाग के पैधे लजीज मेवादार अनार है, मेहन्दी औं सुबुल भी है। १४ जटामासी औं जाफ़रान, बेदमुख औं दारचीनी औं लोबान के तमाम दरखत, मुर औं ऊर ऊर हर तरह की खास खुशबू। १५ तू बागों में एक मम्बा', आब — ए —

हयात का चशमा, और लुबनान का झरना है। 16 ऐ शिमाली हवा बेदार हो, ऐ दछिखिनी हवा चली आ! मेरे बाग पर से गुजर, ताकि उसकी खुशबू कैले। मेरा महबूब अपने बाग में आए, और अपने लजीज मेवे खाए।

5 मैं अपने बाग में आया हूँ ऐ मेरी प्यारी ऐ मेरी जौजा; मैंने अपना मुर अपने बलसान समेत जमा कर लिया; मैंने अपना शहद छते समेत खा लिया, मैंने अपनी मय दृश्य समेत पी ली है। ऐ दोस्तो, खाओ, पियो। पियो। हाँ, ऐ 'अजीजो, ख़बू जी भर के पियो। 2 मैं सोती हूँ, लेकिन मेरा दिल जागता है। मेरे महबूब की आवाज है जो खटखटाता है, और कहता है, “मेरे लिए दरवाजा खोल, मेरी महबूब, मेरी प्यारी! मेरी कबूतरी, मेरी पाकीजा, क्यूँकि मेरा सिर शबनम से तरह है, और मेरी ज़ुक़े रात की बूँदों से भरी हैं।” 3 मैं तो कपड़े उत्तर चुकी, अब फिर कैसे पहनूँ मैं तो अपने पाँव धो चुकी, अब उनको कँूँ मैला करूँ? 4 मेरे महबूब ने अपना हाथ सराहव से अन्दर किया, और मेरे दिल — ओ — जिगर में उसके लिए हरकत हुई। 5 मैं अपने महबूब के लिए दरवाजा खोलने को उठी, और मेरे हाथों से मुर टपका, और मेरी डॅंगलियों से रक्कीक मुर टपका, और कूफ़ल के दस्तों पर पड़ा। 6 मैंने अपने महबूब के लिए दरवाजा खोला, लेकिन मेरा महबूब मुड कर चला गया था। जब वह बोला, तो मैं बदहवास हो गई। मैंने उसे ढँडा पर न पाया, मैंने उसे पुकारा पर उसने मुझे कुछ जवाब न दिया। 7 पहरेवाले जो शहर में फिरते हैं, मुझे मिले; उन्होंने मुझे मारा और घायल किया, शहरपनाह के मुहाफिजों ने मेरी चादर मुझ से छीन ली। 8 ऐ येस्शलेम की बेटियो! मैं तुम को कसम देती हूँ कि अगर मेरा महबूब तुम को मिल जाए, तो उससे कह देना कि मैं इश्क की बीमार हूँ। 9 तेरे महबूब को किसी दूसरे महबूब पर क्या फ़रीलत है, ऐ 'आूरों में सब से जमीला? तेरे महबूब को किसी दूसरे महबूब पर क्या फ़ौकियत है? जो तू हम को इस तरह कसम देती है। 10 मेरा महबूब सुर्खी — ओ — सफेद है, वह दस हजार में मुस्ताज है। 11 उसका सिर खालिस सोना है, उसकी ज़ुक़े पेच — दर — पेचऔर कौवे सी काली हैं। 12 उसकी आँखें उन कबूतरों की तरह हैं, जो दूध में नहाकर लब — ए — दरिया तमकनत से बैठे हों। 13 उसके गाल फूलों के चमन और बलसान की उभरी हुई क्यारियाँ हैं। उसके होंठ सोसन हैं, जिनसे रकीक मुर टपकता है। 14 उसके हाथ जबरजद से आसता सोने के हल्के हैं। उसका पेट हाथी दाँत का काम है, जिस पर नीलम के फूल बने हो। 15 उसकी टांगे कुन्दन के पार्यों पर संग — ए — मरमर के ख़ब्बे हैं। वह देखने में लुबनान और ख़बी में रशक — ए — सरो है। 16 उसका मुँह अज्ञ बस शीरीन है; हाँ, वह सरापा 'इश्क अगेंज है। ऐ येस्शलेम की बेटियो, यह है मेरा महबूब, यह है मेरा प्यारा।

6 तेरा महबूब कहाँ गया ऐ 'आूरों में सब से जमीला? तेरा महबूब किस तरफ को निकला कि हम रोंग साथ उसकी तलाश में जाएँ? 2 मेरा महबूब अपने बोस्तान में बलसान की क्यारियों की तरफ गया है, ताकि बागों में चाराये और सोसन जमा करे। 3 मैं अपने महबूब की हूँ और मेरा महबूब मेरा है। वह सोसनों में चराता है। 4 ऐ मेरी प्यारी, तु तिर्जी की तरह खुशसरू है येस्शलेम की तरह खुशमंजर और 'अल्मदार लशक' की तरह दिल पसन्द है। 5 अपनी आँखें मेरी तरफ से फेर ले, क्यूँकि वह मुझे धबरा देती है, तेरे बाल बकरियों के गल्ले की तरह है, जो कोह — ए — जिलआद पर बैठी हों। 6 तेरे दाँत भेड़ों के गल्ले की तरह हैं, जिनको गुस्त दिया गया हो; जिनमें से हर एक ने दो बच्चे दिए हों, और उनमें एक भी बौंझ न हो। 7 तेरी कनपटियों तेरे नकाब के नीचे, अनार के टुकड़ों की तरह हैं। 8 साठ रानीयौं और अस्सी हररौं, और बेशमार कुंवारियौं भी हैं; 9 लेकिन मेरी कबूतरी, मेरी पाकीजा बेमिसाल है, वह अपनी माँ की इकलौती, वह अपनी वालिदा की लाडली है। बेटियों ने उसे देखा और उसे

मुबारक कहा। रानियों और हरमों ने देखकर उसकी बड़ाई की। 10 यह कौन है जिसका ज़हर सुबह की तरह है, जो हम्म में माहताब, और नूर में आफ़ताब, 'अल्मदार लशक' की तरह दिल पसन्द है? 11 मैं चिलगोजों के बाग में गया, कि बाटी की नबातात पर नज़र करूँ, और देखे कि ताक में गुंचे, और अनारों में फूल निकले हैं कि नहीं। 12 मुझे अभी खबर भी न थी कि मेरे दिल ने मुझे मेरे उमरा के रथों पर चढ़ा दिया। 13 लौट आ, लौट आ, ऐ शूलिमीता! लौट आ, लौट आ कि हम तुझ पर नज़र करोगे, जैसे वह दो लशकरों का नाच है।

7 ऐ अमीरजादी तेरे पाँव जूतियों में कैसे खुशसरू हैं? तेरी रानों की गोलाई उन ज़ेवरों की तरह है, जिनको किरी उस्ताद कारीगर ने बनाया हो। 2 तेरी नाफ गोल प्याला है, जिसमें मिलाई हुई मय की कमी नहीं। तेरा पेट गेहूँ का अम्बार है, जिसके आस — पास सोसन हैं। 3 तेरी दोनों छातियों दो आँह बच्चे हैं जो तो अम पैदा हुए हों। 4 तेरी गर्दन हाथी दाँत का बुर्ज है। तेरी आँखें बैत — रबीम के फाटक के पास हस्तून के चशेमे हैं। तेरी नाक लुबनान के बुर्ज की मिसाल है जो दमिश्क के स्तु बना है। 5 तेरा सिर तुझ पर कर्मिल की तरह है, और तेरे सिर के बाल अर्मानी हैं, बादशाह तेरी ज़ुल्कों में कैदी है। 6 ऐ महबूबा ऐश — ओ — इत्र के लिए तू कैसी जमीला और जॉफ़जा है। 7 यह तेरी कामत खजर की तरह है, और तेरी छातियाँ अंगू के गुच्छे हैं। 8 मैंने कहा, मैं इस खजर पर चढ़ौंगा, और इसकी शाखों को पकड़ौंगा। तेरी छातियाँ अंगू के गुच्छे हैं और तेरे साँस की खुशबू सेब के जैसी हो, 9 और तेरा मुँह बेहतरीन शराब की तरह हो जो मेरे महबूब की तरफ सीधी चली जाती है, और सोने बालों के होंठों पर से आहिस्ता आहिस्ता बह जाती है। 10 मैं अपने महबूब की हँऔर वह मेरा मुश्ताक है। 11 ऐ मेरे महबूब, चल हम खेतों में सेर केंद्र और गाँव में रात काटें। 12 फिर तड़के अगारिस्तानों में चलें, और देखे कि आया ताक शिगुफ्ता है, और उसमें फूल निकले हैं, और अनार की कलियों खिली हैं या नहीं। वहाँ मैं तुझे अपनी मुहब्बत दिखाऊंगी। 13 मर्दुम्याह की खुशबू फैल रही है, और हमारे दरवाजों पर हर किस्म के तर — ओ — खुशक मेवे हैं जो मैंने तेरे लिए जमा कर रख्ये हैं, ऐ मेरे महबूब।

8 काश कि तू मेरे भाइ की तरह होता, जिसने मेरी माँ की छातियों से तूध पिया। मैं जब तुझे बाहर पाती, तो तेरी मच्छियाँ लेती, और कोई मुझे हकीर न जानता। 2 मैं तुझ को अपनी माँ के घर में ले जाती, वह मुझे सिखाती। मैं अपने अनारों के रस से तुझे मम्जू मय पिलाती। 3 उसका बायीं हाथ मेरे सिर के नीचे होता, और दहना मुझे गले से लगाता। 4 ऐ येस्शलेम की बेटियो, मैं तुम को कसम देती हूँ कि तुम मेरे प्यारे को न जगाओ न उठाओ, जब तक कि वह उठाना न चाहे। 5 यह कौन है जो वीराने से, अपने महबूब पर तकिया किए चली आती है? मैंने तुझे सेब के दरख्त के नीचे जगाया। जहाँ तेरी पैदाइश हुई, जहाँ तेरी माँ ने तुझे पैदा किया। 6 नरीन की तरह मुझे अपने दिल में लगा रख और तावीज़ की तरह अपने बाज़ पर, क्यूँकि इश्क मौत की तरह जबरदस्त है, और गैरत पाताल सी बेगुब्बत है उज्जेशोले आग के शोले हैं, और खुदावन्द के शोले की तरह। (Sheol h7585) 7 सैलाब 'इश्क को बुझा नहीं सकता, बाढ़ उसको डबा नहीं सकती, आगर आदमी मुहब्बत के बदले अपना सब कुछ दे डाले तो वह सरासर हिकात के लायक ठहरेगा। 8 हमारी एक छोटी बहन है, अभी उसकी छातियाँ नहीं उठी। जिस रोज उसकी बात चले, हम अपनी बहन के लिए क्या करें? 9 अगर वह दीवार हो, तो हम उस पर चाँदी का बुर्ज बनाएँगे और अगर वह दरवाजा हो; हम उस पर देवदार के तख्ते लगाएँगे। 10 मैं दीवार हूँ और मेरी छातियाँ बुर्ज हैं और मैं उसकी नज़र में सलामीयाँ याफ़ता, की तरह थी। 11 बाल हामून में सुलेमान का खजूर का बाग था उसने उस खजूर के

बाग को बागबानों के सुपुर्द किया कि उनमें से हर एक उसके फल के बदले हजार मिस्काल चाँदी अदा करे। 12 मेरा खजूर का बाग जो मेरा ही है मेरे सामने है ऐ सुलेमान तू तो हजार ले, और उसके फल के निगहबान दो सौ पाँ। 13 ऐ बूस्तान में रहनेवाली, दोस्त तेरी आवाज़ सुनते हैं; मुझ को भी सुना। 14 ऐ मेरे महबूब जल्दी कर और उस गजाल या आह बच्चे की तरह हो जा, जो बलसानी पहाड़ियों पर है।

यसा

१ यसायाह बिन आमूस का ख्वाब जो उसे यहदाह और येस्शलेम के ज़रिए

यहदाह के बादशाहों उजियाह और युताम और आखज़ और हिजकियाह के दिनों में देखा। २ सुन ऐ आमूसन, और कान लगा ऐ ज़मीन, कि खुदावन्द यैं फरमाता है: "कि मैंने लङ्कों को पाला और पोसा, लेकिन उन्होंने मुझ से सरकारी की। ३ बैल अपने मालिक को पहचानता है और गधा अपने मालिक की चर्नी को, लेकिन बनी — इस्माईल नहीं जानते; मेरे लोग कुछ नहीं सोचते।" ४ आह, खताकार यिरोह, बदकिरदारी से लदी है और कैम बदकिरदारों की नसल मक्कार औलाद; जिन्होंने खुदावन्द को छोड़ दिया, इस्माईल के कुदर्दूस को हकीर जाना, और गुमराह — ओ — बरगशता हो गए। ५ तुम क्यैं ज्यादा बगावत करके और मार खाओगे? तमाम सिर बीमार है और दिल बिल्कुल सुस्त है। ६ तलवे से लेकर चाँदी तक उसमें कहीं सेहत नहीं सिर्फ़ ज़ख्म और चोट और सड़े हुए घाव ही हैं; जो न दबाए गए, न बाँधे गए, न तेल से नर्म किए गए हैं। ७ तुम्हारा मुल्क उजाड़ है, तम्हारी बस्तियाँ जल गईं, लेकिन परदेसी तुम्हारी ज़मीन को तुम्हारे सामने निगलते हैं, वह वीरान है, जैसे उसे अजनबी लोगों ने उजाड़ा है। ८ और सिय्यन की बेटी छोड़ दी गई है, जैसे झोपड़ी बाग में और छप्पर ककड़ी के खेत में या उस शहर की तरह जो महसूर हो गया हो। ९ अगर रब्ब — उल — अफवाज हमारा थोड़ा सा बकिया बाकी न छोड़ता, तो हम सदम की तरह और 'अमरा' की तरह हो जाते। १० सदम के हाकिमो, का कलाम सुनो! के लोगों, खुदा की शरी' अत पर कान लगाओ। ११ खुदावन्द फरमाता है, तुम्हारे ज़वीहों की कसरत से मुझे क्या काम? मैं मेंदों की सोखनी कर्बनियों से और फर्बा बछड़ों की चर्ची से बेजार हूँ, और बैलों और भेड़ों और बकरों के खन में मेरी खुशनदी नहीं। १२ "जब तुम मेरे सामने आकर मेरे दीदार के तालिक होते हो, तो कौन तुम से ये चाहता है कि मेरी बारगाहों को रौंदो? १३ इन्दन्दा को बातिल हादिये न लाना, खुशबू से मुझे नफरत है, नये चाँद और सबत और 'ईदी ज़मा' अत से भी; क्यैंकि मुझ में बदकिरदारी के साथ 'ईद' की बदाश्त नहीं। १४ मेरे दिल को तुम्हरे नये चाँदों और तम्हारी मुकररा 'ईदों' से नफरत है; वह मुझ पर बार है, मैं उनकी बदाश्त नहीं कर सकता। १५ जब तुम अपने हाथ फैलाओगे, तो मैं तुम से आँख फेर लैणा; हाँ, जब तुम दुआ पर दुआ करोगे, तो मैं न सुनँगा; तुम्हारे हाथ तो खन आलदा है। १६ अपने आपको धो, अपने आपको पाक करो, अपने धुए कामों को मेरी आँखों के सामने से दूर करो, बदफेली से बाज आओ, १७ नेकोकारी सीधो; इन्साफ के तालिक हो मजल्मों की मदद करो यथिमों की फरियादरसी करो, बेवाओं के हामी हो।" १८ अब खुदावन्द फरमाता है, "आओ, हम मिलकर हुज्जत करें; अगर चे तुम्हारे गुवाह किर्मिजी हों, वह बर्फ़ की तरह सफेद हो जाएगे; और हर चन्द वह असाधारी हों, तो भी उन की तरह उजले होंगे। १९ अगर तुम राजी और फरमाबदर हो, तो ज़मीन के अच्छे अच्छे फल खाओगे; २० लेकिन अगर तुम इन्कार करो और बासी हो तो तलवार का लुक्मा हो जाओगे क्यैंकि खुदावन्द ने अपने मुँह से ये फरमाया है।" २१ बकादार बस्ती कैसी बदकर हो गई। हव तो इन्साफ से मामूर थी और रास्तबाजी उसमें बसती थी, लेकिन अब खूनी रहते हैं। २२ तेरी चाँदी मैल हो गई, तेरी मय में पानी मिल गया। २३ तेरे सरदार गर्दनकश और चोरों के साथी हैं। उनमें से हर एक रिख्वत दोस्त और इन आप का तालिक है। वह यथिमों का इन्साफ नहीं करते और बेवाओं की फरियाद उन तक नहीं पहँचती। २४ इसलिए खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज, इस्माईल का कादिर, यैं फरमाता है: कि "आह मैं ज़मर अपने मुखातिकों से अराम पाऊँगा, और अपने दुश्मनों से इन्तकाम लौँगा। २५ और मैं तुझ पर अपना हाथ

बढ़ाऊँगा, और तेरी गन्दगी बिल्कुल दूर कर दूँगा, और उस रँगे को जो तुझ में मिला है जुदा कहँसँगा; २६ और मैं तेरे क्राजियों को पहले की तरह और तेरे सलाहकरों को पहले के मुताबिक बहाल कहँसँगा। इसके बाद त्रासतबाज बस्ती और बकादार आबादी कहलाएगी।" २७ सिय्यन 'अदालत की बजह से और वह जो उसमें गुनाह से बाज आए हैं, रास्तबाजी के ज़रिए नजात पाएँगे; २८ लेकिन गुनाहगार और बदकिरदार सब इकट्ठे हलाक होंगे, और जो खुदावन्द से बागी हुए फना किए जाएँगे। २९ क्यैंकि वह उन बल्तौतों से, जिनको तुम ने चाहा शर्मिन्दा होंगे; और तुम उन बागों से, जिनको तुम ने पसन्द किया है खेजिल होंगे। ३० और तुम उस बल्तौत की तरह हो जाओगे जिसके पते झड़ जाएँ और उस बाग की तरह जो बेअबी से सूख जाए। ३१ वहाँ का पहलवान ऐसा हो जाएगा जैसा सन, और उसका काम चिंगारी हो जाएगा; वह दोनों एक साथ जल जाएँगे, और कोई उनकी आग न बुझाएगा।

२ वह बात जो यसायाह बिन आमूस ने यहदाह और येस्शलेम के हक में ख्वाब में देखा। २ आखिरी दिनों में यैं होगा कि खुदावन्द के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटी पर काईम किया जाएगा, और टीलों से बुलन्द होगा, और सब कौमें वहाँ पहुँचेंगी; ३ बल्कि बहत सी उम्मतें आयेंगी और कहेंगी "आओ खुदावन्द के पहाड़ पर चढ़ें, यानी याकूब के खुदा के घर में दाखिल होंगे और वह अपनी रहें हम को बताएगा, और हम उसके रास्तों पर चलेंगे।" क्यैंकि शरी अत सिय्यन से, और खुदावन्द का कलाम येस्शलेम से सारिर होगा। ४ और वह कौमों के बीच 'अदालत करेगा और बहुत सी उम्मतें को डाटेगा और वह अपनी रहें हम को बताएगा, और हम उसके रास्तों पर चलेंगे।" ५ और खुदावन्द के घराने, आजो हम खुदावन्द की रोशनी में चलें। ६ तू तो अपने लोगों यानी याकूब के घराने को छोड़ दिया, इसलिए कि वह अहल — ए — मस्तिक की स्सूम से पुर हैं और फिलिस्तियों की तरह शगुन लेते हैं और बेगानों की ओलाद के साथ हाथ पर हाथ मारते हैं। ७ और उनका मुल्क सोने — चाँदी से मालामाल है, और उनके खजाने बे शमार हैं और उनका मुल्क घोड़ों से भरा है, उनके रथों का कुछ शुमार नहीं। ८ उनकी सरजमीन बुतों से भी पुर है वह अपने ही हाथों की सन्ती अत यानी अपनी ही उगलियों की कारीगरी को सिज्दा करते हैं। ९ इस बजह से छोटा आदमी पस्त किया जाता है, और बड़ा आदमी ज़लील होता है; और तु उनको हरगिज़ मुआफ़ न करेगा। १० खुदावन्द के खोफ से और उसके जलाल की शैकत से, चट्टान में धूस जा और खाक में छिप जा। ११ इंसान की ऊँची निगाह नीची की जाएगी और बनी आदम का तकब्बुर पस्त हो जाएगा; और उस रोज़ खुदावन्द ही सरबलन्द होगा। १२ क्यैंकि रब्ब — उल — अफवाज का दिन तमाम मगास्तों बुलन्द नजरों और मुतकब्लियों पर आएगा और वह पस्त किए जाएँगे; १३ और लुबनान के सब देवदारों पर जो बुलन्द और ऊँचे हैं और बसन के सब बल्तौतों पर। १४ और सब ऊँचे पहाड़ों और सब बुलन्द टीलों पर, १५ और हर एक ऊँचे बुजू पर, और हर एक फसीती दीवार पर, १६ और तरसीस के सब जहाजों पर, गरज हर एक खुशन्मा मन्ज़र पर; १७ और आदमी का तकब्बुर ज़ेर किया जाएगा और लोगों की बुतंद बीनी पस्त की जायेगी और उस रोज़ खुदावन्द ही सरबलन्द होगा। १८ तमाम बुत बिल्कुल फना हो जाएंगे १९ और जब खुदावन्द उठेगा कि ज़मीन को शिद्दत से हिलाए, तो लोग उसके डर से और उसके जलाल की शैकत से पहाड़ों के गरों और ज़मीन के शिगाफों में घुसेंगे। २० उस रोज़ लोग अपनी सोने — चाँदी की मूरतों को जो उन्होंने इबादत के लिए बनाई, छँगन्दारों और चमगादरों के आगे फेंक देंगे। २१ ताकि जब खुदावन्द ज़मीन को शिद्दत से हिलाने के लिए उठे, तो उसके खौफ से और उसके जलाल की शैकत से

चान्दानों के गारों और नाहमवार पत्थरों के शिगाफों में घुस जाएँ। 22 तब तुम इंसान से जिसका दम उसके नथनों में है वाज़ रहो, क्यूँकि उसकी क्या कद है?

3 क्यूँकि देखो खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज येस्शलेम और यहदाह

से सहारा और भरोसा, रोटी का तमाम सहारा और पानी का तमाम भरोसा दूर कर देगा; 2 यानी बहादुर और साहिब — ए — जंग को काजी और नवी को, फलारीरों और बुजुर्गों को। 3 पचास पचास के सरदारों और 'इज्जतदारों और सलाहकारों और होशियार कारीगरों और माहिर जादूगरों को। 4 और मैं लड़कों को उनके सरदार बनाऊँगा और नहै बच्चे उन पर हक्मरानी करेंगे। 5 लोगों में से हर एक दूधेरे पर और हर एक अपने पडोसी पर सितम करेगा। और बच्चे बढ़ों की और रजील शरीरों की गुरुताखी करेंगे। 6 जब कोई आदमी अपने बाप के घर में अपने भाई का दामन पकड़कर कहे, कि तू पोशकवाला है; आ तू हमारा हाकिम हो, और इस उजड़े देप पर काबिज़ हो जा। 7 उस रोज़ वह बुलन्द आवाज से कहेगा, कि मुझसे इन्तिजाम नहीं होगा; क्यूँकि मेरे घर में न रोटी है न कपड़ा, मुझे लोगों का हाकिम न बनाओ। 8 क्यूँकि येस्शलेम की बाबीदी हो गई और यहदाह गिर गया, इसलिए कि उनकी बोल — चाल और चाल — चलन खुदावन्द के खिलाफ़ है कि उसकी जलाली आँखों को गज़बानाक करें। 9 उनके मुँह की सूरत उन पर गवाही देती है वह अपने गुनाहों को सदूम की तरह ज़ाहिर करते हैं और छिपाते नहीं उनकी जानों पर बौला है। क्यूँकि वह आप अपने ऊपर बला लाते हैं। 10 रास्ताजारों के ज़रिएँ कहो कि भला होगा, क्यूँकि वह अपने कामों का फल खाएँगे। 11 शरीरों पर बौला है कि उनको बढ़ी पेश आयेगी क्यूँकि वह अपने हाथों का किया पाएँगे। 12 मैं लोगों की ये ज़ालत है कि लड़के उन पर ज़ल्म करते हैं, और 'औरतें उन पर हक्मरान हैं। ऐ मैं लोगों तुम्हारे रहनमा तुम को गुमराह करते हैं, और तुम्हारे चलने की राहों को बिगाड़ते हैं। 13 खुदावन्द खड़ा है कि मुकद्दमा लड़े, और लोगों की 'अदालत करे। 14 खुदावन्द अपने लोगों के बुजुर्गों और उनके सरदारों की 'अदालत करने को आएगा, "तुम ही हो जो बाग चट कर गए हो और गरीबों की लृट तुम्हारे घरों में है।" 15 खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है कि इसके क्या क्या माना है कि तुम मेरे लोगों को दबाते और गरीबों के सिर कुचलते हो। 16 और खुदावन्द फरमाता है, क्यूँकि सिय्यनू की बेटियाँ मूतकब्बर हैं और गर्दनकशी और शोख चश्मी से खिरामी होती है और अपने पाँव से नाज़रफतारी करती और धूम्रस् बजाती जाती है। 17 इसलिए खुदावन्द सिय्यनू की बेटियों के सिर गंजे, और यहोवाह उनके बदन बेपर्दा कर देगा। 18 उस दिन खुदावन्द उनके खलाखल की ज़ेबाइश, जालियाँ और चौंद ले लेगा, 19 और आवेज़े और पहुँचियाँ, और नकाब। 20 और ताज और पाजेब और पटके और 'इत्रान और तारीज़। 21 और अंगूठियाँ और नथ। 22 और नफीस पेशाके, और ओढ़नियाँ, और दोपट्टे और कीसे, 23 और आर्थियाँ और बाकीक कतानी लिबास और दस्तरे और बुक्के भी। 24 और यूँ होगा कि खुशबू के बदले सड़ाहट होगी, और पटके के बदले रस्सी, और गुधे हुए बालों की जगह चंदलापन और नफीस लिबास के बदले टाट और हस्त के बदले दाग। 25 तैरे बहादुर हलाक होंगे और तैरे पहलवान जंग में कत्ल होंगे। 26 उसके फाटक मतम और नौहां कोंगे, और वह उजाड़ होकर खाक पर बैठेगी।

4 उस वक्त सात 'औरतें एक मर्द को पकड़ कर कहेंगी, कि हम अपनी रोटी

खाएँगी और अपने कपड़े हफ़ेंगी, तू हम सबसे सिर्फ़ इतना कर कि तैरे नाम से कहलायें ताकि हमारी शर्मिंदगी मिटे। 2 तब खुदावन्द की तरफ से रोदरी खूबसूरत — औ — शानदार होगी, और ज़मीन का फल उनके लिए जो बनी — इसाईल में से बच निकले, लज़ीज़ और खुशनुमा होगा। 3 और यूँ होगा कि

जो कोई सिय्यनू में छूट जाएगा, और जो कोई येस्शलेम में बाकी रहेगा, बल्कि हर एक जिसका नाम येस्शलेम के जिन्दों में लिखा होगा, मुकद्दस कहलाएगा। 4 जब खुदावन्द सिय्यनू की बेटियों की गन्दगी को दूर करेगा और येस्शलेम का खन रह — ए — 'अद्वल और रह — ए — सोज़ान के ज़रिएँ से धो डालेगा। 5 तब खुदावन्द फिर सिय्यनू पहाड़ के हर एक मकान पर और उसकी मजलिसगाहों पर, दिन को बादल और धुक्के और रात को रोशन शोला पैदा करेगा; तमाम जलाल पर एक सायबान होगा। 6 और एक खेमा होगा जो दिन को गमी में सायादार मकान, और आँधी और झाड़ी के बक्त आरामगाह और पनाह की जगह हो।

5 अब मैं अपने महबूब के लिए अपने महबूब का एक गीत, उसके बाग के

ज़रिएँ गाऊँगा: मैं महबूब का बाग एक ज़ररेख पहाड़ पर था। 2 और उसमे उसे खोदा और उससे पथर निकाल फेंके और अच्छी से अच्छी ताकि उसमे लगाई, और उसमे बुर्ज बनाया और एक कोल्ह भी उसमे तराशा; और इन्तिजार किया कि उसमे अच्छे अंगूर लगे लेकिन उसमे जंगली अंगूर क्यूँ लगे? 5 मैं तुम को बताता हूँ कि अब मैं अपने बाग से क्या कहँगा, मैं उसकी बाड़ गिरा दूँगा, और वह चरागाह होगा; उसका अहाता तोड़ डालूँगा, और वह पामाल किया जाएगा; 6 और मैं उसे बिल्कुल वीराम कर दूँगा वह न छाँटा जाएगा न निराया जाएगा, उसमे ऊँट कटारे और काँटे उंगेंगे; और मैं बादलों को हक्म करँगा कि उस पर मैं हैं न बरसाएँ। 7 इसलिए रब्ब — उल — अफवाज का बाग बनी — इसाईल का घराना है, और बनी यहदाह उसका खुशनुमा पौधा है उसने इन्साफ का इन्तिजार किया, लेकिन खौज़ी देखी; वह दाद का मुतज़िर रहा, लेकिन फरियाद सुनी। 8 उनपर अफ़सोस, जो घर से घर और खेत से खेत मिला देते हैं, यहाँ तक कि कुछ जगह बाकी न बचे, और मुल्क में वही अकेले बसें। 9 रब्ब — उल — अफवाज ने मेरे कान में कहा, यकीन बहुत से घर उजड़ा जाएँगे और बड़े बड़े आलीशान और खूबसूरत मकान भी बे चराग होंगे। 10 क्यूँकि पन्द्रह बीचे बाग से सिर्फ़ एक बत मय हासिल होगी, और एक खोमर 'बीज से एक ऐफ़ा गलता। 11 उनपर अफ़सोस, जो सुबह सवेरे उठते हैं ताकि नशेबाजी के दरपै हों और जो रात को जागते हैं जब तक शराब उनको भड़का न दे। 12 और उनके ज़श की महफिलों में बरबत और सिरत और दफ़ और बीन और शराब हैं; लेकिन वह खुदावन्द के काम को नहीं सोचते और उसके हाथों की कारीगरी पर गौर नहीं करते। 13 इसलिए मेरे लोग ज़ालत की जगह से गुलामी में जाते हैं; उनके बुजुर्ग भूके मरते, और 'अवाम प्यास से ज़लत है। 14 फिर पाताल अपनी हवस बढ़ाता है और अपना मुँह बे इन्तहा फाड़ता है और उनके शरीफ और 'आम लोग और गौगाई और जो कोई उनमें घण्ड करता है, उसमे उतर जाएँगे। (Sheol h7585) 15 और छोटा आदमी झुकाया जाएगा, और बड़ा आदमी पस्त होगा और मगरमों की आँखें नीची हो जाएँगी। 16 लेकिन रब्ब — उल — अफवाज 'अदालत में सरबलन्द होगा, और खुदा — ए — कुदूस की तकदीस सदाकत से की जाएगी। 17 तब बर्दे जैसे अपनी चरागाहों में चरेंगे और दौलतमन्दों के वीराम खेत परदेसियों के गल्ले खाएँगे। 18 उनपर अफ़सोस, जो बताता की तनाबों से बदकिरदारी को और जैसे गाड़ी के रस्सों से गुज़ाह को खीच लाते हैं, 19 और जो कहते हैं, कि जल्दी करे और फुर्ती से अपना काम करें कि हम देखें; और इसाईल के कुदूस की मशवरत नज़दीक हो और आ पहुँचे ताकि हम उसे जानें। 20 उन पर अफ़सोस, जो बड़ी की नेकी और नेकी को बड़ी कहते हैं, और नूर की जगह

तारीकी को और तारीकी की जगह नूर को देते हैं; और शीरीनी के बदले तल्खी और तल्खी के बदले शीरीनी रखते हैं। 21 उनपर अफसोस, जो अपनी नज़र में अकलमन्द और अपनी निगाह में साहिब — ए — इमियाज हैं। 22 उनपर अफसोस, जो मय पीने में तकतवर और शराब मिलाने में पहलवान हैं; 23 जो रिश्वत लेकर शरीरों की सादिक और सादिकों को नारास्त ठहराते हैं। 24 फिर जिस तरह अग भूसे को खा जाती है और जलता हुआ फूस बैठ जाता है, उसी तरह उनकी जड़ बोसीदा होगी और उनकी कर्ती गर्द की तरह उड़ जाएगी, क्यैंकि उहोंने रब्ब — उल — अफवाज की शरी़ी अत को छोड़ दिया, और इसाईंल के कुटदस के कलाम को हकीकर जाना। 25 इसलिए खुदावन्द का कहर उसके लोगों पर भड़का, और उसने उनके खिलाफ अपना हाथ बढ़ाया और उनको मारा; चुनाँचे पहाड़ कौप गए और उनकी लाशें बाजारों में गलाजत की तरह पड़ी हैं। बावजूद इसके उसका कहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है। 26 और वह कौमों के लिए दूर से झाँडा खड़ा करेगा, और उनको जमीन की इन्तिहा से सुसकार कर बुलाएगा; और देख वह दौड़े चले आएँगे। 27 न कोई उनमें थेकेगा न फिसलेगा, न कोई ऊँधेगा न सोएगा, न उनका कमरबन्द खुलेगा और न उनकी जूतियों का तस्मा टूटेगा। 28 उनके तीर तेज हैं और उनकी सब कमानें कशीदा होंगी, उनके घोड़ों के सुप्र चक्रमाक और उनकी गाड़ियाँ गिर्दबाद की तरह होंगी। 29 वह शेरनी की तरह गरजेंगे, हाँ वह जवान शेरों की तरह दहाड़ेंगे; वह गुर्गा कर शिकार पकड़ेंगे और उसे बे रोकटोक ले जाएँगे, कोई बचानेवाला न होगा। 30 और उस रोज़ वह उन पर ऐसा शोर मचाएँगे जैसा समन्दर का शोर होता है, और अगर कोई इस मुल्क पर नज़र करे, तो बस, अन्धेरा और तंगहाली है, और रोशनी उसके बादलों से तारीक हो जाती है।

6 जिस साल में उज्जियाह बादशाह ने वफ़ात पाई मैने खुदावन्द को एक बड़ी बुलन्दी पर ऊँचे तख्त पर बैठे देखा, और उसके लिबास के दामन से हैकल मामूर हो गई। 2 उसके आस — पास सराकीम खड़े थे, जिनमें से हर एक के छँ: बाजू थे; और हर एक दो से अपना मुँह ढाँप था और दो से पाँव और दो से उड़ता था। 3 और एक ने दूसरे को पुकारा और कहा, “कूदस, कूदस, कूदस रब्ब — उल — अफवाज है, सारी जमीन उसके जलाल से मामूर है।” 4 और पुकारने वाले की आवाज के जोर से आस्तानों की बुनियादें हिल गईं, और मकान धूँधूं से भर गया। 5 तब मैं बोल उठा, कि मुझ पर अफसोस! मैं तो बर्बाद हुआ! क्यैंकि मैं होट नापाक हूँ और नजिस लब लोगों में बसता हूँ, क्यैंकि मेरी आँखों ने बादशाह रब्ब — उल — अफवाज को देखा! 6 उस वक्त सराकीम में से एक सुलगा हुआ कोयला जो उसने दस्तपनाह से मजबह पर से तालिया, अपने हाथ में लेकर उड़ता हुआ मेरे पास आया, 7 और उससे मेरे मुँह को छुआ और कहा, “देख, इसने तेरे लबों को छुआ; इसलिए तेरी बढ़िकरदारी दूर हूँ, और तेरे गुनाह का कफ़फ़ारा हो गया।” 8 उस वक्त मैंने खुदावन्द की आवाज सुनी जिसने फरमाया “मैं किसको भेजूँ और हमारी तरफ से कौन जाएगा?” तब मैंने ‘अर्ज की, “मैं हाजिर हूँ मुझे भेज!” 9 और उसने फरमाया, “जा, और इन लोगों से कह, कि ‘तुम सुना करो लेकिन समझो नहीं, तुम देखा करो लेकिन बझो नहीं। 10 तू इन लोगों के दिलों को चर्चा दे, और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आँखें बन्द कर दे; ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखे और अपने कानों से सुनें और अपने दिलों से समझ लें, और बाज आएँ और शिफ़ा पाएँ।” 11 तब मैंने कहा, “ऐ खुदावन्द ये कब तक?” उसने जवाब दिया, “जब तक बस्तियाँ वीरान न हों और कोई बसनेवाला न रहे, और घर बे — चरासा न हों, और ज़मीन सरासर उजाड़ न हो जाए; 12 और खुदावन्द आदमियों को दूर कर दे, और इस सरज़मीन में मतस्क मकाम बक्सरत हों।

13 और अगर उसमें दसवाँ हिस्सा बाकी भी बच जाए, तो वह फिर भसम किया जाएगा; लेकिन वह बुत्म और बलूत की तरह होगा कि बावजूद यह कि वह काटे जाएँ तो भी उनका टुन्ड बच रहता है, इसलिए उसका टुन्ड एक मुकद्दस तुब्ख होगा।”

7 और शाह — ए — यहदाह आखज बिन यूताम बिन उज्जियाह के दिनों में यूँ हुआ कि रजीन, शाह — ए — इराम किकह बिन रमलियाह, शाह — ए — इसाईंल ने येस्सलोप पर चाड़ी की; लेकिन उस पर गालिब न आ सके। 2 उस वक्त दाऊद के घराने को यह खबर दी गई कि अराम इक्राईम के साथ मुत्हिद है इसलिए उसके दिल ने और उसके लोगों के दिलों ने यूँ जुम्बिश खाई, जैसे जंगल के दरखत अँधी से जुम्बिश खाते हैं। 3 तब खुदावन्द ने यसाँयाह को हक्म किया, कि “तू अपने बेटे शियार याशब को लेकर ऊपर के चश्मे की नहर के सिरे पर, जो धोबियों के मैदान के रास्ते में है, आखज से मुलाकात कर, 4 और उसे कह, ‘खबरदार हो, और बेकरार न हो; इन लूटियों के दो धूँधे वाले टुकड़ों से, याँनी अरामी रजीन और रमलियाह के बेटे की कहर अगेज़ी से न डर, और तेरा दिल न घबराए। 5 चूँकि अराम और इक्राईम और रमलियाह का बेटा तो खिलाफ मश्वरत करके कहते हैं, 6 कि आओ, हम यहदाह पर चाड़ी करें और उसे तंग करें, और अपने लिए उसमें रखना पैदा करे और ताबील के बेटे को उसके बीच तख्तनशीन करें। 7 इसलिए खुदावन्द खुदा फरमाता है कि इसको पायदारी नहीं, बल्कि ऐसा हो भी नहीं सकता। 8 क्यैंकि अराम का दास्स — सलतनत दमिश्क ही होगा, और दमिश्क का सरदार रजीन; और पैसठ बरस के अन्दर इक्राईम ऐसा कट जाएगा कि कौम न रहेंगी। 9 इक्राईम का भी दास्स — सलतनत सामरिया ही होगा, और सामरिया का सरदार रमलियाह का बेटा। अगर तुम ईमान न लाओगे तो यक़ीनन तुम भी क़ाइम न रहेंगे। 10 फिर खुदावन्द ने आखज से फरमाया, 11 खुदावन्द अपने खुदा से कोई निशान तलब कर चाहे नीचे पाताल में चाहे ऊपर बुलन्दी पर।” 12 लेकिन आखज ने कहा, कि मैं तलब नहीं क़सँगा और खुदावन्द को नहीं, आजमाऊँगा। 13 तब उसने कहा, ऐ दाऊद के खानान, अब सुनो क्या तुम्हारा इंसान को बेज़ार करना कोई हल्की बात है कि मेरे खुदा को भी बेज़ार करोगे? 14 लेकिन खुदावन्द आप तुम को एक निशान बख़्शणा। देखो, एक कुँवारी हामिला होंगी, और बेटा पैदा होगा और वह उसका नामँ इमानुएल रखेंगी। 15 वह दही और शहद खाएगा, जब तक कि वह नेकी और बटी के रँड — ओ — कूबूल के क़ाबिल न हो। 16 लेकिन इससे पहले कि ये लड़का नेकी और बटी के रँड — ओ — कूबूल के काबिल हो, ये मुल्क जिसके दोनों बादशाहों से तुझ को नफरत है, वीरान हो जाएगा। 17 खुदावन्द तज़ पर और तेरे लोगों और तेरे बाप के घराने पर ऐसे दिन लाएगा जैसे उस दिन से जब इक्राईम यहदाह से जुदा हुआ, आज तक कभी न लाया याँनी शाह — ए — असर के दिन। 18 और उस वक्त धूँधे होंगे कि खुदावन्द मिस की नहों के उस सिरे पर से मक्कियों को, और असर के मुल्क से जम्बरों को सुसकार कर बुलाएगा। 19 इसलिए वह सब आँखें और वीरान बाटियों में, और चट्टानों की दराड़ों में, और सब खारिस्तानों में, और सब चरागाहों में छा जाएँगे। 20 उसी रोज़ खुदावन्द उस उत्तरे से जो दरिया — ए — फरात के पार से किराये पर लिया याँनी असर के बादशाह से, सिर और पाँव के बाल मूढ़ेगा और इससे दाढ़ी भी खुची जाएगी। 21 और उस वक्त धूँधे होंगे कि आदमी सिर्फ़ एक गाय और दो भेड़े पालेगा, 22 और उनके दूध की फिरावानी से लोग मक्कहन खाँगे; क्यैंकि हर एक जो इस मुल्क में बच रहेगा मख्खन और शहद ही खाया करेगा। 23 और उस वक्त यह हालत हो जाएगी कि हर जगह हज़राओं स्थेये के बागों की जगह खारदार ज़ाड़ियाँ होंगी। 24 लोग तीर और कमाने लेकर वहाँ

आयेंगे क्यूंकि तमाम मुल्क काँटों और झाड़ियों से पुर होगा। 25 मगर उन सब पहाड़ियों पर जो कुदाली से खोदी जाती थी, झाड़ियों और काँटों के खौफ से तूंकिर न छड़ा लेकिन वह गाय बैल और भेड़ बकरियों की चरागाह होंगी।

8 फिर खुदावन्द ने मुझे फरमाया, कि एक बड़ी तख्ती ले और उस पर साफ साफ लिख महीर शालाल हाशबज के लिए¹ 2 और दो दियनदार गवाहों को याँनी ऊरियाह कहिन को और जकरियाह बिन यबरकियाह को गवाह बना। 3 और मैं नवीया के पास गया; तब वह हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। तब खुदावन्द ने मुझे फरमाया, कि उसका नाम “महीर — शालाल हाशबज रख, 4 क्यूंकि इससे पहले कि ये लड़का अब्बा और अम्मा कहना सीखे दमिश्क का माल और सामरिया की लूट को उठावकर शाह — ए — असूर के सामने ले जाएँगे।” 5 फिर खुदावन्द ने मुझ से फरमाया, 6 “क्यूंकि इन लोगों ने चश्मा — ए — शिलोख के आहिस्ता रो पानी को रक्खा, और रजीन और रमलियाह के बेटे पर माइल हुए⁷ 7 इसलिए अब देख, खुदावन्द दरिया — ए — फरात के सब्ज शरीद सैलाब को या ‘नी शाह — ए — असूर और उसकी सारी शैकत को, इन पर चढ़ा लाएगा; और वह अपने सब नालों पर और अपने सब किनारों से बह निकलेगा; 8 और वह यहदाह में बढ़ता चला जाएगा, और उसकी तुगियानी बढ़ती जाएगी, वह गर्दन तक पहुँचेगा; और उसके परों के फैलाव से तेरे मुल्क की सारी दुसरे अत ऐ इमानुएल, छिप जायेगी।” 9 ऐ लोगों, धूम मचाओ, लेकिन तम टुकड़े — टुकड़े किए जाओगे, और ऐ दूर — दूर के मुल्कों के बाशिनों, सनोः कमर बाँधों, लेकिन तुम्हारे टुकड़े — टुकड़े किए जाएँगे; कमर बाँधों, लेकिन तुम्हारे पुर्जे — पुर्जे होंगे। 10 तुम मन्सूबा बाँधो, लेकिन वह बातिल होगा; तुम कुछ करो, और उसे क्रयाम न होगा; क्यूंकि खुदा हमारे साथ है। 11 क्यूंकि खुदावन्द ने जब उसका हाथ मुझ पर गालिक हुआ, और इन लोगों के गारसे मैं चलने से मुझे मना⁸ किया तो मुझ से यैं फरमाया कि, 12 “तुम उस सबको जिसे यह लोग साजिश कहते हैं, साजिश न कहो, और जिससे वह डरते हैं, तुम न डरो और न घबराओ। 13 तुम रब्ब — उल — अफवाज ही को पाक जानो, और उसी से डरो और उसी से खाइक रहो। 14 और वह एक मकदिस होगा, लेकिन इसाईल के दोनों घरानों के लिए सदमा और ठोकर का पथर, और येस्तलम के बाशिनों के लिए फन्दा और दाम होगा। 15 उनमें से बहत से उससे ठोकर खायेंगे और जिंगे और पाश पाश होंगे, और दाम में फँसेंगे और पकड़े जाएँगे। 16 शहादत नामा बन्द कर दो, और मैं शागिर्दों के लिए शरीर अत पर मुहर करो। 17 मैं भी खुदावन्द की राह देखँगा, जो अब याँकूब के घराने से अपना मुँह छिपाता है, मैं उसका इन्तिजार करूँगा। 18 देख, मैं उन लड़कों के साथ जो खुदावन्द ने मुझे बधो, रब्ब — उल — अफवाज की तरफ से जो सियरून पहाड़ में रहता है, बनी — इसाईल के बीच निशान — आत और ‘अजायब — ओ — गराइब के लिए हैं। 19 और जब वह तुम्हें कहें, तुम जिन्नाते के यारों और अफसँगरों की जो फुसफुसाते और बड़बड़ते हैं तलाश करो, तो तुम कहो, क्या लोगों को मुनासिब नहीं कि अपने खुदा के तालिब हों? क्या जिन्दों के बारे में मुर्दों से सवाल करें?” 20 शरीर अत और शहादत पर नज़र करो। अगर वह इस कलाम के मुताबिक न बोले तो उनके लिए सुबह न होगी। 21 तब वह मुल्क में भक्ते और खस्ताहाल फिरेंगे और यैँ होगा कि जब वह भक्ते हों तो जान से बेजार होंगे, और अपने बादशाह और अपने खुदा पर लाँनत करेंगे और अपने मुँह असमान की तरफ उठाएँगे; 22 फिर जमीनी की तरफ देखेंगे और नागहान तंगी और तारीकी, याँनी जूल्मत — ए — अन्दोह और तीरंगी में छढ़े जाएँगे।

9 लेकिन अन्दोहगीन की तीरंगी जाती रहेगी। उसने पिछले जमाने में जबलून और नफताली के ‘इलाकों को जलील किया, लेकिन आखिरी जमाने में कौमों के गतील में दरिया की तरफ यदन के पार बुजुर्गी देगा। 2 जो लोग तारीकी में चलते थे उन्होंने बड़ी रोशनी देखी, जो मौत के साथे के मुल्क में रहते थे, उन पर नर चमका। 3 तूने कौम को बढ़ाया, तूने उनकी शादमानी को ज्यादा किया; वह तेरे सामने ऐसे खुश हैं, जैसे फसल काटते बक्त और गनीमत की तक्सीम के बक्त लोग खुश होते हैं। 4 क्यूंकि तूने उनके बोझ के जूए, उनके कन्धे के लठ, और उन पर ज़ुल्म करनेवाले की ताठी को ऐसा तोड़ा है जैसा मिदियान के दिन में किया था। 5 क्यूंकि जंग में मुसल्लह मर्दों के तमाम सिलाह और खन आलदा कपड़े जलाने के लिए आग का ईंधन होंगे। 6 इसलिए हमारे लिए एक लड़का तवल्लुद हुआ और हम को एक बेटा बरब्बा गया, और सलतनत उसके कन्धे पर होगी, उसका नाम ‘अज़ीब सलाहकार खुदा — ए — क़ादिर अब्दियत का बाप, सलामती का शहजादा होगा। 7 उसकी सलतनत के इकबाल और सलामती की कुछ इन्तिहा न होगी, वह दाऊद के तख्त और उसकी ममलुकत पर आज से हमेशा तक हुक्मरान रहेगा और ‘अदालत और सदाकत से उसे क्रयाम बख्शेगा रब्ब — उल — अफवाज की गयरूपी ये करेगी। 8 खुदावन्द ने याँकूब के पास पैगाम भेजा, और वह इसाईल पर नाज़िल हुआ; 9 और सब लोग माँलम कोरेंगे, याँनी बनी इफ़ाईम और अहल — ए — सामरिया जो तकब्बर और सख्त दिली से कहते हैं, 10 कि ईंट गिर गई लेकिन हम तराशे हुए पथरों की ‘इमारत बनायेंगे गूलर के दरखत काटे गए, लेकिन हम देवदार लगाएँगे। 11 इसलिए खुदावन्द रजीन की मुखातिफ़ गिरोहों को उन पर चढ़ा लाएगा, और उनके दुर्मनों को खुद मुसल्लह करेगा। 12 आगे अरामी होंगे और पीछे फिलिस्ती, और वह मूँह फैलाकर इसाईल को निगल जाएँगे; बावजूद इसके उसका कहर टल नहीं गया, बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है। 13 तोभी लोग अपने मारनेवाले की तरफ न पिए और रब्ब — उल — अफवाज के तालिब न हुए। 14 इसलिए खुदावन्द इसाईल के सिर और दूम और खास — ओ — ‘आम को एक ही दिन में काट डालेगा। 15 बुजुर्गी और ‘इज़ज़तदार आदमी सिर है और जो नवी झट्ठी बातें सिखाता है वही दुम है; 16 क्यूंकि जो इन लोगों के पेशवा हैं इनसे खताकारी कराते हैं और उनके पैरी निगले जाएँगे। 17 खुदावन्द उनके जवानों से खेशनद न होगा और वह उनके यतीमों और उनकी बेवाओं पर कभी रहम न करेगा क्यूंकि उनमें हर एक बेटीन और बढ़किरदार है और हर एक मुँह हिमाकत उगलता है बावजूद इसके उसका कहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है। 18 क्यूंकि शरात आग की तरह जलाती है, वह खस — ओ — खार को खा जाती है; बल्कि वह जंगल की गुन्जान झाड़ियों में शोलाजन होती है, और वह धूंपें के बादल में ऊपर को उड़ जाती है। 19 रब्ब — उल — अफवाज के कहर से ये मुल्क जलाया गया, और लोग ईंधन की तरह हैं; कोई अपने भाई पर रहम नहीं करता। 20 और कोई दहरी तरफ से छीनिगा लेकिन भूका रहेगा, और वह बाँध तरफ से खाएगा। 21 मनस्सी इफ़ाईम का और इफ़ाईम मनस्सी का और वह मिलकर यहदाह के मुखातिफ़ होंगे। बावजूद इसके उसका कहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

10 उन पर अफ़सोस जो बे इन्साफी से फैसले करते हैं और उन पर जो ज़ुल्म की स्वकारें लिखते हैं; 2 ताकि गरीबों को ‘अदालत से महसूस करें, और जो मेरे लोगों में मोहताज हैं उनका हक छीन ले, और बेवाओं को लटै, और यतीम उनका शिकार हों। 3 इसलिए तुम मुताल्ब के दिन और उस खराबी के दिन, जो दूर से आएँगी क्या करेगे? तुम मदद के लिए किसके

पास दौड़ोगे? और तुम अपनी शौकत कहाँ रख छोड़ोगे? 4 वह कैदियों में घुसेंगे और मरकतलों के नीचे छिपेंगे। बावजूद इसके उसका कहर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है। 5 असूर याँनी मेरे कहर की लाठी पर अफसोस! जो लठ उसके हाथ में है, वह मेरे कहर का हथियार है। 6 मैं उसे एक रियाकार कौम पर भेज़ूंगा, और उन लोगों की मुखालिफत में जिन पर मेरा कहर है, मैं उसे हक्कम — ए — कर्तव्य दृংगा कि माल लटै और गरीबत ले ले, और उनको बाजारों की कीचड़ की तरह लताड़। 7 लेकिन उसका ये खयाल नहीं है, और उसके दिल में ये ख्वाहिश नहीं कि ऐसा करें; बल्कि उसका दिल ये चाहता है कि कत्तल करे और बहत सी कौमों को काट डाले। 8 क्यूँकि वह कहता है, “क्या मेरे हाकिम सब के सब बादशाह नहीं? 9 क्या कलनों करकिमीस की तरह नहीं और हमात अरफाद की तरह नहीं और सामरिया दमिश्क की तरह नहीं है? 10 जिस तरह मेरे हाथ ने बुतों की ममलकते हासिल की, जिनकी खोदी हई मूर्ते येस्शलेम और सामरिया की मूरतों से कहीं बेहत थीं; 11 क्या जैसा मैंने सामरिया से और उसके बुतों से किया, वैसा ही येस्शलेम और उसके बुतों से न करँगा?” 12 लेकिन यूँ होगा कि जब खुदावन्द सिय्यन पहाड़ पर और येस्शलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब वह फरमाता है मैं शाह — ए — असूर को उसके गुस्ताख दिल के समरह की ओर उसकी बुलन्द नज़री और घमण्ड की सज़ा दृংगा। 13 क्यूँकि वह कहता है, मैंने अपने बाज़ की ताकत से और अपनी ‘अक्तल से ये किया है, क्यूँकि मैं ‘अक्तलमन्द हूँ, हाँ, हाँ, मैंने कौमों की हड़ों को सरका दिया और उनके खजाने लट लिए, और मैंने बहादुरों की तरह तख्त नशीनों को उतार दिया। 14 मेरे हाथ ने लोगों की दौलत को धोंसले की तरह पाया, और जैसे कोई उन अंदों को जो मतस्क पड़े हों समेट ले, वैसे ही मैं सारी ज़मीन पर काबिज़ हुआ और किसी को ये हिम्मत न हई कि पर हिलाए या चोंच खोले या चहचाहे। 15 क्या कुलहाड़ा उसके स्त्री ब — रु जो उससे काटाता है लाफज़नी करेगा अर्दिकश के सामने शेरुँी मरेगा जैसे ‘असा अपने उतारनेवाले को हक्कत देता है और छड़ी आदमी को उठाती है। 16 इस बजह से खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज उसके फर्बा जवानों पर लागारी भेजेगा और उसकी शौकत की नीचे एक सोजिश आग की सोजिश की तरह भड़काएगा। 17 बल्कि इसाईल का नहीं आग बन जाएगा और उसका कुदूस एक शोला होगा, और वह उसके खस — ओ — खार को एक दिन में जलाकर भसम कर देगा। 18 और उसके बन और बाग की खुशनुमाई को बिल्कुल बर्बाद — ओ — हलाक कर देगा “और वह ऐसा हो जाएगा जैसा कोई मरीज़ जो गश खाए। 19 और उसके बाग के दरख़ा ऐसे थोड़े बाकी बचेंगे कि एक लड़का भी उनको गिन कर लिख ले। 20 और उस बक्त यूँ होगा कि वह जो बनी इसाईल में से बाकी रह जाएंगे और याँकूब के घराने में से बच रहेंगे, उस पर जिसने उनको मारा फिर भरोसा न करेंगे; बल्कि खुदावन्द इसाईल के कुदूस पर सच्चे दिल से भरोसा करेंगे। 21 एक बकिया याँनी याँकूब का बकिया खुदा — ए — कादिर की तरफ फिरेगा। 22 क्यूँकि ऐ इसाईल, तैर लोग समन्दर की रेत की तरह हों, तोभी उनमें का सिर्फ़ एक बकिया वापस आएगा; बर्बादी परे ‘अद्वल से मुकर्रह हो चुकी है। 23 क्यूँकि खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज मुकर्रह बर्बादी तमाम इस ज़मीन पर जाहिर करेगा। 24 लेकिन खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है ऐ मेरे लोगों, जो सिय्यन में बसते हो असूर से न डरो, अगरचे कि वह तुमको लठ से मारे और मिस्त्री की तरह तुम पर अपना ‘असा उठाए। 25 लेकिन थोड़ी ही देर है कि जोश — ओ — खरोश खत्म होगा और उनकी हलाकत से मेरे कहर की तस्कीन होगी। 26 क्यूँकि रब्ब — उल — अफवाज मिदियान की खूरैज़ी के मुताबिक जो ‘ओरेब की चट्टान पर हुई, उस पर एक कोड़ा उठाएगा; उसका

‘असा समन्दर पर होगा, हाँ वह उसे मिस्त्र की तरह उठाएगा। 27 और उस बक्त यूँ होगा कि उसका बोझ तैर कथें पर से और उसका बोझ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा और वह बोझ मसह की बजह से तोड़ा जाएगा।’ 28 वह अव्ययत में आया है, मज़्दूर में से होकर गुजर गया; उसने अपना अस्बाब मिकमास में रख्खा 29 वह घाटी से पार गए उन्होंने जिब‘आ में रात काटी, रामा परेशान है; जिब‘आ — ए — साऊल भाग निकला है। 30 ऐ जल्लीम की बेटी, चिखु मार! ऐ गरीब ‘अन्तोत, अपनी आवाज लईस को सुना! 31 मदमीना चल निकला, जेवीम के रहने वाले निकल भागे। 32 वह आज के दिन नोब में खेमाजन होगा तब वह दुखतर — ए — सिय्यन के पहाड़ याँनी कोह — ए — येस्शलेम पर हाथ उठा कर धमकाएगा। 33 देखो, खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज हैबतानक तौर से मार कर शाखों को छाँट डालेगा; कदावर काट डाले जाएँगे और बलन्द पस्त किए जाएँगे। 34 और वह जंगल की गुन्जान झाँड़ियों को लोहे से काट डालेगा, और लुबनान एक ज़बरदस्त के हाथ से गिर जाएगा।

11 और यस्सी के तने से एक कोंपल निकलेगी और उसकी जड़ों से एक बारआवर शाख पैदा होगी। 2 और खुदावन्द की स्तु उस पर ठहरेगी हिकमत और खिरद की स्तु, मसलहत और कुदरत की स्तु, मारिफत और खुदावन्द के खौफ की स्तु। 3 और उसकी शादमानी खुदावन्द के खौफ में होगी। और वह न अपनी आँखों के देखने के मुताबिक इन्साफ करेगा, और न अपने कानों के सुनने के मुवाफिक फैसला करेगा; 4 बल्कि वह रास्ती से गरीबों का इन्साफ करेगा, और ‘अद्वल से ज़मीन के खाकसारों का फैसला करेगा; और वह अपनी ज़बान के ‘असा से ज़मीन को मारेगा, और अपने लबों के दम से शरीरों को फना कर डालेगा। 5 उसकी कमर का पटका रास्तबाजी होगी और उसके पहलू पर वफादारी का पटका होगा। 6 तब भेड़िया बर्के के साथ रहेगा, और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठेगा, और बछड़ा और शेर बच्चा और पला हुआ बैल पेशरवी करेगा। 7 गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे और शेर — ए — बबर बैल की तरह भूसा खाएगा। 8 और दूध पीता बच्चा साँप के बिल के पास खेलेगा, और वह लड़का जिसका दूध छुड़ाया गया हो अफ़ई के बिल में हाथ डालेगा। 9 वह मेरे तमाम पाक पहाड़ पर न नुक्सान पहँचाएँगे न हलाक करेंगे क्यूँकि जिस तरह समन्दर पानी से भरा है उसी तरह ज़मीन खुदावन्द के इरफान से माँमर होगी। 10 और उस बक्त यूँ होगा कि लोग यस्सी की उस जड़ के तालिक होंगे, जो लोगों के लिए एक निशान हैं; और उसकी आरामगाह जलाली होगी। 11 उस बक्त यूँ होगा कि खुदावन्द दूसरी मर्तबा अपना हाथ बढ़ाएगा कि अपने लोगों का बकिया या जो बच रहा हो, असूर और मिस्त्र और क़श और इलाम और सिन‘आर और हमात और समन्दर की अतराफ से वापस लाए। 12 और वह कौमों के लिए एक झ़ड़ा खड़ा करेगा और उन इस्ताइलियों को जो खारिज किए गए हों ‘जमा’ करेगा; और सब बनी यहदाह को जो तिर बित्र होंगे, ज़मीन के चारों तरफ से इकट्ठा करेगा। 13 तब बनी इफ़राईम में हसद न रहेगा और बनी यहदाह के दुश्मन काट डाले जाएँगे, बनी इफ़राईम बनी यहदाह पर हसद न करेंगे और बनी यहदाह बनी इफ़राईम से कीना न रखेंगे। 14 और वह पश्चिम की तरफ फिलिस्तियों के कंधों पर झ़पटेंगे, और वह मिलकर पूरब के बसनेवालों को लटेंगे, और अदोम और मोआब पर हाथ डालेंगे; और बनी ‘अम्मोन उनके फरमाबदर होंगे। 15 तब खुदावन्द बहर — ए — मिस्त्र की खलीज को बिल्कुल हलाक कर देगा, और अपनी बाद — ए — समूम से दरिया — ए — फरात पर हाथ चलाएगा और उसको सात नाले कर देगा, ऐसा करेगा कि लोग जूते पहने हुए पार चले जाएँगे। 16 और उसके बाकी लोगों के लिए जो असूर में

से बच रहेंगे, एक ऐसी शाहगाह होगी जैसी बनी — इस्लाइल के लिए थी, जब वह मुल्क — ए — मिथ से निकले।

12 और उस वक्त तू कहेगा, ऐ खुदावन्द मैं तेरी तम्जीद कहूँगा; कि अगर चे तु मुझ से नाखुश था, तोभी तेरा कहर टल गया और तुमे मुझे तसल्ली दी। 2 “देखो, खुदा मेरी नजात है; मैं उस पर भरोसा करूँगा और न डँगा, क्यौंकि यह — यहोवाह मेरा ज़ोर और मेरा सरोद है और वह मेरी नजात हुआ है।” 3 फिर तुम खुश होकर नजात के चर्शमों से पानी भरोगे। 4 और उस वक्त तुम कहोगे, खुदावन्द की तम्जीद करो, उससे दूँआ करो लोगों के बीच उसके कामों का बयान करो, और कहो कि उसका नाम बुलन्द है। 5 “खुदावन्द की मदह सराई करो; क्यौंकि उसने जलाली काम किये जिनको तमाम दुनिया जानती है।” 6 ऐ सियन की बसनेवाली, तू चिल्ला और ललकार; क्यौंकि तुझमें इस्लाइल का कुदूस बुजुर्ग है।”

13 बाबुल के बारे में नबुव्वत जो यसायाह — बिन — आमूस ने खबाब में पाया। 2 तुम नंगे पहाड़ पर एक झाण्डा खड़ा करो, उनको बुलन्द आवाज से पुकारो और हाथ से इशारा करो कि वह सरदारों के दरवाजों के अन्दर जाएँ। 3 मैंने अपने मञ्जसूस लोगों को हुक्म किया; मैंने अपने बहादुरों को जो मेरी खुदावन्दी से मसस्त है, बुलाया है कि वह मेरे कहर को अन्जाम दें। 4 पहाड़ों में एक हजार का शेर है, जैसे बड़े लशकर का! ममलुकत की कौमों के इजितमा’ अ का गोगा है। रब्ब — उल — अफवाज जंग के लिए लशकर जमा’ करता है। 5 वह दूर मुल्क से आसमान की इन्हिंहा से आते हैं, हाँ खुदावन्द और उसके कहर के हथियार, ताकि तमाम मुल्क को बर्बाद करें। 6 अब तुम बावैला करो, क्यौंकि खुदावन्द का दिन नज़दीक है; वह कादिर — ए — मुतलक की तरफ से बड़ी हलाकत की तरह आएगा। 7 इसलिए सब हाथ ढीले होंगे, और हर एक का दिल पिघल जाएगा, 8 और वह पेरेशान होंगे ज़ॉकीं और गमगीनी उनको आ लेगी वह ऐसे दर्द में मुक्तिला होंगे जैसे औरत जिह की हलत में। वह सरासीहा होकर एक दूसरे का मुँह देवेंगे, और उनके चहरे शो‘तानुमा होंगे। 9 देखो खुदावन्द का वह दिन आता है जो गजब में और कहर — ए — शर्दीद में सखत दुस्त हैं, ताकि मुल्क को वीरान करे और गुनाहारों को उस पर से बर्बाद — ओ — हलाक कर दे। 10 क्यौंकि आसमान के सितारे और कवाकिब बेनू हो जायेंगे, और सूरज तलूँ होते होते तारीक हो जाएगा और चाँद अपनी रेशनी न देगा। 11 और मैं जहान को उसकी बुराई की वजह से, और शरीरों को उनकी बदकिरदारी की सजा दूँगा; और मैं मास्टरों का गुस्सर हलाक और बैटनाक लोगों का घमण्ड पस्त कर दूँगा। 12 मैं आदमी को खालिस सोने से, बल्कि इंसान को औफीर के कुन्दन से भी कमयाब बनाऊँगा। 13 इसलिए मैं आसमानों को लरजाऊँगा, और रब्ब — उल — अफवाज के गजब से और उसके कहर — ए — शर्दीद के रोज जमीन अपनी जगह से झटकी जाएगी। 14 और यूँ होगा कि वह खेदेंडे हुए आह, और लावारिस भेड़ों की तरह होंगे; उनमें से हर एक अपने लोगों की तरफ मुतवजिह होगा, और हर एक अपने बतन को भागेगा। 15 हर एक जो मिल जाए आर — पार छेड़ा जाएगा, और हर एक जो पकड़ा जाए तलबार से कल्ल किया जाएगा। 16 और उनके बाल बच्चे उनकी आँखों के सामने पार — पारा होंगे; उनके घर लटे जाएँगे, और उनकी औरतों की बेहुरमती होगी। 17 देखो मैं मादियों को उनके खिलाफ बरअगेखता कहूँगा, जो बाँदी को खातिर में नहीं लाते और सोने से खुश नहीं होते। 18 उनकी कमानें जवानों को टुकड़े — टुकड़े कर डालेंगी और वह शीरखारों पर तस न खाएँगे, और छोटे बच्चों पर रहम की नजर न करेंगे। 19 और बाबुल जो ममलुकतों की हशमत और कस्दियों की बुजुर्गी की

रोनक है सदूम और 'अमूरा की तरह हो जाएगा जिनको खुदा ने उलट दिया। 20 वह हमेशा तक आबाद न होगा और नसल — दर — नसल उसमें कोई न बसेगा; हरगिज 'अरब खेमें न लगाएँगे, वहाँ गड़रिये गल्लों को न भटकायेंगे 21 लेकिन जंगल के जंगली दरिन्दे वहाँ बैठेंगे और उनके घरों में उल्ल भरे होंगे; वहाँ शृतसुर्ग बसेंगे, और छगमानस वहाँ नाचेंगे। 22 और गीद उनके 'आलीशान मकानों में और भेड़िये उनके रंगमलों में चिल्लाएँगे; उसका वक्त नज़दीक आ पहुँचा है, और उसके दिनों को अब तल नहीं होगा।

14 क्यौंकि खुदावन्द याँकूब पर रहम फरमाएगा, बल्कि वह इस्लाइल को

भी बरगुजीदा करेगा और उनको उनके मुल्क में फिर काईम करेगा और परदेसी उनके साथ मेल करेंगे और याँकूब के घराने से मिल जाएँगे। 2 और लोग उनको लाकर उनके मुल्क में पहुँचाएँगे और इस्लाइल का घराना खुदावन्द की सरजमीन में उनका मालिक होकर उनको गुलाम और लौटियाँ बनाएगा क्यौंकि वह अपने गुलाम करने वालों को गुलाम करेंगे, और अपने जुल्म करने वालों पर हक्मत करेंगे। 3 और यूँ होगा कि जब खुदावन्द तुझे तेरी मेहनत — ओ — मशक्कत से, और सख्त खिदमत से जो उन्होंने तुझ से कराई, राहत बख्शेगा, 4 तब तू शाह — ए — बाबुल के खिलाफ यह मसल लाएगा और कहेगा, कि 'जातिम कैसा हलाक हो गया, और गासिब कैसा हलाक हुआ। 5 खुदावन्द ने शरीरों का लठ, याँनी बेइन्साफ हाकिमों का 'असा तोड डाला; 6 वही जो लोगों को कहर से मराता रहा और कौमों पर गजब के साथ हुक्मरानी करता रहा, और कोई रोक न सका। 7 सारी जमीन पर आराम — ओ — आसाइश है, वह अचानक गीत गाने लगते हैं। 8 हाँ, सनोबर के दरखत और लुबनान के देवदार तुझ पर यह कहते हैं एक खुरी करते हैं, कि 'जब से तू गिराया गया, तब से कोई काटनेवाला हमारी तरफ नहीं आया। 9 पाताल नीचे से तेरी वजह से जुम्बिश खाता है कि तेरे आते बत्त तेरा इस्तकबाल करें; वह तेरे लिए मुर्दों को याँनी जमीन के सब सरदारों को जगाता है; वह कौमों के सब बादशाहों को उनके तख्तों पर से उठा खड़ा करता है। (Sheol h7585) 10 वह सब तुझ से कहेंगे, क्या तू भी हमारी तरह 'अजिज हो गया; तू ऐसा हो गया जैसे हम हैं?' 11 तेरी शान — ओ — शौकत और तेरे साजों की खुश आवाजी पाताल में उतारी गई; तेरे नीचे कँडियों का फर्श हुआ, और कीड़े ही तेरा बालापोश बनें। (Sheol h7585) 12 ऐ सुबह के सितारे, तू क्यौंकि राजमीन पर पटका गया! 13 तू तो अपने दिल में कहता था, मैं आसमान पर चढ़ जाऊँगा; मैं अपने तख्त को खुदा के सितारों से भी ऊँचा कहूँगा, और मैं उतरी अतराफ में जमा' अत के पहाड़ पर बैठूँगा; 14 मैं बालों से भी ऊपर चढ़ जाऊँगा, मैं खुदा ताँआला की तरह हूँगा। 15 लेकिन तू पाताल में गढ़े की तह में उतारा जाएगा। (Sheol h7585) 16 और जिनकी नजर तुझ पर पड़ेगी, तुझे गौर से देखकर कहेंगे, 'क्या यह वही शख्स है जिसने जमीन को लरजाया और ममलुकतों को हिला दिया; 17 जिसने जहान को वीरान किया और उसकी बसियाँ उजाड़ दी, जिसने अपने गुलामों को आजाद न किया कि घर की तरफ जाएँ? 18 कौमों के तमाम बादशाह सब के सब अपने घर में शौकत के साथ आराम करते हैं, 19 लेकिन तू अपनी कब्र से बाहर, निकम्मी शाख की तरह निकाल फेंका गया; तू उन मकतुलों के नीचे दबा है जो तलबार से छेदे गए और गढ़े के पथरों पर गिरे हैं, उस लाश की तरह जो पाँवों से लाटाड़ी गई हो। 20 तू उनके साथ कभी कब्र में दफन न किया जाएगा, क्यौंकि तुमे अपनी ममलुकत को वीरान किया और अपनी 'र' अयत को कल्प न किया, 'बदकिरदारों की नस्ल का नाम बाकी न रहेगा। 21 उसके फर्जन्दों के लिए उनके बाप दादा के गुनाहों की वजह से कल्प का सामान तैयार करो, ताकि वह फिर उठ कर मुल्क के मालिक न हो

जाएँ और इस जर्मीन को शहरों से मार्ग न करें।” 22 क्यूंकि रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, मैं उनकी मुखालिफत को उड़ाना, और मैं बाबूल का नाम मिटाऊँगा और उनको जो बाकी हैं, बेटों और पोतों के साथ काट डालूँगा; यह खुदावन्द का फरमान है। 23 रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है “मैं उसे खार पुरत की मीरास और तालब बना दूँगा और उसे फना के झाड़ से साफ कर दूँगा।” 24 रब्ब — उल — अफवाज कसम खाकर फरमाता है, कि यकीनन जैसा मैंने चाहा वैसा ही हो जाएगा; और जैसा मैंने इरादा किया है, वही बजूद में आयेगा। 25 मैं अपने ही मुल्क में असूरी को शिक्षत दूँगा, और अपने पहाड़ों पर उसे पैंच तले लताहूँगा; तब उसका जूहा उन पर से उतरेगा, और उसका बोझ उनके कंधों पर से टलेगा। 26 सारी दुनिया के जरिए यही है, और सब कौमों पर यही हाथ बढ़ाया गया है। 27 क्यूंकि रब्ब — उल — अफवाज ने इरादा किया है, कौन उसे बातिल करेगा? और उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोकेगा? 28 जिस साल आखज बादशाह ने बकात पाई उसी साल यह बार — ए — नबुव्वत आया: 29 “ऐ कुल फिलिस्तीन, तू इस पर खुश न हो कि तुझे मारने वाला लठ टूट गया; क्यूंकि साँप की अस्त्व से एक नाग निकलेगा, और उसका फल एक उड़नेवाला आग का साँप होगा। 30 तब गरिबों के पहलौठे खाएँगे, और मोहताज आराम से सोएँगे; लेकिन मैं तेरी जड़ काल से बर्बाद कर दूँगा, और तेरे बाकी लोग कत्ल किए जाएँगे। 31 ऐ फटाक, तू बावैला कर; ऐ शहर, तू चिल्ला; ऐ फिलिस्तीन, तू बिल्कुल गुदाज हो गई। क्यूंकि उत्तर से एक धूंधा उठेगा और उसके लश्करों में से कोई पीछे न रह जाएगा।” 32 उस वक्त कौम के कासिदों को कोई क्या जवाब देगा? कि ‘खुदावन्द ने सिय्यन को तामीर किया है, और उसमें उसके गरीब बन्दे पनाह लेंगे।

15 मुआब के बारे में नबुव्वत: एक ही रात में ‘आर — ए — मोआब खराब और हलाक हो गया; एक ही रात में कीर — ए — मोआब खराब और हलाक हो गया। 2 बैत और दीबोन ऊँचे कामों पर रोने के लिए चढ़ गए हैं; नबू और मीदाब पर अहल — ए — मोआब बावैला करते हैं; उन सब के सिर मुण्डाए गए और हर एक की दाढ़ी काटी गई। 3 वह अपनी राहों में टाट का कमरबन्द बांधते हैं, और अपने घरों की छतों पर और बाजारों में नौहा करते हुए सब के सब जार जार रोते हैं। 4 हस्बोन और इन्हीं आली बावैला करते हैं उनकी आवाज यहज तक सुनाई देती है; इस पर मोआब के मुसल्लह सिपाही चिल्ला चिल्ला कर रोते हैं उसकी जान उसमें थरथराती है। 5 मेरा दिल मोआब के लिए फरियाद करता उसके भागने वाले जुगार तक ‘अजलत शलेशियाह तक पहुँचे हाँ वह लहूती की चढ़ाई पर रोते हुए चढ़ जाते, और होरोनायम की राह में हलाकत पर बावैला करते हैं। 6 क्यूंकि निमरियम की नहरें खराब हो गई क्यूंकि घास कुम्ता गई और सज्जा मुर्जा गया और रोयदरी का नाम न रहा। 7 इसलिए वह फिरावान माल जो उन्होंने हासिल किया था, और जर्खीरा जो उन्होंने रख छोड़ा था, बेद की नदी के पार ले जाएँगे। 8 क्यूंकि फरियाद मोआब की सहरों तक और उनका नौहा इजलाइम तक और उनका मातम बैर एलीम तक पहुँच गया है। 9 क्यूंकि दीमोन की नदियाँ खून से भरी हैं मैं दीमोन पर ज्यादा मुसीबत लाऊँगा क्यूंकि उस पर जो मोआब में से बचकर भागेगा और उस मुल्क के बाकी लोगों पर एक शेर — ए — बबर भेज़ूँगा।

16 सिला’ से बीराने की राह दुखर — ए — सिय्यन के पहाड़ पर मुल्क के हाकिम के पास बर्बे भेजो। 2 क्यूंकि अरनून के घाटों पर मोआब की बेटियाँ, आवारा परिनदों और उनके तिर वितर बच्चों की तरह होगी। 3 सलाह दो, इन्साफ करो, अपना साथा, दोपहर को रात की तरह बनाओ;

जिलावतनों को पनाह दो; फरारियों को हवाले न करो। 4 मेरे जिलावतन तेरे साथ रहें, तू मोआब को गारतगरों से छिपा ले, क्यूंकि सितमार खत्म होंगे और गारतगरी तमाम हो जाएगी और सब जालिम मुल्क से फना होंगे। 5 यूँ तब रहमत से काईम न होगा, और एक शख्स रास्ती से दाऊद के खेमे में उस पर जलूस फरमा कर ‘अद्ल की पैरवी करेगा, और रास्तबाजी पर मुस्त़इद रहेगा। 6 हम ने मोआब के घमण्ड के जरिए सुना है कि वह बड़ा घमण्डी है, उसका तकब्बुर और घमण्ड और कहर भी सुना है, उसकी शेखी हेच है। 7 इसलिए मोआब बावैला करेगा, मोआब के लिए हर एक बावैला करेगा; कीर हिरासत की किशमिश की टिकियों पर तुम सख्त तबाह हाती में मातम करोगे। 8 क्यूंकि हस्तोन के खेत सख गए, कौमों के सरदारों ने सिबमाह की ताक की बहतरीन शारों को तोड़ डाला; वह या जेर तक बढ़ी, वह जंगल में भी फैली; उसकी शारों दूर तक फैल गई, वह दरिया पार गुज़री। 9 फिर मैं याँज़ेर के आह — ओ — नाले से सिबमाह की ताक के लिए जारी कस्तूरा ऐ हस्त्वन ऐ इल्लीं आली मैं तुझे अपने आँखुओं से तर कर दूँगा, क्यूंकि तेरे दिनों गमी के मेंदों और गल्ले की फसल को गोगा — ए — जंग ने आ लिया; 10 और शादमानी छिन ली गई और हरे भेरे खेतों की खुशी जाती रही; और तकिसतों में गाना और ललकारना बन्द हो जाएगा; पामाल करनेवाले अंगरूओं को फिर हौज़ों में पामाल न करेंगे; मैंने अंगरू की फसल के गल्ले की खत्म कर दिया। 11 इसलिए मेरा अन्दरून मोआब पर और और मेरा दिल कीर हारस पर बरबत की तरह फुगा खेज़े हैं। 12 और यूँ होगा कि जब मोआब हाजिर हो और ऊँचे मकाम पर अपने आपको थकाए बल्कि अपने माँबद में जाकर दुआ करे, उसे कुछ फायदा न होगा। 13 यह वह कलाम है जो खुदावन्द ने मोआब के हक में पिछले जमाने में फरमाया था 14 लेकिन अब खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तीन बरस के अन्दर जो मजदूरों के बरसों की तरह हों, मोआब की शौकत उसके तमाम लश्करों के साथ हकीर हो जाएगी; और बहुत थोड़े बाकी बचेंगे, और वह किसी हिसाब में न होगे।

17 दमिश्क के बारे में बार — ए — नबुव्वत, “देखो दमिश्क अब तो शहर न रहेगा, बल्कि खण्डर का देर होगा। 2 ‘अरोँइ’ की बसियों बीरान हैं और गल्लों की चरागाहें होंगी; वह वहाँ बैठेंगे, और कोई उनके डराने को भी वहाँ न होगा। 3 और इफाईम में कोई किला’ न रहेगा, दमिश्क और अराम के बकिए से सलतनत जाती रहेगी, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, जो हात बनी — इसाईल की शौकत का हुआ वही उनका होगा। 4 और उस वक्त यूँ होगा कि याँकूब की हस्तम घट जाएगी, और उसका चर्बीदार बदन दुबला हो जाएगा। 5 यह ऐसा होगा जैसा कोई खड़े खेत काटकर गल्ला जमा करे और अपने हाथ से बालें तोड़े; बल्कि ऐसा होगा जैसा कोई रिफाईम की वादी में खोशाईनी करे। 6 खुदावन्द इसाईल का खुदा फरमाता है कि तब उसका बकिया बहुत ही थोड़ा होगा, जैसे जैतून के दरखत का जब वह हिलाया जाए, याँनी दो तीन दाने चोटी की शाख पर, चार पैंच फलवाले दरखत की बैस्ती शाखों पर। 7 उस रोज इंसान अपने खालिक की तरफ नज़ार करेगा और उसकी आँखें इसाईल के कुदूस की तरफ देखेंगी; 8 और वह मजबहों याँनी अपने हाथ के काम पर नज़र न करेगा, और अपनी दस्तकारी याँनी यसीरितों और बूतों की परवा न करेगा। 9 उस वक्त उसके फसीलदार शहर उजड़े जंगल और पहाड़ की चोटी पर के मकामात की तरह होंगे; जो बनी — इसाईल के सामने उजड़ गए, और वहाँ बीरानी होगी। 10 चूँकि तुमे अपने नजात देनेवाले खुदा को फरामेश किया, और अपनी तवानाई की चट्टान को याद न किया; इसलिए तू ख़बूसूर धौधे लगाता और ‘अर्जीब कलमें उसमें जमाता है। 11 लगाते वक्त उसके चारों तरफ अहाता बनाता है, और सुबह को उसमें फूल खिलते हैं;

लेकिन उसका हासिल दुख और सख्त मुसीबत के बक्तव्य बेकार है। 12 आह! बहुत से लोगों का हंगामा है! जो समन्दर के शेर की तरह शोर मचाते हैं, और उम्मतों का धावा बड़े सैलाब के रेले की तरह है। 13 उम्मतें सैलाब — ए — 'अज्ञीम की तरह आ पड़ेंगी; लेकिन वह उनको डॉटेंगा, और वह दूर भाग जाएँगी, और उस भूसे की तरह जो टीटों के ऊपर आँखी से उड़ता फिरे और उस गर्द की तरह जो बोगे में चक्कर खाए रोटी जाएँगी। 14 शाम के बक्तव्य तो हैबत है! सुबह होने से पहले वह हलाक है! ये हमारे गारतगरों का हिस्सा और हम को लूटनेवालों का हिस्सा है।

18 आह! पर्यों के फड़फड़ाने की सर जमीन जो कृश की नदियों के पार है।

2 जो दरिया की राह से बुद्धी की क्रितियों में सतह — ए — आब पर कासिद भेजती है! ऐ तेज़ फ्रतार कासिदों, उस कौम के पास जाओ जो ताकतवर और खबूसूरत है; उस कौम के पास जो शूरू से अब तक मुहीब है, ऐसी कौम जो ज़बरदस्त और फ्रतहयाब है जिसकी ज़मीन नदियों से मुक्तसम है। 3 ऐ जहान के तमाम बाशिनों, और ऐ ज़मीन के रहनेवालों, जब पहाड़ों पर झण्डा खड़ा किया जाए तो देखो और जब नरसिंहा फँका जाए तो सुनो। 4 क्यूँकि खुदावन्द ने मुझ से यूँ फरमाया है कि अपने घर में ताबिश — ए — आफताब की तरह और मौसिम — ए — दिरौ की गर्मी में शबनम के बादल की तरह सुकून के साथ नज़र करँगा।" 5 क्यूँकि फँसल से पहले जब कली खिल चुके और फूल की जगह अँगूर पकने पर हों, तो वह टहनियों को हस्ते से काट डालेगा और फैली हुई शाखों को छाँट देगा। 6 और वह पहाड़ के शिकारी परिन्दों और मैदान के दरिन्दों के लिए पड़ी रहेंगी; और शिकारी परिन्दे गर्मी के मौसम में उन पर बैठेंगे, ज़मीन के सब दरिन्दे जाडे के मौसम में उन पर लेटेंगे। 7 उस बक्तव्य रब्ब — उल — अफवाज के सामने उस कौम की तरफ से जो ताकतवर और खबूसूरत है, गिरोह की तरफ से जो शूरू से आज तक मुहीब है, उस कौम से जो ज़बरदस्त और ज़फरयाब है जिसकी ज़मीन नदियों से बँटी है एक हृदिया रब्ब — उल — अफवाज के नाम के मकान पर जो सिद्धून पहाड़ में है पहँचाया जाएगा।

19 मिस्र के बारे में नव्यवृत्त देखो खुदावन्द एक तेज़ रु बादल पर सवार होकर मिस्र में आता है, और मिस्र के बूत उसके सामने लरज़ों होंगे और मिस्र का दिल पिघल जाएगा। 2 और मैं मिस्रियों को आपस में मुखालिफ़ कर दूँगा; उनमें हर एक अपने भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से लड़ेगा, शहर — शहर से और सूबे — सूबे से; 3 और मिस्र की रुह अफसूर्द हो जाएगी, और मैं उसके मन्सूबे को फ़ना करँगा; और वह बुतों और अफसूराँओं और जिन्नात के यारों और जातुराओं की तलाश करेंगे। 4 लेकिन मैं मिस्रियों को एक सितमगर हाकिम के काबू में कर दूँगा, और ज़बरदस्त बादशाह उन पर सलतनत करेगा; यह खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज का फरमान है। 5 और दरिया का पानी सुख जाएगा, और नदी खुशक और खाली हो जाएगी। 6 और नाले बदबू हो जाएँगे, और मिस्र की नहरें खाली होंगी और सूख जाएँगी, और बेद और ने मुरझा जाएँगे। 7 दरिया-ए-नील के किनारे की चरागाहें और वह सब चीजें जो उसके आस — पास बोई जाती हैं मुरझा जायेंगी और बिल्कुल बर्बाद — औ — हलाक हो जाएँगी। 8 तब माहीगिर मातम करेंगे, और वह सब जो दरिया-ए-नील में शरत डालते हैं गम्भीर होंगे; और पानी में जाल डालने वाले बहत बेताब हो जाएँगे। 9 और सन झाड़ने और कतान बुननेवाले घबरा जाएँगे। 10 हाँ उसके अरकान शिकस्ता और तमाम मज़दूर रंजिदा खातिर होंगे 11 ज़ुअन के शहजादे बिल्कुल बेवकूफ हैं फ़िर 'औन के सबसे 'अक्लमन्द सलाहकारों की मन्त्रवत वहशियाना ठहरी। फिर तुम क्यूँकर फ़िर 'औन से कहते

हो, कि मैं 'अक्लमन्दों का फ़र्जन्द और शाहन — ए — कटीम की नसल हूँ?

12 अब ऐरे 'अक्लमन्द कहाँ है? वह तुझे खबर दें, अगर वह ज़ानते होते कि रब्ब — उल — अफवाज ने मिस्र के हक्म में याहा इरादा किया है। 13 ज़ुअन के शहजादे बेवकूफ बन गए हैं, नूफ़ के शहजादों ने धोखा खाया और जिन पर मिस्री कबाइल का भरोसा था उन्ही ने उनको गुमराह किया। 14 खुदावन्द ने कज़रवी की रुह उनमें डाल दी है और उन्होंने मिस्रियों को उनके सब कामों में उस मतवाले की तरह भटकाया जो उलटी करते हुए डगमगाता है। 15 और मिस्रियों का कोई काम न होगा, जो सिर या दुम या खास — ओ — 'आम कर सके। 16 उस बक्तव्य रब्ब — उल — अफवाज के हाथ चलाने से जो वह मिस्र पर चलाएगा, मिस्री 'औरतों की तरह हो जाएंगे, और हैबतज़दह और परेशान होंगे। 17 तब यहदाह का मुल्क मिस्र के लिए दहशत नाक होगा, हर एक जिससे उसका ज़िक्र हो खौफ खाएगा; उस इरादे की वजह से जो रब्ब — उल — अफवाज ने उनके खिलाफ़ कर रख्या है। 18 उस रोज़ मुल्क — ए — मिस्र में पाँच शहर होंगे जो कनानी ज़बान बोलेंगे, और रब्ब — उल — अफवाज की कसम खाएंगे; उनमें से एक का नाम शहर — ए — आफताब होगा। 19 उस बक्तव्य मुल्क — ए — मिस्र के वस्त्र में खुदावन्द का एक मजबह और उसकी सरहद पर खुदावन्द का एक सुतून होगा। 20 और वह मुल्क — ए — मिस्र में रब्ब — उल — अफवाज के लिए निशान और गवाह होगा; इसलिए कि वह सितमगरों के ज़ुम्से खुदावन्द से फरियाद करेंगे, और वह उनके लिए रिहाई देने वाला और हामी भेजेगा, और वह उनको रिहाई देगा। 21 और खुदावन्द अपने आपको मिस्रियों पर ज़ाहिर करेगा और उस बक्तव्य मिस्री खुदावन्द को पहचानेंगे, और ज़बीह और हादिये पेश करेंगे; हाँ, वह खुदावन्द के लिए मिन्नत मौंगेंगे और अदा करेंगे। 22 और खुदावन्द मिस्रियों को मारेगा, मारेगा और शिफा बख्शेगा; और वह खुदावन्द की तरफ रुज़ू़ लाएँगे और वह उनकी दुआ सुनेगा, और उनको सेहत बख्शेगा। 23 उस बक्तव्य मिस्र से असूर तक एक शाह — ए — राह होगी और असूरी मिस्र में आएँगे और मिस्री असूर को जाएंगे, मिस्री असूरियों के साथ मिलकर इबादत करेंगे। 24 तब इसाईं आरहेगा। 25 क्यूँकि रब्ब — उल — अफवाज उनको बरकत बख्शेगा और फरमाएगा मुबारक हो मिस्री मेरी उम्मत असूर मेरे हाथ की सन्नत और इसाईं मेरी मीरास।

20 जिस साल सरजून शाह — ए — असूर ने तरतान को अशदूद की

तरफ भेजा, और उसने आकर अशदूद से लड़ाई की और उसे फतह कर लिया; 2 उस बक्तव्य खुदावन्द ने यासा'याह बिन अमूस के ज़रिएँ बूँ फरमाया, कि जा और टाट का लिबास अपनी कमर से खोल डाल और अपने पाँवों से ज़ते उतार, तब उसने ऐसा ही किया, वह बरहना और नगे पाँव फिरा करता था। 3 तब खुदावन्द ने फरमाया, जिस तरह मेरा बन्दा यासा'याह तीन बरस तक बरहना और नगे पाँव फिरा किया, ताकि मिस्रियों और कूशियों के बारे में निशान और ताँ अज्जब हो। 4 उसी तरह शाह — ए — असूर मिस्री गुलामों और कशी जिलावतनों को क्या बूढ़े क्या जवान बरहना और नगे पाँव और बेपर्दी सुरनियों के साथ मिस्रियों की स्वावै के लिए ले जाएगा। 5 तब वह परेशान होंगे और कृश से जो उनकी उम्मीदागाह थी, और मिस्र से जो उनका घमण्ड था, शर्मिन्दा होंगे। 6 और उस बक्तव्य इस साहिल के बाशिन्दे कहेंगे देखो हमारी उम्मीदागाह का यह हाल हुआ जिसमें हम मदद के लिए भागे ताकि असूर के बादशाह से बच जाएँ फिर हम किस तरह रिहाई पायें।

21 दश — ए — दरिया के बारे में नबुव्वतः जिस तरह दक्षिणी हवा ज़ोर से चली आती है, उसी तरह वह दश से और मुहीब सरज़मीन से नजदीकी आ रहा है।

2 एक हैलानाक ख्वाब मझे नजर आया; दगाबाज दगाबाजी करता है; और गारतगर गारत करता है ऐ ऐलाम, चढाई कर, ऐ माई, मुहासिरा कर; मैं वह सब कराहना जो उसकी बजह से हआ, खत्म करता हूँ। 3 इसलिए मेरी कमर में सख्त दर्द है, मैं जैसे दर्द — ए — जिह में तड़पता हूँ, मैं ऐसा पेरेनान हूँ कि सुन नहीं सकता; मैं ऐसा पेरेनान हूँ कि देख नहीं सकता। 4 मेरा दिल धड़कता है, और खौफ अचानक मुझ पर गालिब आ गया; शफक — ए — शाम जिसका मैं आरज़मन्द था, मेरे लिए खौफनका हो गई। 5 दस्तरख्बान बिछाया गया, निगहबान खड़ा किया गया, वह खते हैं और पीते हैं; उठो ऐ सरदारों सिपर पर तेल मलो! 6 क्यूँकि खुदावन्द ने मुझे यूँ फरमाया, कि “जा निगहबान बिठा; वह जो कुछ देखे वही बताए।” 7 उसने सवार देखे, जो दो — दो आते थे, और गधों और ऊँटों पर सवार और उसने बड़े गौर से सना।” 8 तब उसने शेर की तरह आवाज से पुकारा, ऐ खुदावन्द, मैं अपनी दीदाग़ाह पर ताम दिन खड़ा रहा, और मैंने हर रात पहरे की जगह पर काटी। 9 और देख, सिपाहियों के गोल और उनके सवार दो — दो करके आते हैं! “फिर उसने यूँ कहा, कि बाबूल गिर पड़ा, गिर पड़ा; और उसके माँबूदों की सब तराशी हँड़ मूर्तें बिल्कुल टूटी पड़ी हैं।” 10 ऐ मेरे गाहे हुए और मेरे खलीहान के गल्ले, जो कुछ मैंने रब्ब — उल — अफवाज इसाईल के खुदा से सना, तमसे कह दिया। 11 दूमा के बारे में नबुव्वत किसी ने मुझ को शाँझे से पुकारा कि ऐ निगहबान, रात की क्या खबर है? 12 निगाहबान ने कहा, सबह होती है और रात भी अगर तुम पूछना चाहते हो तो पूछो तुम फिर आना? 13 ‘अरब के बारे में नबुव्वत ऐ ददानियों के क्राफिलों, तुम ‘अरब के जंगल में रात काटोगे। 14 वह प्यासे के पास पानी लाए, तेमा की सरज़मीन के बाशिने, रोटी लेकर भागने वाले से मिलने को निकले। 15 क्यूँकि वह तलवारों के सामने से ननी तलवार से, और खेंची हँड़ कमान से, और जंग की शिल्प से भागे हैं। 16 क्यूँकि खुदावन्द ने मुझ से यूँ कहा कि मजदूर के बरसों के मुताबिक, एक बरस के अन्दर अन्दर कीदार की सारी हशमत जाती रहेगी। 17 और तीर अन्दाजों की ताँदाद का बकिया यानी बनी कीदार के बहादूर थोड़े से होंगे; क्यूँकि इसाईल के खुदा ने यूँ फरमाया है।

22 ख्वाब की बादी के बारे में नबुव्वत अब तुम को क्या हुआ कि तुम सब के सब कोठों पर चढ़ गए? 2 ऐ पूर शोर और गौगाई शहर ऐ शादमान बस्ती तेरे मकतूल न तलवार से कत्ल हुए और न लडाई में मारे गए। 3 तेरे सब सरदार इकट्ठे भाग निकले, उनको तीर अन्दाजों ने शुलाम कर लिया; जिनने तुझ में पाए गए सब के सब, बल्कि वह भी जो दूर से भाग गए थे गुलाम किए गए हैं। 4 इसीलिए मैंने कहा, मेरी तरफ मत देखो, क्यूँकि मैं जार — जार रोतांगा मेरी तसल्ली की फिक्र मत करो, क्यूँकि मेरी दुखतर — ए — कौम बर्बाद हो गई। 5 क्यूँकि खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज की तरफ से ख्वाब की बादी में, यह दुख और पापाती ओ — बेकरारी और दीवारों को गिराने और पहाड़ों तक फरियाद पहुँचाने का दिन है। 6 क्यूँकि ऐलाम ने जंगी रथों और सवारों के साथ तरकश उठा लिया और कीर ने सिपर का गिलाफ उतार दिया। 7 और यूँ हुआ कि तेरी बेहतरीन बादियाँ ज़ंगली रथों से माँभू हो गई और सवारों ने फाटक पर सफारीआराई की; 8 और यहदाह का नकाब उतारा गया। और तु अब दश — ए — महल के सिलाहानाए पर निगह करता है, 9 और तुम ने दाऊद के शहर के रखने देखे कि बेशुमर हैं, और तुम ने नीचे के हौज में पानी जमा किया। 10 और तुम ने येस्शलेम के घरों को गिना और उनको गिराया ताकि शहर पनाह को मजबूत करो, 11 और तुम ने पुराने हौज के पानी

के लिए दोनों दीवारों के बीच एक और हौज बनाया; लेकिन तुम ने उसके पानी पर निगाह न की और उसकी तरफ जिसने पहले से उसकी तदबीर की मुतवज्जह न हुए। 12 और उस वक्त खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज ने रोने और मातम करने, और सिर मुन्डाने और टाट से कमर बाँधने का हक्म दिया था; 13 लेकिन देखो, खुशी और शादमानी, गाय बैल को जबह करना और भेड़ — बक्री को होलाल करना और गोशत ख्वारी — ओ — मयनेशी कि आओ खाँ और पिंये क्यूँकि कल तो हम मरेंगे। 14 और रब्ब — उल — अफवाज ने मेरे कान में कहा, कि तुम्हारी इस बदकिरदारी का कफ़कारा तुम्हारे मने तक भी न हो सकेगा यह खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज का फरमान है। 15 खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज यह फरमाता है कि उस खजान्ची शबनाह के पास जो महल पर मूँअय्यन है, जा और कह: 16 तू यहाँ क्या करता है? और तेरा यहाँ कौन है कि तू यहाँ अपने लिए कब्र तराशता है? बुलन्दी पर अपनी कब्र तराशता है और चाढ़ान में अपने लिए घर खुदवाता है। 17 देख, ऐ जबरदस्त, खुदावन्द तुझ को जोर से दूर फेंक देगा; वह यकीन तुझे पकड़ रखेगें। 18 वह बेशक तुझ को गेंद की तरह धुमा — धुमाकर बड़े मुल्क में उछलेगा; वहाँ तू मरेगा और तेरी हशमत के रथ वही रहेंगे, ऐ अपने आका के घर की स्वर्वाई। 19 और मैं तुझे तेरे मन्सब से बरतरफ कहँसँगा, हाँ वह तुझे तेरी जगह से खीच उतारेगा। 20 और उस रोज़ यूँ होगा कि मैं अपने बन्दे इलियाकीम — बिन — खिलियाह को बुलाऊँगा, 21 और मैं तेरा खिलाँ अत उसे पहनाऊँगा और तेरा पटका उस पर कहँसँगा, और तेरी हक्मत उसके हाथ में हवाले कर दूँगा; और वह अहल — ए — येस्शलेम का और बनी यहदाह का बाप होगा। 22 और मैं दाऊद के घर की कुंजी उसके कंधे पर रखवाँगा, तब वह खोलेगा और कोई बन्द न करेगा; और वह बन्द करेगा और कोई न खोलेगा। 23 और मैं उसको खेंची की तरह मजबूत जगह में मुहकम कहँसँगा, और वह अपने बाप के घरने के लिए जलाती तड़क होगा। 24 और उसके बाप के खान्दान की सारी हशमत यानी आल — ओ — औलाद और सब छोटे — बड़े बर्तन प्यालों से लेकर करावों तक सबको उसी से मन्सब करेगा। 25 रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, उस वक्त वह खेंची जो मजबूत जगह में लगाई गई थी हिलाई जाएगी, और वह काटी जाएगी और गिर जाएगी, और उस पर का बोझ गिर पड़ेगा; क्यूँकि खुदावन्द ने यूँ फरमाया है।

23 सूर के बारे में नबुव्वत ऐ तरसीस के जहाजो, वावैला करो क्यूँकि वह उजड गया, वहाँ कोई घर और कोई दाखिल होने की जगह नहीं! कितीमी की जमीन से उनको ये खबर पहुँची है। 2 ऐ साहिल के बाशिन्दों, जिनको सैदानी सौदागरों ने जो समन्दर के पार आते जाते हैं मालामाल कर दिया है, खामोश रहो। 3 समन्दर के पार से सीहोरा का गल्ला और दरिया-ए-नील की फसल उसकी अमदनी थी, तब वह कोमों की तिजारत — गाह बना। 4 ऐ सैदा, तू शरमा, क्यूँकि समन्दर ने कहा है, “समन्दर की गढ़ी ने कहा, मुझे दर्द — ए — जिह नहीं लगा, और मैंने बच्चे नहीं जने; मैं जवानों को नहीं पालती, और कुँवारियों की पवरिश नहीं करती हैं।” 5 जब अहल — ए — मिस्र को यह खबर पहुँचेगी, तो वह सूर की खबर से बहुत गमगीन होंगे। 6 ऐ साहिल के बाशिन्दों, तुम जार — जार रोते हुए तरसीस को चले जाओ। 7 क्या यह तुम्हारी शादमान बस्ती है, जिसकी हस्ती पहले से है? उसी के पाँव उसे दूर — दूर ले जाते हैं कि परदेस में रहे। 8 किसी ने यह मंसूबा सूर के खिलाफ बाँधा जो ताज बखारा है जिसके सौदागर 'उमरा और जिसके ताजिर दुनिया भर के 'इज्जतदार हैं। 9 रब्ब — उल — अफवाज ने ये इरादा किया है कि सारी हशमत के घमण्ड को हलाक करे और दुनिया भर के इज्जतदारों को जलील करे। 10 ऐ दुखतर — ए — तरसीस दरिया-ए-नील की तरह अपनी सरज़मीन

पर फैल जा अब कोई बन्द बाकी नहीं रहा। 11 उसने समन्दर पर अपना हाथ बढ़ाया, उसने ममलकतों को हिला दिया; खुदावन्द ने कनान के हक में हक्म किया है कि उसके किले मिस्मान किए जाएँ। 12 और उसने कहा, “ऐ, मज़लूम कुँवारी, दुख्तर — ए — सैदा, तू फिर कभी घमण्ड न करेगी; उठ कितीम में चली जा, तुझे वहाँ भी चैन न मिलेगा।” 13 कस्तियों के मुल्क को देख! यह कौम मौजूद न थी; अस्सर ने उसे वीरान के रहनेवालों का हिस्सा ठहराया। उन्होंने अपने बुर्ज बनाए उन्होंने उसके महल गारत किये और उसे वीरान किया। 14 ऐ तरसीस के जहाजों वैवेला करो क्यूंकि तुम्हारा किला” उजाड़ा गया। 15 और उस बक्त यूँ होगा कि सूर किसी बादशाह के दिनों के मुताबिक, सतर बरस तक फरामोश हो जाएगा, और सतर बरस के बाद सूर की हालत फाहिशा के गीत के मुताबिक होगी। 16 ऐ फाहिशा तू जो फरामोश हो गई है, बर्बत उठा ले और शहर में फिरा कर राग को छेड़ और बहुत — सी गजलें गा कि लोग तुझे याद करें। 17 और सतर बरस के बाद यूँ होगा कि खुदावन्द सूर की खबर लेगा, और वह उजर पर जाएगी और इस जमीन पर की तमाम ममलकतों से बटकारी करेगी। 18 लेकिन उसकी तजारत और उसकी उजरत खुदावन्द के लिए मुकद्दस होगी और उसका माल न जखीरा किया जाएगा और न जमा। रहेगा बल्कि उसकी तजारत का हासिल उनके लिए होगा, जो खुदावन्द के सामने रहते हैं कि खाकर सेर हों और नफीस पोशाक पहने।

24 देवो खुदावन्द जमीन को खाली और सरनगै करके वीरान करता है और उसके बाशिन्दों को तितर — बितर कर देता है। 2 और यूँ होगा कि जैसा रंगित का हाल, वैसा ही काहिन का; जैसा नौकर का, वैसा ही उसके साहिक का; जैसा लौटी का, वैसा ही उसकी बीती का; जैसा खरीदार का, वैसा ही बेचेवाले का; जैसा कर्ज देनेवाले का, वैसा ही कर्ज लेनेवाले का; जैसा सुद देनेवाले का, वैसा ही सुद लेनेवाले का। 3 जमीन बिल्कुल खाली की जाएगी, और बशित गारत होगी; क्यूंकि यह कलाम खुदावन्द का है। 4 जमीन इमारीन होती और मुराजाती है, जहाँ बेताब और पजमर्दी होता है, जमीन के ‘आलीं कट लोग नातवान होते हैं। 5 जमीन अपने बाशिन्दों से नापाक हूँ, क्यूंकि उन्होंने शरीरी अत को ‘उदलू किया, कानून से मुहरिक हूँ, हमेशा के ‘अहद को तोड़ा। 6 इस बज से लान्त ने जमीन को निगल लिया और उसके बाशिन्दे मुजरिम ठहरे, और इसीलिए जमीन के लोग भस्म हूँ और थोड़े से अदामी बच गए। 7 मय गमजदा, ताक पजमर्दी है; और सब जो दिलशाद थे आह भरते हैं। 8 ढोलकों की खुशी बन्द हो गई, खुशी मननेवालों का गुल — ओ — शेर तमाम हुआ, बरबत की शादमानी जाती रही। 9 वह फिर गीत के साथ मय नहीं पीते, पीनेवालों को शराब तल्ख मालम होगी। 10 सुनसान शहर वीरान हो गया, हर एक घर बन्द हो गया कि कोई अन्दर न जा सके। 11 मय के लिए बाजारों में वैवेला हो रहा है; सारी खुशी पर तारीकी छा गई, मुल्क की इश्कत जाती रही। 12 शहर में वीरानी ही वीरानी है, और फाटक तोड़ फोड़ दिए गए। 13 क्यूंकि जमीन में लोगों के बीच यूँ होगा जैसा जैतून का दरखत झाड़ा जाए, जैसे अंगू तोड़ने के बाद खोशा — चीनी। 14 वह अपनी आवाज बलन्द करेंगे, वह गीत गाएँगे; खुदावन्द के जलाल की वजह से समन्दर से ललकारेंगे। 15 तुम पूरब में खुदावन्द की और समन्दर के ज़ज़ीरों में खुदावन्द के नाम की, जो इस्माइल का खुदा है, तम्जीद करो। 16 इन्तिहा — ए — जमीन से नगरों की आवाज हम को सुनाइ देती है, जलाल — ओ — अज़मत सादिक के लिए। लेकिन मैने कहा, मैं गुदाज हो गया, मैं हलाक हुआ; मुझ पर अफरोज़! दगाबाजों ने दगा की; हाँ, दगाबाजों ने बड़ी दगा की। 17 ऐ जमीन के बाशिन्दे, खौफ और गढ़ा और दाम तुझ पर मुसलिलत हैं। 18 और यूँ होगा कि जो खौफनाक आवाज सुन कर भागे, गढ़े में गिरेगा; और जो गढ़े से निकल

आए, दाम में फँसेगा; क्यूंकि आसमान की खिड़कियाँ खुल गईं, और जमीन की बुनियाँ दें हिला रही हैं। 19 जमीन बिल्कुल उजड़ गई, जमीन यक्सर शिकस्ता हई, और शिद्दत से हिलाइ गई। 20 वह मतवत्ते की तरह डगमगाएँ और झोपड़ी की तरह आगे पीछे सरकाइ जाएँगी; क्यूंकि उसके गुनाह का बोझ उस पर भारी हआ, वह गिरेगी और फिर न उठेगी। 21 और उस बक्त यूँ होगा कि खुदावन्द आसमानी लश्कर को आसमान पर और जमीन के बादशाहों को जमीन पर सजा देगा। 22 और वह उन कैटियों की तरह जो गढ़े में डाले जाएँ, जमा किए जाएँगे और वह कैदखाने में कैद किए जाएँगे, और बहुत दिनों के बाद उनकी खबर ली जाएगी। 23 और जब रब्ब — उल — अफवाज सिय्यन पहाड़ पर और येस्शलोम में अपने बुर्जु बन्दों के सामने हश्मत के साथ सल्तनत करेगा, तो चाँद मुजरिब़ सूरज शर्मन्दा होगा।

25 ऐ खुदावन्द त मेरा खुदा है, मैं तेरी तम्जीद करँगा, तेरे नाम की इबादत करँगा क्यूंकि तूने ‘अर्जीब काम किए हैं, तेरी मसलहत कटीम से बफादारी और सच्चाई है। 2 क्यूंकि तूने शहर को खाक का देर किया; हाँ, फसीलदार शहर को खण्डर बना दिया और परदेसियों के महल को भी, यहाँ तक कि शहर न रह; वह फिर तामीर न किया जाएगा। 3 इसलिए जबरदस्त लोग तेरी इबादत करेंगे और हैबतनाक कौमों का शहर तुझ से डेरगा। 4 क्यूंकि तू गरीब के लिए किला’ और मोहताज के लिए परेशानी के बक्त मल्जा और अधीं से पनाहगाह और गर्मी से बचाने को साया हुआ, जिस बक्त जालिमों की साँस दिवारकन तफान की तरह हो। 5 त परदेसियों के शेर को खुशक मकान की गर्मी की तरह दूर करेगा और जिस तरह अबू के साथे से गर्मी हलाक होती है उसी तरह जालिमों का शादियाना बजाना खत्म होगा। 6 और रब्ब — उल — अफवाज इस पहाड़ पर सब कौमों के लिए फरबा चीजों से एक जियाफत तैयार करेगा बल्कि एक जियाफत तलछट पर से निश्चरी हूँ मय से; हाँ फरबा चीजों से जो पुरमज हों और मय से जो तलछट पर से खब निश्चरी हूँ हो। 7 और वह इस पहाड़ पर उस पर्दे को, जो तमाम लोगों पर पड़ा है और उस नकाब को, जो सब कौमों पर लटक रहा है, दूर कर देगा। 8 वह मौत को हमेशा के लिए हलाक करेगा और खुदावन्द खुदा सब के चररों से आँसू पोछ डालेगा, और अपने लोगों की स्वर्वाई तमाम सरजमीन पर से मिटा देगा; क्यूंकि खुदावन्द ने यह फरमाया है। 9 और उस बक्त यूँ कहा जाएगा, लो, यह हमारा खुदा है; हम उसकी राह तकते थे और वही हम को बचाएगा। यह खुदावन्द है, हम उसके इन्जिजार में थे। हम उसकी नजात से खुश — ओ — खर्रम होंगे। 10 क्यूंकि इस पहाड़ पर खुदावन्द का हाथ बरकरार रहेगा और मोआब अपनी ही जगह में ऐसा कुचला जाएगा जैसे मजबले के पानी में घास कुचली जाती है। 11 और वह उसमें उसकी तरह जो तैरते हुए हाथ फैलाता है, अपने हाथ फैलाएगा; लेकिन वह उसके गुरस को उसके हाथों के फन — धोखे के साथ पस्त करेगा। 12 और वह तेरी फसील के ऊँचे बुर्जों को तोड़कर पस्त करेगा, और जमीन के बल्कि खाक के बराबर कर देगा।

26 उस बक्त यहदाह के मुल्क में ये गीत गया जाएगा: हमारा एक मुहकम शहर है, जिसकी फसील और नसलों की जगह वह नजात ही को मुकर्रर करेगा। 2 तुम दरवाजे खोलो ताकि सादिक कौम जो बफादार रही दाखिल हो। 3 जिसका दिल काईम है तू उसे सालमत रखेंगे क्यूंकि उसका भरोसा तुझ पर है। 4 हमेशा तक खुदावन्द पर ऐंतामाद रखेंगे क्यूंकि खुदावन्द यहदाह हमेशा की चटान है। 5 क्यूंकि उसने बुलन्दी पर बसेनेवालों को नीचे उतारा, बुलन्द शहर को जेर किया, उसने उसे जेर करके खाक में मिलाया। 6 वह पाँव तले रौदा जाएगा; हाँ, गरीबों के पाँव और मोहताजों के कदमों से। 7 सादिक की

राह रास्ती है; तू जो हक है, सादिक की रहबरी करता है। 8 हाँ तेरी 'अदालत की राह में, ऐ खुदावन्द, हम तेरे मून्तजिर रहे; हमारी जान का इश्तियाक तेरे नाम और तेरी याद की तरफ है। 9 रात को मेरी जान तेरी मुश्तक है; हाँ, मेरी स्फुरतेरी जुस्तजू में कोर्शाँ रहेगी; क्यूँकि जब तेरी 'अदालत ज़मीन पर जारी है, तो दुनिया के बाशिन्दे सदाकत सीधते हैं। 10 हर चन्द शरीर पर मेहरबानी की जाए, लेकिन वह सदाकत न सीधेगा; रास्ती के मुल्क में नरास्ती करेगा, और खुदावन्द की 'अजमत को न देखेगा। 11 ऐ खुदावन्द, तेरा हाथ बुलन्द है लेकिन वह नहीं देखें, लेकिन वह लोगों के लिए तेरी गैरत को देखेंगे और शर्मसार होंगे, बल्कि आग तेरे दुश्मनों को खा जाएगी। 12 ऐ खुदावन्द, तू ही हम को सलामती बख्तोगा; क्यूँकि तू ही ने हमारे सब कामों को हमारे लिए अन्जाम दिया है। 13 ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, तेरे अलावा दूसरे हाकिमों ने हम पर हुक्मत की है; लेकिन तेरी मिटद से हम सिर्फ तेरा ही नाम लिया करेंगे। 14 वह मर गए, फिर जिन्ना न होंगे; वह रहलत कर गए, फिर न उठेंगे; क्यूँकि तेरे उन पर नजर की और उनको हलाक किया, और उनकी याद को भी मिटा दिया है। 15 ऐ खुदावन्द तेरे इस कौम को कसरत बख्ती है; तेरे इस कौम को बढ़ाया है, तूहीं जुल — जलाल है तूहीं ने मुल्क की हृदों को बढ़ा दिया है। 16 ऐ खुदावन्द, वह मुसीबत में तेरे तालिब हुए जब तेरे उनको तादीक की तो उन्होंने गिरया — ओ — जारी की। 17 ऐ खुदावन्द तेरे सामने हम उस हामिला की तरह हैं, जिसकी विलादत का वक्त नजदीक हो, जो दुख में है और अपने दर्द से चिल्लाती है। 18 हम हामिला हुए, हम को दर्द — ए — जिह लगा, लेकिन पैदा क्या हआ? हवा! हम ने ज़मीन पर आजादी को काँइम नहीं किया, और न दुनिया में बसनेवाले ही पैदा हुए। 19 तेरे मुर्दे जी उठेंगे, मेरी लाशें उठ खड़ी होंगी। तुम जो खाक में जा बर्से हो, जागो और गाओ! क्यूँकि तेरी ओस उस ओस की तरह है जो नवात पर पड़ती है, और ज़मीन मुर्दों को उगल देगी। 20 ऐ मेरे लोगो! अपने खिलत खानों में दाखिल हो, और अपने पिछे दरवाजे बन्द कर लो और अपने आपको थोड़ी देर तक छिपा रखलो जब तक कि ग़जब टल न जाए। 21 क्यूँकि देखो, खुदावन्द अपने मकाम से चला आता है, ताकि ज़मीन के बाशिन्दों को उनकी बदकिरदारी की सजा दे; और ज़मीन उस खून को ज़ाहिर करेगी जो उसमें है और अपने मकतुलों को हरणिज न छिपाएगी।

27 उस वक्त खुदावन्द अपनी सख्त और बड़ी और मजबूत तलवार से अजदाह यानी तेज़स् साँप को और अजदाह यानी पेचीदा साँप को सजा देगा; और दरियाई अजदहे को कत्ल करेगा। 2 उस वक्त तुम खुशनुमा ताकिस्तान का गीत गाना। 3 मैं खुदावन्द उसकी हिफाजत करता हूँ, मैं उसे हर दम सीचाता रहँगा। मैं दिन रात उसकी निगहबानी करूँगा कि उसे नुकसान न पहुँचे। 4 मुझ में कहर नहीं; तोभी काश के जंगाह में झाड़ियाँ और काँटे मेरे खिलाफ होते, मैं उन पर खुरूज करता और उनको बिल्कुल जला देता। 5 लेकिन अगर कोई मेरी ताकत का दामन पकड़े तो मुझ से स्लह करें; हाँ वह मुझ से सुलह करे। 6 अब आइन्दा दिनों में याकूब जड़ पकड़ेगा, और इसाईल पनपेगा और फूलेगा और इस ज़मीन को मेरों से मालामाल करेगा। 7 क्या उसने उसे मारा, जिस तरह उसने उसके मानेवालों को मारा है? या क्या वह कत्ल हुआ, जिस तरह उसके कातिल कत्ल हुए? 8 तूने इन्साफ के साथ उसको निकालते वक्त उससे हुज्जत की; उसने पूर्वी हवा के दिन अपने सख्त तूफान से उसको निकाल दिया। 9 इसलिए इस याकूब के गुनाह का कफ़र करा होगा और उसका गुनाह दूर करने का कुल नतीजा यही है; जिस वक्त वह मजबह के सब पथरों को टूटे कंकरों की तरह टकड़े — टकड़े करे कि यसीरतें और सूरज के बुत फिर काँइम न हों। 10 क्यूँकि फसीलदार शहर वीरान है, और वह बस्ती उजाड़ और वीरान की तरह खाली है; वहाँ बछड़ा चरेगा और वही लेटे

रहेगा और उसकी डालियाँ बिलकुल काट खायेगा। 11 जब उसकी शाखे मुरझा जायेंगी तो तोड़ी जायेंगी 'औरते आयेंगी और उनको जलाएँगी, क्यूँकि लोग अक्ल से खाली हैं, इसलिए उनका खालिक उन पर रहम नहीं करेगा और उनका बनाने वाला उन पर तरस नहीं खाएगा। 12 और उस वक्त यूँ होगा कि खुदावन्द दरया — ए — फरात की गुजरगाह से स्ल्ड — ए — मिस्र तक ज़ाड डालेगा; और तुम ऐ बनी इसाईल एक एक करके जमा किए जाओगे। 13 और उस वक्त यूँ होगा कि बड़ा नरसिंग फूँका जाएगा, और वह जो असू के मुल्क में करीब — उल — मौत थे, और वह जो मुल्क — ए — मिस्र में जिला वत्त थे आयेंगे और येस्तातेम के मुकद्दस पहाड़ पर खुदावन्द की झाड़त करेंगे।

28 अफ़रोस इस्काईम के मतवालों के घमण्ड के ताज पर और उसकी शानदार शौकत के मुरझाये हुए फूल पर जो उन लोगों की शादाब वादी के सिरे पर है जो मय के मालबाल हैं। 2 देखो खुदावन्द के पास एक ज़बरदस्त और ताकतवर शख्स है, जो उस आँधी की तरह जिसके साथ ओते हों और बाद समूम की तरह और सैलाब — ए — शदीद की तरह ज़मीन पर हाथ से पटक देगा। 3 इस्काईम के मतवालों के घमण्ड का ताज पामाल किया जाएगा; 4 और उस शानदार शौकत का मुरझाया हुआ फूल जो उस शादाब वादी के सिरे पर है, पहले पक्के अंजीर की तरह होगा जो गर्मी के दिनों से पहले लेते ही निगल जाए। 5 उस वक्त रब्ब — उल — अफ़राज अपने लोगों के बकिये के लिए शौकत का अफ़सर और हम का ताज होगा। 6 और 'अदालत की कुसीं पर बैठने वाले के लिए इन्साफ की स्फुरत और फाटकों से लडाई को दूर करने वालों के लिए ताकत होगा। 7 लेकिन यह भी मयखारी से डगमगाते और नशे में लड़खड़ते हैं; काहिन और नबी भी नशे में चूर और मय में गर्क हैं, वह नशे में झ़मते हैं; वह रोया में खता करते और 'अदालत में लगाजिश खते हैं। 8 क्यूँकि सब दस्तरख्बान कथ और गन्दगी से भरे हैं कोई ज़गह बाकी नहीं। 9 वह किसको अक्ल सिखाएगा? किसको तकरीर करके समझाएगा? क्या उनको जिनका दूध छुड़ाया गया, जो छातियों से जुदा किए गए? 10 क्यूँकि हक्म पर हक्म, हक्म पर हक्म; कानून पर कानून, कानून पर कानून है; थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ। 11 लेकिन वह बेगाना लोगों और अजनबी जवान से इन लोगों से कलाम करेगा। 12 जिनको उसने फरमाया, "यह आराम है, तुम थके मान्दों को आराम दो, और यह ताजगी है," लेकिन वह सुने वाले न हुए। 13 तब खुदावन्द का कलाम उनके लिए हक्म पर हक्म, हक्म पर हक्म, कानून पर कानून, कानून पर कानून, थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ होगा; ताकि वह चले जाएँ और पिछे गिरें और सिकरत खाएँ और दाम में फसें और गिरफ्तार हों। 14 इसलिए ऐ ठश्च करने वालों, जो येस्तातेम के इन बाशिन्दों पर हक्मरानी करते हो; खुदावन्द का कलाम सुनो: 15 चूँकि तुम कहा करते हो, कि "हम ने मौत से 'अहद बांधा, और पाताल से पैमान कर लिया है; जब सजा का सैलाब आएगा तो हम तक नहीं पहुँचेगा, क्यूँकि हम ने झूठ को अपनी पनाहगाह बनाया है और दोगोंई की आड में छिप गए हैं;" (Sheol h7585) 16 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमात है देखो मैं सियनू में बुनियाद के लिए एक पथर रखवाँगा, आजमूदा पथर मुहकम बुनियाद के लिए कोने के सिरे का कीमती पथर: जो कोई ईमान लाता है काँइम रहेगा। 17 और मैं 'अदालत को सत, सदाकत को साहल बनाऊँगा; और ओले झूठ की पनाहगाह को साफ कर देंगे, और पानी छिपने के मकान पर फैल जायेगा। 18 और तुम्हारा 'अहद जो मौत से हुआ मन्सूख हो जाएगा और तुम्हारा पैमान जो पाताल से हुआ काँइम न रहेगा; जब सजा का सैलाब आएगा, तो तुम को पामाल करेगा। (Sheol h7585) 19 और गुजरते वक्त तुम को बहा ले जाएगा सुबह और शब — औ — रोज आएगा

बल्कि उसका ज़िक्र सुनना भी खौफनाक होगा। 20 क्यूँकि पलंग ऐसा छोटा है कि आदीमि उस पर दराज नहीं हो सकता; और लिहाफ़ ऐसा तग है कि वह अपने आपको उसमें लपेट नहीं सकता। 21 क्यूँकि खुदावन्द उठेगा जैसा कोह — ए — पराजीम में, और वह ग़ज़बनाक होगा जैसा जिबा' उन की बादी में; ताकि अपना काम बल्कि अपना 'अजीब काम करे और अपना काम, हाँ अपना अनोखा, काम पूरा करे। 22 इसलिए अब तुम ठड़ा न करो, ऐसा न हो कि तुम्हारे बंद सञ्चल हो जाए क्यूँकि मैंने खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज से सुना है कि उसने कामिल और मुसाम्म इरादा किया है कि सारी सर ज़मीन को तबाह करे। 23 कान लगा कर मेरी आवाज़ सुनो, सुनने वाले होकर मेरी बात पर दिल लगाओ। 24 क्या किसान बोने के लिए हर रोज़ हल चलाया करता है? क्या वह हर बक्त अपनी ज़मीन को खोदता और उसके ढेले फोड़ा करता है? 25 जब उसको हमवार कर चुका, तो क्या वह अजवाइन को नहीं छांटता, और ज़रि को डाल नहीं देता, और गेहँ को कतरों में नहीं बोता, और जौ को उसके मु़अ्यन मकान में, और कठिया गेहँ को उसकी खास क्यारी में नहीं बोता? 26 क्यूँकि उसका खुदा उसको तरबियत करके उसे सिखाता है। 27 कि अजवाइन को दावने के हेंगे से नहीं दावते, और ज़रि के ऊपर गाड़ी के पहिये नहीं घुमाते; बल्कि अजवाइन को लाटी से झाड़ते हैं और ज़रि को छड़ी से। 28 रोनी के गल्ले पर दौँय चलाता है, लेकिन वह हमेशा उसे कटता नहीं रहता, और अपनी गाड़ी के पहिये और घोड़ों को उस पर हमेशा फिराता नहीं उसे सरासर नहीं कुचलते। 29 यह भी रब्ब — उल — अफवाज से मुकर्रर हुआ है, जिसकी मसलहत 'अजीब और दानाई' अजीम है।

29

अरीएल पर अफसोस अरीएल उस शहर पर जहाँ दाकू खेमाजन हुआ साल पर साल ज्यादा करो, 'ईद पर' 'ईद मनाई जाए। 2 तोभी मैं अरीएल को दुख दैँगा, और वहाँ नैहा और मातम होगा लेकिन मेरे लिए वह अरीएल ही ठहरेगा। 3 मैं तेरे खिलाफ़ चारों तरफ खेमाजन हँगा और मोर्ची बदी करके तेरा मुहासरा करँगा और तेरे खिलाफ़ दमदमा बाध़ूंगा। 4 और त पस्त होगा, और ज़मीन पर से बोलेगा, और खाक पर से तेरी आवाज़ धीमी आयेगी तेरी सदा भूत की सी होगी जो ज़मीन के अन्दर से निकलेगी, और तेरी बोली खाक पर से चुस्तने की आवाज़ मालूम होगी। 5 लेकिन तेरे दुम्पों का गोल बारिक गर्द की तरह होगा, और उन ज़लिमों के गिरोह उड़नेवाले भूसे की तरह होगी; और यह अचानक एक दम में बोके' होगा 6 रब्ब — उल — अफवाज खुद गरजने और जलजले के साथ, और बड़ी आवाज और बड़ी आँखी और तूफान और आग के मुहलिक शो'ले के साथ तुझे सजा देने को आएगा। 7 और उन सब कौमों का गिरोह जो अरीएल से लड़ेगा, याँ वह सब जो उससे और उसके किले' से जंग करेंगे और उसे दुख देंगे, खबाब या रात के खबाब की तरह हो जायेंगे। 8 जैसे भूका आदीमि खबाब में देखे कि खा रहा है, जाग उठे और अप्सास से बेताब हो' उमकी जान आसदा न हो; ऐसा ही उन सब कौमों के गिरोह का हाल होगा जो सिय्यून पहाड़ से जंग करती हैं। 9 ठंडर जाओ औरत'अज़ज़ब करो, ऐश — ओ — 'इशरत करो और अन्धे हो जाओ, वह मस्त है लेकिन मय से नहीं, वह लड़खड़ते हैं लेकिन नशे में नहीं। 10 क्यूँकि खुदावन्द ने तुम पर गहरी नीट की रस्त भेजी है, और तुहारी आँखों याँ वही नबियों को नाबीना कर दिया; और तुम्हारे सिरों याँ वैबीनों पर हिजाब डाल दिया: 11 और सारी रोया तुम्हारे नज़दीक सरबमुहर किताब के मज़मून की तरह होगी, जिसे लोग किसी पढ़े लिखे को दें और कहें कि इसको पढ़ और वह कहे, पढ़ नहीं सकता, क्यूँकि यह सर — ब — मुहर है। 12 और फिर वह किताब किसी नाभवान्दा को दें और कहें, इसको पढ़ और वह कहे, मैं तो पढ़ना नहीं

जानता।" 13 फिर खुदावन्द फरमाता है, 'चौंकि यह लोग ज़बान से मेरी नज़दीकी चाहते हैं और होठों से मेरी ताँजीम करते हैं लेकिन इनके दिल मुझसे दूर हैं मेरा खौफ जो इनको हुआ सिर्फ़ आदियों की ताँलीम सुने से हुआ। 14 इसलिए मैं इन लोगों के साथ 'अजीब सुलूक करँगा, जो हैरत औंज़ और ताँ अज़ज़ब खेज होगा और इनके 'आकिलों की 'अकल ज़ायल हो जाएगी और इनके समझदारों की समझ जाती रहेगी। 15 उन पर अफसोस जो अपनी मध्यवर्त खुदावन्द से छिपाते हैं, जिनका कारोबार अनधैरे में होता है और कहते हैं, कौन हम को देखता है? कौन हम को पहचानता है? 16 आह तम कैसे टेंडे हो! क्या कुम्हार मिट्टी के बराबर गिना जाएगा या मसनू'अ अपने सानिँअ से कहेगा, कि मैं तेरी सन'अत नहीं क्या मखलूक अपने खालिक से कहेगा, कि तू कुछ नहीं जानता? 17 क्या थोड़ा ही 'अरसा बाकी नहीं कि लुबनान शादाब मैदान हो जाएगा, शादाब मैदान ज़ंगल गिना जाएगा? 18 और उस बक्त बहेरे किताब की बातें सुनेंगे और अंधों की आँखें तरीकी और अच्छे में से देखेंगी। 19 तब गरीब खुदावन्द में ज़यादा खुश होंगे और गरीब मोहताज़ इसाईल के कुदूस में शादाम होंगे। 20 क्यूँकि ज़ालिम फना हो जाएगा, और उल उलनेवाला हलाक होगा; और सब जो बदकिरदारी के लिए बेदार रहते हैं, काट डाले जाएँगे; 21 याँ वही जो आदमी को उसके मुकदम्मे में मुज़रिम ठराते, और उसके लिए जिसने 'अदालत से फाटक पर मुकदम्मा कैफ्सल किया फंदा लगाते और रास्तबाज़ को बेवजह बरगश्ता करते हैं। 22 इसलिए खुदावन्द जो अब्रहाम का नजात देनेवाला है, याँ कूब के खान्दान के हक कैं यूँ फरमाता है, "कि याँ कूब अब शर्मिन्दा न होगा, वह हगिज़ जर्द रु न होगा। 23 बल्कि उसके फर्जन्द अपने बीच मेरी दस्तकारी देख कर मेरे नाम की तकदीस करेंगे; हाँ याँ कूब के कुदूस की तकदीस करेंगे और इसाईल के खुदा से डेरेंगे। 24 और वह भी जो स्तु में गुमराह है, फहम हासिल करेंगे और बुद्बुडाने वाले तो लीम पज़ीर होंगे।"

30 खुदावन्द फरमाता है, "उन बागी लड़कों पर अफसोस जो ऐसी तदबीर करते हैं जो मेरी तरफ से नहीं, और 'अहद — ओ — पेमान करते हैं जो मेरी स्तु की हिदायत से नहीं; ताकि गुनाह पर गुनाह करें। 2 वह मुझ से पूछे बगैर मिथ्यों को जाते हैं ताकि फिर 'ओन के पास पनाह लें और मिथ्यों के साथे में अन्न से रहें। 3 लेकिन फिर 'ओन की हिमायत तुहारे लिए ख़जालत होगी और मिथ्यों के साथे में पनाह लेना तुहारे वास्ते स्वाई होगा। 4 क्यूँकि उसके सरदार ज़ुअन में हैं और उसके कासिद हनीस में जा पहुँचे। 5 वह उस कौम से जो उनको कुछ फ़ाइदा न पहुँचा सके, और मदद और्यानी नहीं बल्कि खजालत और मलामत का जरि'आ हो शर्मिन्दा होंगे।" 6 दक्षिण के जानवरों के बारे में दुख और मुसीबत की सरज़मीन में, जहाँ से नर — ओ — मादा शेर — ए — बबर और अफ़ाई और उड़नेवाले आग के साँप आते हैं वह अपनी दौलत गधों की पीठ पर, और अपने खजाने ऊँटों के कोहान पर लाद कर उस कौम के पास ले जाते हैं जिससे उनको कुछ फ़ायदा न पहुँचेगा। 7 क्यूँकि मिथ्यों की मदद बातिल और बेकायदा होगी, इसी वजह से मैंने उसे, राहब कहा जो सुस्त बैठी है। 8 अब जाकर उनके सामने इसे तज्जी पर लिख और किताब में लिख ताकि आइन्दा हमेशा से हमेशा तक काईम हो। 9 क्यूँकि यह बागी लोग और झ़ठे फर्जन्द हैं, जो खुदावन्द की शरी'अत को सुनने से इन्कार करते हैं; 10 जो गैबीनों से कहते हैं, गैबीनी न करो, और नवियों से, कि "हम पर सच्ची नबुवतें जाहिर न करो, हम को ख़ुशगवार बातें सुनाओ, और हम से झ़ठी नबुवत करो, 11 रास्ते से बाहर जाओ, रास्ते से बरगश्ता हो, और इसाईल के कुदूस को हमारे बीच से ख़त्म करो।" 12 फिर इसाईल का कुदूस यूँ फरमाता है, "चौंकि तुम इस कलाम को हकीकी जानते, और ज़ुल्म और कज़रवी पर भरोसा रखते, और उसी पर काईम हो; 13 इसलिए यह बदकिरदारी तुम्हारे लिए

ऐसी होगी जैसे फटी हुई दीवार जो गिरना चाहती है ऊँची उभरी हुई दीवार जिसका गिरना अचानक एक दम में हो। 14 वह इसे कुम्हार के बर्तन की तरह तोड़ डालेगा, इसे बे दरेगा चकनाचूर करेगा; चुनाँचे इसके टुकड़ों में एक ठीकरा भी न मिलेगा जिसमें चूल्हे पर से आग उठाई जाए, या होज से पानी लिया जाए।” 15 क्यूँकि खुदावन्द यहोवाह, इसाईल का कुदूस यूँ फरमाता है, कि वापस आने और खामोश बैठने में तुम्हारी सलामती है; खामोशी और भरोसे में तुम्हारी ताकत है।” लेकिन तुम ने यह न चाहा। 16 तुम ने कहा, नहीं, हम तो घोड़ों पर चढ़ के भागेंगे; इसलिए तुम भागेगे; और कहा, हम तेज रफ्तार जानवरों पर सवार होंगे; फिर तुम्हारा पीछा करनेवाले तेज रफ्तार होंगे। 17 एक की डिंडिकी से एक हजार भागेंगे पौंच की डिंडिकी से तुम ऐसा भागेगे कि तुम उस 'अलामत की तरह जो पहाड़ की चोटी पर और उस निशान की तरह जो कोह पर नसब किया गया हो रह जाओगे। 18 तो भी खुदावन्द तुम पर मेहरबानी करने के लिए इन्तिजार करेगा, और तुम पर रहम करने के लिए बुलन्द होगा। क्यूँकि खुदावन्द इन्साफ करने वाला खुदा है, मुबारक है वह सब जो उसका इन्तिजार करते हैं। 19 क्यूँकि ऐ सियद्दीनी कौम, जो येस्सलेम में बसेगी, तो फिर न रोएगी; वह तेरी फरियाद की आवाज सुन कर यजीनन तुझ पर रहम फरमाएगा; वह सुनते ही तुझे जबाब देगा। 20 और अगर चे खुदावन्द तुझ को तंगी की रोटी और मुसीबत का पानी देता है, तो तेरा मु'अलिम फिर तुझ से स्पोश न होगा; बल्कि तेरी अँखें उसके देखेंगी। 21 और जब तु दहनी या बैंड तरफ मुड़े, तो तेरे कान तेरे पीछे से यह आवाज सुनेंगे, कि “राह यही है, इस पर चल।” 22 उस वक्त तू अपनी खोटी हुई मूरतों पर मठी हुई चाँदी, और ढाले हुए बुतों पर चढ़े हुए सोने को नापाक करेगा। तु उसे हैज के लते की तरह फेंक देगा तू उसे कहेगा, निकल दूर हो। 23 तब वह तेरे बीज के लिए जो तू ज़मीन में बोए, बारिश भेजेगा; और ज़मीन की अफज़ाइश की रोटी का गल्ला, ‘उम्दा और कसरत से होगा। उस वक्त तेरे जानवर वसी’ चराणाहों में चंगेंगे। 24 और बैल और जवान गधे जिससे ज़मीन जोती जाती है, लर्जीज़ चारा खाएँगी जो बेल्चे और छाज से फटका गया हो। 25 और जब बुर्ज गिर जाएँगे और बड़ी खूँज़ी होगी, तो हर एक ऊँचे पहाड़ और बुलन्द टीले पर चरमे और पानी की नदियाँ होंगी। 26 और जिस वक्त खुदावन्द अपने लोगों की शिक्षतामी को दुस्त करेगा और उनके ज़ख्मों को अच्छा करेगा; तो चाँद की चाँदीनी ऐसी होगी जैसी सूरज की रोशनी, और सूरज की रोशनी सात गुर्जी बल्कि सात दिन की रोशनी के बराबर होगी। 27 देखो खुदावन्द दूर से चला आता है, उसका गज़ब भड़का और धूंधें का बादल उठा उसके लब कहर आलूदा और उसकी ज़बान भस्म करने वाली आग की तरह है। 28 उसका दम नदी के सैलाब की तरह है, जो गर्दन तक पहुँच जाए; वह कौमों को हलाकत के छाज में फटकेगा और लोगों के जबड़ों में लगाम डालेगा, ताकि उनको गुमराह करे। 29 तब तुम गीत गाओगे, जैसे उस रात गाते हो जब मुकद्दस 'ईद मनाते हो; और दिल की ऐसी खुली होगी जैसी उस शरब्द की जो बाँसुरी लिए हुए खिरामान हो कि खुदावन्द के पहाड़ में इसाईल की चट्टान के पास जाए। 30 क्यूँकि खुदावन्द अपनी जलाली आवाज सुनाएगा, और अपने कहर की शिद्दत और आतिश — ए — सोजान के शोले, और सैलाब और आँधी और ओलों के साथ अपना बाज़ नीचे लाएगा। 31 हाँ खुदावन्द की आवाज ही से असर तबाह हो जाएगा वह उसे लठ से मारेगा। 32 और उस कज़ा के लठ की हर एक ज़र्ब जो खुदावन्द उस पर लगाएगा, दफ़ और बरबत के साथ होगी और वह उससे सख्त लड़ाई लडेगा। 33 क्यूँकि तक्फ़ मुद्दत से तैयार किया गया है, हाँ, वह बादशाह के लिए गहरा और वसी’ बनाया गया है; उसका देर आग और बहुत सा ईंधन है, और खुदावन्द की साँस गन्धक के सैलाब की तरह उसको सुलगाती है।

31 उसपर अफसोस, जो मदद के लिए मिस्र को जाते और घोड़ों पर एतमाद करते हैं और रथों पर भरोसा रखते हैं इसलिए कि वह बहुत ताकतवर हैं; लेकिन इसाईल के कुदूस पर निगाह नहीं करते और खुदावन्द के तालिब नहीं होते। 2 लेकिन वह भी तो 'अक्लमन्द है और बला नाजिल करेगा, और अपने कलाम को बातिल न होने देगा वह शरीरों के घाने पर और उन पर जो बदकिरदारों की हिमायत करते हैं चढ़ाई करेगा। 3 क्यूँकि मिस्री तो इंसान हैं खुदा नहीं। और उनके घोड़े गोश्ट हैं स्ह नहीं सो जब खुदावन्द अपना हाथ बढ़ाएगा तो हिमायती गिर जाएगा, और वह जिसकी हिमायत की गई पस्त हो जाएगा, और वह सब के सब इकट्ठे हलाक हो जायेगे। 4 क्यूँकि खुदावन्द ने मुझ से वैँ फरमाया है कि जिस तरह शेर बबर हाँ जवान शेर बबर अपने शिकार पर से गुराता है और अगर बहुत से गड़रिये उसके मुकाबिले को बुलाए जाएँ तो उनकी ललकार से नहीं डरता, और उनके हजाम से दब नहीं जाता; उसी तरह रब्ब — उल — अफवाज सिय्यून पहाड़ और उसके टीले पर लड़ने को उतरेगा। 5 मंडलाते हुए परिन्दे की तरह रब्ब — उल — अफवाज येस्सलेम की हिमायत करेगा; वह हिमायत करेगा और रिहाई बख्शेगा, रसम करेगा और बचा लेगा। 6 ऐ बड़ी इसाईल तुम उसकी तरफ फिरो जिससे तुम ने सख्त बगावत की है। 7 क्यूँकि उस वक्त उनमें से हर एक अपने चाँदी के बुत और अपनी सोने की मर्ते, जिनको तुम्हारे हाथों ने खताकारी के लिए बनाया, निकाल फेंकेगा 8 तब असू उसी तलवार से गिर जाएगा जो इंसान की नहीं, और वही तलवार जो आदमी की नहीं उसे हलाक करेगी; वह तलवार के सामने से भागेगा और उसके जवान मर्द खिराज गुजार बनेंगे। 9 और वह खौफ की वजह से अपने हसीन मकान से गुजर जाएगा, और उसके सरदार झण्डे से खोफ़ज़द हो जाएँगे, ये खुदावन्द फरमाता है, जिसकी आग सिय्यून में और भट्टी येस्सलेम में है।

32 देख एक बादशाह सदाकत से सलतनत करेगा और शहजादे 'अदालत से हुक्मरानी करेगे। 2 और एक शख्स आँधी से पनाहगाह की तरह होगा, और तुकान से छिपने की जगह; और खुशक ज़मीन में पानी की नदियों की तरह और मानिंगी की ज़मीन में बड़ी चट्टान के साथे की तरह होगा 3 उस वक्त देखनेवालों की आँखें धूधली न होंगी, और सुनेवालों के कान सुने वाले होंगे। 4 जलदबाज का दिल इफान हासिल करेगा, और लुकनती की ज़बान साफ बोलने में मुस्त़इद होंगी। 5 तब बेवकूफ बा — मुरव्वत न कहलाएगा और बड़ील को कोई सर्खी न कहेगा। 6 क्यूँकि बेवकूफ हिमाकत की बातें करेगा और उसका दिल बदी का मंस्त्रा बाँधेगा कि बेदीनी करे और खुदावन्द के खिलाफ दरगाहोई करे और भूके के पेट को खाली करे और प्यासे को पानी से महस्त रखें 7 और बड़ील के हथियार जबून हैं; वह बुरे मंस्त्रे बाँधा करता है ताकि दूरी बातों से गरीब को और मोहताज को, जब कि वह हक्क बयान करता हो, हलाक करे। 8 लेकिन साहब — ए — मुरव्वत सरखावत की बातें सोचता है, और वह सरखावत के कामों में साबित कदम रहेगा। 9 ऐ 'आरतों तुम जो आराम में हो, उठो मेरी आवाज सुनो; ऐ बे परवा बेटियो, मेरी बातों पर कान लगाओ। 10 ऐ बे परवाह 'औरतो, साल से कुछ ज्यादा 'अर्से में तुम बे आराम हो जाओगी; क्यूँकि अंगू की फस्ल जाती रहेगी फल जमा' करने की नौबत न आयेगी। 11 ऐ 'औरतों तुम जो आराम में हो थरथराओ, ऐ बेपवाओ मुजतरिब हो कपड़े उतार कर बहना हो जाओ, कमर पर टाट बाँधो। 12 वह दिल पज़ीर खेतों और मेवादार ताकों के लिए छाती पीटेंगी। 13 मेरे लोगों की सर ज़मीन में कौटै और ज़ाड़ियों होंगी बल्कि खुशवक्त शहर के तमाम खुश घरों में भी। 14 क्यूँकि कम साँस खाली हो जाएगा, और आबाद शहर तक किया जाएगा; 'ओफल और दीद बानी का बुर्ज हमेशा तक मांद बनकर गोखरों की आरामगाहें और

गल्लों की चरणाहें होंगे। 15 ता वक्त ये कि आलम — ए — बाला से हम पर स्थ नाजिल न हो और वीरान शादाब मैदान न बने, और शादाब मैदान ज़ंगल न गिना जाए। 16 तब वीरान में 'अद्वल बसेगा और सदाकत शादाब मैदान में रहा करेगी। 17 और सदाकत का अंजाम सुलह होगा, और सदाकत का फल हमेशा आराम — ओ — इत्मीनान होगा 18 और मेरे लोग सलामती के मकानों में और बेंतर घरों में, और आसूदी और आसाइश के काशानों में रहेंगे। 19 लेकिन ज़ंगल की बर्बादी के वक्त ओले पड़ेंगे औं शहर बिलकुल पस्त हो जायेगा। 20 तुम खुशनीरी हो, जो सब नहरों के आसपास बोते हो और बैलों और गधों को उधर ले जाते हो।

33 तुम पर अफसोस कि तु गारत करता है, और गारत न किया गया था!

तू दगाबाजी करता है और किसी ने तुम से दगाबाजी न की थी? जब तु गारत कर चुकेगा तो तुम तरह किया जाएगा; और जब तु दगाबाजी कर चुकेगा, तो और लोग तुम से दगाबाजी करेंगे। 2 ऐ खुदावन्द हम पर रहम कर; क्यूँकि हम तेरे मुन्तज़िर हैं। तू हर सुबह उनका बाज़ु हो और मुरीबत के वक्त हमारी नजात। 3 हँगामे की आवाज़ सुनते ही लोग भाग गए, तेरे उत्तरे ही कौमें तिरत — बितर हो गई। 4 और तुम्हारी लट्का का माल इसी तरह बटेरा जायेगा जिस तरह कींडी बटेर लेते हैं, लोग उस पर टिट्ठी की तरह टूट पड़ेंगे। 5 खुदावन्द सरफराज है, क्यूँकि वह बलन्दी पर रहता है, उसने 'अदालत और सदाकत से सिय्यून को मांमू कर दिया है। 6 और तेरे जमाने में अमन होगा नजात व हिक्मत और 'अक्लत की फिरावानी होगी; खुदावन्द का खौफ उसका खाजाना है। 7 देख उनके बहादुर बाहर फरियाद करते हैं और सुलह के कासिद फूट — फूटकर रोते हैं। 8 शाहाहों सुनसान हैं, कोई चलनेवाला न रहा; उसने 'अहद शिकी की शहरों को हक्कीर जाना, और इंसान को हिसाब में नहीं लाता। 9 ज़मीन कुदरती और मुरझाती है। लुबनान स्वा हुआ और मुरझा गया, शादून वीराने की तरह है; बसन और कर्मिल बे — बर्ग हो गए। 10 खुदावन्द फरमाता है, अब मैं उँग़ा; अब मैं सरफराज हँग़ा; अब मैं सर बलन्द हँग़ा। 11 तुम भसे से बारदार होगे, फूस तुम से पैदा होगा; तुम्हारा दम आग की तरह तुम को भस्म करेगा। 12 और लोग जले चूने की तरह होंगे; वह उन काँटों की तरह होंगे, जो काटकर आग में जलाए जाएँ। 13 तुम जो दू हो, सोनो कि मैंने क्या किया; और तुम जो नजदीक हो, मेरी कुदरत का इकरार करो। 14 वह गुनाहगर जो सिय्यून में हैं डर गए; कपकपी ने बेदीनों को आ दबाया है: 'कौन हम में से उस मुहलिक आग में रह सकता है?' और कौन हम में से हमेशा के शोलों के बीच बस सकता है? 15 जो रास्तरफार और दुस्तरुपतार हैं जो ज़ुल्म के नफे हक्कीर जानता है, जो रिश्वत से दस्तबरदार है, जो अपने कान बन्द करता है ताकि खूँज़ी के मज़मून न सुने, और आँखें मून्दता है ताकि बुराई न देखे। 16 वह बलन्दी पर रहेगा, उसकी पनाहगाह पहाड़ का किला होगी, उसको रोटी दी जाएगी, उसका पानी मुकर्रर होगा। 17 तेरी आँखें बादशाह का जमाल देखेंगी: वह बहत दू तक वसीं मुल्क पर नज़र करेंगी। 18 तेरा दिल उस दहशत पर सोचेगा कहाँ है वह गिनें वाला कहाँ है वह तोलेवाला? कहाँ है वह जो बुज़ी को गिनता था? 19 तू फिर उन तुन्दरखूँलोंगों को न देखेगा जिनकी बोली तु समझ नहीं सकता उनकी ज़बान बेगाना है जो तेरी समझ में नहीं आती। 20 हमारी इंदगाह सिय्यून पर नज़र कर, तेरी आँखें येस्शलेम को देखेंगी जो सलामती का मकाम है, बल्कि ऐसा खेमा जो हिलाया न जाएगा, जिसकी मेहों में से एक भी उखाड़ी न जाएगी, और उसकी दोरियों में से एक भी तोड़ी न जाएगी। 21 बल्कि वहाँ ज़ुलजलाल खुदावन्द, बड़ी नदियों और नहरों के बदले हमारी गुन्जाइश के लिए आप मौजूद होगा कि वहाँ डॉड की कोई नाव न जाएगी, और न शादार जहाजों का गुज़र उसमें होगा। 22 क्यूँकि खुदावन्द हमारा हाकिम है, खुदावन्द

हमारा शरीर! अत देने वाला है खुदावन्द हमारा बादशाह है वही हम को बचाएगा। 23 तेरी रसियाँ ढीली हैं, लोग मस्तल की चूल को मजबूत न कर सके, वह बादाबान न फैला सके; सो लूट का वाफिर माल तकसीम किया गया, लंगड़े भी गनीमत पर कबिज हो गए। 24 वहाँ के बाशिन्दों में भी कोई न कहेगा, कि मैं बीमार हूँ; और उनके गुनाह बरब्दे जाएँगे।

34 ऐ कौमों नजदीक आकर सुनो, ऐ उम्मतों कान लगाओ!

उसकी मांमूरी, दुनिया और सब चीजें जो उसमें हैं सुने, 2 क्यूँकि खुदावन्द का कहर तमाम कौमों पर और उसका गजब उनकी सब फौजों पर है; उसने उनको हलाक कर दिया, उसने उनको ज़बह होने के लिए हवाले किया।

3 और उनके मकतूल फैक दिए जायेंगे बल्कि उनकी लाशों से बदबू उठेगी और पहाड़ उनके खून से बह जाएँगे। 4 और तमाम अजराम — ए — फलक गुदाज हो जाएँगे और आसमान तूमार की तरह लपेटे जाएँगे; और उनकी तमाम अफवाज ताक और अंजीर के मुझाये हुए पत्तों की तरह गिर जाएँगी। 5 क्यूँकि मेरी तलवार आसमान में मस्त हो गई है; देखो, वह अदोम पर और उन लोगों पर जिनको मैंने मल'उन किया है सजा देने को नाजिल होगी। 6 खुदावन्द की तलवार खन आलूदा है; वह चर्बी और बर्बरों और बकरों के खन से, और मेंढों के गुर्दों की चर्बी से चिकना गई। क्यूँकि खुदावन्द के लिए बुसराह में एक कुर्बानी और अदोम के मुल्क में बड़ी खूरेजी है। 7 और उनके साथ ज़ंगली सॉँड और बछड़े और बैल ज़बह होंगे और उनका मुल्क खून से सेराब हो जाएगा और उनकी गर्दं चर्बी से चिकना जाएगी। 8 क्यूँकि ये खुदावन्द का इन्तकाम लेने का दिन और बदला लेने का साल है, जिसमें वह सिय्यून का इन्साफ करेगा। 9 और उसकी नदियाँ राल होजाएगी और उसकी खाक गंधक और उसकी ज़मीन ज़ली हुई राल होगी। 10 जो शब — ओ — रोज़ कभी न बुझेगी, उससे हमेशा तक धूँवा उठता रहेगा। नस्ल — दर — नस्ल वह उजाड़ रहेगी, हमेशा से हमेशा तक कोई उधर से न गुज़ेरगा। 11 लेकिन हवासिल और खापुश्त उसके मालिक होंगे उल्लू और कौवे उसमें बरसेंगे; और उस पर वीरानी का सुप फैगेगा, और सुनसानी का साहल डाला जाएगा। 12 उसके अशराफ में से कोई न होगा जिसे वह बुलाएँ कि हम्मरानी करे और उसके सब सरदार नाचीज़ होंगे। 13 और उसके कर्मों में कटौं और उसके किलों में बिच्छु बटी और ऊँट कटारे उगेंगे और वह गीदडों की मौंदें और शुतरमुर्ग के रहने का मकाम होगा। 14 और दरशी दरिन्दे भेड़ियों से मुलाकात करेंगे और छागमास अपने साथी को पुकरेगा; हाँ इफरात — ए — शब वहाँ आराम करेगा और अपने टिकने की जगह पायेगा। 15 वहाँ उड़नेवाले सॉप का आशियाना होगा और अंडे देना और सैना और अपने साए में जमा करना होगा वहाँ गिर्द जमा होंगे और हर एक के साथ उसकी मादा होगी। 16 तुम खुदावन्द की किताब में हूँडो और पढ़ो: इनमें से एक भी कम न होगा, और कोई बैजुफ्त न होगा; क्यूँकि मेरे मूँहे ने यही हुक्म किया है और उसकी रुह ने इनको जमा किया है। 17 और उसने इनके लिए पचीं डाली और उसके हाथ से इनके लिए उसको जरीब से तकसीम किया। इसलिए वह हमेशा तक उसके मालिक होंगे और नस्ल दर नस्ल उसमें बरसेंगे।

35 ज़ंगल और वीरान शादामान होंगे दश खुशी केरेगा और नरगिस की

तरह शगफता होगा। 2 उसमें कसरत से कलियाँ निकलेंगी, वह शादामान से गा कर खुरी करेगा। लुबनान की शैकत और कर्मिल और शास्न की ज़ीनत उसे दी जाएगी; वह खुदावन्द का जलाल और हमरे खुटा की हशमत देखेंगे। 3 कमज़ोर हाथों को ताकत और नातवान घुटनों को तवानाई दो। 4 उनको जो घबराने वाले हैं कहो, हिम्मत बांधो मत डरो देखो तुम्हारा खुटा सजा और ज़जा लिए आता है। हाँ, खुटा ही आएगा और तुम को बचाएगा। 5 उस वक्त अन्धों

की आँखें खोली जायेगी और बहरों के कान खोले जाएँगे। 6 तब लंगड़े हिरन की तरह चौकियाँ भरेंगे और गौंथ की ज़बान गाएँगी क्यूंकि वीराम में पानी और दश्त में नदियों फूट निकलेंगी। 7 बल्कि सराब तालाब हो जाएगा और प्यासी ज़मीन चश्मा बन जाएगी; गीदहों की मान्दों में जहाँ वह पड़े थे ने और नल का ठिकाना होगा। 8 और वहाँ एक शाहराह और गुजराह होगी जो पाक राह कहलाएगी; जिससे कोई नापाक गुजर न करेगा लेकिन ये मुसाफिरों के लिए होगी, बेकूफ भी उसमें गुमराह न होगे। 9 वहाँ शेर बबर न होगा और न कोई दरिन्दा उस पर चढ़ेगा न वहाँ पाया जाएगा; लेकिन जिनका फिदया दिया गया वहाँ सैर करेंगे। 10 और जिनको खुदावन्द ने मखलसी बछाई लौटाए और सिव्युन में गाते हुए आएँगे, और हमेशा सुस्त उनके सिरों पर होगा वह खुशी और शादमानी हासिल करेंगे, और गम व अंदोह काफ़ूर हो जाएँगे।

36 और हिजकियाह बादशाह की सल्तनत के चौदहवें बारस यूँ हआ कि शाह

— ए — असूर सन्हेरिब ने यहदाह के सब फसीलदार शहरों पर चढ़ाई की और उनको ले लिया। 2 और शाह — ए — असूर ने रबशाकी को एक बड़े लश्कर के साथ लकीस से हिजकियाह के पास येस्शलेम को भेजा, और उन्ने ऊपर के तालाब की नाली पर धोबियों के मैदान की राह में मुकाम किया। 3 तब इलियाकीम बिन खिलकियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुंशी और मुहर्रिय यूआख बिन आसिफ निकल कर उसके पास आए। 4 और रबशाकी ने उनसे कहा, तुम हिजकियाह से कहो: कि मलिक — ए — मुअज्जम शाह — ए — असूर यूँ फरमाता है कि तु क्या एतमाद किए बैठा है? 5 क्या मशवरत और जंग की ताकत मूँह की बातें ही हैं आखिर किस के भरोसे पर तूने मुझ से सरकशी की है? 6 देख, तुझे उस मसलें है एसकंडे के 'असा या'नी मिस पर भरोसा है; उस पर अगर कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में गड़ जाएगा और उसे छेद देगा। शाह — ए — मिस फ़िर 'अैन उन सब के लिए, जो उस पर भरोसा करते हैं ऐसा ही है। 7 फिर अगर तू मुझ से यूँ कहे कि हमारा तवक्कुल खुदावन्द हमारे खुदा पर है, तो क्या वह वही नहीं है जिसके ऊँचे मकामों और मज़बहों को ढाकर हिजकियाह ने यहदाह और येस्शलेम से कहा है कि तुम इस मज़बह के आगे सिज्दा किया करो। 8 इसलिए अब ज़रा मेरे आका शाह — ए — असूर के साथ शर्त बांध और मैं तुझे दो हज़ार घोड़े दूँगा, बर्शें कि तु अपनी तरफ से उन पर सवार चढ़ा सके। 9 भला तू क़ूँकर मेरे आका के कमतरीन मूलाजिमों में से एक सरदार का भी मूँह फेर सकता है? और तु रथों और सवारों के लिए मिस पर भरोसा करता है? 10 और क्या अब मैंने खुदावन्द के बे कहे ही इस मकाम को गारत करने के लिए इस पर चढ़ाई की है? खुदावन्द ही ने तो मुझ से कहा कि इस मूल्क पर चढ़ाई कर और इसे गारत करदे। 11 तब इलियाकीम और शबनाह और यूआख ने रबशाकी से 'अर्ज़ की कि अपने खादिमों से अरामी ज़बान में बात कर, क्यूंकि हम उसे समझते हैं, और दीवार पर के लोगों के सुनते हुए यहदियों की ज़बान में हम से बात न कर। 12 लेकिन रबशाकी ने कहा, क्या मेरे आका ने मुझे ये बातें कहने को तेरे आका के पास या तेरे पास भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो तुहारे साथ अपनी ही नजासत खाने और अपना ही कास्सा पिने को दीवार पर भैठे हैं? 13 फिर रबशाकी खड़ा हो गया और यहदियों की ज़बान में बलन्द आवाज से यूँ कहने लगा, कि मूल्क — ए — मुअज्जम शाह — ए — असूर का कलाम सुनो! 14 बादशाह यूँ फरमाता है: कि हिजकियाह तुम को धोखा न दे, क्यूंकि वह तुम को छुड़ा नहीं सकेगा। 15 और न वह ये कह कर तुम से खुदावन्द पर भरोसा कराए कि खुदावन्द ज़स्त हम को छुड़ाएगा, और ये शहर शाह — ए — असूर के हवाले न किया जाएगा। 16 हिजकियाह की न सुनो; क्यूंकि शाह — ए — असूर यूँ फरमाता है कि तुम मुझ से सुन्ह कर लो, और निकलकर मेरे

पास आओ; तुम में से हर एक अपनी ताक और अपने अंजीर के दरखत का मेवा खाता और अपने हौज़ का पानी पीता रहे। 17 जब तक कि मैं आकर तुम को ऐसे मूल्क में न ले जाऊँ, जो तम्हारे मूल्क की तरह गल्ला और मय का मूल्क, रोटी और ताकिस्तानों का मूल्क है। 18 खुबरदार ऐसा न हो कि हिजकियाह तुम को ये कह कर तरगीब दे, कि खुदावन्द हम को छुड़ाएगा। क्या कौमों के मांबूदों में से किसी ने भी अपने मूल्क को शह — ए — असूर के हाथ से छुड़ाया है? 19 हमात और अरफ़ाद के मांबूद कहाँ हैं? सिफवाइम के मांबूद कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचा लिया? 20 इन मूल्कों के तमाम मांबूदों में से किस किस ने अपना मूल्क मेरे हाथ से छुड़ा लिया, जो खुदावन्द भी येस्शलेम को मेरे हाथ से छुड़ा लेगा? 21 लेकिन वह खामोश रहे और उसके जबाब में उन्होंने एक बात भी न कही; क्यूंकि बादशाह का हक्म ये था कि उसे जबाब न देना। 22 और इलियाकीम — बिन — खिलकियाह जो घर का दीवान था, और शबनाह मुंशी और यूआख — बिन — आसप मुहर्रिय अपने कपड़े चाक किए हुए हिजकियाह के पास आए और रबशाकी की बातें उसे सुनाई।

37 जब हिजकियाह बादशाह ने ये सुना तो अपने कपड़े फ़ाड़े और टाट

ओढ़कर खुदावन्द के घर में गया। 2 और उसने घर के दीवान इलियाकीम और शबनाह मुंशी और काहिनों के बुजुर्गों को टाट उढ़ा कर आमूस के बेटे यसायाह नबी के पास भेजा। 3 और उन्होंने उससे कहा कि हिजकियाह यूँ कहता है कि आज का दिन दुख और मलामत और तौहीन का दिन है क्यूंकि बच्चे पैदा होने पर हैं और विलादत की ताकत नहीं। 4 शायद खुदावन्द तेरा खुदा रबशाकी की बातें सुनेगा जिसे उसके आका शाह — ए — असूर ने भेजा है कि जिन्दा खुदा की तौहीन करे; और जो बातें खुदावन्द तेरे खुदा ने सुनी, उनपर वह मलामत करेगा। फिर तू उस बिक्किये के लिए जो मौज़द हैं दूरा कर। 5 तब हिजकियाह बादशाह के मुलाजिम यसायाह के पास आए। 6 और यसायाह ने उनसे कहा, तुम अपने आका से यूँ कहना, खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तू उन बातों से जो तूने सुनी हैं, जिनसे शाह — ए — असूर के मुलाजिमों ने मेरी तक़फ़ीर की है, परेशान न हो। 7 देख मैं उसमें एक स्थ डाल दूँगा, और वह एक अफ़वाह सुनकर अपने मूल्क को लौट जाएगा, मैं उसे उसी के मूल्क में तलवार से मरवा डालूँगा। 8 इसलिए रबशाकी लौट गया और उसने शाह — ए — असूर को लिबनाह से लड़ाते पाया, क्यूंकि उसने सुना था कि वह लकीस से चला गया है। 9 और उसने कूश के बादशाह के ज़रिए सुना कि वह तुझे से लड़ने को निकला है; और जब उसने ये सुना, तो हिजकियाह के पास कासिद भेजे और कहा, 10 शाह — ए — यहदाह हिजकियाह से यूँ कहना, कि तेरा खुदा जिस पर तेरा यक़ीन है, तुझे ये कह कर धोखा न दे कि येस्शलेम शाह — ए — असूर के कब्ज़े में न किया जाएगा। 11 देख तूने सुन है कि असूर के बादशाहों ने तमाम मूल्कों को बिलकुल गारत करके उनका क्या हाल बनाया है; इसलिए क्या तू बचा रहेगा? 12 क्या उन कौमों के मांबूदों ने उनको, यानी ज़ज़ान और हारान और रसफ़ और बनी अदन को जे तिलसार में थे, जिनको हमारे बाप — दादा ने हलाक किया, छुड़ाया। 13 हमात का बादशाह, और अरफ़ाद का बादशाह, और शहर सिफवाइम और हेना और 'इबाह का बादशाह कहाँ हैं। 14 हिजकियाह ने कासिदों के हाथ से खत लिया और उसे पढ़ा और हिजकियाह ने खुदावन्द के घर जाकर उसे खुदावन्द के सामने फैला दिया। 15 और हिजकियाह ने खुदावन्द से यूँ दुआ की, 16 ऐ रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्माइल के खुदा कर्सीयों के ऊपर बैठनेवाले; तू ही अकेला ज़मीन की सब सलतनतों का खुदा है, तू ही ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया। 17 ऐ खुदावन्द कान लगा और सुन; ऐ खुदावन्द अपनी आँखें खोल और देख, और

सनहेरिब की इन सब बातों को जो उसने ज़िन्दा खुदा की तौहीन करने के लिए कहला भेजी हैं, सुनले 18 ऐ खुदावन्द, दर — हकीकत असूर के बादशाहों ने सब कबौमों को उनके मूलकों के साथ तबाह किया, 19 और उनके माँबूदों को आग में डाला, क्यौंकि वह खुदा न थे बल्कि आदिमियों की दस्तकारी थी, लकड़ी और पत्थर; इसलिए उन्होंने उनको हलाक किया है। 20 इसलिए अब ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, हम को उसके हाथ से बचा ले, ताकि जमीन की सब सलतनतें जान लें कि तू ही अकेला खुदावन्द है। 21 तब यसाँयाह बिन अम्पस ने हिजकियाह को कहला भेजा, कि खुदावन्द इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है चौंकि तूने शाह — ए — असूर सनहेरिब के खिलाफ मुझ से दुआ की है, 22 इसलिए खुदावन्द ने उसके हक में यूँ फरमाया है, कि 'कुँवारी दुखर — ए — सियून ने तेरी तहकीर की और तेरा मजाक उड़ाया है। ये स्वश्लेष की बेटी ने तुझ पर सिर हिलाया है। 23 तूने किस की तौहीन — ओ — तक्फीर की है? तूने किसके खिलाफ अपनी आवाज बलन्द की और अपनी आँखें ऊपर उठाई? इसाईल के कुदरूस के खिलाफ 24 तूने अपने खादिमों के जरीए से खुदावन्द की तौहीन की और कहा कि मैं अपने बहुत से ख्यों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटियों पर बल्कि लबनान के बीच हिस्सों तक चढ़ आया हूँ, और मैं उसके ऊँचे ऊँचे देवदरों और अच्छे सोनोबर के दररुओं को काट डालूँगा, और मैं उसके ऊँची ऊँची पर के ज़रखेज़ ज़ंगल में जा खुँसूँगा। 25 मैंने खोद खोद कर पानी पिया है और मैं अपने पाँव के तत्वे से मिस्र की सब नदियाँ सुखा डालूँगा। 26 क्या तूने नहीं सुना कि मुझे ये किए हए मुहर हुई, और मैंने पिछले दिनों से ठहरा दिया था? अब मैंने उसी को पूरा किया है कि तू फसीलदार शहरों को उजाड़ कर खण्डर बना देने के लिए खड़ा हो। 27 इसी बजह से उनके बाशिन्दे कमज़ोर हुए और घबरा गए, और शर्मिन्दा हुए; और मैंने खादिमों की धास और पौधे, छतों पर की धास, खेत के अनाज की तरह हो गए जो अभी बढ़ा न हो। 28 मैं तेरी निश्चित और अमद — ओ — रफ्त और तेरा मुझ पर झुँझलाना जानता हूँ, 29 तेरे गुर्ह पर झुँझलाने की बजह से और इसलिए कि तेरा घमण्ड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं अपनी नकेल तेरी नाक में और अपनी लगाम तेरे मुँह में डालूँगा, और तू जिस गाह से आया है मैं तुझे उसी गाह से वापस लौटा दूँगा। 30 और तेरे लिए ये निशान होगा कि तुम इस साल वह चीजें जो अज — खुद उगती हैं, और दूसरे साल वह चीजें जो उनसे पैदा हों खाओगे; और तीसरे साल तुम बोना और काटना और बाग लगा कर उनका फल खाना। 31 और वह बकिया जो यहदाह के घराने से बच रहा है, फिर नीचे की तरफ जड़ पकड़ेगा और ऊपर की तरफ फल लाएगा; 32 क्यौंकि एक बकिया येस्लेलमें से और वह जो बच रहे हैं। सियून पहाड़ से निकलेंगे; रब्ब — उल — अफवाज की गयग्यी ये कर दिखाएँगी। 33 “इसलिए खुदावन्द शाह — ए — असूर के हक में यूँ फरमाता है कि वह इस शहर में आने या यहाँ तीर चलाने न पाएगा; वह न तो सिपर लेकर उसके सामने आने और न उसके सामने दमदमा बाँधे पाएगा। 34 बल्कि खुदावन्द फरमाता है कि जिस रस्ते से वह आया उसी रस्ते से लौट जाएगा, और इस शहर में आने न पाएगा। 35 क्यौंकि मैं अपनी खातिर और अपने बन्दे दाऊद की खातिर, इस शहर की हिमायत करके इसे बचाऊँगा।” 36 फिर खुदावन्द के फरिश्ते ने असूरियों की लश्करगाह में जाकर एक लाख पिच्चासी हज़ार आदमी जान से मार डाले; और सुबह को जब लोग सवैं उठे, तो देखा कि वह सब पड़े हैं। 37 तब शाह — ए — असूर सनहेरिब रवानगी करके वहाँ से चला गया और लौटकर नीनवाह में रहने लगा। 38 और जब वह अपने माँबूद निसस्क के मंदिर में इबादत कर रहा था तो अदरमालिक और शराजर, उसके बेटों ने उसे तलवार से कत्ल किया और अरागत की सर जमीन को भाग गए। और उसका असरहून उसकी जगह बादशाह हुआ।

38 उन ही दिनों में हिजकियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के करीब हो गया और यसाँयाह नबी अम्पस के बेटे ने उसके पास आकर उनसे कहा कि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तू अपने घर का इन्तजाम करदे क्यौंकि तू मर जाएगा और बचें का नहीं। 2 तब हिजकियाह ने अपना मुँह दीवार की तरफ किया और खुदावन्द से दुआ की। 3 और कहा ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्त करता हूँ यदि फरमा कि मैं तेरे सामने सच्चाई और पूरे दिल से चलता रहा हूँ, और जो तेरी नज़र में अच्छा है वही किया है और हिजकियाह जार — जार रोया। 4 तब खुदावन्द का ये कलाम यसायाह पर नाजिल हुआ 5 कि जा और हिजकियाह से कह कि खुदावन्द तेरे बाप दाऊद का खुदा यूँ फरमाता है कि मैंने तेरी दूँआ सुनी, मैंने तेरे आँखू देखे इसलिए देख मैं तेरी उप्र पन्द्रह बरस और बढ़ा दूँगा। 6 और मैं तुझ को और इस शहर को शाह — ए — असूर के हाथ से बचा लौँगा; और मैं इस शहर की हिमायत करूँगा। 7 और खुदावन्द की तरफ से तेरे लिए ये निशान होगा कि खुदावन्द इस बात को जो उसने फरमाई पूरा करेगा। 8 देख मैं आफताब के ढले हुए साए के दर्जों में से आख़ुज़ की धूप घड़ी के मुताबिक दस दर्जे पिछे को लौटा दूँगा चुनाँचे आफताब जिन दर्जों से ढल गया था उनमें के दस दर्जे फिर लौट दिया। 9 शाह — ए — यहदाह हिजकियाह की तरहीर, जब वह बीमार था और अपनी बीमारी से शिफायाब हुआ। 10 मैंने कहा मैं अपनी अधी उम्र में पाताल के फाटकों में दाखिल हूँगा, मेरी ज़िन्दगी के बाकी बरस मुझसे छीन लिए गए। (Sheol h7585) 11 मैंने कहा मैं खुदावन्द को हाँ खुदावन्द को जिन्दों की जमीन में फिर न देखूँगा, इंसान और दुनिया के बाशिन्दे मुझे फिर दिखाई न देंगे। 12 मेरा घर उजड़ गया है और गडरिए के खेमा की तरह मुझसे दूर किया गया मैंने जुलाहे की तरह अपनी ज़िन्दगानी को लपेट लिया है वह मुझको तांत से काट डालेगा सुख से शाम तक तू मुझको तमाम कर डालता है। 13 मैंने सुबह तक तहमूल किया; तब वह शेर बबर की तरह मुझसे दूर किया गया मैंने जुलाहे की तरह अपनी ज़िन्दगानी को लपेट लिया है वह मुझको तांत से काट डालेगा सुख से शाम तक तू मुझको तमाम कर डालता है। 14 मैं अबाबील और सासास की तरह ची — ची करता रहा; मैं कबूतर की तरह कुढ़ता रहा; मेरी आँखें ऊपर देखते — देखते पथरा गईं ऐ खुदावन्द, मैं बे — कस हूँ, तू मेरा कफील हो। 15 मैं क्या कहूँ? उसने तो मुझ से वाँदा किया, और उसी ने उसे पूरा किया, मैं अपनी बाकी उम्र अपनी जान की तरली की बजह से आहिस्ता आहिस्ता बसर करूँगा। 16 ऐ खुदावन्द, इन्हीं चीजों से इंसान की ज़िन्दगी है, और इन्हीं में मेरी रुह की हयात है; इसलिए तू ही शिफाब बख्श और मुझे ज़िन्दा रख। 17 देख, मेरा सख्त रन्ज राहत से तब्दील हुआ; और मेरी जान पर मेहरबान होकर उने उसे हलाकी के गढ़े से रिहाई दी, क्यौंकि तूने मेरे सब गुनाहों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया। 18 इसलिए कि पाताल तेरी इबादत नहीं कर सकता; और मौत से तेरी हम्म नहीं हो सकती। वह जो कब्र में उतरने वाले हैं तेरी सच्चाई के उम्मीदवार नहीं हो सकते। (Sheol h7585) 19 ज़िन्दा, हाँ, ज़िन्दा ही तेरी तमजीद करेगा जैसा आज के दिन मैं करता हूँ, बाप अपनी औलाद को तेरी सच्चाई की खबर देगा। 20 खुदावन्द मुझे बचाने को तैयार है; इसलिए हम अपने तारादर साज़ों के साथ उम्र भर खुदावन्द के घर में सरोदख्खानी करते रहेंगे। 21 यसाँयाह ने कहा था, कि 'अंजीर की टिकिया लेकर फोड़े पर बौध, और वह शिफा पाएगा। 22 और हिजकियाह ने कहा था, इसका क्या निशान है कि ऐ खुदावन्द के घर में जाऊँगा।

39 उस वक्त मस्तक बल्दान — बिन — बल्दान, शाह — ए — बाबूल ने हिजकियाह के लिए नामे और तहाइफ भेजे; क्यौंकि उसने सुना था कि वह बीमार था और शिफायाब हुआ। 2 और हिजकियाह उनसे बहुत खुश हुआ और अपने खजाने, याँनी चाँदी और सोना और मसालेह और बेश कीमत 'इत्र और तमाम सिलाह खाना, और जो कुछ उसके खजानों में मौजूद था उनको

दिखाया। उसके घर में और उसकी सारी ममलुकत में ऐसी कोई चीज़ न थी, जो हिज़कियाह ने उनको न दिखाई। 3 तब यसायाह नवी ने हिज़कियाह बादशाह के पास आकर उससे कहा, कि “ये लोग क्या कहते थे, और ये कहाँ से तेरे पास आए?” हिज़कियाह ने जवाब दिया, कि “ये एक दूर के मूलक, यानी बाबुल से मेरे पास आए हैं।” 4 तब उसने पूछा, कि “उन्होंने तेरे घर में क्या — क्या देखा?” हिज़कियाह ने जवाब दिया, “सब कुछ जो मेरे घर में है, उन्होंने देखा: मेरे खजानों में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मैंने उनको दिखाई न हो।” 5 तब यसायाह ने हिज़कियाह से कहा, ‘रब्ब — उल — अफवाज का कलाम सुन ले: 6 देख, वह दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है, और जो कुछ तेरे बाप दादा ने आज के दिन तक जमा कर रखवा है बाबुल को ले जाएंगे, खुदावन्द फरमाता है, कुछ भी बाकी न रहेगा। 7 और वह तेरे बेटों में से जो तुझ से पैदा होंगे और जिनका बाप तू ही होगा, किन्तु जो को ले जाएंगे; और वह शाह — ए — बाबुल के महल में ख्वाजासरा होंगे। 8 तब हिज़कियाह ने यसायाह से कहा, ‘खुदावन्द का कलाम जो तूने सुनाया भला है। और उसने ये भी कहा, मेरे दिनों में तो सलामती और अम्न होगा।

40 तसल्ली दो तुम मेरे लोगों को तसल्ली दो; तुम्हारा खुदा फरमाता है। 2

येस्तलेम को दिलासा दो; और उसे पुकार कर कहो कि उसकी मुसीबत के दिन जो जंग — ओ — जदल के थे गुजर गए, उसके गुनाह का कफ़कारा हुआ; और उसने खुदावन्द के हाथ से अपने सब गुनाहों का बदला दो चन्द्र पाया। 3 पुकारनेवाले की आवाज़: वीरान में खुदावन्द की राह दुस्त करो, सहरा में हमरे खुदा के लिए शाहराह हमवार करो। 4 हर एक नशेब ऊँचा किया जाए, और हर एक पहाड़ और टीला पस्त किया जाए; और हर एक टेढ़ी चीज़ सीधी और हर एक नाहमवार जगह हमवार की जाए। 5 और खुदावन्द का जलाल आशकारा होगा और तमाम बशर उसके देखेंगा क्यौंकि खुदावन्द ने अपने मूँह से फरमाया है। 6 एक आवाज़ आई कि ऐलान कर, और मैंने कहा मैं क्या ऐलान करूँ, हर बशर घास की तरह है और उसकी सारी रैनक मैदान के फूल की तरह। 7 घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है; क्यौंकि खुदावन्द की हवा उस पर चलती है; यकीनन लोग घास हैं। 8 हाँ, घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है; लेकिन हमारे खुदा का कलाम हमेशा तक काईम है। 9 ऐसियून को खुशखबरी सुनाने वाली, ऊँचे पहाड़ पर चढ़ जा; और ऐसे येस्तलेम को बशरात देवाती, जो से अपनी आवाज बलन्द कर, खब पुकार, और मत डर; यहद्वार की बसियों से कह, देखो, अपना खुदा। 10 देखो, खुदावन्द खुदा बड़ी कुदरत के साथ आएगा, और उसका बाज़ उसके लिए सलतनत करेगा; देखो, उसका सिला उसके साथ है, और उसका अज्ज उसके सामने। 11 वह चौपान की तरह अपना गल्ला चराएगा, वह बर्झों को अपने बाज़ोंमें जमा करेगा और अपनी बागल में लेकर चलेगा, और उनको जो दूध पिलाती हैं आहिस्ता आहिस्ता ले जाएगा। 12 किसने समदर को चुल्लू से नापा और आसमान की पैमाइश बालिशत से की, और जमीन की गर्द की पैमाने में भरा, और पहाड़ों को पलड़ों में बजन किया और टीटों को तराज़ में तेला। 13 किसने खुदावन्द की स्ह की हिदायत की, या उसका सलाहकर होकर उसे सिखाया? 14 उसने किससे मश्वर ली है जो उसे तालीम दे, और उसे ‘अदालत की राह सुझाए और उसे मारिफ़त की बात बताए, और उसे हिक्मत की राह से आगाह करें? 15 देख, कौमें डोल की एक बैंद की तरह हैं, और तराज़ की बारीक गर्द की तरह गिनी जाती हैं; देख, वह जज़ीरों को एक जर्ज़ की तरह उठा लेता है। 16 लुबनान ईंधन के लिए काफ़ी नहीं और उसके जानवर सोरखनी कुर्बानी के लिए बस नहीं। 17 इसलिए सब कौमें उसकी नज़र में हैच हैं, बल्कि वह उसके नज़दीक बतालत और नाचीज़ से भी कमतर गिनी जाती हैं। 18 तुम खुदा को

किससे तशबीह दोगे और कौन सी चीज़ उससे मुशाबह ठहराओगे? 19 तराशी हुई मूरत! कारीगर ने उसे ढाला, और सुनार उस पर सोना मढ़ता है और उसके लिए चाँदी की जजरी बनाता है। 20 और जो ऐसा तीहीदस्त है कि उसके पास नज़र गुज़राने को कुछ नहीं, वह ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो सड़ने वाली न हो; वह होशियार कारीगर की तलाश करता है, ताकि ऐसी मूरत बनाए जो काईम रह सके। 21 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? क्या ये बात इब्निदा ही से तुम को बताई नहीं गई? क्या तुम बिना — ए — ‘अलाम से नहीं समझे? 22 वह महीत — ए — जमीन पर बैठता है, और उसके सुकूनत के लिए खेमे की तरह है; वह आसमान को पर्वे की तरह तानता है, और उसको सुकूनत के लिए खेमे की तरह फैलाता है। 23 जो शहजादों को नाचीज़ कर डालता, और दुनिया के हाकिमों को हेच ठहराता है। 24 वह अभी लगा न गए, वह अभी बोए न गए; उनका तना अभी जमीन में जड़ न पकड़ चुका कि वह सिर्फ़ उन पर फैक़ मारता है और वह खुशक हो जाते हैं और हवा का झाँका उनको भरने की तरह उड़ा ले जाता है। 25 वह कुद्दूस फरमाता है तम मुझे किससे तशबीह दोगे और मैं किस चीज़ से मशाबह हूँगा। 26 अपनी अँखें ऊपर उठाओ और देखो कि इन सबका खालिक कौन है? वही जो इनके लश्कर को शुमार करके निकालता है, और उन सबको नाम — ब — नाम बुलाता है। उसकी कुदरत की ‘अज़मत और उसके बाज़ की तबानाई की बजह से एक भी गैर हाजिर नहीं रहता। 27 तब ऐ याक़ब! त क्यूँ यूँ कहता है; और ऐ इश्ाइल! तु किस लिए ऐसी बात करता है, कि ‘मेरी राह खुदावन्द से पोशीदा है और मेरी ‘अदालत मेरे खुदा से गुजर गई?’ 28 क्या तु नहीं जानता, क्या तूने नहीं सुना? कि खुदावन्द हमेशा का खुदा व तमाम जमीन का खालिक थकता नहीं और मांदा नहीं होता उसकी हिक्मत इदराक के बाहर है। 29 वह थके हुए को जोर बराष्टा है और नातवान की तबानाई को ज्यादा करता है। 30 नौजवान भी थक जाएँगे, और मान्दा होंगे और स्मृति बिल्कुल गिर पड़ेंगे; 31 लेकिन खुदावन्द का इन्तिजार करने वाले, अज्ज — सर — ए — नौ जोर हासिल करेंगे; वह उकाबों की तरह बाल — ओ — पर से उड़ेंगे, वह दैड़ेंगे और न थकेंगे, वह चलेंगे और मान्दा न होंगे।

41 ऐ जजरी, मेरे सामने खामोश रहो; और उमर्मतें अज्ज — सर — ए

— नौ — जोर हासिल करें; वह नज़दीक आकर ‘अर्ज़ करें; आओ, हम मिलकर ‘अदालत के लिए नज़दीक हों। 2 किसने पूरब से उसको खड़ा किया, जिसको वह सदाकत से अपने कदमों में बुलाता है? वह कौमोंको उसके हवाले करता और उसे बादशाहों पर मुसलित करता है; और उनको खाक की तरह उसकी तलवार की तरफ उड़ती हुई भूमी की तरह उसकी कमान के हवाले करता है, 3 वह उनका पीछा करता और उस राह से जिस पर पहले कदम न रखवा था, सलामत गुजरता है। 4 ये किसने किया और इब्निदा नस्लों को तत्त्व करके अन्जाम दिया? मैं खुदावन्द ने, जो अब्बल — ओ — आखिर हूँ, वह मैं ही हूँ। 5 जमीन के किनारे थर्थ गए वह नज़दीक आते गए। 6 उनमें से हर एक ने अपने पड़ोसी की मदद की और अपने भाई से कहा, हौसला रख! 7 बहई ने सुनाकी और उसने जो हयोड़ी से साफ़ करता है उसकी जो निहाई पर पीटता है, हिम्मत बढ़ाई और कहा जोड़ तो अच्छा है, इसलिए उनहोंने उसको मैंखों से मज़बूत किया ताकि क्राईम रहे। 8 लेकिन तू ऐ इस्माइल, मेरे बन्दे! ऐ याक़ब, जिसको मैंने पसन्द किया, जो मैंने दोस्त अब्बाहम की नस्ल से है। 9 तू जिसको मैंने जमीन की इन्तिहा से बुलाया और उसके अतराफ़ से तलब किया और तुझको कहा कि तू मेरा बंदा है मैंने तुझको पसन्द किया और तुझको रद किया। 10 तू मत डर, क्यौंकि मैं तेरे साथ हूँ; पेरेशन न हो, क्यौंकि मैं तेरा खुदा हूँ, मैं तुझे जोर बराष्टा रखा, मैं यक़ीन तेरी मदद करूँगा, और मैं अपनी सदाकत के दहने हाथ से तुझे संभालूँगा। 11 देख, वह सब जो

तुझ पर गज्जबनाक हैं, पशोमान और स्स्वा होंगे; वह जो तुझ से झगड़ते हैं, नाचीज हो जाएँगे और हलाक होंगे। 12 त अपने मुखालिफों को छूँड़ेगा और न पाएगा, तुझ से लड़नेवाले नाचीज — ओ — हलाक हो जाएँगे। 13 क्यूँकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा तेरा दहना हाथ पकड़ कर कहँगा, मत डर, मैं तेरी मदद करूँगा। 14 परेशान न हो, ऐ कीडे याकब! ऐ इसाईल की कलील जमा'अत मैं तेरी मदद करूँगा, खुदावन्द फरमाता है; हाँ मैं जो इसाईल का कुददूस तेरा फिदिया देनेवाला हूँ। 15 देख, मैं तुझे गहाई का नया और तेज दन्दनादार आला बनाऊँगा; त पहाड़ों को कटेगा और उनको रेजा — रेजा करेगा, और टीलों को भूसे की तरह बनाएगा। 16 त उनको उसाएगा और हवा उनको डाले जाएगी, धूल उनको तितर — बितर करेगी; लेकिन तू खुदावन्द से खुश होगा और इसाईल के कुददूस पर फख़ करेगा। 17 मुहताज और गरीब पानी ढूँढ़ते फिरते हैं लेकिन मिलता नहीं, उनकी ज़बान प्यास से खुशक हैं; मैं खुदावन्द उनकी सुरँगा, मैं इसाईल का खुदा उनको तर्क न कस्स्गा। 18 मैं नैंग टीलों पर नहरे और वादियों में चश्मे खोलूँगा, सहरा को तालाब और खुशक जमीन को पानी का चश्मा बना दूँगा। 19 वीरों में देवदार और बबूल और आस और ज़ैतून के दरखत लगाऊँगा “सेहरा में चीड़ और सरो व सनोबर इकट्ठा लगाऊँगा। 20 ताकि वह सब देखें और जानें और गौर करें, और समझे के खुदावन्द ही की हाथ ने ये बनाया और इसाईल के कुददूस ने ये पैदा किया। 21 खुदावन्द फरमाता है, अपना दावा पेश करो, याकब का बादशाह फरमाता है, अपनी मजबूत दलिलें लाओ।” 22 वह उनको हाजिर करें ताकि वह हम को होने वाली चीजों की खबर दें: हम से अगली बातें बयान करो कि क्या थी, ताकि हम उन पर सोचें और उनके अंजाम को समझें या आइंदा की होने वाली बातों से हम को आगाह करो। 23 बताओ कि आगे को क्या होगा, ताकि हम जानें कि तुम इलाह हो; हाँ, भला या बुरा कुछ तो करो ताकि हम मूताजिब हों और एक साथ उसे देखें। 24 देखो, तुम हेच और बेकर हो, तुम को पसन्द करनेवाला मकर है। 25 मैंने उत्तर से एक को खड़ा किया है, वह आ पर्हेंगा; वह आफताब के मतलों से होकर मेरा नाम लेगा, और शाहजादों को गारे की तरह लताडेगा जैसे कुम्हार मिट्टी गँथता है। 26 किसने ये इन्दिरा से बयान किया कि हम जानें? और किसने आगे से खबर दी कि हम कहें कि सच है? कोई उसका बयान करने वाला नहीं, कोई उसकी खबर देने वाला नहीं कोई नहीं जो तुम्हारी बातें सुने। 27 मैं ही ने पहले सियून से कहा, कि “देख, उनको देख!” और मैं ही येस्सलेम को एक बशारत देनेवाला बरख़ूँगा। 28 क्यूँकि मैं देखता हूँ कि उनमें कोई सलाहकार नहीं जिससे पूँछ़, और वह मुझे जबाब दे। 29 देखो, वह सब के सब बताता है, उनके काम हेच है; उनकी ढाली हुई मूर्ते विल्कुल नाचीज है।

42 देखो मेरा खादिम, जिसको मैं संभालता हूँ, मेरा बरगुजीदा, जिससे मेरा दिल खुश है, मैंने अपनी स्ह ह उस पर डाली, वह क्लौमों में 'अदालत जारी करेगा। 2 वह न चिल्लाएगा और न शेर करेगा और न बाजारों में उसकी आवाज सुनाई देगी। 3 वह मसले हुए सरकंडे को न तोड़ेगा और टमटमाती बत्ती को न बुझाएगा, वह रस्ती से 'अदालत को करेगा। 4 वह थका न होगा और हिम्मत न होगा, जब तक कि 'अदालत को जमीन पर काईम न करें; जर्जी उसकी शरी'अत का इन्तिजार करेंगे। 5 जिसने आसमान को पैदा किया और तान दिया, जिसने ज़मीन को और उनको जो उसमें से निकलते हैं फैलाया, जो उसके बाशिन्दों को साँस और उस पर चलनेवालों को स्ह 'इन्यायत करता है, याँनी खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है 6 “मैं खुदावन्द ने तुझे सदाकत से बुलाया, मैं ही तेरा हाथ पकड़ुँगा और तेरी हिफाजत करूँगा, और लोगों के 'अहद और कौमों के नूर के लिए तुझे दूँगा; 7 कि तू अन्धों की आँखें खोले, और गुलामों को कैद से निकालो, और उनको जो अन्धे में बैठे हैं कैदखाने से छुड़ाए। 8 यहोवा मैं हूँ,

यही मेरा नाम है; मैं अपना जलाल किसी दूसरे के लिए, और अपनी हम्द खोदी हुई मूर्तों के लिए रवा न रखख़ूँगा। 9 देखो, पुरानी बातें पूरी हो गई और मैं नई बातें बताता हूँ, इससे पहले कि वाके' हों, मैं तुम से बयान करता हूँ।” 10 ऐ समन्दर पर गुज़रने वालों और उसमें बसनेवालों, ऐ जर्जीरों और उनके बाशिन्दों, खुदावन्द के लिए नया गीत गाओ, ज़मीन पर सिर — ता — सिर उसी की इवादत करो। 11 बीराना और उसकी बास्तियाँ, कीदार के आबाद गाँव, अपनी आवाज बलन्द करें; सिला' के बसनेवाले गीत गाएँ, फ़ाहड़ों की चोटियों पर से ललकारें। 12 वह खुदावन्द का जलाल ज़ाहिर करें और जर्जीरों में उसकी सनारखानी करें। 13 खुदावन्द बहादुर की तरह निकलेगा, वह ज़ंजीर मर्द की तरह अपनी गैरत दिखाएगा; वह नाँ'रा मारेगा, हाँ, वह ललकरेगा; वह अपने दुश्मनों पर गालिब आएगा। 14 मैं बहुत मुहूर से चुप रहा, मैं खामोश हो रहा और ज़बत करता रहा; लेकिन अब मैं दर्द — ए — ज़िह वाली की तरह चिल्लाऊँगा; मैं हाँ प. गा और ज़ोर — ज़ोर से साँस लूँगा। 15 मैं पैंग फ़ाहड़ों और टीलों को बीरान कर डालूँगा और उनके सब्ज़जारों को खुशक करूँगा; और उनकी नदियों को ज़र्जीर बनाऊँगा और तालाबों को सुखा दूँगा। 16 और अन्धों को उस राह से जिसे वह नहीं जानते ले जाऊँगा, मैं उनको उन रास्तों पर जिसे वह आगाह नहीं ले चलूँगा; मैं उनके आगे तारीकी को रोशनी और ऊँची नीची जगहों को हमारवार कर दूँगा, मैं उनसे ये सुलक करूँगा और उनको तर्क न करूँगा। 17 जो खोदी हुई मूर्तों पर भोसा करते और ढाले हुए बूतों से कहते हैं तुम हमारे माँबूद हो वह पीछे हटेंगे और बहुत शर्मिंदा होंगे। 18 ऐ बहरो सुनो ऐ अन्धों नज़र करो ताकि तुम देखो। 19 मैं खादिम के सिवा अंथा कौन है और कौन ऐसा बहरा है जैसा मेरा स्सूल जिसे मैं भेजता हूँ मैं दोस्त की और खुदावन्द के खादिम की तरह नाबीना कौन है। 20 त बहुत सी चीजों पर नज़र करता है पर देखता नहीं कान तो खले हैं पर सुनता नहीं। 21 खुदावन्द को पोसन्द आया कि अपनी सदाकत की खातिर शरी'अत को बुजुर्गी दे, और उसे काबिल — ए — ताज़ीग बनाए। 22 लेकिन ये वह लोग हैं जो लुट गए और गारत हुए, वह सब के सब किन्दानों में गिरफतार और कैदखानों में छिपे हैं; वह शिकार हुए और कोई नहीं छुड़ाता; वह लुट गए और कोई नहीं कहता, फ़ेर दो! 23 तुम मैं कौन है जो इस पर कान लगाए? जो आइन्दा के बारे में तवज्ज्ञ ह से सुने? 24 किसने याकूब को हवाले किया के गरत हो, और इसाईल को कि लुटेरों के हाथ में पड़े? क्या खुदावन्द ने नहीं, जिसके खिलाफ हम ने गुनाह किया? क्यूँकि उन्होंने न चाहा कि उसकी राहों पर चलें, और वह उसकी शरी'अत के ताबे न हुए। 25 इसलिए उसने अपने कहर की शिद्दत, और ज़ंग की सरबती को उस पर डाला; और उसे हर रस्ते से आग लग गई पर वह उसे दरियापत नहीं करता, वह उससे जल जाता है पर खातिर में नहीं लाता।

43 और अब, ऐ याकूब, खुदावन्द जिसने तुझ को पैदा किया, और जिसने, ऐ इसाईल, तुझ को बनाया यूँ फरमाता है कि खौफ न कर क्यूँकि तेरा फिदिया दिया है मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया है, तुमेरा है। 2 जब तू सैलाब में से गुज़ेरा, तो मैं तेरे साथ हाँगा; और जब तू नदियों को उद्धर करेगा, तो वह तर्जे न डुबाएँगी; जब तू आग पर चलेगा, तो तुझे आँच न लगेगी और शोला तुझे न जलाएगा। 3 क्यूँकि मैं खुदावन्द तेरा खुदा, इसाईल का कुददूस, तेरा नजात देनेवाला हूँ। मैं तेरे फिदिये में मिम को और तेरे बदले कूश और सबा को दिया। 4 चूँकि तू मेरी निगाह में बेशकीमत और मुकर्म ठहरा और मैंने तुझ से मुहब्बत रखखी, इसलिए मैं तेरे बदले लोग और तेरी जान के बदले मैं उमरते दे दूँगा। 5 तू खौफ न कर, क्यूँकि मैं तेरे साथ हाँ, मैं तेरी नस्ल को पूरब से ले आँऊँगा, और मारीब से तुझे फराहम करूँगा। 6 मैं उत्तर से कहँगा कि दे डाल, और जुनूब से कि रख न छोड़; मैं बेटों को दूर से और मेरी बेटियों को ज़मीन की इन्तिहा से

लाओ 7 हर एक को जो मेरे नाम से कहलाता है और जिसको मैंने अपने जलाल के लिए पैदा किया, जिसे मैंने पैदा किया; हाँ, जिसे मैंने ही बनाया। 8 उन अर्थे लोगों को जो अँखें रखते हैं और उन बहरों को जिनके कान हैं बाहर लाओ। 9 तमाम कौमें फराहम की जाएँ और सब उम्मतें जमा हों। 10 उनके बीच कौन है जो उसे बयान करे या हम को पिछली बातें बताए? वह अपने गवाहों को लाएँ ताकि वह सच्चे साबित हों, और लोग सुनें और कहें कि ये सच है। 10 खुदावन्द फरमाता है, तुम मेरे गवाह हो और मेरे खादिम भी, जिन्हें मैंने बरगुजीदा किया, ताकि तुम जानो और मुझ पर ईमान लाओ और समझो कि मैं वही हूँ। मुझ से पहले कोई खुदा न हुआ और मेरे बाद भी कोई न होगा। 11 मैं ही यहोंवा हूँ और मेरे सिवा कोई बचानेवाला नहीं। 12 मैंने ऐलान किया और मैंने नजात बख्ती और मैं ही ने जाहिर किया, जब तुम मैं कोई अजनबी मांडूट न था; इसलिए तुम मेरे गवाह हो, खुदावन्द फरमाता है, कि 'मैं ही खुदा हूँ। 13 आज से मैं ही हूँ, और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ा सके; मैं काम करूँगा, कौन है जो उसे रक्ख सके?" 14 खुदावन्द तुम्हारा नजात देनेवाला इस्माइल का कुदूस यूँ फरमाता है, कि तुम्हारी खातिर मैंने बाल पर खुरूज कराया, और मैं उन सबको फरारीयों की हालत में और कसादियों को भी जो अपने जहजों में ललकारते थे, ले आऊँगा। 15 मैं खुदावन्द मुहम्मद कुदूस, इस्माइल का खालिक, तुम्हारा बादशाह हूँ। 16 खुदावन्द जिसने समन्दर में राह और सैलाब में गुररगाह बनाई, 17 जो जंगी रथों और घोड़ों और लश्कर और बहादुरों को निकाल लाता है, वह सब के सब लेट गए, वह फिर न उठे, वह बूझ गए, हाँ, वह बन्ती की तरह बूझ गए। 18 याँनी खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि पिछली बातों को याद न करो और पुनार्नी बातों पर सोचते न रहो। 19 देखो, मैं एक नया काम करूँगा; अब वह जहर में आएगा, क्या तुम उससे ना — वाकिफ़ रहेगो? हाँ, मैं चीराने में एक राह और सहरा में नदियाँ जारी करूँगा। 20 जंगती जानवर, गीढ़ और शुतरुपुरा, मेरी ताजीम कोरेंगे; क्यूँकि मैं वीरान में पानी और सहरा में नदियाँ जारी करूँगा ताकि मेरे लोगों के लिए, याँनी मेरे बरगुजीदों के पाने के लिए हों। 21 मैंने इन लोगों को अपने लिए बनाया ताकि वह मेरी हम्मद करें। 22 तोभी, ऐ याँकूब, तू मुझे न पुकारा; बल्कि ऐ इस्माइल, तू मुझ से तंग आ गया। 23 तू बर्बी को अपनी सोल्जनी कुर्बानी के लिए मेरे सामने नहीं लाया, और तूने अपने जबीहों से मेरी जातीम नहीं की। मैंने तुझे हदिया लाने पर मजबूर नहीं किया, और लुबान जलाने की तक्तीक नहीं दी। 24 तूने स्पर्य से मेरे लिए अगर को नहीं खरीदा, और तूने मुझे अपने जबीहों की चर्बी से सर नहीं किया; लेकिन तूने अपने गुनाहों से मुझे ज़ेरबार किया और अपनी खताओं से मुझे ज़ेराक कर दिया। 25 'मैं ही वह हूँ जो अपने नाम की खातिर तेरे गुनाहों को मिटाता हूँ, और मैं तेरी खताओं को याद नहीं रखखांगा। 26 मुझे याद दिला, हम आपस में बहस करें; अपना हाल बयान कर ताकि तू सादिक ठहरे। 27 तेरे बड़े बाप ने गुनाह किया, और तेरे तपसीर करनेवालों ने मेरी मुखालिफ़त की है। 28 इसलिए मैंने मकदिस के अमीरों को नापाक ठहराया, और याँकूब को लान्त और इस्माइल को तानाजीनी के हवाले किया।

44 "लेकिन अब ऐ याँकूब, मेरे खादिम और इस्माइल, मेरे बरगुजीदा, सुन!

2 खुदावन्द तेरा खालिक जिसने रहम ही से तुझे बनाया और तेरी मदद करेगा, यूँ फरमाता है: कि ऐ याँकूब, मेरे खादिम और यस्सून मेरे बरगुजीदा, ख्वाफ़ न कर! 3 क्यूँकि मैं प्यासी ज़मीन पर पानी उँडेलूँगा, और खुशक ज़मीन में नदियाँ जारी करूँगा; मैं अपनी स्फूर्ति नस्ल पर और अपनी बरकत तेरी ओलाद पर नाजिल करूँगा 4 और वह घास के बीच उगें, जैसे बहते पानी के किनारे पर बेद हो। 5 एक तो कहेगा, मैं खुदावन्द का हूँ, और दूसरा अपने आपको याँकूब के नाम का ठहराएगा, और तीसरा अपने हाथ पर लिखेगा, मैं

खुदावन्द का हूँ," और अपने आपको इस्माइल के नाम से मुलक्कब करेगा।" 6 खुदावन्द, इस्माइल का बादशाह और उसका फिदया देने वाला रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है, कि 'मैं ही अब्बल और मैं ही आखिर हूँ, और मेरे सिवा कोई खुदा नहीं। 7 और जब से मैंने पुराने लोगों की बिना डाली, कौन मेरी तरह बुलाएगा और उसको बयान करके मेरे लिए तरतीब देगा? हाँ, जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होने वाला है, उसका बयान करो। 8 तुम न डरो, और पेरेशन न हो; क्या मैंने पहले ही से तुझे ये नहीं बताया और जाहिर नहीं किया? तुम मेरे गवाह हो। क्या मैं 'अलावाह कोई और खुदा है? नहीं, कोई चट्टान नहीं; मैं तो कोई नहीं जानता।" 9 खोदी हुई मरातों के बनानेवाले, सबके सब बेकार हैं और उनकी पसंदीदा चीज़ें बे नक़ा; उन ही के गवाह देखते नहीं और समझते नहीं, ताकि पशेमाँ हों। 10 किसने कोई बुत खुदा के नाम से बनाया या कोई मूरत डाली जिससे कुछ फ़ाइदा हो? 11 देख, उसके सब साथी शर्मिन्दा होंगे क्यूँकि बनानेवाले तो इंसान हैं; वह सब के सब 'जमा' होकर खड़े हों, वह डर जाएँगे, वह सब के सब शर्मिन्दा होंगे। 12 लुहार कुल्हाड़ा बनाता है और अपना काम अंगारों से करता है, और उसे हथौड़ों से दुस्त करता है और अपने बाज़ की कुब्बत से गढ़ता है; हाँ, वह भूका हो जाता है और उसका जोर घट जाता है वह बारी नहीं पीता और थक जाता है। 13 बड़ई सूत फैलाता है और नुकेते हथियार से उसकी सूत खींचता है, वह उसके रेंडे से साफ़ करता है और प्रकार से उस पर नक्श बनाता है; वह उसे इंसान की शक्ति बल्कि आदमी की खूबसूरत शबीह बनाता है, ताकि उसे घर में खड़ा करें। 14 वह देवदारों को अपने लिए काटता है और किस्म — किस्म के बल्तत को लेता है, और जंगल के दरखतों से जिसको पसन्द करता है; वह सोनेबर का दरखत लगाता है और मैं उसे सीधी चिता है। 15 तब वह आदमी के लिए ईंधन होता है; वह उसमें से कुछ सुलगाकर तपाता है, वह उसको जलाकर रोटी पकाता है, बल्कि उससे बुत बना कर उसको सिज्दा करता वह खोदी हुई मूरत खुदा के नाम से बनाता है और उसके आगे मुँह के बल पिर जाता है। 16 उसका एक टुकड़ा लेकर आग में जलाता है, और उसी के एक टुकड़े पर गोशत कबाब करके खाता और सरे होता है; फिर वह तपाता और कहता है, "अहा, मैं गर्म हो गया, मैंने आग देखी!" 17 फिर उसकी बाकी लकड़ी से देवता याँनी खोदी हुई मूरत बनाता है, और उसके आगे मुँह के बल पिर जाता है और उसे सिज्दा करता है और उससे इलिज़ा करके कहता है "मुझे नजात दे, क्यूँकि तू मेरा खुदा है!" 18 वह नहीं जानते और नहीं समझते, क्यूँकि उनकी अँखें बन्द हैं तब वह देखते नहीं, और उनके दिल सख्त हैं लेकिन वह समझते नहीं। 19 बल्कि कोई अपने दिल में नहीं सोचता और न किसी को माँरिफ़त और तमीज़ है कि 'मैंने तो इसका एक टुकड़ा आग में जलाया, और मैंने इसके अंगारों पर रोटी भी पकाई, और मैंने गोशत भना और खाया; अब क्या मैं इसके बकिये से एक मकस्त हीची बनाऊँ? क्या मैं दरखत के कुन्दे को सिज्दा करूँ?' 20 वह राख खाता है; फेरबख्ती ने उसको ऐसा गुराह कर दिया है कि वह अपनी जान बचा नहीं सकता और नहीं कहता क्या मैं दहने हाथ में बतालत नहीं? 21 ऐ याँकूब, ऐ इस्माइल, इन बातों को याद रख; क्यूँकि तू मेरा बन्द है, मैंने तुझे बनाया है, तू मेरा खादिम है; ऐ इस्माइल, मैं तुझे को फरामोश न करूँगा। 22 मैंने तेरी खताओं को घटा की तरह और तेरे गुनाहों को बादल की तरह मिटा डाला; मेरे पास बापस आ जा, क्यूँकि मैंने तेरा फिदया दिया है। 23 ऐ आसमानो, गाओ कि खुदावन्द ने ये किया, ऐ असफल — ऐ — ज़मीन, ललकार; ऐ पहाड़ों, ऐ जंगल और उसके सब दरखतों, नामापरदाजी करो! क्यूँकि खुदावन्द ने याँकूब का फिदया दिया, और इस्माइल में अपना जलाल जाहिर करेगा। 24 खुदावन्द तेरा फिदया देनेवाला, जिसने रहम ही से तुझे बनाया यूँ फरमाता है, कि मैं खुदावन्द सबका खालिक

हैं, मैं ही अकेला आसमान को तानने और जर्मीन को बिछाने वाला हूँ, कौन मेरा शरीक है? 25 मैं झूटों के निशान — आत को बातिल करता, और फालगीरों को दीवाना बनाता हूँ और हिकमत वालों को रुक करता और उनकी हिकमत को हिमाकत ठहराता हूँ 26 अपने खादिम के कलाम को साबित करता, और अपने रसूलों की मसलहत को पूरा करता हूँ जो येस्शलेम के जरिए कहता हूँ, कि 'वह आबाद हो जाएगा, और यहदाह के शहरों के जरिए', कि 'वह तामीर किए जाएंगे, और मैं उसके खण्डों को तामीर करूँगा। 27 जो समन्दर को कहता हूँ, 'सुख जा और मैं तेरी नदियाँ सुखा डालूँगा; 28 जो खोरस के हक में कहता हूँ, कि वह मेरा चरवाहा है और मेरी मर्जी बिल्कुल पूरी करेगा; और येस्शलेम के जरिए कहता हूँ, 'वह तामीर किया जाएगा, और हैकल के जरिए कि उसकी बुनियाद डाली जायेगी।

45 खुदावन्द अपने ममस्त खोरस के हक में यूँ फरमाता है कि मैंने उसका

दहना हाथ पकड़ा कि उम्मतों को उसके सामने ज़ेर करूँ और बादशाहों की कर्मों खुलवा डालूँ और दरवाज़ों को उसके लिए खोल दूँ और फाटक बन्द न किए जाएँ, 2 मैं तेरे आगे आगे चलूँगा और ना — हमवार जगहों को हमवार बना दूँगा, मैं पीलत के दरवाज़ों को टुकड़े — टुकड़े करूँगा और लोहे के बेन्डों को काट डालूँगा; 3 और मैं ज़ल्मात के खजाने और छिपे मकानों के दफनीं तुझे दूँगा, ताकि तू जाने कि मैं खुदावन्द इसाईल का खुदा हूँ जिसने तुझे नाम लेकर बुलाया है। 4 मैंने अपने खादिम याक़ब और अपने बरगुंजीदा इसाईल की खातिर तुझे नाम लेकर बुलाया; मैंने तुझे एक लकब बरवा आरचे तमुँ को नहीं जानता। 5 मैं ही खुदावन्द हूँ और कोई नहीं, मेरे अलावाह कोई खुदा नहीं मैंने तेरी कर्म चाँदी आरचे तुमे न पहचाना; 6 ताकि पूरब से पन्द्रिम तक लोग जान ले कि मेरे अलावाह कोई नहीं; मैं ही खुदावन्द हूँ, मेरे अलावाह कोई दूसरा नहीं। 7 मैं ही रोशनी का मूजिद और तारीकी का खालिक हूँ, मैं सलामती का बानी और बला को पैदा करने वाला हूँ, मैं ही खुदावन्द ये सब कुछ करनेवाला हूँ। 8 ऐ आसमान, ऊपर से टपक पड़; हाँ बादल रास्तबाजी बरसाएँ, ज़र्मीन खुल जाएँ, और नजात और सदाकरत का फल लाएँ; वह उनको इकट्ठे उगाएँ; मैं खुदावन्द उसका पैदा करनेवाला हूँ। 9 'अफ़सोस उस पर जो अपने खालिक से झ़गड़ता है! ठीकरा तो ज़र्मीन के ठीकरों में से है! क्या मिट्टी कुम्हर से कहे, 'तू क्या बनाता है?' क्या तेरी दस्तकारी कहे, 'उसके तो हाथ नहीं?' 10 उस पर अफ़सोस जो बाप से कहे, 'तू किस चीज़ का वालिद है?' और माँ से कहे, 'तू किस चीज़ की बालिदा है? 11 खुदावन्द इसाईल का कुदरूस और खालिक यूँ फरमाता है, कि 'क्या तुम अनेवाली चीजों के जरिएँ' मुझे से पूछोगे? क्या तुम मेरे बेटों या मेरी दस्तकारी के जरिएँ मुझे ह़क्म दोगे? 12 मैंने ज़र्मीन बनाई, और उस पर इंसान को पैदा किया; और मैं ही ने, हाँ, मैं हाथों ने आसमान को ताना, और उसके सब लक्षणों पर मैंने हक्म किया।' 13 रब्ब — उल — अफ़वाज़ फरमाता है मैंने उसको सदाकत में खड़ा किया कि है और मैं उसकी तमाम राहों को हमवार करूँगा; वह मेरा शहर बनाएगा, और मेरे शुलामों को बौग कीमत और इवज़ लिए आजाद कर देगा। 14 खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि 'मिस की दौलत, और कृश की तिजारत, और सबा के क़दावर लोग तेरे पास आएंगे और तेरे होंगे; वह तेरी पैरवी करेगे, वह बेड़ीयाँ पहने हुए अपना मुल्क छोड़कर आयेंगे और तेरे सामने सिजद करेंगे; वह तेरी मिन्त करेंगे और कहेंगे, यक़ीनन खुदा तुझमें है और कोई दूसरा नहीं और उसके सिवा कोई खुदा नहीं।' 15 ऐ इसाईल के खुदा, ऐ नजात देवेवाले, यक़ीनन त पोशीदा खुदा है। 16 बुत बनानेवाले सब के सब पशेंगे और सरासीमा होंगे, वह सब के सब शर्मिन्दा होंगे। 17 लेकिन खुदावन्द इसाईल को बचा कर हमेशा की नजात बरखेगा; तुम हमेशा से हमेशा तक कभी पशेंगे और सरासीमा न होंगे। 18

क्यूँकि खुदावन्द जिसने आसमान पैदा किए, वही खुदा है; उसी ने ज़र्मीन बनाई और तैयार की, उसी ने उसे काईम किया; उसने उसे स्नासन पैदा नहीं किया बल्कि उसको आबादी के लिए आरास्ता किया। वह यूँ फरमाता है, कि 'मैं खुदावन्द हूँ, और मेरे 'अलावाह और कोई नहीं।' 19 मैंने ज़र्मीन की किसी तारीक जगह में, पोशीदीयों में तो कलाम नहीं किया, मैंने याक़ब की नस्ल को नहीं फरमाया कि 'अबस मेरे तालिक हो।' मैं खुदावन्द सच कहता हूँ, और रस्ती की बातें बयान फरमाता हूँ। 20 तुम जो कौमों में से बच निकले हो! जमा' होकर आओ मिलकर नज़दीक हो वह जो अपनी लकड़ी की खोदी हुई मूरत खुदा के नाम से लिए फिरते हैं, और ऐसे माबूद से जो बचा नहीं सकता दुआ करते हैं, अकल से खाली हैं। 21 तुम 'ऐलान करो और उनको नज़दीक लाओ; हाँ, वह एक साथ मशवरत करें, किसने पहले ही से ये जाहिर किया? किसने पिछले दिनों में इसकी खबर पहले ही से दी है? क्या मैं खुदावन्द ही ने ये नहीं किया? इसलिए मेरे 'अलावाह कोई खुदा नहीं है, सादिक — उल — कौल और नजात देवेवाला खुदा मेरे 'अलावाह कोई नहीं है। 22 'ऐ इन्हिं — ए — ज़र्मीन के सब रहनेवालों, तुम मेरी तरफ मुत्वजिह हो और नजात पाओ, क्यूँकि मैं खुदा हूँ और मेरे 'अलावाह कोई नहीं।' 23 मैंने अपनी जात की कसम खाई है, कलाम — ए — सिद्धक मेरे मुँह से निकला है और वह टलेना नहीं, कि 'हर एक घुटना मेरे सामने झूकाया और हर एक जबान मेरी कसम खाएगी। 24 मेरे हक में हर एक कहेंगा कि यक़ीनन खुदावन्द ही में रास्तबाजी और तवानई है, उसी के पास वह आएगा और सब जो उससे बेज़ार थे पशेंगे होंगे। 25 इसाईल की कुल नस्ल खुदावन्द में सादिक ठहरेगी और उस पर फ़ऱज़ करेगी।

46 बेल झुकता है नबू खम होता उनके बुत जानवरों और चौपायों पर लदे

हैं; जो चीजें तुम उठाए फिरते थे, थके हुए चौपायों पर लटी हैं। 2 वह झुकते और एक साथ खम होते हैं; वह उस बोझ को बचा न सके, और वह आप ही गुलामी में चले गए हैं। 3 ऐ याक़ब के घराने, और ऐ इसाईल के घर के सब बाकी थके लोगों, जिनको बत्र ही से मैंने उठाया और जिनको रहम ही से मैंने गोद में लिया, मेरी सुनो 4 मैं तुम्हारे बुद्धापे तक वही हूँ और सिर सफेद होने तक तुम को उठाए फ़िरँगा। मैंने तुम्हें बनाया और मैं ही उठाता रहूँगा, मैं ही लिए चाँगा और रिहाई दूँगा। 5 तुम मुझे किससे तशब्बि होगे, और मुझे किसके बगाबर ठहराओगे, और मुझे किसकी तरह कहेंगे ताकि हम मुशाबह हों? 6 जो थैली से बाइक्सरात सोना निकालते और चाँदी को तराज़ू में तोलते हैं, वह सुनार को उजर तर पलगाते हैं और वह उससे एक बुत खुदा के नाम से बनाता है; फिर वह उसके सामने झुकते, बल्कि सिज्दा करते हैं। 7 वह उसे कँधे पर उठाते हैं, वह उसे ले जाकर उसकी जगह पर खड़ा करते हैं और वह खड़ा रहता है, वह अपनी जगह से सरकता नहीं; बल्कि अगर कोई उसे पुकारे, तो वह न जबाब दे सकता है और न उसे मुसीबत से छुड़ा सकता है। 8 ऐ गुनाहारों, इसको याद रखोगे और मर्द बनो, इस पर फ़िर सोचो। 9 पहली बातों को जो क़दीम से है, याद करो कि मैं खुदा हूँ और कोई दूसरा नहीं मैं खुदा हूँ और मुझ सा कोई नहीं। 10 जो इन्हिं ही से अंजाम की खबर देता हूँ, और पहले दिनों से वह बातें जो अब तक बज़द में नहीं आई, बताता हूँ, और कहता हूँ, कि 'मेरी मसलहत काईम रहेगी और मैं अपनी मर्जी बिल्कुल पूरी करूँगा। 11 जो पूरब से उकाब को यानी उस शर्ख को जो मेरे झारदे को पूरा करेगा, दूर के मुल्क से बुलाता हूँ, मैंने ही कहा और मैं ही इसको बज़द में लाऊँगा; मैंने इसका इधाद किया और मैं ही इसे पूरा करूँगा। 12 'ऐ सरज दिलों, जो सदाकत से दूर हो मेरी सुनो, 13 मैं अपनी सदाकत को नज़दीक लाता हूँ, वह दूर नहीं होगी और मेरी नजात ताखीर न करेगी; और मैं सिय्यन को नजात और इसाईल को अपना जलाल बरखेंगा।'

47 ऐ कुँवारी दूखतर — ए — बाबुल उत्तर आ और खाक पर बैठे ऐ

कसदियों की दूखतर, तबे — तत्त्व ज़मीन पर बैठे; कर्यूकि अब त नर्म अन्दाम और नाज़नीन न कहलाएगी। 2 चक्की ले और आटा पीस, अपना निकाब उतार और दामन समेट ले, टॅंगे नंगी करके नदियों को पार कर। 3 तेरा बदन बे — पर्दा किया जाएगा, बल्कि तेरा सत्र भी देखा जाएगा। मैं बदला लैंगा और किसी पर शफकत न करूँगा। 4 हमारा फिदिया देनेवाले का नाम रब्ब — उल — अफवाज याँनी इसाईल का कुददूस है। 5 ऐ कसदियों की बेटी, चुप होकर बैठ और अन्धेरे में दाखिल हो; कर्यूकि अब त मूल्कतों की खातन न कहलाएगी। 6 मैं अपने लोगों पर गज़बानक हुआ, मैंने अपनी मीरास को नापाक किया और उनको तेरे हाथ में सौप दिया; तुमें उन पर रहम न किया, तुमें बूढ़ों पर भी अपना भारी जुआ रखवा। 7 और तूने कहा भी, कि मैं हमेशा तक खातून बनी रहूँगी, इसलिए तूने अपने दिल में इन बातों का ख्याल न किया और इनके अन्जाम को न सोचा। 8 इसलिए अब ये बात सुन, ऐ त जो 'इश्त में गर्क है, जो बेपर्वी रहती है, जो अपने दिल में कहती है, कि मैं हूँ, और मेरे 'अलावाह कोई नहीं', मैं बेवा की तरह न बैटूँगी, और न बैजौलाद होने की हालत से बाकिक हूँगी; 9 इसलिए अचानक एक ही दिन में ये दो मूरीबों तुझ पर आ पड़ेगी, याँनी तू बैजौलाद और बेवा हो जाएगी। तेरे जादू की इफरात और तेरे सहर की कसरत के बाबजूद ये मूरीबों पेरे तौर से तुझ पर आ पड़ेगी। 10 कर्यूकि तूने अपनी शरारत पर भरोसा किया, तूने कहा, मूरों कोई नहीं देखता; “तेरी हिकमत और तेरी अकल ने तुझे बहकाया, और तूने अपने दिल में कहा, मैं ही हूँ। मेरे 'अलावाह और कोई नहीं।'” 11 इसलिए तुझ पर मूरीबत आ पड़ेगी जिसका मंत्र तू नहीं जानती, और ऐसी बला तुझ पर नाजिल होगी जिसको तू दूर न कर सकेगी; यकायक तबाही तुझ पर आएगी जिसकी तुझ को कुछ खबर नहीं। 12 अब अपना जादू और अपना सारा सहर, जिसकी तूने बचपन ही से मशक कर रख्खी है इस्तेमाल कर; शायद तू उनसे नफा पाए, शायद तू गूलिब आए। 13 तू अपनी मध्यरों की कसरत से थक गई, अब अफलातक — पैमा और मुज्जिम और वह जो माह — ब — माह आइन्दा हालात दरियाफत करते हैं, उठे और जो कुछ तुझ पर आनेवाला है उससे तुझ को बचाएँ। 14 देख, वह भसे की तरह होगें; आग उनको जलाएगी। वह अपने आपको शोले की शिद्धत से बचा न सकेंगे, ये आग न तापने के अंगरे होगी, न उसके पास बैठ सकेंगे। 15 जिनके लिए तूने मेहनत की, तेरे लिए ऐसे ही होगे; जिनके साथ तूने अपनी जवानी ही से तिजारत की, उनमें से हर एक अपनी राह लेगा, तुझ को बचानेवाला कोई न रहेगा।

48 ये बात सुनो ऐ याँकब के घराने जो इसाईल के नाम से कहलाते हो और

यहदाह के चश्मे से निकले हो, जो खुदावन्द का नाम लेकर कसम खते हो, और इसाईल के खुदा का इकरार करते हो, बल्कि अमानत और सदाकात से नहीं। 2 कर्यूकि वह शहर — ए — कुददूस के लोग कहलाते हैं और इसाईल के खुदा पर तवक्कल करते हैं जिसका नाम रब्ब — उल — अफवाज है। 3 मैंने पहले से होने वाली बातों की खबर दी है हाँ वह मेरे मुंह से निकली मैंने उनको जाहिर किया मैं नागहा उनको 'अमल में लाया और वह जहर में आई।' 4 चूँकि मैं जानता था कि तू जिद्दी है और तेरी गर्वन का पश्चा लोहे का है और तेरी पेशानी पीतल की है। 5 इसलिए मैंने पहले ही से ये बातें तुझे कह सुनाई, और उनके बयान “होने से पहले तुझ पर जाहिर कर दिया; ता न हो कि तू कहे, 'मेरे बुत ने ये काम किया, और मेरे खेदे हुए सनम ने और मेरी ढाली हुई मूरत ने ये बातें फरमाई।'” 6 तूने ये सुना है, इसलिए इस सब पर तवज्ज्ञ हर कर; क्या तुम इसका इकरार न करोगे? अब मैं तुझे नई चीजें और छिपी बातें, जिनसे तू बाकिफ न था दिखाता हूँ। 7 वह अपनी खलक की गई हैं, पहले से नहीं; बल्कि

आज से पहले तूने उनको सुना भी न था; ता न हो कि तू कहे, 'देख, मैं जानता था। 8 हाँ, तुमें न सुना न जाना; हाँ, पहले ही से तेरे कान खुले न थे। कर्यूकि मैं जानता था कि तू भी बिल्कुल बेवफा है, और रहम ही से खताकार कहलाता है। 9 मैं अपने नाम की खातिर अपने गज़ब में तारुरी कर्सँगा, और अपने जलाल की खातिर तुझ से बाज रहँगा, कि तुझे काट न डालूँ। 10 देख, मैंने तुझे साफ किया, लेकिन चाँदी की तरह नहीं; मैंने मूरीबत की कुठाली से तुझे साफ किया। 11 मैंने अपनी खातिर, हाँ, अपनी ही खातिर ये किया है; कर्यूकि मेरे नाम की तक़फ़ीर क्यूँ हो? मैं तो अपनी शौकत दूसरे को नहीं देने का। 12 ऐ याँकब, आ मेरी सुन, और ऐ इसाईल जो मेरा बुलाया हुआ है; मैं वही हूँ, मैं ही अब्बल और मैं ही आखिर हूँ। 13 यकीनन मेरे ही हाथ ने ज़मीन की बुनियाद डाली, और मेरे दहने हाथ ने आसमान को फैलाया; मैं उनको पुकारता हूँ और वह हाजिर हो जाते हैं। 14 “तुम सब जमा” होकर सुनो। उनमें किसने इन बातों की खबर दी है? वह जिसे खुदावन्द ने पसन्द किया है; उसकी खुशी को बाबुल के मुतालिक 'अमल में लाएँ, और उसी का हाथ कसदियों की मुखालिफ़त में होगा। 15 मैंने, हाँ मैं ही ने कहा; मैंने ही उसे बुलाया, मैं उसे लाया हूँ, और वह अपनी चाल चलन में बरोमद होगा। 16 मेरे नजदीक आओ और ये सुनो, मैंने शुरू ही से पोशीदीरी में कलाम नहीं किया, जिस बक्त्र से कि वह था मैं वही था।” और अब खुदावन्द खुदा ने और उसकी रुद्ध ने मुझ को भेजा है। 17 खुदावन्द तेरा फिदिया देनेवाला, इसाईल का कुददूस, यूँ फरमाता है, कि “मैं ही खुदावन्द तेरा खुदा हूँ। जो तुझे मुफीदा तूलीम देता हूँ और तुझे उस राह में जिसमें तुझे जाना है, ले चलता हूँ। 18 काश कि तू मेरे हृक्षमों का सुनने वाला होता, और तेरी सलामती नहर की तरह और तेरी सदाकत समन्दर की मौजों की तरह होती; 19 तेरी नस्ल रेत की तरह होती और तेरे सुल्बी फ़ज़न्द उसके ज़रूरी की तरह बा — कसरत होते; और उसका नाम मेरे सामने से काटा और मिटाया न जाता।” 20 तुम बाबुल से निकलो, कसदियों के बीच से भागो; नामे की आवाज से बयान करो इसे पश्चात करो हाँ इसकी खबर ज़मीन के बिनारों तक पहुँचाओ; कहते जाओ, कि “खुदावन्द ने अपने खादिम याँकब का फिदिया दिया।” 21 और जब वह उनको वीराने में से ले गया, तो वह प्यासे न हुए; उसने उनके लिए चटटान में से पानी निकाला, उनमें चटटान को चीरा और पानी फूट निकला। 22 खुदावन्द फरमाता है, कि “शरीरों के लिए सलामती नहीं।”

49 ऐ ज़जीरों मेरी सुनों ऐ उमरों जो दो हो कान लगाओ खुदावन्द ने मुझे

रहम ही से बुलाया, बव — ए — मादर ही से उसने मेरे नाम का ज़िक्र किया। 2 और उसने मेरे मुँह को तेज तलवार की तरह बनाया, और मुझ को अपने हाथ के साथ तले छिपाया; उसने मुझे तीर — ए — अबदार किया और अपने तरकश में मुझे छिपा रखदा। 3 और उसने मुझ से कहा, “तू मेरा खादिम है, तुझ मैं ऐ इसाईल, मैं अपना जलाल जाहिर करूँगा।” 4 तब मैंने कहा, मैंने बेफाइदा मशक्कत उठाइ मैंने अपनी कुव्वत बेफाइदा बतालत में सर्फ़ की; तोभी यकीनन मेरा हक खुदावन्द के साथ और मेरा 'अज़ज़' मेरे खुदा के पास है। 5 चूँकि मैं खुदावन्द की नज़र में ज़रिल — उल — करूँह हूँ और वह मेरी तवानाई है, इसलिए वह जिसने मुझे रहम ही से बनाया, ताकि उसका खादिम होकर याँकब को उसके पास वापस लाँह और इसाईल को उसके पास जमा करूँ, यूँ फरमाता है। 6 हाँ, खुदावन्द फरमाता है, कि “ये तो हल्की सी बात है कि तू याँकब के कबाइल को खड़ा करने और महफ़ज इसाईलियों को वापस लाने के लिए मेरा खादिम हो, बल्कि मैं तुझ को कौमों के लिए नू बनाऊँगा कि तुझ से मेरी ज़जात ज़मीन के किनारों तक पहुँचूँ।” 7 खुदावन्द इसाईल का फिदिया देने वाला और उसका कुददूस उसको जिसे इसान हक्कीर जानता है और जिससे कौम को नफरत है और जो हाकिमों का चाकर है, यूँ फरमाता है, कि 'बादशाह देखेंगे

और उठ खडे होंगे, और उमरा सिजदा करेंगे; खुदावन्द के लिए जो सादिक — उल — कौल और इस्माइल का कृदस है, जिसने तुझे बरगुजीदा किया है। 8 खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि 'मैंने कबूलियत के वक्त तेरी सुनी, और नजात के दिन तेरी मदर की; और मैं तेरी हिफाजत करूँगा और लोगों के लिए तुझे एक 'अहद ठहराऊँगा, ताकि मुल्क को बहाल करे और वीरान मीरास वारिसों को दे; 9 ताकि तू कैदियों को कहे, कि 'निकल चलो,' और उनको जो अन्धेरे में हैं, कि 'अपने आपको दिखालाओ।' वह रास्तों में चरेंगे और सब नगों टीले उनकी चरागाहें होंगे। 10 वह न भके होंगे न प्यासे, और न गमी और धूप से उनको जरर पहुँचेंगा; क्यूँकि वह जिसकी रहमत उन पर है उनका रहनुमा होगा, और पानी के सोतों की तरफ उनकी रहबी करेगा। 11 और मैं अपने सारे पहाड़ों को एक रास्ता बना दूँगा, और मेरी शाहराहें ऊँची की जाएँगी। 12 'देख, ये दूर से और ये उत्तर और मारिक बे, और ये सीमी के मुल्क से आएँगे।' 13 ऐ आसमाने, गाओ; ऐ जमीन, खुश हो; ऐ पहाड़ो, नाम परदाजी करो! क्यूँकि खुदावन्द ने अपने लोगों को तसल्ली बख्ती है और अपने रंज़ों पर रहम फरमाएगा। 14 लेकिन सिय्यन कहती है, यहोवाह ने मुझे छोड़ दिया है, और खुदावन्द मुझे भूल गया है। 15 'क्या ये मुकिन है कि कोई मौं अपने शीरख्वार बच्चे को भूल जाए, और अपने रहम के फर्जन्द पर तरस न खाए? हाँ, वह शायद भूल जाए, पर मैं तुझे न भूलूँगा। 16 देख, मैंने तेरी सूरत अपनी हवेलियों पर खोद रख्खी है; और तेरी शहरपनाह हमेशा मेरे सामने है। 17 तेरे फर्जन्द जल्दी करते हैं, और वह जो तुझे बर्बाद करने और उजाड़ने वाले थे, तुझ से निकल जाएँगे। 18 अपनी आँखें उठा कर चारों तरफ नजर कर, ये सब के सब मिलकर इकट्ठे होते हैं और तेरे पास आते हैं। खुदावन्द फरमाता है, मुझे अपनी हयात की कसम कि तू यकीनन इन सबको जेवर की तरह पहन लेरी, और इसे दुल्हन की तरह आरास्ता होगी। 19 'क्यूँकि तेरी वीरान औ उजड़ी जगहों में, और तेरे बर्बाद मुल्क में अब यकीनन बसनेवाले गुंजाइश से ज्यादा होंगे, और तुझ को गारत करनेवाले दूर हो जाएँगे। 20 बर्किं तेरे वह बेटे जो तुझ से ले लिए गए थे, तेरे कानों में फिर कहेंगे, कि बसने की जगह बहुत तंग है, हम को बसने की जगह दे। 21 तब त् अपने दिल में कहेगी, 'कौन मेरे लिए इनका बाप हुआ? कि मैं तो बेओलाद हो गई और अकेली थी, मैं तो जिलावती और आवारगी में रही, सो किसने इनको पाला? देख, मैं तो अकेली रह गई थी; फिर ये कहाँ थे?' 22 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि 'देख, मैं कौमों पर हाथ उठाऊँगा, और उमरों पर अपना झांडा खड़ा करूँगा; और वह तेरे बेटों को अपनी गोद में लिए आएँगे, और तेरी बेटियों को अपने कंधों पर बिठाकर पहुँचाएँगे। 23 और बादशाह तेरे मुरब्बी होंगे और उनकी बीवियों तेरी दाया होंगी। वह तेरे सामने मूँह के बल जमीन पर गिरेंगे, और तेरे पाँव की खाक चाटेंगे; और तू जानेगी कि मैं ही खुदावन्द हूँ, जिसके मनुतजिर शर्मिन्दा न होंगे।' 24 क्या जबरदस्त से शिकार छीन लिया जाएगा? और क्या रास्तबाज के कैदी छुड़ा लिए जाएँगे? 25 खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि 'ताकतवर के गुलाम भी ले लिए जाएँगे, और मुहीब का शिकार छुड़ा लिया जाएगा; क्यूँकि मैं उससे जो तेरे साथ झगड़ा है, झगड़ा करूँगा और तेरे बच्चों को बचा लूँगा। 26 और मैं तुम पर जुलम करनेवालों को उन ही का गोशत खिलाऊँगा, और वह मीठी शराब की तरह अपना ही खुस पीकर बदमस्त हो जाएँगे; और हर फर्द — ए — बशर जानेगा कि मैं खुदावन्द तेरा नजात देनेवाला, और या'कूब का कादि-तेरा किफियता देनेवाला हूँ।

50 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तेरी माँ का तलाक नामा जिसे लिख कर मैंने तुम को बेचा? देखो, तुम अपनी शरारतों की वजह से बिक गए, और तुम्हारी

खताओं के ज़रिए तुम्हारी माँ को तलाक दी गई। 2 फिर किस लिए जब मैं आया तो कोई आदमी न था? और जब मैंने पुकारा, तो कोई जबाब देनेवाला न हुआ? क्या मेरा हाथ ऐसा कोताह हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता? और क्या मुझ में नजात देने की कुदरत नहीं? देखो, मैं अपनी एक धमकी से समन्दर को सुखा देता हूँ, और नहरों को सहरा कर डालता हूँ, उनमें की मछलियाँ पानी के न होने से बदबू हो जाती हैं और प्यास से मर जाती हैं। 3 मैं आसमान को सियाह पोश करता हूँ और उसको टाट उडाता हूँ 4 खुदावन्द खुदा ने मुझ को शागिर्द की जबान बख्ती, ताकि मैं जानूँ कि कलाम के बसीले से किस तरह थके मैंदे की मदर करूँ। वह मुझे हर सुबह जगाता है, और मेरा कान लगाता है ताकि शागिर्दों की तरह सुनूँ। 5 खुदावन्द खुदा ने मेरे कान खोल दिए, और मैं बाही — ओ — बरगश्ता न हुआ। 6 मैंने अपनी पीठ पीटने वालों के और अपनी दाढ़ी नोचने वालों के हवाले की, मैंने अपना मुँह स्वार्वाई और थक से नहीं छिपाया। 7 लेकिन खुदावन्द खुदा मेरी हिमायत करेगा, और इत्तिलाएँ मैं शर्मिन्दा न हूँगा; और इत्तिलिएँ मैंने अपना मुँह संग — ए — खारा की तरह बनाया और मुझे यकीन है कि मैं शर्मसार न हूँगा। 8 मुझे रास्तबाज ठहरानेवाला नज़दीक है। कौन मुझ से झगड़ा करेगा? आओ, हम अमने — सामने खडे हों, मेरा मुखालिक कौन है? वह मेरे पास आए। 9 देखो, खुदावन्द खुदा मेरी हिमायत करेगा; कौन मुझे मुजरिम ठहराएगा? देख, वह सब कपड़े की तरह पुराने हो जाएँगे, उनको कीड़े खा जाएँगे। 10 तुम्हरे बीच कौन है जो खुदावन्द से डरता और उसके खादिम की बातें सुनता है? जो अन्धेरे में चलता और रोशनी नहीं पाता, वह खुदावन्द के नाम पर तवक्कल करे और अपने खुदा पर भरोसा रखें। 11 देखो, तुम सब जो आग सुलगाते हो और अपने आपको अँगारों से घेर लेते हो, अपनी ही आग के शोलों में और अपने सुलगाए हुए अँगारों में चलो। तुम मेरे हाथ से यही पाओगें, तुम ऐजाब में लेट रहेगो।

51 ऐ लोगो, जो सदाकत की पैरवी करते हो और खुदावन्द के जोयान हो, मेरी सुनो। उस चट्टान पर जिसमें से तुम काटे गए हो और उस गढ़े के सूराख पर जहाँ से तुम खोदे गए हो, नज़र करो। 2 अपने बाप अब्राहाम पर और सारा पर जिससे तुम पैदा हुए निगाह करो कि जब मैंने उसे बुलाया वह अकेला था, पर मैंने उसको बरकत दी और उसको कसरत बख्ती। 3 यकीनन खुदावन्द सिय्यन को तसल्ली देगा, वह उसके तमाम वीरानों की दिलदारी करेगा, वह उसका वीरान अदन की तरह और उसका सहरा खुदावन्द के बाग की तरह बनाएगा; खुशी और शादमानी उसमें पाई जाएगी, शुक्रुगुरी और गाने की आवाज उसमें होगी। 4 मेरी तरफ मुत्वजिह हो, ऐ मेरे लोगो; मेरी तरफ कान लगा, ऐ मेरी उमत: क्यूँकि शरी'अत मुझ से सादिर होगी और मैं अपने 'अदूल को लोगों की रोशनी के लिए क्राइम करूँगा। 5 मेरी सदाकत नज़दीक है, मेरी नजात जाहिर है, और मेरे बाजू लोगों पर हक्मरानी करेंगे, जजरी मेरा इन्तजार करेंगे और मेरे बाजू पर उनका तवक्कल होगा। 6 अपनी आँखें आसमान की तरफ उठाओ और नीचे जमीन पर निगाह करो, क्यूँकि आसमान धूँवें की तरह गायब हो जायेंगे और जमीन कपड़े की तरह पुरानी हो जाएँगी, और उसके बाशिन्दे मच्छरों की तरह मर जाएँगे। 7 'ऐ सच्चाई के जानेवालों, मेरी सुनो, ऐ लोगो, जिनके दिल में मेरी शरी'अत है; इंसान की मलामत से न डरो और उनकी ता'नाजीनी से पेरेशान न हो। 8 क्यूँकि कीड़ा उनको कपड़े की तरह खा जाएगा और किर्म उनको पश्मनि की तरह खा जाएगा; लेकिन मेरी सदाकत हमेशा तक रहेगी और मेरी नजात नस्ल — दर — नस्ल।' 9 जाग, जाग, ऐ खुदावन्द के बाजू तवानाई से मुलब्बास हो; जाग जैसा पुराने जमाने में और गुज़िशता नस्लों में क्या तू वही नहीं जिसने रहब' को टकड़े किया और अजदहे को छेदा?

10 क्या तू वही नहीं जिसने समन्दर यार्नी बहर — ए — 'अमीक के पानी को सुखा डाला; जिसने बहर की तह को रास्ता बना डाला, ताकि जिनका फिदिया दिया गया उसे उबर करें? 11 फिर वह जिनको खुदावन्द ने मखलसी बख्ती लौटेंगे और गाते हुए सिय्यन में आएंगे, और हमेसा सुस्त उनके सिरों पर होगा; वह खुशी और शादमानी हासिल करेंगे और गम — ओ — अन्दोह काफूर हो जाएंगे। 12 "तुम को तसल्ली देवाला मैं ही हूँ, तू कौन है जो फानी इसान से, और आदमजाद से जो धास की तरह हो जाएगा डरता है, 13 और खुदावन्द अपने खालिक को भल गया है, जिसने आसमान को ताना और जमीन की बुनियाद डाली; और तू हर बक्त जालिम के जोश — ओ — खरोश से कि जैसे वह हलाक करने को तैयार है, डरता है? पर जालिम का जोश — ओ — खरोश कहाँ है? 14 जिलावतन गुलाम जलदी से आजाद किया जाएगा, वह गार में न मेरगा और उसकी रोटी कमन न होगी। 15 क्यौंकि मैं ही खुदावन्द तेरा खुदा हूँ, जो मौजजन समन्दर को थामा देता हूँ; मेरा नाम रब्ब — उल — अफवाज है। 16 और मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाला, और तुझे अपने हाथ के साथे तले छिपा रख्खा ताकि अफलाक को खड़ा करें" और जमीन की बुनियाद डालें, और अहल — ए — सिय्यन से कहाँ, "तुम मेरे लोग हो। 17 जाग, जाग, उठ ऐ येस्शलेम; तूने खुदावन्द के हाथ से उसके गज़ब का प्याला पिया, तूने डगमगाने का जाम तलछत के साथ पी लिया। 18 उन सब बेटों में जो उससे पैदा हुए, कोई नहीं जो उसका रहनुमा हो; और उन सब बेटों में जिनको उसने पाला, एक भी नहीं जो उसका हाथ पकड़े। 19 ये दो हादिसे तुझ पर आ पड़े, कौन तेरा गमरखार होगा? वीरानी और हलाकत, कातल और तलवार; मैं क्यूंकर तुझे तसल्ली दूँ? 20 तेरे बेटे हर कंचे के मदखल में ऐसे बेहोश पड़े हैं, जैसे हरन दाम में, वह खुदावन्द के गज़ब और तेरे खुदा की धमकी से बेकुदू है। 21 इसलिए अब तू जो बदहाल और मस्त है पर मय से नहीं, ये बात सुन; 22 तेरा "खुदावन्द यहेवाह हाँ तेरा खुदा जो अपने लोगों की वकालत करता है यैं फरमाता है कि देख, मैं डगमगाने का प्याला और अपने कहर का जाम तेरे हाथ से ले लूँगा; तू उसे फिर कभी न पिएगी। 23 और मैं उसके हाथ में दूँगा जो तुझे दुख देते, और जो तुझ से कहते थे, "झक जा ताकि हम तेरे ऊपर से गुज़रें", और तुमे अपनी पीठ को जैसे जमीन, बल्कि गुजरने वालों के लिए सङ्क बना दिया।"

52 जाग जाग ऐ सिय्यन, अपनी शौकत से मुलब्बस हो; ऐ येस्शलेम पाक शहर, अपना खुशनामा लिबास पहन ले; क्यौंकि आगे को कोई नामखनून या नापाक तुझ में कभी दाखिल न होगा। 2 अपने ऊपर से गर्द झाड़ दे, उठकर बैठ; ऐ येस्शलेम, ऐ गुलाम दुखर — ए — सिय्यन, अपनी गर्दन के बंधनों को खोल डाला। 3 क्यौंकि खुदावन्द यूँ फरमाता है, तुम मुफ्त बेचे गए, और तुम बेज़र ही आजाद किए जाओगे। 4 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि "मेरे लोग इन्दिरा में मिस को गए कि वहाँ मुसाफिर होकर रहें, असरियों ने भी बे बजह उन पर जुल्म किया।" 5 खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि "अब मेरा यहाँ क्या काम, हालाँकि मेरे लोग मुस्त गुलामी में गए हैं? वह जो उन पर मुसल्लत है लल्कारते हैं खुदावन्द फरमाता है और हर रोज मुतवातिर मेरे नाम की तक़फ़ीर की जाती है। 6 यकीनन मेरे लोग मेरा नाम जानेंगे, और उस रोज़ समझेंगे कि कहनेवाला मैं ही हूँ, देखो, मैं हाजिर हूँ।" 7 उसके पाँच पहाड़ों पर क्या ही खुशनुमा है जो खुशखबरी लाता है और सलामती का 'ऐलान करता है और खैरियत की खबर और नजात का इश्तिहार देता है जो सिय्यन से कहता है तेरा खुदा सलतनत करता है। 8 अपने निगहबानों की आजाज सुन, वह अपनी आजाज बलन्द करते हैं, वह आजाज मिलाकर गाते हैं; क्यौंकि जब खुदावन्द सिय्यन को बापस आएगा तो वह उसे सू — ब — सू देखेंगे। 9 ऐ येस्शलेम के

बीरानो, खुशी से ललकारो, मिलकर नामा सराई करो, क्यौंकि खुदावन्द ने अपनी कौम को दिलासा दिया उसने येस्शलेम का फिदिया दिया। 10 खुदावन्द ने अपना पाक बाजू तमाम कौमों की आँखों के सामने नंगा किया है और जमीन सरासर हमारे खुदा की नजात को देखेंगी। 11 ऐ खुदावन्द के ज़ुस्फ़ उठाने वालो, रवाना हो, रवाना हो; वहाँ से चले जाओ, नापाक चीजों को हाथ न लगाओ, उसके बीच से निकल जाओ और पाक हो। 12 क्यौंकि तुम न तो जल्द निकल जाओगे, और न भागनेवाले की तरह चलोगे; क्यौंकि खुदावन्द तुम्हारा हरावल, और इसाइल का खुदा तुम्हारा चन्डावल होगा। 13 देखो, मेरा खादिम इकबालमन्द होगा, वह आला — ओ — बरतर और निहायत बलन्द होगा। 14 जिस तरह बहुरेर तुझ को देखकर दंग हो गए उसका चहरा हर एक बशर से जाइद, और उसका जिस्म बनी आदम से ज्यादा बिगड़ गया था, 15 उसी तरह वह बहत सी कौमों को पाक करेगा और बादशाह उसके सामने खामोश होंगे; क्यौंकि जो कुछ उसने कहा न गया था, वह देखेंगे, और जो कुछ उन्होंने सुना न था, वह समझेंगे।

53 हमारे पैगाम पर कौन ईमान लाया? और खुदावन्द का बाजू किस पर जाहिर हुआ? 2 लेकिन वह उसके आगे कोंपल की तरह, और खुदक जमीन से जड़ की तरह फूट निकला है; न उसकी कोई शक्ल और सूत है, न खबरसूती; और जब हम उस पर निगाह करें, तो कुछ हस्त — ओ — जमाल नहीं कि हम उसके मुश्तक हौं। 3 वह आदमियों में होकरी — ओ — मर्दू; मर्द — ए — गमनाक, और रंज का आशना था; लोग उससे जैसे स्पैस थे। उसकी तक्कीर की गई, और हम ने उसकी कुछ कटून ज जानी। 4 तोभी उसने हमारी मशक्कते उठा ली, और हमारे गमों को बर्दीशत किया; लेकिन हमने उसे खुदा का मारा — कृटा और सताया हुआ समझा। 5 हालाँकि वह हमारी खताओं की वजह से घायल किया गया, और हमारी बदकिरदारी के जरिए कुचला गया। हमारी ही सलामती के लिए उस पर सियासत हुई, ताकि उसके मार खने से हम शिफा पाएँ। 6 हम सब भेड़ों की तरह भटक गए, हम में से हर एक अपनी राह को फिरा; लेकिन खुदावन्द ने हम सबकी बदकिरदारी उस पर लादी। 7 वह सताया गया, तोभी उसने बर्दीशत की ओर मुँह न खोला; जिस तरह बर्दा जिसे जबह करने को ले जाते हैं, और जिस तरह भेड़ अपने बाल करनेवालों के सामने बेज़बान है, उरी तरह वह खामोश रहा। 8 वह ज़ुल्म करके और फतवा लगाकर उसे ले गए; फिर उसके ज़माने के लोगों में से किसने खयाल किया कि वह जिन्होंने की जमीन से काट डाला गया? मेरे लोगों की खताओं की वजह से उस पर मार पड़ी। 9 उसकी कब्र भी शरीरों के बीच ठहराई गई, और वह अपनी मौत में दौलतमन्दों के साथ हआ; हालाँकि उसने किसी तरह का ज़ुल्म न किया, और उसके मुँह में हरगिज़ छल न था। 10 लेकिन खुदावन्द को पसन्द आया कि उसे कुचले, उसने उसे गमनाक किया; जब उसकी जान गुनाह की कुर्बानी के लिए पेश की जाएगी, तो वह अपनी नस्ल को देखेगा; उसकी उम्र दाज़ होगी और खुदावन्द की मर्जी उसके हाथ के बसीरे से पूरी होगी। 11 अपनी जान ही का दुख उठाकर वह उसे देखेगा और सेर होगा; अपने ही इरफान से मेरा सादिक खादिम बहुतों को रास्तबाज ठहराएगा, क्यौंकि वह उनकी बदकिरदारी खुद उठा लेगा। 12 इसलिए मैं उसे बुज्जर्हों के साथ हिस्सा दूँगा, और वह लूट का माल ताकतवरों के साथ बाँट लेगा; क्यौंकि उसने अपनी जान मौत के लिए उडेल दी, और वह खताकारों की शका'अत की।

ऐ बॉंडा, तू जो बे — औलाद थी नगमा सराई कर, तू जिसने विलादत का दर्द बर्दाशत नहीं किया, खुशी से गा और जोर से चिल्ला, क्यूँकि खुदावन्द फरमाता है कि बे कस छोड़ी हुई औलाद शौहर बाली की औलाद से ज़्यादा है। 2 अपनी खेमागाह को 'बर्सी' कर दे, हाँ, अपने घरों के पर्दे फैला, देरा न कर, अपनी डोरियाँ लम्बी और अपनी मेंहें मजबूत कर। 3 इसलिए कि तू दहनी और बॉईं तरफ बढ़ेगी और तेरी नस्त्ल कौमों की वारिस होगी और बीरान शहरों को बसाएगी। 4 खौफ न कर, क्यूँकि तू फिर पशेमाँ न होगी; तू न घबरा, क्यूँकि तू फिर स्स्वा न होगी; और अपनी जवानी का नंग भूल जाएगी, और अपनी बेवानी की 'आर' को फिर याद न करेगी। 5 क्यूँकि तेरा खालिक तेरा शौहर है, उसका नाम रब्ब — उल — अफवाज है; और तेरा फिदिया देनेवाला इमाईल का कुदूस है, वह तमाम इस जमीन का खुदा कहलाएगा। 6 क्यूँकि तेरा खुदा फरमाता है कि खुदावन्द ने तुझ को मतस्का और दिल आज़दी बीवी की तरह; हाँ, जवानी की मतलका बीवी की तरह फिर बुलाया है। 7 मैंने एक दम के लिए तुझे छोड़ दिया, लेकिन रहमत की फिरवानी से तुझे ले लूँगा। 8 खुदावन्द तेरा नजात देनेवाला फरमाता है, कि कहर की शिद्दत में मैंने एक दम के लिए तुझ से मुँह छिपाया, लेकिन अब मैं हमेशा शक्करत से तुझ पर रहम कहँस्गा। 9 क्यूँकि मेरे लिए ये तूफान — ए — नह का सा मु़ा'मिला है, कि जिस तरह मैंने कसम खाइ थी कि फिर जमीन पर नह जैसा तूफान कभी न आएगा, उत्ती तरह अब मैंने कसम खाई है कि मैं तुझ से फिर कभी आज़दी न हँगा और तुझ को न घुड़कँगा। 10 खुदावन्द तुझ पर रहम करने वाला यैँ फरमाता है कि पहाड़ तो जाते रहें और टीले टल जाएँ लेकिन मेरी शफकत कभी तुझ पर से जाती न रहेगी, और मेरा सुलह का 'अहद न टरेगा। 11 'ऐ — मुसीबतजदा और तूफान की मारी और तसल्ली से महसूम! देख, मैं तेरे पथरों को स्थान रेखा में लगाऊँगा और तेरी बुनियाद नीलम से डालूँगा। 12 मैं तेरे कुंगुओं को लालों, और तेरे फाटकों को शब चिराग, और तेरी सारी कम्सील बेशकीयत पथरों से बनाऊँगा। 13 और तेरे सब फर्जन्द खुदावन्द से तालीम पाएँगे और तेरे फर्जन्दों की सलामती कामिल होगी। 14 त रास्तबाजी से पायदार हो जाएगी, तू जल्म से दूर रहेगी क्यूँकि तू बेखौफ होगी, और दहशत से दूर रहेगी क्यूँकि वह तेरे करीब न आएगी। 15 मुस्किन है कि वह कभी इक्के हों, लेकिन मैं बहुम से नहीं, जो तेरे खिलाफ जमा' होंगे, वह तेरे ही वजह से गिरेंगे। 16 देख, मैंने लहरान को पैदा किया जो कोयलों की आग धौकता और अपने काम के लिए हथियार निकालता है; और गारतगरों को मैंने ही पैदा किया कि लट मार करें। 17 कोई हथियार जो तेरे खिलाफ बनाया जाए काम न आएगा, और जो जबान 'अदालत में तुझ पर चलेगी तू उसे मुजरिम ठहराएगी। खुदावन्द फरमाता है, ये मेरे बन्दों की मीरास है और उनकी रास्तबाजी मुझ से है।'

ऐ सब प्यासो, पानी के पास आओ, और वह भी जिसके पास पैसा न हो, आओ, मोल लो, और खाओ, हाँ आओ! शराब और दृढ़ बेज़र और बेकीमत खरीदो। 2 तुम किस लिए अपना स्पष्टा उस चीज के लिए जो रोटी नहीं, और अपनी मेहनत उस चीज के बास्ते जो आसदा नहीं करती, खर्च करते हो? तुम गौर से मेरी सनों, और वह चीज़ जो अच्छी है खाओ; और तुम्हारी जान फरबही से लज़त उठाए। 3 कान लगाओ और मेरे पास आओ, सुनो और तुम्हारी जान जिन्दा रहेगी, और मैं तुम को अबदी 'अहद याँ'नी डाऊँ की सच्ची नमरें बख्खूँगा। 4 देखो, मैंने उस उम्मतों के लिए गवाह मुकर्रर किया, बल्कि उम्मतों का पेशवा और फरमाँखा। 5 देख, तू एक ऐसी कौम को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा, और एक ऐसी कौम जो तुझे नहीं जानती थी, खुदावन्द तेरे खुदा और इमाईल के कुदूस की खातिर तेरे पास दौड़ी आएगी;

क्यूँकि उसने तुझे जलाल बख्खा है। 6 जब तक खुदावन्द मिल सकता है उसके तालिब हो, जब तक वह नज़दीक है उसे पुकारो। 7 शरीर अपनी राह को तक़ करे और और बदकिरदार अपने खयालों को, और वह खुदावन्द की तरफ फिरे और वह उस पर रहम करेगा; और हमारे खुदा की तरफ क्यूँकि वह कसरत से मुआफ करेगा। 8 खुदावन्द फरमाता है कि मेरे खयाल तुम्हारे खयाल नहीं, और न तुम्हारी रहें मेरी राहें हैं। 9 क्यूँकि जिस कदर आसमान जमीन से बलन्द है, उसी कदर मेरी राहें तुम्हारी राहों से और मेरे खयाल तुम्हारे खयालों से बलन्द है। 10 'क्यूँकि जिस तरह आसमान से बारिश होती और बर्फ पड़ती है, और फिर वह वहाँ वापस नहीं जाती बल्कि जमीन को सेराब करती है, और उसकी शादाबी और रोईदरी का जरि'आ होती है ताकि बोनेवाले को बीज और खाने वाले को रोटी दे; 11 उसी तरह मेरा कलाम जो मेरे मुँह से निकलता है होगा, वह बेअन्जम मेरे पास वापस न आएगा, बल्कि जो कुछ मेरी ख्वाहिश होगी वह उसे पूरा करेगा और उस काम में जिसके लिए मैंने उसे भेजा मो'अस्सिर होगा। 12 क्यूँकि तम खुशी से निकलोगे और सलामती के साथ रवाना किए जाओगे; पहाड़ और टीले तुम्हारे सामने नामापद्मज्ञ होंगे, और मैदान के सब दरखत ताल देंगे 13 काँटों की जगह सनौबर निकलेगा, और झाड़ी के बदले उसका दरखत होगा; और ये खुदावन्द के लिए नाम और हमेशा निशान होगा जो कभी 'न मिटेगा।'

खुदावन्द फरमाता है कि 'अदूल को काईम रखेंगे, और सदाकत को 'अमल में लाओ, क्यूँकि मेरी नजात नज़दीक है और मेरी सदाकत जाहिर होने वाली है। 2 मुबारक है वह इंसान, जो इस पर 'अमल करता है और वह आदमजात जो इस पर काईम रहता है, जो सबत को मानता और उसे नापाक नहीं करता, और अपना हाथ हर तरह की बुराई से बाज रखता है। 3 और बेगाने का फर्जन्द जो खुदावन्द से मिल गया हारिगंज न कहे, खुदावन्द मुझ को अपने लोगों से जुदा कर देगा; और खोजा न कहे, कि 'देखो, मैं तो सूखा दरखत हूँ।' 4 क्यूँकि खुदावन्द यैँ फरमाता है, कि 'वह खोजे जो मेरे सबतों को मानते हैं और उन कामों को जो मुझे पसन्द हैं इखिल्यार करते हैं 5 मैं उनको अपने घर में और अपनी चार दीवारी के अन्दर, ऐसा नाम — ओ — निशान बख्खूँगा जो बेटों और बेटियों से भी बढ़ कर होगा; मैं हर एक को एक अबदी नाम दूँगा जो मिटाया न जाएगा। 6 'और बेगाने की औलाद भी जिन्होंने अपने आपको खुदावन्द से पैसता किया है कि उसकी खिदमत करें, और खुदावन्द के नाम को 'अजीज रखें और उसके बने हों, वह सब जो सबत को हिफज करके उसे नापाक न करें और मेरे 'अहद पर काईम रहें; 7 मैं उनको भी अपने पाक पहाड़ पर लाऊँगा और अपनी 'इबादतगाह में उनको शादमान कहँस्गा और उनकी सोख्तनी कुबानियाँ और उनके जबीहे मेरे मजबूत पर मक्कबूल होंगे; क्यूँकि मेरा घर सब लोगों की 'इबादतगाह कहलाएगा।' 8 खुदावन्द खुदा, जो इमाईल के तिर — बित्र लोगों को जमा' करनेवाला है, यैँ फरमाता है, कि 'मैं उनके सिवा जो उसी के होकर जमा' हुए हैं, औरों को भी उसके पास जमा' कहँस्गा।' 9 ऐ दर्शी हैवानों, तुम सब के सब खाने को आओ! हाँ, ऐ जांल के सब दरिन्दों। 10 उसके निगहबान अन्धे हैं, वह सब जाहिल है, वह सब गँगौ कुत्ते हैं जो भौंक नहीं सकते, वह ख़वाब देखनेवाले हैं जो पड़े रहते हैं और ऊँचते रहना पसन्द करते हैं। 11 और वह लालती कुत्ते हैं जो कभी सेर नहीं होते। वह नादान चरवाहे हैं, वह सब अपनी अपनी राह को फिर गए; हर एक हर तरफ से अपना ही नक्फ़ ढंगता है। 12 हर एक कहता है, तुम आओ, मैं शराब लाऊँगा, और हम ख़ब जरो में चूर होंगे; और कल भी आज ही की तरह होगा बल्कि इससे बहुत बेहतर।

57 सादिक हलाक होता है, और कोई इस बात को खातिर में नहीं लाता;

और नेक लोग उठा लिए जाते हैं और कोई नहीं सोचता कि सादिक उठा लिया गया ताकि आनेवाली आफत से बचे; 2 वह सलामती में दाखिल होता है। हर एक रास्त रु अपने बिस्तर पर अराम पाएगा। 3 लेकिन तम, ऐ जादूगरनी के बेटों, ऐ जानी और फाहिशा के बच्चों, इधर आगे आओ। 4 तुम किस पर ठठा मारते हो? तुम किस पर मुँह फाड़ते और जबान निकालते हो? क्या तुम बागी औलाद और दाबाज़ नस्ल नहीं हो, 5 जो बुतों के साथ हर एक हरे बलूत के नीचे अपने आपको बरअोखता करते और वादियों में चिन्हों के शिगाफों के नीचे बच्चों को ज़बह करते हो? 6 वादी के चिकने पत्थर तेरा हिस्सा हैं, वही तेरा हिस्सा हैं, हाँ, तुम उनके लिए तपावन दिया और हदिया पेश किया है; क्या मुझे इन कामों से तिस्कीन होगी? 7 एक ऊँचे और बलन्द पहाड़ पर तूने अपना बिस्तर बिछाया है, और उसी पर ज़बीहा जबह करने को चढ़ गई। 8 और तूने दरवाज़ों और चौखटों के पाले अपनी यादगार की 'अलामतें नस्ल की', और तू मेरे सिवा दूसरे के आगे बेपर्दी हैं; हाँ, तू चढ़ गई और तूने अपना बिछौना भी बड़ा बनाया और उनके साथ 'अहट कर लिया है; तूने उनके बिस्तर को जहाँ देखा पसन्द किया। 9 तू खुशबू लगाकर बादशाह के सामने चली गई और अपने आपको खूब मुँअंतर किया, और अपने कासिद दूर दूर भेजे बल्कि तूने अपने आपको पाताल तक पस्त किया। (Sheol h7585) 10 तू अपने सफर की दराजी से थक गई, तोभी तूने न कहा, कि 'इससे कुछ फ़ाइदा नहीं, तूने अपनी कूब्त की ताज़गी पाई इसलिए तू अफ़सुर्दा न हूँ।' 11 तब तू किससे डरी और किसके खौफ से तूने झट बोला, और मुझे याद न किया और खातिर में न लाई? क्या मैं एक मुश्त से खामोश नहीं रहा? तोभी तू मुझ से न डरी। 12 मैं तेरी सदाकत की तरफ तेरे कामों को फ़ाश करँगा और उनसे तुझे कुछ नफ़ा न होगा। 13 जब तू फ़रियाद करे, तो जिनको तूने 'जमा' किया है वह तुझे छुड़ाएँ; ये हवा उन सबको उड़ा ले जाएगी, एक झोंकों उनको ले जाएगा; लेकिन मुझ पर तबक्कुल करनेवाला जमीन का पालिक होगा और मेरे पाक पहाड़ का वारिस होगा। 14 तब यूँ कहा जाएगा, राह ऊँची करो, ऊँची करो, हमवार करो, मेरे लोगों के रास्ते से ठोकर का जरि'आ दूर करो।' 15 क्यूँकि वह जो 'आली और बलन्द है और हमेशा से हमेशा तक काईम है, जिसका नाम कृदत्स है, यूँ फ़रमाता है, मैं बलन्द और मुकद्दस काम में रहता हूँ, और उसके साथ भी जो शिकस्ता दिल और फ़रोतन है; ताकि फ़रोतों की स्फ़ुर्ति को जिन्दा करँगे और शिकस्ता दिलों को हयात बख़्राँ। 16 क्यूँकि मैं हमेशा न झगड़ागा और हमेशा गज़बनाक न रहँगा, इसलिए कि मेरे सामने स्फ़ुर्ति और जानें जो मैंने पैदा की है बेतब हो जाती है। 17 कि मैं उसके लालच के गुनाह से गज़बनाक हुआ; इसलिए मैंने उसे मारा, मैंने अपने आपको छिपाया और गज़बनाक हुआ; इसलिए कि वह उस राह पर जो उसके दिल ने निकाली, भटक गया था। 18 मैंने उसकी गाहें देवी, और मैं ही उसे शिफा बख़्राँगा; मैं उसकी रहबरी करँगा, और उसको और उसके गमच्छारों को फिर दिलासा दँगा। 19 खुदावन्द फरमाता है, मैं लबों का फल पैदा करता हूँ, सलामती! सलामती उसको जो दूर है, और उसको जो नज़दीक है, और मैं ही उसे सिहत बख़्राँगा। 20 लेकिन शरीर तो समर्द की तरह हैं जो हमेशा मौज़ज़न और बेकराह हैं, जिसका पानी कीचड़ और गन्दी उछालता है। 21 मेरा खुदा फरमाता है, कि "शरीरों के लिए सलामती नहीं।"

58 गला फाड़ कर चिल्ला दरेगा न कर नरसिंगे की तरह अपनी आवाज़

बलन्द कर, और मेरे लोगों पर उनकी खता और याकूब के घराने पर उनके गुनाहों को ज़ाहिर कर। 2 वह रोज़ — ब — रोज़ मेरे तालिब हैं और उस कौम की तरह जिसने सदाकत के काम किए और अपने खुदा के अहकाम को तर्क न किया, मेरी राहों को दरियाप्त करना चाहते हैं, वह मुझ से सदाकत के

अहकाम तलब करते हैं, वह खुदा की नज़दीकी चाहते हैं। 3 वह कहते हैं, 'हम ने किस लिए रोजे रख्ये, जब कि तू नज़र नहीं करता; और हम ने क्यूँ अपनी जान को दुख दिया, जब कि तू ख्याल में नहीं लाता? देखो, तुम अपने रोजे के दिन में अपनी खुशी के तालिब रहते हो, और सब तरह की सख्त मेहनत लोगों से करते हो। 4 देखो, तुम इस मक्सद से रोजा रखते हो कि झगड़ा — रगड़ा करो, और शरारत के मुक्ते मरो; फिर अब तुम इस तरह का रोजा नहीं रखते हो कि तुम्हारी आवाज़ 'आलम — ए — बाला पर सुनी जाए। 5 क्या ये वह रोजा है जो मुझ को पसन्द है? ऐसा दिन कि उसमें आदमी अपनी जान को दुख दे और अपने सिर को झाऊ की तरह झकाएँ, और अपने नीचे टाट और राख बिछाएः क्या तू इसको रोजा और ऐसा दिन कहेगा जो खुदावन्द का मक्बूल है? 6 "क्या वह रोजा जो मैं चाहता हूँ ये नहीं कि ज़ुल्म की ज़ंजरी तोड़े और ज़ूर के बन्धन खोलें, और मज़ल्सों को आजाद करें बल्कि हर एक ज़ए को तोड़ डालें? 7 क्या ये नहीं कि तू अपनी रोटी भक्तों को खिलाएँ, और गरीबों को जो आवारा है अपने घर में लाएँ; और जब किसी को नंगा देखे तो उसे पहिनाएँ, और तू अपने हमजिन्स से स्पैशी न करें? 8 तब तेरी रोशनी सबह की तरह फ़ूट निकलेगी और तेरी सेहत की तरकी जल्द जाहिर होगी; तेरी सदाकत तेरी हरावत होगी और खुदावन्द का जलाल तेरा चन्डावल होगा। 9 तब तू एकरेगा और खुदावन्द जबाब देगा, तू चिल्लाएगा और वह फ़रमाएगा, 'मैं यहाँ हूँ।' अगर तू उस ज़ए को और उंगलियों से इशारा करने की, और हरज़गोई को अपने बीच से दूर करेगा, 10 और अगर तू अपने दिल को भक्ते की तरफ माइल करे और आज़दी दिल को आसदा करे, तो तेरा नर तारीकी में चमकेगा और तेरी तीरगी दोपहर की तरह हो जाएगी। 11 और खुदावन्द हमेशा तेरी रहनुमाई करेगा, और खुशक साली में तुझे सेर करेगा और तेरी हड्डियों को कुव्त बख़ोगा; तब तू सेराब बाग की तरह होगा और उस चश्मे की तरह जिसका पानी कम न हो। 12 और तेरे लोग पुराने वीरान मकानों को तामरी करेंगे, और तू पश्चर — दर — पुरत बी बुनियादों को खड़ा करेगा, और तू रखने का बन्द करनेवाला और आबादी के लिए राह का दुम्हत करने वाला कहलाएगा। 13 "अगर तू सबत के रोज़ अपना पाँव रोक रख्ये, और मेरे मुकद्दस दिन में अपनी खुशी का तालिब न हो, और सबत को राहत और खुदावन्द का मुकद्दस और मुँअज़ज़म करे और उसकी ताँ'जीम करे, अपना कारोबार न करे, और अपनी खुशी और बेफ़ाइदा बातों से दस्तबदार रहे; 14 तब तू खुदावन्द में मसस्तर होगा और मैं तुझे दुनिया की बलन्दियों पर ले चलूँगा, और मैं तुझे तेरे बाप याकूब की मीरास से खिलाऊँगा; क्यूँकि खुदावन्द ही के मुँह से ये इशारा हुआ है।"

59 देखो खुदावन्द का हाथ छोटा नहीं हो गया कि बचा न सके, और उसका

कान भारी नहीं कि सुन न सके; 2 बल्कि तुम्हारी बदकिरदारी ने तुम्हारे और तुम्हारे खुदा के बीच जड़ाइ कर दी है, और तुम्हारे गुनाहों ने उसे तुम से छिपा लिया, ऐसा कि वह नहीं सुनता। 3 क्यूँकि तुम्हारे हाथ खन से और तुम्हारी उंगलियों बदकिरदारी से आलूवा है तुम्हारे लब झट बोलते और तुम्हारी जबान शरारत की बातें बकती हैं। 4 कोई इन्साकी बातें पेश नहीं करता और कोई सच्चाई से हुज़ज़त नहीं करता, वह झट पर भरोसा करते हैं और झट बोलते हैं वह ज़ियानकारी से बारदार होकर बदकिरदारी को जन्म देते हैं। 5 वह अज़दहे के अंडे सेते और मकड़ी का जाता तने हैं; जो उनके अंडों में से कुछ खाए मर जाएगा, और जो उनमें से तोड़ा जाए उससे अज़दहा निकलेगा। 6 उनके जाले से पोशाक नहीं बनेगी, वह अपनी दस्तकारी से मुल्बस न होगें। उनके आमाल बदकिरदारी के हैं, और ज़ुल्म का काम उनके हाथों में है। 7 उनके पाँव बुराई की तरफ दौड़ते हैं, और वह बेग़नाह का खून बहाने के लिए जलदी करते हैं;

उनके ख्यालात बदकिरदारी के हैं, तबाही और हलाकत उनकी गाहों में हैं। 8 वह सलामती का रास्ता नहीं जानते, और उनके चाल चलन में इन्साफ नहीं; वह अपने लिए टेटी राह बनाते हैं जो कोई उसमें जाएगा सलामती को न देखेगा। 9 इसलिए इन्साफ हम से दूर है, और सदाकत हमारे नजदीक नहीं आती; हम नूर का इन्तिजार करते हैं, लेकिन देखो तारीकी है, और रोशनी का, लेकिन अधरे में चलते हैं। 10 हम दीवार को अन्धे की तरह टटोलते हैं, हाँ, यूं टटोलते हैं कि जैसे हमारी अँखें नहीं, हम दोपहर को यूं ठोकर खते हैं जैसे रात हो गई, हम तन्दस्तों के बीच जैसे मृदा हैं। 11 हम सब के सब रीछों की तरह गुरुत हैं और कबूलों की तरह कुढ़ते हैं, हम इन्साफ की राह तकते हैं, लेकिन वह कहीं नहीं; और नजात के मुन्तज़िर हैं, लेकिन वह हम से दूर है। 12 क्यूंकि हमारी खताएँ तेरे सामने बहुत हैं और हमारे गुनाह हम पर गवाही देते हैं, क्यूंकि हमारी खताएँ हमारे साथ हैं और हम अपनी बदकिरदारी को जानते हैं; 13 कि हम ने खता की, खुदावन्द का इन्कार किया, और अपने खुद की पैरवी से बरगता हो गए; हम ने जुल्म और सरकारी की बातें की, और दिल में झट तस्विर करके दरोगोई की। 14 'अदालत हटाई गई और इन्साफ दूर खड़ा हो रहा'; सदाकत बाजार में गिर पड़ी, और रास्ती दाखिल नहीं हो सकती। 15 हाँ, रास्ती गुम हो गई, और वह जो बुराई से भागता है शिकार हो जाता है। खुदावन्द ने ये देखा और उसकी नज़र में बुरा मालूम हुआ कि 'अदालत जाती रही।' 16 और उसने देखा कि कोई आदमी नहीं, और ताँ 'अज्जुब' किया कि कोई शका' अत करने वाला नहीं; इसलिए उसी के बाजू ने उसके लिए नजात हासिल की और उसी की रास्तबाजी ने उसे सम्भाला। 17 हाँ, उसने रास्तबाजी का बत्तर पहना और नजात का खुद अपने सिर पर रख्या, और उसने लिबास की जगह इन्तकाम की पोशाक पहनी और गैरत के जुब्बे से मुल्बज्बस हुआ। 18 वह उनको उनके 'आमाल के मुताबिक बदला देगा, अपने मुखालिकों पर कहर करेगा और अपने दुश्मनों को सजा देगा, और जजीरों को बदला देगा। 19 तब पन्द्रिम के बाशिन्दे खुदावन्द के नाम से डेरों, और पूरब के बाशिन्दे उसके जलाल से; क्यूंकि वह दरिया के सैलाब की तरह आएगा जो खुदावन्द के दम से रखा हो। 20 और खुदावन्द फरमाता है, कि सिय्यन में और उनके पास जो याँकब में खताकारी से बाज़ आते हैं, एक फिदिया देनेवाला आएगा। 21 क्यूंकि उनके साथ मेरा 'अहद ये है, खुदावन्द फरमाता है, कि मेरी स्थ जो तुझ पर है और मेरी बातें जो मैंने तेरे मुँह में डाती हैं, तेरे मुँह से और तेरी नस्ल के मुँह से, और तेरी नस्ल की नस्ल के मुँह से अब से लेकर हमेशा तक जाती न रहेंगी; खुदावन्द का यही इश्वराद है।

60 उठ मुन्वर हो क्यूंकि तेरा नूर आगया और खुदावन्द का जलाल तुझ पर जाहिर हुआ। 2 क्यूंकि देख, तारीकी ज़मीन पर छा जाएगी और तीरी उम्मतों पर; लेकिन खुदावन्द तुझ पर ताले होगा और उसका जलाल तुझ पर नुमायँ होगा। 3 और कौमें तेरी रोशनी की तरफ आयेंगी और सलातीन तेरे तुल की तजल्ली में चलेंगे। 4 अपनी अँखें उठाकर चारों तरफ देख, वह सब के सब इकट्ठे होते हैं और तेरे पास आते हैं, तेरे बेटे दूर से आएंगे और तेरी बेटियों को गोद में उठाकर लाएंगे। 5 तब तू देखेगी और मुन्वर होगी; हाँ, तेरा दिल उठलेगा और कुशादा होगा क्यूंकि समन्वर की फ़िरावानी तेरी तरफ फ़िरेगी और कौमों की दौलत तेरे पास फ़राहम होगी। 6 ऊँटों की ककारें और मिदयान और ऐफ़ा की सांडनियँ आकर तेरे गिर्द बेशमार होंगी; वह सब सबा से आएंगे, और सोना और लुबान लायेंगे और खुदावन्द की हम्द का 'ऐलान करेंगे। 7 कीदार की सब भेंडे तेरे पास जमा' होंगी, नबायोत के मेंडे तेरी खिदमत में हाजिर होंगे; वह मेरे मजबब पर मकबूल होंगे और मैं अपनी शौकत के घर को जलाल बरब्ज़ँग। 8 ये कौन हैं जो बादल की तरह उड़े चले आते हैं, और जैसे कबूल अपनी काबूक की तरफ? 9 यकीन जजरी मेरी राह देखेंगे, और तरसीस के

जहाज पहले आएंगे कि तेरे बेटों को उनकी चाँदी और उनके सोने के साथ दूर से खुदावन्द तेरे खुदा और इस्माईल के कुदटस के नाम के लिए लाएँ; क्यूंकि उसने तुझे बुजुर्गी बरब्ज़ी है। 10 और बेगानों के बेटे तेरी दीवाओं बनाएंगे और उनके बादशाह तेरी खिदमत गुज़ारी करेंगे अगरचे मैंने अपने कहर से तुझे मारा पर अपनी महरबानी से मैं तुझ पर रहम करँगा। 11 और तेरे फाटक हमेशा खुले रहेंगे, वह दिन रात कभी बन्द न होंगे; ताकि कौमों की दौलत और उनके बादशाहों को तेरे पास लाएँ। 12 क्यूंकि वह क्रौम और वह ममलकत जो तेरी खिदमत गुज़ारी न करेगी, बर्बाद हो जाएगी; हाँ, वह कौमें बिल्कुल हलाक की जाएंगी। 13 लुबनान का जलाल तेरे पास आएगा, सरों और सनौर और देवदार सब आएंगे ताकि मेरे घर को आरास्ता करें; और मैं अपने पाँव की कुर्सी को रैनक बरब्ज़ँग। 14 और तेरे गारत गरों के बेटे तेरे सामने झकते हुए आयेंगे और तेरी तहजीर करने वाले सब तेरे कदमों पर पिरेंगे; और वह तेरा नाम खुदावन्द का शहर, इस्माईल के कुदटस का सिय्यन रखेंगे। 15 इसलिए कि त तक तकी गई और तुझसे नफरत हुई ऐसा कि किसी आदमी ने तेरी तरफ गुज़र भी न किया मैं तुझे हमेशा की फ़ज़ीलत और नसल दर नसल की खुशी का जरिया' बनाऊंगा। 16 त कौमों का दूध भी पी लेगी, हाँ बादशाहों की छाती चूर्चेगी और त जानेगी कि मैं खुदावन्द तेरा नजात देनेवाला और याँकब का कादिर तेरा फ़िदिया देने वाला हूँ। 17 मैं पीतल के बदले सोना लाँगा, और लोहे के बदले चाँदी और लकड़ी के बदले पीला और पथरों के बदले लोहा; और मैं तेरे हाकिमों को सलामती, और तेरे 'आमिलों को सदाकत बनाऊँगा 18 फिर कभी तेरे मुल्क में जुल्म का जिक्र न होगा, और न तेरी हदों के अन्दर खराबी या बर्बादी का; बल्कि त अपनी दीवारों का नाम नजात और अपने फाटकों का हम्द रखेगी। 19 फिर तेरी रोशनी न दिन को सूरज से होगी न चाँद के चमकने से, बल्कि खुदावन्द तेरा हमेशा का नूर और तेरा खुदा तेरा जलाल होगा। 20 तेरा सरज फिर कभी न ढलेगा और तेरे चाँद को ज़बाल न होगा, क्यूंकि खुदावन्द तेरा हमेशा का नूर होगा और तेरे मातम के दिन खरम हो जाएंगे। 21 और तेरे लोग सब के सब रास्तबाज होंगे; वह हमेशा तक मुल्क के वारिस होंगे, याँनी मेरी लगाए हुई शाख और मेरी दस्तकारी ठहरेंगे ताकि मेरा जलाल ज़ाहिर हो। 22 सबसे छोटा एक हजार हो जाएगा और सबसे हकीकी एक ज़बरदस्त कौम। मैं खुदावन्द ठीक वक्त पर ये सब कुछ जल्द करँगा।

61 खुदावन्द खुदा की स्थ मुझ पर है क्यूंकि उसने मुझे मसह किया ताकि हलीमों को खुशखबरी सुनाँ; उसने मुझे भेजा है कि शिक्षस्ता दिलों को तसल्ली दूँ कैदियों के लिए रिहाई और गुलामों के लिए आजादी का 'ऐलान कराँ, 2 ताकि खुदावन्द के साल — ए — मकबूल का और अपने खुदा के इन्तकाम के दिन का इश्तिहार दूँ कि उनको राख के बदले सेहरा और मातम की जगह खुशी का रैगान, और उदासी के बदले इबादत का खिलाउत बरब्ज़ँग, ताकि वह सदाकत बल्तूं के दरखत और खुदावन्द के लगाए हुए कहलाएँ कि उसका जलाल ज़ाहिर हो। 4 तब वह पुराने उजाड़ मकानों को ताँमी करेंगे और पुरानी वीरानियों को फिर बिना करेंगे, और उन उजड़े शहरों की मरम्मत करेंगे जो नसल — दर — नसल उजाड़ पड़े थे। 5 परदेसी आ खड़े होंगे और तम्हारे गल्लों को चराएँगे, और बेगानों के बेटे तुम्हारे हल चलानेवाले और ताकिस्तानों में काम करनेवाले होंगे। 6 लेकिन तुम खुदावन्द के काहिन कहलाओगे, वह तुम को हमारे खुदा के खादिम करेंगे; तुम कौमों का माल खाओगे और तुम उनकी शौकत पर फ़रँद करेंगे। 7 तम्हारी शर्मिन्दगी का बदले दो चन्द मिलेगा, वह अपनी स्त्रवाई के बदले अपने हिस्से से खुश होंगे; तब वह अपने मुल्क में दो चन्द के मालिक होंगे और उनको हमेशा की खुशी

होगी। 8 क्यूंकि मैं खुदावन्द इन्साफ़ को 'अज्ञीज़ रखता हूँ और गरातगरी और ज़ुल्म से नकरत करता हूँ, सो मैं सच्चाई से उनके कामों का अज्ञ दँगा और उनके साथ हमेशा का 'अहद बाँधुंगा। 9 उनकी नस्ल कौमों के बीच नामवर होगी, और उनकी औलाद लोगों के बीच; वह सब जो उनको देखेंगे, इकरार करेंगे कि ये वह नस्ल है जिसे खुदावन्द ने बरकरत बरछी है। 10 मैं खुदावन्द से बहुत खुश हूँगा, मेरी जान मेरे खुदा में मस्सर होगी, क्यूंकि उसने मुझे नजात के कपड़े पहनाए, उसने रास्ताजी के खिल 'अत से मुझे मुलब्बास किया जैसे दूर्वा से होरे से अपने आपको आरास्ता करता है और तुल्हन अपने ज़ेवरों से अपना सिंगार करती है। 11 क्यूंकि जिस तरह ज़मीन अपने नवातात को पैदा करती है, और जिस तरह बाग उन चीजों को जो उसमें बोई गई हैं उताता है; उसी तरह खुदावन्द खुदा सदाकरत और इबादत को तमाम कौमों के सामने जहर में लाएगा।

62

सिय्यन की खातिर मैं चुप न रहूँगा और येस्शलेम की खातिर मैं दम न लूँगा, जब तक कि उसकी सदाकत नूर की तरह न चमके और उसकी नजात रोशन चराग की तरह जलवायर न हो। 2 तब कौमों पर तेरी सदाकत और सब बादशाहों पर तेरी शैकत ज़ाहिर होगी, और तू एक नये नाम से कहलाएगी जो खुदावन्द के मुँह से निकलेगा। 3 और तू खुदावन्द के हाथ में जलाली ताज और अपने खुदा की हथेली में शाहाना अफसर होगी। 4 तू आगे को मतस्का न कहलाएगी, और तेरे मुल्क का नाम फिर कभी खराब न होगा: बल्कि तू 'प्यारी' और तेरी सरज़मीन सुहागन कहलाएगी; क्यूंकि खुदावन्द तुझ से खुश है, और तेरी ज़मीन खाविन्द वाली होगी। 5 क्यूंकि जिस तरह ज़वान मर्द कुँवारी 'औरत को ब्याह लाता है, उसी तरह तेरे बेटे तुझे ब्याह लेंगे; और जिस तरह तुल्हा तुल्हन में राहत पाता है, उसी तरह तेरा खुदा तुझ में मस्सर होगा। 6 ऐ येस्शलेम, मैंने तेरी दीवारों पर निगहबान मुकर्रि किए हैं, वह दिन रात कभी खामोश न होंगे। ऐ खुदावन्द का ज़िक्र करेवालों, खामोश न हो। 7 और जब तक वह येस्शलेम को काईम करके इस ज़मीन पर महमूद न बनाए, उसे आराम न लेने दो। 8 खुदावन्द ने अपने दहने हाथ और अपने कवी बाज़ की कसम खाई है, कि 'यकीनन मैं आगे को तेरा गल्ला तेरे दुश्मों के खाने को न दँगा, और बेगानों के बेटे तेरी प्रय, जिसके लिए तेरे मेहनत की, नहीं पीँझीं; 9 बल्कि वहीं जिन्होंने फ़स्त ज़मा' की है, उसमें से खाँँगे और खुदावन्द की हम्द करेंगे, और वह जो ज़खरी में लाए हैं उसे मेरे मक़दिस की बारगाहों में पीँझें। 10 गुजर जाओ, फाटकों में से गुजर जाओ, लोगों के लिए राह दूस्त करो, और शाहराह ऊँची और बलन्द करो, पथर चुनकर साक कर दो, लोगों के लिए झण्डा खड़ा करो। 11 देख, खुदावन्द ने इन्हिंहा — ए — ज़मीन तक ऐलान कर दिया है, दुखर — ए — सिय्यन से कहो, देख, तेरा नजात देनेवाला आता है; देख, उसका बदला उसके साथ और उसका काम उसके सामने है।' 12 और वह पाक लोग और खुदावन्द के खरीद हुए कहलाएँगे, और तू मत्त्वा या'नी गैर — मतस्क शहर कहलाएगी।

63

ये कौन है जो अदोम से और सुर्खि लिबास पहने खुसराह से आता है? ये जिसका लिबास दरखशा है और अपनी तवानी की बुज़ुर्गी से खरामान है ये मैं हूँ, जो सादिक — उल — कौल और नजात देने पर कादिर हूँ। 2 तेरी लिबास क्यूं सुर्खी है? तेरा लिबास क्यूं उस शाख की तरह है जो अँगू हौज में रौंदता है? 3 'मैंने तन — ए — तन्हा अँगू हौज में रौंदें और लोगों में से मेरे साथ कोई न था; हाँ, मैंने उनको अपने कहर में लताड़ा, और अपने जोश में उनको रौटा; और उनका खून मेरे लिबास पर छिड़का गया, और मैंने अपने सब कपड़ों को आलूदा किया। 4 क्यूंकि इन्तकाम का दिन मेरे दिल में है, और मेरे बाजू से नजात आई और अपने आलूदा किया गया और अपने लिबास पर छिड़का गया, और मैंने अपने सब कपड़ों को आलूदा किया। 5 मैंने निगह की और कोई मददगार न

था, और मैंने ता'अज्जुब किया कि कोई संभालने वाला न था; पस मेरे ही बाजू से नजात आई, और मेरे ही कहर ने मुझे संभाला। 6 हाँ, मैंने अपने कहर से लोगों को लताड़ा, और अपने गजब से उनको मदहोश किया और उनका खून ज़मीन पर बहा दिया।' 7 मैं खुदावन्द की शफ़कत का ज़िक्र करूँगा, खुदावन्द ही की इबादत का, उस सबके मुताबिक जो खुदावन्द ने हम को इन्हायत किया है, और उस बड़ी मेहरबानी का जो उसने इशाईल के घराने पर अपनी खास रहमत और फिरावान शफ़कत के मुताबिक ज़ाहिर की है। 8 क्यूंकि उसने फरमाया, यकीनन वह मेरे ही लोग हैं, ऐसी औलाद जो बेबाई न करेगी; चुराँचे वह उनका बचानेवाला हुआ। 9 उनकी तमाम मुसीबियों में वह मुसीबतजदा हुआ और उसके सामने के फ़रिश्ते ने उनको बचाया, उसने अपनी उल्कत और रहमत से उनका फ़िदिया दिया; उसने उनको उठाया और पहले से हमेशा उनको लिए फ़िरा। 10 लैकिन वह बागी हुए, और उन्होंने उसकी रुह — ए — कुदूस को गमगीन किया; इसलिए वह उनका दुश्मन हो गया और उनसे लड़ा। 11 फिर उसने अगले दिनों को और मूसा को और अपने लोगों को याद किया, और फरमाया, वह कहाँ हैं, जो उनको अपने गल्ले के चौपानों के साथ समन्दर में से निकाल लाया? वह कहाँ है, जिसने अपनी रुह — ए — कुदूस उनके अन्दर डाली? 12 जिसने मूसा के दहने हाथ पर अपने जलाली बाजू को साथ कर दिया, और उनके आगे पानी को चीरा ताकि अपने लिए हमेशा का नाम पैदा करे, 13 जो गहराओं में से उनको इस तरह ले गया जिस तरह बीराने में से घोड़ा, ऐसा कि उन्होंने ठोकर न खाई? 14 जिस तरह मवेशी वादी में चले जाते हैं, उसी तरह खुदावन्द की रुह उनको आरामगाह में लाई; और उसी तरह तूने अपनी कौम को हिदायत की, ताकि तू अपने लिए जलील नाम पैदा करो। 15 आसमान पर से निगाह कर, और अपने पाक और जलील घर से देखो। तेरी गैरत और तेरी कुहरत के काम कहाँ हैं? तेरी दिली रहमत और तेरी शफ़कत जो मुझ पर थी खत्म हो गई। 16 यकीनन तू हमारा बाप है, अगर वे अब्रहाम हम से नावाकिफ हो और इशाईल हम को न पहचानें; तू, ऐ खुदावन्द, हमारा बाप और फ़िदिया देने वाला है तेरा नाम अजल से यही है। 17 ऐ खुदावन्द, तूने हम को अपनी राहों से क्यूं गुमराह किया, और हमारे दिलों को सख्त किया कि तुझ से न डॉरे? अपने बद्दों की खातिर अपनी मीरास के कबाइल की खातिर बाज आ। 18 तेरे पाक लोग थोड़ी देर तक काबिज़ रहे; अब हमारे दुश्मनों ने तेरे मक़दिस को पामाल कर डाला है। 19 हम तो उनकी तरह हुए जिन पर तूने कभी हुक्मत न की, और जो तेरे नाम से नहीं कहलाते।

64

काश कि तू आसमान को फाडे और उतर आए कि तेरे सामने पहाड़ लरजिश खाएँ। 2 जिस तरह आग सुखी डालियों को जलाती है और पानी आग से जोश मारता है ताकि तेरा नाम तेरे मुखालियों में मशरू हो और कौमें तेरे सामने में लरजाँ हों। 3 जिस बक्त तूने बड़े काम किए जिनके हम मुन्तज़िर न थे, तू उत्तर आया और पहाड़ तेरे सामने काँप गए। 4 क्यूंकि शुरू ही से न किसी ने सुना, न किसी के काम तक पहुँचा और न आँखों ने तेरे सिवा ऐसे खुदा को देखा, जो अपने इन्तजार करनेवाले के लिए कुछ कर दियाए। 5 तू उससे मिलता है जो खुशी से सदाकत के काम करता है, और उनसे जो तेरी राहों में तुझे याद रखते हैं; देख, तू गजबानक हुआ क्यूंकि हम ने गुनाह किया, और मुझ तक उसी में रहे; क्या हम नजात पाएँगे? 6 और हम तो सब के सब के जैसे नापाक चीज़ और हमारी तमाम रस्तबाज़ी नापाक लिबास की तरह है। और हम सब पते की तरह कुमला जाते हैं, और हमारी बदकिरदारी आँधी की तरह हम को उड़ा ले जाती है। 7 और कोई नहीं जो तेरा नाम ले, जो अपने आपको आमादा करे कि तुझ से लिपटा रहे; क्यूंकि हमारी बदकिरदारी की वजह से हम से छिपा रहा और हम को पिघला डाला। 8 तोभी ऐ खुदावन्द, तू हमारा बाप

है; हम मिट्टी है और तू हमारा कुम्हार है, और हम सब के सब तेरी दस्तकारी हैं। 9 ऐ खुदावन्द, ग़ज़बनाक न हो और बदकिरदारी को हमेशा तक याद न रख, देख, हम तेरी मिन्नत करते हैं, हम सब तेरे लोग हैं। 10 तेरे पाक शहर वीराने बन गए, सिय्यून सुनसान और येस्शलेम वीरान है। 11 हमारा खुशनुमा मकदिस जिसमें हमारे बाप दादा तेरी इबादत करते थे, आग से जलाया गया और हमारी उम्दा चीजें बर्बाद हो गईं। 12 ऐ खुदावन्द, क्या तू इस पर भी अपने आप को रोकेगा? क्या तू खामोश रहेगा और हम को यूँ बदलाल करेगा?

65 जो मेरे तालिब न थे, मैं उनकी तरफ मुतवज्जिह हुआ; जिन्होंने मुझे दृঁढ़ा

न था, मुझे पा लिया; मैंने एक कौम से जो मेरे नाम से नहीं कहलाती थी, फरमाया, देख, मैं हाजिर हूँ। 2 मैंने नाफरमान लोगों की तरफ जो अपनी फिक्रों की पैरवी में बुरी राह पर चलते हैं, हमेशा हाथ फैलाए; 3 ऐसे लोग जो हमेशा मेरे सामने, बागों में कुर्बानियाँ करते और ईंटों पर खुशबूज जलाने से मुझे गुस्सा दिलाते हैं; 4 जो क़ब्रों में बैठते, और पोशीदा जगहों में रात काटते, और सउर का गोश खते हैं; और जिनके बर्तनों में नफरती चीजों का शोर्बा मौजूद है; 5 जो कहते तू अलग ही खड़ा रह मेरे नज़दीक न आ क्यूँकि मैं तुझ से ज़यादा पाक हूँ। ये मेरी नाक में धूंधें की तरह और दिन भर जलने वाली आग की तरह हैं। 6 देखो, मेरे सामने ही लिखा हुआ है तब मैं खामोश न रहूँगा बल्कि बदला दृঁढ़ा खुदावन्द फरमाता है; हाँ, उनकी गोद में डाल दृঁढ়া 7 खुदावन्द यूँ फरमाता है, तुम्हारी और तुम्हारे बाप दादा की बदकिरदारी का बदला इकश्ता दृঁढ়া, जो पहाड़ों पर खुशबूज जलते और टीलों पर मेरा इन्कार करते थे; इसलिए मैं पहले उनके कामों को उनकी गोद में नाप कर दृঁढ়া। 8 खुदावन्द यूँ फरमाता है, जिस तरह शरीरा खोशा — ए — अँगू में मौजूद है, और कोई कहे, उसे खराब न कर क्यूँकि उसमें बरकत है, उसी तरह मैं अपने बन्दों की खातिर कस्संगा ताकि उन सबको हलाक न करूँ। 9 और मैं याँक़ब में से एक नस्ल और यहदाह में से अपने कोहिस्तान का वारिस खड़ा कस्संगा और मेरे बर्गुज़ीदा लोग उसके वारिस होंगे और मेरे बन्दे वहाँ बर्सेंगे। 10 और शास्त्रन गल्लों का घर होगा, और 'अक्फ़र की वादी बैलों के बैठने का मक्काम, मेरे उन लोगों के लिए जो मेरे तालिब हुए। 11 लेकिन तुम जो खुदावन्द को छोड़ देते और उसके पाक पहाड़ को फरामोश करते, और मुश्तिरी के लिए दस्तरख्वान चुनते और जुहरा के लिए शराब — ए — मज्जूज़ का जाम पुर करते हो; 12 मैं तुम को गिन गिनकर तलवार के हवाले कहूँगा, और तुम सब जबह होने के लिए इक्कोगे; क्यूँकि जब मैंने बुलाया तो तुम ने जबाब न दिया, जब मैंने कल्ताम किया तो तुम ने न सुना, बल्कि तुम ने वही किया जो मेरी नज़र में बुरा था, और वह चीज़ पसन्द की जिससे मैं खुश न था। 13 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि देखो, मेरे बन्दे खाएँ, लेकिन तुम भूके रहोगे; मेरे बन्दे पिएँगे, लेकिन तुम प्यासे रहोगे; मेरे बन्दे खुश होंगे लेकिन तुम शर्मिदा होगे। 14 और मेरे बन्दे दिल की खुली से गाएँ, लेकिन तुम दिलारी की वजह से नालौं होगे और जान का ही मातम करोगे। 15 और तुम अपना नाम मेरे बरगुज़ीदों की लाज़त के लिए छोड़ जाओगे, खुदावन्द खुदा तुम को कल्त करेगा; और अपने बन्दों को एक दूरे नाम से बुलाएगा। 16 यहाँ तक कि जो कोई इस ज़मीन पर अपने लिए दूआ — ए — खैर करे, खुदाए — बरहक के नाम से करेगा और जो कोई ज़मीन में कस्म खाए, खुदा — ए — बरहक के नाम से खेणगा; क्यूँकि गुजरी हड़ मुसीबतें फरामोश हो गई और वह मेरी आँखों से पोशीदा है। 17 क्यूँकि देखो, मैं नये आसमान और नई ज़मीन को पैदा करता हूँ; और पहली चीजों का फिर जिक्र न होगा और वह खयाल में न आँण्गी। 18 बल्कि तुम मेरी इस नई पैदाइश से हमेशा की खुशी और शादमानी करो, क्यूँकि देखो, मैं येस्शलेम की खुशी और उसके लोगों को खुर्री बनाऊँगा। 19 और मैं येस्शलेम से खुश और अपने

लोगों से मस्सर हूँगा, और उसमें रोने की पुकार और नाला की आवाज़ फिर कभी सुनाई न देगी। 20 फिर कभी वहाँ कोई ऐसा लड़का न होगा जो कम उम्र रहे, और न कोई ऐसा बूढ़ा जो अपनी उम्र पूरी न करे; क्यूँकि लड़का सौ बरस का होकर मेरेगा, और जो गुनाहार सौ बरस का हो जाए, मलाऊँन होगा। 21 वह घर बनाएँगे और उनमें बसेंगे, वह ताकिस्तान लगाएँगे और उनके मेवे खाएँगे; 22 न कि वह बनाएँ और दूसरा बसे, वह लगाएँ और दूसरा खाएँ; क्यूँकि मेरे बन्दों के दिन दरबत्त के दिनों की तरह होंगे, और मेरे बरगुज़ीदा अपने हाथों के काम से मृदूनों तक फायदा उठाएँगे 23 उनकी मेहनत बेकार न होगी, और उनकी औलाद अचानक हलाक न होगी; क्यूँकि वह अपनी औलाद के साथ खुदावन्द के मुबारक लोगों की नसल है। 24 और यूँ होगा कि मैं उनके पुकारने से पहले जबाब दूँगा, और वह अभी कह न चुकेंगे कि मैं सुन लूँगा। 25 भेड़िया और बर्बाद इक्के चरेंगे, और शेर — ए — बबर बैल की तरह भस्ता खाएगा, और साँप की खुशक खाक होगी। वह मेरे तमाम पाक पहाड़ पर न जरर पहुँचाएँगे न हलाक करेंगे, खुदावन्द फरमाता है।

66 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि आसमान मेरा तख्त है और ज़मीन मेरे पाँव

की चौकी; तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे, और कौन सी ज़गह मेरी आरामगाह होगी? 2 क्यूँकि ये सब चीजें तो मेरे हाथ ने बनाई और यूँ मौजूद हुईं, खुदावन्द फरमाता है। लेकिन मैं उस शब्द पर निगाह कहूँगा, उसी पर जो गरीबी और शिकश्ता दिल है और मेरे कलाम से कौपं जाता है। 3 “जो बैल जबह करता है, उसकी तरह है जो किसी आदमी को मार डालता है; और जो बर्क की कुर्बानी करता है, उसके बाबार है जो कृते की गर्दन काटता है; जो हदिया लाता है, जैसे सूअर का खूब पेश करता है; जो लुबान जलाता है, उसकी तरह है जो बुत को मुबारक कहता है। हाँ, उन्होंने अपनी अपनी राहें चुन ली और उनके दिल उनकी नफरती चीजों से मस्सर हैं। 4 मैं भी उनके लिए आफतों को चुन लूँगा और जिन बारों से वह डरते हैं उन पर लाऊँगा क्यूँकि जब मैंने कलाम किया तो उन्होंने न सुना; बल्कि उन्होंने वही किया जो मेरी नज़र में बुरा था, और वह चीज़ पसन्द की जिससे मैं खुश न था।” 5 खुदावन्द की बात सुनो, ऐ तुम जो उसके कलाम से कॉप्टे हो; तुम्हारे बाई जो तुम से कीना रखते हैं, और मेरे नाम की खातिर तुम को खारिज कर देते हैं, कहते हैं, ‘खुदावन्द की तम्जीद करो, ताकि हम तुम्हारी खुशी को देयें’; लेकिन वही शर्मिदा होगे। 6 “शहर से भीड़ का शोरा हैकैल की तरफ से एक आवाज़! खुदावन्द की आवाज़ है, जो अपने दुश्मनों को बदला देता है।” 7 पहले इससे कि उसे दर्द लगे, उसने जन्म दिया; और इससे पहले कि उसको दर्द हो, उससे बेटा पैदा होआ। 8 ऐसी बात किसने सनी? ऐसी चीजें किसने देखी? क्या एक दिन मैं कोई मुल्क पैदा हो सकता है? क्या एक ही साथ एक कौम पैदा हो जाएगी? क्यूँकि सिय्यून को दर्द लगे ही थे कि उसकी औलाद पैदा हो गई।” 9 खुदावन्द फरमाता है, क्या मैं उसे विलादत के बक्त तक लाऊँ और फिर उससे विलादत न कराऊँ? तेरा खुदा फरमाता है, क्या मैं जो विलादत तक लाता हूँ, विलादत से बा॒ज रखूँ? 10 “तुम येस्शलेम के साथ खुशी मानओ और उसकी वजह से खुश हो, उसके सब दोस्तों; जो उसके लिए मातम करते थे, उसके साथ बहुत खुश हो; 11 ताकि तुम दूध पियो और उसकी तसल्ली के पिस्तानों से सेरे हो; ताकि तुम निचोड़ो और उसकी शैकूत की इकरात से फायदा उठाओ।” 12 क्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि देख, मैं सलामती नहर की तरह, और कौमों की दैलत सैलाब की तरह उसके पास रवाँ कहूँगा; तब तुम दूध पियोगे, और बगाल में उठाए जाओगे और घृटनों पर कुदाए जाओगे। 13 जिस तरह माँ अपने बेटे को दिलासा देती है, उसी तरह मैं तुम को दिलासा दूँगा; येस्शलेम ही मैं तुम तसल्ली पाओगे। 14 और तुम देखोगे और तुम्हारा दिल खुश होगा, और तुम्हारी

हड्डियाँ सब्ज़ा की तरह नशोंनुमा पाएँगी, और खुदावन्द का हाथ अपने बन्दों पर ज़ाहिर होगा, लेकिन उसका क़हर उसके दुश्मनों पर भड़केगा। 15 क्यूँकि देखो, खुदावन्द आग के साथ आएगा, और उसके रथ उड़ती धूल की तरह होंगे, ताकि अपने क़हर को जोश के साथ और अपनी तमजीह को आग के शोले में ज़ाहिर करे। 16 क्यूँकि आग से और अपनी तलवार से खुदावन्द तमाम बनी आदम का मुकाबिला करेगा; और खुदावन्द के मकतूल बहुत से होंगे। 17 वह जो बागों की बस्त में विनी के पिछे खड़े होने के लिए अपने आपको पाक — ओ — साफ करते हैं, जो सुअर का गोशत और मकस्त हींजे और चुहे खाते हैं; खुदावन्द फरमाता है, वह एक साथ फना हो जाएँगे। 18 और मैं उनके काम और उनके मन्सूबे जानता हूँ। वह बक्त आता है कि मैं तमाम कौमों और अहल — ए — लुगत को जमा' करूँगा और वह आयेंगे और मेरा जलाल देखेंगे, 19 तब मैं उनके बीच एक निशान खड़ा करूँगा; और मैं उनको जो उनमें से बच निकलें, कौमों की तरफ भेज़ूँगा, याँनी तरसीस और पूल और लूट को जो तीरअन्दाज है, और तूबल और यावान को, और दूर के जजीरों को जिन्होंने मेरी शोहरत नहीं सुनी और मेरा जलाल नहीं देखा; और वह कौमों के बीच मेरा जलाल बयान करेंगे। 20 और खुदावन्द फरमाता है कि वह तुम्हारे सब भाइयों को तमाम कौमों में से घोड़ों और रथों पर, और पालकियों में और खच्चरों पर, और सौंडनियों पर बिठा कर खुदावन्द के हृदिये के लिए येस्शलेम में मेरे पाक पहाड़ को लाएँगे, जिस तरह से बनी — इसाईल खुदावन्द के घर में पाक बर्तनों में हृदिया लाते हैं। 21 और खुदावन्द फरमाता है कि मैं उनमें से भी काहिन और लाची होने के लिए लूँगा। 22 “खुदावन्द फरमाता है, जिस तरह नया आसामान और नई जमीन जो मैं बनाऊँगा, मेरे सामने कार्राई रहेंगे उसी तरह तुम्हारी नसल और तुम्हारा नाम बाकी रहेंगा। 23 और यूँ होगा, खुदावन्द फरमाता है कि एक नये चाँद से दूसरे तक, और एक सबत से दूसरे तक हर फर्द — ए — बशर इबादत के लिए मेरे सामने आएगा। 24 'और वह निकल निकल कर उन लोगों की लाशों पर जो मुझ से बाती हुए नज़र करेंगे; क्योंकि उनका कीड़ा न मरेगा और उनकी आग न बुझेगी, और वह तमाम बनी आदम के लिए नफरती होंगे।”

यर्म

1 यरमियाह — बिन — खिलकियाह की बातें जो — बिनयमीन की ममलुकत में अन्तोती काहिनों में से था; 2 जिस पर खुदावन्द का कलाम शाह — ए — यहदाह यूसियाह — बिन — अमून के दिनों में उसकी सल्तनत के तेरहवें साल में नाजिल हुआ। 3 शाह — ए — यहदाह यहयकीम बिन — यूसियाह के दिनों में भी, शाह — ए — यहदाह सिदकियाह — बिन — यूसियाह के ग्यारहवें साल के पेरे होने तक अहल — ए — येस्शलेम के गुलामी में जाने तक जो पाँचवें ममीनी में था, नाजिल होता रहा। 4 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हआ, और उसने फरमाया, 5 “इससे पहले कि मैंने तुझे बत्र में खलक किया, मैं तुझे जानता था और तेरी पैदाइश से पहले मैंने तुझे खास किया, और कौमों के लिए तुझे नवी ठहराया।” 6 तब मैंने कहा, हाय, खुदावन्द खुदा! देख, मैं बोल नहीं सकता, क्योंकि मैं तो बच्चा हूँ। 7 लेकिन खुदावन्द ने मुझे फरमाया, यूँ न कह कि मैं बच्चा हूँ; क्योंकि जिस किसी के पास मैं तुझे भेज़ूँगा तू जाएगा, और जो कुछ मैं तुझे फरमाऊँगा तू कहेगा। 8 तू उनके चेहरों को देखकर न डर क्योंकि खुदावन्द फरमाता है मैं तुझे छुड़ाने को तेरे साथ हूँ। 9 तब खुदावन्द ने अपना हाथ बढ़ाकर मेरे मुँह को छुआ; और खुदावन्द ने मुझे फरमाया देख भैंसे अपना कलाम तेरे मुँह में डाल दिया। 10 देख, आज के दिन मैंने तुझे कौमों पर, और सल्तनतों पर मुकर्रा किया कि उखाड़े और ढाए, और हलाक करे और गिराए, और तामीर करे और लगाए। 11 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ और उसने फरमाया, ऐ, यरमियाह, तू क्या देखता है? मैंने अर्ज़ की कि “बादाम के दरखत की एक शाख देखता हूँ।” 12 और खुदावन्द ने मुझे फरमाया, तू ने खब देखा, क्योंकि मैं अपने कलाम को पूरा करने के लिए बेदार रहता हूँ। 13 दूसी बार खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ और उसने फरमाया तू क्या देखता है मैंने अर्ज़ की कि उबलती हुई देग देखता हूँ, जिसका मुँह उत्तर की तरफ से है। 14 तब खुदावन्द ने मुझे फरमाया, उत्तर की तरफ से इस मुल्क के तमाम बाशिन्दों पर आफत आएगी। 15 क्योंकि खुदावन्द फरमाता है, देख, मैं उत्तर की सलतनतों के तमाम खानादानों को बुलाऊँगा, और वह आएँगे और हर एक अपना तत्त्व येस्शलेम के फाटकों के मदखल पर, और उसकी सब दीवारों के चारों तरफ, और यहदाह के तमाम शहरों के सामने काईम करेगा। 16 और मैं उनकी सारी शरारत की बजह से उन पर फतवा दूँगा; क्योंकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया और गैर — मांबूदों के सामने लुबान जलाया और अपनी ही दस्तकारी को सिज्जा किया। 17 इसलिए तू अपनी कमर कसकर उठ खड़ा हो, और जो कुछ मैं तुझे फरमाऊँ उनसे कह। उनके चेहरों को देखकर न डर, ऐसा न हो कि मैं तुझे उनके सामने शर्मिदा करूँ। 18 क्योंकि देख, मैं आज के दिन उड़ाको इस तमाम मुल्क, और यहदाह के बादशाहों और उसके अमीरों और उसके काहिनों और मुल्क के लोगों के सामने, एक फसीलदार शहर और लोहे का सुनून और पीतल की दीवार बनाता हूँ। 19 और वह तुझ से लड़ेंगे, लेकिन तुझ पर गालिब न आएँगे; क्योंकि खुदावन्द फरमाता है, मैं तुझे छुड़ाने को तेरे साथ हूँ।

2 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाज़िल हुआ और उसने फरमाया कि 2
 “तू जा और येस्सलेम के काम में पुकार कर कह कि खुदावन्द यूँ फरमाता
 है कि मैं तेरी जवानी की उल्फत, और तेरी शादी की मुहब्बत को याद करता हैं
 कि तू वीरान याँनी बंजर जमीन में मेरे पांछे पीछे चली। 3 इस्माइल खुदावन्द का
 पाक, और उसकी अफ़ज़ाइश का पहला फल था; खुदावन्द फरमाता है, उसे
 निगलने वाले सब मुजरिम ठहरेंगे, उन पर आकत आएगी।” 4 ऐ अहल — ए
 — याक़ब और अहल — ए — इस्माइल के सब खानदानों खुदावन्द का

कलाम सुनो: 5 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि 'तुम्हारे बाप — दादा ने मुझ में कौन सी बी — इन्साफी पाई, जिसकी वजह से वह मुझसे दूर हो गए और इट की पैरवी करके बेकार हुए? 6 और उन्होंने यह न कहा कि 'खुदावन्द कहाँ है जो हमको मुल्क — ए — मिस्र से निकल लाया, और बीराम और बंजर और गढ़ों की जमीन में से, खुशकी और मौत के साथे की सरजामीन में से, जहाँ से न कोई गुरजाता और न कोई क्याम करता था, हमको ले आया?' 7 और मैं तुम को बागों वाली ज़मीन में लाया कि तुम उसके मेवे और उसके अच्छे फल खाओ; लेकिन जब तुम दाखिल हुए, तो तुम ने मेरी जमीन को नापाक कर दिया और मेरी मीरास को मक्स्ह स्वीकृत कर दिया। 8 काहिनों ने न कहा, कि 'खुदावन्द कहाँ है?' और अहल — ए — शरी'अत ने मुझे न जाना; और चरवाहों ने मुझसे सरकीरी की, और नवियों ने बाट के नाम से नबुव्वत की और उन चीजों की पैरवी की जिनसे कुछ फायदा नहीं। 9 इसलिए खुदावन्द फरमाता है, मैं फिर तुम से झग़रँगा और तुम्हारे बेटों के बेटों से झग़ड़ा करूँगा। 10 क्यूँकि पार गुजरकर कितीम के जरीरों में देखो, और कीदार में कासिद भेजकर दरियापत्त करो, और देखो कि ऐसी बात कहीं हुई है? 11 क्या किसी कौम ने अपने मांवदों को, हातोंकि वह खुदा नहीं, बदल डाला? लेकिन मेरी कौम ने अपने जलात को बेकायदा चीज़ से बदला। 12 खुदावन्द फरमाता है, ऐ आसमानो, इससे हैरान हो; शिद्दत से थरथराओ और बिल्कुल बीराम हो जाओं। 13 क्यूँकि मेरे लोगों ने दो बुराइयाँ की: उन्होंने मुझ आब — ए — हयात के चश्मे को छोड़ दिया और अपने लिए हौज़ खोदे हैं शिकस्ता हौज़ जिनमें पानी नहीं ठहर सकता। 14 क्या इसाईल गुलाम है? क्या वह खानाजाद है? वह किस लिए लट्टा गया? 15 जवान शेर — ए — बबर उस पर गुराए और गरजे, और उन्होंने उसका मुल्क उजाड़ दिया। उसके शहर जल गए, वहाँ कोई बसने वाला न रहा। 16 बनी नफू और बनी तहफ़ीस ने भी तेरी खोपड़ी फोड़ी। 17 क्या तू खूद ही यह अपने ऊपर नहीं लाइ कि तुमें खुदावन्द अपने खुदा को छोड़ दिया, जब कि वह तेरी रहबरी करता था? 18 और अब सीहोर "का पानी पीने को मिस्र की राह में तुझे क्या काम? और दरिया — ए — फरार का पानी पीने को असूर की राह में तेरा क्या मतलब? 19 तेरी ही शारात तेरी तादीब करेगी, और तेरी नाफरमानी तुझ को सजा देगी। खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज, फरमाता है, देख और जान ले कि यह बुरा और बहुत ही ज्यादा बेजा काम है कि तूने खुदावन्द अपने खुदा को छोड़ दिया, और तुझ को मेरा खौफ नहीं। 20 क्यूँकि मुझ बुझूँगा कि तूने अपने जुए को तोड़ डाला और अपने बन्धनों के टुकड़े कर डाले, और कहा, 'मैं ताबे' न रहूँगा।' 21 मैंने तो तुझे कामिल ताक लगाया और उम्दा बीज बोया था, फिर तू क्यूँकर मेरे लिए बेहकीकत जंगली अंगूर का दरखत हो गई? 22 हर तरह तू अपने को सज्जी में धोए और बहुत सा साबून इस्तेमाल करे, तो भी खुदावन्द खुदा फरमाता है, तेरी शारात का दाग मेरे सामने जाहिर है। 23 तू क्यूँकर कहती है, 'मैं नापाक नहीं हूँ, मैंने बालीम की पैरवी की? वादी में अपने चाल — चलन देख, और जो कुछ तूने किया है मांतूम कर। तो तेज़ौर ऊँटनी की तरह है जो इधर — उधर दौड़ती है; 24 मादा गोरखर की तरह जो बीरामी की 'आदी है, जो शहवत के जोश में हवा को सूँधती है; उसकी मस्ती की हालत में कौन उसे रोक सकता है? उसके तातिब मान्दा न होंगे, उसकी मस्ती के दिनों में "वह उसे पा लेंगे। 25 तू अपने पाँव को नंगे पन से और अपने हल्क को प्यास से बचा। लेकिन तूने कहा, 'कुछ उम्मीद नहीं, हरपिज नहीं; क्यूँकि मैं बेगानों पर आशिक हूँ और उन्हीं के पीछे जाऊँगी।' 26 जिस तरह चोर पकड़ा जाने पर मस्ता होता है, उसी तरह इसाईल का घराना मस्ता हुआ; वह और उसके बादशाह, और हाकिम और काहिन, और नबी; 27

जो लकड़ी से कहते हैं, 'तू मेरा बाप है, और पत्थर से, 'तू ने मुझे पैदा किया। क्यूंकि उन्होंने मेरी तरफ मुँह न किया बल्कि पीठ की, लेकिन अपनी मुसीबत के बक्तव्य वह कहेंगे, 'उठकर हमको बचा! 28 लेकिन तेरे बुत कहाँ हैं, जिनको तुम अपने लिए बनाया? अगर वह तेरी मुसीबत के बक्तव्य तुम्हे बचा सकते हैं तो उठें; क्यूंकि ऐ यहदाह, जिनें तेरे शहर है उतने ही तेरे मांचूद है। 29 "तुम मुझसे क्यूं हृजत करोगे? तुम सब ने मुझसे बाचाती की है," खुदावन्द फरमाता है। 30 मैंने बेपायदा तुम्हारे बेटों को पीटा, वह तरबियत पज़री न हए; तुम्हारी ही तलवार फाड़ने वाले शेर — ए — बबर की तरह तुम्हारे नवियों को खा गई। 31 ऐ इस नसल के लोगों, खुदावन्द के कलाम का लिहाज़ करो। क्या मैं इसाईल के लिए वीरान या तारीकी की जमीन हआ? मेरे लोग क्यूं कहते हैं, 'हम आजाद हो गए, फिर तेरे पास न आएंगे'! 32 क्या कुँवारी अपने जेवर, या दुल्हन अपनी आराइश भूल सकती है? लेकिन मेरे लोग तो मुझ्त — ए — मदीद से मुझ को भूल गए। 33 त तलब — ए इश्क में अपनी राह को कैरी आरास्ता करती है। यकीनन तूने फाहिशा 'औरतों को भी अपनी राहें सिखाई है। 34 तेरे ही दामन पर बेगुनाह गरीबों का खन भी पाया गया; तूने उनको नक्कल लगाते नहीं पकड़ा; बल्कि इही सब बातों की वजह से, 35 तो भी त कहती है, मैं बेकुसर हूँ, उसका गज़ब यकीनन मुझ पर से टल जाएगा; देख, मैं तुझ पर फतवा दँगा क्यूंकि त कहती है, मैंने उनाह नहीं किया। 36 त् अपनी राह बदलने को ऐसी बेकार रक्यूं फिरती है? त् मिस से भी शमिन्दा होगी, जैसे असर से हई। 37 वहाँ से भी त् अपने सिर पर हाथ रख कर निकलेगी; क्यूंकि खुदावन्द ने उनको जिन पर तूने भरोसा किया हकीर जाना, और तू उनसे कामयाब न होगी।

3 कहते हैं कि 'अगर कोई मर्द अपनी बीकी को तलाक दे दे, और वह उसके यहाँ से जाकर किसी दूसरे मर्द की हो जाए, तो क्या वह पहला फिर उसके पास जाएगा?' क्या वह जमीन बहुत नापाक न होगी? लेकिन तूने तो बहुत से यारों के साथ बदकारी की है; क्या अब भी त् मेरी तरफ फिरेगी? खुदावन्द फरमाता है। 2 पहाड़ों की तरफ अपनी आँखें उठा और देख! कौन सी जगह है जहाँ तूने बदकारी नहीं की? त् राह में उनके लिए इस तरह बैठी, जिस तरह वीराने में 'अरब। तूने अपनी बदकारी और शरारत से जमीन को नापाक किया। 3 इसलिए बारिश नहीं होती और आखिरी बरसात नहीं हई तेरी पेशानी फाहिशा की है और तुझ को शर्म नहीं आती।' 4 क्या त् अब से मुझे पुकार कर न कहोगी, ऐ मेरे बाप, तू मेरी जवानी का रहवार था? 5 क्या उसका क़हर हमेशा रहेगा? क्या वह उसे हमेशा तक रख छोड़ेगा? देख, त् ऐसी बातें तो कह चुकी, लेकिन जहाँ तक तुझ से हो सका तूने बुरे काम किए। 6 और यूसियाह बादशाह के दिनों में खुदावन्द ने मुझसे फरमाया, क्या तूने देखा, नाफरमान इसाईल ने क्या किया है? वह हर एक ऊँचे पहाड़ पर और हर एक हरे दरखत के नीचे गई, और वहाँ बदकारी की। 7 और जब वह ये सब कुछ कर चुकी तो मैंने कहा, वह मेरी तरफ वापस आएगी, लेकिन वह न आई, और उसकी बेवफा बहन यहदाह ने ये हाल देखा। 8 फिर मैंने देखा कि जब फिरे हुए इसाईल की जिनाकारी की वजह से मैंने उसको तलाक दे दिया, और उसे तलाकनामा लिख दिया तो भी उसकी बेवफा बहन यहदाह न डरी; बल्कि उसने भी जाकर बदकारी की। 9 और ऐसा हुआ कि उसने अपनी बदकारी की बुराई से जमीन को नापाक किया, और पत्थर और लकड़ी के साथ जिनाकारी की। 10 और खुदावन्द फरमाता है कि बावजूद इस सब के उसकी बेवफा बहन यहदाह सच्चे दिल से मेरी तरफ न फिरी, बल्कि रियाकारी से। 11 और खुदावन्द ने मुझसे फरमाया, नाफरमान इसाईल ने बेवफा यहदाह से ज्यादा अपने आपको सच्चा साबित किया है। 12 जा और उत्तर की तरफ वह बात पुकारकर कह दे कि 'खुदावन्द फरमाता है, ऐ नाफरमान इसाईल, वापस आ; मैं तुझ पर क़हर की नज़र नहीं करँगा क्यूंकि

खुदावन्द फरमाता है मैं रहीम हूँ मेरा क़हर हमेशा का नहीं। 13 सिर्फ अपनी बदकारी का इकरार कर कि त् खुदावन्द अपने खुदा से 'आसी हो गई, और हर एक हरे दरखत के नीचे गैरों के साथ इधर — उधर आवाज़ फिरी; खुदावन्द फरमाता है, तुम मेरी आवाज़ के सुनने वाले न हुए। 14 खुदावन्द फरमाता है, 'ऐ नाफरमान बच्चों, वापस आओ; क्यूंकि मैं खुद तुम्हारा मालिक हूँ, और मैं तुम को हर एक शहर में से एक, और हर एक घराने में से दो लेकर सिय्यून में लाऊँगा। 15 "और मैं तुम को अपने खातिर खबाह चरवाहे दँगा, और वह तुम को समझदारी और 'अक्लमन्दी से चराएँगे। 16 और यूँ होगा कि खुदावन्द फरमाता है कि जब उन दिनों में तुम मुल्क में बढ़ोगे और बहुत होगे, तब वह फिर न कहेंगे कि 'खुदावन्द के 'अहद का सन्दूक'; उसका खयाल भी कभी उनके दिल में न आएगा, वह हरगिज उसे याद न करेंगे और उसकी जियारत को न जाएंगे, और उसकी मरम्मत न होगी। 17 उस ब्रह्मत येस्शलेम खुदावन्द का तख्त कहलाएगा, और उसमें यानी येस्शलेम में, सब कौमें खुदावन्द के नाम से जमा' होंगी; और वह फिर अपने बुरे दिल की सज्जी की पैरवी न करेंगे। 18 उन दिनों में यहदाह का घराना इसाईल के घराने के साथ चलेगा, वह मिलकर उत्तर के मुल्क में से उस मुल्क में जिसे मैंने तुम्हारे बाप — दादा को मीरास में दिया, आँए। 19 'आह, मैंने तो कहा यहा, मैं तुझ को फर्जन्दों में शामिल करके खुशनुमा मुल्क या'नी कौमों की नाफरमानी मीरास तुझे दँगा; और त् मुझे बाप कह कर पुकारेगी, और त् फिर मुझसे न फिरेगी। 20 लेकिन खुदावन्द फरमाता है, ऐ इसाईल के घराने, जिस तरह बीबी बेवफाई से अपने शौहर को छोड़ देती है, उरी तरह तूने मुझसे बेवफाई की है। 21 पहाड़ों पर बनी — इसाईल की गिराया — ओ — जारी और मिन्नत की आवाज़ सुनाई देती है क्यूंकि उन्होंने अपनी राह देती की और खुदावन्द अपने खुदा को भूल गए। 22 ऐ नाफरमान फर्जन्द वापस आओ मैं तुम्हारी नाफरमानी का चाचा करँगा। देख, हम तेरे पास आते हैं; क्यूंकि त ही, ऐ खुदावन्द, हमारा खुदा है। 23 हकीकत में टीलों और पहाड़ों पर के हज़ार से कुछ उपर्याद रखना बेफायदा है। यकीनन खुदावन्द हमारे खुदा ही में इसाईल की नजात है। 24 लेकिन इस स्वार्वाई की वजह से हमारी जवानी के बक्तव्य से हमारे बाप — दादा के माल को, और उनकी भेड़ों और उनके बैलों और उनके बेटे और बेटियों को निगल लिया है। 25 हम अपनी शर्म में लैटे और स्वार्वाई हमको छिपा ले, क्यूंकि हम और हमारे बाप — दादा अपनी जवानी के बक्तव्य से आज तक खुदावन्द अपने खुदा के खताकार हैं। और हम खुदावन्द अपने खुदा की आवाज़ के सुनने वाले नहीं होए।"

4 "ऐ इसाईल, अगर त् वापस आए, खुदावन्द फरमाता है अगर त् मेरी तरफ वापस आए; और अपनी मक्स्हहात को मेरी नज़र से दूर करे तो तू आवारा न होगा; 2 और अगर त् सच्चाई और 'अदालत और सदाकृत से जिन्दा खुदावन्द की कसम खाए, तो कौमें उसकी वजह से अपने आपको मुबारक कहेंगी और उस पर फ़ख़ करेंगी।" 3 क्यूंकि खुदावन्द यहदाह और येस्शलेम के लोगों को यूँ फरमाता है: "अपनी उम्दा जमीन पर हल चलाओ, और कॉर्टों में बीज न बोया करो। 4 ऐ यहदाह के लोगों, और येस्शलेम के बाशिन्दो, खुदावन्द के लिए अपना खतना कराओ; हाँ, अपने दिल का खतना करो; ऐसा न हो कि तुम्हारी बढ़ा'आमाली की वजह से मेरा क़हर आग की तरह शो'लाजन हो, और ऐसा भड़के के कोई बुझा न सके।" 5 यहदाह में इश्तिहार दो, और येस्शलेम में इसका 'ऐलान करो और कहो, तुम मुल्क में नरसिंगा धौँको, बलन्द आवाज़ से पुकारो और कहो कि 'जमा' हो, कि हसीन शहरों में चलें। 6 तम सिय्यून ही में झाण्डा खड़ा करो, पनाह लेने को भागो और देर न करो, क्यूंकि मैं बला और हलाकत — ए — शदीद को उत्तर की तरफ से लाता हूँ। 7 शेर — ए — बबर झाड़ियों से निकला है, और कौमों के हलाक करने वाले ने खानगी की है; वह

अपनी जगह से निकला है कि तेरी जमीन को वीरान करे, ताकि तेरे शहर वीरान होंगे और कोई बसने वाला न रहे। 8 इसलिए टाट ओढ़कर छाती पीटो और बावैला करो, क्यूँकि खुदावन्द का कहर — ए — शर्दीद हम पर से टल नहीं गया। 9 और खुदावन्द फरमाता है, उस बवत यूँ होगा कि बादशाह और सरदार बे — दिल हो जायेंगे और काहिन हैरतजदा और नवी शर्मिदा होंगे। 10 तब मैंने कहा, अफसोस, ऐ खुदावन्द खुदा, यकीनन तेरे इन लोगों और येस्शलेम को ये कह कर दाया दी कि तुम सलामत रहोगे; हालांकि तलबार जान तक पहुँच गई है। 11 उस बवत इन लोगों और येस्शलेम से ये कहा जाएगा कि 'वीराने के पहाड़ों पर से एक खुशक हवा मेरी दुखर — ए — कौम की तरफ चलेगी, उसाने और साफ करने के लिए नहीं, 12 बल्कि वहाँ से एक बहुत तुन्द हवा मेरे लिए चलेगी; अब मैं भी उन पर फतवा दूँगा। 13 देखो, वह घटा की तरह चढ़ आएगा, उसके रथ गिर्बाद की तरह और उसके घोड़े 'उकाबों के जैसे तेजतर हैं। हम पर अफसोस के हाय, हम बर्बाद हो गए। 14 ऐ येस्शलेम, तु अपने दिल को शरारत से पाक कर ताकि तू रिहाई पाए। बुरे ख्यालात कब तक तेरे दिल में रहेंगे? 15 क्यूँकि दान से एक आवाज आती है, और इफ्राइम के पहाड़ से मुसीबत की खबर देती है; 16 कौमों को खबर दो, देखो, येस्शलेम के बारे में 'ऐलान करो कि 'धिराव करने वाले दूर के मुल्क से आते हैं, और यहदाह के शहरों के सामने ललकारोंगे। 17 खेत के रखबालों की तरह वह उसे चारों तरफ से घेरेंगे, क्यूँकि उसने मुझसे बगावत की, खुदावन्द फरमाता है। 18 तेरी चाल और तेरे कौमों से यह मुसीबत तुम पर आती है। यह तेरी शरारत है, यह बहुत तल्ख है, क्यूँकि यह तेरे दिल तक पहुँच गई है।" 19 हाय, मेरा दिल! मेरे पर्दा — ए — दिल में दर्द है! मेरा दिल बेताब है, मैं चुप नहीं रह सकता; क्यूँकि ऐ मेरी जान, तुम नरसिंग की आवाज और लड़ाई की ललकार सुन ली है। 20 शिक्स्त पर शिक्स्त की खबर आती है, यकीनन तमाम मुल्क बर्बाद हो गया; मेरे खेमे अचानक और मेरे पर्दे एक दम में बर्बाद किए गए। 21 मैं कब तक ये झाँण्डा देखूँ और नरसिंग की आवाज सुँ? 22 "हकीकित मैं मेरे लोग बेवकूफ हैं, उन्होंने मुझे नहीं पहचाना; वह बेश ऊर बच्चे हैं और फर्क नहीं रखते ब्युरे काम करने में होशियार हैं, लेकिन नेक काम की समझ नहीं रखते।" 23 मैंने जमीन पर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि वीरान और सुनसान है, आसमानों को भी बेनूर पाया। 24 मैंने पहाड़ों पर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि वह काँप गए, और सब टीले लिंगिश खा गए। 25 मैंने नज़र की, और क्या देखता हूँ कि कोई आदमी नहीं, और सब हवाई परिन्दे उड़ गए। 26 फिर मैंने नज़र की और क्या देखता हूँ कि जरखेत ज़मीन वीरान हो गई, और उसके सब शहर खुदावन्द की हज़ूरी और उसके कहर की शिद्दत से बर्बाद हो गए। 27 क्यूँकि खुदावन्द फरमाता है कि तमाम मुल्क वीरान होगा तोभी मैं उसे बिल्कुल बर्बाद न करूँगा। 28 इसलिए ज़मीन मातम करेगी और ऊपर से आसमान ताकी हो जाएगा; क्यूँकि मैं कह चुका, मैंने इरादा किया है, मैं उससे फोमान न हँगा और उससे बाज न आँगा। 29 सवारों और तीरअंदाजों के शेर से तमाम शहरी भाग जाएँगे; वह घने जंगलों में जा घुसेंगे, और चट्टानों पर चढ़ जाएँगे, सब शहर छोड़ दिए जायेंगे और कोई आदमी उम्रें न रहेंगे। 30 तब ऐ गारतशुदा, तू क्या करेगी? अगर तेरे तूलाल जोड़ा पहने, अगर तेरे तूज़ीन जेवरों से आसासा हो, आगर तेरे तू अपनी आँखों में सुरमा लगाए, तू 'अबस अपने आपको खबसूरत बनाएगी; तेरे 'आशिक तुझ को हकीर जानेंगे, वह तेरी जान के तालिब होंगे। 31 क्यूँकि मैंने उस 'औरत की जैसी आवाज सुनी है जिसे दर्द लगे हों, और उसकी जैसी दर्दनाक आवाज जिसके फला बच्चा पैदा हो, याहाँी दुखर — ए — सियुंस की आवाज, जो हाँपती और अपने हाथ फैलाकर कहती है, 'हाय!

5 अब येस्शलेम की गलियों में इधर — उधर गश्त करो; और देखो और दरियाफत करो, और उसके चौकों में छूँड़ो, अगर कोई आदमी वहाँ मिले जो इन्साक करनेवाला और सच्चाई का तालिब हो, तो मैं उसे मुँआक करूँगा। 2 और अगर तेर वह कहते हैं, ज़िन्दा खुदावन्द की कसम, तो भी यकीनन वह दूरी कसम खाते हैं। 3 ऐ खुदावन्द, क्या तेरी आँखें सच्चाई पर नहीं हैं? तुम उनको मारा है, लेकिन उन्होंने अफसोस नहीं किया; तूने उनको बर्बाद किया, लेकिन वह तरबियत — पश्चिम न हुए; उन्होंने अपने चेहरों को चट्टान से भी ज्यादा सख्त बनाया, उन्होंने वापस अने से इन्कार किया है। 4 तब मैंने कहा कि "यकीनन ये बेचरों जाहिल हैं, क्यूँकि ये खुदावन्द की राह और अपने खुदा के हक्मों को नहीं जानते। 5 मैं बुजुर्गों के पास जाऊँगा, और उनसे कलाम करूँगा; क्यूँकि वह खुदावन्द की राह और अपने खुदा के हक्मों को जानते हैं।" लेकिन इन्होंने जूँआ बिल्कुल तोड़ डाला, और बन्धनों के टुकड़े कर डाले। 6 इसलिए जंगल का शेर — ए — बबर उनको फाड़ेगा वीराने का भेड़िया हलाक करेगा, चीता उनके शहरों की घाट में बैठा रहेगा; जो कोई उनमें से निकले फाड़ा जाएगा, क्यूँकि उनकी सरकशी बहुत हुई और उनकी नाफरायानी बढ़ गई। 7 मैं तुझे क्यूँकर मुँआक करूँ? तेरे फर्जन्दों ने मुझ को छोड़ा, और उनकी कसम खाई जो खुदा नहीं है। जब मैंने उनको सेर किया, तो उन्होंने बदकारी की और पेर बाँधकर कहबाड़ोंमें इकट्ठे हुए। 8 वह पेट भरे घोड़ों की तरह हो गए, हर एक सुबह के बक्त अपने पड़ोसी की बीची पर हिनहिनाने लगा। 9 खुदावन्द फरमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए सजा न दूँगा, और क्या मेरी स्हेषी कौमों से इन्तकाम न लेगी? 10 'उसकी दीवारों पर चढ़ जाओ और तोड़ डालो, लेकिन बिल्कुल बर्बाद न करो, उसकी शार्खें काट दो, क्यूँकि वह खुदावन्द की नहीं हैं। 11 इसलिए कि खुदावन्द फरमाता है, इसाईल के घराने और यहदाह के घराने ने मुझसे बहुत बेवरफाई की। 12 "उन्होंने खुदावन्द का इन्कार किया और कहा कि 'वह नहीं है, हम पर हरणीज आफत न आएगी, और तलवार और काल को हम पर देखेंगे; 13 और नवी महज हवा हो जाएँगे, और कलाम उनमें नहीं है; उनके साथ ऐसा ही होगा।" 14 फिर इसलिए कि तुम यूँ कहते हो, खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि, देख, मैं अपने कलाम को तो भूँ में आग और इन लोगों को लकड़ी बनाऊँगा और वह इनको भस्म कर देगी। 15 ऐ इसाईल के घराने, देख, मैं एक कौम को दूर से तुझ पर चढ़ा लाऊँगा खुदावन्द फरमाता है वह ज़बरदस्त कौम है, वह क़दीम कौम है, वह ऐसी कौम है जिसकी जबान तू नहीं जानता और उनकी बात को तू नहीं समझता। 16 उनके तरकश खुली क़ब्रै है, वह सब बहारू मर्द है। 17 और वह तेरी फसल का अनाज और तेरी रोटी, जो तेरे बेटों और बेटियों के खाने की थी, खा जाएँगे; तेरे गाय — बैल और तेरी भेड़ बकरियों को चट कर जाएँगे, तेरे अंगरू और अंजरी निगल जाएँगे, तेरे हरीन शहरों को जिन पर तेरा भरोसा है, तलवार से वीरान कर देंगे। 18 "लेकिन खुदावन्द फरमाता है, उन दिनों में भी मैं तुम को बिल्कुल बर्बाद न करूँगा। 19 और यूँ होगा कि जब वह कहेंगे, 'खुदावन्द हमारे खुदा ने यह सब कुछ हम से क्यूँ किया?' तो तु उनसे कहेंगा, जिस तरह तुम ने मुझे छोड़ दिया और अपने मुल्क में गैर मांझों की इबादत की, उसी तरह तुम उस मुल्क में जो तुम्हारा नहीं है, अजनबियों की खिदमत करोगे।" 20 याँ क़ब के घराने में इसका बनान और कहो, 21 "अब जरा सुनो, ऐ नादान और बे अन्नल लोगों, जो आँखें रखते हो लेकिन देखते नहीं, जो कान रखते हो लेकिन सुनते नहीं। 22 खुदावन्द फरमाता है, क्या तुम मुझसे नहीं डरते? क्या तुम मेरे सामने थरथराओगे नहीं, जिसने रेत को समन्दर की हड़ पर हमेशा के हक्म से क़ाइम किया कि वह उससे आगे नहीं बढ़ सकता और

हरचन्द उसकी लहरें उछलती है, तोभी गालिब नहीं आती; और हरचन्द शेर करती हैं, तो भी उससे आगे नहीं बढ़ सकती। 23 लेकिन इन लोगों के दिल बासी और सरकश हैं; इहोंने सरकशी की और दूर हो गए। 24 इहोंने अपने दिल में न कहा कि हम खुदावन्द अपने खुदा से डॉरे, जो पहली और पिछली बरसात बक्त पर भेजता है, और फसल के मुकर्रा हफ्तों को हमारे लिए मौजूद कर रखता है। 25 तुम्हारी बदिकरदारी ने इन चीजों को तुम से दूर कर दिया, और तुम्हारे नुगाहों ने अच्छी चीजों को तुम से बाज़ रखा। 26 क्यूँकि मेरे लोगों में शरीर पाए जाते हैं; वह फन्दा लगाने वालों की तरह घाट में बैठते हैं, वह जाल फैलाते और आदमियों को पकड़ते हैं। 27 जैसे जिरा चिड़ियों से भरा हो, वैसे ही उनके घर फेरब से भरे हैं, तब वह बड़े और मालदार हो गए। 28 वह मोते हो गए, वह चिकने है। वह बुरे कामों में सबकत ले जाते हैं, वह फरियाद याँनी यतीमों की फरियाद, नहीं सुनते ताकि उनका भला हो और मोहताजों का इन्साफ नहीं करते। 29 खुदावन्द फरमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए सजा न दूँगा? और क्या मेरी रुह ऐसी कौम से इत्काम न लेनी? 30 मुल्क में एक हैतउफजा और हौलनाक बात हूँ, 31 नवी झूठी नवुवत करते हैं, और काहिन उनके बरीले से हृक्षमरनी करते हैं, और मेरे लोग ऐसी हालत को पासन्द करते हैं, अब तुम इसके आखिर में क्या करोगे?

6 ऐ बनी बिनयमीन, येस्शलेम में से पनाह के लिए भाग निकलो, और तक़'अ में नरसिंगा फूँको और बैत हक्कम में अविशीन 'अलम बलन्द करो; क्यूँकि उत्तर की तरफ से बला और बड़ी तबाही आनेवाली है। 2 मैं दुखर — ए — सिय्युन को जो शक्तील और नाज़ीन है, हलाक कर्सँगा। 3 चरवाहे अपने गल्लों को लेकर उसके पास आएँगे और चारों तरफ उसके सामने खेमे खड़े करेंगे हर एक अपनी जगह में चराएगा। 4 'उससे जंग के लिए अपने आपको खास करो; उठो, दोपर ही को चढ़ चलें! हम पर अफ़सोस, क्यूँकि दिन ढलता जाता है, और शाम का साया बढ़ता जाता है। 5 उठो, रात ही को चढ़ चलें और उसके किसों को ढा दें।' 6 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फरमाता है कि: 'दरख़त काट डालो, और येस्शलेम के सामने दमदमा बाँधो; यह शहर सजा का सज़ावार है, इसमें जुलम ही जुलम है। 7 जिस तरह पानी चश्मे से फूट निकलता है, उसी तरह शरारत इससे जारी है; जूल्म और सितम की हमेशा इसमें सुनी जाती है, हर दम मेरे सामने दुख दर्द और जरूर हैं। 8 ऐ येस्शलेम, तरबियत — पज़ीर हो; ऐसा न हो कि मेरा दिल तुझ से हट जाए, न हो कि मैं तुझे वीरान और गैरआबाद जमीन बना दूँ। 9 रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फरमाता है: 'वह इसाईल के बकिये को अंगर की तरह ढूँडकर तोड़ लेंगे। 10 अंगर तोड़ने वाले की तरह फिर अपना हाथ शाखों में डाल।' 10 मैं किससे कहूँ और किसको जताऊँ, ताकि वह सुने? देख, उनके कान नामजून हैं और वह सुन नहीं सकते, देख, खुदावन्द का कलाम उनके लिए हिकारत का जरिया है, वह उससे खुश नहीं होते। 11 इसलिए मैं खुदावन्द के कहर से लबरेज हूँ, मैं उसे जब्त करते करते तंग आ गया। बाजारों में बच्चों पर और जवानों की जमा! अत पर उसे उड़ेल दे, क्यूँकि शौहर अपनी नीती के साथ और बड़ा कुहनसाल के साथ गिरफ्तार होगा। 12 और उनके घर खेंगे और बीवियों के साथ औरों के हो जायेंगे क्यूँकि खुदावन्द फरमाता है, मैं अपना हाथ इस मुल्क के बाशिन्दों पर बढ़ाऊँगा। 13 इसलिए कि छोटों से बड़ों तक सब के सब लालची हैं, और नबी से काहिन तक हर एक दगाबाज है। 14 क्यूँकि वह मेरे लोगों के जखम को यूँही 'सलामती सलामती' कह कर अच्छा करते हैं, हालाँकि सलामती नहीं है। 15 क्या वह अपने मकस्त्व कामों की वजह से शर्मिन्दा हूँ? वह हरपिज शर्मिन्दा न हुए, बल्कि वह लजाए तक नहीं; इस वास्ते वह गिरने वाले के साथ गिरेंगे खुदावन्द फरमाता है, जब मैं उनको सजा

दूँगा, तो पस्त हो जाएँगे। 16 खुदावन्द यूँ फरमाता है: 'रास्तों पर खड़े हो और देखो, और पुराने रास्तों के बारे में पूछो कि अच्छी राह कहाँ है, उसी पर चलो और तुम्हारी जान राहत पाएगी। लेकिन उन्होंने कहा, 'हम उस पर न चलेंगे। 17 और मैंने तुम पर निगहबान भी मुकर्रा किए और कहा, 'नरसिंग की आवाज सुओ!' लेकिन उन्होंने कहा, 'हम न सुनेंगे। 18 इसलिए ऐ कौमों, सुगो, और ऐ ए अहल — ए — मजाम', मांतूप करो कि उनकी क्या हालत है। 19 ऐ जमीन सुन; देख, मैं इन लोगों पर अफ़त लाऊँगा जो इनके अन्देशों का फल है, क्यूँकि इहोंने मेरे कलाम को नहीं माना और मेरी शरीरी अत को रुक कर दिया है। 20 इससे क्या फायदा के सबा से लुबान और दूर के मुल्क से अगर मेरे सामने लाते हैं? तुम्हारी सोखती कुर्बानियाँ मुझे पसन्द नहीं, और तुम्हारी कुर्बानियाँ से मुझे खुशी नहीं। 21 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि देख, मैं ठोकर खिलाने वाली चीजें इन लोगों की राह में रख दूँगा; और बाप और बेटे बाहम उससे ठोकर खायेंगे पड़ोसी और उनके दोस्त हलाक होंगे। 22 खुदावन्द यूँ फरमाता है, 'देख, उत्तरी मुल्क से एक गिरेह आती है, और इन्तिहाए — जमीन से एक बड़ी कौम बरअंगेखाल की जाएगी। 23 वह तीरअन्दाज और नेजाबाज है, वह संगदिल और बेरहम है, उनके नारों की हमेशा समन्दर की जैसी है और वह घोड़ों पर सवार है, ऐ दुखर — ए — सिय्यून, वह जंगी मर्दीं की तरह तौर सामने सफ़आराई करते हैं। 24 हमने इसकी शोहरत सुनी है, हमारे हाथ ढाले हो गए, हम जचा की तरह मुसीबत और दर्द में गिरफ्तार हैं। 25 मैदान में न निकलना और सङ्क पर न जाना, क्यूँकि हर तरफ दुश्मन की तलवार का खौफ है। 26 ऐ मेरी बिन्त — ए — कौम, टाट औढ़ और राख में लेट, अपने इकलौतों पर मातम और दिलखारां नोहा कर; क्यूँकि गारतगर हम पर अचानक आएगा। 27 'मैंने तुझे अपने लोगों में आजमाने वाला और बुर्ज मुकर्रा किया ताकि तु उनके चाल चलनों को मालूम करे और अपरेख। 28 वह सब के सब बहुत सरकश हैं, वह गीबत करते हैं, वह तो ताँब और लोहा हैं, वह सब के सब पुँ अमिले के खोते हैं। 29 धौंकीनी जल गई, सीसा आग से भसम हो गया; साफ करनेवाले ने बेफायदा साफ किया, क्यूँकि शरीर अलग नहीं हुए। 30 वह मरदूर चाँदी कहलाएँगे, क्यूँकि खुदावन्द ने उनको रुक कर दिया है।'

7 यह वह कलाम है जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नज़िल हुआ, और उसने फरमाया, 2 त खुदावन्द के घर के फाटक पर खड़ा हो, और वहाँ इस कलाम का इश्तिहार दे, और कह, ऐ यहदाह के सब लोगों, जो खुदावन्द की इबादत के लिए इन फाटकों से दाखिल होते हों, खुदावन्द का कलाम सुनो। 3 रब्ब — उल — अफ़वाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है: अपने चाल चलन और अपने आ'माल दुस्त करो, तो मैं तुम को इस मकान में बसाऊँगा। 4 झूठी बातों पर भोसा न करो और यूँ न कहते जाओ, 'यह है खुदावन्द की हैकल, खुदावन्द की हैकल, खुदावन्द की हैकल। 5 क्यूँकि अगर तुम अपने चाल चलन और अपने आ'माल सरासर दुस्त करो, अगर हर आदमी और उसके पड़ोसी में पूरा इन्साफ करो, 6 अगर परेसी और यतीम और बेवा पर जुल्म न करो, और इस मकान में बेगुनाह का खून न बहाओ, और गैर — मांबूदों की पैरवी जिसमें तुम्हारा नुकसान है, न करो, 7 तो मैं तुम को इस मकान में और इस मुल्क में बसाऊँगा, जो मैंने तुम्हारे बाप — दादा को पहले से हमेशा के लिए दिया। 8 देखो, तुम झूठी बातों पर जो बेफायदा हैं, भरोसा करते हो। 9 क्या तुम चोरी करोगे, खन करोगे, ज़िनाकारी करोगे, झूठी कसम खाओगे, और बाल के लिए खुशबू जलाओगे और गैर मांबूदों की जिनको तुम नहीं जानते थे, पैरवी करोगे। 10 और मेरे सामने इस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है, आकर खड़े होंगे और कहोगे कि हम ने छुटकारा पाया, ताकि यह सब नफरती काम करो? 11 क्या यह घर जो मेरे नाम से कहलाता है, तुम्हारी नज़र में डाकुओं का

गार बन गया? देख, खुदावन्द फरमाता है, मैंने खुद यह देखा है। 12 इसलिए, अब मेरे उस मकान को जाओ जो शीलोह में था, जिस पर पहले मैंने अपने नाम को काईम किया था; और देखो कि मैंने अपने लोगों यानी बनी — इसाईल की शरारत की वजह से उससे क्या किया? 13 और खुदावन्द फरमाता है, अब चौंकि तुम ने यह सब काम किए, मैंने बर वक्त' तुम को कहा और ताकीद की, लेकिन तुम ने न सुना; और मैंने तुम को बुलाया लेकिन तुम ने जबाब न दिया, 14 इसलिए मैं इस घर से जो मेरे नाम से कहलाता है, जिस पर तुम्हारा भरोसा है, और इस मकान से जिसे मैंने तुम को और तुम्हारे बाप — दादा को दिया, वही कहरँगा जो मैंने शीलोह से किया है। 15 और मैं तुम को अपने सामने से निकाल दूँगा, जिस तरह तुम्हारी सारी बिरादी इक्फाईम की कुल नसल को निकाल दिया है। 16 “इसलिए तू इन लोगों के लिए दुआ न कर, और इनके बास्ते आवाज बुलन्द न कर, और मुझसे मिन्त और शफा” अत न कर क्यूंकि मैं तेरी न सुनूँगा। 17 क्या तु नहीं देखता कि वह यहदाह के शहरों में और येस्शलेम के कचों में क्या करते हैं? 18 बच्चे लकड़ी जमा' करते हैं और बाप आग सुलगाते हैं, और औरतें आटा औंधती हैं ताकि आसमान की मिलिका के लिए रोटी पकाएँ, और गैर माबूदों के लिए तपावन तपाक मुझे गजबनाक करें। 19 खुदावन्द फरमाता है, क्या वह मुझ ही को गजबनाक करते हैं? क्या वह अपनी ही रुसियाही के लिए नहीं करते? 20 इसी बाते खुदावन्द खुदा दृ० फरमाता है: देख, मेरा कहर — ओ — गजब इस मकान पर, और इसान और हैबान और मैदान के दरखानों पर, और जमीन की पैदावार पर उँडेल दिया जाएगा; और वह भड़केगा और बुझेगा नहीं।” 21 रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, दृ० फरमाता है कि: अपने जबीहों पर अपनी सोखती कुर्बानियाँ भी बढ़ाओ और गोशत खाओ। 22 क्यूंकि जिस बक्त्र मैं तुम्हारे बाप दादा को मुल्क — ए — मिस से निकाल लाया, उनको सोखती कुर्बानी और जबीहे के बारे में कुछ नहीं कहा और हक्म नहीं दिया; 23 बल्कि मैंने उनको ये हक्म दिया, और फरमाया कि मेरी आवाज के शिनवा हो, और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा और तुम मेरे लोग होगे, और जिस राह की मैं तुम को हिदायत करूँ, उस पर चलो ताकि तुम्हारा भला हो। 24 लेकिन उन्होंने न सुना, न कान लगाया, बल्कि अपनी मसलहतों और अपने बुरे दिल की सख्ती पर चले और फिर गए और आगे न बढ़े। 25 जब से तुम्हारे बाप — दादा मुल्क — ए — मिस से निकल आए, अब तक मैंने तुम्हारे पास अपने सब खादिमों यानी नवियों को भेजा, मैंने उनको हमेशा सही बक्त्र पर भेजा। 26 लेकिन उन्होंने मेरी न सुनी और कान न लगाया, बल्कि अपनी गर्दन सख्त की, उन्होंने अपने बाप — दादा से बढ़कर बुराई की। 27 तू ये सब बातें उनसे कहेगा, लेकिन वह तेरी न सुनेंगे; तू उनको बुलाएगा, लेकिन वह तुझे जबाब न देंगे। 28 तब तु उनसे कह दे, 'यह वह कौम है जो खुदावन्द अपने खुदा की आवाज की शिनवा, और तरवियत पज़री न हुई; सच्चाई बर्बाद हो गई, और उनके मुँह से जाती रही। 29 “अपने बाल काटकर फेंक दे, और पहाड़ों पर जाकर नौहा कर; क्यूंकि खुदावन्द ने उन लोगों को जिस पर उसका कहर है, रु और छोड़ दिया है।” 30 इसलिए कि बनी यहदाह ने मेरी नजर में बुराई की, खुदावन्द फरमाता है, उन्होंने उस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है अपनी मकस्हात रखखी, ताकि उसे नापाक करें। 31 और उन्होंने तूफत के ऊँचे मकान बिन हिन्नोम की बादी में बनाए, ताकि अपने बेटे और बेटियों को आग में जलाएँ, जिसका मैंने हक्म नहीं दिया और मेरे दिल में इसका खयाल भी न आया था। 32 इसलिए खुदावन्द फरमाता है, देख, वह दिन आते हैं कि यह न तूफत कहलाएंगी न बिन हिन्नोम की बादी, बल्कि बादी — ए — कल्ला; और जगह न होने की बजह से तूफत में दफन करेंगे। 33 और इस कौम की लाशें हवाई परिनदों और जमीन के दरिन्दों की खुराक होंगी, और उनको कोई न हँकाएगा। 34 तब मैं यहदाह के

शहरों में और येस्शलेम के बाजारों में खुशी और खुशी की आवाज, दुल्हे और दुल्हन की आवाज खत्म करँगा; क्यूंकि यह मुल्क बीरान हो जाएगा।

8 खुदावन्द फरमाता है कि उस बक्त्र वह यहदाह के बादशाहों और उसके सरदारों और काहिनों और नवियों और येस्शलेम के बाशिन्दों की हड्डियाँ, उनकी कब्रों से निकाल लाएँगे; 2 और उनको सरज और चाँद और तमाम अजराम — ए — फलक के सामने, जिनको वह दोस्त रखते और जिनकी खिदमत — ओ — पैरवी करते थे जिनसे वह सलाह लेते थे और जिनको सिज्दा करते थे, बिछाएँगे; वह न जमा' की जाँहीं न दफन होंगी, बल्कि इस जमीन पर खाद बर्नेंगी। 3 और वह सब लोग जो इस क्षे धरों में से बाकी बच रहेंगे, उन सब मकानों में जहाँ जहाँ मैं उनको हाँक दूँगा, मौत को जिन्दगी से ज्यादा चाहेंगे, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 4 और तु उनसे कह दे कि खुदावन्द दृ० फरमाता है, क्या लोग गिरक फिर नहीं उठते? क्या कोई फिर कर वापस नहीं आता? 5 फिर येस्शलेम के यह लोग करूँ हमेशा की नाफरमानी पर अड़े हैं? वह फेरब से लिपटे रहते हैं और वापस अपने से इक्का करते हैं। 6 मैंने कान लगाया और सुना, उनकी बातें ठीक नहीं; किंतु ने अपनी बुराई से तौबा करके नहीं कहा कि मैंने क्या किया? हर एक अपनी राह को फिरता है, जिस तरह घोड़ा लडाई में सरपट दौड़ता है। 7 हाँ हवाई लकलक अपने मुकर्ररा बक्त्रों को जानता है, और कुमरी और अबाबील और कूलंग अपने अपने का बक्त्र पहचान लेते हैं; लेकिन मेरे लोग खुदावन्द के हुक्मों को नहीं पहचानते। 8 “तुम करूँकर करते हो कि हमतो 'अक्लमन्द हैं और खुदावन्द की शरी' अत हमारे पास है? लेकिन देख, लिखने वालों के बेकार कलम ने बतालत पैदा की है। 9 'अक्लमन्द शर्मिन्दा हुए, वह हैरान हुए और पकड़े गए; देख, उन्होंने खुदावन्द के कलाम को रुक किया; उम्मे कैरी समझदारी है? 10 तब मैं उनकी बीवियों औरों को, और उनके खेत उनको दूँगा जो उन पर काबिज होंगे; करूँकि वह सब छोटे से बड़े तक लालची है, और नवी से काहिन तक हर एक दगाबाज है। 11 और वह मेरी बिन्त — ए — कौम के जख्म को दृ० ही 'सलामती सलामती' कह कर अच्छा करते हैं, हालौंकि सलामती नहीं है। 12 क्या वह अपने मकस्ह कामों की बजह से शर्मिन्दा हुए? वह हरपिज शर्मिन्दा न हुए, बल्कि वह लजाए तक नहीं। इस लिए वह गिरने वालों के साथ मिलेंगे, खुदावन्द फरमाता है, जब उनको सजा मिलेंगी तो वह पस्त हो जाएँगे। 13 खुदावन्द फरमाता है, मैं उनको बिल्कुल फना करँगा। न ताक मैं अंग लगेंगे और न अंजीर के दरखत में अंजीर, बल्कि पते भी सूख जाएँगे; और जो कुछ मैंने उनको दिया, जाता रहेगा।” 14 हम करूँ चुपचाप बैठे हैं? आओ, इकट्ठे होकर मजबूत शहरों में भाग चलें और वहाँ चुप हो रहे करूँकि खुदावन्द हमारे खुदा ने हमको चुप कराया और हमको इन्द्रायन का पानी पीने को दिया है; इसलिए कि हम खुदावन्द के गुनाहगार हैं। 15 सलामती का इन्तजार था पर कुछ फायदा न हआ; और शिफा के बक्त्र का, लेकिन देखो दहशत! 16 “उसके घोड़ों के फरनि की आवाज दान से सुनाई देती है, उसके जाँघों के हिनहिनारे की आवाज से तमाम जमीन कॉप गई, करूँकि वह आ पहुँचे हैं और जमीन को और सब कुछ जो उसमें है, और शहर को भी उसके बाशिन्दों के साथ खा जाएँगे।” 17 करूँकि खुदावन्द फरमाता है, देखो, मैं तुम्हारे बीच सौप और अजदहे भेज़ँगा जिन पर मन्त्र कारगर न होगा और वह तुम को काटेंगे। 18 काश कि मैं फरियाद से तसल्ली पाता; मेरा दिल मुझ में सुस्त हो गया। 19 देख, मेरी बिन्त — ए — कौम की गम की आवाज दूँ के मुलक से आती है, 'क्या खुदावन्द सियून में नहीं? क्या उसका बादशाह उसमें नहीं? उन्होंने करूँ अपनी तराशी हुई मूरतों से, और बेगाने माँबूदों से मुझ को गजबनाक किया? 20 “फसल काटने का बक्त्र गुजरा, गर्मी के दिन खत्म हुए, और हम ने

रिहाई नहीं पाई।” 21 अपनी बिन्त — कौम की शिक्षतार्गी की बजह से मैं शिक्षताहाल हआ; मैं कुछता रहता हूँ, हैरत ने मुझे दबा लिया। 22 क्या जिल 'आद में रैगन — ए — बलसान नहीं है? क्या वहाँ कोई हकीम नहीं? मेरी बिन्त — ए — कौम कर्यूँ शिखा नहीं पाती?

9 काश कि मेरा सिर पानी होता, और मेरी आँखें आँसओं का चशमा, ताकि मैं अपनी बिन्त — ए — कौम के मक्तूनों पर रात दिन मातम करता। 2 काश कि मैं लैटी वीराने में मुसाफिर खाना होता, ताकि मैं अपनी कौम को छोड़ देता और उनमें से निकल जाता! कर्यूँकि वह सब बदकार और दागाबाज जमा' अत हैं 3 वह अपनी ज़बान को नारास्ती की कमान बनाते हैं, वह मुल्क में ताकतवर हो गए हैं लैकिन रास्ती के लिए नहीं; कर्यूँकि वह बुराई से बुराई तक बढ़ते जाते हैं और मुझ को नहीं जानते, खुदावन्द फरमाता है। 4 हर एक अपने पड़ोसी से होशियार रहे, और तुम किसी भाई पर भरोसा न करो, कर्यूँकि हर एक भाई दागाबाजी से दूसरे की जगह ले लेगा, और हर एक पड़ोसी गीवित करता फिरेगा। 5 और हर एक अपने पड़ोसी को फरेब देगा और सच न बोलेगा, उन्होंने अपनी ज़बान को झट बोलना सिखाया है, और बदकारी में जॉफिशनी करते हैं। 6 तेरा घर फरेब के बीच है; खुदावन्द फरमाता है, फरेब ही से वह मुझ को जानने से इन्कार करते हैं। 7 इसलिए रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि देख, मैं उनको पिघला ढाँगा और उनको आजमाऊँगा; कर्यूँकि अपनी बिन्त — ए — कौम से और क्या करूँ? 8 उनकी ज़बान हलाक करने वाला तीर है, उससे दगा की बातें निकलती हैं, अपने पड़ोसी को मूँह से तो सलाम कहते हैं पर बातिन में उसकी धात मैं बैठते हैं। 9 खुदावन्द फरमाता है, क्या मैं इन बातों के लिए उनको सजा न दूँगा? क्या मेरी रुह ऐसी कौम से इन्तकाम न लेगी? 10 'मैं पहाड़ों के लिए गिरा — ओ — ज़ारी, और वीराने की चरागाहों के लिए नौहा कस्तँगा, कर्यूँकि वह यहाँ तक जल गई कि कोई उसे कदम नहीं रखता चौपायों की आवाज सुनाई नहीं देती; हवा के परिन्दे और मवेशी भाग गए, वह चले गए। 11 मैं येस्तलेम को खण्डर और गीदड़ों का घर बना ढूँगा, और यहदाह के शहरों को ऐसा वीरान कस्तँगा कि कोई बाशिन्दा न रहेगा।’ 12 साहिब — ए — हिकमत आदीमी कौन है कि इसे समझे? और वह जिससे खुदावन्द के मूँह ने फरमाया कि इस बात का ऐलान करो। ये सज़ामीन विस्त लिए वीरान हुई, और वीराने की तरह जल गई कि कोई इसमें कदम नहीं रखता? 13 और खुदावन्द फरमाता है, इसलिए कि उन्होंने मेरी शरी' अत को जो मैंने उनके आगे रखी थी, छोड़ दिया और मेरी आवाज को न सुना और उसके मुताबिक न चले, 14 बल्कि उन्होंने अपने हड्डी दिलों की और बालीमी की पैरेडी की, जिसकी उनके बाप — दादा ने उनको तालीम दी थी। 15 इसलिए रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि देख, मैं इनको, हाँ, इन लोगों को नागदैना खिलाऊँगा, और इन्द्रायन का पानी पिलाऊँगा। 16 और इनको उन कौमों में, जिनको न यह न इनके बाप — दादा जानते थे, तिरत — बितर कस्तँगा और तलवार इनके पीछे भेजकर इनको हलाक कर डालूँगा। 17 रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: “सोचो और मातम करने वाली 'औरतों को बुलाओ कि आँए, और माहिं' औरतों को बुलवा भेजो कि वह भी आँए; 18 और जल्दी करें और हमारे लिए नोहा उठायें ताकि हमारी आँखों से आँसू जारी हों और हमारी पलकों से आसुवों का सैलाब बह निकले। 19 यकीनन सिय्यन से नोहे की आवाज सुनाई देती है, 'हम कैसे बर्बाद हए! हम सख्त स्वाहा हुए, कर्यूँकि हम बतन से आवाहा हुए और हमारे घर गिरा दिए गए।' 20 ऐ 'औरतों, खुदावन्द का कलाम सुनो और तुम्हारे कान उसके मूँह की बात कुबूल करें; और तुम अपनी बेटियों को नोहागरी और अपनी पड़ोसनों को फरिया — खबानी सिखाओ। 21 कर्यूँकि मौत हमारी खिड़कियों में चढ़ आई है

और हमारे कम्मों में घुस बैठी है, ताकि बाहर बच्चों को और बाज़ारों में जवानों को काट डाले। 22 कह दे, खुदावन्द यूँ फरमाता है: 'आदिमियों की लाशें मैदान में खाट की तरह मिरेंगी, और उस मुटी भर की तरह होंगी जो फसल काटेवाले के पीछे रह जाये जिसे कोई जमा नहीं करता। 23 खुदावन्द यूँ फरमाता है: न साहिब — ए — हिकमत अपनी हिकमत पर, और न कवी अपनी कृव्वत पर, और न मालदार अपने माल पर फ़खूँ करे; 24 लैकिन जो फ़खूँ करता है, इस पर फ़खूँ करे कि वह समझता और मुझे जानता है कि मैं ही खुदावन्द हूँ, जो दुनिया में शफकत — ओ — 'अद्वल और रास्तबाजी को 'अमल में लाता हूँ, कर्यूँकि मेरी खुशी इन्हीं बातों में है, खुदावन्द फरमाता है। 25 'देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है, जब मैं सब मछलूनों को नामछलूनों के तौर पर सजा ढूँगा; 26 मिथ और यहदाह और अदोम और बनी 'अमोन और मोआब को, और उन सब को जो गांओदम दाढ़ी रखते हैं, जो वीरान के बाशिन्दे हैं, कर्यूँकि यह सब कोमें नामख्तन हैं, और इसाईल का सारा घराना दिल का नामख्तन है।'

10 ऐ इसाईल के घराने, वह कलाम जो खुदावन्द तुम से करता है सुनो। 2 खुदावन्द यूँ फरमाता है: 'तुम दीगर कौमों के चाल चलन न सीखो, और आसमानी 'अलामात और निशान और से हिरासान न हो; अगरचे दीगर कौमें उनसे हिरासान होती हैं। 3 कर्यूँकि उनके कानून बेकार है। चुनौत्ते कोई ज़ंगल में कुल्हाड़ी से दरखत काटता है, जो बढ़दई के हाथ का काम है। 4 वह उसे चाँदी और सोने से आरास्ता करते हैं, और उसमें हथेड़ों से मेख़ूँ लगाकर उसे मज़बूत करते हैं ताकि क़ाइम हो। 5 वह खजूर की तरह मखरूसी सुतून है पर बोतले नहीं, उनको उठा कर ले जाना पड़ता है कर्यूँकि वह चल नहीं सकते; उसमें न डोरे कर्यूँकि वह नुकसान नहीं पहुँचा सकते, और उनसे फायदा भी नहीं पहुँच सकता।' 6 ऐ खुदावन्द, तेरा कोई नज़ीर नहीं, तू 'अजीम है और कुदरत की बजह से तेरा नाम बुज़र्ग है। 7 ऐ कौमों के बादशाह, कौन है जो तज़ा से न डोरे? यकीनन यह तुझ ही को ज़ेबा है, कर्यूँकि कौमों के सब हकीमों में, और उनकी तमाम ममलकुतों में तेरा जैसा कोई नहीं। 8 मगर वह सब हैवान खसलत और बेकूफ़ हैं; बुतों की तालीम क्या, वह तो लकड़ी है। 9 तरसीस से चाँदी की पीटा हुआ पत्तर, और ऊफ़ाज से सोना आता है जो कारीगर की कारीगरी और सुनार की दस्तकारी है; उनका लिबास नीला और अर्वाची है, और ये सब कुछ माहिर उस्तोंकी दस्तकारी है। 10 लैकिन खुदावन्द सच्चा खुदा है, वह जिन्दा खुदा और हमेशा का बादशाह है; उसके कहर से ज़मीन थरथराती है और कौमों में उसके कहर की ताब नहीं। 11 तुम उनसे यूँ कहना कि “यह मांबूद जिन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं बनाया, ज़मीन पर से और आसमान के नीचे से हलाक हो जाएँगे।” 12 उसी ने अपनी कुदरत से ज़मीन को बनाया, उसी ने अपनी हिकमत से जहान को काईम किया और अपनी 'अक्तर से आसमान को तान दिया है। 13 उसकी आवाज से आसमान में पानी की बहातय होती है, और वह ज़मीन की इन्तिहा से बुखारात उठाता है। वह बारिश के लिए बिजली चमकता है और अपने खजानों से हवा चलाता है। 14 हर आदीमी हैवान खसलत और बे — 'इल्म हो गया है; हर एक सुनार अपनी खोटी हुई मूरत से मस्ता है कर्यूँकि उसकी ढाली हुई मूरत बेकार है, उनमें दम नहीं। 15 वह बेकार, फ़ैल — ए — फ़रेब है, सजा के बन्त बर्बाद हो जाएँगी। 16 या 'कूब का हिस्सा उनकी तरह नहीं, कर्यूँकि वह सब चीजों का खालिक है और इसाईल उसकी मीरास का 'असा है; बूबउल — अफवाज उसका नाम है। 17 ऐ धिराव में रहने वाली, ज़मीन पर से अपनी गढ़ी उठा लो! 18 कर्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमाता है: “देख, मैं इस मुल्क के बाशिन्दों को अब की बार जैसे फलाखन में रख कर फ़ैल दूँगा, और उनको ऐसा तंग करूँगा कि जान लो।” 19 हाय मेरी खस्तारी! मेरा ज़रूम दर्दनाक है और मैंने समझ लिया, यकीनन सुझे

यह दुख बरदाशत करना है। 20 मेरा खेमा बबाद किया गया, और मेरी सब तनावें तोड़ दी गई, मेरे बच्चे मेरे पास से चले गए, और वह हैं नहीं, अब कोई न रहा जो मेरा खेमा खड़ा करे और मेरे पर्दे लगाए। 21 क्यूँकि चरवाहे हैवान बन गए, और खुदावन्द के तालिब न हुए, इसलिए वह कामयाब न हुए और उनके सब गल्ले तितर — बितर हो गए। 22 देख, उत्तर के मूल्क से बड़े गौंगा और हंगमे की आवाज़ आती है ताकि यहदाह के शहरों को उजाड़ कर गीड़ों का घर बनाए। 23 ऐ खुदावन्द, मैं जानता हूँ कि इंसान की राह उसके इश्तियाब में नहीं; इंसान अपने चाल चलन में अपने कदमों की रहनुमाई नहीं कर सकता। 24 ऐ खुदावन्द, मुझे हिंदात कर लेकिन अन्दरों से; अपने कहर से नहीं, न हो कि तू मुझे हलाक कर दे। 25 ऐ खुदावन्द, उन क्रौमों पर जो तुझे नहीं जानती, और उन घरानों पर जो तेरा नाम नहीं ले रहे, अपना कहर उँडेल दे; क्यूँकि वह याकूब को खा गए, वह उसे निगल गए और चट कर गए, और उसके घर को उजाड़ दिया।

11 यह वह कलाम है जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ, और उसने फरमाया, 2 कि "तुम इस 'अहद' की बातें सुनो, और बनी यहदाह और येस्शलेम के बाशिन्दों से बायान करो; 3 और तू उनसे कह, खुदावन्द, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि लान्नत उस इंसान पर जो इस 'अहद' की बातें नहीं सुनता। 4 जो मैंने तुम्हारे बाप — दादा से उस वक्त फरमाई, जब मैं उनको मूल्क — ए — मिस से लोहे के तनू से, यह कह कर निकाल लाया कि तुम मेरी आवाज़ की फरमाँबरदारी करो, और जो कुछ मैंने तुम को हक्म दिया है उस पर 'अमल करो, तो तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा'; 5 ताकि मैं उस कसम को जो मैंने तुम्हारे बाप — दादा से खाई कि मैं उनको ऐसा मूल्क दूँगा जिसमें दूध और शहद बहता हो, जैसा कि आज के दिन है, पूरा करूँ।" तब मैंने जबाब में कहा, ऐ खुदावन्द, आमीन। 6 फिर खुदावन्द ने मुझे फरमाया, यहदाह के शहरों और येस्शलेम के कूचों में इन सब बातों का 'ऐलान कर और कह: इस 'अहद' की बातें सुनो और उन पर 'अमल करो। 7 क्यूँकि मैं तुम्हारे बाप — दादा को जिस दिन से मूल्क — ए — मिस से निकाल लाया, आज तक ताकीद करता और वक्त पर जताता और कहता रहा कि मेरी सनो। 8 लेकिन उन्होंने कान न लगाया और शिनावा न हुए बल्कि हर एक ने अपने बुरे दिल की सख्ती की पैरवी की; इसलिए मैंने इस 'अहद' की सब बातें, जिन पर 'अमल करने का उनको हक्म दिया था और उन्होंने न किया, उन पर पूरी की। 9 तब खुदावन्द ने मुझे फरमाया, यहदाह के लोगों और येस्शलेम के बाशिन्दों में साजिश पाई जाती है। 10 वह अपने बाप — दादा की तरफ जिन्होंने मेरी बातें सुनने से इन्कार किया, फिर गए और गैर मांबूदों के पैरों होकर उनकी बाबात की, इसाईल के घराने और यहदाह के घराने ने उस 'अहद' को जो मैंने उनके बाप — दादा से किया था तोड़ दिया। 11 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि देख, मैं उन पर ऐसी बला लाँग़ा जिससे वह भाग न सकेंगे, और वह मुझे पुकारेंगे पर मैं उनकी न सुनूँगा। 12 तब यहदाह के शहर और येस्शलेम के बाशिन्दे जाएँगे और उन मांबूदों को जिनके आगे वह खुशबू जलाते हैं पुकारेंगे, लेकिन वह मुसीबत के वक्त उनको हरगिज न बचाएँगे। 13 क्यूँकि ऐ यहदाह, जितने तेरे शहर हैं उतने ही तेरे मांबूद हैं, और जितने येस्शलेम के कूचे हैं उतने ही तुम ने उस स्वाई की वजह के लिए मजबहे बनाए, यानी बाल के लिए खुशबू जलाने की कुर्बानगाहें। 14 "इसलिए तू इन लोगों के लिए दुआ न कर और न इनके लिए अपनी आवाज़ बलन्द कर और न मिन्नत कर, क्यूँकि जब वह अपनी मुसीबत में मुझे पुकारेंगे मैं इनकी न सुनूँगा। 15 मेरे घर में मेरी महबूबा को क्या काम जब कि वह बहुत ज्यादा शरारत कर चुकी? क्या मन्तन और पाक गोश्त तेरी शरारत को दूर करेंगे? क्या तू

इनके जरिए' से रिहाई पाएँगी? तू शरारत करके खुश होती है। 16 खुदावन्द ने खुशमेवा हरा जैतून, तेरा नाम रखा; उसने बड़े हंगामे की आवाज होते होते ही उसे आग लगा दी और उसकी डालियाँ तोड़ दी गईं। 17 क्यूँकि रब्ब — उल — अफवाज ने जिसने तुझे लगाया, तुझ पर बला का हक्म किया, उस बदी की वजह से जो इमाईल के घराने और यहदाह के घराने ने अपने हक्म में की कि बाल के लिए खुशबू जला कर मुझे गजबनाक किया।" 18 खुदावन्द ने मुझ पर जाहिर किया और मैं जान गया, तब तो मुझे उनके काम दिखाए। 19 लेकिन मैं उस पालत बर्बे की तरह था, जिसे जबह करने को ले जाते हैं; और मुझे मालूम न था कि उन्होंने मैं खिलाफ मंसूबे बैधे हैं कि आओ, दरखत को उसके फल के साथ हलाक करें और उसे जिन्दों की जरीन से काट डालें, ताकि उसके नाम का ज़िक्र तक बाकी न रहे। 20 ऐ रब्बउल — अफवाज, जो सदाकत से 'अदालत करता है, जो दिल — ओ — दिमाग को ज़ीचता है, उनसे इन्तकाम लेकर मुझे कर्मूक मैंने अपना दावा तुझ ही पर जाहिर किया। 21 इसलिए खुदावन्द फरमाता है, अन्तोत के लोगों के बारे में, जो यह कहकर तेरी जान के तलबगार हैं कि खुदावन्द का नाम लेकर नबुवत न कर, ताकि तू हमारे हाथ से न मारा जाए। 22 रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि "देख, मैं उनको सजा दूँगा, जवान तलबार से मारे जाएँगे, उनके बेटे — बेटियाँ काल से मरेंगे; 23 और उनमें से कोई बाकी न रहेगा। क्यूँकि मैं 'अन्तोत के लोगों पर उनकी सजा के साल में आफत लाऊँगा।"

12 ऐ खुदावन्द अगर मैं तेरे साथ बहस करूँ तो तू ही सच्चा ठरेगा; तो भी मैं तुझ से इस अग्र पर बहस करना चाहता हूँ कि शरीर अपने चाल चलन में क्यूँ कामयाब होते हैं? सब दागाबाज़ क्यूँ अपार से रहते हैं? 2 तेरे उनको लगाया और उन्होंने जड़ पकड़ ली, वह बढ़ गए बल्कि कामयाब हुए; तू उनके मुँह से नज़दीक पर उनके दिलों से दूर है। 3 लेकिन ऐ खुदावन्द, तू मुझे जानता है, तू मेरे दिल को जो तेरी तरफ है आज़माया है, तू उनको भेड़ों की तरह जबह होने के लिए खीच कर निकाल और कल्ले के दिन के लिए उनको माझसूस कर। 4 अहल — ए — ज़मीन की शरारत से ज़मीन कब तक मातम करे, और तमाम मूल्क की रोएदरी पज़मूदी हो? चरिन्दे और परिन्दे हलाक हो गए, क्यूँकि उन्होंने कहा, वह हमारा अंजाम न देखेगा। 5 'अगर तू यादों के साथ दौड़ा और उन्होंने तुझे थका दिया, तो फिर तुझ में यह ताब कहाँ कि सबारों की बाबाकी करे? तू सलामती की सरज़मीन में तो बे — खौफ है, लेकिन यरदान के ज़ंगल में क्या करेगा? 6 क्यूँकि तेरे भाइयों और तेरे बाप के घराने में भी तेरे साथ बेवफाई की है; हाँ, उन्होंने बड़ी आवाज़ से तेरे पीछे ललकारा, उन पर भरोसा न कर, अगरचे वह तुझ से मीठी मीठी बातें करें। 7 मैंने अपने लोगों को छोड़ दिया, मैंने अपनी मीरास को रक्ख जरा दिया, मैंने अपने दिल की महबूबा को उसके दुश्मनों के हवाले किया। 8 मेरी मीरास मेरे लिए ज़ंगली शेर बन गई, उसने मेरे खिलाफ अपनी आवाज़ बलन्द की; इसलिए मुझे उसने नफरत है। 9 क्या मेरी मीरास मेरे लिए अबलक्ष शिकारी परिन्दा है? क्या शिकारी परिन्दे उसको चारों तरफ धेर हैं? आओ, सब ज़ंगली जानरों को ज़मा करो; उनको लाज़ों कि वह खा जाएँ। 10 बहुत से चरवाहों ने मेरे ताकिस्तान को खारब किया, उन्होंने मेरे हिस्से को पामाल किया, मेरे दिल पसन्द हिस्से को उजाड़ कर वीरान बना दिया। 11 उन्होंने उसे वीरान किया, वह वीरान होकर मुझसे फरयादी है। सारी ज़मीन वीरान हो गई तो भी कोई इसे खातिर में नहीं लाता, 12 वीराने के सब पहाड़ों पर गारतगर आ गए हैं; क्यूँकि खुदावन्द की तलबार मूल्क के एक सिरे से दूसरे सिरे तक निगल जाती है और किसी बशर को सलामती नहीं। 13 उन्होंने गेहूँ बोया, लेकिन कौटै जमा' किये उन्होंने मशक्कत खीची लेकिन फायदा न उठाया; खुदावन्द के बहुत गुस्से की

वजह से अपने अंजाम से शर्मिन्दा हो। 14 मेरे सब शरीर पड़ोसियों के खिलाफ खुदावन्द यूँ फरमात है, देख, जिन्होंने उस मीरास को छुआ जिसका मैने अपनी कौम इसाईल को वारिस किया, मैं उनको उनकी सरजमीन से उखाड़ डालूँगा और यहदाह के घराने को उनके बीच से निकाल फेकँगा। 15 और इसके बाद कि मैं उनको उखाड़ डालूँगा, यूँ होगा कि मैं पिर उन पर रहम करूँगा और हर एक को उसकी मीरास में और हर एक को उसकी जमीन में पिर लाऊँगा; 16 और यूँ होगा कि अगर वह दिल लगा कर मेरे लोगों के तरीके सिखिंगे, कि मेरे नाम की कसम खाएँ कि खुदावन्द जिन्हाँ हैं। जैसा कि उन्होंने मेरे लोगों को सिखाया कि बाल की कसम खाएँ तो वह मेरे लोगों में शामिल होकर काईंगा हो जाएँगे। 17 लेकिन अगर वह शर्मिदा न होंगे, तो मैं उस कौम को बिल्कुल उखाड़ डालूँगा और हलाक — ओ — बर्बाद कर दूँगा खुदावन्द फरमाता है।

13 खुदावन्द ने मुझे यूँ फरमाया कि “तू जाकर अपने लिए एक कतानी

कमरबन्द खरीद ले और अपनी कमर पर बाँध, लेकिन उसे पानी में मर भिगो।” 2 तब मैने खुदावन्द के कलाम के मुवाफिक एक कमरबन्द खरीद लिया और अपनी कमर पर बाँधा। 3 और खुदावन्द का कलाम दोबारा मुझ पर नाजिल हुआ और उसने फरमाया, 4 कि “इस कमरबन्द को जो तू तो खरीदा और जो तेरी कमर पर है, लेकर उठ और फरात को जा और वहाँ चट्ठान के एक शिगाफ में उसे छिपा दे।” 5 चुनाँचे मैं गया और उसे फरात के किनारे छिपा दिया, जैसा खुदावन्द ने मुझे फरमाया था। 6 और बहुत दिनों के बाद यूँ हुआ कि खुदावन्द ने मुझे फरमाया, कि उठ, फरात की तरफ जा और उस कमरबन्द को जिसे नूटे मेरे हृकम से बहाँ छिपा रखवा है, निकाल ले। 7 तब मैं फरात को गया और खोदा और कमरबन्द को उस जगह से जहाँ मैंने उसे गाड़ दिया था, निकाला और देख, वह कमरबन्द ऐसा खराब हो गया था कि किसी काम का न रहा। 8 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 9 कि “खुदावन्द यूँ फरमाता है कि इसी तरह मैं यहदाह के गुस्त और येस्शलेम के बड़े गुस्त को तोड़ दूँगा। 10 यह शरीर लोग जो मेरा कलाम सुनने से इन्कार करते हैं और अपने ही दिल की सरङ्गी के पैरी होते, और मार्मांबदों के तालिब होकर उनकी इबादत करते और उनको पूजते हैं, वह इस कमरबन्द की तरह होंगे जो किसी काम का नहीं। 11 क्यूँकि जैसा कमरबन्द इंसान की कमर से लिपिटा रहता है वैसा ही, खुदावन्द फरमाता है, मैंने इसाईल के तमाम घराने और यहदाह के तमाम घराने को लिया कि मुझसे लिपें रहें, ताकि वह मेरे लोग हों और उनकी वजह से मेरा नाम हो, और मेरी सिताइश की जाए और मेरा जलाल हो; लेकिन उन्होंने न सुना। 12 तब त उनसे ये बात भी कह दें कि खुदावन्द, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि ‘हर एक मटके में मय भरी जाएँगी।’ और वह तुझ से कहोगे, ‘क्या हम नहीं जानते कि हर एक मटके में मय भरी जाएँगी?’ 13 तब त उनसे कहना, ‘खुदावन्द यूँ फरमाता है कि देखो, मैं इस मुल्क के सब बाशिन्दों को, हाँ, उन बादशाहों को जो दाऊद के तख्त पर बैठते हैं, और कहिनों और नवियों और येस्शलेम के सब बाशिन्दों को मस्ती से भर दूँगा। 14 और मैं उनको एक दूसरे पर, यहाँ तक कि बाप को बेटों पर दे मास्ता, खुदावन्द फरमाता है, मैं न शफकत करूँगा, न रि’आयत और न रहम करूँगा कि उनको हलाक न कहूँ। 15 सुनो और कान लगाओ, गुस्त न करो, क्यूँकि खुदावन्द ने फरमाया है। 16 खुदावन्द अपने खुदा की तम्जीद करो, इससे पहले के वह तारीकी लाए और तुम्हारे पाँव गहरे अन्धेरे में ठोकर खाएँ; और जब तुम रोशनी का इन्तिजार करो, तो वह उसे मौत के साथे से बदल डाले और उसे सरक्त तारीकी बना दे। 17 लेकिन अगर तुम न सुनोगे, तो मेरी जान तुम्हारे गुस्त की वजह से खिल्वतखानों में गम खाया करेगी, हाँ, मेरी आँखें फूट फूटकर रोएँगी और अँसू बहाएँगी, क्यूँकि खुदावन्द का गल्ला गुलामी में चला गया। 18

बादशाह और उसकी वालिदा से कह, “आजिजी करो और नीचे बैठो, क्यूँकि तुम्हारी बुजु़गी का ताज तुम्हारे सिर पर से उतार लिया गया है। 19 दखिन के शहर बन्द हो गए और कोई नहीं खोलता, सब बनी यहदाह गुलाम हो गए; सबको गुलाम करके ले गए। 20 ‘अपनी आँखें उठा और उनको जो उत्तर से आते हैं, देख। वह गल्ला जो तुझे दिया गया था, तेरा खुशनुमा गल्ला कहाँ है? 21 जब वह तुझ पर उनको मुकर्रर करेगा जिनको तूने अपनी हिमायत की तालीम दी है, तो तु क्या कहेंगी? क्या तु उस ‘ओरत की तरह जिसे पैदाइश का दर्द हो, दर्द में मुबिलिया न होगी? 22 और अगर तु अपने दिल में कहे कि यह हादसे मुझ पर क्यूँ गुज़रे? तेरी बदकिरदारी की शिद्धत से तेरा दामन उठाया गया और तेरी एड़ियाँ जबरन बरहना की गई। 23 हब्शी अपने चमड़े को या चीता अपने दागों को बदल सके, तो तुम भी जो बदी के ‘आदी हो नेकी कर सकोगे। 24 इसलिए मैं उनको उस भूमे की तरह जो वीराने की हवा से उड़ता फिरता है, तितर — बितर करूँगा। 25 खुदावन्द फरमाता है कि मेरी तरफ से यही तेरा हिस्सा, तेरा नपा हुआ हिस्सा है; क्यूँकि तूने मुझे फरमायो करके बेकारी पर भरोसा किया है। 26 फिर मैं भी तेरा दामन तेरे सामने से उठा दूँगा, ताकि तू बेर्दा हो। 27 मैंने तेरी बदकारी, तेरा हिनहिनाम, तेरी हरामकारी और तेरे नफरतअंगेज काम जो तूने पहाड़ों पर और मैदानों में किए, देखे हैं। ऐ येस्शलेम, तुझ पर अफसोस! तू अपने आपको कब तक पाक — ओ — साफ न करेगी?

14 खुदावन्द का कलाम जो खुशकाली के बारे में यरमियाह पर नाजिल

हुआ 2 “यहदाह मातम करता है और उसके फाटकों पर उदासी छाई है, वह मातमी लिवास में खाका पर बैठते हैं; और येस्शलेम का नाला बलन्द हुआ है। 3 उनके हाकिम अपने अदना लोगों को पानी के लिए भेजते हैं; वह चरमों तक जाते हैं पर पानी नहीं पाते, और खाली घड़े लिए लौट आते हैं, वह शर्मिन्दा — ओ — परेमान होकर अपने सिर ढाँपते हैं। 4 क्यूँकि मुल्क में बारिश न हुई, इसलिए जमीन फट गई और किसान सरारीमा हुए, वह अपने सिर छिपते हैं। 5 चुनाँचे हिरनी मैदान में बच्चा टेकर उसे छोड़ देती है क्यूँकि घास नहीं मिलती। 6 और गोरखर ऊँची जगहों पर खड़े होकर गीदड़ों की तरह हाँफते हैं उनकी आँखे रह जाती हैं, क्यूँकि घास नहीं है। 7 अगर ये हमारी बदकिरदारी हम पर गवाही देती है, तो भी ऐ खुदावन्द अपने नाम की खातिर कुछ कर; क्यूँकि हमारी नाफ़रामानी बहत है, हम तेरे खताकर हैं। 8 ऐ इसाईल की उम्मीद, मुसीबत के बक्त उसके बचानेवाले, तू क्यूँ मुल्क में परदेसी की तरह बना, और उस मुसाफिर की तरह जो रात काटने के लिए डेरा डालते? 9 तू क्यूँ इंसान की तरह हक्का — बक्का है, और उस बहादुर की तरह जो रिहाई नहीं दे सकता? बहर — हाल, ऐ खुदावन्द, तू तो हमारे बीच है और हम तेरे नाम से कहलते हैं; तू हमको मठ छोड़।” 10 खुदावन्द इन लोगों से यूँ फरमाता है कि “इहोंने गुरामाही को यूँ दोस्त रख्खा है और अपने पाँव को नहीं रोका, इसलिए खुदावन्द इनको कुबल नहीं करता; अब वह इनकी बदकिरदारी याद करेगा और इनके गुनाह की सजा देगा।” 11 और खुदावन्द ने मुझे फरमाया, इन लोगों के लिए दूँआ — ए — खेर न कर। 12 क्यूँकि जब यह रोजा रखवें तो मैं इनकी फरियाद न सुरँगा और जब सोखली कुबली और हदिया पेश करें तो कुबल न करूँगा, बल्कि मैं तलवार और काल और बवा से इनको हलाक करूँगा। 13 तब मैंने कहा, ‘आह, ऐ खुदावन्द खुदा, देख, अम्बिया उनसे कहते हैं, तुम तलवार न देखोगे, और तुम में काल न पड़ेगा; बल्कि मैं इस मकाम में तुम को हकीकी सलामती बख्खूँगा। 14 तब खुदावन्द ने मुझे फरमाया कि अम्बिया मेरा नाम लेकर झटी नवृत्त करते हैं, मैंने उनको भेजा और न हक्कम दिया और न उनसे कलाम किया, वह झटा खबाब और झटा इल्म — ए —

गैब और बतालत और अपने दिलों की मक्कारी, नबुव्वत की सूत में तुम पर ज़ाहिर करते हैं। 15 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि वह नवी जिनको मैंने नहीं भेजा, जो मेरा नाम लेकर नबुव्वत करते और कहते हैं कि तलवार और काल इस मुल्क में न आएँगे, वह तलवार और काल ही से हलाक होंगे। 16 और जिन लोगों से वह नबुव्वत करते हैं, तो काल और तलवार की वजह से येस्शलेम के गलियों में फेंक दिए जाएँगे; उनको और उनकी बीवियों और उनके बेटों और उनकी बेटियों को दफन करने वाला कोई न होगा। मैं उनकी बुराई उन पर उँडेल दूँगा। 17 “और त उनसे यूँ कहना: ‘मेरी आँखें रात दिन अँसू बहाएँ और हगिज़ न थर्में, क्यूँकि मेरी कुँवारी दुखार — ए — कौम ख्वशती और जर्ब — ए — शदीद से शिकस्त है। 18 अगर मैं बाहर मैदान में जाऊँ, तो वहाँ तलवार के मक्तूल हैं; और अगर मैं शहर में दाखिल होऊँ, तो वहाँ काल के मारे हैं। हाँ, नवी और काहिन दोनों एक ऐसे मुल्क को जाएँगे, जिसे वह नहीं जानते।” 19 क्या तने यहदाह को बिल्कुल रद्द कर दिया? क्या तेरी जान को सिय्यून से नफरत है? तूने हमको क्यूँ मारा और हमारे लिए शिफा नहीं? सलामती का इन्तिजार था, लेकिन कुछ फायदा न हुआ; और शिफा के बक्त का, लेकिन देखो, दहशत! 20 ऐ खुदावन्द, हम अपनी शरारत और अपने बाप — दादा की बदकिरदारी का इकरार करते हैं, क्यूँकि हम ने तेरा गुनाह किया है। 21 अपने नाम की खातिर रद्द न कर, और अपने जलाल के तख्त की तहकीर न कर; याद फरमा और हम से रिशत — ए — ‘अहद को न तोड़। 22 क्रौमों के बुरों में कोई है जो मैं हम बरसा सके? या आसमान बरिश पर कादिर हैं? ऐ खुदावन्द हमारे खुदा, क्या वह तू ही नहीं है? इसलिए हम तुझ ही पर उम्मीद रख रहेंगे, क्यूँकि तू ही ने यह सब काम किए हैं।

15 तब खुदावन्द ने मुझे फरमाया कि अगरचे मूसा और समुएल मेरे सामने खड़े होते तो मेरा दिल इन लोगों की तरफ मुतवज्जिह न होता। इनको मेरे सामने से निकाल दे कि चले जाएँ। 2 और जब वह तुझसे कहें कि ‘हम किधर जाएँ’ त उनसे कहना कि ‘खुदावन्द यूँ फरमाता है कि जो मौत के लिए है वह मौत की तरफ जाएँ, और जो तलवार के लिए है वह तलवार की तरफ, और जो काल के लिए है वह काल को, और जो गुलामी के लिए है वह गुलामी में। 3 और मैं चार चीज़ों को उन पर मुसल्लत करूँगा, खुदावन्द फरमात है: तलवार को कि कत्तल करे, और कुर्तों को कि फांड डालें, और आसमानी परिन्दों को, और ज़मीन के दरिन्दों को कि निगल जाएँ और हलाक करें। 4 और मैं उनको शाह — ए — यहदाह मनस्सी — बिन — हिजकियाह की वजह से, उस काम के ज़रिये’ जो उनसे येस्शलेम में किया, छोड़ दूँगा कि ज़मीन की सब ममलुकतों में धक्के खाते फिरें। 5 “अब ऐ येस्शलेम, कौन तुझ पर रहम करेगा? कौन तेरा हमर्द होगा? या कौन तेरी तरफ आएगा कि तेरी खेर — ओ — ‘अफियत पछे?’ 6 खुदावन्द फरमात है, तूने मुझे छोड़ दिया और नाफ़रमान हो गई, इसलिए मैं तुझ पर अपना हाथ बढ़ाऊँगा और तुझे बर्बाद करूँगा, मैं तो तरस खाते खाते तंग आ गया। 7 और मैंने उनको मुल्क के फाटकों पर छाज से फटका, मैंने उनके बच्चे छीन लिए, मैंने अपने लोगों को हलाक किया, क्यूँकि वह अपनी राहों से न फिरे। 8 उनकी बेवाँ मैं आगे समन्दर की रट से ज़यादा हो गईँ, मैंने दोपहर के बक्त जवानों की माँ पर गारतगर को मुसल्लत किया; मैंने उस पर अचानक ऐज़ाब — ओ — दहशत को डाल दिया। 9 सात बच्चों की बालिदा निदाल हो गईँ, उसने जान दे दी; दिन ही को उसका सरज झूब गया, वह पशेमान और शमिदा हो गई है; खुदावन्द फरमात है, मैं उनके बाकी लोगों को उनके दुश्मनों के आगे तलवार के हवाले करूँगा।” 10 ऐ मेरी माँ, मुझ पर अफ़सोस कि मैं तुझ से तमाम दुनिया कि लिए लड़का आदमी और झगड़ालू शख्स पैदा हुआ! मैंने तो न सुद पर कर्ज़ दिया

और न कर्ज़ लिया, तो भी उनमें से हर एक मुझ पर लान न करता है। 11 खुदावन्द ने फरमाया, यकीन मैं तुझे ताकत बख़ूबा कि तेरी खेर हो; यकीन मैं मुसीबत और तंगी के बक्त दुश्मनों से तेरे सामने इलितजा कराऊँगा। 12 क्या कोई लोहे को यारी उत्तरी फौलाद और पीतल को तोड़ सकता है? 13 ‘तेरे माल और तेरे खजानों को मुफ़्त लुटवा दूँगा, और यह तेरे सब गुनाहों की वजह से तेरी तमाम सरहदों में होगा। 14 और मैं तुझ को तेरे दुश्मनों के साथ ऐसे मुल्क मैं ले जाऊँगा जिसे तू नहीं जानता, क्यूँकि मेरे गज़ब की आग भड़केगी और तुम को जलाएगी। 15 ऐ खुदावन्द, तू जानता है; मुझे याद फरमा और मुझ पर शफ़कत कर, और मेरे सतानेवालों से मेरा इन्तकाम ले। तू बर्दीश्त करते — करते मुझे न उठा ले, जान रख कि मैंने तेरी खातिर मलामत उठाई है। 16 तेरा कलाम मिला और मैंने उसे नोश किया, और तेरी बातें मेरे दिल की खुशी और खुर्मी थी; क्यूँकि ऐ खुदावन्द, रब्ब — उल — अफ़वाज मैं तेरे नाम से कहलाता हूँ। 17 न मैं खुशी माननेवालों की महफिल मैं बैठा और न खुश हुआ, तेरे हाथ की वजह से मैं तन्हाँ बैठा, क्यूँकि तूने मुझे कहर — से — लबरेज कर दिया है। 18 मेरा दर्द क्यूँ हमेशा का और मेरा ज़ज्ब व्यूँला — ‘इलाज है कि सिहत पज़ीर नहीं होता? क्या तू मेरे लिए सरासर धोके की नदी के जैसा हो गया है, उस पानी की तरह जिसको क्याम नहीं? 19 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि अगर तू बाज़ आये तो मैं तुझे फेर लाऊँगा और तू मेरे सामने खड़ा होगा। और अगर तू लतीफ को कम्फीफ से जुदा करे, तो तू मेरे मँहूँ की तरह होगा। वह तेरी तरफ़ फिरें, लेकिन तू उनकी तरफ़ न फिरना। 20 और मैं तुझे इन लोगों के सामने पीतल की मज़बूत दीवार ठहराऊँगा; और यह तुझ से लड़ेंगे लेकिन तुझ पर गालिब न आएँगे, क्यूँकि खुदावन्द फरमाता है मैं तेरे साथ हूँ कि तेरी हिफ़ाज़त करूँ और तुझे रिहाई दूँ। 21 हाँ, मैं तुझे शरीरों के हाथ से रिहाई दूँगा।

16 खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ, और उसने फरमाया, 2 तू बीवि न करना, इस जगह तेरे यहाँ बैठे — बेटियों न हों। 3 क्यूँकि खुदावन्द उन बेटों और बेटियों के बारे में जो इस जगह पैदा हुए हैं, और उनकी माँओं के बारे में जिहोने उनको पैदा किया, और उनके बापों के बारे में जिनसे वह पैदा हुए, यूँ फरमाता है: 4 कि वह बुरी मौत मरेंगे, न उन पर कोई मातम करेगा और न वह दफ़न किए जाएँगे, वह सतह — ए — ज़मीन पर खाद की तरह होंगे; वह तलवार और काल से हलाक होंगे और उनकी लाशें हवा के परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की खुराक होंगी। 5 ‘इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तू मातम वाले घर में दाखिल न हो, और न उन पर रोने के लिए जा, न उन पर मातम कर; क्यूँकि खुदावन्द फरमाता है कि मैंने अपनी सलामती और शफ़कत — ओ — रहमत को इन लोगों पर से उठा लिया है। 6 और इस मुल्क के छोटे बड़े सब मार जाएँगे; न वह दफ़न किए जाएँगे, न लोग उन पर मातम करेंगे, और न कोई उनके लिए ज़ख्मी होगा, न सिर मुण्डाएगा; 7 न लोग मातम करनेवालों को खाना खिलाएँगे, ताकि उनको मुर्दों के बारे में तसल्ली दें; और न उनकी दिलदारी का खिलाफ़ लोगों देंगे कि वह अपने माँ — बाप के गम में पिएँ। 8 और तू ज़ियाफ़त वाले घर में दाखिल न होना कि उनके साथ बैठकर खाएंगे। 9 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि देख, मैं इस जगह से तुम्हारे देखते हुए और तुम्हारे ही दिनों में खुशी और शादमानी की आवाज दुर्ल्ह हो जाएँगी, और दुर्लहन की आवाज खत्म कराऊँगा। 10 “और जब तू यह सब बातें इन लोगों पर ज़ाहिर करे और वह तुझ से पछे कि ‘खुदावन्द ने क्यूँ यह सब बुरी बातें हमारे खिलाफ़ कही? हमने खुदा के लिए दिलदारी की आदमी और झगड़ालू शख्स पैदा हुआ! मैंने तो न सुद पर कर्ज़ दिया, और ज़ालिमों के पंजे से तुझे छुड़ाऊँगा।

‘गैरमा’बूदों के तालिब हुए और उनकी इबादत और परस्तिश की, और मुझे छोड़ दिया और मेरी शरीरी अत पर ‘अमल नहीं किया; 12 और तमने अपने बाप — दादा से बढ़कर बुराई की; क्यूंकि देखो, तुम में से हर एक अपने बुरे दिन की सख्ती की पैरवी करता है कि मेरी न सुने, 13 इसलिए मैं तुमको इस मुल्क से खारिज करके ऐसे मुल्क में आवारा करूँगा, जिसे न तुम और न तुम्हारे बाप — दादा जानते थे; और वहाँ तुम रात दिन गैर मांबूदों की इबादत करोगे, क्यूंकि मैं तुम पर रहन म करूँगा। 14 लैकिन देख, खुदावन्द फरमात है, वह दिन आते हैं कि लोग कभी न कहेंगे कि जिन्दा खुदावन्द की कसम जो बनी — इश्वार्ल को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया; 15 बल्कि जिन्दा खुदावन्द की कसम जो बनी — इश्वार्ल को उत्तर की सरजमीन से और उन सब ममलकतों से, जहाँ — जहाँ उसने उनको हाँक दिया था, निकाल लाया; और मैं उनको फिर उस मुल्क में लाऊँगा जो मैंने उनके बाप — दादा को दिया था। 16 आनेवाली सज्जा ‘खुदावन्द फरमाता है: देख बहत से माहीगिरों को बुलवाऊँगा और वह उनको शिकार करेंगे, और फिर मैं बहुत से शिकारियों को बुलवाऊँगा और वह हर पहाड़ से और हर टीले से और चट्टानों के शिगाफों से उनको पकड़ निकालेंगे। 17 क्यूंकि मेरी आँखें उनके सब चाल चलन पर लगी हैं, वह मुझसे छिपी नहीं हैं और उनकी बदकिरदारी मेरी आँखों से छिपी नहीं। 18 और मैं पहले उनकी बदकिरदारी और खताकारी की दूरी सज्जा टूँगा क्यूंकि उन्होंने मेरी सरजमीन को अपनी मकस्त्ह चीजों की लाशों से नापाक किया और मेरी मीरास को अपनी मक्स्त्हता से भर दिया है। 19 यरमियाह की दुआ ऐ खुदावन्द, मेरी कृत्वत और मेरे गढ़ और मुसीबत के दिन मैं मेरी पनाहगाह, दुनिया कि किनारों से कौमें तेरे पास आकर कहेंगी कि “हकीकत मैं हमारे बाप — दादा ने महज झूट की मीरास हासिल की, यानी बेकार और बेस्तु चीजें। 20 क्या इसान पर अपने लिए मांबूद बनाए जो खुदा नहीं हैं!” 21 “इसलिए देख, मैं इस मतबा उनको आगाह करूँगा; मैं अपने हाथ और अपना जोर उनको दिखाऊँगा, और वह जानेंगे कि मेरा नाम यहोवा है।”

17 “यहदाह का गुमाह लोहे के कलम और हीरी की नोक से लिखा गया है;

उनके दिल की तरकी पर, और उनके मजबहों के सीधों पर खुदावया गया है; 2 क्यूंकि उनके बेटे अपने मजबहों और यसीरों को याद करते हैं, जो हरे दरख्तों के पास ऊँचे पहाड़ों पर हैं। 3 ऐ मेरे पहाड़, जो मैदान मैं हैं, मैं तेरा माल और तेरे सब खजाने और तेरे ऊँचे मकाम जिनको तेरे अपनी तामाम सरहदों पर गुमाह के लिए बनाया, लटाऊँगा। 4 और तू अज्ञखुद उस मीरास से जो मैंने तुझे दी, अपने कुम्हर की बजह से हाथ उठाएँगा, और मैं उस मुल्क में जिसे तू नहीं जानता, तुझ से तेरे दुश्मनों की खिदमत कराऊँगा; क्यूंकि तुमने मेरे कहर की आग भड़का दी है जो हमेसा तक जलती रहेगी।” 5 खुदावन्द यूँ फरमाता है: मला’उन है वह आदमी जो इसान पर भरोसा करता है, और बशर को अपना बाजू जानता है, और जिसका दिल खुदावन्द से फिर जाता है। 6 क्यूंकि वह रत्मा की तरह, हमेसा जो वीराने मैं हैं और कभी भलाई न देखेगा; बल्कि वीराने की बे पानी जाहां में और गैर — आबाद जामीन — ए — शार मैं हेहांग। 7 “मुबारक है वह आदमी जो खुदावन्द पर भरोसा करता है, और जिसकी उम्मीदाह खुदावन्द है। 8 क्यूंकि वह उस दरखत की तरह होगा जो पानी के पास लगाया जाए, और अपनी जड़ दरिया की तरफ फैलाएँ, और जब गमी आए तो उसे कछु खतरा न हो बल्कि उसके पते होरे रहें, और खुशकसाली का उसे कुछ खौफ न हो, और फल लाने से बाज़ न रहे।” 9 दिल सब चीजों से ज्यादा हीलाबाज और लालालाज है, उसको कौन दरियाफ़त कर सकता है? 10 “मैं खुदावन्द दिल — ओ — दिमाग को जाँचता और आजमाता हूँ, ताकि हर एक आदमी को उसकी चाल के मुवाफ़िक और उसके कामों के फल के

मुताबिक बदला दूँ।” 11 बेइन्साफ़ी से दौलत हासिल करनेवाला, उस तीर की तरह है जो किनी दूसरे के अंडों पर बैठे; वह आवी उम्र मैं उसे खो भैठेगा और आखिर को बेवकूफ ठहरेगा। 12 हमारे हैकल का मकान इन्विटा ही से मुकर्रर किया हुआ जलाती तख्त है। 13 ऐ खुदावन्द, इश्वाईल की उम्मीदाह, तुझको छोड़ने वाले सब शर्मिन्दा होंगे; मुझको छोड़ने वाले खाक मैं मिल जाएँगे, क्यूंकि उन्होंने खुदावन्द को, जो आब — ए — हयात का चश्मा है छोड़ दिया। 14 ऐ खुदावन्द, तू मुझे शिका बरखे तो मैं शिका पाऊँगा; तू ही बचा ए तो बचूँगा, क्यूंकि तू मेरा फरख है। 15 देख, वह मुझे कहते हैं, खुदावन्द का कलाम कहाँ है? अब नाजिल हो। 16 मैंने तो तेरी पैरी में गड़रिया बनने से इन्कार नहीं किया, और मुसीबत के दिन की आरज़ू नहीं की; तू खुद जानता है कि जो कुछ मैं लबों से निकला, तेरे सामने था। 17 तू मेरे लिए दहशत की बजह न हो, मुसीबत के दिन तू ही मेरी पनाह है। 18 मुझ पर सितम करने वाले शर्मिन्दा हों, लैकिन मुझे शर्मिन्दा न होने दे; वह हिरासान हों, लैकिन मुझे हिरासान न होने दे; मुसीबत का दिन उन पर ला और उनको शिकस्त पर शिकस्त दे! 19 खुदावन्द ने मुझसे यूँ फरमाया है कि: ‘जा और उस फाटक पर जिससे ‘आम लोग और शाहान — ए — यहदाह अते जाते हैं, बल्कि येस्शलेम के सब फाटकों पर खड़ा हो 20 और उनसे कह दे, ‘ऐ शाहान — ए — यहदाह, और ऐ सब बनी यहदाह, और येस्शलेम के सब बाशिन्दों, जो इन फाटकों मैं से आते जाते हो, खुदावन्द का कलाम सुनो।’ 21 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तुम खबरदार रहो, और सबत के दिन बोझ न उठाओं और येस्शलेम के फाटकों की राह से अन्दर न लाओ; 22 और तुम सबत के दिन बोझ अपने घरों से उठा कर बाहर न ले जाओ, और किनी तरह का काम न करो; बल्कि सबत के दिन को पाक जानो, जैसा मैंने तुम्हारे बाप — दादा को हुक्म दिया था। 23 लैकिन उन्होंने न सुना, न कान लगाया, बल्कि अपनी गर्दन को सख्त किया कि सुनने न हों और तरबियत न पाएँ। 24 “और यूँ होगा कि अगर तुम दिल लगाकर मेरी सुनोगे, खुदावन्द फरमाता है, और सबत के दिन तुम इस शहर के फाटकों के अन्दर बोझ न लाओगे बल्कि सबत के दिन को पाक जानोगे, यहाँ तक कि उसमें कुछ काम न करो; 25 तो इस शहर के फाटकों से दाऊद के जानशीन बादशाह और हाकिम दाखिल होंगे; वह और उनके हाकिम यहदाह के लोग और येस्शलेम के बाशिन्दे, रथों और घोड़ों पर सवार होंगे और यह शहर हमेशा तक आबाद रहेगा। 26 और यहदाह के शहरों और येस्शलेम के ‘इलाके और बिनयामीन की सरजमीन, और मैदान और पहाड़ और दाखिल से सोखतनी कुबानियाँ और जबही और हादिये और लबान लेकर आएँगे, और खुदावन्द के घर मैं शकुणजारी के हादिये लाएँगे। 27 लैकिन अगर तुम मेरी न सुनोगे कि सबत के दिन को पाक जानो, और बोझ उठा कर सबत के दिन येस्शलेम के फाटकों मैं दाखिल होने से बाज़ न रहो; तो मैं उसके फाटकों मैं आग सुलगाऊँगा, जो उसके कस्मों को भस्म कर देगी और हरणिज न बड़ोगी।”

18 खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ: 2 कि “उठ और

कुम्हार के घर जा, और मैं वहाँ अपनी बातें तुझे सुनाऊँगा।” 3 तब मैं कुम्हार के घर गया और क्या देखता हूँ कि वह चाक पर कुछ बना रहा है। 4 उस वक्त वह मिट्टी का बर्तन जो वह बना रहा था, उसके हाथ मैं बिगड़ गया; तब उसने उससे जैसा सुनासिल समझा एक दूसरा बर्तन बना लिया। 5 तब खुदावन्द का यह कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 6 ऐ इश्वाईल के घराने, क्या मैं इस कुम्हार की तरह तुम से सुल्क नहीं कर सकता हूँ? खुदावन्द फरमात है। देखो, जिस तरह मिट्टी कुम्हार के हाथ मैं हैं तुम्ही तरह, ऐ इश्वाईल के घराने, तुम मेरे हाथ मैं हो। 7 अगर किसी वक्त मैं किसी कौप और किसी सल्तनत के हक्क मैं कहँ दूँ कि उसे उत्थाईँ और तोड़ डालूँ और वीरान करूँ, 8 और अगर वह

कौम, जिसके हक्क में मैंने ये कहा, अपनी बुराई से बाज़ आए, तो मैं भी उस बुराई से जो मैंने उस पर लाने का इरादा किया था बाज़ आऊँगा। 9 और फिर, अगर मैं किसी कौम और किसी सल्तनत के बारे में कहूँ कि उसे बनाऊँ और लगाऊँ; 10 और वह मेरी नज़र में बुराई करे और मेरी आवाज़ को न सुने, तो मैं भी उस नेकी से बाज़ रहँगा जो उसके साथ करने को कहा था। 11 और अब त जाकर यहदाह के लोगों और येस्शलेम के बाशिन्दों से कह दे, 'खुदावन्द यैं फरमाता है कि देखो, मैं तुम्हारे लिए मुसीबत तजवीज़ करता हूँ और तुम्हारी मुखालिफ़त में मनस्बा बँधता हूँ। इसलिए अब तुम मैं से हर एक अपने बुरे चाल चलन से बाज़ आए, और अपनी राह और अपने 'आमल को दुस्त करो। 12 लेकिन वह कहेंगे, 'यह तो फुज़ल है, क्यूँकि हम अपने मन्स्बों पर चलेंगे, और हर एक अपने बुरे दिल की सख्ती के मुताबिक 'अमल करेगा। 13 "इसलिए खुदावन्द यैं फरमाता है: दरियाफ़त करो कि कौमों मैं से किसी ने कभी ऐसी बातें सुनी हैं? इथाईल की कँवारी ने बहुत हौलनाक काम किया। 14 क्या लुबनान की बर्फ़ जो छान से मैदान में बहती है, कभी बन्द होगी? क्या वह ठंडा बहता पानी जो दूर से आता है, सख़ जाएगा? 15 लेकिन मैं लोग मुझ को भल गए, और उन्होंने बेकार के लिए खुशबू जलाया; और उसने उनकी राहों में यारी कीदी राहों में उनको गुमराह किया, ताकि वह पागड़ियों में जाएँ और ऐसी राह में जो बानाई न गई। 16 कि वह अपनी सरजीमी की वीरामी और हमेशा की हैरानी और सुस्कार का जरिया' बनाएँ; हर एक जो उधर से गुज़रे दंग होगा और सिर हिलाएगा। 17 मैं उनको दुश्मन के सामने जैसे पूरी हवा से तितर — बितर कर दूँगा; उनकी मुसीबत के बक्त उनको मूँह नहीं, बल्कि पीठ दिखाऊँगा।" 18 तब उन्होंने कहा, आओ, हम यरमियाह की मुखालिफ़त में मंस्बे बांधे, क्यूँकि शरी'अत काहिन से जाती न रहेगी, और न मध्वर युशीर से और न कलाम नवी से। आओ, हम उसे जबान से मारें, और उसकी किसी बात पर तज्जुह न करें। 19 ऐ खुदावन्द, तू मुझ पर तवज्जुह कर और गुज़रो झाइंगड़े बालों की आवाज़ सुन। 20 क्या नेकी के बदले बदी की जाएगी? क्यूँकि उन्होंने मेरी जान के लिए गढ़ा खोदा। याद कर कि मैं तेरे सामने खड़ा हुआ कि उनकी शफ़ा'अत करूँ और तेरा कहर उन पर से टला दूँ। 21 इसलिए उनके बच्चों को काल के हवाले कर, और उनको तलवार की धार के सुरुप कर, उनकी बीवियाँ बौलाद और बेवा हों, और उनके मर्द मरे जाएँ, उनके जबान मैदान — ए — जग में तलवार से कल्ला हों। 22 जब तू अचानक उन पर फौज चढ़ा लाएगा, उनके घरों से मातम की सदा निकले। क्यूँकि उन्होंने मुझे फँसाने को गढ़ा खोदा और मेरे पाँव के लिए फन्दे लगाए। 23 लेकिन ऐ खुदावन्द, तू उनकी सब सज़िशों को जो उन्होंने मेरे कल्ला पर की जानता है। उनकी बदकिरदारी को मृ'अफ़ न कर, और उनके गुनाह को अपनी नज़र से दूर न कर; बल्कि वह तेरे सामने पस्त हों, अपने कहर के बक्त तू उनसे यैं ही कर।

19 खुदावन्द ने यैं फरमाया है कि: तू जाकर कम्हार से मिट्टी की सुराही मोल ले, और कौम के बुर्जों और काहिनों के सरदारों को साथ ले, 2 और बिन — हिन्म की वादी मैं कुम्हारों के फाटक के मदरखल पर निकल जा, और जो बातें मैं तुझ से कहूँ वहाँ उनका 'ऐलान कर, 3 और कह, 'ऐ यहदाह के बादशाहों और येस्शलेम के बाशिन्दों, खुदा का कलाम सुनो। रब्ब — उल — अफवाज, इस्माइल का खुदा, यैं फरमाता है कि: देखो, मैं इस जगह पर ऐसी बला नाज़िल करूँगा कि जो कोई उसके बारे में सुने उसके कान बन्ना जाएँगे। 4 क्यूँकि उन्होंने मुझे छोड़ दिया, और इस जगह को गैरों के लिए ठहराया और इसमें गैरमाब्दों के लिए खुशबू जलायी जिनको न वह, न उनके बाप — दादा, न यहदाह के बादशाह जानते थे; और इस जगह को बेगुनाहों के खून से भर

दिया, 5 और बाल के लिए ऊँचे मकाम बनाए, ताकि अपने बेटों को बाल की सोखती कुर्बानियों के लिए आग मैं जलाएँ जो न मैंने फरमाया न उसका जिक किया, और न कभी यह मेरे ख्याल में आया। 6 इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है कि यह जगह न तूफ़त कहलाएगी और न बिनहिन्म की वादी, बल्कि वादी — ए — कल्ला। 7 और इसी जगह मैं यहदाह और येस्शलेम का मन्सूबा बाबीद करूँगा और मैं ऐसा करूँगा कि वह अपने दूम्हों के आगे और उनके हाथों से जो उनकी जान के तलबगार है, तलवार से कल्ला होंगे; और मैं उनकी लाशों हवा के परिन्दों को और जमीन के दरिन्दों को खाने को दूँगा, 8 और मैं इस शहर को हैरानी और सुस्कार का जरिया' बनाऊँगा; हर एक जो इधर से गुज़रे दंग होगा, और उसकी सब आफतों की बजह से सुस्करेगा। 9 और मैं उनको उनके बेटों और उनकी बेटियों का गोशत खिलाऊँगा, बल्कि हर एक दूम्हे का गोशत खाएगा, धिराव के बक्त उस तंगी में जिससे उनके दूश्मन और उनकी जान के तलबगार उनको तंग करेंगे। 10 "तब तू उस सुराही को उन लोगों के सामने जो तेरे साथ जाएँगे, तोड़ डालना 11 और उनसे कहना के 'रब्ब — उल — अफवाज यैं फरमाता है कि मैं ऐसे इन लोगों और इस शहर को ऐसा तोड़न्गा, जिस तरह कोई कुम्हार के बर्तन को तोड़ डाले जो फिर दुस्त नहीं हो सकता; और लोग तूफ़त में दफन करेंगे, यहाँ तक कि दफन करने की जगह न रहेगी। 12 मैं इस जगह और इसके बाशिन्दों से ऐसा ही करूँगा खुदावन्द फरमात है चूनाँचे मैं इस शहर को तूफ़त की तरह कर दूँगा; 13 और येस्शलेम के घर और यहदाह के बादशाहों के घर तूफ़त के मकाम की तरह नापाक हो जाएँगे, हाँ, वह सब घर जिनकी छतों पर उन्होंने तमाम अजराम — ए — फलक के लिए खुशबू जलायी और गैरमाब्दों के लिए तपावन तपाए।" 14 तब यरमियाह तूफ़त से, जहाँ खुदावन्द ने उसे नबूव्वत करने को भेजा था वापस आया; और खुदावन्द के घर के सहन में खड़ा होकर तमाम लोगों से कहने लगा, 15 "रब्ब — उल — अफवाज, इस्माइल का खुदा, यैं फरमाता है कि: देखो, मैं इस शहर पर और इसकी सब बसितियों पर वह तपाम बला, जो मैं ने उस पर भेजने को कहा था लाऊँगा। इसलिए कि उन्होंने बहुत बगावत की ताकि मेरी बातों को न सुनें।"

20 फशहर — बिन — इम्पेर काहिन ने, जो खुदावन्द के घर मैं सरदार नाजिम था, यरमियाह को यह बतें नबूव्वत से कहते सुना। 2 तब फशहर ने यरमियाह नवी को मारा और उसे उस काठ में डाला, जो बिनयमीन के बालाई फाटक मैं खुदावन्द के घर मैं था। 3 और दूसरे दिन यैं हुआ कि फशहर ने यरमियाह को काठ से निकाला। तब यरमियाह ने उसे कहा, खुदावन्द ने तेरा नाम फशहर नहीं, बल्कि मजूरमिस्साबीब रखा है। 4 क्यूँकि खुदावन्द यैं फरमाता है कि देखो, मैं तुझ को तेरे लिए और तेरे सब दोस्तों के लिए दहशत का जरिया' बनाऊँगा; और वह अपने दूश्मनों की तलवार से कल्ला होंगे और तेरी और्खे देखेंगी और मैं तमाम यहदाह को शाह — ए — बाबुल के हवाले कर दूँगा, और वह उनको गुलाम करके बाबुल में ले जाएगा और उनको तलवार से कल्ला करेगा। 5 और मैं इस शहर की सारी दौलत और इसके तमाम महारिल और इसकी सब नफीस चीजों को, और यहदाह के बादशाहों के सब खजानों को दे डालूँगा; हाँ, मैं उनको उनके दूश्मनों के हवाले कर दूँगा, जो उनको लटेंगे और बाबुल को ले जाएँगे। 6 और ऐ फशहर, तू और तेरा सारा धराना गुलामी में जाओगे, और तू बाबुल मैं पहँचेंगा और वहाँ मेरेगा और वही दफन किया जाएगा तू और तेरे सब दोस्त जिनसे तूने झट्टी नबूव्वत की। 7 ऐ खुदावन्द, तूने मुझे तरगीब दी है और मैंने मान लिया; तू मुझसे तवान था, और तू गालिब आया। मैं दिन भर हँसी का जरिया' बनाता हूँ, हर एक मेरी हँसी उड़ाता है। 8 क्यूँकि जब — जब मैं कलाम करता हूँ, जोर से पुकारता हूँ, मैंने गजब और हलाकत का

‘ऐलान किया, क्यूंकि खुदावन्द का कलाम दिन भर मेरी मलामत और हँसी का जरिया होता है। 9 और आग मैं कहूँ कि मैं उसका जिक्र न करूँगा, न फिर कभी उसके नाम से कलाम करूँगा, तो उसका कलाम मेरे दिल में जलती आग की तरह है जो मेरी हड्डियों में छिपा है, और मैं ज़बत करते करते थक गया और मुझसे रहा नहीं जाता। 10 क्यूंकि मैंने बहतों की तोहमत सुनी। चारों तरफ दहशत है! “उसकी शिकायत करो! वह कहते हैं, हम उसकी शिकायत करेंगे, मेरे सब दोस्त मेरे ठोकर खाने के मून्तजिर हैं और कहते हैं, शायद वह ठोकर खाए, तब हम उस पर गालिब आएँगे और उससे बदला लेंगे।” 11 लेकिन खुदावन्द बड़े बहादुर की तरह मेरी तरफ है, इसलिए मुझे सताने वालों ने ठोकर खाई और गालिब न आए, वह बहुत शर्मिन्दा हुए इसलिए कि उन्होंने अपना मकसद न पाया; उनकी शर्मिन्दी हमेशा तक रहेगी, कभी फरारोश न होगी। 12 इसलिए, ऐ रब्बउल — अफवाज, तू जू सादिकों को आज्ञामाता और दिल — ओ — दिमाग को देखता है, उनसे बदला लेकर मुझे दिखा; इसलिए कि मैंने अपना दावा तुझ पर ज़ाहिर किया है। 13 खुदावन्द की मदहसराई करो; खुदावन्द की सिताइश करो! क्यूंकि उसने गारीब की जान को बदकिरदारों के हाथ से छुड़ाया है। 14 लान्त उस दिन पर जिसमें मैं पैदा हुआ! वह दिन जिस में मेरी माँ ने मुझ को पैदा किया, हरगिज मुबारक न हो! 15 लान्त उस आदमी पर जिसने मेरे बाप को ये कहकर खबर दी, तेरे यहाँ बेटा पैदा हुआ, और उसे बहुत खुश किया। 16 हाँ, वह आदमी उन शहरों की तरह हो, जिनको खुदावन्द ने शिक्षत दी और अफसोस न किया; और वह सुबह को खोफनाक शोर सुने और दोपहर के बक्तव्यी ललकार, 17 इसलिए कि उसने मुझे रिहम ही में कल्तन न किया, कि मेरी माँ मेरी कब्ज़ होती, और उसका रिहम हमेशा तक भरा रहता। 18 मैं पैदा ही क्यूं हुआ कि मशक्कत और रंज देखूँ, और मेरे दिन म्स्वाई में कटें?

21 वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाज़िल हुआ, जब सिदिकियाह बादशाह ने फशहर — बिन — मलकियाह और सफनियाह — बिन — मासियाह काहिन को उसके पास ये कहने को भेजा, 2 कि “हमारी खातिर खुदावन्द से दरियापत कर क्यूंकि शाह — ए — बाबूल नबकदनजर हमारे साथ लड़ाई करता है; शायद खुदावन्द हम से अपने तमाम ‘अजीब कामों के मुवाफिक ऐसा सलक करे कि वह हमारे पास से चला जाए।” 3 तब यरमियाह ने उनसे कहा, तुम सिदिकियाह से यूँ कहना, 4 कि ‘खुदावन्द, इसाईल का खुदा, यूँ फ़रमाता है कि: देख, मैं लड़ाई के हथियारों को जो तुहारे हाथ में है, जिनसे तुम शाह — ए — बाबूल और कसदियों के खिलाफ जो फ़सील के बाहर तुम्हारा धिराव किए हुए हैं लड़ते हो फेर टूँगा और मैं उनको इस शहर के बीच मैं कहूँ करूँगा; 5 और मैं आप अपने बढ़ाए हुए हाथ से और कुक्वत — ए — बाज़ से तुम्हारे खिलाफ लड़ूँगा, हाँ, कहर — ओ — गजब से बल्कि ग़ज़बनाक गुस्से से। 6 और मैं इस शहर के बाशिन्दों को, इंसान और हैवान दोनों को मास्ता, वह बड़ी बबा से फना हो जाएँगे। 7 और खुदावन्द फरमाता है, फिर मैं शाह — ए — यहदाह सिदिकियाह को और उसके मुलाजिमों और ‘आम लोगों को, जो इस शहर में बबा और तलवार और काल से बच जाएँगे, शाह — ए — बाबूल नबकदनजर और उनके मुखालिफ़ों और जानी दुश्मनों के हवाले करूँगा। और वह उनको हल्का करेगा; न उनको छोड़ेगा, न उन पर तरस खाएगा और न रहम करेगा। 8 ‘और तू इन लोगों से कहना खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: देखो, मैं तुम को हयात की राह और मौत की राह दिखाता हूँ। 9 जो कोई इस शहर में रहेगा, वह तलवार और काल और बबा से मेरगा, लेकिन जो निकलकर कसदियों में जो तुम को धेरे हुए हैं, चला जाएगा, वह जिएगा और उसकी जान उसके लिए गनीमत होगी। 10 क्यूंकि मैंने इस शहर का सख

किया है कि इससे बुराई करूँ, और भलाई न करूँ, खुदावन्द फरमाता है; वह शाह — ए — बाबूल के हवाले किया जाएगा और वह उसे आग से जलाएगा। 11 ‘और शाह — ए — यहदाह के खान्दान के बारे में खुदावन्द का कलाम सुनो, 12 ‘ऐ दाऊद के घराने! खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: तुम सबैरे उठ कर इन्साफ करो और मजलम को ज़ालिम के हाथ से छुड़ाओ, ऐसा तुम्हारे कामों की बुराई की बजह से मेरा कहर आग की तरह भड़के, और ऐसा तेज हो कि कोई उसे ठंडा न कर सके। 13 ऐ वादी की बसनेवाली, ऐ मैदान की चट्ठान पर रहने वाली, जो कहती है कि कौन हम पर हमला करेगा? या हमारे घरों में कौन आ घुसेगा?’ खुदावन्द फरमाता है: मैं तेरा मुखालिफ़ हूँ, 14 और तुम्हारे कामों के फल के मुवाफिक मैं तुम को सजा दूँगा, खुदावन्द फरमाता है, और मैं उसके बन में आग लगाऊँगा, जो उसके सारे ‘इलाके को भसम करेगी।

22 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि “शाह — ए — यहदाह के घर को जा, और वहाँ ये कलाम सुना 2 और कह, ‘ऐ शाह — ए — यहदाह जो दाऊद के तख्त पर बैठत है, खुदावन्द का कलाम सुन, तू और तेरे मुलाजिम और तेरे लोग जो इन दरवाजों से दाखिल होते हैं। 3 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: ‘अदालत और सदाकत के काम करो, और मजलम को ज़ालिम के हाथ से छुड़ाओ; और किसी से बदसुलकी न करो, और मुसाफिर — ओ — यतीम और बेवा पर ज़ुल्म न करो, इस जगह बेगुनाह का खून न बहाओ। 4 क्यूंकि आगर तुम इस पर ‘अमल करोगे, तो दाऊद के जानशीन बादशाह रथों पर और धोड़ों पर सवार होकर इस घर के फाटकों से दाखिल होंगे, बादशाह और उसके मुलाजिम और उसके लोग। 5 लेकिन आगर तुम इन बातों को न सुनोगे, तो खुदावन्द फरमाता है, मुझे अपनी जात की कसम यह घर बीराम हो जाएगा। 6 क्यूंकि शाह — ए — यहदाह के घराने के बारे में खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: अगर तेरे लिए जिल आद है और लुबनान की चोटी, तो भी मैं यकीनन तज्जे उजाड टूँगा और गैर — आबाद शहर बनाऊँगा। 7 और मैं तेरे खिलाफ गारतगरों को मुकर्रर करूँगा, हर एक को उसके हथियारों के साथ, और वह तेरे नफसी देवदारों को काटेंगे और उनको आग में डालेंगे। 8 और बहुत सी कौमें इस शहर की तरफ से गुज़रेंगी और उनमें से एक दूसरे से कहेगा कि ‘खुदावन्द ने इस बड़े शहर से ऐसा क्यूं किया है?’ 9 तब वह जवाब देंगे, इसलिए कि उन्होंने खुदावन्द अपने खुदा के ‘अहद को छोड़ दिया और ईरामा बूद्दों की बाबात और परस्तिश की। 10 मुर्द फर पर न रो, न नौहा करो, मगर उस पर जो चला जाता है जार — जार नाला करो, क्यूंकि वह फिर न आएगा, न अपने बतन को देखेगा। 11 क्यूंकि शाह — ए — यहदाह सललू — बिन — यूसियाह के बारे में जो अपने बाप यूसियाह का जानशीन हुआ और इस जगह से चला गया, खुदावन्द यूँ फरमाता है कि “वह फिर इस तरफ न आएगा; 12 बल्कि वह उसी जगह मरेगा, जहाँ उसे गुलाम करके ले गए हैं और इस मुल्क को फिर न देखेगा।” 13 “उस पर अफसोस, जो अपने घर को बे — इन्साफी से और अपने बालाखानों को ज़ुल्म से बनाता है; जो अपने पडोसी से बेगार लेता है, और उसकी मजदूरी उसी नहीं देता; 14 जो कहता है, मैं अपने लिए बड़ा मकान और हवादार बालाखाना बनाऊँगा, और वह अपने लिए ज़ांझरियाँ बनाता है और उसे देवदार की लकड़ी की छत लगाता है और उसे शंगरकीं करता है। 15 क्या तू इसीलिए सल्तनत करेगा कि तज्जे देवदार के काम का शैक है? क्या तेरे बाप ने नहीं खाया — पिया और ‘अदालत — ओ — सदाकत नहीं की जिससे उसका भला हुआ? 16 उसने गरीब और मुहताज का इन्साफ किया, इसी से उसका भला हुआ। क्या यही मेरा इफान न था? खुदावन्द फरमाता है। 17 लेकिन तेरी आँखें और तेरा दिल, सिर्फ लालच और बेगुनाह का खून बहाने और ज़ुल्म — ओ — सितम पर लगे हैं।” 18 इसीलिए खुदावन्द यह्यकीम शाह — ए — यहदाह — बिन — यूसियाह

के बारे में यूँ फरमाता है कि “उस पर 'हाय मेरे भाई! या हाय बहन!' कह कर मातम नहीं करेंगे, उसके लिए 'हाय आका! या हाय मालिक!' कह कर नौहा नहीं करेंगे। 19 उसका दफन गधे के जैसा होगा, उसको घसीटकर येस्शलेम के फाटकों के बाहर फेंक देंगे।” 20 “तू लुबनान पर चढ़ जा और चिल्ला, और बसन में अपनी आवाज बुलन्द कर; और 'अबराम पर से फरियाद कर, क्यूंकि तेर सब चाहने वाले मारे गए। 21 मैंने तेरी इकबालमन्दी के दिनों में तुझ से कलाम किया, लेकिन तूने कहा, मैंने न सुर्खी। तेरी जवानी से तेरी यही चाल है कि तू मेरी आवाज को नहीं सुनती। 22 एक आँधी तेरे चरवाहों को उड़ा ले जाएगी, और तेरे आशिक गुलामी में जाएंगे; तब तू अपनी सारी शरारत के लिए शर्मसार और पशेमान होगी। 23 ऐ लुबनान की बसनेवाली, जो अपना आशियान देवदारों पर बनाती है, तू कैसी 'आजिज होगी, जब तू जच्चा की तरह पैदाइश के दर्द में मुबिला होगी।’ 24 'खुदावन्द फरमाता है: मुझे अपनी हयात की क्षसम, अगरचे तू ऐ शाह — ए — यहदाह कूनियाह — बिन — यह्यकीम मेरे दहने हाथ की अँगूठी होता, तो भी मैं तुझे निकाल फेंकता; 25 और मैं तुझ को तेरे जानी दुम्हमों के जिनसे तू डरता है, यानी शाह — ए — बाबल नब्कदनज और कसदियों के हवाले करँगा। 26 हाँ, मैं तुझे और तेरी माँ को जिससे तू पैदा हुआ, गैर मुल्क में जो तुम्हारी जादबूम नहीं है, हाँक टूँगा और तुम वहीं मरेंगे। 27 जिस मुल्क में वह वापस आना चाहते हैं, हरगिज लौटकर न आएंगे। 28 क्या यह शब्द कूनियाह, नाचीज टूटा बर्बन के हाथ या ऐसा बर्तन जिसे कोई नहीं पूछता? वह और उसकी औलाद क्यूँ निकाल दिए गए और ऐसे मुल्क में जिलावतन किए गए जिसे वह नहीं जानते? 29 ऐ जमीन, जमीन, जमीन! खुदावन्द का कलाम सुन! 30 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि “इस आदमी को बे — औलाद लिखो, जो अपने दिनों में इकबालमन्दी का मुँह न देखेगा; क्यूंकि उसकी औलाद में से कभी कोई ऐसा इकबालमन्द न होगा कि दाऊद के तख्त पर बैठे और यहदाह पर सल्तनत करे।”

23 खुदावन्द फरमाता है: “उन चरवाहों पर अफसोस, जो मेरी चरागाह की भेड़ों को हलाक और तिर — बिर करते हैं।” 2 इसलिए खुदावन्द, इसाईल का खुदा उन चरवाहों की मुखालिफत में जो मेरे लोगों की चरवाही करते हैं, यूँ फरमाता है कि तुमने मेरे गल्ले को तिर — बिर किया, और उनको हाँक कर निकाल दिया और निगहबानी नहीं की; देखो, मैं तुम्हरे कामों की बुराई तुम पर लाँगा, खुदावन्द फरमाता है। 3 लेकिन मैं उनको जो मेरे गल्ले से चर रहे हैं, तुमाम मुमालिक से जहाँ — जहाँ मैंने उनको हाँक दिया था जमा कर लूँगा, और उनको फिर उनके गल्ला खानों में लाँगा, और वह फैलेंगे और बढ़ेंगे। 4 और मैं उन पर ऐसे चौपान मुकर्रर करँगा जो उनको चराएँगे; और वह फिर न डरेंगे, न घबराएँगे, न गुम होंगे, खुदावन्द फरमाता है। 5 “देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है कि: मैं दाऊद के लिए एक सादिक शाख पैदा करँगा और उसकी बादशाही मुल्क में इकबालमन्दी और 'अदालत और सदाकत के साथ होगी। 6 उसके दिनों में यहदाह नजात पाएगा, और इसाईल सलामती से सुरक्षत करेगा; और उसका नाम यह रस्खा जाएगा, 'खुदावन्द हमारी सदाकत।' 7 'इसी लिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है कि वह फिर न कहेंगे, जिन्दा खुदावन्द की क्षसम, जो बनी — इसाईल को मुल्क — ए — मिस्स से निकाल लाया, 8 बल्कि, जिन्दा खुदावन्द की क्षसम, जो इसाईल के घराने की औलाद को उत्तर की सरजमीन से, और उन सब ममलकतों से जहाँ — जहाँ मैंने उनको हाँक दिया था निकाल लाया, और वह अपने मुल्क में बरेंगे।” 9 नवियों के बारे में: मेरा दिल मेरे अन्दर टृट गया, मेरी सब हड्डियाँ थरथराती हैं; खुदावन्द और उसके पाक कलाम की वजह से मैं मतवाला सा हूँ, और उस शख्स की तरह जो मय से मगलूब हो। 10

यकीन जमीन बदकरारों से भरी है; लान नत की वजह से जमीन मातम करती है मैदान की चारागाहें सख गयी क्यूंकि उनके चाल चलन लुरे और उनका जो नाहक है। 11 कि “नबी और काहिन, दोनों नापाक हैं, हाँ, मैंने अपने घर के अन्दर उनकी शरारत देखी, खुदावन्द फरमाता है। 12 इसलिए उनकी राह उनके हक में ऐसी होगी, जैसे तारीकी में फिसलनी जगह, वह उसमे दौड़ाये जायेंगे और वहाँ गिरे खुदावन्द फरमाता है: मैं उन पर बला लाँगा, यानी उनकी सजा का साल। 13 और मैंने सामरिया के नवियों में हिमाकत देखी है: उन्होंने बाल के नाम से नबुव्वत की ओर मेरी कौम इसाईल को गुमराह किया। 14 मैंने येस्शलेम के नवियों में भी एक हैलनाक बात देखी: वह जिनाका, झटके के पैरौ और बदकरारों के हामी हैं, यहाँ तक कि कोई अपनी शरारत से बाज नहीं आता; वह सब मेरे नजदीक सदम की तरह और उसके बाशिने 'अमरा की तरह है।' 15 इसीलिए रब्ब — उल — अफवाज, नवियों के बारे में यूँ फरमाता है कि: “देख, मैं उनको नादाना खिलाँगा और इन्द्रायन का पानी पिलाँगा, क्यूंकि येस्शलेम के नवियों ही से तमाम मुल्क में बेटीनी फैली है।” 16 रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: उन नवियों की बाबों न सुनो, जो तुम से नबुव्वत करते हैं, वह तुम को बेकार की तालीम देते हैं, वह अपने दिलों के इल्हाम बयान करते हैं, न कि खुदावन्द के मूँह की बातें। 17 वह मुझे हकीर जानेवालों से कहते रहते हैं, 'खुदावन्द ने फरमाया है कि: तुम्हारी सलामती होगी; “और हर एक से जो अपने दिल की सखीयी पर चलता है, कहते हैं कि 'तुझ पर कोई बला न आएगी।” 18 लेकिन उनमें से कौन खुदावन्द की मजलिस में शामिल हुआ कि उसका कलाम सुने और समझे? किसने उसके कलाम की तरफ तज्जुह की ओर उस पर लगाया? 19 देख, खुदावन्द के गजबानक गुर्से का तुकान जारी हुआ है, बल्कि तुकान का बगोला शरीरों के सिर पर टूट पड़ेगा। 20 खुदावन्द का गजब फिर खत्म न होगा, जब तक उसे अंजाम तक न पहुँचाए और उसके दिल के झाँटे को पूरा न करे। तुम अने बाले दिनों में उसे बखूबी मालूप करेगो। 21 मैंने इन नवियों को नहीं भेजा, लेकिन ये दौड़ते फिरे; मैंने इससे कलाम नहीं किया, लेकिन इन्होंने नबुव्वत की। 22 लेकिन अगर वह मेरी मजलिस में शामिल होते, तो मेरी बाबों मेरे लोगों को सुनाते, और उनको उनकी बुरी राह से और उनके कामों की बुराई से बाज रखते। 23 “खुदावन्द फरमाता है: क्या मैं नजदीक ही का खुदा हूँ और दूर का खुदा नहीं?” 24 क्या कोई अदामी पोशीदा जगहों में छिप सकता है कि मैं उसे न देखूँ? खुदावन्द फरमाता है। क्या जमीन — ओ — आसमान मुझसे मालूर नहीं है? खुदावन्द फरमाता है। 25 मैंने सुना जो नवियों ने कहा, जो मेरा नाम लेकर झूटी नबुव्वत करते और कहते हैं कि मैंने खबाब देखा, मैंने खबाब देखा।” 26 कब तक ये नवियों के दिल में रहेगा कि झूटी नबुव्वत करें? हाँ, वह अपने दिल की फेरेबकारी के नबी है। 27 जो गुमान रखते हैं कि अपने छब्बों से, जो उनमें से हर एक अपने पड़ोसी से बयान करता है, मेरे लोगों को मेरा नाम भुला दें, जिस तरह उनके बाप — दादा बाल की वजह से मेरा नाम भूल गए थे। 28 जिस नबी के पास खबाब है, वह मेरे कलाम को दियानदारी से सुनाए। गेहूँ को भूसे से क्या निस्बत? खुदावन्द फरमाता है। 29 क्या मेरा कलाम आग की तरह नहीं है? खुदावन्द फरमाता है, और हथौडे की तरह जो चट्ठान को चकनाचूर कर डालता है? 30 इसलिए देख, मैं उन नवियों का मुखालिफ हूँ, खुदावन्द फरमाता है, जो अपनी जबान को इस्तेमाल करते हैं और कहते हैं कि खुदावन्द फरमाता है। 32 खुदावन्द फरमाता है, देख, मैं उनका मुखालिफ हूँ जो झूटे खबाबों को नबुव्वत करते हैं और बयान करते हैं और अपनी झूटी

बातों से और बकवास से मेरे लोगों को गुमराह करते हैं; लेकिन मैंने न उनको भेजा न हक्म दिया; इसलिए इन लोगों को उनसे हरगिज़ फायदा न होगा, खुदावन्द फरमाता है। 33 “और जब यह लोग या नवी या काहिन तुम से पूछे कि ‘खुदावन्द की तरफ से बार — ए — नबुव्वत क्या है?’ तब तू उनसे कहना, ‘कौन सा बार — ए — नबुव्वत! खुदावन्द फरमाता है, मैं तुम को फेंक दूँगा।’” 34 और नवी और काहिन और लोगों में से जो कोई कहे, ‘खुदावन्द की तरफ से बार — ए — नबुव्वत, मैं उस शरास को और उसके धराने को सजा दूँगा।’ 35 चाहिए कि हर एक अपने पड़ोसी और अपने भाई से यूँ कहे कि ‘खुदावन्द ने क्या जवाब दिया?’ और ‘खुदावन्द ने क्या फरमाया है?’ 36 लेकिन खुदावन्द की तरफ से बार — ए — नबुव्वत का ज़िक्र तुम कभी न करना; इसलिए कि हर एक आदमी की अपनी ही बातें उस पर बार होंगी, क्यूँकि तुम ने जिन्दा खुदा रब्ब — उलअक्फ़ाज़, हमारे खुदा के कलाम को बिंगाड़ डाला है। 37 तू नवी से यूँ कहना कि ‘खुदावन्द ने तझे क्या जवाब दिया?’ और ‘खुदावन्द ने क्या फरमाया?’ 38 लेकिन चौंकि तुम कहते हो, ‘खुदावन्द की तरफ से बार — ए — नबुव्वत; “इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: चौंकि तुम कहते हो, खुदावन्द की तरफ से बार — ए — नबुव्वत, और मैंने तुम को कहला भेजा, ‘खुदावन्द की तरफ से बार — ए — नबुव्वत और मैंने तुम को कहला भेजा, ‘खुदावन्द ने तज्ज्ञ तरह जो पहले पकते हैं; और दूसरी टोकी में बहत खराब अंजीर थे, ऐसे खराब कि खाने के काबिल न थे। 3 और खुदावन्द ने मुझसे फरमाया, ऐसे यरमियाह! तू क्या देखत है? और मैंने ‘अर्ज की, अंजीर अच्छे अंजीर बहत अच्छे और खराब अंजीर बहुत खराब, ऐसे खराब कि खाने के काबिल न थे। 4 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नज़िल हुआ कि: 5 खुदावन्द, इसाईन का खुदा, यूँ फरमाता है कि: इन अच्छे अंजीरों की तरह मैं यहदाह के उन शुलामों पर जिनको मैंने इस मकाम से कसदियों के मुल्क में भेजा है, करम की नज़र रख्यूँगा। 6 क्योंकि उन पर मेरी नज़र — ए — ‘इनायत होगी, और मैं उनको इस मुल्क में वापस लाऊँगा, और मैं उनको बर्बाद नहीं बल्कि आबाद करूँगा; मैं उनको लागाऊँगा और उखाँगा नहीं। 7 और मैं उनको ऐसा दिल दूँगा कि मुझे पहचानें कि मैं खुदावन्द हूँ। और वह मैंने लोग होंगे और मैं उनका खुदा हाँगा, इसलिए कि वह पेरे दिल से मेरी तरफ फिरेंगे। 8 “लेकिन उन खराब अंजीरों के बारे में, जो ऐसे खराब हैं कि खाने के काबिल नहीं; खुदावन्द यकीनन यूँ फरमाता है कि इसी तरह मैं शाह — ए — यहदाह सिदकियाह को, और उसके हाकिम को, और येस्शलेम के बाकी लोगों को, जो इस मुल्क में बच रहे हैं और जो मुल्क — ए — मिस्र में बसते हैं, छोड़ दूँगा। 9 हाँ, मैं उनको छोड़ दूँगा कि दुनिया की सब ममलकतों में धक्के खाते फिरें, ताकि वह हर एक जगह में जहाँ — जहाँ मैं उनको होके दूँगा, मलामत और मसल और तान और लान्त का ज़रिया हों। 10 और मैं उनमें तलवार और काल और बबा भेजूँगा यहाँ तक कि वह उस मुल्क से जो मैंने उनको और उनके बाप — दादा को दिया, हलाक हो जाएँगे।”

24 जब शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर शाह — ए — यहदाह यूँनियाह — बिन — यहयकीम को और यहदाह के हाकिम को, कारीगरों और लुहारों के साथ येस्शलेम से गुलाम करके बाबुल को ले गया, तो खुदावन्द ने मुझ पर नुमायां किया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द की हैकल के सामने अंजीर की दो टोकरियाँ धरी थीं। 2 एक टोकरी में अच्छे से अच्छे अंजीर थे, उनकी तरह जो पहले पकते हैं; और दूसरी टोकरी में बहत खराब अंजीर थे, ऐसे खराब कि खाने के काबिल न थे। 3 और खुदावन्द ने मुझसे फरमाया, ऐसे यरमियाह! तू क्या देखत है? और मैंने ‘अर्ज की, अंजीर अच्छे अंजीर बहत अच्छे और खराब अंजीर बहुत खराब, ऐसे खराब कि खाने के काबिल न थे। 4 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नज़िल हुआ कि: 5 खुदावन्द, इसाईन का खुदा, यूँ फरमाता है कि: इन अच्छे अंजीरों की तरह मैं यहदाह के उन शुलामों पर जिनको मैंने इस मकाम से कसदियों के मुल्क में भेजा है, करम की नज़र रख्यूँगा। 6 क्योंकि उन पर मेरी नज़र — ए — ‘इनायत होगी, और मैं उनको इस मुल्क में वापस लाऊँगा, और मैं उनको बर्बाद नहीं बल्कि आबाद करूँगा; मैं उनको लागाऊँगा और उखाँगा नहीं। 7 और मैं उनको ऐसा दिल दूँगा कि मुझे पहचानें कि मैं खुदावन्द हूँ। और वह मैंने लोग होंगे और मैं उनका खुदा हाँगा, इसलिए कि वह पेरे दिल से मेरी तरफ फिरेंगे। 8 “लेकिन उन खराब अंजीरों के बारे में, जो ऐसे खराब हैं कि खाने के काबिल नहीं; खुदावन्द यकीनन यूँ फरमाता है कि इसी तरह मैं शाह — ए — यहदाह सिदकियाह को, और उसके हाकिम को, और येस्शलेम के बाकी लोगों को, जो इस मुल्क में बच रहे हैं और जो मुल्क — ए — मिस्र में बसते हैं, छोड़ दूँगा। 9 हाँ, मैं उनको छोड़ दूँगा कि दुनिया की सब ममलकतों में धक्के खाते फिरें, ताकि वह हर एक जगह में जहाँ — जहाँ मैं उनको होके दूँगा, मलामत और मसल और तान और लान्त का ज़रिया हों। 10 और मैं उनमें तलवार और काल और बबा भेजूँगा यहाँ तक कि वह उस मुल्क से जो मैंने उनको और उनके बाप — दादा को दिया, हलाक हो जाएँगे।”

25 वह कलाम जो शाह — ए — यहदाह यहयकीम — बिन — यूसियाह के चौथे बरस में, जो शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर का पहला बरस था, यहदाह के सब लोगों के बारे में यरमियाह पर नाजिल हुआ; 2 जो यरमियाह नवी ने यहदाह के सब लोगों और येस्शलेम के सब बाशिन्दों को सुनाया, और कहा, 3 कि शाह — ए — यहदाह यूसियाह — बिन — अमून के तेरहवें बरस से आज तक यह तेईस बरस खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल होता रहा, और मैं तुम को सुनाता और सही बक्त पर “जतात रहा पर तुम ने न सुना। 4 और खुदावन्द ने अपने सब खिदमतगुज़ार नबियों को तुम्हारे पास भेजा, उसने उनको सही बक्त पर भेजा, लेकिन तुम ने न सुना और न कान लगाया; 5 उन्होंने कहा, ‘तुम सब अपनी — अपनी बुरी राह से, और अपने बुरे कामों से बाज आओ, और उस मुल्क में जो खुदावन्द ने तुम को और तुम्हारे बाप — दादा को पहले से हमेशा के लिए दिया है, बसो; 6 और गैर मार्बदों की पैरवी न करो कि उनकी ‘इबादत — ओ — परासिति करो, और अपने हाथों के कामों से मुझे गजबनाक न करो; और मैं तुम को कुछ नुकसान न पहँचाऊँगा। 7 लेकिन खुदावन्द फरमाता है, तुम ने मेरी न सुनी; ताकि अपने हाथों के कामों से अपने जियान के लिए मुझे गजबनाक करो। 8 इसलिए रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फरमाता है कि: चौंकि तुम ने मेरी बात न सुनी, 9 देखो, मैं तमाम उत्तरी कबीलों को और अपने खिदमत गुज़ार शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर को बुला भेज़ूँगा, खुदावन्द फरमाता है, और मैं उनको इस मुल्क और इसके बाशिन्दों पर, और उन सब कौमों पर जो आस — पास हैं चढ़ा लाऊँगा; और इनको बिल्कुल हलाक — ओ — बर्बाद कर दूँगा और इनको हैरानी और सुस्कार का ज़रिया ‘बानऊँगा और हमेशा के लिए वीरान करूँगा। 10 बल्कि मैं इसमें से खुशी — ओ — शादमानी की आवाज दूर्वहे और दूर्वहन की आवाज, चक्की की आवाज और चराग की रोशनी खत्म कर दूँगा। 11 और यह सारी सरज्मीनी वीरान और हैरानी का ज़रिया हो जाएगी, और यह कौमें सतर बरस तक शाह — ए — बाबुल की गुलामी करेगी। 12 खुदावन्द फरमाता है, जब सतर बरस पूरे होंगे, तो मैं शाह — ए — बाबुल को और उस कौम को और कसदियों के मुल्क को, उनकी बदकिरदारी की वजह से सजा दूँगा; और मैं उसे ऐसा उजाइँगा कि हमेशा तक वीरान रहे। 13 और मैं उस मुल्क पर अपनी सब बातें जो मैंने उसके बारे में कही, यानी वह सब जो इस किताब में लिखी है, जो यरमियाह ने नबुव्वत करके सब कौमों को कह सुनाई, पूरी करूँगा। 14 कि उनसे, हाँ, उन्हीं से बहत सी कौमें और बड़े — बड़े बादशाह गुलाम के जैसी खिदमत लेंगे; तब मैं उनके ‘आ’माल के मुताबिक और उनके हाथों के कामों के मुताबिक उनको बदला दूँगा।” 15 चौंकि खुदावन्द इसाईल के खुदा ने मुझे फरमाया, गजब की मय का यह प्याला मैं हाथ से ले और उन सब कौमों को जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ, पिला, 16 कि वह पिएँ और लड़खाँड़ाँ, और उस तलवार की वजह से जो मैं उनके बीच चलाऊँगा बेहवास हों। 17 इसलिए मैंने खुदावन्द ने मुझे भेजा था पिलाया, और उन सब कौमों को जिनके पास खुदावन्द ने मुझे भेजा था पिलाया; 18 यानी येस्शलेम और यहदाह के शहरों को और उसके बादशाहों और हाकिम को, ताकि वह बर्बाद हों और हैरानी और सुस्कार और लान्त का ज़रिया ठहरें, जैसे अब है; 19 शाह — ए — मिस्र फ़िर ‘औन को, और उसके मुलाजिमों और उसके हाकिम और उसके सब लोगों को; 20 और सब मिले — जुले लोगों, और ‘ऊँकी ज़रीन के सब बादशाहों और फिलिसियों की सरज्मीन के सब बादशाहों, और अशक्लोंन और गज़ा और अकस्न और अशदूद के बाकी लोगों को; 21 अदोम और मोआब और बनी ‘अम्मोन को; 22 और सूर के सब बादशाहों, और सैदा के सब बादशाहों, और समन्दर पार के बहरी मुल्कों के

बादशाहों को; 23 ददान और तेमा और बूज़, और उन सब को जो गाओदुम दाढ़ी रखते हैं, 24 और 'अरब के सब बादशाहों, और उन मिले — जुले लोगों के सब बादशाहों को जो जीरने में बसते हैं; 25 और जिमी के सब बादशाहों और ऐलाम के सब बादशाहों और मादै के सब बादशाहों को; 26 और उत्तर के सब बादशाहों को जो नजदीक और जो दूर हैं, एक दूरे के साथ, और दुनिया की सब सल्तनतों को जो इस जमीन पर हैं; और उनके बाद शेशक का बादशाह पिएगा। 27 और तू उनसे कहेगा कि 'इस्माइल का खुदा, रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि तुम पियो और मस्त हो और तय करो, और गिर पडो और फिर न उठो, उस तलवार की वजह से जो मैं तुम्हारे बीच भेज़ूँगा। 28 और यूँ होगा कि अगर वह पीने को देरे हाथ से प्याला लेने से इन्कार करें, तो उनसे कहना कि रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: यकीनन तुम को पीना होगा। 29 क्यूँकि देख, मैं इस शहर पर जो मेरे नाम से कहलाता है अफत लाना शुरू करता हैं और क्या तुम साफ बेसजा छूट जाओगे? तुम बेसजा न छूटोगे, क्यूँकि मैं जमीन के सब बाशिन्दों पर तलवार को तलब करता हूँ, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 30 इसलिए तू यह सब बातें उनके खिलाफ नबुव्वत से बयान कर, और उनसे कह दे कि: 'खुदावन्द बुलन्दी पर से गरजेगा और अपने पाक मकान से ललकरेगा, वह बड़े ज़ोर — ओ — शोर से अपनी चरागाह पर गरजेगा; अंगू लातांगे वालों की तरह वह जमीन के सब बाशिन्दों को ललकरेगा। 31 एक गौशा जमीन की शरहों तक पहुँचा है क्यूँकि खुदावन्द कौमों से झगड़ेगा, वह तमाम बशर को 'अदालत में लाएगा, वह शरीरों को तलवार के हवाते करेगा, खुदावन्द फरमाता है। 32 'रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: देख, कौम से कौम तक बला नजिल होगी, और ज़मीन की सरहदों से एक सँख्त तुफान खड़ा होगा। 33 और खुदावन्द के मक्तल उस रोज़ जमीन के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पड़े होंगे; उन पर कोई नौहा न करेगा, न वह जमा' किए जाएँ, न दफन होंगे; वह खाद की तरह इस जमीन पर पड़े रहेंगे। 34 ऐ चरवाहो, चरिता करो और चिल्लाओ; और ऐ गल्ले के सरदारों, तुम खुद राख में लेटे जाओ, क्यूँकि तुम्हारे कल्त के दिन आ पहुँचे हैं। मैं तुम को चकनाचूर कस्तूँगा, तुम नक्सीब बर्तन की तरह पिर जाओगे। 35 और न चरवाहों को भागने की कोई राह मिलेगी, न गल्ले के सरदारों को बच निकलने की। 36 चरवाहों की फरियाद की आवाज और गल्ले के सरदारों का नौहा है; क्यूँकि खुदावन्द ने उनकी चरागाह को बर्बाद किया है, 37 और सलामती के भेड़ खाने खुदावन्द के गजबनक गुर्से से बर्बाद हो गए। 38 वह जवान शेर की तरह अपनी कमीनगाह से निकला है, यकीनन सितमगर के जल्म से और उसके कहर की शिद्दत से उनको मुल्क वीरान हो गया।

26 शाह — ए — यहदाह यहयकीम — बिन — यसियाह की बादशाही के शुरू' में यह कलाम खुदावन्द की तरफ से नाजिल हुआ, 2 कि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: तू खुदावन्द के घर के सहन में खड़ा हो, और यहदाह के सब शहरों के लोगों से जो खुदावन्द के घर में सिंजदा करने को आते हैं, वह सब बातें जिनका मैंने तुझे हक्म दिया है कि उनसे कहे, कह दे; एक लफ्ज़ भी कम न कर। 3 शायद वह सुने और हर एक अपने बुरे चाल चलन से बाज आए, और मैं भी उस 'ऐज़ाब को जो उनकी बद' आमाली की वजह से उन पर लाना चाहता हूँ, बाज रखूँ। 4 और तू उनसे कहना, 'खुदावन्द यूँ फरमाता है: अगर तुम मेरी न सुनोगे कि मेरी शरी' अत पर, जो मैंने तुम्हारे सामने रखी 'अमल करो, 5 और मैं खिदमतगुज़ार नवियों की बातें सुनो जिनको मैंने तुम्हारे पास भेजा मैंने उनको सही वक्त पर "भेजा, लेकिन तुम ने न सुना; 6 तो मैं इस घर को शीलोंहो कि तरह कर डालूँगा, और इस शहर को जमीन की सब कौमों के नजदीक

लान्त का ज़रिया' ठहराऊँगा।" 7 चुनाँचे काहिनों और नवियों और सब लोगों ने यरमियाह को खुदावन्द के घर में यह बातें कहते सुना। 8 और यूँ हुआ कि जब यरमियाह वह सब बातें कह चुका जो खुदावन्द ने उसे हक्म दिया था कि सब लोगों से कहे, तो काहिनों और नवियों और सब लोगों ने उसे पकड़ा और कहा कि तू यकीनन कल्त किया जाएगा! 9 तू ने क्यूँ खुदावन्द का नाम लेकर नबुव्वत की और कहा, 'यह घर शीलोंही की तरह होगा, और यह शहर वीरान और गैरआबाद होगा?' और सब लोग खुदावन्द के घर में यरमियाह के पास जमा' हुए। 10 और यहदाह के हाकिम यह बातें सुनकर बादशाह के घर से खुदावन्द के घर में आए, और खुदावन्द के घर के नये फाटक के मदखल पर बैठे। 11 और काहिनों और नवियों ने हाकिम से और सब लोगों से मुखातिब होकर कहा कि यह शख्स वाजिब — उल — कल्त है क्यूँकि इसने इस शहर के खिलाफ नबुव्वत की है, जैसा कि तुम ने अपने कानों से सुना। 12 तब यरमियाह ने सब हाकिम और तमाम लोगों से मुखातिब होकर कहा कि 'खुदावन्द ने मुझे भेजा कि इस घर और इस शहर के खिलाफ वह सब बातें जो तुम ने सुनी हैं, नबुव्वत से कहें। 13 इसलिए अब तुम अपने चाल चलन और अपने आमाल को दुर्स्त करो, और खुदावन्द अपने खुदा की आवाज को सुनो, ताकि खुदावन्द उस 'ऐज़ाब से जिसका तुम्हारे खिलाफ ऐलान किया है बाज रहे। 14 और देखो, मैं तो तुम्हारे काब में हूँ जो कुछ तुम्हारी नज़र में खूब — ओ — रास्त हो मुझसे करो। 15 लेकिन यकीन जानो कि अगर तुम मुझे कल्त करेगे, तो बेरुज़ाह का खून अपने अप और इस शहर पर और इसके बाशिन्दों पर लाओगे, क्यूँकि हकीकत में खुदावन्द ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हारे कानों में ये सब बातें कहूँ।" 16 तब हाकिम और सब लोगों ने काहिनों और नवियों से कहा, यह शख्स वाजिब — उल — कल्त नहीं क्यूँकि उसने खुदावन्द हमारे खुदा के नाम से हम से कलाम किया। 17 तब मुल्क के चंद बुज़ुर्ग उठे और कुल जमा' अत से मुखातिब होकर कहने लगे, 18 कि "मीकाह मोरश्ती ने शह — ए — यहदाह हिज़कियाह के दिनों में नबुव्वत की, और यहदाह के सब लोगों से मुखातिब होकर यूँ कहा, 'रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: सियून खेत की तरह जोता जाएगा और येस्सलेम खण्डर हो जाएगा, और इस घर का पहाड़ ज़ंगल की ऊँची जगहों की तरह होगा। 19 क्या शह — ए — यहदाह हिज़कियाह और तमाम यहदाह ने उसको कल्त किया? क्या वह खुदावन्द से न डरा, और खुदावन्द से मुनाजात न की? और खुदावन्द ने उस 'ऐज़ाब को जिसका उनके खिलाफ ऐलान किया था, बाज न रख्छा? तब यूँ हम अपनी जानों पर बड़ी आफत लाएँगे।" 20 फिर एक और शख्स ने खुदावन्द के नाम से नबुव्वत की, यानी ऊरियाह — बिनसमा'याह ने जो करयत यारीम का था; उसने इस शहर और मुल्क के खिलाफ यरमियाह की सब बातों के मुताबिक नबुव्वत की; 21 और जब यहयकीम बादशाह और उसके सब ज़री मर्दों और हाकिम ने उसकी बातें सुनी, तो बादशाह ने उसे कल्त करना चाहा; लेकिन ऊरियाह यह सुनकर डारा और मिस्त्र को भाग गया। 22 और यहयकीम बादशाह ने चंद आदमियों यानी इलानत — बिन — अकबर और उसके साथ कुछ और आदमियों को मिस्त्र में भेजा: 23 और वह ऊरियाह को मिस्त्र से निकल लाएँ, और उसे यहयकीम बादशाह के पास पहुँचाया; और उसने उसको तलवार से कल्त किया और उसकी लाश को 'अवाम के कब्रिस्तान में फिकवा दिया। 24 लेकिन अखीकाम — बिन — साफन यरमियाह का दम्तगरी था, ताकि वह कल्त होने के लिए लोगों के हवाले न किया जाए।

27 शाह — ए — यहदाह सिदकियाह — बिन — यसियाह की सल्तनत के शुरू' में खुदावन्द की तरफ से यह कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ, 2 कि खुदावन्द ने मुझे यूँ फरमाया कि: "बन्धन और ज़ुए बनाकर अपनी गर्दन पर

डाल, 3 और उनको शाह — ए — अदोम, शाह — ए — मोआब, शाह — ए — बनी 'अम्मोन, शाह — ए — सूर और शाह — ए — सैदा के पास उन कासिदों के हाथ भेज, जो येस्शलेम में शाह — ए — यहदाह सिदकियाह के पास आए हैं; 4 और तु उनको उनके आकाओं के बास्ते ताकीद कर, 'र्ब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: तुम अपने आकाओं से यूँ कहना 5 कि मैंने जमीन को और इसान — ओ — हैवान को जो इस जमीन पर है, अपनी बड़ी कुदरत और बलन्द बाजू से पैदा किया; और उनको जिसे मैंने मुनासिब जाना बख्शा 6 और अब मैंने यह सब ममलुकते अपने खिदमत गुजार शाह — ए — बाबुल नब्कदनजर के कब्जे में कर दी है, और मैदान के जानवर भी उसे दिए, कि उसके काम आएँ। 7 और सब कौमें उसकी और उसके बेटे और उसके पोते की खिदमत करेंगी, जब तक कि उसकी ममलुकत का बक्त न आए; तब बहुत सी कौमें और बड़े — बड़े बादशाह उससे खिदमत करवाएँगी। 8 खुदावन्द फरमाता है: जो कौम और जो सल्तनत उसकी, यानी शाह — ए — बाबुल नब्कदनजर की खिदमत न करेगी और अपनी गर्दन शाह — ए — बाबुल के जाए तले न झटकाएगी, उस कौम को मैं तलवार और काल और बबा से सजा दूँगा, यहाँ तक कि मैं उसके हाथ से उनके हलाक कर डालूँगा। 9 इसलिए तुम अपने नवियों और गैबदानों और खाबबीनों और शगूनियों और जाटारों की न सुनो, जो तुम से कहते हैं कि तुम शाह — ए — बाबुल की खिदमतगुजारी न करोगे। 10 क्यौंकि वह तुम से झूटी न नबृत्त करते हैं, ताकि तुम को तुम्हे मुल्क से आवारा करें, और मैं तुम को निकाल दूँ और तुम हलाक हो जाओ। 11 लेकिन जो कौम अपनी गर्दन शाह — ए — बाबुल के जाए तले रख देगी और उसकी खिदमत करेगी, उसको मैं उसकी ममलुकत में रहने दूँगा, खुदावन्द फरमाता है, और वह उसमें खेती करेगी और उसमें बरेगी।" 12 इन सब बातों के मुताबिक मैंने शाह — ए — यहदाह सिदकियाह से कलाम किया और कहा कि "अपनी गर्दन शाह — ए — बाबुल के जाए तले रख कर उसकी और उसकी कौम की खिदमत करो और जिन्दा रहो। 13 त् और तैरे लोग तलवार और काल और वबा से क्यूँ मरोगे, जैसा कि खुदावन्द ने उस कौम के बारे में फरमाया है, जो शाह — ए — बाबुल की खिदमत न करेगी? 14 और उन नवियों की बातें न सुनो, जो तुम से कहते हैं कि तुम शाह — ए — बाबुल की खिदमत न करोगे; क्यौंकि वह तुम से झूटी न नबृत्त करते हैं। 15 क्यौंकि खुदावन्द फरमाता है मैंने उनको नहीं भेजा, लेकिन वह मेरा नाम लेकर झटी नबृत्त करते हैं; ताकि मैं तुम को निकाल दूँ और तुम उन नवियों के साथ जो तुम से नबृत्त करते हैं हलाक हो जाओ।" 16 मैंने काहिनों से और उन सब लोगों से भी मुखातिब होकर कहा, खुदावन्द यूँ फरमाता है: अपने नवियों की बातें न सुनो, जो तुम से नबृत्त करते और करते हैं कि 'देखो, खुदावन्द के घर के बर्तन अब थोड़ी ही देर में बाबुल से वापस आ जाएँगे, क्यौंकि वह तुम से झटी नबृत्त करते हैं। 17 उनकी न सुनो, शाह — ए — बाबुल की खिदमतगुजारी करो और जिन्दा रहो; यह शहर क्यूँ वीरान हो? 18 लेकिन अगर वह नवी है, और खुदावन्द का कलाम उनकी अमानत में है, तो वह रब्ब — उल — अफवाज से शफा'अत करें, ताकि वह बर्तन जो खुदावन्द के घर में और शाह — ए — यहदाह के घर में और येस्शलेम में बाकी है, बाबुल को न जाएँ। 19 क्यौंकि सुन्तों के बारे में और बड़े हौज और कुर्सियों और बर्तनों के बारे में जो इस शहर में बाकी हैं, रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है, 20 यानी जिनको शाह — ए — बाबुल नब्कदनजर नहीं ले गया, जब वह यहदाह के बादशाह यकनियाह — बिन — यहयकीम को येस्शलेम से, और यहदाह और येस्शलेम के सब शुपाकों को गुलाम करके बाबुल को ले गया; 21 हाँ, रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, उन बर्तनों के बारे में जो खुदावन्द के

घर में और शाह — ए — यहदाह के महल में और येस्शलेम में बाकी है, यूँ फरमाता है 22 कि वह बाबुल में पहुँचाए जाएँगे; और उस दिन तक कि मैं उनको याद फरमाऊँ वहाँ रहेंगे, खुदावन्द फरमाता है उस बक्त मैं उनको उठा लाऊँगा और फिर इस मकान में रख दूँगा।

28 और उसी साल शाह — ए — यहदाह सिदकियाह की सल्तनत के शुरू में, चौथे बरस के पांचवें महीने में, यूँ हआ कि जिबा'अनी "अज्जूर के बेटे हननियाह नबी ने खुदावन्द के घर में काहिनों और सब लोगों के सामने मुझसे मुखातिब होकर कहा, 2 रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: मैंने शाह — ए — बाबुल का जुआ तोड़ डाला है, 3 दो ही बरस के अन्दर मैं खुदावन्द के घर के सब बर्तन, जो शाह — ए — बाबुल नब्कदनजर इस मकान से बाबुल को ले गया, इसी मकान में वापस लाऊँगा। 4 शाह — ए — यहदाह यकनियाह — बिन — यहयकीम को और यहदाह के सब गुलामों को जो बाबुल को गए थे, फिर इसी जगह लाऊँगा, खुदावन्द फरमाता है; क्यौंकि मैं शाह — ए — बाबुल के जाए को तोड़ डालतूँगा। 5 तब यरमियाह नबी ने काहिनों और सब लोगों के सामने, जो खुदावन्द के घर में खड़े थे, हननियाह नबी से कहा, 6 "हाँ, यरमियाह नबी ने कहा, आमीन! खुदावन्द ऐसा ही करे, खुदावन्द तेरी बातों को जो तू ने नबृत्त से कहीं, पीर करे कि खुदावन्द के घर के बर्तनों को और सब गुलामों को बाबुल से इस मकान में वापस लाए। 7 तो भी अब यह बात जो मैं तैरे और सब लोगों के कानों में कहता हूँ सुन, 8 उन नवियों ने जो मुझसे और तुझ से पहले गुजरे जमाने में थे, बहुत से मुल्कों और बड़ी — बड़ी सल्तनतों के हक में, जंग और बला और बबा की नबृत्त की है। 9 वह नबी जो सलामती की खबर देता है, जब उस नबी का कलाम पूरा हो जाए तो मालूम होगा कि हकीकत में खुदावन्द ने उसे भेजा है।" 10 तब हननियाह नबी ने यरमियाह नबी की गर्दन पर से जुआ उतारा और उसे तोड़ डाला; 11 और हननियाह ने सब लोगों के सामने इस तरह कलाम किया, खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: मैं इसी तरह शाह — ए — बाबुल नब्कदनजर का जुआ सब कौमों की गर्दन पर से, दो ही बरस के अन्दर तोड़ डालतूँगा। तब यरमियाह नबी की गर्दन पर से जुआ तोड़ चुका था, तो खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ: 13 कि "जा, और हननियाह से कह कि 'खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: तूने लकड़ी के जुओं को तो तोड़, लेकिन उनके बदले में लोहे के जाए बना दिए।" 14 क्यौंकि रब्ब — उलअफवाज, इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है कि मैंने इन सब कौमों की गर्दन पर लोहे का जुआ डाल दिया है, ताकि वह शाह — ए — बाबुल नब्कदनजर की खिदमत करें; तब वह उसकी खिदमतगुजारी करेगी, और मैंने मैदान के जानवर भी उसे दे दिए हैं।" 15 तब यरमियाह नबी ने हननियाह नबी से कहा, ऐ हननियाह, अब सुन, खुदावन्द ने तुझे नबी भेजा, लेकिन तू इन लोगों को झटी उम्मीद दिलाता है। 16 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि 'देख, मैं तुझे इस जमीन पर से निकाल दूँगा; तू इसी साल मर जाएगा क्यौंकि तूने खुदावन्द के खिलाफ फिनाअमेज बातें कही हैं।" 17 चुनौते उसी साल के सातवें महीने हननियाह नबी मर गया।

29 अब यह उस खत की बातें हैं जो यरमियाह नबी ने येस्शलेम से, बाकी बजूर्गों को जो गुलाम हो गए थे, और काहिनों और नवियों और उन सब लोगों को जिनको नब्कदनजर येस्शलेम से गुलाम करके बाबुल ले गया था 2 उसके बाद के यकनियाह बादशाह और उसकी बालिदा और खवाजासरा और यहदाह और येस्शलेम के हकीम और कामीर और लुहार येस्शलेम से चले गए थे 3 अल'आसा — बिन — साफ़न और जमरियाह — बिन —

खिलकियाह के हाथ जिनको शाह — ए — यहदाह सिदकियाह ने बाबुल में शाह — ए — बाबुल नबकदनजर के पास भेजा इसाल किया और उसने कहा, 4 'रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, उन सब गुलामों से जिनको मैंने येस्शलेम से शुलाम करवा कर बाबुल भेजा है, यूँ फरमाता है: 5 तुम घर बनाओ और उन में बसों, और बाग लगाओ और उनके फल खाओ, 6 बीवियाँ करो ताकि तुम से बेटे — बेटियाँ पैदा हों, और अपने बेटों के लिए बीवियों लो और अपनी बेटियाँ शौहरों को दो ताकि उनसे बेटे — बेटियाँ पैदा हों, और तुम वहाँ फलों — फ्लूओ और कम न हो। 7 और उस शहर की खैर मनाओ, जिसमें मैंने तुम को गुलाम करवा कर भेजा है, और उसके लिए खुदावन्द से दुआ करो; क्योंकि उसकी सलामती में तुम्हारी सलामती होगी। 8 क्यूँकि रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: वह नबी जो तुम्हारे बीच है और तुम्हारे गैबदान तुम को गुरमाह न करो, और अपने खबाबीनों को, जो तुम्हारे ही कहने से खबाब देखते हैं न मानो; 9 क्यूँकि वह मेरा नाम लेकर तुम से झटी नबुव्वत करते हैं, मैंने उनको नहीं भेजा, खुदावन्द फरमाता है। 10 क्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: जब बाबुल में सतर बरस गुजर चुकेंगे, तो मैं तुम को याद फरमाऊँगा और तुम को इय मकान में वापस लाने से अपने नेक कौल को पूरा करूँगा। 11 क्यूँकि मैं तुम्हारे हक्क में अपने खबालात को जानता हूँ, खुदावन्द फरमाता है, यानी सलामती के खबालात, बुराई के नहीं; ताकि मैं तुम को नेक अन्जाम की उम्मीद बरब्धूँ। 12 तब तुम मेरा नाम लोगे, और मुझसे दुआ करोगे और मैं तुम्हारी सुनँगा। 13 और तुम मुझे ढूँगे और पाओगे, जब पूरे दिल से मैं तालिब होगे। 14 और मैं तुम को मिल जाऊँगा, खुदावन्द फरमाता है, और मैं तुम्हारी गुलामी को खत्म कराऊँगा और तुम को उन सब कौमों से और सब जगहों से, जिनमें मैंने तुम को हाँक दिया है, जमा' कराऊँगा, खुदावन्द फरमाता है; और मैं तुम को उस जगह में जहाँ से मैंने तुम को गुलाम करवाकर भेजा, वापस लाऊँगा। 15 'क्यूँकि तुम ने कहा कि 'खुदावन्द ने बाबुल में होगे लिए ननी खड़े किए। 16 इसलिए खुदावन्द उम बादशाह के बारे में जो दाऊद के तख्त पर बैठा है, और उन सब लोगों के बारे में जो इस शहर में बसते हैं, यानी तुम्हारे भाइयों के बारे में जो तुम्हारे साथ गुलाम होकर नहीं गए, यूँ फरमाता है: 17 'रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि देखो, मैं उन पर तलवार और काल और बाबा भेजूँगा और उनको खराब अंजीरों की तरह बनाऊँगा जो ऐसे खराब हैं कि खाने के काविल नहीं। 18 और मैं तलवार और काल और बाबा से उनका पीछा करूँगा, और मैं उनको जमीन की सब सलतनतों के हवाले करूँगा कि धक्के खाते पिंते और सताए जाएँ, और सब कौमों के बीच जिनमें मैंने उनको हाँक दिया है, ला'नत और हैरत और सुस्कार और मलामत का जरिया' हों; 19 इसलिए कि उन्होंने मेरी बातें नहीं सुनी खुदावन्द फरमाता है जब मैंने अपने शिदमतगुजार नवियों को उनके पास भेजा, हाँ, मैंने उनको सही बक्त पर भेजा, लेकिन तुम ने न सना, खुदावन्द फरमाता है।' 20 'इसलिए तुम, ऐ गुलामी के सब लोगों, जिनको मैंने येस्शलेम से बाबुल को भेजा, खुदावन्द का कलाम सुनो: 21 'रब्ब — उल — अफवाज इसाईल का खुदा अखीअब बिन — कुलायाह के बारे में और सिदकियाह — बिन — मासियाह के बारे में, जो मेरा नाम लेकर तुम से झटी नबुव्वत करते हैं, यूँ फरमाता है कि: देखो, मैं उनको शाह — ए — बाबुल नबकदनजर के हवाले करूँगा, और वह उनको तुम्हारी आँखों के सामने कत्ल करेगा; 22 और यहदाह के सब गुलाम जो बाबुल में हैं, उनकी लानी नहीं मसल बनाकर कहा करेंगे, कि खुदावन्द तुझे सिदकियाह और अखीअब की तरह करे, जिनको शाह — ए — बाबुल ने आग पर कबाब किया, 23 क्यूँकि उन्होंने इसाईल में बेवकूफी की और अपने पडोसियों की बीवियों से जिनाकारी की, और मेरा नाम लेकर

झटी बातें कहीं जिनका मैंने उनको हक्क नहीं दिया था, खुदावन्द फरमाता है, मैं जानता हूँ और गवाह हूँ। 24 और नखलामी समा'याह से कहना, 25 कि रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है: इसलिए कि तू येस्शलेम के सब लोगों को, और सफनियाह — बिन — मासियाह काहिन और सब काहिनों को अपने नाम से यूँ खत लिख भेजे, 26 कि 'खुदावन्द ने यहदाह' काहिन की जाह तुझको काहिन मुकर्र किया कि तू खुदावन्द के घर के नजिकों में हो, और हर एक मजनून और नबुव्वत के मुँहँ को कैद करो और काठ में डालो। 27 तब तुमे 'अनन्तोती यरमियाह की जो कहता है कि मैं तुम्हारा नवी हूँ, गोशलामी क्यूँ नहीं की? 28 क्यूँकि उसने बाबुल में यह कहला भेजा है कि ये मुद्रत दराज है; तुम घर बनाओ और बसो, और बाग लगाओ और उनका फल खाओ। 29 और सफनियाह काहिन ने यह खत पढ़ कर यरमियाह नवी को सुनाया। 30 तब खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ कि: 31 गुलामी के सबलोगों को कहला भेज, 'खुदावन्द नखलामी समायाह के बारे में यूँ फरमाता है: इसलिए कि समा'याह ने तुम से नबुव्वत की, हालाँकि मैंने उसे नहीं भेजा, और उसने तुम को झटी उम्मीद दिलाई; 32 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: देखो, मैं नखलामी समा'याह को और उसकी नसल को सजा ढाँगा; उसका कोई आदर्दी न होगा जो इन लोगों के बीच बसे, और वह उस नेकी को जो मैं अपने लोगों से करूँगा हरगिज न देखेगा, खुदावन्द फरमाता है, क्यूँकि उसने खुदावन्द के खिलाफ फितनामेज बातें कहीं हैं।

30 वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाजिल हुआ 2

"खुदावन्द इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है कि: यह सब बातें जो मैंने तुम से कहीं निकाल में लिखा। 3 क्यूँकि देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है, कि मैं अपनी कौम इसाईल और यहदाह की गुलामी को खत्म कराऊँगा, खुदावन्द फरमाता है; और मैं उनको उस मुल्क में वापस लाऊँगा, जो मैंने उनके बाप — दादा को दिया, और वह उसके मालिक होंगे।" 4 और वह बातें जो खुदावन्द ने इसाईल और यहदाह के बारे में फरमाई यह है: 5 कि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: हम ने हडबडी की आवाज सुनी, खौफ है और सलामती नहीं। 6 अब पछो और देखो, क्या कभी किसी मर्द को पैदाइश का दर्द लगा? क्या वजह है कि मैं हर एक मर्द को जच्चा की तरह अपने हाथ कमर पर रख्खे देखता हूँ और सबके चेहरे जर्द हो गए हैं? 7 अफसोस! वह दिन बड़ा है, उसकी मिसाल नहीं; वह याक़ब की मुसीबत का बक्त है, लेकिन वह उससे रिहाई पाएगा। 8 और उस रोज़ यूँ होगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, कि मैं उसका जुआ तेरी गर्दन पर से तोड़ूँगा और तेरे बन्धनों को खोल डालूँगा, और बेगाने तुझे से फिर खिदमत न कराएँगे। 9 लेकिन वह खुदावन्द अपने खुदा की और अपने बादशाह दाऊद की, जिसे मैं उनके लिए खड़ा करूँगा, खिदमत करेंगे। 10 इसलिए ऐ मेरे खादिम याक़ब, हिरासान न हो, खुदावन्द फरमाता है; और ऐ इसाईल, घबरा न जा; क्यूँकि देख, मैं तुझे दूर से और तेरी औलाद की गुलामी की सरजमीन से छुड़ाऊँगा; और याक़ब वापस आएगा और आराम — औ — राहत से रहेगा और कोई उसे न डराएगा। 11 क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ, खुदावन्द फरमाता है, ताकि तुझे बचाऊँ: अपर्चे मैं सब कौमों को जिनमें मैंने तुझे तितर — बितर किया तमाम कर डालूँगा तोमी तुझे तमाम न करूँगा; बल्कि तुझे मुनासिब तम्बीह करूँगा और हरगिज बे सजा न छोड़ूँगा। 12 क्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: तेरी खस्तागी ला — इलाज और तेरा जाड़ा सख्त दर्दनाक है। 13 तेरा हिमायती कोई नहीं जो तेरी मरहम पट्टी करे तेरे पास कोई शिफा बरब्श दवा नहीं। 14 तेरे सब चाहने वाले तुझे भूल गए, वह तेरे तालिब नहीं है, हकीकत में मैंने तुझे दुश्मन की तरह घायल किया और संग दिल की तरह तादीब की; इसलिए कि तेरी बदकिरदारी बढ़ गई और तेरे गुनाह ज्यादा हो

गए। 15 तू अपनी ख़स्तगी की वजह से कर्यूँ चिल्लाती है, तेरा दर्द ला — इलाज है, इसलिए कि तेरी बदकिरदारी बहुत बढ़ गई और तेरे गुनाह ज्यादा हो गए, मैंने तुझसे एसा किया। 16 तो भी वह सब जो तुझे निगलते हैं, निगले जाएँगे, और तेरे सब दुश्मन गुलामी में जाएँगे, और जो तुझे गारत करते हैं, खुद गारत होंगे; और मैं उन सबको जो तुझे लटते हैं लुटा दँगा। 17 कर्यूँकि मैं फिर तुझे तदमुस्ती और तेरे जख़मों से शिफा बख़ूँगा खुदावन्द फरमाता है क्यूँकि उन्होंने तेरा मरदता रखवा कि यह सिय्यन है, जिसे कोई नहीं पछाड़ता 18 “खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: देख, मैं याकूब के खेमों की गुलामी को खत्म कराऊँगा, और उसके घरों पर रहमत करूँगा; और शहर अपने ही पहाड़ पर बनाया जाएगा और कस्म अपने ही मकाम पर आबाद हो जाएगा। 19 और उनमें से शुकुगुजारी और खुशी करने वालों की आवाज आएगी; और मैं उनको अफ़ज़ाइश बख़ूँगा, और वह थोड़े न होंगे; मैं उनको शैकूत बख़ूँगा और वह हकीर न होंगे। 20 और उनकी औलाद ऐसी होगी जैसी पहले थी, और उनकी जमा’अत मेरे हुज़र में काईम होगी, और मैं उन सबको जो उन पर जुलम करें सजा दँगा। 21 और उनका हाकिम उन्हीं में से होगा, और उनका फरमारौँवाँ उन्हीं के बीच से पैदा होगा और मैं उसे कुर्बात बख़ूँगा, और वह मेरे नज़दीक आएगा; कर्यूँकि कौन है जिसने ये जेरुअत की हो कि मेरे पास आए? खुदावन्द फरमाता है। 22 और तुम मेरे लोग होगे, और मैं तुम्हारा खुदा हँगा।” 23 देख, खुदावन्द के गजबनाक गुस्से की अँधी चलती है! यह तेज तुफान शरीरों के सिर पर टूट पड़ेगा। 24 जब तक यह सब कुछ न हो ले, और खुदावन्द अपने दिल के मक्कसद पौरे न कर ले, उसका गजबनाक गुस्सा खत्म न होगा; तुम आँखिरी दिनों में इसे समझोगे।

31 खुदावन्द फरमाता है, मैं उस वक्त इसाईल के सब घरानों का खुदा हँगा और वह मेरे लोग होंगे। 2 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: इसाईल में से जो लोग तलवार से बचे, जब वह राहत की तलाश में गए तो वीरान में मक्कबूल ठहरे। 3 “खुदावन्द फलों से मुझ पर जाहिर हुआ और कहा कि मैंने तुझ से हमेशा की मुहब्बत रखड़ी; इसीलिए मैंने अपनी शक्कत तुझ पर बढ़ाई।” 4 ऐ इसाईल की कुँवारी! मैं तुझे फिर आबाद करूँगा और तू आबाद हो जाएगी; तू फिर दफ उठाकर आरस्ता होगी, और खुशी करने वालों के नाच में शामिल होने को निकलेगी। 5 तू फिर सामरिया के पहाड़ों पर ताकिस्तान लगाएगी, बग लगाने वाले लायगें और उसका फल खाएँगे। 6 कर्यूँकि एक दिन आएगा कि इसाईल की पहाड़ियों पर निगहबान पुकारेंगे कि ‘उठो, हम सिय्यन पर खुदावन्द अपने खुदा के सामने चलें।’ 7 कर्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: याकूब के लिए खुशी से गाओ और कौमों के सरताज के लिए ललकारो; ऐलान करो, हम्द करो और कहो, ‘ऐ खुदावन्द, अपने लोगों को, यानी इसाईल के बकिये को बचा।’ 8 देखो, मैं उत्तरी मुल्क से उनको लाऊँगा, और जमीन की सरहदों से उनको जमा’करूँगा, और उनमें अंधे, और लंगड़े, और हामिला और जच्चा सब होंगे; उनकी बड़ी जमा’अत यहाँ वापस आएगी। 9 वह रोते और मुनाजात करते हुए आएँगे, मैं उनकी रहवारी करूँगा; मैं उनको पारी की नदियों की तरफ राह — ए — रास्त पर चलाऊँगा, जिसमें वह ठोकर न खाएँगे; कर्यूँकि मैं इसाईल का बाप हूँ और इसाईल मेरा पहलौता है। 10 “ऐ कौमों, खुदावन्द का कलाम सनो, और दूँ के जजीरों में ऐलान करो; और कहो, ‘जिसने इसाईल को तितर — बितर किया, वही उसे जमा’ करेगा और उसकी ऐसी निगहबानी करेगा, जैसी गड़रिया अपने गल्ले की, 11 कर्यूँकि खुदावन्द ने याकूब का फिदिया दिया है, और उसके हाथ से जो उससे ताकतवर था रिहाई बख़ी है। 12 तब वह आएँगे और सिय्यन की चोटी पर गाएँगे, और खुदावन्द की नेमतों यानी अनाज और मय और तेल, और गाय — बैल के और भेड़ — बकरी के

बच्चों की तरफ इकट्ठे रहाँ होंगे; और उनकी जान सैराब बाग की तरह होगी, और वह फिर कभी गमजदा न होंगे। 13 उस वक्त कुवाँरियाँ और पीर — और — जबान खुशी से रसास करेंगे, कर्यूँकि मैं उनके गम को खुशी से बदल दूँगा और उनको तसल्ली देकर गम के बाद खुश करूँगा। 14 मैं काहिनों की जान को चिकनाई से सेर करूँगा, और मेरे लोग मेरी नेमतों से आसूदा होंगे, खुदावन्द फरमाता है।” 15 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: ‘रामा में एक आवाज सुनाई दी, नौहा और जार — जार रोना; राखिल अपने बच्चों को रो रही है, वह अपने बच्चों के बारे में तसल्ली पजारी नहीं होती, क्यूँकि वह नहीं है।’ 16 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: अपनी रोने की आवाज को रोक, और अपनी आँखों को आँसूओं से बाज रख; कर्यूँकि तेरी मेहनत के लिए बदला है, खुदावन्द फरमाता है; और वह दुश्मन के मुल्क से वापस आएँगे। 17 और खुदावन्द फरमाता है, तेरी ‘आकबत के बारे में उम्मीद है कर्यूँकि तेरे बच्चे फिर अपनी हहों में दाखिल होंगे। 18 हकीकत में मैंने इक़ाइम को अपने आप पर यूँ मातम करते सुना, ‘तू ने मुझे तम्हीं की, और मैंने उस बछड़े की तरह जो सधाया नहीं गया तम्हीं पाई।’ 19 मुझे फेर तो मैं फिरँगा, कर्यूँकि तू ही मेरा खुदावन्द खुदा है। 19 कर्यूँकि फिरने के बाद मैंने तैबा की, और तरबियत पाने के बाद मैंने अपनी रान पर हाथ मारा; मैं शर्मन्दा बल्कि परेशान खातिर हुआ, इसलिए कि मैंने अपनी जवानी की मलामत उठाई थी। 20 क्या इक़ाइम मेरा प्यारा बेटा है? क्या वह पसन्दीदा फर्जन्द है? कर्यूँकि जब — जब मैं उसके खिलाफ कुछ कहता हूँ, तो उसे जी जान से याद करता हूँ। इसलिए मेरा दिल उसके लिए बेताब है, मैं यकीनन उस पर रहमत करूँगा, खुदावन्द फरमाता है। 21 “अपने लिए सुनून खड़े कर, अपने लिए खब्बे बना; उस शाहराह पर दिल लगा, हाँ, उसी रान से जिससे तू गई थी वापस आ। ऐ इसाईल की कुँवारी, अपने इन शहरों में वापस आ। 22 ऐ नाफरमान बेटी, त कब तक आवारा किरेगी? कर्यूँकि खुदावन्द ने जमीन पर एक नई चीज़ पैदा की है, कि ‘अैर मर्द की हिमायत करेगी।’ 23 रब्ब — उल — अफ़बाज, इसाईल का खुदा यूँ फरमाता है. “जब मैं उनके गुलामों को वापस लाऊँगा, तो वह यहदाह के मुल्क और उसके शहरों में फिर यूँ करेंगे, ऐ सदाकत के घर, ए कोह — ए — मुक़द्दस, खुदावन्द तुझे बरकत बज़ो।” 24 और यहदाह और उसके सब शहर उसमें इकट्ठे आराम करेंगे, किसान और वह जो गल्ले लिए किए जाते हैं। 25 कर्यूँकि मैंने थकी जान को आसूदा, और हर गमीन स्तु को सेर किया है। 26 अब मैंने बेदार होकर निगाह की, और मेरी नीद मेरे लिए मीठी थी। 27 देखो, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है, जब मैं इसाईल के घर में और यहदाह के घर में इसान का बीज और हैवान का बीज बोऊँगा। 28 और खुदावन्द फरमाता है, जिस तरह मैंने उनकी धात में बैठ कर उनको उखाड़ा और दाया और गिराया और बबाद किया और दुख दिया; उसी तरह मैं निगहबानी करके उनको बनाऊँगा और लगाऊँगा। 29 उन दिनों में फिर यूँ न करेंगे, ‘बाप — दादा ने कच्चे अंगू खाए और औलाद के दाँत खट्टे हो गए। 30 कर्यूँकि हर एक अपनी ही बदकिरदारी की वजह से मेरेगा; हर एक जो कच्चे अंगू खाता है, उसी के दाँत खट्टे होंगे। 31 “देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है, जब मैं इसाईल के घराने और यहदाह के घराने के साथ नया ‘अहद बांगूँगा, 32 उस ‘अहद के मुताबिक नहीं, जो मैंने उनके बाप — दादा से किया जब मैंने उनकी दस्तगारी की, ताकि उनको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाऊँ; और उहोंने मैं उस ‘अहद को तोड़ा अपारचे मैं उनका मालिक था, खुदावन्द फरमाता है। 33 बल्कि यह वह ‘अहद है जो मैं उन दिनों के बाद इसाईल के घराने से बाहरूँगा, खुदावन्द फरमाता है: मैं अपनी शरीरी अत उके बातिन में रखबूँगा, और उनके दिल पर उसे लिखूँगा; और मैं उनका खुदा हँगा, और वह मेरे लोग होंगे; 34 और वह फिर अपने — अपने पड़ोसी और

अपने — अपने भाई को यह कह कर तालीम नहीं देंगे कि खुदावन्द को पहचानो, क्यूंकि छोटे से बड़े तक वह सब मुझे जानेंगे, खुदावन्द फरमाता है; इसलिए कि मैं उनकी बदकिरदारी को बख्त दृग्गा और उनके गुनाह को याद न करूँगा।” 35 खुदावन्द जिसने दिन की रोशनी के लिए सूरज को मुकर्रर किया, और जिसने रात की रोशनी के लिए चाँद और सितारों का निजाम काईम किया, जो समन्दर को मैज़जन करता है जिससे उसकी लहरें शोर करती है यूँ फरमाता है; उसका नाम रब्ब — उल — अफवाज है। 36 खुदावन्द फरमाता है: “अगर यह निजाम मेरे सामने से खत्म हो जाए, तो इस्माइल की नसल भी मेरे सामने से जाती रहेंगी कि हमेशा तक फिर कौम न हो।” 37 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: “अगर कोई ऊपर आसमान को नाप सके और नीचे जमीन की बुनियाद का पता लगा ले, तो मैं भी बनी — इस्माइल को उनके सब 'आमाल की बजह से रुक कर दृग्गा, खुदावन्द फरमाता है।” 38 देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है कि “यह शहर हननेल के बुर्ज से कोने के फाटक तक खुदावन्द के लिए तामीर किया जाएगा।” 39 और फिर जरीब सीधी कोह — ए — जरेब पर से होती हुई जोआता को धेर लेगी। 40 और लाशों और राख की तमाम वादी और सब खेत किंद्रोन के नाले तक, और घोड़े फाटक के कोने तक पूरब की तरफ खुदावन्द के लिए पाक होंगे; फिर वह हमेशा तक न कभी उखाड़ा, न गिराया जाएगा।”

32 वह कलाम जो शाह — ए — यहदाह सिदकियाह के दसवें बरस में जो

नबूकनजर का अशहवाँ बरस था, खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाजिल हुआ। 2 उस वक्त शाह — ए — बाबूल की फौज येस्शलेम का प्रियाव किए पड़ी थी, और यरमियाह नबी शाह — ए — यहदाह के घर में कैदखाने के सहन में बन्द था। 3 क्यूँकि शाह — ए — यहदाह सिदकियाह ने उसे यह कह कर कैद किया, तू क्यूँ नबुव्वत करता और कहता है, कि 'खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: देख, मैं इस शहर को शाह — ए — बाबूल के हवाले कर दृग्गा, और वह उसे ले लेगा; 4 और शाह — ए — यहदाह सिदकियाह कसदियों के हाथ से न बचेगा, बल्कि ज़रूर शाह — ए — बाबूल के हवाले किया जाएगा, और उससे आमने — सामने बातें करेगा और दोनों की अँखें सामने होंगी। 5 और वह सिदकियाह को बाबूल में ले जाएगा, और जब तक मैं उसको याद न फरमाऊँ वह वही रहेगा, खुदावन्द फरमाता है। हच्चन्द तुम कसदियों के साथ ज़ंग करोगे, लेकिन कामयाब न होंगे? 6 तब यरमियाह ने कहा कि “खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ और उसने फरमाया 7 देख, तेरे चचा सल्तन का बेटा हनमएल तेरे पास आकर कहेगा कि 'मेरा खेत जो 'अन्तोत मैं है, अपने लिए खरीद ले; क्यूँकि उसको छुड़ाना तेरा हक है। 8 तब मेरे चचा का बेटा हनमएल कैदखाने के सहन में मेरे पास आया, और जैसा खुदावन्द ने फरमाया था, मुझसे कहा कि, मेरा खेत जो 'अन्तोत मैं बिनयमीन के 'इलाके मैं है, खरीद ले; क्यूँकि यह तेरा मौस्ती हक है और उसको छुड़ाना तेरा काम है, उसे अपने लिए खरीद ले।” 9 और मैंने उस खेत को जो 'अन्तोत में था, अपने चचा के बेटे हनमएल से खरीद लिया और नकद सतर मिस्काल चाँदी तोल कर उसे दी। 10 और मैंने एक कबाला लिया और उस पर मुहर की और गवाह ठहराए, और चाँदी तराजू में तोलकर उसे दी 11 तब मैंने उस कबाले को लिया, यानी वह जो कानून और दस्तूर के मुताबिक सर — ब — मुहर था, और वह जो खुला था; 12 और मैंने उस कबाले को अपने चचा के बेटे हनमएल के सामने और उन गवाहों के सामने जिन्होंने अपने नाम कबाले पर लिखे थे, उन सब यहदियों के सामने जो कैदखाने के सहन मैं बैठे थे, बास्क — बिन — नेयिरियाह — बिन — महसियाह को सौंपा। 13 और मैंने उनके सामने बास्क की ताकीद की 14 कि 'रब्ब — उल — अफवाज, इस्माइल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: यह कापाज्जात ले, यानी यह कबाला जो सर — ब —

मुहर है, और यह जो खुला है, और उनको मिट्टी के बर्तन में रख ताकि बहुत दिनों तक महफूज रहें। 15 क्यूँकि रब्ब — उल — अफवाज, इस्माइल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: इस मुल्क में फिर धरों और ताकिस्तानों की खरीद — औ — फ्रोख्त होगी। 16 'बास्क — बिन — नेयिरियाह को कबाला देने के बा'द, मैंने खुदावन्द से यूँ दुआ की: 17 'आह, ऐ खुदावन्द खुदा! देख, तुम अपनी 'अजीम कुदरत और अपने बुलन्द बाजू से आसमान और जमीन को पैदा किया, और तेरे लिए कोई काम मुश्किल नहीं है; 18 तू हजारों पर शक्कत करता है, और बाप — दादा की बदकिरदारी का बदला उनके बाद उनकी औलाद के दामन में डाल देता है; जिसका नाम खुदा — ए — 'अजीम — ओ — कादिर रब्ब — उल — अफवाज है; 19 मश्वरत में बुजुर्ग, और काम में कुदरत वाला है; बनी — आदम की सब राहें तेरे जेर — ए — नजर हैं; ताकि हर एक को उसके चाल चलन के मुवाफिक और उसके 'आमाल के फल के मुताबिक बदला दे। 20 जिसने मुल्क — ए — मिस्र में आज तक, और इस्माइल और दूसरे लोगों में निशान और 'अजायब दिखाए और अपने लिए नाम पैदा किया, जैसा कि इस जमाने में है। 21 क्यूँकि तू अपनी कौम इस्माइल को मुल्क — ए — मिस्र से निशान और 'अजायब और कवी हाथ और बलन्द बाजू से, और बड़ी हैवत के साथ निकाल लाया; 22 और यह मुल्क उनको दिया जिसे देने की तुम उनके बाप — दादा से कसम खासी थी ऐसा मुल्क जिसमें दृश्य और शहद बहता है। 23 और वह आकर उसके मालिक हो गए, लेकिन वह न तेरी आवाज को सुना और न तेरी शरीरी अंत पर चले, और जो कुछ तूने करने को कहा उन्होंने नहीं किया। इसलिए तू यह सब मुनीबत उन पर लाया। 24 दमदर्मों को देख, वह शहर तक आ पहुँचे हैं कि उसे फतह कर लें, और शहर तलवार और काल और बाल की बजह से कसदियों के हवाले कर दिया गया है, जो उस पर चढ़ आए और जो कुछ तूने फरमाया पूरा हआ, और तू आप देखता है। 25 तो भी, ऐ खुदावन्द खुदा, तूने मुझसे फरमाया कि वह खेत स्पस्य देकर अपने लिए खरीद ले और गवाह ठहरा ले, हालांकि यह शहर कसदियों के हवाले कर दिया गया। 26 तब खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ: 27 देख, मैं खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: देख, मैं इस शहर को कसदियों के और शाह — ए — बाबूल नबूकनजर के हवाले कर दृग्गा, और वह इसे ले लेगा; 29 और कसदी जो इस शहर पर चढ़ाई करते हैं, आकर इसको आग लगाएँ और इसे उन धरों के साथ जलाएँ, जिनकी छतों पर लोगों ने बाल के लिए खुदावन्द जलायी और गैरमांबूटों के लिए तपावन तपाए कि मुझे गजबनाक करें। 30 क्यूँकि बनी — इस्माइल और बनी यहदाह अपनी जवानी से अब तक सिर्फ वही करते आए हैं जो मेरी नजर में बुरा है; क्यूँकि बनी — इस्माइल ने अपने 'आमाल से मुझे गजबनाक ही किया, खुदावन्द फरमाता है। 31 क्यूँकि यह शहर जिस दिन से उन्होंने इसे तामीर किया, आज के दिन तक मेरे कहर और गजब का जरिया हो रहा है; ताकि मैं इसे अपने सामने से दूर करूँ 32 बनी — इस्माइल और बनी यहदाह की तमाम बुराई के ज़रिए जो उन्होंने और उनके बादशाहों ने, और हाकिम और काहिनों और नबियों ने, और यहदाह के लोगों और येस्शलेम के बशिन्दों ने की, ताकि मुझे गजबनाक करें। 33 क्यूँकि उन्होंने मेरी तरफ पीठ की और मूँह न किया, हर चन्द मैंने उनको सिखाया और बक्त पर तालीम दी, तो भी उन्होंने कान न लगाया कि तरबियत पजार हों, 34 बल्कि उस धर में जो मेरा नाम से कहलाता है, अपनी मक्क्षहात रखवी ताकि उसे नापाक करें। 35 और उन्होंने बाल के ऊँचे मकाम जो बिन हिन्स की वादी में हैं बनाए, ताकि अपने बेटों और बेटियों को मोलक के लिए आग में से गुजारें, जिसका मैंने उनको हक्क नहीं दिया और न मेरे खयाल में आया कि वह

ऐसा मकरूह काम करके यहदाह को गुनाहगार बनाएँ। 36 और अब इस शहर के बारे में, जिसके हक में तुम कहते हों, 'तलवार और काल और बबा के बरसीले से वह शह — ए — बाबूल के हवाले किया जाएँा, खुदावन्द, इमाईल का खुदा, यूँ फरमाता है: 37 देख, मैं उनको उन सब मुल्कों से जहाँ मैंने उनको गैज — ओ — गजब और बड़े गुस्से से हाँक दिया है, जमा' करँगा और इस मकाम में वापस लाऊँगा और उनको अन्न से आवाद करँगा। 38 और वह मैंने लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा। 39 मैं उनको यकदिल और यकरिवश बना दूँगा, और वह अपनी और अपने बाद अपनी औलाद की भलाई कि लिए हमेशा मुझसे डरते रहेंगे। 40 मैं उनसे हमेशा का 'अहद करँगा' कि उनके साथ भलाई करने से बाज न आऊँगा, और मैं अपना खौफ उनके दिल में डालूँगा ताकि वह मुझसे फिर न जाएँ। 41 हाँ, मैं उनसे खुश होकर उनसे नेकी करँगा, और यकीनन दिल — ओ — जान से उनको इस मुल्क में लाऊँगा। 42 'क्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: जिस तरह मैं इन लोगों पर यह तमाम बला — ए — 'अजीम लाया हूँ, उसी तरह वह तमाम नेकी जिसका मैंने उनसे बांदा किया है, उनसे करँगा। 43 और इस मुल्क में जिसके बारे में तुम कहते हो कि 'वह वीरान है, वहाँ न इंसान है न हैवान, वह कसदियों के हवाले किया गया', फिर खेत खरीद जाएँगे। 44 बिनयमीन के 'इलाके में और येस्सलेम के 'इलाके में और यहदाह के शहरों में और पहाड़ी के, और बादी के, और दलिखन के शहरों में लोग सम्या देकर खेत खरीदिए; और कबाले लिखाकर उन पर महर लगाएँ और गवाह ठहराएँ, क्यूँकि मैं उनकी गुलामी को खत्म कर दूँगा, खुदावन्द फरमाता है।'

33 हुमजु यरमियाह कैदखाने के सहन में बन्द था कि खुदावन्द का कलाम दोबारा उस पर नाजिल हुआ कि: 2 खुदावन्द जो पूरा करता और बनाता और काईम करता है, जिसका नाम योबाह है, यूँ फरमाता है: 3 कि मुझे एकार और मैं तुझे जबाब दूँगा, और बड़ी — बड़ी और गहरी बातें जिनको तू नहीं जानता, तुझ पर जाहिर करँगा। 4 क्यूँकि खुदावन्द इमाईल का खुदा, इस शहर के घरों के बारे में, और शाहान — ए — यहदाह के घरों के बारे में जो दमदारों और तलवार के जरिए पिरा दिए गए हैं, यूँ फरमाता है: 5 कि वह कसदियों से लड़ने आए हैं, और उनको आदिमियों की लाशों से भरेंगे, जिनको मैंने अपने कहर — ओ — गजब से कल्प किया है, और जिनकी तमाम शरारत की बजह से मैंने इस शहर से अपना मैंह छिपाया है। 6 देख, मैं उसे सिहत और तंदुस्ती बरछाँगा मैं उनको शिफा दूँगा और अम्न — ओ — सलामती की कसरत उन पर जाहिर करँगा। 7 और मैं यहदाह और इमाईल को गुलामी से वापस लाऊँगा और उनको पहले की तरह बनाऊँगा। 8 और मैं उनको उनकी सारी बदकिरदारी से जो उन्होंने मेरे खिलाफ की है, पाक करँगा और मैं उनकी सारी बदकिरदारी जिससे वह मेरे गुनाहगार हुए और जिससे उन्होंने मेरे खिलाफ बगावत की है, मृ'आफ करँगा। 9 और यह मेरे लिए इस जमीन की सब कौमों के सामने खुशी बरछा नाम और शिताइश — ओ — जलाल का जरिया' होगा; वह उस सब भलाई का जो मैं उनसे करता हूँ, जिक्र सुनेंगी और उस भलाई और सलामती की बजह से जो मैं इनके लिए मुहूर्या करता हूँ, डेरेंगी और कैपेंगी। 10 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: इस मकाम में जिसके बारे में तुम कहते हो, 'वह वीरान है, वहाँ न इंसान है न हैवान, या'नी यहदाह के शहरों में और येस्सलेम के बाजारों में जो वीरान हैं, जहाँ न इंसान है न बाशिन्दे न हैवान, 11 खुशी और शादमानी की आवाज, दुल्हे और दुल्हन की आवाज, और उनकी आवाज सुनी जाएँगी जो कहते हैं, 'रब्ब — उल — अफवाज की सिताइश करो क्यूँकि खुदावन्द भला है और उसकी शफककत हमेशा की है! हाँ, उनकी आवाज जो खुदावन्द के घर में शक्रगुजारी की कुर्बानी लायेंगे क्यूँकि खुदावन्द फरमाता है,

मैं इस मुल्क के गुलामों को वापस लाकर बहाल करँसँगा। 12 'रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: इस वीरान जगह और इसके सब शहरों में जहाँ न इंसान है न हैवान, फिर चरवाहों के रहने के मकान होंगे जो अपने गल्लों को बिठाएँगे। 13 कोहिस्तान के शहरों में और बादी के और दलिखन के शहरों में, और बिनयमीन के 'इलाकों में और येस्सलेम के 'इलाके में, और यहदाह के शहरों में फिर गल्ले मिन्ने वाले के हाथ के नीचे से गुज़रेंगे, खुदावन्द फरमाता है। 14 देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है कि 'वह नेक बात जो मैंने इमाईल के घराने और यहदाह के घराने के हक में फरमाइ है, पूरी करँसँगा। 15 उन्हीं दिनों में और उसी बक्त दै दाऊद के लिए सदाकत की शाख पैदा करँसँगा, और वह मुल्क में 'अदालत — ओ — सदाकत से 'अमल करेगा। 16 उन दिनों में यहदाह न जात पाएगा और येस्सलेम सलामती से सुकूनत करेगा; और 'खुदावन्द हमारी सदाकत' उसका नाम होगा। 17 'क्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: इमाईल के घराने के तख्त पर बैठने के लिए दाऊद को कभी आदिमी की कमी न होगी, 18 और न लाली काहिनों को आदिमियों की कमी होगी, जो मेरे सामने सोखतनी कुर्बानियों पेश करे और हादिये ढाँड़ां और हमेशा कुर्बानी करें।' 19 फिर खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ: 20 "खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: अगर तुम मेरा वह 'अहद, जो मैंने दिन से और रात से किया, तोड़ सको कि दिन और रात अपने अपने बक्त फर प न हों, 21 तो मेरा वह 'अहद भी जो मैंने अपने खादिम दाऊद से किया, टट सकता है कि उसके तख्त पर बादशाही करने को बेटा न हो और वह 'अहद भी जो अपने खिदमतगुजार लाली काहिनों से किया। 22 जैसे अजराम — ए — फलक बेशुमार हैं और समन्दर की रेत बे अनदाजा है, वैसे ही मैं अपने बन्दे दाऊद की नसल की और लावियों को जो मेरी खिदमत करते हैं, फिरावानी बख्खाँगा।" 23 फिर खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ: 24 कि "क्या तु नहीं देखता कि ये लोग क्या कहते हैं कि 'जिन दो घरानों को खुदावन्द ने चुना, उनको उसने रद कर दिया?' यूँ वह मेरे लोगों को हकीर जानते हैं कि जैसे उनके नज़दीक वह कौप ही नहीं रहे। 25 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: अगर दिन और रात के साथ मेरा 'अहद न हो, और अगर मैंने आसमान और ज़मीन का निजाम मुकर्रर न किया हो; 26 तो मैं या'कूब की नसल को और अपने खादिम दाऊद की नसल को रद कर दूँगा, ताकि मैं अब्राहाम और इस्हाक और या'कूब की नसल पर हक्कमत करने के लिए उसके फर्जन्दों में से किसी को न लौं बल्कि मैं तो उनको गुलामी से वापस लाऊँगा और उन पर रहम करँसँगा।"

34 जब शाह — ए — बाबूल नबकदनजर और उसकी तमाम फौज और इस जमीन की तमाम सल्तनतें जो उसकी फरमार्वाई में थीं, और सब कौमें येस्सलेम और उसकी सब बसियों के खिलाफ जंग कर रही थीं, तब खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह नबी पर नाजिल हुआ 2 कि खुदावन्द इमाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: जा और शाह — ए — यहदाह सिदकियाह से कह दे, 'खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: देख, मैं इस शहर को शाह — ए — बाबूल के हवाले कर दूँगा, और वह इसे आग से जलाएगा; 3 और तू उसके हाथ से न बचेगा, बल्कि ज़स्त पकड़ा जाएगा और उसके हवाले किया जाएगा; और तेरी आँखें शाह — ए — बाबूल की आँखों के देखेंगी और वह सामने तुझ से बातें करेगा, और तू बाबूल को जो जाएगा। 4 तो भी, ऐ शाह — ए — यहदाह सिदकियाह, खुदावन्द का कलाम सुन; तेरे बारे में खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: तू तलवार से कल्पन न किया जाएगा। 5 तू अम्न की हालत में मरेगा और जिस तरह तेरे बाप — दादा 'यानी तुझ से पहले बादशाहों के लिए खुशबूज जलाते थे, उसी तरह तेरे लिए भी जलाएँगे, और तुझ पर नौहा करेंगे और कहेंगे, हाय, आका! "क्यूँकि मैंने यह बात कही है, खुदावन्द फरमाता है।" 6 तब यरमियाह नबी ने

यह सब बातें शाह — ए — यहदाह सिदकियाह से येस्शलेम में कहीं, 7 जब कि शाह — ए — बाबुल की फौज येस्शलेम और यहदाह के शहरों से जो बच रहे थे, यानी लकीस और 'अजीकाह से लड़ रही थी; क्यूंकि यहदाह के शहरों में से यही हसीन शहर बाकी थे। 8 वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाजिल हुआ, जब सिदकियाह बादशाह ने येस्शलेम के सब लोगों से 'अहद — ओ — पैमान किया कि आजादी का 'ऐलान किया जाए। 9 कि हर एक अपने गुलाम को और अपनी लौटी को, जो 'इङ्ग्रामी मर्द या 'औरत हो, आजाद कर दे कि कोई अपने यहदी भाइ से गुलामी न कराए। 10 और जब सब हाकिम और सब लोगों ने जो इस 'अहद में शामिल थे, सुना कि हर एक को लाजिम है कि अपने गुलाम और अपनी लौटी को आजाद करे और फिर उनसे गुलामी न कराए, तो उन्होंने इता'अत की और उनको आजाद कर दिया। 11 लेकिन उसके बाद वह फिर गए और उन गुलामों और लौटियों को जिनको उन्होंने आजाद कर दिया था, फिर वापस ले आए और उनको ताबे' करके गुलाम और लौटियाँ बना लिया। 12 इसलिए खुदावन्द की तरफ से यह कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ: 13 कि 'खुदावन्द, इस्माईल का खुदा यूँ फरमाता है कि: मैंने तुम्हारे बाप — दादा से, जिस दिन मैं उनको मुल्क — ए — मिस्र से और गुलामी के घर से निकाल लाया, यह 'अहद बाँधा, 14 कि 'तुम मैं से हर एक अपने 'इङ्ग्रामी भाइ को जो उसके हाथ बेचा गया हो, सात बरस के आधिर में यानी जब वह छ: बरस तक खिदमत कर चके, तो आजाद कर दे; लेकिन तुम्हारे बाप — दादा ने मेरी न सुनी और कान न लगाया। 15 और आज ही के दिन तम स्तूप' लाए, और वही किया जो मेरी नजर में भला है कि हर एक ने अपने पड़ोसी को आजादी का मुजदा दिया; और तुम ने उस घर में जो मेरे नाम से कहलाता है, मेरे सामने 'अहद बाँधा; 16 लेकिन तुम ने नाकर्मान हो कर मेरे नाम को नापाक किया, और हर एक ने अपने गुलाम को और अपनी लौटी को, जिनको तुमने आजाद करके उनकी मर्जी पर छोड़ दिया था, फिर पकड़कर ताबे' किया कि तुम्हारे लिए गुलाम और लौटियों हों। 17 'इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: तुम ने मेरी न सुनी कि हर एक अपने भाइ और अपने पड़ोसी को आजादी का मुजदा सुनाए, देखो, खुदावन्द फरमाता है, मैं तुम को तलवार और बबा और काल के लिए आजादी का मुजदा देता हूँ और मैं ऐसा कस्तूरा कि तुम इस जमीन की सब ममलुकतों में धक्के खाते फिरोगे। 18 और मैं उन आदिमियों को जिन्होंने मुझसे 'अहदशिकी' की ओर उस 'अहद की बातें, जो उन्होंने मेरे सामने बाँधा है पूरी नहीं कीं, जब बछड़े को दो टुकड़े किया और उन दो टुकड़ों के बीच से होकर गुजरें; 19 यानी यहदाह के और येस्शलेम के हाकिम और ख्वाजासरा और काहिन और मुल्क के सब लोग जो बछड़े के टुकड़ों के बीच से होकर गुजरें; 20 हाँ, मैं उनको उनके मुखालिकों और जानी दुश्मनों के हवाले करूँगा, और उनकी लाशें हवाई परिन्दों और जमीन के दरिन्दों की खुराक होंगी। 21 और मैं शाह — ए — यहदाह सिदकियाह को और उसके हाकिम को, उनके मुखालिकों और जानी दुश्मनों और शाह — ए — बाबुल की फौज के, जो तुम को छोड़कर चली गई, हवाले कर दूँगा। 22 देखो, मैं हक्म करूँगा खुदावन्द फरमाता है और उनको फिर इस शहर की तरफ वापस लाऊँगा, और वह इससे लड़ेंगे और फतह करके आग से जलाएँगे; और मैं यहदाह के शहरों को वीरान कर दूँगा कि गैरआबाद होंगे।'

35 वह कलाम जो शाह — ए — यहदाह यहयकीम — बिन — यूसियाह के दिनों में खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाजिल हुआ: 2 कि "तू ऐकाबियों के घर जा और उसके कलाम कर, और उनको खुदावन्द के घर की एक कोठरी में लाकर मय पिला।" 3 तब मैंने याजनियाह — बिन — यर्मियाह — बिन हवसिनयाह और उसके भाइयों और उसके सब बेटों और ऐकाबियों के

तमाम घराने को साथ लिया। 4 और मैं उनको खुदावन्द के घर में बनी हनान — बिन — यजदलियाह मर्द — ए — खुदा की कोठरी में लाया, जो हाकिम की कोठरी के नजदीक मासियाह — बिन — सलम दरबान की कोठरी के ऊपर थी। 5 और मैंने मय से लबरेज प्याले और जामैरैकाबियों के घराने के बेटों के आगे रख दें और उनसे कहा, 'मय पियो। 6 लेकिन उन्होंने कहा, हम मय न पियेंगे, क्यूंकि हमारे बाप यूनादाब — बिन — ऐकाब ने हमको यूँ हक्म दिया, 'तुम हरगिज मय न पीना; न तुम न तुम्हारे बेटे; 7 और न घर बनाना, न बीज बोना, न ताकिस्तान लगाना, न उनके मालिक होना; बल्कि उम्र भर खेमों में रहना ताकि जिस सरजमीन में तुम मुसाफिर हो, तुम्हारी उम्र दराज हो। 8 चुनौते हम ने अपने बाप यूनादाब — बिन — ऐकाब की बात मानी, उसके हक्म के मुताबिक हम और हमारी बीवियाँ और हमारे बेटे बेटियाँ कभी मय नहीं पीत। 9 और हम न रहने के लिए घर बनाते और न ताकिस्तान और खेत और बीज रखते हैं। 10 लेकिन हम खेमों में बसे हैं, और हमने फरमाँबरदारी की और जो कुछ हमारे बाप यूनादाब ने हमको हक्म दिया हम ने उस पर 'अमल किया है। 11 लेकिन यूँ हुआ कि जब शाह — ए — बाबुल नब्कूदनजर इस मुल्क पर चढ़ आया, तो हम ने कहा कि 'आओ, हम कसियियों और आरमियों की फौज के डर से येस्शलेम को छले जाएँ, यूँ हम येस्शलेम में बसते हैं। 12 तब खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ: 13 कि 'रब्ब — उल — अफवाज, इस्माईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: जा, और यहदाह के आदिमियों और येस्शलेम के बाशिन्दों से यूँ कह कि क्या तुम तरवियत पज़ीर न होगे कि मेरी बातें सुनो, खुदावन्द फरमाता है? 14 जो बातें यूनादाब — बिन — ऐकाब ने अपने बेटों को फरमाइ कि मय न पियो, वह बजा लाए और आज तक मय नहीं पीती, बल्कि उन्होंने अपने बाप के हक्म को माना; लेकिन मैंने तुम से कलाम किया और बक्तप पर तुम को फरमाया, और तुम ने मेरी न सुनी। 15 मैंने अपने तमाम खिदमतगुरान नवियों को तुम्हारे पास भेजा, और उनको बक्त पर ये कहते हुए भेजा कि तुम दर एक अपनी बुरी राह से बाज आओ, और अपने 'आमाल को दुम्हत करो और गैर मांबूदों की फैरवी और इबादत न करो, और जो मुल्क मैंने तुमको और तुम्हारे बाप — दादा को दिया है, तुम उसमें बसोगे; लेकिन तुम ने न कान लगाया न मेरी सुनी। 16 इस वजह से कि यूनादाब बिन ऐकाब के बेटे अपने बाप के हक्म को जो उसने उनको दिया था बजा लाये लेकिन इन लोगों ने मेरी न सुनी। 17 इसलिए खुदावन्द, रब्ब — उल — अफवाज, इस्माईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: देख, मैं यहदाह पर और येस्शलेम के तमाम बाशिन्दों पर वह सब मुसीबत, जिसका मैंने उनके खिलाफ 'ऐलान किया है, लाऊँगा; क्यूंकि मैंने उनसे कलाम किया लेकिन उन्होंने न सुना, और मैंने उनको बुलाया पर उन्होंने जबाब न दिया। 18 और यरमियाह ने ऐकाबियों के घराने से कहा, 'रब्ब — उल — अफवाज, इस्माईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: चौंकि तुमने अपने बाप यूनादाब के हक्म को माना, और उसकी सब वसीयतों पर 'अमल किया है, और जो कुछ उसने तुम को फरमाया तुम बजा लाए; 19 इसलिए रब्ब — उल — अफवाज, इस्माईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: यूनादाब — बिन — ऐकाब के लिए मेरे सामने में खड़े होने को कभी आदिमी की कमी न होगी।

36 शाह — ए — यहदाह यहयकीम — बिन — यूसियाह के चौथे बरस में यह कलाम खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाजिल हुआ: 2 कि "किंताब का एक तूमार ले और वह सब कलाम जो मैंने इस्माईल और यहदाह और तमाम क्लीमों के खिलाफ तुझ से किया, उस दिन से लेकर जब से मैं तुझ से कलाम करने लगा, यानी यूसियाह के दिन से आज के दिन तक उसमें लिख। 3 याद यहदाह का घराना उस तमाम मुसीबत का हाल जो मैं उन पर लाने

का इरादा रखता हूँ सुने, ताकि वह सब अपनी बुद्धि चाल चलन से बाज आएँ; और मैं उनकी बदकिरदारी और गुनाह को मृगाफ करूँ।” 4 तब यरमियाह ने बास्क — बिन — नेयिरियाह को बुलाया, और बास्क ने खुदावन्द का वह सब कलाम जो उसने यरमियाह से किया था, उसकी जबानी किताब के उस तूमार में लिखा। 5 और यरमियाह ने बास्क को हक्म दिया और कहा, मैं तो मजबूर हूँ, मैं खुदावन्द के घर में नहीं जा सकता; 6 लेकिन तू जा और खुदावन्द का वह कलाम जो तूने मेरे मुँह से इस तूमार में लिखा है, खुदावन्द के घर में रोजे के दिन लोगों को पढ़ कर सुना; और तमाम यहदाह के लोगों को भी जो अपने शहरों से आए हों, तू वही कलाम पढ़ कर सुना। 7 शायद वह खुदा के सामने मिन्नत करें और सब के सब अपनी बुद्धि चाल चलन से बाज आएँ, क्यूँकि खुदावन्द का कहर — ओ — गजब जिसका उसने इन लोगों के खिलाफ़ ‘ऐलान किया है, शदीद है। 8 और बास्क — बिन — नेयिरियाह ने सब कुछ जैसा यरमियाह न नबी ने उसको फरमाया था वैसा ही किया, और खुदावन्द के घर में खुदावन्द का कलाम उस किताब से पढ़ कर सुनाया। 9 और शाह — ए — यहदाह यहयकीम — बिन — यूसियाह के पाँचवें बरस के नैवें महीने में यूँ हुआ कि येस्शलेम के सब लोगों ने और उन सब ने जो यहदाह के शहरों से येस्शलेम में आए थे, खुदावन्द के सामने रोजे का ‘ऐलान किया। 10 तब बास्क ने किताब से यरमियाह की बातें, खुदावन्द के घर में जमरियाह — बिन — साफ़न मुश्ती की कोठरी में ऊपर के सहन के बीच, खुदावन्द के घर के नये फाटक के मदरखल पर सब लोगों के सामने पढ़ सुनाई। 11 जब मीकायाह — बिन — जमरियाह — बिनसाफ़न ने खुदावन्द का वह सब कलाम जो उस किताब में था सुना, 12 तो वह उत्तर कर बादशाह के घर मुश्ती की कोठरी में गया, और सब हाकिम यारी इल्लीसमा’ मुश्ती, और दिलायाह बिन समयह और इलनातन बिन अकबर और जमरियाह बिन साफ़न और सिदकियाह — बिन — हननियाह, और सब हाकिम वहाँ बैठे थे। 13 तब मीकायाह ने वह सब बातें जो उसने सुनी थी, जब बास्क किताब से पढ़ कर लोगों को सुनाया था, उससे बयान की। 14 और सब हाकिम ने यहदी — बिन — नतनियाह — बिन — सलमियाह — बिन — कृशी को बास्क के पास यह कहकर भेजा, कि “वह तूमार जो तूने लोगों को पढ़कर सुनाया है, अपने हाथ में ले और चला आ।” 15 तब बास्क — बिन — नेयिरियाह वह तूमार लेकर उनके पास आया। 15 और उन्होंने उसे कहा, कि “अब बैठ जा और हमको यह पढ़ कर सुना।” 16 और बास्क ने उनको पढ़कर सुनाया। 16 जब उन्होंने वह सब बातें सुनी, तो डरकर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे और बास्क से कहा कि “हम यकीनन यह सब बातें बादशाह से बयान करेंगे।” 17 और उन्होंने यह कह कर बास्क से पृछा, हम से कह कि तूने यह सब बातें उसकी जबानी क्यूँकर लिखी? 18 तब बास्क ने उसे कहा, “वह यह सब बातें मुझे मुँह से कहता गया और मैं स्थानी से किताब में लिखता गया।” 19 तब हाकिम ने बास्क से कहा, “जा, अपने आपको और यरमियाह को छिपा, और कोई न जाने कि तुम कहाँ हो।” 20 और वह बादशाह के पास सहन में गए, लेकिन उस तूमार को इल्लीसमा’ मुश्ती की कोठरी में रख गए, और वह बातें बादशाह को कह सुनाई। 21 तब बादशाह ने यहदी को भेजा कि तूमार लाएँ, और वह उसे इल्लीसमा’ मुश्ती की कोठरी में से ले आया। और यहदी ने बादशाह और सब हाकिम को जो बादशाह के सामने खड़े थे, उसे पढ़कर सुनाया। 22 और बादशाह जमिस्तानी महल में बैठा था, क्यूँकि नवाँ महीना था और उसके सामने अंगोठी जल रही थी। 23 जब यहदी ने तीन चार वर्क पढ़े, तो उसने उसे मुश्ती के कलाम तराश से काटा और अंगोठी की आग में डाल दिया, यहाँ तक कि तमाम तूमार अंगोठी की आग में भस्म हो गया। 24 लेकिन वह न डेर, न उन्होंने अपने कपड़े फाड़े, न बादशाह ने न उसके मुलाजिमों

में से किसी ने जिन्होंने यह सब बातें सुनी थी। 25 लेकिन इलनातन, और दिलायाह, और जमरियाह ने बादशाह से ‘अर्ज़ की कि तूमार को न जलाए, लेकिन उसने उनकी एक न सुनी। 26 और बादशाह ने शाहजादे यरहमिएल को और शिरायाह — बिन अज़रिएल और सलमियाह बिन अबदिएल को हुक्म दिया कि बास्क मुश्ती और यरमियाह नबी को गिरफ्तार करें, लेकिन खुदावन्द ने उनको छिपाया। 27 और जब बादशाह तूमार और उन बातों को जो बास्क ने यरमियाह की जबानी लिखी थी, जला चुका तो खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह पर नाजिल हुआ: 28 कि “तू दूसरा तूमार ले, और उसमें वह सब बातें लिख जो पहले तूमार में थीं, जिसे शाह — ए — यहदाह यहयकीम ने जला दिया। 29 और शाह — ए — यहदाह यहयकीम से कह कि ‘खुदावन्द यूँ फरमाता है: तूने तूमार को जला दिया और कहा है, तू ने उसमें यूँ क्यूँ लिखा कि शाह — ए — बाबुल यकीन आएगा और इस मुल्क को हलाक करेगा, और न इसमें इंसान बाकी छोड़ेगा न हैवान?” 30 इसलिए शाह — ए — यहदाह यहयकीम के बारे में खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: उसकी नसल में से कोई न रहेगा जो दाऊद के तखत पर बैठे, और उसकी लाश फैकी जाएगी, ताकि दिन की गमी में और रात को पाले में पड़ी रहे; 31 और मैं उसको और उसकी नसल को और उसके मुलाजिमों को उनकी बदकिरदारी की सज्जा ढूँगा। मैं उन पर और येस्शलेम के बाशिनों पर और यहदाह के लोगों पर वह सब मुरीबत लाऊँगा, जिसका मैं उनके खिलाफ़ ‘ऐलान किया लेकिन उन्होंने न सुना। 32 तब यरमियाह ने दूसरा तूमार लिया और बास्क — बिन — नेयिरियाह मुश्ती को दिया, और उसने उस किताब की सब बातें जिसे शाह — ए — यहदाह यहयकीम ने आग में जलाया था, यरमियाह की जबानी उसमें लिखी और उनके अलावा बैरी ही और बहुत सी बातें उसमें बढ़ा दी गई।

37 और सिदकियाह बिन यूसियाह जिसको शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र ने मुल्क — ए — यहदाह पर बादशाह मुकर्रर किया था, कृनियाह बिन यहयकीम की जगह बादशाही करने लगा। 2 लेकिन न उसने, न उसके मुलाजिमों ने, न मुल्क के लोगों ने खुदावन्द की वह बातें सुनीं, जो उसने यरमियाह नबी के जरिएँ फरमाई थीं। 3 और सिदकियाह बादशाह ने यहकल — बिन सलमियाह और सफ़नियाह — बिन — मासियाह काहिन के जरिएँ यरमियाह नबी की कहला भेजा कि अब हमारे लिए खुदावन्द हमारे खुदा से दुआ कर। 4 हनूँज यरमियाह लोगों के बीच आया जाया करता था, क्यूँकि उन्होंने अपी उसे कैदखाने में नहीं डाला था। 5 इस वक्त फिरँ औन की फौज ने मिस्र से चढ़ाई की, और जब कसदियों ने जो येस्शलेम का घिराव किए थे इसकी शोहरत सुनी, तो वहाँ से चले गए। 6 तब खुदावन्द का यह कलाम यरमियाह नबी पर नाजिल हुआ: 7 कि खुदावन्द, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: तुम शाह — ए — यहदाह से जिसने तुम को मेरी तरफ भेजा कि मुझसे दरियाप्त करो, यूँ कहना कि देख, फिरँ औन की फौज जो तम्हारी मदद को निकली है, अपने मुल्क — ए — मिस्र को लौट जाएगी। 8 और कसदी वापस आकर इस शहर से लड़ोंगे, और इसे फतह करके आग से जलाएँगे। 9 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: तुम यह कह कर अपने आपको फ्रेब न दो, कसदी ज़स्तर हमारे पास से चले जाएँगे, क्यूँकि वह न जाएँगे। 10 और अगर आप कसदियों की तमाम फौज को जो तुम से लड़ती है, ऐसी शिक्षत देते कि उनमें से सिर्फ़ जरबी बाकी रहते, तो भी वह सब अपने — अपने खेमे से उठते और इस शहर को जला देते। 11 और जब कसदियों की फौज फिरँ औन की फौज के डर से येस्शलेम के सामने से रवाना हो गई, 12 तो यरमियाह येस्शलेम से निकला कि बिनयमीन के ‘इलाके में जाकर वहाँ लोगों के बीच अपना हिस्सा ले। 13 और जब वह बिनयमीन के फाटक पर पहुँचा, तो वहाँ पहरेवालों का दारोगा था,

जिसका नाम इरियाह — बिन — सलमियाह — बिन — हननियाह था, और उसने यरमियाह नबी को पकड़ा और कहा तू कसदियों की तरफ भागा जाता है। 14 तब यरमियाह ने कहा, यह झूट है, मैं कसदियों की तरफ भागा नहीं जाता हूँ, लेकिन उसने उनकी एक न सुनी; तब इरियाह यरमियाह को पकड़ कर हाकिम के पास लाया। 15 और हाकिम यरमियाह पर गजबनाक हुए और उसे मारा, और यूनन मुश्ती के घर में उसे कैद किया; क्यौंकि उन्होंने उस घर को कैदखाना बना रखवा था। 16 जब यरमियाह कैदखाने में और उसके तहवानों में दाखिल होकर बहत दिनों तक वहाँ रह चुका; 17 तो सिदकियाह बादशाह ने आदमी भेजकर उसे निकलवाया, और अपने महल में उससे खुफिया तौर से दरियापत किया कि “क्या खुदावन्द की तरफ से कोई कलाम है?” और यरमियाह ने कहा है कि “क्यौंकि उसने फरमाया है कि तू शाह — ए — बाबुल के हवाले किया जाएगा।” 18 और यरमियाह ने सिदकियाह बादशाह से कहा, मैंने तेरा, और तेरे मुलाजिमों का, और इन लोगों का क्या गुनाह किया है कि तुमने मुझे कैदखाने में डाला है? 19 अब तुम्हारे नबी कहाँ हैं, जो तुम से नबुव्वत करते और कहते थे, 'शाह — ए — बाबुल तुम पर और इस मुल्क पर चढ़ाई नहीं करेगा?' 20 अब ऐ बादशाह, मेरे आका मेरी सुन; मेरी दरखास्त कबूल फरमा और मुझे यूनन मुश्ती के घर में वापस न भेज, ऐसा न हो कि मैं वहाँ मर जाऊँ। 21 तब सिदकियाह बादशाह ने हक्म दिया, और उन्होंने यरमियाह को कैदखाने के सहन में रखवा; और हर रोज उसे नानबाईयों के महल्ले से एक रोटी ले कर देते रहे, जब तक कि शहर में रोटी मिल सकती थी। इसलिए यरमियाह कैदखाने के सहन में रहा।

38 फिर सफतियाह बिन मतान और जिदलियाह बिन फशहर और यूक्तुल बिन सलमियाह और फशहर बिन मलकियाह ने वह बातें जो यरमियाह सब लोगों से कहता था, सुनी, वह कहता था, 2 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: जो कोई इस शहर में रहेगा, वह तलवार और काल और बबा से मरेगा; और जो कसदियों में जा मिलेगा, वह जिन्दा रहेगा और उसकी जान उसके लिए गनीमत होगी और वह जिन्दा रहेगा। 3 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: “यह शहर यकीन शाह — ए — बाबुल की फौज के हवाले कर दिया जाएगा और वह इसे ले लेगा।” 4 इसलिए हाकिम ने बादशाह से कहा, हम तुझ से 'अर्ज' करते हैं कि इस आदमी को कत्ल करवा, क्यौंकि यह जंगी मर्दी के हाथों को, जो इस शहर में बाकी है और सब लोगों के हाथों को, उनसे ऐसी बातें कह कर सुस्त करता है। क्यौंकि यह शब्द इन लोगों का खैरखाव ही नहीं, बल्कि बदचाह है। 5 तब सिदकियाह बादशाह ने कहा, वह तुम्हारे काबू में है; क्यौंकि बादशाह तुम्हारे छिलाफ कुछ नहीं कर सकता। 6 तब उन्होंने यरमियाह को पकड़ कर मलकियाह शाहजादे के हौज में, जो कैदखाने के सहन में था डाल दिया; और उन्होंने यरमियाह को रस्से से बौंध कर लटकाया। और हौज में कुछ पानी न था बल्कि कीची थी; और यरमियाह कीच में धंस गया। 7 जब 'अब्द मलिक कूशी ने जो शाही महल के ख्वाजासराओं में से था, सुना कि उन्होंने यरमियाह को हौज में डाल दिया है — जब कि बादशाह बिनयमीन के फटक में बैठा था। 8 तो 'अब्द मलिक बादशाह के महल से निकला और बादशाह से यूँ 'अर्ज' की, 9 कि “ऐ बादशाह, मेरे आका, इन लोगों ने यरमियाह नबी से जो कुछ किया बुरा किया, क्यौंकि उन्होंने उसे हौज में डाल दिया है, और वह वहाँ भूक से मर जाएगा क्यौंकि शहर में रोटी नहीं है।” 10 तब बादशाह ने 'अब्द मलिक कूशी को यूँ हक्म दिया, कि “तू यहाँ से तीस आदमी अपने साथ ले, और यरमियाह नबी को इससे पहले कि वह मर जाए हौज में से निकाला।” 11 और 'अब्द मलिक उन आदमियों को जो उसके पास थे, अपने साथ लेकर बादशाह के महल में रखजाने के नीचे गया, और पुराने चीथड़े और पुराने सड़े हुए लते वहाँ

से लिए और उनको रस्सियों के बरसीले से हौज में यरमियाह के पास लटकाया। 12 और 'अब्द मलिक कूशी ने यरमियाह से कहा कि इन पुराने चीथड़ों और सड़े हुए लतों को रस्सी के नीचे अपनी बगल तले रख। और यरमियाह ने वैसा ही किया। 13 और उन्होंने रस्सियों से यरमियाह को खीचा और हौज से बाहर निकाला; और यरमियाह कैदखाने के सहन में रहा। 14 तब सिदकियाह बादशाह ने यरमियाह नबी को खुदावन्द के घर के तीसरे मदखल में अपने पास बुलाया; और बादशाह ने यरमियाह से कहा, मैं तुझ से एक बात पछता हूँ, तू मुझसे कुछ न छिपा। 15 और यरमियाह ने सिदकियाह से कहा, अगर मैं तुझ से खोलकर बयान करूँ, तो क्या तुम्हे यकीन कत्ल न करेगा? और अगर मैं तुझ से खोलकर कत्ल करूँ, और न उनके हवाले करूँगा जो तेरी जान के तलबगार हैं। 17 तब यरमियाह ने सिदकियाह से कहा कि “खुदावन्द, लश्करों का खुदा, इस्माइल का खुदा यूँ फरमाता है कि: यकीन अगर तू निकल कर शाह — ए — बाबुल के हाकिम के पास चला जाएगा, तो तेरी जान बच जाएगी और यह शहर आग से जलाया न जाएगा, और तू और तेरा धराना जिन्दा रहेगा। 18 लेकिन अगर तू शाह — ए — बाबुल के हाकिम के पास न जाएगा, तो यह शहर कसदियों के हवाले कर दिया जाएगा, और वह इसे जला देंगे और तू उनके हाथ से रिहाई न पाएगा।” 19 सिदकियाह बादशाह ने यरमियाह से कहा कि: “मैं उन यहदियों से डरता हूँ जो कसदियों से जा मिलते हैं, ऐसा न हो कि वह मुझे उनके हवाले करें, और वह मुझ पर ताना मारें।” 20 और यरमियाह ने कहा, वह तुझे हवाले न करेंगे; मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, तू खुदावन्द की बात, जो मैं तुझ से कहता हूँ मान ले। इससे तेरा भला होगा और तेरी जान बच जाएगी। 21 लेकिन अगर तू जाने से इन्कार करे, तो यही कलाम है जो खुदावन्द ने मुझ पर जाहिर किया: 22 कि देख, वह सब 'अर्जें जो शाह — ए — यहदाह के महल में बाकी हैं शाह — ए — बाबुल के हाकिम के पास पहुँचाएंगी और कहेंगी कि जैरे दोस्तों ने तुझे फरेब दिया और तुझ पर गालिक आएँ; जब तेरे पाँव कीच में धूंस गए, तो वह उल्टे फिर गए। 23 और वह तेरी सब बीवियों को, और तेरे बेटों को कसदियों के पास निकाल ले जाएँगे; और तू भी उनके हाथ से रिहाई न पाएगा, बल्कि शाह — ए — बाबुल के हाथ में गिरफ्तार होगा और तू इस शहर के आग से जलाए जाने का जरिया होगा। 24 तब सिदकियाह से यरमियाह से कहा कि इन बातों को कोई न जाने, तो तू मारा न जाएगा। 25 लेकिन अगर हाकिम सुन लें कि मैंने तुझ से बातचीत की, और वह तेरे पास आकर कहें, कि जो कुछ तूने बादशाह से कहा, और जो कुछ बादशाह ने तुझ से कहा अब हम पर जाहिर कर, यह हम से न छिपा और हम तुझे कत्ल न करेंगे; 26 तब तू उनसे कहना कि मैंने बादशाह से 'अर्ज' की थी कि मुझे फिर यूनन के घर में वापस न भेज कि वहाँ मरूँ। 27 तब सब हाकिम यरमियाह के पास आए और उससे पूछा, और उसने इन सब बातों के मुताबिक, जो बादशाह ने फरमाई थी, उनको जबाब दिया। और वह उसके पास से चुप होकर चले गए; क्यौंकि असल मुआमिला उनको मालूम न हुआ। 28 और जिस दिन तक येस्शलेम फतह न हुआ, यरमियाह कैदखाने के सहन में रहा, और जब येस्शलेम फतह हुआ तो वह वही था।

39 शाह — ए — यहदाह से सिदकियाह के नवे बरस के दसवें महीने में, शाह — ए — बाबुल नब्कदनजर अपनी तमाम फौज लेकर येस्शलेम पर चढ़ आया और उसका धिराव किया। 2 सिदकियाह के ग्यारहवें बरस के चौथे महीने की नवी तारीख को शहर — की — फरसील में रखना हो गया; 3 और शाह — ए — बाबुल के सब सरदार या नीरिगिल सराजर, समग्र नब्, सरसकीम, ख्वाजासराओं का सरदार नीरिगिल सराजर मजूसियों का सरदार

और शाह — ए — बाबुल के बाकी सरदार दाखिल हुए और बीच के फाटक पर बैठे। 4 और शाह — ए — यहदाह सिदकियाह और सब जंगी मर्द उनको देख कर भागे, और दोनों तीवरों के बीच जो फाटक शाही बाग के बराबर था, उससे वह रात ही रात भाग निकले और वीराने की राह ली। 5 लेकिन कसदियों की फौज ने उनका पीछा किया और यरीह के मैदान में सिदकियाह को जा लिया, और उसको पकड़ कर रिब्ला में शाह — ए — बाबुल नब्जरदनजर के पास हमारत के 'इलाके' में ले गए; और उसने उस पर फतवा दिया। 6 और शाह — ए — बाबुल ने सिदकियाह के बेटों को रिब्ला में उसकी आँखों के सामने जबह किया, और यहदाह के सब शरफों को भी कत्ल किया। 7 और उसने सिदकियाह की आँखे निकाल डाली और बाबुल को ले जाने के लिए उसे जंजीरों से जकड़ा। 8 और कसदियों ने शाही महल को और लोगों के घरों को आग से जला दिया, और येस्शलेम की फरसील को गिरा दिया। 9 इसके बाद जिलौदारों का सरदार नब्जरादान बाकी लोगों को, जो शहर में रह गए थे और उनको जो उसकी तरफ होकर उसके पास भाग आए थे, यानी कौम के सब बाकी लोगों को गुलाम करके बाबुल को ले गया। 10 लेकिन कौम के गरीबों को जिनके पास कुछ न था, जिलौदारों के सरदार नब्जरादान ने यहदाह के मुल्क में रहने दिया और उसी वक्त उनको ताकिस्तान और खेत बख्तों। 11 और शाह — ए — बाबुल नब्जरदनजर ने यरमियाह के बारे में जिलौदारों के सरदार नब्जरादान को ताकीद करके यूँ कहा, 12 कि "उसे लेकर उस पर खब्र निगाह रख, और उसे कुछ दुख न दे, बल्कि तू उससे वही कर जो वह तुझे कहे।" 13 तब जिलौदारों के सरदार नब्जरादान, नाबशजबान ख्वाजासराओं के सरदार, और नेयिरिगल सराजर, मजूसियों के सरदार, और बाबुल के सब सरदारों ने आदमी भेजकर 14 यरमियाह को कैदखाने के सहन से निकलता लिया, और जिदलियाह — बिन — अखीकाम — बिन — साफन के सुपुर्द किया कि उसे घर ले जाए। इसलिए वह लोगों के साथ रहने लगा। 15 और जब यरमियाह कैदखाने के सहन में बन्ध था, खुदावन्द का यह कलाप उस पर नाजिल हुआ: 16 कि "जा, 'अब्द मलिक कूरी से कह, 'रब्ब — उल — अफावाज, इस्माईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: देख, मैं अपनी बातें इस शहर की भलाई कि लिए नहीं, बल्कि खराबी के लिए पूरी कस्ंगा'; और वह उस रोज़ तेरे सामने पूरी होगी। 17 लेकिन उस दिन मैं तुझे रिहाई दुँगा, खुदावन्द फरमाता है, और तू उन लोगों के हवाले न किया जाएगा जिनसे तू डरता है। 18 क्यूँकि मैं तुझे ज़सर बचाऊँगा और तू तलवार से मारा न जाएगा, बल्कि तेरी जान तेरे लिए ग़नीमत होगी; इसलिए कि तूने मुझ पर भरोसा किया, खुदावन्द फरमाता है।"

40 वह कलाम जो खुदावन्द की तरफ से यरमियाह पर नाजिल हुआ, इसके बाद के जिलौदारों के सरदार नब्जरादान ने उसको रामा से रवाना कर दिया, जब उसने उस हथकड़ियों से जकड़ा हुआ उन सब गुलामों के बीच पाया जो येस्शलेम और यहदाह के थे, जिनको गुलाम करके बाबुल को ले जा रहे थे 2 और जिलौदारों के सरदार ने यरमियाह को लेकर उससे कहा, कि "खुदावन्द तेरे खुदा ने इस बला की, जो इस जगह पर आई खबर दी थी। 3 इसलिए खुदावन्द ने उसे नाजिल किया, और उसने अपने कौल के मुताबिक किया; क्यूँकि तुम लोगों ने खुदावन्द का गुनाह किया और उसकी नहीं सुनी, इसलिए तुम्हारा ये हाल हुआ। 4 और देख, आज मैं तुझे इन हथकड़ियों से जो तेरे हाथों में हैं रिहाई देता हूँ। अगर मेरे साथ बाबुल चलना तेरी नजर में बुरा लगे, तो यहीं रह; तमाम मुल्क तेरे सामने हैं जहाँ तेरा जी चाहे और तू मूनासिब जाने वहीं चला जा।" 5 वह वहीं था कि उसने फिर कहा, तू जिदलियाह बिन अखीकाम बिन साफन के पास जिसे शाह — ए — बाबुल ने

यहदाह के शहरों का हाकिम किया है, चला जा और लोगों के बीच उसके साथ रह; वर्ना जहाँ तेरी नजर में बेहतर हो वहीं चला जा। और जिलौदारों के सरदार ने उसे खुराक और इन आम देकर सम्बत किया। 6 तब यरमियाह जिदलियाह — बिन — अखीकाम के पास मिस्फ़ाह में गया, और उसके साथ उन लोगों के बीच, जो उस मुल्क में बाकी रह गए थे रहने लगा। 7 जब लश्करों के सब सरदारों ने और उनके आदमियों ने जो मैदान में रह गए थे, सुना के शाह — ए — बाबुल ने जिदलियाह — बिन — अखीकाम का मुल्क का हाकिम मुकर्रर किया है; और मर्दी और 'आँतों और बच्चों को, और ममलतक के गरीबों को जो गुलाम होकर बाबुल को न गए थे, उसके सुपुर्द किया है; 8 तो इस्माईल — बिन — नतनियाह और यूनान और यूनतन बनी करिह और सिरायाह — बिन — तनहुमत और बनी 'ईफ़ी नतुकाती और यजनियाह — बिन — मा'काती अपने आदमियों के साथ जिदलियाह के पास मिस्फ़ाह में आए। 9 और जिदलियाह — बिन — अखीकाम — बिन — साफन ने उन से और उन के आदमियों से कसम खाकर कहा, तुम कसदियों की खिदमत गुजारी से न डरो। अपने मुल्क में बसो, और शाह — ए — बाबुल की खिदमत करो तो तुम्हारा भला होगा। 10 देखो, मैं तो इसलिए मिस्फ़ाह में रहता हूँ कि जो करदी हमारे पास आएँ, उनकी खिदमत में हाजिर रहँ पर तुम मय और ताबिस्तानी मेवे, और तेल जमा करके अपने बर्तों में रखेखो, और अपने शहरों में जिन पर तुम ने कब्जा किया है बसो। 11 और इसी तरह जब उन सब यहदियों ने जो मोअब और बनी 'अम्मोन और अदोम' और तमाम मुमालिक में थे, सुना कि शाह — ए — बाबुल ने यहदाह के चन्द लोगों को रहने दिया है, और जिदलियाह — बिन — अखीकाम — बिन — साफन को उन पर हाकिम मुकर्रर किया है; 12 तो सब यहदी हर जगह से, जहाँ वह तिर — तिर किए गए थे, लौटे और यहदाह के मुल्क में मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आएँ, और मय और ताबिस्तानी मेवे कसरत से जमा' किए। 13 और यूनान — बिन — करीह और लश्करों के सब सरदार जो मैदानों में थे, मिस्फ़ाह में जिदलियाह के पास आएँ 14 और उससे कहने लगे, क्या तू जानता है कि बनी 'अम्मोन के बादशाह बालीस ने इस्माईल — बिन — नतनियाह को इसलिए भेजा है कि तुझे कत्ल करो? लौकिन जिदलियाह — बिन — अखीकाम ने उनका यकीन न किया। 15 और यूनान — बिन — करीह ने मिस्फ़ाह में जिदलियाह से तन्हाई में कहा, इजाजत हो तो मैं इस्माईल — बिन — नतनियाह को कत्ल करूँ, और इसको कोई न जानेगा; वह क्यूँ तुझे कत्ल करे, और सब यहदी जो तेरे पास जमा' हुए हैं, तिर — तिर किए जाएँ, और यहदाह के बाकी मान्दा लोग हलाक हों? 16 लौकिन जिदलियाह — बिन — अखीकाम ने यूनान — बिन — करीह से कहा, तू ऐसा काम हरगिज न करना, क्यूँकि तू इस्माईल के बारे में झट कहता है।

41 और सातवें महीने में यूँ हुआ कि इस्माईल बिन — नतनियाह — बिन — इलीसा' जो शाही नसल से और बादशाह के सरदारों में से था, दस आदमी साथ लेकर जिदलियाह — बिन — अखीकाम के पास मिस्फ़ाह में आया; और उन्होंने वहाँ मिस्फ़ाह में मिल कर खाना खाया। 2 तब इस्माईल — बिन — नतनियाह उन दस आदमियों के साथ जो उसके साथ थे उठा और जिदलियाह — बिन — अखीकाम बिन साफन को जिसे शाह — ए — बाबुल ने मुल्क का हाकिम मुकर्रर किया था, तलवार से मारा और उसे कत्ल किया। 3 और इस्माईल ने उन सब यहदियों को जो वहाँ हाजिर थे कत्ल किया। 4 जब वह जिदलियाह को मार चुका, और किसी को खबर न हई, तो उसके दूसरे दिन यूँ हुआ। 5 कि सिकम और शीलोह और सामरिया से कुछ लोग जो सब के सब अस्सी आदमी थे, दाढ़ी मुंडाए और कपड़े फाड़े और अपने आपको घायल

किए और हटिये और लुबान हाथों में लिए हुए वहाँ आए, ताकि खुदावन्द के घर में पेश करें। 6 और इस्माईल — बिन — नतनियाह मिस्फ़ाह से उनके इस्तकबाल को निकला, और रोता हुआ चला; और यूँ हुआ कि जब वह उनसे मिला तो उनसे कहने लगा कि जिदलियाह बिन अख्तीकाम के पास चलो। 7 और फिर जब वह शहर के बस्त में पहुँचे, तो इस्माईल — बिन — नतनियाह और उसके साथियों ने उनको कल्त करके हौज में फेंक दिया। 8 लेकिन उनमें से दस आदमी थे जिन्होंने इस्माईल से कहा, हम को कल्त न कर, क्यूँकि हमारे गेहँ हैं और जौ और तेल और शहद के ज़खरी खेतों में पोशीदा हैं। इसलिए वह बाज़ रहा और उनके भाईयों के साथ कल्त न किया। 9 वह हौज़ जिसमें इस्माईल ने उन लोगों की लाशों को फेंका था, जिनको उसने जिदलियाह के साथ कल्त किया वही है जिसे आसा बदशाह ने शाह — ए — इस्माईल बाशा के डर से बनाया था और इस्माईल — बिन — नतनियाह ने उसको मक्तूलों की लाशों से भर दिया। 10 तब इस्माईल बाकी सब लोगों को, यानी शहजादियों और उन सब लोगों को जो मिस्फ़ाह में रहते थे जिनको जिलौदारों के सरदार नबूज़रादान ने जिदलियाह — बिन — अख्तीकाम के सुपुर्द किया था, गुलाम करके ले गया; इस्माईल — बिन — नतनियाह उनको गुलाम करके रवाना हुआ कि पर होकर बनी 'अमोन में जा पहुँचे। 11 लेकिन जब यूहनान — बिन — करीह ने और लश्कर कि सब सरदारों ने जो उसके साथ थे, इस्माईल — बिन — नतनियाह की तमाम शरात के बारे में जो उनसे की थी सुना, 12 तो वह सब लोगों को लेकर उससे लड़ने को गए और जिबा'ऊन के बड़े तालाब पर उसे जा लिया। 13 और यूँ हुआ कि जब उन सब लोगों ने जो इस्माईल के साथ थे यूहनान — बिन — करीह को और उसके साथ सब फौजी सरदारों को देखा, तो वह रुशा हुए। 14 तब वह सब लोग जिनको इस्माईल मिस्फ़ाह से पकड़ ले गया था, पलटे और यूहनान — बिनकरीह के पास वापस आए। 15 लेकिन इस्माईल — बिन — नतनियाह आठ आदमियों के साथ यूहनान के सामने से भाग निकला और बनी 'अमोन की तरफ़ चला गया। 16 तब यूहनान — बिन करीह और वह फौजी सरदार जो उसके हमराह थे, सब बाकी मान्दा लोगों को वापस लाए, जिनको इस्माईल बिन नतनियाह जिदलियाह बिन — अख्तीकाम को कल्त करने के बाद मिस्फ़ाह से ले गया था यानी जंगी मर्दों और 'औरतों और लड़कों और ख्वाजासराओं को, जिनको वह जिबा'ऊन से वापस लाया था। 17 और वह रवाना हुए और सराय — ए — किमहाम में जो बैतलहम के नजदीक है, आ रहे ताकि मिस्थ को जाएँ। 18 क्यूँकि वह कसदियों से डें; इसलिए कि इस्माईल — बिन — नतनियाह ने जिदलियाह — बिन — अख्तीकाम को, जिसे शाहए — बाबूल ने उस मुल्क पर हाकिम मुकर्रर किया था, कल्त कर डाला।

42 तब सब फौजी सरदार और यूहनान बिन करीह और यजनियाह बिन ह्साइयाह और अदना — ओ — 'आला, सब लोग आए, 2 और यरमियाह नवी से कहा, तू देखता है कि हम बहुतों में से चन्द वीर हग ए हैं, हमारी दरखास्त कुबल कर और अपने खुदावन्द खुदा से हांगे लिए, हाँ, इस तमाम बक्किये के लिए दुआ कर, 3 ताकि खुदावन्द तेरा खुदा, हमको, वह राह जिसमें हम चलें और वह काम जो हम करें बतला दे। 4 तब यरमियाह नवी ने उनसे कहा, मैंने सुन लिया, देखो, अब मैं खुदावन्द तुम्हारे खुदा से तुम्हारे कहने के मुताबिक दुआ करूँगा; और जो जवाब खुदावन्द तुम को देगा, मैं तुम को सुनाऊँगा। मैं तुम से कुछ न छिपाऊँगा। 5 और उन्होंने यरमियाह से कहा कि 'जो कुछ खुदावन्द तेरा खुदा, तेरे जरिएँ हम से फरमाएँ, अगर हम उस पर 'अमल न करें तो खुदावन्द हमारे खिलाफ सच्चा और वफ़ादार गवाह हो। 6 चाहे भला मालूम हो चाहे बुरा, हम खुदावन्द अपने खुदा का हक्म,

जिसके सामने हम तुझे भेजते हैं मानेंगे; ताकि जब हम खुदावन्द अपने खुदा की फरमांबरदारी करें तो हमारा भला हो।' 7 अब दस दिन के बाद यूँ हुआ कि खुदावन्द का कलाम यरमियाह पर नज़िल हुआ। 8 और उसने यूहनान — बिन — करीह और सब फौजी सरदारों को जो उसके साथ थे, और अदना — ओ — आना सबको बुलाया, 9 और उनसे कहा, खुदावन्द इस्माईल का खुदा, जिसके पास तुम ने मुझे भेजा कि मैं उसके सामने तुम्हारी दरखास्त पेश करूँ, यूँ फरमाता है: 10 अगर तुम इस मुल्क में ठहरे रहोगे, तो मैं तुम को बबांद नहीं बल्कि आबाद करूँगा और उत्ताइँ नहीं लगाऊँगा, क्यूँकि मैं उस बुराई से जो मैंने तुम से की है बाज़ आया। 11 शाह — ए — बाबूल से, जिसमें तम डाते हो, न डरो खुदावन्द फरमाता है; उससे न डरो, क्यूँकि मैं तुम्हारे साथ हूँ कि तुम को बचाऊँ और उसके हाथ से छुड़ाऊँ। 12 मैं तुम पर रहम करूँगा, ताकि वह तुम पर रहम करे और तुम को तुम्हारे मुल्क में वापस जाने की इजाजत दे। 13 लेकिन अगर तुम कहो कि 'हम फिर इस मुल्क में न रहेंगे,' और खुदावन्द अपने खुदा की बात न मानेंगे; 14 और कहो कि 'नहीं, हम तो मुल्क — ए — मिस्थ में जाएँगे, जहाँ न लड़ाई देखेंगे न तुरही की आवाज सुनेंगे, न भक्त से रोटी को तरसेंगे और हम तो वही बरसेंगे, 15 तो ऐ यहदाह के बाकी लोगों, खुदावन्द का कलाम स्नो। रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्माईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: अगर तुम वकाई इस मिस्थ में जाकर बसने पर आमादा हो, 16 तो यूँ होगा कि वह तलवार जिससे तम डाते हो, मुल्क — ए — मिस्थ में तुम को जा लेगी, और वह काल जिससे तुम हिंसान हो, मिस्थ तक तुम्हारा पीछा करेगा और तुम वही मरेंगे। 17 बल्कि यूँ होगा कि वह सब लोग जो मिस्थ का स्वृ करते हैं कि वहाँ जाकर रहें, तलवार और काल और बबा से मरेंगे: उनमें से कोई बाकी न रहेगा और न कोई उस बला से जो मैं उन पर नज़िल करूँगा बचेगा। 18 'क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्माईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: जिस तरह मेरा कहर — ओ — गज़ब येस्तातेम के बाशिन्दों पर नज़िल हुआ, उसी तरह मेरा कहर तुम पर भी, जब तुम मिस्थ में दाखिल होगे, नज़िल होगा और तुम लान्त — ओ — हैरत और तान — ओ — तशनी का जरिया होगे; और इस मुल्क को तुम फिर न देखोगे। 19 ऐ यहदाह के बाकी मान्दा लोगों, खुदावन्द ने तुम्हारे बारे में फरमाया है, कि 'मिस्थ में न जाओ, यकीन जानो कि मैंने आज तुम को जता दिया है। 20 हकीकत में तुमने अपनी जानों को फेरेब दिया है, क्यूँकि तुम ने मुझे को खुदावन्द अपने खुदा के सामने यूँ कहकर भेजा, कि 'तू खुदावन्द हमारे खुदा से हमारे लिए दुआ कर और जो कुछ खुदावन्द हमारा खुदा कहे, हम पर ज़ाहिर कर और हम उस पर 'अमल करेंगे। 21 और मैंने आज तुम पर यह जाहिर कर दिया है; तो भी तुमने खुदावन्द अपने खुदा की आवाज को, या किसी बात को जिसके लिए उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, नहीं माना। 22 अब तुम यकीन जानो कि तुम उस मुल्क में जहाँ जाना और रहना चाहते हो, तलवार और काल और बबा से मरेंगे।'

43 और यूँ हुआ कि जब यरमियाह सब लोगों से वह सब बातें, जो खुदावन्द उनके खुदा ने उसके जरिएँ फरमाई थीं, यानी यह सब बातें कह चुका, 2 तो अज़रियाह बिन होसियाह और यूहनान बिन करीह और सब मास्तर लोगों ने यरमियाह से यूँ कहा कि, तू झट बोलता है; खुदावन्द हमारे खुदा ने तुझे कहने को नहीं भेजा, मिस्थ में बसने को न जाओ।' 3 बल्कि बास्तक — बिन — नेयरियाह तुझे उभारता है कि तू खुदावन्द अपने खुदा की आवाज को, या किसी बात को जिसके लिए उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, नहीं माना। 22 अब तुम यकीन जानो कि तुम उस मुल्क में जहाँ जाना और रहना चाहते हो, तलवार और काल और बबा से मरेंगे।'

लोगों को, जो तमाम कौमों में से जहाँ — जहाँ वह तिर — बितर किए गए थे और यहदाह के मुल्क में बसने को वापस आए थे, साथ लिया; 6 या'नी मर्दों और 'औरतों और बच्चों और शाहजादियों और जिस किसी को जिलादारों के सरदार नवजारादान ने जिदियाह — बिन — अरबीकाम — बिन — साफन के साथ छोड़ा था, और यरमियाह नबी और बास्क — बिन — नेयिरियाह को साथ लिया; 7 और वह मुल्क — ए — मिस्र में आए, क्यूंकि उन्होंने खुदावन्द का हक्म न माना, इसलिए वह तहफनीस में पहुंचे। 8 तब खुदावन्द का कलाम तहफनीस में यरमियाह पर नाजिल हुआ: 9 कि बड़े पथर अपने हाथ में ले, और उनको फ़िर' औन के महल के मदखल पर जो तहफनीस में है, बनी यहदाह की आँखों के सामने चढ़े से फरश में लगा; 10 और उनसे कह कि 'रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है: देखो, मैं अपने खिदमत गुजार शाह — ए — बाबुल नवकूदनज़र को बुलाऊँगा, और इन पथरों पर जिनको मैंने लगाया है, उसका तरत रखेंगा, और वह इन पर अपना कालीन बिछाएगा। 11 और वह आकर मुल्क — ए — मिस्र को शिक्स्त देगा, और जो मौत के लिए है मौत के, और जो गुलामी के लिए है गुलामी के, और जो तलवार के लिए है तलवार के हवाले करेगा। 12 और मैं मिस्र के बुतखानों में आग भड़काऊँगा, और वह उनको जलाएगा और गुलाम करके ले जाएगा; और जैसे चरवाहा अपना कपड़ा लपेटा है, वैरे ही वह जमीन — ए — मिस्र को लेटेगा; और वहाँ से सलामत चला जाएगा। 13 और वह बैतशम्स के सुतूंगों को, जो मुल्क — ए — मिस्र में हैं तोड़ेगा और मिसियों के बुतखानों को आग से जला देगा।

44 वह कलाम जो उन सब यहदियों के बारे में जो मुल्क — ए — मिस्र में मिजदाल के 'इलाके और तहफनीस और नूफ़ और फ़तस्स में बसते थे, यरमियाह पर नाजिल हुआ: 2 कि 'रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: तुम ने वह तमाम मुसीबत जो मैं येस्सलेम पर और यहदाह के सब शहरों पर लाया हूँ, देखी, और देखो, अब वह वीरान और गैर आबाद है। 3 उस शरात की वजह से जो उन्होंने मुझे गजबनाक करने को की, क्यूंकि वह गैर — मांबूदों के आगे खुशबू जलाने को गए, और उनकी इबादत की जिनको न वह जाने थे, न तुम न तुम्हारे बाप — दादा। 4 और मैंने अपने तमाम खिदमत — गुजार नवीयों को तुम्हारे पास भेजा, उनको बक्त पर यूँ कह कर भेजा कि तुम यह नफरती काम, जिससे मैं नफरत रखता हूँ, न करो। 5 लेकिन उन्होंने न सुना, न कान लगाया कि अपनी बुराई से बाज आँ, और गैर — मांबूदों के आगे खुशबू न जलाएँ। 6 इसलिए मेरा कहर — ओ — गजब नाजिल हुआ, और यहदाह के शहरों और येस्सलेम के बाजारों पर भड़का; और वह खरबां और वीरान हुए जैसे अब हैं। 7 और अब खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: तुम क्यूँ अपनी जानों से ऐसी बड़ी बुराई करते हो, कि यहदाह में से मर्द — ओ — जन और तिफ़ल — ओ — शीर ख्वार काट डालें जाएँ और तुम्हारा कोई बाकी न रहे; 8 कि तुम मुल्क — ए — मिस्र में, जहाँ तुम बसने को गए हो, अपने 'आमाल से और गैर — मांबूदों के आगे खुशबू जलाकर मुझको गजबनाक करते हो, कि हलाक किए जाओ और इस जमीन की सब कौमों के बीच लाँनत — ओ — मलामत का ज़रिया' बनो। 9 क्या तुम अपने बाप — दादा की शरारत और यहदाह के बादशाहों और उनकी बीवियों की और खुद अपनी और अपनी बीवियों की शरारत, जो तुम ने यहदाह के मुल्क में और येस्सलेम के बाजारों में की, भूल गए हो? 10 वह आज के दिन तक न फरोत हुए, न डेरे और मेरी शरी'अत — ओ — आईन पर, जिनको मैंने तुम्हारे और तुम्हारे बाप — दादा के सामने रखवा, न चले। 11 "इसलिए रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ

फरमाता है: देखो, मैं तुम्हारे खिलाफ़ ज़ियानकारी पर आमाला हूँ ताकि तमाम यहदाह को हलाक करूँ। 12 और मैं यहदाह के बाकी लोगों को, जिन्होंने मुल्क — ए — मिस्र का स्वयं किया है कि वहाँ जाकर बसें, पकड़ँगा; और वह मुल्क — ए — मिस्र ही में हलाक होंगे, वह तलवार और काल से हलाक होंगे; उनके अदना — ओ — 'आला हलाक होंगे और वह तलवार और काल से फना हो जाएँगे; और लाँनत — ओ — हैरत और तान — ओ — तशनी' का ज़रिया होंगे। 13 और मैं उनको जो मुल्क — ए — मिस्र में बसने को जाते हैं, उसी तरह सजा ढाँगा जिस तरह मैंने येस्सलेम को तलवार और काल और बबा से सजा दी है; 14 तब यहदाह के बाकी लोगों में से, जो मुल्क — ए — मिस्र में बसने को जाते हैं, न कोई बचेगा, न बाकी रहेगा कि वह यहदाह की सरजमीन में वापस आँ, जिसमें आकर बसने के वह मुश्तक हैं; क्यूंकि भाग कर बच निकलने वालों के अलावा कोई वापस न आएगा।" 15 तब सब मर्दों ने, जो जानते थे कि उनकी बीवियों ने गैर — मांबूदों के लिए खुशबू जलायी है, और सब 'औरतों ने जो पास खड़ी थी, एक बड़ी जमाँ' अत या'नी सब लोगों ने जो मुल्क — ए — मिस्र में फ़तस्स में जा बसे थे, यरमियाह को यूँ जबाब दिया: 16 कि "यह बात जो तने खुदावन्द का नाम लेकर हम से कही, हम कभी न मानेंगे। 17 बल्कि हम तो उसी बात पर 'अमल करेंगे, जो हम खुद कहते हैं कि हम आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलायेंगे और तपावन तपायेंगे, जिस तरह हम और हमारे बाप — दादा, हमारे बादशाह और हमारे सरदार, यहदाह के शहरों और येस्सलेम के बाजारों में किया करते थे; क्यूंकि उस वक्त हम खब खाते — पीते और खुशहाल और मुसीबतों से महफ़ज़ थे। 18 लेकिन जबसे हम ने आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाना और तपावन तपाना छोड़ दिया, तब से हम हर चीज़ के मोहताज हैं, और तलवार और काल से फना हो रहे हैं। 19 और जब हम आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाती और तपावन तपाती थी, तो क्या हम ने अपने शौहरों के बौर, उसकी इबादत के लिए कुल्चे पकाए और तपावन तपाए थे?" 20 तब यरमियाह ने उन सब मर्दों और 'औरतों या'नी उन सब लोगों से, जिन्होंने उसे जबाब दिया था, कहा, 21 "क्या वह खुशबू, जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बादशाहों और हाकिम ने रैंइयत के साथ यहदाह के शहरों और येस्सलेम के बाजारों में जलाया, खुदावन्द को याद नहीं? क्या वह उसके खयाल में नहीं आया? 22 इसलिए तुम्हारे बद' आमाल और नफरती कामों की वजह से खुदावन्द बर्दाश्त न कर सका; इसलिए तुम्हारा मुल्क वीरान हुआ और हैरत — ओ — लाँनत का ज़रिया' बना, जिसमें कोई बसने वाला न रहा, जैसा कि आज के दिन है। 23 चूँकि तुम ने खुशबू जलाया और खुदावन्द के गुमाहगार ठहरे, और उसकी आवाज को न सुना और न उसकी शरी'अत, न उसके कानून, न उसकी शहादतों पर चते; इसलिए यह मुसीबत जैसी कि अब है, तुम पर आ पड़ी।" 24 और यरमियाह ने सब लोगों और सब 'औरतों से यूँ कहा कि "ऐ तमाम बनी यहदाह, जो मुल्क — ए — मिस्र में हो, खुदावन्द का कलाम सुनो। 25 रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: तुम ने और तुम्हारी बीवियों ने अपनी जबान से कहा कि 'आसमान की मलिका के लिए खुशबू जलाने और तपावन तपाने की जो नज़ेर हम ने मानी हैं, जस्तर अदा करेंगे, और तुमने अपने हाथों से ऐसा ही किया; इसलिए अब तुम अपनी नज़ों को काईम रखोगे और अदा करो 26 इसलिए ऐ तमाम बनी यहदाह, जो मुल्क — ए — मिस्र में बसते हो, खुदावन्द का कलाम सुनो; देखो, खुदावन्द फरमाता है: मैंने अपने बुज्जुर्ग नाम की कसम खाइ है कि अब मेरा नाम यहदाह के लोगों में तमाम मुल्क — ए — मिस्र में किंसी के मँह से न निकलेगा, कि वह कहें जिन्दा खुदावन्द खुदा की कसम। 27 देखो, मैं नेकी कि लिए नहीं, बल्कि बुराई के लिए उन पर निगरान

हँगा; और यहदाह के सब लोग, जो मुल्क — ए — मिस में हैं, तलवार और काल से हलाक होंगे यहाँ तक कि बिल्कुल नेस्त हो जाएँगे। 28 और वह जो तलवार से बचकर मुल्क — ए — मिस से यहदाह के मुल्क में वापस आएँगे, थोड़े से होंगे और यहदाह के तमाम बाकी लोग, जो मुल्क — ए — मिस में बसने को गए, जानेंगे कि किसकी बात काईम ही, मेरी या उनकी। 29 और तुम्हारे लिए यह निशान है, खुदावन्द फरमात है, कि मैं इसी जगह तुम को सजा दूँगा, ताकि तुम जानो कि तुहारे खिलाफ मेरी बातें मुसीबत के बारे में यकीनन काईम रहेंगी: 30 खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि देखो, मैं शाह — ए — मिस फिर 'ओैन हुफरार' को उसके मुखालिफों और जानी दुश्मनों के हवाले कर दूँगा, जिस तरह मैंने शाह — ए — यहदाह सिदकियाह को शाह — ए — बाबूल नबूकदनजर के हवाले कर दिया, जो उसका मुखालिफ और जानी दुश्मन था।"

45 शाह — ए — यहदाह यहयकीम बिन यूसियाह के चौथे बरस में, जब बास्क — बिन — नेयिरियाह यरमियाह की जबानी कलाम की किताब में लिख रहा था, जो यरमियाह ने उससे कहा: 2 'ऐ बास्क, खुदावन्द, इसाईल का खुदा, तेरे बारे में यूँ फरमाता है: 3 कि तुमने कहा, 'मुझ पर अफ्रोसोस! कि खुदावन्द ने मेरे दुख — दर्द पर गम भी बढ़ा दिया; मैं कराहते — कराहते थक गया और मुझे आराम न मिला। 4 तुमसे यूँ कहना, कि खुदावन्द फरमाता है: देख, इस तमाम मुल्क में, जो कुछ मैंने बनाया गिरा दूँगा, और जो कुछ मैंने लगाया उडाड फेरकूँगा। 5 और क्या तू अपने लिए उम्र — ए — 'अजीमी की तलाश में है? उनकी तलाश छोड़ दें; क्यूँकि खुदावन्द फरमाता है: देख, मैं तमाम बशर पर बला नाजिल करूँगा; लेकिन जहाँ कहीं तू जाए तेरी जान तेरे लिए गर्नीमत ठहराऊँगा।"

46 खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह नबी पर कौमों के बारे में नाजिल हुआ। 2 मिस के बारे में शाह — ए — मिस फिर 'ओैन निकोह की फौज के बारे में जो दरिया — ए — फरात के किनारे पर करकिमीस में थी, जिसको शाह — ए — बाबूल नबूकदनजर ने शाह — ए — यहदाह यहयकीम — बिन — यूसियाह के चौथे बरस में शिकस्त दी: 3 सिपर और ढाल को तैयार करो, और लडाई पर चले आओ। 4 घोड़ों पर साज लगाओ; ऐ सबसे, तुम सवार हो और खोद पहनकर निकलो, नेज़ों को सैकलत करो, बक्तर पहियो! 5 मैं उनको घबराए हुए क्यूँ देखते हूँ? वह पलट गए; उनके बहारुरुंगे ने शिकस्त खाई, वह भाग निकले और पांछे फिरकर नहीं देखते क्यूँकि चारों तरफ खौफ है खुदावन्द फरमाता है। 6 न सुखुका भागने पाएगा, न बहादुर बच निकलेगा; उत्तर में दरिया — ए — फरात के किनारे उहोंने ठोकर खाई और पिर पड़े। 7 'यह कौन है जो दरिया-ए-नील की तरह बढ़ा चला आता है, जिसका पानी सैलाब की तरह मौजजन है? 8 मिस दरिया-ए-नील की तरह उठता है, और उसका पानी सैलाब की तरह मौजजन है, और वह कहता है, मैं चढ़ूँगा और जमीन को छिपा लौंगा मैं शर्हों को और उनके बशिन्दों को हलाक कर दूँगा। 9 घोड़े बरअन्गेखता होंगे, रथ हवा हो जाएँ, और कश — ओ — फूट के बहादुर जो सिपरबदार हैं, और लट्टी जो कमानकरी और तीरअन्दाजी में माहिर हैं, निकलें। 10 क्यूँकि यह खुदावन्द रब्ब — उल — अफ्रावज का दिन, यानी इन्तकाम का रोज है, ताकि वह अपने दुश्मनों से इन्तकाम ले। इसलिए तलवार खा जाएगी और सेर होगी, और उनके खन से मस्त होगी; क्यूँकि खुदावन्द रब्ब — उल — अफ्रावज के लिए उत्तरी सरजमीन में दरिया — ए — फरात के किनारे एक जबीहा है। 11 ऐ कुँवारी दुखर — ए — मिस, जिल्लाअद को चढ जा और बलसान ले, त बे — फायदा तरह तरह की दवाँ इस्तेमाल करती है त शिफा न पाएगी। 12 कौमों ने तेरी स्वाइं का हाल सुना, और जमीन तेरी

फरियाद से मामूर हो गई, क्यूँकि बहादुर एक दूसरे से टकराकर एक साथ गिर गए। 13 वह कलाम जो खुदावन्द ने यरमियाह नबी को शाह — ए — बाबूल नबूकदनजर के आने और मुल्क — ए — मिस को शिकस्त देने के बारे में फरमाया: 14 मिस में आशकारा करो, मिजदाल मैं इश्तिहार दो; हाँ, नूफ़ और तहफनीस में 'ऐलान करो; कहो कि 'अपने आपको तैयार कर; क्यूँकि तलवार तेरी चारों तरफ खाये जाती है। 15 तेर बहादुर क्यूँ भाग गए? वह खड़े न रह सके, क्यूँकि खुदावन्द ने उनको गिरा दिया। 16 उसने बहुतों को गुमराह किया, हाँ, वह एक दूसरे पर गिर पड़े; और उन्होंने कहा, 'उठो, हम मुहतिक तलवार के जुल्म से अपने लोगों में और अपने वतन को फिर जाएँ। 17 वह बहाँ खिलाए कि 'शाह — ए — मिस फिर 'ओैन बर्बाद हुआ; उसने मुकर्ररा बक्त को गुजर जाने दिया। 18 'वह बादशाह, जिसका नाम रब्ब — उल — अफ्रावज है, यूँ फरमाता है कि मुझे अपनी हयत की कसम, जैसा तबर पहाड़ों में और जैसा कर्मिल समन्दर के किनारे है, वैसा ही वह आएगा। 19 ऐ बेटी, जो मिस में रहती है गुलामी में जाने का सामान कर; क्यूँकि नूफ़ वीरान और भसम होगा, उसमें कोई बसने वाला न रहेगा। 20 'मिस बहुत खबसूरत बछिया है; लेकिन उत्तर से तबाही आती है, बल्कि आ पहुँची। 21 उसके मजदूर सिपाही भी उसके बीच मोटे बछड़ों की तरह हैं, लेकिन वह भी शुपार हुए, वह इकट्ठे भागे, वह खड़े न रह सके; क्यूँकि उनकी हलाकत का दिन उन पर आ गया, उनकी सजा का बक्त आ पहुँचा। 22 'वह साँप की तरह चिलचिलाएँ; क्यूँकि वह फौज लेकर चढ़ाई करेगे, और कुलहाड़े लेकर लकड़हारों की तरह उस पर चढ़ आएँगे। 23 वह उसका जंगल काट डालेंगे, अगरचे वह ऐसा घना है कि कोई उसमें से गुजर नहीं सकता खुदावन्द फरमाता है क्यूँकि वह टिड़ियों से ज्यादा बल्कि बेशुमार है। 24 दुखर — ए — मिस स्वाहा होगी, वह उत्तरी लोगों के हवाले की जाएगी।' 25 रब्ब — उल — अफ्रावज, इस्माइल का खुदा, फरमाता है: देख, मैं आमून — ए — नो को, और फिर 'ओैन और मिस और उसके मांबरों, और उसके बादशाहों को; यानी मिस फिर 'ओैन और उनको जो उस पर भरोसा रखते हैं, सजा दूँगा; 26 और मैं उनके उनके जानी दुश्मनों, और शाह — ए — बाबूल नबूकदनजर और उसके मुलाजिमों के हवाले कर दूँगा; लेकिन इसके बाद वह फिर ऐसी आबाद होगी, जैसी आत्मे दिनों में थी, खुदावन्द फरमाता है। 27 लेकिन मेरे खादिम याकूब, हिरासाँ न हो, खुदावन्द फरमाता है; क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। अगरचे मैं उन सब कौमों को जिनमें मैंने तुझे हाँक दिया, हलाक — ओ — बर्बाद करूँ तो भी मैं तुझे हलाक — ओ — बर्बाद न करूँगा; बल्कि मनुसिंब तम्बीह करूँगा और हरगिज बे — सजा न छोड़ूँगा।

47 खुदावन्द का कलाम जो यरमियाह नबी पर फिलिस्तियों के बारे में नाजिल हुआ, इससे पहले कि फिर 'ओैन ने गज़ाज़ा को फतह किया। 2 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: देख, उत्तर से पानी चढ़ेंगे और सैलाब की तरह होंगे, और मुल्क पर और सब पर जो उसमें है, शहर पर और उसके बाशिन्दों पर, वह निकलेंगे। उस वक्त लोग खिलाएँगे, और मुल्क के सब बाशिन्दे फरियाद से मामूर हो गई, क्यूँकि बहादुर एक दूसरे से टकराकर एक साथ गिर गए। 3 वह कलाम जो खुदावन्द नेतृत्व देने के बारे में फरमाया: 14 मिस में आशकारा करो, मिजदाल मैं इश्तिहार दो; हाँ, नूफ़ और तहफनीस में 'ऐलान करो; कहो कि 'अपने आपको तैयार कर; क्यूँकि तलवार तेरी चारों तरफ खाये जाती है। 15 तेर बहादुर क्यूँ भाग गए? वह खड़े न रह सके, क्यूँकि खुदावन्द ने उनको गिरा दिया। 16 उसने बहुतों को गुमराह किया, हाँ, वह एक दूसरे पर गिर पड़े; और उन्होंने कहा, 'उठो, हम मुहतिक तलवार के जुल्म से अपने लोगों में और अपने वतन को फिर जाएँ। 17 वह बहाँ खिलाए कि 'शाह — ए — मिस फिर 'ओैन बर्बाद हुआ; उसने मुकर्ररा बक्त को गुजर जाने दिया। 18 'वह बादशाह, जिसका नाम रब्ब — उल — अफ्रावज है, यूँ फरमाता है कि मुझे अपनी हयत की कसम, जैसा तबर पहाड़ों में और जैसा कर्मिल समन्दर के किनारे है, वैसा ही वह आएगा। 19 ऐ बेटी, जो मिस में रहती है गुलामी में जाने का सामान कर; क्यूँकि नूफ़ वीरान और भसम होगा, उसमें कोई बसने वाला न रहेगा। 20 'मिस बहुत खबसूरत बछिया है; लेकिन उत्तर से तबाही आती है, बल्कि आ पहुँची। 21 उसके मजदूर सिपाही भी उसके बीच मोटे बछड़ों की तरह हैं, लेकिन वह भी शुपार हुए, वह इकट्ठे भागे, वह खड़े न रह सके; क्यूँकि उनकी हलाकत का दिन उन पर आ गया, उनकी सजा का बक्त आ पहुँचा। 22 'वह साँप की तरह चिलचिलाएँ; क्यूँकि वह फौज लेकर चढ़ाई करेगे, और कुलहाड़े लेकर लकड़हारों की तरह उस पर चढ़ आएँगे। 23 वह उसका जंगल काट डालेंगे, अगरचे वह ऐसा घना है कि कोई उसमें से गुजर नहीं सकता खुदावन्द फरमाता है क्यूँकि वह टिड़ियों से ज्यादा बल्कि बेशुमार है। 24 दुखर — ए — मिस स्वाहा होगी, वह उत्तरी लोगों के हवाले की जाएगी।' 25 रब्ब — उल — अफ्रावज, इस्माइल का खुदा, फरमाता है: देख, मैं आमून — ए — नो को, और फिर 'ओैन और मिस और उसके मांबरों, और उसके बादशाहों को; यानी मिस फिर 'ओैन और उनको जो उस पर भरोसा रखते हैं, सजा दूँगा; 26 और मैं उनके उनके जानी दुश्मनों, और शाह — ए — बाबूल नबूकदनजर और उसके मुलाजिमों के हवाले कर दूँगा; लेकिन इसके बाद वह फिर ऐसी आबाद होगी, जैसी आत्मे दिनों में थी, खुदावन्द फरमाता है। 27 लेकिन मेरे खादिम याकूब, हिरासाँ न हो, खुदावन्द फरमाता है; क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ। अगरचे मैं उन सब कौमों को जिनमें मैंने तुझे हाँक दिया, हलाक — ओ — बर्बाद करूँ तो भी मैं तुझे हलाक — ओ — बर्बाद न करूँगा; बल्कि मनुसिंब तम्बीह करूँगा और हरगिज बे — सजा न छोड़ूँगा।

को यानी कफ्तूर के जज्जरि के बाकी लोगों को गारत करेगा। 5 गज्जा पर चन्दलापन आया है, अस्कलोन अपनी वादी के बकिये के साथ हलाक किया गया, तू कब तक अपने आप को काटा जाएगा 6 “ऐ खुदावन्द की तलवार, तू कब तक न ठहरेगी? तू चल, अपने शिलाप में आराम ले, और साकिन हो! 7 वह कैसे ठहर सकती है, जब कि खुदावन्द ने अस्कलोन और समन्दर के साहिल के खिलाफ उसे हुक्म दिया है? उसने उसे वहाँ मुकर्र किया है”

48 मोआब के बारे में। रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खदा, यैं

फरमाता है कि: नबू पर अफसोस, कि वह वीरान हो गया! करयताइम स्वा हुआ, और ले लिया गया; मिसजाब खजिल और पस्त हो गया। 2 अब मोआब की तारीफ न होगी। हस्तोन में उन्होंने यह कह कर उसके खिलाफ मंसूबे बांधे हैं कि: 'आजो, हम उसे बर्बाद करें कि वह कौन म कहलाएँ, ऐ, मदमेन तू भी काट डाला जाएगा; तलवार तेरा पीछा करेगा। 3 'होरोनायिम में चीख पकार, 'वीरानी और बड़ी तबाही होगी। 4 मोआब बर्बाद हुआ; उसके बच्चों के नैहे की आवाज सुनाई देती है। 5 कर्यूक लहीत की चढाई पर आह — ओ — नाला करते हए चढ़ेंगे यकीन होरोनायिम की उत्तराई पर मुखालिफ हलाकत के जैसी आवाज सुनते हैं। 6 भागो! अपनी जान बचाओ! वीरान में रत्मा के दरखत की तरह हो जाओ! 7 और चूँकि तूने अपने कामों और खजानों पर भरोसा किया इसलिए तू भी गिरफ्तर होगा; और कमोस अपने काहिनों और हाकिम के साथ गुलाम होकर जाएगा। 8 और गारतगर हर एक शहर पर आएगा, और कोई शहर न बचेगा; वादी भी वीरान होगी, और मैदान उजाड हो जाएगा; जैसा खुदावन्द ने फरमाया है। 9 मोआब को पर लगा दो, ताकि उड जाए, कर्यूक उसके शहर उजाड होंगे और उसे कोई बसनेवाला न होगा। 10 जो खुदावन्द का काम बेपरवाई से करता है, और जो अपनी तलवार को खौंजी से बाज रखता है, मलाूँन हो। 11 मोआब बचपन ही से आराम से रहा है, और उसकी तलचट तहनशीन रही, न वह एक बर्तन से दूरें में उँडेला गया और न गुलामी में गया; इसलिए उसका मजा उसमें काईम है और उसकी बनही बदती। 12 इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है, कि मैं उँडेलने वालों को उसके पास भेज़ूँगा कि वह उसे उलटाएँ; और उसके बर्तनों को खाली और मटकों को चकनाचूर करें। 13 तब मोआब कमोस से शर्मिन्दा होगा, जिस तरह इसाईल का घराना बैतप्ल से जो उसका भरोसा था, खजिल हुआ। 14 तुम कर्यूक करते हो, कि 'हम पहलवान हैं और जंग के लिए जबरदस्त समझ हैं'? 15 मोआब गारत हुआ; उसके शहरों का धूंधूं उठ रहा है, और उसके चीदा जवान कल्ल होने को उत्तर गए; वह बादशाह फरमाता है जिसका नाम रब्ब — उल — अफवाज है। 16 नजदीक है कि मोआब पर आफत आए, और उनका बवाल दौड़ा आता है। 17 ऐ उसके आस — पास वालों, सब उस पर अफसोस करों; और तुम सब जो उसके नाम से बाकिप हो कहो कि यह मोटा 'असा और खब्सूर डंडा कर्यूकर टूट गया। 18 ऐ बेटी, जो दीबोन में बसती है! अपनी शैकत से नीचे उत्तर और यासी बैठ; कर्यूक मोआब का गारतगर तुझ पर चढ आया है और उसने तैर किलों को लोड डाला। 19 ऐ अरोैइं की रहने वाली तू राह पर खड़ी हो, और निगाह कर! भाने वाले से और उसने जो बच निकली हो; पृछ कि 'क्या माजरा है?' 20 मोआब स्वा हुआ, कर्यूक वह पस्त कर दिया गया, तुम वावैला मचाओ और चिल्लाओ! अरनोन में इश्तिहार दो, कि मोआब गारत हो गया। 21 और कि सहरा की अतराफ पर, होलून पर, और यहसाह पर, और मिफ़'अत पर, 22 और दीबोन पर, और नबू पर, और बैत — दिल्लताइम पर, 23 और करयताइम पर, और बैत — जमूल पर, और बैत — म'ऊन पर, 24 और करयोत पर, और बुसराह, और मुल्क — ए — मोआब के दूर — ओ — नजदीक के सब शहरों पर

‘ऐजाब नाजिल हुआ है। 25 मोआब का सींग काटा गया, और उसका बाजू तोड़ा गया, खुदावन्द फरमाता है। 26 तुम उसको मदहोश करो, कर्यूक उसने अपने आपको खुदावन्द के सामने बुलन्द किया; मोआब अपनी कथ में लोटेगा और मस्खरा बनेगा। 27 क्या इसाईल तेरे आगे मस्खरा न था? क्या वह चोरों के बीच पाया गया कि जब कभी तू उसका नाम लेता था, तू सिर हिलाता था? 28 “ऐ मोआब के बाशन्दों, शहरों को छोड़ दो और चट्टान पर जा बसों, और कबूतर की तरह बनो जो गहरे गार के मूँह के किनारे पर आशियाना बनाता है। 29 हम ने मोआब का तकब्बुर सुना है, वह बहुत गमरू है, उसकी गुस्ताखी भी, और उसकी शेरी और उसका गुस्तर और उसके दिल का तकब्बुर 30 मैं उसका कहर जानता हूँ, खुदावन्द फरमाता है; वह कुछ नहीं और उसकी शेरी से कुछ बन न पड़ा। 31 इसलिए मैं मोआब के लिए वावैला कस्त्गा; हाँ, सारे मोआब के लिए मैं जार — जार रोड़गा; कोर हरस के लोगों के लिए मातम किया जाएगा। 32 ऐ, सिबाह की ताक, मैं याैजर के रोने से ज्यादा तेरे लिए रोड़गा; तेरी शाखें समन्दर तक फैल गईं, वह याैजर के समन्दर तक पहुँच गईं, गारतगर तेरे ताबिसानी मेवों पर और और तेरे अंगरूपे पर आ पड़ा है 33 खुबी और शादमानी हरे भरे खेतों से और मोआब के मूँक से उठा ली गईं, और मैंने अंगरू के हैजै में मय बाकी नहीं छोड़ी, अब कोई ललकार कर न लताडेगा; उनका ललकारना, ललकारना न होगा। 34 'हस्तोन के रोने से वह अपनी आवाज को इल्ली आली और यहज तक और जुगर से होरोनायिम तक 'इजलत शलीशियाह तक बुलन्द करते हैं, कर्यूक नमरियम के चश्मे भी खराब हो गए हैं। 35 और खुदावन्द फरमाता है, कि जो कोई ऊँचे मकाम पर कुर्बानी चढ़ाता है, और जो कोई अपने मांबूदों के आगे खुशबू जलाता है, मोआब में से हलाक कर दूँगा। 36 इसलिए मेरा दिल मोआब के लिए बांसीरी की तरह आहें भरता, और करी हरस के लोगों के लिए शहनाओं की तरह फुगान करता है, कर्यूक उसका फिरावान जरखीरा तलफ हो गया। 37 हकीकत में हर एक सिर मुड़ा है, और हर एक दाढ़ी करती गईं, हर एक के हाथ पर जखा है और हर एक की कमर पर टाट। 38 मोआब के सब घरों की छतों पर और उसके सब बाजारों में बड़ा मातम होगा, कर्यूक मैंने मोआब को उस बर्तन की तरह जो पसन्द न आए तोड़ा है, खुदावन्द फरमाता है। 39 वह वावैला करेंगे और कहेंगे, कि उसने कैसी शिक्षत खाइ है! मोआब ने शर्म के मारे कर्यूक अपनी पीठ फेरी! तब मोआब सब आस — पास वालों के लिए हैंही और खौफ का जरिया होगा।” 40 कर्यूक खुदावन्द यैं फरमाता है कि देख, वह 'उकाब की तरह उडेगा और मोआब के खिलाफ बाजू फैलाएगा। 41 वहाँ के शहर और किलों ले लिए जायेंगे और उस दिन मोआब के बहादुरों के दिल जच्चा के दिल की तरह होंगे। 42 और मोआब हलाक किया जाएगा और कौम न कहलाएगा, इसलिए कि उसने खुदावन्द के सामने अपने आपको बुलन्द किया। 43 खौफ और गदा और दाम तुझ पर मुसल्लत होंगे, ऐ साकिन — ए — मोआब, खुदावन्द फरमाता है। 44 जो कोई दहशत से भागे, गढ़े में गिरेगा, और जो गढ़े से निकले, दाम में फँसेगा; कर्यूक मैं उन पर, हाँ, मोआब पर उनकी सियासत का बरस लाऊँगा, खुदावन्द फरमाता है। 45 “जो भागे, इसलिए हस्तोन के साथ तले बेताब खड़े हैं, लेकिन हब्जोन से आग और सीहोन के बस्त से एक शोला निकलेगा और मोआब की दाढ़ी के कोने को और हर एक फसादी की चाँद को खा जाएगा। 46 हाय, तुझ पर ऐ मोआब! कमोस के लोग हलाक हुए कर्यूकि रे बेटों को शुलाम करके ले गए और तेरी बोटियाँ भी गुलाम हुईं। 47 बाजवड इसके मैं अखरी दिनों में मोआब के गुलामों को वापस लाऊँगा, खुदावन्द फरमाता है।” मोआब की 'अदालत यहाँ तक हुई।

49 बनी 'अमोन के बारे में खुदावन्द का इन्साफ फरमाता है कि: क्या इसाईल के बेटे नहीं हैं? क्या उसका कोई वारिस नहीं? फिर मिलकूम ने

क्यूँ जद पर कब्जा कर लिया, और उसके लोग उसके शहरों में क्यूँ बसते हैं? 2 इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है, कि मैं बनी 'अमोन के रब्बह में लडाई का हुल्लड बर्पा करूँगा; और वह खंडर हो जाएगा और उसकी बेटियाँ आगे से जलाई जाएँगी; तब इसाईल उनका जो उसके वारिस बन बैठे थे, वारिस होगा, खुदावन्द फरमाता है। 3 'ऐ हब्बोन, वावैला कर, कि ऐ बर्बाद की गई। ऐ खुदावन्द की बेटियो, चिल्लाओ, और टाट ओडकर मातम करो और इहातों में इधर उधर दौड़ो, क्यूँकि मिलकूम शुलामी में जाएगा और उसके काहिन और हाकिम भी साथ जाएँगे। 4 तब क्यूँ वादियों पर फरख करती है? तेरी बादी सेराहि है, ऐ बरगश्ता बेटी, तू अपने खजानों पर भरोसा करती है, कि 'कौन मुझ तक आ सकता है?' 5 देख, खुदावन्द, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है: मैं तेरे सब इर्दगिर्द वालों का खौफ तुझ पर गालिक करूँगा; और तुम में से हर एक आगे हाँका जाएगा, और कोई न होगा जो आवारा फिरने वालों को 'जमा' करे। 6 मगर उसके बाद मैं बनी 'अमोन को गुलामी से वापस लाऊँगा, खुदावन्द फरमाता है।' 7 अदोम के बारे में। रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमात है कि: 'क्या तेमान में खिरद मुतलक न रही? क्या तदवीरों की मसलहत जाती रही? क्या उनकी 'अक्ल उड गई?' 8 ऐ ददान के बाशिन्दों, भागो, लौटो, और नशेवों में जा बसो! क्यूँकि मैं इत्काम के बन्न उस पर ऐसो की जैसी मुसीबित लाऊँगा। 9 अगर अँगूर तोड़ने वाले तेरे पास आएँ, तो क्या कुछ दाने बाकी न छोड़ेंगे? या अगर रात को चोर आएँ, तो क्या वह हस्त — ए — ख्वाहिश ही न तोड़ेंगे? 10 लेकिन मैं ऐसो को बिल्कुल नंगा करूँगा, उसके पोशीदा मकानों को बे — पर्दी कर दूँगा कि वह छिप न सके; उसकी नसल और उसके भाई और उसके पड़ोसी सब बर्बाद किए जाएँगे, और वह न रहेगा। 11 तू अपने यतीम फर्जन्दों को छोड़, मैं उनको जिन्दा रख बूँदोंगा; और तेरी बेवाएँ मुझ पर भरोसा करो।' 12 क्यूँकि खुदावन्द यूँ फरमात है: कि 'देख, जो सजावर न थे कि प्याला पीएँ, उन्होंने खूब पिया; क्या तू बे — सजा छूट जाएगा? तू बेसजा न छुटेगा, बल्कि यकीन उसमें से पिणा। 13 क्यूँकि मैंने अपनी जात की कसम खाई है, खुदावन्द फरमात है, कि बुसराह जा — ए — हैरत और मलामत और वीरानी और लान्त होगा; और उसके सब शहर अबद — उल — आबाद वीरान होंगे।' 14 मैंने खुदावन्द से एक खबर सुनी है, बल्कि एक कासिद यह कहने को कौमों के बीच भेजा गया है: 'जमा' हो और उस पर जा पड़ो, और लडाई कि लिए उठो। 15 क्यूँकि देख, मैंने तुझे कौमों के बीच हकीर, और आदमियों के बीच जलील किया। 16 तेरी हैबत और रेरे दिल के हुसर ने तुझे फरब दिया है। ऐ तू जो चाढ़नों के शिगाफों में रहती है, और पहाड़ों की चोटियों पर क्रिब्ज है; अगर तेरे तु 'उकाब की तरह अपना आशियाना बुलन्दी पर बनाए, तो भी मैं वहाँ से तुझे नीचे उतास्सा, खुदावन्द फरमाता है। 17 'अदोम भी जा — ए — हैरत होगा, हर एक जो उधर से गुजरेगा हैरान होगा, और उसकी सब आफतों की बजह से सुस्करेगा। 18 जिस तरह सदूम और 'अमूरा और उनके आस पास के शहर गारत हो गए, उसी तरह उसमें भी न कोई आदमी बसेगा, न आदमजाद बहाँ सुकूनत करेगा, खुदावन्द फरमाता है। 19 देख, वह शेर — ए — बबर की तरह यदन के जंगल से निकलकर मजबूत बस्ती पर चढ आएगा; लेकिन मैं अचानक उसको बहाँ से भगा दूँगा, और अपने बरगुजीदा को उस पर मुकर्रर करूँगा; क्यूँकि मुझ सा कौन है? कौन है जो मैं लिए बन्न मुकर्रर करे? और वह चरवाहा कौन है जो मैं सामने खड़ा हो सके? 20 तब खुदावन्द की मसलहत को, जो उसने अदोम के खिलाफ ठहराई है और उसके झारदे को जो उसने तेमान के बाशिन्दों के खिलाफ किया है, सनो, उनके गल्ले के सबसे छोटों को भी घसीट ले जाएँगे, यकीन उनका घर भी उनके साथ बर्बाद होगा। 21 उनके

गिरने की आवाज से जमीन काँप जाएगी, उनके चिल्लाने का शोर बहर — ए — कुलज़ुम तक सुनाई देगा। 22 देख, वह चढ आएगा और 'उकाब की तरह उडेगा, और बुसराह के खिलाफ बाजू फैलाएगा; और उस दिन अदोम के बहादुरों का दिल जच्चा के दिल की तरह होगा।' 23 दमिश्क के बारे में: 'हमात और अरफाद शर्मिन्दा हैं क्यूँकि उन्होंने बुरी खबर सुनी, वह पिघल गए समन्दर ने जुम्बिश खाई, वह ठहर नहीं सकता। 24 दमिश्क का जोर टूट गया, उसने भागने के लिए मुँह फेरा, और थरथराहट ने उसे आ लिया; जच्चा के से रंज — ओ — दर्द ने उसे आ पकड़ा। 25 यह क्यूँकर हआ कि वह नामवर शहर, मेरा शादमान शहर, नहीं बचा? 26 इसलिए उसके जवान उसके बाजारों में गिर जाएँगे, और सब जांगी मर्द उस दिन काट डाले जाएँगे, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 27 और मैं दमिश्क की शहरपनाह में आग भड़काऊँगा, जो बिन — हृदद के महलों को भसम कर देगी।' 28 कीदार के बारे में और हस्र की सल्तनतों के बारे में जिनको शाह — ए — बाबूल नबकदनजर ने शिक्षित दी। खुदावन्द यूँ फरमात है: 'उठो, कीदार पर चढाई करो, और अहल — ए — मशरिक को हलाक करो। 29 वह उनके खेमों और गल्लों को ले लेंगे; उनके पर्दों और बर्तनों और ऊँटों को छीन ले जाएँगे; और वह चिल्ला कर उनसे कहेंगे कि चारों तरफ खौफ है।' 30 भागो, दूर निकल जाओ, नशेब में बसो, ऐ हस्र के बाशिन्दो, खुदावन्द फरमात है; क्यूँकि शाह — ए — बाबूल नबकदनजर ने तम्हारी मुखालिफत में मध्वरत की और तुम्हारे खिलाफ इरादा किया है। 31 खुदावन्द फरमाता है, उठो, उस आसदा कौम पर, जो बे — फिक्र रहती है, जिसके न किवड़े हैं न अडबंगे और अकेती है चढाई करो 32 उनके ऊँट गमिमत के लिए होंगे, और उनके चौपायों की कसरत लट्ट के लिए; और मैं उन लोगों को जो गाओदेम दाढ़ी रखते हैं, हर तरफ हवा में तिरत — बितर करूँगा; और मैं उन पर हर तरफ से आफत लाऊँगा, खुदावन्द फरमाता है। 33 हस्र गीदड़ों का मकाम, हमेशा का वीराना होगा; न कोई आदमी वहाँ बरसा, और न कोई आदमजाद उसमें सुकूनत करेगा। 34 खुदावन्द का कलाम जो शाह — ए — यहदाह सिदूकियाह की सल्तनत के शुरू में ऐलाम के बारे में यरमियाह नबी पर नाजिल हुआ। 35 कि रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: देख ये ऐलाम की कमान उनकी बड़ी तवानाई को तोड डालूँगा। 36 और चारों हवाओं को आसमान के चारों कोनों से ऐलाम पर लाऊँगा, और उन चारों हवाओं की तरफ उनको तिरत — बितर करूँगा; और कोई ऐसी कौम न होगी, जिस तक ऐलाम के जिलावतन न पहुँचेंगे। 37 क्यूँकि मैं ऐलाम को उनके मुखालिफों और जानी दूसरों के आगे हिरासाँ करूँगा; और उन पर एक बला या नी कहर — ए — शटीद को नाजिल होगा। खुदावन्द फरमाता है, और तलवार को उनके पीछे लागा दूँगा, यहाँ तक कि उनको नाबूद कर डालूँगा; 38 और मैं अपना तगड़ा ऐलाम में रखूँगा, और वहाँ से बादशाह और हाकिम को नाबूद करूँगा, खुदावन्द फरमाता है। 39 'लोकिन आखिरी दिनों में यूँ होगा, कि मैं ऐलाम को गुलामी से वापस लाऊँगा, खुदावन्द फरमाता है।'

50 वह कलाम जो खुदावन्द ने बाबूल और कस्मियों के मूलक के बारे में यरमियाह नबी की 'जरिए' फरमाया: 2 कौमों में 'ऐलाम करो, और इश्तिहार दो, और झाँडा खड़ा करो, 'ऐलाम करो, पोशीदा न रख खो; कह दो कि बाबूल से लिया गया, जेल स्वाह हआ, मरोदक सरासीमा हो गया; उसके बुत खजिल हुए, उसकी मूरते तोड़ी गई।' 3 क्यूँकि उत्तर से एक कौम उस पर चढ़ी चली आती है, जो उसकी सरजमीन को उजाड़ देगी, यहाँ तक कि उसमें कोई न रहेगा, वह भाग निकले, वह चल दिए, क्या इंसान क्या हैवान। 4 'खुदावन्द फरमाता है, उन दिनों में बल्कि उसी बन्न बनी — इसाईल आएँगे; वह और बनी यहदाह इकट्ठे रोते हुए चलेंगे और खुदावन्द अपने खुदा के तालिब होंगे।

5 वह सिय्यून की तरफ मुतवज्जिह होकर उसकी राह पड़ेंगे, 'आओ, हम खुदावन्द से मिल कर उससे अबदी 'अहद करें, जो कभी फरामोश न हो। 6 मेरे लोग भटकी हुई भेड़ों की तरह हैं; उनके चरवाहों ने उनको गुमराह कर दिया, उन्होंने उनको पहाड़ों पर ले जाकर छोड़ दिया, वह पहाड़ों से तीलों पर गए और अपने आराम का मकान भूत गए हैं। 7 सब जिन्होंने उनको पाया उनको निगल गए, और उनके दुश्मनों ने कहा, हम कुसूवार नहीं हैं क्यूंकि उन्होंने खुदावन्द का गुनाह किया है, वह खुदावन्द जो सदाकत का मस्कन और उनके बाप — दादा की उम्मीदगाह है। 8 बाबूल में से भागो, और कसदियों की सरजमीन से निकलो, और उन बकरों की तरह हो जो गल्लों के आगे आगे चलते हैं। 9 क्यूंकि देख, मैं उत्तर की सरजमीन से बड़ी कौमों के अम्बों को बर्पा करूँगा और बाबूल पर चढ़ा लाऊँगा, और वह उसके सामने सफ — आरा होंगे; वहाँ से उस पर कब्जा कर लैंगे उनके तीरकार आजमूदा बहादुर के से होंगे जो खाली हाथ नहीं लौटा। 10 कसदिस्तान लटा जाएगा, उसे लटने वाले सब आसदा होंगे, खुदावन्द फरमाता है। 11 ऐ मेरी मीरास को लूटनेवालों, चौंकि तुम शादमान और खुश हो और दावने वाली बछिया की तरह कहते फाँटें और ताकतवर घोड़ों की तरह हिन्हिनाते हों; 12 इसलिए तुम्हारी मौं बहुत शर्मिन्दा होगी, तुम्हारी वालिदा ख़ाजालत उठाएगी। देखो, वह कौमों में सबसे आखिरी ठहरेगी और वीरान — ओ — ख़ुशक ज़मीन और रेगिस्तान होगी। 13 खुदावन्द के कहर की वजह से वह आबाद न होगी, बल्कि बिल्कुल वीरान हो जाएगी; जो कोई बाबूल से गुजरेगा हैरान होगा, और उसकी सब आफतों के बाइस सुस्कारेगा। 14 ऐ सब तीरअन्दाज़ों, बाबूल को घेर कर उसके खिलाफ सफ़आराई करो, उस पर तीर चलाओ, तीरों को दरेग न करो, क्यूंकि उसने खुदावन्द का गुनाह किया है। 15 उसे घेर कर तुम उस पर ललकारो, उसने इता' अत मन्जूर कर ली; उसकी बुनियादें धंस गई, उसकी दीवारें गिर गई। क्यूंकि यह खुदावन्द का इन्तकाम है, उससे इन्तकाम लो; जैसा उसने किया, वैसा ही तुम उससे करो। 16 बाबूल में हर एक बोनेवाले को और उसे जो दिरों के वक्त दर्ताएं पकड़े, काट डालो; जालिम की तलवार की हैबत से हर एक अपने लोगों में जा मिलेगा, और हर एक अपने वतन को भाग जाएगा। 17 इसाईल तिर — बितर भेड़ों की तरह है, शेरों ने उसे रोदा है। पहले शाह — ए — असूर ने उसे खा लिया और फिर यह शाह — ए — बाबूल नबूकदनज़र उसकी हड्डियाँ तक चबा गया। 18 इसलिए रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: देख, मैं शाह — ए — बाबूल और उसके मूल्क को सजा दूँगा, जिस तरह मैंने शाह — ए — असूर को सजा दी है। 19 लेकिन मैं इसाईल को फिर उसके पर मैं लाऊँगा, और वह कर्मिल और बसन मैं चरेगा, और उसकी जान कोह — ए — इक्वाईम और जिल'आद पर आसदा होगी। 20 खुदावन्द फरमाता है, उन दिनों में और उर्मी वक्त इसाईल की बदकिरदारी ढूँडे न मिलेगी; और यहदाह के गुनाहों का पता न मिलेगा जिनको मैं बाकी रखूँगा उनको मु'आफ करूँगा। 21 मरातायम की सरजमीन पर और फिकोद के बाशिन्दों पर चढ़ाई कर। उसे वीरान कर और उनको बिल्कुल नाबूद कर, खुदावन्द फरमाता है; और जो कुछ मैंने तुझे फरमाया है, उस सब के मुताबिक 'अमल कर। 22 मूल्क में लडाइ और बड़ी हलाकत की आवाज है। 23 तमाम दुनिया का हथौडा, क्यूंकि काटा और तोड़ा गया! बाबूल कौमों के बीच कैसा जा — ए — हैरत हआ! 24 मैंने तेरे लिए फन्दा लगाया, और ऐ बाबूल, त पकड़ा गया, और तुझे खबर न थी। तेरा पता मिला और त् गिरपतार हो गया, क्यूंकि तुमने खुदावन्द से लडाई की है। 25 खुदावन्द ने अपना सिलाहाखाना खोला और अपने कहर के हथियारों को निकाला है; क्यूंकि कसदियों की सरजमीन में खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज को कुछ करना है। 26 सिरे से

शुरू' करके उस पर चढ़ो, और उसके अम्बारखानों को खोलो, उसको खण्डर कर डालो और उसको बर्बाद करो, उसकी कोई चीज़ बाकी न छोड़ो। 27 उसके सब बैलों को जबह करो, उनको मसलख में जाने दो; उन पर अफसोस! कि उनका दिन आ गया, उनकी सजा का वक्त आ पहुँचा। 28 सरजमीन — ए — बाबूल से फरारियों की आवाज! वह भागते और सिय्यून में खुदावन्द हमारे खुदा के इत्काम, यांनी उसकी हैकल के इन्तकाम का एलान करते हैं। 29 तीरअन्दाज़ों को बुलाकर इकशा करो कि बाबूल पर जाएँ, सब कमानदारों को हर तरफ से उसके सामने खेमाजन करो। वहाँ से कोई बच न निकले, उसके काम के मुवाफिक उसको बदला दो। सब कुछ जो उसने किया उसे करों क्यूंकि उसने खुदावन्द इसाईल के कुदूस के सामने बहुत तकब्बर किया। 30 इसलिए उसके जवान बाजारों में गिर जाएँगे, और सब जंगी मर्द उस दिन काट डाले जाएँगे, खुदावन्द फरमाता है। 31 ऐ मासूर, देख, मैं तेरा मुखालिफ हूँ खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है क्यूंकि तेरा वक्त आ पहुँचा, हाँ, वह वक्त जब मैं तुझे सजा दूँ। 32 और वह मग्नर ठोकर खाएगा, वह पिरेगा और कोई उसे न उठाएगा; और मैं उसके शहरों में आग भड़काऊँगा, और वह उसके तमाम 'इलाके को भस्म कर देगा। 33 'रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि बनी — इसाईल और बनी यहदाह दोनों मजल्लूम हैं, और उनको गुलाम करने वाले उनको कैद में रखते हैं, और छोड़ने से इकार करते हैं। 34 उनका छुडानेवाला जोरआवर है; रब्ब — उल — अफवाज उसका नाम है; वह उनकी पूरी हिमायत करेगा ताकि ज़मीन को राहत बख्शे, और बाबूल के बाशिन्दों को पेरेशान करे। 35 खुदावन्द फरमाता है, कि तलवार कसदियों पर और और बाबूल के बाशिन्दों पर, और उसके हाकिम और हक्मा पर है। 36 लाफ़ज़नों पर तलवार है, वह बैवक़फ हो जाएँगे; उसके बहादुरों पर तलवार है, वह डर जाएँगे। 37 उसके घोड़ों और रथों और सब मिले — ज़ले लोगों पर जो उसमें हैं, तलवार है, वह 'औरतों की तरह होंगे; उनके ख़जानों पर तलवार है, वह लटे जाएँगे। 38 उसकी नहरों पर ख़ुशकसाती है, वह सख जाएँगी, क्यूंकि वह तराशी हुई मूरों की ममलुकत है और वह बुतों पर शेषता है। 39 इसलिए दस्ती दरिन्दे गीद़डों के साथ वहाँ बसेंगे और शुरुमूर्त उसमें बसेरा करेंगे, और वह फिर अबद तक आबाद न होगी, नस्ल — दर — नस्ल कोई उसमें सूक्नत न करेगा। 40 जिस तरह खुदा ने सदूम और 'अमूरा और उनके आसपास के शहरों को उलट दिया खुदावन्द फरमाता है उसी तरह कोई आदमी वहाँ न बसेगा, न आदमजाद उसमें रहेगा। 41 देख, उतरी मूल्क से एक गिरेह आती है, और इन्तिहा — ए — ज़मीन से एक बड़ी कौम और बहुत से बादशाह बरअन्गेखता किए जाएँगे। 42 वह तीरअन्दाज — ओ — नेजा बाज़ है, वह संगदिल — ओ — बेरहम हैं, उनके नारों की आवाज हमेशा समन्दर की जैसी है, वह घोड़ों पर सवार है, ऐ दुखर — ए — बाबूल, वह जंगी मर्दों की तरह तेरे सामने सफ — आराई करते हैं। 43 शाह — ए — बाबूल ने उनकी शोहरत सुनी है, उसके हाथ ढाई लोगे हो गए, वह ज़च्चा की तरह मुसीबत और दर्द में गिरपतार है। 44 'देख, वह शेर — ए — बबर की तरह यरदन के ज़ंगल से निकलकर मजबूत बस्ती पर चढ़ आएगा; लेकिन मैं अचानक उसको वहाँ से भगा दूँगा, और अपने बरगुजीदा को उस पर मुकर्रर करूँगा; क्यूंकि मुझ सा कौन है? कौन है जो मैं लिए वक्त मुकर्रर करे? और वह चरवाहा कौन है जो मैं सामने खड़ा हो सके? 45 इसलिए खुदावन्द की ममलुकत को जो उसने बाबूल के खिलाफ ठहराई है, और उसके इरादे को जो उसने कसदियों की सरजमीन के खिलाफ किया है, सुनो, यकीनन उनके गल्ले के सब से छोटों को भी घसीट ले जाएँगे; यकीन उनका घर भी उनके साथ बर्बाद होगा। 46 बाबूल की शिक्षत के शोर से ज़मीन काँपती है, और फरियाद को कौमों ने सुना है।'

51 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि देख, मैं बाबुल पर और उस मुखालिफ दर

— उस — सल्तनत के रहनेवालों पर एक मुहलिक हवा चलाऊँगा। 2 और मैं उसने वालों को बाबुल में भेज़ूँगा कि उसे उसाँूँ और उसकी सरजीमीन को खाली करें; यकीन उसकी मुरीबत के दिन वह उसके दुश्मन बनकर उसे चारों तरफ से घेर लेंगे। 3 उसके कमानदारों और जिरहपेशों पर तीरअन्दाजी करो; तुम उसके जवानों पर रहम न करो, उसके तमाम लश्कर को बिल्कुल हलाक करो। 4 मक्तूल कसदियों की सरजीमीन में पिंगें, और छिदे हुए उसके बाजारों में पड़े रहेंगे। 5 क्यूँकि इसाईल और यहदाह को उनके खुदा रब्ब — उल — अफवाज ने तर्क नहीं किया; अगर उसे इनका मुल्क इसाईल के कुद्दस की नाफरमानी से पूरा है। 6 बाबुल से निकल भागो, और हर एक अपनी जान बचाओ, उसकी बदकिरदारी की सजा में शरीक होकर हलाक न हो, क्यूँकि यह खुदावन्द के इन्तकाम का वक्त है; वह उसे बदला देता है। 7 बाबुल खुदावन्द के हाथ में सोने का प्याला था, जिसने सारी दुनिया को मतवाला किया; कौमों ने उसकी मय पी, इसलिए वह दीवाने हैं। 8 बाबुल अचानक गिर गया और गरात हुआ, उस पर बावैला करो; उसके जरूम के लिए बलसान लो, शायद वह शिका पाए। 9 हम तो बाबुल की शिकायाबी चाहते थे लेकिन वह शिकायाब न हुआ, तुम उसको छोड़ो, आओ, हम सब अपने अपने वक्त को चले जाएँ, क्यूँकि उसकी आवाज आसमान तक पहुँची और अफलाक तक बुलन्द हुई। 10 खुदावन्द ने हमारी रास्तबाजी को आशकारा किया; आओ, हम सिय्यून में खुदावन्द अपने खुदा के काम का बयान करें। 11 तीरों को सैकल करो, सिपों को तैयार रखें; खुदावन्द ने मादियों के बादशाहों की स्ह को उभारा है, क्यूँकि उसका इरादा बाबुल को बर्बाद करने का है; क्यूँकि यह खुदावन्द का, याँनी उसकी हैकल का इन्तकाम है। 12 बाबुल की दीवारों के सामने झङ्गा खड़ा करो पहरे की चौकियाँ मजबूत करो, पहरेदारों को बिलाओ, कमीनगाहे तैयार करो; क्यूँकि खुदावन्द ने अहल — ए — बाबुल के हक में जो कुछ ठहराया और फरमाया था, इसलिए पूरा किया। 13 ऐ नहरों पर सुकूनत करने वाली, जिसके खजाने फिरावान हैं, तेरी तमामी का वक्त आ पहुँचा और तेरी गारतगरी का पैमाना पूर हो गया। 14 रब्ब — उल — अफवाज ने अपनी जात की कसम खाई है, कि यकीन मैं तज़ में लोगों को टिहियों की तरह भर दँगा, और वह तुझ पर जंग का नारा मरेंगे। 15 उसी ने अपनी कुदरत से जीमीन को बनाया, उसी ने अपनी हिक्मत से जहाँ को काईम किया, और अपनी 'अन्तर्त से आसमान को तान दिया है; 16 उसकी आवाज से आसमान में पानी की फिरावानी होती है, और वह जीमीन की इन्तिहा से बुखारात उठाता है; वह बारिश के लिए बिजली चमकाता है और अपने खजानों से हवा चलाता है। 17 हर आदमी हैवान खसलत और बे — 'इल्म हो गया है, सनार अपनी खोटी हुई मूरत से स्वा है; क्यूँकि उसकी ढाँची हुई मूरत बातिल है, उसमें दम नहीं। 18 वह बातिल — फे'ल — ए — फेरब है, सजा के वक्त बर्बाद हो जाएँगी। 19 याँकूब का हिस्सा उनकी तरह नहीं, क्यूँकि वह सब चीजों का खालिक है और इसाईल उसकी मीरास का 'असा है; रब्बउल — अफवाज उसका नाम है। 20 तू मेरा गुर्ज और जंगी हाथियार है, और तुझी से मैं कौमों को तोड़ता और तुझी से सल्तनतों को बर्बाद करता हूँ। 21 तुझी से मैं घोड़े और सवार को कुचलता, और तुझी से रथ और उसके सवार को चूर करता हूँ; 22 तुझी से मर्द — ओ — जन और पीर — ओ — जवान को कुचलता, और तुझी ही से नौखेंज लड़कों और लड़कियों को पीस डालता हूँ; 23 और तुझी से चरवाहे और उसके गल्ले को कुचलता, और तुझी से किसान और उसके जोड़ी बैल को, और तुझी से सरदारों और हाकिमों को चूर — चूर कर देता हूँ। 24 और मैं बाबुल को और कसदिस्तान के सब बाशिन्दों को उस तमाम नुक्सान का, जो उन्होंने सिय्यून को

तुम्हारी आँखों के सामने पहुँचाया है इवज़ देता हूँ खुदावन्द फरमाता है। 25 देख खुदावन्द फरमाता है, ऐ हलाक करने वाले पहाड़, जो तमाम इस जीमीन को हलाक करता है, मैं तोरा मुखालिफ हूँ और मैं अपना हाथ तुझ पर बढ़ाऊँगा, और चढ़ानों पर से तुझे लड़काऊँगा, और तुझे जला हुआ पहाड़ बना दूँगा। 26 न तुझ से कोने का पथर, और न बुनियाद के लिए पत्थर लेंगे; बल्कि तु हमेशा तक बीरान रहेगा, खुदावन्द फरमाता है। 27 'मुल्क में झङ्गा खड़ा करो, कौमों में नरसिंगा झङ्गूको उनको उसके खिलाफ मखसूस करो अरारात और मिन्नी और अशकनजां की ममलकतों को उस पर चढ़ा लाओ; उसके खिलाफ सिपहसालार मुकर्रर करो और सवारों को मुहलिक टिहियों की तरह चढ़ा लाओ। 28 कौमों को मादियों के बादशाहों को और सरदारों और हाकिमों और उनकी सल्तनत के तमाम मुमालिक को मखसूस करो उस पर चढ़ाइं करो। 29 और जीमीन कौपीं और दर्द में मुबिला है, क्यूँकि खुदावन्द के इरादे बाबुल की मुखालिफत में काईम रहेंगे, कि बाबुल की सरजीमीन को बीरान और गैरआबाद कर दे। 30 बाबुल के बहादुर लड़ाइ से दस्तबरदार और किलों में बैठे हैं, उनका जोर घट गया, वह 'औरतों की तरह हो गए; उसके घर जलाए गए, उसके अड़बगे तोड़े गए। 31 हरकरार हरकरों से मिलने को और कसिदे से मिलने को दौड़ेगा कि बाबुल के बादशाह को इतला दे, कि उसका शहर हर तरफ से ले लिया गया; 32 और गुजरागों हेले ली गई, और नेस्तान आग से जलाए गए और फौज हड़बड़ा गई। 33 क्यूँकि रब्ब — उल — अफवाज, इसाईल का खुदा, यूँ फरमाता है कि: दुखर — ए — बाबुल खलीहान की तरह है, जब उसे रौदेने का वक्त आए, थोड़ी देर है कि उसकी कटाइ का वक्त आ पहुँचेगा। 34 "शाह — ए — बाबुल नबूकदनजर ने मुझे खा लिया, उसने मुझे शिक्स्त दी है, उसने मुझे खाली बर्तन की तरह कर दिया अजदहा की तरह वह मुझे निगल गया, उसने अपने पेट को मेरी नेपतों से भर लिया; उसने मुझे निकाल दिया; 35 सिय्यून के रेनेवाले कहेंगे, जो सितम हम पर और हमरे लोगों पर हुआ, बाबुल पर हो।" और येशलेम कहेगा, मेरा खन अहल — ए — कसदिस्तान पर हो। 36 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि: देख, मैं तेरी हिमायत करूँगा और तेरा इन्तकाम लौंगा, और उसके बहर को सुखाऊँगा और उसके सौते को खुश कर दँगा; 37 और बाबुल खण्डर हो जाएगा, और गीढ़ों का मकाम और हैरत और सुस्कार का 'जरिया' होगी और उसमें कोई न बसेगा। 38 वह जवान बर्बरों की तरह इकट्ठे गरजेंगे, वह शेर बच्चों की तरह गुराँसेंगे। 39 उनकी हालत — ए — तैश में मैं उनकी जियाफत करके उनको मस्त करूँगा, कि वह जड़ में आँ और दाढ़ी ख्वाल भैंसेंगे और बैदर न हो, खुदावन्द कर्मसान है। 40 मैं उनको बर्बे और मेंडों की तरह बकरों के साथ मसलख पर उतार लाऊँगा। 41 शेषक ब्यूकर ले लिया गया! हाँ, तमाम रु — ए — जीमीन का खम्बा यकबारी ले लिया गया। बाबुल कौमों के बीच कैसा वीरान हुआ! 42 समन्दर बाबुल पर चढ गया है, वह उसकी लहरों की कसरत से छिप गया। 43 उसकी बस्तियाँ उजड़ गईं, वह खुशक जीमीन और सहरा हो गया ऐसी सरजीमीन जिसमें न कोई बसाता हो और न वहाँ आदमजाद का गुजर हो। 44 क्यूँकि मैं बाबुल में बेल को सजा दँगा, और जो कुछ वह निगल गया है उसके मूँह से निकालूँगा, और फिर कौमों उसकी तरफ रवाँ होंगी; हाँ, बाबुल की फसील गिर जाएगी। 45 ऐ मेरे लोगों, उसमें से निकल आओ, और तुम मैं से हर एक खुदावन्द के कहर — ए — शदीद से अपनी जान बचाए। 46 न हो कि तुहरा दिल सुस्त हो, और तुम उस अफवाह से डरो जो जीमीन में सुनी जाएगी; एक अफवाह एक साल आएगी और फिर दूसरी अफवाह दूसरे साल में, और मुल्क में जूत्म होगा और हाकिम हाकिम से लडेगा। 47 इसलिए देख, वह दिन आते हैं कि मैं बाबुल की तराशी हुई मूरतों से इन्तकाम लौंगा और उसकी तमाम सरजीमीन स्वा होगी।

और उसके सब मक्तूल उसी में पड़े रहेंगे। 48 तब आसमान और जमीन और सब कुछ जो उनमें है, बाबूल पर शादियाना बजाएँगे; क्यूंकि गारतगर उत्तर से उस पर चढ़ आएँगे, खुदावन्द फरमाता है। 49 जिस तरह बाबूल में बनी — इमाईल कल्ले हुए, उसी तरह बाबूल में तमाम मुल्क के लोग कल्ले होंगे। 50 तुम जो तलवार से बच गए हो, खड़े न हो, चले जाओ। दूर ही से खुदावन्द को याद करो, और येस्शलेम का ख्याल तुहरे दिल में आ। 51 'हम परेशान हैं, क्यूंकि हम ने मलामत सुनीं; हम शर्मआलदा हुए, क्यूंकि खुदावन्द के घर के हैकलों में अजनबी धूस आए। 52 इसलिए देख, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है, कि मैं उसकी ताराशी हुई मर्तों को सजा दूँगा; और उसकी तमाम सल्तनत में घायल करावेंगे। 53 हरचन्द बाबूल आसमान पर चढ़ जाए और अपने जोर की इन्तिहा तक मुस्तहकम हो बैठे तो भी गारतगर मेरी तरफ से उस पर चढ़ आएँगे, खुदावन्द फरमाता है। 54 बाबूल से रोने की और कसदियों की सरजमीन से बड़ी हलाकत की आवाज आती है। 55 क्यूंकि खुदावन्द बाबूल को गारत करता है, और उसके बड़े शेर — ओ — गुल को बर्बाद करेगा; उनकी लहरें समन्दर की तरह शेर मचाती हैं उनके शेर की आवाज बुलंद है, 56 इसलिए कि गारतगर उस पर, हाँ, बाबूल पर चढ़ आया है, और उसके ताकतवर लोग पकड़े जायेंगे उनकी कमाने तोड़ी जायेंगी क्यूंकि खुदावन्द इन्तकाम लेनेवाला खुदा है, वह जस्त बदला लेगा। 57 मैं हाकिम — ओ — हुक्मा को और उसके सरदारों और हाकिमों को मस्त करूँगा, और वह दाइमा ख्वाब में पड़े रहेंगे और बेदार न होंगे, वह बादशाह फरमाता है, जिसका नाम रब्ब — उल — अफवाज है। 58 “रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: बाबूल की चौड़ी फसील बिल्कुल गिरा दी जाएगी, और उसके बुलन्द फाटक आग से जला दिए जाएंगे। यूँ लिंगों की मेहनत बे कायदा ठहरेगी, और कौमों का काम आग के लिए होगा और वह मान्दा होंगे।” 59 यह वह बात है, जो यरमियाह नबी ने सिरायाह — बिन — नेयिरियाह — बिन — महसियाह से कही, जब वह शाह — ए — यहदाह सिदकियाह के साथ उसकी सल्तनत के चौथे बरस बाबूल में गया, और यह सिरायाह ख्वाजासमाओं का सरदार था। 60 और यरमियाह ने उन सब आफतों को जो बाबूल पर आने वाली थी, एक किताब में कलमबन्द किया; यानी इन सब बातों को जो बाबूल के बारे में लिखी गई है। 61 और यरमियाह ने सिरायाह से कहा, कि “जब तू बाबूल में पहुँचे, तो इन सब बातों को पढ़ना, 62 और कहना, ‘ऐ खुदावन्द, तरे इस जगह की बर्बादी के बारे में फरमाया है कि मैं इसको बर्बाद करूँगा, ऐसा कि कोई इसमें न बसे, न इसन न हैवान, लेकिन हमेशा वीरान रहे। 63 और जब तू इस किताब को पढ़ चुके, तो एक पत्थर इससे बैंधना और फरात में फेंक देना; 64 और कहना, ‘बाबूल इसी तरह ढूब जाएगा, और उस मूरीबत की बजह से जो मैं उस पर डाल दूँगा, फिर न उठेगा और वह मान्दा होंगे।’” यरमियाह की बातें यहाँ तक हैं।

52 जब सिदकियाह सल्तनत करने लगा, तो इक्कीस बरस का था; और उसने ग्यारह बरस येस्शलेम में सल्तनत की, और उसकी माँ का नाम हमूतल था जो लिबानी यरमियाह की बेटी थी। 2 और जो कुछ यहयकीम ने किया था, उसी के मुताबिक उसने भी खुदावन्द की नजर में बढ़ी की। 3 क्यूंकि खुदावन्द के ग़ज़ब की बजह से येस्शलेम और यहदाह की यह नौबत आई कि आखिर उसने उनको अपने सामने से दूर ही कर दिया। और सिदकियाह शाह — ए — बाबूल से मुन्हरिक हो गया। 4 और उसकी सल्तनत के नवें बरस के दसवें महीने के दसवें दिन यूँ हासा कि शाह — ए — बाबूल नबूकदनज़र ने अपनी सारी फौज के साथ येस्शलेम पर चढ़ाई की, और उसके सामने खैमाजन हुआ और उन्होंने उसके सामने हिसार बनाए। 5 और सिदकियाह बादशाह की

सल्तनत के ग्यारहवें बरस तक शहर का धिराव रहा। 6 चौथे महीने के नवें दिन से शहर में काल ऐसा सख्त हो गया कि मुल्क के लोगों के लिए खारक न रही। 7 तब शहरपनाह में रखना हो गया, और दोनों दीवारों के बीच जो फाटक शाही बाग के बारबर था, उससे सब जंगी मर्द रात ही रात भाग गए इस वक्त कसदी शहर को धेरे हुए थे और वीरामे की राह ली। 8 लेकिन कसदियों की फौज ने बादशाह का पीछा किया, और उसे यरीह के मैदान में जा लिया, और उसका सारा लश्कर उसके पास से तितर — बितर हो गया था। 9 तब वह बादशाह को पकड़ कर रिब्ला में शाह — ए — बाबूल के पास हमारत के 'इलाके में ले गए, और उसने सिदकियाह पर फतवा दिया। 10 और शाह — ए — बाबूल ने सिदकियाह के बेटों को उसकी आँखों के सामने ज़बह किया, और यहदाह के सब हाकिम को भी रिब्ला में कत्ल किया। 11 और उसने सिदकियाह की आँखें निकाल डाली, और शाह — ए — बाबूल उसके ज़ंजीरों से ज़कड़ कर बाबूल को ले गया, और उसके मरने के दिन तक उसे कैदखाने में रखा। 12 और शाह — ए — बाबूल नबूकदनज़र के 'अहद' के उन्नीसवें बरस के पाँचवें महीने के दसवें दिन जिलौदारों का सरदार नबूजरादान, जो शाह — ए — बाबूल के सामने में खड़ा रहता था, येस्शलेम में आया। 13 उसने खुदावन्द का घर और बादशाह का महल और येस्शलेम के सब घर, यानी हर एक बड़ा घर आग से जला दिया। 14 और कसदियों के सारे लश्कर ने जिलौदारों के सरदार के हमराह था, येस्शलेम की फसील को चारों तरफ से गिरा दिया। 15 और बाकी लिंगों और मोहताजों को जो शहर में रह गए थे, और उनको जिन्होंने अपनों को छोड़कर शाह — ए — बाबूल की पनाह ली थी, और 'अवाम में से जितने बाकी रह गए थे, उन सबको नबूजरादान जिलौदारों का सरदार गुलाम करके ले गया। 16 लेकिन जिलौदारों के सरदार नबूजरादान ने मुल्क के कंगालों को रहने दिया, ताकि खेती और ताकिस्तानों की बागबानी करें। 17 और पीतल के उन सूनों को जो खुदावन्द के घर में थे, और कसदियों के तोड़क टुकड़े टुकड़े किया और उनका सब पीतल बाबूल को ले गए। 18 और देंगे और बेन्वे और गुलामीर और लगन और चमचे और पीतल के तमाम बर्तन, जो वहाँ काम आते थे, ले गए। 19 और बासन और अंगेठियाँ और लगन और देंगे और शमा'दान और चमचे और प्याले गर्जा जो सोने के थे उनके सोने को, और जो चौंदी के थे उनकी चौंदी को जिलौदारों का सरदार ले गया। 20 वह दो सूनत और वह बड़ा हौज और वह पीतल के बारह बैल जो कुर्सियों के नीचे थे, जिनको सुनेमान बादशाह ने खुदावन्द के घर के लिए बनाया था; इन सब चीजों के पीतल का बजन बेहिसाब था। 21 हर सून अशरह हाथ ऊँचा था, और बारह हाथ का सूत उसके चारों तरफ आता था, और वह चार ऊंगल मोटा था; यह खोखला था। 22 और उसके ऊपर पीतल का एक ताज था, और वह ताज पाँच हाथ बुलन्द था, उस ताज पर चारों तरफ जालियाँ और अनार की कलियाँ, सब पीतल की बनी हुई थीं, और दूसरे सूनत के लवाजिम भी जाती के साथ इहीं की तरह थे। 23 और चारों हवाओं के स्वर अनार की कलियाँ छियानवे थीं, और चारों तरफ जालियों पर एक सौ थी। 24 और जिलौदारों के सरदार ने सिरायाह सरदार काहिन को, और काहिन — ए — सानी सफनियाह को, और तीनों दरबानों को पकड़ लिया; 25 और उसने शहर में से एक सरदार को पकड़ लिया जो जंगी मर्दी पर मुकर्रर था, और जो लोग बादशाह के सामने हाजिर रहते थे, उनमें से सात आदियों को जो शहर में मिले; और लश्कर के सरदार के मुहर्रिर को जो अहल — ए — मुल्क की मौज़दात लेता था; और मुल्क के आदियों में से साठ आदियों को जो शहर में मिले। 26 इनको जिलौदारों का सरदार नबूजरादान पकड़कर शाह — ए — बाबूल के सामने रिब्ला में ले

गया। 27 और शाह — ए — बाबुल ने हमात के 'इलाके के रिल्ला में इनको कत्ल किया। इसलिए यहदाह अपने मुल्क से गुलाम होकर चला गया। 28 यह वह लोग हैं जिनको नबूकदनजर गुलाम करके ले गया: सातवें बरस में तीन हजार तेईस यहदी, 29 नबूकदनजर के अष्टरहवें बरस में वह येस्जलेम के बाशिन्दों में से आठ सौ बत्तीस आदमी गुलाम करके ले गया, 30 नबूकदनजर के तेर्दस्वें बरस में जिलौदारों का सरदार नबूजरादान सात सौ पैतालीस आदमी यहदियों में से पकड़कर ले गया; यह सब आदमी चार हजार छ: सौ थे। 31 और यहयाकीन शाह — ए — यहदाह की शुलामी के सैतीसवें बरस के बारहवें महीने के पच्चीसवें दिन थैं हुआ, कि शाह — ए — बाबुल ईवील मस्तक ने अपनी सल्तनत के पहले साल यहयाकीन शाह — ए — यहदाह को कैदखाने से निकालकर सरफराज किया; 32 और उसके साथ मेहरबानी से बांते की, और उसकी कुसीं उन सब बादशाहों की कुर्सियों से जो उसके साथ बाबुल में थे, बुलन्द की। 33 वह अपने कैदखाने के कपड़े बदलकर उम्र भर बराबर उसके सामने खाना खाता रहा। 34 और उसकी उम्र भर, यानी मरने तक शाह — ए — बाबुल की तरफ से वज़ीफ़ि के तौर पर हर रोज़ रसद मिलती रही।

नोहा

1 वह बस्ती जो लोगों से भरी थी, कैसी खाली पड़ी है! वह कौमों की 'खालत' बेवा की तरह हो गई! वह कुछ गुजरे के लिए मूलक की मतिका बन गई। 2 वह रात को जार — जार रोती है, उसके अँसू चेहरे पर बहते हैं, उसके चाहने वालों में कोई नहीं जो उसे तसल्ली दे; उसके सब दोस्तों ने उसे धोका दिया, वह उसके दुश्मन हो गए। 3 यहदाह जुल्म और सख्त मेहनत की वजह से जिलावतन हुआ, वह कौमों के बीच रहते और बे — आराम है, उसके सब सताने वालों ने उसे धारियों में जा लिए। 4 सिय्यून के रास्ते मातम करते हैं, क्यूँकि खुशी के लिए कोई नहीं आता; उसके सब दरवाजे सुनसान हैं, उसके काहिन आहें भरते हैं, उसकी कुँवारियाँ मुसीबत जदा हैं और वह खुद गमीन है। 5 उसके मुखालिफ गालिब आए और दुश्मन खुशाहल हुए; क्यूँकि खुदावन्द ने उसके गुनाहों की ज्यादीत के जरिए! उसे गम में डाला; उसकी औलाद को दुश्मन गुलामी में पकड़ ले गए। 6 सिय्यून की बैटियों की सब शान — ओ — शैकत जाती रही; उसके हाकिम उन दिनों की तरह हो गए हैं, जिनको चरागाह नहीं मिलती, और शिकारियों के सामने बे बस हो जाते हैं। 7 येस्शलेम को अपने गम — ओ — मुसीबत के दिनों में, जब उसके रहने वाले दुश्मन का शिकार हुए, और किसी ने मदद न की, अपने गुजरे जमाने की सब नेपांते याद आई, दुश्मनों ने उसे देखकर उसकी बर्बादी पर हँसी उड़ाई। 8 येस्शलेम सख्त गुनाह करके नापाक हो गया; जो उसकी 'इज्जत करते थे, सब उसे हकीक जानते हैं, हाँ, वह खुद आहें भरता, और मँहूँ फेर लेता है। 9 उसकी नापाकी उसके दामन में है, उसने अपने अंजाम का ख्याल न किया; इसलिए वह बहुत बेहाल हुआ; और उसे तसल्ली देने वाला कोई न रहा; ऐ खुदावन्द, मेरी मुसीबत पर नजर कर; क्यूँकि दुश्मन ने गुरर किया है। 10 दुश्मन ने उसकी तमाम 'उम्दा चीज़ों पर हाथ बढ़ाया है; उसने अपने मक्किस में कौमों को दाखिल होते देखा है। जिनके बारे में तू ने फरमाया था, कि वह तेरी जामा'अत में दाखिल न हों। 11 उसके सब रहने वाले कराहते और रोटी ढूँढते हैं, उन्होंने अपनी 'उम्दा चीज़ों दे डाली, ताकि रोटी से ताजा दम हों, ऐ खुदावन्द, मुझ पर नजर कर; क्यूँकि मैं जलील हो गया। 12 ऐ सब आने जाने वालों, क्या तुम्हारे नज़दीक ये कुछ नहीं? नजर करो और देखो; क्या कोई गम मेरे गम की तरह है, जो मुझ पर आया है जिसे खुदावन्द ने अपने बड़े गजब के वक्त नाजिल किया। 13 उसने 'आलम — ए — बाला से मेरी हड्डियों में आग भेजी, और वह उन पर गालिब आई, उसने मेरे पैरों के लिए जाल बिछाया, उस ने मुझे पीछे लौटाया; उसने मुझे दिन भर बीरान — ओ — बेताब किया। 14 मेरी खताओं का बोझ उसी के हाथ से बांधा गया है, वह बाहम पेचीदा मेरी गर्दन पर है उसने मुझे कमज़ोर कर दिया है; खुदावन्द ने मुझे उनके हवाले किया है, जिनके मुकाबिले की मुझ में हिम्मत नहीं। 15 खुदावन्द ने मेरे अन्दर ही मेरे बहादुरों को नाचीज ठहराया; उसने मेरे खिलाफ एक खास जमा'अत को बुलाया, कि मेरे बहादुरों को कुचले जाएं। 16 इसलिए मैं रोती हूँ, मेरी अँखें अँसू से भरी हैं, जो मेरी स्त्री को ताजा करे, मुझ से दूँ है; मेरे बाल — बच्चे बे सहारा हैं, क्यूँकि दुश्मन गालिब आ गया। 17 सिय्यून ने हाथ फैलाए; उसे तसल्ली देने वाला कोई नहीं; याकब के बारे में खुदावन्द ने हुक्म दिया है, कि उसके दर्विंदे वाले उसके दुश्मन हों, येस्शलेम उनके बीच नजासत की तरह है। 18 खुदावन्द सच्चा है, क्यूँकि मैंने उसके हुक्म से नाकरमानी की है; ए सब लोगों, मैंनिन तरता हूँ, सनो, और मेरे दुख पर नजर करो, मेरी कुँवारिया और जवान गुलाम होकर चले गए। 19 मैंने अपने दोस्तों को पुकारा, उन्होंने मुझे धोका दिया; मेरे काहिन और बुज़ुर्ग

अपनी स्त्री को ताजा करने के लिए, शहर में खाना ढूँढते — ढूँढते हलाक हो गए। 20 ऐ खुदावन्द देखे: मैं तबाह हाल हूँ, मेरे अन्दर पेच — ओ — ताब है; मेरा दिल मेरे अन्दर मुजतरिब है; क्यूँकि मैंने सख्त बगावत की है; बाहर तलवार बे — औलाद करती है और घर में मौत का सम्पन्न है। 21 उन्होंने मेरी आहें सनी हैं, मुझे तसल्ली देनेवाला कोई नहीं; मेरे सब दुश्मनों ने मेरी मुसीबत सुनी; वह खुशी है कि तू ने ऐसा किया; तू वह दिन लाएणा, जिसका तू ने 'ऐतान किया है, और वह मेरी तरह हो जाएँगे। 22 उनकी तमाम शरारत तेरे सामने आये; उनसे वही कर जो तू ने मेरी तमाम खताओं के जरिए मुझसे किया है; क्यूँकि मेरी आहें बेशमाह हैं और मेरा दिल बेबस है।

2 खुदावन्द ने अपने कहर में सिय्यून की बेटी को कैसे बादल से छिपा दिया!

उन्हे इमाईल की खुबसूरती को आसामन से जमीन पर गिरा दिया, और अपने गजल के दिन भी अपने पैरों की चौकी को याद न किया। 2 खुदावन्द ने या'क़ब के तमाम घर हलाक किए, और रहम न किया; उसने अपने कहर में यहदाह की बेटी के तमाम किले गिराकर खाक में मिला दिए उसने मुल्कों और उसके हाकियों को नापाक ठहराया। 3 उसने बड़े गजब में इमाईल का सींग बिल्कुल काट डाला; उसने दुश्मन के सामने से दहना हाथ खींच लिया, और उसने जलाने वाली आग की तरह, जो चारों तरफ खाक करती है, याक़ब को जला दिया। 4 उसने दुश्मन की तरह कमान खींची, मुखालिफ की तरह दहना हाथ बढ़ाया, और सिय्यून की बेटी के खेमें से सब हसीनों को कल्प लिया! उसने अपने कहर की आग को उँडेल दिया। 5 खुदावन्द दुश्मन की तरह हो गया, वह इमाईल को निगल गया, वह उसके तमाम महलों को निगल गया, उसने उसके किले में मिस्मार कर दिए, और उसने दुखतर — ए — यहदाह में मातम — ओ नौहा बहातायत से कर दिया। 6 और उसने अपने घर को एक बार में ही बर्बाद कर दिया, गोया खैमा — ए — बाग था; और अपने मज़दों के मकान को बर्बाद कर दिया; खुदावन्द ने मुक़द्दस 'इंदों और सबतों को सिय्यून से फरामोश करा दिया, और अपने कहर के जोश में बादशाह और काहिन को जलाल किया। 7 खुदावन्द ने अपने मज़बह को रुद किया, उसने अपने मक्किस से नफरत की, उसके महलों की दीवारों को दुश्मन के हवाले कर दिया; उन्होंने खुदावन्द के घर में ऐसा शोर मचाया, जैसा 'ईंद के दिन। 8 खुदावन्द ने दुखतर — ए — सिय्यून की दीवार गिराने का इरादा किया है; उसने देरी डाली है, और बर्बाद करने से दस्तबरदार नहीं हुआ; उसने फ़सील और दीवार को मामूल किया; वह एक साथ मातम करती है। 9 उसके दरवाजे जमीन में गर्क हो गए; उसने उसके बेडों को तोड़कर बर्बाद कर दिया; उसके बादशाह और उमरा बे — शरी अत कौमों में हैं; उसके नबी भी खुदावन्द की तरफ से कोई खाव नहीं देखते। 10 दुखतर — ए — सिय्यून के बुज़ुर्ग खाक नशीन और खामोश हैं; वह अपने सिरों पर खाक डालते और टाट ओढ़ते हैं, येस्शलेम की कुँवारियाँ ज़ामीन पर सिर झूकाए हैं। 11 मेरी अँखें रोते — रोते धूंदला गई, मेरे अन्दर पेच — ओ — ताब है, मेरी दुखतर — ए — कौम की बर्बादी के जरिए! मेरा कलेजा निकल आया, क्यूँकि छोड़े जाचे और दूध पीने वाले शहर की गलियों में बेहेश हैं। 12 जब वह शहर की गलियों में के ज़ालियों की तरह गश खाते, और जब अपनी माँओं की गोद में ज़बल होते हैं, तो उनसे कहते हैं, कि गल्ला और मय कहाँ हैं? 13 ऐ दुखतर — ए — येस्शलेम, मैं तुझे क्या नरीहत काँ, और किससे मिसाल दूँ? ऐ कुँवारी दुखतर — ए — सिय्यून, तुझे किस की तरह जान कर तसल्ली दूँ? क्यूँकि तेरा ज़ख्म समन्दर सा बड़ा है, तुझे कौन शिफा देगा? 14 तेरे नबियों ने तेरे लिए, बातिल और बेहदा खाव देखे: और तेरी बदकिरदारी ज़ाहिर न की, ताकि तुझे गुलामी से बापस लाते: बल्कि तेरे लिए झूटे पैमान और जिलावतनी के सामान देखे। 15 सब आने जानेवाले तुझ पर तालियाँ बजाते हैं;

वह दुख्तर — ए — येस्सलेम पर सुसकारते और सिर हिलाते हैं, के क्या, ये वही शहर है, जिसे लोग कमाल — ए — हृष्ट और फरहत — ए — जहाँ कहते थे? 16 तेरे सब दुश्मनों ने तुझ पर मुँह पसारा है; वह सुसकारते और दाँत पीसते हैं; वो कहते हैं, हम उसे निगल गए; वेशक हम इसी दिन के मृतजिर थे; इसलिए आ पहुँचा, और हम ने देख लिया 17 खुदावन्द ने जो तय किया वही किया; उसने अपने कलाम को, जो पुणे दिनों में फरमाया था, पूरा किया; उसने गिरा दिया, और रहम न किया; और उसने दुश्मन को तुझ पर शादमान किया, उसने तेरे मुखालिकों का सींग बलन्द किया। 18 उनके दिलों ने खुदावन्द से फरियाद की, ऐ दुख्तर — ए — सिय्यून की फसील, शब — ओ — रोज़ ऑसू नहर की तरह जारी रहें; तू बिल्कुल आराम न ले; तेरी आँख की पुतली आराम न करे। 19 उठ रात को फरहों के शूस् में फरियाद कर; खुदावन्द के हुज़र अपना दिल पानी की तरह उँडेल दे; अपने बच्चों की ज़िन्दगी के लिए, जो सब गलियों में भक्त से बेहोश पड़े हैं, उसके सामने में दस्त — ए — दू'आ बलन्द कर। 20 ऐ खुदावन्द, नज़र कर, और देख, कि तू ने किससे ये किया! क्या 'औरते अपने फल यानी अपने लाडले बच्चों को खाएँ' क्या कहिन और नवी खुदावन्द के मान्दिस में कल्प किए जाएँ? 21 बुर्जुंग — ओ — जवान गलियों में खाक पर पड़े हैं; मेरी कुँवारियाँ और मेरे जवान तलवार से कल्प हैं; तू ने अपने कहर के दिन उनको कल्प किया; तू ने उनको काट डाला, और रहम न किया। 22 तूने मेरी दहशत को हर तरफ से गोया 'ईद के दिन बुला लिया, और खुदावन्द के कहर के दिन न कोई बचा, न बाकी रहा; जिनको मैंने गोद में खिलाया और पला पोसा, मेरे दुश्मनों ने फना कर दिया।

3 मैं ही वह शाख्स हूँ जिसने उसके गजब की लाठी से दुख पाया। 2 वह मेरा रहबर हुआ, और मुझे रैशनी में नहीं, बल्कि तारीकी में चलाया; 3 यकीन उसका हाथ दिन भर मेरी मुखालिफत करता रहा। 4 उसने मेरा गोशत और चमड़ा खुशक कर दिया, और मेरी हड्डियाँ तोड़ डाली, 5 उसने मेरे चारों तरफ दीवार खेंची और मुझे कड़वाहट और — मशक्कत से थेर लिया; 6 उसने मुझे लाबे बक्त से मुर्दों की तरह तारीक मकानों में रख्खा। 7 उसने मेरे गिर्द अहाता बना दिया, कि मैं बाहर नहीं निकल सकता; उसने मेरी ज़ंजीर भारी कर दी। 8 बल्कि जब मैं पुकारता और तुड़ाइ देता हूँ, तो वह मेरी फरियाद नहीं सुनता। 9 उसने तातों हुए पथरों से मेरे गर्देन बदन्द कर दिए, उसने मेरी राहें टेढ़ी कर दी। 10 वह मेरे लिए घात में बैठा हुआ रीछ और कमीनाह का शेर — ए — बब्बर है। 11 उसने मेरी राहें तंग कर दी और मुझे रेजा — रेजा करके बर्बाद कर दिया। 12 उसने अपनी कमान खींची और मुझे अपने तीरों का निशाना बनाया। 13 उसने अपने तर्कश के तीरों से मेरे गुर्दों को छेद डाला। 14 मैं अपने सब लोगों के लिए मजाक, और दिन भर उनका चर्चा हूँ। 15 उसने मुझे तल्खी से भर दिया और नागदोने से मदहोश किया। 16 उसने सगरेजों से मेरे दाँत तोड़े और मुझे ज़मीन की तह में लिटाया। 17 तू ने मेरी जान को सलामी से दूरकर दिया, मैं खुशाली को भूल गया; 18 और मैंने कहा, 'मैं नातवं हुआ, और खुदावन्द से मेरी उम्मीद जाती रही।' 19 मेरे दुख का ख्याल कर; मेरी मुसीबत, यानी तल्खी और नागदोने को याद कर। 20 इन बातों की याद से मेरी जान मुझ में बेताब है। 21 मैं इस पर सोचता रहता हूँ, इस्लिए मैं उम्मीदवार हूँ। 22 ये खुदावन्द की शफकत है, कि हम फना नहीं हुए, क्यूँकि उसकी रहमत ला जवाल है। 23 वह हर सुबह ताजा है; तेरी फकादारी 'अज़ीम है 24 मेरी जान ने कहा, 'मेरा हिस्सा खुदावन्द है, इसलिए मेरी उम्मीद उरी से है।' 25 खुदावन्द उन पर महरबान है, जो उसके मुत्तजिर हैं; उस जान पर जो उसकी तालिब है। 26 ये ख़बू हैं कि आदमी उम्मीदवार रहे और खामोशी से खुदावन्द की नज़ार का इन्तजार करे। 27 आदमी के लिए बेहतर है कि अपनी

जवानी के दिनों में फरमॉबरदारी करे। 28 वह तन्हा बैठे और खामोश रहे, क्यूँकि ये खुदा ही ने उस पर रखा है। 29 वह अपना मूँह खाक पर रख दें, कि शायद कुछ उम्मीद की सूरत निकले। 30 वह अपना गाल उसकी तरफ फेर दे, जो उसे तमांचा मारता है और मलामत से ख़बू सेर हो 31 क्यूँकि खुदावन्द होशा के लिए रद्द न करेगा, 32 क्यूँकि अगर वे वह दुख दे, तो भी अपनी शक्कत की दरयादिली से रहम करेगा। 33 क्यूँकि वह बनी आदम पर खुशी से दुख मुसीबत नहीं भेजता। 34 रू — ए — ज़मीन के सब कैदियों को पामाल करना 35 हक ताला के सामने किसी इंसान की हक तल्की करना, 36 और किसी आदमी का मुकद्दमा बिगाड़ा, खुदावन्द देख नहीं सकता। 37 वह कौन है जिसके कहने के मुताबिक होता है, हालाँकि खुदावन्द नहीं फ़साता? 38 क्या भलाई और बुराई हक ताला ही के हकम से नहीं हैं? 39 इसलिए आदमी जीते जी क्यूँ शिकायत करे, जब कि उसे गुराहों की सजा मिलती हो? 40 हम अपनी राहों को ढूँढ़े और जाँचें, और खुदावन्द की तरफ फ़िरें। 41 हम अपने हाथों के साथ दिलों को भी खुदा के सामने आसमान की तरफ उठाएँ: 42 हम ने खता और सरकशी की, तूने मुँअफ़ नहीं किया। 43 तू ने हम को कहर से ढाँपा और रोगों; तूने कल्प किया, और रहम न किया। 44 तू बादलों में मस्तूर हुआ, ताकि हमारी दुआ तुझ तक न पहुँचे। 45 तूने हम को कौमों के बीच कड़े करकट और नज़सत सा बना दिया। 46 हमारे सब दुश्मन हम पर मुँह पसारते हैं, 47 खौफ — और — दहशत और वीरानी — और — हलाकत ने हम को आ दबाया। 48 मेरी दुख्तर — ए — कौम की तबाही के ज़रिए मेरी आँखों से आँसूओं की नहरें जारी हैं। 49 मेरी आँखें अशक्कर हैं और थमती नहीं, उनको आराम नहीं, 50 जब तक खुदावन्द आसमान पर से नज़र करके न देखें; 51 मेरी आँखें मेरे शहर की सब बैटियों के लिए मेरी जान को आजुरी करती हैं। 52 मेरे दुश्मनों ने बे वजह मुझे परिन्दे की तरह दौड़ाया; 53 उन्होंने चाह — ए — ज़िन्दान में मेरी जान लेने को मुझ पर पत्थर रख्खा; 54 पानी मेरे सिर से गुज़र गया, मैंने कहा, मैं पर पिटा। 55 ऐ खुदावन्द, मैंने तह दिल से रैंग जान की दुहाई दी; 56 तू ने मेरी आवाज़ सनी है, मेरी आह — ओ — फरियाद से अपना कान बन्द न कर। 57 जिस रोज़ मैंने तुझे पुकारा, तू न ज़दीक आया; और तू ने फरमाया, 'पेरेशान न हो!' 58 ऐ खुदावन्द, तूने मेरी जान की हिमायत की और उसे छुड़ाया। 59 ऐ खुदावन्द, तू ने मेरी मजल्लानी देखी; मेरा इन्साफ़ कर। 60 तूने मेरे खिलाफ़ उनके तमाम इन्तकाम और सब मन्सूबों को देखा है। 61 ऐ खुदावन्द, तूने मेरे खिलाफ़ उनकी मलामत और उनके सब मन्सूबों को सुना है; 62 जो मेरी मुखालिफ़त को उठे उनकी बातें और दिल भर मेरी मुखालिफ़त में उनके मन्सूबे। 63 उनकी महाफ़िल — ओ — बरखास्त को देख कि मेरा ही ज़िक्र है। 64 ऐ खुदावन्द, उनके 'आमाल के मुताबिक उनको बदला दे। 65 उनको कोर दिल बना कि तेरी लांउ उन पर हो। 66 हे यहोवा, कहर से उनको भगा और रू — ए — ज़मीन से नेस्त — ओ — नाबद कर दे।

4 सोना कैसा बेआव हो गया! कुन्दन कैसा बदल गया! मान्दिस के पत्थर तमाम गली क्लॉबों में पड़े हैं। 2 सिय्यून के 'अज़ीज़ फ़र्जन्द, जो खालिस सोने की तरह थे, कैसे कुम्हार के बनाए हए बर्तनों के बराबर ठहरे! 3 गीद़ भी अपनी छातियों से अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं; लेकिन मेरी दुख्तर — ए — कौम वीरानी शतरम्भी की तरह बे — रहम है। 4 दूध पीते बच्चों की जबान प्यास के मारे तालू से जा लगी; बच्चे रोटी मांगते हैं लेकिन उनको कोई नहीं देता। 5 जो नाज़ वर्पादा थे, गलियों में तबाह हाल हैं; जो बचपन से अर्धावनपोश थे, मज़बलों पर पड़े हैं। 6 क्यूँकि मेरी दुख्तर — ए — कौम की बदकिरदारी सदूम के गुनाह से बढ़कर है, जो एक लम्हे में बर्बाद हुआ, और किसी के हथ पर उस पर दराज़ न हुए। 7 उसके शुर्फ़ बर्फ़ से ज़यादा साफ़ और दूध

से सफेद थे, उनके बदन मूरे से ज्यादा सुर्ख थे, उन की झलक नीलम की सी थी; 8 अब उनके चेहरे सियाही से भी काले हैं; वह बाजार में पहचाने नहीं जाते; उनका चमड़ा हरीयों से सटा है; वह सख बर कर लकड़ी सा हो गया। 9 तलवार से कल्ला होने वाले, भूकों मरने वालों से बहतर हैं, क्यूंकि ये खेत का हासिल न मिलने से कुटकर हलाक होते हैं। 10 रहमदिल 'औरतों के हाथों ने अपने बच्चों को पकाया, मेरी दुख्तर — ए — कौम की तबाही में वही उनकी खुराक हुए। 11 खुदावन्द ने अपने गजब को अन्जाम दिया; उसने अपने कहर — ए — शरीद को नाजिल किया। और उसने सियून में आग भड़काई जो उसकी बुनियाद को चट कर गई। 12 रु — ए — ज़मीन के बादशाह और दुनिया के बाशिन्दे बावर नहीं करते थे, कि मुखालिफ और दुश्मन थेस्सलेम के फाटकों से घुस आएँगे। 13 ये उसके नवियों के गुनाहों और काहिनों की बदकिरदारी की वजह से हुआ, जिन्होंने उसमें सच्चों का खन बहाया। 14 वह अन्यों की तरह गलियों में भटकते, और खन से आलदा होते हैं, ऐसा कि कोई उनके लिबास को भी छू नहीं सकता। 15 वह उनको पुकार कर कहते थे, दूर रहो! नापाक, दूर रहो! दूर रहो, छना मत! "जब वह भाग जाते और आवारा फिरते, तो लोग कहते थे, 'अब ये यहाँ न रहेंगे।'" 16 खुदावन्द के कहर ने उनको पस्त किया, अब वह उन पर नज़र नहीं करेगा; उन्होंने काहिनों की 'इज़ज़त न की, और बुज़ुर्गों का लिहाज़ न किया। 17 हमारी आँखें बातिल मदद के इन्तिजार में थक गईं, हम उस कौम का इन्तिजार करते रहे जो बच्चा नहीं सकती थी। 18 उन्होंने हमारे पाँव ऐसे बाँध रख ले हैं, कि हम बाहर नहीं निकल सकते; हमारा अन्जाम नज़ीक है, हमारे दिन पूरे हो गए; हमारा बक्त आ पहुँचा। 19 हम को दौड़ाने वाले आसमान के उकाबों से भी तेज़ हैं; उन्होंने पहाड़ों पर हमारा पीछा किया; वह वीराने में हमारी धात में बैठे। 20 हमारी जिन्दगी का दम खुदावन्द का मास्फ़, उनके गढ़ों में गिरफ्तार हो गया; जिसकी वजह हम कहते थे, कि उसके साथ तले हम कौमों के बीच जिन्दगी बसर कोरोंग। 21 ऐ दुख्तर — ए — अदोम, जो 'उज़ की सरज़मीन में बसती है, खुश — और — खुर्म हो; ये प्याला तुझ तक भी पहुँचेगा; तू मस्त और बरहना हो जाएगी। 22 ऐ दुख्तर — ए — सियून, तेरी बदकिरदारी की सजा तमाम हुईं; वह मुझे फिर गुलाम करके नहीं ले जाएगा; ऐ दुख्तर — ए — अदोम, वह तेरी बदकिरदारी की सजा देगा; वह तेरे गुनाह वाश करेगा।

5 ऐ खुदावन्द, जो कुछ हम पर गुज़रा उसे याद कर; नज़र कर और हमारी स्वाइ को देख। 2 हमारी मीरास अजनबियों के हवाले की गई, हमारे घर बेगानों ने ले लिए। 3 हम यतीम हैं, हमारे बाप नहीं, हमारी माँ ए बेवाओं की तरह हैं। 4 हम ने अपना पानी मोल लेकर पिया; अपनी लकड़ी भी हम ने दाम देकर ली। 5 हम को रोगदे वाले हमारे सिर पर हैं; हम थके हारे और बेआराम हैं। 6 हम ने मिथियों और असूरियों की इतः'अत कुबूल की ताकि रोटी से सेर और आसदा हों। 7 हमारे बाप दादा गुनाह करके चल बसे, और हम उनकी बदकिरदारी की सजा पा रहे हैं। 8 गुलाम हम पर हुक्मरानी करते हैं, उनके हाथ से छुड़ाने वाला कोई नहीं। 9 सहरा नशीलों की तलवार के ज़रिएँ, हम जान पर खेलकर रोटी हासिल करते हैं। 10 कहत की झुलसाने वाली आग के ज़रिएँ, हमारा चमड़ा तनूँ की तरह सियाह हो गया है। 11 उन्होंने सियून में 'औरतों को बेहुमत किया और यहदाह के शहरों में कुँवारी लड़कियों को। 12 हाकिम को उनके हाथों से लटका दिया; बुज़ुर्गों की रु — दारी न की गई। 13 जवानों ने चक्की पीसी, और बच्चों ने गिरते पड़ते लकड़ियाँ ढोईं। 14 बुजुर्ग फाटकों पर दिखाई नहीं देते, जवानों की नगामा परदाजी सुनाई नहीं देती। 15 हमारे दिलों से खुशी जाती रही; हमारा रक्स मातम से बदल गया। 16 ताज हमारे सिर पर से गिर पड़ा; हम पर अफ़सोस! कि हम ने गुनाह किया। 17

इसीलिए हमारे दिल बेताब हैं, इन्हीं बातों के ज़रिएँ 'हमारी आँखें धुंदला गईं, 18 कोह — ए — सियून की वीरानी के ज़रिए', उस पर गीदड़ फिरते हैं। 19 लेकिन तू, ऐ खुदावन्द, हमेशा तक कायम है, और तेरा तख्त नसल — दर — नसल। 20 फिर तू क्यूँ हम को हमेशा के लिए भूल जाता है, और हम को लम्बे बक्त तक तक करता है? 21 ऐ खुदावन्द, हम को अपनी तरफ फिरा, तो हम फिरेंगे; हमारे दिन बदल दे, जैसे पहले से थे। 22 क्या तू ने हमको बिल्कुल रद्द कर दिया है? क्या तू हमसे शरज्ञ नाराज़ है?

हिज़ि

1

तेइसवीं बरस के चौथे महीने की पाँचवीं तारीख को यूँ हुआ कि जब मैं नहर — ए — किबार के किनारे पर गुलामों के बीच था तो आसमान खुल गया और मैंने खुदा की रोधते देखी। 2 उस महीने की पाँचवीं को यहयाकीम बादशाह की शुलामी के पाँचवीं बरस। 3 खुदावन्द का कलाम बुज्जी के बेटे हिजकएल काहिन पर जो कसदियों के मुल्क में नहर — ए — किबार के किनारे पर था नाजिल हुआ, और वहाँ खुदावन्द का हाथ उस पर था। 4 और मैंने नजर की तो क्या देखता हूँ कि उत्तर से अँधी उठी एक बड़ी धटा और लिपटी हूँ आग और उसके चारों तरफ रोशनी चमकती थी और उसके बीच से याँनी उस आग में से सैकल किये हुए पीतल की तरह सूत जलवागर हूँ। 5 और उसमें से चार जानदारों की एक शबीह नजर आई और उनकी शकल यूँ थी कि वह इंसान से मुशाबह थे। 6 और हर एक चार चेहरे और चार पर थे। 7 और उनकी टौंगे सीधी थीं और उनके पाँव के तलवे बछड़े की पाँव के तलवे की तरह थे और वह मंजे हुए पीतल की तरह झलकते थे। 8 और उनके चारों तरफ परों के नीचे इंसान के हाथ थे और चारों के चेहरे और पर यूँ थे। 9 कि उनके पर एक दूसरे के साथ जुड़े थे और वह चलते हुए मुड़ते न थे बल्कि सब सीधे आगे बढ़े चले जाते थे। 10 उनके चेहरों की मुशाबिहत यूँ थी कि उन चारों का एक एक चेहरा इंसान का एक शेर बबर का उनकी दहिनी तरफ और उन चारों का एक एक चेहरा सांड का बाँध तरफ और उन चारों का एक एक चेहरा 'उकाब का था। 11 उनके चेहरे यूँ थे और उनके पर ऊपर से अलग — अलग थे हर एक के ऊपर दूसरे के दो परों से मिले हुए थे और दो दो से उनका बदन छिपा हुआ था। 12 उनमें से हर एक सीधा आगे को चला जाता था जिधर को जाने की ख्वाहिश होती थी वह जाते थे, वह चलते हुए मुड़ते न थे। 13 रही उन जानदारों की सूरत तो उनकी शक्त आग के सुलगे हुए कोयलों और मशालों की तरह थी, वह उन जानदारों के बीच इधर उधर आती जाती थी और वह आग नानी थी और उसमें से बिजली कौथ जाती है। 14 और वह जानदार ऐसे हटते बढ़ते थे जैसे बिजली कौथ जाती है। 15 जब मैंने उन जानदारों की तरफ नजर की तो क्या देखता हूँ कि उन चार चार चेहरों वाले जानदारों के हर चेहरे के पास ज़मीन पर एक पहिया है। 16 उन पहियों की सूरत और और बनावट जबरजद के जैसी थी और वह चारों एक ही बजाए के थे और उनकी शक्त और उनकी बनावट ऐसी थी जैसे पहिया पहटे के बीच में हैं। 17 वह चलते बदन अपने चारों पर चलते थे और पीछे नहीं मुड़ते थे। 18 और उनके हल्के बहुत ऊँचे और डरावने थे और उन चारों के हल्कों के चारों तरफ आँखें ही आँखें थीं। 19 जब वह जानदार ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये भी उनके साथ चलते थे और जब वह जानदार ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये भी उनके उठाये जाते थे। 20 जहाँ कहीं जाने की ख्वाहिश होती थी जाते थे, उनकी ख्वाहिश उनको उधर ही ही ले जाती थी और पहिये उनके साथ उठाये जाते थे, क्यूँकि जानदार की स्थ पहियों में थी। 21 जब वह चलते थे, यह चलते थे, और जब वह ठहरते थे, यह ठरते थे; और जब वह ज़मीन पर से उठाये जाते थे तो पहिये भी उनके साथ उठाये जाते थे, क्यूँकि पहियों में जानदार की स्थ थी। 22 जानदारों के सरों के ऊपर की फज्जा बिल्लोर की तरह चमक थी और उनके सरों के ऊपर फैली थी। 23 और उस फज्जा के नीचे उनके पर एक दूसरे की सीध में थे हर एक दो परों से उनके बदनों का एक पहल और दो परों से दूसरा हिस्सा छिपा था 24 और जब वह चलते थे मैंने उनके परों की आवाज सुनी जैसे बड़े सैलाब की आवाज याँनी कादिर — ए — मुतलक की आवाज और ऐसी शेर की आवाज हुई जैसी लशकर की आवाज होती है जब वह ठहरते थे तो

अपने परों को लटका देते थे। 25 और उस फज्जा के ऊपर से जो उनके सरों के ऊपर थी, एक आवाज आती थी और वह जब ठहरते थे तो अपने बाजुओं को लटका देते थे। 26 और उस फज्जा से ऊपर जो उनके सरों के ऊपर थी तब उसी सूत थी और उसकी सूरत नीलम के पत्थर की तरह थी और उस तब नमा सूरत पर किसी इंसान की तरह शबीह उसके ऊपर नजर आयी। 27 और मैंने उसकी कमर से लेकर ऊपर तक सैकल किये हुए पीतल के जैसा रंग और शोला सा जलवा उसके बीच और चारों तरफ देखा और उसकी कमर से लेकर नीचे तक मैंने शोला की तरह तजल्ली देखी, और उसकी चारों तरफ जगमगाहट थी। 28 जैसी उस कमान की सूरत है जो बारिश के दिन बादलों में दिखाई देती है वैसी ही आस — पास की उस जगमगाहट जाहिर थी यह खुदावन्द के जलाल का इजहार था, और देखते ही मैं सिंजदे में गिरा और मैंने एक आवाज सुनी जैसे कोई बातें करता है।

2 और उसने मुझे कहा, “ऐ आदमजाद अपने पाँव पर खड़ा हो कि मैं तुझसे बातें कहूँ।” 2 जब उसने मुझे यूँ कहा, तो स्थ मुझे मैं दाखिल हुई और मुझे पाँव पर खड़ा किया; तब मैंने उसकी सुनी जो मुझ से बातें करता था। 3 चुराँचे उरने मुझ से कहा, कि ऐ आदमजाद, मैं तुझे बनी — इसाईल के पास, याँनी उस सरकश कौम के पास जिसने मुझ से सरकशी की है भेजता हूँ वह और उनके बाप दादा आज के दिन तक मेरे गुनाहार होते आए हैं। 4 क्यूँकि जिनके पास मैं तुझ को भेजता हूँ, वह सरकश दित और बेहया फर्जन्द है; त उनसे कहना, ‘खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है। 5 तो चाहे वह सुने या न सुने क्यूँकि वह तो सरकश खान्दान है तो भी इतना तो होगा कि वह जानेगे कि उनमें से एक नवी खड़ा होता है। 6 त ऐ आदमजाद उनसे परेशन न हो और उनकी बातों से न डर, हर बदन तूँकटारों और काँटों से घिरा है और बिच्छुओं के बीच रहता है। उनकी बातों से तरसान होता है और उनके चेहरों से न घबरा, अगर वह बागी खान्दान है। 7 तब तू मेरी बातें उनसे कहना, चाहे वह सुने चाहे न सुने, क्यूँकि वह बहुत बागी है। 8 “लेकिन ऐ आदमजाद, तू मेरा कलाम सन। तू उस सरकश खान्दान की तरह सरकशी न कर, अपना मुँह खोल और जो कुछ मैं तुझे देता हूँ खा ले।” 9 और मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि एक हाथ मेरी तरफ बढ़ाया हुआ है, और उसमें किताब का तमार है। 10 और उसने उसे खोल कर मेरे सामने रख दिया। उसमें अन्दर बाहर लिखा हुआ था, और उसमें नोहा और मातम और आह और नला मरक्मथा।

3 फिर उसने मुझे कहा, कि ‘ऐ आदमजाद, जो कुछ तूने पाया सो खा। इस तमार को निगल जा, और जा कर इसाईल के खान्दान से कलाम कर। 2 तब मैंने मुँह खोला और उसने वह तमार मुझे खिलाया। 3 फिर उसने मुझे कहा, कि ऐ आदमजाद, इस तमार को जो मैं तुझे देता हूँ खा जा, और उससे अपना पेट भर ले। तब मैंने खाया और वह मेरे मुँह में शहद की तरह मीठा था। 4 फिर उसने मुझे फरमाया, कि ‘ऐ आदमजाद, तू बनी — इसाईल के पास जा और मेरी यह बातें उनसे कह। 5 क्यूँकि तू ऐसे लोगों की तरफ नहीं भेजा जाता जिनकी जबान बेगाना और जिनकी बोली सख्त है; बल्कि इसाईल के खान्दान की तरफ; 6 न बहुत सी उम्रों की तरफ जिनकी जबान बेगाना और जिनकी बोली सख्त है; जिनकी बात तू समझ नहीं सकता। यकीन अगर मैं तुझे उनके पास भेजता, तो वह तेरी सुनती। 7 लेकिन बनी इसाईल तेरी बात न सुनेंगे, क्यूँकि वह मेरी सुनना नहीं चाहते, क्यूँकि सब बनी — इसाईल सख्त पेशानी और पत्थर दिल हैं। 8 देख, मैंने उनके चेहरों के सामने तेरा चेहरा दूसरत किया है, और तेरी पेशानी उनकी पेशानियों के सामने सख्त कर दी है। 9 मैंने तेरी पेशानी को हरी की तरह चकमाक से भी ज्यादा सख्त कर दिया है; उनसे न डर और

उनके चेहरों से परेशान न हो, अगर वह सरकश खान्दान हैं। 10 फिर उसने मुझ से कहा, कि 'ऐ आदमजाद, मेरी सब बातों को जो मैं तुझ से कहूँगा, अपने दिल से कबूल कर और अपने कानों से सुन। 11 अब उठ, गुलामों याँनी अपनी कौपै के लोगों के पास जा, और उनसे कह, 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है,' चाहे वह सुनें चाहे न सुनें। 12 और स्थ ने मुझे उठा लिया, और मैंने अपने पीछे एक बड़ी कड़क की आवाज सुनी जो कहती थी: कि 'खुदावन्द का जलाल उसके घर से मुवारक हो। 13 और जानदारों के परों के एक दूसरे से लगने की आवाज और उनके सामने पहियों की आवाज और एक बड़े धड़के की आवाज सुनाई दी। 14 और स्थ मुझे उठा कर ले गई, इसलिए मैं तल्लू दिल और ग़ज़बनाक होकर रवाना हुआ, और खुदावन्द का हाथ मुझ पर गालिब था; 15 और मैं तल अबीब में गुलामों के पास, जो नहर — ए — किबार के किनारों बसते थे पहुँचा; और जहाँ वह रहते थे, मैं सात दिन तक उनके बीच परेशान बैठा रहा। 16 और सात दिन के बाद खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हआ: 17 कि 'ऐ आदमजाद, मैंने तुझे बनी — इसाईल का निगहबान मुकर्रर किया। इसलिए तू मेरे मुँह का कलाम सुन, और मेरी तरफ से उनको आगाह कर दे। 18 जब मैं शरीर से कहूँ, कि 'तू यकीन मेरेगा, और तू उसे आगाह न करे' और शरीर से न कहे कि वह अपनी बुरी चाल चलन से खबरदार हो, ताकि वह उससे बाज़ आकर अपनी जान बचाए, तो वह शरीर अपनी शरारत में मेरेगा, लेकिन मैं उसके खुन का सवाल — ओ — जबाब तुझ से करूँगा। 19 लेकिन अगर तने शरीर को आगाह कर दिया और वह अपनी शरारत और अपनी बुरी चाल चलन से बाज़ न आया तो वह अपनी बदकिरदारी में मेरेगा पर तने अपनी जान को बचा लिया। 20 और अगर रास्तबाज़ अपनी रास्तबाज़ी छोड़ दे और गुनाह करे, और मैं उसके आगे ठोकर खिलाने वाला पथर रख दें तो वह मर जाएगा; इसलिए कि तने उसे आगाह नहीं किया, तो वह अपने गुनाह में मेरेगा और उसकी सदाकत के कामों का लिहाज़ न किया जाएगा, लेकिन मैं उसके खुन का सवाल — ओ — जबाब तुझ से करूँगा। 21 लेकिन अगर तू उस रास्तबाज़ को आगाह कर दे, ताकि गुनाह न करे और वह गुनाह से बाज़ रहे तो वह यकीन जिएगा; इसलिए कि नसीहत पज़ीर हुआ और तने अपनी जान बचा ली। 22 और वहाँ खुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे फरमाया, 'उठ, मैदान में निकल जा और वहाँ मैं तुझ से बातें करूँगा।' 23 तब मैं उठ कर मैदान में गया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द का जलाल उस शैकृत की तरह, जो मैंने नहर — ए — किबार के किनारे देखी थी खड़ा है; और मैं मुँह के बल गिरा। 24 तब स्थ मुझ में दाखिल हुईं और उसने मुझे मेरे पाँप पर खड़ा किया, और मुझ से हमकलाम होकर फरमाया, कि अपने घर जा, और दरवाज़ा बन्द करके अन्दर बैठ रह। 25 और ऐ आदमजाद देख, वह तुझ पर बंधन डालते और उसने तुझे बांधे और तू उनके बीच बाहर न जाएगा। 26 और मैं तेरी ज़बान तेरी ताल से चिपका दूँगा कि तू खाँगा हो जाएँ, और उनके लिए नसीहत गो न हो, क्यूँकि वह बागी खान्दान हैं। 27 लेकिन जब मैं तुझ से हमकलाम हँगा, तो तेरा मुँह खोलूँगा, तब तू उनसे कहेगा, कि 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, जो सुनता है सुने और जो नहीं सुनता न सुने, क्यूँकि वह बागी खान्दान है।

4 और ऐ आदमजाद, त एक खपरा ले और अपने सामने रख कर उस पर एक शहर, हाँ, येस्शलेम ही की तस्वीर खीच। 2 और उसके घेराव कर, और उसके सामने बुर्ज बना, और उसके सामने दमदमा बाँध और उसके चारों तरफ खेंगे खड़े कर और उसके चारों तरफ मन्ज़नीक लगा। 3 फिर तू लोहे का एक तवा ले, और अपने और शहर के बीच उसे नस्ब कर कि वह लोहे की दीवार ठहरे और तू अपना मुँह उसके सामने कर और वह घेराव की हालत में हो, और तू उसके घेरने वाला होगा; यह बनी इसाईल के लिए निशान है। 4 फिर तू

अपनी ई करवट पर लेट रह और बनी — इसाईल की बदकिरदारी इस पर रख दे; जिने दिनों तक तू लेटा रहेगा, तू उनकी बदकिरदारी बर्दाशत करेगा। 5 और मैंने उनकी बदकिरदारी के बरसों को उन दिनों के शुमार के मुताबिक जो तीन — सौ — नब्बे दिन हैं तुझ पर रख छाहा है, इसलिए तू बनी — इसाईल की बदकिरदारी बर्दाशत करेगा। 6 और जब तू इनको पूरा कर चुके तो फिर अपनी दहनी करवट पर लेटे रह, और चालासिं दिन तक बनी यहदाह की बदकिरदारी को बर्दाशत कर; मैंने तेरे लिए एक एक साल के बदले एक एक दिन मुकर्रर किया है। 7 फिर तू येस्शलेम के घेराव की तरफ मूँह कर और अपना बाज़ नंगा कर और उसके खिलाफ नब्बवत कर। 8 और देख, मैं तुझ पर बन्धन डालूँगा कि तू करवट न ले सके, जब तक अपने घेराव के दिनों को पूरा न कर ले। 9 और तू अपने लिए गेहूँ और जौ और बाकला और मसूर और बाजरा ले, और उनको एक ही बर्तन में रख, और उनकी इतनी रोटियाँ पका जितने दिनों तक तू पहली करवट पर लेटा रहेगा; तू तीन सौ नब्बे दिन तक उनको खाना। 10 और तेरा खाना वजन करके बीस मिस्काल 'रोजाना होगा जो तू खाएगा, तू थोड़ा — थोड़ा खाना। 11 तू पानी भी नाप कर एक हीन का छटा हिस्सा पिएगा, तू थोड़ा — थोड़ा पीना। 12 और तू जौ के फुलके खाना, और तू उनकी आँखों के सामने इंसान की नजासत से उनको पकाना।' 13 और खुदावन्द ने फरमाया, कि 'इसी तरह से बनी — इसाईल अपनी नापाक रोटियों को उन कौमों के बीच जिनमें मैं उनको आवारा करूँगा, खाया करेंगे।' 14 तब मैंने कहा, कि 'हाय, खुदावन्द खुदा! देख, मेरी जान कभी नापाक नहीं हुई; और अपनी जावानी से अब तक कोई मुरदार चीज़ जो आप ही मर जाए या किसी जानवर से फाड़ी जाए, मैंने हरगिज़ नहीं खाई, और हराम गोश मेरे मुँह में कभी नहीं गया।' 15 तब उसने मुझे फरमाया, देख, मेरी जान कभी नापाक नहीं हुई; और अपनी जावानी से अब तक कोई मुरदार चीज़ जो आप ही मर जाए या किसी जानवर से फाड़ी जाए, मैंने हरगिज़ नहीं खाई, और अपनी जावानी से फाड़ी जाएगी, और पानी नाप कर हैरत से पिएगी। 16 उसने मुझे फरमाया, कि ऐ आदमजाद, देख, मैं येस्शलेम में रोटी का 'असा तोड़ डालूँगा; और वह रोटी तील कर पिक्रमन्दी से खाएँगे, और पानी नाप कर हैरत से पिएगी। 17 ताकि वह रोटी पानी के मोहताज हों, और एक साथ शर्मिन्दा हों और अपनी बदकिरदारी में हलाक हों।

5 ऐ आदमजाद, तू एक तेज तलवार ले और हज़ाम के उस्तरे की तरह उस से अपना सिर और अपनी दाढ़ी मुड़ा और तराज़ु ले और बालों को तौल कर उनके हिस्से बना। 2 फिर जब घेराव के दिन पेरे हो जाएँ, तो शहर के बीच में उनका एक हिस्सा लेकर आग में जला। और दूसरा हिस्सा लेकर तलवार से इधर उधर बिखेर दे। और तीसरा हिस्सा हवा में उड़ा दे, और मैं तलवार खीच कर उनका पीछा करूँगा। 3 और उनमें से थोड़े से बाल गिन कर ले और उनको अपने दामन में बाँध। 4 फिर उनमें से कुछ निकाल कर आग में डाल और जला दे; इसमें से एक आग निकलेगी जो इसाईल के तमाम घाराने में फैल जाएगी। 5 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि येस्शलेम यही है। मैंने उसे कौमों और मम्लकतों के बीच, जो उसके आस — पास हैं रख छाहा है। 6 लेकिन उसने दीपर कौमों से ज्यादा शरारत कर के मेरे हुक्मों की मुखालिफा की और मेरे कानून को आसापास की मम्लकतों से ज्यादा रद किया, क्यूँकि उन्होंने मेरे हुक्मों को रद किया और मेरे कानून की पैरवी न की। 7 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चौंक तुम अपने आस — पास की कौम से बढ़ कर फितना अगेज हो और मेरे कानून की पैरवी नहीं की और मेरे हुक्मों पर 'अमल नहीं किया, और अपने आस — पास की कौम के कानून और हुक्मों पर भी 'अमल नहीं किया; 8 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं, हाँ मैं ही तेरा मुखालिफ़ हूँ और तेरे बीच सब कौमों की आँखों के सामने तुझे सज़ा दूँगा। 9 और मैं तेरे सब नफरती कौमों की वजह से तुझमें वही करूँगा, जो मैंने अब तक नहीं किया

और कभी न कर्सँगा। 10 अगर तुझमें बाप बेटे को और बेटा बाप को खा जाएगा, और मैं तुझे सजा दूँगा और तेरे बकिये को हर तरफ तिर — बितर कर्सँगा। 11 इसलिए खुदावन्द खुदा फरमाता है: कि मुझे अपनी ह्यात की क्रसम, चौंके तूने अपनी तमाम मक्सहात से और अपने नफरती कामों से मेरे मनिंद्रिस को नापाक किया है, इसलिए मैं भी तुझे घटाऊँगा, मेरी आँखें रि'आयत न करेंगी, मैं हरगिज रहम न कर्सँगा। 12 तेरे एक हिस्सा बबा से भर जाएगा और काल से तेरे अन्दर हलाक हो जाएगा और दूसरा हिस्सा तेरी चारों तरफ तलवार से मारा जाएगा, और तीसरे हिस्से को मैं हर तरफ तिर बितर कर्सँगा और तलवार खींच कर उनका पीछा कर्सँगा। 13 “मेरा कहर यूँ पूरा होगा, तब मेरा गजब उन पर धीमा हो जाएगा और मेरी तस्कीन होगी, और जब मैं उन पर अपना कहर पूरा कर्सँगा, तब वह जानेगे कि मुझ खुदावन्द ने अपनी गैरत से यह सब कुछ फरमाया था। 14 इसके 'अलामा मैं तुझको उन कौमों के बीच जो तेरे आस — पास हैं, और उन सब की निगाहों में जो उधर से गुजर करेंगे वीरान और मलापत की वजह बनाऊँगा। 15 इसलिए जब मैं कहर — ओ — गजब और सबत मलापत से तेरे बीच 'अदालत कर्सँगा, तो तू अपने आसपास की कौम के लिए जा — ए — मलापत — ओ — इहानत और मकाम — ए — 'इबरत — ओ — हैरत होगी; मैं खुदावन्द ने यह फरमाया है। 16 यारी जब मैं सख्त सखे के तेरे जो उनकी हलाकत के लिए हैं, उनकी तरफ खाना कर्सँगा जिनको मैं तुम्हारे हलाक करने के लिए चलाऊँगा, और मैं तम में सखे को ज्यादा कर्सँगा और तुम्हारी रोटी की लाठी को तोड़ डालूँगा। 17 और मैं तुम में सखा और बुद्धिन्देश भेजूँगा, और वह तुझे बेऔलाद करेंगे, और मेरी और खूरेजी तेरे बीच आएगी मैं तलवार तुझ पर लाऊँगा; मैं खुदावन्द ही ने फरमाया है।”

6 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हआ। 2 कि ऐ आदमजाद, इसाईल के पहाड़ों की तरफ मुँह करके उनके खिलाफ नबुवत कर 3 और यूँ कह, कि ऐ इसाईल के पहाड़ों, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो! खुदावन्द खुदा पहाड़ों और टीलों को और नहरों और वादियों को यूँ फरमाता है: कि देखो, मैं, हाँ मैं ही तुम पर तलवार चलाऊँगा, और तुम्हारे ऊँचे मकामों को गारत कर्सँगा। 4 और तुम्हारी कुर्बानगाहों उंजड जाएँगी और तुम्हारी सूरज की मूरतें तोड़ डाली जाएँगी और मैं तुम्हारे मकतुलों को तुहरे बूतों के आगे डाल दूँगा। 5 और बनी — इसाईल की लाशें उनके बुतों के आगे फैक दूँगा, और मैं तुम्हारी हड्डियों को तुम्हारी कुर्बानगाहों के चारों तरफ तिर — बितर कर्सँगा। 6 तुम्हारे क्याम के तमाम इलाकों के शहर वीरान होंगे और ऊँचे मकाम उजड़े जाएंगे ताकि तुम्हारी कुर्बानगाहे खराब और वीरान हों और तुहरे बूते तोड़े जाएँ और बाकी न रहें और तुम्हारी सूरज की मूरतें काट डाली जाएँ और तुम्हारी दस्तकारियाँ हलाक हों। 7 और मक्तूल तुम्हारे बीच गिरेंगे, और तुम जानेगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 8 “लेकिन मैं एक बकिया छोड़ दूँगा, यारी वह चन्द लोग जो कौमों के बीच तलवार से बच निकलेंगे जब तुम गैर मुल्कों में तिर बितर हो जाओगे। 9 और जो तुम में से बच रहेंगे उन कौमों के बीच जहाँ जहाँ वह गुलाम होकर जाएँगे मुझको याद करेंगे, जब मैं उनके बेवफा दिलों को जो मुझ से दूर हुए और उनकी आँखों को जो बुतों की फैरवी में नाफरमान हुई, शिक्षत कर्सँगा और वह खुद अपनी तमाम बद'आमाली की वजह से जो उन्होंने अपने तमाम यिनौने कामों में की, अपनी ही नज़र में नफरती ठहरेंगे। 10 तब वह जानेगे कि मैं खुदावन्द हूँ, और मैंने यूँ ही नहीं फरमाया था कि मैं उन पर यह बला लाऊँगा।” 11 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि “हाथ पर हाथ मार और पाँव ज़मीन पर पटक कर कह, कि बनी — इसाईल के तमाम यिनौने कामों पर अफसोस। क्यूँकि वह तलवार और काल और बबा से हलाक होंगे। 12 जो दूँहे वह बबा से मेरेगा और जो नज़दीक है तलवार से कल्त किया जाएगा, और

जो बाकी रहे और महसूर हो वह काल से मेरेगा, और मैं उन पर अपने कहर को यूँ पूरा कर्सँगा। 13 और जब उनके मक्तूल हर ऊँचे टीले पर और पहाड़ों की सब चोटियों पर, और हर एक हरे दग्धत और घेरे बलूत की नीचे, हर जगह जहाँ वह अपने सब बुतों के लिए खुशबू जलाते थे; उनके बुतों के पास उनकी कुर्बानगाहों के चारों तरफ पड़े हुए होंगे, तब वह पहचानेगे कि खुदावन्द हैं। 14 और मैं उन पर हाथ चलाऊँगा, और वीराने से बिल्का तक उनके मुल्क की सब बस्तियाँ वीरान और सुनसान कर्सँगा। तब वह पहचानेगे कि मैं खुदावन्द हूँ।”

7 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ 2 कि ऐ आदमजाद, खुदावन्द खुदा इसाईल के मुल्क से यूँ फरमाता है: कि तमाम हुआ! मुल्क के चारों कोनों पर खातिमा आन पहुँचा है। 3 अब तेरी मौत आई और मैं अपना गजब तुझ पर नाजिल कर्सँगा, और तेरी चाल चलन के मुताबिक तेरी 'अदालत कर्सँगा और तेरे सब यिनौने कामों की सजा तुझ पर लाऊँगा। 4 मेरी आँख तेरी अपना कहर पर आ पहुँचा, बल्कि मैं तेरी चाल चलन के मुताबिक तुझे सजा दूँगा और तेरे यिनौने कामों के अन्जाम तेरे बीच होंगे, ताकि तुम जानो कि मैं खुदावन्द हूँ। 5 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि एक बला यारी बला — ए — 'अजीम! देख, वह आती है। 6 खाताम आया, खाताम आ गया! वह तुझ पर आ पहुँचा, देख वह आ पहुँचा। 7 ऐ ज़मीन पर बसने वाले, तेरी शामत आ गई, बकर आ पहुँचा, हाँगाये का दिन करीब हुआ; यह पहाड़ों पर खुशी की ललकार का दिन नहीं। 8 अब मैं अपना गजब तुझ पर पूरा कर्सँगा और तेरे चाल चलन के मुताबिक तेरी 'अदालत कर्सँगा और तेरे सब यिनौने कामों की सजा तुझ पर लाऊँगा। 9 मेरी आँख रि'आयत न करेगी और मैं यह गिज रहम न कर्सँगा, मैं तुझे तेरी चाल चलन के मुताबिक सजा दूँगा और तेरे यिनौने कामों के अन्जाम तेरे बीच होंगे, और तुम जानेगे कि मैं खुदावन्द सजा देने वाला हूँ। 10 “देख, वह दिन, देख वह आ पहुँचा है तेरी शामत आ गई, 'असा मैं कलियाँ निकली, गुरुर मैं गुन्जे निकलो। 11 सितम्बरी निकली कि शरारत के लिए छड़ी हो, कोई उम्रे से न बचेगा, न उनके गिरोह में से कोई और न उनके माल में से कुछ, और उन पर मातम न होगा। 12 बकर आ गया, दिन करीब है, न खरीदने वाला खुश हो न बेचने वाला उदास, क्यूँकि उनके तमाम गिरोह पर गजब नाजिल होने को है। 13 क्यूँकि बेचने वाला बिकी हुई चीज तक फिर न पहुँचेगा, अगर तेरी अभी वह ज़िन्दों के बीच हों, क्यूँकि यह खबाब उनके तमाम गिरोह के लिए है, एक भी न लौटेगा और न कोई बदकिरदारी से अपनी जान को कायम रखेगा। 14 नरसिंग फूका गया और सब कुछ तेयार है, लेकिन कोई ज़ंग को नहीं निकलता, क्यूँकि मेरा गजब उनके तमाम गिरोह पर है। 15 बाहर तलवार है और अन्दर बबा और कहत है, जो खेत में है तलवार से कल्त होगा, और जो शहर में है सूचा और बबा उसे निगल जाएँगे। 16 लेकिन जो उनमें से भाग जाएँगे वह बच निकलेंगे, और वादियों के कबूतरों की तरह पहाड़ों पर रहेंगे और सब के सब फरियाद करेंगे, हर एक अपनी बदकिरदारी की वजह से। 17 सब हाथ ढैले होंगे और सब घुने पानी की तरह कमज़ोर हो जाएँगे। 18 वह टाट से कमर करेंगे और खौफ उन पर छा जाएगा, और सब के मुँह पर शर्म होगी और उन सब के सिरों पर चन्दलापन होगा। 19 और वह अपनी चाँदी सड़कों पर फैक देंगे और उनका सोना नापाक चीज की तरह होगा खुदावन्द के गजब के दिन में उनका सोना चाँदी उनको न बचा सकेगा। उनकी जाने आसूदा न होगी और उनके पेट न भरेंगे, क्यूँकि उन्होंने उसी से ठोकर खाकर बदकिरदारी की थी। 20 और उनके खबसूरत जेवर शौकत के लिए थे लेकिन उन्होंने उसे अपनी नफरती मूरतें और मक्तूल ही बनाई, इसलिए मैंने उनके लिए उनको नापाक चीज की

तरह कर दिया। 21 और मैं उनको गनीमत के लिए परदेसियों के हाथ में और लट्टे के लिए जमीन के शरीरों के हाथ में सौंप दूँगा, और वह उनको नापाक करेंगे। 22 और मैं उनसे मुँह फेर लौंगा और वह मेरे खिल्वताखाने को नापाक करेंगे। उसमें गारतगर आँगे और उसे नापाक करेंगे। 23 'जन्जीर बना क्यूँकि मुल्क खौर्जी के गुनाहों से पुर है और शहर ज़ुल्म से भरा है। 24 इसलिए मैं और कौमों में से बुराई को लाऊँगा और वह उनके घरों के मालिक होंगे, और मैं ज़बरदस्तों का धमण्ड मिटाऊँगा और उनके पाक मकाम नापाक किए जाएँगे। 25 हलाकत आती है, और वह सलामी को छूँटों लेकिन न पाएँगे। 26 बला पर बला आएगी और अफवाह पर अफवाह होगी, तब वह नबी से खबाब की तलाश करेंगे, लेकिन शरीर अत काहिन से और मसलहत बुजुर्गों से जाती रहेगी। 27 बादशाह मातम करेगा और हाकिम पर हैरत छा जाएगी, और र'अयथ के हाथ कौपेंगे। मैं उनके चाल चलन के मुताबिक उनसे सुलूक करूँगा और उनके 'आमाल' के मुताबिक उन पर फतवा दूँगा, ताकि वह जानें कि खुदावन्द मैं हूँ।'

8 और छठे बरस के छठे महीने की पाँचवीं तारीख को यूँ हुआ कि मैं अपने घर में बैठा था, और यहदाह के बुजुर्ग मेरे सामने बैठे थे कि वहाँ खुदावन्द खुदा का हाथ मुझ पर ठहरा। 2 तब मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि एक शबीह आग की तरह नज़र आती है; उसकी कमर से नीचे तक आग और उसकी कमर से ऊपर तक जल्वा — ए — नर जाहिर हुआ जिसका रंग शैकल किए हुए पीतल की तरह था। 3 और उसने एक हाथ को शबीह की तरह बढ़ा कर मेरे सिर के बालों से मुझे पकड़ा, और स्थ है मेरे मुझे आसमान और ज़मीन की बीच बुलन्द किया और मुझे इलाही खबाब में येस्सलेम में उत्तर की तरफ अन्दस्ती फाटक पर, जहाँ गैरत की मूरत का घर था जो गैरत भड़काती है ले आईं। 4 और क्या देखता हूँ कि वहाँ इस्माईल के खुदा का जलाल, उस खबाब के मुताबिक जो मैंने उस वादी में देखा था मौजद है। 5 तब उसने मुझे फरमाया, कि ऐ 'आदमजाद अपनी आँखें उत्तर की तरफ उठा और मैंने उस तरफ आँखें उठाईं और क्या देखता हूँ कि उत्तर की तरफ मज़बह के दरवाजे पर गैरत की बही मूरत दहलीज मैं हैं। 6 और उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ 'आदमजाद, तू उनके काम देखता है? याँ वह मक्स्हात — ए — 'अजीम जो बनी — इस्माईल यहाँ करते हैं, ताकि मैं अपने हैकल को छोड़ कर उससे दूँ हो जाऊँ; लेकिन तू अभी इनसे भी बड़ी मक्स्हात देखेगा।' 7 तब वह मुझे सहन के फाटक पर लाया, और मैंने नज़र की और क्या देखता हूँ कि दीवार में एक छेद है। 8 तब उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ 'आदमजाद, दीवार खोदा।' और जब मैंने दीवार को खोदा, तो एक दरवाजा देखा। 9 फिर उसने मुझे फरमाया, अन्दर जा, और जो नफरती काम वह यहाँ करते हैं देखा। 10 तब मैंने अन्दर जा कर देखा। और क्या देखता हूँ कि हरनूँ के सब रहने वाले कीड़ों और मक्स्ह जानवरों की सब सूरतें और बनी — इस्माईल के बुजुर्गों में से सतर शश्वत उनके आगे खड़े हैं और याज़नियाह — बिन — साफ़न उनके बीच में खड़ा है, और हर एक के हाथ में एक खुशबूदान है और खुशबूदा का बादल उठ रहा है। 12 तब उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ 'आदमजाद, क्या तू ने देखा कि बनी — इस्माईल के सब बुजुर्गों तारीकी में याँ अपने मुनक्कश काशानों में क्या करते हैं? क्यूँकि वह कहते हैं कि खुदावन्द हम को नहीं देखता; खुदावन्द ने मुल्क को छोड़ दिया है। 13 और उसने मुझे यह भी फरमाया, कि 'तू अभी इनसे भी बड़ी मक्स्हात, जो वह करते हैं देखेगा।' 14 तब वह मुझे खुदावन्द के घर के उत्तरी फाटक पर लाया, और क्या देखता हूँ कि वहाँ 'औरतें बैठी तम्भ पर नोहा कर रही हैं। 15 तब उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ 'आदमजाद, क्या तू ने यह देखा है? तू अभी इनसे भी बड़ी मक्स्हात देखेगा।' 16 फिर वह मुझे खुदावन्द के घर के अन्दस्ती सहन में ले गया, और

क्या देखता हूँ कि खुदावन्द की हैकल के दरवाजे पर आस्ताने और मज़बह के बीच, करीबन पच्चीस लोग हैं जिनकी पीठ खुदावन्द की हैकल की तरफ है और उनके मुँह पूरब की तरफ है, और पूरब का सब करके आफताब को सिज्दा कर रहे हैं। 17 तब उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ 'आदमजाद, क्या तू ने यह देखा है? क्या बनी यहदाह के नजदीक यह छोटी सी बात है कि वह यह मक्स्ह काम करें जो वहाँ करते हैं क्यूँकि उन्होंने तो मुल्क को ज़ुल्म से भर दिया और फिर मुझे गजबनाक किया, और देख, वह अपनी नाक से डाली लगाते हैं। 18 फिर मैं भी कहर से पेश आऊँगा। मेरी आँखें रि'आयत न करेगी और मैं हरगिज रहम न करूँगा, और अगरचे वह चिल्ला चिल्ला कर मेरे कानों में आह — व — नाला करे तो भी मैं उनकी न सुपँगा।

9 फिर उसने बुलन्द आवाज से पुकार कर मेरे कानों में कहा कि, उनको

जो शहर के मुतरजिम हैं मैं नजदीक बुला हर एक शश्वत अपना मुहलिक हथियार हाथ में लिए हो। 2 और देखो छ: मर्द ऊपर के फाटक के रास्ते से जो उत्तर की तरफ है चले आए और हर एक मर्द के हाथ में उसका खैरैज हथियार था और उनके बीच एक आदमी कतानी लिबास पहने था और उसकी कमर पर लिखने की दवात थी तब वह अन्दर गए और पीतल के मज़बह के पास खड़े हुए। 3 और इस्माईल के खुदावन्द का जलाल कस्तूरी पर से जिस पर वह था उठ कर घर के आस्ताना पर गया और उसने उस मर्द को जो कतानी लिबास पहने था और जिसके पास लिखने की दवात थी पुकारा। 4 और खुदावन्द ने उसे फरमाया, कि 'शहर के बीच से, हैं, येस्सलेम के बीच से गुज़र और उन लोगों की पेशानी पर जो उन सब नफरती कामों की बजह से जो उसके बीच किए जाते हैं, अहं मारते और रोते हैं, निशान कर दे।' 5 और उसने मेरे सुनते हुए दूसरों से फरमाया, उसके पीछे पीछे शहर में से गुज़र करो और मारो। तुम्हारी आँखें रि'आयत न करें, और तुम रहम न करो। 6 तुम बूढ़ों और जवानों और लड़कियों और नहने बच्चों और 'ओरतों को बिल्कुल मार डालो, लेकिन जिनपर निशान है उम्रों से किसी के पास न जाओ; और मेरे हैकल से शुरू करो। तब उन्होंने उन बुजुर्गों से जो हैकल के सामने थे शुरू किया। 7 और उसने उनको फरमाया, हैकल को नापाक करो, और मक्तूरों से सहनों को भर दो। चलो, बाहर निकलो। इसलिए वह निकल गए और शहर में कल्त करने लगे। 8 और जब वह उनको कल्त कर रहे थे और मैं बच रहा था, तो यूँ हुआ कि मैं मुँह के बल गिरा और चिल्ला कर कहा, आह! ऐ खुदावन्द खुदा, क्या तू अपना कहर — ए — शदीद येस्सलेम पर नाजिल कर के इस्माईल के सब बाकी लोगों को हलत करेगा? 9 तब उसने मुझे फरमाया, कि 'इस्माईल और यहदाह के खान्दान की बदकिरदारी बहुत 'अजीम है, मुल्क खौर्जी से पुर है और शहर बे इन्साफी से भरा है; क्यूँकि वह कहते हैं, कि 'खुदावन्द ने मुल्क को छोड़ दिया है और वह नहीं देखता। 10 फिर मेरी आँखें रि'आयत न करेगी, और मैं हरगिज रहम न करूँगा; मैं उनकी चाल चलन का बदला उनके सिर पर लाऊँगा।' 11 और देखो, उस आदमी ने जो कतानी लिबास पहने था और जिसके पास लिखने की दवात थी, यूँकैफियत बयान की, जैसा तू ने मुझे हृक्ष दिया, मैंने किया।

10 तब मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ, कि उस फजा पर जो कस्तियों

के सिर के ऊपर थी, एक चीज़ नीलम की तरह दिखाई दी और उसकी सरत तखत की जैसी थी। 2 और उसने उस आदमी को जो कतानी लिबास पहने था फरमाया, उन पहियों के अन्दर जा जो कस्तूरी के नीचे हैं, और आग के अंगों जो कस्तियों के बीच हैं मुँही भर कर उठा और शहर के ऊपर खिले दे। और वह गया और मैं देखता था। 3 जब वह शश्वत अन्दर गया, तब कस्तूरी हैकल की दहनी तरफ खड़े थे, और अन्दस्ती सहन बादल से भर गया। 4 तब

खुदावन्द का जलाल कस्बी पर से बुलन्द होकर हैकल के आस्ताने पर आया, और हैकल बादल से भर गई; और सहन खुदावन्द के जलाल के नूर से मां'मू हो गया। 5 और कस्बियों के परों की आवाज बाहर के सहन तक सुनाई देती थी, जैसे कादिर — ए — मुतलक खुदा की आवाज जब वह कलाम करता है। 6 और यूँ हआ कि जब उसने उस शब्द को, जो कतानी लिबास पहने था, हक्म किया कि वह पहिए के अन्दर से और कस्बियों के बीच से आग ले; तब वह अन्दर गया और पहिए के पास खड़ा हुआ। 7 और कस्बियों में से एक कस्बी ने अपना हाथ उस आग की तरफ, जो कस्बियों के बीच थी, बढ़ाया और आग लेकर उस शब्द के हाथों पर, जो कतानी लिबास पहने था रख्बी; वह लेकर बाहर चला गया। 8 और कस्बियों के बीच उनके परों के नीचे इंसान के हाथ की तरह सूरत नजर आई 9 और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि चार पहिए कस्बियों के आस पास हैं, एक कस्बी के पास एक पहिया और दूसरे कस्बी के पास दूसरा पहिया था; और उन पहियों का जलाल देखने में जबरजद की तरह था। 10 और उनकी शक्ति एक ही तरह की थी, जैसे पहिया पहिये के अन्दर हो। 11 जब वह चलते थे तो अपनी चारों तरफ पर चलते थे; वह चलते हुए मुड़ते न थे, जिस तरफ को सिर का स्ख होता था उत्तीरफ उसके पीछे पीछे जाते थे; वह चलते हुए मुड़ते न थे। 12 और उनके तमाम बदन और पीठ और हाथों और परों और उन पहियों में चारों तरफ ऑँखें ही ऑँखें थी, यानी उन चारों के पहियों में। 13 इन पहियों को मेरे सुनते हुए चर्ख कहा गया। 14 और हर एक के चार चेहरे थे: पहला चेहरा कस्बी का, दूसरा इंसान का, तीसरा शेर — ए — बबर का, और चौथा 'उकाब का। 15 और कस्बी बुलन्द हुए। यह वह जानदार था, जो मैंने नहर — ए — किबार के पास देखा था। 16 और जब कस्बी चलते थे, तो पहिए भी उनके साथ — साथ चलते थे; और जब कस्बियों ने अपने बाजू फैलाए ताकि जमीन से ऊपर बुलन्द हों, तो वह पहिए उनके पास से जुदा न हुए। 17 जब वह ठहरते थे, तो यह भी ठहरते थे; और जब वह बुलन्द होते थे, तो यह भी उनके साथ बुलन्द हो जाते थे; क्यूँकि जानदार की स्थ उनमें थी। 18 और खुदावन्द का जलाल घर के आस्ताने पर से रवाना हो कर कस्बियों के ऊपर ठहर गया। 19 तब कस्बियों ने अपने बाजू फैलाए, और मेरी ऑँखों के सामने जमीन से बुलन्द हुए और उनके चले गए; और पहिए उनके साथ साथ थे, और वह खुदावन्द के घर के पूरबी फाटक के आस्ताने पर ठहरे और इसाईल के खुदा का जलाल उनके ऊपर जलवागर था। 20 यह वह जानदार है जो मैंने इसाईल के खुदा के नीचे नहर — ए — किबार के किनारे पर देखा था और मुझे मां'तूम था कि कस्बी है। 21 हर एक के चार चेहरे थे और चार बाजू और उनके बाजूओं के नीचे इंसान के जैसा हाथ था। 22 रही उनके चेहरों की सूरत, यह वही चेहरे थे जो मैंने नहर — ए — किबार के किनारे पर देखा था, यानी उनकी सूरत और वह खुद, वह सब के सब सीधे आगे ही को चले जाते थे।

11 और स्ख मुझ को उठा कर खुदावन्द के घर के पूरबी फाटक पर जिसका स्ख पूरब की तरफ है ले गई, और क्या देखता हूँ कि उस फाटक के आस्ताने पर पच्चीस शब्द हैं। और मैंने उनके बीच याजनियाह बिन अज्जर और फिलियाह बिन बिनायाह, लोगों के हाकिमों को देखा। 2 और उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ आदमजाद, यह वह लोग हैं जो इस शहर में बदकिरादी की तदबीर और बुरी मध्वरत करते हैं। 3 जो कहते हैं, कि 'घर बनाना नजदीक नहीं है, यह शहर तो देगा है और हम गोशत हैं। 4 इसलिए तू उनके खिलाफ नव्बत्त कर; ऐ आदमजाद, नव्बत्त कर।' 5 और खुदावन्द की स्ख मुझ पर नाजिल हुई और उसने मुझे कहा कि खुदावन्द यूँ फरमाता है: कि ऐ बनी — इसाईल तुम ने यूँ कहा है, मैं तुम्हारे दिल के ख्यालात को जानता हूँ। 6 तुम ने इस शहर में

बहुतों को कत्तल किया, बल्कि उसकी सड़कों को मक्तुलों से भर दिया है। 7 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि तुम्हारे मक्तुल जिनकी लाशें तुम ने शहर में रख डोडी हैं, यह वही गोशत है और यह शहर वही देगा है; लेकिन तुम इस से बाहर निकालते जाओगे। 8 तुम तलवार से डेरे हो, और खुदावन्द खुदा फरमाता है, कि मैं तलवार तुम पर लाऊँगा। 9 और मैं तुम को उस से बाहर निकालूँगा और तुम को परदेसियों के हवाले कर दूँगा, और तुम को सजा दूँगा। 10 तुम तलवार से कल्तल होगे, इसाईल की हादों के अन्दर मैं तुम्हारी 'अदालत कहँगा, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 11 यह शहर तुम्हारे लिए देगा न होगा, न तुम इसमें को गोशत होगे; बल्कि मैं बनी — इसाईल की हादों के अन्दर तुम्हारा फैसला कहँगा। 12 और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ, जिसके कानून पर तुम नहीं चले और जिसके हक्मों पर तुम ने 'अमल नहीं किया; बल्कि तुम उन क्लौमों के हक्मों पर जो तुहारे आस पास हैं 'अमल किया। 13 और जब मैं नव्बत्त कर रहा था, तो यूँ हआ कि फलातियाह — बिन — बिनायाह मर गया। तब मैं मुँह के बल गिरा और बुलन्द आवाज से चिल्ला कर कहा, कि 'ऐ खुदावन्द खुदा! क्या तू बनी — इसाईल के बकिये को बिल्कुल मिटा डालेगा?' 14 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 15 कि 'ऐ आदमजाद, तेरे भाईयों, हाँ, तेरे भाईयों यानी तेरे कराबतियों बल्कि सब बनी — इसाईल से, हाँ, उन सब से येस्सलालेम के बाशिन्दों ने कहा है, 'खुदावन्द से दूर रहो। यह मुल्क हम को मीरास में दिया गया है। 16 इसलिए तू कह, 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि हर चन्द मैंने उनको क्लौमों के बीच हाँक दिया है और तैर — मुल्कों में तितर बितर किया लेकिन मैं उनके लिए थोड़ी देर तक उन मुल्कों में जहाँ जहाँ बह गए एक हैकल हूँगा। 17 इसलिए तू कह, 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: मैं तुम को उम्मतों में से जमा' कर दूँगा, और उन मुल्कों में से जिनमें तुम तितर बितर हूए तूम को 'जमा' कहँगा और इसाईल का मुल्क तुम को दूँगा। 18 और वह वहाँ आयेंगे और उसकी तमाम नकरती और मकरह चीजें उस से दूर कर देंगे। 19 और मैं उनको नया दिल दूँगा और नई रह तुहारे बातिन में डालूँगा, और संगीन दिल उनके जिसमें निकाल कर दूँगा और उनको गोशत का दिल 'इनायत कहँगा; 20 ताकि वह मेरे तौर तरीके पर चले और मेरे हक्मों पर 'अमल करें और उन पर 'अमल करें, और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा। 21 लेकिन जिसका दिल दूँगा और नव्बत्त के बीच राघवनी के बीच रहता है, जिसकी ऑँखें हैं कि देखें पर वह नहीं सुनते; क्यूँकि वह बागी खान्दान है। 3 इसलिए ऐ आदमजाद, सफर का सामान तैयार कर और दिन को उनके देखते हुए अपने मकान से रवाना हो, तू उनके सामने अपने मकान से दूसरे मकान को जा; मुस्किन है कि वह सोचें, अगर वह बागी खान्दान है। 4 और तू दिन को उनकी ऑँखों के सामने अपना सामान बाहर निकाल, जिस तरह नक्त — ए — मकान के लिए सामान निकालते हैं और शाम को उनके सामने

12 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि ऐ आदमजाद, तू एक बागी घाराने के बीच रहता है, जिसकी ऑँखें हैं कि देखें पर वह नहीं देखते, और उनके कान हैं कि सुनें पर वह नहीं सुनते; क्यूँकि वह बागी खान्दान है। 3 इसलिए ऐ आदमजाद, सफर का सामान तैयार कर और दिन को उनके देखते हुए अपने मकान से रवाना हो, तू उनके सामने अपने मकान से दूसरे मकान को जा; मुस्किन है कि वह सोचें, अगर वह बागी खान्दान है। 4 और तू दिन को उनकी ऑँखों के सामने अपना सामान बाहर निकाल, जिस तरह नक्त — ए — मकान के लिए सामान निकालते हैं और शाम को उनके सामने बातें बयान कीं, जो उसने मुझ पर जाहिर की थी।

उनकी तरह जो गुलाम होकर निकल जाते हैं निकल जा। 5 उनकी आँखों के सामने दीवार में सराख कर और उस रास्ते से सामान निकाल। 6 उनकी आँखों के सामने तू उसे अपने कान्धे पर उठा, और अन्धेरे में उसे निकाल ले जा, त. अपना चेहरा छिपा ताकि ज़मीन को न देख सके; क्यूंकि मैंने तुझे बनी — इसाईल के लिए एक निशान मुकर्रर किया है। 7 चुनाँचे जैसा मुझे हक्म हुआ था वैसा ही मैंने किया। मैंने दिन को अपना सामान निकाला, जैसे नकल — ए — मकान के लिए निकालते हैं, और शाम को मैंने अपने हाथ से दीवार में सराख किया, मैंने अँधेरे में उसे निकाला और उनके देखते हुए काँधे पर उठा लिया। 8 और सुबह को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 9 कि ऐ आदमजाद, क्या बनी इसाईल ने जो बागी खान्दान हैं, तुझ से नहीं पूछा, 'तू क्या करता है? 10 उनको ज़ीवाब दे, कि 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि येस्शलेम के हाकिम और तमाम बनी — इसाईल के लिए जो उसमें है, वह बार — ए — नबुव्वत है। 11 उनसे कह दे, कि मैं तुम्हारे लिए निशान हूँ: जैसा मैंने किया, वैसा ही उनसे सुलूक किया जाएगा। वह ज़िलावत होंगे और गुलामी में जाएँगे। 12 और जो उनमें हाकिम हैं, वह शाम को अन्धेरे में उठ कर अपने काँधे पर सामान उठाए हुए निकल जाएगा। वह दीवार में सराख करेंगे कि उस रास्ते से निकाल ले जाएँ। वह अपना चेहरा छिपाएगा, क्यूंकि अपनी आँखों से ज़मीन को न देखेगा। 13 और मैं अपना जाल उस पर बिछाऊँगा और वह मेरे फैदे में फँस जाएगा। और मैं उसे कसदियों के मुल्क में बाबूल में फैचाऊँगा, लेकिन वह उसे न देखेगा, अगरचे वही मरेगा। 14 और मैं उसके आस पास के सब हिमायत करने वालों और उसके सब गोलों की तमाम अतराफ में तिर बितर करूँगा, और मैं तलवार खींच कर उनका पीछा करूँगा। 15 और जब मैं उनकी क़ोम में तिर बितर और मुल्कों में तिरत — बितर करूँगा, तब वह जानेगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 16 लेकिन मैं उनमें से कुछ को तलवार और काल से और बाला से बचा रखूँगा, ताकि वह क़ोमों के बीच जहाँ कहीं जाएँ अपने तमाम नफरती कामों को बचाव करें, और वह मालूम करेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 17 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 18 कि ऐ आदमजाद! तू थरथराते हुए रोटी खा, और काँपते हुए फ़िक्रमन्दी से पानी पी। 19 और इस मुल्क के लोगों से कह कि खुदावन्द खुदा येस्शलेम और मुल्क — ए — इसाईल के बाशिन्दों के हक में यूँ फरमाता है: कि वह फ़िक्रमन्दी से रोटी खाएँगे और पेरेशनी से पानी पिएँगे, ताकि उसके बाशिन्दों की सितमगारी की बजह से मुल्क अपनी मामूरी से खाली हो जाए। 20 और वह बस्तियाँ जो आबाद हैं उजाड हो जायेंगी और मुल्क बीरान होगा और तुम जानेगे कि खुदावन्द मैं हूँ। 21 फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 22 कि ऐ आदमजाद! मुल्क — ए — इसाईल में यह क्या मिसाल जारी है, कि 'बक्त गुजरता जाता है, और किसी खबाब का कुछ अन्जाम नहीं होता'? 23 इसलिए उनसे कह दे, कि 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मैं इस मिसाल को खत्म करूँगा और फिर इसे इसाईल में इस्तेमाल न करेंगे। बल्कि तू उनसे कह, वक्त आ गया है और हर खबाब का अन्जाम करीब है। 24 क्यूंकि आगे को बनी इसाईल के बीच बेततलब के खबाब और खुशामद की गैबदानी न होगी। 25 क्यूंकि मैं खुदावन्द हूँ मैं कलाम करूँगा और मेरा कलाम जस्ते पूरा होगा उसके पूरा होने में देर न होगी बल्कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि ऐ बागी खान्दान मैं तुम्हारे दिनों में कलाम करके उसे पूरा करूँगा। 26 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ। 27 कि ऐ आदमजाद देख बनी इसाईल कहते हैं कि जो खबाब उसने देखा है बहुत ज़मानों में ज़ाहिर होगा और वह उन दिनों की खबर देता है जो बहुत दूर है। 28 इसलिए उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि आगे की मेरी

किसी बात को पूरा होने में देर न होगी, बल्कि खुदावन्द खुदा फरमाता है, कि जो बात मैं कहँगा पूरी हो जाएगी।

13 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ। 2 कि ऐ आदमजाद,

इसाईल के नबी जो नबुव्वत करते हैं, उनके खिलाफ नबुव्वत कर और जो अपने दिल से बात बनाकर नबुव्वत करते हैं उनसे कह, 'खुदावन्द का कलाम सुनो! 3 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि बेवकूफ नवियों पर अफ़सोस जो अपनी ही स्तर की पैरवी करते हैं और उन्होंने कुछ नहीं देखा। 4 ऐ इसाईल, देर नबी उन लोमड़ियों की तरह हैं, जो बीरानों में रहती हैं। 5 तुम स्तुतों पर नहीं गए और न बनी — इसाईल के लिए फ़सील बनाई, ताकि वह खुदावन्द के दिन ज़ंगाह में खड़े हों। 6 उन्होंने बातिल और झटा शाश्वत देखा है, जो कहते हैं, कि 'खुदावन्द फरमाया है, अगरचे खुदावन्द ने उनको नहीं भेजा, और लोगों को उमीद दिलाते हैं कि उनकी बात पूरी हो जाएगी। 7 क्या तुम ने बातिल खबाब नहीं देखा? क्या तुम ने झूठी गैबदानी नहीं की? क्यूंकि तुम कहते हो कि खुदावन्द ने फरमाया है, अगरचे मैंने नहीं फरमाया। 8 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: 'चूँकि तुम ने झट कहा है और बुलान देखा, इसलिए खुदावन्द खुदा फरमाता है कि मैं तुम्हारा मुखालिफ हूँ। 9 और मेरा हाथ उन नवियों पर, जो बुलान देखते हैं और झूठी गैबदानी करते हैं, चलेगा; न वह मेरे लोगों के मजमे में शामिल होंगे और न इसाईल के खान्दान के दफतर में लिखे जाएँगे और न वह इसाईल के मुल्क में दाखिल होंगे, और तुम जान लोगे कि मैं खुदावन्द खुदा हूँ। 10 इस बजह से कि उन्होंने मेरे लोगों को यह कह कर बरगलाया है कि सलामती है बलाँकि सलामती नहीं; जब कोई दीवार बनाता है, तो वह उस पर कच्चा गारा लगाते हैं। 11 तुमसे जो उस पर गारा लगाते हैं कह, वह गिर जाएगी क्यूंकि मूसलाधार बारिश होगी और बड़े बड़े ओले पड़ेंगे और आँधी उसे गिरा देगी। 12 और जब वह दीवार पर गिरे गए तो क्या लोग तुम से न पूछेंगे, कि 'वह गारा कहाँ है, जो तुम ने उस पर की थी?' 13 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मैं अपने गज़ब के तफान से उसे तोड़ दूँगा, और मेरे कहर से इमाइम मैं बरसेगा और मेरे कहर के ओले पड़ेंगे ताकि उसे हलाक करें। 14 इसलिए मैं उस दीवार को जिस पर तुम ने कच्चा गारा किया है तोड़ डालूँगा और जमीन पर गिराऊँगा, यहाँ तक कि उसकी बुनियाद ज़ाहिर हो जाएगी। हाँ, वह गिरेगी और तुम उसी में हलाक होंगे, और जानेगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 15 मैं अपना कहर उस दीवार पर और उन पर जिन्होंने उस पर कच्चा गारा किया है पूरा करूँगा, और तब मैं तुम से कहँगा, कि न दीवार रही और न वह रहे जिन्होंने उस पर गारा किया, 16 याँ नी इसाईल के नबी जो येस्शलेम के बारे में नबुव्वत करते हैं, और उसकी सलामती के खबाब देखते हैं हालाँकि सलामती नहीं है खुदावन्द खुदा फरमाता है। 17 'और ऐ आदमजाद, तू अपनी क़ोम की बेटियों की तरफ, जो अपने दिल बात बना कर नबुव्वत करती है मूतज़वज़ह हो कर उनके खिलाफ नबुव्वत कर, 18 और कह खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि अफ़सोस तुम पर जो सब कोहनियों के नीचे की ग़ड़ी सीते हो, और हर एक कद के मुखालिक सिर के लिए झुकाँ बनाती हो कि जानों को शिकार करो! क्या तुम मेरे लोगों की जानों का शिकार करोगी और अपनी जान बचाओगी? 19 और तुम ने मृशी भर जौ के लिए और रोटी के टकड़ों के लिए मुझे मेरे लोगों में नापाक ठहराया, ताकि तुम जानों को मार डालो जो मने के लायक नहीं, और उनको ज़िन्दा रख्खो जो ज़िन्दा रहने के लायक नहीं हैं, क्यूंकि तुम मेरे लोगों से जो झट सनते हैं झट बोलती हो। 20 फिर खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देखो, मैं तुम्हारी ग़दियों का दुश्मन हूँ जिन्हें तुम जानों को परिन्दों की तरह शिकार करती हो, और मैं उनको तुम्हारी कोहनियों के नीचे से फ़ाड़ डालूँगा, और उन जानों को जिनको तुम परिन्दों की तरह शिकार

करती हो आजाद कर दूँगा। 21 मैं तुम्हारे बुक्रों को भी फाड़ूँगा और अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा, और फिर कभी तुम्हारा बस न चलेगा कि उनको शिकार करो, और तम जानेगी कि मैं खुदावन्द हूँ। 22 इसलिए कि तुम ने झूट बोलकर सादिक के दिल को उदास किया, जिसको मैंने गमगनी नहीं किया; और शरीर की मदद की है, ताकि वह अपनी जान बचाने के लिए अपनी बुरी चाल चलन से बाज न आए। 23 इसलिए तुम आगे को न बतालत देखोगी और न गैरिगोई करोगी, क्योंकि मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊँगा, तब तुम जानेगी कि खुदावन्द मैं हूँ।”

14 फिर इसाईल के बुजुर्गों में से चन्द आदमी मेरे पास आए और मेरे सामने बैठ गए। 2 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 3 कि ऐ, आदमजाद, इन मर्दों ने अपने बुतों को अपने दिल में नसब किया है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रख दिया है; क्या ऐसे लोग मुझ से कुछ दरियापत्त कर सकते हैं? 4 इसलिए तुमने बतें कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: बनी इसाईल में से हर एक जो अपने बुतों को अपने दिल में नसब करता है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रखता है और नबी के पास आता है, मैं खुदावन्द उसके बुतों की कम्सरत के मुताबिक उसको जवाब दूँगा; 5 ताकि मैं बनी — इसाईल को उन्हीं के ख्यालात में पकड़ें, क्योंकि वह सब के सब अपने बुतों की वजह से मुझ से दूर हो गए हैं। 6 इसलिए तुमनी — इसाईल से कर, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: तोबा करो और अपने बुतों से बाज आओ, और अपनी तामाम मक्स्हहात से मुँह मोड़ो। 7 क्यूँकि हर एक जो बनी — इसाईल में से या उन बेगानों में से जो इसाईल में रहते हैं, मुझ से जुदा हो जाता है और अपने दिल में अपने बुत को नसब करता है, और अपनी ठोकर खिलाने वाली बदकिरदारी को अपने सामने रखता है, और नबी के पास आता है कि उसके जरिए मुझ से दरियापत्त करे, उसको मैं खुदावन्द खुद ही जवाब दूँगा। 8 और मेरा चेहरा उसके खिलाफ होगा और मैं निशन ठहराऊँगा और उसको हैरत की वजह और अन्यशरनुमा और जरब — उल — मिसाल बनाऊँगा और अपने लोगों में से काट डालूँगा; और तुम जानेगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 9 और आग नबी धोका खाकर कुछ कहे, तो मैं खुदावन्द ने उस नबी को धोका दिया, और मैं अपना हाथ उस पर चलाऊँगा और उसे अपने इसाईली लोगों में से हलाक कर दूँगा। 10 और वह अपनी बदकिरदारी की सजा को बदीशत करेंगे, नबी की बदकिरदारी की सजा वैसी ही होगी, जैसी सवाल करने वाले की बदकिरदारी की — 11 ताकि बनी — इसाईल फिर मुझ से भटक न जाएँ, और अपनी सब खताओं से फिर अपने आप को नापाक न करें; बल्कि: खुदा वन्द खुदा फरमाता है, कि वह मेरे लोग हों और मैं उनका खुदा हूँ। 12 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 13 कि ऐ, आदमजाद, जब कोई मुल्क सक्षम खता करके मेरा गुनाहगार हो, और मैं अपना हाथ उस पर चलाऊँ और उसकी रोटी का 'असा तोड डालें, और उसमें सूखा भेजें और उसके इंसान और हैवान को हलाक करूँ। 14 तो अगर ये यह तीन शब्द, नह और दानीएल और अर्यबू, उसमें मौजूद हों तो भी खुदावन्द फरमाता है, वह अपनी सदाकत से सिर्फ अपनी ही जान बचाएँगे। 15 'आगर मैं किसी मूल्क में मूल्किक दरिन्दे भेजे कि उसमें गश्त करके उसे तबाह करें, और वह यहाँ तक वीरान हो जाए कि दरिन्दों की वजह से कोई उसमें से गुज़र न सके, 16 तो खुदावन्द खुदा फरमाता है, मुझे अपनी हयात की कसम, अगर ये यह तीन शब्द उसमें हों तो भी वह न बेटों को बचा सकेंगे न बेटियों को; सिर्फ वह खुद ही बचेंगे और मुल्क वीरान हो जाएगा। 17 "या आग मैं उस मुल्क पर तलवार भेज़ और कहूँ कि ऐ तलवार मुल्क में गुज़र कर और मैं उसके इंसान और हैवान को काट डालें, 18 तो खुदावन्द खुदा फरमाता है, मुझे अपनी हयात

की कसम अगर ये यह तीन शब्द उसमें हों, तो भी न बेटों को बचा सकेंगे न बेटियों को, बल्कि सिर्फ वह खुद ही बच जाएँगे। 19 या आग मैं उस मुल्क में बचा भेज़ और खूरैजी करा कर अपना कहर उस पर नाजिल करूँ कि वहाँ के इंसान और हैवान को काट डालें, 20 अगर ये नह और दानीएल और अर्यबू उसमें हों तो भी खुदावन्द खुदा फरमाता है मुझे अपनी हयात की कसम वह न बेटे को बचा सकेंगे न बेटी को, बल्कि अपनी सदाकत से सिर्फ अपनी ही जान बचाएँगे। 21 फिर खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: जब मैं अपनी चार बड़ी बलायाँ, यानी तलवार और सूखा और मूल्किक दरिन्दे और बचा येस्सलेम पर भेज़ कि उसके इंसान और हैवान को काट डालें, तो क्या हाल होगा? 22 तो भी वहाँ थोड़े से बेटे — बेटियाँ बच रहेंगे जो निकालकर तुम्हारे पास पहुँचाएंगे, और तुम उनके चाल चलन और उनके कामों को देखकर उस आफत के बारे में, जो मैंने येस्सलेम पर भेजी और उन सब आफतों के बारे में जो मैं उस पर लाया हूँ तसल्ली पाओगे। 23 और वह भी जब तुम उनके चाल चलन को और उनके कामों को देखोगे, तुम्हारी तसल्ली का जरिया होंगे और तुम जानेगे कि जो कुछ मैंने उसमें किया है वे वजह नहीं किया, खुदावन्द फरमाता है।"

15 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि ऐ आदमजाद, क्या ताक की लकड़ी और दरखतों की लकड़ी से, यानी शाख — ए — अंगू जंगल के दरखतों से कुछ बेहत है? 3 क्या उसकी लकड़ी कोई लेता है कि उससे कुछ बनाए, या लोग उसकी खूटियाँ बना लेते हैं कि उन पर बर्तन लटकाएँ? 4 देख, वह आग में इन्धन के लिए डाली जाती है, जब आग उसके दोनों सिरों को खा गई और बीच के हिस्से को भस्म कर चुकी, तो क्या वह किसी काम की है? 5 देख, जब वह सती थी तो किसी काम की न थी, और जब आग से जल गई तो किस काम की है? 6 फिर खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: जिस तरह मैंने जंगल के दरखतों में से अंगू के दरखत को आग का ईन्धन बनाया, उसी तरह येस्सलेम के बाशिन्दों को बनाऊँगा। 7 और मेरा चेहरा उसके खिलाफ होगा, वह आग से निकल भागेंगे पर आग उनको भस्म करेगी, और जब मेरा चेहरा उनके खिलाफ होगा, तो तुम जानेगे कि खुदावन्द मैं हूँ। 8 और मैं मुल्क को उजाड डालूँगा, इसलिए कि उन्होंने बड़ी बेवराई की है, खुदावन्द खुदा फरमाता है।

16 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि ऐ आदमजाद! येस्सलेम को उसके नफरती कामों से आगाह कर, 3 और कह, खुदावन्द खुदा येस्सलेम से यूँ फरमाता है: तेरी विलादत और तेरी पैदाइश कनान की सरजमीन की है; तेरा बाप अमूरी था और तेरी माँ हिती थी। 4 और तेरी पैदाइश का हाल यूँ है कि जिस दिन तू पैदा हुई तेरी नाक काटी न गई, और न सफाई के लिए तुझे पानी से गुस्त मिला, और न तुझ पर नमक मला गया, और तू कपड़ों में लपेटी न गई। 5 किसी की अँख ने तुझ पर रहम न किया कि तेरे लिए यह काम करे और तुझ पर मेहरबानी दिखाए बल्कि तू अपनी विलादत के दिन बाहर मैटान में फेंकी गई, क्योंकि तुझ से नफरत रखते थे। 6 तब मैंने तुझ पर गुज़र किया और तुझे तेरी ही खून में लोटाती देखा, और मैंने तुझे जब तू अपने खून में आसिराती थी कहा, 'जीती रह! हाँ, मैंने तुझ खून आलदा से कहा, 'जीती रह! 7 मैंने तुझे चमन के शगफों की तरह हजार चन्द बढ़ाया, इसलिए तू बढ़ी, और कमाल और जमाल को पहुँची तेरी छातियाँ उठी और तेरी जुल्फे बढ़ी लेकिन तू नंगी और बरहना थी। 8 फिर मैंने तेरी तरफ गुज़र किया और तुझ पर नजर की, और क्या देखता हूँ कि तू 'इश्क अंगू ज्ञात उम्र को पहुँच गई है'; फिर मैंने अपना दामन तुझ पर फैलाया और तेरी बरहनी को छिपाया, और कसम खाकर तुझ से 'अहद बाँधा खुदावन्द खुदा फरमाता है और तू मेरी हो गई। 9 फिर मैंने

तुझे पानी से गुस्सा दिया, और तेरा खून बिल्कुल धो डाला और तुझ पर 'इत्र मला। 10 और मैंने तुझे ज़र — दोज़ लिबास से मुलब्बस किया, और तुझस की खाल की जूती पहनाई, नफ़ीस कतान से तेरा कमरबन्द बनाया और तुझे सरासर रेशम से मुलब्बस किया। 11 मैंने तुझे ज़ेवर से आरास्ता किया, तेरे हाथों में कंगन पहनाएँ और तेरे गले में तौक डाला। 12 और मैंने तेरी नाक में नथ और तेरे कानों में बालियाँ पहनाई, और एक ख़बूसूर ताज तेरे सिर पर रख्खा। 13 और तू सोने — चैंदी से आरास्ता हुई, और तेरी पोशाक कतानी और रेशमी और चिकन — दोज़ी की थी; और तू मैदा और शहद और चिकनाई खाती थी, और तू बहुत ख़बूसूर और इकबालमन्द मलिका हो गई। 14 और कौम — ए — 'आलाम में तेरी ख़बूसूरती की शोहरत फैल गई, क्यूंकि, खुदावन्द खुदा फरमाता है, कि तू मेरे उस जलाल से जो मैंने तुझे बख्खा कामिल हो गई थी। 15 लेकिन तूने अपनी ख़बूसूरती पर भरोसा किया और अपनी शोहरत के बरीले से बदकारी करने लगी, और हर एक के साथ जिसका तेरी तरफ गुजर हआ खब फाहिशा बनी और उसी की हो गई। 16 तूने अपनी पोशाक से अपने ऊँचे मकाम मुनक्कश और आरास्ता किए, और उन पर ऐसी बदकारी की, कि न कभी हुई और न होगी। 17 और तूने अपने सोने — चैंदी के नफ़ीस ज़ेवरों से जो मैंने तुझे दिए थे, अपने लिए मर्दी की मूरतें बनाई और उनसे बदकारी की। 18 और अपनी ज़र — दोज़ पोशाकों से उनको मुलब्बस किया, और मेरा 'इत्र और ख़बूसूर उनके सामने रख्खा। 19 और मेरा खाना जो मैंने तुझे दिया, यानी मैदा और चिकनाई और शहद जो मैं तुझे खिलाता था, तूने उनके सामने ख़ुशबू के लिए रख्खा: खुदावन्द खुदा फरमाता है कि यैं ही हुआ। 20 और तूने अपने बेटों और अपनी बेटियों को, जिनको तूने मेरे लिए पैदा किया तेकर उनके आगे कुर्बान किया, ताकि वह उनको खा जाएँ, क्या तेरी बदकारी की छोटी बात थी, 21 कि तूने मैं बच्चों को भी ज़ब किया और उनको बुतों के लिए आग के हवाले किया? 22 और तूने अपनी तमाम मक्कह्वाह और बदकारी में अपने बचपन के दिनों को, जब कि तू नंगी और बरहना अपने ख़ुन में लोटी थी, कभी याद न किया। 23 'और खुदावन्द खुदा फरमाता है कि अपनी इस सारी बदकारी के 'अलावा अफ़सोस! तुझ पर अफ़सोस! 24 तूने अपने लिए गुम्बद बनाया और हर एक बाजार में ऊँचा मकाम तैयार किया। 25 तूने गरस्ते के हर कोने पर अपना ऊँचा मकाम तापीर किया, और अपनी ख़बूसूरती को नफरत अगेज़ किया, और हर एक राह गुजर के लिए अपने पाँव पसारे और बदकारी में तरक्की की। 26 तूने अहल — ए — मिस और अपने पड़ोसियों से जो बड़े कदआवार हैं बदकारी की और अपनी बदकारी की ज्यादती से मुझे गजबनाक किया। 27 फिर देख, मैंने अपना हाथ तुझ पर चलाया और तेरे बज़िफे को कम कर दिया, और तुझे तेरी बदशब्बाह फिलिस्तियों की बेटियों के क़बूल में कर दिया जो तेरी ख़राब चाल चलन से शर्मिन्दा होती थी। 28 फिर तूने अहल — ए — असू से बदकारी की, क्यूंकि तू सेर न हो सकती थी; हाँ, तूने उन से भी बदकारी की लेकिन तोभी तू आसदा न हई। 29 और तूने मुल्क — ए — कन'आन से कसदियों के मुल्क तक अपनी बदकारी को फैलाया, लेकिन इस से भी सेर न हई। 30 खुदावन्द खुदा फरमाता है, तेरा दिल कैसा बे — इज़लियर है कि तू यह सब कुछ करती है, जो बेलगाम फाहिशा 'औरत का काम है, 31 इसलिए कि तू हर एक सड़क के सिरे पर अपना गुम्बद बनाती है, और हर एक बाजार में अपना ऊँचा मकाम तैयार करती है, और तू कस्बी की तरह नहीं क्यूंकि तू उजरत लेना बेकर जानती है। 32 बल्कि बदकार बीची की तरह है, जो अपने शौहर के बदले लैरों को कुक्लन करती है। 33 लोग सब कस्बियों को हादिए देते हैं; लेकिन तू अपने यारों को हादिए और तोहफे देती है, ताकि वह चारों तरफ से तेरे पास आएँ और तेरे साथ बदकारी करें। 34 और तू बदकारी में

और 'औरतों की तरह नहीं, क्यूंकि बदकारी के लिए तेरे पीछे कोई नहीं आता। तू उजरत नहीं लेती बल्कि खुद उजरत देती है, इसलिए तू अनोखी है। 35 इसलिए ऐ बदकार, तू खुदावन्द का कलाम सन, 36 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चैंदी तेरी नापाकी बह निकली और तेरी बरहनगी तेरी बदकारी के जरिएँ जो तूने अपने यारों से की, और तेरे सब नफरती बुतों की बजह से और तेरे बच्चों के खुन की बजह से जो तूने उनके आगे पेश किया, जाहिर हो गई। 37 इसलिए देख, मैं तेरे सब यारों को तू लज़ज़ी थी, और उन सब को जिनको तू चाहती थी और उन सबको जिससे तू कीना रखती है जमा' कस्तूरा; मैं उनको चारों तरफ से तेरी मुखालिफ़त पर जमा' कस्तूरा और उनके आगे तेरी बरहनगी खोल दूँगा ताकि वह तेरी तमाम बरहनगी देखें। 38 और मैं तेरी ऐसी 'अदालत कस्तूरा जैसी बेवफा और खुनी बीची की और मैं गजब और गैरत की मौत तुझ पर लाऊँगा। 39 और मैं तुझे उनके हवाले कर दूँगा, और वह तेरे गुम्बद और ऊँचे मकामों को मिस्मान करेंगे और तेरे कपड़े उतारेंगे और तेरे ख़शनुमा जेवर छीन लेंगे, और तुझे नंगी और बरहना छोड़ जाएँगे। 40 वह तुझ पर एक हज़ूम चढ़ा लाएँगे, और तुझे संगसार करेंगे और अपनी तलवारों से तुझे छेद डालेंगे। 41 और वह तेरे घर आग से जलाएँगे और बहुत सी 'औरतों के सामने तुझ सजा देंगे, और मैं तुझे बदकारी से रोक दूँगा और तू फिर उजरत न देगी। 42 तब मेरा कहर तुझ पर धीमा हो जाएगा, और मेरी गैरत तुझ से जाती रहेगी; और मैं तस्कीन पाऊँगा और फिर गजबनाक न हँगा। 43 चैंदी के तूने अपने बचपन के दिनों को याद न किया, और इन सब बातों से मुझ को फ़रोख़त किया, इसलिए खुदावन्द खुदा फरमाता है, देख, मैं तेरी बदराही का नतीजा तेरे सिर पर लाऊँगा और तू आगे को अपने सब घिनौने कामों के 'अलावा ऐसी बदजाती नहीं कर सकेगी। 44 देख, सब मिसाल कहने वाले तेरे बारे में यह मिसाल कहेंगे, कि 'जैसी माँ, वैसी बेटी। 45 तू अपनी उस माँ की बेटी है जो अपने शौहर और अपने बच्चों से घिन खाती थी, और तू अपनी उन बहनों की बहन है जो अपने शौहरों और अपने बच्चों से नफरत रखती थीं; तेरी माँ दिन्ही और तेरा बाप अमूरी था। 46 और तेरी बड़ी बहन सामरिया है जो तेरी बाईं तरफ रहती है, वह और उसकी बेटियाँ, और तेरी छोटी बहन जो तेरी दहनी तरफ रहती हैं, सदूम और उसकी बेटियाँ हैं। 47 लेकिन तू सिर्फ़ उनकी राह पर नहीं चली और सिर्फ़ उन ही के जैसे घिनौने काम नहीं किए, क्यूंकि यह तो अगरचे छोटी बात थी, बल्कि तू अपनी तमाम चाल चलन में उनसे बदतर हो गई। 48 खुदावन्द खुदा फरमाता है, मुझे अपनी हयत की कसम कि तेरी बहन सदूम ने ऐसा नहीं किया, न उसने न उसकी बेटियों ने जैसा तूने और तेरी बेटियों ने किया है। 49 देख, तेरी बहन सदूम की तब्दील यह थी, गुस्तर और रोटी की सेरी और राहत की कसरत उसमें और उसकी बेटियों में थी; उसने गरीब और मोहताज की दस्तावीरी न की। 50 वह मग्सर थी और उन्होंने मैरे सामने घिनौने काम किए, इसलिए जब मैंने देखा तो उनको उखाड़ फेंका। 51 और सामरिया ने तेरे गुनाहों के आधे भी नहीं किए, तूने उनके बदले अपनी मक्कह्वाह को फ़िरावान किया है, और तूने अपनी इन मक्कह्वाह से अपनी बहनों को बेकुसूर ठहराया है। 52 फिर तू खुद जो अपनी बहनों को मुजरिम ठहराती है, इन गुनाहों की बजह से जो तूने किए जो उनके गुनाहों से ज्यादा नफरत अपेक्षा हैं, मलामत उठा; वह तुझ से ज्यादा बेकुसूर है। इसलिए तू भी स्त्री हो जाएँगी और शर्म खा, क्यूंकि तूने अपनी बहनों को बेकुसूर ठहराया है। 53 'और मैं उनकी गुलामी को और सामरिया और उसकी बेटियों की गुलामी की, और उनके बीच तेरे गुलामों की गुलामी को, 54 ताकि तू अपनी स्वस्वाई उठाएँ और अपने सब कामों से शर्मिदा हो, क्यूंकि तू उनके लिए तसल्ली के ज़रिएँ हैं। 55 तेरी बहनें सदूम और सामरिया, अपनी अपनी

बेटियों के साथ अपनी पहली हालत पर बहाल हो जाएँगी, और तू और तेरी बेटियों अपनी पहली हालत पर बहाल हो जाओगी। 56 तू अपने गुरु के दिनों में, अपनी बहन सदूम का नाम तक जबान पर न लाती थी। 57 उससे पहले कि तेरी शरारत फाश हुई, जब अराम की बेटियों ने और उन सब ने जो उनके आस — पास थी तुझे मलामत की, और फिलिस्तियों की बेटियों ने चारों तरफ से तेरी हिकरत की। 58 खुदावन्द फरमाता है, तूने अपनी बदजाती और धिनैने कामों की सजा पाई। 59 “क्यैंकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मैं तुझे से जैसा तैने किया वैसा ही सुलक करूँगा, इसलिए कि तूने कसम को बेकार जाना और 'अहद शिकनी' की। 60 लेकिन मैं अपने उस 'अहद' को जो मैंने तेरी जवानी के दिनों में तैरे साथ बौद्धा, याद रखवाँगा और हमेशा का 'अहद' तैरे साथ कायम करूँगा। 61 और जब तू अपनी बड़ी और छोटी बहनों को कुबल करेगी, तब तू अपनी राहों को याद करके शर्मिंदा होगी और मैं उनको तुझे दँगा कि तेरी बेटियों हों, लेकिन यह तैरे 'अहद' के मुताबिक नहीं। 62 और मैं अपना 'अहद' तैरे साथ कायम करूँगा, और तू जनेनी की खुदावन्द मैं हूँ। 63 ताकि तू याद करे और शर्मिंदा हो और शर्म के मारे फिर कभी यूँ न खोले, जब कि मैं सब कुछ जो तूने किया मुआफ कर दँ, खुदावन्द खुदा फरमाता है।”

17 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ। 2 “कि ऐ आदमजाद,

एक पहेली निकाल और अहल — ए — इस्माईल से एक मिसाल बयान कर, 3 और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: एक बड़ा उकाब जो बड़े बाज और लम्बे पर रखता था, अपने रंगा — रंग के बाल — ओ — पर मैं छिपा हुआ लुबनान में आया, और उसने देवदार की चोटी तोड़ ली। 4 वह सब से ऊँची डाली तोड़ कर सौदागरी के मूल्क में ले गया, और सौदागरों के शहर में उसे लगाया। 5 और वह उस सर — जमीन में से बीज ले गया और उसे ज़रखेज जमीन में बोया; उसने उसे आब — ए — फिरावँ के किनारे, बेद के दरखत की तरह लगाया। 6 और वह उगा और अँगू का एक पस्त — कद शाखदार दरखत हो गया और उसकी शाखे उसकी तरफ झुकी थी, और उसकी जड़ें उसके नीचे थीं, चुनाँचे वह अँगू का एक दरखत हुआ; उसकी शाखे निकलती और उसकी कोपलें बढ़ी 7 'और एक और बड़ा 'उकाब था, जिसके बाजू बड़े बड़े और पर — ओ — बाल बहुत थे, और इस तक ने अपनी जड़ें उसकी तरफ झुकाई और अपनी क्यारियों से अपनी शाखे उसकी तरफ बढ़ी ताकि वह उसे सीचे। 8 यह आब — ए — फिरावँ के किनारे ज़रखेज जमीन में लगाई गई थी, ताकि उसकी शाखे निकलें और इसमें फल लंगें और यह नफीस तक हो। 9 तू कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि क्या यह कामयाब होगी? क्या वह इसको उखाड़ न डालेगा और इसका फल न तोड़ डालेगा कि यह खुशक हो जाए, और इसके सब ताजा पते मुरझा जाएँ? इसे जड़ से उखाड़ने के लिए बहुत ताकत और बहुत से आदमियों की ज़रूरत न होगी। 10 देख, यह लगाई तो गई, पर क्या यह कामयाब होगी? क्या यह पूरी हवा लगते ही बिल्कुल सूख न जाएगी? यह अपनी क्यारियों ही मैं पज़मरु हो जाएगी।” 11 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ 12 इस बागी खानान से कह, क्या तुम इन बातों का मतलब नहीं जानते? इनसे कह, देखो, शाह — ए — बाबुल ने येस्शलेम पर चढ़ाई की और उसके बादशाह को और उसके 'हाकिमों को गुलाम करके अपने साथ बाबुल को ले गया। 13 और उसने शाही नस्ल में से एक को लिया और उसके साथ 'अहद बौद्धा और उससे कसम ली और मूल्क के उहदे दारों को भी ले गया, 14 ताकि वह मम्लकत पस्त हो जाए और फिर सिर न उठा सके, बल्कि उसके 'अहद' को कायम रखने से कायम रहे। 15 लेकिन उसने बहुत से आदमी और घोड़े लेने के लिए मिथ्र में कासिद भेज कर उससे शरकशी की क्या वह कामयाब होगा क्या ऐसे काम करने वाला बच सकता है

क्या वह 'अहद शिकनी' करके बच जाएगा। 16 खुदावन्द खुदा फरमाता है, मुझे अपनी हायात की कसम, वह उसी जगह जहाँ उस बादशाह का घर है जिसने उसे बादशाह बनाया और जिसकी कसम को उसने बेकार जाना और जिसका 'अहद उसने तोड़ा, यानी बाबुल में उसी के पास मरेगा। 17 और फ़िर 'अैन अपने बड़े लश्कर और बहुत से लोगों को लेकर लड़ाई में उसके साथ शरीक न होगा, जब दम्भमा बाँधते हों और बुर्ज बनाते हों कि बहुत से लोगों को कत्ल करें। 18 चूंकि उसने कसम को बेकार जाना और उस 'अहद' को तोड़ा, और हाथ पर हाथ मार कर भी यह सब कुछ किया, इसलिए वह बच न सकेगा। 19 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मुझे अपनी हायात की कसम वह मेरी ही कसम है, जिसको उसने बेकार जाना और वह मेरा ही 'अहद' है जो उसने तोड़ा; मैं ज़स्त यह उसके सिर पर लाऊँगा। 20 और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊँगा और वह मेरे फन्दे में पकड़ा जाएगा, और मैं उसे बाबुल को ले आँऊँगा, और जो मेरा गुनाह उसने किया है उसके बारे मैं वहाँ उससे हज़जत करूँगा। 21 और उसके लश्कर के सब फरारी तलवार से कत्ल होंगे, और जो बच रहेंगे वह चारों तरफ तिर बितर हो जाएँगे; और तुम जानेगे कि मैं खुदावन्द ने यह फरमाया है। 22 खुदावन्द खुदा फरमाता है: 'मैं भी देवदार की बुलन्द चेटी लँगा और उसे लगाऊँगा, फिर उसकी नर्म शारों में से एक कौपल काट लँगा और उसे एक ऊँचे और बुलन्द पहाड़ पर लगाऊँगा। 23 मैं उसे इस्माईल के ऊँचे पहाड़ पर लगाऊँगा, और वह शाखे निकालेगा और फल लाएगा और 'आलीशान देवदार होगा। और हर किस्म के परिन्दे उसके नीचे बसेंगे, वह उसकी डालियों के साथ मैं बसेरा करेंगे। 24 और पैदान के सब दरखत जानेंगे कि मैं खुदावन्द ने बड़े दरखत को पस्त किया और छोटे दरखत को बुलन्द किया; हरे दरखत को सुखा दिया और सूखे दरखत को हरा किया; मैं खुदावन्द ने फरमाया और कर दिखाया।”

18 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि तुम इस्माईल के

मूल्क के हक में क्यूँ यह मिसाल कहते हो, कि 'बाप — दादा ने कच्चे अँगू खाए और औलाद के दौत खट्टे हए?' 3 खुदावन्द खुदा फरमाता है, मुझे अपनी हायात की कसम कि तुम फिर इस्माईल में यह मिसाल न करोगे। 4 देख, सब जाने मेरी हैं, जैसी बाप की जान वैसी ही बेटे की जान भी मेरी है; जो जान गुनाह करती है वही मेरी हैं। 5 'लेकिन जो इंसान सादिक है, और उसके काम 'आदालत और इन्साक के मुताबिक हैं। 6 जिसने बुतों की कुर्बानी से नहीं खाया, और बनी — इस्माईल के बुतों की तरफ अपनी आँखें नहीं उठाई; और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक नहीं किया, और 'औरत की नापाकी के बक्त उसके पास नहीं गया, 7 और किसी पर सितम नहीं किया, और कर्जदार का गिरवी वापस कर दिया और ज़ुल्म से कुछ छीन नहीं लिया; भूकों को अपनी रोटी खिलाई और नंगों को कपड़ा पहनाया; 8 सूद पर लेन — देन नहीं किया, बदकिरदारी से दस्तबरदार हुआ और लोगों में सच्चा इन्साफ किया; 9 मेरे कानन पर चला और मेरे हृक्षमों पर 'अमल कीया, ताकि रास्ती से मूँ अमिला करें; वह सादिक है, खुदावन्द खुदा फरमाता है, वह यकीन जिन्दा रहेगा। 10 'लेकिन अगर उसके यहाँ बेटा पैदा हो, जो राहज़नी या खूँज़ी की और इन गुनाहों में कोई गुनाह करे, 11 और इन फराइज़ को बजा न लाए, बल्कि बुतों की कुर्बानी से खाए और अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक करे; 12 गरीब और मोहताज पर सितम करे, ज़ुल्म करके छीन ले, गिरवी वापस न दे, और बुतों की तरफ अपनी आँखें उठाये और धिनैने काम करे; 13 सूद पर लेन देन करे, तो क्या वह ज़िन्दा रहेगा? वह ज़िन्दा न रहेगा, उसने यह सब नफरती काम किए हैं, वह यकीन मरेगा, उसका ख़न उसी पर होगा। 14 लेकिन अगर उसके यहाँ ऐसा बेटा पैदा हो, जो उन तमाम गुनाहों को जो उसका बाप करता है

देखे और खौफ खाकर उसके से काम न करे । 15 और खुटों की कुर्बानी से न खाए, और बनी — इसाईल के बुटों की तरफ अपनी आँखें न उठाए और उपने पड़ोसी की बीची को नापक न करे; 16 और किसी पर सितम न करे, गिरवी न ले, और ज़ुल्म करके कुछ छीन न ले, भूके को अपनी रोटी खिलाए और नगे को कपड़े पहनाए; 17 गरीब से दस्तबदार हो, और सूद पर लेन — देन न करे, लेकिन मैंने हुक्मों पर 'अमल करे और मेरे कानून पर चले, वह अपने बाप के गुनाहों के लिए न मरेगा; वह यकीनन जिन्दा रहेगा। 18 लेकिन उसका बाप, क्यूँकि उसने बेरहमी से सितम किया और अपने भाइ को ज़ुल्म से लटा, और अपने लोगों के बीच बोरे काम किए; इसलिए वह अपनी बदकिरदारी के ज़रिए मरेगा। 19 "तोभी तुम करते हो, 'बेटा बाप के गुनाह का बोझ करूँ नहीं उठाता?" जब बेटे ने वही जो जाएँ और रवा है किया, और मेरे सब कानून को याद करके उन पर 'अमल किया; तो वह यकीनन जिन्दा रहेगा। 20 जो जान गुनाह करती है वही मरेगी, बेटा बाप के गुनाह का बोझ न उठाएगा और न बाप बेटे के गुनाह का बोझ; सादिक की सदाकत उसी के लिए होगी, और शरीर की शरारत शरीर के लिए। 21 लेकिन अगर शरीर अपने तमाम गुनाहों से जो उसने किए हैं, बाज आए और मेरे सब तौर तरीके पर चलकर, जो जाएँ और रवा है करे तो वह यकीनन जिन्दा रहेगा, वह न मरेगा। 22 वह सब गुनाह जो उसने किए हैं, उसके खिलाफ महसून न होंगे। वह अपनी रास्ताबाजी में जो उसने की जिन्दा रहेगा। 23 खुदावन्द खुदा फरमाता है, क्या शरीर की मौत में मेरी खुशी है, और इसमें नहीं कि वह अपनी चाल चलन से बाज आए और जिन्दा रहे? 24 लेकिन अगर सादिक अपनी सदाकत से बाज आए, और गुनाह करे और उन सब यन्हाँने कामों के मुताबिक जो शरीर करता है करे, तो क्या वह जिन्दा रहेगा? उसकी तमाम सदाकत जो उसने की फ्रामोश होगी; वह अपने गुनाहों में जो उसने किए हैं और अपनी खताओं में जो उसने की हैं मरेगा। 25 "तोभी तुम कहते हो, 'खुदावन्द की रविश रास्त नहीं।' ऐ बनी — इसाईल सुनो तो, क्या मेरा चाल चलन रास्त नहीं? क्या तुहारा चाल चलन नारास्त नहीं? 26 जब सादिक अपनी सदाकत से बाज आए और बदकिरदारी करे और उसमें मेरे, तो वह अपनी बदकिरदारी की वजह से जो उसने की है मरेगा। 27 और अगर शरीर अपनी शरारत से, जो वह करता है बाज आए, और वह काम करे जो जाएँ और रवा है; तो वह अपनी जान ज़िन्दा रखेगा। 28 इसलिए कि उसने सोचा और अपने सब गुनाहों से जो करता था बाज आया; वह यकीनन जिन्दा रहेगा, वह न मरेगा। 29 तोभी बनी — इसाईल कहते हैं, 'खुदावन्द की रविश रास्त नहीं?' ऐ बनी इसाईल, क्या मेरा चाल चलन रास्त नहीं? क्या तुहारा चाल चलन नारास्त नहीं? 30 इसलिए खुदावन्द फरमाता है, ऐ बनी इसाईल मैं हर एक के चाल चलन के मुताबिक तुम्हारी 'अदालत कस्सँगा'; तोबा करो और अपने तमाम गुनाहों से बाज आओ, ताकि बदकिरदारी तुम्हारी हलाकत का ज़रिया' न हो। 31 उन तमाम गुनाहों को, जिनसे तुम गुनहगार हए दूर करो और अपने लिए नया दिल और नई स्थ पैदा करो! ऐ बनी — इसाईल, तुम क्यूँ हलाक होगे? 32 क्यूँकि खुदावन्द खुदा फरमाता है, "मुझे मरने वाले की मौत से खुशी नहीं, इसलिए बाज आओ और जिन्दा रहो।"

19 अब त इसाईल के "हाकिमों पर नौहा कर, 2 और कह, तेरी माँ कौन थी? एक शेरनी जो शेरों के बीच लेटी थी और जवान शेरों के बीच उसने अपने बच्चों को पाला। 3 और उसने अपने बच्चों में से एक को पाला, तो वह जवान शेर हआ और शिकार करना सीख गया और आदमियों को निगलने लगा। 4 और कौमों के बीच उसका जिक हुआ तो वह उनके गडे में पकड़ा गया, और वह उसे ज़न्जीरों से ज़कड़ कर ज़मीन — ए — मिस्त्र में लाए। 5 और जब शेरनी ने देखा कि उसने बेफाइदा इन्तिजार किया और उसकी

उम्मीद जाती रही, तो उसने अपने बच्चों में से दूसरे को लिया और उसे पाल कर जवान शेर किया। 6 और वह शेरों के बीच सैर करता फिरा और जवान शेर हुआ, और शिकार करना सीख गया और आदमियों को निगलने लगा। 7 और उसने उनके महलों को बर्बाद किया, और उनके शहरों को बीरान किया; उसकी गरज से मूल्क उज़ड गया और उसकी आबादी न रही। 8 तब बहुत सी कौमें तमाम मूल्कों से उसकी धात में बैठी, और उन्होंने उस पर अपना जाल फैलाया; वह उनके गढ़े में पकड़ा गया। 9 और उन्होंने उसे ज़न्जीरों से ज़कड़ कर पिजरे में डाला और शाह — ए — बाबूल के पास ले आए। उन्होंने उसे किले में बन्द किया, ताकि उसकी आबादी इसाईल के पहाड़ों पर फिर सुनी न जाए। 10 तेरी माँ उस ताक से मुशाबह थी, जो तेरी तरह पानी के किनारे लगाई गई; वह पानी की बहुतायत के ज़रिए फ्लटार और शाखदार हड्डी। 11 और उसकी शाखों पर एसी मजबूत हो गई के बादशाहों के 'असा उन से बनाए गए, और धनी शाखों में उसका ताना ब्लन्ड हुआ और वह अपनी धनी शाखों के साथ ऊँची दिखाई देती थी। 12 लेकिन वह गजब से उद्याड कर जमीन पर गिराई गई, और पूरी हड्डा ने उसका फल खुशक कर डाला, और उसकी मजबूत डालियाँ तोड़ी गई और सूख गई और आग से भसम हड्डी। 13 और अब वह बीरान में सूखी और ध्यासी जमीन में लगाई गई। 14 और एक छड़ी से जो उसकी डालियों से बनी थी, आग निकलकर उसका फल खा गई और उसकी कोई ऐसी मजबूत डाली न रही कि सलतनत का 'असा हो। यह नोहा है और नोहे के लिए रहेगा।

20 और सातवें बरस के पाँचवें महीने की दसवीं तारीख को यूँ हुआ कि इसाईल के चन्द बुजुर्ग खुदावन्द से कुछ दरियापत करने को आए और मेरे सामाने बैठ गए। 2 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नजिल हुआ 3 कि 'ऐ आदमजाद!' इसाईल के बुजुर्गों से कलाम कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि क्या तुम मुझ से दरियापत करने आए हो? खुदावन्द खुदा फरमाता है कि मुझे अपनी हयात की कसम, तुम मुझ से कुछ दरियापत न कर सकोगे। 4 क्या तू उन पर हज़जत काईम करेगा? ऐ आदमजाद, क्या तू उन पर हज़जत कायम करेगा? उनके बाप दादा के नफरती कामों से उनको आगाह कर। 5 उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि जिस दिन मैंने इसाईल को बरगुजीदा किया, और बनी याँकूब से कसम खाई और मुल्क — ए — मिस्त्र में अपने आपको उन पर ज़ाहिर किया, मैंने उनसे कसम खा कर कहा, मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 6 जिस दिन मैंने उनसे कसम खाई, ताकि उनको मुल्क — ए — मिस्त्र से उस मुल्क में लाँच जो मैंने उनके लिए देख कर ठहराया था, जिसमें दूध और शहद बहता है और जो तमाम मूल्कों की शूकरत है। 7 और मैंने उनसे कहा, तुम मैं से हर एक शख्स उन नफरती चीजों को जो उसकी मन्ज़ूर — ए — नज़र है, दूर करे और तुम अपने आपको मिस्त्र के खुटों से नापाक न करो; मैं खुदावन्द, तुम्हारा खुदा हूँ। 8 लेकिन वह मुझ से बागी हुए और न चाहा कि मेरी सूंहे। उनमें से किसी ने उन नफरती चीजों को, जो उसकी मन्ज़ूर — ए — नज़र थीं, छोड़ न दिया और मिस्त्र के खुटों को न छोड़ा। तब मैंने कहा, कि मैं अपना कहर उन पर उण्डेल दूँगा, ताकि अपने गजब को मुल्क — ए — मिस्त्र में उन पर पूरा करूँ। 9 लेकिन मैंने अपने नाम की खातिर ऐसा किया ताकि मेरा नाम उन कौमों की नज़र में, जिनके बीच वह रहते थे और जिनकी निगाहों में मैं उन पर ज़ाहिर हुआ जब उनको मुल्क — ए — मिस्त्र से निकालत लाया, नापाक न किया जाए। 10 इसलिए मैं उनको मुल्क — ए — मिस्त्र से निकालकर बीरान में लाया। 11 और मैंने अपने कानून उनको दिए और अपने हुक्मों को उनको सिखाया कि इसान उन पर 'अमल करने से जिन्दा रहे। 12 और मैंने अपने सबत भी उनको दिए, ताकि वह मेरे और उनके बीच निशान हों; ताकि वह जानें कि मैं खुदावन्द उनका पाक करने वाला हूँ। 13 लेकिन बनी — इसाईल बीरान में मुझ

से बागी हुए, वह मेरे कानून पर न चले और मेरे हृक्षमों को रुक्ख किया, जिन पर अगर इंसान 'अमल करे तो उनकी वजह से जिन्दा रहे, और उन्होंने मेरे सबतों को बहुत ही नापाक किया। तब मैंने कहा, कि मैं वीरान में अपना कहर उन पर नाजिल कर के उनको फना करूँगा। 14 लेकिन मैंने अपने नाम की खातिर ऐसा किया, ताकि वह उन कौमों की नज़र में जिनकी आँखों के सामने मैं उनको निकाल लाया नापाक न किया जाए। 15 और मैंने वीरान में भी उनसे कसम खाई कि मैं उनको उस मूलक में न लाऊँगा जो मैंने उनको दिया, जिसमें दूध और शहद बहता है और जो तमाम मूल्कों की शैकृत है। 16 क्यूँकि उन्होंने मेरे हृक्षमों को रुक्ख किया और मेरे कानून पर न चले और मेरे सबतों को नापाक किया, इसलिए कि उनके दिल उनके बुतों के मुरताक थे। 17 तोभी मेरी आँखों ने उनकी रिं'आयत की और मैंने उनको हलाक न किया, और मैंने वीरान में उनको बिल्कुल बर्बाद — ओ — हलाक न किया। 18 और मैंने वीरान में उनके फर्जन्दों से कहा, तुम अपने बाप — दादा के कानून — ओ — हृक्षमों पर न चलो और उनके बुतों से अपने आपको नापाक न करो। 19 मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, मेरे कानून पर चलो और मेरे हृक्षमों को मानो और उन पर 'अमल करो। 20 और मेरे सबतों को पाक जानो कि वह मेरे और तुम्हारे बीच निशान हों, ताकि तुम जानो कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ। 21 लेकिन फर्जन्दों ने भी मुझ से बगावत की; वह मेरे कानून पर न चले, न मेरे हृक्षमों को मानकर उन पर 'अमल किया जिन पर अगर इंसान 'अमल करे तो उनकी वजह से जिन्दा रहे, उन्होंने मेरे सबतों को नापाक किया। तब मैंने कहा कि मैं अपना कहर उन पर नाजिल करूँगा और वीरान में अपने गज़ब को उन पर पूरा करूँगा। 22 तोभी मैंने अपना हाथ खींचा और अपने नाम की खातिर ऐसा किया, ताकि वह उन कौमों की नज़र में जिनके देखते हुए मैं उनको निकाल लाया, नापाक न किया जाए। 23 फिर मैंने वीरान में उनसे कसम खाई कि मैं उनको कौमों में आवारा और मूल्कों में तिरत बितर करूँगा। 24 इसलिए कि वह मेरे हृक्षमों पर 'अमल न करते थे, बल्कि मेरे कानून को रुक्ख करते थे और मेरे सबतों को नापाक करते थे, और उनकी आँखें उनके बाप — दादा के बुतों पर थीं। 25 इसलिए मैंने उनको दुर्घे कानून और ऐसे अहकाम दिए जिनसे वह जिन्दा न रहे, 26 और मैंने उनको उन्हीं के हदियों से यानी सब पहलौठों को आग पर से गुजार कर, नापाक किया ताकि मैं उनको वीरान करूँ और वह जानें कि खुदावन्द मैं हूँ। 27 इसलिए, ऐ आदमजाद, त बनी इसाईल से कलाम कर और उनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि इसके 'अलावा तुम्हारे बाप — दादा ने ऐसे काम करके मेरी बुराई की और मेरा गुनाह करके खताकर हुए; 28 कि जब मैं उनको उस मूलक में लाया जिसे उनके देने की मैंने कसम खाई थी, तो उन्होंने जिस ऊँचे पहाड़ और जिस घंे दरख़व को देखा वही अपने जबीहों को जबह किया, और वही अपनी गज़ब और नज़र को गुज़राना, और वही अपनी गुशशबू जलाई और अपने तपावन तपाए। 29 तब मैंने उनसे कहा, यह कैसा ऊँचा मकाम है जहाँ तुम जाते हो? और उन्होंने उसका नाम बामाह रख्खा जो आज के दिन तक है। 30 'इसलिए, त बनी — इसाईल से कह, कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: क्या तुम भी अपने बाप — दादा की तरह नापाक होते हो? और उनके नफरत अंगौज कामों की तरह तुम भी बदकारी करते हो? 31 और जब अपने हदिए चढ़ाते और अपने बेटों को आग पर से गुजार कर अपने सब बुतों से अपने आपको आज के दिन तक नापाक करते हो, तो ऐ बनी — इसाईल क्या तुम मुझ से कुछ दरियापत कर सकते हो? खुदावन्द खुदा फरमाता है: मुझे अपनी हायत की कसम, मुझ से कुछ दरियापत न कर सकोगे। 32 और वह जो तुम्हारे जी में आता है हण्डीज वज़द में न आएगा, क्यूँकि तुम सोचते हो, 'तुम भी दीगर कौम — ओ — कबाईल — ए — 'आलम की तरह लकड़ी और पत्थर की

इबादत करोगे। खुदावन्द सज्जा देता और मु'आफ भी करता है 33 खुदावन्द खुदा फरमाता है: मुझे अपनी हायत की कसम, मैं ताकतवर हाथ से और बुलन्द बाजू से कहर नाजिल' कर के तुम पर सलतनत करूँगा। 34 और मैं ताकतवर हाथ और बुलन्द बाजू से कहर नाजिल' करके तुम को कौमों में से निकाल लाऊँगा, और उन मूल्कों में से जिनमें तुम तिरत बितर हुए हो जमा' करूँगा। 35 और मैं तुम को कौमों के बीराने में लाऊँगा और वहों आमने सामने तुम से हुज्जत करूँगा। 36 जिस तरह मैंने तुम्हारे बाप — दादा के साथ मिस्त्र के वीरान में हुज्जत की, खुदावन्द खुदा फरमाता है, उसी तरह मैं तुम से भी हुज्जत करूँगा। 37 और मैं तुम को छड़ी के नीचे से गुजारूँगा और 'अहद के बन्द में लाऊँगा। 38 और मैं तुम में से उन लोगों को जो सरकश और मुझ से बागी हैं, जुटाकरूँगा; मैं उनको उस मूल्क से जिसमें उन्होंने कथाम किया, निकाल लाऊँगा पर वह इसाईल के मूल्क में दाखिल न होगे और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 39 और 'तुम से ऐ बनी — इसाईल, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि जाओ और अपने अपने बुत की इबादत करो, और आग को भी, अगर तुम मेरी न सुनोगे; लेकिन अपनी कुर्बानियों और अपने बुतों से मेरे पाक नाम की बुराई न करोगे। 40 'क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि मैं मेरे पाक पहाड़ यानी इसाईल के ऊँचे पहाड़ पर तमाम बनी — इसाईल, सब के सब मूल्क में मेरी इबादत करोगे; बहाँ मैं उनको कुबूल करूँगा, और तुम्हारी कुर्बानियाँ और तुम्हारी नज़रों के पहले फल और तुम्हारी सब मुकाद्दस चीज़ें तलब करूँगा। 41 जब मैं तुम को कौमों में से निकाल लाऊँगा और उन मूल्कों में से जिनमें मैंने तुम को तिरत बितर किया जमा' करूँगा, तब मैं तुम को खुशबू के साथ कुबूल करूँगा और कौमों के सामने तुम मेरी तक्बीरीस करोगे। 42 और जब मैं तुम को इसाईल के मूल्क में यानी उस सरजमीन में जिसके लिए मैंने कसम खाई कि तुम्हारे बाप — दादा को दूँ ले आऊँगा तब तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 43 और वहाँ तुम अपने चाल चलन और अपने सब कौमों को, जिनसे तुम नापाक हुए हो, याद करोगे और तुम अपनी तापाम बुराई की वजह से जो तुम ने की है, अपनी ही नज़र में धिनौने होगे। 44 खुदावन्द खुदा फरमाता है, ऐ बनी — इसाईल जब मैं तुम्हारे बुरे चाल चलन और बद — आ'माली के मुताबिक नहीं बल्कि अपने नाम के खातिर तुम से सलक करूँगा, तो तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ।' 45 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 46 कि 'ऐ आदमजाद, दक्षिण का स्वर कर और दक्षिण ही से मुखातिब हो कर उसके मैदान के जंगल के खिलाफ नबुव्वत कर; 47 और दक्षिण के जंगल से कह, खुदावन्द का कलाम सुन, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: देख, मैं तुझ में आग भड़काऊँगा और वह हर एक दरख़त और हर एक स्थान दरख़त जो तुझ में है, खा जाएगी; भड़कता हुआ शोला न बुझेगा और दक्षिण से उत्तर तक सबके मूँह उससे झुलस जाएँगी। 48 और हर इंसान देखेगा कि मैं खुदावन्द ने उसे भड़काया है, वह न बुझेगी। 49 तब मैंने कहा, 'हाय खुदावन्द खुदा! वह तो मेरे बारे में कहते हैं, क्या वह मिसालें नहीं कहता?

21 फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि ऐ आदमजाद, येस्शलेम का स्वर कर और पाक मकानों से मुखातिब होकर मूल्क — ऐ — इसाईल के खिलाफ नबुव्वत कर 3 और उस से कह, खुदावन्द यूँ फरमाता है: कि देख मैं तेरा मुखालिफ हूँ और अपनी तलबार मियान से निकाल लौँगा, और तेरे सादिकों और तेरे शरीरों को तेरे बीच से काट डालौँगा। 4 इसलिए चूँकि मैं तेरे बीच से सादिकों और शरीरों को काट डालौँगा, इसलिए मेरी तलबार अपने मियान से निकाल कर दक्षिण से उत्तर तक तमाम बशर पर चलेगी। 5 और सब जानोगे कि मैं खुदावन्द ने अपनी तलबार मियान से खींची है वह फिर उसमें न जायेगी। 6 इसलिए ऐ आदमजाद कमर की शिगास्ती से आँहें मार

और तल्ख कामी से उनकी आँखों के सामने ठण्डी साँस भर। 7 और जब वह पूछे कि तू क्यूँ हाए करता है तो यूँ ज़बाब देना कि उसकी आमद की अफवाह की बजह से और हर एक दिल पिघल जायेगा और सब हाथ ढीले हो जायेंगे और हर एक जी डूब जाएगा और सब घुटने पानी की तरह कमज़ोर हो जायेंगे खुदावन्द खुदा फरमाता है उसकी आमद है यह बजद में आएगा। 8 फिर खुदावन्द का कलाम मुझपर नाजिल हुआ। 9 ऐ आदमजाद, नव्यवत्त कर और कह खुदावन्द यूँ फरमाता है कि तू कह तलवार बल्कि तेज और सैकल की हुई तलवार है। 10 वह तेज की गई है ताकि उससे बड़ी खौरेजी की जाये वह सैकल की गई है ताकि चमके फिर क्या हम खुश हो सकते हैं मेरे बेटे का 'असा हाह लकड़ी' को बेकार जानता है। 11 और उसने उसे सैकल करने को दिया है ताकि हाथ में ली जाये वह तेज और सैकल की गई ताकि कल्त करने वाले के हाथ में दी जाए। 12 ऐ आदमजाद, तू रो और नाला कर क्यूँकि वह मेरे लोगों पर चलेगी वह इसाईल के सब हाकिमों पर होगी वह मेरे लोगों के सात तलवार के हवाले किए गए हैं इसलिए तू अपनी रान पर हाथ मार। 13 यकीनन वह आजमाई गई और अगर लाली उसे बेकार जाने तो क्या वह हलाक होगा खुदावन्द फरमाता है। 14 और ऐ आदमजाद, तू नव्यवत्त कर और ताली बजा और तलवार दो गुना बल्कि तीन गुना हो जाए वह तलवार जो मकतूलों पर कारण हुई बड़ी खौरेजी की तलवार है जो उनको धेरती है। 15 मैंने यह तलवार उनके सब फाटकों के खिलाफ कायम की है ताकि उनके दिल पिघल जायें और उनके पिसे के सामान ज्यादा होंगे हाए बर्क रेत यह कल्त करने को खीची गई। 16 तैयार हो; दाहनी तरफ जा, आमादा हो, बाईं तरफ जा, जिधर तेरा स्व, 17 और मैं भी ताली बजाऊँगा और अपने कहर को ठण्डा करूँगा मैं खुदावन्द ने यह फरमाया है। 18 और खुदावन्द का कलाम मुझपर नाजिल हुआ। 19 कि ऐ आदमजाद, तू दो रास्ते खीच जिनसे शाह — ए — बाबुल की तलवार अये एक ही मुल्क से वह दोनों रास्ते निकाल और एक हाथ निशान के लिए शहर की रस्ते के सिरे पर लगा। 20 एक रस्ता निकाल जिससे तलवार बनी अम्मून की रब्बा पर और फिर एक और जिससे यहदाह के मासूर शहर येस्शानेम पर आये। 21 क्यूँकि शाह — ए — बाबुल दोनों रास्तों के नुक्त — ए — इत्साल पर फ़लतगरी के लिए खड़ा हआ और तीरों को हिला कर बुत से सवाल करेगा और जिगर पर नजर करेगा। 22 उसके दहने हाथ में येस्शालेम का पच्ची पड़ोसी कि मंजनीक लगाये और कुश्त — ओ — खून के लिए मुँह खोले ललकार की आवाज बुलन्द करे और फाटकों पर मंजनीक लगाए और दमदमा बांधे और बुर्ज बनाए। 23 लेकिन उनकी नजर में यह ऐसा होगा जैसा इटान शगुन यानी उनके लिए जिन्होंने कसम खाई थी, पर वह बदकिरदारी को याद करेगा ताकि वह गिरफ्तार हों। 24 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चूंकि तुम ने अपनी बदकिरदारी याद दिलाई और तुम्हारी खतकारी ज़ाहिर हुई यहाँ तक कि तुम्हारे सब कामों में तुम्हारे गुनाह अर्थाँ हैं, और चूंकि तुम ख्याल में आ गए इसलिए गिरफ्तार हो जाओगे। 25 और तू ऐ मजर्ह शरीर शाह — ए — इसाईल, जिसका ज़माना बदकिरदारी के अन्जाम को पहुँचने पर आया है। 26 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि कुलाह दूर कर और ताज उतार, यह ऐसा न रहेगा, पस्त को बलन्द कर और उसे जो बुलन्द है पस्त कर। 27 मैं ही उसे उलट उलट दौँगा, पर यूँ भी न रहेगा और वह आएगा जिसका हक है, और मैं उसे दौँगा। 28 “और तू ऐ आदमजाद नव्यवत्त कर और कह खुदावन्द खुदा बनी अम्मून और उनकी ताना ज़नी के बारे में यूँ फरमाता है: कि तू कह तलवार बल्कि खीची हुई तलवार खौरेजी के लिए सैकल की गई है, ताकि बिजली की तरह भस्म करे। 29 बजकि वह तेरे लिए धोका देखते हैं और इटे फ़ल निकालते हैं कि तुझ को उन शरीरों की गर्दनों पर डाल दें जो मारे गए,

जिनका ज़माना उनकी बदकिरदारी के अंजाम को पहुँचने पर आया है। 30 उसको मियान में कर। मैं तेरी पैदाइश के मकान में और तेरी ज़ाद बूम में तेरी 'अदालत करूँगा। 31 और मैं अपना कहर तुझ पर नाजिल करूँगा और अपने गजब की आग तुझ पर भड़काऊँगा, और तुझ को हैवान खसलत आदमियों के हवाले करूँगा जो बर्बाद करने में माहिर हैं। 32 तू आग के लिए ईंधन होगा और तेरा खून मुल्क में बहेगा, और फिर तेरा ज़िक्र भी न किया जाएगा, क्यूँकि मैं खुदावन्द ने फरमाया है।”

22 फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि ऐ आदमजाद, क्या तू इल्जाम न लगाएगा? क्या तू इस खीनी शहर को मुजिज्म न ठहराएगा? तू इसके सब नफरती काम इसको दिखा, 3 और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि ऐ शहर, तू अपने अन्दर खौरेजी करता है ताकि तेरा बक्त आजाए और तू अपने बास्ते बुतों को अपने नापाक करने के लिए बनाता है। 4 तू उस खून की बजह से जो तूने बहाया मुजरिम ठहरा, और तू बुतों के ज़रिए जिनको तूने बनाया है नापाक होआ; तू अपने बक्त को नजदीक लाता है और अपने दिनों के खातिम तक पहुँचा है इसलिए मैंने तुझे कौमों की मलामत का निशाना और मुल्कों का ढांग बनाया है। 5 तुझ से दूर — ओ — नजदीक के सब लोग तेरी हँसी उड़ायेंगे क्यूँकि तू झगड़ाल, और बदनाम मशहूर है। 6 देख, इसाईल के हाकिम सब के सब जो तुझ में हैं, मकदूर भर खौरेजी पर मुस्त़िद थे। 7 तेरे अन्दर उन्होंने माँ बाप को बेकार जाना है, तेरे अन्दर उन्होंने परदेसियों पर जुल्म किया तेरे अन्दर उन्होंने यतीमों और बेवाओं पर सितम किया है। 8 तूने मेरी पाप चीजों को नाचीज जाना, और मेरे सबतों को नापाक किया। 9 तेरे अन्दर वह लोग हैं जो चुतालखोरी करके खुन करवाते हैं, और तेरे अन्दर वह है जो बुतों की कबानी से खाते हैं, तेरे अन्दर वह हैं जो बुराई करते हैं। 10 तेरे अन्दर वह भी है जिन्होंने अपने बाप की लौड़ी शिकनी की, तज़ में उन्होंने उस 'औरत से जो नापाकी की हालत में थी मुबान्त की। 11 किसी ने दूसरे की बीबी से बदकारी की, और किसी ने अपनी बह से बदजाती की, और किसी ने अपनी बहन अपने बाप की बेटी को तेरे अन्दर स्वत्व किया। 12 तेरे अन्दर उन्होंने खौरेजी के लिए रिव्वत ख्वारी की तैने ब्याज और सूद लिया और जुल्म करके अपने पड़ोसी को लूटा और मुझे फ़रामोश किया खुदावन्द खुदा फरमाता है। 13 “देख, तेरा नारवा नफे” की बजह से जो तूने लिया, और तेरी खौरेजी के ज़रिए जो तेरे अन्दर हुई, मैंने ताली बजाई। 14 क्या तेरा दिल बदीशत करेगा और तेरे हाथों में ज़ोर होगा, जब मैं तेरा मु'अमिले का फैसला करूँगा? मैं खुदावन्द ने फरमाया, और मैं ही कर दिखाऊँगा। 15 हाँ, मैं तुझ को कौमों में तितर बितर और मुल्कों में तितर — बितर करूँगा, और तेरी गन्दगी तुझ में से हलाक कर दूँगा। 16 और तू कौमों के सामने अपने आप में नापाक ठरेगा, और मालूम करेगा कि मैं खुदावन्द हूँ।” 17 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 18 कि ऐ आदमजाद, बनी इसाईल मेरे लिए मैल हो गए हैं, वह सब के सब पीतल और रोग और लोहा और सीसी हैं जो भट्टी में हैं, वह चाँदी की मैल हैं। 19 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चूंकि तुम सब मैल हो गए हो, इसलिए देखो, मैं तुम को येस्शालेम में जमा' करूँगा। 20 जिस तरह लोग चाँदी और पीतल और लोहा और शीशा और रोग भट्टी में जमा' करते हैं और उनपर धौंकते हैं ताकि उनको पिघला डालें, उसी तरह मैं अपने कहर और अपने गजब में तुम को जमा' करूँगा, और तुम को वहाँ रखकर पिघलाऊँगा। 21 हाँ, मैं तुम को इकट्ठा करूँगा और अपने गजब की आग तुम पर धौंकूँगा, और तुम को उसमें पिघला डालूँगा। 22 जिस तरह चाँदी भट्टी में पिघलाई जाती है, उसी तरह तुम उसमें पिघलाए जाओगे, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द ने अपना कहर तुम पर नाजिल किया है। 23 और खुदावन्द

का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 24 कि 'ऐ आदमजाद, उससे कह, त वह सरजमीन है जो पाक नहीं की गई और जिस पर ग़ज़ब के दिन में बारिश नहीं हुई। 25 जिसमें उसके नवियों ने साजिश की है, शिकार को फाडते हुए गरजने वाले शेर — ए — बबर की तरह वह जानों को खा गए हैं, वह माल और कीमती चीजों को छीन लेते हैं; उन्होंने उसमें बहुत सी 'औरतों को बेवा बना दिया है। 26 उसके काहिनों ने मेरी शरी़ी अत को तोड़ा और मेरी पाक चीजों को नापाक किया है। उन्होंने पाक और 'आम में कुछ फर्क नहीं रखता और मै उनमें बैंज़त हुआ। 27 उसके हाकिम उसमें शिकार को फाडने वाले भेड़ियों की तरह है, जो नाजाए़ज़ नफ़ा' की खातिर खेरूज़ी करते हैं और जानों को हलाक करते हैं। 28 और उसके नवी उनके लिए कच्च गारा करते हैं; बातिल खबाब देखते और झटी फालगिरी करते हैं और कहते हैं कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, हालाँकि खुदावन्द ने नहीं फरमाया। 29 इस मुल्क के लोगों ने सितमगरी और लट मार की है, और गरीब और मोहताज को सताया है और परदेसियों पर नाहक सख्ती की है। 30 मैंने उनके बीच तलाश की, कि कोई ऐसा आदमी मिले जो फ़सील बनाए, और उस सरजमीन के लिए उसके रखने में मेरे सामने खड़ा हो ताकि मैं उसे वीरान न करूँ, लेकिन कोई न मिला। 31 इसलिए मैंने अपना कहर उन पर नाजिल किया, और अपने ग़ज़ब की आग से उनको फ़ना कर दिया; और मैं उनके चाल चलन को उनके सिरों पर लाया, खुदावन्द खुदा फरमाता है।

23 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि 'ऐ आदमजाद,

दो 'औरतें एक ही माँ की बेटियों थीं। 3 उन्होंने मिस में बदकारी की, वह अपनी जवानी में बदकार बनी बहाँ उनकी छातियों मर्ती गई और बहनी उनकी दोशीज़गी के पिस्तान मरसले गए। 4 उनमें से बड़ी का नाम ओहोला और उसकी बहन का नाम ओहोलीबा था वह दोनों मेरी हो गई और उन्से बेटे बेटियों पैदा हुए और उनके यह नाम ओहोला और ओहोलीबा सामरिया व येस्थलाम हैं। 5 और ओहोला जब कि वह मेरी थी, बदकारी करने लगी और अपने यारों पर यानी असूरियों पर जो पड़ोसी थे, 'आशिक हुई। 6 वह सरदार और हाकिम और सबके सब दिल पसन्द जवाँ मर्द और सवार थे, जो घोड़ों पर सवार होते और अर्गावनी पोशाक पहनते थे। 7 और उसने उन सबके साथ जो असूर के बरगुजीदा मर्द थे बदकारी की, और उन सबके साथ जिनसे वह 'इश्कबाजी करती थी, और उनके सब बुतों के साथ नापाक हुई। 8 उसने जो बदकारी मिस में की थी उसे न छोड़ा, क्यूँकि उसकी जवानी में वह उससे हम — अगोश हुए और उन्होंने उसकी दोशीज़गी के पिस्तानों को मरसला और अपनी बदकारी उस पर उँड़ेल दी। 9 इसलिए मैंने उसे उसके यारों यानी असूरियों के हवाले कर दिया जिन पर वह मरती थी। 10 उन्होंने उसको बरहना किया और उसके बेटों — बेटियों को छीन लिया और उसे तलवार से कल्प किया; इसलिए वह 'औरतों में अंगृहत नुमा हुई क्यूँकि उन्होंने उसे 'अदालत से सजा दी। 11 'और उसकी बहन ओहोलीबा ने यह सब कुछ देखा, लेकिन वह शहवत परस्ती में उससे बदतर हुई और उसने अपनी बहन से बढ़ कर बदकारी की। 12 वह असूरियों पर 'आशिक हुई जो सरदार और हाकिम और उसके पड़ोसी थे, जो भड़कीती पोशाक पहनते और घोड़ों पर सवार होते और सबके सब दिल पसन्द जवाँ मर्द थे। 13 और मैंने देखा, कि वह भी नापाक हो गई; उन दोनों की एक ही चाल चलन थी। 14 और उसने बदकारी में तरक्की की क्यूँकि जब उसने दीवार पर मर्दी की सरतें देखी, यानी कसदियों की तस्वीर जो शनार्फ़ से खिंची हुई थी, 15 जो पटकों से करमबस्ता और सिरों पर रंगीन पगड़ियाँ पहने थे, और सब के सब देखने में हाकिम अहल — ए — बाबूल की तरह थे जिनका वतन कसदिस्तान है। 16 तो देखते ही वह उन पर मरने लगी, और

उनके पास कसदिस्तान में कासिद भेजे। 17 तब अहल — ए — बाबूल उसके पास आकर 'इश्क के बिस्तर पर चढ़े, और उन्होंने उससे बदकारी करके उसे आलदा किया और वह उसे नापाक हुई, तो उसकी जान उसे बेजार हो गई। 18 तब उसकी बदकारी 'ऐलानिया हुई और उसकी बरहनी बेसव रही गई; तब उसकी जान उससे बेजार हुई जैसी उसकी बहन से बेजार हो चुकी थी। 19 तो उसने अपनी जवानी के दिनों की याद करके जब वह मिस की सरजमीन में बदकारी करती थी, बदकारी पर बदकारी की। 20 इसलिए वह फिर अपने उन यारों पर मरने लगी, जिनका बदन गयों के जैसा बदन और जिनका इन्जात घोड़ों के जैसा इन्जात था। 21 इस तरह तने अपनी जवानी की शहवत परस्ती को, जबकि मिसी तेरी जवानी की छातियों की बजह से तेरे पिस्तान मलते थे, फिर याद किया। 22 इसलिए ऐ ओहोलीबा खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि "देख, मैं उन यारों को जिनसे तेरी जान बेजार हो गई है उभास्तंग कि तुझ से मुखातिफ़ करों, और उनको बुला लाऊँगा कि तुझे चारों तरफ से घेर लें। 23 अहल — ए — बाबूल और सब कसदियों को फ़िकूद और शो'अ और को'अ और उनके साथ तमाम असूरियों को, सब के सब दिल पसन्द जवाँ मर्दों को, सदरों और हाकिमों को, और बड़े बड़े अमीरों और नामी लोगों को जो सबके सब घोड़ों पर सवार होते हैं तुझ पर चढ़ा लाऊँगा। 24 और वह असलह — ए — जंग और रथों और छकड़ों और उम्मतों के गिरोह के साथ तुझ पर हमला करेंगे, और ढाल और फ़री पकड़ कर और खुद पहनकर चारों तरफ से तुझे घेर लेंगे; मैं 'अदालत उनको सुर्पुर करूँगा, और वह अपने क़ानून के मुताबिक तेरा फैसला करेंगे। 25 और मैं अपनी गैरत को तेरी मुखातिफ़ बनाऊँगा और वह गजबनाक होकर तुझ से पेश आयेंगे और तेरी नाक और तेरे कान काट डालेंगे और तेरे बाकी लोग तलवार से मारे जाएंगे। वह तेरे बेटे और बेटियों को पकड़ लेंगे और तेरा बकिया आग से भस्म होगा। 26 वह तेरे कपड़े भी उतार लेंगे और तेरे नफ़सी जेवर लूट ले जायेंगे 27 और मैं तेरी शहवत परस्ती और तेरी बदकारी जो तुमे मुल्क — ए — मिस में सीधी मौकूफ़ करूँगा, यहाँ तक कि तु उनकी तरफ फिर अँख न उठाएँगी और फिर मिस को याद न करेगी। 28 'क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं तुझे उनके हाथ में जिनसे तुझे नफ़रत है, हाँ, उन्हीं के हाथ में जिनसे तेरी जान बेजार है दे दँगा। 29 और वह तुझ से नफ़रत के साथ पेश आयेंगे, और तेरा सब माल जो तूने मेहनत से पैदा किया है छीन लेंगे और तुड़े 'ऊरियान और बरहना छोड़ जायेंगे यहाँ तक कि तेरी शहवत परस्ती — ओ — खबासत और तेरी बदकारी फ़ाश हो जाएगी। 30 यह सब कुछ तुझ से इसलिए होगा कि तूने बदकारी के लिए दीग़र कौम का पीछा किया और उनके बुतों से नापाक हुई। 31 तु अपनी बहन के रस्ते पर चली, इसलिए मैं उसका प्याला तेरे हाथ में दूँगा। 32 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि तु अपनी बहन के प्याला से जो गहरा और बड़ा है पियेगी तेरी हँसी होगी और तु ठड़ों में उडाई जाएगी, क्यूँकि उसमें बहुत सी समाई है। 33 तु मस्ती और सोग से भर जाएगी; वीरानी और हैरत का प्याला, तेरी बहन सामरिया का प्याला है। 34 तु उसे पियेगी और निचोड़ीगी और उसकी टेकरियों भी चबाई जाएगी, और अपनी छातियाँ नोचेगी क्यूँकि मैं ही ने यह फरमाया है, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 35 फिर खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि चूँकि तू मुझे भूल गई और मुझे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया इसलिए अपनी बदजारी और बदकारी की सजा उठा।" 36 फिर खुदावन्द ने मुझे फरमाया: कि 'ऐ आदमजाद, क्या तु ओहोला और ओहोलीबा पर इल्ज़ाम न लगाएगा? तु उनके घिनौने काम उन पर जाहिर कर। 37 क्यूँकि उन्होंने बदकारी की और उनके हाथ खनालदा हैं हाँ उन्होंने अपने बुतों से बदकारी की और अपने बेटों को जो मुझ से पैदा हुए आग से गुजारा कि बुतों की नज़र होकर हलाक हों। 38 इसके 'अलावा उन्होंने मुझ से यह किया

कि उसी दिन उन्होंने मेरे हैकल को नापाक किया, और मेरे सबतों की बेहमर्ती की। 39 क्यूंकि जब वह अपनी औलाद को बुतों के लिए जबह कर चुकी, तो उसी दिन मेरे हैकल में दाखिल हुई, ताकि उसे नापाक करें और देख, उन्होंने मेरे घर के अन्दर ऐसा काम किया। 40 बल्कि तुम ने दूर से मर्द बूताए जिनके पास कासिद भेजा, और देख, वह आए जिनके लिए तेरे गुस्त किया और आँखों में काजल लगाया और बनाओ सिंगार किया; 41 और तू नकीस पलांग पर बैठी और उसके पास दस्तरखबान तैयार किया, और उस पर तेरे मेरी खुदाबू और मेरा 'इत्र रखबा। 42 और एक 'अय्याशी जमा' अत की आवाज उसके साथ थी और आम लोगों के 'अलावा वीरान से शराबियों को लाए और उन्होंने उनके हाथों में कंगन और सिरों पर खुशनुमा ताज पहनाए। 43 'तब मैंने उसके ज़रिए' जो बदकारी करते करते बूढ़िया हो गई थी, कहा, अब यह लोग उससे बदकारी करेंगे और वह उनसे करेगी। 44 और वह उसके पास गए जिस तरह किसी कस्ती के पास जाते हैं, उसी तरह वह उन बदजात 'औरतों, ओहोला और ओहोलीबा के पास गए। 45 लेकिन सादिक आदमी उन पर वह फतवा देंगे जो बदकार और खूनी 'औरतों पर दिया जाता है, क्यूंकि वह बदकार 'औरतें हैं और उनके हाथ खून अलादा हैं।' 46 क्यूंकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि 'मैं उन पर एक गिरोह चढ़ा लाँगा, और उनको छोड़ दूँगा कि इधर — उधर धक्के खाती फिरें और गारत हों। 47 और वह गिरोह से उनको पथराव करेगा और अपनी तलबारों से कल्प करेगी, उनके बेटों — बेटियों को हलाक करेगा और उनके घरों को आग से जला देगी। 48 यूँ मैं बदकारी को मुल्क से खत्म करँगा ताकि सब 'औरतें' इबरत पज़ीर हों और तुम्हारी तरह बदकारी न करें। 49 और वह तुम्हारे बुराई का बदला तुम को देंगे, और तुम अपने बुतों के गुमाहों की सज्जा का बोझ उठाओगे, ताकि तुम जानों कि खुदावन्द खुदा मैं ही हूँ।'

24 फिर नवे बरस के दसवें महीने की दसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ 2 कि 'ऐ आदमजाद, आज के दिन, हाँ, इसी दिन का नाम लिय रख; शाह — ए — बाबूल ने ऐन इसी दिन येस्सलेम पर खस्ज किया। 3 और इस बागी खानान्दान के लिए एक मिसाल बयान कर और इनसे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि एक देग चढ़ा दे, हाँ, उसे चढ़ा और उसमें पानी भर दे। 4 टुकड़े उसमें इकट्ठे कर, हर एक अच्छा टुकड़ा याँही रान और शान और अच्छी अच्छी हड्डियाँ उसमें भर दे। 5 और गल्ले में से चुन — चून कर ले, और उसके नीचे लकड़ियों का ढेर लगा दे, और खब जाओ दे ताकि उसकी हड्डियाँ उसमें खब उबल जाएँ। 6 'इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि उस खूनी शहर पर अफसोस और उस देग पर जिसमें जग्न लगा है, और उसका जना उस पर से उतारा नहीं गया। एक एक टुकड़ा करके उसमें से निकाल, और उस पर पच्ची पड़े। 7 क्यूंकि उसका खून उसके बीच है, उसने उसे साफ़ चट्टान पर रखबा, जर्मीन पर नहीं गिराय ताकि खाक में छिप जाए। 8 इसलिए कि गजब नाजिल हो और इन्तकाम लिया जाए, मैंने उसका खून साफ़ चट्टान पर रखबा ताकि वह छिप न जाए। 9 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि खूनी शहर पर अफसोस। मैं भी बड़ा ढेर लगाऊँगा। 10 लकड़ियाँ खब झोंक, आग सुलगा, गोशत को खब उबल और शोरबा गाढ़ा कर, और हड्डियाँ भी जला दे। 11 तब उसे खाली करके आँगारों पर रख, ताकि उसका पीतल गर्म हो और जल जाए और उसमें की नापाकी गत जाए और उसका जना दूर हो। 12 वह सख्त मेहनत से हार गई, लेकिन उसका बड़ा जना उससे दूर नहीं हुआ; आग से भी उसका जना दूर नहीं होता। 13 तेरी नापाकी में खबासत है, क्यूंकि मैं तुझे पाक करना चाहता हूँ लेकिन तू पाक होना नहीं चाहती, तू अपनी नापाकी से फिर पाक न होगी, जब तक मैं अपना कहर तुझ पर पूरा न कर चुकूँ। 14 मैं खुदावन्द ने यह फरमाया है, यूँ ही होगा और मैं कर दिखाऊँगा, न

दस्तबरदार हूँगा न रहम करँगा न बाज आँगा; तेरे चाल चलन और तेरे कामों के मुताबिक वह तेरी 'अदालत करेगे खुदावन्द खुदा फरमाता है। 15 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 16 कि 'ऐ आदमजाद, देख, मैं तेरी मन्ज़र — ए — नज़र को एक ही मार में तुझ से जुदा करँगा, लेकिन तू न मातम करना, न रोना और न आँसू बहाना। 17 चुनके चुपके ओहें भरना, मुर्दे पर नोहा करना, सिर पर अपनी पांगी बाँधना और पाँव में जूती पाफ फनना और अपने होटों को न छिपाना और लोगों की रोटी न खाना।' 18 इसलिए मैंने सबह को लोगों से कलाम किया और शाम को मेरी बीकी मर गई, और सबह को मैंने वही किया जिसका मुझे खुबम मिला था। 19 तब लोगों ने मुझ से पूछा, 'क्या तू हमें न बताएगा कि जो तू करता है उसको हम से क्या रिश्ता है?' 20 तब मैंने उनसे कहा, कि खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 21 कि 'इसाईल के घराने से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमात है, कि देखो, मैं अपने हैकल को जो तुम्हारे जोर का फरड़ और तुम्हारा मंज़र — ए — नज़र है जिसके लिए तुम्हारे दिल तरसते हैं नापाक करँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ, जिनको तुम पीछे छोड़ आए हों, तलबार से मारे जाएँगे। 22 और तुम ऐसा ही करारे जैसा मैंने किया; तुम अपने होटों को न छिपाओगे, और लोगों की रोटियाँ न खाओगे। 23 और तुम्हारी पगड़ियाँ तुम्हारे सिरों पर और तुम्हारी जूटियाँ तुम्हारे पाँव में होंगी, और तुम नोहा और जारी न कराएं लेकिन अपनी शरारत की बजह से घुलोगे, और एक दूसरे को देख देख कर ठन्डी साँस भरोगे। 24 चुनाँचे हिजकिएल तुम्हारे लिए निशान हैं; सब कुछ जो उसने किया तुम भी करोगे, और जब यह वज़द में आएगा तो तुम जानेगे कि खुदावन्द खुदा मैं हूँ। 25 'और तू ऐ आदमजाद, देख, कि जिस दिन मैं उनसे उनका जोर और उनकी शान — ओ — शौकत और उनके मन्ज़र — ए — नज़र को, और उनके मरग्ब — ए — खातिर उनके बेटे और उनकी बेटियाँ ले लूँगा, 26 उस दिन वह जो भाग निकले, तेरे पास आएगा कि तेरे कान में कहे। 27 उस दिन तेरा मुँह उसके सामने, जो बच निकला है खुल जाएगा और तू बोलोगा, और मिर 'रौंगा न रहेगा; इसलिए तू उनके लिए एक निशान होगा और वह जानेगे कि खुदावन्द मैं हूँ।'

25 और खुदावन्द खुदा का कलाम मुझपर नाजिल हुआ। 2 कि 'ऐ आदमजाद बनी 'अम्मून की तरफ मुतवज्जिह हो और उनके खिलाफ नबुवत कर। 3 और बनी 'अम्मून से कह, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो, खुदावन्द खुदा यूँ फरमात है: चूंकि तुने मैंने हैकल पर जब वह नापाक किया गया, और इसाईल के मुल्क पर जब वह उजाड़ा गया, और बनी यहदाह पर जब वह गुलाम हो कर गए अहा हा! कहा। 4 इसलिए मैं तुझे अहल — ए — पूरब के हवाले कर दूँगा कि तू उनकी मिल्कियत हो, और वह तुझ में अपने खेमे लगाएँगे और तेरे अन्दर अपने मकान बनाएँगे, और तेरे में खेल जाएँगे और तेरा टूध पिएँगे। 5 और मैं रब्बा को ऊँटों का अस्तबल और बनी 'अम्मून की सर — जर्मीन को भेड़साला बना दूँगा, और तू जानेगा कि मैं खुदावन्द हूँ। 6 क्यूंकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमात है, कि चूंकि तुने तालियाँ बजाई और पाँव पटके, और इसाईल की मस्लकत की बर्बादी पर अपनी कमाल 'अदालत से बड़ी खूशी की; 7 इसलिए देख, मैं अपना हाथ तुझ पर चलाऊँगा और तुझे दीगर कौम के हवाले करँगा, ताकि वह तुझ को लट लें और मैं तुझे उमरों में से काट डालूँगा, और मूल्कों में से तुझे बर्बाद — ओ — हलाक करँगा; मैं तुझे हलाक करँगा और तू जानेगा कि खुदावन्द मैं हूँ। 8 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमात है: कि चूंकि मोआब और शाईर कहते हैं कि बनी यहदाह तमाम कौमों की तरह है, 9 इसलिए देख, मैं मोआब के पहलू को उसके शहरों से, उसकी सरहद के शहरों से जो जर्मीन की शौकत है, बैठ — यसीमोत और बालम'जन और क्रयताइम से खोल दूँगा। 10 और मैं अहल — ए — पूरब को उसके और बनी 'अम्मून के

खिलाफ चढ़ा लाऊँगा कि उन पर काबिज्ज हों, ताकि कौमों के बीच बनी 'अम्भू' का ज़िक्र बाकी न रहे। 11 और मैं योआब को सज्जा दूँगा, और वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ। 12 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चूँकि अदोम ने बनी यहदाह से कीना कश्मी की, और उनसे इन्तकाम लेकर बड़ा गुनाह किया। 13 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि मैं अदोम पर हाथ चलाऊँगा; उसके इंसान और हैवान को हलाक करूँगा, और तीमान से लेकर उसे वीरान करूँगा और वह ददान तक तलवार से कल्प होंगे। 14 और मैं अपनी कौम बनी — इसाईल के हाथ से अदोम से इन्तकाम लूँगा, और वह मेरे गजब — ओ — कहर के मुताबिक अदोम से सुलूक करेंगे, और वह मेरे इन्तकाम को मालूम करेंगे, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 15 'खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चूँकि फिलिस्तियों ने कीनाकशी की, और दिल की कीना वरी से इन्तकाम लिया, ताकि दाइमी 'अदावत से उसे हलाक करें। 16 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि देख, मैं फिलिस्तियों पर हाथ चलाऊँगा और करतियों को काट डालूँगा, और समन्दर के साहिल के बाकी लोगों को हलाक करूँगा। 17 और मैं सज्ज सज्जा देकर उनसे बड़ा इन्तकाम लूँगा, और जब मैं उनसे इन्तकाम लूँगा तो वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।'

26 और ग्यारें बरस में महीने के पहले दिन खुदावन्द का कलाम मुझ पर नज़िल हुआ: 2 कि 'ऐ आदमजाद, चूँकि सूर ने येस्सलेम पर कहा है, 'अहा हा! वह कौमों का फाटक तोड़ दिया गया है, अब वह मेरी तरफ मुतवज्जिह होगी, अब उसकी बर्दी से मेरी मामूरी होगी। 3 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि देख, ऐ सूर मैं तेरा मुखालिफ हूँ और बहुत सी कौमों को तुझ पर चढ़ा लाऊँगा, जिस तरह समन्दर अपनी मौजों को चढ़ाता है। 4 और वह सूर की शहर पनाह को तोड़ डालेंगे, और उसके घुर्जों को ढाँदेंगे और मैं उसकी मिट्टी तक खुर्च फेंकूँगा और उसे साफ़ चट्टान बना दूँगा। 5 वह समन्दर में जाल फैलाने की जगह होगा क्यूँकि मैं ही ने फरमाया, खुदावन्द खुदा फरमाता है, और वह कौमों के लिए गर्नीमत होगा। 6 और उसकी बेटियाँ जो मैदान में हैं, तलवार से कल्प होंगी और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 7 क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं शाह — ए — बाबुल नबूकदनज़र को जो शहनशाह है, घोड़ों और रथों और सवारों और फ़ौजों और बहुत से लोगों के गिरोह के साथ उत्तर से सूर पर चढ़ा लाऊँगा; 8 वह तेरी बेटियों को मैदान में तलवार से कल्प करेगा और तेरे चारों तरफ मोर्चाबन्दी करेगा, और तेरे सामने दमदाम बाँधिया और तेरी मुखालिफ में ढाल उठाएगा। 9 वह अपने मन्ज़नीक को तेरी शहर पनाह पर चलाएगा, और अपने तबरों से तेरे बुज्जों को ढालेगा। 10 उसके घोड़ों की कसरत की बजह से इतनी गर्द उड़ेगी कि तुझे छिपा लेगी जब वह तेरे फाटकों में घुस आएगा, जिस तरह रखना करके शहर में घुस जाते हैं, तो सवारों और गाड़ियों और रथों की गड़ग़ाहट की आवाज से तेरी शहरपनाह हिल जाएगी। 11 वह अपने घोड़ों के सुरों से तेरी सब सँडकों को रौनह डालेगा, और तेरे लोगों की तलवार से कल्प करेगा और तेरी ताकत के सुतून जमीन पर गिर जाएगी। 12 और वह तेरी दैलत लटू लैंगे, और तेरे माल — ए — तिजारत को गारत करेंगे और तेरे शहर पनाह तोड़ डालेंगे तेरे रंगमहलों को ढालेंगे, और तेरे पथर और लकड़ी और तेरी मिट्टी समन्दर में ढाल देंगे। 13 और तेरे गाने की आवाज बंद कर दूँगा और तेरी सितारों की आवाज फिर सुनी न जायेगी। 14 और मैं तुझे साफ़ चट्टान बना दूँगा त् जाल फैलाने की जगह होगा और फिर तामीर न किया जाएगा क्यूँकि मैं खुदावन्द ने यह फरमाया है, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 15 खुदावन्द खुदा सूर से यूँ फरमाता है: कि जब तुझ में कल्प का काम जारी होगा और जख्मी कराहते होंगे, तो क्या बहरी मुल्क तेरे गिरने के शोर से न थरथराएँगे? 16 तब समन्दर के हाकिम अपने

तख्तों पर से उतरेंगे और अपने जुब्बे उतार डालेंगे और अपने ज़रदोज़ पैराहन उतार फेंकेंगे, वह थरथराहट से मुलबस होकर खाक पर बैठेंगे, वह हरदम कपौंगे और तेरी बजह से हैरत जाद होंगे। 17 और वह तुझ पर नोहा करेंगे और कहेंगे, 'हाय, तू कैसा हलाक हुआ जो बहरी मुल्कों से आबाद और मशहर शहर था, जो समन्दर में ताकतवर था; जिसके बाशिनों से सब उसमें आमद — ओ — रफत करने वाले खौफ खाते थे! 18 अब बहरी मुल्क तेरे गिरने के दिन थरथरायेंगे हाँ, समन्दर के सब बहरी मुल्क तेरे अन्जाम से पेरेशान होंगे। 19 "क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि जब मैं तुझे उन शहरों की तरह जो बे चराग है, वीरान का दौँगा; जब मैं तुझ पर समन्दर बहा दूँगा और जब समन्दर तुझे छिपा लेगा, 20 तब मैं तुझे उनके साथ जो पाताल में उतर जाते हैं, पुराने बक्त के लोगों के बीच नीचे उतार्हा, और जमीन के तह में और उन उजाड़ मकानों में जो पहले से हैं, उनके साथ जो पाताल में उतर जाते हैं, तुझे बसाऊँगा ताकि तू फिर आबाद न हो, लेकिन मैं जिन्दों के मुल्क को जलाल बख्तरँगा। 21 मैं तुझे जा — ए — 'इबरत करूँगा और तू हलाक होगा, हर चन्द तेरी तलाश की जाए तो तू कहीं हमेशा तक न मिलेगा, खुदावन्द खुदा फरमाता है।"

27 फिर खुदावन्द का कलाम मुझपर नाजिल हुआ। 2 कि 'ऐ आदमजाद, त सूर पर नोहा शूर' कर। 3 और सूर से कह तुझे, जिसने समन्दर के मदखल में जगह पाई और बहुत से बहरी मुल्क के लोगों के लिए तिजारत गाह है, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि 'ऐ सूर, तू कहता है, मेरा हुस्त कामिल है। किया। 4 तेरी सरहदें समन्दर के बीच हैं, तेरे मिस्तिरियों ने तेरी खुशनुमाई को कामिल किया है। 5 उहोंने सनीर के सरोओं से लाकर तेरे जहाजों के तख्ते बनाए, और लुबनान से देवदार काटकर तेरे लिए मस्तुल बनाए। 6 बसन के बलूत से टाट बनाए तेरे तख्ते जजाइर — ए — कित्तीम के सन्खर से हाथी दांत जड़कर तैयार किये गए। 7 तेरा बादबान मिस्ती मुनक्करक्ष कतान का था ताकि तेरे लिए झन्डे का काम दे, तेरा शामियाना जजाईर इलिसा के कबूदी व अर्गावनी रंग का था। 8 सैदा और अर्वद के रहने वाले तेरे मल्लाह थे और ऐ सूर तेरे 'अक्लमन्द तुझ में तेरे नाखुदा थे। 9 जबल के बुजुर्ग और 'अक्लमन्द तुझ में थे कि रखना बर्दी करें, समन्दर के सब जहाज और उनके मल्लाह तुझमें हाजिर थे कि तेरे लिए झन्डे का काम करें। 10 फारस और लदू और फूट के लोग तेरे लिए लशकर के जंगी बहादुर थे। वह तुझ में सिपर और खुद को लटकाते और तुझे रैनक बख्तरा थे। 11 अर्वद के मद तेरी ही फौज के साथ चारों तरफ तेरी शहरपनाह पर मौजूद थे और बहादुर तेरे बुजुर्ग पर हाजिर थे, उहोंने अपनी सिपरें चारों तरफ तेरी दीवारों पर लटकाई और तेरे जमाल को कामिल किया। 12 'तरसीस ने हर तरह के माल की कसरत की बजह से तेरे साथ तिजारत की, वह चूँदी और लोहा और रोंगा और सीसा लाकर तेरे जाजारों में सौदागरी करते थे। 13 यावान तबल और मसक तेरे ताजिर थे, वह तेरे जाजारों में और लुबनान तेरे बाजारों में गुलामों और पीतल के बर्तनों की सौदागरी करते थे। 14 अहल — ए — तुजरा मो ने तेरे बाजारों में घोड़ों, जंगी घोड़ों और खच्चरों की तिजारत की। 15 अहल ए — ददान तेरे ताजिर थे बहुत से बहरी मुल्क तिजारत के लिए तेरे इक्लियार में वह हाथी दान्त और आबनस मुबादला के लिए तेरे पास लाते थे। 16 अरामी तेरी दस्तकारी की कसरत की बजह से तेरे साथ तिजारत करते थे वह गौहर — ए — शब — चराग और अर्गावनी रंग और चिकन्दोजी और कतान और मंगा और मल्लाह थे लाल लाकर तुझ से खरीद — ओ — फरोखत करते थे। 17 यहदाह और इसाईल का मुल्क तेरे ताजिर थे, वह मिसीत और पन्धग का गेहूँ और शहद और रोगन और बिलसान लाकर तेरे साथ तिजारत करते थे। 18 अहल — ए — दमिश्क तेरी दस्तकारी की कसरत की बजह से, और किस्म किस्म के माल की ज्यादती के जरिए हलबून की मय और सफेद

उन की तिजारत तेरे यहाँ करते थे। 19 दान और यावान ऊजाल से तज और आबदार फौलाद और अगर तेरे बाजारों में लाते थे। 20 ददान तेरा ताजिर था, जो सवारी के चार — जामे तेरे हाथ बेचता था। 21 'अरब और कीदार के सब अमीर तिजारत की राह से तेरे हाथ में थे, वह बर्बे और मेडे और बकरियाँ लाकर तेरे साथ तिजारत करते थे। 22 सबा और रामाह के सौदागर तेरे साथ सौदागरी करते थे; वह हर किस्म के नफीस मसाल्हे और हर तरह के कीमती पथर और सोना, तेरे बाजारों में लाकर खरीद — ओ — फरोखत करते थे। 23 हरान और कन्ना और अदन और सबा के सौदागर, और अस्सू और किलमट के बाशिने तेरे साथ सौदागरी करते थे। 24 यहीं तेरे सौदागर थे, जो लाज़दीनी कपड़े और कम ख्वाब और नफीस तिलासों से भेरे देवदार के सन्दक, डोरी से कसे हए तेरी तिजारतगाह में बेचने को लाते थे। 25 तरसीस के जहाज तेरी तिजारत के कारवान थे, तू मामूर और वस्त — ए — बहर में बहुत शान — ओ — शैकत रखता था। 26 'तेरे मल्लाह तुझे गहरे पानी में लाए, पर्बी हवा ने तुझ को वस्त — ए — बहर में तोड़ा है। 27 तेरा माल — ओ — अस्बाब और तेरी अजनास — ए — तिजारत और तेरे अहल — ए — जहाज व ना खुदा तेरे रखना बन्दी करनेवाले और तेरे कारोबार के गुमाते और सब जंगी मद्द जो तुझ में हैं, उस तमाम जमा'अत के साथ जो तुझ में है, तेरी तबाही के दिन समन्दर के बीच में गिरेंगे। 28 तेरे नाखुदाओं के चिल्लाने के शोर से तमाम 'इलाके थर्थ जायेंगे। 29 और तमाम मल्लाह और अहल — ए — जहाज और समन्दर के सब नाखुदा, अपने जहाजों पर से उतर आएंगे; वह खुशकी पर खड़े होंगे। 30 और अपनी आवाज बुलन्द करके तेरी वजह से चिल्लाएँगे, और अपने सिरों पर खाक डालेंगे और राख में लोटेंगे। 31 वह तेरी वजह से सिर मुंदाएँगे और टाट ओरेंगे वह तेरे तिए दिल शिक्स्ता होकर रोएँगे और जाँगुदाज नोहा करेंगे। 32 और नोहा करते हुए तुझ पर मरसिया खबानी करेंगे और तुझ पर थूंराएँगे; 'कौन सूर की तरह है, जो समन्दर के बीच में तबाह हुआ?' 33 जब तेरा माल — ए — तिजारत समन्दर पर से जाता था, तब तुझ से बहुत सी कौमें मालामाल होती थीं; तू अपनी दौलत और अजनास — ए — तिजारत की कसरत से इस जमीन के बादशाहों को दौलतमन्द बनाता था। 34 लेकिन अब तू समन्दर की गहराई में पानी के जोर से दृट गया है, तेरी अजनास — ए — तिजारत। और तेरे अन्दर की तमाम जमा'अत गिर गई। 35 बहरी मुल्क के सब रहने वाले तेरे जरिए हैरत जदह होंगे और उनके बादशाह बहुत तरसान होंगे और उनका चेहरा जर्द हो जाएगा। 36 कौमों के सौदागर तेरा जिक्र सुनकर सुसकरेंगे, तू जा — ए — 'इकरत होगा और बाकी न रहेगा।'

28 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ। 2 कि 'ऐआदमजाद, वाली — ए — सूर से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, इसलिए कि तेरे दिल में गुरु समाया और तूने कहा, 'मैं खुदा हूँ, और समन्दर के किनारे में इलाही तख्त पर बैठा हूँ, और तूने अपना दिल इलाह के जैसा बनाया है, अगर चे तू इलाह नहीं बल्कि इंसान है। 3 देख, तू दानीएल से ज्यादा 'अक्तमन्द है, ऐसा कोई राज नहीं जो तुझ से छिपा हो। 4 तूने अपनी हिक्मत और छिरद से माल हासिल किया, और सोने चाँदी से अपने खजाने भर लिए। 5 तूने अपनी बड़ी हिक्मत से और अपनी सौदागरी से अपनी दौलत बहुत बढ़ाई, और तेरा दिल तेरी दौलत के जरिए फूल गया है। 6 इसलिए देख, मैं तुझ पर परदेसियों को जो कौमों में हैबतनाक है, चढ़ा लाऊँगा; वह तेरी समझदारी की खबरी के खिलाफ तलवार छीचेंगे और तेरे जमाल को खराब करेंगे। 8 वह तुझ पाताल में उतारेंगे और तू उनकी मौत मरेगा जो समन्दर के बीच में कल्ल होते हैं। 9 क्या तू अपने कातिल के सामने यूँ कहेगा, कि मैं खुदावन्द हूँ? हालाँकि त

अपने कातिल के हाथ में खुदा नहीं, बल्कि इंसान है। 10 तू अजनबी के हाथ से नामख्तून की मौत मेरगा, क्यूँकि मैंने फरमाया है खुदावन्द खुदा फरमाता है। 11 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ 12 कि 'ऐआदमजाद, सूर के बादशाह पर यह नोहा कर और उससे कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि तू खातिम — उल — कमाल 'अक्तल से मामूर और हस्त में कामिल है। 13 तू अदन में बाग — ए — खुदा में रहा करता था, हर एक कीमती पथर तेरी पोशिश के लिए था; मसलन याकूत — ए — सुर्खी और पुरबाज और इल्मास और फिरोजा और संग — ए — सुलेमानी और जबरजद और नीलम और जुर्मद और गौहर — ए — शब्बराग और सोने से, तुझ में खातिमसाजी और नगीनाबन्दी की सन'अत तेरी पैदाइश ही के रोज़ से जारी रही। 14 तू मम्सूह कस्ती था जो साया। अफगन था, और मैंने तुझे खुदा के कोह — ए — मुकद्दस पर क्रायम किया; तू वहाँ आतिशी पथरों के बीच चलता फिरता था। 15 तू अपनी पैदाइश ही के रोज़ से अपनी राह — ओ — रस्म में कामिल था, जब तक कि तुझ में नारास्ती न पाई गई। 16 तेरी सौदागरी की फिरावानी की वजह से उन्होंने तुझ में जल्म भी भर दिया और तूने गुनाह किया; इसलिए मैंने तुझ को खुदा के पहाड़ पर से गन्दरी की तरह फेंक दिया, और तुझ साया — अफगन कस्ती को आतिशी पथरों के बीच से फेना कर दिया। 17 तेरा दिल तेरे हस्त पर गुस्त करता था, तूने अपने जमाल की वजह से अपनी हिक्मत खो दी; मैंने तुझे जमीन पर पटख दिया और बादशाहों के सामने रख दिया है, ताकि वह तुझे देख लै। 18 तूने अपनी बदकिरदारी की कसरत, और अपनी सौदागरी की नारास्ती से अपने हैकलों को नापाक किया है। इसलिए मैं तेरे अन्दर से आग निकालूँगा जो तुझे भस्म करेगी, और मैं तेरे सब देखने वालों की आँखों के सामने तुझे जमीन पर राख कर दूँगा। 19 कौमों के बीच वह सब जो तुझ को जानते हैं, तुझे देख कर हैरान होंगे; तू जा — ए — 'इकरत होगा और बाकी न रहेगा। 20 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 21 कि 'ऐआदमजाद, सैदा का स्वर करके उसके खिलाफ नबुव्वत कर। 22 और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं तेरा मुखालिफ हूँ, ऐ सैदा; और तेरे अन्दर मेरी तम्जीद होगी, और जब मैं उसको सजा दूँगा तो लोग मालूम कर लेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ, और उसमें मेरी तकदीस होगी। 23 मैं उसमें बबा भेज़ूँगा, और उसकी गलियों में खुरैजी कस्तूँग, और मक्तूल उसके बीच उस तलवार से जो चारों तरफ से उस पर चलेंगी रिये, और वह मालूम करेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 24 तब बनी — इसाईल के लिए उनके चारों तरफ के सब लोगों में से, जो उनको बेकार जानते थे, कोई चुभने वाला कॉटा या दुखाने वाला खारा न रहेगा, और वह जानेंगे कि खुदावन्द खुदा मैं हूँ। 25 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: जब मैं बनी — इसाईल को कौमों में से, जिनमें वह तित बितर हो गए 'जमा' कहस्ता, तब मैं कौमों की आँखों के सामने उनसे अपनी तकदीस कराऊँगा; और वह अपनी सरज़मीन में जो मैंने अपने बन्दे याकूब को दी थी बरेंगे। 26 और वह उसमें अम्न से सकूनत करेंगे, बल्कि मकान बनाएँगे और अंगूरिस्तान लगाएँगे और अम्न से सकूनत करेंगे; जब मैं उन सब को जो चारों तरफ से उनकी हिक्मत करते थे, सजा दूँगा तो वह जानेंगे के मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ।

29 दसवें बरस के दसवें महीने की बारहवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि 'ऐआदमजाद, तू शाह — ए — मिस्र फिर'ओन के खिलाफ हो, और उसके और तमाम मुल्क — ए — मिस्र के खिलाफ नबुव्वत कर 3 कलाम कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि 'देख, ऐ शाह — ए — मिस्र फिर'ओन, मैं तेरा मुखालिफ हूँ; उस बड़े घड़ियाल का जो अपने दरियाओं में लेट रहता है और कहता है कि 'मेरा दरिया-ए-नील मेरा ही है, और मैंने उसे अपने लिए बनाया है। 4 लेकिन मैं तेरी

जबड़ों में कैंटे अटकाऊंगा, और तेरी दरियाओं की मछलियाँ तेरी खाल पर चिमटाऊंगा, और तुझे तेरी तेरे दरियाओं से बाहर से बाहर खींच निकालूँगा और तेरे दरियाओं की सब मछलियाँ तेरी खाल पर चिमटी होंगी। 5 और मैं तुझ को और तेरे दरियाओं की मछलियों को वीराने में फेंक दूँगा, त् खुले मैदान में पड़ा रहेगा, त् न बटोरा जाएगा न जमा' किया जाएगा; मैंने तुझे मैदान के दरिन्द्रों और आसमान के परिन्दों की खुदावन्द हूँ। इसलिए कि वह बरी — इसाईल के तिए सिर्फ़ सरकंडे का 'असा थे। 7 जब उन्होंने तुझे हाथ में लिया, तो तू टूट गया और उन सबके कथ्ये जरूरी कर डाले; फिर जब उन्होंने तुझ पर भरोसा किया, तो तू टुकड़े — टुकड़े हो गया और उन सब की कर्मों हिल गई। 8 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं एक तलवार तुझ पर लाऊँगा और तुझ में इंसान और हैवान को काट डालूँगा। 9 और मुल्क — ए — मिस्त्र उजाड़ और वीरान हो जाएगा, और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।" क्यूँकि उसने कहा है, कि दरिया-ए-नील मेरा ही है, और मैंने ही उसे बनाया है। 10 इसलिए देख, मैं तेरा और तेरे दरियाओं का मुखालिफ़ हूँ, और मुल्क — ए — मिस्त्र को मिजदाल से असवान बाल्कि कश की सरहद तक महज वीरान और उजाड़ कर दूँगा। 11 किसी इंसान का पाँव उधर न पड़ेगा और न उसमें किसी हैवान के पाँव का गुजर होगा क्यूँकि वह चालीस बरस तक आबाद न होगा। 12 और मैं वीरान मुल्कों के साथ मुल्क — ए — मिस्त्र को वीरान करूँगा, और उजाड़े शहरों के साथ उसके शहर चालीस बरस तक उजाड़ रहेंगे। और मैं मिस्त्रियों को कौमों में तितर बितर और मुख्यतालिक मुल्कों में तितर — बितर करूँगा। 13 "क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चालीस बरस के आखिर में मैं मिस्त्रियों की उन कौमों के बीच से, जहाँ वह तितर बितर हुए 'जमा' करूँगा; 14 और मैं मिस्त्र के गुलामों को वापस लाऊँगा, और उनकी फतस्स की जमीन उनके बतन में वापस पहुँचाऊँगा, और वह वहाँ बेकार माल्युकत होंगे। 15 यह ममलुकत तमाम माल्युकतों से ज्यादा बेकार होगी, और फिर कौमों पर अपने आप बुलन्द न करेगी; क्यूँकि मैं उनको पस्त करूँगा ताकि फिर कौमों पर हुक्मरानी न करें। 16 और वह आइंदा को बरी — इसाईल की भरोसे की जगह न होगी, जब वह उनकी तरफ देखने लगे तो उनकी बदकिरदारी याद दिलाएँगे और जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।" 17 सत्ताइसवें बरस के पहले महीने की पहली तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 18 कि 'ऐ आदमजाद, शाह — ए — बाबुल नबुकदनजर ने अपनी फौज से सूर की मुखालिफ़त में बड़ी खिदमत करवाई है; हर एक सिर बेबाल हो गया और हर एक का कन्धा छिल गया, लेकिन न उसने न उसके लश्कर ने सूर से उस खिदमत के वास्ते, जो उसने उसकी मुखालिफ़त में की थी कुछ मजदूरी पाई। 19 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं मुल्क — ए — मिस्त्र शाह — ए — बाबुल नबुकदनजर के हाथ में कर दूँगा, वह उसके लोगों को पकड़ ले जाएगा, और उसको लूट लेगा और उसकी गनीमत को ले लेगा, और यह उसके लश्कर की मजदूरी होगी। 20 मैंने मुल्क — ए — मिस्त्र उस मेहनत के सिले में जो उसने की उसे दिया क्यूँकि उन्होंने मेरे लिए मशक्कत खींची थी; खुदावन्द खुदा फरमाता है 21 "मैं उस बक्त इसाईल के खानदान का सींग उगाऊँगा और उनके बीच तेरा मुँह खोलूँगा, और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

30 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ।

नबुव्वत कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि चिल्ला कर कहो: अफ्रोस उस दिन पर! 3 इसलिए कि वह दिन करीब है, हाँ, खुदावन्द का दिन यानी बादलों का दिन करीब है। वह कौमों की सजा का बक्त होगा। 4 क्यूँकि तलवार मिस्त्र पर आएगी, और जब लोग मिस्त्र में कल्ल होंगे और

गुलामी में जाएँगे और उसकी बुनियादें बर्बाद की जायेंगी तो अहल — ए — कश सख्त दर्द में मुब्लिला होंगे। 5 कश और फूट और लूट और तमाम मिले जुले लोग, और कूब और उस सरजमीन के रहने वाले जिन्होंने मूँआहिदा किया है, उनके साथ तलवार से कल्ल होंगे। 6 खुदावन्द यूँ फरमाता है: कि मिस्त्र के मददगार गिर जाएँगे और उसके ताकत का एस्तर जाता रहेगा, मिजदाल से असवान तक वह उसमें तलवार से कल्ल होंगे, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 7 और वह वीरान मुल्कों के साथ वीरान होंगे, और उसके शहर उजाड़े शहरों के साथ उजाड़ होंगे। 8 और जब मैं मिस्त्र में आग भड़काऊँगा, और उसके सब मददगार हलाक किए जाएँगे तो वह माल्म करेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ। 9 उस रोज बहुत से कासिद जहाजों पर सवार होकर, मेरी तरफ से रवाना होंगे कि गाफिल कूशियों को डाराँ, और वह सख्त दर्द में मुब्लिला होंगे जैसे मिस्त्र की सजा के बक्त, क्यूँकि देख वह दिन आता है। 10 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मैं मिस्त्र के गिरोह को शाह — ए — बाबुल नबुकदनजर के हाथ से बर्बाद — ओ — हलाक कर दूँगा। 11 वह और उसके साथ उसके लोग जो कौमों में हैबतनाक हैं, मुल्क उजाड़ने को भेजे जाएँगे और वह मिस्त्र पर तलवार खींचेंगे और मुल्क को मक्तुलों से भर देंगे। 12 और मैं नदियों को सूखा दूँगा और मुल्क को शरीरों के हाथ बेचूँगा और मैं उस सर जमीन को और उसकी तमाम मामूरी को अजनबियों के हाथ से वीरान करूँगा, मैं खुदावन्द ने फरमाया है। 13 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि "मैं बूतों की भी बर्बाद — ओ — हलाक करूँगा और नूफ़ में से मूरतों को मिटा डालूँगा और आइंदा को मुल्क — ए — मिस्त्र से कोई बादशाह खड़ा न होगा, और मैं मुल्क — ए — मिस्त्र में दहशत डाल दूँगा। 14 और फतस्स को वीरान करूँगा और जुअन में आग भड़काऊँगा और नो पर फतवा दूँगा। 15 और मैं सीन पर जो मिस्त्र का किला' है, अपना कहर नाजिल करूँगा और नो के गिरोह को काट डालूँगा। 16 और मैं मिस्त्र में आग लगा दूँगा, सीन को सख्त दर्द होगा, और नो में रखने हो जाएँगे और नूफ़ पर हर दिन मुनीबित होगी। 17 ओन और पीबस्त के जवान तलवार से कल्ल होंगे और यह दोनों बस्तियाँ गुलामी में जाएँगी। 18 और तहफनीस में भी दिन अँधेरा होगा, जिस बक्त मैं वहाँ मिस्त्र के जूँओं को तोड़ूँगा और उसकी कुब्त की शौकत मिट जाएगी और उस पर घटा छा जाएगी और उसकी बेटियाँ गुलाम होकर जाएँगी। 19 इसी तरह से मिस्त्र को सजा दूँगा और वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ।" 20 ग्यारहवें बरस के पहले महीने की सातवी तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 21 कि ऐ आदमजाद, मैंने शाह — ए — मिस्त्र फिर' औन का बाजू तोड़ा, और देख, वह बाँधा न गया, दवा लगा कर उस पर पटियाँ न कसी गई कि तलवार पकड़ने के लिए मजबूत हो। 22 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं शाह — ए — मिस्त्र फिर' औन का मुखालिफ़ हूँ, और उसके बाजू ओं को यानी मजबूत और टूटे को तोड़ूँगा, और तलवार उसके हाथ से गिरा दूँगा। 23 और मिस्त्रियों को कौमों में तितर बितर और मुमालिक में तितर बितर करूँगा। 24 और मैं शाह — ए — बाबुल के बाजूओं को कुब्त बरबाँगा और अपनी तलवार उसके हाथ में दूँगा, लेकिन फिर' औन के बाजूओं को तोड़ूँगा और वह उसको मूल्क — ए — मिस्त्र पर चलाएगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 25 हाँ शाह — ए — बाबुल के बाजूओं को सहारा दूँगा और फिर' औन के बाजू गिर जाएंगे और जब मैं अपनी तलवार शाह — ए — बाबुल के हाथ में दूँगा और वह उसको मूल्क — ए — मिस्त्र पर चलाएगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

31 फिर ग्यारहवें बरस के तीसरे महीने की पहली तारीख को, खुदावन्द का

कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि ऐ आदमजाद शाह — ए — मिस्त्रिका' औन और उसके लोगों से कह, तुम अपनी बुजुर्गी में किसकी तरह हो? 3 देख असू लुबनान का बुलन्द देवदार था, जिसकी डालियाँ खूबसूरत थीं, और पत्नियों की कसरत से वह खबर सायादार था और उसका कट बुलन्द था, और उसकी चोटी धनी शारखों के बीच थी। 4 पानी ने उसकी परवरिश की, गहराव ने उसे बढ़ाया, उसकी नहरें चारों तरफ जारी थीं, और उसने अपनी नलियों को मैदान के सब दरखतों तक पहुँचाया। 5 इसलिए पानी की कसरत से उसका कट मैदान के सब दरखतों से बुलन्द हुआ, और जब वह लहलहाने लगा, तो उसकी शाखें फिरावान और उसकी डालियाँ दराज हईं। 6 हवा के सब परिन्दे उसकी शाखों पर अपने घोंसले बनाते थे, और उसकी डालियों के नीचे सब दशर्ती हैवान बच्चे देते थे, और सब बड़ी बड़ी कौमें उसके साथे में बसती थीं। 7 यूँ वह अपनी बुजुर्गी में अपनी डलियों की दराजी की वजह से खुशनुमा था, क्यूँकि उसकी जड़ों के पास पानी की कसरत थी। 8 खुदा के बाग के देवदार उसे छिपा न सके, सरो उसकी शाखों और विनार उसकी डालियों के बराबर न थे और खुदा के बाग का कोई दरखत खूबसूरी में उसकी तरह न था। 9 मैंने उसकी डालियों की फिरावानी से उसे हुम्ब बरब्शा, यहाँ तक कि अदन के सब दरखतों को जो खुदा के बाग में थे उस पर रक्ष आता था। 10 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि 'चूंकि उसने अपाको बुलन्द और अपनी चोटी को धनी शाखों के बीच ऊँचा किया, और उसके दिल में उसकी बूलन्दी पर गुप्तर समाया। 11 इसलिए मैं उसको कौमों में से एक उद्देश दार के हवाले कर दूँगा, यकीन वह उसका फैसला करेगा, मैंने उसे उसकी शरारत की वजह से निकाल दिया। 12 और अजनवी लोग जो कौमों में से हैबतनाक हैं, उसे काट डालेंगे और फेंक देंगे पहाड़ों और सब वादियों पर उसकी शाखें गिर पड़ेंगी, और जमीन की सब नहरों के आस — पास उसकी डालियाँ तोड़ी जाएँगी, और इस जमीन के सब लोग उसके साथे से निकल जाएँगे और उसे छोड़ देंगे। 13 हवा के सब परिन्दे उसके टूटे तने में बसेंगे, और तमाम दशर्ती जानवर उसकी शाखों पर होंगे। 14 ताकि लब — ए — आब के सब बलतों के दरखतों में से कोई अपनी बुलन्दी पर मग्मर न हो, और अपनी चोटी धनी शाखों के बीच ऊँची न करे, और उनमें से बड़े बड़े और पानी जब्ज करने वाले सीधी खड़े न हों, क्यूँकि वह सबके सब मौत के हवाले किए जाएँगे, यानी जमीन के तह में बनी आदम के बीच जो पाताल में उतरते हैं। 15 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि जिस रोज़ वह पाताल में उतरे मैं मातम कराऊँगा, मैं उसकी वजह से गहराव को छिपा दूँगा और उसकी नहरों को रोक दूँगा और बड़े सैलैक थम जाएँगे; हाँ, मैं लुबनान को उसके लिए सियाह पोश कराऊँगा, और उसके लिए मैदान के सब दरखत गरी में आएँगे। (Sheol h7585) 16 जिस वक्त मैं उसे उन सब के साथ जो गढ़े में गिरते हैं, पाताल में डालूँगा, तो उसके गिरने के शोर से तमाम कौम लरजॉ होंगी; और अदन के सब दरखत, लुबनान के चीदा और नफीस, वह सब जो पानी जब्ज करते हैं जमीन के तह में तसल्ली पाएँगी। (Sheol h7585) 17 वह भी उसके साथ उन तक, जो तलवार से मारे गए, पाताल में उतर जाएँगे और वह भी जो उसके बाजू थे, और कौमों के बीच उसके साथे में बसते थे वही होंगे। (Sheol h7585) 18 "तु शान — ओ — शौकत में अदन के दरखतों में से किसकी तरह है? लेकिन तु अदन के दरखतों के साथ जमीन के तह में डाला जाएगा, तु उनके साथ जो तलवार से कल्त्त हुए नामज्जनों के बीच पड़ा रहेगा, यहीं फिर' औन और उसके सब लोग हैं, खुदावन्द खुदा फरमाता है।"

32 बारहवें बरस के बारहवें महीने की पहली तारीख को, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि ऐ आदमजाद, शाह — ए — मिस्त्रि

फिर' औन पर नोहा उठा और उसे कह: "तू कौमों के बीच जवान शेर — ए — बबर की तरह था, और तू दरियाओं के घड़ियाल जैसा है; तू अपनी नहरों में से नागाह निकल आता है, तूने अपने पाँव से पानी को तह — बाला किया और उनकी नहरों को गदला कर दिया। 3 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मैं उमरों के गिरोह के साथ तुझ पर अपना जात डालूँगा और वह तुझे मेरे ही जाल में बाहर निकलेंगे। 4 तब मैं तुझे खुशकी में छोड़ दूँगा और खुले मैदान पर तुझे फेंकूँगा, और हवा के सब परिन्दों को तुझ पर बिटाऊँगा और तमाम इस जमीन के दरिन्दों को तुझ से सेर कहँगा। 5 और तेरा गोशेत पहाड़ों पर डालूँगा, और वादियों को तेरी बुलन्दी से भर दूँगा। 6 और मैं उस सरजमीन को जिसे पानी में तू तैरता था, पहाड़ों तक तेरे खन से तर कहँगा और नहरें तुझ से लबरेज होंगी। 7 और जब मैं तुझे हलाक कहँगा, तो आसमान को तारीक और उसके सितारों को बे — नू कहँगा सूरज को बादल से छिपाऊँगा और चाँद अपनी रोशनी न देगा। 8 और मैं तमाम नूरानी अजराम — ए — फलक को तज्जपर तारीक कहँगा और मेरी तरफ से तेरी जमीन पर तारीकी छा जायेगी खुदावन्द खुदा फरमाता। 9 और जब मैं तेरी शिक्षता हाली की खबर को कौमों के बीच उन मूल्कों में जिनसे तू ना वाकिफ़ है पहँचाऊँगा तो उमरों का दिल आजूदी कहँगा 10 बल्कि बहुत सी उमरों को तेरे हाल से हैरान करँगा, और उनके बादशाह तेरी वजह से सख्त प्रेशन होंगे; जब मैं उनके सामने अपनी तलवार चमकाऊँगा, तो उनमें से हर एक अपनी जान की खाति तेरे गिरने के दिन हर दम थरथराएगा 11 क्यूँकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि शाह — ए — बाबूल की तलवार तुझ पर चलेगी। 12 मैं तेरी जमियत को जबरदस्तों की तलवार से, जो सब के सब कौमों में हैबतनाक हैं हलाक कहँगा, वह मिस्त्रि की शौकत को खत्म और उसकी तमाम जमियत को मिटा देंगे। 13 और मैं उसके सब जानवरों को आब — ए — कर्सी के पास से हलाक कहँगा, और आगे को न इंसान के पाँव उसे गदला करेंगे न हैवान के खुर। 14 तब मैं उनका पानी साफ़ कर दूँगा, और उनकी नदियाँ रैपान की तरह जारी होंगी, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 15 जब मैं मूल्क — ए — मिस्त्रि को वीरान और सूनसान करँगा और वह अपनी मामूरी से खाली हो जाएगा, जब मैं उसके तमाम बाशिन्दों को हलाक कहँगा तब वह जानेंगे कि खुदावन्द मैं हूँ। 16 ये वह नोहा है जिससे उस पर मातम करेंगे कौमों की बेटियों इससे मातम करेंगी वह मिस्त्रि और उसकी तमाम जमियत पर इसी से मातम करेंगी, खुदावन्द खुदा फरमाता है।" 17 फिर बारहवें बरस में महीने के पन्द्रहवें दिन, खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 18 कि ऐ आदमजाद, मिस्त्रि की जमियत पर बावैता कर, और उसको और नामदार कौमों की बेटियों को पाताल में उतरने वालों के साथ जमीन की तह में गिरा दे 19 तु हम मैं किस से बढ़कर था? उतर और नामज्जनों के साथ पड़ा रह। 20 वह उनके बीच गिरेंगे जो तलवार से कल्त्त हुए, वह तलवार के हवाले किया गया है, उसे और उसकी तमाम जमियत को घसीट ले जा। 21 वह जो उहदे दारों में सब से तवान है, पाताल में उस से और उसके मददगारों से मुखातिब होंगे: 'वह पाताल में उतर गए, वह बे हिस पड़े हैं, यानी वह नामज्जन जो तलवार से कल्त्त हुए। (Sheol h7585) 22 असू और उसकी तमाम जमियत वहाँ है उसकी चारों तरफ उनकी कब्जे हैं सब के सब तलवार से कल्त्त हुए हैं, 23 जिनकी कब्जे पाताल की तह में हैं और उसकी तमाम जमियत उसकी कब्जे के चारों तरफ है; सब के सब तलवार से कल्त्त हुए, जो जिन्दों की जमीन में हैबत का ज़रिएँ थे। 24 'ऐताम और उसकी तमाम गिरोह, जो उसकी कब्जे के चारों तरफ हैं वहाँ हैं; सब के सब तलवार से कल्त्त हुए हैं, वह जमीन की तह में नामज्जन उतर गए जो जिन्दों की जमीन में हैबत के ज़रिएँ थे, और उन्होंने पाताल में उतरने वालों के साथ खजालत उठाई है। 25 उन्होंने उसके लिए

और उसकी तमाम गिरोह के लिए मक्तुलों के बीच बिस्तर लगाया है, उसकी कङ्ग्रें उसके चारों तरफ हैं, सब के सब नामज्जल तलवार से कल्प हुए हैं; वह जिन्दों की जमीन में हैबत की बजह थे, और उन्होंने पाताल में उतरने वालों के साथ स्सवाई उठाई, वह मक्तुलों में रख देंगे गए। 26 मस्क और तूबल और उसकी तमाम जमियत वहाँ हैं, उसकी कङ्ग्रे उसके चारों तरफ हैं, सब के सब नामज्जलून और तलवार के मक्तूल हैं; अगर वे जिन्दों की जमीन में हैबत के ज़रिएँ थे। 27 क्या वह उन बहादुरों के साथ जो नामज्जलों में से कल्प हुए जो अपने जंग के हथियारों के साथ पाताल में उतर गए पड़े न रहेंगे? उनकी तलवारें उनके सिरों के नीचे रख दी हैं, और उनकी बदकिरदारी उनकी हड्डियों पर है, क्यूंकि वह जिन्दों की जमीन में बहादुरों के लिए हैबत का ज़रिएँ थे। (Sheol h7585) 28 और तू नामज्जलूनों के बीच तोड़ा जाएगा, और तलवार के मक्तुलों के साथ पड़ा रहेगा। 29 वहाँ अदोम भी है, उसके बादशाह और उसके सब 'उमरा जो बावजूद अपनी कृत्ति के तलवार के मक्तुलोंमें रख देंगे हैं; वह नामज्जलूनों और पाताल में उतरने वालों के साथ पड़े रहेंगे। 30 उत्तर के तमाम 'उमरा और तमाम सैदानी, जो मक्तुलों के साथ पाताल में उतर गए, बावजूद अपने रैब के अपनी तकतवरों से शर्मिन्दा हुए; वह तलवार के मक्तुलों के साथ नामज्जलून पड़े रहेंगे और पाताल में उतरने वालों के साथ स्सवाई उठायेंगे 31 फिर 'अौन उनको देख कर अपनी तमाम जमियत के ज़रिएँ तसल्ली पज़ीर होंगा हाँ किएँ' औन और तमाम लक्षर जो तलवार से कल्प हुए, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 32 क्यूंकि मैंने जिन्दों की जमीन में उसकी हैबत काईम की और वह तलवार के मक्तुलों के साथ नामज्जलों में रख दिया जाएगा; हाँ, किएँ' औन और उसकी जमियत, खुदावन्द खुदा फरमाता है।

33 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि 'ऐआदमजाद, तू अपनी कौम के फर्जन्दों से मुरावाति हो और उसे कह, जिस वक्त मैं किसी सरजमीन पर तलवार चलाऊँ, और उसके लोग अपने बहादुरों में से एक को लें और उसे अपना निगहबान ठहराएँ। 3 और वह तलवार को अपनी सरजमीन पर आते देख कर नरसिंगा फैके और लोगों को होशियार करे। 4 तब जो कोई नरसिंगे की आवाज सुने और होशियार न हो, और तलवार आए और उसे कल्प करे, तो उसका खुन उसी की गर्दन पर होगा। 5 उसने नरसिंगे की आवाज सुनी और होशियार न हुआ, उसका खुन उसी पर होगा, हालाँकि आगर वह होशियार होता तो अपनी जान बचाता। 6 लेकिन आगर निगहबान तलवार को आते देखे और नरसिंगा न फैके, और लोग होशियार न किए जाएँ, और तलवार आए और उनके बीच से किसी को ले जाए, तो वह तो अपनी बदकिरदारी में हलाक हुआ लेकिन मैं निगहबान से उसके खुन का सवाल — ओ — जवाब करूँगा। 7 फिर तू ऐ आदमजाद, इसलिए कि मैंने तुझे बनी — इसाईल का निगहबान मुकर्रर किया, मेरे मुँह का कलाम सुन रख और मेरी तरफ से उनको होशियार कर। 8 जब मैं शरीर से कहूँ, ऐ शरीर, तू यकीनन मरेगा, उस वक्त अगर तू शरीर से न कहे और उसे उसके चाल चलन से आगाह न करे, तो वह शरीर तो अपनी बदकिरदारी में मरेगा लेकिन मैं तुझे से उसके खुन की सवाल — ओ — जवाब करूँगा। 9 लेकिन आगर तू उस शरीर को जाताएँ कि वह अपनी चाल चलन से बाज आए और वह अपनी चाल चलन से बाज न आए, तो वह तो अपनी बदकिरदारी में मरेगा लेकिन तुमे अपनी जान बचा ली। 10 इसलिए ऐ आदमजाद, तू बनी इसाईल से कह तुम यूँ कहते हो कि हकीकत में हमारी खताएँ और हमारे गुनाह हम पर हैं और हम उनमें घुलते रहते हैं पस हम क्यूँकर जिन्दा रहेंगे। 11 तू उनसे कह खुदावन्द खुदा फरमाता है, मुझे अपनी हयात की कसम शरीर के मरने में मुझे कुछ खुशी नहीं बल्कि इसमें है कि शरीर अपनी राह से बाज आए और जिन्दा रहे ए बनी इसाईल बाज आओ तुम अपनी

बुरी चाल चलन से बाज आओ तुम क्यूँ मरोगे। 12 "इसलिए ऐ आदमजाद, अपनी कौम के फर्जन्दों से यूँ कह, कि सादिक की सदाकत उसकी खताकारी के दिन उसे न बचाएँगी, और शरीर की शारात जब वह उससे बाज आए तो उसके गिरने की बजह न होगी; और सादिक जब गुनाह करे तो अपनी सदाकत की बजह से जिन्दा न रह सकेगा। 13 जब मैं सादिक से कहूँ कि तू यकीनन जिन्दा रहेगा, आगर वह अपनी सदाकत पर भरोसा करके बदकिरदारी करे तो उसकी सदाकत के काम फरामोश हो जाएँगे, और वह उस बदकिरदारी की बजह से जो उतने की है मरेगा। 14 और जब शरीर से कहूँ, तू यकीनन मरेगा, आगर वह अपने गुनाह से बाज आए और वही करे जायज़ — ओ — रवा है। 15 अगर वह शरीर गिरवी वापस कर दे और जो उसने लट लिया है वापस दे दे, और जिन्दगी के कानून पर चले और नारास्ती न करे, तो वह यकीनन जिन्दा रहेगा वह नहीं मरेगा। 16 जो गुनाह उसने किए हैं उसके खिलाफ महसूब न होंगे, उसने वही किया जो जायज़ — ओ — रवा है, वह यकीनन जिन्दा रहेगा। 17 लेकिन तेरी कौम के फर्जन्द कहते हैं, कि खुदावन्द के चाल चलन रास्त नहीं, हालाँकि खुद उन ही के चाल चलन नारास्त है। 18 अगर सादिक अपनी सदाकत छोड़कर बदकिरदारी करे, तो वह यकीनन उसी की बजह से मरेगा। 19 और अगर शरीर अपनी शरारत से बाज आए और वही करे जो जायज़ — ओ — रवा है, तो उसकी बजह से जिन्दा रहेगा। 20 फिर भी तुम कहते हो कि खुदावन्द के चाल चलन रास्त नहीं है। ऐ बनी — इसाईल मैं तुम में से हर एक की चाल चलन के मुताबिक तुम्हारी 'अदालत करूँगा।' 21 हमारी गुलामी के बारहवें बरस के दसवें महीने की पाँचवीं तारीख को, यूँ हआ कि एक शख्स जो येस्थलेम से भाग निकला था, मेरे पास आया और कहने लगा, कि "शहर मुझखर हो गया।" 22 और शाम के बक्त्र उस भगोडे के पहँचने से पहले खुदावन्द का हाथ मुझ पर था; और उसने मेरा मुँह खोल दिया। उसने सुबह को उसके मेरे पास आने से पहले मेरा मुँह खोल दिया और मैं फिर गूँगा न रहा। 23 तब खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 24 कि 'ऐ आदमजाद, मुल्क — ए — इसाईल के बीरानों के बाशिन्दे यूँ कहते हैं, कि अब्राहाम एक ही था और वह इस मुल्क का वारिस हुआ, लेकिन हम तो बहुत से हैं, मुल्क हम को मीरास में दिया गया है। 25 इसलिए तू उनसे कह दे, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि तुम खून के साथ खाते और अपने बुतों की तरफ आँख उठाते हो और खूरेजी करते हो क्या तुम मुल्क के वारिस होगे? 26 तुम अपनी तलवार पर भरोसा करते हो, तुम मकस्त हम करते हो और तुम में से हर एक अपने पड़ोसी की बीवी को नापाक करता है, क्या तुम मुल्क के वारिस होगे? 27 तू उनसे यूँ कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मुझे अपनी हयात की कसम वह जो बीरानों में है, तलवार से कल्प होंगे; और उसे जो खुले मैदान में है, दरिन्दों को दूँगा कि निगल जाएँ; और वह जो किलों और गारों में है, बबा से मरेंगे। 28 क्यूंकि मैं इस मुल्क को उजाड़ा और हैरत का ज़रिएँ अ बनाऊँगा, और इसकी ताकत का गुसर जाता रहेगा, और इसाईल के पहाड़ बीरान होंगे यहाँ तक कि कोई उन पर से गुजर नहीं करेगा। 29 और जब मैं उनके तमाम मकस्त कामों की बजह से जो उन्होंने किए हैं, मुल्क को बीरान और हैरत का ज़रिएँ अ बनाऊँगा, तो वह जानेगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 30 लेकिन ऐ आदमजाद, फिलहाल तेरी कौम के फर्जन्द दीवारों के पास और घरों के आस्तानों पर तेरे ज़रिएँ गुप्तगूँ करते हैं, और एक दूसरे से कहते हैं, हाँ, हर एक अपने भाई से यूँ कहता है, 'चलो, वह कलाम सुने जो खुदावन्द की तरफ से नाजिल हुआ है। 31 वह उमत की तरह तेरे पास आते और मेरे लोगों की तरह तेरे आगे बैठते और तेरी बाँहें सुनते हैं, लेकिन उन लेकिन 'अमल नहीं करते; क्यूंकि वह अपने यूँ से तो बहुत मुहब्बत जाहिर करते हैं, पर उनका दिल

लालच पर दौड़ता है। 32 और देख, तू उनके लिए बहुत मरण बस सरोदी की तरह है, जो खुश इल्हाम और माहिर साज बजाने वाला हो, क्यूंकि वह तेरी बाँतें सुनते हैं लेकिन उन पर 'अमल नहीं करते। 33 और जब यह बातें बजूद में आँखी देख, वह जल्द बजूद में आने वाली है, तब वह जानेगे कि उनके बीच एक नवी था।

34 और खुदावन्द का कलाम उसपर नाजिल हुआ। 2 कि 'ऐ आदमजाद,

इसाईल के चरवाहों के खिलाफ नबुव्वत कर, हाँ नबुव्वत कर और उनसे कह खुदावन्द खुदा, चरवाहों को यूँ फरमाता है: कि इसाईल के चरवाहों पर अफ्सोस, जो अपना ही पेट भरते हैं! क्या चरवाहों को मुनासिब नहीं कि भेड़ों को चराएँ? 3 तुम चिनकाई खाते और ऊन पहनते हो और जो मोटे हैं उनको जबकरते हो, लेकिन गल्ला नहीं चराते। 4 तुम ने कमज़ोरों को तवानाई और बीमारों की शिफा नहीं दी और दूट हुए को नहीं बाँधा, और वह जो निकात दिए गए उनको वापस नहीं लाए और गुपशूदा की तलाश नहीं की, बल्कि जबरदस्ती और सख्ती से उन पर हक्मत की। 5 और वह तिर — बितर हो गए क्यूंकि कोई पासबान न था, और वह तिर बितर होकर मैदान के सब दरिन्दों की खुराक हुए। 6 मेरी भेड़े तमाम पहाड़ों पर और हर एक ऊँचे टीले पर भटकती फिरती थीं; हाँ, मेरी भेड़े हर एक ज़ंगली दरिन्दे की खुराक हई, क्यूंकि कोई पासबान न था और मेरे पासबानों ने मेरी भेड़ों की तलाश न की, बल्कि उहोंने अपना पेट भरा और मेरी भेड़ों को न चराया। 9 इसलिए ऐ पासबानो, खुदावन्द का कलाम सुनो: 10 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं चरवाहों का मुखालिफ हूँ और अपना गल्ला उनके हाथ से तलब करूँगा और उनको गल्लेबानी से माजूल करूँगा, और चरवाहे आद्वा को अपना पेट न भर सकेंगे क्यूंकि मैं अपना गल्ला उनके मूँह से छुड़ा लूँगा, ताकि वह उनकी खुराक न हो। 11 क्यूंकि खुदावन्द खुदा फरमाता है: देख, मैं खुद अपनी भेड़ों की तलाश करूँगा और उनको ढूँढ़ निकालूँगा। 12 जिस तरह चरवाहा अपने गल्ले की तलाश करता है, जबकि वह अपनी भेड़ों के बीच हो जो तिर बितर हो गई हैं; उसी तरह मैं अपनी भेड़ों को ढूँढ़ निकालूँगा, और उनको हर जगह से जहाँ वह बादल तारीकी के दिन तिर बितर हो गई है छुड़ा लाऊँगा। 13 और मैं उनको सब उम्रतों के बीच से वापस लाऊँगा, और सब मुल्कों में से जमा करूँगा और उन ही के मुल्क में पहुँचूँगा, और इसाईल के पहाड़ों पर नहरों के किनारे और ज़मीन के तमाम आबाद मकानों में चराऊँगा। 14 और उनको अच्छी चरागाह में चराऊँगा और उनकी आरमगाह इसाईल के ऊँचे पहाड़ों पर होगी, वहाँ वह 'उम्दा आरमगाह में लेटैगी और हरी चरागाह में इसाईल के पहाड़ों पर चौरीगी। 15 मैं ही अपने गल्ले को चराऊँगा और उनको लिटाऊँगा खुदावन्द खुदा फरमाता है। 16 मैं गुपशूदा की तलाश करूँगा और खारिज शुदा को वापस लाऊँगा और शिकस्ता को बांधूँगा और बीमारों को तकवियत दूँगा, लेकिन मोटों और जबरदस्तों को हलाक करूँगा, मैं उनकी सियासत का खाना खिलाऊँगा। 17 और तुहरों हक में खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: ऐ मेरी भेड़ों, देखो, मैं भेड़ बकरियों और मेड़ों और बकरों के बीच इमित्याज करके इन्साफ करूँगा। 18 क्या तुम को यह हल्की सी बात मालूम हुई कि तुम अच्छा सज्जाज़ खाजाओ और बाकी मान्दा को पाँवों से लताड़ो, और साफ पानी में से पिओ और बाकी मान्दा को पाँवों से गंदला करो? 19 और जो तुम ने पाँव से लताड़ा है वह मेरी भेड़ खाती है, और जो तुम ने पाँव से गंदला किया पीती है। 20 इसलिए खुदावन्द खुदा उनको यूँ फरमाता है: देखो, मैं हाँ

मैं, मोटी और दुबली भेड़ों के बीच इन्साफ करूँगा। 21 क्यूंकि तुम ने पहलू और कन्धे से धेकेता है और तमाम बीमारों को अपने सींगों से रेला है, यहाँ तक कि वह तिर — बितर हुए। 22 इसलिए मैं अपने गल्ले को बचाऊँगा, वह फिर कभी शिकार न होंगे और मैं भेड़ बकरियों के बीच इन्साफ करूँगा। 23 और मैं उनके लिए एक चौपान मुकर्रर करूँगा और वह उनको चराएगा, याँनी मेरा बन्दा दाऊद, वह उनको चराएगा और वही उनका चौपान होगा। 24 और मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँगा और मेरा बन्दा दाऊद उनके बीच फरमारवा होगा, मैं खुदावन्द ने यूँ फरमाया है। 25 मैं उनके साथ सुल्ह का 'अहद बदूँगा और सब बुरे दरिन्दों को मुल्क से हलाक करूँगा, और वह वीरान में सलामती से रहा करेंगे और ज़ंगलों में सोएंगे। 26 और मैं उनको और उन जगहों को जो मेरे पहाड़ के आसपास हैं, बरकत का जरि'अ बनाऊँगा; और मैं बक्त फर मेह बरसाऊँगा, बरकत की बारिश होगी। 27 और मैदान के दरखत अपना मेवा देंगे और ज़मीन अपनी पैदावार देंगी, और वह सलामती के साथ अपने मुल्क में बरसेंगे और जब मैं उनके ज्ञान तोड़ूँगा और उनके हाथ से जो उनसे खिदमत करवाते हैं छुड़ाऊँगा, तो वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 28 और वह आगे को कौमों का शिकार न होंगे और ज़मीन के दरिन्दे उनको निगल न सकेंगे, बल्कि वह अन्न से बरसेंगे और उनको कोई न डराएगा। 29 और मैं उनके लिए एक नामवर पौदा खड़ा करूँगा, और वह फिर कभी अपने मुल्क में सुखे से हलाक न होंगे और आगे को कौमों का ताना न उठाएंगे। 30 और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा उनके साथ हूँ, और वह याँनी बनी — इसाईल मेरे लोग हैं, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 31 और तुम ऐ मेरे भेड़ों मेरी चरागाह की भेड़ों इंसान हो और मैं तुम्हारा खुदा हूँ फरमाता है खुदावन्द खुदा फरमाता है।

35 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ 2 कि 'ऐ आदमजाद,

कोह — ए — शाँझ की तरफ मुतवज्जिह हो और उसके खिलाफ नबुव्वत कर, 3 और उसके कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, ए कोह — ए — शाँझ, मैं तेरा मुखालिफ हूँ और तुझ पर अपना हाथ चलाऊँगा, और तुझे वीरान और बेचरास करूँगा। 4 मैं तेरे शहरों को उजाइँगा, और तू वीरान होगा और जेनाग कि खुदावन्द मैं हूँ। 5 चूँकि तू फहले से 'अदावत रखता है, और तूने बनी — इसाईल को उनकी मुरीबत के दिन उनकी बदकिरदारी के आखिर में तलवार की धार के हवाले किया है। 6 इसलिए खुदावन्द खुदा फरमाता है: कि मुझे अपनी ह्यात की कसम, मैं तुझे खन के लिए हवाले करूँगा और खन तुझे दौड़ाएगा; चूँकि तूने खैरेजी से नफरत न रखती, इसलिए खन तेरा पीछा करेगा। 7 यूँ मैं कोह — ए — शाँझ को वीरान और बेचरास करूँगा, और उसमें से गुजरने वाले और वापस आने वाले को हलाक करूँगा। 8 और उसके पहाड़ों को उसके मक्तुलों से भर दूँगा, तलवार के मक्तुल तेरे टीतों और तेरी वादियों और तेरी तापाम नदियों में गिरेंगे। 9 मैं तुझे हमेशा तक वीरान रख खूँगा और तेरी बसियतों फिर आबाद न होगी, और तुम जानेगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 10 चूँकि तूने कहा, कि 'यह दो कौम और यह दो मुल्क मैं होंगे, और हम उनके मालिक होंगे, बावजूद यह कि खुदावन्द वहाँ था। 11 इसलिए खुदावन्द खुदा फरमाता है, मुझे अपनी ह्यात की कसम, मैं तुझे खन के लिए हवाले करूँगा और जानेगा इसाईल के तमाम बीमारों को तकवियत दूँगा, लेकिन मोटों और जबरदस्तों को हलाक करूँगा, मैं उनकी सियासत का खाना खिलाऊँगा। 17 और तुहरों हक में खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: ऐ मेरी भेड़ों, देखो, मैं भेड़ बकरियों और मेड़ों और बकरों के बीच इमित्याज करके इन्साफ करूँगा। 18 क्या तुम को यह हल्की सी बात मालूम हुई कि तुम अच्छा सज्जाज़ खाजाओ और बाकी मान्दा को पाँवों से लताड़ो, और साफ पानी में से पिओ और बाकी मान्दा को पाँवों से गंदला करो? 19 और जो तुम ने पाँव से लताड़ा है वह मेरी भेड़ खाती है, और जो तुम ने पाँव से गंदला किया पीती है। 20 इसलिए खुदावन्द खुदा उनको यूँ फरमाता है: देखो, मैं हाँ

खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि जब तमाम दुनिया खुशी करेगी, मैं तुझे वीरान करूँगा। 15 जिस तरह तूने बनी इसाईल की मीरास पर, इसलिए कि वह वीरान थी, खुशी की उसी तरह मैं भी तुझ से करूँगा, ऐ कोह — ए — शाईं, तू और तमाम अदोम बिल्कुल वीरान होगे, और लोग जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।

36 कि 'ऐ आदमजाद! इसाईल के पहाड़ों से नबूवत कर और कह, ऐ

इसाईल के पहाड़ो, खुदावन्द का कलाम सुनो। 2 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चूँकि दूशमन ने तुम पर, 'अहा हा!' कहा और यह कि, 'वह ऊँचे ऊँचे पुराने मकाम हमारे ही हो गए। 3 इसलिए नबूवत कर और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि इस वजह से, हाँ, इसी वजह से कि उन्होंने तुम को वीरान किया और हर तरफ से तुम को निगल गए, ताकि जो कौमों में से बाकी है तुम्हारे मालिक हों और तुम्होंने हक में बकवासियों ने जबान खोली है, और तुम लोगों में बदनाम हुए हो। 4 इसलिए ऐ इसाईल के पहाड़ो, खुदावन्द खुदा का कलाम सुनो, खुदावन्द खुदा पहाड़ों और टीलों नालों और वादियों और उजाड वीरानों से और मत्रक शहरों से जो आसपास की कौमों के बाकी लोगों के लिए लूट और मजाक की जगह हुए हैं, यूँ फरमाता है। 5 हाँ, इसी लिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि यकीनन मैंने कौम के बाकी लोगों का और तमाम अदोम का मुख्यालिक होकर जिन्होंने अपने पूरे दिल की खुशी से और कल्बी 'अदावत से अपने आपको मेरी सर — जर्मीन के मालिक ठराया ताकि उनके लिए गरीबत हो, अपनी गैरत के जोश में फरमाया है। 6 इसलिए तू इसाईल के मुल्क के बारे में नबूवत कर और पहाड़ों और टीलों और नालों और वादियों से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देखो, मैंने अपनी गैरत और अपने कहर में कलाम किया, कि इसलिए कि तुम ने कौमों की मलामत उठाई है। 7 तब खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि यकीनन तुम्हारे आसपास की कौम खुद ही मलामत उठायेंगी। 8 "लेकिन तुम ऐ इसाईल के पहाड़ों, अपनी शाखें निकालोगे और मेरी उम्मत इसाईल के लिए फल लाओगे, क्यूँकि वह जल्द आने वाले हैं। 9 इसलिए देखो, मैं तुम्हारी तरफ हूँ और तुम पर तवज्ज्ञ करूँगा, और तुम जोते और बोए जाओगे; 10 और मैं आदिमियों को, हाँ, इसाईल के तमाम घरानों को, तुम पर बहुत बढ़ाऊँगा और शहर आबाद होंगे और खंडर पिर तामीर किए जाएंगे। 11 और मैं तुम पर इंसान — ओ — हैवान की फिरावानी करूँगा और वह बहुत होंगे, और फैलेंगे और मैं तुम को ऐसे आबाद करूँगा जैसे तुम पहले थे, और तुम पर तुम्हारी शुश्र के दिनों से ज्यादा एहसान करूँगा, और तुम जानोगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 12 हाँ, मैं ऐसा करूँगा कि आदमी यानी मेरे इसाईली लोग तुम पर चलें फिरेंगे, और तुम्हारे मालिक होंगे और तुम उनकी मीरास होंगे और फिर उनको बेऔलाद न करोगे। 13 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि चूँकि वह तुझ से कहते हैं, ऐ जर्मीन, तू इंसान को निगलती है और तूने अपनी कौमों को बेऔलाद किया। 14 इसलिए आइदा न तू इंसान को निगलती न अपनी कौमों को बेऔलाद करेगी, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 15 और मैं ऐसा करूँगा कि लोग तुझ पर कभी दीगर कौम का ताना न सुनेंगे, और तू कौमों की मलामत न उठाएंगी और फिर अपने लोगों की गलती का जरिए अन होगी, खुदावन्द खुदा फरमाता है।" 16 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 17 कि 'ऐ आदमजाद, जब बनी इसाईल अपने मुल्क में बसते थे उन्होंने अपनी चाल चलन और अपने 'आमाल से उसको नापाक किया उनके चाल चलन मेरे नजदीक 'औरत की नापाकी की हालत की तरह थी। 18 इसलिए मैंने उस खूरेजी की वजह से जो उन्होंने उस मुल्क में की थी, और उन बुरों की वजह से जिनसे उन्होंने उसे नापाक किया था, अपना कहर उन पर नाजिल किया। 19 और मैंने उनको कौमों में तिर बितर किया, और वह मुल्कों में तिर — बितर हो गए, और उनके चाल चलन और उनके

'आमाल के मुताबिक मैंने उनकी 'अदालत की। 20 और जब वह दीगर कौमों के बीच जहाँ — जहाँ वह गए थे पहुँचे, तो उन्होंने मेरे सुक्लास नाम को नापाक किया, क्यूँकि लोग उनकी बोरे में कहते थे, 'यह खुदावन्द के लोग हैं, और उसके मुल्क से निकल आए हैं। 21 लेकिन मुझे अपने पाक नाम पर, जिसको बनी — इसाईल ने उन कौमों के बीच जहाँ वह गए थे नापाक किया, अफसोस हुआ। 22 इसलिए तू बनी — इसाईल से कह दे, कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: ऐ बनी इसाईल तुम्हारी खातिर नहीं बल्कि अपने पाक नाम की खातिर, जिसको तुम ने उन कौमों के बीच जहाँ तुम गए थे नापाक किया, यह करता हूँ। 23 मैं अपने बुजु़ग नाम की, जो कौमों के बीच नापाक किया गया, जिसको तुम ने उनके बीच नापाक किया था तकदीस करूँगा और जब उनकी आँखों के सामने तुम से मेरी तकदीस होगी तब वह कौमें जानेंगी कि मैं खुदावन्द हूँ, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 24 क्यूँकि मैं तुम को उन कौमों में से निकाल लौँगा और तमाम मुल्कों में से जमा' करूँगा, और तुम को तुम्हारे बतन में वापस लाऊँगा। 25 तब तुम पर साफ पानी छिड़कँगा और तुम पाक साफ होगे, और मैं तुम को तुम्हारी तमाम गन्दगी से और तुम्हारे सब बुतों से पाक करूँगा। 26 और मैं तुम को नया दिल बख़्शँगा और नई स्तर तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और तुम्हारे जिसमें से शख्त दिल को निकाल डालूँगा और गोश का दिल तुम को 'इनायत करूँगा। 27 और मैं अपनी स्तर स्तर तुम्हारे बातिन में डालूँगा, और तुम से अपने कानून की फैरवी कराऊँगा और तुम मेरे हक्मों पर 'अमल करोगे और उनको बजा लाओगे। 28 तुम उस मुल्क में जो मैंने तुम्हारे बाप — दादा को दिया सुक्लन तकरोगे, और तुम मेरे लोग होगे और मैं तुम्हारा खुदा हूँगा। 29 और मैं तुम को तुम्हारी तमाम नापाकी से छुड़ाऊँगा और अनाज मंगवाऊँगा और इफ्रात बख़्शँगा और तुम पर सूखा न भेजूँगा। 30 और मैं दरखत के फलों में और खेत के हासिल में अफजाइश बख़्शँगा, यहाँ तक कि तुम मलामत न उठाओगे। 31 तब तुम अपनी बुरी चाल चलन और बद्र आपाती को याद करोगे और अपनी बदकिरदारी व मक्खाती की वजह से अपनी नजर में घिनौने ठहरोगे। 32 मैं यह तुम्हारी खातिर नहीं करता हूँ, खुदावन्द खुदा फरमाता है, यह तुम को याद रहे। तुम अपनी राहों की वजह से खिजाल उठाओगे और शर्मिंदा हो, ऐ बनी इसाईल। 33 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: जिस दिन मैं तुम को तुम्हारी तमाम बदकिरदारी से पाक करूँगा, उसी दिन तुम को तुम्हारे शहरों में बसाऊँगा और तुम्हारे खण्डर तामीर हो जाएंगे। 34 और वह वीरान जर्मीन जो तमाम राह गुज़रों की नजर में वीरान पड़ी थी जोती जाएंगी। 35 और वह कहेंगे, कि ये सरज़मीन जो खारब पड़ी थी, बाग — ए — 'अदन की तरह हो गई, और उजाड और वीरान और खारब शहर मुहकम और आबाद हो गए। 36 तब वह कौमें जो तुम्हारे आसपास बाकी हैं, जानेंगी कि मैं खुदावन्द ने उजाड मकानों को तामीर किया है और वीराने को बाग बनाया है, मैं खुदावन्द ने फरमाया है और मैं ही कर दिखाऊँगा। 37 "खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि बनी — इसाईल मुझ से यह दरखावस्त भी कर सकेंगे, और मैं उनके लिए ऐसा करूँगा कि उनके लोगों को भेड — बकरियों की तरह फिरावान करूँगा। 38 जैसा पाक गल्ला था और जिस तरह येस्सलेम का गल्ला उसकी मुकर्रा 'ईदों में था, उसी तरह उजाड शहर आदिमियों के गोलों से मामूर होगे, और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ।"

37 खुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और उसने मुझे अपनी स्तर में उठा लिया

और उस बादी में जो हड्डियों से पुरी थी, मुझे उतार दिया। 2 और मुझे उनके आसपास चारों तरफ फिराया, और देख, वह बादी के मैदान में ब — कसरत और बहुत सूखी थी। 3 और उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ आदमजाद, क्या यह हड्डियों जिन्दा हो सकती हैं मैंने जबाब दिया, कि 'ऐ खुदावन्द खुदा, तू

ही जानता है। 4 फिर उसने मुझे फरमाया, तू इन हड्डियों पर नबुव्वत कर और इनसे कह, ऐ सर्खी हड्डियों, खुदावन्द का कलाम सुनो। 5 खुदावन्द खुदा इन हड्डियों को यूँ फरमाता है: कि मैं तुम्हरे अन्दर स्थ हालाँगा और तुम जिन्दा हो जाओगी। 6 और तुम पर नसे फैलाऊँगा और गोश चढ़ाऊँगा, और तुम को चमड़ा पहनाऊँगा और तुम में दम फँकँगा, और तुम जिन्दा होगी और जानेगी कि मैं खुदावन्द हूँ। 7 तब मैंने हुक्म के मुताबिक नबुव्वत की, और जब मैं नबुव्वत कर रहा था तो एक शेर हुआ, और देख, जलजला आया और हड्डियाँ आपस में मिल गईं, हर एक हड्डी अपनी हड्डी से। 8 और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि नसें और गोश उन पर चढ़ आए, और उन पर चमड़े की पोशिश हो गईं, लेकिन उनमें दम न था। 9 तब उसने मुझे फरमाया, नबुव्वत कर, तू हवा से नबुव्वत कर ऐ आदमजाद, और हवा से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि ऐ दम, तू चारों तरफ से आ और इन मक्कलों पर फँक कि जिन्दा हो जाएँ। 10 इसलिए मैंने हुक्म के मुताबिक नबुव्वत की और उनमें दम आया, और वह जिन्दा होकर अपने पाँव पर खड़ी हुईं; एक बहुत बड़ा लश्कर! 11 तब उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ आदमजाद, यह हड्डियाँ तमाम बनी — इसाईल हैं; देख, यह कहते हैं, 'हमारी हड्डियाँ सख्त गईं और हमारी उम्मीद जारी रही, हम तो बिल्कुल फना हो गए। 12 इसलिए तू नबुव्वत कर और इनसे कह खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि ऐ मेरे लोगों, देखो मैं तुम्हारी कब्रों को खोलूँगा और तुम को उनसे बाहर निकालूँगा और इसाईल के मूल्क में लाऊँगा। 13 और ऐ मेरे लोगों जब मैं तुम्हारी कब्रों को खोलूँगा और तुम को उनसे बाहर निकालूँगा, तब तुम जानेगे कि खुदावन्द मैं हूँ। 14 और मैं अपनी स्तर तुम में डालूँगा और तुम जिन्दा हो जाओगे, और मैं तुम को तुम्हारे मूल्क में बसाऊँगा, तब तुम जानेगे कि मैं खुदावन्द ने फरमाया और पूरा किया, खुदावन्द फरमाता है। 15 फिर खुदा वन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 16 कि 'ऐ आदमजाद, एक छड़ी ले और उस पर लिख, 'यहदाह और उसके रफीक बनी — इसाईल के लिए; फिर दूसरी छड़ी ले और उस पर यह लिख, 'इसाईल की छड़ी यस्फुक और उसके रफीक तमाम बनी इसाईल के लिए। 17 और उन दोनों को जोड़ दे कि एक ही छड़ी तेरे लिए हों, और वह तेरे हाथ में एक होंगी। 18 और जब तेरी कौम के लोग तुझ से पहुँचे और कहें, कि 'इन कामों से तेरा क्या मतलब है?' क्या तू हमें नहीं बताएगा?'' 19 तो तू उनसे कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, मैं यस्फुक की छड़ी को जो इसाईल के हाथ में है, और उसके रफीकों को जो इसाईल के कबीले हैं, लूँगा और यहदाह की छड़ी के साथ जोड़ दूँगा और उनको एक ही छड़ी बना दूँगा और वह मेरे हाथ में एक होंगी। 20 और वह छड़ियाँ जिन पर तू लिखता है, उनकी अँखों के सामने तेरे हाथ में होंगी। 21 और तू उनसे कहना, कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मैं बनी इसाईल को कौमों के बीच से जहाँ जहाँ बह गए हैं निकाल लाऊँगा और हर तरफ से उनको इकट्ठा करूँगा और उनको उनके मूल्क में लाऊँगा। 22 और मैं उनको उस मूल्क में इसाईल के पहाड़ों पर एक ही कौम बनाऊँगा, और उन सब पर एक ही बादशाह होगा, और वह आगे को न दो कौमें होंगे और न दो मम्लकतों में तकसीम किए जाएँगे। 23 और वह फिर अपने बुतों से और अपनी नफरत अन्गों जीजों से और अपनी खताकारी से, अपने आपको नापाक न कोरेंगे बल्कि मैं उनके तमाम धरों से, जहाँ उन्होंने गुनाह किया है, छड़ाऊँगा और उनको पाक करूँगा और वह मेरे लोग होंगे और मैं उनका खुदा हूँगा। 24 'और मेरा बन्दा दाऊँद उनका बादशाह होगा और उन सबका एक ही चरवाहा होगा, और वह मेरे हक्मों पर चलेंगे और मेरे क्रान्ति को मानकर उन पर 'अमल करेंगे। 25 और वह उस मूल्क में जो मैंने अपने बन्दा या 'कूब को दिया जिसमें तुम्हारे बाप दादा बसते थे, बरसेंगे और वह और उनकी औलाद और उनकी

औलाद की औलाद हमेशा तक उसमें सुकूनत करेंगे और मेरा बन्दा दाऊँद हमेशा के लिए उनका फरमारवा होगा। 26 और मैं उनके साथ सलामती का 'अहद बाध्यांगा जो उनके साथ हमेशा का 'अहद होगा, और मैं उनको बसाऊँगा और फिरावानी बख्खांगा और उनके बीच अपने हैकल को हमेशा के लिए काईम करूँगा। 27 मेरा खेमा भी उनके साथ होगा, मैं उनका खुदा हूँगा और वह मेरे लोग होंगे। 28 और जब मेरा हैकल हमेशा के लिए उनके बीच रहेगा तो कौमें जानेगी कि मैं खुदावन्द इसाईल को पाक करता हूँ।

38 और खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि 'ऐ आदमजाद, जज की तरफ जो माजूज की सरजमीन का है, और रोश और मसक और तबल का फरमारवा है, मुतवजिल हो और उसके खिलाफ नबुव्वत कर, 3 और कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि देख, ऐ जज, रोश और मसक और तबल के फरमारवा, मैं तेरा मुखालिफ हूँ। 4 और मैं तुझे फिरा दूँगा, और तेरे जबड़ों में आँखेंडे डालकर तुझे और तेरे तमाम लश्कर और घोड़ों और सवारों को, जो सब के सब मुसल्लल हाल लश्कर हैं, जो फरियाँ और सिपरे लिए हैं और सब के सब तेगजन हैं खीच निकालूँगा। 5 और उनके साथ फारस और कूश और फूत, जो सब के सब सिपर बरदार और खूबीपोश हैं, 6 जुमर और उसका तमाम लश्कर, और उत्तर की दूँ अतराफ के अहल — ए — तुजरमा और उनका तमाम लश्कर, या'नी बहुत से लोग जो तेरे साथ हैं। 7 तू तैयार हो और अपने लिए तैयारी कर, तू और तेरी तमाम जमा'अत जो तेरे पास जमा' हुई है, और तू उनका रहनुमा हो। 8 और बहुत दिनों के बाद तू याद किया जाएगा, और आखिरी बरसों में उस सरजमीन पर जो लत्वार के गलबे से छुड़ाई गई है और जिसके लोग बहुत सी कौमों के बीच से जमा' किए गए हैं, इसाईल के पहाड़ों पर जो पहले से वीरान थे, चढ़ आएगा; लेकिन वह तमाम कौम से आजाद है, और वह सब के सब अमन — ओ — अमान से सुकूनत करेंगे। 9 और तू चढ़ाई करेगा और अँखी की तरह आएगा, तब बादल की तरह जमीन को छिपाएगा, तू और तेरा तमाम लश्कर और बहुत से लोग तेरे साथ। 10 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि उस बक्त्र यूँ होगा कि बहुत से खयाल तेरे दिल में आँएँगे और तू एक बुरा मंसबा बाँधेगा; 11 और तू कहेगा, कि मैं देहात की सरजमीन पर हमला करूँगा, मैं उन पर हमला करूँगा जो राहत — ओ — आराम से बसते हैं, जिनकी न फर्सील है और न अड़बगे और न फाटक है। 12 ताकि तू लटे और माल को छीन ले, और उन वीरानों पर जो अब आबाद है, और उन लोगों पर जो तमाम कौमों में से जमा' हुए हैं, जो मवेशी और माल के मालिक हैं और जमीन की नाफ पर बसते हैं, अपना हाथ चलाए। 13 सबा और ददान और तरसीस के सौदागर और उनके तमाम जवान शेर — ए — बबर तुझ से पूछेंगे, 'क्या तू गारत करने आया है? क्या तू तेरे अपना गोल इसलिए जमा' किया है कि माल छीन ले, और चाँदी सोना लटे और मवेशी और माल ले जाए और बड़ी गनीमत हासिल करे। 14 'इसलिए, ऐ आदमजाद, नबुव्वत कर और जज से कह, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि जब मेरी उम्मत इसाईल, अमन से बर्सेगी क्या तुझे खबर न होंगी। 15 और तू अपनी जगह से उत्तर की दूँ अतराफ से आएगा, तू और बहुत से लोग तेरे साथ, जो सब के सब घोड़ों पर सवार होंगे एक बड़ी कौज और भारी लश्कर। 16 तू मेरी उम्मत इसाईल के सामने को निकलेगा और जमीन को बादल की तरह छिपा लेगा; यह आखिरी दिनों में होगा और तुझे अपनी सरजमीन पर चढ़ा लाऊँगा, ताकि कौमें मुझे जाने जिस वक्त मैं ऐ जज उनकी आँखों के सामने तुझसे अपनी तकदीस कराऊँ 17 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि क्या मैं वही नहीं जिसके बारे में मैंने पहले जमाने में अपने खिदमत गुजार इसाईली नवियों के ज़रिए, जिन्होंने उन दिनों में सालों साल तक नबुव्वत की फरमाया था कि मैं तुझे उन पर चढ़ा लाऊँगा?

18 और यूँ होगा कि जब जूज इमाईल की मम्लुकत पर चढ़ाई करेगा तो मेरा कहर मेरे चेहरे से नुमाया होगा, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 19 क्यूँकि मैंने अपनी गैरत और आतिशी कहर में फरमाया कि यकीनन उस रोजे इमाईल की सरजमीन में सख्त ज़लज़ल आएगा। 20 यहाँ तक कि समन्दर की मछलियाँ और आसमान के परिन्दे और मैदान के चरिन्दे, और सब कीड़े मकौड़े जो ज़मीन पर रेंगते फिरते हैं और तमाम इंसान जो इस ज़मीन पर हैं, मेरे सामने थरथराएँगे और पहाड़ पिर पड़ेंगे और किनारे बैठ जायेंगे और हर एक दीवार ज़मीन पर पिर पड़ेंगी। 21 और मैं अपने सब पहाड़ों से उस पर तलवार तलब करँगा, खुदावन्द खुदा फरमाता है, और हर एक इंसान की तलवार उसके भाई पर चलेगी। 22 और मैं बबा भेजकर और ख़ैरेजी करके उसे सजा दूँगा, और उस पर और उसके लश्करों पर और उन बहुत से लोगों पर जो उसके साथ हैं शिद्दत का मैं हूँ और बड़े — बड़े — औले और आग और गन्धक बरसाऊँगा। 23 और अपनी बुजुर्गी और अपनी तक़ीस कराऊँगा, और बहुत सी क्रौमों की नज़रों में मशहर होंगे और वह जानेगे कि खुदावन्द मैं हूँ।

39 इसलिए ऐ आदमजाद, तू जज के खिलाफ नव्युवत कर और कह, कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: देख, ऐ जूज, रोश और मसक और तबल के फरमारवा, मैं तेरा मुखालिक हूँ। 2 और मैं तुझे फिरा दूँगा और तुझे लिए फिरँगा और उत्तर की दूँ 'अतराफ से चढ़ा लाऊँगा और तझे इमाईल के पहाड़ों पर पहुँचाऊँगा। 3 और तेरी कमान तेरे बाँध हाथ से छुड़ा दूँगा और तेरे तीर तैर दहने हाथ से गिरा दूँगा। 4 तू इमाईल के पहाड़ों पर अपने सब लश्कर और हिमायतियों के साथ पिर जाएगा, और मैं तुझे हर किस्म के शिकारी परिन्दों और मैदान के दरिन्दों को दूँगा कि खा जाएँ। 5 तू खुले मैदान में रिंगे, क्यूँकि मैंने ही कहा, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 6 और मैं माजूज पर और उन पर जो समन्दरी मुल्कों में अमन से सुकूनत करते हैं, आग भेजूँगा और वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द हूँ। 7 और मैं अपने मुक़दिस नाम को अपनी उम्मत इमाईल में जाहिर करँगा, और फिर अपने मुक़दिस नाम की बेहरमती न होने दूँगा; और कौमे जानेंगी कि मैं खुदावन्द इमाईल का कुदूस हूँ। 8 देख, वह पहुँचा और बज़द में आया, खुदावन्द खुदा फरमाता है; यह वही दिन है जिसके जरिए मैंने फरमाया था। 9 तब इमाईल के शहरों के बसने वाले निकलेंगे और आग लगाकर हथियारों को जलाएँगे, यानी सिरपों और फरियों को, कमानों और तीरों को, और भालों और बर्छियों को, और वह सात बरस तक उनको जलाते रहेंगे। 10 यहाँ तक कि न वह मैदानों से लकड़ी लाएँगे और न जंगलों से काटेंगे क्यूँकि वह हथियार ही जलाएँगे, और वह अपने लटने वालों को लटेंगे और अपने गारत करने वालों को गारत करेंगे, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 11 और उसी दिन यूँ होगा कि मैं वहाँ इमाईल में जूज को एक कब्रिस्तान दूँगा, यानी रहगुरों की वादी जो समन्दर के पूरब में वहाँ जूज को और उसकी तमाम जमियत को दफन करेंगे, और जमियत — ए — जूज की वादी उसका नाम रख देंगे। 12 और सात महीनों तक बनी इमाईल उनको दफन करते रहेंगे ताकि मुल्क को साफ करें। 13 हाँ, उस मुल्क के सब लोग उनको दफन करेंगे, और यह उनके लिए उनका भी नाम होगा जिस रोज मेरी बड़ई होगी, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 14 और वह चन्द आदमियों को चुन लेंगे जो इस काम में हमेशा मशगूल रहेंगे, और वह ज़मीन पर से गुज़रते हुए रहगुरों की मदद से, उनको जो सतह — ए — ज़मीन पर पड़े हर गए हों, दफन करेंगे ताकि उसे साफ करें, पूरे सात महीनों के बाद तलाश करेंगे। 15 और जब वह मुल्क में से गुज़रे और उनमें से कोई किसी आदमी की हड्डी देखे, तो उसके पास एक निशान खड़ा करेंगा, जब तक दफन करने वाले जमियत — ए — जूज की वादी में उसे दफन न करें। 16 और शहर भी जमियत कहलाएगा। यूँ वह ज़मीन को पाक करेंगे।

17 और ऐ आदमजाद, खुदावन्द खुदा फरमाता है: कि हर किस्म के परिन्दे और मैदान के हर एक जानवर से कह, ज़मा' होकर आओ, मेरे उस ज़बीहे पर जिसे मैं तुम्हारे लिए जबह करता हूँ; हाँ, इमाईल के पहाड़ों पर एक बड़े ज़बीहे पर हर तरफ से ज़मा' हो, ताकि तुम गोशत खाओगे और ख़ून पियो। 18 तुम बहादुरों का गोशत खाओगे और ज़मीन के 'उमरा का ख़ून पियोगे, हाँ, मैंडो, बर्दी, बकरों और बैलों का वह सब के सब बसन के फर्बी हैं। 19 और तुम मेरे ज़बीहे की जिसे मैंने तुहारे लिए जबह किया यहाँ तक खाओगे कि सेर हो जाओगे, और इतना ख़ून पियोगे कि मस्त हो जाओगे। 20 और तुम मेरे दस्तरखान पर घोड़ों और सवारों से, और बहादुरों और तमाम ज़ंगीमर्दों से सेर होगे, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 21 'और मैं कौमों के बीच अपनी बुजुर्गी जाहिर करँगा और तमाम क्रोमें मेरी सजा को जो मैंने दी और मेरे हाथ को जो मैंने उन पर रखड़ा देखेंगे। 22 और बनी — इमाईल जानेंगे कि उस दिन से लेकर आगे को मैं ही खुदावन्द उनका खुदा हूँ। 23 और कौमें जानेंगी कि बनी — इमाईल अपनी बदकिरदारी की वजह से गुलामी में गए, क्यूँकि वह मुझ से बाबी हुए, इसलिए मैंने उनसे मुँह छिपाया; और उनको उनके दुश्मनों के हाथ में कर दिया, और वह सब के सब तलवार से कल्पत है। 24 उनकी नापाकी और खताकारी के मुताबिक, मैंने उनसे सुलक किया और उनसे अपना मुँह छिपाया। 25 लेकिन खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि अब मैं याक़ूब की गुलामी को खत्म करँगा, और तमाम बनी इमाईल पर रहम करँगा और अपने पाक नाम के लिए गयरू हूँगा। 26 और वह अपनी स्वार्वाई और तमाम खताकारी, जिससे वह मेरे गुनहगार हुए बर्दाशत करेंगे; जब वह अपनी सरजमीन में अमन से क्यायम करेंगे, तो कोई उनको न डराएगा। 27 जब मैं उनकी उम्रतों में से वापस लाऊँगा, और उनके दुश्मनों के मुल्कों से ज़मा' करँगा, और बहुत सी क्रौमों की नज़रों में उनके बीच मेरी तक़दीर होगी। 28 तब वह जानेंगे कि मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ, इसलिए कि मैंने उनको कौम के बीच गुलामी में भेजा और मैं ही ने उनको उनके मुल्क में ज़मा' किया और उनमें से एक को भी वहाँ न छोड़ा। 29 और मैं फिर कभी उनसे मुँह न छिपाऊँगा, क्यूँकि मैंने अपनी रुह बनी — इमाईल पर नाज़िल की है खुदावन्द खुदा फरमाता है।

40 हमारी गुलामी के पचचीसवें बरस के शुरू में और महीने की दसवीं तारीख को, जो शहर की तस्खीर का चौदहवाँ साल था, उसी दिन खुदावन्द का हाथ मुझ पर था, और वह मुझे बाँहे ले गया। 2 वह मुझे खुदा की रोयतों में इमाईल के मुल्क में ले गया और उसने मुझे एक बहुत बुलन्द पहाड़ पर उतारा, और उसी पर दक्षिण की तरफ जैसे एक शहर का सा नक्शा था। 3 जब वह मुझे वहाँ ले गया तो क्या देखता हूँ कि एक शरख़स है जिसकी झलक पीतल के जैसी है, और वह सन की डोरी और पैमाइश का सरकण्डा हाथ में लिए फाटक पर खड़ा है। 4 और उस शरख़स ने मुझे कहा, कि 'ऐ आदमजाद, अपनी आँखों से देख और कानों से सुन, और जो कुछ मैं तुझे दिखाऊँ उस सब पर ख़बर गौर कर, क्यूँकि तू इसी लिए यहाँ पहुँचाया गया है कि मैं यह सब कुछ तुझे दिखाऊँ; इसलिए जो कुछ तू देखत है, बनी इमाईल से बवान कर। 5 और क्या देखता हूँ कि घर के चारों तरफ दीवार है, और उस शरख़स के हाथ में पैमाइश का सरकण्डा है, छ: हाथ लम्बा और हर एक हाथ पूरे हाथ से चार उँगल बड़ा था; इसलिए उसने उस दीवार की चौड़ाई नापी, वह एक सरकण्डा बड़ा था और दूसरे आस्ताने का 'अर्ज़ भी एक सरकण्डा था। 6 तब वह पूरब स्था फाटक पर आया, और उसकी सीढ़ी पर चढ़ा और उस फाटक के आस्ताने को नापा, जो एक सरकण्डा चौड़ा था और दूसरे आस्ताने का 'अर्ज़ भी एक सरकण्डा था। 7 और हर एक कोठरी एक सरकण्डा लम्बी और एक सरकण्डा चौड़ी थी, और कोठरियों के बीच पाँच पाँच हाथ का फासिला था, और फाटक की डियोडी के पास अन्दर

की तरफ फाटक का आस्ताना एक सरकण्डा था। 8 और उसने फाटक के आँगन अन्दर से एक सरकण्डा नापी। 9 तब उसने फाटक के आँगन आठ हाथ नापी, और उसके सुतन दो हाथ और फाटक के आँगन अन्दर की तरफ थी। 10 और पूरब स्था फाटक की कोठरियाँ तीन इधर और तीन उधर थी, यह तीनों पैमाइश में बराबर थीं, और इधर — उधर के सुतनों का एक ही नाप था। 11 और उसने फाटक के दरवाजे की चौडाई दस हाथ और लम्बाई तेरह हाथ नापी। 12 और कोठरियों के आगे का हासिया हाथ भर इधर और हाथ भर उधर था, और कोठरियाँ छः हाथ इधर और छः हाथ उधर थी। 13 तब उसने फाटक की एक कोठरी की छत से दूसरी की छत तक पच्चीस हाथ चौड़ा नापा दरवाजे के सामने का दरवाजा। 14 और उसने सुतन साठ हाथ नापे और सहन के सुतन दरवाजे के चारों तरफ थे। 15 और मदखल के फाटक के सामने से लेकर, अन्दस्ती फाटक के आँगन तक पचास हाथ का फासिला था। 16 और कोठरियों में और उनके सुतनों में फाटक के अन्दर चारों तरफ झरके थे, वैसे ही आँगन के अन्दर भी चारों तरफ झरके थे, और सुतनों पर खजर की सूतें थीं। 17 फिर वह मुझे बाहर के सहन में ले गया, और क्या देखता हूँ कि कमरे हैं और चारों तरफ सहन में फर्श लगा था, और उस फर्श पर तीस कमरे हैं। 18 और वह फर्श यानी नीचे का फर्श फाटकों के साथ साथ बराबर लगा था। 19 तब उसने उसकी चौडाई नीचे के फाटक के सामने से अन्दर के सहन के आगे, पूरब और उत्तर की तरफ बाहर बाहर सौ हाथ नापी। 20 फिर उसने बाहर के सहन के उत्तर स्था फाटक की लम्बाई और चौडाई नापी। 21 और उसकी कोठरियाँ तीन इस तरफ और तीन उस तरफ और उसके सुतन और मेहराब पहले फाटक के नाप के मुताबिक थे; उसकी लम्बाई पचास हाथ और चौडाई पच्चीस हाथ थी। 22 और उसके दरीचे और आँगन और खजर के दरखत पूरब स्था फाटक के नाप के मुताबिक थे, और ऊपर जाने के लिए सात जीने थे; उसके आँगन उनके आगे थी। 23 और अन्दर के सहन का फाटक उत्तर स्था और पूरब स्था फाटकों के सामने था, और उसने फाटक से फाटक तक सौ हाथ नापा। 24 और वह मुझे दक्खिन की राह से ले गया, और क्या देखता हूँ कि दक्खिन की तरफ एक फाटक है, और उसने उसके सुतनों को और उसके आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक नापा। 25 और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ उन दरीचों की तरह दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ, चौडाई पच्चीस हाथ। 26 और उसके ऊपर जाने के लिए सात जीने थे, और उसके आँगन उनके आगे थी और सुतनों पर खजर की सूतें थीं, एक इस तरफ और एक उस तरफ। 27 और दक्खिन की तरफ अन्दस्ती सहन का फाटक था, और उसने दक्खिन की तरफ फाटक से फाटक तक सौ हाथ नापा। 28 और वह दक्खिनी फाटक की रास्ते से मुझे अन्दस्ती सहन में लाया, और इन्हीं नापों के मुताबिक उसने दक्खिनी फाटक को नापा। 29 और उसकी कोठरियों और उसके सुतनों और उसके आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक पाया और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ और चौडाई पच्चीस हाथ थी। 30 और आँगन चारों तरफ पच्चीस हाथ लम्बी और पाँच हाथ चौड़ी थी। 31 उसकी आँगन बैस्ती सहन की तरफ थी और उसके सुतनों पर खजर की सूतें थीं और ऊपर जाने के लिए आठ जीने थे। 32 और वह मुझे पूरब की तरफ अन्दस्ती सहन में लाया और इन्हीं नापों के मुताबिक फाटक को पाया। 33 और उसकी कोठरियों और सुतनों और आँगन को इन्हीं नापों के मुताबिक पाया, और उसमें और उसके आँगन में चारों तरफ दरीचे थे; लम्बाई पचास हाथ चौडाई पच्चीस हाथ थी। 34 और उसका आँगन बैस्ती सहन की तरफ था और उसके सुतनों पर इधर — उधर खजर की सूतें थीं, और ऊपर जाने के लिए आठ जीने थे। 35 और वह मुझे उत्तरी फाटक की तरफ ले गया और इन्हीं नापों के मुताबिक

उसे पाया। 36 उसकी कोठरियों और उसके सुतनों और उसके आँगन को जिनमें चारों तरफ दरीचे थे, लम्बाई पचास हाथ चौडाई पच्चीस हाथ थी। 37 और उसके सुतन बैस्ती सहन की तरफ थे, और उसके सुतनों पर इधर उधर खजर की सूतें थीं और ऊपर जाने के लिए आठ जीने थे। 38 और फाटकों के सुतनों के पास दरवाजेदार हजरा था, जहाँ सोखतनी कुर्बानियाँ धोते थे। 39 और फाटक के आँगन में दो मेजे इस तरफ और दो मेजे उस तरफ थीं, कि उन पर सोखतनी कुर्बानी और खत की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी जबह करें। 40 और बाहर की तरफ उत्तरी फाटक के मदखल के पास दो मेजे थीं, और फाटक की डगोड़ी की दूसरी तरफ दो मेजे। 41 फाटक के पास चार मेजे इस तरफ और चार उस तरफ थीं, यानी आठ मेजे जिन पर जबह करें। 42 सोखतनी कुर्बानी के लिए तराशे हुए पत्थरों की चार मेजे थीं, जो डेह हाथ लम्बी और डेह हाथ चौड़ी और एक हाथ ऊँची थीं, जिन पर वह सोखतनी कुर्बानी और जबह को जबह करने के हथियार रखते थे। 43 और उसके अन्दर चारों तरफ चार उंगल लम्बी अंकड़ियाँ लाई थीं और कुर्बानी का गोश मेजों पर था। 44 और अन्दस्ती फाटक से बाहर अन्दस्ती सहन में जो उत्तरी फाटक की जानिब था, गणे बालों के करपे थे और उनका स्ख दक्खिन की तरफ था, और एक पूरबी फाटक की जानिब था जिसका स्ख उत्तर दक्खिन की तरफ था। 45 और उसने मुझे से कहा, कि “यह कमरा जिसका स्ख दक्खिन की तरफ है, उन काहिनों के लिए है जो घर की निगहबानी करते हैं; 46 और वह कमरा जिसका स्ख उत्तर की तरफ है, उन काहिनों के लिए है जो मज़बह की मुहाफिजत में हाज़िर हैं; यह बनी सदूक है जो बनी लावी में से खुदावन्द के सामने आते हैं कि उसकी खिदमत करें।” 47 और उसने सहन को सौ हाथ लम्बा और सौ हाथ चौड़ा मुख्जा नापा और मज़बह घर के सामने था। 48 फिर वह मुझे घर के आँगन में लाया और आँगन को नापा; पाँच हाथ इधर पाँच हाथ उधर और फाटक की चौडाई तीन हाथ इस तरफ थी और तीन हाथ उस तरफ। 49 आँगन की लम्बाई बीस हाथ और चौडाई ग्यारह हाथ की और सीटी के जीने जिनसे उस पर चढ़ते थे और सुतनों के पास पील पाए थे, एक इस तरफ और एक उस तरफ।

41 और वह मुझे हैकल में लाया और सुतनों को नापा, छः हाथ की चौडाई एक तरफ और छः हाथ की दूसरी तरफ, यही खेमे की चौडाई थी। 2 और दरवाजे की चौडाई दस हाथ, और उसका एक पहलू पाँच हाथ का और दूसरा भी पाँच हाथ का था; और उसने उसकी लम्बाई चालीस हाथ और चौडाई बीस हाथ नापी। 3 तब वह अन्दर गया और दरवाजे की चौडाई साठ हाथ थी। 4 और उसने हैकल के सामने की लम्बाई को बीस हाथ और चौडाई को बीस हाथ नापा, और मुझे से कहा, कि “यही पाक — तरीन मकाम है। 5 और उसने घर की दीवार छः हाथ नापी, और पहलू के हर एक करपे की चौडाई घर के चारों तरफ चार हाथ थी। 6 और पहलू के कमरे तीन मंजिला थे; कमरे के ऊपर कमरा कतार में तीस, और वह उस दीवार में जो घर के चारों तरफ के कमरों के लिए थी, दाखिल किए गए थे ताकि मज़बूत हों; लेकिन वह घर की दीवार से मिले हुए न थे। 7 और वह पहलू पर के कमरे ऊपर तक चारों तरफ ज्यादा चौड़े होते जाते थे, क्योंकि घर चारों तरफ से ऊँचा होता चला जाता था। घर की चौडाई ऊपर तक बराबर थी, और ऊपर के कमरों का रास्ता बीच के कमरों के बीच से था। 8 और मैंने घर के चारों तरफ ऊँचा चबूतरा देखा, पहलू के कमरों की बुनियाद छः बड़े हाथ के पारे सरकाड़े की थी। 9 और पहलू के कमरों की बैस्ती दीवार की चौडाई पाँच हाथ थी, और जो जगह बाकी बीच वह घर के पहलू के कमरों के बीच से था। 10 और कमरों के बीच घर के चारों तरफ बीस हाथ का फासला था। 11 और पहलू के कमरों के दरवाजे उस खाली जगह की

तरफ थे, एक दरवाजा उत्तर की तरफ और एक दक्षिण की तरफ और खाली जगह की चौड़ाई चारों तरफ पाँच हाथ थी। 12 और वह 'इमारत जो अलग जगह के सामने पश्चिम की तरफ थी उसकी चौड़ाई सतर हाथ थी और उस 'इमारत की दीवार चारों तरफ पाँच हाथ मोटी और नब्बे हाथ लम्बी थी। 13 इसलिए उसने घर को सौ हाथ लम्बा नापा और अलग जगह और 'इमारत उसकी दीवारों के साथ सौ हाथ लम्बी थी। 14 नेज़, घर के सामने की तरफ उस पूर्वी जानिब की अलग जगह की चौड़ाई सौ हाथ थी। 15 और अलग जगह के सामने की 'इमारत की लम्बाई को, जो उसके पीछे थी, और उसकी जानिब के बरामदे इस तरफ से और उस तरफ से, और अन्दर की तरफ हैकल को और सहन के अँगनों को उसने सौ हाथ नापा। 16 आस्तानों और झोरकों और चारों तरफ के बरामदों को जो सहमंजिला और आस्तानों के सामने थे, और चारों तरफ लकड़ी से मढ़े हुए थे, और जमीन से खिड़कियों तक और खिड़कियों भी मढ़ी हुई थीं। 17 दरवाजे के ऊपर तक और अन्दरस्नी घर तक और उसके बाहर भी, चारों तरफ की तमाम दीवार तक घर के अन्दर बाहर सब ठीक अन्दाजे से थे। 18 और कर्सी और खजूर बने थे, और एक खजूर दो कर्सियों के बीच में था और हर एक कर्सी के दो चेहरे थे। 19 चुनौते एक तरफ इंसान का चेहरा खजूर की तरफ था, और दूसरी तरफ जवान शेर — ए — बबर का चेहरा भी खजूर की तरफ था; घर की चारों तरफ इसी तरह का काम था। 20 जमीन से दरवाजे के ऊपर तक, और हैकल की दीवार पर कर्सी और खजूर बने थे। 21 और हैकल के दरवाजे के सुनन चहार गोशा थे, और हैकल के सामने की सूरत भी इसी तरह की थी। 22 मजबह लकड़ी का था, उसकी ऊँचाई तीन हाथ और लम्बाई दो हाथ थी, और उसके कोने और उसकी कुर्सी और उसकी दीवारों लकड़ी की थी, और उसने मुझ से कहा, यह खुदावन्द के सामने की मेज है। 23 और हैकल और हैकल के दो दो दरवाजे थे। 24 और दरवाजों के दो दो पल्ले थे जो मुड़ सकते थे; दो पल्ले एक दरवाजे के लिए, और दो दूसरे के लिए। 25 और उन पर यानी हैकल के दरवाजों पर कर्सी और खजूर बने थे, जैसे कि दीवारों पर बने थे और बाहर के अँगन के स्ख पर तख्ता बन्दी थी। 26 और अँगन की अन्दरस्नी और बैस्ती जानिब पहल में झोरके और खजूर के दरखत बने थे, और हैकल के पहल के कर्मों और तख्ता बन्दी की यही सूरत थी।

42 फिर वह मुझे उत्तरी रास्ते से बैस्ती सहन में ले गया, और उस कोठरी में जो अलग जगह और 'इमारत के सामने उत्तर की तरफ थी ले आया। 2 सौ हाथ की लम्बाई की जगह के सामने उत्तरी दरवाजा था, और उसकी चौड़ाई पचास हाथ थी। 3 बीस हाथ के सामने जो अन्दरस्नी सहन के लिए थे, और बैस्ती सहन के फर्श के सामने कोठरियाँ तीन तबकों में एक दूसरे के सामने थी। 4 और कोठरियों के सामने अन्दर की तरफ दस हाथ चौड़ा रास्ता था, और एक रास्ता एक हाथ का और उनके दरवाजे उत्तर की तरफ थे। 5 ऊपर की कोठरियाँ छोटी थीं, कर्मूँक उनके बरामदों ने 'इमारत की निचली और बीच की मंजिल के सामने इनसे ज्यादा जगह रोक ली थी। 6 कर्मूँक वह तीन दर्जों की थी, लेकिन उनके सुनन सहन के सुनों की तरह न थे; इसलिए वह निचली और बीच मंजिल से तंग थी। 7 और कोठरियों के पास की बैस्ती सहन की तरफ, कोठरियों के सामने की बैस्ती दीवार पचास हाथ लम्बी थी। 8 कर्मूँक बैस्ती सहन की कोठरियों की लम्बाई पचास हाथ थी, और हैकल के सामने सौ हाथ की लम्बाई थी। 9 और उन कोठरियों के नीचे पूर्ब की तरफ वह मदखल था, जहाँ से बैस्ती सहन से दाखिल होते थे। 10 पूर्वी सहन की चौड़ी दीवार में और अलग जगह और उस 'इमारत के सामने कोठरियाँ थीं। 11 और उनके सामने एक ऐसा रास्ता था, जैसा उत्तर की तरफ की कोठरियों के सामने था;

उनकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर थी, और उनके तमाम मध्यरज उनकी तरतीब और उनके दरवाजों के मुताबिक थे। 12 और दक्षिण की तरफ की कोठरियों के दरवाजों के मुताबिक एक दरवाजा रास्ते के सिरे पर था, यानी सीधी दीवार के रास्ते पर पूर्ब की तरफ जहाँ से उनमें दाखिल होते थे। 13 और उसने मुझ से कहा, कि "उत्तरी और दक्षिणी कोठरियाँ जो अलग जगह के मुकाबिल हैं पाक कोठरियाँ हैं जहाँ काहिन जो खुदावन्द के सामने जाते हैं अकदस चीज़ खायेंगे और अकदस चीज़ और नज़र की कुर्बानी और खत्ता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी वहाँ रखेंगे, कर्मूँक वह मकान पाक है। 14 जब काहिन दाखिल हो तो वह हैकल से बैस्ती सहन में न जाएँ बल्कि अपनी खिदमत के लिबास वही उत्तर दें कर्मूँक वह पाक है, और वह दूसरे कपड़े पहन कर 'आम मकान में जाएँ।' 15 फिर जब वह अन्दरस्नी घर को नाप चुका, तो मुझे उस फाटक के रास्ते से लाया जिसका स्ख पूर्ब की तरफ पाँच सौ सरकण्डे नापे। 17 उसने पैमाइश के सरकण्डे से उत्तर की तरफ चारों तरफ पाँच सौ सरकण्डे नापे। 18 उसने पैमाइश के सरकण्डे से दक्षिण की तरफ भी पाँच सौ सरकण्डे नापे। 19 उसने पच्छिम की तरफ मुड़ कर पैमाइश के सरकण्डे से पाँच सौ सरकण्डे नापे। 20 उसने उसको चारों तरफ से नापा, उसकी चारों तरफ एक दीवार पाँच सौ सरकण्डे लम्बी और पाँच सौ चौड़ी थी, ताकि पाक को 'आम से जुटा करे।

43 फिर वह मुझे फाटक पर ले आया, यानी उस फाटक पर जिसका स्ख पूर्ब की तरफ है; 2 और क्या देखता है कि इसाईल के खुदा का जलाल पूर्ब की तरफ से आया, और उसकी आवाज सैलाल के शेर के जैसी थी, और जमीन उसके जलाल से मुनब्बर हो गई। 3 और यह उस ख्वाब की नुमाइश के मुताबिक था जो मैंने देखा था, हाँ, उस ख्वाब के मुताबिक जो मैंने उस वक्त देखा था जब मैं शहर को बर्बाद करने आया था, और यह रोयतें उस ख्वाब की तरह थी जो मैंने नहर — ए — किबार के किनारे पर देखा था; तब मैं मुँह के बल गिरा। 4 और खुदावन्द का जलाल उस फाटक की राह से, जिसका स्ख पूर्ब की तरफ है हैकल में दाखिल हआ। 5 और रुह ने मुझे उठा कर अन्दरस्नी सहन में पहुँचा दिया, और क्या देखता है कि हैकल खुदावन्द के जलाल से मांगू है। 6 और मैंने किसी की आवाज सुनी, जो हैकल में से मेरे साथ बांत करता था, और एक शख्स मेरे पास खड़ा था। 7 और उसने मुझे फरमाया, कि 'ऐ आदमजाद, यह मेरी तख्तागाह और मेरे पाँच की कुर्सी है जहाँ मैं बनी — इसाईल के बीच हमेशा तक रहँगा और बनी इसाईल और उनके बादशाह फिर कभी मेरे पाक नाम को अपनी बदकारी और अपने बादशाहों की लाशों से उनके मरने पर नापाक न करेंगे। 8 कर्मूँक वह अपने आस्ताने में आस्तानों के पास, और अपनी चौखटें मेरी चौखटों के पास लगाते थे, और मेरे और उनके बीच सिर्फ एक दीवार थी; उन्होंने अपने उन घिनौने कामों से जो उन्होंने किए मेरे पाक नाम को नापाक किया, इसलिए मैंने अपने कहर में उनको हलाक किया। 9 आगरे अब वह अपनी बदकारी और अपने बादशाहों की लाशें मुझ से दूर कर दें, तो मैं हमेशा तक उनके बीच रहँगा। 10 'ऐ आदमजाद, तू बनी — इसाईल को यह घर दिखा, ताकि वह अपनी बदकिरदारी से शर्मिन्दा हो जाएँ और इस नम्रे को नापें। 11 और अगर वह अपने सब कामों से शर्मिन्दा हों, तो उस घर का नक्शा और उसकी तरतीब और उसके मध्यरज और मदखल और उसकी तमाम शक्ति और उनके कुल हक्मों और उसकी पूरी वजह और तमाम कवानीन उनको दिखा, और उनकी आँखों के सामने उसको लिख, ताकि वह उसका कुल नक्शा और उसके तमाम हक्मों को मानकर उन पर 'अमल करें। 12 इस घर का कानून यह है कि इसकी तमाम सरहदें पहाड़ की चौटी पर और

इसके चारों तरफ बहुत पाक होंगी; देख, यही इस घर का कानून है। 13 'और हाथ के नाप से मजबूत के यह नाप है, और इस हाथ की लम्बाई एक हाथ चार उँगल है। पाया एक हाथ का होगा, और चौड़ाई एक हाथ और उसके चारों तरफ बालिश्त भर चौड़ा हाशिया, और मजबूत का पाया यही है। 14 और जमीन पर के इस पाये से लेकर नीचे की कुर्सी तक दो हाथ, और उसकी चौड़ाई एक हाथ और छोटी कुर्सी से बड़ी कुर्सी तक चार हाथ और चौड़ाई एक हाथ। 15 और ऊपर का मजबूत चार हाथ का होगा, और मजबूत के ऊपर चार सीधी होंगे। 16 और मजबूत बारह हाथ लम्बा होगा और बारह हाथ चौड़ा मुरब्बा। 17 और कुर्सी चौदह हाथ लम्बी और चौदह हाथ चौड़ी मुरब्बा' और चारों तरफ उसका किनारा आधा हाथ, उसका पाया चारों तरफ एक हाथ और उसका जीना पूरब रु होगा। 18 और उसने मुझ से कहा, ऐ आदमजाद, खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि मजबूत के यह हक्म उस दिन जारी होंगे जब वह उसे बनाएँ, ताकि उस पर सोखतनी कुर्बानी पेश करें और उस पर खन्न छिड़के। 19 और तू लाली काहिनों को जो सदूक की नसल से हैं, जो मेरी खिदमत के लिए मेरे सामने आते हैं, खता की कुर्बानी के लिए बछड़ा देना, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 20 और तू उसके खुन में से लेना और मजबूत के चारों सीधीं पर, उसकी कुर्सी के चारों कोनों पर और उसके चारों तरफ के हाशिये पर लगाना; इसी तरह कफ़कारा देकर उसे पाक — ओ — साफ करना। 21 और खता की कुर्बानी के लिए बछड़ा लेना, और वह घर की मुकर्रर जगह में हैकल के बाहर जलाया जाएगा। 22 और तू दूसरे दिन एक बेरेब कवरा खता की कुर्बानी के लिए पेश करना, और वह मजबूत को कफ़कारा देकर उसी तरह पाक करेंगे, जिस तरह बछड़े से पाक किया था। 23 और जब तू उसे पाक कर चुके तो एक बेरेब बछड़ा और गल्ले का एक बेरेब मेंदा पेश करना। 24 और तू उनको खुदावन्द के सामने लाना और काहिन उनपर नमक छिड़के और उनको सोखतनी कुर्बानी के लिए खुदावन्द के सामने पेश करें। 25 और तू सात दिन तक हर रोज एक बकरा खता की कुर्बानी के लिए तैयार कर रखना, वह एक बछड़ा और गल्ले का एक मेंदा भी जो बेरेब हो तैयार कर रखें। 26 सात दिन तक वह मजबूत को कफ़कारा देकर पाक — ओ — साफ करेंगे और उसको मरखस करेंगे। 27 और जब यह दिन पूरे होंगे, तो यूँ होगा कि आठवें दिन और आइन्दा काहिन तुम्हारी सोखतनी कुर्बानियों को और तुम्हारी सलामती की कुर्बानियों को मजबूत पर पेश करेंगे, और मैं तुम को कुबल करूँगा; खुदावन्द खुदा फरमाता है।

44 वह वह मुझको हैकल के बैस्ती फाटक के रास्ते से, जिसका स्ख पूरब की तरफ है वापस लाया, और वह बन्द था। 2 और खुदावन्द ने मुझे फरमाया, कि "यह फाटक बन्द रहेगा और खोला न जाएगा, और कोई इंसान इससे दाखिल न होगा; चूँकि खुदावन्द इसाईल का खुदा इससे दाखिल हुआ है, इसलिए यह बन्द रहेगा। 3 मगर फरमारवाँ इसलिए कि फरमारवाँ है, खुदावन्द के सामने रोटी खाने को इसमें भेटेगा, वह इस फाटक के आस्ताने के रास्ते से अन्दर आएगा, और इसी रास्ते से बाहर जाएगा।" 4 फिर वह मुझे उत्तरी फाटक के रास्ते से हैकल के सामने लाया, और मैंने पिगाह की और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द के जलाल ने खुदावन्द के घर को मार्पू कर दिया; और मैं मूँह के बल गिरा। 5 और खुदावन्द ने मुझे फरमाया, ऐ आदमजाद, खब गैर कर और अपनी आँखों से देख, और जो कुछ खुदावन्द के घर के हक्मों और कवानीन के जरिए तुझ से कहता हूँ अपने कानों से सुन, और घर के मदखल को और हैकल के सब मरज़ों को खयाल में रख। 6 और तू बनी इसाईल के बाणी लोगों से कहना कि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता कि ऐ बनी इसाईल तुम अपनी मकस्त्तात को अपने लिए काफी समझो। 7 चुनाँचे जब तुम मेरी

रोटी और चबीं और खन अदा करते थे, तो दिल के नामखनून और जिस्म के नामखनून अजनबीजादों को मेरी हैकल में लाए, ताकि वह मेरी हैकल में आकर मेरे घर को नापाक करें, और उन्होंने तुम्हारे तमाम नफरतअगेज कामों की बजह से मेरे 'अहद को तोड़ा। 8 और तुम ने मेरी पाक चीजों की हिफाजत न की, बल्कि तुम ने गैरों को अपनी तरफ से मेरी हैकल में निगहबान मुकर्रर किया। 9 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि उन अजनबीजादों में से जो बनी इसाईल के बीच हैं, कोई दिल का नामखनून या जिस्म का नामखनून अजनबी जादा मेरी हैकल में दाखिल न होगा। 10 और बनी लाली जो मुझ से दूर हो गए जब इसाईल गुमराह हुआ, चूँकि वह अपने बुतों की पैरवी करके मुझ से गुमराह हुए वह भी अपनी बदकिरदारी की सजा पाएँगे। 11 तोभी वह मेरी हैकल में खादिम होंगे और मेरे घर के फाटकों पर निगहबानी करेंगे और मेरे घर में खिदमत गुजारी करेंगे; वह लोगों के लिए सोखतनी कुर्बानी और ज़बीहा जबह करेंगे और उनके सामने उनकी खिदमत के लिए खड़े रहेंगे। 12 चूँकि उन्होंने उनके लिए खुदों की खिदमत की और बनी इसाईल के लिए बदकिरदारी में ठोकर का जरिए अह हुए, इसलिए मैंने उन पर हाथ चलाया और वह अपनी बदकिरदारी की सजा पाएँगे; खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: 13 और वह मेरे नज़दीक न आ सकेंगे कि मेरे सामने कहानत करें, न वह मेरी पाक चीजों के पास आएँगे यांनी पाक तरीन चीजों के पास; बल्कि वह अपनी स्वसाइ उठायेंगे और अपने यिनौने कामों की, जो उन्होंने किए हैं सजा पाएँगे। 14 तोभी मैं उनको हैकल की हिफाजत के लिए और उसकी तमाम खिदमत के लिए, और उस सब के लिए जो उसमें किया जाएगा, निगहबान मुकर्रर करँगा। 15 लेकिन लाली काहिन यांनी बनी सदूक जो मेरी हैकल की हिफाजत करते थे, जब बनी इसाईल मुझ से गुमराह हो गए, मेरी खिदमत के लिए मेरे नज़दीक आएँगे और मेरे सामने खड़े रहेंगे ताकि मेरे सामने चबीं और खन पेश करेंगे, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 16 वही मेरे हैकल में दाखिल होंगे और वही खिदमत के लिए मेरी मेज के पास आएँगे और मेरे अपानत दाहोंगे। 17 और यूँ होगा कि जिस वक्त वह अन्दरूनी सहन के फाटकों से दाखिल होंगे, तो कतानी लिबास से मूलब्बस होंगे, और जब तक अन्दरूनी सहन के फाटकों के बीच और घर में खिदमत करेंगे कोई ऊनी चीज न पहनेंगे। 18 वह अपने सिरों पर कतानी 'अमामे और कमरों पर कतानी पायजामे पहनेंगे, और जो कुछ पसनी के जरिए हो उसे अपनी कमर पर न बँधें। 19 और जब बैस्ती सहन में यांनी 'अबाम के बैस्ती सहन में निकल आएँ, तो अपनी खिदमत की पोशाक उतार कर पाक कमरों में रखेंगे; और दूसरी पोशाक पहनेंगे, ताकि अपने लिबास से 'अबाम की तकदीस न करें। 20 और वह न सिर मुंदाएँगे और न बाल बढ़ाएँगे, वह सिर्फ अपने सिरों के बाल कतराएँगे। 21 और जब अन्दरूनी सहन में दाखिल हों, तो कोई काहिन शराब न पिए। 22 और वह बेवा या मुत्तलका से ब्याह न करेंगे, बल्कि बनी — इसाईल की नसल की कुँवारियों से या उस बेवा से जो किरी काहिन की बेवा हो। 23 और वह मेरे लोगों को पाक और 'अमाम में फर्क बताएँगे, और उनको निजस और तहिर में इमित्याज़ करना सिखाएँगे। 24 और वह झगड़ों के फैसले के लिए खड़े होंगे, और मेरे हक्मों के मूताबिक 'अदालत करेंगे, और वह मेरी तमाम मुकर्रा 'ईदों में मेरी शरी अत और मेरे कानून पर 'अमल करेंगे, और मेरे सबतों को पाक जानेंगे। 25 और वह किसी मूर्दे के पास जाने से अपने आपको नापाक न करेंगे; मगर सिर्फ बाप या माँ या बेटे या बेटी या भाई या कुँवारी बहन के लिए वह अपने आपको नापाक कर सकते हैं। 26 और वह उसके पाक होने के बाद उसके लिए और सात दिन शमार करेंगे, 27 और जिस रोज वह हैकल के अन्दर अन्दरूनी सहन में खिदमत करने को जाए, तो अपने लिए खता की कुर्बानी पेश करेंगा; खुदावन्द खुदा फरमाता है। 28 और उनके

लिए एक मीरास होगी मैं ही उनकी मीरास हूँ, और तुम इसाईल में उनकी कोई मिलिकियत न देना — मैं ही उनकी मिलिकियत हूँ। 29 और वह नजर की कुर्बानी और खता की कुर्बानी और जुर्म की कुर्बानी खाएंगे, और हर एक चीज़ जो इसाईल में मध्यसूस की जाए उन ही की होगी। 30 और सब पहले फलों का पहला और तुम्हारी तमाम चीजों की हर एक कुर्बानी काहिन के लिए हो, और तुम अपने पहले गुर्थ आटे से काहिन को देना, ताकि तैरे घर पर बरकत हो। 31 आगर वह जो अपने आप ही मर गया हो या दरिन्दों का फाड़ा हुआ, क्या परिन्द क्या चरिन्द, काहिन उसे न खाए।

45 और जब तुम जमीन को पचीं डाल कर मीरास के लिए तकसीम करो तो

उसका एक पाक हिस्सा खुदावन्द के सामने हिदिया देना उसकी लम्बाई पच्चीस हजार और चौडाई दस हजार होगी वह अपने चारों तरफ की तमाम हदों में पाक होगा। 2 उसमें से एक कितांआ जिसकी लम्बाई पाँच सौ और चौडाई पाँच सौ, जो चारों तरफ बराबर है हैकल के लिए होगा, और उसके अंतरे के लिए चारों तरफ पचास पचास हाथ की चौडाई होगी। 3 और तु इस पैमाइश की पच्चीस हजार की लम्बाई और दस हजार की चौडाई नापेगा और उसमें हैकल होगा जो बहुत पाक है। 4 जमीन का यह पाक हिस्सा उन काहिनों के लिए होगा जो हैकल के खादिम हैं, और जो खुदावन्द के सामने खिदमत करने को आते हैं, और यह मकाम उनके घरों के लिए होगा, और हैकल के लिए पाक जाह होगी। 5 और पच्चीस हजार लम्बा और दस हजार चौड़ा, बनी लावी हैकल के खादिमों के लिए होगा, ताकि बीस बस्तियों की जगह उनकी मिल्यकित हो। 6 और तुम शहर का हिस्सा पाँच हजार चौड़ा और पच्चीस हजार लम्बा हैकल के हिदिये वाले हिस्से के पास मुकर्रर करना, यह तमाम बनी इसाईल के लिए होगा। 7 और पाक हिदिये वाले हिस्से की तरफ शहर के हिस्से की दोनों तरफ, पाक हिदिये वाले हिस्से के सामने और शहर के हिस्से के सामने दक्खिनी गोशे मारिब की तरफ और पूर्वी गोशे पूरब की तरफ फरमरवाँ के लिए होगा; और लम्बाई में पच्छिमी सरहद से पूर्वी सरहद तक उन हिस्सों में से एक के सामने होगा। 8 इसाईल के बीच जमीन में से उसका यही हिस्सा होगा, और मेरे हाकिम फिर मेरे लोगों पर सितम न करेंगे; और जमीन को बनी — इसाईल में उनके कर्बाले के मुताबिक तकसीम करेंगे। 9 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि ऐ इसाईल के हाकिमों, तुम्हरे लिए यही काफी है, जूल्म और लूट मार को दूँ करो, 'अदालत — ओ — सदाकत को' 'अमल में लाओ, और मेरे लोगों पर से अपनी ज़ियादिती को खत्म करो; खुदावन्द खुदा फरमाता है। 10 और तुम पूरी तरज़ू और पूरा एफा और पूरा बत रखड़ा करो। 11 एफा और बत एक ही बजन का हो, ताकि बत में खोमर का दसवाँ हिस्सा हो; और एफा भी खोमर का दसवाँ हिस्सा हो, उसका अन्दाजा खोमर के मुताबिक हो। 12 और मिस्काल बीस जीरा हो; और बीस मिस्काल, पच्चीस मिस्काल, पन्द्रह मिस्काल का तुम्हारा माना होगा। 13 'और हिदिया जो तुम पेश करोगे फिर यह है: गेहँ के खोमर से एफा का छटा हिस्सा, और जौ के खोमर से एफा का छटा हिस्सा देना। 14 और तेल यानी तेल के बत के बारे में यह हुक्म है कि तुम कुर में से, जो दस बत का खोमर है, एक बत का दसवाँ हिस्सा देना कर्मैकि खोमर में दस बत है। 15 और गल्ला में से हर दोसों पीछे इसाईल की सेराब चरागाह का एक बर्ग नजर की कुर्बानी के लिए और सलामती की कुर्बानी के लिए ताकि उनके लिए कफ़क़ार हो खुदावन्द फरमाता है। 16 मुल्क के सब लोग उस फरमारवाँ के लिए जो इसाईल में हैं यही हिदिया देंगे। 17 और फरमारवाँ सोखतनी कुर्बानियाँ और नजर की कुर्बानियाँ और तपावन 'अहदों और नए चाँद के वक्तों और सबतों और बनी इसाईल की तमाम मुकर्रा' ईदों में देगा वह खता की कुर्बानी और नजर की कुर्बानी और सोखतनी कुर्बानी और सलामती

की कुर्बानियाँ बनी इसाईल के कफ़क़ारके लिए तैयार होगा। 18 खुदावन्द खुदा यूँ फरमात है कि पहले महीने की पहली तारीख को तु एक बे 'ऐब बछड़ा लेना और हैकल को पाक करना 19 और काहिन खता की कुर्बानी के बछड़े का खन लेगा और उसमें से कुछ घर के सूतनों पर और मजबह की कुसीं के चारों कोनों पर और अंदेस्नी सहन के दरवाजे की चौखटों पर लगाएगा। 20 और तु महीने की सातवीं तारीख को हर एक के लिए जो खता करें और उसके लिए भी जो नादान है ऐसा ही करेगा इसी तरह तुम घर का कफ़क़ार दिया करोगे। 21 तुम पहले महीने की चौदाई तारीख को 'ईद फसह मनाना जो सात दिन की 'ईद है और उसमें बेखरीयी रोटी खाई जाएगी। 22 और उसी दिन फरमारवाँ अपने लिए और तमाम अहल — ए — मम्लुकत के लिए खता की कुर्बानी के बास्ते एक बछड़ा तैयार कर रखेगा। 23 और 'ईद के सातों दिन में वह हर रोज यानी सात दिन तक सात बे'ऐब बछड़े और सात मेंदे मुह्यत्या करेगा ताकि खुदावन्द के सामने सोखतनी कुर्बानी हों और हर रोज खता की कुर्बानी के लिए एक बकरा। 24 और हर एक बछड़े के लिए एक एफा भर नजर की कुर्बानी और हर मेंदे के लिए एक एफा और फ़ी एफा एक हीन तेल तैयार करेगा। 25 सातवें महीने की पन्दरीं तारीख को भी वह 'ईद के लिए जिस तरह से उसने इन सात दिनों में किया था तैयारी करेगा खता की कुर्बानी और सोखतनी कुर्बानी और नजर की कुर्बानी और तेल के मुताबिक।

46 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है, कि अन्दर्स्नी सहन का फाटक जिसका

स्ख पूरब की तरफ है, काम काज के छ: बन्द रहेगा; लेकिन सबत के दिन खोला जाएगा, और नए चाँद के दिन भी खोला जाएगा। 2 और फरमारवा बैस्नी फाटक के आस्ताने के गास्ते से दाखिल होगा, फाटक की चौखट के पास खड़ा रहेगा; और काहिन उसकी सोखतनी कुर्बानी और उसकी सलामती की कुर्बानियाँ पेश करेंगे, वह फाटक के आस्ताने पर सिज्दा करके बाहर निकलेगा लेकिन फाटक शाम तक बन्द न होगा। 3 और मुल्क के लोग उसी फाटक के दरवाजे पर, सबतों और नए चाँद के वक्तों में खुदावन्द के सामने सिज्दा किया करेंगे 4 और सोखतनी कुर्बानी जो फरमारवा सबत के दिन खुदावन्द के सामने पेश करेगा, छ: बे'ऐब बर्ग और एक बे'ऐब मेंदा, 5 और नजर की कुर्बानी मेंदे के लिए एक एफा और बर्ग के लिए नजर की कुर्बानी उसकी तौफ़ीक के एक एफा के लिए एक हीन तेल। 6 और नए चाँद के बोर्ड के रोज एक बे'ऐब बछड़ा और छ: बर्ग और एक मेंदा, सब के सब बे'ऐब 7 और वह नजर की कुर्बानी तैयार करेगा यानी बछड़े के लिए एक एफा और मेंदे के लिए एक एफा और बर्ग के लिए उसकी तौफ़ीक के मुताबिक, हर एक एफा के लिए एक हीन तेल। 8 जब फरमारवा अन्दर आए, फाटक के आस्ताने के गास्ते से दाखिल होगा और उसी गास्ते से निकलेगा। 9 लेकिन जब मुल्क के लोग मुकर्रा ईदों के वक्त खुदावन्द के सामने हाज़िर होंगे, जो उत्तरी फाटक के गास्ते से बाहर जाएगा, जो दक्खिनी फाटक के गास्ते से बाहर आता है वह उत्तरी फाटक के गास्ते से बाहर जाएगा; जिस फाटक के गास्ते से वह अदान आया उससे बाहर न जाएगा। 10 और जब वह अन्दर जाएंगे तो फरमारवा भी उनके बीच होकर जाएगा, और जब वह बाहर निकलेंगे तो सब इकट्ठे जाएंगे। 11 और ईदों और मेंदे के लिए एक एफा होगी, और बर्गों के लिए उसकी तौफ़ीक के मुताबिक और हर एक एफा के लिए एक हीन तेल। 12 और जब फरमारवा रजा की कुर्बानी तैयार करे यानी सोखतनी कुर्बानी या सलामती की कुर्बानी खुदावन्द के सामने रजा की कुर्बानी के तैर पर लाए तो वह फाटक जिसका स्ख पूरब की तरफ उसके लिए खोला जाएगा और सबत के दिन की

तरह वह अपनी सोखतनी कुर्बानी और सलामती की कुर्बानी पेश करेगा, तब वह बाहर निकल आएगा और उसके निकलने के बाद फाटक बन्द किया जाएगा। 13 तो हर रोज खुदावन्द के सामने पहले साल का एक बेंगेख बर्बा सोखतनी कुर्बानी के लिए पेश करेगा, तू हर सबह पेश करेगा। 14 और तू उसके साथ हर सबह नजर की कुर्बानी पेश करेगा या'नी एका का छटा हिस्सा, और ऐसे के साथ मिलाने को तेल के हीन की एक तिहाई, दाइमी हुक्म के मुताबिक हमेशा के लिए खुदावन्द के सामने यह नजर की कुर्बानी होगी। 15 इसी तरह वह बर्बे और नजर की कुर्बानी और तेल हर सबह हमेशा की सोखतनी कुर्बानी के लिए अदा करेगे। 16 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि अगर फरमारवा अपने बेटों में से किसी को कोई हदिया दे, वह उसकी मीरास उसके बेटों की होगी, वह उनका मौस्सी माल है। 17 लेकिन अगर वह अपने गुलामों में से किसी को अपनी मीरास में से हदिया दे, तो वह आजादी के साल तक उसका होगा; उसके बाद फिर फरमारवा का हो जाएगा। मगर उसकी मीरास उसके बेटों के लिए होगी। 18 और फरमारवा लोगों की मीरास में से जल्म करके न लेगा, ताकि उनको उनकी मिलिकियत से बेदखल करें; लेकिन वह अपनी ही मिलिकियत में से अपने बेटों को मीरास देगा, ताकि मेरे लोग अपनी अपनी मिलिकियत से जुदा न हो जाएँ। 19 फिर वह मुझे उस मदखल के रास्ते से जो फाटक के पहलू में था, काहिनों के पाक कमरों में जिनका सख उत्तर की तरफ था, लाया और क्या देखता हूँ कि पच्छिम की तरफ पीछे कुछ खाली जगह है। 20 तब उसने मुझे फरमाया, देख, यह वह जगह है जिसमें काहिन जुर्म की कुर्बानी और खता की कुर्बानी को जोश देंगे और नजर की कुर्बानी पकायेंगे ताकि उनको बैस्ती सहन में ले जाकर लोगों की तकरीब करें। 21 फिर वह मुझे बैस्ती सहन में लाया और सहन के चारों कोनों की तरफ मुझे ले गया, और देखो, सहन के हर कोने में एक और सहन था; 22 सहन के चारों कोनों में चातीस चातीस हाथ लबे और तीस तीस हाथ चौड़े सहन मुत्सिल थे, यह चारों कोने वाले एक ही नाप के थे। 23 और उनके चारों तरफ यानी उन चारों के चारों तरफ दीवार थी, और चारों तरफ दीवार के नीचे चूहे बने थे। 24 तब उसने मुझे फरमाया, कि "यह चूल्हे हैं, जहाँ हैकल के खादिम लोगों के ज़बीहे उबलते हैं।"

47 फिर वह मुझे हैकल के दरवाजे पर वापस लाया, और क्या देखता हूँ कि हैकल के आसाने के नीचे से पानी पूरब की तरफ निकल रहा है क्यूँकि हैकल का सामना पूरब की तरफ था और पानी हैकल के दाहीने तरफ के नीचे से मजबह के दक्षिणी जानिक से बहता था। 2 तब वह मुझे उत्तरी फाटक की गाह से बाहर लाया, और मुझे उस राह से जिसका सख पूरब की तरफ है, बैस्ती फाटक पर वापस लाया यानी पूरब स्थान फाटक पर; और क्या देखता हूँ कि दहनी तरफ से पानी जारी है। 3 और उस मर्द ने जिसके हाथ में पैमाल्श की डोरी थी, पूरब की तरफ बढ़ कर हजार हाथ नापा, और मुझे पानी में से चलाया और पानी टखनों तक था। 4 फिर उसने हजार हाथ और नापा और मुझे उसमें से चलाया, और पानी कमर तक था। 5 फिर उसने एक हजार और नापा, और वह ऐसा दरिया था कि मैं उसे पार नहीं कर सकता था, क्यूँकि पानी चढ़ कर तैने के दर्जे को पहँच गया और ऐसा दरिया बन गया जिसको पार करना मुश्किल न था। 6 और उसने मुझ से कहा, ऐ आदमजाद! क्या तौने यह देखा? तब वह मुझे लाया और दरिया के किनारे पर वापस पहँचाया। 7 और जब मैं वापस आया तो क्या देखता हूँ कि दरिया के किनारे दोनों तरफ बहत से दरखत हैं। 8 तब उसने मुझे फरमाया कि यह पानी पूरबी 'इलाकी की तरफ बहता है, और मैदान में से होकर समन्दर में जा मिलता है, और समन्दर में मिलते ही उसके पानी को शीरी कर देगा। 9 और यूँ होगा कि जहाँ कहीं यह दरिया

पहँचेगा, हर एक चलने फिरने वाला जानदार जिन्दा रहेगा और मछलियों की बड़ी कसरत होगी क्यूँकि यह पानी वहाँ पहँचा और वह शीरी हो गया इसलिए जहाँ कहीं यह दरिया पहँचेगा जिन्दारी बख्शेगा। 10 और यूँ होगा कि शिकारी उसके किनारे खड़े रहेंगे, 'ऐसे जर्दी से ऐसे' 'अजलाईम तक जाल बिछाने की जगह होगी, उसकी मछलियां अपनी अपनी जिन्स के मुताबिक बड़े समन्दर की मछलियों की तरह कसरत से होंगी। 11 लेकिन उसकी कीच की जाहें और दलदले शीरी न की जायेंगी वह नमक जार ही रहेगी। 12 और दरिया के करीब उसके दोनों किनारों पर हार किस्म के मेवादार दरखत उतोंगे जिनके पते कभी न मुरझायेंगे और जिनके मेवे कभी खत्म न होंगे वह हर महीने नए मेवे लायेंगे क्यूँकि उनका पानी हैकल में से जारी है और उनके मेवे खाने के लिए और उनके पते दवा के लिए होंगे। 13 खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है: कि यह वह सरहद है जिसके मुताबिक तुम ज़मीन को तकसीम करेगे, ताकि इसाईल के बाहर कबीलों की मीरास हो; यस्फ के लिए दो हिस्से होंगे। 14 और तुम सब यकसाँ उसे मीरास में पाओगे, जिसके जारी मैंने कस्तम खाई कि तुम्हारे बाप — दादा को दूँ और यह ज़मीन तुम्हारी मीरास होगी। 15 'और ज़मीन की हड्दें यह होंगी: उत्तर की तरफ बड़े समन्दर से लेकर हतल्लून से होती हुई सिदाद के मदखल तक, 16 हमात बैस्त — सिबरैम जो दमिश्क की सरहद और हमात की सरहद के बीच है, और हसर हतीकून जो हौरान के किनारे पर है। 17 और समन्दर से सरहद यह होगी: यानी हसर 'ऐनान दमिश्क की सरहद, और उत्तर की उत्तरी अतराफ, हमात की सरहद उत्तरी जानिक यही है। 18 और पूर्बी सरहद हौरान और दमिश्क, और जिल अद के बीच से और इसाईल की सरजमीन के बीच से यदरन पर होगी; उत्तरी सरहद से पूर्बी समन्दर तक नापना पूर्बी जानिक यही है। 19 और दक्षिण की तरफ दक्षिणी सरहद यह है: यानी तमर से मरीबूत के कादिस के पानी से और नहर — ए — मिस्र से होकर बड़े समन्दर तक, पच्छिमी जानिक यही है। 20 और उसी सरहद से हमात के मदखल के सामने बड़ा समन्दर दक्षिणी सरहद होगा दक्षिणी जानिक यही है। 21 इसी तरह तुम कबाइल — ए — इसाईल के मुताबिक ज़मीन को आपस में तकसीम करेगे। 22 और यूँ होगा कि तुम अपने और उन बेगानों के बीच, जो तुम्हारे साथ बसते हैं और जिनकी औलाद तुम्हारे बीच पैदा हुई जो तुम्हरे लिए देसी बनी — इसाईल की तरह होंगे; मीरास तकसीम करने के लिए पच्ची डालोंगे, वह तुम्हारे साथ कबाइल — ए — इसाईल के बीच मीरास पाएँगे। 23 और यूँ होगा कि जिस जिस कबीले में कोई बेगाना बसता होगा, उसी में तुम उसे मीरास दोगे। खुदावन्द खुदा फरमाता है।

48 और कबीलों के नाम यह है: इन्तिहा — ए — उत्तर पर हतल्लून के रास्ते के साथ साथ हमात के मदखल से होते हुए हसर 'ऐनान तक, जो दमिश्क की उत्तरी सरहद पर हमात के पास है, पूरब से पच्छिम तक दान के लिए एक हिस्सा। 2 और दान की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, आशर के लिए एक हिस्सा। 3 और आशर की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, नफताली के लिए एक हिस्सा। 4 और नफताली की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, मनस्सी के लिए एक हिस्सा। 5 और मनस्सी की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, इक्काईम के लिए एक हिस्सा। 6 और इक्काईम की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, स्विन के लिए एक हिस्सा। 7 और स्विन की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, यहदाह के लिए एक हिस्सा। 8 और यहदाह की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, हादिये का हिस्सा होगा जो तुम वक्फ करेगे; उसकी चौड़ाई पच्चीस हजार और लग्बाई बाजी हिस्सों में से एक के बराबर पूर्बी

सरहद से दक्षिणी सरहद तक और हैकल उसके बीच में होगा। 9 हादिये का हिस्सा जो तुम खुदावन्द के लिए वक्फ करोगे, पच्चीस हजार लम्बा और दस हजार चौड़ा होगा। 10 और यह पाक हादिये का हिस्सा उनके लिए, हाँ, कहिनों के लिए होगा; उत्तर की तरफ पच्चीस हजार उसकी लम्बाई होगी और दस हजार उसकी चौड़ाई पच्छिम की तरफ और दस हजार उसकी चौड़ाई पूरब की तरफ और पच्चीस हजार उसकी लम्बाई दक्षिण की तरफ और खुदावन्द का हैकल उसके बीच में होगा। 11 यह उन कहिनों के लिए होगा जो सदूक के बेटों में से पाक किए गए हैं; जिन्होंने मेरी अमानदारी की तरफ गुमराह न हए। जब बनी — इस्माइल गुमराह हो गए जैसे बनी लावी गुमराह हए। 12 और जमीन के हादिये में से बनी लावी के हिस्से से मुत्सिल, यह उनके लिए हादिया होगा जो बहुत पाक ठहरेगा। 13 और कहिनों की सरहद के सामने बनी लावी के लिए एक हिस्सा होगा, पच्चीस हजार लम्बा और दस हजार चौड़ा; उसकी कूल लम्बाई पच्चीस हजार और चौड़ाई दस हजार होगी। 14 और वह उसमें से न बेचे और न बदलें और न जमीन का पहला फल अपने कब्जे से निकलने दें, क्योंकि वह खुदावन्द के लिए पाक है। 15 और वह पाँच हजार की चौड़ाई का बाकी हिस्सा, उस पच्चीस हजार के सामने बस्ती और उसकी 'इलाके' के लिए 'आम जग होगी'; और शहर उसके बीच में होगा। 16 और उसकी पैमाइश यह होगी, उत्तर की तरफ चार हजार पाँच सौ, और दक्षिण की तरफ चार हजार पाँच सौ, और पूरब की तरफ चार हजार पाँच सौ, 17 और शहर के 'इलाके' उत्तर की तरफ दो सौ पचास, और दक्षिण की तरफ दो सौ पचास, और पूरब की तरफ दो सौ पचास, और पच्छिम की तरफ दो सौ पचास। 18 और वह पाक हादिये के सामने बाकी लम्बाई पूरब की तरफ दस हजार और पच्छिम की तरफ दस हजार होगी, और वह पाक हादिये के सामने होगी और उसका हासिल उनकी खुराक के लिए होगा जो शहर में काम करते हैं। 19 और शहर में काम करने वाले इस्माइल के सब कबीलों में से उसमें काशतकारी करोगे। 20 हादिये के तामाप दिसरे की लाजाई पच्चीस हजार और चौड़ाई पच्चीस हजार होगी; तुम पाक हादिये के हिस्से को मुरब्बा' शब्द में शहर की मिल्कियत के साथ बक्क करोगे। 21 और बाकी जो पाक हादिये का हिस्सा और शहर की मिल्कियत की दोनों तरफ जो हादिये के हिस्से के पच्चीस हजार के सामने पच्छिम की तरफ फरमरवा के हिस्सों के सामने हैं; वह फरमरवा के लिए होगा और वह पाक हादिये का हिस्सा होगा, और पाक घर उसके बीच में होगा। 22 और बनी लावी की मिल्कियत से और शहर की मिल्कियत से जो फरमरवा की मिल्कियत के बीच में है, यहदाह की सरहद और बिनयमीन की सरहद के बीच फरमरवा के लिए होगी। 23 और बाकी कबाइल के लिए यूँ होगा: कि पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, बिनयमीन के लिए एक हिस्सा। 24 और बिनयमीन की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, शमैन के लिए एक हिस्सा। 25 और शमैन की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, इश्कार के लिए एक हिस्सा। 26 और इश्कार की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, जब्लन के लिए एक हिस्सा। 27 और जब्लन की सरहद से मुत्सिल पूर्बी सरहद से पच्छिमी सरहद तक, ज़द के लिए एक हिस्सा। 28 और ज़द की सरहद से मुत्सिल दक्षिण की तरफ दक्षिणी किनारे की सरहद तमर से लेकर मरीबूत कादिस के पानी से नहर — ए — मिस्र से होकर बड़े समन्दर तक होगी। 29 यह वह सरज़मीन है जिसको तुम मीरास के लिए पर्ची डालकर कबाइल — ए — इस्माइल में तक्सीम करोगे और यह उनके हिस्से हैं, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 30 और शहर के मखारिज यह हैं: उत्तर की तरफ की पैमाइश चार हजार पाँच सौ। 31 और शहर के फाटक कबाइल — ए — इस्माइल से

नामज़द होंगे: तीन फाटक उत्तर की तरफ — एक फाटक स्ट्रिबन का, एक यहदाह का, एक लावी का; 32 और पूरब की तरफ की पैमाइश चार हजार पाँच सौ, और तीन फाटक एक यूसुफ का एक बिनयमीन का और एक दान का। 33 और दक्षिण की तरफ की पैमाइश चार हजार पाँच सौ, और तीन फाटक — एक शमैन का, एक इश्कार का, और एक जब्लन का। 34 और पच्छिम की तरफ की पैमाइश चार हजार पाँच सौ और तीन फाटक — एक ज़द का, एक आशर का और एक नफ्ताली का। 35 उसका मुहीत अठारह हजार और शहर का नाम उसी दिन से यह होगा कि "खुदावन्द वहाँ है।"

दानि

1 शाह — ए — यहदाह यहयकीमी की सल्तनत के तीसरे साल में शाह — ए
— बाबुल नब्कदनजर ने येस्शलेम पर चढ़ाई करके उसका धिराव किया।
2 और खुबावन्द ने शाह यहदाह यहयकीमी को और खुदा के घर के बा'ज बर्तनों को उसके हवाले कर दिया और उनको सिन'आर की सरजामीन में अपने बुतखने में ले गया, चुनाँचे उसने बर्तनों को अपने बृत के खजाने में दाखिल किया। **3** और बादशाह ने अपने ख्वाजासाराओं के सरदार असपनज को हुक्म किया कि बनी इशाईल में से और बादशाह की नस्त में से और शरीफों में से लोगों को हाजिर करे। **4** वह बैरेब जवान बल्कि ख़बसूरत और हिकमत में माहिर और हर तरह से 'अव्वल्मन्द और 'आलिम हाँ, जिनमें ये लियाकत हो कि शाही महल में खड़े हों, और वह उनको कसदियों के 'इल्म और उनकी जबान की तालीम दें। **5** और बादशाह ने उनके लिए शाही खुराक में से और अपने पीने की मय में से रोजाना वज़ीफ़ा मुकर्रर किया कि तीन साल तक उनकी परवरिश हो, ताकि इसके बाद वह बादशाह के सामने खड़े हो सकें। **6** और उनमें बनी यहदाह में से दानीएल और हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह थे। **7** और ख्वाजासाराओं के सरदार ने उनके नाम रख्वें; उसने दानीएल को बेल्तशजर, हननियाह को सदरक, और मीसाएल को मीसक, और 'अज़रियाह को 'अब्दनजू कहा। **8** लेकिन दानीएल ने अपने दिल में इरादा किया कि अपने आप को शाही खुराक से और उसकी शराब से, जो वह पीता था, नापाक न करें; तब उसने ख्वाजासाराओं के सरदार से दरखास्त की कि वह अपने आप को नापाक करने से मा'जूर रखा जाए। **9** और खुदा ने दानीएल को ख्वाजासाराओं के सरदार की नजर में मक्खल — ओ — महबूब ठहराया। **10** चुनाँचे ख्वाजासाराओं के सरदार ने दानीएल से कहा, मैं अपने खुदावन्द बादशाह से, जिसने तुहारा खाना पीना मुकर्रर किया है डरता हूँ, तुम्हारे चेहरे उसकी नजर में तुहारे हम उम्रों के चेहरों से क्यूँ जबून हों, और यूँ तुम मेरे सिर को बादशाह के सामने खतरे में डालो। **11** तब दानीएल ने दारोगा से जिसको ख्वाजासाराओं के सरदार ने दानीएल और मीसाएल और 'अज़रियाह पर मुकर्रर किया था कहा, **12** 'मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू दस दिन तक अपने खादिमों को आज्ञामा कर देख, और खाने को साग — पात और पीने को पानी हम को दिलवा। **13** तब हमारे चेहरे और उन जवानों के चेहरे जो शाही खाना खाते हैं, तेरे सामने देखें जाएँ फिर अपने खादिमों से जो तू मुनासिब समझे वह कर कर।' **14** चुनाँचे उसने उनकी ये बात कुबली की और दस दिनों तक उनको आज्ञामाया। **15** और दस दिन के बाद उनके चेहरों पर उन सब जवानों के चेहरों की निस्तव्त जो शाही खाना खाते थे, ज्यादा रौनक और ताज़गी नजर आई। **16** तब दारोगा ने उनकी खुराक और शराब को जो उनके लिए मुकर्रर थी रोक दिया, और उनको साग — पात खाने को दिया। **17** तब खुदा ने उन चारों जवानों को मा'रिफ़त और हर तरह की हिकमत और 'इल्म में महारत बख्शी, और दानीएल हर तरह की रोया और ख्वाब में साहब — ए — 'इल्म था। **18** और जब वह दिन गुज़र गए जिनके बाद बादशाह के फरमान के मुताबिक उनको हाजिर होना था, तो ख्वाजासाराओं का सरदार उनको नब्कदनजर के सामने ले गया। **19** और बादशाह ने उसे बातें की और उनमें से दानीएल और हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह की तरह कोई न था, इसलिए वह बादशाह के सामने खड़े होने लगे। **20** और हर तरह की खैरमन्दी और अकल्मन्दी के बारे में जो कुछ बादशाह ने उसे पूछा, उनको तमाम फालगिरों और नज़ूमियों से जो उसके तमाम मुल्क में थे, दस दर्जी बेहतर पाया। **21** और दानीएल खोपस बादशाह के पहले साल तक जिन्दा था।

2 और नब्कदनजर ने अपनी सल्तनत के दूसरे साल में ऐसे ख्वाब देखे जिनसे उसका दिल घबरा गया और उसकी नीद जाती रही। **2** तब बादशाह ने हुक्म दिया कि फालगिरों और नज़ूमियों और जाडूगरों और कसदियों को बुलाएँ कि बादशाह के ख्वाब उसे बताएँ। चुनाँचे वह आए और बादशाह के सामने खड़े हुए। **3** और बादशाह ने उसे कहा, कि "मैंने एक ख्वाब देखा है, और उस ख्वाब को दरियापत करने के लिए मेरी जान बेताब है।" **4** तब कसदियों ने बादशाह के सामने अरामी जबान में 'अर्ज़ किया, कि ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह। अपने खादिमों से ख्वाब बयान कर, और हम उसकी ताबीर करेंगे। **5** बादशाह ने कसदियों को जबाब दिया, भैं तो ये हुक्म दे चुका हूँ कि अगर तुम ख्वाब न बताओ और उसकी ताबीर न करो, तो टुकड़े टुकड़े किए जाओगे और तुहारे घर मजबले हो जाएँगे। **6** लेकिन अगर ख्वाब और उसकी ताबीर बताओ, तो मुझ से इन'आम और बदला और बड़ी 'इज़ज़त हासिल करोगे, इसलिए ख्वाब और उसकी ताबीर मुझ से बयान करो। **7** उन्होंने फिर 'अर्ज़ किया, कि "बादशाह अपने खादिमों से ख्वाब बयान करे, तो हम उसकी ताबीर करेंगे।" **8** बादशाह ने जबाब दिया, कि "मैं ख्वाब जानता हूँ कि तुम टालाना चाहते हो, क्यूँकि तुम जानते हो कि मैं हुक्म दे चुका हूँ।" **9** लेकिन अगर तुम मुझ को ख्वाब न बताओगे, तो तुहारे लिए एक ही हुक्म है, क्यूँकि तुम मेरे झट और बहाने की बातें बनाई ताकि मेरे सामने बयान करो कि बक्त टल जाए; इसलिए ख्वाब बताओ तो मैं जानूँ कि तुम उसकी ताबीर भी बयान कर सकते हो।" **10** कसदियों ने बादशाह से 'अर्ज़ किया, कि "इस जमीन पर ऐसा तो कोई भी नहीं जो बादशाह की बात बता सके, और न कोई बादशाह या अमीर या हाकिम ऐसा हुआ है जिसने कभी ऐसा सवाल किसी फालगिर या नज़ूमी या कसदी से किया हो।" **11** और जो बात बादशाह तलब करता है, निहायत मुश्किल है, और मांबदों के सेवा जिनकी सुकून इंसान के साथ नहीं, बादशाह के सामने कोई उसको बयान नहीं कर सकता।" **12** इसलिए बादशाह गज़बनाक और सख्त गुप्ता हुआ और उसने हुक्म किया कि बाबुल के तमाम हकीमों को हलाक करें। **13** तब यह हुक्म जगह जगह पहुँचा कि हकीम कत्तल किए जाएँ, तब दानीएल और उसके साथियों को भी ढूँढ़ने लगे कि उनको कत्तल करें। **14** तब दानीएल ने बादशाह के जिलौदारों के सरदार अरयूक को, जो बाबुल के हकीमों को कत्तल करने को निकला था, खैरमन्दी और 'अकल्म से जबाब दिया। **15** उसने बादशाह के जिलौदारों के सरदार अरयूक से पूछा, "बादशाह ने ऐसा सख्त हुक्म क्यूँ जारी किया?" तब अरयूक ने दानीएल से इसकी हकीकित बताई। **16** और दानीएल ने अन्दर जाकर बादशाह से 'अर्ज़ किया कि मुझे मुहलत मिले, तो मैं बादशाह के सामने ताबीर बयान कर सकूँगा।" **17** तब दानीएल ने अपने घर जाकर हननियाह और मीसाएल और 'अज़रियाह अपने साथियों को खबर दी, **18** ताकि वह इस राज के बारे में आसमान के खुदा से रहमत तलब करें कि दानीएल और उसके साथी बाबुल के बाकी हकीमों के साथ हलाक न हों। **19** फिर रात को ख्वाब में दानीएल पर वह राज खुल गया, और उसने आसमान के खुदा को मुबारक कहा। **20** दानीएल ने कहा: "खुदा का नाम हमेशा तक मुबारक हो, क्यूँकि हिकमत और कुदरत उसी की है।" **21** वही बक्तों और जमानों को तब्दील करता है, वही बादशाहों को मा'जूल और कायम करता है, वही हकीमों को हिकमत और अकल्मन्दों को 'इल्म इनायत करता है। **22** वही गहीर और छुपी चीज़ों को जाहिर करता है, और जो कुछ अँगैरे में है उसे जानता है और नर उरी के साथ है। **23** मैं तेरा शुक्र करता हूँ और तेरी 'इशाद' करता हूँ ऐ मेरे बाप — दादा के खुदा, जिसने मुझ पर जाहिर किया, क्यूँकि तू ने बादशाह का मुआमिला हम

पर जाहिर किया है।” 24 तब दानीएल अरर्यूक के पास गया, जो बादशाह की तरफ से बाबूल के हकीमों के कल्तन पर मुकर्रर हुआ था, और उस से यैं कहा, कि “बाबूल के हकीमों को हलाक न कर, मुझे बादशाह के सामने ले चल, मैं बादशाह को तांबीर बता दूँगा।” 25 तब अरर्यूक दानीएल को जल्दी से बादशाह के सामने ले गया और ‘अर्ज किया, कि “मुझे वहदाह के गुलामों में एक शख्स मिल गया है, जो बादशाह को तांबीर बता देगा।” 26 बादशाह ने दानीएल से जिसका लक्ख बेलत्शजर था पूछा, क्या तू उस खबाब को जो मैंने देखा, और उसकी तांबीर को मुझ से बयान कर सकता है? 27 दानीएल ने बादशाह के सामने ‘अर्ज किया, कि वह राजा जो बादशाह ने पूछा, हुक्मा और नजूमी और जाटूर और फलारी बादशाह को बता नहीं सकते। 28 लेकिन आसमान पर एक खुदा है जो राजा की बातें जाहिर करता है, और उसने नबूकदनजर बादशाह पर जाहिर किया है कि आखिरी दिनों में क्या होने को आएगा; तो राखबाब और तेरे दिमारी ख्याल जो तू ने अपने पलंग पर देखे थे हैं: 29 ऐ बादशाह, तु अपने पलंग पर लेटा हुआ ख्याल करने लगा कि आइन्दा को क्या होगा, तब वह जो राजों का खोलने वाला है, तुझ पर जाहिर करता है कि क्या कुछ होगा। 30 लेकिन इस राज के मुझ पर जाहिर होने की बजह यह नहीं कि मुझ में किसी और जी ह्यात से ज्यादा हिक्मत है, बल्कि यह कि इसकी तांबीर बादशाह से बयान की जाए और तू अपने दिल के ख्यालात को पहचाने। 31 ऐ बादशाह, तू ने एक बड़ी मूरत देखी; वह बड़ी मूरत जिसकी रैनक बेनिहायत थी, तेरे सामने खड़ी हुई और उसकी सूरत हैवतनक थी। 32 उस मूरत का सिर खालिस सोने का था, उसका सीना और उसके बाजू चॉटी के, उसका शिकम और उसकी राने तौम्बे की थी; 33 उसकी टौंग लोहे की, और उसके पॉव कुछ लोहे के और कुछ मिट्ठी के थे। 34 तू उसे देखता रहा, यहाँ तक कि एक पत्थर हाथ लगा और बगैर ही काटा गया, और उस मूरत के पॉव पर जो लोहे और मिट्ठी के थे लगा और उनको टुकड़े — टुकड़े कर दिया। 35 तब लोहा और मिट्ठी और तौम्बा और चॉटी और सोना, टुकड़े टुकड़े किए गए और जास्तिसारी खलीहान के भूसे की तरह हुए, और हवा उनको उड़ा ले गई, यहाँ तक कि उनका पता न मिला; और वह पत्थर जिसने उस मूरत को तोड़ा, एक बड़ा पहाड़ बन गया और सारी जमीन में फैल गया। 36 “वह खबाब यह है; और उसकी तांबीर बादशाह के सामने बयान करता है। 37 ऐ बादशाह, तू शहनशाह है, जिसको आसमान के खुदा ने बादशाही और — तवानाई और कुदरत — ओ — शैकत बरखी है। 38 और जहाँ कहीं बनी आदम रहा करते हैं, उसने मैदान के जनवर और हवा के परिस्रे तेरे हवाले करके तुझ को उन सब का हाकिम बनाया है; वह सोने का सिर तू ही है। 39 और तेरे बाद एक और सल्तनत खड़ी होगी, जो तुझ से छोटी होगी और उसके बाद एक और सल्तनत ताम्बे की जो पूरी जमीन पर हुक्मत करेगी। 40 और चौथी सल्तनत लोहे की तरह मजबूत होगी, और जिस तरह लोहा तोड़ डालता है और सब चीजों पर गालिब आता है; हाँ, जिस तरह लोहा सब चीजों को टुकड़े — टुकड़े करता और कुचलता है उसी तरह वह टुकड़े — टुकड़े करेगी और कुचल डालेगी। 41 और जो तू ने देखा कि उसके पॉव और उंगलियाँ, कुछ तो कुम्हार की मिट्ठी की और कुछ लोहे की थी, इसलिए उस सल्तनत में फट होगी, मगर जैसा तू ने देखा कि उसमें लोहा मिट्ठी से मिला हुआ था, उसमें लोहे की मजबूती होगी। 42 और चौंकि पॉव की उंगलियाँ कुछ लोहे की और कुछ मिट्ठी की थी, इसलिए सल्तनत कुछ मजबूत और कुछ कमज़ोर होगी। 43 और जैसा तू ने देखा कि लोहा मिट्ठी से मिला हुआ था, वह बनी आदम से मिले हुए होंगे, लेकिन जैसे लोहा मिट्ठी से मेल नहीं खाता वैसे ही वह भी आपस में मेल न खाएँगे। 44 और उन बादशाहों के दिनों में आसमान का खुदा एक सल्तनत खड़ा करेगा, जो हमेशा बर्बाद न होगी और

उसकी हुक्मत किसी दूसरी कौम के हवाले न की जाएगी, बल्कि वह इन तमाम हुक्मतों को टुकड़े — टुकड़े और बर्बाद करेगी, और वही हमेशा तक कायम रहेगी। 45 जैसा तू ने देखा कि वह पत्थर हाथ लगाए बगैर ही पहाड़ से काटा गया, और उसने लोहे और तांम्बे और मिट्ठी और चॉटी और सोने को टुकड़े — टुकड़े किया; खुदा तंआला ने बादशाह को वह कुछ दिखाया जो आगे को होने वाला है, और यह खबाब यकीनी है और उसकी तांबीर यकीनी।” 46 तब नबूकदनजर बादशाह ने मैंह के बल गिर कर दानीएल को सिज्दा किया, और हुक्म दिया कि उसे हदिया दें और उसके सामने खुशबू जलाएँ। 47 बादशाह ने दानीएल से कहा, “हकीकत में तेरा खुदा माँबूंहों का माँबूद और बादशाहों का खुदावन्द और राजों का खोलने वाला है, क्योंकि तू इस राज को खोल सकता।” 48 तब बादशाह ने दानीएल को सरफराज किया, और उसे बहुत से बड़े — बड़े तोहफे ‘अता किए; और उसको बाबूल के तमाम स्लों पर इतिहायर दिया, और बाबूल के तमाम हकीमों पर हक्मरानी ‘इनायत की। 49 तब दानीएल ने बादशाह से दरखास्त की और उसने सदरक मीसक और ‘अबदनजू को बाबूल के सूबे की जिम्मेदारी पर मुकर्रर किया, लेकिन दानीएल बादशाह के दरबार में रहा।

3 नबूकदनजर बादशाह ने एक सोने की मूरत बनवाई जिसकी लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई थी: हाथ थी, और उसे दरा के मैदान सवा — ए — बाबूल में खड़ा किया। 2 तब नबूकदनजर बादशाह ने लोगों को भेजा कि नाजिमों और हाकिमों और सरदारों और काजियों और खजांचियों और सलाहकारों और मुफ्तियों और तमाम स्लों के ‘उहदेदोरों को जमा’ करें, ताकि वह उस मूरत की ‘इज्जत को हाजिर हों जिसको नबूकदनजर बादशाह ने खड़ा किया था। 3 तब नाजिम, और हाकिम, और सरदार, और काजी, और खजांची, और सलाहकार, और मुफ्ती और स्लों के तमाम ‘उहदेदार, उस मूरत की ‘इज्जत के लिए जिसे नबूकदनजर बादशाह ने खड़ा किया था जमा’ हुए, और वह उस मूरत के सामने जिसको नबूकदनजर ने खड़ा किया था, खड़े हुए। 4 तब एक ऐलान करने वाले ने बलन्द आवाज से पुकार कर कहा, ऐ लोगों, ऐ उम्मतों, और ऐ मुख्तालिफ जबानें बोलने वालों! तुम्हारे लिए यह हुक्म है कि 5 जिस वक्त करना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चागाना, और हर तरह के साज़ की आवाज सुनो, तो उस सोने की मूरत के सामने जिसको नबूकदनजर बादशाह ने खड़ा किया है गिर कर सिज्दा करो। 6 और जो कोई गिर कर सिज्दा न करे, उसी वक्त आग की जलती भट्टी में डाला जाएगा। 7 इसलिए जिस वक्त सब लोगों ने करना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और हर तरह के साज़ की आवाज सुनी, तो सब लोगों और उम्मतों और मुख्तालिफ जबानें बोलने वालों ने उस मूरत के सामने, जिसको नबूकदनजर बादशाह ने खड़ा किया था, गिर कर सिज्दा किया। 8 तब उस वक्त चन्द कसदियों ने आकर यह दियों पर इल्जाम लगाया। 9 उन्होंने नबूकदनजर बादशाह से कहा, ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह! 10 ऐ बादशाह, तू ने यह फरमान जारी किया है कि जो कोई करना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चागाना, और हर तरह के साज़ की आवाज सुने, गिर कर सोने की मूरत को सिज्दा करे। 11 और जो कोई गिर कर सिज्दा न करे, आग की जलती भट्टी में डाला जाएगा। 12 अब चन्द यह दी है, जिनको तू ने बाबूल के स्लों की जिम्मेदारी पर मुकर्रर किया है, याँनी सदरक और मीसक और ‘अबदनजू, इन आदमियों ने, ऐ बादशाह, तेरी ताँझी नहीं की। वह तेरे माँबूंहों की इबादत नहीं करते, और उस सोने की मूरत को जिसे तू ने खड़ा किया सिज्दा नहीं करते। 13 तब नबूकदनजर ने कहर — ओ — गजब से हुक्म किया कि सदरक और मीसक और ‘अबदनजू को हाजिर करें। और उन्होंने उन आदमियों को बादशाह के सामने हाजिर किया। 14 नबूकदनजर ने उनसे कहा, ऐ सदरक और मीसक और ‘अबदनजू,

क्या यह सच है कि तुम मेरे मांबूदों की इबादत नहीं करते हो, और उस सोने की मूरत को जिसे मैंने खड़ा किया सिज्दा नहीं करते? 15 अब अगर तुम तैयार रहो कि जिस वक्त करना, और ने, और सितार, और रबाब, और बरबत, और चाना, और हर तरह के साज़ की आवाज़ सुगो, तो उस मूरत के सामने जो मैंने बनवाई है गिर कर सिज्दा करो तो बेहतर, लेकिन अगर सिज्दा न करेगे, तो उसी वक्त आग की जलती भट्टी में डाले जाओगे और कौन सा मांबूद तुम को मेरे हाथ से छुड़ाएगा? 16 सदरक और मीसक और 'अबदनजू' ने बादशाह से 'अर्ज किया कि "ऐ नब्कदनजर, इस हक्म में हम तुझे जबाब देना ज़रूरी नहीं समझते। 17 देख, हमारा खुदा जिसकी हम इबादत करते हैं, हम को आग की जलती भट्टी से छुड़ाने की कुदरत रखता है, और ऐ बादशाह वही हम को ऐसे हाथ से छुड़ाएगा। 18 और नहीं, तो ऐ बादशाह तुझे मांलम हो कि हम तेरे मांबूदों की इबादत नहीं करेंगे, और उस सोने की मूरत को जो तूसे खड़ी की है सिज्दा नहीं करेंगे। 19 तब नब्कदनजर गुस्से से भर गया, और उसके चेहेरे का रंग सदरक और मीसक और 'अबदनजू' पर बदल गया, और उसने हक्म दिया कि भट्टी की अँच मांलम से सात गुना ज़्यादा करें। 20 और उसने अपने लश्कर के चन्द ताकतवर पहलवानों को हक्म दिया कि सदरक और मीसक और 'अबदनजू' को बैंध कर आग की जलती भट्टी में डाल दें। 21 तब यह मर्द अपने पैजामों — कमीसों और 'अमामों' के साथ बौंधे गए, और आग की जलती भट्टी में फेंक दिए गए। 22 इसलिए चौंक बादशाह का हक्म ताकीटी था और भट्टी की अँच निहायत तेज़ थी, इसलिए सदरक और मीसक और अबदनजू को उठाने वाले आग के शोलों से हलाक हो गए; 23 और यह तीन आदमी यानी सदरक और मीसक और अबदनजू, बैंधे हुए आग की जलती भट्टी में जा पड़े। 24 तब नब्कदनजर बादशाह सरासीरा होकर जल्द उठा, और अरकान — ए — दौलत से मुखातिब होकर कहने लगा, क्या हम ने तीन शख्सों को बैंधवा कर आग में नहीं डलवाया?" उन्होंने जबाब दिया, बादशाह ने सच फरमाया है। 25 उसने कहा, देखो, मैं चार शख्स आग में खुले पिरते देखता हूँ, और उनको कुछ नुकसान नहीं पहँचा; और चौथे की सूर इलाहजादे की तरह है। 26 तब नब्कदनजर ने आग की जलती भट्टी के दरवाजे पर आकर कहा, ऐ सदरक और मीसक और अबदनजू, खुदा — त'आला के बन्दो! बाहर निकलो और इधर आओ! इसलिए सदरक और मीसक और अबदनजू आग से निकल आए। 27 तब नजिमों और हाकिमों और सरदारों और बादशाह के सलाहकारों ने जमा होकर उन शख्सों पर नजर की, और देखा कि आग ने उनके बदनों पर कुछ असर न किया और उनके सिर का एक बाल भी न जलाया, और उनकी पोशाक में कुछ फर्क न आया और उनसे आग से जलने की बूझी न आती थी। 28 तब नब्कदनजर ने पुकार कर कहा, कि "सदरक और मीसक और 'अबदनजू' का खुदा मुबारक हो, जिसने अपना फरिशता भेज कर अपने बन्दों को रिहाई बाल्यी, जिन्होंने उस पर भरोसा करके बादशाह के हक्म को टाल दिया, और अपने बदनों को निसार किया कि अपने खुदा के अलावा किसी दूसरे मांबूद की इबादत और बन्दी न करें। 29 इसलिए मैं यह फरमान जारी करता हूँ कि जो कौम या उम्मत या अहल — ए — ज़ुबान, सदरक और मीसक और 'अबदनजू' के खुदा के हक्म में कोई ना मुनासिब बात कहें उनके टुकड़े — टुकड़े किए जाएँ और उनके घर मज़बला हो जाएँ, क्यूंकि कोई दूसरा मांबूद नहीं जो इस तरह रिहाई दे सके!" 30 फिर बादशाह ने सदरक और मीसक और 'अबदनजू' को स्था — ए — बाबुल में सरफ़राज़ किया।

4 नब्कदनजर बादशाह की तरफ से तमाम लोगों, उम्मतों और अहल — ए — ज़ुबान के लिए जो तमाम इस ज़मीन पर रहते हैं: तुहारी सलामती होती रहे। 2 मैंने मुनासिब जाना कि उन निशानों और 'अज़ायब' को ज़ाहिर करूँ जो

खुदा — त'आला ने मुझ पर ज़ाहिर किए हैं। 3 उसके निशान कैसे 'अज़ीम, और उसके 'अज़ायब' कैसे पसंदीदा हैं! उसकी ममलुकत हमेशा की ममलुकत है, और उसकी सल्तनत नमल — दर — नसल। 4 मैं, नब्कदनजर, अपने घर में मुतम'इन और अपने महल में कामयाब था। 5 मैंने एक ख्वाब देखा, जिससे मैं परेशान हो गया और उन ख्यालात से जो मैंने पलंग पर किए और उन ख्यालों से जो मेरे दिमाग में आए, मुझे परेशानी हुई। 6 इसलिए मैंने फरमान जारी किया कि बाबुल के तमाम हकीम मेरे सामने हाजिर किए जाएँ, ताकि मुझसे उस ख्वाब की ताबीर बयान करें। 7 चुनाँचे जादूगर और नज़मी और कसदी और फ़लागीर हाजिर हुए और मैंने उनसे अपने ख्वाब का बयान किया, पर उन्होंने उसकी ताबीर मुझ से बयान न की। 8 आखिरकार दानीएल मेरे सामने आया, जिसका नाम बेलतशजर है, जो मेरे मांबूद का भी नाम है, उसमें मुकद्दस इलाहों की रुह है; इसलिए मैंने उसके आपने — सामने ख्वाब का बयान किया और कहा: 9 ऐ बेलतशजर, जादूगरों के सरदार, चौंक मैं जानता हूँ कि मुकद्दस इलाहों की रुह तुझे है, और कि कोई राज की बात तेरे लिए मुश्किल नहीं; इसलिए जो ख्वाब मैंने देखा उसकी कैफियत और ताबीर बयान कर। 10 पलंग पर मेरे दिमाग की रोया थे थी: मैंने निगाह की और क्या देखता हूँ कि ज़मीन के तह में एक निहायत ऊँचा दरखत है। 11 वह दरखत बढ़ा और मज़बूत हुआ और उसकी चोटी आसमान तक पहुँची, और वह ज़मीन की इन्तिहा तक दिखाई देने लगा। 12 उसके पते खुशनुमा थे और मेवा फिरावान था, और उसमें सबके लिए खुराक थी; मैदान के जानवर उसके साथे में और हवा के परिन्दे उसकी शाखों पर बसेरा करते थे, और तमाम बशर ने उस से परवरिश पाई। 13 "मैंने अपने पलंग पर अपनी दिमागी रोया पर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि एक निगहबान, हूँ एक फरिश्ता आसमान से उतरा। 14 उसने बलन्द आवाज से युकार कर यूँ कहा कि 'दरखत को काटो, उसकी शाखे तराशो, और उपरे पते झाड़ो, और उसका फल बिखेरो दो; जानवर उसके नीचे से चले जाएँ और परिन्दे उसकी शाखों पर से उड़ जाएँ। 15 लेकिन उसकी ज़ड़ों का हिस्सा ज़मीन में बाकी रहने दो, हौं, लोहे और ताँबे के बन्धन से बन्धा हुआ मैदान की ही धास में रहने दो, और वह आसमान की शबनम से तर हो, और उसका हिस्सा ज़मीन की धास में हैवानों के साथ हो। 16 उसका दिल इंसान का दिल न रहे, बल्कि उसको हैवान का दिल दिया जाएँ; और उस पर सात दौर गुज़र जाएँ। 17 यह हक्म निगहबानों के फैसले से है, और यह हक्म फरिश्तों के कहने के मुताबिक है, ताकि सब जानवर पहचान लें कि हक्म त'आला आदमियों की ममलुकत में हुक्मरानी करता है और जिसको चाहता है उसे देता है, बल्कि आदमियों में से अदाना आदमी को उस पर कायम करता है। 18 मैं नब्कदनजर बादशाह ने यह ख्वाब देखा है। ऐ बेलतशजर, त इसकी ताबीर बयान कर, क्यूंकि मेरी ममलुकत के तमाम हकीम मुझसे उसकी ताबीर बयान नहीं कर सकते, लेकिन तू कर सकता है; क्यूंकि मुकद्दस इलाहों की रुह तुझमें मौजद है।" 19 तब दानीएल जिसका नाम बेलतशजर है, एक वक्त तक खामोश रहा, और अपने ख्यालात में परेशान हुआ। बादशाह ने उससे कहा, ऐ बेलतशजर, ख्वाब और उसकी ताबीर से तू परेशान न हो। बेलतशजर ने जबाब दिया, ऐ मैं खुदावन्द, ये ख्वाब तुझसे कीना रखने वालों के लिए और उसकी ताबीर तेरे दूसरों के लिए हो। 20 वह दरखत जो तूसे देखा कि बढ़ा और मज़बूत हुआ, जिसकी चोटी आसमान तक पहुँची और ज़मीन की इन्तिहा तक दिखाई देता था; 21 जिसके पते खुशनुमा थे और मेवा फिरावान था, जिसमें सबके लिए खुराक थी। जिसके साथे मैं मैदान के जानवर और शाखों पर हवा के परिन्दे बसेरा करते थे। 22 ऐ बादशाह, वह तू ही है जो बढ़ा और मज़बूत हुआ, क्यूंकि तेरी बुजुर्गी बढ़ी और आसमान तक पहुँची और तेरी सल्तनत ज़मीन की इन्तिहा तक। 23 और जो

बादशाह ने देखा कि एक निगहबान, यहाँ, एक फरिशता आसमान से उतरा और कहने लगा, 'दरखत को काट डालों और उसे बर्बाद करो, लेकिन उसकी जड़ों का हिस्सा जमीन में बाकी रहें दो; बल्कि उसे लोहे और ताँबे के बन्धन से बन्धा हुआ, मैदान की हरी धास में रहें दो कि वह आसमान की शबनम से तर हो, और जब तक उस पर सात दौर न गुजर जाएँ उसका हिस्सा जमीन के हैवानों के साथ हो। 24 ऐ बादशाह, इसकी ताँबी और हक — ताँला का वह हुक्म, जो बादशाह मेरे खुदावन्द के हक में हुआ है यही है, 25 कि तुझे आदिमियों में से हाँक कर निकाल देंगे, और तू मैदान के हैवानों के साथ रहेगा, और तू बैल की तरह धास खाएगा और आसमान की शबनम से तर होगा, और तुझ पर सात दौर गुजर जाएँगे, तब तुझको मालूम होगा कि हक ताँला इंसान की ममलुकत में हवमरानी करता है और उसे जिसको चाहता है देता है। 26 और यह जो उन्होंने हुक्म किया कि दरखत की जड़ों के हिस्से को बाकी रहें दो, उसका मतलब ये है कि जब तू मालूम कर चुकेगा कि बादशाही का इजितियार आसमान की तरफ से है, तो तू अपनी सलतनत पर फिर कायम हो जाएगा। 27 इसलिए ऐ बादशाह, तेरे सामने मेरी सलाह कुबल हो और तू अपनी खताओं को सदाकत से और अपनी बदकिरदारी को मिस्कीनों पर रखम करने से दूर कर, मुस्किन है इससे तेरा इत्मिनान इच्छा हो। 28 यह सब कुछ नबूकदनजर बादशाह पर गुजरा। 29 एक साल बाद वह बाबूल के शाही महल में टहल रहा था। 30 बादशाह ने फरमाया, "क्या यह बाबूल — ए — आजम नहीं, जिसको मैंने अपनी तजानाई की कुरत से तामीर किया है कि दार — उस — सलतनत और मेरे जाह — ओ — जलाल का नमस्ता हो?" 31 बादशाह यह बात कह ही रहा था कि आसमान से आवाज आई, ऐ नबूकदनजर बादशाह, तेरे हक में यह फतवा है कि सलतनत तुझ से जाती रही। 32 और तुझे आदिमियों में से हाँक कर निकाल देंगे, और तू मैदान के हैवानों के साथ रहेगा और बैल की तरह धास खाएगा, और सात दौर तूश पर गुजेरेंगे, तब तुझको मालूम होगा कि हक ताँला आदिमियों की ममलुकत में हवमरानी करता है, और उसे जिसको चाहता है, देता है। 33 उसी वक्त नबूकदनजर बादशाह पर यह बात पूरी हुई, और वह आदिमियों में से निकाला गया और बैलों की तरह धास खाता रहा और उसका बदन आसमान की शबनम से तर हुआ, यहाँ तक कि उसके बाल उकाब के परों की तरह और उसके नाखून परन्दों के चॅंगुल की तरह बढ़ गए। 34 और इन दिनों के गुजरने के बाद, मैं नबूकदनजर ने आसमान की तरफ आँखें उठाई और मेरी 'अक्ल मुझमे फिर आई और मैंने हक — ताँला का शुक्र किया, और उस हय्युल — कर्यम की बड़ाई — ओ — सना की, जिसकी सलतनत हमेशा और जिसकी ममलुकत नसल — दर — नसल है। 35 और जमीन के तमाम बाशिने नाचीज गिने जाते हैं और वह आसमानी लश्कर और जमीन के रहे वालों के साथ जो कुछ चाहता है करता है, और कोई नहीं जो उसका हाथ रोक सके। या उससे कहे कि "तू क्या करता है?" 36 उसी वक्त मेरी 'अक्ल मुझमे फिर आई, और मेरी सलतनत की शौकत के लिए मेरा रौब और दबदबा फिर मुझमे बहाल हो गया, और मेरे सलाहकारों और अमीरों ने मुझे फिर ढूँढ़ा और मैं अपनी ममलुकत में काईं हुआ और मेरी 'अजमत में अफजूनी हुई। 37 अब मैं नबूकदनजर, आसमान के बादशाह की बड़ाई और 'इज्जत — ओ — ताँजीम करता हूँ, क्योंकि वह अपने सब कामों में रास्त और अपनी सब राहों में 'इन्साफ करता है, और जो मगर्सी में चलते हैं उनको जलील कर सकता है।

5 बेलशजर बादशाह ने अपने एक हजार हाकिमों की बड़ी धूमधाम से मेहमान नवाज़ी की, और उनके सामने शराबनोशी की। 2 बेलशजर ने शराब से मस्सर होकर हुक्म किया कि सोने चाँदी के बर्तन जो नबूकदनजर उसका बाप

येस्सलेम की हैकल से निकाल लाया था, लाएँ ताकि बादशाह और उसके हाकिमों और उसकी बीवियों और बाँदियों उनमें मयरबारी करें। 3 तब सोने के बर्तन को जो हैकल से, यानी खुदा के घर से जो येस्सलेम में हैं तेरे गए थे, लाए और बादशाह और उसके हाकिमों और उसकी बीवियों और बाँदियों ने उनमें शराब पी। 4 उन्होंने शराब पी और सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और पथर के बुतों की बड़ाई की। 5 उसी वक्त आदीपी के हाथ की उंगलियों जाहिर हुईं और उन्होंने शमा'दान के मुकाबिल बादशाही महल की दीवार के गच पर लिखा, और बादशाह ने हाथ का वह हिस्सा जो लिखता था देखा। 6 तब बादशाह के चेहरे का रंग उड़ गया और उसके ख्यालात उसको पेरेशान करने लगे, यहाँ तक कि उसकी कमर के जोड़ ढीले हो गए और उसके घुटने एक दूरे से टकराने लगे। 7 बादशाह ने चिल्लता कर कहा कि नज़मियों और कसदियों और फलागिरों को हाजिर करें। बादशाह ने बाबूल के हकीमों से कहा, जो कोई इस लिखे हए को पढ़े और इसका मतलब मुझ से बयान करें, अर्गावानी खिल'अत पाएगा और उसकी गर्दन में जरीन तौक पहनाया जाएगा, और वह ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा। 8 तब बादशाह के तमाम हकीम हाजिर हुए, लेकिन न उस लिखे हए को पढ़ सके और न बादशाह से उसका मतलब बयान कर सके। 9 तब बेलशजर बादशाह बहुत घबराया और उसके चेहरे का रंग उड़ गया, और उसके हाकिम पेरेशान हो गए। 10 अब बादशाह और उसके हाकिमों की बातें सुनकर बादशाह की बालिदा जश्नगाह में आईं और कहने लगी, ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह! तेरे ख्यालात तुझको पेरेशान न करे और तेरा चेहरा उदास न हो। 11 उसी ममलुकत में एक शराब है जिसमें पाक इलाहों की स्थ है, और तेरे बाप के दिनों में नूर और 'अक्ल और हिक्मत, इलाहों की हिक्मत की तरह उसमें पाई जाती थीं, और उसको नबूकदनजर बादशाह, तेरे बाप ने जादूगरों और नज़मियों और कसदियों और फलागिरों का सरदार बनाया था। 12 क्यूँकि उसमें एक फाजिल स्थ और दानिश और 'अक्ल और ख्यालों की ताँबी और 'उत्क्या कुशाई और मुश्किलात के हल की ताकत थी — उसी दानीएल में जिसका नाम बादशाह ने बेलशजर र रख्या था — इसलिए दानीएल को बुलवा, वह मतलब बताएगा। 13 तब दानीएल बादशाह के सामने हाजिर किया गया। बादशाह ने दानीएल से पूछा, क्या तू वही दानीएल है जो यहदाह के गुलामों में से है, जिनको बादशाह मेरा बाप यहदाह से लाया? 14 मैंने तेरे बारे में सुना है कि इलाहों की स्थ तुझमें है, और नूर और 'अक्ल और कामिल हिक्मत तुझ में है। 15 हकीम और नज़मी मेरे सामने हाजिर किए गए, ताकि इस लिखे हए को पढ़ें और इसका मतलब मुझ से बयान करें, लेकिन वह इसका मतलब बयान नहीं कर सके। 16 और मैंने तेरे बारे में सुना है कि तू ताँबी और मुश्किलात के हल पर कादिर है। इसलिए अगर तू इस लिखे हए को पढ़े और इसका मतलब मुझ से बयान करे, तो अर्गावानी खिल'अत पाएगा और तेरी गर्दन में जरीन तौक पहनाया जाएगा और तू ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम होगा। 17 तब दानीएल ने बादशाह को जबाब दिया, तेरा इन्हाँ आम तेरे ही पास रहे और अपना सिला किसी दूसरे को दे, तो भी मैं बादशाह के लिए इस लिखे हए को पढ़ूँगा और इसका मतलब मुझ से बयान करसँग। 18 ऐ बादशाह, खुदा ताँला ने नबूकदनजर, तेरे बाप को सलतनत और हशमत और शौकत और 'इज्जत बख्शी। 19 और उस हशमत की बजह से जो उसने उसे बख्शी तमाम लोग और उमरों और अहल — ए — जुबान उसके सामने काँपेंगे और डरने लगे। उसने जिसको चाहा हलाक किया और जिसको चाहा जिन्दा रख्खा, जिसको चाहा सरफराज किया और जिसको चाहा जलील किया। 20 लेकिन जब उसकी ताँबी अत में गुर्ह सरमाया और उसका दिल गुर्ह से सख्त हो गया, तो वह तख्त — ए — सलतनत से उतार

दिया गया और उसकी हशमत जाती रही। 21 और वह बनी आदम के बीच से हॉक कर निकाल दिया गया, और उसका दिल हैवानों का सा बना और गोखरुओं के साथ रहने लगा और उसे बैलों की तरह घास खिलते थे और उसका बदन आसमान की शब्दनम से तर हुआ; जब तक उसने मालूम न किया कि खुदा — ताला इंसान की ममलुकत में हक्मरानी करता है, और जिसको चाहता है उस पर कार्दम करता है। 22 लेकिन तू, ऐ बेलशजर, जो उसका बेटा है; बाबजूद यह कि तू इस सब को जानता था तोपी तूने अपने दिल से 'आजिजी न की। 23 बल्कि आसमान के खुदावन्द के सामने अपने आप को बलन्द किया, और उसकी हैकल के बर्तन तेरे पास लाए और तूने हाकिमों और अपनी वीवियों और बांदियों के साथ उनमें मय — ख्वारी की, और तूने सोने और चाँदी और पीतल और लोहे और लकड़ी और पथर के बुतों की बडाई की, जो न देखते न सुनते और न जानते हैं; और उस खुदा की तम्जीद न की जिसके हाथ में तेरा दम है, और जिसके काबू में तेरी सब राहें हैं। 24 'इसलिए उसकी तरफ से हाथ का वह हिस्सा भेजा गया, और यह नविशत लिखा गया। 25 और यूं लिखा है: मिने, मिने, तकील — ओ — फरसीन। 26 और उसके मानी यह है: मिने, यानी खुदा ने तेरी ममलुकत महसूब किया और उसे तमाम कर डाला। 27 तकील, यानी त तराजू में तोला गया और कम निकला। 28 फरसी, यानी तेरी ममलुकत फारसियों को ती गई। 29 तब बेलशजर ने हक्म किया, और दानीएल को अर्गावानी लिखास पहनाया गया और जरीन तौक उसके गले में डाला गया, और ऐलान कराया गया कि वह ममलुकत में तीसरे दर्जे का हाकिम हो। 30 उरी रात को बेलशजर, कसदियों का बादशाह कल्त हुआ। 31 और दरा मादी ने बासठ बरस की उम्र में उसकी सल्तनत हासिल की।

6 दारा को पसन्द आया कि ममलुकत पर एक सौ बीस नाजिम मुकर्रर करें, जो सारी ममलुकत पर हक्मत करें। 2 और उन पर तीन बजीर हों जिनमें से एक दानीएल था, ताकि नाजिम उनको हिसाब दें और बादशाह नुकसान न उठाए। 3 और चूंकि दानीएल में फाजिल स्थ थी, इसलिए वह उन बजीरों और नाजिमों पर सबकत ले गया और बादशाह ने चाहा कि उसे सारे मुल्क पर मुख्तार ठहराए। 4 तब उन बजीरों और नाजिमों ने चाहा कि हाकिमदारी में दानीएल पर कुसूर साबित करें, लेकिन वह कोई मौका' या कुसूर न पा सके, क्यूंकि वह ईमानदार था और उसमें कोई खता या बुराई न थी। 5 तब उन्होंने कहा, कि "हम इस दानीएल को उसके खुदा की शरी'अत के अलावा किसी और बात में कुसूरवार न पाएंगे।" 6 इसलिए यह बजीर और नाजिम बादशाह के सामने जमा' हुए और उससे इस तरह कहने लगे, कि "ऐ दारा बादशाह, हमेशा तक जीता रह।" 7 ममलुकत के तमाम बजीरों और हाकिमों और नाजिमों और सलाहकारों और सरदारों ने एक साथ मशवरा किया है कि एक खुस्वाना तरीका मुकर्रर करें, और एक इन्सिनाई फरमान जारी करें, ताकि ऐ बादशाह, तीस रोज तक जो कोई तेरे अलावा किसी मालूम या आदमी से कोई दरखास्त करें, शेरों की माँद में डाल दिया जाए। 8 अब ऐ बादशाह, इस फरमान को कायम कर और सिखे हुए पर दस्तखत कर, ताकि बदील न हो जैसे मादियों और फारसियों के तौर तरीके जो तबदील नहीं होते।" 9 तब दारा बदशाह ने उस लिखे हुए और फरमान पर दस्तखत कर दिए। 10 और जब दानीएल ने मालूम किया कि उस लिखे हुए पर दस्तखत हो गए, तो अपने घर में आया और उसकी कोठरी का दीना येस्सलेम की तरफ खुला था, वह दिन में तीन मरतबा हमेशा की तरह घुटने टेक कर खुदा के सामने दुआ और उसकी शुक्रगुजारी करता रहा। 11 तब यह लोग जमा' हुए और देखा कि दानीएल अपने खुदा के सामने दुआ और इल्तिमास कर रहा है। 12 तब उन्होंने बादशाह के पास आकर उसके सामने उसके फरमान का यूंजिक किया, कि "ऐ बादशाह, क्या तूने इस

फरमान पर दस्तखत नहीं किए, कि तीस रोज़ तक जो कोई तेरे अलावा किसी मालूम या आदमी से कोई दरखास्त करे, शेरों की माँद में डाल दिया जाएगा? बादशाह ने जबाब दिया, मादियों और फारसियों के ना बदलने वाले तौर तरीके के मुताबिक यह बात सच है।" 13 तब उन्होंने बादशाह के सामने 'अर्ज़ किया, कि "ऐ बादशाह, यह दानीएल जो यहदाह के गुलामों में से है, न तेरी परवा करता है और न उस इन्सिनाई फरमान को जिस पर तूने दस्तखत किए हैं काम में लाता है, बल्कि हर रोज तीन बार दुआ करता है।" 14 जब बादशाह ने यह बातें सुनी, तो निहायत रन्जीदा हुआ और उसने दिल में चाहा कि दानीएल को छुड़ाए, और सरज झूने तक उसके छुड़ाने में कोशिश करता रहा। 15 फिर यह लोग बादशाह के सामने जमा' हुए और बादशाह से कहने लगे, कि "ऐ बादशाह, तू समझ ले कि मादियों और फारसियों के तौर तरीके यूं हैं कि जो फरमान और कानून बादशाह मुकर्रर करे कभी नहीं बदलता।" 16 तब बादशाह ने हक्म दिया, और वह दानीएल को लाए और शेरों की माँद में डाल दिया, पर बादशाह ने दानीएल से कहा, 'तेरा खुदा, जिसकी तू हमेशा इबादत करता है तुझे छुड़ाएगा। 17 और एक पथर लाकर उस माँद के मूँह पर रख दिया, और बादशाह ने अपनी और अपने अमीरों की मूहर उस पर कर दी, ताकि वह बात जो दानीएल के हक में ठहराई गई थी न बदले। 18 तब बादशाह अपने महल में गया और उसने सारी रात फ़ाका किया, और मसीकी की साज उसके सामने न लाए और उसकी नीद जाती रही। 19 और बादशाह सुबह बहुत सवेरे उठा, और जल्दी से शेरों की माँद की तरफ चला। 20 और जब माँद पर पहुँचा, तो गमनाक आवाज से दानीएल को पुकारा। बादशाह ने दानीएल को खिलाब करके कहा, ऐ दानीएल, जिन्दा खुदा के बन्दे, क्या तेरा खुदा के जिसकी तू हमेशा इबादत करता है, क्यादिर हुआ कि तुझे शेरों से भेड़ाए? 21 तब दानीएल ने बादशाह से कहा, ऐ बादशाह, हमेशा तक जीता रह। 22 मेरे खुदा ने अपने फ़ारिशे को भेजा और शेरों के मूँह बन्द कर दिए, और उन्होंने मुझे नुकसान नहीं पहुँचाया क्यूंकि मैं उसके सामने थे — युनाह साबित हुआ, और तेरे सामने भी ऐ बादशाह, मैंने खता नहीं की। 23 इसलिए बादशाह निहायत खुश हुआ और हक्म दिया कि दानीएल को उस माँद से निकालें। तब दानीएल उस माँद से निकाला गया, और मालूम हुआ कि उसे कुछ नुकसान नहीं पहुँचा, क्यूंकि उसने अपने खुदा पर भरोसा किया था। 24 और बादशाह ने हक्म दिया और वह उन शख्तों को जिन्होंने दानीएल की शिकायत की थी लाए, और उनके बच्चों और वीवियों के साथ उनको शेरों की मान्द में डाल दिया; और शेर उन पर गालिब आए और इससे पहले कि मान्द की तह तक पहुँचे, शेरों ने उनकी सब बहिँयाँ तोड़ डाली। 25 तब दारा बादशाह ने सब लोगों और कौमों और अहल — ए — ज़बान को जो इस जमीन पर बसते थे, खत लिखा: "तुम्हारी सलामती बढ़ती जाये।" 26 मैं यह फरमान जारी करता हूँ कि मेरी ममलुकत के हर एक स्कैपे के लोग, दानीएल के खुदा के सामने डरते और काँपते हों क्यूंकि वही जिन्दा खुदा है और हमेशा कायम है; और उसकी सल्तनत लाज़वाल है और उसकी ममलुकत हमेशा तक रहेगी। 27 वही छुड़ाता और बचाता है, और आसमान और ज़मीन में वही निशान और 'अजायब दिखाता है, उसीने दानीएल को शेरों के पंजों से छुड़ाया है।" 28 इसलिए यह दानीएल दारा की सल्तनत और खोरस फ़ारसी की सल्तनत में कामयाब रहा।

7 शाह — ए — बाबुल बेलशजर के पहले साल में दानीएल ने अपने बिस्तर पर खाब में अपने सिर के दिमागी ख्यालात की रोया देखी। तब उसने उस खाब को लिखा, और उन ख्यालात का मुकम्मल बयान किया। 2 दानीएल ने यूँ कहा, कि मैंने रात को एक खाब देखा, और क्या देखता हूँ कि आसमान की चारों हवाएँ समन्दर पर ज़ोर से चली। 3 और समन्दर से चार बड़े हैवान, जो

एक दूसरे से मुख्तालिफ़ थे निकले। 4 पहला शेर — ए — बबर की तरह था, और उकाब के से बाजू रखता था; और मैं देखता रहा, जब तक उसके पर उखाड़े गए और वह जमीन से उठाया गया, और आदमी की तरह पाँव पर खड़ा किया गया और इंसान का दिल उसे दिया गया। 5 और क्या देखता हूँ कि एक दसरा हैवान रीछ की तरह है, और वह एक तरफ सीधा खड़ा हुआ; और उसके मुँह में उसके दाँतों के बीच तीन पसालियाँ थीं, और उन्होंने उससे कहा, 'कि उठ, और कसरत से गोश खा। 6 फिर मैंने निगाह की, और क्या देखता हूँ कि एक और हैवान तैरते की तरह उठा, जिसकी पीठ पर परिन्ने के से चार बाजू थे और उस हैवान के चार सिर थे; और सल्तनत उसे दी गई। 7 फिर मैंने रात को ख्वाब में देखा, और क्या देखता हूँ कि चौथा हैवान हौलनाक और हैबतनाक और निहायत जबरदस्त है, और उसके दाँत लोहे के बड़े — बड़े थे; वह निगल जाता और टुकड़े टुकड़े करता था, और जो कुछ बाकी बचता उसको पाँव से लताड़ता था, और यह उन सब पहले हैवानों से मुख्तालिफ़ था और उसके दस सींग थे। 8 मैं ने उन सींगों पर गौर से नज़र की, और क्या देखता हूँ कि उनके बीच से एक और छोटा सा सींग निकला, जिसके आगे पहलों में से तीन सींग जड़ से उखाड़े गए, और क्या देखता हूँ कि उस सींग में इंसान के सी आँखे हैं और एक मुँह है जिस से गुस्त की बातें निकलती हैं। 9 मैं देखते हुए तत्त्व लगाए गए, और पुराने दिनों में बैठ गया; उसका लिबास बर्फ़ की तरह सफेद था, और उसके सिर के बाल खालिस ऊन की तरह थे; उसका तत्त्व आग के शोले की तरह था, और उसके पहिये जलती आग की तरह थे। 10 उसके सामने से एक आग का दरिया जारी था, हजारों हजार उसकी खिदाम पर मेहमान हाजिर थे और लाखों लाख उसके सामने खड़े थे, 'अदालत हो रही थी, और किताबें खुली थीं। 11 मैं देख ही रहा था कि उस सींग की गुस्त की बातों की आवाज़ की वजह से, मैं देखते हुए वह हैवान मारा गया और उसका बदन हलाक करके शोलाजन आग में डाला गया। 12 और बाकी हैवानों की सल्तनत भी उन से ले ली गई, लेकिन वह एक ज़माना और एक दौर जिन्दा रहे। 13 मैंने रात को ख्वाब में देखा, और क्या देखता हूँ एक शब्द सादमजाद की तरह आसमान के बादलों के साथ आया और गुज़रे दिनों तक पहुँचा, वह उसे उसके सामने लाए। 14 और सल्तनत और हशमत और ममलुकत उसे दी गई, ताकि सब लोग और उम्मतें और अहल — ए — ज़ुबान उसकी खिदाम पुजारी करें उसकी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है जो जाती न रहेगी और उसकी ममलुकत लाज़वाल होगी। 15 मुझ दानीएल की रुह मैं बदन में मलतून हूँ, और मैं दिमाग के ख्यालात ने मुझ परेशान कर दिया। 16 जो मैं नज़ारीक खड़े थे, मैं उनमें से एक के पास गया और उससे इन सब बातों की हकीकित दरियापूर्त की, इसलिए उसने मुझे बताया और इन बातों का मतलब समझा दिया, 17 'यह चार बड़े हैवान चार बादशाह हैं, जो जमीन पर बर्पी होंगे। 18 लेकिन हक — ताआला के पाक लोग सल्तनत से ले लेंगे और हमेशा तक हाँ हमेशा से हमेशा तक उस सल्तनत के मालिक रहेंगे। 19 तब मैंने चाहा कि चौथे हैवान की हकीकित समझूँ, जो उन सब से मुख्तालिफ़ और निहायत हौलनाक था, जिसके दाँत लोहे के और नाखून पीतल के थे, जो निगलता और टुकड़े — टुकड़े करता और जो कुछ बचता उसको पाँव से लताड़ता था। 20 और दस सींगों की हकीकित जो उसके सिर पर थे, और उस सींग की जो निकला और जिसके आगे तीन गिर गए, यानी जिस सींग की आँखें थीं और एक मुँह था जो बड़े गुस्त की बातें करता था, और जिसकी सूरत उसके साथियों से ज़्यादा रोब दार थी। 21 मैं ने देखा कि वही सींग मुकद्दसों से ज़ंग करता और उन पर गालिप आता रहा। 22 जब तक कि पुराने दिन न आये, और हक ताआला के पाक लोगों का इन्साफ़ न किया गया, और बक्तु आ न पहुँचा कि पाक लोग सल्तनत के मालिक हों। 23

उसने कहा, कि चौथा हैवान दुनिया की चौथी सल्तनत जो तमाम सल्तनतों से मुख्तालिफ़ है, और जमीन को निगल जायेगी और उसे लताड़ कर टुकड़े — टुकड़े करेगी। 24 और वह दस सींग दस हादशाह हैं, जो उस सल्तनत में खड़े होंगे; और उनके बाद एक और खड़ा होगा, और वह पहलों से मुख्तालिफ़ होगा और तीन हादशाहों को पस्त करेगा। 25 और वह हक — ताआला के खिलाफ बातें करेगा, और हक ताआला के मुकद्दसों को तंग करेगा और मुर्कराव बक्तु व शरीरी अत को बदलने की कोशिश करेगा, और वह एक दौर और दौरों और नीम दौर तक उसके हवाले किए जाएंगे। 26 तब 'अदालत कायम होगी, और उसकी सल्तनत उससे ले लेंगे कि उसे हमेशा के लिए नेस्त — ओ — नाबूद करें। 27 और तमाम आसमान के नीचे सब मुल्कों की सल्तनत और ममलुकत और सल्तनत की हशमत हक ताआला के मुकद्दस लोगों को बख्ती जाएगी, उसकी सल्तनत हमेशा की सल्तनत है और तमाम ममलुकत उसकी, खिदामत गुजार और फरमाबदार होंगी। 28 "यहाँ पर यह हक्म पूरा हुआ, मैं दानीएल अपने शकों से निहायत घबराया और मेरा चेहरा मायूस हुआ, लेकिन मैंने यह बात दिल ही में रख्ती।"

8 बेलशज़र बादशाह की सल्तनत के तीसरे साल में मुझ को, हाँ, मुझ दानीएल को एक ख्वाब नज़र आया, यानी मेरे पहले ख्वाब के बाद। 2 और मैंने 'आलम — ए — रोया में देखा, और जिस बक्तु मैंने देखा, ऐसा मालूम हुआ कि मैं महल — ए — सोसन में था, जो सूबा — ए — ऐलाम में है। मिर मैंने 'आलम — ए — रोया ही में देखा कि मैं दरिया — ए — ऊलाई के किनारे पर हूँ। 3 तब मैंने आँख उठा कर नज़र की, और क्या देखता हूँ कि दरिया के पास एक मेडा खड़ा है जिसके दो सींग हैं, दोनों सींग ऊँचे थे, लेकिन एक दूसरे से बड़ा था और बड़ा दूसरे के बाद निकला था। 4 मैंने उस मेडे को देखा कि पश्चिम — और — उत्तर — और — दक्षिण की तरफ सींग मारता है, यहाँ तक कि न कोई जानकार उसके सामने खड़ा हो सका और न कोई उससे छुड़ा सका, पर वह जो कुछ छाहता था करता था, यहाँ तक कि वह बहुत बड़ा हो गया। 5 और मैं सोच ही रहा था कि एक बकरा पश्चिम की तरफ से आकर तमाम जमीन पर ऐसा फिरा कि जमीन को भी न छुआ, और उस बकरे की दोनों आँखों के बीच एक 'अजीब सींग था। 6 और वह उस दो सींग वाले मेडे, के पास, जिसे मैंने दरिया के किनारे खड़ा देखा था आया और अपने जोर के कहर से उस पर हमलावर हुआ। 7 और मैंने देखा कि वह मेडे के करीब पहुँचा और उसका गज़ब उस पर भड़का और उसने मेडे को मारा और उसके दोनों सींग तोड़ डाले और मेडे में उसके मुकाबले की हिम्मत न थी, तब उसने उसे जमीन पर पटख दिया और उसे लताड़ा और कोई न था कि मेडे को उससे छुड़ा सके। 8 और वह बकरा निहायत बुर्जु हुआ, और जब वह निहायत ताकतवर हुआ तो उसका बड़ा सींग टूट गया और उसकी जगह चार अजीब सींग आसमान की चारों हवाओं की तरफ निकले। 9 और उनमें से एक छोटा सींग निकला, जो दक्षिण और पूरब और जलाली मुल्क की तरफ बैठी हायत बढ़ गया। 10 और वह बढ़ कर अजराम — ए — फलक तक पहुँचा, और उसने कुछ अजराम — ए — फलक और सिरातों को जमीन पर गिरा दिया और उनको लताड़ा। 11 बल्कि उसने अजराम के फरमारूबाँ तक अपने आप को बलन्द किया, और उससे दाझमी कुर्बानी को छीन लिया और उसका मकदिस गिरा दिया। 12 और अजराम खताकारी की वजह से कायम रहने वाली कुर्बानी के साथ उसके हवाले किए गए, और उसने सच्चाई को जमीन पर पटख दिया और वह कामयाबी के साथ यूँ ही करता रहा। 13 तब मैंने एक फरिशत को कलाम करते सुना, और दूसरे फरिशते ने उसी फरिशते से जो कलाम करता था पूछा कि दाझमी कुर्बानी और वीरान करने वाली खताकारी की रोया जिसमें

मकदिस और अजराम पायमाल होते हैं, कब तक रहेगी? 14 और उसने मुझ से कहा, कि “दो हजार तीन सौ सुख्ब — और — शाम तक, उसके बाद मकदिस पाक किया जाएगा।” 15 फिर यूँ हुआ कि जब मैं दानीएल ने यह रोया देखी, और इसकी तांबी की फिर्क में था, तो क्या देखता हूँ कि मेरे सामने कोई इंसान सूरत खड़ा है। 16 और मैंने ऊलाई में से आदमी की आवाज सुनी, जिसने बलन्द आवाज से कहा, कि “ऐ जबराइल, इस शब्द को इस रोया के माने समझा दो।” 17 चुनौते वह जहाँ मैं खड़ा था नजदीक आया, और उसके अने से मैं डर गया और मूँह के बल पिरा, पर उसने मुझसे कहा, “ऐ आदमजादा! समझ ले कि यह रोया आखिरी जमाने के जरिए है।” 18 और जब वह मुझसे बतें कर रहा था, मैं गहरी नींद में मूँह के बल जमीन पर पड़ा था, लेकिन उसने मुझे पकड़ कर सीधा खड़ा किया, 19 और कहा कि “देख, मैं तुझे समझाऊँगा कि कहर के आखिर में क्या होगा, क्यूँकि यह हृक्षम आखिरी मुकर्रा वक्त के बोरे है। 20 जो मैंदा तु ने देखा, उसके दोनों सींग मादी और फारस के बादशाह हैं। 21 और वह जसीम बकरा यूनान का बादशाह है, और उसकी आँखों के बीच का बड़ा सींग पहला बादशाह है। 22 और उसके टूट जाने के बाद, उसकी जगह जो चार और निकले वह चार सलतनतें हैं जो उसकी कौम में कायम होंगी, लेकिन उनका इश्तियार उसकी तरह न होगा। 23 और उनकी सलतनत के आखिरी दिनों में जब खताकार लोग हृद तक पहुँच जायें, तो एक सख्त और बेरहम बादशाह खड़ा होगा। 24 यह बड़ा जबरदस्त होगा लेकिन अपनी ताकत से नहीं, और ‘अजीब तरह से बर्बाद करेगा और कामयाब होगा और काम करेगा और ताकतवरों और मुकदिस लोगों को हलाक करेगा। 25 और अपनी चुताराई से ऐसे काम करेगा कि उसकी फिरत के मन्सुबे उसके हाथ में खूब अन्जाम पाएंगे, और दिल में बड़ा गुस्त करेगा और सुलह के वक्त में बहुतों को हलाक करेगा; वह बादशाहों के बादशाह से भी मुकाबिला करने के लिए उठ खड़ा होगा, लेकिन वही शिक्षक्त खाएगा। 26 और यह सुखर शाम की रोया जो बयान हृदय यकीनी है, लेकिन तू इस रोया को बन्द कर रख, क्यूँकि इसका ‘इलाका बहुत दूर के दिनों से है।’ 27 और मुझ दानीएल को शश आया, और मैं कुछ रोज़ तक बीमार पड़ा रहा; फिर मैं उठा और बादशाह का कारोबार करने लगा, और मैं खबाब से परेशान था लेकिन इसको कोई न समझा।

9 दारा — बिन — ‘अख्स्यरस जो मादियों की नसल से था, और कसदियों की ममलकत पर बादशाह मुकर्रर हुआ, उसके पहले साल में, 2 याँनी उसकी सलतनत के पहले साल में, मैं दानीएल, ने किताबों में उन बरसों का हिसाब समझा, जिनके जरिए खुदावन्द का कलाम यरमियाह नबी पर नाजिल हुआ कि येस्शलेम की बर्बादी पर सतर बरस पूरे गुजरेंगे। 3 और मैंने खुदावन्द खुदा की तरफ सुख किया, और मैंने मिन्नत और मुनाजात करके और रोजा रखकर और टाट ओढ़कर और राख पर बैठकर उसका तालिब हुआ। 4 और मैंने खुदावन्द अपने खुदा से दुआ की और इकरार किया और कहा, कि “ऐ खुदावन्द अजीम और मुहीब खुदा तू अपने फरमाबदराम पूरबूत रखेनवातों के लिए अपने ‘अहद — ओ — रहम को कायम रखता है; 5 हम ने गुनाह किया, हम बरगता हुए, हम ने शरारत की, हम ने बगावत की बल्कि हम ने तेरे हृक्षों और तौर तरीके को तर्क किया है; 6 और हम तेरे खिदमतगुजार नवियों के फरमाबदराम नहीं हुए, जिन्होंने तेरा नाम लेकर हमारे बादशाहों और हाकिमों से और हमारे बाप — दादा और मुल्क के सब लोगों से कलाम किया। 7 ऐ खुदावन्द, सदाकत तेरे लिए है और स्स्वाई हमारे लिए, जैसे अब यहृदाह के लोगों और येस्शलेम के बाशिन्दों और दूर — ओ — नजदीक के तमाम बनी — इस्माइल के लिए है, जिनको तूने तमाम मुमलिक में हँक किया

क्यूँकि उन्होंने तेरे खिलाफ गुनाह किया। 8 ऐ खुदावन्द, मायूसी हमारे लिए है; हमारे बादशाहों, हमारे उमरा और हमारे बाप — दादा के लिए, क्यूँकि हम तेरे गुनहगार हुए। 9 खुदावन्द हमारा खुदा रहीम — ओ — गफूर है, अगरचे हमने उसे बाबाकर की। 10 हम खुदावन्द अपने खुदा की आवाज के सुनने वाले नहीं हैं कि उसकी शरीरी अत पर, जो उसने अपने खिदमतगुजार नवियों की मारिफत हमारे लिए मुकर्रर की, ‘अमल करों। 11 हाँ, तमाम बनी — इस्माइल ने तेरी शरीरी अत को तोड़ा और नाम फरमानी इश्तियार की ताकि तेरी आवाज के फरमाबदराम न हों, इसलिए वह लान्त और कसम, जो खुदा के खादिम मस्सा की तैरत में लिखी है हम पर परी हूँ, क्यूँकि हम उसके गुनहगार हुए। 12 और उसने जो कुछ हमारे और हमारे काजियों के खिलाफ जो हमारी ‘अदालत करते थे फरमाया था, हम पर बलाए — ‘अजीम लाकर साबित कर दिखाया, क्यूँकि जो कुछ येस्शलेम से किया गया वह तमाम जहान में’ और कहीं नहीं हुआ। 13 जैसा मस्सा की तैरत में लिखा है, यह तमाम मुसीबत हम पर आई, तो भी हम ने अपने खुदावन्द अपने खुदा से इल्लिजा न की कि हम अपनी बदकिरदारी से बा’ज़ आते और तेरी सच्चाई को पहचानते। 14 इसलिए खुदावन्द ने बला को निगाह में रखा और उसको हम पर अपने सब कामों में जो वह करता है सच्चा है, लेकिन हम उसकी आवाज के फरमाबदराम न हुए। 15 और अब, ऐ खुदावन्द हमारे खुदा जो ताकतवर बाजू से अपने लोगों को मुल्क — ए — मिस्र से निकाल लाया, और अपने लिए नाम पैदा किया जैसा आज के दिन है, हमने गुनाह किया, हमने शरारत की। 16 ऐ खुदावन्द, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू अपनी तमाम सदाकत के मुताबिक अपने कहर — ओ — गजब को अपने शहर येस्शलेम, याँनी अपने कोह — ए — मुकदिस से खत्म कर, क्यूँकि हमारे गुनाहों और हमारे बाप — दादा की बदकिरदारी की बजह से येस्शलेम और तेरे लोग अपने सब आसापास वालों के नजदीक जा — ए — मलामत हुए। 17 इसलिए अब ऐ हमारे खुदा, अपने खादिम की दुआ और इल्लिमास सुन, और अपने चेहरे को अपनी ही खालिर अपने मकदिस पर जो बीराम है जलवायर फरमा। 18 ऐ मेरे खुदा, वीरानों को, और उस शहर को जो तेरे नाम से कहलाता है देख कि हम तेरे समाने अपनी रास्तबाजी पर नहीं बल्कि तेरी बेनिहायत रहमत पर भरोसा करके मुनाजात करते हैं। 19 ऐ खुदावन्द, सुन ले और कुछ कर; ऐ मेरे खुदा, अपने नाम की खालिर देर न कर, क्यूँकि तेरा शहर और तेरे लोग तेरे ही नाम से कहलाते हैं।” 20 और जब मैं यह कहता और दुआ करता, और अपने और अपनी कौम इस्माइल के गुनाहों का इकरार करता था, और खुदावन्द अपने खुदा के सामने अपने खुदा के कोह — ए — मुकदिस के लिए मुनाजात कर रहा था; 21 हाँ, मैं दुआ में यह कह ही रहा था कि वही शब्द जिबाराइल जिसे मैंने शूरू में रोया मैं देखा था, हृक्ष के मुताबिक तेज़ परवाजी करता हुआ आया, और शाम की कुर्बानी पेश करने के वक्त के क्रीब मुझे छुआ। 22 और उसने मुझे समझाया, और मुझ से बतें की और कहा, ऐ दानीएल, मैं अब इसलिए आया हूँ कि तुझे अक्ल — ओ — समझ बख्शूँ। 23 तेरी मुनाजात के शूरू ही मैं हृक्ष जारी हुआ, और मैं आया हूँ कि तुझे बताऊँ, क्यूँकि तू बहुत ‘अजीज़ है; इसलिए तू गूर्ख कर और खबाब को समझ ले। 24 ‘तेरे लोगों और तेरे मुकदिस शहर के लिए सतर हफ्ते मुकर्रर किए गए कि खताकारी और गुनाह का खातिमा हो जाए, बदकिरदारी का कफ़ारा दिया जाए, हमेशा रास्तबाजी कायाम’ हो, रोया — ओ — बबुत्त एवं मुहर हो और पाक तरीन मकाम मस्सूर किया जाए। 25 इसलिए तू मालम कर और समझ ले कि येस्शलेम की बहाती और तामीर का हृक्ष जारी होने से मप्सूह फरमांवर्वों तक सात हफ्ते और बासठ हफ्ते होंगे; तब फिर बाजार तामीर किए जाएँगे और फर्सील बनाई जाएँगी, मगर मुसीबत

के दिनों में। 26 और बासठ हफ्तों के बाद वह मम्सूह कत्तल किया जाएगा, और उसका कुछ न रहेगा, और एक बादशाह आएगा जिसके लोग शहर और मक्किदिस को बर्बाद करेंगे, और उसका अन्जाम गोया तूफान के साथ होगा, और आखिर तक लडाई रहेगी; बर्बादी मुकर्रर हो चुकी है। 27 और वह एक हफ्ते के लिए बहतों से 'अहद कायम करेगा, और निस्फ हफ्ते में जबीहे और हविये मौकूफ करेगा, और फसीलों पर उजाइने वाली मक्स्हहात रखी जाएगी; यहाँ तक कि बर्बादी कामाल को पहुँच जाएगी, और वह बला जो मुकर्रर की गई है उस उजाइने वाले पर वाक़ेँ होगी।"

10 शाह — ए — फारस खोरस के तीसरे साल में दानीएल पर, जिसका

नाम बेलत्सज़र रखा गया, एक बात ज़ाहिर की गई और वह बात सच और बड़ी लश्करकरशी की थी; और उसने उस बात पर गौर किया, और उस ख्वाब का राज समझा। 2 मैं दानीएल उन दिनों में तीन हफ्तों तक मातम करता रहा। 3 न मैंने लज़ीज़ खाना खाया, न गोशत और मय ने मेरे मुँह में दखल पाया और न मैंने तेल मला, जब तक कि प्ले तीन हफ्ते गुज़र न गए। 4 और पहले महीने की चौबीसवीं तारीख को जब मैं बड़े दरिया, यानी दरिया — ए — दजला के किनारे पर था, 5 मैंने आँख उठा कर नज़र की और क्या देखता हूँ कि एक शख्स कतानी लिबास पहने और ऊफ़ाज़ के खालिस सोने का पटका कमर पर बैंधे खड़ा है। 6 उसका बदन ज़बरज़द की तरह, और उसका चेहरा बिजली सा था, और उसकी आँखें आग के चरागों की तरह थीं; उसके बाज़ और पाँव रंगत में चमकते हुए पीतल से थे, और उसकी आवाज़ अम्बोह के शेर की तरह थी। 7 मैं दानीएल ही ने यह ख्वाब देखा, क्यूँकि मेरे साथियों ने ख्वाब न देखा, लेकिन उन पर बड़ी कपकपी तारी हुई और वह अपने आप को छिपाने को भाग गए। 8 इसलिए मैं अकेला रह गया और यह बड़ा ख्वाब देखा, और मुझ में हिम्मत न रही क्यूँकि मेरी ताज़गी मायसी से बदल गई और मेरी ताकत जाती रही। 9 लेकिन मैंने उसकी आवाज़ और बातें सुनी, और मैं उसकी आवाज़ और बातें सुनते बक्तर मुँह में बेल भारी नींद में पड़ गया और मेरा मुँह ज़मीन की तरफ था। 10 और देख एक हाथ ने मुझे छुआ, और मुझे खुटों और हथेलियों पर बिठाया। 11 और उसने मुझ से कहा, "ऐ दानीएल, 'अज़ीज़ मर्द, जो बातें मैं तुझ से कहता हूँ समझ ले; और सीधा खड़ा हो जा, क्यूँकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ।" और जब उसने मुझ से यह बात कही, तो मैं कॉपता हुआ खड़ा हो गया। 12 तब उसने मुझ से कहा, ऐ दानीएल, खौफ़ न कर, क्यूँकि जिस दिन से तेरे दिल लगाया कि समझे, और अपने खुदा के सामने 'आजिज़ी करें; तेरी बातें सुनी गईं और तेरी बातों की बजह से मैं आया हूँ। 13 पर फारस की ममलुकत के मुवक्किल ने इक्कीस दिन तक मेरा मुकाबला किया। फिर मीकाएल, जो मुकर्रब फरिश्तों में से है, मेरी मदद को पहुँचा और मैं शाहान — ए — फारस के पास रुका रहा। 14 लेकिन अब मैं इसलिए आया हूँ कि जो कुछ तेरे लोगों पर आखिरी दिनों में आने को है, तुझे उसकी खबर दें क्यूँकि अभी ये रोया ज़माना — ए — दराज़ के लिए है। 15 और जब उसने यह बातें मुझ से कही, मैं सिर झुका कर खामोश हो रहा। 16 तब किसी ने जो आदमज़ाद की तरह था मेरे होटों को छुआ, और मैंने मुँह खोला, और जो मेरे सामने खड़ा था उस से कहा, ऐ खुदावन्द, इस ख्वाब की बजह से मुझ पर गम का हुजूम है, और मैं नातवाँ हूँ। 17 इसलिए यह खादिम, अपने खुदावन्द से क्यूँकि हम कलाम हो सकता है? इसलिए मैं बिल्कुल बेताब — ओ — बेदम हो गया। 18 तब एक और ने जिसकी सूरत आदमी की सी थी, आकर मुझे छुआ और मुझको ताकत दी; 19 और उसने कहा, "ऐ 'अज़ीज़ मर्द, खौफ़ न कर, तेरी सलामती हो, मज़बूत — और — तवाना हो।" और जब उसने मुझसे यह कहा, तो मैंने तवानाई पाई और कहा, ऐ मेरे खुदावन्द, फरमा, क्यूँकि तू ही

ने मुझे ताकत बरखी है।" 20 तब उसने कहा, क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास किस लिए आया हूँ? और अब मैं फारस के मुवक्किल से लड़ने को बापस जाता हूँ; और मैं जाते ही यूनान का मुवक्किल आएगा। 21 लेकिन जो कुछ सच्चाई की किताब मैं लिखा है, तुझे बताता हूँ; और तुम्हारे मुवक्किल मीकाएल के सिवा इसमें मेरा कोई मददगार नहीं है।

11 और दारा मादी की सलतनत के पहले साल में, मैं ही उसको कायम करने और ताकत देने को खड़ा हुआ। 2 और अब मैं तझको हकीकत बताता हूँ। फारस में अभी तीन बादशाह और खड़े होंगे, और चौथा उन सबसे ज़्यादा दैलतमन्द होगा, और जब वो अपनी दौलत से ताकत पाएगा, तो सब को यूनान की सलतनत के खिलाफ उभेरेगा। 3 लेकिन एक ज़बरदस्त बादशाह खड़ा होगा, जो बड़े तसल्लुत से हक्मरान होगा और जो कुछ चाहेगा करेगा। 4 और उसके खड़े होते ही उसकी सलतनत को ज़बाल आएगा, और आसमान की चारों हवाओं की अतराफ़ पर तकसीम हो जाएगी लेकिन न उसकी नसल को मिलेगी न उसका एक बाल भी बाकी रहेगा बल्कि वह सलतनत ज़ड़ से उखड़ जाएगी और गैरों के लिए होगी। 5 और शाह — ए — ज़ुनूब ज़ोर पकड़ेगा, और उसके हाकिम में से एक उससे ज़्यादा ताकत — ओ — इस्तियार हासिल करेगा और उसकी सलतनत बहुत बड़ी होगी। 6 और चन्द्र साल के बाद वह आपस में मेल करेंगे, क्यूँकि शाह — ए — ज़ुनूब की बेटी शाह — ए — शिमाल के पास आएगी, ताकि इतिहाद कायम हो; लेकिन उसमें कुक्वत — ए — बाजून न रहेगी और न वह बादशाह कायम रहेगा न उसकी ताकत, बल्कि उन दिनों में वह अपने बाप और अपने लाने वालों और ताकत देने वाले के साथ छोड़ दी जाएगी। 7 लेकिन उसकी ज़ड़ों की एक शाख से एक शख्स उसकी जगह खड़ा होगा, वह सिपहसालार होकर शाह — ए — शिमाल के किले' में दाखिल होगा, और उन पर हमला करेगा और गालिब आएगा। 8 और उनके बुरों और ढाली हुई मूरतों को, सोने चाँदी के कीमती बर्तन के साथ गुलाम करके मिस्त्र को ले जाएगा; और चन्द्र साल तक शाह — ए — शिमाल से अलग रहेगा। 9 फिर वह शाह — ए — ज़ुनूब की ममलुकत में दाखिल होगा, पर अपने मुल्क को वापस जाएगा। 10 लेकिन उसके बेटे बरअमोखता होंगे, जो बड़ा लश्कर ज़मा' करेंगे और वह चढ़ाई करके फैलेगा, और गुज़र जाएगा और वह लौट कर उसके किले' तक लड़ेंगे। 11 और शाह — ए — ज़ुनूब की ताकत दाखिल होगा, और होकर निकलेगा और शाह — ए — शिमाल से ज़ंग करेगा, और वह बड़ा लश्कर लेकर आएगा और वह खड़ा लश्कर कर व्हाले कर दिया जाएगा। 12 और जब वह लश्कर तितर बितर कर दिया जाएगा, तो उसके दिल में गुस्सा समाएगा, वह लाखों को गिराएगा और गालिब न आएगा। 13 और शाह — ए — शिमाल फिर हमला करेगा और पहले से ज़्यादा लश्कर ज़मा' करेगा, और कुछ साल के बाद बहुत से लश्कर — और — माल के साथ फिर हमलावर होगा। 14 'और उन दिनों में बहुत से शाह — ए — ज़ुनूब पर चढ़ाई करेंगे, और तेरी कौम के कज़ज़ाक भी उठेंगे कि उस ख्वाब को पार करें; लेकिन वह गिर जाएंगे। 15 चुनून चाहे शाह — ए — शिमाल आएगा और दमदामा बँधेगा और हरीन शहर ले लेगा, और ज़ुनूब की ताकत कायम न रहेगी और उसके चुने हुए मर्दी में मुकाबले की हिम्मत न होगी। 16 और हमलावर जो कुछ चाहेगा, और कोई उसका मुकाबला न कर सकेगा; वह उस जलाती मुल्क में कायम करेगा, और उसके हाथ में बाबी होगी। 17 और वह यह इतादा करेगा कि अपनी ममलुकत की तमाम शौकत के साथ उसमें दाखिल हो, और सच्चे उसके साथ होंगे; वह कामयाब होगा और वह उसे जवान कुँवारी देगा कि उसकी बर्बादी का जरिया' हो, लेकिन यह तदीर कायम न रहेगी और उसको इसमें कुछ फाइदा न होगा। 18 फिर वह समंदरी — मुमालिक का स्त्रव करेगा

और बहुत से ले लेगा, लेकिन एक सरदार उसकी मलामत को मौकूफ करेगा, बल्कि उसे उसी के सिर पर डालेगा। 19 वह वह अपने मुल्क के किलों की तरफ मुड़ेगा, लेकिन ठोकर खाकर गिर पड़ेगा और माटूम हो जाएगा। 20 और उसकी जगह एक और खड़ा होगा, जो उस ख़बरसूत ममलुकत में महसूल लेने वाले को भेजेगा; लेकिन वह चन्द रोज़ में बे कहर — ओ — जंग ही हलाक हो जाएगा। 21 फिर उसकी जगह एक पांची खड़ा होगा जो सलतनत की 'इज़ज़त का हकदार न होगा, लेकिन वह अचानक आएगा और चापलूसी करके ममलुकत पर कांबिज हो जाएगा। 22 और वह सैलाब — ए — अफवाज को अपने सामने ढौड़ाएगा और शिक्षत देगा, और अमीर — ए — 'अहद को भी न छोड़ेगा। 23 और जब उसके साथ 'अहद — ओ — पैमान हो जाएगा तो दगाबाजी करेगा, क्यूंकि वह बढ़ेगा और एक छोटी जमा' अत की मदद से ताकत हासिल करेगा। 24 और हृक्षम के दिनों में मुल्क के वीरान मकामात में दाखिल होगा, और जो कुछ उसके बाप — दादा और उनके आबा — ओ — अजदाद से न हुआ था कर दिखाएगा; वह गनीमत और लट और माल उनमें तक्सीम करेगा और कुछ 'असे तक मजबूत किलों' के खिलाफ मन्सूब बौद्धिंग। 25 वह अपनी ताकत और दिल को ऊभरेगा कि बड़ी फौज के साथ शाह — ए — जुनूब पर हमला करे, और शाह — ए — जुनूब निहायत बड़ा और जबरदस्त लश्कर लेकर उसके मुकाबिले को निकलेगा लेकिन वह न ठहरेगा, क्यूंकि वह उसके खिलाफ मन्सूब बौद्धिंग। 26 बल्कि जो उसका दिया खाते हैं, वही उसे शिक्षत देंगे और उसकी फौज तिर बितर होगी और बहुत से कल्ले होंगे। 27 और इन दोनों बादशाहों के दिल शरारत की तरफ माइल होंगे, वह एक ही दस्तरखान पर बैठ कर दूर बोलेंगे लेकिन कामयाबी न होगी, क्यूंकि खातिमा मुकर्रा वक्त पर होगा। 28 तब वह बहुत सी गनीमत लेकर अपने मुल्क को बापस जाएगा; और उसका दिल 'अहद — ए — मुकद्दस के खिलाफ होगा, और वह अपनी मर्जी पूरी करके अपने मुल्क को बापस जाएगा। 29 मुकर्रा वक्त पर वह फिर जुनूब की तरफ खुस्त जर्केगा, लेकिन ये हमला पहले की तरह न होगा। 30 क्यूंकि अहल — ए — कितीम के जहाज उसके मुकाबिले को निकलेंगे, और वह रंजीदा होकर मुड़ेगा और 'अहद — ए — मुकद्दस पर उसका गजब भड़केगा, और वह उसके मुताबिक 'अमल करेगा; बल्कि वह मुड कर उन लोगों से जो 'अहद — ए — मुकद्दस के छोड़ देंगे, इत्तफ़ाक करेगा। 31 और अफवाज उसकी मदद करेंगी, और वह मजबूत मक्कदिस को नापाक और दाइमी कुर्बानी को रोकेंगे और उजाड़ने वाली मकस्त हीज़ को उसमें नस्ब करेंगे। 32 और वह 'अहद — ए — मुकद्दस के खिलाफ शरारत करने वालों को खुशामद करके बरग़शता करेगा, लेकिन अपने खुदा को पहचानने वाले ताकत पाकर कुछ कर दिखाएँगे। 33 और वह जो लोगों में 'अक्लमन्द हैं बहुतों को तालीम देंगे, लेकिन वह कुछ मुहर तक तलवार और आग और गुलामी और लट मार से तबाह हाल रहेंगे। 34 और जब तबाही में पड़ेंगे तो उनको थोड़ी सी मदद से ताकत पहुँचेंगी, लेकिन बहुतौरे खुशामद गोई से उनमें आ मिलेंगे। 35 और बाँज़ अहल — ए — फ़हम तबाह हाल होंगे ताकि पाक और साफ़ और बुराक हो जाएँ जब तक आखिरी वक्त न आ जाए, क्यूंकि ये मुकर्रा वक्त तक मना' है। 36 और बादशाह अपनी मर्जी के मुताबिक खलेगा, और तकब्बल करेगा और सब माँबदों से बड़ा बनेगा, और माँबदों के खुदा के खिलाफ बहुत सी हैरत — ओग़ज़ बातें कहेगा, और इकबाल मन्द होगा यहाँ तक कि कहर की तस्कीन हो जाएगी; क्यूंकि जो कुछ मुकर्रा हो चुका है वाकें होगा। 37 वह अपने बाप — दादा के माँबदों की परवाह न करेगा, और न 'औरतों की पसन्द को और न किसी और माँबद को मानेगा; बल्कि अपने आप ही को सबसे बेहतर जानेगा। 38 और अपने मकान पर माँबद — ए — हिसार की ताज़ीम

करेगा, और जिस माँबद को उसके बाप — दादा न जानते थे, सोना और चाँदी और कीमी पत्थर और नफ़सी तोहफे दे कर उसकी तकरीम करेगा। 39 वह बेगाना माँबद की मदद से मुहकम किलों पर हमला करेगा, जो उसको कबूल करेंगे उनको बड़ी 'इज़ज़त बख़शेगा और बहुतों पर हाकिम बनाएगा और रिख्वत में मुल्क को तकरीम करेगा। 40 और खातिमे के वक्त में शाह — ए — जुनूब उस पर हमला करेगा, और शाह — ए — शिमाल रथ और सवार और बहुत से जहाज लेकर हवा के झोंके की तरह उस पर चढ़ आएगा, और ममलिक में दाखिल होकर सैलाब की तरह गुज़रेगा। 41 और जलाली मुल्क में भी दाखिल होगा और बहुत से मगलब हो जाएँगे, लेकिन अदोम और मोआब और बनी — 'अम्मून के खास लोग उसके हाथ से छुड़ा लिए जाएँगे। 42 वह दीगर ममलिक पर भी हाथ चलाएगा और मुल्क — ए — मिस्र भी बच न सकेगा। 43 बल्कि वह सोने चाँदी के ख़जानों और मिस्र की तमाम नफ़ीस चीज़ों पर कांबिज होगा, और लब्बी और कशी भी उसके हम — रकाब होंगे। 44 लेकिन पश्चिमी और उत्तरी अतराफ से अफवाहें उसे पेरेशान करेंगी, और वह बड़े गजब से निकलेगा कि बहुतों को नेस्त — ओ — नबूद करे। 45 और वह शानदार मुकद्दस पहाड़ और समुद्र के बीच शाही खेम लगाएगा, लेकिन उसका खातिमा हो जाएगा और कोई उसका मददगार न होगा।

12 और उस वक्त मीकाईल मुकर्रा फ़रिशता जो तेरी कौम के फ़रज़न्दों की हिमायत के लिए खड़ा है उठेगा और वह ऐसी तकलीफ का वक्त होगा कि इन्तिदाई कौम से उस वक्त तक कभी न हुआ होगा, और उस वक्त तेरे लोगों में से हर एक, जिसका नाम किताब में लिखा होगा रिहाई पाएगा। 2 और जो खाक में सो रहे हैं उनमें से बहुत से जाग उठेंगे, कुछ हमेशा की जिन्दगी के लिए और कुछ स्वावई और हमेशा की ज़िल्लत के लिए। 3 और 'अक्लमन्द नूर — ए — फ़लक की तरह चमकेंगे, और जिनकी कोशिश से बहुत से रास्तबाज हो गए, सिरांगों की तरह हमेशा से हमेशा तक रोशन होंगे। 4 लेकिन तू ऐ दामीएल, इन बातों को बन्द कर रख, और किताब पर आखिरी ज़माने तक मुहर लगा दे। बहुत से इसकी तप्तीश — ओ — तहकीक करेंगे और 'अक्ल बहुती रहेंगी। 5 फिर मैं दानिएल ने नज़र की, और क्या देखता हूँ कि दो शख्स और खड़े थे; एक दरिया के इस किनारे पर और दूसरा दरिया के उस किनारे पर। 6 और एक ने उस शख्स से जो कतानी लिबास पहने था और दरिया के पानी पर खड़ा था पृछा, कि "इन 'अजायब के अन्जाम तक कितनी मुहर है?" 7 और मैंने सुना कि उस शख्स ने जो कतानी लिबास पहने था, जो दरिया के पानी के ऊपर खड़ा था, दोनों हाथ आसमान की तरफ उठा कर हय्युल क़य्यूम की कसम खाई और कहा कि एक दौर और दौर और नीम दौर। और जब वह मुकद्दस लोगों की ताकत को नेस्त कर चुके तो यह सब कुछ पूरा हो जाएगा। 8 और मैंने सुना लोकिन समझ न सका तब मैंने कहा ऐ मेरे खुदाबन्द इनका अंजाम क्या होगा। 9 उसने कहा ऐ दानिएल त अपनी राह ले क्यूंकि यह बातें आखिरी वक्त तक बन्द — ओ — सरबमूर रहेंगी। 10 और बहुत लोग पाक किए जायेंगे और साफ़ — ओ — बरीक होंगे लेकिन शरीर शरारत करते रहेंगे और शरीरों में से कोई न समझेगा लेकिन 'अक्लमन्द समझेंगे। 11 और जिस वक्त से दाइमी कुर्बानी ख़त्म की जायेगी और वह उजाड़ने वाली मकस्त हीज़ की जायेगी एक हज़ार दो सौ नव्वे दिन होंगे। 12 मुबारक है वह जो एक हज़ार तीन सौ पैतीस रोज़ तक इन्तज़ार करता है। 13 लेकिन तू अपनी राह ले जब तक कि मुहर पूरी न हो क्यूंकि तू आराम करेगा और दिनों के खातिमे पर अपनी मीरास में उठ खड़ा होगा।

होसी

1 शाहन — ए — यहदाह उज्जियाह और यूताम और आरुज्ज और

हिजकियाह और शाह ए — इसाईल युक्त' आम — बिन — यूआस के दिनों में खुदावन्द का कलाम होसे' अ — बिन — बैरी पर नजिल हुआ। 2 जब खुदावन्द ने शुरू में होसे' अ के जरिए कलाम किया, तो उसको फरमाया, “जा, एक बदकारी बीवी और बदकारी की औलाद अपने लिए ले, क्यूंकि मुल्क ने खुदावन्द को छोड़कर बड़ी बदकारी की है।” 3 तब उसने जाकर जुमर बिन दिबलाईम को लिया; वह हामिला हुई, और बेटा पैदा हुआ। 4 और खुदावन्द ने उसे कहा, उसका नाम यजर'एल रख, क्यूंकि मैं ‘अनकरीब ही याह के घराने से यजर'एल के खून का बदला लौंगा, और इसाईल के घराने की सल्तनत को खत्म करूँगा। 5 और उसी वक्त यजर'एल की बादी में इसाईल की कमान तोड़़ी। 6 वह फिर हामिला हुई, और बेटी पैदा हुई। और खुदावन्द ने उसे फरमाया, कि “उसका नाम लूरहामा रख, क्यूंकि मैं इसाईल के घराने पर फिर रहम न करूँगा कि उनको मु'आफ करूँ। 7 लेकिन यहदाह के घराने पर रहम करूँगा, और मैं खुदावन्द उनका खुदा उनको रिहाई देंगा और उनको कमान और तलबार और लडाई और घोड़ों और सवारों के बसीले से नहीं छुड़ाऊँगा।” 8 और लूरहामा का दृथ छुड़ने के बाद, वह फिर हामिला हुई और बेटा पैदा हुआ। 9 और उसने फरमाया, कि उसका नाम तो'अमीरी रख; क्यूंकि तुम मेरे लोग नहीं हो, और मैं तुम्हारा नहीं हूँगा। 10 तोभी बनी — इसाईल दरिया की रेत की तरह बेशपार — ओ — बेकियास होंगे, और जहाँ उससे ये कहा जाता था, तुम मेरे लोग नहीं हो, जिन्दा खुदा के फर्जन्द कहलाएँगे। 11 और बनी यहदाह और बनी — इसाईल आपस में एक होंगे, और अपने लिए एक ही सरदार मुकर्रन करेंगे। और इस मुल्क से खुरूज करेंगे, क्यूंकि यजर'एल का दिन 'अज्ञीम होगा।

2 अपने भाइयों से 'अमीरी कहो, और अपनी बहनों से स्थामा। 2 तुम अपनी

माँ से हुज्जत करो — क्यूंकि न वह मेरी बीवी है, और न मैं उसका शौहर हूँ — वह अपनी बदकारी अपने सामने से, अपनी जिनकारी अपने पिस्तानों से दूर करे; 3 ऐसा न हो कि मैं उसे बेपर्दा करूँ, और उस तरह डाल दूँ जिस तरह वह अपनी पैदाइश के दिन थी, और उसको बियाबान और खुशक ज़मीन की तरह बना कर प्यास से बार डालूँ। 4 मैं उसके बच्चों पर रहम न करूँगा, क्यूंकि वह हलालजादे नहीं हैं। 5 उनकी माँ ने धोखा किया; उनकी बालिदा ने स्स्याही की। क्यूंकि उसने कहा, ऐं अपने यारों के पीछे जाऊँगी, जो मुझ को रोटी — पानी और ऊनी, और कतानी काढ़े और रौगन — ओ — शरबत देते हैं। 6 इसलिए देखो, मैं उसकी राह कॉटों से बन्द करूँगा, और उसके सामने दीवार बना दौँगा, ताकि उसे रास्ता न मिले। 7 और वह अपने यारों के पीछे जाएगी, पर उनसे जा न मिलेगी; और उनको ढूँढ़ी पर न पाएगी। तब वह कहेंगी, मैं अपने पहले शौहर के पास वापस जाऊँगी, क्यूंकि मेरी वह हालत अब से बेहतर थी। 8 क्यूंकि उसने न जाना कि मैं ने ही उसे गल्ला — ओ — मय और रौगन दिया, और सोने चाँदी की फिरवानी बख्बी जिसको उहोंने बाल पर खर्च किया 9 इसलिए मैं अपना गल्ला फसल के बबत, और अपनी मय को उसके मौसम में वापस ले लौंगा, और अपने ऊनी और कतानी कपड़े जो उसकी सत्रपेशी करते हैं, छीन लौंगा। 10 अब मैं उसकी फाहिशागरी उसके यारों के सामने फ़ाश करूँगा, और कोई उसको मेरे हाथ से नहीं छुड़ाएगा। 11 अलावा इसके मैं उसकी तमाम खुशियों, और जश्नों और नए चाँद और सबत के दिनों और तमाम मु'अय्यन 'ईंदों को खत्म करूँगा। 12 और मैं उसके अंगू और अंजीर के दरखतों को, जिनके बारे मैं उसने कहा है, ये मेरी उत्तर है, जो मेरे यारों ने मुझे दी है, 'बर्बद करूँगा और उनको जंगल बनाऊँगा, और जंगली

जानवर उनको खाएँगे। 13 और खुदावन्द फरमाता है, मैं उसे बालीम के दिनों के लिए सजा दौँगा जिनमें उसने उनके लिए खुशबू जलाई, जब वह बालियों और जेवरों से आरास्ता होकर अपने यारों के पीछे गई, और मुझे भूल गई। 14 तोभी मैं उसे फरेपता कर लौंगा, और बियाबान में लाकर, उससे तसल्ली की बातें कहँगा। 15 और वहाँ से उसके ताकिस्तान उसे दौँगा, और 'अकर की बादी भी, ताकि वह उमीद का दरवाजा हो, और वह वहाँ गया करेगी जैसे अपनी जवानी के दिनों में, और मुल्क — ए — मिस्र से निकल आने के दिनों में गया करती थी 16 और खुदावन्द फरमाता है, तब वह मुझे इशी कहेगी और फिर बाली न कहेगी। 17 क्यूंकि मैं बालीम के नाम उसके मूँह से दूर करूँगा, और फिर कभी उनका नाम न लिया जाएगा। 18 तब मैं उनके लिए जंगली जानवरों, और हवा के परिन्दों, और जमीन पर रेंगेवालों से 'अहद करूँगा; और कमान और तलबार और लडाई को मुल्क से नेस्त करूँगा, और लोगों को अम — ओ — अमान से लेटने का मौका दौँगा। 19 और तदे अपनी अबदी नामजद करूँगा। हाँ, तुझे सदाकत और 'अदलत और शफकत — ओ — रहमत से अपनी नामजद करूँगा। 20 मैं तुझे वफादारी से अपनी नामजद बनाऊँगा और तू खुदावन्द को पहचानेगी। 21 “और उस वक्त मैं सुनूँगा, खुदावन्द फरमाता है, मैं आसमान की सुनूँगा और आसमान ज़मीन की सुनेगा; 22 और ज़मीन अनाज और मय और तेल की सुनेगी, और वह यजर'एल की सुनेगे; 23 और मैं उसको उस सरजमीन मैं अपने लिए बोलूँगा। और लूरहामा पर रहम करूँगा, और लो'अमीरी से कहँगा, 'तुम मेरे लोग हो; और वह कहेंगे, 'ऐ हमारे खुदा।’”

3 खुदावन्द ने मुझे फरमाया, जा, उस 'औरत से जो अपने यार की प्यारी और बदकार है, मुहब्बत रख; जिस तरह कि खुदावन्द बनी — इसाईल से जो गैर — मा'बूदों पर निगाह करते हैं और किशमिश के कुल्चे चाहते हैं, मुहब्बत रखता है। 2 इसलिए, मैंने उसे पन्द्रह सूचे और डेढ़ खोमर जौ देकर अपने लिए मोल लिया। 3 और उसे कहा, तू मुठ — ए — दराज तक मुझ पर कना'अत करेगी, और हारामकारी से बाज़ रहेगी और किसी दूसरे की बीवी न बनेगी, और मैं भी तौरे लिए दूँही ही हूँगा। 4 क्यूंकि बनी — इसाईल बहुत दिनों तक बादशाह और हाकिम और कुर्बानी और सूतून और अफूद और तिराफीम के बगैर रहेंगे। 5 इसके बाद बनी — इसाईल रसू'लाएँगी, और खुदावन्द अपने खुदा को और अपने बादशाह दाऊद को ढूँढ़े और आखिरी दिनों में डरते हुए खुदावन्द और उसकी मेहरबानी के तालिब होंगे।

4 ऐ बनी इसाईल खुदावन्द का कलाम सुनों क्यूंकि इस मुल्क में रहने वालों से खुदावन्द का झांगडा है; क्यूंकि ये मुल्क रास्ती — ओ — शफकत, और खुदावन्दासी से खाली है। 2 बदजबानी वा'दा खिलाफी और खौज़ी और चोरी और हारामकारी के अलावा और कुछ नहीं होता; वह जुल्म करते हैं, और खून पर खून होता है। 3 इसलिए मुल्क मातम करेगा, और उसके तामाम रहने वाले जंगली जानवरों, और हवा के परिन्दों के साथ नातवाँ हो जाएँगे; बन्दिक समन्दर की मछलियाँ भी गयबत हो जाएँगी। 4 तोभी कोई दूसरे के साथ बहस न करे, और न कोई उसे इल्जाम दे, क्यूंकि तौरे लोग उनकी तरह हैं, जो काहिन से बहस करते हैं। 5 इसलिए तू दिन को गिर पड़ेगा, और तौरे साथ नवी भी रात को गिरेगा; और मैं तेरी माँ को तबाह करूँगा। 6 मेरे लोग 'अदम — ए — मारिफत से हताक हए; चूंकि तू ने जरिए को रद किया, इसलिए मैं भी तू रद करूँगा ताकि तू मेरे सामने काहिन न हो; और चूंकि तू अपने खुदा की शरीरी अत की भूल गया है, इसलिए मैं भी तेरी ओलाद को भूल जाऊँगा। 7 जैसे जैसे वह बड़ते गए, मेरे खिलाफ ज्यादा गुनाह करने लगो; फिर मैं उनकी हश्मत को स्स्वाई से बदल डालूँगा। 8 वह मेरे लोगों के गुनाह पर गुज़रान करते हैं; और

उनकी बदकिरदारी के आरजूमंद हैं। 9 फिर जैसा लोगों का हाल, वैसा ही काहिनों का हाल होगा; मैं उनके चालचलन की सज्जा और उनके 'आमाल का बदला उनको दूँगा। 10 क्यूँकि उनको खुदावन्द का खयाल नहीं, इसलिए वह खाएँगे, पर असूना न होंगे; वह बदकारी करेंगे, लेकिन ज्यादा न होंगे। 11 बदकारी और मय से बर्तीरत जाती रहती है। 12 मेरे लोग अपने काठ के पुले से सवाल करते हैं उनकी लाठी उनको जबाब देती है। क्यूँकि बदकारी की स्फूर्ति ने उनको गुमराह किया है, और अपने खुदा की पनाह को छोड़ कर बदकारी करते हैं। 13 पहाड़ों की चोटियों पर वह कुर्बानियाँ और टीतों पर और बलून — ओ — चिनार — ओ — बतम के नीचे खुशबू जलाते हैं, क्यूँकि उनका साया अच्छा है। पस बह बेटियाँ बदकारी करती हैं। 14 जब तुम्हारी बह बेटियाँ बदकारी करेंगी, तो मैं उनको सजा नहीं दूँगा; क्यूँकि वह आप ही बदकारों के साथ छिखिल्वत में जाते हैं, और कस्बियों के साथ कुर्बानियाँ गुजरानते हैं। तब जो लोग 'अकल से खाली हैं, बर्बाद किए जाएँगे। 15 ऐ इसाईल, अगरचे तू बदकारी करे, तोमी ऐसा न हो कि यहदाह भी गुनहगार हो। तुम जिल्जाल में न आओ और बैतावन पर न जाओ, और खुदावन्द की हयात की कसम न खाओ। 16 क्यूँकि इसाईल ने सरकश बछिया की तरह सरकशी की है; क्या अब खुदावन्द उनको कुशादा जगह में बर्ब की तरह चराएगा? 17 इक्फाईम बुरों से मिल गया है; उसे छोड़ दो। 18 वह मयरखारी से सेर होकर बदकारी में मशगूल होते हैं; उसके हाकिम मस्वाई दोस्त हैं। 19 वहा ने उसे अपने दामन में उठा लिया, वह अपनी कुर्बानियों से शर्मिन्दा होंगे।

5 ऐ कहिनो, ये बात सुनो! ऐ बनी — इसाईल, कान लगाओ! ऐ बादशाह के घराने, सुनो! इसलिए कि फतवा तुम पर है, क्यूँकि तुम मिस्फाह में फंदा और तबूर पर दाम बने हो। 2 बागी खूरूजी में गर्क है, लेकिन मैं उन सब की तादीब करूँगा। 3 मैं इक्फाईम को जानता हूँ, और इसाईल भी मुझ से छिपा नहीं, क्यूँकि ऐ इक्फाईम, तू ने बदकारी की है; इसाईल नापाक हुआ। 4 उनके 'आमाल उनको खुदा की तरफ स्फूर्ति' नहीं होने देते क्यूँकि बदकारी की स्फूर्ति उनमें मौजूद है और खुदावन्द को नहीं जानते। 5 और फरवर्ष — ए — इसाईल उनके मूँह पर गवाही देता है, और इसाईल और इक्फाईम अपनी बदकिरदारी में पिंडेंगे, और यहदाह भी उनके साथ गिराए। 6 वह अपने रेवड़ों और गल्लों के बरीले से खुदावन्द के तालिब होंगे, लेकिन उसको न पाएँगे; वह उनसे दूर हो गया है। 7 उन्होंने खुदावन्द के साथ बेवफाई की, क्यूँकि उनसे अजनबी बच्चे पैदा हुए। अब एक महनीने का 'अर्सा उनकी जायदाद के साथ उनको खा जाएगा। 8 जिब'आ में कर्ना फूँको और रामा में तुरही। बैतावन में ललकारो, कि ऐ बिन्यमीन, खबरदार पीछे देखो। 9 तादीब के दिन इक्फाईम वीरान होगा। जो कुछ यकीन होने वाला है मैंने इसाईलीनी कबीलों को जता दिया है। 10 यहदाह के 'उमरा सरहदों' को सरकाने वालों की तरह हैं। मैं उन पर अपना कहर पानी की तरह उड़ेलूँगा। 11 इक्फाईम मजलूम और फतवे से दबा है क्यूँकि उसने पैरवी पर सब किया। 12 तब मैं इक्फाईम के लिए कीड़ा हँगा और यहदाह के घराने के लिए धून। 13 जब इक्फाईम ने अपनी बीमारी और यहदाह ने अपने जख्म को देखा तो इक्फाईम असूर को गया और उस मुखालिफ बादशाह को दावत दी लेकिन वह न तो तुम को शिफा दे सकता है और न तुम्हरे जख्म का 'इलाज कर सकता है। 14 क्यूँकि मैं इक्फाईम के लिए शेर — ए — बबर और बनी यहदाह के लिए जवान शेर की तरह हँगा। मैं हौं मैं ही ही फाँड़ा और चला जाऊँगा। मैं उठा ले जाऊँगा और कोई छुड़ाने वाला न होगा। 15 मैं रवाना हँगा और अपने घर को चला जाऊँगा जब तक कि वह अपने गुनाहों का इक्कराकर करके मेरे चहरे के तालिब न हों। वह अपनी मुसीबत में बड़ी सर गमी से मेरे तालिब होंगे।

6 आओ खुदावन्द की तरफ स्फूर्ति करें क्यूँकि उसी ने फाड़ा है और वही हम को शिफा बख्शेगा। उसी ने मारा है और वही हमारी मरहम पट्टी करेगा। 2 वह दो दिन के बाद हम को हयात — ए — ताजा बख्शेगा और तीसरे दिन उठा खड़ा करेगा और हम उसके सामने ज़िन्दगी बसर करेंगे। 3 आओ हम दरियापत्त करें और खुदावन्द के 'इरफान में तरक्की करें। उसका जहर सुबह की तरह यकीनी है और वह हमारे पास बसात की तरह यानी आधिरी बरसात की तरह जो जमीन को सेराब करती है, आएगा। 4 ऐ इक्फाईम मैं तुझ से क्या करूँ? ऐ यहदाह मैं तुझ से क्या करूँ? क्यूँकि तुम्हारी नेकी सुबह के बालद और शबनम की तरह जल्द जाती रहती है। 5 इसलिए मैंने उनके नवियों के बसीले से काट डाला और अपने कलाम से कल्ला किया है और मेरा 'अद्वल नूर' की तरह चमकता है। 6 क्यूँकि मैं कुर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ और खुदा शनारी की सोखनी कुर्बानियों से ज्यादा चाहता हूँ। 7 लेकिन लोगों वह अहद शिकन आदम के सामने तोड़ दिया: उन्होंने वहाँ मुझ से बेकाफ़ी की है। 8 जिलआ'द बदकिरदारी की बस्ती है। वह खुदानलदा है। 9 जिस तरह के रहजनों के गोल किरी आदिमी की धोखे में बैठते हैं उसी तरह काहिनों की गिरेह सिकम की राह में कल्ला करती है, हाँ उन्होंने बदकारी की है। 10 मैंने इसाईल के घराने में एक खतरनाक चीज़ देखी। इक्फाईम मैं बदकारी पाई जाती है और इसाईल नापाक हो गया। 11 ऐ यहदाह तेरे लिए भी कटाई का बक्त मुकरर है जब मैं अपने लोगों को गुलामी से बापस लाऊँगा।

7 जब मैं इसाईल को शिफा बख्शने को था तो इक्फाईम की बदकिरदारी और सामरिया की शरारत जाहिर हुई क्यूँकि वह दगा करते हैं। अन्दर चोर घुस आए हैं और बाहर डाकुओं का गोल लट रहा है। 2 वह ये नहीं सोचते के मुझे उनकी सारी शरारत मालूम है। अब उनके 'आमाल ने जो मुझ पर जाहिर हैं उनको धेर लिया है। 3 वह बादशाह को अपनी शरारत और उमरा को दरोगा गोई से खुश करते हैं। 4 वह सब के सब बदकार हैं। वह उस तनूर की तरह है जिसको नानाई गर्म करता है और आटा गंदूने के बक्त से खामी उठने तक आग भड़काने से बाज रहता है। 5 हमरे बादशाह के जश्न के दिन उमरा तो गमी — ए — मय से बीमार हुए और वह ठड़ाबाजों के साथ बेतकल्लुक हुआ। 6 धोखे में बैठे उनके दिल तनूर की तरह हैं। उनका कहर रात भर सुलगता रहता है। वह सुबह के बक्त आग की तरह भड़कता है। 7 वह सब के सब तनूर की तरह दहकते हैं और अपने काजियों को खा जाते हैं। उनके सब बादशाह मारे गए। उनमें कोई न रहा जो मुझ से दुआ करे। 8 इक्फाईम दसे लोगों से मिल जूल गया। इक्फाईम एक चपाती है जो उलटाई न गई। 9 अजनबी उसकी तवानाई को निगल गए और उसकी खबर नहीं और बाल सफेद होने लगे पर वह बेखबर है। 10 और फ़ख — ए — इसाईल उसके मूँह पर गवाही देता है तो भी वह खुदावन्द अपने खुदा की तरफ स्फूर्ति नहीं लाए और बाबजूद इस सब के उसके तालिब नहीं हुए। 11 इक्फाईम बेवकूफ — ओ — नासमझ फालता है वह मिस्त्री की दुड़ाई देते और असूर को जाते हैं। 12 जब वह जाएँगे तो मैं उन पर अपना जाल फैला दूँगा। उनकी हवा के परिन्दों की तरह नीचे उतारूँगा और जैसा उनकी जमा'अत सुन चुकी है उनकी तादीब करूँगा। 13 उन पर अफसोस क्यूँकि वह मुझ से आवारा हो गए, वह बबौद होंगे क्यूँकि वह मुझ से बाबी हुए। अगरचे मैं उनका फिदिया देना चाहता हूँ वह मेरे खिलाफ दरोगा गोई करते हैं। 14 और वह हजर — ए — कल्ब के साथ मुझ से फरियाद नहीं करते बल्कि अपने बिस्तरों पर पड़े चिल्लते हैं। वह अनाज और मय के लिये तो जमा' हो जाते हैं पर मुझ से बाबी रहते हैं। 15 अगरचे मैंने उनकी तरबियत की और उनको ताकतवर बाजू किया तो भी वह मेरे हक के सुरे खयाल करते हैं। 16 वह स्फूर्ति होते हैं पर हक ताला की तरफ नहीं। वह दगा देने वाली कमान की तरह है। उनके उमरा

अपनी जबान की गुस्ताखी की वजह से बर्बाद होंगे। इससे मुल्क — ए — मिस्र में उनकी हँसी होगी।

8 तुरही अपने मुँह से लगा! वह 'उकाब की तरह खुदावन्द के घर पर टूट

पड़ा है, क्यूंकि उन्होंने मेरे अहद से तजाबुज किया और मेरी शरी' अत के खिलाफ चले। 2 वह मुझे यूँ पकारते हैं कि ऐ हमारे खुदा, हम बनी — इसाईल तुझे पहचानते हैं। 3 इसाईल ने भलाई को छोड़ दिया, दुश्मन उसका पीछा करेगा। 4 उन्होंने बादशाह मुकर्र किए लेकिन मेरी तरफ से नहीं। उन्होंने उमरा को ठहराया है और मैंने उनको न जाना। उन्होंने अपने सोने चाँदी से बुत बनाए ताकि बर्बाद हों। 5 ऐ सामरिया, तेरा बछड़ा मरदूर है। मेरा कहर उन पर भड़का है। वह कब तक गुनाह से पाक न होगे। 6 क्यूंकि ये भी इसाईल ही की करतूत है। कारीगर ने उसको बनाया है। वह खुदा नहीं। सामरिया का बछड़ा यकीन टुकड़े — टुकड़े किया जाएगा। 7 बेशक उन्होंने हवा बोई। वह गर्दबाद करेगा, न उसमें डंठल निकलेगा न उसकी बालों से गलता पैदा होगा और अगर पैदा हो भी तो अजनबी उसे चट कर जाएँगे। 8 इसाईल निगला गया। अब वह कौमों के बीच ना पसंदीदा बर्बाद की तरह होंगे। 9 क्यूंकि वह तन्हा गोरखर की तरह असूँ को चले गए हैं। इसाईल ने उजरत पर यार बुलाए। 10 अगर वे उन्होंने कौमों को उजरत दी है तो भी अब मैं उनको जमा' करूँगा और वह बादशाह — ओ — उमरा के बोझ से गमरीन होंगे। 11 चैकि इसाईल ने गुनहगारी के लिए बहुत सी कुर्बानगाहें बनायी इसालिए वह कुर्बानगाहें उसकी गुनहगारी का जरिया' हूँही। 12 अगर वे मैंने अपनी शरी' अत के अहकाम को उनके लिए हजारों बार लिखा, लेकिन वह उनको अजनबी छायाल करते हैं। 13 वह मेरे तोहफों की कुर्बानियों के लिए गोश पेश करते और खाते हैं, लेकिन खुदावन्द उनको क्षब्दल नहीं करता। अब वह उनकी बदकिरदारी की याद करेगा और उनको उनके गुमाहों की सजा देगा। वह मिस्र को वापस जाएँगे। 14 इसाईल ने अपने खालिक को फ्रामोश करके बुतखाने बनाए हैं और यहदाह ने बहुत से हसीन शहर तामीर किए हैं, लेकिन मैं उसके शहरों पर आग भेज़ूँगा और वह उनके कस्तों को भस्म कर देगी।

9 ऐ इसाईल, दूसरी कौमों की तरह खुशी — ओ — शादमानी न कर, क्यूंकि

तू ने अपने खुदा से बेकारी की है। तू ने हर एक खलीहान में इश्क से उजरत तलाश की है। 2 खलीहान और मय के होज़ उनकी परवरिश के लिए काफ़ी न होंगे और नई मय किफायत न करेगी। 3 वह खुदावन्द के मुल्क में न बरसेंगे, बल्कि इसाईल मिस्र को वापस जाएँगे और वह असूँ में नापाक चीजें खाएँगे। 4 वह मय को खुदावन्द के लिए न तपाएँगे और वह उसके मकबूल न होंगे, उनकी कुर्बानियाँ उनके लिए नौहारों की रोटी की तरह होंगी। उनको खाने वाले नापाक होंगे, क्यूंकि उनकी रोटियाँ उन ही की भूक के लिए होंगी और खुदावन्द के घर में दाखिल न होंगी। 5 मजामा' — ए — मुकद्दस के दिन और खुदावन्द की 'ईद के दिन क्या करेगे? 6 क्यूंकि वो तबाही के खौफ से चले गए, लेकिन मिस्र उनको समेटेगा। मोफ उनको दफन करेगा। उनकी चाँदी के अच्छे खजानों पर बिच्छु बृती काबिज होगी। उनके खेमों में कैंटे उंगें। 7 सजा के दिन आ गए, बदले का बक्त आ पहुँचा। इसाईल को मालूम हो जाएगा कि उसकी बदकिरदारी की कसरत और 'अदावत की ज्यादाती के जरिए नबी बेकरूक है। रहनी अदमी दीवाना है। 8 इसाईल मेरे खुदा की तरफ से निगहबान है। नबी अपनी तमाम राहों में चिड़ीमार का जाल है। वह अपने खुदा के घर में 'अदावत है। 9 उन्होंने अपने आप को निहायत खराब किया जैसा जिब'आ के दिनों में हुआ था। वह उनकी बदकिरदारी को याद करेगा और उनके गुनाहों की सजा देगा। 10 मैंने इसाईल को बियाबानी अंगरौं की तरह

पाया। तुम्हारे बाप — दादा को अंजीर के पहले पक्के फल की तरह देखा जो दरखत के पहले मौसम में लगा हो, लेकिन वह बाल फगू के पास गए और अपने आप को उस जरिए' स्वाई के लिए मख्यसूस किया और अपने उस महबूब की तरह मकर्स्त हुए। 11 अहल — ए — इस्काईम की शैकत परिन्दे की तरह उड़ जाएगी, विलात — ओ — हामिला का बुजूद उनमें न होगा और करार — ए — हमल खत्म हो जाएगा। 12 अगर वे वह अपने बच्चों को पालें, तो भी मैं उनको छीन लूँगा, ताकि कोई आदमी बाकी न रहे। क्यूंकि जब मैं भी उससे दूर हो जाऊँ, तो उनकी हालत काबिल — ए — अफसोस होगी। 13 इस्काईम अपने बच्चों को क्रातिल के सामने ले जाएगा। 14 ऐ खुदावन्द, उनको दे; तू उनको क्या देगा? उनको इस्कात — ए — हमल और खुशक पिस्तान दे। 15 उनकी सारी शरारत जिल्जाल मैं है। हाँ, वहाँ मैंने उनसे नफरत की। उनकी बदआमाली की वजह से मैं उनको अपने घर से निकाल दूँगा और फिर उनसे मुहब्बत न रखबूँगा। उनके सब उमरा बामी हैं। 16 बनी इस्काईम तबाह हो गए। उनकी जड़ सूख गई। उनके यहाँ औलाद न होगी और अगर औलाद हो भी तो मैं उनके घ्यारे बच्चों को हलाक करूँगा। 17 मेरा खुदा उनको छोड़ देगा, क्यूंकि वो उसके सुनने वाले नहीं हुए और वह अक्रवाम — ए — 'आलम मैं आवारा किरेंगे।

10 इसाईल लहलहाती ताक है जिसमें फल लगा, जिसने अपने फल की

कसरत के मुताबिक बहुत सी कुर्बानगाहें तामीर की और अपनी जमीन की खुबी के मुताबिक अच्छे अच्छे सूतन बनाए। 2 उनका दिल दगाबाज है। अब वह मुजरिम ठरेंगे। वह उनके मजबूतों को ढाएगा और उनके सुरुनों को तोड़ेगा। 3 यकीन अब वह कहेंगे, हमारा कोई बादशाह नहीं क्यूंकि जब हम खुदावन्द से नहीं डरते तो बादशाह हमरे लिए क्या कर सकता है? 4 उनकी बातें बेकार हैं। वह 'अहद — ओ — पैमान में झटी कसम खाते हैं। इसलिए बला ऐसी फूट निकलेगी जैसे खेत की रेघारियों में इन्द्रायन। 5 बैतअबन की बछियों की वजह से सामरिया के रहने वाले खौफजदा होंगे, क्यूंकि वहाँ के लोग उस पर मातम करेंगे, और वहाँ के काहिन भी जो उसकी पहले की शैकत की वजह से शादमान थे। 6 इसको भी असूँ मैं ले जाकर, उस मुखालिक बादशाह की नज़र करेंगे। इस्काईम शर्मिंदी उठाएगा और इसाईल अपनी मश्वरत से शर्मिंदा होगा। 7 सामरिया का बादशाह कर गया है, वह पानी पर तैरती शाख की तरह है। 8 और अबन के ऊँचे मकाम, जो इसाईल का गुनाह है, बर्बाद किए जाएँगे; और उनके मजबूतों पर कैंट और ऊँट कटारे उंगेंगे और वह पहाड़ों से करेंगे, हम को छिपा लो, और टीलों से करेंगे, हम पर आ गिरो। 9 ऐ इसाईल, तू जिब'आ के दिनों से गुनाह करता आया है। वो वही ठरे रहे, ताकि लड़ाई जिब'आ में बदकिरदारों की नस्ल तक न पहुँचे। 10 मैं जब चाहूँ उनको सजा दूँगा और जब मैं उनके दो गुनाहों की सजा दूँगा तो लोग उन पर हूँजम करेंगे। 11 इस्काईम सार्थी हुई बछिया है, जो दाओनों परसन्द करती है, और मैंने उसकी खुशनुमा गर्दन की देगा किया लेकिन मैं इस्काईम पर सबार बिठाऊँगा। यहदाह हल चलाएगा और याकूब ढेले तोड़ेगा। 12 अपने लिए सच्चाई से बीज बोया करो। शफकत से फस्ल काटो और अपनी उफ्तादा जमीन में हल चलाओ। क्यूंकि अब 'मौका' है कि तुम खुदावन्द के तालिब हो, ताकि वह आए और रास्ती को तुम पर बरसाए। 13 तुम ने शरारत का हल चलाया। बदकिरदारी की फसल काटी और झट का फल खाया, क्यूंकि तू ने अपने चाल चलन में अपने बहादुरों के अबोह पर तकिया किया। 14 इसलिए तेरे लोगों के खिलाफ हंगामा खड़ा होगा, और तेरे सब किले' ढा दिए जाएँगे, जिस तरह शलमन ने लडाई के दिन बैत अर्बल को ढा दिया था; जब कि मैं अपने बच्चों

के साथ टुकड़े — टुकड़े हो गई। 15 तम्हारी बेनिहायत शरारत की वजह से बैतेल में तुम्हारा यही हाल होगा। शाह — ए — इसाईल अलस् सबाह बिल्कुल फना हो जाएगा।

11 जब इसाईल अभी बच्चा ही था, मैंने उससे मुहब्बत रख्खी, और अपने बेटे को मिस्त्र से बुलाया। 2 उन्होंने जिस कद्र उनको बुलाया, उसी कद्र वह दूर होते गए; उन्होंने बालीम के लिए कुर्बानियाँ पेश की और तराशी हुई मूरतों के लिए खुशबू जलाया। 3 मैंने बीं इस्फाईम को चलाना सिखाया; मैंने उनको गोद में उठाया, लेकिन उन्होंने जाना कि मैं ही ने उनको सेहत बछाई। 4 मैंने उनको इसानी रिश्तों और मुहब्बत की डोरियों से खींचा; मैं उनके हक में उनकी गर्दन पर से जूँड़ा उतारने वालों की तरह हुआ, और मैंने उनके आगे खाना रख्खा। 5 वह फिर मुल्क — ए — मिस्त्र में न जाएंगे, बल्कि अस्स उनका बादशाह होगा; क्यूंकि वह वापस आने से इन्कार करते हैं। 6 तलवार उनके शहरों पर आ पड़ेगी, और उनके अडबंगों को खा जाएगी और ये उन ही की मश्वरत का नतीजा होगा। 7 क्यूंकि मेरे लोग मुझ से नाफरमानी पर आमादा हैं, बावजूद ये कि उन्होंने उनको बुलाया कि हक ताला की तरफ रसू' लाए; लेकिन किसी ने न चाहा कि उसकी इबादत करें। 8 ऐ इस्फाईम, मैं तुझे से क्यूंकर दस्तबरदार हो जाऊँ? ऐ इसाईल, मैं तुझे क्यूंकर तर्क करन? मैं क्यूंकर तुझे अदमा की तरह बनाऊ? और ज़िबू' इम तरह बनाऊँ मेरा दिल मुझ में पेच खाता है; मेरी शफ़कत मौज़जन है। 9 मैं अपने कहर की शिद्दत के मुताबिक 'अमल नहीं करूँगा, मैं हरगिज इस्फाईम को हलाक न करूँगा; क्यूंकि मैं इसान नहीं, खुदा हूँ। तेरे बीच सुकूनत करने वाला कुदूस, और मैं कहर के साथ नहीं आऊँगा। 10 वह खुदावन्द की पैरवी करेंगे, जो शेर — ए — बबर की तरह गरजेगा, क्यूंकि वह गरजेगा, और उसके फर्जन्द मारिब की तरफ से काँपते हुए आएँगे। 11 वह मिस्त्र से परिन्दे की तरह, और अस्स के मुल्क से कबूतर की तरह काँपते हुए आएँगे; और मैं उनको उनके घरों में बसाऊँगा, खुदावन्द फरमाता है। 12 इस्फाईम ने दरोगार्इ से और इस्फाईल के घराने ने मक्कारी से मुझ को धेरा है, लेकिन यहदाह अब तक खुदा के साथ हाँ उस कुदूस वफ़ादार के साथ हक्मरान हैं।

12 इस्फाईम हवा चरता है; वह पूरी हवा के पीछे दौड़ता है। वह मुत्वातिर झट पर झट बोलता, और ज़ुल्म करता है। वह असरियों से 'अहद — ओ — पैमान करते, और मिस्त्र को तेल भेजते हैं। 2 खुदावन्द का यहदाह के साथ भी इगड़ा है, और याकूब को चाल चलन के मुताबिक उसकी सज्जा देगा; और उसके 'आ'मल के मुवाफिक उसका बदला देगा। 3 उसने रिहम में अपने भाई की एड़ी पकड़ी, और वह अपनी जवानी के दिनों में खुदा से कुश्टी लड़ा। 4 हाँ, वह फरिशते से कुश्टी लड़ा और गालिब आया। उसने रोकर दुआ की। उसने उसे बैतेल में पाया और वहाँ वह हम से हम कलाम हुआ 5 याँनी खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज, यहोवा उसकी यादगार है: 6 “अब त् अपने खुदा की तरफ रसू' ला; नेकी और रास्ती पर काईम, और हमेशा अपने खुदा का उम्मीदवार रह।” 7 वह सौदागर है, और दगा की तराजू उसके हाथ में है; वह ज़ुल्म दोस्त है। 8 इस्फाईम तो कहता है, मैं दौलतमंद और मैंने बहुत सा माल हासिल किया है। मेरी सारी कमाई में बदकिरदारी का गुमाह न पाएँगे। 9 लेकिन मैं मुल्क — ए — मिस्त्र से खुदावन्द तेरा खुदा हूँ; मैं फिर तुझ को 'ईद — ए — मुक़द्दस के दिनों के दस्तूर पर खेमों में बसाऊँगा। 10 मैंने तो नवियों से कलाम किया; और रोया पर रोया दिखाई, और नवियों के बरील से तशब्बिहात इस्तेमाल कीं। 11 यकीन जिलाओं में बदकिरदारी है, वो बिल्कुल बतालत हैं, जो जिल्जाल में बैल कुर्बान करते हैं, उनकी कुर्बानगाहे खेत की

रेखारियों पर के तूदों की तरह हैं। 12 और याकूब अराम की ज़मीन को भाग गया; इसाईल बीवी के खातिर नैकर बना, उसने बीवी की खातिर चरबाही की। 13 एक नबी के बरीले से खुदावन्द इसाईल को मिस्त्र से निकाल लाया और नबी ही के बरीले से वह महफ़ज़ रहा। 14 इस्फाईम ने बड़े सख्त ग़ज़बअंगेज काम किए; इसलिए उसका खुन उसी की गर्दन पर होगा और उसका खुदावन्द उसकी मलामत उसी के सिर पर लाएगा।

13 इस्फाईम के कलाम में खौफ था, वह इसाईल के बीच सरफ़राज किया गया; लेकिन बाल की वजह से गुहगार होकर फना हो गया। 2 और अब वह गुनाह पर गुनाह करते हैं, उन्होंने अपने लिए चाँदी की ढाली हुई मुर्ते बनाई और अपनी समझ के मुताबिक खूत तैयार किए जो सब के सब कारीगरों का काम है। वो उनके बारे कहते हैं, “जो लोग कुर्बानी पेश करते हैं, बछड़ों को दूमें” 3 इसलिए वह सुहू के बादल और शब्दनम की तरह जल्द जाते रहेंगे, और भसी की तरह, जिसको बगला खलीहान पर से उड़ा ले जाता है, और उस धूवें की तरह जो दूकंकश से मिलकता है। 4 लेकिन मैं मुल्क — ए — मिस्त्र ही रे, खुदावन्द तेरा खुदा हूँ और मेरे अलावा तू किसी माँबद को नहीं जानता था, क्यूंकि मेरे अलावा कोई और नजात देने वाला नहीं है। 5 मैंने बियाबान में, याँनी खुश ज़मीन में तेरी खबर गीरी की। 6 वह अपनी चरागाहों में सेर हुए, और सेर होकर उनके दिल में धमंड समाया और मुझे भूल गए। 7 इसलिए मैं उनके लिए शेर — ए — बबर की तरह हुआ; चीति की तरह राह में उनकी धात में बैरंगा। 8 मैं उस रीछनी की तरह जिसके बच्चे छिन गए हैं, उनसे दो चार हँगा, और उनके दिल का पर्दा चाक काके शेर — ए — बबर की तरह, उनको बही निगल ज़ॉग़ा; ज़ंगली जानवर उनको फाड़ डालेंगे। 9 ऐ इसाईल, यही तेरी हलाकत है कि तु मेरा यानी अपने मदद गार का मुखातिफ़ बना। 10 अब तेरा बादशाह कहाँ है कि तु तुझे तेरे सब शहरों में बचाएँ और तेरे काज़ी कहाँ हैं जिनके बारे तू कहता था कि मुझे बादशाह और उमरा इनायत कर? 11 मैंने अपने कहर में तुझे बादशाह दिया, और ग़ज़ब से उसे उठा लिया। 12 इस्फाईम की बदकिरदारी बाँध रखी गई, और उसके गुनाह ज़र्वीर में ज़मा' किए गए। 13 वह जैसे दर्द — ए — जिह में मुबिला होगा, जो बे अक्ल फर्जन्द है, अब मुनासिब है कि पैदाश की ज़ग में देर न करे। 14 मैं उनको पाताल के काबू से नजात दूँगा; मैं उनकी मौत से छुड़ाऊँगा। ऐ मौत तेरी बबा कहाँ है? ऐ पाताल तेरी हलाकत कहाँ है? मैं हरगिज रहम न करूँगा। (Sheol h7585) 15 अगर वे वह अपने भाईयों में कामियाब हो, तोभी पूर्णी हवा आएगी; खुदावन्द का दम बियाबान से आएगा, और उसका सोता सख जाएगा, और उसका चर्शमा खुशक हो जाएगा। वह सब पसंदीदा बर्तनों का खजाना लट्ट लेगा। 16 सामरिया अपने ज़ुर्म की सज्जा पाएगा, क्यूंकि उसने अपने खुदा से बालात की है; वह तलवार से गिर जाएँगे। उनके बच्चे पारा — पारा होंगे और हामला 'औरतों के पेट चाक किए जाएँगे।

14 ऐ इसाईल, खुदावन्द अपने खुदा की तरफ रसू' ला, क्यूंकि त अपनी बदकिरदारी की वजह से गिर गया है। 2 कलाम लेकर खुदावन्द की तरफ रसू' लाओ, और कहो, हमारी तमाम बदकिरदारी को दूर कर, और फ़ज़ल से हम को कुबूल फरमा; तब हम अपने लबों से कुर्बानियाँ पेश करेंगे। 3 अब हम को नहीं बचाएगा; हम धोड़ों पर सवार नहीं होंगे; और अपनी दस्तकारी को खुदा न कहेंगे क्यूंकि यतीरों पर रहम करने वाला तु ही है। 4 मैं उनकी नाफरमानी का चारा करूँगा; मैं कुशादा दिली से उससे मुहब्बत रखूँगा, क्यूंकि मेरा कहर उन पर से टल गया है। 5 मैं इसाईल के लिए ओस की तरह हँगा; वह सोसन की तरह फूलेगा, और लुबनान की तरह अपनी जड़ें फैलाएगा; 6 उसकी

डालियाँ फैलेंगी, और उसमें जैतून के दरखत की ख़बसूरती और लुबनान की सी खुशबू होगी। 7 उसके मातहत में रहने वाले कामियाब हो जाएँगे; वह गेहूँ की तरह तर — ओ — ताजा और ताक की तरह शिगुफ्ता होंगे। उनकी शुहरत लुबनान की मय की सी होगी। 8 इफाईम कहेगा, अब मुझे बुतों से क्या काम? मैं खुदावन्द ने उसकी सुनी है, और उस पर निगाह करूँगा। मैं सर सब्ज सरो की तरह हूँ, तू मुझ ही से कामयाब हुआ। 9 'अक्तलमन्द कौन है कि वह ये बातें समझे और समझदार कौन है जो इनको जाने? कर्तृक खुदावन्द की राहें रास्त है और सादिक उनमें चलेंगे; लेकिन खताकर उनमें गिर पड़ेंगे।

यूए

1 खुदावन्द का कलाम जो यूएल — बिन फटूएल पर नाज़िल हुआ:

बढ़ो, सुनो, ऐ जमीन के सब रहने वालों, कान लगाओ। क्या तुम्हारे या तुम्हारे बप — दादा के दिनों में कभी ऐसा हुआ? 3 तुम अपनी औलाद से इसका तज़किरा करो, और तुम्हारी औलाद अपनी औलाद से, और उनकी औलाद अपनी नसल से बयान करो। 4 जो कुछ टिड़ियों के एक गोल से बचा, उसे दूसरा गोल निगल गया; और जो कुछ दूसरे से बचा, उसे तीसरा गोल चट कर गया; और जो कुछ तीसे से बचा, उसे चौथा गोल खा गया। 5 ऐ मतवालों, जागो और मातम करो; ऐ मयनौशी करने वालों, नई मय के लिए चिल्लाओ, क्यूँकि वह तुम्हारे मैंह से छिन गई है। 6 क्यूँकि मेरे मुल्क पर एक क्रौम चढ़ आई है, उनके दाँत शेर — ए — बबर के जैसे हैं, और उनकी दाँड़े शेरीनी की जैसी है। 7 उन्होंने मेरे ताकिस्तान को उजाड़ डाला, और मेरे अंजीर के दरखतों को तोड़ डाला; उन्होंने उनको बिल्कुल छील छालकर फेंक दिया, उनकी डालियाँ सफेद निकल आईं। 8 तुम मातम करो, जिस तरह दुल्हन अपनी जवानी के शौहर के लिए टाट ओड़ कर मातम करती है। 9 नज़र की कुर्बानी और तपावन खुदावन्द के घर से मौक़फ हो गए। खुदावन्द के खिदमत गुजार, काहिन मातम करते हैं। 10 खेत उजड़ गए, जमीन मातम करती है, क्यूँकि गल्ला खबाब हो गया है; नई मय खब्त हो गई, और तेल बर्बाद हो गया। 11 ऐ किसानों शर्मिन्दी उठाओ, ऐ ताकिस्तान के बागबानों, मातम करो, क्यूँकि गेहूं और जौ और मैदान के तैयार खेत बर्बाद हो गए। 12 तक खुश क हो गई; अंजीर का दरखत मुझा गया। अनार और खजूर और सेब के दरखत, हाँ मैदान के तमाम दरखत मुझा गए; और बनी आदम से खुरी जाती रही। 13 ऐ काहिनों, कमरें कस कर मातम करो, ऐ मज़बह पर खिदमत करने वालों, वावैला करो। ऐ मेरे खुदा के खादिमों, आओ रात भर टाट ओड़ो। क्यूँकि नज़र की कुर्बानी और तपावन तुम्हारे खुदा के घर से मौक़फ हो गए। 14 रोजे के लिए एक दिन मुक़द्दस करो; पाक महफिल बुताओ। बुजुर्गों और मुल्क के तमाम बाशिदों को खुदावन्द अपने खुदा के घर में जमा करके उससे फरियाद करो। 15 उस दिन पर अफसोस। क्यूँकि खुदावन्द का दिन नज़दीक है, वह कादिर — ए — मुतलक की तरफ से बड़ी हलाकत की तरह आएगा। 16 क्या हमारी आँखों के सामने रोजी मौक़फ नहीं है, और हमारे खुदा के घर से खुशीओ — शादमानी जाती नहीं रही? 17 बीज ढेलों के नीचे सड़ गया; गल्लाखानों खाली पड़े हैं, खेते तोड़ डाले गए; क्यूँकि खेती सख गई। 18 जानवर कैसे कराहते हैं! गाय — बैल के गल्ले परेशन हैं क्यूँकि उनके लिए चरागाह नहीं है; हाँ, भेड़ों के गल्ले भी बर्बाद हो गए हैं। 19 ऐ खुदावन्द, मैं तेरे सामने फरियाद करता हूँ। क्यूँकि आग ने वीराने की चरागाहों को जला दिया, और शोले ने मैदान के सब दरखतों को राख कर दिया है। 20 जंगली जानवर भी तेरी तरफ निगाह रखते हैं, क्यूँकि पानी की नदियाँ सख गईं, और आग वीराने की चरागाहों को खा गई।

2 सिय्यून में नरसिंगा फैंको; मेरे पाक पहाड़ी पर साँस बाँध कर जोर से फैंको!

मुल्क के तमाम रहने वाले थरथराएँ, क्यूँकि खुदावन्द का दिन चला आता है; बल्कि आ पहुँचा है। 2 अंधेरे और तारीकी का दिन, काले बादल और ज़्रुमात का दिन है! एक बड़ी और ज़बरदस्त उम्मत जिसकी तरह न कभी हुई और न सालों तक उसके बाद होगी; पहाड़ों पर सुब्ब — ए — सादिक की तरह फैल जाएगी। 3 जैसे उनके आगे आगे आग भसम करती जाती है, और उनके पीछे पीछे शो'ला जलाता जाता है। उनके आगे जमीन बासा — ए — 'अदन की तरह है और उनके पीछे वीरान बियाबान है; हाँ, उनसे कुछ नहीं बचता। 4 उनके पैरों का निशान घोड़ों के जैसे हैं, और सवारों की तरह दौड़ते

हैं। 5 पहाड़ों की चोटियों पर रथों के खड़खड़ाने और भूसे को खाक करने वाले जलाने वाली आग के शोर की तरह बलन्द होते हैं। 6 उनके आपने सामने लोग थरथराते हैं; सब चेहरों का रंग उड़ जाता है। 7 वह पहलवानों की तरह दौड़ते, और जंगी मर्दों की तरह दीवारों पर चढ़ जाते हैं। सब अपनी अपनी राह पर चलते हैं, और लाइन नहीं तोड़ते। 8 वह एक दूसरे को नहीं ढकेलते, हर एक अपनी राह पर चला जाता है; वो जंगी हथियारों से जुरज जाते हैं, और बेतरतीब नहीं होते। 9 वो शहर में कृद पड़ते, और दीवारों और घरों पर चढ़कर चोरों की तरह छिड़कियों से घुस जाते हैं। 10 उनके सामने ज़मीन — ओ — आसमान काँपते और थरथराते हैं। सूरज और चाँद तारीक, और सिरोंवे बेसू हो जाते हैं। 11 और खुदावन्द अपने लश्कर के सामने लश्करता है, क्यूँकि उसका लश्कर बेशुमार है और उसके हुक्म को अंजाम देने वाला ज़बरदस्त है; क्यूँकि खुदावन्द का रोज — ए — 'अजीम बहत खौफनाक है। कौन उसकी बर्दाश्त कर सकता है? 12 लेकिन खुदावन्द फ़माता है, अब भी पूरे दिल से और रोजा रख कर और गिर्या — ओ — जारी — ओ — मातम करते हुए मेरी तरफ फ़िरो। 13 और अपने कपड़ों को नहीं, बल्कि दिलों को चाक करके, खुदावन्द अपने खुदा की तरफ मुतवज्जह हो; क्यूँकि वह रहीम — ओ — मेहरबान, कहर करने में धीमा, और शफ़कत में ग़नी है, और ऐजाब नाज़िल करने से बाज़ रहता है। 14 कौन जानता है कि वह बाज़ रहे, और बरकत बाकी छोड़े जो खुदावन्द तुम्हारे खुदा के लिए नज़र की कुर्बानी और तपावन हो। 15 सिय्यून में नरसिंगा फैंको, और रोजे के लिए एक दिन पाक करो; पाक महफिल इकट्ठा करो। 16 तुम लोगों को जमा करो। जमा'त को पाक करो, बुजुर्गों को इकश्ता करो; बच्चों और शरीरबारों को भी बुताओ। दुल्हा अपनी कोठरी से और दुल्हन अपने तन्हाई के घर से निकल आए। 17 काहिन या'नी खुदावन्द के खादिम, डयोढ़ी और कुर्बानगाह के बीच गिर्या — ओ — जारी करें कहें, ऐ खुदावन्द, अपने लोगों पर रहम कर, और अपनी मीरास की तौहीन न होने दे। ऐसा न हो कि दूसरी कोई उन पर हक्कमत करें। वह उम्मतों के बीच क्यूँ कहें, उनका खुदा कहाँ है? 18 तब खुदावन्द को अपने मुल्क के लिए गैरत आई और उसने अपने लोगों पर रहम किया। 19 फिर खुदावन्द ने अपने लोगों से फ़रमाया, मैं तुम को अनाज और नई मय और तेल 'अता फरमाऊँगा और तुम उनसे सेर होगे और मैं फिर तुम को कौमों में स्वत्वा न करूँगा। 20 और शिमाली लश्कर को तुम से दूर करूँगा और उसे खुशक वीराने में हाँक दूँगा; उसके अगले मशरिकी समुद्र में होंगे, और पिछले मार्गारिनी समुद्र में होंगे; उससे बदबू उठेंगी और 'उफ़नत फैलेंगी, क्यूँकि उसने बड़ी गुस्ताखी की है। 21 ऐ' ज़मीन, न घबरा; खुशी और शादमानी कर, क्यूँकि खुदावन्द ने बड़े बड़े काम किए हैं। 22 ऐ दश्ती जानवरों, न घबरा; क्यूँकि वीरान की चरागाह सब्ज़ होती है, और दरखत अपना फल लाते हैं। अंजीर और ताक अपनी पूरी पैदावार देते हैं। 23 तब ऐ बनी सिय्यून, खुश हो, और खुदावन्द अपने खुदा में शादमानी करो; क्यूँकि वह तुम को पहली बरसात कसरत से बरछेगा; वही तुम्हारे लिए बारिश, यानी पहली और पिछली बरसात बक्त पर भेजेगा। 24 यहाँ तक कि खलीहान गेहूँ से भर जाएँगे, और हौज नई मय और तेल से लब्बेज होंगे। 25 और उन बरसों का हासिल जो मेरी तुम्हारे खिलाफ़ भेजी हुई फौज — ए — मलख निगल गई, और खाकर चट कर गई; तुम को वापस दूँगा। 26 और तुम खुब खाओगे और सेर होगे, और खुदावन्द अपने खुदा के नाम की, जिसने तुम से 'अजीब सुलूक किया, इबादत करोगे और मेरे लोग हरगियाँ शर्मिन्दा न होंगे। 27 तब तुम जानोगे कि मैं इसाईल के बीच हूँ, और मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, और कोई दूसरा नहीं; और मेरे लोग कभी शर्मिन्दा न होंगे। 28 'और इसके बाद मैं हर फ़र्द — ए — बशर पर

अपना स्ह नाजिल करूँगा, और तुम्हरे बेटे बेटियाँ न बुव्वत करेंगे; तुम्हरे बढ़े पर अपना स्ह नाजिल करूँगा। 30 और मैं जमीन — ओ — आसमान में 'अजायब जाहिर करूँगा, याँनी खून और आग और धूंधे के खम्बे। 31 इस से पहले कि खुदावन्द का खौफनाक रोज — ए — अजीम आए, सरज तारीक और चाँद खून हो जाएगा। 32 और जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा, क्यूंकि कोह — ए — सिय्यन और येस्शलेम में, जैसा खुदावन्द ने फरमाया है बच निकलने वाले होंगे, और बाकी लोगों में वह जिनको खुदावन्द बुलाता है।

3 उन दिनों में और उसी वक्त, जब मैं यहदाह और येस्शलेम के कैटियों को वापस लाऊँगा; 2 तो सब कौमों को जमा' करूँगा और उन्हें यहसफत की वादी में उतार लाऊँगा, और वहाँ उन पर अपनी कौम और मीरास, इस्माइल के लिए, जिनको उन्होंने कौमों के बीच हलाक किया और मेरे मुल्क को बॉट लिया, दर्तील साबित करूँगा। 3 हाँ, उन्होंने मेरे लोगों पर पर्वी डाली, और एक कस्ती के बदले एक लड़का दिया, और मय के लिए एक लड़की बेची ताकि मयख्वारी करें। 4 "फिर ऐ सूर — ओ — सैदा और फिलिस्तीन के तमाम 'इलाकों, मेरे लिए तुम्हारी क्या हकीकत है? क्या तुम मुझ को बदला देगे? और अगर दोगे, तो मैं वही फौरन तुम्हारा बदला तुम्हरे सिर पर फेंक दूँगा। 5 क्यूंकि तुम ने मेरा सोना चाँदी ले लिया है, और मेरी लतीफ — ओ — नफीस चीज़ अपने हैंकलों में ले गए हो। 6 और तुम ने यहदाह और येस्शलेम की ओलाद को युनानियों के हाथ बेचा है, ताकि उनको उनकी हदों से दूर करो। 7 इसलिए मैं उनको उस जगह से जहाँ तुम ने बेचा है, बरअंगेख्ता करूँगा और तुम्हारा बदला तुम्हरे सिर पर लाऊँगा। 8 और तुम्हरे बेटे बेटियों को बनी यहदाह के हाथ बेचूँगा, और वह उनको अहल — ए — सबा के हाथ, जो दूर के मुल्क में रहते हैं, बेचेंगे, क्यूंकि यह खुदावन्द का फरमान है।" 9 कौमों के बीच इस बात का 'ऐलान करो: लडाइ की तैयारी करो "बहादुरों को बरअंगेख्ता करो, जंगी जवान हाजिर हों, वह चढाइ करो। 10 अपने हल की फालों को पीटकर तलबारें बनाओ और हँसुओं को पीट कर भाले, कमज़ोर कहे, मैं ताकतवर हूँ।" 11 ऐ अस पास की सब कौमों, जल्द आकर जमा' हो जाओ। ऐ खुदावन्द, अपने बहादुरों को वहाँ भेज दे। 12 कौमें बरअंगेख्ता हों, और यहसफत की वादी में आएँ; क्यूंकि मैं वहाँ बैठकर आस पास की सब कौमों की 'अदालत करूँगा। 13 हँसुआ लगाओ, क्यूंकि खेत पक गया है। आओ रौदो, क्यूंकि हौज लबालब। और कोल्ह लबरेज है क्यूंकि उनकी शरारत 'अजीम है। 14 गिरोह पर गिरोह इनफिसाल की वादी में है, क्यूंकि खुदावन्द का दिन इनफिसाल की वादी में आ पहुँचा। 15 सूरज और चाँद तारीक हो जाएँगे, और सितारों का चमकना बंद हो जाएगा। अपने लोगों को खुदावन्द बरकत देगा 16 क्यूंकि खुदावन्द सिय्यन से नारा मारेगा, और येस्शलेम से आवाज बुलंद करेगा और आसमान और जमीन कँपेंगे। लेकिन खुदावन्द अपने लोगों की पनाहगाह और बनी — इस्माइल का किला है। 17 "तब तुम जानेगे कि मैं खुदावन्द तुम्हारा खुदा हूँ, जो सिय्यन में अपने पाक पहाड़ पर रहता हूँ। तब येस्शलेम भी पाक होगा और फिर उसमे किसी अजनबी का गुज़र न होगा। 18 और उस दिन पहाड़ों पर से नई मय टाकेगी, और टीलों पर से दूध बहेगा, और यहदाह की सब नदियों में पानी जारी होगा; और खुदावन्द के घर से एक चरमा फूट निकलेगा और वादी — ए — शितीम को सेराब करेगा। 19 मिस्र बीराना होगा और अदोम सुनसान बियाबान, क्यूंकि उन्होंने बनी यहदाह पर जुल्म किया, और उनके मुल्क में बेगुनाहों का खून बहाया। 20 लेकिन यहदाह हमेशा आबाद और येस्शलेम नसल — दर — नसल काईम रहेगा। 21 क्यूंकि

मैं उनका खून पाक करार दूँगा, जो मैंने अब तक पाक करार नहीं दिया था; क्यूंकि खुदावन्द सिय्यन में सुकूनत करता है।"

आमू

1 तकू'अ के चरवाहों में से 'आमूस का कलाम, जो उस पर शाह — ए — यहदाह उज्जियाह और शाह — ए — इस्माईल युरब'आम — बिन — यूआस के दिनों में इस्माईल के बारे में भौताल से दो साल पहले ख्याल में नाजिल हुआ। 2 उसने कहा: "खुदावन्द सिय्यून से नारा मारेगा और येस्शलेम से आवाज बलन्द करेगा; और चरवाहों की चरागाहें मातम करेगी, और कर्मिल की चोटी सूख जाएगी।" 3 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि "दमिश्क के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसजा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उन्होंने जिलआद को खलीहान में दाउने के आहनी औजार से रौद डाला है। 4 और मैं हजारएल के घराने में आग भेज़ूँगा, जो बिन — हदद के कँसों को खा जाएगी। 5 और मैं दमिश्क का अडबंगा तोड़ूँगा और वादी — ए — अवान के बाशिंदों और बैत — 'अदन के फरमाँरवाँ को काट डालूँगा और अराम के लोग गुलाम होकर कीर को जाएँगे, खुदावन्द फरमाता है। 6 खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि गज्जा के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसजा न छोड़ूँगा, क्यूँकि वह सब लोगों को गुलाम करके ले गए ताकि उनको अदोम के हवाले करें। 7 इसलिए मैं गज्जा की शहरपनाह पर आग भेज़ूँगा, जो उसके कँसों को खा जाएगी। 8 और अशदूद के बाशिंदों और अस्कलोन के फरमाँरवाँ को काट डालूँगा और अकर्सन पर हाथ चलाऊँगा और फिलिसियों के बाकी लोग बर्बाद हो जायेंगे। खुदावन्द खुदा फरमाता है। 9 खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि सूर के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसजा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उन्होंने सब लोगों को अदोम के हवाले किया और बिरादराना 'अहद' की याद न किया। 10 इसलिए मैं सूर की शहरपनाह पर आग भेज़ूँगा, जो उसके कँसों को खा जाएगी।" 11 खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि अदोम के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसजा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उसने तलवार लेकर अपने भाई को दौड़ाया और रहमिली को छोड़ दिया और उसका कहर हमेशा फाड़ता रहा और उसका गज़ब खत्म न हुआ। 12 इसलिए मैं तेमान पर आग भेज़ूँगा, और वह बुसराह के कँसों को खा जाएगी। 13 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि बनी 'अम्मोन के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसजा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उन्होंने अपनी हदूद को बढ़ाने के लिए जिलआद की बारदार 'औरतों के पेट चाक किए। 14 इसलिए मैं रब्बा की शहरपनाह पर आग भड़काऊँगा, जो उसके कँसों को लडाई के दिन ललकार और और्ध्वी के दिन गिर्दबाद के साथ खा जाएगी; 15 और उनका बादशाह बल्कि वह अपने हाकिमों के साथ गुलाम होकर जाएगा, खुदावन्द फरमाता है।

2 खुदावन्द यूँ फरमाता है: "मोआब के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसजा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उसने शाह — ए — अदोम की हड्डियों को जलाकर चूना बना दिया है। 2 इसलिए मैं मोआब पर आग भेज़ूँगा, और वह करयूत के कँसों को खा जाएगी; और मोआब ललकार और नरसिंगों की आवाज, और शोर — ओ — गोंगा के बीच मरेगा। 3 और मैं काजी को उसके बीच से काट डालूँगा और उसके तमाम हाकिमों को उसके साथ कल्प करूँगा," खुदावन्द फरमाता है। 4 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि "यहदाह के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसजा न छोड़ूँगा क्यूँकि उन्होंने खुदावन्द की शरी'अत को रुक किया, और उसके अहकाम की पैरवी न की और उनके झटे माबूदों ने जिनकी पैरवी उनके बाप — दादा ने की, उनको गुरुराह किया है। 5 इसलिए मैं यहदाह पर आग भेज़ूँगा, जो येस्शलेम के कँसों को खा जाएगी।" 6 खुदावन्द यूँ फरमाता है: इस्माईल के तीन बल्कि चार गुनाहों की वजह से मैं उसको बेसजा न छोड़ूँगा, क्यूँकि उन्होंने सादिक को स्पष्ट की

खातिर, और गरीब को जूतियों के जोड़े की खातिर बेच डाला। 7 वह गरीबों के सिर पर की गर्द का भी लालच रखते हैं, और हलीमों को उनकी राह से गुमराह करते हैं और बाप बेटा एक ही 'औरत के पास जाने से मेरे पाक नाम की तकाफीर करते हैं। 8 और वह हर मज़बह के पास गिरवी लिए हुए कपड़ों पर लेटे हैं, और अपने खुदा के घर में जुमनि से खरीदी हई मय पीते हैं। 9 हालाँकि मैं ही ने उनके सामने से अमोरियों को हलाक किया, जो देवदारों की तरह बल्ट और बल्टों की तरह मज़बत थे; हाँ, मैं ही ने उनपर से उनका फल बर्बाद किया, और नीचे से उनकी जड़े काटी। 10 और मैं ही तुमको मूल्क — ए — मिस से निकल लाया, और चातीनी बरस तक बीराने में तुम्हारी रहबी की, ताकि तुम अमोरियों के मूल्क पर काबिज हो जाओ। 11 और मैंने तुम्हारे बेटों में से नबी, और तुम्हारे जवानों में से नजीर खड़े किए, खुदावन्द फरमाता है, ऐ बनी इस्माईल, क्या ये सच नहीं? 12 लेकिन तुम ने नजीरों को मय पिलाई, और नबियों को हक्म दिया के नव्वबत न करें। 13 देखो, मैं तुम को ऐसा दबाऊँगा, जैसे प्लॉटों से लदी हुई गाड़ी दबाई है। 14 तब तेज रफ्तार से भागने की ताकत जाती रहेगी, और ताकतवर का जोर बेकार होगा, और बहादुर अपनी जान न बचा सकेगा। 15 और कमान खींचने वाला खड़ा न रहेगा, और तेज़ कदम और सवार अपनी जान न बचा सकेगे; 16 और पहलवानों में से जो कोई दिलावर है, नंगा निकल भागेगा, खुदावन्द फरमाता है।

3 ऐ बनी इस्माईल, ऐ सब लोगों जिनको मैं मिल्क — ए — मिस से निकल लाया, ये बात सुनो जो खुदावन्द तुम्हारे बारे में फरमाता है: 2 "दुनिया के सब घरानों में से मैंने सिर्फ तुम को चुना है, इसलिए मैं तुम को तुम्हारी सारी बदकिरारी की सजा दृঁग।" 3 अगर दो शब्द आपस में मुत्तफिक न हों, तो क्या इकट्ठे चल सकेंगे? 4 क्या शेर — ए — बबर जंगल में गरजेगा, जबकि उसे शिकार न मिला हो? और अगर जवान शेर ने कुछ न पकड़ा हो, तो क्या वह गार में से अपनी आवाज को बल्ट बढ़ावा दे सकता है? 5 क्या कोई चिंडिया ज़मीन पर दाम में फँस सकती है, जबकि उसके लिए दाम ही न बिछाया गया हो? क्या फंदा जब तक कि कुछ न कुछ उसमें फँसा न हो, ज़मीन पर से उछलेगा? 6 क्या ये मुकिन है कि शहर में नरसिंग ढूँका जाए, और लोग न कौपीं? या कोई बला शहर पर आए, और खुदावन्द ने उसे न भेजा हो? 7 यकीन खुदावन्द खुदा कुछ नहीं करता, जब तक अपना राज अपने खिदमत गुजार नवियों पर पहले आशकारा न करे। 8 शेर — ए — बबर गरजा है, कौन न डेरगा? खुदावन्द खुदा ने फरमाया है, कौन नव्वबत न करेगा? 9 अशदूद के कँसों में और मूल्क — ए — मिस के कँसों में 'ऐलान करो, और कहो, सामरिया के पहाड़ों पर जमा' हो जाओ, और देखो उसमें कैसा हंगामा और ज़ल्म है। 10 क्यूँकि वह नेकी करना नहीं जानते, खुदावन्द फरमाता है जो अपने कँसों में ज़ल्म और लट को जमा' करते हैं। 11 इसलिए खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि "दुश्मन मूल्क का धिराव करेगा, और तेरी कुब्बत को तड़ा से दूँ करेगा, और तेर कम्प लटे जाएँगे।" 12 खुदावन्द यूँ फरमाता है कि जिस तरह से चरवाहा दो टौंगे, या कान का एक टुकड़ा, शेर — ए — बबर के मूँह से छुड़ा लेता है उसी तरह बनी इस्माईल जो सामरिया में पलांग के गोशे में और रेशमीन फर्श पर बैठे रहते हैं, छुड़ा लिए जाएँगे। 13 खुदावन्द खुदा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, सुनो और बनी या"कब के खिलाफ गवाही दो। 14 क्यूँकि जब मैं इस्माईल के गुमाहों की सजा दृँग, तो बैतएल के मज़बहों को भी देख लूँगा, और मज़बह के सींग कट कर ज़मीन पर गिर जाएँगे। 15 और खुदावन्द फरमाता है: मैं ज़मिस्तानी और ताबिस्तानी घरों को बर्बाद करूँगा, और हाथी दौत के घर मिस्मार किए जाएँगे और बहुत से मकान बीरान होंगे।

4 ऐ बसन की गायें, जो कोह — ए — सामरिया पर रहती हो, और गरीबों को सताती और गरीबों को कुचलती और अपने मालिकों से कहती हो, 'ताओ, हम पियें', 'तुम ये बात सुनो। 2 खुदावन्द खुदा ने अपनी पाकीजगी की कक्षम खाई है कि तुम पर वह दिन आएँगे, जब तुम को अंकड़ियों से और तुम्हारी औलाद को शस्तों से खीच ले जाएँगे। 3 और खुदावन्द फरमाता है, तुम में से हर एक उस रखें से जो उसके सामने होगा निकल भगेगी, और तुम कैद में डाली जाओगी। 4 बैतैल में आओ और गुनाह करो, और जिल्जाल में कक्षर से गुनाह करो, और हर सबह अपनी कुर्बानियाँ और तिसे रोज ढहकी लाओ, 5 और शुकुजुरारी का हादिया खरीन के साथ आग पर पेश करो, और रजा की कुर्बानी का 'ऐलान करो, और उसको मशहर करो, क्यूंकि ऐ बनी इसाईल, ये सब काम तुम को पसंद है, खुदावन्द खुदा फरमाता है। 6 खुदावन्द फरमाता है, अगरचे मैंने तुम को तुम्हारे हर शहर में दाँतों की काफ़ाई, और तुम्हारे हर मकान में रोटी की कमी दी है; तोभी तुम मेरी तरफ रसू' न लाए। 7 और अगरचे मैंने मेंह को, जबकि फसल पकने में तीन महीने बाकी थे तुम से रोक लिया; और एक शहर पर बरसाया और दूसे से रोक रखवा, एक किता' ज़मीन पर बरसा और दूसरा किता' बारिश न होने की वजह से सूख गया; 8 और दो तीन बस्तियाँ आवाहा हो कर एक बस्ती में आईं, ताकि लोग पानी पिएँ पर वह आस्ता न हुए, तो भी तुम मेरी तरफ रसू' न लाए, खुदावन्द फरमाता है। 9 फिर मैंने तुम पर बाद — ए — समूम और गेरोई की आफत भेजी, और तुम्हारे बेशुमर बाग और ताकिस्तान और अंजीर और ज़ैतून के दरखत, टिड़ियों ने खा लिए; तोभी तुम मेरी तरफ रसू' न लाए, खुदावन्द फरमाता है। 10 मैंने मिस के जैसी बवा तुम पर भेजी और तुम्हारे जवानों को तलवार से करत्त किया; तुम्हारे घोड़े छीन लिए और तुम्हारी लश्करगाह की बदबू तुम्हारे नरनों में पहुँची, तोभी तुम मेरी तरफ रसू' न लाए, खुदावन्द फरमाता है। 11 'मैंने तुम में से कुछ को उलट दिया, जैसे खुदा ने सदम और 'अमूरा को उलट दिया था; और तुम उस लुक्टी की तरह हुए जो आग से निकाली जाए, तोभी तुम मेरी तरफ रसू' न लाए।' खुदावन्द फरमाता है। 12 'इसलिए ऐ इसाईल, मैं तुझ से यूँ ही कर्सँगा, और चूँकि मैं तुझ से यूँ कर्सँगा, इसलिए ऐ इसाईल, तू अपने खुदा से मुलाकात की तैयारी कर!' 13 क्यूंकि देख, उसी ने पहाड़ों को बनाया और हवा को पैदा किया, वह द्वान पर उसके ख्यालात को जाहिर करता है और सबूह को तारीक बना देता है और ज़मीन के ऊँचे मकामात पर चलता है; उसका नाम खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज है।

5 ऐ इसाईल के खान्दान, इस कलाम को जिससे मैं तुम पर नौहा करता हूँ, सुनो: 2 'इसाईल की कुँवारी गिर पड़ी, वह फिर न उठेरी; वह अपनी ज़मीन पर पड़ी है, उसको उठने वाला कोई नहीं।' 3 क्यूंकि खुदावन्द खुदा यूँ फरमाता है कि 'इसाईल के घराने के लिए, जिस शहर से एक हज़ार निकलते थे, उसमें एक सौ रह जाएँगे; और जिससे एक सौ निकलते थे, उसमें दस रह जाएँगे।' 4 क्यूंकि खुदावन्द इसाईल के घराने से यूँ फरमाता है कि 'तुम मेरे तालिब हो और ज़िन्दा रहो; 5 लेकिन बैतैल के तालिब न हो, और जिल्जाल में दाखिल न हो, और बैरसबा' को न जाओ, क्यूंकि जिल्जाल गुलामी में जाएगा और बैतैल नाचीज होगा।' 6 तुम खुदावन्द के तालिब हो और ज़िन्दा रहो, ऐसा न हो कि वह यूसुफ के घराने में आग की तरह भड़के और उसे खा जाए और बैतैल में उसे बुझाने वाला कोई न हो। 7 ऐ 'अदालत को नागदाना बनाने वालों, और सदाकत को खाक में मिलाने वालों। 8 वही सूरैया और जब्बार सिटारों का खालिक है जो मौत के साथे को मतला' — ए — नूर, और रोज़ — ए — रोशन को शब — ए — दैज़र बना देता है, और समन्दर के पानी को बुलाता और इस ज़मीन पर फैलाता है, जिसका नाम खुदावन्द है; 9 वह जो

जबरदस्तों पर नागहानी हलाकत लाता है, जिससे किलों पर तबाही आती है। 10 वह फाटक में मलामत करने वालों से कीना रखते हैं, और रास्तों से नफरत करते हैं। 11 इसलिए चूँकि तुम गरीबों को पायामाल करते हो और ज़ुल्म करके उनसे गेहूँ छीन लेते हो, इसलिए जो तराशे हुए पथरों के मकान तुम ने बनाए उनमें न बसोगे, और जो नफीस ताकिस्तान तुम ने लगाए उनकी मय न पियोगे। 12 क्यूंकि मैं तुम्हारी बेशुमर खुदानों और तुम्हारे बड़े — बड़े गुनाहों से आगाह हूँ तुम सदिकों को सताते और रिक्विट लेते हो, और फाटक में गरीबों की हक्कतलफी करते हो। 13 इसलिए इन दिनों में पेशबीनी खामोश हो रहे हैं क्यूंकि ये बुरा वक्त है। 14 बुराई के नहीं बल्कि नेकी के तालिब हो, ताकि ज़िन्दा रहो और खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज तुम्हारे साथ रहेगा, जैसा कि तुम कहते हो। 15 बुराई से 'अदावत और नेकी से मुहब्बत रखवा, और फाटक में 'अदालत को क्रायम करो; शायद खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज बनी यूसुफ के बकिये पर रहम करो। 16 इसलिए खुदावन्द खुदा रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि: सब बाजारों में नौहा होगा, और सब गलियों में अफसोस अफसोस कहेंगे; और किसानों को मातम के लिए, और उनको जो नौहागारी में महारत रखते हैं नौहे के लिए बुलाएँगे; 17 और सब ताकिस्तानों में मातम होगा, क्यूंकि मैं तुझमें से होकर गुज़रँगा, खुदावन्द फरमाता है। 18 तुम पर अफसोस जो खुदावन्द के दिन की आरज़ा करते हो! तुम खुदावन्द के दिन की आरज़ा क्यूँ करते हो? वह तो तारीकी का दिन है, रोशनी का नहीं; 19 जैसे कोई शेर — ए — बबर से भागे और रीछ उसे मिले, या घर में ज़ाकर अपना हाथ दीवार पर रख दें और उसे साँप काट ले। 20 क्या खुदावन्द का दिन तारीकी का न होगा? उसमें रोशनी न होगी, बल्कि सध्य जुल्मत होगी और नूर मुतलक न होगा। 21 मैं तुम्हारी 'ईदों' को मकरस्त जानता, और उनसे नफरत रखता हूँ, और मैं तुम्हारी पाक महफिलों से भी खुश न हँगा। 22 और अगरचे तुम मेरे सामने सोलतनी और नज़र की कुर्बानियाँ पेश करेगे तोमी मैं उनको कुबूल न करँगा; और तुम्हारे फर्जी जानवरों की शुक्रने की कुर्बानियों को खातिर मैं न लाऊँगा। 23 तू अपने सरोद का शेर मेरे सामने से दूर कर, क्यूंकि मैं तेरे रबाब की आवाज न सुँगा। 24 लेकिन 'अदालत को पानी की तरह और सदाकत को बड़ी नहर की तरह जारी रख। 25 ऐ बनी — इसाईल, क्या तुम चातीस बरस तक वीराने में, मेरे सामने ज़बीह और नज़र की कुर्बानियाँ पेश करते रहें? 26 तुम तो मिल्कम का खेमा और कीबान के बूत, जो तुम ने अपने लिए बनाए, उठाए फिरते थे, 27 इसलिए खुदावन्द जिसका नाम रब्ब — उल — अफवाज है फरमाता है, मैं तुम को दिमश्क से भी आगे गुलामी में भेज़ूँगा।

6 उन पर अफसोस जो सिय्यन में बा राहत और कोहिस्तान — ए — सामरिया में बेकिंक है, यानी कौमों के रईस के शर्फ़ जिनके पास बनी — इसाईल आते हैं! 2 तुम कलना तक जाकर देखो, और बहँों से हमार — ए — 'आज़म तक सैर करो, और फिर फ़िलिसितों के जात को जाओ। क्या वह इन ममलकतों से बेहतर हैं? क्या उनकी हृदूद तुम्हारी हृदूद से ज्यादा बरी है? 3 तुम जो बुरे दिन का ख्याल मुत्तवी करके, जुलम की कुर्सी नज़ीकी करते हो। 4 'जो हाथी दाँत के पलंग पर लेटे और चारपाइयों पर दराज होते, और गल्ले में से बर्बी को और तवेल में से बछड़ों को लेकर खाते हो। 5 और रबाब की आवाज़ के साथ गाते, और अपने लिये दाऊद की तरह मूरीकी के साज ईजाद करते हो; 6 जो प्यालों में से मय पीते और अपने बदन पर बेहतरीन 'इन मलते हो; लेकिन यूसुफ की शिक्षस्ताहाली से गम्फ़ीन नहीं होते! 7 इसलिए वह पहले गुलामों के साथ गुलाम होकर जाएँगे, और उनकी पेश — ओ — निशात का खातिमा हो जाएगा। 8 खुदावन्द खुदा ने अपनी जात की कसम खाई है, खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: 'किं मैं याँकूब की हश्मत

से नफरत रखता हूँ और उसके कस्तों से मुझे 'अदावत है। इसलिए मैं शहर को उसकी सारी मामूरी के साथ हवाते कर दूँगा।' 9 बल्कि दूँ होगा कि अगर किसी घर में दस अदामी बाकी होंगे, तो वह भी मर जाएँगे। 10 और जब किसी का रिश्तेदार जो उसको जलाता है, उसे उठाएगा ताकि उसकी हड्डियों को घर से निकाले, और उससे जो घर के अन्दर पूछेगा, क्या कोई और तेरे साथ है? तो वह जवाब देगा, कोई नहीं, तब वह कहेगा, चुप रह, ऐसा न हो कि हम खुदावन्द के नाम का जिक्र करें। 11 क्यूँकि देख, खुदावन्द ने हुक्म दे दिया है, और बड़े — बड़े घर रखनों से, और छोटे शिखाफों से बर्बाद होंगे। 12 क्या चटानों पर घोड़े दौड़ेंगे, या कोई बैलों से वहाँ हल चलाएगा? तोभी तुम ने 'अदालत को इंदायन और समरा — ए — सदाकत को नागदौना बना रखवा है, 13 तुम बेहकीकत चीजों पर फ़खु करते, और कहते हो, क्या हम ने अपने लिए, अपनी ताकत से सींग नहीं निकाले? 14 लेकिन खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, ऐ बनी — इसाईल, देखो, मैं तुम पर एक कौम को चढ़ा लाऊँगा, और वह तुम को हमात के मदरबल से, बादी — ए — अरबा तक परेशान करेगी।

7 खुदावन्द खुदा ने मुझे ख्वाब दिखाया और क्या देखता हूँ कि उसने ज़रा' अत की आखिरी रोईदगी की शुरू' में टिट्ठियाँ पैदा की; और देखो, ये शाही कटाई के बाद आखिरी रोईदगी थी। 2 और जब वह ज़मीन की घास को बिल्कुल खा चुकी, तो मैंने 'अर्ज की, "ऐ खुदावन्द खुदा, मेहरबानी से मू' आफ फरमा! या 'कूब की क्या हकीकत है कि वह कायम रह सके? क्यूँकि वह छोटा है!" 3 खुदावन्द इससे बाज़ आया, और उसने फरमाया: "यूँ न होगा।" 4 फिर खुदावन्द खुदा ने मुझे ख्वाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द खुदा ने आप को बुलाया कि मुकाबला करे, और वह बहर — ए — 'अमीक को निगल गई, और नज़दीक था कि ज़मीन को खा जाए। 5 तब मैंने 'अर्ज की, "ऐ खुदावन्द खुदा, मेहरबानी से बाज आ, या 'कूब की क्या हकीकत है कि वह कायम रह सके? क्यूँकि वह छोटा है!" 6 खुदावन्द इससे बाज़ आया, और खुदावन्द खुदा ने फरमाया: "यूँ भी न होगा।" 7 फिर उसने मुझे ख्वाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि खुदावन्द एक दीवार पर, जो साहल से बनाई गई थी खड़ा है, और साहल उसके हाथ में है। 8 और खुदावन्द ने मुझे फरमाया कि "ऐ 'आमूस, त क्या देखता है?" मैंने 'अर्ज की, कि साहल। तब खुदावन्द ने फरमाया, देखो, मैं अपनी कौम इसाईल में साहल लटकाऊँगा, और मैं फिर उसने दरगुजर न करूँगा, 9 और इस्हाक के ऊँचे मकाम बर्बाद होंगे, और इसाईल के मकदिस वीरान हो जाएँगे; और मैं युरब' आम के घराने के खिलाफ तलवार लेकर उड़ूँगा। 10 तब बैतेल के काहिन इम्सियाह ने शाह — ए — इसाईल युरब' आम को कहला भेजा कि 'आमूस ने तेरे खिलाफ बनी — इसाईल में फिना खड़ा किया है, और मुल्क में उसकी बातों की बर्दाशत नहीं। 11 क्यूँकि 'आमूस यूँ कहता है, 'कि युरब' आम तलवार से मारा जाएगा, और इसाईल यकीन आपने वतन से गुलाम होकर जाएगा। 12 और इम्सियाह ने 'आमूस से कहा, ऐ बैगो, त यहदाह के मुल्क को भाग जा, वही खा पी और नबुव्वत कर, 13 लेकिन बैतेल में फिर कभी नबुव्वत न करना, क्यूँकि ये बादशाह का मकदिस और शाही महल है। 14 तब 'आमूस ने इम्सियाह को जवाब दिया, कि मैं न नबी हूँ, न नबी का बेटा; बल्कि चरवाहा और गूलर का फल बटोरने वाला हूँ। 15 और जब मैं गल्ले के पीछे — पीछे जाता था, तो खुदावन्द ने मुझे लिया और फरमाया, कि 'जा, मेरी कौम इसाईल से नबुव्वत कर। 16 इसलिए अब त खुदावन्द का कलाम सन। तू कहता है, 'कि इसाईल के खिलाफ नबुव्वत और इस्हाक के घराने के खिलाफ कलाम न कर। 17 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि तेरी बीवी शहर में कस्ती बनेगी, और तेरे बेटे और तेरी बेटियाँ तलवार से

मारे जाएँगे; और तेरी ज़मीन जरीब से बाँटी जाएगी, और तू एक नापाक मुल्क में मरेगा; और इसाईल यकीनन अपने वतन से गुलाम होकर जाएगा।

8 खुदावन्द खुदा ने मुझे ख्वाब दिखाया, और क्या देखता हूँ कि ताबिस्तानी

मेंवों की टोकरी है। 2 और उसने फरमाया, ऐ 'आमूस, त क्या देखता है?

मैंने 'अर्ज की, ताबिस्तानी मेंवों की टोकरी। तब खुदावन्द ने मुझे फरमाया कि मेरी कौम इसाईल का वक्त आ पहुँचा है; अब मैं उससे दरगुजर न करूँगा। 3

और उस वक्त हैकल के नामे नैहे हो जायेंगे, खुदावन्द खुदा फरमाता, बहुत सी लाशें पड़ी होंगी वह चुपके — चुपके उनको हर जगह निकाल फेंकेंगे। 4 तुम जो चाहते हो कि मुहताजों को निगल जाओ, और गरीबों को मुल्क से हलाक करो, 5 और ऐका को छोटा और मिस्काल को बड़ा बनाते, और फेरब की तरजू से दगाबाजी करते, और कहते हो, कि नये चाँद का दिन कब गुजरेगा, ताकि हम गल्ला बेचें, और सबत का दिन कब खत्म होगा के गेहूँ के खेते खोलें, 6 ताकि गरीब को स्पष्ट से और मुहताज को एक जोड़ी जूटियों से खरीदें, और गेहूँ की फटकन बेचें, ये बात सुनो, 7 खुदावन्द ने याकूब की हश्मत की कसम खाकर फरमाया है: "मैं उनके कामों में से एक को भी हरायिज न भलूँगा।

8 क्या इस वजह से ज़मीन न थरथराएगी, और उसका हर एक बांशिंदा मातम न करेगा? हाँ, वह बिल्कुल दरिया-ए-नील की तरह उठेगी और रोद — ए — मिस्र की तरह फैल कर फिर सुकड़ जाएगी।" 9 और खुदावन्द खुदा फरमाता है, उस रोज़ आफताब दोपहर ही को गुरुब हो जाएगा और मैं रोज़ — ए — रोशन ही में ज़मीन को तारीक कर दूँगा। 10 तुम्हारी 'ईदों' को मातम से और तुम्हारे नामों को नैहों से बदल दूँगा, और हर एक की कमर पर टाट बँधवाऊँगा और हर एक के सिर पर चंद्रतापन भेज़ूँगा और ऐसा मातम खड़ा करूँगा जैसा इकलौते बेटे पर होता है और उसका अंजाम रोज़ — ए — तल्ख सा होगा। 11 खुदावन्द खुदा फरमाता है, देखो, वह दिन आते हैं कि मैं मुल्क में कहत डालूँगा न ज़मीन की प्यास और न रोटी का कहत, बल्कि खुदावन्द का कलाम सुनने का। 12 तब लोग समन्दर से समन्दर तक और उत्तर से पूरब तक भटकते फिरेंगे, और खुदावन्द के कलाम की तलाश में इधर उधर दौड़ेंगे लेकिन कही न पाएँगे। 13 और उस रोज़ हसीन कुँवारियाँ और जबान मर्द प्यास से बेताब हो जाएँगे। 14 जो सामरिया के बुत की कसम खाते हैं, और कहते हैं, ऐ दान, तेरे मांबूद की कसम' और 'बैर सबा' के तरीके की कसम, 'वह पिर जाएँगे और फिर हरायिज न उठेंगे।

9 मैंने खुदावन्द को मजबह के पास खड़े देखा, और उसने फरमाया: "सुनूँ

के सिर पर मार, ताकि आस्ताने हिल जाएँ; और उन सबके सिरों पर उनको पारा — पारा कर दे, और उनके बकिये को मैं तलवार से कत्ल करूँगा; उनमें से एक भी भाग न सकेगा, उनमें से एक भी बच न निकलेगा। 2 अगर वह पाताल में घुस जाएँ, तो मेरा हाथ वहाँ से उनको खीच निकालेगा; और अगर आसमान पर चढ़ जाएँ, तो मैं वहाँ से उनको उतार लाऊँगा (Sheol h7585) 3 अगर वह कोह — ए — कर्मिल की चोटी पर जा छिपें, तो मैं उनको वहाँ से ढूँड निकालूँगा; और अगर समन्दर की तरह मैं भैरवी भलाई के लिए नहीं, बल्कि बुराई के लिए उन पर निगाह रखूँगा।" 5 क्यूँकि खुदावन्द रब्ब — उल — अफवाज वह है कि अगर ज़मीन को छू देते वह गुदाज हो जाए, और उसकी सब मामूरी मातम करें; वह बिल्कुल दरिया-ए-नील की तरह उठे और रोद — ए — मिस्र की तरह फिर सुकड़ जाए। 6 वही आसमान पर अपने बालाखाने तामीर करता है, उसी ने

ज़मीन पर अपने गुम्बद की बुनियाद रख्वी है; वह समन्दर के पानी को बुलाकर इस ज़मीन पर फैला देता है, उसी का नाम खुदावन्द है। 7 खुदावन्द फरमाता है, ऐ बनी — इस्माइल, क्या तुम मेरे लिए अहल — ए — कृश की औलाद की तरह नहीं हो? क्या मैं इस्माइल को मुल्क — ए — मिस्र से, और फिलिस्तियों को कफतूर से, और अरामियों को कीर से नहीं निकाल लाया हूँ? 8 देखो, खुदावन्द खुदा की आँखें इस गुनाहार ममलुकत पर लगी हैं, खुदावन्द फरमाता है, मैं उसे इस ज़मीन से हलाक — ओ — बर्बाद कर दूँगा, मगर या'कूब के घराने को बिलकुल हलाक न करूँगा। 9 क्यूँकि देखो, मैं हव्वम करूँगा और बनी — इस्माइल को सब कौमों में जैसे छलनी से छानते हैं, छानूँगा और एक दाना भी ज़मीन पर गिरने न पाएगा। 10 मेरी उम्मत के सब गुनहगार लोग जो कहते हैं कि 'हम पर न पीछे से आफत आएगी न आगे से,' तलवार से मारे जाएँगे। 11 मैं उस रोज़ दाऊद के पिरे हुए घर को खड़ा करके, उसके रखनों को बंद करूँगा; और उसके खंडर की मरम्मत करके, उसे पहले की तरह तामीर करूँगा; 12 ताकि वह अदोम के बकिये और उन सब कौमों पर जो मेरे नाम से कहलाती है क्राबिज़ हो उसको वुहूँ में लाने वाला खुदावन्द फरमाता है। 13 देखो, वह दिन आते हैं, खुदावन्द फरमाता है, जोतने वाला काटने वाले को, और अंगू कुचलने वाला बोने वाले को जा लेगा; और पहाड़ों से नई मय टपकेगी, और सब टीते गुदाज होंगे। 14 और मैं बनी — इस्माइल, अपने लोगों को गुलामी से वापस लाऊँगा; वह उजड़े शहरों को तामीर करके उनमें कथाम करेंगे और बाग लगाकर उनकी मय पिँसेंगे। वह बाग लगाएँगे और उनके फल खाएँगे। 15 क्यूँकि मैं उनको उनके मुल्क में क्लायम करूँगा और वह फिर कभी अपने वतन से जो मैंने उनको बरक्षा है, निकाले न जाएँगे, खुदावन्द तेरा खुदा फरमाता है।

1 'अबदियाह का ख्वाब; हम ने खुदावन्द से यह खबर सुनी, और कौमों के बीच कासिद यह फैगाम ले गया: कि चलो उस पर हमला करें। खुदावन्द खुदा अदोम के बारे में यूँ फरमाता है। 2 कि देख मैंने तुझे कौमों के बीच हकीर कर दिया है, तू बहुत जल्लील है। 3 ऐ चट्टानों के शिंगाफ़ों में रहने वाले, तौर दिल के घमंड ने तुझे धोका दिया है; तेरा मकान ऊँचा है और तू दिल में कहता है, कौन मुझे नीचे उतारेगा? 4 खुदावन्द फरमाता है, अगर तू उकाब की तरह ऊँची परवाज हो और सितारों में अपना आशियाना बनाए, तोमी मैं तुझे वहाँ से नीचे उतारँगा। 5 अगर तेरे घर में चोर आएँ, या रात को डाकू आ घुसें, तेरी कैसी बर्बादी है तो क्या वह हस्ब — ए — ख्वाहिश ही न लेगी? अगर अंगू तोड़ने वाले तेरे पास आएँ, तो क्या कुछ दाने बाकी न छोड़ेंगे? 6 'ऐसौ का माल कैसा ढूँड निकाला गया, और उसके छुपे हुए खजानों की कैसी तलाश हुई! 7 तेरे सब हिमायतियों ने तुझे सरहद तक हाँक दिया है, और उन लोगों ने जो तुझ से मेल रखते थे तुझे धोका दिया और मगलब किया, और उन्होंने जो तेरी रोटी खाते थे, तेरे नीचे जाल बिछाया; उसमें थोड़े भी होशियार नहीं। 8 खुदावन्द फरमाता है, क्या मैं उस दिन अदोम से होशियारों को और 'अक्लमन्दी को पहाड़ी — ए — 'ऐसौ से हलाक न करँगा? 9 ऐ तीमान, तेरे बहादुर घबरा जाएँगे, यहाँ तक के पहाड़ी — ए — 'ऐसौ के रहने वालों में से हर एक काट डाला जाएगा। 10 उस कल्ल की बजह और उस ज़ुल्म की बजह से जो तू ने अपने भाई या'कूब पर किया है, तू शर्मिन्दगी से भरपूर और हमेशा के लिए बर्बाद होगा। 11 जिस दिन तू उसके मुखालिफ़ों के साथ खड़ा था, जिस दिन अजनबी उसके लश्कर को गुलाम करके ले गए और बेगानों ने उसके फाटकों से दाखिल होकर येस्शलेम पर पर्ची डाली, तू भी उनके साथ था 12 तुझे ज़स्ती न था कि तू उस दिन अपने भाई की जिलावती को खड़ा देखता रहता, और बनी यहदाह की हलाकत के दिन खुश होता और मुसीबत के रोज बड़ी जुबान बकता। 13 तुझे मुनासिब न था कि तू मेरे लोगों की मुसीबत के दिन उनके फाटकों में घुसता, और उनकी मुसीबत के रोज उनकी बदहाली को खड़ा देखता रहता, और उनके लश्कर पर हाथ बढ़ाता। 14 तुझे ज़स्ती न था कि घाटी में खड़ा होकर, उसके फारियों को कल्ट करता, और उस दुख के दिन में उसके बाकी थके लोगों को हवाले करता। 15 क्यूँकि सब कौमों पर खुदावन्द का दिन आ पहुँचा है। जैसा तू ने किया है, वैसा ही तुझ से किया जाएगा। तेरा किया तेरे सिर पर आएगा। 16 क्यूँकि जिस तरह तुम ने मेरे कोह — ए — मुकद्दस पर पिया, उसी तरह सब कौमें पिया करेंगी, हाँ पीती और निगलती रहेगी; और वह ऐसी होगी जैसे कभी थी ही नहीं। 17 लेकिन जो बच निकलेगे सिय्यून पहाड़ी पर रहेंगे, और वह पाक होगा और याकूब का घराना अपनी मीरास पर काबिज होगा। 18 तब याकूब का घराना आग होगा, और यूसुफ का घराना शो'ला, और 'ऐसौ का घराना फूस; और वह उसमें भड़केंगे और उसको खा जाएँगे, और 'ऐसौ के घराने में से कोई न बचेगा; क्यूँकि ये खुदावन्द का फरमान है। 19 और दखिल के रहने वाले पहाड़ी — ए — 'ऐसौ, और मैदान के रहने वाले फिलिस्तीन के मालिक होंगे; और वह इफाईम और सामरिया के खेतों पर काबिज होंगे, और बिनयमीन जिलआद का वारिस होगा। 20 और बनी — इस्माइल के लश्कर के सब गुलाम, जो कनानीयों में सारपत तक हैं, और येस्शलेम के गुलाम जो सिफाराद में हैं, दखिल के शहरों पर काबिज हो जाएँगे। 21 और रिहाइ देने वाले सिय्यून की पहाड़ी पर चढ़ेंगे ताकि पहाड़ी — ए — 'ऐसौ की 'अदालत करें, और बादशाही खुदावन्द की होगी।

यूना

1 खुदावन्द का कलाम यूनाह बिन अमितै पर नाजिल हुआ। 2 कि उठ,

उस बड़े शहर निनवे को जा और उसके खिलाफ ऐलान कर; क्यूंकि उनकी बुराई मेरे सामने पहुँची है। 3 लेकिन यूनाह खुदावन्द के सामने से तरसीस को भागा, और याफा मैं पहुँचा और वहाँ उसे तरसीस को जाने वाला जहाज मिला; और वह किराया देकर उसमे सवार हुआ ताकि खुदावन्द के सामने से तरसीस को जहाज वालों के साथ जाए। 4 लेकिन खुदावन्द ने समन्दर पर बड़ी अँधी भेजी, और समन्दर मैं सख्त त़क़फ़ान बर्फ़ी हुआ, और अंदेशा था कि जहाज तबाह हो जाए। 5 तब मल्लाह हैरान हुए और हर एक ने अपने मांबूद को पुकारा; और वह सामान जो जहाज मैं था समन्दर मैं डाल दिया ताकि उसे हल्का करें, लेकिन यूनाह जहाज के अन्दर पड़ा सो रहा था। 6 तब ना खुदा उसके पास जाकर कहने लगा, “तू क्यों पड़ा सो रहा है? उठ अपने मांबूद को पुकार! शायद हम को याद करे और हम हलाक न हों।” 7 और उन्होंने आपस में कहा, “आओ, हम पर्ची डालकर देखें कि यह आफत हम पर किस की वजह से आई।” चुनौते उन्होंने पर्ची डाला, और यूनाह का नाम निकला। 8 तब उन्होंने उस से कहा, त हम को बता कि यह आफत हम पर किस की वजह से आई है? तेरा क्या पेशा है, और त कहाँ से आया है?, तेरा बतन कहाँ है, और त किस कौम का है?, 9 उसे उसे कहा, “मैं इंसानी हूँ और खुदावन्द असमान के खुदा बहर — ओ — बर्क के खालिक से डरता हूँ।” 10 तब वह खौफ़जदा होकर उस से कहने लगा, तू ने यह क्या किया? क्यूंकि उनको मालूम था कि वह खुदावन्द के सामने से भागा है, इसलिए कि उस ने खुद उन से कहा था। 11 तब उन्होंने उस से पछा, “हम तुम से क्या करें कि समन्दर हमारे लिए ठहर जाए़!” क्यूंकि समन्दर ज्यादा त़क़फ़ानी होता जाता था 12 तब उस ने उस से कहा, “मुझे उठा कर समन्दर मैं फेंक दो, तो तुम्हरे लिए समन्दर ठहर जाए़; क्यूंकि मैं जानता हूँ कि यह बड़ा त़क़फ़ान तुम पर मेरी ही वजह से आया है।” 13 तो भी मल्लाहोंने डंडा चलाने में बड़ी मेहनत की कि किनारे पर पहुँचे, लेकिन न पहुँच सके, क्यूंकि समन्दर उनके खिलाफ और भी ज्यादा त़क़फ़ानी होता जाता था। 14 तब उन्होंने खुदावन्द के सामने गिड़गिड़ा कर कहा, ऐ खुदावन्द हम तेरी मिन्नत करते हैं कि हम इस आदमी की जान की वजह से हलाक न हों, और त खून — ए — नाहक को हमारी गर्दन पर न डाले; क्यूंकि ऐ खुदावन्द, तूने जो चाहा वही किया। 15 और उन्होंने यूनाह को उठा कर समन्दर मैं फेंक दिया और समन्दर के मौजौं का जो रस्ता गया। 16 तब वह खुदावन्द से बहत डर गए, और उन्होंने उसके सामने कुर्बानी पेश की और नन्हे मानी 17 लेकिन खुदावन्द ने एक बड़ी मछली मुकर्रर कर रख्खी थी कि यूनाह को मिगल जाए़, और यूनाह तीन दिन रात मछली के पेट में रहा।

2 तब यूनाह ने मछली के पेट मैं खुदावन्द अपने खुदा से यह दुआ की। 2

“मैंने अपनी मुसीबत मैं खुदावन्द से दुआ की, और उसने मेरी सुनी, मैंने पताल की गहराई से दुर्हाई दी, तूने मेरी फरियाद सुनी। (Sheol h7585) 3 तो मुझे गहरे समन्दर की गहराई मैं फेंक दिया, और सैलाब ने मुझे धेर लिया। तेरी सब मौजौं और लहरें मुझ पर से गुजर गई 4 और मैं समझा कि तेरे सामने से दूँ हो गया हूँ लेकिन मैं फिर तेरी मुकद्दिस हैकल को देखूँगा। 5 सैलाब ने मुझे धेर लिया, समन्दर मेरी चारों तरफ़ था; समन्दरी नबात मेरी सर पर लिपट गई। 6 मैं पहाड़ों की गहराई तक गर्क हो गया जमीन के रास्ते हमेशा के लिए मुझ पर बंद हो गए; तो भी ऐ खुदावन्द मेरे खुदा तूने मेरी जान पताल से बचाई। 7 जब मेरा दिल बेताब हुआ, तो मैं ने खुदावन्द को याद किया; और मेरी दुआ तेरी मुकद्दिस हैकल मैं तेरे सामने पहुँची 8 जो लोग झटे मांबूदों को मानते हैं, वह शफ़कत से

महस्म हो जाते हैं। 9 मैं हमद करता हुआ तेरे सामने कुर्बानी पेश करूँगा; मैं अपनी नन्हे अदा करूँगा नजात खुदावन्द की तरफ़ से है।” 10 और खुदावन्द ने मछली को हुक्म दिया, और उस ने यूनाह को खुशकी पर उगल दिया।

3 और खुदावन्द का कलाम दूसरी बार यूनाह पर नाजिल हुआ। 2 कि उठ

उस बड़े शहर निनवा को जा और वहाँ उस बात का ऐलान कर जिसका मैं तुझे हुक्म देता हूँ। 3 तब यूनाह खुदावन्द के कलाम के मुताबिक उठ कर निनवा को गया, और निनवा बहुत बड़ा शहर था। उसकी दूरी तीन दिन की राह थी 4 और यूनाह शहर मैं दाखिल हुआ और एक दिन की राह चला। उस ने ‘ऐलान किया और कहा, “चालीस रोज़े के बाद निनवा बर्बाद किया जायेगा।” 5 तब निनवा के बाशिंदों ने खुदा पर ईमान लाकर रोजा का ‘ऐलान किया और छोटे और बड़े सब ने टाट ओढ़ा। 6 और यह खबर निनवा के बादशाह को पहुँची; और वह अपने तख्त पर से उठा और बादशाही लिबास के उतार डाला और टाट ओढ़ कर राख पर बैठ गया। 7 और बादशाह और उसके अर्कान — ए — दौलत के फरमान से निनवा मैं यह ‘ऐलान किया गया और इस बात का ‘ऐलान हुआ कि कोइ इंसान या हैवान गल्ला या शराब कुछ न चखें और न खाएं पिए। 8 लेकिन इंसान और हैवान टाट से मुलबस्स हों और खुदा के सामने रोना पीटना करें बल्कि हर शब्स अपनी द्वारे चाल चलन और अपने हाथ के ज़ल्म से बाज आए। 9 शायद खुदा रहम करे और अपना इरादा बरले, और अपने कहर शदीद से बाज आए और हम हलाक न हों। 10 जब खुदा ने उनकी ये हालत देखी कि वह अपने अपने द्वारे चाल चलन से बाज आए, तो वह उस 'अजाब से जो उसने उन पर नाजिल करने को कहा था, बाज आया और उसे नाजिल न किया।

4 लेकिन यूनाह इस से बहत नाखुश और नाराज हुआ। 2 और उस ने खुदावन्द

से यूँ दुआ की कि ऐ खुदावन्द, जब मैं अपने बतन ही मैं था और तरसीस को भागने वाला था, तो क्या मैंने यही न कहा था? मैं जानता था कि त रहीम — ओ — करीम खूद है जो कहर करने मैं धीमा और शफ़कत मैं गर्नी है और अजाब नाजिल करने से बाज रहता है। 3 अब ऐ खुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मेरी जान ले ले, क्यूंकि मेरे इस जिनी से मर जाना बेहतर है। 4 तब खुदावन्द ने फरमाया, क्या तु ऐसा नाराज है? 5 और यूनाह शहर से बाहर मशारिक की तरफ जा बैठा; और वहाँ अपने लिए एक छप्पर बना कर उसके साथे मैं बैठ रहा, कि देखें शहर का क्या हाल होता है। 6 तब खुदावन्द खुदा ने कटू की बेल उगाई, और उसे यूनाह के ऊपर फैलाया कि उसके सर पर साया हो और वह तकलीफ़ से बचे और यूनाह उस बेल की वजह से निहायत खुश हुआ। 7 लेकिन दूसरे दिन सबके के बक्त खुदा ने एक कीड़ा भेजा, जिस ने उस बेल को कट डाला और वह सूख गई। 8 और जब आफताब बलन्द हुआ, तो खुदा ने पूरब से लू चलाई और आफताब कि गर्नी ने यूनाह के सर मैं असर किया और वह बेताब हो गया और मौत का आरजूमन्द होकर कहने लगा कि मेरे इस जिनी से मर जाना बेहतर है। 9 और खुदा ने यूनाह से फरमाया, “क्या तु इस बेल की वजह से ऐसा नाराज है?” उस ने कहा, “मैं यहाँ तक नाराज हूँ कि मरना चाहता हूँ।” 10 तब खुदावन्द ने फरमाया कि तुझे इस बेल का इतना खयाल है, जिसके लिए तूने न कुछ मेहनत की और न उसे उगाया। जो एक ही रात मैं उगी और एक ही रात मैं सूख गई। 11 और क्या मुझे ज़स्ती न था कि मैं इतने बड़े शहर निनवा का ख्याल करूँ, जिस मैं एक लाख बीस हजार से ज्यादा ऐसे हैं जो अपने दहने और बाई हाथ मैं फर्क नहीं कर सकते, और वे शुमार मवेशी हैं।

मीका

१ सामरिया और येस्शलेम के बारे में खुदावन्द का कलाम जो शाहान —

ए — यहदाह यताम, आखज — ओ — हिजकियाह के दिनों में मीकाह मोरशती पर ख्वाब में नाजिल हुआ। २ ऐ सब लोगों, सुनो! ऐ जमीन और उसकी मामीरी कान लगाओ! हाँ खुदावन्द अपने मुक़दिस घर से तुम पर गवाही दे। ३ क्यौंकि देख, खुदावन्द अपने घर से बाहर आता है, और नाजिल होकर जमीन के ऊँचे मकामों को पायमाल करेरा। ४ और पहाड़ उनके नीचे पिघल जाएँगे, और वादियों फट जाएँगी, जैसे माय आग से पिघल जाता और पानी कराड़े पर से बह जाता है। ५ ये सब याकूब की खता और इस्माइल के घराने के गुनाह का नतीजा है। याकूब की खता क्या है? क्या सामरिया नहीं? और यहदाह के ऊँचे मकाम क्या है? क्या येस्शलेम नहीं? ६ इसलिए मैं सामरिया को खेत के तूदे की तरह, और ताकिस्तान लगाने की जगह की तरह बनाऊँगा, और मैं उसके पथरों को वादी में ढलकाऊँगा और उसकी बुनियाद उत्खाड़ दूँगा। ७ और उसकी सब खोदी हुई मूर्तें चूर — चूर की जाएँगी, और जो कुछ उसने मज़दूरी में पाया आग से जलाया जाएगा; और मैं उसके सब बुरों को तोड़ डालूँगा क्यौंकि उसने ये सब कुछ कस्बी की मज़दूरी से पैदा किया है; और वह फिर कस्बी की मज़दूरी हो जाएगा। ८ इसलिए मैं मातम — ओ — नौहा कहँगा, मैं नंगा और बरहना होकर फिरँगा, मैं गीदड़ों की तरह चिल्लाऊँगा और शूतरमुर्मों की तरह गम कहँगा। ९ क्यौंकि उसका जख्म लाइलाज है, वह यहदाह तक भी आया; वह मेरे लोगों के फाटक तक बल्कि येस्शलेम तक पहुँचा। १० जात में उसकी खबर न दो, और हरगिज़ नौहा न करो, बैत 'अफ़रा में खाक पर लोटो। ११ ऐ सफ़ीर की रहने वाली, तु बरहना — ओ — स्वा होकर चर्ती जा; जानान की रहने वाली निकल नहीं सकती। बैतेज़ल के मातम के ज़रिए! उसकी पनाहगाह तुम से ले ली जाएगी। १२ मारोत की रहने वाली भलाई के इन्तिज़ार में तड़पती है, क्यौंकि खुदावन्द की तरफ से बला नाजिल हुई, जो येस्शलेम के फाटक तक पहुँची। १३ ऐ लकीस की रहने वाली बादपा घोड़ों को रथ में जोत; तू बिन्त — ए — सिय्यन के गुनाह का आगाज हुई क्यौंकि इस्माइल की खताएँ भी तुझ में पाई गई। १४ इसलिए तु मोरसत जात को तलाक देगी, अक़ज़ीब के घराने इस्माइल के बादशाहों से दाखाज़ी करेगी। १५ ऐ मेरेसा की रहने वाली, तुझ पर कब्ज़ा करने वाले को तो तो पास लाऊँगा; इस्माइल की शौकत 'अदूलाम में आएगी। १६ अपने प्यारे बच्चों के लिए सिर मुंदाकर चंदली हो जा; गिर्द की तरह अपने चंदलेपन को ज्यादा कर क्यौंकि वह तेरे पास से गुलाम होकर चले गए।

२ उन पर अफ़सोस, जो बदकिरदारी के मंसबे बाँधते और बिस्तर पर पड़े —

पड़े शरात की तदबीर इजाद करते हैं, और सुबह होते ही उनको 'अमल में लाते हैं, क्यौंकि उनको इसका इच्छियाहा है। २ वह लालच से खेतों को जब्त करते, और घरों को छीन लेते हैं; और यूँ आदमी और उसके घर पर, हाँ, मर्द और उसकी मीरास पर ज़ुल्म करते हैं। ३ इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है कि देख, मैं इस घराने पर अफ़त लाने की तदबीर करता हूँ जिससे तुम अपनी गर्दन न बचा सकोगे, और गर्दनकशी से न चलोगे; क्यौंकि ये बुरा वक्त होगा। ४ उस वक्त कोई तुम पर ये मसल लाएगा और पुदर्दे नौहे से मातम करेगा, और कहेगा, "हम बिल्कुल गारत हुए; उसने मेरे लोगों का हिस्सा बदल डाला; उसने कैसे उसको मुझ से जुदा कर दिया! उसने हमारे खेत बागियों को बाँट दिए।" ५ इसलिए तुम में से कोई न बचेगा, जो खुदावन्द की जमा' अत मैं पैमाइश की रस्सी डाले। ६ बकवासी कहते हैं, "बकवास न करो! इन बातों के बारे में बकवास न करो। ऐसे लोगों से स्वाई जुदा न होगी।" ७ ऐ बनी याकूब, क्या

ये कहा जाएगा कि खुदावन्द की स्ह कासिर हो गई? क्या उसके यही काम है? क्या मेरी बातें रास्तरौ के लिए फ़ायदेमन्द नहीं। ८ अभी कल की बात है कि मेरे लोग दुश्मन की तरह उठे; तुम सुल्ह पसंद — ओ — बेकिंग राहगीरों की चादर उतार लेते हो। ९ तुम मेरे लोगों की 'औरतों को उनके मराबू घरों से निकाल देते हो, और तुमने मेरे जलाल को उनके बच्चों पर से हमेशा के लिए दूर कर दिया। १० उठो, और चले जाओ, क्यौंकि लाइताज — ओ — मोहलिक नापाकी की वजह से ये तुम्हारी आरामगाह नहीं है। ११ अगर कोई इट और बतालत का पैरो कहे कि मैं शराब — ओ — नशा की बातें कहँगा, तो वही इन लोगों का नबी होगा। १२ ऐ याकूब, मैं यकीन तेरे सब लोगों को इकट्ठा कहँगा, मैं यकीन इस्माइल के बकिये को जमा' करँगा मैं उनको बुसराह की भेड़ों और चरागाह के गल्ले की तरह इकट्ठा कहँगा और आदमियों का बड़ा शोर होगा। १३ तोड़े वाला उनके आगे — आगे गया है; वह तोड़े हुए फाटक तक चले गए, और उसमें से गुज़र गए; और उनका बादशाह उनके आगे — आगे गया, यानी खुदावन्द उनका पेशवा।

३ और मैंने कहा: ऐ याकूब के सरदारों और बनी — इस्माइल के हाकिमों, सुनो।

क्या मुसासिब नहीं कि तुम 'अदालत से वाकिफ हो? २ तुम नेकी से दुश्मनी और बुराई से मुहब्बत रखते हो; और लोगों की खाल उतारते, और उनकी हड्डियों पर से गोशत नोचते हो। ३ और मेरे लोगों का गोशत खाते हो, और उनकी खाल उतारते, और उनकी हड्डियों को तोड़ते और उनको टुकड़े — टुकड़े करते हो; जैसे वह हाँड़ी और देखा के लिए गोशत हैं। ४ तब वह खुदावन्द को पुकारे, लेकिन वह उनकी न सुनेगा; हाँ, वह उस वक्त उसे मूँह फेर लेगा क्यौंकि उनके 'आमाल बुरे हैं। ५ उन नबियों के हक में जो मेरे लोगों को गुमराह करते हैं, जो लुक्मा पाकर 'सलामती सलामती पुकारते हैं, लेकिन अगर कोई खाने को न दे तो उससे लड़ने को तैयार होते हैं, खुदावन्द यूँ फरमाता है। ६ "कि अब तुम पर रात हो जाएगी, जिसमें ख्वाब न देखोगे और तुम पर तारीकी छा जाएगी; और गैबीनी न कर सकोगे, और नबियों पर आफताब गुर्स्ब होगा, और उनके लिए दिन अंधेरा हो जाएगा। ७ तब गैबीनी पशेमान और फ़लामीर शर्मिन्दा होंगे, बल्कि सब लोग मूँह पर हाथ रख जाएंगे, क्यौंकि खुदा की तरफ से कुछ जवाब न होगा। ८ लेकिन मैं खुदावन्द की स्ह के जरिए कुव्वत — ओ — 'अदालत — ओ — दिलेरी से मा'पूर हूँ, ताकि याकूब को उसका गुनाह और इस्माइल को उसकी खता जाताँ। ९ ऐ बनी याकूब के सरदारों, और ऐ बनी — इस्माइल के हाकिमों, जो 'अदालत से 'अदावत रखते हो, और सारी रास्ती को मोरड़ते हो, इस बात को सुनो। १० तुम जो सिय्यन को खेरूनी से और येस्शलेम को बेइन्साफ़ी से तामीर करते हो। ११ उसके सरदार रिक्वेट लेकर 'अदालत करते हैं, और उसके काहिन मज़दूरी लेकर तालीम देते हैं, और उसके नबी स्पाय लेकर फ़लामीरी करते हैं; तो भी वह खुदावन्द पर भरोसा करते हैं और कहते हैं, क्या खुदावन्द हमारे बीच नहीं? इसलिए हम पर कोई बला न आएगी।" १२ इसलिए सिय्यन तुम्हारी ही वजह से खेत की तरह जोता जाएगा; येस्शलेम खण्डरों का देख हो जाएगा, और इस खुदा के घर का पहाड़ ज़ंगल की ऊँची जगहों की तरह होगा।

४ लेकिन आखिरी दिनों में यूँ होगा कि खुदावन्द के घर का पहाड़ पहाड़ों

की चोटियों पर काईम किया जाएगा, और सब टीलों से बलंद होगा और उमरें वहाँ पहुँचेंगी। २ और बहुत सी कौमें आएँगी, और कहेंगी, 'आओ, खुदावन्द के पहाड़ पर चौं, और याकूब के खुदा के घर में दाखिल हों, और वह अपनी राहें हम पर बताएगा और हम उसके रास्तों पर चलेंगे। क्यौंकि शरी' अत सिय्यन से, और खुदावन्द का कलाम येस्शलेम से सादिर होगा। ३

और वह बहुत सी उम्मतों के बीच 'अदालत करेगा, और दूर की ताकतवर क्रौमों को डॉटेगा; और वह अपनी तलवारों को तोड़ कर फाले, और अपने भालों को हँसवे बांडलेंगे; और कौम — कौम पर तलवार न चलाएगी, और वह फिर कभी जंग करना न सीखेंगे। 4 तब हर एक आदमी अपनी ताक और अपने अंजीर के दरखत के नीचे बैठेगा, और उनको कोई न डराएगा, क्यूंकि रब्ब — उल — अफवाज ने अपने मुँह से ये फामया है। 5 क्यूंकि सब उम्मतें अपने — अपने मांबूद के नाम से चलेंगी, लेकिन हम हमेशा से हमेशा तक खुदावन्द अपने खुदा के नाम से चलेंगे। 6 खुदावन्द फरमाता है, कि मैं उस रोज लंगड़ों को जमा' कहँगा और जो हाँक दिए गए और जिनको मैंने दुख दिया, इकड़ा कहँगा; 7 और लंगड़ों को बकिया, और जिलावतनों को ताकतवर कौम बनाऊँगा; और खुदावन्द कोह — ए — सिय्यून पर अब से हमेशा हमेशा तक उन पर सल्तनत करेगा। 8 ऐ गल्ले की दीदाराह, ऐ बिन्त — ए — सिय्यून की पहाड़ी, ये तेरे ही लिए हैं; कदीम सल्तनत, याँनी दुखर — ए — येस्सलेम की बादशाही तुझे मिलेगी। 9 अब तू क्यूँ चिल्लाती है, जैसे दर्द — ए — ज़िह में मुक्लिला है? क्या तुझ में कोई बादशाह नहीं? क्या तेरा सलाहकार हलका हो गया? 10 ऐ बिन्त — ए — सिय्यून, जच्चा की तरह तकलीफ उठा और पैदाइश के दर्द में मुक्लिला हो; क्यूँकि अब तू शहर से निकल कर मैदान में रहेगी और बाबूल तक जाएगी वहाँ तू रिहाई पायेगी। और वही खुदावन्द तुझ को तेरे दुश्मनों के हाथ से छुड़ाएगा। 11 अब बहुत सी क्रौमें तेरे खिलाफ जमा' हुई हैं और कहती हैं "सिय्यून नापाक हो और हमारी आँखें उसकी स्वावाई देखें।" 12 लेकिन वह खुदावन्द की तदबीर से आगाह नहीं, और उसकी मसलहत को नहीं समझती; क्यूँकि वह उनको खलीहान के पूलों की तरह जमा' करेगा। 13 ऐ बिन्त — ए — सिय्यून, उठ और पायमाल कर, क्यूँकि मैं तेरे सींग को लोहा और तेरे खुरों को पीतल बनाऊँगा, और तू बहुत सी उम्मतों को टुकड़े — टुकड़े करेगी; उनके ज़खरी खुदावन्द को नज़र करेगी और उनका माल रब्ब — उल — 'आलामीन के सामने लाएगी।

5 ऐ बिन्त — ए — अफवाज, अब फौजों में जमा' हो; हमारा धिराव किया जाता है। वह इस्माइल के हाकिम के गाल पर छड़ी से मारते हैं। 2 लेकिन ऐ बैतलहम इफ्राताह, अगर चे तू यहदाह के हजारों में शामिल होने के लिए छोटा है, तोभी तुझ में से एक शराब निकलेगा; और मेरे सामने इस्माइल का हाकिम होगा, और उसका मसदर ज़माना — ए — साबिक, हाँ कदीम — उल — अस्यम से है। 3 इसलिए वह उनको छोड़ देगा, जब तक कि जच्चा दर्द — ए — ज़िह से फारिगा न हो; तब उसके बाकी बाईं बनी — इस्माइल में आ मिलेंगे। 4 और वह खड़ा होगा और खुदावन्द की कुदरत से, और खुदावन्द अपने खुदा के नाम की बुजुर्गी से गल्ले बानी करेगा। और वह काईम रहेंगे, क्यूँकि वह उस बक्त इन्हिंहा — ए — ज़मीन तक बुजुर्ग होगा। 5 और वही हमारी सलामती होगा। जब असूर हमारे मुल्क में आएगा और हमारे क्षेत्रों में कदम रखेगा, तो हम उसके खिलाफ सात चरवाहे और आठ सरगिरों खड़े करेंगे; 6 और वह असूर के मुल्क को, और नमस्त की सरज़मीन के मदखलों को तलवार से बीरान करेंगे; और जब असूर हमारे मुल्क में आकर हमारी हृदों को पायमाल करेंगे, तो वह हम को रिहाई बख्तेगा। 7 और याँकूब का बकिया बहुत सी उम्मतों के लिए ऐसा होगा, जैसे खुदावन्द की तरफ से ओस और घास पर बारिश, जो न इसान का इन्जिजार करती है, और न बनी आदम के लिए ठहरती है। 8 और याँकूब का बकिया या बहुत सी क्रौमों और उम्मतों में, ऐसा होगा जैसे शेर — ए — बबर जंगल के जानवरों में, और जवान शेर भेड़ों के गल्ले में, जब वह उनके बीच से गुजरता है, तो पायमाल करता और फाड़ता है, और कोई छुड़ा नहीं सकता। 9 तेरा हाथ तेरे दुश्मनों पर उठे, और तेरे सब

मुखालिफ हलाक हो जाएँ। 10 और खुदावन्द फरमाता है, उस रोज़ मैं तेरे घोड़ों को जो तेरे बीच हैं काट डालूँगा, और तेरे रथों को बर्बाद करँगा। 11 और तेरे मुल्क के शहरों को बर्बाद, और तेरे सब किलों को मिस्मास करँगा। 12 और मैं तुझ से जादूगरी दूर करँगा, और तुझ में फालगनीर न रहेंगे; 13 और तेरी खोदी हैं मूरतें और तेरे सुतून तेरे बीच से बर्बाद कर दँड़ा और फिर तू अपनी दस्तकारी की झालादत न करेगा; 14 और मैं तेरी यसीरतों को तेरे बीच से उखाड़ डालूँगा और तेरे शहरों को तबाह करँगा। 15 और उन क्रौमों पर जिसने सुना नहीं, अपना कहर — ओ — गज़ब नाज़िल करँगा।

6 अब खुदावन्द का फरमान सुन: उठ, पहाड़ों के सामने मुबाहसा कर,

और सब टीले तेरी आवाज सुनें। 2 ऐ पहाड़ों, और ऐ ज़मीन की मज़बूत बुनियादों, खुदावन्द का दावा सुनो, क्यूँकि खुदावन्द अपने लोगों पर दावा करता है, और वह इस्माइल पर हुज़जत साबित करेगा। 3 ऐ मेरे लोगों मैंने तुम से क्या किया है और तुमको किस बात में आजुदी किया है मुझ पर साबित करो। 4 क्यूँकि मैं तुम को मुल्क — ए — मिस्त्र से निकाल लाया, और गुलामी के घर से फिदिया देकर छुड़ा लाया; और तुम्हारे आगे मूसा और हास्न और मरियम को भेजा। 5 ऐ मेरे लोगों, याद करो कि शाह — ए — मोअब बलक ने क्या मश्वरत की, और बल'आम — बिन — ब'ऊर ने उसे क्या जवाब दिया; और शितीम से जिलाजाल तक क्या — क्या हुआ, ताकि खुदावन्द की सदाकत से बाकिफ हो जाओ। 6 मैं क्या लेकर खुदावन्द के सामने आँऊँ, और खुदा ताला को क्यूँकर सिज्दा करँसँ? क्या सोश्वनी कुबानियों और यकसाला बछड़ों को लेकर उसके सामने आँऊँ? 7 क्या खुदावन्द हज़ारों मेंदों से सा तेल की दस हज़ार नहरों से खुश होगा? क्या मैं अपने पहलौठे को अपने गुनाह के बदले में, और अपनी औलाद को अपनी जान की खता के बदले में दे दूँ? 8 ऐ इंसान, उसने तुझ पर नेकी ज़ाहिर कर दी है, खुदावन्द तुझ से इसके सिवा क्या चाहता है कि तू इन्साफ करे और रहमदिनों को 'अज़ीज रखें, और अपने खुदा के सामने फरीती से चलो? 9 खुदावन्द की आवाज शहर को पुकारती है और 'अक्सल्मद उसके नाम का लिहाज रखता है: 'असा और उसके मुकर्रर करने वाले की सुनो। 10 क्या शरीर के घर में अब तक नाजायज नफे' के खजाने और नक्सिस — ओ — नफरती पैमाने नहीं हैं। 11 क्या वह द़ा की तराज़ू और झटे तौल बाट का थैला रखता हआ, बेग़ुनाह ठहरेगा। 12 क्यूँकि वहाँ के दौलतमंद ज़ल्म से भरे हैं; और उसके बाशिन्दे झटू बोलते हैं, बल्कि उनके मुँह में दगाबाज़ जबान है। 13 इसलिए मैं तुझे मुहलिक ज़रूम लगाऊँगा, और तेरे गुनाहों की बजह से तुझ को वीरान कर डालूँगा। 14 तू खाएगा लेकिन आसूदा न होगा, क्यूँकि तेरा पेट खाली रहेगा; तू छिपाएगा लेकिन बचा न सकेगा, और जो कुछ कि तू बचाएगा मैं उसे तलवार के हवाले करँगा। 15 तू बोएगा, लेकिन फसल न काटेगा; जैतून को रोटेगा, लेकिन तेल मलने न पाएगा; तू अंगू को कुचलेगा, लेकिन मय न पिएगा। 16 क्यूँकि उमरी के कवानीन और अखीबक के खानदान के आँमाल की पैरवी होती है, और तुम उनकी मश्वरत पर चरते हो, ताकि मैं तुम को वीरान करूँ, और उसके गहने वालों को सुस्कार का ज़रिया' बनाऊँ, इसलिए तुम मेरे लोगों की स्वाई उठाओगे।

7 मुझ पर अफसोस! मैं ताबिस्तानी मेवा जमा' होने और अंगू तोड़ने के बाद

की खोशाचीनी की तरह हूँ, न खाने को कोई खोशा, और न पहला पक्का दिलपसंद अंजीर है। 2 दीनदार आदमी दुनिया से जाते रहे, लोगों में कोई रास्तबाज़ नहीं; वह सब के सब घाट में बैठे हैं कि खन कंठे हर शराब जाल बिछा कर अपने भाई का शिकार करता है। 3 उनके हाथ बुराई में फुर्तीले हैं; हाकिम रिश्वत माँगता है और क़ाज़ी भी यही चाहता है, और बड़े आदमी अपने

दिल की हिर्स की बातें करते हैं; और यूँ साज़िश करते हैं। 4 उनमें सबसे अच्छा तो ऊँट कटरे की तरह है, और सबसे रास्तबाज खारदार झाड़ी से बदतर है। उनके मिग्हबानों का दिन, हाँ उनकी सजा का दिन आ गया है; अब उनको परेशानी होगी। 5 किसी दोस्त पर भरोसा न करो; हमराज पर भरोसा न रखेंगे; हाँ, अपने मूँह का दरवाजा अपनी बीकी के सामने बंद रखेंगे 6 क्यूँकि बेटा अपने बाप को हकीर जानता है, और बेटी अपनी माँ के और बहू अपनी सास के खिलाफ होती है; और आदमी के दुश्मन उसके घर ही के लोग हैं। 7 लेकिन मैं खुदाबन्द की राह देखूँगा, और अपने नजात देने वाले खुदा का इन्तिज़ार करूँगा, मेरा खुदा मेरी सुनेगा। 8 ऐ मेरे दुश्मन, मुझ पर खुश न हो, क्यूँकि जब मैं गिरूँगा, तो उठ खड़ा हूँगा; जब अंधेरे में बैठूँगा, तो खुदाबन्द मेरा नूर होगा। 9 मैं खुदाबन्द के कहर को बर्दाशत करूँगा, क्यूँकि मैंने उसका गुनाह किया है जब तक वह मेरा दा'वा साबित करके मेरा इसाफ न करे। वह मुझे रोशनी में लाएगा, और मैं उसकी सदाकत को देखूँगा। 10 तब मेरा दुश्मन जो मुझ से कहता था, खुदाबन्द तेरा खुदा कहाँ है ये देखकर स्वां होगा। मेरी आँखें उसे देखेंगी वह गलियों की कीची की तरह पायमाल किया जाएगा। 11 तेरी फ़सील की तामीर के रोज़, तेरी हृदे बढ़ाई जाएँगी। 12 उसी रोज़ असर से और मिस्र के शहरों से, और मिस्र से दरिया — ए — फ़रात तक, और समन्दर से समन्दर तक और कोहिस्तान से कोहिस्तान तक, लोग तेरे पास आएँगे। 13 और ज़मीन अपने बाशिनों के 'आमाल की बजह से वीरान होगी। 14 अपने 'असा से अपने लोगों, या'नी अपनी मीरास की गल्लेबानी कर, जो कर्मिल के जंगल में तन्हा रहते हैं, उनको बसन और जिलआद में पहले की तरह चरने दे। 15 जैसे जैसे मुल्क — ए — मिस्र से निकलते बक्त दिखाए, वैसे ही अब मैं उसे 'अजायब दिखाऊँगा। 16 कोमे देखकर अपनी तमाम तवानाई से शर्मिन्दा होंगी; वह मूँह पर हाथ रखेंगी, और उनके कान बहरे हो जाएँगे। 17 वह सौंप की तरह खाक चाटेंगी, और अपने छिपने की जगहों से ज़मीन के कीड़ों की तरह थरथराती हुई आँखेंगी; वह खुदाबन्द हमारे खुदा कौन है, जो बदकिरदारी मुँआफ करे और अपनी मीरास के बकिये की खताओं से दरगुज़रे? वह अपना कहर हमेशा तक नहीं रख छोड़ता, क्यूँकि वह शफक्त करना पसंद करता है। 19 वह फिर हम पर रहम फरमाएगा; वही हमारी बदकिरदारी को पायमाल करेगा और उनके सब गुनाह समन्दर की तह में डाल देगा। 20 तू या'क्ब से बफ़दारी करेगा और अब्रहाम को वह शफक्त दिखाएगा, जिसके बारे में तू ने पुराने ज़माने में हमारे बाप — दादा से कसम खाई थी।

नाहम

१ नीनावा के बारे में बार — ए — नबुवत्र। इलक्शी नाहम की रोया की

किताब। २ खुदावन्द गय्यर और इन्तकाम लेनेवाला खुदा है, हाँ खुदावन्द इन्तकाम लेने वाला और कहहर है; खुदावन्द अपने मुखालिफों से इन्तकाम लेता है और अपने दुम्हनों के लिए कहर को कायम रखता है। ३ खुदावन्द कहर करने में धीमा और कृदरत में बढ़कर है, और मुजरिम को हरगिज बरी न करेगा। खुदावन्द की राह गिर्दबाद और आँधी में है, और बादल उसके पाँव की गर्द है। ४ वरी समन्दर को डॉटा और साखा देता है, और सब नदियों को खुशक कर डालता है, बसन और कर्मिल कुमला जाते हैं, और लुबनान की कोपले मुरझा जाती है। ५ उसके खौफ से पहाड़ काँपते और टीले पिघल जाते हैं, उसके सामने जमीन हाँ, दुनिया और उसकी सब मामूरी थरथराती है। ६ किसको उसके कहर की ताब है? उसके गजबनाक गुस्से की कौन बर्दाश्त कर सकता है? उसका कहर आग की तरह नाजिल होता है वह चट्ठानों को तोड़ डालता है। ७ खुदावन्द भला है और मूसीबत के दिन पनाहगाह है वह अपने भरोसा करने वालों को जानता है। ८ लैकिन अब वह उसके मकान को बड़े सैलाब से हलाक — ओ — बर्बाद करेगा और तारीकी उसके दुम्हनों को दौड़ायेगी। ९ तुम खुदावन्द के खिलाफ क्या मंसूबा बॉथ्टे हो वह बिल्कुल हलाक कर डालेगा अज्जाब दोबारा न अप्पा। १० अगरचे वह उलझे हुए काँटों की तरह पेचीदा, और अपनी मय से तर हो तो भी वह सखे भूसे की तरह बिल्कुल जला दिए जायेंगे। ११ तुझसे एक ऐसा शख्स निकला है जो खुदावन्द के खिलाफ कुरे मंसूबे बॉथ्टा और शरारत की सलाह देता है। १२ खुदावन्द यैं फरमाता है कि अगरचे वह जबरदस्त और बहत से हों तो भी वह काटे जायेंगे और वह बर्बाद हो जाएगा अगरचे मैंने तुझे दुख दिया तोभी पिर कभी तुझे दुख न दूँगा। १३ और अब मैं उसका जुआ तुझ पर से तोड़ डालौंगा और तेरे बंधनों को टुकड़े — टुकड़े कर दूँगा। १४ लैकिन खुदावन्द ने तेरे बारे में ये हक्कम सादिर फरमाया है कि तेरी नसल बाकी न रहे मैं तेरे बुत्खाने से खोदी हूँ और ढाली हूँ मूरतों को बर्बाद कर्सँगा, मैं तेरे लिए क्रब्रू तैयार कर्सँगा क्यूँकि तुम निकमा है १५ देख जो खुशखबरी लाता और सलामती का 'ऐलान करता है उसके पाँव पहाड़ों पर हैं, ये यहदाह अपनी ईंदें मना और अपनी नंजे अदा कर क्यूँकि पिर खबीस तेरे बीच से नहीं गुजरेगा वह साफ काट डाला गया है।

२ बिखेरने वाला तुझ पर चढ़ आया है, किले को महफूज रख: राह की

निगहबानी कर: कमर बस्ता हो और खब्र मजबूत रह। १२ क्यूँकि खुदावन्द याकूब की रैनक को इथाईल की रैनक की तरह, फिर बहाल करेगा: अगरचे गारतगरों ने उनको गारत किया है, और उनकी ताक की शाखे तोड़ डाली है। ३ उसके बहाईरों की ढाले सुख हैं, जंगी मर्द किरमिजी बर्दी पहने हैं। उसकी तैयारी के बक्त रथ फौलाद से झालकते हैं, और देवदार के नेजे बगिछत हिलते हैं। ४ रथ सड़कों पर तुन्दी से दौड़ते, और मैदान में बेतहाशा जाते हैं; वह मशालों की तरह चमकते, और बिजली की तरह कोदोते हैं। ५ वह अपने सरदारों को बुलाता है, वह टक्करें खाते आते हैं; वह जल्दी — जल्दी फसील पर चढ़ते हैं, और अड़तला तैयार किया जाता है। ६ नहरों के फाटक खुल जाते हैं, और कस्त गुदाज हो जाता है; ७ हस्सब बेपर्दा हूँ और गुलामी में चली गई, उसकी लौड़ियाँ कुमारियों की तरह कराहती हूँ मातम करती और छाती पीटती हैं। ८ नीनवा तो पहले ही से हौज की तरह है, तोभी वह भगे चले जाते हैं। वह पुकारते हैं, 'ठहरो, ठहरो!', लैकिन कोई मुड़कर नहीं देखता। ९ चाँदी लटो! सोना लटो! क्यूँकि माल की कुछ इन्तिहा नहीं सब नफीस चीजें कसरत से हैं। १० वह खाली, सुनसान और बीराम है! उनके दिल पिघल गए और घुटने टकराने

लगे हर एक की कमर में शिद्दत से दर्द है और इन सबके चेहरे जर्द हो गए। ११ शेरों की माँद, और जवान बबरों की खाने की जगह कहाँ है जिसमें शेर — ए — बबर और शेरनी और उनके बच्चे बेखौफ फिरते थे? १२ शेर — ए — बबर अपने बच्चों की खुराक के लिए फाड़ता था, और अपनी शेरनियों के लिए गला घोटा था; और अपनी माँदों को शिकार से, और गारों को फाड़ हओं से भरता था। १३ रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, देख, मैं तेरा मुखालिफ हूँ और उसके रथों को जलाकर धूक्के बना दूँगा और तलबार तेरे जवान बबरों को खा जाएगी। और मैं तेरा शिकार जमीन पर से मिटा डालूँगा, और तेरे कासिदों की आवाज फिर कभी सुनाई न देगी।

३ खूरैज शहर पर अफसोस, वह झट और लट से बिल्कुल भरा है; वह

लूट्यार से बाज नहीं आता। २ सुनो, चाबक की आवाज, और पहियों की खड़खडाहट और घोड़ों का कूदना और रथों के हिचकेले। ३ देखो, सवारों का हमला और तलबारों की चमक और भालों की झलक और मक्तुलों के ढेर, और लाशों के तूले; लाशों की इन्तिहा नहीं, लाशों से ठोकरें खाते हैं। ४ ये उस खबसूत जादूरानी फाहिसा की बदकारी की कसरत का नतीजा है, क्यूँकि वह कौमों को अपनी बदकारी से, और धरानों को अपनी जादूरी से बेचती है। ५ रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, देख, मैं तेरा मुखालिफ हूँ और तेरे सामने से तेरा दामन उठा दूँगा, और कौमों को तेरी बरहनी और ममलुकतों को तेरा सत्र दिखलाऊँगा। ६ और नजासत तुझ पर डालूँगा, और तुझे स्वाक्षर हूँगा, हाँ तुझे अन्नशतनुमा कर दूँगा। ७ और जो कोई तुझ पर निगाह करेगा, तुझ से भागेगा और कलेगा, नीनवा बीराम हूँगा; इस पर कौन तरस खाएगा? मैं तेरे लिए तसल्ली देने वाले कहाँ से लाँझँ। ८ क्या तू नो अमून से बेहतर है, जो नहरों के बीच बसा था और पानी उसकी चारों तरफ था; जिसकी शहरपनाह दरिया-ए-नील था, और जिसकी फसीत पानी था? ९ कूश और मिस उसकी बेइन्तिहा तबानाई थे; पूत और लबीम उसके हिमायती थे। १० तोभी वह जिलावतन और गुलाम हूँगा; उसके बच्चे सब कूचों में पटक दिए गए, और उनके शर्फ पर पर्चा डाला गया, और उसके सब बुरुगी जंजीरों से जकड़े गए। ११ तू भी मस्त होकर अपने आप को छिपाएगा, और दुश्मन के सामने से पनाह देंड़ेगा। १२ तेरे सब किलों अंजरी के दरख्त की तरह हैं, जिस पर पहले पक्के फल लगे हों, जिसको अगर कोई हिलाए तो वह खाने वाले के मुँह में गिर पड़ें। १३ देख, तेरे अन्दर तेरे मर्द 'ओरते बन गए, तेरी मल्लकत के फाटक तेरे दुम्हनों के सामने खुले हैं; आग तेरे अड़बगों को खा गई। १४ तू अपने धिराक के बक्त के लिए पानी भर ले, और अपने किलों को मज़बूत कर; गढ़े मैं उत्तरकर मिट्टी तैयार कर, और इंट का संचा हाथ में ले। १५ वहाँ आग तुझे खा जाएगी, तलबार तुझे काट डालेगी। वह टिड़ी की तरह तुझे चट कर जाएगी। अगरचे तू अपने आप को चट कर जाने वाली टिड़ियों की तरह फिरावान करे, और फौज — ए — मलख की तरह बेशमार हो जाए। १६ तू ने अपने सौदारों को आसमान के सितरों से ज्यादा फिरावान किया। चट कर जाने वाली टिड़ी, खराब काके उड़ जाती है। १७ तेरे हाकिम मलख और तेरे सदार टिड़ियों का हुज़म है, जो सदीं के बक्त झाड़ियों में रहती हैं; और जब आफताब निकलता है तो उड़ जाती है, और उनका मकान कोई नहीं जानता। १८ ऐ शाह — ए — अस्सर, तेरे चरवाहे सो गए; तेरे सरदार लेट गए। तेरी हि आया पहाड़ों पर बिखर गई, और उसको इकड़ा करने वाला कोई नहीं है। १९ तेरी शिक्कतगी लाइलाज है, तेरा ज़ख्य कारी है; तेरा हाल सुनकर सब ताली बजाएँगे। क्यूँकि कौन है जिस पर हमेशा तेरी शरारत का बार न था?

हबक्क

1

हबक्कूकूक नवी की खबाब की नबुव्वत के बारे में: 2 ऐ खुदावन्द, मैं कब तक फरियाद कहूँगा, और तू न सनेगा? मैं तो सामने कब तक चिल्लाऊँगा “जुल्म”, “जुल्म” और तू न बचाएगा? 3 तू क्यूँ मुझे बद किरदारी और टेढ़ी रविश दिखाता है? क्यौंकि जुल्म और सितम मेरे सामने हैं फितना — ओ — फसाद खड़े होते रहते हैं। 4 इसलिए शरीं अत कमज़ोर हो गई, और इन्साफ़ मुतलक जारी नहीं होता। क्यौंकि शरीर सादिको को धेर लेते हैं; इसलिए इसाफ़ का खुम हो रहा है। 5 कौमों पर नज़र करो, और देखो; और हैरान हो; क्यौंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक ऐसा काम करने को हूँ जिसे अगर कोई तुम से उसका बयान करे तो तुम हरायिज़ उम्मीद न करोगे। 6 क्यौंकि देखो, मैं कसदियों को चढ़ाताऊँगा: वह गुस्सावर और कम़’अकल कौम है, जो चौड़ी जमीन से होकर गुज़रते हैं, ताकि उन बसियों पर जो उनकी नहीं है, कब्ज़ा कर लें। 7 वह डरावने और खोफ़नक है: वह खुद ही अपनी ‘अदालत और शान का मसदात है। 8 उनके घोड़े चीतों से भी तेज रफ़तार, और शाम को निकलने वाले भेड़ियों से ज्यादा ख़ूँच्चाहा है, और उनके सवार कूदते फौंदते आते हैं। हाँ, वह दूर से चले आते हैं, वह उकाब की तरह हैं, जो अपने शिकार पर झपटता है। 9 वह सब गारतगी को आते हैं, वह सीधे बढ़े चले आते हैं; और उनके गुलाम रेत के जर्जे की तरह बेशमार होते हैं। 10 वह बादशाहों को ढुंगे में उड़ाते, और ‘उमार को मसखरा बनाते हैं। वह किलों को हक्कीर जानते हैं, क्यौंकि वह मिट्टी से दमदमे बाँधकर उनको फतह कर लेते हैं। 11 तब वह हवा के झोंकों की तरह गुज़रते और खता करके गुनहगार होते हैं, क्यौंकि उनका जोर ही उनका खुदा है। 12 ऐ खुदावन्द में खुदा, ऐ मेरे कुदूस, क्या तू अजल से नहीं है? हम नहीं मंगें। ऐ खुदावन्द, तूने उनको ‘अदालत के लिए ठहराया है, और ऐ चड़ान, तू ने उनको तात्वीक के लिए मुकर्रर किया है। 13 तेरी आँखें ऐसी पाक हैं कि तु गुनाह को देख नहीं सकता, और टेढ़ी रविश पर निगाह नहीं कर सकता। पिर तु दगाबाजों पर क्यूँ नज़र करता है, और जब शरीर अपने से ज्यादा सादिक को निगल जाता है, तब तु क्यूँ खामोश रहता है? 14 और बनी आदम को समन्दर की मछलियों, और कीड़े — मकौड़ों की तरह बनाता है जिन पर कोई हुक्मत करने वाला नहीं? 15 वह उन सब को शस्त से उठा लेते हैं, और अपने जाल में फँसाते हैं; और महाजाल में जमा’ करते हैं, इसलिए वह शादमान और खुश बक्त है। 16 इसलिए वह अपने जाल के आगे कुबीनी अदा करते हैं और अपने बड़े जाल के आगे खुशबू जालते हैं, क्यौंकि इनके बरसीले से उनका हिस्सा लज़ीज़, और उनकी गिज़ा चिकनी है। 17 इसलिए क्या वह अपने जाल को खाली करने और कौमों को बराबर कर्त्तव्य करने से बाज़ न आएँगे?

2

और मैं अपनी दीदाग़ ह पर खड़ा रहँगा और बुर्ज पर चढ़कर इन्तिज़ार करूँगा कि वह मुझ से क्या कहता है, और मैं अपनी फरियाद के बारे में क्या जवाब दूँ। 2 तब खुदावन्द ने मुझे जवाब दिया और फरमाया कि “खबाब को तख्तियों पर ऐसी सफाई से लिख कि लोग दौड़ते हए भी पढ़ सकें। 3 क्यौंकि ये खबाब एक मुर्कररा बक्त के लिए हैं; ये जल्द जहर में आएगा और खता न करेगा। अगर चे इसमें देर हो, तोपी इसके इन्तिज़ार में रह, क्यौंकि ये यकीनन नाजिल होगा, देर न करेगा। 4 देख, घमण्डी आदमी का दिल रास्त नहीं है, लेकिन सच्चा अपने ईमान से जिन्दा रहेगा। 5 बेशक, घमण्डी आदमी शराब की तरह दगाबाज है, वह अपने घर में नहीं रहता। वह पाताल की तरह अपनी खाविश बढ़ाता है; वह मौत की तरह है, कभी आसदा नहीं होता; बल्कि सब कौमों को अपने पास जमा’ करता है, और सब उम्मतों को अपने नज़दीक इकठ्ठा करता है।” (Sheol h7585) 6 क्या ये सब उस पर मिसाल न

लाएँगे, और तनज़न न कहेंगे कि “उस पर अफसोस, जो औरों के माल से मालदार होता है, लेकिन ये कब तक? और उस पर जो कसरत से गिरवी लेता है!” 7 क्या वह मुझे खा जाने को अचानक न उठेंगे, और उड़े परेशान करने को बेदार न होंगे, और उनके लिए लट न होगा? 8 क्यौंकि तेरे बहुत सी कौमों को लट लिया, और मुल्क — ओ — शहर — ओ — बाशिंदों में ख़ैरज़ी और सितमगारी की है, इसलिए बाकी माँदा लोग तुके गरत करेंगे। 9 “उस पर अफसोस जो अपने घराने के लिए नाजायज़ नका’ उठाता है, ताकि अपना आशियाना बुलन्दी पर बनाये, और मुसीबत से महफ़ूज़ रहे। 10 तेरे बहुत सी उम्मतों को बर्बाद करके अपने घराने के लिए सम्वाई हासिल की, और अपनी जान का गुनहगार हआ। 11 क्यौंकि दीवार से पथर चिल्लायेंगे, और छत से शहतीर जबाब देंगे। 12 उस पर अफसोस, जो कस्बे को ख़ैरज़ी से और शहर को बादकरदारी से ताम्हीर करता है। 13 क्या यह रब्ब — उल — अफवाज की तरफ से नहीं कि लोगों की मेहनत आग के लिए हो, और कौमों की मशक्कत बतातल के लिए हो? 14 क्यौंकि जिस तरह समन्दर पानी से भरा है, उसी तरह जमीन खुदावन्द के जलाल के ‘इल्म से मामूर है। 15 उस पर अफसोस जो अपने पड़ोसी को अपने कहां का जाम पिलाकर मतवाला करता है, ताकि उसको बे पर्दा करे! 16 तू ‘इज़ज़त के ‘इज़ज़ स्वाई से भर गया है। तू भी पीकर अपनी नामबत्ती जाहिर कर! खुदावन्द के दहने हाथ का प्याला अपने दौर में तुझ तक पहुँचेगा, और स्वावई तेरी शौकत को ढाँप लेगी। 17 चूँकि तेरे मुल्क — ओ — शहर — ओ — बाशिंदों में ख़ैरज़ी और सितमगारी की है, इसलिए वह जियादती जो लुबनान पर हुई और वह हलाकत जिसमें जानवर डर गए, तुझ पर आएगी। 18 खोटी हुई मूरत से क्या हासिल कि उसके बनाने वाले ने उसे खोदकर बनाया? ढली हुई मूरत और झट खियाने वाले से क्या फायदा कि उसका बनाने वाला उस पर भरोसा रखता और ग़ौँ झुतों को बनाता है? 19 उस पर अफसोस जो लकड़ी से कहता है, जग, और बे ज्बान पथर से कि उठ, क्या वह तालीम दे सकता है? देख वह तो सोने और चौंदी से मढ़ा है लेकिन उसमें कुछ भी ताकत नहीं। 20 मगर खुदावन्द अपनी मुकद्दस हैकल में है; सारी जमीन उसके सामने खामोश रहे।”

3 शिगायूनोत के सुर पर हबक्कूक: नवी की दुआ: 2 ऐ खुदावन्द, मैंने तेरी

शोहर सुनी, और डर गया; ऐ खुदावन्द, इनी जमाने में अपने काम को पूरा कर। इसी जमाने में उसको जाहिर कर; गज़ब के बक्त रहम को याद फरमा। 3 खुदा तेमान से आया, और कुदूस फरान के पहाड़ से। उसका जलाल अस्मान पर छा गया, और जमीन उसकी तारीफ से मामूर हो गई। 4 उसकी जगमगाहट नूर की तरह थी, उसके हाथ से किरने निकलती थी, और इसमें उसकी कुदरत छिपी हुई थी, 5 बीमारी उसके आगे — आगे चलती थी, और आग के तीर उसके कदमों से निकलते थे। 6 वह खड़ा हुआ और जमीन थर्रा गई, उसने निगाह की और कौमें तिर — बितर हो गई। अज़ली पहाड़ टुकड़े — टुकड़े हो गए; पुराने टीले झुक गए, उसके रास्ते अज़ली हैं। 7 मैंने कूशन के खेमों को मुसीबत में देखा; मुल्क — ए — मिदियान के पर्दे हिल गए। 8 ऐ खुदावन्द, क्या तू नदियों से बेजार था? क्या तेरा गज़ब दरियाओं पर था? क्या तेरा गज़ब समन्दर पर था कि तू अपने घोड़ों और फतहयाब रथों पर सवार हो? 9 तेरी कमान गिलाफ से निकाली गई, तेरा ‘अहद कबाइल के साथ उस्तवार था। (सिलाह) तूने जमीन को नदियों से चीर डाला। 10 पहाड़ तुझे देखकर काँप गए; सैलाब गुज़र गए; समन्दर से शेर उठा, और मौजें बुलन्द हुईं। 11 तेरे उड़ने वाले तीरों की रोशनी से, तेरे चमकीले भाले की झलक से, चौंद — ओ — सूरज अपने बुर्जों में ठहर गए। 12 तू गज़बनाक होकर मुल्क में से गुज़रा; तूने गज़ब से कौमों को पस्त किया। 13 तू अपने लोगों की नजात की खातिर

निकला, हाँ, अपने मम्सूह की नजात की खातिर तूने शरीर के घर की छत गिरा दी, और उसकी बुनियाद बिल्कुल खोद डाली। 14 तूने उसी की लाठी से उसके बहादुरों के सिर फोड़े; वह मुझे बिखेरने को हवा के झोके की तरह आए, वह गरीबों को तन्हाई में निगल जाने पर खुश थे। 15 तू अपने घोड़ों पर सवार होकर समन्दर से, हाँ, बड़े सैलाब से पार हो गया। 16 मैंने सुना और मेरा दिल दहल गया, उस शोर की वजह से मेरे लब हिलने लगे; मेरी हड्डियाँ बोसीदा हो गई, और मैं खड़े — खड़े काँपने लगा। लेकिन मैं सुकून से उनके बुरे दिन का मुन्तजिर हूँ, जो इकट्ठा होकर हम पर हमला करते हैं। 17 अगरचे अंजीर का दरख्त न फूले, और डाल में फल न लगें, और जैतून का फल जाय' हो जाए, और खेतों में कुछ पैदावार न हो, और भेड़खाने से भेड़ें जाती रहें, और तबेलों में जानवर न हों, 18 तोभी मैं खुदावन्द से खुश रहूँगा, और अपनी नजात बरखा खुदा से खुश बनत रहूँगा। 19 खुदावन्द खुदा, मेरी ताकत है; वह मेरे पैर हिरनी के से बना देता है, और मुझे मेरी ऊँची जगहों में चलाता है।

सफन

1 खुदावन्द का कलाम जो यहदाह बादशाह यूसियाह बिन अमून के दिनों में सफनियाह बिन कशी बिन जदलियाह बिन अमरयाह बिन हिजकियाह पर नाजिल हुआ। 2 खुदावन्द फरमाता है, “मैं इस जमीन से सब कुछ बिल्कुल हलाक कहँगा।” 3 “इंसान और हैवान को हलाक कहँगा; हवा के परिन्दों और समन्दर की मछलियों को और शरीरों और उनके बुतों को हलाक कहँगा, और इंसान को इस जमीन से फना कहँगा।” खुदावन्द फरमाता है। 4 “मैं यहदाह पर और येस्सलेम के सब रहने वालों पर हाथ चलाऊंगा, और इस मकान में से बाल के बकिया को और कमारी के नाम को पुजारियों के साथ हलाक कहँगा; 5 और उनको भी जी कोठों पर चढ़ कर अज्ञाम — ए — फलक की इबादत करते हैं, और उनको जो खुदावन्द की इबादत का ‘अहद करते हैं, लेकिन मिल्कम की कसम खाते हैं। 6 और उनको भी जो खुदावन्द से नाफरमान होकर न उसके तालिक हुए और न उन्होंने उससे मब्वरत ली।” 7 तुम खुदावन्द खुदा के सामने खामोश रहो, क्यूँकि खुदावन्द का दिन नजदीक है, और उसने ज़र्ही हातौर किया है, और अपने मेहमानों को मध्यस्स किया है। 8 और खुदावन्द के जबीहे के दिन यूँ होगा, कि “मैं उमरा और शहजादों को, और उन सब को जो अजनबियों की पोशाक पहनते हैं, सजा दूँगा। 9 मैं उसी रोज उन सब को, जो लोगों के घोंगों में घुम कर अपने मालिक के घर को लूट और धोखे से भरते हैं सजा दूँगा।” 10 और खुदावन्द फरमाता है, “उसी रोज मछली फाटक से रोने की आवाज, और मिशना से मातम की, और टीलों पर से बड़े शोर की आवाज उठेगी। 11 ऐ मकतीस के रहने वालों, मातम करो। क्यूँकि सब सौदागर मरे गए। जो चाँदी से लटे थे, सब हलाक हुए। 12 फिर मैं चराग लेकर येस्सलेम में तलाश कहँगा, और जितने अपनी तलछत पर जम गए हैं, और दिल में कहते हैं, ‘कि खुदावन्द सजा — और — जजा न देगा,’ उनको सजा दूँगा। 13 तब उनका माल लूट जाएगा, और उनके घर उजड जाएँगे। वह घर तो बनाएँगे, लेकिन उनमें बूद — ओ — बाश न करेंगे; और बाग तो लगाएँगे, लेकिन उनकी मय न पिएँगो।” 14 खुदावन्द का बड़ा दिन कीरी है, हाँ, वह नजदीक आ गया, वह आ पहुँचा; सुनो, खुदावन्द के दिन का शोर; जबरदस्त आदमी फूट — फूट कर रोएगा। 15 वह दिन कहर का दिन है, दुख और गम का दिन, वीरानी और खराबी का दिन, तारीकी और उदासी का दिन, बादल और तीरंगी का दिन; 16 हरीन शहरों और ऊँचे बुर्जों के खिलाफ, नरसिंगे और जंगी ललकार का दिन। 17 और मैं बर्नी आदम पर मुमीबत लाऊँगा, यहाँ तक कि वह अंथों की तरह चलेंगे, क्यूँकि वह खुदावन्द के गुनहगार हुए; उनका खून धूल की तरह गिराया जाएगा, और उनका गोशत नजासत की तरह। 18 खुदावन्द के कहर के दिन, उनका सोना चाँदी उनको बचा न सकेगा; बल्कि तमाम मुल्क को उसकी गैरत की आग खा जाएगी, क्यूँकि वह एक पल में मुल्क के सब बाशिन्दों को तमाम कर डालेगा।

2 ऐ बेहया क्रौम, जमा’ हो, जमा’ हो; 2 इससे पहले के फ़रमान — ए — इलाही जाहिर हो, और वह दिन भूस की तरह जाता रहे, और खुदावन्द का बड़ा कहर तुम पर नाजिल हो, और उसके गजब का दिन तुम पर आ पहुँचे। 3 ऐ मुर्क के सब हलीम लोगों, जो खुदावन्द के हुक्मों पर चलते हो, उसके तालिक हो, रास्तबाजी को ढूँढ़ों, फरोतनी की तलाश करो; शायद खुदावन्द के गजब के दिन तुम को पनाह मिले। 4 क्यूँकि जग्जा मतस्क होगा, और अस्कलोन वीरान किया जाएगा, और अशदूद दोपहर को खारिज कर दिया जाएगा, और अकर्सून की बेखकनी की जाएगी। 5 समन्दर के साहिल के रहने वालों, या’नी करेतियों की क्रौम पर अफसोस! ऐ कनान, फ़िलिस्तियों की

सरज़मीन, खुदावन्द का कलाम तेरे खिलाफ है; मैं तुझे हलाक — ओ — बर्बाद करँगा यहाँ तक कि कोई बसने वाला न रहे। 6 और समन्दर के साहिल, चरागाहे होंगे, जिनमें चरावाहों की झोपड़ियाँ और भेड़खाने होंगे। 7 और वही साहिल, यहदाह के घराने के बकिया के लिए होंगे; वह उनमें चराय करेंगे, वह शाम के वक्त अस्कलोन के मकानों में लेटा करेंगे, क्यूँकि खुदावन्द उनका खुदा, उन पर फिर नजर करेगा, और उनकी जुलाई को खत्म करेगा। 8 मैंने मोआब की मलामत और बनी ‘अम्मोन की लान’तान सुनी है उन्होंने मेरी कौम को मलामत की और उनकी हूदू को दबा लिया है। 9 इसलिए रब्ब — उल — अफवाज इशाईल का खुदा फरमाता है, मुझे अपनी हयात की कसम यकीन मोआब सदम की तरह होगा, और बनी ‘अम्मोन ‘अम्मा की तरह; वह पुरखार और नमकजार और हमेशा से हमेशा तक बर्बाद रहेंगे। मेरे लोगों के बाकी उनको गारत करेंगे, और मेरी कौम के बाकी लोग उनके बारिस होंगे। 10 ये सब कुछ उनके तकब्बल की वजह से उन पर आएगा, क्यूँकि उन्होंने रब्ब — उल — अफवाज के लोगों को मलामत की और उन पर जियादी की। 11 खुदावन्द उनके लिए हैबतनाक होगा, और जमीन के तमाम माँबूदों को लासार कर देगा, और बहरी ममालिक के सब बाशिन्दे अपनी अपनी जगह में उसकी इबादत करेंगे। 12 ऐ कूश के बाशिन्दो, तुम भी मेरी तलवार से मारे जाओगे। 13 और वह शिमाल की तरफ अपना हाथ बढ़ायेगा और असर को हलाक करेगा, और नीनवा को वीरान और सेहरा की तरह खुश कर देगा। 14 और जंगली जानवर उसमें लेटेंगे, और हर किस्म के हैबतनाक होगा, वहासिल और खारपुश उसके सुतनों के सिरों पर मकाम करेंगे; उनकी आवाज उसके झरोकों में होगी, उसकी दहलीजों में वीरानी होगी, क्यूँकि देवदार का काम खुला छोड़ा गया है। 15 ये वह शादमान शहर है जो बेकिक था, जिसने दिल में कहा, मैं हूँ, और मेरे अलावा कोई दूसरा नहीं। वह कैसा वीरान हुआ, हैवानों के बैठने की जगह! हर एक जो उधर से गुजरेगा सुसकरेगा और हाथ हिलाएगा।

3 उस सरकश और नापाक व जालिम शहर पर अफसोस! 2 उसने कलाम की न सुना, वह तरबियत पजरी न हुआ। उसने खुदावन्द पर भरोसा न किया, और अपने खुदा की कुरबत की आरजू न की। 3 उसके उमरा उसमें गरजने वाले बबर हैं, उसके काजी भेड़िये हैं जो शाम को निकलते हैं, और सुबह तक कुछ नहीं छोड़ते। 4 उसके नवी लाफजन और दगाबाज हैं, उसके काहिनों ने पाक को नापाक ठहराया, और उन्होंने शरी’अत को मोड़ा है। 5 खुदावन्द जो सच्चा है, उसके अंदर है; वह बेइन्साफी न करेगा; वह हर सुबह बिला नागा अपनी ‘अदालत जाहिर करता है, मगर बेइन्साफ आदमी शर्म को नहीं जानता। 6 मैंने क्रौमों को काट डाला, उनके बुर्ज बर्बाद किए गए; मैंने उनके कूचों को वीरान किया, यहाँ तक कि उनमें कोई नहीं चलता; उनके शहर उजाड हुए और उनमें कोई इंसान नहीं कोई बाशिन्दा नहीं। 7 मैंने कहा, ‘कि सिर्फ मुझ से डर, और तरबियत पजरी हो; ताकि उसकी बस्ती काटी न जाए। उस सब के मुताबिक जो मैंने उसके हक्क में ठहराया था। लेकिन उन्होंने ‘अमदन अपनी चाल को चिगाड़ा। 8 “इसलिए, खुदावन्द फरमाता है, मेरे मन्तज़िर रहो, जब तक कि मैं लूट के लिए न उटूँ, क्यूँकि मैंने ठान लिया है जिस क्रौमों को जमा’ करूँ और ममलुकतों को इक्कश करूँ, ताकि अपने गजब या’नी तमाम कहर को उन पर नाजिल करूँ, क्यूँकि मेरी गैरत की आग सारी जमीन को खा जाएगी। 9 और मैं उस वक्त लोगों के होंट पाक कर दूँगा, ताकि वह सब खुदावन्द से दुआ करें, और एक दिल होकर उसकी इबादत करें। 10 कूश की नहरों के पार से मेरे ‘आबिद, या’नी मेरी बिखरी क्रौम पर लिए हादिया लाएगी। 11 उसी रोज तू अपने सब आमाल की वजह से जिससे तू मेरी गुनहगार हुई, शर्मिन्दा न होगी; क्यूँकि मैं उस वक्त तेरे बीच से तेरे मगास्त लोगों को निकाल दूँगा, और फिर

तू मेरे मुकद्दस पहाड़ पर तकब्बर न करेगी। 12 और मैं तुझ में एक मज़लूम और मिस्कीन बकिया छोड़ दूँगा और वह खुदावन्द के नाम पर भरोसा करेंगे, 13 इमाईल के बाकी लोग न गुनाह करेंगे, न झट बोलेंगे और न उनके मुँह में दगा की बातें पाई जाएँगी बल्कि वह खाएँगे और लेट रहेंगे, और कोई उनको न डराएगा।” 14 ऐ बिन्त — ए — सियून, नगमा सराई कर, ऐ इमाईल, ललकार! ऐ दुखर — ए — येस्शलेम, पूरे दिल से खुशी मना और शादमान हो। 15 खुदावन्द ने तेरी सज्जा को दूर कर दिया, उसने तेरे दुश्मनों को निकाल दिया खुदावन्द इमाईल का बादशाह तेरे अन्दर है तू फिर मुरीबत को न देखेगी। 16 उस रोज़ येस्शलेम से कहा जाएगा, पेरेशान न हो, ऐ सियून; तेरे हाथ ढीले न हों। 17 खुदावन्द तेरा खुदा, जो तुझ में है, कादिर है, वही बचा लेगा; वह तेरी बजह से शादमान होकर खुशी करेगा; वह अपनी मुहब्बत में मस्सर रहेगा; वह गाते हुए तेरे लिए शादमानी करेगा। 18 “मैं तेरे उन लोगों को जो 'ईर्दों से महस्म होने की बजह से गमीन और मलामत से जेरबार हैं, जमा करँगा। 19 देख, मैं उस वक्त तेरे सब सतानेवालों को सज्जा दूँगा, और लंगड़ों को रिहाई दूँगा; और जो हाँक दिए गए उनको इकश करँगा और जो तमाम जहान में स्वा हए, उनको सितदा और नामवर करँगा। 20 उस वक्त मैं तुम को जमा करके मुल्क में लाऊँगा; क्यैंकि जब तुम्हारी हीन हयात ही में तुम्हारी गुलामी को खत्म करँगा, तो तुम को जमीन की सब क्सौमों के बीच नामवर और सितदा करँगा।” खुदावन्द फरमाता है।

हज्जी

1 दारा बादशाह की सलतनत के दूसरे साल के छठे महीने की पहली तारीख को, यहदाह के नाजिम जस्ल्बाबुल — बिन — सियालतिएल और सरदार काहिन यशूअ — बिन — यहसदक को, हज्जी नबी के जरिए खुदावन्द का कलाम पहुँचा, 2 कि “रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि यह लोग कहते हैं, अभी खुदावन्द के घर की तामीर का वक्त नहीं आया।” 3 तब खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के जरिए पहुँचा, 4 “क्या तुम्हारे लिए महफ़ूज घरों में रहने का वक्त है, जब कि यह घर बीराम पड़ा है? 5 और अब रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: तुम अपने चाल चलन पर गौर करो। 6 तुम ने बहुत सा बोया, पर थोड़ा काटा। तुम खाते हो, पर आसदा नहीं होते, तुम पीते हो, लेकिन प्यास नहीं बुझती। तुम कपड़े पहनते हो, पर गर्म नहीं होते; और मज़दूर अपनी मज़दूरी सूराखदार थैली में जमा’ करता है। 7 “रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि अपने चाल चलन पर गौर करो। 8 पहाड़ों से लकड़ी लाकर यह घर तामीर करो, और मैं उसके देखकर खुश हँगा और मेरी तम्जीद होगी रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है। 9 तुम ने बहुत की उम्मीद रख्ती, और देखो, थोड़ा मिला; और जब तुम उसे अपने घर में लाए, तो मैंने उसे उड़ा दिया। रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है; क्यूँ इसलिए कि मेरा घर बीराम है, और तुम में से हर एक अपने घर को दैड़ा चता जाता है। 10 इसलिए न आसमान से शबनम गिरती है, और न जमीन अपनी पैदावार देती है। 11 और मैंने खुशक साली को तलब किया कि मुल्क और पहाड़ों पर, और अनाज और नई मय और तेल और जमीन की सब पैदावार पर, और इसान — ओ — हैबान पर, और हाथ की सारी मेहनत पर आए।” 12 तब जस्ल्बाबुल — बिन — सियालतिएल और सरदार काहिन यशूअ — बिन — यहसदक और लोगों के बकिया खुदावन्द खुदा अपने कलाम और उसके भेजे हुए हज्जी नबी की बातों को सुनने लगे: और लोग खुदावन्द के सामने खौफ जदा हुए। 13 तब खुदावन्द के पैसाम्बर हज्जी ने खुदावन्द का पैसाम उन लोगों को सुनाया, खुदावन्द फरमाता है: मैं तुम्हारे साथ हूँ 14 फिर खुदावन्द ने यहदाह के नाजिम जस्ल्बाबुल — बिन — सियालतिएल के, सरदार काहिन यशूअ — बिन — यहसदक की ओर लोगों के बकिया की स्वर्ण की हिदायत दी। इसलिए वह आकर रब्ब — उल — अफवाज, अपने खुदा के घर की तामीर में मशगूल हुए; 15 और यह वाक़ेँ आ दारा बादशाह की सलतनत के दूसरे साल के छठे महीने की चौबीसवीं तारीख का है।

2 सातवें महीने की इक्कीसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के जरिए पहुँचा, 2 कि “यहदाह के नाजिम जस्ल्बाबुल — बिन — सियालतिएल और सरदार काहिन यशूअ” बिन यहसदक और लोगों के बकिया से यूँ कह, 3 कि “तुम में से किसने इस हैकल की पहली रैनक को देखा? और अब कैसी दिखाई देती है? क्या यह तुम्हारी नजर में सही नहीं है? 4 लेकिन ऐ जस्ल्बाबुल, हिम्मत रख, खुदावन्द फरमाता है; और ऐ सरदार काहिन, यशूअ — बिन यहसदक हिम्मत रख, और ऐ मुल्क के सब लोगों हिम्मत रखदो, खुदावन्द फरमाता है; और काम करो क्यूँकि मैं तुम्हारे साथ हूँ रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 5 मिस्र से निकलते वक्त मैंने तुम से जो ‘अहद किया था, उसके मुताबिक मेरी वह स्वरूप रहती है; हिम्मत न हारो। 6 क्यूँकि रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि मैं थोड़ी देर में फिर एक बार जमीन — ओ — आसमान — ओर — खुशकी — ओर — तरी को हिला दूँगा। 7 मैं सब कौमों को हिला दूँगा, और उनकी पसंदीदा चीजें आँएँ; और मैं इस घर को जलाल से मांगूँगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है।

8 चाँदी मेरी है और सोना मेरा है, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 9 इस पिछले घर की रैनक, पहले घर की रैनक से ज्यादा होगी, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, और मैं इस मकान में सलामती बख़्श़ूँगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है।” 10 दारा बादशाह की सलतनत के दूसरे साल के नवे महीने की चौबीसवीं तारीख को, खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी के जरिए पहुँचा, 11 “रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि शरी’त के बारे में काहिनों से मालूम कर: 12 ‘अगर कोई पाक गोश्ट को अपनी लिबास के दामन में लिए जाता हो, और उसका दामन रोटी या दाल या शारब या तेल या किसी तरह के खाने की चीज़ को छू जाएँ; तो क्या वह चीज़ पाक हो जाए़ी?’” काहिनों ने जबाब दिया, “हरगिज नहीं।” 13 फिर हज्जी ने पछा, कि “अगर कोई किसी मुर्दे को छूने से नापाक हो गया हो, और इनमें से किसी चीज़ को छूएँ; तो क्या वह चीज़ नापाक हो जाए़ी?” काहिनों ने जबाब दिया, “जस्तर नापाक हो जाए़ी।” 14 फिर हज्जी ने कहा, कि खुदावन्द फरमाता है: मेरी नजर में इन लोगों, और इस क्लौम और इनके आमाल का यही हाल है, 15 और “जो कुछ इस जाह अदा करते हैं नापाक हैं इसलिए आइन्दा को उस वक्त का ख्याल रखदो, जब कि अभी खुदावन्द की हैकल का पथर पर पथर न रख्ता गया था; 16 उस पूरे जमाने में जब कोई बीस पैमानों की उम्मीद रखता, तो दस ही मिलते थे; और जब कोई शराब के हौंसे से पचास पैमाने निकालने जाता, तो बीस ही मिलते थे। 17 मैंने तुम को तुम्हारे सब कामों में ठण्डी हवा और गेस्टी और ओलों से मारा, लेकिन तुम मेरी तरफ ध्यान न लाएँ, खुदावन्द की फरमाता है। 18 अब और आइन्दा इसका ख्याल रखदो, आज खुदावन्द की हैकल की बुनियाद के डाले जाने यानी नवे महीने की चौबीसवीं तारीख से इसका ख्याल रखेंगे: 19 क्या इस वक्त बीज खेते मैं है? अभी तो अंगू की बेत और अंजीर और अनार और जैतून में फल नहीं लगे। आज ही से मैं तुम को बरकत दूँगा।” 20 फिर इनी महीने की चौबीसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम हज्जी नबी पर नाजिल होआ, 21 कि यहदाह के नाजिम जस्ल्बाबुल से कह दे, कि मैं आसमान और जमीन को हिलाऊँगा; 22 और सलतनतों के तख्त उलट दूँगा; और कौमों की सलतनतों की ताकतों को खत्म कर दूँगा, और रथों को सवारों के साथ उलट दूँगा और घोड़े और उनके सवार गिर जायेंगे और हर शब्स अपने भाई की तलवार से कल्प लोग। 23 रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, ऐ मेरे खादिम जस्ल्बाबुल — बिन — सियालतिएल, उसी दिन मैं तुझे लूँगा, खुदावन्द फरमाता है, और मैं तुझे एक मिसाल ठहराऊँगा: क्यूँकि मैंने तुझे मुकर्रर किया है, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है।

ज़कर

1 दारा के दूसरे बरस के आठवें महीने में खुदावन्द का कलाम जकरियाह नबी बिन बरकियाह — बिन — 'इदू पर नाजिल हुआ: 2 कि "खुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा से सरबत नाराज रहा। 3 इसलिए तु उनसे कह, रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि तुम मेरी तरफ रस्ता हो, रब्ब — उल — अफवाज का फरमान है, तो मैं तुम्हारी तरफ से रस्ता हूँगा रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 4 तुम अपने बाप — दादा की तरह न बनो, जिनसे आपने नवियों ने बा आवाज — ए — बुलन्द कहा, रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है, कि तुम अपनी बुरे चाल चलन और बदामाली से बाज आओ; लेकिन उन्होंने सुना और मुझे न माना, खुदावन्द फरमाता है। 5 तुम्हारे बाप दादा कहाँ हैं? क्या अम्बिया हमेशा जिन्दा रहते हैं? 6 लेकिन मेरा कलाम और मेरे कानून, जो मैंने अपने खिदमत गुजार नवियों को फरमाए थे, क्या वह तुम्हारे बाप — दादा पर पौरे नहीं हुए? चुनौते उन्होंने रस्ता लाकर कहा, कि रब्ब — उल — अफवाज ने अपने इदू के मुताबिक हमारी 'आदात और हमारे 'आमाल का बदला दिया है।' 7 दारा के दूसरे बरस और ग्यारहवें महीने यानी माह — ए — सबात की चौबीसवीं तारीख को खुदावन्द का कलाम जकरियाह नबी बिन — बरकियाह — बिन — 'इदू पर नाजिल हुआ 8 कि मैंने रात को रोया में देखा कि एक शब्द सुन्दर घोड़े पर सवार, मैंहीनी के दरखतों के बीच नशेब में खड़ा था, और उसके पीछे संरंग और कूमैत और नुकरह घोड़े थे। 9 तब मैंने कहा, ऐ मेरे आका, यह क्या है? इस पर फरिश्ते ने, जो मुझ से गुफ्तगू करता था कहा, मैं तुझे दिखाऊँगा कि यह क्या है। 10 और जो शब्द मैंहीनी के दरखतों के बीच खड़ा था, कहने लगा, 'थे वह है जिनको खुदावन्द ने भेजा है कि सारी दुनिया में सैर करें। 11 और उन्होंने खुदावन्द के फरिश्ते से, जो मैंहीनी के दरखतों के बीच खड़ा था कहा, हम ने सारी दुनिया की सैर की है, और देखा कि सारी जमीन में अमन — ओ — अमान है। 12 फिर खुदावन्द के फरिश्ते ने कहा, ऐ रब्ब — उल — अफवाज तू येस्शलेम और यहदाह के शहरों पर, जिनसे तू सत्तर बरस से नाराज है, कब तक रहमन करेगा? 13 और खुदावन्द ने उस फरिश्ते को जो मुझ से गुफ्तगू करता था, मुलायम और तसल्ली बरशा जबाब दिया। 14 तब उस फरिश्ते ने जो मुझ से गुफ्तगू करता था, मुझ से कहा, बुलन्द आवाज से कह, रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि मुझे येस्शलेम और सिय्यून के लिए बड़ी गैरत है। 15 और मैं उन कौमों से जो आराम मैं हूँ, निहायत नाराज हूँ, क्यौंकि जब मैं थोड़ा नाराज था, तो उन्होंने उस आफत को बहुत ज्यादा कर दिया। 16 इसलिए खुदावन्द यूँ फरमाता है, कि मैं रहमत के साथ येस्शलेम को वापस आया हूँ, उसमें मेरा घर तामीर किया जाएगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, और येस्शलेम पर फिर सूत खीचा जाएगा। 17 फिर बुलन्द आवाज से कह, रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है, मेरे शहर दोबारा खुशहाली से मारपूर होगे, क्यौंकि खुदावन्द फिर सिय्यून को तसल्ली बरछोगा, और येस्शलेम को कुबूल फरमाएगा। 18 फिर मैंने आँखें उठाकर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि चार सींग हैं। 19 और मैंने उस फरिश्ते से जो मुझ से गुफ्तगू करता था पूछा, कि "यह क्या है?" उसने मुझे जबाब दिया, "यह वह सींग है, जिन्होंने यहदाह और इमाईल और येस्शलेम को तितर — बितर किया है।" 20 फिर खुदावन्द ने मुझे चार कारीगर दिखाए। 21 तब मैंने कहा, "यह क्यूँ आए है?" उसने जबाब दिया, "यह वह सींग है, जिन्होंने यहदाह को ऐसा तितर — बितर किया कि कोई फिर न उठा सका; लेकिन यह इसलिए आए है कि उनको डाराँ, और उन कौमों के सींगों को

पस्त करें जिन्होंने यहदाह के मुल्क को तितर — बितर करने के लिए सींग उठाया है।"

2 फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की और क्या देखता हूँ कि एक शब्द जरीब हाथ में लिए खड़ा है। 2 और मैंने पूछा, "तू कहाँ जाता है?" उसने मुझे जबाब दिया, "येस्शलेम की पैमाइश को, ताकि देखें कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई कितनी है।" 3 और देखो, वह फरिश्ता जो मुझ से गुफ्तगू करता था। रवाना हुआ, और दूसरा फरिश्ता उसके पास आया, 4 और उससे कहा, दौड़ और इस जबाब से कह, कि येस्शलेम इसान और हैवान की कसरत के जरिए बेफ़रील बसियों की तरह आबाद होगा। 5 क्यौंकि खुदावन्द फरमाता है मैं उसके लिए चारों तरफ आतिशी दीवार हूँगा और उसके अन्दर उसकी शोकत। 6 सुनो "खुदावन्द फरमाता है, शिमाल की सर जमीन से, जहाँ तुम असमान की चारों हाथों की तरह रितर — बितर किए गए, निकल भागो, खुदावन्द फरमाता है। 7 ऐ सिय्यून, तू जो दुख्तर — ए — बाबूल के साथ बसती है, निकल भागो! 8 क्यौंकि रब्बुल — अफवाज जिसने मुझे अपने जलाल की खातिर उन कौमों के पास भेजा है, जिन्होंने तुम को गारत किया, यूँ फरमाता है, जो कोई तुम को छूता है, मेरी आँख की पुतली को छूता है। 9 क्यौंकि देख, मैं उन पर अपना हाथ हिलाऊँगा और वह अपने गुलामों के लिए लृट होगे। तब तुम जानोगे कि रब्बुल — अफवाज ने मुझे भेजा है। 10 ऐ दुख्तर — ए — सिय्यून, तू गा और खुशी कर, क्यौंकि देख, मैं आकर तेरे अंदर सुकूनत करूँगा खुदावन्द फरमाता है। 11 और उस वक्त बहुत री जौमें खुदावन्द से मेल करेंगी और मेरी उमत होंगी, और मैं तेरे अंदर सुकूनत करूँगा, तब तू जानोगी कि रब्ब — उल — अफवाज ने मुझे तेरे पास भेजा है। 12 और खुदावन्द यहदाह को मुल्क — ए — मुकद्दस में अपनी मीरास का हिस्सा ठहराएगा, और येस्शलेम को कुबूल फरमाएगा।" 13 "ऐ बनी आदम, खुदावन्द के सामने खामोश रहो, क्यौंकि वह अपने मुकद्दस घर से उठा है।"

3 और उसने मुझे यह दिखाया कि सरदार काहिन यशुः खुदावन्द के फरिश्ते के सामने खड़ा है और शैतान उसके दाहिने हाथ इस्ताता है ताकि उसका सामना करे। 2 और खुदावन्द ने शैतान से कहा, "ऐ शैतान, खुदावन्द तुझे मलामत करे। हाँ, वह खुदावन्द जिसने येस्शलेम को कुबूल किया है, तुझे मलामत करे। क्या यह वह तुकी नहीं जो आग से निकाली गई है?" 3 और यशुः अ मैले कपड़े पहने फरिश्ते के सामने खड़ा था। 4 फिर उसने उनसे जो उसके सामने खड़े थे कहा, "इसके मैले कपड़े उतार दो।" और उससे कहा, "देख, मैंने तेरी बदकिरदारी तुझ से दूर की, और मैं तुझे नफीस तिबास पहनाऊँगा।" 5 और उसने कहा, कि "उसके सिर पर साफ 'अमामा रख्बो।'" तब उन्होंने उपके सिर पर साफ 'अमामा रख्बा और पोशाक पहनाई, और खुदावन्द का फरिश्ता उसके पास खड़ा रहा। 6 और खुदावन्द के फरिश्ते ने यशुः अ से तामीद करके कहा, 7 "रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: अगर तू मेरी राहों पर चले और मेरे अहकाम पर 'अमल करे, तो मेरे घर पर हूँकमत करेगा और मेरी बारगाहों का निगहबान होगा; और मैं तुझे इन्हें खड़े हैं आने जाने की इजाजत दूँगा।" 8 अब ऐ यशुः अ सरदार काहिन, सुन, तू और तेरे रफीक जो तेरे सामने बैठे हैं, वह इस बात का ईमा है कि मैं अपने बन्दे यानी शाख को लाने वाला हूँ। 9 क्यौंकि उस पत्थर को जो मैंने यशुः अ के सामने रखा है, देख, उस पर सात आँखें हैं। देख, मैं इसे तितर — बितर करूँगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, और मैं इस मुल्क की बदकिरदारी को एक ही रिन में दूर करूँगा। 10 रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, उसी दिन तुम मैं से हर एक अपने हम साये को ताक और अंजीर के नीचे बुलाएगा।"

4 और वह फरिश्ता जो मुझ से बांते करता था, फिर आया और उसने जैसे मुझे नीद से जगा दिया, 2 और पृष्ठा, “तू क्या देखता है?” और मैंने कहा, कि “मैं एक सोने का शमादान देखता हूँ जिसके सिर पर एक कटोरा है और उसके ऊपर सात चिराग हैं, और उन सातों चिरागों पर उनकी सात सात नलियाँ। 3 और उसके पास जैतून के दो दरखत हैं, एक तो कटोरे की दहनी तरफ और दूसरा बाईं तरफ।” 4 और मैंने उस फरिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था, पृष्ठा, “ऐ मेरे आका, यह क्या है?” 5 तब उस फरिश्ते ने जो मुझ से कलाम करता था कहा, “क्या तू नहीं जानता यह क्या है?” मैंने कहा, “नहीं, ऐ मेरे आका!” 6 तब उसने मुझे जबाब दिया, कि “यह ज़म्बाबूल के लिए खुदावन्द का कलाम है, कि न तो ताकत से, और न तवानाई से, बल्कि मेरी स्थ से, रब्ब — ल — अफवाज फरमाता है। 7 ऐ बड़े पहाड़, तू क्या है? तू ज़म्बाबूल के सामने मैंदान हो जाएगा, और जब वह चोटी का पत्थर निकाल लाएगा, तो लोग पुकारेंगे, कि उस पर फजल हो फजल हो।” 8 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ, 9 कि “ज़म्बाबूल के हाथों ने इस घर की नीव डाली, और उसी के हाथ इसे तमाम भी करेंगे। तब तू जानेगा कि रब्ब — उल — अफवाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। 10 क्यूँकि खुदावन्द की वह सात आँखें, जो सारी ज़मीन की सैर करती हैं, खुशी से उस साहल को देखती हैं जो ज़म्बाबूल के हाथ में है।” 11 तब मैंने उससे पृष्ठा, कि “यह दोनों जैतून के दरखत जो शमादान के दहने बाँधे, क्या है?” 12 और मैंने दोबारा उससे पृष्ठा, कि “जैतून की यह दो शाख क्या है, जो सोने की दो नलियों के मुतासिल हैं, जिनकी राह से सुहेला तेल निकला चला जाता है?” 13 उसने मुझे जबाब दिया, “क्या तू नहीं जानता, यह क्या है?” मैंने कहा, “नहीं, ऐ मेरे आका!” 14 उसने कहा, “यह वह दो मस्ख हैं, जो रब्ब — उल — अलामीन के सामने खड़े रहते हैं।”

5 फिर मैंने आँख उठाकर नजर की, और क्या देखता हूँ कि एक उड़ता हुआ तमार है। 2 उसने मुझ से पृष्ठा, “तू क्या देखता है”, मैंने जबाब दिया “एक उड़ता हुआ तमार देखता हूँ, जिसकी लम्बाई बीस और चौड़ाई दस हाथ है।” 3 फिर उसने मुझ से कहा, “यह वह लान है जो तमाम मुल्क पर नाजिल होने को है, और इसके मुताबिक हर एक चोर और झूटी कसम खाने वाला यहाँ से काट डाला जाएगा। 4 रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, मैं उसे भेजता हूँ, और वह चोर के घर में और उसके घर में, जो मेरे नाम की झूटी कसम खाता है, घुसेगा और उसके घर में होगा; और उसे उसकी लकड़ी और पत्थर के साथ बर्बाद करेगा।” 5 वह फिर फरिश्ता जो मुझ से कलाम करता था निकला, और उसने मुझ से कहा, कि “अब तू आँख उठाकर देख, क्या निकल रहा है?” 6 मैंने पृष्ठा, “यह क्या है?” उसने जबाब दिया, “यह एक ऐका निकल रहा है।” और उसने कहा, कि “तमाम मुल्क में यही उनकी शबीह है।” 7 और सीसे का एक गोल सरपोश उठाया गया, और एक ‘ऐरत ऐका में बैठी नजर आई। 8 और उसने कहा, कि “यह शरारत है।” और उसने उस तौल बाट को ऐका में नीचे दबाकर, सीसे के उस सरपोश को ऐका के मुँह पर रख दिया। 9 फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की, और क्या देखता हूँ कि दो ‘ऐरतें निकल आई और हवा उनके बाज़ओं में भरी थी, क्यूँकि उनके लकलक के से बाज़ थे, और वह ऐका की आसमान और ज़मीन के बीच उठा ले गई। 10 तब मैंने उस फरिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था, पृष्ठा, कि “यह ऐका को कहाँ लिए जाती है?” 11 उसने मुझे जबाब दिया कि “सिनार के मुल्क को, ताकि इसके लिए घर बनाएँ, और जब वह तैयार हो तो यह अपनी जगह में रख दीजा जाए।”

6 तब फिर मैंने आँख उठाकर निगाह की तो क्या देखता हूँ कि दो पहाड़ों के बीच से चार रथ निकले, और वह पहाड़ पीतल के थे। 2 पहले रथ के घोड़े सुरंग, दूसरे के मुशकी, 3 तीसरे के नुकरा और चौथे के अबलक थे। 4 तब मैंने उस फरिश्ते से जो मुझ से कलाम करता था पृष्ठा, “ऐ मेरे आका, यह क्या है?” 5 और फरिश्ते ने मुझे जबाब दिया, कि “यह आसमान की चार हवाएँ हैं जो रब्बुल — ‘आलमीन के सामने से निकली हैं। 6 और मुशकी घोड़ों वाला रथ उत्तरी मुल्क को निकला चला जाता है, और नुकरा घोड़ों वाला उसके पीछे और अबलक घोड़ों वाला दक्खिनी मुल्क को। 7 और सुगंग घोड़ों वाला भी निकला, और उहोंने चाहा कि दुनिया की सैर करें,” और उसने उनसे कहा, “जाओ, दुनिया की सैर करो।” 8 और उहोंने दुनिया की सैर की। 8 तब उसने बुलन्द आवाज से मुझ से कहा, “देख, जो उत्तरी मुल्क को गए हैं, उहोंने वहाँ मेरा जी ठंडा किया है।” 9 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 10 कि तू आज ही खल्दी और तूबियाह और यद्य अयाह के पास जा, जो बाबूल के गुलामों की तरफ से आकर यूसियाह — बिन — सफनिया के घर में उतरे हैं। 11 और उनसे सोना — चौदी लेकर ताज बना, और यश्शू अ बिन — यहसदक सरदार कहिन को पहना; 12 और उससे कह, कि रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है, कि देख, वह शरख जिसका नाम शाख है, उसके ज़ेर — ए — साया खुशहाली होगी और वह खुदावन्द की हैकल को तामीर करेगा। 13 हाँ, वही खुदावन्द की हैकल को बनाएगा और वह साहिब — ए — शौकत होगा, और तख्त नशीन होकर हुक्मत करेगा और उसके साथ काहिन भी तख्त नशीन होगा; और दोनों में सुलह — ओ — सलामती की मशवरत होगी। 14 और यह ताज हीलम और तूबियाह और यद्य अयाह और हेन — बिन — सफनियाह के लिए खुदावन्द की हैकल में यादगार होगा। 15 “और वह जो दूर है आकर खुदावन्द की हैकल को तामीर करेंगे, तब तुम जानेगे कि रब्ब — उल — अफवाज ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है; और अगर तुम दिल से खुदावन्द अपने खुदा की फ़रमाबदरी करेंगे तो यह जांते पूरी होगी।”

7 दरा बादशाह की सल्तनत के चौथे बरस के नवें महीने, यानी किसलेव महीने की चौथी तारीख को खुदावन्द का कलाम जकरियाह पर नाजिल हुआ। 2 और बैतैल के बाशिन्दों ने शराजर और रजममतिक और उसके लोगों को भेजा कि खुदावन्द से दरखास्त करें, 3 और रब्ब — उल — अफवाज के घर के काहिनों और नवियों से पूछे, कि “क्या मैं पॉच्वें महीने में गोशानशीन होकर मातम करूँ, जैसा कि मैंने सालहाँ साल से किया है?” 4 तब रब्ब — उल — अफवाज का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 5 कि मम्लुकत के सब लोगों और काहिनों से कह कि जब तुम ने पॉच्वें और सातवें महीने में, इन सत्तर बरस तक रोजा रख्वा और मातम किया, तो क्या था कभी मेरे लिए खास मेरी ही लिए रोजा रख्वा था? 6 और जब तुम खाते — पीते थे तो अपने ही लिए न खाते — पीते थे? 7 “क्या यह वही कलाम नहीं जो खुदावन्द ने गुजिश्ता नवियों की मारिफत फरमाया, जब येस्सलेम आबाद और आसूदा हाल था, और उसके लिए के शहर और दक्खिन की सर ज़मीन और सैदाम आबाद थे?” 8 फिर खुदावन्द का कलाम जकरियाह पर नाजिल हुआ: 9 कि “रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाया था, कि रास्ती से ‘अदालत करो, और हर शख्स अपने भाईं पर करम और रहम किया करे, 10 और बेवा और यतीम और मुसाफिर और मिस्कीन पर ज़ल्म न करो, और तुम में से कोई अपने भाईं के खिलाफ दिल में बुरा मन्सबा न बैठे।’” 11 लेकिन वह सुनने वाले न हुए, बल्कि उहोंने गर्दनकशी की तरफ अपने कानों को बंद किया ताकि न सुनें। 12 और उहोंने अपने दिलों को अल्मास की तरह सख्त किया, ताकि शरीर अत और उस कलाम को न सुनें जो रब्बुल — अफवाज ने गुजिश्ता नवियों

पर अपने स्ह की मारिफत नाजिल फरमाया था। इसलिए रब्ब — उल — अफवाज की तरफ से कहर — ए — शदीद नाजिल हुआ। 13 और रब्ब — उल — अफवाज ने फरमाया था: “जिस तरह मैंने पुकार कर कहा और वह सुने वाले न हुए, उसी तरह वह पुकारे और मैं नहीं सुनँगा। 14 बल्कि उनको सब क्रौमों में जिनसे वह नावाकिफ है तिर — बितर करँगा। यूँ उनके बाद मुल्क वीरान हुआ, यहाँ तक कि किसी ने उसमें आपद — ओ — रफत न की, क्यूँकि उन्होंने उस दिलकृशा मुल्क को वीरान कर दिया।”

8 फिर खुदावन्द का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 2 कि “रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि मुझे सिय्यन के लिए बड़ी गैरत है बल्कि मैं गैरत से सख्त गजबानक हुआ 3 खुदावन्द यूँ फरमात है कि मैं सिय्यन में वापस आया हुआ और येस्शलेम में सकूनत करँगा और येस्शलेम शहर — ए — सिदक होगा और रब्ब — उल — अफवाज का पहाड़ कोहे मुकद्दस कहलाएगा 4 रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि येस्शलेम के गलियों में उम्र रसीदा मर्द — ओ — ज़न बुढ़ापे की वजह से हाथ में ‘असा लिए हूए फिर बैठे होंगे। 5 और शहर की गलियों में खेनने वाले लड़के — लड़कियों से मांप्र होंगे। 6 और रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है कि अगर उन दिनों में यह ‘अप्र इन लोगों के बकिये की नज़र में हैरत अफज़ा हो, तो भी क्या मेरी नज़र में हैरत अफज़ा होगा? रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है 7 रब्ब उल — अफवाज यूँ फरमाता है: देख, मैं अपने लोगों को पूर्वी और पश्चिमी मामालिक से छुड़ा लगा 8 और मैं उनको वापस लाऊँगा और वह येस्शलेम में सुकूनत करेंगे, और वह मेरे लोग होंगे और मैं रास्ती — और — सदाकत से उनका खुदा हैंगा।” 9 रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: “कि ऐ लोग, अपने हाथों को मजबूत करो; तुम जो इस वक्त यह कलाम सुनते हो, जो रब्ब उल — अफवाज के घर यानी हैकल की तामीर के लिए बुनियाद डालते वक्त नवियों के ज़रिए।” नाजिल हुआ। 10 क्यूँकि उन दिनों से पहले, न इंसान के लिए मजदूरी थी और न हैवान का किराया था, और दुश्मन की वजह से अने — जाने वाले महफूज न थे, क्यूँकि मैंने सब लोगों में निकाफ डाल दिया। 11 लेकिन अब मैं इन लोगों के बकिये के साथ पहले की तरह पेश न आऊँगा, रब्बुल — उल — अफवाज फरमाता है। 12 बल्कि जिराईत सलामती से होंगी, अपना फल देनी और ज़मीन अपना हासिल और आसमान से ओस पड़ेंगी, मैं इन लोगों के बकिये को इन सब बरकतों का वारिस बनाऊँगा। 13 ऐ बनी यहदाह और ऐ बनी — इस्माईल, तरह तुम दूसरी क्रौमों में लान्त तरह मैं तुम को छुड़ाऊँगा और तुम बरकत होगे। परेशान न हो, तुहारे हाथ मजबूत हों।” 14 क्यूँकि रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि “जिस तरह मैंने क़स्द किया था कि तुम पर आफत लाऊँ, तुहारे बाप — दादा ने मुझे गजबानक किया और मैं अपने इशादे से बाज़ न रहा, फरमात है; 15 उसी तरह मैंने अब इशादा किया है कि येस्शलेम और यहदाह के घराने से नेकी कस्त़; लेकिन तुम परेशान न हो। 16 फिर लाजिम है कि तुम इन बातों पर ‘अमल करो। तुम सब अपने पड़ौसियों से सच बोलो, अपने फाटकों में रसीदी से करो ताकि सलामती हो, 17 और तुम में से कोई अपने भाई के खिलाफ दिल में बुरा मंसूबा न बँधे, झटी कसम को ‘अजीज न रखें; मैं इन सब बातों से नफरत रखता हूँ खुदावन्द फरमात है।” 18 फिर रब्ब — उल — अफवाज का कलाम मुझ पर नाजिल हुआ: 19 कि रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि चौथे और पाँचवे और सातवें और दसवें महीने का रोज़ा, यहदाह के लिए खुशी और खुर्मी का दिन और शादमानी की ‘ईंद होगा; तुम सच्चाई और सलामती को ‘अजीज रखखो। 20 रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि फिर क्रौम में और बड़े बड़े शहरों के बाशिन्दे आएँगे। 21 एक शहर के बाशिन्दे दूसरे शहर में

जाकर कहेंगे, जल्द खुदावन्द से दरखास्त करें और रब्ब — उल — अफवाज के तालिब हों, भी चलता हूँ। 22 बहुत सी उमातें और जबरदस्त क्रौम रब्ब — उल — अफवाज की तालिब होंगी, खुदावन्द से दरखास्त करने को येस्शलेम में आएँगी। 23 रब्ब — उल — अफवाज यूँ फरमाता है: कि उन दिनों में मुख्लिफ अहल — ए — ल्पात में से दस आदमी हाथ बढ़ाकर एक यहदी का दामन पकड़ेंगे और कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ जायेंगे क्यूँकि हम ने सुना है कि खुदा तुम्हारे साथ है।

9 बनी आदम और खुस्सन कुल कबाइल — ए — इस्माईल की आँखें खुदावन्द पर लगी हैं। खुदावन्द की तरफ से सर ज़मीन — ए — और दमिश्क के खिलाफ बार — ए — नव्बत्वत; 2 हमात के खिलाफ जो उनसे सूर और सैदा के खिलाफ जो अपनी नज़र में बहुत ‘अक्लमन्द है। 3 सूर ने अपने लिए मजबूत किला मिट्ठी की तरह चाँदी के तदे लगाए और गलियों की कीच की तरह सोने के देर। 4 देखो खुदावन्द उसे खारिज कर देगा, उसके गुसर को समृद्ध में डाल देगा; और आग उसको खा जाएगी। 5 अस्कलोन देखकर डर जाएगा गज़ा भी सख्त दर्द में मृत्युलिपि होगा, अक्सरन भी क्यूँकि उसकी उम्मीद टूट गई और गज़ा से बादशाही जाती रहेगी, अस्कलोन बे चिराग हो जाएगा। 6 और एक अजनबी जादा अशद्द में तख्त नशीन होगा और मैं फिलिसियों का गुसर मिटाऊँगा। 7 और मैं उसके खुन को उसके मुँह से और उसकी मज़हबत उसके दौर्तों से निकाल डाललौंगा, और वह भी हमारे खुदा के लिए बकिया होगा और वह यहदाह में सरदार होगा और अक्सर यद्युसियों की तरह होंगे। 8 और मैं मुखालिफ फौज के मुकाबिल अपने घर की चारों तरफ खुमाजन हैंगा ताकि कोई उसमें से आपद — ओ — रफत न कर सके; फिर कोई ज़ालिम उनके बीच से न गुजरेगा क्यूँकि अब मैंने अपनी आँखों से देख लिया है। 9 ऐ बिन्त — ए — सिय्यन तृनिहाय शादमान हो! ऐ दुख्तर — ए — येस्शलेम, खब ललकार क्यूँकि देख तेरा बादशाह तेरे पास आता है; वह सादिक है, नजात उसके हाथ में है वह हलीम है और गधे पर बल्कि जवान गधे पर सवार है। 10 और मैं इस्काइम से रथ, येस्शलेम से घोड़े काट डालौंगा और ज़ंगी कमान तोड़ डाली जाएगी और वह क्रौमों को सुलह का मुजदा देगा और उसकी सलतनत समृद्धर से समन्दर तक और दरिया — ए — फुरात से इन्तिहाए — ज़मीन तक होंगी। 11 और तेरे बारे में धूँ है कि तेरे ‘अहद के खुन की बजह से, तेरे गुलामों को अधे कुंगे से निकाल लाया। 12 मैं आज बताता हूँ कि तुझ को दो बदता दूँगा, “ऐ उमीदवार, गुलामों किले वापस आओ।” 13 क्यूँकि मैंने यहदाह को कमान की तरह झुकाया और इस्काइम को तीर की तरह लगाया, और ऐ सिय्यन, मैं तेरे फर्जदों को यूनान के फर्जदों के खिलाफ बरअन्गेखता करँगा, तुझे पहलवान की तलबार की तरह बनाऊँगा। 14 और खुदावन्द उनके ऊपर दिखाई देगा उसके तीर बिजली की तरह निकलेंगे, हाँ खुदावन्द खुदा नरसिंहा फूँकेगा और दक्खिनी बगोलों के साथ खुरूज करेगा। 15 और रब्ब — उल — अफवाज उनकी हिमायत करेगा और वह दुश्मनों को निगलेंगे, और फलाखन के पथरों को पायमाल करेंगे और पीकर मतवालों की तरह शेर मचायेंगे और कटोरों और मज़बूत के कोनों की तरह मांप्र होंगे। 16 और खुदावन्द उनका खुदा उस दिन उनको अपनी भेंडों की तरह बचा लेगा, क्यूँकि वह ताज के जवाहर की तरह होंगे, जो उसके मुल्क में सरफराज 17 क्यूँकि उनकी खुशहाली ‘अजीम और उनका जमाल ख़ब है, नौजवान गल्ले से बढ़ेंगे और लड़कियाँ नई शराब से नव्व — ओ — नुमा पाएँगी।

10 पिछली बरसात की बारिश के लिए खुदावन्द से दूँआ करो खुदावन्द से जो बिजली चमकाता है वह बारिश भेजेगा और मैदान में सबके लिए

घास उगाएगा। 2 क्यूंकि तराफीम ने बतालत की बातें कही हैं और गैबरीनों ने बतालत देखी और झूठे खबाब बयान किये हैं उनकी तसल्ली बे हकीकत है इसलिए वह भेड़ों की तरह भटक गए। उन्होंने दुख पाया क्यूंकि उनका कोई चरवाहा न था। 3 मेरा गजब चरवाहों पर भड़का है, मैं पेशवाओं को सज्जा दूँगा; तोभी रब्ब — उल — अफवाज ने अपने गल्ले यानी बनी यहदाह पर नजर की है, उनको गोया अपना खूबसूरत जंगी घोड़ा बनाएगा। 4 उन्हीं में से कोने का पथर और खंडी जंगी कमान और सब हाकिम निकलेंगे। 5 और वह फलवानों की तरह लड़ाई में दुश्मनों को गलियों की कीच की तरह लताड़ेंगे और वह लड़ेंगे, क्यूंकि खुदावन्द उनके साथ हैं और सवार सरासीमा हो जाएंगे। 6 और मैं यहदाह के घराने की तक्कियत कहूँगा और यूसुफ के घराने को रिहाई बख्ख़ूँगा और उनको वापस लाऊँगा, क्यूंकि मैं उन पर रहम करता हूँ, वह ऐसे होंगे गोया मैंने कभी उनको तरक्की किया था, मैं खुदावन्द उनका खुदा हूँ और उनकी सुन्ना। 7 और बनी इफाईम पहलवानों की तरह होंगे और उनके दिल गोया मय से मस्सर होंगे, बल्कि उनकी औलाद भी देखेगी और शादमानी करेगी; उनके दिल खुदावन्द से खुश होंगे। 8 “मैं सीटी बजाकर उनको इकड़ा करूँगा, क्यूंकि मैंने उनका फिरिया दिया है, वह बहत हो जाएँगे जैसे पहले 9 अगर चे मैंने उन्हें कौमों में तिरत — बितर किया तोभी वह उन दूर के मुल्कों में मुझे याद करेंगे और अपने बाल बच्चों साथ जिन्दा रहेंगे और वापस आएंगे। 10 मैं उनको मुल्क — ए — मिस से वापस लाऊँगा अस्सर से जमा’ कहूँगा और जिल’आद और लुबनान की सरजमीन में पहँचाऊँगा, यहाँ तक कि उनके लिए गुजाइश न होगी। 11 और वह मुसीबत के सम्मदर से गुजार जाएगा और उसकी लाहरों को मारेगा, और दरिया-ए-नील तक सूखा जाएगा, अस्सर का तकब्बर दृट जाएगा और वह उसका नाम लेकर इधर उधर चलेंगे।”

11 ऐ लुबनान, त अपने दरवाजों को खोलदे ताकि आग तेरे देवदारों को खा जाए। 2 ऐ सरो के दरख्त, नौहा कर क्यूंकि देवदार गिर गया, शानदार गारत हो गए। ऐ बसनी बलत के दरखते, फुआं करो क्यूंकि दुश्वार गुजार जंगल साफ हो 3 चरवाहों के नौहे की आवाज आती है, क्यूंकि उनकी हशमत गारत हुई। जवान बर्दों की गरज सुनाई देती है क्यूंकि यरदन का जंगल बर्बाद हो गया। 4 खुदावन्द मेरा खुदा यूँ फरमाता है: “कि जो भेड़ें जबह हो रही हैं उनको चरा। 5 जिनके मालिक उनको जबह करते और अपने आप को बेकुसर समझते हैं, और जिनके बैचने वाले कहते हैं, खुदावन्द का शुक हो कि हम मालदार हुए, और उनके चरवाहे उन पर रहम नहीं करते। 6 क्यूंकि खुदावन्द फरमाता है, मुल्क के बाशिन्दों पर फिर रहम नहीं कहूँगा, बल्कि हर शख्स को उसके हमसाये और उसके बादशाह के हवाले कर दूँगा; वह मुल्क को तबाह करेंगे और मैं उनको उनके हाथ से नहीं छुड़ाऊँगा।” 7 तब मैंने उन भेड़ों को जो जबह हो रही थी, यानी गल्ले के मिस्किनों को चराया और मैंने दो लाठियाँ ली; एक का नाम फजल रख्खा और दसरी का इतिहाद, और गल्ले को चराया। 8 और मैंने एक महीने में तीन चरवाहों को हलाक किया, क्यूंकि मेरी जान उसे बेजार थी; उनके दिल में मुझ से कराहियत थी। 9 तब मैंने कहा, कि अब मैं तुम को न चराऊँगा। मरने वाला मरजाए और हलाक होने वाला हलाक हो, बाकी एक दूसरे का गोशत खाएँ। 10 तब मैंने फजल नामी लाठी को लिया और उसे काट डाला कि अपने ‘अहद को जो मैंने सब लोगों से बांधा था, मन्सूख करूँ। 11 और वह उसी दिन मन्सूख हो गया; तब गल्ले के मिस्किनों ने जो मेरी सुनते थे, मालूम किया कि यह खुदावन्द का कलाम है; 12 और मैंने उनसे कहा, कि “आग तुम्हारी नजर में ठीक हो, तो मेरी मजदूरी मुझे दो नहीं तो मत दो।” और उन्होंने मेरी मजदूरी के लिए तीस स्पये तोल कर दिए। 13 और खुदावन्द ने मुझे

हुक्म दिया, कि “उसे कुम्हार के सामने फेंक दे,” यानी इस बड़ी कीमत को जो उन्होंने मेरे लिए ठहराई, और मैंने यह तीस स्पये लेकर खुदावन्द के घर में कुम्हार के सामने फेंक दिए। 14 तब मैंने दूसरी लाठी यानी इतिहाद नामी को काट डाला, ताकि उस बिरादी को जो यहदाह और इसाईल में है खत्म करूँ। 15 और खुदावन्द ने मुझे फरमाया, कि “तू फिर नादान चरवाहे का सामान ले। 16 क्यूंकि देख, मैं मुक्के में ऐसा चौपान बर्पा करूँगा, जो हलाक होने वाले की खबर गीरी, और भटके हुए की तलाश और जखी की ‘इलाज न करेगा, और तन्दुस्त को न चराएगा लेकिन मोटों का गोशत खाएगा, और उनके खुरों को तोड़ डालेगा। 17 उस नाबकार चरवाहे पर अफसोस, जो गल्ले को छोड़ जाता है, तलवार उसके बाजू और उसकी दहरी आँख पर आ पड़ेगी। उसका बाजू बिल्कुल सूख जाएगा और उसकी दहरी आँख फूट जाएगी।”

12 इसाईल के बारे में खुदावन्द की तरफ से बार — ए — नबुव्वतः

खुदावन्द जो आसमान को तानता और जर्मीन की नियु डालता और इंसान के अन्दर उसकी रुह पैदा करता है, यूँ फरमाता है: 2 देखो, मैं येस्शलेम को चारों तरफ के सब लोगों के लिए लड़खड़ाहट का प्याला बनाऊँगा, और येस्शलेम के मुहासिरे के बक्त यहदाह का भी यही हाल होगा। 3 और मैं उस दिन येस्शलेम को सब कौमों के लिए एक भारी पथर बना दूँगा, और जो उसे उठाएँ सब यायल होंगे, और दुनिया की सब कौमें उसके सामने जमा’ होंगी। 4 खुदावन्द फरमाता है, मैं उस दिन हर घोड़े को हैरतजदा और उसके सवार को दीवाना कर दूँगा, लेकिन यहदाह के घराने पर निगाह रख खेंगा, और कौमों के सब घोड़ों को अंथा कर दूँगा। 5 तब यहदाह के फरमारवाँ दिल में कहेंगे, कि ‘येस्शलेम के बाशिन्दे अपने खुदा रब्ब — उल — अफवाज की बजह से हमारी ताकत है। 6 मैं उस दिन यहदाह के फरमारवाँों को लकड़ियों में जलती अंगठी और पूलों में मशा’ अल की तरह बनाऊँगा, और वह दहने बाएँ चारों तरफ की सब कौमों को खा जाएँगे, और अहल — ए — येस्शलेम फिर अपने मकाम पर येस्शलेम में ही आबाद होंगे। 7 और खुदावन्द यहदाह के खैमों को पहले रिहाई बख्ख़ूँगा, ताकि दाऊद का घराना और येस्शलेम के बाशिन्दे यहदाह के खिलाफ गुस्सर न करें। 8 उस दिन खुदावन्द येस्शलेम के बाशिन्दों की हिमायत करेगा, और उनमें का सबसे कमज़ोर उस दिन दाऊद की तरह होगा; और दाऊद का घराना खुदा की तरह, यानी खुदावन्द के फरिश्ते की तरह जो उनके आगे आगे चलता हो। 9 और मैं उस दिन येस्शलेम की सब मुख्यालिक कौमों की हलाकत का कम्सद करूँगा। 10 और मैं दाऊद के घराने और येस्शलेम के बाशिन्दों पर फजल और मुनाजाती की रुह नजिल करूँगा, और वह उस पर जिसको उन्होंने छेदा है नजर करेंगे और उसके लिए मातम करेंगे जैसा कोई अपने पहलौटे के लिए होता है। 11 और उस दिन येस्शलेम में बड़ा मातम होगा, हदद रिमोन के मातम की तरह जो मजिहोन की वादी में हुआ। 12 और तमाम मुल्क मातम करेगा, हर एक घराना अलग; दाऊद का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; नातन का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; 13 लावी का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; सिमई का घराना अलग, और उनकी बीवियाँ अलग; 14 बाकी सब घराने अलग — अलग, और उनकी बीवियाँ अलग अलग!

13 उस रोज गुनाह और नापाकी धोने को दाऊद के घराने और येस्शलेम

के बशिन्दों के लिए एक सोता फूट निकले गा 2 और रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, मैं उसी दिन मुल्क से बुतों का नाम मिटा दूँगा, और उनको फिर कोई याद न करेगा; और मैं नवियों को और नापाक स्फु को मुल्क

से खारिज कर दूँगा। 3 और जब कोई नबुव्वत करेगा, तो उसके माँ — बाप जिससे वह पैदा हुआ उससे कहेंगे तू जिन्दा न रहेगा क्यूंकि तू खुदावन्द का नाम लेकर झट्ट बोलता है और जब एह नबुव्वत करेगा तो उसके माँ बाप जिससे वह पैदा हुआ छेद डालेंगे। 4 और उस दिन नवियों में से हर एक नबुव्वत करते वक्त अपनी ख्वाब से शर्मिन्दा होगा, और कभी धोखा देने के लिए कम्बल के कपड़े न पहनेंगे, 5 बल्कि हर एक कहेगा, कि मैं नवी नहीं किसान हूँ, क्यूंकि मैं लड़कपन ही से गुलाम रहा हूँ। 6 और जब कोई उससे पछेगा, कि तेरी छाती “पर यह ज़ख्म कैसे है?” तो वह ज़बाब देगा यह वह ज़ख्म है जो मैं दोस्तों के घर में लगे। 7 रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, “ऐ तलवार, तू मेरे चरवाहे, यानी उस दंसान पर जो मेरा रफ़ीक है बेटार हो। चरवाहे को मार कि गल्ला तितर — बितर हो। जाए, और मैं छोटों पर हाथ चलाऊँगा। 8 और खुदावन्द फरमाता है, सरे मुल्क में दो तिहाई कल्त किए जाएँगे और मरेंगे, लेकिन एक तिहाई बच रहेंगे। 9 और मैं इस तिहाई को आग में डालकर चाँदी की तरह साफ करूँगा और सोने की ताऊँगा। वह मुझ से दुआ करेंगे, और मैं उनकी सुरूँगा। मैं कहूँगा, ‘यह मेरे लोग हैं, और वह कहेंगे, ‘खुदावन्द ही हमारा खुदा है।’”

14 देख, खुदावन्द का दिन आता है, जब तेरा माल लूटकर तेरे अन्दर बॉटा जाएगा। 2 क्यूंकि मैं सब कौमों को जमा करूँगा कि येस्शलेम से जंग करें, और शहर ले लिया जाएगा और घर लटे जाएँगे और 'ओरें बे हरमत की जायेंगी और आधा शहर गुलामी में जाएगा, लेकिन बाकी लोग शहर ही में रहेंगे। 3 तब खुदावन्द खुरूज करेगा और उन कौमों से लडेगा, जैसे जंग के दिन लड़ा करता था। 4 और उस दिन वह को — हह — जैतन पर जो येस्शलेम के पूरब में बाके हैं खड़ा होगा और कोह — ए — जैतूर बीच से फट जाएगा; और उसके पूरब से पश्चिम तक एक बड़ी वादी हो जाएगी, क्यूंकि आधा पहाड़ उत्तर को सरक जाएगा और आधा दक्षिण को। 5 और तुम मेरे पहाड़ों की वादी से होकर भागोगे, क्यूंकि पहाड़ों की वादी अज़ल तक होगी; जिस तरह तुम शह — ए — यहदाह उज्जियाह के दिनों में जलजले से भागे थे, उसी तरह भागोगे; क्यूंकि खुदावन्द मेरा खुदा आएगा और सब कुदरी उसके साथ 6 और उस दिन रोशनी न होगी, और अजराम — ए — फ्लक छिप जाएँगे। 7 लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जो खुदावन्द ही को मालम है। वह न दिन होगा न रात, लेकिन शाम के वक्त रोशनी होगी। 8 और उस दिन येस्शलेम से आब — ए — हयात जारी होगा, जिसका आधा बहर — ए — पूरब की तरफ बहेगा और आधा बहर — ए — पच्छिम की तरफ, गर्भी सदी में जारी रहेगा। 9 और खुदावन्द सारी दुनिया का बादशाह होगा। 10 और येस्शलेम के दक्षिण में तमाम मुल्क जिबा' से रिमोन तक मैदान की तरह हो जाएगा। लेकिन येस्शलेम बुलन्द होगा, और बिनयमीन के फाटक से फहले फाटक के मकाम या'नी कोने के फाटक तक, और हननएल के बूर्ज से बादशाह के अंगूष्ठ हौजों तक, अपने मकाम पर आबाद होगा। 11 और लोग इसमें सुकूनत करेंगे और फिर लान्त मुतलक न होगी, बल्कि येस्शलेम अमन — ओ — अमान से आबाद रहेगा। 12 और खुदावन्द येस्शलेम से जंग करने वाली सब कौमों पर यह 'ऐजाब नाजिल करेगा, कि खड़े खड़े उनका गोशत सख जाएगा, और उनकी आँखे चश्म खानों में गल जायेंगी और उनकी जबान उनके मूँह में सड जाएगी। 13 और उस दिन खुदावन्द की तरफ से उनके बीच बड़ी हलचल होगी और एक दूसरे का हाथ पकड़ेंगे और एक दूसरे के खिलाफ हाथ उठाएगा। 14 और यहदाह भी येस्शलेम के पास लडेगा, और चारों तरफ की सब कौमों का माल यानी सोना — चाँदी और पोशाक बड़ी कसरत से इकट्ठा किया जाएगा। 15 और घोड़ों, खच्चरों, ऊँटों,

गधों और सब हैवानों पर भी जो उन लश्करगाहों में होंगे, वही 'ऐजाब नाजिल होगा 16 और येस्शलेम से लड़ने वाली कौमों में से जो बच रहेंगे, साल — ब — साल बादशाह रब्ब — उल — अफवाज को सिज्दा करने और 'ईद — ए — खियाम मनाने को आएँगे। 17 और दुनिया के उन तमाम कबाइल पर बादशाह रब्ब — उल — अफवाज के सामने सिज्दा करने को येस्शलेम में न आएँगे, मैं न बरसेगा। 18 और अगर कबाइल — ए — मिस्र जिन पर बारिश नहीं होती न आँए, तो उन पर वही 'ऐजाब नाजिल होगा जिसको खुदावन्द उन गैर — कौमों पर नाजिल करेगा, जो 'ईद — ए — खियाम मनाने को न आएँगी। 19 अहल — ए — मिस्र और उन सब कौमों की, जो ईद — ए — खियाम मनाने की न जाएँ यहीं सज्जा होगी। 20 उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा, “खुदावन्द के लिये पाक।” और खुदावन्द के घर को देंगे, मजबह के प्यालों की तरह पाक होंगे। 21 बल्कि येस्शलेम और यहदाह में की सब देंगे, रब्ब — उल — अफवाज के लिए पाक होंगी, और सब ज़बीहे पेश करने वाले आयेंगे और उनको लेकर उनमें पकायेंगे और उस रोज़ फिर कोई कन'यानी रब्ब — उल — अफवाज के घर में न होगा।

मला

1

खुदावन्द की तरफ से मलाकी के 'जरिए' इसाईल के लिए बार — ए — नव्यव्वतः 2 खुदावन्द फरमाता है, "मैंने तुम से मुहब्बत रख्खी, तोमीं तुम कहते हो, 'तूने किस बात में हम से मुहब्बत जाहिर की?' खुदावन्द फरमाता है, "क्या 'एसो या' कूब का भाई न था? लेकिन मैंने या' कूब से मुहब्बत रख्खी, 3 और 'एसो से 'अदावत रखी, और उसके पहाड़ों को वीरान किया और उसकी मीरास वीराने के गीदड़ों को दी।" 4 अगर अदोम कहे, "हम बर्बाद तो हुए, लेकिन वीरान जगहों को फिर आकर तामीर करेंगे, तो रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, अगरचे वह तामीर करें, लेकिन मैं ढाँका, और लोग उनका ये नाम रखदेंगे, 'शरारत का मुल्क', 'वह लोग जिन पर होशा खुदावन्द का कहर है।' 5 और तुम्हारी ऑर्थे देखेंगी और तुम कहेंगे कि "खुदावन्द की तम्जीद, इसाईल की हड्डों से आगे तक हो।" 6 रब्बुल — उल — अफवाज तुम को फरमाता है: "ऐ मेरे नाम की तहकीर करने वाले कहिनों, बेटा अपने बाप की, और नैकर अपने आका की ताजीम करता है। इसलिए अगर मैं बाप हूँ, तो मेरी 'इज़ज़त कहाँ है?' और अगर आका हूँ, तो मेरा खौफ कहाँ है? लेकिन तुम कहते हो, 'हमने किस बात में तेरे नाम की तहकीर की?' 7 तुम मेरे मजबूत पर नापाक रोटी पेश करते हो और कहते हो कि 'हमने किस बात में तेरी तौहीन की?' इसी में जो कहते हो, खुदावन्द की मेज बहकती है। 8 जब तुम अंधे की कुर्बानी करते हो, तो कुछ बुराई नहीं? और जब लंगड़े और बीमार को पेश करते हो, तो कुछ नुकसान नहीं? अब यही अपने हाकिम की नज़र कर, क्या वह तुझ से खूश होगा और तू उसका मंजूर — ए — नज़र होगा? रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 9 अब जरा खुदा को मनाओ, ताकि वह हम पर रहम फरमाए। तुम्हारे ही हाथों ने ये पेश किया है; क्या तुम उसके मंजूर — ए — नज़र होगे? रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 10 काश कि तुम में कोई ऐसा होता जो दरवाजे बंद करता, और तुम मेरे मजबूत पर 'अबस आग न जलाते, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, मैं तुम से खुश नहीं हूँ और तुम्हारे हाथ का हादिया हरपिज कुबल न करूँगा। 11 क्यैंकि आफताब के तलूँ से गुम्ब तक कौमों में मेरे नाम की तम्जीद होगी, और हर जगह मेरे नाम पर खुशबूजलाएंगे और पाक हादिये पेश करेंगे; क्यैंकि कौमों में मेरे नाम की तम्जीद होगी, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 12 लेकिन तुम इस बात में उसकी तौहीन करते हो, कि तुम कहते हो, 'खुदावन्द की मेज पर क्या है, उस पर के हादिये बेहकीकत हैं।' 13 और तुम ने कहा, 'ऐ कैसी जहमत है,' और उस पर नाक चढ़ाई रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। फिर तुम लृट का माल और लंगड़े और बीमार जड़िहे लाए, और इसी तरह के हादिये पेश करें। क्या मैं इनको तुम्हारे हाथ से कुबल करूँ? खुदावन्द फरमाता है। 14 लान्त उस दगाबाज पर जिसके गल्ले में नर है, लेकिन खुदावन्द के लिए ऐंबदार जानवर की नज़र मानकर पेश करता है; क्यैंकि मैं शाह — ए — 'अज़ीम हूँ और कौमों में मेरा नाम मुहीब है, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है।

2

"और अब ऐ कहिनों, तुम्हारे लिए ये हुक्म है। 2 रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, अगर तुम नहीं सुनोगे, और मेरे नाम की तम्जीद को मद — ए — नज़र न रखोगे, तो मैं तुम को और तुम्हारी नेमतों को मला'ऊन करूँगा; बल्कि इसलिए कि तुमने उसे मद — ए — नज़र न रखवा, मैं मला'ऊन कर चुका हूँ। 3 देखो, मैं तुम्हारे बाज़ बेकार कर दूँगा, और तुम्हारे मुँह पर नापाकी यानी तुम्हारी कुर्बानियों की नापाकी फेंकूँगा, और तुम उसी के साथ फेंक दिए जाओगे। 4 और तुम जान लोगे कि मैंने तुम को ये हुक्म इसलिए दिया है कि मेरा 'अहद लावी के साथ कायम रहे, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है।

है। 5 उसके साथ मेरा 'अहद ज़िन्दगी और सलामती का था, और मैंने ज़िन्दगी और सलामती इसलिए बछरी कि वह डरता रहे; चुनौंचे वह मुझ से डरा और मेरे नाम से तरसान रहा। 6 सच्चाई की शरी' अत उसके मुँह में थी, और उसके लबों पर नारास्ती न पाई गई। वह मेरे सामने सलामती और रास्ती से चलता रहा, और वह बहुतों को बढ़ी की राह से वापस लाया। 7 क्यैंकि लाजिम है कि काहिन के लब मा'रिफत को महफूज रखवें, और लोग उसके मुँह से शर'ई मसाइल पूँछें, क्यैंकि वह रब्ब — उल — अफवाज का रसलू है। 8 लेकिन तुम राह से फिर गए। तुम शरी' अत में बहुतों के लिए ठोकर का जरिया' हुए। तुम ने लावी के 'अहद को खारब किया, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, 9 इसलिए मैंने तुम को सब लोगों की नज़र में जलील और हकीर किया, क्यैंकि तुम मेरी राहों पर कायम न रहे, बल्कि तुम ने शर'ई मुआ'मिलात में स्दरारी की।" 10 क्या हम सबका एक ही बाप नहीं? क्या एक ही खुदा ने हम सब को पैदा नहीं किया? फिर क्यैं हम अपने भाइयों से बेवफाई करके अपने बाप — दादा के 'अहद की बेहरमी करते हैं? 11 यहदाह ने बेवफाई की, इसाईल और येस्थलेम में मकस्त्व काम हुआ है। यहदाह ने खुदावन्द की पाकीज़गी को, जो उसको अज़ीज़ थी बेहृष्ट किया, और एक गैर मांबूद की बेटी ब्याह लाया। 12 खुदावन्द ऐसा करने वाले को, जिन्दा और जबाब दहिन्दा और रब्ब — उल — अफवाज के सामने कुर्बानी पेश करने वाले, या'कूब के खेमों से मुकन्ता' कर देगा। 13 फिर तुम्हारे 'आमाल की बजह से, खुदावन्द के मजबूत पर आह — ओ — नाला और अँसुओं की ऐसी कसरत है कि वह न तुम्हारे हादियों को देखेगा और न तुम्हारे हाथ की नज़र को खुशी से कुबल करेगा। 14 तोमीं तुम कहते हो, "वजह क्या है?" वजह ये है कि खुदावन्द तेरे और तेरी जवानी की बीची के बीच गवाह है, तुम उससे बेवफाई की है, अगरचे वह तेरी दोस्त और मनकूहा बींची है। 15 और क्या उसने एक ही को पैदा नहीं किया, बावजूद कि उसके पास और भी अवराह मौजूद थी? फिर क्यैं एक ही को पैदा किया? इसलिए कि खुदावतरस नस्त ऐसा हो। इसलिए तुम अपने नप्स से खुबरदार रहो, और कोई अपनी जवानी की बीची से बेवफाई न करो।" 16 क्यैंकि खुदावन्द इसाईल का खुदा फरमाता है, "मैं तलाक से बेज़ार हूँ, और उससे भी जो अपनी बीची पर जुल्म करता है, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, इसलिए तुम अपने नप्स से खुबरदार रहो ताकि बेवफाई न करो।" 17 तुमने अपनी बातों से खुदावन्द को बेज़ार कर दिया; तोमीं तुम कहते हो, "किस बात में हम ने उसे बेज़ार किया?" इसी में जो कहते हो कि "हर शख्स जो बुराई करता है, खुदावन्द की नज़र में नेक है, और वह उससे खूश है, और ये के 'अदूल का खुदा कहाँ हैं?"

3

देखो मैं अपने रस्ल को भेजूँगा और वह मेरे आगे राह दुस्त करेगा, और खुदावन्द, जिसके तुम तालिब हो, वह अचानक अपनी हैकल में आ मौजूद होगा। हाँ, 'अहद का रस्ल, जिसके तुम अरज़ान्द हो आएगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 2 लेकिन उसके अपने दिन की किसीमें ताब है? और जब उसका जहर होगा, तो कौन खड़ा रह सकेगा? क्यैंकि वह सुनार की आग और धोबी की साबुन की तरह है। 3 और वह चाँदी को ताने और पाक — साफ करने वाले की तरह बैठेगा, और बनी लावी को सोने और चाँदी की तरह पाक — साफ करेगा ताकि रास्तवाज़ी से खुदावन्द के सामने हादिये पेश करें। 4 तब यहदाह और येस्थलेम का हादिया खुदावन्द को पसन्द आएगा, जैसा गुज़रे दिनों और गुज़रे जग्मने में। 5 और मैं 'अदालत के लिए तुम्हारे नज़ीक आँख़ा और जादूगरों और बदकारों और झट्टी कसम खाने वालों के खिलाफ़, और उनके खिलाफ़ भी जो मजदूरों को मजदूरी नहीं देते, और बेवाओं और यतीमों पर सितम करते और मुसाफिरों की हक तल्फ़ी करते हैं और मुझ से नहीं डरते हैं, मुस्त'िद गवाह हूँगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 6 "क्यैंकि मैं

खुदावन्द ला — तब्दील हूँ, इसीलिए ऐ बनी या'कूब, तुम हलाक नहीं हुए। 7 तुम अपने बाप — दादा के दिनों से मेरे तौर तरीके से फिरे रहे और उनको नहीं माना। तुम मेरी तरफ र्झूँ हो, तो मैं तुम्हारी तरफ र्झूँ हूँगा रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है तेकिन तुम कहते हो कि 'हम किस बात में र्झूँ हों?' 8 क्या कोई आदमी खुदा को ठगेगा? लेकिन तुम मुझको ठगते हो और कहते हो, 'हम ने किस बात में तुझे ठगा?' दहेकी और हादिये में। 9 इसलिए तुम सख्त मला'उन हुए, क्यूँकि तुमने बल्कि तमाम कौम ने मुझे ठगा। 10 पूरी दहेकी जखरिखाने में लाओ, ताकि मेरे घर में खुराक हो। और इसी से मेरा इन्तिहान करो रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है, कि मैं तुम पर आसमान के दीनों को खोल कर बरकत बरसाता हूँ कि नहीं, यहाँ तक कि तुम्हारे पास उसके लिए जगह न रहे। 11 और मैं तुम्हारी खातिर टिड़ी को डाढ़ूँगा और वह तुम्हारी ज़मीन की फ़सल को बर्बाद न करेगी, और तुम्हारे ताकिस्तानों का फ़ल कच्चा न झड़ जाएगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 12 और सब कामें तुम को मुबारक कहेंगी, क्यूँकि तुम दिलकुशा मम्लुकत होगे, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 13 "खुदावन्द फरमाता है, तुम्हारी बातें मेरे खिलाफ़ बहुत सख्त हैं। तोमी तुम कहते हो, 'हम ने तेरी मुखालिफ़त में क्या कहा?' 14 तुमने तो कहा, 'खुदा की इबादत करना 'अबस है। रब्ब — उल — अफवाज के हृक्ष्मों पर 'अमल करना, और उसके सामने मातम करना बे — फ़ायदा है। 15 और अब हम मगस्तरों को नेकबज्जल कहते हैं। शरीर कामयाब होते हैं और खुदा को आजमाने पर भी रिहाई पाते हैं।" 16 तब खुदातरसों ने आपस में गुफ्तगूँ की, और खुदावन्द ने मुतवज्जिह होकर सुना और उनके लिए जो खुदावन्द से डरते और उसके नाम को याद करते थे, उसके सामने यादगार का दफ्तर लिखा गया। 17 रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है उस रोज़ वह मेरे लोग, बल्कि मेरी खास मिल्कियत होंगे; और मैं उन पर ऐसा रहीम हूँगा जैसा बाप अपने खिदमतगुज़र बेटे पर होता है। 18 तब तुम र्झूँ लाओगे, और सादिक और शरीर में और खुदा की इबादत करने वाले और न करने वाले में फ़र्क़ करोगे।

4 क्यूँकि देखो वह दिन आता है जो भट्टी की तरह सोजान होगा। तब सब मगस्तर और बदकिरदार भूसे की तरह होंगे और वह दिन उनको ऐसा जलाएगा कि शाख — ओ — बुन कुछ न छोड़ेगा, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 2 लेकिन तुम पर जो मेरे नाम की ताजीम करते हो, आफताब — ए — सदाकत तालीं अ होगा, और उसकी किरनों में शिफ्फा होगी; और तुम गावछाने के बछड़ों की तरह कूदो — फँदोगे। 3 और तुम शरीरों को पायमाल करोगे, क्यूँकि उस रोज़ वह तुम्हारे पाँव तले की राख होंगे, रब्ब — उल — अफवाज फरमाता है। 4 "तुम मेरे बन्दे मूसा की शरी'अत या'नी" उन फराइज़ — ओ — अहकाम को, जो मैंने होरिब पर तमाम बनी — इसाइल के लिए फरमाए, याद रख्यो। 5 देखो, खुदावन्द के बुजुर्ग और गजबनाक दिन के अने से पहले, मैं एलियाह नबी को तुम्हारे पास भेज़ूँगा। 6 और वह बाप का दिल बेटे की तरफ़, और बेटे का बाप की तरफ़ माइल करेगा; मुबादा मैं आँऊँ और ज़मीन को मला'उन करूँ।"

नया अहदनामा



ईसा ने कहा, “ऐ बाप, इन्हें मुआफ कर, क्योंकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।”

उन्होंने पच्ची डाल कर उस के कपड़े आपस में बाँट लिए।

लूका 23:34

मत्ती

1 इसा मसीह इबने दाऊद इबने इब्राहीम का नसबनामा। 2 इब्राहीम से इज्हाक़ पैदा हुआ, और इज्हाक़ से याकूब पैदा हुआ, और याकूब से यहदा और उस के भाई पैदा हुए; 3 और यहदा से फारस और जारह तमर से पैदा हुए, और फारस से हसरोन पैदा हुआ, और हसरोन से राम पैदा हुआ; 4 और राम से अमीनदाब पैदा हुआ, और अमीनदाब से नहसोन पैदा हुआ, और नहसोन से सलमोन पैदा हुआ; 5 और सलमोन से बो'अज़ राहब से पैदा हुआ, और बो'अज़ से ओबेद स्तुत से पैदा हुआ, और ओबेद से यस्ती पैदा हुआ; 6 और यस्ती से दाऊद बादशाह पैदा हुआ। 7 और दाऊद से सुलैमान उस 'औरत से पैदा हुआ जो पहले ऊरियाह की बीवी थी; 7 और सुलैमान से रहब'आम पैदा हुआ, और रहब'आम से अबियाह पैदा हुआ, और अबियाह से आसा पैदा हुआ; 8 और आसा से यहसफत पैदा हुआ, और यहसफत से यराम पैदा हुआ, और यराम से उज्जियाह पैदा हुआ; 9 उज्जियाह से यूताम पैदा हुआ, और यूताम से अखञ्ज पैदा हुआ, और अखञ्ज से हिजकियाह पैदा हुआ; 10 और हिजकियाह से मनस्ती पैदा हुआ, और मनस्ती से अमून पैदा हुआ, और अमून से यूसियाह पैदा हुआ; 11 और गिरफतार होकर बाबूल जाने के ज्ञाने में यूसियाह से यकुनियाह और उस के भाई पैदा हुए; 12 और गिरफतार होकर बाबूल जाने के बाद यकुनियाह से सियालतीपल पैदा हुआ, और सियालतीपल से जस्ल्बाबूल पैदा हुआ। 13 और जस्ल्बाबूल से अबीहद पैदा हुआ, और अबीहद से इलियाकीम पैदा हुआ, और इलियाकीम से आजोर पैदा हुआ; 14 और आजोर से सदोक़ पैदा हुआ, और सदोक़ से अर्खीम पैदा हुआ, और अर्खीम से इलीहद पैदा हुआ; 15 और इलीहद से इलीअजर पैदा हुआ, और अलीअजर से मतान पैदा हुआ, और मतान से याकूब पैदा हुआ; 16 और याकूब से यसुफ़ पैदा हुआ, ये उस मरियम का शौहर था जिस से ईंसा पैदा हुआ, जो मसीह कहलाता है। 17 पस सब पुर्णे इब्राहीम से दाऊद तक चौदह पुर्णे हुईं, और दाऊद से लेकर गिरफतार होकर बाबूल जाने तक चौदह पुर्णे, और गिरफतार होकर बाबूल जाने से लेकर मसीह तक चौदह पुर्णे हुईं। 18 अब ईंसा मसीह की पैदाइश इस तरह हुई कि जब उस की माँ मरियम की मंगनी यसुफ़ के साथ हो गईः तो उन के एक साथ होने से पहले वो स्थ — उल कुदूस की कुदरत से हामिला पाई गई। 19 पस उस के शौहर यसुफ़ ने जो रास्तबाज था, और उसे बदनाम नहीं करना चाहता था। उसे चुपके से छोड़ देने का इरादा किया। 20 वो ये बांते सोची ही रहा था, कि खुदावन्द के फरिश्ते ने उसे खबाब में दिखाई देकर कहा, ऐ यसुफ़ “इबने दाऊद अपनी बीवी मरियम को अपने यहाँ ले आने से न डऱ, क्यूंकि जो उस के पेट में है, वो स्थ — उल — कुदूस की कुदरत से है। 21 उस के बेटा होगा और तू उस का नाम ईंसा रखना, क्यूंकि वह अपने लोगों को उन के गुनाहों से नजात देगा।” 22 यह सब कुछ इस लिए हुआ कि जो खुदावन्द ने नबी के ज़रिए कहा था, वो पूरा हो कि। 23 “देखो एक कुँवारी हामिला होगी। और बेटा जनेंगी और उस का नाम इमानुएल रखेंगे,” जिसका मतलब है — खुदा हमारे साथ। 24 पस यसुफ़ ने नीद से जाग कर वैसा ही किया जैसा खुदावन्द के फरिश्ते ने उसे हक्म दिया था, और अपनी बीवी को अपने यहाँ ले गया। 25 और उस को न जाना जब तक उस के बेटा न हुआ और उस का नाम ईंसा रख्या।

2 जब ईंसा होरेदेस बादशाह के ज्ञाने में यहदिया के बैत — लहम में पैदा हुआ। तो देखो कई मज़सी पूरब से येस्शलेम में ये कहते हुए आए। 2 “यहदियों का बादशाह जो पैदा हुआ है, वो कहाँ है? क्यूंकि पूरब में उस का सितारा देखकर हम उसे सज्जा करने आए हैं।” 3 यह सुन कर होरेदेस बादशाह

और उस के साथ येस्शलेम के सब लोग घबरा गए। 4 और उस ने कौम के सब सरदार कहिनों और आलिमों को जमा करके उन से पूछा, “मसीह की पैदाइश कहाँ होनी चाहिए?” 5 उन्होंने उस से कहा, यहदिया के बैत-लहम में, क्यूंकि नबी के ज़रिए यूँ लिखा गया है कि, 6 “ऐ बैत-लहम, यहदिया के ‘इलाके’ तू यहदाह के हाकिमों में हरगिज सब से छोटा नहीं। क्यूंकि तुझ में से एक सरदार निकलेगा जो मेरी कौम इमाईंल की निगहबानी करेगा।” 7 इस पर होरेदेस ने मज़सियों को चुपके से बुता कर उन से मालमूत किया कि वह सितारा किस बक्त दिखाई दिया था। 8 और उन्हें ये कह कर “बैतलहम भेजा कि जा कर उस बच्चे के बारे में ठीक — ठीक मालमूत करो और जब वो मिले तो मुझे खबर दो ताकि मैं भी आ कर उसे सिज्दा करूँ।” 9 वो बादशाह की बात सुनकर रवाना हुए और देखो, जो सितारा उन्होंने पूरब में देखा था; वो उनके आगे — आगे चला; यहाँ तक कि उस जगह के ऊपर जाकर ठहर गया जहाँ वो बच्चा था। 10 वो सितारे को देख कर निहायत खुश हुए। 11 और उस घर में पहँचकर बच्चे को उस की माँ मरियम के पास देखा; और उसके आगे गिर कर सिज्दा किया। और अपने डिब्बे खोल कर सोना, और लुबान और मुर उसको नज़र किया। 12 और होरेदेस के पास पिर न जाने की दिलायत ख्वाब में पाकर दूसरी राह से अपने मुल्क को रवाना हुए। 13 जब वो रवाना हो गए तो देखो खुदावन्द के फरिश्ते ने यसुफ़ को ख्वाब में दिखाई देकर कहा, “उठ बच्चे और उस की माँ को साथ ले कर मिस के लिए रवाना हो गया। 15 और होरेदेस के मरने तक वही रहा ताकि जो खुदावन्द ने नबी के ज़रिए कहा था, वो पूरा हो “कि मिस से मैंने अपने बेटे को बुलाया।” 16 जब होरेदेस ने देखा कि मज़सियों ने मेरे साथ हैंसी की तो निहायत गुस्सा हुआ और आदीमी भेजकर बैतलहम और उसकी सब सरहदों के अन्दर के उन सब लड़कों को कल्प करवा दिया जो दो — दो बरस के या इस से छोटे थे, उस बक्त के हिसाब से जो उसने मज़सियों से तहकीक की थी। 17 उस बक्त वो बात पूरी हुई जो यमियाह नबी के ज़रिए कही गई थी। 18 “रामा में आवाज सुनाई दी, रोना और बड़ा मातम। राखिल अपने बच्चे को रो रही है और तसल्ली कबूल नहीं करती, इसलिए कि वो नहीं है।” 19 जब होरेदेस मर गया, तो देखो खुदावन्द के फरिश्ते ने मिस में यसुफ़ को ख्वाब में दिखाई देकर कहा कि। 20 उठ इस बच्चे और इसकी माँ को लेकर इमाईंल के मुल्क में चला जा, क्यूंकि जो बच्चे की जान लेने वाले थे वो मर गए। 21 पस वो उठा और बच्चे और उस की माँ को ले कर मुल्क — ए — इमाईंल में लौट आया। 22 मगर जब सुना कि अर्खिलाउस अपने बाप होरेदेस की जगह यहदिया में बादशाही करता है तो वहाँ जाने से डरा, और ख्वाब में दिलायत पाकर गलील के 'इलाके' को रवाना हो गया। 23 और नासरत नाम एक शहर में जा बसा, ताकि जो नवियों की मारिफत कहा गया था वो पूरा हो, “वह नासरी कहलाएगा।”

3 उन दिनों में युहन्ना बपतिस्मा देवे बाला आया और यहदिया के वीरने में ये ऐलान करने लगा कि, 2 “तौबा करो, क्यूंकि आस्मान की बादशाही नज़दीक आ गई है।” 3 ये वेही है जिस का जिक्र यसायाह नबी के ज़रिए यूँ हुआ कि वीरने में पुकारने वाले की आवाज आती है, कि खुदावन्द की राह तैयार करो! उसके रास्ते सीधे बनाओ। 4 ये युहन्ना ऊँटों के बालों की पोशाक पहने और चमड़े का पटका अपनी कमर से बाँधे रहता था। और इसकी खुराक टिड़ियाँ और जंगली शहद था। 5 उस बक्त येस्शलेम, और सारे यहदिया और यरदन और उसके आस पास के सब लोग निकल कर उस के पास गए। 6 और अपने गुनाहों का इकरार करके। यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया? 7 मगर

जब उसने बहुत से फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मे के लिए अपने पास आते देखा तो उनसे कहा कि, ऐ सॉप के बच्चों तुम को किस ने बता दिया कि अने वाले गजब से भागो? 8 पस तौबा के मुताबिक फल लाओ। 9 और अने दिलों में ये कहने का ख्याल न करो कि अद्वाहम हमारा बाप है क्यूंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि खुदा “इन पत्थरों से अब्दहाम के लिए औलाल बैटा कर सकता है। 10 अब दरखतों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखड़ा हुआ है पस, जो दरखत अच्छा फल नहीं लाता वो काटा और आग में डाला जाता है। 11 ‘मैं तो तुम को तौबा के लिए पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन जो मैं बाद आता है मुझ से बड़ा है, मैं उसकी जूतियाँ उठाने के लायक नहीं। वो तुम को स्ह — उल कुददस और आग से बपतिस्मा देगा। 12 उस का छाज उसके हाथ में है और वो अने खलियान को खूब साफ करेगा, और अपने गेहँ बों को तो खिते में जमा करेगा, मगर भूमी को उस आग में जलाएगा जो बुझने वाली नहीं।” 13 उस बक्त इसा गलील से यर्दन के किनारे यहना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया। 14 मगर यहना ये कह कर उसे मनह करने लगा, “मैं आप तुझ से बपतिस्मा लेने का मोहताज हूँ, और तू मेरे पास आया है?” 15 इसा ने जबाब में उस से कहा, “अब तु होने ही दे, क्यूंकि हमें इसी तरह सारी रास्तबाजी परी करना मुनासिब है। इस पर उस ने होने दिया।” 16 और इसा बपतिस्मा लेकर फैरून पानी के ऊपर आया। और देखो, उस के लिए आस्मान खुल गया और उस ने खुदा की स्ह को कबूतर की शक्ल में उतरते और अपने ऊपर आते देखा। 17 और देखो आस्मान से ये आवाज आई: “ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ।”

4 उस बक्त स्ह इसा को जंगल में ले गया ताकि इब्लीस से आजमाया जाए। 2 और चालीस दिन और चालीस रात फकाका कर के आखिर को उसे भूख लगी। 3 और आजमाने वाले ने पास आकर उस से कहा “अगर तु खुदा का बेटा है तो फरमा कि ये पत्थर रोटियाँ बन जाएँ।” 4 उस ने जबाब में कहा, “लिखा है आदमी सिर्फ रोटी ही से जिन्दा न रहेगा; बल्कि हर एक बात से जो खुदा के मैंह से निकलती है।” 5 तब इब्लीस उसे मुकद्दस शहर में ले गया और हैक्ल के कंगरे पर खड़ा करके उस से कहा। 6 “अगर तु खुदा का बेटा है तो अपने आपको मीचे पिरा दे, क्यूंकि लिखा है कि वह तो बारे में अपने फरिशों को हुक्म देगा, और वह तुझे अपने हाथों पर उठा लेंगे ताकि ऐसा न हो कि तेरे पैर को पत्थर से डेस लगे।” 7 इसा ने उस से कहा, “ये भी लिखा है; तु खुदाबन्द अपने खुदा की आजमाइश न कर।” 8 फिर इब्लीस उसे एक बहत ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और दुनिया की सब सलतनतें और उन की शान — ओ शौकत उसे दिखाई। 9 और उससे कहा कि अगर तु झूक कर मुझे सज्दा करे तो ये सब कुछ तुझे दे दँगा 10 इसा ने उस से कहा, “ऐ शैतान दूर हो क्यूंकि लिखा है, तु खुदाबन्द अपने खुदा को सज्दा कर और सिर्फ उनी की इबादत कर।” 11 तब इब्लीस उस के पास से चला गया; और देखो फरिश्ते आ कर उस की खिदमत करने लगे। 12 जब उस ने सुना कि यहना पकड़वा दिया गया तो गलील को रवाना हुआ; 13 और नासर तो छोड़ कर कफरनस्म में जा बसा जो झील के किनारे जबलून और नफताली की सरहद पर है। 14 ताकि जो यसाँयाह नबी की मारिफत कहा गया था, वो पूरा हो। 15 “जबलून का इलाका, और नफताली का इलाका, दरिया की राह यदन के पार, गैर कौमों की गलील: 16 याँनी जो लोग अच्छे में बैठे थे, उन्होंने बड़ी रौशनी देखी; और जो मौत के मुल्क और साए में बैठे थे, उन पर रोशनी चमकी।” 17 उस बक्त से इसा ने एलान करना और ये कहना शुरू किया “तौबा करो, क्यूंकि आस्मान की बादशाही नजदीक आ गई है।” 18 उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों याँनी शमैन को जो पतरस कहलाता है, और उस के भाई

आन्द्रियास को। झील में जाल डालते देखा, क्यूंकि वह मछली पकड़ने वाले थे। 19 और उन से कहा, “मेरे पीछे चले आओ, मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊँगा।” 20 वो फैरून जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए। 21 वहाँ से आगे बढ़ कर उस ने और दो भाइयों याँनी, जब्दी के बेटे याकूब और उस के भाई यहना को देखा। कि अने बाप जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों की मरम्मत कर रहे हैं। और उन को बुलाया। 22 वह फैरून नाव और अपने बाप को छोड़ कर उस के पीछे हो लिए। 23 इसा पुे गलील में फिरता रहा, और उनके इबादतखानों में तालीम देता, और बादशाही की खुशखबरी का एलान करता और लोगों की हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करता रहा। 24 और उस की शोहरत पूरे सब — ए — सूरिया में फैल गई, और लोग सब बिमारों को जो तरह — तरह की बीमारियों और तकलीफों में गिरफ्तार थे; और उन को जिन में बदर्दहे थी, और मिर्गी वालों और मफ्लज़ों को उस के पास लाए और उसने उन को अच्छा किया। 25 और गलील, और दिक्पुलिस, और येस्सलेम, और यहदिया और यर्दन के पार से बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली।

5 वो इस भीड़ को देख कर ऊँची जगह पर चढ़ गया। और जब बैठ गया तो उस के शारिर्द उस के पास आए। 2 और वो अपनी ज़बान खोल कर उन को यूँ तालीम देने लगा। 3 मुबारिक हैं वो जो दिल के गरीब हैं क्यूंकि आस्मान की बादशाही उन्हीं की है। 4 मुबारिक हैं वो जो गमानी है, क्यूंकि वो तो सल्ली पाएँगे। 5 मुबारिक हैं वो जो हलीम हैं, क्यूंकि वो ज़मीन के वारिस होंगे। 6 मुबारिक हैं वो जो रास्तबाजी के भूखे और प्यासे हैं, क्यूंकि वो सेर होंगे। 7 मुबारिक हैं वो जो रहमदिल हैं, क्यूंकि उन पर रहम किया जाएगा। 8 मुबारिक हैं वो जो पाक दिल है, क्यूंकि वह खुदा को देखेंगे। 9 मुबारिक हैं वो जो सुलह करते हैं, क्यूंकि वह खुदा के बेटे कहलाएँगे। 10 मुबारिक हैं वो जो रास्तबाजी की वजह से सताए गए हैं, क्यूंकि आस्मान की बादशाही उन्हीं की है। 11 जब लोग मेरी वजह से तुम को लान — तान करेंगे, और सताएँगे; और हर तरह की बुरी बातें तुम्हारी निस्बत नाहक कहेंगे; तो तुम मुबारिक होंगे। 12 खुशी करना और निहायत शादमान होना क्यूंकि आस्मान पर तुम्हारा अज्ञ बड़ा है। इसलिए कि लोगों ने उन नवियों को जो तुम से पहले थे, इसी तरह सततया था। 13 तुम ज़मीन के नमक हो। लोकिन अगर नमक का मज़ा जाता रहे तो वो किस चीज़ से नमकीन किया जाएगा? फिर वो किसी काम का नहीं सिवा इस के कि बाहर फेंका जाए और आदमियों के फैरे के नीचे रौदी जाए। 14 तुम दुनिया के नर हो। जो शहर पहाड़ पर बसा है वो छिप नहीं सकता। 15 और चिरागा जलाकर पैमाने के नीचे नहीं बल्कि चिरागादान पर रखते हैं; तो उस से घर के सब लोगों को रोशनी पहुँचती है। 16 इसी तरह तुम्हारी रोशनी आदमियों के सामने चमके, ताकि वो तुम्हारे नेक कामों को देखकर तुम्हारे बाप की जो आस्मान पर है बड़ाई करें। 17 “ये न समझो कि मैं तौरेत या नवियों की किताबों को मन्सूख करने आया हूँ, मन्सूख करने नहीं बल्कि पूरा करने आया हूँ। 18 क्यूंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, जब तक आस्मान और ज़मीन टल न जाएँ, एक नुक़ा या एक शोशा तौरेत से हरगिज़ न टलेगा जब तक सब कुछ पूरा न हो जाए। 19 पस जो कोई इन छोटे से छोटे हक्मों में से किसी भी हक्म को तोड़ेगा, और यही आदमियों को सिखाएगा। वो आस्मान की बादशाही में सब से छोटा कहलाएगा; लेकिन जो उन पर अमल करेगा, और उन की तालीम देगा; वो आस्मान की बादशाही में बड़ा कहलाएगा। 20 क्यूंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अगर तुम्हारी रास्तबाजी आलिमों और फरीसियों की रास्तबाजी से ज्यादा न होगी, तो तुम आस्मान की बादशाही में हरगिज़ दाखिल न होंगे।” 21 तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था कि खून न करना जो कोई खून करेगा वो

'अदालत की सज्जा के लायक होगा। 22 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि, 'जो कोई अपने भाई पर गुस्सा होगा, वो 'अदालत की सज्जा के लायक होगा; कोई अपने भाई को पागल कहेगा, वो सदे — ऐ अदालत की सज्जा के लायक होगा; और जो उसको बेवकूफ कहेगा, वो जहन्नुम की आग का सजावार होगा।

(Geenna g1067) 23 पस अगर तू कूर्बानगाह पर अपनी कुर्बानी करता है और वहाँ तुझे याद आए कि मैं भाई को मुझ से कुछ शिकायत है। 24 तो वही कुर्बानगाह के आगे अपनी नज़र छोड़ दे और जाकर पहले अपने भाई से मिलाप कर तब आकर अपनी कुर्बानी कर। 25 जब तक तू अपने मुझे इसे के साथ रास्ते में है, उससे जल्द सुलह कर ले, कहीं ऐसा न हो कि मुझे तुझे मुस्तिक के हवाले कर दे और मुस्तिक तुझे सिपाही के हवाले कर दे; और तू कैद खाने में डाला जाए। 26 मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक तू कौड़ी — कौड़ी अदा न करेगा वहाँ से हरगिज न छुटेगा। 27 'तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, 'जिना न करना।' 28 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि जिस किसी ने बूरी ख्वाहिश से किसी 'औरत पर निगाह की वो अपने दिल में उस के साथ जिना कर चुका। 29 पस अगर तेरी दहनी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर अपने पास से फेंक दे; क्यूँकि तेरे लिए यही बेहतर है; कि तेरे 'आज्जा' में से एक जाता रहे और तेरा सारा बदन जहन्नुम में न डाला जाए। (Geenna g1067)

30 और अगर तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उस को काट कर अपने पास से फेंक दे। क्यूँकि तेरे लिए यही बेहतर है; कि तेरे 'आज्जा' में से एक जाता रहे और तेरा सारा बदन जहन्नुम में न जाए।" (Geenna g1067) 31 ये भी कहा गया था, जो कोई अपनी बीवी को छोड़े उसे तलाकनामा लिख दे। 32 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ, कि जो कोई अपनी बीवी को हरामकारी के सिवा किसी और बजह से छोड़ दे वो तुम से जिना करता है; और जो कोई उस छोड़ी हुई से शादी करे वो भी जिना करता है। 33 "फिर तुम सुन चुके हो कि अगलों से कहा गया था 'झूटी कसम न खाना; बल्कि अपनी कसमें खुदावन्द के लिए पूरी करना।' 34 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि बिल्कुल कसम न खाना न तो आस्मान की क्यूँकि वो खुदा का तख्त है, 35 न जमीन की, क्यूँकि वो उस के पैरों की चौकी है। न येस्शलेम की क्यूँकि वो बुजुर्ग बादशाह का शहर है। 36 न अपने सर की कसम खाना क्यूँकि तू एक बाल को भी सफेद या काला नहीं कर सकता। 37 बल्कि तुम्हारा कलाम 'हाँ — हाँ' या 'नहीं — नहीं में' हो क्यूँकि जो इस से ज्यादा है वो बदी से है।" 38 "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, आँख के बदले आँख, और दाँत के बदले दाँत। 39 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ कि शरीर का मुकाबिला न करना बल्कि जो कोई तेरे दहने गाल पर तमाचा मारे दूसरा भी उसकी तरफ फेर दे। 40 और अगर कोई तुझ पर नालिश कर के तेरा कुरता लेना चाहे; तो चोपा भी उसे ले लेने दे। 41 और जो कोई तुझे एक कोस बेगार में ले जाएँ; उस के साथ दो कोस चला जा। 42 जो कोई तुझ से माँग उसे दे, और जो तुझ से कर्ज चाहे उस से मूँह न मोड़।" 43 "तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, अपने पड़ोसी से मूँह रख और अपने दुश्मन से दुश्मनी। 44 लेकिन मैं तुम से ये कहता हूँ, अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो और अपने सतने वालों के लिए दुआ करो। 45 ताकि तुम अपने बाप के जो आस्मान पर है, बेटे ठहरो; क्यूँकि वो अपने सूरज को बदों और नेकों दोनों पर चमकाता है; और रास्तबाजों और नारास्तों दोनों पर मेह बरसाता है। 46 क्यूँकि अगर तुम अपने मुहब्बत रखने वालों ही से मुहब्बत रखेंगे तो तुम्हारे लिए क्या अज्ज है? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते।" 47 अगर तुम सिर्फ अपने भाइयों को सलाम करो; तो क्या ज्यादा करते हो? क्या गैर कौमों के लोग भी ऐसा नहीं करते? 48 पस चाहिए कि तुम कामिल हो जैसा तुम्हारा आस्मानी बाप कामिल हो।

6 "खबरदार! अपने रास्तबाजी के काम आदमियों के सामने दिखावे के लिए न करो, नहीं तो तुम्हारे बाप के पास जो आस्मान पर है; तुम्हारे लिए कुछ अज्ज नहीं है।" 2 पस जब तुम खैरत करो तो अपने आगे नरसिंगा न बजाओ, जैसा रियाकार 'इबादतश्वानों और कूचों में करते हैं; ताकि लोग उनकी बड़ाई करें मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो अपना अज्ज पा चुके। 3 बल्कि जब तू खैरत करो तो जो तेरा दहना हाथ करता है; उसे तेरा बाँया हाथ न जाने। 4 ताकि तेरी खैरत पोशीदी रहे, इस सूरत में तेरा आसमानी बाप जो पोशीदीरी में देखता है तुझे बदला देगा। 5 जब तुम दुआ करो तो रियाकारों की तरह न बनो; क्यूँकि वो 'इबादतश्वानों में और बाजारों के मोड़ों पर खड़े होकर दुआ करना पसन्द करते हैं, ताकि लोग उन को देखें, मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो अपना बदला पा चुके। 6 बल्कि जब तू दुआ करो तो अपनी कोठरी में जा और दरवाजा बंद करके अपने आसमानी बाप से जो पोशीदीरी में हैं; दुआ कर इस सूरत में तेरा आसमानी बाप जो पोशीदीरी में देखता है तुझे बदला देगा। 7 और दुआ करते बक्त गैर कौमों के लोगों की तरह बक — बक न करो क्यूँकि वो समझते हैं; कि हमारे बहुत बोलने की बजह से हमारी सुनी जाएगी। 8 पस उन की तरह न बनो; क्यूँकि तुम्हारा आसमानी बाप तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम किन — किन चीजों की मोहताज हो। 9 पस तुम इस तरह दुआ किया करो, "ऐ हमारे बाप, तू जो आसमान पर है तेरा नाम पाक माना जाए। 10 तेरी बादशाही आए। तेरी मर्जी जैसी आसमान पर पूरी होती है जर्मीन पर भी हो। 11 हमारी रोज़ की रोटी आज हमें दे। 12 और जिस तरह हम ने अपने कुसूरवारों को मु'आफ किया है; तू भी हमारे कुसूरों को मु'आफ कर। 13 और हमें आज्माइश में न ला, बल्कि बुराई से बचा; क्यूँकि बादशाही और कुरदर और जलाल हमेशा तेरे ही हैं; आर्मीन।" 14 इसलिए कि अगर तुम आदमियों के कुसूर मु'आफ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मु'आफ न करेगा। 15 और अगर तुम आदमियों के कुसूर मु'आफ न करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुम को मु'आफ न करेगा। 16 जब तुम रोज़ा रख्लो तो रियाकारों की तरह अपनी सूरत उदास न बनाओ; क्यूँकि वो अपना मूँह बिगाड़ते हैं; ताकि लोग उन को रोजादार जाने। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो अपना अज्ज पा चुके। 17 बल्कि जब तू रोज़ा रख्ले तो अपने सिर पर तेल डाल और मूँह धो। 18 ताकि आदमी नहीं बल्कि तेरा बाप जो पोशीदीरी में है तुझे रोजादार जाने। इस सूरत में तेरा बाप जो पोशीदीरी में देखता है तुझे बदला देगा। 19 अपने बास्ते जर्मीन पर माल जमा न करो, जहाँ पर कीड़ा और जँग खराब करता है; और जहाँ चोर नक्ब लगाते और चुराते हैं। 20 बल्कि अपने लिए आसमान पर माल जमा करो; जहाँ पर न कीड़ा खराब करता है; न जँग और न वहाँ चोर नक्ब लगाते और चुराते हैं। 21 क्यूँकि जहाँ तेरा माल है वही तेरा दिल भी लगा रहेगा। 22 बदन का चराग आँख है। पस अगर तेरी आँख दुस्त हो तो तेरा पूरा बदन रोशन होगा। 23 अगर तेरी आँख खराब हो तो तेरा सारा बदन तारीक होगा। पस अगर जो रोशनी जो तुझ में है तारीक हो तो तारीकी कैनी बड़ी होगी। 24 कोई आदमी दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता; क्यूँकि या तो एक से दुश्मनी रखेंगे और दूसरे से मुहब्बत या एक से मिला रहेंगे और दूसरे को नाचीज जानेगा; तुम खुदा और दौलत दोनों की खिदमत नहीं कर सकते। 25 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ; कि अपनी जान की फिक्र न करना कि हम क्या खाँसेंगे या क्या पीँसेंगे, और न अपने बदन की कि क्या पहनेंगे; क्या जान खूराक से बेटे हैं तो बदन पोशाक से बढ़ कर नहीं। 26 हवा के परिन्दों को देखो कि न बोते हैं न काटते न कोठियाँ में जमा करते हैं; तो भी तुम्हारा आसमानी बाप उनको खिलाता है क्या तुम उस से ज्यादा कद्र नहीं रखते? 27 तुम में से ऐसा कौन है जो फिक्र करके अपनी उम्र एक घड़ी भी बढ़ा सके? 28 और पोशाक के लिए क्यूँ फिक्र करते हों; जंगली

सोसन के दरखतों को गौर से देखो कि वो किस तरह बढ़ते हैं; वो न मेहनत करते हैं न कातते हैं। 29 तोमी मैं तुम से कहता हूँ, कि सुलैमान भी बावजूद अपनी सारी शानो शौकत के उन में से किसी की तरह कपड़े पहने न था। 30 पस जब खुदा मैदान की घास को जो आज है और कल तंदूर में झोंकी जाएगी; ऐसी पोशाक पहनाना है, तो ऐ कम ईमान वालों “तुम को क्यूँ न पहनाएगा? 31 “इस लिए फिक्कमन्द होकर ये न कहो, हम क्या खाएँगे? या क्या पिएँगे? या क्या पहनेंगे?” 32 क्यैंकि इन सब चीजों की तलाश में गैर कौमें रहती हैं; और तुम्हारा आसमानी बाप जानता है, कि तुम इन सब चीजों के मोहताज हो। 33 बल्कि तुम पहले उसकी बादशाही और उसकी रास्ताजी की तलाश करो तो ये सब चीजें भी तुम को मिल जाएँगी। 34 पस कल के लिए फिक्र न करो क्यैंकि कल का दिन अपने लिए आप फिक्र कर लेगा; आज के लिए आज ही का दृश्य काफ़ी है।

7 बुराई न करो, कि तुम्हारी भी बुराई न की जाए। 2 क्यैंकि जिस तरह तुम बुराई करते हो उसी तरह तुम्हारी भी बुराई की जाएगी और जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा। 3 तू क्यूँ अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है और अपनी आँखें के शहरीर पर गौर नहीं करता? 4 और जब तेरी ही आँखें में शहरीर हैं तो तू अपने भाई से क्यूँ कर कह सकता है, ‘ला, तेरी आँखें में से तिनका निकाल दूँ? 5 ऐ रियाकार, पहले अपनी आँखें में से तो शहरीर निकाल, पिर अपने भाई की आँखें में से तिनके को अच्छी तरह देख कर निकाल सकता है। 6 पाक चीज़ कुत्तों को ना दो, और अपने मोती मुअरों के आगे न डालो, ऐसा न हो कि वो उनको पाँव के लिए रोंदें और पलट कर तुम को फांडें। 7 माँगो तो तुम को दिया जाएगा। ढूँडो तो पाओगे; दरवाजा खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। 8 क्यैंकि जो कोई माँगता है उसे मिलता है; और जो ढूँडता है वो पाता है और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। 9 तुम में ऐसा कौन सा आदीम है, कि अगर उसका बेटा उससे रोटी माँगे तो उसे पथर दे? 10 या अगर मछली माँगे तो उसे सोंप दे? 11 पस जबकि तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छी चीजें देना जानते हो, तो तुम्हारा बाप जो आसमान पर है; अपने माँगने वालों को अच्छी चीजें क्यूँ न देगा। 12 पस जो कुछ तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें वही तुम भी उनके साथ करो; क्यैंकि तैरत और नवियों की तात्त्विम यही है। 13 तंग दरवाजे से दाखिल हो, क्यैंकि वो दरवाजा चौड़ा है, और वो रास्ता चौड़ा है जो हलाकत को पहुँचाता है; और उससे दाखिल होने वाले बहुत हैं। 14 क्यैंकि वो दरवाजा तंग है और वो रास्ता सुकड़ा है जो जिन्दगी को पहुँचाता है और उस के पाने वाले थोड़े हैं। 15 इठे नवियों से खबरदार रहो! जो तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं; मगर अन्दर से फांडने वाले भेड़ियों की तरह हैं। 16 उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे; क्या ज़ाइडियों से अंगूर या ऊँट कटारों से अंजर तोड़ते हैं? 17 इनी तरह हर एक अच्छा दरखत अच्छा फल लाता है और बुरा दरखत बुरा फल लाता है। 18 अच्छा दरखत बुरा फल नहीं लासकता, न बुरा दरखत अच्छा फल ला सकता है। 19 जो दरखत अच्छा फल नहीं लाता वो काट कर आग में डाला जाता है। 20 पस उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे। 21 “जो मुझ से ऐ खुदावन्द! ‘ऐ खुदावन्द!’ कहते हैं उन में से हर एक आसमान की बादशाही में दाखिल न होगा। मगर वही जो मेरे आस्मानी बाप की मर्जी पर चलता है। 22 उस दिन बहत से मुझसे कहेंगे, ‘ऐ खुदावन्द! खुदावन्द! क्या हम ने तेरे नाम से नबुव्वत नहीं की, और तेरे नाम से बदस्हों को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत से मोजिजे नहीं दिखाए?’ 23 उस दिन मैं उन से साफ़ कह दूँगा, मेरी तुम से कभी वाकफियत न थी, ऐ बदकारो! मेरे सामने से चले जाओ।” 24 “पस जो कोई मेरी यह बातें सुनता और उन पर अमल करता है

वह उस अकल्तमन्द आदमी की तरह ठहरेगा जिस ने चट्टान पर अपना घर बनाया। 25 और मैं बरसा और पानी चढ़ा और आन्धियाँ चली और उस घर पर टक्करें लगी; लेकिन वो न गिरा क्यैंकि उस की बुनियाद चट्टान पर डाली गई थी। 26 और जो कोई मेरी यह बातें सुनता है और उन पर अमल नहीं करता वह उस बेवकूफ आदमी की तरह ठहरेगा जिस ने अपना घर रेत पर बनाया। 27 और मैं बरसा और पानी चढ़ा और आन्धियाँ चली, और उस घर को सदमा पहुँचा और वो गिर गया, और बिल्कुल बरबाद हो गया।” 28 जब ईसा ने यह बातें खत्म की तो ऐसा हआ कि भीड़ उस की तात्त्विम से हैरान हुई। 29 क्यैंकि वह उन के आलिमों की तरह नहीं बल्कि साहिब — ए — इतियार की तरह उनको तात्त्विम देता था।

8 जब वो उस पहाड़ से उतरा तो बहुत सी भीड़ उस के पीछे हो ली। 2 और देखो: एक कौदी ने पास आकर उपर सज्जा किया और कहा, “ऐ खुदावन्द! अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है।” 3 उसने हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, तू पाक — साफ़ हो जा।” वह फैरन कौदी से पाक — साफ़ हो गया। 4 ईसा ने उस से कहा, “खबरदार! किनी से न कहना बल्कि जाकर अपने आप को काहिन को दिखा; और जो नज़र मूसा ने मुकर्रर की है उसे गुजरान, ताकि उन के लिए गवाही हो।” 5 जब वो कफ़रनहम में दाखिल हुआ तो एक सबेदार उसके पास आया; और उसकी मिन्नत करके कहा। 6 “ऐ खुदावन्द, मेरा खादिम फालिज का मारा घर में पड़ा है; और बहुत ही तकलीफ मैं है।” 7 उस ने उस से कहा, “मैं आ कर उसे शिफा दूँगा।” 8 सबेदार ने जबाब में कहा “ऐ खुदावन्द, मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए; बल्कि सिर्फ़ ज़बान से कह दे तो मेरा खादिम शिफा पाएगा।” 9 क्यैंकि मैं भी दूरे के इतियार में हूँ, और सिपाही मेरे मातहत हैं; जब एक से कहता हूँ, जा! तो वह जाता है और दूरे से ‘आ!’ तो वह आता है। और अपने नौकर से ‘ये कर’ तो वह करता है।” 10 ईसा ने ये सुनकर तूञ्ज़बू किया और पीछे आने वालों से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि मैं मैं ने इमाईल में भी ऐसा इमान नहीं पाया। 11 और मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत सारे पूरब और पश्चिम से आकर अब्राहाम, इज़हाक और याकूब के साथ आसमान की बादशाही की जियाकत में शरीक होंगे। 12 मगर बादशाही के बेटे बाहर अंधेरे में डाले जाएँगे; जहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।” 13 और ईसा ने सबेदार से कहा, “जा�! जैसा तू ने यकीन किया तो लिए वैसा ही हो।” और उसी धड़ी खादिम से शिफा पाई। 14 और ईसा ने पतरस के घर में आकर उसकी सास को बुखार में पड़ी देखा। 15 उस ने उसका हाथ छुआ और बुखार उस पर से उतर गया; और वो उठ खड़ी हुई और उसकी खिदमत करने लगी। 16 जब शाम हुई तो उसके पास बहुत से लोगों को लाए; जिन में बदस्हों थी उसने बदस्हों को ज़बान ही से कह कर निकाल दिया; और सब बीमारों को अच्छा कर दिया। 17 ताकि जो यसायाह नवी के जरिए कहा गया था, वो पूरा हो: “उसने आप हमारी कमज़ोरियाँ ले ली और बीमारियाँ उठा लीं।” 18 जब ईसा ने अपने चारों तरफ बहुत सी भीड़ देखी तो पार चलने का हुक्म दिया। 19 और एक आलिम ने पास आकर उस से कहा “ऐ उस्ताद, जहाँ कहीं भी तू जाएगा मैं तैरे पीछे चलूँगा।” 20 ईसा ने उस से कहा, “लोमड़ियों के भठ होते हैं और हवा के परिनदों के घोंसले, मगर इबने आदम के लिए सर रखने की भी जगह नहीं।” 21 एक और शारिर्द ने उस से कहा, “ऐ खुदावन्द, मुझे इज़ाजत दे कि पहले जाकर अपने बाप को दफ़न करूँ।” 22 ईसा ने उससे कहा, “तू मेरे पीछे चल और मुर्दों को अपने मुर्दे दफ़न करने दे।” 23 जब वो नाव पर चढ़ा तो उस के शारिर्द उसके साथ हो लिए। 24 और देखो इलाल में ऐसा बड़ा तूफ़ान आया कि नाव लहरों से छिप गई, मगर वो सोता रहा। 25 उन्होंने पास आकर उसे जागाया और कहा “ऐ खुदावन्द, हमें

बचा, हम हलाक हुए जाते हैं”। 26 उसने उनसे कहा, “ऐ कम ईमान वालो! डरते क्यूँ हो?” तब उसने उठकर हवा और पानी को डॉटा और बड़ा अम्न हो गया। 27 और लोग तांउज्जुब करके करने लगे “ये किस तरह का आदमी है कि हवा और पानी सब इसका हृक्षम मानते हैं।” 28 जब वो उस पार गदरीनियों के मुल्क में पहुँचा तो दो आदमी जिन में बदस्तूर थीं; कब्रों से निकल कर उससे मिले; वो ऐसे तंग मिजाज थे कि कोई उस ग्रास्ते से गुरुर नहीं सकता था। 29 और देखो उन्होंने चिल्लाकर कहा “ऐ खुदा के बेटे हमें तुझ से क्या काम? क्या तू इसलिए यहाँ आया है कि बक्त से पहले हमें ऐजाब में डालते हैं।” 30 उनसे कुछ दूर बहुत से सूर्यों का गोल चर रहा था। 31 पस बदस्तूरों ने उसकी मिन्नत करके कहा “अगर तू हम को निकालता है तो हमें सूर्यों के गोल में भेज दे।” 32 उसने उनसे कहा “जाओ।” वो निकल कर सूर्यों के अन्दर चली गईं; और देखो; सारा गोल किनारे पर से झपट कर ईल में जा पड़ा और पानी में डब मरा। 33 और चाराने वाले भागे और शहर में जाकर सब माजरा और उनके हालात जिन में बदस्तूर थी बयान किया। 34 और देखो सारा शहर ईसा से मिलने को निकला और उसे देख कर मिन्नत की, कि हमारी सरहदों से बाहर चला जा।

9 फिर वो नाव पर चढ़ कर पार गया; और अपने शहर में आया। 2 और देखो, लोग एक फालिज के मारे हुए को जो चारपाई पर पड़ा हुआ था उसके पास लाएँ; ईसा ने उसका ईमान देखकर मफ्तूर से कहा “बेटा, इत्मीनान रख। तेरे गुनाह मुआफ है।” 3 और देखो कुछ आलिमों ने अपने दिल में कहा, “ये कुँकुँ बकता है” 4 ईसा ने उनके खुयाल मालूम करके कहा, “तुम क्यूँ अपने दिल में बूझे खुयाल लाते हो? 5 असान क्या है? ये कहना तेरे गुनाह मुआफ हुए; या ये कहना; उठ और चल फिर। 6 लेकिन इसलिए कि तुम जान लो कि इन्हें आदम को जमीन पर गुनाह मुआफ करने का इच्छियार है,” उसने फालिज का मारे हुए से कहा, “उठ, अपनी चारपाई उठा और अपने घर चला जा।” 7 वो उठ कर अपने घर चला गया। 8 लोग ये देख कर डर गए; और खुदा की बड़ाई करने लगे; जिसने आदिमियों को ऐसा इच्छियार बख्शा। 9 ईसा ने वहाँ से आगे बढ़कर मर्ती नाम एक शख्स को महसूल की चौकी पर बैठे देखा; और उस से कहा, “ऐ पीछे हो लो।” वो उठ कर उसके पीछे हो लिया।

10 जब वो घर में खाना खाने बैठा; तो ऐसा हआ कि बहुत से महसूल लेने वाले और गुनहगार आकर ईसा और उसके शाशिर्दी के साथ खाना खाने बैठे। 11 फरीसियों ने ये देख कर उसके शाशिर्दी से कहा, “तुम्हारा उत्साद महसूल लेने वालों और गुनहगारों के साथ क्यूँ खाता है?” 12 उसने ये सुनकर कहा, “तन्दस्तों को हकीम की जस्त नहीं बल्कि बीमारों को। 13 मगर तुम जाकर उसके माने मालूम करो: मैं कूर्बानी नहीं बल्कि रहम पसन्द करता हूँ। क्यूँकि मैं रास्तबाजों को नहीं बल्कि गुनहगारों को बुलाने आया हूँ।” 14 उस बक्त यहन्ना के शाशिर्दी ने उसके पास आकर कहा, “क्या बजह है कि हम और फरीसी तो अक्सर रोजा रखते हैं, और तेरे शाशिर्दी रोजा नहीं रखते हैं?” 15 ईसा ने उस से कहा, “क्या बारती जब तक दुर्ला उनके साथ है, मातम कर सकते हैं? मगर वो दिन आएंगे; कि दुर्ला उनसे जुदा किया जाएगा; उस बक्त वो रोजा रखेंगे। 16 कोरे कपड़े का पैवन्द पुरानी पोशाक में कोई नहीं लगाता क्यूँकि वो पैवन्द पोशाक में से कुछ र्धीच लेता है और वो ज्यादा फट जाती है। 17 और नई मय पुरानी मशक्कों में नहीं भरते वर्ना मशक्के फट जाती हैं, और मय बर जाती है, और मश्के बरबाद हो जाती हैं; बल्कि नई मय नई मशक्कों में भरते हैं; और वो दोनों बच्ची रहती हैं।” 18 वो उन से ये बातें कही रहा था, कि देखो एक सरदार ने आकर उसे सज्जा किया और कहा, “मेरी बेटी अभी मरी है लेकिन तू चलकर अपना हाथ उस पर रख तो वो जिन्दा हो जाएगी।” 19 ईसा उठ कर

अपने शाशिर्दी समेत उस के पीछे हो लिया। 20 और देखो; एक ‘औरत ने जिसके बारह बरस से खुन जारी था; उसके पीछे आकर उस की पोशाक का किनारा छुआ। 21 क्यूँकि वो अपने जी में कहती थी; अगर सिफ़ उसकी पोशाक ही छू लैंगी “तो अच्छी हो जाऊँगी।” 22 ईसा ने फिर कर उसे देखा और कहा, “बेटी, इत्मीनान रख! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा कर दिया।” पस वो ‘औरत उसी धड़ी अच्छी हो गई। 23 जब ईसा सरदार के घर में आया और बांसुरी बजाने वालों को और भीड़ को शोर मचाते देखा। 24 तो कहा, “हट जाओ! क्यूँकि लड़की मरी नहीं बल्कि सोती है।” वो उस पर हँसेंसे लगे। 25 मगर जब भीड़ निकाल दी गई तो उस ने अन्दर जाकर उसका हाथ पकड़ा और लड़की उठी। 26 और इस बात की शोहरत उस तमाम इलाके में फैल गई। 27 जब ईसा वहाँ से आगे बढ़ा तो दो अन्ये उसके पीछे ये पुकारते हुए चले “ऐ इन — ए — दाऊद, हम पर रहम कर।” 28 जब वो घर में पहुँचा तो वो अन्ये उसके पास आए और “ईसा ने उसके कहा “क्या तुम को यकीन है कि मैं ये कर सकता हूँ?” उन्होंने उस से कहा “हाँ खुदावन्द।” 29 फिर उस ने उन की आँखें छु कर कहा, “तुम्हारे यकीन के मुताबिक तुम्हारे लिए हो।” 30 और उन की आँखें खुल गईं और ईसा ने उनको ताकीद करके कहा, “खबरदार, कोई इस बात को न जाने।” 31 मगर उन्होंने निकल कर उस तमाम इलाके में उसकी शोहरत फैला दी। 32 जब वो बाहर जा रहे थे, तो देखो लोग एक गँगे को जिस में बदस्तूर थी उसके पास लाए। 33 और जब वो बदस्तूर निकाल दी गई तो गँगा बोलने लगा; और लोगों ने तांउज्जुब करके कहा, “इसाईल में ऐसा कभी नहीं देखा गया।” 34 मगर फरीसियों ने कहा, “ये तो बदस्तूरों के सरदार की मदद से बदस्तूरों को निकालता है।” 35 ईसा सब शहरों और गाँव में फिरता रहा, और उनके इबादतगारों में तालीम देता और बादशाही की खुशखबरी का एलान करता और — और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी दूर करता रहा। 36 और जब उसने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया; क्यूँकि वो उन भेड़ों की तरह थे जिनका चरवाहा न हो बूरी हालत में पड़े थे। 37 उस ने अपने शाशिर्दी से कहा, “फ़सल बहुत है, लेकिन मजदूर थोड़े हैं।” 38 पस फ़सल के मालिक से मिन्नत करो कि वो अपनी फ़सल काटने के लिए मजदूर भेज दे।”

10 फिर उस ने अपने बारह शाशिर्दी को पास बुला कर उनको बदस्तूरों पर इच्छियार बख्शा कि उनको निकालें और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करें। 2 और बारह रसलों के नाम ये हैं; पहला शमैन, जो पतरस कहलाता है और उस का भाई अन्द्रियास ज़ब्दी का बेटा याकूब और उसका भाई यहन्ना। 3 फिलिप्पुस, बरतुल्माई, तोमा, और मर्ती महसूल लेने वाला। 4 हलफ़ी का बेटा याकूब और दूरी शमैन कनानी और यहदाह इस्करियोती जिस ने उसे पकड़ा भी दिया। 5 इन बारह को ईसा ने भेजा और उनको बदस्तूर देकर कहा, “गैर कौमों की तरफ न जाना और सामरियों के किसी शहर में भी दाखिल न होना।” 6 बल्कि इसाईल के घराने की खोई हैं भेड़ों के पास जाना। 7 और चलते — चलते ये एलान करना आसान की बादशाही नज़दीक आ गई है। 8 बीमारों को अच्छा करना; मुर्दों को जिलाना कैदियों को पाक साफ करना बदस्तूरों को निकालना; तुम ने मुफ्त पाया मुफ्त ही देना। 9 न सोना अपने कमरबन्द में रखना — न चाँदी और न पैसे। 10 रास्ते के लिए न झोली लेना न दो — दो करते न ज़तियाँ न लाठी; क्यूँकि मजदूर अपनी खराक का हक्कदार है।” 11 “जिस शहर या गाँव में दाखिल हो मालूम करना कि उस में कौन लायक है और जब तक वहाँ से रखाना न हो उसी के यहाँ रहना। 12 और घर में दाखिल होते बक्त उसे दूँआ — ए — खैर देना। 13 आग वो घर लायक हो तो तुम्हारा सलाम उसे पहुँचे; और अगर लायक न हो तो तुम्हारा

सलाम तुम पर फिर आए। 14 और अगर कोई तुम को कुबूल न करे, और तुम्हारी बातें न सुने तो उस घर या शहर से बाहर निकलते बक्त अपने पैरों की धूल झाड़ देना। 15 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि 'अदालत के दिन उस शहर की निस्त त्र सदूम और अमूराके इलाके का हाल ज्यादा बर्दशत के लायक होगा।' 16 'देखो, मैं तुम को भेजता हूँ, गोया भेड़ों को भेड़ियों के बीच पस साँपों की तरह होशियार और कबूतरों की तरह सीधे बना।' 17 मगर आदिमियों से खबरदार रहो, क्यूँकि वह तुम को अदालतों के हवाले करेंगे; और अपने इबादतखानों में तुम को कोडे मारेंगे। 18 और तुम मेरी वजह से हाकिमों और बादशाहों के सामने हाजिर किए जाओगे; ताकि उनके और गैर कौमों के लिए गवाही हो। 19 लेकिन जब वो तुम को पकड़वाएँगे; तो फिक्र न करना कि हम किस तरह कहें या क्या कहें; क्यूँकि जो कुछ कहना होगा उसी बक्त तुम को बताया जाएगा। 20 क्यूँकि बोलने वाले तुम नहीं बल्कि तुम्हारे आसमानी बाप का स्थ हैं; जो तुम में बोलता है।' 21 'भाई को भाई कल्त के लिए हवाले करेगा और बेटे को बाप और बेटा अपने माँ बाप के बराहिलाक खड़े होकर उनको मरवा डालेंगे। 22 और मेरे नाम के जरिए से सब लोग तुम से अदावत रखेंगे; मगर जो आखिर तक बर्दशत करेगा वही नजात पाएगा। 23 लेकिन जब तुम को एक शहर साताएं तो दूसरे को भाग जाओ; क्यूँकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम इस्साइल के सब शहरों में न फिर चुके होगे कि 'इन — ए — आदम आजाएगा।' 24 'शारिर्द अपने उस्ताद से बड़ा नहीं होता, न नौकर अपने मालिक से। 25 शारिर्द के लिए ये काफी है कि अपने उस्ताद की तरह हो; और नौकर के लिए ये कि अपने मालिक की तरह जब उन्होंने घर के मालिक को बालजबूल कहा; तो उसके घराने के लोगों को क्यूँ न कहेंगे।' 26 'पस उसे न डरो; क्यूँकि कोई चीज़ ढकी नहीं जो खोली न जाएगी और न कोई चीज़ छिपी है जो जानी न जाएगी। 27 जो कुछ मैं तुम से अन्दरे में कहता हूँ; उजाले में कहो और जो कुछ तुम कान में सुनते हो छतों पर उसका लालान करो। 28 जो बदन को कल्पन करते हैं और रुह को कल्पन नहीं कर सकते उन से न डरो बल्कि उसी से डरो जो स्थ और बदन दोनों को जहन्नुम में हलाक कर सकता है। (Geenna g1067) 29 क्या पैसे की दो चिड़ियाँ नहीं बिकती? और उन में से एक भी तुम्हारे बाप की मर्जी के बाहर ज़मीन पर नहीं गिर सकती। 30 बल्कि तुम्हारे सर के बाल भी सब गिने हुए हैं। 31 पस डरो नहीं; तुम्हारी कट तो बहुत सी चिड़ियों से ज्यादा है।' 32 'पस जो कोई आदिमियों के सामने मेरा इकरार करेगा; मैं भी अपने बाप के सामने जो आसमान पर है उसका इकरार करूँगा। 33 मगर जो कोई आदिमियों के सामने मेरा इकरार करेगा मैं भी अपने बाप के जो आसमान पर है उसका इकरार करूँगा।' 34 'ये न समझो कि मैं ज़मीन पर सुलह करवाने आया हूँ; सुलह करवाने नहीं बल्कि तलवार चलवाने आया हूँ।' 35 क्यूँकि मैं इस्साइल आया हूँ, कि आदमी को उसके बाप से और बेटी को उस की माँ से और बह को उसकी सास से जुदा कर दूँ। 36 और आदमी के दुश्मन उसके घर के ही लोग होंगे।' 37 'जो कोई बाप या माँ को मुझ से ज्यादा अजीज़ रखता है वो मेरे लायक नहीं; और जो कोई बेटे या बेटी को मुझ से ज्यादा अजीज़ रखता है वो मेरे लायक नहीं। 38 जो कोई अपनी सलीब न उठाए और मेरे पीछे न चले वो मेरे लायक नहीं। 39 जो कोई अपनी जान बचाता है उसे खोएगा; और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोता है उसे बचाएगा।' 40 'जो तुम को कुबूल करता है वो मुझे कुबूल करता है और जो मुझे कुबूल करता है वो मेरे भेजने वाले को कुबूल करता है। 41 जो नवी के नाम से नवी को कुबूल करता है, वो नवी का अञ्ज पाएगा; और जो रास्तबाज के नाम से रास्तबाज को कुबूल करता है वो रास्तबाज का अञ्ज पाएगा। 42 और जो

कोई शारिर्द के नाम से इन छोटों में से किसी को सिर्फ़ एक प्याला ठन्डा पानी ही पिलाएगा, मैं तुम से सच कहता हूँ वो अपना अञ्ज हरणिज़ न खोएगा।'

11 जब इसा अपने बाहर शारिर्दों को हक्म दे चुका, तो ऐसा हुआ कि वहाँ से चला गया ताकि उके शहरों में तालीम दे और एलान करे। 2 यहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कैदखाने में मसीह के कामों का हाल सुनकर अपने शारिर्दों के जरीए उससे पुछावा भेजा। 3 'अने वाला तु ही है या हम दूसरे की राह देखें?' 4 इसा ने जवाब में उनसे कहा, 'जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो जाकर यहन्ना से बयान कर दो। 5 कि अच्यु देखते और लांगड़े चलते फिरते हैं, कौही पाक साफ किए जाते हैं और बहरे सुनते हैं और मर्दे जिन्दा किए जाते हैं और गरीबों को खुशखबरी सुनाई जाती है।' 6 और मुबारिक वो है जो मेरी बजह से ठोकर न खाए।' 7 जब वो रवाना हो लिए तो इसा ने यहन्ना के बारे में लोगों से कहना शुरू किया कि 'युम वीरान में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकंडे को? 8 तो फिर क्या देखने गए थे क्या महीन कपड़े पहने हुए शख्स को? देखो जो महीन कपड़े पहनते हैं वो बादशाहों के घरों में होते हैं। 9 तो फिर क्युँ गए थे? क्या एक नवी को देखें? हाँ मैं तुम से कहता हूँ बल्कि नवी से बड़े को। 10 ये वही है जिसके बारे में लिखा है कि देख मैं अपना पैगम्बर तेरे अगे भेजता हूँ जो तेरा रास्ता तेरे अगे तैयार करेगा।' 11 'मैं तुम से सच कहता हूँ, जो औरतों से पैदा हुए हैं, उन में यहन्ना बपतिस्मा देने वाले से बड़ा कोई नहीं हुआ, लेकिन जो आसमान की बादशाही में छोड़ा है वो उस से बड़ा है।' 12 और यहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दिनों से अब तक आसमान की बादशाही पर जोर होता रहा है; और ताकतवर उसे छीन लेते हैं। 13 क्यूँकि सब नवियों और तैरत ने यहन्ना तक न्युनत बना की। 14 और चाहो तो मानो; परियाह जो आनेवाला था, यही है। 15 जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले।' 16 'पस इस जमाने के लोगों को मैं किस की मिसाल दूँ? वो उन लड़कों की तरह हैं, जो बाजारों में बैठे हुए अपने साथियों को पुकार कर कहते हैं।' 17 हम ने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजाई और तुम न नाचे। हम ने मातम किया और तुम ने छाती न पीटी। 18 क्यूँकि यहन्ना न खाता आया न पीता और वो कहते हैं उस में बदरह है। 19 इन — ए — आदम खाता पीता आया। और वो कहते हैं, देखो खाऊ और शराबी आदी महसूल लेने वालों और गुहाहारों का यार। मगर हिक्मत अपने कामों से रास्ता साखित हुई है।' 20 वो उस बक्त उन शहरों को मोलामत करने लगा जिनमें उसके अकसर मोजिज़े जाहिर हुए थे; क्यूँकि उन्होंने तौबा न की थी। 21 'ऐ खुराजीन, तुझ पर अफसोस! ऐ बैत — सैदा, तुझ पर अफसोस! क्यूँकि जो मोजिज़े तुम में हुए अगर सूर और सैदा में होते तो वो टाट ओढ़ कर और खाक में बैठ कर कब के तौबा कर लेते। 22 मैं तुम से सच कहता हूँ; कि 'अदालत के दिन सूर और सैदा का हाल तुम्हारे हाल से ज्यादा बर्दशत के लायक होगा।' 23 और ऐ कफरनहम, क्या तु आसमान तक बुलन्द किया जाएगा? तु तो आलम — ए अर्वाह में उत्तरोगा क्यूँकि जो मोजिज़े तुम में जाहिर हुए अगर सदूम में होते तो आज तक काईम रहता। (Hadés g86) 24 मगर मैं तुम से कहता हूँ कि 'अदालत के दिन सदूम के इलाके का हाल तेरे हाल से ज्यादा बर्दशत के लायक होगा।' 25 उस बक्त इसा ने कहा, 'ऐ बाप, आसमान — औ — ज़मीन के खुदावन्द मैं तेरी हम्मट करता हूँ कि तू ने यह बातें समझदारों और अकलमन्दों से छिपाई और बच्चों पर जाहिर की। 26 हाँ ऐ बाप, क्यूँकि ऐसा ही तुझे पसन्द आया।' 27 'मेरे बाप की तरफ से सब कुछ मुझ सौंपा गया और कोई बेटे को नहीं जानता आया न खाता आया।' 28 'मेरे बाप के दिन सूर और सैदा का हाल तुम्हारे हाल से ज्यादा बर्दशत के लायक होगा।' 29 मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो और मुझ से सीखो, क्यूँकि मैं हलीम हूँ।'

और दिल का फिरोतन तो तुम्हारी जानें आराम पाएँगी, 30 क्यूँकि मेरा जूआ मुलायम है और मेरा बोझ हल्का।”

12 उस वक्त ईसा सबत के दिन खेतों में हो कर गया, और उसके शागिर्दों को भ्रु लारी और वो बालियां तोड़ — तोड़ कर खाने लगे। 2

फरीसियों ने देख कर उससे कहा “देख तौरे शागिर्द वो काम करते हैं जो सबत के दिन करना जायज़ नहीं।” 3 उसने उनसे कहा “क्या तुम ने ये नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उस के साथी भर्खा थे; तो उसने क्या किया? 4 वो क्यूँकर खुदा के घर में गया और नज़र की रोटियाँ खाई जिनको खाना उसको जायज़ न था; न उसके साथियों को मगर सिर्फ़ कहिनों को? 5 क्या तुम ने तौरें में नहीं पढ़ा कि काहिन सबत के दिन हैकल में सबत की बेहरमती करते हैं; और बेकुसूर रहते हैं? 6 लेकिन मैं तुम से कहता हूँ कि यहाँ वो है जो हैकल से भी बड़ा है। 7 लेकिन आगर तुम इसका मतलब जानो कि, मैं कुर्बानी नहीं बल्कि, रहम पसन्द करता हूँ। तो बेकुसूरों को कुसूरवार न ठहराते। 8 क्यूँकि इन — ए — आदम सबत का मालिक है।” 9 वो वहाँ से चलकर उन के इबादतखाने में गया। 10 और देखो; वहाँ एक आदमी था जिस का हाथ सखा हआ था उहोंने उस पर इल्जाम लगाने के ‘इशादे से ये पुछा, “क्या सबत के दिन शिफा देना जायज़ है।” 11 उसने उनसे कहा, “तुम में ऐसा कौन है जिसकी एक भेड़ हो और वो सबत के दिन गड़े में गिर जाए तो वो उसे पकड़कर न निकाले? 12 पस आदमी की कद्र तो भेड़ से बहत ही ज्यादा है; इसलिए सबत के दिन नेकी करना जायज़ है।” 13 तब उसने उस आदमी से कहा “अपना हाथ बढ़ा।” उस ने बढ़ाया और वो दूसरे हाथ की तरह दुस्त हो गया। 14 इस पर फरीसियों ने बाहर जाकर उसके बराबिलाफ़ मशवरा किया कि उसे किस तरह हल्तक करें। 15 ईसा ये मालूम करके वहाँ से रवाना हआ; और बहत से लोग उसके पीछे हो लिए और उसने सब को अच्छा कर दिया, 16 और उनको ताकीद की, कि मुझे जारी न करना। 17 ताकि जो यसायाह नबी की मारिफ़त कहा गया था वो पूरा हो। 18 देखो, ये मेरा खादिम है जिससे मैं ने चुना मेरा प्यारा जिससे मेरा दिल खुश है। मैं अपना स्व हिस्से पर डालूँगा, और ये गैर कौमों को इन्साफ़ की खबर देगा। 19 ये न झगड़ा करेगा न शोर, और न बाजारों में कोई इसकी आवाज़ सुनेगा। 20 ये कुचले हुए संकंडे को न तोड़ो और धूँवों उठे हुए सन को न बुझाएँगा; जब तक कि इन्साफ़ की फ़तह न कराए। 21 और इसके नाम से गैर कौमों उम्मीद रख खेंगी। 22 उस वक्त लोग उसके पास एक अंधे गैरों को लाएँ; उसने उसे अच्छा कर दिया चुनाँचे वो गैरों बोलने और देखने लगा। 23 “सारी भीड़ हैरान होकर कहने लगी, क्या ये इन — ए — आदम हैं?” 24 फरीसियों ने सुन कर कहा, “ये बदर्हों के सरदार बालजबल की मदद के बगैर बदर्हों को नहीं निकालता।” 25 उसने उनके ख्यालों को जानकर उनसे कहा, “जिस बादशाही में फूट पड़ती है वो बीरान हो जाती है और जिस शहर या घर में फूट पड़ेगी वो काईम न रहेगा। 26 और अगर शैतान ही शैतान को निकालते तो वो आप ही अपना मुखालिफ़ हो गया; फिर उसकी बादशाही क्यूँकर कर काईम रहेगी? 27 आगर मैं बालजबल की मदद से बदर्हों को निकालता हूँ तो तुम्हारे बेटे किस की मदद से निकालते हैं? पस वही तुम्हारे मुस्तिफ़ होंगे। 28 लेकिन अगर मैं खुदा के स्व की मदद से बदर्हों को निकालता हूँ तो खुदा की बादशाही तुम्हारे पास आ पहुँची। 29 या क्यूँकर कोई आदमी किसी ताकतवर के घर में धूस कर उसका माल लूट सकता है; जब तक कि पहले उस ताकतवर को न बाँध ले? फिर वो उसका घर लट लेगा। 30 जो मेरे साथ नहीं वो मेरे खिलाफ़ है और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वो बिखेरता है। 31 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि आदमियों का हर गुनाह और कुफ़ तो मुआफ़ किया जाएगा; मगर जो कुफ़ स्व के हक्क में हो वो मुआफ़ न किया जाएगा।” 32 “और जो कोई इन — ए —

आदम के खिलाफ़ कोई बात कहेगा वो तो उसे मुआफ़ की जाएगी; मगर जो कोई स्व — उल — कुदूस के खिलाफ़ कोई बात कहेगा; वो तो उसे मुआफ़ न की जाएगी न इस अलम में न आने वाले में।” (aión g165) 33 “या तो दरखत को भी अच्छा कहो; और उसके फल को भी अच्छा, या दरखत को भी बुरा कहो और उसके फल को भी बुरा; क्यूँकि दरखत फल से पहचाना जाता है। 34 ऐसे सांप के बच्चों! तुम बुरे होकर क्यूँकर अच्छी बातें कह सकते हों? क्यूँकि जो दिल में भरा है वही मूँह पर आता है। 35 अच्छा आदमी अच्छे खजाने से अच्छी चीज़े निकालता है; बुरा आदमी बुरे खजाने से बुरी चीज़े निकालता है। 36 मैं तुम से कहता हूँ, कि जो निकम्मी बात लोग कहेंगे; ‘अदालत के दिन उसका हिसाब देंगे। 37 क्यूँकि तू अपनी बातों की वजह से रास्तबाज़ ठहराया जाएगा; और अपनी बातों की वजह से कुसूरवार ठहराया जाएगा।’ 38 इस पर कुछ आलिमों और फरीसियों ने जबाब में उससे कहा, “ऐ उस्ताद हम तुझ से एक निशान देखना चाहते हैं।” 39 उस ने जबाब देकर उनसे कहा, इस जमाने के बुरे और बेईमान लोग निशान तलब करते हैं; मगर यहन्ना नवी के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा। 40 क्यूँकि जैसे यहन्ना तीन रात तीन दिन मछली के पेट में रहा, वैसे ही इबन आदम तीन रात तीन दिन जमाने के अन्दर रहेगा। 41 निनवे शहर के लोग ‘अदालत के दिन इस जमाने के लोगों के साथ खड़े होकर इनको मुजरिम ठहरायेंँ; क्यूँकि उन्होंने यहन्ना के एलान पर तौबा कर ली; और देखो, यह वो है जो यहन्ना से भी बड़ा है। 42 दक्खिन की मलिका ‘अदालत के दिन इस जमाने के लोगों के साथ उठकर इनको मुजरिम ठहराएँगी; क्यूँकि वो दुनिया के किनारे से सुलैमान की हिक्मत सुनने को आईं; और देखो यहाँ वो है जो सुलैमान से भी बड़ा है। 43 “जब बदर्ह आदमी में से निकलती है तो सुखे मकामों में आराम ढूँढ़ती फिरती है, और नहीं पाती। 44 तब कहती है, मैं अपने उस घर में फिर जाऊँगी जिससे निकली थी। और आकर उसे खाली और ड़ाड़ा हुआ और आरास्ता पाती है। 45 फिर जा कर और सात रहें अपने से बुरी अपने साथ ले आती है और वो दाखिल होकर वहाँ बसती है; और उस आदमी का पिछला हात पहले से बदतर हो जाता है, इस जमाने के बुरे लोगों का हाल भी ऐसा ही होगा।” 46 जब वो भीड़ से ये कह रहा था, उसकी माँ और भाई बाहर खड़े थे, और उससे बात करना चाहते थे। 47 किसी ने उससे कहा, “देख तेरी माँ और भाई बाहर खड़े हैं और तुम से बात करना चाहते हैं।” 48 उसने खबर देने वाले को जबाब में कहा “कौन है मेरी माँ और कौन है मेरी भाई?” 49 फिर अपने शागिर्दों की तरफ हाथ बढ़ा कर कहा, “देखो, मेरी माँ और मेरे भाई ये हैं। 50 क्यूँकि जो कोई मेरे आस्मानी बाप की मर्जी पर चले वही मेरा भाई, मेरी बहन और माँ है।”

13 उसी रोज़ ईसा घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा। 2 उस के पास एसी बड़ी भीड़ जमा हो गई, कि वो नाव पर चढ़ बैठा, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। 3 और उसने उनसे बहत सी बातें मिसालों में कही “देखो एक बोने वाला बीज बोने निकलता। 4 और बोते बक्त कुछ दाने राह के किनारे परि और परिन्दों ने अकर उन्हें चुग लिया। 5 और कुछ पथरीली जमीन पर गिरे जहाँ उनको बहत मिट्टी न मिट्टी और गहरी मिट्टी न मिलने की बजह से जल्द उग आए। 6 और जब सूरज निकला तो जल गए और जड़ न होने की बजह से सुख गए। 7 और कुछ झाड़ियों में गिरे और झाड़ियों ने बढ़ कर उनको दबा लिया। 8 और कुछ अच्छी जमीन पर गिरे और फल लाए; कुछ सौ गुना कुछ साठ गुना कुछ तीस गुना। 9 जो सुनना चाहता है वो सुन ले।” 10 शागिर्दों ने पास आ कर उससे पछा “तु उनसे मिसालों में क्या बातें करता है?” 11 उस ने जबाब में उनसे कहा “इसलिए कि तुम को आस्मान की बादशाही के राज की समझ दी गई है, मगर उनको नहीं दी गई। 12 क्यूँकि

जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उसके पास ज्यादा हो जाएगा; और जिसके पास नहीं है उस से वो भी ले लिया जाएगा; जो उसके पास है। 13 मैं उनसे मिसालों में इसलिए बातें कहता हूँ; कि वो देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते और नहीं समझते। 14 उनके हक में यसायाह की ये नव्यूवत पूरी होती है कि तुम कानों से सुनोगे पर हरगिज न समझोगे, और आँखों से देखोगे और हरगिज मालूम न करोगे। 15 “क्यूंकि इस उम्मत के दिल पर चर्ची छा गई है, और वो कानों से कँचा सुनते हैं; और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं; ताकि ऐसा न हो कि आँखों से मालूम करें और कानों से सुनें और दिल से समझें और सूख लाएँ और मैं उनको शिफा बरबाँ।” 16 “लेकिन मुबारिक है तुम्हारी आँखें क्यूंकि वो देखती हैं और तुम्हारे कान इसलिए कि वो सुनते हैं। 17 क्यूंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि बहुत से नवियों और रास्तबाजों की आरज़ू थी कि जो कुछ तुम देखते हो देखें मगर न देखा और जो बातें तुम सुनते हो सनें मगर न सुनी।” 18 “पस बोनेवाले की मिसाल सुनो। 19 जब कोई बादशाही का कलाम सुनता है और समझता नहीं तो जो उसके दिल में बोया गया था उसे वो शैतान छीन ले जाता है ये वो है जो राह के किनारे बोया गया था। 20 और वो पथरीली जमीन में बोया गया; ये वो है जो कलाम को सुनता है, और उसे फैरून खुशी से कुबूल कर लेता है। 21 लेकिन अपने अन्दर जड़ नहीं रखता बल्कि चन्द रोज़ा है, और जब कलाम के बजह से महीनीत या ज़ूत्म बर्पा होता है तो फैरून ठोकर खाता है। 22 और जो झाड़ियों में बोया गया, ये वो है जो कलाम को सुनता है और दुनिया की फिर्क और दौलत का फ़रेब उस कलाम को दबा देता है; और वो बे फल रह जाता है। (aiōn g165) 23 और जो अच्छी जमीन में बोया गया, ये वो है जो कलाम को सुनता और समझता है और फल भी लाता है; कोई सो गुना फलता है, कोई साठ गुना, और कोई तीस गुना।” 24 उसने एक और मिसाल उनके सामने पेश करके कहा, “आसमान की बादशाही उस आदमी की तरह है; जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। 25 मगर लोगों के सोते में उसका दुश्मन आया और गेहूँ में कड़वे दाने भी बोया गया। 26 पस जब पनियाँ निकली और बालें आईं तो वो कड़वे दाने भी दिखाई दिए। 27 नौकरों ने आकर घर के मालिक से कहा, ‘ऐ खुदाबन्द क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? उस में कड़वे दाने कहाँ से आ गए?’ 28 उस ने उनसे कहा, ये किसी दुश्मन का काम है, नौकरों ने उससे कहा, ‘तो क्या तू चाहता है कि हम जाकर उनको जमा करें।’ 29 उस ने कहा, नहीं, ऐसा न हो कि कड़वे दाने जमा करने में तुम उनके साथ गेहूँ भी उखाड़ लो। 30 कटाई तक दोनों को इक्षु बढ़ने दो, और कटाई के बक्त भी काटने वालों से कह द्यो कि पहले कड़वे दाने जमा कर लो और जलाने के लिए उनके गढ़े बाँध लो और गेहूँ मेरे खिले में जमा कर दो।” 31 उसने एक और मिसाल उनके सामने पेश करके कहा, “आसमान की बादशाही उस राई के दानेकी तरह है जिसे किसी आदमी ने लेकर अपने खेत में बो दिया। 32 वो सब बीजों से छोटा तो है मगर जब बढ़ता है तो सब तरकारियों से बड़ा और ऐसा दरखत हो जाता है, कि हवा के परिन्दे आकर उसकी डालियों पर बरसाए करते हैं।” 33 उस ने एक और मिसाल उनको सुनाई। “आसमान की बादशाही उस खुमार की तरह है जिसे किसी ‘औरत ने ले कर तीन पैमाने आटे में मिला दिया और वो होते होते सब खुमार हो गया।” 34 ये सब बातें इसा ने भीड़ से मिसालों में कहीं और बाहर मिसालों के बीच उनसे कुछ न कहता था। 35 ताकि जो नवी के जरिए कहा गया था वो पूरा हो “मैं मिसालों में अपना मुँह खोलूँगा, मैं उन बातों को ज़ाहिर करूँगा जो बिना — ए — आलम से छिपी रही हैं।” 36 उस बक्त को भीड़ को छोड़ कर घर में गया और उस के शारिर्दोंने उस के पास आकर कहा, “खेत के कड़वे दाने की मिसाल हमें समझा दे।” 37 उस ने जबाब में उन से

कहा, “अच्छे बीज का बोने वाला इबने आदम है। 38 और खेत दुनिया है और अच्छा बीज बादशाही के फर्जन्द और कड़वे दाने उस शैतान के फर्जन्द हैं। 39 जिस दुश्मन ने उन को बोया वो इब्लीस है। और कटाई दुनिया का आखिर है और काटने वाले फरिश्ते हैं। (aiōn g165) 40 पस जैसे कड़वे दाने जमा किए जाते और आग में जलाए जाते हैं। (aiōn g165) 41 इन — ए — आदम अपने फरिश्तों को भेजेगा; और वो सब ठोकर खिलाने वाली चीजें और बदकारों को उस की बादशाही में से जमा करेगे। 42 और उनको आग की भट्टी में डाल देंगे वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा। 43 उस बक्त रास्तबाज अपने बाप की बादशाही में मूरज की तरह चमकेंगे; जिसके कान हाँ वो सुन ले!” 44 “आसमान की बादशाही खेत में छिपे खजाने की तरह है जिसे किसी आदमी ने पाकर छिपा दिया और खुशी के मारे जाकर जो कुछ उसका था; बेच डाला और उस खेत को खरीद लिया।” 45 “फिर आसमान की बादशाही उस सौदागर की तरह है, जो उम्दा मोतियों की तलाश में था। 46 जब उसे एक बेशकीमीती मोती मिला तो उस ने जाकर जो कुछ उस का था बेच डाला और उसे खरीद लिया।” 47 “फिर आसमान की बादशाही उस बड़े जाल की तरह है; जो दरिया में डाला गया और उस ने हर किस्म की मछलियाँ समेट ली। 48 और जब भर गया तो उसे किनारे पर खीच लाएँ; और बैठ कर अच्छी — अच्छी तो बरतनों में जमा कर ली और जो खराब थी फेंक दी। 49 दुनिया के आखिर में ऐसा ही होगा; फरिश्ते निकलेंगे और शरीरों को रास्तबाजों से जुड़ा करेंगे; और उनको आग की भट्टी में डाल देंगे। (aiōn g165) 50 वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।” 51 “क्या तुम ये सब बातें समझ गए?” उन्होंने उससे कहा, हाँ। 52 उसने उससे कहा, “इसलिए हर आलिम जो आसमान की बादशाही का शारिर्द बना है उस घर के मालिक की तरह है जो अपने खजाने में से नई और पुरानी चीजें निकालता है।” 53 जब इसा ने मिसाल खत्म कर चुका तो ऐसा हुआ कि वहाँ से रवाना हो गया। 54 और अपने बतन में आकर उनके बादातखाने में उनको ऐसी तालीम देने लगा; कि वो फैरान होकर कर्दने लगे, इस में से हिक्मत और मोजिजे कहाँ से आएँ? 55 क्या ये बर्डई का बेटा नहीं? और इस की माँ का नाम मरियम और इस के भाईँ काकूब और यसुफ और शमैन और यहदा नहीं? 56 और क्या इस की सब बहनें हमारे यहाँ नहीं? फिर ये सब कुछ इस में कहाँ से आया? 57 और उन्होंने उसकी बजह से ठोकर खाई मगर इसा ने उस से कहा “नवी अपने बतन और अपने घर के सिवा कहीं बेइज्जत नहीं होता।” 58 और उसने उनकी बेएतिकादी की बजह से वहाँ बहुत से मोजिजे न दिखाए।

14 उस बक्त चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस ने इसा की शोहरत सुनी। 2 और अपने खाद्यिमों से कहा “ये यहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है वो मुर्दी में से जी उठा है; इसलिए उससे ये मोजिजे ज़ाहिर होते हैं।” 3 क्यूंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्स की बीवी हेरोदियास की बजह से यहन्ना को पकड़ कर बाँधा और कैद खाने में डाल दिया था। 4 क्यूंकि यहन्ना ने उससे कहा था कि इसका रखना तुझे जायज नहीं। 5 और वो हर चन्द उसे कर्तल करना चाहता था, मगर आम लोगों से डरता था क्यूंकि वो उसे नवी मानते थे। 6 लेकिन जब हेरोदेस की साल गिर हुई तो हेरोदियास की बेटी ने महफिल में नाच कर हेरोदेस को खुश किया। 7 इस पर उसने कसम खाकर उससे वादा किया “जो कुछ तू मैंगोगी तुझे देंगा।” 8 उसने अपनी माँ के सिखाने से कहा, “मुझे यहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं मैंगवा दे।” 9 बादशाह गमरानी हुआ; मगर अपनी कसमों और मेहमानों की बजह से उसने हक्म दिया कि दे दिया जाए। 10 और आदमी भेज कर कैद खाने में यहन्ना का सिर कटवा दिया। 11 और उस का सिर थाल में लाया गया और लड़की को दिया गया; और वो उसे अपनी माँ के पास ले गई। 12 और उसके शारिर्दों ने आकर लाश उठाई और

उसे दफन कर दिया, और जा कर ईसा को खबर दी। 13 जब ईसा ने ये सुना तो वहाँ से नाव पर अलग किरी वीरान जगह को रवाना हुआ और लोग ये सुनकर शहर — शहर से पैदल उसके पांछे गए। 14 उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उन पर तरस आया; और उसने उनके बीमारों को अच्छा कर दिया। 15 जब शाम हुई तो शागिर्द उसके पास आकर कहने लगे “जगह वीरान है और वक्त गुजर गया है लोगों को स्वस्त कर दे ताकि गाँव में जाकर अपने लिए खाना खरीद लें।” 16 ईसा ने उनसे कहा, “इहें जाने की ज़रूरत नहीं, तुम ही इनको खाने को दो।” 17 उन्होंने उसके कहा “यहाँ हमारे पास पाँच रोटियाँ और दो मछलियों के सिवा और कुछ नहीं।” 18 उसने कहा “वो यहाँ मेरे पास ले आओ,” 19 और उसने लोगों को घास पर बैठने का हृक्षम दिया। फिर उस ने वो पाँच रोटियों और दो मछलियों ली और आसमान की तरफ देख कर बर्कत दी और रोटियाँ तोड़ कर शागिर्दों को दी और शागिर्दों ने लोगों को। 20 और सब खाकर सेर हो गए; और उन्होंने बिना इस्तेमाल बचे हुए खाने से भरी हुई बारह टोकरियाँ उठाई। 21 और खानेवाले औरतों और बच्चों के सिवा पाँच हजार मर्द के करीब थे। 22 और उसने फौरन शागिर्दों को मजबूर किया कि नाव में सवार होकर उससे पहले पार चले जाएँ जब तक वो लोगों को स्वस्त करे। 23 और लोगों को स्वस्त करके तन्हा दुआ करने के लिए पहाड़ पर चढ़ गया, और जब शाम हुई तो वहाँ अकेला था। 24 मगर नाव उस वक्त झील के बीच में थी और लहरों से डगमगा रही थी; क्यूंकि हवा मुखालिफ थी। 25 और वो गत के चौथे पहर झील पर चलता हुआ उनके पास आया। 26 शागिर्द उसे झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए और कहने लगे “भूत है,” और डर कर चिल्ला उठे। 27 ईसा ने फौरन उन से कहा “इत्मीनान रख्यो! मैं हूँ डरो मत।” 28 पतरस ने उससे जबाब में कहा “ऐ खुदावन्द, अगर तू है तो मुझे हक्म दे कि पानी पर चक्रतर तेरे पास आऊँ।” 29 उस ने कहा, “आ।” पतरस नाव से उतर कर ईसा के पास जाने के लिए पानी पर चलने लगा। 30 मगर जब हवा देखी तो डर गया और जब इबने लगा तो चिल्ला कर कहा “ऐ खुदावन्द, मुझे बचा।” 31 ईसा ने फौरन हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ लिया। और उससे कहा, “ऐ कम ईमान तूने क्यूँ शक किया?” 32 जब वो नाव पर चढ़ आए तो हवा थम गई; 33 जो नाव पर थे, उन्होंने सज्जा करके कहा “यकीनन तु खुदा का बेटा है।” 34 वो नदी पार जाकर गनेसरत के इलाके में पहुँचे। 35 और वहाँ के लोगों ने उसे पहचान कर उस सारे इलाके में खबर भेजी; और सब बीमारों को उस के पास लाए। 36 और वो उसकी मिन्नत करने लगे कि उसकी पोशाक का किनारा ही छू लें और जितनों ने उसे छुआ वो अच्छे हो गए।

15 उस वक्त फरीसियों और आलिमों ने येस्तलेम से ईसा के पास आकर कहा। 2 “तेरे शागिर्द हमारे बुजुर्गों की रिवायत को क्यूँ टाल देते हैं; कि खाना खाते वक्त हाथ नहीं धोते?” 3 उस ने जबाब में उनसे कहा “तुम अपनी रिवायत से खुदा का हक्म क्यूँ टाल देते हो? 4 क्यूंकि खुदा ने फ़राया है, तु अपने बाप की और अपनी माँ की इज्जत करना, और ‘जो बाप या माँ को बुरा कहे वो ज़रूर जान से मारा जाए।’ 5 मगर तुम कहते हो कि जो कोई बाप या माँ से कहे, ‘जिस चीज का तुझे मुझ से फ़ाइदा पहुँच सकता था, वो खुदा की नज़र हो चुकी, 6 तो वो अपने बाप की इज्जत न करे; पस तुम ने अपनी रिवायत से खुदा का कलाम बातिल कर दिया। 7 ऐ रियाकारो! यसायाह ने तुहारे हक में क्या खब नबुव्वत की है, 8 ये उम्मत जबान से तो मेरी इज्जत करती है मगर इन का दिल मुझ से दूर है। 9 और ये बेपाइदा मेरी इबादत करते हैं क्यूंकि ईसानी अहकाम की तालीम देते हैं।” 10 फिर उस ने लोगों को पास बुला कर उनसे कहा, “सुनो और समझो। 11 जो चीज मुँह में जाती है, वो आदमी को नापक नहीं करती मगर जो मुँह से निकलती है वही आदमी को नापक करती

है।” 12 इस पर शागिर्दों ने उसके पास आकर कहा, “क्या तू जानता है कि फरीसियों ने ये बात सुन कर ठोकर खाई?” 13 उसने जबाब में कहा, जो पौदा मेरे आसमानी बाप ने नहीं लगाया, जड़ से उखाड़ा जाएगा। 14 “उन्हें छोड़ दो, वो अन्धे राह बताने वाले हैं, और अगर अन्धे को अन्धा राह बताएँगा तो दोनों गड़े में गिरेंगे।” 15 पतरस ने जबाब में उससे कहा “ये मिसाल हमें समझा दे।” 16 उस ने कहा, “क्या तुम भी अब तक नासमझ हो? 17 क्या नहीं समझते कि जो कुछ मुँह में जाता है, वो पेट में पड़त है और गंदगी में फेंका जाता है? 18 मगर जो बातें मुँह से निकलती हैं वो दिल से निकलती हैं और वही आदमी को नापाक करती है। 19 क्यूंकि बुरे ख्याल, ख्वान रेजियाँ, जिनाकारियाँ, हरामकारियाँ, चोरियाँ, झाठी, गवाहियाँ, बदगोइयाँ, दिल ही से निकलती है।” 20 “यही बातें हैं जो आदमी को नापाक करती हैं, मगर वौर हाथ धोए खाना खाना आदमी को नापाक नहीं करता।” 21 फिर ईसा वहाँ से निकल कर सूर और सैदा के इलाके को रवाना हुआ। 22 और देखो, एक कनानी “औरत उन सरहदों से निकली और पुकार कर कहने लगी, “ऐ खुदावन्द! इबने दाऊद मुझ पर रहम का! एक बदस्त मेरी बेटी को बहुत सताती है।” 23 मगर उसने उसे कुछ जबाब न दिया “उसके शागिर्दों ने पास आकर उससे ये अर्ज़ किया कि; उसे स्वस्त कर दे, क्यूंकि वो हमारे पीछे चिल्लाती है।” 24 उसने जबाब में कहा, “मैं ईसाइल के घराने की खोई हुई भेड़ों के सिवा और किनी के पास नहीं भेजा गया।” 25 मगर उसने आकर उसे सज्जा किया और कहा “ऐ खुदावन्द, मेरी मदत कर!” 26 उस ने जबाब में कहा “लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों को डाल देना अच्छा नहीं।” 27 उसने कहा “हाँ खुदावन्द, क्यूंकि कुत्ते भी उन टुकड़ों में से खाते हैं जो उनके मालिकों की मेज से पिरते हैं।” 28 इस पर ईसा ने जबाब में कहा, “ऐ औरत, तेरा ईमान बहुत बड़ा है। जैसा तु चाहती है तेरे लिए वैसा ही हो; और उस की बेटी ने उसी वक्त शिका पाई।” 29 फिर ईसा वहाँ से चल कर गलील की झील के नज़दीक आया और पहाड़ पर चढ़ कर वही बैठ गया। 30 और एक बड़ी भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गँगों, टुंडों और बहुत से और बीमारों को अपने साथ लेकर उसके पास आई और उनको उसके पांप में डाल दिया; उनसे उन्हें अच्छा कर दिया। 31 चुनाँचे जब लोगों ने देखा कि गँगी बोलते, टुंडा तन्दस्त होते, लंगड़े चलते फिरते और अन्धे देखते हैं तो वो ज़ज्जब किया; और ईसाइल के खुदा की बड़ाई की। 32 और ईसा ने अपने शागिर्दों को पास बुला कर कहा, “सुनो इस भीड़ पर तरस आता है। क्यूंकि ये लोग तीन दिन से बराबर मेरे साथ हैं और इनके पास खाने को कुछ नहीं और मैं इनको भूखा स्वस्त करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि रास्ते में थककर रह जाएँ।” 33 शागिर्दों ने उससे कहा, “वीराने में हम इतनी रोटियाँ कहाँ से लाएँ; कि ऐसी बड़ी भीड़ को सेर करें?” 34 ईसा ने उनसे कहा, “तुहारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात और थोड़ी सी छोटी मछलियाँ हैं।” 35 उसने लोगों को हक्म दिया कि जमीन पर बैठ जाएँ। 36 और उन सात रोटियों और मछलियों को लेकर शुक्र किया और उन्हें तोड़ कर शागिर्दों को देता गया और शागिर्द लोगों को। 37 और सब खाकर सेर हो गए; और बिना इस्तेमाल बचे हुए खाने से भेरे हुए सात टोके उठाए। 38 और खाने वाले सिवा औरतों और बच्चों के चार हजार मर्द थे। 39 फिर वो भीड़ को स्वस्त करके नाव पर सवार हुआ और मगदन की सरहदों में आ गया।

16 फिर फरीसियों और सदूकियों ने ईसा के पास आकर आजमाने के लिए उससे दरबार्हास्त की; कि हमें कोई आसमानी निशान दिखाए। 2 उसने जबाब में उनसे कहा “शाम को तुम कहते हो, खुला रहेगा, क्यूंकि आसमान लाल हूँधला है तुम आसमान की सूर में तो पहचान करना जानते हो मगर ज़मानों

की अलामतों में पहचान नहीं कर सकते। 4 इस ज्ञाने के बुरे और बोझमान लोग निशान तलब करते हैं; मगर यहन्ना के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा।” और वो उनको छोड़ कर चला गया। 5 शारिर्द पार जाते बक्त रोटी साथ लेना भूल गए थे। 6 ईसा ने उन से कहा, “खबरदार, फरीसियों और सदूकियों के खमीर से होशियार रहना।” 7 वो आपस में चर्चा करने लगे, “हम रोटी नहीं लाए।” 8 ईसा ने ये मालूम करके कहा, “ऐ कम — ऐतिकादों तुम आपस में क्यूँ चर्चा करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? 9 क्या अब तक नहीं समझते और उन पाँच हजार आदमियों की पाँच रोटियाँ तुम को याद नहीं? और न ये कि कितनी टोकरियाँ उठाई? 10 और न उन चार हजार आदमियों की सत रोटियाँ? और न ये कि कितने टोके उठाए। 11 क्या बजह है कि तुम ये नहीं समझते कि मैंने तुम से रोटी के बारे में नहीं कहा फरीसियों और सदूकियों के खमीर से होशियार रहो।” 12 जब उनकी समझ में न आया कि उसने रोटी के खमीर से नहीं; बल्कि फरीसियों और सदूकियों की तालीम से खबरदार रहने को कहा था। 13 जब ईसा कैसे रिया फिलाप्पी के इलाके में आया तो उसने अपने शारिर्दों से ये पूछा, “लोग इन्हन — ए — आदम को क्या कहते हैं?” 14 उन्होंने कहा, कुछ यहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं। “कुछ ऐलियाह और कुछ यरमियाह या नवियों में से कोई।” 15 उसने उनसे कहा, “मार तुम मुझे क्या कहते हो?” 16 शमैन पतरस ने जबाब में कहा, “तुमन्दा खुदा का बेटा मसीह है।” 17 ईसा ने जबाब में उससे कहा, “मुबारिक है तू शमैन बर — यहन्ना, क्योंकि ये बात गोश्त और खून ने नहीं, बल्कि मेरे बाप ने जो आसमान पर है; तुझ पर जाहिर की है।” 18 और मैं भी तुम से कहता हूँ; कि तू पतरस है; और मैं इस पत्रह पर अपनी कर्त्तिसिया बनाऊँगा। और आलम — ए — अरबाह के दरवाजे उस पर गालिब न आएंगे। (Hades 986) 19 मैं आसमान की बादशाही की कुन्जियाँ तुझे दूँगा; और जो कुछ तू ज़मीन पर बँधे गा वो आसमान पर बँधेगा और जो कुछ तू ज़मीन पर खोले गा वो आसमान पर खुलेगा।” 20 उस बक्त उसने शारिर्दों को हृक्षम दिया कि किसी को न बताना कि मैं मसीह हूँ। 21 उस बक्त से ईसा अपने शारिर्दों पर जाहिर करने लगा “कि उसे ज़स्त है कि येशुश्लेम को जाए और बुझूँगा और सरदार काहिनों और आलिमों की तरफ से बहुत दुःख उठाए; और कल्प किया जाए और तीसरे दिन जी उठे।” 22 इस पर पतरस उसको अलग ले जाकर मलायत करने लगा “ऐ खुदावन्द, खुदा न करे ये तुझ पर हरगिज नहीं अने का।” 23 उसने फिर कर पतरस से कहा, “ऐ शैतान, मैं सामने से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का बाईस है; क्योंकि तू खुदा की बातों का नहीं बल्कि आदमियों की बातों का खायाल रखता है।” 24 उस बक्त ईसा ने अपने शारिर्दों से कहा, “अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आपका इन्कार करें; अपनी सलीब उठाए और मेरे पीछे हो ले। 25 क्योंकि जो कोई अपनी जान खोएगा उसे पाएगा। 26 अगर आदमी सारी दुनिया हासिल करे और अपनी जान का नुकसान उठाए तो उसे क्या फ़ाइदा होगा? 27 क्योंकि इन्हन — ए — आदम अपने बाप के जलाल में अपने फरिश्तों के साथ आएगा; उस बक्त हर एक को उसके कामों के मुताबिक बदला देगा। 28 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो यहाँ खड़े हैं उन में से कुछ ऐसे हैं कि जब तक इन — ए — आदम को उसकी बादशाही में आते हुए न देख लेंगे; मौत का मजा हरगिज न चुहेंगा।”

17 छ. दिन के बाद ईसा ने पतरस, को और याकूब और उसके भाई यहन्ना को साथ लिया और उन्हें एक ऊँचे पहाड़ पर ले गया। 2 और उनके सामने उसकी सूरत बदल गई; और उसका चेहरा सूरज की तरह चमका और उसकी पोशाक नूर की तरह सफेद हो गई। 3 और देखो; मूसा और ऐलियाह

उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। 4 पतरस ने ईसा से कहा “ऐ खुदावन्द, हमारा यहाँ रहना अच्छा है; मज़ी हो तो मैं यहाँ तीन डोरे बनाऊँ। एक तैरे लिए; एक मूसा के लिए; और एक ऐलियाह के लिए।” 5 वो ये कह ही रहा था कि देखो; “एक नूरानी बादल ने उन पर साया कर लिया और उस बादल में से आवाज आई, ये मेरा प्यारा बेटा है जिससे मैं खुश हूँ; उसकी सुनो।” 6 शारिर्द ये सुनकर मुँह के बल गिरे और बहुत डर गए। 7 ईसा ने पास आ कर उन्हें छुए और कहा, “उठो, डरो मत।” 8 जब उन्होंने अपनी अँखें उठाई तो ईसा के सिवा और किसी को न देखा। 9 जब वो पहाड़ से उतर रहे थे तो ईसा ने उन्हें ये हृक्षम दिया “जब तक इन्हन — ए — आदम मुर्दों में से जी न उठे; जो कुछ तुम ने देखा है किसी से इसका ज़िक्र न करना।” 10 शारिर्द ने उस से पूछा, “फिर आलिम क्यूँ कहते हैं कि ऐलियाह का पहले आना जस्तर है?” 11 उस ने जबाब में कहा, “ऐलियाह अलबत्ता आएगा और सब कुछ बहाल करेगा। 12 लेकिन मैं तुम से कहता हूँ; कि ऐलियाह तो आ चुका और उन्होंने उसे नहीं पहचाना बल्कि जो चाहा उसके साथ किया; इसी तरह इबने आदम भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा।” 13 और शारिर्द समझ गए; कि उसने उससे यहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में कहा है। 14 और जब वो भीड़ के पास पहुँचे तो एक आदमी उसके पास आया; और उसके आगे घुटने टेक कर कहने लगा। 15 “ऐ खुदावन्द, मेरे बेटे पर रहम कर, क्योंकि उसको मिर्गी आती है और वो बहुत दुःख उठाता है; इसलिए कि अक्सर आग और पानी में गिर पड़ता है।” 16 और मैं उसको तेरे शारिर्दों के पास लाया था; मगर वो उसे अच्छा न कर सके।” 17 ईसा ने जबाब में कहा, “ऐ बे ऐतिकाद और टेढ़ी नस्ल मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा? कब तक तुम्हारी बर्दाशत करूँगा? उसे यहाँ मेरे पास लाओ।” 18 ईसा ने उसे झिङ्का और बदस्तू उससे निकल गई; वो लड़का उसी वक्त अच्छा हो गया। 19 तब शारिर्द ने ईसा के पास आकर तन्हाई में कहा “हम इस को क्यूँ न निकाल सकें?” 20 उस ने उससे कहा, “अपने ईमान की कमी की वजह से ‘क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि आप तुम में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा’ तो इस पहाड़ से कह सकोगे; यहाँ से सरक कर वहाँ चला जा, और वो चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिए नामुकिन न होगी।” 21 (लेकिन ये किस्म दुआ और रोजे के सिवा और किसी तरह नहीं निकल सकती) 22 जब वो गली में ठहरे हुए थे, ईसा ने उससे कहा, “इन्हन — ए — आदम आदमियों के हवाले किया जाएगा। 23 और वो उसे कल्प करेंगे और तीसरे दिन ज़िन्दा किया जाएगा।” इस पर वो बहुत ही गमगीन हुए। 24 और जब कफरनहम में आए तो नीम मिस्काल लेनेवालों ने पतरस के पास आकर कहा, “क्या तुम्हारा उस्ताद नीम मिस्काल नहीं देता?” 25 उसने कहा, “हाँ देता है।” और जब वो घर में आया तो ईसा ने उसके बोलने से पहले ही कहा, ऐ “शमैन तू क्या समझता है? दुनिया के बादशाह किनसे महसूल या जिजिया लेते हैं; अपने बेटों से या गैरों से?” 26 जब उसने कहा, “गैरों से,” तो ईसा ने उससे कहा, “पस बेटे बरी हुए।” 27 लेकिन मुबाद हम इनके लिए ठोकर का बाईस हों तू झील पर जाकर बन्सी डाल और जो मछली पहले निकले उसे ले और जब तू उसका मुँह खोलेगा; तो एक चाँदी का सिक्का पाएगा; वो लेकर मैं और अपने लिए उन्हें दे।”

18 उस बक्त शारिर्द ईसा के पास आ कर कहने लगे, “पस आसमान की बादशाही में बड़ा कौन है?” 2 उसने एक बच्चे को पास बुलाकर उसे उनके बीच में खड़ा किया। 3 और कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि अगर तौबा न करो और बच्चों की तरह न बनो तो आसमान की बादशाही में हरगिज दाखिल न होगे। 4 पस जो कोई अपने आपको इस बच्चे की तरह छोटा बनाएगा; वही आसमान की बादशाही में बड़ा होगा। 5 और जो कोई ऐसे बच्चे

को मेरे नाम पर कुबूल करता है; वो मुझे कुबूल करता है।” 6 “लेकिन जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर ईमान लाए हैं, किसी को ठोकर खिलाता है उसके लिए ये बेहतर है कि बड़ी चक्री का पाट उसके गले में लटकाया जाए और वो गहरे समृद्ध में डबो दिया जाए। 7 ठोकरों की बजह से दुनिया पर अप्सोस है; क्यूंकि ठोकरों का होना ज़स्तर है, लेकिन उस आदमी पर अप्सोस है, जिसकी बजह से ठोकर लगे।” 8 “पस अगर तेरा हाथ या तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट कर अपने पास से फेंक दे; तुंडा या लंगड़ा होकर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है; कि दो हाथ या दो पाँव रखता हुआ त हमेशा की आग में डाला जाए। (aiónios g166) 9 और अगर तेरी आँखें तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल कर अपने से फेंक दे; काना हो कर ज़िन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो आँखें रखता हुआ तू ज़हन्मुम कि आग में डाला जाए।” (Geenna g1067) 10 “खबरदार! इन छोटों में से किसी को नाचीज न जानना। क्यूंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि आसमान पर उनके फरिश्ते मेरे आसमानी बाप का मँह हर वक्त देखते हैं। 11 क्यूंकि इन — ए — आदम खोए हुओं को छूँडने और नजात देने आया है।” 12 “तुम क्या समझते हो? अगर किसी आदमी की सौ भेड़ें हों और उन में से एक भटक जाए; तो क्या वो निनानवें को छोड़कर और पहाड़ों पर जाकर उस भटकी हुई को न छूँडेगा? 13 और अगर ऐसा हो कि उसे पाए; तो मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो उन निनानवें से जो भटकी हुई नहीं इस भेड़ की ज्यादा खुशी करेगा। 14 इस तरह तुम्हारा आसमानी बाप ये नहीं चाहता कि इन छोटों में से एक भी हलाक हो।” 15 “अगर तेरा भाई तेरा गुनाह करे तो जा और अकेले में बात चीत करके उसे समझा; और अगर वो तेरी सुने तो तू उसने अपने भाई को पा लिया। 16 और अगर न सुने, तो एक दो आदमियों को अपने साथ ले जा, ताकि हर एक बात दो तीन गवाहों की जबान से साकित हो जाए। 17 और अगर वो उनकी भी सुनने से इन्कार करे, तो कलीसिया से कह, और अगर कलीसिया की भी सुनने से इन्कार करे तो तू उसे भर क्रौप वाले और महसूल लेने वाले के बाबर जान।” 18 “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कुछ तुम ज़मीन पर बाँधोगे वो आसमान पर बैधगा; और जो कुछ तुम ज़मीन पर खोलोगे; वो आसमान पर खोलेगा। 19 फिर मैं तुम से कहता हूँ, कि अगर तुम में से दो शख्स ज़मीन पर किसी बात के लिए जिसे वो चाहते हों इत्फाक करें तो वो मेरे बाप की तरफ से जो आसमान पर है, उनके लिए हो जाएगी। 20 क्यूंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे हैं, वहाँ मैं उनके बीच मैं हूँ।” 21 उस बक्त तपतरस ने पास आकर उससे कहा “ऐ खुदावन्द, अगर मेरा भाई मेरा गुनाह करता रहे, तो मैं कितनी मर्तबा उसे मु'आफ करूँ? क्या सात बार तक?” 22 ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझ से ये नहीं कहता कि सात बार, बल्कि सात दफा के सतर बार तक।” 23 “पस आसमान की बादशाही उस बादशाह की तरह है जिसने अपने नौकरों से हिसाब लेना चाहा। 24 और जब हिसाब लेने लगा तो उसके सामने एक कर्जदार हाजिर किया गया; जिस पर उसके दस हजार चाँदी के सिक्के आते थे। 25 मगर चौंकि उसके पास अदा करने को कुछ न था; इसलिए उसके मालिक ने हृक्षम दिया कि, ये और इसकी बीची और बच्चे और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए और कर्ज बसल कर लिया जाए। 26 पस नौकर ने गिरकर उसे सज्जा किया और कहा, “ऐ खुदावन्द मुझे मोहल्त दे, मैं तेरा सारा कर्ज अदा करूँगा।” 27 उस नौकर के मालिक ने तरस खबर उसे छोड़ दिया, और उसका कर्ज बख्श दिया।” 28 “जब वो नौकर बाहर निकला तो उसके हम खिदमतों में से एक उसको मिला जिस पर उसके सौ चाँदी के सिक्के आते थे। उसने उसको पकड़ कर उसका गला घोटा और कहा, ‘जो मेरा आता है अदा कर दे।’ 29 पस उसके हमखिदमत ने उसके सामने गिरकर मिन्नत की और कहा, मुझे मोहल्त दे; मैं

तुझे अदा कर दूँगा। 30 उसने न माना; बल्कि जाकर उसे कैदखाने में डाल दिया; कि जब तक कर्ज अदा न कर दे कैद रहे। 31 पस उसके हमखिदमत ये हाल देखकर बहुत गमगीन हुए; और आकर अपने मालिक को सब कुछ जो हुआ था; सुना दिया। 32 इस पर उसके मालिक ने उसको पास खुला कर उससे कहा, ‘ऐ शरीर नौकर; मैं ने वो सारा कर्ज तुझे इसलिए मु'आफ कर दिया; कि तू मेरी मिन्नत की थी। 33 व्या तुझे ज़स्ती न था, कि जैसे मैं ने तुझ पर रहम किया; तू भी अपने हमखिदमत पर रहम करता?’ 34 उसके मालिक ने खफा होकर उसको जल्लादों के हवाले किया; कि जब तक तमाम कर्ज अदा न कर दे कैद रहे।” 35 “मेरा आसमानी बाप भी तुम्हारे साथ इसी तरह करेगा; अगर तुम में से हर एक अपने भाई को दिल से मु'आफ न करे।”

19 जब ईसा ये बातें खत्म कर चुका तो ऐसा हुआ कि गलील को रवाना होकर यदरदान के पार यदिया की सरहदों में आया। 2 और एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली; और उस ने उन्हें वरी अच्छा किया। 3 और फरीसी उसे आजमाने को उसके पास आए और कहने लगे “क्या हर एक बजह से अपनी बीची को छोड़ देना जायज है?” 4 उस ने जबाब में कहा, “क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया उसने शुरू ही से उन्हें मर्द और ‘और तबन कर कहा?’ 5 ‘कि इस बजह से मर्द बाप से और माँ से जुदा होकर अपनी बीची के साथ रहेगा; और वो दोनों एक जिस्म होंगे।’ 6 पस वो दो नहीं, बल्कि एक जिस्म है, इसलिए जिसे खुला ने जोड़ा है उसे आदमी जुदा न करे।” 7 उन्होंने उससे कहा, “फिर मूसा ने क्यूँ हृक्षम दिया है; कि तलाक नामा देकर छोड़ दी जाए?” 8 उस ने उनसे कहा, मूसा ने तुम्हारी सख्त दिली की बजह से तुम को अपनी बीचियों को छोड़ देने की इजाजत दी; मगर शुरू से ऐसा न था। 9 “और मैं तुम से कहता हूँ, कि जो कोई अपनी बीची को हरामकारी के सिवा किसी और बजह से छोड़ दे; और दूसरी शादी करे, वो ज़िना करता है; और जो कोई छोड़ी हुई से शादी कर ले, वो भी ज़िना करता है।” 10 शागिर्दों ने उससे कहा, “अगर मर्द का बीची के साथ ऐसा ही हाल है, तो शादी करना ही अच्छा नहीं।” 11 उसने उनसे कहा, सब इस बात को कुबूल नहीं कर सकते मगर वही जिनको ये कुदरत दी गई है। 12 क्यूंकि कुछ खोजे ऐसे हैं “जो मौंके पेरे ही से ऐसे पैदा हए, और कुछ खोजे ऐसे हैं जिन्होंने आसमान की बादशाही के लिए अपने आप को खोजा बनाया, जो कुबूल कर सकता है करे।” 13 उस बक्त लोग बच्चों को उपके पास लाए, ताकि वो उन पर हाथ रख लें और उन्होंने इंडका। 14 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, बच्चों को मेरे पास आने दो और उन्हें मनह न करो, क्यूंकि आसमान की बादशाही ऐसों ही की है। 15 और वो उन पर हाथ रखकर वही से चला गया। 16 और देखो; एक शरवत ने पास आकर उससे कहा “मैं कौन सी नेकी करूँ, ताकि हमेशा की ज़िन्दगी पाऊँ?” (aiónios g166) 17 उसने उससे कहा, “तू मुझ से नेकी की बजह क्यूँ पूछता है? नेक तो एक ही है लेकिन अगर तू ज़िन्दगी में दाखिल होना चाहता है तो हृक्षमों पर अमल कर।” 18 उसने उससे कहा, “कौन से हृक्षम पर?” ईसा ने कहा, “ये कि खून न कर ज़िना न कर, झटी गवाही न दे।” 19 अपने बाप की और माँ की इज्जत कर और अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।” 20 उस जबान ने उससे कहा कि “मैंने उन सब पर अमल किया है अब मुझे मैं किस बात की कमी है?” 21 ईसा ने उससे कहा, “अगर तू कामिल होना चाहे तो जा अपना माल — ओ — अस्त्रबाब बेच कर गरीबों को दे, तुझे आसमान पर खोजाना मिलेगा; और आकर मेरे पीछे होले।” 22 मगर वो जबान ये बात सुनकर उदास होकर चला गया, क्यूंकि बड़ा मालदार था। 23 ईसा ने अपने शागिर्दों से कहा “मैं तुम से सच कहता हूँ कि दौलतमन्द का आसमान की

बादशाही में दाखिल होना मुश्किल है। 24 और फिर तुम से कहता हूँ, 'कि ऊँट का सूँझे के नाके में से निकल जाना इससे आसान है कि दौलतमन्द खुदा की बादशाही में दाखिल हो।' 25 शारिर्द ये सुनकर बहुत ही हैरान हुए और कहने लगे 'फिर कौन नजात पा सकता है?' 26 ईसा ने उनकी तरफ देखकर कहा 'ये आदिमियों से तो नहीं हो सकता; लेकिन खुदा से सब कुछ हो सकता है।' 27 इस पर पतरस ने जबाब में उससे कहा 'देख हम तो सब कुछ छोड़ कर तैर पीछे हो लिए हैं, परं हम को क्या मिलेगा?' 28 ईसा ने उस से कहा, 'मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब इन्हें आदम नई पैदाइश में अपने जलाल के तख्त पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो बाहर तख्तों पर बैठ कर इस्माइल के बाहर कबीलों का इन्साफ करोगे।' 29 और जिस किसी ने धरों, या भाइयों, या बहनों, या बाप, या माँ, या बच्चों, या खेतों को मेरे नाम की खातिर छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा और हमेशा की जिन्दगी का वारिस होगा। (aiōnios g166) 30 लेकिन बहुत से पहले आखिर हो जाएँगे और आखिर पहले।"

20 "क्यूँकि आस्मान की बादशाही उस घर के मालिक की तरह है, जो सर्वे निकला ताकि अपने बाग में मजदूर लगाए। 2 उसने मजदूरों से एक दीनार रोज तक करके उन्हें अपने बाग में भेज दिया। 3 फिर पहर दिन चढ़ने के करीब निकल कर उसने औरों को बाजार में बेकार खड़े देखा, 4 और उन से कहा, 'तुम भी बाग में चले जाओ, जो बाजिक है तुम को दँगा। परं वो चले गए। 5 फिर उसने दोपहर और तीसरे पहर के करीब निकल कर वैसा ही किया। 6 और कोई एक धंटा दिन रहे फिर निकल कर औरों को खड़े पाया, और उसने कहा, 'तुम क्यूँ यहाँ तामाम दिन बेकार खड़े हो?' 7 उन्होंने उससे कहा, 'इस लिए कि किसी ने हम को मजदूरी पर नहीं लगाया। उस ने उसने कहा, 'तुम भी बाग में चले जाओ।' 8 "जब शाम हुई तो बाग के मालिक ने अपने कारिन्दे से कहा, 'मजदूरों को बुलाओ और पिछलों से लेकर पहलों तक उनकी मजदूरी दे दो।' 9 जब वो आए जो धंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उनको एक — एक दीनार मिला। 10 जब पहले मजदूर आए तो उन्होंने ये समझा कि हम को ज्यादा मिलेगा; और उनको भी एक ही दीनार मिला। 11 जब मिला तो घर के मालिक से ये कह कर शिकायत करने लगे, 12 'इन पिछलों ने एक ही धंटा काम किया है और तुम इनको हमारे बराबर कर दिया जिन्होंने दिन भर बोझ उठाया और सख्त धूप सही?' 13 उसने जबाब देकर उन में से एक से कहा, 'मियाँ, मैं तेरे साथ बे इन्साकी नहीं करता; क्या तेरा मुझ से एक दीनार नहीं ठहरा था?' 14 जो तेरा ही उठा ले और चला जा मेरी मर्जी ये है कि जितना तुझे देता हूँ इस पिछले को भी उतना ही दूँ। 15 क्या मुझे ठीक नहीं कि अपने माल से जो चाहूँ सो कर्सँ? त इसलिए कि मैं नेक हूँ बुरी नज़र से देखता हूँ। 16 इसी तरह आखिर पहले हो जाएँगे और पहले आखिर।' 17 और यैस्शलेम जाते हुए ईस्ता बाहर शारिर्दों को अलग ले गया; और रास्ते में उनसे कहा। 18 "देखो, हम यैस्शलेम को जाते हैं; और इन्हे आदम सरदार कहिनों और फकीरों के हवाले किया जाएगा; और वो उसके कल्प का हुक्म देंगे। 19 और उसे गैर कैमों के हवाले करेंगे ताकि वो उसे ठड़ों में उड़ाएँ, और कोडे मारे और मस्तक बरें और वो तीसरे दिन जिन्दा किया जाएगा।" 20 उस बक्त जब्दी की बीबी ने अपने बेटों के साथ उसके सामने आकर सिज्दा किया और उससे कुछ अर्ज़ करने लाई। 21 उसने उससे कहा, "तू क्या चाहती है?" उस ने उससे कहा, "फरमा कि ये मेरे दोनों बेटे तेरी बादशाही में तेरी दहनी और बाईं तरफ बैठें।" 22 ईसा ने जबाब में कहा, "तुम नहीं जानते कि क्या मँगते हो? जो प्याला मैं पिने को हूँ क्या तुम पी सकते हो?" उन्होंने उससे कहा, "पी सकते हैं।" 23 उसने उससे कहा "मेरा प्याला तो पियेगे, लेकिन अपने दर्दने बाएँ किसी को बिठाना मेरा काम नहीं; मगर जिनके लिए मेरे बाप की तरफ से

तैयार किया गया उन्हीं के लिए है।" 24 जब शारिर्दों ने ये सुना तो उन दोनों भाइयों से खफा हुए। 25 मगर ईसा ने उन्हें पास बुलाकर कहा "तुम जानते हो कि गैर कैमों के सरदार उन पर हुक्म चलाते और अमीर उन पर इखित्यार जाता है। 26 तुम में ऐसा न होगा; बल्कि जो तुम में बड़ा होना चाहे वो तुम्हारा खादिम बने। 27 और जो तुम में अब्बल होना चाहे वो तुम्हारा गुलाम बने। 28 चुनाँचे; इन्हें आदम इसलिए नहीं आया कि खिदमत लें; बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जान बहुतों के बदले फिदाया में दें।" 29 जब वो यरीह से निकल रहे थे; एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। 30 और देखो, दो अंधों ने जो गास्ते के किनारे बैठे थे ये सुनकर कि 'ईसा जा रहा है चिल्ला कर कहा, "ऐ खुदावन्द इन्हें ए — दाऊद हम पर रहम कर।" 31 लोगों ने उन्हें डॉटा कि चुप रहें; लेकिन वो और भी चिल्ला कर कहने लगे, "ऐ खुदावन्द इन्हें दाऊद हम पर रहम कर।" 32 ईसा ने खेड़े होकर उन्हें बुलाया और कहा, "तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ?" 33 उन्होंने उससे कहा "ऐ खुदावन्द हमारी आँखें खुल जाएँ।" 34 ईसा को तरस आया। और उसने उन की आँखों को छुआ और वो फौरन देखने लगे और उसके पीछे हो लिए।

21 जब वो यैस्शलेम के नजदीक पहुँचे और ज़ैतून के पहाड़ पर बैठफिले के पास आएँ तो ईसा ने दो शारिर्दों को ये कह कर भेजा, 2 "अपने सामने के गाँव में जाओ। वहाँ पहुँचते ही एक गधी बैंधी हुई और उपके साथ बच्चा पाओगे। उन्हें खोल कर मेरे पास ले आओ।" 3 और अगर कोई तुम से कुछ कहे तो कहना कि खुदावन्द को इन की ज़स्तर है। वो फौरन इन्हें भेज देगा।" 4 ये इसलिए हुआ जो नवी की मारिफत कहा गया था वो पूरा हो: 5 "सिद्ध्यून की बेटी से कहो, देख, तेरा बादशाह रे पास आता है; वो हल्मिय है और गधे पर सवार है, बल्कि लादू के बच्चे पर।" 6 परं शारिर्दों ने जाकर जैसा ईसा ने उनको हुक्म दिया था; वैसा ही किया। 7 गधी और बच्चे को लाकर अपने कपड़े उन पर डाले और वो उस पर बैठ गया। 8 और भीड़ में से अक्सर लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछाएँ; औरों ने दरखतों से डालियाँ काट कर राह में फैलाइं। 9 और भीड़ जो उसके आगे — आगे जाती और पीछे — पीछे चली आती थी पुकार — पुकार कर कहती थी "इन्हें दाऊद को हो शाना! मुबारिक है वो जो खुदावन्द के नाम से आता है। आलम — ऐ बाला पर होशना।" 10 और वो जब यैस्शलेम में दाखिल हुआ तो सारे शहर में हलचल मच गईँ और लोग कहने लगे "ये कौन है?" 11 भीड़ के लोगों ने कहा "ये गतील के नासरत का नवी ईसा है।" 12 और ईसा ने खुदा की हैकल में दाखिल होकर उन सब को निकाल दिया; जो हैकल में खरीद — ओ फरोखत कर रहे थे; और सराकों के तख्त और कबूतर फरोशों की चैकियां उलट दीं। 13 और उन से कहा, "लिखा है मेरा घर दुआ का घर कहलाएगा। मगर तुम उसे डाक़ओं की खो बनाते हो।" 14 और अंधे और लंगड़े हैकल में उसके पास आएँ, और उसने उन्हें अच्छा किया। 15 लेकिन जब सरदार कहिनों और फकीहों ने उन अजीब कैमों को जो उसने किए; और लड़कों को हैकल में इन्हें दाऊद को हो शाना पुकारते देखा तो खफा होकर उससे कहने लगे, 16 "तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?" ईसा ने उन से कहा, "हाँ; क्या तुम ने ये कभी नहीं पढ़ा: 'बच्चों और शरीरभवारों के मुँह से तुम ने हमद को कामिल कराया?" 17 और वो उन्हें छोड़ कर शहर से बाहर बैठ अनियाह में गया; और रात को बही रहा। 18 और जब सुबह को फिर शहर को जा रहा था; तो उसे भूख लगी। 19 और रास्ते के किनारे अंजीर का एक दरखत देख कर उसके पास गया; और पत्तों के सिवा उस में कुछ न पाकर उससे कहा; "आइन्दा कभी तुझ में फल न लगो!" और अंजीर का दरखत उसी दम सूख गया। (aiōn g165) 20 शारिर्दों ने ये देख कर ताओँज्जुब किया और कहा "ये अंजीर का दरखत क्यूँकर एक दम में सूख

गया?” 21 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, तुम से सच कहता हूँ “कि अगर ईमान रखो और शक न करो तो न सिर्फ वही करोगे जो अंजीर के दरखत के साथ हुआ; बल्कि अगर इस पहाड़ से कहो उछड़ जा और समुन्दर में या पड़ तो यूँ ही हो जाएगा। 22 और जो कुछ दुआ में ईमान के साथ माँगोगे वो सब तुम को मिलेगा” 23 जब वो हैकल में आकर तालीम दे रहा था; तो सरदार काहिनों और कौम के बुजुर्गों ने उसके पास आकर कहा, “तूँ इन कामों को किस इश्कियार से करता है? और ये इश्कियार तुझे किसने दिया है?” 24 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, “मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ; अगर वो मुझे बताएंगे तो मैं भी तुम को बताऊँगा कि इन कामों को किस इश्कियार से करता हूँ। 25 यहन्ना का बपतिस्मा कहाँ से था? आसमान की तरफ से या ईसान की तरफ से?” वो आपस में कहने लगे, “अगर हम कहें, आसमान की तरफ से, तो वो हम को कहेगा, ‘फिर तुमने क्यूँ उसका यकीन न किया?’ 26 और अगर कहें ईसान की तरफ से तो हम अवाम से डरते हैं? क्यूँकि सब यहन्ना को नवी जानते थे?” 27 पस उन्होंने जबाब में ईसा से कहा, “हम नहीं जानते।” उनसे भी उनसे कहा, “मैं भी तुम को नहीं बताता कि मैं इन कामों को किस इश्कियार से करता हूँ।” 28 “तुम क्या समझते हो? एक आदमी के दो बेटे थे उसने पहले के पास जाकर कहा, ‘बेटा जा!’, और बाग में जाकर काम कर।” 29 उसने जबाब में कहा, “मैं नहीं जाऊँगा,” मगर पीछे पछता कर गया। 30 फिर दूसरे के पास जाकर उसने उसी तरह कहा, उसने जबाब दिया, ‘अच्छा जनाब, मगर गया नहीं। 31 इन दोनों में से कौन अपने बाप की मर्जी बजा लाया?” उन्होंने कहा, “‘पहला।’” ईसा ने उन से कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि महसूल लेने वाले और कस्बियाँ तुम से पहले खुदा की बादशाही में दाखिल होती हैं। 32 क्यूँकि यहन्ना रास्तबाजी के तरीके पर तुम्हारे पास आया; और तुम ने उसका यकीन न किया; मगर महसूल लेने वाले और कस्बियों ने उसका यकीन किया; और तुम ये देख कर भी न पछताए; कि उसका यकीन कर लेते।” 33 “एक और मिसाल सुनो: एक घर का मालिक था; जिसने बाग लगाया और उसकी चारों तरफ अहाता और उस में हौज खोदा और बुर्ज बनाया और उसे बागबानों को ठेके पर देकर परदेस चला गया। 34 जब फल का मौसम करीब आया तो उसने अपने नौकरों को बागबानों के पास अपना फल लेने को भेजा। 35 बागबानों ने उसके नौकरों को पकड़ कर किसी को पीटा किसी को कत्तल किया और किसी को पथराव किया। 36 फिर उसने और नौकरों को भेजा, जो पहलों से ज्यादा थे; उन्होंने उनके साथ भी वही सलक किया। 37 आखिर उसने अपने बेटे को उनके पास ये कह कर भेजा कि ‘वो मेरे बेटे का तो लिहाज करेंगे।’ 38 जब बागबानों ने बेटे को देखा, तो आपस में कहा, ‘ये ही वारिस हैं। आओ दूसरे कल्प करके इसी की जायदाद पर कब्जा कर लें।’ 39 और उसे पकड़ कर बाग से बाहर निकला और कल्प कर दिया।” 40 “पास जब बाग का मालिक आएगा, तो उन बागबानों के साथ क्या करेगा?” 41 उन्होंने उससे कहा, “उन बदकारों को बूरी तरह हलाक करेगा; और बाग का ठेका दूसरे बागबानों को देगा, जो मौसम पर उसको फल दें।” 42 ईसा ने उन से कहा, “क्या तुम ने किताबे मुकद्देस में कभी नहीं पढ़ा? ‘जिस पथर को मेरामों ने रद किया, वही कोने के सिरे का पथर हो गया; ये खुदावन्द की तरफ से हुआ और हमारी नजर में अंजीब है?’” 43 “इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि खुदा की बादशाही तुम से ले ली जाएगी और उस कौम को जो उसके फल लाए, दे दी जाएगी। 44 और जो इस पथर पर पिरेगा; टुकड़े — टुकड़े हो जाएगा; लेकिन जिस पर वो पिरेगा उसे पीस डालेगा।” 45 जब सरदार काहिनों और फरीसियों ने उसकी मिसाल सुनी, तो समझ गए, कि हमारे हक में कहता है। 46 और वो उसे पकड़ने की कोशिश में थे, लेकिन लोगों से डरते थे; क्यूँकि वो उसे नवी जानते थे।

22 और ईसा फिर उनसे मिसालों में कहने लगा, 2 “आस्मान की बादशाही उस बादशाह की तरह है जिस ने अपने बेटे की शादी की। 3 और अपने नौकरों को भेजा कि बुलाए हुओं को शादी में बुला लाएँ, मगर उन्होंने आना न चाहा। 4 फिर उस ने और नौकरों को ये कह कर भेजा, ‘बुलाए हुओं से कहो: देखो, मैंने जियाफ़त तैयार कर ली है, मेरे बैल और मोटे जानवर जबह हो चुके हैं और सब कुछ तैयार है; शादी में आओ।’ 5 मगर वो बे परवाई करके चल दिए; कोई अपने खेत की, कोई अपनी सौदागरी की। 6 और बाकियों ने उसके नौकरों को पकड़ कर बोइज्जत किया और मार डाला। 7 बादशाह गजबानक हुआ और उसने अपना लश्कर भेजकर उन खुनियों को हलाक कर दिया, और उन का शहर जला दिया। 8 तब उस ने अपने नौकरों से कहा, शादी का खाना तो तैयार है ‘मगर बुलाए हुए लायक न थे। 9 पस रास्तों के नाकों पर जाओ, और जितने तुहें मिले शादी में बुला लाओ।’ 10 और वो नौकर बाहर रास्तों पर जा कर, जो उन्हें मिले क्या बरे क्या भले सब को जमा कर लाए और शादी की महफिल मेहमानों से भर गई।” 11 “जब बादशाह मेहमानों को देखने को अन्दर आया, तो उसने वहाँ एक आदमी को देखा, जो शादी के लिबास में न था। 12 उसने उससे कहा ‘मियौं तू शादी की पोशाक पहने बगैर यहाँ क्यूँ कर आ गया?’ लेकिन उस का मुँह बन्द हो गया। 13 इस पर बादशाह ने खादिमों से कहा ‘उस के हाथ पांव बाँध कर बाहर अंदरे में डाल दो, वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।’ 14 क्यूँकि बुलाए हुए बहत हैं, मगर चुने हुए थेड़े।” 15 उस वक्त फरीसियों ने जा कर मशवारा किया कि उसे क्यूँ कर बातों में फँसाएँ। 16 पस उन्होंने अपने शारिरिंदों को हेरोदियों के साथ उस के पास भेजा, और उन्होंने कहा “ऐ उसाद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और सच्चाई से खुदा की राह की तालीम देता है। और किसी की परवाह नहीं करता क्योंकि तू किसी आदमी का तरफदार नहीं। 17 पस हमें बता तू क्या समझता है? कैसर को जिजिया देना जायज है या नहीं?” 18 ईसा ने उन की शरारत जान कर कहा, “ऐ रियाकारो, पुणे क्यूँ आजमाते हो? 19 जिजिए का सिक्का पुणे दिखाओ वो एक दीनार उस के पास लाए।” 20 उसने उनसे कहा “ये सूरत और नाम किसका है?” 21 उन्होंने उससे कहा, “कैसर का।” उस ने उनसे कहा, “पस जो कैसर का है कैसर को और जो खुदा का है खुदा को अदा करो।” 22 उन्होंने ये सुनकर ताजज्जुब किया, और उसे छोड़ कर चले गए। 23 उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि क्रायामत नहीं होगी उसके पास आए, और उससे ये सवाल किया। 24 “ऐ उस्ताद, मूसा ने कहा था, कि अगर कोई बे औलाद मर जाए, तो उसका भाई उसकी बीवी से शादी कर ले, और अपने भाई के लिए नस्ल पैदा करे। 25 अब हमारे दर्मियान सात भाई थे, और पहला शादी करके मर गया; और इस बजह से कि उसके औलाद न थी, अपनी बीवी अपने भाई के लिए छोड़ गया। 26 इसी तरह दूसरा और तीसरा भी सातवें तक। 27 सब के बाद वो ‘और तभी भी मर गई। 28 पस वो क्रायामत में उन सातों में से किसकी बीवी होगी? क्यूँकि सब ने उससे शादी की थी।” 29 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, “तुम गुप्तराह हो; इसलिए कि न किताबे मुकद्देस को जानते हो न खुदा की कुरुत को। 30 क्यूँकि क्रायामत में शादी बारात न होगी; बल्कि लोग आसमान पर फरिश्तों की तरह होंगे। 31 मगर मुर्दों के जी उठने के बारे में खुदा ने तुहें फरमाया था, क्या तुम ने वो नहीं पढ़ा? 32 मैं इत्ताहीम का खुदा, और इत्ताहक का खुदा और याकूब का खुदा हूँ? वो तो मुर्दों का खुदा नहीं बल्कि जिन्दों का खुदा है।” 33 लोग ये सुन कर उसकी तालीम से हैरान हुए। 34 जब फरीसियों ने सुना कि उसने सदूकीयों का मुँह बन्द कर दिया, तो वो जामा हो गए। 35 और उन में से एक आलिम — ऐ शरा ने आजमाने के लिए उससे पछाड़ा; 36 “ऐ उस्ताद, तैरैर में कौन सा हुक्म बड़ा है?” 37 उसने उस से कहा “खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल,

और अपनी सारी जान और अपनी सारी अक्ल से मुहब्बत रख। 38 बड़ा और पहला हृक्षम यही है। 39 और दूसरा इसकी तरह ये हैं कि 'अपने पड़ोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख।' 40 इन्हीं दो हृक्षमों पर तमाम तैरत और अभियां के सहीफों का मदर है।' 41 जब फरीसी जमा हुए तो ईसा ने उनसे ये पूछा; 42 "तुम मसीह के हक में क्या समझते हो? वो किसका बेटा है" उन्होंने उससे कहा "दाऊद का।" 43 उसने उनसे कहा, "पास दाऊद रुह की हिदायत से क्यूँकर उसे खुदावन्द कहता है, 44 'खुदावन्द ने मेरे खुदावन्द से कहा, मेरी दहनी तरफ बैठ, जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव के नीचे न कर दूँ।' 45 पस जब दाऊद उसको खुदावन्द कहता है तो वो उसका बेटा क्यूँकर ठहरा?" 46 कोई उसके जबाब में एक हर्फ न कह सका, और न उस दिन से फिर किसी ने उससे सवाल करने की जुरआत की।

23 उस वक्त ईसा ने भीड़ से और अपने शाशिर्दि से ये बातें कहीं, 2

"कफीह और फरीसीमास के शरीर अत की गधी पर बैठे हैं। 3 पास जो कुछ वो तुहँ बताएँ जो सब करो और मानो, लेकिन उनकी तरह काम न करो, क्यूँकि वो कहते हैं, और करते नहीं। 4 वो ऐसे भारी बोझ जिनको उठाना मुश्किल है, बाँध कर लोगों के कँधों पर रखते हैं, मगर खुद उनको अपनी उंगली से भी हिलाना नहीं चाहते। 5 वो अपने सब काम लोगों को दिखाने को करते हैं; क्यूँकि वो अपने तावीज बड़े बनाते और अपनी पोशाक के किनारे चौड़े रखते हैं। 6 जियाफ़तों में सदू नसीनी और इबादतखानों में आला दर्जे की कुर्सियाँ। 7 और जाजरों में सलाम और आदिमियों से रब्बी कहलाना पसन्द करते हैं। 8 मगर तुम रब्बी न कहलाओ, क्यूँकि तुम्हारा उसताद एक ही है और तुम सब भाई हो। 9 और जमीन पर किसी को अपना बाप न कहो, क्यूँकि तुम्हारा 'बाप' एक ही है जो आसमानी है। 10 और न तुम हादी कहलाओ, क्यूँकि तुम्हारा हादी एक ही है, यानी मसीह। 11 लेकिन जो तुम में बड़ा है, वो तुम्हारा खादिम बने। 12 जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएँ, वो छोटा किया जाएँ, और जो अपने आप को छोटा बनाएँ, वो बड़ा किया जाएँ।" 13 "ऐ रियाकार; आलिमों और फरीसियों तुम पर अफसोस कि आसमान की बादशाही लोगों पर बन्द करते हो, क्यूँकि न तो आप दाखिल होते हो, और न दाखिल होने वालों को दाखिल होने देते हो। 14 ऐ रियाकार; आलिमों और फरीसियों तुम पर अफसोस, कि तुम बेवाओं के थरों को दबा बैठते हो, और दिखावे के लिए इबादत को तुल देते हो; तुहँ ज्यादा सजा होगी।" 15 "ऐ रियाकार; फकीहों और फरीसियों तुम पर अफसोस, कि एक मुरीद करने के लिए तरी और खुशकी का दौरा करते हो, और जब वो मुरीद हो चुकता है तो उसे अपने से दूगना जहन्नुम का फर्जन्द बना देते हो।" (Geenna g1067) 16 "ऐ अंधे राह बताने वालों, तुम पर अफसोस! जो कहते हो, अगर कोई मकदिसी की कसम खाए तो उसका पाबन्द होगा। 17 ऐ अहमकों! और अँधों सोना बड़ा है, या मकदिस जिसने सोने को मुकद्दस किया। 18 फिर कहते हो 'अगर कोई कुर्बानगाह की कसम खाए तो कुछ बात नहीं; लेकिन जो नज़र उस पर चढ़ी हो अगर उसकी कसम खाए तो उसका पाबन्द होगा।' 19 ऐ अँधों! नज़र बड़ी है या कुर्बानगाह जो नज़र को मुकद्दस करती है? 20 पस, जो कुर्बानगाह की कसम खाता है, वो उसकी और उन सब चीजों की जो उस पर है कसम खाता है। 21 और जो मकदिस की कसम खाता है वो उसकी और उसके रहेवाले की कसम खाता है। 22 और जो आसमान की कसम खाता है वह खुदा के तख्त की और उस पर बैठने वाले की कसम भी खाता है।" 23 "ऐ रियाकार; आलिमों और फरीसियों तुम पर अफसोस कि पुदीना सौफ और ज़री पर तो दसवाँ हिस्सा देते हो, पर तुम ने शरीर की ज्यादा भारी बातों यानी इन्साफ़, और रहम, और ईमान को

छोड़ दिया है; लाज़िम था ये भी करते और वो भी न छोड़ते।" 24 "ऐ अंधे राह बताने वालों; जो मच्छर को तो छानते हो, और ऊँट को निगल जाते हो। 25 ऐ रियाकार; आलिमों और फरीसियों तुम पर अफसोस कि प्याले और रकाबी को ऊपर से साफ़ करते हो, मगर वो अन्दर लट और ना'रहेज़ारी से भेरे हैं। 26 ऐ अंधे फरीसी; पहले प्याले और रकाबी को अन्दर से साफ़ कर ताकि ऊपर से भी साफ़ हो जाए।" 27 "ऐ रियाकार; आलिमों और फरीसियों तुम पर अफसोस कि तुम सफेदी फिर हुई कब्रों की तरह हो, जो ऊपर से तो खुबसूत दिखाई देती है, मगर अन्दर मुर्दों की हड्डियों और हर तरह की नापाकी से भीरी है। 28 इसी तरह तुम भी जाहिन में तो लोगों को रास्तबाज़ दिखाई देते हो, मगर बातिन में रियाकारी और बेदीनी से भेरे हो।" 29 "ऐ रियाकार; आलिमों और फरीसियों तुम पर अफसोस, कि नबियों की कब्रें बनाते और रास्तबाज़ों के मक्कबरे आरास्ता करते हो। 30 और कहते हो, 'अगर हम अपने बाप दादा के जमाने में होते तो नबियों के खन में उनके शरीक न होते।' 31 इस तरह तुम अपनी निस्बत गवाही देते हो, कि तुम नबियों के कातिलों के फर्जन्द हो। 32 गरज अपने बाप दादा का पैमाना भर दो। 33 ऐ सौंपों, ऐ अँकड़े के बच्चों; तुम जहन्नुम की सजा से क्यूँकर बच्चों? (Geenna g1067) 34 इसलिए देखो मैं नबियों, और दानाओं और आलिमों को तुम्हारे पास भेजता हूँ, उन में से तुम कुछ को कल्तल और मस्लब बरोगे, और कुछ को अपने इबादतखानों में कोडे मारोगे, और शहर ब शहर सताते फिरोगे। 35 ताकि सब रास्तबाज़ों का खन जो जमीन पर बहाया गया तुम पर आए, रास्तबाज़ हाबिल के खन से लेकर बरकियाह के बेटे ज़करियाह के खन तक जिसे तुम ने मकदिस और कुर्बानगाह के दर्मियान कल्तल किया। 36 मैं तुम से सच कहता हूँ कि ये सब कुछ इसी जमाने के लोगों पर आएगा।" 37 "ऐ यस्शलीम ऐ यस्शलीम त् जो नबियों को कल्तल करता और जो तेरे पास भेजे गए, उनको संगासार करता है, कितनी बार मैंने चाहा कि जिस तरह मुर्दी अपने बच्चों को पोंगे तले जमा कर लेती है, इसी तरह मैं भी तेरे लड़कों को जमा कर लूँ; पर तुम ने न चाहा। 38 देखो; तुम्हारा घर तम्हारे लिए वीरान छोड़ा जाता है। 39 क्यूँकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अब से मुझे फिर हापिज़ न देखोगे; जब तक न कहोगे कि मुबारिक है वो जो दावन्द के नाम से आता है।"

24 और ईसा हैकल से निकल कर जा रहा था, कि उसके शाशिर्दि उसके

पास आए, ताकि उसे हैकल की इमारतें दिखाएँ। 2 उसने जबाब में उनसे कहा, "क्या तुम इन सब चीजों को नहीं देखोते? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि यहाँ किसी पथर पर पथर बाकी न रहेगा; जो गिराया न जाएगा।" 3 जब वो जैतून के पहाड़ पर बैठा था, उसके शाशिर्दि ने अलग उसके पास आकर कहा, "हम को बता ये बातें कब होंगी? और तेरे आने और दुनिया के आखिर होने का निशान क्या होगा?" (aión g165) 4 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, "खबरदार! कोई तुम को गुमराह न कर दे, 5 क्यूँकि बहुत से मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ।' और बहुत से लोगों को गुमराह करेंगे। 6 और तुम लडाइयाँ और लडाइयों की अफवाह सुनोगे, खबरदार, घबरा न जाना, क्यूँकि इन बातों का वाके होना ज़स्तर है। 7 क्यूँकि कौम पर कौम और सल्तनत पर सल्तनत चढ़ाई करेगी, और जगह — जगह काल पड़ेंगे, और भुन्चाल आएँगे। 8 लेकिन ये सब बातें मुरीबों का शुरू ही होंगी। 9 उस वक्त लोग तुम को तकलीफ रेने के लिए पकड़वाएँगे, और तुम को कल्तल करेंगे; और मेरे नाम की खातिर सब कौमें तुम से दुश्मनी रख देंगी। 10 और उस वक्त बहुत से ठोकर खाएँगे, और एक दूसरे को पकड़वाएँगे; और एक दूसरे से दुश्मनी रख देंगे। 11 और बहुत से झटे नवी उठ खड़े होंगे, और बहुतों को गुमराह करेंगे। 12 और बेदीनी के बढ़ जाने से बहुतेरों की मुहब्बत ठन्डी पड़ जाएगी। 13 लेकिन जो आखिर तक बर्दाशत

करेगा वो नजात पाएगा। 14 और बादशाही की इस खुशबूबरी का एलान तमाम दुनिया में होगा, ताकि सब कौमों के लिए गवाही हो, तब खातिमा होगा।” 15 “पस जब तुम उस उजाड़ने वाली मकस्त चीज़ जिसका जिक दानीएल नबी की ज़रिए हुआ, मुक़द्दस मुकामों में खड़ा हुआ देखो (पढ़ने वाले समझ लें) 16 तो जो यहदिया में हों वो पहाड़ों पर भाग जाएँ। 17 जो छत पर हो वो अपने घर का माल लेने को नीचे न उतरे। 18 और जो खेत में हो वो अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटो।” 19 “मगर अफ़सोस उन पर जो उन दिनों में हामिला हों और जो दूध पिलाती हों। 20 पस, दुआ करो कि तुम को जाड़ों में या सबक के दिन भागना न पड़े। 21 क्यूँकि उस वक्त ऐसी बड़ी मुसीबत होगी कि दुनिया के शुरू से न अब तक हुई न कभी होगी। 22 अगर वो दिन घटाए न जाते तो कोई बशर न बचता मगर चुने हवों की खातिर वो दिन घटाए जाएँ। 23 उस वक्त अगर कोई तुम को कहे, देखो, मसीह “यहाँ है” या “वह वहाँ है” तो यकीन न करना।” 24 “क्यूँकि झटे मसीह और झटे नबी उठ खड़े होंगे और ऐसे बड़े निशान और अंजीब काम दिखाएँगे कि अगर मुम्किन हो तो बरगुजीदों को भी गुमराह कर लें। 25 देखो, मैंने पहले ही तुम को कह दिया है। 26 पस अगर वो तुम से कहें, देखो, वो बीरानों में है तो बाहर न जाना। या देखो, कोठियों में है तो यकीन न करना।” 27 “क्यूँकि जैसे बिजली पूरब से कौंध कर पच्छिम तक दिखाई देती है वैसे ही इबने आदम का आना होगा। 28 जहाँ मुर्दाहै, वहाँ गिर जमा हो जाएँ।” 29 “फौरन इन दिनों की मुसीबत के बाद सूरज तरीक हो जाएगा। और चाँद अपनी रौशनी न देगा, और सिरों आसमान से गिरेंगे और आसमान की कुब्बतें हिलाई जाएँगी। 30 और उस वक्त इन — ए — आदम का निशान आस्मान पर दिखाई देगा। और उस वक्त जमीन की सब कौमें छाती पट्टियाँ, और इबने आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ आसमान के बादलों पर आते देखेंगी। 31 और वो नरसिंगे की बड़ी आवाज़ के साथ अपने फरिश्तों को भेजेगा और वो उसके चुने हवोंको चारों तरफ से आसमान के इस किनारे से उस किनारे तक जाए करेंगे।” 32 “अब अंजीब के दरखत से एक मिसाल सीखो, जैसे ही उसकी डाली नर्म होती और पते निकलते हैं तुम जान लेते हो कि गर्मी नज़दीक है। 33 इसी तरह जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो कि वो नज़दीक बल्कि दरवाज़े पर है। 34 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हो लें ये नस्ल हरगिज़ तमाम न होगी। 35 आसमान और जमीन टल जाएँगी लेकिन मेरी बातें हरगिज़ न टलेंगी।” 36 “लेकिन उस दिन और उस वक्त के बारे में कोई नहीं जानता, न आसमान के फरिश्ते न बेटा मगर, सिर्फ़ बाप। 37 जैसा नहू के दिनों में हुआ वैसा ही इबने आदम के आने के वक्त होगा। 38 क्यूँकि जिस तरह तफान से पहले के दिनों में लोग खाते पीते और ब्याह शादी करते थे, उस दिन तक कि नह नाव में दाखिल हुआ। 39 और जब तक तफान आकर उन सब को बहा न ले गया, उन को खबर न हुई, उसी तरह इबने आदम का आना होगा। 40 उस वक्त दो आदमी खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा, और दूसरा छोड़ दिया जाएगा, 41 दो और उत्तरें चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। 42 पस जागते रहो, क्यूँकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा खुदावन्द किस दिन आएगा। 43 लेकिन ये जान रखें, कि अगर घर के मालिक को मालूम होता कि चोर रात के कौन से पहर आएगा, तो जागता रहता और अपने घर में नकब न लगाने देता। 44 इसलिए तुम भी तैयार रहो, क्यूँकि जिस घड़ी तुम को गुमान भी न होगा इबने आदम आ जाएगा।” 45 “पस वो ईमानदार और अक़लमन्द नौकर कौन सा है, जिसे मालिक ने अपने नौकर चाकरों पर मुकर्रर किया ताकि वक्त पर उनको खाना दे। 46 मुबारिक है वो नौकर जिसे उस का मालिक आकर ऐसा ही करते पाए। 47 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो उसे अपने सारे माल का मुख्तार कर-

देगा। 48 लेकिन अगर वो खराब नौकर अपने दिल में ये कह कर कि मेरे मालिक के आने में देर है। 49 अपने हमखिदमतों को मारना शुरू करे, और शराबियों के साथ खाए पिए। 50 तो उस नौकर का मालिक ऐसे दिन कि वो उसकी राह न देखता हो और ऐसी घड़ी कि वो न जानता हो आ मौजूद होगा। 51 और खब कोडे लगा कर उसको रियाकारों में शामिल करेगा वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।”

25 “उस वक्त आसमान की बादशाही उन दस क़ुँवारियों की तरह होगी

जो अपनी मशा’लें लेकर दुल्हा के इस्तकबाल को निकली। 2 उन में पाँच बेक़फ़ और पाँच अक़लमन्द थी। 3 जो बेक़फ़ थी उन्होंने अपनी मशा’लें तो ले ली मगर तेल अपने साथ न लिया। 4 मगर अक़लमन्दों ने अपनी मशा’लों के साथ अपनी कुपियों में तेल भी ले लिया। 5 और जब दुल्हा ने देल लगाई तो सब ऊँधेने लागी और सो गई।” 6 “आधी रात को धूम मची, देखो! दुल्हा आ गया, उसके इस्तकबाल को निकलो! 7 उस वक्त वो सब क़ुँवारियाँ उठकर अपनी — अपनी मशा’लों को दुस्त करने लगी। 8 और बेक़फ़ों ने अक़लमन्दों से कहा, ‘अपने तेल में से कुछ हम को भी दे दो, क्यूँकि हमारी मशा’लें बुझी जाती हैं।’ 9 ‘अक़लमन्दों ने जबाब दिया, शायद हमारे तुहारे दोनों के लिए काफ़ी न हो बेहतर; ये हैं कि बेचने वालों के पास जाकर, अपने लिए मोल ले लो। 10 जब वो मोल लेने जा रही थीं, तो दुल्हा आ पहुँचा और जो तैयार थीं, वो उस के साथ शादी के जश्न में अन्दर चली गई, और दरवाजा बन्द हो गया। 11 फिर वो बाकी क़ुँवारियाँ भी आईं और कहने लगीं ‘ऐ खुदावन्द ऐ खुदावन्द। हमारे लिए दरवाजा खोल दे।’ 12 उसने जबाब में कहा ‘मैं तुम से सच कहता हूँ कि मैं तुम को नहीं जानता।’ 13 पस जागते रहो, क्यूँकि तुम न उस दिन को जानते हो न उस वक्त को।’ 14 “क्यूँकि ये उस आदमी जैसा हाल है, जिसने परदेस जाते वक्त अपने घर के नौकरों को बुला कर अपना माल उनके सुरुद किया। 15 एक को पाँच चाँदी के सिक्के दिए, दूसरे को दो, और तीसरे को एक यानी हर एक को उसकी काबलियत के मुताबिक दिया और परदेस चला गया। 16 जिसको पाँच सिक्के मिले थे, उसने फौरन जाकर उनसे लेन देन किया, और पाँच तोड़े और पैदा कर लिए। 17 इसी तरह जिसे दो मिले थे, उसने भी दो और कमाए। 18 मगर जिसको एक मिला था, उसने जाकर जमीन खोटी और अपने मालिक का स्पष्टे छिपा दिया।” 19 “बड़ी मुद्दत के बाद उन नौकरों का मालिक आया और उनसे हिसाब लेने लगा। 20 जिसको पाँच तोड़े मिले थे, वो पाँच सिक्के और लेकर आया, और कहा, ‘ऐ खुदावन्द! तुमे पाँच सिक्के मुझे सुरुद किए थे; देख, मैंने पाँच सिक्के और कमाए।’ 21 उसके मालिक ने उससे कहा, ‘ऐ अच्छे और ईमानदार नौकर शाबाश; तू थोड़े में ईमानदार रहा मैं तुझे बहुत चीजों का मुख्तार बनाऊँगा; अपने मालिक की खुशी में शरीक हो।’” 22 “और जिस को दो सिक्के मिले थे, उसने भी पास आकर कहा, ‘तुमे दो सिक्के मुझे सुरुद किए थे, देख तुमे दो सिक्के और कमाए।’ 23 उसके मालिक ने उससे कहा, ‘ऐ अच्छे और दियानतदार नौकर शाबाश; तू थोड़े में ईमानदार रहा मैं तुझे बहुत चीजों का मुख्तार बनाऊँगा; अपने मालिक की खुशी में शरीक हो।’” 24 “और जिसको एक तोड़ा मिला था, वो भी पास आकर कहने लगा, ऐ खुदावन्द! मैं तुझे जानता था, कि तू सख्त आदमी है, और जहाँ नहीं बोया वहाँ से काटता है, और जहाँ नहीं बिखेरा वहाँ से जमा करता है। 25 पस मैं डरा और जाकर तेरा तोड़ा जमीन में छिपा दिया देख, ‘जो तेरा है वो मौजूद है।’ 26 उसके मालिक ने जबाब में उससे कहा, ‘ऐ शरीर और सुस्त नौकर तू जानता था कि जहाँ मैंने नहीं बोया वहाँ से काटता हूँ, और जहाँ मैंने नहीं बिखेरा वहाँ से जमा करता हूँ; 27 पस तुझे लाजिम था, कि मेरा स्पष्टे साहकारों को देता, तो मैं आकर अपना माल सूट

समेत ले लेता। 28 पस इससे वो सिक्का ले लो और जिस के पास दस सिक्के हैं ‘उसे दे दो।’ 29 क्यूंकि जिस के पास है उसे दिया जाएगा और उस के पास ज्यादा हो जाएगा, मगर जिस के पास नहीं है उससे वो भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। 30 और इस निकम्मे नौकर को बाहर अंधेरे में डाल दो, और वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा।’’ 31 “जब इबने आदम अपने जलाल में आएगा, और सब फरिश्ते उसके साथ आएंगे; तब वो अपने जलाल के तख्त पर बैठेगा। 32 और सब कीमें उस के सामने जमा की जाएंगी। और वो एक को दूसरे से जुदा करेगा। 33 और भेड़ों को अपने दाहिने और बकरियों को बाँध जमा करेगा। 34 उस वक्त बादशाह अपनी तरफ वालों से कहेगा ‘आओ, मेरे बाप के मुबारिक लोगों, जो बादशाही दुनिया बनाने से पहले से तुम्हरे लिए तैयार की गई है उसे मीरास में ले लो। 35 क्यूंकि मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना खिलाया; मैं प्यासा था, तुमने मुझे पानी पिलाया; मैं परदेसी था तुमने मुझे अपने घर में उतारा। 36 नंगा था तुमने मुझे कपड़ा पहनाया, बीमार था तुमने मेरी खबर ली, मैं कैद में था, तुम मेरे पास आए।’’ 37 “तब रास्तबाज जवाब में उससे कहेगी, ऐ खुदावन्द, हम ने कब तुझे भूखा देख कर खाना खिलाया, या प्यासा देख कर पानी पिलाया? 38 हम ने कब तुझे मुसाफिर देख कर अपने घर में उतारा? या नंगा देख कर कपड़ा पहनाया। 39 हम कब तुझे बीमार या कैद में देख कर तेरे पास आए। 40 बादशाह जवाब में उन से कहेगा, ‘मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम ने मेरे सब से छोटे भाइयों में से किसी के साथ ये सुलक्षण किया, तो मेरे ही साथ किया।’ 41 फिर वो बाँध तरफ वालों से कहेगा, ‘मला’ ऊनों मेरे सामने से उस हमेशा की आग में चले जाओ, जो इब्लीस और उसके फरिश्तों के लिए तैयार की गई है। (aiōnios g166) 42 क्यूंकि, मैं भूखा था, तुमने मुझे खाना न खिलाया, प्यासा था, तुमने मुझे पानी न पिलाया। 43 मुसाफिर था, तुम ने मुझे घर में उतारा नंगा था, तुम ने मुझे कपड़ा न पहनाया, बीमार और कैद में था, तुम ने मेरी खबर न ली।’’ 44 “तब वो भी जवाब में कहेगे, ऐ खुदावन्द हम ने कब तुझे भूखा, या प्यासा, या मुसाफिर, या नंगा, या बीमार या कैद में देखकर तेरी खिदमत न की? 45 उस वक्त वो उससे जवाब में कहेगा, ‘मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तुम ने इन सब से छोटों में से किसी के साथ ये सुलक्षण किया, तो मेरे साथ न किया।’ 46 और ये हमेशा की सजा पाएंगे, मगर रास्तबाज हमेशा की जिन्दगी।’’ (aiōnios g166)

26 जब ईसा ये सब बातें खत्म कर चुका, तो ऐसा हुआ कि उसने अपने शाशिर्दीं से कहा। 2 “तुम जानते हो कि दो दिन के बाद ईंट — ए — फसहोगी। और इन — ए — आदम मस्तूब होने को पकड़वाया जाएगा।” 3 उस वक्त सरदार काहिन और कौम के बुजुर्ग काइफा नाम सरदार काहिन के दिवान खाने में जमा हुए। 4 और मशवरा किया कि ईसा को धोखे से पकड़ कर कर्त्तव्य करें। 5 मगर कहते थे, “ईंट में नहीं, ऐसा न हो कि लोगों में बलवा हो जाए।” 6 और जब ईसा बैठ अन्नियां में शामैन जो पहले कोहड़ी था के घर में था। 7 तो एक ‘औरत संग — मगर के इन्द्रान के लिए लेकर उसके पास आई, और जब वो खाना खाने बैठा तो उस के सिर पर डाला। 8 शाशिर्दि ये देख कर खफा हुए और कहने लगे, “ये किस लिए बरबाद किया गया? 9 ये तो बड़ी कीमत में बिक कर गरीबों को दिया जा सकता था।” 10 ईसा’ ने ये जान कर उन से कहा, “इस ‘औरत को क्यूं दुखी करते हो? इस ने तो मेरे साथ भलाई की है। 11 क्यूंकि गरीब गुरुबे तो हमेशा तुम्हरे पास हैं लेकिन मैं तुम्हरे पास हमेशा न रहूँगा। 12 और इस ने तो मेरे दफन की तैयारी के लिए इन मेरे बदन पर डाला। 13 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तमाम दुनिया में जहाँ कहीं इस खुदावखबरी का एलान किया जाएगा, ये भी जो इस ने किया; इस की यादगारी में कहा जाएगा।” 14 उस वक्त उन बारह में से एक ने जिसका नाम यहदाह

इस्करियोती था; सरदार काहिनों के पास जा कर कहा, 15 “अगर मैं उसे तुम्हरे हवाले कर दूँ तो मुझे क्या दोगे? उन्होंने उसे तीस स्पंगे तौल कर दे दिया।” 16 और वो उस वक्त से उसके पकड़वाने का मौका ढूँडने लगा। 17 ईंट — ए — फिर के पहले दिन शाशिर्दीं ने ईसा के पास आकर कहा, “तू कहाँ चाहता है कि हम तेरे लिए फसह के खाने की तैयारी करें।” 18 उस ने कहा, “शहर में फल्तू शब्द के पास जा कर उससे कहना ‘उत्साद फरमाता है’ कि मेरा वक्त नज़दीक है मैं अपने शाशिर्दीं के साथ तेरे यहाँ ईंटए फसह करूँगा।” 19 और जैसा ईसा ने शाशिर्दीं को हक्म दिया था, उन्होंने वैसा ही किया और फसह तैयार किया। 20 जब शाम हुई तो वो बारह शाशिर्दीं के साथ खाना खाने बैठा था। 21 जब वो खा रहा था, तो उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा।” 22 वो बहुत ही गमानी हुए और हर एक उससे कहने लगे “खुदावन्द, क्या मैं हूँ?” 23 उस ने जवाब में कहा, “जिस ने मेरे साथ रक्काबी में हाथ डाला है वही मुझे पकड़वाएगा।” 24 इन्हने आदम तो जैसा उसके हक्क में लिखा है जाता ही है लेकिन उस आदमी पर अफसोस जिसके वसीते से इन्हने आदम पकड़वाया जाता है अगर वो आदमी पैदा न होता तो उसके लिए अच्छा होता।” 25 उसके पकड़वाने वाले यहदाह ने जवाब में कहा “ऐ रङ्गी क्या मैं हूँ?” उसने उससे कहा “तूने खुद कह दिया।” 26 जब वो खा रहे थे ये तो ईसा’ ने रोटी ली और — और बर्कत देकर तोड़ी और शाशिर्दीं को टेकर कहा, “लो, खाओ, ये मेरा बदन है।” 27 फिर प्याला लेकर शुक्र किया और उनको टेकर कहा “तुम सब इस में से पियो। 28 क्यूंकि ये मेरा वो अहद का खन है जो बहतों के गुमाहों की मुआफी के लिए बहाया जाता है। 29 मैं तुम से कहता हूँ, कि अंगूर का ये शीरा फिर कभी न पियूँगा, उस दिन तक कि तुम्हरे साथ अपने बाप की बादशाही में नया न पियूँगा।” 30 फिर वो हम्मट करके बाहर जैतून के पहाड़ पर गए। 31 उस वक्त ईसा’ ने उसने कहा “तुम सब इसी रात मेरी वजह से ठोकर खाओगे क्यूंकि लिखा है, मैं चरवाहे को मासँगा और गल्ली की खेड़े खिलाऊँगा।” 32 लेकिन मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊँगा।” 33 पतरस ने जवाब में उससे कहा, “चाहे सब तेरी वजह से ठोकर खाएँ, लेकिन मैं कभी ठोकर न खाऊँगा।” 34 ईसा’ ने उससे कहा, “मैं तुमसे सच कहता हूँ, इसी रात मुर्ग के बांग देने से पहले, तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” 35 पतरस ने उससे कहा, “अगर तेरे साथ मुझे मरना भी पड़े। तो मैं तेरा इन्कार हरिगिज़ न करूँगा।” और सब शाशिर्दीं ने भी इसी तरह कहा। 36 उस वक्त ईसा’ उनके साथ गतसिमीनी नाम एक जगह में आया और अपने शाशिर्दीं से कहा। “यहाँ बैठे रहना जब तक कि मैं वहाँ जाकर दुआ करूँगा।” 37 और पतरस और ज़ब्दी के दोनों बेटों को साथ लेकर गमानी और बेकरार होने लगा। 38 उस वक्त उसने उनसे कहा, “मेरी जान निहायत गमानी है यहाँ तक कि मरने की नौबत पहुँच गई है, तुम यहाँ ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो।” 39 फिर ज़रा आगे बढ़ा और मुँह के बल पिर कर यूँ दुआ की, “ऐ मेरे बाप, अगर हो सके तो ये दुःख का प्याला मुझ से टल जाए, तो भी न जैसा मैं चाहता हूँ, बल्कि जैसा तू चाहत है वैसा ही हो।” 40 फिर शाशिर्दीं के पास आकर उनको सोते पाया और पतरस से कहा, “क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? 41 जागते और दुआ करते रहो ताकि आज्ञाइश में न पड़ो, स्वतो मुस्तऽदृ है मगर जिस्म कमज़ोर है।” 42 फिर दोबारा उसने जाकर यूँ दुआ की “ऐ मेरे बाप अगर ये मेरे एिं बौर नहीं टल सकता तो तेरी मर्जी पूरी हो।” 43 और आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्यूंकि उनकी आँखें नीद से भरी थीं। 44 और उनको छोड़ कर फिर चला गया, और फिर वही बात कह कर तीसी बार दुआ की। 45 तब शाशिर्दीं के पास आकर उसने कहा “अब सोते रहो, और आराम करो, देखो वक्त आ पहुँचा है, और इन्हने आदम

गुनाहगारों के हवाले किया जाता है। 46 उठो चलें, देखो, मेरा पकड़वाने वाला नज़दीक आ पहुँचा है।” 47 वो ये कह ही रहा था, कि यहदा ह जो उन बाहर में से एक था, आया, और उसके साथ एक बड़ी भीड़ तलवारें और लाठियाँ लिए सरदार कहिनों और कौम के बुजुर्गों की तरफ से आ पहुँची। 48 और उसके पकड़वाने वाले ने उनको ये निशान दिया था, जिसका मैं बोसा लूँ वही है उसे पकड़ लेना। 49 और फैन उसने ईसा के पास आ कर कहा, “ऐ रब्बी सलाम!” और उसके बोसे लिए। 50 ईसा ने उससे कहा, “मियाँ! जिस काम को आया है वो कर ले।” इस पर उन्होंने पास आकर ईसा पर हाथ डाला और उसे पकड़ लिया। 51 और देखो, ईसा के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ा कर अपनी तलवार खींची और सरदार कहिन के नौकर पर चला कर उसका कान उड़ा दिया। 52 ईसा ने उससे कहा, “अपनी तलवार को मियान में कर क्यूँकि जो तलवार खींचते हैं वो सब तलवार से हलाक किए जाएँगे।” 53 क्या तू नहीं समझता कि मैं अपने बाप से मिन्तन कर सकता हूँ, और वो फरिश्तों के बाहर पलटन से ज्यादा मेरे पास अभी मौजूद कर देगा? 54 मगर वो लिखे हुए का यौं ही होना ज़रूर है क्यूँ कर पैरे होगे?” 55 उसी वक्त ईसा ने भीड़ से कहा, “क्या तुम तलवारें और लाठियाँ लेकर मुझे डाक की तरह पकड़ने निकले हो? मैं हर रोज़ हैकल में बैठकर तालीम देता था, और तुमने मुझे नहीं पकड़ा।” 56 मगर ये सब कुछ इसलिए हुआ कि नवियों की नबुवत पूरी हो।” इस पर सब शारिद उसे छोड़ कर भाग गए। 57 और ईसा के पकड़ने वाले उसको काफ़ा नाम सरदार कहिन के पास ले गए, जहाँ अलिम और बुजुर्ग जमा हुए थे। 58 और पतरस दूर—दूर उसके पीछे—पीछे सरदार कहिन के दिवानखाने तक गया, और अन्दर जाकर प्यादों के साथ नीतजा देखने को बैठ गया। 59 सरदार कहिन और सब सदे—ए 'अदालत वाले ईसा को मार डालने के लिए उसके खिलाफ़ झाठी गवाही ढूँढ़ने लगे। 60 मगर न पाई, गरचे बहुत से झाठे गवाह आए, लेकिन आशिकरार दो गवाहों ने आकर कहा, 61 “इस ने कहा है, कि मैं खुदा के मकासिस को ढा सकता और तीन दिन में उसे बना सकता हूँ।” 62 और सरदार कहिन ने खड़े होकर उससे कहा, “तू जबाब नहीं देता? ये तैरे खिलाफ़ क्या गवाही देते हैं?” 63 मगर ईसा खामोश ही रहा, सरदार कहिन ने उससे कहा, “मैं तुझे जिन्दा खुदा की कसम देता हूँ, कि अगर तु खुदा का बेटा मसीह है तो हम से कह देते?” 64 ईसा ने उससे कहा, “तू न खुद कह दिया बल्कि मैं तुम से कहता हूँ, कि इसके बाद इबने आदम को कादिर—ए मुतल्लिक की दहनी तरफ बैठे और असमान के बादलों पर आते देखोगे।” 65 इस पर सरदार कहिन ने ये कह कर अपने कपड़े फाड़े “उसने कुक्कु बका है अब हम को गवाहों की क्या ज़स्त रही? देखो, तुम ने अभी ये कुक्कु सुना है।” 66 तुहारी क्या राय है? उन्होंने जबाब में कहा, वो कल्प के लायक है।” 67 इस पर उन्होंने उसके मुँह पर थूका और उसके मुक्के मरे और कुछ ने तमाचे मार कर कहा। 68 “ऐ मसीह, हमें नबुवत से बता कि तुझे किस ने मारा।” 69 पतरस बाहर सहन में बैठा था, कि एक लौंडी ने उसके पास आकर कहा, “तू भी ईसा गलती की साथ था।” 70 उसने सबके सामने ये कह कर इकार किया “मैं नहीं जानता त क्या कहती है।” 71 और जब वो डेवडी में चला गया तो दूसरी ने उसे देखा, और जो वहाँ थे, उनसे कहा, “ये भी ईसा नासीर के साथ था।” 72 उसने कसम खा कर फिर इन्कार किया “मैं इस आदमी को नहीं जानता।” 73 थोड़ी देर के बाद जो वहाँ खड़े थे, उन्होंने पतरस के पास आकर कहा, “बेशक तू भी उन में से है, क्यूँकि तेरी बोली से भी ज़ाहिर होता है।” 74 इस पर वो लोगों ने जबाब दिया और उसके पास आगे घुटने टेक कर उसे ठड़ों में उड़ाने लगे; “ऐ यहाँदियों के बादशाह, आदाबा!” 30 और उस पर थूका, और वही सरकड़ा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। 31 और जब उसका ठड़ा कर चुके तो चोरों

थीं: “मुर्गा के बांग देने से पहले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” और वो बाहर जाकर जार रोया।

27 जब सुबह हुई तो सब सरदार कहिनों और कौम के बुजुर्गों ने ईसा के खिलाफ़ मशवरा किया कि उसे मार डालें। 2 और उसे बाँध कर ले गए, और पीलातुस हाकिम के हवाले किया। 3 जब उसके पकड़वाने वाले यहदा ह ने ये देखा, कि वो मुजरिम ठहराया गया, तो अप्सोस किया और वो तीस स्पर्श सरदार कहिन और बुजुर्गों के पास बापस लाकर कहा। 4 “मैंने गुनाह किया, कि बेक्ससूर को कल्प के लिए पकड़वाया।” उन्होंने ने कहा “हमें क्या? तू जान।” 5 वो स्पैरेंज को मकादिस में फेंक कर चला गया। और जाकर अपने आपको फाँसी दी। 6 सरदार कहिन ने स्पर्शे लेकर कहा “इनको हैकल के ख़जाने में डालना जायज़ नहीं; क्यूँकि ये ख़ून की कीमत है।” 7 पस उन्होंने मशवरा करके उन स्पैरेंज से कुम्हार का खेत परदेसियों के दफ्न करने के लिए ख़रीदा। 8 इस वजह से वो खेत आज तक ख़ून का खेत कहलाता है। 9 उस वक्त वो पूरा हुआ जो यरमियाह नवी के ज़रिए कहा गया था कि जिसकी कीमत ठहराई गई थी, “उन्होंने उसकी कीमत के बो तीस स्पर्शे ले लिए, (उसकी कीमत कुछ बनी ईसाईल ने ठहराई थी) 10 और उसको कुम्हार के खेत के लिए दिया, जैसा खुदावन्द ने मुझे हक्म दिया।” 11 ईसा हाकिम के सामने खड़ा था, और हाकिम ने उससे पछा, क्या तू यहाँदियों का बादशाह है? ईसा ने उस से कहा, “तू खुद कहता है।” 12 जब सरदार कहिन और बुजुर्ग उस पर इल्जाम लगा रहे थे, उसने कुछ जबाब न दिया। 13 इस पर पीलातुस ने उस से कहा “क्या तू नहीं सुनता, ये तैरे खिलाफ़ कितनी गवाहियों देते हैं?” 14 उसने एक बात का भी उसको जबाब न दिया, यहाँ तक कि हाकिम ने बहुत ता'ज़ुब किया। 15 और हाकिम का दस्तर था, कि इंद पर लोगों की खातिर एक कैटी जिसे वो चाहते थे छोड़ देता था। 16 उस वक्त बरअब्बा नाम उन का एक मशहूर कैटी था। 17 पस जब वो इकठ्ठे हुए तो पीलातुस ने उस से कहा, “तुम किसे चाहते हो कि तुहारी खातिर छोड़ दूँ? बरअब्बा को या ईसा को जो मसीह कहलाता है?” 18 क्यूँकि उसे मालूम था, कि उन्होंने उसको जलन से पकड़वाया है। 19 और जब वो तख्त — ए आदालत पर बैठा था तो उस की बीवी ने उसे कहला भेजा “तू इस रास्तबाज से कुछ काम न रख क्यूँकि मैंने आज ख़बाब में इस की बजह से बहुत दुःख उठाया है।” 20 लेकिन सरदार कहिनों और बुजुर्गों ने लोगों को उभारा कि बरअब्बा को माँग लें, और ईसा को हलाक कराएँ। 21 हाकिम ने उससे कहा इन दोनों में से किसको चाहते हो कि तुहारी खातिर छोड़ दूँ? उन्होंने कहा “बरअब्बा को।” 22 पीलातुस ने उससे कहा “फिर ईसा को जो मसीह कहलाता है क्या कहूँ?” सब ने कहा “वो मस्तूब हो।” 23 उसने कहा “क्यूँ? उस ने क्या बुराई की है?” मगर वो और भी चिल्ला — चिल्ला कर कहने लगे “वो मस्तूब हो।” 24 जब पीलातुस ने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ा बल्कि उल्टा बलवा होता जाता है तो पानी लेकर लोगों के स्लूर अपने हाथ धोए “और कहा, मैं इस रास्तबाज के ख़ून से बरी हूँ; तुम जानो।” 25 सब लोगों ने जबाब में कहा “इसका ख़ून हमारी और हमारी औलाद की गर्दन पर।” 26 इस पर उस ने बरअब्बा को उनकी खातिर छोड़ दिया, और ईसा को कोडे लगवा कर हवाले किया कि मस्तूब हो। 27 इस पर हाकिम के सिपाहियों ने ईसा को किले में ले जाकर सारी पलटन उसके आपस मारा की। 28 और उसके कपड़े उतार कर उसे किरमियी चोगा पहनाया। 29 और कॉटों का ताज बना कर उसके सिर पर रखवा, और एक सरकंडा उस के दहने हाथ में दिया और उसके आगे घुटने टेक कर उसे ठड़ों में उड़ाने लगे; “ऐ यहाँदियों के बादशाह, आदाबा!” 30 और उस पर थूका, और वही सरकड़ा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। 31 और जब उसका ठड़ा कर चुके तो चोरों

को उस पर से उतार कर फिर उसी के कपड़े उसे पहनाएँ; और मस्लूब करने को ले गए। 32 जब बाहर आए तो उन्होंने शमैन नाम एक कुरेनी आदमी को पाकर उसे बेगार में पकड़ा, कि उसकी सलीब उठाए। 33 और उस जगह जो गुल्गुता यार्नी खोपड़ी की जगह कहलाती है पहुँचकर। 34 पित मिली हुई मय उसे पीने को दी, मगर उसने चख कर पीना न चाहा। 35 और उन्होंने उसे मस्लूब किया; और उसके कपड़े पर्ची डाल कर बैट कर उसकी निगहबानी करने लगे। 37 और उस का इल्जाम लिख कर उसके सिर से ऊपर लगा दिया “कि ये यहदियों का बादशाह ईसा है।” 38 उस वक्त उसके साथ दो डाक मस्लूब हुए, एक दर्दने और एक बाँध। 39 और राह चलने वाले सिर हिला — हिला कर उसको लान तान करते और कहते थे। 40 “ऐ मकदिस के ढानेवाले और तीन दिन में बनाने वाले अपने आप को बचा; अगर तु खुदा का बेटा है तो सलीब पर से उतर आ।” 41 इसी तरह सरदार काहिन भी फ़कीरों और बुजुर्गों के साथ मिलकर ठड़े से कहते थे, 42 “इसने औरों को बचाया, अपने आप को नहीं बचा सकता, ये तो इस्पाईल का बादशाह है; अब सलीब पर से उतर आए, तो हम इस पर ईमान लाएँ। 43 इस ने खुदा पर भरोसा किया है, आगर चे इसे चाहता है तो अब इस को छुड़ा ले, क्यूँकि इस ने कहा था, मैं खुदा का बेटा हूँ।” 44 इसी तरह डाकू भी जो उसके साथ मस्लूब हुए थे, उस पर लान तान करते थे। 45 और दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक तमाम मुल्क में अध्यर्था छाया रहा। 46 और तीसरे पहर के करीब ईसा ने बड़ी आवाज से चिल्ला कर कहा “एर्नी, एर्नी, लमा शबकतनी ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, त ने मुझे क्यूँ छोड़ दिया?” 47 जो वहाँ खड़े थे उन में से कुछ ने सुन कर कहा “ये एलियाह को पुकारता है।” 48 और फौरन उनमें से एक शख्स दौड़ा और सोखते को लेकर सिरके में ढुबोया और सरकड़े पर रख कर उसे चुसाया। 49 मगर बाकियों ने कहा, “ठहर जाओ, देखें तो एलियाह उसे बचाने आता है या नहीं।” 50 ईसा ने फिर बड़ी आवाज से चिल्ला कर जान दे दी। 51 और मकदिस का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया, और ज़मीन लरजी और चट्टानें तड़क गईं। 52 और कब्बे खुल गईं। और बहुत से जिस्म उन मुकद्दसों के जो सो गए थे, जी उठे। 53 और उसके जी उठने के बाद कब्बों से निकल कर मुकद्दस शहर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए। 54 पस सुवेदार और जो उस के साथ ईसा की निगहबानी करते थे, भुन्चाल और तमाम माजरा देख कर बहुत ही डर कर कहने लगे “बै — शक ये खुदा का बेटा था।” 55 और वहाँ बहुत सी औरतें जो गलील से ईसा की खिदमत करती हुई उसके पीछे — पीछे आई थीं, दूर से देख रही थीं। 56 उन में मरियम मादलिनी थीं, और याकूब और योसेस की माँ मरियम और ज़ल्दी के बेटों की माँ। 57 जब शाम हुई तो यस्फुक नाम अरिमियाह का एक दैलतमन्द आदमी आया जो खुद भी ईसा का शारिंद था। 58 उस ने पीलातुस के पास जा कर ईसा की लाश मँगी, इस पर पीलातुस ने दे देने का हक्म दे दिया। 59 यस्फुक ने लाश को लेकर साफ महीन चादर में लपेटा। 60 और अपनी नई कब्र में जो उस ने चट्टान में खुदावन्द थी रख दिया, फिर वो एक बड़ा पत्थर कब्र के पीछे पर लुढ़का कर चला गया। 61 और मरियम मादलिनी और दूसरी मरियम वहाँ कब्र के सामने बैठी थीं। 62 दूसरे दिन जो तैयारी के बाद का दिन था, सरदार काहिन और फ़रीसियों ने पीलातुस के पास जमा होकर कहा। 63 खुदावन्द हमें याद है “कि उस धोखेबाज ने जीते जी कहा था, मैं तीन दिन के बाद जी उड़ूँगा।” 64 पस हुक्म दे कि तीसरे दिन तक कब्र की निगहबानी की जाए, कहीं ऐसा न हो कि उसके शारिंद आकर उसे चुरा ले जाएँ, और लोगों से कह दें, जो मुर्दों में से जी उठा, और ये पिछला धोखा पहले से भी बुरा हो।” 65 पीलातुस ने उनसे कहा “तुम्हारे पास पहरे वाले हैं जाओ, जहाँ तक तुम से हो सके उसकी निगहबानी

करो।” 66 पस वो पहरेदारों को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर करके कब्र की निगहबानी की।

28

सबत के बाद हफ्ते के पहले दिन धूप निकलते वक्त मरियम मादलिनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई। 2 और देखो, एक बड़ा भुन्चाल आया क्यूँकि खुदा का फ़रिशत आसमान से उतरा और पास आकर पत्थर को लुढ़का दिया; और उस पर बैठ गया। 3 उसकी सूरत बिजली की तरह थी, और उसकी पोशाक बर्फ की तरह सफेद थी। 4 और उसके डर से निगहबान कँप उठे, और मुर्दों से हो गए। 5 फ़रिशत ने औरतों से कहा, “तुम न डरो। क्यूँकि मैं जानता हूँ कि तुम ईसा को उड़ रही हो जो मस्लूब हुआ था। 6 वो यहाँ नहीं है, क्यूँकि अपने कहने के मुताबिक जी उठा है; आओ ये जगह देखो जहाँ खुदावन्द पड़ा था। 7 और ज़ल्दी जा कर उस के शागिर्दों से कहो जो मुर्दों में से जी उठा है, और देखो; जो तुम से पहले गलील को जाता है वहाँ तुम उसे देखोगे, देखो मैंने तुम से कह दिया है।” 8 और वो खौफ और बड़ी खुशी के साथ कब्र से जल्द रवाना होकर उसके शागिर्दों को खबर देने दौड़ी। 9 और देखो ईसा उन से मिला, और उस ने कहा, “सलाम।” उन्होंने पास आकर उसके कदम पकड़े और उसे सज्जा किया। 10 इस पर ईसा ने उन से कहा, “डरो नहीं। जाओ, मेरे भाइयों से कहो कि गलील को चले जाएँ, वहाँ मुझे दें देखेंगे।” 11 जब वो जा रही थी, तो देखो; पहरेदारों में से कुछ ने शहर में आकर तमाम माजरा सरदार काहिनों से बयान किया। 12 और उन्होंने बुजुर्गों के साथ जमा होकर मशवरा किया और सिपाहियों को बहत सा स्थान दे कर कहा, 13 “ये कह देना, कि रात को जब हम सो रहे थे उसके शारिंद आकर उसे चुरा ले गए। 14 अगर ये बात हाकिम के कान तक पहुँची तो हम उसे समझाकर तुम को खोर से बचा लेंगे” 15 पस उन्होंने स्थान से लेकर जैसा सिखाया गया था, वैसा ही किया; और ये बात यहूदियों में मशहूर है। 16 और यारह शारिंद गलील के उस पहाड़ पर गए, जो ईसा ने उनके लिए मुकर्रर किया था। 17 उन्होंने उसे देख कर सज्जा किया, मगर कुछ ने शक किया। 18 ईसा ने पास आ कर उन से बातें की और कहा “आस्मान और ज़मीन का कुल इखिल्यार मुझे दे दिया गया है। 19 पस तुम जा कर सब क्लौमों को शारिंद बनाओ और उन को बाप और बेटे और स्त्री — कुरूस के नाम से बपतिस्मा दो। 20 और उन को ये तालीम दो, कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने तुम को हुक्म दिया; और देखो, मैं दुनिया के आखिर तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।” (aiōn g165)

मरकुस

1 इसा मसीह इब्न — ए खुदा की खुशखबरी की शुभ्यात। 2 जैसा यसायाह

नबी की किताब में लिखा है: “देखो, मैं अपना पैग्म्बर पहले भेजता हूँ, जो तुम्हारे लिए रास्ता तैयार करेगा। 3 वीराने में पूकारने वाले की आवाज आती है कि खुदावन्द के लिए राह तैयार करो, और उसके रास्ते सीधे बनाओ।” 4 यहन्ना आया और वीरानों में बपतिस्मा देता और गुनाहों की मुआफी के लिए तौबा के बपतिस्मे का ऐलान करता था 5 और यहदिया के मुल्क के सब लोग, और येस्सनेये के सब द्वन्द्वेवाले निकल कर उस के पास गए, और उन्होंने अपने गुनाहों को कुबूल करके दरिया — ए — यर्दन में उससे बपतिस्मा लिया। 6 ये यहन्ना ऊँटों के बालों से बनी पोशाक पहनता और चमड़े का पटाना अपनी कमर से बोधे रहता था। और वो टिह्याँ और जंगली शहद खाता था। 7 और ये ऐलान करता था, “कि मेरे बाद वो शश्व आनेवाला है जो मुझ से ताकतवर है मैं इस लायक नहीं कि झुक कर उसकी जूतियों का फ़ीता खोऊँ।” 8 मैंने तो तुम को पानी से बपतिस्मा दिया मगर वो तुम को स्ह — उल — कूदूस से बपतिस्मा देगा।” 9 उन दिनों में ऐसा हुआ कि इसा ने गलील के नासरत नाम कि जगह से आकर यरदन नदी में यहन्ना से बपतिस्मा लिया। 10 और जब वो पानी से निकल कर ऊपर आया तो फौरन उसने आसमान को खुलाते और स्ह को कबूतर की तरह अपने ऊपर आते देखा। 11 और आसमान से ये आवाज आई, “तू मेरा प्यारा बेटा है, तुझ से मैं खुश हूँ।” 12 और उसके बाद स्ह ने उसे वीराने में भेज दिया। 13 और वो उस सूनसान जगह में चालीस दिन तक शैतान के जरिए आजमाया गया, और वह जंगली जानवरों के साथ रहा किया और फरिश्ते उसकी खिदमत करते रहे। 14 फिर यहन्ना के पकड़वाएँ जाने के बाद इसा गलील में आया और खुदा की खुशखबरी का ऐलान करने लगा। 15 और उसने कहा कि “बक्त्र पूरा हो गया है और खुदा की बादशाही नज़दीक आ गई है, तौबा करो और खुशखबरी पर ईमान लाओ।” 16 गलील की ग़ील में किनारे — किनारे जाते हुए, शमैन और शमैन के भाई अन्द्रियास को ग़ील में जाल डालते हुए देखा; क्यूँकि वो मछली पकड़ने वाले थे। 17 और इसा ने उन से कहा, “मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को आदमी पकड़ने वाला बनाऊँगा।” 18 वो फौरन जाल छोड़ कर उस के पीछे हो लिए। 19 और थोड़ी दूर जाकर कर उसने जब्दी के बेटे याकब और उसके भाई यहन्ना को नाब पर जातों की मरम्मत करते देखा। 20 उसने फौरन उनको अपने पास लुटाया, और वो अपने बाप जब्दी को नाब पर मज़दूरों के साथ छोड़ कर उसके पीछे हो लिए। 21 फिर वो कफरनहम में दाखिल हुए, और वो फौरन सबत के दिन इबादतखाने में जाकर तालीम देने लगा। 22 और लोग उसकी तालीम से हैरान हुए, क्यूँकि वो उनको आतिमों की तरह नहीं बल्कि इखियार के साथ तालीम देता था। 23 और फौरन उनके इबादतखाने में एक आदमी ऐसा मिला जिस के अंदर बदस्ह थी वो यूँ कह कर पुकार उठा। 24 “ऐ इसा नासी हमें तुझ से क्या काम? क्या तु हमें तबाह करने आया है मैं तुझको जानता हूँ कि तू कौन है? खुदा का कूदूस है।” 25 इसा ने उसे खिड़क कर कहा, “चुप रह, और इस में से निकल जा।!” 26 तब वो बदस्ह उसे मरोड़ कर बड़ी आवाज से चिल्ला कर उस में से निकल गई। 27 और सब लोग हैरान हुए और आपस में ये कह कर बहस करने लगे “ये कौन है। ये तो नई तालीम है? वो बदस्हों को भी इखियार के साथ हुक्म देता है, और वो उसका हुक्म मानती है।” 28 और फौरन उसकी शोहरत गलील के आस पास में हर जगह फैल गई। 29 और वो फौरन इबादतखाने से निकल कर शमैन और अन्द्रियास के घर आए। 30 शमैन की सास बुधार में पड़ी थी, और उन्होंने फौरन उसकी खबर उसे दी। 31 उसने पास जाकर और उसका हाथ

पकड़ कर उसे उठाया, और बुधार उस पर से उत्तर गया, और वो उठकर उसकी खिदमत करने लगी। 32 शम को सूरज इबने के बाद लोग बहुत से बीमारों को उपके पास लाए। 33 और सारे शहर के लोग दरवाजे पर जमा हो गए। 34 और उसने बहुतों को जो तरह — तरह की बीमारियों में गिरफ्तार थे, अच्छा किया और बहुत सी बदस्हों को निकाला और बदस्हों को बोलने न दिया, क्यूँकि वो उसे फहमानी थीं। 35 और सुबह होने से बहुत पहले वो उठा, और एक वीरान जगह में गया, और वहाँ दुआ की। 36 और शमैन और उसके साथी उसके पीछे गए। 37 और जब वो मिला तो उन्होंने उससे कहा, “सब लोग तुझे दूँड़ रहे हैं।” 38 उसने उससे कहा “आओ हम और कहीं आस पास के शहरों में चलें ताकि मैं वहाँ भी ऐलान करूँ, क्यूँकि मैं इसी लिए निकला हूँ।” 39 और वो पूरे गलील में उनके इबादतखाने में जा जाकर ऐलान करता और बदस्हों को निकालता रहा। 40 और एक कौदी ने उस के पास आकर उसकी मिन्नत की और उसके सामने घृने टेक कर उस से कहा “अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ कर सकता है।” 41 उसने उसपर तरस खाकर हाथ बढ़ाया और उसे छक्र उस से कहा। “मैं चाहता हूँ, तू पाक साफ हो जा।” 42 और फौरन उसका कौद जाता रहा और वो पाक साफ हो गया। 43 और उसने उसे हिदायत कर के फौरन सूखत किया। 44 और उससे कहा “खबरदार! किन्तु से कुछ न कहना जाकर अपने आप को इमारों को दिखा, और अपने पाक साफ हो जाने के बारे में उन चीजों को जो मूरा ने मुकर्रर की हैं नज़ गुज़र ताकि उनके लिए गवाही हो।” 45 लेकिन वो बाहर जाकर बहुत चर्चा करने लगा, और इस बात को इस कदर मशहर किया कि इसा शहर में फिर खुले आम दाखिल न हो सका; बल्कि बाहर वीरान मुकामों में रहा, और लोग चारों तरफ से उसके पास आते थे।

2 कई दिन बाद जब ‘इसा कफरनहम में फिर दाखिल हुआ तो सुना गया

कि वो घर में है। 2 फिर इतने आदमी जमा हो गए, कि दरवाजे के पास भी जगह न रही और वो उनको कलाम सुना रहा था। 3 और लोग एक फालिज के मारे हुए को चार आदमियों से उठवा कर उस के पास लाए। 4 मगर जब वो भीड़ की वजह से उसके नज़दीक न आ सके तो उन्होंने उस छत को जहाँ वो था, खोल दिया और उसे उथेड़ कर उस चारपाई को जिस पर फालिज का मारा हुआ लेटा था, लटका दिया। 5 इसा ने उन लोगों का ईमान देख कर फालिज के मारे हुए से कहा, “बेटा, तैरे गुनाह मुआफ हुए।” 6 मगर वहाँ कुछ आलिम जो बैठे थे, वो अपने दिलों में सोचने लगे। 7 “ये क्यूँ ऐसा कहता है? कुक्र बकता है, खुदा के सिवा गुनाह कौन मुआफ कर सकता है।” 8 और फौरन इसा ने अपनी स्ह में मालूम करके कि वो अपने दिलों में यूँ सोचते हैं उनसे कहा, “तुम क्यूँ अपने दिलों में ये बातें सोचते हो? 9 आसान क्या है फालिज के मारे हुए से ये कहना कि तैरे गुनाह मुआफ हुए, या ये कहना कि उठ और अपनी चारपाई उठा कर चल फिर। 10 लेकिन इस लिए कि तुम जानों कि इब्न — ए आदम को जमीन पर गुनाह मुआफ करने का इखियार है” (उसने उस फालिज के मारे हुए से कहा)। 11 “मैं तुम से कहता हूँ उठ अपनी चारपाई उठाकर अपने घर चला जा।” 12 और वो उठा, फौरन अपनी चारपाई उठाकर उन सब के सामने बाहर चला गया, चुनौती वो सब हैरान हो गए, और खुदा की तम्जीद करके कहने लगे “हम ने ऐसा कभी नहीं देखा था।” 13 वो फिर बाहर ग़ील के किनारे गया, और सारी भीड़ उसके पास आई और वो उनको तालीम देने लगा। 14 जब वो जा रहा था, तो उसने हलाकों के बेटे लाली को महसूल की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा “मेरे पीछे हो ले तो।” पस वो उठ कर उस के पीछे हो लिया। 15 और यूँ हुआ कि वो उस के घर में खाना खाने बैठा। बहुत से महसूल लेने वाले और गुनाहगार लोग इसा और उसके शागिर्दों के साथ खाने बैठे, क्यूँकि वो बहुत थे, और उसके पीछे हो लिए थे। 16 फरीसियों ने फ़कीरों

ने उसे गुनाहगारों और महसूल लेने वालों के साथ खाते देखकर उसके शारिर्दों से कहा, “ये तो महसूल लेने वालों और गुनाहगारों के साथ खाता पीता है!” 17 इसा’ ने ये सुनकर उनसे कहा, “तन्दस्तों को हकीमी की जस्त नहीं बल्कि बीमारों को; मैं रास्तबाजों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।” 18 और यहुन्ना के शारिर्द और फरीसियों के शारिर्द तो रोजा रखते हैं? लेकिन तेर शारिर्द क्यौं रोजा नहीं रखते? 19 इसा’ ने उनसे कहा “क्या बाराती जब तक दुल्हा उनके साथ है रोजा रख सकते हैं? जिस बक्त तक दुल्हा उनके साथ है वो रोजा नहीं रख सकते। 20 मगर वो दिन आएँगे कि दुल्हा उनसे जुदा किया जाएगा, उस बक्त वो रोजा रखेंगे। 21 कोरे कपड़े का पैवन्द पुरानी पोशाक पर कोई नहीं लगाता नहीं तो वो पैवन्द उस पोशाक में से कुछ खींच लेगा, यानी नया पुरानी से और वो ज़ियादा फट जाएगी। 22 और नई मय को पुरानी मश्कों में कोई नहीं भरता नहीं तो मश्कें मय से फट जाएँगी और मय और मश्कें दोनों बरबाद हो जाएँगी बल्कि नई मय को कई मश्कों में भरते हैं।” 23 और यूँ हुआ कि वो सबत के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके शारिर्द राह में चलते होए बाले तोड़ने लगे। 24 और फरीसियों ने उस से कहा “देख ये सबत के दिन वो काम क्यूँ करते हैं जो जाएँगे नहीं।” 25 उसने उनसे कहा, “क्या तुम ने कभी नहीं पढ़ा कि दाऊद ने क्या किया जब उस को और उस के साथियों को जस्त हुई और वो भर्खे हुए? 26 वो क्यूँकर अबियातर सरदार काहिन के दिनों में खुदा के घर में गया, और उस ने नज़र की रोटियाँ खाई जिनको खाना कहिनों के सिवा और किसी को जाएँगे नहीं था और अपने साथियों को भी दी? 27 और उसने उनसे कहा “सबत आदमी के लिए बना है न आदमी सबत के लिए। 28 इस लिए इन्हन — ए — आदम सबत का भी मालिक है।”

3 और वो इबादतखाने में फिर दाखिल हुआ और वहाँ एक आदमी था, जिसका हाथ सखा हुआ था। 2 और वो उसके इंतजार में रहे, कि अगर वो उसे सबत के दिन अच्छा करे तो उस पर इल्जाम लगाएँ। 3 उसने उस आदमी से जिसका हाथ सखा हुआ था कहा “बीच में खड़ा हो।” 4 और उसने कहा “सबत के दिन नेकी करना जाएँ है या बटी करना? जान बचाना या कल्पना करना?” वो चुप रह गए। 5 उसने उनकी सखत दिली की वजह से गमानी होकर और चारों तरफ उन पर गुस्से से नजर करके उस आदमी से कहा, “अपना हाथ बढ़ा।” उस ने बड़ा दिया, और उसका हाथ दुस्त हो गया। 6 फिर फरीसी फौरन बाहर जाकर हेरोदियों के साथ उसके खिलाफ मशवरा करने लगे। कि उसे किस तरह हलाक करें। 7 और इसा अपने शारिर्दों के साथ इ़ील की तरफ चला गया, और गलील से एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। 8 और यहदिया और येस्लामे इदूम्या से और यदरन के पार सूर और सैदा के शहरों के आस पास से एक बड़ी भीड़ ये सुन कर कि वो कैसे बड़े काम करता है उसके पास आई। 9 पस उसने अपने शारिर्दों से कहा भीड़ की वजह से एक छोटी नाव में लिए तैयार रहे “ताकि वो मुझे दबा न दें।” 10 क्यूँकि उस ने बहुत लोगों को अच्छा किया था, चुनौंचे जितने लोग जो सखत बीमारियों में गिरफतार थे, उस पर गिर पड़ते थे, कि उसे छू लें। 11 और बदस्तों जब उसे देखती थी उसके आगे गिर पड़ती और पुकार कर कहती थी, “तू खुदा का बेटा है।” 12 और वो उनको बड़ी ताकीद करता था, मुझे ज़ाहिर न करना। 13 फिर वो पहाड़ पर चढ़ गया, और जिनको वो आप चाहता था उनको पास बुलाया, और वो उसके पास चले गए। 14 और उसने बारह को मुकर्रन किया, ताकि उसके साथ रहें और वो उनको भेजे कि मनादी करें। 15 और बदस्तों को निकालने का इक्खियार रखें। 16 वो ये हैं शमौन जिसका नाम पतरस रखा। 17 और जब्दी का बेटा याकूब

और याकूब का भाई यहुन्ना जिस का नाम बु'आनर्गिस यानी गरज के बेटे रखा। 18 और अन्दियास, फिलिप्पुस, बरतुल्माई, और मती, और तोमा, और हलफी का बेटा और तदी और शमौन कनानी। 19 और यहदाह इस्क्रियोती जिस ने उसे पकड़वा भी दिया। 20 वो घर में आया और इतने लोग फिर जमा हो गए, कि वो खाना भी न खा सके। 21 जब उसके अजीजों ने ये सुन तो उसे पकड़ने को निकले, क्योंकि वो कहते थे “वो बेखुद है।” 22 और आलिम जो येस्लामे से आए थे, ये कहते थे “उसके साथ बालजबूल है” और ये भी कि “वो बदस्तों के सरदार की मदद से बदस्तों को निकालता है।” 23 वो उनको पास बुलाकर उसे मिसालों में कहने लगा “कि शैतान को शैतान किस तरह निकाल सकता है? 24 और अगर किसी सलतनत में फूट पड़ जाए तो वो सलतनत काईम नहीं रह सकती। 25 और अगर किसी घर में फूट पड़ जाए तो वो घर काईम न रह सकेगा। 26 और अगर शैतान अपना ही मुखालिफ होकर अपने में फूट डाले तो वो काईम नहीं रह सकता, बल्कि उसका खातिमा हो जाएगा।” 27 “लेकिन कोई आदमी किसी ताकतवर के घर में घुसकर उसके माल को लट नहीं सकता जब तक वो पहले उस ताकतवर को न बौध ले तब उसका घर लट लेगा।” 28 “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि बनी आदम के सब गुनाह और जितना कुक्र वो बकते हैं मुआफ किया जाएगा। 29 लेकिन जो कोई स्त्री — उल — कुदरूस के हक में कुक्र बके वो हसेसा तक मुआफी न पाएगा; बल्कि वो हमेशा गुनाह का कुसरवार है।” (aiōn g165, aiōnios g166) 30 क्यूँकि वो कहते थे, कि उस में बदस्त है। 31 फिर उसकी माँ और भाई आए और बाहर खड़े होकर उसे बुलवा भेजा। 32 और भीड़ उसके आसपास बैठी थी, उन्होंने उस से कहा “देख तेरी माँ और तेरे भाई बाहर तुझे पूछते हैं” 33 उसने उनको जबाब दिया “मेरी माँ और मेरे भाई कौन हैं?” 34 और उन पर जो उसके पास बैठे थे नजर करके कहा “देखो, मेरी माँ और मेरे भाई ये हैं। 35 क्यूँकि जो कोई खुदा की मर्जी पर चले वही मेरा भाई और मेरी बहन और माँ हैं।”

4 वो फिर इ़ील के किनारे तालीम देने लगा; और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ जमा हो गई, वो इ़ील में एक नाव में जा बैठा और सारी भीड़ खुशकी पर इ़ील के किनारे रही। 2 और वो उनको मिसालों में बहुत सी बातें सिखाने लगा, और अपनी तालीम में उसे कहा। 3 “सुनो देखो; एक बोने वाला बीज बोने निकला। 4 और बोते वक्त यूँ हुआ कि कुछ राह के किनारे गिरा और परिदंडों ने आकर उसे चुप लिया। 5 और कुछ पत्थरीली जमीन पर गिरा, जहाँ उसे बहुत मिट्ठी न मिली और गहरी मिट्ठी न मिलने की वजह से जल्द उग आया। 6 और जब सुरज निकला तो जल गया और जड़ न होने की वजह से सूख गया। 7 और कुछ झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने बढ़कर दबा लिया, और वो फल न लाया। 8 और कुछ अच्छी जमीन पर गिरा और वो उगा और बढ़कर फला; और कोई तीस गुना कोई साठ गुना कोई सौ गुना फल लाया।” 9 “फिर उसने कहा! जिसके सुनने के कान हों वो सुन ले।” 10 जब वो अकेला रह गया तो उसके साथियों ने उन बारह समेत उसे इन मिसालों के बारे में पूछा? 11 उसने उसने उनसे कहा “तुम को खुदा की बादशाही का भी राज दिया गया है; मगर उनके लिए जो बाहर हैं सब बातें मिसालों में होती हैं। 12 ताकि वो देखते हुए देखते हुए और मालूम न करें “और सुनते हुए सुनें और न समझें” ऐसा न हो कि वो फिर जाएँ और मुआफी पाएँ।” 13 फिर उसने उनसे कहा “क्या तुम ये मिसाल नहीं समझें? फिर सब मिसालों को क्यूँकर समझाएँ? 14 बोनेवाला कलाम बोता है। 15 जो राह के किनारे हैं जहाँ कलाम बोया जाता है वो है कि जब उन्होंने सुना तो शैतान फौरन आकर उस कलाम को जो उस में बोया गया था, उठा ले जाता है। 16 और इसी तरह जो पत्थरीली जमीन में बोए गए, वे वो हैं जो कलाम को सुन कर फौरन खुशी से कबूल कर लेते हैं। 17 और अपने अन्दर जड़ नहीं रखते,

बल्कि चन्द रोजा है, फिर जब कलाम की वजह से मुसीबत या जुल्म बर्पा होता है तो फैरन ठोकर खाते हैं। 18 और जो झाड़ियों में बोए गए, वो और हैं ये वो हैं जिन्होंने कलाम सुना। 19 और दुनिया की फिक्र और दौलत का धोखा और और चीजों का लालच दाखिल होकर कलाम को दबा देते हैं, और वो बेफल रह जाता है।” (aiōn g165) 20 और जो अच्छी जमीन में बोए गए, ये वो हैं जो कलाम को सुनते और कुबूल करते और फल लाते हैं; कोई तीस गुना कोई साठ गुना और कोई सौ गुना।” 21 और उसने उनसे कहा “क्या चराग इसलिए जलाते हैं कि पैमाना या पलंग के नीचे रखवा जाए? क्या इसलिए नहीं कि चिरागदान पर रखवा जाए?” 22 कर्यूक कोई चीज छिपी नहीं मगर इसलिए कि जाहिर हो जाए, और पोशीदा नहीं हूँ, मगर इसलिए कि सामने में आए। 23 अगर किसी के सुनने के कान हों तो सुन लें।” 24 फिर उसने उनसे कहा “खबरदार रहो; कि क्या सुनते हो जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा, और तुम को ज्यादा दिया जाएगा। 25 कर्यूक जिस के पास है उसे दिया जाएगा और जिसके पास नहीं है उस से वो भी जो उसके पास है ले लिया जाएगा।” 26 और उसने कहा “खुदा की बादशाही ऐसी है जैसे कोई अदमी जमीन में बीज डालते। 27 और रात को सोए और दिन को जागे और वो बीज इस तरह उगे और बढ़े कि वो न जाने। 28 जमीन आप से आप फल लाती है, पहले पत्ती फिर बालों में तेयार दाने। 29 फिर जब अनाज पक चुका तो वो फैरन दरान्ती लगात है क्यूँकि काटने का बक्त आ पहुँचा।” 30 फिर उसने कहा “हम खुदा की बादशाही को किससे मिसाल दें और किस मिसाल में उसे बयान करें? 31 वो गाई के दाने की तरह है कि जब जमीन में बोया जाता है तो जमीन के सब बीजों से छोटा होता है। 32 मगर जब बो दिया गया तो उग कर सब तरकारियों से बड़ा हो जाता है और ऐसी बड़ी डालियाँ निकालता है कि हवा के परिन्दे उसके साए में बसेरा कर सकते हैं।” 33 और वो उनको इस किस्म की बहुत सी मिसालें दे देकर उनकी समझ के मुताबिक कलाम सुनाता था। 34 और वे मिसाल उससे कुछ न कहता था, लेकिन तन्हाई में अपने खास शागिर्दों से सब बातों के माने बयान करता था। 35 उसी दिन जब शाम हुई तो उसने उनसे कहा “आओ पार चलें।” 36 और वो भीड़ को छोड़ कर उसे जिस हाल में था, नाव पर साथ ले चले, और उसके साथ और नावें भी थी। 37 तब बड़ी औँची चली और लहरें नाव पर यहाँ तक आईं कि नाव पानी से भरी जाती थी। 38 और वो खुद पीछे की तरफ गढ़ी पर सो रहा था “पस उहोंने उसे जगा कर कहा? ऐ उस्ताद क्या तुझे फिक्र नहीं कि हम हलाक हैं जाते हैं।” 39 उसने उठकर हवा को डॉटा और पानी से कहा “साकित हो यांनी थम जा।” पस हवा बन्द हो गई, और बड़ा अमन हो गया। 40 फिर उसने कहा “तुम कर्यू डरते हो? अब तक ईमान नहीं रखते।” 41 और वो निहायत डर गए और आपस में कहने लगे “ये कौन हैं कि हवा और पानी भी इसका हुक्म मानते हैं।”

5 और वो झील के पार गिरासीनियों के इलाके में पहुँचे। 2 जब वो नाव से उतरा तो फैरन एक अदमी जिस में बदरू थी, कब्डों से निकल कर उसे मिला। 3 वो कब्डों में रहा करता था और अब कोई उसे ज़ंजीरों से भी न बाँध सकता था। 4 कर्यूक वो बार बार बेड़ियों और ज़ंजीरों से बाँधा गया था, लेकिन उसने ज़ंजीरों को तोड़ा और बेड़ियों के टुकड़े टुकड़े किया था, और कोई उसे काबू में न ला सकता था। 5 वो हमेशा रात दिन कब्डों और पहाड़ों में चिल्लाता और अपने आपको पत्थरों से ज़खीरी करता था। 6 वो ईसा को दूर से देखकर दौड़ा और उसे सज्दा किया। 7 और बड़ी आवाज से चिल्ला कर कहा “ऐ ईसा खुदा ताला के फर्जन्द मुझे तुझ से क्या काम? तुझे खुदा की कसम देता हूँ, मुझे ऐजाब में न डाला।” 8 कर्यूक उस ने उससे कहा था, “ऐ बदरू! इस

आदमी में से निकल आ।” 9 फिर उसने उससे पूछा “तेरा नाम क्या है?” उस ने उससे कहा “मेरा नाम लश्कर, है कर्यूक हम बहुत हैं।” 10 फिर उसने उसकी बहुत मिन्नत की, कि हमें इस इलाके से बाहर न भेज। 11 और वहाँ पहाड़ पर खिन्जीरों यनी [सुवरों] का एक बड़ा गोल चर रहा था। 12 पस उहोंने उसकी मिन्नत करके कहा, “हम को उन खिन्जीरों यनी [सुवरों] में भेज दे, ताकि हम इन में दाखिल हों।” 13 पस उनमे उनको इजाजत दी और बदरू हें निकल कर खिन्जीरों यनी [सुवरों] में दाखिल हो गई, और वो गोल जो कोई दो हजार का था किनारे पर से डापट कर झील में या पड़ा और झील में डब मरा। 14 और उनके चराने वालों ने भागकर शहर और देहात में खबर पहुँचाई। 15 पस लोग ये माजरा देखने को निकलकर ईसा के पास आए, और जिस में बदरू हें यांनी बदरू हें का लश्कर था, उसको बैठे और कपड़े पहने और होश में देख कर डर गए। 16 देखने वालों ने उसका हाल जिस में बदरू हें थी और खिन्जीरों यनी [सुवरों] का माजरा उनसे बयान किया। 17 वो उसकी मिन्नत करने लगे कि हमारी सरहद से चला जा। 18 जब वो नाव में दाखिल होने लगा तो जिस में बदरू हें थी उसने उसकी मिन्नत की “मैं तेरे साथ रहूँ।” 19 लेकिन उसने उसे इजाजत न दी बल्कि उस से कहा “अनेन लोगों के पास अपने घर जा और उनको खबर दे कि खुदावन्द ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए, और तुम पर रहम किया।” 20 वो गया और दिक्पुलिस में ईसा बात की चर्चा करने लगा, कि ईसा ने उसके लिए कैसे बड़े काम किए, और सब लोग ताऊँज्बुक करते थे। 21 जब ईसा फिर नाव में पार आया तो बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई और वो झील के किनारे था। 22 और इबादतखाने के सरदारों में से एक शख्स याईर नाम का आया और उसे देख कर उसके कदमों में गिरा। 23 और ये कह कर मिन्नत की, “मेरी छोटी बेटी मरने को है तु आकर अपना हाथ उस पर रख ताकि वो अच्छी हो जाए और जिन्दा रहे।” 24 पस वो उसके साथ चला और बहुत से लोग उसके पीछे हो लिए और उस पर गिरे पड़ते थे। 25 फिर एक औरत जिसके बारह बरस से खून जारी था। 26 और कई हकीमों से बड़ी तकलीफ उठा चुकी थी, और अपना सब माल खर्च करके भी उसे कुछ फाइदा न हुआ था, बल्कि ज्यादा बीमार हो गई थी। 27 ईसा का हाल सुन कर भीड़ में उसके पीछे से आई और उसकी पोशाक को छुआ। 28 कर्यूक वो कहती थी, “अगर मैं सिर्फ उसकी पोशाक ही छू लूँगी तो अच्छी हो जाऊँगी।” 29 और फैरन उसका खून बहना बन्द हो गया और उसने अपने बदन में मालम किया कि मैंने इस बीमारी से शिफा पाई। 30 ईसा को फैरन अपने में मालम हुआ कि मुझ में से कूब्त निकली, उस भीड़ में पीछे मुड़ कर कहा, “किसने मेरी पोशाक छुई?” 31 उसके शागिर्दों ने उससे कहा, तु देखोता है कि भीड़ तुझ पर गिरी पड़ती है फिर तु कहता है, “मुझे किसने छुआ?” 32 उसने चारों तरफ निगाह की ताकि जिसने ये काम किया; उसे देखे। 33 वो औरत जो कुछ उससे हुआ था, महसूल करके डरती और काँपती हुई आई और उसके आगे गिर पड़ी और सारा हाल सच सच उससे कह दिया। 34 उसने उससे कहा, “बेटी तेरे ईमान से तुझे शिफा मिली; सलामती से जा और अपनी इस बीमारी से बची रह।” 35 वो ये कह कर ही रहा था कि इबादतखाने के सरदार के यहाँ से लोगों ने आकर कहा, “तेरी बेटी मर गई अब उस्ताद को क्यूँ तकलीफ देता है?” 36 जो बात वो कह रहे थे, उस पर ईसा ने गौर न करके इबादतखाने के सरदार से कहा, “खौफ न कर, सिर्फ ऐंतिकाद रख।” 37 फिर उसने पतरस और यांकूब के भाई यूहन्ना के सिवा और किसी को अपने साथ चलने की इजाजत न दी। 38 और इबादतखाने के सरदार के घर में आए, और उसने देखा कि शोर हो रहा है और लोग बहुत रो पीट रहे हैं 39 और अन्दर जाकर उसने कहा, “तुम कर्यू शेर मचाते और रोते हो, लड़की मरी नहीं बल्कि सोती है।” 40 वो उस पर हँसने

लगे, लेकिन वो सब को निकाल कर लड़की के माँ बाप को और अपने साथियों को लेकर जहाँ लड़की पड़ी थी अन्दर गया। 41 और लड़की का हाथ पकड़ कर उससे कहा, “तलीता कूपी” जिसका तर्जुमा, “ऐ लड़की! मैं तुझ से कहता हूँ उठ!” 42 वो लड़की फैरैन उठ कर चलने फिरने लगी, क्यूँकि वो बारह बरस की थी इस पर लोग बहत ही हैरान हुए। 43 फिर उसने उनको ताकीद करके हक्म दिया कि ये कोई न जाने और फरमाया; लड़की को कुछ खाने को दिया जाए।

6 फिर वहाँ से निकल कर ‘इंसा अपने शहर में आया और उसके शारिर्द उसके पीछे हो लिए। 2 जब सबत का दिन आया “तो वो इबादतखाने में तालीम देने लगा और बहुत लोग सुन कर हैरान हुए और कहने लगे, ये बातें इस में कहाँ से आ गई? और ये क्या हिक्मत है जो इसे बाखी गई और कैसे मोजिजे इसके हाथ से जाहिर होते हैं? 3 क्या ये वही बढ़ई नहीं जो मरियम का बेटा और याकूब और योसेस और यहदाह और शमैन का भाई है और क्या इसकी बहनें यहाँ हमारे हाँ नहीं?” पस उन्होंने उसकी वजह से तोकर खाई। 4 इंसा ने उन से कहा, “नबी अपने बतन और अपने रिश्तेदारों और अपने घर के सिवा और कहीं बेइज्जत नहीं होता।” 5 और वो कोई मोजिजा वहाँ न दिया सका, सिर्फ़ थोड़े से बीमारों पर हाथ रख कर उन्हें अच्छा कर दिया। 6 और उस ने उनकी बेपिकादी पर ताअज्जब किया और वो चारों तरफ के गाँव में तालीम देता फिरा। 7 उसने बारह को अपने पास बुलाकर दो दो करके भेजना शुरू किया और उनको बदस्हों पर इखियार बाखा। 8 और हक्म दिया “रास्ते के लिए लाठी के सिवा कुछ न लो, न रोटी, न झोली, न अपने कमरबन्द में पैसे। 9 मगर जरियों पहनों और दो दो कुरते न पहनो।” 10 और उसने उनसे कहा, “जहाँ तुम किसी घर में दाखिल हो तो उसी में रहो, जब तक वहाँ से रवाना न हो। 11 जिस जगह के लोग तुम्हें कबूल न करें और तुम्हारी न सुनें, वहाँ से चलते बत्रत अपने तल्जों की मिट्टी झाड़ दो ताकि उन पर गवाही हो।” 12 और बारह शारिर्दों ने रवाना होकर ऐलान किया, कि “तौबा करो।” 13 और बहुत सी बदस्हों को निकाला और बहुत से बीमारों को तेल मल कर अच्छा कर दिया। 14 और हेरोदेस बादशाह ने उसका जिक्र सुना “क्यूँकि उसका नाम मशहूर होगया था और उसने कहा, यहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मुर्दों में से जी उठा है, क्यूँकि उससे मोजिजे जाहिर होते हैं।” 15 मगर बा’ज़ कहते थे, एतियाह है और बा’ज़ ये नवियों में से किसी की मानिन्द एक नवी है। 16 मगर हेरोदेस ने सुनकर कहा, “यहन्ना जिस का सिं मैंने कटवाया वही जी उठा है।” 17 क्यूँकि हेरोदेस ने अपने आदमी भेजकर यहन्ना को पकड़वाया और अपने भाई फिलिप्स की बीवी हेरोदियास की वजह से उसे कैदखाने में बाँध रखा था, क्यूँकि हेरोदेस ने उससे शादी कर ली थी। 18 और यहन्ना ने उससे कहा था, “अपने भाई की बीवी को रखना तुझे जाएँ नहीं।” 19 पस हेरोदियास उस से दुश्मनी रखती और चाहती थी कि उसे कल्त कराए, मगर न हो सका। 20 क्यूँकि हेरोदेस यहन्ना को रास्तबाज और मुकद्दस आदमी जान कर उससे डरता और उसे बचाए रखता था और उसकी बातें सुन कर बहत हैरान हो जाता था, मगर सुनता खुशी से था। 21 और मौके के दिन जब हेरोदेस ने अपनी सालाहिराह में अमीरों और फौजी सरदारों और गलील के रईसों की दावत की। 22 और उसी हेरोदियास की बेटी अन्दर आई और नाच कर हेरोदेस और उसके मेहमानों को खुश किया तो बादशाह ने उस लड़की से कहा, “जो चाहे मुझ से माँग मैं तुझे दूँगा।” 23 और उससे कसम खाई “जो कुछ त मुझ से माँगी अपनी आपी सलतनत तक तुझे दूँगा।” 24 और उसने बाहर आकर अपनी माँ से कहा, “मैं क्या माँगूँ?” उसने कहा, “यहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर।” 25 वो फैरैन बादशाह के पास जल्दी से अन्दर आई और उस से अर्ज किया, “मैं

चाहती हूँ कि तू यहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर एक थाल में अभी मुझे मँगवा दो।” 26 बादशाह बहुत गमरीन हुआ मगर अपनी कँसमों और मेहमानों की बजह से उसे इन्कार करना न चाहा। 27 पस बादशाह ने फैरैन एक सिपाही को हक्म देकर भेजा कि उसका सिर लाए, उसने जाकर कैद खाने में उस का सिर काटा। 28 और एक थाल में लाकर लड़की को दिया और लड़की ने माँ को दिया। 29 फिर उसके शारिर्द सुन कर आए, उस की लाश उड़ा कर कब्र में रखी। 30 और रसूल इसा के पास जमा हुए और जो कुछ उन्होंने किया और सिखाया था, सब उससे बयान किया। 31 उसने उनसे कहा, “तुम आप अलग वीरान जगह में चले आओ और जरा आराम करो इसलिए कि बहुत लोग आते जाते थे और उनको खाना खाने को भी फुरसत न मिलती थी।” 32 पस वो नाव में बैठ कर अलग एक वीरान जगह में चले आए। 33 लोगों ने उनको जाते देखा और बहुतेरों ने पहचान लिया और सब शहरों से इकट्ठे हो कर पैदल उधर दौड़े और उन से पहले जा पहुँचे। 34 और उसने उतर कर बड़ी भीड़ देखी और उसे उनपर तरस आया क्यूँकि वो उन भेड़ों की मानिन्द थे, जिनका चरवाहा न हो; और वो उनको बहुत सी बातों की तालीम देने लगा। 35 जब दिन बहुत ढल गया तो उसके शारिर्द उसके पास आकर कहने लगे, “ये जगह वीरान है, और दिन बहुत ढल गया है।” 36 इनको स्वस्त कर ताकि चारों तरफ की बस्तियों और गांव में जाकर, अपने लिए कुछ खाना मोल लें।” 37 उसने उसे जबाब में कहा, “तुम ही इहें खाने को दो।” उन्होंने उससे कहा “क्या हम जाकर दो सौ दिन की मजदूरी से रोटियाँ मोल लाएँ और इनको खिलाएँ?” 38 उसने उनसे पूछा, “तुम्हारे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने दरियाप्त करके कहा, “पाँच और दो मछलियाँ।” 39 उसने उन्हें हक्म दिया कि, “सब हरी घास पर कतार में होकर बैठ जाएँ।” 40 पस वो सौ सौ और पचास पचास की कतारें बाँध कर बैठ गए। 41 फिर उसने वो पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ ली और आसमान की तरफ टेखकर बर्कत दी; और रोटियाँ तोड़ कर शारिर्दों को देता गया कि उनके आगे रखें, और वो दो मछलियाँ भी उन सब में बैठ दी। 42 पस वो सब खाकर सेर हो गए। 43 और उन्होंने वे इस्तेमाल खाने और मछलियों से बारह टोकरियाँ भरकर उठाई। 44 और खानेवाले पाँच हजार मर्द थे। 45 और फैरैन उसने अपने शारिर्दों को मजबूर किया कि नाव पर बैठ कर उस से पहले उस पार बैठ सैदा को चले जाएँ जब तक वो लोगों को स्वस्त करे। 46 उनको स्वस्त करके पहाड़ पर दुआ करने चला गया। 47 जब शाम हुई तो नाव झील के बीच में थी और वो अकेला खुशकी पर था। 48 जब उसने देखा कि वो खेने से बहुत तंग हैं क्यूँकि हवा उनके मुखालिफ थी तो रात के पिछले पहर के करीब वो झील पर चलता हुआ उनके पास आया और उनसे अगे निकल जाना चाहता था। 49 लेकिन उन्होंने उसे झील पर चलते देखकर ख्याल किया कि “भूत है” और चिल्ला उठे। 50 क्यूँकि सब उसे देख कर घब्बा गए थे, मगर उसने फैरैन उससे बातें की और कहा, “सुतमझन रहो। मैं हूँ डरो मत।” 51 फिर वो नाव पर उनके पास आया और हवा थम गई। और वो अपने दिल में निहायत हैरान हुए। 52 इसलिए कि वो रोटियाँ के बारे में न समझे थे, बल्कि उनके दिल सख्त हो गए थे। 53 और वो पार जाकर गनेसरत के इलाके में पहुँचे और नाव किनारे पर लगाई। 54 और जब नाव पर से उतरे तो फैरैन लोग उसे पहचान कर। 55 उस सारे इलाके में चारों तरफ दौड़े और बीमारों को चारपाइयों पर डाल कर जहाँ कहीं सुना कि वो है वहाँ लिए फिरे। 56 और वो गाँव शहरों और बस्तियों में जहाँ कहीं जाता था लोग बीमारों को गाहों में रख कर उसकी मिन्नत करते थे कि वो सिर्फ़ उसकी पोशाक का किनारा हूँ लें और जितने उसे छूते थे शिफा पाते थे।

7 फिर फरीसी और कुछ आलिम उसके पास जमा हुए, वो येस्सलेम से आए थे। 2 और उन्होंने देखा कि उसके कुछ शारिर्द नापाक यानी बिना धोए हाथों से खाना खाते हैं 3 क्यूंकि फरीसी और सब यहदी बुजुर्गों की रिवायत के मुताबिक जब तक अपने हाथ खब्बन न धोते नहीं खाते। 4 और बाजार से आकर जब तक गुस्सल न कर लें नहीं खाते, और बहुत सी और बातों के जो उनको पहुँची हैं पाबन्द हैं, जैसे प्यालों और लोटों और तांबे के बरतनों को धोना। 5 पस फरीसियों और आलिमों ने उस से पूछा, क्या वजह है कि “तेरे शारिर्द बुजुर्गों की रिवायत पर नहीं चलते बल्कि नापाक हाथों से खाना खते हैं?” 6 उसने उनसे कहा, “यसां याह ने तुम रियाकारों के हक में क्या खब्बन बुव्वत की, जैसे लिखा है कि: ये लोग होटों से तो मेरी तालीम करते हैं लेकिन इनके दिल मुझ से दूर हैं। 7 ये बे फाइदा मेरी इबादत करते हैं, क्यूंकि इनसानी अहकाम की तालीम देते हैं।” 8 तुम खुदा के हक्म को छोड़ करके आदिमियों की रिवायत को काई रखते हो।” 9 उसने उनसे कहा, “तुम अपनी रिवायत को मानने के लिए खुदा के हक्म को बिल्कुल रद्द कर देते हो। 10 क्यूंकि मस्ता ने फरमाया है, अपने बाप की अपनी माँ की इज्जत कर, और जो कोई बाप या माँ को बुरा करे, वो जस्त जान से मारा जाए।” 11 लेकिन तुम कहते हो, “अगर कोई बाप या माँ से कहे कि जिसका तड़े मुझ से फाइदा पहुँच सकता था, ‘वो कुर्बान यानी खुदा की नज़र हो चुकी। 12 तो तुम उसे फिर बाप या माँ की कुछ मदद करने नहीं देते। 13 यूँ तुम खुदा के कलाम को अपनी रिवायत से, जो तुम ने जारी की है बेकार कर देते हो, और ऐसे बहतेरे काम करते हो।” 14 और वो लोगों को फिर पास बुला कर उनसे कहने लगा, “तुम सब मेरी सुनो और समझो। 15 कोई चीज बाहर से आदमी में दाखिल होकर उसे नापाक नहीं कर सकती मगर जो चीजें आदमी में से निकलती हैं वही उसको नापाक करती है। 16 [अगर किसी के सुनने के कान हों तो सुन लो।]” 17 जब वो भीड़ के पास से घर में आया “तो उसके शारिर्दों ने उससे इस मिसाल का मतलब पूछा?” 18 उस ने उनसे कहा, “क्या तुम भी ऐसे ना समझ हो? क्या तुम नहीं समझते कि कोई चीज जो बाहर से आदमी के अन्दर जाती है उसे नापाक नहीं कर सकती? 19 इसलिए कि वो उसके दिल में नहीं बल्कि पेट में जाती है और गंदी में निकल जाती है। ये कह कर उससे तमाम खाने की चीजों को पाक ठहराया। 20 फिर उसने कहा, जो कुछ आदमी में से निकलता है वही उसको नापाक करता है। 21 क्यूंकि अन्दर से, यानी आदमी के दिल से द्वे ख्याल निकलते हैं हरामकारियाँ 22 चोरियाँ, खन रेजियाँ, जिनाकारियाँ। लालच, बीड़ीयाँ, मक्कारी, शहवत परस्ती, बदनज़री, बदगोई, शेरी, बेकूफ़ी। 23 ये सब बुरी बातें अन्दर से निकल कर आदमी को नापाक करती हैं।” 24 फिर वहाँ से उठ कर सूर और सैदा की सरहदों में गया और एक घर में दाखिल हुआ और नहीं चाहता था कि कोई जाने मगर छुपा न गह सका। 25 बल्कि फौरन एक औरत जिसकी छोटी बेटी में बदस्तूरी, उसकी खबर सुनकर आई और उसके कदमों पर गिरी। 26 ये “औरत यूनानी थी और कौप की सूस्फेनेकी। उसने उससे दरखास्त की कि बदस्तूर को उसकी बेटी में से निकाले। 27 उसने उससे कहा, “पहले लड़कों को सेर होने दे क्यूंकि लड़कों की रोटी लेकर कुतों को डाल देना अच्छा नहीं।” 28 उस ने जवाब में कहा “हाँ खुदाबन्द, कुते भी मेज के तले लड़कों की रोटी के टुकड़ों में से खाते हैं।” 29 उसने उससे कहा “इस कलाम की खानिर जा बदस्तूर तेरी बेटी से निकल गई है।” 30 और उसने अपने घर में जाकर देखा कि लड़की पलंग पर पड़ी है और बदस्तूर निकल गई है। 31 और वो फिर सूर शहर की सरहदों से निकल कर सैदा शहर की राह से दिक्षुलिस की सरहदों से होता हुआ गलील की झील पर पहुँचा। 32 और लोगों ने एक बहेरे को जो हकला भी था, उसके पास लाकर उसकी

मिन्नत की कि अपना हाथ उस पर रख। 33 वो उसको भीड़ में से अलग ले गया, और अपनी उंगलियों उसके कानों में डाली और थक कर उसकी जबान छूई। 34 और आसमान की तरफ नजर करके एक आह भरी और उससे कहा “इफ़क़त्तह!” यानी “खुल जा!” 35 और उसके कान खुल गए, और उसकी जबान की गिरह खुल गई और वो साफ बोलने लगा। 36 उसने उसको हक्म दिया कि किसी से न कहना, लेकिन जितना वो उनको हक्म देता रहा उतना ही ज्यादा वो चर्ची करते रहे। 37 और उन्होंने ने निहायत ही हैरान होकर कहा “जो कुछ उसने किया सब अच्छा किया वो बहरों को सुनने की और गँगों को बोलने की ताकत देता है।”

8 उन दिनों में जब फिर बड़ी भीड़ जमा हुई, और उनके पास कुछ खाने को न था, तो उसने अपने शारिर्दों को पास बुलाकर उनसे कहा। 2 “मुझे इस भीड़ पर तरस आता है, क्यूंकि ये तीन दिन से बराबर मेरे साथ रही हैं और इनके पास कुछ खाने को नहीं। 3 आर मैं इनको भूखा घर को सख्त करूँ तो रास्ते में थक कर रह जाएँगे और कुछ इन में से दूर के हैं।” 4 उस के शारिर्दों ने उसे जबाब दिया, “इस विराने में कहाँ से कोई इतनी रोटियाँ लाए कि इनको खिला सके?” 5 उसने उनसे पूछा, “तुम्हरे पास कितनी रोटियाँ हैं?” उन्होंने कहा, “सात।” 6 फिर उसने लोगों को हक्म दिया कि जरीन पर बैठ जाएँ। उसने वो सात रोटियाँ ली और शुरू करके तोड़ी, और अपने शारिर्दों को देता गया कि उनके आगे रख दें, और उन्होंने लोगों के आगे रख दी। 7 उनके पास थोड़ी सी छोटी मछलियाँ भी थीं उसने उन पर बर्कत देकर कहा कि ये भी उनके आगे रख दो। 8 पस वो खा कर सेरे हुए और बचे हुए बे इस्तेमाल खाने के सात टोकेरे उठाए। 9 और वो लोग चार हजार के कर्तीब थे, फिर उसने उनको मख्सूत किया। 10 वो फौरन अपने शारिर्दों के साथ नाव में बैठ कर दलमनूता के स्त्रों में गया। 11 फिर फरीसी निकल कर उस से बहस करने लगे, और उसे आज्ञामने के लिए उससे कोई आसमानी निशान तलब किया। 12 उसने अपनी स्त्री में आह खीच कर कहा, “इस जमाने के लोग क्यूँ निशान तलब करते हैं? मैं तुम से सच कहता हूँ, कि इस जमाने के लोगों को कोई निशान न दिया जाएगा।” 13 और वो उनको छोड़ कर फिर नाव में बैठा और पर चला गया। 14 वो रोटी लेना भल गए थे, और नाव में उनके पास एक से ज्यादा रोटी न थी। 15 और उसने उनको ये हक्म दिया; “खबरदार, फरीसियों के तालीम और हेरेदेस की तालीम से होशियार रहना।” 16 वो अपस में चर्चा करने और कहने लगे, “हमारे पास रोटियाँ नहीं।” 17 मगर इसा ने ये मालूम करके कहा, “तुम क्यूँ ये चर्चा करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? क्या अब तक नहीं जानते, और नहीं समझते हो? क्या तुम्हारा दिल सख्त हो गया है? 18 आँखें हैं और तुम देखते नहीं कान हैं और सुनते नहीं और क्या तुम को याद नहीं। 19 जिस वक्त मैंने वो पांच रोटियाँ पांच हजार के लिए तोड़ी तो तुम मैं कितनी टोकरियाँ बे इस्तेमाल खाने से भरी ही हृउठाइ?” उन्होंने ने उस से कहा “बारह।” 20 “और जिस वक्त सात रोटियाँ चार हजार के लिए तोड़ी तो तुम मैं कितने टोकरे बे इस्तेमाल खाने से भरे हुए उठाइ?” उन्होंने ने उस से कहा “सात।” 21 उस ने उससे कहा “क्या अब तक नहीं समझते?” 22 फिर वो बैठ सैदा में आये और लोग एक अंधे को उसके पास लाए और उसकी मिन्नत की, कि उसे छूए। 23 वो उस अंधे का हाथ पकड़ कर उसे गँब से बाहर ले गया, और उसकी आँखें में थूक कर अपने हाथ उस पर रख देंगी। 24 उसने पूछा, “क्या तुम क्या देखते हो?” 25 उसने नजर उठाकर कहा “मैं आदमियों को देखता हूँ क्यूँकि वो मुझे चलते हुए ऐसे दिखाई देते हैं जैसे दरखत।” 26 उसने फिर दोबारा उसकी आँखों पर अपने हाथ रख देंगी और उसने गौर से नजर की और अच्छा हो गया और सब चीजें साफ देखने लगा। 26 फिर उसने उसको उसके घर

की तरफ रवाना किया और कहा, “इस गाँव के अन्दर कदम न रखना।” 27 फिर ईंसा और उसके शागिर्द कैसरिया फ़िलिप्पी के गाँव में चले आए और रास्ते में उसने अपने शागिर्दों से पूछा, “लोग मुझे क्या कहते हैं?” 28 उन्होंने जब दिया, “यहन्ना बपतिस्मा देनेवाला; कुछ एलियाह और कुछ नवियों में से कोई।” 29 उसने उनसे पूछा, “लेकिन तुम मुझे क्या कहते हो?” पतरस ने जब वाले में उसे से कहा, “तू मरीह है।” 30 फिर उसने उनको ताकीद की कि मैं बोरे में किसी से ये न कहना। 31 फिर वो उनको तालीम देने लगा, कि ज़स्त है कि इबने आदम बहत दुःख उठाए और बुज़ुर्ग और सरदार काहिन और आलिम उसे रुक़ारे, और वो कल्तव किया जाए, और तीन दिन के बाद जी उठे। 32 उसने ये बात साफ़ साफ़ कही पतरस उसे अलग ले जाकर उसे मलामत करने लगा। 33 मगर उसने मुड़ कर अपने शागिर्दों पर निगाह करके पतरस को मलामत की और कहा, “ऐ शैतान मेरे सामने से दूर हो; क्यूँकि तू खुदा की बातों का नहीं बल्कि आदमियों की बातों का ख्याल रखता है।” 34 फिर उसने भीड़ को अपने शागिर्दों समेत पास बुला कर उनसे कहा, “अगर कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इन्कार करे और अपनी सलीब उठाए, और मेरे पीछे हो ले। 35 क्यूँकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे वो उसे खोएगा, और जो कोई मेरी और इन्जील की खातिर अपनी जान खोएगा, वो उसे बचाएगा।” 36 आदमी अगर सारी दुनिया को हासिल करे और अपनी जान का तुक्सान उठाए, तो उसे क्या फ़ाइदा होगा? 37 और आदमी अपनी जान के बदले क्या दे? 38 क्यूँकि जो कोई इस बे ईमान और बुरी कौम में मुझ से और मेरी बातों से शरमाए गा, इबने आदम भी अपने बाप के जलाल में पाक करिश्मों के साथ आएगा तो उस से शरमाएगा।”

9 और उसने उनसे कहा “मैं तुम से सच कहता हूँ, जो यहाँ खड़े हैं उन में से कुछ ऐसे हैं जब तक खुदा की बादशाही को कुदरत के साथ आया हुआ देख न लैं मौत का मजा हरगिज़ न चर्खेंगे।” 2 छः दिन के बाद ईसा ने पतरस और याकूब यहन्ना को अपने साथ लिया और उनको अलग एक ऊँचे पहाड़ पर तन्हाई में ले गया और उनके सामने उसकी सूरत बदल गई। 3 उसकी पोशाक ऐसी नूरानी और निहायत सफेद हो गई, कि दुनिया में कोई धोबी वैसी सफेद नहीं कर सकता। 4 और एलियाह मूसा के साथ उनको दिखाई दिया, और वो ईसा से बातें करते थे। 5 पतरस ने ईसा से कहा “रब्बी हमारा यहाँ रहना अच्छा है पस हम तीन तम्बू बनाएँ एक तेरे लिए एक मूसा के लिए, और एक एलियाह के लिए।” 6 क्यूँकि वो जानता न था कि क्या कहे इसलिए कि वो बहुत डर गए थे। 7 फिर एक बादल ने उन पर साया कर लिया और उस बादल में से आवाज आई “ये मेरा प्यारा बेटा है; इसकी सनो।” 8 और उन्होंने यकायक जो चारों तरफ नज़र की तो ईसा के सिवा और किसी को अपने साथ न देखा। 9 जब वो पहाड़ से उतर रहे थे तो उसने उनको हक्म दिया कि “जब तक इबने आदम मुर्दी में से जी न उठे जो कुछ तम ने देखा है किसी से न कहना।” 10 उन्होंने इस कलाम को याद रखा और वो आपस में बहस करते थे, कि मुर्दी में से जी उठने के क्या मतलब है। 11 फिर उन्होंने उस से ये पूछा, “आलिम क्यूँ कहते हैं कि एलियाह का पहले आना ज़स्त है?” 12 उसने उनसे कहा, “एलियाह अलबत्ता पहले आकर सब कुछ बहल करेगा मगर क्या बजह है कि इबने आदम के हक में लिखा है कि वो बहुत से दुःख उठाएगा और जनील किया जाएगा?” 13 लेकिन मैं तुम से कहता हूँ, कि एलियाह तो आ चुका और जैसा उसके हक में लिखा है उन्होंने जो कुछ चाहा उसके साथ किया।” 14 जब वो शागिर्दों के पास आए तो देखा कि उनके चारों तरफ बड़ी भीड़ है, और आलिम लोग उनसे बहस कर रहे हैं। 15 और फौरन सारी भीड़ उसे देख कर निहायत हैरान हुई और उसकी तरफ दौड़ कर उसे सलाम करने लगे। 16 उसने उनसे पूछा, “तुम उन से क्या बहस करते हो?” 17 और भीड़ में से एक ने उसे जबाब दिया, ऐ उस्ताद! मैं अपने बेटे को जिसमें गौंथी रुह है तेरे पास लाया था। 18 वो जहाँ उसे पकड़ती है, मटक देती है; और वो कफ़ भर लाता और दाँत पीसता और सूखता जाता है। मैंने तेरे शागिर्दों से कहा था, “वो उसे निकाल दें मगर वो न निकाल सके।” 19 उसने जबाब में उनसे कहा, “ऐ बेटें तिकाद कौम! मैं कब तक तुम्हारे साथ रहँगा? कब तक तुम्हारी बर्दाशत करँगा उसे मेरे पास लाओ।” 20 पस वो उसे उसके पास लाए, और जब उसने उसे देखा तो फौरन रुह ने उसे मरोड़ा और वो ज़मीन पर गिरा और कफ़ भर लाकर लोटने लगा। 21 उसने उसके बाप से पूछा “ये इस को कितनी मुद्रत से है?” उसने कहा “बचपन ही से।” 22 और उसने उसे अक्सर आग और पानी में डाला ताकि उसे हलाक करे लेकिन अगर तू कुछ कर सकता है तो हम पर तरस खार हमारी मदद कर।” 23 ईसा ने उस से कहा “क्या जो तू कर सकता है जो ऐ तिकाद रखता है? उस के लिए सब कुछ हो सकता है।” 24 उस लड़के के बाप ने फौरन चिल्लाकर कहा, “मैं ऐ तिकाद रखता हूँ, मेरी बे ऐ तिकादी का इलाज कर।” 25 जब ईसा ने देखा कि लोग दौड़ दौड़ कर जमा हो रहे हैं, तो उस बद रुह को छिड़कर कर कहा, “मैं तुझ से कहता हूँ, इस में से बाहर आ और इस में फिर दाखिल न होना।” 26 वो चिल्लाकर और उसे बहुत मरोड़ कर निकल आई और वो मुर्दा सा हो गया “ऐसा कि अक्सरों ने कहा कि वो मर गया।” 27 मगर ईसा ने उसका हाथ पकड़कर उसे उठाया और वो उठ खड़ा हुआ। 28 जब वो घर में आया तो उसके शागिर्दों ने तन्हाई में उस से पूछा “हम उसे क्यूँ न निकल सकते?” 29 उसने उनसे कहा, “ये सिर्फ़ दुआ के सिवा और किसी तरह नहीं निकल सकती।” 30 फिर वहाँ से रवाना हुए और गलील से हो कर उजरे और वो न चाहता था कि कोई जाने। 31 इसलिए कि वो अपने शागिर्दों को तालीम देता और उनसे कहता था, “इन — ए आदम आदमियों के हवाले किया जाएगा और वो उसे कल्त करेंगे और वो कल्त होने के तीन दिन बाद जी उठेगा।” 32 लेकिन वो इस बात को समझते न थे, और उस से पूछते हुए डरते थे। 33 फिर वो कफ़रनहम में आए और जब वो घर में था तो उसने उनसे पूछा, “तुम रास्ते में क्या बहस करते थे?” 34 वो चुप रहे क्यूँकि उन्होंने रास्ते में एक दूरे से ये बहस की थी कि बड़ा कौन है? 35 फिर उसने बैठ कर उन बारह को बुलाया और उनसे कहा “अगर कोई अच्छा होना चाहे तो वो सब से पिछला और सब का खादिम बने।” 36 और एक बच्चे को लेकर उन के बीच में खड़ा किया फिर उसे गोद में लेकर उनसे कहा। 37 “जो कोई मेरे नाम पर ऐसे बच्चों में से एक को कबूल करता है वो मुझे नहीं बल्कि उसे जिसे मेरुदेवी भेजा है कबूल करता है।” 38 यहन्ना ने उस से कहा “ऐ उस्ताद हम ने एक शख्स को तेरे नाम से बदस्तों को निकालते देखा और हम उसे मनह करने लगे क्यूँकि वो हमारी पैरवी नहीं करता था।” 39 लेकिन ईसा ने कहा “उसे मनह न करना क्यूँकि ऐसा कोई नहीं जो मेरे नाम से मोजिजे दिखाएँ और मुझे जल्द बुरा कह सके।” 40 क्यूँकि जो हमारे खिलाफ़ नहीं वो हमारी तरफ़ है। 41 जो कोई एक प्याला पानी तुम को इसलिए पिलाए कि तुम मरीसी के हो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो अपना अच्छा हरगिज़ न खोएगा।” 42 “और जो कोई इन छोटों में से जो मुझे पर ईमान लाए हैं किसी को ठोकर खिलाए, उसके लिए ये बेहतर है कि एक बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जा और वो समृद्ध में फैक दिया जाए।” 43 अगर तेरे हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल दुंडा हो कर जिन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो हाथ होते जहन्मुक के बीच उस आग में जाए और कभी बुझने की नहीं। (Geenna g1067) 44 जो उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। 45 और अगर तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट

डाल लंगड़ा हो कर जिन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो पाँव होते जहन्नुम में डाला जाए। (Geenna g1067) 46 जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। 47 और अगर तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल काना हो कर जिन्दगी में दाखिल होना तेरे लिए इससे बेहतर है कि दो आँखें होते जहन्नुम में डाला जाए। (Geenna g1067) 48 जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। 49 क्यौंकि हर शख्स आग से नमकीन किया जाएगा [और हर एक कृबन्नी नमक से नमकीनी की जाएगी।] 50 नमक अच्छा है लेकिन अगर नमक की नमकीनी जाती रहे तो उसको किस चीज़ से मज़ेदार करेंगे? अपने में नमक रखें और एक दूसरे के साथ मेल मिलाप से रहो।”

10

फिर वो वहाँ से उठ कर यहदिया की सरहदों में और यरदन के पार आया और भीड़ उसके पास फिर जमा हो गई और वो अपने दस्तूर के मुवाफिक फिर उनको तालीम देने लगा। 2 और फरीसियों ने पास आकर उसे आजमाने के लिए उससे पूछा, “क्या ये जायज़ है कि मर्द अपनी बीवी को छोड़ देते?” 3 उसने जबाब में कहा, “मूसा ने तुम को क्या हक्म दिया है?” 4 उन्होंने कहा, “मूसा ने तो इजाजत दी है कि तलाक नामा लिख कर छोड़ दें?” 5 मगर ईसा ने उनसे कहा, “उस ने तुम्हारी सज़दिली की बजह से तुम्हारे लिए ये हक्म लिखा था। 6 लेकिन पैदाइश के शुरू से उसने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 7 इस लिए मर्द अपने — बाप से और माँ से जुड़ा हो कर अपनी बीवी के साथ रहेगा। 8 और वो और उसकी बीवी दोनों एक जिस्म होंगे।” पस वो दो नहीं बल्कि एक जिस्म हैं। 9 इसलिए जिसे खुदा ने जोड़ा है उसे अदीनी जुड़ा न करो।” 10 और घर में शारिरों ने उससे इसके बारे में फिर पूछा। 11 उसने उसके कहा “जो कोई अपनी बीवी को छोड़ दे और दूसरी से शादी करे वो वो उस पहली के बरखिलाफ़ जिना करता है। 12 और अगर औरत अपने शौहर को छोड़ दे और दूसरे से शादी करे तो जिना करती है।” 13 फिर लोग बच्चों को उसके पास लाने लगे ताकि वो उनको छुए मगर शारिरों ने उनको झिड़का। 14 ईसा ये देख कर खफा हुआ और उन से कहा “बच्चों को मेरे पास आने दो उन को मनह न करो क्योंकि खुदा की बादशाही ऐसों ही की है 15 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई खुदा की बादशाही को बच्चे की तरह कुबूल न करे वो वो उस में हरगिज़ दाखिल नहीं होगा।” 16 फिर उसने उन्हें अपनी गोद में लिया और उन पर हाथ रखकर उनको बर्कत दी। 17 जब वो बाहर निकल कर रास्ते में जा रहा था तो एक शख्स दौड़ता हुआ उसके पास आया और उसके आगे घूटने टेक कर उससे पूछने लगा “ऐ नेक उस्ताद, मैं क्या करूँ कि हमेशा की जिन्दगी का वारिस बैँ?” (aiōnios g166) 18 ईसा ने उससे कहा “तुम्हें क्यूँ नेक कहता है? कोई नेक नहीं मगर एक याँनी खुदा। 19 तू हम्मों को तो जानता है खन न कर, चरी न कर, इझ्ठी गवाही न दे, धोखा देकर नुकसान न कर, अपने बाप की और माँ की इज्जत कर।” 20 उसने उससे कहा “ऐ उस्ताद मैंने बचपन से इन सब पर अमल किया है।” 21 ईसा ने उसको देखा और उसे उस पर प्यार आया, और उससे कहा, “एक बात की तुझ में कमी है, जा, जो कुछ तेरा है बेच कर गरीबों को दे, तुझे आसमान पर खजाना मिलेगा और आकर मेरे पीछे हो ल।” 22 इस बात से उसके चहरे पर उदासी छा गई, और वो गमगीन हो कर चला गया; क्यौंकि बड़ा मालदार था। 23 फिर ईसा ने चारों तरफ नज़र करके अपने शारिरों से कहा, “दौलतमन्द का खुदा की बादशाही में दाखिल होना कैसा मुश्किल है।” 24 शारिर्द उस की बातों से हैरान हुए ईसा ने फिर जबाब में उनसे कहा, “बच्चों जो लोग दौलत पर भरोसा रखते हैं उन के लिए खुदा की बादशाही में दाखिल होना क्या ही मुश्किल है। 25 ऊंट का सूई के नाके में से गुज़र जाना इस से आसान है कि दौलतमन्द खुदा की बादशाही में दाखिल हो।”

26 वो निहायत ही हैरान हो कर उस से कहने लगे, “फिर कौन नज़ात पा सकता है?” 27 ईसा ने उनकी तरफ नज़र करके कहा, “ये आदमियों से तो नहीं हो सकता लेकिन खुदा से हो सकता है क्यौंकि खुदा से सब कुछ हो सकता है।” 28 पतस्स उस से कहने लगा “देख हम ने तो सब कुछ छोड़ दिया और तेरे पीछे हो लिए हैं।” 29 ईसा ने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं जिसने घर या भाईयों या बहनों या माँ बाप या बच्चों या खेतों को मेरी खातिर और इन्जील की खातिर छोड़ दिया हो।” 30 और अब इस जमाने में सौ गुना न पाए घर और बाई और बहने और माँ और बच्चे और खेत मगर जल्म के साथ और अने वाले आलम में हमेशा की जिन्दगी। (aiōn g165, aiōnios g166) 31 लेकिन बहुत से अब्बल आखिर हो जाएँगे और आखिर अब्बल।” 32 और वो येस्शलेम को जाते हुए रास्ते में थे और ईसा उनके आगे जा रहा था वो हैरान होने लगे और जो पीछे पीछे चलते थे डरने लगे पस वो फिर उन बारह को साथ लेकर उनको वो बातें बताने लगा जो उस पर अने वाली थीं, 33 “देखो हम येस्शलेम को जाते हैं और इन — ए आदम सरदार कहिनों फकीहों के हवाले किया जाएगा, और वो उसके कल्प का हक्म देंगे और उसे गैर क्रामों के हवाले करेंगे। 34 और वो उसे ठड़ों में उड़ाएँगे और उस पर थकेंगे और उसे कोड़े मारेंगे और कल्प करेंगे और वो तीन दिन के बाद जी उठेगा।” 35 तब ज़न्दी के बेटों याँकूब और यूहन्ना ने उसके पास आकर उससे कहा “ऐ उस्ताद हम चाहते हैं कि जिस बात की हम तुझ से दरखास्त करें तुम्हारे लिए करें।” 36 उसने उनसे कहा “तुम क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिए करूँ करूँ?” 37 उन्होंने उससे कहा “हमारे लिए ये कर कि तेरे जलाल में हम में से एक तेरी दाहिनी और एक बाँद तरफ बैठे।” 38 ईसा ने उनसे कहा “तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो? जो व्याला में पीने को हूँ क्या तुम पी सकते हो? और जो बपतिस्मा में लेने को हूँ तुम ले सकते हो?” 39 उन्होंने उससे कहा, “हम से हो सकता है।” 40 ईसा ने उनसे कहा, “जो व्याला मैं पीने को हूँ तुम पियेगें? और जो बपतिस्मा मैं लेने को हूँ तुप लोगे। 40 लेकिन अपनी दाहिनी या बाँद तरफ किनी को बिठा देना मेरा काम नहीं मगर जिन के लिए तैयार किया गया उन्हीं के लिए है।” 41 जब उन दसों ने ये सुना तो याँकूब और यूहन्ना से खफा होने लगे। 42 ईसा ने उन्हें पास बुलाकर उनसे कहा, “तुम जानते हो कि जो गैर क्रामों के सरदार समझे जाते हैं वो उन पर हक्मत चलाते हैं और उनके अमीर उन पर इजित्यार जाते हैं। 43 मगर तुम में ऐसे कौन है बल्कि जो तुम में बड़ा होना चाहता है वो तुम्हारा खादिम बने। 44 और जो तुम में अब्बल होना चाहता है वो सब का गुलाम बने। 45 क्यौंकि इन — ए आदम भी इसलिए नहीं आया कि खिद्दमत ले बल्कि इसलिए कि खिद्दमत करे और अपनी जान बहुतेरों के बदले फिरद्या में दे।” 46 और वो यरीह में आए और जब वो और उसके शारिर्द और एक बड़ी भीड़ यरीह से निकलती थी तो तिमार्द का बेटा बरातिमाई अंधा फकीर रास्ते के किनारे बैठा हुआ था। 47 और ये सुनकर कि ईसा नासरी है चिल्ला चिल्लाकर कहने लगा, ऐ इन — “ए दाऊद ऐ ईसा मुझ पर रहम कर।” 48 और बहुतों ने उसे ढाँटा कि चुप रह, मगर वो और ज्यादा चिल्लाया, “ऐ इन — ए दाऊद मुझ पर रहम कर।” 49 ईसा ने खेड़े होकर कहा, “उसे बुलाओ।” पस उन्होंने उस अंधे को ये कह कर बुलाया, कि “इन्हीनान रख। उठ, वो तुझे बुलाता है।” 50 वो अपना चोपा फेंक कर उछल पड़ा और ईसा के पास आया। 51 ईसा ने उस से कहा, “तुम क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?” अंधे ने उससे कहा, “ऐ रब्बनी, ये कि मैं देखने लांग।” 52 ईसा ने उस से कहा “जा तेरे ईशान ने तुझे अच्छा कर दिया” और वो फौरन देखने लगा और रास्ते में उसके पीछे हो लिया।

11 जब वो येस्सलेम के नज़दीक जैतून के पहाड़ पर बैतफिगे और बैत

अन्नियाह के पास आए तो उनसे अपने शागिर्दों में से दो को भेजा। 2 और उनसे कहा, “अपने सामने के गाँव में जाओ और उस में दाखिल होते ही एक गधी का जवान बच्चा बैंधा हुआ तुम्हें मिलेगा, जिस पर कोई आदमी अब तक सवार नहीं हुआ; उसे खोल लाओ। 3 और अगर कोई तुम से कहे, तुम ये क्यूँ करते हो?” तो कहना, खुदावन्द को इस की ज़स्त है।” वो फैरैन उसे यहाँ भेजेगा।” 4 पस वो गए, और बच्चे को दिवाज़े के नज़दीक बाहर चौक में बैंधा हुआ पाया और उसे खोलने लगे। 5 मगर जो लोग वहाँ खड़े थे उन में से कुछ ने उन से कहा “ये क्या करते हो? कि गधी का बच्चा खोलते हो?” 6 उन्होंने जैसा ईसा ने कहा था, वैसा ही उनसे कह दिया और उन्होंने उनको जाने दिया। 7 पस वो गधी के बच्चे को ईसा के पास लाए और अपने कपड़े उस पर डाल दिए और वो उस पर सवार हो गया। 8 और बहुत लोगों ने अपने कपड़े रास्ते में बिछा दिए, और वो खेतों में से डालियाँ काट कर फैला दी। 9 जो उनके आगे जाते और पीछे पीछे चले आते थे ये पुकार पुकार कर कहते जाते थे “होशना मुबारिक है वो जो खुदावन्द के नाम से आता है। 10 मुबारिक है हमारे बाप दाऊद की बादशाही जो आ रही है आलम — ए बाला पर होशना।” 11 और वो येस्सलेम में दाखिल होकर हैकल में आया और चारों तरफ सब चीज़ों का मुआइना करके उन बारह के साथ बैतै़न अन्नियाह को गया क्यूँकि शाम हो गई थी। 12 दूसरे दिन जब वो बैतै़न अन्नियाह से निकले तो उसे भर्ख लगी। 13 और वो दूर से अंजीर का एक दरखत जिस में पते थे देख कर गया कि शायद उस में कुछ पाए मगर जब उसके पास पहुँचा तो पते के सिवा कुछ न पाया क्यूँकि अंजीर का मोसम न था। 14 उसने उस से कहा “आइन्दा कोई तुझ से कहीं फल न खाए!” और उसके शागिर्दों ने सुना। (aiōn g165) 15 फिर वो येस्सलेम में आए, और ईसा हैकल में दाखिल होकर उन को जो हैकल में खरीदे फरोखत कर रहे थे बाहर निकालने लगा और सराकों के तरबत और क्षमावाद फरारों की चौकियों को उलट दिया। 16 और उसने किसी को हैकल में से होकर कोई बरतन ले जाने न दिया। 17 और अपनी तालीम में उनसे कहा, “क्या ये नहीं लिखा कि मेरा धर सब कौमों के लिए दुआ का धर कहलाएगा? मगर तुम ने उसे डाकओं की खोह बना दिया है।” 18 और सरदार काहिन और फकीह ये सुन कर उसके हलाक करने का मौका ढूँडने लगे क्यूँकि उस से डरते थे इसलिए कि सब लोग उस की तालीम से हैरान थे। 19 और हर रोज शाम को वो शहर से बाहर जाया करता था, 20 फिर सुबह को जब वो उधर से गुजरे तो उस अंजीर के दरखत को जड तक सूखा हुआ देखा। 21 पतरस को वो बात याद आई और उससे कहने लगा “ऐ रब्बी देख ये अंजीर का दरखत जिस पर तने लान्त की थी सूख गया है।” 22 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “खुदा पर ईमान रखो। 23 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई ईस पहाड़ से कहे उठड़ जा और समन्दर में जा पड़ और अपने दिल में शक न करे बल्कि यकीन करे कि जो कहता है वो ही जाएगा तो उम्हे क्षिति वही होगा। 24 इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम दुआ में माँगते हो यकीन करो कि तुम को मिल गया और वो तुम को मिल जाएगा। 25 और जब कभी तुम खड़े हुए दुआ करते हो, अगर तुम्हें किसी से कुछ शिकायत हो तो उसे मु'आफ करो ताकि तुम्हारा बाप भी जो आसमान पर है तुम्हेरे गुनाह मु'आफ करे। 26 [अगर तुम मु'आफ न करोगा।]” 27 वो फिर येस्सलेम में आए, और जब वो हैकल में टहेल रहा था तो सरदार काहिन और फकीह और बुर्जु़ी उसके पास आए। 28 और उससे कहने लगे, “तू इन कामों को किस इश्तियार से करता है? या किसने तुझे इश्तियार दिया है कि इन कामों को करे?” 29 ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से एक बात पूछता हूँ तुम

जवाब दो तो मैं तुमको बताऊँगा कि इन कामों को किस इश्तियार से करता हूँ। 30 यहन्ना का बपतिस्मा आसमान की तरफ से था या इंसान की तरफ से? मुझे जवाब दो।” 31 वो आपस में कहने लगे, अगर हम कहें आसमान की तरफ से तो वो कहेगा “फिर तुम ने क्यूँ उसका यकीन न किया?” 32 और अगर कहें इंसान की तरफ से? तो लोगों का डर था इसलिए कि सब लोग बाक़ ई यहन्ना को नवी जानते थे 33 पस उन्होंने जवाब में ईसा से कहा, हम नहीं जानते। ईसा ने उनसे कहा “मैं भी तुम को नहीं बताता, कि इन कामों को किस इश्तियार से करता हूँ।”

12 फिर वो उनसे मिसालों में बातें करने लगा “एक शख्स ने बाग लगाया

और उसके चारों तरफ अहाता थेरा और हौज खोदा और बुर्ज बनाया और उसे बागबानों को डेके पर डेकर परदेस चला गया। 2 फिर फल के मोसम में उसने एक नौकर को बागबानों के पास भेजा ताकि बागबानों से बाग के फलों का हिसाब ले ले। 3 लेकिन उन्होंने उसे पकड़ कर पीटा और खाली हाथ लौटा दिया। 4 उसने फिर एक और नौकर को उनके पास भेजा मगर उन्होंने उसका सिर फोड़ दिया और बैंडज़त किया। 5 फिर उसने एक और को भेजा उन्होंने उसे कत्तल किया फिर और बहुतेरों को भेजा उन्होंने उन में से कुछ को पीटा और कुछ को कत्तल किया। 6 अब एक बाकी था जो उसका प्यारा बेटा था उसने आखिर उसे उनके पास ये कह कर भेजा कि वो मेरे बेटे का तो लिहाज़ करेंगे। 7 लेकिन उन बागबानों ने आपस में कहा यही वारिस है ‘आओ इसे कत्तल कर डाले मीरास हमारी हो जाएगी।’ 8 पस उन्होंने उसे पकड़ कर कत्तल किया और बाग के बाहर फेंक दिया।” 9 “अब बाग का मालिक क्या करेगा? वो आएगा और उन बागबानों को हलाक करके बाग औरों को देगा। 10 क्या तुम ने ये लिखे हुए को नहीं पढ़ा जिस पत्थर को मैं ‘मारों ने रद किया वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया। 11 ये खुदावन्द की तरफ से हुआ और हमारी नज़र में अजीब है।” 12 इस पर वो उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे मगर लोगों से डरे, क्यूँकि वो समझ गए थे कि उसने ये मिसाल उन्हीं पर कहीं पस वो उसे छोड़ कर चले गए। 13 फिर उन्होंने कुछ फरीसियों और सदृकियों ने हेरोदेस को उसके पास भेजा ताकि बातों में उसको फँसाएँ। 14 और उन्होंने आकर उससे कहा, “ऐ उस्ताद हम जानते हैं कि तू सच्चा है और किसी की परवाह नहीं करता क्यूँकि तू किसी आदमी का तरफदार नहीं बल्कि सच्चाई से खुदा के रास्ते की तालीम देता है।” 15 पस कैसर को जिजिया देना जायज़ है या नहीं? हम दें या न दें? उसने उनकी मक्कारी मालम करके उनसे कहा, “तुम मुझे क्यूँ आजमाते हो? मेरे पास एक दीनार लाओ कि मैं देखूँ।” 16 वो ले आए उसने उनसे कहा “ये सूरत और नाम किसका है?” उन्होंने उससे कहा “कैसर का।” 17 ईसा ने उनसे कहा “जो कैसर का है कैसर को और जो खुदा का है खुदा को अदा करो” वो उस पर बड़ा ताऊँज़ुब करने लगे। 18 फिर सदृकियों ने जो कहते थे कि क्यामत नहीं होगी, उसके पास आकर उससे ये सवाल किया। 19 ऐ उस्ताद “हमारे लिए मूसा ने लिखा है कि अगर किसी का भाई बे — औलाद मर जाए और उसकी बीवी रह जाए तो उस का भाई उसकी बीवी को लेले ताकि अपने भाई के लिए नस्ल पैदा करे। 20 सात भाई थे पहले ने बीवी की और बे — औलाद मर गया। 21 दूसरे ने उसे लिया और बे — औलाद मर गया इसी तरह तीसरे ने। 22 यहाँ तक कि सातों बे — औलाद मर गए, सब के बाद वह औरत भी मर गई। 23 क्यामत में ये उन में से किसकी बीवी होगी? क्यूँकि वो सातों की बीवी बनी थी।” 24 ईसा ने उनसे कहा, “क्या तुम इस बजह से गुमराह नहीं हो कि न किताब — ऐ — मुकद्दस को जानते हो और न खुदा की कुदरत को। 25 क्यूँकि जब लोगों में से मुर्दे जी उठेंगे तो उन में ब्याह शादी न होगी बल्कि आसमान पर फरिश्तों की तरह होंगे। 26

मगर इस बारे में कि मुर्दे जी उठते हैं 'क्या तुम ने मूसा की किताब में झाड़ी के ज़िक्र में नहीं पढ़ा' कि खुदा ने उससे कहा मैं अब्राहाम का खुदा और इज्हाक का खुदा और याकूब का खुदा हैं। 27 वो तो मुर्दे का खुदा नहीं बल्कि जिन्दों का खुदा है, पस तुम बहत ही गुमराह हो।" 28 और अलिमों में से एक ने उनको बहस करते सुनकर जान लिया कि उसने उनको अच्छा जवाब दिया है "वो पास आया और उस से पूछा? सब हृक्षों में पहला कौन सा है।" 29 इसा ने जवाब दिया "पहला ये है 'ऐ इस्माइल सुन! खुदावन्द हमरा खुदा एक ही खुदावन्द है। 30 और तु खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान सारी अकल्त और अपनी सारी ताकत से मुहब्बत रख।" 31 दूसरा हक्म ये है: 'अपने पडोसी से अपने बराबर मुहब्बत रख' इस से बड़ा कोई हक्म नहीं।" 32 आलिम ने उससे कहा ऐ उस्ताद "बहत खब; तु ने सच कहा कि वो एक ही है और उसके सिवा कोई नहीं 33 और उसे सारे दिल और सारी अकल्त और सारी ताकत से मुहब्बत रखना और अपने पडोसी से अपने बराबर मुहब्बत रखना सब सोडतनी कुर्बानियों और जबीहों से बढ़ कर है।" 34 जब इसा ने देखा कि उसने अकल्मन्दी से जवाब दिया तो उससे कहा, "तु खुदा की बादशाही से दूर नहीं।" और फिर किसी ने उससे सवाल करने की ज़रूरत न की। 35 फिर इसा ने हैकल में तारीम देते बक्त ये कहा, "फ़क़रीह क्यूँकर कहते हैं कि मसीह दाऊद का बेटा है? 36 दाऊद ने खुद स्थ — उल — कुद्दस की द्विदायत से कहा है खुदावन्द ने मेरे खुदावन्द से कहा, "मेरी दाविनी तरफ बैठ जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँव के नीचे की चौकी न कर दूँ।" 37 दाऊद तो आप से खुदावन्द कहता है, फिर वो उसका बेटा कहाँ से ठहरा?" आम लोग खुशी से उसकी सुनते थे। 38 फिर उसने अपनी तालीम में कहा "आलिमों से खबरदार रहो, जो लम्जे लम्जे जाए पहन कर फिरना और बाजारों में सलाम। 39 और इबादतखानों में आला दर्ज की कुर्सियाँ और जियाफ़तों में सदृश नरीनी चाहते हैं। 40 और वो बेवाओं के घरों को दबा बैठते हैं और दिखावे के लिए लाल्ची लाल्ची दुआँ करते हैं।" 41 फिर वो हैकल के खजाने के सामने बैठा देख रहा था कि लोग हैकल के खजाने में पैसे किस तरह डालते हैं और बहुतेरे दौलतमन्द बहुत कुछ डाल रहे थे। 42 इनमें एक कंगाल बेवा ने आ कर दो दमड़ियाँ याँनी एक धेला डाला। 43 उनसे अपने शागिर्दों को पास बुलाकर उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो हैकल के खजाने में डाल रहे हैं इस कंगाल बेवा ने उन सब से ज्यादा डाला। 44 क्यूँकि सभों ने अपने माल की जियादती से डाला; मगर इस ने अपनी गरीबी की हालत में जो कुछ इस का था याँनी अपनी सारी रोज़ी डाल दी।"

13 जब वो हैकल से बाहर जा रहा था तो उसके शागिर्दों में से एक ने उससे कहा "ऐ उस्ताद देख ये कैसे कैसे पत्थर और कैसी कैसी इमारतें हैं।" 2 इसा ने उनसे कहा, "तु इन बड़ी बड़ी इमारतों को देखता है? यहाँ किसी पत्थर पर पत्थर बाकी न रहेगा जो गिराया न जाए।" 3 जब वो जैतून के पहाड़ पर हैकल के सामने बैठा था तो पतरस और याँकूब और यहन्ना और अन्दियास ने तन्हाँ में उससे पूछा। 4 "हमें बता कि वो बातें कब होंगी? और जब ये सब बातें पूरी होने को हों उस बक्त का क्या निशान है।" 5 इसा ने उनसे कहना शूँ किया "खबरदार कोई तुम को गुमराह न कर दे। 6 बहुतेरे मेरे नाम से आएँगे और कहेंगे 'वो मैं ही हूँ।' और बहुत से लोगों को गुमराह करेंगे। 7 जब तुम लडाइयाँ और लडाइयों की अफवाहें सुनो तो घबरा न जाना इनका बाके होना ज़स्तर है तेकिन उस बक्त खातिमा न होगा। 8 क्यूँकि कौम पर कौम और सलतनत पर सलतनत चढ़ाई करेगी जगह जगह भूचाल आएँगे और काल पड़ेंगे ये बातें मुसीबतों की शस्त्रात ही होंगी।" 9 "लेकिन तुम खबरदार रहो क्यूँकि लोग तुम को अदालतों के हवाले करेंगे और तुम इबादतखानों में पिटि जाओगे;

और हाकिमों और बादशाहों के सामने मेरी खातिर हाज़िर किए जाओगे ताकि उनके लिए गवाही हो। 10 और ज़स्तर है कि पहले सब कौमों में इन्जील की मनादी की जाए। 11 लेकिन जब तुम्हें ले जा कर हवाले करें तो पहले से फ़िक्र न करना कि हम क्या कहें बल्कि जो कुछ उस घड़ी तुम्हें बताया जाए वही करना क्यूँकि कहने वाले तुम नहीं हो बल्कि स्थ — उल कुद्दस है। 12 भाई को भाई और बेटे को बाप कल्त के लिए हवाले करेगा और बेटे माँ बाप के बरखिलाफ़ खड़े हो कर उन्हें मरवा डालेंगे। 13 और मेरे नाम की वजह से सब लोग तुम से अदावत रखेंगे मरग जो आखिर तक बर्दाशत करेगा वो नजात पाएगा।" 14 "पस जब तुम उस उजाड़ने वाली नापसन्द चीज़ को उस जगह खड़ी ही है देखो जहाँ उसका खड़ा होना जायज़ नहीं पढ़ने वाला समझ ले वह बक्त जो यहदिया में हों वो पहाड़ों पर भाग जाएँ। 15 जो छत पर हो वो अपने घर से कुछ लेने को न नीचे उतरे न अन्दर जाए। 16 और जो खेत में हो वो आपना कपड़ा लेने को पीछे न लें। 17 मगर उन पर अफसोस जो उन दिनों में हामिला हों और जो दूध पिलाती हों। 18 और दुआ करो कि ये जाड़ों में न हो। 19 क्यूँकि वो दिन एसी मुसीबत के होंगे कि पैदाइश के शूँ से जिसे खुदा ने पैदा किया न अब तक ही है न कभी होगी। 20 अगर खुदावन्द उन दिनों को न घटाता तो कोई इंसान न बचता मगर उन चुने हुवों की खातिर जिनको उसने चुना है उन दिनों को घटाया। 21 और उस बक्त अगर कोई तुम से कहे 'देखो, मसीह यहाँ है', या 'देखो वहाँ है' तो यकीन न करना। 22 क्यूँकि झड़े मसीह और झड़े नवी उड़ खड़े होंगे और निशान और अजीब काम दिखाएँगे ताकि अगर मुस्किन हो तो चुने हुवों को भी गुमराह कर दें। 23 लेकिन तुम खबरदार रहो; देखो मैंने तुम से सब कुछ पहले ही कह दिया है।" 24 "मगर उन दिनों में उस मुसीबत के बाद सूरज औंधिरा हो जाएगा और चाँद अपनी रोशनी न देगा। 25 और आसमान के सितारे गिरने लगेंगे और जो ताकतें आसमान में हैं ही वो हिलाइ जाएँगी। 26 और उस बक्त लोग इन्हें ए आदम को बड़ी कुदरत और जलाल के साथ बालों में आते देंगे। 27 उस बक्त वो फ़रिश्तों को भेज कर अपने चुने हुए को जमीन की इन्तिहा से आसमान की इन्तिहा तक चारों तरफ से जमा करेगा।" 28 "अब अंजीर के दरखत से एक तमसील सीखो; ज़ूँ ही उसकी डाली नर्म होती और पते निकलते हैं तू तुम जान लेते हो कि गर्मी न जटीक है। 29 इसी तरह जब तुम इन बातों को होते देखो तो जान लो कि वो नजदीक बल्कि दरवाजे पर है। 30 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जब तक ये सब बातें न हों लें ये नस्ल हरगिज़ खत्म न होगी। 31 आसमान और जमीन टल जाएँगे लेकिन मेरी बातें न टलेंगी।" 32 "लेकिन उस दिन या उस बक्त के बारे कोई नहीं जानता न आसमान के फ़रिश्ते न बेटा मगर बाप। 33 खबरदार; जागते और दुआ करते रहो, क्यूँकि तुम नहीं जानते कि वो बक्त कब आएगा। 34 ये उस अदामी का सा हाल है जो परदेस गया और उस ने घर से स्वस्त होते बक्त अपने नैकों को इखिलाफ़ दिया याँनी हर एक को उस का काम बता दिया और दरबान को हुक्म दिया कि जागता रहे। 35 पस जागते रहो क्यूँकि तुम नहीं जानते कि घर का मालिक कब आएगा शाम को या आधी रात को या सुर्य के बाँग देते बक्त या सुबह को। 36 ऐसा न हो कि अचानक आकर वो तुम को सोते पाए। 37 और जो कुछ मैं तुम से कहता हूँ, वही सब से कहता हूँ जागते रहो!"

14 दो दिन के बाद फ़स्त है और 'ईद — ए — फ़िक्र होने वाली थी और सरदार काहिन और फ़कीर मौका ढूँढ़ रहे थे कि उसे क्यूँकर धोखे से पकड़ कर कल्त करें। 2 क्यूँकि कहते थे ईद में नहीं "ऐसा न हो कि लोगों में बलवा हो जाए।" 3 जब वो बैठे अन्नियाह में शमोन जो पहले कीटी था उसके घर में खाना खाने बैठा तो एक औरत जटामासी का बेशकीमी इन संगे मरमर के इन दान में लाई और इन दान तोड़ कर इन को उसके सिर पर डाला। 4 मगर

कुछ अपने दिल में खफा हो कर कहने लगे “ये इन किस लिए जाया किया गया। 5 क्यूंकि ये इन तकनीबन तीन सौ दिन की मजदूरी से ज्यादा की कीमत में बिक कर गरीबों को दिया जा सकता था” और वो उसे मलामत करने लगे। 6 ईसा ने कहा “उसे छोड़ दो उसे क्यूं दिक करते हो उसने मेरे साथ भलाई की है। 7 क्यूंकि गरीब और गुरबा तो हमेशा तुम्हारे पास हैं जब चाहो उनके साथ नेकी कर सकते हो; लेकिन मैं तुम्हारे पास हमेशा न रहूँगा। 8 जो कुछ वो कर सकी उसने किया उसने दफन के लिए मेरे बदन पर पहले ही से इन मला। 9 मैं तुम से सच कहता हूँ कि, तमाम दुनिया में जहाँ कहीं इन्हीं की मनादी की जाएगी, ये भी जो इस ने किया उस की यादारी में बयान किया जाएगा।” 10 फिर यहदाह इस्करियोंजी जो उन बारह में से था, सरदार काहिन के पास चला गया ताकि उसे उनके हवाले कर दे। 11 वो ये सुन कर खुश हुए और उसको स्पेरेने का इकरार किया और वो मौका ढूँडने लगा कि किस तरह काबू पाकर उसे पकड़वा दे। 12 इंदू'ए फिरत के पहले दिन यानी जिस रोज़ फसह को जब बढ़ा किया करते थे “उसके शागिर्दों ने उससे कहा? त कहाँ चाहता है कि हम जाकर तेरे लिए फसह खाने की तैयारी करें।” 13 उसने अपने शागिर्दों में से दो को भेजा और उनसे कहा “शहर में जाओ एक शख्त पानी का घड़ा लिए हुए तुम्हें मिलेगा, उसके पीछे हो लेना। 14 और जहाँ वो दाखिल हो उस घर के मालिक से कहना “उस्ताद कहता है? मेरा मेहमानखाना जहाँ मैं अपने शागिर्दों के साथ फसह खाऊँ कहाँ है।” 15 वो आप तुम को एक बड़ा मेहमानखाना आरास्ता और तैयार दिखाएगा वहीं हमारे लिए तैयारी करना।” 16 पस शागिर्द चले गए और शहर में आकर जैसा ईसा ने उन से कहा था वैसा ही पाया और फसह को तैयार किया। 17 जब शाम हुई तो वो उन बारह के साथ आया। 18 और जब वो बैठे खा रहे थे तो ईसा ने कहा “मैं तुम से सच कहता हूँ कि तुम में से एक जो मेरे साथ खाता है मुझे पकड़वाएगा।” 19 वो दुखी होकर और एक एक करके उससे कहने लगे, “क्या मैं हूँ?” 20 उसने उनसे कहा, “वो बाहर मैं से एक है जो मेरे साथ थाल में हाथ डालता है। 21 क्यूंकि इब्न — ए आदम तो जैसा उसके हक्क में लिखा है जाता ही है लेकिन उस आदमी पर अफसोस जिसके वसीती से इब्न — ए आदम पकड़वाया जाता है, अगर वो आदमी पैदा ही न होता तो उसके लिए अच्छा था।” 22 और वो खा ही रहे थे कि उसने रोटी ली और बर्कत देकर तोड़ी और उनको दी और कहा “लो ये मेरा बदन है।” 23 फिर उसने प्याला लेकर खुक किया और उनको दिया और उन सभों ने उस में से पिया। 24 उसने उनसे कहा “ये मेरा वो अहंद का खून है जो बहतेरों के लिए बहाया जाता है। 25 मैं तुम से सच कहता हूँ कि अग्रू का शीरा फिर कभी न पिंडागा; उस दिन तक कि खुदा की बादशाही में नया न पिंड।” 26 फिर हमद गा कर बाहर जैतून के पहाड़ पर गए। 27 और ईसा ने उनसे कहा “तुम सब ठोकर खाओगे क्यूंकि लिखा है, ‘मैं चरवाहे को मासँगा और भेड़े इधर उधर हो जाएँगी।’” 28 मगर मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गतील को जाऊँगा।” 29 पतरस ने उससे कहा, “चाहे सब ठोकर खाएँ लेकिन मैं न खाऊँगा।” 30 ईसा ने उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ कि तू आज इसी रात मुझ के दो बार बाँग देने से पहले तीन बार मेरा इन्कार करेगा।” 31 लेकिन उसने बहत जोर देकर कहा, “अगर तेरे साथ मुझे मरना भी पड़े तोभी तेरा इन्कार हरपिज्ज न करँगा।” इसी तरह और सब ने भी कहा। 32 फिर वो एक जगह आए जिसका नाम गतिमनी था और उसने अपने शागिर्दों से कहा, “यहाँ बैठे रहो जब तक मैं दुआ करँगा।” 33 और पतरस और याक़ब और यूहन्ना को अपने साथ लेकर निहायत हरान और बेकरार होने लगा। 34 और उससे कहा “मेरी जान निहायत गमानी है यहाँ तक कि मरने की नौबत पहुँच गई है तुम यहाँ ठहरो और जागते रहो।” 35 और वो थोड़ा आगे बढ़ा और ज़मीन पर गिर

कर दुआ करने लगा, कि अगर हो सके तो ये बक्तृत मुझ पर से टल जाए। 36 और कहा “ऐ अब्बा ऐ बाप तुझ से सब कुछ हो सकता है इस प्याले को मेरे पास से हटा ले तो भी जो मैं चाहता हूँ वो नहीं बल्कि जो तू चाहता है वही हो।” 37 फिर वो आया और उहें सोते पाकर पतरस से कहा “ऐ शमैन तू सोता है? क्या तू एक घड़ी भी न जाग सका।” 38 जागो और दुआ करो, ताकि आजमाइश में न पड़ो रुह तो मुसतैद है मगर जिस कमज़ोर है।” 39 वो फिर चला गया और वही बात कह कर दुआ की। 40 और फिर आकर उहें सोते पाया क्यूंकि उनकी आँखें नीद से भरी थीं और वो न जानते थे कि उसे क्या जबाब दें। 41 फिर तीसरी बार आकर उनसे कहा “अब सोते रहो और आराम करो बस बक्तृत आ पहुँचा है देखो; इब्न — ए आदम गुमाहगारों के हाथ में हवाले किया जाता है।” 42 उठो चलो देखो मेरा पकड़वाने वाला नज़दीक आ पहुँचा है।” 43 वो ये कह ही रहा था कि फौरन यहदाह जो उन बारह में से था और उसके साथ एक बड़ी भीड़ तलवरों और लाठियाँ लिए हुए सरदार काहिनों और फकीरों की तरफ से आ पहुँची। 44 और उसके पकड़वाने वाले ने उहें ये निशान दिया था जिसका मैं बोसा लौँ वही है उसे पकड़ कर हिफाजत से ले जाना। 45 वो आकर फौरन उसके पास गया और कहा, “ऐ रब्बी!” और उसके बोसे लिए। 46 उहोंने उस पर हाथ डाल कर उसे पकड़ लिया। 47 उन में से जो पास खड़े थे एक ने तलवार खींचकर सरदार काहिन के नौकर पर चलाई और उसका कान उड़ा दिया। 48 ईसा ने उससे कहा “क्या तूम तलवरों और लाठियाँ लेकर मुझे डाक़ की तरह पकड़ने निकले हो? 49 मैं हर रोज़ तुम्हारे पास हैकल में तालीम देता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा लेकिन ये इसलिए हआ कि लिखा हआ पूरा हो।” 50 इस पर सब शागिर्द उसे छोड़कर भाग गए। 51 मगर एक जवान अपने नंगे बदन पर महीन चादर ओढ़े हुए उसके पीछे हो लिया, उसे लोगों ने पकड़ा। 52 मगर वो चादर छोड़ कर नंगा भाग गया। 53 फिर वो ईसा को सरदार काहिन के पास ले गए; और अब सरदार काहिन और बुजुर्ग और फकीर उसके यहाँ जपा हुए। 54 पतरस फ़ासले पर उसके पीछे पीछे सरदार काहिन के दिवानखाने के अन्दर तक गया और सिपाहियों के साथ बैठ कर आग तापने लगा। 55 और सरदार काहिन सब सदे — अदालत वाले ईसा को मार डालने के लिए उसके खिलाफ गवाही ढूँडने लगे मगर न पाई। 56 क्यूंकि बहरोंने उस पर झटी गवाहियों तो दी लेकिन उनकी गवाहियाँ सही न निकली। 60 “फिर सरदार काहिन ने बीच में खड़े हो कर ईसा से पूछा तू कुछ जबाब नहीं देता? ये तेरे खिलाप क्या गवाही देते हैं।” 61 “मगर वो खामोशी ही रहा और कुछ जबाब न दिया? सरदार काहिन ने उससे फिर सवाल किया और कहा क्या तू उस यसुफ का बेटा मसीह है।” 62 ईसा ने कहा, “हाँ मैं हूँ।” और तुम इब्न — ए आदम को कादिर ए मुतलिक की दहनी तरफ बैठे और आसमान के बादलों के साथ आते देखोगे।” 63 सरदार काहिन ने अपने कपड़े फाड़ कर कहा “अब हमें गवाहों की क्या जस्तर रही।” 64 तुम ने ये कुछ सुना तुम्हारी क्या राय है? उन सब ने फतवा दिया कि वो कल्पन के लायक है।” 65 तब कुछ उस पर थकने और उसका मूँह ढाँपने और उसके मुक्के मारने और उससे कहने लगे “नबुवत की बातें सुना! और सिपाहियों ने उसे तमाचे मार मार कर अपने कब्जे में लिया।” 66 जब पतरस नीचे सहन में था तो सरदार काहिन की लाईडियों में से एक वहाँ आई। 67 और पतरस को आग तापने देख कर उस पर नज़र की और कहने लगी “तू भी उस नासरी ईसा के साथ था।” 68 उसने इन्कार किया और कहा “मैं तो न जानता और न समझता हूँ।” कि तू क्या

कहती है फिर वो बाहर सहन में गया [और मुर्गी ने बाँग दी]। 69 वो लौटी उसे देख कर उन से जो पास खड़े थे, फिर कहने लगी “ये उन में से है!” 70 “मगर उसने फिर इन्कार किया और थोड़ी देर बाद उन्होंने जो पास खड़े थे पतरस से फिर कहा बेशक तु उन में से है क्यूंकि तु गलीली भी है!” 71 “मगर वो लान्नत करने और क्रस्म खाने लगा मैं इस आदमी को जिसका तुम जिक्र करते हो नहीं जानता!” 72 और फैरन मुर्गी ने दूसरी बार बाँग दी पतरस को बात जो ईसा ने उससे कही थी याद आई “मुर्गी के दो बार बाँग देने से पहले तू तीन बार इन्कार करेगा” और उस पर गौर करके रो पड़ा।

15 और फैरन सुबह होते ही सरदार काहिनों ने और बुजुर्गों और फकीहों

और सब सदृश अदालत वालों समेत सलाह करके ईसा को बन्धवाया और ले जा कर पीलातुस के हवाले किया। 2 और पीलातुस ने उससे पछा, “क्या तू यहदियों का बादशाह है?” उन्हें जबाब में उस से कहा, “तू खट्ट कहता है!” 3 और सरदार काहिन उस पर बहुत सी बातों का इल्जाम लगाते रहे। 4 पीलातुस ने उस से दोबारा सवाल करके ये कहा “तू कुछ जबाब नहीं देता देख ये तुझ पर कितनी बातों का इल्जाम लगाते हैं।” 5 ईसा ने फिर भी कुछ जबाब न दिया यहाँ तक कि पीलातुस ने तो अज्जुब किया। 6 और वो ‘इंद्र’ पर एक कैदी को जिसके लिए लोग अर्ज करते थे छोड़ दिया करता था। 7 और बारंअब्बा नाम एक आदमी उन बागियों के साथ कैद में पड़ा था जिन्होंने बगावत में खुन किया था। 8 और भीड़ उस पर चढ़कर उस से अर्ज करने लगी कि जो तेरा दस्तर है वो हमारे लिए कर। 9 पीलातुस ने उन्हें ये जबाब दिया, “क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी खातिर यहदियों के बादशाह को छोड़ दूँ?” 10 क्यूंकि उसे मालूम था कि सरदार काहिन ने इसको हसद से मेरे हवाले किया है। 11 मगर सरदार काहिनों ने भीड़ को उभारा ताकि पीलातुस उनकी खातिर बारंअब्बा ही को छोड़ दे। 12 “पीलातुस ने दोबारा उनके कहा फिर जिसे तुम यहदियों का बादशाह कहते हो? उसे मैं क्या करूँ।” 13 वो फिर चिल्लाएं “वो मस्लूब हो!” 14 पीलातुस ने उनसे कहा “क्यूँ? उस ने क्या बुराई की है?” वो और भी चिल्लाएं “वो मस्लूब हो!” 15 पीलातुस ने लोगों को खुश करने के इरादे से उनके लिए बारंअब्बा को छोड़ दिया और ईसा को कोड़े लगवाकर हवाले किया कि मस्लूब हो। 16 और सिपाही उसको उस सहन में ले गए, जो प्रतेरियन कहलाता है और सारी पलटन को बुला लाए। 17 और उन्होंने उसे झार्वानी चोपा पहनाया और कॉटों का ताज बना कर उसके सिर पर रखा। 18 और उसे सलाम करने लगे “ऐ यहदियों के बादशाह! आदाब!” 19 और वो उसके सिर पर सरकंडा मारते और उस पर थकूते और घुटने टेक टेक कर उसे सज्जा करते रहे। 20 और जब उसे ठड़ों में उड़ा चुके तो उस पर से झार्वानी चोपा उतार कर उसी के कपड़े उसे पहनाए फिर उसे मस्लूब करने को बाहर ले गए। 21 और शैमौन नाम एक कुरेनी आदमी सिंकन्दर और सफ्स का बाप देहात से आते हुए उधर से गुजरा उन्होंने उसे बेसार में पकड़ा कि उसकी सलीब उठाए। 22 और वो उसे मुकाम्ए ए गुल्मूता पर लाए जिसका तरजुमा (खोपड़ी की जगह) है। 23 और मुर्गी हुई मय उसे देने लगे मगर उसने न ली। 24 और उन्होंने उसे मस्लूब किया और उसके कपड़ों पर पच्चीं डाली कि किसको क्या मिले उन्हें बाँट लिया। 25 और पहर दिन चढ़ा था जब उन्होंने उसको मस्लूब किया। 26 और उसका इल्जाम लिख कर उसके ऊपर लगा दिया गया: “यहदियों का बादशाह!” 27 और उन्होंने उसके साथ दो डाक, एक उसकी दाहिनी और एक उसकी बाईं तरफ मस्लूब किया। 28 [तब इस मज्जून का वो लिखा हुआ कि वो बदकारों में गिना गया पूरा हुआ] 29 “और राह चलनेवाले सिर हिला हिला कर उस पर लान्नत करते और कहते थे वाह मकदिस के ढाने वाले और तीन दिन में बनाने वाले। 30 सलीब पर से उतर कर अपने आप को

बचा!” 31 “इसी तरह सरदार काहिन भी फकीहों के साथ मिलकर आपस में ढाँचे से कहते थे इसने औरें को बचाया अपने आप को नहीं बचा सकता। 32 इमाईल का बादशाह मसीह; अब सलीब पर से उतर आए ताकि हम देख कर ईमान लाएँ और जो उसके साथ मस्लूब हुए थे वो उस पर लान्नत करते थे।” 33 जब दो पहर हुई तो पूरे मुल्क में अंधेरा छा गया और तीसरे पहर तक रहा। 34 तीसरे पहर ईसा बड़ी आवाज से चिल्लाया, “इलोही, इलोही लमा शबकतनी?” जिसका तर्जुमा है, “ऐ मेरे खुदा, ऐ मेरे खुदा, तू मेरे मुझे छोड़ दिया?” 35 जो पास खड़े थे उन में से कुछ ने ये सुनकर कहा “देखो ये एलियाह को बुलाता है।” 36 और एक ने टौड़ कर सोखते को सिरके में डबोया और सरकंडे पर रख कर उसे चुमाया और कहा, “ठहर जाओ देखें तो एलियाह उसको उतारने आता है या नहीं।” 37 फिर ईसा ने बड़ी आवाज से चिल्ला कर जान दे दिया। 38 और हैकल का पर्दा उपर से नीचे तक फट कर दो टुकड़े हो गया। 39 और जो सिपाही उसके सामने खड़ा था उसने उसे यूँ जान देते हुए देखकर कहा “बेशक ये आदमी खुदा का बेटा था।” 40 कई औरतें दूर से देख रही थीं उन में मरियम मादालिनी और छोटे याकूब और योसेस की माँ मरियम और सलोमी थीं। 41 जब वो गर्तील में था ये उसके पीछे हो ली और उसकी रिखिमत करती थी और और भी बहुत सी औरतें थीं जो उसके साथ येस्सलेम से आई थीं। 42 जब शाम हो गई तो इसलिए कि तैयारी का दिन था जो सबत से एक दिन पहले होता है। 43 अरिमतियाह का रहने वाला यूसुक आया जो इज्जतदार मुशीर और खुद भी खुदा की बादशाही का मुन्तज़िर था और उसने हिम्मत से पीलातुस के पास जाकर ईसा की लाश माँगी। 44 और पीलातुस ने तो अज्जुब किया कि वो ऐसे जल्द मर गया? और सिपाही को बुला कर उस से पूछा उसको मेरे देर हो गई? 45 जब सिपाही से हाल मालूम कर लिया तो लाश यूसुक को दिला दी। 46 उसने एक महीन चारद मोल ली और लाश को उतार कर उस चारद में कफ्नाया और एक कब्र के अन्दर जो चृष्टान में खोदी गई थी रखवा और कब्र के मूँह पर एक पथर लुढ़का दिया। 47 और मरियम मादालिनी और योसेस की माँ मरियम देख रही थी कि वो कहाँ रखवा गया है।

16 जब सबत का दिन गुज़र गया तो मरियम मादालिनी और याकूब की माँ

मरियम और सलोमी ने खुशबूतार चीजें मोल ली ताकि अकर उस पर मलें। 2 वो हफ्ते के पहले दिन बहुत सवैरे जब सूरज निकला ही था कब्र पर आई। 3 और आपस में कहती थी “हमारे लिए पथर को कब्र के मूँह पर से कौन लुढ़काएगा?” 4 जब उन्होंने निगाह की तो देखा कि पथर लुढ़का हुआ है क्यूंकि वो बहुत ही बड़ा था। 5 कब्र के अन्दर जाकर उन्होंने एक जबान को सफेद जामा पक्के हुए दहनी तरफ बैठे देखा और निहायत हैरान हुई। 6 उसने उनसे कहा ऐसी हैरान न हो तुम ईसा नासरी को “जो मस्लूब हुआ था तलाश रही हो; जी उठा है वो यहाँ नहीं है देखो ये वो जगह है जहाँ उन्होंने उसे रखवा था। 7 लेकिन तुम जाकर उपर क्षणिकों और पतरस से कहो कि वो तुम से पहले गलील को जाएगा तुम वही उसको देखोगे जैसा उसने तुम से कहा।” 8 और वो निकल कर कब्र से भागी क्यूंकि कपकपी और हैबत उन पर गालिब आ गई थी और उन्होंने किसी से कुछ न कहा क्यूंकि वो डरती थी। 9 (note: The most reliable and earliest manuscripts do not include Mark 16:9-20.) हफ्ते के पहले दिन जब वो सवैरे जी उठा तो पहले मरियम मादालिनी को जिस में से उसने सात बदस्हें निकाली थी दिखाई दिया। 10 उसने जाकर उसके शागिर्दों को जो मातम करते और रोते थे खबर दी। 11 उन्होंने ये सुनकर कि वो जी उठा है और उसने उसे देखा है यकीन न किया। 12 इसके बाद वो दूसरी सूरत में उन में से दो को जब वो देहात की तरफ जा रहे थे दिखाई दिया। 13 उन्होंने भी जाकर बाकी लोगों को खबर दी; मगर उन्होंने उन का भी यकीन न

किया। 14 फिर वो उन गयारह शांगिर्दों को भी जब खाना खाने बैठे थे दिखाई दिया और उसने उनकी बैरेटिकादी और सख्त दिली पर उनको मलामत की क्यूंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था उन्होंने उसका यकीन न किया था। 15 और उसने उनसे कहा, “तुम सारी दुनियाँ में जाकर सारी मरुखलूक के सामने इन्जील की मनादी करो। 16 जो ईमान लाए और बपतिस्मा ले वो नजात पाएंगा और जो ईमान न लाए वो मुजरिम ठहराया जाएगा। 17 और ईमान लाने वालों के दर्मियान ये मोजिज़े होंगे वो मेरे नाम से बदस्हों को निकालेंगे; नई नई जबाने बोलेंगे। 18 साँपों को उठा लेंगे और अगर कोई हलाक करने वाली चीज़ पीएंगी तो उन्हें कुछ तकलीफ न पहुँचेगी वो बीमारों पर हाथ रखेंगे तो अच्छे हो जाएंगे।” 19 गरज़ खुदावन्द उनसे कलाम करने के बाद आसमान पर उठाया गया और खुदा की दहनी तरफ बैठ गया। 20 फिर उन्होंने निकल कर हर जगह मनादी की और खुदावन्द उनके साथ काम करता रहा और कलाम को उन मोजिज़ों के बसीले से जो साथ साथ होते थे साक्षित करता रहा; आमीन।

लूका

1 चूंकि बहुतों ने इस पर कमर बांधी है कि जो बातें हमारे दरमियान बाके हुई उनको सिलसिलावार बयान करें। 2 जैसा कि उन्होंने जो शूर्स' से खुद देखेने वाले और कलाम के खादिम थे उनको हम तक पहुँचाया। 3 इसलिए ऐसे मुंअज़िज़ यथियुक्तिलुसु मैंने भी मुनासिब जाना कि सब बातों का सिलसिला शूर्स' से ठीक — ठीक मालूम करके उनको तेरे लिए तरतीब से लियँ। 4 ताकि जिन बातों की तूने तालीम पाई है उनकी पुछतारी तुड़े मालूम हो जाए। 5 यहदिया के बादशाह हेरेदेस के ज़माने में अबियाह के फ़रीके में से ज़करियाह नाम एक कहिन था और उसकी बीवी हास्तन की औलाद में से थी और उसका नाम इलीशिबा 'था। 6 और वो दोनों खुदा के सामने रास्तबाज़ और खुदावन्द के सब अहकाम — ओ — कवानीन पर बे — 'ऐ चलने वाले थे। 7 और उनके औलाद न थी क्यूंकि इलीशिबा' बाँझी थी और दोनों उम्र रसीदा थे। 8 जब वो खुदा के हुज़र अपने फ़रीके की बारी पर इमामत का काम अन्जाम देता था तो ऐसा हुआ, 9 कि इमामत के दस्तर के मुवाफिक उसके नाम की पच्ची निकली कि खुदावन्द के हुज़री में जाकर खुशबू जलाए। 10 और लोगों की सारी जमा 'अत रुशबू जलाए वक्त बाहर दुआ कर रही थी। 11 अचानक खुदा का एक फ़रिश्ता जाहिर हुआ जो खुशबू जलाने की कुर्बानगाह के दहनी तरफ खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया। 12 उसे देख कर ज़करियाह यधरया और बहन डूर गया। 13 लेकिन फ़रिश्ते ने उस से कहा, ज़करियाह, मत डर! खुदा ने तेरी दुआ सुन ली है। तेरी बीवी इलीशिबा के बेटा होगा। उस का नाम युहन्ना रखना। 14 वह न सिर्फ़ तेरे लिए खुशी और सुर्खरत का बाइस होगा, बल्कि बहुत से लोग उस की पैदाइश पर खुशी मनाएँगे। 15 क्यूंकि वह खुदा के नज़दीक अज़ीम होगा। ज़स्ती है कि वह मय और शराब से परहेज़ करे। वह पैदा होने से पहले ही स्ह — उल — कुदूस से भरपूर होगा। 16 और इसाईली कौम में से बहुतों को खुदा उन के खुदा के पास वापस लाएगा। 17 वह एलियाह की स्ह और कुव्वत से खुदावन्द के आगे आगे चलेगा। उस की खिदमत से वालिदों के दिल अपने बच्चों की तरफ माइल हो जाएँगे और नाफ़रमान लोग रास्तबाज़ों की अक्तरमन्दी की तरफ फ़िरेंगे। यूँ वह इस कौम को खुदा के लिए तथ्यार करेगा।" 18 ज़करियाह ने फ़रिश्ते से पूछा, "मैं किस तरह जारूर कि यह बात सच है? मैं खुद बढ़ा हूँ और मेरी बीवी भी उम्र रसीदा है।" 19 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "मैं जिब्राइल हूँ जो खुदावन्द के सामने खड़ा रहता हूँ। मुझे इसी मक्कसद के लिए भेजा गया है कि तुझे यह खुशखबरी सुनाऊँ। 20 लेकिन तुमे मेरी बात का यकीन नहीं किया इस लिए तू खामोश रहेगा और उस वक्त तक बोल नहीं सकेगा जब तक तेरे बेटा पैदा न हो। मेरी यह बातें अपने वक्त पर ही पूरी होंगी।" 21 इस दौरान बाहर के लोग ज़करियाह के इन्तिज़ार में थे। वह फैरान होते जा रहे थे कि उसे वापस आने में क्यूँ इनी देर हो रही है। 22 आखिरकार वह बाहर आया, लेकिन वह उन से बात न कर सका। तब उन्होंने जान लिया कि उस ने खुदा के घर में ख्रवाब देखा है। उस ने हाथों से इशारे तो किए, लेकिन खामोश रहा। 23 ज़करियाह अपने वक्त तक खुदा के घर में अपनी खिदमत अन्जाम देता रहा, फिर अपने घर वापस चला गया। 24 थोड़े दिनों के बाद उस की बीवी इलीशिबा हामिला हो गई और वह पाँच माह तक घर में छुपी रही। 25 उस ने कहा, "खुदावन्द ने मेरे लिए कितना बड़ा काम किया है, क्यूंकि अब उस ने मेरी फ़िक्र की और लोगों के सामने से मेरी स्वास्थ्य सूर कर दी।" 26 इलीशिबा छः: माह से हामिला थी जब खुदा ने जिब्राइल फ़रिश्ते को एक कुँवरी के पास भेजा जो नासरत में रहती थी। नासरत गलील का एक शहर है और कुँवरी का नाम मरियम था। 27 उस की मंगनी एक मर्द के साथ हो चुकी थी

जो दाकूद बादशाह की नस्ल से था और जिस का नाम यूसुफ था। 28 फ़रिश्ते ने उस के पास आ कर कहा, "ऐ खातून जिस पर खुदा का खास फ़ज़ल हुआ है, सलाम! खुदा तेरे साथ है।" 29 मरियम यह सुन कर घबरा गई और सोचा, यह किस तरह का सलाम है? 30 लेकिन फ़रिश्ते ने अपनी बात जारी रखी और कहा, "ऐ मरियम, मत डर, क्यूंकि तुझ पर खुदा का फ़ज़ल हुआ है।" 31 तू हमिला हो कर एक बेटे को पैदा करेगी। तू उस का नाम ईशा (नज़ात देने वाला) रखना। 32 वह बड़ा होगा और खुदावन्द के बेटा कहलाएगा। खुदा हमारा खुदा उसे उस के बाप दाकूद के तख्त पर बिठाएगा 33 और वह हमेशा तक इसाईल पर हुक्मत करेगा। उस की सलतनत की खत्म न होगी।" (aiōn g165) 34 मरियम ने फ़रिश्ते से कहा, "यह क्यैंकर हो सकता है? अपनी तो मैं कुँवारी हूँ।" 35 फ़रिश्ते ने जवाब दिया, "स्ह — उल — कुदूस तुझ पर नाज़िल होगा, खुदावन्द की कुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इस लिए यह बच्चा कुदूस होगा और खुदा का बेटा कहलाएगा। 36 और देख, तेरी रिश्तेदार इलीशिबा के भी बेटा होगा हालाँकि वह उम्रसीद है। गरचे उसे बॉझ करार दिया गया था, लेकिन वह छः: माह से हामिला है। 37 क्यूंकि खुदा के नज़दीक कोई काम नामुमानिन नहीं है।" 38 मरियम ने जवाब दिया, "मैं खुदा की खिदमत के लिए हाजिर हूँ। मेरे साथ वैसा ही हो जैसा आप ने कहा है।" इस पर फ़रिश्ता चला गया। 39 उन दिनों में मरियम यहदिया के पहाड़ी इलाके के एक शहर के लिए रवाना हुई। उस ने जल्दी जल्दी सफर किया। 40 वहाँ पहुँच कर वह ज़करियाह के घर में दाखिल हुई और इलीशिबा को सलाम किया। 41 मरियम का यह सलाम सन कर इलीशिबा का बच्चा उस के पेट में उछल पड़ा और इलीशिबा खुद स्ह — उल — कुदूस से भर गई। 42 उस ने बुलन्द आवाज़ से कहा, "तू तमाम औरतों में मुबारिक है और मुबारिक है तेरा बच्चा।" 43 मैं कौन हूँ कि मेरे खुदावन्द की माँ मैंरे पास आई। 44 जैसे ही मैं ने तेरा सलाम सुना बच्चा मेरे पेट में खुशी से उछल पड़ा। 45 तू कितनी मुबारिक है, क्यूंकि तू ईमान लाई कि जो कुछ खुदा मेरे फ़रमाया है वह पूरा होगा।" 46 इस पर मरियम ने कहा, "मेरी जान खुदा की बड़ाई करती है। 47 और मेरी स्ह मेरे मुन्जी खुदावन्द से बहुत खुश है। 48 क्यूंकि उस ने अपनी खादिमा की पस्ती पर नज़र की है। हाँ, अब से तमाम नसरत मुझे मुबारिक कहेंगी, 49 क्यूंकि उस क़ादिर ने मेरे लिए बड़े — बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पाक है। 50 और खौफ रहम उन पर जो उससे डरते हैं, पुष्ट — दर — पुष्ट रहता है। 51 उसने अपने बाज़ से जोर दिखाया, और जो अपने आपको बड़ा समझते थे उनको तितर बितर किया। 52 उसने इख्लियात वालों को तख्त से पिशा दिया, और पस्तहालों को बुलन्द किया। 53 उसने ख्रौंकों को अच्छी चीज़ों से सेर कर दिया, और दौलतमन्दों को खाली हाथ लौटा दिया। 54 उसने अपने खादिम इसाईल को संभाल लिया, ताकि अपनी उस रहमत को याद फ़रमाए। 55 जौ अब्रहाम और उसकी नस्ल पर हमेशा तक रहेगी, जैसा उसने आपके साथ रहकर अपने घर को लौट गई। 57 और इलीशिबा' के बज़ ए हाल का बक्त आ पहुँचा और उसके बेटा बड़ा हुआ। 58 उसके पड़ोसियों और रिश्तेदारों ने ये सुनकर कि खुदावन्द ने उस पर बड़ी रहमत की, उसके साथ खुशी मनाई। 59 और आठवें दिन ऐसा हुआ कि वो लड़के का खत्मा करने आए और उसका नाम उसके बाप के नाम पर ज़करियाह रखने लगा। 60 मगर उसकी माँ ने कहा, "नहीं बल्कि उसका नाम युहन्ना रखा जाए।" 61 उन्होंने कहा, "तेरे खानदान में किसी का ये नाम नहीं है।" 62 और उन्होंने उसके बाप को इशारा किया कि तू उसका नाम क्या रखना चाहता है? 63 उसने तज़ी माँग कर ये लिखा, उसका नाम युहन्ना है, और सब ने ताँच्चुब किया। 64 उसी दम उसका मुँह और ज़बान खुल गई

और वो बोलने और खुदा की हम्द करने लगा। 65 और उनके आसपास के सब रहने वालों पर दहशत छा गई और यहदिया के तमाम पहाड़ी मुलक में इन सब बातों की चर्चा फैल गई। 66 और उनके सब सुनने वालों ने उनको सोच कर दिलों में कहा, “तो ये लड़का कैसा होने वाला है?” क्यूँकि खुदावन्द का हाथ उस पर था। 67 और उस का बाप जकरियाह स्थ — उल — कुद्दूस से भर गया और नव्वुबत की राह से कहने लगा कि: 68 “खुदावन्द इस्माईल के खुदा की हम्द हो क्यूँकि उसने अपनी उम्मत पर तज्जह करके उसे छुटकारा दिया। 69 और अपने खादिम दाऊद के घराने में हमारे लिए नजात का सींग निकाला, 70 (जैसा उसने अपने पाक नव्वियों की जबानी कहा था जो कि दुनिया के शून्य से होते आए है) (aiōn g165) 71 याँनी हम को हमारे दुश्मनों से और सब बुज्ज रखने वालों के हाथ से नजात बख्ती। 72 ताकि हमारे बाप — दादा पर रहम करे और अपने पाक 'अहद' को याद रखमाए। 73 याँनी उस कस्म को जो उसने हमारे बाप अब्रहाम से खाइ थी, 74 कि वो हमें ये बाखिश देगा कि अपने दुश्मनों के हाथ से छुटकर, 75 उसके सामने पाकीजगी और रास्तबाजी से उम्र भर बेरखोफ उसकी इबादत करें 76 और ऐ लडके तु खुदा ताला का नबी कहलाएगा क्यूँकि तु खुदावन्द की राहे तैयार करने को उसके आगे आगे चलेगा, 77 ताकि उसकी उम्मत को नजात का 'इल्म बख्तों जो उनको गुनाहों की मुँआफी से हासिल हो। 78 ये हमारे खुदा की रहमत से होगा; जिसकी बजह से 'आलम — ए — बाला का सरज हम पर निकलेगा, 79 ताकि उनको जो अन्धेरे और मौत के साए में बैठे हैं रोशनी बख्तों, और हमारे कर्दमों को सलामती की राह पर डाले।” 80 और वो लड़का बढ़ता और स्थ में कुब्बत पाता गया, और इस्माईल पर जाहिर होने के दिन तक जंगलों में रहा।

2 उन दिनों में ऐसा हुआ कि कैसर औग्स्टस की तरफ से ये हकम जारी हुआ कि सारी दुनियाँ के लोगों के नाम लिखे जाएँ। 2 ये पहली इस्म नवीरी सूरिया के हाकिम कोरिन्युस के 'अहद में हूँ'। 3 और सब लोग नाम लिखावाने के लिए अपने — अपने शहर को गए। 4 पस यसुफ भी गलीत के शहर नासरत से दाऊद के शहर बैतलहम को गया जो यहदिया में है, इसलिए कि वो दाऊद के घराने और औलाद से था। 5 ताकि अपनी होने वाली बीमी मरियम के साथ जो हमिला थी, नाम लिखावा। 6 जब वो वहाँ थे तो ऐसा हुआ कि उसके बजा — ए — हम्ल का वक्त आ पहुँचा, 7 और उसका पहलौटा बेटा पैदा हुआ और उसने उसको कपड़े में लपेट कर चर्ची में रखवा क्यूँकि उनके लिए सराय में जगह न थी। 8 उसी 'इलाके में चरवाहे थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने गल्ले की निगहबानी कर रहे थे। 9 और खुदावन्द का फरिश्ते उनके पास आ खड़ा हुआ, और खुदावन्द का जलाल उनके चारोंतरफ चमका, और वो बहत डर गए। 10 मगर फरिश्ते ने उनसे कहा, डरो मत! क्यूँकि देखो, मैं तुम्हें बड़ी खुशी की बशारत देता हूँ जो सारी उम्मत के बास्ते होगी, 11 कि आज दाऊद के शहर में तुम्हरे लिए एक मून्जी पैदा हुआ है, याँनी मरीह खुदावन्द। 12 इसका तुम्हारे लिए ये निशान है कि तुम एक बच्चे को कपड़े में लिपटा और चर्ची में पड़ा हुआ पायेगो।” 13 और यकायक उस फरिश्ते के साथ आसमानी लश्कर की एक गिरोह खुदा की हम्द करती और ये कहती जाहिर हुई कि: 14 “आलम — ए — बाला पर खुदा की तम्जीह हो और ज़मीन पर आदियों में जिनसे जो राजी है सलह।” 15 जब फरिश्ते उनके पास से आसमान पर चले गए तो ऐसा हुआ कि चरवाहों ने आपस में कहा, “आओ, बैतलहम तक चले और ये बात जो हुई है और जिसकी खुदावन्द ने हम को खबर दी है देखें।” 16 पस उन्होंने जल्दी से जाकर मरियम और यसुफ को देखा और इस बच्चे को चर्ची में पड़ा पाया। 17 उन्हें देखकर वो बात जो उस लड़के के हक में उनसे कही गई थी मशहूर की, 18 और सब सुनने वालों ने इन बातों पर जो चरवाहों

ने उनसे कही ताँज्जब किया। 19 मगर मरियम इन सब बातों को अपने दिल में रखकर गौर करती रही। 20 और चरवाहे, जैसा उनसे कहा गया था वैसा ही सब कुछ सुन कर और देखकर खुदा की तम्जीह और हम्द करते हुए लौट गए। 21 जब आठ दिन पुरे हुए और उसके खत्तने का वक्त आया, तो उसका नाम इंसा रखवा गया। जो फरिश्ते ने उसके रहम में पड़ने से पहले रखवा था। 22 फिर जब मूसा की शरीँ अत के मुवाफिक उनके पाक होने के दिन पुरे हो गए, तो वो उसको येस्सलेम में लाए ताकि खुदावन्द के आगे हाजिर करें 23 (जैसा कि खुदावन्द की शरीँ अत में लिखा है कि हर एक पहलौटा खुदावन्द के लिए मुकद्दस ठहरेगा) 24 और खुदावन्द की शरीँ अत के इस कौल के मुवाफिक कुर्बानी करें, कि फारजा का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे लाओ। 25 और देखो, येस्सलेम में शमैन नाम एक आदमी था, और वो आदमी रास्तबाज और खुदातस और इस्माईल की तसल्ली का मुन्तजिर था और स्थ — उल — कुद्दूस उस पर था। 26 और उसको स्थ — उल — कुद्दूस से अगवाही हुई थी कि जब तक तू खुदावन्द के मसीह को देख न ले, मौत को न देखेगा। 27 वो स्थ की हिदायत से हैकल में आया और जिस वक्त मौं — बाप उस लड़के ईसा को अन्दर लाए ताकि उसके शरीँ अत के दस्तर पर 'अमल करें। 28 तो उसने उसे अपनी गोद में लिया और खुदा की हम्द करके कहा: 29 “ऐ मालिक अब तू अपने खादिम को अपने कौल के मुवाफिक सलामती से स्वस्त करता है, 30 क्यूँकि मेरी आँखों ने तेरी नजात देखी ली है, 31 जो तूने सब उम्मतों के स्थ — ब — स्थ तैयार की है, 32 ताकि गैर कौमों को रौशनी देने वाला नहूँ और तेरी उम्मत इस्माईल का जलाल बने।” 33 और उसका बाप और उसकी माँ इन बातों पर जो उसके हक में कही जाती थीं, ताँज्जब करते थे। 34 और शमैन ने उनके लिए दुआ — ए — खेर की ओर उसकी माँ मरियम से कहा, “देख, ये इस्माईल में बहुतों के गिरने और उठने के लिए मुकर्रह हुआ है जिसकी मुखालिफत की जाएगी। 35 बल्कि तेरी जान भी तलवार से छिद जाएगी, ताकि बहुत लोगों के दिली खायल खुल जाएँ।” 36 और आश्र के कुर्बाने में से हन्ना नाम फन्नूल की बेटी एक नवीया थी — वो बहुत 'बूढ़ी' थी — और उसने अपने कँवरेपन के बाद सात बरस एक शौहर के साथ गुजारे थे। 37 वो चौरासी बरस से बेवा थी, और हैकल से जुदा न होती थी बल्कि रात दिन रोज़ों और दुआओं के साथ इबादत किया करती थी। 38 और वो उसी घड़ी वहाँ आकर खुदा का शक्त करने लगी और उन सब से जो येस्सलेम के छुटकारे के मुन्तजिर थे उसके बारे में बातें करने लगी। 39 और जब वो खुदावन्द की शरीँ अत के मुवाफिक सब कुछ कर चुके तो गर्ती में अपने शहर नासरत को लौट गए। 40 और वो लड़का बढ़ता और ताकत पाता गया और हिक्मत से माँमूँ होता गया और खुदा का फ़ज़ल उस पर था। 41 उसके माँ — बाप हर बरस 'ईद — ए — फ़स्त' पर येस्सलेम को जाया करते थे। 42 और जब वो बारह बरस का हुआ तो वो 'ईद' के दस्तर के मुवाफिक येस्सलेम को गए। 43 जब वो उन दिनों को पूरा करके लौटे तो वो लड़का ईसा येस्सलेम में रह गया — और उसके माँ — बाप को खबर न हुई। 44 मगर ये समझ कर कि वो काफिले में है, एक मजिल निकल गए — और उसके रिश्तेदारों और उसके जान पहचानों में ढूँढ़े लगे। 45 जब न मिला तो उसे ढूँढ़ते हुए येस्सलेम तक चापस गए। 46 और तीन रोज़े के बाद ऐसा हुआ कि उन्होंने उसे हैकल में उस्तादों के बीच में बैठा उनकी सुनते और उनसे सबाल करते हुए पाया। 47 जितने उसकी सुन रहे थे उसकी समझ और उसके जबाबों से दंग थे। 48 और वो उसे देखकर हैरान हुए। उसकी माँ ने उससे कहा, “बैठा, तू ने क्यूँ हम से ऐसा किया? देख तेरा बाप और मैं घबराते हुए तुझे ढूँढ़ते थे?” 49 उसने उनसे कहा, “तुम मुझे क्यूँ ढूँढ़ते थे? क्या तुम को माँल्स न था कि मुझे अपने बाप के यहाँ होना ज़स्त है?” 50 मगर जो बात उसने उनसे कही

उसे वो न समझे। 51 और वो उनके साथ रवाना होकर नासरत में आया और उनके साथ रहा और उसकी माँ ने ये सब बातें अपने दिल में रख दी। 52 और इसा हिक्मत और कद — ओ — कियामत में और खुदा की और इंसान की मकबूलियत में तरक्की करता गया।

3 तिब्रियुस कैसर की हक्मत के पंद्रहवें बरस पुनित्युस पिलातस यहदिया का हाकिम था, हेरोदेस गतील का और उसका भाई फिलिप्पुस इतुरिया और अखोनीतिस का और लिसानियास अबलेने का हाकिम था। 2 और हन्ना और काइफा सरदार काहिन थे, उस वक्त खुदा का कलाम वीराने में जकरियाह के बेटे युहन्ना पर नाजिल हुआ। 3 और वो यरदन के आस पास में जाकर गुनाहों की मु'अफ़ी के लिए तौबा के बपतिस्मे का लालान करने लगा। 4 जैसा यसाँथा ह नबी के कलाम की किताब में लिखा है: “वीराने में पुकारने वाले की आवाज आती है, ‘खुदावन्द की राह तैयार करो, उसके रास्ते सीधे बानो।” 5 हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और टीला नीचा किया जाएगा; और जो टेढ़ा है सीधा, और जो ऊँचा — नीचा है बराबर रास्ता बनेगा। 6 और हर बशर खुदा की नजात देखेगा।” 7 पस जो लोग उससे बपतिस्मा लेने को निकलकर आते थे वो उसे कहता था, “ऐ साँप के बच्चों! तुम्हें किसने जाता कि आने वाले गजब से भागो?” 8 पस तौबा के मुवाफ़िक फल लाओ — और अपने दिलों में ये कहना शुरू न करो कि अब्राहाम हमारा बाप है क्यूंकि मैं तुम से कहता हूँ कि खुदा इन पथरों से अब्बाहम के लिए औलाद पैदा कर सकता है। 9 और अब तो दरखतों की जड़ पर कल्हाड़ा रखवा है परस जो दरखत अच्छा फल नहीं लाता वो काटा और आग में डाला जाता है।” 10 लोगों ने उस से पूछा, “हम क्या करें?” 11 उसने जबाब में उनसे कहा, “जिसके पास दो कुरते हों वो उसको जिसके पास न हो बाँट दे, और जिसके पास खाना हो वो भी ऐसा ही करो।” 12 और महसूल लेने वाले भी बपतिस्मा लेने को आए और उससे पूछा, “ऐ उस्ताद, हम क्या करें?” 13 उसने उनसे कहा, “जो तुम्हरे लिए मुकरिर है उससे ज्यादा न लेना।” 14 और सिपाहियों में भी उससे पूछा, “हम क्या करें?” उसने उनसे कहा, “न किनी पर तुम जुल्म करो और न किसी से नाहक कुछ लो, और अपनी तनाख्वाह पर किफायत करो।” 15 जब लोग इन्तिज़ार में थे और सब अपने अपने दिल में युहन्ना के बारे में सोच रहे थे कि आया वो मरीह है या नहीं। 16 तो युहन्ना ने उन से जबाब में कहा, ‘मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, मगर जो मुझ से ताकतवर है वो आनेवाला है, मैं उसकी ज़रीती का फीता खोलने के लायक नहीं; वो तुम्हें स्व-उल — कुद्दस और आग से बपतिस्मा देगा।’ 17 उसका सूपु उमके हाथ में है; ताकि वो अपने खलियान को खब साक़ करे और गेहँ्ग को अपने खिलें में जमा करे, मगर भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।” 18 पस वो और बहुत सी नसीहत करके लोगों को खुशखबरी सूनाता रहा। 19 लेकिन चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की बीवी हेरोदियास की बजह से और उन सब ख्राइयों के बाँझों जो हेरोदेस ने की थी, युहन्ना से मलामत उठाकर, 20 इन सब से बढ़कर ये भी किया कि उसको कैद में डाला। 21 जब सब लोगों ने बपतिस्मा लिया और इसा भी बपतिस्मा पाकर दुआ कर रहा था तो ऐसा हुआ कि आसमान खुल गया, 22 और स्व-उल — कुद्दस जिसमानी सूरत में कबूल की तरह उस पर नाजिल हुआ और आसमान से ये आवाज आई: “तू मेरा प्यारा बेटा है, तुझ से मैं खुश हूँ।” 23 जब ईसा खुद तालीम देने लगा, कर्तीबन तीस बरस का था और (जैसा कि समझा जाता था) यसुफ का बेटा था; और वो ‘एली का, 24 और वो मतात का, और वो लाली का, और वो मल्की का, और वो यन्ना का, और वो यसुफ का, 25 और वो मतितियाह का, और वो ‘आमूस का और नाहम का, और वो असलियाह का, और वो नोगा का, 26

और वो माअत का, और मतितियाह का, और वो शिमाई का, और वो योसेख का, और वो यहदाह का, 27 और वो युहन्ना का, और वो रोसा का, और वो ज़स्त्वाबूल का, और वो सियालतीएल का और वो नेरी का, 28 और वो मल्की का, और वो अदी का, और वो कोसाम का, और वो इल्मोदाम का, और वो ‘एर का, 29 और वो याँउ’अ का, और वो इली अज़र का, और वो योरीम का, और वो मतात का, और वो लाली का, 30 और वो शमान का, और वो यहदाह का, और वो यसुफ का, और वो योनाम का और वो इलियाकीम का, 31 और वो मलेआह का, और वो मिनाह का, और वो मतितियाह का, और वो नातन का, और वो दाऊद का, 32 और वो यस्सी का, और वो ओबेद का, और वो बो’अज़ का, और वो सल्मान का, और वो नह्सोन का, 33 और वो ‘अम्मीनदाब का, और वो अदरीन का, और वो असनी का, और वो हस्सोन का, और वो फारस का, और वो यहदाह का, 34 और वो याकूब का, और वो इज़हाक का, और वो इब्राहीम का, और वो तारह का, और वो नहर का, 35 और वो सस्ज का, और वो रँक का, और वो फलज का, और वो इर का, और वो सिलह का, 36 और वो कीनान का और वो अर्फ़कसद का, और वो सिम का, और वो नह का, और वो लमक का, 37 और वो मतसिलह का और वो हन्क का, और वो यारिद का, और वो महल्ल — एल का, और वो कीनान का, 38 और वो अन्सूस का, और वो सेत का, और आदम खुदा से था।

4 फिर ईसा स्व — उल — कुद्दस से भरा हुआ यरदन से लौटा, और चालीस

दिन तक स्व की हिदायत से वीराने में फिरता रहा; 2 और शैतान उसे आजमाता रहा। उन दिनों में उसने कुछ न खाया, जब वो दिन पुरे हो गए तो उसे भूख लगी। 3 और शैतान ने उससे कहा, “अगर तू खुदा का बेटा है तो इस पथर से कह कि रोटी बन जाए।” 4 ईसा ने उसको जबाब दिया, “कलाम में लिखा है कि, आदमी सिर्फ़ रोटी ही से जीता न रहेगा।” 5 और शैतान ने उसे ऊँचे पर ले जाकर दुनिया की सब सलतनतें पल पर मैं दिखाई। 6 और उससे कहा, “ये सारा इज़लियार और उनकी शान — ओ — शैकत मैं तुझे दे दूँगा, क्यूंकि ये मेरे सुपुर्द हैं और जिसको चाहता हूँ देता हूँ।” 7 पस अगर तू मेरे आगे सज्जा करे, तो ये सब तेरा होगा।” 8 ईसा ने जबाब में उससे कहा, “लिखा है कि, तू खुदावन्द अपने खुदा को सिज्दा कर और सिर्फ़ उसकी झाड़त कर।” 9 और वो उसे येस्तालेम में ले गया और हैकल के कंगरे पर खड़ा करके उससे कहा, अगर तू खुदा का बेटा है तो अपने आपको यहाँ से नीचे गिरा दे। 10 क्यूंकि लिखा है कि, वो तेरे बरे में अपने फ़रिश्तों को हक्म देगा कि तेरी हिफ़ाज़त करें। 11 और ये भी कि वो तुझे हाथों पर उठा लेंगे, क़साकी तेरे पैँव को पथर से ठेस लगे। 12 ईसा ने जबाब में उससे कहा, “फ़रमाया गया है कि, तू खुदावन्द अपने खुदा की आजमाइश न कर।” 13 जब इलीस तमाम आजमाइशें कर चूका तो कुछ अर्से के लिए उससे जुदा हुआ। 14 फिर ईसा पाक स्व की कुब्त से भरा हुआ गलील को लौटा और आसपास में उसकी शोहरत फैल गई। 15 और वो उनके ‘इबादतखाने में तालीम देता रहा और सब उसकी बड़ाई करते रहे। 16 और वो नासरत में आया जहाँ उसने परवरिश पाई थी और अपने दस्तर के मुवाफ़िक सबत के दिन ‘इबादतखाने में गया और पढ़ने को खड़ा हुआ। 17 और यसायाह नवी की किताब उसको दी गई, और किताब खोलकर उसने वो वर्का खोला जहाँ ये लिखा था: 18 “खुदावन्द का स्व मुझ पर है, इसलिए कि उसने मुझे गरीबों को खुशखबरी देने के लिए मसह किया; उसने मुझे भेजा है कैदियों को रिहाई और अन्धों को बीनाई पाने की खबर सूनाऊँ, कुचले हुओं को आजाद करूँ।” 19 और खुदावन्द के साल — ए — मकबूल का ऐलान करूँ।” 20 फिर वो किताब बन्द करके और खादिम को वापस देकर बैठ गया; जितने ‘इबादतखाने में थे सबकी अँखें उस पर लगी थीं।

21 वो उनसे कहने लगा, “आज ये लिखा हुआ तुम्हारे सामने पूरा हुआ।” 22 और सबने उस पर गवाही दी और उन पुर फ़ज़ल बातों पर जो उसके मूँह से निकली थी, ताज्जुब करके कहने लगे, “क्या ये यूसूफ का बेटा नहीं?” 23 उसने उनसे कहा “तुम अलबत्ता ये मिसाल मुझ पर कहोगे कि, ‘ऐ हकीम, अपने आप को तो अच्छा कर! जो कुछ हम ने सुना है कि कफरनहम में किया गया, यहाँ अपने बतन में भी कर।’” 24 और उसने कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि कोई नबी अपने बतन में मकबूल नहीं होता। 25 और मैं तुम से कहता हूँ, कि एलियाह के दिनों में जब साठे तीन बरस आसमान बन्द रहा, यहाँ तक कि सारे मुल्क में सर्वत काल पड़ा, बहुत सी बेवाई इमाईल में थी। 26 लेकिन एलियाह उनमें से किसी के पास न भेजा गया, मगर मुल्क — ए — सैदा के शहर सारपत में एक बेवा के पास 27 और इलिया नबी के बक्त में इमाईल के बीच बहुत से कोढ़ी थे, लेकिन उनमें से कोई पाक साफ़ न किया गया मगर नामान स्थानी।” 28 जिने ‘इबादतखाने में थे, इन बातों को सुनते ही गुस्से से भर गए, 29 और उठकर उस को बाहर निकाले और उस पहाड़ की चोटी पर ले गए जिस पर उनका शहर आवाद था, ताकि उसको सिर के बल गिरा दें। 30 मगर वो उनके बीच में से निकलकर चला गया। 31 फिर वो गलील के शहर कफरनहम को गया और सबत के दिन उहें तालीम दे रहा था। 32 और लोग उसकी तालीम से हैरान थे क्योंकि उसका कलाम इखित्यार के साथ था। 33 इबादतखाने में एक आदमी था, जिसमें बदस्तूरी थी। वो बड़ी आवाज से चिल्ला उठा कि, 34 “ऐ ईसा नासरी हमें तुझ से क्या काम? क्या तु हमें हलाक करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ कि तु कौन है — खुदा का कुदस है।” 35 ईसा ने उसे झिड़क कर कहा, “चुप रह और उसमें से निकल जा।” इस पर बदस्तूर उसे बीच में पटक कर बौंदूर तुक्सान पहुँचाए, उसमें से निकल गई। 36 और सब हैरान होकर आपस में कहने लगे, “ये कैसा कलाम है? क्योंकि वो इखित्यार और कुदरत से नापाक स्थहों को हुक्म देता है और वो निकल जाती है।” 37 और आपस में रह जगह उसकी धूम मच गई। 38 फिर वो ‘इबादतखाने से उठकर शमाईन के घर में दाखिल हुआ और शमाईन की सास जो खुशार में पड़ी हुई थी और उन्होंने उस के लिए उससे ‘अर्ज की। 39 वो खड़ा होकर उसकी तरफ झूका और खुशार को झिड़का तो वो उतर गया, वो उसी दम उठकर उनकी इखिदमत करने लगी। 40 और सूरज के बूढ़ते बक्त वो सब लोग जिनके यहाँ तरह — तरह की बीमारियों के मरीज थे, उहें उसके पास लाए और उसने उनमें से हर एक पर हाथ रख कर उहें अच्छा किया। 41 और बदस्तूर भी चिल्लाकर और ये कहकर कि, “तू खुदा का बेटा है” बहुतों में से निकल गई, और वो उहें झिड़कता और बोलने न देता था, क्योंकि वो जानती थी कि ये मरीज है। 42 जब दिन हुआ तो वो निकल कर एक वीरान जगह में गया, और भीड़ की भीड़ की भीड़ हुई उसके पास आई, और उसको रोकने लगी कि हमारे पास से न जा। 43 उसने उनसे कहा, “मुझे और शहरों में भी खुदा की बादशाही की खुशखबरी सुनाना जास्तर है, क्योंकि मैं इसी लिए भेजा गया हूँ।” 44 और वो गलील के ‘झावूतखानों में लान करता रहा।

5 जब भीड़ उस पर गिरी पड़ती थी और खुदा का कलाम सुनती थी, और वो गनेसरत की झील के किनारे खड़ा था तो ऐसा हुआ कि 2 उसने झील के किनारे दो नाव लगी देखी, लेकिन मछली पकड़ने वाले उन पर से उतर कर जाल धो रहे थे 3 और उसने उस नावों में से एक पर चढ़कर जो शमाई की थी, उससे दरख्खास्त की कि किनारे से ज़रा हटा ले चल और वो बैठकर लोगों को नाव पर से तालीम देने लगा। 4 जब कलाम कर चुका तो शमाई से कहा, “गहरे में ले चल, और तुम शिकार के लिए अपने जाल डालो।” 5 शमाई ने जवाब में कहा, “ऐ खुदावन्द! हम ने रात भर मेहनत की और कुछ हाथ न

आया, मगर तेरे कहने से जाल डालता हूँ।” 6 ये किया और वो मछलियों का बड़ा धेर लाए, और उनके जाल फटने लगे। 7 और उन्होंने अपने साथियों को जो दूसरी नाव पर थे इशारा किया कि आओ हमारी मदद करो। पस उन्होंने आकर दोनों नावें यहाँ तक भर दी कि बूढ़ने लगी। 8 शमाई पतरस ये देखकर ईसा के पाँव में गिरा और कहा, ऐ खुदावन्द! मेरे पास से चला जा, क्यूँकि मैं गुनहगर आदमी हूँ।” 9 क्योंकि मछलियों के इस शिकार से जो उन्होंने किया, वो और उसके सब साथी बहुत हैरान हुए। 10 और वैसे ही जब्दी के बेटे याकूब और यहन्ना भी जो शमाई के साथी थे, हैरान हुए। ईसा ने शमाई से कहा, “खूफ न कर, अब से तू आदमियों का शिकार करोगा।” 11 वो नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए। 12 जब वो एक शहर में था, तो देखो, कौदू से भरा हुआ एक आदमी ईसा को देखकर मूँह के बल पिरा और उसकी मिन्त करके कहने लगा, “ऐ खुदावन्द, अगर तू चाहे तो मुझे पाक साफ़ कर सकता है।” 13 उसने हाथ बढ़ा कर उसे छुआ और कहा, “मैं चाहता हूँ, तू पाक साफ़ हो जा।” और फौरन उसका कौदू जाता रहा। 14 और उसने उसे ताकीट की, “किसी से न कहना बल्कि जाकर अपने आपको कानिन को दिखा। और जैसा मूरा ने मुकर्रर किया है अपने पाक साफ़ हो जाने के बारे में गुज़रान ताकि उनके लिए गवाही हो।” 15 लेकिन उसकी चर्चा ज्यादा फैली और बहुत से लोगों जमा हुए कि उसकी सुनें और अपनी बीमारियों से शिफा पाएँ। 16 मगर वो जंगलों में अलग जाकर दुआ किया करता था। 17 और एक दिन ऐसा हुआ कि वो तालीम दे रहा था और फरीसी और शरा के मुअलिम वहाँ बैठे हुए थे जो गलील के हर गाँव और यहदिया और येस्शलेम से आए थे। और खुदावन्द की कुदरत शिफा बछाने को उसके साथ थी। 18 और देखो, कोई मद एक आदमी को जो फालिज का मारा था चारपाई पर लाए और कोशिश की कि उसे अन्दर लाकर उसके आगे रखें। 19 और जब भीड़ की बजह से उसको अन्दर ले जाने की राह न पाई तो छत पर चढ़ कर खपैल में से उसको खटोले समेत बीच में ईसा के सामने उतार दिया। 20 उसने उनका ईमान देखकर कहा, “ऐ आदमी! तेरे गुनाह मुआफ हुए।” 21 इस पर फकीह और फरीसी सोचने लगे, “ये कौन है जो कुफ्र बक्ता है? खुदा के सिवा और कौन गुनाह मुआफ कर सकता है?” 22 ईसा ने उनके ख्यालों को मालूम करके जवाब में उनसे कहा, “तुम अपने दिलों में क्या सोचते हो? 23 आसान क्या है? ये कहना कि ‘तेरे गुनाह मुआफ हुए’ या ये कहना कि ‘उठ और चल फिर?’ 24 लेकिन इसलिए कि तुम जानो कि इन्हें ए — आदम को जीवन पर गुनाह मुआफ करने का इखित्यार है,” (उसने मफ़्लूज से कहा) मैं तुझ से कहता हूँ, उठ और अपनी चारपाई उठाकर अपने घर जा।” 25 वो उसी दम उनके सामने उठा और जिस पर पड़ा था उसे उठाकर खुदा की तमजीद करता हुआ अपने घर चला गया। 26 वो सब के सब बहुत हैरान हुए और खुदा की तमजीद करने लगे, और बहत डर गए और कहने लगे, “आज हम ने अजीब बातें देखीं।” 27 इन बातों के बाद वो बाहर गया और लावी नाम के एक महसूल लेनेवाले को महसूल की चौकी पर बैठे देखा और उससे कहा, “मेरे पीछे हो ले।” 28 वो सब कुछ छोड़कर उठा, और उसके पीछे हो लिया। 29 फिर लावी ने अपने घर में उसकी बड़ी जियाफ़त की; और महसूल लेनेवालों और औरें की जो उनके साथ खाना खाने बैठे थे, बड़ी भीड़ थी। 30 और फरीसी और उनके आलिम उसके शारिर्दो से ये कहकर बुटबदाने लगे, “तुम क्यूँ महसूल लेनेवालों और गुनाहगारों के साथ खाते — परि हो?” 31 ईसा ने जवाब में उनसे कहा, “तन्दस्तों को हकीम की जस्तर नहीं है बल्कि बीमारों को। 32 मैं गम्भीर बाजों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को तौबा के लिए बुलाने आया हूँ।” 33 और उन्होंने उससे कहा, “सुहना के शारिर्द अक्सर रोज़ा रखते

और दूँआँ किया करते हैं, और इसी तरह फरीसियों के भी; मगर तेरे शारिर खाते पीते हैं।³⁴ इसा ने उनसे कहा, “क्या तुम बरातियों से, जब तक दुल्हा उनके साथ है, रोजा रखवा सकते हो? 35 मगर वो दिन आएँ; और जब दुल्हा उनसे जुदा किया जाएगा तब उन दिनों में वो रोजा रख लेंगे।”³⁶ और उनसे उनसे एक मिसाल भी कही: “कोई आदमी नई पोशाक में से फाड़कर पुरानी में पैकन्द नहीं लगता, वर्ता नई भी फटेगी और उसका पैकन्द पुरानी में मेल भी न खाएगा। 37 और कोई शब्द सनई मय पूरानी मशकों में नहीं भरता, नहीं तो नई मय मशकों को फाड़ कर खुद भी बह जाएगी और मशकें भी बरबाद हो जाएँगी। 38 बल्कि नई मय नई मशकों में भरना चाहिए। 39 और कोई आदमी पुरानी मय पीकर नई की ख्वाहिश नहीं करता, क्यूंकि कहता है कि पुरानी ही अच्छी है।”

6 फिर सबत के दिन यूँ हआ कि वो खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके शारिर बाले तोड़ — तोड़ कर और हाथों से मल — मलकर खाते जाते थे। 2 और फरीसियों में से कुछ लोग कहने लगे, “तुम वो काम क्यूँ करते हो जो सबत के दिन करना ठीक नहीं।”³ इसा ने जबाब में उनसे कहा, “क्या तुम ने ये भी नहीं पढ़ा कि जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे तो उसने क्या किया? 4 वो क्यूँकर खुदा के घर में गया, और नज़र की रोटियाँ लेकर खाइ जिनको खाना कहिनों के सिवा और किसी को ठीक नहीं, और अपने साथियों को भी दी।”⁵ फिर उनसे उनसे कहा, “इन्ह — ए — आदम सबत का मालिक है।”⁶ 6 और यूँ हुआ कि किसी और सबत को वो ‘इबादतखाने में दाखिल होकर तालीम देने लगा। वहाँ एक आदमी था जिसका दाहिना हाथ सूख गया था।⁷ 7 और अलिम और फरीसी उसकी ताक में थे, कि आया सबत के दिन अच्छा करता है या नहीं, ताकि उस पर इलाजम लगाने का मौका पाएँ।⁸ मगर उसके उनके ख्याल मालूम थे; पस उसने उस आदमी से जिसका हाथ सूखा था कहा, “उठ, और बीच में खड़ा हो।”⁹ 9 इसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से ये पृछता हूँ कि आया सबत के दिन नेकी करना ठीक है या बदी करना? जान बचाना या हलाक करना?”¹⁰ 10 और उन सब पर नज़र करके उनसे कहा, “अपना हाथ बढ़ा!”¹¹ उसने बढ़ाया और उसका हाथ दस्त हो गया। 11 वो आपे से बाहर होकर एक दूसरे से कहने लगे कि हम इसा के साथ क्या करें। 12 और उन दिनों में ऐसा हुआ कि वो पहाड़ पर दुआ करने को निकला और खड़ा से दुआ करने में सारी रात गुज़री।¹³ जब दिन हआ तो उसने अपने शारिरों को पास बुलाकर उनमें से बाहर चुन लिए और उनको रसूल का लक्क दिया: 14 यानी शमैन जिसका नाम उसने पतरस भी रखवा, और अद्वियास, और याकूब, और यूहन्ना, और फिलिप्पस, और बरतुल्माई, 15 और मर्ती, और तोमा, और हलफी का बेटा याकूब, और शमैन जो जेलोतेस कहलाता था, 16 और याकूब का बेटा यहदाह, और यहदाह इस्करियोती जो उसका पकड़वाने वाला हआ।¹⁷ 17 और वो उनके साथ उत्तर कर हमवार जगह पर खड़ा हुआ, और उसके शारिरों की बड़ी जमा अत और लोगों की बड़ी भीड़ वहाँ थी, जो सारे यहदिया और येशुलोतम और सूर और सैदा के बहरी किनारे से उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से शिफा पाने के लिए उसके पास आई थी। 18 और जो बदरहूंसों से दुःख पाते थे वो अच्छे किए गए। 19 और सब लोग उसे छुने की कोशिश करते थे, क्यूँकि कूब्त उससे निकलती और सब को शिफा बरखाती थी। 20 फिर उसने अपने शारिरों की तरफ नज़र करके कहा, “मुबारिक हो तुम जो गरीब हो, क्यूँकि खुदा की बादशाही तुम्हारी है।”²¹ “मुबारिक हो तुम जो अब भखे हो, क्यूँकि आसदा होगे “मुबारिक हो तुम जो अब रोते हो, क्यूँकि हँसेंगे 22 “जब इन — ए — आदम की बजह से लोग तुम से ‘दुश्मनी रख लेंगे, और तुम्हें निकाल देंगे, और लान — तान करेंगे।”²³ “उस दिन खुश होना और

खुशी के मारे उछलना, इसलिए कि देखो आसमान पर तुम्हारा अञ्ज बड़ा है; क्यूँकि उनके बाप — दादा नवियों के साथ भी ऐसा ही किया करते थे।²⁴ “मगर अफसोस तुम पर जो दौलतमन्द हो, क्यूँकि तुम अपनी तसल्ली पा चुके।²⁵ “अफसोस तुम पर जो अब सेर हो, क्यूँकि भूखे होगे।” “अफसोस तुम पर जो अब हँसते हो, क्यूँकि मातम करोगे और रोओगे।²⁶ “अफसोस तुम पर जब सब लोग तुम्हें अच्छा कहें, क्यूँकि उनके बाप — दादा झूठे नवियों के साथ भी ऐसा ही किया करते थे।”²⁷ “लेकिन मैं सुनने वालों से कहता हूँ कि अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखते, जो तुम से ‘दुश्मनी रख लेंगे उसके साथ नेकी करो।²⁸ जो तुम पर लान तरत करें उनके लिए बर्कत चाहो, जो तुमसे नफरत करें उनके लिए दुआ करो।²⁹ जो तेरे एक गाल पर तमाचा मारे दूसरा भी उसकी तरफ फेर दे, और जो तेरा चोगा ले उसको कुरता लेने से भी मनह न कर।³⁰ जो कोई तुझ से मँगी उसे दे, और जो तेरा माल ले ले ते उससे तलब न कर।³¹ और जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।”³² “अगर तुम अपने मुहब्बत रखनेवालों ही से मुहब्बत रखते हो, तो तुम्हारा क्या अहसान है? क्यूँकि गुनहगार भी अपने मुहब्बत रखनेवालों से मुहब्बत रखते हैं।³³ और अगर तुम उन ही का भला करो जो तुम्हारा भला करें, तो तुम्हारा क्या अहसान है? क्यूँकि गुनहगार भी ऐसा ही करते हैं।³⁴ और अगर तुम उन्हीं को कर्ज दो जिसने वसूल होने की उम्मीद रखते हो, तो तुम्हारा क्या अहसान है? गुनहगारों को कर्ज देते हैं ताकि पूरा वसूल कर लें³⁵ मगर तुम अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखतो, और नेकी करो, और बगैर न उम्मीद हए कर्ज दो तो तुम्हारा अञ्ज बड़ा होगा और तुम खुदा के बेटे ठहरेगे, क्यूँकि वो न — शुक्रों और बदों पर भी महरबान है।³⁶ जैसा तुम्हारा आसमानी बाप रहीम है तुम भी रहम दिल हो।”³⁷ “ऐजोई न की जाएगी। मुजरिम न ठहराओ, तुम भी मुजरिम ना ठहराए जाओगे। इज्जत दो, तुम भी इज्जत पाओगे।³⁸ दिया करो, तुम्हें भी दिया जाएगा। अच्छा पैमाना दाब — दाब कर और हिला — हिला कर और लबरेज करके तुम्हारे पल्ले में डालेंगे, क्यूँकि जिस पैमाने से तुम नापते हो उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा।”³⁹ “और उसने उनसे एक मिसाल भी दी “क्या अंधे को अंधा राह दिखा सकता है? क्या दोनों गड़े में न गिरेंगे?”⁴⁰ शारिर अपने उस्ताद से बड़ा नहीं, बल्कि हर एक जब कामिल हुआ तो अपने उस्ताद जैसा होगा।⁴¹ तब क्यूँ अपने भाई की आँख के तिनके को देखता है, और अपनी आँख के शहतीर पर गौर नहीं करता?⁴² और जब तु अपनी आँख के शहतीर को नहीं देखता तो अपने भाई से क्यूँकर कह सकता है, कि भाई ला उस तिनके को जो तेरी आँख में है निकाल दूँ ऐ रियाकार।⁴³ पहले अपनी आँख में से तो शहतीर निकालत, फिर उस तिनके को जो तेरे भाई की आँख में है अच्छी तरह देखकर निकाल सकेगा।⁴⁴ “क्यूँकि कोई अच्छा दरगत नहीं जो बुरा फल लाए, और न कोई बुरा दररुत है जो अच्छा फल लाए।”⁴⁵ हर दररुत अपने फल से पहचाना जाता है, क्यूँकि झाड़ियों से अंजीर नहीं तोड़ते और न झड़बेरी से अंगर।⁴⁶ “अच्छा आदमी अपने दिल के अच्छे खजाने से अच्छी चीजें निकालता है, और बुरा आदमी बुरे खजाने से बुरी चीजें निकालता है; क्यूँकि जो दिल में भरा है वही उसके मँह पर आता है।”⁴⁷ “जब तुम मेरे कहने पर ‘अमल नहीं करते तो क्यूँ मझे ‘खुदावन्द, खुदावन्द’ कहते हो।⁴⁸ जो कोई मेरे पास आता और मेरी बातें सुनकर उन पर ‘अमल करता है, मैं तुम्हें बताता हूँ कि वो किसकी तरह है।⁴⁹ वो उस आदमी की तरह है जिसने घर बनाते बक्त जमीन गहरी खोदकर चट्टान पर बुनियाद डाली, जब तूफान आया और सैलाब उस घर से टकराया, तो उसे हिला न सका क्यूँकि वो मजबूत बना हुआ था।⁵⁰ लेकिन जो सुनकर ‘अमल में नहीं लाता वो उस आदमी की तरह

है जिसने जमीन पर घर को बै— बुनियाद बनाया, जब सैलाब उस पर जोर से आया तो वो फैरून गिर पड़ा और वो घर बिल्कुल बरबाद हुआ।”

7 जब वो लोगों को अपनी सब बातें सुना चुका तो कफरनहम में आया। 2 और किसी संवेदार का नौकर जो उसको 'प्यारा था, बीमारी से मरने को था। 3 उसने ईसा की खबर सुनकर यहदियों के कई बुर्जाएँ को उसके पास भेजा और उससे दरब्बारस्त की कि आकर मेरे नौकर को अच्छा कर। 4 वो ईसा के पास आए और उसकी बड़ी खुशामद कर के कहने लगे, “वो इस लायक है कि तु उसकी खातिर ये करे। 5 क्यूँकि वो हमारी कौम से मुहब्बत रखता है और हमारे 'इबादतखाने को उसी ने बनवाया।” 6 ईसा उनके साथ चला मगर जब वो घर के करीब पहुँचा तो संवेदार ने कुछ दोस्तों के जरिए उसे ये कहला भेजा, “ऐ, खुदावन्द तकलीफ न कर, क्यूँकि मैं इस लायक नहीं कि तू मेरी छत के नीचे आए। 7 ईसी बजह से मैंने अपने आप को भी भैं पास आये के लायक न समझा, बल्कि जबान से कह दे तो मेरा खादिम शिफा पाएगा। 8 क्यूँकि मैं भी दूसरे के तोबे मैं हूँ, और सिपाही मेरे मातहत हैं; जब एक से कहता हूँ कि 'जा' वो जाता है, और दूसरे से कहता हूँ 'आ' तो वो आता है; और अपने नौकर से कि 'थे कर' तो वो करता है।” 9 ईसा ने ये सुनकर उस पर ताज्जब किया, और मुड़ कर उस भीड़ से जो उसके पीछे आती थी कहा, “मैं तुम से कहता हूँ कि मैंने ऐसा ईमान इसाईल में भी नहीं पाया।” 10 और भेजे हए लोगों ने घर में वापस आकर उस नौकर को तन्दस्त पाया। 11 थोड़े 'असरों के बाद ऐसा हुआ कि वो नाईन नाम एक शहर को गया। उसके शारिंद और बहुत से लोग उसके हमराह थे। 12 जब वो शहर के फाटक के नजदीक पहुँचा तो देखो, एक मुर्दे को बाहर लिए जाते थे। वो अपनी माँ का इकलौता बेटा था और वो बेटा थी, और शहर के बहुतेरे लोग उसके साथ थे। 13 उसे देखकर खुदावन्द को तरस आया और उससे कहा, “मत रो।” 14 फिर उसने पास आकर जनाजे को छुआ और उठाने वाले खड़े हो गए। और उसने कहा, “ऐ जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ।” 15 वो मुर्दा उठ बैठा और बोलने लगा। और उसने उसे उसकी माँ को सुप्रद किया। 16 और सब पर खौफ छा गया और वो खुदा की तम्जीद करके कहने लगे, एक बड़ा नबी हम में आया हुआ है, खुदा ने अपनी उम्मत पर तवज्ज्ञ की है। 17 और उसकी मिस्त्रत ये खबर सारे यहदिया और तमाम आस पास मैं फैल गई। 18 और युहन्ना को उसके शारिंदों ने इन सब बातों की खबर दी। 19 इस पर युहन्ना ने अपने शारिंदों में से दो को बुला कर खुदावन्द के पास ये पछेंे को भेजा, कि “आने वाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की गाह देखें।” 20 उन्होंने उसके पास आकर कहा, युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास ये पछेंे को भेजा है कि आने वाला तू ही है या हम दूसरे की गाह देखें। 21 उरी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों और आफतों और बदरहों से नजात बरब्जी और बहुत से अन्धों को बीनाई 'अता की। 22 उसने जवाब में उनसे कहा, “जो कुछ तुम ने देखा और सुना है जाकर युहन्ना से बयान कर दो कि अन्धे देखें, लंगड़े चलते फिरते हैं, कौटी पाक साफ किए जाते हैं, बहरे सुनते हैं मुर्दे जिन्दा किए जाते हैं, गरिबों को खुशखबरी सुनाई जाती है।” 23 मुबारिक है वो जो मेरी बजह से ठोकर न खाए।” 24 जब युहन्ना के कासिद चले गए तो ईसा युहन्ना के हक में कहने लगा, “तुम वीराने में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकंडे को?” 25 तो फिर क्या देखने गए थे? क्या महीन कपड़े पहने हुए शख्स को? देखो, जो चमकदार पोशाक पहनते और 'ऐश — ओ — अशरत में रहते हैं, वो बादशाही महलों में होते हैं।” 26 तो फिर तुम क्या देखने गए थे? क्या एक नबी? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, बल्कि नबी से बड़े को। 27 ये बही है जिसके बारे में लिखा है: “देख, मैं अपना पैग्मन्टर तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरी राह तेरे अगे तैयार करेगा।” 28 “मैं तुम से कहता हूँ कि जो 'औरतों से पैदा हुए है, उनमें

युहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं लेकिन जो खुदा की बादशाही में छोटा है वो उससे बड़ा है।” 29 और सब 'आम लोगों ने जब सुना, तो उन्होंने और महसूल लेने वालों ने भी युहन्ना का बपतिस्मा लेकर खुदा को रास्तबाज मान लिया। 30 मगर फरीसियों और शरा' के 'आलिमों ने उससे बपतिस्मा न लेकर खुदा के इदों को अपनी निस्बत बातित कर दिया। 31 “पस इस जमाने के आदिमियों को मैं किससे मिसाल दूँ, वो किसकी तरह हैं?” 32 उन लड़कों की तरह हैं जो बाजार में बैठे हुए एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं कि हम ने तुहारे लिए बाँसुरी बजाई और तुम न नाचे, हम ने मातम किया और तुम न रोए। 33 क्यूँकि युहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न तो रोटी खाता हुआ आया न मय पीता हुआ और तुम कहते हो कि उसमें बदरहू है। 34 इबन — ए — आदम खाता पीता आया और तुम कहते हो कि देखो, खाऊ और शराबी आदमी, महसूल लेने वालों और गुआहगारों का यार। 35 लेकिन हिक्मत अपने सब लड़कों की तरफ से रास्त साबित हुई।” 36 फिर किसी फरीसी ने उससे दरब्बारस्त की कि मैं साथ खाना खा, पस वो उस फरीसी के घर जाकर खाना खाने बैठा। 37 तो देखो, एक बदचलन 'औरत जो उस शहर की थी, ये जानकर कि वो उस फरीसी के घर में खाना खाने बैठा है, संग — ए — मरम्म के 'इन्द्रदाम में 'इन लाईं; 38 और उसके पाँव के पास रोती हुई पीछे खड़े होकर, उसके पाँव अँसुओं से भिगोने लगी और अपने सिर के बालों से उनको पोछा, और उसके पाँव बहुत चमों और उन पर इन डाला। 39 उसकी दाँवत करने वाला फरीसी ये देख कर अपने जी में कहने लगा, अगर ये शख्स नवी “होता तो जानता कि जो उसे छूती है वो कौन और कैसी 'औरत है, क्यूँकि बदचलन है।” 40 ईसा, ने जवाब में उससे कहा, “ऐ शमैन! मुझे तुम से कुछ कहना है।” उसने कहा, “ऐ उस्ताद कह।” 41 “किसी साहकार के दो कंजीदार थे, एक पाँच सौ दीनार का दूसरा पचास का। 42 जब उनके पास अदा करने को कुछ न रहा तो उसने दोनों को बख्श दिया। पस उनमें से कौन उससे ज्यादा मुहब्बत रखलेगा?” 43 शमैन ने जवाब में कहा, “मेरी समझ में वो किसे उसने ज्यादा बख्शा।” उसने उससे कहा, “तू ने ठीक फैसला किया है।” 44 और उस 'औरत की तरफ फिर कर उसने शमैन से कहा, “क्या तू इस 'औरत को देखता है? मैं तेरे घर में आया, तू ने मेरे पाँव धोने को पानी न दिया; मगर इन्हें मेरे पाँव अँसुओं से भिगो दिए, और अपने बालों से पोछे। 45 तू ने मुझ को बोसा न दिया, मगर इन्हें जब से मैं आया हूँ मेरे पाँव चूमना न छोड़ा। 46 तू ने मेरे सिर में तेल न डाला, मगर इसने मेरे पाँव पर 'इन डाला है। 47 इसी लिए मैं तुझ से कहता हूँ कि इसके गुनाह जो बहुत थे मू'आफ हुए क्यूँकि इसने बहुत मुहब्बत की, मगर जिसके थोड़े गुनाह मू'आफ हुए वो थोड़ी मुहब्बत करता है।” 48 और उस 'औरत से कहा, “तेरे गुनाह मू'आफ हैं।” 49 इसी पर वो जो उसके साथ खाना खाने बैठे थे अपने जी में कहने लगे, “ये कौन है जो गुनाह भी मू'आफ करता है?” 50 मगर उसने 'औरत से कहा, “तेरे ईमान ने तुझे बचा लिया, सलामत चली जा।”

8 थोड़े 'असरों के बाद यूँ हुआ कि वो ऐलान करता और खुदा की बादशाही की खुशखबरी सुनाता हुआ शहर — शहर और गाँव — गाँव फिरने लगा, और वो बाहर हुए उसके साथ थे। 2 और कुछ 'औरतें जिन्होंने दुरी स्थूंओं और बिमारियों से शिफा पाई थी, याँनी मरियम जो मगदलिनी कहलाती थी, जिसमें से सात बदरहूं निकली थी, 3 और युहन्ना हेरोदेस के दिवान ख़ज़ा की बीची, और सूसन्ना, और बहुत सी 'औरतें भी थीं; जो अपने माल से उनकी खिदमत करती थी। 4 फिर जब बड़ी भीड़ उसके पास जमा हुई और शहर के लोग उसके पास चले आते थे, उसने मिसाल में कहा, 5 “एक बोने वाला अपने बीज बोने निकला, और बोते बक्त कुछ राह के किनारे गिरा और रौदा गया और हवा के परिन्दों ने उसे चुग लिया। 6 और कुछ चट्टान पर गिरा और उग कर

सूख गया, इसलिए कि उसको नमी न पहुँची। 7 और कुछ झाड़ियों में गिरा और झाड़ियों ने साथ — साथ बढ़कर उसे दबा लिया। 8 और कुछ अच्छी जमीन में गिरा और उग कर सौ गुना फल लाया। 9 और कुछ अच्छी जिसके सुनने के कान हौं वो सुन ले।” 10 उसके शागिर्दों ने उससे पूछा कि ये मिसाल क्या है। 10 उसने कहा, “तुम को खुदा की बादशाही के राजों की समझ दी गई है, मगर औरों को मिसाल में सुनाया जाता है, ताकि देखते हुए न देखें, और सुनते हुए न समझें। 11 वो मिसाल ये है, कि “बीज खुदा का कलाम है। 12 राह के किनारे के बो हैं, जिन्होंने सुना फिर शैतान आकर कलाम को उनके दिल से छीन ले जाता है ऐसा न हो कि वो ईमान लाकर नजात पाएँ। 13 और चट्टान पर बो हैं जो सुनकर कलाम को खुशी से कुबूल कर लेते हैं, लेकिन जड़ नहीं पकड़ते मगर कुछ ‘अरसे तक ईमान रख कर आजमाइश के बक्त दुड़ जाते हैं। 14 और जो झाड़ियों में पड़ा उससे वो लोग मुराद हैं, जिन्होंने सुना लेकिन होते होते इस जिन्दगी की फिलों और दौलत और ऐश — और — अशरत में फँस जाते हैं और उनका फल पकता नहीं। 15 मगर अच्छी जमीन के बो हैं, जो कलाम को सुनकर ‘उम्दा’ और नेक दिल में संभाले रहते हैं और सब से फल लाते हैं।” 16 “कोई शख्स चराग जला कर बरतन से नहीं छिपाता न पलंग के नीचे रखता है, बल्कि चिरागदान पर रखता है ताकि अन्दर आने वालों को रौशनी दिखाई दे। 17 क्यूँकि कोई बीज छिपी नहीं जो जाहिर न हो जाएगी, और न कोई ऐसी छिपी बात है जो माँलम न होगी और सामने न आए। 18 पस खबरदार रहो कि तुम किस तरह सुनते हो? क्यूँकि जिसके पास नहीं है वो भी ते लिया जाएगा जो अपना समझता है।” 19 फिर उसकी माँ और उसके भाई उसके पास आए, मगर भीड़ की वजह से उस तक न पहुँच सके। 20 और उसे खबर दी गई, “तेरी माँ और तेरे भाइ बाहर खड़े हैं, और तुझ से मिलना चाहते हैं।” 21 उसने जबाब में उनसे कहा, “मेरी माँ और मेरे भाइ तो ये हैं, जो खुदा का कलाम सुनते और उस पर ‘अमल करते हैं।’ 22 फिर एक दिन ऐसा हुआ कि वो और उसके शागिर्द नाव में सवार हुए। उसने उनसे कहा, “आओ, झील के पार चलें।” वो सब रवाना हुए। 23 मगर जब नाव चली जाती थी तो वो सो गया। और झील पर बड़ी आँखी आई और नाव पानी से भरी जाती थी और वो खतरे में थे। 24 उन्होंने पास आकर उसे जगाया और कहा, “साहेब! साहेब! हम हलाक हुए जाते हैं।” उसने उठकर हवा को और पानी के जोर — शेर को छिड़का और दोनों थम गए और अम्न हो गया। 25 उसने उनसे कहा, “तुम्हारा ईमान कहाँ गया?” वो डर गए और तात्पुरता करके आपस में कहने लगे, “ये कौन है? ये तो हवा और पानी को हूकम देता है और वो उसकी मानते हैं।” 26 फिर वो गिरासीनियों के ‘लिलोंके में जा पहुँचें जो उस पार गलील के सामने है। 27 जब वो किनारे पर उतरा तो शहर का एक मर्द उसे मिला जिसमें बदस्ह हैं थी, और उसने बड़ी मुझ से कपड़े न पहने थे और वो घर में नहीं बल्कि कठ्रों में रहा करता था। 28 वो ईसा को देख कर चिल्लाया और उसके आगे गिर कर बुलन्द आवाज से कहने लगा, “ऐ ईसा! खुदा के बेटे, मुझे तुझ से क्या काम? मैं तेरी मिन्त करता हूँ कि मुझे ‘ऐजाब में न डाला।’” 29 क्यूँकि वो उस बदस्ह को हूकम देता था कि इस आदमी में से निकल जा, इसलिए कि उसने उसको अक्सर पकड़ा था; और हर चन्द लोग उसे ज़ंजीरों और बेड़ियों से ज़कड़ कर काबू में रखते थे, तो भी वो ज़ंजीरों को तोड़ डालता था और बदस्ह उसको बीरानों में भगाए फिरती थी। 30 ईसा ने उससे पूछा, “तेरा क्या नाम है?” उसने कहा, “लतशकर!” क्यूँकि उसमें बहुत सी बदस्ह हैं थी। 31 और वो उसकी मिन्त करने लगी कि “हमें गहरे गहे में जाने का हूकम न दे।” (Abyssos g12) 32 वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा गोल चर रहा था। उन्होंने उसकी मिन्त की कि हमें उनके अन्दर जाने दें; उसने उन्हें जाने दिया। 33 और बदस्ह उस

आदमी में से निकल कर सूअरों के अन्दर गई और गोल किनारे पर से झापट कर झील में जा पड़ा और डब मरा। 34 ये माजरा देख कर चराने वाले भागे और जाकर शहर और गाँव में खबर दी। 35 लोग उस माजरे को देखने को निकले, और ईसा के पास आकर उस आदमी को जिसमें से बदस्ह हैं निकली थी, कपड़े पहने और होश में ईसा के पाँव के पास बैठे पाया और डर गए। 36 और देखने वालों ने उनको खबर दी कि जिसमें बदस्ह हैं वो जिस तरह अच्छा हुआ। 37 गिरासीनियों के आस पास के सब लोगों ने उससे दरखास्त की कि हमारे पास से चला जा; क्यूँकि उन पर बड़ी दहशत छा गई थी। पस वो नाव में बैठकर वापस गया। 38 लेकिन जिस शख्स में से बदस्ह हैं निकल गई थी, वो उसकी मिन्त करके कहने लगा कि मुझे अपने साथ रहने दे, मगर ईसा ने उसे सख्त करके कहा, 39 “अपने घर को लौट कर लोगों से बयान कर, कि खुदा ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए हैं।” वो रवाना होकर तमाम शहर में चर्ची करने लगा कि ईसा ने मेरे लिए कैसे बड़े काम किए। 40 जब ईसा वापस आ रहा था तो लोग उससे खुशी के साथ मिले, क्यूँकि सब उसकी राह देखते थे। 41 और देखो, याइर नाम एक शख्स जो ‘इबादतखाने का सरदार था, आया और ईसा के कठर्मों पे गिरकर उससे मिन्त की कि मेरे घर चल, 42 क्यूँकि उसकी इकलौती बेटी जो तकरीबन बारह बरस की थी, मरने को थी। और जब वो जा रहा था तो लोग उस पर गिरे पड़ते थे। 43 और एक ‘औरत ने जिसके बारह बरस से खुन जारी था, और अपना सारा माल हकीमों पर खर्च कर चकी थी, और किसी के हाथ से अच्छी न हो सकी थी; 44 उसके पीछे आकर उसकी पोशाक का किनारा हुआ, और उरी दम उसका खन बहना बन्द हो गया। 45 इस पर ईसा ने कहा, “वो कौन है जिसने मुझे छुआ?” जब सब इन्कार करने लगे तो पतरस और उसके साथियों ने कहा, “ऐ साहेब! लोग तुझे दबाते और तुझ पर गिरे पड़ते हैं।” 46 मगर ईसा ने कहा, “किंतु ने मुझे छुआ तो है, क्यूँकि मैंने मालूम किया कि कुक्तुर मुझ से निकली है।” 47 जब उस ‘औरत ने देखा कि मैं छिप नहीं सकती, तो वो कॉपर्टी हूँड आई और उसके आगे गिरकर सब लोगों के सामने बयान किया कि मैंने किस वजह से तुझे छुआ, और किस तरह उरी दम शिका पा गई। 48 उसने उससे कहा, “बेटी! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया है, सलामत चली जा।” 49 वो ये कह ही रहा था कि ‘इबादतखाने के सरदार के यहाँ से किंती ने आकर कहा, तेरी बेटी मर गई: उस्ताद को तकलीफ न दे।’ 50 ईसा ने सुनकर जबाब दिया, “खौफ न कर; फक्त ऐतिकाद रख, वो बच जाएगी।” 51 और घर में पहुँचकर पतरस, यूहना और यांकू और लड़की के माँ बाप के सिवा किसी को अपने साथ अन्दर न जाने दिया। 52 और सब उसके लिए रो पीट रहे थे, मगर उसने कहा, “मातम न करो! वो मर नहीं गई बल्कि सोती है।” 53 वो उस पर हँसने लगे क्यूँकि जानते थे कि वो मर गई है। 54 मगर उसने उसका हाथ पकड़ा और पुकार कर कहा, “ऐ लड़की, उठ।” 55 उसकी रुह वापस आई और वो उसी दम उठी। फिर ईसा ने हूकम दिया, लड़की को कुछ खाने को दिया जाए।” 56 माँ बाप हैरान हुए। उसने उन्हें ताकीद की कि ये माजरा किसी से न कहना।

9 फिर उसने उन बारह को बुलाकर उन्हें सब बदस्हों पर इश्वियार बरखा और बीमारियों को दूर करने की कूदरत दी। 2 और उन्हें खुदा की बादशाही का ऐलान करने और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा, 3 और उनसे कहा, “राह के लिए कुछ न लेना, न लाठी, न झोली, न रोटी, न स्पाए, न दो दो कुराते रखना। 4 और जिस घर में दाखिल हो वही रहना और वही से रवाना होना; 5 और जिस शहर के लोग तुम्हें कुबूल ना करें, उस शहर से निकलते बक्त अपने पाँव की धूल झाड़ देना ताकि उन पर गवाही हो।” 6 पस वो रवाना होकर गाँव गाँव खुशखबरी सुनते और हर जगह शिका देते फिरे। 7 चौथाईं

मुल्क का हाकिम हेरोदेस सब अहवाल सुन कर घबरा गया, इसलिए कि कुछ ये कहते थे कि युहन्ना मुर्दों में से जी उठा है, 8 और कुछ ये कि एलियाह ज़ाहिर हुआ, और कुछ ये कि कटीम नवियों में से कोई जी उठा है। 9 मगर हेरोदेस ने कहा, “युहन्ना का तो मैंने से सिर कटवा दिया, अब ये कौन जिसके बारे में ऐसी बातें सुनता हूँ?” पस उसे देखने की कोशिश में रहा। 10 फिर रसलों ने जो कुछ किया था लैटक उससे बयान किया; और वो उनको अलग लेकर बैतैसैदा नाम एक शहर को चला गया। 11 ये जानकर भीड़ उसके पांछे गई और वो खुशी के साथ उनसे मिला और उनसे खुदा की बादशाही की बातें करने लगा, और जो शिफा पाने के मुहताज थे उन्हें शिफा बरखी। 12 जब दिन ढलने लगा तो उन बारह ने आकर उससे कहा, “भीड़ को स्वस्त कर के चारों तरफ के गाँव और बस्तियों में जा टिके और खाने का इन्तजाम करो।” क्यैंकि हम यहाँ वीरान जगह में हैं। 13 उसने उनसे कहा, “तुम ही उन्हें खाने को दो,” उन्होंने कहा, “हमारे पास सिर्फ़ पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, मगर हाँ हम जा जाकर इन सब लोगों के लिए खाना मोल ले आएँ।” 14 क्यैंकि वो पाँच हजार मर्द के करीब थे। उसने अपने शागिर्दों से कहा, “उनको तकरीबन पचास — पचास की कतारों में बिठाओ।” 15 उन्होंने उसी तरह किया और सब को बिठाया। 16 फिर उसने वो पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ ली और आसमान की तरफ देख कर उन पर बर्कत बरखी, और तोड़कर अपने शागिर्दों को देता गया कि लोगों के आगे रखें। 17 उन्होंने खाया और सब सेर हो गए, और उनके बचे हुए वे इस्तेमाल खाने की बारह टोकरियाँ उठाई गईं। 18 जब वो तन्हाई में दुआ कर रहा था और शागिर्द उसके पास थे, तो ऐसा हुआ कि उसने उनसे पूछा, “लोग मुझे क्या कहते हैं?” 19 उन्होंने जबाब में कहा, “युहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और कुछ एलियाह कहते हैं, और कुछ ये कि पुराने नवियों में से कोई जी उठा है।” 20 उसने उनसे कहा, “लोकेन तुम मुझे क्या कहते हो?” पतरस ने जबाब में कहा, “खुदावन्द का मसीह।” 21 उसने उनको हिदायत करके हृक्म दिया कि ये किसी से न करना, 22 और कहा, “ज़स्तर है इब्न — ए — आदम बहुत दुःख उठाए और बुरुज़ और सरदार काहिन और आलिम उसे रुक़ करें और वो कल्प किया जाए और तिसरे दिन जी उठे।” 23 और उसने सब से कहा, “अगर कोई मेरे पांछे आना चाहे तो अपने आप से इनकार करे और हर रोज अपनी सलीब उठाए और मेरे पांछे हो ले। 24 क्यैंकि जो कोई अपनी जान बचाना चाहे, वो उसे खोएगा और जो कोई मेरी खातिर अपनी जान खोए वही उसे बचाएगा। 25 और आदर्मी अगर सारी दुनिया को हासिल करे और अपनी जान को खो दे या नुकसान उठाए तो उसे क्या फ़ाइदा होगा? 26 क्यैंकि जो कोई मुझ से और मेरी बातों से शरमाएगा, इब्न — ए — आदम भी जब अपने और अपने बाप के और पाप केरिश्तों के जलाल में आएगा तो उस से शरमाएगा। 27 लेकिन मैं तुम से सच कहता हूँ कि उनमें से जो यहाँ खड़े हैं कुछ ऐसे हैं कि जब तक खुदा की बादशाही को देख न लें मौत का मजा हरिग़ज़ न चखेंगे।” 28 फिर इन बातों के कोई अठ रोज बाद ऐसा हुआ, कि वो पतरस और यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर पहाड़ पर दुआ करने गया। 29 जब वो दुआ कर रहा था, तो ऐसा हुआ कि उसके चेहरे की सूरत बदल गई, और उसकी पोशाक सफेद बर्क़ को हो गई। 30 और देखो, दो शरद यानी मूसा और एलियाह उससे बातें कर रहे थे। 31 ये जलाल में दिखाई दिए और उसके इन्तकाल का ज़िक्र करते थे, जो येस्शलेम में वाक़े होने को था। 32 मगर पतरस और उसके साथी नीद में पड़े थे और जब अच्छी तरह जागे, तो उसके जलाल को और उन दो शरदों को देखा जो उसके साथ खड़े थे। 33 जब वो उससे ज़दा होने लगे तो ऐसा हुआ कि पतरस ने ईसा से कहा, “ऐ उत्साह! हमारा यहाँ रहना अच्छा है। पस हम तीन डेरे बनाएँ, एक तैरे लिए एक मूसा के लिए और एक एलियाह के

लिए।” लेकिन वो जानता न था कि क्या कहता ही था कि बादल ने आकर उन पर साया कर लिया, और जब वो बादल में घिरने लगे तो डर गए। 35 और बादल में से एक आवाज आई, “ये मेरा चुना हुआ बेटा है, इसकी सुनो।” 36 ये आवाज आते ही ईसा अकेला दिखाई दिया; और वो चुप रहे, और जो बातें देखी थीं उन दिनों में किसी को उनकी कुछ खबर न दी। 37 दूसरे दिन जब वो पहाड़ से उतरे थे, तो ऐसा हुआ कि एक बड़ी भीड़ उससे आ मिली। 38 और देखो एक आदर्मी ने भीड़ में से चिल्लाकर कहा, “ऐ उत्साह! मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मैं मेरे बेटे पर नज़र कर; क्यैंकि वो मेरा इकलौता है। 39 और देखो, एक स्थ हउसे पकड़ लेती है, और वो यकायक चीख उठता है; और उसको ऐसा मरोड़ती है कि कफ़ भर लाता है, और उसको कुचल कर मुश्किल से छोड़ती है। 40 मैंने रेरे शागिर्दों की मिन्नत की कि उसे निकाल दें, लेकिन वो न निकाल सके।” 41 ईसा ने जबाब में कहा, “ऐ कम ईमान वालों मैं कब तक तुम्हारे साथ रहँगा और तुम्हारी बदरिश कस्सँग? अपने बेटे को ले आ।” 42 वो आता ही था कि बदर्स्ह ने उसे पटक कर मरोड़ा और ईसा ने उस नापाक स्थ को झिङ्का और लड़के को अच्छा करके उसके बाप को दे दिया। 43 और सब लोग खुदा की शान देखकर हैरान हए। लेकिन जिस वक्त सब लोग उन सब कामों पर जो वो करता था ताज़बू कर रहे थे, उसने अपने शागिर्दों से कहा, 44 “तुम्हरे कानों में ये बातें पड़ी रहें, क्यैंकि इब्न — ए — आदम आदमियों के हवाले किए जाने को हैं।” 45 लेकिन वो इस बात को समझते न थे, बल्कि ये उनसे छिपाई गई ताकि उसे मालूम न करें; और इस बात के बारे में उससे पछते हुए डरते थे। 46 फिर उनमें ये बहस शूरू हुई, कि हम मैं से बड़ा कौन है? 47 लेकिन ईसा ने उनके दिलों का ख्याल मालूम करके एक बच्चे को लिया, और अपने पास खड़ा करके उनसे कहा, 48 “जो कोई इस बच्चे को मेरे नाम से कुबल करता है, वो मुझे कुबल करता है; और जो मुझे कुबल करता है, वो मेरे भेजनेवाले को कुबल करता है; क्यैंकि जो तुम मैं से बड़ा से छोटा है वही बड़ा है।” 49 यूहन्ना ने जबाब में कहा, “ऐ उत्साह! हम ने एक शख्स को तेरे नाम से बदर्स्ह निकालते देखा, और उसको मनह करने लगे, क्यैंकि वो हमारे साथ तेरी पैरवी नहीं करता।” 50 लेकिन ईसा ने उससे कहा, “उसे मनह न करना, क्यैंकि जो तुम्हरे खिलाफ़ नहीं वो तुम्हारी तरफ है।” 51 जब वो दिन नज़दीक आए कि वो ऊपर उठाया जाए, तो ऐसा हुआ कि उसने येस्शलेम जाने को कमर बांधी। 52 और आगे कासिद भेजे, जो जाकर सामरियों के एक गाँव में दाखिल हुए ताकि उसके लिए तैयारी करें। 53 लेकिन उन्होंने उसको टिकने न दिया, क्यैंकि उसका स्थ येस्शलेम की तरफ था। 54 ये देखकर उसके शागिर्द याकूब और यूहन्ना ने कहा, “ऐ खुदावन्द, क्या तू चाहता है कि हम हृक्म दें कि आसमान से आग नाजिल होकर उन्हें भस्म कर दे [जैसा एलियाह ने किया?].” 55 मगर उसने फिरकर उन्हें झिङ्का [और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम कैसी स्थ के हो। क्यैंकि इब्न — ए — आदम लोगों की जान बरबाद करने नहीं बल्कि बचाने आया है।] 56 फिर वो किसी और गाँव में चले गए। 57 जब वो राह में चले जाते थे तो किसी ने उससे कहा, “जहाँ कहीं तू जाए, मैं तेरे पीछे चलूँगा।” 58 ईसा ने उससे कहा, “लोमङ्गियों के भड होते हैं और हवा के परिन्दों के घोसले, मगर इब्न — ए — आदम के लिए सिर रखने की भी जगह नहीं।” 59 फिर उसने दूसरे से कहा, “मेरे पीछे हो ले।” उसने जबाब में कहा, “ऐ खुदावन्द! मुझे इजाजत दे कि पहले जाकर अपने बाप को दफन करूँ।” 60 उसने उससे कहा, “मुर्दों को अपने मुर्दे दफन करने दे, लेकिन तू जाकर खुदा की बादशाही की खबर फैला।” 61 एक और ने भी कहा, “ऐ खुदावन्द! मैं तेरे पीछे चलूँगा, लेकिन पहले मुझे इजाजत दे कि अपने

घर वालों से स्वस्त हो आऊँ।” 62 ईसा ने उससे कहा, “जो कोई अपना हाथ हल पर रख कर पीछे देखता है वो खुदा की बादशाही के लायक नहीं।”

10 इन बातों के बाद खुदावन्द ने सतर आदमी और मुकर्रर किए, और जिस

जिस शहर और जगह को खुद जाने वाला था वहाँ उन्हें दो दो करके अपने आगे भेजा। 2 और वो उससे कहने लगा, “फसल तो बहुत है, लेकिन मजदूर थोड़े हैं; इसलिए फसल के मालिक की मिन्नत करो कि अपनी फसल कानूने के लिए मजदूर भेजे।” 3 जाओ; देखो, मैं तुम को गोया बर्रों को भेड़ियों के बीच मैं भेजता हूँ। 4 न बटुवा ले जाओ न झोली, न जूतियाँ और न राह में किसी को सलाम करो। 5 और जिस घर में दाखिल हो पहले कहो, ‘‘इस घर की सलामती हो।’’ 6 अगर वहाँ कोई सलामती का फर्जन्द होगा तो तुम्हारा सलाम उस पर ठहरेगा, नहीं तो तुम पर लौट आएगा। 7 उसी घर में रहो और जो कुछ उनसे मिले खाओ — पीओ, क्यूंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है, घर घर न फिरो। 8 जिस शहर में दाखिल हो वहाँ के लोग तुम्हें कुबूल करें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए खाओ; 9 और वहाँ के बीमारों को अच्छा करो और उनसे कहो, ‘‘खुदा की बादशाही तुम्हारे नजदीक आ पहुँची है।’’ 10 लेकिन जिस शहर में तुम दाखिल हो और वहाँ के लोग तुम्हें कुबूल न करें, तो उनके बाजारों में जाकर कहो कि, 11 ‘‘हम इस गर्द को भी जो तुम्हारे शहर से हमारे पैरों में लगी है तुम्हारे सामने झाड़ देते हैं, मगर ये जान लो कि खुदा की बादशाही नजदीक आ पहुँची है।’’ 12 मैं तुम से कहता हूँ कि उस दिन सदूम का हाल उस शहर के हाल से ज्यादा बर्दाश्त के लायक होगा। 13 ‘‘ऐ खुराजीन शहर, तुझ पर अफसोस! ऐ बैतसैदा शहर, तुझ पर अफसोस! क्यूंकि जो मोजिजे तुम में जाहिर हुए अमर सूर और सैदा शहर में जाहिर होते, तो वो टाट ओड़कर और खाक में बैठकर कब के तौबा कर लेते।’’ 14 मगर ‘‘अदालत में सूर और सैदा शहर का हाल तुम्हारे हाल से ज्यादा बर्दाश्त के लायक होगा।’’ 15 और तु ऐ कफरनहम, क्या तु आसमान तक बुलन्द किया जाएगा? नहीं, बल्कि तू ‘‘आलम — ए — अर्वाह में उतारा जाएगा। (Hadès g86) 16 ‘‘जो तुम्हारी सुनता है वो मेरी सुनता है, और जो तुम्हें नहीं मानता वो मुझे नहीं मानता, और जो मुझे नहीं मानता वो मैं भेजनेवाले को नहीं मानता।’’ 17 वो सतर खुश होकर फिर आए और कहने लगे, ‘‘ऐ खुदावन्द, तेरे नाम से बदस्तें भी हमारे तबे हैं।’’ 18 उसने उनसे कहा, ‘‘मैं शैतान को बिजली की तरह आसमान से पिरा हुआ देख रहा था। 19 देखो, मैंने तुम को इखित्यार दिया कि साँपों और बिच्छुओं को कुचलो और दुश्मन की सारी कुदरत पर गालिब आओ, और तुम को हरगिज किसी चीज से नुकसान न पहुँचेगा। 20 तोभी इससे खुश न हो कि स्तैन तुम्हारे तबे हैं बल्कि इससे खुश हो कि तुम्हारे नाम आसमान पर लिखे हुए हैं।’’ 21 उसी घड़ी वो रु — उल — कुदूस से खुशी में भर गया और कहने लगा, ‘‘ऐ बाप! आसमान और जमीन के खुदावन्द, मैं तेरी हम्मद करता हूँ कि तेरे ये बातें होशियारों और ‘‘अक्लमन्दों से छिपाई और बच्चों पर जाहिर की हाँ, ऐ, बाप क्यूंकि ऐसा ही तुझे पसन्द आया। 22 मेरे बाप की तरफ से सब कुछ मुझे सौंपा गया; और कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवा बाप के, और कोई नहीं जानता कि बाप कौन है सिवा बेटे के और उस शश्वत के जिस पर बेटा उसे जाहिर करना चाहे।’’ 23 और शागिर्दों की तरफ मूखातिब होकर खास उन्हीं से कहा, ‘‘मुबारिक है वो आँखें जो ये बातें देखती हैं जिन्हें तुम देखते हो।’’ 24 क्यूंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से नबियों और बादशाहों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें मगर न देखी, और जो बातें तुम सुनते हो सुनें मगर न सुनी।’’ 25 और देखो, एक शरा का अलिम उठा, और ये कहकर उसकी आजमाइश करने लगा, ‘‘ऐ उस्ताद, मैं क्या कहूँ कि हमेशा की जिन्दगी का बारिस बनूँ?’’ (aiōnios g166) 26 उसने उससे कहा, ‘‘तौरें मैं क्या लिखा है?

तू किस तरह पढ़ता है?’’ 27 उसने जवाब में कहा, ‘‘खुदावन्द अपने खुदा से अपने सारे दिल और अपनी सारी जान और अपनी सारी ताकत और अपनी सारी ‘‘अक्ल से मूहब्बत रख और अपने पडोसी से अपने बराबर मूहब्बत रख।’’ 28 उसने उससे कहा, ‘‘तूने ठीक जवाब दिया, यहीं कर तो तू जिएगा।’’ 29 मगर उसने अपने आप को रास्तबाज ठहराने की गरज से ईसा से पूछा, ‘‘फिर मेरा पडोसी कौन है?’’ 30 ईसा ने जवाब में कहा, ‘‘एक आदमी येस्शलेम से यहीं की तरफ जा रहा था कि डाक्हओं में घिर गया। उन्होंने उसके कपड़े उतार लिए और मारा भी और अधमरा छोड़कर चले गए। 31 इतकाकान एक काहिन उसी राह से जा रहा था, और उसे देखकर कतरा कर चला गया। 32 इसी तरह एक लावी उस जगह आया, वो भी उसे देखकर कतरा कर चला गया। 33 लेकिन एक सामरी सफर करते करते वहाँ आ निकला, और उसे देखकर उसने तरस खाया। 34 और उसके पास आकर उसके ज़ख्मों को तेल और मय लगा कर बांधा, और अपने जानवर पर सवार करके सराय में ले गया और उसकी देखरेख की। 35 दूसरे दिन दो दीनार निकालकर भट्टाचारे को दिए और कहा, ‘‘इसकी देख भाल करना और जो कुछ इससे ज्यादा खर्च होगा मैं फिर आकर उत्तर देंगा।’’ 36 इन तीनों में से उस शब्दक का जो डाक्हओं में घिर गया था तेरी नजर में कौन पडोसी ठहरा?’’ 37 उसने कहा, वो जिसने उस पर रहम किया ईसा ने उससे कहा, ‘‘जा त भी ऐसा ही कर।’’ 38 फिर जब जा रहे थे तो वो एक गाँव में दाखिल हुआ और मर्था नाम ‘‘औरत ने उसे अपने घर में उतारा। 39 और मरियम नाम उसकी एक बहन थी, वो ईसा के पाँक के पास बैठकर उसका कलाम सुन रही थी। 40 लेकिन मर्था खिदमत करते करते घबरा गई, पस उसके पास आकर कहने लगी, ‘‘ऐ खुदावन्द, क्या तुझे ख्याल नहीं कि मेरी बहन ने खिदमत करने को मुझे अकेला छोड़ दिया है, पस उसे कह कि मेरी मदद करे।’’ 41 खुदावन्द ने जवाब में उससे कहा, ‘‘मर्था, मर्था, तु बहुत सी चीजों की फिक — ओ — तरड़ में है।’’ 42 लेकिन एक चीज जस्त है और परियम ने वो अच्छा दिस्सा चुन लिया है जो उससे छीना न जाएगा।’’

11 फिर ऐसा हुआ कि वो किसी जगह दुआ कर रहा था; जब कर चुका तो उसके शागिर्दों में से एक ने उससे कहा, ‘‘ऐ खुदावन्द! जैसा युहना ने अपने शागिर्दों को दुआ करना सिखाया, तू भी हमें सिखा।’’ 2 उसने उनसे कहा, ‘‘जब तुम दुआ करो तो कहो, ऐ बाप! तेरा नाम पाक माना जाए, तेरी बादशाही आए। 3 ‘‘हमारी रोज़ की रोटी हर रोज़ हमें दिया कर।’’ 4 और हमारे गुनाह मुँआफ कर, क्यूंकि हमी भी अपने हर कर्जदार को मुँआफ करते हैं, और हमें आजमाइश में न ला।’’ 5 फिर उसने उनसे कहा, ‘‘तुम मैं से कौन है जिसका एक दोस्त हो, और वो आधी रात को उसके पास जाकर उससे कहे, ‘‘ऐ दोस्त, मुझे तीन रोटियाँ द।’’ 6 क्यूंकि मेरा एक दोस्त सफर करके मेरे पास आया है, और मेरे पास कुछ नहीं कि उसके आगे रखें।’’ 7 और वो अन्दर से जवाब में कहे, ‘‘मुझे तकलीफ न दे, अब दरवाजा बंद है और मेरे लड़के मेरे पास बिछोने पर हैं, मैं उठकर तुझे दे नहीं सकता।’’ 8 मैं तुम से कहता हूँ, कि अगर वो इस बजह से कि उसका दोस्त है उठकर उसे न दे, तो भी उसकी बेशमी की बजह से उठकर जितनी दरकार है उसे देगा। 9 पस मैं तुम से कहता हूँ, माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा, ढूँढ़ो तो पाओगे, दरवाजा खटखटाओ तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा। 10 क्यूंकि जो कोई मँगता है उसे मिलता है, और जो ढूँढ़ता है वो पाता है, और जो खटखटाता है उसके लिए खोला जाएगा। 11 तुम मैं से ऐसा कौन सा बाप है, कि जब उसका बेटा रोटी मँगे तो उसे पत्थर दे; या मछली मँगे तो मछली के बदले उसे साँप दे? 12 या अंडा मँगे तो उसे बिच्छू दे? 13 पस जब तुम बूरे होकर अपने बच्चों को अच्छी चीजें देना जानते हो, तो आसमानी बाप अपने मँगने वालों को रुह — उल — कुदूस क्लून देगा।’’ 14 फिर वो एक

गँगी बदस्ह को निकाल रहा था, और जब वो बदस्ह निकल गई तो ऐसा हुआ कि गँगा बोला और लोगों ने ताज्जुब किया। 15 लेकिन उनमें से कुछ ने कहा, “ये तो बदस्हों के सरदार बालजबूल की मदद से बदस्हों को निकालता है।” 16 कुछ और लोग आजमाइश के लिए उससे एक आसमानी निशान तलब करने लगे। 17 मगर उसने उनके खायालात को जानकर उनसे कहा, “जिस सल्तनत में फूट पड़े, वो वीरान हो जाती है, और जिस घर में फूट पड़े, वो बरबाद हो जाता है।” 18 और अगर शैतान भी अपना मुखालिक हो जाए, तो उसकी सल्तनत किस तरह काईम रहेगी? क्यूंकि तुम मेरे बारे में कहते हो, कि ये बदस्हों को बालजबूल की मदद से निकालता है। 19 और अगर मैं बदस्हों को बालजबूल की मदद से निकालता हूँ, तो तुम्हारे बेटे किसकी मदद से निकालते हैं? पस वही तुम्हारा फैसला करेंगे। 20 लेकिन अगर मैं बदस्हों को खुदा की कुदरत से निकालता हूँ, तो खुदा की बादशाही तुम्हारे पास आ पहुँची। 21 जब ताकतवर आदमी हथियार बांधे हुए अपनी हवेती की रखवाली करता है, तो उसका माल महफूज रहता है। 22 लेकिन जब उससे कोई ताकतवर हमला करके उस पर गालिब आता है, तो उसके सब हथियार जिन पर उसका भरोसा था छीन लेता और उसका माल लूट कर भाँट देता है। 23 जो मेरी तरफ नहीं वो मेरे खिलाफ है, और जो मेरे साथ जमा नहीं करता वो बिखेरता है।” 24 “जब नापाक स्थ आदमी में से निकलती है तो सूखे मुकामों में आराम छूँटी फिरती है, और जब नहीं पाती तो कहती है, मैं अपने उसी घर में लौट जाऊँगी जिससे निकलती हूँ।” 25 और आकर उसे झड़ा हुआ और आरस्ता पाती है। 26 फिर जाकर और सात स्थ हैं अपने से बुरी अपने साथ ले आती है और वो उसमें दाखिल होकर वहाँ बसती है, और उस आदमी का पिछला हाल पहले से भी खराक हो जाता है।” 27 जब वो ये बातें कह रहा था तो ऐसा हुआ कि भीड़ में से एक ‘औरत ने पुकार कर उससे कहा, मुबारिक है वो पेट जिसमें तरह और वो आंचल जो तू ने पिए।’’ 28 उसने कहा, “हाँ; मगर ज्यादा मुबारिक वो है जो खुदा का कलाप सुनते और उस पर ‘आमल करते हैं।’’ 29 जब बड़ी भीड़ जमा होती जाती थी तो वो कहने लगा, “इस जमाने के लोग बुरे हैं, वो निशान तलब करते हैं; मगर यहन्ना के निशान के सिवा कोई और निशान उनको न दिया जाएगा।” 30 क्यूंकि जिस तरह यहन्ना निवेदे के लोगों के लिए निशान ठहरा, उसी तरह इन्हने — ए — आदम भी इस जमाने के लोगों के लिए ठहरेगा। 31 दक्षिण की मतिका इस जमाने के आदमियों के साथ ‘अदालत के दिन उठकर उनको मुजरिम ठहराएंगी, क्यूंकि वो दुनिया के किनारे से सूलैमान की हिक्मत सुनने को आई, और देखो, यहाँ वो है जो सूलैमान से भी बड़ा है। 32 निवेदे के लोग इस जमाने के लोगों के साथ, ‘अदालत के दिन खड़े होकर उनको मुजरिम ठहराएँगे; क्यूंकि उन्होंने यहन्ना के लेलान पर तौबा कर ली, और देखो, यहाँ वो है जो यहन्ना से भी बड़ा है।’’ 33 “कोई शब्द चरागा जला कर तहाने में या पैमाने के नीचे नहीं रखता, बल्कि चरागादान पर रखता है ताकि अन्दर जाने वालों को रोशनी दिखाई दे।” 34 तेरे बदन का चरागा तेरी आँख है, जब तेरी आँख दुस्त है तो तेरा सारा बदन भी रोशन है, और जब खराब है तो तेरा बदन भी तारीक है। 35 पस देख, जो रोशनी तुझ में है तारीकी तो नहीं। 36 पस अगर तेरा सारा बदन रोशन हो और कोई हिस्सा तारीक न रहे, तो वो तमाम ऐसा रोशन होगा जैसा उस वक्त होता है जब चरागा अपने चमक से रोशन करता है।” 37 जो वो बात कर रहा था तो किसी फरीसी ने उसकी दावत की। पस वो अन्दर जाकर खाना खाने बैठा। 38 फरीसी ने ये देखकर ताज्जुब किया कि उसने खाने से पहले गुस्त नहीं किया। 39 खुदावन्द ने उससे कहा, “ऐ फरीसीयों! तुम प्याले और तशरी को ऊपर से तो साफ करते हो, लेकिन तुम्हारे अन्दर लूट और बदी भरी है।” 40 ऐ नादानों! जिसने बाहर को बनाया क्या उसने अन्दर

को नहीं बनाया? 41 हाँ! अन्दर की चीजें खेरात कर दो, तो देखो, सब कुछ तुम्हारे लिए पाक होगा। 42 “लेकिन ऐ फरीसीयों! तुम पर अफसोस, कि पुद्दीने और सुदाब और हर एक तरकारी पर दस्वाँ हिस्सा देते हो, और इन्साफ और खुदा की मुहब्बत से गाफिल रहते हों; लाज़िम था कि ये भी करते और वो भी न छोड़ते। 43 ऐ फरीसीयों! तुम पर अफसोस, कि तुम ‘इबादतखानों में आला दर्जे की कुसियों और और बाजारों में सलाम चाहते हो। 44 तुम पर अफसोस! क्यूंकि तुम उन छिपी हड्डी कंठों की तरह हो जिन पर आदमी चलते हैं, और उनको इस बात की खबर नहीं।” 45 फिर शरा’ के ‘आलिमों में से एक ने जवाब में उससे कहा, “ऐ उस्ताद! इन बातों के कहने से तू हमें भी बेइज्जत करता है।” 46 उसने कहा, “ऐ शरा’ के ‘आलिमों! तुम पर भी अफसोस, कि तुम ऐसे बोझ जिनको उठाना मुश्किल है, आदिमियों पर लादते हो और तुम एक उंगली भी उन बोझों को नहीं लगाते। 47 तुम पर अफसोस, कि तुम तो नवियों की कंठों को बनाते हो और तुम्हारे बाप — दादा ने उनको कल्प किया था। 48 पस तुम गवाह हो और अपने बाप — दादा के कामों को पसन्द करते हो, क्यूंकि उन्होंने तो उनको कल्प किया था और तुम उनकी कंठें बनाते हो। 49 इसी लिए खुदा की हिक्मत ने कहा है, मैं नवियों और रसूलों को उनके पास भेजूँगी, वो उनमें से कुछ को कल्प करेंगे और कुछ को सताएँगे। 50 ताकि सब नवियों के खून का जो बिना — ए — ‘आलम से बहाया गया, इस जमाने के लोगों से हिसाब किताब लिया जाए। 51 हाबिल के खून से लेकर उस जकरियाह के खून तक, जो कुर्बानगाह और मक्किस के बीच में हलाक हुआ। मैं तुम से सच कहता हूँ कि इसी जमाने के लोगों से सब का हिसाब किताब लिया जाएगा। 52 ऐ शरा’ के ‘आलिमों! तुम पर अफसोस, कि तुम ने मारिफत की कुर्जी छीन ली, तुम खूब भी दाखिल न हुए और दाखिल होने वालों को भी रोका।” 53 जब वो वहाँ से निकला, तो आलिम और फरीसी उसे बे — तरह चिपटने और छेड़ने लगे ताकि वो बहुत से बातों का ज़िक्र करे, 54 और उसकी घात में रहे ताकि उसके मूँह की कोई बात पकड़े।

12 इनमें में जब हजारों आदिमियों की भीड़ लग गई, यहाँ तक कि एक दूसरे पर गिरा पड़ता था, तो उसने सबसे पहले अपने शारिदरों से ये कहना शुरू किया, “उस खींची से होशियार रहना जो फरीसीयों की रियाकारी है। 2 क्यूंकि कोई चीज़ ढकी नहीं जो खोली न जाएगी, और न कोई चीज़ छिपी है जो जानी न जाएगी। 3 इसलिए जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है वो उजाले में सुना जाएगा; और जो कुछ तुम ने कोठरियों के अन्दर कान में कहा है, छतों पर उसका एलान किया जाएगा।” 4 “मगर तुम दोस्तों से मैं कहता हूँ कि उनसे न डरो जो बदन को कल्प करते हैं, और उसके बाद और कुछ नहीं कर सकते।” 5 लेकिन मैं तुम्हें जताता हूँ कि किससे डरना चाहिए, उससे डरो इश्कियार है कि कल्प करने के बाद जहन्मुम में डाले, हाँ, मैं तुम से कहता हूँ कि उसी से डरो। (Geenna g1067) 6 क्या दो पैसे की पाँच चिड़ियां नहीं बिकती? तो भी खुदा के सामने उनमें से एक भी फरामोश नहीं होती। 7 बल्कि तुम्हारे सीर के सब बाल भी गिने हए हैं; डरो, मत तुम्हारी कद्र तो बहुत सी चिड़ियों से ज्यादा है। 8 “और मैं तुम से कहता हूँ कि जो कोई आदिमियों के सामने मेरा इकरार करे, इन — ए — आदम भी खुदा के फरिश्तों के सामने उसका इकरार करेगा।” 9 “मगर जो आदिमियों के सामने मेरा इन्कार करे, खुदा के फरिश्तों के सामने उसका इन्कार किया जाएगा। 10 और जो कोई इन्हने — ए — आदम के खिलाफ कोई बात करे, उसको मृ’आफ किया जाएगा; लेकिन जो स्थ — उल — कुद्दस के हक्क में कुफ्र बके, उसको मृ’आफ न किया जाएगा।” 11 “और जब वो तुम को ‘इबादतखानों में और हाकिमों और इश्कियार वालों के पास ले जाँगू, तो फ़िक्र न करना कि हम किस तरह या क्या जवाब दें या क्या

कहें। 12 क्यूँकि रुह — उल — कुद्दूस उसी वक्त तुम्हें सिखा देगा कि क्या कहना चाहिए।” 13 “फिर भीड़ में से एक ने उससे कहा, ऐ उस्ताद! मेरे भाई से कह कि मेरे बाप की जायदाद का मेरा हिस्सा मुझे दे।” 14 उसने उससे कहा, “मियाँ! किसने मुझे तुहारा मुनिसिक या बँटने वाला मुर्कर किया है?” 15 और उसने उनसे कहा, “खबरदार! अपने आप को हर तरह के लालच से बचाए रखें, क्यूँकि किसी की जिन्दगी उसके माल की ज्यादी पर मौक़फ़ नहीं।” 16 और उसने उनसे एक मिसाल कही, “किसी दौलतमन्द की ज़मीन में बड़ी फसल है।” 17 पस वो अपने दिल में सोचकर कहने लगा, मैं क्या करूँ? क्यूँकि मेरे यहाँ जगह नहीं जहाँ अपनी पैदावार भर रखदूँ? 18 उसने कहा, मैं यूँ कहूँगा कि अपनी कोठियाँ ढा कर उनसे बड़ी बनाऊँगा; 19 और उनमें अपना सारा अनाज और माल भर ढूँगा और अपनी जान से कहूँगा, कि ऐ जान! तैरे पास बहुत बरसों के लिए बहुत सा माल जमा है, चैन कर, खा पी खुश रह।” 20 मगर खुदा ने उससे कहा, ऐ नादान! इसी रात तेरी जान तुझ से तलब कर ली जाएगी, पस जो कुछ तू ने तैयार किया है वो किसका होगा? 21 ऐसा ही वो शख्स है जो अपने लिए खजाना जमा करता है, और खुदा के नजदीक दौलतमन्द नहीं।” 22 फिर उसने अपने शारिरों से कहा, “इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि अपनी जान की फ़िक्र न करो कि हम क्या खाएँगे, और न अपने बदन की कि क्या पहरेंगे।” 23 क्यूँकि जान खुराक से बढ़ कर है और बदन पोशाक से। 24 परिन्दों पर गौर करो कि न बोते हैं और न काटते, न उनके खिंता होता है न कोठी; तोभी खुदा उहें खिलाता है। तुम्हारी कद्र तो परिन्दों से कही ज्यादा है। 25 तुम में ऐसा कोन है जो फ़िक्र करके अपनी उम्र में एक घड़ी बढ़ा सके? 26 पस जब सबसे छोटी बात भी नहीं कर सकते, तो बाकी चीजों की फ़िक्र क्यूँ करते हो? 27 सोसन के दरखतों पर गौर करो कि किस तरह बढ़ते हैं; वो न महेनक करते हैं न कातते हैं, तोभी मैं तुम से कहता हूँ कि सलैमान भी बावजूद अपनी सारी शान — ओ — शौकत के उमरों से किसी की तरह मुल्कबस न था। 28 पस जब खुदा गैदन की धास को जो आज है कल तरूँ में झोंकी जाएगी, ऐसी पोशाक पहनाता है; तो ऐ कम ईमान वालो! तुम को क्यूँ न पहनाएँ? 29 और तुम इसकी तलाश में न रहो कि क्या खाएँगे या क्या पीएँगे, और न शक्की बनो। 30 क्यूँकि इन सब चीजों की तलाश में दूनिया की कौमें रहती हैं, लेकिन तुम्हारा आसमानी बाप जानता है कि तुम इन चीजों के मुहताज हो। 31 हाँ, उसकी बादशाही की तलाश में रहो तो ये चीजें भी तुम्हें मिल जाएँगी।” 32 “ऐ छोटे गल्ले, न डर; क्यूँकि तुम्हरे आसमानी बाप को पसन्द आया कि तुम्हें बादशाही दे।” 33 अपना माल अस्त्वाब बेचकर खैरत कर दो, और अपने लिए ऐसे बटवे बनाओ जो पुराने नहीं होते; यानि आसमान पर ऐसा खजाना जो खाली नहीं होता, जहाँ चोर नजदीक नहीं जाता, और कीड़ा खराब नहीं करता। 34 क्यूँकि जहाँ तुम्हारा खजाना है, वही तुम्हारा दिल भी रहेगा।” 35 “तुम्हारी कर्मों बँधी रहें और तुम्हरे चराग जलते रहें।” 36 और तुम उन आदमियों की तरह बनो जो अपने मालिक की राह देखते हों कि वो शादी में से कब लौटेगा, ताकि जब वो आकर दरवाजा खटखटाए तो फ़ौरन उसके लिए खोल दें। 37 मुबारिक है वो नौकर जिनका मालिक आकर उहें जागता पाए; मैं तुम से सच कहता हूँ कि वो कमर बाँध कर उहें खाना खाने को बिठाएगा, और पास आकर उनकी खिदमत करेगा। 38 अगर वो रात के दूसरे पहरमें या तीसरे पहरमें आकर उनको ऐसे हाल में पाए, तो वो नौकर मुबारिक है। 39 लेकिन ये जान रखो कि अगर घर के मालिक को मालूम होता कि चोर किस घड़ी आएगा तो जागता रहता और अपने घर में नक्कल लाने न देता। 40 तुम भी यैरार रहो; क्यूँकि जिस घड़ी तुम को गुमान भी न होगा, इन — ए — आदम आ जाएगा।” 41 पतरस ने कहा, “ऐ खुदावन्द, तू ये मिसाल हम ही से कहता है या

सबसे।” 42 खुदावन्द ने कहा, “कौन है वो ईमानदार और 'अक्लमन्द, जिसका मालिक उसे अपने नौकर चाकरों पर मुकर्कर करे हर एक की खुराक वक्त पर बाँट दिया करे।” 43 मुबारिक है वो नौकर जिसका मालिक आकर उसको ऐसा ही करते पाए। 44 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि वो उसे अपने सारे माल पर मुख्तार कर देगा। 45 लेकिन अगर वो नौकर अपने दिल में ये कहकर मेरे मालिक के अने में ढेर है, गुलामों और लौंडियों को मारना और खा पी कर मतवाला होना शुरू करे।” 46 तो उस नौकर का मालिक ऐसे दिन, कि वो उसकी राह न देखता हो, आ मौजूद होगा और खब कोडे लगाकर उसे बेईमानों में शामिल करेगा। 47 और वो नौकर जिसने अपने मालिक की मर्जी जान ली, और तैयारी न की और न उसकी मर्जी के मुताबिक 'अमल किया, बहुत मार खाएगा। 48 मगर जिसने न जानकर मार खाने के काम किए वो थोड़ी मार खाएगा; और जिसे बहुत दिया गया उससे बहुत तलब किया जाएगा, और जिसे बहुत सौंपा गया उससे ज्यादा तलब करेगो।” 49 “मैं ज़मीन पर आग भड़काने आया हूँ, और अगर लग चुकी होती तो मैं क्या ही खुश होता।” 50 लेकिन मुझे एक बपतिस्मा लेना है, और जब तक वो हो न ले मैं बहुत ही तंग रहँगा। 51 क्या तुम गुमान करते हो कि मैं ज़मीन पर सुलह कराने आया हूँ? मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं, बल्कि ज़ुदाईं कराने। 52 क्यूँकि अब से एक घर के पाँच आदमी आपस में दूशमनी रख रहेंगे, दो से तीन और तीन से दो। 53 बाप बेटे से दूशमनी रख रहेंगे और बेटा बाप से, सास बहु से और बहु सास से।” 54 फिर उसने लोगों से भी कहा, “जब बादल को पच्छिम से उठते देखते हो तो फ़ौरन कहते हो कि पानी बरसेगा, और ऐसा ही होता है; 55 और जब तुम मालूम करते हो कि दक्खिना चल रही है तो कहते हो कि लूँ चलेगी, और ऐसा ही होता है। 56 ऐ रियाकारो! ज़मीन और आसमान की सूरत में फ़क्र करना तुम्हें आता है, लेकिन इस जमाने के बारे में फ़क्र करना क्यूँ नहीं आता?” 57 “और तुम अपने आप ही क्यूँ फैसला नहीं कर लेते कि ठीक क्या है? 58 जब तू अपने दूशमन के साथ हकिम के पास जा रहा है तो रसें में कोशिश करके उससे झूट जाए, ऐसा न हो कि वो तझको फैसला करने वाले के पास खीची ले जाए, और फैसला करने वाला तुझे सिपाही के हवाले करे और सिपाही तुझे कैद में डाले।” 59 मैं तुझ से कहता हूँ कि जब तक तू टमड़ी — टमड़ी अदा न कर देगा वहाँ से हगिज़ न छटेगा।”

13 उस वक्त कुछ लोग हाजिर थे, जिन्होंने उसे उन गलतियों की खबर दी जिनका खुल पिलात्स ने उनके जबीहों के साथ मिलाया था। 2 उसने जबाब में उनसे कहा, “इन गलतियों ने ऐसा दुःख पाया, क्या वो इसलिए तुम्हारी समझ में और सब गलतियों से ज्यादा गुहाहार थे? 3 मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं; बल्कि अगर तुम तौबा न करोगे, तो सब इसी तरह हलाक होगा।” 4 या, क्या वो अठारह आदमी जिन पर शिलोख का गुम्बद गिरा और दब कर मर गए, तुम्हारी समझ में येस्त्सलेम के और सब रहनेवालों से ज्यादा कुसूरवार थे? 5 मैं तुम से कहता हूँ कि नहीं; बल्कि अगर तुम तौबा न करोगे, तो सब इसी तरह हलाक होगा।” 6 फिर उसने ये मिसाल कही, “किसी ने अपने बाप में एक अंजीर का दरखत लगाया था। वो उसमें फल ढूँडने आया और न पाया। 7 इस पर उसने बागबान से कहा, ‘देख तीन बरस से मैं इस अंजीर के दरखत में फल ढूँडने आता हूँ और नहीं पाता।’ इसे काट डाल, ये ज़मीन को भी क्यूँ रोके रहे? 8 उसने जबाब में उससे कहा, ‘ऐ खुदावन्द, इस साल तू और भी उसे रहने दे, ताकि मैं उसके चारों तरफ थाला खोदूँ और खाद डालूँ।’ 9 अगर आगे फला तो खैर, नहीं तो उसके बाद काट डालना।” 10 फिर वो सबत के दिन किसी ‘इबादतखाने में तालीम देता था। 11 और देखो, एक ‘अौरत थी जिसको अठारह बरस से किसी बदस्त की वजह से कमज़ोरी थी; वो झुक गई थी और

किसी तरह सीधी न हो सकती थी। 12 इसा ने उसे देखकर पास बुलाया और उससे कहा, “ऐ ‘ओरत, तु अपनी कमज़ोरी से छूट गई।’” 13 और उसने उस पर हाथ रखे, उसी दम वो सीधी हो गई और खुदा की बडाई करने लगी। 14 ‘इबादतखाने का सरदार, इसलिए कि इसा ने सबत के दिन शिफा बर्खी, खफा होकर लोगों से कहने लगा, ‘छः दिन हैं जिनमें काम करना चाहिए, परस उन्हीं में आकर शिफा पाओ न कि सबत के दिन।’” 15 खुदावन्द ने उसके जवाब में कहा, “ऐ रियाकारो! क्या हार एक तुम में से सबत के दिन अपने बैल या गधे को खेटे से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जातो? 16 परस क्या वाजिब न था कि ये जो अब्रहाम की बेटी है जिसको शैतान ने अठारह बरस से बाँध कर रखवा था, सबत के दिन इस कैद से छुड़ाई जाती?” 17 जब उसने ये बातें कहीं तो उसके सब मुखालिफ शर्मिन्दा हुए, और सारी भीड़ उन ‘आलीशान कामों से जो उससे होते थे, खुश हीं। 18 परस वो कहने लगा, ‘खुदा की बादशाही किसकी तरह है? मैं उसको किससे मिसाल दूँ?’ 19 वो राई के दाने की तरह है, जिसको एक आदीनी ने लेकर अपने बाग में डाल दिया: वो उगकर बड़ा दरख़त हो गया, और हवा के परिन्दों ने उसकी डालियों पर बसेरा किया।” 20 उसने फिर कहा, “मैं खुदा की बादशाही को किससे मिसाल दूँ?” 21 वो खमीर की तरह है, जिसे एक ‘ओरत ने तीन पैमाने आटे में मिलाया, और होते होते सब खमीर हो गया।” 22 वो शहर — शहर और गाँव — गाँव तालीम देता हुआ येस्शलेम का सफर कर रहा था। 23 किसी शख्स ने उससे पूछा, “ऐ खुदावन्द! क्या नजात पाने वाले थोड़े हैं?” 24 उसने उससे कहा, “मैंहनत करो कि तंग दरवाज़े से दाखिल हो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहत से दाखिल होने की कोशिश करेंगे और न हो सकेंगे। 25 जब घर का मालिक उठ कर दरवाजा बन्द कर चुका हो, और तुम बाहर खड़े दरवाजा खटखटाकर ये कहना शुरू करो, ‘ऐ खुदावन्द! हमारे लिए खोल दे, और वो जवाब दे, मैं तुम को नहीं जानता कि कहाँ के हो।’” 26 उस बक्त तुम कहना शुरू करोगे, ‘हम ने तो तेरे रु—ब—ब—रु खाया — पिया और तो ने हमारे बाजारों में तो ‘राईम दी।’” 27 मगर वो कहेगा, मैं तुम से कहता हूँ, कि मैं नहीं जानता तुम कहाँ के हो। ऐ बदकारो, तुम सब मुझ से दूर हो। 28 वहाँ रोना और दौंत पीसना होगा; तुम अब्रहाम और इज़ाक और याकूब और सब नवियों को खुदा की बादशाही में शामिल, और अपने आपको बाहर निकाला हुआ देखोगे; 29 और पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से लोग आकर खुदा की बादशाही की ज़ियाक़त में शरीक होंगे। 30 और देखो, कुछ आखिर ऐसे हैं जो अब्वल होंगे और कुछ अब्वल हैं जो आखिर होंगे।” 31 उसी बक्त कुछ फरीसियों ने आकर उपरोक्त कहा, “निकल कर यहाँ से चल दे, क्योंकि हेठों तुझे कल्त करना चाहता है।” 32 उसने उसने कहा, “जाकर उस लोमटी से कह दो कि देख, मैं आज और कल बदस्हों को निकालता और शिफा का काम अन्जाम देता रहँगा, और तीसे दिन पूरा करँगा। 33 मगर मुझे आज और कल और परसों अपनी राह पर चलना ज़स्त है, क्योंकि मुस्किन नहीं कि नवी येस्शलेम से बाहर हलाक हो।” 34 ‘ऐ येस्शलेम! ऐ येस्शलेम! तू जो नवियों को कल्त करती है, और जो तेरे पास भेजे गए उन पर पथराव करती है। कितनी ही बार मैंने चाहा कि जिस तरह मुझी अपने बच्चों को परों तले जमा कर लेती है, उसी तरह मैं भी तेरे बच्चों को जमा कर लूँ, मगर तुम ने न चाहा। 35 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे ही लिए छोड़ा जाता है, और मैं तुम से कहता हूँ, कि मुझ को उस बक्त तक हरणिज न देखोगे जब तक न कहतोगे, ‘मुबारिक है वो, जो खुदावन्द के नाम से आता है।’”

14 फिर ऐसा हुआ कि वो सबत के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के

घर खाना खाने को गया; और वो उसकी ताक में रहे। 2 और देखो, एक शख्स उसके सामने था जिसे जलन्दर था। 3 इसा ने शरा के ‘आलिमों और

फरीसियों से कहा, “सबत के दिन शिफा बर्खाना जायज है या नहीं?” 4 वो चुप रह गए। उसने उसे हाथ लगा कर शिफा बर्खी और स्खसत किया, 5 और उससे कहा, “तुम मैं ऐसा कौन है, जिसका गधा या बैल कूँँ मैं गिर पड़े और वो सबत के दिन उसको फौरन न निकाल ले?” 6 वो इन बातों का जवाब न दे सके। 7 जब उसने देखा कि मेहमान सदू जगह किस तरह पसन्द करते हैं तो उसे एक मिसाल कही, 8 “जब कोई तुझे शादी में बुलाए तो सदू जगह पर न बैठ, कि शायद उसने तुझ से भी किसी ज्यादा ‘इज़ज़तदार’ को बुलाया हो; 9 और जिसने तुझे और उसे दोनों को बुलाया है, आकर तुझ से कहे, ‘इसको जगह दे, फिर तुझे शर्मिन्दा होकर सबसे नीचे बैठना पड़े। 10 बल्कि जब तू बुलाया जाए तो सबसे नीची जगह जा बैठ, ताकि जब तेरा बुलाने वाला आए तो तुझ देखे, ‘ऐ दोस्त, आगे बढ़कर बैठ, ‘तब उन सब की नज़र में जो तेरे साथ खाने बैठ हैं तेरी इज़ज़त होगी। 11 क्यूँकि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वो छोटा किया जाएगा; और जो अपने आप को छोटा बनाएगा, वो बड़ा किया जाएगा।” 12 फिर उसने अपने बुलानेवाले से कहा, “जब तू दिन का या रात का खाना तैयार करे, तो अपने दोस्तों या भाइयों या रिश्तेदारों या दैलतमन्द पड़ोसियों को न बुला; ताकि ऐसा न हो कि वो भी तुझे बुलाएँ और तेरा बदला हो जाए। 13 बल्कि जब तू दावत करे तो गरीबों, लुँजों, लंगड़ों, अन्धों को बुला। 14 और तुझ पर बर्कत होगी, क्योंकि उनके पास तुझे बदला देने को कुछ नहीं, और तुझे रास्त्वाजों की क्यामत में बदला मिलेगा।” 15 जो उसके साथ खाना खाने बैठे थे उनमें से एक ने ये बातें सुनकर उससे कहा, “मुबारिक है वो जो खुदा की बादशाही में खाना खाए।” 16 उसने उसे कहा, “एक शख्स ने बड़ी दावत की और बहत से लोगों को बुलाया। 17 और खाने के बक्त अपने नौकर को भेजा कि बुलाए हुओ से कहें, ‘आओ, अब खाना तैयार है।’ 18 इस पर सब ने मिलकर मुँआफ़ी मांगना शुरू किया। पहले ने उससे कहा, मैंने खेत खरीदा है, मुझे ज़स्त है कि जाकर उसे देखें; मैं तेरी खुशामद करता हूँ, मुझे मुँआफ़ कर। 19 दूसरे ने कहा, मैंने पौंछ जोड़ी बैल खरीद लैं, और उन्हें आजमाने जाता हूँ, मैं तुझे खुशामद करता हूँ, मुझे मुँआफ़ कर। 20 एक और ने कहा, मैंने शादी की है, इस बजह से नहीं आ सकता। 21 पस उस नौकर ने आकर अपने मालिक को इन बातों की खबर दी। 22 इस पर घर के मालिक ने गुस्सा होकर अपने नौकर से कहा, ‘सड़कों और खेत की बाड़ी की तरफ जा और लोगों को मजबूर करके ला ताकि मेरा घर भर जाए। 22 नौकर ने कहा, ‘ऐ खुदावन्द, जैसा तूने फरमाया था वैसा ही हुआ; और अब भी जगह है।’ 23 मालिक ने उस नौकर से कहा, ‘सड़कों और खेत की बाड़ी की तरफ जा और लोगों को मजबूर करके ला ताकि मेरा घर भर जाए। 24 क्यूँकि मैं तुम से कहता हूँ कि जो बुलाए गए थे उनमें से कोई शख्स मेरा खाना चर्चने न पाएगा।’” 25 जब बहुत से लोग उसके साथ जा रहे थे, तो उसने पीछे मुड़कर उसे कहा, 26 “अगर कोई मैं पास आए, और बच्चों और भाइयों और बहनों बल्कि अपनी जान से भी दुर्घटनी न करे तो मेरा शारिर्द नहीं हो सकता। 27 जो कोई अपनी सलीब उठाकर मेरे पीछे न आए, वो मेरा शारिर्द नहीं हो सकता।” 28 “क्यूँकि तुम मैं ऐसा कौन है कि जब वो एक गुम्बद बनाना चाहे, तो पहले बैठकर लागत का हिसाब न कर ले कि आया मेरे पास उसके तैयार करने का सामान है या नहीं? 29 ऐसा न हो कि जब नीच डालकर तैयार न कर सके, तो सब देखने वाले ये कहकर उस पर हँसना शुरू करेंगे, 30 इस शख्स ने ‘इमारत शुरू तो की मार मुकम्मल न कर सकता है या नहीं जो बीस हजार लेकर मुझ पर चढ़ आता है? 32 नहीं तो उसके दूर रहते ही एल्ची भेजकर सुलह की गुजारिश करेगा। 33 पस इसी तरह

तुम में से जो कोई अपना सब कुछ छोड़ न दे, वो मेरा शारिर्द नहीं हो सकता।” 34 “नमक अच्छा तो है, लेकिन अगर नमक का मजा जाता रहे तो वो किस चीज़ से मजेदार किया जाएगा। 35 न वो ज़मीन के काम का रहा न खाद के, लोग उसे बाहर फेंक देते हैं। जिसके कान सुनने के हौं वो सुन ले।”

15 सब महसूल लेनेवाले और गुनहगार उसके पास आते थे ताकि उसकी

बातें सुनें। 2 और उलमा और फरीदी बुद्धवाकर कहने लगे, “ये आदमी गुनहगारों से मिलता और उनके साथ खाना खाता है।” 3 उसने उनसे ये मिसाल कहीं, 4 “तुम में से कौन है जिसकी सौ भेड़ें हैं, और उनमें से एक गुग हो जाए तो निमानवें को जंगल में छोड़कर उस खोड़ हुई को जब तक मिल न जाएँ ढूँडता न रहेगा? 5 फिर मिल जाती है तो वो खुश होकर उसे कन्धे पर उठा लेता है, 6 और घर पहुँचकर दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाता और कहता है, 7 मैं साथ खुशी करो, क्यूँकि मेरी खोड़ हुई भेड़ मिल गई। 7 मैं तुम से कहता हूँ कि इसी तरह निमानवें, रास्तबाज़ों की निस्त जो तौबा की हाजत नहीं रखते, एक तौबा करने वाले गुनहगार के बाइस आसमान पर ज्यादा खुशी होगी।” 8 “या कौन ऐसी “औरत है जिसके पास दिश्रहम हों और एक खो जाए तो वो चराग जलाकर घर में झाड़ न दे, और जब तक मिल न जाए कोशिश से ढूँडती न रहे? 9 और जब मिल जाए तो अपनी दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाकर न कहे, 10 मैं तुम से कहता हूँ कि इसी तरह एक तौबा करनेवाला गुनहगार के बारे में खुदा के फरिश्तों के सामने खुशी होती है।” 11 फिर उसने कहा, “किसी शरक्स के दो बेटे थे। 12 उनमें से छोटे ने बाप से कहा, ‘ऐ बाप! माल का जो हिस्सा मुझ को पहुँचता है मुझे दे दे।’ उसने अपना माल — ओ — अस्त्राव उत्तें बैंट दिया। 13 और बहुत दिन न गुज़रे कि छोटा बेटा अपना सब कुछ जमा करके दूर दराज मुल्क को रवाना हुआ, और वहाँ अपना माल बदचलनी में उड़ा दिया। 14 जब सब खर्च कर चुका तो उस मुल्क में सख्त काल पड़ा, और वो मुहताज होने लगा। 15 फिर उस मुल्क के एक बाशिन्दे के वहाँ जा पड़ा। उसने उसको अपने खेत में खिंजिर यानी [सुअवर] चराने भेजा। 16 और उसे आरजू थी कि जो फलियाँ खिंजिर यानी [सुअवर] खाते थे उन्हीं से अपना पेट भेर, मगर कोई उसे न देता था। 17 फिर उसने होश में आकर कहा, ‘ऐ बाप के बहुत से मजरूओं को इफ्रात से रोटी मिलती है, और मैं यहाँ भूखा मर रहा हूँ।’ 18 मैं उठकर अपने बाप के पास जाऊँगा और उससे कहूँगा, ‘ऐ बाप! मैं आसमान का और तेरी नज़र में गुनहगार हुआ।’ 19 अब इस लायक नहीं रहा कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ। मुझे अपने मजरूओं जैसा कर ले।” 20 “पस वो उठकर अपने बाप के पास चला। वो अभी दूर ही था कि उसे देखकर उसके बाप को तरस आया, और दौड़कर उसको गले लगा लिया और चूमा। 21 बेटे ने उससे कहा, ‘ऐ बाप! मैं आसमान का और तेरी नज़र मैं गुनहगार हुआ। अब इस लायक नहीं रहा कि फिर तेरा बेटा कहलाऊँ। 22 बाप ने अपने नौकरों से कहा, ‘अच्छे से अच्छा लिवास जल्द निकाल कर उसे पहनाओ और उसके हाथ में अंगूष्ठी और पैरों में ज़री पहनाओ; 23 और तैयार किए हुए जानवर को लाकर ज़बह करो, ताकि हम खाकर खुशी मनाएँ। 24 क्यूँकि मेरा ये बेटा मुर्दा था, अब जिन्दा हुआ; खो गया था, अब मिला है। पस वो खुशी मनाने लगे।” 25 “लेकिन उसका बड़ा बेटा खेत में था। जब वो आकर घर के नज़दीक पहुँचा, तो गाने बजाने और नाचने की आवाज सुनी। 26 और एक नौकर को बुलाकर मालम करने लगा, थे क्या हो रहा है?” 27 उसने उससे कहा, ‘पेरा भाई आ गया है, और तेरे बाप ने तैयार किया हुआ जानवर ज़बह कराया है, क्यूँकि उसे भला चंगा पाया।’ 28 वो गुस्सा हुआ और अन्दर जाना न चाहा, मगर उसका बाप बाहर जाकर उसे मनाने लगा। 29 उसने अपने बाप से जवाब में कहा, ‘देख, इतने बरसों से मैं तेरी

खिदमत करता हूँ और कभी तेरी नाफरमानी नहीं की, मगर मुझे तूने कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया कि अपने दोस्तों के साथ खुशी मनाता। 30 लेकिन जब तेरा ये बेटा आया जिसने तेरा माल — ओ — अस्त्राव कस्कियों में उड़ा दिया, तो उसके लिए तूने तैयार किया हुआ जानवर ज़बह कराया है।” 31 उसने उससे कहा, बेटा, तू तो हमेशा मेरे पास है और जो कुछ मेरा है वो तेरा ही है। 32 लेकिन खुशी मनाना और शादमान होना मुनासिब था, क्यूँकि तेरा ये भाई मुर्दा था अब ज़िन्दा हुआ, खोया था अब मिला है।”

16 फिर उसने शागिर्दों से भी कहा, “किसी दौलतमन्द का एक मुख्तार था;

उसकी लोगों ने उससे शिकायत की कि ये तेरा माल उड़ाता है। 2 पस उसने उसको बुलाकर कहा, ‘थे क्या है जो मैं तेरे हक में सुनता हूँ? अपनी मुख्तारी का हिसाब दे क्यूँकि आगे को तु मुख्तार नहीं रह सकता।’ 3 उस मुख्तार ने आगे जी मैं कहा, ‘क्या कहूँ? क्यूँकि मेरा मालिक मुझ से जिम्मेदारी छीन लेता है।’ मिट्टी तो मुझ से खोदी नहीं जाती और भीख माँगने से शर्म आती है। 4 मैं समझ गया कि क्या कहूँ, ताकि जब जिम्मेदारी से निकाला जाऊँ तो लोग मुझे अपने घरों में जगह दें।’ 5 पस उसने अपने मालिक के एक एक कर्जदार को बुलाकर पहले से पूछा, ‘तुझ पर मेरे मालिक का क्या आता है?’ 6 उसने कहा, ‘सौ मन तेल।’ उसने उससे कहा, ‘अपनी दस्तावेज़ ले और जल्द बैठकर पचास लिख दे।’ 7 फिर दूसरे से कहा, ‘तुझ पर क्या आता है?’ उसने कहा, ‘सौ मन गेहूँ।’ 8 उसने उससे कहा, ‘अपनी दस्तावेज़ लेकर असरी लिख दे।’ 9 “और मालिक ने बैंझान मुख्तार की तारीफ़ की, इसलिए कि उसने होशियारी की थी। क्यूँकि इस जहान के फर्जन्द अपने हमवक्तों के साथ मूँ अपिलात में न रोके फर्जन्द से ज्यादा होशियार है।” (aiōn g165) 9 और मैं तुम से कहता हूँ कि नारास्ती की दौलत से अपने लिए दोस्त पैदा करो, ताकि जब वो जाती रहे तो ये तुम को हमेशा के मुकामों में जगह दें। (aiōnios g166) 10 जो थोड़े में ईमानदार है, वो बहुत में भी ईमानदार है, और जो थोड़े में बैंझान है, वो बहुत में भी बैंझान है। 11 पस जब तुम नारास्त दौलत में ईमानदार न ठहरे तो हकीकी दौलत कौन तुहारे जिम्मे करेगा। 12 और अगर तुम बैगाना माल में ईमानदार न ठहरे तो जो तुहारा अपना है उसे कौन तुहारे देगा?” 13 “कोई नौकर दो मालिकों की खिदमत नहीं कर सकता: क्यूँकि या तो एक से ‘दूशमी रख लेगा और दूसरे से मुहब्बत, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को नाचीज जानेगा। तुम खुदा और दौलत दोनों की खिदमत नहीं कर सकते।’ 14 फरीदी जो दौलत दोतथे, इन सब बातों को सुनकर उसे ठड़े में उड़ाने लगे। 15 उसने उससे कहा, “तुम वो हो कि आदमियों के सामने अपने आपको रास्तबाज ठहराते हो, लेकिन खुदा तुहारे दिलों को जानता है, क्यूँकि यो जीज आदमियों की नज़र में ‘आला कढ़ है, वो खुदा के नज़दीक मकस्त है।’” 16 “शरीर अत और अद्विया युहन्ना तक रहे, उस बक्त से खुदा की बादशाही की खुशखबरी दी जाती है, और हर एक जोर मारकर उसमें दाखिल होता है। 17 लेकिन आसमान और ज़मीन का टल जाना, शरीर अत के एक नुक्ते के मिट जाने से आसान है।” 18 “जो कोई अपनी बीवी को छोड़कर दूरी से शादी करे, वो ज़िना करता है; और जो शर्द्दस शौहर की छोड़ी हुई ‘औरत से शादी करे, वो भी ज़िना करता है।’” 19 “एक दौलतमन्द था, जो इर्वानी और महीन कपड़े पहनता और हर रोज खुशी मनाता और शान — ओ — शौकत से रहता था। 20 और लाज़राना एक गरीब नासूरों से भरा हुआ उसके दरवाजे पर डाला गया था। 21 उसे आरजू थी कि दौलतमन्द की मेज से गिरे हुए टुकड़ों से अपना पेट भेर; बल्कि कुत्ते भी आकर उसके नासूर को चाटते थे। 22 और ऐसा हुआ कि वो गरीब मर गया, और फरिश्तों ने उसे ले जाकर अब्रहाम की गोद में पहुँच दिया। और दौलतमन्द भी मरा और दफन हुआ; 23 उसने ‘आलम — ए —

अर्वांह के दरमियान 'ऐजाब में मुश्तिला होकर अपनी आँखें उठाई, और अब्रहाम को दूर से देखा और उसकी गोद में ला'जर को। (Had es g86) 24 और उसने पुकार कर कहा, 'ऐ बाप अब्रहाम! मुझ पर रहम करके ला'जर को भेज, कि अपनी ऊँगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी ज़बान तर करें; क्यूंकि मैं इस आग में तड़पता हूँ।' 25 अब्रहाम ने कहा, 'बेटा! याद कर ले तू अपनी जिन्दगी में अपनी अच्छी चीजें ले चुका, और उसी तरह ला'जर बुरी चीजें ले चुका; लेकिन अब वो यहाँ तसल्ली पाता है, और तू तड़पता है।' 26 और इन सब बातों के सिवा हमारे तुम्हारे दरमियान एक बड़ा गङ्गा बनाया गया है, कि जो यहाँ से तुम्हारी तरफ पार जाना चाहें न जा सके और न कोई उधर से हमारी तरफ आ सके।' 27 उसने कहा, 'पस ऐ बाप! मैं तेरी तुजारिस करता हूँ कि तू उसे मेरे बाप के घर भेज, 28 क्यूंकि मेरे पाँच भाई हैं, ताकि वो उनके सामने इन बातों की गवाही दे, ऐसा न हो कि वो भी इस 'ऐजाब की जगह में आएँ।' 29 अब्रहाम ने उससे कहा, 'उनके पास मूसा और अम्बिया तो हैं उनकी सनें।' 30 उसने कहा, 'नहीं, ऐ बाप अब्रहाम! अगर कोई मुर्दी में से उनके पास जाए तो वो तौबा करेगो।' 31 उसने उससे कहा, जब वो मूसा और नवियों ही की नहीं सुनते, तो अगर मुर्दी में से कोई जी उठे तो उसकी भी न सुनेंगो।'

17 फिर उसने अपने शागिर्दों से कहा, “ये नहीं हो सकता कि ठोकरें न

लगें, लेकिन उस पर अफसोस है कि जिसकी बजह से लगें। 2 इन छोटोंमें से एक को ठोकर खिलाने की बनिस्तत, उस शरक्स के लिए ये बेहतर होता है कि चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वो समृद्ध में फेंका जाता। 3 खुबरार रहा! अगर तेरा भाई गुनाह करे तो उसे डांट दे, अगर वो तौबा करे तो उसे मु'आफ कर। 4 और वो एक दिन में सात दफा¹ तेरा गुनाह करे और सातों दफा² तेरे पास फिर आकर कहे कि तौबा करता हूँ, तो उसे मु'आफ कर।³ 5 इस पर रस्लूंगों ने खुदावन्द से कहा, "हमारे ईमान को बढ़ा!" 6 खुदावन्द ने कहा, "अगर तुम में राईं के दाने के बराबर भी ईमान होता और तुम इस तरु के दरखत से कहते, कि जड़ से उखड़ कर समृद्ध में जा लग, तो तुम्हारी मानता।"⁴ 7 "मगर तुम में ऐसा कौन है, जिसका नौकर हल जोता या भेड़ें चराता हो, और जब वो खेत से आए तो उससे कहे, जल्द आकर खाना खाने बैठ!"⁵ 8 और ये न कहे, 'परो खाना तैयार कर, और जब तक मैं खाऊँ — पियूँ कमर बाँध कर मेरी खिदमत कर, उसके बाद तू भी या पी लेना?' 9 क्या वो इसलिए उस नौकर का एहसान मानेगा कि उसने उन बातों को जिनका हृक्षम हुआ तामील की? 10 इसी तरह तुम भी जब उन सब बातों की, जिनका तुम को हृक्षम हुआ तामील कर चुको, तो कहो, 'हम निकम्मे नौकर हैं जो हम पर करना फर्ज़ था वही किया है।'⁶ 11 और अगर ऐसा कि येस्स्लतेम को जाते हुए वो सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था 12 और एक गाँव में दाखिल होते बक्त दस कोड़ी उसको मिले। 13 उन्होंने दूर खेड़ होकर बुलन्द आवाज से कहा, ऐ ईस्ता! ऐ खुदावन्द! हम पर रहम कर। 14 उसने उन्हें देखकर कहा, "जाओ! अपने आपको काहिंगों को दिखाओ!" और ऐसा हुआ कि वो जाते — जाते पाक साफ हो गए। 15 फिर उनमें से एक ये देखकर कि मैं शिफा पा गया हूँ, बुलन्द आवाज से खुदा की बड़ाई करता हुआ लौटा; 16 और मुँह के बल ईसा के पाँव पर गिरकर उसका शुक्र करने लगा; और वो सामरी था। 17 ईसा ने जवाब में कहा, "क्या दर्सों पाक साफ न हुए; फिर वो नौ कहाँ है? 18 क्या इस परदेसी के सिवा और न निकले जो लौटकर खुदा की बड़ाई करते?" 19 फिर उससे कहा, "उठ कर चला जा! तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया है!" 20 जब फरीसियों ने उससे पछा लिया खुदा की बादशाही कब आएगी, तो उसने जवाब में उनसे कहा, "खुदा की बादशाही जाहिरी तैर पर न आएगी। 21 और लोग ये न कहेंगे, देखो, यहाँ है या वहाँ है।" क्यूँकि देखो, खुदा की बादशाही

— तुम्हारे बीच है।” 22 उसने शागिर्दों से कहा, “वो दिन आएंगे, कि तुम इन्हे ए — आदम के दिनों में से एक दिन को देखने की आज्ञा होगी, और न देखोगे। 23 और लोग तुम से कहेंगे, ‘देखो, वहाँ है!’ या देखो, यहाँ है!’ मगर तुम चले न जाना न उनके पीछे हो लेना। 24 क्यूंकि जैसे बिजली आसमान में एक तरफ से कौशल कर आसमान कि दूसरी तरफ चमकती है, वैसे ही इन्हे ए — आदम अपने दिन में जाहिर होगा। 25 लेकिन पहले जरूर है कि वो बहुत दुःख उठाए, और इस ज्ञान के लोग उसे रुक करें। 26 और जैसा नहूं के दिनों में हुआ था, उसी तरह इन्हे ए — आदम के दिनों में होगा; 27 कि लोग खाते पीते थे और उनमें ब्याह शादी होती थी, उस दिन तक जब नहूं नाव में दाखिल हुआ; और तूफान ने आकर सबको हलाक किया।” 28 और जैसा लूट के दिनों में हुआ था, कि लोग खाते — पीते और खरीद — ओ — फरोखत करते, और दरखत लगाते और घर बनाते थे। 29 लेकिन जिस दिन लूट सदमू से निकला, आग और गन्धक ने आसमान से बरस कर सबको हलाक किया। 30 इन्हे ए — आदम के जाहिर होने के दिन भी ऐसा ही होगा।” 31 “इस दिन जो छत पर हो और उसका अस्त्रबाल घर में हो, वो उसे लेने को न उतरें; और इसी तरह जो खेत में हो वो पीछे को न लौटे। 32 लूट की बीची को याद रखें। 33 जो कोई अपनी जान बचाने की कोशिश करे वो उसको खोएगा, और जो कोई उसे खोए वो उसको जिंदा रखेगा। 34 मैं तुम से कहता हूँ कि उस रात दो आदमी एक चारपाई पर सोते होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। 35 दो ‘औरतें एक साथ चक्की पीसती होंगी, एक ले ली जाएगी और दूसरी छोड़ दी जाएगी। 36 दो आदमी जो खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा,” 37 उन्होंने जबाब में उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! ये कहाँ होगा?” उसने उनसे कहा, “जहाँ मरदार है, वहाँ गिर्द भी जमा होंगे।”

18 फिर उसने इस गरज से कि हर वक्त दुआ करते रहना और हिम्मत हारना

न चाहिए, उसने ये मिसाल कही: 2 “किसी शहर में एक काजी था, न वो खुदा से डरता, न आदमी की कुछ परवा करता था। 3 और उसी शहर में एक बेवा थी, जो उसके पास आकर ये कहा करती थी, ‘मेरा इन्साफ करके मुझे मुझे इंसाफ़ से बचा।’ 4 उसने कुछ ‘असे तक तो न चाहा, लेकिन आखिर उसने अपने जी में कहा, ‘गरचै मैं न खुदा से डरता और न आदमियों की कुछ परवा करता हूँ।’ 5 तोभी इसलिए कि ये बेवा मुझे सताती है, मैं इसका इन्साफ़ करूँगा; ऐसा न हो कि ये बार — बार आकर आखिर को मेरी नाक में दम करे।” 6 खुदाबन्द ने कहा, “मुझे ये बेइन्साफ़ काजी क्या कहता है? 7 परस क्या खुदा अपने चुने हुए का इन्साफ़ न करेगा, जो रात दिन उससे फरियाद करते हैं? 8 मैं तुम से कहता हूँ कि वो जल्द उनका इन्साफ़ करेगा। तोभी जब इन — ए — आदम आएंगा, तो क्या जीमान पर ईमान पाएगा?” 9 फिर उसने कुछ लोगों से जो अपने पर भरेसा रखते थे, कि हम रास्तबाज़ हैं और बाकी आदमियों को नाचीज़ जानते थे, ये मिसाल कही, 10 “दो शख्स हैकल में दूँ आ करने गए; एक फरीरी, दूसरा महसूल लेनेवाला। 11 फरीरी खड़ा होकर अपने जी में दूँ दुआ करने लगा, ऐ खुदा मैं तेरा शुक करता हूँ कि बाकी आदमियों की तरह ज़ालिम, बेइन्साफ़, ज़िनाकार या इस महसूल लेनेवाले की तरह नहीं हूँ। 12 मैं हफ्ते में दो बार रोजा रखता, और अपनी सारी आमदनी पर दसवां हिस्सा देता हूँ।” 13 “लेकिन महसूल लेने वाले ने दूर खड़े होकर इतना भी न चाहा कि आसमान की तरफ आँख उठाए, बल्कि छाती पीट पीट कर कहा ऐ खुदा। मुझ गुनहगार पर रहम कर।” 14 “मैं तुम से कहता हूँ कि ये शख्स दूसरे की मिस्त्रत रास्तबाज़ ठहराकर अपने घर गया, क्योंकि जो कोइं अपने आप को बड़ा बनाएंगा वो छोटा किया जाएगा और जो अपने आपको छोटा बनाएगा वो बड़ा किया जाएगा।” 15 फिर लोग अपने छोटे बच्चों को भी उसके पास लाने लगे ताकि

वो उनको छूए; और शागिर्दों ने देखकर उनको स्थिरका। 16 मगर ईसा ने बच्चों को अपने पास बुलाया और कहा, “बच्चों को मेरे पास आने दो, और उन्हें मनहूं न करो; क्यूंकि खुदा की बादशाही ऐसों ही की है। 17 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई खुदा की बादशाही को बच्चे की तरह कुबूल न करे, वो उसमें हरगिज दाखिल न होगा।” 18 फिर किसी सरदार ने उससे ये सवाल किया, ऐ उस्ताद! मैं क्या करूँ ताकि हमेशा की जिन्दगी का वारिस बनूँ (aiōnios g166) 19 ईसा ने उससे कहा, “तू मुझे क्यूँ नेक कहता है? कोई नेक नहीं, मगर एक याँनी खुदा। 20 तू हक्मों को जानता है: जिना न कर, खुन न कर, चोरी न कर, झटी गवाही न दे; अपने बाप और माँ की इज्जत कर।” 21 उसने कहा, मैंने लड़कपन से इन सब पर ‘अमल किया है।’ 22 ईसा ने ये सुनकर उससे कहा, “अपीं तक तुझ में एक बात की कमी है, अपना सब कुछ बेचकर गरीबों को बाँट दे; तुझे आसमान पर खजाना मिलेगा, और आकर मेरे पीछे हो टें।” 23 ये सुन कर वो बहुत गम्भीर हुआ, क्यूंकि बड़ा दौलतमन्द था। 24 ईसा ने उसको देखकर कहा, “दौलतमन्द का खुदा की बादशाही में दाखिल होना कैसा सुशिक्ल है! 25 क्यूंकि ऊँक का सईँ के नाके में से निकल जाना इससे असान है, कि दौलतमन्द खुदा की बादशाही में दाखिल हो।” 26 सुनने वालों ने कहा, तो फिर कौन नजात पा सकता है? 27 उसने कहा, “जो ईसान से नहीं हो सकता, वो खुदा से हो सकता है।” 28 पतरस ने कहा, देख! हम तो अपना घर — बार छोड़कर तेरे पीछे हो लिए हैं।” 29 उसने उससे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि ऐसा कोई नहीं जिसने घर या बीवी या भाइयों या माँ बाप या बच्चों को खुदा की बादशाही की खातिर छोड़ दिया हो; 30 और इस जमाने में कई गुना ज्यादा न पाए, और आने वाले ‘आलम में हमेशा की जिन्दगी।’ (aiōn g165, aiōnios g166) 31 फिर उसने उन बाहर को साथ लेकर उनसे कहा, “देखो, हम येस्सलेम को जाते हैं, और जितनी बातें नवियों के जरिए लिखी गई हैं, इन — ए — आदम के हक में पूरी होंगी। 32 क्यूंकि वो गैर क्रौंप बालों के हवाले किया जाएगा; और लोग उसको ठड़ों में उड़ाएँगे और बैंज्जत करेंगे, और उस पर थकेंगे, 33 और उसको कोडे मरेंगे और कल्त करेंगे और वो तीसरे दिन जी उठेगा।” 34 लेकिन उन्होंने इनमें से कोई बात न समझी, और ये कलाम उन पर छिपा रहा और इन बातों का मतलब उनकी समझ में न आया। 35 जो वो चलते — चलते यरीह के नजदीक पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि एक अन्धा रास्ते के किनारों बैठा हुआ भीख माँग रहा था। 36 वो भीड़ के जाने की आवाज सुनकर पूछने लगा, ये क्या हो रहा है? 37 उन्होंने उसे खबर दी, “ईसा नासरी जा रहा है।” 38 उसने चिल्लताक कहा, “ऐ ईसा इन — ए — दाऊद, मुझ पर रहम कर!” 39 जो आगे जाते थे, वो उसको डाँटने लगे कि चुप रह; मगर वो और भी चिल्लताक, “ऐ इन — ए — दा, ऊद, मझ पर रहम कर!” 40 ईसा ने खड़े होकर हृकम दिया कि उसको मेरे पास ले आओ, जब वो नजदीक आया तो उसने उससे ये पूछा। 41 “तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिए करूँ?” उसने कहा, “ऐ खुदावन्द! मैं देखने लां।” 42 ईसा ने उससे कहा, “बीना हो जा, तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया,” 43 वो उसी बक्त देखने लगा, और खुदा की बड़ाई करता हुआ उसके पीछे हो लिया; और सब लोगों ने देखकर खुदा की तारीफ की।

19 फिर ईसा यरीह में दाखिल हुआ और उस में से होकर गुजरने लगा।

2 उस शहर में एक अमीर आदमी जक्काई नाम का रहता था जो महसूल लेने वालों का अपसर था। 3 वह जानना चाहता था कि यह ईसा कौन है, लेकिन पूरी कोशिश करने के बावजूद उसे देख न सका, क्यूंकि ईसा के आस पास बड़ा हृजम था और जक्काई का कद छोटा था। 4 इस लिए वह दौड़ कर आगे निकला और उसे देखने के लिए गूलर के दरगत पर चढ़ गया जो रास्ते में

था। 5 जब ईसा वहाँ पहुँचा तो उस ने नजर उठा कर कहा, “जक्काई, जल्दी से उतर आ, क्यूंकि आज मुझे तैरे घर में ठहरना है।” 6 जक्काई फौरन उतर आया और खुशी से उस की मेहमान — नवाजी की। 7 जब लोगों ने ये देखा तो सब बुद्धिमत्ता लगे, कि “वह एक गुनाहगार के यहाँ में मेहमान बन गया है।” 8 लेकिन जक्काई ने खुदावन्द के सामने खड़े हो कर कहा, “खुदावन्द, मैं अपने माल का आधा हिस्सा गरीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैं नेजायज तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।” 9 ईसा ने उस से कहा, “आज इस घरने को नजात मिल गई है, इस लिए कि यह भी इत्तीहाम का बेटा है। 10 क्यूंकि इन — ए — आदम खोए हुए को ढूँढ़े और नजात देने के लिए आया है।” 11 अब ईसा येस्सलेम के करीब आ चुका था, इस लिए लोग अन्दाजा लगाने लगे कि खुदा की बादशाही जाहिर होने वाली है। इस के पेश — ए — नजर ईसा ने अपनी यह बातें सुनने वालों को एक मिसाल सुनाई। 12 उस ने कहा, “एक जागीरदार किसी दूरदारा जल्दी को चला गया ताकि उसे बादशाह मुकर्रर किया जाए। फिर उसे वापस आना था। 13 रवाना होने से पहले उस ने अपने नौकरों में से दस को बुला कर उन्हें सोने का एक एक सिक्का दिया। साथ साथ उस ने कहा, यह पैसे ले कर उस बक्त तक कारोबार में लागाओ जब तक मैं वापस न आऊँ।” 14 लेकिन उस की रिआया उस से नफरत रखती थी, इस लिए उस ने उस के पीछे एल्टनी भेज कर इतिलादी, हम नहीं चाहते कि यह आदमी हमारा बादशाह बने।” 15 “तो भी उसे बादशाह मुकर्रर किया गया। इस के बाद जब वापस आया तो उस ने उन नौकरों को बुलाया जिन्हें उस ने पैसे दिए थे ताकि मालूम करे कि उन्होंने ने यह पैसे कारोबार में लगा कर कितना मुनाफा किया है। 16 पहला नौकर आया। उस ने कहा, जनाब, आप के एक सिक्के से दस हो गए हैं।” 17 मालिक ने कहा, शाबाश, अच्छे नौकर। तू थोड़े मैं वफादार रहा, इस लिए अब तुझे दस शहरों पर इख्लियार दिया।” 18 फिर दूसरा नौकर आया। उस ने कहा, जनाब, आप के एक सिक्के से पौँच हो गए हैं।” 19 मालिक ने उस से कहा, तुझे पौँच शहरों पर इख्लियार दिया।” 20 फिर एक और नौकर आ कर कहने लगा, जनाब, यह आप का सिक्का है। मैं ने इसे कपड़े मैं लपेट कर महफूज रखा, 21 क्यूंकि मैं आप से डरता था, इस लिए कि आप सख्त आदमी हैं। जो पैसे आप ने नहीं लगाए उन्हें ले लेते हैं और जो बीज आप ने नहीं बोया उस की फसल काटते हैं।” 22 मालिक ने कहा, शरीर नौकर! मैं तेरे अपने अल्काज के मुताबिक तेरा फैसला करूँगा। जब तू जानता था कि मैं सख्त आदमी हूँ, कि वह पैसे ले लेता हूँ जो खुद नहीं लगाए और वह फसल काटता हूँ जिस का बीज नहीं बोया, 23 तो फिर तूने मैं पैसे साहकार के यहाँ क्यूँ न जमा कराए? अगर तू ऐसा करता तो वापसी पर मुझे कम अज्ञ कम वह पैसे सूद समेत मिल जाते।” 24 और उसने उनसे कहा, यह सिक्का इससे ले कर उस नौकर को दे दो जिस के पास दस सिक्के हैं।” 25 उन्होंने उससे कहा, ऐ खुदावन्द, उस के पास तो पहले ही दस सिक्के हैं।” 26 उस ने जबाब दिया, मैं तुहाँ बताता हूँ कि हर शख्स जिस के पास कुछ है उसे और दिया जाएगा, लेकिन जिस के पास कुछ नहीं है उस से वह भी छीन लिया जाएगा जो उस के पास है। 27 अब उन दूसरों को ले आओ जो नहीं चाहते थे कि मैं उन का बादशाह बनूँ। उन्हें मैं पैसे साहकार की तरफ बढ़ाने लगा। 29 जब वह बैठ — फैगे और बैठ — अनियाह गाँव के करीब पहुँचा जो जैतून के पहाड़ पर आबाद थे तो उस ने दो शागिर्दों को अपने आगे भेज कर कहा?, 30 “सामने वाले गाँव में जाओ। वहाँ तुम एक जवान गथा देखोगे। वह बाँधा होगा और अब तक कोई भी उस पर सवार नहीं हुआ है। उसे खोल कर ले आओ। 31 अगर कोई पछे कि गधे को क्यूँ खोल रहे हो तो उसे बता देना कि खुदावन्द को इस की ज़स्तर है।”

32 दोनों शारिंद गए तो देखा कि सब कुछ वैसा ही है जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। 33 जब वह जवान गधे को खोलने लगे तो उस के मालिकों ने पूछा, “तुम गधे को क्यूँ खोल रहे हो?” 34 उन्होंने जबाब दिया, “‘खुदावन्द को इस की ज़स्तर है।” 35 वह उसे ईसा के पास ले आए, और अपने कपड़े गधे पर रख कर उसको उस पर सवार किया। 36 जब वह चल पड़ा तो लोगों ने उस के अगे आगे रास्ते में अपने कपड़े बिछा दिए। 37 चलते चलते वह उस जगह के करीब पहुँचा जहाँ रास्ता ज़ैतून के पहाड़ पर से उत्तरने लगता है। इस पर शारिंदों का पूरा हज़म खुशी के मारे ऊँची आवाज से उन मोजिज़ों के लिए खुदा की बड़ाई करने लगा जो उन्होंने देखे थे, 38 “मुबारिक है वह बादशाह जो खुदावन्द के नाम से आता है। आस्मान पर सलामती हो और बुलन्दियों पर इज्जत — ओ — जलाल।” 39 कुछ फरीसी भीड़ में थे उन्होंने ईसा से कहा, “उस्ताद, अपने शारिंदों को समझा दें।” 40 उस ने जबाब दिया, “मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर यह न्युप हो जाएँ तो पथर पुकार उठेंगे।” 41 जब वह येस्सलेम के करीब पहुँचा तो शहर को देख कर रो पड़ा 42 और कहा, “काश तू भी उस दिन पहचान लेती कि तेरी सलामती किस में है।” लेकिन अब यह बात तेरी आँखों से छुपी हुई है। 43 क्यूँकि तुझ पर ऐसा बक्त आएगा कि तेरे दुश्मन तेरे चारों तरफ बन्द बँध कर तेरा धेरा करेंगे और यूँ तुझे तंग करेंगे। 44 वह तुझे तेरे बच्चों समेत ज़मीन पर पटकेंगे और तेरे अन्दर एक भी पथर दूसरे पर नहीं छोड़ेंगे। और वजह यही होगी कि तु ने वह बक्त नहीं पहचाना जब खुदावन्द ने तेरी नजात के लिए तुझ पर नज़र की।” 45 फिर ईसा बैत — उल — मुक़द्दस में जा कर बेचने वालों को निकालने लगा, 46 और उसने कहा, “लिखा है, ‘मेरा घर दुआ का घर होगा’ मगर तुम ने उसे डाकूओं के अंदे में बदल दिया है।” 47 और वह रोजाना बैत — उल — मुक़द्दस में तालीम देता रहा। लेकिन बैत — उल — मुक़द्दस के रहनुमा इमाम, शरी’अत के आलिम और अवारी रहनुमा उसे कल्प करने की कोशिश में थे। 48 अलबत्ता उन्हें कोई मौका न मिला, क्यूँकि तपाम लोग ईसा की हर बात सुन सुन कर उस से लिपटे रहते थे।

20 एक दिन जब वह बैत — उल — मुक़द्दस में लोगों को तालीम दे रहा था और खुदावन्द की खुशखबरी सुना रहा था तो रहनुमा इमाम, शरी’अत के उलमा और बुर्जी उस के पास आए। 2 उन्होंने ने कहा, “हमें बताएँ, आप यह किस इश्तियार से कर रहे हैं? किस ने आप को यह इश्तियार दिया है?” 3 ईसा ने जबाब दिया, “मेरा भी तुम से एक सवाल है। तुम मुझे बताओ?”, 4 कि क्या युहन्ना का बपतिस्मा आसमानी था या ईसानी? 5 वह आपस में बहस करने लगे, “अगर हम कहें ‘आसमानी’ तो वह पछेंगा, तो फिर तुम उस पर ईमान कर्ने लाएँ?” 6 लेकिन अगर हम कहें ‘ईसानी’ तो तपाम लोग हम पर पथर मरेंगे, क्यूँकि वह तो यकीन रखते हैं कि युहन्ना नबी था।” 7 इस लिए उन्होंने जबाब दिया, “हम नहीं जानते कि वह कहाँ से था।” 8 ईसा ने कहा, “तो फिर मैं भी तुम को नहीं बताता कि मैं यह सब कुछ किस इश्तियार से कर रहा हूँ।” 9 फिर ईसा लोगों को यह मिसाल सुनाने लगा, “किसी आदमी ने अंगर का एक बाग लगाया। फिर वह उसे बागबानों को ठेके पर देकर बहुत दिनों के लिए बाहरी मूलक चला गया। 10 जब अंगर पक गए तो उस ने अपने नौकर को उन के पास भेज दिया ताकि वह मालिक का हिस्सा बसूल करे। लेकिन बागबानों ने उस की पिटाई करके उसे खाली हाथ लौटा दिया। 11 इस पर मालिक ने एक और नौकर को उन के पास भेजा। लेकिन बागबानों ने उसे भी मार मार कर उस की बे-इज्जती की और खाली हाथ निकाल दिया। 12 फिर मालिक ने तीसरे नौकर को भेज दिया। उसे भी उन्होंने मार कर ज़ब्ज़ी कर दिया और निकाल दिया। 13 बाग के मालिक ने कहा, अब मैं क्या करूँ? मैं अपने प्यारे बेटे को भेजूँगा, शायद वह उस का लिहाज़ करें।” 14 लेकिन मालिक के बेटे को देख कर

बागबानों ने आपस में मशवरा किया और कहा, यह ज़मीन का वारिस है। आओ, हम इसे मार डालें। फिर इस की मीरास हमारी ही होगी। 15 उन्होंने उसे बाग से बाहर फैक कर कत्ल किया। ईसा ने पूछा, अब बताओ, बाग का मालिक क्या करेगा? 16 वह वहाँ जा कर बागबानों को हलताक करेगा और बाग को दूसरों के हवाले कर देगा। यह सुन कर लोगों ने कहा, खुदा ऐसा कभी न करे।” 17 ईसा ने उन पर नज़र डाल कर पूछा, “तो फिर कलाम — ए — मुक़द्दस के इस हवाले का क्या मतलब है कि जिस पथर को राजगारों ने रद किया, वह कोने का बुनियादी पथर बन गया?” 18 जो इस पथर पर गिरे वह टुकड़े टुकड़े हो जाएंगा, जबकि जिस पर वह खुद गिरे उसे पीस डालेगा।” 19 शरी’अत के उलमा और राहनुमा इमामों ने उसी बक्त उसे पकड़ने की कोशिश की, क्यूँकि वह समझ गए थे कि मिसाल में बयान होने वाले हम ही हैं। लेकिन वह अवाम से डरते थे। 20 चुनावे वह उसे पकड़ने का मौका दृঁढ़ते रहे। इस मक्सद के तहत उन्होंने उस के पास जासूस भेज दिए। यह लोग अपने आप को ईमानदार जाहिर करके ईसा के पास आए ताकि उस की कोई बात पकड़ कर उसे रोपी हाकिम के हवाले कर सकें। 21 इन जासूसों ने उस से पूछा, “उस्ताद, हम जानते हैं कि आप वही कुछ बयान करते और सिखाते हैं जो सही है। आप तरफदारी नहीं करते बल्कि दियानदारी से खुदा की राह की तालीम देते हैं। 22 अब हमें बताएँ कि क्या रोपी हाकिम को महसूल देना जायज है या नाजायज़?” 23 लेकिन ईसा ने उन की चालाकी भाँप ली और कहा, 24 “मुझे चाँदी का एक रोपी सिक्का दियाओ। किस की सूरत और नाम इस पर बना है?” उन्होंने ने जबाब दिया, “कैसर का।” 25 उस ने कहा, “तो जो कैसर का है कैसर को दो और जो खुदा का है खुदा को।” 26 यूँ वह अवाम के सामने उस की कोई बात पकड़ने में नाकाम रहे। उस का जबाब सुन कर वह हक्का — बक्का रह गए और मजीद कोई बात न कर सके। 27 फिर कुछ सदूकी उस के पास आए। सदूकी नहीं मानते थे कि रोज़ — ए — क्यामत में मुर्दे जी उठेंगे। उन्होंने ईसा से एक सवाल किया, 28 “उस्ताद, मूसा ने हमें हम्म दिया कि अगर कोई शादीशुदा आदमी बेऔलाद मर जाए और उस का भाई हो तो भाई का फर्ज है कि वह बेवा से शादी करके अपने भाई के लिए औलाद पैदा करे। 29 अब फर्ज करें कि क्या सात भाई हैं। पहले ने शादी की, लेकिन बेऔलाद मर गया। 30 इस पर दूसरे ने उस से शादी की, लेकिन वह भी बेऔलाद मर गया। 31 फिर तीसरे ने उस से शादी की। यह सिलसिला सातवें भाई तक जारी रहा। इसके बाद हर भाई बेवा से शादी करने के बाद मर गया। 32 आखिर मैं बेवा की भी मौत हो गई। 33 अब बताएँ कि क्यामत के दिन वह किस की बीवी होगी? क्यूँकि सात के सात भाइयों ने उस से शादी की।” 34 ईसा ने जबाब दिया, “इस जमाने में लोग ब्याह — शादी करते और कराते हैं।” (al-i‘m g165) 35 लेकिन जिन्हें खुदा आने वाले जमाने में शारीक होने और मुर्दों में से जी उठने के लायक समझता है वह उस बक्त शादी नहीं करेंगे, न उन की शादी किसी से कराई जाएगी। (al-i‘m g165) 36 वह मर भी नहीं सकेंगे, क्यूँकि वह फरिश्तों की तरह होंगे और क्यामत के फर्जन्द होने के बाइस खुदा के फर्जन्द होंगे। 37 और यह बात कि मुर्दे जी उठेंगे मूसा से भी जाहिर की गई है। क्यूँकि जब वह कैटिदार ज़ाड़ी के पास आया तो उस ने खुदा को यह नाम दिया, अद्वाहम का खुदा, इजहाक का खुदा और याकूब का खुदा, हालाँकि उस बक्त तीनों बहुत पहले मर चुके थे। इस का मतलब है कि यह हकीकित में जिन्दा है। 38 क्यूँकि खुदा मुर्दों का नहीं बल्कि ज़िन्दों का खुदा है। उस के नज़दीक यह सब ज़िन्दा है।” 39 यह सुन कर शरी’अत के कुछ उलमा ने कहा, “शाबास उस्ताद, आप ने अच्छा कहा है।” 40 इस के बाद उन्होंने उस से कोई भी सवाल करने की हिम्मत न की। 41 फिर ईसा ने उन से पूछा, “मसीह के बारे में क्यूँ कहा

जाता है कि वह दाऊद का बेटा है? 42 क्यौंकि दाऊद खुद जबूर की किताब में फरमाता है, खुदा से कहा, मेरे दानिंह हाथ बैठ, 43 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पैरों की चौकी न बना दूँ। 44 दाऊद तो खुद मसीह को खुदा कहता है। तो फिर वह किस तरह दाऊद का बेटा हो सकता है? 45 जब लोग सुन रहे थे तो उस ने अपने शारिर्दों से कहा, 46 “शरीरी अत के उलमा से खबरदार रहो! क्यौंकि वह शानदार चोरों पहन कर इधर उधर फिरना पासन्द करते हैं। जब लोग बाजारों में सलाम करके उन की इज्जत करते हैं तो फिर वह खुश हो जाते हैं। उन की बस एक ही ख्वाहिश होती है कि इबादतखानों और दावतों में इज्जत की कुर्सियों पर बैठ जाएँ। 47 यह लोग बेवाओं के घर हडप कर जाते और साथ साथ दिखावे के लिए लम्बी लम्बी दुआएँ माँगते हैं। ऐसे लोगों को निहायत सख्त सजा मिलेगी।”

21 ईसा ने नजर उठाकर देखा, कि अमीर लोग अपने हृदिएं बैत — उल — मुकद्दस के चन्दे के बक्से में डाल रहे हैं। 2 एक गरीब बेवा भी वहाँ से गुजरी जिस ने उस में तौबे के दो मामूली से सिक्के डाल दिए। 3 ईसा ने कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस गरीब बेवा ने तमाम लोगों की निस्बत ज्यादा डाला है। 4 क्यौंकि इन सब ने तो अपनी दौलत की कसरत से कुछ डाला जबकि इस ने ज़स्तर मन्द होने के बावजूद भी अपने गुज़रों के सारे पैसे दे दिए हैं।” 5 उस बक्त कुछ लोग हैकल की तारीफ में कहने लगे कि वह कितने ख़बरदार पत्थरों और मिन्नत के तोहफों से सजा हुआ है। यह सुन कर ईसा ने कहा, 6 “जो कुछ तुम को यहाँ नजर आता है उस का पत्थर पर पत्थर नहीं रहेगा। आने वाले दिनों में सब कुछ ढा दिया जाएगा।” 7 उन्होंने पूछा, “उस्ताद, यह कब होगा? क्या क्या नजर आएगा जिस से मालूम हो कि यह अब होने को है?” 8 ईसा ने जबाब दिया, “ख़बरदार रहो कि कोई तुम्हें गुमराह न कर दे। क्यौंकि बहुत से लोग मेरा नाम ले कर आएँगे और कहेंगे, मैं ही मसीह हूँ और कि ‘बक्त करीब आ चुका है।’ लेकिन उन के पीछे न लगना। 9 और जब जंगों और फितनों की खबरें तुम तक पहुँचेंगी तो मत घबराना। क्यौंकि ज़स्ती है कि यह सब कुछ पहले पेश आए। तो भी अभी आधिरत न होगी।”

10 उस ने अपनी बात जारी रखी, “एक क्रौम दूसरी के खिलाफ उठ खड़ी होगी, और एक बादशाही दूसरी के खिलाफ। 11 बहुत ज़ल्जले के बिलाफ। 12 बहुत काल पड़ेंगे और बबाई बीमारियाँ फैल जाएँगी। हैबतनाक बाकिआत और आस्मान पर बड़े निशान देखने में आएँगे। 13 लेकिन इन तमाम बाकिआत से पहले लोग तुम को पकड़ कर सताएँगे। वह तुम को यहदी इबादतखानों के हवाले करेंगे, कैदखानों में डलवाएँगे और बादशाहों और हक्मरानों के सामने पेश करेंगे। और यह इस लिए होगा कि तुम मेरे पैतोकार हो। 14 लेकिन ठान लो, कि तुम पहले से अपनी फिक करने की तैयारी न करो, 15 क्यौंकि मैं तुम को ऐसे अल्फाज़ और हिक्मत अता करूँगा, कि तुम्हारे तमाम मुखालिफ न उस का मुकाबिला और न उस का जबाब दे सकेंगे। 16 तुम्हारे वालिदैन, भाई, रिश्तेदार और दोस्त भी तुम को दुश्मन के हवाले कर देंगे, बाल्कि तुम में से कुछ को कल्प किया जाएगा। 17 सब तुम से नफरत करेंगे, इस लिए कि तुम मेरे मानने वाले हो। 18 तो भी तुम्हारा एक बाल भी बांका नहीं होगा। 19 साबितकदम रहने से ही तुम अपनी जान बचा लोगे।” 20 “जब तुम येस्सलेम को फौजों से घिरा हआ देखो तो जान लो, कि उस की तबाही करीब आ चुकी है। 21 उस बक्त यहदिया के रहनेवाले भाग कर पहाड़ी इलाके में पनाह लो। शहर के रहने वाले उस से निकल जाएँ और दिहात में आबाद लोग शहर में दाखिल न हों। 22 क्यौंकि यह इलाही ग़ज़ब के दिन होंगे जिन में वह सब कुछ पूरा हो जाएगा जो कलाम — ए — मुकद्दस में लिखा है। 23 उन औरतों पर अमरोंस जो उन दिनों में हामिला हों

या अपने बच्चों को दूध पिलाती हों, क्यौंकि मुल्क में बहुत मुसीबत होगी और इस क्लैम पर खुदा का ग़ज़ब नाजिल होगा। 24 लोग उन्हें तलवार से कल्प करेंगे और कैद करके तमाम गैरयहदी मामालिक में ले जाएँगे। गैरयहदी येस्सलेम को पाँव तले कुचल डालेंगे। यह सिलसिला उस बक्त तक जारी रहेगा जब तक गैरयहदियों का दौर पूरा न हो जाए।” 25 “सूरज, चाँद और तारों में अंजीब — ओ — गरीब निशान जाहिर होंगे। कैमेंस मुन्हर के शेर और ठाठे मारने से हैरान — ओ — पेरेशान होंगी। 26 लोग इस अन्देशे से कि क्या क्या मुसीबत दुनिया पर आएँगी इस कदर खांफ़ खाएँगे कि उन की जान में जान न रहेगी, क्यौंकि आस्मान की ताकतें हिलाई जाएँगी। 27 और फिर वह इन — ए — आदम को बड़ी कुटरत और जलाल के साथ बादल में आते हुए देखेंगे। 28 चुनाँचे जब यह कुछ पेश आने लगे तो सीधे खड़े हो कर अपनी नजर उठाओ, क्यौंकि तुहारी नजात नजदीक होगी।” 29 इस सिलसिले में ईसा ने उन्हें एक मिसाल सुनाई। “अंजीर के दरखत और बाकी दरखतों पर गैर करो। 30 जैसे ही कोपलें निकलने लगती हैं तुम जान लेते हो कि गर्मियों का मौसम नजदीक है। 31 इसी तरह जब तुम यह बाकिआत देखोगे तो जान लोगे कि खुदा की बादशाही करीब ही है। 32 मैं तुम को सच बताता हूँ कि इस नस्ल के ख़त्म होने से पहले पहले यह सब कुछ बाके होगा। 33 आस्मान — ओ — ज़मीन तो जाते होंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक काइम होंगी।” 34 “ख़बरदार रहो ताकि तुम्हरे दिल अय्यासी, नशाबाजी और रोजाना की फिरों तले दब न जाएँ। वर्ना यह दिन अचानक तुम पर आन पड़ेगा, 35 और फ़द्दे की तरह तुम्हें जकड़ लेगा। क्यौंकि वह दुनिया के तमाम रहनेवालों पर आएगा। 36 हर बक्त चौकस रहो और दुआ करते रहो कि तुम को आने वाली इन सब बातों से बच निकलने की तौफीकी मिल जाए और तुम इन — ए — आदम के सामने खड़े हो सको।” 37 हर रोज़ ईसा बैत — उल — मुकद्दस में तालीम देता रहा और हर शाम वह निकल कर उस पहाड़ पर रात गुजारता था जिस का नाम जैतून का पहाड़ है। 38 और सुबह सवैरे सब लोग उस की बातें सुनने को हैकल में उस के पास आया करते थे।

22 बेखमीरी रोटी की ईद यानी फ़सह की ईद करीब आ गई थी। 2 रेहनुपा इमाम और शरीरी अत के उलमा ईसा को कल्प करने का कोई मौजूँ मौका दूँड रहे थे, क्यौंकि वह अवाम के रद — ए — अमल से डरते थे। 3 उस बक्त इब्लीस यहदाह इस्करियोती में बस गया जो बारह रस्तों में से था। 4 अब वह रेहनुमा ईमामों और बैत — उल — मुकद्दस के पहरेदारों के अफ़सरों से मिला और उन से बात करने लगा कि वह ईसा को किस तरह उन के हवाले कर सकेगा। 5 वह खुश हुए और उसे पैसे देने पर मुतकिक हुए। 6 यहदाह रजामन्द रहा। अब से वह इस तलास में रहा कि ईसा को ऐसे मौके पर उन के हवाले करे जब मजमा उस के पास न हो। 7 बेखमीरी रोटी की ईद आई जब फ़सह के मैन्ने को कुर्बान करना था। 8 ईसा ने पतरस और यूहन्ना को आगे भेज कर हिदायत की, “जाओ, हमारे लिए फ़सह का खाना तैयार करो ताकि हम जा कर उसे खा सकें।” 9 उन्होंने पूछा, “हम उसे कहाँ तैयार करें?” 10 उस ने जबाब दिया, “जब तुम शहर में दाखिल होगे तो तुम्हारी मुलाकात एक आदमी से होगी जो पानी की घड़ा उठाए चल रहा होगा। उस के पीछे चल कर उस घर में दाखिल हो जाओ जिस में वह जाएगा। 11 वहाँ के मालिक से कहना, उस्ताद आप से पूछते हैं कि वह कमरा कहाँ है जहाँ मैं अपने शारिर्दों के साथ फ़सह का खाना खाऊँ?” 12 वह तुम को दूसरी मान्जिल पर एक बड़ा और सजा हुआ कमरा दिखाएगा। फ़सह का खाना वहीं तैयार करना।” 13 दोनों चले गए तो सब कुछ बैसा ही पाया जैसा ईसा ने उन्हें बताया था। फिर उन्होंने फ़सह का खाना तैयार किया। 14 मुकर्रा बक्त पर ईसा अपने शारिर्दों के साथ खाने के लिए बैठ

गया। 15 उस ने उन से कहा, “मेरी बहुत आरज्जु थी कि दुःख उठाने से पहले तुम्हारे साथ मिल कर फसका का यह खाना खाउँ।” 16 “क्योंकि मैं तुम को बताता हूँ कि उस बक्त तक इस खाने में शरीक नहीं हूँगा जब तक इस का मक्सद खुदा की बादशाही में पूरा न हो गया हो।” 17 फिर उस ने मय का प्याला ले कर शुक्रगुजारी की दुआ की और कहा, “इस को ले कर आपस में बाँटो। 18 मैं तुम को बताता हूँ कि अब से मैं अंगूर का रस नहीं पियूँगा, क्योंकि अगली दफा इसे खुदा की बादशाही के आने पर पियूँगा।” 19 फिर उस ने रोटी ले कर शुक्रगुजारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके उन्हें दे दिया। उस ने कहा, “यह मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 20 इसी तरह उस ने खाने के बाद प्याला ले कर कहा, “मय का यह प्याला वह नया अहृत है जो मेरे खून के जरिए काइम किया जाता है, वह खून जो तुम्हारे लिए बहाया जाता है।” 21 लेकिन जिस शख्स का हाथ मेरे साथ खाना खाने में शरीक है वह मुझे दूषन के हवाले कर देगा। 22 इन्हन् — ए — आदम तो खुदा की मर्जी के मुताबिक कूच कर जाएगा, लेकिन उस शख्स पर अफसोस जिस के बर्जीले से उसे दूषन के हवाले कर दिया जाएगा।” 23 यह सुन कर शारिर्द एक दूसरे से बहस करने लगे कि हम में से यह कौन हो सकता है जो इस किल्स की हरकत करेगा। 24 फिर एक और बात भी छिड़ गई। वह एक दूसरे से बहस करने लगे कि हम में से कौन सब से बड़ा समझा जाए। 25 लेकिन इसा ने उन से कहा, “गैरियहदी कीमों में बादशाह वही हैं जो दूसरों पर हक्मत करते हैं, और इखिलायर वाले वही हैं जिन्हें ‘मोहदसिन’ का लक्ज दिया जाता है।” 26 लेकिन तुम को ऐसा नहीं होना चाहिए। इस के बजाए जो सब से बड़ा है वह सब से छोटे लड़के की तरह हो और जो रेहनुमाई करता है वह नौकर जैसा हो। 27 क्योंकि आप तौर पर कौन ज्यादा बड़ा होता है, वह जो खाने के लिए बैठा है वह जो लोगों की खिदमत के लिए हाजिर होता है? क्या वह नहीं जो खाने के लिए बैठा है? बेशक। लेकिन मैं खिदमत करने वाले की हैसियत से ही तुम्हारे बीच हूँ।” 28 “देखो, तुम वही हो जो मेरी तामां आज्माइशों के दौरान मेरे साथ रहे हो।” 29 चुनौते मैं तुम को बादशाही अंता करता हूँ जिस तरह बाप ने मुझे बादशाही अंता की है। 30 तुम मेरी बादशाही में मेरी मेज पर बैठ कर मेरे साथ खाओ और पियोगे, और तरबों पर बैठ कर इमाईल के बारह कबीलों का इन्साफ करोगे।” 31 “शमैन, शमैन! इब्लीस ने तुम लोगों को गन्दुम की तरह फटकने का मुतालबा किया है।” 32 लेकिन मैंने तैरे लिए दुआ की है ताकि तेरा ईमान जाता न रहे। और जब तु मुड़ कर वापस आए तो उस बक्त अपने भाइयों को मज्जूत करना।” 33 पतरस ने जबाब दिया, खुदावन्द, मैं तो आप के साथ जेल में भी जाने बल्कि मरने को तयार हूँ।” 34 इसा ने कहा, “पतरस, मैं तुझे बताता हूँ कि कल सबह मुर्गी के बांग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।” 35 फिर उसने उसे कहा “जब मैं तुझे बटवे और झोली और जूती के बिना भेजा था तो क्या तुम किसी चीज में मोहताज रहे थे, उन्होंने कहा किसी चीज के नहीं।” 36 उस ने कहा, “लेकिन अब जिस के पास बटुवा या थैला हो वह उसे साथ ले जाए, बल्कि जिस के पास तलवार न हो वह अपनी चादर बेच कर तलवार खरीद ले।” 37 कलाम — ए — मुकद्दस में लिखा है, उसे मुल्लिजों में शुमार किया गया। और मैं तुम को बताता हूँ, ज़स्ती है कि यह बात मुझ में पूरी हो जाए। क्योंकि जो कुछ मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा ही होना है।” 38 उन्होंने कहा, “खुदावन्द, यहाँ दो तलवरें हैं।” उस ने कहा, “बस! काफ़ी है!” 39 फिर वह शहर से निकल कर रोज के मुताबिक ज़ैतून के पहाड़ की तरफ चल दिया। उस के शारिर्द उस के पीछे हो लिए। 40 वहाँ पहुँच कर उस ने उन से कहा, “दुआ करो ताकि आज्माइश में न पड़ो।” 41 फिर वह उन्हें छोड़ कर कुछ आगे

निकला, तकरीबन इतने फासिले पर जितनी दूर तक पथर फैका जा सकता है। वहाँ वह झुक कर दुआ करने लगा, 42 “ऐ बाप, अगर तू चाहे तो यह प्याला मुझ से हटा ले। लेकिन मेरी नहीं बल्कि तेरी मर्जी पूरी हो।” 43 उस बक्त एक फरिश्ते ने अस्मान पर से उस पर ज़ाहिर हो कर उस को ताकत दी। 44 वह सख्त परेशान हो कर ज्यादा दिलसोजी से दुआ करने लगा। साथ साथ उस का परसीना खून की बँदों की तरह जमीन पर टपकने लगा। 45 जब वह दुआ से फारिश्हा हो कर खड़ा हुआ और शारीर्दों के पास बापस आया तो देखा कि वह गम के मारे सो गए हैं। 46 उस ने उन से कहा, “तुम क्युँ सो रहे हो? उठ कर दुआ करते रहो ताकि आज्माइश में न पड़ो।” 47 वह अभी यह बात कर ही रहा था कि एक हज़म आ पहुँचा जिस के आगे आगे यहदाह चल रहा था। वह ईंसा को बोसा देने के लिए उस के पास आया। 48 लेकिन उस ने कहा, “यहदाह, क्या तू इन्हन् — ए — आदम को बोसा दे कर दुश्मन के हवाले कर रहा है?” 49 जब उस के साथियों ने भाँप लिया कि अब क्या होने वाला है तो उन्होंने कहा, “खुदावन्द, क्या हम तलवार चलाएँ?” 50 और उनमें से एक ने अपनी तलवार से इमाम — ए — आज़म के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया। 51 लेकिन ईंसा ने कहा, “बस कर!” उस ने गुलाम का कान छू कर उसे शिफारी दी। 52 फिर वह उन रेहनुमा इमामों, बैत — उल — मुकद्दस के पहरेदारों के अफसरों और बुज़ुर्गों से मुखियतिब आया जो उस के पास आए थे, “क्या मैं डाकू हूँ कि तुम तलवरें और लाठियों लिए मेरे खिलाफ निकले हो? 53 मैं तो रोजाना बैत — उल — मुकद्दस में तुम्हारे पास था, मगर तुम ने वहाँ मुझे हाथ नहीं लगाया। लेकिन अब यह तुम्हारा बक्त है, वह बक्त जब तारीकी हक्मत करती है।” 54 फिर वह उसे गिरफ्तार करके इमाम — ए — आज़म के घर ले गए। पतरस कुछ फासिले पर उन के पीछे पीछे वहाँ पहुँच गया। 55 लोग सहन में आग जला कर उस के इद्दीर्ग बैठ गए। पतरस भी उन के बीच बैठ गया। 56 किसी नौकरानी ने उसे वहाँ आग के पास बैठे हुए देखा। उस ने उसे घूर कर कहा, “यह भी उस के साथ था।” 57 लेकिन उस ने इन्कार किया, “खात्सु, मैं उसे नहीं जानता।” 58 थोड़ी देर के बाद किसी आदमी ने उसे देखा और कहा, “तुम भी उन में से हो।” लेकिन पतरस ने जबाब दिया, “नहीं भाई! मैं नहीं हूँ।” 59 तकरीबन एक घंटा गुज़र गया तो किसी और ने इमार करके कहा, “यह आदमी यकीनन उस के साथ था, क्योंकि यह भी गलील का रहने वाला है।” 60 लेकिन पतरस ने जबाब दिया, “यार, मैं नहीं जानता कि तुम क्या कह रहे हो!” वह अभी बात कर ही रहा था कि अचानक मुर्गी की बाँग सुनाई दी। 61 खुदावन्द ने मुड़ कर पतरस पर नज़र डाली। फिर पतरस को खुदावन्द की वह बात याद आई जो उस ने उस से कही थी कि “कल सबह मुर्गा के बांग देने से पहले पहले तू तीन बार मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।” 62 पतरस वहाँ से निकल कर दूर दिल से खूब रोया। 63 पहरेदार ईंसा का मज़ाक उड़ाने और उस की पिटाई करने लगे। 64 उन्होंने उस की आँखों पर पट्टी बाँध कर पूछा, “नबुव्वत कर कि किस ने तुम्हे मारा?” 65 इस तरह की और बहुत सी बातों से वह उस की बेइज़ती करते रहे। 66 जब दिन चढ़ा तो रेहनुमा इमामों और शरीरी अंत के आलिमों पर मुश्तमिल कौम के मज़मा ने जमा हो कर उसे यहदी अदालत — ए — आलिया में पेश किया। 67 उन्होंने कहा, “अगर तू मरीह है तो हमें बता!” ईंसा ने जबाब दिया, “अगर मैं तुम को बताऊँ तो तुम मेरी बात नहीं मानोगे, 68 और अगर तुम से पूछँ तो तुम जबाब नहीं दोगे।” 69 लेकिन अब से इन्हन् — ए — आदम खुदा तआला के दहने हाथ बैठा होगा।” 70 सब ने पूछा, “तो फिर क्या तू खुदा का फर्जन्द है?” उस ने जबाब दिया, “जी, तुम खुद कहते हो।” 71 इस पर उन्होंने कहा, “अब हमें किसी और

गवाही की क्या ज़स्तर रही? क्यूँकि हम ने यह बात उस के अपने मुँह से सन ली है।”

23 फिर पूरी मजिस उठी और ‘ईसा को पीलातुस के पास ले आई। 2 और

उन्होंने उस पर इल्जाम लगा कर कहने लगे, “हम ने मालम किया है कि यह आदमी हमारी कौम को गुमराह कर रहा है। यह कैसर को खिराज देने से मनह करता और दावा करता है कि मैं मर्सीह और बादशाह हूँ।” 3 पीलातुस ने उस से पूछा, “अच्छा, तुम यहदियों के बादशाह हो?” ईसा ने जवाब दिया, जी, “आप खुद कहते हैं।” 4 फिर पीलातुस ने रहनुमा इमामों और हज़ूम से कहा, “मुझे इस आदमी पर इल्जाम लगाने की कोई वजह नज़र नहीं आती।” 5 मगर वो और भी जोर देकर कहने लगे कि ये तमाम यहदियों में बल्कि गतील से लेकर यहाँ तक लोगों को सिखा सिखा कर उभारता है 6 यह सुन कर पीलातुस ने पूछा, “क्या यह शाल्प गतील का है?” 7 जब उसे मालम हुआ कि ईसा गलील यानी उस इलाके से है, जिस पर हेरोदेस अनतिपास की हुक्मत है तो उस ने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, क्यूँकि वह भी उस वक्त येस्सलेम में था। 8 हेरोदेस ईसा को देख कर बहुत खुश हुआ, क्यूँकि उस ने उस के बारे में बहुत कुछ सुना था, और इस लिए काफी दिनों से उस से मिलना चाहता था। अब उस की बड़ी ख्वादिश थी, कि ईसा को कोई मोजिजा करते हुए देख सके। 9 उस ने उस से बहुत सारे सवाल किए, लेकिन ईसा ने एक का भी जवाब न दिया। 10 रहनुमा इमाम और शरी‘ अत के उलमा साथ खड़े बड़े जोश से उस पर इल्जाम लगाते रहे। 11 फिर हेरोदेस और उस के फौजियों ने उसको जलील करते हुए उस का मजाक उड़ाया और उसे चमकदार लिखास पहना कर पीलातुस के पास वापस भेज दिया। 12 उसी दिन हेरोदेस और पीलातुस ने रहनुमा इमामों, सरदारों और अवाम को जमा करके; 14 उन से कहा, “तुम ने इस शाल्प को मेरे पास ला कर इस पर इल्जाम लगाया है कि यह कौम को उकसा रहा है। मैं ने तुम्हारी मौजूदगी में इस का जायजा ले कर ऐसा कुछ नहीं पाया जो तुहारे इल्जामत की तस्टीक करे। 15 हेरोदेस भी कुछ नहीं मालम कर सका, इस लिए उस ने इसे हमारे पास वापस भेज दिया है। इस आदमी से कोई भी ऐसा गुनाह नहीं हुआ कि यह सजा — ए — मौत के लायक है। 16 इस लिए मैं इसे कोई की सजा दे कर रिहा कर देता हूँ।” 17 [अस्ल में यह उस का फर्ज था कि वह ईंट के मैके पर उन की खातिर एक कैटी को रिहा कर दे।] 18 लेकिन सब मिल कर शेर मचा कर कहने लगे, “इसे ले जाएँ। इसे नहीं बल्कि बर — अब्बा को रिहा करके हमें दें।” 19 (बर — अब्बा को इस लिए जेल में डाला गया था कि वह कातिल था और उस ने शहर में हुक्मत के खिलाफ बगावत की थी।) 20 पीलातुस ईसा को रिहा करना चाहता था, इस लिए वह दुबारा उन से मुखियत रहा। 21 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “इसे मस्लब करें, इसे मस्लब करें।” 22 फिर पीलातुस ने तीसीरी दफा उन से कहा, “क्यूँ? उस ने क्या जुर्म किया है? मुझे इसे सजा — ए — मौत देने की कोई वजह नज़र नहीं आती। इस लिए मैं इसे कोडे लगावा कर रिहा कर देता हूँ।” 23 लेकिन वह बड़ा शेर मचा कर उसे मस्लब करने का तकाजा करते रहे, और आखिरकार उन की आवाज़े ग़ालिब आ गई। 24 फिर पीलातुस ने फैसला किया कि उन का मूतालाब पूरा किया जाए। 25 उस ने उस आदमी को रिहा कर दिया जो अपनी हुक्मत के खिलाफ हरकतों और कल्त की वजह से जेल में डाल दिया गया था जबकि ईसा को उस ने उन की मर्जी के मुताबिक उन के हवाले कर दिया। 26 जब फौजी ईसा को ले जा रहे थे तो उन्होंने एक आदमी को पकड़ लिया जो लिखिया के शहर कुरेन का रहने वाला था। उस का नाम शमैन था। उस वक्त वह देहत से शहर में दाखिल हो रहा था। उन्होंने सलीब को उस

के कँधों पर रख कर उसे ईसा के पीछे चलने का हुक्म दिया। 27 एक बड़ा हज़ूम उस के पीछे हो लिया जिस में कुछ ऐसी औरतें भी शामिल थीं जो सीना पीट पीट कर उस का मातम कर रही थीं। 28 ईसा ने मुड़ कर उन से कहा, “येस्सलेम की बेटियों! मेरे बासे न रोओ बल्कि अपने और अपने बच्चों के बासे रोओ।” 29 क्यूँकि ऐसे दिन आँगे जब लोग कहेंगे, मुबारिक है वह जो बाँझ है, जिन्होंने ने तो बच्चों को जन्म दिया, न दूध पिलाया।” 30 फिर लोग पहाड़ों से कहने लगेंगे, हम पर गिर पड़ो, और पहाड़ियों से कि “हमें छुपा लो।” 31 “क्यूँकि आग होरे दरखत से ऐसा सुलक किया जाता है तो फिर सुखे के साथ क्या कुछ न किया जाएगा?” 32 दो और मर्दी को भी मस्लब करने के लिए बाहर ले जाया जा रहा था। दोनों मुजरिम थे। 33 चलते चलते वह उस जगह पहुँचे जिस का नाम खोपड़ी था। वहाँ उन्होंने ईसा को दोनों मुजरिमों समेत मस्लब किया। एक मुजरिम को उस के दाँ हाथ और दूसरे को उस के बाँ हाथ लटका दिया गया। 34 ईसा ने कहा, “ऐ बाप, इहें मुआफ कर, क्यूँकि यह जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।” उन्होंने पर्ची डाल कर उस के कपड़े अपस में बैंट लिए। 35 हज़ूम वहाँ खड़ा तमाशा देखता रहा जबकि कौम के सरदारों ने उस का मजाक भी उड़ाया। उन्होंने कहा, “उस ने औरों को बचाया है। अगर यह खुदा का चुना हुआ और मर्सीह है तो अपने आप को बचाए।” 36 फौजियों ने भी उसे लान — तान की। उस के पास आ कर उन्होंने ने उस मय का सिरका पेश किया 37 और कहा, “अगर तू यहदियों का बादशाह है तो आपने आप को बचा ले।” 38 उस के सर के ऊपर एक तख्ती लगाइ गई थी जिस पर लिखा था, “यह यहदियों का बादशाह है।” 39 जो मुजरिम उस के साथ मस्लब हुए थे उन में से एक ने कुफ़ बकते हुए कहा, “क्या तू मर्सीह नहीं है? तो फिर अपने आप को और हमें भी बचा ले।” 40 लेकिन दूसरे ने यह सुन कर उसे डॉटा, क्या तू खुदा से भी नहीं डरता? जो सजा उसे दी गई है वह उड़े भी मिलती है। 41 हमारी सजा तो बजिबी है, क्यूँकि हमें अपने कामों का बदला मिल रहा है, लेकिन इस ने कोई बुरा काम नहीं किया।” 42 फिर उस ने ईसा से कहा, “जब आप अपनी बादशाही में आँ तो मुझे याद करो।” 43 ईसा ने उस से कहा, “मैं तुझे सच बताता हूँ कि तू आज ही मेरे साथ फिरदोस में होगा।” 44 बारह बजे से दोपहर तीन बजे तक पूरा मुल्क अंदरे में डब गया। 45 सूरज तारीक हो गया और बैत — उल — मुकद्दस के पाकतरीन कमरे के सामने लटका हुआ पर्दा दो हिस्सों में फट गया। 46 ईसा ऊँची आवाज से पुकार उठा, “ऐ बाप, मैं अपनी रस्ते हाथों में सौंपता हूँ।” यह कह कर उस ने दम तोड़ दिया। 47 यह देख कर वहाँ खड़े फौजी अपसर ने खुदा की बड़ाई करके कहा, “यह आदमी बाक़ी रास्तबाज़ था।” 48 और हज़ूम के तमाम लोग जो यह तमाशा देखने के लिए जमा हुए थे यह सब कुछ देख कर छाती पीटने लगे और शहर में वापस चले गए। 49 लेकिन ईसा के जाने वाले कुछ फासिले पर खड़े देखते रहे। उन में वह औरतें भी शामिल थीं जो गलील में उस के पीछे चल कर यहाँ तक उस के साथ आई थीं। 50 वहाँ एक नेक और रास्तबाज़ आदमी बनाम यूसुफ था। वह यहदी अदालत — ए — अलिया का स्कन था 51 लेकिन दूसरों के फैसले और हक्कतों पर रजामन्द नहीं हुआ था। यह आदमी यहदिया के शहर अरिमतियाह का रहने वाला था और इस इन्तज़ार में था कि खुदा की बादशाही आए। 52 अब उस ने पिलातुस के पास जा कर उस से ईसा की लाश ले जाने की इजाजत माँगी। 53 फिर लाश को उतार कर उस ने उसे कतान के कफ़न में लपेट कर चट्टान में तराशी हुई एक कबूल में रख दिया जिस में अब तक किसी को दफनाया नहीं गया था। 54 यह तैयारी का दिन यानी जुमआ था, लेकिन सबत का दिन शुरू होने को था। 55 जो औरतें ईसा के साथ गलील से आई थीं वह यूसुफ के पीछे हो लीं। उन्होंने कबूल को देखा और यह भी कि

इंसा की लाश किस तरह उस में रखी गई है। 56 फिर वह शहर में वापस चली गई और उस की लाश के लिए खुशबूदार मसाले तैयार करने लगी।

24 हफ्ते का पहला दिन शुरू हुआ, इस लिए उन्होंने शरीर अत के मुताबिक आराम किया। इतवार के दिन यह औरतें अपने तैयारशुदा मसाले ले कर सुबह — सर्वेर कब्र पर गईं। 2 वहाँ पहुँच कर उन्होंने ने देखा कि कब्र पर का पत्थर एक तरफ लुढ़का हुआ है। 3 लेकिन जब वह कब्र में गई तो वहाँ खुदावन्द इंसा की लाश न पाई। 4 वह अभी उलझन में वहाँ खड़ी थी कि अचानक दो मर्द उन के पास आ खड़े हुए जिन के लिबास बिजली की तरह चमक रहे थे। 5 औरतें खोखो खा कर मुँह के बल झुक गईं, लेकिन उन मर्दों ने कहा, तुम क्यूँ जिन्दा को मर्दी में ढूँढ़ रही हो? 6 वह यहाँ नहीं है, वह तो जी उठा है। वह बात याद करो जो उस ने तुम से उस बक्त कही जब वह गलील में था। 7 “जर्सी है कि इन — ए — आदम को गुमाहगारे के हवाले कर के, मस्लूब किया जाए और कि वह तीसरे दिन जी उठे।” 8 फिर उन्हें यह बात याद आई। 9 और कब्र से वापस आ कर उन्होंने ने यह सब कुछ ग्यारह रसूलों और बाकी शारिर्दों को सुना दिया। 10 मरियम मगादलिनी, यमा, याकूब की माँ मरियम और चन्द एक और औरतें उन में शामिल थी जिन्होंने यह बातें रसूलों को बताई। 11 लेकिन उन को यह बातें बेतकी सी लग रही थी, इस लिए उन्हें यकीन न आया। 12 तो भी पतरस उठा और भाग कर कब्र के पास आया। जब पहुँचा तो झुक कर अन्दर झाँका, लेकिन सिर्फ़ कफ़न ही नज़र आया। यह हालात देख कर वह हैरान हुआ और चला गया। 13 उसी दिन इसा के दो पैरोंकार एक गाँव बनाम इमामास की तरफ चल रहे थे। यह गाँव येस्शलेम से तक्रीबन दस किलोमीटर दूर था। 14 चलते चलते वह आपस में उन वाकियों आता का जिक्र कर रहे थे जो हुए थे। 15 और ऐसा हुआ कि जब वह बातें और एक दूसरे के साथ बहस — ओ — मुबाहसा कर रहे थे तो इसा खुद कीरी आ कर उन के साथ चलने लगा। 16 लेकिन उन की आँखों पर पर्दा ढाला गया था, इस लिए वह उसे पहचान न सके। 17 इंसा ने कहा, “यह कैरी बातें हैं जिन के बारे में तुम चलते चलते तबादला — ए — खयाल कर रहे हो?” यह सुन कर वह गमीन से खड़े हो गए। 18 उन में से एक बनाम किलयुपास ने उस से पूछा, “क्या आप येस्शलेम में वाहिद शख्स हैं जिसे मालूम नहीं कि इन दिनों में क्या कुछ हुआ है?” 19 उस ने कहा, “क्या हुआ है?” उन्होंने जबाब दिया, वह जो इंसा नासीरी के साथ हुआ है। वह नभी था जिसे कलाम और काम में खुदा और तमाम कौमें के सामने जबरदस्त ताक्त हासिल थी। 20 लेकिन हमरे रहनुमा इमामों और सरदारों ने उसे हुक्मरानों के हवाले कर दिया ताकि उसे सजा — ए — मौत दी जाए, और उन्होंने उसे मस्लूब किया। 21 लेकिन हमें तो उमीद थी कि वही इमाईल को नज़ात देगा। इन वाकियों आता को तीन दिन हो गए हैं। 22 लेकिन हम में से कुछ औरतों ने भी हमें हैरान कर दिया है। वह आज सुबह — सर्वेर कब्र पर गई थी। 23 तो देखा कि लाश वहाँ नहीं है। उन्होंने लौट कर हमें बताया कि हम पर फरिश्ते जाहिर हुए जिन्होंने कहा कि इंसा “जिन्दा है। 24 हम में से कुछ कब्र पर गए और उसे वैसा ही पाया जिस तरह उन औरतों ने कहा था। लेकिन उसे खुद उन्होंने नहीं देखा।” 25 फिर इसा ने उन से कहा, “अरे नादानों! तुम कितने नादान हो कि तुम्हें उन तमाम बातों पर यकीन नहीं आया जो नवियों ने फरमाई है। 26 क्या जस्ती नहीं था कि मर्सिंह यह सब कुछ झेल कर अपने जलाल में दाखिल हो जाए?” 27 फिर मूसा और तमाम नवियों से शुरू करके इसा ने कलाम — ए — मुकद्दस की हर बात की तशरीह की जहाँ जहाँ उस का जिक्र है। 28 चलते चलते वह उस गाँव के कीरीब पहुँचे जहाँ उन्हें जाना था। इंसा ने ऐसा किया गया कि वह आगे बढ़ना चाहता है, 29 लेकिन उन्होंने उसे मज्जूर करके कहा, “हमारे पास ठहरें, क्यूँकि शाम होने को है और

दिन ढल गया है।” चुनौंचे वह उन के साथ ठहरने के लिए अन्दर गया। 30 और ऐसा हुआ कि जब वह खाने के लिए बैठ गए तो उस ने रोटी ले कर उस के लिए शुक्गुजारी की दुआ की। फिर उस ने उसे टुकड़े करके उन्हें दिया। 31 अचानक उन की आँखें खुल गईं और उन्होंने उसे वहचान लिया। लेकिन उसी लहरे वह ओझल हो गया। 32 फिर वह एक दूसरे से कहने लगे, “क्या हमारे दिल जोश से न भर गए थे जब वह रास्ते में हम से बातें करते हमें सहीफों का मतलब समझा रहा था?” 33 और वह उसी बक्त उठ कर येस्शलेम वापस चले गए। जब वह वहाँ पहुँचे तो ग्यारह रसूल अपने साथियों समेत पहले से जमा थे 34 और यह कह रहे थे, “खुदावन्द बाक़ ई जी उठा है। वह शमैन पर जाहिर हुआ है।” 35 फिर इमाउस के दो शागिर्दों ने उन्हें बताया कि गाँव की तरफ जाते हुए क्या हुआ था और कि इंसा के रोटी तोड़ते बक्त उन्होंने उसे कैसे पहचाना। 36 वह अभी यह बातें सुना रहे थे कि इंसा खुद उन के दर्मियान आ खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो।” 37 वह घबरा कर बहुत डर गए, क्यूँकि उन का ख्याल था कि कोई भूत — प्रेत देख रहे हैं। 38 उस ने उसे कहा, “तुम क्यूँ परेशान हो गए हो? क्या बजह है कि तुम्हारे दिलों में शक उपर आया है?” 39 मैं हाथों और पैरों को देखो कि मैं मैं ही हूँ। मुझे टटोल कर देखो, क्यूँकि भूत के गोशत और हड्डियों नहीं होती जबकि तुम देख रहे हो कि मेरा जिसम है।” 40 यह कह कर उस ने उन्हें अपने हाथ और पैर दिखाए। 41 जब उन्हें खुशी के मारे यकीन नहीं आ रहा था और ताँज्जब कर रहे थे तो इंसा ने पूछा, “क्या यहाँ तुम्हारे पास कोई खाने की जीज़ है?” 42 उन्होंने उसे भुजी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया 43 उस ने उसे ले कर उन के सामने ही खा लिया। 44 फिर उस ने उन से कहा, “यही है जो मैं ने तुम को उस बक्त बताया था जब तुम्हारे साथ था कि जो कुछ भी मूसा की शरीर अत, नवियों के सहीफों और जबर की किताब में मेरे बारे में लिखा है उसे पूरा होना है।” 45 फिर उस ने उन के जहन को खोल दिया ताकि वह खुदा का कलाम समझ सकें। 46 उस ने उन से कहा, “कलाम — ए — मुकद्दस में दूँ लिखा है, मर्सिंह दुःख उठा कर तीसरे दिन मर्दी में से जी उठेगा। 47 फिर येस्शलेम से शुरू करके उस के नाम में यह फैसाम तमाम कौमों को सुनाया जाएगा कि वह तैबा करके गुनाहों की मुशाफी पाएँ। 48 तस इन बातों के गवाह हो। 49 और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिस का वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुम को अस्मान की ताकत से भर दिया जाएगा। उस बक्त तक शहर से बाहर न निकलना।” 50 फिर वह शहर से निकल कर उन्हें बैत — अनियाह तक ले गया। वहाँ उस ने अपने हाथ उठा कर उन्हें बर्कत दी। 51 और ऐसा हुआ कि बर्कत देते हुए वह उन से जुदा हो कर अस्मान पर उठा लिया गया। 52 उन्होंने उसे सिज्दा किया और फिर बड़ी खुशी से येस्शलेम वापस चले गए। 53 वहाँ वह अपना पूरा बक्त बैत — उल — मुकद्दस में गुज़ार कर खुदा की बडाई करते रहे।

यूहन्ना

1 इन्दिता में कलाम था, और कलाम खुदा के साथ था, और कलाम ही खुदा था। 2 यही शूरू में खुदा के साथ था। 3 सब चीजें उसके वसीले से पैदा हुईं, और जो कुछ पैदा हुआ है उसमें से कई चीज़ भी उसके बाहर पैदा नहीं हुईं। 4 उसमें ज़िन्दगी थी और वो ज़िन्दगी आदमियों का नार थी। 5 और नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उसे कुबूल न किया। 6 एक आदमी युहन्ना नाम आ मौजूद हुआ, जो खुदा की तरफ से भेजा गया था; 7 ये गवाही के लिए अर्था कि नूर की गवाही दे, ताकि सब उसके वसीले से ईमान लाएँ। 8 वो खुद तो नूर न था, मगर नूर की गवाही देने अर्था था। 9 हकीकी नूर जो हर एक आदमी को रौशन करता है, दुनियाँ में आने को था। 10 वो दुनियाँ में था, और दुनियाँ उसके वसीले से पैदा हुईं, और दुनियाँ ने उसे न पहचाना। 11 वो अपने घर आया और और उसके अपनों ने उसे कुबूल न किया। 12 लेकिन जितों ने उसे कुबूल किया, उसने उन्हें खुदा के फर्जन्द बनने का हक बरखा, यानी उन्हें जो उसके नाम पर ईमान लाते हैं। 13 वो न खन से, न जिस्म की खालिश से, न इंसान के इरादे से, बल्कि खुदा से पैदा हुए। 14 और कलाम मुजरिस्म हुआ फजल और सच्चाई से भरकर हमारे दरमियान रहा, और हम ने उसका ऐसा जलाल देखा जैसा बाप के इकलौते का जलाल। 15 युहन्ना ने उसके बारे में गवाही दी, और पुकार कर कहा है, “ये वही है, जिसका मैंने ज़िक्र किया कि जो मेरे बाद आता है, वो मुझ से मुकद्दम ठहरा क्यूंकि वो मुझ से पहले था।” 16 क्यूंकि उसकी भरपूरी में से हम सब ने पाया, यानी फजल पर फजल। 17 इसलिए कि शरीर अत तो मूसा के ज़रिए दी गई, मगर फजल और सच्चाई ईसा मसीह के ज़रिए पहुँची। 18 खुदा को किसी ने कभी नहीं देखा, इकलौता बेटा जो बाप की गोद में है उसी ने जाहिर किया। 19 और युहन्ना की गवाही ये है, कि जब यहदी अगुणे ने येस्थलेम से काहिन और लाली ये पृथने को उसके पास भेजे, “तु कैन है?” 20 तो उन्हें इकरार किया, और इकरार न किया बल्कि, इकरार किया, “मैं तो मसीह नहीं हूँ।” 21 उन्होंने उससे पछा, “फिर त कौन है? क्या त ए लियाह है?” उसने कहा, “मैं नहीं हूँ।” “क्या त वो नहीं है?” उसने जवाब दिया, कि “नहीं।” 22 पस उन्होंने उससे कहा, “फिर त है कौन? ताकि हम अपने भेजने वालों को जवाब दें कि, तू अपने हक में क्या कहता है?” 23 मैं “जैसा यासायाह नवी ने कहा, वीराने में एक पुकारने वाले की आवाज हूँ, ‘तुम खुदा बन्द की राह को सीधा करो।’” 24 ये फरसियों की तरफ से भेजे गए थे। 25 उन्होंने उससे ये सवाल किया, “अगर तू न मसीह है, न एलियाह, न वो नवी, तो फिर बपतिस्मा क्यूं देता है?” 26 युहन्ना ने जवाब में उनसे कहा, “मैं पानी से बपतिस्मा देता हूँ, तुम्हे बीच एक शरब खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते। 27 यानी मैं बाद का आनेवाला, जिसकी जरीना का फीता मैं खोलने के लायक नहीं।” 28 ये बातें यरदन के पार बैठें अन्नियाह में बाके हुईं, जहाँ युहन्ना बपतिस्मा देता था। 29 दूसरे दिन उसने ईसा ‘को अपनी तरफ अते देखकर कहा, “देखो, ये खुदा का बार है जो दुनियाँ का गुनाह उठा ले जाता है।” 30 ये वही है जिसके बारे मैंने कहा था, ‘एक शरब मैं बाद आता है, जो मुझ से मुकद्दम ठहरा है, क्यूंकि वो मुझ से पहले था।’ 31 और मैं तो उसे पहचानता न था, मगर इसलिए पानी से बपतिस्मा देता हुआ आया कि वो ईमाईल पर जाहिर हो जाए।” 32 और युहन्ना ने ये गवाही दी: “मैंने स्थ को कबूतर की तरह आसमान से उतरते देखा है, और वो उस पर ठहर गया। 33 मैं तो उसे पहचानता न था, मगर जिसने मुझे पानी से बपतिस्मा देने को भेजा उसी ने मुझ से कहा, ‘जिस पर त स्थ को उतरते और ठहरते देखे, वही स्थ — उल — कुदूस से बपतिस्मा देनेवाला है। 34 चुनाँचे मैंने देखा, और गवाही दी है कि ये खुदा का बेटा है।” 35 दूसरे दिन फिर युहन्ना और उसके शागिर्दों में से दो शरब खड़े थे, 36 उसने ईसा पर जो जा रहा था निगाह करके कहा, “देखो, ये खुदा का बर्बाद है।” 37 वो दोनों शागिर्द उसको ये कहते सुनकर ईसा के पीछे हो लिए। 38 ईसा ने फिरकर और उन्हें पीछे आते देखकर उनसे कहा, “तुम क्या ढूँढ़ते हो?” उन्होंने उससे कहा, “चलो, देख लोगो।” पस उन्होंने अकर उसके हरने की जगह देखी और उस रोज उसके साथ रहे, और ये चार बजे के करीब था। 40 उन दोनों में से जो युहन्ना की बात सुनकर ईसा के पीछे हो लिए थे, एक शमैन पतरस का भाई अन्दियास था। 41 उसने पहले अपने सभी भाई शमैन से मिलकर उससे कहा, “हम को छिस्तुस, यानी मसीह मिल गया।” 42 वो उसे ईसा के पास लाया ईसा ने उस पर निगाह करके कहा, “तू युहन्ना का बेटा शमैन है; तू कैफ़ा यानी पतरस कहलाएगा।” 43 दूसरे दिन ईसा ने गलील में जाना चाहा, और फिलिप्पस से मिलकर कहा, “मेरे पीछे हो ले।” 44 फिलिप्पस, अन्दियास और पतरस के शहर, बैतैसैदा का रहने वाला था। 45 फिलिप्पस से नतनएल से मिलकर उससे कहा, जिसका ज़िक्र मूला ने तौरेत में और नवियों ने किया है, वो हम को मिल गया; वो यूसुक का बेटा ईसा नामी है।” 46 नतनएल ने उससे कहा, “क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?” फिलिप्पस ने कहा, “चलकर देख ले।” 47 ईसा ने नतनएल को अपनी तरफ आते देखकर उसके हक में कहा, “देखो, ये फिल हकीकत इश्वरी है। इस में मक्क नहीं।” 48 नतनएल ने उससे कहा, “तू मुझे कहाँ से जानता है?” ईसा ने उसके जवाब में कहा, “इससे पहले के फिलिप्पस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के दरखत के नीचे था, मैंने तुझे देखा।” 49 नतनएल ने उसको जवाब दिया, “ऐ रब्बी, तू खुदा का बेटा है! तू बादशाह का बादशाह है!” 50 ईसा ने जवाब में उससे कहा, “मैंने जो तुझ से कहा, ‘तू मुझे कहाँ से जानता है?’” ईसा ने उसके जवाब में कहा, “इससे पहले के फिलिप्पस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के दरखत के नीचे था, मैंने तुझे देखा।” 51 फिर उससे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि आसमान को खुला और खुदा के फरिश्तों को ऊपर जाते और इब्न — ए — आदम पर उतरते देखोगे।”

मुकद्दस से निकाल दिया, उसने भेड़ों और गाय — बैलों को बाहर निकाल कर हाँक दिया, पैरे बदलने वालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मैंजें उलट दीं। 16 और कबूतर फरशों से कहा, “इनको यहाँ से ले जाओ। मेरे आसमानी बाप के घर को तिजारत का घर न बनाओ।” 17 उसके शागिर्दों को याद आया कि लिखा है, तेरे घर की गैरत मुझे खा जाएगी।” 18 पस कुछ यहदी अगुवों ने जबाब में उनसे कहा, “तू जो इन कामों को करता है, हमें कैन सा निशान दिखाता है?” 19 ईसा ने जबाब में उससे कहा, “इस हैकल को ढा दो, तो मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।” 20 यहदी अगुवों ने कहा, छियालीस बरस में ये बना है, और क्या तू उसे तीन दिन में खड़ा कर देगा?” 21 मगर उसने अपने बदन के मार्किस के बारे में कहा था। 22 “पस जब वो मुर्दां में से जी उठा तो उसके शागिर्दों को याद आया कि उसने ये कहा था; और उन्होंने किताब — ए — मुकद्दस और उस कौल का जो ईसा ने कहा था, यकीन किया।” 23 जब वो येस्सलेम में फसह के बबत 'ईमें था, तो बहुत से लोग उन मेजिजों को देखकर जो वो दिखाता था उसके नाम पर ईमान लाए। 24 लेकिन ईसा अपनी निस्खत उस पर ऐतबार न करता था, इसलिए कि वो सबको जानता था। 25 और ईस्की जस्तर न रखता था कि कोई ईसान के हक में गवाही दे, क्यूंकि वो आप जानता था कि ईसान के दिल में क्या क्या है।

3 फरीसियों में से एक शख्स निकुदेमुस नाम यहदियों का एक सरदार था। 2 उसने रात को ईसा के पास आकर उससे कहा, “ऐ रब्बी! हम जाते हैं कि तू खुदा की तरफ से उस्तद होकर आया है, क्यूंकि जो मोजिजे तू दिखाता है कोई शख्स नहीं दिखा सकता, जब तक खुदा उसके साथ न हो।” 3 ईसा ने जबाब में उससे कहा, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि जब तक कोई न एसिरे से पैदा न हो, वो खुदा की बादशाही को देख नहीं सकता।” 4 नीकुदेमुस ने उससे कहा, “आदमी जब बढ़ा हो गया, तो क्यूंकर पैदा हो सकता है? क्या वो दोबारा अपनी माँ के पेट में दाखिल होकर पैदा हो सकता है?” 5 ईसा ने जबाब दिया, “मैं तुझ से सच कहता हूँ, जब तक कोई आदमी पानी और रस्ते से पैदा न हो, वो खुदा की बादशाही में दाखिल नहीं हो सकता।” 6 जो जिसम से पैदा हुआ है जिसम है, और जो रस्ते से पैदा हुआ है रस्त है। 7 तां अज्जबन न कर कि मैंने तुझ से कहा, तुहें नए सिरे से पैदा होना जस्त है। 8 हवा जियर चाहती है चलती है और तू उसकी आवाज सुनता है, मगर नहीं कि वो कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। जो कोई रस्ते से पैदा हुआ ऐसा ही है।” 9 नीकुदेमुस ने जबाब में उससे कहा, “ये बातें क्यूंकर हो सकती हैं?” 10 ईसा ने जबाब में उससे कहा, “बनी — ईसाईंल का उस्तद होकर क्या तू इन बातों को नहीं जानता? 11 मैं तुझ से सच कहता हूँ कि जो हम जानते हैं वो कहते हैं, और जिसे हम ने देखा है उसकी गवाही देते हैं, और तुम हमारी गवाही कुबूल नहीं करते। 12 जब मैंने तुम से ज़मीन की बातें कहाँ और तुम मेरे यकीनी नहीं किया, तो अगर मैं तुम से आसमान की बातें कहाँ तो क्यूंकर यकीनी करोगे? 13 आसमान पर कोई नहीं चढ़ा, सिवा उसके जो आसमान से उत्तरा यानी इन्ह — ए — आदम जो आसमान में है। 14 और जिस तरह मूसा ने पीतल के साँपको वीरने में ऊँचे पर चढ़ाया, उसी तरह जस्त है कि इन — ए — आदम भी ऊँचे पर चढ़ाया जाएं, 15 ताकि जो कोई ईमान लाए उसमें हमेशा की जिन्दगी पाए।” (aiōnios g166)

16 “क्यूंकि खुदा ने दुनियाँ से ऐसी मुहब्बत रखखी कि उसने अपना इकलौता बेटा बख्शा दिया, ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक न हो, बल्कि हमेशा की जिन्दगी पाए। (aiōnios g166) 17 क्यूंकि खुदा ने बेटे को दुनियाँ में इसलिए नहीं भेजा कि दुनियाँ पर सजा का हृक्षम करे, बल्कि इसलिए कि दुनियाँ उसके वसीले से नजात पाए। 18 जो उस पर ईमान लाता है उस पर सजा का हृक्षम नहीं होता, जो उस पर ईमान नहीं लाता उस पर सजा का हृक्षम हो चुका;

इसलिए कि वो खुदा के इकलौते बेटे के नाम पर ईमान नहीं लाया। 19 और सजा के हृक्षम की बजह ये है कि नूर दुनियाँ में आया है, और आदमियों ने तारीकी को नूर से ज्यादा पसन्द किया इसलिए कि उनके काम बुरे थे। 20 क्यूंकि जो कोई बदी करता है वो नूर से दृश्मनी रखता है और नूर के पास नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर मलामत की जाए। 21 मगर जो सचाई पर 'अमल करता है वो नूर के पास आता है, ताकि उसके काम जाहिर हों कि वो खुदा में किए गए हैं।” 22 इन बातों के बाद ईसा और शागिर्द यहदिया के मुल्क में आए, और वो वहाँ उनके साथ रहकर बपतिस्मा देने लगा। 23 और यहन्ना भी 'एनोम में बपतिस्मा देता था जो यरदन नदी के पासथा, क्यूंकि वहाँ पानी बहत था और लोग आकर बपतिस्मा लेते थे। 24 (क्यूंकि यहन्ना उस वक्त तक कैदखाने में डाला न गया था) 25 पस युहना के शागिर्दों की किसी यहदी के साथ पाकीजारी के बारे में बहस हुई। 26 उन्होंने युहना के पास आकर कहा, “ऐ रब्बी! जो शख्स यरदन के पार तो साथ था, जिसकी तुने गवाही दी है; देख, वो बपतिस्मा देता है और सब उसके पास आते हैं।” 27 युहना ने जबाब में कहा, ईसान कुछ नहीं पा सकता, जब तक उसको आसमान से न दिया जाए। 28 तुम खुद मेरे गवाह हो कि मैंने कहा, ‘मैं मरी हनी, मगर उसके आगे भेजा गया हूँ। 29 जिसकी दुहन है वो दुल्हा है, मगर दुल्हा का दोस्त जो खड़ा हुआ उसकी सनत है, दुल्हा की आवाज से बहत खुश होता है; पस मेरी ये खुशी पूरी हो गई। 30 जस्त है कि वो बदे और मैं घटँ। 31 “जो ऊपर से आता है वो सबसे ऊपर है। जो ज़मीन से है है वो ज़मीन ही से है और ज़मीन ही की कहता है 'जो आसमान से आता है वो सबसे ऊपर है। 32 जो कुछ उस ने खुद देखा और सुना है उसी की गवाही देता है। तो भी कोई उस की गवाही कुबूल नहीं करता। 33 जिसने उसकी गवाही कुबूल की उसने इस बात पर मुहर कर दी, कि खुदा सच्चा है। 34 क्यूंकि जिसे खुदा ने भेजा वो खुदा की बातें कहता है, इसलिए कि वो रस्त नाप कर नहीं देता। 35 बाप बेटे से मुहब्बत रखता है और उसने सब चीजें उसके हाथ में दे दी है। 36 जो बेटे पर ईमान लाता है हमेशा की जिन्दगी उसकी है; लेकिन जो बेटे की नहीं मानता 'जिन्दगी को न देखगा बल्कि उसपर खुदा का गजब रहता है।” (aiōnios g166)

4 फिर जब खुदाबन्द को मालूम हुआ, कि फरीसियों ने सुना है कि ईसा युहन्ना से ज्यादा शागिर्द बनाता है और बपतिस्मा देता है, 2 (अगर वे ईसा आप नहीं बल्कि उसके शागिर्द बपतिस्मा देते थे), 3 तो वो यहदिया को छोड़कर फिर गतील को चला गया। 4 और उसको सामरिया से होकर जाना जस्त था। 5 पस वो सामरिया के एक शहर तक आया जो सुखार कहलाता है, वो उस कितै के नजदीक है जो याकूब ने अपने बेटे यूसूफ को दिया था; 6 और याकूब का कुआँ वर्ती था। चुनौती ईसा सफर से थका — मौदा होकर उस कुए पर थूँ ही बैठ गया। ये छठे घटे के करीब था। 7 सामरिया की एक 'औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, “मुझे पानी पिला।” 8 क्यूंकि उसके शागिर्द शहर में खाना खरीदने को गए थे। 9 उस सामरी 'औरत ने उससे कहा, “तू यहदी होकर मुझ सामरी 'औरत से पानी क्यूं मांगता है?” (क्यूंकि यहदी सामरियों से किसी तरह का बर्तीव नहीं रखते।) 10 ईसा ने जबाब में उससे कहा, “अगर तू खुदा की बसिद्धिया को जानती, और ये भी जानती कि वो कौन है जो तुझे से कहता है, 'मुझे पानी पिला, 'तो तू उससे मौग्नी और वो तुझे जिन्दगी का पानी देता।” 11 'औरत ने उससे कहा, “ऐ खुदाबन्द! तेरे पास पानी भरने को तो कुछ है नहीं और कुआँ गहरा है, फिर वो जिन्दगी का पानी तेरे पास कहाँ से आया? 12 क्या तू हमरे बाप याकूब से बड़ा है जिसने हम को ये कुआँ दिया, और खुद उससे और उसके बेटों ने और उसके जानबरों ने उसमें से पिया?” 13 ईसा ने जबाब में उससे कहा, “जो कोई ईस पानी में से पीता है वो

फिर प्यासा होगा, 14 मगर जो कोई उस पानी में से पिएगा जो मैं उसे दूँगा, वो अबद तक प्यासा न होगा! बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा, वो उसमें एक चश्मा बन जाएगा जो हमेशा की जिन्दगी के लिए जारी रहेगा।” (aiōnios g165, aiōnios g166) 15 औरत ने उस से कहा, “ऐ खुदावन्द! वो पानी मुझ को दे ताकि मैं न प्यासी हूँ, न पानी भरने को यहाँ तक आऊँ।” 16 ईसा ने उससे कहा, “जा, अपने शौहर को यहाँ बुला ला।” 17 औरत ने जबाब में उससे कहा, “मैं बे शौहर हूँ।” ईसा ने उससे कहा, “तुमें खबर कहा, मैं बे शौहर हूँ, 18 क्यूँकि तू पॅच शौहर कर चुकी हैं, और जिसके पास तू अब है वो तेरा शौहर नहीं, ये तुमें सच कहा।” 19 औरत ने उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! मुझे मालूम होता है कि तू नवी है। 20 हमारे बाप — दादा ने इस पहाड़ पर इबादत की, और तुम कहते हो कि वो जगह जहाँ पर इबादत करना चाहिए येस्सलेम में है।” 21 ईसा ने उससे कहा, “ऐ बहन, मेरी बात का यकीन कर, कि वो बक्त आता है कि तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करेगे और न येस्सलेम में। 22 तुम जिसे नहीं जानते उसकी इबादत करते हो; और हम जिसे जानते हैं उसकी इबादत करते हैं, क्यूँकि नजात यहुदियों में से है। 23 मगर वो बक्त आता है बल्कि अब ही है, कि सच्चे इबादतघर खुदा बाप की इबादत रुह और सच्चाई से करेंगे, क्यूँकि खुदा बाप अपने लिए ऐसी ही इबादतघर ढूँढता है। 24 खुदा रुह है, और ज़रूर है कि उसके इबादतघर रुह और सच्चाई से इबादत करें।” 25 औरत ने उससे कहा, “मैं जानती हूँ कि मसीह जो खिस्तुस कहलाता है अनें बाला है, जब वो आएगा तो हमें सब बातें बता देगा।” 26 ईसा ने उससे कहा, “मैं जो तुम से बोल रहा हूँ, वही हूँ।” 27 इन्हें में उसके शारिर्द आ गए और ताअ़ ज्जब करने लगे कि वो ‘औरत से बातें कर रहा है, तोभी किसी ने न कहा, “तू क्या चाहता है?” या, “उससे किस लिए बातें करता है।” 28 पस ‘औरत अपना घडा छोड़कर शहर में चली गई और लोगों से कहने लगी, 29 “आओ, एक आदमी को देखो, जिसने मेरे सब काम मुझे बता दिए। क्या मुकिन है कि मसीह यही है?” 30 वो शहर से निकल कर उसके पास आने लगे। 31 इन्हें में उसके शारिर्द उससे ये दरख्वास्त करने लगे, “ऐ रब्बी! कृच्छ खा ले।” 32 लेकिन उसने कहा, “मेरे पास खाने के लिए ऐसा खाना है जिसे तुम नहीं जानते।” 33 पस शारिर्द ने आपस में कहा, “क्या कोई उसके लिए कृच्छ खाने को लाया है?” 34 ईसा ने उससे कहा, “मेरा खाना, ये है, कि अपने भेजनेवाले की मर्जी के मुताबिक़ ‘अमल करूँ और उसका काम पूरा करूँ।’ 35 क्या तुम कहते नहीं, ‘फ़सल के आने में अभी चार महीने बाकी हैं?’ देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर नज़र करो कि फ़सल पक गई है।” 36 और काटनेवाला मजदूरी पाता और हमेशा की जिन्दगी के लिए फल जमा करता है, ताकि बोनेवाला और काटनेवाला दोनों मिलकर खुशी करें। (aiōnios g166) 37 क्यूँकि इस पर ये मिसाल ठीक आती है, ‘बोनेवाला और काटनेवाला और।’ 38 मैंने तुम्हें वो खेत काटने के लिए भेजा जिस पर तुम ने मेहनत नहीं की, औरों ने मेहनत की और तुम उनकी मेहनत के फल में शरीक हुए।” 39 और उस शहर के बहुत से सामरी उस ‘औरत के कहने से, जिसने गवाही दी, उसने मेरे सब काम मुझे बता दिए, उस पर ईमान लाए। 40 पस जब वो सामरी उसके पास आए, तो उससे दरख्वास्त करने लगे कि हमारे पास रह। चुनौती वो दो रोज़ वहाँ रहा। 41 और उसके कलाम के जरिए से और भी बहुत सारे ईमान लाए। 42 और उस औरत से कहा “अब हम तेरे कहने ही से ईमान नहीं लाते क्यूँकि हम ने खुद सभु लिया और जानते हैं कि ये हकीकत में दुनियाँ का मुन्जी है।” 43 फिर उन दो दिनों के बाद वो बहाँ से होकर गतील को गया। 44 क्यूँकि ईसा ने खुद गवाही दी कि नवी अपने वतन में इज्जत नहीं पाता। 45 पस जब वो गतील में आया तो गतीलियों ने उसे कुबूल किया, इसलिए कि जितने काम उसने येस्सलेम में

‘ईद के बक्त किए थे, उन्होंने उनको देखा था क्यूँकि वो भी ‘ईद में गए थे। 46 पस फिर वो काना — ए — गलील में आया, जहाँ उसने पानी को मय बनाया था, और बादशाह का एक मुलाजिम था जिसका बेटा कफरनहम में बीमार था। 47 वो ये सुनकर कि ईसा यहुदिया से गलील में आ गया है, उसके पास गया और उससे दरख्वास्त करने लगा, कि चल कर मेरे बेटे को शिफा बख्श क्यूँकि वो मरने को था। 48 ईसा ने उससे कहा, “जब तक तुम निशान और ‘अजीब काम न देखो, हापिज ईमान न लाओगे।” 49 बादशाह के मुलाजिम ने उससे कहा, “ऐ खुदावन्द! मेरे बच्चे के मरने से पहले चल।” 50 ईसा ने उससे कहा, “जा; तेरा बेटा जिन्दा है।” उस शख्स ने उस बात का यकीन किया जो ईसा ने उससे कही और चला गया। 51 वो रास्ते ही में था कि उसके नौकर उसे मिले और कहने लगे, “तेरा बेटा जिन्दा है।” 52 उसने उनसे पूछा, “उसे किस बक्त से आराम होने लगा था?” उन्होंने कहा, “कल एक बजे उसका बुखार उत्तर गया।” 53 पस बाप जान गया कि वही बक्त था जब ईसा ने उससे कहा, “तेरा बेटा जिन्दा है।” और वो खुद और उसका सारा घराना ईमान लाया। 54 ये दूसरा करिश्मा है जो ईसा ने यहुदिया से गतील में आकर दिखाया।

5 इन बातों के बाद यहुदियों की एक ‘ईद हुई और ईसा येस्सलेम को गया।

2 येस्सलेम में भेड़ दरवाजे के पास एक हौज है जो ‘इब्रानी में बैत हस्ता कहलाता है, और उसके पाँच बरामदेह हैं। 3 इनमें बहुत से बीमार और अन्धे और लंगड़े और कमज़ोर लोग जो पानी के हिलने के इंतजार में पड़े थे। 4 [क्यूँकि बक्त पर खुदावन्द का फरिश्ता हौज पर उत्तर कर पानी हिलाया करता था। पानी हिलते ही जो कोई पहले उत्तरता सो शिफा पाता, उसकी जो कुछ बीमारी क्यूँ न हो।] 5 वहाँ एक शख्स था जो अठरीस बरस से बीमारी में मुब्लिता था। 6 उसको ‘ईसा ने पड़ा देखा और ये जानकर कि वो बड़ी मुद्रत से इस हालत में है, उससे कहा, “क्या तू तन्दस्त होना चाहता है?” 7 उस बीमार ने उसे जबाब दिया, “ऐ खुदावन्द! मेरे पास कोई आदमी नहीं कि जब पानी हिलाया जाए तो मुझे हौज में उतार दे, बल्कि मेरे पहुँचते पहुँचते दूसरा मुझ से पहले उत्तर पड़ता है।” 8 ‘ईसा ने उससे कहा, “उठ, और अपनी चारपाई उठाकर चल फिर।” 9 वो शख्स फैरन तन्दस्त हो गया, और अपनी चारपाई उठाकर चलने फिरने लगा। 10 वो दिन सबत का था। पस यहूदी अगुवे उससे जिसने शिफा पाई थी कहने लगे, “आज सबत का दिन है, तुझे चारपाई उठाना जायज़ नहीं।” 11 उसने उन्हें जबाब दिया, जिसने मुझे तन्दस्त किया, उसी ने मुझे फरमाया, “अपनी चारपाई उठाकर चल फिर।” 12 उन्होंने उससे पूछा, “वो कौन शख्स है जिसने तुझ से कहा, ‘चारपाई उठाकर चल फिर?’” 13 लेकिन जो शिफा पा गया था वो न जानता था कि वो कौन है, क्यूँकि भी दी की बजह से ‘ईसा वहाँ से टल गया था। 14 इन बातों के बाद वो ईसा को हैकल में मिला; उसने उससे कहा, “देख, तू तन्दस्त हो गया है। फिर गुहाह न करना, ऐसा न हो कि तुझपर इससे भी ज्यादा आफत आए।” 15 उस आदमी ने जाकर यहुदियों को खबर दी कि जिसने मुझे तन्दस्त किया वो ईसा है। 16 इसलिए यहुदी ईसा को साताने लगे, क्यूँकि वो ऐसे काम सबत के दिन करता था। 17 लेकिन ईसा ने उनसे कहा, “मेरा आसानी बाप अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूँ।” 18 इस बजह से यहुदी और भी ज्यादा उसे कल्प करने की कोशिश करने लगे, कि वो न फक्त सबत का हक्म तोड़ता, बल्कि खुदा को खास अपना बाप कह अपने अपाको खुदा के बराबर बनाता था। 19 पस ईसा ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच कहता हूँ कि बेटा आप से कुछ नहीं कर सकता, सिवा उसके जो बाप को करते देखता है; क्यूँकि जिन कामों को वो करता है, उन्हें बेटा भी उसी तरह करता है।” 20 इसलिए कि बाप बेटे को ‘अजीज़ रखता है, और जितने काम खुद करता है उसे दिखाता है; बल्कि इनसे

भी बड़े काम उसे दिखाएगा, ताकि तुम ताज्जुब करो। 21 क्यौंकि जिस तरह बाप मुर्दों को उठाता और जिन्दा करता है, उसी तरह बेटा भी जिन्हें चाहता है जिन्दा करता है। 22 क्यौंकि बाप किसी की 'अदालत भी नहीं करता, बल्कि उसने 'अदालत का सारा काम बेटे के सुरुदं परियोग किया है; 23 ताकि सब लोग बेटे की 'इज्जत करें जिस तरह बाप की 'इज्जत करते हैं। जो बेटे की 'इज्जत नहीं करता, वो बाप की जिसने उसे भेजा 'इज्जत नहीं करता। 24 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो मेरा कलाम सुनता और मेरे भेजने वाले का यकीन करता है, हमेशा की जिन्दगी उसकी है और उस पर सजा का हक्म नहीं होता बल्कि वो मौत से निकलकर जिन्दगी में दाखिल हो गया है।" (aiōnios g166) 25 "मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि वो बक्त आता है बल्कि अभी है, कि मुर्दे खुदा के बेटे की आवाज सुनेंगे और जो सुनेंगे वो जिएंगे। 26 क्यौंकि जिस तरह बाप अपने आप में जिन्दगी रखता है, उसी तरह उसने बेटे को भी ये बाज़ा कि अपने आप में जिन्दगी रखते हैं। 27 बल्कि उसे 'अदालत करने का भी इजितियार बरबार, इसलिए कि वो आदमजाद है। 28 इससे तो 'अज्जुब न करो; क्यौंकि वो बक्त आता है कि जितने कब्जों में हैं उसकी आवाज सुनकर निकलेंगे, 29 जिन्होंने नेकी की है जिन्दगी की कथामत, के बासे, और जिन्होंने बदी की है सजा की कथामत के बासे।" 30 "मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हैं 'अदालत करता हूँ और मेरी 'अदालत रास्त है, क्यौंकि मैं अपनी मर्जी नहीं बल्कि अपने भेजने वाले की मर्जी चाहता हूँ। 31 अगर मैं खुद अपनी गवाही दूँ, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं। 32 एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूँ कि मेरी गवाही जो वो देता है सच्ची है। 33 तुम ने युहन्ना के पास पयाम भेजा, और उसने सच्चाई की गवाही दी है। 34 लेकिन मैं अपनी निस्बत इंसान की गवाही मैं खुश रहना मंजूर हुआ। 35 वो जलता और चमकता हुआ चरागा था, और तुम को कुछ 'अर्से तक उसकी रौशनी में खुश रहना मंजूर हुआ। 36 लेकिन मेरे पास जो गवाही है वो युहन्ना की गवाही से बड़ी है, क्यौंकि जो काम बाप ने मुझे ऐसे करने को दिए, यानी यही काम जो मैं करता हूँ, वो मेरे गवाह है कि बाप ने मुझे भेजा है। 37 और बाप जिसने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है। तुम ने न कभी उसकी आवाज सुनी है और न उसकी सूरत देखी; 38 और उस के कलाम को अपने दिलों में काईम नहीं रखते, क्यौंकि जिसे उसने भेजा है उसका यकीन नहीं करते। 39 तुम किताब — ए — मुकद्देस में दूँड़ते हो, क्यौंकि समझते हो कि उसमें हमेशा की जिन्दगी तुहें मिलती है, और ये वो है जो मेरी गवाही देती है; (aiōnios g166) 40 फिर भी तुम जिन्दगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते। 41 मैं आदमियों से 'इज्जत नहीं चाहता। 42 लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुम मैं खुदा की मुहब्बत नहीं। 43 मैं अपने आसमानी बाप के नाम से आया हूँ और तुम मुझे कुबल नहीं करते, अगर कोई और अपने नी नाम से आए तो उसे कुबल कर लोगे। 44 तुम जो एक दूसरे से 'इज्जत चाहते हो और वो 'इज्जत जो खुदा — ए — वाहिद की तरफ से होती है नहीं चाहते, क्यूँकर ईमान ला सकते हो? 45 ये न समझो कि मैं बाप से तुहारी शिकायत करूँगा; तुहारी शिकायत करनेवाला तो है, यानी मूस जिस पर तुम ने उम्मीद लगा रखी है। 46 क्यौंकि अगर तुम मूस का यकीन करते तो मेरा भी यकीन करते, इसलिए कि उसने मेरे हक में लिखा है। 47 लेकिन जब तुम उसके लिखे हुए का यकीन नहीं करते, तो मेरी बात का क्यूँकर यकीन करोगे?"

6 इन बातों के बाद 'ईसा गलील की झील या'नी तिबरियास की झील के

पार गया। 2 और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली क्यौंकि जो मोजिजे वो बीमारों पर करता था उनको वो देखते थे। 3 ईसा पहाड़ पर चढ़ गया और अपने शागिर्दों के साथ वहाँ बैठा। 4 और यहदियों की 'इंद — ए — फसह नज़दीक

थी। 5 पस जब 'ईसा ने अपनी आँखें उठाकर देखा कि मेरे पास बड़ी भीड़ आ रही है, तो फिलिप्पुस से कहा, "हम इनके खाने के लिए कहाँ से रोटियाँ खरीद लें?" 6 मगर उसने उसे आजमाने के लिए ये कहा, क्यौंकि वो आप जानता था कि मैं क्या करूँगा। 7 फिलिप्पुस ने उसे जबाब दिया, "दो सौ दिन मज़दूरी की रोटियाँ इनके लिए काफी न होंगी, कि हर एक को थोड़ी सी मिल जाए।" 8 उसके शागिर्दों में से एक ने, यानी शमान पररस के बाई अन्नियास ने, उससे कहा, 9 "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं, मगर ये इतने लोगों में क्या है?" 10 ईसा ने कहा, "लोगों को बिठाओ।" और उस जगह बहुत धास थी। पस वो मर्द जो तकरीबन पाँच हजार थे बैठ गए। 11 ईसा ने वो रोटियाँ ली और शुक्र करके उहें जो बैठे थे बॉट दी, और इसी तरह मछलियों में से जिस कदर चाहते थे बॉट दिया। 12 जब वो सेर हो चुके तो उसने अपने शागिर्दों से कहा, "बचे हुए वे इस्तेमाल खाने को जमा करो, ताकि कुछ जाया न हो।" 13 चुनाँचे उहोंने जमा किया, और जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से जो खानेवालों से बच रहे थे बारह टोकरियाँ भरी 14 पस जो मोजिजे उसने दिखाया, "वो लोग उसे देखकर कहने लगे, जो नवी दुनियाँ में आने वाला था हकीकत में यही है।" 15 पस ईसा ये मालूम करके कि वो आकर मुझे बादशाह बनाने के लिए पकड़ना चाहते हैं, फिर पहाड़ पर अकेला चला गया। 16 फिर जब शाम हुई तो उसके शागिर्द झील के किनारे गए, 17 और नाव में बैठकर झील के पार कफरनहम को चले जाते थे। उस वक्त अध्येरो हो गया था, और 'ईसा अभी तक उनके पास न आया था। 18 और आँखी की वजह से झील में मौजे उठने लगी। 19 पस जब वो खेते — खेते तीन — चार मील के करीब निकल गए, तो उहोंने 'ईसा को झील पर चलते और नाव के नज़दीक आते देखा और डर गए। 20 मगर उसने उनसे कहा, "मैं हूँ, डरो मत।" 21 पस वो उसे नाव में चढ़ा लेने को राजी हुए, और फैरन वो नाव उस जगह जा पहुँची जहाँ वो जाते थे। 22 दूसरे दिन उस भीड़ ने जो झील के पार खड़ी थी, ये देखा कि यहाँ एक के सिवा और कोई छोटी नाव न थी; और 'ईसा अपने शागिर्दों के साथ नाव पर सवार न हुआ था, बल्कि सिर्फ उसके शागिर्द चले गए थे। 23 (लेकिन कुछ छोटी नावें तिबरियास से उस जगह के नज़दीक आईं, जहाँ उहोंने खुदावन्द के शुक्र करने के बाद रोटी खाई थी।) 24 पस जब भीड़ ने देखा कि यहाँ न 'ईसा है न उसके शागिर्द, तो वो खुद छोटी नावों में बैठकर 'ईसा की तलाश में कफरनहम को आए। 25 और झील के पार उसके मिलकर कहा, "ऐ रब्बी! तू यहाँ कब आया?" 26 ईसा ने उनके जबाब में कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि तुम मुझे इस्तेलिए नहीं ढूँडते कि मोजिजे देखे, बल्कि इस्तेलिए कि तुम रोटियाँ खाकर सेर हए।" 27 फ़ानी खुराक के लिए मेहनत न करो, बल्कि उस खुराक के लिए जो हमेशा की जिन्दगी तक बाकी रहती है जिसे इन — ए — अदाम तुहें देगा; क्यौंकि बाप यानी खुदा ने उसी पर मुहर की है।" (aiōnios g166) 28 पस उहोंने उसके कहा, "हम क्या करें ताकि खुदा के काम अन्जाम दें?" 29 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, "खुदा का काम ये है कि जिसे उसने भेजा है उस पर ईमान लाओ।" 30 पस उहोंने उसके कहा, "फिर तू कौन सा निशान दिखाता है, ताकि हम देखकर तेरा यकीन करें? तू कौन सा काम करता है? 31 हमारे बाप — दादा ने वीराने में मन्ना खाया, चुनाँचे लिखा है, 'उसने उहें खाने के लिए आसमान से रोटी दी।' 32 ईसा ने उसके कहा, "मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि मूसा ने तो वो रोटी आसमान से तुहें न दी, लेकिन मेरा बाप तुहें आसमान से हकीकी रोटी देता है। 33 क्यौंकि खुदा की रोटी वो है जो आसमान से उत्तरकर दुनियाँ को जिन्दगी बखशती है।" 34 उहोंने उसके कहा, ऐ खुदावन्द! ये रोटी हम को हमेशा दिया कर।" 35 ईसा ने उनसे कहा, "जिन्दगी की रोटी मैं हूँ; जो मेरे पास आए वो हरगिज भूखा न

होगा, और जो मुझ पर ईमान लाए वो कभी प्यासा ना होगा। 36 लेकिन मैंने तुम से कहा कि तुम ने मुझे देख लिया है फिर भी ईमान नहीं लाते। 37 जो कुछ बाप मुझे देता है मेरे पास आ जाएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं हरागिज निकाल न दूँगा। 38 क्यूंकि मैं आसमान से इसलिए नहीं उतरा हूँ कि अपनी मर्जी के मुवाफिक 'अमल करूँ। 39 और मेरे भेजनेवाले की मर्जी ये है, कि जो कुछ उसने मुझे दिया है मैं उसमें से कुछ खो न दूँ, बल्कि उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँ। 40 क्यूंकि मेरे बाप की मर्जी ये है, कि जो कोई बेटे को देखे और उस पर ईमान लाए, और हमेशा की जिन्दगी पाए और मैं उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँ।" (aiōnios g166) 41 पस यहदी उस पर बुद्धवाने लगे, इसलिए कि उसने कहा, था, "जो रोटी आसमान से उतरी वो मैं हूँ।" 42 और उहरोंने कहा, क्या ये युसूफ का बेटा 'ईसा नहीं, जिसके बाप और माँ को हम जानते हैं?' अब ये क्यूंकर कहता है कि "मैं आसमान से उतरा हूँ।" 43 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, "आपस में न बुद्धवानों। 44 कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक कि बाप जिसने मुझे भेजा है उसे खीच न ले, और मैं उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँगा। 45 नवियों के सहीको मैं ये लिखा है: 'वो सब खुदा से तालीम पाए हुए लोग होंगे।' जिस किसी ने बाप से सुना और सीखा है वो मेरे पास आता है — 46 ये नहीं कि किसी ने बाप को देखा है, मगर जो खुदा की तरफ से है उसी ने बाप को देखा है। 47 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो ईमान लाता है हमेशा की जिन्दगी उसकी है।" (aiōnios g166) 48 जिन्दगी की रोटी मैं हूँ। 49 तुम्हारे बाप — दादा ने बीराने मैं मन्ना खाया और मर गए। 50 वे वो रोटी है कि जो आसमान से उतरती है, ताकि आदमी उसमें से खाए और न मरे। 51 मैं हूँ वो जिन्दगी की रोटी जो आसमान से उतरी। अगर कोई इस रोटी मैं से खाए तो हमेशा तक जिन्दा रहेगा, बल्कि जो रोटी मैं दुनिया की जिन्दगी के लिए दूँगा वो मेरा गोश्त है।" (aiōn g165) 52 पस यहदी ये कहकर आपस में झगड़ने लगे, "ये शरख़ आपना गोश्त हाँ, क्यूंकर खाने को दे सकता है?" 53 ईसा ने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक तुम इन — ए — आदम का गोश्त न खाओ और उसका का खून न पियो, तुम मैं जिन्दगी नहीं। 54 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है, हमेशा की जिन्दगी उसकी है; और मैं उसे आखिरी दिन फिर जिन्दा करूँगा।" (aiōnios g166) 55 क्यूंकि मेरा गोश्त हकीकित मैं खाने की चीज़ और मेरा खून हकीकित मैं पीनी की चीज़ है। 56 जो मेरा गोश्त खाता और मेरा खून पीता है, वो मुझ मैं काईम रहता है और मैं उसमें। 57 जिस तरह जिन्दा बाप ने मुझे भेजा, और मैं बाप के ज़रिए से जिन्दा हूँ, इसी तरह वो भी जो मुझे खाएगा मैं ज़रिए से जिन्दा रहेगा। 58 जो रोटी आसमान से उतरी यही है, बाप — दादा की तरह नहीं कि खाया और मर गए; जो ये रोटी खाएगा वो हमेशा तक जिन्दा रहेगा।" (aiōn g165) 59 ये बातें उसने कफ़रनहम के एक 'बाबादतखाने में तालीम देते बक्त कहीं। 60 इसलिए उसके शाशिर्दों में से बहुतों ने सुनकर कहा, "ये कलाम नागवार है, इसे कौन सुन सकता है?" 61 ईसा ने अपने जी मैं जानकर कि मेरे शाशिर्द आपस में इस बात पर बुद्धवादते हैं, उनसे कहा, "क्या तुम इस बात से ठोकर खाते हो? 62 अगर तुम इन — ए — आदम को ऊपर जाते देखोगे, जहाँ वो पहले था तो क्या होगा? 63 जिन्दा करने वाली तो स्थ है, जिसमें कुछ फ़ाइदा नहीं; जो बातें मैंने तुम से कहीं हैं, वो स्थ हैं और जिन्दगी भी हैं। 64 मगर तुम मैं से कुछ ऐसे हैं जो ईमान नहीं लाए।" क्यूंकि ईसा शूँ से जानता था कि जो ईमान नहीं लाते वो कौन हैं, और कौन मुझे पकड़वाएगा। 65 फिर उसने कहा, "इसी लिए मैंने तुम से कहा था कि मेरे पास कोई नहीं आ सकता जब तक बाप की तरफ से उसे ये तौफीक न दी जाए।" 66 इस पर उसके शाशिर्दों मैं से बहुत से लोग उल्टे फिर गए और

इसके बाद उसके साथ न रहे। 67 पस ईसा ने उन बारह से कहा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?" 68 शमैन पतरस ने उसे जबाब दिया, "ऐ खुदावन्द! हम किसके पास जाएँ? हमेशा की जिन्दगी की बातें तो तेरे ही पास हैं।" (aiōnios g166) 69 और हम ईमान लाए और जान गए हैं कि, खुदा का कुहूम तू ही है।" 70 ईसा ने उन्हें जबाब दिया, "क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुन लिया? और तुम मैं से एक शाख़ शैतान हैं।" 71 उसने ये शमैन इकरारियों के बेटे यहुदाव की निस्बत कहा, क्यूंकि यहीं जो उन बारह मैं से था उसे पकड़वाने को था।

7 इन बातों के बाद 'ईसा गलील में फिरता रहा क्यूंकि यहदिया में फिरना न चाहता था, इसलिए कि यहदी अगुवे उसके कल्प की कोशिश में थे 2 और यहदियों की 'ईद — ए — खियाम नज़दीक थी। 3 पस उसके भाइयों ने उससे कहा, "यहाँ से खाना होकर यहदिया को चला जा, ताकि जो काम तू करता है उहें तो शाशिर्द भी देखें। 4 क्यूंकि ऐसा कोई नहीं जो मशहूर होना चाहे और छिपकर काम करे। अगर तू ये काम करता है, तो अपने आपको दुनियाँ पर जाहिर कर।" 5 क्यूंकि उसके भाई भी उस पर ईमान न लाए थे। 6 पस ईसा ने उससे कहा, "मेरा तो अभी बक्त नहीं आया, मगर तुम्हारे लिए सब बक्त है।" 7 दुनियाँ तुम से 'दुश्मनी नहीं रख सकती लेकिन मुझ से रखती है, क्यूंकि मैं उस पर गवाही देता हूँ कि उसके काम थेरे हैं। 8 तुम 'ईद में जाओ, मैं अभी इस 'ईद में नहीं जाता, क्यूंकि अभी तक मेरा बक्त पूरा नहीं हुआ।" 9 ये बातें उनसे कहकर दूँगे लगे, "वो कहाँ हैं?" 10 लेकिन जब उसके भाई 'ईद में चले गए उस बक्त वो भी गया, खुले तौर पर नहीं बल्कि पोषीदी। 11 पस यहदी उसे 'ईद में ये कहकर दूँगे लगे, "वो कहाँ हैं?" 12 और लोगों मैं उसके बारे मैं चुपके — चुपके बहुत सी गुफ़ाएँ हूँ, कुछ कहते थे, जो नेक हैं।" 13 और कुछ कहते थे, नहीं बल्कि वो लोगों को गुमराह करता है।" 13 तो भी यहदियों के डर से कोई शब्द उसके बारे मैं साफ़ साफ़ न कहता था। 14 जब 'ईद के आधे दिन गुज़र गए, तो 'ईसा हैकल मैं जाकर तालीम देने लगा। 15 पस यहदियों ने तो 'ज़ुब करके कहा, "इसको बगैर पढ़े क्यूंकर 'ईदम आ गया।" 16 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, "मेरी तालीम मेरी नहीं, बल्कि मैंने भेजने वाले की है।" 17 अगर कोई उसकी मर्जी पर चलना चाहे, तो इस तालीम की बजह से जान जाएगा कि खुदा की तरफ से कहता हूँ। 18 जो अपनी तरफ से कुछ कहता है, वो अपनी 'इज़ज़त चाहता है', लेकिन जो अपने भेजनेवाले की 'इज़ज़त चाहता है, वो सच्चा है और उसमें नाराती नहीं।" 19 क्या मूसा ने तुम्हें शरी'अत नहीं दी? तो भी तुम मैं शरी'अत पर कोई 'अमल नहीं करता। तुम क्यूं मेरे कल्प की कोशिश में हो?" 20 लोगों ने जबाब दिया, "तुझ मैं तो बदस्त है! कौन तेरे कल्प की कोशिश में है?" 21 ईसा ने जबाब मैं उससे कहा, "मैंने एक काम किया, और तुम सब ताल्जुब करते हो।" 22 इस बारे मैं मूसा ने तुम्हें खतने का हूँकम दिया है (हालौकि वो मूसा की तरफ से नहीं), बल्कि बाप — दादा से चला आया है), और तुम सबत के दिन आदमी का खतना करते हो। 23 जब सबत को आदमी का खतना किया जाता है ताकि मूसा की शरी'अत का हूँकम न देटे, तो क्या मूसा से इसलिए नाराज हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी को बिल्कुल तन्दस्त कर दिया? 24 जाहिर के मुवाफिक़ फैसला न करो, बल्कि इन्साफ़ से फैसला करो।" 25 तब कुछ येस्तातेमी कहने लगे, "क्या ये वही नहीं जिसके कल्प की कोशिश हो रही है? 26 लेकिन देखो, ये साफ़ — साफ़ कहता है और वो इससे कुछ नहीं कहते। क्या हो सकता है कि सरदारों से सच जान लिया कि मरीह यही है? 27 इसको तो हम जानते हैं कि कहाँ का है, मगर मरीह जब आएगा तो कोई न जानेगा कि वो कहाँ का है।" 28 पस ईसा ने हैकल मैं तालीम देते बक्त पुकार कर कहा, "तुम मुझे भी जानते हो, और ये भी जानते हो कि मैं कहाँ का हूँ, और मैं आप से नहीं आया, मगर

जिसने मुझे भेजा है वो सच्चा है, उसको तुम नहीं जानते। 29 मैं उसे जानता हूँ, इसलिए कि मैं उसकी तरफ से हूँ और उसी ने मुझे भेजा है।” 30 पस वो उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे, लेकिन इसलिए कि उसका वक्त अपनी न आया था, किसी ने उस पर हाथ न डाला। 31 मगर भीड़ में से बहुत सारे उस पर ईमान लाए, और कहने लगे, “मरीह जब आएगा, तो क्या इनसे ज्यादा मोज़िज़े दिखाएगा?” जो इसने दिखाए। 32 फरीसियों ने लोगों को सुना कि उसके बारे में चुपके — चुपके ये बातें करते हैं, पस सरदार कहिनों और फरीसियों ने उसे पकड़ने को प्यारे भेजे। 33 ईसा ने कहा, “मैं और थोड़े दिनों तक तुम्हरे पास हूँ, फिर अपने भेजेनेवाले के पास चला जाऊँगा। 34 तुम मुझे ढूँढ़ोगे मगर न पाओगे, और जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते।” 35 हमारे यहदियों ने आपस में कहा, ये कहाँ जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या उनके पास जाएगा कि हम इसे न पाएँगे? क्या उनके पास जाएगा जो यन्ननियों में अक्सर रहते हैं, और यन्ननियों को तालीम देगा? 36 ये क्या जात है जो उसने कही, “तुम मुझे तलाश करोगे मगर न पाओगे, ‘और, ‘जहाँ मैं हूँ तुम नहीं आ सकते?’” 37 फिर ईद के आखिरी दिन जो खास दिन है, ईसा खड़ा हुआ और पुकार कर कहा, “अगर कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पिए। 38 जो मुझ पर ईमान लाएगा उसके अन्दर से, जैसा कि किंताब — ए — मुकद्दस में आया है, जिन्दगी के पारी की नदियाँ जारी होंगी।” 39 उसने ये बात उस स्थ के बारे में कही, जिसे वो पाने को थे जो उस पर ईमान लाए; क्यूँकि स्थ अब तक नाजिल न हई थी, इसलिए कि ईसा अभी अपने जलाल को न पहुँचा था। 40 पस भीड़ में से कुछ ने ये बातें सुनकर कहा, “बेशक यहीं वो नहीं है।” 41 औरों ने कहा, ये मरीह है। “और कुछ ने कहा, क्यूँ? क्या मरीह गलील से आएगा? 42 क्या किंताब — ए — मुकद्दस में से नहीं आया, कि मरीह दाऊद की नस्ल और बैतलहम के गाँव से आएगा, जहाँ का दाऊद था?” 43 पस लोगों में उसके बारे में इश्विलाप हुआ। 44 और उनमें से कुछ उसको पकड़ना चाहते थे, मगर किसी ने उस पर हाथ न डाला। 45 पस प्यारे सरदार कहिनों और फरीसियों के पास आए, और उन्होंने उनसे कहा, “तुम उसे क्यूँ न लाए?” 46 प्यारों ने जबाब दिया, “क्या तुम भी गुमराह हो गए? 48 भला इश्विलायां वालों या फरीसियों मैं से भी कोई उस पर ईमान लाया? 49 मगर ये ‘आम लोग जो शरी’ अत से वाकिफ नहीं लाएं नहीं हैं।” 50 नीकुदेसुस ने, जो पहले उसके पास आया था, उनसे कहा, 51 “क्या हमारी शरी’ अत किसी शरव्स को मुजरिम ठहराती है, जब तक पहले उसकी सुनकर जान न ले कि वो क्या करता है?” 52 उन्होंने उसके जबाब में कहा, “क्या तू भी गलील का है? तलाश कर और देख, कि गलील मैं से कोई नहीं नाजिल नहीं होने का।” 53 [फिर उनमें से हर एक अपने घर चला गया।

8 तब ईसा जैतून के पहाड़ पर गया। 2 दूसरे दिन सुबह सर्वे ही वो फिर हैकल में आया, और सब लोग उसके पास आए और वो बैठकर उन्हें तालीम देने लगा। 3 और फकीह और फरीसी एक ‘औरत को लाए जो ज़िना में पकड़ी गई थी, और उसे बीच में खड़ा करके ईसा से कहा, 4 “ऐ उस्ताद! ये ‘औरत किना के ऐन वक्त पकड़ी गई है। 5 तौरें मैं मूसा ने हम को हक्म दिया है, कि ऐसी ‘औरतों पर पथराव करें। पस त इस ‘औरत के बारे में क्या कहता है?’” 6 उन्होंने उसे आजमाने के लिए ये कहा, ताकि उस पर इल्जाम लगाने की कोई बजह निकलते। मगर ईसा इकू कर उंगली से ज़मीन पर लिखने लगा। 7 जब वो उससे सवाल करते ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहा, “जो तुम मैं बेगुनाह हो, वही पहले उसको पथर मारो।” 8 और फिर इकू कर ज़मीन पर उंगली से लिखने लगा। 9 वो ये सनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक — एक करके निकल गए, और ईसा अकेला रह गया और ‘औरत वही बीच में रह गई। 10

ईसा ने सीधे होकर उससे कहा, “ऐ ‘औरत, ये लोग कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर सजा का हक्म नहीं लगाया?” 11 उसने कहा, “ऐ खुदावन्द! किसी ने नहीं।” 12 ईसा ने कहा, “मैं भी तुझ पर सजा का हक्म नहीं लगाता; जा, फिर गुनाह न करना।” 12 ईसा ने फिर उनसे मुखातिब होकर कहा, “दुनियाँ का नर मैं हूँ; जो मेरी पैरवी करेगा वो अन्धेरे में न चलेगा, बल्कि जिन्दगी का नर पाएगा।” 13 फरीसियों ने उससे कहा, “तू अपनी गवाही आप देता है, तेरी गवाही सच्ची नहीं।” 14 ईसा ने जबाब में उनसे कहा, “अगर त्वे मैं अपनी गवाही आप देता हूँ, तो भी मेरी गवाही सच्ची है; क्यूँकि मुझे मातृत्व है कि मैं कहाँ से आता हूँ या कहाँ को जाता हूँ। 15 तुम जिस के मुताबिक फैसला करते हो, मैं किसी का फैसला नहीं करता। 16 और अगर मैं फैसला करूँ भी तो मेरा फैसला सच है, क्यूँकि मैं अकेला नहीं, बल्कि मैं हूँ और मेरा बाप है जिसने मुझे भेजा है। 17 और तुम्हारी तौरें में भी लिखा है, कि दो आदमियों की गवाही मिलकर सच्ची होती है। 18 एक मैं खद अपनी गवाही देता हूँ, और एक बाप जिसने मुझे भेजा मेरी गवाही देता है।” 19 उन्होंने उससे कहा, “तेरा बाप कहाँ है?” 20 ईसा ने जबाब दिया, “न तुम मुझे जानते हो न मेरे बाप को, अगर मुझे जानते तो मेरे बाप को भी जानते।” 20 उसने हैकल में तालीम देते वक्त ये बातें बैत — उल — माल में कहीं; और किसी ने इसको न पकड़ा, क्यूँकि अभी तक उसका वक्त न आया था। 21 उसने फिर उनसे कहा, “मैं जाता हूँ, और तुम मुझे ढूँढ़ोगे और अपने गुनाह में मरोगे।” 22 पस यहदियों ने कहा, क्या वो अपने आपको मार डालेगा, जो कहता है, “जहाँ मैं जाता हूँ, तुम नहीं आ सकते?” 23 उसने उनसे कहा, “तुम नीचे के हो मैं ऊपर का हूँ, तुम दुनियाँ के हो मैं दुनियाँ का नहीं हूँ। 24 इसलिए मैंने तुम से ये कहा, कि अपने गुनाहों में मरोगे; क्यूँकि अगर तुम ईमान न लाओगे कि मैं वही हूँ, तो अपने गुनाहों में मरोगे।” 25 उन्होंने उसे से कहा, तू कौन है? ईसा ने उनसे कहा, “वही हूँ जो शुरू से तुम से कहता आया हूँ। 26 मुझे तुम्हरे बारे में बहुत कुछ कहना है और फैसला करना है; लेकिन जिसने पुझे भेजा वो सच्चा है, और जो मैंने उससे सुना वही दुनियाँ से कहता हूँ।” 27 वो न समझे कि हम से बाप के बारे में कहता है। 28 पस ईसा ने कहा, “जब तुम इन — ए — आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तो जानोगे कि मैं वही हूँ, और अपनी तरफ से कुछ नहीं करता, बल्कि जिस तरह बाप ने मुझे सिखाया उसी तरह ये बातें कहता हूँ। 29 और जिसने मुझे भेजा वो मेर साथ है; उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्यूँकि मैं हमेशा वही काम करता हूँ जो उसे पसन्द आते हैं।” 30 जब ईसा ये बातें कह रहा था तो बहत से लोग उस पर ईमान लाए। 31 पस ईसा ने उन यहदियों से कहा, जिन्होंने उसका यकीन किया था, “अगर तुम कलाम पर काईम रहोगे, तो हकीकत में मेरे शागिर्द ठहरोगे। 32 और सच्चाई को जानोगे और सच्चाई तुम्हें आजाद करेगी।” 33 उन्होंने उसे जबाब दिया, “हम तो अब्राहाम की नस्ल से हैं, और कभी किसी की शुलामी में नहीं रहे। तू कूँकर कहता है कि तुम आजाद किए जाओगे?” 34 ईसा ने उन्हें जबाब दिया, “मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई गुनाह करता है गुनाह का शुलाम है।” 35 और शुलाम हमेशा तक घर में नहीं रहता, बेटा हमेशा रहता है। (aión g165) 36 पस अगर बेटा तुम्हें आजाद करेगा, तो तुम बाक़ी आजाद होगे। 37 मैं जानता हूँ तुम अब्राहाम की नस्ल से हो, तभी मैं उसका कल्प की कोशिश में हो क्यूँकि मेरा कलाम तुम्हरे दिल में जगह नहीं पाता। 38 मैंने जो अपने बाप के यहाँ देखा है वो कहता हूँ, और तुम ने जो अपने बाप से सुना वो करते हो।” 39 उन्होंने जबाब में उससे कहा, हमारा बाप तो अब्राहाम है। ईसा ने उनसे कहा, “अगर तुम अब्राहाम के फर्जन्द होते तो अब्राहाम के से काम करते। 40 लेकिन अब तुम मुझ जैसे शेष को कल्प की कोशिश में हो, जिसने तुम्हें वही हक्क बात बताई जो खुदा से सुनी; अब्राहाम ने तो ये नहीं किया

था। 41 तुम अपने बाप के से काम करते हो।” उन्होंने उससे कहा, “हम हराम से पैदा नहीं हुए। हमारा एक बाप है यानी खुदा।” 42 ईसा ने उनसे कहा, “अगर खुदा तुम्हारा होता, तो तुम मुझ से मुहब्बत रखते; इसलिए कि मैं खुदा में से निकला और आया हूँ, क्यूँकि मैं आप से नहीं आया बल्कि उसी ने मुझे भेजा। 43 तुम मेरी बातें क्यूँ नहीं समझते? इसलिए कि मेरा कलाम सुन नहीं सकते। 44 तुम अपने बाप इल्लीस से हो और अपने बाप की ख्वाहिशों को पूरा करना चाहते हो। वो शूरू ही से ख्वानी है और सच्चाई पर काझ नहीं रहा, क्यूँकि उस में सच्चाई नहीं है। जब वो झट्ठ बोलता है तो अपनी ही सी कहता है, क्यूँकि वो झट्ठा है बल्कि झट्ठा का बाप है। 45 लेकिन मैं जो सच बोलता हूँ, इसी लिए तुम मेरा यकीन नहीं करते। 46 तुम में से कौन मुझ पर गुनाह साबित करता है? अगर मैं सच बोलता हूँ, तो मेरा यकीन क्यूँ नहीं करते? 47 जो खुदा से होता है वो खुदा की बातें सुनता है; तुम इसलिए नहीं सुनते कि खुदा से नहीं हो।” 48 यहदियों ने जबाब में उससे कहा, “क्या हम सच नहीं कहते, कि तु सामरी है और तुझ में बदस्तू है।” 49 ईसा ने जबाब दिया, “मुझ में बदस्तू नहीं, मगर मैं अपने बाप की इज्जत करता हूँ, और तुम मेरी बैंज़ती करते हो। 50 लेकिन मैं अपनी तारीफ नहीं चाहता; हाँ, एक है जो उसे चाहता और फैसला करता है।” 51 मैं तुम से सच कहता हूँ कि अगर कोई ईसान मेरे कलाम पर ‘अमल करेगा, तो हमेशा तक कभी मौत को न देखेगा।’ (aiōn g165) 52 यहदियों ने उससे कहा, “अब हम ने जान लिया कि तुझ में बदस्तू है। अब्राहाम मर गया और नवी मर गए, मगर तू कहता है, ‘अगर कोई मेरे कलाम पर ‘अमल करेगा, तो हमेशा तक कभी मौत का मज्जा न चखेगा।’ (aiōn g165) 53 हमारे बुजुर्ग अब्राहाम जो मर गए, क्या तू उससे बड़ा है? और नवी भी मर गए। तू अपने आपको क्या ठहराता है?” 54 ईसा ने जबाब दिया, “अगर मैं आप अपनी बडाई कहूँ, तो मेरी बडाई कुछ नहीं, लेकिन मेरी बडाई मेरा बाप करता है, जिसे तुम कहते हो कि हमारा खुदा है।” 55 तुम ने उसे नहीं जाना, लेकिन मैं उसे जानता हूँ; और अगर कहूँ कि उसे नहीं जानता, तो तुम्हारी तरह झट्ठा बनँगा। मगर मैं उसे जानता और उसके कलाम पर ‘अमल करता हूँ।’ 56 तुम्हारा बाप अब्राहाम मेरा दिन देखने की उम्मीद पर बहुत खुश था, चुरौंचे उसने देखा और खुश हुआ।” 57 यहदियों ने उससे कहा, “तेरी उम्र तो अभी पचास बरस की नहीं, फिर क्या तूने अब्राहाम को देखा है?” 58 ईसा ने उससे कहा, “मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि पहले उससे कि अब्राहाम पैदा हुआ मैं हूँ।” 59 पस उन्होंने उसे मारने को पत्थर उठाए, मगर ईसा छिपकर हैकल से निकल गया।

9 चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइशी अंधा था। 2 उस के शारीर्दों ने उस से पूछा, “उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यूँ पैदा हुआ? क्या इस का कोई गुनाह है या इस के वालिदैन का?” 3 ईसा ने जबाब दिया, “न इस का कोई गुनाह है और न इस के वालिदैन का। यह इस लिए हुआ कि इस की जिन्दगी में खुदा का काम जाहिर हो जाए।” 4 अभी दिन है कि हम जितनी देर तक दिन है उस का काम करते रहें जिस ने मुझे भेजा है। क्यूँकि रात आने वाली है, उस बक्त कोई काम नहीं कर सकेगा। 5 लेकिन जितनी देर तक मैं दुनियाँ मैं हूँ उतनी देर तक मैं दुनियाँ का ना हूँ।” 6 यह कह कर उस ने जर्मीन पर थक कर मिट्टी सानी और उस की आँखों पर लगा दी। 7 उस ने उस से कहा, “जा, शिलोख के हौज में नहा ले।” (शिलोख का मतलब ‘भेजा हुआ’ है।) अंधे ने जा कर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था। 8 उस के साथी और वह जिन्होंने पहले उसे भीख माँगते देखा था पूछने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँग करता था?” 9 बाज ने कहा, “हाँ, वही है।” औरों ने इन्कार किया, “नहीं, यह सिर्फ उस का हमशक्त है।” 10 लेकिन आदमी ने खुद ईसार किया, “मैं वही हूँ।” 10 उन्होंने उस से सवाल

किया, “तेरी आँखें किस तरह सही हुईं?” 11 उस ने जबाब दिया, “वह आदमी जो ईसा कहलाता है उस ने मिट्टी सान कर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उस ने मुझे कहा, ‘शिलोख के हौज पर जा और नहाते।’ मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें सही हो गईं।” 12 उन्होंने पूछा, वह कहाँ है? उसने कहा, मैं नहीं जानता।” 13 तब वह सही हुए अंधे को फरीसियों के पास ले गए। 14 जिस दिन ईसा ने मिट्टी सान कर उस की आँखों को सही किया था वह सबत का दिन था। 15 इस लिए फरीसियों ने भी उस से पूछ — ताथ की कि उसे किस तरह आँख की रौशनी मिल गई। आदमी ने जबाब दिया, “उस ने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैं ने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।” 16 फरीसियों में से कुछ ने कहा, “यह शब्द खुदा की तरफ से नहीं है, क्यूँकि सबत के दिन काम करता है।” 17 फिर वह दुबारा उस आदमी से मुखातिब हुए जो पहले अंधा था, “तू खुद उस के बारे में क्या कहता है? उस ने तो तेरी ही आँखों को सही किया है।” 18 यहदी अगुजों को यकीन नहीं आ रहा था कि वह सच में अंधा था और फिर सही हो गया है। इस लिए उन्होंने उस के वालिदैन को बुलाया। 19 उन्होंने उन से पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिस के बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है यह कि किस ने इस की आँखों को सही किया है। इस से खुद पता करें, यह बालिग है। यह खुद अपने बारे में बता सकता है।” 20 उस के वालिदैन ने जबाब दिया, “हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते बक्त अंधा था।” 21 लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है यह कि किस ने इस की आँखों को सही किया है। इस से खुद पता करें, यह बालिग है। यह खुद अपने बारे में बता सकता है।” 22 उस के वालिदैन ने यह इस लिए कहा कि वह यहदियों से डरते थे। क्यूँकि वह फैसला कर चुके थे कि जो भी ईसा को मरीही करार दे उसे यहदी जमाअत से निकाल दिया जाए। 23 यही वजह थी कि उस के वालिदैन ने कहा था, “यह बालिग है, इस से खुद पूछ लें।” 24 एक बार फिर उन्होंने ने सही हूँ अंधे को बुलाया, “खुदा को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।” 25 आदमी ने जबाब दिया, “पूँजी क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ।” 26 फिर उन्होंने उस से सवाल किया, उस ने तेरे साथ क्या किया? “उस ने किस तरह तेरी आँखों को सही कर दिया?” 27 उस ने जबाब दिया, “मैं पहले भी आप को बता चुका हूँ और आप ने सुना नहीं। क्या आप भी उस के शारीर्द करना चाहते हैं?” 28 इस पर उन्होंने उसे बुग — भला कहा, “तू ही उस का शारीर्द है, हम तो मूसा के शारीर्द हैं।” 29 हम तो जानते हैं कि खुदा ने मूसा से बात की है, लेकिन इस के बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।” 30 आदमी ने जबाब दिया, “अजीब बात है, उस ने मेरी आँखों को शिफा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है।” 31 हम जानते हैं कि खुदा गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उस की सुनता है जो उस का खूफ मानता और उस की मर्जी के मुताबिक चलता है। 32 शूरू ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को सही कर दिया हो। (aiōn g165) 33 अगर यह आदमी खुदा की तरफ से न होता तो कुछ न कर सकता।” 34 जबाब में उन्होंने उसे बताया, “तू जो गुनाह की हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?” यह कह कर उन्होंने उसे जमाअत में से निकाल दिया। 35 जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उस को मिला और पूछा, “क्या तू इन — ए — आदम पर ईमान रखता है?” 36 उस ने कहा, “खुदावन्द, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।” 37 ईसा ने जबाब दिया, “तू ने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझ से बात कर रहा है।” 38 उस ने कहा, “खुदावन्द, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे सज्जा किया। 39 ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस दुनियाँ में आया

हैं, इस लिए कि अंधे देखें और देखने वाले अंधे हो जाएँ।” 40 कुछ फरीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुन कर पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?” 41 ईसा ने उन से कहा, “अगर तुम अंधे होते हो तो तुम गुनाहगार न ठहरते। लेकिन अब चौंकि तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इस लिए तुम्हारा गुनाह काइम रहता है।”

10

“मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो दरवाजे से भेड़ों के बाड़े में दाखिल हैं। नहीं होता बल्कि किसी ओर से कूद कर अन्दर घुस आता है वह चोर और डाकू है। 2 लेकिन जो दरवाजे से दाखिल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है। 3 चौंकीदार उस के लिए दरवाजा खोल देता है और भेड़े उस की आवाज सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम ले कर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। 4 अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उन के आगे आगे चलने लगता है और भेड़े उस के पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्यौंकि वह उस की आवाज पहचानती है। 5 लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेगी बल्कि उस से भाग जाएँगी, क्यौंकि वह उस की आवाज नहीं पहचानती।” 6 ईसा ने उन्हें यह मिसाल पेश की, लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें बया बताना चाहता है। 7 इस लिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाजा मैं हूँ। 8 जितने भी मुझ से पहले आए वह चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उन की न सुनी। 9 मैं ही दरवाजा हूँ। जो भी मेरे जरिए अन्दर आए उसे नजारा मिलेगा। वह आता जाता और हरी चरागाहे पाता रहेगा। 10 चोर तो सिर्फ़ चोरी करने, जबह करने और तबाह करने आता है। लेकिन मैं इस लिए आया हूँ कि वह जिन्दगी पाएँ, बल्कि कमत की जिन्दगी पाएँ। 11 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। 12 मजदूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्यौंकि भेड़े उस की अपनी नहीं होती। इस लिए जूँ ही कोई भेड़िया आता है तो मजदूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़ कर भाग जाता है। नरीजी में भेड़िया कुछ भेड़े पकड़ लेता और बाकियों को इधर उधर कर देता है। 13 वजह यह है कि वह मजदूर ही है और भेड़ों की फिक नहीं करता। 14 अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे जानती है, 15 बिल्कुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। 16 मेरी और भी भेड़े हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। जर्सी है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज सुनेगी। फिर एक ही गलता और एक ही गलताबान होगा। 17 मेरा बाप मुझे इस लिए मुहब्बत करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ। 18 कोई मेरी जान मुझ से छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मर्जी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इच्छियाह है और उसे बापस लेने का भी। यह हक्म मुझे अपने बाप की तरफ से मिला है।” 19 इन बातों पर यहदियों में दुबारा फूट पड़ गई। 20 बहुतों ने कहा, “यह बदस्तू के कब्जे में है, यह दीवाना है। इस की क्यूँ सूनें?” 21 लेकिन औरों ने कहा, “यह ऐसी बातें नहीं हैं जो इंसान बदस्तू के कब्जे में हो। क्या बदस्तू अँधों की आँखें सही कर सकती हैं?” 22 सर्दियों का मौसम था और ईसा बैत — उल — मुकद्दस की खास ईद तजीद के दौरान येस्शलेम में था। 23 वह बैत — उल — मुकद्दस के उस बरामदहे में टहेल रहा था जिस का नाम सलैमान का बरामदह था। 24 यहदी उसे घेर कर कहने लगे, आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? “अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।” 25 ईसा ने जबाब दिया, “मैं तुम को बता चुका हूँ, लेकिन तुम को यकीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह है। 26 लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्यौंकि तुम मेरी भेड़े नहीं हो। 27 मेरी भेड़े मेरी आवाज सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। 28 मैं उन्हें हमेशा की जिन्दगी देता हूँ, इस लिए

वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, (aiōn g165, aiōnios g166) 29 क्यौंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सपुद्र किया है और वही सब से बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। 30 मैं और बाप एक हैं। 31 यह सुन कर यहदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा पर पथराव करें। 32 उस ने उन से कहा, “मैं ने तुम्हें बाप की तरफ से कई खुदाई करिये दिखाए हैं। तुम मुझे इन में से किस करिये की बजह से पथराव कर रहे हो?” 33 यहदियों ने जबाब दिया, “हम तुम पर किसी अच्छे काम की बजह से पथराव नहीं कर रहे बल्कि कुछ बकने की बजह से। तुम जो सिर्फ़ ईसान हो खुदा होने का दावा करते हो।” 34 ईसा ने कहा, “क्या यह तुम्हारी शरीरी अत मैं नहीं लिखा है कि ‘खुदा ने फरमाया, तुम खुदा हो?’ 35 उन्हें ‘खुदा’ कहा गया जिन तक यह पैगाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलाम — ए — मुकद्दस को रद्द नहीं किया जा सकता। 36 तो फिर तुम कुछ बकने की बात क्यूँ करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं खुदा का फर्जन्द हूँ? आखिर बाप ने खुद मुझे खास करके दुनियाँ में भेजा है। 37 अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। 38 लेकिन आग उस के काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम से कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझे मैं हूँ और मैं बाप मैं हूँ।” 39 एक बार फिर उन्होंने पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह उन के हाथ से निकल गया। 40 फिर ईसा दुबारा दरिया — ए — यर्दन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहना शूरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। 41 बहुत से लोग उस के पास आते रहे। उन्होंने कहा, “युहन्ना ने कभी कोई खुदाई करिया न दिखाया, लेकिन जो कुछ उसे ने इस के बारे में बयान किया, वह बिल्कुल सही निकला।” 42 और वहाँ बहुत से लोग ईसा पर ईमान लाए।

11 उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिस का नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत — अनियाह में रहता था। 2 यह वही मरियम थी जिस ने बाद में खुदावन्द पर खुद्दू डाल कर उस के पैर अपने बालों से खुश किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। 3 चुनौते बहनों ने ईसा को खबर दी, “खुदावन्द, जिसे आप मुहब्बत करते हैं वह बीमार है।” 4 जब ईसा को यह खबर मिली तो उस ने कहा, “इस बीमारी का अन्जाम मौत नहीं है, बल्कि यह खुदा के जलाल के बास्ते हुआ है, ताकि इस से खुदा के फर्जन्द को जलाल मिले।” 5 ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। 6 तो भी वह लाज़र के बारे में खबर मिलने के बाद दो दिन और वही ठहरा। 7 फिर उस ने अपने शारिर्दों से बात की, “आओ, हम दुबारा यहदिया चले जाएँ।” 8 शारिर्दों ने एतराज किया, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहदी आप पर पथराव करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप बापस जाना चाहते हैं?” 9 ईसा ने जबाब दिया, “क्या दिन में रोशनी के बाराह घटे नहीं होते? जो शब्द दिन के बक्त चलता फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्यौंकि वह इस दुनियों की रोशनी के जरिए देख सकता है। 10 लेकिन जो रात के बक्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्यौंकि उस के पास रोशनी नहीं है।” 11 फिर उस ने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जा कर उसे जगा दूँगा।” 12 शारिर्दों ने कहा, “खुदावन्द, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।” 13 उन का खयाल था कि ईसा लाज़र की दुनियाँ नीद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हकीकत में वह उस की मौत की तरफ इशारा कर रहा था। 14 इस लिए उस ने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र की मौत हो गई है 15 और तुम्हारी खातिर मैं खुश हूँ कि मैं उस के मरते बक्त वहाँ नहीं था, क्यौंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उस के पास जाएँ।” 16 तोमा ने जिस का लकड़ जुड़वा था अपने साथी शारिर्दों से कहा, “चलो, हम

भी वहाँ जा कर उस के साथ मर जाएँ।” 17 वहाँ पहुँच कर ईसा को मालूम हुआ कि लाजर को कब्जा में रखे चार दिन हो गए हैं। 18 बैत — अनियाह का येस्सलेम से फासिला तीन किलोमीटर से कम था, 19 और बहुत से यहदी मर्था और मरियम को उन के भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे। 20 यह सन कर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। 21 मर्था ने कहा, “खुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। 22 लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी खुदा आप को जो भी माँगोगे देगा।” 23 ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।” 24 मर्था ने जवाब दिया, जी, “मुझे मालूम है कि वह कथामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।” 25 ईसा ने उसे बताया, “कथामत और जिन्दगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह जिन्दा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए।” 26 और जो जिन्दा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यकीन है?” (aiōn g165) 27 मर्था ने जवाब दिया, “जी खुदावन्द, मैं ईमान रखती हूँ कि आप खुदा के फर्जन्द मसीह हैं, जिसे दुनियाँ में आना था।” 28 यह कह कर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।” 29 यह सनते ही मरियम उठ कर ईसा के पास गई। 30 वह अभी गौव के बाहर उसी जगह ठहरा था जहाँ उस की मुलाकात मर्था से हुई थी। 31 जो यहदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह जल्दी से उठ कर निकल गई है तो वह उस के पांछे हो लिए। क्यूँकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई की कब्र पर जा रही है। 32 मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उस के पैरों में गिर गई और कहने लगी, “खुदावन्द, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।” 33 जब ईसा ने मरियम और उस के लोगों को रोते देखा तो उसे दुःख हुआ। और उसने ताओंजुब होकर 34 उस ने पछा, “तुम ने उसे कहाँ रखा है?” उन्होंने ने जवाब दिया, “आऐ खुदावन्द, और देख लें।” 35 ईसा “रो पड़ा। 36 यहदियों ने कहा, देखो, वह उसे कितना प्यारा था।” 37 लेकिन उन में से कुछ ने कहा, इस आदमी ने अंधे को सही किया। “क्या यह लाजर को मरने से नहीं बचा सकता था?” 38 फिर ईसा दुबारा बहुत ही मायूस हो कर कब्र पर आया। कब्र एक गार थी जिस के मूँह पर पथर रखा गया था। 39 ईसा ने कहा, “पथर को हटा दो।” लेकिन मर्म की बहन मर्था ने एतराज किया, “खुदावन्द, बदबू आएगी, क्यूँकि उसे वहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।” 40 ईसा ने उस से कहा, “क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो खुदा का जलाल देखोगी?” 41 चुनावें उन्होंने पथर को हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नजर उठा कर कहा, “ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तू ने मेरी सुन ली है।” 42 मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैं ने यह बात पास खड़े लोगों की खातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तू ने मुझे भेजा है।” 43 फिर ईसा जोर से पुकार उठा, “लाजर, निकल आ।” 44 और मुर्दा निकल आया। अभी तक उस के हाथ और पाँओं पट्टियों से बैंधे हुए थे जबकि उस का चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उन से कहा, “इस के कफ़न को खोल कर इसे जाने दो।” 45 उन यहदियों में से जो मरियम के पास आए थे बहुत से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने वह देखा जो उस ने किया। 46 लेकिन कुछ फरीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। 47 तब राहनुमा इमामों और फरीसियों ने यहदियों ने सदरे अदालत का जलसा बुलाया। उन्होंने एक दूसरे से पछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत से खुदाई करिश्मे दिया रहा है।” 48 अगर हम उसे यूँही छोड़ते तो आखिरकार सब उस पर ईमान ले आएँ। फिर रोमी हाकिम आ कर हमारे बैत — उल — मुकद्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।” 49 उन में से एक काइका था जो उस साल

इमाम — ए — आजम था। उस ने कहा, “आप कुछ नहीं समझते 50 और इस का खयाल भी नहीं करते कि इस से पहले कि पूरी कौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” 51 उस ने यह बात अपनी तरफ से नहीं की थी। उस साल के इमाम — ए — आजम की हैसियत से ही उस ने यह पेरीनोर्ड की कि ईसा यहदी कौम के लिए मरेगा। 52 और न सिर्फ इस के लिए बल्कि खुदा के खिले हुए फर्जन्दों को जमा करके एक करने के लिए भी। 53 उस दिन से उन्होंने ईसा को कल्पना करने का इरादा कर लिया। 54 इस लिए उस ने अब से एलानिया यहदियों के दरमियान वक्त न गुजारा, बल्कि उस जगह को छोड़ कर रेगिस्टरन के करीब एक इलाके में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इकाईम में रहने लगा। 55 फिर यहदियों की ईद — ए — फसह करीब आ गई। देहात से बहुत से लोग अपने आप को पाक करवाने के लिए ईद से पहले पहले येस्सलेम पहुँचे। 56 वहाँ वह ईसा का पता करते और हैकल में खड़े आपस में बात करते रहे, “क्या खयाल है? क्या वह ईद पर नहीं आएगा?” 57 लेकिन राहनुमा इमामों और फरीसियों ने हक्म दिया था, अगर किसी को मालूम हो जाए कि ईसा कहाँ है तो वह खबर दे ताकि हम उसे गिरफ्तार कर लें।

12 फसह की ईद में अभी छः दिन बाकी थे कि ईसा बैत — अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाजर का घर था जिसे ईसा ने मुर्दों में से जिन्दा किया था। 2 वहाँ उस के लिए एक खास खाना बनाया गया। मर्था खाने वालों की खिदमत कर रही थी जबकि लाजर ईसा और बाकी मेहमानों के साथ खाने में शारीक था। 3 फिर मरियम ने आधा लीटर खालिस जटामासी का बेशकीमीता इत्र ले कर ईसा के पैरों पर डाल दिया और उन्हें अपने बालों से पौछ कर खुश किया। खुब्ख पूरे घर में फैल गई। 4 लेकिन ईसा के शागिर्द यहदाह इस्करियोती ने एतराज किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया) उस ने कहा, 5 “इस इत्र की कीमत लगभग एक साल की मजदूरी के बराबर थी। इसे क्यूँ नहीं बेचा गया ताकि इस के पैरों गरीबों को दिए जाते?” 6 उस ने यह बात इस लिए नहीं की कि उसे गरीबों की फ़िक्र थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का खजांची था और जमाशुदा पैसों में से ले लिया करता था। 7 लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दो। उस ने मेरी दामाने की तयारी के लिए यह किया है। 8 गरीब तो हमेशा तम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तम्हारे पास नहीं रहूँगा।” 9 इतने में यहदियों की बड़ी तहदाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि लाजर से भी जिसे उस ने मुर्दों में से जिन्दा किया था। 10 इस लिए राहनुमा इमामों ने लाजर को भी कल्पना करने का इरादा बनाया। 11 क्यूँकि उस की बजह से बहुत से यहदी उन में से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे। 12 अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पापा चला कि ईसा येस्सलेम आ रहा है। एक बड़ा मजमा 13 खजूर की डालियाँ पकड़े शहर से निकल कर उस से मिलने आया। चलते चलते वह चिल्ला कर नहरे लगा रहे थे, “होशाना! मुबारक है वह जो रब्ब के नाम से आता है। इसाईंल का बादशाह मुबारक है।” 14 ईसा को कही से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलाम — ए — मुकद्दस में लिखा है, 15 “ऐ सिय्यून की बेटी, मत डर! देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।” 16 उस बन्नत उस के शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उस के साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलाम — ए — सुकदस में इस का जिक्र थी है। 17 जो मजमा उस बन्नत ईसा के साथ था जब उस ने लाजर को मुर्दों में से जिन्दा किया था, वह दूसरों को इस के बारे में बताता रहा था। 18 इसी बजह से इन्हें लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे,

उन्होंने उस के इस खुदाई करिश्मे के बारे में सुना था। 19 यह देख कर फरीसी आपस में कहने लगे, “आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनियाँ उस के पीछे हो ली हैं।” 20 कुछ यूनानी भी उन में थे जो फसह की ईद के मौके पर इबादत करने के लिए आए हुए थे। 21 अब वह फिलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत — सैदा से था। उन्होंने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।” 22 फिलिप्पुस ने अन्द्रियास को यह बात बताई और फिर वह मिल कर ईसा के पास गए और उसे यह खबर पहुँचाई। 23 लेकिन ईसा ने जबाब दिया, “अब बक्त आ गया है कि इब्न — ए — अदाम को जलाल मिले। 24 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जब तक गन्तुम का दाना जमीन में गिर कर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत सा फल लाता है। 25 जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनियाँ में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे हमेशा तक बचाए रखेगा। (aiōnios g166) 26 अगर कोई मेरी खिदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्यूंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा खादिम भी होगा। और जो मेरी खिदमत करे मेरा बाप उस की इज्जत करेगा। 27 “अब मेरा दिल घबराता है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, ‘ऐ बाप, मुझे इस बक्त से बचाए रख?’ नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। 28 ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।” एस आसमान से आवाज आई कि मैंने उस को जलाल दिया है और भी दौँगा 29 मजमा के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने ने यह सुन कर कहा, बादल गरज रहे हैं। और उने खयाल पेश किया, “कोई फरिश्ते ने उस से बातें की।” 30 ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। 31 अब दुनियाँ की अदालत करने का बक्त आ गया है, अब दुनियाँ पे हुक्मत करने वालों को निकाल दिया जाएगा। 32 और मैं खुद जमीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सब को अपने पास लूटा लूँगा।” 33 इन बातों से उस ने इस तरफ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा। 34 मजमा बोल उठा, कलाम — ए — मुकद्दस से हम ने सुना है कि मरीह हमेशा तक काईम रहेगा। तो फिर आप की यह कैसी बात है कि “इब्न — ए — अदाम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है?” आखिर इब्न — ए — अदाम है कौन? (aiōn g165) 35 ईसा ने जबाब दिया, “रोशनी थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगी। जितनी देर वह मौजूद है इस रोशनी में चलते रहो ताकि अँधेरा तम पर छा न जाए। जो अँधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। 36 रोशनी तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम खुदा के फर्जन्द बन जाओ।” 37 अगर वह ईसा ने यह तमाम खुदाई करिश्मे उन के सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए। 38 ये यसायाह नबी की पेशेंगी पूरी ही, “ऐ रब्ब, कौन हमारे पैराम पर ईमान लाया? और रब्ब की कुद्रत किस पर जाहिर ही?” 39 चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने कही और फरमाया है, 40 “खुदा ने उन की अँधों को अंधा किया और उन के दिल को बेहिस्स कर दिया है, नहीं तो वो अपनी आँखों से देखेंगे और अपने दिल से समझेंगे, और मेरी तरफ रुक़ करें, और मैं उन्हें शिफादूं।” 41 यसायाह ने यह इस लिए फरमाया क्योंकि उस ने ईसा का जलाल देख कर उस के बारे में बात की। 42 तो भी बहुत से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उन में कुछ राहनुभा भी शामिल थे। लेकिन वह इस का खुला इकरार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे कि फरीसी हमें यहदी जमाअत से निकाल देंगे। 43 असल में वह खुदा की इज्जत के बजाए ईसान की इज्जत को ज्यादा अजीजी रखते थे। 44 फिर ईसा पुकार उठा, “जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिस ने मुझे भेजा है। 45 और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिस ने मुझे भेजा है। 46 मैं रोशनी की तरह से इस दुनियाँ में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह अँधेरे में न रहे। 47

जो मेरी बातें सुन कर उन पर अमल नहीं करता मैं उसका इन्साफ नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनियाँ का इन्साफ करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे जनात देने के लिए। 48 तो भी एक है जो उस का इन्साफ करता है। जो मुझे रुक करके मेरी बातें कुबूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही कथामत के दिन उस का इन्साफ करेगा। 49 क्यूंकि जो कुछ मैं ने बयान किया है वह मेरी तरफ से नहीं है मेरे भेजने वाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनना है। 50 और मैं जानता हूँ कि उस का हुक्म हमेशा की ज़िन्दगी तक पहुँचता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही है जो बाप ने मुझे बताया है।” (aiōnios g166)

13 फसह की ईद अब शुरू होने वाली थी। ईसा जानता था कि वह बक्त आ

गया है कि मुझे इस दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास जाना है। अगर वे उस ने हमेशा दुनियाँ में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उस ने आखिरी हद तक उन पर अपनी मुहब्बत का इजहार किया। 2 फिर शाम का खाना तयार हुआ। उस बक्त इब्लीस शमैन इकरियोती के बेटे यहदाह के दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल चका था। 3 ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मैं हवाले कर दिया है और कि मैं खुदा से निकल आया और अब उस के पास वापस जा रहा हूँ। 4 चुनाँचे उस ने दस्तरख्बान से उठ कर अपना चोगा उतार दिया और कमर पर तैलिया बौंध लिया। 5 फिर वह बासन में पानी डाल कर शारीर्दों के पैर धोने और बैधे हुए तैलिया से पोंछ कर खुश करने लगा। 6 जब पतरस की बारी आई तो उस ने कहा, “खुदावन्द, आप मेरे पैर धोना चाहते हैं?” 7 ईसा ने जबाब दिया, “इस बक्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ जाएगा।” 8 पतरस ने एतरजाक किया, “मैं कभी भी आप को मैं पैर पैर धोने नहीं दूँगा।” ईसा ने जबाब दिया “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरी कोई शराकत नहीं।” (aiōn g165) 9 यह सुन कर पतरस ने कहा, “तो फिर खुदावन्द, न सिर्फ मेरे पैर बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ।” 10 ईसा ने जबाब दिया, “जिस शब्द से नहा लिया है उसे सिर्फ अपने पैरों को धोने की ज़स्तर होती है, क्योंकि वह पौरे तौर पर पाक — साफ हो।” तुम पाक — साफ हो, लेकिन सब के सब नहीं।” 11 (ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा।) इस लिए उस ने कहा कि सब के सब पाक — साफ नहीं है। 12 उन सब के पैरों को धोने के बाद ईसा दुबारा अपना लिबास पहन कर बैठ गया। उस ने सवाल किया, “क्या तुम समझते हो कि मैं ने तुम्हारे लिए क्या किया है? 13 तुम मुझे ‘उस्ताद’ और ‘खुदावन्द’ कह कर मुखातिब करते हो और यह सही है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। 14 मैं, तुम्हारे खुदावन्द और उस्ताद ने तुम्हारे पैर धोए। इस लिए अब तुम्हारा फर्ज भी ही है कि एक दूसरे के पैर धोया करो। 15 मैंने तुम को एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैं ने तुम्हारे साथ किया है। 16 मैं तुम को सच बताता हूँ कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़ाबर अपने भेजने वाले से। 17 अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, तभी तुम मुबारिक होगे। 18 मैं तुम सब की बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हूँ। लेकिन कलाम — ए — मुकद्दस की उस बात का पूरा होना जस्तर है, जो मेरी रोटी खाता है उस ने मुझ पर लात उठाई है। 19 मैं तुम को इस से पहले कि वह पेश आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो शब्द उसे कुबूल करता है जिसे मैं भेजा है वह मुझे कुबूल करता है। 21 इन अल्फाज के बाद ईसा बेहद दुखी हुआ और कहा, “मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम मैं से एक मुझ दुश्मन के हवाले कर देगा।” 22 शारीर्द उलझन में एक दूसरे को देख कर सोचने लगे कि ईसा किस की बात कर रहा है। 23 एक शारीर्द जिसे ईसा

मुहब्बत करता था उस के बिल्कुल करीब बैठा था। 24 पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उस से पछे कि वह किस की बात कर रहा है। 25 उस शारिंद ने ईसा की तरफ सर झुका कर पूछा, “खुदावन्द, वह कौन है?” 26 ईसा ने जबाब दिया, “जिसे मैं रोटी का निवाला शोर्बे में डुबो कर दूँ वही है।” फिर निवाले को डुबो कर उस ने शमैन इस्करियोती के बेटे यहदाह को दे दिया। 27 जैसे ही यहदाह ने यह निवाला ले लिया इल्लीस उस में बस गया। ईसा ने उसे बताया, “जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।” 28 लेकिन मेज पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हआ कि ईसा ने यह क्यूँ कहा। 29 कुछ का ख्याल था कि चौंकि यहदाह खजांची था इस लिए वह उसे बता रहा है कि ईंट के लिए जर्सी चीजें खरीद ले या गरीबों में कुछ बॉट दे। 30 चूनाँचे ईसा से यह निवाला लेते ही यहदाह बाहर निकल गया। रात का बक्त था। 31 यहदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, “अब इन्हें — ए — आदम ने जलाल पाया और खुदा ने उस में जलाल पाया है। 32 हाँ, चौंकि खुदा को उस में जलाल मिल गया है इस लिए खुदा अपने में फर्जन्द को जलाल देगा। और वह यह जलाल फैरन देगा। 33 मेरे बच्चों, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहस्सा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहदियों को बता चुका हूँ वह अब तुम को भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। 34 मैं तुम को एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। 35 अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखेगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शारिंद हो।” 36 पतरस ने पूछा, खुदावन्द, “आप कहाँ जा रहे हैं?” ईसा ने जबाब दिया “जहाँ मैं जाता हूँ अब तो त मेरे पीछे आ नहीं सकता लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जाएगा।” 37 पतरस ने सवाल किया, “खुदावन्द, मैं आप के पीछे अभी क्यूँ नहीं जा सकता? मैं आप के लिए अपनी जान तक देने को तयार हूँ।” 38 लेकिन ईसा ने जबाब दिया, “तू मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुझे के बांग देने से पहले पहले तू तीन मर्टबा मुझे जानने से इन्कार कर चुका होगा।”

14 “तुम्हारा दिल न घबराए। तुम खुदा पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। 2 मेरे आसमानी बाप के घर में बेशुमार मकान है। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुम को बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तयार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? 3 और अगर मैं जा कर तुम्हारे लिए जगह तयार करूँ तो वापस आ कर तुम को अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो।” 4 “और जहाँ मैं जा रहा हूँ उस की राह तुम जानते हो।” 5 तोमा बोल उठा, “खुदावन्द, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उस की राह किस तरह जानें?” 6 ईसा ने जबाब दिया, “राह हक और जिन्दगी मैं हूँ। कोई मेरे बसीले के बगैर बाप के पास नहीं आ सकता। 7 अगर तुम ने मुझे जान लिया है तो इस का मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब तुम उसे जानते हो और तुम ने उस को देख लिया है।” 8 फिलिप्पस ने कहा, “ऐ खुदावन्द, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।” 9 ईसा ने जबाब दिया, “फिलिप्पस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इस के बाबजट तू मुझे नहीं जानता? जिस ने मुझे देखा उस ने बाप को देखा है। तो फिर तू क्यूँकि करता है, बाप को हमें दिखाएँ? 10 क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप मैं हूँ और बाप मुझ में है? जो बातें मैं तुम को बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझ में रहने वाले बाप की तरफ से है। वही अपना काम कर रहा है। 11 मेरी बात का यकीन करो कि मैं बाप मैं हूँ और बाप मुझ में है। या कम से कम उन कामों की बिना पर यकीन करो जो मैंने किए हैं।” 12 “मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ यह बल्कि वह इन से भी बड़े काम करेगा, क्यूँकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। 13 और जो कुछ

तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को बेटे में जलाल मिल जाए। 14 जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझ से चाहो वह मैं करूँगा।” 15 “अगर तुम मुझे मुहब्बत करते हो तो मेरे हुक्मों के मुताबिक जिन्दगी गुजारेगो। 16 और मैं बाप से जो गुजारिश करूँगा तो वह तुम को एक और मददगार देगा जो हमेशा तक तुम्हारे साथ रहेगा (aión g165) 17 यानी सच्चाई की स्वर, जिसे दुनियाँ पा नहीं सकती, क्यूँकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानती हो, क्यूँकि वह तुम्हारे साथ रहती है और आइन्दा तुम्हारे अन्दर रहेगी।” 18 “मैं तुम को यतीम छोड़ कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। 19 थोड़ी देर के बाद दुनियाँ मुझ नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखे रहेगे। चूँकि मैं जिन्दा हूँ इस लिए तुम भी जिन्दा रहेगे। 20 जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप मैं हूँ, तुम मुझ में हो और मैं तुम मैं। 21 जिस के पास मेरे हुक्म हैं और जो उन के मुताबिक जिन्दगी गुजारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आप को उस पर जाहिर करूँगा।” 22 यहदाह (यहदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा, “खुदावन्द, क्या वजह है कि आप अपने आप को सिर्फ हम पर जाहिर करेंगे और दुनियाँ पर नहीं?” 23 ईसा ने जबाब दिया, “आप कोई मुझे मुहब्बत करते वह मेरे कलाम के मुताबिक जिन्दगी गुजारेगा। मेरा बाप ऐसे शख्स को मुहब्बत करेगा और हम उस के पास आ कर उस के साथ रहा करेंगे। 24 जो मुझ से मुहब्बत नहीं करता, वह मेरे कलाम के मुताबिक जिन्दगी नहीं गुजारता। और जो कलाम तुम मुझ से सुनते हो, वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप का है जिस ने मुझे भेजा है।” 25 “यह सब कुछ मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम को बताया है। 26 लेकिन बाद में स्व — ए पाक, जिसे बाप मेरे नाम से भेजा, तुम को सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुम को हार बात की याद दिलाएगा जो मैं ने तुम को बताइ है।” 27 “मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुम को दे देता हूँ। और मैं इसे यूँ नहीं देता जिस तरह दुनियाँ देती है। तुम्हारा रितन घबराए और न ढेर। 28 तुम ने मुझ से सुन लिया है कि मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा। अगर तुम मुझ से मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर खुश होते कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्यूँकि बाप मुझ से बड़ा है। 29 मैं ने तुम को पहले से बता दिया है, कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ। 30 अब से मैं तुम से ज्यादा बातें नहीं करूँगा, क्यूँकि इस दुनियाँ का बादशाह आ रहा है। उसे मुझ पर कोई काबू नहीं है, 31 लेकिन दुनियाँ यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ जिस का हुक्म वह मुझे देता है।”

15 “अंगर का हकीकी दरखत मैं हूँ और मेरा बाप बागबान है। 2 वह मेरी हर डाल को जो फल नहीं लाती काट कर फैक देता है। लेकिन जो डाली फल लाती है उस की वह कॉट — छॉट करता है ताकि ज्यादा फल लाए। 3 उस कलाम के बजह से जो मैं ने तुम को सुनाया है तुम तो पाक — साफ हो चुके हो। 4 मुझ में काईम रहो तो मैं भी तुम में काईम रहूँगा। जो डाल दरखत से कट गई है वह फल नहीं लाता क्योंकि बिल्कुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझ में काईम नहीं रहो तो फल नहीं ला सकते। 5 मैं ही अंगर का दरखत हूँ, और तुम उस की डालियाँ हो। जो मुझ में काईम रहता है और मैं उस में बहुत सा फल लाता है, क्यूँकि मुझ से अलग हो कर तुम कुछ नहीं कर सकते। 6 जो मुझ में काईम नहीं रहता और न मैं उस में उस सखी डाल की तरह बाहर फैक दिया जाता है। और लोग उन का ढेर लगा कर उन्हें आग में झोक देते हैं जहाँ वह जल जाती है। 7 अगर तुम मुझ में काईम रहो और मैं तुम में तो जो जी चाहे माँगो, वह तुम को दिया जाएगा। 8 जब तुम बहुत सा फल लाते और यूँ रहा शारिंद साबित होते हो तो इस से मेरे बाप को जलाल मिलता है। 9 जिस तरह

बाप ने मुझ से मुहब्बत रखी है उसी तरह मैं ने तुम से भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क्राईम रहो। 10 जब तुम मेरे हृकम के मुताबिक जिन्दगी गुजारते हो तो तुम मुझ में काईम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक चलता हूँ और यूँ उस की मुहब्बत में काईम रहता हूँ। 11 मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि मेरी खुशी तुम में हो बल्कि तुम्हारा दिल खुशी से भर कर छलक उठे।” 12 “मेरा हृकम यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैं ने तुम को प्यार किया है। 13 इस से बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। 14 तुम मेरे दोस्त हो आगर तुम वह कुछ करो जो मैं ने तुम को बताता हूँ। 15 अब से मैं नहीं कहता कि तुम गुलाम हो, क्यूँकि गुलाम नहीं जानता कि उस का मालिक क्या करता है। इस के बजाए मैं ने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्यूँकि मैं ने तुम को सब कुछ बताया है जो मैं ने अपने बाप से सुना है। 16 तुम ने मुझे नहीं चुना बल्कि मैं ने तुम को चुन लिया है। मैं ने तुम को मुकर्रर किया कि जा कर फल लाओ, ऐसा फल जो काईम रहे। फिर बाप तुम को वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम से माँगोगे। 17 मेरा हृकम यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।” 18 आगर दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखे तो यह बात जहन में रहो कि उस ने तुम से पहले मुझ से दुश्मनी रखी है। 19 आगर तुम दुनियाँ के होते तो दुनियाँ तुम को अपना समझ कर प्यार करती। लेकिन तुम दुनियाँ के नहीं हो। मैं ने तुम को दुनियाँ से अलग करके चुन लिया है। इस लिए दुनियाँ तुम से दुश्मनी रखती है। 20 वह बात याद करो जो मैं ने तुम को बताई कि गुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। आगर उन्होंने मेरु सताया है तो तुम्हें भी सतायें। और आगर उन्होंने मेरे कलाम के मुताबिक जिन्दगी गुजारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेगे। 21 लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेगे, मेरे नाम की बजह से करेंगे, क्यूँकि वह उसे नहीं जानते जिस ने मुझे भेजा है। 22 आगर मैं आया न होता और उन से बात न की होती तो वह कुसूरावार न ठहरते। लेकिन अब उन के गुनाह का कोई भी उड़बाकी नहीं रहा। 23 जो गुश से दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है। 24 आगर मैं ने उन के दरमियान ऐसा काम न किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह कुसूरावार न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने मेरे सब कुछ देखा है और फिर भी मुझ से और मेरे बाप से दुश्मनी रखी है। 25 अब ऐसा होना भी था ताकि कलाम — ए — मुकद्दस की यह नव्बत्वत पूरी हो जाए कि ‘उन्होंने कहा है’ 26 जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ से तुम्हारे पास भेज़ँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का स्थ है जो बाप मैं से निकलता है 27 तुम को भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्यूँकि तुम शुरू से ही मेरे साथ रहे हो।”

16 “मैं ने तुम को यह इस लिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। 2 वह तुम को यहदी जमाअतों से निकाल देंगे, बल्कि वह बक्त्र भी आने वाला है कि जो भी तुम को मार डालेगा वह समझेगा, मैंने खुदा की खिदमत की है। 3 वह इस किस्म की हरकतें इस लिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। 4 (जिसे यह देखा है उसे गवाही दी है और उस की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हकीकत बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक्सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ) 5 “लेकिन अब मैं उस के पास जा रहा हूँ जिस ने मुझे भेजा है। तो भी तुम मैं से कोई मुझ से नहीं पछता, ‘आप कहाँ जा रहे हैं?’ 6 इस के बजाए तुम्हारे दिल उदास है कि मैं ने तुम को ऐसी बातें बताई हैं। 7 लेकिन मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ाइदामन्द है कि मैं जा रहा हूँ। आगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन आगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। 8 और जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाजी और अदालत के बारे में दुनियाँ की ग़लती को बेनिकाब

करके यह जाहिर करेगा: 9 गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, 10 रास्तबाजी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, 11 और अदालत के बारे में यह कि इस दुनियाँ के हाकिम की अदालत हो चकी है।” 12 “मुझे तुम को बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस बक्त्र तुम उसे बर्दाशत नहीं कर सकते। 13 जब सच्चाई का स्थ आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ तुम्हारी राहनुभाउ करेगा। वह अपनी मर्जी से बात नहीं करेगा बल्कि सिफ़ि वही कुछ कहेगा जो वह खुद सुनेगा। वही तुम को भी। मुस्तकबिल के बारे में बताएगा 14 और वह इस में मुझे जलाल देगा कि वह तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा। 15 जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इस लिए मैं ने कहा, स्थ तुम को वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझ से मिला होगा।” 16 “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम दुबारा देख लोगे।” 17 उस के कुछ शारीर अपस में बात करने लगे, इसा के यह कहने से क्या मुहाद है कि “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे? और इस का क्या मतलब है, मैं बाप के पास जा रहा हूँ?” 18 और वह सोचते रहे, “यह किस किस्म की ‘थोड़ी देर’ है जिस का जिक्र वह कर रहे हैं? हम उन की बात नहीं समझते।” 19 इसा ने जान लिया कि वह मुझ से इस के बारे में सवाल करना चाहते हैं। इस लिए उस ने कहा, “क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि ‘थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे?’” 20 मैं तुम को सच बताता हूँ कि तुम रो रो कर मातम करोगे जबकि दुनियाँ खुश होगी। तुम गम करोगे, लेकिन तुम्हारा गम खुशी में बदल जाएगा। 21 जब किसी औरत के बच्चा पैदा होने वाला होता है तो उसे गम और तकलीफ होती है क्यूँकि उस का बक्त्र आ गया है। लेकिन जूँ ही बच्चा पैदा हो जाता है तो मैं खुशी के मारे कि एक इंसान दुनियाँ मैं आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। 22 यही तुम्हारी हालत है। क्यूँकि अब तुम उदास हो, लेकिन मैं तुम से दुबारा मिलूँगा। उस बक्त्र तुम को खुशी होगी, ऐसी खुशी जो तुम से कोई छीन न लेगा। 23 उस दिन तुम मुझ से कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुम को सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम मैं बाप से माँगोगे वह तुम को देगा। 24 अब तक तुम ने मेरे नाम मैं कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुम को मिलेगा। फिर तुम्हारी खुशी पूरी हो जाएगी।” 25 “मैं ने तुम को यह मिसालों में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस बक्त्र मैं मिसालों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुम को बाप के बारे में साफ साफ बता दूँगा। 26 उस दिन मुझ मेरा नाम ले कर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी खातिर बाप से दरखास्त करूँगा। 27 क्यूँकि बाप प्रत्येक वक्त तुम को प्यार करता है, इस लिए कि तुम ने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं खुदा मैं से निकल आया हूँ। 28 मैं बाप मैं से निकल कर दुनियाँ मैं आया हूँ, और अब मैं दुनियाँ को छोड़ कर बाप के पास वापस जाता हूँ।” 29 इस पर उस के शारीर दर्दों के बारे, “अब आप मिसालों मैं नहीं बल्कि साफ साफ बता कर रहे हैं। 30 अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इस की जस्त नहीं कि कोई आप की पूछ — ताछ करे। इस लिए हम ईमान रखते हैं कि आप खुदा मैं से निकल कर आए हैं।” 31 इसा ने जबाब दिया, “अब आप ईमान रखते हो? 32 देखो, वह बक्त्र आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तितर — बितर हो जाओगे। मुझे अकेला नहीं हूँगा क्यूँकि बाप मैं साथ है। 33 मैं ने तुम को इस लिए यह बात बताई ताकि तुम मुझ मैं सलामती पाओ। दुनियाँ मैं तुम मुसीबत मैं फ़ंसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनियाँ पर गालिब आया हूँ।”

17 यह कह कर ईसा ने अपनी नजर आसमान की तरफ उठाई और दुआ की, “ऐ बाप, ब्रक्त आ गया है। अपने बेटे को जलाल दे ताकि बेटा तुझे जलाल दे। **2** क्यूँकि तू ने उसे तमाम ईंसानःँों पर इखियार दिया है ताकि वह उन सब को हमेशा की ज़िन्दगी दे जू तू ने उसे दिया है। (aiōnios g166) **3** और हमेशा की ज़िन्दगी यह है कि वह तुझे जान लें जो बाहिद और सच्चा खुदा है और ईसा मरीह को भी जान लें जिसे तू ने भेजा है। (aiōnios g166) **4** मैं ने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम को पूरा किया जिस की ज़िम्मेदारी तू ने मुझे दी थी। **5** और अब मुझे अपने हज़र जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनियों की पैदाइश से पहले तेरे साथ रखता था।” **6** “मैं ने तेरा नाम उन लोगों पर जाहिर किया जिन्हें तू ने दुनियों से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तू ने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक ज़िन्दगी गुज़राई है। **7** अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तू ने मुझे दिया है वह तेरी तरफ से है। **8** क्यूँकि जो बातें तू ने मुझे दी मैं ने उन्हें दी हैं। नजीजे में उन्होंने यह बते कबूल करके हकीकी तौर पर जान लिया कि मैं तुझे मैं से निकल कर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तू ने मुझे भेजा है। **9** मैं उन के लिए दुआ करता हूँ, दुनियों के लिए नहीं बल्कि उन के लिए जिन्हें तू ने मुझे दिया है, क्यूँकि वह तेरे ही है। **10** जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनौत्ये मुझे उन में जलाल मिला है। **11** अब से मैं दुनियों में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनियों में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। कृदूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफूज़ रख, उस नाम में जो तू ने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। **12** जिनती देर मैं उन के साथ रहा मैं ने उन्हें तेरे नाम में महफूज़ रखा, उसी नाम में जो तू ने मुझे दिया था। मैं ने यूँ उन की निगहबानी की कि उन में से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के कर्फ़ज़न के। यूँ कलाम की पेशीगोई पूरी हुई। **13** अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनियों में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उन के दिल मेरी खुशी से भर कर छलक उठें। **14** मैं ने उन्हें तेरा कलाप दिया और दुनियों ने उन से दुर्मानी रखी, क्यूँकि यह दुनियों के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनियों का नहीं हूँ। **15** मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनियों से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इन्हींस से महफूज़ रखें। **16** वह दुनियों के नहीं है जिस तरह मैं भी दुनियों का नहीं हूँ। **17** उन्हें सच्चाई के वर्तीले से मख्सूस — ओ — मुकद्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। **18** जिस तरह तू ने मुझे दुनियों में भेजा है उसी तरह मैं ने भी उन्हें दुनियों में भेजा है। **19** उन की खातिर मैं अपने आप को मख्सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वर्तीले से मख्सूस — ओ — मुकद्दस किया जाए।” **20** “मेरी दुआ न सिर्फ़ इन ही के लिए है, बल्कि उन सब के लिए भी जो इन का पैगाम सुन कर मुझ पर ईमान लाएँ। **21** ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझ मैं है और मैं तुझ मैं हूँ उसी तरह वह भी हम मैं हों ताकि दुनियों यकीन करे कि तू ने मुझे भेजा है। **22** मैं ने उन्हें वह जलाल दिया है जो तू ने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, **23** मैं उन मैं और तू मुझे मैं। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनियों जान ले कि तू ने मुझे भेजा और कि तू ने उन से मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझ से रखी है। **24** ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तू ने मुझे दिए हैं वह भी मैं साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तू ने इस लिए मुझे दिया है कि तू ने मुझे दुनियों को बनाने से पहले प्यार किया है। **25** ऐ रास्तबाज, दुनियों तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शारिंद जानते हैं कि तू ने मुझे भेजा है। **26** मैं ने तेरा नाम उन पर जाहिर किया और इसे जाहिर करता रहँगा ताकि तेरी मुझ से मुहब्बत उन मैं हो और मैं उन मैं हूँ।”

18 यह कह कर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और बादी — ए — किंद्रोन को पार करके एक बाग में दाखिल हुआ। **2** यहदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करने वाला था वह भी इस जगह से बाकिफ़ था, क्यूँकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था। **3** राहनुमा ईमामों और फरीसियों ने यहदाह को रोमी फौजियों का दस्ता और बैत — उल — मुकद्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालाईन और हथियार लिए बाग में पहुँचे। **4** ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनौत्ये उस ने निकल कर उन से पृछा, “तुम किस को ढूँढ़ रहे हो?” **5** उन्होंने ने जबाब दिया, “ईसा नासरी को।” ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।” यहदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उन के साथ खड़ा था। **6** जब ईसा ने एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे हट कर जमीन पर गिर पड़े। **7** एक और बार ईसा ने उन से सवाल किया, “तुम किस को ढूँढ़ रहे हो?” **8** उस ने कहा, “मैं तुम को बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँढ़ रहे हो तो इन को जाने दो।” **9** यूँ उस की यह बात पूरी हुई, “मैं ने उन मैं से जो तू ने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।” **10** शमैन पतरस के पास तलावर थी। अब उस ने उसे मियान से निकाल कर इमाम — ए — आजम के गुलाम का दहना कान उड़ा दिया (गुलाम का नाम मलखुस था)। **11** लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलावर को मियान मैं रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जौ बाप ने मुझे दिया है?” **12** फिर फौजी दरते, उन के अपसर और बैत — उल — मुकद्दस के यहदी पहरेदारों ने ईसा को गिरफ्तार करके बाँध लिया। **13** पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमाम — ए — आजम काइफ़ा का ससर था। **14** काइफ़ा ही ने यहदियों को यह मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्रत के लिए मर जाए। **15** शमैन पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। वह दूसरा शारिंद इमाम — ए — आजम का जानने वाला था, इस लिए वह ईसा के साथ इमाम — ए — आजम के सहन में दाखिल हुआ। **16** पतरस बाहर दरवाजे पर खड़ा रहा। फिर इमाम — ए — आजम का जानने वाला शारिंद दुबारा निकल आया। उस ने दरवाजे की निगरानी करने वाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अन्दर ले जाने की इजाजत मिली। **17** उस औरत ने पतरस से पृछा, “तुम भी इस आदमी के शारिंद हो कि नहीं?” उस ने जबाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।” **18** ठन्डा थी, इस लिए गुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उस के पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उन के साथ खड़ा ताप रहा था। **19** इन्हें इमाम — ए — आजम ईसा की पृछ — ताछ करके उस के शागिर्दों और तालीमों के बोरे मैं पूछ — ताछ करने लगा। **20** ईसा ने जबाब मैं कहा, “मैं ने दुनियों मैं खुल कर बात की है। मैं हमेशा यहदी इबादतखानों और हैकल मैं तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ ताम यहदी जमा हुआ करते हैं। पोशादीयों मैं तो मैं ने कुछ नहीं कहा। **21** आप मुझ से क्यूँ पूछ रहे हैं? उन से दरयापत करें जिन्होंने मैं मेरी बातें सुनी हैं। उन को मालूम है कि मैं ने क्या कुछ कहा है।” **22** “इस पर साथ खड़े हैकल के पहरेदारों मैं से एक ने ईसा के मूँह पर अप्पड मार कर कहा, क्या यह इमाम — ए — आजम से बात करने का तरीका है जब वह तुम से कुछ पूछे?” **23** ईसा ने जबाब दिया, “अगर मैं ने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तू ने मुझे क्यूँ मारा?” **24** फिर हन्ना ने ईसा को बाँधी हुई हालत में इमाम — ए — आजम काइफ़ा के पास भेज दिया। **25** शमैन पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इन्हें मैं दूसरे उसे पूछने लगे, “तुम भी उस के शारिंद हो कि नहीं?” **26** फिर इमाम — ए — आजम का एक गुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिस का कान पतरस ने उड़ा दिया था, “क्या मैं ने तुम को बाग मैं उस के साथ नहीं देखा

था?” 27 पतरस ने एक बार फिर इन्कार किया, और इन्कार करते ही मुर्गी की बाँग सुनी दी। 28 फिर यहदी ईसा को काइफा से ले कर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियम के पास पहुँच गए। अब सबह हो चुकी थी और चूँकि यहदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इस लिए वह महल में दखिल न हए, वरन् वह नापाक हो जाते। 29 चुनाँचे पिलातुस निकल कर उन के पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इल्ज़ाम लगा रहे हो?” 30 उन्होंने जबाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आप के हवाले न करते।” 31 पिलातुस ने अग्रवां से कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।” लेकिन यहदियों ने एतराज किया, “हमें किसी को सजा-ए-मौत देने की इजाजत नहीं।” 32 ईसा ने इस तरफ इशारा किया था कि वह किस तरह की मौत मरेगा और अब उस की यह बात पूरी हुई। 33 तब पिलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उस ने ईसा को बुलाया और उस से पूछा, “क्या तुम यहदियों के बादशाह हो?” 34 ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आप को मेरे बारे में बताया है?” 35 पिलातुस ने जबाब दिया, “क्या मैं यहदी हूँ?” तुम्हारी अपनी क्रौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुम से क्या कुछ हुआ है? 36 ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनियाँ की नहीं है। अगर वह इस दुनियाँ की होती तो मेरे खादिम सख्त जद — ओ — जहद करते ताकि मुझे यहदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।” 37 पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाकई बादशाह हो?” ईसा ने जबाब दिया, “आप सही ह कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक्सद के लिए पैदा हो कर दिनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ से है वह मेरी सुनता है।” 38 पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?” फिर वह दुबारा निकल कर यहदियों के पास गया। उस ने एलान किया, “मुझे उसे सुनिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। 39 “लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिस के मुताबिक मुझे ईद — ए — फ़सह के मौके पर तुम्हरे लिए एक कैटेद्री को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं ‘यहदियों के बादशाह’ को रिहा कर दूँ?” 40 लेकिन जबाब में लोग चिल्लाने लगे, “नहीं, इस को नहीं बल्कि बर — अब्बा को।” (बर — अब्बा डाक था)

19 फिर पिलातुस ने ईसा को कोडे लगवाए। 2 फौजियों ने कॉटेदार ठहरनियों का एक ताज बना कर उस के साथ पर रख दिया। उन्होंने ने उसे इर्वानी रंग का चोपा भी पहनाया। 3 फिर उस के सामने आ कर वह कहते, “ऐ यहदियों के बादशाह, आदाब!” और उसे थप्पद मराते थे। 4 एक बार फिर पिलातुस निकल आया और यहदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हरे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” 5 फिर ईसा कॉटेदार ताज और इर्वानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पिलातुस ने उन से कहा, “लो यह है वह आदमी।” 6 उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उन के मुलाजिम चीखने लगे, “इसे मस्लूब करें, इसे मस्लूब करें।” 7 यहदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीर अत है और इस शरीर अत के मुताबिक लाजिम है कि वह मारा जाए। कर्मकि इस ने अपने आप को खुदा का फर्जन्द करार दिया है।” 8 यह सुन कर पिलातुस बहुत डर गया। 9 दुबारा महल में जा कर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?” 10 पिलातुस ने उस से कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मस्लूब करने का इक्तियार है?” 11 ईसा ने जबाब दिया, “आप को मुझ पर इक्तियार न होता अगर वह आप को ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शब्द से ज्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिस ने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।” 12 इस के बाद पिलातुस ने उसे छोड़ने की कोशिश

की। लेकिन यहदी चीख चीख कर कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहन्शाह कैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह कैसर की मुखालिफ़त करता है।” 13 इस तरह की बातें सुन कर पिलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह इंसाफ की कुर्सी पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी जबान में वह गब्बता कहलाती थी।) 14 अब दोपहर के तक्रीबन बाराह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, कर्मकि अगले दिन ईद का आगाज था। पिलातुस बोल “उठा, लो, तुम्हारा बादशाह!” 15 लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे मस्लूब करें।” पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारा बादशाह को सर्वीब पर चढ़ाऊँ?” राहनुमा इमामों ने जबाब दिया, “सिवा-ए-शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।” 16 फिर पिलातुस ने ईसा को उन के हवाले कर दिया ताकि उसे मस्लूब किया जाए। 17 वह अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिस का नाम खोपड़ी (अरामी जबान में गुन्तुज़ा) था। 18 वहाँ उन्होंने ने उसे सर्वीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने ईसा के बाएँ और दाएँ हाथ से डाक को मस्लूब किया। 19 पिलातुस ने एक तख्ती बनवा कर उसे ईसा की सर्वीब पर लगाया दिया। तख्ती पर लिखा था, “ईसा नासरी, यहदियों का बादशाह।” 20 बहत से यहदियों ने यह पढ़ लिया, कर्मकि ईसा को सर्वीब पर चढ़ाए जाने की जगह शहर के करीब थी और यह ज़ुमला अरामी, लातिनी और यूनानी जबानों में लिखा था। 21 यह देख कर यहदियों के राहनुमा इमामों ने एतराज किया, “यहदियों का बादशाह न लिखें बल्कि यह कि इस आदमी ने यहदियों का बादशाह होने का दावा किया।” 22 पिलातुस ने जबाब दिया, “जो कुछ मैं ने लिख दिया सो लिख दिया।” 23 ईसा को सर्वीब पर चढ़ाने के बाद फौजियों ने उस के कपड़े ले कर चार हिस्सों में बॉट लिए, हर फौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोपा बेजोड़ था। वह ऊपर से ले कर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। 24 इस लिए फौजियों ने कहा, “आओ, इसे फाड़ कर तक्रीबन न करें बल्कि इस पर पर्ची डालें।” २५ कलाम — ए — मुकद्दस की यह पेशीनगोई पूरी हुई, “उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बॉट लिए और मेरे लिबास पर पर्ची डाला।” फौजियों ने यही कुछ किया। 25 ईसा की सर्वीब के करीब: उस की माँ, उस की खाला, क्लियुपास की बीबी मरियम और मरियम मगालिनी खड़ी थीं। 26 जब ईसा ने अपनी माँ को उस शारीर के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था तो उस ने कहा, “ऐ खातून, देखें आप का बेटा यह है।” 27 और उस शारीर से उस ने कहा, “देख, तेरी माँ यह है।” उस वक्त से उस शारीर ने ईसा की माँ को अपने घर रखा। 28 इस के बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा काम मुकम्मल हो चुका है तो उस ने कहा, “मुझे प्यास लगी है।” (इस से भी कलाम — ए — मुकद्दस की एक पेशीनगोई पूरी हुई।) 29 वहाँ सिरके से भरा हुआ एक बरतन रखा था, उन्होंने सिरके में स्पंज डुबोकर ज़फे की डाली पर रख कर उसके मुँह से लगाया। 30 यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा, “काम मुकम्मल हो गया है।” और सर झुका कर उस ने अपनी जान खुदा के सुर्युद कर दी। 31 फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आगाज और एक खास सबल था। इस लिए यहदी नहीं चाहते थे कि मस्लूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे उन्होंने ने पिलातुस से गुजारिश की कि वह उन की टाँगे तोड़वा कर उन्हें सलीबों से उतारने दे। 32 तब फौजियों ने आ का ईसा के साथ मस्लूब किए जाने वाले अदमियों की टाँगे तोड़ दी, पहले एक की फिर दूसरे की। 33 जब वह ईसा के पास आए तो उन्होंने देखा कि उसकी मौत हो चुकी है, इस लिए उन्होंने ने उस की टाँगे न तोड़ी। 34 इस के बाजे एक ने भाले से ईसा का पहलू छेद दिया। जख्म से फैरून खून और पानी बह निकला। 35 (जिस ने यह देखा है उस ने गवाही दी है और उस

की गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हकीकित बयान कर रहा है और उस की गवाही का मक्सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ। 36 यह यैँ हूँ हुआ ताकि कलाम — ए — मुकद्देस की यह नबुवत पूरी हो जाए, “उस की एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।” 37 कलाम — ए — मुकद्देस में यह भी लिखा है, “वह उस पर नजर डालेंगे जिसे उन्होंने ने छेदा है।” 38 बाद में अरिमतियाह के रहने वाले यूसुफ ने पिलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाजत माँगी। (यूसुफ ईसा का खुफिया शारिर्द था, क्यूंकि वह यहदियों से डरता था।) इस की इजाजत मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया। 39 नीकुदेसुस भी साथ था, वह आदिमी जो गुजरे दिनों में रात के बक्तव्य ईसा से मिलने आया था। नीकुदेसुस अपने साथ मूर और ऊद की तकीबिन 34 किलो खुशबूले कर आया था। 40 उन्होंने ईसा की लाश को ले लिया और यहदी जनाजी की स्मामत के मुताबिक उस पर खुशबूलगा कर उसे परिदृश्यों से लपेट दिया। 41 सर्लीबों के करीब एक बाग था और बाग में एक नई कब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई थी। 42 उस के करीब होने के बजह से उन्होंने ईसा को उस में रख दिया, क्यूंकि फसह की तयारी का दिन था और अगले दिन इंद की शुरूआत होने वाली थी।

20 हफ्ते का दिन गुजर गया तो इतवार को मरियम मगादिलीनी सुबह — सर्वे कब्र के पास आई। अभी अधीरा था। वहाँ पहुँच कर उस ने देखा कि कब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ हटाया गया है। 2 मरियम दौड़ कर शमैन पतरस और ईसा के प्यारे शारिर्द के पास आई। उस ने खबर दी, “वह खुदावन्द को कब्र से ले गए हैं, और हमें मालत्स नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।” 3 तब पतरस दूसरे शारिर्द समेत कब्र की तरफ चल पड़ा। 4 दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शारिर्द ज्यादा तेज़ रफ्तार था। वह पहले कब्र पर पहुँच गया। 5 उस ने शूक कर अन्दर न गया। 6 फिर शमैन पतरस उस के पीछे पहुँच कर कब्र में दाखिल हुआ। उस ने भी देखा कि कफन की पटियाँ वहाँ पड़ी हैं 7 और साथ वह कपड़ा भी जिस में ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया था और पटियों से अलग पड़ा था। 8 फिर दूसरा शारिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाखिल हुआ। जब उस ने यह देखा तो वह ईमान लाया।

9 (लेकिन अब भी वह कलाम — ए — मुकद्देस की नबुवत नहीं समझते थे कि उसे मुर्दों में से जी उठाना है।) 10 फिर दोनों शारिर्द घर बापस चले गए। 11 लेकिन मरियम रो रो कर कब्र के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उस ने शूक कर कब्र में झाँका। 12 तो क्या देखती है कि दो फरिरते सफेद लिपास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उस के सिरहाने और दूसरा उस के पैतने थे। 13 उन्होंने ने मरियम से पूछा, “ऐ खातून, तू क्यूँ रो रही हो?” उस ने कहा, “वह मेरे खुदावन्द को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।” 14 फिर उस ने पीछे मुड़ कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उस ने उसे न पहचाना। 15 ईसा ने पूछा, “ऐ खातून, तू क्यूँ रो रही है, किस को ढूँढ रही है?” उसने बाबाबान समझ कर उस से कहा, मियाँ अगर तो उसको यहाँ से उठाया हो तू मुझे बता दे कि उसे कहा रखा है ताकि मैं उसे ले जाऊँ। 16 ईसा ने उस से कहा, “मरियम!” उसने मुड़कर उससे इबरानी जबान में कहा “रब्बोनी ए उस्ताद!” 17 ईसा ने कहा, “मुझे मत छू, क्यूंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, मैं अपने बाप और तुम्हरे बाप के पास बापस जा रहा हूँ, अपने खुदा और तुम्हरे खुदा के पास।” 18 चुनाँचे मरियम मगादिलीनी शारिर्दों के पास गई और उन्हें इतिला दी, “मैं ने खुदावन्द को देखा है और उस ने मुझ से यह बातें कहीं।” 19 उस इतवार की शाम को शारिर्द जमा थे। उन्होंने ने दरवाजों पर ताले लगा दिए थे क्यूंकि वह यहदियों से डरते थे। अचानक ईसा उन के दरमियान आ

खड़ा हुआ और कहा, “तुम्हारी सलामती हो,” 20 और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। खुदावन्द को देख कर वह निहायत खुश हुए। 21 ईसा ने दुबारा कहा, “तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुम को भेज रहा हूँ।” 22 फिर उन पर फैक कर उस ने फरमाया, “स्ह — उल — कुद्दूस को पा लो। 23 अगर तुम किसी के गुनाहों को मुआफ करो तो वह मुआफ किए जाएँ। और अगर तुम उन्हें मुआफ न करो तो वह मुआफ नहीं किए जाएँ।” 24 बारह शारिर्दों में से तोमा जिस का लकब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था। 25 चुनाँचे दूसरे शारिर्दों ने उसे बताया, “हम ने खुदावन्द को देखा है।” लेकिन तोमा ने कहा, मुझे यकीन नहीं आता। “पहले मुझे उस के हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उन में अपनी उंगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उस के पहलू के जख्म में डालूँ। फिर ही मुझे यकीन आएगा।” 26 एक हफ्ता गुजर गया। शारिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मर्बा तोमा भी साथ था। आरंभ दरवाजों पर ताले लगे थे कि भी ईसा उन के दरमियान आ कर खड़ा हुआ। उस ने कहा, “तुम्हारी सलामती हो!” 27 फिर वह तोमा से मुखातिब हुआ, “अपनी उंगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के जख्म में डाल और बेणिकाद न हो बाल्कि ईमान रख।” 28 तोमा ने जबाब में उस से कहा, “ऐ मेरे खुदावन्द! ऐ मेरे खुदा!” 29 फिर ईसा ने उसे बताया, “क्या तू इस लिए ईमान लाया है कि तू ने मुझे देखा है? मुबारिक हैं वह जो मुझे देखे बौगर मुझ पर ईमान लाते हैं।” 30 ईसा ने अपने शारिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहत से ऐसे खुदावन्द करिश्मे दिखाएं जो इस किंतब में दर्ज नहीं हैं। 31 लेकिन जितने दर्ज हैं उन का मक्सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी खुदा का फर्जन्द है और आप को इस ईमान के बरीले से उस के नाम से ज़िन्दगी हासिल हो।

21 इस के बाद ईसा एक बार फिर अपने शारिर्दों पर जाहिर हुआ जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यैँ हुआ। 2 कुछ शारिर्द शमैन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतन — एल जो गलील के काना से था, जब्दी के दो बेटे और मज़ीद दो शारिर्द। 3 शमैन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।” दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएँ।” चुनाँचे वह निकल कर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। 4 सुबह — सर्वे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शारिर्दों को मातृत्व नहीं था कि वह ईसा ही है। 5 उस ने उन से पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?” 6 उस ने कहा, “अपना जाल नाव के दाएँ हाथ डालो, फिर तुम को कुछ मिलेगा।” उन्होंने ने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तहाद थी कि वह जाल नाव तक न ला सके। 7 इस पर ईसा के प्यारे शारिर्द ने पतरस से कहा, “यह तो खुदावन्द है।” यह सुनते ही कि खुदावन्द है शमैन पतरस अपनी चादर ओढ़ कर पानी में कूद पड़ा (उस ने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था)। 8 दूसरे शारिर्द नाव पर सवार उस के पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे, तकरीबन सौ मीटर के फसिले पर थे। इस लिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी खींची खींच कर खुशकी तक लाए। 9 जब वह नाव से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भूंती जा रही हैं और साथ रोटी भी है। 10 ईसा ने उन से कहा, “उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुम ने अभी पकड़ी हैं।” 11 शमैन पतरस नाव पर गया और जाल को खुशकी पर धसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। 12 ईसा ने उन से कहा, “आओ, खा लो।” किसी भी शारिर्द ने सबाल करने की जुरात न की कि “आप कौन हैं?” क्यूंकि वह तो जानते थे कि यह खुदावन्द ही है। 13 फिर ईसा आया और रोटी ले कर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी

उन्हें खिलाई। 14 ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार था कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ। 15 खाने के बाद ईसा शमैन पतरस से मुखातिब हुआ, “यूहन्ना के बेटे शमैन, क्या तू इन की निष्पत मुझ से ज्यादा मुहब्बत करता है?” उस ने जवाब दिया, “जी खुदावन्द, आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।” 16 तब ईसा ने एक और मर्तबा पूछा, “शमैन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझ से मुहब्बत करता है?” उस ने जवाब दिया, “जी खुदावन्द, आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।” 17 ईसा बोला, “फिर मेरी भेड़ों को चरा।” 18 तीसरी दफा ईसा ने उस से पूछा, “शमैन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?” तीसरी दफा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उस ने कहा, “खुदावन्द, आप को सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आप को प्यार करता हूँ।” 19 ईसा ने उस से कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।” 20 मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू खुद अपनी कमर बाँध कर जहाँ जी चाहता थमता फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँध कर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” 21 (ईसा की यह बात इस तरफ झारा था कि पतरस किस किस्म की मौत से खुदा को जलाल देगा)। फिर उस ने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।” 22 पतरस ने मुड़ कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उन के पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिस ने शाम के खाने के दौरान ईसा की तरफ सर इका कर पूछा था, “खुदावन्द, कौन आप को दुश्मन के हवाले करेगा?” 23 अब उसे देख कर पतरस ने ईसा से सवाल किया, “खुदावन्द, इस के साथ क्या होगा?” 24 ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे बापस आने तक जिन्दा रहे तो तुझे क्या? बस तू मैं पीछे चलता रह।” 25 नरीजे में भाइयों में यह खयाल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की थी। उस ने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे बापस आने तक जिन्दा रहे तो तुझे क्या?” 26 यह वह शागिर्द है जिस ने इन बातों की गवाही दे कर इन्हें कलमबन्द कर दिया है। और हम जानते हैं कि उस की गवाही सच्ची है। 27 ईसा ने इस के अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उस का हर काम कलमबन्द किया जाता तो मेरे खयाल में पूरी दुनियाँ में यह किताबें रखने की गुन्जाइश न होती।

आमाल

1 ऐथियुफिल्स मैने पहली किताब उन सब बातों के बायान में लिखी जो ईसा शूँ; में करता और सिखाता रहा। 2 उस दिन तक जिसमें वो उन रस्लों को जिन्हें उसने चुना था स्थ — उल — कुदूस के वर्सीले से हुक्म देकर ऊपर उठाया गया। 3 ईसा ने तकलीफ सरने के बाद बहुत से सबूतों से अपने आपको उन पर जिन्दा जाहिर भी किया, चुनाँचे वो चालीस दिन तक उनको नजर आता और खुदा की बादशाही की बातें कहता रहा। 4 और उनसे मिलकर उन्हें हुक्म दिया, “येस्शलेम से बाहर न जाओ, बल्कि बाप के उस बांदे के पार होने का इन्तिजार करो, जिसके बारे में तुम मुझ से सुन चुके हो, 5 क्यूँकि युहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया मगर तुम थोड़े दिनों के बाद स्थ — उल — कुदूस से बपतिस्मा पाओगे।” 6 पस उन्होंने इक्षा होकर पूछा, “ऐ खुदावन्द! क्या तु इसी बक्त इस्माइल को बादशाही फिर ‘आता करोगा?’” 7 उसने उनसे कहा, “उन बक्तों और मी‘आदों का जानना, जिन्हें बाप ने अपने ही इखिलायर में रख्खा है, तुम्हारा काम नहीं। 8 लेकिन जब स्थ — उल — कुदूस तुम पर नाजिल होगा तो तुम ताकत पाओगे; और येस्शलेम और तमाम यहदिया और सामरिया में, बल्कि जमीन के आखीर तक मेरे गवाह होगे।” 9 ये कहकर वो उनको देखते देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादलों ने उसे उनकी नजरों से छिपा लिया। 10 उसके जाते बक्त वो असमान की तरफ गौर से देख रहे थे, तो देखो, दो मर्द सफेद पोशाक पहने उनके पास आ खड़े हुए, 11 और कहने लगे, “ऐ गलीती मर्दों! तुम क्यूँ खड़े आसमान की तरफ देखते हो? यही ईसा जो तुम्हारे पास से आसमान पर उठाया गया है, इसी तरह फिर आएगा जिस तरह तुम ने उसे आसमान पर जाते देखा है।” 12 तब वो उस पहाड़ से जो जैतन का कहलाता है और येस्शलेम के नजदीक सबत की मन्जिल के फासले पर है येस्शलेम को फिरे। 13 और जब उसमें दाखिल हुए तो उस बालाखाने पर चढ़े जिस में वो यांनी पतरस और यहन्ना, और याकूब और अन्दियास और मिलिपुस, तोमा, बरतुल्माई, मर्ती, हलफी की बेटा याकूब, शमैन जेलोतेस और यायकूब का बेटा यहदाह रहते थे। 14 ये सब के सब चन्द ‘ओरतों और ईसा की माँ मरियम और उसके भाइयों के साथ एक दिल होकर दुआ में मशगूल रहे। 15 उन्हीं दिनों पतरस भाइयों में जो तकरीबन एक सौ बीस शख्सों की जमा‘अत थी खड़ा होकर कहने लगा, 16 “ऐ भाइयों उस नबुव्वत का पूरा होना जस्ती था जो स्थ — उल — कुदूस ने दाऊद के जबानी उस यहदा के हक में पहले कहा था, जो ईसा के पकड़ने वालों का रहनुमा हुआ। 17 क्यूँकि वो हम में शुमार किया गया और उस ने इस खिदमत का हिस्सा पाया।” 18 उस ने बदकारी की कमाई से एक खेत खरीदा, और सिर के बल पिरा और उसका पेट फट गया और उसकी सब आँतीयां निकल पड़ी। 19 और ये येस्शलेम के सब रहने वालों को मालूम हुआ, यहाँ तक कि उस खेत का नाम उनकी जबान में है कलेदमा पड़ गया यांनी [खून का खेत]। 20 क्यूँकि जबूर में लिखा है, ‘उसका धर उजड़ जाए, और उसमें कोई बसने वाला न रहे और उसका मर्तबा दुसरा ले ले। 21 पस जितने ‘अर्से तक खुदावन्द ईसा हमारे साथ आता जाता रहा, यानी यहन्ना के बपतिस्मे से लेकर खुदावन्द के हमारे पास से उठाए जाने तक — जो बराबर हमारे साथ रहे, 22 चाहिए कि उन में से एक आदमी हमारे साथ उसके जी उठें का गवाह बने। 23 फिर उन्होंने दो को पेश किया। एक यसुफ को जो बरसब्बा कहलाता है और जिसका लकब यस्तुस है। दूसरा मत्याह को। 24 और ये कह कर दुआ की, “ऐ खुदावन्द! तु जो सब के दिलों को जानता है, ये जाहिर कर कि इन दोनों में से तो विस को चुना है 25 ताकि वह इस खिदमत और रस्लों की जगह ले, जिसे यहदाह छोड़ कर अपनी जगह गया।” 26 फिर

उन्होंने उनके बारे में पर्ची डाली, और पर्ची मत्याह के नाम की निकली। पस वो तु ग्यारह रस्लों के साथ शुमार किया गया।

2 जब ईंद — ऐ — पन्तिकुस्त का दिन आया। तो वो सब एक जगह जमा थे। 2 एकाएक अस्मान से ऐसी आवाज आई जैसे जोर की आँखी का सन्नाटा होता है। और उस से सारा धर जहाँ वो बैठे थे गँग गया। 3 और उन्हें आग के शोले की सी फट्टी हुई जबाने दिखाई दी और उन में से हर एक पर आ ठहरी। 4 और वो सब स्थ — उल — कुदूस से भर गए और गैर जबान बोलने लगे, जिस तरह स्थ ने उन्हें बोलने की ताकत बरखी। 5 और हर कौम में से जो आसमान के निचे खुदा तरस यहदी येस्शलेम में रहते थे। 6 जब यह आवाज आई तो भीड़ लग गई और लोग दंग हो गए, क्यूँकि हर एक को यही सुनाई देता था कि ये मेरी ही बोली बोल रहे हैं। 7 और सब हैरान और ताज्जुब हो कर कहने लगे, देखो ये बोलने वाले क्या सब गलती नहीं? 8 फिर क्यूँकि हम में से हर एक कैसे अपने ही बतन की बोली सुनता है। 9 हालाँकि हम हैं: पार्थि, मादि, ऐलामी, मसोपोतामिया, यहदिया, और कप्पदुकिया, और पुतुस, और आसिया, 10 और फस्गिया, और पफ्फीलिया, और मिस और लिब्बाका, के इलाके के रहने वाले हैं, जो कुरेरे की तरफ है और रोमी मुसाफिर 11 चाहे यहदी चाहे उनके मुरीद, करेती और ‘अरब है। मगर अपनी अपनी जबान में उन से खुदा के बड़े बड़े कामों का बयान सुनते हैं। 12 और सब हैरान हुए और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, “ये क्या हुआ चाहता है?” 13 और कुछ ने ठड़ा मार कर कहा, “ये तो ताजा मय के नरों में है।” 14 लेकिन पतरस उन ग्यारह रस्लों के साथ खड़ा हुआ और अपनी आवाज बुलन्द करके लोगों से कहा कि ये यहदियों और येस्शलेम के सब रहने वालों ये जान लो, और कान लगा कर मेरी बातें सुनो! 15 कि जैसा तुम समझते हो ये नरों में नहीं। क्यूँकि अभी तो सुबक के नौ ही बजे हैं। 16 बल्कि ये वो बात है जो योएल नवी के जरिए कही गई है कि, 17 खुदा फरमाता है, कि आखिरी दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपनी स्थ में से हर आदमियों पर डातन्गा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ नुबुव्वत करें गी और तुम्हारे जवान रोया और तुम्हारे बुड़े खड़ा बदेखेंगे। 18 बल्कि मैं अपने बन्दों पर और अपनी बन्दियों पर भी उन दिनों में अपने स्थ में से डालूँगा और वह नुबुव्वत करेंगी। 19 और मैं ऊपर असमान पर ‘अजीब काम और नीचे जमीन पर निशानियाँ यांनी खून और आग और धुएँ का बादल दिखाऊँगा। 20 सूरज तारीक और, चाँद खन हो जाएगा पहले इससे कि खुदावन्द का अजीम और जलील दिन आए। 21 और यूँ होगा कि जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा, नजात पाएगा। 22 ऐ इस्माइलियों! ये बातें सुनो ईसा नासीरी एक शख्स था जिसका खुदा की तरफ से होना तुम पर उन मोजिजों और ‘अजीब कामों और निशानों से सावित हुआ; जो खुदा ने उसके ज़रिए तुम में दिखाए। चुनाँचे तुम आप ही जानते हो। 23 जब वो खुदा के मुकर्रा इन्तजाम और इलमें साबिक के मुवाफिक पकड़बाया गया तो तुम ने बेशरा लोगों के हाथ से उसे मस्तक बरवा करवा कर मार डाला। 24 लेकिन खुदा ने मौत के बंद खोल कर उसे जिलाया क्यूँकि मुस्किन ना था कि वो उसके कब्जे में रहता। 25 क्यूँकि दाऊद उसके हक में कहता है कि वो खुदावन्द को हमेशा अपने सामने देखता रहा; क्यूँकि वो मेरी दहीनी तरफ है ताकि मुझे जुबिश ना हो। 26 ईसी बजह से मेरा दिल खुश हुआ; और मेरी जबान शाद, बल्कि मेरा जिस्म भी उम्मीद में बसा रहेगा। 27 इसलिए कि तू मेरी जान को ‘आलम — ऐ — अर्वाह में छोड़ेगा, और ना अपने पाक के सड़ने की नौबत पहुँचने देगा। (Hadès g86) 28 तू ने मुझे जिन्दगी की राहें बताईं तू मुझे अपने दीदार के ज़रिए खुशी से भर देगा। 29 ऐ भाइयों! मैं कौम के बुजुर्गी, दाऊद के हक में तुम से दिलेणी के साथ कह सकता हूँ कि वो मरा और दफन भी हुआ; और उसकी कब्र आज तक हम

में मौजूद है। 30 पस नवी होकर और ये जान कर कि खुदा ने मुझ से कसम खाई है कि तेरी नस्ल से एक शास्त्र को तेरे तख्त पर बिठाऊँगा। 31 उसने नबुव्वत के तौर पर मसीह के जी उठने का जिक्र किया कि ना वों 'आलम' एं अर्वाह में छोड़ेगा, ना उसके जिस्म के सड़ने की नैबूत पहुँचेगी। (Hadès g86) 32 इसी ईसा को खुदा ने जिलाया; जिसके हम सब गवाह हैं। 33 पस खुदा के दहने हाथ से सर बलन्द होकर, और बाप से वो स्ह — उल — कुदू दुस हासिल करके जिसका वांदा किया गया था, उसने ये नज़िल किया जो तुम देखते और सुनते हो। 34 क्यूँकी दाऊद बादशाह तो आस्मान पर नहीं चढ़ा, लेकिन वो खुद कहता है, कि खुदावन्द ने मेरे खुदा से कहा, मेरी दहनी तरफ बैठ। 35 जब तक मैं तेरे दुश्मनों को तेरे पाँछे तत्ते की चौकी न कर दौँ।' 36 'पस ईसाईल का सारा धराना यकीन जान ले कि खुदा ने उती ईसा को जिसे तुम ने मस्लूब किया खुदावन्द भी किया और मसीह भी।' 37 जब उन्होंने ये सुना तो उनके दिलों पर चोट लगी, और पतरस और बाकी रस्तों से कहा, 'ऐ भाइयों हम क्या करें?' 38 पतरस ने उन से कहा, तौबा करो और तुम मैं से हर एक अपने गुनाहों की मुंआफी के लिए ईसा मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले तो तुम स्ह — उल — कुदूस इनाम में पाओ गे। 39 इसलिए कि ये वांदा तुम और तुम्हारी औलाद और उन सब दू के लोगों से भी हैं; जिनको खुदावन्द हमरा खुदा अपने पास बुलाएगा। 40 उसने और बहुत सी बारें जता जाता कर उन्हें ये नसीहत की, कि अपने आपको इस टेढ़ी कौम से बचाओ। 41 पस जिन लोगों ने उसका कलाम कुबूल किया, उन्होंने बपतिस्मा लिया और उसी रोज़ तीन हज़ार आदमियों के क़रीब उन में मिल गए। 42 और ये रस्तों से तालीम पाने और रिफ़ाकत रखने में, और रोटी तोड़ने और दुआ करने में मशगूल रहे। 43 और हर शास्त्र पर खोफ छा गया और बहुत से 'अजीब काम और निशान रस्तों' के जरिए से जाहिर होते थे। 44 और जो ईमान लाए थे वो सब एक जगह रहते थे और सब चीजों में शरीक थे। 45 और अपना माल — और अस्त्राब बेच बेच कर हर एक की जरूरत के मुवाफ़िक सब को बैठ दिया करते थे। 46 और हर रोज़ एक दिन होकर हैकल में जमा हुआ करते थे, और घरों में रोटी तोड़कर ख्शी और सादा दिली से खाना खाया करते थे। 47 और खुदा की हम्मद करते और सब लोगों को अजीज़ थे; और जो नजात पाते थे उनको खुदावन्द हर रोज़ जमाअत में मिला देता था।

3 पतरस और यहन्ना दुआ के वक्त यांनी दो पहर तीन बजे हैकल को जा रहे थे। 2 और लोग एक पैदाइशी लंगड़े को ला रहे थे, जिसको हर रोज़ हैकल के उस दरवाजे पर बिठा देते थे, जो खबूसरत कलहाता है ताकि हैकल में जाने वालों से भीख मँगे। 3 जब उस ने पतरस और यहन्ना को हैकल जाते देखा तो उन से भीख मँगी। 4 पतरस और यहन्ना ने उस पर गौर से नजर की और पतरस ने कहा, 'हमारी तरफ देखा।' 5 वो उन से कुछ मिलने की उम्मीद पर उनकी तरफ मुतवज्जह हुआ। 6 पतरस ने कहा, 'चांदी सोना तो मेरे पास है नहीं! मगर जो मेरे पास है वो तुझे देता है इसा मसीह नासरी के नाम से चल फिर।' 7 और उसका दाहिना हाथ पकड़ कर उसको उठाया, और उसी दम उसके पाँव और टख्हे में जबूत हो गए। 8 और वो कृद कर खड़ा हो गया और चलने फिरने लगा; और चलता और कृदता और खुदा की हम्मद करता हुआ उनके साथ हैकल में गया। 9 और सब लोगों ने उसे चलते फिरते और खुदा की हम्मद करते देख कर। 10 उसको पहचाना, कि वे वही हैं जो हैकल के खबूसरत दरवाजे पर बैठ कर भीख मँगा करता था; और उस माजे से जो उस पर बैठे हुआ था, बहुत दंग और हैरान हुए। 11 जब वो पतरस और यहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत हैरान हो कर उस बरामदह की तरफ जो सुलैमान का कहलाता है, उनके पास दौड़े आए। 12 पतरस ने ये देख कर लोगों से कहा, 'ऐ ईसाईलियों

इस पर तुम क्यूँ ताअँज्जुब करते हो और हमें क्यूँ इस तरह देख रहे हो; कि गोया हम ने अपनी कूदरत या दीनदारी से इस शास्त्र को चलाता फिराता कर दिया? 13 अब्रहाम, इज़हाक और याकूब के खुदा यांनी हमारे बाप दादा के खुदा ने अपने खादिम ईसा को जलाल दिया, जिसे तुम ने पकड़वा दिया और जब पीलातुस ने उसे छोड़ देने का इरादा किया तो तुम ने उसके सामने उसका इन्कार किया। 14 तुम ने उस कुदूस और रास्तबाज का इकार किया; और पीलातुस से दरखास्त की कि एक खताकार तुम्हारी खातिर छोड़ दिया जाए। 15 मगर जिन्दगी के मालिक को कल्प लिया जाए; जिसे खुदा ने मुर्दों में से जिलाया; इसके हम गवाह हैं। 16 उसी के नाम से उस ईमान के बसीले से जो उसके नाम पर है, इस शास्त्र को मज़बूत किया जिसे तुम देखते और जानते हो। बेशक उसी ईमान ने जो उसके बसीला से है वे पूरी तरह से तन्दस्स्ती तुम सब के सामने उसे दी। 17 ऐ भाइयों! मैं जानता हूँ कि तुम ने ये काम नादानी से किया; और ऐसा ही तुम्हारे सरदारों में भी है। 18 मगर जिन बातों की खुदा ने सब नवियों की जबानी पहले खबर दी थी, कि उसका मसीह दुःख उठाएगा; वो उसने ईसी तरह पूरी की। 19 पस तौबा करो और फिर जाओ ताकि तुम्हारे गुहाह मिटाए जाएं, और इस तरह खुदावन्द के हज़र से तज़ीजी के दिन आएँ। 20 और वो उस मसीह को जो तुम्हारे वास्ते मुकर्रर हुआ है, यांनी ईसा को भेजे। 21 ज़स्ती है कि वो असमान में उस वक्त तक रहे; जब तक कि वो सब चीज़ें बहाल न की जाएँ, जिनका ज़िक्र खुदा ने अपने पाक नवियों की जबानी किया है; जो दुनिया के शूरु से होते आए हैं। (aion g165) 22 चुनाँचे मूसा ने कहा, कि खुदावन्द खुदा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझसा एक नवी पैदा करेगा जो कुछ वो तुम से कहे उसकी सुनना। 23 और यूँ होगा कि जो शास्त्र उस नवी की न सुनेगा वो उम्मत में से नेत — ओ — नाबूद कर दिया जाएगा। 24 बल्कि समुप्लन से लेकर पिछलों तक जितने नवियों ने कलाम किया, उन सब ने इन दिनों की खबर दी है। 25 तुम नवियों की औलाद और उस अहद के शरीक हो, जो खुदा ने तुम्हारे बाप दादा से बौद्धा, जब इब्राहीम से कहा, कि तेरी औलाद से दुनिया के सब धराने बर्कत पाएँगे। 26 खुदा ने अपने खादिम को उठा कर पहले तुम्हारे पास भेजा; ताकि तुम मैं से हर एक को उसकी बुराइयों से हटाकर उसे बर्कत दे।'

4 जब वो लोगों से ये कह रहे थे तो काहिन और हैकल का मालिक और सदूकी उन पर चढ़ आए। 2 वो गमगीन हुए क्यूँकि यह लोगों को तालीम देते और ईसा की मिसाल देकर मुर्दों के जी उठने का ऐलान करते थे। 3 और उहोंने उन को पकड़ कर दुसरे दिन तक हवालात में रखवा; क्यूँकि शाम हो गई थी। 4 मगर कलाम के सुनेवालों में से बहुत से ईमान लाए; यहाँ तक कि मर्दों की तालीद वाँच हज़ार के करीब हो गई। 5 दुसरे दिन यूँ हुआ कि उनके सरदार और बुर्जुआ और आलिम। 6 और सरदार काहिन हन्ना और काइफा, यहन्ना, और इस्कन्दर और जितने सरदार काहिन के घराने के थे, येस्शलेम में जमा हुए। 7 और उनको बीच में खड़ा करके पूछे लगे कि तुम ने ये काम किस कुदरत और किस नाम से किया? 8 उस वक्त पतरस ने स्ह — उल — कुदूस से भरपूर होकर उन से कहा। 9 ऐ उम्मत के सरदारों और बुर्जुआ; अगर आज हम से उस एहसान के बारे में पूछ — ताछ की जाती है, जो एक कमज़ोर आदमी पर हुआ; कि वो क्यूँकर अच्छा हो गया? 10 तो तुम सब और ईसाईल की सारी उम्मत को मालम हो कि ईसा मसीह नासरी जिसको तुम ने मस्लूब किया, उसे खुदा ने मुर्दों में से जिलाया, उसी के नाम से ये शास्त्र तुम्हारे सामने तन्दस्त खड़ा है। 11 ये वही पत्थर है जिसे तुमने हकीर जाना और वो कोने के सिरे का पत्थर हो गया। 12 और किसी दूसरे के बसीले से नजात नहीं, क्यूँकि आसमान के तले आदमियों को कोई दुसरा नाम नहीं बछाया गया,

जिसके वसीले से हम नजात पा सकें। 13 जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना की हिम्मत देखी, और मालूम किया कि ये अनपढ और नावाकिफ आदमी हैं, तो तांअज्जव किया; फिर उन्हें पहचाना कि ये ईसा के साथ रहे हैं। 14 और उस आदमी को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़ा देखकर कुछ खिलाफ न कह सके। 15 मगर उन्हें संदे — ए — अदालत से बाहर जाने का हक्म देकर आपस में मशवरा करने लगे। 16 “कि हम इन आदमियों के साथ क्या करें? क्यूंकि येश्शलेम के सब रहने वालों पर यह रोशन है। कि उन से एक खुला मोजिज्जा जाहिर हुआ और हम इस का इन्कार नहीं कर सकते। 17 लेकिन इसलिए कि ये लोगों में ज्यादा मशहूर न हो, हम उन्हें धमकाएं कि फिर ये नाम लेकर किसी से बात न करें।” 18 पस उन्हें बुला कर ताकीद की कि ईसा का नाम लेकर हरपिज बात न करना और न तालीम देना। 19 मगर पतरस और यूहन्ना ने जबाब में उनसे कहा, कि तुम ही इन्साफ करो, आया खुदा के नजदीक ये वाजिब है कि हम खड़ा की बात से तुम्हारी बात ज्यादा सुनें? 20 क्यूंकि मुकिन नहीं कि जो हम ने देखा और सुना है वो न कहें। 21 उन्होंने उनको और धमकाकर छोड़ दिया; क्यूंकि लोगों कि वजह से उनको सजा देने का कोई मौका; न मिला इसलिए कि सब लोग उस माजे कि वजह से खुदा की बड़ई करते थे। 22 क्यूंकि वो शब्द जिस पर ये शिफा देने का मोजिज्जा हुआ था, चार्लीस बरस से ज्यादा का था। 23 वो छूटकर अपने लोगों के पास गए, और जो कुछ सरदार काहिनों और बुजूर्गों ने उन से कहा था बयान किया। 24 जब उन्होंने ये सुना तो एक दिल होकर बुलन्द आवाज से खुदा से गुजारिश की, “ऐ मालिक त वो है जिसने आसमान और जमीन और समून्दर और जो कुछ उन में है पैदा किया। 25 तूने स्थ — उल — कुदूस के वसीले से हमारे बाप अपने खादिम दाऊद की जबानी फरमाया कि, कौमों ने क्यूं धूम मचाई? और उम्मतों ने क्यूं बातिल ख्याल किए? 26 खुदावन्द और उसके मसीह की मुख्यालिफत को जमीन के बादशाह उठ खड़े हुए, और सरदार जमा हो गए।” 27 क्यूंकि वाक़ ई तेरे पाक खादिम ईसा के बरखिलाफ जिसे न्यौ मधर किया। हेरोदेस, और, पुनित्यस्प पीलातुस, गैर कौमों और इमाईलियों के साथ इस शहर में जमा हुए। 28 ताकि जो कुछ पहले से तेरी कुदरत और तेरी मसलेहत से ठहर गया था, वही “अमल में लाएँ।” 29 अब ऐ खुदावन्द “उनकी धमकियों को देख, और अपने बन्दों को ये तौफीक दे, कि वो तेरा कलाम कमाल दिलेरी से सुनाएँ। 30 और तु अपना हाथ शिफा देने को बढ़ा और तेरे पाक खादिम ईसा के नाम से मोजिज्जे और अजीब काम जहर में आएँ।” 31 जब वो दुआ कर चुके, तो जिस मकान में जमा थे, वो हिल गया और वो सब स्थ — उल — कुदूस से भर गए, और खुदा का कलाम दिलेरी से सुनाते रहे। 32 और ईमानदारों की जमा “अत एक दिल और एक जान थी; और किसी ने भी अपने माल को अपना न कहा, बल्कि उनकी सब चीजें मुरतका थी। 33 और रस्लूल बड़ी कुदरत से खुदावन्द ईसा के जी उठने की गवाही देते रहे, और उन सब पर बड़ा फ़जल था। 34 क्यूंकि उन में कोई भी मुहताज न था, इसलिए कि जो लोग जमीनों और घरों के मालिक थे, उनको बेच बेच कर बिकी हुई चीजों की कीमत लाते। 35 और रस्लूलों के पाँव में रख देते थे, फिर हर एक को उसकी जस्त के मुवाफिक बैट दिया जाता था। 36 और यूसूफ नाम एक लाली था, जिसका लक्कब रस्लूलों ने बरनबासः यांनी नसीहत का बेटा रखखा था, और जिसकी पैदाइश कुप्रस टाप की थी। 37 उसका एक खेत था, जिसको उसने बेचा और कीमत लाकर रस्लूलों के पाँव में रख दी।

5 और एक शब्द हननियाह नाम और उसकी बीबी सफीरा ने जायदाद बेची। 2 और उसने अपनी बीबी के जानते हुए कीमत में से कुछ रख छोड़ा और एक हिस्सा लाकर रस्लूलों के पाँव में रख दिया। 3 मगर पतरस ने कहा, ऐ

हननियाह! क्यूं शैतान ने तेरे दिल में ये बात डाल दी, कि तू रुह — उल — कुदूस से झाठ बोले और जमीन की कीमत में से कुछ रख छोड़े। 4 क्या जब तक वो तेरे पास थी वो तेरी न थी? और जब बेची गई तो तेरे इब्लियार में न रही, तो क्यूं अपने दिल में इस बात का ख्याल बाँधा? तू आदमियों से नहीं बल्कि खुदा से झाठ बोला। 5 ये बातें सनते ही हननियाह गिर पड़ा, और उसका दम निकल गया, और सब सुनेवालों पर बड़ा खौफ छा गया। 6 कुछ जवानों ने उठ कर उसे कफनाया और बाहर ले जाकर दफन किया। 7 तकरीबन तीन घंटे गुजर जाने के बाद उसकी बीबी इस हालात से बेखबर अन्दर आई। 8 पतरस ने उस से कहा, मुझे बता; क्या तुम ने इन्हें ही की जमीन बेची थी? उसने कहा हाँ इतने ही की। 9 पतरस ने उससे कहा, “तुम ने क्यूं खुदावन्द की रुह को आजमाने के लिए ये क्या किया? देख तेरे शौहर को दफन करने वाले दरवाजे पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले जाएँगे।” 10 वो उसी बक्त उसके कदमों पर गिर पड़ी और उसका दम निकल गया, और जवानों ने अन्दर आकर उसे मुर्दा पाया और बाहर ले जाकर उसके शौहर के पास दफन कर दिया। 11 और सारी कल्लीसिया बल्कि इन बारों के सब सुनेवालों पर बड़ा खौफ छा गया। 12 और रस्लूलों के हाथों से बहुत से निशान और अजीब काम लोगों में जाहिर होते थे, और वो सब एक दिल होकर सुनौमान के बरामदेह में जमा हुआ करते थे। 13 लेकिन वे ईमानों में से किसी को हिम्मत न हई, कि उन में जा मिले, मगर लोग उनकी बड़ई करते थे। 14 और ईमान लाने वाले मर्द — ओ — और उस खुदावन्द की कल्लीसिया में और भी कसरत से आ मिले। 15 यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला लाकर चार पाईयों और खटोलों पर लिटा देते थे, ताकि जब पतरस आए तो उसका साया ही उन में से किसी पर पड़ पड़ जाए। 16 और येश्शलेम के चारों तरफ के कस्बों से भी लोग बीमारों और नापाक स्थँहों के सताए हवों को लाकर कसरत से जमा होते थे, और वो सब अच्छे कर दिए जाते थे। 17 फिर सरदार काहिन और उसके सब साथी जो सदूकियों के फिरके के थे, हसद के मारे उठे। 18 और रस्लूलों को पकड़ कर हवालात में रख दिया। 19 मगर खुदावन्द के एक फ़रिश्ते ने रात को कैदखाने के दरवाजे खोले और उन्हें बाहर लाकर कहा कि। 20 “जाओ, हैक्ल में खड़े होकर इस ज़िन्दगी की सब बातें लोगों को सनाओ।” 21 वो ये सनकर सबह होते ही हैक्ल में गए, और तालीम देने लगे; मगर सरदार काहिन और उसके साथियों ने आकर सदे — ऐ — अदालत वालों और बनी ईमाईल के सब बुजूर्गों को जमा किया, और कैद खाने में कहला भेजा उन्हें लाएँ। 22 लेकिन सिपाहियों ने पहँच कर उन्हें कैद खाने में न पाया, और लौट कर खबर दी 23 “हम ने कैद खाने को तो बड़ी फ़िक्राजत से बन्द किया हुआ, और पहरेदारों को दरवाजों पर खड़े पाया; मगर जब खोला तो अन्दर कोई न मिला।” 24 जब हैक्ल के सरदार और सरदार काहिनों ने ये बातें सुनी तो उनके बारे में हैरान हुए, कि इसका क्या अंजाम होगा? 25 इतने में किसी ने आकर उन्हें खबर दी कि देखो, वो आदमी जिन्हें तुम ने कैद किया था; हैक्ल में खड़े लोगों को तालीम दे रहे हैं। 26 तब सरदार सिपाहियों के साथ जाकर उन्हें ले आया; लेकिन ज़बरदस्ती नहीं, क्यूंकि लोगों से डरते थे, कि हम पर पथराव न करें। 27 फिर उन्हें लाकर ‘अदालत में खड़ा कर दिया, और सरदार काहिन ने उन से ये कहा। 28 “हम ने तो तुम्हें सरकार ताकीद की थी, कि ये नाम लेकर तालीम न देना; मगर देखो तुम ने तमाम येश्शलेम में अपनी तालीम फैला दी, और उस शब्द का खून हमारी गर्दन पर रखना चाहते हो।” 29 पतरस और रस्लूलों ने जबाब में कहा, कि; “हमें आदमियों के हक्म की निस्बत खुदा का हक्म मानना ज्यादा फ़ज़ी है। 30 हमारे बाप दादा के खुदा ने ईसा को जिलाया, जिसे तुमने सलीब पर लटका कर मार डाला था। 31 उसी को खुदा ने मालिक और मुन्जी ठहराकर अपने दहने हाथ

से सर बलन्द किया, ताकि इसाईल को तौबा की तौफीक और गुनाहों की मु'आफ़ी बचें। 32 और हम इन बातों के गवाह हैं, स्ह — उल — कुदू दस भी जिसे खुदा ने उन्हें बचाया है जो उसका हूकम मानते हैं। 33 वो ये सुनकर जल गए, और उन्हें कल्प करना चाहा। 34 मारा गमलील नाम एक फरीसी ने जो शरा' का मु'अल्लिम और सब लोगों में इज्जतदार था; अदालत में खड़े होकर हूकम दिया कि इन आदमियों को थोड़ी देर के लिए बाहर कर दो। 35 फिर उस ने कहा, ऐ इसाईलियों; इन आदमियों के साथ जो कुछ करना चाहते हो होशियारी से करना। 36 क्यैंकि इन दिनों से पहले थियदास ने उठ कर दावा किया था, कि मैं भी कुछ हूँ, और तकरीबन चार सौ आदमी उसके साथ हो गए थे, मगर वो मारा गया और जितने उसके मानने वाले थे, सब इधर उधर हए, और मिट गए। 37 इस शख्स के बाद यहदाह गलीली नाम लिखवाने के दिनों में उठा; और उस ने कुछ लोग अपनी तरफ कर लिए; वो भी हल्काक हुआ और जिन्हे उसके मानने वाले थे सब इधर उधर हो गए। 38 पस अब में तुम से कहता हूँ कि इन आदमियों से किनारा करो और उन से कुछ काम न रखें, कहीं ऐसा न हो कि खुदा से भी लड़ने वाले ठहरों क्यैंकि ये तदबीर या काम अगर आदमियों की तरफ से है तो आप बरबाद हो जाएं। 39 लेकिन अगर खुदा की तरफ से है तो तुम इन लोगों को मगलूब न कर सकोगे। 40 उन्होंने उसकी बात मानी और रस्लों को पास बुला उनको पिटवाया और ये हूकम देकर छोड़ दिया कि ईसा का नाम लेकर बात न करना। 41 पस वो अदालत से इस बात पर खुश होकर चले गए; कि हम उस नाम की खालिर बैज्जत होने के लायक तो ठहरे। 42 और वो हैकल में और घरों में हर रोज तालीम देने और इस बात की खुशखबरी सुनाने से कि ईसा ही मसीह है बाज न आए।

6 उन दिनों में जब शाशिर्द बहुत होते जाते थे, तो यत्नानी माइल यहदी इज्जानियों की शिकायत करने लगे; इसलिए कि रोजाना खबरगीरी में उनकी बेवाओं के बारे में लापरवाही होती थी। 2 और उन बारह ने शाशिर्दी की जमा'अत को अपने पास बुलाकर कहा, मुनासिब नहीं कि हम खुदा के कलाम को छोड़कर खाने पीने का इन्तजाम करें। 3 पस, ऐ भाइयों! अपने में से सात नेक नाम शख्सों को चुन लो जो स्थ और दानाई से भरे हुए हों; कि हम उनको इस काम पर मुकर्रर करें। 4 लेकिन हम तो दुआ में और कलाम की सिद्धिमत में मशगूल रहेंगे। 5 ये बात सारी जमा'अत को पसन्द आई, पस उन्होंने स्टिफ़नसुस नाम एक शख्स को जो ईमान और स्थ — उल — कुदूस से भरा हुआ था और फिलिप्पस, प्रधुख्स, और नीकानोर, और तीमोन, और पर्मिनास और नीकुलाउस। को जो नी मुरीद यहदी अन्ताकी था, चुन लिया। 6 और उन्हें रस्लों के आगे खड़ा किया; उन्होंने दुआ करके उन पर हाथ रखे। 7 और खुदा का कलाम फैलाता रहा, और येस्स्लातेम में शाशिर्दी का शुपार बहुत ही बढ़ता गया, और काहिनों की बड़ी गिरोह इस दीन के तहत में हो गई। 8 स्टिफ़नसुस फ़जल और कुब्त से भरा हुआ लोगों में बड़े बड़े अजीब काम और निशान जाहिर किया करता था; 9 कि उस इबादतखाने से जो लिलिरीनों का कहलाता है; और कुरेनियों शहर और इकन्दरियों कस्ता और उन में से जो फ़िलकिया और आसिया सूबे के थे, ये कुछ लोग उठ कर स्टिफ़नसुस से बहस करने लगे। 10 मगर वो उस दानाई और स्थ का जिससे वो कलाम करता था, मुकाबिला न कर सके। 11 इस पर उन्होंने कुछ आदमियों को सिखाकर कहलावा दिया "हम ने इसको मूसा और खुदा के बर — खिलाफ कुफ़ की बातें करते सुना।" 12 फिर वो 'अवाम और बुज्जर्गी और आलिमों को उभार कर उस पर चढ़ गए; और पकड़ कर सदे — ए — 'अदालत में ले गए। 13 और इठे गवाह खड़े किए जिन्होंने कहा, ये शख्स इस पाक मुकाम और शरी'अत के बराहिलाफ बोलने से बाज नहीं आता। 14 क्यैंकि हम ने उसे ये कहते सुना है, कि वही ईसा नासरी

इस मुकाम को बरबाद कर देगा, और उन रस्मों को बदल डालेगा, जो मूसा ने हमें सौंपी हैं। 15 और उन सब ने जो अदालत में बैठे थे, उस पर गौर से नज़र की तो देखा कि उसका चेहरा फरिश्ते के जैसा है।

7 फिर सरदार कहिन ने कहा, "क्या ये बातें इसी तरह पर हैं?" 2 उस ने कहा, "ऐ भाइयों! और बुज्जर्गी, सुं। खुदा ऐ ज़ल — ज़लाल हमारे बुज्जर्ग अब्रहाम पर उस बक्त जाहिर हुआ जब वो हारान शहर में बसने से पहले मसोपेतामिया मुल्क में था।" 3 और उस से कहा कि 'अपने मुल्क और अपने कुन्बे से निकल कर उस मुल्क में चला जाजिसे मैं तुझे दिखाऊँगा। 4 इस पर वो कसिदियों के मुल्क से निकल कर हारान में जा बसा; और वहाँ से उसके बाप के मरने के बाद खुदा ने उसको इस मुल्क में लाकर बसा दिया, जिस में तुम अब बसते हो। 5 और उसको कुछ मीरास बलिक कदम रखने की भी उस में जगह न दी मार दावा किया कि मैं ये जरीन रेते और रेते बात तेरी नस्ल के कुन्बे में कर दूँगा, हालाँकि उसके औलाद न थी। 6 और खुदा ने ये फरमाया, तेरी नस्ल गैर मुल्क में परदेसी होंगी, वो उसको गुलामी में रख देंगे और चार सौ बरस तक उन से बदसुलकी करेंगे। 7 फिर खुदा ने कहा, जिस कौम की वो गुलामी में रहेंगे उसको मैं सजा दूँगा; और उसके बाद वो निकलकर इसी जगह मेरी इबादत करेंगे। 8 और उन्हे उससे खनने का 'अहद बाँधा; और इसी हालत में अब्रहाम से इज्हाक पैदा हुआ, और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और इज्हाक से याकूब और याकूब से बारह कबीलों के बुज्जर्ग पैदा हुए। 9 और बुज्जर्गी ने हसद में आकर युसूफ को बेचा कि मिस में पहुँच जाए; मगर खुदा उसके साथ था। 10 और उसकी सब मुसीबियों से उसने उसको छुड़ाया; और मिस के बादशाह फिर 'जैन के नज़दीक उसको मकबूलियत और हिक्मत बख्शी, और उसने उसे मिस और अपने सारे घर का सरदार कर दिया। 11 फिर मिस के सारे मुल्क और कनान में काल पड़ा, और बड़ी मुसीबत आई; और हमारे बाप दादा को खाना न मिलता था। 12 लेकिन याकूब ने ये सुनकर कि, मिस में अनाज है; हमारे बाप दादा को पहली बार भेजा। 13 और दूसी बार यूसूफ अपने भाइयों पर जाहिर हो गया और यूसूफ की कौमियत फिर 'जैन को मालूम हो गई। 14 फिर यूसूफ ने अपने बाप याकूब और सारे कुन्बे को जो पछहतर जाने थी, बुला भेजा। 15 और याकूब मिस में गया वहाँ वो और हमारे बाप दादा मर गए। 16 और वो शहर ऐ सिकम में पहुँच गए और उस मकबूले में दफ़न किए गए। जिसको अब्रहाम ने सिकम में स्पर्श देकर बनी हमरू से मोल लिया था। 17 लेकिन जब उस बादे की मी'आद पुरी होने को थी, जो खुदा ने अब्रहाम से फरमाया था तो मिस में वो उम्मत बढ़ गई; और उनका शमार ज्यादा होता गया। 18 उस बक्त तक कि दूसरा बादशाह मिस पर हूकमरान हुआ; जो यूसूफ को न जानता था। 19 उसने हमारी कौम से चालाकी करके हमारे बाप दादा के साथ यहाँ तक बदसुलकी की कि उन्हें अपने बच्चे फैकने पड़े ताकि जिन्दा न रहे। 20 इस मैके पर मूसा पैदा हुआ; जो निहायत खूबसूरत था, वो तीन महीने तक अपने बाप के घर में पाला गया। 21 मगर जब फैक दिया गया, तो फिर 'जैन की बेटी ने उसे उठा लिया और अपना बेटा करके पाला। 22 और मूसा ने मिसियों के, तमाम इल्मों की तालीम पाई, और वो कलाम और काम में ताकत वाला था। 23 और जब वो तकरीबन चालीस बरस का हुआ, तो उसके जी में आया कि मैं अपने भाइयों बनी इसाईल का हाल देखें। 24 चनाँचे उन में से एक को ज़ुल्म उठाते देखकर उसकी हिमायत की, और मिसी को मार कर मज्जलूम का बदला लिया। 25 उसने तो खयाल किया कि मेरे भाई समझ लेंगे, कि खुदा मेरे हाथों उन्हें छुटकारा देगा, मगर वो न समझे। 26 फिर दूसरे दिन वो उन में से लड़ते हुओं के पास आ निकला और ये कहकर उन्हें सुलह करने की तराफ़ी दी कि 'ऐ जवानों तुम तो भाई भाई हो, क्यूँ एक दूसरे पर ज़ुल्म करते हो?' 27

लेकिन जो अपने पड़ोसी पर ज़ुल्म कर रहा था, उसने ये कह कर उसे हटा दिया तुझे किसने हम पर हाकिम और काजी मुकर्रर किया? 28 क्या तू मुझे भी कल्पना करना चहता है? जिस तरह कल उस मिसी को कल्पना किया था। 29 मूसा ये बात सुन कर भाग गया, और मिदियान के मुल्क में परदेसी रहा, और वहाँ उसके दो बेटे पैदा हुए। 30 और जब पैरे चालीस बरस हो गए, तो कोह-ए-सीना के बीराने में जलती हुई झाड़ी के शोले में उसको एक फ़रिशता दिखाई दिया। 31 जब मूसा ने उस पर नजर की तो उस नजर से ताज़ज़ब किया, और जब देखने को नज़दीक गया तौ खुदावन्द की आवाज़ आई कि 32 मैं तेरे बाप दादा का खुदा यानी अब्राहम इज़हाक और याकूब का खुदा हूँ तब मूसा काँप गया और उसको देखने की हिम्मत न रही। 33 खुदावन्द ने उससे कहा कि अपने पाँव से जूती उतार ले, क्यूँकि जिस जगह तू खड़ा है, वो पाक ज़मीन है। 34 मैंने बाक़ै अपनी उस उम्मत की मुसीबत देखी जो मिस मैं है। और उनका आह—व नाला सुना पस उन्हें छुड़ाने उत्तरा हूँ, अब आ मैं तड़प मिस में भेज़ा। 35 जिस मूसा का उन्होंने ये कह कर इन्कार किया था, तड़प किसने हाकिम और काजी मुकर्रर किया 'उत्ती' को खुदा ने हाकिम और छुड़ाने वाला ठराहा कर, उस फ़रिशते के ज़रिए से भेजा जो उस झाड़ी में नजर आया था। 36 यही शब्द उन्हें निकाल लाया और मिस और बहर—ए—कुलज़म और बीराने में चालीस बरस तक अजीब काम और निशान दिखाए। 37 ये वही मूसा है, जिसने बीरी इस्माइल से कहा, खुदा तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ सा एक नबी पैदा करेगा। 38 ये वही है, जो बीराने की कल्तीसिया में उस फ़रिशते के साथ जो कोह-ए-सीना पर उससे हम कलाम हआ, और हमारे बाप दादा ने उसके फरमाँबदराद होना न चाहा, बल्कि उसको हटा दिया और उनके दिल मिस की तरफ माइल हुए। 40 और उन्होंने हास्तन से कहा, हमोरे लिए ऐसे माँबूद बना जो हमारे आगे आगे चलें, क्यूँकि ये मूसा जो हमें मुल्क—ए मिस से निकाल लाया, हम नहीं जानते कि वो क्या हुआ। 41 और उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाया, और उस बूत को कुर्बानी चढ़ाई, और अपने हाथों के कामों की खुर्ची मनाई। 42 पस खुदा ने मुँह मोंडकर उन्हें छोड़ दिया कि आसमानी फौज को पूँजे चुनाँचे नवियों की किताबों में लिखा हूँ ऐ इस्माइल के घराने क्या तुम ने बीराने में चालीस बरस मुझको जबही और कुर्बानीयाँ उजरानी? 43 बल्कि तुम मोलक के खेमे और रिफ़ान देवता के तारे को लिए फिरते थे, यानी उन मूरतों को जिन्हें तुम ने सज्जा करने के लिए बनाया था। पस मैं तुम्हें बाबुल के पेरे ले जाकर बसाऊँगा। 44 शहादत का खेमा बीराने में हमारे बाप दादा के पास था, जैसा कि मूसा से कलाम करने वाले ने हक्म दिया था, जो नमूना तूने देखा है, उसी के सुवाफ़िक इसे बना। 45 उसी खेमे को हमारे बाप दादा अगले खुर्ज़ों से हासिल करके इसा के साथ लाए जिस वक्त उन कौमों की मिलिक्यत पर कब्ज़ा किया जिनको खुदा ने हमारे बाप दादा के सामने निकाल दिया, और वो दाऊद के ज़माने तक रहा। 46 उस पर खुदा की तरफ से फ़जल हआ, और उस ने दरखावास्त की, कि मैं याकूब के खुदा के वास्ते घर तैयार करूँ। 47 मगर सुलैमान ने उस के लिए घर बनाया। 48 लेकिन खुदा हाथ के बनाए हुए घरों में नहीं रहता चुनाँचे नबी कहता है कि 49 खुदावन्द फ़रमाता है, आसमान मेरा तखत और ज़मीन मेरे पाँव तले की चौकी है, तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे, या मेरी आरामगाह कौन सी है? 50 क्या ये सब चीज़ें मेरे हाथ से नहीं बनी 51 ऐ गर्दन कशो, दिल और कान के नामङ्कलनों, तुम हर बक्त्र स्ह—उल—कुदूस की मुखालिफ़त करते हों; जैसे तुम्हारे बाप दादा करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। 52 नवियों में से किसको तुम्हारे बाप दादा ने नहीं सताया? उन्होंने ने तो उस रास्तबाज़ के आने की पेश—खबरी देनेवालों को कल्पना किया, और अब तुम उसके पकड़वाने वाले

और क्रातिल हुए। 53 तुम ने फ़रिशतों के ज़रिए से शरीरी अत तो पाई, पर अमल नहीं किया। 54 जब उन्होंने ये बातें सुनी तो जी मैं जल गए, और उस पर दाँत पीसने लगे। 55 मगर उस ने स्ह—उल—कुदूस से भरपूर होकर आसमान की तरफ गौर से नजर की, और खुदा का जलाल और ईंसा को खुदा की दहनी तरफ खड़ा देख कर कहा। 56 “देखो मैं आसमान को खुला, और इबने—एदम को खुदा की दहनी तरफ खड़ा देखता हूँ” 57 मगर उन्होंने बड़े जोर से चिल्लाकर अपने कान बन्द कर लिए, और एक दिल होकर उस पर चापे। 58 और शहर से बाहर निकाल कर उस पर पथराव करने लगे, और गवाहों ने अपने कपड़े साऊल नाम एक जवान के पाँव के पास रख दिए। 59 पस स्तिफ़न्सु पर पथराव करते रहे, और वो ये कह कर दुआ करता रहा “ऐ खुदावन्द ईंसा मेरी स्ह को कुबूल कर!” 60 फिर उस ने घुटने टेक कर बड़ी आवाज से पुकारा, “ऐ खुदावन्द ये गुनाह इन के ज़िम्मे न लगा।” और ये कह कर सो गया।

8 और साऊल उस के कल्पन में शामिल था। उसी दिन उस कल्तीसिया पर जो येस्शलेम में थी, बड़ा ज़ुल्म बर्पा हुआ, और रस्लों के सिवा सब लोग यहैंदिया और सामरिया के चारों तरफ फैल गए। 2 और दीनदार लोग स्तिफ़न्सु को दफ़न करने कि लिए ले गए, और उस पर बड़ा मातम किया। 3 और साऊल कल्तीसिया को इस तरह तबाह करता रहा, कि घर घर घुसकर और ईमानदार मर्दों और औरतों को घसीट कर कैद करता था, 4 जो इधर उत्तर हो गए थे, वो कलाम की खुशखबरी देते पिरे। 5 और फ़िलिप्पस सब—ए सामरिया में जाकर लोगों में मसीह का ऐलान करने लगा। 6 और जो मोजिजे फ़िलिप्पस दिखाता था, लोगों ने उन्हें सुनकर और देख कर बिल—इत्तफ़ाक उसकी बातों पर जी लगाया। 7 क्यूँकि बहत सारे लोगों में से बदल हैं बड़ी आवाज से चिल्ला चिल्लाकर निकल गई, और बहत से मफ़्लूज और लंगड़े अच्छे किए गए। 8 और उस शहर में बड़ी खुर्ची हुई। 9 उस से पहले शामा'ऊन नाम का एक शब्द उस शहर में जादूरी करता था, और सामरिया के लोगों को हैरान रखता और ये कहता था, कि मैं भी कोई बड़ा शब्द हूँ। 10 और छोटे से बड़े तक सब उसकी तरफ मुतवज्ज़ह होते और कहते थे, ये शब्द खुदा की वो कूदरत है, जिसे बड़ी कहते हैं। 11 वह इस लिए उस की तरफ मुतवज्ज़ह होते थे, कि उस ने बड़ी मुद्दत से अपने जादू की बजह से उनको हैरान कर रखा था, 12 लेकिन जब उन्होंने फ़िलिप्पस का यकीन किया जो खुदा की बादशाही और ईंसा मसीह के नाम की खुशखबरी देता था, तो सब लोग मर्द हो चाहे और उत्तर बपतिस्मा लेने लगे। 13 और शामा'ऊन ने खुद भी यकीन किया और बपतिस्मा लेकर फ़िलिप्पस के साथ रहा, और निशान और मोजिजे देखकर हैरान हुआ। 14 जब रस्लों ने जो येस्शलेम में थे सुना, कि सामरियों ने खुदा का कलाम कुबूल कर लिया है, तो पतरस और युहन्ना को उन के पास भेजा। 15 उन्होंने जाकर उनके लिए दुआ की कि स्ह—उल—कुदूस पाएँ। 16 क्यूँकि वो उस वक्त तक उन में से किसी पर नाज़िल ना हुआ था, उन्होंने सुर्खिं खुदावन्द ईंसा के नाम पर बपतिस्मा लिया था। 17 फिर उन्होंने उन पर हाथ रखें, और उन्होंने स्ह—उल—कुदूस पाएँ। 18 जब शामा'ऊन ने देखा कि रस्लों के हाथ रखने से स्ह—उल—कुदूस पाएँ, 19 “मुझे भी यह इछियार दो, कि जिस पर मैं हाथ रखूँ, वो स्ह—उल—कुदूस पाएँ।” 20 पतरस ने उस से कहा, तेरे स्पर्शे तेरे साथ खत्म हो, इस लिए कि तू ने खुदा की बशिक्षा को स्पर्शे तेरे से हासिल करने का ख्याल किया। 21 तेरा इस काम में न हिस्सा है न बखरा क्यूँकि तेरा दिल खुदा के नज़दीक खालिस नहीं। 22 पस अपनी ईम बुराई से तौबा कर और खुदा से दुआ कर शायद तेरा दिल के इस ख्याल की मृआकी हो। 23 क्यूँकि मैं देखता हूँ कि तू पित की सी कड़वाहट और नारास्ती के बन्द में गिरपतार है। 24 शैमौन ने जवाब

में कहा, तुम मेरे लिए खुदावन्द से दुआ करो कि जो बातें तुम ने कही उन में से कोई मुझे पेश ना आए। 25 फिर वो गवाही देकर और खुदावन्द का कलाम सुना कर येस्शलेम को वापस हाएँ और सामरियों के बहुत से गाँव में खुशखबरी देते गए। 26 फिर खुदावन्द के फरिश्ते ने फिलिप्पुस से कहा, उठ कर दक्षिण की तरफ उस राह तक जा जो येस्शलेम से गज्जा शहर को जाती है, और जंगल में है, 27 वो उठ कर रवाना हुआ, तो देखो एक हड्डी खोजा आ रहा था, वो हविशियों की मलिका कन्दाके का एक बजार और उसके सारे खजाने का मुख्तार था, और येस्शलेम में इबादत के लिए आया था। 28 वो अपने रथ पर बैठा हुआ और यसायाह नवी के सहाफे को पढ़ता हुआ वापस जा रहा था। 29 पाक स्थ ने फिलिप्पुस से कहा, नज़दीक जाकर उस रथ के साथ होले। 30 पास फिलिप्पुस ने उस तरफ टौड कर उसे यसायाह नवी का सहाफा पढ़ते सुना और कहा, “जो तू पढ़ता है उसे समझता भी है?” 31 ये मुझे से क्यूँ कर हो सकता है जब तक कोई मुझे हिदायत ना करे? और उसने फिलिप्पुस से दरखास्त की कि मेरे साथ आ बैठ। 32 किंतब — ए — मुकद्दस की जो इबादत वो पढ़ रहा था, ये थी: “लोग उसे भेड़ की तरह जबह करने को ले गए, और जिस तरह बर्बाद अपने बाल करतने वाले के सामने बे — जबान होता है।” उनीं तरह वो अपना मँह नहीं खोलता। 33 उसकी पस्तहाली में उसका इन्साफ न हुआ, और कौन उसकी नस्त का हाल बयान करेगा? क्यूँकि जर्मीन पर से उसकी जिन्दगी मिटाई जाती है। 34 खोजे ने फिलिप्पुस से कहा, “मैं तेरी मिन्नत करके पछता हूँ, कि नवी ये किस के हक्क में कहता है, अपने या किसी दूसरे के हक्क में?” 35 फिलिप्पुस ने अपनी जबान खोलकर उसी लिखे हए से शूरू किया और उसे ईसा की खुशखबरी दी। 36 और राह में चलते चलते चलते किसी पानी की जगह पर पहुँचे; खोजे ने कहा, “देख पानी मौजूद है अब मुझे बपतिस्मा लेने से कौन सी चीज़ रोकती है?” 37 फिलिप्पुस ने कहा, अगर तू दिल ओ — जान से ईमान लाए तो बपतिस्मा ले सकता है। उसने जबाब में कहा, मैं ईमान लाता हूँ कि ईसा प्रसीद खुदा का बेटा है। 38 पास उसने रथ को खुदा करने का हमरम दिया और फिलिप्पुस और खोजा दोनों पानी में उत्तर पड़े और उसने उसको बपतिस्मा दिया। 39 जब वो पानी में से निकल कर उपर आए तो खुदावन्द का स्थ फिलिप्पुस को उठा ले गया और खोजा ने उसे फिर न देखा, क्यूँकि वो खुशी करता हुआ अपनी राह चला गया। 40 और फिलिप्पुस अशदूद कस्बा में आ निकला और कैसरिया शहर में पहुँचने तक सब शहरों में खुशखबरी सुनाता गया।

9 और साऊल जो अभी तक खुदावन्द के शागिर्दों को धमकाने और कल्पना करने की धून में था। सरदार काहिन के पास गया। 2 और उस से दमिश्क के इबादतखानों के लिए इस मज़मून के खत मांगे कि जिनको वो इस तरीके पर पाएँ, मर्द चाहे औरत, उनको बाँधकर येस्शलेम में लाए। 3 जब वो सफर करते करते दमिश्क के नज़दीक पहुँचा तो ऐसा हुआ कि यकायक आसमान से एक नूँ उसके पास आ, चमका। 4 और वो जर्मीन पर गिर पड़ा और ये आवाज सुनी “ऐ साऊल, ऐ साऊल, तू मुझे क्यूँ सताता है?” 5 उस ने पूछा, “ऐ खुदावन्द, तू कौन है?” उस ने कहा, “मैं ईसा हूँ जिसे तू सताता है। 6 मगर उठ शहर में जा, और जो तड़ो करना चाहिए वो तुझसे कहा जाएगा।” 7 जो आदमी उसके हमराह थे, वो खामोश खड़े रह गए, क्यूँकि आवाज तो सुनते थे, मगर किसी को देखते न थे। 8 और साऊल जर्मीन पर से उठा, लैकिन जब आँखें खोली तो उसको कुछ दिखाई न दिया, और लोग उसका हाथ पकड़ कर दमिश्क शहर में ले गए। 9 और वो तीन दिन तक न देख सका, और न उसने खाया न पिया। 10 दमिश्क में हननियाह नाम एक शागिर्द था, उस से खुदावन्द ने रोया में कहा, “ऐ हननियाह” उस ने कहा, “ऐ खुदावन्द, मैं हाजिर हूँ।” 11 खुदावन्द ने उस से

कहा, “उठ, उस गली में जा जो सीधा” कहलाता है। और यहदाह के घर में साऊल नाम तर्सी शहरी को पूछ ले क्यूँकि देख वो दूसा कर रहा है। 12 और उस ने हननियाह नाम एक आदमी को अन्दर आते और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है, ताकि फिर बीना हो।” 13 हननियाह ने जाबाब दिया कि ऐ खुदावन्द, मैं ने बहुत से लोगों से इस शब्द का जिक्र सुना है, कि इस ने येस्शलेम में तेरे मुकद्दसों के साथ कैसी कैसी बुराइयां की हैं। 14 और यहाँ उसको सरदार काहिनों की तरफ से इश्लियार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बाँध ले। 15 मगर खुदावन्द ने उस से कहा कि “तू जा, क्यूँकि ये कौमों, बादशाहों और बनी इमाईल पर मेरा नाम जाहिर करने का मेरा चुना हुआ बरीला है।” 16 और मैं उसे जता दँगा कि उसे मेरे नाम के खातिर किस कदर दुःख उठाना पड़ेगा।” 17 पास हननियाह जाकर उस घर में दाखिल हुआ और अपने हाथ उस पर रखकर कहा, “ऐ भाई शाऊल उस खुदावन्द यानी ईसा जो तुझ पर उस राह में जिस से तू आया जाहिर हुआ था, उसने मुझे भेजा है, कि तू बीनाई पाएँ, और स्थेपने पाक से भर जाए।” 18 और फौरन उसकी आँखों से छिल्के से गिरे और वो बीना हो गया, और उठ कर बपतिस्मा लिया। 19 फिर कुछ खाकर ताकत पाई, और वो कई दिन उन शागिर्दों के साथ रहा, जो दमिश्क में थे। 20 और फौरन इबादतखानों में ईसा का ऐलान करने लगा, कि वो खुदा का बेटा है। 21 और सब सुनने वाले हैरान होकर कहने लगे कि “क्या ये वो शब्द नहीं है, जो येस्शलेम में इस नाम के लेने वालों को तबाह करता था, और यहाँ भी इस लिए आया था, कि उनको बाँध कर सरदार काहिनों के पास ले जाए?” 22 लैकिन साऊल को और भी ताकत हासिल होती गई, और वो इस बात को साबित करके कि मसीह यही है दमिश्क के रहने वाले यहदियों को हैरत दिलाता रहा। 23 और जब बहुत दिन गुज़र गए, तो यहदियों ने उसे मार डालने का मशवारा किया। 24 मगर उनकी साजिश साऊल को मालम हो गई, वो तो उसे मार डालने के लिए रात दिन दरवाजों पर लगे रहे। 25 लैकिन रात को उसके शागिर्दों ने उसे लेकर टोकरे में बिठाया और दीवार पर से लटका कर उतार दिया। 26 उस ने येस्शलेम में पहुँच कर शागिर्दों में मिल जाने की कोशिश की और सब उस दरते थे, क्यूँकि उनको यकीन न आता था, कि ये शागिर्द हैं। 27 मगर बरनबास ने उसे अपने साथ रसलों के पास ले जाकर उन से बयान किया कि इस ने इस तरह राह में खुदावन्द को देखा और उसने इस से बातें की और उस ने दमिश्क में कैसी दिलेरी के साथ ईसा के नाम से ऐलान किया। 28 पास वो येस्शलेम में उनके साथ जाता रहा। 29 और दिलेरी के साथ खुदावन्द के नाम का ऐलान करता था, और यूनानी माइल यहदियों के साथ गुफतग और बहस भी करता था, मगर वो उसे मार डालने के दर पै थे। 30 और भाइयों को जब ये मालम हुआ, तो उसे कैसरिया में ले गए, और तरसस को रवाना कर दिया। 31 पास तमाम यहदिया और गलील और सामरिया में कल्पितिया को चैन हो गया और उसकी तरक्की होती गई और वो दावन्द के खौफ और स्थ — उल — कुदूस की तसल्ली पर चलती और बढ़ती जाती थी। 32 और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ उन मुकद्दसों के पास भी पहुँचा जो लुटा में रहते थे। 33 वहाँ ऐनियास नाम एक मफलज को पाया जो आठ बरस से चारपाई पर पड़ा था। 34 पतरस ने उस से कहा, ऐ ऐनियास, ईसा मसीह तुझे शिफा देता है। उठ आप अपना बिस्तरा बिछा। वो फौरन उठ खड़ा हुआ। 35 तब लुटा और शास्त्र के सब रहने वाले उसे देखकर खुदावन्द की तरफ रस्त लाए। 36 और याफा शहर में एक शागिर्द थी, तबीता नाम जिसका तर्जुमा होती है, वो बहुत ही नेक काम और खेरात किया करती थी। 37 उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि वो बीमार होकर मर गई, और उसे नहलाकर बालाखाने में रख दिया। 38 और चूँकि लुटा याफा के नज़दीक था, शागिर्दों ने ये सुन कर कि पतरस वहाँ है दो

आदमी भेजे और उस से दरखास्त की कि हमारे पास आने में देर न कर। 39 पतरस उठकर उनके साथ हो लिया, जब पहुँचा तो उसे बालाखाने में ले गए, और सब बेवाएँ रोती हुई उसके पास आ खड़ी हुईं और जो कुरते और कपड़े हरनी ने उनके साथ में रह कर बनाए थे, दिखाने लगी। 40 पतरस ने सब को बाहर कर दिया और घुटने टेक कर दुआ की, फिर लाश की तरफ मुतवज्जह होकर कहा, ऐ तबीत उठ पस उसने आँखें खोल दी और पतरस को देखकर उठ बैठी। 41 उस ने हाथ पकड़ कर उसे उठाया और मुकद्दसों और बेवाओं को बुला कर उसे जिन्दा उनके सुपुर्दि किया। 42 ये बात सारे याका में मशहूर हो गई, और बहुत सारे खुदावन्द पर ईमान ले आए। 43 और ऐसा हुआ कि वो बहुत दिन याका में शमैन नाम दब्बागा के यहाँ रहा।

10

कैसरिया शहर में कुर्नेलियुस नाम एक शख्स था। वह सौ फौजियोंका संवेदा था, जो अतालियानी कहलाती है। 2 वो दीनदार था, और अपने सारे धराने समेत खुदा से डरता था, और यहदियों को बहत खैरात देता और हर वक्त खुदा से दुआ करता था। 3 उस ने तीसरे पहर के कर्नीब रोया में साफ़ साफ़ देखा कि खुदा का फरिशता मेरे पास आकर कहता है, “कुर्नेलियुस!” 4 उसने उस को गौर से देखा और डर कर कहा खुदावन्द क्या है? उस ने उस से कहा, तेरी दुँआएँ और तेरी खैरात यादगारी के लिए खुदा के हज़र पहुँची। 5 अब याका में आदमी भेजकर शमैन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। 6 वो शमैन दब्बाग के यहाँ मेहमान है, जिसका धर समून्दर के किनारे है। 7 और जब वो फरिशत चला गया जिस ने उस से बातें की थीं, तो उस ने दो नौकरों को और उन में से जो उसके पास हाजिर रहा करते थे, एक दीनदार सिपाही को बुलाया। 8 और सब बातें उन से बयान कर के उहें याका में भेजा। 9 दूसरे दिन जब वो राह में थे, और शहर के नजदीक पहुँचे तो पतरस दोपहर के कर्नीब छत पर दुआ करने को चढ़ा। 10 और उसे भूख लगी, और कुछ खाना चहता था, लेकिन जब लोग तैयारी कर रहे थे, तो उस पर बेखुदी छा गई। 11 और उस ने देखा कि आसमान खुल गया और एक चीज़ बड़ी चादर की तरह चारों कोनों से लटकती हुई जमीन की तरफ उतर रही है। 12 जिसमें जमीन के सब किस्म के चौपाई, कीड़े मकोड़े और हवा के परिन्दे हैं। 13 और उसे एक अवाज़ आई कि ऐ पतरस, “उठ जबह कर और खा,” 14 मगर पतरस ने कहा, “ऐ खुदावन्द हरगिज़ नहीं कर्यूँकि मैं ने कभी कोई हराम या नापाक चीज़ नहीं खाई।” 15 फिर दूसरी बार उसे आवाज़ आई, कि “जिनको खुदा ने पाक ठहराया है तू उठे हराम न कह” 16 तीन बार ऐसा ही हुआ, और फैन वो चीज़ आसमान पर उठा ली गई। 17 जब पतरस अपने दिल में हैरान हो रहा था, कि ये रोया जो मैं ने देखी क्या है, तो देखो वो आदमी जिन्हें कुर्नेलियुस ने भेजा था, शमैन के धर पूछ कर के दरवाजे पर आ खड़े हुए। 18 और पुकार कर पूछने लगे कि शमैन जो पतरस कहलाता है? “यही मेहमान है।” 19 जब पतरस उस खबाब को सोच रहा था, तो रुह ने उस से कहा देखो तीन आदमी तुझे पूछ रहे हैं। 20 पस, उठ कर नीचे जा और बे — खटके उनके साथ हो लो; कर्यूँकि मैं ने ही उनको भेजा है। 21 पतरस ने उतर कर उन आदमियों से कहा, “देखो जिसको तुम पूछते हों वो मैं ही हूँ तुम किस वजह से आये हो।” 22 उन्होंने कहा, “कुर्नेलियुस सूबेदार जो रास्ताज़ और खुदा तरस आदमी और यहदियों की सारी कौम में नेक नाम है उस ने पाक फरिशते से हिदायत पाई कि तुझे अपने धर बुलाकर तझ से कलाम सुनो।” 23 पस उस ने उन्हें अन्दर बुला कर उनकी मेहमानी की, और दूसरे दिन वो उठ कर उनके साथ रवाना हुआ, और याका में से कुछ भाई उसके साथ हो लिए। 24 वो दूसरे रोज़ कैसरिया में दाखिल हुए, और कुर्नेलियुस अपने रिश्तेदारों और दिली दोस्तों को जमा कर के उनकी राह देख रहा था। 25 जब पतरस अन्दर आने लगा तो ऐसा हुआ कि कुर्नेलियुस ने उसका इस्तकबाल

किया और उसके कदमों में पिर कर सिज्दा किया। 26 लेकिन पतरस ने उसे उठा कर कहा, “खड़ा हो, मैं भी तो इंसान हूँ।” 27 और उससे बातें करता हुआ अन्दर गया और बहुत से लोगों को इकट्ठा पा कर। 28 उनसे कहा तुम तो जानते हो कि यहदी को गैर कौम वाले से सोहबत रखना या उसके यहाँ जाना ना जायज़ है मगर खुदा ने मुझ पर जाहिर किया कि मैं किसी आदमी को नजिस या नापाक न कहूँ। 29 इसी लिए जब मैं बुलाया गया तो वे उड़ चला आया, पस अब मैं पूछता हूँ कि मुझे किस बात के लिए बुलाया है? 30 कुर्नेलियुस ने कहा “इस बक्त पूरे चार रोज़ हुए कि मैं अपने धर तीसरे पहर दुआ कर रहा था। और क्या देखता हूँ। कि एक शख्स चमकदार पोशाक पहने हुए मैं सामने खड़ा हुआ।” 31 और कहा कि ऐ कुर्नेलियुस तेरी दुआ सुन ली गई और तेरी खैरात की खुदा के हुज़र याद हुई। 32 पस किसी को याका में भेज कर शमैन को जो पतरस कहलाता है अपने पास बुला, वो समून्दर के किनारे शमैन दब्बाग के धर में मेहमान है। 33 पस उसी दिन में ने तेरे पास आदमी भेजे और तने खब किया जो आ गया, अब हम सब खुदा के हुज़र हाजिर हैं ताकि जो कुछ खुदावन्द ने फरमाया है उसे सुनें। 34 पतरस ने जबान खोल कर कहा, अब मुझे पूरा यकीन हो गया कि खुदा किसी का तरफदार नहीं। 35 बल्कि हर कौम में जो उस से डरता और रास्ताज़ी करता है, वो उसको पसन्द नहीं है। 36 जो कलाम उस ने बनी इसाईन के पास भेजा, जब कि इसा मसीह के जरिए जो सब का खुदा है, सुलह की खुशखबरी दी। 37 इस बात को तुम जानते हो जो यहना के बपतिस्मे की मनादी के बाद गलील से शुरू होकर तमाम यहदिया स्कूल में मशहूर हो गई। 38 कि खुदा ने इसा नासरी को स्थ — उल — कुदूस और कुदरत से किस तरह मसह किया, वो भलाई करता और उन सब को जो इब्लीस के हाथ से जुल्म उठाते थे शिका देता फिरा, कर्यूँकि खुदा उसके साथ था। 39 और हम उन सब कामों के गवाह हैं, जो उस ने यहदियों के मुल्क और येस्सलेम में किए, और उन्होंने उस को सलीब पर लटका कर मार डाला। 40 उस को खुदा ने तीसरे दिन जिलाया और जाहिर भी कर दिया। 41 न कि सारी उम्मत पर बल्कि उन गवाहों पर जो आगे से खुदा के चुने हुए थे, यानी हम पर जिन्होंने उसके मुर्दों में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पिया। 42 और उस ने हमें हुक्म दिया कि उम्मत में ऐलान करो और गवाही दो कि ये वही है जो खुदा की तरफ से जिन्होंने और मुर्दों का मुनिफ़िक मुकर्रर किया गया। 43 इस शख्स की सब नवी गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर ईमान लाएगा, उस के नाम से गुनाहों की मुआफ़ी हासिल करेगा। 44 पतरस ये बातें कह ही रहा था, कि स्थ — उल — कुदूस उन सब पर नज़िल हुआ, जो कलाम सुन रहे थे। 45 और पतरस के साथ जितने मछलन ईमानदार आए थे, वो सब हैरान हुए कि गैर कौमों पर भी स्थ — उल — कुदूस की बाल्लिश जारी हुई। 46 कर्यूँकि उन्हें तरह तरह की जबाने बोलते और खुदा की तरीफ़ करते सुना; पतरस ने जबाब दिया। 47 “क्या कोई पानी से रोक सकता है, कि बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने हमारी तरह स्थ — उल — कुदूस पाया?” 48 और उस ने हुक्म दिया कि उहें इसा मसीह के नाम से बपतिस्मा दिया जाए इस पर उन्होंने ने उस से दरखास्त की कि चन्द्र रोज़ हमारे पास रह।

11 रस्लों और भाइयों ने जो यहदिया में थे, सना कि गैर कौमों ने भी खुदा का कलाम कुबूल किया है। 2 जब पतरस येस्सलेम में आया तो मछलन ईमानदार उस से ये बहस करने लगे 3 “तू, ना मछलन ईमानदारों के पास गया और उन के साथ खाना खाया।” 4 पतरस ने शुरू से वो काम तरतीबवार उन से बयान किया कि 5 मैं याका शहर में दुआ कर रहा था, और बेखुदी की हालत में एक खबाब देखा। कि कोई चीज़ बड़ी चादर की तरह चारों कोनों से लटकती हुई आसमान से उतर कर मुझ तक आई। 6 उस पर जब मैंने गैर से

नज़र की तो ज़मीन के चौपाएँ और ज़ंगली जानवर और क़ीड़े मकोड़े और हवा के परिन्दे देखे। 7 और ये आवाज भी सुनी कि “ऐ पतरस उठ ज़बह कर और खा!” 8 लेकिन मैं ने कहा “ऐ खुदावन्द हरगिज नहीं ‘क्यूँकि कभी कोई हराम या नापाक चीज़ खाया ही नहीं।” 9 इसके जावाब में दूसरी बार आसमान से आवाज़ आई, “जिनको खुदा ने पाक ठहराया है; तु उन्हें हराम न कह।” 10 तीन बार ऐसा ही नहीं, पर वो सब चीजें आसमान की तरफ खींच ली गई। 11 और देखो! उसी वक्त तीन आदमी जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर के पास आ खड़े हुए जिस में हमथे। 12 स्थ है मुझ से कहा कि तु बिला इमित्याज़ उनके साथ चला जा और ये छे: भाई भी मेरे साथ हो लिए और हम उस शाखे के घर में दाखिल हुए। 13 उस ने हम से बयान किया कि मैंने फरिश्ते को अपने घर में खड़े हुए देखा। जिसने मुझ से कहा, याका में आदमी भेजकर शमैन को बुलवा ले जो पतरस कहलाता है। 14 वो तुझ से ऐसी बातें कहेगा जिससे तु और तेरा सारा घराना नजात पाएगा। 15 जब मैं कलाम करने लगा तो स्थ — उल — कुदूस उन पर इस तरह नाजिल हुआ जिस तरह शूरू में हम पर नाजिल हुआ था। 16 और मुझे खुदावन्द की वो बात याद आई, जो उसने कही थी “यहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया मगर तुम स्थ — उल — कुदूस से बपतिस्मा पाओगे।” 17 पस जब खुदा ने उस को भी वही नेंमत दी जो हम को खुदावन्द ईसा मसीह पर ईमान लाकर मिली थी? तो मैं कौन था कि खुदा को रोक सकता। 18 वो ये सनकर चूप रहे और खुदा की बड़ाई करके कहने लगे, “फिर तो बेशक खुदा ने गैर कौमों को भी ज़िन्दारी के लिए तैयारी की तौफीकी दी है।” 19 पस, जो लोग उस मुरीबत से इधर उधर हो गए थे जो स्तिफ़तस कि ज़रिए पड़ी थी वो फिरते फिरते फ़ीनिके सबा और कुप्रस टापू और आन्ताकिया शहर में पहुँचे; मगर यहदियों के सिवा और किंसी को कलाम न सुनते थे। 20 लेकिन उन में से चन्द कुप्रसी और कुरेनी थे, जो आन्ताकिया में आकर यूनायियों को भी खुदावन्द ईसा मसीह की खुशबूबरी की बातें सुनने लगे। 21 और खुदावन्द का हाथ उन पर था और बहुत से लोग ईमान लाकर खुदावन्द की तरफ रुक्खे। 22 उन लोगों की खबर येस्थलेम की कलीसिया के कानों तक पहुँची और उन्होंने बरनबास को आन्ताकिया तक भेजा। 23 वो पहुँचकर और खुदा का फ़ज़ल देख कर खुश हुआ, और उन सब को नसीहत की कि दिनी इरादे से खुदावन्द से लिप्ते रहो। 24 क्यूँकि वो नेक मर्द और स्थ — उल — कुदूस और ईमान से मामूर था, और बहुत से लोग खुदावन्द की कलीसिया में आ मिले। 25 फिर वो साऊल की तलाश में तरस्स को चला गया। 26 और जब वो मिला तो उसे आन्ताकिया में लाया और ऐसा हुआ कि वो साल भर तक कलीसिया की जमा अत में शामिल होते और बहुत से लोगों को तालीम देते रहे और शारिंद पहले आन्ताकिया में ही मसीही कहलाए। 27 उन ही दिनों में चन्द नबी येस्थलेम से आन्ताकिया में आए। 28 उन में से एक जिसका नाम अबुस था खड़े होकर स्थ की हिदायत से जाहिर किया कि तमाम दुनियाँ में बड़ा काल पड़ेगा और कलोदियुक्त के अहद में वाके हुआ। 29 पस, शारिंद ने तजवीज़ की अपने अपेने हैसियत कि मुवाकिक यहदिया में रहने वाले भाइयों की खिदमत के लिए कुछ भेजें। 30 चुनौते उन्होंने ऐसा ही किया और बरनबास और साऊल के हाथ बुजुर्गों के पास भेजे।

12 तकीबन उसी वक्त हेरोदेस बादशाह ने सताने के लिए कलीसिया में से कुछ पर हाथ डाला। 2 और यहन्ना के भाई याकूब को तलवार से कत्ल किया। 3 जब देखा कि ये बात यहदी अगुवों को पसन्द आई, तो पतरस को भी गिरफ्तार कर लिया। ये ईद 'ए फ़तीर के दिन थे। 4 और उसको पकड़ कर कैद किया और निगहबानी के लिए चार चार सिपाहियों के चार पहरों में रखा इशारे से कि फ़सह के बाद उसको लोगों के सामने पेश करे। 5 पस,

कैद खाने में तो पतरस की निगहबानी हो रही थी, मगर कलीसिया उसके लिए दिलों जान से खुदा से दुआ कर रही थी। 6 और जब हेरोदेस उसे पेश करने को था, तो उसी रात पतरस दो ज़ंगीरों से बँधा हुआ दो सिपाहियों के बीच सोता था, और पहरे वाले दरवाजे पर कैदखाने की निगहबानी कर रहे थे। 7 कि देखो, खुदावन्द का एक फ़रिश्ता खड़ा हुआ और उस कोठरी में नूर चमक गया और उस ने पतरस की पसली पर हाथ मार कर उसे ज़गाया और कहा कि जल्द उठ! और ज़ंगीर उसके हाथ से खुल पड़ी। 8 फिर फ़रिश्ते ने उस से कहा, “कमर बाँध और अपनी जूती पहन ले।” 9 उस ने ऐसा ही किया, फिर उस ने उस से कहा, “अपना चोगा पहन कर मेरे पीछे हो ले।” 9 वो निकल कर उसके पीछे हो लिया, और ये न जाना कि जो कुछ फ़रिश्ते की तरफ से हो रहा है वो बाक़ी है बल्कि ये समझा कि खबाब देख रहा है। 10 पस, वो पहले और दूसरे हल्के में से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुँचे, जो शहर की तरफ है। वो आप ही उन के लिए खुल गया, पस वो निकलकर गली के उस किनारे तक गए, और फौरन फ़रिश्ता उस के पास से चला गया। 11 और पतरस ने होश में आकर कहा कि अब मैंने सच जान लिया कि खुदावन्द ने अपना फ़रिश्ता भेज कर मुझे हेरोदेस के हाथों से छुड़ा लिया, और यहदी कौम की सारी उम्मीद तोड़ दी। 12 और इस पर गौर कर कर उस यहन्ना की मौं मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है, वहाँ बहुत से आदमी जमा हो कर दुआ कर रहे थे। 13 जब उस ने फाटक की खिड़की खटखटाई, तो स्त्री नाम एक लौटी आवाज़ सुनने आई। 14 और पतरस की आवाज़ पहचान कर खुशी के मारे फाटक न खोला, बल्कि दौड़कर अन्दर खबर की कि पतरस फाटक पर खड़ा है। 15 उन्होंने उस से कहा, “तु दिवानी है लेकिन वो यकीन से कहती रही कि यूँ ही है। उन्होंने कहा कि उसका फ़रिश्ता होगा।” 16 मगर पतरस खटखटाता रहा पस, उन्होंने खिड़की खोली और उस को देख कर हैरान हो गए। 17 उस ने उन्हें हाथ से इशारा किया कि चुप रहें। और उन से बयान किया कि खुदावन्द ने मुझे इस तरह कैदखाने से निकाला पिर कहा कि याकूब और खाइदों को इस बात की खबर देना, और रवाना होकर दूसरी जगह चला गया। 18 जब सुबह हुई तो सिपाही बहुत घबराएँ, कि पतरस क्या हुआ। 19 जब हेरोदेस ने उस की तलाश की और न पाया तो पहरे बातों की तहकीकात करके उनके कल्ट का हक्म दिया; और यहदिया सूबे को छोड़ कर कैसरिया शहर में जा बसा। 20 और वो सूर और सैदा के लोगों से निहायत नाखुश था, पस वो एक दिल हो कर उसके पास आए, और बादशाह के दरबान बलस्तस को अपनी तरफ करके सुलह चाही, इसलिए कि उन के मुल्क को बादशाह के मुल्क से इन्दिर दर्हनी दी। 21 पस, हेरोदेस एक दिन मुकर्रर करके और शाहाना पोशाक पहन कर तरजत — ए, अदालत पर बैठा, और उन से कलाम करने लगा। 22 लोग पुकार उठे कि ये तो खुदा की आवाज़ है न इंसान की, “यह खुदावन्द की आवाज़ है, इन्सान की नहीं।” 23 उसी वक्त खुदा के फ़रिश्ते ने उसे मारा; इसलिए कि उस ने खुदा की बड़ाई नहीं की और वो कीड़ी पड़ कर मर गया। 24 मगर खुदा का कलाम तरक्की करता और फ़ेलता गया। 25 और बरनबास और साऊल अपनी खिदमत पूरी करके और यहन्ना को जो मरकुस कहलाता है साथ लेकर, येस्थलेम से वापस आए।

13 अन्ताकिया में उस कलीसिया के मुतालिक जो वहाँ थी, कई नबी और मुअल्लिम थे यानी बरनबास और शमैन जो काला कहलाता है, और लुकियुस कुरेनी और मनाहेम जो चौथाई मुल्क के हाकिम हेरोदेस के साथ पला था, और साऊल। 2 जब वो खुदावन्द की इबादत कर रहे और रोजे रख रहे थे, तो स्थ — उल — कुदूस ने कहा, “मेरे लिए बरनबास और साऊल को उस काम के बास्ते मञ्जस्स कर दो जिसके बास्ते में ने उनको बुलाया है।” 3 तब

उन्होंने रोज़ा रख कर और दुआ करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें सख्त किया। 4 पस, वो रुह — उल — कुदूस के भेजे हए सिलोकिया को गए, और वहाँ से जहाज पर कुप्रस को चले। 5 और सल्मास शहर में पहुँचकर यहदियों के इबादतखानों में खुदा का कलाम सुनाने लगे और यूहन्ना उनका खादिम था। 6 और उस तमाम टापू में होते हए पाकुस शहर तक पहुँचे वहाँ उन्हें एक यहदी जादगार और झूठा नवी बरियसू नाम का मिला। 7 वो सिरिगियुसू पौत्सू सूबेदार के साथ था जो सहिब — ए — तमीज़ आदीनी था, इस ने बरनबास और साऊल को बुलाकर खुदा का कलाम सुनाना चाहा। 8 मगर इलीमास जादगार ने (यही उसके नाम का तर्मुहा है), उनकी मुखालिफ़त की और सूबेदार को ईमान लाने से रोकना चाहा। 9 और साऊल ने जिसका नाम पौत्सू भी है रुह — उल — कुदूस से भर कर उस पर गौर से देखा। 10 और कहा ऐ इलीमास की औलाद तु तमाम मक्कारी और शरारत से भरा हुआ और हर तरह की नेकी का दुश्मन है। क्या दावन्द के सीधे रास्तों को बिगाड़ने से बाज़ न आएगा 11 अब देख तुह पर खुदावन्द का गज़ब है और तू अन्धा होकर कुछ मुट्ठ तक सूरज को न देखे गा। उसी वक्त अंधेरा उस पर छा गया, और वो ढूँढ़ता फिरा कि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले। 12 तब सूबेदार ये माजरा देखकर और खुदावन्द की तालीम से हैरान हो कर ईमान ले आया। 13 फिर पौलुस और उसके साथी पाकुस शहर से जहाज पर रवाना होकर पम्फीलिया मुल्क के पिरगा शहर में आए; और यूहन्ना उनसे जुटा होकर येस्शलेम को वापस चला गया। 14 और वो पिरगा शहर से चलकर पिसदिया मुल्क के अन्ताकिया शहर में पहुँचे, और सबत के दिन इबादतखाने में जा बैठे। 15 फिर तौरेत और नवियों की किताब पढ़ने के बाद इबादतखाने के सरदारों ने उन्हें कहला भेजा “ऐ भाइयों अगर लोगों की नसीहत के बास्ते तुम्हारे दिल में कोई बात हो तो बयान करो।” 16 पस, पौलुस ने खेड़े होकर और हाथ से झारा करके कहा, ऐ इस्माइलियों और ऐ खुदा से डरनेवाले सुनो! 17 इस उम्मत इस्माइल के खुदा ने हमरो बाप दादा को चुन लिया और जब ये उम्मत पुक्के पिस्म में परदेसियों की तरह रहती थी, उसको सरबलन्द किया और जबरदस्त हाथ से उन्हें वहाँ से निकाल लाया। 18 और कोई चालीस बरस तक वीरानों में उनकी आदों की बर्दाशत करता रहा, 19 और कनाम के मुल्क में सात कौमों को लट करके तकरीबन साढ़े चार सौ बरस में उनका मुल्क इन की मीरास कर दिया। 20 और इन बातों के बाद शमुएल नवी के ज़माने तक उन में क़ाज़ी मुकर्रर किए। 21 इस के बाद उन्होंने बादशाह के लिए दरखास्त की और खुदा ने बिनयामीन के क़वीले में से एक शख्स साऊल कीस के बेटे को चालीस बरस के लिए उन पर मुकर्रर किया। 22 फिर उसे हटा करके दाऊद को उन का बादशाह बनाया। जिसके बारे में उस ने ये गवाही दी कि मुझे एक शख्स यस्ती का बेटा दाऊद मेरे दिल के मुँवाफ़िक मिल गया। वही मेरी तमाम मर्जी को पूरा करेगा। 23 इसी की नस्ल में से खुदा ने अपने वाँदे के मुताबिक इस्माइल के पास एक मुन्जी याँनी ईसा को भेज दिया। 24 जिस के अने से पहले यूहन्ना ने इस्माइल की तमाम उम्मत के सामने तौबा के बपतिस्मे का ऐतान किया। 25 और जब यूहन्ना अपना दैर पूरा करने को था, तो उस ने कहा कि तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वो नहीं बल्कि देखो मैं बाद वो शख्स आने वाला है, जिसके पाँव की ज़ूतियों का फीता मैं खोलने के लायक नहीं। 26 ऐ भाइयों! अब्राहाम के बेटों और ऐ खुदा से डरने वालों इस नजात का कलाम हमारे पास भेजा गया। 27 क्यूँकि येस्शलेम के रहने वालों और उन के सरदारों ने न उसे पहचाना और न नवियों की बातें समझीं, जो हर सबत को सनाई जाती हैं। इस लिए उस पर फतवा देकर उनको पूरा किया। 28 और अगर उस के कल्त की कोई वजह न मिली तो भी उन्होंने पीलातुस से उसके कल्त की दरखास्त की। 29 और जो कुछ उसके हक्क में लिखा था, जब

उसको तमाम कर चुके तो उसे सलीब पर से उतार कर कब्र में रख्खा। 30 लेकिन खुदा ने उसे मुर्दों में से जिलाया। 31 और वो बहुत दिनों तक उनको दिखाई दिया, जो उसके साथ गलील से येस्शलेम आए थे, उम्मत के सामने अब वही उसके गवाह हैं। 32 और हम तुमको उस बादे के बारे में जो बाप दादा से किया गया था, वे खुशखबरी देते हैं। 33 कि खुदा ने ईसा को जिला कर हमारी औलाद के लिए उसी बादे को पूरा किया चुनौती दूसरे मजमूर में लिखा है, कि तू मेरा बेटा है, आज तू मुझ से पैदा हुआ। 34 और उसके इस तरह मुर्दों में से जिलाने के बारे में फिर कभी न मरे और उस ने यूँ कहा, कि मैं दाऊद की पाक और सच्ची ने अमतें तुहें दँगा।’ 35 चुनौती वो एक और मजमूर में भी कहता है, कि तू अपने मुकद्दस के सड़ने की नौबत पहुँचने न देगा।’ 36 क्यूँकि दाऊद तो अपने बक्त ये खुदा की मर्जी के तबे दार रह कर सो गया, और अपने बाप दादा से जा मिला, और उसके सड़ने की नौबत पहुँची। 37 मगर जिसको खुदा ने जिलाया उसके सड़ने की नौबत न पहुँची। 38 पस, ऐ भाइयों! तुहें माँ लूम हो कि उसी के बसीले से तुम को गुनाहों की मुँआफ़ी की खबर दी जाती है। 39 और मूसा की शरीरी अत के ज़रिए जिन बातों से तुम बरी नहीं हो सकते थे, उन सब से हर एक ईमान लाने वाला उसके ज़रिए बरी होता है। 40 पस, खबरदार! ऐसा न हो कि जो नवियों की किताब में आया है वो तुम पर सच आए। 41 ऐ तहकीर करने वालों, देखो, तब'ज्जब करो और मिट जाओः क्यूँकि मैं तम्हारे ज़माने में एक काम करता हूँ ऐसा काम कि अगर कोई तुम से बयान करे तो कभी उसका यकीन न करोगे। 42 उनके बाहर जाते वक्त लोग मिन्नत करने लगे कि अगले सबत को भी ये बातें सुनाई जाएँ। 43 जब मजलिस खत्म हुई तो बहुत से यहदी और खुदा परस्त नए मुरीद यहदी पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए, उन्होंने उन से कलाम किया और तराजीबी दी कि खुदा के फ़ज़ल पर काईम रहो। 44 दूसरे सबत को तक़ीबीन सारा शहर खुदा का कलाम सुनने को इकट्ठा हुआ। 45 मगर यहदी इतनी भीड़ देखकर हस्द से भर गए, और पौलुस की बातों की मुखालिफ़त करने और कुफ़्र बकने लगे। 46 पौलुस और बरनबास दिलर होकर कहने लगे, ज़स्त था, कि खुदा का कलाम पहले तुहें सुनाया जाएँ; लेकिन चैकि तुम उसको रद करते हो। और अपने आप को हमेशा की ज़िन्दगी के नाकाबिल ठहराते हो, तो देखो हम गौम कौमों की तरफ मुतवज्जह होते हैं। (aiōnios g166) 47 क्यूँकि खुदा ने हमें ये हूँकम दिया है कि “मैंने तुझ को गैर कौमों के लिए नूर मुकर्रर किया ‘ताकि तू ज़मीन की इन्हिंता तक नजात का ज़रिया हो।’” 48 गैर कौम वाले ये सुनकर खुश हुए और खुदा के कलाम की बड़ाई करने लगे, और जितने हमेशा की ज़िन्दगी के लिए मुकर्रर किए गए, ऐसामन ले आए। (aiōnios g166) 49 और उस तमाम इलाके में खुदा का कलाम फैल गया। 50 मगर यहदियों ने खुदा परस्त और इज्जत दार औरतों और शहर के रसीदों को उभारा और पौलुस और बरनबास को सताने पर आमादा करके उन्हें अपनी सरहदों से निकाल दिया। 51 ये अपने पाँव की खाक उनके सामने झाड़ कर इकुनियम शहर को गए। 52 मगर शारीर्द खुशी और रुह — उल — कुदूस से भरते रहे।

14 और इकुनियम में ऐसा हुआ कि वो साथ यहदियों के इबादत खाने में गए। और ऐसी तक़ीर की कि यहदियों और यानियों दोनों की एक बड़ी ज़मान ले आई। 2 मगर नाफ़रामान यहदियों ने गैर कौमों के दिलों में जोश पैदा करके उनको भाइयों की तरफ बदगुमान कर दिया। 3 पस, वो बहुत ज़माने तक वहाँ रहे, और खुदावन्द के भरोसे पर हिम्मत से कलाम करते थे, और वो उनके हाथों से निशान और अजीब काम कराकर, अपने फ़ज़ल के कलाम की गवाही देता था। 4 लेकिन शहर के लोगों में फूट पड़ गई। कुछ यहदियों की तरफ हो गए। कुछ रस्लों की तरफ

कौम वाले और यहांटी उन्हें बैंजज्ञत और पथराव करने को अपने सरदारों समेत उन पर चढ़ आए। 6 तो वो इस से वाकिफ होकर लुकाउनिया मुल्क के शहरों लुस्तरा और दिरबे और उनके आस — पास में भाग गए। 7 और वहाँ खुशखबरी सुनाते रहे। 8 और लुस्तरा में एक शख्स बैठा था, जो पाँव से लाचार था। वो पैदाइशी लंगड़ा था, और कभी न चला था। 9 वो पौत्रुस को बांटे करते सुन रहा था। और जब इस ने उसकी तरफ गैर करके देखा कि उस में शिफा पाने के लायक ईमान है। 10 तो बड़ी आवाज से कहा कि, “अपने पाँव के बल सीधा खड़ा हो पास, वो उछल कर चलने फिरने लगा।” 11 लोगों ने पौत्रुस का ये काम देखकर लुकाउनिया की बोली में बुलन्द आवाज से कहा “कि आदमियों की सूरत में देवता उतर कर हमारे पास आए हैं। 12 और उन्होंने बरनबास को जियूस कहा, और पौत्रुस को हरमेस इसलिए कि ये कलाम करने में सबकंत रखता था। 13 और जियूस कि उस मन्दिर का पुराजी जो उनके शहर के सामने था, बैल और फूलों के हार फाटक पर लाकर लागों के साथ कुर्बानी करना चहता था।” 14 जब बरनबास और पौत्रुस रस्लों ने ये सुना तो अपने कपड़े फाड़ कर लागों में जा कूदे, और पुकार पुकार कर। 15 कहने लगे, लोगों तुम ये क्या करते हो? हम भी तुहारी हम तबी' अत इंसान हैं और तुहाँ खुशखबरी सुनाते हैं ताकि इन बातिल चीजों से किनारा करके ज़िन्दा खुदा की तरफ फिरे, जिस ने आसमान और जमीन और समून्दर और जो कुछ उन में है, पैदा किया। 16 उस ने अगले ज्ञानों में सब कौमों को अपनी अपनी राह पर चलने दिया। 17 तो ऐसी उस ने अपने आप को बेगावाह न छोड़ा। चुनाँचे, उस ने महरबानियाँ की और आसमान से तुहारे लिए पानी बरसाया और बड़ी बड़ी पैदावार के मौसम अता' किए और तुहारे दिलों को खुराक और खुशी से भर दिया। 18 ये बातें कहकर भी लोगों को मुश्किल से रोका कि उन के लिए कुर्बानी न करें। 19 फिर कुछ यहांटी अन्ताकिया और इक्कनियुम से आए और लोगों को अपनी तरफ करके पौत्रुस पर पथराव किया और उसको मुर्दा समाझकर शहर के बाहर घसीट ले गए। 20 मगर जब शरिंगि उसके आस पास आ खड़े हुए, तो वो उठ कर शहर में आया, और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे शहर को चला गया। 21 और वो उस शहर में खुशखबरी सुना कर और बहुत से शार्मिंद करके लुस्तरा और इक्कनियुम और अन्ताकिया को वापस आए। 22 और शार्मिंद के दिलों को मजबूत करते, और ये नसीहत देते थे, कि ईमान पर काईम रहो और कहते थे “ज़स्त है कि हम बहुत मुसीबों सहकर खुदा की बादशाही में दाखिल हों।” 23 और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिए बुजुर्गों को मुकर्रर किया और रोजा रखकर और दुआ करके उन्हें दावन्द के सुपुर्द किया, जिस पर वो ईमान लाए थे। 24 और पिसदिया मुल्क में से होते हुए पम्फीलिया मुल्क में पहुँचे। 25 और पिरों में कलाम सुनाकर अतलिया को गए। 26 और वहाँ से जहाज पर उस अन्ताकिया में आए, जहाँ उस काम के लिए जो उन्होंने अब पूरा किया खुदा के फ़जल के सुपुर्द किए गए थे। 27 वहाँ पहुँचकर उन्होंने कलीसिया को जमा किया और उन के सामने बयान किया कि खुदा ने हमारे जरिए क्या कुछ किया और ये कि उस ने गैर कौमों के लिए ईमान का दरवाजा खोल दिया। 28 और वो ईमानदारों के पास मुक्त तक रहे।

15 फिर कुछ लोग यहदिया से आ कर भाइयों को यह तालीम देने लगे, “ज़स्ती है कि आप का मूसा की शरी' अत के मुताबिक खतना किया जाए, वर्ना आप नजात नहीं पा सकेंगे।” 2 पस, जब पौत्रुस और बरनबास की उन से बहुत तकरार और बहस हुई तो कलीसिया ने ये ठहराया कि पौत्रुस और बरनबास और उन में से चन्द शख्स इस मस्ले के लिए रस्लों और बुजुर्गों के पास येस्शलेम जाए। 3 पस, कलीसिया ने उनको रवाना किया और वो गैर कौमों को रुजू़ लाने का बयान करते हुए फ़ीनिके और सामरिया स्थे से

गुजरे और सब भाइयों को बहुत खुश करते रहे। 4 जब येस्शलेम में पहुँचे तो कलीसिया और रस्ल और बुजुर्ग उन से खुशी के साथ मिले। और उन्होंने ने सब कुछ बयान किया जो खुदा ने उनके जरिए किया था। 5 मगर फ़रीसियों के फ़िर्के में से जो ईमान लाए थे, उन में से कुछ ने उठ कर कहा “कि उनका खतना कराना और उनको मूसा की शरी' अत पर अमल करने का हक्म देना ज़स्ती है।” 6 पस, रस्ल और बुजुर्ग इस बात पर गैर करने के लिए जमा हुए। 7 और बहुत बहस के बाद पतरस ने खड़े होकर उन से कहा कि ऐ भाइयों तुम जानते हो कि बहत अस्सी हुआ जब खुदा ने तुम लोगों में से मुझे चुना कि गैर कौमें मेरी ज़बान से खुशखबरी का कलाम सुनकर ईमान लाएँ। 8 और खुदा ने जो दिलों को जानता है उनको भी हमारी तरह स्थ — उल — कुदूस दे कर उन की गवाही दी। 9 और ईमान के वर्सीले से उन के दिल पाक करके हम में और उन में कुछ फ़र्क न रखवा। 10 पस, अब तुम शार्मिंद की गर्दन पर ऐसा जुआ रख कर जिसको न हमारे बाप दादा उठा सकते थे, न हम खुदा को क्यूँ आज़माते हो? 11 हालाँकि हम को यकीन है कि जिस तरह वो खुदावन्द इसा के फ़जल ही से नजात पाएँगे, उसी तरह हम भी पाएँगे। 12 फिर सारी जमा' अत चुप रही और पौत्रुस और बरनबास का बयान सुनने लगी, कि खुदा ने उनके ज़रिए गैर कौमों में कैसे कैसे निशान और अजीब काम ज़हिर किए। 13 जब वो खामोश हुए हो या कृबूक कहने लगा कि, “ऐ भाइयों मेरी सुनो!” 14 शमैन ने बयान किया कि खुदा ने पफ्ले गैर कौमों पर किस तरह तवज्जह की ताकि उन में से अपने नाम की एक उम्मत बना ले। 15 और नवियों की बातें भी इस के मुताबिक हैं। चुनाँचे लिखा है कि। 16 इन बातों के बाद मैं फिर आकर दाऊद के गिरे हुए खेमों को उठाऊँगा, और उस के फ़टे टृटे की मरम्मत करके उसे खड़ा करूँगा। 17 ताकि बाकी आदमी याँनी सब कौमों में जो मेरे नाम की कहलाती हैं खुदावन्द को तलाश करें। 18 ये वही खुदावन्द फरमाता है जो दुनिया के शुरू से इन बातों की खबर देता आया है। (aiōn g165) 19 पस, मेरा फ़ैसला ये है, कि जो गैर कौमों में से खुशा की तरफ रुजू़ होते हैं हम उन्हें तकलीफ न दें। 20 मगर उन को लिख भेजें कि बुतों की मक्कुहात और हामाकारी और गला घोटे हुए जानवरों और लहू से परहेज़ करें। 21 क्यूँकि पुराने ज़माने से हर शहर में मूसा की तौरेत का ऐलान करने वाले होते चले आए हैं: और वो हर सबत को इबादतखानों में सुनाई जाती है। 22 इस पर रस्लों और बुजुर्गों ने सारी कलीसिया समेत मुनासिब जाना कि अपने में से चन्द शख्स चुन कर पौत्रुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया को भेजें, याँनी यहदाह को जो बरसबा कहलाता है। और सीलास को ये शख्स भाइयों में मुकद्दम थे। 23 और उनके हाथ ये लिख भेजा कि “अन्ताकिया और सुरिया और किलकिया के रहने वाले भाइयों को जो गैर कौमों में से है। रस्लों और बुजुर्ग भाइयों का सलाम पहुँचें।” 24 चूँकि हम ने सुना है, कि कुछ ने हम में से जिनको हम ने हक्म न दिया था, वहाँ जाकर तुहाँ अपनी बातों से घबरा दिया। और तुहारे दिलों को उलट दिया। 25 इसलिए हम ने एक दिल होकर मुनासिब जाना कि कुछ चुने हुए आदमियों को अपने अजीजों बरनबास और पौत्रुस के साथ तुम्हारे पास भेजें। 26 ये दोनों ऐसे आदमी हैं, जिन्होंने अपनी जानें हमारे खुदावन्द ईसा मरीह के नाम पर निसार कर रखड़ी हैं। 27 चुनाँचे हम ने यहदाह और सीलास को भेजा है, वो यही बातें ज़बानी भी बयान करेंगे। 28 क्यूँकि स्थ — उल — कुदूस ने और हम ने मुनासिब जाना कि इन ज़स्ती बातों के सिवा तुम पर और बोझ न डालें 29 कि तुम बुतों की कुर्बानियों के गोशत से और लहू और गला घोटे हुए जानवरों और हामाकारी से परहेज़ करो। अगर तुम इन चीजों से अपने आप को बचाए रखेंगे, तो सलामत रहेंगे, वस्सलामत। 30 पस, वो स्वस्त होकर अन्ताकिया में पहुँचे और जमा' अत को इकट्ठा करके खत दे दिया। 31

वो पढ़ कर उसके तसल्ली बख्श मज्जून से खुश हुए। 32 और यहदाह और सीलास ने जो खुद भी नदी थे, भाइयों को बहुत सी नसीहत करके मजबूत कर दिया। 33 वो चन्द रोज रह कर और भाइयों से सलामती की दुआ लेकर अपने भेजने वालों के पास स्वस्त कर दिए गए। 34 [लेकिन सीलास को वहाँ ठहरना अच्छा लगा।] 35 मगर पौलस और बरनबास अन्ताकिया ही में रहे। और बहुत से और लोगों के साथ खुदावन्द का कलाम सिखाते और उस का ऐलान करते रहे। 36 चन्द रोज बाद पौलस ने बरनबास से कहा “कि जिन जिन शहरों में हम ने खुदा का कलाम सुनाया था, आओ फिर उन में चलकर भाइयों को देखें कि कैसे हैं।” 37 और बरनबास की सलाह थी कि यहन्ना को जो मरकुस कहलाता है। अपने साथ ले चलें। 38 मगर पौलस ने ये मुनासिब न जाना, कि जो शख्स पम्फीलिया में किनारा करके उस काम के लिए उनके साथ न गया था; उस को हमराह ले चलें। 39 पस, उन में ऐसी सज्जत तकरार हुईं, कि एक दूसरे से जुदा हो गए। और बरनबास मरकुस को ले कर जहाज पर कुमुकों को रखाना हुआ। 40 मगर पौलस ने सीलास को पसन्द किया, और भाइयों की तरफ से खुदावन्द के फ़जल के सुर्दू हो कर रवाना किया। 41 और कलीसिया को मजबूत करता हुआ सूरीया और किलकिया से गुजारा।

16 फिर वो दिखे और लस्तरा में भी पहुँचा। तो देखो वहाँ तीमुथियस नाम का एक शारिदर था। उसकी माँ यो यहदी थी जो ईमान ले आई थी, मगर उसका बाप यत्नानी था। 2 वो लस्तरा और इकुनियु के भाइयों में नेक नाम था।

3 पौलस ने चाहा कि ये मेरे साथ चले। परं, उसको लेकर उन यहदियों की बजह से जो उस इलाके में थे, उसका खतना कर दिया क्योंकि वो सब जानते थे, कि इसका बाप यत्नानी है। 4 और वो जिन जिन शहरों में से गुज़रते थे, वहाँ के लोगों को वो अहकाम अमल करने के लिए पहुँचते जाते थे, जो येस्शलेम के रस्तों और बुजुर्गों ने जारी किए थे। 5 परं, कलीसियाएँ ईमान में मजबूत और शुमार में रोज — ब — रोज ज्यादा होती गईं। 6 और वो फोरेशिया और गलीतिया स्कूले के इलाके में से गुज़रे, क्योंकि स्ह — उल — कूदूस ने उन्हें आसिया में कलाम सुनाने से मनह किया। 7 और उन्होंने मसिया के करीब पहुँचकर बित्तिन्या स्कूले में जाने की कोशिश की मगर ईसा की स्ह ने उन्हें जाने न दिया। 8 परं, वो प्रसिया से गुज़र कर त्रोआस शहर में आए। 9 और पौलस ने रात को ख्वाब में देखा कि एक मकिदुनी आदमी खड़ा हुआ, उस की मिन्नत करके कहता है कि पार उत्तर कर मकिदुनिया में आ, और हमरी मदद कर। 10 उस का ख्वाब देखते ही हम ने फौरन मकिदुनिया में जाने का ईरादा किया, क्योंकि हम इस से ये समझे कि खुदा ने उन्हें खुशखबरी देने के लिए हम को बुलाया है। 11 परं, त्रोआस शहर से जहाज पर रवाना होकर हम सीधे सुमारिकिटाप में और दूसरे दिन नियापुलिस शहर में आए। 12 और वहाँ से फिलिप्पी शहर में पहुँचे, जो मकिदुनिया का स्कूल में है और उस किस्मत का सद्र और रोमियों की बस्ती है और हम चन्द रोज उस शहर में रहे। 13 और सबत के दिन शहर के दरवाजे के बाहर नदी के किनारे गए, जहाँ समझे कि दुआ करने की जगह होगी और बैठ कर उन औरतों से जो इकट्ठी हुई थी, कलाम करने लगे। 14 और थुवातीरा शहर की एक खुदा परस्त औरत लुदिया नाम की, किरमिजी बेचने वाली भी सुनती थी, उसका दिल खुदावन्द ने खोला ताकि पौलस की बातों पर तवज्जुह करे। 15 और जब उस ने अपने धराने समेत बपतिस्मा लिया तो मिन्नत कर के कहा कि “अगर तुम मुझे खुदावन्द की ईमानदार बन्दी समझते हो तो चल कर मेरे घर में रहो” परं, उसने हमें मजबूर किया। 16 जब हम दुआ करने की जगह जा रहे थे, तो ऐसा हुआ कि हमें एक लौड़ी मिली जिस में पोशीदा स्ह थी, वो गैब गोइ से अपने मालिकों के लिए बहुत कुछ कमाती थी। 17 वो पौलस के, और हमारे पीछे आकर चिल्लाने

लगी “कि ये आदमी खुदा के बन्दे हैं जो तुम्हें नजात की राह बताते हैं।” 18 वो बहत दिनों तक ऐसा ही करती रही। आधिर पौलस सख्त रंजीदा हुआ और फिर कर उस स्तर से कहा कि “मैं तुझे ईसा मसीह के नाम से हक्म देता हूँ कि इस में से निकल जा!” वो उसी बक्त निकल गई। 19 जब उस के मालिकों ने देखा कि हमारी कमाई की उम्मीद जाती रही तो पौलस और सीलास को पकड़कर हाकिमों के पास चौक में खीच ले गए। 20 और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के आगे ले जा कर कहा कि ये आदमी जो यहदी हैं हमारे शहर में बड़ी खलबली डालते हैं। 21 और “ऐसी रस्में बताते हैं, जिनको कुबूल करना और अमल में लाना हम गोमियों को पसन्द नहीं।” 22 और आम लोग भी मुत्तिफ़िक होकर उनकी मुखालिकत पर आमादा हुए, और फौजदारी के हाकिमों ने उन के कपड़े फ़ाड़कर उत्तर डाले और बैत लगाने का हक्म दिया 23 और बहुत से बैत लगावकर उन्हें कैद खाने में डाल दिया, और दरोगा को ताकीद की कि बड़ी होशियारी से उनकी निगहबानी करे। 24 उस ने ऐसा हक्म पाकर उन्हें अन्दर के कैद खाने में डाल दिया, और उनके पाँव काठ में ठोक दिए। 25 आर्दी रात के करीब पौलस और सीलास दुआ कर रहे और खुदा की हम्मद के गीत गा रहे थे, और कैटी सुन रहे थे। 26 कि यकायक बड़ा भुज्चाल आया, यहाँ तक कि कैद खाने की नीव हिल गई और उसी बक्त सब दरवाजे खुल गए, और सब की बेड़ियाँ खुल पड़ीं। 27 और दरोगा जाग उठा, और कैद खाने के दरवाजे खुले देखकर समझा कि कैटी भाग गए, परं, तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा। 28 लेकिन पौलस ने बड़ी आवाज से पुकार कर कहा “अपने को तुक्सान न पहुँचा! कर्मूक हम सब मौजूद हैं।” 29 वो चराग मँगवा कर अन्दर जा कूदा। और कौपता हुआ पौलस और सीलास के आगे गिरा। 30 और उन्हें बाहर ला कर कहा “ऐ साहिबों में क्या कहूँ कि नजात पाऊँ?” 31 उन्होंने कहा, खुदावन्द ईसा पर ईमान ला “तो तू और तेरा धराना नजात पाएगा।” 32 और उन्होंने उस को और उस के सब धरवालों को खुदावन्द का कलाम सुनाया। 33 और उस ने रात को उसी बक्त उन्हें ले जा कर उनके जरूर थे, और उसी बक्त अपने सब लोगों के साथ बपतिस्मा लिया। 34 और उन्हें ऊपर धर में ले जा कर दस्तरखान बिछाया, और अपने सारे धराने समेत खुदा पर ईमान ला कर बड़ी खुशी की। 35 जब दिन हुआ, तो फौजदारी के हाकिमों ने हवालदारों के जरीए कहला भेजा कि उन आदमियों को छोड़ दे। 36 और दरोगा ने पौलस को इस बात की खबर दी कि फौजदारी के हाकिमों ने तुम्हारे छोड़ देने का हक्म भेज दिया है “पस अब निकल कर सलामत चले जाओ।” 37 मगर पौलस ने उससे कहा, उन्होंने हम को जो रोमी हैं कुसूर साबित किए और “ऐलानिया पिटवाकर कैट में डाला। और अब हम को चुपके से निकालते हैं? ये नहीं हो सकता; बल्कि वो आप आकर हमें बाहर ले जाएँ।” 38 हवालदारों ने फौजदारी के हाकिमों को इन बातों की खबर दी। जब उन्होंने सुना कि ये रोमी हैं तो डर गए। 39 और आकर उन की मिन्नत की ओर बाहर ले जाकर दरखास्त की कि शहर से चले जाएँ। 40 परं वो कैद खाने से निकल कर लुदिया के यहाँ गए और भाइयों से मिलकर उन्हें तसल्ली दी। और रवाना हुए।

17 फिर वो अफिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीकियों शहर में आए, जहाँ यहदियों का बड़ादतरखाना था। 2 और पौलस अपने दस्तर के मुवाफिक उनके पास गया, और तीन सबतों को किताब — ए — मुकद्दस से उनके साथ बहस की। 3 और उनके मतलब खोल कर दलीलें पेश करता था, कि मसीह को दुःख उठाना और मुर्दों में से जी उठाना जस्त था और ईसा जिसकी मैं तुम्हें खबर देता हूँ मसीह है। 4 उनमें से कुछ ने मान लिया और पौलस और सीलास के शरीक हुए और खुदा परस्त यूनानियों की एक बड़ी

जमा'अत और बहुत सी शरीफ औरतें भी उन की शरीक हुईं। 5 मगर यहदियों ने हसद में आकर बाजारी आदमियों में से कई बदमाशों को अपने साथ लिया और भीड़ लगा कर शहर में फसाद करने लगे। और यासोन का घर घेरकर उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। 6 और जब उन्हें न पाया तो यासोन और कई और भाइयों को शहर के हाकिमों के पास चिल्लाते हुए खींच ले गए कि वो शब्द जिन्होंने जहान को बांधी कर दिया, यहाँ भी आए हैं। 7 और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ उतारा है और ये सब के सब कैसर के अहकाम की मुखालिफत करके कहते हैं, कि बादशाह तो और ही है यारी ईसा, 8 ये सुन कर आम लोग और शहर के हाकिम घबरा गए। 9 और उन्होंने यासोन और बाकियों की जमानत लेकर उन्हें छोड़ दिया। 10 लेकिन भाइयों ने फौरन रातों रात पौलस और सीलास को बिरिया कस्बा में भेज दिया, वो वहाँ पहुँचकर यहदियों के इबादतखाने में गए। 11 ये लोग थिस्सलीनीकियों के यहदियों से नेक जात थे, क्यैंकि उन्होंने बड़े शौक से कलाम को कृत्तुल किया और रोज़ — ब — रोज़ किताब ऐ मुकद्दस में तहकीक करते थे, कि आया ये बातें इस तरह हैं? 12 पस, उन में से बहुत सारे ईमान लाए और यनानियों में से भी बहुत सी 'इज्जतदार' 'औरतें और मर्द ईमान लाए। 13 जब थिस्सलीनीकियों के यहदियों को मालूम हुआ कि पौलस बिरिया में भी खुदा का कलाम सुनाता है, तो वहाँ भी जाकर लोगों को उभारा और उन में खलबली डाली। 14 उस बक्त भाइयों ने फौरन पौलस को रवाना किया कि सम्मन्दर के किनारे तक चला जाए, लेकिन सीलास और तीमुथियुस के लिए ये हक्म लेकर रवाना हुए। कि जहाँ तक हो सके जल्द मेरे पास आओ। 15 और पौलस के रहबर उसे अथेने तक ले गए। और सीलास और तीमुथियुस के लिए ये हक्म लेकर रवाना हुए। कि जहाँ तक हो सके जल्द मेरे पास आओ। 16 जब पौलस अथेने में उन की राह देख रहा था, तो शहर को बुरों से भरा हुआ देख कर उस का जी जल गया। 17 इस लिए वो इबादतखाने में यहदियों और खुदा परस्तों से और चौक में जो मिलते थे, उन से रोज़ बहस किया करता था। 18 और चन्द इक्की और स्तोइकी फैलासूर उसका मुकाबिला करने लगे कुछ ने कहा, ये बकवारी क्या कहना चाहता है? औरों ने कहा ये गैर मालूदों की खबर देने वाला मालूम होता है इस लिए कि वो ईसा और क्यामत की खुशखबरी देता है। 19 पस, वो उसे अपने साथ अरियुग्मस जगह पर ले गए और कहा, आया हमको मालूम हो सकता है। कि ये नई तालीम जो तू देता है, क्या है? 20 क्यैंकि तू हमें अनोखी बातें सुनाता है पस, हम जानना चाहते हैं। कि इन से गरज़ क्या है, 21 (इस लिए कि सब अथेनी और परदेसी जो वहाँ मुकीम थे, अपनी फुरसत का बक्त नई नई बातें करने सुने के सिवा और किसी काम में सर्फ़ न करते थे) 22 पौलस ने अरियुग्मस के बीच में खड़े हो कर कहा। ऐ अथेने वालों, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वाले हो। 23 चुनाँचे मैने सैर करते और तुम्हारे मालूदों पर गैर करते बक्त एक ऐसी कुबीनगाह भी पाई, जिस पर लिखा था, ना मालूम खुदा के लिए पस, जिसको तुम बौर मालूम किए पूजते हो, मैं तुम को उसी की खबर देता हूँ। 24 जिस खुदा ने दुनिया और उस की सब चीजों को पैदा किया वो आसमान और जमीन का मालिक होकर हाथ के बनाए हुए मकदिस में नहीं रहता। 25 न किसी चीज़ का मुहताज होकर आदमियों के हाथों से खिदमत लेता है। क्यैंकि वो तो खुद सबको जिन्दी और साँस और सब कुछ देता है। 26 और उस ने एक ही नस्ल से आदमियों की हर एक कौम तमाम स्ट्रजमीन पर रहने के लिए पैदा की और उन की 'तहदाद और रहने की हड़े मुकर्रर की। 27 ताकि खुदा को ढैंडें, शायद कि टटोलकर उसे पाएँ, हर बक्त वो हम में से किसी से दूर नहीं। 28 क्यैंकि उसी में हम जीते और चलते फिरते और मौजूद हैं, जैसा कि तुम्हारे 'शायरों में से भी कुछ ने कहा है। हम तो उस की नस्ल भी हैं। 29 पस, खुदा की नस्ल होकर हम को ये ख्याल करना

मुनासिब नहीं कि जात — ऐ — इलाही उस सोने या स्पर्शे या पत्थर की तरह है जो आदमियों के हुनर और ईजाद से गढ़े गए हैं। 30 पस, खुदा जिहालत के बक्तों से चम्प पोशी करके अब सब आदमियों को हर जगह हक्म देता है। कि तैबा करें। 31 क्यैंकि उस ने एक दिन ठाराया है, जिस में वो रास्ती से दुनिया की अदालत उस आदमी के ज़रिए करेगा, जिसे उस ने मुकर्रर किया है और उसे मुर्दी में से जिला कर ये बात सब पर साक्षित कर दी है। 32 जब उन्होंने मुर्दी की क्यामत का ज़िक्र सुना तो कुछ ठड़ा मारने लगे, और कुछ ने कहा कि ये बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे। 33 इसी हालत में पौलस उनके बीच में से निकल गया 34 मगर कुछ आदमी उसके साथ मिल गए और ईमान ले आए, उन में दियुनुसियुस, अरियुग्मस, का एक हाकिम और दमरिस नाम की एक औरत थी, और कुछ और भी उन के साथ थे।

18 इन बातों के बाद पौलस अथेने से रवाना हो कर कुरिन्युस शहर में आया। 2 और वहाँ उसको अविला नाम का एक यहदी मिला जो पुन्तुस शहर की पैदाइश था, और अपनी बीवी प्रिस्किल्ला समेत इतालिया से नया नया आया था; क्यैंकि क्टोदेटियुस ने हक्म दिया था, कि सब यहदी रोमा से निकल जाएँ। पस, वो उसके पास गया। 3 और चैंकि उनका हम पेशा था, उन के साथ रहा और वो काम करने लगे, और उन का पेशा खेमा दोज़ी था। 4 और वो हर सबत को इबादतखाने में बहस करता और यहदियों और यनानियों को तैयार करता था। 5 और जब सीलास और तीमुथियुस मकिन्दुनिया से आए, तो पौलस कलाम सुनाने के जोश से मजबूर हो कर यहदियों के आगे गवाही दे रहा था कि ईसा ही मरींह है। 6 जब लोग मुखालिफत करने और कुछ बकने लगे, तो उसे अपने कार्डे झाड़ कर उन से कहा, तुहारा खन्न तुहारी गर्दन पर मैं पाक हूँ, अब से यैर कौमों के पास जाऊँगा। 7 पस, वहाँ से चला गया, और फिर युस्तुस नाम के एक खुदा परस्त के घर चला गया, जो इबादतखाने से मिला हुआ था। 8 और इबादतखाने का सरदार क्रिसपुस अपने तमाम घराने समेत खुदावन्द पर ईमान लाया; और बहुत से कुरिन्यी सुनकर ईमान लाए, और बपतिस्मा लिया। 9 और खुदावन्द ने रात को रोया में पौलस से कहा, "खौफ न कर, बल्कि कहे जा और चुप न रह। 10 इसलिए कि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई शब्द तुझ पर हमला कर के तकलीफ न पहुँच सकेगा; क्यैंकि इस शहर में मेरे बहत से लोग हैं।" 11 पस, वो डेढ़ बरस उन में रहकर खुदा का कलाम सिखाता रहा। 12 जब गल्लियो अखिया सबे का सबेदार था, यहदी एका करके पौलस पर चढ़ आए, और उसे अदालत में ले जा कर। 13 कहने लगे "कि ये शब्द लोगों को तरायी देता है, कि शरी'अत के बरखिलाफ़ खुदा की इबादत करें।" 14 जब पौलस ने बोलना चाहा, तो गल्लियो ने यहदियों से कहा, ऐ यहदियों, अगर कुछ जुल्म या बड़ी शरात की बात होती तो वाजिब था, कि मैं सब करके तुम्हारी सुनता। 15 लेकिन जब ये ऐसे सबाल हैं तो तुम ही जानो। मैं ऐसी बातों का मुस्तिफ बनना नहीं चाहता। 16 और उस ने उन्हें अदालत से निकला दिया। 17 फिर सब लोगों ने इबादतखाने के सरदार सोसिथिनेस को पकड़ कर अदालत के सामने मारा, मगर गल्लियो ने इन बातों की कुछ परवाह न की। 18 पस, पौलस बहुत दिन वहाँ रहकर भाइयों से स्वस्त हूँ तो तुम ही जानो। मैं ऐसी बातों का मुस्तिफ बनना नहीं चाहता। 19 और इफिसुस ने जिन्दी की इबादत करें। 20 जब उन्होंने उसे दरखास्त की, और कुछ अरसे हमारे साथ रह तो उस ने मंजूर न किया। 21 बल्कि ये कह कर उन से स्वस्त हुआ अगर खुदा ने चाहा तो तुम्हारे पास फिर आऊँगा और इफिसुस से जहाज पर

रवाना हुआ। 22 फिर कैसरिया में उतर कर येस्सलेम को गया, और कलीसिया को सलाम करके अन्ताकिया में आया। 23 और चन्द रोज़ रह कर वहाँ से रवाना हुआ, और तरीब वार गलतिया सूके के इलाके और फ़्रूगिया सूके से गुज़रता हुआ सब शारीरिकों को मजबूत करता गया। 24 फिर अपुल्लोस नाम के एक यहदी इसकन्दरिया शहर की पैदाइश खुशतकरी किताब — ए — मुक़द्दस का माहिर इफ़िसुस में पहुँचा। 25 इस शब्द से खुदावन्द की राह की तालीम पाई थी, और स्थानी जोश से कलाम करता और ईसा की वजह से सही सही तालीम देता था। मगर सिर्फ़ यहन्ना के बपतिसे से वाकिफ़ था। 26 वो इबादतखाने में दिलेसी से बोलने लगा, मगर प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने घर ले गए। और उसको खुदा की राह और अच्छी तरह से बताई। 27 जब उस ने इरादा किया कि पार उतर कर अखिया को जाए तो भाईयों ने उसकी हिम्मत बढ़ाकर शारीरिकों को लिखा कि उससे अच्छी तरह मिलना। उस ने वहाँ पहुँचकर उन लोगों की बड़ी मदद की जो फ़ज़ल की वजह से ईमान लाए थे। 28 क्यौंकि वो किताब — ए — मुक़द्दस से ईसा का मसीह होना साबित करके बड़े ज़ोर शोर से यहदियों को ऐलानिया कायल करता रहा।

19 और जब अपुल्लोस कुरिन्थस में था, तो ऐसा हुआ कि पौलस ऊपर

के पहाड़ी मुल्कों से गुज़र कर इफ़िसुस में आया और कई शारीरिकों को देखकर। 2 उन से कहा “क्या तुमने ईमान लाते बन्त स्त्र — उल — कुद्दूस पाया?” उन्होंने उस से कहा “कि हम ने तो सुना नहीं। कि स्त्र — उल — कुद्दूस नाज़िल हुआ है।” 3 उस ने कहा “तुम ने किस का बपतिस्मा लिया?” उन्होंने कहा “यहन्ना का बपतिस्मा।” 4 पौलस ने कहा, यहन्ना ने लोगों को ये कह कर तौबा का बपतिस्मा दिया कि जो मेरे पिंडे अने बाला है उस पर यानी ईसा पर ईमान लाना। 5 उन्होंने ये सुनकर खुदावन्द ईसा के नाम का बपतिस्मा लिया। 6 जब पौलस ने अपने हाथ उन पर रखे तो स्त्र — उल — कुद्दूस उन पर नाज़िल हुआ, और वह तरह तरह की ज़बाने बोलने और नबूव्वत करने लगे। 7 और वो सब तकीबन बारह अदमी थे। 8 फिर वो इबादतखाने में जाकर तीन महीने तक दिलेसी से बोलता और खुदा की बादशाही के बारे में बहस करता और लोगों को कायल करता रहा। 9 लेकिन जब कुछ सज्जा दिल और नाफ़रमान हो गए। बल्कि लोगों के सामने इस तरीके को खुा करने लगे, तो उस ने उन से किनारा करके शारीरिकों को अलग कर लिया, और हर रोज़ तुरन्नुस के मदरसे में बहस किया करता था। 10 दो बरस तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहने वालों का यहदी क्या यूनानी सब ने खुदावन्द का कलाम सुना। 11 और खुदा पौलस के हाथों से खास खास मोजिजे दिखाता था। 12 यहाँ तक कि स्माल और पटके उसके बदन से छुआ कर बीमारों पर डाले जाते थे, और उन की बीमारियाँ जाती रहती थीं, और बदर्हे उन में से निकल जाती थीं। 13 मगर कुछ यहदियों ने जो ज़ादा फ़ैक करते फ़िरते थे। ये इखिलाफ़ किया कि जिन में बदर्हे हों “उन पर खुदावन्द ईसा का नाम ये कह कर फ़ैके। कि जिस ईसा की पौलस ऐलान करता है, मैं तुम को उसकी कसम देता हूँ” 14 और सिकवा, यहदी सरदार काहिन, के सात बेटे ऐसा किया करते थे। 15 बदर्हे ने जबाब में उन से कहा, ईसा को तो मैं जानती हूँ, और पौलस से भी वाकिफ़ हूँ “मगर तुम कौन हो?” 16 और वो शब्द जिस में बदर्हे थी, कह कर उन पर जा पड़ा और दोनों पर गालिब आकर ऐसी ज्यादाती की कि वो नंगे और ज़ख्मी होकर उस घर से निकल भागे। 17 और ये बात इफ़िसुस के सब रहने वाले यहदियों और यूनानियों को मालूम हो गई। पस, सब पर खौफ़ छा गया, और खुदावन्द ईसा के नाम की बड़ाई हुई। 18 और जो ईमान लाए थे, उन में से बहुतों ने आकर अपने अपने कामों का इकरार और इज़हार

किया। 19 और बहुत से जाटूरों ने अपनी अपनी किताबें इकट्ठी करके सब लोगों के सामने जला दी, जब उन की कीमत का हिसाब हुआ तो पचास हज़ार स्त्रें की निकली। 20 इसी तरह खुदा का कलाम जोर पकड़ कर फैलता और गालिब होता गया। 21 जब ये हो चुका तो पौलस ने पाक स्त्र में हिम्मत पाई कि मकिन्दुनिया और अखिया से हो कर येस्सलेम को जाऊँगा। और कहा, “वहाँ जाने के बाद मुझे रोमा भी देखना ज़रूर है।” 22 पस, अपने खिदमतज़ुराओं में से दो शख्स यानी तीमियिसु और इरास्तुस को मकिन्दुनिया में भेजकर आप कुछ अर्सा, आसिया में रहा। 23 उस बन्त इस तरीके की वजह से बड़ा फ़साद हुआ। 24 क्यौंकि देवेनियुस नाम एक सुनार था, जो अरतमिस कि स्पल्ले मन्दिर बनवा कर उस पेशेवालों को बहुत काम दिलवा देता था। 25 उस ने उन को और उनके मुताल्लिक और पेशेवालों को जमा कर के कहा, ऐ लोगों! तुम जानते हो कि हमारी आसद्दी इसी काम की बदौलत है। 26 तुम देखो और सुनते हो कि सिर्फ़ इफ़िसुस ही मैं नहीं बल्कि तकरीबन तमाम आसिया में इस पौतुस ने बहुत से लोगों को ये कह कर समझा बुझा कर और गुप्तराह कर दिया है, कि हाथ के बनाए हुए हैं, खुदा “नहीं है।” 27 पस, सिर्फ़ यही खतरा नहीं कि हमारा पेशा बेकदू हो जाएगा, बल्कि बड़ी देवी अरतमिस का मन्दिर भी नाचीज हो जाएगा, और जिसे तमाम आसिया और सारी दुनिया पूजती है, खुद उसकी अज़मत भी जाती रहेगी।” 28 वो ये सुन कर कहर से भर गए और चिल्ला चिल्ला कर कहने लगे, कि इफ़िसियों की अरतमिस बड़ी है। 29 और तमाम शहर में हलचल पड़ गई, और लोगों ने गयुस और अपिस्तरखुस मकिन्दुनिया वालों को जो पौलस के हम — सफर थे, पकड़ लिया और एक दिल हो कर तमाशा गाह को दैड़े। 30 जब पौलस ने मज्जे में जाना चाहा तो शारीरिकों ने जाने न दिया। 31 और आसिया के हाकिमों में से उस के कुछ दोस्तों ने आदमी भेजकर उसकी मिन्त की कि तमाशा गाह में जाने की हिम्मत न करना। 32 और कुछ चिल्लाए और मजलिस दरहम बरहम हो गई थी, और अक्सर लोगों को ये भी खबर न थी, कि हम विस लिए इकट्ठे हुए हैं। 33 पिर उन्होंने इस्कन्दर को जिसे यहदी पेश करते थे, भीड़ में से निकाल कर आगे कर दिया, और इस्कन्दर ने हाथ से शिरा करके मज्जे कि सामने उड़ बयान करना चाहा। 34 जब उन्हें मालूम हुआ कि ये यहदी है, तो सब हम आवाज़ होकर कोई दो घटे तक चिल्लाते रहे “कि इफ़िसियों की अरतमिस बड़ी है!” 35 पिर शहर के मुहर्रर ने लोगों को ठन्डा करके कहा, ऐ इफ़िसियों! कौन सा आदमी नहीं जानता कि इफ़िसियों का शहर बड़ी देवी अरतमिस के मन्दिर और उस मूरत का महाफ़िज है, जो ज्यूस की तरफ से गिरी थी। 36 पस, जब कोई इन बातों के खिलाफ़ नहीं कह सकता तो वाजिब है कि तुम इत्मीनान से रहो, और बे सोचे कुछ न करो। 37 क्यौंकि ये लोग जिन को तुम यहाँ लाए हो न मन्दिर को लटाने वाले हैं, न हमारी देवी की बदौलत होकर बेवाल। 38 पस, अगर देवेनियुस और उसके हम पेशा किनी पर दावा रखते हों तो अदालत खुली है, और सबेदार मौजद है, एक दूसरे पर नालिश करें। 39 और अगर तुम किसी और काम की तहकीकात चाहते हो तो बाज़ात मजलिस में फैसला होगा। 40 क्यौंकि आज के बवाल की वजह से हमें अपने ऊपर नालिश होने का अद्देश है, इसलिए कि इसकी कोई वजह नहीं है, और इस सूत में हम इस हँगामे की जबाबदेही न कर सकेंगे। 41 ये कह कर उसने मजलिस को बरखास्त किया।

20 जब बवाल कम हो गया तो पौलस ने ईमानदारों को बुलावा कर नसीहत

की, और उन से स्वतंत्र हो कर मकिन्दुनिया को रवाना हुआ। 2 और उस इलाके से गुज़र कर और उन्हें बहुत नसीहत करके यूनान में आया। 3 जब तीन महीने रह कर सूरिया की तरफ जहाज पर रवाना होने की था, तो यहदियों ने उस के बरखिलाफ़ साज़िश की, फिर उसकी ये सलाह हुई कि मकिन्दुनिया

होकर वापस जाए। 4 और पुस्स का बेटा सोपबूस जो बिरिया कन्सबे का था, और थिसल्टनीकियों में से अरिस्तरखुस और सिकुन्द्स और गयुस जो दिरबे शहर का था, और तीमुथियस और आसिया का तुखिक्स और त्रुफिमस आसिया तक उसके साथ गए। 5 ये आगे जा कर त्रोआस में हमारी राह देखते रहे। 6 और ईंट — ए — फ्रीर के दिनों के बाद हम फिलिपी से जहाज पर रवाना होकर पॉच दिन के बाद त्रोआस में उन के पास पहुँचे और सात दिन वही रहे। 7 सबत की शाम जब हम रोटी तोड़ने के लिए जमा हुए, तो पौलस ने दूधेरे दिन रवाना होने का इरादा करके उन से बातें की और आधी रात तक कलाम करता रहा। 8 जिस बालाद्वाने पर हम जमा थे, उस में बहुत से चराग जल रहे थे। 9 और यतुखुस नाम एक जवान खिडकी में बैठा था, उस पर नींद का बड़ा गल्बा था, और जब पौलस ज्यादा देर तक बातें करता रहा तो वो नीद के गल्बे में तीसरी मंजिल से गिर पड़ा, और उठाया गया तो मुर्दा था। 10 पौलस उत्तर कर उस से लिपट गया, और गले लगा कर कहा, घबराओ नहीं इस में जान है। 11 फिर ऊपर जा कर रोटी तोड़ी और खा कर इतनी देर तक बातें करता रहा कि सबह हो गई, फिर वो रवाना हो गया। 12 और वो उस लड़के को चिंदा लाए और उनको बड़ा इत्मीनान हुआ। 13 हम जहाज तक आगे जाकर इस इरादा से अस्सुस शहर को रवाना हुए कि वहाँ पहुँच कर पौलस को चढ़ा लो, क्यूँकि उस ने पैदल जाने का इरादा करके यही तज्जीज की थी। 14 पस, जब वो अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ा कर मिलतेरे शहर में आए। 15 वहाँ से जहाज पर रवाना होकर दूसरे दिन खियुस टापू के सामने पहुँचे और तीसरे दिन सामुस टापू तक आए और अगले दिन मिलतेस शहर में आ गए। 16 क्यूँकि पौलस ने ये ठान लिया था, कि इफिसुस के पास से गुरेरे, ऐसा न हो कि उसे आसिया में दें लगे; इसलिए कि वो जल्दी करता था, कि अगर हो सके तो पिनेकूस्ट के दिन येस्सलेम में हो। 17 और उस ने मिलतेस से इफिसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के बुजुर्गों को बुलाया। 18 जब वो उस के पास आए तो उन से कहा, तुम खुद जानते हो कि पहले ही दिन से कि मैंने आसिया में कदम रखाया हैं वक्त तुम्हारे साथ किस तरह रहा। 19 यानी कमाल फरोतनी से और आँसू बहा बहा कर और उन अज्ञामाझियों में जो यहदियों की साज़िश की वजह से मुझ पर वाके हई खुदावन्द की खिदमत करता रहा। 20 और जो जो बातें तुम्हारे काफ़दे की थीं उनके बयान करने और एलानिया और घर घर सिखाने से कभी न दिलाका। 21 बल्कि यहदियों और यन्नानियों के रू — ब — रू गवाही देता रहा कि खुद के सामने तौबा करना और हमारे खुदावन्द ईसा मरीह पर ईमान लाना चाहिए। 22 और अब देखो मैं रुह में बैंधा हुआ येस्सलेम को जाता हूँ, और न मालूम कि वहाँ मुझ पर क्या क्या गुजरे। 23 सिवा इसके कि रुह — उल — कूद्स हर शहर में गवाही दे दे कर मुझ से कहता है। कि कैद और मुरीबते तेरे लिए तैयार हैं। 24 लेकिन मैं अपनी जान को अजीज़ नहीं समझता कि उस की कुछ कद कर्सँ; बावजूद इसके कि अपना दौर और वो खिदमत जो खुदावन्द ईसा से पाई है, पूरी करूँ। यानी खुदा के फजल की खुशबूरी की गवाही दूँ। 25 और अब देखो मैं जानता हूँ कि तुम सब जिनके दर्मियान मैं बादशाही का एलान करता फिरा, मेरा मूँह फिर न देखेंगे। 26 पस, मैं आज के दिन तुम्हें कर्ताई कहता हूँ कि सब आदिमियों के खून से पाक हूँ। 27 क्यूँकि मैं खुदा की सारी मर्जी तुम से पैरे तौर से बयान करने से न दिलाका। 28 पस, अपनी और उस सारे गल्ले की खबरदारी करो जिसका रुह — उल कूद्स ने तुम्हें निगरबान ठहराया ताकि खुदा की कलीसिया की गल्ले कि रख वाली करो, जिसे उस ने खास अपने खन से खरीद लिया। 29 मैं ये जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िये तुम में आंगे जिन्हें गल्ले पर कुछ तरस न आएगा; 30 आप के बीच से भी आदमी उठ कर सच्चाई को तोड़ — मरोड़ कर बयान करेंगे ताकि

शागिर्दों को अपने पीछे लगा तें। 31 इसलिए जागते रहो, और याद रखो कि मैं तीन बरस तक रात दिन आँसू बहा बहा कर हर एक को समझाने से बा'ज़ न आया। 32 अब मैं तुम्हें खुदा और उसके फजल के कलाम के सुपुर्द करता हूँ, जो तुम्हारी तबक्की कर सकता है, और तमाम मुक़द्दसों में शरीक करके मीरास दे सकता है। 33 मैंने किसी के पैसे या कपड़े का लालच नहीं किया। 34 तुम अप जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की हाजातरी की। 35 मैंने तुम को सब बातें करके दिखा दी कि इस तरह मेहनत करके कमज़ोरों को संभालना और खुदावन्द ईसा की बातें याद रखना चाहिए, उस ने खुद कहा, “देना लेने से मुबारिक है।” 36 उस ने ये कह कर घटने टेके और उन सब के साथ दुआ की। 37 और वो सब बहुत रोए और पौलस के गले लग लगकर उसके बोसे लिए। 38 और खास कर इस बात पर गमगीन थे, जो उस ने कही थी, कि तुम फिर मेरा मेरा मुँह न देखेंगे फिर उसे जहाज तक पहुँचाया।

21 जब हम उनसे बमुश्किल जुदा हो कर जहाज पर रवाना हुए, तो ऐसा हुआ की सीधी राह से कोस टापू में आए, और दूसरे दिन स्टुस में, और वहाँ से पतरा शहर में। 2 फिर एक जहाज़ सीधा फ़िनिके को जाता हुआ मिला, और उस पर सवार होकर रवाना हुए। 3 जब कूप्रुस शहर नज़र आया तो उसे बाएँ हाथ छोड़कर सुरिया को चले, और सूर शहर में उतरे, क्यूँकि वहाँ जहाज का माल उतारना था। 4 जब शागिर्दों को तलाश कर लिया तो हम सात रोज़ वहाँ रहे, उन्होंने रुह के जरिए पौलस से कहा, कि येस्सलेम में कदम न रखना। 5 और जब वो दिन गुज़र गए, तो ऐसा हुआ कि हम निकल कर रवाना हुए, और सब ने बीवियों बच्चों समेत हम को शहर से बाहर तक पहुँचाया। फिर हम ने समन्दर के किनारे घूटने टेककर दुआ की। 6 और एक दूसरे से विदा होकर हम तो जहाज पर चढ़े, और वो अपने घर वापस चले गए। 7 और हम सूर से जहाज का सफर पूरा कर के पतुलिमायिस सबा में पहुँचे, और भाइयों को सलाम किया, और एक दिन उनके साथ रहे। 8 दूसरे दिन हम रवाना होकर कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस मुबशिर के घर जो उन सातों में से था, उत्तर कर उसके साथ रहे, 9 उस की चार कुँवारी बेटियाँ थीं, जो नबुव्वत करती थीं। 10 जब हम वहाँ बहुत रोज़ रहे, तो अगबुस नाम एक नवी यहदिया से आया। 11 उस ने हमारे पास आकर पौलस का कमरबन्द लिया और अपने आह येस्सलेम के बांध कर कहा, स्त्र — उल — कूद्स यूँ फ़रमाता है कि जिस शब्स का ये कमरबन्द है उस को यहदी येस्सलेम में इसी तरह बाँधेंगे और गैर कौमों के हाथ में सुर्पुद करेंगे। 12 जब ये सुना तो हम ने और वहाँ के लोगों ने उस की मिन्त की, कि येस्सलेम को न जाए। 13 मगर पौलस ने जाबाद दिया, कि तुम क्या करते हो? क्यूँ रो रो कर मेरा दिल तोड़ते हो? मैं तो येस्सलेम में खुदावन्द ईसा मरीह “के नाम पर न सिर्फ बाँधे जाने बल्कि मरने को भी तैयार हूँ।” 14 जब उस ने माना तो हम ये कह कर चुप हो गए “कि खुदावन्द की मर्जी पूरी हो।” 15 उन दिनों के बाद हम अपने सफर का सामान तैयार करके येस्सलेम को गए। 16 और कैसरिया से भी कुछ शागिर्द हमारे साथ चले और एक पुराने शागिर्द मनासेन कुरीसी के रहने वाले को साथ ले आए, ताकि हम उस के मेहमान हों। 17 जब हम येस्सलेम में पहुँचे तो ईमानदार भाई बड़ी खुशी के साथ हम से मिले। 18 और दूसरे दिन पौलस हमारे साथ याकूब के पास गया, और सब बुजुर्ग वहाँ हाजिर थे। 19 उस ने उन्हें सलाम करके जो कुछ खुदा ने उस की खिदमत से गैर कौमों में किया था, एक एक कर के बयान किया। 20 उन्होंने ये सुन कर खुदा की तारीफ की फिर उस से कहा, ऐ भाई तू देखता है, कि यहदियों में हजारों आदमी ईमान ले आए हैं, और वो सब शरीर अत के बारे में सरगम हैं। 21 और उन को तेरे बारे में सिखा दिया गया है, कि तू गैर कौमों में रहने वाले सब यहदियों को ये कह कर मूसा से फिर जाने की तालीम देता है,

कि न अपने लड़कों का खतना करो न मूसा की रस्मों पर चलो। 22 पस, क्या किया जाए? लोग ज़स्तर सुनेंगे, कि तू आया है। 23 इसलिए जो हम तुझ से कहते हैं वो कर; हमरे यहाँ चार आदमी ऐसे हैं, जिन्होंने मैं नन्त मानी है। 24 उन्हें ले कर अपने आपको उन के साथ पाक कर और उनकी तरफ से कुछ खर्च कर, ताकि वो सिर मुंडाएँ, तो सब जान लेंगे कि जो बातें उन्हें तेरे बारे में सिखाई गई हैं, उन की कुछ असल नहीं बल्कि तू खुद भी शरीरी अत पर अमल करके दुस्ती से चलता है। 25 मगर गैर कौमों में से जो ईमान लाए उनके बारे में हमने ये फैसला करके लिखा था, कि वो सिर्फ बूतों की कुर्बानी के गोशत से और लह और गला घोंटे हुए जानरों और हरामकारी से अपने आप को बचाए रखें। 26 इस पर पौलस उन आदमियों को लेकर और दूसरे दिन अपने आपको उनके साथ पाक करके हैकल में दाखिल हुआ और खबर दी कि जब तक हम में से हर एक की नज़र न चढ़ाई जाए तक हुस्के के दिन पौरे करेंगे। 27 जब वो सात दिन पौरे होने को थे, तो आसिया के यहदियों ने उसे हैकल में देखकर सब लोगों में हलचल मचाई और यूं चिल्लाकर उस को पकड़ लिया। 28 कि “ऐ इस्माइलियों, मदद करो ये वही आदमी है, जो हर जगह सब आदमियों को उम्मत और शरीरी अत और इस मुकाम के खिलाफ तालीम देता है, बल्कि उस ने यूनाइयों को भी हैकल में लाकर इस पाक मुकाम को नापाक किया है।” 29 (उन्होंने उस से पहले त्रुफिम्सु इफिसी को उसके साथ शहर में देखा था। उसी के बारे में उन्होंने खायाल किया कि पौलस उसे हैकल में ले आया है।) 30 और तमाम शहर में हलचल मच गई, और लोग दौड़ कर जमा हुए, और पौलस को पकड़ कर हैकल के दरवाजे के फाटक से बाहर घसीट कर ले गए, और फौरन दरवाजे बन्द कर लिए गए। 31 जब वो उसे कत्ल करना चाहते थे, तो ऊपर सौ फौजियों के सरदार के पास खबर पहुँची “कि तमाम येस्शलेम में खलबली पड़ गई है।” 32 वो उसी वक्त सिपाहियों और स्वेदरों को ले कर उनके पास नीचे दौड़ा आया। और वो पलटन के सरदार और सिपाहियों को देख कर पौलस की मार पीट से बाज़ आए। 33 इस पर पलटन के सरदार ने नज़दीक आकर उसे पिरफ्तार किया “और दो जंजीरों से बाँधने का हुक्म देकर पूछने लगा, ये कौन है, और इस ने क्या किया है?” 34 भीड़ में से कुछ चिल्लाएँ और कुछ पस जब हल्लड़ की वजह से कुछ हकीकत दरियाफ़त न कर सका, तो हुक्म दिया कि उसे किले में ले जाओ। 35 जब सीढ़ियों पर पहुँचा तो भीड़ की जबरदस्ती की वजह से सिपाहियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा। 36 क्यैंकि लोगों की भीड़ ये चिल्लाती ही है उसके पीछे पड़ी “कि उसका काम तमाम कर।” 37 “और जब पौलस को किले के अन्दर ले जाने को थे? उस ने पलटन के सरदार से कहा क्या मुझे इजाजत है कि तुझ से कुछ कहें? उस ने कहा तू यूनानी जानता है? 38 क्या तू वो मिसी नहीं? जो इस से पहले गाजियों में से चार हजार आदमियों को बासी करके जंगल में ले गया।” 39 पौलस ने कहा “मैं यहदी आदमी किलकिया के मशहर स्त्रा तरस्स शहर का बाशिन्दा हूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे लोगों से बोलने की इजाजत दे।” 40 जब उस ने उसे इजाजत दी तो पौलस ने सीढ़ियों पर खड़े होकर लोगों को इशारा किया। जब वो चुप चाप हो गए, तो इन्हाँनी जबान में यूँ कहने लगा।

22 ऐ भाइयों और बुज़ुर्गों, मेरी बात सुनो, जो अब तुम से बयान करता हूँ। 2 जब उन्होंने सुना कि हम से इन्हाँनी जबान में बोलता है तो और भी चप चाप हो गए। पस उस ने कहा। 3 मैं यहदी हूँ, और किलकिया के शहर तरस्स में पैदा हुआ हूँ, मगर मेरी तरबियत इस शहर में गमतीएल के क्रदमों में हुई, और मैंने बाप दादा की शरीरी अत की खास पाबन्दी की तालीम पाई, और खुदा की राह में ऐसा सरगर्म रहा था, जैसे तुम सब आज के दिन हो। 4 चुनाँचे मैंने मर्दाँ और औरतों को बाँध बाँधकर और कैदखाने में डाल डालकर मसीही तरीके

बालों को यहाँ तक सताया है कि मरवा भी डाला। 5 चुनाँचे सरदार काहिन और सब बुज़ुर्ग मेरे गवाह हैं, कि उन से मैं भाइयों के नाम खत ले कर दमिश्क को रखाना हुआ, ताकि जितने वाहाँ हों उन्हें भी बौद्ध कर येस्शलेम में सजा दिलाने को लाऊँ। 6 जब मैं सफर करता करता दमिश्क शहर के नज़दीक पहुँचा तो ऐसा हुआ कि दोपहर के करीब यकायक एक बड़ा नूर आसमान से मेरे आस — पास आ चमका। 7 और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा, और ये आवाज़ सुनी कि “ऐ साऊल, ऐ साऊल। तू मुझे क्यूँ सतात है?” 8 मैं ने जबाब दिया कि ‘ऐ खुदावन्द, तू कौन है?’ उस ने मुझ से कहा “मैं ईसा नासरी हूँ जिसे तू सतात है।” 9 और मेरे साथियों ने रु तो देखा लेकिन जो मुझ से बोलता था, उस की आवाज़ न समझ सके। 10 मैं ने कहा, ऐ खुदावन्द, मैं क्या करूँ? खुदावन्द ने मुझ से कहा, “उठ कर दमिश्क में जा। और जो कुछ तेरे करने के लिए मुर्कर द्वारा हुआ है, वहाँ तुझ से सब कहा जाए गा।” 11 जब मुझे उस नूर के जलाल की वजह से कुछ दिखाई न दिया तो मैं साथी मेरा हाथ पकड़ कर मुझे दमिश्क में ले गए। 12 और हननियाह नाम एक शख्स जो शरीरी अत के मुवाफिक दीनदार और वहाँ के सब रहने वाले यहदियों के नज़दीक नेक नाम था 13 मेरे पास आया और खड़े होकर मुझ से कहा, ‘भाई साऊल फिर बीना हो, उसी वक्त बीना हो कर मैंने उस को देखा। 14 उस ने कहा, ‘हमारे बाप दादा के खुदा ने तुझ को इसलिए मुर्कर किया है कि तू उस की मर्जी को जाने और उस रास्तबाज़ को देखे और उस के मूँह की आवाज़ सुने। 15 क्यैंकि तू उस की तरफ से सब आदमियों के सामने उन बातों का गवाह होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं। 16 अब क्यूँ देर करता है? उठ बपतिस्मा ले, और उस का नाम ले कर अपने गुनाहों को धो डाल। 17 जब मैं फिर येस्शलेम में आकर हैकल में दुआ कर रहा था, तो ऐसा हुआ कि मैं बैरेखुद हो गया। 18 और उस को देखा कि मुझ से कहता है, “जल्दी कर और फौरन येस्शलेम से निकल जा, क्यैंकि वो मेरे हक में तेरी वाहाही कुबूल न करेंगे।” 19 मैंने कहा, ऐ खुदावन्द! वो खुद जानते हैं, कि जो तुझ पर ईमान लाए हैं, उन को कैद करता और जांबजा इबादतखानों में पिटवाता था। 20 और जब तेरे शहीद स्तिफन्सु का खन बहाया जाता था, तो मैं भी वहाँ खड़ा था। और उसके कातिलों के कपड़ों की हिफाजत करता था। 21 उस ने मुझ से कहा, “जा मैं तुझे गैर कौमों के पास दूर भेज़ूँगा।” 22 वो इस बात तक तो उसकी सुनते रहे फिर बुलन्द आवाज़ से चिल्लाएँ कि ऐसे शख्स को ज़मीन पर से खत्म कर दे! उस का जिन्दा रहना मुनासिब नहीं, 23 जब वो चिल्लाते और अपने कपड़े फेंकते और खाक उड़ाते थे। 24 तो पलटन के सरदार ने हुक्म दे कर कहा, कि उसे किले में ले जाओ, और कोडे मार कर उस का इजहार लो ताकि मुझे मालूम हो कि वो किस वजह से उसकी मुखालिफत में यूँ चिल्लाते हैं। 25 जब उन्होंने उसे रसियों से बाँध लिया तो, पौलस ने उस सिपाही से जो पास छड़ा था कहा, “खुदावन्द क्या तम्हें जायज़ है कि एक रोमी आदमी को कोडे मारो और वो भी कुसूर साबित किए बैरैर?” 26 सिपाही ये सुन कर पलटन के सरदार के पास गया और उसे खबर दे कर कहा, तू क्या करता है? ये तो रोमी आदमी है। 27 पलटन के सरदार ने उस के पास आकर कहा, मुझे बता तो क्या तु रोमी है? उस ने कहा, हाँ। 28 पलटन के सरदार ने जबाब दिया कि मैं बैड़ी रकम दे कर रोमी होने का स्तबा हासिल किया था पौलस ने कहा, “मैं तो पैदाइशी हूँ।” 29 पस, जो उस का इजहार लेने को थे, फौरन उस से अलग हो गए। और पलटन का सरदार भी ये मालूम करके डर गया, कि जिसको मैंने बाँधा है, वो रोमी है। 30 सुबह को ये हकीकत मालूम करने के इदेवे से कि यहदी उस पर क्या इल्जाम लगाते हैं। उस ने उस को खोल दिया। और सरदार काहिन और सब सद — ए

— आदालत वालों को जमा होने का हक्म दिया, और पौलस को नीचे ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

23 पौलस ने सद — ऐ आदालत वालों को गौर से देख कर कहा “ऐ

भाइयों, मैंने आज तक पूरी नेती से खुदा के बास्ते अपनी उप्र गुजारी है।” 2 सरदार काहिन हननियाह ने उन को जो उस के पास खड़े थे, हक्म दिया कि उस के मुँह पर तमाचा मारो। 3 पौलस ने उस से कहा, ऐ सफेदी फिरी हूई दीवार! खुदा “तुमे मारेगा! त शरीर अत के मुवाफिक मेरा इन्साफ करने को बैठा है, और क्या शरीर अत के बर — खिलाफ मुझे मानने का हक्म देता है।” 4 जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा, “क्या तु खुदा के सरदार काहिन को बुरा कहता है?” 5 पौलस ने कहा, ऐ भाइयों, मुझे मालूम न था कि ये सरदार काहिन है, क्यूँकि लिखा है कि, अपनी कौम के सरदार को बुरा न कह। 6 जब पौलस ने ये मालूम किया कि कुछ सदकी हैं और कुछ फरीसी तो अदालत में पुकार कर कहा, ऐ भाइयों, मैं फरीसी और फरीसियों की औलाद हूँ। मुर्दों की उम्मीद और क्रयामत के बारे में मुझ पर मुकदमा हो रहा है, 7 जब उस ने ये कहा तो फरीसियों और सदकियों में तकरार हुई, और मजमें में फूट पड़ गई। 8 क्यूँकि सदकी तो कहते हैं कि न क्रयामत होगी, न कोई फरिशत है, न रुह मगर फरीसी दोनों का इकरार करते हैं। 9 पस, बड़ा शोर हआ। और फरीसियों के फिरके के कुछ आतिम उठे “और यूँ कह कर झगड़ने लगे कि हम इस आदमी में कुछ बुराई नहीं पाते और अगर किसी स्थ या फरिशते ने इस से कलाम किया हो तो फिर क्या?” 10 और जब बड़ी तकरार हुई तो पलटन के सरदार ने इस खौफ से कि उस वक्त पौलस के टकड़े कर दिए जाएँ, फौज को हक्म दिया कि उतर कर उसे उन में से जबरदस्ती निकालो और किले में ले जाओ। 11 उसी रात खुदावन्द उसके पास आ खड़ा हआ, और कहा, “इत्मीनान रख; कि जैसे तू ने मेरे बारे में येस्शलेम में गवाही दी है वैसे ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी।” 12 जब दिन हुआ तो यहदियों ने एका कर के और लान्तकी की क्रसम खाकर कहा “कि जब तक हम पौलस को कल्तन न कर ले कुछ न चर्खें।” 13 और जिन्होंने आपस में ये साज़िश की बो चालीस से ज्यादा थे। 14 पस, उन्होंने सरदार काहिनों और बुजुर्गों के पास जाकर कहा “कि हम ने सञ्चल लान्त की क्रसम खाई है कि जब तक हम पौलस को कल्तन न कर ले कुछ न चर्खें।” 15 पस, अब तुम सद — ऐ — अदालत वालों से मिलकर पलटन के सरदार से अर्ज करो कि उसे तुम्हरे पास लाए। गोया तुम उसके मुअमिले की हकीकत ज्यादा मालूम करना चाहते हो, और हम उसके पहुँचने से पहले उसे मार डालने को तैयार हैं।” 16 लेकिन पौलस का भाजा उनकी घाट का हाल सुन कर आया और किले में जाकर पौलस को खबर दी। 17 पौलस ने सुबेदारों में से एक को बुला कर कहा “इस जवान को पलटन के सरदार के पास ले जाए तुम से कुछ कहना चाहता है।” 18 उस ने उस को पलटन के सरदार के पास ले जा कर कहा कि पौलस कैटी ने मुझे बुला कर दरखास्त की कि जवान को तेरे पास लाऊँ। कि तुझ से कुछ कहना चाहता है। 19 पलटन के सरदार ने उसका हाथ पकड़ कर और अलग जा कर पछा “कि मुझ से क्या कहना चाहता है?” 20 उस ने कहा “यहदियों ने मशवरा किया है, कि तुझ से दरखास्त करो कि कल पौलस को सद — ऐ — अदालत में लाए। गोया तु उस के हाल की और भी तहकीकात करना चाहता है।” 21 लेकिन तु उन की न मानना, क्यूँकि उन में चालीस शख्स से ज्यादा उस की घाट में हैं जिन्होंने लान्त की क्रसम खाई है, कि जब तक उसे मार न डालें न खाएँगे न पिएँगे और अब वो तैयार है, सिर्फ तेरे वादे का इन्तजार है।” 22 पस, सरदार ने जवान को ये हक्म दे कर सञ्चस्त किया कि किसी से न कहना कि तू ने मुझ पर ये जाहिर किया। 23 और दो सुबेदारों को पास बुला कर कहा कि “दो सौ सिपाही और

सतर सवार और दो सौ नेजा बरदार पहर रात गए, कैसरिया जाने को तैयार कर रखना। 24 और हक्म दिया पौलस की सवारी के लिए जानवरों को भी हाज़िर करें, ताकि उसे फेलिक्स हाकिम के पास सही सलामत पहुँचा दें।” 25 और इस मज्मून का खत लिखा। 26 क्लोदियस लौसियास का फेलिक्स बहादुर हाकिम को सलाम। 27 इस शख्स को यहदियों ने पकड़ कर मार डालना चाहा मगर जब मुझे मालूम हुआ कि ये रोमी हैं तो फौज समेत चढ़ गया, और खुड़ा लाया। 28 और इस बात की दरियापत करने का ज्ञादा करके कि वो किस बजह से उस पर लान्त करते हैं, उसे उन की सद — ऐ — अदालत में ले गया। 29 और मालूम हुआ कि वो अपनी शरीर अत के मस्तों के बारे में उस पर नालिश करते हैं; लेकिन उस पर कोई ऐसा इल्जाम नहीं लगाया गया कि कल्त या कैद के लायक हो। 30 और जब मुझे इत्तला हुई कि इस शख्स के बर — खिलाफ साज़िश होने वाली है, तो मैंने इसे फौरन तेरे पास भेज दिया है और इस के मुझ, इयों को भी हक्म दे दिया है कि वे तेरे सामने इस पर दान्वा करें। 31 पस, सिपाहियों ने हक्म के मुवाफिक पौलस को लेकर रातें रात अन्तिप्रियों में पहुँच दिया। 32 और दूसरे दिन सवारों को उसके साथ जाने के लिए छोड़ कर आप किले की तरफ मुड़े। 33 उन्होंने ने कैसरिया में पहुँच कर हाकिम को खत दे दिया, और पौलस को भी उस के आगे हाज़िर किया। 34 उस ने खत पढ़ कर पूछा कि ये किस सबे का है और ये मालूम करके कि किलकिया का है। 35 उस से कहा “कि जब तेरे मुझे इसी भी हाजिर होंगे; मैं तेरा मुकदमा करूँगा।” और उसे हेरेदेस के किले में कैद रखने का हक्म दिया।

24 पाँच दिन के बाद हननियाह सरदार काहिन के कुछ बुजुर्गों और तिरतुल्स

नाम एक बकील को साथ ले कर बहाँ आया, और उन्होंने हाकिम के सामने पौलस के खिलाफ फरियाद की। 2 जब वो बुलाया गया तो तिरतुल्स इल्जाम लगा कर कहने लगा कि ऐ फेलिक्स बहादुर चूँकि तेरे बर्सीले से हम बड़े अमन में हैं और तेरी दूर अदेशी से इस कौम के फाइदे के लिए खराबियों की इस्लाह होती है। 3 हम हर तरह और हर जगह कमाल शुक्र गुजारी के साथ तेरा एहसान मानते हैं। 4 मार इस लिए कि तुझे ज्यादा तकलीफ न हूँ, मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि तू मेरबानी से दो एक बातें हमारी सुन ले। 5 क्यूँकि हम ने इस शख्स को फ्रासाद करने वाला और दुनिया के सब यहदियों में फिजान और ज़ा और नासरियों की बिद़अती फिरके का सरगिरोह पाया। 6 इस ने हैकल को नापाक करने की भी कोशिश की थी, और हम ने इसे पकड़ा। और हम ने चाहा कि अपनी शरीर अत के मुवाफिक इस की अदालत करें। 7 लेकिन लौसियास सरदार आकर बड़ी जबरदस्ती से उसे हमारे हाथ से छीन ले गया। 8 और उसके मुझदियों को हक्म दिया कि तेरे पास जाएँ इसी से तहकीक करके तू आप इन सब बातों को मालूम कर सकता है, जिनका हम इस पर इल्जाम लगाते हैं। 9 और दूसरे यहदियों ने भी इस दावे में मुताफिक हो कर कहा कि ये बातें इसी तरह हैं। 10 जब हाकिम ने पौलस को बोलने का इशारा किया तो उस ने जवाब दिया, चूँकि मैं जानता हूँ, कि तू बहुत बरसों से इस कौम की अदालत करता है, इसलिए मैं खुद से अपना उड़ बयान करता हूँ। 11 तू मालूम कर सकता है, कि बारह दिन से ज्यादा नहीं हूँ कि मैं येस्शलेम में इबादत करने गया था। 12 और उन्होंने मुझे न हैकल में किसी के साथ बहस करते या लोगों में फ़साद कराते पाया न इबादतखानों में न शहर में। 13 और न वो इन बातों को जिन का मुझ पर अब इल्जाम लगाते हैं, तेरे सामने साबित कर सकते हैं। 14 लेकिन तेरे सामने ये इकरार करता हूँ, कि जिस तरीके को वो बिद़अत कहते हैं, उसी के मुताबिक मैं अपने बाप दादा के खुदा की इबादत करता हूँ, और जो कुछ तैरत और नबियों के सहीफों में लिखा है, उस सब पर मेरा ईमान है। 15 और खुदा से उसी बात की उम्मीद रखता हूँ, जिसके बो खुद भी मन्त्रजिर है, कि रास्तबाजों

और नारास्तों दोनों की क्रयामत होगी। 16 फेस्टसिए मैं खुद भी कोशिश में रहता हूँ, कि खुदा और आदमियों के बारे में मेरा दिल मुझे कभी मलामत न करे। 17 बहुत बरसों के बाद मैं अपनी कौम को खैरात परहँचने और नन्जे चढ़ाने आया था। 18 उन्होंने बौगैर हँगामे या जवाल के मुझे तहारत की हालत में ये काम करते हुए हैकल में पाया, यहाँ आसिया के चन्द यहदी थे। 19 और अगर उन का मुझ पर कुछ दावा था, तो उन्हें तैर सामने हाजिर हो कर फरियाद करना चाजिथा। 20 या यही खुद कहें, कि जब मैं सद—ए—अदालत के सामने खड़ा था, तो मुझ में क्या खुराइ पाई थी। 21 सिवा इस बात के कि मैं मैं ने उन में खड़े हो कर बुलन्द आजाव से कहा था कि मुर्दों की क्रयामत के बारे में आज मुझ पर मुकद्दमा हो रहा है। 22 फेलिक्स ने जो सही तौर पर इस तरीके से बाकिफथा “ये कह कर मुकद्दमे को मुल्तवी कर दिया कि जब पलटन का सरदार लूसियास आएगा तो मैं तुहारा मुकद्दमा फैसला करूँगा।” 23 और सबेदार को हक्म दिया कि उस को कैद तो रख मगर आराम से रखना और इसके दोस्तों में से किसी को इसकी खिदमत करने से मनह' न करना। 24 और चन्द रोज़ के बाद फेलिक्स अपनी बीवी दुसिल्ला को जो यहदी थी, साथ ले कर आया, और पौलस को बुलवा कर उस से मसीह ईसा के दीन की कैफियत सुनी। 25 और जब वो रास्तबाजी और पहेजारी और आइदा अदालत का बयान कर रहा था, तो फेलिक्स ने दहशत खाकर जवाब दिया, कि इस बक्त तू जा; फुरसत पाकर तज्जे फिर बुलाउँगा। 26 उसे पौलस से कुछ स्पर्श मिलने की उम्मीद भी थी, इसलिए उसे और भी बुला बुला कर उस के साथ गुपत्ता किया करता था। 27 लेकिन जब दो बरस गुज़र गए तो पुकियसुस फेस्टसिए फेलिक्स की जगह मुकर्रर हआ और फेलिक्स यहदियों को अपना एहसान मन्द करने की गरज से पौलस को कैद ही मैं छोड़ गया।

25 पस, फेस्टसुस सूबे में दाखिल होकर तीन रोज़ के बाद कैसरिया से येस्शलेम को गया। 2 और सरदार काहिनों और यहदियों के रईसों ने उस के यहाँ पौलस के खिलाफ फरियाद की। 3 और उस की मुखालिफत में ये रि'आयत चाही कि उसे येस्शलेम में बुला भेजे; और घाट में थे, कि उसे राह में मार डालें। 4 मगर फेस्टसुस ने जवाब दिया कि पौलस तो कैसरिया में कैद है और मैं आप जल्द वहाँ जाऊँगा। 5 पस तुम में से जो इजिनार वाले हैं वो साथ चलें और अगर इस शब्स में कुछ बेजा जाता हो तो उस की फरियाद करें। 6 वो उन में आठ दस दिन रह कर कैसरिया को गया, और दूसरे दिन तख्त — ए — अदालत पर बैठकर पौलस के लाने का हक्म दिया। 7 जब वो हाजिर हआ तो जो यहदी येस्शलेम से आए थे, वो उस के आस पास खड़े होकर उस पर बहुत सख्त इल्जाम लगाने लगे, मगर उन को साबित न कर सके। 8 लेकिन पौलस ने ये उत्तर किया “मैंने न तो कुछ यहदियों की शरीरी अत का गुनाह किया है, न हैकल का न कैसर का।” 9 मगर फेस्टसुस ने यहदियों को अपना एहसानमन्द बनाने की गरज से पौलस को जवाब दिया “क्या तुझे येस्शलेम जाना मन्जूर है? कि तेरा ये मुकद्दमा वहाँ मेरे सामने फैसला हो” 10 पौलस ने कहा, मैं कैसर के तख्त — ए — अदालत के सामने खड़ा हूँ, मेरा मुकद्दमा यही फैसला होना चाहिए यहदियों का मैं ने कुछ कुसर नहीं किया। चुनौते तू भी खब जानता है। 11 अगर बदकार हैं, या मैंने कैल्ट के लायक कोई काम किया है तो मुझे मरने से इन्कार नहीं! लेकिन जिन बातों का वो मुझ पर इल्जाम लगाते हैं अगर उनकी कुछ अस्त नहीं तो उनकी रि'आयत से कोई मुझ को उनके हवाले नहीं कर सकता। मैं कैसर के यहाँ दरखास्त करता हूँ। 12 फिर फेस्टसुस ने सलाहकारों से मशवारा करके जवाब दिया, “तू ने कैसर के यहाँ फरियाद की है, तो कैसर ही के पास जाएगा।” 13 और कुछ दिन गुज़रने के बाद अग्रिप्पा बादशाह और बिरनीकि ने कैसरिया में आकर फेस्टसुस से मुलाकात की। 14 और उनके कुछ

अर्से वहाँ रहने के बाद फेस्टसुस ने पौलस के मुकद्दमे का हाल बादशाह से ये कह कर बयान किया। कि एक शास्त्र को फेलिक्स कैद में छोड़ गया है। 15 जब मैं येस्शलेम में था, तो सरदार काहिनों और यहदियों के बुर्जानों ने उसके खिलाफ फरियाद की; और सजा के हक्म की दरखास्त की। 16 उनको मैंने जवाब दिया कि “रोमियों का ये दस्तर नहीं कि किसी आदमियों को रि'आयतन सजा के लिए हवाले करें, जब कि मुझ अलिया को अपने मुझ इँद्रों के स्त्री—बी—रु हो कर दा, वे के जवाब देने का मौका न मिले।” 17 पस, जब वो यहाँ जाम हुए तो मैंने कुछ देर न की बल्कि दूसरे ही दिन तख्त — ए अदालत पर बैठ कर उस आदमी को लाने का हक्म दिया। 18 मगर जब उसके मुझ इँद्र खड़े हुए तो जिन बुराइयों का मुझे गुमान था, उनमें से उन्होंने किसी का इल्जाम उस पर न लगाया। 19 बल्कि अपने दीन और किसी शरख्स ईसा के बारे में उस से बहस करते थे, जो मर गया था, और पौलस उसको जिन्दा बताता है। 20 चौंकि मैं इन बातों की तहकीकात के बारे में उलझन में था, इस लिए उस से पछा क्या तू येस्शलेम जाने को राजी है, कि वहाँ इन बातों का फैसला हो? 21 मगर जब पौलस ने फरियाद की, कि मेरा मुकद्दमा शहन्शाह की अदालत में फैसला हो तो, मैंने हम्म दिया कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजूँ, कैद मैं रहे। 22 अग्रिप्पा ने फेस्टसुस से कहा, मैं भी उस आदमी की सुनना चाहता हूँ, उस ने कहा “तू कल सुन लेगा।” 23 पस, दूसरे दिन जब अग्रिप्पा और बिरनीकि बड़ी शान — ओ शौकत से पलटन के सरदारों और शहर के राईसों के साथ दिवान खाने में दाखिल हुए। तो फेस्टसुस के हक्म से पौलस हाजिर किया गया। 24 फिर फेस्टसुस ने कहा, ऐ अग्रिप्पा बादशाह और ऐ सब हाजरीन तुम इस शख्स को देखते हो, जिसके बारे में यहदियों के सारे पिरोह ने येस्शलेम में और यहाँ भी चिल्ला चिल्ला कर सुधा से अर्ज़ की कि इस का आगे को जिन्दा रहना मुसारिब नहीं। 25 लेकिन मुझे मालूम हआ कि उस ने कैल्ट के लायक कुछ नहीं किया; और जब उस ने खुद शहन्शाह के यहाँ फरियाद की तो मैं ने उस को भेजने की तज्जीज़ की। 26 उपरेके बारे में मुझे कोई ठीक बात मालूम नहीं कि सरकार — ए — आली को लिखूँ इस वास्ते मैंने उस को तुम्हरे आगे और खासकर — ए — अग्रिप्पा बादशाह तेरे हज़र हाजिर किया है, ताकि तहकीकात के बाद लिखने के काबिल कोई बात निकले। 27 क्वैंकि कैटी के भेजते वक्त उन इल्जामों को जो उस पर लगाए गए हैं, जाहिर न करना मुझे खिलाफ — ए — अक्ल मालूम होता है।

26 अग्रिप्पा ने पौलस से कहा, तुझे अपने लिए बोलने की इजाजत है; पौलस अपना हाथ बढ़ाकर अपना जवाब दें, पेश करने लगा कि, 2 ऐ अग्रिप्पा बादशाह जितनी बातों की यहदी मुझ पर लान्त करते हैं; आज तेरे सामने उनकी जवाबदेही करना अपनी खुशनसीबी जानता है। 3 खासकर इसलिए कि तू यहदियों की सब रस्मों और मसलों से बाकिप है; पस, मैं मिन्नत करता हूँ, कि तहमील से मेरी सुन ले। 4 सब यहदी जानते हैं कि अपनी कौम के दर्मियान और येस्शलेम में शूरु जवानी से मेरा चालचलन कैसा रहा है। 5 चौंकि वो शूरु से मुझे जानते हैं, आज चाहें तो गवाह हो सकते हैं, कि मैं फरीसी होकर अपने दीन के सब से ज्यादा पाबन्द मज़हबी फिरके की तरह जिन्दी गुज़राता था। 6 और अब उस बादे की उम्मीद की वजह से मुझ पर मुकद्दमा हो रहा है, जो खुदा ने हमारे बाप दादा से किया था। 7 उसी बादे के पूरा होने की उम्मीद पर हमारे बारह के बारह कबीले दिल औ जान से रात दिन इबादत किया करते हैं, इसी उम्मीद की वजह से ऐ बादशाह यहदी मुझ पर नलिश करते हैं। 8 जब कि खुदा मुर्दों को जिलाता है, तो ये बात तुम्हरे नज़रीकी क्यूँ गैर मोतबर समझी जाती है? 9 मैंने भी समझा था, कि ईसा नासीरी के नाम की तरह तरह से मुखालिफत करना मुझ पर फर्ज है। 10 चुनौते मैंने

येस्सलेम में ऐसा ही किया, और सरदार काहिनों की तरफ से इतिहायार पाकर बहुत से मुकद्दसों को कैद में डाला और जब वो कॉल किए जाते थे, तो मैं भी यही मशवरा देता था। 11 और हर इबादत खाने में उहौं सजा दिला दिला कर ज़बरदस्ती उन से कूक़ कहलावाता था, बल्कि उन की मुखालिफ़त में ऐसा दिवाना बना कि गैर शाहरों में भी जाकर उहौं सताता था। 12 इसी हाल में सरदार काहिनों से इतिहायार और पवने लेकर दमिश्क को जाता था। 13 तो ऐ बादशाह मैंने दो पहर के ब्रक्ट राह में ये देखा कि सूरज के नूर से ज्यादा एक नूर आसमान से मैं और मैं हमसफरों के गिर्द आ चमका। 14 जब हम सब ज़मीन पर गिर पड़े तो मैंने इबानी ज़बान में ये आवाज़ सुनी कि “ऐ साऊल, ऐ साऊल, तु मुझे क्यूँ सताता है? अपने आप पर लात मारना तेरे लिए मुश्किल है।” 15 मैंने कहा “ऐ खुदावन्द, तू कौन है? खुदावन्द ने फरमाया “मैं ईसा हूँ, जिसे तु सताता है।” 16 लेकिन उठ अपने पाँव पर खड़ा हो, क्यूँकि मैं इस लिए तुझ पर जाहिर हुआ हूँ, कि तुझे उन चीजों का भी खादिम और गवाह मुकर्रह कर्स़ जिनकी गवाही के लिए तू ने मुझे देखा है, और उन का भी जिनकी गवाही के लिए मैं तुझ पर जाहिर हुआ करूँगा। 17 और मैं तुझे इस उम्त और गैर कौमों से बचाता रहूँगा। जिन के पास तुझे इसलिए भेजता हूँ।” 18 कि तू उन की आँखें खोल दे ताकि अन्धेरे से रोशनी की तरफ और शैतान के इतिहायर से खुदा की तरफ रूज़ लाएँ, और मुझ पर ईमान लाने के जरिए गुनाहों की मुआफ़ी और मुकद्दसों में शरीक हो कर मीरास पाएँ।” 19 इसलिए ऐ अग्रिष्णा बादशाह! मैं उस आसामानी रोया का नाफरमान न हुआ। 20 बल्कि पहले दमिश्कियों को फिर येस्सलेम और सारे मुल्क यहदिया के बाशिन्दों को और गैर कौमों को समझाता रहा। कि तौबा करें और खुदा की तरफ रूज़ लाकर तौबा के मुवाफ़िक काम करें। 21 इन्हीं बातों की वजह से कुछ यहदियों ने मुझे हैकल में पकड़ कर मार डालने की कोशिश की। 22 लेकिन खुदा की मदद से मैं आज तक काई हूँ, और छोटे बड़े के सामने गवाही देता हूँ, और उन बातों के सिवा कुछ नहीं कहता जिनकी पेपनिगोई नवियों और प्रसा ने भी की है। 23 कि “मसीह को दुःख: उठाना जस्तर है और सब से पहले वही मुर्दों में से जिन्दा हो कर इस उम्त को और गैर कौमों को भी नूर का इतिहार देगा।” 24 जब वो इस तरह जवाबदेही कर रहा था, तो फेस्सुस ने बड़ी आवाज़ से कहा “ऐ, पौलस तू दिवाना हैं; बहुत इत्म ने तुझे दिवाना कर दिया है।” 25 पौलस ने कहा, ऐ फेस्सुस बहादुर; मैं दिवाना नहीं बल्कि सच्चाई और होशियारी की बातें कहता हूँ। 26 चुनौत्ये बादशाह जिससे मैं दिवेराना कलाम करता हूँ, ये बातें जानता है और मुझे यकीन है कि इन बातों में से कोई उस से छिपी नहीं। क्यूँकि ये माजरा कहीं कोने में नहीं हुआ। 27 ऐ अग्रिष्णा बादशाह, क्या तु नवियों का यकीन करता है? मैं जानता हूँ, कि तू यकीन करता है। 28 अग्रिष्णा ने पौलस से कहा, तू तो थोड़ी ही सी नसीहत कर के मुझे मसीह कर लेना चाहता है। 29 पौलस ने कहा, मैं तो खुदा से चाहता हूँ, कि थोड़ी नसीहत से या बहुत से सिर्फ़ तू ही नसीह बल्कि जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, मेरी तरह हो जाएँ, सिवा इन जंजीरों के। 30 तब बादशाह और हाकिम और बर्सीकि और उनके हमनशीन उठ खड़े हुए, 31 और अलग जाकर एक दूसरे से बातें करने और कहने लगे, कि ये आदमी ऐसा तो कुछ नहीं करता जो कॉल के लायक हो। 32 अग्रिष्णा ने फेस्सुस से कहा, कि अगर ये आदमी कैसर के यहाँ फरियाद न करता तो छूट सकता था।

27 जब ज़हाज पर इतालिया को हमारा जाना ठहराया गया तो उन्होंने पौलस और कुछ और कैटियों को शहन्शाही पलटन के एक सुबेदार अगस्सुस ने यूलियस नाम के हवाले किया। 2 और हम अद्रमुतय्युस के एक ज़हाज पर जो आसिया के किनारे के बन्दरगाहों में जाने को था। सवार होकर रवाना हुए और

थिस्सलुनीकियों का अरिस्तरखुस मकिट्टुनी हमारे साथ था। 3 दूसरे दिन सैदा में जहाज ठहराया, और यूलियस ने पौलस पर मेहरबानी करके दोस्तों के पास जाने की इजाजत दी। ताकि उस की खातिरदारी हो। 4 वहाँ से हम रवाना हुए और कुखुस की आड़ में होकर चले इसलिए कि हवा मुखालिफ़ थी। 5 फिर किलकिया और पम्फीलिया सूबे के समुद्र से गुजर कर लुकिया के शहर मूरा में उतरे। 6 वहाँ सुबेदार को इकन्दरिया का एक ज़हाज इतालिया जाता हुआ, मिला पास, हमको उस में बैठा दिया। 7 और हम बहुत दिनों तक आहिस्ता आहिस्ता चलकर मुश्किल से कनिदुप शहर के सामने पहुँचे तो इसलिए कि हवा हम को आगे बढ़ने न देती थी सलमाने के सामने से हो कर करते टापू की आड़ में चले। 8 और बमुश्किल उसके किनारे किनारे चलकर हसीन — बन्दर नाम एक मकाम में पहुँचे जिस से लसाया शहर नज़दीक था। 9 जब बहुत अरसा गुजर गया और ज़हाज का सफर इसलिए खतरनाक हो गया कि रोजा का दिन गुजर चुका था। तो पौलस ने उहौं ये कह कर नसीहत की। 10 कि ऐ साहिबो। मुझे मालम होता है, कि इस सफर में तकलीफ़ और बहुत नुकसान होगा, न सिर्फ़ माल और ज़हाज का बल्कि हमारी जानों का भी। 11 मारा सुबेदार ने नाखुदा और ज़हाज के मालिक की बातों पर पौलस की बातों से ज्यादा लिहाज किया। 12 और चूँकि वो बन्दरगाह जाड़ों में रहने कि लिए अच्छा न था, इसलिए अक्सर लोगों की सलाह ठहरी कि वहाँ से रवाना हों, और अगर हो सके तो फेनिक्स शहर में पहुँच कर जाड़ा काटें; वो करते का एक बन्दरगाह है जिसका स्थ शिमाल मशरिक और ज़न्बु मशरिक को है। 13 जब कुछ कुछ दक्षिणा हवा चलने लगी तो उन्होंने ने ये समझ कर कि हमारा मतलब हासिल हो गया लंगर उठाया और करते के किनारे के करीब करीब चले। 14 लेकिन थोड़ी देर बाद एक बड़ी तुफानी हवा जो यूकुलोन कहलाती है करते पर से ज़हाज पर आई। 15 और जब ज़हाज हवा के काबू में आ गया, और उस का सामना न कर सका, तो हम ने लाचार होकर उसको बहने दिया। 16 और कौदा नाम एक छोटे टापू की आड़ में बढ़ते बढ़ते हम बड़ी मुश्किल से डॉगी को काबू में लाए। 17 और जब मल्लाह उस को उपर चढ़ा चुके तो ज़हाज की मजबूती की तदबीर करके उसको नीचे से बाँधा, और सूरतिस के चोर बालू में धंस जाने के डर से ज़हाज का साज़ो सामना उतार लिया। और उसी तरह बहते चले गए। 18 मगर जब हम ने आँधी से बहत हिचकोते खाए तो दूसरे दिन वो ज़हाज का माल फेंकने लगे। 19 और तीसरे दिन उन्होंने अपने ही हाथों से ज़हाज के कुछ आलात — ओ — ‘असबाब भी फैंक दिए। 20 जब बहुत दिनों तक न सर्ज नज़र आया न तारे और शिल्प की आँधी चल रही थी, तो आशिर हम को बचने की उम्मीद बिल्कुल न रही। 21 और जब बहुत फ़ाक़ा कर चुके तो पौलस ने उन के बीच में खड़े हो कर कहा, ऐ साहिबो; लाजिम था, कि तुम मेरी बात मान कर करते से रवाना न होते और ये तकलीफ़ और नुकसान न उठाते। 22 मगर अब मैं तुम को नसीहत करता हूँ कि इतमीनान रखें; क्यूँकि तुम में से किसी का नुकसान न होगा मगर ज़हाज का। 23 क्यूँकि खुदा जिसका मैं हूँ, और जिसकी इबादत भी करता हूँ, उसके फरिश्ते ने इसी रात को मैं परापर आकर। 24 कहा, पौलस, न डर। ज़स्ती है कि तू कैसर के सामने हाजिर हो, और देख जितने लोग तेरे साथ ज़हाज में सवार हैं, उन सब की खुदा ने तेरी खातिर जान बख्ती की। 25 इसलिए “ऐ साहिबो; इत्मीनान रखें; क्यूँकि मैं खुदा का यकीन करता हूँ, कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा।” 26 लेकिन ये ज़स्त है कि हम किसी टापू में जा पड़ें। 27 जब चौधीरी रात हुई और हम बहर — ए — अदिया में टकराते फिरते थे, तो आधी रात के करीब मल्लाहों ने अंदाजे से मालम किया कि किसी मूलक के नज़दीक पहुँच गए। 28 और पानी की थाह लेकर बीस पुर्सी पाया और थोड़ा आगे बढ़ कर और फिर थाह लेकर

पन्द्रह पुर्सी पाया। 29 और इस डर से कि पथरीली चट्ठानों पर जा पड़ें, जहाज के पीछे से चार लंगर डाले और सबह होने के लिए दुआ करते रहे। 30 और जब मल्लाहों ने चाहा कि जहाज पर से भाग जाएँ, और इस बहाने से कि गलही से लंगर डाले, डोंगी को समन्दर में उतरें। 31 तो पौलस ने सुवेदार और सिपाहियों से कहा “अगर ये जहाज पर न रहेंगे तो तुम नहीं बच सकते।” 32 इस पर सिपाहियों ने डोंगी की रस्सियाँ काट कर उसे छोड़ दिया। 33 और जब दिन निकलने को हुआ तो पौलस ने सब की मिन्नत की कि खाना खालो और कहा कि तुम को इन्तजार करते करते और फाका करते करते आज चौदह दिन हो गए; और तुम ने केवल नहीं खाया। 34 इसलिए तुम्हारी मिन्नत करता है कि खाना खालो, इसी में तुम्हारी बहतरी मौक़ूफ़ है, और तुम में से किसी के सिर का बाल बाका न होगा। 35 ये कह कर उस ने रोटी ली और उन सब के सामने खुदा का शुक्र किया, और तोड़ कर खाने लगा। 36 फिर उन सब की खातिर जमा हुई, और आप भी खाना खाने लगे। 37 और हम सब मिलकर जहाज में दो सौ छिह्नतर आदमी थे। 38 जब वो खा कर सेर हुए तो गेहँ को समन्दर में फेंक कर जहाज को हल्का करने लगे। 39 जब दिन निकल आया तो उन्होंने उस मुल्क को न पहचाना, मगर एक खाड़ी देखी, जिसका किनारा साफ़ था, और सलाह की कि अगर हो सके तो जहाज को उस पर चढ़ा लें। 40 पस, लंगर खोल कर समन्दर में छोड़ दिए, और पत्वरों की भी रस्सियाँ खोल दीं; और अगला पाल हवा के स्ख पर चढ़ा कर उस किनारे की तरफ़ चले। 41 लेकिन एक ऐसी जगह जा पड़े जिसके दोनों तरफ़ समन्दर का ज़ोर था; और जहाज ज़मीन पर टिक गया, पस गलही तो धक्का खाकर फ़ैस गई, मगर दुखाला लहरों के ज़ोर से टूटने लगा। 42 और सिपाहियों की ये सलाह थी, कि कैदियों को मार डालें, कि ऐसा न हो कोई तैर कर भाग जाए। 43 लेकिन सुवेदार ने पौलस को बचाने की ग़रज से उन्हें इस इरादे से बाज रखवा; और हक्म दिया कि जो तैर सकते हैं, पहले कूद कर किनारे पर चले जाएँ। 44 बाकी लोग कुछ तक्कों पर और कुछ जहाज की ओर चीज़ों के सहारे से चले जाएँ; इसी तरह सब के सब खुशकी पर सलामत पहुँच गए।

28 जब हम पहुँच गए, तो जाना कि इस टापू का नाम मिलिते हैं, 2 और उन

अजनबियों ने हम पर खास महरबानी की, क्यूँकि बारिश की झड़ी और जाड़े की वजह से उन्होंने आग जलाकर हम सब की खातिर की। 3 जब पौलस ने लकड़ियों का गष्ट जमा करके आग में डाला तो एक साँप गर्मी पा कर निकला और उसके हाथ पर लिपट गया। 4 जिस वक्त उन अजनबियों ने वो कीड़ा उसके हाथ से लटका हुआ देखा तो एक दूसरे से कहने लगे, बेशक ये आदमी ख़नी है: अगर चेस समन्दर से बच गया तो भी अदल उसे जीने नहीं देता। 5 पस, उस ने कीड़े को आग में झटक दिया और उसे कुछ तकलीफ़ न पहुँची। 6 मगर वो मून्तज़िर थे, कि इस का बदन सज जाएँ: या ये मरकर यकायक पिर पड़ेगा लेकिन जब देर तक इन्तजार किया और देखा कि उसको कुछ तकलीफ़ न पहुँची तो और खयाल करके कहा, ये तो कोई देवता है। 7 वहाँ से करीब पुबलियस नाम उस टापू के सरदार की मिलिक्यत थी, उस ने घर लेजाकर तीन दिन तक बड़ी महरबानी से हमारी मेहमानी की। 8 और ऐसा हुआ, कि पुबलियस का बाप बुखार और पेचिंच की वजह से बीमार पड़ा था; पौलस ने उसके पास जाकर दुआ की और उस पर हाथ रखकर शिफा दी। 9 जब ऐसा हुआ तो बाकी लोग जो उस टापू में बीमार थे, आए और अच्छे किए गए। 10 और उन्होंने हमारी बड़ी 'इज़जत की ओर चलते वक्त जो कुछ हमें दरकार था; जहाज पर रख दिया। 11 तीन महीने के बाद हम इसकन्दरिया के एक जहाज पर रवाना हुए जो जाड़े भर 'उस टापू में रहा था जिसका निशान दियुस्कूरी था 12 और सुरक्षा में जहाज ठहरा कर तीन दिन रहे। 13 और वहाँ

से फेर खाकर रेगियूम बन्दरगाह में आए। एक रोज बाद दक्षिण हवा चली तो दूसरे दिन पुतियुली शहर में आए। 14 वहाँ हम को भाई मिले, और उनकी मिन्नत से हम सात दिन उन के पास रहे; और इसी तरह रोमा तक गए। 15 वहाँ से भाई हमारी खबर सुनकर अपियुस के चौक और तीन सराय तक हमारे इस्तकबाल को आए। पौलस ने उन्हें देखकर खुदा का शुक्र किया और उसके खातिर जमा हुई। 16 जब हम रोम में पहुँचे तो पौलस को इज़जत हुई, कि अकेला उस सिपाही के साथ रहे, जो उस पर पहरा देता था। 17 तीन रोज़ के बाद ऐसा हुआ कि उस ने यहदियों के रईसों को बुलवाया और जब जमा हो गए, तो उन से कहा, ऐ भाइयों हर वक्त पर मैंने उम्रत और बाप दादा की रस्सों के खिलाफ़ कुछ नहीं किया। तो वी येस्शलेम से कैदी होकर रोमियों के हाथ हवाले किया गया। 18 उन्होंने मेरी तहकीकात करके मुझे छोड़ देना चाहा; क्यूँकि मेरे कल्ले की कोई वजह न थी। 19 मगर जब यहदियों ने मुखलिफ़त की तो मैंने लाचार होकर कैसर के यहाँ फरियाद की मगर इस वास्ते नहीं कि अपनी कौम पर मुझे कुछ इल्ज़ाम लगाना है, 20 पस, इसलिए मैंने उन्हें बुलाया है कि तुम से मिलूं और गुफ्तगू करूँ, क्यूँकि इम्पाइल की उम्मीद की वजह से मैं इस ज़ंजीर से जकड़ा हुआ हूँ, 21 उन्होंने कहा “न हमारे पास यहदिया से तेरे बारे में खत आएँ, न भाइयों में से किसी ने आ कर तेरी कुछ खबर दी न बुराई बयान की। 22 मगर हम मुनासिब जानते हैं कि तुझ से सुर्ये, कि तेरे खयालात क्या हैं; क्यूँकि इस फ़िक्र की वजह हम को मालूम है कि हर जगह इसके खिलाफ़ कहते हैं।” 23 और वो उस से एक दिन ठहरा कर कसरत से उसके यहाँ जमा हुए, और वो खुदा की बादशाही की गवाही दे दे कर और मूरा की तैरत और नवियों के सहीफों से ईसा की वजह समझा समझा कर सुख से शाम तक उन से बयान करता रहा। 24 और कुछ ने उसकी बातों को मान लिया, और कुछ ने न माना। 25 जब आपस में मुत्तकिक न हुए, तो पौलस की इस एक बात के कहने पर स्खस्त हुए; कि स्ह— उल कुदूस ने यसायाह नवी के जरिए तुहरे बाप दादा से खबर कहा कि। 26 इस उम्रत के पास जाकर कह कि तुम कानों से सुनोगे और हर्मिज न समझोगे और आँखों से देखोगे और हर्मिज मालूम न करोगे। 27 क्यूँकि इस उम्रत के दिल पर चबीं छा गई है, ‘और वो कानों से ऊँचा सुते हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर ली हैं, कही ऐसा न हो कि आँखों से मालूम करें, और कानों से सुर्ये, और दिल से समझें, और रुज़ लाएँ, और मैं उन्हें शिफा बख्तूँ। 28 “पस, तुम को मालूम हो कि खुदा! की इस नजात का पैगाम गैर कौमों के पास भेजा गया है, और वो उसे सुन भी लेंगी।” 29 [जब उस ने ये कहा तो यहदी आपस में बहुत बहस करते चले गए।] 30 और वो पैरे दो बरस अपने किराए के घर में रहा। 31 और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा; और कमाल दिलेरी से बगैर रोक टोक के खुदा की बादशाही का ऐलान करता और खुदावन्द ईसा मसीह की बातें सिखाता रहा।

रोमियो

1 पौत्रम की तरफ से जो ईसा मसीह का बन्दा है और रसूल होने के लिए

बुलाया गया और खुदा की उस खुशखबरी के लिए अलग किया गया। 2 पस मैं तुम को भी जो रोपा मैं हों खुशखबरी सुनाने को जहाँ तक मेरी ताकत है मैं तैयार हूँ। 3 अपने बेटे खुदावन्द ईसा मसीह के बारे में वादा किया था जो जिसम के ऐतिवार से तो दाउद की नस्ल से पैदा हआ। 4 लेकिन पाकीजगी की स्थ के ऐतिवार से मुर्दों में से जी उठने की वजह से कुदरत के साथ खुदा का बेटा ठहरा। 5 जिस के जरिए हम को फजल और रिसालत मिली ताकि उसके नाम की खातिर सब क्रौपों में से लोग ईमान के ताबे हों। 6 जिन में से तुम भी ईसा मसीह के होने के लिए बुलाए गए हो। 7 उन सब के नाम जो रोप मैं खुदा के प्यारे हैं और मुकाद्दस होने के लिए बुलाए गए हैं, हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ से तुम्हें फजल और इत्यनीनां हासिल होता रहे। 8 पहले, तो मैं तुम सब के बारे में ईसा मसीह के बरिले से अपने खुदा का शुक्र करता हूँ कि तुम्हारे ईमान का तामां दुनिया में नाम हो रहा है। 9 चुनाँचे खुदा जिस की इबादत में अपनी स्थ से उसके बेटे की खुशखबरी देने में करता हूँ वही मेरा गवाह है कि मैं बिला नाशा तुम्हें याद करता हूँ। 10 और अपनी दुआओं में हमेशा ये गुजारिश करता हूँ कि अब अस्थिरकार खुदा की मर्जी से मुझे तुम्हारे पास आने में किरी तरह कामियाबी हो। 11 क्यौंकि मैं तुम्हारी मुलाकात का मुश्तक हूँ, ताकि तुम को कोई रुहानी नेमत दूँ जिस से तुम मजबूत हो जाओ। 12 गरज मैं भी तुम्हारे दर्मियान हो कर तुम्हारे साथ उस ईमान के जरिए तसल्ली पांक जो तुम मैं और मुझ मैं दोनों मैं है। 13 और ऐ खाइयों, मैं इस से तुम्हारा ना वाकिफ रहना नहीं चाहता कि मैंने बार बार तुम्हारे पास आने का इशारा किया ताकि जैसा मुझे और गैर क्रौपों में फल मिला वैसा ही तुम मैं भी मिले मगर आज तक स्का रहा। 14 मैं युनानियों और गैर यूनानियों दानाओं और नादानों का कर्जदार हूँ। 15 पस मैं तुम को भी जो रोपा मैं हों खुशखबरी सुनाने को जहाँ तक मेरी ताकत है मैं तैयार हूँ। 16 क्यौंकि मैं इन्जील से शर्माता नहीं इसलिए कि वो हर एक ईमान लानेवाले के वास्ते फहले यहदियों फिर यूनानी के वास्ते नजात के लिए खुदा की कुदरत है। 17 इस वास्ते कि उसमें खुदा की रास्तबाजी ईमान से “और ईमान के लिए जाहिर होती है जैसा लिखा है रास्तबाज ईमान से जीता रहेगा” 18 क्यौंकि खुदा का गजब उन अदमियों की तामां बेटीनी और नारास्ती पर आसमान से जाहिर होता है। 19 क्यौंकि जो कुछ खुदा के बारे में मालूम हो सकता है वो उनको बातिन में जाहिर है इसलिए कि खुदा ने उनको उन पर जाहिर कर दिया। 20 क्यौंकि उसकी अनदेखी सिफरों यानी उसकी अजली कुदरत और खुदावन्द दुनिया की पैदाइश के बक्त्र से बनाई हुई चीजों के जरिए मालूम हो कर साफ नजर आती है यहाँ तक कि उन को कुछ बहाना बाकी नहीं। (aidios g126) 21 इसलिए कि अग्रें खुदाई के लायक उसकी बड़ाई और शुक्रजारी न की बल्कि बेकार के खयाल में पड़ गए, और उनके नासमझ दिलों पर अंधेरा छा गया। 22 वो अपने आप को अक्रलमन्द समझ कर बेवकूफ बन गए। 23 और गैर फानी खुदा के जलाल को फानी ईसान और परिन्दों और चौपायों और कीड़ों मकोड़ों की सूरत में बदल डाला। 24 इस वास्ते खुदा ने उनके दिलों की ख्वाहिशों के मुताबिक उन्हें नापाकी मैं छोड़ दिया कि उन के बदन आपस मैं बेइज्जत किए जाएँ। 25 इसलिए कि उन्होंने खुदा की सच्चाई को बदल कर झट बना डाला और मरखलकात की ज्यादा इबादत की बनिस्त उस खालिक के जो हमेशा तक महमद है; आपनी। (aiōn g165) 26 इसी वजह से खुदा ने उनको गन्दी आदतों मैं छोड़ दिया यहाँ तक कि उनकी औरतों ने अपने तब; ई काम को खिलाफ़ ए तब'आ काम से बदल डाला। 27 इसी तरह

मर्द भी औरतों से तब; ई काम छोड़ कर आपस की शहवत से मस्त हो गए; यानी आदमियों ने आदमियों के साथ ससिहाई का काम कर के अपने आप मैं अपने काम के मुआफिक बदला पाया। 28 और जिस तरह उन्होंने खुदा को पहचाना ना पासन्द किया उसी तरह खुदा ने भी उनको नापसन्दी अकल के हवाले कर दिया कि नालायक हरकतें करें। 29 पस वो हर तरह की नारास्ती बदी लालच और बदखावी से भर गए, खनरेजी, झगड़े, मक्करी और अदावत से मामूर हो गए, और सीबित करने वाले। 30 बदगों खुदा की नजर मैं नफरती औरों को बैंज्जत करनेवाला, मास्सर, शेखीबाज, बदियों के बानी, माँ बाप के नाफरमान, 31 बेवकूफ, बादा खिलाफ, तर्वाई तौर से महबूत से खानी और बे रहम हो गए। 32 हालाँकि वो खुदा का हृकम जानते हैं कि ऐसे काम करने वाले मौत की सजा के लायक हैं फिर भी न सिर्फ़ खुद ही ऐसे काम करते हैं बल्कि और करनेवालों से भी खुश होते हैं।

2 पस ऐ इल्जाम लगाने वाले तू कोई क्यूँ न हो तेरे पास कोई बहाना नहीं क्यौंकि जिस बात से तू दूरे पर इल्जाम लगाता है उसी का तू अपने आप को मुजरिम ठहराता है इसलिए कि तू जो इल्जाम लगाता है खुद वही काम करता है। 2 और हम जानते हैं कि ऐसे काम करने वालों की अदालत खुदा की तरफ से हक के मुताबिक होती है। 3 ऐ भाई! तू जो ऐसे काम करने वालों पर इल्जाम लगाता है और खुद वही काम करता है क्या ये समझता है कि तू खुदा की अदालत से बच जाएगा। 4 या तू उसकी महबानी और बरदाशत और सब की दौलत को नाचीज जानता है और नहीं समझता कि खुदा की महबानी तुझ को तौबा की तरफ मालूम करती है। 5 बल्कि तू अपने सख्त और न तोबा करने वाले दिल के मुताबिक उस कहर के दिन के लिए अपने वास्ते गजब का काम कर रहा है जिस में खुदा की सच्ची अदालत जाहिर होगी। 6 वो हर एक को उस के कामों के मुवाफिक बदला देगा। 7 जो अच्छे काम मैं साबित करदम रह कर जलाल और इज्जत और बका के तालिब होते हैं उनको हमेशा की ज़िन्दगी देगा। (aiōnios g166) 8 मगर जो ना इतकाकी अन्दाज और हक के न माननेवाले बल्कि नारास्ती के माननेवाले हैं उन पर गजब और कहर होगा। 9 और मुसीबत और तंती हर एक बदकर की जान पर आएगी पहले यहदी की पिर यूनानी की। 10 मगर जलाल और इज्जत और सलामती हर एक नेक काम करने वाले को मिलेगी; पहले यहदी को पिर यूनानी को। 11 क्यौंकि खुदा के यहाँ किसी की तरफदारी नहीं। 12 इसलिए कि जिन्होंने बगैर शरी'अत पाए गुनाह किया वो बगैर शरी'अत के हलाक भी होगा और जिन्होंने शरी'अत के मातहत होकर गुनाह किया उन की सजा शरी'अत के मुवाफिक होगी 13 क्यौंकि शरी'अत के सुननेवाले खुदा के नजरीक रास्तबाज नहीं होते बल्कि शरी'अत पर अमल करनेवाले रास्तबाज ठहराए जाएँगे। 14 इसलिए कि जब वो क्रौपों जो शरी'अत नहीं रखती अपनी तबी'अत से शरी'अत के काम करती हैं तो बावजूद शरी'अत की रखने के अपने लिए खुद एक शरी'अत है। 15 चुनाँचे वो शरी'अत की बातें अपने दिलों पर लिखी हुई दिखाती हैं और उन का दिल भी उन बातों की गवाही देता है और उनके अपसी ख्यालात या तो उन पर इल्जाम लगाते हैं या उन को माजूर रखते हैं। 16 जिस रोज खुदा खुशखबरी के मुताबिक जो मैं ऐसान करता हूँ ईसा मसीह की मारिफत आदमियों की छुनी बातों का इन्साफ करेगा। 17 पस अगर तू यहदी कहलात और शरी'अत पर भरोसा और खुदा पर फ़ँस करता है। 18 और उस की मर्जी जानत और शरी'अत की तालीम पाकर उम्दा बातें पसन्द करता है। 19 और अगर तुझको इस बात पर भी भरोसा है कि मैं अँधों का रहनुमा और अँधेरे मैं पड़े हुओं के लिए रोशनी। 20 और नादानों का तरबियत करनेवाला और बच्चों का उस्ताद हूँ और 'इल्म और हक का जो नमूना शरी'अत मैं है वो मेरे पास है। 21 पस तू जो औरों को सिखाता है अपने

आप को क्यूँ नहीं सिखाता? तू जो बताता है कि चोरी न करना तब तू खुद क्यूँ चोरी करता है? तू जो कहता है जिना न करना; तब तू क्यूँ जिना करता है? 22 तू जो बुतों से नफरत रखता है? तब खुद क्यूँ बुतखानों को लूटता है? 23 तू जो शरी'अत पर फ़ख़ करता है? शरी'अत की मुखालिफ़त से खुदा की क्यूँ बे'इज्जती करता है? 24 क्यूँकि तुम्हारी वजह से गैर कौमों में खुदा के नाम पर कुक़ बका जाता है “चुनौचे ये लिखा भी है।” 25 खतने से फ़ाइदा तो है बर्शत तू शरी'अत पर अमल करे लेकिन जब तू ने शरी'अत से मुखालिफ़त किया तो तेरा खतना ना मखूनी ठहरा। 26 पस अगर नामखून शख्स शरी'अत के हक्मों पर अमल करे तो क्या उसकी ना मखूनी खतने के बाबर न गिनी जाएगी। 27 और जो शख्स कैमियत की वजह से ना मखून रहा अगर वो शरी'अत को पूरा करे तो क्या तुझे जो बावजूद कलाम और खतने के शरी'अत से मुखालिफ़त करता है कुसूरावार न ठहरेगा। 28 क्यूँकि वो यहदी नहीं जो जाहिर का है और न वो खतना है जो जाहिरी और जिसमानी है। 29 बल्कि यहदी वही है जो बातिन में है और खतना वही है जो दिल का और स्थानी है न कि लफ़ज़ी ऐसे की तारीफ़ आदमियों की तरफ से नहीं बल्कि खुदा की तरफ से होती है।

3 उस यहदी को क्या दर्जा है और खतने से क्या फ़ाइदा? 2 हर तरह से बहुत खास कर ये कि खुदा का कलाम उसके सुर्द हआ। 3 मगर कुछ बेवफ़ा निकले तो क्या हआ क्या उनकी बेवफ़ा खुदा सच्चा ठहरे और हर एक आदमी झटा क्यूँकि लिखा है “तू अपनी बातों में रास्तबाज़ ठहरे और अपने मुक़द्दमे में फ़तह पाए।” 5 अगर हमारी नारास्ती खुदा की रास्तबाज़ी की खूबी को जाहिर करती है, तो हम क्या करें? क्या ये कि खुदा बेवफ़ा है जो गज़ब नज़िल करता है मैं ये बात इंसान की तरह करता हूँ। 6 हराज़ि नहीं वर्ता खुदा क्यूँकर दुनिया का इन्साफ़ करेगा। 7 अगर मेरे झूठ की वजह से खुदा की सच्चाई उसके जलाल के बास्ते ज्यादा जाहिर हूँ तो फ़िर क्यूँ गुनाहगार की तरह मुझ पर हक्म दिया जाता है? 8 और “हम क्यूँ बुराई न करें ताकि भलाई पैदा हो” चुनौचे हम पर ये तोहमत भी लगाई जाती है और कुछ कहते हैं इनकी यही कहावत है मगर ऐसों का मुजरिम ठहरना इन्साफ़ है। 9 पस क्या हआ; क्या हम कुछ फ़ज़ीलत रखते हैं? बिल्कुल नहीं क्यूँकि हम यहदियों और यूनानियों दोनों पर पहले ही ये इज़ज़ाम लगा चुके हैं कि वो सब के सब गुनाह के मातहत हैं। 10 चुनौचे लिखा है “एक भी रास्तबाज़ नहीं। 11 कोई समझदार नहीं कोई खुदा का तालिब नहीं। 12 सब गुमराह है सब के सब निकम्मे बन गए, कोई भलाई करनेवाला नहीं एक भी नहीं। 13 उनका गला खुली हूँ कब्र है उन्होंने अपनी ज़बान से धोखा दिया उन के होंठों में सौंपों का जहर है। 14 उन का मूँह लान्त और कड़वाहट से भरा है। 15 उन के कदम खून बहाने के लिए तेज़ी से बढ़ने वाले हैं। 16 उनकी राहों में तबाही और बदहाली है। 17 और हर सलामती की राह से वाकिफ़ न हए। 18 उन की आँखों में खुदा का खौफ़ नहीं।” 19 अब हम जानते हैं कि शरी'अत जो कुछ कहती है उनसे कहती है जो शरी'अत के मातहत हैं ताकि हर एक का मूँह बन्द हो जाए और सारी दुनिया खुदा के नज़दीक सजा के लायक ठहरे। 20 क्यूँकि शरी'अत के अमल से कोई बशर उसके हज़र रास्तबाज़ नहीं ठहरेगी इसलिए कि शरी'अत के बरीले से तो गुनाह की पहचान हो सकती है। 21 मगर अब शरी'अत के बौरे खुदा की एक रास्तबाज़ी जाहिर हूँ है जिसकी गवाही शरी'अत और नवियों से होती है। 22 यानी खुदा की यो रास्तबाज़ी जो इसा मसीह पर ईमान लाने से सब ईमान लानेवालों को हासिल होती है, क्यूँकि कुछ फ़र्क नहीं। 23 इसलिए कि सब ने गुनाह किया और खुदा के जलाल से महस्म हैं। 24 मगर उसके फ़ज़ल की वजह से उस मख़लसी के बरीले से जो मसीह ईसा में है मुफ़्त रास्तबाज़ ठहराए जाते हैं। 25 उसे खुदा ने उसके खून के ज़रिए

एक ऐसा कफ़कारा ठहराया जो ईमान लाने से फ़ाइदामन्द हो ताकि जो गुनाह पहले से हो चुके थे और जिसे खुदा ने बर्दाश्त करके तरजीह दी थी उनके बारे में वो अपनी रास्तबाज़ी जाहिर करे। 26 बल्कि इसी बक्त उनकी रास्तबाज़ी जाहिर हो ताकि वो खुद भी आदिल रहे और जो ईसा पर ईमान लाए उसको भी रास्तबाज़ ठहराने वाला हो। 27 पस फ़ऱख कहाँ हैं रहा? इसकी गुन्जाइश ही नहीं कौन सी शरी'अत की वजह से? क्या आमाल की शरी'अत से? ईमान की शरी'अत से? 28 चुनौचे हम ये नतीजा निकालते हैं कि इंसान शरी'अत के आमाल के बौरे ईमान के ज़रिए से रास्तबाज़ ठहराता है। 29 क्या खुदा सिर्फ़ यहदियों ही का है गैर कौमों का नहीं? बेशक गैर कौमों का भी है। 30 क्यूँकि एक ही खुदा है मख़लुनों को भी ईमान से और नामख़लुनों को भी ईमान ही के बरीले से रास्तबाज़ ठहराएगा। 31 पस क्या हम शरी'अत को ईमान से बातिल करते हैं। हराज़ि नहीं बल्कि शरी'अत को क़ाइम रखते हैं।

4 पस हम क्या कहें कि हमारे जिसमानी बाप अब्रहाम को क्या हासिल हुआ? 2 क्यूँकि अगर अब्रहाम आमाल से रास्तबाज़ ठहराया जाता तो उसको फ़ख़ की जगह होती; लेकिन खुदा के नज़दीक नहीं। 3 किताब ए मुक़द्दस क्या कहती है “ये कि अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया। ये उसके लिए रास्तबाज़ी गिना गया।” 4 काम करनेवाले की मज़दूरी बायिशांग नहीं बल्कि हक्क समझी जाती है। 5 मगर जो शख्स काम नहीं करता बल्कि बेदीन के रास्तबाज़ ठहराने वाले पर ईमान लाता है उस का ईमान उसके लिए रास्तबाज़ी गिना जाता है। 6 चुनौचे जिस शख्स के लिए खुदा बौरे आमाल के रास्तबाज़ शुमार करता है दाऊद भी उसकी मुबारिक हाली इस तरह बयान करता है। 7 “मुबारिक वो हैं जिनकी बदकारियाँ मुआफ़ हैं और जिनके गुनाह छुपाए गए। 8 मुबारिक वो शख्स है जिसके गुनाह खुदावन्द शुमार न करेगा।” 9 पस क्या ये मुबारिकबाड़ी मख़लुनों ही के लिए है या नामख़लुनों के लिए भी? क्यूँकि हमारा दावा ये है कि अब्रहाम के लिए उसका ईमान रास्तबाज़ी गिना गया। 10 पस किस हालत में गिना गया? मख़लूनी में या नामख़लूनी में? मख़लूनी में नहीं बल्कि नामख़लुनी में। 11 और उसने खाने का निशान पाया कि उस ईमान की रास्तबाज़ी पर मुहर हो जाए जो उसे नामख़लूनी की हालत में हासिल था, वो उन सब का बाप ठहरे जो बावजूद नामख़लून होने के ईमान लाते हैं 12 और उन मख़लुनों का बाप हो जो न सिर्फ़ मख़लून हैं बल्कि हमारे बाप अब्रहाम के उस ईमान की भी पैरवी करते हैं जो उसे नामख़लूनी की हालत में हासिल था। 13 क्यूँकि ये वादा किया वो कि दुनिया का वारिस होगा न अब्रहाम से न उसकी नस्ल से शरी'अत के बरीले से किया गया था बल्कि ईमान की रास्तबाज़ी के बरीले से किया गया था। 14 क्यूँकि अगर शरी'अत वाले ही वारिस हों तो ईमान बेफ़ाइदा रहा और वादा से कुछ हासिल न ठहरेगा। 15 क्यूँकि शरी'अत तो ज़ब्बत पैदा करती है और जहाँ शरी'अत नहीं वहाँ मुद्दालिफ़त — ए — हुक्म भी नहीं। 16 इसी वास्ते वो मीरास ईमान से मिलती है ताकि फ़ज़ल के तौर पर हो; और वो वादा कुल नस्ल के लिए कोइंग रहे सिर्फ़ उस नस्ल के लिए जो शरी'अत वाली है बल्कि उसके लिए भी जो अब्रहाम की तरह ईमान वाली है वही हम सब का बाप है। 17 चुनौचे लिखा है (“मैंने तुझे बहुत सी कौमों का बाप बनाया”) उस खुदा के सामने जिस पर वो ईमान लाया और जो मुर्दों को जिन्दा करता है और जो चीज़ नहीं हैं उन्हें इस तरह से बुला लेता है कि गोया वो है। 18 वो जो उम्मीदी की हालत में उम्मीद के साथ ईमान लाया ताकि इस कौल के मुताबिक कि तेरी नस्ल ऐसी ही होगी “वो बहुत सी कौमों का बाप हो।” 19 और वो जो तकरीबन सौ बरस का था, बावजूद अपने मुर्दों से बदन और सारह के रहम की मुदाहालत पर लिहाज करने के ईमान में कमज़ोर न हुआ। 20 और न बे ईमान हो कर खुदा के वादे में शक किया बल्कि ईमान में मज़बूत हो कर खुदा की बड़ाई की। 21 और

उसको कामिल ऐतिकाद हुआ कि जो कुछ उसने बादा किया है वो उसे पूरा करने पर भी कादिर है। 22 इसी बजह से ये उसके लिए रास्तबाजी गिना गया। 23 और ये बात कि ईमान उस के लिए रास्तबाजी गिना गया; न सिर्फ उसके लिए लिखी गई। 24 बल्कि हमारे लिए भी जिनके लिए ईमान रास्तबाजी गिना जाएगा इस वास्ते के हम उस पर ईमान लाए हैं जिस ने हमारे खुदावन्द ईसा को मुर्दों में से जिलाया। 25 वो हमारे गुनाहों के लिए हवाले कर दिया गया और हम को रास्तबाज ठहराने के लिए जिलाया गया।

5 पस जब हम ईमान से रास्तबाज ठहरे, तो खुदा के साथ अपने खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से सुलह रखें। 2 जिस के वसीले से ईमान की बजह से उस फजल तक हमारी रिसाई भी हुई जिस पर काईम है और खुदा के जलाल की उम्मीद पर फ़ख़ करें। 3 और सिर्फ यही नहीं बल्कि मुसीबों में भी फ़ख़ करें ये जानकर कि मुसीबत से सब्र पैदा होता है। 4 और सब से पुज़तानी और पुज़तानी से उम्मीद पैदा होती है। 5 और उम्मीद से शर्मिंदगी हासिल नहीं होती क्यूंकि रुह — उल — कुद्दम जो हम को बरछा गया है उसके वसीले से खुदा की मुहब्बत हमारे दिलों में डाली गई है। 6 क्यूंकि जब हम कमज़ोर ही थे तो ऐन बक्त पर मसीह बेदीनों की खातिर मरा। 7 किसी रास्तबाज की खातिर भी मुश्किल से कोई अपनी जान देगा मगर शायद किसी नेक आदमी के लिए कोई अपनी जान तक दे देने की हिम्मत करे; 8 लेकिन खुदा अपनी मुहब्बत की खुब्बी हम पर यूँ ज़ाहिर करता है कि जब हम गुनाहगार ही थे, तो मसीह हमारी खातिर मरा। 9 पस जब हम उसके खून के जरिए अब रास्तबाज ठहरे तो उसके वसीले से गज़ब 'ए इलाही से ज़स्त बचेंगे। 10 क्यूंकि जब बावजूद दुश्मन होने के खुदा से उपरेक बेटे की मौत के वसीले से हमारा मेल हो गया तो मेल होने के बाद तो हम उसकी जिन्दगी की बजह से ज़स्त ही बचेंगे। 11 और सिर्फ यही नहीं बल्कि अपने खुदावन्द ईसा मसीह के तुफ़ेल से जिसके वसीले से अब हमारा खुदा के साथ मेल हो गया खुदा पर फ़ख़ भी करते हैं। 12 पस जिस तरह एक आदमी की बजह से गुनाह दुनिया में आया और गुनाह की बजह से मौत आई और यूँ मौत सब आदमियों में फैल गई इसलिए कि सब ने गुनाह किया। 13 क्यूंकि 'शरी' अत के दिए जाने तक दुनिया में गुनाह तो था मगर जहाँ 'शरी' अत नहीं वहाँ गुनाह शूमार नहीं होता। 14 तो भी आदम से लेकर मूसा तक मौत ने उन पर भी बादशाही की जिन्होंने उस आदम की नाफ़रमानी की तरह जो आनेवाले की मिसाल था गुनाह न किया था। 15 लेकिन गुनाह का जो हाल है वो फजल की नेमामत का नहीं क्यूंकि जब एक शरूस के गुनाह से बहुत से आदमी मर गए तो खुदा का फजल और उसकी जो बरिष्यश एक ही आदमी यानी ईसा मसीह के फजल से पैदा हुई और बहुत से आदमियों पर ज़स्त ही झ़फ़ात से नाज़िल हुई। 16 और जैसा एक शरूस के गुनाह करने का अंजाम हुआ बरिष्यश का वैसा हाल नहीं क्यूंकि एक ही की बजह से वो फैसला हुआ जिसका नतीजा सजा का हुक्म था; मगर बहुतेरे गुनाहों से ऐसी नेमामत पैदा हुई जिसका नतीजा ये हुआ कि लोग रास्तबाज ठहरें। 17 क्यूंकि जब एक शरूस के गुनाह की बजह से मौत ने उस एक के जरिए से बादशाही की तो जो लोग फजल और रास्तबाजी की बरिष्यश झ़फ़ात से हासिल करते हैं "वो एक शरूस यानी ईसा" मसीह के वसीले से हमेशा की जिन्दगी में ज़स्त ही बादशाही करेंगे। 18 गरज जैसा एक गुनाह की बजह से वो फैसला हुआ जिसका नतीजा सब आदमियों की सजा का हुक्म था; वैसे ही रास्तबाजी के एक काम के वसीले से सब आदमियों को वो नेमामत मिली जिससे रास्तबाज ठहराकर जिन्दगी पाएँ। 19 क्यूंकि जिस तरह एक ही शरूस की नाफ़रमानी से बहुत से लोग रास्तबाज ठहरे, उसी तरह एक की फरमांबरदारी से बहुत से लोग रास्तबाज ठहरे। 20 और बीच में शरी' अत आ मौजूद हुई ताकि गुनाह ज्यादा हो जाए

मगर जहाँ गुनाह ज्यादा हुआ फजल उससे भी निहायत ज्यादा हुआ। 21 ताकि जिस तरह गुनाह ने मौत की बजह से बादशाही की उसी तरह फजल भी हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के वसीले से हमेशा की जिन्दगी के लिए रास्तबाजी के जरिए से बादशाही करे। (aiōnios g166)

6 पस हम क्या कहें? क्या गुनाह करते रहें ताकि फजल ज्यादा हो? 2 हरगिज

नहीं हम जो गुनाह के ऐतिवार से मर गए क्यूँकर उस में फिर से जिन्दगी गुज़ारें? 3 क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह ईसा में शामिल होने का बपतिस्मा लिया तो उस की मौत में शामिल होने का बपतिस्मा लिया? 4 पस मौत में शामिल होने के बपतिस्मे के वसीले से हम उपरे साथ दफन हुए ताकि जिस तरह मसीह बाप के जलाल के वसीले से मुर्दों में से जिलाया गया; उसी तरह हम भी नई जिन्दगी में चलें। 5 क्यूँकि जब हम उसकी मुशाबहत से उपरे साथ जुड़ गए, तो बेशक उसके जी उठने की मुशाबहत से भी उस के साथ जुड़े होंगे। 6 चुनौती हम जानते हैं कि हमारी पूरानी ईसाना विश्वास उसके साथ इसलिए मस्लिब की गई कि गुनाह का बदन बेकार हो जाए ताकि हम आगे को गुनाह की गुलामी में न रहें। 7 क्यूँकि जो मरा वो गुनाह से बरी हुआ। 8 पस जब हम मसीह के साथ मरे तो हमें यकीन है कि उपरे साथ जिएँगे भी। 9 क्यूँकि ये जानते हैं कि मसीह जब मुर्दों में से जी उठा है तो फिर नई मरने का; मौत का फिर उस पर इखित्यार नहीं होने का। 10 क्यूँकि मसीह जो मरा गुनाह के ऐतिवार से एक बार मरा, मगर अब जो जिन्दा हुआ तो खुदा के ऐतिवार से जिन्दा है। 11 इसी तरह तुम भी अपने आपको गुनाह के ऐतिवार से एक साथ मसीह ईसा में जिन्दा समझो। 12 पस गुनाह तुम्हारे फानी बदन में बादशाही न करें; कि तुम उसकी खालिहोंकों के ताबे रहो। 13 और अपने आ'ज़ा नारास्ती के हथियार होने के लिए गुनाह के हवाले न करो; बल्कि अपने आपको मुर्दों में से जिन्दा जानकर खुदा के हवाले करो और अपने आ'ज़ा रास्तबाजी के हथियार होने के लिए खुदा के हवाले करो। 14 इसलिए कि गुनाह का तुम रप इखित्यार न रहोगा; क्यूँकि तुम शरी' अत के मातहत नहीं बल्कि फजल के मातहत हो। 15 पस क्या हुआ? क्या हम इसलिए गुनाह करें कि शरी' अत के मातहत नहीं बल्कि फजल के मातहत है? हरगिज नहीं; 16 क्या तुम नहीं जानते, कि जिसकी फरमांबरदारी के लिए अपने आप को गुलामों की तरह हवाले कर देते हो, उसी के गुलाम हो जिसके फरमांबरदार हो चाहे गुनाह के जिसका अंजाम मौत है चाहे फरमांबरदारी के जिस का अंजाम रास्तबाजी है? 17 लेकिन खुदा का शक है कि अगर तुम गुनाह के गुलाम थे तो भी दिल से उस तालीम के फरमांबरदार हो गए; जिसके साँचे में ढाले गए थे। 18 और गुनाह से आजाद हो कर रास्तबाजी के गुलाम हो गए। 19 मैं तुहारी ईसानी कमज़ोरी की बजह से ईसानी तौर पर कहता हूँ, जिस तरह तुम ने अपने आ'ज़ा बदकारी करने के लिए नापाकी और बदकारी की गुलामी के हवाले किए थे उसी तरह अब अपने आ'ज़ा पाक होने के लिए रास्तबाजी की गुलामी के हवाले कर दो। 20 क्यूँकि जब तुम गुनाह के गुलाम थे, तो रास्तबाजी के ऐतिवार से आजाद थे। 21 पस जिन बातों पर तुम अब शर्मिंदा हो उनसे तुम उस वक्त बना फल पाते थे? क्यूँकि उन का अंजाम तो मौत है। 22 मगर अब गुनाह से आजाद और खुदा के गुलाम हो कर तुम को अपना फल मिला जिससे पाकीज़री हासिल होती है और इस का अंजाम हमेशा की जिन्दगी है। (aiōnios g166) 23 क्यूँकि गुनाह की मज़दूरी मौत है मगर खुदा की बरिष्यश हमारे खुदावन्द ईसा मसीह में हमेशा की जिन्दगी है। (aiōnios g166)

7 ऐ भाइयों, क्या तुम नहीं जानते मैं उन से कहता हूँ जो शरी' अत से वाकिफ़ हैं कि जब तक आदमी जीता है उसी वक्त तक शरी' अत उस पर इखित्यार

रखती है? 2 चुनाँचे जिस औरत का शौहर मौजूद है वो शरी'अत के मुवाफिक अपने शौहर की जिन्दगी तक उसके बन्द में है; लेकिन अगर शौहर मर गया तो वो शौहर की शरी'अत से छूट गई। 3 पस अगर शौहर के जीते जी दूसरे मर्द की हो जाए तो जानिया कहलाएँी लेकिन अगर शौहर मर जाए तो वो उस शरी'अत से आजाद है, यहाँ तक कि अगर दूसरे मर्द की हो भी जाए तो जानिया न ठहरेगी। 4 पस ऐ मेरे भाइयों; तुम भी मर्सीह के बदन के बसीले से शरी'अत के ऐतिबार से इसलिए मुर्दां बन गए, कि उस दूसरे के हो; जाओ जो मुर्दों में से जिलाया गया ताकि हम सब खुदा के लिए फल पैदा करें। 5 क्यूँकि जब हम जिस्मानी थे गुनाह की खवाहिंगों जो शरी'अत के जरिए पैदा होती थी मौत का फल पैदा करने के लिए हमारे आज्ञा में तासीर करती थी। 6 लेकिन जिस चीज़ की कैद में थे उसके ऐतिबार से मर कर अब हम शरी'अत से ऐसे छूट गए, कि स्ह के नए तौर पर न कि लफ़ज़ों के पूराने तौर पर खिदमत करते हैं। 7 पस हम क्या करें क्या शरी'अत के गुनाह है? हरगिज नहीं बल्कि बगैर शरी'अत के मैं गुनाह को न पहचानता मसलन अगर शरी'अत ये न कहती कि तू लालच न कर तो मैं लालच को न जानता। 8 मगर गुनाह ने मौका पाकर हक्म के जरिए से मुझ में हर तरह का लालच पैदा कर दिया; क्यूँकि शरी'अत के बगैर गुनाह मुर्दा है। 9 एक जमाने में शरी'अत के बगैर मैं जिन्दा था, मगर अब हुक्म आया तो गुनाह जिन्दा हो गया और मैं मर गया। 10 और जिस हक्म की चाहत जिन्दगी थी, वही मेरे हक्म में मौत का जरिया बन गया। 11 क्यूँकि गुनाह ने मौका पाकर हक्म के जरिए से मुझे बहकाया और उसी के जरिए से मुझे मार भी डाला। 12 पस शरी'अत पाक है और हक्म भी पाक और रास्ता भी अच्छा है। 13 पस जो चीज़ अच्छी है क्या वो मेरे मौत ठहरी? हरगिज नहीं बल्कि गुनाह ने अच्छी चीज़ के जरिए से मेरे मौत पैदा करके मुझे मार डाला ताकि उसका गुनाह होना जाहिर हो; और हक्म के जरिए से गुनाह हट से ज्यादा मकरस्त मालूम हो। 14 क्या हम जानते हैं कि शरी'अत तो स्हानी है मगर मैं जिस्मानी और गुनाह के हाथ बिका हुआ हूँ। 15 और जो मैं करता हूँ उसको नहीं जानता क्यूँकि जिसका मैं इरादा करता हूँ वो नहीं करता बल्कि जिससे मुझको नफरत है वही करता हूँ। 16 और अगर मैं उस पर अमल करता हूँ जिसका इरादा नहीं करता तो मैं मानता हूँ कि शरी'अत उमदा है। 17 पस इस स्तर में उसका करने वाला मैं न रहा बल्कि गुनाह है जो मुझ में बसा हुआ है। 18 क्यूँकि मैं जानता हूँ कि मुझ में यानी मेरे जिस्म में कोई नेकी बसी हुई नहीं; अलवक्ता इरादा तो मुझ में मौजूद है, मगर नेक काम मुझ में बन नहीं पड़ते। 19 चुनाँचे जिस नेकी का इरादा करता हूँ वो तो नहीं करता मार जिस बटी का इरादा नहीं करता उसे कर लेता हूँ। 20 पस अगर मैं वो करता हूँ जिसका इरादा नहीं करता तो उसका करने वाला मैं न रहा बल्कि गुनाह है; जो मुझ में बसा हुआ है। 21 गरज मैं ऐसी शरी'अत पाता हूँ कि जब नेकी का इरादा करता हूँ तो बटी मैंरे पास आ मौजूद होती है। 22 क्यूँकि बातिनी इसान विषय के ऐतिबार से तो मैं खुदा की शरी'अत को बहुत पसन्द करता हूँ। 23 मगर मुझे अपने आज्ञा में एक और तरह की शरी'अत नजर आती है जो मेरी अक्रल की शरी'अत से लड़कर मुझे उस गुनाह की शरी'अत की कैद में ले आती है; जो मेरे आज्ञा में मौजूद है। 24 हाय मैं कैसा कम्बख्त आदमी हूँ इस मौत के बदन से मुझे कौन छुड़ाएगा? 25 अपने खुदावन्द ईसा मर्सीह के बासीले से खुदा का शुक्र करता हूँ, गरज मैं खुद अपनी अक्रल से तो खुदा की शरी'अत का मगर जिस्म से गुनाह की शरी'अत का गुलाम हूँ।

8 पस अब जो मर्सीह ईसा में है उन पर सजा का हक्म नहीं क्यूँकि जो जिस्म के मुताबिक नहीं बल्कि स्ह के मुताबिक चलते हैं? 2 क्यूँकि जिन्दगी की पाक स्ह को शरी'अत ने मर्सीह ईसा में मुझे गुनाह और मौत की शरी'अत

से आजाद कर दिया। 3 इसलिए कि जो काम शरी'अत जिस्म की बजह से कमज़ोर हो कर न कर सकी वो खुदा ने किया; यानी उसने अपने बेटे को गुनाह आलदा जिस की सूरत में और गुनाह की कुर्बानी के लिए भेज कर जिस्म में गुनाह की सजा का हुक्म दिया। 4 ताकि शरी'अत का तक़ज़ा हम मैं पूरा हो जो जिस्म के मुताबिक नहीं बल्कि स्ह के मुताबिक चलता है। 5 क्यूँकि जो जिस्मानी है वो जिस्मानी बातों के ख्याल में रहते हैं; लेकिन जो रुहानी है वो रुहानी बातों के ख्याल में रहते हैं। 6 और जिस्मानी नियत मौत है मगर रुहानी नियत जिन्दगी और इत्मीनान है। 7 इसलिए कि जिस्मानी नियत खुदा की दृश्यन है न तो खुदा की शरी'अत के ताबे हैं न हो सकती है। 8 और जो जिस्मानी है वो खुदा को खुश नहीं कर सकते। 9 लेकिन तुम जिस्मानी नहीं बल्कि रुहानी हो बशर्त कि खुदा का स्ह तुम में बसा हुआ है; मगर जिस मर्सीह का स्ह नहीं वो उसका नहीं। 10 और अगर मर्सीह तुम में है तो बदन तो गुनाह की बजह से मुर्दा है मगर स्ह रास्तबाज़ी की बजह से ज़िन्दा है। 11 और अगर उसी का स्ह तुझ में बसा हुआ है जिसने ईशा को मुर्दों में से जिलाया; वो जिसने मर्सीह को मुर्दों में से जिलाया, तुम्हारे फानी बदनों को भी अपने उस स्ह के बसीले से जिन्दा करेगा जो तुम में बसा हुआ है। 12 पस ऐ भाइयों! हम कर्जदार होते हैं मगर जिस्म के मुताबिक जिन्दगी गुजारें। 13 क्यूँकि अगर तुम जिस्म के मुताबिक जिन्दगी गुजारेंगे तो ज़स्त मरोगे; और अगर स्ह से बदन के कामों को नेस्तोनाबूद करोगे तो जीते रहेंगे। 14 क्योंकि जो भी खुदा की स्ह के मुताबिक चलाए जाते हैं, वो खुदा के फर्जन्द हैं। 15 क्यूँकि तुम को गुलामी की स्ह नहीं मिली जिससे फिर डर पैदा हो बल्कि लेपालक होने की स्ह मिली जिस में हम अब्बा यानी ऐ बाप कह कर पुकारते हैं। 16 पाक स्ह हमारी स्ह के साथ मिल कर गवाही देता है कि हम खुदा के फर्जन्द हैं। 17 और अगर फर्जन्द हैं तो वारिस भी हैं यानी खुदा के वारिस और मर्सीह के हम मीरास बशर्त कि हम उसके साथ दुख उठाएँ ताकि उसके साथ जलाल भी पाएँ। 18 क्यूँकि मेरी सप्तश्च में इस जमाने के दुख दर्द इस लायक नहीं कि उस जलाल के मुकाबिले में हो सकें जो हम पर जाहिर होने वाला है। 19 क्यूँकि मर्जलकूत पूरी अरजू से खुदा के बेटों के ज़ाहिर होने की राह देखती है। 20 इसलिए कि मर्जलकूत बतालत के इखियार में कर दी गई थी न अपनी खुशी से बल्कि उसके जरिए से जिसने उसको। 21 इस उम्मीद पर बतालत के इखियार कर दिया कि मर्जलकूत भी फना के कब्ज़े से छूट कर खुदा के फर्जन्दों के जलाल की आजादी में दाखिल हो जाएगी। 22 क्यूँकि हम को मालूम हैं कि सारी मर्जलकूत मिल कर अब तक कराहती है और दर्द — ए — ज़ेह में पड़ी तड़पती है। 23 और न सिर्फ वही बल्कि हम भी जिन्हें स्ह के पहले फल मिले हैं आप अपने बातिन में करहते हैं और लेपालक होने यानी अपने बदन की मर्जलसी की राह देखते हैं। 24 चुनाँचे हमें उम्मीद के बसीले से नजात मिली मगर जिस चीज़ की उम्मीद है जब वो नजर आ जाए तो फिर उम्मीद कैसी? क्यूँकि जो चीज़ कोई देख रहा है उसकी उम्मीद क्या करेगा? 25 लेकिन जिस चीज़ को नहीं देखते अगर हम उसकी उम्मीद करें तो सब्र से उसकी राह देखते हैं। 26 इसी तरह स्ह ही हमारी कमज़ोरी में मदद करता है क्यूँकि जिस तौर से हम को दुआ करना चाहिए हम नहीं जानते मगर स्ह खुद ऐसी आहें भर भर कर हमारी शक्ता'अत करता है जिनका बयान नहीं हो सकता। 27 और दिनों का परखने वाला जानता है कि स्ह की क्या नियत है; क्यूँकि वो खुदा की मर्जी के मुवाफिक मुकद्दसों की शक्ता'अत करता है। 28 और हम को मालूम है कि सब चीज़े मिल कर खुदा से मुहब्बत रखनेवालों के लिए भलाई पैदा करती है; यानी उनके लिए जो खुदा के द्वारा के मुवाफिक बुलाए गए। 29 क्यूँकि जिनको उसने पहले से जाना उनको पहले से मुकर्रर भी किया कि उसके

बेटे के हमशक्त हों, ताकि वो बहुत से भाइयों में पहलौठा ठहरे। 30 और जिन को उसने पहले से मुकर्रर किया उनको बुलाया थी, और जिनको बुलाया उनको रास्तबाज भी ठहराया, और जिनको रास्तबाज ठहराया; उनको जलाल भी बख्ता। 31 पर हम इन बातों के बारे में क्या कहें? अगर खुदा हमारी तरफ है; तो कौन हमारा मुखालिफ है? 32 जिसने अपने बेटे ही की परवाह न की? बल्कि हम सब की खातिर उसे हवाले कर दिया वो उसके साथ और सब चीजें भी हमें किस तरह न बख्ती। 33 खुदा के बरगुजियों पर कौन शिकायत करेगा? खुदा वही है जो उनको रास्तबाज ठहराता है। 34 कौन है जो मुजरिम ठहराएगा? मरीह ईसा वो है जो मर गया बल्कि मुर्दों में से जी उठा और खुदा की दहरी तरफ है और हमारी शिकायत भी करता है। 35 कौन हमें मरीह की मुहब्बत से जुदा करेगा? मुरीबत या तंगी या जुल्म या काल या नंगापन या खतरा या तलवार। 36 चुनौते लिखा है “हम तेरी खातिर दिन भर जान से मारे जाते हैं, हम तो जबह होने वाली भेड़ों के बराबर गिने गए।” 37 मगर उन सब हालतों में उसके बसीले से जिसने हम सब से मुहब्बत की हम को जीत से भी बढ़कर गलबा हासिल होता है। 38 क्यौंकि मुझको यकीन है कि खुदा की जो मुहब्बत हमारे खुदावन्द ईसा मरीह में है उससे हम को न मौत जुदा कर सकेंगी न ज़िन्दगी, 39 न फरिश्ते, न हक्कामों, न मौजूदा, न अनेक वाली चीजें, न कुदरत, न ऊँचाई, न गहराई, न और कोई माल्यकू।

9 मैं मरीह में सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, और मेरा दिल भी स्थ — उल — कुद्दस में इस की गवाही देता है 2 कि मुझे बड़ा गम है और मेरा दिल बराबर दुःखता रहता है। 3 क्यौंकि मुझे यहाँ तक मंज़ूर होता कि अपने भाइयों की खातिर जो जिसके ऐतबार से मेरे कर्तीबी हैं में खुद मरीह से महसूम हो जाता। 4 वो इसाईल हैं, और लेपालक होने का हक और जलाल और ओहदा और शरीरी अत और इबादत और वादे उन ही के हैं। 5 और कौम के बुरुर्ज उन ही के हैं और जिसके ऐतबार से मरीह भी उन ही में से हुआ, जो सब के ऊपर और हमेशा तक खुदा'ए महसूद है, आमीन। (aion g165) 6 लेकिन ये बात नहीं कि खुदा का कलाम बालित हो गया इसलिए कि जो इसाईल की औलाद हैं वो सब इसाईली नहीं। 7 और न अब्राहाम की नस्ल होने की वजह से सब फर्जन्द ठहरे बल्कि ये लिखा है, “कि इहाक ही से तेरी नस्ल कहलाएगा।” 8 यानी कि जिसमानी फर्जन्द खुदा के फर्जन्द नहीं बल्कि वादे के फर्जन्द नस्ल गिने जाते हैं। 9 क्यौंकि वादे का कौल ये हैं “मैं इस वक्त के मुताबिक आँज़ा और सारा के बेटा होगा।” 10 और सिफ यही नहीं बल्कि रखेका भी एक शख्स यानी हमारे बाप इज्हाक से हामिला थी। 11 और अभी तक न तो लड़के पैदा हुए थे और न उहोंने नेकी या बदी की थी, कि उससे कहा गया, बड़ा छोटे की खिदमत करेगा। 12 ताकि खुदा का इरादा जो चुनाव पर मुन्हसिर है “आमाल पर म्बनी न ठहरे बल्कि बुलानेवाले पर।” 13 चुनौते लिखा है “मैंने याकूब से तो मुहब्बत की मार ऐसों को नापसन्द।” 14 पर हम क्या कहें? क्या खुदा के यहाँ बै-इन्साफी है? हरणीज़ नहीं; 15 क्यौंकि यो मूसा से कहता है “जिस पर रहम करना मंज़ूर है और मेरा न इरादा करने वाले पर मुन्हसिर है तुम पर तरस खाऊँगा।” 16 पर ये न इरादा करने वाले पर मुन्हसिर है न दौड़ धूप करने वाले पर बल्कि रहम करने वाले पर खुदा पर। 17 क्यौंकि किताब — ए — मुकद्दस में खुदा ने फिर औन से कहा “मैंने इसी लिए तुझे खड़ा किया है कि तेरी वजह से अपनी कुदरत जाहिर करूँ, और मेरा नाम तमाम स्ट्रे ज़मीन पर मशहर हो।” 18 पर वो जिस पर चाहता है रहम करता है, और जिसे चाहता है उसे सख्त करता है। 19 पर त् मुझ से कहेगा, “फिर वो क्यूँ ऐब लगाता है? कौन उसके इरादे का मुकाबिला करता है?” 20 ऐं इसान, भला त् कौन है जो खुदा के सामने जबाब देता है? क्या बनी हुई चीज बनाने वाले से कह सकती है “तूने मुझे क्यूँ ऐसा

बनाया?” 21 क्या कुम्हार को मिट्टी पर इश्वियार नहीं? कि एक ही लौन्दे में से एक बरतन इज्जत के लिए बनाए और दूसरा बैंज़ती के लिए? 22 पर क्या तंअज्जब है अगर खुदा अपना गजब जाहिर करने और अपनी कुदरत जाहिर करने के इरादे से गजब के बरतनों के साथ जो हलाकत के लिए तैयार हुए थे, निहायत तहमील से पैश आए। 23 और ये इसलिए हुआ कि अनेक जलाल की दैलत रहम के बरतनों के जरिए से जाहिर करे जो उस ने जलाल के लिए पहले से तैयार किए थे। 24 यानी हमारे जरिए से जिनको उसने न सिर्फ यहदियों में से बल्कि गैर कौमों में से भी बुलाया। 25 चुनौते होसे की किताब में भी खुदा यूँ फरमाता है, “जो मेरी उम्मत नहीं थी उसे अपनी उम्मत कहँगा।” और जो यारी न थी उसे यारी कहँगा। 26 और ऐसा होगा कि जिस जगह उनसे ये कहा गया था कि तुम मेरी उम्मत नहीं हो, उत्ती जगह वो जिन्दा खुदा के बेटे कहलाएँगे।” 27 और यसायाह इसाईल के बारे में पुकार कर कहता है चाहे बनी इसाईल का शुमार सम्पुर्द जीरों की रेत के बराबर हो तोपी उन में से थोड़े ही बचेंगे। 28 क्यौंकि खुदावन्द अपने कलाम को मुकम्मल और खत्म करके उसके मुताबिक ज़मीन पर अमल करेगा। 29 चुनौते यसायाह ने पहले भी कहा है कि अगर रब्बुल अफवाज हमारी कछ नस्ल बाकी न रखता तो हम सद्य की तरह और अमरा के बराबर हो जाते। 30 पर हम क्या कहें? ये कि गैर कौमों ने जो रास्तबाज़ी की तलाश न करी थी, रास्तबाज़ी हासिल की यानी वो रास्तबाज़ी जो ईमान से है। 31 मगर इसाईल जो गास्ताजी की शरीरी अत तक न पहुँचा। 32 किस लिए? इस लिए कि उन्होंने ईमान से नहीं बल्कि गोया आमाल से उसकी तलाश की; उन्होंने उसे ठोकर खाने के पथर से ठोकर खाइ। 33 चुनौते लिखा है देखो; “मैं सिय्यून में ठेस लगाने का पथर और ठोकर खाने की चाढ़ान रखता हूँ और जो उस पर ईमान लाएगा वो शर्मिन्दा न होगा।”

10 ऐ भाइयों, मेरे दिल की आरजू और उन के लिए खुदा से मेरी दुआ है कि वो नजात पाएँ। 2 क्यौंकि मैं उनका गवाह हूँ कि वो खुदा के बारे में गैरत तो रखते हैं; मगर समझ के साथ नहीं। 3 इसलिए कि वो खुदा की रास्तबाज़ी से नावाकिफ हो कर और अपनी रास्तबाज़ी काईम करने की कोशिश करके खुदा की रास्तबाज़ी के ताबे न हए। 4 क्यौंकि हर एक ईमान लानेवाले की रास्तबाज़ी के लिए मरीह शरीरी अत का अंजाम है। 5 चुनौते मूसा ने ये लिखा है “कि जो शब्स उस रास्तबाज़ी पर अमल करता है जो शरीरी अत से है वो उसी की वजह से जिन्दा रहेगा।” 6 अगर जो रास्तबाज़ी ईमान से है वो वो यूँ कहती है, “त् अपने दिल में ये न कहकि आसमान पर कौन चढ़ेगा?” यानी मरीह के ऊतर लाने को। 7 या “गहराव में कौन उतरेगा?” यानी मरीह को मुर्दों में से जिला कर ऊपर लाने को। (Abyssos g12) 8 बल्कि क्या कहती है; ये कि कलाम तेरे नज़दीक है बल्कि तेरे मुँह और तेरे दिल में है कि, ये वही ईमान का कलाम है जिसका हम ऐलान करते हैं। 9 कि अगर त् अपनी ज़बान से ईसा के खुदावन्द होने का इकरार करे और अपने दिल से ईमान लाए कि खुदा ने उसे मुर्दों में से जिलाया तो नजात पाएगा। 10 क्यौंकि रास्तबाज़ी के लिए ईमान लाना दिल से होता है और नजात के लिए इकरार मुँह से किया जाता है। 11 चुनौते किताब — ए — मुकद्दस ये कहती है “जो कोई उस पर ईमान लाएगा वो शर्मिन्दा न होगा।” 12 क्यौंकि यहदियों और यसायियों में कछ फर्क नहीं इसलिए कि वही सब का खुदावन्द है और अपने सब दुआ करनेवालों के लिए फर्याज है। 13 क्यौंकि “जो कोई खुदावन्द का नाम लेगा नजात पाएगा।” 14 मगर जिस पर वो ईमान नहीं लाए उस से क्यूँकर दुआ करें? और जिसका जिक्र उन्होंने सुना नहीं उस पर ईमान क्यूँ लाएँ? और बगैर ऐलान करने वाले की क्यूँकर सुनें? 15 और जब तक वो भेजे न जाएँ ऐलान क्यूँकर करें? चुनौते लिखा है “क्या ही खुशनुमा है उनके कदम जो अच्छी चीजों की खुशबूरी देते हैं।” 16 लेकिन

सब ने इस खुशखबरी पर कान न धरा चुनाँचे यसायाह कहता है “ऐ खुदावन्द हमारे पैगामा का किसने यकीन किया है?” 17 पस ईमान सुनने से पैदा होता है और सुनना मसीह के कलाम से। 18 लेकिन मैं कहता हूँ, क्या उन्होंने नहीं सुना? चुनाँचे लिखा है, “उनकी आवाज तमाम स्ट्रैंजमान पर और उनकी बातें दुनिया की इन्हिंता तक पहुँचीं।” 19 फिर मैं कहता हूँ, क्या इसाईल वाकिफ न था? पहले तो मूसा कहता है, “उन से तुम को गैर तरिका जो कौम ही नहीं एक नादान कौम से तुम को शुस्ता दिलाऊँगा।” 20 फिर यसायाह बड़ा दिलेर होकर ये कहता है जिन्होंने मुझे नहीं ढूंगा उन्होंने मुझे पा तिया जिन्होंने मुझ से नहीं पूछा उन पर मैं जाहिर हो गया। 21 लेकिन इसाईल के हक्म मैं यूँ कहता है “मैं दिन भर एक नाफरमान और हज्जती उम्मत की तरफ अपने हाथ बढ़ाए रहा।”

11 पस मैं कहता हूँ क्या खुदा ने अपनी उम्मत को रद्द कर दिया? हरगिज

नहीं क्यूँकि मैं भी इसाईली अब्राहाम की नस्त और बिनयामीन के कबीले में से हूँ। 2 खुदा ने अपनी उस उम्मत को रद्द नहीं किया जिसे उसने पहले से जाना क्या तुम नहीं जानते कि किंतुब — ए — मुकद्दस एलियाह के जिक्र में क्या कहती है, कि वो खुदा से इसाईल की यूँ फरियाद करता है? 3 “ऐ खुदावन्द उन्होंने तेरे नवियों को कल्प किया और तेरी कुरबानगाहों को ढा दिया; अब मैं अकेला बाकी हूँ और वो मेरी जान के भी पीछे हैं।” 4 मगर जवाब़— “इताही उसको क्या मिला? ये कि मैंने “अपने लिए सात हजार आदर्मी बचा रख्ये हैं जिन्होंने बाल के आगे घुटने नहीं टेके।” 5 पस इसी तरह इस वक्त भी फजल से बरगुजीदा होने के जरिए कुछ बाकी है। 6 और अगर फजल से बरगुजीदा होते तो आमाल से नहीं; वर्गी फजल फजल न रहा। 7 पस नवीजा क्या हुआ? ये कि इसाईल जिस चीज़ की तलाश करता है वो उस को न मिली मगर बरगुजीदों को मिली और बाकी सज्जा किए गए। 8 चुनाँचे लिखा है, खुदा ने उनको आज के दिन तक सुस्त तबी’ अत दी और ऐसी आँखें जो न देखें और ऐसे कान जो न सुनें। 9 और दाऊद कहता है, उनका दस्तरखबान उन के लिए जाल और फन्दा और ठोकर खाने और सजा का जरिया बन जाए। 10 उन की आँखों पर अँधेरा छा जाए ताकि न देखें और तु उनकी पीठ हमेशा झकाए रख। 11 पस मैं पूछता हूँ क्या यहदियों ने ऐसी ठोकर खाई कि गिर पड़े? हरगिज नहीं, बल्कि उनकी गलती से गैर कौमों को नजात मिली ताकि उन्हें गैरत आए। 12 पस जब उनका लड़खड़ाना दुनिया के लिए दौलत का जरिया और उनका घटना गैर कौमों के लिए दौलत का जरिया हुआ तो उन का भरपूर होना जस्तर ही दौलत का जरिया होगा। 13 मैं ये बातें तुम गैर कौमों से कहता हूँ, क्यूँकि मैं गैर कौमों का रसूल हूँ इसलिए अपनी खिदमत की बड़ाई करता हूँ। 14 ताकि किसी तरह से अपनी कौम वालों से गैरत दिलाकर उन में से कुछ को नजात दिलाऊँ। 15 क्यूँकि जब उनका अलग हो जान दुनिया के आ मिलने का जरिया हुआ तो क्या उन का मकबूल होना मुर्दों में से जी उठने के बरबार न होगा? 16 जब नज़र का पहला पेड़ा पाक ठराते से सारा धुंगा हुआ आटा भी पाक है, और जब जड़ पाक है तो डालियाँ भी पाक ही हैं। 17 लेकिन अगर कुछ डालियाँ तोड़ी गईं, और तू जंगली जैतून होकर उनकी जगह पैवन्द हुआ, और जैतून की रौगनदार जड़ में शरीक हो गया। 18 तो तु उन डालियों के मुकाबिले में फँख न कर और अगर फँख करेगा तो जान रख कि तु जड़ को नहीं बल्कि जड़ तुझ को संभालती है। 19 पस त कहेगा, “डालियाँ इसलिए तोड़ी गई कि मैं पैवन्द हो जाऊँ।” 20 अच्छा, वो तो बे’ईमानी की बजह से तोड़ी गई, और तु ईमान की बजह से काईम है, पस मगर न हो बल्कि खौफ कर। 21 क्यूँकि जब खुदा ने असली डालियों को न छोड़ा तो तुझ को भी न छोड़ेगा। 22 पस खुदा की महरबानी और सख्ती को देख सख्ती उन पर जो गिर गए हैं; और खुदा

की महरबानी तुझ पर बर्शते कि तू उस महरबानी पर काईम रहे, वर्ना तू भी काट डाला जाएगा। 23 और वो भी अगर बे’ईमान न रहें तो पैवन्द किए जाएँगे क्यूँकि खुदा उन्हें पैवन्द करके बहाल करने पर कादिर है। 24 इसलिए कि जब तू जैतून के उस दरखत से काट कर जिसकी जड़ ही जंगली है जड़ के बरखिलाफ अच्छे जैतून में पैवन्द हो गया तो वो जो जड़ डालियाँ हैं अपने जैतून में जस्तर ही पैवन्द हो जाएँगी। 25 ऐ बाइयों! कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने आपको अक्लमन्द समझ लो इसलिए मैं नहीं चाहता कि तुम इस राज से ना वाकिफ रहो कि इसाईल का एक हिस्सा सख्त हो गया है और जब तक गैर कौमें पूरी पूरी दाविल न हों वो ऐसा ही रहेगा। 26 और इस सूत से तमाम इसाईल नजात पाएगा; चुनाँचे लिखा है, छुड़ने वाला सिय्यन से निकलेगा और बेदीनी को याकूब से दफा करेगा। 27 “और उनके साथ मेरा ये अहद होगा जब कि मैं उनके गुहाहों को दूर करूँगा।” 28 इंजील के ऐतिवार से तो वो तुम्हारी खातिर दूरम है लेकिन बरगुजीदी के ऐतिवार से बाप दादा की खातिर प्यार करें। 29 इसलिए कि खुदा की ने अमत और बुलावा ना बदलने वाला है। 30 क्यूँकि जिस तरह तुम पहले खुदा के नाफरमान थे मगर अब यहदियों की नाफरमानी की बजह से तुम पर रहम हुआ। 31 उसी तरह अब ये भी नाफरमान हुए ताकि तुम पर रहम होने के जरिए अब इन पर भी रहम हो। 32 इसलिए कि खुदा ने सब को नाफरमानी में गिरफ्तार होने दिया ताकि सब पर रहम फरमाए। 33 वाह! खुदा की दौलत और हिक्मत और इलम क्या ही अजीम है उसके फैसले किस कदर पहुँच से बाहर हैं और उसकी राहें क्या ही बोनिशान हैं। 34 खुदावन्द की अक्ल को किसने जाना? या कौन उसका सलाहकार हुआ? 35 या किसने पहले उसे कुछ दिया है, जिसका बदला उसे दिया जाए? 36 क्यूँकि उसी की तरफ से, और उसी के बरसीते से और उसी के लिए सब चीजें हैं; उसकी बड़ाई हमेशा तक होती रहे अमीन। (aiōn g165)

12 ऐ भाइयों! मैं खुदा की रहमतें याद दिला कर तुम से गुजारिश करता हूँ

कि अपने बदन ऐसी कुर्बानी होने के लिए पेश करो जो जिन्दा और पाक और खुदा को पसन्दीदा हो यही तुम्हारी माकूल इबादत है। 2 और इस जहान के हमशक्ल न बनो बल्कि अक्ल नई हो जाने से अपनी सूत बदलते जाओ ताकि खुदा की नेक और पसन्दीदा और कामिल मर्जी को तजुर्बा से मालूम करते रहो। (aiōn g165) 3 मैं उस तौकीकी की बजह से जो मुझ को मिली है तुम में से हर एक से कहता हूँ, कि जैसा समझना चाहिए उससे ज्यादा कोई अपने आपको न समझे बल्कि जैसा खुदा ने हर एक को अन्दाजे के मुवाफिक ईमान तकरीम किया है ऐतिवाल के साथ अपने आप को बैसा ही समझे। 4 क्यूँकि जिस तरह हमारे एक बदन में बहुत से आज्ञा होते हैं और तमाम आज्ञा का काम एक जैसा नहीं। 5 उसी तरह हम भी जो बहुत से हैं मरीझ में शामिल होकर एक बदन हैं और आपस में एक दूसरे के आज्ञा। 6 और चूँकि उस तौकीक के मुवाफिक जो हम को दी गई है, हमें तरह तरह की ने अमतें मिली इसलिए जिस को न बुव्वत मिली हो वो ईमान के अन्दाजे के मुवाफिक न बुव्वत करें। 7 अगर खिदमत मिली हो तो खिदमत में लगा रहे अगर कोई मुअल्लिम हो तो तालीम में मशाल हो। 8 और अगर नासेह हो तो नसीहत में, खैरत बैंटने वाला सखावत से बैटे, पेशवा सरगमी से पेशवाई करे, रहम करने वाला खुशी से रहम करे। 9 मुहब्बत के ‘रिया हो बदी से नकरत रखखो नेकी से लिपटे रहो। 10 बिरादाना मुहब्बत से आपस में एक दूसरे को प्यार करो इज्जत के ऐतिवार से एक दूसरे को बेहतर समझो। 11 कोशिश में सुस्ती न करो स्फाहनी जोश में भरे रहो; खुदावन्द की खिदमत करते रहो। 12 उम्मीद में खुश मुसीबत में साबिर दुआ करने में मशालूल हो। 13 मुकद्दसों की जस्तरते पूरी करो। 14 जो तुम्हें सताते हैं उनके वास्ते बर्कत चाहो ला’नत न करो। 15 खुशी करनेवालों के साथ

खुशी करो रोने वालों के साथ रोओ। 16 आपस में एक दिल रहो ऊँचे ऊँचे ख्याल न बाँधो बल्कि छोटे लोगों से रिफ़ाकत रखो अपने अप को अकलमन्द न समझो। 17 बदी के बदले किसी से बदी न करो; जो बातें सब लोगों के नज़दीक अच्छी हैं उनकी तदबीर करो। 18 जहाँ तक हो सके तुम अपनी तरफ से सब अदिमियों के साथ मेल मिलाप रखें। 19 “ऐ अजीजो! अपना इन्तकाम न लो बल्कि गजब को मौका दो क्यूँकि ये लिखा है खुदावन्द फरमाता है इन्तिकाम लेना मेरा काम है बदला मैं ही दूँगा।” 20 बल्कि अगर तेरा दुश्मन भूखा हो तो उस को खाना खिला “अगर प्यासा हो तो उसे पानी पिला क्यूँकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगरों का ढेर लगाएगा।” 21 बदी से मालूब न हो बल्कि नेकी के जरिए से बदी पर गालिब आओ।

13 हर शब्स आला हृकूमतों का ताबेदार रहे क्यूँकि कोई हृकूमत ऐसी

नई जो खुदा की तरफ से न हो और जो हृकूमतों मौजूद है वो खुदा की तरफ से मुर्करह है। 2 पस जो कोई हृकूमत का सामना करता है वो खुदा के इन्तिजाम का मुखालिफ़ है और जो मुखालिफ़ है वो सज्जा पाएगा। 3 नेक — आ कारों को हाकिमों से खौफ नहीं बल्कि बदकार को है, पस अगर तू हाकिम से निडर रहना चाहता है तो नेकी कर उसकी तरफ से तेरी तारीफ होगी। 4 क्यूँकि वो तेरी बेहती के लिए खुदा का खादिम है लेकिन अगर तू बदी करे तो डर, क्यूँकि वो तलवार बेफाइदा लिए हुए नहीं और खुदा का खादिम है कि उसके गजब के मुवाफिक बदकार को सज्जा देता है 5 पस ताबे दार रहना न सिर्फ़ गजब के डर से ज़रूर है बल्कि दिल भी यहीं गवाही देता है। 6 तुम इसी लिए लगान भी देते हो कि वो खुदा का खादिम है और इस खास काम में हमेशा मशगूल रहते हैं। 7 सब का हक अदा करो जिस को लगान चाहिए लगान दो, जिसको महसूल चाहिए महसूल जिससे डरना चाहिए उस से डरो, जिस की इज्जत करना चाहिए उसकी इज्जत करो। 8 आपस की मुहब्बत के सिवा किसी चीज़ में किसी के कर्जदार न हो क्यूँकि जो दूसरे से मुहब्बत रखता है उसने शरीर अत पर पूरा अमल किया। 9 क्यूँकि ये बातें कि जिना न कर, खन न कर, चोरी न कर, लालच न कर और इसके सिवा और जो कोई हृकम हो उन सब का खुलासा इस बात में पाया जाता है “अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।” 10 मुहब्बत अपने पड़ोसी से बदी नहीं करती इस वास्ते मुहब्बत शरीर अत की तारीफ़ है। 11 बक्त को पहचानकर ऐसा ही करो इसलिए कि अब वो घडी आ पहुँची कि तुम नीद से जागो; क्यूँकि जिस बक्त हम ईमान लाए थे उस बक्त की निस्बत अब हमारी जनात नजदीक है। 12 गत बहुत गुरज गई, और दिन निकलने वाला है पस हम अंधेरे के कामों को तर्क करके रौशनी के हथियार बाँध लें। 13 जैसा दिन को दस्तर है संजीदारी से चलें न कि नाच रंग और नशेबाजी से न जिनाकारी और शहवत परस्ती से और न झगड़े और हसद से। 14 बल्कि खुदावन्द इसा मसीह को पहन लो और जिसम की खवाहिशों के लिए तदबीरें न करो।

14 कमज़ोर ईमान वालों को अपने में शामिल तो कर लो, मगर शक' और

शुब्ह की तकरारों के लिए नहीं। 2 हरएक का मानना है कि हर चीज़ का खाना जाएज़ है और कमज़ोर ईमानवाला साग पात ही खाता है। 3 खाने वाला उसको जो नहीं खाता हक्कीर न जाने और जो नहीं खाता वो खाने वाले पर इल्जाम न लगाए; क्यूँकि खुदा ने उसको कुबूल कर लिया है। 4 तू कौन है, जो दूसरे के नैकर पर इल्जाम लगाता है? उसका काईम रहना या गिर पड़ना उसके मालिक ही से मुतालिक है; बल्कि वो काईम ही कर दिया जाए क्यूँकि खुदावन्द उसके काईम करने पर कादिर है। 5 कोई तो एक दिन को दूसरे से अफ़ज़ल जानता है और कोई सब दिनों को बराबर जानता है हर एक अपने दिल

में पूरा ऐतिकाद रखे। 6 जो किसी दिन को मानता है वो खुदावन्द के लिए मानता है और जो खाता है वो खुदावन्द के वास्ते खाता है क्यूँकि वो खुदा का शुक करता है और जो नहीं खाता वो भी खुदावन्द के वास्ते नहीं खाता, और खुदावन्द का शुक करता है। 7 क्यूँकि हम में से न कोई अपने वास्ते जीता है, न कोई अपने वास्ते मरता है। 8 अगर हम जीते हैं तो खुदावन्द के वास्ते जीते हैं और अगर मरते हैं तो खुदावन्द के वास्ते मरते हैं; पस हम जिएं या मरें खुदावन्द ही के हैं। 9 क्यूँकि मसीह इसलिए मरा और जिन्दा हुआ कि मर्दूं और जिन्दों दोनों का खुदावन्द हो। 10 मगर तू अपने भाई पर किस लिए इल्जाम लगाता है? या तू भी किस लिए अपने भाई को हक्कीर जानता है? हम तो सब खुदा के तरबत — ए — अदालत के अगे खड़े होंगे। 11 चुनाँचे ये लिखा है, खुदावन्द फरमाता है मुझे अपनी हयात की कसम, हर एक घुटना मेरे आगे झुकेगा और हर एक जबान खुदा का इकरार करेगी। 12 पस हम में से हर एक खुदा को अपना हिसाब देगा। 13 पस आइन्दा को हम एक दूसरे पर इल्जाम न लाएँ बल्कि तुम यही ठान लो कि कोई अपने भाई के समाने वो चीज़ न रखवे जो उसके ठोकर खाने या गिरने का जरिया हो। 14 मुझे मालूम है बल्कि खुदावन्द ईशा में मुझे यकीन है कि कोई चीज़ बजाहित हराम नहीं लेकिन जो उसको हराम समझता है उस के लिए हराम है। 15 अगर तेरे भाई को तेरे खाने से रंज पहुँचता है तो फिर तू मुहब्बत के काँइदे पर नहीं चलता; जिस शब्स के वास्ते मसीह मरा तू अपने खाने से हलाक न कर। 16 पस तुम्हारी नेकी की बदनामी न हो। 17 क्यूँकि खुदा की बादशाही खाने पीने पर नहीं बल्कि रास्तबाज़ी और मेल मिलाप और उस खुशी पर मौकफ़ है जो स्व — उल — कुद्दस की तरफ से होती है। 18 जो कोई इस तौर से मसीह की खिदमत करता है; वो खुदा का पसन्दीदा और आदिमियों का मकबल है। 19 पस हम उन बातों के तालिब रहें; जिनसे मेल मिलाप और आपसी तरक्की हो। 20 खाने की खातिर खुदा के काम को न बिगाड हर चीज़ पाक तो है मगर उस आदमी के लिए बुरी है; जिसको उसके खाने से ठोकर लगाती है। 21 यही अच्छा है कि तू न गोशत खाए न मय पिए न और कुछ ऐसा करे जिस की वजह से तेरा भाई ठोकर खाए। 22 जो तेरा ऐतिकाद है वो खुदा की नज़र में तेरे ही दिल में रहे, मुबारिक वो है जो उस चीज़ की वजह से जिसे वो जायज़ रखता है अपने आप को मुल्जिम नहीं ठहराता। 23 मगर जो कोई किसी चीज़ में शक रखता है अगर उस को खाए तो मुजरिम ठहरता है इस वास्ते कि वो ऐतिकाद से नहीं खाता, और जो कुछ ऐतिकाद से नहीं वो गुनाह है।

15 गरज हम ताकतवरों को चाहिए कि कमज़ोरियों के कमज़ोरियों की

रिंआयत करें न कि अपनी खुशी करें। 2 हम में हर शब्स अपने पड़ोसी को उसकी बेहती के वास्ते खुश करें; ताकि उसकी तरक्की हो। 3 क्यूँकि मसीह ने भी अपनी खुशी नहीं की “बल्कि यूँ लिखा है, तेरे लान तान करनेवालों के लानांतन मुझ पर आ पड़े।” 4 क्यूँकि जितनी बातें पहले लिखी गईं, वो हमारी तालीम के लिए लिखी गईं, ताकि सब और किताबें पुकाइस की तस्लीली से उमीद रखें। 5 और खुदा सब्र और तस्लीली का चशमा तुम को ये तौफीक दे कि मसीह इसके मुबारिक आपस में एक दिल रहो। 6 ताकि तुम एक दिल और यक जबान हो कर हमारे खुदावन्द ईशा मसीह के खुदा और बाप की बड़ाई करो। 7 पस जिस तरह मसीह ने खुदा के जलाल के लिए तुम को अपने साथ शामिल कर लिया है उसी तरह तुम भी एक दूसरे को शामिल कर लो। 8 में कहता हूँ कि खुदा की सच्चाई साबित करने के लिए मसीह मख्जनों का खादिम बना ताकि उन वाँदों को पूरा करूँ जो बाप दादा से किए गए थे। 9 और गैर कौमों भी रहम की वजह से खुदा की हम्मद करें चुनाँचे लिखा है, “इस वास्ते मैं गैर कौमों में तेरा इकरार करूँगा और तेरे नाम के गीत गाऊँगा।” 10

और फिर वो फरमाता है “ऐरे कौमों उसकी उम्मत के साथ खुशी करो।” 11 फिर ये “ऐ, गैर कौमों खुदावन्द की हम्द करो और उम्मतें उसकी सिताइश करो।” 12 और यसायाह भी कहता है यस्ती की जड़ जाहिर होगी यानी वो शख्स जो गैर कौमों पर हक्कपत करने को उठेगा, उसी से गैर कौमों उम्मीद रखेंगी। 13 पस खुदा जो उम्मीद का चर्चा है तुम्हें ईमान रखने के जरिए सारी खुशी और इमीनान से मामूर करे ताकि रह — उल कुद्दस की कुदरत से तुम्हारी उम्मीद ज्यादा होती जाए। 14 ऐ मेरे भाइयों, मैं खुद भी तुम्हारी निस्बत यकीन रखता हूँ कि तुम आप नेकी से मामूर और मुकम्मल मारिफत से भरे हो और एक दूसरे को नसीहत भी कर सकते हो। 15 तोपी मैं ने कुछ जगह ज्यादा दिलेकी के साथ याद दिलाने के तौर पर इसलिए तुम को लिखा; कि मुझ को खुदा की तरफ से गैर कौमों के लिए मसीह ईसा मसीह के खादिम होने की तौफीकी मिली है। 16 कि मैं खुदा की खुशखबरी की खिदमत इमाम की तरह अंजाम दूँ ताकि गैर कौमों नज़र के तौर पर रह — उल कुद्दस से मुकद्दस बन कर मक्कबूल हो जाएँ। 17 पस मैं उन बातों में जो खुदा से मुतलिक हैं मसीह ईसा के जरिए फ़ख़ कर सकता हूँ। 18 क्यूँकि सुधे किसी और बात के ज़िक्र करने की हिम्मत नहीं सिवा उन बातों के जो मसीह ने गैर कौमों के ताबे करने के लिए कौल और फ़ेल से निशानों और मोज़िज़ों की ताकत से और रह — उल कुद्दस की कुदरत से मेरे वसीते से की। 19 यहाँ तक कि मैंने येस्सलेम से लेकर चारों तरफ इल्लूरिकम सबे तक मसीह की खुशखबरी की पूरी पूरी मनादी की। 20 और मैं ने यही हौसला रखा कि जहाँ मसीह का नाम नहीं लिया गया वहाँ खुशखबरी सुनाऊँ ताकि दूसरे की बुनियाद पर इमारत न उठाऊँ। 21 बल्कि जैसा लिखा है वैसा ही हो जिनको उसकी खबर नहीं पहुँची वो देखेंगे; और जिन्होंने नहीं सुना वो समझेंगे। 22 इसी लिए मैं तुम्हारे पास आने से बार बार स्का रहा। 23 मगर चूँकि मुझ को अब इन मुक्कों में जगह बाकी नहीं रही और बहुत बरसों से तुम्हारे पास आने का मुश्तक भी हूँ। 24 इसलिए जब इस्फानिया मुल्क को जाऊँगा तो तुम्हारे पास होता हुआ जाऊँगा; क्यूँकि मुझे उम्मीद है कि उस सफर में तुम से मिलूँगा और जब तुम्हारी सोहबत से किसी कदर मेरा जी भर जाएगा तो तुम मुझे उस तरफ रवाना कर दोगे। 25 लेकिन फिलहाल तो मुक्कद्दों की खिदमत करने के लिए येस्सलेम को जाता हूँ। 26 क्यूँकि मक्कुदिनिया और अखिया के लोग येस्सलेम के गरीब मुकद्दों के लिए कुछ चन्दा करने को रजायन्त है। 27 किया तो रजायन्दी से मगर वो उनके क़र्जदार भी हैं क्यूँकि जब गैर कौमों स्फानी बातों में उनकी शरीक हुई हैं तो लाजिम है कि जिसमानी बातों में उनकी खिदमत करें। 28 पस मैं इस खिदमत को पूरा करके और जो कुछ हासिल हुआ उनकी सौंप कर तुम्हारे पास होता हुआ इस्फानिया को जाऊँगा। 29 और मैं जानता हूँ कि जब तुम्हारे पास आँऊँगा तो मसीह की कमिल बर्कत लेकर आँऊँगा। 30 ऐ, भाइयों, मैं ईसा मसीह का जो हमारा खुदावन्द है वास्ता देकर और रह की मुहब्बत को याद दिला कर तुम से गुजारिश करता हूँ कि मैं लिए खुदा से दुआ करने में मेरे साथ मिल कर मेहनत करो। 31 कि मैं यहदिया के नाफरमानों से बचा रहूँ, और मेरी वो खिदमत जो येस्सलेम के लिए है मुकद्दों को पसन्द आए। 32 और खुदा की मर्जी से तुम्हारे पास खुशी के साथ आकर तुम्हारे साथ आराम पाऊँ। 33 खुदा जो इत्मीनान का चर्चा है तुम सब के साथ रहें; आपीन।

16 मैं तुम से फ़िरी की जो हमारी बहन और किन्डुरिया शहर की कलीसिया की खादिमा है सिफरिश करता है। 2 कि तुम उसे खुदावन्द में कुबल करो, जैसा मुकद्दों को चाहिए और जिस काम में वो तुम्हारी मोहताज हो उसकी मदद करो क्यूँकि वो भी बहुतों की मददगार रही है; बल्कि मेरी भी। 3 प्रिस्का और अक्विला से मेरा सलाम कहो वो मसीह ईसा मैं मेरे हमखिदमत

है। 4 उन्होंने मेरी जान के लिए अपना सिर दे रखवा था; और सिर्फ़ में ही नहीं बल्कि गैर कौमों की सब कलीसियाँ भी उनकी शुक्रानुजार हैं। 5 और उस कलीसिया से भी सलाम कहो जो उन के घर में है; मेरे प्यारे अपीनितुस से सलाम कहो जो मसीह के लिए आसिया का पहला फल है। 6 मरियम से सलाम कहो; जिसने तुम्हारे वास्ते बहत मेहनत की। 7 अन्दनीकुस और यूनायस से सलाम कहो वो मेरे रिश्तेदार हैं और मेरे साथ कैद हुए थे, और रसूलों में नामवर हैं और मुझ से पहले मसीह में शामिल हुए। 8 अप्पलियातुस से सलाम कहो जो खुदावन्द में मेरा प्यारा है। 9 उत्तरानुस से जो मसीह मैं हमारा हमखिदमत है और मेरे प्यारे इस्तरूस से सलाम कहो। 10 आपिल्लेस से सलाम कहो जो मसीह मैं मकबूल है अरिस्तुतुल्स के घर बालों से सलाम कहो। 11 मेरे रिश्तेदार हेरोदियन से सलाम कहो; नरकिस्सुस के उन घरवालों से सलाम कहो जो खुदावन्द में हैं। 12 त्रैना त्रुफोसा से सलाम कहो जो खुदावन्द मैं मेहनत करती है प्यारी परसिस से सलाम कहो जिसने खुदावन्द मैं बहत मेहनत की। 13 स्फुस जो खुदावन्द में बरगुजीदा है और उसकी माँ जो मेरी भी माँ है दोनों से सलाम कहो। 14 अस्कितुस और फलिगोन और हिरमेस और पत्रुबास और हिरमास और उन भाइयों से जो उनके साथ हैं सलाम कहो। 15 फिल्लुएस और यूलिया और नयरयस और उसकी बहन और उत्तम्पास और सब मुकद्दों से जो उन के साथ हैं सलाम कहो। 16 आपस में पाक बोसा लेकर एक दूसरे को सलाम करो मसीह की सब कलीसियाँ तुम्हें सलाम कहती हैं। 17 अब ऐ, भाइयों मैं तुम से गुजारिश करता हूँ कि जो लोग उस तालीम के बरखिलाफ़ जो तुम ने पाई फ़ूट पड़ने और ठोकर खाने का जरिया है उन को पहचान लो और उनसे किनारा करो। 18 क्यूँकि ऐसे लोग हमारे खुदावन्द मसीह की नहीं बल्कि अपने पेट की खिदमत करते हैं और चिकनी चुपड़ी बातों से सादा दिलों को बहकाते हैं, 19 क्यूँकि हमारी फरमाबदरी सब में मशहूर हो गई है इसलिए मैं तुम्हारे बारे में खुश हूँ लेकिन ये चाहता हूँ कि तुम नेकी के ऐतिबार से अक्तरमंद बन जाओ और बदी के ऐतिबार से भोले बने रहो। 20 खुदा जो इत्मीनान का चर्चा है शैतान तुम्हारे पाँव से जल्द कुचलवा देगा। हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़जल तुम पर होता रहे। 21 मैं हमखिदमत तीमुथियुस और मेरे रिश्तेदार लुकियुस और यासोन और सोसिप्रूस तुम्हें सलाम कहते हैं। 22 इस खत का कातिब तिरियुस तुम को खुदावन्द में सलाम कहता है। 23 गयुस मेरा और सारी कलीसिया का मेहमानदार तुम्हें सलाम कहता है इस्तसुस शहर का खजांची और भाई क्वारतुस तुम को सलाम कहते हैं। 24 हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़जल तुम सब के साथ हो; आपीन। 25 अब खुदा जो तुम को मेरी खुशखबरी यानी ईसा मसीह की मनादी के मुवाफ़िक मज़बूत कर सकता है, उस राज के मुकाशिया के मुवाबिक जो अजल से पोशीदा रहा। (aiōnios g166) 26 मगर इस वक्त ज़ाहिर हो कर खुदा ए अज़ली के हुक्म के मुवाबिक नवियों की किताबों के जरिए से सब कौमों को बताया गया ताकि वो ईमान के ताबे हो जाएँ। (aiōnios g166) 27 उसी वाहिद हकीम खुदा की ईसा मसीह के वसीले से हमेशा तक बड़ाई होती रहे। आपीन। (aiōn g165)

1 कुरिन्थियों

1 पौलस रसूल की तरफ से, जो खुदा की मर्जी से ईसा मसीह का रसूल होने

के लिए बुलाया गया है और भाई सोस्थिनेस की तरफ से, वे खत, 2 खुदा की उस कल्पनियों के नाम जो कुरिन्थियस शहर में है, यानी उन के नाम जो मसीह ईसा में पाक किए गए, और सुकदस होने के लिए बुलाए गए हैं, और उन सब के नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने खुदावन्द ईसा मसीह का नाम लेते हैं। 3 हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनाम हासिल होता रहे। 4 मैं तुम्हारे बारे में खुदा के उस फ़ज़ल के जरिए जो मसीह ईसा में तुम पर हुआ हमेशा अपने खुदा का शुक्र करता है। 5 कि तुम उस में होकर सब बातों में कलाम और इल्म की हर तरह की दौलत से दौलतमन्द हो गए हो। 6 चुनाँचे मसीह की गवाही तुम में काईम है। 7 यहाँ तक कि तुम किसी नेमत में कम नहीं, और हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के जहार के मुन्तजिर हो। 8 जो तुम को आशिर तक काईम भी रखेगा, ताकि तुम हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह के दिन बेइल्जाम ठहरो। 9 खुदा सच्चा है जिसने तुम्हे अपने बेटे हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह' की शराकत के लिए बुलाया है। 10 अब ऐ भाइयों! ईसा मसीह जो हमारा खुदावन्द है, उसके नाम के बसीते से मैं तुम से इल्लिमास करता हूँ कि सब एक ही बात कहो, और तुम में तक़फ़े न हों, बल्कि एक साथ एक दिल और एक राय हो कर कामिल बने रहो। 11 क्यौंकि ऐ भाइयों! तुम्हारे जरिए मुझे खलोए के घर बालों से मालम हुआ कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। 12 मेरा ये मतलब है कि तुम में से कोई तो अपने आपको पौलस का कहता है कोई अपुल्लोस का कोई कैफ़ा का कोई मसीह का। 13 क्या मसीह बट गया? क्या पौलस तुम्हारी खातिर मस्लब हुआ? या तुम ने पौलस के नाम पर बपतिस्मा लिया? 14 खुदा का शुक्र करता हूँ कि क्रिस्तुस और गयुस के सिवा मैंने तुम में से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया। 15 ताकि कोई ये न कहे कि तुम ने मैं नाम पर बपतिस्मा लिया। 16 हाँ स्तिफ़नस के खानदान को भी मैंने बपतिस्मा दिया बाकी नहीं जानता कि मैंने किसी और को बपतिस्मा दिया हो। 17 क्यौंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं भेजा बल्कि खुशबूबरी सुनाने को और वो भी कलाम की हिक्मत से नहीं ताकि मसीह की सलीबी मौत बेताशीर न हो। 18 क्यौंकि सलीब का पैगाम हलाक होने वालों के नज़दीक तो बेवकूफ़ी है मगर हम नजात पानेवालों के नज़दीक खुदा की कुदरत है। 19 क्यौंकि लिखा है, "मैं हकीमों की हिक्मत को नेस्त और अकलमन्दों की अकल को रद करूँगा।" 20 कहाँ का हकीम? कहाँ का आलिम? कहाँ का इस जहान का बहस करनेवाला? क्या खुदा ने दुनिया की हिक्मत को बेवकूफ़ी नहीं ठहराया? (aiōn g165) 21 इसलिए कि जब खुदा की हिक्मत के मुताबिक दुनियाँ ने अपनी हिक्मत से खुदा को न जाना तो खुदा को ये पसन्द आया कि इस मनादी की बेवकूफ़ी के बरीते से ईमान लानेवालों को नजात दे। 22 चुनाँचे यहदी निशान चाहते हैं और यूनानी हिक्मत तलाश करते हैं। 23 मगर हम उस मसीह मस्लब का ऐलान करते हैं जो यहदियों के नज़दीक ठोकर और गैर कौमों के नज़दीक बेवकूफ़ी है। 24 लेकिन जो बुलाए हुए हैं यहदी हों या यूनानी उन के नज़दीक मसीह खुदा की कुदरत और खुदा की हिक्मत है। 25 क्यौंकि खुदा की बेवकूफ़ी आदमियों की हिक्मत से ज्यादा हिक्मत बाली है और खुदा की कमज़ोरी आदमियों के जारे से ज्यादा ताकतवर है। 26 ऐ भाइयों! अपने बुलाए जाने पर तो निगाह करो कि जिस के लिहाज से बहुत से हकीम बहुत से इतिहायर बाले बहुत से अशराफ नहीं बुलाए गए। 27 बल्कि खुदा ने दुनिया के बेवकूफ़ों चुन लिया कि हकीमों को शर्मिन्दा करे और खुदा ने दुनिया के कमज़ोरों को चुन लिया कि जारआवारों को शर्मिन्दा करे। 28

और खुदा ने दुनिया के कमीनों और हकीरों को बल्कि वे बज़दों को चुन लिया कि मौज़दों को नेस्त करे। 29 ताकि कोई बशर खुदा के सामने फ़ख़ु न करे। 30 लेकिन तुम उसकी तरफ से मसीह ईसा में हो, जो हमारे लिए खुदा की तरफ से हिक्मत ठहरा, यानी रास्तबाज़ी और पाकीज़ी और मछलसी। 31 ताकि जैसा लिखा है "वैसा ही हो जो फ़ख़ु करे वो खुदावन्द पर फ़ख़ु करे।"

2 ऐ भाइयों! जब मैं तुम्हारे पास आया और तुम में खुदा के भेद की मनादी

करने लगा तो आला दर्ज की तकरीर या हिक्मत के साथ नहीं आया। 2 क्यौंकि मैंने ये इरादा कर लिया था कि तुम्हारे दर्मियान ईसा मसीह, मस्लब के सिवा और कुछ न जानूँ। 3 और मैं कमज़ोरी और खौफ़ और बहुत थर थराने की हालत में तुम्हारे पास रहा। 4 और मेरी तकरीर और मेरी मनादी में हिक्मत की लुभाने वाली बातें न थीं बल्कि वे स्थू और कुदरत से साबित होती थीं। 5 ताकि तुम्हारा ईमान ईमान की हिक्मत पर नवी बल्कि खुदा की कुदरत पर मौकूफ़ हो। 6 फिर भी कामिलों में हम हिक्मत की बातें कहते हैं लेकिन इस जहान की और इस जहान के नेस्त होनेवाले हाकिमों की अकल नहीं। (aiōn g165) 7 बल्कि हम खुदा के राज़ की हकीकत कातों के तौर पर बयान करते हैं, जो खुदा ने जहान के शूल से फ़हले हमारे जलाल के बासे मुकर्रा की थी। (aiōn g165) 8 जिसे इस दुनिया के सरदारों में से किसी ने समझा क्यौंकि अगर समझते तो जलाल के खुदावन्द को मस्लब न करते। (aiōn g165) 9 "बल्कि जैसा लिखा है वैसा ही हुआ जो चीज़ें न अँखों ने देखीं न कर्नों ने सुनी न आदमी के दिल में आई वो सब खुदा ने अपने मुहब्बत रखनेवालों के लिए तैयार कर दी।" 10 लेकिन हम पर खुदा ने उसको स्थू के जरिए से जाहिर किया क्यौंकि स्थू सब बातें बल्कि खुदा की तह की बातें भी दरियाफ़त कर लेता है। 11 क्यौंकि ईसान :ँ में से कौन किसी ईसान की बातें जानता है सिवा ईसान की अपनी स्थू के जो उस में है? उसी तरह खुदा के स्थू के सिवा कोई खुदा की बातें नहीं जानता। 12 मगर हम ने दुनिया की स्थू बल्कि वो स्थू पाया जो खुदा की तरफ से है, ताकि उन बातों को जानें जो खुदा ने हमें इनायत की है। 13 और हम उन बातों को उन अल्फ़ाज़ में नहीं बयान करते जो ईसानी हिक्मत ने हम को सिखाए हों बल्कि उन अल्फ़ाज़ में जो स्थू ने सिखाए हैं और स्थानी बातों का स्थानी बातों से मुकाबिला करते हैं। 14 मगर जिसमानी आदमी खुदा के स्थू की बातें कुबल नहीं करता क्यौंकि वो उस के नज़दीक बेवकूफ़ी की बातें हैं और न वो इन्हें समझ सकता है क्यौंकि वो स्थानी तौर पर परखी जाती है। 15 लेकिन स्थानी शब्द सब बातों को परख लेता है; मगर खुदा किसी से परखा नहीं जाता। 16 "खुदावन्द की अकल को किसने जाना कि उसको तालीम दे सके? मगर हम में मसीह की अकल है।"

3 ऐ भाइयों! मैं तुम से उस तरह कलाम न कर सका जिस तरह स्थानियों

से बल्कि जैसे जिसमानियों से और उन से जो मसीह में बच्चे हैं। 2 मैंने तुम्हें दध पिलाया और खाना न खिलाया क्यौंकि तुम को उसकी बर्दाशत न थी, बल्कि अब भी नहीं। 3 क्यौंकि अभी तक जिसमानी हो इसलिए कि जब तुम मैं हसद और झगड़ा हैं तो क्या तुम जिसमानी न हुए और ईसानी तरीके पर न चले? 4 इसलिए कि जब एक कहता है "मैं पौलस का हूँ" और दूसरा कहता है मैं अपुल्लोस का हूँ तो क्या तुम ईसान न हुए? 5 अपुल्लोस क्या चीज़ है? और पौलस क्या? खादिम जिनके बसीते से तुम ईमान लाए और हर एक को वो हैसियत है जो खुदावन्द ने उसे बच्ची। 6 मैंने दरख़त लगाया और अपुल्लोस ने पानी दिया मगर बढ़ाया खुदा ने। 7 पस न लगाने वाला कुछ चीज़ है न पानी देनेवाला मगर खुदा जो बढ़ाने वाला है। 8 लगानेवाला और पानी देनेवाला दोनों एक हैं लेकिन हर एक अपना अज्ञ अपनी मेहनत के मुवाफ़िक पाएगा। 9 क्यौंकि हम खुदा के साथ काम करनेवाले हैं तुम खुदा की खेती और खुदा की

इमारत हो। 10 मैंने उस तौकीक के मुवाफिक जो खुदा ने मुझे बरखी अक्लमन्द मिस्त्री की तरह नीव रख खींची, और दूसरा उस पर इमारत उठाता है पर हर एक खबरदार रहे, कि वो कैसी इमारत उठाता है। 11 क्यौंकि सिवा उस नीव के जो पड़ी हुई है और वो इसा मरीह है कोई शब्द संदूरी नहीं रख सकता। 12 और आगर कोई उस नीव पर सोना या चाँदी या बेशकीमती पत्थरों या लकड़ी या घास या भूसे का रक्खा रखें। 13 तो उस का काम जाहिर हो जाएगा क्यौंकि जो दिन आग के साथ जाहिर होगा वो उस काम को बता देगा और वो आग खुद हर एक का काम आजमा लेरी कि कैसा है। 14 जिस का काम उस पर बना हुआ बाकी रहेगा, वो अब आपाएगा। 15 और जिस का काम जल जाएगा, वो नुकसान उठाएगा; लेकिन खुद बच जाएगा मगर जलते जलते। 16 क्या तुम नहीं जानते कि तुम खुदा का मकदिस हो और खुदा का स्थूल तुम में बसा हुआ है? 17 अगर कोई खुदा के मकदिस को बरबाद करेगा तो खुदा उसको बरबाद करेगा, क्यौंकि खुदा का मकदिस पाक है और वो तुम हो। 18 कोई अपने आप को धोखा न दे अगर कोई तुम में अपने आप को इस जहान में हकीम समझे, तो बेवकूफ बने ताकि हकीम हो जाए। (aīnōn g165) 19 क्यौंकि दुनियाँ की हिक्मत खुदा के नजदीक बेवकूफी है, चुनाँचे लिखा है, “वो हकीमों को उम ही की चालाकी में फँसा देता है।” 20 और ये भी, खुदावन्द हकीमों के खयालों को जानता है “कि बातिल है।” 21 पस आदमियों पर कोई फँखु न करो क्यौंकि सब चीजें तुम्हारी हैं। 22 चाहे पौलस हो, चाहे अपुल्लोस, चाहे कैफा, चाहे दुनिया, चाहे ज़िन्दगी, चाहे मौत, चाहे हाल, की चीज़ें, चाहे इस्तकबाल की, 23 सब तुम्हारी हैं और तुम मसीह के हो, और मसीह खुदा का है।

4 आदमी हम को मसीह का खादिम और खुदा के हिक्मत का मुख्तार समझे।

2 और यहाँ मुख्तार में ये बात देखी जाती है कि दियानतदार निकले। 3 लेकिन मैं नजदीक ये निहायत छोटी बात है कि तुम या कोई इंसानी अदालत मुझे परखे; बल्कि मैं खुद भी अपने आप को नहीं परखता। 4 क्यौंकि मेरा दिल तो मुझे मलामत नहीं करता मगर इस से मैं रास्तबाज़ नहीं ठहरता, बल्कि मेरा परखने वाला खुदावन्द है। 5 पस जब तक खुदावन्द न आए, वक्त से पहले किसी बात का फैसला न करो; वही तारीकी की पोशीदा बातें रोशन कर देगा और दिलों के मस्क्के जाहिर कर देगा और उस वक्त हर एक की तारीफ खुदा की तरफ से होगी। 6 ऐ भाइयों! मैंने इन बातों में तुम्हारी खातिर अपना और अपुल्लोस का ज़िक्र मिसाल के तौर पर किया है, ताकि तुम हमारे कर्तिले से ये सीखो कि लिखे हुए से बढ़ कर न करो और एक की ताईद में दसरे के बरखिलाफ़ शेरखी न मारो। 7 तुझ में और दूसरे में कौन फँक करता है? और तेरे पास कौन सी ऐसी चीज़ है जो तू ने दूसरे से नहीं पाई? और जब तूने दूसरे से पाई तो फँखु क्यौं करता है कि गोया नहीं पाई? 8 तुम तो पहले ही से आसदा हो और पहले ही से दौलतमन्द हो और तुम ने हमारे बौरी बादशाही कीं; और काश कि तुम बादशाही करते ताकि हम भी तुम्हारे साथ बादशाही करते। 9 मेरी दानिस्त में खुदा ने हम स्मूलों को सब से अदना ठहराकर उन लोगों की तरह पेश किया है जिनके कल्प का हुक्म हो चुका हो; क्यौंकि हम दुनिया और फरिश्तों और आदमियों के लिए एक तमाशा ठरते। 10 हम मसीह की खातिर बेवकूफ हैं मगर तुम मसीह में अक्लमन्द हो: हम कमज़ोर हैं और तुम ताकतवर तुम इज्जत दार हो: और हम बे इज्जत। 11 हम इस वक्त तक खुखे प्यासे नंगे हैं और मुक्के खाते और आवारा फिरते हैं। 12 और अपने हाथों से काम करके मशक्कत उठाते हैं लोग बुरा कहते हैं हम दुआ देते हैं वो सताते हैं हम सहते हैं। 13 वो बदनाम करते हैं हम मिन्नत समाजत करते हैं हम आज तक दुनिया के कुड़े और सब चीजों की झ़ड़न की तरह हैं। 14 मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए ये नहीं लिखता: बल्कि अपना प्यारा बेटा जानकर तुम को नसीहत करता हूँ। 15

क्यौंकि अगर मसीह में तुम्हारे उस्ताद दस हजार भी होते तो भी तुम्हारे बाप बहुत से नहीं: इसलिए कि मैं ही इन्जील के बरसीले से मसीह इसा में तुम्हारा बाप बना। 16 पस मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि मेरी तरह बनो। 17 इसी वास्ते मैंने नीमुथियस को तुम्हारे पास भेजा; कि वो खुदावन्द में मेरा प्यारा और दियानतदार बेटा है और मेरे उन तरीकों को जो मसीह मैं हैं तुम्हें याद दिलाएगा; जिस तरह मैं हर जाहां हर कलीसिया में तालीम देता हूँ। 18 कुछ ऐसी शेरखी मारते हैं गोया कि तुम्हारे पास आने ही का नहीं। 19 लेकिन खुदावन्द ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास जल्द आँख़ा और शेरखी बाजों की बातों को नहीं, बल्कि उनकी कुदरत को मालूम करूँगा। 20 क्यौंकि खुदा की बादशाही बातों पर नहीं, बल्कि कुदरत पर मौकूफ़ है। 21 तुम क्या चाहते हो कि मैं लकड़ी लेकर तुम्हारे पास आँख़ या मुहब्बत और नर्म मीजाजी से?

5 यहाँ तक कि सुनने में आया है कि तुम में हरामकारी होती है बल्कि ऐसी

हरामकारी जो गैर कौमों में भी नहीं होती: चुनाँचे तुम में से एक शब्द अपने बाप की दूसरी बीवी को रखता है। 2 और तुम अफ़रोस तो करते नहीं ताकि जिस ने ये काम किया वो तुम में से निकाला जाए बल्कि शेरखी मारते हो। 3 लेकिन मैं अगर चे जिस्म के ऐतिबार से मौजूद न था, मगर स्थूल के ऐतिबार से हाजिर होकर गोया बहालत — ए — मौजूदगी ऐसा करने वाले पर ये हुक्म दे चुका हूँ। 4 कि जब तुम और मेरी स्थूल हमारे खुदावन्द इसा मसीह की कुदरत के साथ जमा हो तो ऐसा शब्द इसारे खुदावन्द “इसा” के नाम से। 5 जिस्म की हलाकत के लिए शैतान के हवाते किया जाए ताकि उस की स्थूल खुदावन्द ईसा के दिन जनात पाए। 6 तुम्हारा फँखु करना खबर नहीं क्या तुम नहीं जानते कि थोड़ा सा खमीर सरे गुधे हुए आटे को खमीर कर देता है। 7 पुराना खमीर निकाल कर अपने आप को पाक कर लो ताकि ताजा गुंधा हुआ आटा बन जाओ चुनाँचे तुम बे खमीर हो क्यौंकि हमारा भी फँसह याँनी मसीह कुर्बान हुआ। 8 पस आओ हम इद करें न पुराने खमीर से और न बटी और शरारत के खमीर से, बल्कि साफ़ दिली और सच्चाई की बे खमीर रोटी से। 9 मैंने अपने खत में तुम को ये लिखा था कि हरामकारों से सुहबत न रखना। 10 ये तो नहीं कि बिल्कुल दुनिया के हरामकारों या लालचियों या जालिमों या बुतपरस्तों से मिलना ही नहीं; क्यौंकि इस सूरत में तो तुम को दुनिया ही से निकल जाना डिता। 11 यहाँ तक कि सुनने में आया है कि तुम में हरामकारी होती है बल्कि ऐसी हरामकारी जो गैर कौमों में भी नहीं होती: चुनाँचे तुम में से एक शब्द अपने बाप की बीवी को रखता है। 12 लेकिन मैंने तुम को दर हकीकत ये लिखा था कि अगर कोई भाई कहलाकर हरामकार या लालची या बुतपरस्त या गाली देने वाला शराबी या जालिम हो तो उस से सुहबत न रखो; बल्कि ऐसे के साथ खाना तक न खाना। 12 क्यौंकि मुझे कलीसिया के बाहर वालों पर हुक्म करने से क्या वास्ता? क्या ऐसा नहीं है कि तुम तो कलीसिया के अन्दर वालों पर हुक्म करते हो। 13 मगर बाहर वालों पर खुदा हुक्म करता है, पस उस शरीर आदमी को अपने दर्मियान से निकाल दो।

6 क्या तुम में से किसी को ये जुँ अत है कि जब दूसरे के साथ मुक़द्दमा हो तो

फ़ैसले के लिए बेटीन आदिलों के पास जाए; और मुक़द्दसों के पास न जाए। 2 क्या तुम नहीं जानते कि मुक़द्दस लोग दुनिया का इन्साफ़ करेंगे? पस जब तुम को दुनिया का इन्साफ़ करना है तो क्या छोटे से छोटे झगड़ों के भी फ़ैसले करने के लायक नहीं हो? 3 क्या तुम नहीं जानते कि हम फ़रिश्तों का इन्साफ़ करेंगे? तो क्या हम दुनियाँ वी मुश्किलें के फ़ैसले न करें? 4 पस अगर तुम में दुनियाँ वी मुक़द्दमे हों तो क्या उन को मुसिफ़ मुक़र्रर करोगे जो कलीसिया में हकीर समझे जाते हैं। 5 मैं तुम्हें शर्मिन्दा करने के लिए ये कहता हूँ; क्या

वाक़ैँ तुम में एक भी समझदार नहीं मिलता जो अपने भाइयों का फैसला कर सके। 6 बल्कि भाई भाइयों में मुकदमा होता है और वो भी बेदीनों के आगे। 7 लेकिन दरअसल तुम में बड़ा नुकस ये है कि आपस में मुकदमा बाजी करते हो; जून्म उठाना क्यूँ नहीं बेहतर जानते? अपना नुकसान क्यूँ नहीं कुबल करते? 8 बल्कि तुम ही जूल्म करते और नुकसान पहुँचाते हो और वो भी भाइयों को। 9 क्या तुम नहीं जानते कि बदकर खुदा की बादशाही के बारिस न होंगे धोबा न खाओ न हरामकार खुदा की बादशाही के बारिस होंगे न बुतपस्त, न जिनाकार, न अय्याश, न लौडे बाज, 10 न चोर, न लालची, न शराबी, न गालियाँ बकने वाले, न जालिम, 11 और कुछ तुम में ऐसे ही थे भी, 'मगर तुम खुदावन्द इसा मसीह के नाम से और हमारे खुदा के रूप से धूल गए और पाक हुए और रास्तबाज भी ठहरे। 12 सब चीजें मेरे लिए जायज तो हैं मगर सब चीजें मुफीद नहीं; सब चीजें मेरे लिए जायज तो हैं; लेकिन मैं किसी चीज़ का पाबन्द न हूँगा। 13 खाना पेट के लिए है और पेट खाने के लिए लेकिन खुदा उसको और इनको नेस्त करेगा मगर बदन हरामकारी के लिए नहीं बल्कि खुदावन्द के लिए है और खुदावन्द बदन के लिए। 14 और खुदा ने खुदावन्द को भी जिलाया और हम को भी अपनी कुट्रत से जिलाएगा। 15 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारे बदन मसीह के आज्ञा है? पस क्या मैं मसीह के आज्ञा लेकर कस्ती के आज्ञा बनाऊँ रहगिज नहीं। 16 क्या तुम नहीं जानते कि जो कोई कस्ती से सुहबत करता है वो उसके साथ एक तन होता है? क्यूँकि वो फरमाता है, "वो दोनों एक तन होंगे।" 17 और जो खुदावन्द की सुहबत में रहता है वो उसके साथ एक रूप होता है। 18 हरामकारी से भागो जितने गुनाह आदमी करता है वो बदन से बाहर है; मगर हरामकार अपने बदन का भी गुनाहगार है। 19 क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारा बदन रूप — उल — कुदूस का मकदिस है जो तुम में बसा हआ है और तुम को खुदा की तरफ से मिला है? और तुम अपने नहीं। 20 क्यूँकि कीमत से खरीदे गए हो; पस अपने बदन से खुदा का जलाल जाहिर करो।

7 जो बातें तुम ने लिखी थी उनकी वजह ये हैं मर्द के लिए अच्छा है कि औरत को न छुए। 2 लेकिन हरामकारी के अन्देशे से हर मर्द अपनी बीवी और हर औरत अपना शौहर रख दें। 3 शौहर बीवी का हक अदा करे और वैसे ही बीवी शौहर का। 4 बीवी अपने बदन की मुख्तार नहीं बल्कि शौहर है इसी तरह शौहर भी अपने बदन का मुख्तार नहीं बल्कि बीवी। 5 तुम एक दूरे से जुदा न रहो मगर थोड़ी मूढ़त तक आपस की रजामन्दी से, ताकि दुआ के लिए वक्त मिले और फिर इकट्ठे हो जाओ ऐसा न हो कि गल्बा — ए — नफस की वजह से जैतान तुम को आजमाए। 6 लेकिन मैं ये इजाजत के तौर पर कहता हूँ हक्कम के तौर पर नहीं। 7 और मैं तो ये चाहता हूँ कि जैसा मैं हूँ वैसे ही सब आदमी हों लेकिन हर एक को खुदा की तरफ से खास तोफ़ीकी मिली है किसी को किसी तरह की किसी को किसी तरह की। 8 पस मैं बेब्याहों और बेवाओं के हक में ये कहता हूँ; कि उनके लिए ऐसा ही रहना अच्छा है जैसा मैं हूँ। 9 लेकिन आग सब न कर सकें तो शादी कर लें, क्यूँकि शादी करना मरत होने से बेहतर है। 10 मगर जिनकी शादी हो गई है उनको मैं नहीं बल्कि खुदावन्द हक्कम देता है कि बीवी अपने शौहर से जुदा न हो। 11 (और अगर जुदा हो तो बेनिकाह रहे या अपने शौहर से फिर मिलाप कर ले) न शौहर बीवी को छोड़े। 12 बाकियों से मैं ही कहता हूँ न खुदावन्द कि अगर किसी भाई की बीवी बा ईमान न हो और उस के साथ रहने को राजी हो तो वो उस को न छोड़े। 13 और जिस 'औरत का शौहर बा' ईमान न हो और उसके साथ रहने को राजी हो तो वो शौहर को न छोड़े। 14 क्यूँकि जो शौहर बाईमान नहीं वो बीवी की वजह से पाक ठहरता है, और जो बीवी बाईमान नहीं वो मसीह शौहर के जरिए पाक

ठहरती है वर्ना तुम्हारे बेटे नापाक होते मगर अब पाक है। 15 लेकिन मर्द जो बा'ईमान न हो अगर वो जुदा हो तो जुदा होने दो ऐसी हालत में कोई भाई या बहन पाबन्द नहीं और खुदा ने हम को मेल मिलाप के लिए बुलाया है। 16 क्यूँकि ऐ 'औरत तुझे क्या खबर है कि शायद त अपने शौहर को बचा ले? और ऐ मर्द तुझे क्या खबर है कि शायद त अपनी बीवी को बचा ले। 17 मगर जैसा खुदावन्द ने हर एक को हिस्सा दिया है और जिस तरह खुदा ने हर एक को बुलाया है उसी तरह वो चले, और मैं सब कलींसियाँओं मैं ऐसा ही मुकर्रर करता हूँ। 18 जो ममतन बुलाया गया वो नाममत्तन न हो जाए जो नाममत्ती की हालत में बुलाया गया वो ममतन न हो जाए। 19 न खतना कोई चीज़ है नाममत्तनी बल्कि खुदा के हक्कों पर चलना ही सब कुछ है। 20 हर शब्स जिस हालत में बुलाया गया हो उसी में रहे। 21 अगर तु गुलामी की हालत में बुलाया गया तो फ़िक्र न कर लेकिन अगर तु आज्ञाद हो सके तो इसी को इक्खितयार कर। 22 क्यूँकि जो शब्स गुलामी की हालत में खुदावन्द में बुलाया गया है वो खुदावन्द का आज्ञाद किया हुआ है; इसी तरह जो आजादी की हालत में बुलाया गया है वो मसीह का गुलाम है। 23 तुम मसीह के जरिए खास कीमत से खरीदे गए हो आदमियों के गुलाम न बनो। 24 ऐ भाइयों! जो कोई जिस हालत में बुलाया गया हो वो उसी हालत में खुदा के साथ रहे। 25 कुँवारियों के हक में मेरे पास खुदावन्द का कोई हक्कम नहीं लेकिन दियानतदार होने के लिए जैसा खुदावन्द की तरफ से मुझ पर रहम हुआ उसके मुवाफिक अपनी राय देता हूँ। 26 पस मौजूदा मसीहित के खयाल से मेरी राय में आदमी के लिए यही बेहतर है कि जैसा है वैसा ही रहे। 27 अगर तेरी बीवी है तो उस से जुदा होने की कोशीश न कर और अगर तेरी बीवी नहीं तो बीवी की तलाश न कर। 28 लेकिन तू शादी करे भी तो गुनाह नहीं और अगर कुँवारी ब्याही जाए तो गुनाह नहीं मगर ऐसे लोग जिस्मानी तकलीफ पाएँगे, और मैं तुम्हें बचाना चाहता हूँ। 29 मगर ऐ भाइयों! मैं ये कहता हूँ कि बक्त तंग है पस आगे को चाहिए कि बीवी वाले ऐसे हों कि गोया उनकी बीवियाँ नहीं। 30 और रोने वाले ऐसे हों गोया नहीं रोते; और खुशी करने वाले ऐसे हों गोया खुशी नहीं करते; और खरीदने वाले ऐसे हों गोया माल नहीं रखते। 31 और दुनियाकी कारोबार करनेवाले ऐसे हों कि दुनिया ही के न हो जाएँ; क्यूँकि दुनिया की शक्त बदलती जाती है। 32 पस मैं ये चाहता हूँ कि तुम बेफिर रहो, वे ब्याहा शब्स खुदावन्द की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह खुदावन्द को राजी करे। 33 मगर शादी हुआ शब्स दुनिया की फ़िक्र में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को राजी करे। 34 शादी और बेशादी में भी फ़र्क है वे शादी खुदावन्द की फ़िक्र में रहती है ताकि उसका जिस्म और स्तु दोनों पाक हों मगर ब्याही हूँ और दुनिया की फ़िक्र में रहती है कि किस तरह अपने शौहर को राजी करे। 35 ये तुम्हारे फ़ादे के लिए कहता हूँ न कि तुम्हें फ़साने के लिए; बल्कि इसलिए कि जो जेबा है वही अमल में आए और तुम खुदावन्द की खिदमत में बिना शक किए मशमूल रहो। 36 अगर कोई ये समझे कि मैं अपनी उस कुँवारी लड़की की हकतलफी करता हूँ जिसकी जवानी ढल चली है और ज़स्तर भी मालूम हो तो इश्कियार है इस में गुनाह नहीं वो उसकी शादी होने दे। 37 मगर जो अपने दिल में पुज्जा हो और इस की कुछ ज़स्तर न हो बल्कि अपने इरादे के अंजाम देने पर कादिर हो और दिल में अहट कर लिया हो कि मैं अपनी लड़की को बेनिकाह रखँगा वो अच्छा करता है। 38 पस जो अपनी कुँवारी लड़की को शादी कर देता है वो अच्छा करता है और जो नहीं करता वो और भी अच्छा करता है। 39 जब तक कि 'औरत का शौहर जीता है वो उस की पाबन्द है पर जब उसका शौहर मर जाए तो जिससे चाहे शादी कर सकती है मगर सिर्फ़ खुदावन्द में। 40 लेकिन जैसी है अगर वैसी

ही रहे तो मेरी राय में ज्यादा खुश नसीब है और मैं समझता हूँ कि खुदा का स्व सुझ में भी है।

8 अब बुतों की कुर्बानियों के बारे में ये है हम जानते हैं कि हम सब इत्म रखते हैं इत्म गुरु पैदा करता है लेकिन मुहब्बत तरक्की का जरिया है। 2 अगर कोई गुमान करे कि मैं कछ जानता हूँ तो जैसा जानना चाहिए वैसा अब तक नहीं जानता। 3 लेकिन जो कोई खुदा से मुहब्बत रखता है उस को खुदा पहचानता है। 4 पस बुतों की कुर्बानियों के गोशत खाने के जरिए हम जानते हैं कि बुत दुनिया में कोई चीज़ नहीं और सिवा एक के और कोई खुदा नहीं। 5 अगरचे आसमान — ओ — ज़मीन में बहुत से खुदा कहलाते हैं चुनौते बहत से खुदा और बहत से खुदावन्द हैं। 6 लेकिन हमारे नजदीक तो एक ही खुदा है यानी बाप जिसकी तरफ से सब चीज़े हैं और हम उसी के लिए हैं और एक ही खुदावन्द है यानी 'इसा मसीह जिसके बरीले से सब चीज़े मौजूद हैं' और हम भी उसी के बरीले से हैं। 7 लेकिन सब को ये इत्म नहीं बल्कि कुछ को अब तक खुतपरस्ती की आदत है इसलिए उस गोशत को बुत की कुर्बानी जान कर खाते हैं और उसका दिल, चूँकि कमज़ोर है, गन्दा हो जाता है। 8 खाना हमें खुदा से नहीं मिलाएगा; अगर न खाएँ तो हमारा कुछ नुकसान नहीं और अगर खाएँ तो कुछ फ़ाइदा नहीं। 9 लेकिन होशियार रहे एसा न हो कि तुम्हारी आजादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का जरिया हो जाए। 10 क्यौंकि अगर कोई तुड़ा साहिब ऐसे इत्म को बुत खाने में खाना खाते देखे और वो कमज़ोर शख्स हो तो क्या उस का दिल बुतों की कुर्बानी खाने पर मजबूत न हो जाएगा? 11 गरज तैरे इत्म की वजह से वो कमज़ोर शख्स यानी वो भाई जिसकी खातिर मसीह मरा, हलाक हो जाएगा। 12 और तुम इस तरह भाईयों के गुनाहगार होकर और उनके कमज़ोर दिल को घायल करके मसीह के गुनाहगार ठहरते हो। 13 इस वजह से अगर खाना मेरे भाई के ठोकर खिलाए तो मैं कभी हरागिज गोशत न खाऊँगा, ताकि अपने भाई के लिए ठोकर की वजह न बर्दूँ। (aiōn g165)

9 क्या मैं आजाद नहीं? क्या मैं रसूल नहीं? क्या मैंने 'इसा' को नहीं देखा जो हमारा खुदावन्द है? क्या तुम खुदावन्द में मेरे बनाए हुए नहीं? 2 अगर मैं औरों के लिए रसूल नहीं तो तुम्हारे लिए बेशक हूँ क्यौंकि तुम खुदावन्द में मेरी रिसालत पर मुहर हो। 3 जो मेरा इमिहान करते हैं उनके लिए मेरा यही जबाब है। 4 क्या हमें खाने पीने का इख्लियार नहीं? 5 क्या हम को ये इख्लियार नहीं कि किसी मसीह बहन को शादी कर के लिए फिरें, जैसा और रसूल और खुदावन्द के भाई और कैफ़ा करते हैं। 6 या सिफ़े मुझे और बरनबास को ही मेहनत मुश्किल से बाज़ रहने का इख्लियार नहीं। 7 कौन सा सिपाही कभी अपनी गिरह से खाकर जंग करता है? कौन बाग लगाकर उसका फल नहीं खाता या कौन भेड़ों को चरा कर उन भेड़ों का दृढ़ नहीं पीता? 8 क्या मैं ये बातें इंसानी अंदाज ही के मूलाधिक कहता हूँ? क्या तौरेत भी यही नहीं कहती? 9 चुनौते मूसा की तौरेत में लिखा है "दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना" क्या खुदा को बैलों की फ़िक्र है? 10 या खास हमारे बास्ते ये फ़रमाता है हाँ हाँ ये हमारे बास्ते लिखा गया क्यौंकि मुनासिब है कि जोने वाला उम्मीद पर जोते और दाएँ चलाने वाला हिस्सा पाने की उम्मीद पर दाएँ चलाए। 11 पस जब हम ने तुम्हारे लिए रस्हानी चीज़े बोई तो क्या ये कोई बड़ी बात है कि हम तुम्हारी जिस्मानी चीज़ों की फ़सल काटें। 12 जब औरों का तुम पर ये इख्लियार है, तो क्या हमारा इस से ज्यादा न होगा? लेकिन हम ने इस इख्लियार से काम नहीं किया; बल्कि हर चीज़ की बर्दाश्त करते हैं, ताकि हमारी वजह मसीह की खुशखबरी में हर्ज न हो। 13 क्या तुम नहीं जानते कि जो मुकद्दस चीज़ों की खिदमत करते हैं वो हैकल से खाते हैं? और जो कुर्बानगाह के खिदमत गुज़ार है

वो कुर्बानगाह के साथ हिस्सा पाते हैं? 14 इस तरह खुदावन्द ने भी मुकर्रर किया है कि खुशखबरी सुनाने खुशखबरी वाले के बरीले से ये लिखा कि मैं भी बास्ते ऐसा किया और न इस गरज से ये लिखा कि मैं भी बास्ते ऐसा किया और क्यौंकि मेरा मरना ही इस से बेहतर है कि कोई फ़ख खो दे। 16 अगर खुशखबरी सुनाऊँ तो मेरा कुछ फ़ख नहीं क्यौंकि ये तो मैं लिए ज़री बात है बल्कि मुझ पर अफ़सोस है अगर खुशखबरी न सुनाऊँ। 17 क्यौंकि अगर अपनी मर्जी से ये करता हूँ तो मेरे लिए अब्र है और अगर अपनी मर्जी से नहीं करता तो मुख्तारी में सुर्पर्ह हड्ड है। 18 पस मुझे क्या अब्र मिलता है? ये कि जब इंजील का ऐलान करूँ तो खुशखबरी को मुफ़्त कर दूँ ताकि जो इख्लियार मुझे खुशखबरी के बारे में हासिल है उसके मुवाफ़िक पूरा अमल न करूँ। 19 अगरचे मैं सब लोगों से आजाद हूँ फिर भी मैंने अपने आपको सबका शुलाम बना दिया है ताकि और भी ज्यादा लोगों को खीच लाऊँ। 20 मैं यहदियों के लिए यहदी बना, ताकि यहदियों को खीच लाऊँ, जो लोग शरीर अत के मातहत हूआ; ताकि शरीर अत के मातहत हुआ; ताकि शरीर अत के मातहतों को खीच लाऊँ अगरचे खुद शरीर अत के मातहत न था। 21 बेशरा लोगों के लिए बेशरा' बना ताकि बेशरा' लोगों को खीच लाऊँ; (अगरचे खुदा के नज़दीक बेशरा' न था; बल्कि मसीह की शरीर अत के ताबे था) 22 कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना, ताकि कमज़ोरों को खीच लाऊँ, मैं सब आदिमों के लिए सब कुछ बना हुआ हूँ, ताकि किसी तरह से कुछ को बचाऊँ। 23 मैं सब कुछ इन्जील की खातिर करता हूँ, ताकि औरों के साथ उस में शरीक हूँ। 24 क्या तुम नहीं जानते कि दौड़ में दौड़ने वाले दौड़ते तो सभी हैं मगर इन'आम एक ही ले जाता है? तुम भी ऐसा ही दौड़ो ताकि जीतो। 25 हर पहलावान सब तरह का परेहज करता है वो लोग तो मुझाने वाला सेहरा पाने के लिए ये करते हैं मगर हम उस सेहे के लिए ये करते हैं जो नहीं मुरझाता। 26 पस मैं भी इसी तरह दौड़ता हूँ यानी बेठिकाना नहीं; मैं इसी तरह मुक्कों से लड़ता हूँ; यानी उस की तरह नहीं जो हवा को मारते हैं। 27 बल्कि मैं अपने बदन को मारता कूटता और उसे काबू में रखता हूँ; ऐसा न हो कि औरों में ऐलान कर के आप ना मकबूल ठहरूँ।

10 ऐ भाइयो! मैं तुम्हारा इस से नाबाकिफ़ रहना नहीं चाहता कि हमारे सब बाप दादा बादल के नीचे थे; और सब के सब लाल समून्दर में से गुरे। 2 और सब ही ने उस बादल और समून्दर में मूसा का बपतिस्मा लिया। 3 और सब ने एक ही रस्हानी खुशक खाई। 4 और सब ने एक ही रस्हानी पानी पिया क्यौंकि वो उस रस्हानी चट्टान में से पानी पीते थे जो उन के साथ चलती थी और वो चट्टान मसीह था। 5 मगर उन में अक्सरों से खुदा राजी न हुआ चुनौते वो वीराने में ढेर हो गए। 6 ये बातें हमारे लिए इबरत ठहरी, ताकि हम बुरी चीज़ों की ख्वाहिश न करें, जैसे उन्होंने ने की। 7 और तुम बुतपरस्त न बनो जिस तरह कुछ उनमें से बन गए थे चुनौते लिखा है। "लोग खाने पीने को बैठे फिर नाचने करने को उठे।" 8 और हम हरामकारी न करें जिस तरह उनमें से कुछ ने की, और एक ही दिन में तेईं हजार मर गए। 9 और हम खुदा बन्द की आजमाइश न करें जैसे उन में से कुछ ने की और साँपों ने उन्हें हलाक किया। 10 और तुम बड़बडाओ नहीं जिस तरह उन में से कुछ बड़बडाए और हलाक करने वाले से हलाक हुए। 11 ये बातें उन पर 'इबरत के लिए बाके' हूँ और हम आखरी ज्याने वालों की नसीहत के बास्ते लिखी गई। (aiōn g165) 12 पस जो कोई अपने आप को काईम समझता है, वो खबरदार रहे के गिर न पड़े। 13 तुम किसी ऐसी आजमाइश में न पड़े जो इंसान की आजमाइश से बाहर हो खुदा सच्चा है वो तुम को तुम्हारी ताकत से ज्यादा आजमाइश में पड़ने न देगा, बल्कि आजमाइश के साथ निकलने की राह भी पैदा कर देगा, ताकि तुम बर्दाश्त कर

सको। 14 इस वजह से ऐ मेरे प्यारो! खुतपरस्ती से भागो। 15 मैं अक्लमन्द जानकर तुम से कलाम करता हूँ; जो मैं कहता हूँ, तुम आप उसे परखो। 16 वो बर्कत का प्याला जिस पर हम बर्कत चाहते हैं क्या मसीह के खुन की शराकत नहीं? वो रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या मसीह के बदन की शराकत नहीं? 17 क्यूँकि रोटी एक ही है इस लिए हम जो बहत से हैं एक बदन हैं क्यूँकि हम सब उसी एक रोटी में शरीक होते हैं। 18 जो जिस्म के ऐंतिबार से इर्दाईती हैं उन पर नजर करो क्या कुर्बानी का गोशत खानेवाले कुर्बानगाह के शरीक नहीं? 19 पस मैं क्या ये कहता हूँ कि बुतों की कुर्बानी कुछ चीज़ है या खुत कुछ चीज़ है? 20 नहीं बल्कि मैं ये कहता हूँ कि जो कुर्बानी गैर कौमें करती है शयातीन के लिए कुर्बानी करती हैं; न कि खुदा के लिए, और मैं नहीं चाहता कि तुम शयातीन के शरीक हो। 21 तुम खुदावन्द के प्याले और शयातीन के प्याले दोनों में से नहीं पी सकते; खुदावन्द के दस्तरखावान और शयातीन के दस्तरखावान दोनों पर शरीक नहीं हो सकते। 22 क्या हम खुदावन्द की गैरत को जोश दिलाते हैं? क्या हम उस से ताकतवर हैं? 23 सब चीज़े जाएँ तो हैं, मगर सब चीज़े मुझीद नहीं; जाएँ तो हैं मगर तरकीका की ज़रिया नहीं। 24 कोई अपनी बेहतरी न ढूँढ़े बल्कि दूसरे की। 25 जो कुछ कस्साबों की दुकानों में बिकता है वो खाओ और दीनी इम्तियाज़ की वजह से कुछ न पछो। 26 “क्यूँकि ज़मीन और उसकी मामूली खुदावन्द की है।” 27 अगर बे-ईमानों में से कोई तुम्हारी दावत करे और तुम जाने पर राजी हो तो जो कुछ तुम्हारे आगे रखवा जाए उसे खाओ और दीनी इम्तियाज़ की वजह से कुछ न पछो। 28 लेकिन अगर कोई तुम से कहे, ये कुर्बानी का गोशत है, तो उस की वजह से न खाओ। 29 दीनी इम्तियाज़ से मेरा मतलब तेरा इम्तियाज़ नहीं बल्कि उस दूसरे का; भला मेरी आजादी दूसरे शरख के इम्तियाज़ से क्यूँ परखी जाए? 30 अगर मैं शुक्र कर के खाता हूँ तो जिस चीज़ पर शुक्र करता हूँ उसकी वजह से किस लिए बदनाम किया जाता हूँ? 31 पस तुम खाओ या पियो जो कुछ करो खुदा के जलाल के लिए करो। 32 तुम न यहरियों के लिए ठोकर का ज़रिया बनो; न यन्मियों के लिए, न खुदा की कलीसिया के लिए। 33 चूनांचे मैं भी सब बातों में सब को खुश करता हूँ और अपना नहीं बल्कि बहुतों का फ़ाइदा ढूँडता हूँ, ताकि वो नजात पाएँ।

11 तुम मेरी तरह बनो जैसा मैं मसीह की तरह बनता हूँ। 2 मैं तुम्हारी तारीफ करता हूँ कि तुम हर बात में मुझे याद रखते हो और जिस तरह मैंने तुम्हे रिवायतें पहुँचा दी, उसी तरह उन को बरकरार रखो। 3 पस मैं तुम्हें खबर करना चाहता हूँ कि हर मर्द का सिर मसीह और 'औरत का सिर मर्द' और मसीह का सिर खुदा है। 4 जो मर्द सिर ढके हए दुआ या नबुव्वत करता है वो अपने सिर को बेहरमत करता है। 5 और जो 'औरत बे सिर ढके दुआ या नबुव्वत करती है वो अपने सिर को बेहरमत करती है, क्यूँकि वो सिर मुंडी के बराबर है। 6 अगर 'औरत औढ़नी न औढ़े तो बाल भी कटाए़; अगर 'औरत का बाल कटाना या सिर मुंडाना शर्म की बात है तो औढ़नी औढ़े। 7 अलबता मर्द को अपना सिर ढाँकना न चाहिए क्यूँकि वो खुदा की सूरत और उसका जलाल है, मगर 'औरत मर्द' का जलाल है। 8 इसलिए कि मर्द 'औरत से नहीं बल्कि 'औरत मर्द से है। 9 और मर्द 'औरत के लिए नहीं बल्कि 'औरत मर्द' के लिए पैदा हुई है। 10 पस फ़रिश्तों की वजह से 'औरत को चाहिए कि अपने सिर पर महकूम होने की अलामत रखें। 11 तोभी खुदावन्द में न 'औरत मर्द' के बाहर है न मर्द 'औरत के बाहर। 12 क्यूँकि जैसे 'औरत मर्द' से है वैसे ही मर्द भी 'औरत के बसीले से है मगर सब चीज़े खुदा की तरफ से हैं। 13 तुम आप ही इन्साफ करो; क्या 'औरत का बे सिर ढाँके खुदा से दुआ करना मनासिब है। 14 क्या तुम को तबई तौर पर भी मालूम नहीं कि अगर मर्द लम्बे बाल रखते हो तो उस की बेहरमती है। 15

अगर 'औरत के लम्बे बाल हों तो उसकी ज़ीनत है, क्यूँकि बाल उसे पर्दे के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन अगर कोई हज़रती निकले तो ये जान ले कि न हमारा ऐसा दस्तर है न खुदावन्द की कलीसियाओं का। 17 लेकिन ये हक्म जो देता हूँ उस में तुम्हारी तारीफ नहीं करता इसलिए कि तुम्हारे जमा होने से फ़ाइदा नहीं, बल्कि तुम्हारा होता है। 18 क्यूँकि अब्वल तो मैं सुनता हूँ कि जिस वक्त तुम्हारी कलीसिया जमा होती है तो तुम में तफ़के होते हैं और मैं इसका किसी कदर यकीन भी करता हूँ। 19 क्यूँकि तुम मैं बिट' अंतों का भी होना ज़रूरी है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि तुम में मकबूल कौन से हैं। 20 पस तुम सब एक साथ जमा होते हो तो तुम्हारा खो खाना अशाए — रब्बानी नहीं हो सकता। 21 क्यूँकि खाने के वक्त हर शख्स दूसरे से पहले अपना हिस्सा खा लेता है और कोई तो खूबा रहता है और किसी को नशा हो जाता है। 22 क्यूँ? खाने पीने के लिए तुम्हारे पास घर नहीं? या खुदा की कलीसिया को ना चीज़ जानते और जिनके पास नहीं उन को शर्मिन्दा करते हो? मैं तुम से क्या कहूँ? क्या इस बात में तुम्हारी तारीफ करूँ? मैं तारीफ नहीं करता। 23 क्यूँकि ये बात मुझे खुदावन्द से पहुँची और मैंने तुमको भी पहुँचा दी कि खुदावन्द ईसा ने जिस रात वो पकड़वाया गया रोटी ली। 24 और शकु कक्षे तोड़ी और कहा; लो खाओ ये मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है; मेरी यादगारी के बास्ते यही किया करो। 25 इसी तरह उस ने खाने के बाद प्याला भी लिया और कहा, ये प्याला मेरे खून में नया अहद है जब कभी पिये मेरी यादगारी के लिए यही किया करो। 26 क्यूँकि जब कभी तुम ये रोटी खाते और इस प्याले में से पीते हो तो खुदावन्द की मौत का इजहार करते हो; जब तक वो न आए। 27 इस बाते जो कोई नामुनासिब तौर पर खुदावन्द की रोटी खाए या उसके प्याले में से पिए; वो खुदा वन्द के बदन और खुन के बारे में कूसूरावर होगा। 28 पस आदामी अपने आप को आजामा ले और इसी तरह उस रोटी में से खाए और उस प्याले में से पिए। 29 क्यूँकि जो खाते पीते वक्त खुदा वन्द के बदन को न पहचाने वो इस खाने पीने से सजा पाएगा। 30 इसी वजह से तुम में बहुत सारे कमज़ोर और बीमार हैं और बहुत से सो भी गए। 31 अगर हम अपने आप को ज़ाँचते तो सजा न पाते। 32 लेकिन खुदा हमको सजा देकर तरवियत करता है, ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें। 33 पस ऐ मेरे भाइयों! जब तुम खाने को जमा हो तो एक दूसरे की राह देखो। 34 अगर कोई खूबा हो तो अपने घर में खाले, ताकि तुम्हारा जमा होना सजा का ज़रिया न हो; बाकी बातों को मैं आकर दुस्त कर दूँगा।

12 ऐ भाइयों! मैं नहीं चाहता कि तुम पाक स्थ की नेमंतों के बारे में बेखबर रहो। 2 तुम जानते हो कि जब तुम गैर कौम थे, तो ये गैरी बुतों के पीछे जिस तरह कोई तुम को ले जाता था; उसी तरह जाते थे। 3 पस मैं तुम्हें बताता हूँ कि जो कोई खुदा के स्थ की हिदायत से बोलता है; वो नहीं कहता कि ईसा मला'ऊन है; और न कोई इस उल — कूहस के बाहर कह सकता है कि ईसा खुदावन्द है। 4 नेमंतों तो तरह तरह की हैं मगर रुह एक ही है। 5 और खिदमतों तो तरह तरह की हैं मगर खुदावन्द एक ही है। 6 और तासीरी भी तरह तरह की है मगर खुदा एक ही है जो सब में हर तरह का असर पैदा करता है। 7 लेकिन हर शख्स में पाक रुह का ज़ाहिर होना फ़ाइदा पहुँचाने के लिए होता है। 8 क्यूँकि एक को स्थ के वसीले से हिक्मत का कलाम इन्यात होता है और दूसरे को उसी स्थ की मजरी के मुवाफ़िक इल्मियत का कलाम। 9 किसी को उसी स्थ से ईमान और किसी को उसी स्थ से शिफ़ा देने की तौकीक। 10 किसी को मोजिजों की कुदरत, किसी को नबुव्वत, किसी को स्थों का इम्तियाज़, किसी को तरह तरह की जबाने, किसी को जबाने का तर्जमा करना। 11 लेकिन ये सब तासीरी वही एक स्थ करता है; और जिस को जो चाहता है बाँटा है, 12 क्यूँकि जिस तरह बदन एक है और उस के आज़ा बहुत से हैं, और

बदन के सब आ'ज्ञा गरचे बहुत से है, मगर हमसब मिलकर एक ही बदन है, उसी तरह मसीह भी है। 13 क्यूंकि हम सब में चाहे यहदी हों, चाहे यानी, चाहे गुलाम, चाहे आजाद, एक ही रुह के वसीते से एक बदन होने के लिए बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही रुह पिलाया गया। 14 चुनौती बदन में एक ही आ'ज्ञा नहीं बल्कि बहुत से हैं 15 अगर पाँव कहे चुंकि मैं हाथ नहीं इसलिए बदन का नहीं तो वो इस वजह से बदन से अलग तो नहीं। 16 और अगर कान कहे चुंकि मैं आँख नहीं इसलिए बदन का नहीं तो वो इस वजह से बदन से अलग तो नहीं। 17 अगर सारा बदन आँख ही होता तो सुनना कहाँ होता? अगर सुनना ही सुनना होता तो संधान कहाँ होता? 18 मगर हकीकत में खुदा ने हर एक 'उज्ज्व को बदन में अपनी मजी के मुवाफिक रख्खा है। 19 अगर वो सब एक ही 'उज्ज्व होते तो बदन कहाँ होता? 20 मगर अब आ'जा तो बहुत है लेकिन बदन एक ही है। 21 पस आँख हाथ से नहीं कह सकता है, "मैं तेरी मोहताज नहीं," और न सिर पाँव से कह सकता है, "मैं तेरा मोहताज नहीं!" 22 बल्कि बदन के वो आ'ज्ञा जो औरों से कमज़ोर मालूम होते हैं बहुत ही ज़स्ती हैं। 23 और बदन के वो आ'ज्ञा जिन्हें हम औरों की तरह जलील जाते हैं उन्हीं को ज्यादा इज्जत देते हैं और हमारे नाजेबा आ'जा बहुत जेबा हो जाते हैं। 24 हालाँकि हमारे जेबा आ'जा मोहताज नहीं मगर खुदा ने बदन को इस तरह मुक्तकब किया है, कि जो 'उज्ज्व मोहताज है उसी को ज्यादा 'इज्जत दी जाए। 25 ताकि बदन में जुदाई न पड़े, बल्कि आ'ज्ञा एक दूसरे की बराबर फिक्र रखें। 26 पस अगर एक 'उज्ज्व दुःख पाता है तो सब आ'ज्ञा उस के साथ दःख पाते हैं। 27 इसी तरह तुम मिल कर मसीह का बदन हो और फर्दन आ'ज्ञा हो। 28 और खुदा ने कलीसिया में अलग अलग शख्स मुकर्रर किए पहले रसूल दूसरे नवी तीसरे उस्ताद फिर मोजिजे दिखाने वाले फिर शिफा देने वाले मददगार मुन्तजिम तरह तरह की जबाने बोलने वाले। 29 क्या सब रसूल हैं? क्या सब नवी हैं? क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोजिजे दिखानेवाले हैं? 30 क्या सब को शिफा देने की ताकत हासिल हूँ? क्या सब तरह की जबाने बोलते हैं? क्या सब तर्जुमा करते हैं? 31 तुम बड़ी से बड़ी नेमत की आरज़ू रख्खो, लेकिन और भी सब से उमदा तरीका तुम्हें बताता हूँ।

13 अगर मैं आदमियों और फरिश्तों की जबाने बोलूँ और मुहब्बत न रखूँ, तो मैं ठनठनाता पीतल या झनझनाती झँझँ हूँ। 2 और अगर मझे नबुव्वत मिले और सब भेदों और कल इल्म की वाकफियत हो और मेरा ईमान यहाँ तक कामिल हो कि पहाड़ों को हटा दूँ और मुहब्बत न रखूँ तो मैं कुछ भी नहीं। 3 और अगर अपना सारा माल गरीबों को खिला दूँ या अपना बदन जलाने को दूँ और मुहब्बत न रखूँ तो मुझे कुछ भी फाइदा नहीं। 4 मुहब्बत साकिर है और मेहरबान, मुहब्बत हसद नहीं करती, मुहब्बत शेरीकी नहीं मारती और फूलती नहीं; 5 नाजेबा काम नहीं करती, अपनी बेहतरी नहीं चाहती, झँझलाती नहीं, बदगुमानी नहीं करती; 6 बदकारी में खुश नहीं होती, बल्कि रास्ती से खुश होती है; 7 सब कुछ सह लेती है, सब कुछ यकीन करती है, सब बातों की उम्मीद रखती है, सब बातों में बर्दाशत करती है। 8 मुहब्बत को ज़ावाल नहीं, नबुव्वत हों तो मौक़ूफ हो जाएँगी, जबाने हों तो जाती रहेंगी; इल्म हो तो मिट जाएँगे। 9 क्यूंकि हमारा इल्म नाकिस है और हमारी नबुव्वत ना तमाम। 10 लेकिन जब कामिल आएगा तो नाकिस जाता रहेगा। 11 जब मैं बच्चा था तो बच्चों की तरह बोलता था बच्चों की सी तबियत थी बच्चों सी समझ थी; लेकिन जब जबान हुआ तो बच्चन की बातें तर्क कर दीं। 12 अब हम को आइने में धून्धला सा दिखाई देता है, मगर जब मसीह दुबारा आएगा तो उस वक्त रु ब देखेंगे, इस वक्त मेरा इल्म नाकिस है, मगर उस वक्त ऐसे पैरे

तौर पर पहचानँगा जैसे मैं पहचानता आया हूँ। 13 गरज़ ईमान, उम्मीद, मुहब्बत ये तीनों हमेशा हैं; मगर अफ़ज़ल इन में मुहब्बत है।

14 मुहब्बत के तालिब हो और स्हानी नेमतों की भी आरज़ू रखो खुस्सन इसकी नबुव्वत करो। 2 क्यूंकि जो बेगाना जबान में बातें करता है वो आदमियों से बातें नहीं करता, बल्कि खुदा से; इस लिए कि उसकी कोई नहीं समझता, हालाँकि वो अपनी पाक रुह के वसीते से राज़ की बातें करता है। 3 लेकिन जो नबुव्वत करता है वो आदमियों से तरक्की और नसीहत और तसल्ली की बातें करता है। 4 जो बेगाना जबान में बातें करता है वो अपनी तरक्की करता है और जो नबुव्वत करता है वो कल्तीसिया की तरक्की करता है। 5 अगरचे मैं ये चाहता हूँ कि तुम सब बेगाना जबान में बातें करो, लेकिन ज्यादा तरह यहीं चाहता हूँ कि नबुव्वत करो; और अगर बेगाना जबाने बोलने वाला कलीसिया की तरक्की के लिए तर्जुमा न करो, तो नबुव्वत करने वाले उससे बड़ा है। 6 पस ऐ भाइयों! अगर मैं तुम्हारे पास आकर बेगाना जबानों में बातें करूँ और मुकाशिफा या इल्म या नबुव्वत या तालीम की बातें तुम से न करूँ; तो तुम को मुझ से क्या फाइदा होगा? 7 चुनौती बेजान चीजों में से भी जिन से आवाज निकलती है, मसलन बौसीरी या बरबत अगर उनकी आवाजों में फ़र्क न हो तो जो फ़ैका या बजाए जाता है वो कँक़र पहचाना जाए? 8 और अगर तरही की आवाज साफ न हो तो कौन लडाई के लिए तैयारी करोगा? 9 ऐसे ही तुम भी अगर जबान से कुछ बात न कहो तो जो कहा जाता है कँक़र समझा जाएगा? तुम हवा से बातें करनेवाले ठहरेगे। 10 दुनिया में चाहे कितनी ही मुख्यतिक जबाने हों उन में से कोई भी बेमानी न होगी। 11 पस अगर मैं किसी जबान के माँ ने न समझूँ, तो बोलने वाले के नज़दीक मैं अजनबी ठहरँगा और बोलने वाले मेरे नज़दीक अजनबी ठरेगा। 12 पस जब तुम रस्तानी नेमतों की आरज़ू रखते हो तो ऐसी कोशिश करो, कि तुम्हारी नेमतों की अफ़ज़ली से कलीसिया की तरक्की हो। 13 इस वजह से जो बेगाना जबान से बातें करता है वो दुआ करो कि तर्जुमा भी कर सके। 14 इसलिए कि अगर मैं किसी बेगाना जबान में दुआ करूँ तो मेरी रुह तो दुआ करती है मगर मेरी अकल बेकार है। 15 पस क्या करना चाहिए? मैं रुह से भी दुआ करूँगा और अकल से भी दुआ करूँगा और अकल से भी गाँगँगा। 16 वर्ना अगर तु स्हर ही से हम्द करेगा तो नावाकिफ़ आदमी तेरी शुक गुजारी पर "आमीन" क्यूंकर कहेगा? इस लिए कि वो नहीं जानता कि त क्या कहता है। 17 तो ते बेशक अच्छी तरह से शुक करता है, मगर दूसरे की तरक्की नहीं होती। 18 मैं खुदा का शुक करता हूँ, कि तुम सब से ज्यादा जबाने बोलते हैं। 19 लेकिन कलीसिया में बेगाना जबान में दस हजार बातें करने से मुझे ये ज्यादा पसन्द है, कि औरों की तालीम के लिए पाँच ही बातें अकल से करूँ। 20 ऐ भाइयों! तुम समझूँ में बच्चे न बनो; बदी में बच्चे रहो, मगर समझूँ में जबान बनो। 21 पाक कलाम में लिखा है खुदावन्द फरमाता है, "मैं बेगाना जबान और बेगाना होटों से इस उम्मत से बातें करूँगा तो भी वो मेरी न सुनेगे।" 22 पस बेगाना जबाने ईमानदारों के लिए नहीं बल्कि बेईमानों के लिए निशान है और नबुव्वत बेईमानों के लिए नहीं, बल्कि ईमानदारों के लिए निशान है। 23 पस अगर सारी कलीसिया एक जगह जमा हो और सब के सब बेगाना जबाने बोलें और नावाकिफ़ या बेईमान लोग अन्दर आ जाएं, तो क्या वो तुम को दिवाना न कहेंगे। 24 लेकिन अगर जब नबुव्वत करें और कोई बेईमान या नावाकिफ़ अन्दर आ जाए, तो सब उसे कायल कर देंगे और सब उसे परख लेंगे; 25 और उसके दिल के राज जाहिर हो जाएंगे; तब वो मुँह के बल गिर कर सज्जा करेगा, और इकरार करेगा कि बेशक खुदा तुम मैं है। 26 पस ऐ भाइयों! क्या करना चाहिए? जब तुम जमा होते हो, तो हर एक के दिल में मज्मूर या तालीम या

मुकाशिफा, या बेगाना, जबान या तर्जुमा होता है; सब कुछ स्थानी तरक्की के लिए होना चाहिए। 27 अगर बेगाना जबान में बातें करना हो तो दो या ज्यादा से ज्यादा तीन तीन शब्द बारी बारी से बोलें और एक शब्द तर्जुमा करें। 28 और अगर कोई तर्जुमा करने वाला न हो तो बेगाना जबान बोलनेवाला कलीसिया में चुप रहे और अपने दिल से और खुदा से बातें करें। 29 नवियों में से दो या तीन बोलें और बाकी उनके कलाम को परखें। 30 लेकिन अगर दूसरे पास बैठें वाले पर वही उत्तर तो पहला खामोश हो जाए। 31 क्यूँकि तुम सब के सब एक करके नव्वबूत करते हो, ताकि सब सीधे और सब को नसीहत हो। 32 और नवियों की स्थँ हैं नवियों के ताबे हैं। 33 क्यूँकि खुदा अवतरी का नहीं, बल्कि सुकून का बानी है जैसा मुक़द्दसों की सब कलीसियाओं में है। 34 औरतें कलीसिया के मज्जे में खामोश रहें, क्यूँकि उन्हें बोलने का हक्म नहीं बल्कि ताबे रहें जैसा तौरें में भी लिखा है। 35 और अगर कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने अपने शौहर से पछें, क्यूँकि औरत का कलीसिया के मज्जे में बोलना शर्म की बात है। 36 क्या खुदा का कलाम तुम में से निकला या सिर्फ तुम ही तक पहुँचा है। 37 अगर कोई अपने आपको नवी या स्थानी समझे तो ये जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ वो खुदावन्द के हक्म हैं। 38 और अगर कोई न जाने तो न जानें। 39 पस ऐ भाइयों! नबुव्वत करने की आरज़ू रख्बो और जबान बोलने से मनह न करो। 40 मगर सब बातें शाइस्तानी और करीने के साथ अमल में लाएँ।

15 ऐ भाइयों! मैं तुम्हें वही खुशखबरी बताए देता हूँ जो पहले दे चुका हूँ

जिसे तुम ने कबूल भी कर लिया था और जिस पर काईम भी हो। 2 उसी के बसीते से तुम को नजार भी मिली है बर्शें कि वो खुशखबरी जो मैंने तुम्हें दी थी याद रखते हो वनी तुम्हारा ईमान लाना बेफाइदा हुआ। 3 चुनाँचे मैंने सब से पहले तुम को वही बात पहुँचा दी जो मुझे पहुँची थी; कि मसीह किंताब — ए — 'मुक़द्दस के मुताबिक हमारे गुनाहों के लिए मरा। 4 और दफन हुआ और तीसरे दिन किंताब ऐ-मुक़द्दस के मुताबिक जी उठा। 5 और कैफा और उस के बाद उन बारह को दिखाइ दिया। 6 फिर पाँच सौ से ज्यादा भाइयों को एक साथ दिखाइ दिया जिन में अक्सर अब तक मौजद हैं और कुछ सो गए। 7 फिर याँकूब को दिखाइ दिया फिर सब रसूलों को। 8 और सब से पछि मुझ को जो गोया अंधेरे दिनों की पैदाइश हैं दिखाइ दिया। 9 क्यूँकि मैं रसूलों में सब से छोटा हूँ, बल्कि रसूल कहलाने के लायक नहीं इसलिए कि मैंने खुदा की कलीसिया को सताया था। 10 लेकिन जो कुछ हूँ खुदा के फजल से हूँ और उसका फजल जो मुझ पर हुआ वो बेफाइदा नहीं हुआ बल्कि मैंने उन सब से ज्यादा मेहनत की और ये मेरी तरफ से नहीं हुई बल्कि खुदा के फजल से जो मुझ पर था। 11 पस चाहे मैं हूँ चाहे वो हैं हम यही ऐलान करते हैं और इसी पर तुम ईमान भी लाए। 12 पस जब मसीह की ये मनादी की जाती है कि वो मुर्दा में से जी उठा तो तुम में से कुछ इस तरह कहते हैं कि मुर्दों की कलामत है ही नहीं। 13 अगर मुर्दों की कलामत नहीं तो मसीह भी नहीं जी उठा है। 14 और अगर मसीह नहीं जी उठा तो हमारी मनादी भी बेफाइदा है और तुम्हारा ईमान भी बेफाइदा है। 15 बल्कि हम खुदा के झूठे गवाह ठहरे क्यूँकि हम ने खुदा के बारे में ये गवाही दी कि उसने मसीह को जिला दिया हालाँकि नहीं जिलाया अगर बिलकुर्ज मुर्दे नहीं जी उठते। 16 और अगर मुर्दे नहीं जी उठते तो मसीह भी नहीं जी उठा। 17 और अगर मसीह नहीं जी उठा तो तुम्हारा ईमान बेफाइदा है तुम अब तक अपने गुनाहों में गिरफ्तार हो। 18 बल्कि जो मसीह मैं सो गए हैं वो भी हलाक हुए। 19 अगर हम सिर्फ इसी जिन्दानी में मसीह मैं उमर्दी रखते हैं तो सब आदमियों से ज्यादा बदनसीब हैं। 20 लेकिन फिलवक्त मसीह मुर्दों में से जी उठा है और जो सो गए हैं उन में पहला फल

हुआ। 21 क्यूँकि अब आदमी की बजह से मौत आई तो आदमी की बजह से मुर्दों की कलामत भी आई। 22 और जैसे आदम में सब मरते हैं वैसे ही मसीह में सब जिन्दा किए जाएँगे। 23 लेकिन हर एक अपनी अपनी बारी से; पहला फल मसीह फिर मसीह के अने पर उसके लोग। 24 इसके बाद अखिर होगी; उस वक्त वो सारी हक्मत और सारा इख्लियार और कुदरत नेस्त करके बादशाही को खुदा यानी बाप के हवाले कर देगा। 25 क्यूँकि जब तक कि वो सब दुश्यनों को अपने पाँव तले न ले आए उस को बादशाही करना ज़र्री है। 26 सब से पिछला दुश्यम जो नेस्त किया जाएगा वो मौत है। 27 क्यूँकि खुदा ने सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया है; मगर जब वो फरमाता है कि सब कुछ उसके ताबे कर दिया गया तो ज़ाहिर है कि जिसने सब कुछ उसके ताबे कर दिया; वो अलग रहा। 28 और जब सब कुछ उसके ताबे कर दिया जाएगा तो बेटा खुद उसके ताबे हो जाएगा जिसने सब चीजें उसके ताबे कर दी ताकि सब मैं खुदा ही सब कुछ है। 29 वर्ना जो लोग मुर्दों के लिए बपतिस्मा लेते हैं; वो क्या करेंगे? अगर मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यूँ उन के लिए बपतिस्मा लेते हों? 30 और हम क्यूँ हर बक्त खत्ते हों पैदे रहते हैं? 31 ऐ भाइयों! उस फ़ाइदा की कसम जो हमारे ईशा मसीह में तुम पर हैं मैं हो रोज मरता हूँ। 32 जैसा कि कलाम में लिखा है कि अगर मैं इसान की तरह इफ़िस्सुस में दरिन्दों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ाइदा? अगर मुर्दे न जिलाएं जाएँगे "तो आओ खाएं पीएं क्यूँकि कल तो मर ही जाएंगे।" 33 धोखा न खाओं "बूरी सोहबतें अच्छी आदतों को बिगाड देती हैं।" 34 रास्तबाज होने के लिए होश में आओ और गुनाह न करो, क्यूँकि कुछ खुदा से नावाकिफ हैं, मैं तुम्हें शर्म दिलाने को ये कहता हूँ। 35 अब कोई ये कहेगा, "मुर्दे किस तरह जी उठते हैं? और कैसे जिस्म के साथ आते हैं?" 36 ऐ, नादान! तू खुद जो कुछ बोता है जब तक वो न मेरे जिन्दा नहीं किया जाता। 37 और जो त बोता है, ये वो जिस्म नहीं जो पैदा होने वाला है बल्कि सिर्फ दाना है, चाहे गेहूँ का चाहे किसी और चीज का। 38 मगर खुदा ने जैसा इशारा कर लिया वैसा ही उसको जिस्म देता है और हर एक बीज को उसका खास जिस्म। 39 सब गोशत एक जैसा गोशत नहीं; बल्कि आदमियों का गोशत और है, चौपायों का गोशत और, परिन्दों का गोशत और है मछलियों का गोशत और। 40 आसमानी भी जिस्म है, और जमीनी भी मगर आसमानियों का जलाल और है, और जमीनियों का और। 41 आफताब का जलाल और है, माहताब का जलाल और, सितारों का जलाल और, क्यूँकि सितारे सितारे के जलाल में फर्क है। 42 मुर्दों की कलामत भी ऐसी ही है; जिस्म फना की हालत में बोया जाता है, और हमेशा की हालत में जी उठता है। 43 बेहरमती की हालत में बोया जाता है, और जलाल की हालत में जी उठता है, कमज़ोरी की हालत में बोया जाता है और कुब्बत की हालत में जी उठता है। 44 नफसानी जिस्म बोया जाता है, और रस्तानी जिस्म जी उठता है जब नफसानी जिस्म है तो स्थानी जिस्म भी है। 45 चुनाँचे कलाम लिखा भी है, "पहला आदमी यानी आदम जिन्दा नफस बना पिछला आदम जिन्दानी बख्ताने वाली रस्त बना।" 46 लेकिन रस्तानी पहले न था बल्कि नफसानी था इसके बाद रस्तानी हुआ। 47 पहला आदमी जमीन से यानी खाकी था दूसरा आदमी आसमानी है। 48 जैसा वो खाकी था वैसे ही और खाकी भी है और जैसा वो आसमानी है वैसे ही और आसमानी भी है। 49 और जिस तरह हम इस खाकी की सूरत पर हुए उसी तरह उस आसमानी की सूरत पर भी होंगे। 50 ऐ भाइयों! मेरा मतलब ये है कि गोशत और खन खुदा की बादशाही के वारिस नहीं हो सकते और न फना बका की वारिस हो सकती है। 51 देखो मैं तुम से राज की बात कहता हूँ हम सब तो नहीं सोएँगे मगर सब बदल जाएँगे। 52 और ये एक दम में, एक पल में पिछला नरसिंग फ़ूँकते ही होगा क्यूँकि नरसिंग फ़ूँका जाएगा और मुर्दे गैर फ़ानी हालत

में उठेंगे और हम बदल जाएँगे। 53 क्यौंकि ज़स्ती है कि ये फानी जिस्म बका का जामा पहने और ये मरने वाला जिस्म हमेशा की जिन्दगी का जामा पहने। 54 जब ये फानी जिस्म बका का जामा पहन चुकेगा और ये मरने वाला जिस्म हमेशा का जामा पहन चुकेगा तो वो कौल पूरा होगा जो कलाम लिखा है “मौत फतह का लुक्मा हो जाएगी। 55 ऐ मौत तेरी फतह कहाँ रही? ऐ मौत तेरा डंक कहाँ रहा?” (Hadès 886) 56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह का जोर शरीर अत है। 57 मगर खुदा का शुक्र है, जो हमारे खुदावन्द ‘इसा मसीह के वसीले से हम को फतह बख्ताता है। 58 पस ऐ मेरे अजीज भाइयों! साबित कदम और काईम रहो और खुदावन्द के काम में हमेशा बढ़ते रहो क्यौंकि ये जानते हो कि तुम्हारी मेहनत खुदावन्द में बेफाइदा नहीं है।

16 अब उस चन्दे के बरे में जो मुकद्दिसों के लिए किया जाता है, जैसा मैं ने गलतिया की कलीसियाओं को हक्म दिया वैसे ही तुम भी करो। 2 हमने के पहले दिन तुम मैं से हर शब्द स अपनी आमदनी के मुवाफिक कुछ अपने पास रख छोड़ा करे ताकि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े। 3 और जब मैं आऊँगा तो जिन्हें तुम मंज़ूर करोगे उनको मैं खत देकर भेज दूँगा कि तुम्हारी खैरात येस्सलेम को पहुँचा दें। 4 अगर मेरा भी जाना मुनासिब हुआ तो वो मेरे साथ जाएँगे। 5 मैं मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊँगा; क्यौंकि मुझे मकिदुनिया हो कर जाना तो है ही। 6 मगर रहँगा शायद तुम्हारे पास और जाड़ा भी तुम्हारे पास ही काटूँ ताकि जिस तरफ मैं जाना चाहूँ तुम मुझे उस तरफ रखाना कर दो। 7 क्यौंकि मैं अब राह में तुम से मुलाकात करना नहीं चाहता बल्कि मुझे उम्मीद है कि खुदावन्द ने चाहा तो कुछ असे तुम्हारे पास रहँगा। 8 लेकिन मैं इंद्रए पित्रेकुस्त तक इफिसुस में रहँगा। 9 क्यौंकि मेरे लिए एक वसीं और कार आमद दरवाजा खुला है और मुखालिफ बहत से हैं। 10 अगर तीमुथियस आ जाए तो रख्याल रखना कि वो तुम्हारे पास बेरखौफ रहे क्यौंकि वो मेरी तरह खुदावन्द का काम करता है। 11 पस कोई उसे हकीर न जाने बल्कि उसको सही सलामत इस तरफ रखाना किया कि मेरे पास आजाए क्यौंकि मैं मुन्तजिर हूँ कि वो भाइयों समेत आए। 12 और भाई अपुल्लोस से मैंने बहुत इल्तिमास किया कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाएँ; मगर इस बक्त जाने पर वो अपनी राजी न हुआ लेकिन जब उस को मैका मिलेगा तो जाएगा। 13 जागते रहो ईमान में काईम रहो मर्दनगी करो मजबूत हो। 14 जो कुछ करते हो मुहब्बत से करो। 15 ऐ भाइयों! तुम स्तिफनास के खानदान को जानते हो कि वो अखिया के पहले फल हैं और मुकद्दिसों की खिदमत के लिए तैयार रहते हैं। 16 पस मैं तुम से इल्तिमास करता हूँ कि ऐसे लोगों के ताबे रहो बल्कि हर एक के जो इस काम और मेहनत में शरीक है। 17 और मैं स्तिफनास और फरतनात्स और अखीकुस के अने से खुश हूँ क्यौंकि जो तुम मैं से रह गया था उन्होंने पूरा कर दिया। 18 और उन्होंने मेरी और तुम्हारी स्त्री हूँ क्यौंकि जो ताजा किया पस ऐसों को मानो। 19 आसिया की कलीसिया तुम को सलाम कहती है अविला और प्रिस्का उस कलीसिया समेत जो उन के घर मैं हैं, तुहँे खुदावन्द में बहुत बहत सलाम कहते हैं। 20 सब भाई तुहँे सलाम कहते हैं पाक बोसा लेकर आपस में सलाम करते। 21 मैं पौलस अपने हाथ से सलाम लिखता हूँ। 22 जो कोई खुदावन्द को अजीज नहीं रखता मलाऊन हो हमारा खुदावन्द आने वाला है। 23 खुदावन्द ईसा मसीह का फजल तुम पर होता रहे। 24 मेरी मुहब्बत ईसा मसीह में तुम सब से रहे। आपनी।

2 कुरिन्थियों

1 पौलस की तरफ जो खुदा की मर्जी से मरीह ईसा का रसल है और भाई तीमुथियस की तरफ से खुदा की उस कलीसिया के नाम जो कुरिन्थुस शहर में है और तमाम अस्थिया के सब मुकद्दसों के नाम पौलस का खत। 2 हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मरीह की तरफ से तुम्हें फ़जल और इत्मानन हासिल होता रहे; आमीन। 3 हमारे खुदावन्द ईसा मरीह के खुदा और बाप की हम्द हो जो रहमतों का बाप और हर तरह की तसल्ली का खुदा है। 4 वो हमारी सब मुसीबतों में हम को तसल्ली देता है; ताकि हम उस तसल्ली की बजह से जो खुदा हमें बर्खाता है उनको भी तसल्ली दे सकें जो किसी तरह की मुसीबत में है। 5 क्यैंकि जिस तरह मरीह के दुःख हम को ज्यादा पहुँचते हैं; उसी तरह हमारी तसल्ली भी मरीह के बसीले से ज्यादा होती है। 6 अगर हम मुसीबत उठाते हैं तो तुम्हारी तसल्ली और नजात के बास्ते और अगर तसल्ली पाते हैं तो तुम्हारी तसल्ली के बास्ते, जिसकी तासीर से तुम सब के साथ उन दुखों को बर्दाश्ट कर लेते हो; जो हम भी सहते हैं। 7 और हमारी उम्मीद तुम्हारे बारे में मजबूत है; क्यैंकि हम जानते हैं कि जिस तरह तुम दुःखों में शरीक हो उसी तरह तसल्ली में भी हो। 8 ऐ, भाइयों! हम नहीं चाहते कि तुम उस मुसीबत से ना वाकिफ रहो जो आसिया में हम पर पड़ी कि हम हट से ज्यादा और ताकत से बाहर पस्त हो गए; यहाँ तक कि हम ने जिन्दगी से भी हाथ धो लिए। 9 बल्कि अपने ऊपर मौत के हकम का यकीन कर चुके थे ताकि अपना भरोसा न रखें बल्कि खुदा का जो मुर्दाँ को जिलाता है। 10 चुनाँचे उसी ने हम को ऐसी बड़ी हलाकत से छुड़ाया और छुड़ाएगा; और हम को उसी से ये उम्मीद है कि अगे को भी छुड़ाता रहेगा। 11 अगर तुम भी मिलकर दुआ से हमारी मदद करेगे ताकि जो नेअम्पत हम को बहुत लोगों के बरसीले से मिली उसका शुक्र भी बहुत से लोग हमारी तरफ से करें। 12 क्यैंकि हम को अपने दिल की ईस गवाही पर फ़ड़ा है कि हमारा चाल चलन दुनिया में और खासकर तुम में जिसमानी हिक्मत के साथ नहीं बल्कि खुदा के फ़जल के साथ ऐसी पाकीज़गी और सफाई के साथ रहा जो खुदा के लायक है। 13 हम और बातें तुम्हें नहीं लिखें सिवा उन के जिन्हें तुम पढ़ते या मानते हो, और मुझे उम्मीद है कि आखिर तक मानते रहेगे। 14 चुनाँचे तुम में से कितनों ही ने मान भी लिया है कि हम तुम्हारा फ़ख़ हैं; जिस तरह हमारे खुदावन्द ईसा के दिन तुम भी हमारा फ़ख़ रहेगे। 15 और इसी भरोसे पर मैंने ये झारा किया था, कि पहले तुम्हारे पास आँऊँ; ताकि तुम्हें एक और नेअम्पत मिले। 16 और तुम्हारे शहर से होता हुआ मकिदुनिया सबै को जाँऊँ और मकिदुनिया से फिर तुम्हारे पास आँऊँ, और तुम मुझे यहदिया की तरफ रवाना कर दो। 17 पस मैंने जो झारा किया था शोखिमिजाजी से किया था? या जिन बातों का झारा करता हूँ क्या जिसमानी तौर पर करता हूँ कि हाँ हाँ भी कस्ट और नहीं नहीं भी कस्ट? 18 खुदा की सच्चाई की कसम कि हमारे उस कलाम में जो तुम से किया जाता है हाँ हाँ और नहीं दोनों पाई नहीं जाती। 19 क्यैंकि खुदा का बेटा ईसा मरीह जिसकी मनादी हम ने ये नानी मैंने और सिलवानुस और तीमुथियस ने तुम में की उस में हाँ और नहीं दोनों न थी बल्कि उस में हाँ ही हाँ है। 20 क्यैंकि खुदा के जितने वादे हैं वो सब उस में हाँ के साथ हैं। इसी लिए उसके जरिए से आमीन भी हूँ; ताकि हमारे बरसीले से खुदा का जलाल जाहिर हो। 21 और जो हम को तुम्हारे साथ मरीह में काईम करता है और जिस ने हमारे बरसीले से खुदा को जलाल जाहिर हो। 22 जिसने हम पर महर भी की और पेशी में स्थ को हमारे दिलों में दिया। 23 मैं खुदा को गवाह करता हूँ कि मैं अब तक कुरिन्थुस में इस बास्ते नहीं आया कि मुझे तुम पर रहम आता है।

24 ये नहीं कि हम ईमान के बारे में तुम पर हुक्मत जताते हैं बल्कि खुशी में तुम्हारे मददगार हैं क्यैंकि तुम ईमान ही से काईम रहते हो।

2 मैंने अपने दिल में ये झारा किया था कि फिर तुम्हारे पास गमगीन हो कर न आँऊँ। 2 क्यैंकि अगर मैं तुम को गमगीन करूँ तो मुझे कौन खुश करेगा? सिवा उम्हें जो मेरी बजह से गमगीन हुआ। 3 और मैंने तुम को वही बात लिखी थी ताकि ऐसा न हो कि मुझे आकर जिन से खुश होना चाहिए था, मैं उनकी बजह से गमगीन हूँ; क्यैंकि मुझे तुम सब पर इस बात का भरोसा है कि जो मेरी खुशी है वही तुम सब की है। 4 क्यैंकि मैंने बड़ी मुसीबत और दिलगीरी की हालत में बहुत से औसू बहा बहा कर तुम को लिखा था, लेकिन इस बास्ते नहीं कि तुमको गम हो बल्कि इस बास्ते कि तुम उस बड़ी मुहब्बत को मालूम करो जो मुझे तुम से है। 5 और अगर कोई शख़स गम का बा॒इस हुआ है तो वो मेरे ही गम का नहीं बल्कि, (ताकि उस पर ज्यादा साली न करूँ) किस कदर तुम सब के गम का जारिया हुआ। 6 यही सजा जो उसने अकसरों की तरफ से पाई ऐसे शख़स के बास्ते का काफ़ी है। 7 पस बार' अक्स इसके यही बेहतर है कि उस का कुरूर मु'आफ़ करो और तसल्ली दो ताकि वो गम की कसरत से तबाह न हो। 8 इसलिए मैं तुम से गुजारिश करता हूँ कि उसके बारे में मुहब्बत का फ़तवा दो। 9 क्यैंकि मैंने इस बास्ते भी लिखा था कि तुम्हें आजमा लौँ, कि सब बातों में फरमानबदर हो या नहीं। 10 जिसे तुम मु'आफ़ करते हो उसे मैं भी मु'आफ़ करता हूँ क्यैंकि जो कुछ़ मैंने मु'आफ़ किया; अगर किया, तो मरीह का काईम मुकाम हो कर तुम्हारी खातिर मु'आफ़ किया। 11 ताकि वो लोगों का हम पर दाव न चले क्यैंकि हम उसकी चालों से नावाकिफ नहीं। 12 और जब मैं मरीह की खुशबूबरी देने को जोआस शहर में आया और खुदावन्द में मैं लिए दरवाजा खुल गया। 13 तो मेरी स्त्र को आराम न मिला; इसलिए कि मैंने अपने भाई तिरुस को न पाया; पस उन ईमानदारों से स्वतंत्र होकर मकिदुनिया सबै को चला गया। 14 मगर खुदा का शुक्र है जो मरीह में हम को हमेशा कैटियों की तरह गश्त करता है और अपने इत्म की खुशबूबरी देने को जोआस शहर में आया और खुदावन्द में मैं लिए दरवाजा खुल गया। 15 क्यैंकि हम खुदा के नज़दीक नजात पानेवालों और हलाक होने वालों दोनों के लिए मरीह की खुशबूबरी है। 16 कुछ के बास्ते तो मरने के लिए मौत की बू और कुछ के बास्ते जिने के लिए जिन्दगी की बू हैं और कौन जैन बातों के लायक है। 17 क्यैंकि हम उन बहुत लोगों की तरह नहीं जो खुदा के कलाम में मिलावट करते हैं बल्कि दिल की सफाई से और खुदा की तरफ से खुदा को हाजिर जान कर मरीह में बोलते हैं।

3 क्या हम फिर अपनी नेक नामी जताना शुरू करते हैं या हम को कुछ लोगों की तरह नेक नामी के खत तुम्हारे पास लाने या तुम से लेने की जरूरत है। 2 हमारा जो खुत हमारे दिलों पर लिखा हुआ है; वो तुम हो और उसे सब आदमी जानते और पढ़ते हैं। 3 जाहिर है कि तुम मरीह का वो खत जो हम ने खादिमों के तौर पर लिखा; स्याही से नहीं बल्कि जिन्दा खुदा के स्त्र से पत्थर की तखियों पर नहीं बल्कि गोश यानी दिल की तखियों पर। 4 हम मरीह के जरिए खुदा पर ऐसा ही भरोसा रखते हैं। 5 ये नहीं कि बजात — ए — खुद हम इस लायक हैं कि अपनी तरफ से कुछ खयाल भी कर सकें बल्कि हमारी लियाकत खुदा की तरफ से है। 6 जिसने हम को नए अहंद के खादिम होने के लायक भी किया लफजों के खादिम नहीं बल्कि स्त्र के क्यैंकि लफज मार डालते हैं मगर स्त्र जिन्दा करती है। 7 और जब मौत का वो अहंद जिसके हस्त पथरों पर खेदे गए थे ऐसा जलाल बाला हुआ कि इमाईली लोग मूसा के चेहरे पर उस जलाल की बजह से जो उसके चरे पर था गौर से नजर न कर सके हालाँकि वो घटता जाता था। 8 तो पाक स्त्र का अहंद तो ज़स्तर ही जलाल

वाला होगा। 9 क्यूंकि जब मुजरिम ठहराने वाला अहद जलाल वाला था तो रास्तबाजी का अहद तो ज़रूर ही जलाल वाला होगा। 10 बल्कि इस सूत में वो जलाल वाला इस बैंग्निहा जलाल की बजह से बैंग्नल ठहरा। 11 क्यूंकि जब मिटने वाली चीज़े जलाल वाली थीं तो बाकी रहने वाली चीज़े तो ज़रूर ही जलाल वाली होंगी। 12 पस हम ऐसी उम्मीद करके बड़ी दिलेरी से बोलते हैं। 13 और मूसा की तरह नहीं हैं जिसने अपने चेहरे पर नकाब डाला ताकि बनी इम्माइल उस मिटने वाली चीज़ के अन्याय को न देख सके। 14 लेकिन उनके ख्यालात कर्सीफ हो गए, क्यूंकि आज तक पासे 'अहदनामे' को पढ़ते बक्त उन के दिलों पर वही पर्दा पड़ा रहता है, और वो मसीह में उठ जाता है। 15 मगर आज तक जब कभी मूसा की किताब पढ़ी जाती है तो उनके दिल पर पर्दा पड़ा रहता है। 16 लेकिन जब कभी उन का दिल खुदा की तरफ फ़िरेगा तो वो पर्दा उठ जाएगा। 17 और खुदावन्द रुह है, और जहाँ कहीं खुदावन्द की रुह है वहाँ आजादी है। 18 मगर जब हम सब के बैंग्नकाब चेहरों से खुदावन्द का जलाल इस तरह जाहिर होता है; जिस तरह आइने में, तो उस खुदावन्द के वसीले से जो स्थ है हम उसी जलाली सूरत में दर्ज ब दर्ज बदलते जाते हैं।

4 पस जब हम पर ऐसा रहम हुआ कि हमें ये खिदमत मिली, तो हम हिम्मत की नहीं हारते। 2 बल्कि हम ने शर्म की छिपी बातों को तर्क कर दिया और मक्कारी की चाल नहीं चलते न खुदा के कलाम में मिलावट करते हैं बल्कि हक जाहिर करके खुदा के रु — ब — रु हर एक आदर्मी के दिल में अपनी नेकी बिठाते हैं। 3 और अगर हमारी खुशखबरी पर पर्दा पड़ा है तो हलाक होने वालों ही के वास्ते पड़ा है। 4 यानी उन बैंग्निमानों के वास्ते जिनकी अक्तलों को इस जहान के खुदा ने अंगा कर दिया है ताकि मसीह जो खुदा की सूरत है उसके जलाल की खुशखबरी की रौशनी उन पर न पड़े। (aiōn g165) 5 क्यूंकि हम अपनी नहीं बल्कि मसीह ईसा का ऐलान करते हैं कि वो खुदावन्द है और अपने हक में ये कहते हैं कि ईसा की खातिर तुहारे गुलाम हैं। 6 इसलिए कि खुदा ही है जिसने फरमाया कि "तारीकी में से नूर चमके" और वही हमारे दिलों पर चमका ताकि खुदा के जलाल की पहचान का नूर ईसा मसीह के चहरे से जलवागर हो। 7 लेकिन हमारे पास ये खजाना मिटी के बरतनों में रखवा है ताकि ये हृद से ज्यादा कुदरत हमारी तरफ से नहीं बल्कि खुदा की तरफ से मालूम हो। 8 हम हर तरफ से मुसीबत तो उठाते हैं लेकिन लाचार नहीं होते हैरान तो होते हैं मगर ना उम्मीद नहीं होते। 9 सताए तो जाते हैं मगर अकेले नहीं छोड़ जाते; पिराए तो जाते हैं, लेकिन हलाक नहीं होते। 10 हम हर बक्त अपने बदन में ईसा की मौत लिए फिरते हैं ताकि ईसा की जिन्दगी भी हमारे बदन में जाहिर हो। 11 क्यूंकि हम जीते जी ईसा की खातिर हमेशा मौत के हवाले किए जाते हैं ताकि ईसा की जिन्दगी भी हमारे फ़ानी जिस्म में जाहिर हो। 12 पस मौत तो हम में असर करती है और जिन्दगी तुम में। 13 और चूँकि हम में वही ईमान की रुह है जिसके बारे में कलाम में लिखा है कि मैं ईमान लाया और इसी लिए बोला; पस हम भी ईमान लाए और इसी लिए बोलते हैं। 14 क्यूंकि हम जाते हैं कि जिसने खुदावन्द ईसा मसीह को जिलाया वो हम को भी ईसा के साथ शामिल जानकर जिलाएँ; और तुम्हारे साथ अपने सामने हाजिर करेगा। 15 इसलिए कि सब चीज़े तुहारे वास्ते हैं ताकि बहुत से लोगों के जरिए से फ़जल ज्यादा हो कर खुदा के जलाल के लिए शुक्र गुजारी भी बढ़ा। 16 इसलिए हम हिम्मत नहीं हारते बल्कि चाहे हमारी जाहिरी इंसान दियत जाहिल हो जाती है फिर भी हमारी बातिनी इंसान दियत रोज़ ब, रोज़ नई होती जाती है। 17 क्यूंकि हमारी दम भर की हल्की सी मुसीबत हमारे लिए अज, हृद भारी और अबदी जलाल पैदा करती है। (aiōnios g166) 18 जिस हाल में हम

देखी हुई चीज़ों पर नहीं बल्कि अनदेखी चीज़ों पर नज़र करते हैं; क्यूंकि देखी हुई चीज़े चन्द रोज़ हैं; मगर अनदेखी चीज़े अबदी हैं। (aiōnios g166)

5 क्यूंकि हम जानते हैं कि जब हमारा खेमे का घर जो जमीन पर है गिराया जाएगा तो हम को खुदा की तरफ से आसामन पर एक ऐसी इमारत मिलेगी जो हाथ का बनाया हुआ घर नहीं बल्कि अबदी है। (aiōnios g166) 2 चुनौते हम इस में कराहते हैं और बड़ी आरज़ रखते हैं कि अपने आसमनी घर से मुलब्बस हो जाएँ। 3 ताकि मुलब्बस होने के जरिए नों न पाए जाएँ। 4 क्यूंकि हम इस खेमे में रुह कर बोझ के मारे कराहते हैं इसलिए नहीं कि ये लिबास उतारना चाहते हैं बल्कि इस पर पहनना चाहते हैं ताकि वो जो फ़ानी है जिन्दगी में गर्के हो जाए। 5 और जिस ने हम को इसी बात के लिए तैयार किया वो खुदा है और उसी ने हमें रुह पेशी में दिया। 6 पस हमेशा हम मुतमईन रहते हैं और ये जानते हैं कि जब तक हम बदन के बतन में हैं खुदावन्द के वहाँ से जिला बतन है। 7 क्यूंकि हम ईमान पर चलते हैं न कि आँखों देखे पर। 8 गरचे, हम मुतमईन हैं और हम को बदन के बतन से जुदा हो कर खुदावन्द के बतन में रहना ज्यादा मंज़ूर है। 9 इसी वास्ते हम ये हौसला रखते हैं कि बतन में हूँ चाहे जेला बतन उसको खुश करें। 10 क्यूंकि जस्ती है कि मसीह के तखत — ए — अदालत के सामने जाकर हम सब का हाल जाहिर किया जाए ताकि हर शरख्ब अपने उन कामों का बदला पाए; जो उसने बदन के वसीले से किए हों; चाहे भले हों चाहे बुरे हों। 11 पस हम खुदावन्द के खौफ को जान कर आदमियों को समझते हैं और खुदा पर हमारा हाल जाहिर है और मुझे उम्मीद है कि तुहारे दिलों पर भी जाहिर हुआ होगा। 12 हम फिर अपनी नेक नामी तुम पर नहीं जाते बल्कि हम अपनी बजह से तुम को फ़खुर करने की मौका देते हैं ताकि तुम उनको जवाब दे सको जो जाहिर पर फ़खुर करते हैं और बातिन पर नहीं। 13 अगर हम बेखुद हैं तो खुदा के वास्ते हैं और अगर होश में हैं तो तुहारे वास्ते। 14 क्यूंकि मसीह की मुहब्बत हम को मजबूर कर देती है इसलिए कि हम ये समझते हैं कि जब एक सब के वास्ते मरा तो सब मर गए। 15 और वो इसलिए सब के वास्ते मरा कि जो जीते हैं वो आगे को अपने लिए न जिए बल्कि उसके लिए जो उन के वास्ते मरा और फिर जी उठा। 16 पस अब से हम किसी को जिस्म की हैसियत से न पहचानेंगे; हाँ अगर चे मसीह को भी जिस्म की हैसियत से जाना था मगर अब से नहीं जानेंगे। 17 इसलिए अगर कोई मसीह में है तो वो नया मखलूक है पूरानी चीज़े जाती रहीं; देखो वो नई हो गई। 18 और वो सब चीज़े खुदा की तरफ से हैं जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया और मेल मिलाप की खिदमत हमारे सुरुदं की। 19 मतलब ये है कि खुदा ने मसीह में हो कर अपने साथ दुनिया का मेल मिलाप कर लिया और उन की तक्सीरों को उनके ज़िम्मे न लगाया और उसने मेल मिलाप का पैगाम हमें सौंप दिया। 20 पस हम मसीह के एल्वी हैं और गोया हमारे वसीले से खुदा इलिमास करता है; हम मसीह की तरफ से मिन्नत करते हैं कि खुदा से मेल मिलाप कर लो। 21 जो गुनाह से वाकिफ न था; उसी को उनसे हमारे वास्ते गुनाह ठहराया ताकि हम उस में हो कर खुदा के रास्तबाज हो जाएँ।

6 हम जो उस के साथ काम में शरीक हैं, ये भी गुजारिश करते हैं कि खुदा का फ़जल जो तुम पर हुआ बे फ़ाइदा न रहने दो। 2 क्यूंकि वो फ़रमाता है कि मैंने कुबलियत के बजत तेरी सुन ली और नज़त के दिन तेरी मदद की; देखो अब कबलियत का बजत है; देखो ये नज़त का दिन है। 3 हम किसी बात में ठोकर खाने का कोई मौका नहीं देते ताकि हमारी खिदमत पर हर्फ़ न आए। 4 बल्कि खुदा के खादिमों की तरह हर बात से अपनी ख़बरी जाहिर करते हैं बड़े

सब्र से मुसीबत, से इहतियात से तंगी से। 5 कोडे खाने से, कैद होने से, हँगामों से, मेहनतों से, बेदीरी से, फ़ाकों से, 6 पाकीजागी से, इल्म से, तहमील से, मेहरबानी से, स्थ उल कुदूस से, बे — रिया मुहब्बत से, 7 कलाम्ए हक से, खुदा की कुदूत से, रास्तबाजी के हथियारों के वसीले से, जो दहने बाँहें हैं। 8 इज्जत और बे'इज्जती के वसीले से, बदनामी और नेक नामी के वसीले से, जो गुमराह करने वाले मालूम होते हैं फिर भी सच्चे हैं। 9 गुमानामों की तरह हैं, तो भी मशहूर हैं, मरते हुओं की तरह हैं, मगर देखो जीते हैं, मार खानेवालों की तरह हैं, मगर जान से मरे नहीं जाते। 10 गमानामों की तरह हैं, लेकिन हमेशा खुश रहते हैं, कंगालों की तरह हैं, मगर बहुतरों को दौलतमन्द कर देतग हैं, नादानों की तरह हैं, तो भी सब कुछ देखते हैं। 11 ऐ कुरन्यस के ईमानदारों, हम ने तुम से खुल कर बातें कहीं और हमारा दिल तुम्हारी तरफ से खुश हो गया। 12 हमारे दिलों में तुम्हारे लिए तंगी नहीं मगर तुम्हारे दिलों में तंगी है। 13 पस मैं फ़र्जन्द जान कर तुम से कहता हूँ कि तुम भी उसके बदले में कुशादा दिल हो जाओ। 14 बे'ईमानों के साथ ना हमवार जूँ में न जुतो, क्यूँकि रास्तबाजी और बेदीरी में क्या मेल जोल? या रौशनी और तारीकी में क्या रिश्ता? 15 वो मसीह को बती! आल के साथ क्या मुवाफिक या ईमानदार का बे'ईमान से क्या वास्ता? 16 और खुदा के मकादिस को बुरों से क्या मुनासिबत है? क्यूँकि हम जिन्दा खुदा के मकादिस हैं चुनाँचे खुदा ने फरमाया है, “मैं उम्रे बसऱा और उन में चला किरा कस्स़ग़ा और मैं उनका खुदा हँगा और वो मेरी उम्मत होगे।” 17 इस वास्ते खुदावन्द फ़रमाता है कि उन में से निकल कर अलग रहो और नापाक चीज को न छुओ तो मैं तुम को कुबल कस्स़ग़ा। 18 मैं तुम्हारा बाप हँगा और तुम मेरे बेटे — बेटियों होंगे, खुदावन्द कादिर — ए — मुतलिक का कौल है।

7 पस ऐं अजीज़ो चूँकि हम से ऐसे वादे किए गए, आओ हम अपने आपको हर तरह की जिसमानी और स्थानी आलदगी से पाक करें और खुदा के बेखौफ के साथ पाकीजागी को कमाल तक पहुँचाए। 2 हम को अपने दिल में जगह दो हम ने किसी से बेइन्साफ़ी नहीं की किसी को नहीं बिगाड़ा किसी से दाना नहीं की। 3 मैं तुम्हें मुजरिम ठहराने के लिए ये नहीं कहता क्यूँकि पहले ही कह चुका हूँ कि तुम हमारे दिलों में ऐसे बस गए हो कि हम तुम एक साथ मरें और जाएं। 4 मैं तुम से बड़ी दिलीरी के साथ बातें करता हूँ मुझे तुम पर बड़ा फ़ख़ है मुझको पूरी तसल्ली हो गई है; जिन्हीं मुसीबतें हम पर आती हैं उन सब में मेरा दिल खुशी से लबेरेज रहता है। 5 क्यूँकि जब हम मुकिनियां मैं आए उस बक्त भी हमारे जिस्म को चैन न मिला बल्कि हर तरफ से मुसीबत में पिरफ़तार रहे बाहर लडाइयाँ थीं और अन्दर दहशतें। 6 तो भी आजीजों को तसल्ली बछाने वाले यानीं खुदा ने तिसु के आने से हम को तसल्ली बछाई। 7 और न सिर्फ़ उसके आने से बल्कि उसकी तसल्ली से भी जो उसको तुम्हारी तरफ से हुई और उसने तुम्हारा इश्तियाक तुम्हारा गम और तुम्हारा जोश जो मेरे बारे में था हम से बायन किया जिस से मैं और भी खुश हुआ। 8 गरचे, मैंने तुम को अपने खत से गमानी किया मगर उससे पछताता नहीं आगरचे पहले पछताता था चुनाँचे देखता हूँ कि उस खत से तुम को गम हुआ गरचे थोड़े ही अर्से तक रहा। 9 अब मैं इसलिए खुश नहीं हूँ कि तुम को गम हुआ, बल्कि इस लिए कि तुम्हारे गम का अन्जाम तौबा हुआ क्यूँकि तुम्हारा गम खुदा परस्ती का था, ताकि तुम को हमारी तरफ से किनी तरह का नुकसान न हो। 10 क्यूँकि खुदा परस्ती का गम ऐसी तौबा पैदा करता है, जिसका अन्जाम न जात है और उसे पछताना नहीं पड़ता मगर दुनिया का गम मौत पैदा करता है। 11 पस देखो इसी बात ने कि तुम खुदा परस्ती के तौर पर गमानी हुए तो मैं किस कदर सरगामी और उत्त्र और खफा और खौफ और इश्तियाक और जोश और

इन्तिकाम पैदा किया; तुम ने हर तरह से साबित कर दिखाया कि तुम इस काम में बरी हो। 12 पस अगरचे मैंने तुम को लिखा था मगर न उसके बारे में लिखा जिसने बे इन्साफ़ी की और न उसके जरिए जिस पर बे इन्साफ़ी हुई बल्कि इस लिए कि तुम्हारी सरगामी जो हमारे वास्ते है खुदा के हज़र तुम पर जाहिर हो जाए। 13 इसी लिए हम को तसल्ली हुई है और हमारी इस तसल्ली में हम को तितुस की खुशी की बजह से और भी ज्यादा खुशी हुई क्यूँकि तुम सब के जरिए उसकी स्थ हिंसा की तराजा हो गई। 14 और अगर मैंने उसके सामने तुम्हारे बारे में कुछ फ़ख़ किया तो शर्मिन्दा न हुआ बल्कि जिस तरह हम ने सब बातें तुम से सच्चाई से कहीं उसी तरह जो फ़ख़ हम ने तिसु के सामने किया था भी सच निकला। 15 और जब उसको तुम सब की फ़रमाबदारी याद आती है कि तुम किस तरह डरते और काँते हुए उस से मिले तो उसकी दिली मुहब्बत तुम से और भी ज्यादा होती जाती है। 16 मैं खुश हूँ कि हर बात में तुम्हारी तरफ से मुतम्इन हूँ।

8 ऐ, भाइयों! हम तुम को खुदा के उस फ़जल की खबर देते हैं जो मकिदुनिया सूखे की कलीसियाओं पर हुआ है। 2 कि मुसीबत की बड़ी आजमाइश में उनकी बड़ी खुशी और सख्त गरीबी ने उनकी सखाबत को हद से ज्यादा कर दिया। 3 और मैं गवाही देता हूँ, कि उन्होंने हैसियत के मुवाफिक बल्कि तकत से भी ज्यादा अपनी खुशी से दिया। 4 और इस खेरात और मुकद्दसों की खिदमत की शिराकत के जरिए हम से बड़ी मिन्नत के साथ दरखास्त की। 5 और हमारी उमीद के मुवाफिक ही नहीं दिया बल्कि अपने आप को पहले खुदावन्द के और फ़िर खुदा की मज़ी से हमारे सुर्द किया। 6 इस वास्ते हम ने तिसु को नसीहत की जैसे उस ने पहले शूरू किया था वैसे ही तुम में इस खेरात के काम को पूरा भी करे। 7 पस जैसे तुम हर बात में ईमान और कलाम और इल्म और पूरी सरगामी और उस मुहब्बत में जो हम से आगे हो गए हो, वैसे ही इस खेरात के काम में आगे ले जाओ। 8 मैं हुक्म के तौर पर नहीं कहता बल्कि इसलिए कि औरौरों की सरगामी से तुम्हारी सच्चाई को आजमाऊँ। 9 क्यूँकि तुम हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के फ़जल को जानते हो कि वो अगरचे दौलतमन्द था मगर तुम्हारी खातिर गरीब बन गया ताकि तुम उसकी गरीबी की बजह से दौलतमन्द हो जाओ। 10 और मैं इस अग्र में अपनी राय देता हूँ, क्यूँकि ये तुम्हारे लिए फ़ाइदामन्द है, इसलिए कि तुम पिछले साल से न सिर्फ़ इस काम में बल्कि इसके ज़ारे में भी अव्वल थे। 11 पस अब इस काम को पूरा भी करो ताकि जैसे तुम इशादा करने में मुस्त़इद थे वैसे ही हैसियत के मुवाफिक पूरा भी करो। 12 क्यूँकि आगर नियत हो तो खेरात उसके मुवाफिक मक्कल होनी जो आदमी के पास है न उसके मुवाफिक जो उसके पास नहीं। 13 ये नहीं कि औरौरों को आराम मिले और तुम को तकलीफ हो। 14 बल्कि बराबरी के तौर पर इस बक्त तुम्हारी दौलत से उनकी कमी पूरी हो और इस तरह बराबरी हो जाए। 15 चुनाँचे कलाम में लिखा है, “जिस ने बहुत मन्ना जमा किया उसका कुछ कम न निकला।” 16 खुदा का शुक्र है जो तिसु के दिल में तुम्हारे वास्ते वैसी ही सरगामी पैदा करता है। 17 क्यूँकि उसने हमारी नसीहत को मान लिया बल्कि बड़ा सरगर्म हो कर अपनी खुशी से तुम्हारी तरफ रवाना हुआ। 18 और हम ने उस के साथ उस भाई को भेजा जिस की तरीफ़ खुशबूकी की बजह से तमाम कलीसियाओं में होती है। 19 और सिर्फ़ यही नहीं बल्कि वो कलीसियाओं की तरफ से इस खेरात के बारे में हमारा हमसफ़र मुकर्रर हुआ और हम ये खिदमत इसलिए करते हैं कि खुदावन्द का जलाल और हमारा शौक जाहिर हो। 20 और हम बचते रहते हैं कि जिस बड़ी खेरात के बारे में खिदमत करते हैं उसके बारे में कोई हम पर हर्फ़

न लाए। 21 क्यूंकि हम ऐसी चीजों की तदबीर करते हैं जो न सिर्फ खुदावन्द के नज़दीक भरी हैं बल्कि आदमियों के नज़दीक भी। 22 और हम ने उनके साथ अपने उस भाई को भेजा है जिसको हम ने बहुत सी बातों में बार हा आजमाकर सरगर्म पाया है मगर चूंकि उसको तुम पर बड़ा भरोसा है इसलिए अब बहुत ज्यादा सरगर्म है। 23 अगर कोई तितुस की बारे में पूछे तो वो मेरा शरीक और तुम्हारे वास्ते मेरा हम खिदमत है और अगर भाइयों के बारे में पूछा जाए तो वो कल्पियाओं के कसिद्द और मसहि का जलाल है। 24 पस अपनी मुहब्बत और हमारा वो फ़ख़ जो तुम पर है कल्पियाओं के से — ब — स उन पर सहित करो।

9 जो खिदमत मुक़द्दसों के बास्ते की जाती है, उसके ज़रिए मुझे तुम को

लिखना फ़ज़ल है। 2 क्यैंकि मैं तुम्हारा शौक जानता हूँ, जिसकी वजह से मकिन्दुनिया के लोगों के आगे तुम पर फ़ख़ु करता हूँ कि अखिया के लोग पिछले साल से तैयार हैं और तुम्हारी सरागर्मी ने अकसर लोगों को उभारा। 3 लेकिन मैंने भाइयों को इसलिए भेजा कि हम जो फ़ख़ु इस बारे में तुम पर करते हैं वो बे'असल न ठहरे बल्कि तुम मेरे कहने के मुवाफ़िक तैयार रहो। 4 ऐसा न हो कि अगर मकिन्दुनिया के लोग मेरे साथ आएं और तुम को तैयार न पाएं तो हम ये नहीं कहते कि तुम उस भरोसे की वजह से शर्मन्दा हो। 5 इसलिए मैंने भाइयों से ये दरख़वास्त करना ज़रूरी समझा कि वो पहले से तुम्हारे पास जाकर तुम्हारी मो'ऊदा बाल्लिशा को पहले से तैयार कर रखें ताकि वो बाल्लिशा की तरह तैयार रहें न कि जबरदस्ती के तौर पर। 6 लेकिन बात ये है कि जो थोड़ा बोता है वो थोड़ा काटेगा और जो बहत बोता है वो बहत काटेगा। 7 जिस कदर हर एक ने अपने दिल में ठहराया है उसी कदर दे, न दरेगा करके न लाचारी से क्यैंकि खुदा खुशी से देने वाले को अजीज़ रखता है। 8 और खुदा तुम पर हर तरह का फ़ज़ल कसरत से कर सकता है। ताकि तुम को हमेशा हर चीज़ ज़्यादा तौर पर मिला करे और हर नेक काम के लिए तुम्हारे पास बहुत कछू मौजूद रहा करे। 9 चुनौचे कलाम में लिखा है कि उसने बिखेरा है उसने कंगालों को दिया है उसकी रास्तबाज़ी हमेशा तक बाकी रहेगी। (aiōn g165) 10 पस जो बोने वाले के लिए बीज और खाने के लिए रोटी एक दुसरे को पहुँचाता है वही तुम्हारे लिए बीज बहम पहुँचाए गा; और उसी में तरक्की देगा और तुम्हारी रास्तबाज़ी के फलों को बढ़ाएगा। 11 और तुम हर चीज़ को बहतायत से पाकर सब तरह की सखावत करोगे; जो हमारे वसीले से खुदा की शुक्रगुज़री के जरिए होती है। 12 क्यैंकि इस खिदमत के अन्जाम देने से न सिर्फ़ मुक़द्दसों की ज़स्तरे पूरी होती है बल्कि बहुत लोगों की तरफ से खुदा की शुक्रगुज़री होती है। 13 इस लिए कि जो नियत इस खिदमत से साबित हुई उसकी वजह से वो खुदा की बड़ाई करते हैं कि तुम मसीह की खुशबूबरी का इक्करार करके उस पर ताबेदारी से अमल करते हो और उनकी ओर सब लोगों की मदद करने में सखावत करते हो। 14 और वो तुम्हारे लिए दुआ करते हैं और तुम्हारे मुश्तक हैं इसलिए कि तुम पर खुदा का बड़ा ही फ़ज़ल है। 15 शुक्र खुदा का उसकी उस बाल्लिशा पर जो बयान से बाहर है।

10 मैं पैलस जो तुम्हारे रु — ब — रु आजिज और पीठ पीछे तुम पर

— दिलेर हूँ मसीह का हलीम और नरी याद दिलाकर खद्दर तुम से गुजारिश करता हूँ। 2 बल्कि मिन्नत करता हूँ कि मुझे हाजिर होकर उस बेबाकी के साथ दिलेर न होना पड़े जिससे मैं कुछ लोगों पर दिलेर होने का कस्टर रखता हूँ जो हमें यूँ समझते हैं कि हम जिस्म के मुताबिक जिन्दगी गुजारते हैं। 3 क्योंकि हम आराचे जिस्म में ज़िन्दगी गुजारते हैं मगर जिस्म के तौर पर लड़ते नहीं। 4 इस लिए कि हमारी लडाई के हथियार जिसमानी नहीं बल्कि खुदा के नजदीक

किलों को ढा देने के काबिल हैं। 5 चुनौत्ते हम तस्वीरात और हर एक उंची चीज़ को जो खुदा की पहचान के बरखिलाफ़ सर उठाए हुए हैं ढा देते हैं और हर एक खयाल को कैद करके मसीह का फरमाँबदार बना देते हैं। 6 और हम तैयार हैं कि जब तुम्हारी फरमाँबदारी पूरी हो तो हर तरह की नाकरमानी का बदला लें। 7 तो तुम उन चीजों पर नज़र करते हों जो आँखों के सामने हैं अगर किसी को अपने आप पर ये भरोसा है कि वो मसीह का है तो अपने दिल में ये भी सोच ले कि जैसे वो मसीह का है वैसे ही हम भी हैं। 8 क्यौंकि अगर मैं इस इख्तियार पर कुछ ज्यादा फ़ख़ भी करूँ जो खुदावन्द ने तुम्हारे बनाने के लिए दिया है; न कि बिगाड़ने के लिए तो मैं शर्मिन्दा न हूँगा। 9 ये मैं इस लिए कहता हूँ, कि खतों के ज़रिए से तुम को डराने वाला न ठहरू। 10 क्यौंकि कुछ लोग कहते हैं कि पौतुस के खत तो अलबता असरदार और जबरदस्त हैं लेकिन जब खुद मौजूद होता है तो कमज़ोर सा मालूम होता है और उसकी तक़रीर लचर है। 11 पस ऐसा कहने वाला समझ रखें कि जैसा पीढ़ पीछे खतों में हमारा कलाम है वैसा ही मौजूदी के बक्त हमारा काम भी होगा। 12 क्यौंकि हमारी ये हिम्मत नहीं कि अपने आप को उन चन्द लोगों में शुमार करें या उन से कुछ निस्बत दें जो अपनी नेक नामी जताते हैं लेकिन वो खुद अपने आप को आपस में वजन कर के और अपने आप को एक दूसरे से निस्बत देकर नादान ठहराते हैं। 13 लेकिन हम अन्दाज़े से ज्यादा फ़ख़ न करेंगे, बल्कि उसी इलाके के अन्दाज़े के मुवाफिक जो खुदा ने हमारे लिए मुकर्रर किया है जिस में तुम भी आगए, हो। 14 क्यौंकि हम अपने आप को हद से ज्यादा नहीं बढ़ाते जैसे कि तुम तक न पहुँचने की सूरत में होता बल्कि हम मसीह की खुशखबरी देते हुए तुम तक पहुँच गए थे। 15 और हम अन्दाज़े से ज्यादा याँनी औरों की मेहनतों पर फ़ख़ नहीं करते लेकिन उम्मीदवार हैं कि जब तुम्हारे इमान में तरक्की हो तो हम तुम्हारी बजह से अपने इलाके के मुवाफिक और भी बढ़े 16 ताकि तुम्हारी सरहद से आगे बढ़ कर खुशखबरी पहुँचा दें न कि गैर इलाका में बनी बनई हुई चीजों पर फ़ख़ करें 17 गरज़ जो फ़ख़ करे वो खुदावन्द पर फ़ख़ करे। 18 क्यौंकि जो अपनी नेकनामी जताता है वो मकबूल नहीं बल्कि जिसको खुदावन्द नेकनाम ठहराता है वही मकबूल है।

11 काश कि तुम मेरी थोड़ी सी बेक़ाफ़ी की बर्दाश्त कर सकते, हाँ तुम मेरी बर्दाश्त करते तो हो। 2 मुझे तुम्हारे जरिए खुदा की सी गैरत है क्यूँकि मैंने एक ही शौहर के साथ तुम्हारी निस्बत की है ताकि तुम को पाक दामन कँवारी की तरह मरीह के पास हाजिर करहूँ। 3 लेकिन मैं डरता हूँ कहीं ऐसा न हो कि जिस तरह साँप ने अपनी मक्कारी से हव्वा को बहकाया उसी तरह तुम्हारे खालात भी उस खलूस और पाकदामनी से हट जाएँ जो मरीह के साथ होनी चाहिए। 4 क्यूँकि जो आता है अगर वो किसी दूसरे ईसा का ऐलान करता है जिसका हमने ऐलान नहीं किया या कोई और स्ह तुम को मिलती है जो न मिली थी या दूसरी खुशखबरी मिली जिसको तुम ने कुबूल न किया था; तो तुम्हारा बर्दाश्त करना बजा है। 5 मैं तो अपने आप को उन अफ़ज़ल रस्लों से कुछ कम नहीं समझता। 6 और अगर तकरीर में बेशेऊर हूँ तो इलम के एतबार से तो नहीं बल्कि हम ने इस को हर बात में तमाम आदमियों में तुम्हारी खातिर ज़ाहिर कर दिया। 7 क्या ये मुझ से खता हुई कि मैंने तुहँसे खुदा की खुशखबरी सुफ़त पहुँचा कर अपने आप को नीचे किया ताकि तुम बुलन्द हो जाओ। 8 मैंने और कलीसियाओं को लूटा थानी उससे उज्र ली ताकि तुम्हारी खिद्रतम करहूँ। 9 और जब मैं तुम्हारे पास था और हाजत मंद हो गया था, तो भी मैंने किसी पर बोझ नहीं डाला क्यूँकि भाइयों ने मकिदुनिया से आकर मेरी जस्तर को पूरा कर दिया था; और मैं हर एक बात में तुम पर बोझ डालने से बाज रहा और रहँगा। 10 मरीह की सदाकत की कसम जो मुझ में है अखिया के इलाका में कोई

शर्वस मुझे ये करने से न रोकेगा। 11 किस वास्ते? क्या इस वास्ते कि मैं तुम से मुहब्बत नहीं रखता? इसको खुदा जानता है। 12 लेकिन जो करता हूँ वही करता रहँगा ताकि मौका ढूँढ़ने वालों को मौका न ढूँबल्कि जिस बात पर वो फ़ख़ करते हैं उस में हम हीं जैसे निकलें। 13 क्यौंकि ऐसे लोग झटे रस्लू और दगा बाजी से काम करने वाले हैं और अपने आपको मरीह के रस्लों के हमशक्त बना लेते हैं। 14 और कुछ अजीब नहीं शैतान भी अपने आपको नूरानी फ़रिश्ते का हम शक्त बना लेता है। 15 पस अगर उसके खादिम भी रास्तबाजी के खादिमों के हमशक्त बन जाएँ तो कुछ बड़ी बात नहीं लेकिन उनका अन्जाम उनके कामों के मुवाफिक होगा। 16 मैं फिर कहता हूँ कि मुझे कोई बेवकूफ़ न समझे और न बेवकूफ़ समझ कर मुझे कुबूल करो कि मैं भी थोड़ा सा फ़ख़ करूँ। 17 जो कुछ मैं कहता हूँ वो खुदावन्द के तौर पर नहीं बल्कि गोया बेवकूफ़ी से और उस हिम्मत से कहता हूँ जो फ़ख़ करने में होती है। 18 जहाँ और बहुत सारे जिसमानी तौर पर फ़ख़ करते हैं मैं भी कसँगा। 19 क्यौंकि तुम को अकलमन्द हो कर खुशी से बेवकूफ़ों को बदाशित करते हो। 20 जब कोई तुम्हें गुलाम बनाता है या खा जाता है या फ़ैसा लेता है या अपने आपको बड़ा बनाता है या तुहारे मुँह पर तामाचा मारता है तो तुम बर्दाशत कर लेते हो। 21 मेरा ये कहना ज़िल्लत के तौर पर सही कि हम कमज़ोर से थे मगर जिस किसी बात में कोई दिलेर है (अगरचे ये कहना बेवकूफ़ी है) मैं भी दिलेर हूँ। 22 क्या वही इब्रानी है? मैं भी हूँ, क्या वही अब्राहाम की नस्ल से है? मैं भी हूँ। 23 क्या वही मसीह के खादिम है? (मेरा ये कहना दीवानगी है) मैं ज्यादा तर हूँ मेहनतों में ज्यादा कैद में ज्यादा कोडे खाने में हद से ज्यादा बारहा मौत के खतरों में रहा हूँ। 24 मैंने यहदियों से पांच बार एक कम चालीस चालीस कोडे खाए। 25 तीन बार बैठ लगे एक बार पथराव किया गया तीन मरवा जहाज टूटने की बला में पड़ा रात दिन समूद्र में काटा। 26 मैं बार बार सफर में दरियाओं के खतरों में डाकूओं के खतरों में अपनी कौम से खतरों में गैर कौमों के खतरों में शरद के खतरों में वीरान के खतरों में समन्दर के खतरों में झटे भाइयों के खतरों में। 27 मेहनत और मशक्कत में बारहा बेदारी की हालत में भूख और प्यास की मसीबत में बारहा फ़ाक़ा कशी में सदीं और नगे पन की हालत में रहा हूँ। 28 और बातों के अलावा जिनका मैं ज़िक्र नहीं करता सब कलीसियाओं की फ़िक मुझे हर रोज आती है। 29 किसी की कमज़ोरी से मैं कमज़ोर नहीं होता, किसी के ठोकर खाने से मेरा दिल नहीं दुःखता? 30 अगर फ़ख़ हीं करना ज़सर है तो उन बातों पर फ़ख़ कसँगा जो मेरी कमज़ोरी से मुतालिक हैं। 31 खुदावन्द ईसा का खुदा और बाप जिसकी हमेशा तक हृष्ट हो जानता है कि मैं झट नहीं कहता। (aiōn g165) 32 दमिश्क के शहर में उस हाकिम ने जो बादशाह अरितास की तरफ से था मैरे पकड़ने के लिए दमिश्कियों के शहर पर पहरा बिठा रखा था। 33 फ़िर मैं टोकरे में छिड़की की राह दिवार पर से लटका दिया गया और मैं उसके हाथों से बच गया।

12 मुझे फ़ख़ करना ज़स्ती हुआ अगरचे मुफीद नहीं पस जो रोया और मुकाशिफ़ा खुदावन्द की तरफ से इनायत हुआ उनका मैं ज़िक्र करता हूँ। 2 मैं मसीह में एक शर्वस को जानता हूँ चौदह बरस हए कि वो यकायक तीसरे आसमान तक उठा लिया गया न मुझे ये मालूम कि बदन समेत न ये मालूम कि बौर बदन के ये खुदा को मालूम है। 3 और मैं ये भी जानता हूँ कि उस शर्वस ने बदन समेत या बौर बदन के ये मुझे मालूम नहीं खुदा को मालूम है। 4 यकायक फ़िरदौस में पहुँचकर ऐसी बातें सुनी जो कहने की नहीं और जिनका कहना आदर्मी की रवा नहीं। 5 मैं ऐसे शर्वस पर तो फ़ख़ करँगा लेकिन अपने आप पर सिवा अपनी कमज़ोरी के फ़ख़ करँगा। 6 और अगर फ़ख़ करना चाहूँ भी तो बेवकूफ़ न ठहँसँग इसलिए कि सच बोलूँगा मगर तोभी बाँज़ रहता हूँ

ताकि कोई मुझे इस से ज्यादा न समझे जैसा मुझे देखा है या मुझ से सुना है। 7 और मुकाशिफ़ा की जियादी के जरिए मेरे फ़ल जाने के अन्देशे से मेरे जिसमें कांटा चुभोया गया याँनी शैतान का कासिद ताकि मेरे मुक्के मारे और मैं फ़ल न जाँका। 8 इसके बारे में मैंने तीन बार खुदावन्द से इलिमास किया कि ये मुझ से दूर हो जाए। 9 मगर उसने मुझ से कहा कि मेरा फ़ज़ल तेरे लिए काफ़ी है क्यौंकि मेरी कुदरत कमज़ोरी में पूरी होती है पस मैं बड़ी खुशी से अपनी कमज़ोरी पर फ़ख़ करँगा ताकि मसीह की कुदरत मुझ पर छाई रहे। 10 इसलिए मैं मसीह की खातिर कमज़ोरी में बैंज़ज़ती में, एहतियाज में, सताए जाने में, तंगी में, खुश हूँ क्यौंकि जब मैं कमज़ोर होता हूँ उसी वक्त ताकतवर होता हूँ। 11 मैं बेवकूफ़ तो बना मगर तुम ही ने मुझे मजबूर किया, क्यौंकि तुम को मेरी तारीफ़ करना चाहिए था इसलिए कि उन अफ़ज़ल रस्लों से किसी बात में कम नहीं अगरचे कुछ नहीं हैं। 12 सच्चा रस्ल होने की अलापत्ते कमाल सब के साथ निशानों और अजीब कामों और मोज़िज़ों के बसाले से तुम्हारे दर्मियान जाहिर हुईं। 13 तुम कौन सी बात में और कलीसियाओं में कम ठहरे बा बजूट इसके मैंने तुम पर बौद्ध न डाला? मेरी ये बैंज़नाफ़ी मुं आफ़ करो। 14 देखो ये तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आने के लिए तैयार हूँ और तुम पर बौद्ध न डालेंगा इसलिए कि मैं तुम्हारे माल का नहीं बल्कि तुहारा चहेता हूँ, क्यौंकि लड़कों को मौं बाप के लिए जमा करना नहीं चाहिए, बल्कि मौं बाप को लड़कों के लिए। 15 और मैं तुम्हारी रस्लों के बास्ते बहुत खुशी से खर्च करँगा, बल्कि खुद ही खर्च हो जाऊँगा। अगर मैं तुम से ज्यादा मुहब्बत रखूँ तो क्या तुम मुझ से कम मुहब्बत रखोगे। 16 लेकिन मुक्किन है कि मैंने खुद तुम पर बौद्ध न डाला हो मगर मक्कार जो हुआ इसलिए तुम को धोखा देकर फ़ैसा लिया हो। 17 भला जिन्हें मैंने तुम्हारे पास भेजा कि उन में से किसी की ज़रिए दो तौर पर तुम से कुछ लिया? 18 मैंने तियुस को समझा कर उनके साथ उस भाई को भेजा पस क्या तियुस ने तुम से दाग के तौर पर कुछ लिया? क्या हम दोनों का चाल चलन एक ही स्वर की हिंदायत के मुताबिक न था; क्या हम एक ही नक्को कदम पर न चले। 19 तुम अभी तक यही समझते होगे कि हम तुम्हारे सामने उड़ कर रहे हैं? हम तो खुदा को हाजिर जानकर मसीह में बोलते हैं और ऐसे, प्यासों ये सब कुछ तुम्हारी तरक्की के लिए है। 20 क्यौंकि मैं डरता हूँ कहीं ऐसा न हो कि आकर जैसा तुहँ चाहता हूँ वैसा न पाऊँ और मुझे भी जैसा तुम नहीं चाहते वैसा ही पाओ कि तुम मैं, झगड़ा, हसद, गुस्सा, त़क़रे, बद गोइयाँ, गीबत, शेरी और फ़साद हों। 21 और फिर जब मैं आँक तो मेरा खुदा तुम्हारे सामने आजिज़ करे और मुझे बहुतों के लिए अपमोस करना पड़े जिन्होंने पहले गुनाह किए हैं और उनकी नापाकी और हरामकारी और शहवत परस्ती से जो उन से सरजद हुई तौबा न की।

13 ये तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आता हूँ। दो या तीन गवाहों कि जबान से तो पहले से कह दिया था, वैसे ही अब गैर हाजिरी में भी उन लोगों से जिन्होंने पहले गुनाह किए हैं और सब लोगों से, पहले से कहे देता हूँ कि आग फ़िर आँज़गा तो दर गुज़र न करँगा। 3 क्यौंकि तुम इसकी दलील चाहते हो कि मसीह मुझ में बोलता है, और वो तुम्हारे लिए कमज़ोर नहीं बल्कि तुम मैं ताकतवर है। 4 हाँ, वो कमज़ोरी की बजह से मस्लब किया गया, लेकिन खुदा की कुदरत की बजह से ज़िन्दा है; और हम भी उसमें कमज़ोर तो हैं, मगर उसके साथ खुदा कि उस कुदरत कि बजह से ज़िन्दा होंगे जो तुम्हारे लिए है। 5 तुम अपने आप को आजमाओ कि इमान पर हो या नहीं। अपने आप को ज़ौंचो तुम अपने बारे में ये नहीं जानते हो कि इसा मसीह तुम में है? वर्ना तुम नामकबूल हो। 6 लेकिन मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम मालूम कर लोगे कि हम

तो नामकबूल नहीं। 7 हम खुदा से दुआ करते हैं कि तुम कुछ बदी न करो ना
इस वास्ते कि हम मकबूल मालम हैं। बल्कि इस वास्ते कि तुम नेकी करो चाहे
हम नामकबूल ही ठहरें। 8 क्यूँकि हम हक के बारखिलाफ कुछ नहीं कर
सकते, मगर सिर्फ हक के लिए कर सकते हैं। 9 जब हम कमज़ोर हैं और तुम
ताकतवर हो, तो हम खुश हैं और ये दुआ भी करते हैं कि तुम कामिल बनो।
10 इसालिए मैं गैर हाजिरी में ये बातें लिखता हूँ ताकि हाजिर होकर मुझे उस
इश्कियार के मुताफिक सख्ती न करना पड़े जो खुदावन्द ने मुझे बनाने के लिए
दिया है न कि बिगाड़ने के लिए। 11 गरज ऐ भाइयो! खुश रहो, कामिल बनो,
इत्तीनान रखदो, यकदिल रहो, मेल — मिलाप रखदो तो खुदा, मुहब्बत और
मेल — मिलाप का चशमा तुम्हारे साथ होगा। 12 आपस में पाक बोसा लेकर
सलाम करो। 13 सब मुकद्दस लोग तुम को सलाम कहते हैं। 14 खुदावं येस्
मसीह का फज्जल और खुदा की मौहब्बत और स्फुलकुद् दूस की शिराकत तुम
सब के साथ होती रहे।

गलातियों

1 पौत्रम की तरफ से जो ना इंसानःँ की जनिब से ना इंसान की वजह से, बल्कि इंसा 'मरीह और खुदा बाप की वजह से जिसने उसको मर्दी में से जिलाया, रस्ल है; 2 और सब भाइयों की तरफ से जो मेरे साथ हैं, गलतिया सबे की कलीसियाओं को खत: 3 खुदा बाप और हमारे खुशबान्द इंसा मरीह की तरफ से तुम्हें फजल और इतमिनान हासिल होता रहे। 4 उरी ने हमारे गुनाहों के लिए अपने आप को दे दिया; ताकि हमारे खुदा और बाप की मर्जी के मुवाफिक हमें इस मौजदा खराब जहान से खलासी बख्शे। (aiōn g165)

5 उसकी बडाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे आमीन। (aiōn g165) 6 मैं ताअँज्ज्वल करता हूँ कि जिसने तुम्हें मरीह को फजल से बुलाया, उससे तुम इस कदर जल्द फिर कर कर किसी और तरह की खुशबुबरी की तरफ माइल होने लगे, 7 मगर वो दूसरी नहीं; अलबत्ता कुछ ऐसे हैं जो तुम्हें उलझा देते और मरीह की खुशबुबरी को बिगाड़ा चाहते हैं। 8 लेकिन हम या आसमान का कोई फरिशता भी उस खुशबुबरी के सिवा जो हमने तुम्हें सुनाई, कोई और खुशबुबरी सुनाए तो मला'उन हो। 9 जैसा हम पहले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूँ कि उस खुशबुबरी के सिवा जो तुम ने कुबूल की थी, अगर तुम्हें और कोई खुशबुबरी सुनाता है तो मला'उन हो। 10 अब मैं आदिमियों को दोस्त बनाता हूँ या खुदा को? क्या आदिमियों को खुश करना चाहता हूँ? अगर अब तक आदिमियों को खुश करता रहता, तो मरीह का बन्दा ना होता। 11 ऐ भाइयों! मैं तुम्हें बताए देता हूँ कि जो खुशबुबरी मैं ने सुनाई वो इंसान की नहीं। 12 क्यूँकि वो मुझे इंसान की तरफ से नहीं पहुँची, और न मुझे सिखाई गई, बल्कि खुदा मरीह की तरफ से मुझे उसका मुकाशिका हुआ। 13 चुनाँचे यहदी तरीके में जो पहले मेरा चाल — चलन था, तुम सुन चुके हो कि मैं खुदा की कलीसिया को अज हद सताता और तबाह करता था। 14 और मैं यहदी तरीके में अपनी कौम के अक्सर हम उत्रों से बढ़ता जाता था, और अपने बुजुर्जों की विवायों में निहायत सरगम था। 15 लेकिन जिस खुदा ने मेरी माँ के पेट ही से मध्यस्स कर लिया, और अपने फजल से बुला लिया, जब उसकी ये मर्जी हुई 16 कि अपने बेटे को मुझ में जाहिर करे ताकि मैं गैर — कौमों में उसकी खुशबुबरी दूँ तो न मैंने गोश और खुन से सलाह ली, 17 और न येस्सलेम में उनके पास गया जो मुझ से पहले रसूल थे, बल्कि फैरून अरब मूल्क को चला गया फिर वहाँ से दमिश्क शहर को वापस आया 18 फिर तीन बरस के बाद मैं कैफा से मुलाकात करने को गया और पन्द्रह दिन तक उसके पास रहा। 19 मगर और रस्लों में से खुदाबान्द के भाई याँकूब के सिवा किसी से न मिला। 20 जो बातें मैं तुम को लिखता हूँ, खुदा को हाजिर जान कर कहता हूँ कि वो झूटी नहीं। 21 इसके बाद मैं सीरिया और किलकिया के इलाकों में आया; 22 और यहदिया सबा की कलीसियाएँ, जो मरीह में थी मुझे सूरत से न जानती थी, 23 मगर ये सुना करती थी, जो हम को पहले सताता था, वो अब उसी दीन की खुशबुबरी देता है जिसे पहले तबाह करता था। 24 और वो मेरे जरिए खुदा की बडाई करती थी।

2 आखिर चौदह बरस के बाद मैं बरनबास के साथ फिर येस्सलेम को गया और तितुस को भी साथ ले गया। 2 और मेरा जाना मुकाशिका के मुताबिक हुआ; और जिस खुशबुबरी की गैर — कौमों में मनादी करता हूँ वो उन से बयान की, मगर तन्हाई में उन्हीं के लोगों से जो कुछ समझे जाते थे, कही ऐसा ना हो कि मेरी इस वक्त की या अगली दौड़ धूप बेफाइदा जाए। 3 लेकिन तितुस भी जो मेरे साथ था और यूनानी है खतना करने पर मजबूर न किया गया। 4 और ये उन झूठे भाइयों की वजह से हुआ जो छिप कर दाखिल हो गए थे,

ताकि उस आजादी को जो तुम्हें मरीह इंसा में हासिल है, जासूसों के तौर पर मालूम करके हमे गुलामी में लाएँ। 5 उनके तबे रहना हम ने पत भर के लिए भी मंजर ना किया, ताकि खुशबुबरी की सच्चाई तुम में काईम रहे। 6 और जो लोग कुछ समझे जाते थे, चाहे वो कैसे ही थे मुझे इंसे कुछ भी वास्ता नहीं; खुदा किसी आदीमी का तरफदार नहीं उनसे जो कुछ समझे जाते थे मुझे कुछ हासिल ना हआ। 7 लेकिन बरँअक्स इसके जब उन्होंने ये देखा कि जिस तरह यहदी मध्यनों को खुशबुबरी देने का काम पतरस के सुपुर्द हुआ 8 क्यूँकि जिस ने मध्यनों की रिसालत के लिए पतरस में असर पैदा किया, उसी ने गैर — यहदी न मध्यन कौमों के लिए मुझे में भी असर पैदा किया। 9 और जब उन्होंने उस तौकीक को माँलूम किया जो मुझे मिली थी, तो याँकूब और कैफा और याहन ने जो कलीसिया के सूतून समझे जाते थे, मुझे और बरनबास को दहना हाथ देकर शरीक कर लिया, ताकि हम गैर कौमों के पास जाएँ और वो मध्यनों के पास; 10 और सिर्फ ये कहा कि गरीबों को याद रखना, मगर मैं खुद ही इसी काम की कोशिश में हूँ, 11 और जब कैफा अंतकिया शहर में आया तो मैंने ८ — ब — ८ होकर उसकी मुखिलिकत की, क्यूँकि वो मलामत के लायक था। 12 इस लिए कि याँकूब की तरफ से चन्द लोगों के आने से पहले तो वो गैर — कौम वालों के साथ खाया करता था, मगर जब वो आ गए तो मध्यनों से डर कर बाज़ रहा और किनारा किया। 13 और बाकी यहदी ईमानदारों ने भी उसके साथ होकर रियाकारी की यहाँ तक कि बरनबास भी उसके साथ रियाकारी में पड़ गया। 14 जब मैंने देखा कि वो खुशबुबरी की सच्चाई के मुताबिक सीधी चाल नहीं चलते, तो मैंने सब के सामने कैफा से कहा, “जब तू बावजूद यहदी होने के गैर कौमों की तरह जिन्दी गुजारता है न कि यहदियों की तरह तो गैर कौमों को यहदियों की तरह चलने पर क्यूँ मजबूर करता है?” 15 जबकि हम पैदाइश से यहदी हैं, और गुनहगार गैर कौमों में से नहीं। 16 तो भी ये जान कर कि आदीमी शरी'अत के आमाल से नहीं बल्कि सिर्फ इंसा मरीह पर ईमान लाने से रास्तबाज ठहरता है खुद भी मरीह ईंसा पर ईमान लाने से रास्तबाज ठहरता है क्योंकि शरी'अत के आमाल से कोई भी बशर रास्त बाज न ठहरेगा। 17 और हम जो मरीह में रास्तबाज ठहरना चाहते हैं, अगर खुद ही गुनहगार निकले तो क्या मरीह गुनाह का जरिया है? हरगिज नहीं! 18 क्यूँकि जो कुछ मैंने शरी'अत को ढां दिया अगर उसे फिर बनाऊँ, तो अपने आप को कुसुबार ठहराता हूँ। 19 चुनाँचे मैं शरी'अत ही के वरीले से शरी'अत के एतिबार से मारा गया, ताकि खुदा के एतिबार से जिंदा हो जाऊँ। 20 मैं मरीह के साथ मसलूब हुआ हूँ, और अब मैं जिंदा न रहा बल्कि मरीह मुझ में जिंदा है; और मैं जो अब जिसमें जिन्दी गुजारता हूँ तो खुदा के बेटे पर ईमान लाने से गुजारता हूँ, जिसने मुझे से मुहब्लत रखी और अपने आप को मेरे लिए मौत के हवाले कर दिया। 21 मैं खुदा के फजल को बेकार नहीं करता, क्यूँकि रास्तबाजी अगर शरी'अत के वसीले से मिलती, तो मरीह का मरना बेकार होता।

3 ऐ नादान गलतियो, किसने तुम पर जाद कर दिया? तुम्हारी तो गोया अँखों के सामने इंसा मरीह सलीब पर दिखाया गया। 2 मैं तुम से सिर्फ ये गुजारिश करना चाहता हूँ: कि तुम ने शरी'अत के आ'माल से पाक स्ह को पाया या ईमान की खुशबुबरी के पैगाम से? 3 क्या तुम ऐसे नादान हो कि पाक स्ह के तौर पर शुरू करके अब जिसम के तौर पर काम पूरा करना चाहते हो? 4 क्या तुमने इतनी तकलीफि बे फाइदा उठाई? मगर शायद बे फाइदा नहीं। 5 पर जो तुम्हें पाक स्ह बख्शता और तुम मैं मोजिजे जाहिर करता है, क्या वो शरी'अत के आ'माल से ऐसा करता है या ईमान के खुशबुबरी के पैगाम से? 6 चुनाँचे “अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया और ये उसके लिए रास्तबाजी गिना गया।” 7 पस जान लो कि

जो ईमानवाले हैं, वही अब्रहाम के फरजन्द हैं। 8 और किताब — ए — मुकद्दस ने पहले से ये जान कर कि खुदा गैर कौमों को ईमान से रास्तबाज ठहराएगा, पहले से ही अब्रहाम को ये खुशखबरी सुना था, “तैर जरिए सब कैमें बर्कत पाएँगी।” 9 इस पर जो ईमान वाले हैं, वो ईमानदार अब्रहाम के साथ बर्कत पाते हैं। 10 क्यूंकि जितने शरी'अत के आ'माल पर तकिया करते हैं, वो सब ला'नत के मातहत हैं; चुनौचे लिखा है, “जो कोई उन सब बातों को जो किताब में से लिखी है, क्राईम न रहे वो ला'नती है।” 11 और ये बात साफ़ है कि शरी'अत के बसीले से कोई इंसान खुदा के नजदीक रास्तबाज नहीं ठहरता, क्यूंकि कलाम में लिखा है, रास्तबाज ईमान से जीता रहेगा। 12 और शरी'अत को ईमान से कुछ वास्ता नहीं, बल्कि लिखा है, “जिसने इन पर 'अमल किया, वो इनकी वजह से जीता रहेगा।” 13 मसीह जो हमारे लिए ला'नती बना, उसने हमें मोल लेकर शरी'अत की ला'नत से छुड़ाया, क्यूंकि कलाम में लिखा है, “जो कोई लकड़ी पर लटकाया गया वो ला'नती है।” 14 ताकि मसीह ईसा में अब्रहाम की बर्कत गैर कौमों तक भी पहुँचे, और हम ईमान के बसीले से उस स्ह को हासिल करें जिसका वांदा हुआ है। 15 ऐ भाइयों! मैं इसाने दियत के तौर पर कहता हूँ कि अगर आदमी ही का 'अहद हो, जब उसकी तस्दीक हो गई हो तो कोई उसको बातिल नहीं करता और ना उस पर कुछ बढ़ाता है। 16 पस अब्रहाम और उसकी नस्ल से वादे किए गए। वो ये नहीं कहता, नस्लों से, जैसा बहुतों के वास्ते कहा जाता है: बल्कि जैसा एक के वास्ते, तेरी नस्ल को और वो मसीह है। 17 मेरा ये मतलब है: जिस 'अहद की खुदा ने पहले से तस्दीक की थी, उसको शरी'अत चार सौ तीस बरस के बाद अकर बातिल नहीं कर सकती कि वो वांदा लअहासिल हो। 18 क्यूंकि अगर मीरास शरी'अत की वजह से मिली है तो वादे की वजह से ना है, मगर अब्रहाम को खुदा ने वादे ही की राह से बर्खी। 19 पस शरी'अत क्या रही? वो नाफरमानी की वजह से बाद में दी गई कि उस नस्ल के अने तक रहे, जिससे वांदा किया गया था; और वो फरिशों के बसीले से एक दरमियानी की मारिफत मुकर्रर की गई। 20 अब दर्मियानी एक का नहीं होता, मगर खुदा एक ही है। 21 पस क्या शरी'अत खुदा के वांदों के खिलाफ़ है? हरपिज़ नहीं! क्यूंकि अगर कोई ऐसी शरी'अत दी जाती जो जिन्दगी बरबंध सकती तो, अलबत्ता रास्तबाजी शरी'अत की वजह से होती। 22 मगर किताब — ए — मुकद्दस ने सबको गुनाह के मातहत कर दिया, ताकि वो वांदा जो ईसा मसीह पर ईमान लाने पर मौक़ूफ़ है, ईमानदारों के हक्क में पूरा किया जाए। 23 ईमान के अने से पहले शरी'अत की मातहती में हमारी निगहबानी होती थी, और उस ईमान के अने तक जो जाहिर होनेवाला था, हम उसी के पाबन्द रहे। 24 पस शरी'अत मसीह तक पहुँचने को हमारा उस्ताद बनी, ताकि हम ईमान की वजह से रास्तबाज ठहरें। 25 मगर जब ईमान आ चुका, तो हम उस्ताद के मातहत ना रहे। 26 क्यूंकि तुम उस ईमान के बसीले से जो मसीह ईसा में है, खुदा के फर्जन्द हो। 27 और तुम सब, जितनों ने मसीह मैं शामिल होने का बपतिस्मा लिया मसीह को पहन लिया। 28 न कोई यहदी रहा, न कोई यूनानी, न कोई गुलाम, ना आजाद, न कोई मर्द, न औरत, क्यूंकि तुम सब मसीह 'ईसा में एक ही हो। 29 और अगर तुम मसीह के हो तो अब्रहाम की नस्ल और वादे के मुताबिक वारिस हो।

4 और मैं ये कहता हूँ कि वारिस जब तक बच्चा है, अगरचे वो सब का

मालिक है, उसमें और गुलाम में कुछ फर्ज नहीं। 2 बल्कि जो मैं आद बाप ने मुकर्रर की उस वक्त तक सरपरस्तों और मुख्तारों के इश्तियार में रहता है। 3 इसी तरह हम भी जब बच्चे थे, तो दुनियावी इन्विटार्ड बातों के पाबन्द होकर गुलामी की हालत में रहे। 4 लेकिन जब वक्त पूरा हो गया, तो खुदा ने अपने बेटे को भेजा जो 'औरत से पैदा हुआ और शरी'अत के मातहत पैदा हुआ, 5

ताकि शरी'अत के मातहतों को मोल लेकर छुड़ा ले और हम को लेपालक होने का दर्जा मिले। 6 और चैकि तुम बेटे हो, इसलिए खुदा ने अपने बेटे का स्ह हमारे दिलों में भेजा जो 'अब्बा'याँनी ऐ बाप, कह कर पुकारता है। 7 पस अब तू गुलाम नहीं बल्कि बेटा है, और जब बेटा हुआ तो खुदा के बसीले से वारिस भी हुआ। 8 लेकिन उस वक्त खुदा से नवाकिफ होकर तुम उन मा'बद्दों की गुलामी में थे जो अपनी जात से खुदा नहीं, 9 मगर अब जो तुम ने खुदा को पहचाना, बल्कि खुदा ने तुम को पहचाना, तो उन कमज़ोर और निकम्पी शुस्तारी बातों की तरफ किस तरह फिर रुँ' होते हो, जिनकी दुबारा गुलामी करना चाहते हो? 10 तुम दिनों और महीनों और मुकर्रर बक्तों और बरसों को मानते हो। 11 मुझे तुहरे बारे में डर लगता है, कही ऐसा न हो कि जो मेहनत मैंने तुम पर की है बेकार न हो जाए 12 ऐ भाइयों! मैं तुमसे गुजारिश करता हूँ कि मेरी तरह हो जाओ, क्यूंकि मैं भी तुम्हारी तरह हूँ, तुम ने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। 13 बल्कि तुम जानते हो कि मैंने पहली बार 'जिस्म की कमज़ोरी की वजह से तुम को खुशखबरी सुनाई थी। 14 और तुम ने मेरी उस जिस्मानी हालत को, जो तुम्हारी आजमाइश का जरिया थी, ना हक्कीर जाना, न उससे नफरत की; और खुदा के फरिशते बल्कि मसीह ईसा की तरह मुझे मान लिया। 15 पस तुहरा वो खुशी मनाना कहाँ गया? मैं तुम्हारा गवाह हूँ कि हो सकता तो तुम अपनी आँखें भी निकाल कर मुझे दे देते। 16 तो क्या तुम से सच बोलने की वजह से मैं तुम्हारा दुश्मन बन गया? 17 वो तुहरे दोस्त बनाने की कोशिश तो करते हैं, मार नेक नियत से नहीं; बल्कि वो तुहरे अलग करना चाहते हैं, ताकि तुम उन्हीं को दोस्त बनाने की कोशिश करो। 18 लेकिन ये अच्छी बात है कि नेक अप्र में दोस्त बनाने की हर वक्त कोशिश की जाए, न सिर्फ जब मैं तुम्हरे पास मोज़द हूँ। 19 ऐ मेरे बच्चों, तुम्हारी तरफ से मुझे फिर बच्चा जानने के से दर्द लगे हैं, जब तक कि मसीह तुम मैं सरत न पकड़ ले। 20 जी चाहता है कि अब तुहरे पास मौजूद होकर और तरह से बोलूँ क्यूंकि मुझे तुम्हारी तरफ से शब्द है। 21 मुझ से कहो तो, तुम जो शरी'अत के मातहत होना चाहते हो, क्या शरी'अत की बात को नहीं सुनो 22 ये कलाम में लिखा है कि अब्रहाम के दो बेटे थे; एक लौटी से और एक आजाद से। 23 मगर लौटी का जिस्मानी तौर पर, और आजाद का बेटा वांदे के वजह से पैदा हुआ। 24 इन बातों में मिसाल पाई जाती है: इसलिए ये 'औरतें गोया दो; अहद हैं। एक कोह-ए-सीना पर का जिस से गुलाम ही पैदा होते हैं, वो हाजारा है। 25 और हाजारा 'अरब का कोह-ए-सीना है, और मौजूदा येस्शलेम उसका जबाब है, क्यूंकि वो अपने लड़कों समेत गुलामी मैं है। 26 मगर 'आलम — ए — बाला का येस्शलेम आजाद है, और वही हमारी माँ है। 27 क्यूंकि लिखा है, 'कि ऐ बौद्ध, जिसके औलाद नहीं होती खुशी मनह, तू जो दर्द — ए — जिह से नावाकिफ है, आबाज ऊँची करके चिल्ला; क्यूंकि बेकस छोड़ी हुई की औलाद है शौहर बातों की औलाद से ज्यादा होगी। 28 पस ऐ भाइयों! हम इज्हाक की तरह वांदे के फर्जन्द हैं। 29 और जैसे उस वक्त जिस्मानी पैदाइश वाला स्त्रीहीन पैदाइश वाले को सताता था, वैसे ही अब भी होता है। 30 मगर किताब — ए — मुकद्दस क्या कहती है? ये कि 'लौटी और उसके बेटे को निकाल दे, क्यूंकि लौटी का बेटा आजाद के साथ हरगिज़ वारिस न होगा।' 31 पस ऐ भाइयों! हम लौटी के फर्जन्द नहीं, बल्कि आजाद के हैं।

5 मसीह ने हमे आजाद रहने के लिए आजाद किया है; पस काईम रहो, और दोबारा गुलामी के जुबे में न ज्ञातो। 2 सुनो, मैं पौलस तुम्हे कहता हूँ कि अगर तुम खतना कराओगे तो मसीह से तुम को कुछ फ़ाइदा न होगा। 3 बल्कि मैं हर एक खतना करने वाले आदमी पर फिर गवाही देता हूँ, कि उसे तमाम शरी'अत पर' अमल करना फ़र्ज है। 4 तुम जो शरी'अत के बसीले से रास्तबाज

ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग हो गए और फज्जल से महस्म। 5 क्यूँकि हम पाक स्ह के जरिए, ईमान से रास्तबाजी की उम्मीद बर आने के मुन्तजिर हैं। 6 और मसीह ईसा में न तो खतना कुछ काम का है न नामाख्तनी मगर ईमान जो मुहब्बत की राह से असर करता है। 7 तुम तो अच्छी तरह दौड़ रहे थे किसने तुम्हें हक के मानने से रोक दिया। 8 ये तरलीब खुदा जिसने तुम्हें बुलाया उस की तरफ से नहीं है। 9 थोड़ा सा खमीर सारे गैंधी हुए आटे को खमीर कर देता है। 10 मुझे खुदावन्द में तुम पर ये भरोसा है कि तुम और तरह का ख्याल न करोगे; लेकिन जो तुम्हें उलझा देता है, वो चाहे कोई हो सजा पाएगा। 11 और ऐ भाइयों! अगर मैं अब तक खतना का एलान करता हूँ, तो अब तक तस्ताया क्यूँ जाता हूँ? इस सूरत में तो सलीब की ठोकर तो जाती रही। 12 काश कि तुम्हें बेकरार करने वाले अपना तअल्लुक तोड़ लेते। 13 ऐ भाइयों! तुम आजादी के लिए बुलाए तो गए हो, मगर ऐसा न हो कि ये आजादी जिस्मानी बातों का मौका, बने; बल्कि मुहब्बत की राह पर एक दूसरे की खिड़मत करो। 14 क्यूँकि पूरी शरी' अत पर एक ही बात से 'अमल हो जाता है, या, नी इससे कि 'तू अपने पड़ोसी से अपनी तरह मुहब्बत रख।' 15 लेकिन अगर तुम एक दूसरे को फाड़ खाते हो, तो खबरदार रहना कि एक दूसरे को खम न कर दो। 16 मगर मैं तुम से ये कहता हूँ, स्ह के मुताबिक चलो तो जिस की ख्वाहिश को हरगिज पूरा न करोगे। 17 क्यूँकि जिस्म स्ह के खिलाफ ख्वाहिश करता है और स्ह जिस्म के खिलाफ है, और ये एक दूसरे के मुखालिक है, ताकि जो तुम चाहो वो न करो। 18 और अगर तुम पाक स्ह की हिदायत से चलते हो, तो शरी' अत के मातहत नहीं रहे। 19 अब जिस्म के काम तो जाहिर है, यानी कि हरामकारी, नापाकी, शहवत परस्ती, 20 बुत परस्ती, जादूगरी, अदावतें, झगड़ा, हसद, गुस्सा, तप्सके, जुदाइशें, बिद'अतें, 21 अदावत, नशाबाजी, नाच रंग और इनकी तरह, इनके जरिए तुम्हें पहले से कहे देता हूँ जिसको पहले बता चुका हूँ कि ऐसे काम करने वाले खुदा की बादशाही के वारिस न होंगे। 22 मगर पाक स्ह का फल पुढ़ब्बत, खुर्जी, इमानान, सब, मेहरबानी, नेकी, ईमानदारी 23 हलीम, परहेजगारी है; ऐसे कामों की कोई शरी; अत मुखालिक नहीं। 24 और जो मसीह ईसा के हैं उन्होंने जिस्म को उसकी रागबतों और ख्वाहिशों समेत सलीब पर खीच दिया है। 25 अगर हम पाक स्ह की वजह से जिंदा हैं, तो स्ह के मुवाफिक चलना भी चाहिए। 26 हम बेजा फख्त करके न एक दूसरे को चिढ़ाएँ, न एक दूसरे से जरों।

6 ऐ भाइयों! अगर कोई आदमी किसी कुसर में पकड़ा भी जाए तो तुम जो स्हानी हो, उसको नर्म मिजाजी से बहाल करो, और अपना भी ख्याल रख कठी तु भी आजमाइश में न पड़ जाए। 2 तुम एक दूसरे का बोझ उठाओ, और यूँ मसीह की शरी' अत को पूरा करो। 3 क्यूँकि अगर कोई शख्स अपने आप को कुछ समझे और कुछ भी न हो, तो अपने आप को धोखा देता है। 4 पस हर शख्स अपने ही काम को आजमाले, इस सूरत में उसे अपने ही बारे में फख्त करने का मौका'होगा न कि दूसरे के बारे में। 5 क्यूँकि हर शख्स अपना ही बोझ उठाएगा। 6 कलाम की तालीम पानेवाला, तालीम देनेवालों को सब अच्छी चीजों में शरीक करे। 7 धोखा न खाओ; खुदा ठड़ों में नहीं उड़ाया जाता, क्यूँकि आदमी जो कुछ बोता है वही काटेगा। 8 जो कोई अपने जिस्म के लिए बोता है, वो जिस्म से हलात की फस्ल काटेगा। (aiōnios g166) 9 हम नेक काम करने में हिम्मत न हों, क्यूँकि अगर बेदिल न होंगे तो 'सही वक्त पर काटेंगे। 10 पस जहाँ तक मौका मिले सबके साथ नेकी करें खासकर अहले ईमान के साथ। 11 देखो, मैंने कैसे बड़े बड़े हरफों में तुम को अपने हाथ से लिखा है। 12 जितने लोग जिस्मानी जाहिर होना चाहते हैं वो तुम्हें खतना करने

पर मजबूर करते हैं, सिर्फ इसलिए कि मसीह की सलीब के बजह से सताए न जाए। 13 क्यूँकि खतना करने वाले खुद भी शरी' अत पर अमल नहीं करते, मगर तम्हारा खतना इस लिए कराना चाहते हैं, कि तुम्हारी जिस्मानी हालत पर फख्त करें। 14 लेकिन खुदा न करे कि मैं किसी चीज पर फख्त, करूँ सिवा अपने खुदावन्द मसीह ईसा की सलीब के, जिससे दुनिया मेरे एतिबार से। 15 क्यूँकि न खतना कुछ चीज है न नामाख्तनी, बल्कि नए सिरे से मध्यलूक होना। 16 और जितने इस कर्दै पर चले उन्हें, और खुदा के इमाइल को इत्मीनान और रहम हासिल होता रहे। 17 आगे को कोई मुझे तकलीफ न दे, क्यूँकि मैं अपने जिस्म पर मसीह के दाग लिए फिरता हूँ। 18 ऐ भाइयों! हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फज्जल तुम्हारे साथ रहे। अमीन

इफिसियों

1 पौलुस की तरफ से जो खुदा की मर्जी से ईसा मसीह का रसूल है, उन

मुकद्दसों के नाम खत जो इफिसुस शहर में हैं और ईसा मसीह 'में ईमानदार हैं: 2 हमारे बाप खुदा और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ से तुम्हें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे। 3 हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के खुदा और बाप की हम्द हो, जिसने हम को मसीह में आसमानी मुकामों पर हर तरह की स्थानी बर्कत बरखा। 4 चुनाँचे उसने हम को दुनियाँ बनाने से पहले उसमें चुन लिया, ताकि हम उसके नज़दीक मुहब्बत में पाक और बेंगल हों। 5 खुदा अपनी मर्जी के नेक इरादे के मुवाफ़िक हमें अपने लिए पहले से मुकर्रर किया कि ईसा मसीह के बरीले से खुदा लेपालक बेटे हों, 6 ताकि उसके उस फ़ज़ल के जलाल की सिताइश हो जो हमें उसमें 'ईसा के खुन के बरीले से मखलसी, यानी कुसूरों की सु'आफ़ी उसके उस फ़ज़ल की दौलत के मुवाफ़िक हासिल है, 8 जो खुदा ने हर तरह की हिक्मत और दानाई के साथ क्षसरत से हम पर नाज़िल किया 9 चुनाँचे उसने अपनी मर्जी के राज को अपने उस नेक इरादे के मुवाफ़िक हम पर ज़ाहिर किया, जिसे अपने में ठहरा लिया था 10 ताकि जमाने के पेरे होने का ऐसा इन्तज़ाम हो कि मसीह में सब चीज़ों का मज़म'आ हो जाए, चाहे वो आसमान की हों चाहे जमीन की। 11 उसी में हम भी उसके इरादे के मुवाफ़िक जो अपनी मर्जी की मसलेहत से सब कुछ करता है, पहले से मुकर्रर होकर मीरास बने। 12 ताकि हम जो पहले से मसीह की उम्मीद में थे, उसके जलाल की सिताइश का ज़रिया हो 13 और उसी में तुम पर भी, जब तुम ने कलाम — ए — हक्क को सुना जो तुहारी नज़ार की खुशखबरी है और उस पर ईमान लाए, वादा की हई पाक स्थ की मुहर लगी। 14 पाक स्थ ही खुदा की मिल्कियत की मखलसी के लिए हमारी मीरास की पेशाई है, ताकि उसके जलाल की सिताइश हो। 15 इस वजह से मैं भी उस ईमान का, जो तुम्हारे दरमियान खुदावन्द 'ईसा' पर है और सब मुकद्दसों पर ज़ाहिर है, हाल सुनकर। 16 तुम्हारे ज़रिए शुक़र करने से बा'ज़ नहीं आता, और अपनी 'दु'आओं में तुम्हें याद किया करता है। 17 कि हमारे खुदावन्द 'ईसा' मसीह का खुदा जो जलाल का बाप है, तुम्हें अपनी पहचान में हिक्मत और मुकाशिफ़ा की स्थ बरखों, 18 और तुम्हारे दिल की आँखें रोशन हो जाएँ ताकि तुम को मालूम हो कि उसके ब्लाने से कैसी कुछ उम्मीद है, और उसकी मीरास के जलाल की दौलत मुकद्दसों में कैसी कुछ है, 19 और हम ईमान लानेवालों के लिए उसकी बड़ी कुदरत क्या ही अज़ीम है। उसकी बड़ी कुव्वत की तासीर के मुवाफ़िक, 20 जो उसने मसीह में की, जब उसे मुर्दा में से जिला कर अपनी दहनी तरफ आसमानी मुकामों पर बिठाया, 21 और हर तरह की हुक्मत और इज़ित्यार और कुदरत और रियासत और हर एक नाम से बहत ऊँचा किया, जो न सिर्फ़ इस जहान में बल्कि अनेवाले जहान में भी लिया जाएगा; (aiōn g165) 22 और सब कुछ उसके पाँव तले कर दिया; और उसको सब चीज़ों का सरदार बनाकर कलीसिया को दे दिया, 23 ये 'ईसा का बदन है, और उसी की मामूरी जो हर तरह से सबका मामूर करने वाला है।

2 और उसने तुम्हें भी ज़िन्दा किया जब अपने कुसरों और गुनाहों की वजह

से मुर्दा थे। 2 जिनमें तुम पहले दुनियाँ की रविश पर चलते थे, और हवा की 'अमलदारी' के हाकिम यानी तुम स्थ की पैरवी करते थे जो अब नाफ़रमानी के फ़रज़न्दों में तासीर करती है। (aiōn g165) 3 इनमें हम भी सबके सब पहले अपने जिस की ख्वाहिशों में ज़िन्दगी गुजारते और जिस्म और 'अक्ल' के इरादे पुरे करते थे, और दूसरों की तरह फ़ितरत गज़ब के फ़र्ज़न्द थे। 4 मगर खुदा ने अपने रहम की दौलत से, उस बड़ी मुहब्बत की वजह से जो उसने हम से की,

5 कि अगर्चे हम अपने गुनाहों में मुर्दा थे तो भी उसने हमें मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया आपको खुदा के फ़ज़ल ही से नज़ार मिली है 6 और मसीह ईसा में शामिल करके उसके साथ जिलाया, और आसमानी मुकामों पर उसके साथ बिठाया। 7 ताकि वो अपनी उस महरबानी से जो मसीह ईसा में हम पर है, अनेवाले जमाने में अपने फ़ज़ल की अज़ीम दौलत दिखाए। (aiōn g165) 8 क्यौंकि तुम को ईमान के बरीते फ़ज़ल ही से नज़ार मिली है, और ये तुहारी तरफ से नहीं, खुदा की बाख्यिश है, 9 और न 'आमाल की बजह से है, ताकि कोई फ़छु न करे। 10 क्यौंकि हम उसकी कारीगरी हैं, और ईसा मसीह में उन नेक 'आमाल के बासते पैदा हुए जिनको खुदा ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया था। 11 पस याद करो कि तुम जो जिस्म में हाथ से किए हुए खतें की वजह से कहलाते हैं, तुम को नामज़दान कहते हैं। 12 अगले जमाने में मसीह से जुदा, और ईसाईल की सल्तनत से अलग, और जादे के 'अहदों' से नावाकिफ़, और नाउमीद और दुनियाँ में खुदा से जुदा थे। 13 मगर तुम जो पहले दूर थे, अब ईसा मसीह में मसीह के खून की वजह से नज़दीक हो गए हो। 14 क्यौंकि वही हमारी सुलह है, जिसने दोनों को एक कर लिया और ज़दाई की दीवार को जो बीच में थी ढी दिया, 15 चुनाँचे उसने अपने जिस के ज़रिए से दुश्मनी, यानी वो शरीर अत जिसके हुक्म ज़ाविरों के तौर पर थे, मौक़ूफ़ कर दी ताकि दोनों से अपने आप में एक नया ईसान पैदा करके सुलह करा दे; 16 और सर्तीब पर दुश्मनी को मिटा कर और उसकी वजह से दोनों को एक तन बना कर खुदा से मिलाए। 17 और उसने आ कर तुम यहदी जो खुदा के नज़दीक थे, और गैर यहदी जो खुदा से दूर थे दोनों को सुलह की खुशखबरी दी। 18 क्यौंकि उसी के बरीले से हम दोनों की, एक ही स्थ में बाप के पास रसाई होती है। 19 पस अब तुम परदेसी और मुसाफ़िर नहीं रहे, बल्कि मुकद्दसों के हमवतन और खुदा के घराने के हो गए। 20 और रसूलों और नवियों की नीब पर, जिसके कोने के सिरे का पथर खुद ईसा मसीह है, तापीर किए गए हो। 21 उसी में हर एक 'इमारत मिल — मिलाकर खुदावन्द में एक पाक मन्दिस बनता जाता है। 22 और तुम भी उसमें बाहम ता'मीर किए जाते हो, ताकि स्थ में खुदा का मस्कन बनो।

3 इसी वजह से मैं पौलुस जो तुम गैर — कौम वालों की खातिर ईसा मसीह का कैरी हूँ।

2 शायद तुम ने खुदा के उस फ़ज़ल के इन्तज़ाम का हाल सुना होगा, जो तुम्हारे लिए मुझ पर हुआ। 3 यानी ये कि वो भेद मुझे मुकाशिफ़ा से मालूम हुआ। चुनाँचे मैंने पहले उसका थोड़ा हाल लिया है, 4 जिसे पढ़कर तुम मालूम कर सकते हो कि मैं मसीह का वो राज किस कदर समझता हूँ। 5 जो और जमाने में बनी आदम को इस तरह मालूम न हुआ था, जिस तरह उसके मुकद्दस रसूलों और नवियों पर पाक स्थ में अब ज़ाहिर हो गया है; 6 यानी ये कि ईसा मसीह में गैर — कौम खुशखबरी के बरीले से मीरास में शरीक और बदन में शामिल और वांदों में दाखिल है। 7 और खुदा के उस फ़ज़ल की बाख्यिश से जो उसकी कुदरत की तासीर से मुझ पर हुआ, मैं इस खुशखबरी का खादिम बना। 8 मुझ पर जो सब मुकद्दसों में छोटे से छोटा हूँ, फ़ज़ल हुआ कि गैर — कौमों को मसीह की बेक्यास दौलत की खुशखबरी दूँ। 9 और सब पर ये बात रोशन कहूँ कि जो राज अज़ल से सब चीज़ों के पैदा करनेवाले खुदा में छुपा रहा उसका क्या इन्तज़ाम है। (aiōn g165) 10 ताकि अब कलीसिया के बरीले से खुदा की तरह तप्प की हिक्मत उन हुक्मतवालों और इज़ित्यार वालों के जो आसमानी मुकामों में हैं, मालूम हो जाए। 11 उस अज़ली इरादे के जो उसने हमारे खुदावन्द ईसा मसीह में किया था, (aiōn g165) 12 जिसमें हम को उस पर ईमान रखने की वजह से दिलेती है और भरोसे के साथ रसाई।

13 पस मैं गुजारिश करता हूँ कि तुम मेरी उन मुसीबतों की वजह से जो तुम्हारी खातिर सहता हूँ हिम्मत न हारो, क्यौंकि वो तुम्हारे लिए 'इज्जत का ज़रिया हैं। 14 इस वजह से मैं उस बाप के आगे घुटने टेकता हूँ, 15 जिससे आसमान और ज़मीन का हर एक खानदान नामज़द है। 16 कि वो अपने जलाल की दौलत के मुवाफिक तुम्हें ये 'इनायत करे कि तुम खुदा की स्वर्ह से अपनी बातिनी इंसान दियत में बहुत ही ताकतवर हो जाओ, 17 और ईमान के बरीले से मसीह तुम्हारे दिलों में स्वकृत करे ताकि तुम मुहब्बत में जड़ पकड़ के और बुनियाद काईम करके, 18 सब मुकद्दसों समेत बखूबी माल्यूम कर सको कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई और ऊँचाई और गहराई कितनी है, 19 और मसीह की उस मुहब्बत को जान सको जो जानने से बाहर है ताकि तुम खुदा की सारी माल्यी तक माल्यर हो जाओ। 20 अब जो ऐसा कादित है कि उस कुदरत के मुवाफिक जो हम में तासीर करती है, हामारी गुजारिश और ख्याल से बहुत ज्यादा काम कर सकता है, 21 कलीसिया में और ईसा मसीह में पुरत — दर — पुरत और हमेशा हमेशा उसकी बड़ाई होती रहे। आमिन। (aión g165)

4 पस मैं जो खुदावन्द में कैदी हूँ, तुम से गुजारिश करता हूँ कि जिस बुलावे

से तुम बुलाए गए थे उसके मुवाफिक चाल चलो, 2 यानी कमाल दरियाई और नर्मदिल के साथ सब करके मुहब्बत से एक दूसरे की बर्दीशत करो; 3 सुलह सलामती के बंधन में रहकर स्व की सौगात काईम रखने की पूरी कोशिश करें 4 एक ही बदन है और एक ही स्व; चुनाँचे तुम्हें जो बुलाए गए थे, अपने बुलाए जाने से उम्मीद भी एक ही है। 5 एक ही खुदावन्द, है एक ही ईमान है, एक ही बपतिस्मा, 6 और सब का खुदा और बाप एक ही है, जो सब के ऊपर और सब के दर्मियान और सब के अन्दर है। 7 और हम में से हर एक पर मसीह की बाल्लिश के अंदर जै। 8 इसी बास्ते वो फरमाता है, “जब वो 'आलम — ए — बाला पर चढ़ा तो कैटियों को साथ ले गया, और आदिमियों को इन 'आम दिए।” 9 (उसके चढ़ने से और क्या पाया जाता है?) सिवा इसके कि वो ज़मीन के नीचे के 'इलाके में उत्तरा भी था। 10 और ये उत्तरने वाला वही है जो सब आसमानों से भी ऊपर चढ़ गया, ताकि सब चीजों को माल्यूम करे। 11 और उसी ने कुछ को स्सल, और कुछ को नवी, और कुछ को मुबशिर, और कुछ को चरवाहा और उस्तद बनाकर दे दिया। 12 ताकि मुकद्दस लोग कामिल बनें और खिदमत गुजारी का काम किया जाए, और मसीह का बदन बढ़ जाएँ, 13 जब तक हम सब के सब खुदा के बेटे के ईमान और उसकी पहचान में एक न हो जाएँ और पूरा इंसान न बनें, यानी मसीह के पुरे कद के अन्दर जै तक न पहुँच जाएँ। 14 ताकि हम आगे को बच्चे न रहें और आदिमियों की बाजीगरी और मक्कारी की वजह से उनके गुमराह करनेवाले इरादों की तरफ हर एक तालीम के झोंके से मौजों की तरह उछलते बहते न फिरें 15 बल्कि मुहब्बत के साथ सच्चाई पर काईम रहकर और उसके साथ जो सिर है, या; नी मसीह के साथ, पैवस्ता हो कर हर तरह से बढ़ते जाएँ। 16 जिससे सारा बदन, हर एक जोड़ की मिटद से पैवस्ता होकर और गठ कर, उस तासीर के मुवाफिक जो बकद — ए — हर हिस्सा होती है, अपने आप को बढ़ाता है ताकि मुहब्बत में अपनी तरक्की करता जाए। 17 इस लिए मैं ये कहता हूँ और खुदावन्द में जाता देता हूँ कि जिस तरह गैर — कीमें अपने बेहदा ख्यालात के मुवाफिक चलती हैं, तुम आइन्दा को उस तरह न चलना। 18 क्यौंकि उनकी 'अक्ल तारीक हो गई है, और वो उस नादानी की वजह से जो उनमें है और अपने दिलों की सख्ती के ज़रिए खुदा की ज़िन्दगी से अलग है। 19 उहोंने खामोशी के साथ शब्दत परस्ती को इस्तियार किया, ताकि हर तरह के गन्दे काम बड़े शोक से करें। 20 मगर तुम ने मसीह की ऐसी तालीम नहीं पाई। 21 बल्कि तुम ने उस सच्चाई के मुताबिक जो ईसा में है, उसी की सुनी

और उसमें ये तालीम पाई होगी। 22 कि तुम अपने अगले चाल — चलन की पुरानी इंसान दियत को उतार डालो, जो धोखे की शहवतों की वजह से खराब होती जाती है 23 और अपनी 'अक्ल की स्वानी हालात में नै बनते जाओ, 24 और नई इंसान दियत को पहनो जो खुदा के मुताबिक सच्चाई की रस्तबाज़ी और पाकीजगी में पैदा की गई है। 25 पस झूठ बोलना छोड़ कर हर एक शब्द अपने पडोसी से सच बोले, क्यौंकि हम आपस में एक दूसरे के 'बदन हैं। 26 गुस्सा तो करो, मगर गुनाह न करो। सूरज के ढूबने तक तुम्हारी नाराज़गी न रहे, 27 और इब्लिस को मौका न दो। 28 चोरी करने वाला फिर चोरी न करे, बल्कि अच्छा हुनर इस्तियार करके हाथों से मेहनत करे ताकि मुहताज़ को टेने के लिए उसके पास कुछ हो। 29 कोई गन्दी बात तुम्हारे मूँह से न निकले, बल्कि वही जो ज़स्तर के मुवाफिक तरक्की के लिए अच्छी हो, ताकि उससे सुनने वालों पर फ़ज़ल हो। 30 और खुदा के पाक स्व हक को गमानीन करो, जिससे तुम पर रिहाई के दिन के लिए मुहर है। 31 हर तरह की गर्म मिजाजी, और कहर, और गुस्सा, और शेर — ओ — गुल, और बुराई, हर किसी की बद ख्वाही समेत तुम से दूर की जाएँ। 32 और एक दूसरे पर मेहरबान और नर्मदिल हो, और जिस तरह खुदा ने मसीह में तुम्हारे कुसर मुआफ़ किए हैं, तुम भी एक दूसरे के कुसर मुआफ़ करो।

5 पस 'अज्जीज बेटों की तरह खुदा की तरह बनो, 2 और मुहब्बत से चलो जैसे मसीह ने तुम से मुहब्बत की, और हारो बास्ते अपने आपको खुशबू की तरह खुदा की नज़र करके कुर्बान किया। 3 जैसे के मुकद्दसों को मुनासिब है, तुम में हरामकारी और किसी तरह की नापाकी या लालच का ज़िक्र तक न हो; 4 और न बेशर्मी और बेहदा गोई और रठा बाजी का, क्यौंकि यह लायक नहीं; बल्कि बर अक्स इसके शुक गुजारी हो। 5 क्यौंकि तुम ये खब जानते हो कि किसी हरामकार, या नापाक, या लालची की जो बुत परस्त के बराबर है, मसीह और खुदा की बादशाही में कुछ मीरास नहीं। 6 कोई तुम को बे पाइदा बातों से धोखा न दे, क्यौंकि इही गुनाहों की वजह से नाफ़रमानों के बेटों पर खुदा का गजब नाजिल होता है। 7 पस उके कामों में शरीक न हो। 8 क्यौंकि तुम पहले अंधेरे थे; मगर अब खुदावन्द में नूर हो, पस नूर के बेटे की तरह चलो, 9 (इसलिए कि नूर का फल हर तरह की नेकी और रास्तबाज़ी और सच्चाई है) 10 और तर्जुबे से मालूम करते रहो के खुदावन्द को क्या पसन्द है। 11 और अंधेरे के बे फल कामों में शरीक न हो, बल्कि उन पर मलामत ही किया करो। 12 क्यौंकि उन के छपे हुए कामों का ज़िक्र भी करना शर्म की बात है। 13 और जिन चीजों पर मलामत होती है जो सब नूर से ज़ाहिर होती है, क्यौंकि जो कुछ ज़ाहिर किया जाता है वो रोशन हो जाता है। 14 इसलिए वो कलाम में फरमाता है, “ऐ सोने वाले, जाग और मुर्दों में से जी उठ, तो मसीह का नूर तुम पर चमकेगा।” 15 पस गौर से देखो कि किस तरह चलते हो, नादानों की तरह नहीं बल्कि अक्लतमंदों की तरह चलो; 16 और वक्त को गनीमत जानो क्यौंकि दिन बेरे हैं। 17 इस वजह से नादान न बनो, बल्कि खुदावन्द की मर्जी को समझो कि क्या है। 18 और शराब में मतवाले न बनो क्यौंकि इससे बदचलनी पेश आती है, बल्कि पाक स्व से मालूम होते जाओ, 19 और आपस में दुआएँ और गीत और स्वानी गज़लें गाया करो, और दिल से खुदावन्द के लिए गते बजाते रहा करो। 20 और सब बातों में हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के नाम से हमेशा खुदा बाप का शुक्र करते रहो। 21 और मसीह के खौफ से एक दूसरे के फरमाबरदार रहो। 22 ऐ बीवियो, अपने शौहरों की ऐसी फरमाबरदार रहो जैसे खुदावन्द की। 23 क्यौंकि शौहर बीवी का सिर है, जैसे के मसीह कलीसिया का सिर है और वो खुद बदन का बचाने वाला है। 24 लेकिन जैसे कलीसिया मसीह की फरमाबरदार है, वैसे बीवियाँ भी हर बात में अपने शौहरों

की फरमाबरदार हों। 25 ऐ शौहरो! अपनी बीवियों से मुहब्बत रखें, जैसे मसीह ने भी कलीसिया से मुहब्बत करके अपने आप को उसके बास्ते मौत के हवाले कर दिया, 26 ताकि उसको कलाम के साथ पानी से गुस्ल देकर और साफ करके मुकद्दस बनाए, 27 और एक ऐसी जलाल वाली कलीसिया बना कर अपने पास हाजिर करें, जिसके बदन में दाग या झुर्णी या कोई और ऐसी चीज़ न हो, बल्कि पाक और बैरेब हो। 28 इसी तरह शौहरों को ज़स्ती है कि अपनी बीवियों से अपने बदन की तरह मुहब्बत रखें। जो अपने बीवी से मुहब्बत रखता है, वो अपने आप से मुहब्बत रखता है। 29 क्यूँकि कभी किसी ने अपने जिस्म से दुश्मनी नहीं की बल्कि उसको पालता और परवरिश करता है, जैसे कि मसीह कलीसिया को। 30 इसलिए कि हम उसके बदन के 'हिस्सा हैं। 31 "इसी बजह से आदमी बाप से और माँ से जुदा होकर अपनी बीवी के साथ रहेगा, और वो दोनों एक जिस्म होंगे।" 32 ये राज तो बड़ा है, लेकिन मैं मसीह और कलीसिया के जरिए कहता हूँ। 33 बहरहाल तुम में से भी हर एक अपनी बीवी से अपनी तरह मुहब्बत रखें, और बीवी इस बात का खयाल रखें कि अपने शौहर से डरती रहे।

6 ऐ फर्जन्दो! खुदावन्द में अपने माँ — बाप के फरमाबरदार रहो, क्यूँकि यह ज़स्ती है। 2 "अपने बाप और माँ की इज्जत कर (ये पहला हृत्क है जिसके साथ वांदा भी है) 3 ताकि तेरा भला हो, और तेरी जमीन पर उम्र लम्बी हो।"

4 ऐ ओलाद वालों! तुम अपने फर्जन्दों को शुस्सा न दिलाओ, बल्कि खुदावन्द की तरफ से तरबियत और नसीहत दे देकर उनकी परवरिश करो। 5 ऐ नौकरों! जो जिस्मानी तौर से तुम्हारे मालिक हैं, अपनी साफ दिली से डरते और काँपते हुए उनके ऐसे फरमाबरदार रहो जैसे मसीह के; 6 और आदमियों को खुश करनेवालों की तरह दिखावे के लिए खिदमत न करो, बल्कि मसीह के बन्दों की तरह दिल से खुदा की मर्जी पूरी करो। 7 और खिदमत को आदमियों की नहीं बल्कि खुदावन्द की जान कर, जी से करो। 8 क्यूँकि, तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे गुलाम हो या चाहे आजाद, खुदावन्द से वैसा ही पाएगा। 9 और ऐ मलिको! तुम भी धमकियाँ छोड़ कर उनके साथ ऐसा सुलक करो; क्यूँकि तुम जानते हो उनका और तुम्हारा दोनों का मालिक आसमान पर है, और वो किसी का तरफदार नहीं। 10 गरज खुदावन्द में और उसकी कुदरत के ज़ेर में मजबूत बनो। 11 खुदा के सब हथियार बाँध लो ताकि तुम इन्वास के इरादों के मुकाबिले मैं काईम रह सको। 12 क्यूँकि हमें खन और गोश्ट से कुश्ती नहीं करना है, बल्कि हृकूमतवालों और इश्कियार वालों और इस दुनियाँ की तारीकी के हाकिमों और शरारत की उन स्थानी फौजों से जो आसमानी मुकामों में हैं। (aiōn g165) 13 इस बास्ते खुदा के सब हथियार बाँध लो ताकि बुरे दिन में मुकाबिला कर सको, और सब कामों को अंजाम देकर काईम रह सको। 14 पस सच्चाई से अपनी कमर कसकर, और रास्तबाजी का बद्रत लगाकर, 15 और पाँव में सुलह की खुशखबरी की तैयारी के जूते पहन कर, 16 और उन सब के साथ ईमान की सिपर लगा कर काईम रहो, जिससे तुम उस शरीर के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको; 17 और नजार का टोप, और स्ह की तलवार, जो खुदा का कलाम है ले लो; 18 और हर बक्त और हर तरह से स्ह में दुआ और मिन्नत करते रहो, और इसी गरज से जागते रहो कि सब मुकद्दसों के बास्ते बिला नागा दुआ किया करो, 19 और मेरे लिए भी ताकि बोलने के बक्त मुझे कलाम करने की तौफीक हो, जिससे मैं खुशखबरी के राज को दिलेरी से जाहिर करूँ, 20 जिसके लिए जंजीर से जकड़ा हआ एल्ची हूँ, और उसको ऐसी दिलेरी से बयान करूँ जैसा बयान करना मुझ पर फर्ज है। 21 तुखिकुस जो प्यारा भाई खुदावन्द में दियानतदार खादिम है, तुम्हें सब बातें बता देगा ताकि तुम भी मेरे हाल से बाकिफ हो जाओ कि मैं किस तरह रहता हूँ। 22

उसको मैं ने तुम्हारे पास इसी बास्ते भेजा है कि तुम हमारी हालत से बाकिफ हो जाओ और वो तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे। 23 खुदा बाप और खुदावन्द ईसा मसीह की तरफ से भाइयों को इत्मीनान हासिल हो, और उनमें ईमान के साथ मुहब्बत हो। 24 जो हमारे खुदावन्द ईसा मसीह से लाजवाल मुहब्बत रखते हैं, उन सब पर फ़जल होता रहे।

फिलिप्पियों

1 मसीह ईसा के बन्दों पौलस और तीमुथियुम की तरफ से, फिलिप्पियों शहर के सब मुकद्दरों के नाम जो मसीह ईसा में हैं; निगहबानों और खादियों समेत खत। 2 हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ से तुहें फ़ज़ल और इत्मीनान हासिल होता रहे। 3 मैं जब कभी तुहें याद करता हूँ, तो अपने खुदा का शक्त बजा लाता हूँ; 4 और हर एक दुआ में जो तुम्हारे लिए करता हूँ, हमेशा खुर्ची के साथ तुम सब के लिए दरखास्त करता हूँ। 5 इस लिए कि तुम पहले दिन से लेकर आज तक खुशखबरी के फैलाने में शरीक रहे हो। 6 और मुझे इस बात का भरोसा है कि जिस ने तुम में नेक काम शुरू किए है, वो उसे ईसा मसीह के अपने तक पूरा कर देगा। 7 चुनौत्ये जस्ती है कि मैं तुम सब के बारे में ऐसा ही ख्याल करूँ, क्योंकि तुम मेरे दिल में रहते हो, और कैट और खुशखबरी की जबाब दिही और सुखाने में तुम सब मेरे साथ फ़ज़ल में शरीक हो। 8 खुदा मेरा गवाह है कि मैं ईसा मसीह जैसी महब्बत करके तुम सब को चाहता हूँ। 9 और ये दुआ करता हूँ कि तुम्हारी मुहब्बत 'इल्म और हर तरह की तमीज़ के साथ और भी ज्यादा होती जाए। 10 ताकि 'अच्छी अच्छी बातों को पसन्द कर सको, और मसीह के दीन में पाक साफ दिल रहो, और ठोकर न खाओ; 11 और रास्ताबाजी के फल से जो ईसा मसीह के जरिए से है, भरे रहो, ताकि खुदा का जलाल जाहिर हो और उसकी सिंताइश की जाए। 12 ए भाईयो! मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि जो मुझ पर गुजरा, वो खुशखबरी की तरक्की का जरिए हुआ। 13 यहाँ तक कि मैं कैसरी सिपाहियों की सारी पलटन और बाकी सब लोगों में मशहूर हो गया कि मैं मसीह के वास्ते कैद हूँ; 14 और जो खुदावन्द में भाई है, उनमें अक्सर मैं कैद होने के जरिए से दिलों होकर बेज़ौफ़ खुदा का कलाम सुनाने की ज्यादा हिम्मत करते हैं। 15 कुछ तो हसद और झगड़े की वजह से मसीह का ऐलान करते हैं और कुछ नेक निती से। 16 एक तो मुहब्बत की वजह से मसीह का ऐलान करते हैं कि मैं खुशखबरी की जवाबदेही के वास्ते मुकर्रर हूँ। 17 अगर दूसरे तफ़क की वजह से न कि साफ़ दिली से, बल्कि इस ख्याल से कि मेरी कैद में मेरे लिए मुरीबत पैदा करें। 18 पस क्या हुआ? सिर्फ़ ये की हर तरह से मसीह की मनादी होती है, चाहे बहाने से हो चाहे सच्चाई से, और इस से मैं खुश हूँ और रहँगा भी। 19 क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम्हारी दु; आ और 'ईसा मसीह के स्वर के इन आम से इन का अन्जाम मेरी नजात होगा। 20 चुनौत्ये मेरी दिली अरज़ और उम्मीद यही है कि, मैं किसी बात में शर्मन्दा न हूँ बल्कि मेरी कामाल दिलेनी के जरिए जिस तरह मसीह की ताजीम मेरे बदन की वजह से हमेशा होती रही है उसी तरह अब भी होगी, चाहे मैं जिंदा रहूँ चाहे मरूँ। 21 क्योंकि जिंदा रहना मेरे लिए मसीह और मरना नफ़ा। 22 लेकिन अगर मेरा जिसमें जिंदा रहना ही मेरे काम के लिए फ़ाइदा है, तो मैं नहीं जानता किसे पसन्द करूँ। 23 मैं दोनों तरफ़ फ़ैसा हुआ हूँ, मेरा जी तो ये चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ, क्योंकि ये बहुत ही बेहतर है; 24 मगर जिसमें रहना तुम्हारी खातिर ज्यादा जस्ती है। 25 और चूँकि मुझे इसका यकीन है इसलिए मैं जानता हूँ कि जिंदा रहँगा, ताकि तुम ईमान में तरक्की करो और उस में खुश रहो; 26 और जो तुम्हें मुझ पर फ़ख़ू है वो मेरे फिर तुम्हारे पास आनेसे मसीह ईसा में ज्यादा हो जाए। 27 सिर्फ़ ये करो कि मसीह में तुम्हारा चाल चलन मसीह के खुशखबरी के मुताफ़िक रहे ताकि, चाहे मैं आँख़ और तुहें देखूँ, चाहे न आँख़, तुम्हारा हाल सन्ति कि तुम एक स्वर में काईम हो, और ईंजील के ईमान के लिए एक जान होकर कोशिश करते हो, 28 और किसी बात में मुखालिकों से दहशत नहीं खाते। ये उनके लिए हलाकत का साफ़ निशान है; लेकिन तुम्हारी नजात का और ये खुदा की तरफ से है। 29

क्यूँकि मसीह की खातिर तुम पर ये फ़ज़ल हुआ कि न सिर्फ़ उस पर ईमान लाओ बल्कि उसकी खातिर दुःख भी सहो; 30 और तुम उसी तरह मेहनत करते रहो जिस तरह मुझे करते देखा था, और अब भी सुनते हो की मैं वैसा ही करता हूँ।

2 पर अगर कुछ तसल्ली मसीह में और मुहब्बत की दिलजम'इ और स्व की शराकत और रहमदिली और — दर्द मर्दी है, 2 तो मेरी खुशी पूरी करो कि एक दिल रहो, यक्सी मुहब्बत रखो एक जान हो, एक ही ख्याल रखेंगो। 3 तफ़के और बेजा फ़ऱु के बारे में कुछ न करो, बल्कि फ़रोतनी से एक दूसरे को अपने से बेहतर समझो। 4 हर एक अपने ही अहवाल पर नहीं, बल्कि हर एक दूसरों के अहवाल पर भी न जरूर रखेंगे। 5 वैसा ही मिजाज रखो जैसा मसीह ईसा का भी था; 6 उसने आगरे खुदा की सूरत पर था, खुदा के बराबर होने को कब्ज़े के रखने की चीज़ न समझा। 7 बल्कि अपने आप को खाली कर दिया और खादिम की सूरत इख्लियार की और ईसान :०० के मुशाबह हो गया। 8 और ईसानी सूरत में जाहिर होकर अपने आप को पस्त कर दिया और यहाँ तक फरमाँबरदार रहा कि मौत बल्कि सलीबी मौत गंवारा की। 9 इसी वास्ते खुदा ने भी उसे बहुत सर बुलन्द किया और उसे वो नाम बछाना जो सब नामों से 'आला है 10 ताकि 'ईसा के नाम पर हर एक घुटना झुकें; चाहे आसामानियों का हो चाहे ज़मीनियों का, चाहे उनका जो ज़मीन के निचे हैं। 11 और खुदा बाप के जलाल के लिए हर एक जबान इकरार करो कि 'ईसा मसीह खुदावन्द है। 12 पस ए मेरे अज़ीज़ों जिस तरह तुम हमेशा से फरमाँबरदारी करते आए हो उसी तरह न सिर्फ़ मेरी हाज़िरी में, बल्कि इससे बहुत ज्यादा मेरी गैर हाज़िरी में डरते और काँपते हुए एपनी नजात का काम किए जाओ; 13 क्यूँकि जो तुम में नियत और 'अमल दोनों को, अपने नेक इशादे को अन्जाम देने के लिए पैदा करता आए हो उसी तरह न सिर्फ़ मेरी हाज़िरी में, बल्कि इससे बहुत ज्यादा मेरी गैर हाज़िरी में डरते और काँपते हुए एपनी नजात का काम किए जाओ; 14 क्यूँकि जो तुम में नियत और 'अमल दोनों को, अपने नेक इशादे को अन्जाम देने के लिए पैदा करता वा खुदा है। 15 सब काम शिकायत और तकरार बौरी किया करो, 15 ताकि तुम बे ऐब और भोले हो कर टेढ़े और कज़रौ लोगों में खुदा के बेनुक्स फ़र्ज़न बने रहो [जिनके बीच दुरिया में तुम चारों की तरह दिखाइ देते हो, 16 और ज़िन्दगी का कलाम पेश करते हो]; ताकि मसीह के वापस आने के दिन मुझे तुम पर फ़ख़ू हो कि न मेरी टौड — धूप बे फ़ाइदा हुई, न मेरी मेहनत अकारत गई। 17 और अगर मुझे तुम्हारे ईमान की कुर्बानी और खिदमत के साथ अपना खुन भी बहाना पड़े, तो भी खुश हूँ और तुम सब के साथ खुशी करता हूँ। 18 तुम भी इसी तरह खुश हो और मेरे साथ खुशी करो। 19 मुझे खुदावन्द 'ईसा में खुशी है उम्मीद है कि तीमुथियुस को तुम्हारे पास जल्द भेज़ौंगा, ताकि तुम्हारा अहवाल दरयापत करके मेरी भी खातिर जमा हो। 20 क्यूँकि कोई ऐसा हम ख्याल मेरे पास नहीं, जो साफ़ दिली से तुम्हारे लिए फ़िक्रमन्द हो। 21 सब अपनी अपनी बातों के फ़िक्र में हैं, न कि ईसा मसीह की। 22 लेकिन तुम उसकी पुरुतगी से वाकिफ़ हो कि जैसा बेटा बाप की खिदमत करता है, वैसे ही उसने मेरे साथ खुशखबरी फैलाने में खिदमत की। 23 पस मैं उम्मीद करता हूँ कि जब अपने हाल का अन्जाम मालाम कर लूँगा तो उसे फौरन भेज दूँगा। 24 और मुझे खुदावन्द पर भरोसा है कि मैं आप भी जल्द आँऊँगा। 25 लेकिन मैं नै ईफ़ूटीदितुस को तुम्हारे पास भेजना जस्ती समझा। वो मेरा भाई, और हम खिदमत, और मसीह का सिपाही, और तुम्हारा कासिद, और मेरी हाजत रफ़ाकरने के लिए खादिम है। 26 क्यूँकि वो तुम सब को बहुत चाहता था, और इस वास्ते बे करार रहता था कि तूने उसकी बीमारी का हाल सुना था। 27 बेशक वो बीमारी से मरने को था, मगर खुदा ने उस पर रहम किया, सिर्फ़ उस ही पर नहीं बल्कि मुझ पर भी ताकि मुझे गम पर गम न हो। 28 इसी लिए मुझे उसके भेजने का और भी ज्यादा ख्याल हुआ कि तुम भी उसकी मूलाकात से फिर खुश हो जाओ, और मेरा भी गम घट जाए। 29 पस तुम उससे खुदावन्द में कमाल खुशी के साथ मिलना,

और ऐसे शख्सों की इज्जत किया करो, 30 इसलिए कि वो मसीह के काम की खातिर मरने के करीब हो गया था, और उसने जान लगा दी ताकि जो कर्मी तुम्हारी तरफ से मेरी खिदमत में हुई उसे पूरा करे।

3 गरज मेरे भाइयों! खुदावन्द में खुश रहो। तुम्हें एक ही बात बार — बार लिखने में मुझे तो कोई दिक्कत नहीं, और तुम्हारी इस में हिफाजत है। 2 कर्ताओं से खबरदार रहो, बदकारों से खबरदार रहो कटवाने वालों से खबरदार रहो। 3 क्योंकि मस्तून तो हम हैं जो खुदा की स्थ की हिदायत से खुदा की इबादत करते हैं, और मसीह पर फ़ख़ुर करते हैं, और जिस्म का भरोसा नहीं करते। 4 अगर्चे मैं तो जिस्म का भी भरोसा कर सकता हूँ। अगर जिसी और को जिस्म पर भरोसा करने का ख्याल हो, तो मैं उससे भी ज्यादा कर सकता हूँ। 5 आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इसाईंली की क्रौम और बिनायामीन के कबीले का हूँ, इबरामियो, का इब्रानी और शरी'अत के ऐतिवार से फरीसी हूँ 6 जोश के एतबार से कलीसिया का, सतानेवाला, शरी'अत की रास्तबाजी के ऐतबार से वे ऐत्तबार, 7 लेकिन जितनी चीज़ें मेरे नफ़े' की थी उन्हीं को मैंने मसीह की खातिर नुकसान समझ लिया है। 8 बल्कि मैंने अपने खुदावन्द मसीह 'ईसा की पहचान की बड़ी खुशी की बजह से सब चीजों का नुकसान उठाया और उनको कहड़ा समझता हूँ ताकि मसीह को हासिल करूँ 9 और उस में पाया जाऊँ, न अपनी उस रास्तबाजी के साथ जो शरी'अत की तरफ से है, बल्कि उस रास्तबाजी के साथ जो मसीह पर ईमान लाने की बजह से है और खुदा की तरफ से ईमान पर मिलती है; 10 और मैं उसको और उसके जी उठने की कुदरत को, और उसके साथ दुखों में शरीक होने को मालूम करूँ, और उसकी मौत से मुशाबहत पैदा करूँ 11 ताकि किसी तरह मुर्दों में से जी उठने के दर्जे तक पहुँचूँ 12 अगर्चे ये नहीं कि मैं पा चुका या कामिल हो चुका हूँ, बल्कि उस चीज़ को पकड़ने को दौड़ा हुआ जाता हूँ जिसके लिए मसीह ईसा ने मुझे पकड़ा था। 13 ऐ भाइयों! मेरा ये गुमान नहीं कि पकड़ चुका हूँ; बल्कि सिर्फ़ ये करता हूँ कि जो चीज़ पिछे रह गई उनको भूल कर, आगे की चीजों की तरफ बढ़ा हुआ। 14 निशाने की तरफ दौड़ा हुआ जाता हूँ, ताकि उस इनाम को हासिल करूँ जिसके लिए खुदा ने मुझे मसीह 'ईसा में ऊपर बुलाया है। 15 पस हम में से जितने कामिल हैं यही ख्याल रखें, और अगर जिसी बात में तुम्हारा और तरह का ख्याल हो तो खुदा उस बात को तुम पर भी जाहिर कर देगा। 16 बहरहाल जहाँ तक हम पहुँचे हैं उसी के मुताबिक चलें। 17 ऐ भाइयों! तुम सब मिलकर मेरी तरह बनो, और उन लोगों की पहचान रखो जो इस तरह चलते हैं जिसका नमूना तुम हम में पाते हो; 18 क्योंकि बहत सरो ऐसे हैं जिसका ज़िक्र मैंने तुम से बाबार किया है, और अब भी रो रो कर कहता हूँ कि वो अपने चाल — चलन से मसीह की सलीबि के दुश्मन हैं। 19 उनका अन्जाम हलतक है, उनका खुदा पेट है, वो अपनी शर्म की बातों पर फ़ख़ुर करते हैं और दुनिया की चीजों के ख्याल में रहते हैं। 20 मगर हमारा बतन असमान पर है हम एक मुन्जी यानी खुदावन्द 'ईसा मसीह के बहाने से आने के इन्तिज़ार में हैं। 21 वो अपनी उस ताकत की तासीर के मुवाफ़िक, जिससे सब चीजें अपने ताबें कर सकता है, हमारी पस्त हाली के बदन की शक्ति बदल कर अपने जलाल के बदन की सूरत बनाएगा।

4 इस बास्ते ऐ मेरे प्यारे भाइयों! जिनका मैं मुरताक हूँ जो मेरी खुशी और ताज हो। ऐ प्यारो! खुदावन्द में इसी तरह काईम रहो। 2 मैं यहुदिया को भी नसीहत करता हूँ और सुनतुखे को भी कि वो खुदावन्द में एक दिल रहे। 3 और ऐ सच्चे हमखिदमत, तुझ से भी दरख्बास्त करता हूँ कि तू उन 'औरतों की मदद कर, क्योंकि उन्होंने खुशखबरी फैलाने में क्लेमेंस और मेरे बाकी उन हम

खिदमतों समेत मेहनत की, जिनके नाम किताब — ए — हयात में दर्ज है। 4 खुदावन्द में हर बक्त खुश रहो; मैं फिर कहता हूँ कि खुश रहो। 5 तुम्हारी नर्म मिजाजी सब आदमियों पर जाहिर हो, खुदावन्द करीब है। 6 किसी बात की फ़िक्र न करो, बल्कि हर एक बात में तुम्हारी दरख्बास्तें दुआ और मिन्नत के वरीले से शुक्रगुजारी के साथ खुदा के सामने पेश की जाएँ। 7 तो खुदा का इत्मीनान जो समझ से बिल्कुल बाहर है, वो तुहारे दिलों और ख्यालों को मसीह 'ईसा में महफूज रखेगा। 8 गरज ऐ भाइयों! जितनी बातें सच हैं, और जितनी बातें शरातक की हैं, और जितनी बातें दिलकश हैं; गरज जो नेकी और ता 'रीफ की बातें हैं, उन पर गौर किया करो। 9 जो बातें तुमने मुझ से सीखी, और हासिल की, और सुनी, और मुझ में देखीं, उन पर अमल किया करो, तो खुदा जो इत्मीनान का चरमा है तुहारे साथ रहेगा। 10 मैं खुदावन्द में बहत खुश हूँ कि अब इतनी मुश्त के बाद तुम्हारा ख्याल मेरे लिए सरसब्ज हुआ; बेशक तुम्हें पहले भी इसका ख्याल था, मगर मौका न मिला। 11 ये नहीं कि मैं मोहताजी के लिहाज से कहता हूँ; क्योंकि मैंने ये सीखा है कि जिस हालत में हूँ उसी पर राजी रहूँ 12 मैं पस्त होना भी जनता हूँ और बढ़ना भी जनता हूँ; हर एक बात और सब हालतों में मैंने सेर होना, भूखा रहना और बढ़ना घटना सीखा है। 13 जो मुझे ताकत बख्शता है, उसमें सब कुछ कर सकता हूँ। 14 तो भी तुम ने अच्छा किया जो मेरी मुसीबियों में शरीक हुए। 15 और ऐ फिलिप्पियों! तुम खुद भी जानते हो कि खुशखबरी के शूरू में, जब मैं मकिनुया से रवाना हुआ तो तुम्हारे सिवा किसी कल्पनिया ने लेने — देने में मेरी मदद न की। 16 चुनाँचे थिसलुनीकियों में भी मेरी एहतियाज रफ़ा' करने के लिए तुमने एक दफ़ा' नहीं, बल्कि दो दफ़ा' कुछ भेजा था। 17 ये नहीं कि मैं ईनाम चाहता हूँ बल्कि ऐसा फल चाहता हूँ जो तुम्हारे हिसाब से ज्यादा हो जाए। 18 मेरे पास सब कुछ है, बल्कि बहुतायत से है; तुम्हारी भेजी हुई चीजों इप्पिद्रस्त के हाथ से लेकर मैं अपसदा हो गया हूँ, जो खुदा को पसन्दीदा है। 19 मेरा खुदा अपनी दौलत के मुवाफ़िक जलाल से मसीह 'ईसा में तुम्हारी हर एक कमी रफ़ा' करेगा। 20 हमारे खुदा और बाप की हमेशा से हमेशा तक बड़ाई होती रहे आर्मिन (aiōn g165) 21 हर एक मुकद्दस से जो मसीह 'ईसा में है सलाम कहो। जो भाई मेरे साथ है तुम्हें सलाम कहते हैं। 22 सब मुकद्दस खुसूसन, कैसर के घर बाले तुम्हें सलाम कहते हैं। 23 खुदावन्द 'ईसा मसीह का फ़जल तुम्हारी रुह के साथ रहे।

कुलस्सियों

1 यह खत पौलुस की तरफ से है जो खुदा की मर्जी से मसीह ईसा का सूल है। साथ ही यह भाई तीमिथियस की तरफ से भी है। 2 मैं कृत्स्ने शहर के मुकद्दस भाईयों को लिख रहा हूँ जो मसीह पर ईमान लाए हैं: खुदा हमारा बाप आप को फ़जल और सलामती बख्ती। 3 जब हम तुम्हारे लिए दुआ करते हैं तो हर वक्त खुदा अपने खुदावन्द ईसा मसीह के बाप का शुक्र करते हैं, 4 क्यूँकि हमने तुम्हारे मसीह ईसा पर ईमान और तुम्हारी तमाम मुकद्दसीन से मुहब्बत के बारे में सुन लिया है। 5 तुम्हारा यह ईमान और मुहब्बत वह कुछ जाहिर करता है जिस की तुम उम्मीद रखते हो और जो आस्मान पर तुम्हारे लिए महबूज रखा गया है। और तुम में यह उम्मीद उस वक्त से रखी है जब से तुम ने पहली मर्तबा सच्चाई का कलाम यानी खुदा की खुशखबरी सुनी। 6 यह पैगाम जो तुम्हारे पास पहुँच गया पूरी दुनिया में फल ला रहा और बढ़ रहा है, बिल्कुल उसी तरह जिस तरह यह तुम में भी उस दिन से काम कर रहा है जब तुम ने पहली बार इसे सुन कर खुदा के फ़जल की पूरी हकीकत समझ ली। 7 तुम ने हमारे अजीज इमण्डिमत इफ़कास से इस खुशखबरी की तालीम पाली थी। मसीह का यह वफादार खादिम हमारी जगह तुम्हारी खिदमत कर रहा है। 8 उत्ती ने हमें तुम्हारी उस मुहब्बत के बारे में बताया जो स्थ — उल — कुद्दस ने तुम्हारे दितों में डाल दी है। 9 इस वजह से हम तुम्हारे लिए दुआ करने से बाज नहीं आए बल्कि यह माँगते रहते हैं कि खुदा तुम को हर स्थानी हिक्मत और समझ से नवाज़ कर अपनी मर्जी के इल्म से भर दे। 10 क्यूँकि फिर ही तुम अपनी जिन्दगी खुदावन्द के लायक गुजार सकोगे और हर तरह से उत्ते पसन्द आओगे। हाँ, तुम हर किस्म का अच्छा काम करके फल लाओगे और खुदा के इल्म — औ — 'इफ़कान में तरक्की करोगे। 11 और तुम उसी की जलाली कुदरत से मिलें वाली हर किस्म की ताकत से मजबूती पा कर हर वक्त साबितकदर्मी और सब्र से चल सकोगे। 12 और बाप का शुक्र करते रहे जिस ने तुम को उस मीरास में हिस्सा लेने के लायक बना दिया जो उसकी रोशनी में रहने वाले मुकद्दसीन को हासिल है। 13 क्यूँकि वही हमें अंधेरे की गिरफ्त से रिहाई दे कर अपने प्यारे फ़र्जन्द की बादशाही में लाया, 14 उस एक शरख के इश्तियार में जिस ने हमारा फ़िदया दे कर हमारे गुनाहों को मुआफ़ कर दिया। 15 खुदा को देखा नहीं जा सकता, लेकिन हम मसीह को देख सकते हैं जो खुदा की सूरत और कायानात का पहलौटा है। 16 क्यूँकि खुदा ने उत्ती में सब कुछ पैदा किया, चाहे आस्मान पर हो या जमीन पर, आँखों को नजर आए, या न नजर आए, चाहे शाही तख, कुब्बें, हुक्मरान या इश्तियार वाले हों। सब कुछ मसीह के जरिए और उसी के लिए पैदा हुआ। 17 वही सब चीज़ों से पहले है और उत्ती में सब कुछ काईम रहता है। 18 और वह बदन याजी अपनी जमाअत का सर भी है। वही शुभआत है, और चूँकि पहले वही मर्दी में से जी उठा इस लिए वही उन में से पहलौटा भी है ताकि वह सब बातों में पहले हो। 19 क्यूँकि खुदा को पसन्द आया कि मसीह में उस की पूरी मामूली सुकूनत करे। 20 और वह मसीह के ज़रिए सब बातों की अपने साथ सुलह करा ले, चाहे वह जमीन की हों चाहे आस्मान की। क्यूँकि उस ने मसीह के सरीब पर बहाए गए खन के बसीले से सुलह — सलामती काईम की। 21 तुम भी पहले खुदा के सामने अजननी थे और दुमन की तरह सोच रख कर बुरे काम करते थे। 22 लौकिन अब उस ने मसीह के इंसानी बदन की मौत से तुम्हारे साथ सुलह कर ली है ताकि वह तुमको मुकद्दस, बेदाम और बेल्जाम हालत में अपने सामने खड़ा करे। 23 बेशक अब ज़र्सी है कि तुम ईमान में काईम रहो, कि तुम ठोस बुनियाद पर मजबूती से खड़े रहो और उस खुशखबरी की उम्मीद से हट न जाओ जो तुम ने सुन ली है। यह

वही पैगाम है जिस का एलान दुनिया में हर मञ्ज़ूक के सामने कर दिया गया है और जिस का खादिम मैं पौलस बन गया हूँ। 24 अब मैं उन दुर्खों के जरिए खुशी मनाता हूँ जो मैं तुम्हारी खातिर उठा रहा हूँ। क्यूँकि मैं अपने जिसमें मसीह के बदन यानी उस की जमाअत की खातिर मसीह की मुसीबियों की वह कमियाँ पूरी कर रहा हूँ जो अब तक रह गई हैं। 25 हाँ, खुदा ने मुझे अपनी जमाअत का खादिम बना कर यह जिम्मेदारी दी कि मैं तुम को खुदा का पूरा कलाम सुना हूँ, 26 वह बातें जो शुरू से तमाम गुज़री नसलों से छुपा रहा था लेकिन अब मुकद्दसीन पर जाहिर की गई है। (aiōn g165) 27 क्यूँकि खुदा चाहाता था कि वह जान ले कि गैरयदियों में यह राज किताना बेशकीयती और जलाली है। और यह राज है क्या? यह कि मसीह तुम में है। वही तुम में है जिस के जरिए हम खुदा के जलाल में शरीक होने की उम्मीद रखते हैं। 28 यूँ हम सब को मसीह का पैगाम सुनते हैं। हर मुक्किन हिक्मत से हम उन्हें समझाते और तालीम देते हैं ताकि हर एक को मसीह में कामिल हालत में खुदा के सामने पेश करें। 29 यही मुक्सद पूरा करने के लिए मैं सख्त मेहनत करता हूँ। हाँ, मैं पूरे जड़ — ओ — जहद करके मसीह की उस ताकत का सहारा लेता हूँ जो बड़े जोर से मेरे अन्दर काम कर रही है।

2 मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो कि मैं तुम्हारे लिए किस कदर ज़ॉफ़िशानी कर रहा हूँ — तुम्हारे लिए, लौदीकिया शहर बालों के लिए और उन तमाम ईमानदारों के लिए भी जिन की मैं साथ मुलाकात नहीं हूँ। 2 मेरी कोशिश यह है कि उन की दिली हौसला अफ़ज़ाई की जाए और वह मुहब्बत में एक हो जाएँ, कि उन्हें वह ठोस भरोसा हासिल हो जाए जो पूरी समझ से पैदा होता है। क्यूँकि मैं चाहता हूँ कि वह खुदा का राज जान लें। राज क्या है? मसीह खुद। 3 उसी में हिक्मत और इल्म — ओ — 'इफ़कान के तमाम खजाने छुपे हैं। 4 गरज़ खबरदार रहें कि कोई तुमको बजाहिर सही और मीठे मीठे अल्फ़ज़ार से धोखा न दे। 5 क्यूँकि गरचे मैं जिसके लिहाज़ से हाजिर नहीं हूँ, लेकिन स्थ में मैं तुम्हारे साथ हूँ। और मैं यह देख कर खुश हूँ कि तुम कितनी मुनज्ज़म ज़िन्दगी गुजारते हो, कि तुम्हारी मसीह पर ईमान कितना पुष्टा है। 6 तुमने ईसा मसीह को खुदावन्द के तौर पर कबूल कर लिया है। अब उस में ज़िन्दगी गुजारो। 7 उस में जड़ पकड़ो, उस पर अपनी जिन्दगी तापीर करो, उस ईमान में मज़बूत रहो जिस की तुमको तालीम दी गई है और शुक्रगुज़ारी से लक्षेज़ हो जाओ। 8 होशियार रहो कि कोई तुम को फ़लसफियाना और महज़ धोखा देने वाली बातों से अपने जाल में न फ़ैसा ले। ऐसी बातों का सरचशमा मसीह नहीं बल्कि इसानी रिवायतें और इस दुनियों की ताकतें हैं। 9 क्यूँकि मसीह में खुदाइयत की सारी मामूली मुज़सिम हो कर सुकूनत करती है। 10 और तुम को जो मसीह में है है उस की मामूली में शरीक कर दिया गया है। वही हर हक्मरान और इश्तियार वाले का सर है। 11 उस में आते वक्त तुम्हारा खतना भी करवाया गया। लेकिन यह खतना इंसानी हाथों से नहीं किया गया बल्कि मसीह के बरसीले से। उस वक्त तुम्हारी पुरानी निस्बत उतार दी गई, 12 तुम को बपतिस्मा दे कर मसीह के साथ दफनाया और तुम को ईमान से ज़िन्दा कर दिया गया। क्यूँकि तुम खुदा की कुदरत पर ईमान लाए थे, उसी कुदरत पर जिस ने मसीह को मुर्दी में से ज़िन्दा कर दिया था। 13 पहले तुम अपने गुनाहों और नामरबून ज़िस्मानी हालत की बजह से मुर्दा थे, लेकिन अब खुदा ने तुमको मसीह के साथ ज़िन्दा कर दिया है। 14 उस ने हमारे तमाम गुनाहों को मुआफ़ कर दिया है। 15 और अहकाम की वह दस्तावेज़ जो हमारे खिलाफ़ी थी उसे उस ने रद्द कर दिया। हाँ, उस ने हम से दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड़ दिया। 16 उस ने हक्मरानों और इश्तियार वालों से उन का हाथियार छीन कर सब के सामने उन की स्वर्वाई की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह खुदा के कैदी बन गए और उन्हें फ़तह के ज़ुलूस

में उस के पीछे पीछे चलना पड़ा। 16 चुनौती कोई तुमको इस बजह से मुजरिम न ठहराए कि तुम क्या क्या खाते — पीते या कौन कौन सी ईंदू मनाते हो। इसी तरह कोई तुम्हारी अदालत न करे अगर तुम हक की ईंदू या सबत का दिन नहीं मनाते। 17 यह चीज़ों तो सिर्फ़ आने वाली हकीकत का साथा ही हैं जबकि यह हकीकित खुद मसीह में पाई जाती है। 18 ऐसे लोग तुम को मुजरिम न ठहराएं जो जाहीरी फरोती और फरिश्तों की इवादत पर इसपर करते हैं। बड़ी तपसील से अपनी रोयाओं में देखी हुई बातें बयान करते करते उन के गैरहसनी जहन खावह — म — खावह फूल जाते हैं। 19 यूँ उन्होंने मसीह के साथ लगे रहना छोड़ दिया अगरचे बह बदन का सिर है। वही जोड़ों और पश्तों के जरिए पूरे बदन को सहारा दे कर उस के मुख्तलिफ़ हिस्सों को जोड़ देता है। यूँ पूरा बदन खुदा की मदद से तरकी करता जाता है। 20 तुम तो मसीह के साथ मर कर दुनिया की ताकतों से आजाद हो गए हो। अगर ऐसा है तो तुम जिन्दगी ऐसे क्यूँ गुजारते हो जैसे कि तुम अभी तक इस दुनिया की मिल्कियत हो? तुम क्यूँ इस के अहकाम के ताबे रहते हो? 21 मसलन “इसे हाथ न लगाना, वह न चखना, यह न छाना।” 22 इन तमाम चीजों का मक्सद तो यह है कि इतेमाल हो कर खत्म हो जाएँ। यह सिर्फ़ इंसानी अहकाम और तालीमात हैं। 23 बेशक यह अहकाम जो गढ़ हुए मज्हबी फ़राइज़, नाम — निहाद फ़रोती और जिस्म के सख्त दबाओं का तकाज़ा करते हैं हिक्मत पर मुहसिर तो लगते हैं, लेकिन यह बेकार हैं और सिर्फ़ जिस्म ही की ख्वाहिशत पूरी करते हैं।

3 तुम को मसीह के साथ जिन्दा कर दिया गया है, इस लिए वह कछ तलाश करो जो अस्मान पर है जहाँ मसीह खुदा के दहने हाथ बैठा है। 2 दुनियावी चीजों को अपने खयालों का मर्कज़ न बनाओ बल्कि अस्मानी चीजों को। 3 क्यूँकि तुम मर गए हो और अब तुम्हारी जिन्दगी मसीह के साथ खुदा में छुपी है। 4 मसीह ही तुम्हारी जिन्दगी है। जब वह जाहिर हो जाएगा तो तुम भी उस के साथ जाहिर हो कर उस के जलाल में शरीक हो जाओगे। 5 चुनौती उन दुनियावी चीजों को मार डालो जो तुम्हरे अन्दर काम कर रही हैं: जिनाकारी, नापाकी, शहवतपरस्ती, बुरी ख्वाहिशत और लालच (लालच तो एक क्रिस्म की बुतपरस्ती है)। 6 खुदा का ग़ज़ब ऐसी ही बातों की बजह से नाजिल होगा। 7 एक बक्तव्य था जब तुम भी इन के मुताबिक जिन्दगी गुजारते थे, जब तुम्हारी जिन्दगी इन के कांब में थी। 8 लेकिन अब बक्तव्य आ गया है कि तुम यह सब कछ यानी गुस्सा, तैश, बदस्लकी, बुहान और गन्दी जबान खस्ताहाल कपड़े की तरह उतार कर फेंक दो। 9 एक दूसरे से बात करते बक्तव्य झट मत बोलना, क्यूँकि तुमने अपनी पुरानी फितरत उस की हरकतों समेत उतार दी है। 10 साथ साथ तुमने नई फितरत पहन ली है, वह फितरत जिस की ईजाद हमारा खालिक अपनी सूरत पर करता जा रहा है ताकि तुम उसे और बेहतर तौर पर जान लो। 11 जहाँ यह काम हो रहा है वहाँ लोगों में कोई फर्क नहीं है, चाहे कोई गैरयहदी हो या यहदी, मरजून हो या नामरजून, गैरयूनानी हो या स्कूती, गुलाम हो या आजाद। कोई फर्क नहीं पड़ता, सिर्फ़ मसीह ही सब कुछ और सब में है। 12 खुदा ने तुम को चुन कर अपने लिए खास — और पाक कर लिया है। वह तुम से मुहब्बत रखता है। इस लिए अब तरस, नेकी, फ़रोती, नर्मदिल और सब्र को पहन लो। 13 एक दूसरे को बर्दाशत करो, और अगर तुम्हारी किसी से शिकायत हो तो उसे मुआक कर दो। हाँ, यूँ मुआक करो जिस तरह खुदावन्द ने आप को मुआक कर दिया है। 14 इन के अलावा मुहब्बत भी पहन लो जो सब कुछ बाँध कर कामिलियत की तरफ़ ले जाती है। 15 मसीह की सलामती तुम्हरे दिलों में हुक्मत करे। क्यूँकि खुदा ने तुम को इसी सलामती की जिन्दगी गुजारने के लिए बुला कर एक बदन में शामिल कर दिया है। शुक्रगुजार भी रहो। 16 तुम्हारी जिन्दगी में मसीह के कलाम की पूरी दौलत घर कर जाए। एक दूसरे को हर

तरह की हिक्मत से तालीम देते और समझाते रहो। साथ साथ अपने दिलों में खुदा के लिए शुक्रगुजारी के साथ जबूर, हमद — औ — सना और स्हानी गीत गाते रहो। 17 और जो कुछ भी तुम करो ख्वाह जबानी हो या अमली वह खुदावन्द इसा का नाम ले कर करो। हर काम में उसी के बरीसे से खुदा बाप का शुक्र करो। 18 बीवियों, अपने शौहर के ताबे रहें, क्यूँकि जो खुदावन्द में है उस के लिए यही मुनासिब है। 19 शौहरों, अपनी बीवियों से खुदबूल रखो। उन से तल्ख मिजाजी से पेश न आओ। 20 बच्चे, हर बात में अपने मौं — बाप के ताबे रहें, क्यूँकि यही खुदावन्द को पसन्द है। 21 बालिदो, अपने बच्चों को गुस्सा न करें, बर्ना वह बेदिल हो जाएँगे। 22 गुलामों, हर बात में अपने दुनियावी मालिकों के ताबे रहो। न सिर्फ़ उन के सामने ही और उन्हें खुश रखने के लिए खिदमत करें बल्कि खुल्सादिली और खुदावन्द का खौफ़ मान कर काम करें। 23 जो कुछ भी तुम करते हो उसे पूरी लगन के साथ करो, इस तरह जैसा कि तुम न सिर्फ़ इंसानँ की बल्कि खुदावन्द की खिदमत कर रहे हो। 24 तुम तो जानते हो कि खुदावन्द तुम को इस के मुआवजे में वह मीरास देगा जिस का बादा उस ने किया है। हकीकत में तुम खुदावन्द मसीह की ही खिदमत कर रहे हो। 25 लेकिन जो गलत काम करे उसे अपनी गलियों का मुआवजा भी मिलेगा। खुदा तो किसी की भी तरफ़दारी नहीं करता।

4 मालिकों, अपने गुलामों के साथ मलिकाना और जायज़ सुलूक करें। तुम तो जानते हो कि अस्मान पर तुहारा भी एक ही मालिक और वो खुदा है। 2 दुआ में लगे रहो। और दुआ करते बक्तव्य शुक्रगुजारी के साथ जागते रहो। 3 साथ साथ हमारे लिए भी दुआ करो ताकि खुदा हमारे लिए कलाम सुनाने का दरवाज़ा खोले और हम मसीह का राज पेश कर सकें। आखिर मैं इसी राज की बजह से कैद में हूँ। 4 दुआ करो कि मैं इसे यूँ पेश करूँ जिस तरह करना चाहिए, कि इसे साफ़ समझा जा सके। 5 जो अब तक ईमान न लाए हों उन के साथ अकल्मन्दी का सुलूक करो। इस सिलसिले में हर मौके से फ़ाइदा उठाओ। 6 तुम्हारी बातें हर बक्तव्य मेहरबान हो, ऐसी कि मज़ा आए और तुम हर एक को मुनासिब जवाब दे सको। 7 जहाँ तक मेरा ताल्लुक है हमारा अज़ीज़ भाई तुखिक्स तुम्होंको सब कछ बता देगा। वह एक वफ़ादार खादिम और खुदावन्द में हमसिलिदपत रहा है। 8 मैंने उसे खासकर इस लिए तुहारे पास भेज दिया ताकि तुम को हमारा हाल मालूम हो जाए और वह तुम्हारी हौसला अफ़ज़ाई करे। 9 वह हमारे वफ़ादार और अज़ीज़ भाई उनेसिमुस के साथ तुम्हारे पास आ रहा है, वही जो तुम्हारी जमाअत से है। दोनों तमको वह सब कछ सुना देंगे जो यहाँ हो रहा है। 10 अरिस्तरखुस जो मेरे साथ कैद में है तुम को सलाम कहता है और इसी तरह बरनबास का चचेरा भाई मरकुस भी। (तुम को उस के बारे में हिदायत दी गई है। जब वह तुम्हारे पास आए तो उसे खुशआमदीद कहना।) 11 ईसा जो यूस्तुस कहलाता है भी तुम को सलाम कहता है। उन मैं से जो मेरे साथ खुदा की बादशाही में खिदमत कर रहे हैं सिर्फ़ यह तीन मर्द यहदी हैं। और यह मेरे लिए तसल्ली का जरिया रहे हैं। 12 मसीह ईसा का खादिम इप्रकास भी जो तुम्हारी जमाअत से है सलाम कहता है। वह हर बक्तव्य बड़ी ज़द — औ — जट्ट के साथ तुम्हारे लिए दुआ करता है। उस की खास दुआ यह है कि तुम मज्जती के साथ खड़े रहो, कि तुम बालिम गरीबी बन कर हर बात में खुदा की मज़ी के मुताबिक चलो। 13 मैं खुद ईस की तस्दीक कर सकत हूँ कि उस ने तुम्हारे लिए सख्त मेहनत की है बल्कि लौटीकिया और हियापुलिस की जमाअतों के लिए भी। 14 हमारे अज़ीज़ तबीब लूका और देमास तुम्होंको सलाम कहते हैं। 15 मेरा सलाम लौटीकिया की जमाअत को देना और इसी तरह नुफ़ास को उस जमाअत समेत जो उस के घर में जमा होती है। 16 यह पढ़ने के बाद ध्यान दें कि लौटीकिया की जमाअत में भी यह खत फ़ढ़ा जाए और तुम लौटीकिया का

ख़त भी पढ़ो। 17 अशिंप्पुस को बता देना, खबरदार कि तुम वह खिदमत उस पाए तकमील तक पहुँचाओ जो तुम को खुदावन्द में सौंपी गई है। 18 मैं अपने हाथ से यह अल्फाज लिख रहा हूँ। मेरा यानी पौलुस की तरफ से सलाम। मेरी ज़ंजरिं मत भूलना! खुदा का फ़ज़ल तुम्हारे साथ होता रहे।

1 थिस्सलुनीकियों

1 पौत्रम् और सिलास और नीमुथियुस की तरफ से थिस्सलुनीकियों शहर

की कलीसिया के नाम खत, जो खुदा बाप और खुदा बन्द ईसा मसीह में है, फज्जल और इत्मीनान तम्हें हासिल होता रहे। 2 तुम सब के बारे में हम खुदा का शक्र बजा लाते हैं और अपनी दुआओं में तुम्हें याद करते हैं। 3 और अपने खुदा और बाप के हजूर तुम्हारे ईमान के काम और मुहब्बत की मेहनत और उस उम्मीद के सब्र को बिला नागा याद करते हैं जो हमारे खुदावन्द ईसा मसीह की वजह से है। 4 और ऐ भाइयों! खुदा के प्यारे हम को मालूम है, कि तुम चुने हुए हो। 5 इसलिए कि हमारी खुशखबरी तुम्हारे पास न फक्त लफजी तौर पर पहुँची बल्कि कुदरत और स्थ — उल — कुदूस और पूरे यकीन के साथ भी चुनाँचे तुम जानते हो कि हम तुम्हारी खातिर तुम में कैसे बन गए थे। 6 और तुम कलाम को बड़ी मुसीबत में रह — उल — कुदूस की खुशी के साथ कुबूल करके हमारी और खुदावन्द की मानिन्द बने। 7 यहाँ तक कि मकिदुनिया और अखिया के सब ईमानदारों के लिए नमूना बने। 8 क्यूँकि तुम्हारे हाँ से न फक्त मकिदुनिया और अखिया में खुदावन्द के कलाम का चर्ची फैला है, बल्कि तुम्हारा ईमान जो खुदा पर है हर जगह ऐसा मशहर हो गया है कि हमारे कहने की कुछ जस्त नहीं। 9 इसलिए कि वो आप हमारा जिक्र करते हैं कि तुम्हारे पास हमारा आना कैसा हुआ और तुम बुतों से फिर कर खुदा की तरफ मुखातिव हुए ताकि जिन्दा और हकीकी खुदा की बन्दगी करो। 10 और उसके बेटे के आसमान पर से अपने के इन्तिजार में रहो, जिसे उस ने मुर्दों में से जिलाया यानी ईसा मसीह के जो हम को अपने बाले गजब से बचाता है।

2 ऐ भाइयों! तुम आप जानते हो कि हमारा तुम्हारे पास आना बेफाइदा न

हुआ। 2 बल्कि तुम को मालूम ही है कि बावजूद पहले फिलिप्पी में दुःख उठाने और बेइज्जत होने के हम को अपने खुदा में ये दिलेरी हासिल हुई कि खुदा की खुशखबरी बड़ी जाँकिशानी से तुम्हें सनाएँ। 3 क्यूँकि हमारी नसीहत न गुमराही से है न नापाकी से न धोखे के साथ। 4 बल्कि जैसे खुदा ने हम को मक्कबूल करके खुशखबरी हमारे सुपुर्क की बैसे ही हम बयान करते हैं; आदमियों को नहीं बल्कि खुदा को खुश करने के लिए जो हमारे दिलों को आज्ञामात है। 5 क्यूँकि तुम को मालूम ही है कि न कभी हमारे कलाम में खुशामद पाई गई न लालच का पर्दा बना खुदा इसका गवाह है। 6 और हम न आदमियों से इज्जत चाहते हैं न तुम से न औरों से अगर चोंकी हमीन के रस्सल होने की वजह तुम पर बोझ डाल सकते थे। 7 बल्कि जिस तरह माँ अपने बच्चों को पालती है उसी तरह हम तुम्हारे दर्मियान नर्मी के साथ रहे। 8 और उसी तरह हम तुम्हारे बहुत अहसासमंद होकर न फक्त खुदा की खुशखबरी बल्कि अपनी जान तक भी तुम्हें देने को राजी थे; इस वास्ते कि तुम हमारे प्यारे हो गए थे। 9 क्यूँकि ऐ भाइयों! तुम को हमारी मेहनत और मशक्कत याद होगी कि हम ने तुम में से किसी पर बोझ न डालने की गरज से रात दिन मेहनत मजदूरी करके तुम्हें खुदा की खुशखबरी की मानादी की। 10 तुम भी गवाह हो और खुदा भी कि तुम से जो ईमान लाए हो हम कैसी पाकीजगी और रस्तबाजी और बैपेंडी के साथ पेश आए। 11 चुनाँचे तुम जानते हो। कि जिस तरह बाप अपने बच्चों के साथ करता है उसी तरह हम भी तुम में से हर एक को नसीहत करते और दिलासा देते और समझाते रहे। 12 ताकि तुम्हारा चालचलन खुदा के लायक हो जो तुम्हें अपनी बादशाही और जलाल में बुलाता है। 13 इस वास्ते हम भी बिला नागा खुदा का शक्र करते हैं कि जब खुदा का पैगाम हमारे जरिए तुम्हारे पास पहुँचा तो तुम ने उसे आदमियों का कलाम समझा कर नहीं बल्कि जैसा हकीकित में है खुदा का कलाम जान कर कुबूल किया और वो तुम में जो ईमान लाए हो असर

भी कर रहा है। 14 इसलिए कि तुम ऐ भाइयों!, खुदा की उन कलीसियाओं की तरह बन गए जो यहदिया में मरीह ईसा में हैं क्यूँकि तुम भी अपनी कौम बालों से वही तकलीफें उठाईं जो उहोंने यहदियों से। 15 जिन्होंने खुदावन्द ईसा को भी मार डाला और हम को सता सता कर निकाल दिया वो खुदा को पसन्द नहीं आते और सब आदमियों के खिलाफ हैं। 16 और वो हमें गैर कौमों को उनकी नजात के लिए कलाम सुनाने से मनह करते हैं ताकि उन के गुनाहों का पैमाना होमेशा भरत रहें; लेकिन उन पर इन्हिंहा का गजब आ गया। 17 ऐ भाइयों! जब हम थोड़े अर्से के लिए जाहिर में न कि दिल से तुम से जुदा हो गए तो हम ने कमाल आरजा से तुम्हारी सूरत देखने की और भी ज्यादा कोशिश की। 18 इस वास्ते हम ने यानी मुझ पौलस ने एक दफा नहीं बल्कि दो दफा तुम्हारी पास आना चाहा मगर शैतान ने हमें रोके रखा। 19 भला हमारी उम्मीद और खुशी और फखु का ताज क्या है? क्या वो हमारे खुदावन्द के सामने उसके आने के बक्त तुम ही न होगे। 20 हमारा जलाल और खुशी तुम्हीं तो हो।

3 इस वास्ते जब हम ज्यादा बर्दाश्त न कर सके तो अथेने शहर में अकेले रह

जाना मन्जूर किया। 2 और हम ने तीसुथियुस को जो हमारा भाई और मरीह की खुशखबरी में खुदा का खादिम है इसलिए भेजा कि वो तुम्हें मजबूत करे और तुम्हारे ईमान के बारे में तुम्हें नसीहत करे। 3 कि इन मुसीबों के ज़रिए से कोई न घबराए, क्यूँकि तुम आप जानते हो कि हम इन ही के लिए मुकर्रर हुए हैं। 4 बल्कि पहले भी जब हम तुम्हारे पास थे, तो तुम से कहा करते थे; कि हमें मुसीबत उठाना होगा, चुनाँचे तोसा ही हुआ और तुम्हें मालूम भी है। 5 इस वास्ते जब मैं और ज्यादा बर्दाश्त न कर सका तो तुम्हारे ईमान का हाल दरियापत करने को भेजा; कहीं ऐसा न हो कि आजमाने वाले ने तुम्हें आजमाया हो और हमारी मेहनत बेफाइदा रह गई हो। 6 मगर अब जो तीसुथियुस ने तुम्हारे पास से हमारे पास आकर तुम्हारे ईमान और मुहब्बत की और इस बात की खुशखबरी दी कि तुम हमारा ज़िक्र खेर होमेशा करते हो और हमारे देखने के ऐसे मुश्तक हो जैसे कि हम तुम्हारे। 7 इसलिए ऐ भाइयों! हम ने अपनी सारी एहतियाज और मुसीबत में तुम्हारे ईमान के जरिए से तुम्हारे बारे में तसल्ली पाई। 8 क्यूँकि अब अगर तुम खुदावन्द में काईम हो तो हम जिन्दा हैं। 9 तुम्हारी वजह से अपने खुदा के सामने हमें जिस कदर खुशी हासिल है, उस के बदले में किस तरह तुम्हारे ज़रिए खुदा का शुक्र अदा करें। 10 हम रात दिन बहुत ही दुआ करते रहते हैं कि तुम्हारी सूरत देखें और तुम्हारे ईमान की कमी पूरी करें। 11 अब हमारा खुदा और बाप खुद हमारा खुदावन्द ईसा तुम्हारी तरफ से हमारी रहनुमाई करे। 12 और खुदावन्द ऐसा करे कि जिस तरह हम को तुम से मुहब्बत है उसी तरह तुम्हारी मुहब्बत भी आपस में और सब आदमियों के साथ ज्यादा हो और बढ़े 13 ताकि वो तुम्हारे दिलों को ऐसा मजबूत कर दे कि जब हमारा खुदावन्द ईसा अपने सब मुक़द्दसों के साथ आए तो वो हमारे खुदा और बाप के सामने पाकीजगी में बैठें।

4 गरज ऐ भाइयों! हम तुम से दरखास्त करते हैं और खुदावन्द ईसा में तुम्हें

नसीहत करते हैं कि जिस तरह तुम ने हम से मुनासिब चाल चलने और खुदा को खुश करने की तालीम पाई और जिस तरह तुम चलते भी हो उसी तरह और तरक्की करते जाओ। 2 क्यूँकि तुम जानते हो कि हम ने तुम को खुदावन्द ईसा की तरफ से क्या क्या हुक्म पहुँचाए। 3 चुनाँचे खुदा की मर्जी ये है कि तुम पाक बनो, यानी हारमाकारी से बचे रहो। 4 और हर एक तुम में से पाकीजगी और इज्जत के साथ अपने ज़र्क को हासिल करना जाने। 5 न बुरी ख्वाहिश के जोश से उन कौमों की तरह जो खुदा को नहीं जानती 6 और कई शब्द अपने भाई के साथ इस काम में ज्यादाती और दगा न करे क्यूँकि खुदावन्द इन सब

कामों का बदला लेने वाला है चुनाँचे हम ने पहले भी तुम को करके जता दिया था। 7 इसलिए कि खुदा ने हम को नापाकी के लिए नहीं बल्कि पाकीजगी के लिए बुलाया। 8 पस, जो नहीं मानता वो आदमी को नहीं बल्कि खुदा को नहीं मानता जो तुम को अपना पाक स्थ देता है। 9 मगर भाई — चरों की मुहब्बत तुम ने आपस में मुहब्बत करने की खुदा से तालीम पा चुके हो। 10 और तमाम मकिदुनिया के सब भाइयों के साथ ऐसा ही करते हो लेकिन ऐ भाइयों! हम तुम्हें नसीहत करते हैं कि तरक्की करते जाओ। 11 और जिस तरह हम ने तुम को हकम दिया चुप चाप रहने और अपना कारोबार करने और अपने हाथों से मेहनत करने की हिम्मत करो। 12 ताकि बाहर वालों के साथ संजीदारी से बरताव करो और किसी चीज के मोहताज न हो। 13 ऐ भाइयों! हम नहीं चाहते कि जो सोते हैं उनके बारे में तुम नावाकिफ रहो ताकि औरों की तरह जो ना उम्मीद है गम ना करो। 14 क्यूँकि जब हमें ये यकीन है कि ईंसा मर गया और जी उठा तो उसी तरह खुदा उन को भी जो सो गए हैं ईंसा के बरीले से उसी के साथ ले आएगा। 15 चुनाँचे हम तुम से दावन्द के कलाम के मुताबिक कहते हैं कि हम जो जिन्दा हैं और दावन्द के अने तक बाकी रहेंगे सोए हुओं से हरगिज आगे न बढ़ेंगे। 16 क्यूँकि खुदावन्द खुद आसमान से लट्कार और खास फरिश्ते की आवाज और खुदा के नरसिंगे के साथ उत्तर आएगा और पहले तो वो जो मसीह में मेरे जी उठेंगे। 17 फिर हम जो जिन्दा बाकी होंगे उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएँगे; ताकि हवा में खुदावन्द का इस्तकबाल करें और इसी तरह हमेशा दावन्द के साथ रहेंगे। 18 पस, तुम इन बातों से एक दूसरे को तसल्ली दिया करो।

5 मगर ऐ भाइयों! इसकी कुछ जस्तर नहीं कि वक्तों और मौकों के जरिए तुम को कुछ लिखा जाए। 2 इस वास्ते कि तुम आप खुद जानते हो कि खुदावन्द का दिन इस तरह आने वाला है जिस तरह रात को चोर आता है। 3 जिस वक्त लोग कहते होंगे कि सलामती और अम्न है उस वक्त उन पर इस तरह हलाकत आएगी जिस तरह हामिला को दर्द होता है और वो हरगिज न बचेंगे। 4 लेकिन तुम ऐ भाइयों, अंधेरे में नहीं हो कि वो दिन चोर की तरह तुम पर आ पड़े। 5 क्यूँकि तुम सब नूर के फर्जन्द और दिन के फर्जन्द हो, हम न रात के हैं न तारीकी के। 6 पस, औरों की तरह सोते न रहो, बल्कि जागते और होशियार रहो। 7 क्यूँकि जो सोते हैं रात ही को सोते हैं और जो मतवाले होते हैं रात ही को मतवाले होते हैं। 8 मगर हम जो दिन के हैं ईमान और मुहब्बत का बज्जर लगा कर और निजात की उम्मीद कि टोपी पहन कर होशियार रहें। 9 क्यूँकि खुदा ने हमें गजब के लिए नहीं बल्कि इसलिए मुकर्रर किया कि हम अपने खुदावन्द ईंसा मसीह के बरीले से नजात हासिल करें। 10 वो हमारी खातिर इसलिए मरा, कि हम जाते हों या सोते हों सब मिलकर उसी के साथ जाएँ। 11 पस, तुम एक दूसरे को तसल्ली दो और एक दूसरे की तरक्की की वजह बनो चुनाँचे तुम ऐसा करते भी हो। 12 और ऐ भाइयों, हम तुम से दरब्बास्त करते हैं, कि जो तुम में मेहनत करते और खुदावन्द में तुम्हरे पेशवा हैं और तुम को नसीहत करते हैं उस्हें मानो। 13 और उनके काम की वजह से मुहब्बत के साथ उन की बड़ी इज्जत करो; आपस में मेल मिलाप रखेंगे। 14 और ऐ भाइयों, हम तुम्हें नसीहत करते हैं कि बे काइदा चलने वालों को समझाओ कम हिम्मतों को दिलासा दो कमज़ोरों को संभालो सब के साथ तहमील से पेश आओ। 15 खबरदार कोई किसी से बटी के बदले बटी न करे बल्कि हर वक्त नेकी करने के दर पैर रहो आपस में भी और सब से। 16 हर वक्त खुश रहो। 17 बिला नागा दुआ करो। 18 हर एक बात में शुक्र गुजारी करो क्यूँकि मसीह ईंसा में तुम्हारे बारे में खुदा की यही मर्जी है। 19 स्थ को न बुझाओ। 20 नशुब्दतों की हिकारत न करो। 21 सब बातों को आज्ञाओं, जो

अच्छी हो उसे पकड़े रहो। 22 हर किस्म की बटी से बचे रहो। 23 खुदा जो इत्मीनान का चश्मा है आप ही तुम को बिल्कुल पाक करे, और तुम्हारी स्ह और जान और बदन हमारे खुदावन्द ईंसा मसीह के अने तक पूरे पूरे और बेएब महफूज रहें। 24 तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है वो ऐसा ही करेगा। 25 ऐ भाइयों! हमारे वास्ते दुआ करो। 26 पाक बोसे के साथ सब भाइयों को सलाम करो। 27 मैं तुम्हें खुदावन्द की कस्म देता हूँ, कि ये खत सब भाइयों को सुनाया जाए। 28 हमारे खुदावन्द ईंसा मसीह का फ़जल तुम पर होता रहे।

2 थिस्सलुनीकियों

1 पौलस, और सिलास और तीमुथियुस की तरफ से थिस्सलुनीकियों शहर की

कलीसिया के नाम खत जो हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह में है। 2 फजल और इत्मीनान खुदा' बाप और खुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ से तुम्हें हासिल होता रहे। 3 ऐ भाइयों! तुम्हारे बारे में हर वक्त खुदा का शक्ति करना हम पर फर्ज है, और ये इसलिए मुनासिब है, कि तुम्हारा ईमान बहुत बढ़ता जाता है; और तुम सब की मुहब्बत आपस में ज्यादा होती जाती है। 4

यहाँ तक कि हम आप खुदा की कलीसियाओं में तुम पर फँकु करते हैं कि जितने जुल्म और मसीबतें तुम उठाते हो तुम सब में तुम्हारा सब्द और ईमान ज़ाहिर होता है। 5 ये खुदा की सच्ची अदालत का साफ निशान है; ताकि तुम खुदा की बादशाही के लायक ठहरो जिस के लिए तुम तकलीफी भी उठाते हो। 6

7 क्यूँकि खुदा के नजदीक ये इन्साफ है के बदले में तुम पर मुसीबत लाने वालों को मुसीबत। 7 और तुम मुसीबत उठाने वालों को हमारे साथ आराम दें; जब खुदावन्द 'ईसा अपने मजबूत फरिशों के साथ भड़कती हुई आग में आसमान से ज़ाहिर होगा। 8 और जो खुदा को नहीं पहचानते और हमारे खुदावन्द 'ईसा की खुशखबरी को नहीं मानते उन से बदला लेगा। 9 वह खुदावन्द का चेहरा और उसकी कुद्रत के जलाल से दूर हो कर हमेशा हलाकत की सजा पाएँगे (aiōnios g166) 10 ये उस दिन होगा जबकि वो अपने मुकद्दसों में जलाल पाने और सब ईमान लाने वालों की बजह से तांअज्जुब का बाइस होने के लिए आएँगे; क्यूँकि तुम हमारी गवाही पर ईमान लाए। 11 इसी वास्ते हम तुम्हारे लिए हर वक्त दुआ भी करते रहते हैं कि हमारा खुदा तुम्हें इस लुलावे के लायक जाने और नेकी की हर एक खवाहिंश और ईमान के हर एक काम को कुद्रत से पूरा करे। 12 ताकि हमारे खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह के फजल के मुवाफ़िक हमारे खुदावन्द 'ईसा का नाम तुम में जलाल पाएँ और तुम उस में।

2 ऐ भाइयों! हम अपने खुदा वन्द 'ईसा मसीह के आने और उस के पास जमा

होने के बारे में तुम से दरखास्त करते हैं। 2 कि किसी रस्ते या कलाम या खत से जो गोया हमारी तरफ से हो ये समझ कर कि खुदावन्द के वापस आने का दिन आ पहुँचा है तुम्हारी अकल अचानक परेशान न हो जाए और न तुम घबराओ। 3 किसी तरह से किसी के धोखे में न आना क्यूँकि वो दिन नहीं आएगा जब तक कि फहले बरगतरीन हो और वो गुनाह का शरक्षण यानी हलाकत का फर्जन्द ज़ाहिर न हो। 4 जो मुख्यालिफ़त करता है और हर एक से जो खुदा या मांबूद कहलाता है अपने आप को बड़ा ठहराता है; यहाँ तक कि वो खुदा के मक्किस में बैठ कर अपने आप को खुदा ज़ाहिर करता है। 5 क्या तुम्हें याद नहीं कि जब मैं तुम्हारे पास था तो तुम से ये बातें कहा करता था? 6 अब जो चीज़ उसे रोक रही है ताकि वो अपने खास वक्त पर ज़ाहिर हो उस को तुम जानते हो। 7 क्यूँकि बेदीनी का राज तो अब भी तासीर करता जाता है मगर अब एक रोकने वाला है और जब तक कि वो दूर न किया जाए रोके रहेगा। 8

उस वक्त वो बेदीन ज़ाहिर होगा, जिसे खुदावन्द ये सु, अपने मूँह की फँक से हलाक और अपनी आमद के जलाल से मिटा देगा। 9 और जिसकी आमद शैतान की तासीर के मुवाफ़िक हर तरह की झटी कुद्रत और निशानों और अर्जीब कामों के साथ, 10 और हलाक होने वालों के लिए नारास्ती के हर तरह के धोखे के साथ होगी इस वास्ते कि उन्होंने ने हक्क की मुहब्बत को इश्लियार न किया जिससे उनकी नजात होती। 11 इसी वजह से खुदा उन के पास गुमराह करने वाली तासीर भेजेगा ताकि वो झूठ को सच जानें। 12 और जितने लोग हक का यकीन नहीं करते बल्कि नारास्ती को पसन्द करते हैं; वो सजा पाएँगे। 13 लेकिन तुम्हारे बारे में ऐ भाइयों! खुदावन्द के प्यारों हर वक्त खुदा का शक्ति

करना हम पर फर्ज है क्यूँकि खुदा ने तुम्हें शूर से ही इसलिए चुन लिया था कि रस्ते के ज़रिए से पाकीजा बन कर और हक पर ईमान लाकर नजात पाओ। 14 जिस के लिए उस ने तुम्हें हमारी खुशखबरी के बसीले से बुलाया ताकि तुम हमारे खुदा वन्द 'ईसा मसीह का जलाल हासिल करो। 15 पस ऐ भाइयों! साबित कदम रहो, और जिन रवायतों की तुम ने हमारी जबाबी या खत के ज़रिए से तांतीम पाई है उन पर कार्बिम रहो। 16 अब हमारा खुदावन्द 'ईसा मसीह खुद और हमारा बाप खुदा जिसने हम से मुहब्बत रखी और फजल से हमेशा तसल्ली और अच्छी उम्मीद बरखी (aiōnios g166) 17 तुम्हारे दिलों को तसल्ली दे और हर एक नेक काम और कलाम में मजबूत कर।

3 गरज ऐ भाइयों और बहनों! हमारे हक में दुआ करो कि खुदावन्द का

कलाम जल्द ऐसा फैल जाए और जलाल पाए; जैसा तुम मैं। 2 और कजरौ और बुरे आदमियों से बचे रहें क्यूँकि सब मैं ईमान नहीं। 3 मगर खुदावन्द सच्चा है वो तुम को मजबूत करेगा; और उस शरीर से महफूज रखवेगा। 4 और खुदावन्द में हमें तुम पर भरोसा है; कि जो हक्क हम तुम्हें देते हैं उस पर अमल करते हो और करते भी रहेंगे। 5 खुदावन्द तुम्हारे दिलों को खुदा की मुहब्बत और मसीह के सब की तरफ हिदायत करे। 6 ऐ भाइयों! हम अपने खुदावन्द 'ईसा मसीह के नाम से तुम्हें हक्क देते हैं कि हर एक ऐसे भाई से किनारा करो जो वे काइदा चलते हैं और उस रिवायत पर अमल नहीं करता जो उस को हमारी तरफ से पहँची। 7 क्यूँकि आप जानते हो कि हमारी तरह किस तरह बनना चाहिए इसलिए कि हम तुम में वे काइदा न चलते थे। 8 और किसी की रोटी मुफ्त न खाते थे, बल्कि मेहनत और मशक्कत से रात दिन काम करते थे ताकि तुम में से किसी पर बोझ न डालें। 9 इसलिए नहीं कि हम को इश्लियार न था बल्कि इसलिए कि अपने आपको तुम्हारे वास्ते नमूना ठहराएँ ताकि तुम हमारी तरह बनो 10 और जब हम तुम्हारे पास थे उस वक्त भी तुम को ये हक्क देते थे; कि जिसे मेहनत करना मन्जूर न हो वो खाने भी न पाए। 11 हम सुनते हैं कि तुम में कुछ बेकाइदा चलते हैं और कुछ काम नहीं करते; बल्कि औरों के काम में दखल अंदाजी करते हैं। 12 ऐसे शख्सों को हम खुदावन्द 'ईसा मसीह में हक्क देते और सलाह देते हैं कि चुप चाप काम कर के अपनी ही रोटी खाएँ। 13 और तुम ऐ भाइयों! नेक काम करने में हिम्मत न हारो। 14 और अगर कोई हमारे इस खत की बात को न मानें तो उसे निगाह में रखेंगे और उस से तांत्लुक न रखेंगे ताकि वो शर्मिन्दा हो। 15 लेकिन उसे दुर्मन न जाने बल्कि भाई समझ कर नसीहत करो। 16 अब खुदावन्द जो इत्मीनान का चश्मा है आप ही तुम को हमेशा और हर तरह से इत्मीनान बख्शें; खुदावन्द तुम सब के साथ रहे। 17 मैं, पौलस अपने हाथ से सलाम लिखता हूँ; हर खत मैं मेरा यही निशान है, मैं इसी तरह लिखता हूँ। 18 हमारे खुदावन्द 'ईसा मसीह का फजल तुम सब पर होता रहे।

1 तीमुथियुस

1 पौत्रम की तरफ से जो हमारे मुन्जी खुदा और हमारे उम्मीद गाह मसीह

इसा के हृष्म से मसीह ईसा का रसूल है, 2 तीमुथियुस के नाम जो ईमान के लिहाज से मेरा सच्चा बेटा है: फजल, रहम और इन्मीनान खुदा बाप और हमारे खुदावन्द मसीह ईसा की तरफ से तुझे हासिल होता रहे। 3 जिस तरह मैंने मकिनुमिया जाते बबत तुझे नसीहत की थी, कि ईफिसुस में रह कर कुछ को शरखों हृष्म कर दे कि और तरह की तालीम न दें, 4 और उन कहानियों और बे इन्हिं नसब नामों पर लिहाज न करें, जो तकरार का जरिया होते हैं, और उस इंतजाम — ए — इलाही के मुवाफिक नहीं जो ईमान पर मर्मनी है, उसी तरह अब भी करता हैं। 5 हृष्म का मकसद ये है कि पाक दिल और नेक नियत और बिना दिखावा ईमान से मुहब्बत पैदा हो। 6 इनको छोड़ कर कुछ शब्द बेहदा बकवास की तरफ मुतवज्जह हो गए, 7 और शरी' अत के मु'अल्लिम बनना चाहते हैं, हालांकि जो बारें कहते हैं और जिनका यकीनी तौर से दावा करते हैं, उनको समझते भी नहीं। 8 मगर हम जानते हैं कि शरी' अत अच्छी है, बशर्ते कि कोई उसे शरी' अत के तौर पर काम में लाए। 9 यारी ये समझकर कि शरी' अत रास्तबाजों के लिए मुकर्रर नहीं है, बल्कि बेशरा' और सरकश लोगों, और बेटिनों, और गुनहगारों, और नापाक, और रिन्हों, और माँ — बाप के कातिलों, और खुनियों, 10 और हारामकारों, और लौटे — बाजों, और बर्दी — गुलाम फरोशों, और झटों, और झटी कसम खानेवालों, और इनके सिवा सही तालीम के और बरखिलाफ काम करनेवालों के बास्ते हैं। 11 ये खुदा — ए — मुहारिक के जलाल की उस खुशखबरी के मुवाफिक है जो मैं सुपुर्द हैं। 12 मैं अपनी ताकत बरखाने वाले खुदावन्द मसीह ईसा का शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे दियानतदार समझकर अपनी खिदमत के लिए मुकर्रर किया। 13 अगर ये मैं पहले कुफ़ बकरे वाला, और सताने वाला, और बैंजजत करने वाला था; तोभी मुझ पर रहम हुआ, इस वास्ते कि मैंने बैंझमानी की हालत में नादानी से ये काम किए थे। 14 और हमारे खुदावन्द का फजल उस ईमान और मुहब्बत के साथ जो मसीह ईसा में है बहत ज्यादा हुआ। 15 ये बात सच और हर तरह से कुबूल करने के लायक है कि मसीह ईसा गुनहगारों को नजात देने के लिए दुनिया में आया, उन गुनहगारों में से सब से बड़ा मैं हूँ, 16 लेकिन मुझ पर रहम इसलिए हुआ कि ईसा मसीह मुझ बड़े गुनहगार में अपना सब्र जाहिर करे, ताकि जो लोग हमेशा की ज़िन्दगी के लिए उस पर ईमान लाएँ उन के लिए मैं नमूना बनूँ। (aiōnios g166) 17 अब हमेशा कि बादशाही यारी ना मिन्दे वाली, नादीदा, एक खुदा की 'ज़िज्जत और बडाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे। आमीन। (aiōn g165) 18 ऐ फर्जन्द तीमुथियुस! उन पेशीगोड़ों के मुवाफिक जो पहले रे जरिए की गई थी, मैं ये हक्म तेरे सुरुद करता हूँ ताकि तू उनके मुताबिक अच्छी लडाई लड़ता रहे; और ईमान और उस नेक नियत पर काईम रहे, 19 जिसको दूर करने की वजह से कुछ लोगों के ईमान का जहाज गर्क हो गया। 20 उन ही मैं से हिम्न्युस और सिकन्दर है, जिन्हें मैंने शैतान के हवाले किया ताकि कुफ़ से बाज़ रहना सीखें।

2 पस मैं सबसे पहले ये नसीहत करता हूँ, कि मुनाजाएं, और दूआएँ, और, इल्लियाँ और शुक्रगुजारियाँ सब आदमियों के लिए की जाएँ, 2 बादशाहों और सब बड़े मरतबे वालों के वास्ते इसलिए कि हम कलाल दीनदारी और सन्जीदी के चैन सूकून के साथ जिन्दगी गुजारें। 3 ये हमारे मुन्जी खुदा के नज़दीक 'उम्दा' और पसन्दीदा है। 4 वो चाहता है कि सब आदमी नजात पाएँ, और सच्चाई की पहचान तक पहुँचें। 5 क्यूँकि खुदा एक है, और खुदा और ईसान के बीच में दर्मियानी भी एक यारी मसीह ईसा जो इंसान है। 6 जिसने

अपने आपको सबके फिदया में दिया कि मुनासिब वक्तरों पर इसकी गवाही दी जाए। 7 मैं सच कहता हूँ, झट नहीं बोलता, कि कौमों को ईमान और सच्चाई की बातें सिखाने वाला मुकर्र हुआ। 8 पस मैं चाहता हूँ कि मर्द हर जगह, बगैर गुस्सा और तकरार के पाक हाथों को उठा कर दुआ किया करें। 9 इसी तरह 'औरतें हयादर लिबास से शर्म और परहेजगारी के साथ अपने आपको सँवारें; न कि बाल गैंधने, और सोने और मोतियों और कीमती पोशाक से, 10 बल्कि नेक कामों से, जैसा खुदा परस्ती का इकरार करने वाली' औरतों को मुनासिब है। 11 'औरत को चुपचाप कमाल तबेदारी से सीखाना चाहिए। 12 और मैं इजाजत नहीं देता कि 'औरत सिखाए या मर्द पर हृष्म चलाए, बल्कि चुपचाप रहे। 13 क्यूँकि पहले आदम बनाया गया, उसके बाद हव्वा; 14 और आदम ने धोखा नहीं खाया, बल्कि 'औरत धोखा खाकर गुनाह में पड़ गई; 15 लेकिन औलाद होने से नजात पाएगी, बशर्ते कि वो ईमान और मुहब्बत और पाकीजगी में परहेजगारी के साथ काईम रहें।

3 और ये बात सच है, कि जो शब्द निगहबान का मर्तबा चाहता है, वो अच्छे

काम की खवाहिंश करता है। 2 पस निगहबान को बेइल्जाम, एक बीवी का शौहर, परहेजगार, खुदापरस्त, शाइस्ता, मुसाफिर परवर, और तालीम देने के लायक होना चाहिए। 3 नशे में शेर मचाने वाला या मार — पीट करने वाला न हो; बल्कि नर्मदिला, न तकरारी, न ज़रदोस्त। 4 अपने घर का अच्छी तरह बन्दोबस्त करता हो, और अपने बच्चों को पूरी नर्मी से तबे रखता हो। 5 (जब कोई अपने घर ही का बन्दोबस्त करना नहीं जानता तो खुदा कि कलीसिया की देख भाल करा करेगा?) 6 नया शारीर्दि न हो, ताकि घमण्ड करके कही इल्लीस की सी सज्जा न पाए। 7 और बाहर वालों के नज़दीक भी नेक नाम होना चाहिए, ताकि मलामत में और इल्लीस के फन्दे में न फैसे 8 इसी तरह खादियों को भी नर्म होना चाहिए दो ज़बान और शराबी और नाजायज़ नफ़ा का लालची ना हो 9 और ईमान के भेद को पाक दिल में हिफाजत से रखें। 10 और ये भी पहले आज्ञामाए जाएँ, इसके बाद अगर बे गुनाह ठहरें तो खिदमत का काम करें। 11 इसी तरह' औरतों को भी संजीदा होना चाहिए; तोहमत लगाने वाली न हो, बल्कि परहेजगार और सब बातों में ईमानदार हों। 12 खादिम एक एक बीवी के शौहर हों और अपने बच्चों और घरों को अच्छी तरह बन्दोबस्त करते हों। 13 क्यूँकि जो खिदमत का काम बख्बरी अंजाम देते हैं, वो अपने लिए अच्छा मर्तबा और उस ईमान में जो मसीह ईसा पर है, बड़ी दिलरी हासिल करते हैं। 14 मैं तेरे पास जल्द आने की उम्दी करने पर भी ये बते तुझे इसलिए लिखता हूँ, 15 कि अगर मुझे आने में देर हो, तो तुझे मालूम हो जाए कि खुदा के घर, यारी जिन्दा खुदा की कलीसिया में जो हक का सूतन और बुनियाद है, कैसा बर्ताव करना चाहिए। 16 इस में कलाम नहीं कि दीनदारी का भेद बड़ा है, यारी वो जो जिसमें जाहिर हुआ, और स्व हैं रास्तबाज ठहरा, और फरिश्तों को दिखाई दिया, और गैर — कौमों में उसकी मनादी है, और दुनिया में उस पर ईमान लाएँ, और जलाल में ऊपर उठाया गया।

4 लेकिन पाक स्व साफ फरमाता है कि आइन्दा जमाने में कुछ लोग गुमराह

करनेवाली स्थहों, और शयातीन की तालीम की तरफ मुतवज्जह होकर ईमान से पिर जाएँ। 2 ये उन झटे आदमियों की रियाकारी के जरिए होगा, जिनका दिल गोया गर्म लोहे से गड़ा गया है; 3 ये लोग शादी करने से मनह' करेंगे, और उन खानों से परहेज करने का हृष्म देंगे, जिन्हें खुदा ने इसलिए पैदा किया है कि ईमानदार और हक के पहचानने वाले उन्हें शक्त्युजारी के साथ खाएँ। 4 क्यूँकि खुदा की पैदा की हुई हर चीज़ अच्छी है, और कोई चीज़

इनकार के लायक नहीं; बशर्ते कि शुक्रगुजारी के साथ खाई जाए, 5 इसलिए कि खुदा के कलाम और दुआ से पाक हो जाती है। 6 अगर तू भाइयों को ये बातें याद दिलाएं, तो मसीह ईसा का अच्छा खादिम ठहरेगा; और ईमान और उस अच्छी तालीम की बातों से जिसकी तू पैरवी करता आया है, परवरिश पाता रहेगा। 7 लेकिन खेला और बृद्धियों की सी कहानियों से किनारा कर, और दीनदारी के लिए मेहनत कर। 8 क्यौंकि जिसमानी मेहनत का फाइदा कम है, लेकिन दीनदारी सब बातों के लिए फाइदामन्द है, इसलिए कि अब की और आइन्दा की जिन्दगी का 'वादा' भी इसी के लिए है। 9 ये बात सच है और हर तरह से कुबूल करने के लायक। 10 क्यौंकि हम मेहनत और कोशिश इस लिए करते हैं कि हमारी उम्मीद उस जिन्दा खुदा पर लारी हुई है, जो सब आदमियों का खास कर ईमानदारों का मूँजी है। 11 इन बातों का हृक्ष कर और तालीम दे। 12 कोई तेरी जवानी की हिकारत न करने पाए; बल्कि तू ईमानदारों के लिए कलाम करने, और चाल चलन, और मुहब्बत, और पाकीजगी में नम्रा बन।

13 जब तक मैं न आऊँ, पढ़ने और नसीहत करने और तालीम देने की तरफ मुतवज्जह रह। 14 उस ने 'अमत से गाफिल ना रह जो तुझे हासिल है, और नबुव्वत के जरिए से बुजूर्गों के हाथ रखते वक्त तुझे मिली थी। 15 इन बातों की फिक्र रख, इन ही में मशगूल रह, ताकि तेरी तरकी सब पर जाहिर हो। 16 अपना और अपनी तालीम की खबरदारी कर। इन बातों पर काईम रह, क्यौंकि ऐसा करने से तू अपनी और अपने सुनने वालों को झेंठे उस्ताद की तालीम से भी नजात का जरिया होगा।

5 किसी बड़े उम्र वाले को मलामत न कर, बल्कि बाप जान कर नसीहत कर; 2 और जवानों को भाई जान कर, और बड़ी उम्र वाली 'औरतों को माँ जानकर, और जवान 'औरतों को कमाल पाकीजगी से बहन जानकर। 3 उन बेवाओं की, जो वाक़ौँ बेवा हैं इज्जत कर। 4 और आप किसी बेवा के बेटे या पोते हों, तो वो पहले अपने ही घराने के साथ दीनदारी का बर्ताव करना, और माँ—बाप का हक अदा करना सीखें, क्यौंकि ये खुदा के नज़दीक पसन्दीदा हैं। 5 जो वाक़ौँ बेवा है और उसका कोई नहीं, वो खुदा पर उम्मीद रखती है और रात—दिन मुनाजात और दुआ में मशगूल रहती है; 6 मगर जोऐश—ओ—अशरत में पढ़ गई है, वो जीती जी मर गई है। 7 इन बातों का भी हृक्ष कर ताकि वो बेल्जाम रहें। 8 अगर कोई अपनों और खास कर अपने घराने की खबरगरीरी न करे, तो ईमान का इंकार करने वाला और वे—ईमान से बदतर है। 9 वही बेवा फर्द में लिखी जाए जो साठ बरस से कम की न हो, और एक शौहर की बीवी हुई हो, 10 और नेक कामों में मशहूर हो, बच्चों की तरबियत की हो, परदेसियों के साथ मेहमान नवाजी की हो, सुकलियों के पाँव धोए हों, मुसीबत जदों की मदद की हो और हर नेक काम करने के दरपै रही हो। 11 मगर जवान बेवाओं के नाम दर्ज न कर, क्यौंकि जब वो मसीह के खिलाफ नफस के तोबोंहो जाती है, तो शादी करना चाहती है, 12 और सजा के लायक ठहरती है, इसलिए कि उन्होंने अपने पहले ईमान को छोड़ दिया। 13 और इसके साथ ही वो घर घर फिर कर बेकार रहना सीखती है, और सिर्फ़ बेकार ही नहीं रहती बल्कि बक बक करती रहती है औरैरों के काम में दखल भी देती है और बेकार की बातें कहती हैं। 14 पस मैं ये चाहता हूँ कि जवान बेवाएँ शादी करें, उनके औलाद हों, घर का इन्तिजाम करें, और किसी मुखालिफ़ को बदगोई का मौका न दें। 15 क्यौंकि कुछ गुपराह हो कर शैतान के पीछे हो चुकी हैं। 16 अगर किसी ईमानदार औरत के यहाँ बेवाएँ हों, तो वही उनकी मदद करे और कलीसिया पर बोझ न डाला जाए, ताकि वो उनकी मदद कर सके जो वाक़ौँ बेवा हैं। 17 जो बुजूर्ग अच्छा इन्तिजाम करते हैं, खास कर वो जो कलाम सुनाने और तालीम देने में मेहनत करते हैं, दुगानी 'इज्जत के लायक समझे जाएँ। 18 क्यौंकि किंतु

— ए— मुकद्दस ये कहती है, “दाँ भूँ में चलते हुए बैल का मुँह न बौंधना,” और “मज़ट्रू अपनी मज़ट्री का हकदार है।” 19 जो दाँवा कीरी बुजूर्ग के बराखिलाफ़ किया जाए, बगैर दो या तीन गवाहों के उसको न सुन। 20 गुनाह करने वालों को सब के सामने मलामत कर ताकि औरतों को भी खौफ़ हो। 21 खुदा और मसीह ईसा और बरगुजीदा फरिश्तों को गवाह करके मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि इन बातों पर बिला ता' अस्सू' अमल करना, और कोई काम तरफदारी से न करना। 22 किसी शख्स पर जल्द हाथ न रखना, और दूसरों के गुनाहों में शरीक न होना, अपने आपको पाक रखना। 23 आइन्दा को सिर्फ़ पानी ही न पिया कर, बल्कि अपने मैंदे और अक्सर कमज़ोर रहने की बजह से जरा सी मय भी काम में लाया कर। 24 कुछ आदमियों के गुनाह जाहिर होते हैं, और पहले ही अदालत में पहुँच जाते हैं कुछ बाद में जाते हैं। 25 इसी तरह कुछ अच्छे काम भी जाहिर होते हैं, और जो ऐसे नहीं होते वो भी छिप नहीं सकते।

6 जितने नौकर जुए के नीचे हों, अपने मालिकों को कमाल 'इज्जत के लाइक जानें, ताकि खुदा का नाम और तालीम बदनाम न हो। 2 और जिनके मालिक ईमानदार हैं वो उनको भाई होने की बजह से हकीकी न जानें, बल्कि इस लिए ज्यादातर उनकी खिदमत करें कि फाइदा उठानेवाले ईमानदार और 'अजीज़ हैं तू इन बातों की तालीम दे और नसीहत कर। 3 अगर कोई शख्स और तरह की तालीम देता है और सही बातों को, यानी खुदावन्द ईसा मरीह की बातें और उस तालीम को नहीं मानता जो दीनदारी के मुताबिक है, 4 वो मास्तर है और कुछ नहीं जानता; बल्कि उसे बहस और लफ्जी तकरार करने का मर्ज है, जिनसे हमदू और इगड़े और बदगोँयाँ और बदगुमानियाँ, 5 और उन आदमियों में रद्दो बदल पैदा होता है जिनकी अवृत्त बिगड़ गई है और वो को हक से महस्म है और दीनदारी को नफे ही का जरिया समझते हैं 6 हाँ दीनदारी सब्र के साथ बड़े नफे का जरिया है। 7 क्यौंकि न हम दुर्नियाँ में कुछ लाए और न कुछ उसमें से ले जा सकते हैं। 8 पस अगर हमारे पास खाने पहनने को है, तो उसी पर सब करें। 9 लेकिन जो दौलतमन्द होना चाहते हैं, वो ऐसी आजमाइश और फन्दे और बहुत सी बेहदा और नुकसान पहुँचाने वाली ख्वाहिशों में फँसते हैं, जो आदमियों को तबाही और हलाकत के दरिया में गँक्क कर देती है। 10 क्यौंकि माल की दोस्ती हर किसी की बुराई की जड़ है जिसकी आरज़ में कुछ ने ईमान से गुराह होकर अपने दिलों को तरह तरह के गमों से छलनी कर लिया। 11 मगर ऐ मर्द—ए—खुदा, तू इन बातों से भाग और रास्तबाज़ी, दीनदारी, ईमान, मुहब्बत, सब्र और नर्म दिली का तालिब हो। 12 ईमान की अच्छी कुश्ती लड़; उस हमेशा की जिन्दगी पर कब्जा कर ले जिसके लिए तू बुलाया गया था, और बहुत से गवाहों के सामने अच्छा इकरार किया था। (aiōnios g166) 13 मैं उस खुदा को, जो सब चीज़ों को जिन्दा करता है, और मसीह ईसा को, जिसने पुनित्युप पिलातुस के सामने अच्छा इकरार किया था, गवाह करके उसे नसीहत करता हूँ। 14 कि हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के उस मरीह के आने तक हुक्म को बेदाम और बेल्जाम रख, 15 जिसे वो मुनासिब वक्त पर नुमायाँ करेगा, जो मुबारिक और वाहिद हाकिम, बादशाहों का बादशाह और खुदावन्दों का खुदा है; 16 बका सिर्फ़ उसी की है, और वो उस नूर में रहता है जिस तक किसी की पहुँच नहीं हो सकती, न उसे किसी इंसान ने देखा और न देख सकता है; उसकी 'इज्जत और सलतनत हमेशा तक रहे। आमीन। (aiōnios g166) 17 इस मौजूदा जहान के दौलतमन्दों को हुक्म दे कि मगरस न हों और नापाएदार दौलत पर नहीं, बल्कि खुदा पर उम्मीद रखवें जो हमें लुक़ उठाने के लिए सब चीज़ें बहुतायत से देता है। (aiōn g165) 18 और नेकी करें, और अच्छे कामों में दौलतमन्द बनें, और सखावत पर तैयार और इम्दाद पर मुस्ताइद हों,

19 और आइन्दा के लिए अपने वास्ते एक अच्छी बुनियाद काईम कर रखें
ताकि हक्कीकी जिन्दगी पर कब्ज़ा करें। (aiōnios g166) 20 ऐ तीमुथियुस, इस
अमानत को हिफाजत से रख; और जिस'इल्म को इल्म कहना ही गलत है,
उसकी बेहदा बकवास और मुखालिफत पर ध्यान न कर। 21 कुछ उसका
इकरार करके ईमान से फिर गए हैं तुम पर फ़ज़ल होता रहे।

2 तीमुथियुस

1 पौत्रस की तरफ से जो उस जिन्दगी के बादे के मुताबिक जो मरीह ईसा

में है खुदा की मर्जी से मरीह 'ईसा का रसल है। 2 प्यारे बेटे तीमुथियुस के नाम खत: फज्जल रहम और इत्मीनान खुदा बाप और हमरे खुदावन्द 'ईसा मरीह की तरफ से तुझे हासिल होता रहे। 3 जिस खुदा की इबादत में साफ दिल से बाप दादा के तौर पर करता हूँ; उसका शक्ति है कि अपनी दुआओं में बिला नामा तुझे याद रखता है। 4 और तेरे आँसुओं को याद करके रात दिन तेरी मुलाकात का मुश्ताक रहता हूँ ताकि खुशी से भर जाऊँ। 5 और मुझे तेरा बो बे रिया ईमान याद दिलाया गया है जो पहले तेरी नानी लूझ और तेरी माँ यूनिके रखती थी और मुझे यकीन है कि तू भी रखता है। 6 इसी वजह से मैं तुझे याद दिलाता हूँ कि तू खुदा की उस ने'अमत को चमका दे जो मैं हाथ रखने के जरिए तुझे हासिल है। 7 क्यौंकि खुदा ने हमें दहशत की रुह नहीं बल्कि कुदरत और मुहब्बत और तरबियत की रुह दी है। 8 पस, हमारे खुदावन्द की गवाही देने से और मुझ से जो उसका कैटी हूँ शर्म न कर बल्कि खुदा की कुदरत के मुताबिक खुशखबरी की खातिर मेरे साथ दुःख उठा। 9 जिस ने हमें नजात दी और पाक बुलावे से बुलाया हमरे कामों के मुताबिक नहीं बल्कि अपने खास इरादा और उस फज्जल के मुताबिक जो मरीह 'ईसा में हम पर शुरू से हुआ। (aiōnios g166)

10 मगर अब हमारे मुन्जी मरीह 'ईसा के अने से जाहिर हुआ जिस ने मौत को बराबर और बाकी जिन्दगी को उस खुशखबरी के बसीते से रौशन कर दिया। 11 जिस के लिए मैं ऐलान करने वाला और रसूल और उस्ताद मुकर्रर हुआ। 12 इसी वजह से मैं यै दुःख खी उठाता हूँ, लेकिन शर्मिता नहीं क्यौंकि जिसका मैं ने यकीन किया है उसे जानता हूँ और मुझे यकीन है कि वो मेरी अमानत की उस दिन तक हिफाजत कर सकता है। 13 जो सही बातें तू ने मुझ से सुनी उस ईमान और मुहब्बत के साथ जो मरीह ईसा में है उस का खाका याद रख। 14 स्वरूप — उल — कुरुक्षे के बसीते से जो हम में बसा हुआ है इस अच्छी अमानत की हिफाजत कर। 15 तू ये जानता है कि आसिया सूखे के सब लोग मुझ से खाफा हो गए; जिन में से हगलतुस और हरमुगिनेस हैं। 16 खुदावन्द उत्तेक्षित के घराने पर रहम करे क्यौंकि उस ने बहुत मर्तबा मुझे ताजा दम किया और मेरी कैद से शर्मिन्दा न हुआ। 17 बल्कि जब वो रोमा शहर में आया तो कोशिश से तलावा करके मुझ से मिला। 18 खुदावन्द उसे ये बाखों कि उस दिन उस पर खुदावन्द का रहम हो और उस ने इफिसस में जो जो खिदमतें की तू उन्हें खुब जानता है।

2 पस, ऐ मेरे बेटे, त उस फज्जल से जो मरीह 'ईसा में है मजबूत बन। 2 और

जो बातें तू ने बहुत से गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं उनको ऐसे ईमानदार आदिमियों के सुरुद्ध कर जो औरों को भी सिखाने के कबिल हों। 3 पस मरीह 'ईसा के अच्छे सिपाही की तरह मेरे साथ दुःख उठा। 4 कोई सिपाही जब लड़ाई को जाता है अपने आपको दुनिया के मु'अमिलों में नहीं फँसाता ताकि अपने भरती करने वाले को खुश करे। 5 दैंगल में मुकाबिला करने वाला भी अगर उस ने बा' काइदा मुकाबिला न किया हो तो सेहरा नहीं पाता। 6 जो किसान मेहनत करता है, पैदावार का हिस्सा पहले उसी को मिलना चाहिए। 7 जो मैं कहता हूँ उस पर गौर कर क्यौंकि खुदावन्द तुझे सब बातों की समझ देगा। 8 'ईसा मरीह को याद रख जो मुर्दाँ में से जी उठा है और दाकूट की नस्ल से है मेरी उस खुशखबरी के मुकाबिक। 9 जिसके लिए मैं बदकार की तरह दुःख उठाता हूँ यहाँ तक कि कैटै हूँ मगर खुदा का कलाम कैटै नहीं। 10 इसी वजह से मैं नेक लोगों की खातिर सब कुछ सहता हूँ ताकि वो भी उस नजात को जो मरीह 'ईसा में है अबदी जलाल समेत हासिल करें। (aiōnios g166) 11 ये बात सच है कि जब हम उस के साथ मर गए तो उस के साथ जियेंगे भी। 12 अगर

हम दुःख सहेंगे तो उस के साथ बादशाही भी करेंगे अगर हम उसका इन्कार करेंगे; तो वो भी हमारा इन्कार करेगा। 13 अगर हम बेवफा हो जायेंगे तो भी वो बफादार रहेगा, क्यौंकि वो अपने आप का इन्कार नहीं कर सकता। 14 ये बातें उन्हें याद दिला और खुदावन्द के सामने नसीहत कर के लफ़ज़ी तकरार न करें जिस से कुछ हासिल नहीं बल्कि सुने वाले बिगड़ जाते हैं। 15 अपने आपको खुदा के सामने मकबूल और ऐसे काम करने वाले की तरह पेश करने की कोशिश कर; जिसको शमिन्दा होना न पड़े, और जो हक्क के कलाम को दुस्ती से काम में लाता हो। 16 लेकिन बेकार बातों से परहेज कर क्यौंकि ऐसे शब्द और भी बेदीनी में तरकी करेंगे। 17 और उन का कलाम सड़े घाव की तरह फैलता चला जाएगा; हृमिन्युस और फ़िलेतुस उन ही में से हैं। 18 वो ये कह कर कि कथामत हो चुकी है; हक्क से गुमराह हो गए हैं और कुछ का ईमान बिगड़ते हैं। 19 तो भी खुदा की मजबूत बुनियाद क्राइम रहती है और उस पर ये मुहर है, "खुदावन्द अपनों को पहचानता है," और "जो कोई खुदावन्द का नाम लेता है नारस्ती से बाज रहे।" 20 बड़े घर में सिर्फ़ सोने चाँदी ही के बरतन होते हैं बल्कि लकड़ी और मिट्टी के भी कुछ 'इज्जत और कुछ जिल्लत के लिए। 21 पस, जो कोई इन से अलग होकर अपने आप को पाक करेगा वो 'इज्जत का बरतन और मुक़द्दस बनेगा और मालिक के काम के लायक और हर नेक काम के लिए तैयार होगा। 22 जवानी की ख्वाहिशों से भाग और जो पाक दिल के साथ खुदावन्द से दुआ करते हैं; उन के साथ रस्तबाजी और ईमान और मुहब्बत और मेलमिलाप की चाहत हो। 23 लेकिन बेकूफ़ी और नादानी की हज्जतों से किनारा कर क्यौंकि तू जानता है; कि उन से झागड़े पैदा होते हैं। 24 और मुसासिब नहीं कि खुदावन्द का बन्दा झगड़ा करे बल्कि सब के साथ रहम करे और तालीम देने के लायक और हल्तीम हो। 25 और मुखालिफ़ों को हल्तीमि से सिखाया करे शायद खुदा उन्हें तौबा की तौफ़ीक बख्तों ताकि वो हक्क को पहचानें 26 और खुदावन्द के बन्दे के हाथ से खुदा की मर्जी के कैटी हो कर इल्लीस के फन्दे से छूटें।

3 लेकिन ये जान रख कि आशिरी जमाने में बुरे दिन आएँ। 2 क्यौंकि आदमी

खुदार्ज एहसान फरामोश, शेरीबाज, मास्तूर बद़गो, मौं बाप का नाफ़रमान' नाशुक, नापाक, 3 जाती मुहब्बत से खाली संगदिल तोहमत लगानेवाले बेज़बूत तुन्द मिजाज नेकी के दुमन। 4 दगाबाज़, टीठ, घमण्ड करने वाले, खुदा की निस्बत ऐश — ओ — अशरत को ज्यादा दोस्त रखने वाले होंगे। 5 जो दीनदारी का दिखावा तो रखेंगे मगर उस पर अमल न करेंगे ऐसों से भी किनारा करना। 6 इन ही में से वो लोग हैं जो घरों में दबे पांप घुस आते हैं और उन बद चलन 'औरतों को क्राबू कर लेते हैं जो गुनाहों में टबी ही हैं और तरह की ख्वाहिशों के बस में हैं। 7 और हमेशा तालीम पाती रहती है मगर हक्क की फहचान उन तक कर्मी नहीं पहुँचती। 8 और जिस तरह के यत्रेस और यम्बेस ने मूसा की मुखालिफ़त की ये ऐसे आदमी हैं जिनकी अक्ल बिगड़ ही है और जो ईमान के ऐतिबार से खाली है। 9 मगर इस से ज्यादा न बढ़ सकेंगे इस वास्ते कि इन की नादानी सब आदिमियों पर जाहिर हो जाएंगी जैसे उन की भी हो गई थी। 10 लेकिन तू ने तालीम, चाल चलन, झारादा, ईमान, तहमील, मुहब्बत, सब, सताए जाने और दुःख उठाने में मेरी पैरवी की। 11 याँ'नी ऐसे दुःखों में जो अन्ताकिया और इकुनियुस और लुस्तरा शहरों में मुझ पर पड़े दीरग दुःखों में भी जो मैं उठाए हैं मगर खुदावन्द ने मुझे उन सब से छुड़ा लिया। 12 बल्कि जितने मरीह ईसा में दीनदारी के साथ जिन्दगी गुजाराना चाहते हैं वो सब सताए जाएँगे। 13 और बुरे और धोखेबाज आदमी फरेब देते और फरेब खाते हुए बिगड़ते चले जाएँगे। 14 मगर तू उन बातों पर जो तू ने सीखी थी, और जिनका यकीन तुझे दिलाया गया था, ये जान कर काइम रह कि तू ने उन्हें किन लोगों से

सीखा था। 15 और तू बचपन से उन पाक नविशतों से बाकिफ है, जो तुझे मर्सीह 'ईसा पर ईमान लाने से नजात हासिल करने के लिए दानाई बछा सकते हैं। 16 हर एक सहीफा जो खुदा के इत्तम से है है तालीम और इल्जाम और इस्लाह और रास्तबाजी में तरबियत करने के लिए फाइदे मन्द भी है। 17 ताकि मर्द खुदा कामिल बने और हर एक नेक काम के लिए बिल्कुल तैयार हो जाए।

4 खुदा और मर्सीह 'ईसा को जो जिन्दों और मुर्दों की अदालत करेगा; गवाह करके और उस के जहर और बादशाही को याद दिला कर मैं तुझे नसीहत करता हूँ। 2 कि त कलाम की मनादी कर बक्त और बे बक्त मुस्तइद रह, हर तरह के तहमील और तालीम के साथ समझा दे और मलामत और नसीहत कर। 3 क्यूँकि ऐसा बक्त आएगा कि लोग सही तालीम की बर्दाशत न करेंगे, बल्कि कानों की खुजली के जरिए अपनी अपनी ख्वाहिशों के मुवाफिक बहुत से उस्ताद बना लेंगे। 4 और अपने कानों को हक की तरफ से फेर कर कहानियों पर मुतवज्जह होंगे। 5 मगर तू सब बातों में होशियार रह, दुःख उठा बशारत का काम अन्जाम दे अपनी खिदमत को पूरा कर। 6 क्यूँकि मैं अब कुर्बान हो रहा हूँ, और मेरे जाने का बक्त आ पहुँचा है। 7 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका, मैंने टौड को खत्म कर लिया, मैंने ईमान को महफूज रख लिया। 8 आइन्दा के लिए मेरे बास्ते रास्तबाजी का बो ताज रखा हुआ है, जो आदिल मुन्सिफ यारी खुदावन्द मुझे उस दिन देगा और सिर्फ मुझे ही नहीं बल्कि उन सब को भी जो उस के जहर के आज़मन्द हों। 9 मैं पास जल्द अने की कोशिश कर। 10 क्यूँकि देमास ने इस मौजूदा जहान को पसन्द करके मुझे छोड़ दिया और थिस्सलनीकियों के शहर को चला गया और क्रेसकेन्स गतितया सबे को और तितुस दलमतिया सबे को। (aiōn g165) 11 सिर्फ लूका मेरे पास है मरकुस को साथ लेकर आजा; क्यूँकि खिदमत के लिए बो मेरे काम का है। 12 तुखिकुस को मैं इफिसुस भेज दिया है। 13 जो चोगा मैं त्रोआस में करपुस के यहाँ छोड़ आया हूँ जब तू आए तो बो और किताबें खास कर रक्क के तुमार लेता आइये। 14 सिकन्दर ठठेरे ने मुझे से बहुत बुराइयों की खुदावन्द उसे उसके कामों के मुवाफिक बदला देगा। 15 उस से तू भी खबरदार रह, क्यूँकि उस ने हमारी बातों की बड़ी मुखालिफत की। 16 मेरी पहली जबाबदेही के बक्त किसी ने मेरा साथ न दिया; बल्कि सब ने मुझे छोड़ दिया काश कि उन्हें इसका हिसाब देना न पड़े। 17 मगर खुदावन्द मेरा मददगार था, और उस ने मुझे ताकत बख्ती ताकि मेरे जरिए पैगाम की पूरी मनादी हो जाए और सब गैर कौमें सुन लें और मैं शेर के मूँह से छुड़ाया गया। 18 खुदावन्द मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा और अपनी आसमानी बादशाही में सही सलामत पहुँचा देगा उसकी बडाई हमेशा से हमेशा तक होती रहे आमीन। (aiōn g165) 19 प्रिस्का और अक्विला से और अनेसफुस्स के खानदान से सलाम कह। 20 इरास्तुस कुरिन्थसु शहर में रहा, और त्रुफिसु को मैंने मीलेतुस टापू में बीमार छोड़ा। 21 जाड़ों से पहले मेरे पास आ जाने की कोशिश कर यखलुस और पद्में और लीन्स और क्लोटिया और सब भाईं तुझे सलाम कहते हैं। 22 खुदावन्द तेरी रुह के साथ रहे तुम पर फ़जल होता रहे।

तीतुस

१ पौत्रम की तरफ से तीतुस को खत, जो खुदा का बन्दा और 'ईसा मसीही

का रस्ता है। खुदा के बरगुजीदों के ईमान और उस हक्क की पहचान के मुताबिक जो दीनदारी के मुताबिक है। २ उस हमेशा की जिन्दगी की उम्मीद पर जिसका बांदा शूरू ही से खुदा ने किया है जो झूठ नहीं बोल सकता। (aiōnios g166) ३ और उस ने मुनासिब बक्तव्यों पर अपने कलाम को जो हमारे मुन्जी खुदा के हुक्म के मुताबिक मेरे सुपुर्द हुआ। ४ ईमान की शिरकत के स्थ से सच्चे फर्जन्द तितुस के नाम फज्जल और इतीमान खुदा बाप और हमारे मुन्जी 'ईसा मसीही की तरफ से तुझे हासिल होता रहे। ५ मैंने तुझे कोते में इस लिए छोड़ा था, कि तू बकिया बातों को दुस्त करे और मेरे हुक्म के मुताबिक शहर बा शहर ऐसे बुर्जों को मुकर्र करे। ६ जो बे इल्जाम और एक एवं बीवी के शैरह हों और उन के बच्चे ईमान्दार और बदचलनी और सरकशी के इल्जाम से पाक हों। ७ क्यूंकि निगहबान को खुदा का मुख्तार होने की वजह से बेइल्जाम होना चाहिए; न खुदराय हो न गुस्सावर, न नशे में गुल मचानेवाला, न मार पीट करने वाला और न नाजायज नफे का लालची; ८ बल्कि मुसाफिर परवर, खैर दोस्त, परहेजगार, मुन्सिफ मिजाज, पाक और सब्र करने वाला हो; ९ और ईमान के कलाम पर जो इस तालीम के मुवाफिक है काईम हो ताकि सही तालीम के साथ नसीहत भी कर सके और मुखालिफों को कायल भी कर सके। १० क्यूंकि बहत से लोग सरकश और बेहदा गो और दावाबाज हैं खासकर ईमानदार यहदी मख्खनों में से। ११ इन का मुँह बन्द करना चाहिए ये लोग नाजायज नफे की खातिर नशाइस्ता बातें सीधिकर घर के घर तबाह कर देते हैं। १२ उन ही में से एक शरब्स ने कहा है, जो खास उन का नवी था "केरेती हमेशा झूठे, मूँजी जानवर, वादा खिलाफ होते हैं।" १३ ये गवाही सच है, पस, उन्हें सख्त मलामत किया कर ताकि उन का ईमान दुस्त होजाए। १४ और वो यहदियों की कहानियों और उन आदमियों के हुम्मों पर तबज्जह न करें, जो हक्क से गुमाह होते हैं। १५ पाक लोगों के लिए सब चीजें पाक हैं, मगर गुनाह आलूदा और बेईमान लोगों के लिए कुछ भी पाक नहीं, बल्कि उन की 'अक्लन और दिल दोनों गुनाह आलूदा है। १६ वो खुदा की पहचान का दावा तो करते हैं, मगर अपने कामों से उसका इन्कार करते हैं क्यूंकि वो मकस्ह और नाफरमान हैं, और किसी नेक काम के काबिल नहीं।

२ और तू वो बातें बयान कर जो सही तालीम के मुनासिब हैं। २ यांनी ये

कि बहु मर्द परहेजगार, सन्जीदा और मुहाबती हों और उन का ईमान और मुहब्बत और सब दुस्त हो। ३ इसी तरह बूढ़ी 'औरतों की भी वज़' अ मुकद्दसों सी हों, इल्जाम लगाने वाली और ज्यादा मय पिने में मशगूल न हों, बल्कि अच्छी बातें सिखाने वाली हों, ४ ताकि जवान 'औरतों को सिखाएँ कि अपने शौहरों को प्यार करें बच्चों को प्यार करें; ५ और परहेजगार और पाक दामन और घर का कारोबार करने वाली, और मेहरबान हों अपने और अपने शौहर के तबे रहें, ताकि खुदा का कलाम बदनाम न हो। ६ जवान आदमियों को भी इसी तरह नसीहत कर कि परहेजगार बनें। ७ सब बातों में अपने आप को नेक कामों का नमूना बना तेरी तालीम में सफाई और सन्जीदी। ८ और ऐसी सेहत कलामी पाई जाए जो मलामत के लायक न हो ताकि मुखालिफ हम पर ऐब लगाने की कोई वजह न पाकर शर्मिन्दा होजाए। ९ नैकरों को नसीहत कर कि अपने मालिकों के तबे रहें और सब बातों में उन्हें खुश रखें, और उनके हुक्म से कुछ इन्कार न करें, १० चोरी चालाकी न करें बल्कि हर तरह की ईमानदारी अच्छी तरह जाहिर करें, ताकि उन से हर बात में हमारे मुन्जी खुदा की तालीम को रैनक हो। ११ क्यूंकि खुदा का वो फज्जल जाहिर हुआ है, जो सब आदमियों की

नजात का जारिया है, १२ और हमें तालीम देता है ताकि बेदीनी और दुनियावी खबाहिशों का इकार करके इस मौजूदा जहान में परहेजगारी और रास्तबाजी और दीनदारी के साथ जिन्दगी गुजारें; (aiōn g165) १३ और उस मुबारिक उम्मीद यांनी अपने बुजूर्ग खुदा और मुन्जी ईसा मसीह के जलाल के ज्ञाहिर होने के मुत्तजिर रहें। १४ जिस ने अपने आपको हमारे लिए दे दिया, ताकि फिदाया होकर हमें हर तरह की बेदीनी से छुड़ाले, और पाक करके अपनी खास मिलियत के लिए ऐसी उम्मत बनाए जो नेक कामों में सरगम हो। १५ पैरे इख्तियार के साथ ये बातें कह और नसीहत दे और मलामत कर। कोई तेरी हिकारत न करने पाए।

३ उनको याद दिला कि हाकिमों और इख्तियारबालों के तबे रहें और उनका

हुक्म मारें, और हर नेक काम के लिए मुस्त़इद रहें, २ किसी की बुराई न करें तकारी न हों; बल्कि नर्म मिजाज हों और सब आदमियों के साथ कमाल हलीमी से फेश आएँ। ३ क्यूंकि हम भी पहले नादान नाफरमान फरेब खाने वाले रंग बिरंग की खबाहिशों और ऐश — ओ — अशरत के बन्दे थे, और बदखावी और हसद में जिन्दगी गुजारते थे, नफरत के लायक थे और आपस में जलन रखते थे। ४ मगर जब हमारे मुन्जी खुदा की मेहरबानी और इंसान के साथ उसकी उल्फत ज्ञाहिर हुई। ५ तो उस ने हम को नजात दी; मगर रास्तबाजी के कामों के जरिए से नहीं जो हम ने खुद किए, बल्कि अपनी रहमत के मुताबिक पैदाइश के गुल और स्थ — उल — कूदूस के हमें नया बनाने के बरीले से। ६ जिसे उस ने हमारे मुन्जी 'ईसा मसीह के ज़रिए हम पर इफ्रात से नाजिल किया, ७ ताकि हम उसके फज्जल से रास्तबाज ठहर कर हमेशा की जिन्दगी की उम्मीद के मुताबिक वारिस बनें। (aiōnios g166) ८ ये बात सच है, और मैं चाहता हूँ, कि तू इन बातों का याकीनी तौर से दावा कर ताकि जिन्होंने खुदा का यकीन किया है, वो अच्छे कामों में लगे रहने का ख्याल रखवें ये बातें भली और आदमियों के लिए फाइदामन्द हैं। ९ मगर बेकूफी की हुज्जतों और नसबनामों और झगड़ों और उन लडाइयों से जो शरीर अत के बारे में हों परहेज करे इसलिए कि ये ला हासिल और बेकाइदा हैं। १० एक दो बार नसीहत करके झूठी तालीम देने वाले शख्स से किनारा कर, ११ ये जान कर कि ऐसा शख्स मुड गया है और अपने आपको मुरारिम ठहर कर गुनाह करता रहता है। १२ जब मैं तेरे पास अरतिमास या तुश्विकुस को भेजूँ तो मेरे पास नीकुपुलिस शहर आने की कोशीश करना क्यूंकि मैंने बही जाडा कानेक का झारदा कर लिया है। १३ जेनास आलिम — ए — शरा और अपूल्लोस को कोशीश करके रवाना कर दे इस तौर पर कि उन को किसी चीज़ की कमी न रही। १४ और हमारे लोग भी जस्तरों को रफा करने के लिए अच्छे कामों में लगे रहना सीधें ताकि बेफल न रहें। १५ मेरे सब साथी तुझे सलाम कहते हैं। जो ईमान के स्थ से हमें 'अजीजी रखते हैं उन से सलाम कह। तुम सब पर फज्जल होता रहे।

फिलेमोन

1 पौलस की तरफ से जो मसीह ईसा का कैदी है, और भाई तीमुथियुस की

तरफ से अपने 'अजीज और हम खिदमत फिलेमोन, 2 और बहन अफिया, और अपने हम सफर आर्थिप्पुस और फिलेमोन के घर की कलीसिया के नाम खतः 3 फ़ज़ल और इत्मीनान हमारे बाप खुदा और खुदावन्द 'ईसा मसीह की तरफ से तुम्हें हासिल होता रहे। 4 मैं तेरी उस मुहब्बत का और ईमान का हाल सुन कर, जो सब मुकद्दसों के साथ और खुदावन्द ईसा पर है' 5 हमेशा अपने खुदा का शुक्र करता हूँ, और अपनी 'दुआओं में तुझे याद करता हूँ। 6 ताकि तेरे ईमान की शिरकत तुम्हारी हर खबरी की पहचान में मसीह के बास्ते मु' अस्सिम हो। 7 क्यूँकि ऐ भाई! मुझे तेरी मुहब्बत से बहुत खुशी और तसल्ली हुई, इसलिए कि तेरी वजह से मुकद्दसों के दिल ताजा हुए हैं। 8 पस अगर चे मुझे मसीह में बड़ी दिलेरी तो है कि तुझे मुनासिब हृक्षम दूँ। 9 मगर मुझे ये ज्यादा पसन्द है कि मैं बृद्धा पौलस, बल्कि इस बन्नत मसीह 'ईसा का कैदी भी होकर मुहब्बत की राह से इल्लिमास करूँ। 10 सो अपने फर्जन्द उनेसिम्मुस के बारे में जो कैट की हालत में मुझ से पैदा हुआ, तुझसे इल्लिमास करता हूँ। 11 पहले तो तेरे कुछ काम का ना था मगर अब तेरे और मेरे दोनों के काम का है। 12 खुद उसी को यानी अपने कलेजे के टुकड़े को, मैंने तेरे पास वापस भेजा है। 13 उसको मैं अपने ही पास रखना चाहता था, ताकि तेरी तरफ से इस कैट में जो खुशरुदी के जरिए है मेरी खिदमत करे। 14 लेकिन तेरी मर्जी के बाहर मैं ने कुछ करना न चाहा, ताकि तेरे नेक काम लाचारी से नहीं बल्कि खुशी से हों। 15 क्यूँकि मुम्किन है कि वो तुझ से इसलिए थोड़ी देर के बास्ते जुदा हुआ हो कि हमेशा तेरे पास रहे। (aiōnios g166) 16 मगर अब से गुलाम की तरह नहीं बल्कि गुलाम से बेहतर होकर यानी ऐसे भाई की तरह रहे जो जिस्म में भी और खुदावन्द में भी मेरा निहायत 'अजीज हो और तेरा इससे भी कहीं ज्यादा। 17 पस अगर त मुझे शरीक जानता है, तो उसे इस तरह कुबूल करना जिस तरह मुझे। 18 और अगर उस ने तेरा कुछ नुकसान किया है, या उस पर तेरा कुछ आता है, तो उसे मेरे नाम से लिख ले। 19 मैं पौलस अपने हाथ से लिखता हूँ कि खुद अदा करूँगा, इसके कहने की कुछ ज़स्तर नहीं कि मेरा कर्ज़ जो तुझ पर है वो तु खुद है 20 ऐ भाई! मैं चाहता हूँ कि मुझे तेरी तरफ से खुदावन्द में खुशी हासिल हो। मसीह में मेरे दिल को ताजा कर। 21 मैं तेरी फरमाँबरदारी का यकीन करके तुझे लिखता हूँ, और जानता हूँ कि जो कुछ मैं कहता हूँ, तू उस से भी ज्यादा करेगा। 22 इसके सिवा मेरे लिए ठहरने की जगह तैयार कर, क्यूँकि मुझे उम्मीद है कि मैं तुम्हारी 'दु' आओं के बसीले से तुम्हें बरछा जाऊँगा। 23 इपफ्रास जो मसीह ईसा में मेरे साथ कैद है, 24 और मरकुस और अरिस्तरखुस और दोमास और लुका, जो मेरे हम खिदमत हैं तुझे सलाम कहते हैं। 25 हमारे खुदावन्द ईसा मसीह का फ़ज़ल तुम्हारी स्तर पर होता रहे। आमीन।

इब्रानियों

1 पुराने जमाने में खुदा ने बाप — दादा से हिस्सा — ब — हिस्सा और तरह — ब — तरह नवियों के जरिए कलाम करके, **2** इस जमाने के आखिर में हम से बेटे के जरिए कलाम किया, जिसे उसने सब चीजों का वारिस ठहराया और जिसके बसीले से उसने आलम भी पैदा किए। (aiōn g165) **3** वो उसके जलाल की रोशनी और उसकी जात का नक्श होकर सब चीजों को अपनी कुदरत के कलाम से संभालता है। वो गुणहाँ को धोकर 'आलम — ए — बाला पर खुदा की दहनी तरफ जा बैठा, **4** और फरिश्तों से इस कदर बड़ा हो गया, जिस कदर उसने मीरास में उनसे अफजल नाम पाया। **5** क्यूँकि फरिश्तों में से उसने कब किन्ति से कहा, “तू मेरा बेटा है, आज तू मुझ से पैदा हुआ?” और फिर ये, “मैं उसका बाप हूँगा?” **6** और जब पहलौठे को दुनियाँ में फिर लाता है, तो कहता है, “खुदा के सब फरिश्ते उसे सिजदा करें।” **7** और वो अपने फरिश्तों के बारे में ये कहता है, “वो अपने फरिश्तों को हवाएँ, और अपने खादिमों को आग के शोले बनाता है।” **8** मगर बेटे के बारे में कहता है, “ऐ खुदा, तेरा तज्जह हमेशा से हमेशा तक रहेगा, और तेरी बादशाही की 'लाठी रास्तबाजी की 'लाठी है।” (aiōn g165) **9** तू ने रास्तबाजी से मुहब्बत और बदकारी से 'अदावत रखवी, इसी वजह से खुदा, याँनी तेरे खुदा ने खुशी के तेल से तेरे साथियों की बनिस्वत तुड़े ज्यादा मसह किया।” **10** और ये कि, “ऐ खुदावन्दा! तू ने शुरू में जमीन की नीव डाली, और आसमान तेरे हाथ की कारीगरी है। **11** वो मिट जाएँगे, मगर तू बाकी रहेगा; और वो सब पोशाक की तरह पुणे हो जाएँगे। **12** तू उन्हें चादर की तरह लपेटेगा, और वो पोशाक की तरह बदल जाएँगे: मगर तू वही रहेगा और तेरे साल खत्म न होंगे।” **13** लेकिन उसने फरिश्तों में से किसी के बारे में कब कहा, “तू मेरी दहनी तरफ बैठ, जब तक मैं तेरे दुम्हनों को तेरे पाँव तर्ते की चौकी न कर दूँ।” **14** क्या वो सब खिदमत गुजार स्हूँ हनी, जो नजात की मीरास पानेवालों की खातिर खिदमत को भेजी जाती है?

2 इसलिए जो बारें हम ने सुनी, उन पर और भी दिल लगाकर गौर करना चाहिए, ताकि बहक कर उनसे दूर न चले जाएँ। **2** क्यूँकि जो कलाम फरिश्तों के जरिए फरमाया गया था, जब वो काईम रहा और हर कुसूर और नाफरमानी का ठीक ठीक बदला मिला, **3** तो इन्हीं बड़ी नजात से गाफिल रहकर हम क्यूँकर चल सकते हैं? जिसका बयान पहले खुदावन्द के बसीले से हुआ, और सुनने वालों से हमें पूँ — सबका को पहुँचा। **4** और साथ ही खुदा भी अपनी मर्जी के मुवाफिक निशानों, और 'अजीब कामों, और तरह तरह के मोजिजों, और स्हू — उल — कुदस की नेमतों के ज़रिए से उसकी गवाही देता रहा। **5** उनसे उस आनेवाले जहान को जिसका हम ज़िक्र करते हैं, फरिश्तों के ताबे' नहीं किया। **6** बल्कि किसी ने किसी मौके पर ये बयान किया है, “इंसान क्या चीज़ है जो तू उसका खयाल करता है? या आदमजाद क्या है जो तू उस पर निगाह करता है? **7** तू ने उसे फरिश्तों से कुछ ही कम किया; तू ने उस पर जलाल और 'इज्जत का ताज रखवा, और अपने हाथों के कामों पर उसे इख्लियार बख्शा। **8** तू ने सब चीजें ताबे' करके उसके कदमों तले कर दी हैं।” पस जिस सूरत में उनसे सब चीजें उसके ताबे' कर दीं, तो उसने कोई चीज़ ऐसी न छोड़ी जो उसके ताबे, न हो। मगर हम अब तक सब चीजें उसके ताबे' नहीं देखते। **9** अलबत्ता उसको देखते हैं जो फरिश्तों से कुछ ही कम किया गया, याँनी इसा को मौत का दुःख सहने की वजह से जलाल और 'इज्जत का ताज उसे पहनाया गया है, ताकि खुदा के फ़ज़ल से वो हर एक आदमी के लिए मौत का मज़ा चखे। **10** क्यूँकि जिसके लिए सब चीजें हैं और

जिसके बसीले से सब चीजें हैं, उसको यही मुनासिब था कि जब बहुत से बेटों को जलाल में दाखिल करे, तो उनकी नजात के बानी को दुखों के ज़रिए से कामिल कर ले। **11** इसलिए कि पाक करने वाला और पाक होनेवाला सब एक ही नस्ल से हैं, इसी ज़रिए वो उन्हें भाई कहने से नहीं शरमाता। **12** चुनाँचे वो फरमाता है, “तेरा नाम मैं आने भाइयों से बयान करूँगा, कलीसिया में तेरी हम्द के गीत गाऊँगा।” **13** और फिर ये, “देख मैं उस पर भरोसा रखूँगा।” और फिर ये, “देख मैं उन लड़कों समेत जिन्हें खुदा ने मुझे दिया।” **14** पस जिस सूरत में कि लड़के खुन और गोश्त में शरीक हैं, तो वो खुद भी उनकी तरह उनमें शरीक हुआ, ताकि मौत के बसीले से उसको जिसे मौत पर कुदरत हासिल थी, याँनी इब्नीस को, तबाह कर दे; **15** और जो उप्र भर मौत के डर से गुलामी में गिरफतार रहे, उन्हें छुड़ा ले। **16** क्यूँकि हकीकत में वो फरिश्तों का नहीं, बल्कि अब्राहाम की नस्ल का साथ देता है। **17** पस उसको सब बातों में अपने भाइयों की तरह बनना ज़स्ती हआ, ताकि उम्मत के गुनाहों का कफ़क़ार देने के बास्ते, उन बातों में जो खुदा से ताँ'अल्लुक रखती है, एक रहम दिल और दियानतदार सरदार कहिन बने। **18** क्यूँकि जिस सूरत में उसने खुद की आजमाइश की हालत में दुःख उठाया, तो वो उनकी भी मदद कर सकता है जिनकी आजमाइश होती है।

3 पस ऐ पाक भाइयों! तुम जो आसमानी बुलावे में शरीक हो, उस रस्ल और सरदार काहिन ईसा पर गौर करो जिसका हम करते हैं; **2** जो अपने मुर्कर करनेवाले के हक में दियानतदार था, जिस तरह मूसा खुदा के सारे घर में था। **3** क्यूँकि वो मूसा से इस कदर ज्यादा 'इज्जत के लायक समझा गया, जिस कदर घर का बनाने वाला घर से ज्यादा इज्जतदार होता है। **4** चुनाँचे हर एक घर का कोई न कोई बनाने वाला होता है, मगर जिसने सब चीजें बनाइ वो खुदा है। **5** मूसा तो उसके सारे घर में खादिम की तरह दियानतदार रहा, ताकि आइन्दा बयान होनेवाली बातों की गवाही दे। **6** लेकिन मसीह बेटे की तरह उसके घर का मालिक है, और उसका घर हम हैं; बर्थर कि अपनी दिलेणी और उम्मीद का फ़खु आखिर तक मजबूती से क्राईम रखें। **7** पस जिस तरह कि पाक स्ह कलाम में फरमाता है, “अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, **8** तो अपने दिलों को सख्त न करो, जिस तरह गुस्सा दिलाने के बक्त आजमाइश के दिन ज़ंगत में किया था। **9** जहाँ तुम्हारे बाप — दादा ने मुझे ज़ाँचा और आजमाया और चालीस बरस तक मेरे काम देखे। **10** इसलिए मैं उस पीढ़ी से नाराज़ हुआ, और कहा, 'इनके दिल हमेशा गुमराह होते रहते हैं, और उन्होंने मेरी राहों को नहीं पहचाना। **11** चुनाँचे मैंने अपने गुस्से में कसम खाई, 'ये मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे।'” **12** ऐ भाइयों! खबरदार! तुम मैं से किसी का ऐसा बुरा और वे — ईमान दिल न हो, जो जिन्दा खुदा से फिर जाए। **13** बल्कि जिस रोज तक आज का दिन कहा जाता है, हर रोज आपस में नसीहत किया करो, ताकि तुम मैं से कोई गुनाह के थोखे में आकर सख्त दिल न हो जाए। **14** क्यूँकि हम मसीह में शरीक हुए हैं, बर्थर कि अपने शस्त्रात के भरोसे पर आखिर तक मजबूती से क्राईम रहें। **15** चुनाँचे कलाम में लिखा है “अगर आज तुम उसकी आवाज़ सुनो, तो अपने दिलों को सख्त न करो, जिस तरह कि गुस्सा दिलाने के बक्त किया था।” **16** किन लोगों ने आवाज़ सुन कर गुस्सा दिलाया? क्या उन सब नहीं जो मूसा के बसीले से मिस्र से निकले थे? **17** और वो किन लोगों से चालीस बरस तक नाराज़ रहा? क्या उससे नहीं जिन्होंने गुमाह किया, और उनकी लाशें वीराने में पड़ी रहीं? **18** और किनके बारे में उसने कसम खाई कि वो मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे, सिवा उनके जिन्होंने नाफरमानी की? **19** गरज़ हम देखते हैं कि वो वे — ईमानी की वजह से दाखिल न हो सके।

4 पस जब उसके आराम में दाखिल होने का बाद बाकी है तो हमें डरना चाहिए ऐसा न हो कि तुम में से कोई रहा हआ मालूम हो 2 क्यूंकि हमें भी उन ही की तरह खुशरबरी सुनाई गई, लेकिन सुने हुए कलाम ने उनको इसलिए कुछ फाइदा न दिया कि सुनने वालों के दिलों में इमान के साथ न बैठा। 3 और हम जो ईमान लाए, उस आराम में दाखिल होते हैं; जिस तरह उसने कहा, “मैंने अपने गुस्से में कसम खाई कि ये मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे।” अगर चे दुनिया बनाने के बक्त उसके काम हो चुके थे। 4 चुनौती उसने सातवें दिन के बारे में कलाम में इस तरह कहा, “खुदा ने अपने सब कामों को पूरा करके, सातवें दिन आराम किया।” 5 और फिर इस मुकाम पर है, “वो मेरे आराम में दाखिल न होने पाएँगे।” 6 पस जब ये बात बाकी है कि कुछ उस आराम में दाखिल हों, और जिनको पहले खुशरबरी सुनाई गई थी वो नाफरमानी की बजह से दाखिल न हुए, 7 तो फिर एक खास दिन ठहर कर इतनी मुट्ठत के बाद दाँड़ की किताब में उसे आज का दिन कहता है। जैसा पहले कहा गया, “और आज तुम उसकी आवाज सुनो, तो अपने दिलों को सख्त न करो।” 8 और अगर ईसा ने उन्हें आराम में दाखिल किया होता, तो वो उसके बाद दुप्रेर दिन का जिक्र न करता। 9 पस खुदा की उम्मत के लिए सबत का आराम बाकी है 10 क्यूंकि जो उसके आराम में दाखिल हुआ, उसने भी खुदा की तरह अपने कामों को पूरा करके आराम किया। 11 पस आओ, हम उस आराम में दाखिल होने की कोशिश करें, ताकि उनकी तरह नाफरमानी कर के कोई शब्द गिर न पड़े। 12 क्यूंकि खुदा का कलाम जिन्दा, और असरदार, और हर एक दोधारी तलवार से ज्यादा तेज़ है, और जान और स्व और बन्द, बन्द और गदे को जुदा करके गुजर जाता है, और दिल के खयालों और इरादों को जाँचता है। 13 और खुदा की नजर में मख्लिकता की कोई चीज़ छिपी नहीं, बल्कि जिससे हम को काम है उसकी नजरों में सब चीजें खुली और बेपदा हैं। 14 पस जब हमारा एक ऐसा बड़ा सरदार काहिन है जो आसमानों से गुजर गया, यानी खुदा का बेटा ईसा, तो आओ हम अपने इन्हराए पर काईम रहें। 15 क्यूंकि हमारा ऐसा सरदार काहिन नहीं जो हमारी कमज़ोरियों में हमारा हमदर्द न हो सके, बल्कि वो सब बातों में हमारी तरह आजमाया गया, तो भी बेगुनाह रहा। 16 पस आओ, हम फ़ज़ल के तखत के पास दिलेरी से चलें, ताकि हम पर रहम हो और फ़ज़ल हासिल करें जो ज़स्तर के बक्त हमारी मदद करे।

5 अब ईसानः में से चुने गए इमाम — ए — आजम को इस लिए मुकर्रर किया जाता है कि वह उन की खातिर खुदा की खिंदिमत करे, ताकि वह गुनाहों के लिए नज़राने और कुर्बानीयाँ पेश करे। 2 वह जाहिल और आवारा लोगों के साथ नर्म सुलक रख सकता है, क्यूंकि वह खुद कई तरह की कमज़ोरियों की गिरफ्त में होता है। 3 यही बजह है कि उसे न सिर्फ़ कौम के गुनाहों के लिए बल्कि अपने गुनाहों के लिए भी कुर्बानीयाँ चढ़ानी पड़ती हैं। 4 और कोई अपनी मर्जी से इमाम — ए — आजम का ‘इज़ज़त वाला ओह्दा नहीं अपना सकता बल्कि ज़स्ती है कि खुदा उसे हास्न की तरह बुला कर मुकर्रर करे। 5 इसी तरह मसीह ने भी अपनी मर्जी से इमाम — ए — आजम का ‘इज़ज़त वाला ओह्दा नहीं अपनाया। इस के बजाए खुदा ने उस से कहा, “तू मेरा बेटा है आज तू मुझसे पैदा हुआ है।” 6 कहीं और वह फ़रमाता है, “तू अब तक इमाम है, ऐसा इमाम जैसा मलिक — ए — सिद्धक था।” (aiōn g165) 7 जब ईसा इस दुनिया में था तो उस ने जोर जोर से पुकार कर और अँख बहा बहा कर उसे दुआएँ और इलित्ताएँ पेश की जो उसको मौत से बचा सकता था और खुदा तरसी की बजह से उसकी सुनी गई। 8 वह खुदा का फ़र्जन्द तो था, तो भी उस ने दुःख उठाने से फरमाँबरदारी सीरीबी। 9 जब वह कामिलियत तक पहुँच गया तो वह उन सब की अबदी नज़ात का सरचशमा बन गया जो उस

की सुनते हैं। (aiōnios g166) 10 उस बक्त खुदा ने उसे इमाम — ए — आजम भी मुतअर्यन किया, ऐसा इमाम जैसा मलिक — ए — सिद्धक था। 11 इस के बारे में हम ज्यादा बहुत कछ कह सकते हैं, लेकिन हम मुश्किल से इस का खुलासा कर सकते हैं, क्यूंकि आप सुनने में सुस्त हैं। 12 असल में इतना बक्त गुजर गया है कि अब आप को खुद उस्ताद होना चाहिए। अफ़सोस कि ऐसा नहीं है बल्कि आप को इस की ज़स्तर है कि कोई आप के पास आ कर आप को खुदा के कलाम की बुनियादी सच्चाइयाँ दुबारा सिखाए। आप अब तक सख्त गिज़ा नहीं खा सकते बल्कि आप को दूध की ज़स्तर है। 13 जो दृष्ट ही पी सकता है वह अभी छोटा बच्चा ही है और वह ग्रामवाज़ी की तालीम से ना समझ है। 14 इस के मुकाबिले में सख्त गिज़ा बालिगों के लिए है जिन्होंने अपनी बल्सात के जरिए अपनी स्थानी जिन्दगी को इतनी तर्कियत दी है कि वह भलाई और बुराई में पहचान कर सकते हैं।

6 इस लिए आँ, हम मरीह के बारे में बुनियादी तालीम को छोड़ कर बल्सात की तरफ आगे बढ़ें। क्यूंकि ऐसी बातें दोहराने की ज़स्तर नहीं होनी चाहिए जिन से ईमान की बुनियाद रखी जाती है, मसलन मौत तक पहुँचाने वाले काम से तौबा, 2 बपतिस्मा क्या है, किसी पर हाथ रखने की तालीम, मुर्दों के जी उठने और हमेशा सजा पाने की तालीम। (aiōnios g166) 3 चुनौते खुदा की मर्जी हुई तो हम यह छोड़ कर आगे बढ़ेगे। 4 नामुसकिन है कि उन्हें बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाया जाए जिन्होंने ने अपना ईमान छोड़ दिया हो। उन्हें तो एक बार खुदा के नूर में लाया गया था, उन्होंने ने आसमान की नै अमत का मज़ा चख लिया था, वह रुह — उल — कुदूस में शरीक हुए, 5 उन्होंने ने खुदा के कलाम की भलाई और अब वाले ज़माने की ताकतों का तज़र्ज़ा किया था। (aiōn g165) 6 और फिर उन्होंने ने अपना ईमान छोड़ दिया। ऐसे लोगों को बहाल करके दुबारा तौबा तक पहुँचाना नामुसकिन है। क्यूंकि ऐसा करने से वह खुदा के फ़र्जन्द को दुबारा मस्लिम करके उसे लान — तान का निशाना बना देते हैं। 7 खुदा उस ज़माने को बर्कत देता है जो अपने पर बार बार पड़ने वाली बारिश को ज़ज्ज़ करके ऐसी फ़सल पैदा करती है जो खेतीबाड़ी करने वाले के लिए फ़ाइदामन्द हो। 8 लेकिन अगर वह सिर्फ़ काटे दरा पैदे और ऊँटकटरो पैदा करे तो वह बेकर है और इस खरे में है कि उस पर लान्त भेजी जाए। अन्जाम — ए — कर उस पर का सब कुछ जलाया जाए। 9 लेकिन ऐ अज़ीज़ो! अगर चे वह इस तरह की बातें कर रहे हैं तो भी हमारा भरोसा यह है कि आप को वह बेतरीन बर्कतें हासिल हैं जो नज़ात से मिलती हैं। 10 क्यूंकि खुदा बेइन्स्पाक नहीं है। वह आप का काम और वह मुहब्बत नहीं भूलेगा जो आप ने उस का नाम ले कर जाहिर की जब आप ने पाक लोगों की खिंदिमत की बल्कि आज तक कर रहे हैं। 11 लेकिन हमारी बड़ी खबाहिश यह है कि आप में से हर एक इसी सरगर्मी का इज़हार आखिर तक करता रहे ताकि जिन बातों की उमीद आप रखते हैं वह हकीकत में पूरी हो जाएँ। 12 हम नहीं चाहते कि आप सुस्त हो जाएँ बल्कि यह कि आप उन के नमने पर चलें जो ईमान और सब से वह कुछ मीरास में पा रहे हैं जिस का बाद खुदा ने किया है। 13 जब खुदा ने कसम खा कर अब्राहम से बादा किया तो उस ने अपनी ही कसम खा कर यह बादा किया। क्यूंकि कोई और नहीं था जो उस से बड़ा था जिस की कसम वह खा सकता। 14 उस बक्त उस ने कहा, “मैं ज़स्त तुझे बर्कत दूँगा।” 15 इस पर अब्राहम ने सब से इन्तज़ार करके वह कुछ पाया जिस का खुदा ने बादा किया था। 16 कसम खाते वक्त लोग उस की कसम खाते हैं जो उन से बड़ा होता है। इस तरह से कसम में बयानकरा बात की तस्दीक बहस — मुबाहसा की हर गुन्जाइश को खत्म कर देती है। 17 खुदा ने भी कसम खा कर अपने वादे की तस्दीक की। क्यूंकि वह

अपने बादे के बारिसों पर साफ ज़ाहिर करना चाहता था कि उस का इरादा कभी नहीं बदलेगा। 18 गरज, यह दो बातें काईम रही हैं, खुदा का बादा और उस की कसम। वह इन्हें न तो बदलेगा न इन के बारे में झूल बोलेगा। यूँ हम जिन्होंने उस के पास पनाह ली है बड़ी तसल्ली पा कर उस उम्मीद को मज़बूती से थामे रख सकते हैं जो हमें पेश की गई है। 19 क्यूंकि यह उम्मीद हमारी जान के लिए मजबूत लंगर है। और यह आसमानी बैत — उल — मुकद्दस के पाकतीरीन कमरे के पर्दे में से गुज़र कर उस में दाखिल होती है। 20 वही इसा हमारे आगे आगे जा कर हमारी खातिर दाखिल हुआ है। यूँ वह मलिक — ए — सिद्दक की तरह हमेशा के लिए इमाम — ए — आजम बन गया है। (aiōn g165)

7 यह मलिक — ए — सिद्दक, सालिम का बादशाह और खुदा — ए —

तआता का इमाम था। जब अब्रहाम चार बादशाहों को शिक्षत देने के बाद वापस आ रहा था तो मलिक — ए — सिद्दक उस से मिला और उसे बर्कत दी। 2 इस पर अब्रहाम ने उसे तामाम लूट के माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। अब मलिक — ए — सिद्दक का मतलब रास्तबाजी का बादशाह है। दूसरे, सालिम का बादशाह का मतलब सलामती का बादशाह है। 3 न उस का बाप या माँ है, न कोई नसबनाम। उसकी जिन्दगी की न तो शुरूआत है, न खातिमा। खुदा के फर्जन्द की तरह वह हमेशा तक इमाम रहता है। 4 गौर करें कि वह कितना अजीमी था। हमारे बापदादा अब्रहाम ने उसे लटे हुए माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया। 5 अब शरी'अत माँग करती है कि लाली की वह औलाद जो इमाम बन जाती है कौम यानी अपने भाइयों से पैदावार का दसवाँ हिस्सा ले, हालाँकि उन के भाई अब्रहाम की औलाद है। 6 लेकिन मलिक — ए — सिद्दक लाली की औलाद में से नहीं था। तो भी उस ने अब्रहाम से दसवाँ हिस्सा ले कर उसे बर्कत दी जिस से खुदा ने बादा किया था। 7 इस में कोई शक नहीं कि कम हैसियत शख्स को उस से बर्कत मिलती है जो ज्यादा हैसियत का हो। 8 जहाँ लाली इमामों का ताल्लुक है खत्म होने वाले इंसान दसवाँ हिस्सा लेते हैं। लेकिन मलिक — ए — सिद्दक के मुआमले में यह हिस्सा उस को मिला जिस के बारे में गवाही दी गई है कि वह जिन्दा रहता है। 9 यह भी कहा जा सकता है कि जब अब्रहाम ने माल का दसवाँ हिस्सा दे दिया तो लाली ने उस के जरिए भी यह हिस्सा दिया, हालाँकि वह खुद दसवाँ हिस्सा लेता है। 10 क्यूंकि अगर चे लाली उस बर्कत पैदा नहीं हआ था तो भी वह एक तरह से अब्रहाम के जिस्म में मौजूद था जब मलिक — ए — सिद्दक उस से मिला। 11 अगर लाली की कहानित (जिस पर शरी'अत मुहसिर थी) कामिलियत पैदा कर सकती तो फिर एक और किस्म के इमाम की क्या ज़स्तर होती, उस की जो हासन जैसा न हो बल्कि मलिक — ए — सिद्दक जैसा? 12 क्यूंकि जब भी कहानित बदल जाती है तो लाज़िम है कि शरी'अत में भी तब्दीली आए। 13 और हमारा खुदावन्द जिस के बारे में यह बयान किया गया है वह एक अलग कबीले का फर्द था। उस के कबीले के किसी भी फर्द ने इमाम की खिदमत अदा नहीं की। 14 क्यूंकि साफ मालूम है कि खुदावन्द मरीह यहदाह कबीले का फर्द था, और मूसा ने इस कबीले को इमामों की खिदमत में शामिल न किया। 15 मुआमला ज्यादा साफ हो जाता है। एक अलग इमाम ज़ाहिर हुआ है जो मलिक — ए — सिद्दक जैसा है। 16 वह लाली के कबीले का फर्द होने से इमाम न बना जिस तरह शरी'अत की चाहत थी, बल्कि वह न खत्म होने वाली जिन्दगी की कुव्वत ही से इमाम बन गया। 17 क्यूंकि कलाम — ए — मुकद्दस फरमाता है, कि तू मलिक — ए — सिद्दक के तौर पर अबद तक कहिन है। (aiōn g165) 18 यूँ पूर्णे हक्म को रुक्क कर दिया जाता है, क्यूंकि वह कमज़ोर और बेकार था 19 (मूसा की शरी'अत तो किसी चीज़ को कामिल नहीं बना सकती थी) और अब एक बेहतर

उम्मीद मुहय्या की गई है जिस से हम खुदा के करीब आ जाते हैं। 20 और यह नया तरीका खुदा की कसम से क्याई गई जब दूसरे इमाम बने। 21 लेकिन इसा एक कसम के जरिए इमाम बन गया जब खुदा ने फरमाया। “खुदा ने कसम खाई है और वो इससे अपना मन नहीं बदलेगा: तुम अबद तक के लिये इमाम है।” (aiōn g165) 22 इस कसम की बजह से इसा एक बेहतर अहद की जमानत देता है। 23 एक और बदलाव, पुराने निजाम में बहत से इमाम थे, क्यूंकि मौत ने हर एक की खिदमत महदूद किए रखी। 24 लेकिन चूँकि इंसा हमेशा तक जिन्दा है इस लिए उस की कहानित कभी भी खत्म नहीं होगी। (aiōn g165) 25 यूँ वह उन्हें अबदी नजात दे सकता है जो उस के बरीले से खुदा के पास आते हैं, क्यूंकि वह अबद तक जिन्दा है और उन की शकात करता रहता है। 26 हमें ऐसी ही इमाम — ए — आजम की ज़स्तर थी। हाँ, ऐसा इमाम जो मुकद्दस, बेकुसर, बेदासा, गुनाहगारों से अलग और आसमानों से बुलन्द हुआ है। 27 उस दूसरे इमामों की तरह इस की ज़स्तर नहीं कि हर रोज कुर्�बानियाँ पेश करे, फहले अपने लिए फिर कौम के लिए। बल्कि उस ने अपने आप को पेश करके अपनी इस कुर्बानी से उन के गुनाहों को एक बार सदा के लिए मिटा दिया। 28 मूसा की शरी'अत ऐसे लोगों को इमाम — ए — आजम मुकर्रर करती है जो कमज़ोर है। लेकिन शरी'अत के बाद खुदा की कसम फर्जन्द को इमाम — ए — आजम मुकर्रर करती है, और यह खुदा का फर्जन्द हमेशा तक कामिल है। (aiōn g165)

8 जो कछ हम कह रहे हैं उस की खास बात यह है, हमारा एक ऐसा इमाम — ए — आजम है जो आसमान पर जलाली खुदा के तख्त के दहने हाथ बैठा है। 2 वहाँ वह मन्दिर में खिदमत करता है, उस हक्मीती मुलाकात के खेमे में जिसे इंसानी हाथों ने खड़ा नहीं किया बल्कि खुदा ने। 3 हर इमाम — ए — आजम को नज़राने और कुर्बानियाँ पेश करने के लिए मुकर्रर किया जाता है। इस लिए लाजिम है कि हमारे इमाम — ए — आजम के पास भी कुछ हो जो वह पेश कर सके। 4 अगर यह दुनिया में होता तो इमाम — ए — आजम न होता, क्यूंकि यहाँ इमाम तो है जो शरी'अत के लिहाज से नज़राने पेश करते हैं। 5 जिस मन्दिर में वह खिदमत करते हैं वह उस मन्दिर की सिर्फ नकरी सूरत और साया है जो आसमान पर है। यही वजह है कि खुदा ने मूसा को मुलाकात का खेमा बनाने से फहले आगाह करके यह कहा, “गौर कर कि सब कुछ बिल्कुल उस नम्रे के मूलाकिं बनाया जाए जो मैं तुमे यहाँ पहाड़ पर दिखाता हूँ।” 6 लेकिन जो खिदमत इंसा को मिल गई है वह दुनिया के इमामों की खिदमत से कहीं बेहतर है, उतनी बेहतर जितना वह अहद जिस का दरमियानी इंसा है पुराने अहद से बेहतर है। क्यूंकि यह अहद बेहतर बादों की बुनियाद पर बँधा गया। 7 अगर पहला अहद बेइलाज़म होता तो फिर नए अहद की ज़स्तर न होती। 8 लेकिन खुदा को अपनी कौम पर इल्जाम लगाना पड़ा। उस ने कहा, “खुदावन्द फरमाता है कि देख! वो दिन आते हैं कि मैं इस्माइल के घराने और यहदाह के घराने से एक नया 'अहद बाँधूँगा। 9 यह उस अहद की तरह नहीं होगा जो मैंने उनके बाप दादा से उस दिन बाँधा था, जब मूक्क — ए — मिस से निकाल लाने के लिए उनका हाथ पकड़ा था, इस वास्ते कि वो मेरे अहद पर काईम नहीं रहे और खुदा बन्द फरमाता है कि मैंने उनकी तरफ कुछ तबज़ह न की। 10 खुदावन्द फरमाता है कि, जो अहद इस्माइल के घराने से उनदिनों के बाद बाँधूँगा, वो ये है कि मैं अपने कानून उनके जहन में डालूँगा, और उनके दिलों पर लिखूँगा, और मैं उनका खुदा हँगा, और वो मेरी उमत होंगे। 11 और हर शख्स अपने हम बतन और अपने भाई को ये तालीम न देगा कि तू खुदावन्द को पहचान, क्यूंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे। 12 क्यूंकि मैं उनके गुनाहों को याद ना रखूँगा। और मैं उनके गुनाहों को याद ना रखूँगा।” 13 इन

अल्फाज में खुदा एक नए अहंद का ज़िक्र करता है और यूँ पुराने अहंद को रद्द कर देता है। और जो रद्द किया और पुराना है उस का अन्जाम करीब ही है।

9 जब पहला अहंद बौद्धा गया तो इबादत करने के लिए हिंदायत दी गई।

ज़मीन पर एक मन्त्रिदस भी बनाया गया, 2 एक खेमा जिस के पहले कमरे में शमादान, मेज और उस पर पड़ी मख्सूस की गई रोटियाँ थीं। उस का नाम “मुकद्दस कमरा” था। 3 उस के पीछे एक और कमरा था जिस का नाम “पाकतरीन कमरा” था। पहले और दूसरे कमरे के दरमियान बाकी दरवाजे पर पर्दा लगा था। 4 इस पिछले कमरे में बरबर जलाने के लिए सोने की कुर्बानगाह और अहंद का सन्दूक था। अहंद के सन्दूक पर सोना मढ़ा हुआ था और उस में तीन चीजें थीं: सोने का मर्तबान जिस में मन भरा था, हास्न की वह लाठी जिस से कोपले फूट निकली थीं और पथर की वह दो ताजियाँ जिन पर अहंद के अक्काम लिखे थे। 5 सन्दूक पर इलाही जलाल के दो कर्त्त्वी फरिश्ते लगे थे जो सन्दूक के ढकने को साधा देते थे जिस का नाम “कफ़कारा का ढकना” था। लेकिन इस जगह पर हम सब कुछ मज़ीद तपसील से बयान नहीं करना चाहते।

6 यह चीजें इती तरतीब से रखी जाती हैं। जब इमाम अपनी खिदमत के फराइज अदा करते हैं तो बाकाइदारी से पहले कमरे में जाते हैं। 7 लेकिन सिर्फ इमाम — ए — अज़ाम ही दूसरे कमरे में दाखिल होता है, और वह भी साल में सिर्फ एक दफ़ा। जब भी वह जाता है वह अपने साथ खून ले कर जाता है जिसे वह अपने और कौम के लिए पेश करता है ताकि वह गुनाह मिट जाएँ जो लोगों ने भूलचूक में किए होते हैं। 8 इस से स्थ — उल — कुद्दम दिखाता है कि पाकतरीन कमरे तक रसाई उस वक्त तक जाहिर नहीं की गई थी जब तक पहला कमरा इस्तेमाल में था। 9 यह मिजाजन मैजूदा ज़माने की तरफ़ इशारा है। इस का मतलब यह है कि जो नज़राने और कुर्बानियाँ पेश की जा रही हैं वह इबादत गुजार दिल को पाक — साफ़ करके कामिल नहीं बना सकती। 10 क्यौंकि इन का ताल्लुक सिर्फ़ खाने — पीने वाली चीज़ों और गुस्त की मुखलिकी रस्मों से होता है, ऐसी ज़ारिरी हिंदायत जो सिर्फ़ नए निजाम के आने तक लागू है। 11

लेकिन अब मसीह आ चुका है, उन अच्छी चीज़ों का इमाम — ए — आज़म जो अब हासिल हई है। जिस खेमे में वह खिदमत करता है वह कहीं ज़यादा अज़ीम और कामिल है। यह खेमा इसानी हाथों से नहीं बनाया गया यानी यह इस कायनात का हिस्सा नहीं है। 12 जब मसीह एक बार सदा के लिए खेमे के पाकतरीन कमरे में दाखिल हुआ तो उस ने कुर्बानियाँ पेश करने के लिए बकरों और बछड़ों का खून इस्तेमाल न किया। इस के बजाए उस ने अपना ही खून पेश किया और यूँ हमारे लिए हमेशा की नज़ात हासिल की। (aiōnios g166) 13 पुराने निजाम में बैल — बकरों का खून और जवान गाय की राख नापाक लोगों पर छिड़के जाते थे ताकि उन के जिस्म पाक — साफ़ हो जाएँ। 14 अगर इन चीज़ों का यह असर था तो फिर मसीह के खून का क्या ज़बरदस्त असर होगा! अजली स्थ के ज़रिए उस ने अपने आप को बेदाग कुर्बानी के तौर पर पेश किया। यूँ उस का खून हमारे ज़मीर को मौत तक पहुँचाने वाले कामों से पाक — साफ़ करता है ताकि हम ज़िन्दा खुदा की खिदमत कर सकें। (aiōnios g166) 15 यही वजह है कि मसीह एक नए अहंद का दरमियानी है। मक्सद यह था कि जितने लोगों को खुदा ने बुलाया है उन्हें खुदा की बादा की हुई और हमेशा की मीरास मिले। और यह सिर्फ़ इस लिए मुकिन हआ है कि मसीह ने मर कर किदमा दिया ताकि लोग उन गुनाहों से छुटकारा पाएँ जो उन से उस वक्त सरजद हुए जब वह पहले अहंद के तहत थे। (aiōnios g166) 16 जहाँ वसीयत है वहाँ ज़स्ती है कि वसीयत करने वाले की मौत की तस्दीक की जाए।

17 क्यौंकि जब तक वसीयत करने वाला ज़िन्दा हो वसीयत बे असर होती है। इस का असर वसीयत करने वाले की मौत ही से शुरू होता है। 18 यही वजह है

कि पहला अहंद बौद्धते वक्त भी खून इस्तेमाल हुआ। 19 क्यौंकि पूरी कौम को शरीरी अत का हर हक्म सुनाने के बाद मूसा ने बछड़ों का खून पानी से मिला कर उसे ज़ूके के गुच्छे और किरमिज़ी रंग के धागे के जरिए शरीरी अत की किताब और पूरी कौम पर छिड़का। 20 उस ने कहा, “यह खून उस अहंद की तस्दीक करता है जिस की पैरवी करने का हक्म खुदा ने तुम्हें दिया है।” 21 इसी तरह मूसा ने यह खून मुलाकात के खेमे और इबादत के तमाम सामान पर छिड़का।

22 न सिर्फ़ यह बल्कि शरीरी अत तकाज़ा करती है कि तक़रीबन हर चीज़ को खून ही से पाक — साफ़ किया जाए बल्कि खुदा के हज़र खून पेश किए बगैर मुआफ़ी मिल ही नहीं सकती। 23 गरज़, ज़स्ती था कि यह चीज़ें जो आसमान की असली चीज़ों की नकली सूरतें हैं पाक — साफ़ की जाएँ। लेकिन आसमानी चीज़ें खुद ऐसी कुर्बानियों की तलब करती हैं जो इन से कहीं बेहतर हों। 24 क्यौंकि मसीह सिर्फ़ इसानी हाथों से बने मुकिन्द्रिस में दाखिल नहीं हुआ जो असली मन्त्रिदस की सिर्फ़ नकली सूरत थी बल्कि वह आसमान में ही दाखिल हुआ ताकि अब से हमारी खातिर खुदा के सामने हाजिर हो। 25 दुनिया का इमाम — ए — अज़म तो सालाना किरी और (यानी जानवर) का खून ले कर पाकतरीन कमरे में दाखिल होत है। लेकिन मसीह इस लिए आसमान में दाखिल न हुआ कि वह अपने आप को बार बार कुर्बानी के तौर पर पेश करे।

26 आगर ऐसा होता तो उसे दुनिया की पैदाइश से ले कर आज तक बहुत बार दुःख सहना पड़ता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि अब वह ज़मानों के खातिमें पर एक ही बार सदा के लिए ज़ाहिर हुआ ताकि अपने आप को कुर्बान करने से गुनाह को दूर करे। (aiōn g165) 27 एक बार मरना और खुदा की अदालत में हाजिर होना हर इंसान के लिए मुकर्रर है। 28 इसी तरह मसीह को भी एक ही बार बहुतों के गुनाहों को उठा कर ले जाने के लिए कुर्बान किया गया। दूसरी बार जब वह जाहिर होगा तो गुनाहों को दूर करने के लिए ज़ाहिर नहीं होगा बल्कि उन्हें नज़ात देने के लिए जो शिद्दत से उस का इन्तज़ार कर रहे हैं।

10 मूसा की शरीरी अत आने वाली अच्छी और असली चीज़ों की सिर्फ़

नकली सूरत और साया है। यह उन चीज़ों की असली शक्ति नहीं है। इस लिए यह उन्हें कभी भी कामिल नहीं कर सकती जो साल — ब — साल और बार बार खुदा के हज़र आ कर वही कुर्बानियाँ पेश करते रहते हैं। 2 अगर वह कामिल कर सकती तो कुर्बानियाँ पेश करने की ज़स्तर न रहती। क्यौंकि इस सूरत में इबादत करने से एक बार सदा के लिए पाक — साफ़ हो जाते और उन्हें गुनाहगार होने का शक्तर न रहता। 3 लेकिन इस के बजाए यह कुर्बानियाँ साल — ब — साल लोगों को उन के गुनाहों की याद दिलाती हैं। 4 क्यौंकि मुकिन ही नहीं कि बैल — बकरों का खून गुनाहों को दूर करे। 5 इस लिए मसीह दुनिया में आते वक्त खुदा से कहता है, कि तूने “कुर्बानी और नज़र को पसन्द ना किया बल्कि मैं लिए एक बदन तैयार किया। 6 राख होने वाली कुर्बानियाँ और गुनाह की कुर्बानियों से तू खून न हाएँ।” 7 फिर मैं बैल उठा, ऐ खुदा, मैं हाजिर हूँ ताकि तेरी मर्जी पूरी करूँ। 8 पहले मसीह कहता है, “न तू कुर्बानियाँ, न ज़रो, राख होने वाली कुर्बानियाँ या गुनाह की कुर्बानियाँ चाहता था, न उन्हें पसन्द करता था।” अगर ये शरीरी अत इन्हें पेश करने का मुतालबा करती है। 9 फिर वह फरमाता है, “मैं हाजिर हूँ ताकि तेरी मर्जी पूरी करूँ।” यूँ वह पहला निजाम खत्म करके उस की ज़गह दूसरा निजाम क़ाइम करता है। 10 और उस की मर्जी पूरी हो जाने से हमें इसा मसीह के बदन के बसीले से खास — ओ — मुकिन किया गया है। क्यौंकि उसे एक ही बार सदा के लिए हमारे लिए कुर्बान किया गया। 11 हर इमाम रोज़ — ब — रोज़ मन्त्रिदस में खड़ा अपनी खिदमत के फराइज अदा करता है। रोजाना और बार बार वह वही कुर्बानियाँ पेश करता रहता है जो कभी भी गुनाहों को दूर नहीं कर सकती। 12 लेकिन मसीह ने

गुनाहों को दूर करने के लिए एक ही कुर्बानी पेश की, एक ऐसी कुर्बानी जिस का असर सदा के लिए रहेगा। फिर वह खुदा के दहने हाथ बैठ गया। 13 वही वह अब इन्तिजार करता है जब तक खुदा उस के दुश्मनों को उस के पाँओं की चौकी न बना दे। 14 यूँ उसे एक ही कुर्बानी से उन्हें सदा के लिए कामिल बना दिया है जिन्हें पाक किया जा रहा है। 15 स्ह — उल — कुद्दूस भी हमें इस के बारे में गवाही देता है। पहले वह कहता है, 16 “खुदा फरमाता है कि, जो ‘अहद मैं उन दिनों के बाद उनसे बांधा लो ये हैं कि मैं अपने कानून उन के दिलों पर लिखूँगा और उनके जहन में डालूँगा।” 17 फिर वह कहता है, “उस वक्त से मैं उन के गुनाहों और बुराइयों को याद नहीं करूँगा।” 18 और जहाँ इन गुनाहों की मुआफ़ी हूँ है वहाँ गुनाहों को दूर करने की कुर्बानियों की जस्तर ही नहीं रही। 19 चुनौते भाइयों, अब हम ईसा के खून के वसीले से पौरे यकीन के साथ पाकतरीन कमरे में दाखिल हो सकते हैं। 20 अपने बदन की कुर्बानी से ईसा ने उस कमरे के पर्वे में से गुजाने का एक नया और जिन्दगीबद्ध रास्ता खोल दिया। 21 हमारा एक अजीम इमाम — ए — आजम है जो खुदा के घर पर मुकर्रर है। 22 इस लिए आँए, हम खुलूसदिली और इमान के पौरे यकीन के साथ खुदा के हजर आँए। क्यूँकि हमारे दिलों पर मरीह का खून छिड़का गया है ताकि हमारे मुजरिम दिल साफ हो जाएँ। और, हमारे बदनों का पाक — साफ पानी से धोया गया है। 23 आँए, हम मज़बूती से उस उम्मीद को थामे रखें जिस का इकरार हम करते हैं। हम लड़खड़ा न जाएँ, क्यूँकि जिस ने इस उम्मीद का वादा किया है वह वफादार है। 24 और आँए, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार सकते। 25 हम एकसाथ जमा होने से बाज न आएँ, जिस तरह कुछ की आदत बन गई है। इस के बाजे हम एक दूसरे की होसला अफ़जाई करें, खासकर यह बात मढ़ — ए — नजर रख कर कि खुदावन्द के दिन के अने तक। 26 खबरदार! अगर हम सच्चाई जान लेने के बाद भी जान — बूझ कर गुनाह करते रहें तो मरीह वी कुर्बानी इन गुनाहों को दूर नहीं कर सकेगी। 27 फिर सिर्फ़ खुदा की अदालत की हौलनाक उम्मीद बाकी रहेगी, उस भड़कती हूँ है आग की जो खुदा के मुद्यालिकों को खत्म कर डालेगी। 28 जो मूसा की शरीरी अत रक्ष करता है उस पर रहम नहीं किया जा सकता बल्कि अगर दो या इस से ज्यादा लोग इस जर्म की गवाही दें तो उसे सजा — ए — मौत दी जाए। 29 तो फिर क्या ख्याल है, वह कितनी सख्त सजा के लायक होगा जिस ने खुदा के फर्जन्द को पाँओं तले रौंदा? जिस ने अहद का वह खून हकीर जाना जिस से उसे खास — ओ — मुक़द्दस किया गया था? और जिस ने फ़ज़ल के स्थ की बैज़ज़ती की? 30 क्यूँकि हम उसे जानते हैं जिस ने फरमाया, “इन्तिकाम लेना मेरा ही काम है, मैं ही बदला लूँगा।” उस ने यह भी कहा, “खुदा अपनी कौम का इन्साफ़ करेगा।” 31 यह एक हौलनाक बात है अगर जिन्दा खुदा हमें सजा देने के लिए पकड़े। 32 इमान के पहले दिन याद करें जब खुदा ने आप को रौशन कर दिया था। उस वक्त के सख्त मुक़बिले में आप को कई तरह का दुर्ख सहना पड़ा, लेकिन आप साबितकदम रहे। 33 कभी कभी आप की बैज़ज़ती और अवाम के समान ही ईंजा रसानी होती थी, कभी कभी आप उन के सारी थे जिन से ऐसा सुलूक हो रहा था। 34 जिन्हें जेल में डाला गया आप उन के दुख में शरीक हुए और जब आप का माल — ओ — जेवर लूटा गया तो आप ने यह बात खुशी से बर्दाशत की। क्यूँकि आप जानते थे कि वह माल हम से नहीं छीन लिया गया जो पहले की तरह कहीं बेहतर है और हर सूरत में काईम रहेगा। 35 चुनौते अपने इस भरोसे की हाथ से जाने न दें क्यूँकि इस का बड़ा अज़ मिलेगा। 36 लेकिन इस के लिए आप को साबित करदी की जस्तर है ताकि आप खुदा की मर्जी पूरी कर सकें और यूँ आप को वह कुछ

मिल जाए जिस का वादा उस ने किया है। 37 और कलाम में लिखा है “अब बहत ही थोड़ा वक्त बाकी है कि आने वाला आएगा और देर न करेगा। 38 लेकिन मेरा रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा, और अगर वो हटेगा तो मेरा दिल उससे खुश न होगा।” 39 लेकिन हम उन में से नहीं हैं जो पीछे हट कर तबाह हो जाएँगे बल्कि हम उन में से हैं जो ईमान रख कर नजात पाते हैं।

11 ईमान क्या है? यह कि हम उस में काईम रहें जिस पर हम उम्मीद रखते हैं और कि हम उस का यकीन रखें जो हम नहीं देख सकते। 2 ईमान ही से पुराने जमानों के लोगों को खुदा की कब्ज़ायित हासिल हुई। 3 ईमान के ज़रिए हम जान लेते हैं कि कायानात को खुदा के कलाम से पैदा किया गया, कि जो कुछ हम देख सकते हैं नजर आने वाली चीज़ों से नहीं बना। (aión g165) 4 यह ईमान का काम था कि हाविल ने खुदा को एक ऐसी कुर्बानी पेश की जो काइन की कुर्बानी से बेहतर थी। इस ईमान की बिना पर खुदा ने उसे रास्तबाज़ ठहरा कर उस की अच्छी गवाही दी, जब उस ने उस की कुर्बानियों को कबूल किया। और ईमान के ज़रिए वह अब तक बोलता रहता है हालाँकि वह मुर्दा है। 5 यह ईमान का काम था कि हृष्टक न मरा बल्कि जिन्दा हालत में आसमान पर उठाया गया। कोई भी उसे ढूँढ़ कर पा न सका क्यूँकि खुदा उसे आसमान पर उठा ले गया था। वजह यह थी कि उठाए जाने से पहले उसे यह गवाही मिली कि वह खुदा को पसन्द आया। 6 और ईमान रखे बौरे हम खुदा को पसन्द नहीं आ सकते। क्यूँकि ज़रीरी है कि खुदा के हजर अने वाला ईमान रखे कि वह है और कि वह उन्हें अज़ देता है जो उस के तालिके हैं। 7 यह ईमान का काम था कि नह ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे आने वाली बातों के बारे में आगाह किया, ऐसी बातों के बारे में जो अभी देखने में नहीं आई थी। नह ने खुदा का खौफ़ मान कर एक नाव बनाई ताकि उस का खानदान बच जाए। यूँ उस ने अपने ईमान के ज़रिए दुनिया को मुजरिम करार दिया और उस रास्तबाज़ी का वारिस बन गया जो ईमान से हासिल होती है। 8 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ, वह अपने मुल्क को छोड़ कर रवाना हुआ, हालाँकि उसे बालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। 9 ईमान के ज़रिए वह वादा किए हुए मुल्क में अजनबी की हैसियत से रहने लगा। वह खेमों में रहता था और इसी तरह इज्जाक और याकूब भी जो उस के साथ उसी बादे के वारिस थे। 10 क्यूँकि अब्रहाम उस शहर के इन्तिजार में था जिस की मज़बूत बूनियाद है और जिस का नक्शा बनाने और तामीर करने वाला खुद खुदा है। 11 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम बाप बनने के काविल हो गया, हालाँकि वह कुछापे की वजह से बाप नहीं बन सकता था। इनी तरह सारा भी बच्चे जन नहीं सकती थी। लेकिन अब्रहाम समझता था कि खुदा जिस ने बाद किया है वफ़ादार है। 12 अगर ये अब्रहाम तकीबन मर चुका था तो भी उसी एक शश्वत से बेशुमार औलाद निकली, तहदाद में आसमान पर के सितारों और साहिल पर की रेत के जर्ज़ों के बराबर। 13 यह तमाम लोग ईमान रखते रखते मर गए। उन्हें बहु कुछ न मिला जिस का वादा किया गया था। उन्होंने ने उसे सिर्फ़ दूर ही से देख कर खुश हुए। 14 जो इस किस्म की बातें करते हैं वह जाहिर करते हैं कि हम अब तक अपने बतन की तलाश में हैं। 15 अगर उन के जहन में वह मुल्क होता जिस से वह निकल आए थे तो वह अब भी वापस जा सकते थे। 16 इस के बाजा वह एक बेहतर मुल्क यानी एक आसमानी मुल्क की तमना कर रहे थे। इस लिए खुदा उन का खुदा कहलाने से नहीं शर्मीली, क्यूँकि उस ने उन के लिए एक शहर तैयार किया है। 17 यह ईमान का काम था कि अब्रहाम ने उस वक्त इज़हाक को कुर्बानी के तौर पर पेश किया जब खुदा ने उसे आज़माया। हाँ, वह अपने इकलौते बेटे को कुर्बान करने के लिए तैयार था

आगरचे उसे खुदा के बादे मिल गए थे 18 “कि तेरी नस्ल इज्हाक ही से काईम रहेगी।” 19 अब्राहाम ने सोचा, खुदा मुर्दों को भी जिन्दा कर सकता है, और तबियत के लिहाज से उसे वाक़ैँ इज्हाक मुर्दों में से वापस मिल गया। 20 यह ईमान का काम था कि इज्हाक ने अपने बाली चीजों के लिहाज से याकूब और ऐसेव को बर्कत दी। 21 यह ईमान का काम था कि याकूब ने मरते बक्त यसुफ के दोनों बेटों को बर्कत दी और अपनी लाठी के सिरे पर टेक लगा कर खुदा को सिंजदा किया। 22 यह ईमान का काम था कि यसुफ ने मरते बक्त यह पेशगोइ की कि इसाईली मिस्र से निकलेंगे बल्कि यह भी कहा थि निकलते बक्त मेरी हड्डियों भी अपने साथ ले जाओ। 23 यह ईमान का काम था कि मूसा के माँ — बाप ने उसे पैदाइश के बाद तीन माह तक छुपाए रखा, क्यूंकि उन्होंने ने देखा कि वह खूबसूरत है। वह बादशाह के हक्म की खिलाफ वर्जी करने से न डेर। 24 यह ईमान का काम था कि मूसा ने परवान चढ़ कर इन्कार किया कि उसे फिर औन की बेटी का बेटा ठहराया जाए। 25 आरजी तौर पर गुनाह से लुफ्त अन्दोज होने के बजाए उस ने खुदा की कौम के साथ बदसुल्की का निशान बनने को तजीह दी। 26 वह समझा कि जब मेरी मसीही की खातिर स्वाई की जाती है तो यह मिस्र के तमाम खजानों से ज्यादा कीमती है, क्यूंकि उस की आँखें अपने बाले अब्र पर लगी रही। 27 यह ईमान का काम था कि मूसा ने बादशाह के गुस्से से डेरे बौरे मिस्र को छोड़ दिया, क्यूंकि वह गोया अनदेखे खुदा को लगातार अपनी आँखों के सामने रखता रहा। 28 यह ईमान का काम था कि उस ने फसह की इंद मनह कर हक्म दिया कि खन्न को चैप्टों पर लगाया जाए ताकि हलाक करने वाला फरिशत उन के फहलौठे बेटों को न छुए। 29 यह ईमान का काम था कि इसाईली बहर — ए — कुलजूम में से यैं गुज़र सके जैसे कि यह खुशक ज़मीन थी। जब मिस्रियों ने यह करने की कोशिश की तो वह ड्रब गए। 30 यह ईमान का काम था कि सात दिन तक यरीह शहर की फसील के गिर्द चक्रवर लगाने के बाद पूरी दीवार गिर गई। 31 यह भी ईमान का काम था कि राहब फ़ाहिदा अपने शहर के बाकी नाफ़रपान रहने वालों के साथ हलाक न हई, क्यूंकि उस ने इसाईली जासूसों को सलामती के साथ खुशआमदीद कहा था। 32 मैं ज्यादा क्या कुछ कहूँ? मेरे पास इतना बक्त नहीं कि मैं जिदाऊन, बरक, सम्मन, इफ़ताह, दाऊद, सम्मैल और नबियों के बारे में सुनाता रहूँ। 33 यह सब ईमान की वजह से ही कामियाब रहे। वह बादशाहों पर गालिब आए और इन्साफ़ करते रहे। उन्हें खुदा के बादे हासिल हुए। उन्होंने ने शेर बररों के मुँह बन्द कर दिए। 34 और आग के भड़कते शोतों को बुझा दिया। वह तलवार की ज़द से बच निकले। वह कमज़ोर थे लेकिन उन्हें ताकत हासिल हुई। जब ज़ंग छिड़ गई तो वह इतने ताकतवर साबित हुए कि उन्होंने ने गैरमुल्की लश्करों को शिकस्त दी। 35 ईमान रखने के जरिए से औरतों को उन के मुर्दा अंजीज़ जिन्दा हालत में वापस मिले। 36 कुछ को लान — तान और कोडों बल्कि ज़ंजीरों और कैद का भी सामना करना पड़ा। 37 उनपर पथराव किया गया, उन्हें और से चीरा गया, उन्हें तलवार से मार डाला गया। कुछ को भेड़ — बकरियों की खालों में धूमाना फिरना पड़ा। ज़स्तरमन्द हालत में उन्हें दबाया और उन पर ज़ुल्म किया जाता रहा। 38 दुनिया उन के लायक नहीं थी! वह बीराम जगहों में, पहाड़ों पर, गारों और ग़हुओं में आवारा फिरते रहे। 39 इन सब को ईमान की वजह से अच्छी गवाही मिली। तो भी इन्हें वह कुछ हासिल न हुआ जिस का बादा खुदा ने किया था। 40 क्यूंकि उस ने हमारे लिए एक ऐसा मन्सूबा बनाया था जो कहीं बेहतर है। वह चाहता था कि यह लोग हमारे बौरे कामिलियत तक न पहुँचें।

12 गरज, हम गवाहों के इतने बड़े लश्कर से घिरे रहते हैं, इस लिए आँँ

हम सब कुछ उतरें जो हमारे लिए स्काबट का ज़रिया बन गया है, हर

गुनाह को जो हमें आसानी से उलझा लेता है। आँँ, हम साबितकदमी से उस दौड़ में दौड़ते रहें जो हमारे लिए मुकर्रर की गई है। 2 और दौड़ते हुए हम ईसा को तकते रहें, उसे जो ईमान का बानी भी है और उसे पाए तक्मील तक पहुँचाने वाला भी। याद रहे कि गो वह खुशी हासिल कर सकता था तो भी उस ने सलीबी मौत की शर्मनाक बेइज्जती की परवाह न की बल्कि उसे बदाशत किया। और अब वह खुदा के तज़के देहने हाथ जा बैठा है। 3 उस पर गौर करें जिस ने गुनाहगारों की इतनी मुखालिफ़त बदाशत की। फिर आप थकते थकते बेदिल नहीं हो जाएँ। 4 देखें, आप गुनाह से लड़े तो हैं, लेकिन अभी तक आप को जान देने तक इस की मुखालिफ़त नहीं करनी पड़ी। 5 क्या आप कलाम — ए — मुकद्दस की यह हिम्मत बढ़ाने वाली बात भूल गए हैं जो आप को खुदा के फर्जन्द ठहरा कर बयान करती है, 6 क्यूंकि जो खुदा को प्यारा है उस की वह हिदायत करता है, क्यूंकि जिसको फरजन्द बनालेता है उसके कोडे भी लगता है 7 अपनी मुसीबों को इताही तर्बियत समझ कर बदाशत करें। इस में खुदा आप से बेटों का सा सलूक कर रहा है। क्या कभी कोई बेटा था जिस की उस के बाप ने तर्बियत न की? 8 अगर आप की तर्बियत सब की तरह न की जाती तो इस का मतलब यह होता कि आप खुदा के हकीकी फर्जन्द न होते बल्कि नाजायज़ औलाद। 9 देखो, जब हमारे इंसानी बाप ने हमारी तर्बियत की तो हम ने उस की इज्जत की। अगर ऐसा है तो कितना ज्यादा ज़स्ती है कि हम अपने स्थानी बाप के ताबे हो कर ज़िन्दगी पाएँ। 10 हमारे इंसानी बापों ने हमें अपनी समझ के मुताबिक थोड़ी देर के लिए तर्बियत दी। लेकिन खुदा हमारी ऐसी तर्बियत करता है जो फ़ाइदे का ज़रिया है और जिस से हम उस की कुदूसियाँ में शरीक होने के काबिल हो जाते हैं। 11 जब हमारी तर्बियत की जाती है तो उस बक्त हम खुशी महसूस नहीं करते बल्कि इम। लेकिन जिन की तर्बियत इस तरह होती है वह बाद में रासतबाज़ी और सलामती की फ़सल काटते हैं। 12 चुनौंचे अपने थके होरे बाज़ू और कमज़ोर घुटनों को मज़बूत करें। 13 अपने राते चलने के काबिल बना दें ताकि जो अज्ज लंगड़ा है उस का जोड़ उतर न जाए। 14 सब के साथ मिल कर सल्तन — सलामती और कुदूसियाँ को लिए ज़िद — ओ — जहद करते रहें, क्यूंकि जो पाक नहीं है वह खुदावन्द को कभी नहीं देखेगा। 15 इस पर ध्यान देना कि कोई खुदा के फ़जल से महसूम न रहे। ऐसा न हो कि कोई कड़वी ज़ड़ फ़ूट निकले और बढ़ कर तकलीफ़ का ज़रिया बन जाए और बहुतों को नापाक कर दे। 16 गौर करें कि कोई भी ज़िनाकार या ऐसव जैसा दुनियावी शरूब न हो जिस ने एक ही खने के बदले अपने वह मौस्ती हुकूक बेच डाले जो उसे बड़े बेटे की हैसियत से हासिल थे। 17 आप को भी मालूम है कि बाद में जब वह यह बर्कत विरासत में पाना चाहता था तो उसे रुक़ किया गया। उस बक्त उसे तौबा का मौका न मिला हालाँकि उस ने अँसू बहा बहा कर यह बर्कत हासिल करने की कोशिश की। 18 आप उस तरह खुदा के हुज़र नहीं आए जिस तरह इसाईली जब वह सीना पहाड़ पर पहुँचे, उस पहाड़ के पास जिसे छुआ जा सकता था। वहाँ आग भड़क रही थी, अंधेरा ही अंधेरा था और आँधी चल रही थी। 19 जब नरसिंगी की आवाज़ सुनाई दी और खुदा उन से हमकलाम हुआ तो सुनने वालों ने उस से गुजारिश की कि हमें ज्यादा कोई बात न बता। 20 क्यूंकि वह यह हुक्म बदाशत नहीं कर सकते थे कि “अगर कोई जानवर भी पहाड़ को छू ले तो उसपर पथराव करना है।” 21 यह मज़र इतना डरावना था कि मूसा ने कहा, “मैं खौफ़ के मारे काँप रहा हूँ।” 22 नहीं, आप सियदून पहाड़ के पास आ गए हैं, यानी ज़िन्दा खुदा के शहर आसमानी येस्सलेम के पास। आप बेशमार फ़रिश्तों और ज़म्म मनाने वाली ज़मानत के पास आ गए हैं, 23 उन पहलौंठों की जमानत के पास जिन के नाम आसमान पर दर्ज किए गए हैं। आप तमाम इंसानों के मुन्सिफ़ खुदा के पास

आ गए हैं और कामिल किए गए रास्तबाजों की रुहों के पास। 24 नेज़ आप नए अहद के बीच ईसा के पास आ गए हैं और उस छिड़के गए खन के पास जो हाबिल के खन की तरह बदला लेने की बात नहीं करता बल्कि एक ऐसी मुआझी देता है जो कही ज्यादा असरदार है। 25 चुनाँचे खबरदार रहे कि आप उस की सुनें से इन्कार न करें जो इस वक्त आप से हमकलाम हो रहा है। क्यूंकि अगर इसाईंही न बचे जब उन्होंने ने दुनियावी पैगंबर मूसा की सुनें से इन्कार किया तो फिर हम किस तरह बवेंगे अगर हम उस की सुनें से इन्कार करें जो आसमान से हम से हमकलाम होता है। 26 जब खुदा सीना पहाड़ पर से बोल उठा तो जमीन काँप गई, लेकिन अब उस ने बादा किया है, “एक बार फिर मैं न सिफ़े जमीन को हिला दूँगा बल्कि आसमान को भी।” 27 “एक बार फिर” के अल्फाज इस तरफ ईशारा करते हैं कि पैदा की गई चीजों को हिला कर दूर किया जाएगा और नतीजे में सिफ़े वह चीजें काईम रहेंगी जिन्हें हिलाया नहीं जा सकता। 28 चुनाँचे आँए, हम शुक्रगुजार हों। क्यूंकि हमें एक ऐसी बादशाही हासिल हो रही है जिसे हिलाया नहीं जा सकता। हाँ, हम शुक्रगुजारी की इस स्थ में एहतिराम और खौफ के साथ खुदा की पसन्दीदा इबादत करें, 29 क्यूंकि हमारा खुदा हकीकतन राख कर देने वाली आग है।

13 एक दूसरे से भाइयों की सी मुहब्बत रखते रहें। 2 मेहमान — नवाजी

मत भूलना, क्यूंकि ऐसा करने से कुछ ने अनजाने तौर पर फरिश्तों की मेहमान — नवाजी की है। 3 जो कैंट में हैं, उन्हें याद रखना जैसे आप खुद उन के साथ कैंट में हों। और जिन के साथ बदसुलूकी हो रही है उन्हें याद रखना जैसे आप से यह बदसुलूकी हो रही हो। 4 ज़स्ती है कि सब के सब मिली हई जिन्दगी का एहतिराम करें। शौहर और बीवी एक दूसरे के फकादार रहें, क्यूंकि खुदा जिनाकारों और शादी का बंधन तोड़ने वालों की अदालत करेगा। 5 आप की जिन्दगी पैसों के लालच से आजात हो। उसी पर इकतिफा करें जो आप के पास है, क्यूंकि खुदा ने फरमाया है, मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूँगा, “मैं तुझे कभी तर्क नहीं करूँगा।” 6 इस लिए हम यकीन से कह सकते हैं “कि खुदावन्द मेरा मददगार है, मैं खौफ़ न करूँगा ईसान मेरा क्या करेगा?” 7 अपने राहनुमाओं को याद रखें जिन्होंने आप को खुदा का कलाम सुनाया। इस पर गौर करें कि उन के चाल — चलन से किनारी भलाई पैदा हुई है, और उन के ईमान के नमैन पर चलें। 8 ईसा मसीह कल और आज और हमेशा तक यक्साँ हैं। (aiōn g165) 9 तरह तरह की और बेगाना तालीमित आप को इधर उधर न भटकाएँ। आप तो खुदा के फ़ज़ल से ताकत पाते हैं और इस से नहीं कि आप मुख्तालिक खानों से परहेज़ करते हैं। इस में कोई खास फ़ाइदा नहीं है। 10 हमारे पास एक ऐसी कुर्बानगाह है जिस की कुर्बानी खाना मुलाकात के खेमे में खिदमत करने वालों के लिए मनद है। 11 क्यूंकि अगरचे इमाम — ए — आजम जानवरों का खन गुजाह की कुर्बानी के तौर पर पाक तरीन कमरे में ले जाता है, लेकिन उन की लाशों को खेमागाह के बाहर जलाया जाता है। 12 इस बजह से ईसा को भी शहर के बाहर सरीबी मौत सहनी पड़ी ताकि कौम को अपने खन से खास — ओ — पाक करे। 13 इस लिए आँए, हम खेमागाह से निकल कर उस के पास जाएँ और उस की बेइज्जती में शरीक हो जाएँ। 14 क्यूंकि यहाँ हमारा कोई काईम रहने वाला शहर नहीं है बल्कि हम अपने वाले शहर की शर्दीद आरजु रखते हैं। 15 चुनाँचे आँए, हम ईसा के वर्सीले से खुदा को हम्द — ओ — सना की कुर्बानी पेश करें, यानी हमारे होंटों से उस के नाम की तारीफ करने वाला फल निकले। 16 नेज़, भलाई करना और दूसरों को अपनी बर्कतों में शरीक करना मत भूलना, क्यूंकि ऐसी कुर्बानियाँ खुदा को पसन्द हैं। 17 अपने राहनुमाओं की सुनें और उन की बात मानें। क्यूंकि वह आप की देख भाल करते जागते रहते हैं, और इस में वह खुदा

के सामने जवाबदेह हैं। उन की बात मानें ताकि वह खुशी से अपनी खिदमत सरअन्जाम दें। वर्ना वह कराहते कराहते अपनी ज़िम्मेदारी निभाएँगे, और यह आप के लिए मुफ़ीद नहीं होगा। 18 हमारे लिए दुआ करें, गरचे हमें यकीन है कि हमारा ज़मीर साफ़ है और हम हर लिहाज से अच्छी जिन्दगी गुज़ारने के ख्वाहिशमन्द हैं। 19 मैं खासकर इस पर जोर देना चाहता हूँ कि आप दुआ करें कि खुदा मुझे अप के पास जल्द वापस अने की तौफ़ीक बरब्द्धों। 20 अब सलामती का खुदा जो अबदी 'अहद' के खन से हमारे खुदावन्द और भेड़ों के अजीम चरवाहे ईसा को मुर्दां में से वापस लाया (aiōnios g166) 21 वह आप को हर अच्छी चीज़ से नवजोते ताकि आप उस की मज़ी पूरी कर सकें। और वह ईसा मसीह के ज़रिए हम में वह कुछ पैदा करे जो उसे पसन्द आए। उस का जलाल शूरू से हमेशा तक होता रहे! आमीन। (aiōn g165) 22 भाइयों! मेहरबानी करके नसीहत की इन बातों पर सन्जीदगी से गौर करें, क्यूंकि मैंने आप को सिर्फ़ चन्द अल्फाज लिखे हैं। 23 यह बात आप के इल्म में होनी चाहिए कि हमारे भाईं तीमुथियस को रिहा कर दिया गया है। अगर वह जल्दी पहँचे तो उसे साथ ले कर आप से मिलने आँऊँगा। 24 अपने तमाम राहनुमाओं और तमाम मुकद्दसीन को भेरा सलाम कहना। इतालिया मूल्क के ईमानदार आप को सलाम कहते हैं। 25 खुदा का फ़ज़ल आप सब के साथ रहे।

याकूब

1 खुदा के और खुदावन्द 'ईसा मसीह के बन्दे याकूब की तरफ से उन बारह ईमानदारों के कबीलों को जो जगह — ब — जगह रहते हैं सलाम पहुँचें।

2 ऐ, मेरे भाइयों जब तुम तरह तरह की आजमाइशों में पड़ो। 3 तो इसको ये जान कर कमाल खुशी की बात समझना कि तुम्हारे ईमान की आजमाइश सब्र पैदा करती है। 4 और सब्र को अपना पूरा काम करने दो ताकि तुम पूरे और कमिल हो जाओ और तुम में किसी बात की कमी न रहे। 5 लेकिन अगर तुम में से किसी में दिक्षित की कमी हो तो खुदा से माँगे जो बौरे मलामत किए सब को बहुतायत के साथ देता है। उसको दी जाएँ। 6 मगर ईमान से माँगे और कुछ शक न करें क्यूँकि शक करने वाला समन्वय की लहरों की तरह होता है जो हवा से बहती और उठलती है। 7 ऐसा आदमी ये न समझे कि मुझे खुदावन्द से कुछ मिलेगा। 8 वो शख्स दो दिला है और अपनी सब बातों में बैक्याम। 9 अदना भाई अपने 'आला मरतीं पर फ़ऱड़ करे। 10 और दौलतमन्द अपनी हलीमी हालत पर इसलिए कि घास के फूलों की तरह जाता रहेगा। 11 क्यूँकि सूरज निकलते ही सख्त धूप पड़ती और घास को सुखा देती है और उसका फूल गिर जाता है और उसकी खुबसूरती जाती रहती है इस तरह दौलतमन्द भी अपनी राह पर चलते चलते खाक में मिल जाएं। 12 मुबारिक वो शख्स है जो आजमाइश की बदृशंक करता है क्यूँकि जब मकबूल ठहरा तो जिन्दाई का वो ताज हासिल करेगा जिसका खुदावन्द ने अपने मुहब्बत करने वालों से 'वादा किया है। 13 जब कोई आजमाया जाए तो ये न कहे कि मेरी आजमाइश खुदा की तरफ से होती है क्यूँकि न तो खुदा बदी से आजमाया जा सकता है और न वो किसी को आजमाता है। 14 हाँ हर शख्स अपनी ही ख्वाहिशों में खिंचकर और फ़ैस कर आजमाया जाता है। 15 फिर ख्वाहिश हामिला हो कर गुनाह को पैदा करती है और गुनाह जब बढ़ गया तो मौत पैदा करता है। 16 ऐ, मेरे प्यारे भाइयों धोखा न खाना। 17 हर अच्छी बाखिश और कमिल ईमान ऊपर से है और नूरों के बाप की तरफ से मिलता है जिस में न कोई तबदीली हो सकती है और न गरदिश के बजह से उस पर साया पड़ता है। 18 उसने अपनी मर्जी से हमें कलाम — ऐ — हक के बसीले से पैदा किया ताकि उसकी मुखालिफ़त में से हम एक तरह के फल हो। 19 ऐ, मेरे प्यारे भाइयों ये बात तुम जानते हो; पस हर आदमी सुनने में तेज और बोलने में धीमा और कहर में धीमा हो। 20 क्यूँकि इंसान का कहर खुदा की रास्तबाजी का काम नहीं करता। 21 इसलिए सारी नजासत और बदी की गंदी को दूर करके उस कलाम को नर्मदिल से कुबूल कर लो जो दिल में बोया गया और तुम्हारी रुहों को नजात दे सकता है। 22 लेकिन कलाम पर अमल करने वाले बनो, न महज सुनने वाले जो अपने आपको धोखा देते हैं। 23 क्यूँकि जो कोई कलाम का सुनने वाला हो और उस पर अमल करने वाला न हो वो उस शख्स की तरह है जो अपनी कुदरती सूरत आँँगा में देखता है। 24 इसलिए कि वो अपने आप को देख कर चला जाता और भूल जाता है कि मैं कैसा था। 25 लेकिन जो शख्स आजादी की कमिल शरीर अत पर गौर से नजर करता रहता है वो अपने काम में इसलिए बक्तव्य पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं बल्कि अमल करता है। 26 अगर कोई अपने आपको दीनदार समझे और अपनी जबान को लगाम न दे बल्कि अपने दिल को धोखा दे तो उसकी दीनदारी बातिल है। 27 हमारे खुदा और बाप के नजदीक खालिस और बेएब दीनदारी ये हैं कि यतीमों और बेवाओं की मुसीबत के बक्त उनकी खबर लें; और अपने आप को दुनिया से बोंदाग रखें।

2 ऐ, मेरे भाइयों; हमारे खुदावन्द ज़ुल्जलाल 'ईसा मसीह का ईमान तुम पर तरफदारी के साथ न हो। 2 क्यूँकि अगर एक शख्स तो सोने की अँगूठी

और 'उम्दा पोशाक पहने हुए तुम्हारी जमाअत में आए और एक गरीब आदमी मैले कुचेले पहने हुए आए। 3 और तुम उस 'उम्दा पोशाक वाले का लिहाज कर के कहो तू यहाँ अच्छी जगह बैठ और उस गरीब शख्स से कहो तू वहाँ खड़ा रह या मेरे पाँव की चौकी के पास बैठ। 4 तो क्या तुम ने आपस में तरफदारी न की और बद नियत मुन्सिफ़ न बने? 5 ऐ, मेरे प्यारे भाइयों सुनो; क्या खुदा ने इस जहान के गरीबों को ईमान में दौलतमन्द और उस बादशाही के वारिस होने के लिए बरगुजीदा नहीं किया जिसका उसने अपने मुहब्बत करने वालों से 'वादा किया है। 6 लेकिन तुम ने गरीब आदमी की बैंजजती की; क्या दौलतमन्द तुम पर ज़ुल्म नहीं करते और वही तम्हें आदालतों में घसीट कर नहीं ले जाते। 7 क्या वो उस बुजुर्ग नाम पर कुफ़ नहीं बकते जिससे तुम नाम जद हो। 8 तोभी अगर तुम इस लिखे हुए के मुताबिक अपने पडोसी से अपनी तरह मुहब्बत रखो उस बादशाही शरीर अत को पूरा करते हो तो अच्छा करते हो। 9 लेकिन अगर तुम तरफदारी करते हो तो गुनाह करते हो और शरीर अत तुम को कसूरवार ठहराती है 10 क्यूँकि जिसने सारी शरीर अत पर अमल किया और एक ही बात में खाती की वो सब बातों में कसूरवार ठहरा। 11 इसलिए कि जिसने ये फरमाया कि जिना न कर उत्ती ने ये भी फरमाया कि खून न कर पस आग तू ने जिना तो न किया मगर खून किया तोभी तू शरीर अत का इन्कार करने वाला ठहरा। 12 तुम उन लोगों की तरह कलाम भी करो और काम भी करो जिनका आजादी की शरीर अत के मुवाफिक इन्साफ़ होगा। 13 क्यूँकि जिसने रहम नहीं किया उसका इन्साफ़ बौरे रहम के होगा रहम इन्साफ़ पर गालिब आता है। 14 ऐ, मेरे भाइयों; अगर कोई कहे कि मैं ईमानदार हूँ मगर अमल न करता हो तो क्या फ़ाइदा? क्या ऐसा ईमान उसे नजात दे सकता है। 15 अगर कोई भाई या बहन नगे हो और उनको रोजाना रोटी की कमी हो। 16 और तुम में कोई उन से कहे कि सलामती के साथ जाओ गर्म और सेरे रहो मगर जो चीजें तन के लिए ज़रूरी हैं वो उन्हें न दे तो क्या फ़ाइदा। 17 इसी तरह ईमान भी अगर उसके साथ आमाल न हों तो अपनी जात से मुदो हैं। 18 बल्कि कोई कह सकता है कि तू तो ईमानदार है और मैं अमल करने वाला हूँ अपना ईमान बौरे आमाल के मुझे दिखा और मैं अपना ईमान आमाल से तँझे दिखाऊँगा। 19 तू इस बात पर ईमान रखता है कि खुदा एक ही है खैर अच्छा करता है शियातीन भी ईमान रखते और थर थरते हैं। 20 मगर ऐ, निकम्मे आदमी क्या तू ये भी नहीं जानता कि ईमान बौरे आमाल के बेकार है। 21 जब हमारे बाप अब्रहाम ने अपने बेटे इज़हाक को कुर्बानी पर कुर्बान किया तो क्या वो आमाल से रास्तबाज न ठहरा। 22 पस तूने देख लिया कि ईमान ने उसके आमाल के साथ मिल कर असर किया और आमाल से ईमान कामिल हुआ। 23 और ये लिखा पूरा हुआ कि अब्रहाम खुदा पर ईमान लाया और ये उसके लिए रास्तबाजी गिना गया और वो खुदा का दोस्त कहलाया। 24 पस तुम ने देख लिया कि ईमान ही से नहीं बल्कि आमाल से रास्तबाज ठहरता है। 25 इसी तरह राहब फ़ाहिशा भी जब उसने कासिदों को अपने घर में उतारा और दूसरे रास्ते से स्वस्त किया तो क्या काम से रास्तबाज न ठहरी। 26 गरज जैसे बदन बौरे स्थ के मुर्दं हैं वैसे ही ईमान भी बौरे आमाल के मुर्दा है।

3 ऐ, मेरे भाइयों; तुम में से बहुत से उस्ताद न बनें क्यूँकि जानते हो कि हम जो उस्ताद हैं ज्यादा सजा पाएँगे। 2 इसलिए कि हम सब के सब अक्सर खता करते हैं; कामिल शख्स वो है जो बातों में खता न करे वो सारे बदन को भी काबू में रख सकता है; 3 देखो हम अपने काबू में करने के लिए घोड़ों के मुँह में लगाम देते हैं तो उनके सारे बदन को भी घुमा सकते हैं। 4 और जहाज भी अगर चे बड़े बड़े होते हैं और तेज हवाओं से चलाए जाते हैं तोभी एक निहायत छोटी सी पतवार के जारिए माँझी की मर्जी के मुवाफिक घुमा जाते हैं। 5 इसी

तरह जबान भी एक छोटा सा 'उज्ज्व है और बड़ी शेरखी मारती है। देखो थोड़ी सी आग से कितने बड़े जंगल में आग लग जाती है। 6 जबान भी एक आग है जबान हमारे आजा में शरारत का एक आलम है और सारे जिस्म को दाग लगाती है और दाइश दुनिया को आग लगा देती है और जहन्म की आग से जलती रहती है। (Geenna g1067) 7 क्यूँकि हर किस्म के चौपाएँ और परिन्दे और कीड़े मकोड़े और दरियाई जानवर तो इंसान के काबू में आ सकते हैं और आए भी हैं। 8 मगर जबान को कोई काबू में नहीं कर सकता वो एक बला है जो कभी स्कर्ती ही नहीं जहर — ए — कातिल से भरी हड्डी है। 9 इसी से हम खुदावन्द अपने बाप की हमद करते हैं और इसी से आदिमियों को जो खुदा की सूत पर पैदा हुए हैं बड़ा देते हैं। 10 एक ही मुँह से मुबारिक बाद और बदुआ निकलती है। ऐ मेरे भाइयों; ऐसा न होना चाहिए। 11 क्या चर्शमे के एक ही मुँह से मीठा और खारा पानी निकलता है। 12 ऐ, मेरे भाइयों! क्या अंजीर के दरखत में जैतन और अँगू में अंजीर पैदा हो सकते हैं? इसी तरह खोर चर्शमे से मीठा पानी नहीं निकल सकता। 13 तुम में दाना और फ़हीम कौन है? जो ऐसा हो वो अपने कामों को नेक चाल चलन के बसिले से उस हलीमी के साथ जाहिर करें जो हिक्मत से पैदा होता है। 14 लेकिन आग तुम अपने दिल में सख्त हस्त और तक्रे के रखते हो तो कह के खिलाफ़ न शेरखी मारो न झूठ बोलो। 15 ये हिक्मत वो नहीं जो उत्तरी है बल्कि दुनियावी और नफसानी और शैतानी है। 16 इसलिए कि जहाँ हस्त और तक्रा होता है फ़साद और हर तरह का बुरा काम भी होता है। 17 मगर जो हिक्मत ऊपर से आती है अब्लत तो वो पाक होती है फिर मिलनसार नर्मदिल और तरबियत पज़ीर रहम और अच्छे फलों से लदी हुई बेतरफदर और बे — रिया होती है। 18 और सुलह करने वालों के लिए रास्तबाज़ी का फल सुलह के साथ बोया जाता है।

4 तुम में लड़ाइयाँ और झगड़े कहाँ से आ गए? क्या उन ख्वाहिशों से नहीं जो तुम्हेरे आजा में फ़साद करती हैं। 2 तुम ख्वाहिश करते हो, और तुम्हे मिलता नहीं, खून और हस्त करते हो और कुछ हासिल नहीं कर सकते; तुम लड़ते और झगड़ते हो। तुम्हें इसलिए नहीं मिलता कि माँगते नहीं। 3 तुम माँगते हो और पाते नहीं इसलिए कि बुरी नियत से माँगते हो: ताकि अपनी ऐश — ओ — अशरत में खर्च करो। 4 ऐ, नाफ़रमानी करने वालों क्या तुम्हें नहीं मालूम कि दुनिया से दोस्ती रखना खुदा से दुश्मनी करना है? पस जो कोई दुनिया का दोस्त बनना चाहता है वो अपने आप को खुदा का दुश्मन बनाता है। 5 क्या तुम ये समझते हो कि किताब — ऐ — मुकद्दस बैफ़ाइदा कहती है? जिस पाक स्त्र को उसने हमारे अन्दर बसाया है क्या वो ऐसी अरज़ करती है जिसका अन्जाम हस्त हो। 6 वो तो ज्यादा तौफ़ीक बरखाता है इसी लिए ये आया है कि खुदा मासरों का मुकाबिला करता है मगर फ़िरोतों को तौफ़ीक बरखाता है। 7 पस खुदा के ताबे हो जाओ और इब्तीस का मुकाबिला करो तो वो तुम से भाग जाएगा। 8 खुदा के नज़दीक जाओ तो वो तुम्हारे नज़दीक आएगा; ऐ, गुनाहगारों अपने हाथों को साफ़ करो और ऐ, दो दिलों अपने दिलों को पाक करो। 9 अफ़सोस करो और रोओ तुम्हारी हँसी मातम से बदल जाए और तुम्हारी खुर्खी ऊदासी से। 10 खुदावन्द के सामने फ़िरोतनी करो, वो तुम्हें सरबलन्द करेगा। 11 ऐ, भाइयों एक दूसरे की बुराई न करो जो अपने भाई की बुराई करता या भाई पर इल्जाम लगाता है; वो शरीर अत की बुराई करता और शरीर अत पर इल्जाम लगाता है और अपर तू शरीर! अत पर इल्जाम लगाता है तो शरीर! अत पर अमल करने वाला नहीं बल्कि उस पर हाकिम ठहरा। 12 शरीर! अत का देने वाला और हाकिम तो एक ही है जो बचाने और हलाक करने पर कादिर है तू कौन है जो अपने पड़ोसी पर इल्जाम लगाता है। 13 तुम जो ये कहते हो कि हम आज या कल फलाँ शहर में जा कर वहाँ एक बरस ठहरेंगे और

सौदागरी करके नफा उठाएँगे। 14 और ये जानते नहीं कि कल क्या होगा; जरा सुनो तो; तुम्हारी ज़िन्दगी चीज़ ही क्या है? बुखारात का सा हाल है अभी नज़र आए अभी गायब हो गए। 15 ये कहने की जगह तम्हें ये कहना चाहिए अगर खुदावन्द चाहे तो हम ज़िन्दा भी रहेंगे और ये और वो काम भी करेंगे। 16 मगर अब तुम अपनी शेरखी पर फ़ख़ु करते हो; ऐसा सब फ़ख़ु बुरा है। 17 पस जो कोई भलाई करना जानता है और नहीं करता उसके लिए ये गुनाह है।

5 ऐ, दौलतमन्दों जरा सुनो; तुम अपनी मुसीबतों पर जो आने वाली हैं रोओ; और मातम करो; 2 तुम्हारा माल बिगड़ गया और तुम्हारी पोशाकों को कीड़ा खा गया। 3 तुम्हारे सोने चौंदी की ज़ँग लग गया और वो ज़ँग तुम पर गवाही देगा और आग की तरह तुम्हारा गोङ्गत खाएगा; तुम ने आसिर जमाने में खाजाना जमा किया है। 4 देखो जिन मज़दूरों ने तुम्हारे खेत काटे उनकी वो मज़दूरी जो तुम ने धोखा करके रख छोड़ी विल्लाती है और फ़सल कटने वालों की फ़रियाद रब्बُ'उल अफ़वाज के कानों तक पहुँच गई है। 5 तुम ने ज़मीन पर ऐश़ 'ओ — अशरत की और मज़े उड़ाए तुम ने अपने दिलों को ज़बह के दिन मोटा ताजा किया। 6 तुम ने रास्तबाज़ शख्स को कुसरवार ठहराया और कल्तन किया वो तुम्हारा मुकाबिला नहीं करता। 7 पस, ऐ भाइयों; खुदावन्द की आमद तक सब्र करो देखो किसान ज़मीन की कीमती पैदावार के इन्तज़ार में पहले और पिछले बारिश के बरसने तक सब्र करता रहता है। 8 तुम भी सब्र करो और अपने दिलों को मज़बूत रखो, क्यूँकि खुदावन्द की आमद करीब है। 9 ऐ, भाइयों! एक दूसरे की शिकायत न करो ताकि तुम सज़ा न पाओ, देखो मुस्तिफ़ दरवज़े पर खड़ा है। 10 ऐ, भाइयों! जिन नवियों ने खुदावन्द के नाम से कलाम किया उनको दुःख उठाने और सब्र करने का नमाना समझो। 11 देखो सब्र करने वालों को हम मुबारिक कहते हैं; तुम ने अर्यूब के सब्र का हाल तो सुना ही है और खुदावन्द की तरफ से जो इसका अन्जाम हुआ उसे भी मालूम कर लिया जिससे खुदावन्द का बहुत तरस और रहम ज़ाहिर होता है। 12 मगर ऐ, मेरे भाइयों; सब बढ़कर ये है कसम न खाओ, न आसमान की न ज़मीन की न किसी और चीज़ की बल्कि हाँ की जगह हाँ करो और नहीं की जगह नहीं ताकि सज़ा के लायक न ठहरो। 13 अगर तुम में कोई मुसीबत जदा हो तो दुआ करे, आग खुशा हो तो हमद के गीत गाए। 14 अगर तुम में कोई बीमार हो तो कलीसिया के बुजुर्गों को बुलाए और वो खुदावन्द के नाम से उसको तेल मलकर उसके लिए दुःआ करें। 15 जो दुःआ करें आ इमान के साथ होगी उसके ज़रिए बीमार बच जाएगा; और खुदावन्द उसे उठा कर खड़ा करेगा, और अगर उसने गुनाह किए हों, तो उनकी भी मुआफ़ी हो जाएगी। 16 पस तुम आपस में एक दूसरे से अपने अपने गुनाहों का इकरार करो और एक दूसरे के लिए दुःआ करो ताकि शिफ़ा पाओ रास्तबाज़ की दुःआ के असर से बहुत कुछ हो सकता है। 17 एलियाह हमारी तरह इंसान था, उसने बड़े जोश से दुःआ की कि पानी न बरसे, चुनाँचे साढ़े तीन बरस तक ज़मीन पर पानी न बरसा। 18 फिर उसी ने दुःआ की तो आसमान से पानी बरसा और ज़मीन में पैदावार हुई। 19 ऐ, मेरे भाइयों! अगर तुम में कोई रहे हक्क से गुमाह हो जाए और कोई उसको वापस लाए। 20 तो वो ये जान ले कि जो कोई किसी गुनाहगार को उसकी गुमाही से फेर लाएगा; वो एक जान को मौत से बचा लेगा और बहुत से गुनाहों पर पर्दा ढालेगा।

1 पतरस

1 पतरस की तरफ से जो ईसा मसीह का रसूल है, उन मुसाफिरों के नाम खत,

जो पुन्तुस, गलतिया, कप्पुकिया, असिया और बीथुनिया सबे में जा बजा रहते हैं, 2 और खुदा बाप के 'इल्म — ए — साबिक के मुवाफिक स्वर्ग के

पाक करने से फरमांबरदार होने और ईसा मसीह का खन छिड़के जाने के लिए बरगुनीदा हुए हैं। फजल और इत्मीनान तुम्हें ज्यादा हासिल होता रहे। 3 हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के खुदा और बाप की हाद हो, जिसने ईसा मसीह के मुर्दों में से जी उठने के जरिए, अपनी बड़ी रहमत से हमें जिन्दा उमरीद के लिए नए सिरे से पैदा किया, 4 ताकि एक गैरफानी और बेदाम और लाजवाल मीरास को हासिल करें; 5 वो तुम्हारे वास्ते [जो खुदा की कुदरत से ईमान के वसीले से, उस नजात के लिए जो आखिरी वक्त में जाहिर होने को तैयार है, हिफाजत किए जाते हो] ईसामान पर महफूज है। 6 इस की वजह से तुम खुशी मनाते हो, अगर तरह अब चन्द रोज़ के लिए ज़स्तर की वजह से, तरह तरह की आज्ञामाइयों की वजह से गमजादा हो; 7 और ये इस लिए कि तुम्हारा आज्ञामाया हआ ईमान, जो आग से आज्ञामाए हुए फ़रानी सोने से भी बहुत ही बेशकीमीती है, ईसा मसीह के जहां के वक्त तारीफ और जलाल और 'इज्जत का जरिया ठहरे। 8 उससे तुम अनदेखी मुहब्बत रखते हो और अगर तरह इस वक्त उसको नहीं देखते तो भी उस पर ईमान लाकर ऐसी खुशी मनाते हो जो बयान से बाहर और जलाल से भरी है; 9 और अपने ईमान का मकसद या'नी स्वर्णों की नजात हासिल करते हो। 10 इसी नजात के बारे में नवियों ने बड़ी तलाश और तहकीक की, जिन्होंने उस फजल के बारे में जो तुम पर होने का था नक्भवत की। 11 उन्होंने इस बात की तहकीक की कि मसीह का स्वर्ग जो उस में था, और पहले मसीह के दुखों और उनके जिन्दा हो उठने के बाद उसके के जलाल की गवाही देता था, वो कौन से और कैसे वक्त की तरफ इशारा करता था। 12 उन पर ये जाहिर किया गया कि वो न अपनी बल्कि तुम्हारी खिदमत के लिए ये बातें कहा करते थे, जिनकी खबर अब तुम को उनके जरिए मिली जिन्होंने स्वर्ग — उल — कुद्दस के वसीले से, जो आसामान पर से भेजा गया तुम को खुशबूरी दी; और फरिते भी इन बातों पर गौर से नजर करने के मुश्तक हैं। 13 इस वास्ते अपनी 'अवस्तु की कमर बाँधकर और होशियार होकर, उस फजल की पूरी उम्मीद रखवा जो ईसा मसीह के जहां के वक्त तुम पर होने वाला है। 14 और फरमांबरदार बेटा होकर अपनी जहालत के जमाने की पुरानी ख्वाहिशों के ताबे न बनो। 15 बल्कि जिस तरह तुम्हारा बुलानेवाला पाक, है, उसी तरह तुम भी अपने सारे चाल — चलन में पाक बनो; 16 क्यूँकि पाक कलाम में लिखा है, "पाक हो, इसलिए कि मैं पाक हूँ।" 17 और जब कि तुम 'बाप' कह कर उससे दुआ करते हो, जो हर एक के काम के मुवाफिक बगैर तरफतारी के इन्साफ करता है, तो अपनी मुसाफिर का जमाना खौफ के साथ गुजारो। 18 क्यूँकि तुम जानते हो कि तुम्हारा निकम्मा चाल — चलन जो बाप — दादा से चला आता था, उससे तुम्हारी खलासी फानी चीजों या'नी सोने चाँदी के जरिए से नहीं हुई; 19 बल्कि एक बेएब और बेदाम बर्दे, या'नी मसीह के बेश कीमत खून से। 20 उसका 'इल्म तो दुनियाँ बनाने से पहले से था, मगर जहर आखिरी जमाने में तुम्हारी खातिर हआ, 21 कि उस के वसीले से खुदा पर ईमान लाए हो, जिसने उस को मुर्दों में से जिलाया और जलाल बख्शा ताकि तुम्हारा ईमान और उम्मीद खुदा पर हो। 22 क्यूँकि तुम ने हक की ताबे 'दारी से अपने दिनों को पाक किया है, जिससे भाईयों की बे'रिया मुहब्बत पैदा हुई, इसलिए दिल — ओ — जान से आपस में बहुत मुहब्बत रखवा। 23 क्यूँकि तुम मिट्टे वाले बीज से नहीं बल्कि गैर फानी से खुदा के कलाम के वसीले से, जो जिंदा और

काईम है, नए सिरे से पैदा हुए हो। (aiōn g165) 24 चुनाँचे हर आदमी घास की तरह है, और उसकी सारी शान — ओ — शैक्त घास के फूल की तरह। घास तो सूख जाती है, और फूल गिर जाता है। 25 लेकिन खुदावन्द का कलाम हमेशा तक काईम रहेगा। ये वही खुशबूरी का कलाम है जो तुम्हें सुनाया गया था। (aiōn g165)

2 पस हर तरह की बद्रखाती और सारे फ्रेब और रियाकारी और हसद और

हर तरह की बटगोई की दूर करके, 2 पैदाइशी बच्चों की तरह खालिस स्फानी दृढ़ के इंतजार में रहो, ताकि उसके जरिए से नजात हासिल करने के लिए बढ़ते जाओ, 3 अगर तुम ने खुदावन्द के मेहरबान होने का मजा चखा है। 4 उसके याँनी आदमियों के रद्द किए हुए, पर खुदा के द्वारे हुए और कीमती जिन्दा पथर के पास आकर, 5 तुम भी जिन्दा पत्थरों की तरह स्फानी घर बनते जाते हो, ताकि काहिनों का मुकद्दस फिरका बनकर ऐसी रुहानी कुबानियाँ चढ़ाओ जो ईसा मसीह के वसीले से खुदा के नजदीक मकबूल होती है। 6 चुनाँचे किताब — ए — मुकद्दस में आया है: देखो, मैं सियन में कोने के सिरे का चुना हुआ और कीमती पथर रखता है; जो उस पर ईमान लाए गया हारमिज शर्मिन्दा न होगा। 7 पस तुम ईमान लाने वालों के लिए तो वो कीमती है, मगर ईमान न लाने वालों के लिए जिस पथर को राजगीरों ने रद्द किया वही कोने के सिरे का पथर हो गया। 8 और देस लगाने का पथर और ठेकर खाने की चटान हुआ, क्यूँकि वो नाफरमान होकर कलाम से ठेकर खाते हैं और इसी के लिए मुकर्रर भी हुए थे। 9 लेकिन तुम एक चुनी हुई नस्ल, शाही काहिनों का फिरका, मुकद्दस कौम, और ऐसी उम्रत हो जो खुदा की खास मिल्कियत है ताकि उसकी ख्वाहियाँ जाहिर करो जिसने तुम्हें अंधेरे से अपनी 'अजीब रौशनी में बुलाया है। 10 पहले तुम कोई उम्रत न थे मगर अब तुम खुदा की उम्रत हो, तुम पर रहमत न हुई थी मगर अब तुम पर रहमत हुई। 11 ऐ प्यारों! मैं तुम्हारी मिन्त करता रहा हूँ कि तुम अपने आप को परदेसी और मुसाफिर जान कर, उन जिसमानी ख्वाहिशों से पहजे करो जो स्वर्ग से लडाई रखती हैं। 12 और गैर — कौमों में अपना चाल — चलन नेक रखवा, ताकि जिन बातों में वो तुम्हें बदकार जानकर तुम्हारी बुराई करते हैं, तुम्हारे नेक कामों को देख कर उन्हीं की वजह से मुलाहिजा के दिन खुदा की बडाई करें। 13 खुदावन्द की खातिर इंसान के हर एक इन्जिजाम के ताबे' रहो; बादशाह के इसलिए कि वो सब से बुजुर्ग है, 14 और हाकियों के इसलिए कि वो बदकारों को सजा और नेकोंकारों की तारीफ के लिए उसके भेजे हुए हैं। 15 क्यूँकि खुदा की ये मज़ी है कि तुम नेकी करके नादान आदमियों की जहालत की बातों को बन्द कर दो। 16 और अपने आप को आजाद जानो, मगर इस आजादी को बड़ी का पर्दा न बनाओ; बल्कि अपने आप को खुदा के बन्दे जानो। 17 सबकी 'इज्जत करो, बिरादी से मुहब्बत रखवा, खुदा से डरो, बादशाह की 'इज्जत करो। 18 ऐ नौकरों! बड़े खौफ से अपने मालिकों के ताबे' रहो, न सिर्फ नेकों और हलीमों ही के बल्कि बद मिजाजों के भी। 19 क्यूँकि अगर कोई खुदा के खयाल से बेइसाफी के बाँझ दूँ ख उठाकर तकलीफों को बदीरकर करे तो ये पसन्दीदा है। 20 इसलिए कि अगर तुम ने गुनाह करके मुक्के खाए और सब्र किया, तो कौन सा फ़ख़ है? हाँ, अगर नेकी करके दुःख पाते और सब्र करते हो, तो ये खुदा के नजदीक पसन्दीदा है। 21 और तुम इसी के लिए खुलाए गए हो, क्यूँकि मसीह भी तुम्हारे वास्ते दुःख उठाकर तुम्हें एक नम्मा दे गया है ताकि उसके नक्श — ए — क्रदम पर चलो। 22 न उसने गुनाह किया और न ही उसके मुँह से कोई मक्क की बात निकली, 23 न वो गालियाँ खाकर गाली देता था और न दुःख पाकर किसी को धमकाता था; बल्कि अपने आप को सच्चे इन्साफ करने वाले खुदा के सुरुद करता था। 24 वो आप हमारे गुनाहों को अपने बदन पर

लिए हुए सलीब पर चढ़ गया, ताकि हम गुजाहों के ऐतिहास से जिएँ; और उसी के मार खाने से तुम ने शिक्षा पाई। 25 अगर कोई कुछ कहे तो ऐसा कहे कि गोया खुदा का कलाम है, अगर कोई खिदमत करे तो उस ताकत के मुताबिक करे जो खुदा दे, ताकि सब बातों में इसा मसीह के वसीले से खुदा का जलाल जाहिर हो। जलाल और सल्तनत हमेशा से हमेशा उसी की है। आमीन।

3 ऐ बीवियों! तुम भी अपने शौहर के ताबे रहो, 2 इसलिए कि अगर कुछ

उनमें से कलाम को न मानते हों, तो आप तुम्हारे पाकीजा चाल — चलन और खौफ को देख कर बगैर कलाम के अपनी अपनी बीजी के चाल — चलन से खुदा की तरफ खिंच जाएँ। 3 और तुम्हारा सिंगार ज़ाहिरी न हो, यानी सर गँधा और सोने के जेवर और तरह तरह के कपड़े पहनना, 4 बल्कि तुम्हारी बातिनी और पोशीदा इंसान दियत, हलीम और नर्म मिजाज की गुरुबत की गैरफनी आपाइश से आपासा रहे, क्यौंकि खुदा के नज़दीक इमर्जी बड़ी कृद है। 5 और आगले ज्ञाने में भी खुदा पर उम्मीद रखनेवाली मुकद्दस 'औरतें, अपने आप को इसी तरह संवारती और अपने अपने शौहर के ताबे' रहती थी। 6 चुनाँचे सारह अब्राहाम के हक्म में रहती और उसे खुदावन्द कहती थी। तुम भी आग नेकी करो और किसी के डराने से न डरो, तो उसकी बेटियाँ हुईँ। 7 ऐ शौहरों! तुम भी बीवियों के साथ 'अकलमन्दी से बसर करो, और 'औरत को नाज़क जर्ज कान कर उसकी 'इज्जत करो, और यूँ समझो कि हम दोनों ज़िन्दगी की नेमत के बारिस हैं, ताकि तुम्हारी दु'आएँ स्क न जाएँ। 8 गरज सब के सब एक दिल और हमदर्द रहो, बिरादराना मुहब्बत रख्खो, नर्म दिल और फरोतन बनो। 9 बदी के 'बदले बदी न करो और गाली के बदले गाली न दो, बल्कि इसके बर' अक्स बर्कत चाहो, क्यौंकि तुम बर्कत के बारिस होने के लिए बुलाए गए हो। 10 चुनाँचे "जो कोई ज़िन्दगी से खुश होना और अच्छे दिन देखना चाहे, वो जबान को बदी से और होंटों को मक्क की बात कहने से बाज रख दें। 11 बदी से किनारा करो और नेकी को 'अमल में लाए, सुलह का तालिब हो, और उसकी कोशिश में रहे। 12 क्यौंकि खुदावन्द की नज़र रास्तबाज़ों की तरफ है, और उसके कान उनकी दुरा पर लगे हैं, मगर बदकार खुदावन्द की निगाह में हैं।" 13 अगर तुम नेकी करने में सरगम हो, तो तुम से बदी करनेवाला कौन है? 14 और अगर रास्तबाज़ी की खातिर दुख सहो भी तो तुम मुशारिक हो, न उनके डराने से डरो और न घबराओ; 15 बल्कि मसीह को खुदावन्द जानकर अपने दिलों में मुकद्दस समझो; और जो कोई तुम से तुम्हारी उम्मीद की वजह पूछे, उसको जबाब देने के लिए हर वक्त मस्तइद रहो, मगर हलीमी और खौफ के साथ। 16 और नियत भी नेक रख्खो ताकि जिन बातों में तुम्हारी बदगोई होती है, उन्हीं में वो लोग शर्मिन्दा हों जो तुम्हारे मसीही नेक चाल — चलन पर लान तान करते हैं। 17 क्यौंकि अगर खुदा की यही मर्जी हो कि तुम नेकी करने की वजह से दुख उठाओ, तो ये बदी करने की वजह से दुख उठाने से बेहतर है। 18 इसलिए कि मसीह ने भी यानी रास्तबाज ने नारातों के लिए, गुनाहों के बाँइस एक बार दुख उठाया ताकि हम को खुदा के पास पहुँचाएँ; वो जिसम के ऐतिहास से मारा गया, लेकिन स्वरूप के ऐतिहास से तो ज़िन्दा किया गया। 19 इसी में से उसने जा कर उन कैदी स्थों में मनादी की, 20 जो उस अगले ज्ञाने में नाफरमान थी जब खुदा नह के वक्त में तहमील करके ठहरा रहा था और वो नाव तैयार हो रही थी, जिस पर सवार होकर थोड़े से आदमी यानी आठ जाने पानी के वसीले से बची। 21 और उसी पानी का मुशाबह भी यानी बपतिस्मा, इसा मसीह के जी उठने के वसीले से अब तुम्हें बचाता है, उससे जिसम की नजासत का दूर करना मुराद नहीं बल्कि खालिस नियत से खुदा का तालिब होना मुराद है। 22 वो आसमान पर जाकर खुदा की दहीनी तरफ बैठा है, और फरिश्ते और इख्लियारात और कुदरतें उसके ताबे' की गई हैं।

4 पस जबकि मसीह ने जिसम के ऐतिहास से दुख उठाया, तो तुम भी ऐसे ही

मिजाज इख्लियार करके हथियारबन्द बनो; क्यौंकि जिसने जिसम के ऐतिहास से दुख उठाया उसने गुनाह से छुटकारा पाया। 2 ताकि आइन्दा को अपनी बाकी जिसमानी ज़िन्दगी आदमियों की ख्वाहिशों के मुताबिक न गुज़ारे बल्कि खुदा की मर्जी के मुताबिक। 3 इस वास्ते कि गैर — कौमों की मर्जी के मुवाफिक काम करने और शहवत परस्ती, बुरी ख्वाहिशों, मयखावारी, नाचरंग, नशेबाजी और मकरस्त बुरा परस्ती में जिस कदर हम ने पहले बवत गुज़ारा वही बहुत है। 4 इस पर वो ताओं'ज़ुब करते हैं कि तुम उसी सख्त बदचलनी तक उनका साथ नहीं देते और लान तान करते हैं, 5 उन्हें उसी को हिसाब देना पड़ेगा जो ज़िन्दों और मुर्दों का इन्साफ करने को तैयार है। 6 क्यौंकि मुर्दों को भी खुशखबरी इसलिए एसुआई गई थी कि जिसम के लिहाज से तो आदमियों के मुताबिक उनका इन्साफ हो, लेकिन रुह के लिहाज से खुदा के मुताबिक ज़िन्दा रहें। 7 सब चीजों का खातिमा जल्द होने वाला है, पस होशियार रहो और दुआ करने के लिए तैयार। 8 सबसे बढ़कर ये है कि आपस में बड़ी मुहब्बत रख्खो, क्यौंकि मुहब्बत बहुत से गुनाहों पर पर्दा डाल देनी है। 9 बौरे बड़बडाए आपस में मुसाफिर परवरी करो। 10 जिनको जिस जिस कदर नेमत मिली है, वो उसे खुदा की मुखलियत नेमतों के अच्छे मुख्लारों की तरह एक दूसरे की खिदमत में सर्क करें। 11 अगर कोई कुछ कहे तो ऐसा कहे कि गोया खुदा का कलाम है, अगर कोई खिदमत करे तो उस ताकत के मुताबिक करे जो खुदा दे, ताकि सब बातों में इंसा मसीह के वसीले से खुदा का जलाल ज़ाहिर हो। जलाल और सल्तनत हमेशा से हमेशा उसी की है। आमीन। (aiōn g165) 12 ऐ प्यारो! जो मुसीबत की आग तुम्हारी आजमाइश के लिए तुम में भड़की है, ये समझ कर उससे तो 'ज़ुब न करो कि ये एक अनोखी बात हम पर ज़ाहिर' हुई है। 13 बल्कि मसीह के दुखों में ज़ूँज़ शरीक हो खुशी करो, ताकि उसके जलाल के जहार के वक्त भी निहायत खुश — ओ — खुम्ह हो। 14 अगर मसीह के नाम की वजह से तुम्हें मलायत की जाती है तो तुम मुशारिक हो, क्यौंकि जलाल का रुह यानी खुदा का स्वरूप से दुख तुम पर साया करता है। 15 तुम में से कोई शख्स खूनी या चोर या बदकार या औरों के काम में दखल अन्दाज़ होकर दुख न पाए। 16 लेकिन अगर मसीही होने की वजह से कोई शख्स पाए तो शरमाए नहीं, बल्कि इस नाम की वजह से खुदा की बड़ाई करे। 17 क्यौंकि वो वक्त आ पहुँचा है कि खुदा के घर से 'अदालत शूर' हो, और जब हम ही से शूर होनी तो उनका क्या अन्जाम होगा जो खुदा की खशखबरी को नहीं मानते? 18 और "जब रास्तबाज ही मुश्किल से नजात पाएगा, तो बेदीन और गुनाहगार का क्या ठिकाना?" 19 पस जो खुदा की मर्जी के मुवाफिक दुख पाते हैं, वो नेकी करके अपनी जानों को वफादार खालिक के सुपुर्द करें।

5 तुम में जो बुजुर्ग हैं, मैं उनकी तरह बुजुर्ग और मसीह के दुखों का गवाह

और जाहिर होने वाले जलाल में शरीक होकर उनको ये नसीहत करता हैँ। 2 कि खुदा के उस गल्ले की गल्लेबानी करो जो तुम में है, लाचारी से निगाहानी न करो, बल्कि खुदा की मर्जी के मुवाफिक खुशी से और नाजायज नफों के लिए नहीं बल्कि दिली शौक से। 3 और जो लोग तुम्हें सुर्पुर्द हैं उन पर हक्मन त ज जाओ, बल्कि गल्ले की गल्लेबानी करो। 4 और जब सरदार गल्लेबान जाहिर होगा, तो तुम को जलाल का ऐसा सहारा मिलेगा जो मुरझाने का नहीं। 5 ऐ जवानो! तुम भी बुजुर्गों के ताबे' रहो, बल्कि सब के सब एक दूसरे की खिदमत के लिए फरोतनी से कमर बस्ता रहो, इसलिए कि "खुदा माझसों का मुकाबिला करता है, मगर फरोतनों को तौफीकी बखाता है।" 6 पस खुदा के मजबूत हाथ के नीचे फरोतनी से रहो, ताकि वो तुम्हें वक्त पर सरबलन्द करे। 7 अपनी सारी फिक्र उसी पर डाल दो, क्यौंकि उसको तुम्हारी फिक्र है। 8

तुम होशियार और बेदार रहो; तुम्हारा मुख्यालिफ़ इब्लीस गरजने वाले शेर — ए — बबर की तरह ढूँडता फिरता है कि किसको फाड़ खाए। 9 तुम ईमान में मजबूत होकर और ये जानकर उसका मुकाबिला करो कि तुम्हारे भाई जो दुनिया में हैं ऐसे ही दुःख उठा रहे हैं 10 अब खुदा जो हर तरह के फ़ज़ल का चरमा है, जिसने तुम को मर्सीह ईसा में अपने अबदी जलाल के लिए बुलाया, तुम्हारे थोड़ी मुझत तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें कामिल और काईम और मजबूत करेगा। (aiōnios g166) 11 हमेशा से हमेशा तक उसी की सल्तनत रहे। आमीन। (aiōn g165) 12 मैंने सिलवानुस के जरिए, जो मेरी दानिस्त में दियनतदार भाई है, मुख्तसर तौ पर लिख कर तुम्हें नरीहत की और ये गवाही दी कि खुदा का सच्चा फ़ज़ल यही है, इसी पर काईम रहो। 13 जो बाबुल में तुम्हारी तरह बरगुजीदा है, वो और मेरा मरकुस तुम्हें सलाम करते हैं। 14 मुहब्बत से बोसा ले लेकर आपस में सलाम करो। तुम सबको जो मर्सीह में हो, इत्मीनान हासिल होता रहे।

2 पतरस

1 शमैन पतरस की तरफ से, जो इसा मसीह का बन्दा और रसूल है, उन लोगों

के नाम खत, जिन्होंने हमारे खुदा और मुंजी ईसा मसीह की रास्तबाजी में हमारा सा कीमती ईमान पाया है। 2 खुदा और हमारे खुदावन्द ईसा की पहचान की वजह से फ़जल और इत्तीनान तुहँ ज्यादा होता रहे। 3 क्यूंकि खुदा की इलाही कुदरत ने वो सब चीज़ें जो जिन्दगी और दीनदारी के मुतालिक हैं, हमें उसकी पहचान के बसीले से 'इनायत की, जिसने हम को अपने खास जलाल और नेकी के ज़रिए से बुलाया। 4 जिनके ज़रिए उपने हम से कीमती और निहायत बड़े बड़े किए; ताकि उनके बसीले से तुम उस खराबी से छूटकर, जो दुनिया में बुरी ख़बाहिश की वजह से है, जात — ए — इलाही में शरीक हो जाओ। 5 पस इसी ज़रिए तुम अपनी तरफ से पूरी कोशिश करके अपने ईमान से नेकी, और नेकी से मारिफत, 6 और मारिफत से पहेज़गारी, और परहेज़गारी से सब्र और सब्र सेदीनदारी, 7 और दीनदारी से बिरादराना उल्फत, और बिरादराना उल्फत से मुहब्बत बढ़ाओ। 8 क्यूंकि अगर ये बातें तुम में मौजूद हों और ज्यादा भी होती जाएँ, तो तुम को हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के पहचानने में बेकार और बेफल न होने देंगी। 9 और जिसमें ये बातें न हों, वो अन्धा है और कोताह नजर अपने पहले गुनाहों के धोए जाने को भले बैठता है। 10 पस ऐ भाइयों! अपने बुलावे और बरुज़ीदीयों को साखित करने की ज्यादा कोशिश करो, क्यूंकि अगर ऐसा करेंगे तो कभी ठोकर न खाओगे; 11 बल्कि इससे तुम हमारे खुदावन्द और मुन्जी ईसा मसीह की हमेशा बादशाही में बड़ी 'इज़ज़त के साथ दाखिल किए जाओगे। (aiōnios g166) 12 इसलिए ऐसे तुहँ ये बातें याद दिलाने को हमेशा मुस्त़इद रहँगा, अगर चे तुम उनसे वाकिफ़ और उस हक बात पर काईम हो जो तुहँ हासिल है। 13 और जब तक मैं इस खेमे में हूँ, तुहँ याद दिला कर उभारना अपने ऊपर वाजिब समझता हूँ। 14 क्यूंकि हमारे खुदावन्द ईसा मसीह के बताने के मुवाफिक, मझे मालूम है कि मेरे खेमे के पिराए जाने का बवत जल्द अपेक्षाला है। 15 पस मैं ऐसी कोशिश करँगा कि मेरे इन्तकाल के बाद तुम इन बातों को हमेशा याद रख सको। 16 क्यूंकि जब हम ने तुहँ अपने खुदा वन्द ईसा मसीह की कुदरत और आमद से बाकिफ़ किया था, तो द़ाबाजी की गढ़ी हुई कहानियों की पैरवी नहीं की थी बल्कि खुद उस कि अज़मत को देखा था 17 कि उसने खुदा बाप से उस वक्त 'इज़ज़त और जलाल पाया, जब उस अफ़ज़ल जलाल में से उसे ये आवाज आई, "ये मेरा प्यारा बेटा है, जिससे मैं खुश हूँ।" 18 और जब हम उसके साथ मुकद्दस पहाड़ पर थे, तो आसमान से यही आवाज आती सुनी। 19 और हमारे पास नवियों का को कलाम है जो ज्यादा मौतबर ठहरा। और तुम अच्छा करते हो, जो ये समझ कर उसी पर गौर करते हो कि वो एक चराग है जो अन्धेरी जगह में रैशनी बछाता है, जब तक सुबह की रैशनी और सुबह का सितारा तुम्हारे दिलों में न चमके। 20 और पहले ये जान लो कि किताब — ए — मुकद्दस की किसी नव्बत की बात की ताकीत किसी के जाती इश्कियार पर मौक़फ़ नहीं, 21 क्यूंकि नव्बत की कोई बात आदमी की ख़बाहिश से कभी नहीं हुई, बल्कि आदमी स्ह — उल — कुद्दस की तहीक की वजह से खुदा की तरफ से बोलते थे।

2 जिस तरह उस उम्मत में झटे नबी भी थे उसी तरह तुम में भी झटे उस्ताद

होंगे, जो पोशीदा तौर पर हलाक करने वाली नई — नई बातें निकालेंगे, और उस मालिक का इन्कार करेंगे जिसने उहँ ख़रीद लिया था, और अपने आपको जल्द हलाकत में डालेंगे। 2 और बहुत सारे उनकी बुरी आदातों की पैरवी करेंगे, जिनकी वजह से राह — ए — हक की बदनामी होगी। 3 और वो लालच से बातें बनाकर तुम को अपने नफ़े की वजह ठहराएँगे, और जो ज्ञान

से उनकी सज्जा का हुक्म हो चुका है उसके आने में कुछ देर नहीं, और उनकी हलाकत सोती नहीं। 4 क्यूंकि जब खुदा ने गुनाह करने वाले परिशर्तों को न छोड़ा, बल्कि जहन्मु भेज कर तारीक गारों में डाल दिया ताकि 'अदालत के दिन तक हिसास भेजे रहें, (Tartaroō g5020) 5 और न पहली दुनिया को छोड़ा, बल्कि बेदीन दुनिया पर तूफान भेजकर रास्तबाजी के ऐलान करने वाले नह समेत सात आदमियों को बचा लिया; 6 और सदूम और 'अमूरा के शहरों को मिट्टी में मिला दिया और उहँ हलाकत की सज्जा दी और आइन्दा ज़माने के बेदीनों के लिए जा — ए — 'इबरत बना दिया, 7 और रास्तबाज लूट को जो बेदीनों के नापाक चाल — चलन से बहुत दुखी था रिहाई बख्खी। 8 [चुनौती वो रास्तबाज उनमें रह कर और उनके बेशरा कामों को देख देख कर और सुन सुन कर, गोया हर रोज अपने सच्चे दिल को शिकंजे में खीचता था।] 9 तो खुदावन्द दीनदारों को आजमाइश से निकाल लेना और बदकरारों को 'अदालत के दिन तक सज्जा में रखना जानता है, 10 खुसलन उनको जो नापाक ख़बाहिशों से जिस्म की पैरवी करते हैं और हुक्मत को नाचीज़ जानते हैं। वो गुस्ताख और नाफरमान हैं, और 'इज़ज़तदारों पर लान तान करने से नहीं डरते, 11 बावजूद ये कि फ़रिश्ते जो ताकत और कुदरत में उनसे बड़े हैं, खुदावन्द के सामने उन पर लान तान करते हैं। 12 लेकिन ये लोग बे'अक्तल जानवरों की तरह हैं, जो पकड़े जाने और हलाक होने के लिए हैवान — ए — मूललिक पैदा हुए हैं, जिन बातों से नावाकिफ़ हैं उनके बारे में औरें पर लान तान करते हैं, अपनी खराबी में खुद खराब किए जाएँगे। 13 दूसरों को बुरा करने के बदले इन ही का बुरा होगा। इनको दिन दहाड़े अर्यामी करने में मज़ा आता है। ये दाग बाज और ऐदरार हैं। जब तुम्हरे साथ खाते पीते हैं, तो अपनी तरफ से मुहब्बत की ज़ियाक़त करके 'ऐश — ओ — अशरत करते हैं। 14 उनकी आँखें जिनमें जिनाकार 'औरतें बसी हुई हैं, गुनाह से स्क नहीं सकती, वो बे क्याम दिलों को फ़साते हैं। उनका दिल लालच का मुश्तक है, वो लान तान की ऐलाद है। 15 वो सीधी राह छोड़ कर गुप्ताह हो गए हैं, और बरक के बेटे बिल'आम की राह पर हो लिए हैं, जिसने नारास्ती की मज़दूरी को 'अज़ीज जाना; 16 मगर अपने कुसर पर ये मलामत उठाई कि एक बेज़बान गधी ने आदमी की तरह बोल कर उस नबी को दीवानगी से बाज रखा। 17 वो अन्धे कुँए हैं, और ऐसे बादल हैं जिसे आँधी उड़ाती है; उनके लिए बेदर तारीकी पिरी है। (questioned) 18 वो घमण्ड की बेहदा बातें बक बक कर दूसी आदातों के ज़रिए से, उन लोगों को जिस्मानी ख़बाहिशों में फ़साते हैं जो गुमराही में से निकल ही रहे हैं। 19 जो उनसे तो आज़ादी का वादा करते हैं और अप खराबी के गुलाम बने हुए हैं, क्यूंकि जो शख्स जिससे मगलबूं है वो उसका गुलाम है। 20 जब वो खुदावन्द और मुन्जी ईसा मसीह की पहचान के बसीले से दुनिया की आलदीया से छुट कर, फिर उनमें फ़से और उनसे मगलबूं हुए, तो उनका पिछला हाल पहले से भी बदतर हुआ। 21 क्यूंकि रास्तबाजी की राह का न जानना उनके लिए इससे बेहतर होता है कि उसे जान कर उस पाक हुक्म से फ़िर जाते, जो उहँ सौंपा गया था। 22 उन पर ये सच्ची मिसाल सादिक आती है, कृता अपनी कै की तरफ रुज़ू करता है, और नहलाई हुई स़अरनी दलदल में लोटने की तरफ।

3 ऐ 'अज़ीजो! अब मैं तुहँ ये दूसरा खत लिखता हूँ, और याद दिलाने के तौर

पर दोनों खतों से तुम्हारे साफ दिलों को उभारता हूँ, 2 कि तुम उन बातों को जो पाक नवियों ने पहले कहीं, और खुदावन्द और मुन्जी की उस हुक्म को याद रखतो जो तुम्हारे रसलों की ज़रिए आया था। 3 और पहले जान लो कि आखिरी दिनों में ऐसी हँसी ठड़ा करनेवाले आँएंगे जो अपनी ख़बाहिशों के मुवाफिक चलेंगे, 4 और कहेंगे, "उसके आने का वादा कहाँ गया? क्यूंकि जब

से बाप — दादा सोए हैं, उस वक्त से अब तक सब कुछ वैसा ही है जैसा दुनिया के शुरू से था।” 5 वो तो जानबूझ कर ये भूल गए कि खुदा के कलाम के जरिए से आसमान पहले से मौजूद है, और जमीन पानी में से बनी और पानी में काईम है; 6 इन ही के ज़रिए से उस जमाने की दुनिया ढूब कर हलाक हुई। 7 मगर इस वक्त के आसमान और जमीन उर्फी कलाम के जरिए से इसलिए रख्खे हैं कि जलाए जाएँ; और वो बेदीन आदमियों की 'अदालत और हलाकत के दिन तक महफूज रहेंगे 8 ऐ 'अजीजो! ये खास बात तुम पर पोशीदा न रहे कि खुदावन्द के नजदीक एक दिन हजार बरस के बराबर है, और हजार बरस एक दिन के बराबर। 9 खुदावन्द अपने बादे में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; बल्कि तुम्हरे बारे में हलाकत नहीं चाहता बल्कि ये चाहता है कि सबकी तौबा तक नौबत पहुँचे। 10 लेकिन खुदावन्द का दिन चोर की तरह आ जाएगा, उस दिन आसमान बड़े शेर — ओ — गुल के साथ बरबाद हो जाएँगे, और अजराम — ए — फलक हरारत की शिद्दत से पिघल जाएँगे, और जमीन और उस पर के काम जल जाएँगे। 11 जब ये सब चीजें इस तरह पिघलने वाली हैं, तो तुम्हें पाक चाल — चलन और दीनदारी में कैसे कुछ होना चाहिए, 12 और खुदा की 'अदालत के दिन के अने का कैसा कुछ मुत्तजिर और मुश्ताक रहना चाहिए, जिसके ज़रिए आसमान आग से पिघल जाएँगे, और अजराम — ए — फलक हरारत की शिद्दत से गल जाएँगे। 13 लेकिन उसके बादे के मुवाफिक हम नए आसमान और नई जमीन का इन्तजार करते हैं, जिनमें रास्तबाजी बसी रहेगी। 14 पस ऐ 'अजीजो! चूँकि तुम इन बातों के मुन्तजिर हो, इसलिए उसके सामने इत्मीनान की हालत में बेदाम और बे — ऐब निकलने की कोशिश करो, 15 और हमारे खुदावन्द के तहमील को नजात समझो, चुनाँचे हमारे प्यारे भाई पौत्र ने भी उस हिक्मत के मुवाफिक जो उसे 'इनायत हुई, तुम्हें यही लिखा है 16 और अपने सब खतों में इन बातों का जिक्र किया है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना मुश्किल है, और जाहिल और बे — कर्याम लोग उनके मांगों को और सहीफों की तरह खींच तान कर अपने लिए हलाकत पैदा करते हैं। 17 पस ऐ 'अजीजो! चूँकि तुम पहले से आगाह हो, इसलिए होशियार रहो, ताकि बे — दीनों की गुमराही की तरफ खिंच कर अपनी मजबूती को छोड न दो। 18 बल्कि हमारे खुदावन्द और मुन्जी ईसा मसीह के फजल और 'इरफान में बढ़ते जाओ। उसी की बड़ाई अब भी हो, और हमेशा तक होती रहे। आमीन। (aiōn g165)

1 यूहन्ना

1 उस जिन्दगी के कलाम के बारे में जो शूरू से था, और जिसे हम ने सुना और अपनी आँखों से देखा बल्कि, गौर से देखा और अपने हाथों से छुआ। 2 [ये जिन्दगी जाहिर हुई और हम ने देखा और उसकी गवाही देते हैं, और इस हमेशा की जिन्दगी की तुम्हें खबर देते हैं जो बाप के साथ थी और हम पर जाहिर हुई है।] (aiōnios g166) 3 जो कुछ हम ने देखा और सुना है तुम्हें भी उसकी खबर देते हैं, ताकि तुम भी हमारे शरीक हो, और हमारा मेल मिलाप बाप के साथ और उसके बेटे ईसा मसीह के साथ है। 4 और ये बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारी खुशी परी हो जाए। 5 उससे सुन कर जो पैगाम हम तुम्हें देते हैं, वो ये है कि खुदा नूर है और उसमें जरा भी तारीकी नहीं। 6 अगर हम कहें कि हमारा उसके साथ मेल मिलाप है और फिर तारीकी में चलें, तो हम झटे हैं और हक पर 'अमल नहीं करते। 7 लेकिन जब हम नूर में चलें जिस तरह कि वो नूर में हैं, तो हमारा आपस में मेल मिलाप है, और उसके बेटे ईसा का खन हमें तमाम गुनाह से पाक करता है। 8 अगर हम कहें कि हम बेगुनाह हैं तो अपने आपको धोखा देते हैं, और हम में सच्चाई नहीं। 9 अगर अपने गुनाहों का इकरार करें, तो वो हमारे गुनाहों को मुंआफ करने और हमें सारी नारास्ती से पाक करने में सच्चा और 'आदिल है। 10 अगर कहें कि हम ने गुनाह नहीं किया, तो उसे झटा ठहराते हैं और उसका कलाम हम में नहीं है।

2 ऐ मेरे बच्चों! ये बातें मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ तुम गुनाह न करो; और अगर कोई गुनाह करे, तो बाप के पास हमारा एक मददगार मौजूद है, यानी ईसा मसीह रास्तबाज़; 2 और वही हमारे गुनाहों का काप्रसारा है, और न सिर्फ हमारे ही गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का भी। 3 अगर हम उसके हुक्मों पर 'अमल करें, तो इससे हमें मौल्यम होगा कि हम उसे जान गए हैं। 4 जो कोई ये कहता है, मैं उसे जान गया हूँ "और उसके हुक्मों पर" अमल नहीं करता, वो झटा है और उसमें सच्चाई नहीं। 5 हाँ, जो कोई उसके कलाम पर 'अमल करे, उसमें यकीनन खुदा की मुहब्बत कामिल हो गई है। हमें इसी से मालूम होता है कि हम उसमें हैं: 6 जो कोई ये कहता है कि मैं उसमें काईम हूँ, तो चाहिए कि ये भी उसी तरह चले जिस तरह वो चलता था। 7 ऐ 'अजीजो! मैं तुम्हें कोई नया हुक्म नहीं लिखता, बल्कि वही पुराना हुक्म जो शूरू से तुम्हें मिला है; ये पुराना हुक्म वही कलाम है जो तुम ने सुना है। 8 फिर तुम्हें एक नया हुक्म लिखता हूँ, ये बात उस पर और तुम पर सच्ची आती है: क्यूँकि तारीकी मिटानी जाती है और हकीकी नूर चमकना शूरू हो गया है। 9 जो कोई ये कहता है कि मैं नूर में हूँ और अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है, वो अभी तक अंधेरे ही मैं है। 10 जो कोई अपने भाई से मुहब्बत रखता है वो नूर में रहता है और ठोकर नहीं खाता। 11 लेकिन जो अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है वो अंधेरे में है और अंधेरे ही में चलता है, और ये नहीं जानता कि कहाँ जाता है क्यूँकि अंधेरे ने उसकी आँखें अन्धी कर दी हैं। 12 ऐ बच्चो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि उसके नाम से तुम्हरे गुनाह मूंआफ है। 13 ऐ बुजुर्गो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि जो इन्विटा से है उसे तुम जान गए हो। ऐ जवानो! मैं तुम्हें इसलिए लिखता हूँ कि तुम उस शैतान पर गालिब आ गए हो। ऐ लड़कों! मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि तुम बाप को जान गए हो। 14 ऐ बुजुर्गो! मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि जो शूरू से है उसको तुम जान गए हो। ऐ जवानो! मैंने तुम्हें इसलिए लिखा है कि तुम मजबूत हो, उसे खुदा का कलाम तुम में काईम रहता है, और तुम उस शैतान पर गालिब आ गए हो। 15 न दुनिया से मुहब्बत रखतो है, उसमें बाप की मुहब्बत नहीं। 16 क्यूँकि जो कुछ दुनिया में है, याँनी जिसकी

ख्वाहिश और आँखों की ख्वाहिश और जिन्दगी की शेरड़ी, वो बाप की तरफ से नहीं बल्कि दुनिया की तरफ से है। 17 दुनियाँ और उसकी ख्वाहिश दोनों मिटानी जाती है, लेकिन जो खुदा की मर्जी पर चलता है वो हमेशा तक काईम रहेगा। (aiōn g165) 18 ऐ लड़कों! ये आँखिरी ब्रत है; जैसा तुम ने सुना है कि मुखालिफ — ए — मरीह आनेवाला है, उसके मुखालिफ अब भी बहत से मुखालिफ — ए — मरीह पैदा हो गए हैं। इससे हम जानते हैं ये आँखिरी ब्रत है 19 जो निकले तो हम ही में से, मगर हम में से थे नहीं। इसलिए कि अगर हम में से होते तो हमारे साथ रहते, लेकिन निकल इस लिए गए कि ये जाहिर हो कि वो सब हम में से नहीं है। 20 और तुम को तो उस कुदूस की तरफ से मसह किया गया है, और तुम सब कुछ जानते हो। 21 मैंने तुम्हें इसलिए नहीं लिखा कि तुम सच्चाई को नहीं जानते, बल्कि इसलिए कि तुम उसे जानते हो, और इसलिए कि कोई झ़रन सच्चाई की तरफ से नहीं है। 22 कौन झटा है? सिवा उसके जो ईसा के मसीह होने का इन्कार करता है। मुखालिफ — ए — मरीह वही है जो बाप और बेटे का इन्कार करता है। 23 जो कोई बेटे का इन्कार करता है उसके पास बाप भी नहीं; जो बेटे का इन्कार करता है उसके पास बाप भी है। 24 जो तुम ने शूरू से सुना है अगर वो तम में काईम रहे, तो तुम भी बेटे और बाप में काईम रहोगे। 25 और जिसका उसने हम से वादा किया, वो हमेशा की जिन्दगी है। (aiōnios g166) 26 मैंने ये बातें तुम्हें उनके बारे में लिखी हैं, जो तुम्हें धोखा देते हैं, 27 और तुम्हारा वो मसह जो उसकी तरफ से किया गया, तुम में काईम रहता है, और तुम इसके मोहताज नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, बल्कि जिस तरह वो मसह जो उसकी तरफ से किया गया, तुम्हें सब बतें सिखाता है और सच्चा है और झटा नहीं; और जिस तरह उसने तुम्हें सिखाया उसी तरह तुम उसमें काईम रहते हो। 28 गरज ऐ बच्चो! उसमें काईम रहते, ताकि जब वो जाहिर हो तो हमें दिलेरी हो और हम उसके अपने पर उसके सामने शर्मिन्दा न हों। 29 अगर तुम जानते हो कि वो रास्तबाज है, तो ये भी जानते हो कि जो कोई रास्तबाजी के काम करता है वो उससे पैदा हुआ है।

3 देखो, बाप ने हम से कैसी मुहब्बत की है कि हम खुदा के फर्जन्द कहलाए, और हम हैं भी। दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती कि उसने उसे भी नहीं जाना। 2 'अजीजो! हम इस वक्त खुदा के फर्जन्द हैं, और अभी तक ये जाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं कि जब वो जाहिर होगा तो हम भी उसकी तरह होंगे, क्यूँकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वो है। 3 और जो कोई उससे ये उम्मीद रखता है, अपने आपको वैसा ही पाक करता है जैसा वो पाक है। 4 जो कोई गुनाह करता है, वो शरीर की मुखालिफत करता है; और गुनाह शरीर अत की मुखालिफत ही है। 5 और तुम जानते हो कि वो इसलिए जाहिर हुआ था कि गुनाहों को उठा ले जाए, और उसकी जात में गुनाह नहीं। 6 जो कोई उसमें काईम रहता है वो गुनाह नहीं करता; जो कोई गुनाह करता है, न उसने उसे देखा है और न जाना है। 7 ऐ बच्चो! किसी के धोखे में न आना। जो रास्तबाजी के काम करता है, वही उसकी तरह रास्तबाज है। 8 जो शैतान गुनाह करता है वो शैतान से है, क्यूँकि शैतान शूरू ही से गुनाह करता रहा है। खुदा का बेटा इसलिए जाहिर हुआ था कि शैतान के कामों को मिटाए। 9 जो कोई खुदा से पैदा हुआ है वो गुनाह नहीं करता, क्यूँकि उसका बीज उसमें रहता है, बल्कि वो गुनाह कर ही नहीं सकता क्यूँकि खुदा से पैदा हुआ है। 10 इसी से खुदा के फर्जन्द और शैतान के फर्जन्द जाहिर होते हैं। जो कोई रास्तबाजी के काम नहीं करता वो खुदा से नहीं, और वो भी नहीं जो अपने भाई से मुहब्बत नहीं रखता। 11 क्यूँकि जो पैगाम तुम से शूरू से सुना वो ये है कि हम एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं। 12 और काइन की तरह न बनें जो उस शरीर से था, और जिसने अपने भाई को कल्प किया; और उसने किस वास्ते

उसे कत्ल किया? इस वास्ते कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम रास्ती के थे। 13 ऐ भाइयों! आगर दुनिया तुम से 'दुश्मनी रखती है तो तात्पुर ज्ञाव न करो। 14 हम तो जानते हैं कि मौत से निकलकर जिन्दगी में दाखिल हो गए, क्यूंकि हम भाइयों से मुहब्बत रखते हैं। जो मुहब्बत नहीं रखता वो मौत की हालत में रहता है। 15 जो कोई अपने भाई से 'दुश्मनी रखता है, वो ख़ूनी है और तुम जानते हो कि किसी ख़ूनी में हमेशा की जिन्दगी मौजूद नहीं रहती।

(aiōnios g166) 16 हम ने मुहब्बत को इसी से जाना है कि उसने हमारे वास्ते अपनी जान दे दी, और हम पर भी भाइयों के वास्ते जान देना फर्ज है। 17 जिस किसी के पास दुनिया का माल हो और वो अपने भाई को मोहताज देखकर रहम करने में देर करे, तो उसमें खुदा की मुहब्बत कँूकर कँैम रह सकती है? 18 ऐ बच्चो! हम कलाम और जबान ही से नहीं, बल्कि काम और सच्चाई के जरिए से भी मुहब्बत करें। 19 इससे हम जानेगे कि हक के हैं, और जिस बात में हमारा दिल हमें इल्जाम देगा, उसके बारे में हम उसके हुजर अपनी दिलजमँ'ई करेंगे; 20 कँूकि खुदा हमारे दिल से बड़ा है और सब कुछ जानता है। 21 ऐ 'अज़ीजो! जब हमारा दिल हमें इल्जाम नहीं देता, तो हमें खुदा के सामने दिलेरी हो जाती है; 22 और जो कुछ हम माँगते हैं वो हमें उसकी तरफ से मिलता है, क्यूंकि हम उसके हुक्मों पर अमल करते हैं और जो कुछ वो पसन्द करता है उसे बजा लाते हैं। 23 और उसका हकम ये है कि हम उसके बेटे इंसा मरीह के नाम पर ईमान लाएँ, जैसा उसने हमें हकम दिया उसके मुखाफिक आपस में मुहब्बत रखवें। 24 और जो उसके हुक्मों पर 'अमल करता है, वो इस में और ये उसमें कँैम रहता है; और इसी से यानी उस पाक स्ह से जो उसने हमें दिया है, हम जानते हैं कि वो हम में कँैम रहता है।

4 ऐ 'अज़ीजो! हर एक स्ह का यकीन न करो, बल्कि स्हों को आज़माओ तकि वो खुदा की तरफ से हैं या नहीं; क्यूंकि बहुत से झूटे नबी दुनियाँ में निकल खेड़ हुए हैं। 2 खुदा के स्ह को तुम इस तरह पहचान सकते हो कि जो कोई स्ह इकरार करे कि इंसा मरीह मुजस्सिम होकर आया है, वो खुदा की तरफ से है; 3 और जो कोई स्ह इंसा का इकरार न करे, वो खुदा की तरफ से नहीं और यही मुखालिफ — ऐ — मरीह की स्ह है, जिसकी खबर तुम सुन चुके हो कि वो आनेवाली है, बल्कि अब भी दुनिया में मौजूद है। 4 ऐ बच्चों! तुम खुदा से हो हो और उन पर गालिब आ गए हो, क्यूंकि जो तुम में है वो उससे बड़ा है जो दुनिया में है। 5 वो दुनिया से हैं इस वास्ते दुनियाँ की सी कहते हैं, और दुनियाँ उनकी सुनती है। 6 हम खुदा से हैं। जो खुदा को जानता है, वो हमारी सुनता है; जो खुदा से नहीं, वो हमारी नहीं सुनता। इसी से हम हक की स्ह और गुमराही की स्ह को पहचान लेते हैं। 7 ऐ 'अज़ीजो! हम इस बबत खुदा के फर्जन्द हैं, और अभी तक ये जाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं कि जब वो जाहिर होगा तो हम भी उसकी तरह होंगे, क्यूंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वो है। 8 जो मुहब्बत नहीं रखता वो खुदा को नहीं जानता, क्यूंकि खुदा मुहब्बत है। 9 जो मुहब्बत खुदा को हम से है, वो इससे जाहिर हुई कि खुदा ने अपने इकलौते बेटे को दुनिया में भेजा है ताकि हम उसके बसीले से जिन्दा रहें। 10 मुहब्बत इस में नहीं कि हम ने खुदा से मुहब्बत की, बल्कि इस में है कि उसने हम से मुहब्बत की और हमारे गुनाहों के कफ़फ़ोरे के लिए अपने बेटे को भेजा। 11 ऐ 'अज़ीजो! जब खुदा ने हम से ऐसी मुहब्बत की, तो हम पर भी एक दूसरे से मुहब्बत रखना फर्ज है। 12 खुदा को कभी किसी ने नहीं देखा; आगर हम एक दूसरे से मुहब्बत रखते हैं, तो खुदा हम में रहता है और उसकी मुहब्बत हमारे दिल में कामिल हो गई है। 13 चूँकि उसने अपने स्ह में से हमें दिया है, इससे हम जानते हैं कि हम उसमें कँैम रहते हैं और वो हम में। 14 और हम ने देख लिया है और गवाही देते हैं कि बाप ने बेटे

को दुनिया का मुन्जी करके भेजा है। 15 जो कोई इकरार करता है कि इंसा खुदा का बेटा है, खुदा उसमें रहता है और वो खुदा में। 16 जो मुहब्बत खुदा को हम से है उसको हम जान गए और हमें उसका यकीन है। खुदा मुहब्बत है, और जो मुहब्बत में काईम रहता है वो खुदा में कँैम रहता है, और खुदा उसमें कँैम रहता है। 17 इसी वजह से मुहब्बत हम में कामिल हो गई, ताकि हमें 'अदालत के दिन दिलेरी हो; क्यूंकि जैसा वो है वैसे ही दुनिया में खम भी है। 18 मुहब्बत में खौफ नहीं होता, बल्कि कामिल मुहब्बत खौफ को दूर कर देती है; क्यूंकि खौफ से 'अज़बा होता है और कोई खौफ करनेवाला मुहब्बत में कामिल नहीं हुआ। 19 हम इस लिए मुहब्बत रखते हैं कि पहले उसने हम से मुहब्बत रखती है। 20 अगर कोई कहे, 'मैं खुदा से मुहब्बत रखता हूँ' और वो अपने भाई से 'दुश्मनी रखते तो झ़ठा है'; क्यूंकि जो अपने भाई से जिसे उसने नहीं देखा मुहब्बत नहीं रखता। 21 और हम को उसकी तरफ से ये हक्म मिला है कि जो खुदा से मुहब्बत रखता है वो अपने भाई से भी मुहब्बत रखते हैं।

5 जिसका ये ईमान है कि इंसा ही मसीह है, वो खुदा से पैदा हुआ है; और जो कोई बाप से मुहब्बत रखता है, वो उसकी औलाद से भी मुहब्बत रखता है।

2 जब हम खुदा से मुहब्बत रखते और उसके हुक्मों पर 'अमल करते हैं, तो इससे मालूम हो जाता है कि खुदा के फर्जन्दों से भी मुहब्बत रखते हैं। 3 और खुदा की मुहब्बत ये है कि हम उसके हुक्मों पर 'अमल करें, और उसके हुक्म सख्त नहीं। 4 जो कोई खुदा से पैदा हुआ है, वो दुनिया पर गालिब आता है; और वो गल्वा जिससे दुनिया मालूम हुई है, हमारा ईमान है। 5 दुनिया को हराने वाला कौन है? सिवा उस शब्द के जिसका ये ईमान है कि इंसा खुदा का बेटा है। 6 यही है वो जो पानी और खन के बसीले से आया था, यानी इंसा मसीह: वो न फक्त पानी के बसीले से, बल्कि पानी और खन दोनों के बसीले से आया था। 7 और जो गवाही देता है वो स्ह है, क्यूंकि स्ह सच्चाई है। 8 और गवाही देवाते तीन हैं: स्ह पानी और खन; ये तीन एक बात पर मुत्तकिक हैं। 9 जब हम आदिमों की गवाही कुबूल कर लेते हैं, तो खुदा की गवाही तो उससे बढ़कर है; और खुदा की गवाही ये है कि उसने अपने बेटे के हक्म में गवाही दी है। 10 जो खुदा के बेटे पर ईमान रखता है, वो अपने आप में गवाही रखता है। जिसने खुदा का यकीन नहीं किया उसने उसे झ़ठा ठहराया, क्यूंकि वो उस गवाही पर जो खुदा ने अपने बेटे के हक्म में दी है, ईमान नहीं लाया। 11 और वो गवाही ये है, कि खुदा ने हमेशा की जिन्दगी बख्ती, और ये जिन्दगी उसके बेटे में है। (aiōnios g166) 12 जिसके पास बेटा है, उसके पास जिन्दगी है, और जिसके पास खुदा का बेटा नहीं, उसके पास जिन्दगी भी नहीं। 13 मैंने तुम को जो खुदा के बेटे के नाम पर ईमान लाए हो, ये बातें इसलिए लिखी कि तुम्हें मालूम हो कि हमेशा की जिन्दगी रखते हो। (aiōnios g166) 14 और हमें जो उसके सामने दिलेरी है, उसकी बजह ये है कि अगर उसकी मज़ी के मुखाफिक कुछ माँगते हैं, तो वो हमारी सुनता है। 15 और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम माँगते हैं, वो ये भी जानते हैं कि जो कुछ हम ने उससे माँगा है वो पाया है। 16 अगर कोई अपने भाई को ऐसा गुनाह करते देखे जिसका नतीजा मौत न हो तो दुआ करे खुदा उसके बसीले से जिन्दगी बख्ती। उही को जिन्होंने ऐसा गुनाह नहीं किया जिसका नतीजा मौत हो, गुनाह ऐसा भी है जिसका नतीजा मौत है; इसके बारे में दुआ करने को मैं नहीं कहता। 17 है तो हर तरह की नारास्ती गुनाह, मगर ऐसा गुनाह भी है जिसका नतीजा मौत नहीं। 18 हम जानते हैं कि जो कोई खुदा से पैदा हुआ है, वो गुनाह नहीं करता; बल्कि उसकी हिफाज़त वो करता है जो खुदा से पैदा हुआ और शैतान उसे छोने नहीं पाता। 19 हम जानते हैं कि हम खुदा से हैं, और सारी दुनिया उस शैतान के

कल्जे में पड़ी हुई है। 20 और ये भी जानते हैं कि खुदा का बेटा आ गया है, और उसने हमे समझ बरखी है ताकि उसको जो हकीकी है जाने और हम उसमें जो हकीकी है, यानी उसके बेटे ईसा मसीह में है। हकीकी खुदा और हमेशा की जिन्दगी यही है। (aiōnios g166) 21 ऐ बच्चों! अपने आपको बुतों से बचाए रखें।

2 यूहन्ना

1 मुझ बुजुर्गी की तरफ से उस बरगुजीदा बीवी और उसके फर्जन्दों के नाम खत, जिनसे मैं उस सच्चाई की वजह से सच्ची मुहब्बत रखता हूँ, जो हम में क्राइम रहती है, और हमेशा तक हमारे साथ रहेगी, **2** और सिफ मैं ही नहीं बल्कि वो सब भी मुहब्बत रखते हैं, जो हक्क से बाकिफ हैं। (aiōn g165) **3** खुदा बाप और बाप के बेटे 'ईसा मसीह की तरफ से फजल और रहम और इतीनाम, सच्चाई और मुहब्बत समेत हमारे शामिल — ए — हाल रहेंगे। **4** मैं बहुत रुक्ष हुआ कि मैंने तो कुछ लड़कों को उस हृक्षम के मुताबिक, जो हमें बाप की तरफ से मिला था, हकीकत में चलते हुए पाया। **5** अब ऐ बीवी! मैं तुझे कोई नया हृक्षम नहीं, बल्कि वही जो 'शूस' से हमारे पास है लिखता और तुझ से मिन्नत करके कहता हूँ कि आओ, हम एक दूसरे से मुहब्बत रखेंगे। **6** और मुहब्बत ये है कि हम उसके हृक्षमों पर चलें। ये वही हृक्षम हैं जो तुम ने 'शूस' से सुना है कि तुम्हें इस पर चलना चाहिए। **7** क्यैंकि बहुत से ऐसे गुमराह करने वाले दुनिया में निकल खड़े हुए हैं, जो 'ईसा मसीह के मुजस्सिम होकर अने का इकरार नहीं करते। गुमराह करनेवाला मुश्वालिफ — ए — मसीह यही है। **8** अपने आप में खबरदार रहो, ताकि जो मेहनत हम ने की है वो तुम्हारी वजह से जाया न हो जाए, बल्कि तुम को पूरा अज्ञ मिले। **9** जो कोई आगे बढ़ जाता है और मसीह की तालीम पर काईम नहीं रहता, उसके पास बाप भी है और बेटा भी। **10** अगर कोई तुम्हारे पास आए और ये तालीम न दे, तो न उसे घर में आने दो और न सलाम करो। **11** क्यैंकि जो कोई ऐसे शर्क्ष से को सलाम करता है, वो उसके बुरे कामों में शरीक होता है। **12** मुझे बहुत सी बातें तुम को लिखना है, मगर कागज और स्थानी से लिखना नहीं चाहता; बल्कि तुम्हारे पास आने और रु — ब — रु बातचीत करने की उम्मीद रखता हूँ, ताकि तुम्हारी खुशी कामिल हो। **13** तेरी बरगुजीदा बहन के लड़के तुझे सलाम कहते हैं।

3 यूहन्ना

1 मुझ बुजुर्गी की तरफ से उस प्यारे गियुस के नाम खत, जिससे मैं सच्ची मुहब्बत रखता हूँ। 2 ऐ प्यारे! मैं ये दुआ करता हूँ कि जिस तरह तू रुहनी तरक्की कर रहा है, इसी तरह तू सब बातों में तरक्की करे और तन्दस्त रहे। 3 क्योंकि जब भाइयों ने आकर तेरी उस सच्चाई की गवाही दी, जिस पर तू हकीकत में चलता है, तो मैं निहायत खुश हुआ। 4 मेरे लिए इससे बढ़कर और कोई खुशी नहीं कि मैं अपने बेटों को हक पर चलते हुए सुूँ। 5 ऐ प्यारे! जो कुछ तू उन भाइयों के साथ करता है जो परदेसी भी हैं, वो ईमानदारी से करता है। 6 उन्होंने कलीसिया के सामने तेरी मुहब्बत की गवाही दी थी। अगर तू उन्हें उस तरह रवाना करेगा, जिस तरह खुदा के लोगों को मुनासिब है तो अच्छा करेगा। 7 कर्मकीं वो उस नाम की खातिर निकले हैं, और गैर — कौमों से कुछ नहीं लेते। 8 पस ऐसों की खातिरदारी करना हम पर फर्ज है, ताकि हम भी हक की ताईट में उनके हम खिदमत हों। 9 मैंने कलीसिया को कुछ लिखा था, मगर दियुक्तिफेस जो उनमें बड़ा बनना चाहता है, हमें कुबूल नहीं करता। 10 पस जब मैं आऊँगा तो उसके कामों को जो बो कर रहा है, याद दिलाऊँगा, कि हमारे हक में बुरी बातें बकता है; और इन पर सब न करके खुद भी भाइयों को कुबूल नहीं करता, और जो कुबूल करना चाहते हैं उनको भी मनह' करता है और कलीसिया से निकाल देता है। 11 ऐ प्यारे! बटी की नहीं बल्कि नेकी की पैरवी कर। नेकी करनेवाला खुदा से है; बटी करनेवाले ने खुदा को नहीं देखा। 12 देमेक्रियुस के बारे में सब ने और खुद हक ने भी गवाही दी, और हम भी गवाही देते हैं, और तू जानता है कि हमारी गवाही सच्ची है। 13 मुझे लिखना तो तुझ को बहुत कुछ था, मगर स्याही और कलम से तुझे लिखना नहीं चाहता। 14 बल्कि तुझ से जल्द मिलने की उम्मीद रखता हूँ, उस बवत हम स् — ब — स् बातचीत करेंगे। तुझे इत्मीनान हासिल होता रहे। यहाँ के दोस्त तुझे सलाम कहते हैं। तू वहाँ के दोस्तों से नाम — ब — नाम सलाम कह।

यहदाह

१ यहदाह की तरफ से जो मरीह 'ईसा का बन्दा और याकूब का भाई', और

उन बुलाए हुओं के नाम जो खुदा बाप में प्यारे और 'ईसा मरीह के लिए महफूज हैं। २ रहम, इतीमान और मुहब्बत तुम को ज्यादा हासिल होती रहे। ३ ऐ प्यारो! जिस वक्त मैं तुम को उस नजात के बारे में लिखने में पूरी कोशिश कर रहा था जिसमें हम सब शामिल हैं, तो मैंने तुम्हें ये नरीहत लिखना जस्तर जाना कि तुम उस ईमान के बास्ते मेहनत करो जो मुकद्दसों को एक बार सौंपा गया था। ४ कर्म्मिक कुछ ऐसे शास्त्र चृपके से हम में आ मिले हैं, जिनकी इप सजा का जिक्र पाक कलाम में पहले से लिखा गया था: ये बेटीन हैं, और हमारे खुदा के फजल को बुरी आदतों से बदल डालते हैं, और हमारे वाहिद मालिक और खुदावन्द ईसा मरीह का इन्कार करते हैं। ५ पस अगरचे तुम सब बातें एक बार जान चुके हो, तोधी ये बात तुम्हें याद दिलाना चाहता है कि खुदावन्द ने एक उम्मत को मुल्क — ए — मिस में से छुड़ाने के बाद, उन्हें हलाक किया जो ईमान न लाए। ६ और जिन फरिश्तों ने अपनी हुक्मत को काईम न रखवा बल्कि अपनी खास जगह को छोड़ दिया, उनको उसने हमेशा की कैट दें अंधेरे के अन्दर रोज़ — ए — 'अजीम की 'अदालत तक रखवा है (aīdios g126) ७ इसी तरह सदम और 'अमरा और उसके आसपास के शहर, जो इनकी तरह जिनकारी में पढ़ गए और गैर जिस्म की तरफ गतिव हुए, हमेशा की आग की सजा में गिरफ्तार होकर जा — ए — 'इबरत ठहरे हैं। (aīonios g166) ८ तोमी ये लोग अपने वहमों में मशगूल होकर उनकी तरह जिस्म को नापाक करते, और हुक्मत को नाचीज़ जानते, और 'इज्जतदारों पर लान तान करते हैं। ९ लोकिन मुकर्ब फरिश्ते मीकाईल ने मूसा की लाश के बारे में इब्नीस से बहस — ओ — तकरार करते वक्त, लान तान के साथ उस पर नालिश करने की हिम्मत न की, बल्कि ये कहा, "खुदावन्द तुझे मलामत करे।" १० मगर ये जिन बातों को नहीं जानते उन पर लान तान करते हैं, और जिनको बे अकल जानवरों की तरह मिजाजी तौर पर जानते हैं, उनमें अपने आप को खराब करते हैं। ११ इन पर आफसोस है कि ये काईन की राह पर चले, और मजदूरी के लिए बड़ी लालच से बिल'आम की सी गुमराही इलियार की, और कोरह की तरह मुखालिफत कर के हलाक हुए। १२ ये तुम्हारी मुहब्बत की दावतों में तुम्हरे साथ खते — पीते वक्त, गोया दरिया की छिपी चट्टानें हैं। ये बेधड़क अपना पेट भरनेवाले चरवाहे हैं। ये बे — पानी के बादल हैं, जिन्हें हवाएँ उड़ा ले जाती हैं। ये पतझड़ के बे — फल दरखत हैं, जो दोनों तरफ से मुर्दा और जड़ से उछड़े हुए। १३ ये समुन्दर की पुर जोश मौजें, जो अपनी बेशर्मी के झाग उछालती हैं। ये बो आवारा गर्द सितरे हैं, जिनके लिए हमेशा तक बेहद तारीकी धर्ही है। (aīon g165) १४ इनके बारे में हनक ने भी, जो आदम से सातवीं पुरत में था, ये पेशीनगोई की थी, "देखो, खुदावन्द अपने लाखों मुकद्दसों के साथ आया, १५ ताकि सब आदमियों का इन्साक करे, और सब बेटीनों को उनकी बेटीनी के उन सब कामों के जरिए से, जो उन्होंने बेटीनी से किए हैं, और उन सब सख्त बातों की वजह से जो बेटीन गुनाहगारों ने उसकी मुखालिफत में कही हैं कुस्सावार ठहराए।" १६ ये बड़बड़ाने वाले और शिकायत करने वाले हैं, और अपनी छवाहिशों के मुवाफिक चलते हैं, और अपने मुँह से बड़े बोल बोलते हैं, और फाइदे के लिए लोगों की तारीफ करते हैं। १७ लोकिन ऐ प्यारो! उन बातों को याद रखो जो हमारे खुदावन्द 'ईसा मरीह के रसल पहले कह चुके हैं। १८ वो तुम से कहा करते थे कि, "आखिरी जमाने में ऐसे ठड़ा करने वाले होंगे, जो अपनी बेटीनी की छवाहिशों के मुवाफिक चलेंगे।" १९ ये बो आदमी हैं जो फूट डालते हैं, और नफसानी हैं और स्फर से बे — बहरा। २० मगर तुम ऐ प्यारो!

अपने पाक तरीन ईमान में अपनी तरक्की करके और स्फर — उल — कुद्दस में दुआ करके, २१ अपने आपको 'खुदा' की मुहब्बत में काईम रखो, और हमेशा की जिन्दगी के लिए हमारे खुदावन्द 'ईसा मरीह की रहमत के इन्तजार में रहो। (aīonios g166) २२ और कुछ लोगों पर जो शक में है रहम करो; २३ और कुछ को झपट कर आग में से निकालो, और कुछ पर खाएँ खाकर रहम करो, बल्कि उस पोशाक से भी नफरत करो जो जिसम की वजह से दागी हो गई हो। २४ अब जो तुम को ठोकर खाने से बचा सकता है, और अपने पुर जलाल हुजर में कमाल खुशी के साथ बेष्ट करके खड़ा कर सकता है, २५ उस खुदा — ए — वाहिद का जो हमारा मुन्जी है, जलाल और 'अजमत और सलतनत और इलियार, हमारे खुदावन्द 'ईसा मरीह के बसीते से, जैसा पहले से है, अब भी हो और हमेशा रहे। आमीन। (aīon g165)

मुकाशफा

1 इसा मरीह का मुकाशिफा, जो उसे खुदा की तरफ से इसलिए हुआ कि

अपने बन्दों को बो बातें दिखाए जिनका जल्द होना जरूरी है, और उसने अपने फरिश्ते को भेज कर उसकी मार्फिरत उहें अपने अपने बन्दे युहन्ना पर जाहिर किया। 2 युहन्ना ने खुदा का कलाम और इसा मरीह की गवाही की याँनी उन सब चीजों की जो उसने देखी थी गवाही दी। 3 इस नबुव्वत की किताब का पढ़ने वाले और उसके सुनने वाले और जो कुछ इस में लिखा है, उस पर अमल करने वाले मुबारिक हैं; क्योंकि वक्त नज़ीकी है। 4 युहन्ना की जानिक से उन सात कलीसियाओं के नाम जो आसिया सूबा में हैं। उसकी तरफ से जो है, और जो था, और जो अनेवाला है, और उन सात स्थों की तरफ से जो उसके तत्व के सामने है। 5 और इसा मरीह की तरफ से जो सच्चे गवाह और मुर्दी में से जी उठेवालों में पहलौठा और दुनियाँ के बादशाहों पर हाकिम है, तुम्हें फ़जल और इत्नीनाम हासिल होता रहे। जो हम से मुहब्बत रखता है, और जिसने अपने खुन के बसीते से हम को गुनाहों से मुआफ़ी बर्खी, 6 और हम को एक बादशाही भी दी और अपने खुदा और बाप के लिए काहिन भी बना दिया। उसका जलाल और बादशाही हमेशा से हमेशा तक रहे। आर्मीन। (aiōn g165) 7 देखो, वो बादलों के साथ आनेवाला है, और हर एक आँख उसे देखेगी, और उसे छेड़ा था वो भी देखेगे, और ज़रीन पर के सब कबीले उसकी वजह से सीना पिटेंगे। बेशक। आर्मीन। 8 खुदावन्द खुदा जो है और जो था और जो आनेवाला है, याँनी कादिर — ए — मुल्क फरमाता है, “मैं अल्फ़ा और ओमेगा हूँ।” 9 मैं युहन्ना, जो तुम्हारा भाई और इसा की मुसीबत और बादशाही और सब में तुम्हारा शरीक हूँ, खुदा के कलाम और इसा के बारे में गवाही देने के ज़रिए उस टापू में था, जो तप्सुक कहलाता है, कि 10 खुदावन्द के दिन स्थ में आ गया और अपने पिछे नरसिंगे की सी ये एक बड़ी आवाज सुनी, 11 “जो कुछ तू देखता है उसे एक किताब में लिख कर उन सातों शहरों की सातों कलीसियाओं के पास भेज दे याँनी इफ़िसुस, और सुमरना, और परिगमन, और थुवातीरा, और सरदीस, और फ़िलदिकिया, और लौदीकिया में।” 12 मैंने उस आवाज देनेवाले को देखोने के लिए मँहूँ फेरा, जिसने मुझ से कहा था; और फिर कर सोने के सात चिरागदान देखो, 13 और उन चिरागदानों के बीच में आदमजाद सा एक आदमी देखा, जो पाँव तक का जामा पहने हुए था। 14 उसका सिर और बाल सफेद उन बल्कि बर्फ की तरह सफेद थे, और उसकी आँखें आग के शोले की तरह थीं। 15 और उसके पाँव उस खालिसी पीतल के से थे जो भर्ती में तपाया गया हो, और उसकी आवाज जोर के पानी की सी थी। 16 और उसके दहने हाथ में सात सितारे थे, और उसके मँहूँ में से एक दोधारी तेज तलवार निलकती थी, और उसका चेहरा ऐसा चमकता था जैसे तेजी के वक्त आफताब। 17 जब मैंने उसे देखा तो उसके पाँव में मुर्दी सा गिर पड़ा। और उसने ये कहकर मुझ पर अपना दहना हाथ रखवा, “खौफ़ न कर; मैं अब्बल और आसिर, 18 और ज़िनदा हूँ। मैं मर गया था, और देख हमेशा से हमेशा तक रहँगा; और मौत और ‘आलम — ए — अवहाँ की कुञ्जियाँ मैं पास हैं।’ (aiōn g165, Hadēs g86) 19 पस जो बातें तू ने देखी और जो हैं और जो इनके बाद होने वाली हैं, उन सब को लिख ले। 20 याँनी उन सात सितारों का भेट जिहें तू ने मेरे दहने हाथ में देखा था, और उन सोने के सात चिरागदानों का: वो सात सितारे तो सात कलीसियाओं के फरिश्ते हैं, और वो सात चिरागदान कलीसियाँ हैं।”

2 “इफ़िसुस की कलीसिया के फरिश्ते को ये लिख: जो अपने दहने हाथ में सितारे लिए हुए हैं, और सोने के सातों चिरागदानों में फिरता है, वो ये

फरमाया है कि। 2 मैं तेरे काम और तेरी मशक्कत और तेरा सब्र तो जानता हूँ; और ये भी कि तू बदियों को देख नहीं सकता, और जो अपने आप को रसूल कहते हैं और हैं नहीं, तू ने उनको आजमा कर झूठा पाया। 3 और तू सब्र करता है, और मेरे नाम की खातिर मुसीबत उठाते उठाते थका नहीं। 4 मगर मुझ को तुझ से ये शिकायत है कि तू ने अपनी पहली सी मुहब्बत छोड़ दी। 5 पस खायाल कर कि तू कहाँ से पिशा। और तैबा न करेगा, तो मैं तेरे पास आकर तेरे चिरागदान को उसकी जगह से हटा दूँगा। 6 अलबता तुझ में ये बात तो है कि तू निकलियोंके कामों से नफरत रखता है, जिसने मैं भी नफरत रखता हूँ। 7 जिसके कान हों वो सुने कि स्थ कलीसियाओं से क्या फरमाता है। जो गालिब आए, मैं उसे उस ज़िन्दगी के दरखत में से जो खुदा की जनन्त मैं है, फ़ल खाने को दूँगा।” 8 “और समूरना की कलीसिया के फरिश्ते को ये लिख: जो अब्बल — ओ — आसिर है, और जो मर गया था और ज़िन्दा हुआ, वो ये फरमाता है कि, 9 मैं तेरी मुसीबत और गरीबी को जानता हूँ (मगर तू दौलतमन्द है), और जो अपने आप को यहदी कहते हैं, और हैं नहीं बल्कि शैतान के पिरोह हैं, उनके लान तान को भी जानता हूँ। 10 जो दुःख तुझ सहने होंगे उनसे खौफ़ न कर, देखो शैतान तुम में से कुछ को कैद में डालने को है ताकि तुहारी आज्ञामाझ पूरी हो और दस दिन तक मुसीबत उठाओगे जान देने तक वफ़ादार रहो तो मैं तुम्हें ज़िन्दगी का ताज दूँगा। 11 जिसके कान हों वो सुने कि पाक स्थ कलीसियाओं से क्या फरमाता है। जो गालिब आए, उसको दूसरी मौत से नुकसान न पहुँचेगा।” 12 “और पिरगुमन की कलीसिया के फरिश्ते को ये लिख: जिसके पास दोधारी तेज तलवार है, वो फरमाता है कि 13 मैं ये तो जानता हूँ कि शैतान की तख्त गाह में सुकूनत रखता है, और मेरे नाम पर काई रहता है; और जिन दिनों में मेरा वफ़ादार शहीद इन्तपास तुम में उस जगह कल्प हुआ था जहाँ शैतान रहता है, उन दिनों मैं भी तू ने मुझ पर ईमान रखने से इनकार नहीं किया। 14 लेकिन मुझे चन्द बातों की तुझ से शिकायत है, इसलिए कि तेरे यहाँ कुछ लोग बिल’ आम की तालीम मानेवाले हैं, जिसने बलक को बनी — इसाईल के सामने ठोकर खिलाने वाली चीज रखने की तालीम दी, याँनी ये कि वो बुतों की कुर्बानियाँ खाएँ और हरामकारी करें। 15 चुनाँचे तेरे यहाँ भी कुछ लोग इसी तरह नीकुलियों की तालीम के मानेवाले हैं। 16 पास तैबा कर, नहीं तो मैं तेरे पास जल्द आकर अपने मँहूँ की तलवार से उनके साथ लड़ागा। 17 जिसके कान हों वो सुने कि पाक स्थ कलीसियाओं से क्या फरमाता है। जो गालिब आएगा, मैं उसे आसमानी खाने में से दूँगा, और एक सफेद पत्थर दूँगा। उस पत्थर पर एक नया नाम लिखा हुआ होगा, जिसे पानेवाले के सिवा कोई न जानेगा।” 18 “और थुवातीरा की कलीसिया के फरिश्ते को ये लिख: खुदा का बेटा जिसकी आँखें आग के शोले की तरह और पाँव खालिसी पीतल की तरह हैं, ये फरमाता है कि 19 मैं तेरे कामों और मुहब्बत और ईमान और खिदमत और सब को तो जानता हूँ, और ये भी कि तेरे पिछले कामों से ज्यादा हैं। 20 पर मुझे तुझ से ये शिकायत है कि तू ने उस और ईज़बिल को रहने दिया है जो अपने आपको नविया कहती है, और मेरे बन्दों को हरामकारी से तैबा करना नहीं चाहती। 21 मैंने उसको तैबा करने की मुहलत दी, मगर वो अपनी हरामकारी से तैबा करना नहीं चाहती। 22 देख, मैं उसको बिस्तर पर डालता हूँ; और जो जिना करते हैं अगर उसके से कामों से तैबा न करें, तो उनके बड़ी मुसीबत में फ़साता हूँ; 23 और उसके मानने वालों को जान से मास्त़ा, और सब कलीसियाओं को माल्म होगा कि गुर्दा और दिलों का जाँचने वाला मैं ही हूँ, और मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के जैसा बदला दूँगा। 24 मगर तुम थुवातीरा के बाकी लोगों से, जो उस तालीम को नहीं मानते और उन बातों से

जिन्हें लोग शैतान की गहरी बातें कहते हैं ना जानते हो, ये कहता हूँ कि तुम पर और बोझ न डालँगा। 25 अलबत्ता, जो तुम्हरे पास है, मेरे आने तक उसको थामे रहो। 26 जो गालिब आए और जो मेरे कामों के जैसा आखिर तक 'अमल करे, मैं उसे कौमों पर इक्षित्यार ढूँगा; 27 और वो लोहे के 'असा से उन पर हक्मत करेगा, जिस तरह कि कुम्हार के बरतन चकना चूँ हो जाते हैं: चुनाँचे मैंने भी ऐसा इक्षित्यार अपने बाप से पाया है, 28 और मैं उसे सबक का सिंतारा ढूँगा। 29 जिसके कान हों वो सुने कि स्ह कलीसियाओं से क्या फरमाता है।"

3 "और सरदीस की कलीसिया के फरिश्ते को ये लिख कि जिसके पास खुदा की सात स्हैं और सात सितरे हैं" 2 "जागता रहता, और उन चीजों को जो बाकी है और जो मिटें को थी मजबूत कर, क्यूँकि मैंने तेरे किसी काम को अपने खुदा के नजदीक पूरा नहीं पाया। 3 पस याद कर कि तू ने किस तरह तातीम पाई और सुनी थी, और उस पर काईर रह और तौबा कर। और आर त जागता न रहेगा तो मैं चोर की तरह आ जाऊँगा, और तुझे हरगिज मालूम न होगा कि किस वक्त तुझ पर आ पड़ँगा। 4 अलबत्ता, सरदीस में तेरे यहाँ थोड़े से ऐसे शब्द हैं जिन्हें ने अपनी पोशाक अलंदा नहीं की। वो सफेद पोशाक पहने हुए मेरे साथ सैर करेंगे, क्यूँकि वो इस लायक हैं। 5 जो गालिब आए उसे इसी तरह सफेद पोशाक पहनाई जाएगी, और मैं उसका नाम किताब — ए — हायात से हरगिज न काटूँगा, बल्कि अपने बाप और उसके फरिश्तों के सामने उसके नाम का इकरार करूँगा। 6 जिसके कान हों वो सुने कि स्ह कलीसियाओं से क्या फरमाता है।" 7 "और फिलादिल्फिया की कलीसिया के फरिश्ते को ये लिख: जो कुदूस और बरहक है, और दाऊद की कुन्जी रखता है, जिसके खोले हुए को कोई बन्द नहीं करता और बन्द किए हुए को कोई खोलता नहीं, जो ये फरमाता है कि 8 मैं तेरे कामों को जानता हूँ (देख, मैंने तेरे सामने एक दरवाजा खोल रखवा है, कोई उसे बन्द नहीं कर सकता) कि तुझ में थोड़ा सा जोर है और तू ने मेरे कलाम पर अमल किया और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया। 9 देख, मैं शैतान की उन जमात वालों को तेरे काबू में कर ढूँगा, जो अपने आपको यहदी कहते हैं और है नहीं, बल्कि झूँ बोलते हैं — देख, ये ऐसा कस्सँगा कि वो आकर तेरे पाँव में सिंजदा करेंगे, और जानेगे कि मुझे तुझ से मुहब्बत है। 10 चूँकि तू ने मेरे सब के कलाम पर 'अमल किया है, इसलिए मैं भी आज्ञामाइश के उस वक्त तेरी हिक्काजत करूँगा जो ज़मीन के रहनेवालों के आज्ञामाने के लिए तमाम दुनियाँ पर अनेवाला है। 11 मैं जल्द अनेवाला हूँ। जो कुछ तेरे पास है थामे रह, ताकि कोई तेरा ताज न छीन ले। 12 जो गालिब आए, मैं उसे अपने खुदा के मालिदस में एक सुतून बनाऊँगा। वो फिर कभी बाहर न निकलेगा, और मैं अपने खुदा का नाम और अपने खुदा के शहर, यानी उस नए येस्सलेम का नाम जो मेरे खुदा के पास से आसमान से उत्तरने वाला है, और अपना नया नाम उस पर लिखूँगा। 13 जिसके कान हों वो सुने कि स्ह कलीसियाओं से क्या फरमाता है।" 14 "और लौदीकिया की कलीसिया के फरिश्ते को ये लिख: जो आमीन और सच्चा और बरहक गवाह और खुदा की कायनत की शुम्भात है, वो ये फरमाता है कि 15 मैं तेरे कामों को जानता हूँ कि न त् सर्द है न गर्म। काश कि तू सर्द या गर्म होता। 16 पस चूँकि तू न तो गर्म है न सर्द बल्कि नीम गर्म है, इसलिए मैं तुझे मुँह से निकाल फेंकने को हूँ। 17 और चूँकि तू कहता है कि मैं दौलतमन्द हूँ और मालदार बन गया हूँ और किनी चीज का मोहताज नहीं; और ये नहीं जानता कि तू कमबरवत और आवारा और गरीब और अन्धा और नंगा है। 18 इसलिए मैं तुझे सलाह देता हूँ कि मुझ से आग में तपाया हुआ सोना खरीद ले, ताकि तू उसे पहन कर नंगे पन के जाहिर होने की शर्मिन्दी न उठाए; और आँखों में लगाने के लिए सुर्पी ले, ताकि तू बीना हो जाए। 19 मैं जिन जिन को 'अजीज रखता हूँ, उन सब को मलामत और हिदायत करता हूँ;

पस सरगर्म हो और तौबा कर। 20 देख, मैं दरवाजे पर खड़ा हुआ खटखटाता हूँ, और कोई मेरी आवाज सुनकर दरवाजा खोलेगा, तो मैं उसके पास अन्दर जाकर उसके साथ खाना खाऊँगा और वो मेरे साथ। 21 जो गालिब आए मैं उसे अपने साथ तब्दि पर बिठाऊँगा, जिस तरह मैं गालिब आकर अपने बाप के साथ उसके तख्त पर बैठ गया। 22 जिसके कान हों वो सुने कि स्ह कलीसियाओं से क्या फरमाता है।"

4 इन बातों के बाद जो मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि आसमान में एक

दरवाजा खुला हुआ है, और जिसको मैंने पहले नरसिंगों की सी आवाज से अपने साथ बाते करते सुना था, वही फरमाता है, "यहाँ ऊपर आ जा; मैं तुझे वो बातें दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद होना जस्तर है।" 2 फौरन मैं स्ह में आ गया; और क्या देखता हूँ कि आसमान पर एक तख्त रखवा है, और उस तख्त पर कोई बैठा है। 3 और जो उस पर बैठा है वो संग — ए — यशब और 'अकीक सा मालूम होती है, और उस तख्त के पीर जर्मद की सी एक धनक मालूम होता है। 4 उस तख्त के पास चौबीस बुजुर्ग सफेद पोशाक पहने हुए बैठे हैं, और उनके सिरों पर सोने के ताज हैं। 5 उस तख्त में से बिजलियाँ और आवाजें और गर्वें पैदा होती हैं, और उस तख्त के सामने आग के सात चिराग जल रहे हैं, ये खुदा की साथ स्हैं हैं, 6 और उस तख्त के सामने गोया शीशे का समुन्दर बिल्लौर की तरह है। 7 और तख्त के बीच में और तख्त के पास चार जानवर हैं, जिनके आगे — पीछे आँखें ही आँखें हैं। 7 पहला जानवर बबर की तरह है, और दूसरा जानदार बछड़े की तरह, और तीसरे जानदार का इंसान का सा है, और चौथा जानदार उड़ते हुए 'उकाब की तरह है। 8 और इन चारों जानदारों के छ: छ: पर हैं; और गत दिन बैर आराम लिये ये कहते रहते हैं, "कुदूस, कुदूस, कुदूस, खुदावन्द खुदा क्वादिर — ए — मुतलिक, जो था और जो है और जो आनेवाला है।" 9 और जब वो जानदार उसकी बड़ाई — ओ — 'इज्जत और तम्जीद करेंगे, जो तख्त पर बैठा है और हमेशा से हमेशा ज़िन्दा रहेगा; (aiōn g165) 10 तो वो चौबीस बुजुर्ग उसके सामने जो तख्त पर बैठा है गिर पड़ेंगे और उसको सिंजदा करेंगे, जो हमेशा हमेशा ज़िन्दा होगा और अपने ताज ये कहते हुए उस तख्त के सामने डाल देंगे, (aiōn g165) 11 "ऐ हमारे खुदावन्द और खुदा, तू ही बड़ाई और 'इज्जत और कूरत के लायक है, क्यूँकि तू ही ने सब चीजें पैदा की और वो तेरी ही मर्जी से थी और पैदा हुई।"

5 जो तख्त पर बैठा था, मैंने उसके दहने हाथ में एक किताब देखी जो अन्दर

से और बाहर से लिखी हुई थी, और उसे सात मुहरें लगाकर बन्द किया गया था 2 फिर मैंने एक ताकतवर फरिश्ते को ऊँची आवाज से ये ऐलान करते देखा, "कौन इस किताब को खोलने और इसकी मुहरें तोड़ने के लायक कै?" 3 और कोई शब्द, आसमान पर या ज़मीन के नीचे, उस किताब को खोलने या उस पर नज़र करने के काबिल न निकला। 4 और मैं इस बात पर जार जार रोने लगा कि कोई उस किताब को खोलने और उस पर नज़र करने के लायक न निकला। 5 तब उन बुजुर्गों में से एक ने कहा मत रो, यहदा के कबीले का वो बबर जो दाऊद की नस्ल है उस किताब और उसकी सातों मुहरों को खोलने के लिए गालिब आया। 6 और मैंने उस तख्त पर चारों जानदारों और उन बुजुर्गों के बीच में, गोया जबह किया हुआ एक बर्दी खड़ा देखा। उसके सात सींग और सात आँखें थीं, ये खुदा की सातों स्हैं हैं जो तमाम रु — ए — ज़मीन पर भेजी गई हैं। 7 उसने आकर तख्त पर बैठे हुए दाहिने हाथ से उस किताब को ले लिया। 8 जब उसने उस किताब को लिया, तो वो चारों जानदार और चौबीस बुजुर्ग उस बींचे के सामने गिर पड़े, और हर एक के हाथ में बर्दी और 'ऊद से भेरे हुए सोने के प्याले थे, ये मुकद्दसों की दुँआँ हैं। 9 और वो ये नया गीत गाने

लगे, “तू ही इस किताब को लेने, और इसकी मुहरें खोलने के लायक है, क्यूंकि तू ने जब होकर अपने खून से हर कबीले और अहले जबान और उम्मत और कौम में से खुदा के वास्ते लोगों को खारीद लिया। 10 और उनको हमारे खुदा के लिए एक बादशाही और कहिन बना दिया, और वो ज़मीन पर बादशाही करते हैं।” 11 और जब मैंने निगाह की, तो उस तख्त और उन जानदारों और बुजुर्गों के आस पास बहुत से फरिश्तों की आवाज सुनी, जिनका शुमार लाखों और करोड़ों था, 12 और वो ऊँची आवाज से कहते थे, “जबह किया हुआ बर्बारी की कुदरत और दौलत और हिक्मत और ताकत और 'इज्जत और बडाई और तारीफ के लायक है।” 13 फिर मैंने आसमान और ज़मीन और ज़मीन के नीचे की, और समून्दर की सब मञ्जूलकात को याँनी सब चीजों को उनमें है ये कहते सुना, “जो तख्त पर बैठा है उसकी और बर्बारी की, तारीफ और इज्जत और बडाई और बादशाही हमेशा हमेशा रहे।” (aiōn g165) 14 और चारों जानदारों ने आमीन कहा, और बुजुर्गों ने गिर कर सिज्दा किया।

6 फिर मैंने देखा कि बर्बे ने उन सात मुररों में से एक को खोला, और उन चारों जानदारों में से एक गरजने कि सी ये आवाज सुनी, आ! 2 और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक सफेद घोड़ा है, और उसका सवार कमान लिए हुए है। उसे एक ताज दिया गया, और वो फतह करता हुआ निकला ताकि और भी फतह करे। 3 जब उसने दूसरी मुहर खोली, तो मैंने दूसरे जानदार को ये कहते सुना, “आ!” 4 फिर एक और घोड़ा निकला जिसका रंग लाल था। उसके सवार को ये इखित्यार दिया गया कि ज़मीन पर से सुलह उठा ले ताकि लोग एक दूसरे को कल्प करें; और उसको एक बड़ी तलवार दी गई। 5 जब उसने तीसरी मुहर खोली, तो मैंने तीसरे जानदार को ये कहते सुना, “आ!” और मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक काला घोड़ा है, और उसके सवार के हाथ में एक तराज है। 6 और मैंने गोया उन चारों जानदारों के बीच में से ये आवाज आती सुनी, गेहूँ दीनार के सेर भर, और जै दीनार के तीन सेर, और तेल और मय का नुक्सान न कर। 7 जब उन्होंने चौथी मुहर खोली, तो मैंने चौथे जानदार को ये कहते सुना, “आ!” 8 मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि एक ज़र्द सा घोड़ा है, और उसके सवार का नाम ‘पौत्र’ है और ‘आलम — ए — अर्वाह उसके पाठे पीछे हैं; और उनको चौथाई ज़मीन पर ये इखित्यार दिया गया कि तलवार और काल और बवा और ज़मीन के दरिन्दों से लोगों को हलाक करें। (Hadēs g86) 9 जब उसने पाँचवीं मुहर खोली, तो मैंने कुर्बानगाह के नीचे उनकी स्थें देखी जो खुदा के कलाम की वजह से और गवाही पर काई रहने के ज़रिए मारे गए थे। 10 और बड़ी आवाज से चिल्ला कर बोली, ए मालिक, “ए कुद्दस — ओ — बरहक, तू कब तक इस्साफ न करेगा और ज़मीन के रहेवालों से हमारे खून का बदला न लेगा?” 11 और उनमें से हर एक को सफेद जामा दिया गया, और उनसे कहा गया कि और थोड़ी मुहर आराम करो, जब तक कि तुम्हरे हमखिदमत और भाईयों का भी शमार पूरा न हो ले, जो तुम्हारी तरह कल्प होनेवाले हैं। 12 जब उसने छठी मुहर खोली, तो मैंने देखा कि एक बड़ा भुन्चाल आया, और सूरज कम्पल की तरह काला और सारा चाँद खून सा हो गया। 13 और आसमान के सितरे इस तरह ज़मीन पर गिर पड़े, जिस तरह ज़ोर की आँखी से हिल कर अंजीर के दरखत में से कच्चे फल गिर पड़ते हैं। 14 और आसमान इस तरह सरक गया, जिस तरह खूत लपेटने से सरक जाता है, और हर एक पहाड़ और टापू अपनी जगह से टल गया। 15 और ज़मीन के बादशाह और अमीर और फौजी सरदार, और मालदार और ताकतवर, और तमाम गुलाम और आजाद पहाड़ों के गारों और चट्टानों में जा छिपे, 16 और पहाड़ों और चट्टानों से कहने लगे, “हम पर गिर पड़ो, और हमें उनकी

नज़र से जो तख्त पर बैठा हुआ है और बर्बे के गजब से छिपा लो। 17 क्यूंकि उनके गजब का दिन ‘अज्ञीम आ पहँचा, अब कौन ठहर सकता है?’

7 इसके बाद मैंने ज़मीन के चारों कोनों पर चार फरिश्ते खड़े देखे। वो ज़मीन की चारों हवाओं को थामे हुए थे, ताकि ज़मीन या समून्दर या किसी दरखत पर हवा न चले। 2 फिर मैंने एक और फरिश्ते को, जिन्दा खुदा की मुहर लिए हुए मशरिक से ऊपर की तरफ आते देखा; उसने उन चारों फरिश्तों से, जिन्हें ज़मीन और समून्दर को तकलीफ पहँचाने का इखित्यार दिया गया था, ऊँची आवाज से पुकार कर कहा, 3 “जब तक हम अपने खुदा के बन्दों के माथे पर मुहर न कर लें, ज़मीन और समून्दर और दरखतों को तकलीफ न पहँचाना।” 4 और जिन पर मुहर की गई उनका शुमार सुना, कि बड़ी — इसाईंल के सब कबीलों में से एक लाख चावालीस हजार पर मुहर की गई: 5 यहूदाह के कबीले में से बारह हजार पर मुहर की गई: रोमिं के कबीले में से बारह हजार पर, 6 आशर के कबीले में से बारह हजार पर, नफ़ताली के कबीले में से बारह हजार पर, मनससी के कबीले में से बारह हजार, 7 शमैन के कबीले में से बारह हजार पर, लावी के कबीले में से बारह हजार, इश्कार के कबीले में से बारह हजार पर, 8 जबलून के कबीले में से बारह हजार पर, युसूफ के कबीले में से बारह हजार पर, बिनयामिन के कबीले में से बारह हजार पर मुहर की गई। 9 इन बातों के बाद जो मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि हर एक कौम और कबीला और उम्मत और अहल — ए — ज़बान की एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई शुमार नहीं कर सकता, सफेद जामे पहने और खजर की डालियाँ अपने हाथों में लिए हुए तख्त और बर्बे के आगे खड़ी हैं, 10 और बड़ी आवाज से चिल्ला कर कहती है, नज़ात हारो खुदा की तरफ से।” 11 और सब फरिश्ते उस तख्त और बुजुर्गों और चारों जानदारों के पास खड़े हैं, फिर वो तख्त के आगे मँहूँ के बल पिर पड़े और खुदा को सिज्दा कर के 12 कहा, आमीन! तारीफ और बडाई और हिक्मत और शुक्र और इज्जत और कुदरत और ताकत हमेशा से हमेशा हमारे खुदा की हो! आमीन। (aiōn g165) 13 और बुजुर्गों में से एक ने मुझ से कहा, ये सफेद जामे पहने हुए कौन है, और कहाँ से आए हैं? 14 मैंने उससे कहा, “ऐ मेरे खुदावन्द, तू ही जानता है।” उसने मुझ से कहा, ये वही है; उहोंने अपने जामे बर्बे के कुर्बानी के खून से धो कर सफेद किए हैं। 15 “इसी वजह से ये खुदा के तख्त के सामने हैं, और उसके मन्दिस में रात दिन उसकी इबादत करते हैं, और जो तख्त पर बैठा है, वो अपना खेमा उनके ऊपर तानेगा। 16 इसके बाद न कभी उनको भूख लगेगी न प्यास और न धूप सताएगी न गर्मी। 17 क्यूंकि जो बर्बी तख्त के बीच में है, वो उनकी देखभाल करेगा, और उहों आब — ए — ह्यात के चश्मों के पास ले जाएगा और खुदा उनकी आँखों के सब आँसू पौछ देगा।”

8 जब उसने सातवी मुहर खोली, तो अधे घटे के करीब आसमान में खामोशी रही। 2 और मैंने उन सातों फरिश्तों को देखा जो खुदा के सामने खड़े रहते हैं, और उन्हें सात नरसिंगी दीए गए। 3 फिर एक और फरिश्ता सोने के ‘बखरदान लिए हुए आया और कुर्बानगाह के ऊपर खड़ा हुआ, और उसको बहुत सा ‘ऊँद दिया गया, ताकि अब मुकद्दसों की दुआओं के साथ उस सुनही कुर्बानगाह पर चढ़ाए जो तख्त के सामने है। 4 और उस ‘ऊँद का धूवाँ फरिश्ते के सामने है। 5 और फरिश्ते ने ‘बखरदान को लेकर उसमें कुर्बानगाह की आग भरी और ज़मीन पर डाल दी, और गरजे और आवाजें और बिजलियाँ पैदा हुईं और भुन्चाल आया। 6 और वो सातों फरिश्ते जिनके पास वो सात नरसिंगे थे, दूँकने को तैयार हुए। 7 जब पहले ने नरसिंगा फँका, तो खून मिले हुए ओले और आग पैदा हुईं और ज़मीन जल गई, और तिहाई दरखत जल गए, और

तमाम हरी घास जल गई। 8 जब दूसरे फरिश्ते ने नरसिंगा फूँका, गोया आग से जलता हुआ एक बड़ा पहाड़ समुन्दर में डाला गया; और तिहाई समुन्दर खन हो गया। 9 और समुन्दर की तिहाई जानदार मछलूकात मर गई, और तिहाई जहाज तबाह हो गए। 10 जब तीसरे फरिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो एक बड़ा सिंतारा मशाल की तरह जलता हआ आसमान से टूटा, और तिहाई दरियाओं और पानी के चश्मों पर आ पड़ा। 11 उस सिंतारा का नाम नागदौना कहलाता है; और तिहाई पानी नागदौने की तरह कडवा हो गया, और पानी के कडवे हो जाने से बहुत से आदमी मर गए। 12 जब चौथे फरिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो तिहाई सूरज चाँद और तिहाई सिंतारों पर सदमा पहुँचा, यहाँ तक कि उनका तिहाई हिस्सा तारीक हो गया, और तिहाई दिन में रोशनी न रही, और इसी तरह तिहाई रात में भी। 13 जब मैंने फिर निगाह की, तो आसमान के बीच में एक 'उकाब' को उड़ते और बड़ी आवाज से ये कहते सुना, "उन तीन फरिश्तों के नरसिंगों की आवाजों की बजह से, जिनका फूँकना अभी बाकी है, जमीन के रहनेवालों पर अफसोस, अफसोस, अफसोस!"

9 जब पाँचवें फरिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो मैंने आसमान से जमीन पर एक सिंतारा गिरा हुआ देखा, और उसे अथाह गढ़े की कंडी दी गई। (Abyssos g12) 2 और जब उसने अथाह गढ़े को खोला तो गढ़े में से एक बड़ी भट्टी का सा धूवाँ उठा, और गढ़े के धूवे के जरिए से सूरज और हवा तारीक हो गई। (Abyssos g12) 3 और उस धूवे में से जमीन पर टिहियाँ निकल पड़ीं, और उन्हें जमीन के बिच्छुओं की सी ताकत दी गई। 4 और उससे कहा गया कि उन आदमियों के सिंवा जिनके माथे पर खुदा की मुहर नहीं, जमीन की घास या किसी हरियाली या किसी दरबन्ध को तकलीफ न पहुँचे। 5 और उन्हें जान से मारने का नहीं, बल्कि पाँच महीने तक लोगों को तकलीफ देने का इखिल्यार दिया गया; और उनकी तकलीफ ऐसी थी जैसे बिच्छु के डंक मारने से आदमी को होती है। 6 उन दिनों में आदमी मौत दूँड़ेगे मगर हरगिज न पाएंगे, और मारने की आरज़ करेंगे और मौत उनसे भागेंगी। 7 उन टिहियों की सूरतें उन घोड़ों की सी थीं जो लडाई के लिए तैयार किए गए हों, और उनके चरहे आदमियों के से थे, 8 और बाल 'औरतों के से थे, और दाँत बरके के से। 9 उनके पास लाहे के से बछर थे, और उनके परों की आवाज ऐसी थीं रथों और बहुत से घोड़ों की जो लडाई में दौड़ते हों। 10 और उनकी दुँये बिच्छुओं की सी थीं और उनमें डंक भी थी, और उनकी दुमों में पाँच महीने तक आदमियों को तकलीफ पहुँचाने की ताकत थी। 11 अथाह गढ़े का फरिश्ते उन पर बादशाह था; उसका नाम 'इङ्गानी अबदून और यूनानी' में अपुल्ल्योन है। (Abyssos g12) 12 पहला अफसोस तो हो चका, देखो, उसके बाद दो अफसोस और होने हैं। 13 जब छठे फरिश्ते ने नरसिंगा फूँका, तो मैंने उस सुनहरी कुर्बानगाह के चारों कोनों के सीरों में से जो खुदा के सामने है, ऐसी आवाज सुनी 14 कि उस छठे फरिश्ते से जिसके पास नरसिंग था, कोई कह रहा है, बड़े दरिया, "यानी फुरात के पास जो चार फरिश्ते बैठे हैं उन्हें खोल दे।" 15 पर जो चारों फरिश्ते खोल दिए गए, जो खास घड़ी और दिन और महीने और बरस के लिए तिहाई आदमियों के मार डालने को तैयार किए गए थे; 16 और फौजों के सवार में बीस करोड़ थे; मैंने उनका शुमार सुना। 17 और मुझे उस रोया में घोड़े और उनके ऐसे सवार दिखाई दिए जिनके बछर से आग और धूवाँ और गंधक निकलती थी। 18 इन तीनों आफतों यानी आग, धूआं, और गंधक, सी जो उनके मूँह से निकलती थी, तिहाई लोग मरे गए। 19 क्यूँकि उन घोड़ों की ताकत उनके मूँह और उनकी दुमों में थी, इसलिए कि उनकी दुमों सांपों की तरह थीं और दुमों में सिर भी थे, उन्हीं से वो तकलीफ पहुँचाते थे। 20 और बाकी आदमियों ने जो इन आफतों से न मरे थे, अपने

हाथों के कामों से तौबा न की, कि शयातीन की और सोने और चाँदी और पीतल और पत्थर लकड़ी के बुतों की इबादत करने से बा'ज़ आते, जो न देख सकती है न सुन सकती हैं, न चल सकती हैं; 21 और जो खून और जातूरी और हरामकारी और चोरी उन्होंने की थी, उनसे तौबा न की।

10 फिर मैंने एक और ताकतवर फरिश्ते को बादल ओढ़े हुए आसमान से

उत्तरे देखा। उसके सिर पर धनुक थी, और उसका चेहरा आफताब की तरह था, और उसका पाँव आग के सुतों की तरह। 2 और उसके हाथ में एक छोटी सी खुली हुई किताब थी। उसने अपना दहना पैर तो समुन्दर पर रख दिया और बायाँ खुक्की पर। 3 और ऐसी ऊँची आवाज से चिल्लाया जैसे बबर चिल्लाता है और जब वो चिल्लाया तो सात आवाजें सुनाई दी 4 जब गरज की सात आवाजें सुनाई दे चुकी तो मैंने लिखने का इशारा किया, और आसमान पर से ये आवाज आती सुनी, जो बातें गरज की इन सात आवाजों से सुनी हैं, उनको छुपाए रख और लिख मत। 5 और जिस फरिश्ते को मैंने समुन्दर और खुक्की पर खड़े देखा था उसने अपना दहना हाथ आसमान की तरफ उठाया 6 जो हमेशा से हमेशा जिन्दा रहेगा और जिसने आसमान और उसके अन्दर की चीज़ें, और जमीन और उसके ऊपर की चीज़ें, और समुन्दर और उसके अन्दर की चीज़ें, पैदा की हैं, उसकी कसम खाकर कहा कि अब और देर न होगी। (alōn g165) 7 बल्कि सातवें फरिश्ते की आवाज देने के जमाने में, जब वो नरसिंगा फूँकने को होगा, तो खुदा का छुपा हुआ मतलब उस खुशबूबरी के जैसा, जो उसने अपने बन्दों, नवियों को दी थी पूरा होगा। 8 और जिस आवाज देवताले को मैंने आसमान पर बोलते सुना था, उसने फिर मुझ से मुखातिब होकर कहा, जा, "उस फरिश्ते के हाथ में से जो समुन्दर और खुशकी पर खड़ा है, वो खुली हुई किताब ले लो।" 9 तब मैंने उस फरिश्ते के पास जाकर कहा, ये छोटी किताब मुझे दे दे। उसने मुझ से कहा, "ले, इसे खालों, ये तेरा पेट तो कडवा कर देगी, मगर तेरे मूँह में शहद की तरह मीठी लगेगी।" 10 पर मैं वो छोटी किताब उस फरिश्ते के हाथ में से जो समुन्दर और खुशकी पर खड़ा है, वो खुली हुई किताब ले लो।" 11 तब मैंने उस फरिश्ते के पास जाकर कहा, ये छोटी किताब मुझे दे दे। उसने मुझ से कहा, "ले, इसे खालों, ये तेरा पेट तो कडवा कर देगी, मगर जब मैं उसे खा गया तो मेरा पेट कडवा हो गया। 11 और मुझ से कहा गया, "तुझे बहुत सी उम्मतों और कौमों और अहल — ए — ज़बान और बादशाहों पर फिर नवुच्वत करना ज़स्त है।"

11 और मुझे 'लाठी' की तरह एक नापने की लकड़ी दी गई, और किसी

ने कहा, उठकर खुदा के मक्किस और कुर्बानगाह और उसमें के इबादत करने वालों को नाप। 2 और उस सहन को जो मक्किस के बाहर है अलग कर दे, और उसे न नाप क्यूँकि वो गैर — कौमों को दे दिया गया है; वो मुक्किस शहर को बयालीस महीने तक पामाल करेंगी। 3 "और मैं अपने दो गवाहों को इखिल्यार दूँगा, और वो टाट ओढ़े हुए एक हजार दो सौ साठ दिन तक नवुच्वत करेंगे।" 4 ये वही जैतून के दो दरखत और दो चिरागदान हैं जो जमीन के खुदाबन्द के सामने खड़े हैं। 5 और अगर कोई उन्हें तकलीफ पहुँचाना चाहता है, तो उनके मूँह से आग निकलकर उनके दुरुमनों को खा जाती है; और अगर कोई उन्हें तकलीफ पहुँचाना चाहे, तो वो ज़स्त तरह मारा जाएगा। 6 उनको इखिल्यार है आसमान को बन्द कर दें, ताकि उनकी नवुच्वत के जमाने में पानी न बरसे, और पानियों पर इखिल्यार है कि उनको खून बना डालें, और जितनी दफ़ा चाहें ज़मीन पर हर तरह की आफत लाएँ। 7 जब वो अपनी गवाही दे चुकेंगे, तो वो हैवान जो अथाह गढ़े से निकलेगा, उनसे लड़कर उन पर गालिब आएगा और उनको मार डालेगा। (Abyssos g12) 8 और उनकी लाशें उस येस्ज़लेम के बाजार में पड़ी रहेंगी, जो स्थानी ऐतिबार से समू और मिस्र कहलाता है, जहाँ उनका खुदाबन्द भी मस्लब हुआ था। 9 उम्मतों और कबीलों और अहल — ए — ज़बान और कौमों में से लोग उनकी लाशों को

साढे तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उनकी लाशों को कब्र में न रखने देंगे। 10 और जमीन के रहनेवाले उनके मरने से खुशी मनाएँगे और शादियाने बजाएँगे, और आपस में तुहफे भेजेंगे, क्यूंकि इन दोनों नवियों ने जमीन के रहनेवालों को सताया था। 11 और साढे तीन दिन के बाद खुदा की तरफ से उनमें जिन्दगी की स्थ दाखिल हुई, और वो अपने पाँव के बल खड़े हो गए और उनके देखनेवालों पर बड़ा खौफ छा गया। 12 और उन्हें आसमान पर से एक ऊँची आवाज सुनाई दी, “यहाँ ऊपर आ जाओ।” पस वो बादल पर सवार होकर आसमान पर चढ़ गए और उनके दूधमन उन्हें देख रहे थे। 13 फिर उसी वक्त एक बड़ा भून्चाल आ गया, और शहर का दसवाँ हिस्सा गिर गया, और उस भून्चाल से सात हजार आदमी मरे और बाकी डर गए, और आसमान के खुदा की बडाई की। 14 दूसरा अफसोस हो चुका; देखो, तीसरा अफसोस जल्द होने वाला है। 15 जब सातवें फरिश्ते ने नरसिंहा फैका, तो आसमान पर बड़ी आवाजें इस मजमून की पैदा हुईः “दुनियाँ की बादशाही हमारे खुदावन्द और उसके मसीह की हो गई, और वो हमेशा बादशाही करेगा।” (aiōn g165) 16 और चौबीसों बुजुर्गों ने जो खुदा के सामने अपने अपने तख्त पर बैठे थे, मूँह के बल गिर कर खुदा को सिज्जा किया। 17 और कहा, “ऐ खुदावन्द खुदा, करिर — ए — मुतल्लिक। जो है और जो था, हम तेरा शुक करते हैं क्यूंकि तू ने अपनी बड़ी कुदरत को हाथ में लेकर बादशाही की। 18 और क्रौमों को गुस्सा आया, और तेरा ग़जब नाजिल हुआ, और वो वक्त आ पहुँचा है कि मर्दों का इन्साफ किया जाए, और तेरे बन्दों, नवियों और मुक़द्दसों और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं बदला दिया जाए और जमीन के तबाह करने वालों को तबाह किया जाए।” 19 और खुदा का जो मकिदिस आसमान पर है वो खोला गया, और उसके मकिदिस में उसके ‘अहद का सन्दूक दिखाई दिया; और बिजलियाँ और आवाजें और गरजे पैदा हुईं, और भून्चाल आया और बड़े ओले पड़े।

12

फिर आसमान पर एक बड़ा निशान दिखाई दिया, यानी एक ‘औरत नजर आई जो अफताब को ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँव के नीचे था, और बारह सितारों का ताज उसके सिर पर। 2 वो हामिला थी और दर्द — ए — जेह में चिल्लाती थी, और बच्चा जनने की तकलीफ में थी। 3 फिर एक और निशान आसमान पर दिखाई दिया, यानी एक बड़ा लाल अज़दहा, उसके सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात ताज; 4 और उसकी दूम ने आसमान के तिहाई सिरों खीच कर जमीन पर डाल दिए। और वो अज़दहा उस औरत के आगे जा खड़ा हुआ जो जनने को थी, ताकि जब वो जने तो उसके बच्चे को निगल जाए। 5 और वो बेटा जनी, यानी वो लड़का जो लोहे के लाठी से सब क्रौमों पर हुक्मत करेगा, और उसका बच्चा यकायक खुदा और उसके तख्त के पास तक पहुँचा दिया गया; 6 और वो ‘औरत उस जंगल को भाग गई, जहाँ खुदा की तरफ से उसके लिए एक जगह तैयार की गई थी, ताकि वहाँ एक हजार दो सौ साठ दिन तक उसकी परवरिश की जाए। 7 फिर आसमान पर लडाई हुई, मीकाईल और उसके फरिश्ते अज़दहा से लड़ने को निकले; और अज़दहा और उसके फरिश्ते उनसे लड़े, 8 लेकिन गालिब न आए, और इसके बाद आसमान पर उनके लिए जगह न रही। 9 और बड़ा अज़दहा, यानी वही पुराना साँप जो इल्लीस और शैतान कहलाता है और सारे दुनियों को गुमराह कर देता है, जमीन पर गिरा दिया गया और उसके फरिश्ते भी उसके साथ गिरा दिए गए। 10 फिर मैंने आसमान पर से ये बड़ी आवाज आती सुनी, अब हमारे खुदा की नजात और कुदरत और बादशाही, और उसके मसीह का इश्कियार जाहिर हुआ, क्यूंकि हमारे भाईयों पर इल्जाम लगाने वाला जो रात दिन हमारे खुदा के आगे उन पर इल्जाम लगाया करता है, गिरा दिया गया। 11 और वो बर्दे के खून और अपनी गवाही के कलाम के जारी उस पर गालिब

आए; और उन्होंने अपनी जान को ‘अज़ीज़ न समझा, यहाँ तक कि मौत भी गंवारा की। 12 “पस ऐ आसमानों और उनके रहनेवालों, खुशी मनाओ। ऐ खुशकी और तरी, तुम पर अफसोस, क्यूंकि इल्लीस बड़े कहर में तुम्हारे पास उतर कर आया है, इसलिए कि जानता है कि मेरा थोड़ा ही सा वक्त बाकी है।” 13 और जब अज़दहा ने देखा कि मैं जमीन पर गिरा दिया गया हूँ, तो उस ‘औरत को सताया जो बेटा जनी थी। 14 और उस ‘औरत को बड़े; उकाब के दो पर दिए गए, ताकि साँप के सामने से उड़ कर बीराने में अपनी उस जगह पहुँच जाए, जहाँ एक जमाना और जमानों और आधे जमान तक उसकी परवरिश की जाएगी। 15 और साँप ने उस ‘औरत के पीछे अपने मुँह से नदी की तरह पानी बहाया, ताकि उसको इस नदी से बहा दे। 16 मगर जमीन ने उस ‘औरत की मदद की, और अपना मुँह खोलकर उस नदी को पी लिया जो अज़दहा ने अपने मुँह से बहाई थी। 17 और अज़दहा को ‘औरत पर गुस्सा आया, और उसकी बाकी जौलाद से, जो खुदा के हक्मों पर ‘अमल करती है और इंसा की गवाही देने पर काईम है, लड़ने को गया और समन्दर की रेत पर जा खड़ा हुआ।

13

और मैंने एक हैवान को समन्दर में से निकलते हुए, देखा, उसके दस सींग और सात सिर थे; और उसके सींगों पर दस ताज और उसके सिरों पर कुकुर के नाम लिखे हुए थे। 2 और जो हैवान मैंने देखा उसकी शक्त तेन्दवे की सींगी थी, और पाँव रीछ के से और मूँह बबर का सा, और उस अज़दहा ने अपनी कुदरत और अपना तख्त और बड़ा इश्कियार उसे दे दिया। 3 और मैंने उसके सिरों में से एक पर गोया ज़ज़म — ए — कारी अच्छा हो गया, और सारी दुनियाँ ताज़ज़ब करती हुई उस हैवान के पीछे पीछे हो ली। 4 और चौके उस अज़दहा ने अपना इश्कियार उस हैवान को दे दिया था इस लिए उन्होंने अज़दहे की ओर उस हैवान की भी ये कहकर इबादत की कि इस के बराबर कौन है कौन है जो इस से लड़ सकता है। 5 और बड़े बोल बोलने और कुकुर बकने के लिए उसे एक मूँह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम का इश्कियार दिया गया। 6 और उसने खुदा की निस्बत कुकुर बकने के लिए मूँह खोला कि उसके नाम और उसके खेमे, यानी आसमान के रहनेवालों की निस्बत कुकुर बके। 7 और उसे ये इश्कियार दिया गया के मुक़द्दसों से लड़े और उन पर गालिब आए, और उसे हर कबीले और उम्मत और अहल — ए — ज़बान और क्रौम पर इश्कियार दिया गया। 8 और जमीन के बो सब रहनेवाले जिनका नाम उस बर्दे की किताब — ए — हयात में लिखे नहीं गए जो दुनियाँ बनाने के बक्त से जबह हआ है, उस हैवान की इबादत करेंगे 9 जिसके कान हों वो सुने। 10 जिसको कैद होने वाली है, वो कैद में पड़ेगा। जो कोई तलवार से कल्प लेगा, वो ज़स्तर तलवार से कल्प लेगा जाएगा। पाक लोग के सब्र और ईमान का यही मौका। 11 फिर मैंने एक और हैवान को जमीन में से निकलते हुए देखा। उसके बर्दे के से दो सींग थे और वो अज़दहा की तरह बोलता था। 12 और ये पहले हैवान का सारा इश्कियार उसके सामने काम में लाता था, और जमीन और उसके रहनेवालों से उस पहले हैवान की इबादत करता था, जिसका ज़ज़म — ए — कारी अच्छा हो गया था। 13 और वो बड़े प्रियाम दिखाता था, यहाँ तक कि आदिमियों के सामने आसमान से जमीन पर आग नाजिल कर देता था। 14 और जमीन के रहनेवालों को उन निशानों की बजह से, जिनके उस हैवान के सामने दिखाने का उसको इश्कियार दिया गया था, इस तरह गुप्राह कर देता था कि जमीन के रहनेवालों से कहता था कि जिस हैवान के तलवार लाती थी और वो जिन्दा हो गया, उसका बुत बना ओ। 15 और उसे उस हैवान के बुत में रुह फूँकने का इश्कियार दिया गया ताकि वो हैवान का बुत बोले भी, और जितने लोग उस हैवान के बुत की इबादत न करें उनको कल्प भी कराए। 16 और उसने सब छोटे — बड़ों, दौलतमन्दों और गरीबों, आजादों और गुलामों

के दहने हाथ या उनके माथे पर एक एक छाप करा दी, 17 ताकि उसके सिवा जिस पर निशान, या'नी उस हैवान का नाम या उसके नाम का 'अदद हो, न कोई खरीद — ओ — फ्रोब्ल न कर सके। 18 हिक्मत का ये मौका' है: जो समझ रखता है वो आदमी का 'अदद पिन ले, क्यूंकि वो आदमी का 'अदद है, और उसका 'अदद छ: सौ छियासठ है।

14 फिर मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि वो बर्दा को हे सियून पर खड़ा है, और उसके साथ एक लाख चवालीस हजार शब्द वाह है, जिनके माथे पर उसका और उसके बाप का नाम लिखा हुआ है। 2 और मुझे आसमान पर से एक ऐसी आवाज़ सुनाई दी जो जोर के पानी और बड़ी गरज की सी आवाज़ मैंने सुनी वो ऐसी थी जैसी बर्बत नवाज़ बर्बत बजाते हों। 3 वो तब्ज़ के सामने और चारों जानदारों और बुजुर्गों के आगे गोया एक नया गीत गा रहे थे, और उन एक लाख चवालीस हजार शब्दों के सिवा जो दुनियाँ में से खरीद लिए गए थे, कोई उस गीत को न सीख सका। 4 वे वो हैं जो 'औरतों के साथ अलदा नहीं हुए, बल्कि कुँवरे हैं। ये वो हैं जो बर्दे की पिछे पिछे चलते हैं, जहाँ कहीं वो जाता है; ये खुदा और बर्दे के लिए पहले फल होने के बास्ते आदमियों में से खरीद लिए गए हैं। 5 और उनके मुँह से कभी झूठ न निकला था, वो बेएब हैं। 6 फिर मैंने एक और फरिश्ते को आसमान की बीच में उठाए हुए देखा, जिसके पास जमीन के रहनेवालों की हर कौम और कबीले और अहल — ए — जबान और उम्मत के सुनाने के लिए हमेशा की खुशखबरी थी। (aiōnios g166) 7 और उसने बड़ी आवाज़ से कहा, "खुदा से डरो और उसकी बडाई करो, क्यूंकि उसकी 'अदालत का बक्त आ पहुँचा है; और उसी की इबादत करो जिसने आसमान और जमीन और समून्दर और पानी के चश्मे पैदा किए।" 8 फिर इसके बाद एक और दूसरा फरिश्ता ये कहता आया, "गिर पड़ा, वह बड़ा शहर बाबूल गिर पड़ा, जिसने अपनी हरामकारी की गजबानाक मय तमाम क्रौमों को पिलाई है।" 9 फिर इन के बाद एक और, तीसरे फरिश्ते ने आकर बड़ी आवाज़ से कहा, "जो कोई उस हैवान और उसके बुत की इबादत करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उसकी छाप ले ले; 10 वो खुदा के कहर की उस खालिस मय को पिणा जो उसके गुरुसे के प्याले में भरी गई है, और पाक फरिश्तों के सामने और बर्दे के सामने आग और गन्धक के 'अजाब में मुक्तिला होगा। 11 और उनके 'अजाब का ध्वनि हमेशा ही उठाना रहेगा, और जो उस हैवान और उसके बुत की इबादत करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उनको रात दिन चैन न मिलेगा।" (aiōn g165) 12 मुक्कद्दसों यानी खुदा के हक्कों पर 'अमल करनेवालों और इसा पर ईमान रखनेवालों के सबका का यही मौका' है। 13 फिर मैंने आसमान में से ये आवाज़ सुनी, "लिख! मुबारिक हैं वो मुर्दे जो अब से खुदावन्द में मरते हैं।" स्थ फरमाता है, "बेशक, क्यूंकि वो अपनी मेहनतों से आराम पाएँगे, और उनके 'आमाल उनके साथ साथ होते हैं।" 14 फिर मैंने निगाह की, तो क्या देखता हूँ कि एक सफेद बादल है, और उस बादल पर आदमज़दा की तरह कोई बैठा है, जिसके सिर पर सोने का ताज और हाथ में तेज़ दरान्ती है। 15 फिर एक और फरिश्ते ने मन्त्रिद्वारा से निकलकर उस बादल पर बैठे हुए एक बड़ी आवाज़ के साथ पुकार कर कहा, "अपनी दरान्ती चलाकर काट, क्यूंकि काटने का बक्त आ गया, इसलिए कि जमीन की फसल बहुत पक गई।" 16 पस जो बादल पर बैठा था उसने अपनी दरान्ती जमीन पर डाल दी, और जमीन की फसल कट गई। 17 फिर एक और फरिश्ता उस मन्त्रिद्वारा में से निकला जो आसमान पर है, उसके पास भी तेज़ दरान्ती थी। 18 फिर एक और फरिश्ता कुर्बानगाह से निकला, जिसका आग पर इख्लियार था; उसने तेज़ दरान्ती वाले से बड़ी आवाज़ से कहा, अपनी तेज़ दरान्ती चलाकर जमीन के अंगू के दरखत के गुच्छे काट ले जो बिल्कुल पक गए हैं। 19 और

उस फरिश्ते ने अपनी दरान्ती जमीन पर डाली, और जमीन के अंगू के दरखत की फसल काट कर खुदा के कहर के बड़े हौज़ में डाल दी; 20 और शहर के बाहर उस हौज़ में अंगू रोंदे गए, और हौज़ में से इतना खून निकला कि घोड़ों की लगामों तक पहुँच गया, और 300 सौ किलो मीटर तक वह निकला।

15 फिर मैंने आसमान पर एक और बड़ा और 'अजीब निशान, यानी सात

फरिश्ते सातों पिछली आफतों को लिए हुए देखे, क्यूंकि इन आफतों पर खुदा का कहर खत्म हो गया है। 2 फिर मैंने शशी का सा एक समून्दर देखा जिसमें आग मिली हुई थी; और जो उस हैवान और उसके बुत और उसके नाम के 'अदद पर गालिब आ'थे, उनको उस शशी के समून्दर के पास खुदा की बर्बत लिए खेद हुए देखा। 3 और वो खुदा के बन्दे मूसा का गीत, और बर्दे का गीत गा गा कर कहते थे, "ऐ खुदा! कादिर — ए — मुतलिल्क! तैरे काम बड़े और 'अजीब हैं। ऐ अजली बादशाह! तेरी गाहे रास्त और दम्भत है।" 4 "ऐ खुदावन्द! कौन तुझ से न डेरगा? और कौन रेरे नाम की बडाई न करेगा? क्यूंकि सिर्फ त ही कुदूस है; और सब कौमें आकर तेरे सामने सिज्दा करेंगी, क्यूंकि तेरे इस्माफ के काम जाहिर हो गए हैं।" 5 इन बातों के बाद मैंने देखा कि शहादत के खेमे का मन्त्रिद्वारा आसमान में खोला गया; 6 और वो सातों फरिश्ते जिनके पास सातों आफतों थीं, आबदार और चमकदार जवाहर से आरास्ता और सीनों पर सुनहरी सीना बन्द बौंधे हुए मन्त्रिद्वारा से निकले। 7 और उन चारों जानदारों में से एक ने सात सोने के प्याले, हमेशा जिन्दा रहनेवाले खुदा के कहर से भरे हुए, उन सातों फरिश्तों को दिए; (aiōn g165) 8 और खुदा के जलाल और उसकी कुदरत की बजह से मन्त्रिद्वारा धूँसे भर गया और जब तक उन सातों फरिश्तों की सातों मुस्तिबें खत्म न हों चक्री कोई उस मन्त्रिद्वार में दाखिल न हो सका

16 फिर मैंने मन्त्रिद्वार में से किसी को बड़ी आवाज़ से ये कहते सुना, जाओ!

खुदा के कहर के सातों प्यालों को जमीन पर उलट दो। 2 पस पहले ने जाकर अपना प्याला जमीन पर उलट दिया, और जिन आदमियों पर उस हैवान की छाप थी और जो उसके बुत की इबादत करते थे, उनके एक बुरा और तकीफ देनेवाला नास्रू पैदा हो गया। 3 दूसरे ने अपना प्याला समून्दर में उलटा, और वो मुर्दे का सा खुन बन गया, और समून्दर के सब जानदार मर गए। 4 तीसरे ने अपना प्याला दरियाओं और पानी के चश्मों पर उलटा और वो खुन बन गया। 5 और मैंने पानी के फरिश्ते को ये कहते सुना, "ऐ कुदूस! जो है और जो था, तू 'आदिल हैं कि तू ने ये इस्माफ किया। 6 क्यूंकि उन्होंने मुक्कद्दसों और निवियों का खुन बहाया था, और तू ने उन्हें खुन पिलाया; वो इसी लायक है।" 7 फिर मैंने कुर्बानगाह में से ये आवाज़ सुनी, "ऐ खुदावन्द खुदा! कादिर — ए — मुतलिल्क! बेशक तैरे फैसले दूस्त और रास्त है।" 8 चौथे ने अपना प्याला सूरज पर उलटा, और उसे आदमियों को आग से झलस देने का इख्लियार दिया गया। 9 और आदमी सख्त गर्मी से झलस गए, और उन्होंने खुदा के नाम के बारे में कुफ़्र बका जो इन आफतों पर इख्लियार रखता है, और तौबा न की कि उसकी बडाई करते। 10 पांचवें ने अपना प्याला उस हैवान के तब्ज़ पर उलटा, और लोग अपनी जबाने काटने लगे, 11 और अपने दुखों और नास्रों के जरिए आसमान के खुदा के बारे में कुफ़्र बकने लगे, और अपने कामों से तौबा न की। 12 छठे ने अपना प्याला बड़े दरिया यानी कुरात पर पहरत, और उसका पानी सूख गया ताकि मशरिक से अनेवाले बादशाहों के लिए रास्ता तैयार हो जाए। 13 फिर मैंने उस अजलदा के पूँछ से, और उस हैवान के मुँह से, और उस झूठे नबी के मुँह से तीन बदस्तें मेंढकों की सूरत में निकलती देखी। 14 ये शयातीन की निशान दिखानेवाली स्थें हैं, जो कादिर — ए — मुतलिल्क खुदा के रोज़

— ए — 'अज्ञीम की लड़ाई के बास्ते जमा करने के लिए, सारी दुनियाँ के बादशाहों के पास निकल कर जाती हैं। 15 “(देखो, मैं चार की तरह आता हूँ; मुख्यारिक वो है जो जागता है और अपनी पोशाक की हिफाजत करता है ताकि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन न देखें)” 16 और उन्होंने उनको उस जगह जमा किया, जिसका नाम 'इङ्गानी में हरमजदौन है। 17 सातवें ने अपना प्याला हवा पर उलटा, और मार्किस के तख्त की तरफ से बड़े जोर से ये आवाज़ आईं, “हो चूका!” 18 फिर बिजलियाँ और आवाज़ें और गरजे पैदा हुईं, और एक ऐसा बड़ा भुन्नाल आया कि जब से इंसान जमीन पर पैदा हुए ऐसा बड़ा और सख्त भुन्नाल कभी न आया था। 19 और उस बड़े शहर के तीन टुकड़े हो गए, और कौमों के शहर गिर गए; और बड़े शहर — ए — बाबुल की खुदा के यहाँ याद हुई ताकि उसे अपने सख्त गुरुसे की मय का जाम पिलाए। 20 और हर एक टापू अपनी जगह से टल गया और पहाड़ों का पाता न लगा। 21 और आसमान से आदमियों पर मन मन भर के बड़े बड़े ओते गिरे, और चूँकि ये आफत निहायत सख्त थी इसलिए लोगों ने ओलों की आफत के जरिए खुदा की निस्बत कुफ्र बका।

17 और सातों फरिश्तों में से, जिसके पास सात प्याले थे, एक ने आकर

मुझ से ये कहा, इधर आ! मैं तुझे उस बड़ी कस्ती की सजा दिखाऊँ, जो बहुत से पानियों पर बैठी हुई है; 2 और जिसके साथ जमीन के बादशाहों ने हरामकारी की थी, और जमीन के रहनेवाले उसकी हरामकारी की मय से मतवाले हो गए थे। 3 पस वो मुझे पाक स्थ में जंगल को ले गया, वहाँ मैंने किरमिजी रंग के हैवान पर, जो कुफ्र के नामों से लिपा हुआ था और जिसके सात सिर और दस सींग थे, एक 'औत को बैठे हुए देखा। 4 ये औरत इङ्गानी और किरमिजी लिबास पहने हुए सोने और जवाहर और मोतियों से आरास्त थी और एक सोने का प्याला मक्हाहात का जो उसकी हरामकारी की नापकियों से भरा हुआ था उसके हाथ में था। 5 और उसके माथे पर ये नाम लिखा हुआ था “राज; बड़ा शहर — ए — बाबुल कस्तियों और जमीन की मक्सहात की माँ।” 6 और मैंने उस 'औत को मुक़द़सों का खून और इसा के शहीदों का खून पीने से मतवाला देखा, और उसे देखकर सख्त हैरान हुआ। 7 उस फरिश्ते ने मुझ से कहा, “तू हैरान कर्दू हो गया मैं इस औरत और उस हैवान का, जिस पर वो सवार है जिसके सात सिर और दस सींग हैं, तुझे भेद बताता हूँ। 8 ये जो तू ने हैवान देखा है, ये पहले तो था मगर अब नहीं है; और आइन्दा अथाह गहू से निकलकर हलाकत में पड़ेगा, और जमीन के रहनेवाले जिसके नाम दुनियाँ बनाने से पहले के बक्त से किताब — ए — हयात में लिखे नहीं गए, इस हैवान का ये हाल देखकर कि पहले था और अब नहीं और फिर मौजूद हो जाएगा, ता’ अज्जुब करेंगे। (Abyssos g12) 9 यही मौका” है उस जहन का जिसमें हिक्मत है: वो सातों सिर पहाड़ है, जिन पर वो ‘औरत बैठी हुई है। 10 और वो सात बादशाही भी हैं, पाँच तो हो चुके हैं, और एक मौजूद, और एक अभी आया भी नहीं और जब आएगा तो कुछ ‘अरसे तक उसका रहना जस्तर है। 11 और जो हैवान पहले था और अब नहीं, वो आठवाँ है और उन सातों में से पैदा हुआ, और हलाकत में पड़ेगा। 12 और वो दस सींग जो तू ने देखे दस बादशाह हैं। अभी तक उन्होंने बादशाही नहीं पाई, मगर उस हैवान के साथ घड़ी भर के बास्ते बादशाहों का सा इन्जियर पाएँगे। 13 इन सब की एक ही राय होती है, और वो अपनी कुदरत और इश्कियार उस हैवान को दे देंगे।” 14 “वो बर्दे से लड़ेंगे और बर्दा उन पर गालिब आएगा, क्यूँकि वो खुदावन्दों का खुदावन्द और बादशाहों का बादशाह है; और जो बुताए हुए और चुने हुए और वफादार उसके साथ है, वो भी गालिब आएँगे।” 15 फिर उसने मुझ से कहा, जो पानी तू ने देखा जिन पर कस्ती बैठी है, वो उम्मतें और गिरोह और कौमें

और अहले जबान है। 16 और जो दस सींग तू ने देखे, वो और हैवान उस कस्ती से 'अदावत रखेंगे, और उसे बेबस और नंगा कर देंगे और उसका गोशत खा जाएँगे, और उसको आग में जला डालेंगे। 17 “क्यूँकि खुदा उनके दिलों में ये डालेगा कि वो उसी की राय पर चलें, वो एक — राय होकर अपनी बादशाही उस हैवान को दे दें। 18 और वो 'औरत जिसे तू ने देखा, वो बड़ा शहर है जो जमीन के बादशाहों पर हुक्मत करता है।”

18 इन बातों के बाद मैंने एक और फरिश्ते को आसमान पर से उतरते देखा,

जिसे बड़ी आवाज़ से चिल्लाकर कहा, “गिर पड़ा, बड़ा शहर बाबुल गिर पड़ा। और शयातीन का मस्कन और हर नापाक और मक्स्ह परिन्दे का अंडा हो गया। 3 क्यूँकि उसकी हरामकारी की गज़बनाक मय के जरिए तमाम कौमें गिर गई हैं और जमीन के बादशाहों ने उसके साथ हरामकारी की है, और दुनियाँ के सौदागर उसके 'ऐशो — ओ — अशरत की बैदौलत दैलतमन्द हो गए।” 4 फिर मैंने आसमान में किसी और को ये कहते सुना, “ऐ मेरी उम्मत के लोगों! उसमें से निकल आओं, ताकि तुम उसके गुनाहों में शरीक न हो, और उसकी आफतों में से कोई तुम पर न आ जाए। 5 क्यूँकि उसके गुनाहों में शरीक न हो, और उसका पहँच गए हैं, और उसकी बदकारियाँ खुदा को याद आ गई हैं। 6 जैसा उसने किया वैसा ही तुम भी उसके साथ करो, और उसे उसके कामों का दो चन्द्र बदला दो, जिस कदर उसने प्याला भरा तुम उसके लिए दूगाना भर दो। 7 जिस कदर उसने आपने आपको शानदार बनाया, और अर्याशी की थी, उसी कदर उसको 'अज्जाब और गम में डाल दो; क्यूँकि वो अपने दिल में कहती है, 'मै मलिका हो बैठी हूँ, बेवा नहीं; और कभी गम न देखूँगी।’ 8 इसलिए उस एक ही दिन में आफतें आएँगी, यानी मौत और गम और काल; और वो आग में जलकर खाक कर दी जाएँगी, क्यूँकि उसका इन्साफ करनेवाला खुदावन्द खुदा ताकतवर है।” 9 “और उसके साथ हरामकारी और 'अस्याशी करनेवाले जीवन के बादशाह, जब उसके जलने का धूँवां देखेंगे तो उसके लिए रोएँ और छाती पटिंगे। 10 और उसके 'अज्जाब के डर से दूर खड़े हुए कहेंगे, 'ऐ बड़े शहर! अफसोस! अफसोस! घड़ी ही भर में तुझे सजा मिल गई।’” 11 “और दुनियाँ के सौदागर उसके लिए रोएँ और मातम करेंगे, क्यूँकि अब कोई उनका माल नहीं खरीदने का; 12 और वो माल ये हैं: सोना, चाँदी, जवाहर, मोती, और महीन कतानी, और इङ्गानी और रेशमी और किरमिजी कपड़े, और हर तरह की खुशबूदार लकड़ियाँ, और हाथीदाँत की तरह की चीजें, और निहायत बेशकीमी लकड़ी, और पीलत और लोहे और संग — ए — मरमर की तरह तरह की चीजें, 13 और दाल चीनी और मसाले और 'ऊद और 'इत्र और लुबान, और मय और तेल और मैदा और गेहूँ, और मवेशी और भेड़े और घोड़े, और गाड़ियाँ और गुलाम और आदमियों की जानें। 14 अब तेरे दिल पसन्द मेवे तेरे पास से दूर हो गए, और सब लजीज और तोहफा चीजें तुझ से जाती रहीं, अब वो हैगिज हाथ न आएँगी। 15 इन दिनों के सौदागर जो उसके वजह से मालदार बन गए थे, उसके 'अज्जाब ले खोफ से दूर खड़े हुए रोएँ और गम करेंगे। 16 और कहेंगे, अफसोस! अफसोस! वो बड़ा शहर जो महीन कतानी, और इङ्गानी और किरमिजी कपड़े पहने हुए, और सोने और जवाहर और मोतियों से सजा हुआ था। 17 घड़ी ही भर में उसकी इतनी बड़ी दैलत बरबाद हो गई, और सब नाखुदा और जहाज के सब मुसाफिर, ”और मल्लाह और जितने समुन्दर का काम करते हैं, 18 जब उसके जलने का धूँवां देखेंगे, तो दूर खड़े हुए चिल्लाएँगे और कहेंगे, 'कौन सा शहर इस बड़े शहर की तरह है? 19 और अपने सिरों पर खाक डालेंगे, और रोते हुए और मातम करते हुए चिल्ला चिल्ला कर कहेंगे, 'अफसोस! अफसोस! वो बड़ा शहर जिसकी दैलत से

समन्दर के सब जहाज वाले दैत्यतमन्द हो गए, घड़ी ही भर में उजड़ गया।" 20 ऐ, आसमान, और ऐ एमुकद्दसों और रसलों और नवियों। उस पर खुशी करो, क्यूँकि खुदा ने इन्साफ करके उससे तुम्हारा बदला ले लिया।" 21 फिर एक ताक्तवर फरिश्ते ने बड़ी चक्की के पाट की तरह एक पथर उठाया, और ये कहकर समन्दर में फेंक दिया, "बाबूत का बड़ा शहर भी इसी तरह जोर से गिराया जाएगा, और फिर कभी उसका पता न मिलेगा।" 22 और बर्बत नवाजों, और मुराइबों, और बाँसुरी बजानेवालों और नरसिंगा फूँकने वालों की आवाज फिर कभी तुझ में न सुनाई देगी; और किसी काम का कारीगर तुझ में फिर कभी पाया न जाएगा। और चक्की की आवाज तुझ में फिर कभी न सुनाई देगी। 23 और चिराग की रौशनी तुझ में फिर कभी न चमकेगी, और तुझ में दूल्हे और दुल्हन की आवाज फिर कभी सुनाई न देगी; क्यूँकि तेरे सौदागर जमीन के अमीर थे, और तेरी जातगृही से सब कौमें गुरुराह हो गई। 24 और नवियों और मुकद्दसों, और जमीन के सब मकरत्लों का खन उसमें पाया गया।"

19 इन बातों के बाद मैंने आसमान पर गोया बड़ी जमा'अत को ऊँची आवाज से ये कहते सुना, "हालेलया! नजात और जलाल और कुदरत हमारे खुदा की है।" 2 क्यूँकि उसके फैसले सही है और दम्भत है, इसलिए कि उसने उस बड़ी कस्ती का इन्साफ किया जिसने अपनी हरामकारी से दुनियों को खराब किया था, और उससे अपने बन्दों के खन का बदला लिया।" 3 फिर दूसरी बार उहोंने कहा, "हल्लेलुइया!" और उसके जलने का धुवाँ हमेशा उठता रहेगा।" (aiōn g165) 4 और चौबीसों बुजु़ुर्गों और चारों जानदारों ने गिर कर खुदा को सिज्दा किया, जो तख्त पर बैठा था और कहा, "आमीन! हल्लेलुइया!" 5 और तख्त में से ये आवाज निकली, "ऐ, उससे डरनेवाले बन्दो! हमारे खुदा की तम्जीद करो! चाहे छोटे हो चाहे बड़े!" 6 फिर मैंने बड़ी जमा'अत की सी आवाज, और जोर की सी आवाज, और सख्त गरजने की सी आवाज सुनी: "हल्लेलुइया! इसलिए के खुदावन्द हमारा खुदा कादिर — ऐ — मुतल्लिक बादशाही करता है।" 7 आओ, हम खुशी करें और निहायत शादमान हों, और उसकी बड़ई करें; इसलिए कि बर्बे की शादी आ पहुँची, और उसकी बीवी ने अपने आपको तैयार कर लिया; 8 और उसको चमकदार और सफ महीन कतानी कपड़ा पहनने का इखितायार दिया गया," क्यूँकि महीन कतानी कपड़ों से मुकद्दस लोगों की रस्तबाजी के काम मुराद है। 9 और उसने मुझ से कहा, "लिख, मुबारिक हैं वो जो बर्बे की शादी की दावत में बुलाए गए हैं।" फिर उसने मुझ से कहा, "ये खुदा की सच्ची बातें हैं।" 10 और मैं उसे सिज्दा करने के लिए उसके पाँव पर गिरा। उसने मुझ से कहा, "खबरदार! ऐसा न कर। मैं भी तेरा और सैरे उन भाइयों का हमखिदमत हूँ, जो ईसा की गवाही देने पर काई हैं। खुदा ही को सिज्दा कर।" क्यूँकि ईसा की गवाही नवृत्व की स्थ है। 11 फिर मैंने आसमान को खुला हुआ, देखा, और क्या देखता हूँ कि एक सफेद घोड़ा है; और उस पर एक सवार है जो सच्चा और बरहक कहलाता है, और वो सच्चाई के साथ इन्साफ और लडाई करता है। 12 और उसकी आँखें आग के लोले हैं, और उसके सिर पर बहत से ताज हैं। और उसका एक नाम लिखा हआ है, जिसे उसके सिवा और कोई नहीं जानता। 13 और वो खन की छिड़की हुई पोशाक पहने हुए है, और उसका नाम कलाम — ऐ — खुदा कहलाता है। 14 और आसमान की कौजें सफेद घोड़ों पर सवार, और सफेद और सफ महीन कतानी कपड़े पहने हुए उसके पीछे पीछे हैं। 15 और कौमों के मारने के लिए उसके मुँह से एक तेज तलवार निकलती है; और वो लोहे की 'लाठी से उन पर हक्कमत करेगा, और कादिर — ऐ — मुतल्लिक खुदा के तख्त गजब की मय के हौंज में अंगूर रौंदेगा। 16 और उसकी पोशाक और रान पर ये नाम लिखा हुआ है: "बादशाहों का बादशाह और खुदावन्दों का

खुदावन्द।" 17 फिर मैंने एक फरिश्ते को आफताब पर खड़े हुए देखा। और उसने बड़ी आवाज से चिल्ला कर आसमान में के सब उड़नेवाले परिन्दों से कहा, "आओ, खुदा की बड़ी दावत में शरीक होने के लिए जमा हो जाओ; 18 ताकि तुम बादशाहों का गोश्त, और फौजी सरदारों का गोश्त, और ताकतवरों का गोश्त, और घोड़ों और उनके सवारों का गोश्त, और सब आदमियों का गोश्त खाओ; चाहे आजाद हों चाहे गुलाम, चाहे छोटे हों चाहे बड़े।" 19 फिर मैंने उस हैवान और जमीन के बादशाहों और उनकी फौजों को, उस घोड़े के सवार और उसकी फौज से जंग करने के लिए इकट्ठे देखा। 20 और वो हैवान और उसके साथ वो झटा नवी कपड़ा गया, जिसने उसने हैवान की छाप लेनेवालों और उसके बुत की इबादत करनेवालों को गुमराह किया था। वो दोनों आग की उस झील में जिन्दा डाले गए, जो गंधक से जलती है। (Limnē Pyr g3041 g4442) 21 और बाकी उस घोड़े के सवार की तलवार से, जो उसके मुँह से निकलती थी कल्प किए गए, और सब परिन्दे उनके गोश्त से सेर हो गए।

20 फिर मैंने एक फरिश्ते को आसमान से उतरते देखा, जिसके हाथ में अथाह गढ़े की कुंजी और एक बड़ी ज़ंजीर थी। (Abyssos g12) 2 उसने उस अजदहा, यानी पुराने साँप को जो इन्लीस और शैतान है, पकड़ कर हजार बरस के लिए बाँधा, 3 और उसे अथाह गढ़े में डाल कर बन्द कर दिया और उस पर मुहर कर दी, ताकि वो हजार बरस के परे होने तक कौमों को फिर गुमराह न करे। इसके बाद जस्तर है कि थोड़े 'असे के लिए खोला जाए। (Abyssos g12) 4 फिर मैंने तत्त्व देखे, और लोग उन पर बैठे गए और 'अदालत उनके सुर्पद की गई; और उनकी स्थूनों को भी देखा जिनके सिर इसा की गवाही देने और खुदा के कलाम की वजह से काटे गए थे, और जिन्होंने न उस हैवान की इबादत की थी न उसके बुत की, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वो जिन्दा होकर हजार बरस तक मसीह के साथ बादशाही करते रहे। 5 और जब तक ये हजार बरस पूरे न हो गए बाकी मुर्दे जिन्दा न हो। पहली क्यायात यही है। 6 मुबारिक और मुकद्दस वो हैं, जो पहली क्यायात में शरीक हो। ऐसों पा दूसरी मौत का कुछ इखितायार नहीं, बल्कि वो खुदा और मसीह के काहिन होंगे और उसके साथ हजार बरस तक बादशाही करेंगे। 7 जब हजार बरस पूरे हो चुकेंगे, तो शैतान कैद से छोड़ दिया जाएगा। 8 और उन कौमों को जो जमीन की चारों तरफ होंगी, यानी जूँ और माजूँ को गुमराह करके लडाई के लिए जमा करने को निकाले; उनका शपारा समून्दर की रेत के बराबर होगा। 9 और वो तमाम जमीन पर फैल जाएगी, और मुकद्दसों की लक्षकरगाह और 'अज़नीज शहर को चारों तरफ से धेर लेंगी, और आसमान पर से आग नजिल होकर उन्हें खा जाएगी। 10 और उनका गुमराह करने वाला इन्लीस आग और गंधक की उस झील में डाला जाएगा, जहाँ वो हैवान और झटा नवी भी होगा; और रात दिन हमेशा से हमेशा तक 'अज़ाब में रहेंगे। (aiōn g165, Limnē Pyr g3041 g4442) 11 फिर मैंने एक बड़ा सफेद तख्त और उसको जो उस पर बैठा था देखा, जिसके सामने से जमीन और आसमान भाग गए, और उन्हें कही जगह न मिली। 12 फिर मैंने छोटे बड़े सब मुर्दों को उस तख्त के सामने खड़े हुए देखा, और किताब खोली गई, यानी किताब — ऐ — ह्यात; और जिस तरह उन किताबों में लिखा हुआ था, उनके आमाल के मुताबिक मुर्दों का इन्साफ किया गया। 13 और समून्दर ने अपने अन्दर के मुर्दों को दे दिया, और मौत और 'आलम — ऐ — अर्वाह ने अपने अन्दर के मुर्दों को दे दिया, और उनमें से हर एक के 'आमाल के मुताबिक उसका इन्साफ किया गया। (Hadēs g86) 14 फिर मौत और 'आलम — ऐ — अर्वाह आग की झील में डाले गए। ये आग की झील आखरी मौत है, (Hadēs g86, Limnē Pyr g3041 g4442) 15 और जिस किसी का नाम किताब — ऐ —

हयात में लिखा हुआ न मिला, वो आग की झील में डाला गया। (Limnē Pyr g3041 g4442)

21 फिर मैंने एक नए आसमान और नई जमीन को देखा, क्यौंकि पहला आसमान और पहली जमीन जाती रही थी, और समुन्दर भी न रहा। 2

फिर मैंने शहर — ए — मुकद्दस नए येस्शलेम को आसमान पर से खुदा के पास से उतरते देखा, और वो उस दुल्हन की तरह सजा था जिसने अपने शैहर के लिए सिंगार किया हो। 3 फिर मैंने तख्त में से किसी को उनको ऊँची आवाज से ये कहते सुना, “देख, खुदा का खेमा आदमियों के दर्मियान है। और वो उनके साथ सुकृत करेगा, और वो उनके साथ रहेगा और उनका खुदा होगा। 4 और उनकी ऊँचों के सब अँसू पौध ढेगा; इक्के बाद न मौत रहेगी, और न मातम रहेगा, न आह — और — नाला न दर्द; पहली चीजें जाती रहीं।” 5 और जो तख्त पर बैठा हुआ था, उसने कहा, “देख, मैं सब चीजों को नया बना देता हूँ।” फिर उसने मुझ से कहा, “लिख ले, क्यौंकि ये बातें सच और बरहक हैं।” 6 फिर उसने मुझ से कहा, ये बातें पूरी हो गई। मैं अल्फा और ओमेगा, या’नी शूरू और आखिर हूँ। मैं प्यासे को आब — ए — हयात के चरमे से मुफ्त पिलाऊँगा। 7

जो गालिब आए वही इन चीजों का वारिस होगा, और मैं उसका खुदा हँगा और वो मेरा बेटा होगा। 8 मगर बुजादिलों, और बेइमान लोगों, और धिनोने लोगों, और खुनियों, और हरामकरों, और जादूगरों, और बुत परस्तों, और सब झाठों का हिस्सा आग और गन्धक से जलाने वाली झील में होगा; ये दूसरी मौत है। (Limnē Pyr g3041 g4442)

9 फिर इन सात फरिश्तों में से जिनके पास प्यासे थे, एक ने आकर मुझ से कहा, “झधर आ, मैं तुझे दुल्हन, या’नी बर्क की बीची दिखाऊँ।” 10 और वो मुझे रुह में एक बड़े और ऊँचे पहल घर ले गया, और शहर — ए — मुकद्दस येस्शलेम को आसमान पर से खुदा के पास से उतरते दिखाया। 11 उसमें खुदा का जलाल था, और उसकी चमक निहायत कीमती पत्थर, या’नी उस यशब की सी थी जो बिल्लौर की तरह शफाक हो। 12 और उसकी शहरपनाह बड़ी और ऊँची थी, और उसके बारह दरवाजे और दरवाजों पर बारह फरिश्ते थे, और उन पर बनी — इस्पाईल के बारह कबीलों के नाम लिखे हुए थे। 13 तीन दरवाजे मशरिक की तरफ थे, तीन दरवाजे शुमाल की तरफ, तीन दरवाजे जु़बून की तरफ, और तीन दरवाजे मारिब की तरफ।

14 और उस शहर की शहरपनाह की बारह बुनियाँ थीं, और उन पर बर्क के बारह रस्तों के बारह नाम लिखे थे। 15 और जो मुझ से कह रहा था, उसके पास शहर और उसके दरवाजों और उसकी शहरपनाह के नामें के लिए एक पैमाइश का आला, या’नी सोने का गज था। 16 और वो शहर चौकोर बाकें हुआ था, और उसकी लम्बाई चौड़ाई के बराबर थी; उसने शहर को उस गज से नापा, तो बारह हजार फरलॉग निकला: उसकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर थी। 17 और उसने उसकी शहरपनाह को आदमी की, या’नी फरिश्ते की पैमाइश के मूलाबिक नापा, तो एक सौ चावलीस हाथ निकली। 18 और उसकी शहरपनाह की तामीर यशब की थी, और शहर ऐसे खालिस सोने का था जो साफ शीशी की तरह हो। 19 और उस शहर की शहरपनाह की बुनियाँ हर तरह के जवाहर से आरस्ता थीं; पहली बुनियाँ यशब की थी, दूसरी नीलम की, तीसरी शब चिरास की, चौथी ज़मुर्स्त की, 20 पाँचवीं ‘आकीकी की, छठी लाल की, सातवीं सुन्हरे पत्थर की, आठवीं फीरोज़ की, नवीं ज़बरजद की, और बारहवीं याकूत की। 21 और बारह दरवाजे बारह मोतियों के थे; हर दरवाजा एक मोती का था, और शहर की सड़क साफ शीशी की तरह खालिस सोने की थी। 22 और मैंने उसमें कोई मक्किदिस न देखे, इसलिए कि खुदावन्द खुदा कांदिर — ए — मुतल्सिन्क और बर्दाँ उसका मक्किदिस है। 23 और उस शहर में सरज या चाँद की रौशनी की कुछ हाजत नहीं, क्यौंकि खुदा के जलाल

ने उसे रौशन कर रखवा है, और बर्दा उसका निराग है। 24 और कौमें उसकी रौशनी में चले फिरेंगी, और ज़मीन के बादशाह अपनी शान — ओ — शौकत का सामान उसमें लाएँगे। 25 और उसके दरवाजे दिन को हरागिज बन्द न होंगे, और रात वहाँ न होंगी। 26 और लोग कौमों की शान — ओ — शौकत और इज्जत का सामान उसमें लाएँगे। 27 और उसमें कोई नापाक या झटी बातें घटता है, हरागिज दाखिल न होगा, मगर वही जिनके नाम बर्दे की किताब — ए — हयात में लिखे हुए हैं।

22 फिर उसने मुझे बिल्लौर की तरह चमकता हुआ आब — ए — हयात

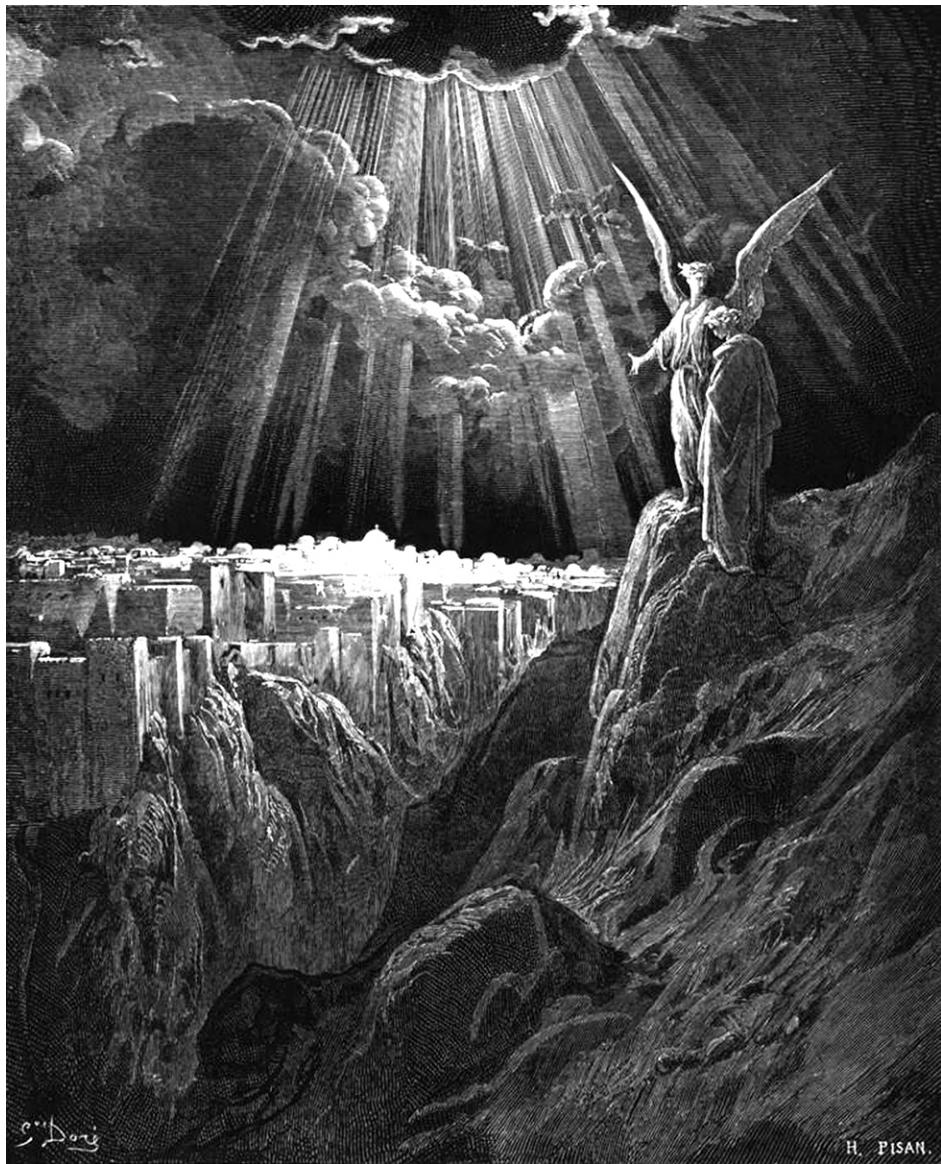
का एक दरिया दिखाया, जो खुदा और बर्दे के तख्त से निकल कर उस शहर की सड़क के बीच में बहता था। 2 और दरिया के पार ज़िन्दगी का दरखत था। उसमें बारह किस्म के फल आते थे और हर महीने में फलता था, और उस दरखत के पत्तों से कौमों को शिका होती थी। 3 और फिर लान्त न होगी, और खुदा और बर्दे का तख्त उस शहर में होगा, और उसके बन्दे उसकी झावात करेंगे। 4 और वो उसका मुँह देखेंगे, और उसका नाम उनके माथों पर लिखा हुआ होगा। 5 और फिर रात न होगी, और वो चिरास और सूरज की रौशनी के मुहताज न होंगे, क्यौंकि खुदावन्द खुदा उनको रौशन करेगा और वो हमेशा से हमेशा तक बादशाही करेंगे। (aiōn g165)

6 फिर उसने मुझ से कहा, “ये बातें सच और बरहक हैं; चुनाँचे खुदावन्द ने जो नवियों की स्थँहों का खुदा है, अपने फरिश्ते को इसलिए भेजा कि अपने बन्दों को वो बातें दिखाए जिनका जल्द होना ज़रूर है।” 7 “और देख मैं जल्द आने वाला हूँ। मुबारिक है वो जो इस किताब की नबुव्वत की बातों पर ‘अमल करता है।’” 8 मैं वही युहन्ना हूँ, जो इन बातों को सुनता और देखता था; और जब मैंने सुना और देखा, तो जिस फरिश्ते ने मुझे ये बातें दिखाई, मैं उसके पैर पर सिज्दा करने को पिरा। 9 उसने मुझ से कहा, खबरदार! ऐसा न कर, मैं भी तेरा और तेरे नवियों और इस किताब की बातों पर ‘अमल करनेवालों का हम खिदमत हूँ। खुदा ही को सिज्दा कर।

10 फिर उसने मुझ से कहा, इस किताब की नबुव्वत की बातों को छुपाए न रख; क्यौंकि वक्त नज़दीक है, 11 “जो बुराई करता है, वो बुराई ही करता जाए; और जो नजिस है, वो नजिस ही होता जाए; और जो रास्तबाज़ है, वो रास्तबाज़ी करता जाए; और जो पाक है, वो पाक ही होता जाए।” 12 “देख, मैं जल्द आने वाला हूँ, और हर एक के काम के मुताबिक देने के लिए बदला मेरे पास है। 13 मैं अल्फा और ओमेगा, पहला और आखिर, इन्विदा और इन्तिहा हूँ।

14 मुबारिक है वो जो अपने जामे धोते हैं, क्यौंकि ज़िन्दगी के दरखत के पास आने का इख्लियार पाएँगे, और उन दरवाजों से शहर में दाखिल होंगे। 15 मगर कुते, और जादूगर, और हरामकार, और ख़नी, और बुत परस्त, और झटी बात का हर एक पसन्द करने और गढ़ने वाला बाहर रहेगा। 16 मुझ इसा ने, अपना फरिश्ता इसलिए भेजा कि कलीसियाओं के बारे में तम्हारे आगे इन बातों की गवाही दे। मैं दाकूद की अस्ल — ओ — नस्त और सुख का चमकता हुआ सितारा हूँ।” 17 और स्थ और दुल्हन कहती है, “आ!” और सुननेवाला भी कहे, “आ!” “आ!” और जो व्यासा हो वो आए, और जो कोई चाहे आब — ए — हयात मुफ्त ले। 18 मैं हर एक आदमी के आगे, जो इस किताब की नबुव्वत की बातें सुनता है, गवाही देता हूँ: अगर कोई आदमी इनमें कुछ बढ़ाए, तो खुदा इस किताब में लिखी हुई आफतें उस पर नाजिल करेगा। 19 और अगर कोई इस नबुव्वत की किताब की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो खुदा उस ज़िन्दगी के दरखत और मुकद्दस शहर में से, जिनका इस किताब में जिक्र है, उसका हिस्सा निकाल डालेगा। 20 जो इन बातों की गवाही देता है वो ये कहता है, “बैशक, मैं जल्द आने वाला हूँ।” आमीन! ऐ खुदावन्द इंसा आ! 21

खुदावन्द इंसा का फजल मुकद्दसों के साथ रहे। आमीन।



फिर मैंने शहर — ए — मुकद्दस नए येस्शलेम को आसमान पर से खुदा के पास से उतरते देखा, और वो उस दूर्लहन की तरह सजा था जिसने अपने शौहर के लिए सिंगार किया हो। फिर मैंने तख्त में से किसी को उनको ऊँची आवाज से ये कहते सुना, “देख, खुदा का खेमा आदमियों के दर्मियान है। और वो उनके साथ सुखन्त करेगा, और वो उनके साथ रहेगा और उनका खुदा होगा।

मुकाशफा 21:2-3

रीडर्स गार्ड

उर्दू at AionianBible.org/Readers-Guide

The Aionian Bible republishes public domain and Creative Common Bible texts that are 100% free to copy and print. The original translation is unaltered and notes are added to help your study. The notes show the location of ten special Greek and Hebrew Aionian Glossary words to help us better understand God's love for individuals and for all mankind, and the nature of afterlife destinies.

Who has the authority to interpret the Bible and examine the underlying Hebrew and Greek words? That is a good question! We read in 1 John 2:27, *"As for you, the anointing which you received from him remains in you, and you do not need for anyone to teach you. But as his anointing teaches you concerning all things, and is true, and is no lie, and even as it taught you, you remain in him."* Every Christian is qualified to interpret the Bible! Now that does not mean we will all agree. Each of us is still growing in our understanding of the truth. However, it does mean that there is no infallible human or tradition to answer all our questions. Instead the Holy Spirit helps each of us to know the truth and grow closer to God and each other.

The Bible is a library with 66 books in the Protestant Canon. The best way to learn God's word is to read entire books. Read the book of Genesis. Read the book of John. Read the entire Bible library. Topical studies and cross-referencing can be good. However, the safest way to understand context and meaning is to read whole Bible books. Chapter and verse numbers were added for convenience in the 16th century, but unfortunately they can cause the Bible to seem like an encyclopedia. The Aionian Bible is formatted with simple verse numbering, minimal notes, and no cross-referencing in order to encourage the reading of Bible books.

Bible reading must also begin with prayer. Any Christian is qualified to interpret the Bible with God's help. However, this freedom is also a responsibility because without the Holy Spirit we cannot interpret accurately. We read in 1 Corinthians 2:13-14, *"And we speak of these things, not with words taught by human wisdom, but with those taught by the Spirit, comparing spiritual things with spiritual things. Now the natural person does not receive the things of the Spirit of God, for they are foolishness to him, and he cannot understand them, because they are spiritually discerned."* So we cannot understand in our natural self, but we can with God's help through prayer.

The Holy Spirit is the best writer and he uses literary devices such as introductions, conclusions, paragraphs, and metaphors. He also writes various genres including historical narrative, prose, and poetry. So Bible study must spiritually discern and understand literature. Pray, read, observe, interpret, and apply. Finally, *"Do your best to present yourself approved by God, a worker who does not need to be ashamed, properly handling the word of truth."* 2 Timothy 2:15. *"God has granted to us his precious and exceedingly great promises; that through these you may become partakers of the divine nature, having escaped from the corruption that is in the world by lust. Yes, and for this very cause adding on your part all diligence, in your faith supply moral excellence; and in moral excellence, knowledge; and in knowledge, self-control; and in self-control patience; and in patience godliness; and in godliness brotherly affection; and in brotherly affection, love. For if these things are yours and abound, they make you to be not idle nor unfruitful to the knowledge of our Lord Jesus Christ,"* 2 Peter 1:4-8.

ଲଗତ

ଉଦ୍‌ଦୃଷ୍ଟି at AionianBible.org/Glossary

The Aionian Bible un-translates and instead transliterates ten special words to help us better understand the extent of God's love for individuals and all mankind, and the nature of afterlife destinies. The original translation is unaltered and a note is added to 63 Old Testament and 200 New Testament verses. Compare the meanings below to the Strong's Concordance and Glossary definitions.

Abyssos

Language: Koine Greek

Speech: proper noun, place

Usage: 9 times in 3 books, 6 chapters, and 9 verses

Strong's: g12

Meaning:

Temporary prison for special fallen angels such as Apollyon, the Beast, and Satan.

aīdios

Language: Koine Greek

Speech: adjective

Usage: 2 times in Romans 1:20 and Jude 6

Strong's: g126

Meaning:

Lasting, enduring forever, eternal.

aiōn

Language: Koine Greek

Speech: noun

Usage: 127 times in 22 books, 75 chapters, and 102 verses

Strong's: g165

Meaning:

A lifetime or time period with a beginning and end, an era, an age, the completion of which is beyond human perception, but known only to God the creator of the *aiōns*, Hebrews 1:2. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Koine Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

aiōnios

Language: Koine Greek

Speech: adjective

Usage: 71 times in 19 books, 44 chapters, and 69 verses

Strong's: g166

Meaning:

From start to finish, pertaining to the age, lifetime, entirety, complete, or even consummate. Never meaning simple endless or infinite chronological time in Koine Greek usage. Read Dr. Heleen Keizer and Ramelli and Konstan for proofs.

Geenna

Language: Koine Greek

Speech: proper noun, place

Usage: 12 times in 4 books, 7 chapters, and 12 verses

Strong's: g1067

Meaning:

Valley of Hinnom, Jerusalem's trash dump, a place of ruin, destruction, and judgment in this life, or the next, though not eternal to Jesus' audience.

Hadēs

Language: Koine Greek

Speech: proper noun, place

Usage: 11 times in 5 books, 9 chapters, and 11 verses

Strong's: g86

Meaning:

Synonomous with Sheol, though in New Testament usage Hades is the temporal place of punishment for deceased unbelieving mankind, distinct from Paradise for deceased believers.

Limnē Pyr

Language: Koine Greek

Speech: proper noun, place

Usage: Phrase 5 times in the New Testament

Strong's: g3041 g4442

Meaning:

Lake of Fire, final punishment for those not named in the Book of Life, prepared for the Devil and his angels, Matthew 25:41.

Sheol

Language: Hebrew

Speech: proper noun, place

Usage: 65 times in 17 books, 50 chapters, and 63 verses

Strong's: h7585

Meaning:

The grave or temporal afterlife world of both the righteous and unrighteous, believing and unbelieving, until the general resurrection.

Tartaroō

Language: Koine Greek

Speech: proper noun, place

Usage: 1 time in 2 Peter 2:4

Strong's: g5020

Meaning:

Temporary prison for particular fallen angels awaiting final judgment.

لگات +

AionianBible.org/Bibles/Urdu---Urdu-Bible/Noted

Glossary references are below. Strong's Hebrew and Greek number notes are added to 63 Old Testament and 200 New Testament verses. Questioned verse translations do not contain Aionian Glossary words and may wrongly imply *eternal* or *Hell*. * The note placement is skipped or adjusted for verses with non-standard numbering.

Abyssos

لکا 8:31
رے‌میو 10:7
مکاشفا 9:1
مکاشفا 9:2
مکاشفا 9:11
مکاشفا 11:7
مکاشفا 17:8
مکاشفا 20:1
مکاشفا 20:3

aidios

رے‌میو 1:20
یہدا 1:6

aiōn

متری 12:32
متری 13:22
متری 13:39
متری 13:40
متری 13:49
متری 21:19
متری 24:3
متری 28:20
مرکس 3:29
مرکس 4:19
مرکس 10:30
مرکس 11:14
لکا 1:33
لکا 1:55
لکا 1:70
لکا 16:8
لکا 18:30
لکا 20:34
لکا 20:35
یہننا 4:14
یہننا 6:51
یہننا 6:58
یہننا 8:35
یہننا 8:51
یہننا 8:52
یہننا 9:32
یہننا 10:28
یہننا 11:26
یہننا 12:34
یہننا 13:8
یہننا 14:16

آماں 3:21
آماں 15:18
رے‌میو 1:25
رے‌میو 9:5
رے‌میو 11:36
رے‌میو 12:2
رے‌میو 16:27
1 کریمیو 1:20
1 کریمیو 2:6
1 کریمیو 2:7
1 کریمیو 2:8
1 کریمیو 3:18
1 کریمیو 8:13
1 کریمیو 10:11
2 کریمیو 4:4
2 کریمیو 9:9
2 کریمیو 11:31
گلاتیو 1:4
گلاتیو 1:5
یفیسیو 1:21
یفیسیو 2:2
یفیسیو 2:7
یفیسیو 3:9
یفیسیو 3:11
یفیسیو 3:21
یفیسیو 6:12
فیلیپیو 4:20
کولسیو 1:26
1 تیمثیو 1:17
1 تیمثیو 6:17
2 تیمثیو 4:10
2 تیمثیو 4:18
تیتوس 2:12
ذرا نیو 1:2
ذرا نیو 1:8
ذرا نیو 5:6
ذرا نیو 6:5
ذرا نیو 6:20
ذرا نیو 7:17
ذرا نیو 7:21
ذرا نیو 7:24
ذرا نیو 7:28
ذرا نیو 9:26
ذرا نیو 11:3
ذرا نیو 13:8
ذرا نیو 13:21
1 پترس 1:23

1 پترس 1:25
1 پترس 4:11
1 پترس 5:11
2 پترس 3:18
1 یہننا 2:17
2 یہننا 1:2
یہدا 1:13
یہدا 1:25
مکاشفا 1:6
مکاشفا 1:18
مکاشفا 4:9
مکاشفا 4:10
مکاشفا 5:13
مکاشفا 7:12
مکاشفا 10:6
مکاشفا 11:15
مکاشفا 14:11
مکاشفا 15:7
مکاشفا 19:3
مکاشفا 20:10
مکاشفا 22:5

aiōnios

متری 18:8
متری 19:16
متری 19:29
متری 25:41
متری 25:46
مرکس 3:29
مرکس 10:17
مرکس 10:30
لکا 10:25
لکا 16:9
لکا 18:18
لکا 18:30
یہننا 3:15
یہننا 3:16
یہننا 3:36
یہننا 4:14
یہننا 4:36
یہننا 5:24
یہننا 5:39
یہننا 6:27
یہننا 6:40
یہننا 6:47
یہننا 6:54
یہننا 6:68

यहना 10:28
यहना 12:25
यहना 12:50
यहना 17:2
यहना 17:3
आमाल 13:46
आमाल 13:48
रोमियो 2:7
रोमियो 5:21
रोमियो 6:22
रोमियो 6:23
रोमियो 16:25
रोमियो 16:26
2 कृपिन्थियों 4:17
2 कृपिन्थियों 4:18
2 कृपिन्थियों 5:1
गतातियों 6:8
2 थिस्सलनीकियों 1:9
2 थिस्सलनीकियों 2:16
1 तीमुथियुस 1:16
1 तीमुथियुस 6:12
1 तीमुथियुस 6:16
1 तीमुथियुस 6:19
2 तीमुथियुस 1:9
2 तीमुथियुस 2:10
तीतुस 1:2
तीतुस 3:7
फिलेमोन 1:15
झानियों 5:9
झानियों 6:2
झानियों 9:12
झानियों 9:14
झानियों 9:15
झानियों 13:20
1 पतरस 5:10
2 पतरस 1:11
1 यहना 1:2
1 यहना 2:25
1 यहना 3:15
1 यहना 5:11
1 यहना 5:13
1 यहना 5:20
यहदाह 1:7
यहदाह 1:21
मुकाशफा 14:6

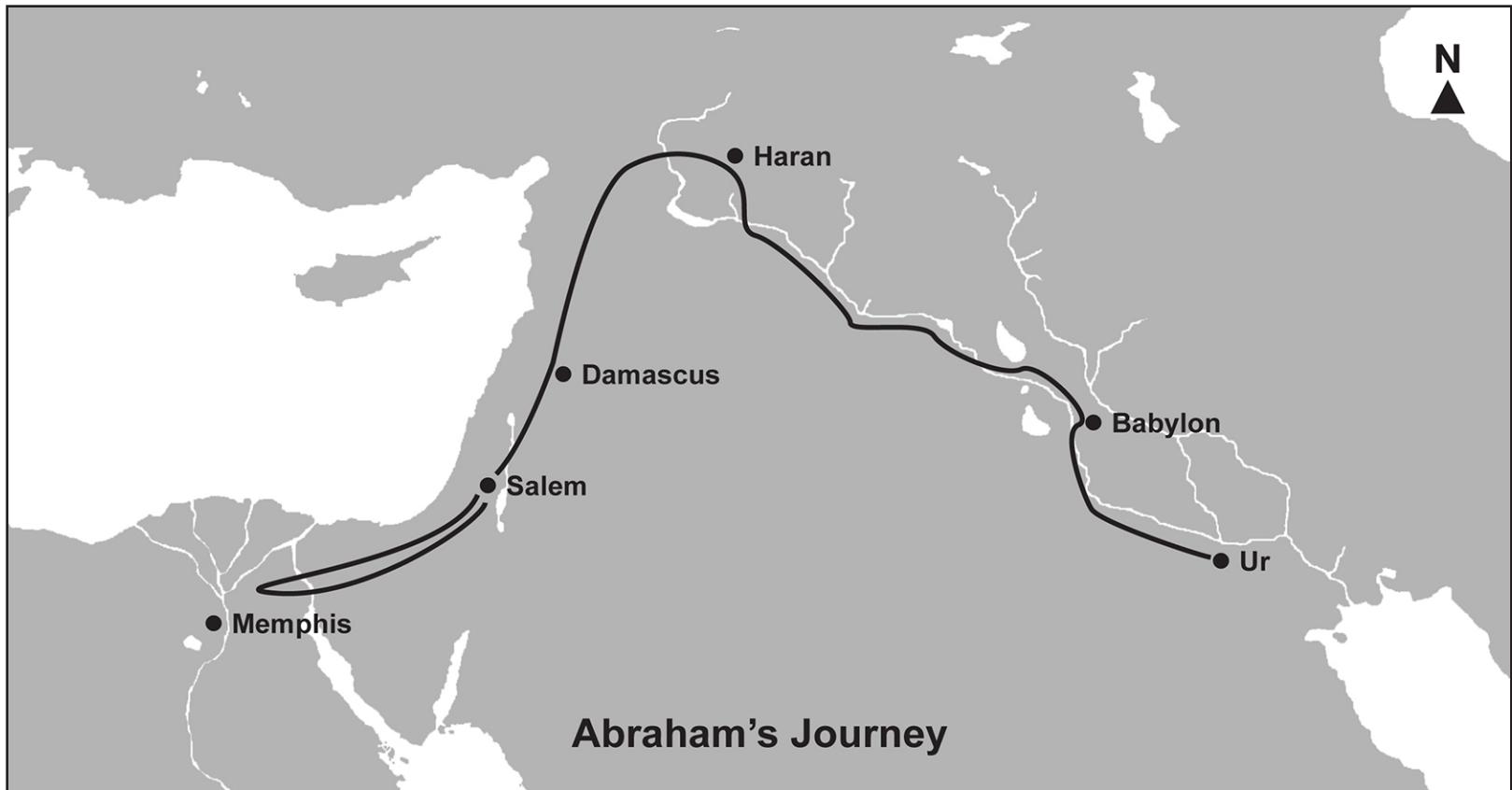
लका 12:5
याकृब 3:6
Hades
मर्ती 11:23
मर्ती 16:18
लका 10:15
लका 16:23
आमाल 2:27
आमाल 2:31
1 कृपिन्थियों 15:55
मुकाशफा 1:18
मुकाशफा 6:8
मुकाशफा 20:13
मुकाशफा 20:14
Limnē Pyr
मुकाशफा 19:20
मुकाशफा 20:10
मुकाशफा 20:14
मुकाशफा 20:15
मुकाशफा 21:8
Sheol
पैदाइश 37:35
पैदाइश 42:38
पैदाइश 44:29
पैदाइश 44:31
गिन 16:30
गिन 16:33
इस्त 32:22
1 सम् 2:6
2 सम् 22:6
1 सला 2:6
1 सला 2:9
अय्यू 7:9
अय्यू 11:8
अय्यू 14:13
अय्यू 17:13
अय्यू 17:16
अय्यू 21:13
अय्यू 24:19
अय्यू 26:6
जबूर 6:5
जबूर 9:17
जबूर 16:10
जबूर 18:5
जबूर 30:3
जबूर 31:17
जबूर 49:14
जबूर 49:15
जबूर 55:15
जबूर 86:13
जबूर 88:3
जबूर 89:48
जबूर 116:3
जबूर 139:8

जबूर 141:7
अम्सा 1:12
अम्सा 5:5
अम्सा 7:27
अम्सा 9:18
अम्सा 15:11
अम्सा 15:24
अम्सा 23:14
अम्सा 27:20
अम्सा 30:16
वाइज्ज 9:10
गजल्तुल 8:6
यसा 5:14
यसा 14:9
यसा 14:11
यसा 14:15
यसा 28:15
यसा 28:18
यसा 38:10
यसा 38:18
यसा 57:9
हिजि 31:15
हिजि 31:16
हिजि 31:17
हिजि 32:21
हिजि 32:27
होसी 13:14
आम् 9:2
यूता 2:2
हबूक 2:5

Tartaroō
2 पतरस 2:4

Questioned
2 पतरस 2:17

Geenna
मर्ती 5:22
मर्ती 5:29
मर्ती 5:30
मर्ती 10:28
मर्ती 18:9
मर्ती 23:15
मर्ती 23:33
मरकुस 9:43
मरकुस 9:45
मरकुस 9:47

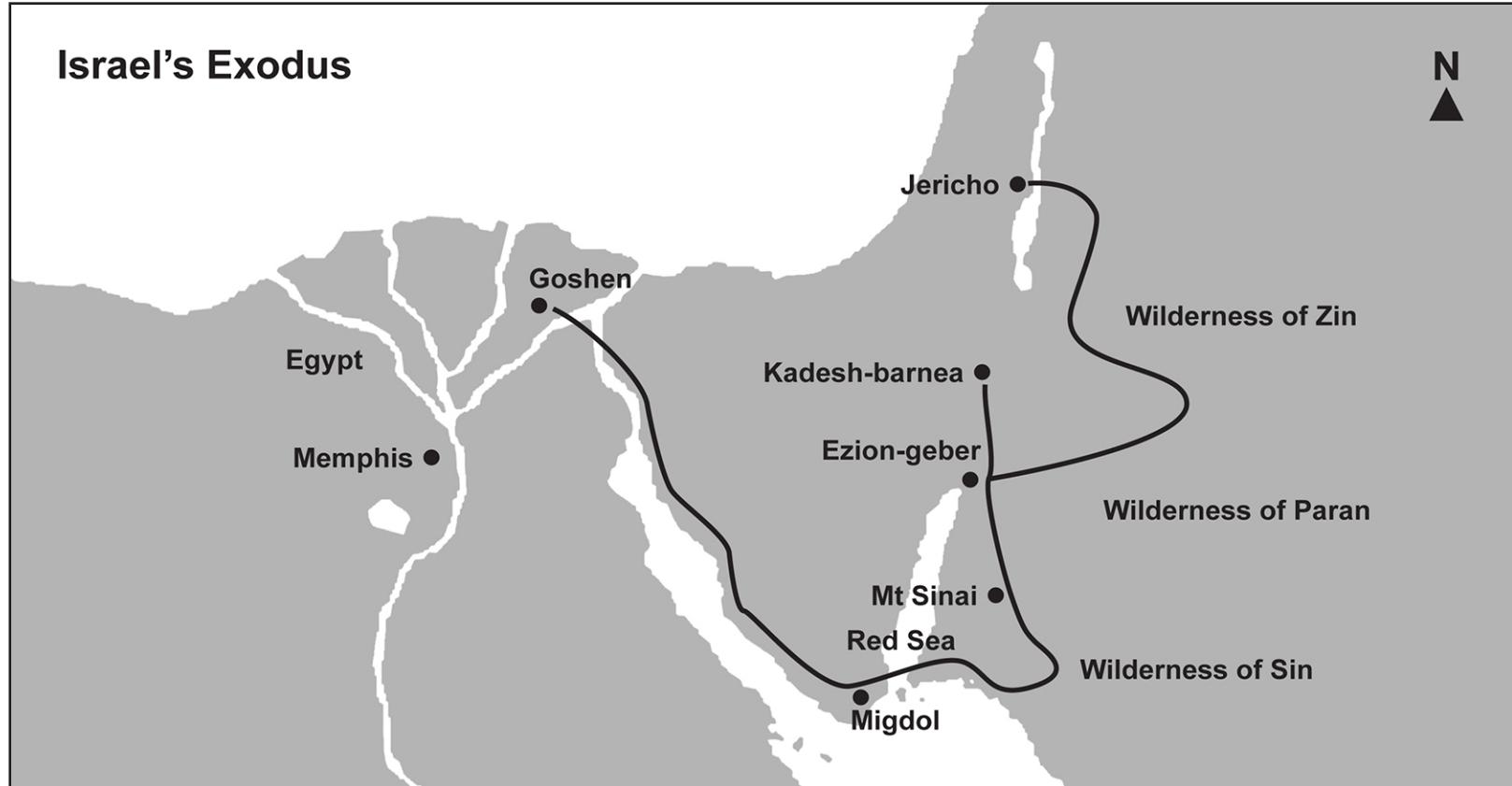


यह ईमान का काम था कि अब्राहाम ने खुदा की सुनी जब उस ने उसे बुला कर कहा कि वह एक ऐसे मुल्क में जाए जो उसे बाद में मीरास में मिलेगा। हाँ,

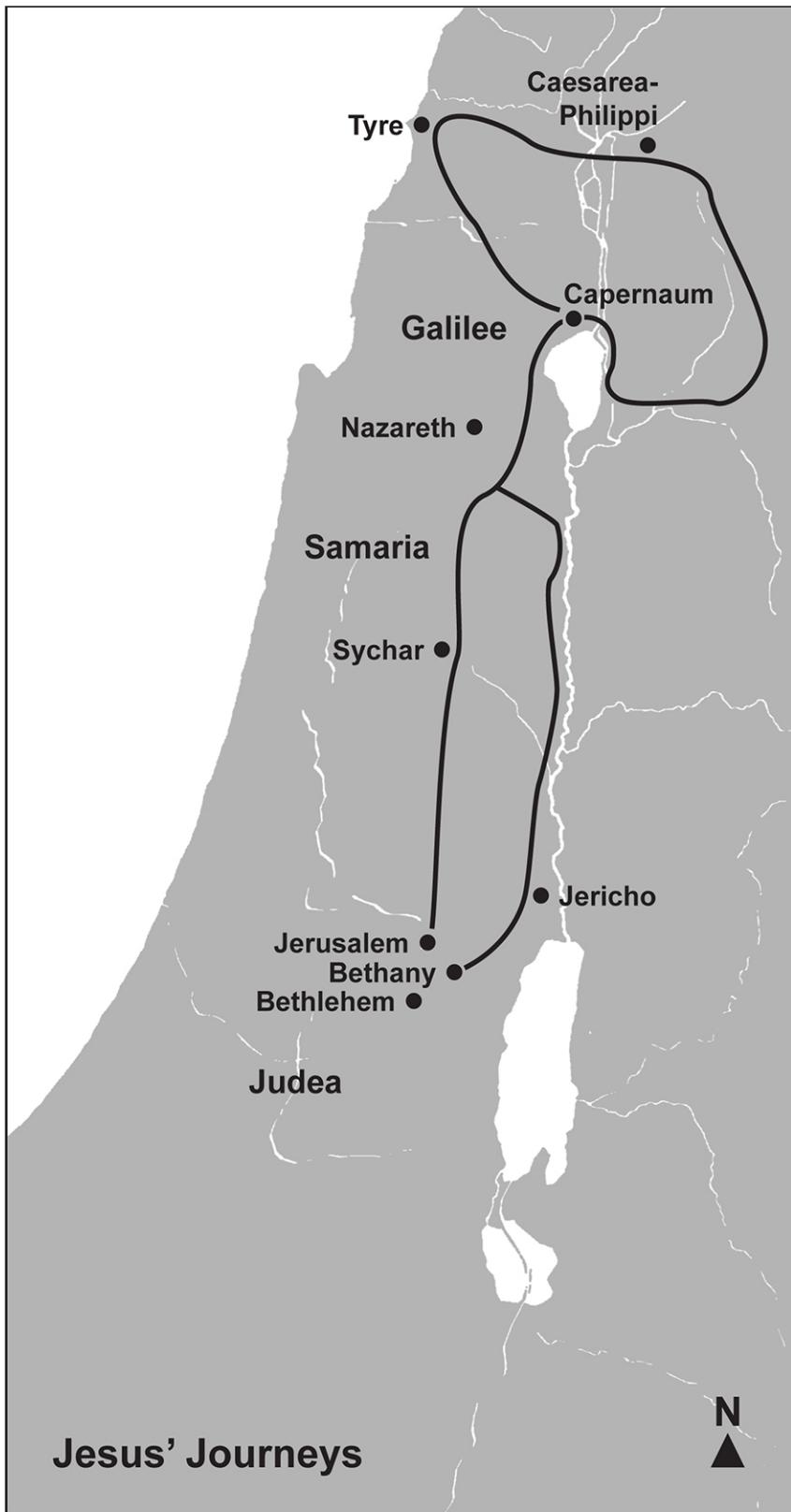
वह अपने मुल्क को छोड़ कर रवाना हुआ, हालांकि उसे मालूम न था कि वह कहाँ जा रहा है। - इब्रानियों 11:8

Israel's Exodus

N



और जब फिर 'ओैन ने उन लोगों को जाने की इजाजत दे दी तो खुदा इनको फिलिस्तियों के मुल्क के रास्ते से नहीं ले गया, अगरचे उधर से नजदीक पड़ता; क्यूँकि खुदा ने कहा,
ऐसा न हो कि यह लोग लडाई — मिडाई देख कर पछताने लगें और मिस्र को लौट जाएं। - खुरु 13:17



कर्तृक इन — ए आदम भी इसलिए नहीं अब कि खिदमत ते बल्कि इसलिए कि खिदमत करे और अपनी जन बहुतों के बदले भिदया में दे। - मर्कुस 10:45

Jesus' Journeys



पौलस की तरफ से जो ईसा मसीह का बन्दा है और रसूल होने के लिए बुलाया गया और खुदा की उस खुशखबरी के लिए अलग किया गया। - रोमियो 1:1

Creation 4004 B.C.

Adam and Eve created	4004
Tubal-cain forges metal	3300
Enoch walks with God	3017
Methuselah dies at age 969	2349
God floods the Earth	2349
Tower of Babel thwarted	2247
Abraham sojourns to Canaan	1922
Jacob moves to Egypt	1706
Moses leads Exodus from Egypt	1491
Gideon judges Israel	1245
Ruth embraces the God of Israel	1168
David installed as King	1055
King Solomon builds the Temple	1018
Elijah defeats Baal's prophets	896
Jonah preaches to Nineveh	800
Assyrians conquer Israelites	721
King Josiah reforms Judah	630
Babylonians capture Judah	605
Persians conquer Babylonians	539
Cyrus frees Jews, rebuilds Temple	537
Nehemiah rebuilds the wall	454
Malachi prophesies the Messiah	416
Greeks conquer Persians	331
Seleucids conquer Greeks	312
Hebrew Bible translated to Greek	250
Maccabees defeat Seleucids	165
Romans subject Judea	63
Herod the Great rules Judea	37

(The Annals of the World, James Usher)

Jesus Christ born 4 B.C.

New Heavens and Earth

1956	Christ returns for his people
1830	Jim Elliot martyred in Ecuador
1731	John Williams reaches Polynesia
1614	Zinzendorf leads Moravian mission
1572	Japanese kill 40,000 Christians
1517	Jesuits reach Mexico
1455	Martin Luther leads Reformation
1323	Gutenberg prints first Bible
1276	Franciscans reach Sumatra
1100	Ramon Llull trains missionaries
1054	Crusades tarnish the church
997	The Great Schism
864	Adalbert martyred in Prussia
716	Bulgarian Prince Boris converts
635	Boniface reaches Germany
569	Alopen reaches China
432	Longinus reaches Alodia / Sudan
397	Saint Patrick reaches Ireland
341	Carthage ratifies Bible Canon
325	Ulfilas reaches Goth / Romania
250	Niceae proclaims God is Trinity
197	Denis reaches Paris, France
70	Tertullian writes Christian literature
61	Paul imprisoned in Rome, Italy
52	Titus destroys the Jewish Temple
39	Thomas reaches Malabar, India
33	Peter reaches Gentile Cornelius
	Holy Spirit empowers the Church

(Wikipedia, Timeline of Christian missions)

Resurrected 33 A.D.

What are we? ►			Genesis 1:26 - 2:3		Mankind is created in God's image, male and female He created us							
How are we sinful? ►			Romans 5:12-19		Sin entered the world through Adam and then death through sin							
Where are we? ◀			When are we? ▼									
			Innocence		Fallen			Glory				
Who are we? ►	God	Eternity Past	Creation 4004 B.C.	Fall to sin No Law	Moses' Law 1500 B.C.	Christ 33 A.D.	Church Age Kingdom Age	New Heavens and Earth				
		Father	John 10:30 God's perfect fellowship	Genesis 1:31 God's perfect fellowship with Adam in The Garden of Eden	1 Timothy 6:16 Living in unapproachable light			Acts 3:21 Philippians 2:11 Revelation 20:3 God's perfectly restored fellowship with all Mankind praising Christ as Lord in the Holy City				
		Son			John 8:58 Pre-incarnate	John 1:14 Incarnate	Luke 23:43 Paradise					
		Holy Spirit			Psalm 139:7 Everywhere	John 14:17 Living in believers						
	Mankind	Living			Ephesians 2:1-5 Serving the Savior or Satan on Earth							
		Deceased believing			Luke 16:22 Blessed in Paradise							
		Deceased unbelieving			Luke 16:23, Revelation 20:5,13 Punished in Hades until the final judgment							
	Angels	Holy	Genesis 1:1 No Creation No people		Hebrews 1:14 Serving mankind at God's command			Matthew 25:41 Revelation 20:10 Lake of Fire prepared for the Devil and his Angels				
		Imprisoned			2 Peter 2:4, Jude 6 Imprisoned in Tartarus							
		Fugitive			Revelation 20:13 Thalaasa							
		First Beast			1 Peter 5:8, Revelation 12:10 Rebelling against Christ Accusing mankind							
		False Prophet			Revelation 19:20 Lake of Fire							
		Satan			Revelation 20:2 Abyss							
Why are we? ►			Romans 11:25-36, Ephesian 2:7		For God has bound all over to disobedience in order to show mercy to all							



पस तुम जा कर सब कौमों को शाशिर्द बनाओ और उन को बाप और बेटे और रुह — उल — कुदूस के नाम से बपतिस्मा दो। - मत्ती 28:19